

प्रथमावृत्तिः ५९४९.

४००० प्रत्ययः

सर्वस्वाम्यसंकलिता

: तत्पत्र १८९ प्रत्ययः

श्री जामनगरे आयुर्वेद मुद्रणाकषे मुद्रापिता च


~~~~~

IN

WITH TRANSLATIONS IN HINDI, GUJARATI AND ENGLISH

BY

**JAMNAGAR**

Printed in India

DE LUXE EDITION MAGAZINE, 1949, The Aynives 11 SEPT 125/-

**First Impression 1949**  
**4000 Copies**

*Copyright Reserved*

**Printed in India**  
**At The Ayurveda Mudranalaya, JAMNAGAR,**  
**By Gunvantrai Acharya**

# चरकसंहिताया विषयानुक्रमणिका ।

## १६ पाण्डुरोगचिकित्सितम्

|       |                              |         |
|-------|------------------------------|---------|
| १-२   | पाण्डुरोगचिकित्सितोपक्रमः    | १९२१    |
| ३     | पाण्डुरोगस्य भेदाः           | १९२१    |
| ४-६   | संप्राप्तिः                  | १९२१-२२ |
| ७-११  | निदानम्                      | १९२२-२३ |
| १२    | पूर्वरूपम्                   | १९२३    |
| १३-१६ | सामान्यलक्षणम्               | १९२३-२४ |
| १७-१८ | वातजपाण्डुरोगस्य निदानलक्षणे | १९२४    |
| १९-२२ | पित्तजपाण्डुरोगस्य           | १९२५    |
| २३-२५ | श्लेष्मजपाण्डुरोगस्य         | १९२६    |
| २६    | साक्षिपातिकपाण्डुरोगस्य      | १९२६    |
| २७-३० | मृजपाण्डुरोगस्य              | १९२७    |
| ३१-३३ | पाण्डुरोगस्यासाम्यलक्षणम्    | १९२६-२८ |
| ३४-३६ | कामलाया निदानं लक्षणं        | १९२६    |
| ३७    | कुम्भकामलाया लक्षणम्         | १९२९    |
| ३८    | कामलाया असाध्यलक्षणम्        | १९२९    |
| ३९-४० | कामलापाण्डुरोगयोः संशोधनम्   | १९३०    |
| ४१-४२ | अज्ञपानम्                    | १९३०    |
| ४३    | स्नेहनम्                     | १९३०-३१ |
| ४४-४६ | पाण्डुरोगे दाडिमाद्यं घृतम्  | १९३१    |
| ४७-४८ | कटुकायं                      | १९३१    |
| ४९    | पथ्याघृतम्                   | १९३२    |
| ५०    | दन्तीघृतम्                   | १९३२    |
| ५१    | शङ्खाघृतम्                   | १९३३    |
| ५२    | इरिदादिघृतम्                 | १९३३    |
| ५३    | अन्यौ घृतयोगो                | १९३३    |
| ५४-५५ | संशोधनम्                     | १९३४-३५ |
| ५६-५८ | विशालादिफण्टः                | १९३५    |
| ५९-६१ | कृतिप्रयोगाः                 | १९३५-३७ |
| ६२-६३ | नवायसचूर्णम्                 | १९३७    |
| ६४-६५ | मण्डू रवटकाः                 | १९३७-३८ |

|         |                                |         |
|---------|--------------------------------|---------|
| ८०-८६   | पाण्डुरोगे योगराजः             | १९३९-४० |
| ८७-९२   | शिलाजतुवटकाः                   | १९४०-४२ |
| ९३-९६   | पुनर्नवामण्डू                  | १९४२    |
| ९७      | दाव्यादिहेहः                   | १९४२    |
| ९८      | कामलाहरी योगौ                  | १९४३    |
| ९९      | त्रिफलाद्यो हेहः               | १९४३    |
| १००-१०१ | धान्यबलेहः                     | १९४३    |
| १०२-१०४ | मण्डूरवटकाः                    | १९४३-४५ |
| १०५     | गौडोरिष्टः                     | १९४५    |
| १०६-११० | बीजकारिष्टः                    | १९४५-४६ |
| १११-११३ | धान्यरिष्टः                    | १९४६-४७ |
| ११४     | पाण्डुकामलोः पानादारे तोयम्    | १९४७    |
| ११५-११६ | दोषापेक्षिणी चिकित्सा          | १९४७    |
| ११७     | मृजपाण्डुरोगस्य चिकित्सा       | १९४८    |
| ११८-१२० | मृजपाण्डुरोगे व्योषाद्यं घृतम् | १९४८-४९ |
| १२१-१३१ | कामलायामावस्थिकी चिकित्सा      | १९४९-५१ |
| १३२-१३३ | हस्तीमकस्य लक्षणम्             | १९५१    |
| १३४-१३७ | चिकित्सा                       | १९५२    |
| १३८-१३९ | अध्यायोक्तविषयाः               | १९५२-५३ |

## १७ हिकाश्वासचिकित्सितम्

|       |                                              |         |
|-------|----------------------------------------------|---------|
| १-५   | हिकाश्वासचिकित्सितोपक्रमः                    | १९५३-५४ |
| ६-९   | हिकाश्वासयोः शीघ्रं प्राणहरत्वं तत्र हेतुश्च | १९५४-५५ |
| १०-१७ | निदानं संप्राप्तिश्च                         | १९५५-५७ |
| १८-२० | पूर्वरूपाणि                                  | १९५७    |
| २१-२६ | महाहिकाया लक्षणम्                            | १९५७-५९ |
| २७-३० | गम्भीराख्यहिकायाः लक्षणम्                    | १९५९    |
| ३१-३३ | व्यपेताख्यहिकायाः                            | १९५९-६० |
| ३४-३७ | क्षुद्राख्यहिकायाः                           | १९६०-६१ |
| ३८-४१ | अज्ञजहिकायाः                                 | १९६१-६२ |

| विषयः             | पृष्ठाङ्कः                                | विषयः     | पृष्ठाङ्कः |
|-------------------|-------------------------------------------|-----------|------------|
| ४२-४४             | हिकायाः साध्यासाध्यविचारः                 | १९६२-६३   | १९७९-८०    |
| ४५                | श्वासानां संप्राप्तिः                     | १९६३      | १९८०-८१    |
| ४६-४८             | महाश्वासस्य लक्षणम्                       | १९६३      | १९८१       |
| ४९-५१             | ऊर्ध्वश्वासस्य                            | १९६४      | १९८१-८२    |
| ५२-५४             | छिन्नश्वासस्य                             | १९६४-६५   | १९८३-८५    |
| ५५-६२             | तमकश्वासस्य                               | १९६५-६७   | १९८५       |
| ६३-६४             | प्रतमकसंतमकयोः                            | १९६७      | १९८५       |
| ६५-६७             | क्षुद्रश्वासस्य                           | १९६७-६८   | १९८६       |
| ६८-६९             | श्वासानां साध्यासाध्यविचारः               | १९६८      | १९८६-८७    |
| ७०-७६             | हिकाश्वासयोः सामान्यचिकित्साक्रमः         | १९६८-७०   | १९८७-८८    |
| ७७-७८             | हरिद्राशूयधूमवर्तिः                       | १९७०      |            |
| ७९-८०             | कतिपयधूमयोगाः                             | १९७१      |            |
| ८१                | अनुबन्धजहिकाश्वासचिकित्सा                 | १९७१      |            |
| ८२-८४             | अस्वेष्टा हिकाश्वासानुराः                 | १९७१-७२   |            |
| ८५-८७             | हिकाश्वासयोरवस्थिकी चिकित्सा              | १९७२-७३   |            |
| ८८-९३             | हिकाश्वासयोः शोषनविचारः                   | १९७३-७४   |            |
| ९४-९५             | कतिपययोगाः                                | १९७४      |            |
| ९६                | रान्नायो यूषः                             | १९७५      |            |
| ९७-९८             | क्षारयूषः                                 | १९७५      |            |
| ९९                | अन्ये यूषयोगाः                            | १९७५      |            |
| १००               | वार्ताकजः यूषः                            | १९७६      |            |
| १००               | पथ्यम्                                    | १९७६      |            |
| १०१               | हिंसवादिद्विबागूः                         | १९७६      |            |
| १०२-१०४           | दशमूलादियबागूः                            | १९७६      |            |
| १०५               | पानम्                                     | १९७७      |            |
| १०६-१०७           | पाठादिसंबानम्                             | १९७७      |            |
| १०८               | हिंसवादिचूर्णम्                           | १९७७      |            |
| १०९               | सौवर्चलादिचूर्णम्                         | १९७७      |            |
| ११०               | कल्कयोगाः                                 | १९७८      |            |
| १११               | पित्तानुबन्धजे श्वासे मधूलिकाद्युत्कारिका | १९७८      |            |
| ११२               | वतानुबन्धजे श्वासे पथ्यम्                 | १९७८      |            |
| ११३               | वातपित्तानुबन्धजे श्वासे अनुपानम्         | १९७८      |            |
| ११४               | कफपित्तानुबन्धजे श्वासे अनुपानम्          | १९७८      |            |
| ११५               | हिकाश्वासयोः मधुकादियोगः                  | १९७९      |            |
| ११६               | शङ्कुदसप्रयोगः                            | १९७९      |            |
| ११७               | अश्वगन्धाक्षारः                           | १९७९      |            |
| ११८-१२०           | हिकाश्वासयोः लेहयोगाः                     | १९८०-८२   |            |
| १२१-१२२           | संशोधनम्                                  | १९८०-८१   |            |
| १२३-१२४           | शुद्धिचूर्णम्                             | १९८१      |            |
| १२५-१२८           | मुक्तशः                                   | १९८१-८२   |            |
| १२९-१३९           | हिकायां कतिपययोगाः                        | १९८३-८५   |            |
| १४०               | दशमूलाद्यं घृतम्                          | १९८५      |            |
| १४१-१४४           | तेजोवत्प्रायः                             | १९८५      |            |
| १४५-१४६           | मनःशिलादिघृतम्                            | १९८६      |            |
| १४७-१५०           | चिकित्सासूत्रम्                           | १९८६-८७   |            |
| १५१               | अध्यायोक्तविषयाः                          | १९८७-८८   |            |
| <hr/>             |                                           |           |            |
| १८ कासचिकित्सितम् |                                           |           |            |
| १-३               | कासचिकित्सितोपक्रमः                       | १९८८      |            |
| ४                 | कासस्य मेदाः                              | १९८८      |            |
| ५                 | पूर्वरूपम्                                | १९८९      |            |
| ६-८               | संप्राप्तिः                               | १९८९      |            |
| ९                 | मेद हेतुः                                 | १९८९      |            |
| १०-१३             | वातकासस्य निदानलक्षणम्                    | १९९०      |            |
| १४-१६             | पित्तकासस्य                               | १९९१      |            |
| १७-१९             | श्लेष्मकासस्य                             | १९९१-९२   |            |
| २०-२३             | क्षतकासस्य                                | १९९२-९३   |            |
| २४-२९             | क्षयकासस्य                                | १९९३-९४   |            |
| ३०-३१             | कासानां साध्यासाध्यविचारः                 | १९९४      |            |
| ३२-३४             | वातकासे चिकित्साक्रमः                     | १९९५      |            |
| ३५                | कण्टकारीघृतम्                             | १९९५      |            |
| ३६-३८             | पिप्पल्याद्यं घृतम्                       | १९९६      |            |
| ३९-४२             | त्र्ययूषणाद्यं घृतम्                      | १९९६-९७   |            |
| ४३-४६             | रान्नाघृतम्                               | १९९७-९८   |            |
| ४७                | विट्कादिचूर्णम्                           | १९९९      |            |
| ४८-४९             | द्विक्षारादिचूर्णम्                       | १९९८-९९   |            |
| ५०-५१             | दुरालभादिदेहः                             | १९९९      |            |
| ५२                | विट्कादिदेहः                              | १९९९      |            |
| ५३-५६             | चित्रकादिदेहः                             | १९९९-२००० |            |
| ५७-६२             | अगस्त्यहरीतकीदेहः                         | २०००-२००२ |            |

| विषयः                             | पृष्ठाङ्कः | विषयः                                       | पृष्ठाङ्कः |
|-----------------------------------|------------|---------------------------------------------|------------|
| ६३-६४ वातकासे कतिपययोगाः          | २००२       | १६३-१६४ , कासमदविधृतम्                      | २०२५       |
| ६५-६८ ,, धूमपानम्                 | २००२-०३    | १६५-१६७ ,, कतिपयघृतयोगाः                    | २०२५-२६    |
| ६९-७० ,, मनःशिलादिधूमः            | २००३       | १६८-१६९ ,, हरीतकीलेहः                       | २०२६       |
| ७१-७२ ,, प्रपौण्डरीकादिधूमवर्तिः  | २००३-०४    | १७०-१७३ ,, कतिपय केहयोगाः                   | २०२७       |
| ७३-७४ ,, मनःशिलादिधूमवर्तिः       | २००४       | १७४-१७५ ,, पद्मकदिहलेहः                     | २०२७-२८    |
| ७५ ,, इक्षुदीस्वगादिधूमः          | २००४       | १७६-१८१ ,, जीवन्त्यादिलेहः                  | २०२८-२९    |
| ७६-८२ ,, अन्नपानम्                | २००४-०६    | १८१-१८९ ,, अन्नपानम्                        | २०२९-३१    |
| ८३-८६ पित्तकासे चिकित्साक्रमः     | २००६-०७    | १९० ,, कासमैषज्यसंग्रहः                     | २०३१       |
| ८७-८९ ,, लेहयोगाः                 | २००७       | १९१ ,, अध्यायोक्तविषयाः                     | २०३१-३२    |
| ९० ,, शर्करादिलेहः                | २००८       |                                             |            |
| ९१ ,, मृद्वीकादिलेहः              | २००८       |                                             |            |
| ९५-९३ ,, त्वगादिलेहः              | २००८       |                                             |            |
| ९४-९५ ,, पिप्पल्यादिलेहः          | २००९       |                                             |            |
| ९६-९९ ,, अन्नपानम्                | २००९-१०    |                                             |            |
| १०० पित्तकासे शरादिपञ्चमूलक्षीरम् | २०१०       |                                             |            |
| १०१-१०२ ,, स्थिरादिक्षीरम्        | २०१०       |                                             |            |
| १०३-१०७ ,, कतिपययोगाः             | २०११-१२    |                                             |            |
| १०७-१११ कफकासे चिकित्साक्रमः      | २०१२-१३    |                                             |            |
| ११२-११३ ,, कट्फलविक्राथः          | २०१३       |                                             |            |
| ११४ ,, पाठादियोगः                 | २०१३       |                                             |            |
| ११५ ,, नागरादियोगः                | २०१३       |                                             |            |
| ११६ ,, पिप्पलीप्रयोगः             | २०१४       |                                             |            |
| ११७-१२२ ,, कतिपययोगाः             | २०१४-१५    |                                             |            |
| १२३-१२४ ,, दशमूलादिघृतम्          | २०१५       |                                             |            |
| १२५-१२८ ,, कण्टकारीघृतम्          | २०१६       |                                             |            |
| १२९ ,, कुलत्थादिघृतम्             | २०१६-१७    |                                             |            |
| १३० ,, धूमयोगाः                   | २०१७       |                                             |            |
| १३१-१३३ ,, दोषापोक्षणी चिकित्सा   | २०१७-१८    |                                             |            |
| १३४ क्षतकासे चिकित्साक्रमः        | २०१८       |                                             |            |
| १३५-१३७ ,, पिप्पल्यादिलेहः        | २०१८-१९    |                                             |            |
| १३८-१४३ ,, आवस्थिकी चिकित्सा      | २०१९-२०    |                                             |            |
| १४४ ,, धूमयोगाः                   | २०२०       |                                             |            |
| १४५-१४८ ,, द्विमेदादिधूमवर्तिः    | २०२१       |                                             |            |
| १४९-१५७ क्षयकासे चिकित्साक्रमः    | २०२२-२४    |                                             |            |
| १५८-१६० ,, द्विपञ्चमूलादिघृतम्    | २०२४       |                                             |            |
| १६१-१६२ ,, गुह्य्यादिघृतम्        | २०२५       |                                             |            |
|                                   |            | १९ अतिसारचिकित्सितम्                        |            |
|                                   |            | १-२ अतिसारचिकित्सितोपक्रमः                  | २०३२       |
|                                   |            | ३-४ अतिसारस्य प्रागुत्पत्तिः                | २०३२-३४    |
|                                   |            | ५ वातातिसारस्य निदानसंप्राप्ति-<br>लक्षणानि | २०३४-३५    |
|                                   |            | ६ पित्तातिसारस्य ,,                         | २०३५-३६    |
|                                   |            | ७ श्लेष्मातिसारस्य ,,                       | २०३६-३७    |
|                                   |            | ८-१० सन्निपातातीसारस्य ,,                   | २०३८-४१    |
|                                   |            | ११-१३ अयशोकातीसारयोः लक्षणम्                | २०४१-४२    |
|                                   |            | १४-११ आम्रातिसारे संग्रहणीषधनिषेधः          | २०४२-४३    |
|                                   |            | १८ ,, अनुलोमनाथे<br>हरीतकीयोगः              | २०४३       |
|                                   |            | १९-२२ ,, प्रमथ्याः                          | २०४३-४४    |
|                                   |            | २३-४१ अतिसारे अन्नपानम्                     | २०४४-४८    |
|                                   |            | ४२ गुदभ्रंशचिकित्सा                         | २०४८       |
|                                   |            | ४३ गुदभ्रंशे चाङ्गेरीघृतम्                  | २०४८       |
|                                   |            | ४४ ,, चव्यादिघृतम्                          | २०४८       |
|                                   |            | ४५ ,, अनुवासनम्                             | २०४९       |
|                                   |            | ४६ ,, संप्रवेशनम्                           | २०४९       |
|                                   |            | ४७-४९ वातातिसारे आवस्थिकी चिकित्सा          | २०४९-५०    |
|                                   |            | ५० पित्तातिसारे चिकित्साक्रमः               | २०५०-५१    |
|                                   |            | ५१-५५ ,, कतिपययोगाः                         | २०५१-५२    |
|                                   |            | ५६-६० ,, अन्नपानम्                          | २०५२       |
|                                   |            | ६१-१२ ,, अनुवासनम्                          | २०५४       |
|                                   |            | ६३-६८ ,, पिच्छावस्तिः                       | २०५४-५५    |

| विषयः                                       | पृष्ठाङ्कः | विषयः                                        | पृष्ठाङ्कः |
|---------------------------------------------|------------|----------------------------------------------|------------|
| ६९-७० रक्तातिसारलक्षणम्                     | २०५५-५६    | ११ विसर्पस्य निरुक्तिः                       | २०८५       |
| ७१-८६ रक्तातिसारचिकित्सा                    | २०५६-५९    | १२-१४ ,, भेदाः                               | २०८५-८६    |
| ८७-९२ पित्तातिसारे गुदवलीपाकचिकित्सा        | २०५९-६०    | १५ ,, दोषरूपसंप्रदहः                         | २०८६       |
| ९३-१०१ रक्तातिसारे चिकित्साक्रमः            | २०६१-६३    | १६-२२ ,, सामान्यनिदानम्                      | २०८६-८७    |
| १०२-१०३ श्लेष्मातिसारे चिकित्साक्रमः        | २०६३       | २३-२४ ,, साध्यानाध्यलक्षणम्                  | २०८७-८८    |
| १०३-१२० श्लेष्मातिवाग्नाः कतिपयोगाः         | २०६३-६६    | २५-२७ ,, बाह्याभ्यन्तराश्रयभेदेन द्वैविध्यम् | २०८८       |
| १२१-१२२ अतिसारे वातादिविकित्साक्रमः         | २०६६-६७    | २८ असाध्यविसर्पलक्षणम्                       | २०८९       |
| १२३ अध्यायोक्तविषयाः                        | २०६७       | २९-३० वातविसर्पस्य निदानलक्षणे               | २०८९-९०    |
|                                             |            | ३१-३२ पित्तविसर्पस्य ,,                      | २०९०-९१    |
|                                             |            | ३३-३४ कफविसर्पस्य ,,                         | २०९२-९३    |
|                                             |            | ३५-३६ अग्निविसर्पस्य ,,                      | २०९३-९४    |
|                                             |            | ३७-३८ कर्दमविसर्पस्य निदानलक्षणे             | २०९४-९६    |
|                                             |            | ३९ ग्रन्थिविसर्पस्य ,,                       | २०९७-९८    |
|                                             |            | ४० उपद्रवस्य लक्षणम्                         | २०९८       |
|                                             |            | ४० ,, आशुप्रतिकारोपदेशः                      | २०९८       |
|                                             |            | ४१ सान्निपातिकविसर्पलक्षणम्                  | २०९९       |
|                                             |            | ४२ विषपर्णां साध्यासाध्यविचारः               | २०९९       |
|                                             |            | ४३-५० विसर्पेषु चिकित्सासूत्रम्              | २१००-०२    |
|                                             |            | ५१-५३ विसर्पे वमनम्                          | २१०२       |
|                                             |            | ५४ विसर्पेनाः कषाययोगाः                      | २१०२       |
|                                             |            | ५५-५६ विसर्पे किराततिकादिकषायः               | २१०३       |
|                                             |            | ५७ ,, प्रपौण्डरीकादिकषायः                    | २१०३       |
|                                             |            | ५८ ,, दक्षादिशीतकषायः                        | २१०३       |
|                                             |            | ५९-६१ ,, षटोलादिकषायः                        | २१०४       |
|                                             |            | ६२-६७ ,, विरेचनम्                            | २१०४-०५    |
|                                             |            | ६८-७० ,, रक्तसावः                            | २१०५-०६    |
|                                             |            | ७१ ,, प्रदेहयोगाः                            | २१०६       |
|                                             |            | ७२ ,, उदुम्बरादिप्रदेहः                      | २१०६       |
|                                             |            | ७३ ,, न्यग्रोधपादपादिलेपः                    | २१०७       |
|                                             |            | ७४ ,, काळीयादिप्रलेपः                        | २१०७       |
|                                             |            | ७५ ,, शाद्वलादिप्रदेहः                       | २१०७       |
|                                             |            | ७६ ,, सारिव दिप्रलेपः                        | २१०७       |
|                                             |            | ७७ ,, नलदादिप्रलेपः                          | २१०७-०८    |
|                                             |            | ७८-९७ ,, प्रदेहयोगाः                         | २१०८-१२    |
|                                             |            | ९८-१०७ प्रलेपविषये कर्तव्याकर्तव्योपदेशः     | २११२-१४    |
| <hr/>                                       |            |                                              |            |
| २० छर्दिचिकित्सितम्                         |            |                                              |            |
| १-२ छर्दिचिकित्सितोपक्रमः                   | २०६८       |                                              |            |
| ३-४ छर्दिविषयेऽग्निवेशस्य प्रश्नः           | २०६८       |                                              |            |
| ५ छर्देः भेदाः                              | २०६८       |                                              |            |
| ६ छर्देः पूर्वरूपम्                         | २०६९       |                                              |            |
| ७-९ वातच्छर्देः निदानलक्षणे                 | २०६९-७०    |                                              |            |
| १०-११ पित्तच्छर्देः ,,                      | २०७०-७१    |                                              |            |
| १२-१३ कफच्छर्देः ,,                         | २०७१       |                                              |            |
| १४-१५ सन्निपातच्छर्देः ,,                   | २०७१-७२    |                                              |            |
| १६-१७ छर्देरुपद्रवाः                        | २०७२-७३    |                                              |            |
| १८ द्विष्टार्थजायाश्छर्देः निदान-<br>लक्षणे | २०७३       |                                              |            |
| १९ छर्देरसाध्यलक्षणम्                       | २०७३       |                                              |            |
| २०-२५ वातच्छर्द्याश्चिकित्सा                | २०७३-७५    |                                              |            |
| २६-३३ पित्तच्छर्द्याश्चिकित्सा              | २०७५-७८    |                                              |            |
| ३४-३९ कफच्छर्द्याश्चिकित्सा                 | २०७८-७९    |                                              |            |
| ४० सन्निपातच्छर्द्याश्चिकित्सा              | २०८०       |                                              |            |
| ४१-४४ मर्माभिघातजच्छर्द्याश्चिकित्सा        | २०८०-८१    |                                              |            |
| ४५ छलुपद्रवचिकित्सा                         | २०८१       |                                              |            |
| ४६-४७ विरप्रवृत्तच्छर्दिचिकित्सा            | २०८१-८२    |                                              |            |
| ४८ अध्यायोक्तविषयाः                         | २०८२       |                                              |            |
| <hr/>                                       |            |                                              |            |
| २१ विसर्पे चिकित्सितम्                      |            |                                              |            |
| १-२ विसर्पचिकित्सितोपक्रमः                  | २०८३       |                                              |            |
| ३-१० विसर्पविषये अग्निवेशस्य प्रश्नाः       | २०८३-८४    |                                              |            |

| विषयः                                | पृष्ठाङ्कः |
|--------------------------------------|------------|
| १०८-११४ विसर्पे अक्षपानम्            | २११४-१६    |
| ११५ ,, वर्ज्यानि                     | २११६       |
| ११६-११७ ,, दोषभेः न चिकित्सा         | २११६-१७    |
| ११८-१३८ ग्रन्थिविसर्पस्य चिकित्सा    | २११७-२२    |
| १३९-१४० गलगण्डचिकित्सा               | २१२२       |
| १४१-१४३ विसर्पे रक्तमोक्षणप्रशस्त्रा | २१२२-२३    |
| १४४-१४६ अध्यायोक्तविषयाः             | २१२३-२३    |

## २२ तृष्णारोगचिकित्सितम्

|       |                                                 |         |
|-------|-------------------------------------------------|---------|
| १-३   | तृष्णाचिकित्सितोपक्रमः                          | २१२४    |
| ४-७   | तृष्णानां निदानं संप्राप्तिश्च                  | २१२४-२५ |
| ८     | ,, पूर्वरूपं सामान्य-<br>लक्षणं च               | २१२५    |
| ९-१०  | तृष्णानामुपद्रवाः                               | २१२५-२६ |
| ११-१२ | वाततृष्णायाः संप्राप्तिर्लक्षणम् च              | २१२६    |
| १३-१४ | पित्ततृष्णायाः ,,                               | २१२६-२७ |
| १५    | आमजतृष्णायाः ,,                                 | २१२७    |
| १६    | क्षयजतृष्णायाः ,,                               | २१२७    |
| १७    | उपसर्गजतृष्णायाः ,,                             | २१२७-२८ |
| १८    | अमाशयतृष्णायाः लक्षणम्                          | २१२८    |
| १९-२१ | तृष्णायां वातपित्तघर्हेतुत्वम्                  | २१२८-२९ |
| २२    | तृष्णायां शीतजलं देयम्                          | २१२९    |
| २३    | उष्णकान्तस्य साहसशीतजलदान-<br>विधेयः            | २१२९    |
| २४    | सर्वतृष्णानामन गित्तक्षयजत्वम्                  | २१२९    |
| २५-३९ | तृष्णायाः सामान्यचिकित्सा                       | २१३०-३३ |
| ४०    | तृष्णाया वैशेषिकी चिकित्सा                      | २१३३-३४ |
| ४१-४६ | पित्तजतृष्णायाः ,,                              | २१३४-३५ |
| ४७-४९ | कफजतृष्णायाः ,,                                 | २१३५-३६ |
| ५०    | क्षयजतृष्णायाः ,,                               | २१३६    |
| ५१-५६ | मध्यजतृष्णायाः ,,                               | २१३६-३८ |
| ५७-६१ | शीतमुष्णं च जलं कुत्र देयं<br>कुत्र वा वर्ज्यम् | २१३८-३९ |
| ६२    | तृष्णायाः शीघ्रप्रतिकार्यत्वम्                  | २१३९    |

|                          |                                                            |            |
|--------------------------|------------------------------------------------------------|------------|
| विषयः                    |                                                            | पृष्ठाङ्कः |
| ६३                       | अध्यायोक्तार्थसंग्रहः                                      | २१४०       |
| <b>२३ विषचिकित्सितम्</b> |                                                            |            |
| १-३                      | विषचिकित्सितोपक्रमः                                        | २१४०       |
| ४-५                      | विषस्य प्रागुत्पत्तिः निरुक्तिश्च                          |            |
| ६-७                      | ,, योनिप्रभावादि                                           | २१४१       |
| ७-८                      | वर्षासु विषस्य तीक्ष्णत्वम्<br>शरदि मन्दवीर्यत्वम् च       | २१४१-४२    |
| ९-१०                     | जङ्गमविषस्य भेदाः                                          | २१४२       |
| ११-१३                    | स्थावरविषस्य                                               | २१४२-४३    |
| १४                       | गरविषलक्षणानि                                              | २१४३       |
| १५                       | जङ्गमविषलिङ्गानि                                           | २१४३       |
| १६                       | स्थावरविषलिङ्गानि                                          | २१४३       |
| १७                       | जङ्गमस्थावरोभयविषप्रभावः                                   | २१४३-४४    |
| १८-२१                    | मनुष्यशरीरे विषस्य सप्तवेगानां<br>पृथगलक्षणानि             | २१४४       |
| २२-२३                    | पशुपक्षिशरीरे विषवेगस्य लक्षणानि                           | २१४५       |
| २४-२७                    | विषस्य दशगुणाः                                             | २१४५-४६    |
| २८-३०                    | दोषस्थानप्रकृतीः प्राप्य विषं<br>यत्तरोति                  | २१४६-४७    |
| ३१                       | दूषीविषस्य लक्षणम्                                         | २१४७       |
| ३२                       | विषं यथा मारयति                                            | २१४७-४८    |
| ३३-३४                    | विषमृतस्य लिङ्गानि                                         | २१४८       |
| ३५-३७                    | विषस्य चतुर्विंशत्युपक्रमाः                                | २१४८-४९    |
| ३८                       | विषे वेणिकावन्ध- निष्पीडनो-<br>त्कर्त्तनानि                | २१४९       |
| ३९                       | ,, चूषणम्                                                  | २१४९       |
| ४०-४१                    | ,, रक्तस्त्रावणं प्रदेहसेकाः                               | २१४९-५०    |
| ४२-४५                    | ,, देशच्छेदश्चूषणारिष्टा<br>दाह विस्त्रावण-वसन-<br>विरैकाः | २१५०-५१    |
| ४६-५०                    | सप्तविषवेगानां चिकित्सा                                    | २१५०-५२    |
| ५१-५३                    | विषहरा अगदयोगाः                                            | २१५२-५३    |
| ५४-६०                    | मृतसंजीवनीउगदः                                             | २१५३-५५    |
| ६१                       | विषे मन्त्रयोगः                                            | २१५५       |

| विषयः   | पृष्ठाङ्कः                          | विषयः   | पृष्ठाङ्कः                        |         |
|---------|-------------------------------------|---------|-----------------------------------|---------|
| ६२-६४   | दोषस्थानभेदेन विषचिकित्सा           | १५२     | कणभट्टादौ लक्षणम्                 | २१७८    |
| ६५-६७   | विषसंकमण र्थमुपधानम्                | १५३     | संघट्टद्वन्द्वलक्षणम्             | २१७८-७९ |
| ६८      | विषे नस्यम्                         | १५४     | सविषमण्डूदद्वन्द्वलक्षणम्         | २१७९    |
| ६९      | अञ्जनम्                             | १५५     | सविषमत्स्य-त्रलौकोद्वन्द्वलक्षणम् | २१७९    |
| ७०-७६   | गन्धार्स्तनामागदः                   | १५६     | गृहगोषिणा-शतपदीद्वन्द्वलक्षणम्    | २१७९    |
| ७७-९४   | महागन्धहस्तिनामागदः                 | १५७     | मशकद्वन्द्वलक्षणम्                | २१७९    |
| ९५-९७   | अगदाः                               | १५८     | मक्षिकाद्वन्द्वलक्षणम्            | २१८०    |
| ९७-१००  | धूमागदाः                            | १५९-१६० | स्थान काल-स्वभाव-प्रदेशैः         |         |
| १०१-१०४ | क्षारागदः                           |         | सर्पद्वन्द्वानामसाध्यत्वम्        | २१८०    |
| १०५-१०७ | विषप्रदातुर्लक्षणानि                | १६१-१६४ | सर्पाणां कालादि भेदेन तीक्ष्ण-    |         |
| १०८-११५ | सविषाञ्जलक्षणम्                     |         | मन्दविषत्वम्                      | २१८१    |
| ११६-१२० | सविषदन्तपवन शिरोभ्यङ्गाञ्जन-        | १६५-१६६ | कीटानां वातोत्पन्नादित्वम्        | २१८१    |
|         | स्नानोदकोत्सादन-वस्त्रालंकार-       | १६७     | वातिकविषलक्षणम्                   | २१८२    |
|         | वर्णक-भू पादुकाश्चगजवमेकेतु-        | १६८     | पैत्तिकविषलक्षणम्                 | २१८२    |
|         | शयनासनमाल्यलक्षणम्                  | १६९     | श्लेष्मिकविषलक्षणम्               | २१८२    |
| १२०     | सविषधूमलक्षणम्                      | १७०-१७४ | कीटविषधिकित्सा                    | २१८३-८४ |
| १२१     | सविषजलक्षणम्                        | १७५-१७६ | सविषकुङ्कुमादिद्वन्द्वलक्षणम्     | २१८४    |
| १२२-१२३ | स्थानविशेषे विषे चिकित्सा           | १७७-१७८ | सविषदंशस्य निर्विषदंशस्य च        |         |
| १२४-१२६ | सर्पभेदाः तेषां लक्षणानि च          |         | लक्षणम्                           | २१८४-८५ |
| १२७     | दर्वाकरकृतदंशलक्षणम्                | १७९-१८० | विषे हृदिदाह प्रसेकयोः चिकित्सा   | २१८५    |
| १२८     | मण्डलकृतदंशलक्षणम्                  | १८१-१८२ | शिरोनते                           | ११८५    |
| १२९     | राजिलकृतदंशलक्षणम्                  | १८३     | अक्षिगतं                          | ११८६    |
| १३०-१३३ | सर्पाणां पुंस्त्रीनपुंसकभेदेन       | १८४     | कण्ठगते                           | ११८६    |
|         | लक्षणानि                            | १८५     | आमाशयगतं                          | ११८६    |
| १३३     | गर्भिण्या सूतया च दृश्य लक्षणम्     | १८६     | रसगतं                             | ११८६    |
| १३४     | गौधेयलक्षणम्                        | १८७     | रक्तगतं                           | ११८७    |
| १३५     | सर्पदंशानामाकृतिभेदेन मृदु          | १८८     | मांसगतं                           | २१८७    |
|         | दारुणत्वम्                          | १८९     | विषे कतिपयसिद्धयोगाः              | २१८७    |
| १३६     | सर्पानामवस्थाभेदेन तीक्ष्णविषत्वम्  | १९०-१९१ | मांसादियोगः                       | २१८७-८८ |
| १३७-१३९ | सर्पविषं कस्यां दंष्ट्रायां तिष्ठति | १९१-१९२ | चन्दनादियोगः                      | २१८८    |
| १४०     | सर्पविषमूत्राः कीटाः                | १९३-१९५ | सिन्धुवारादियोगः                  | २१८८    |
| १४१-१४३ | सविषकीटद्वन्द्वलक्षणम्              | १९६     | मज्जिष्ठादियोगः                   | २१८९    |
| १४४-१४६ | लूताद्वन्द्वलक्षणम्                 | १९७     | व्योषादियोगः                      | २१८९    |
| १४७-१४८ | मूषिकविषलक्षणम्                     | १९८     | गृहधूमादियोगः                     | २१८९    |
| १४९     | कृकलासकद्वन्द्वलक्षणम्              | १९९     | कीटविषे लेपौ                      | २१८९    |
| १५०-१५१ | वृश्चिकद्वन्द्वलक्षणम्              | २००-२०४ | लूताविषे सिद्धयोगाः               | २१९०-९१ |



| विषयः                                  | पृष्ठाङ्कः | विषयः                             | पृष्ठाङ्कः |
|----------------------------------------|------------|-----------------------------------|------------|
| २०५ मूषकविषे अगदः                      | २१९१       | ७९-८४ मद्यपाने सुखाः सहायाः       | २२२०-२१    |
| २०६-२०७ वृश्चिकादिविषे अगदः            | २१९१       | ८५-८७ के चरेण के च शीघ्रं मायन्ति | २२२१-२२    |
| २०८ ११ ददुर-मत्स्य-जलौक-उच्चिटिङ्ग-    |            | ८८-९१ वातिकमदात्ययस्य निदान-      |            |
| कणभविषे चिकित्सा                       | २१९१-९२    | लक्षणे                            | २२२२-२३    |
| २१२-२१४ विष्णुभरादिष्वगदः              | २१९२-९३    | ९२-९४ पैतिकमदात्ययस्य             | २२२३       |
| २१५ शतशदीविषे चिकित्सा                 | २१९३       | ९५ ९७ श्लेष्मिकमदात्ययस्य         | २२२३-२४    |
| २१६ गृहगोधाविषे                        | २१९३       | ९८-१०० सर्वस्यापिमदात्ययस्य       |            |
| २१७-२१८ विषे पञ्चशिरीषोऽगदः            | २१९४       | त्रिदोषजत्वम्                     | २२२४       |
| २१९-२२० नखदन्तविषलक्षणं तच्चिकित्सा च  | २१९४       | १०१-१०६ मदात्ययस्य सामान्यलक्षणम् | २२२५-२६    |
| २२१-२२३ शङ्खाविषलक्षणम्                | २१९४-९५    | १०७-१०८ मदात्ययचिकित्सासूत्रम्    | २२२६       |
| २२४-२२७ विपातानां हितान्यन्नपानानि     | २१९५-९६    | १०९ समपीतमद्यस्य मदात्यय-         |            |
| २२८ ,, अहितानि ,,                      | २१९६       | प्रशमकत्वम्                       | २२२६       |
| २२९ २३२ दष्टानां चतुष्पदानां विषलक्ष-  |            | ११० १२० मदात्यये मद्यप्रयोगः      | २२२६-२७    |
| णानि चिकित्सा च                        | २१९६-९७    | १२१-१३५ वातिकमदात्ययस्य चिकित्सा  | २२२९-३२    |
| २३३-२४१ गरलक्षणं तच्चिकित्सा           | २१९७ ९९    | १३६-१५० पित्तमदात्ययस्य           | २२३२-३५    |
| २४२-२४९ सर्वविषेष्वमृतं घृतम्          | २१९९-०१    | १५१ पित्तमदात्यये पञ्चभलकयोः      | २०३५       |
| २५०-२५३ सर्पविषे सान्यचिकित्सा         | २२०१-०२    | १५२-१६३ ,, शीतलाः                 |            |
| २५४ अध्यायोक्तार्थसंग्रहः              | २२०२       | बाह्योपचाराः                      | २२३५-३८    |
| <b>२४ मदात्ययचिकित्सितम्</b>           |            | १६४-१८८ कफमदात्ययस्य चिकित्सा     | २२३८-४३    |
| १ २ मदात्ययचिकित्सितोपक्रमः            | २२०३       | १८९-१९० सन्निपातमदात्ययस्य        | २२४३       |
| ३-१० मद्यप्रशंसा                       | २२०३-०५    | १९१-१९४ मदात्यये हितो विहारः      | २२४३-४४    |
| ११-२० सुरापानविधिः                     | २२०५-०६    | १९५-१९८ ,, क्षीरप्रयोगः           | २२४४-४५    |
| २१-२५ वातिकरुदीनां पानविधिः            | २२०७-०८    | १९९-२०३ मद्योत्थयोर्धंसकविक्षयक-  |            |
| २६-२७ विविधसंवितमद्यगुणाः              | २२०८       | रागबोर्लक्षणम्                    | २२४५-४६    |
| २८ अविविधीतमद्यदोषाः                   | २२०८       | २०४-२०५ तयोश्चिकित्सा             | २२४६       |
| २९-३८ मद्यस्य दशगुणास्तेषां कर्माणि च  | २२०९-११    | २०६ मद्यनिवृत्तेर्गुणाः           | २२४६       |
| ३९-४० मदलक्षणम्                        | २२११       | २०७-२११ अष्टयोर्योक्तविषयसंग्रहः  | २२४७-४८    |
| ४१-५१ मदस्य त्रयोभेदः तेषां लक्षणानि च | २२११-१४    | <b>२५ द्विजणीयचिकित्सितम्</b>     |            |
| ५२-५८ मद्यदोषाः                        | २२१४-१५    | १-२ द्विजणीयचिकित्सितोपक्रम       | २२४८       |
| ५९ ६० मद्यस्य स्वभावानुत्पत्त्यस्त्वम् | २२१५       | ३-४ त्रणवि येऽन्विशस्य प्रश्नाः   | २२४८-४९    |
| ६१-७१ युक्तिपीतमद्यगुणाः               | २२१६-१८    | ५ आत्रेयस्य चाम्                  | २२४९       |
| ७२-७३ मद्यस्य प्रकृतिदर्शकत्वम्        | २२१८       | ६ त्रणभेद                         | २२५०       |
| ७४-७८ सांख्यिक राजस तामसानामापानानां   |            | ७-९ आग-तुमणानां हेतुः             |            |
| लक्षणानि                               | २२१९-२०    | चिकित्सा च                        | २२४९-५०    |

[illegible]

| विषयः | पृष्ठाङ्कः                                                 | विषयः   | पृष्ठाङ्कः                                        |
|-------|------------------------------------------------------------|---------|---------------------------------------------------|
| ३२४४  | मूत्रकृच्छ्रस्य निदानसंप्राप्ति-<br>लक्षणानि २२८५-८९       | १००     | त्रिदोषजहृदोगस्य चिकित्सा २३०७                    |
| ४५    | वातजमूत्रकृच्छ्रस्य चिकित्सा २२८९                          | १०१-१०३ | शूलस्य ,, २३०७-०८                                 |
| ४६-४८ | मूत्रकृच्छ्रे पुनर्नवादिभिश्चक्रस्नेहः २२८९-९०             | १०४-१०६ | प्रतिशयायस्य निदानसंप्राप्ति-<br>लक्षणानि २३०८-०९ |
| ४९    | पित्तजमूत्रकृच्छ्रे निमित्ता २२९०                          | १०७-१०९ | दुष्टप्रतिशयायजा रोगाः २३०९-१०                    |
| ५०    | पित्तजमूत्रकृच्छ्रे कृतावस्थादि कायः २२९०                  | ११०     | दुष्टप्रतिशयायस्य लक्षणम् २३१०                    |
| ५१    | ,, कतिपययोगाः २२९०-९२                                      | १११     | क्षवयोः नासाशोषस्य च<br>लक्षणम् २३१०              |
| ५२-५३ | ,, एवास्वीनादियोगौ २२९२                                    | ११२     | प्रतिशयस्य ,, २३१०                                |
| ५४    | कफजमूत्रकृच्छ्रचिकित्सा २२९२-९२                            | ११२     | नासाशोषस्य २३११                                   |
| ५५    | कफजमूत्रकृच्छ्रे व्यापारचूर्णम् २२९२                       | ११३-११४ | पूतिनस्यस्य अपीतस्य च<br>लक्षणम् २३११             |
| ५७    | ,, सप्तचलदादियवागूः<br>कायः वा २२९२                        | ११५     | घ्राणपात्रस्य ,, २३११                             |
| ५८    | सार्वपातिकमूत्रकृच्छ्रचिकित्सा २२९३                        | ११५     | नासाश्वयोः ,, २३११                                |
| ५९    | अश्मरीजमूत्रकृच्छ्रचिकित्सा २२९३                           | ११६     | नासाश्वयोः ,, २३११                                |
| ६०-६१ | अश्मरीजमूत्रकृच्छ्रे पाषाणभेदादिवर्णं<br>चूर्तं वा २२९३-९४ | ११६     | पूयक्तस्य ,, २३१२                                 |
| ६२    | ,, श्वेच्छ्रादियोगः २२९४                                   | ११७     | अरुंधिकायाः ,, २३१२                               |
| ६३    | ,, पुनर्नवादियोगः २२९४                                     | ११८     | शिरोरोगस्य वातजदिभेदेन<br>लक्षणानि २३१२-१३        |
| ६४-६५ | ,, त्रुष्यादिवर्णम् २२९५                                   | ११९-१२३ | मुखरोगस्य ,, २३१३-१४                              |
| ६६-६८ | ,, अन्ये योगाः २२९५-९६                                     | १२४-१२६ | अरुंधिकास्य ,, २३१४-१५                            |
| ६९-७२ | रेनाभिवातमूत्रकृच्छ्राचिकित्सा २२९६-९६                     | १२७-१२८ | कर्णरोगस्य ,, २३१६                                |
| ७३-७४ | रक्तजमूत्रकृच्छ्रचिकित्सा २२९८                             | १२९-१३१ | नेत्ररोगस्य ,, २३१६-१७                            |
| ७४-७५ | रक्तजमूत्रकृच्छ्रे श्वेच्छ्रादियोगः २२९८                   | १३२     | खालितस्य लक्षणम् २३१७                             |
| ७६    | मूत्रकृच्छ्रेऽपथ्यानि २२९९                                 | १३२     | पलितस्य ,, २३१७                                   |
| ७७-८० | हृदोगस्य निदानसंप्राप्तिलक्षणानि                           | १३३     | ऊर्ध्वज्वररोगनिदानोपसंहारः २३१८                   |
| ८१    | वातजहृदोगेचिकित्सा २३००                                    | १३४-१३५ | वातजपीनसचिकित्सा २३१८-१९                          |
| ८२    | वातजहृदोगे पुनर्नवाद्यं तैलम् २३०१                         | १३६     | वातजपीनसे सक्तधूमः २३१९                           |
| ८३    | ,, हरीसकपादिघृतम् २३०१                                     | १३७-१४३ | ,, आवस्थिकीचिकित्सा २३१९-२०                       |
| ८४    | ,, पुष्करमूलदिकरुक् २३०१                                   | १४४     | पैतिकप्रतिशयायचिकित्सा २३२०-२१                    |
| ८५-८६ | ,, पुष्करमूलादिकायः २३०२                                   | १४५     | पैतिकप्रतिशयाये पाठाद्यम् तैलम् २३२१              |
| ८७-८९ | ,, त्र्यवृणायं तैलम् २३०२-०३                               | १४४-१४९ | ,, आवस्थिकीचिकित्सा २३२१-२२                       |
| ९०-९२ | पित्तजहृदोगस्य चिकित्सा २३०३-०४                            | १५०-१५७ | कफजप्रतिशयायचिकित्सा २३२२-२४                      |
| ९३    | पित्तजहृदोगे द्राक्षाद्यम् घृतम् २३०४                      | १५८-१५९ | वातिकशिरोरोगे ,, २३२४                             |
| ९४-९५ | ,, कशेरुकाद्यं ,, २३०४-०५                                  | १६०-१६२ | वातिकशिरोरोगे राक्षादि तैलम् २३२४-२५              |
| ९६-९७ | कफजहृदोगस्य चिकित्सा २३०५-०६                               | १६३-१६५ | शिरोरोगे मायूरघृतम् २३२५                          |
| ९८-९९ | कफजहृदोगे लडुम्बरादिलेहः २३०६                              |         |                                                   |

| विषयः                                 | पृष्ठाङ्कः |
|---------------------------------------|------------|
| १६६-१७५ शिरोरोगे महामायाघृतम्         | २२२६-२७    |
| १७५-१७९ पैच्छिकशिरोरोगस्य चिकित्सा    | २२२८-२९    |
| १८०-१८२ कफजशिरोरोगस्य                 | २३२९       |
| १८३ सखिपातजशिरोरोगस्य                 | २३२९-३०    |
| १८३-१८६ कृमिजशिरोरोगस्य               | २३३०       |
| १८७-१९३ मुखरोगस्य                     | २३३०-३२    |
| १९४-१९५ मुखरोगे कालकचूर्णम्           | २३३२       |
| १९६-१९७ ,, पीतकचूर्णम्                | २३३२       |
| १९८-२०० ,, मृद्वीकादिचूर्णम्          | २३३३       |
| २०१-२०२ ,, कटुकादिकाथः                | २३३३-३४    |
| २०३ तालुशोषचिकित्सा                   | २३३४       |
| २०४-२०५ मुखपाक                        | २३३४       |
| २०६-२१४ मुखरोगे खदिरादिगुटिका         |            |
| तैलम् च                               | २३३४-३६    |
| २१५-२२० अरोचकानां चिकित्सा            | २३३६-३७    |
| २२१ कर्णरोगचिकित्सा                   | २३३८       |
| २२२ कर्णरोगे शिवादि तैलम्             | २३३८       |
| २२३-२२५ ,, देवदारुदि                  | २३३८       |
| २२६-२३० ,, क्षारतैलम्                 | २३३९       |
| २३१-२३६ नेत्ररोगे विडालकाः            | २३४०-४१    |
| २३७-२३९ ,, आभ्योतनानि                 | २३४१-४२    |
| २४०-२४२ ,, भजनानि                     | २३४२-४३    |
| २४३-२४५ ,, अमृताह्लादिवर्तिः          | २३४३       |
| २४६ ,, शङ्खावर्तिः                    | २३४३-४४    |
| २४७-२५० ,, चूर्णाञ्जनम्               | २३४४       |
| २५१-२५२ ,, सौवीराञ्जनादिवर्तिः        | २३४४-४५    |
| २५३-२५३ ,, सुखावती वर्तिः             | २३४५       |
| २५४-२५५ ,, हृष्टिप्रदा वर्तिः         | २३४५-४६    |
| २५६-२६२ नेत्ररोगे अन्यान्यजनानि       | २३४६-४७    |
| २६३-२६७ खालित्यादि चिकित्सा           | २३४७-४९    |
| २६८-२७५ खालित्यपलितयो                 |            |
| महानीलतैलम्                           | २३४९-२३५०  |
| २७६-२८३ ,, अन्ये कतिपययोगाः           | २३५०-५२    |
| २८३-२९० स्वरभेद चिकित्सा              | २३५२-५४    |
| २९१ दोषाणां स्थानसामीप्याद्वरणमुचितम् | २३५४       |
| २९२-२९३ विरुद्धगुणा अपिदोषाः परस्परं  |            |

| विषयः                                 | पृष्ठाङ्कः |
|---------------------------------------|------------|
| नोपपन्नित                             | २३५४       |
| अध्यायोकार्यसंग्रहः                   | २३५५       |
| २७ ऊरुस्तम्भचिकित्सितम्               |            |
| १२ ऊरुस्तम्भ चिकित्सितोपक्रमः         | २३५५       |
| ३-१४ ऊरुस्तम्भस्य निदानं सप्तप्रश्नैः | २३५५-५८    |
| १५ ,, पूर्वरूपाणि                     | २३५८       |
| १६ ऊरुस्तम्भे ब्रह्मप्रयोगजा दोषाः    | २३५९       |
| १७-१८ ऊरुस्तम्भस्य लक्षणानि           | २३५९       |
| १९ ,, साध्यासाध्यलक्षणानि             | २३५९       |
| २०-२७ ,, चिकित्सासूत्रम्              | २३६०-६१    |
| २८-३२ ऊरुस्तम्भहराः कतिपययोगाः        | २३६२       |
| ३३-३४ ऊरुस्तम्भे शार्ङ्गेष्टादियोगः   | २३६३       |
| ३५ ,, मूर्धादियोगः                    | २३६३       |
| ३६-३७ ,, स्वर्णक्षीर्यादियोगः         | २३६३       |
| ३८ ,, अन्योयोगी                       | २३६४       |
| ३९-४१ ,, आदस्थिका चिकित्सा            | २३६४       |
| ४१-४२ ,, तैलयोगः                      | २३६४       |
| ४३-४४ ,, कुष्ठाय तैलम्                | २३६५       |
| ४५-४६ ,, सैन्धवाद्य                   | २३६५       |
| ४७ ,, अष्टकृद्भेद तैलम्               | २३६६       |
| ४८ ,, बाह्यचिकित्सा                   | २३६६       |
| ४९ ,, बल्मीक मूर्तकायुत्सादनम्        | २३६६       |
| ५०-५३ ,, अन्धयोगाः                    | २३६६-६७    |
| ५४-५५ ,, वत्सकादिप्रलेपः              | २३६७       |
| ५६-६० ,, श्वेदनाकादिपरिषेकः           |            |
| प्रलेपः वा                            | २३६८-६९    |
| ६०-६१ ऊरुस्तम्भचिकित्सासूत्रम्        | २३६९       |
| ६२ अध्यायोकार्यसंग्रहः                | २३६९       |

## २८ वातव्याधिचिकित्सितम्

|                               |      |
|-------------------------------|------|
| १-२ वातव्याधिचिकित्सितोपक्रमः | २३७० |
| ३-४ वायोः स्वभावः             | २३७० |

| विषयः | पृष्ठाङ्कः                                  | विषयः   | पृष्ठाङ्कः                          |
|-------|---------------------------------------------|---------|-------------------------------------|
| ५-११  | पञ्चभेदाः तेषां स्थानानि<br>कर्मे च         | ७५-७७   | वातरोगेषु स्नेहविधिः                |
| १२-१४ | विधुणवातानां कार्यम्                        | ७८-८२   | स्वेदविधिः                          |
| १५-१८ | वातरोगाणां सामान्यानिदानं<br>संप्राप्तिश्च  | ८३-८५   | संशोधनम्                            |
| १९    | पूर्वरूपम्                                  | ८६-८८   | सामान्यचिकित्सा                     |
| २०-२३ | कुपितस्य वायोः रूपाणि                       | ८९      | कोष्ठस्थे वाते चिकित्सा             |
| २४    | कोष्ठे प्रकुपितस्य वातस्य<br>लक्षणम्        | ९०      | गुदपक्षाशयस्थे                      |
| २५    | सर्वाङ्गि                                   | ९१      | आमाशयस्थे                           |
| २६    | गुदे                                        | ९२      | सर्वाङ्गकुपिते                      |
| २७    | आमाशये                                      | ९२      | त्वगाश्रिते                         |
| २८-२९ | पक्षाशये                                    | ९२      | रक्तस्थे                            |
| ३०    | त्वचि                                       | ९३      | मांसभेदस्थे                         |
| ३१    | असृजि                                       | ९३      | अस्थिमज्जगते                        |
| ३२    | मांसभेदसोः                                  | ९४-९५   | शुक्रस्थे                           |
| ३३    | मज्जास्थसोः                                 | ९६      | हृदि प्रकुपिते                      |
| ३४    | शुक्रस्थस्य                                 | ९७      | वायुना गात्रे वेष्ट्यमाने चिकित्सा  |
| ३५    | स्नायुगतस्य                                 | ९८      | सङ्कुचिते                           |
| ३६    | सिरागतस्य                                   | ९८      | बाहुषीर्षगते वाते                   |
| ३७    | सन्निधगतस्य                                 | ९९      | नाभेऽधो वाते प्रकुपिते              |
| ३८-४२ | अर्दितस्य लक्षणम्                           | ९९-१००  | अर्दितस्य                           |
| ४३-४५ | अन्तरायानस्य                                | १००     | पक्ष वातस्य                         |
| ४६-४८ | बहिरायामस्य                                 | १०१     | गृध्रस्याः                          |
| ४९    | हनुमदस्य                                    | १०१-१०२ | खल्व्याः                            |
| ५०    | आक्षेपकस्य                                  | १०२-१०३ | हनुमदस्य                            |
| ५१    | दण्डकस्य                                    | १०४-१०६ | वातरोगिणां यत्प्रशस्तम्             |
| ५२    | अर्दितस्त्रीणां समानं लक्षणम्               | १०६-१०८ | वातरोगे मांसरसाः                    |
| ५३-५५ | एकाङ्गरोगस्य                                | १०९-११७ | स्वेदाः                             |
| ५६    | गृध्रस्याः                                  | ११८-१४१ | वातरोगहराः श्लेष्मयोगाः             |
| ५७    | खल्व्याः                                    | १४२-१५६ | वातरोगे बलातैलम्                    |
| ५८-६१ | पित्तदिशेऽर्गज्ञानम्                        | १५७-१६४ | अमृतायम् तैलम्                      |
| ६१-६२ | कफविशैराश्रितस्य वायोः लक्षणानि             | १६५-१६६ | राम्नातैलम्                         |
| ६३-६८ | रक्षादिश्लेष्मिराश्रितस्य वायोः<br>लक्षणानि | १६७-१६९ | मूलकाद्यम् तैलम्                    |
| ७२-७४ | वातरोगाणां साध्यसाध्य-<br>विचारः            | १७०-१७१ | वृषमूलादि                           |
|       |                                             | १७२-१७६ | मूलक तैलम्                          |
|       |                                             | १७७-१८१ | अन्ये तैलयोगाः                      |
|       |                                             | १८१-१८३ | तैलप्रशंसा                          |
|       |                                             | १८४-१९९ | दोषान्तरादिसंस्पृष्टे वाते चिकित्सा |

| विषयः                                  | पृष्ठाङ्कः |
|----------------------------------------|------------|
| ११९-१४७ पञ्चानां मारुतानामभ्योग्यावरणे |            |
| २४८-२५० अध्यायोक्तविषयाः               | २४१८-२९    |

## २९ वातशोणितचिकित्सितम्

|         |                                    |         |
|---------|------------------------------------|---------|
| १-२     | वातचिकित्सितोपक्रमः                | २४२९    |
| ३-११    | वातरक्तस्यनिदानम् संप्राप्तिश्च    | २४२९-३२ |
| १२-१५   | स्थानम्                            | २४३१-३२ |
| १६-१८   | पूर्वलक्षणम्                       | २४३२    |
| १९-२३   | भेदाः तेषां                        |         |
|         | लक्षणानि च                         | २४३३-३४ |
| २४-२६   | वातधिकस्य वातरक्तस्य लिङ्गानि      | २४३४    |
| २७-२८   | पित्ताधिकस्य                       | २४३४-३५ |
| २९      | कफाधिकस्य                          | २४३५    |
| ३०-३४   | वातरक्तस्य साध्यासाध्य-<br>लक्षणम् | २४३५-३६ |
| ३५-४०   | वातरक्ते रक्तमोक्षणविधिः           | २४३६-३८ |
| ४१-४२   | सामान्यचिकित्सा                    | २४३८    |
| ४२-४८   | विशेषचिकित्सा                      | २४३८-४० |
| ४९      | अद्वितानि                          | २४४०    |
| ५०-५४   | हितमन्नपानम्                       | २४४०-४२ |
| ५५-५७   | घृतय गाः                           | २४४२-४२ |
| ५८-६०   | पारुष्यघृतम्                       | २४४२    |
| ६१-७०   | जीवनीयघृतम्                        | २४४३-४४ |
| ७१      | घृतयोग क्षीयोगश्च                  | २४४४    |
| ७२-७५   | चतुःस्नेहः                         | २४४५    |
| ७६-७८   | स्थिराद्यं घृतं तैलं वा            | २४४५-४६ |
| ७९-८१   | कतिपययोगाः                         | २४४६-४७ |
| ८२-८७   | संशोधनम्                           | २४४७-४८ |
| ८८-८९   | वस्तः                              | २४४८    |
| ९०-९५   | मधुयष्ट्यादि तैलम्                 | २४४९-५० |
| ९६-१०२  | सुकुमारकं तैलम्                    | २४५०-५२ |
| १०३-१०९ | अमृतं च तैलम्                      | २४५२-५३ |
| ११०-११३ | महापद्मक                           | २४५३    |
| ११४-११५ | खड्गापद्मक                         | २४५३-५४ |
| ११५-११८ | मधुतैलम्                           | २४५४    |

| विषयः   |                               | पृष्ठांकः |
|---------|-------------------------------|-----------|
| ११९-१२० | ॥ वलतैलम्                     | २४५५      |
| १२१-१२३ | ॥ पिण्डतैलम्                  | २४५५-५६   |
| १२४-१२७ | ॥ शूलदिविकित्सा               | २४५६-५७   |
| १२८-१३४ | ॥ दाहचिकित्सा                 | २४५७-५९   |
| १३५-१४४ | वाताधिकवातरक्तचिकित्सा        | २४५९-६२   |
| १४५-१४८ | कफाधिकवातरक्तचिकित्सा         | २४६२-६३   |
| १४९-१५६ | वातकफाधिकवातरक्त-<br>चिकित्सा | २४६३-६६   |
| १५६-१६२ | वातरक्ते आवस्थिकी चिकित्सा    | २४६६-६७   |
| १६३-१६५ | अध्यायोक्तार्थसंप्रदः         | २४६७-६८   |

## ३० योनिव्यापच्चिकित्सितम्

|       |                                       |         |
|-------|---------------------------------------|---------|
| १-२   | योनिव्यापच्चिकित्सितोपक्रमः           | २४६८    |
| ३-६   | योनिव्यापद्विषयेऽभिधेयस्य<br>प्रश्नाः | २४६८-६९ |
| ७     | योनिव्यापद्वेदाः                      | २४६९    |
| ८     | योनिव्यापदां नामान्यहेतुः             | २४६९-७० |
| ९-११  | वातयोनिव्यापत्तेः निदानं<br>लक्षणम् च | २४७०    |
| ११-१२ | पित्तयोनिव्यापत्तेः                   | २४७०    |
| १३-१४ | कफयोनिव्यापत्तेः                      | २४७१    |
| १४-१५ | त्रिदोषज्योनिव्यापत्तेः लक्षणम् च     | २४७१    |
| १६    | रक्तयोनिव्यापत्तेर्लक्षणम्            | २४७१    |
| १७    | अरजस्वाया योनिव्यापत्तेर्लक्षणम्      | २४७१    |
| १८    | अचरणाया                               | २४७१    |
| १९    | अतिचरणाया                             | २४७१    |
| २०    | प्राक्चरणाया                          | २४७१    |
| २१-२२ | उपल्लवाया                             | २४७१    |
| २३-२४ | परिप्लुताया                           | २४७१    |
| २५-२६ | उदावर्तिन्या                          | २४७२    |
| २७-२८ | कणिन्या                               | २४७२    |
| २८    | पुत्रघ्न्या                           | २४७२-७३ |
| २९-३० | अतन्मुख्या                            | २४७३    |
| ३१    | सूचीमुख्या                            | २४७३    |
| ३२    | शुभाया                                | २४७३-७४ |

| विषयः   | पृष्ठाङ्कः                       | विषयः   | पृष्ठाङ्कः                                |
|---------|----------------------------------|---------|-------------------------------------------|
| ३३      | बामिन्या                         | १२८-१३२ | शुकदोषादिविषये आत्रेयं प्रत्यभि-          |
| ३४      | षण्ड्या                          |         | वेशस्य प्रश्नाः २४९५-९६                   |
| ३५-३६   | महायोन्या                        | १३३-१३४ | दुष्टस्य शुकस्याधी जत्वम् २४९६            |
| ३७-३८   | व्यापक्षयोनेरुपद्रवाः            | २३५-१३८ | शुकदुष्टेनिदानं संप्राप्तिश्च २४९६-९७     |
| ३९-४०   | योनिव्यापत्सुदोषा ध्वन्यनिरूपणम् | १३९-१४० | शुकदोषभेदाः २४९७                          |
| ४१-४६   | योनिरोगाणाम् चिकित्सासूत्रम्     | १४०     | वातदूषितशुकस्य लक्षणम् २४९७-९८            |
| ४७-४८   | वातिकयोनिरोगाणाम् चिकित्सा       | १४१     | पित्तदूषितशुकस्य ,, २४९८                  |
| ४९-५२   | वातिके योनिरोगे बलाघृतम्         | १४२     | श्लेष्मदूषितशुकस्य ,, २४९८                |
| ५२-५३   | ,, ,, क्वाश्मर्यादि-             | १४३     | रुधिरान्वितशुकस्य ,, २४९८                 |
|         | घृतम्                            | १४४-१४५ | अवसादिनः शुकस्य ,, २४९८                   |
| ५४-५६   | ,, ,, पिप्पल्यादि-               | १४५-१४६ | शुकस्य शुकस्य ,, २४९९                     |
|         | प्रयोगः २४७८-७९                  | १४६-१५३ | शुकदोषाणां चिकित्सा २४९९-२५००             |
| ५६-६०   | ,, ,, प्रयोगाः २४७९-८०           | १५३-१५७ | क्लैव्यस्य निदानम् सामान्य                |
| ६१-६२   | ,, ,, कतिपययोगः २४८०             |         | लक्षणम् च                                 |
| ६३      | पैतिकयोनिरोगाणां चिकित्सा        | १५८-१६२ | बीजोपघातक्लैव्यलक्षणम् २५०१-०२            |
| ६४-६८   | पैतिके योनिरोगे शतावरीघृतम्      | १६३-१७६ | ध्वजभङ्गकृतक्लैव्यलक्षणम् २५०२-०५         |
| ६९      | ,, ,, जीवनीमघृतम्                | १७६-१८० | जरासंभवक्लैव्यलक्षणम् २५०५-०६             |
| ७०-७२   | श्लेष्मिकयोनिरोगाणाम् चिकित्सा   | १८१-१८७ | धातुक्षयक्लैव्यलक्षणम् २५०६-०७            |
| ७२      | योनिरोगे पिप्पल्यादिवर्तिः       | १८८-१९१ | पृकीयमतेन क्लैव्य निदानम् २५०७-०८         |
| ७३-७७   | ,, उदुम्बरादितैलम्               | १९१-२०३ | क्लैव्यचिकित्सा २५०८-११                   |
| ७७-७८   | ,, उदुम्बरादुग्धप्रयोगः          | २०४-२१० | प्रदरस्य निदानं मंगसि च २५११-१२           |
| ७९-८२   | योनिरोगे घातक्यादि तैलम्         | २१०-२१३ | वातप्रदरस्य निदानलक्षणे २५१२              |
| ८२-८४   | ,, करीरादिप्रयोगाः               | २१४-२१६ | पित्तप्रदरस्य निदानलक्षणे २५१२-१३         |
| ८४-८५   | ,, लोहभस्मप्रयोगः                | २१६-२१९ | कफप्रदरस्य ,, २५१३-१४                     |
| ८६-९०   | असृग्दरचिकित्सा                  | २१९-२२४ | सान्निपातिक प्रदरस्य ,, २५१४-१५           |
| ९०-९६   | असृग्दरे पुष्पाणाम् चूर्णम्      | २२५-२२६ | शुद्धार्तवलक्षणम् २५१५                    |
| ९६-१००  | असृग्दरे कतिपययोगाः              | २२७-२२८ | प्रदरचिकित्सा २५१५                        |
| १००-११४ | विविधयोनिरोगाणां चिकित्सा        | २२९-२३६ | क्षीरदोषाणां निदानं संप्राप्तिश्च २५१६-१७ |
| ११४-११६ | योनिरोगेषु आहारौ वातशमनं         | २३७-२३८ | वातजादिभेदेन क्षीरदोषस्य                  |
|         | कार्यम्                          |         | लिङ्गानि २५२७                             |
| ११६-१२० | पाण्डुरप्रदचिकित्सा              | २३९-२५१ | वातादिदुष्टं क्षीरं पिबतो                 |
| १२०-१२२ | योनिरोगेष्ववस्थिकी चिकित्सा      |         | बालस्य यानि लिङ्गानि भवन्ति २५१८-२०       |
| १२२     | योनिरोगेषु पलाशादिफलकः           | २५१-२५२ | क्षीरदोषे घ्रात्र्याः संशोधनम् २५२०       |
| १२३     | स्तब्धयोन्याश्चिकित्सा           | २५२-२५३ | वमनार्थं वचादियोगाः २५२१                  |
| १२४-१२८ | योनिदौर्गन्ध्यचिकित्सा           | २५४-२५६ | विरचनार्थयोगाः २५२१                       |
|         |                                  | २५७-२६० | क्षीरदोषे हितमजपानम् २५२२                 |





| विषयः                                            | पृष्ठाङ्कः |
|--------------------------------------------------|------------|
| १५ सर्वेषु दसनयोगेष्वनुक्तमपि<br>मधुपैधवम् देयम् | २५५६       |
| १५ छर्दनयोगयुक्तस्य मधुनः<br>उष्णाविरोधित्वम्    | २५५६       |
| १६ मदनफलानामष्टौ मात्रायोगाः                     | २५५६-५७    |
| १७-१८ मदनफलानां पञ्च पयोमुखा-<br>योगाः           | २५५७-५८    |
| १९ मदनफलानामेको प्रेययोगः                        | २५५८       |
| २० मदनफलानामेकः फणितयोगः                         | २५५९       |
| २१ मदनफलानां षट् वर्तियोगाः                      | २५५९       |
| २२ ,, विंशतिर्लहयोगाः                            | २५५९-६०    |
| २३ ,, विंशतिरुत्कारिका-<br>योगाः मोदकयोगाश्च     | २५६०       |
| २४-२५ ,, षोडश शङ्कुलो-<br>अपूपयोगाः              | २५६१       |
| २६ ,, दश षाडवादियोगाः                            | २५६२       |
| २७ मदनफलपर्यायाः                                 | २५६२       |
| २८-३० अध्यायोक्तार्थसंग्रहः                      | २५६२-६३    |

### २ जीमूतक कल्पः

|                                  |         |
|----------------------------------|---------|
| १-२ जीमूतककल्पोपक्रमः            | २५६३    |
| ३ जीमूतकपर्यायाः                 | २५६३    |
| ४ जीमूतकगुणाः                    | २५६४    |
| ५-७ जीमूतकानां षट् क्षीरयोगाः    | २५६४    |
| ८ ,, एकाः सुरामण्डयोगाः          | २५६५    |
| ९-१० ,, एकोनविंशतिः<br>कषाययोगाः | २५६५    |
| ११ जीमूतकानां अष्टौ मात्रायोगाः  | २५६६    |
| १२ ,, चत्वारः स्वरसयोगाः         | २५६६    |
| १३ ,, एको घृतयोगः                | २५६६    |
| १४-१५ अध्यायोक्तार्थसंग्रहः      | २५६६-६७ |

### ३. इक्षु कुकल्पः

|                         |         |
|-------------------------|---------|
| १-२ इक्षु कुकल्पोपक्रमः | २५६७    |
| ३ इक्षुकोः पर्यायाः     | २५६७-६८ |

| विषयः                                       | पृष्ठाङ्कः |
|---------------------------------------------|------------|
| ४ ,, गुणाः                                  | २५६८       |
| ५-९ ,, पयोमुखाः अष्टौ<br>एकश्च सुरामण्डयोगः | २५६८-६९    |
| १० ,, सत्तो एको योगः                        | २५६९       |
| ११ ,, तके ,, ,,                             | २५६९       |
| ११-१२ ,, एको प्रेययोगः                      | २५६९       |
| १२-१३ ,, एकः एकलयोगः                        | २५७०       |
| १३ ,, एकस्तैलयोगः                           | २५७०       |
| १३ ,, एको घृतयोगः                           | २५७०       |
| १३ ,, बीजानां षड्<br>वर्धमानयोगाः           | २५७०       |
| १४ इक्षुकोः कषायेषु नवयोगाः                 | २५७०       |
| १५ ,, अष्टौवर्तियोगाः                       | २५७०       |
| १५-१८ ,, पञ्चलहयोगाः                        | २५७१       |
| १९ ,, एको मन्थयोगः                          | २५७१-७२    |
| २० ,, ,, मांसरसयोगः                         | २५७२       |
| २१-२३ अध्यायोक्तार्थसंग्रहः                 | २५७२-७३    |

### ४. धामार्गवकल्पः

|                                   |         |
|-----------------------------------|---------|
| १-३ धामार्गवकलोपक्रमः             | २५७३    |
| ३ धामार्गवपर्यायाः                | २५७३    |
| ४-५ धामार्गवगुणाः                 | २५७३-७४ |
| ६ धामार्गवस्य पल्लवानां नवयोगाः   | २५७४    |
| ७ ,, चत्वारः क्षीरयोगाः           | २५७४    |
| ७ ,, एकः सुरायोगः                 | २५७४    |
| ७-९ ,, नव कषाययोगाः               | २५७४-७५ |
| ९ ,, एकोनयोगाः                    | २५७५    |
| १० ,, एको प्रेययोगः               | २५७५    |
| ११-१२ ,, द्वादश शङ्कुदसयोगाः      | २५७५-७६ |
| १३-१५ ,, दश लेहयोगाः              | २५७६    |
| १५ ,, एकः कल्कयोगः                | २५७६    |
| १६-१७ ,, अन्ये एकादश<br>कषाययोगाः | २५७६-७७ |
| १८ ,, एको घृतयोगः                 | २५७७    |
| १९-२० अध्यायोक्तार्थसंग्रहः       | २५७७-७८ |

| विषयः                  | पृष्ठाङ्कः                         | विषयः   | पृष्ठाङ्कः              |                                 |         |
|------------------------|------------------------------------|---------|-------------------------|---------------------------------|---------|
| <b>५. वत्सककल्पः</b>   |                                    |         |                         |                                 |         |
| १-२                    | वत्सककल्पोपक्रमः                   | २५७८    | १२-१३                   | अम्लदिभिर्नवकल्कयोगाः           | २५८७    |
| ३-४                    | वत्सकस्य पर्यायाः                  | २५७८    | १४                      | सैन्धवादिभिर्द्वादश             |         |
| ५                      | ” भेदौ                             | २५७९    |                         | चूर्णयोगाः                      | २५८८    |
| ६                      | ” गुणाः                            | २५७९    | १५-१७                   | गोमूत्रेणसहाष्टादश              |         |
| ७-९                    | ” नव कषाययोगाः                     | २५७९    |                         | योगाः                           | २५८८    |
| ९-१०                   | ” पञ्च चूर्णयोगाः                  | २५८०    | १७                      | मधुकैनेको योगः                  | २५८८    |
| ११                     | ” त्रयः सलिलयोगाः                  | २५८०    | १८-१९                   | जीवकादिभिश्चतुर्दश              |         |
| ११                     | ” एकः कृशारायोगः                   | २५८०    |                         | योगाः                           | २५८८-८९ |
| १२                     | अध्यायोक्तार्थसंग्रहः              | २५८०-८१ | २०                      | क्षीरदिभिः सप्तयोगाः            | २५८९    |
|                        |                                    |         | २१-२२                   | अष्टौ देहयोगाः                  | २५८९-९२ |
|                        |                                    |         | २३                      | पानकादिषु पञ्चयोगाः             | २५९२    |
|                        |                                    |         | २४-२५                   | प्रथमस्तर्पणयोगः                | २५९२    |
| <b>६. कृतवेधनकल्पः</b> |                                    |         | २६-५५                   | श्यामात्रिवृतयोः पञ्च मोदकयोगाः | २५९२-९६ |
| १-२                    | कृतवेधनकल्पोपक्रमः                 | २५८१    | ५६-६०                   | ” पटुक्रुतुषु पटुयोगाः          | २५९७-९८ |
| ३-४                    | कृतवेधनस्य पर्यायाः गुणाश्च        | २५८१    | ६१-६४                   | ” द्वौ चूर्णयोगौ                | २५९८    |
| ५                      | ” चत्वारः क्षीरयोगाः               | २५८१    | ६५-६६                   | ” द्वितीस्तर्पणयोगः             | २५९९    |
| ५                      | ” एकः सुगयोगः                      | २५८१    | ६६-६७                   | ” घृतयोगी                       | २५९९    |
| ५-७                    | ” द्वाविंशतिः कषाययोगाः            | २५८२    | ६८                      | ” क्षीरायोगी                    | २५९९    |
| ८                      | ” दश पिच्छायोगाः                   | २५८२    | ६९-७१                   | ” घृतमद्ययोगी                   | २६००    |
| ८                      | ” षड्वर्तियोगाः एको                |         | ७२-७३                   | ” काजिकयोगी                     | २६००-०१ |
|                        | घृतयोगश्च                          | २५८३    | ७४                      | ” चाण्डवादिभिर्दशयोगाः          | २६०१    |
| ९-१०                   | ” अष्टौ देहयोगाः                   | २५८३    | ७५-७६                   | विरचनयोगानां वान्तिभिरासार्थ-   |         |
| ११-१२                  | ” सप्त मांससयोगाः                  | २५८३-८४ |                         | मुपायाः                         | २६०१-०२ |
| १२                     | ” एकः इक्षुरसयोगः                  | २५८४    | ७७-८०                   | अध्यायोक्तविषयाः                | २६०२-०३ |
| १३-१४                  | ” अरुणयोक्तविषयाः                  | २५८४    |                         |                                 |         |
|                        |                                    |         | <b>८. चतुरङ्गलकल्पः</b> |                                 |         |
| १-२                    | श्यामात्रिवृतकल्पोपक्रमः           | २५८५    | १-२                     | चतुरङ्गलकल्पोपक्रमः             | २६०३    |
| ३                      | विरचने त्रिवृन्मूलञ्च श्रेष्ठत्वम् | २५८२    | ३                       | आरग्वधस्य पर्यायाः              | २६०३    |
| ४                      | त्रिवृतायाः पर्यायाः               | २५८५    | ४-५                     | ” गुणाः                         | २६०३-०४ |
| ५-६                    | ” गुणाः                            | २५८५-८६ | ६-७                     | ” उपयोगविधिः                    | २६०४    |
| ७                      | ” भेदाः                            | २५८६    | ८                       | ” द्रक्षारसेन एकोयोगः           | २६०४    |
| ८-९                    | येषामरुणा येषां च श्यामाहितता      | २५८६    | ९-१०                    | ” सुरामण्डेन, सीधुना,           |         |
| १०-११                  | श्यामात्रिवृतायाः उद्धरणविधिः      | २५८७    |                         | दधिमण्डेन, आमलकरसेन,            |         |
|                        |                                    |         |                         | सौवीरकण च एकैको योगः            | २६०५    |

| विषयः                                           | पृष्ठाङ्कः |
|-------------------------------------------------|------------|
| ११ " त्रिदशकपायेण, बिल्व-<br>कपायेण च एकैकोयोगः | २६०५       |
| १२ " एको लेहयोगः                                | २६०५       |
| १३-१४ " द्वौ घृतयोगौ                            | २६०५-०६    |
| १५ " एकोऽरिष्टयोगः                              | २६०६       |
| १६ " अनुकविस्वनयोगोपदेशः                        | २६०६       |
| १७-१८ अध्यायोक्तविषयाः                          | २६०६-०७    |

९. तिलवक्त्रकल्पः

|                               |         |
|-------------------------------|---------|
| १२ तिलवक्त्रकल्पोपक्रमः       | २६०७    |
| ३ तिलवक्त्रस्य पर्यायाः       | २६०८    |
| ३-५ " उपयःगविभिः              | २६०८    |
| ६ " दध्यादिभिः पञ्च योगाः     | २६०८    |
| ७-८ " एकः सौवीरकयोगः          | २६०९    |
| ८ " सुरायोगः                  | २६०९    |
| ९-१० " अरिष्टयोगः             | २६०९    |
| १०-११ " कम्पिपल्लकेन एको योगः | २६०९    |
| ११-१३ " त्रयो लेहयोगाः        | २६१०    |
| १४-१६ " चत्वारो घृतयोगाः      | २६१०-११ |
| १७-१८ अध्यायोक्तविषयाः        | २६११    |

१०. सुधाकल्पः

|                                            |         |
|--------------------------------------------|---------|
| १२ सुधाकल्पोपक्रमः                         | २६१२    |
| ३-४ सुधागुणाः, सुधाप्रयोगानर्हा-<br>नराश्च | २६१२    |
| ५-७ सुधाप्रयोगार्हा नराः                   | २६१२-१३ |
| ७-८ सुधाभेदौ                               | २६१३    |
| ८ सुधायाः पर्यायाः                         | २६१३    |
| ९ सुधाया उपयोगविभिः                        | २६१३    |
| १०-१२ " सौवीरकादिभिः सप्त योगाः            | २६१३-१४ |
| १३ " क्षरिषा मांसरसेन<br>चैकैकोयोगः        | २६१४    |
| १४ " एकः पानकयोगः                          | २६१४    |
| १५-१७ " " प्रेययोगः                        | २६१५    |
| १८ " " लेहयोगः                             | २६१५    |

| विषयः                                   | पृष्ठाङ्कः |
|-----------------------------------------|------------|
| १९ " युवादिभिस्त्रयोयोगाः               | २६१६       |
| १९ " शुष्कमत्स्येन, मांसेन<br>च एकोयोगः | २६१६       |
| २० " एकः सुगयोगः द्वौ-<br>घृतयोगौ च     | २६१६       |
| २१-२२ " अध्यायोक्तार्थसंग्रहः           | २६१६-१७    |

११. सप्तलाशङ्खिनी कल्पः

|                                                 |         |
|-------------------------------------------------|---------|
| १-२ सप्तलाशङ्खिनीकल्पोपक्रमः                    | २६१७    |
| ३ सप्तलाशङ्खिनीः पर्यायाः                       | २६१७    |
| ४ " गुणाः                                       | २६१८-१८ |
| ५ " ग्राह्यमङ्गल                                | २६१८    |
| ६-८ " षोडश कल्कयोगाः                            | २६१८    |
| ९-११ " षट् तैलयोगाः                             | २६१८-१९ |
| ११-१५ " अष्टौ घृतयोगाः                          | २६१९-२० |
| १६ " त्रयो लेहयोगाः,<br>कम्पिपल्लकेनको-<br>योगः | २६२०    |
| १७ " पञ्च सन्धानयोगाः                           | २६२०    |
| १८-१९ " अध्यायोक्तविषयाः                        | २६२१    |

१२. दन्तीद्रवन्ती कल्पः

|                                               |         |
|-----------------------------------------------|---------|
| १-२ दन्तीद्रवन्तीकल्पोपक्रमः                  | २६२१    |
| ३ दन्तीद्रवन्त्योः पर्यायाः                   | २६२२    |
| ४-५ " ग्राह्यमङ्गल, प्रयोग-<br>विधिश्च        | २६२२    |
| ६ " गुणाः                                     | २६२२-२३ |
| ७-८ " सप्त कल्कयोगाः,<br>मांसरसैस्त्रयो योगाः | २६२३    |
| ९-१० " त्रयः स्नेहयोगाः                       | २६२३-२४ |
| ११-१५ " षड् लेहयोगाः                          | २६२४-२५ |
| १६ " एकरशूर्णयोगः                             | २६२५    |
| १७ " इक्षुण्को योगः                           | २६२५-२६ |
| १८ " मुद्गादिभिस्त्रयो<br>रसयोगाः             | २६२५-२६ |

| विषयः | पृष्ठाङ्कः                                                                        | विषयः                                                                                          | पृष्ठ पृः |
|-------|-----------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------|
| १९    | त्रयो यवारवादि-<br>योगः २६२६                                                      | ६१ अन्यद्वेषजं कदा प्रयोज्यम् २६३६                                                             |           |
| २०-२१ | एक उत्कारिका-<br>योगः, एको मोदक-<br>योगश्च २६२६                                   | ६२ वमने पाकप्रतीक्षा किमर्थं<br>न कार्या २६३६                                                  |           |
| २१-२२ | एकोमद्ययोगः, भक्ष्य-<br>योगश्च २६२६                                               | ६३-६४ कदा पुनः संशोधनोपार्थं देयम् २६३६                                                        |           |
| २३-२६ | अपरशूर्णयोगः २६-२७                                                                | ६५ यो दुर्बलो बहुदोषश्च दोषपाकेन<br>स्वयमेव विरिच्यते तत्र<br>कर्तव्यम् २६३७                   |           |
| २७-२९ | मोदकयोगः २६२७-२८                                                                  | ६६ दोषशेषशमनोपायः २६३७                                                                         |           |
| ३०    | एकः कषाययोगः २६२८                                                                 | ६७ ६९ केषां मृद्वौषधं प्रयोज्यम् २६३७-३८                                                       |           |
| ३१    | कल्कयोगः २६२८                                                                     | ७० यस्य विरेचनमूर्ध्वं याति<br>तस्य चिकित्सा २६३८                                              |           |
| ३२-३४ | पञ्चसखयोगः २६२९                                                                   | ७१-७२ दोषाप्रवृत्तौ कर्तव्यम् २६३८                                                             |           |
| ३५    | एकैकः सौवीरक-गुणोदक-<br>सुराक्षिपलकयोगः २६२९                                      | ७३ दोषातिप्रवृत्तौ २६३९                                                                        |           |
| ३६-४० | अध्यायोकार्यसंग्रहः २६३०                                                          | ७४-७५ विरेचनस्याविक्रमत्वे हेतुः तच्चि-<br>कित्सा च २६३९                                       |           |
| ४१-४२ | पञ्चदशद्रव्याण्याश्रित्य वमने<br>विरेचने च यावन्तोयोगा<br>उक्तास्तन्निर्देशः २६३१ | ७६ जीर्यत्यौषधे यदि तृणोद-<br>मूलच्छाः स्युस्तदा कर्तव्यम् २६३९-४०                             |           |
| ४३    | योगसंज्ञा कथं भवति २६३१                                                           | ७७ कफावृत्ते भेषजे यथा जालादयः<br>स्युस्तदा चिकित्सा २६४०                                      |           |
| ४४    | गुणभूतानां सुगन्धानां फलादि-<br>प्रधानद्रव्यानुवर्तित्वम् २६३१                    | ७८ सुस्निग्धकूरुकोष्ठे च कर्तव्यम् २६४०                                                        |           |
| ४५    | तेषां विरुद्धवीर्यान्वेऽप्यबाधकत्वम् २६३०                                         | ७९-८० येषामविरिच्यैव भेषजम् जीर्यति<br>तेषां चिकित्सा २६४०-४१                                  |           |
| ४६    | विरुद्धवीर्याणां प्रयोगे हेतुः २६३२                                               | ८१-८२ येषां संशोधनम् विनैव कर्मवातातपा-<br>ग्निभिर्गोषाः क्षय्यन् याति तेषां<br>कर्तव्यम् २६४१ |           |
| ४७-४८ | द्रव्याणां बलाधानार्थं स्वर-<br>संभावना कार्या २६३२                               | ८३ केषां स्निग्धं केषां च रुक्षम्<br>विरेचनम् प्रयोज्यम् २६४१-४२                               |           |
| ४८    | तुल्यातुल्यवीर्यसंयोगादिकार्यम् २६३२-३३                                           | ८४-८५ विधिपूर्वकसंशोधनम् २६४२                                                                  |           |
| ४९-५० | अत्रोक्तीजेनान्ययोगानामपि<br>कल्पना कार्या २६३३                                   | ८६ अत्रोक्तमात्राविचारः २६४२                                                                   |           |
| ५१-५३ | तीक्ष्णस्य विरेचनस्य लक्षणम् २६३३                                                 | ८७-९७ मानपरिभाषा २६४२-४४                                                                       |           |
| ५३-५६ | कथं भेषजं तीक्ष्णत्वं मन्द-<br>त्वं च याति २६३४                                   | ९८-९९ द्रव्याणां सद्यः स्मृतानां द्रव्याणां<br>च द्विगुणम् मानम् प्राक्यम् २६४४-४५             |           |
| ५७-५८ | तीक्ष्णादीनि भेषजानि<br>केषु योज्यानि २६३४-३५                                     | १००-१०४ स्नेहपाकपरिभाषा २६४५-४६                                                                |           |
| ५९    | आपित्तदर्शनादमनार्थं भेषज<br>प्रयोज्यम् २६३५                                      | १०५ मानस्य द्वैविध्यम् २६४६                                                                    |           |
| ६०    | दोषादिबलमवेक्ष्य भेषजं प्रयोज्यम् २६३४                                            | १०६-१०७ कल्पस्थानोक्तार्थसंग्रहः २६४६-४७                                                       |           |

विषयः

पृष्ठाङ्कः

१. कल्पनासिद्धिः

|       |                                                                      |         |
|-------|----------------------------------------------------------------------|---------|
| १-२   | कल्पनासिद्धयुपक्रमः                                                  | २६४८    |
| ३-६   | पञ्चकर्मकल्पनाविषयेऽभिप्रेतस्य<br>कतिपये प्रश्नाः                    | २६४८-४८ |
| ६-७   | स्नेहकर्मणः कालावधिः                                                 | २६४९-५० |
| ७-८   | रत्नैर्हस्वेदयोग्यताः                                                | २६५०    |
| ८-९   | वसनं विरचने च दोषोत्क्लेशविधिः                                       | २६५०    |
| १०    | वसनविरचनयोः प्रतिलोमगमने<br>हेतुः                                    | २६५०-५१ |
| १०-११ | वसनविरचनयोः कर्तव्यः क्रमः                                           | २६५१    |
| ११-१३ | संयोगानन्तरं कर्तव्योक्तसंस्पर्जन-<br>क्रमः                          | २६५२-५२ |
| १३-१४ | हीनमध्यप्रवरयोर्वसनविरचनयो-<br>र्लक्षणानि                            | २६५२    |
| १५-२० | वसनविरचनयोः समहीनाति-<br>योगलक्षणानि                                 | २६५३-५४ |
| २०-२६ | निरुद्धानुवासनविधानम्                                                | २६५५-५७ |
| २७-४० | वस्तेर्गुणाः                                                         | २६५७-६१ |
| ४०-४६ | वस्तेः समहीनातियोगलक्षणानि                                           | २६६१-६३ |
| ४६    | उचितस्नेहप्रत्यागमनकालः                                              | २६६३-६४ |
| ४७-५० | वर्मवस्ति-कालवस्ति-योग-<br>वस्तीनां विवर्णणम्                        | २६६४-६५ |
| ५०-५१ | शिरोविरचनस्य विधिः                                                   | २६६५    |
| ५१-५२ | समहीनातियोग-<br>लक्षणानि                                             | २६६५-६६ |
| ५३    | तेषु चिकित्सा                                                        | २६६६    |
| ५४    | वस्त्यादिषु परिहारकालः                                               | २६६६    |
| ५४-५५ | परिहरणीयानि                                                          | २६६७    |
| ५५-५६ | प्रणीयमानो वस्तिर्ये हेतुभिर्न याति<br>सुखं च वह्निर्नायाति ते हेतवः | २६६७    |
| ५६-५७ | वस्तेः शीघ्रनिर्गमने हेतवः                                           | २६६७-६८ |
| ५७-६० | येषु साध्येष्वपि रोगेषु कर्म<br>न सिद्धमेति ते रोगाः                 | २६६८    |
| ६०    | अध्यायोक्तार्थसंग्रहः                                                | २६६८    |

विषयः

पृष्ठाङ्कः

२. पञ्चकर्मयसिद्धिः

|       |                                                |         |
|-------|------------------------------------------------|---------|
| १-३   | पञ्चकर्मयसिद्धयुपक्रमः                         | २६६९-७० |
| ४-७   | सामान्यतः पञ्चकर्मानर्हाः                      | २६६९-७० |
| ८     | अच्छर्दीनीयाः                                  | २६७०-७२ |
| ९     | तत्रापवादः                                     | २६७४    |
| १०    | वसनार्हाः                                      | २६७४-७५ |
| ११    | अविरच्यः                                       | २६७५-७६ |
| १२    | तेषां विरचनाया व्यापदो भवन्ति                  | २६७६-७८ |
| १३    | विरचनार्हाः                                    | २६७८-७९ |
| १४    | अनास्थाप्याः                                   | २६७९-८० |
| १५    | तेषामास्थापनाया व्यापदो<br>भवन्ति              | २६८०-८२ |
| १६    | आस्थापनार्हाः                                  | २६८२-८३ |
| १७    | अनुवासनार्हाः                                  | २६८३-८४ |
| १८    | तेषामनुवासनाया व्यापदो<br>भवन्ति               | २६८४    |
| १९    | अनुवासनार्हाः                                  | २६८४-८५ |
| २०    | अशिरोविरचनार्हाः                               | २६८५    |
| २१    | तेषां शिरोविरचनाया व्यापदो<br>भवन्ति           | २६८६-८८ |
| २२    | शिरोविरचनार्हाः                                | २६८८-८९ |
| २३    | कस्मिन्तौ कदा वसनम् विधेयम्                    | २६८९    |
| २४    | अध्यायोक्तविषयाः                               | २६८९    |
| २५-२८ | उक्तेषु विधिनियेषु वैधेन<br>स्वयमप्यूहो विधेयः | २६८९-९१ |

३ वस्तिस्त्रीया सिद्धिः

|     |                                             |         |
|-----|---------------------------------------------|---------|
| १-२ | वस्तिस्त्रीयसिद्धयुपक्रमः                   | २६९१    |
| ३-५ | वस्तिविषयेऽभिप्रेतस्य<br>कतिपयप्रश्नाः      | २६९१-९२ |
| ६   | किमपेक्ष्य दत्तोवस्तिः सम्यक्<br>सिद्धिमेति | २६९२    |
| ७   | वस्तिनेत्रविधानोपयोगीभि<br>द्रव्याणि        | २६९२-९३ |

| पृष्ठाङ्कः | विषयः                                         |
|------------|-----------------------------------------------|
| ८-१०       | वस्तिनेत्रप्रमाणम् वस्तिनेत्राकृतिश्च २६९३-३४ |
| १०-११      | वस्तिन्यन्त्रनिर्माणविधिः २६९४                |
| १२         | वस्त्यलाभेऽनुकल्पविधिः २६९४                   |
| १२-२०      | वस्तिप्रयोगविधिः २६९४-९७                      |
| २०-२३      | असम्यक्पणीते वस्तौ व्यापदः २६९७-९८            |
| २३         | वस्तौ रूढनिक्षेपक्रमः २६९८                    |
| २४         | सव्यञ्च शयानस्य वस्तिदाने हेतुः २६९८-९९       |
| २५         | वस्तिदानसमये आवस्थिकम् कर्म २६९९              |
| २६         | प्रथमद्वितीयतृतीयवस्तीनां फलम् २६९९           |
| २७         | प्रत्यागते वस्तौ प्रश्नात्कर्म २६९९-२७००      |
| २८-२९      | निरुहानन्तरमनुवासनञ्च देयम् २७००              |
| ३०         | निरुह कषायस्नेहयोर्मात्रा २७०१                |
| ३१-३२      | वयोभेदेन निरुहमात्राः २७०१                    |
| ३३-३४      | वस्तिदानसमये प्रशस्तम् शयनञ्च २७०२            |
| ३४-३५      | वस्तिदानानन्तरं देयम् भोजनम् २७०२             |
| ३५-४५      | कतिपये निरुहयोगाः २७०२-०५                     |
| ३५         | द्विपञ्चमूलो निरुहः २७०२                      |
| ३६         | स्थिराद्यो २७०३                               |
| ३६-४२      | एरण्डमूलाद्यो २७०३                            |
| ४३         | छागरसाद्यो २७०४                               |
| ४४-४५      | पलाशाद्यो २७०५                                |
| ४६         | यष्ट्याहो वस्तिः २७०५                         |
| ४७         | अपरः २७०६                                     |
| ४८-५२      | चन्दनाद्यो २७०६-०७                            |
| ५३-५५      | ब्राह्म्याद्यो २७०७-०८                        |
| ५६-५८      | कोशातकाद्यो निरुहः २७०८                       |
| ५९-६१      | द्विपञ्चमूलाद्यो २७०९                         |
| ६१-६४      | रान्नाद्यो २७०९-१०                            |
| ६५-६८      | संसर्गजे पुनर्नवाद्यो निरुहः २७११-१२          |
| ६९         | दोषापेक्षिणी निरुहकलाया २७१२                  |
| ७०         | निरुहे प्रतिभोजनम् २७१२                       |
| ७१         | अध्यायोक्तविषयाः २७१३                         |

| विषयः                         | पृष्ठाङ्कः                                         |
|-------------------------------|----------------------------------------------------|
| ४. स्नेहवस्तिव्यापदिकीसिद्धिः |                                                    |
| १-३                           | स्नेहवस्तिव्यापदिकयुक्तक्रमः २७१३-१४               |
| २५                            | स्नेहवस्तेः षडाः २७१४                              |
| २६-२७                         | षड्व्यापदां हेतुः २७१४-१५                          |
| २८                            | वाताहतस्नेहस्य लक्षणं २७१५                         |
| २९-३०                         | चिकित्सा २७१५                                      |
| ३१                            | पित्तवृत्तस्नेहस्य लक्षणं चिकित्सा च २७२०          |
| ३२-३३                         | कफावृत्तस्नेहस्य २७२०                              |
| ३४-३५                         | अत्यगनात्रस्नेहस्य २७२०-२१                         |
| ३६-३७                         | विडावृत्तस्नेहस्य २७२१                             |
| ३८-३९                         | कण्ठादूर्ध्वगच्छतः स्नेहस्य लक्षणं चिकित्सा च २७२१ |
| ४०                            | रैश्वादानागतः स्नेहः उपेक्ष्यः २७२२                |
| ४३                            | अनुवासनात्पूर्वं युक्तस्नेहत्वादि भोजनं देयम् २७२२ |
| ४३-४५                         | अनुवासायायोगं जलं दधं तदुपाश्च २७२३                |
| ४६                            | प्रतिदिनमनुवासाः २७२३                              |
| ४७                            | प्रतिदिनानुवासाने हेतुः २७२४                       |
| ४८                            | अनुवासाने अगस्नेहनिषेधः २७२४                       |
| ४९                            | शुद्धकण्ठाभ्यां युगपत्स्नेहदान-निषेधः २७२४         |
| ५०-५१                         | अनुवासानानिरुहयोरैकान्ततः सेवननिषेधः २७२४-२५       |
| ५२                            | कैपांमात्रावस्तिर्हितः २७२५                        |
| ५३-५४                         | मात्रावस्तेर्गुणाः २७२५-२६                         |
| ५५-५६                         | अध्यायोक्तार्थसंग्रहः २७२६                         |
| ५. नेत्रव्यापदिकीसिद्धिः      |                                                    |
| १-२                           | नेत्रवस्तिव्यापदिकयुक्तक्रमः २७२७                  |
| ३-५                           | वर्ज्यानि वस्तिनेत्राणि तेषां दोषाश्च २७२७-२८      |
| ६-७                           | वर्ज्याः वक्तव्यं तेषां दोषाश्च २७२८               |
| ८                             | वस्तिप्रणेतृदोषाः २७२८                             |

| विषयः                                   | पृष्ठाङ्कः | विषयः                              | पृष्ठाङ्कः |
|-----------------------------------------|------------|------------------------------------|------------|
| ९.१० अनुच्छास्य दोषे निःशेषं वा दत्ते   | २५         | तर्पणादिक्रमः कुत्र येज्यः         | २७३८       |
| बस्तौ दोषः चिकित्सा च                   | २७२९       | जीर्णौषधस्य लिङ्गानि               | २७३८       |
| १०-११ द्रुतप्रणीतादिर्बास्तदोषाः तेषां  | २७         | अजीर्णौषधस्य                       | २७३९       |
| चिकित्सा च                              | २७२९       | कथंभूतमौषधं व्यापयते               | २७३९       |
| १२ बस्तेरुध्वगमने हेतुः तच्चिकित्सा च   | २९-३०      | वमनविरेचनयोर्दश व्यापदः            | २७३९       |
| १३-१४ पीडयमाने बस्त्राधन्वरा मुक्ते     | ३१-३४      | वमनविरेचनयोर्भागतियोगायोगानां      |            |
| दोषाः तच्चिकित्सा च                     | २७३०       | लक्षणम्                            | २७३९.४०    |
| १४-१५ नेत्रकम्पनाभिदृते गुदे दोषाः      | ३५-३६      | पीतेऽप्यौषधेऽशुद्धस्य कर्तव्यम्    | २७४१       |
| तच्चिकित्सा च                           | २७३०       | ३७ दुर्बलमने वमनं क्लृप्तौ विरेचनं |            |
| १५-१६ अतिमात्रप्रणीतनेत्रदोषाः          |            | च न देयम्                          | २७४१       |
| तच्चिकित्सा च                           | २७३०-३१    | अयोगजन्या व्यापदः                  | २७४१.४२    |
| १७ मन्दं प्रणीते बाह्ये वा स्नेहे दोषाः | ४२-४४      | तत्र चिकित्सा                      | २७४२-४३    |
| तच्चिकित्सा च                           | २७३१       | ४५-५७ अतियोगजन्या व्यापदः तासां    |            |
| १८ अतिप्रपीडनदोषाः तच्चिकित्सा च        | २७३१       | चिकित्सा च                         | २७४३-४६    |
| १९ अध्यायोक्तविषयाः                     | २७३१-३२    | ५८-६० आध्मानव्यापदो वर्णनं         |            |

६. वसन्तविरेचनव्यापत्तिरुद्धिः

|       |                                  |         |       |                                   |         |
|-------|----------------------------------|---------|-------|-----------------------------------|---------|
| १-३   | वमनविरचनव्यापत्तिसङ्ग्रहयुपक्रमः | २७३२    | ६८-७० | परिस्रावव्यापदो वर्णनं            |         |
| ४-६   | साधारणेषु प्राक्प्राग्द्वसन्तेषु |         |       | चिकित्सा च                        | २७४८    |
|       | संशोधनोपदेशः                     | २७३२-२३ | ७१-७५ | हृद्ग्रहव्यापदो वर्णनं चिकित्सा च | २७४९-५० |
| ७     | वमनादीनामादौ अन्तरा स्नेहश्चेद-  |         | ७६-७७ | अङ्गप्रव्यापदो , ,                | २७५०-५१ |
|       | प्रयोगः अन्ते च स्नेहप्रयोगः     | २७३३    | ७८-८४ | जीवादानव्यापदो वर्णनं             |         |
| ८     | कान् नातिस्निग्धान् विरैचयेत्    | २७३३-३४ | ८५-८७ | चिकित्सा च                        | २७५१-५३ |
| ९-१४  | केषां स्नेहविरचनं केषां च        |         | ८८-८९ | विश्रंशव्यापदो वर्णनं चिकित्सा च  | २७५३    |
|       | रूक्षं विरचनं देयम्              | २७३४    | ९०-९१ | स्तम्भव्यापदो , ,                 | २७५३-५४ |
| १५-१६ | मात्रावतः संशोधनौषधस्य गुणाः     | २७३५-३६ |       | उपश्रवाख्यव्यापदो वर्णनं          |         |
| १७    | कथंभूतनना औषधं पिबेत्            | २७३६    | ९२-९३ | चिकित्सा च                        | २७५४    |
| १८-१९ | श्रो वमनं पाता किं भुञ्जीत       | २७३६    | ९४-९५ | क्लमाख्यव्यापदो वर्णनं            | २७५४    |
| १९-२० | सम्यक् शुद्धस्य लिङ्गानि         | २७३६-३७ |       | अध्यायोक्तविषयमग्रहः              | २७५५-५६ |
| २१    | शुद्धिलक्षणदर्शनेऽपि सावशेषौषधे  |         |       |                                   |         |
|       | वमनोपदेशः                        | २७३७    |       |                                   |         |
| २२-२३ | यथोक्तवमनफलं सम्यग्प्रमितस्य     |         |       |                                   |         |
|       | पश्चात्कर्म                      | २७३७-३८ |       |                                   |         |
| २४    | पेयादिकमाचरणे हेतुः              | २७३८    |       |                                   |         |

७. वस्तिन्यापत्सिद्धिः

|     |                           |      |
|-----|---------------------------|------|
| १-४ | बस्तिग्यापत्तिद्वयुपक्रमः | २७५६ |
| ५-६ | बस्तिग्यापत्तिद्वयुपक्रमः | २७५७ |

| विषयः                                            | पृष्ठाङ्कः |
|--------------------------------------------------|------------|
| ७-११ अयोगव्यापदो वर्णनं<br>चिकित्सा च            | २७५७-५८    |
| १२-१४ अतियोगव्यापदो वर्णनं<br>चिकित्सा च         | २७५८-५९    |
| १५-२० क्रमाख्यव्यापदो वर्णनं<br>चिकित्सा च       | २७५९-६०    |
| २१-२६ आधमानव्यापदो वर्णनं<br>चिकित्सा च          | २७६०-६२    |
| २७-२९ हिक्काव्यापदो वर्णनं चिकित्सा च            | २७६२       |
| ३०-३१ हृत्प्राप्तव्यापदो , ,                     | २७६२-६३    |
| ३२-३९ ऊर्ध्वताख्यव्यापदो वर्णनं<br>चिकित्सा च    | २७६३-६५    |
| ४०-४२ प्रवाहिकाव्यापदो वर्णनं<br>चिकित्सा च      | २७६५-६६    |
| ४३-४६ शिरःशूलव्यापदो वर्णनं<br>चिकित्सा च        | २७६६-६७    |
| ४७-५३ अङ्गशूलव्यापदो वर्णनम्                     | २७६८       |
| ५४-५७ परिकर्तिकाव्यापदो वर्णनं<br>चिकित्सा च     | २७६९       |
| ५८-६२ परिस्रवव्यापदो वर्णनम्                     | २७७०       |
| ६६ वस्तेर्मृदुत्वं तीक्ष्णत्वं च<br>कथं विधेयम्  | २७७१       |
| ६४-६५ वस्तेः सर्वशरीरमलहरत्वे<br>दृष्टान्तद्वयम् | २७७१       |
| ६६ अध्यायोकार्यसंग्रहः                           | २७७१-७२    |

## ८. प्रास्तयोगिकी सिद्धिः

|                                |         |
|--------------------------------|---------|
| १-३ प्रास्तयोगिकीसिद्धयुपक्रमः | २७७२    |
| ४ वातघ्नो घलवर्णकृच्च निरुहः   | २७७३    |
| ५ वातघ्ननिरुहः                 | २७७३    |
| ६ द्वितीयोनिरुहः               | २७७३    |
| ७ शुक्रकृत्रिरुहः              | २७७३-७४ |
| ८ पञ्चतक्तो निरुहः             | २७७४    |
| ९-१० किमिनाशनो , ,             | २७७४    |

| विषयः                                   | पृष्ठाङ्कः |
|-----------------------------------------|------------|
| ११ वृषत्वकृत्रिरुहः                     | २७७४-७५    |
| १२ भेदनो निरुहः                         | २७७५       |
| १३-१४ मूत्रकृच्छ्रहृत्रिरुहः            | २७७५       |
| १५ तीक्ष्णो वस्तिर्मधुरपत्यास्थः रसम्   | २७७५-७६    |
| १६ गुददाहादौ द्राक्षादियोगः             | २७७६       |
| १७ वस्तिशुद्धस्य यवागून्निधानम्         | २७७६       |
| १८ क्षौण्विट्कस्य चिकित्सा              | २७७६       |
| १९-२१ अतिसारस्य षट्त्रिंशद्विंशदाः      | २७७७       |
| २२ अतिसारोपद्रवाः                       | २७७७-७८    |
| २३-३३ अतिसारोपद्रवाणां नाशना योगाः      | २७७८-८१    |
| ३४ अतिसारोपद्रवमस्यान्यना-<br>प्यतिदेशः | २७८१       |
| ३५ आम्रादिषट्संघर्गचिकित्सा             | २७८१       |
| ३६-३७ अतिसारहरं घृतम्                   | २७८२       |
| ३८-४२ अतिसारहरा यवागवः                  | २७८२-८३    |
| ४३-४५ अतिसारचिकित्सासूत्रम्             | २७८३-८४    |
| ४६ अध्यायोविषयाः                        | २७८४-८५    |

## ९. त्रिमर्मीया सिद्धिः

|                                             |         |
|---------------------------------------------|---------|
| १-२ त्रिमर्मीयसिद्धयुपक्रमः                 | २७८५    |
| ३ मर्मणां संख्या                            | २७८५    |
| ३ तत्र त्रयाणां प्राधान्यम्                 | २७८६    |
| ४ प्रधानमर्मणां हृदयशिरोवस्तीनां<br>वर्णनम् | २७८६-८७ |
| ५ प्रधानमर्मणामुपघाते सामान्य-<br>लक्षणानि  | २७८७    |
| ६ प्रधानमर्मणामुपघाते विशेष-<br>लक्षणानि    | २७८७-८९ |
| ७ सर्वाणि मर्माणि वाताद्विशेषतो<br>रक्षयानि | २७८९    |
| ८ वातोपहतेषु मर्मसु चिकित्सा                | २७९०-९२ |
| ९-१० मर्मणां परिपालनानि                     | २७९२    |
| ११-१४ अपतन्त्रकस्य संप्राप्तिलक्षणानि       | २७९२-९३ |
| १४-१५ अपतानकरय , ,                          | २७९३    |



| विषयः                                          | पृष्ठाङ्कः |
|------------------------------------------------|------------|
| १६ अपतन्त्र शापतानकयोः चिकित्सा-               |            |
| सूत्रम् २७९४                                   |            |
| १७ " शिरोवरेचनम् २७९४                          |            |
| १८ " पानम् २७९४                                |            |
| १९ " हिंसवाद्यो योगः २७९४                      |            |
| २० " तीक्ष्णशोधनवस्ति-                         |            |
| निषेधः २७९४                                    |            |
| २१-२२ तन्द्रानिदानं संपासिश्च २७९५             |            |
| २३ तन्द्रालक्षणानि २७९५                        |            |
| २४ तन्द्रायां चिकित्सासूत्रम् २७९५             |            |
| २५-२६ त्रयोदश मूत्रदोषाणां नामतो निर्देशः २७९६ |            |
| २७-२८ मूत्रौकसादस्य निदानलक्षण-                |            |
| चिकित्सितानि २७९६                              |            |
| २९-३१ मूत्रजठरस्य २७९६-९७                      |            |
| ३२ मूत्रकृच्छस्य निदानलक्षणे २७९७              |            |
| ३२-३४ मूत्रोत्सङ्गस्य , २७९७                   |            |
| ३४ मूत्रसंश्लेष , २७९८                         |            |
| ३५ मूत्रातीतस्य , २७९८                         |            |
| ३६ मूत्रासीलायाः , २७९८                        |            |
| ३७ वातवस्तेः , २७९९                            |            |
| ३८ लघ्णवातस्य , २७९९                           |            |
| ३९-४० वातकुण्डलिकाया , २७९९                    |            |
| ४१-४२ रक्तग्रन्थेः निदानलक्षणे २८००            |            |
| विड्मिषातस्य , २८००                            |            |
| ४४-४९ बस्तिकुण्डलस्य , २८००                    |            |
| ४९-५० मूत्राघातानां चिकित्सा २८०१              |            |
| ५०-५१ उत्तरवस्तेर्विधिः २८०२                   |            |
| ५२-७० स्त्रोणामुत्तरवस्तिदाने विशेषः २८०४      |            |
| ७०-७३ शङ्खकस्य निदानलक्षण-                     |            |
| चिकित्सितानि २८०५-०७                           |            |
| ७४-७८ अधविभेदकस्य निदानलक्षण-                  |            |
| चिकित्सितानि २८०८                              |            |
| ७९-८३ सूर्यावर्तकस्य निदानलक्षण-               |            |
| चिकित्सितानि २८०८                              |            |
| ८४-८६ अनन्तवातस्य निदानलक्षण-                  |            |
| चिकित्सितानि २८१०                              |            |

| विषयः                                            | पृष्ठाङ्कः |
|--------------------------------------------------|------------|
| ८६-८७ शिरःकम्पस्य निदानलक्षण-                    |            |
| चिकित्सितानि २८११                                |            |
| ८८ नस्तः कर्मगुणाः २८११                          |            |
| ८९-९२ नस्यकर्मभेदाः २८११                         |            |
| ९४-९५ नस्यकर्म केषु रोगेषु कार्यम् २८१३          |            |
| ९६ विरेचनं नस्यं कैर्द्रव्यैः कल्पनीयम् २८१३     |            |
| ९७ तर्पणं , , , २८१३                             |            |
| ९८-१०७ अवपीडनस्य दानविधिः २८१३                   |            |
| १०७-१०८ प्रध्मापनस्य प्रयोगविधिः २८१५            |            |
| १०९-११५ नस्यकर्षणे व्यापदः तच्चिकित्सा च १८१५-१७ |            |
| ११६ प्रतिसर्शुगुणाः २८१८                         |            |
| ११७ प्रतिसर्शुप्रयोग विधिः २८१८                  |            |
| ११८-११९ आभ्यायोक्तविषयाः २८१८                    |            |
| <hr/>                                            |            |
| <b>१० वस्ति सिद्धिः</b>                          |            |
| १३ वस्ति सिद्धयुपक्रमः २८१९                      |            |
| ४ बलादीन् प्रविमज्य दत्तो वस्तिः                 |            |
| सर्वरोगान्निवर्तयति २८२०                         |            |
| ५ वस्तेर्गुणाः २८२०                              |            |
| ६-८ विरेचनाद्यपेक्षया वस्तेः श्रेष्ठत्व-         |            |
| प्रतिपादनम् २८२०                                 |            |
| ८ वस्तेर्भेदाः २८२१                              |            |
| ९-१० कुत्र कं दशो वस्तिर्गुण्यः २८२१             |            |
| ११ ब्रूणीयवस्त्यनर्हाः २८२१                      |            |
| १२ शोषनीयवस्त्यनर्हाः २८२२                       |            |
| १३-१७ कार्यविशेषापेक्षया वस्तीनां                |            |
| संस्कारविशेषः २८२२                               |            |
| १८-२० वातरोगे हस्ताः त्रयो वस्तयः २८२२           |            |
| २१-२२ पित्तरोगे , , , २८२४                       |            |
| २३-२४ कफरोगे , , , २८२५                          |            |
| २५-२७ पक्षाशयशोधनाश्चत्वारः , २८२५               |            |
| २८-२९ शुक्रमासदाश्चत्वारो , २८२६                 |            |
| ३०-३१ स्रग्वाहिकाश्चत्वारो , २८२६                |            |
| ३२ परिस्रवे द्वौ वस्ती २८२७                      |            |
| ३३ दाहे द्वौ वस्ती २८२७                          |            |

| विषयः                                      | पृष्ठाङ्कः | विषयः                                   | पृष्ठाङ्कः |
|--------------------------------------------|------------|-----------------------------------------|------------|
| ३४-३५ परिश्रुते द्वौ वस्ती                 | २८२७       | १४-(५) अजीर्णाध्यशनजा व्यापदः           | २८४७       |
| ३६ प्रवाहणे ,, ,,                          | २८२८       | १४-(६) विषमाहिताशनजा ,,                 | २८४९       |
| ३७-३८ क्षतियोगे ,, ,,                      | २८२८       | १४-(७) दिवास्वप्नजा ,,                  | २८४९       |
| ३८-४२ जीवादाने वस्तयः                      | २८२८-२९    | १४-(८) व्यवायजा ,,                      | २८४९-५०    |
| ४३ रक्तपित्ते प्रमेहे च वस्तयः             | २८२९       | १५ पूर्वोक्तव्यापदां निष्कृताः          | २८५०-५२    |
| ४४-४५ गुल्मादिरोगेष्वतिशेषिकवस्तयः         | २८३०       | १६-(१) मुस्ताद्यो यापनवस्तिः            | २८५२-५४    |
| ४६-४८ अध्यायोक्तविषयाः                     | २८३०       | १६-(२) एण्डमूलाद्यो ,,                  | २८५४-५५    |
|                                            |            | १६-(३) सहचराद्यः ,,                     | २८५५       |
|                                            |            | १६-(४) बृहत्याद्यः ,,                   | २८५५-५६    |
|                                            |            | १६-(५-६) बलाद्यो यापनवस्ती              | २८५६-५७    |
|                                            |            | १६-(७) ह्युवाद्यः यापनवस्तिः            | २८५७-५८    |
|                                            |            | १६-(८) लघुपञ्चमूलाद्यः ,,               | २८५८       |
|                                            |            | १६-(९) तृतीयो बलाद्यः ,,                | २८५८-५९    |
|                                            |            | १६-(१०) चतुर्थो बलाद्यः ,,              | २८५९       |
|                                            |            | १६-(११) शालिपण्यांशो ,,                 | २८५९       |
|                                            |            | १६ स्थिराद्यो ,,                        | २८६०       |
|                                            |            | १७ निष्क्रियोन्दादिषु पूर्वोक्तकल्पाति- |            |
|                                            |            | देशः                                    | २८६०       |
|                                            |            | १८-(१) तिक्तियाद्यो यापनवस्तिः          | २८६०-६१    |
|                                            |            | १८-(२) द्विपञ्चमूलाद्यो ,,              | २८६१       |
|                                            |            | १८-(३) मथूराद्यो ,,                     | २८६१-६२    |
|                                            |            | १८-(४) विष्किरादिषु पूर्वोक्तकल्पाति    |            |
|                                            |            | देशः                                    | २८६२       |
|                                            |            | १८-(५) गोवाद्यो यापनवस्तिः              | २८६२-६३    |
|                                            |            | १८-(६) कूर्माद्यो ,,                    | २८६३       |
|                                            |            | १८-(७) धर्कटरसाद्यः ,,                  | २८६३       |
|                                            |            | १८-(८) गोवृषाद्यः ,,                    | २८६४       |
|                                            |            | १८-(९) दशमूलाद्यो ,,                    | २८६४       |
|                                            |            | १८-(१०) मृगादिषु पूर्वोक्तकल्पातिदेशः   | २८६४       |
|                                            |            | १८-(११) मध्वाद्यो यापनवस्तिः            | २८६५       |
|                                            |            | १८-(१२) घृताद्यः ,,                     | २८६५       |
|                                            |            | १८-(१३) मधुनैलाद्यः ,,                  | २८६५-६६    |
|                                            |            | १८-(१४-१५) मधुघृताद्यो यापनवस्ती        | २८६६       |
|                                            |            | १८-(१६) सुग्राद्यो यापनवस्तिः           | २८६६       |
|                                            |            | १८ द्विपञ्चमूलाद्यो ,,                  | २८६७       |
|                                            |            | १९ वृष्यतमाः स्नेहवस्तयः                | २८६७-७२    |
| ११-२ फलमात्रसिद्धयुपक्रमः                  | २८३१       |                                         |            |
| ३-१० आस्थापने कतमं फलं श्रेष्ठमित्यत्र-    |            |                                         |            |
| मुनीनां मतानि                              | २८३१-३३    |                                         |            |
| ११-१४ तत्रात्रेयकृतो निश्चयः               | २८३४       |                                         |            |
| १५-१६ गुदगतो वस्तिः सर्वेशरीरस्थानं दोषान् |            |                                         |            |
| कथमपहरतीत्यभिप्रेतः                        | २८३५       |                                         |            |
| १७-१८ तत्रात्रेयकृतं समाधानम्              | २८३५-३६    |                                         |            |
| १९-२६ पशूनां वस्तिर्कर्मविधिः              | २८३६-३९    |                                         |            |
| २७ सदातुरा नराः                            | २८३९       |                                         |            |
| २८-३६ तेषां सदातुरास्वे हेतुः              |            |                                         |            |
| चिकित्सा च                                 | २८४०-४२    |                                         |            |
| ३७ अध्यायोक्तविषयाः                        | २८४३       |                                         |            |
|                                            |            |                                         |            |
| १२. उत्तरवस्तिः सिद्धिः                    |            |                                         |            |
| १-२ उत्तरवस्तिः सिद्धयुपक्रमः              | २८४४       |                                         |            |
| ३-५ वमनादिभिः शुद्ध आतुरो यथा परि-         |            |                                         |            |
| पालनीयः                                    | २८४४       |                                         |            |
| ६-८ तस्याभिप्रेतं पुष्कणार्थं पेयाधिकमः    | २८४४-४५    |                                         |            |
| ९ प्रकृतिमापन्नस्य लक्षणानि                | २८४५       |                                         |            |
| १०-१२ प्रकृतिप्राप्तस्य वर्ज्यानि          | २८४६       |                                         |            |
| १३ तेषां विस्तरतो व्याख्यानप्रतिज्ञा       | २८४६       |                                         |            |
| १४-(१) उच्चैर्माध्यातिमाध्यजा व्यापदः      | २८४७       |                                         |            |
| १४-(२) रथक्षोभजा ,,                        | २८४७       |                                         |            |
| १४-(३) अतिचङ्क्रमणजा ,,                    | २८४८       |                                         |            |
| १४-(४) अत्याशनजा ,,                        | २८४८       |                                         |            |

| विषयः                                | पृष्ठाङ्कः | विषयः                               | पृष्ठाङ्कः |
|--------------------------------------|------------|-------------------------------------|------------|
| २०-२१ पूर्वोक्तवस्तीनां गुणः         | २८७२-७३    | २४-३५ एषत्तन्मपटनफलम्               | २८७६       |
| २३ तत्र वज्र्यानि                    | २८७३       | ३६ प्रतिसेस्कर्तुः कर्म             | २८७६       |
| २४-२५ लघ्वायोक्तविषयाः               | २८७३-७४    | ३७-४१ नगरकदम्बलाभ्यां कृतोऽग्नि-    |            |
| २५-३० यापनावस्त्वप्रवृत्तौ कर्तव्यम् | २८७४-७५    | वेशतन्त्रप्रतिसेस्कारः              | २८७६-७७    |
| ३१ यापनावस्तेरतिमेवमे दोषाः          | २८७५       | ४१-४५ पट्टविंशतन्त्रयुक्तिनिर्माणम् | २८७७-७८    |
| ३१-३२ तत्र चिकित्सा                  | २८७५       | ४५-५० तन्त्रयुक्तिज्ञानफलम्         | २८७८-७९    |
| ३३ सिद्धिस्थाननिरुक्तिः              | २८७५-७६    | ५१-५५ एतच्छास्त्रज्ञानफलम्          | २८८०-८१    |







श्रीः  
चरकसंहिता  
चिकित्सास्थानम्

श्री  
चरकसंहिता  
चिकित्सास्थानम्

श्री  
चरकसंहिता  
चिकित्सास्थानम्

The  
Carakasamhita  
CHIKITSASTHANA  
( The Section on  
Therapeutics )

षोडशोऽध्यायः ।

सोऽणभो अध्याय सोलहवाँ

Chapter XVI

पाण्डुरोगचिकित्सितोपक्रमः —

अथातः पाण्डुरोगचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥१॥

इति ह स्माह भगवान्नात्रेयः ॥२॥

अथ अतः हवे अहींशी अब आगे, पाण्डुरोगचिकित्सितम् 'पाण्डुरोगचिकित्सित' नामना अध्यायतु 'पाण्डुरोगचिकित्सित' नामके अध्यायका, व्याख्यास्यामः व्याख्यान करुं व्याख्यान करेंगे ॥ १ ॥

भगवान् भगवान् भगवान्, आत्रेयः आत्रेये आत्रेयने, इति ह आ विषयमा नीये प्रमाणे व इस विषयमें निम्न प्रकारसे ही, जाह स कहेंगे छे कहा है ॥ २ ॥

1. We shall now expound the chapter on 'The Therapeutics of Anemia.'

2. Thus declared the worshipful Atreya.

पाण्डुरोगस्य मेदाः —

पाण्डुरोगाः स्मृताः पञ्च वातपित्तकफैस्त्रयः ।

चतुर्थः सन्निपातेन पञ्चमो भक्षणाम्बुदः ॥३॥

वात-पित्त-कफैः वात, पित्त तथा कफैः वात, पित्त तथा कफैः, त्रयः त्रयः तीन, सन्निपातेन सन्निपातथी सन्निपातसे, चतुर्थः चतुर्थः चौथा, स्मृतः भक्षणाम्बुदः भक्षणाम्बुदः भक्षणाम्बुदः और मिट्टी खानेसे, पञ्चमः पांथमे पांचवाँ, पाण्डुरोगाः ऐम पाण्डुरोग इस तरह पाण्डुरोग, पञ्च पांथ पांच, स्मृताः कहे छे कहे हैं ॥ ३ ॥

3. Anemia is considered to be of five kinds viz., the three due to the provocation of vata, pitta and kapha individually, the fourth due to the provocation of all these three combined, and the fifth due to geophagism (earth-eating).

पाण्डुरोगस्य संप्राप्तिः —

दोषाः पित्तप्रधानास्तु यस्य कुप्यन्ति धातुषु ।  
शैथिल्यं तस्य धातूनां गौरवं चोपजायते ॥४॥

यस्य तु ते रोगीना जिस रोगीके, पित्तप्रधानाः पित्तप्रधान पित्तप्रधान, दोषाः दोषा दोष, धातुषु धातुओंमें धातुओंमें, कुप्यन्ति प्रकुपित थाय छे प्रकुपित होते हैं, तस्य तेना उसकी, धातूनाम् धातुओंकी धातुओंमें, शैथिल्यम् शिथिलता शिथिलता, गौरवम् च

અને ગૌરવ ઓર માગીવન, ઉપજાયતે શ્રાવ્ય છે પૈદા હો જાતે હૈં ॥ ૪ ॥

4. The man in whose body-elements the morbid humors get provoked, with pitta predominating, in that man those body-elements grow flabby and heavy.

તતો વર્ણવલ્લેહા યે ચાન્યેઽધ્યોજસો ગુણાઃ ।  
વ્રજન્તિ ક્ષયમત્યર્થ દોષદૂષ્યપ્રદૂષણાત્ ॥ ૫ ॥

તતઃ ત્યારપછી તદનન્તર, વર્ણ-વલ-લ્લેહાઃ વર્ણ, બલ, સ્નેહ વર્ણ, વલ, સ્નેહ, યે ચ અને ં ઓર જો, ઓજસઃ ઓજની ઓજકે, અન્યે અપિ બીજા પાણુ અન્ય મી, ગુણાઃ ગુણો છે તે ગુણ હૈં વે, દોષ-દૂષ્ય-દોષો તથા દૂષ્ય દોષ તથા દૂષ્યકે, પ્રદૂષણાત્ અત્યંત દૂષિત થવાથી અત્યંત દૂષિત હોનેસે, અત્યર્થમ્ અત્યંત અત્યંત, ક્ષયમ્ ક્ષય ક્ષીણ, વ્રજન્તિ પામે છે હો જાતે હૈં ॥ ૫ ॥

5. Thereafter the complexion, vitality, unctuousness and other qualities of Ojas become excessively diminished as a result of the morbidity of humors as well as of the body-elements.

સોઽલ્પરક્તોઽલ્પમેદસ્કો નિઃસારઃ શિથિલેન્દ્રિયઃ ।  
વૈવર્ણ્યમ્ ભજતે, તસ્ય હેતું શૃણુ સલક્ષણમ્ ॥ ૬ ॥

અલ્પરક્તઃ આથી અલ્પ રોહીવાળો અતઃ અલ્પરક્તવાળા, અલ્પમેદસ્કઃ અલ્પ મેદવાળો અલ્પ મેદવાળા, નિઃસારઃ સારરહિત સારરહિત, શિથિલ-ઇન્દ્રિયઃ અને શિથિલ ઇન્દ્રિયવાળો ઓર શિથિલ ઇન્દ્રિયવાળા, સઃ તે રોગી વહ રોગી, વૈવર્ણ્યમ્ વિવર્ણતાને વિવર્ણતાકો, ભજન્તિ ધારણ કરે છે પાતા હૈ, તસ્ય તે પાંડુરોગનાં ઉપ પાંડુરોગકે, સલક્ષણમ્ લક્ષણસહિત લક્ષણસહિત, હેતુમ્ કારણ હેતુકો, શૃણુ સાંભળો સુનો ॥ ૬ ॥

6. In consequence, the person becomes poor in blood, poor in fat and

devitalized and suffers from asthenia of the sense-organs and discoloration of the skin. Now listen to a description of the etiology and signs and symptoms of anemia.

પાણ્ડુરોગસ્ય નિદાનમ્—

ક્ષારામ્લલવણાત્યુષ્ણવિરુદ્ધાસાત્મ્યભોજનાત્ ।  
નિષ્પાવમાષપિण्याકતિલતૈલનિષેવણાત્ ॥ ૭ ॥  
વિદગ્ધેઽન્ને દિવાસ્વપ્નાદ્યાયામાન્મેથુનાત્તથા ।  
પ્રતિકર્મર્તુવૈષમ્યાદ્દેગાનાં ચ વિધારણાત્ ॥ ૮ ॥  
કામચિન્તાભયક્રોધશોકોપહતચેતસઃ ।  
સસુદીર્ણં યદા પિત્તં હૃદયે સમવસ્થિતમ્ ॥ ૯ ॥  
વાયુના બલિના ક્ષિપ્તં સંપ્રાપ્ય ધમનીર્દશ ।  
પ્રપન્નં કેવલં દેહં ત્વદ્ધ્યાંસાન્તરમાશ્રિતમ્ ॥ ૧૦ ॥  
પ્રદૂષ્ય કફવાતાસુક્ત્વદ્ધ્યાંસાનિ કરોતિ તત્ ।  
પાણ્ડુહારિદ્રહરિતાન્ વર્ણાન્ બહુવિધાંસ્વચ્ચિ ॥ ૧૧ ॥  
સ પાણ્ડુરોગ ઇત્યુક્તઃ

ક્ષાર-ક્ષાર ક્ષાર, અમ્લ-અમ્લ અમ્લ, લવણ-લવણ લવણ, અત્યુષ્ણ-અતિ ઉષ્ણ અત્યંત ઉષ્ણ, વિરુદ્ધ-વિરુદ્ધ વિરુદ્ધવીર્ય, અસાત્મ્ય-અને અસાત્મ્ય ઓર અસાત્મ્ય, ભોજનાત્ ભોજનથી ભોજનસે, નિષ્પાવ-તથા વાલ તથા સૈમ, માષ-અડદ ઉદ્દ, પિण्याક-ખેડા તિલકી સલી, તિલ-તૈલ-અને તલજું તેલ ઓર તિલકે તૈલકે, નિષેવણાત્ સેવન કરવાને લીધે સેવન કરનેકે કારણ, વિદગ્ધે વિદાહ પામેલ વિદગ્ધદ્રુપ, અન્ને અન્નથી અન્નસે, દિવાસ્વપ્નાદ દિવસની નિદ્રાથી દિનમે સોનેસે,

૭ યદા-યથા (વ. ઢ. ફ.)

,, ,, -તથા (ફ.)

૧૦. સંપ્રાપ્ય ધમનીર્દશ-સંપ્રાપ્તિર્દશનિઃ સ્વતઃ (ચ. વ. ફ.)

,, કેવલં દેહં-કેવલે દેહે (ચ. ફ.)

,, આશ્રિતમ્-સંસ્થિતમ્ (ચ.)

૧૧. પ્રદૂષ્ય-પ્રદુષ્ટઃ (ચ.)

,, વાતાસુ-વાતાસુ (ચ.)

,, પાણ્ડુહારિદ્રહરિતાન્ વર્ણાન્-વર્ણાન્હરિતઃપાણ્ડુહારિદ્રપાણ્ડુ (ચ.)

,, ,, ,, -વર્ણાન્હરિતઃપાણ્ડુહારિદ્રપાણ્ડુ (ચ.)

,, વર્ણાન્ બહુવિધાન્-વર્ણાન્ બહુવિધાન્ (ચ.)



न्यायामात् व्यायामाधी व्यायामसे, तथा मैथुनात् मैथुनाधी मैथुनसे, प्रतिकर्मे- वमनादि कर्मा वमनादि कर्म, ऋतु-वैषम्यात् तथा ऋतुनाधी विषमताधी तथा ऋतुकी विषमतासे, वेगानाम् च अने वेगाने और वेगोंके, विधारणात् रोकवाधी रोकनेसे, काम- काम काम, चिन्ता- चिन्ता चिन्ता, भय- भय भय, क्रोध- क्रोध क्रोध, शोक- अने शोकधी और शोकसे, उपहत-चेतसः हृत्प्रायेण चित्तवाणाना आहत मनवाले पुरुषके, हृदये हृदयभां हृदयमें, समवस्थितम् रहेषु स्थित, पित्तम् पित्त पित्त, यदा न्मादे जब, समुदीर्णम् नष्टे छे बदता है, बलिना वायुना त्यारे अणवान वायुवडे तब प्रबल वायुद्वारा, क्षिप्तम् ईडातुं फैका जाता हुआ, तत् ते वह, दश धमनीः दश धमनीओने दस धमनियोंको, संप्राप्य प्राप्त थधने पाकर, केवलम् संपूर्ण समस्त, देहम् देहभां शरीरमें, प्रपञ्चम् प्राप्त थध पहुंचकर, त्वक्-मांस- तेभ्य त्वचा तथा भांसना एवं त्वचा और मांसके, अन्तरम् मध्यभां बीचमें, आश्रितम् रक्षी आश्रित हो कर, कफ-वात- कफ, वात कफ, वात, असूक्-स्वक्-मांसानि रक्षत, त्वचा अने भांसने रक्त, त्वचा और मांसको, प्रवृष्य दूषित करीने दूषित करके, त्वचि त्वचा विशेष त्वचामें, बहुविधान् अनेक प्रकारना अनेक प्रकारके, पाण्डु- पांडु पांडु, हरिश्- पीणा पीले, हरितान् अने हरीला और हरे, वर्णान् वर्णोंने वर्णोंको, करोति उत्पन्न करे छे करता है, सः ते वह, पाण्डुरोगः इति पांडुरोग पांडुरोग, उक्तः उहेवाय छे कहा जाता है ॥ ७-११३ ॥

7-11½. By indulgence in alkaline acid, salt, very hot, antagonistic and unwholesome diet; by habitual indulgence in legumes, black-gram, oil cake and til oil; by resorting to day-sleep, physical exercise and sexual congress while the food is still undigested; by irregular performance of the quinary purificatory procedures; by abnormality of the seasons, and by suppression of natural urges, the pitta which is in the normal condition in the heart

gets provoked as also in persons whose minds have been affected with passion, anxiety, fright, wrath or grief. This pitta, being expelled by the powerful vata and passing into the ten main arteries, spreads through them in the entire body and becomes lodged in the space between the skin and the flesh. Then, by vitiating the kapha, vata, blood, skin and flesh, it produces whitish, yellowish or greenish, or various other discolorations of the skin. This condition is called anemia.

पाण्डुरोगस्य पूर्वरूपम्—

तस्य लिङ्गं भविष्यतः ।

हृदयस्पन्दनं रौक्ष्यं खेदाभावः श्रमस्तथा ॥१२॥

भविष्यतः तस्य भविष्यभां थनार ते रोगने। आगे होनेवाले उस रोगके, हृदयस्पन्दनम् हृदयतुं धडकतुं हृदयकी धडकन, रौक्ष्यम् रक्षता रूक्षता, खेदाभावः पसीने। न थने। पसीना न आना, तथा तथा तथा, श्रमः श्रम श्रम, लिङ्गम् पूर्वरूप छे पूर्वरूप हैं ॥१२॥

12. Its premonitory symptoms are—cardiac palpitation, dryness, anhydrosis and fatigue.

पाण्डुरोगसामान्यलक्षणम्—

संभूतेऽस्मिन् भवेत् सर्वः कर्णक्ष्वेदी हतानलः ।

दुर्बलः सदनोऽन्नद्विद् श्रमश्रमनिपीडितः ॥१३॥

गात्रशूलज्वरश्वासगौरवारुचिमाश्रयः ।

मृदितैरिव गात्रैश्च पीडितोन्मथितैरिव ॥१४॥

शूनाक्षिकूटो हरितः शीर्णलोमा हतप्रभः ।

१३. कर्णक्ष्वेदी-कर्णक्ष्वेदः (थ.)

„ सदनोऽन्नद्विद्-सदनो निद्रा (थ.)

„ „ -सदनोऽन्नद्विद्ः (फ.)

„ सदनो-स्वेदनो (र.)

कोपनः शिशिरद्वेषी निद्रालुः स्त्रीवनोऽल्पवाक् ॥१५॥

पिण्डकोद्वेष्टकटयूरपादरुक् सदनानि च ।

भवन्त्यारोहणायसैर्विशेषश्चास्य वक्ष्यते ॥१६॥

अस्मिन् आ पांडुरोग इसके, संभूते था। पक्षी उत्पन्न होने पर, सर्पः नरः स्त्री मनुष्य सब पुरुष, कर्णद्वेष्टी कानमां अवागवाणा कर्णद्वेष्टयुक्त, इतानलः भेदाशिवाणा नष्ट अग्निवाले, दुर्बलः दुर्धन दुबले, सदनः शिथिल होते, अलद्विष्ट अलद्वेषी अन्नमें द्वेष रखनेवाले, श्रम-श्रम- श्रम अने श्रमभी श्रम तथा श्रमसे, निपीडितः पीडित। पीडित, गात्रशूल- अन्तर्गतां थल अन्नमें शूल, ज्वर- ज्वर- ज्वर, श्वास- श्वास- श्वास, गौरव- शरीरतुं धारणार्थं गुरुता, अरुचिमान् अने अरुचिवाणा और अरुचिबुक्त, भवेत् था। ये होते हैं, मृदितैः इव अने मृदित करेह होय मानो मसले गये हों, पीडित-हन्मथितैः इव च अने अने दुःखावेद तथा हयमथावेद होय तेवा और मानो दवाये और दिलाये गये हों वैसे, गात्रैः गात्रेशी युक्त अवयवोंसे युक्त, भवेत् था। ये होते हैं, क्षुणाक्षिकूटः सुन्दर आंभनां पोषणावाणा अक्षिकूटमें शोकयुक्त, हरितः खीला रंगना हरित वर्णवाले, शीर्णलोभा भरी गये। श्वाशवाणा श्वाके हुए रोंएवाले, हतप्रभः निरतेज नष्ट प्रभावाले, कोपनः क्रोधी क्रोधी, शिशिरद्वेषी ठंडी वस्तुओंना अलुगभावाणा शीतको न चाहनेवाले, निद्रालुः अध- लुशी निद्रालु, स्त्रीवनः अलु थूंकता बारंवार थूकनेवाले, अल्पवाक् अने थोड़ा थोड़ना। था। ये और थोड़ा बोलने- वाले होते हैं, आरोहण-आयासैः तेजोने जेथे अश्वश्री अने श्रमभी उनको चढ़नेसे और परिश्रमसे, पिण्डका- उद्वेष्ट- पिंडीओमां जोटलां पिंडलियोंमें ऐंठन, कटि-ऊरु- पादरुक् अने कमर, साथण तथा पगमां पीडा और कमर, ऊर तथा पैरमें पीडा, सदनानि च तेभ्य था। एवं यकान, भवन्ति था। ये होते हैं, अस्य च हवे आ पांडुरोगनां अब इस पाण्डुरोगके, विशेषः सिन्न सिन्न हेतु तथा लक्षण भिन्न भिन्न हेतु तथा लक्षण, वक्ष्यते कहेवाले कहे जायेंगे ॥ १३-१६ ॥

१५. शिशिरद्वेषी—शिशिराद्वेषी (ब.)

,, अल्पवाक्—अल्पवक् (घ.)

१६. भवन्त्यारोहणायसैः—स्वरोहणारोहणायसैः (घ. घ.)

13-16. When the disease has fully manifested itself, there occur all the following symptoms—the patient becomes afflicted with tinnitus, loss of gastric fire, weakness, asthenia, repugnance for food, fatigue, giddiness, pain in the limbs, fever, dyspnea, heaviness and anorexia. He feels as though his limbs have been kneaded, squeezed and pounded; his eyelids are swollen; he is greenish in body-tinge, his hair falls off; he suffers loss of body-lustre; he becomes irritable, dislikes cold things, develops sleepiness, ptialism, taciturnity, complains of cramps in the legs and pain and flabbiness in the waist, thighs and feet when climbing or exerting himself in other ways. We shall now give a detailed description of this disease.

वातजपाण्डुरोगस्य निदानलक्षणम्—

आहारैरुपचारैश्च वातलैः कुपितोऽनिलः ।

जनयैत्कृष्णपाण्डुत्वं तथा रूक्षारुणाङ्गताम् ॥१७॥

अङ्गमर्दं रुजं तोदं कम्पं पार्श्वशिरोरुजम् ।

वर्चःशोषास्यवैरस्यशोफानाहबलक्षयान् ॥१८॥

वातलैः वातकर वातकारक, आहारैः आहार आहार, उपचारैः च तथा उपचारोंशी और उपचारोंसे, कुपितः प्रकुपित थयेवे। प्रकुपित, अनिलः वायु वायु, कृष्ण- काणाश कालावर्ण, पाण्डुत्वम् पांडुता पांडुता, रूक्ष-अरुण- अङ्गताम् अंगोनी रूक्षता तेभ्य अरुणता अङ्गोंकी रूक्षता एवं अरुणता, अङ्गमर्दम् अंगोंनु अंगमर्द, रुजम् पीडा रुजा, तोदम् थसका तोद, कम्पम् कंप कंपन, पार्श्व-शिरोरुजम् पडमां अने भस्तकमां पीडा पार्श्व और शिरमें पीडा, वर्चःशोष- भण सुखावे। मलकी

१७. कृष्णपाण्डुत्वम्—कृच्छ्रपाण्डुत्वम् (घ. स. घ.)

, अरुणाङ्गताम्—अरुणाभताम् (घ. घ.)

१८. वर्चः—शुक्ल (घ.)

शुष्कता, आस्यवैरस्यश्च सुभन्नी विरसता मुखकी विरसता, श्लोक- सोमे शोक, आनाह- आनाह आनाह, बलक्षयान् अने भणने। क्षय और बलक्षयको, जनयेत् उत्पन्न करे छे उत्पन्न करता है ॥ १७-१८ ॥

17-18. The vata, getting provoked by vata-promoting diet and activity causes the swarthy type of pallor, dry-brown coloration of the limbs, body-ache, pain pricking pain, tremors, pain in the side of the body and in the head, dehydration of feces, dysgeusia, edema, constipation and loss of vitality.

पित्तजपाण्डुरोगस्य निदानलक्षणम्—

पित्तलस्याचितं पित्तं यथोक्तैः स्त्रैः प्रकोपणैः ।  
दूषयित्वा तु रक्तादीन् पाण्डुरोगाय कल्पते ॥१९॥

पित्तलस्य पित्तप्रकृतिवाणानुं पित्तप्रकृतिवाले मनुष्यका, यथोक्तैः पूर्वे उहेक्षां पूर्व कहे हुए, स्त्रैः पोताना अपने, प्रकोपणैः प्रकोप दाना लेतुये। वडे प्रकोपक हेतुओंसे, आचितम् संश्रित यथेक्षुं संचित, पित्तम् पित्त पित्त, रक्तादीन् रक्त वजरेने रक्तादिको दूषयित्वा तु दूषित करीने दूषित करके, पाण्डुरोगाय पाण्डुरोग पाण्डुरोगको, कल्पते उत्पन्न करे छे उत्पन्न करता है ॥१९॥

19. The pitta getting provoked by the particular pitta-provoking factors and getting accumulated in the body of the person of the pitta-habitus, vitiates the blood and other body-elements and causes anemia.

स पीतो हरिताभो वा ज्वरदाहसमन्वितः ।  
तृष्णामूर्च्छापिपासार्तः पीतमूत्रशकृन्नरः ॥२०॥

१९. यथोक्तैः—यथोक्तम् (ब.)

” ” —तथोक्तैः (ब.)

२०. तृष्णा—छर्दि (द. ब.)

” पिपासार्तः—परीतस्तु (ब. ड.)

” ” —परीतस्य (झ.)

स्वेदनः शीतकामश्च न चात्रमभिनन्दति ।

कटुकास्यो न चास्योष्णमुपशेतेऽम्लमेव च ॥२१॥

उद्गारोऽम्लो विदाहश्च विदग्धोऽमेऽस्य जायते ।

दौर्गन्ध्यं भिन्नवर्चस्त्वं दौर्बल्यं तम एव च ॥२२॥

सः नरः ते भुण्थ्य वह मनुष्य पीतः पीणे। पीले वर्णवाला, हरितामः वा अथवा धीधी कृतिवाणे। या हरित आभावाला, ज्वर-दाह-समन्वितः ज्वर तथा दाहशी युक्त ज्वर तथा दाहसे युक्त। तृष्णा- तृषाथी यथेक्षी प्याससे जन्य, मूर्च्छा- भूच्छा मूर्च्छा, पिपासार्तः तथा तृषाथी पीपावाणे। तथा प्याससे पीडित, पीत- पीणा पीले मूत्रशकृन् भूत अने भणवाणे मूत्र और मलवाला, स्वेदनः पसीनावाणे पसीनासे युक्त, शीतकामः च अने ठंडी वस्तुओंनी भूच्छावाणे थाय छे और शीतकी अभिलाषा करनेवाला होता है, अन्नश्च न अभिनन्दति ते अन्ननी भूच्छा करते। नथी वह अन्नको नहीं चाहता कटुक-आस्यः तीक्ष्णः सुभवाणे थाय छे तीते मुखवाला होता है, अस्य च अने तेने और उसको, उष्णम् उष्ण गरम, अम्लम् एव च तथा आटी वस्तु तथा खट्टे पदार्थ, न उपशेते मद्यती नथी अनुकूल नहीं होते, अमे अन्न अन्ने, विदग्धो विदग्ध भूत विदग्ध होने पर, अस्य अने उसको, अम्लः उद्गारः आटा ओडकार आवे छे खट्टी डकार आती हैं, विदाहः च अने विदाह और विदाह, जायते थाय छे होता है, दौर्गन्ध्यम् शरीरभाथी दुर्गन्ध आवे छे देहसे दुर्गन्ध आती है, भिन्नवर्चस्त्वम् अने भणने और मलमेद, दौर्बल्यम् तथा दुर्बलता तथा दुर्बलता होती है, तमः एव च तेभ्य आभे अभावा आवे छे एवं आंखोंके सामने अंधेरा आता है ॥ २०-२२ ॥

20-22. The person becomes yellowish or greenish in tinge, afflicted with fever and burning, has craving for fluids, fainting and thirst; he passes yellowish urine and feces,

२१. शीतकामश्च—शीतकायश्च (थ. ब.)

२२. दौर्गन्ध्यं भिन्नवर्चस्त्वं दौर्बल्यं तम एव च—दौर्बल्यं भिन्नवर्च-

स्त्वं दौर्बल्यं तम एव च (द. ब.)

” भिन्नवर्चस्त्वं—वर्चसो भेदो (थ. क. ब.)

perspires excessively, craves for cold things, does not relish food and has a pungent taste in the mouth. Hot as well as acid things are not homologatory to him; and he suffers from acid eructations and heart-burn due to the misdigestion of food, and also from body-fetor, looseness of stools, prostration and faintness.

श्लेष्मजपाण्डुरोगस्य निदानलक्षणे—

विवृद्धः श्लेष्मलैः श्लेष्मा पाण्डुरोगं स पूर्ववत् ।  
करोति गौरवं तन्द्रां छर्दिं श्वेतावभासताम् ॥२३॥  
प्रसेकं लोमहर्षं च सादं मूर्च्छां भ्रमं क्लमम् ।  
श्वासं कासं तथाऽऽलस्यमरुचिं वाक्स्वरग्रहम् २४॥  
शुक्लमूत्राक्षिवर्चस्त्वं कटुरूक्षोष्णकामताम् ।  
श्वयथुं मधुरास्यत्वमिति पाण्ड्वामयः कफात् ॥२५॥

श्लेष्मलैः ऊँ ३२५२१ आहारविहारोत्थी कफ-  
कारक आहारविहारोत्से, विवृद्धः वधेदे। अत्यन्त बड़ा  
हुआ, सः श्लेष्मा से ऊँ वह कफ, पूर्ववत् पूर्वनी ये  
पूर्ववत्, पाण्डुरोगम् पांडुरोगने पांडुरोगको, गौरवम्  
तथा शरीरनुं भारेपक्षुं तथा मारीपन, तन्द्राम् तन्द्रा  
तन्द्रा, छर्दिम् उल्टी कै, श्वेत-अवभासताम् धीगाश  
देभावी सफेद आभा दिखाई देता, प्रसेकम् दाग पड़नी  
कालाप्रसेक, लोमहर्षम् इंचाईं उल्लां थवां रोमहर्षं,  
सादम् शिथिलता डीलापन, मूर्च्छाम् भूँछां मूर्च्छा,  
भ्रमम् भ्रम चकर, क्लमम् च भाउ थकान, श्वासम्  
श्वास श्वास, कासम् उधरस खांसी, तथा आलस्यम्  
आलस्य आलस्य, अरुचिम् अरुचि अरुचि, वाक्-स्वर-  
वाधुः अने २५२ वाणी और स्वरका, ग्रहम् पडडावां  
बैठ जाना, शुक्ल-मूत्र-अक्षि-वर्चस्त्वम् मूत्र, नेत्र अने  
भूँछे सोई थवां मूत्र, नेत्र और मलका सफेद होना,  
कटुरूक्ष-उष्ण- कामताम् तीप्पा, रूक्ष अने उष्ण

२४. श्वासं कासं-श्वासकासौ (ब.)

२५. शुक्लमूत्राक्षिवर्चस्त्वं-मूत्राक्षिवर्चसां शौक्यम्

(ग. घ. द. फ. व.)

,, मधुरास्यत्वमिति-कवणास्यत्वमिति (ब. फ. व.)

पक्षार्थेनी ४२५३ थवी तीते, रूक्ष और उष्णमें प्रीति,  
श्वयथुम् सोअ शोक, मधुर-आस्यत्वम् च अने सुअनी  
मधुरता ये वक्षणे।ने मुँहकी मीठास इन लक्षणोंको,  
करोति उत्पन्न करे छे उत्पन्न करता है, इति आ यह.  
कफात् ऊँथी थयेदे। कफजनित, पाण्ड्वामयः पांडुरोग  
छे पांडुरोग है ॥ २३-२५ ॥

23-25. Similarly, the kapha getting increased by kapha-promoting factors, causes anemia having the following symptoms—heaviness, torpor, vomiting, sallow complexion, ptyalism, horripilation, asthenia, fainting, giddiness, exhaustion, dyspnea, cough, lethargy, anorexia, loss of speech and voice, whiteness of urine, eyes and feces; craving for pungent, dry and hot things; edema and sweet taste in the mouth. This is the anemia due to kapha.

साक्षिपातिकपाण्डुरोगस्य निदानलक्षणे—

सर्वात्रसेविनः सर्वे दुष्टा दोषास्त्रिदोषजम् ।  
त्रिदोषलिं कुर्वन्ति पाण्डुरोगं सुदुःसहम् ॥२६॥  
सर्वात्र-सधणां अन्ने।नुं सब प्रकारके अन्न,  
सेविनः सेवन ३२५२२१ सेवन करनेवाले पुरुषके,  
दुष्टाः दूषित थयेला दूषित हुए, सर्वे दोषाः सधणा  
दोषो सब दोष, त्रिदोषजम् त्रिदोषो दोषोथी थयेला  
त्रिदोषजनित, त्रिदोष-अने त्रिदोषो।ने और तीनों  
दोषोंके, लिङ्गम् वक्षणे।ने लक्षणोंसे युक्त, सुदुःसहम्  
अत्यन्त दुःसह अत्यन्त दुःसह, पाण्डुरोगम् पांडुरोगने  
पांडुरोगको, कुर्वन्ति उत्पन्न करे छे उत्पन्न करते हैं ॥२६॥

26. In a person who indulges in all varieties of food, all the three humors get simultaneously provoked and cause a very severe type of anemia having a syndrome of the symptoms of tridiscordance.

મૃજપાણ્ડુરોગસ્ય વિદાનલક્ષણે—

મૃત્તિકાદનશીલસ્ય કુપ્યત્યન્યતમો મલઃ ।  
કષાયા મારુતં, પિત્તમૂષરા, મધુરા કફમ્ ॥૨૭॥  
કોપયેન્મૃદ્સાદીશ્ચ રૌક્ષ્યાદ્રુકં વિરુક્ષયેત્ ।  
પૂરયત્યવિપકૈવ સ્ત્રોતાંસિ નિરુણદ્ધિ ચ ॥૨૮॥  
ઈન્દ્રિયાણાં બલં હત્વા તેજો વીર્યૌજસી તથા ।  
પાણ્ડુરોગં કરોત્યાશુ બલવર્ણાગ્નિનાશનમ્ ॥૨૯॥  
શૂનગણ્ડાશ્લિકૂટઘ્રૂઃ શૂનપાન્નાભિમેહનઃ ।  
ક્રિમિકોષ્ઠોઽતિસાર્યેત મલં સાસૃક્ કફાન્વિતમ્ ૩૦

મૃત્તિકા-અદન-શીલસ્ય માટીનું બક્ષણ કરવાના સ્વભાવવાળા દરદીનેા મિટ્ટી ખાનેકી આદતવાલે રોગીકા, અન્યતમઃ કોઈએક કોઈ એક, મલઃ દોષ દોષ, કુપ્યતિ કુપિત થામ છે કુપિત હોતા હૈ, કષાયા મૃદ કષાય રસવાળી માટી કસૈલી મિટ્ટી, મારુતમ્ બાધુને વાયુકો, કષરા ખારા રસવાળી માટી ક્ષાર રસવાળી મિટ્ટી, પિત્તમ્ પિત્તને પિત્તકો, મધુરા અને મધુર રસવાળી માટી ઓર મીઠી મિટ્ટી, કફમ્ કફને કફકો, કોપયેત્ પ્રકુપિત કરે છે પ્રકુપિત કરતી હૈ, રૌક્ષ્યાત્ તે રૂક્ષ હોવાથી વહ રૂક્ષતાકે કારણ, રસાદીન્ રસ વગેરેને રસાદિકોંકો, સુક્તમ્ ચ અને ખાધેલા ખેરાકને ઓર ઓજનકો, વિરુક્ષયેત્ રૂક્ષ કરે છે રૂક્ષ કર દેતી હૈ, અવિપક્વા એવ અને પચ્યા વિનાજ ઓર ધિના પકે હી, સ્ત્રોતાંસિ સ્ત્રોતોને સ્ત્રોતોંકો, પૂરયતિ ભરી દે છે ભર દેતી હૈ, નિરુણદ્ધિ ચ તથા બંધ પશુ કરી દે છે તથા રોક સી દેતી હૈ, ઇન્દ્રિયાણામ્ તેમજ ઇન્દ્રિયોનાં એવં ઇન્દ્રિયોંકે, બલમ્ બળ શક્તિ, તેજઃ તેજ, તથા તથા તથા, વીર્ય-ઓજસી વીર્ય અને ઓજને વીર્ય ઓર ઓજકો, હત્વા હણીને નષ્ટ કરકે, બલ-વર્ણ-અગ્નિ-નાશનમ્ બલ, વર્ણ અને અગ્નિનેા નાશ કરનારા બલ, વર્ણ ઓર અગ્નિકે નાશક, પાણ્ડુરોગમ્ પાંડુરોગને પાંડુરોગકો,

૨૮. રૌક્ષ્યાત્ સુક્ત-રૌક્ષ્યાત્ સુક્તા (ક.)

,, સુક્તમ્-અક્તમ્ (ક.)

,, વિરુક્ષયેત્-વિરુક્ષય ચ (ક.)

૨૯. બલં હત્વા તેજો વીર્યૌજસી તથા-બલં તેજ ઓજો વીર્ય-નિહત્ય ચ (ક. ધ. ક્ષ. ક.)

,, તેજો વીર્યૌજસી તથા-તેજો વીર્યૌજસાં તથા (પ. ધ.)

૩૦. શૂનપાન્નાભિમેહનઃ-નાભિપાદાભિમેહનઃ (ક. ધ. જ.)

બાણુ શીઘ્ર શીઘ્ર, કરોતિ ઉત્પન્ન કરે છે ઉત્પન્ન કરતી હૈ, શૂન-ગણ્ડ-અશ્લિકૂટ-ઘ્રૂઃ સુજેલાં ગાલ, અખનાં પેાપચાં અને ભમરવાળો શોથયુક્ત ગંડચલ, અશ્લિકૂટ ઓર મોંઢવાલા, શૂનપાન્-નાભિ-મેહનઃ સુજેલાં પગ, નાભિ અને મૂત્રેન્દ્રિયવાળો શોથયુક્ત પૈર, નાભિપ્રદેશ ઓર શિશ્રવાલા, ક્રિમિકોષ્ઠઃ તથા ક્રિમિયુક્ત કોષ્ઠવાળો રોગી તથા પેટમેં ક્રિમિવાલા રોગી, સાસૃક્ રક્તયુક્ત રક્તયુક્ત, કફાન્વિતમ્ તેમજ કફયુક્ત એવં કફયુક્ત, મલમ્ મલનેા મલકો, અતિસાર્યેત અતિ પ્રમાણમાં ત્યાગ કરે છે અત્યંત ત્યાગતા હૈ ॥ ૨૭-૩૦ ॥

27-30. In one who is addicted to earth-eating, any of the three humors may become provoked. Earth of the astringent taste provokes vata; that of saltish taste provokes pitta and that of sweet taste provokes kapha. Earth when eaten, dehydrates the nutrient fluid and the other body-elements on account of its quality of dryness, and, not being digested in the body, it (the earth) fills the body-channels and causes obstruction. Then, impairing tone of the senses, secretory system, lustre, and vital essence, it causes anemia and soon diminishes vitality, complexion and the gastric fire. The patient develops edema of the cheek, eyelid and brow; his feet, navel and genitals become edematous; he develops intestinal worms and diarrhea and his stools are mixed with mucus and blood.

પાણ્ડુરોગસ્યાસાધ્યલક્ષણમ્—

પાણ્ડુરોગશ્ચિરોત્પન્નઃ સ્તરીભૂતો ન સિષ્યતિ ।  
કાલપ્રકર્ષાચ્છૂનો ના યશ્ચ પીતાનિ પશ્યતિ ॥૩૧॥

૩૧. કાલપ્રકર્ષાચ્છૂનો ના-કાલપ્રકર્ષાચ્છૂનાનાં (ધ.)

,, ,, ,, -કાલપ્રકર્ષાચ્છૂનાનાં (ધ. ધ.)

बद्धाल्पविदकं सकफं हरितं योऽतिस्वार्यते ।  
दीनः श्वेतातिदिग्धाङ्गश्छर्दिमूर्च्छातृषार्दितः ॥३२॥  
स नास्त्यसृक्क्षयाद्यश्च पाण्डुः श्वेतत्वमामुयात् ।  
इति पञ्चविधस्योक्तं पाण्डुरोगस्य लक्षणम् ॥३३॥

चिरोत्पन्नः दाया वभतथी थथेदा चिरकालीन,  
खरीभूतः अने अत्यंत रक्ष अत्यंत रुक्ष हुआ,  
पाण्डुरोगः पांडुरोग पांडुरोग, न स्थिति साध्य नथी  
साध्य नहीं है, काल- प्रकर्षात् अने धण्डो वभत थथ  
जवाली और दीर्घकालके कारण, शूनः सोजवाणी  
शोफयुक्त, यः च ने पांडुरोगी जो पांडुरोगी, पीतालि  
पद्मार्थोने पीला द्रव्योको पीले वर्णके, पश्यति शुभे  
छे ते पक्ष साध्य नथी देखता है वह भी साध्य  
नहीं है, यः ने पांडुरोगीने जिस पांडुरोगीको, बद्ध-  
अल्प- विदकम् अधिक अल्प भणवाणी बंधे हुए  
अल्प मलसे युक्त, सकफम् कड़ाणी कफसे युक्त, हरितम्  
तथा धीरे तथा हरे वर्णके, अतिसार्यते अतिसार  
थाय छे बस्त अत्यंत मात्रामें होते हैं, दीनः ने  
पांडुरोगी दीनतावाणी जो पांडुरोगी दीनतावाला, श्वेत-  
अतिदिग्धाङ्गः अतिशय सङ्गे रंगथी धीपेदा होय जेवां  
अंगवाणी अत्यंत श्वेत वर्णसे लिप्तके सङ्गा शरीरवाला,  
छर्दि-मूर्च्छा-तृषार्दितः उल्टी, भूच्छा अने तृषाथी  
पीडिता होय छे कै, मूर्च्छा और प्याससे पीडित होता  
है, यः च पाण्डुः अने ने पांडुरोगी और जो पांडुरोगी,  
असृक्- क्षयात् रक्तने क्षय थाया रक्तक्षयसे, श्वेतत्वम्  
धाणाशने श्वेताको, आप्नुयात् प्राप्त थाय छे प्राप्त  
होता है, सः ते वह, न अस्ति अथतो नथी नहीं बचता,  
इति आ प्रमाणे इस तरह, पञ्चविधस्य पांच प्रकारके,  
पांच प्रकारके, पाण्डुरोगस्य पांडुरोगना पांडुरोगके,  
लक्षणम् लक्षण लक्षण, उक्तम् उक्ता छे कहे गये  
हैं ॥ ३१-३३ ॥

31-33. The patient in whom the  
anemia has been of long duration and  
has led to excessive dehydration of  
the body, or the patient who has

३२. छर्दिमूर्च्छातृषार्दितः—छर्दिमूर्च्छातृषान्वितः (ड.)

„ तृषार्दितः—तृषान्वितः (ड.)

developed edema on account of the  
long duration of the disease and whose  
vision has become yellow; or the  
patient who passes frequent, yellow,  
hardened and scanty stools mixed  
with mucus; or the patient who has  
become depressed in spirit and pale  
and whose body has become excessively  
clammy and who is afflicted with  
vomiting, fainting and thirst; or the  
patient, who, in consequence of loss  
of blood, has developed pronounced  
pallor—all these types of anemia do  
not get cured. Thus have been described  
the signs and symptoms of the five  
varieties of anemia.

कामलायाः निदानं लक्षणं च—

पाण्डुरोगी तु योऽत्यर्थं पित्तलानि निषेवते ।  
तस्य पित्तमसृग्मांसं दग्ध्वा रोगाय कल्पते ॥३४॥

यः तु ने जो, पाण्डुरोगी पांडुरोगी,  
पित्तलानि (पित्तकारक पदार्थोंका,  
अत्यर्थम् अत्यन्त अत्यन्त, निषेवते सेवन करे छे सेवन  
करता है, तस्य तेनुं उसका, पित्तम् पित्त पित्त, असृक्-  
रक्त रक्त, मांसम् अने मांसने और मांसको, दग्ध्वा  
आणीने जलाकर, रोगाय रोगने रोगका, कल्पते उत्पन्न  
करे छे कारण बनता है ॥ ३४ ॥

34. If the anemic person indulges  
inordinately in pitta-promoting things,  
the pitta in him gets aggravated and  
consuming the blood and flesh in his  
body, leads to further disease.

हारिद्रनेत्रः स भृशं हारिद्रत्वञ्मखाननः ।  
रक्तपीतशङ्कुमूत्रो मेकवर्णो हतेन्द्रियः ॥३५॥

३५. स भृशं—बहुशं (ड.)

„ हारिद्रत्वञ्मखाननः—हारिद्रत्वञ्मखो नरः (ड.)



दाहाविपाकदौर्बल्यसदनारुचिकर्षितः ।

कामला बहुपित्तैषा कोष्ठशाखाश्रया मता ॥३६॥  
कालान्तरात् खरीभूता कृच्छ्रा स्यात् कुम्भकामला ।

सः शृङ्गात् ते अत्यन्तं वह अत्यन्त, हारिद्रनेत्रः  
हृण्दर नेत्रा रंगना नेत्रवाणी हल्दीके समान वर्णयुक्त  
नेत्रवाला, हारिद्र-स्वक्-नख-आमनः हृण्दर नेत्रा रंगना  
त्वचा नख और मुँहवाला, रक्त-पीत रता-पीणा लाल-  
पीले, शकृत्-मूत्रः भण-भूतवाणी मल और मूत्रवाला  
मेकवर्णः देडका नेत्रा रंगवाणी मेंढकसे रंगवाला,  
हतेन्द्रियः हृष्टाध गथेदी छन्दिरवाणी नष्ट इन्द्रियोंवाला,  
दाह- अने दाह और दाह, अविपाक- अपचन  
दौर्बल्य- दुर्बलता दुर्बलता, सदन- शिथिलता शैथिल्य,  
अरुचि- तथा अरुचिशी तथा अरुचिसे, कर्षितः क्षीण  
आय छे कृश होता है, बहुपित्ता अतिशय पित्तवाणी  
अति पित्तयुक्त, कोष्ठ-शाखा-आश्रया अने डोठे तथा  
शाखाओंना आश्रय करी रहेछ कोष्ठ तथा शाखामे  
आश्रयवाली, एषा आ व्याधि इस व्याधिको, कामला  
कभणी कामला, मता कहेवाय छे कहते हैं, कालान्तरात्  
केटवोड काण जवायी कुछ कालके बाद, खरीभूता  
रक्ष भता रूक्ष होने पर, कृच्छ्रा ते व्याधि कष्टसाध्य  
उस व्याधिको कृच्छ्रसाध्य, कुम्भकामला कुम्भकामला  
कुम्भकामला, स्यात् कहेवाय छे कहते हैं ॥ ३५-३६ ॥

35-36. Thus, his eyes become extremely yellow and likewise his skin, nails and face become yellow; he passes urine and feces of reddish or yellowish color; his skin-color is yellow like that of a frog; his senses are impaired and he is afflicted with burning, mis-digestion, prostration, asthenia and anorexia. This condition known as Kamala or jaundice is caused by the excess of pitta and its seats of affection are both the gastro-intestinal

३६. बहुपित्तैषा-बहुपित्तैषा (य.)

tract and the peripheral tissues. In course of time, the jaundice becomes deep-seated and formidable; this is called Kumbha-jaundice.

कुम्भकामलायाः लक्षणम्—

कृष्णपीतशकुन्मूत्रो भृशं शून्यमानवः ॥३७॥  
सरक्ताक्षिमुखच्छर्दिविण्मूत्रो यश्च ताम्यति ।  
दाहारुचितृषाजाहतन्द्रामोहसमन्वितः ॥३८॥  
नष्टाग्निसंज्ञः क्षिप्रं हि कामलावान् विपद्यते ।

यः मानवः जे भृशं जो भृश, कृष्ण-पीत-शकुन्  
तथा पीणा काले तथा पीले, शकृत्-मूत्रः भण तेभण  
भूतवाणी मल एवं मूत्रवाणी, शृङ्गात् अत्यन्त अत्यन्त,  
शूनः च सोभवाणी शोकयुक्त, सरक्त- तथा दादाश-  
वाणी तथा लालमांस युक्त, अक्षि- नेत्र आँख, मुख-  
मुण मुँह, छर्दि- डिल्ली के, विण्मूत्रः च अने भणभूत-  
वाणी यधने और मलमूत्रवाला होकर, ताम्यति  
भेद पाभते होय छे खिल होता है, दाह-अरुचि- दाह-  
अरुचि दाह-अरुचि तृषा- तथा प्यास, आनाह-  
आनाह आनाह, तन्द्रा- तन्द्रा तन्द्रा, मोह- अने  
भूतवाणी और मोहसे, समन्वित- युक्त होय छे युक्त होता है,  
नष्टाग्निसंज्ञः अने नेत्रा अग्नि तेभण मान नष्ट  
थयेव होय छे और जिसके अग्नि एवं संज्ञा नष्ट हुए हैं,  
कामलावान् ते कभणाने रोगी वह पीलियावाला पुरुष,  
क्षिप्रम् हि शीघ्र न शीघ्र ही, विपद्यते भरेख पाभे छे  
मृत्यु पाता है ॥ ३७-३८ ॥

37-38. The patient passes feces and urine of dark-yellow color and develops severe edema; his eyes and face appear red and his vomit, feces and urine are tinged with blood; he has tremors; he is afflicted with burning, anorexia, thirst, constipation,

३७. कृष्णपीतशकुन्मूत्रः—कृष्णमूत्रशकुन्मूत्रः (य.)

३८. तृषानाह-तृषानाह (य.)

३८. नष्टाग्निसंज्ञः क्षिप्रं हि कामलावान् विपद्यते—नष्टाग्निसंज्ञः  
विसंज्ञा निर्यावाश्च च कामला (ह.)

torpor and faintness; he suffers from loss of the gastric fire as well as of consciousness; such a subject of jaundice will soon die.

साध्यानामितरेषां तु प्रवक्ष्यामि चिकित्सितम् ॥३९॥

इतरेषाम् पील्य अन्य, साध्यानाम् साध्य पांडुरोग तथा कामलायी साध्य पांडुरोग तथा कामलायी, तु ते। तो, चिकित्सितम् चिकित्सा चिकित्सा, प्रवक्ष्यामि ६० उल्लिखितं वक्तव्यम् ॥ ३९ ॥

39. Now we shall describe the treatment of the remaining conditions which are curable

कामलापाण्डुरोगयोः संशोधनम्—

तत्र पाण्ड्यामयी क्षिण्णस्तीक्ष्णैरुर्ध्वानुलोमिकैः ।  
संशोध्यो मृदुभिस्तैः कामली तु विरेचनैः ॥४०॥

तत्र तेभ्यो उनमं, पाण्ड्यामयी पांडुरोगीका, क्षिण्णः स्नेहन करके, तीक्ष्णैः तीक्ष्ण, ऊर्ध्व-आनुलोमिकैः वमन तथा विरेचन वउ वमन तथा विरेचनसे, संशोध्यः शोधन करवुं ओधये शोधन करना चाहिए, कामली तु अने उभ-याना रोगीनुं ते। और पीलियावाले रोगीका तो, मृदुभिः मृदु, तैः तथा तिक्त रसयुक्त तथा तिक्त, विरेचनैः विरेचने। वउ शोधन करवुं ओधये विरेचनसे शोधन करना चाहिए ॥ ४० ॥

40. The patient suffering from anemía should be made to undergo oleation procedure and then be cleansed with strong emesis and purgation. The patient suffering from jaundice should be cleansed with mild and bitter purgative remedies.

३९. प्रवक्ष्यामि चिकित्सितम्—मेघजं संप्रवक्ष्यामि (क.)

„ „ „ —मेघजं संप्रवक्ष्यते (ब. फ.)

४०. संशोध्यो—शोध्यः स्यात् (ब.)

„ कामली तु—कामलायान् (क.)

कामलापाण्डुरोगयोः अन्नपानम्—

ताभ्यां संशुद्धकोष्ठाभ्यां पथ्यान्नन्नानि दापयेत् ।  
शालीन् सयवगोधूमान् पुराणान् यूषसंहितान् ॥४१॥  
मुद्राढकीमसूरैश्च जाङ्गलैश्च रसैर्हितैः ।

संशुद्ध- शुद्ध अथवा शुद्ध द्रव्य, काष्ठाभ्याम् काष्ठावाणा कोष्ठवाते, ताभ्याम् ते अन्ने रोगीने उन दोनों रोगियोंके, पथ्यानि अन्नानि पथ्य भोजन पथ्य भोजन, दापयेत् कराववां ओधये कराना चाहिए, यूषसंहितान् जेभके यूषोनी साथे जैसे यूषोंके साथ, पुराणान् जूना पुराने, सयव-गोधूमान् जव, धुईं जौ, गेहूं, शालीन् के शास्त्रियोंआने। प्रयोग कराववां ओधये या शालि-चावलका प्रयोग कराना चाहिए, हितैः अने हितकारी और हितकर, मुद्रा- भग मूंग, आढकी- पुवर अरहर, मसूरैः च तथा मसूर ऐओना यूषोनी साथे तथा मसूर इनके यूषोंके साथ, जाङ्गलैः अथवा हितकर जंगल पशुपक्षियोंके, रसैः मांसरसोनी साथे पथ्य भोजनका प्रयोग कराना चाहिए ॥ ४१ ॥

41-42. After the alimentary system has thus been cleansed by these procedures, he should be given wholesome food, namely, old rice, barley or wheat either with soup prepared of green gram, pigeon-pea or lentils, or with wholesome meat-juice of jangala creatures.

कामलापाण्डुरोगयोः स्नेहनम्—

यथादोषं विशिष्टं च तयोर्मैषज्यमाचरेत् ॥४२॥  
पञ्चगव्यं महातिकं कल्याणकमथापि वा ।  
स्नेहनार्थं घृतं दद्यात् कामलापाण्डुरोगिणे ॥४३॥

तयोः च अवे ते अन्नेनुं उन दोनोंको, यथादोषम् दोष प्रमाणे दोषके अनुसार, विशिष्टम् विशेष प्रकारनुं

४१. शालीन् सयवगोधूमान् पुराणान् यूषसंहितान्—शालीयो यवगोधूमाः पुराणाः स्युषसंहिताः (क.)

„ यूषसंहितान्—यूषसंहिताम् (फ. ड थ. व.)

४२. यथादोषं विशिष्टं च —यथादोषविशेषं च (क. ब.)



विषिष्ट, भैषज्यम् औषध औषध, आचरेत् उरुं देवे कामला-पाण्डुरोगिणे कुम्भोऽने पाण्डुरोगिना हस्तीने पीलियावाले और पाण्डुरोगीको, स्नेहनार्थम् स्नेहन भाटे स्नेहनार्थ, पञ्चगव्यम् पञ्चगव्य पञ्चगव्य, महातिक्तम् महातिक्त महातिक्त, अथ अपि वा अथवा वा, कल्याणकम् कल्याणक कल्याणक, घृतम् घृत घृत, दद्यात् आप्तुं देवे ॥ ४२-४३ ॥

42-43. According to the particular morbidity in each of these two conditions, medication should be carried out. The medicated ghees viz., Panchagavya (Chi. chap. 10), Maha-tikta (Chi. chap. 7) or Kalyanaka (Chi. chap. 9) may be given for oleation purposes to the patient suffering from jaundice and anemia.

दाडिमाद्यं घृतम्—

दाडिमात् कुडवो घान्यात् कुडवार्धं पलं पलम् ।  
चित्रकारुक्कुवेराश्च पिप्पल्यष्टमिका तथा ॥४४॥  
तैः कर्कैर्विंशतिपलं घृतस्य सलिलाढके ।  
सिद्धं हृत्पाण्डुगुल्मार्शः स्त्रीहवातकफार्तिनुत् ॥४५॥  
दीपनं श्वासकासघ्नं मूढवाते च शस्यते ।  
दुःखप्रसविनीनां च वन्ध्यानां चैव गर्भदम् ॥४६॥  
इति दाडिमाद्यं घृतम् ।

दाडिमात् दाडिमेना २५ अनारके रसका कुडवः १६ तोला एक कुडव, घान्यात् धातु अनियाका, कुडवार्धम् ८ तोला आधा कुडव, चित्रकारु चित्रक, चित्रकारु च तथा आडु और आर्द्रकका, पलम् पलम् आर आर तोला एक एक पल, तथा तथा तथा, पिप्पली पीपरी पिप्पली, अष्टमिका २ तोला दो कर्क; तैः कर्कैः ओमेना ३६ व ३ उनके कर्कोसे, सलिलाढके पाण्डु २५ तोलाभा एक आढक जलमें, सिद्धम् पडावेहुं सिद्ध किया गया, घृतस्य विंशतिपलम् ८० तोला धी

बीस पल घृत, हृत्- हृदयरोग हृदोष, पाण्डु- पाण्डु पाण्डु, गुल्म- गुल्म गुल्म, अर्शः शरस अर्श, स्त्रीह- स्त्रीह स्त्रीह, वातकफार्तिनुत् अने वात तथा कफ पीडा अने शरीर के वात और कफ पीडाको नाश करनेवाला है, दीपनम् दीपन छे दीपन है, श्वास-कासघ्नम् अने श्वास तथा कफ नाश करनेवाला है, मूढवाते च मूढवातवाणो मूढवातवाले, दुःखप्रसविनीनाम् च तथा ३५ असवनाली स्त्रीओने तथा कठिन प्रसूतिवाली स्त्रियोंके लिए, शस्यते हितकारी छे हितकारी है, वन्ध्यानाम् च एव तेभ्य वन्ध्याओने पण्ड एवं वन्ध्या स्त्रियोंकोभी, गर्भदम् गर्भ आपनानुं छे गर्भ देनेवाला है ॥४४-४६॥ इति आ यद्, दाडिमाद्यं दाडिमाद्य दाडिमाद्य, घृतम् घृत छे घृत है।

44-46. The medicated ghee prepared of eighty tolas of cow's ghee, in 256 tolas of water with the paste of 16 tolas of pomegranate, 8 tolas of coriander, 4 tolas of white-flowered leadwort, 4 tolas of dry ginger and 2 tolas of long pepper—this ghee is curative of gastric disorders, anemia, gulma, piles, splenic disorder and disorders due to vata and kapha. It is digestive-stimulant, curative of dyspnea and cough; it is recommended in claudication of vata and in difficult labour (dystocia); it endows fertility on sterile women. Thus has been described the Compound Pomegranate-ghee.

कटुकाद्यं घृतम्—

कटुका रोहिणी मुस्तं हरिद्रे वत्सकात् फलम् ।  
पटोलं चम्पकं मूर्वा त्रायमाणा दुरालभा ॥४७॥  
कृष्णा पर्पटको निम्बो भूनिम्बो देवदारु च ।  
तैः कार्ष्णिकैर्घृतप्रस्थः सिद्धः क्षीरचतुर्गुणः ॥४८॥

४८. कृष्णा पर्पटको....क्षीरचतुर्गुणः॥—सपिप्पलीपर्पटकमुनिम्बो देवदारु च । पिष्टाक्षमाणस्तैः सर्पिः प्रस्थं क्षीरकके पचेत् ॥ (ब. च. द. क.)

४५. गुल्मार्शः—रोगार्शः (ख. ड. व.)

४६. चैव गर्भदम्—च घृतप्रदम् (ग. घ. क. व.)



પાંડુરોગ, શોકવિદ અને સીખને બંને છે. ઓર શોકો જીતનેવાલા છે ॥ ૫૧ ॥ इति आ. यह, दन्तीघृतम् इत्थीधृत છે. દન્તીધૃત છે ॥

51. Prepare a medicated ghee taking 64 tolas of ghee and sixteen tolas of the decoction of the red physic nut and adding to it the paste of green fruits of red physic nut. This is curative of splenic disorders, anemia and edema. Thus has been described the Red Physic-nut-ghee.

દ્રાક્ષાઘૃતમ્ —

પુરાણસર્પિષઃ પ્રસ્થો દ્રાક્ષાર્ધપ્રસ્થસાધિતઃ ।

કામલાગુલ્મપાણ્ડુતિજ્વરમેહોદરાપહઃ ॥ ૫૨ ॥

इति द्राक्षाघृतम् ।

દ્રાક્ષા- દ્રાક્ષ મુનક્ષાકે, અર્ધપ્રસ્થ- ૩૨ તોલાથી આવે પ્રસ્થસે, સાધિતઃ સિદ્ધ કરેલ સિદ્ધ, પુરાણસર્પિષઃ પ્રસ્થઃ ૬૪ તોલા જૂનું ધૃત એક પ્રસ્થ પુરાણા થી, કામલા- કમળો. પીલિયા, ગુલ્મ- ગુલ્મ ગુલ્મ, પાણ્ડુતિ- પાંડુરોગ પાંડુરોગ, જ્વર- જ્વર જ્વર, મેહ- મેહ પ્રમેહ, ઉદરાપહઃ અને ઉદરરોગનો નાશ કરે છે ઓર ઉદરરોગનો હટાનેવાલા છે ॥ ૫૨ ॥ इति आ. यह, द्राक्षाघृतम् द्राक्षाघृत છે. દ્રાક્ષાઘૃત છે ॥

52. The medicated ghee, made from 64 tolas of old ghee cooked with 32 tolas of the paste of grapes, is curative of jaundice, gulma, anemia, fever, urinary disorders and abdominal affections. Thus has been described the Grape-ghee.

૫૨. કામલાગુલ્મપાણ્ડુતિજ્વરમેહોદરાપહઃ -- કામલાજ્વરપાણ્ડુતિ-

ગુલ્મમેહોદરાપહઃ (ગ.)

કામલાગુલ્મપાણ્ડુતિજ્વરમેહોદરાપહઃ (ગ.)

हरिद्रादिघृतम्—

हरिद्रात्रिफलाचिम्बबलामधुकसाधितम् ।

सक्षीरं माहिषं सर्पिः कामलाहरमुत्तमम् ॥ ૫૩ ॥

इति हरिद्रादिघृतम् ।

હરિદ્રા- હળદર હલ્દી, ત્રિફલા- ત્રિફળા ત્રિફળા, ચિમ્બ- લીમડો નીમ, બલા બલા, મધુક-સાધિતમ્ અને બેડીમધથી સિદ્ધ કરેલ ઓર મુલહરીસે સિદ્ધ, સક્ષીરમ્ દૂધમિત દૂધકે સાથ, માહિષમ્ બેસનું મૈસકા, સર્પિઃ ધૃત થી, ઉત્તમમ્ કામલાહરમ્ કમળાનો નાશ કરવામાં ઉત્તમ છે પીલિયાકા નાશ કરનેમ્ ઉત્તમ છે ॥ ૫૩ ॥ इति आ. यह, हरिद्रादिघृतम् हरिद्रादिघृत છે. હરિદ્રાદિધૃત છે ॥

53. The medicated ghee prepared from buffalo's ghee cooked with cow's milk, turmeric, the three myrobalans, neem, heart-leaved sida and liquorice is an excellent cure for jaundice. Thus has been described the Compound Turmeric-ghee.

અન્યો ઘૃતયોગૌ—

ગોમૂત્રે દ્વિગુણે દાઘ્યાઃ કલ્કાક્ષદ્રવસાધિતઃ ।

દાઘ્યાઃ પચ્ચપલકાયે કલ્કે કાલીયકે પરઃ ॥ ૫૪ ॥

माहिषात् सर्पिषः प्रस्थः पूर्वः पूर्वं परे परः ।

દ્વિગુણે બમણા દત્તે, ગોમૂત્રે ગોમૂત્રમાં ગોમૂત્રમે, દાઘ્યાઃ દારુહળદરના દારુહલ્દીકે, કલ્કાક્ષદ્રવ- ૨ તોલા કરેલથી દો કર્ણ કલ્કસે, સાધિતઃ સિદ્ધ કરેલું બેસનું ૬૪ તોલા થી એ પહેલું થી સાધિત મૈસકા એક પ્રસ્થ થી. આ પહેલા થી, દાઘ્યાઃ તથા દારુહળદરના ઓર દારુહલ્દીકે, પચ્ચપલકાયે ૨૦ તોલા કલામાં પાંચ પલ કાયમે, કાલીયકે પીળા અદનના કાલીયકે, કલ્કે કરેલથી સિદ્ધ કરેલું કલ્કસે સાધિત, માહિષાત્ બેસનું મૈસકા, સર્પિષઃ પ્રસ્થઃ ૬૪ તોલા થી એક પ્રસ્થ થી,

૫૩. કામલાહર-કામલાપહ (ગ.)

૫૪. દાઘ્યાઃ કલ્કાક્ષ-દાર્વીકલ્કાક્ષ (ગ. બ. ગ.)

૫૫. માહિષાત્ સર્પિષઃ પ્રસ્થઃ - માહિષાત્ સર્પિષઃ પ્રસ્થઃ (ગ. બ. ગ.)

परः औषधीं च यह दूसरा बी, पूर्वः औषधीं  
पहेलुं बी इनमेंसे पहला बी, पूर्व पहेला पांडुरोगमा  
आपुं पहले पाण्डुरोगमें देना चाहिए. परः अने औषधीं  
बी और दूसरा बी, परे औषधीं कामला रोगमा आपुं  
दूसरे कामलारोगमें देना चाहिए ॥ ५४३ ॥

54-54½. Prepare a medicated ghee by cooking 2 tolas of the paste of indian berberry in 64 tolas of buffalo's ghee and twice that amount of cow's urine. Prepare also another medicated ghee from the decoction of twenty tolas of indian berberry, two tolas of the paste of yellow-sandalwood and 64 tolas of buffalo's ghee. The first ghee is indicated in anemia and the second one in jaundice.

पाण्डुरोगे संशोधनम्—

क्षौद्रेभिरुपक्रम्य खिगधं मत्वा विरेचयेत् ॥५५॥  
पयसा मूत्रयुक्तेन बहुशः केवलेन वा ।  
दन्तीफलरसे कोष्णे काश्मर्याञ्जलिना शृतम् ॥५६॥  
द्राक्षाञ्जलिं मृदित्वा वा दद्यात् पाण्ड्वामयापहम् ।  
द्विशर्करं त्रिवृच्चूर्णं पलार्धं पैत्तिकः पिबेत् ॥५७॥  
कफपाण्डुस्तु गोमूत्रक्षिप्रयुक्तां हरीतकीम् ।  
आरग्वधं रसेनेक्षोर्विदार्यामलकस्य च ॥५८॥  
सत्रयूषणं बिल्वपत्रं पिबेत् कामलापहम् ।  
दन्त्यर्धपलकल्कं वा द्विगुणं शीतवारिणा ॥५९॥  
कामली त्रिवृतां वाऽपि त्रिफलाया रसैः पिबेत् ।

पुसिः आ इन, स्नेहैः स्नेहोने। स्नेहोका, उपक्रम्य  
प्रयोग कथां पक्षी प्रयोग करनेके पश्चात्, खिगधम्  
रोगीने स्निग्ध भयेक्षे। रोगीको स्निग्ध हुआ, मरवा

५६. शृतम्—युतम् (घ.)

५८. गोमूत्रक्षिप्रयुक्तां—गोमूत्रयुक्तां क्षिप्रां (ब. ब. फ.)

५९. बिल्वपत्रं—बिल्वपत्रं (ग. झ. ब.)

६०. कामली त्रिवृतां वाऽपि त्रिफलाया रसैः पिबेत्—पिबेत् काम-  
लावाक्ता त्रिवृतां त्रिफलां रसैः (क. ब.)

अष्टौ जानकर, मूत्रयुक्तेन औषधमहित गोमूत्रयुक्त,  
पयसा दूधशी दूधसे, केवलेन वा अथवा केवल दूधशी  
या केवल दूधसे, बहुशः धष्टीवार बहुतवार, विरेचयेत्  
विरेचन करावुं विरेचन करावे, कोष्णे अथवा नव-  
शेका अथवा गुनगुने, दन्तीफलरसे दन्तीफलना  
अथवा दन्तीबीजके कषायमें, काश्मर्या-अञ्जलिना-  
१६ तोला शीतवीथी एक कुडव गंभारीके फलसे,  
शृतम् पकावेदी शृत, द्राक्षा- द्राक्ष मुनकेका, अञ्जलिम्  
१६ तोला एक कुडव, मृदित्वा वा योषीने मलकर,  
दद्यात् आपवी देवे. पाण्ड्वामयापहम् ते पांडुरोगनाशक  
छे वह पांडुरोगनाशक है, पैत्तिकः पित्त प्रकृति-  
वाला पांडुरोगीके पैत्तिक पांडुरोगी, द्विशर्करं अमली  
साकरवाणुं दुगुनी पीनीयुक्त, पलार्धम् २ तोला आधा  
पल, त्रिवृत्-चूर्णम् नसे।तरुं यूलुं त्रिवृत्का चूर्ण, पिबेत्  
पीतुं पीवे कफपाण्डुः छे कफ-य पांडुरोगवाला मालुसे  
ते। कफ पांडुरोगवाला मनुष्य तो, गोमूत्रक्षिप्रयुक्ताम्  
गोमूत्रशी वाटेदी अने तेमां योषीने गोमूत्रसे पीसी  
और उसमें घोली हुई, हरीतकीम् छरे पीवी हरद  
पीवे. कामली ना कमला रोगीने कामला रोगी,  
कामलापहम् कमला रोगीने नाश करने। कामलानाशक,  
आरग्वधम् अरमाणा अमलता, सम्यूषणम् त्रिफला त्रिफला.  
बिल्वपत्रम् तथा पीषीपत्र औषधीने तथा बेलके पत्ते  
उनको, इक्षोः शेषडीना ईक्षके, विदारी- विदारीक-दना  
विदारीकन्दके, आमलकस्य च अथवा आमलाना या  
आंवलेके, रसेन रसनी साथे रसके साथ, पिबेत् पीवे।  
पीवे, द्विगुणम् अथवा अमला जोलसहित या दूने  
गुडके साथ, दन्ती- दन्तीने। दन्तीके, अर्धपल- २ तोला  
आधे पलके, कल्कम् वा छे कल्कको, शीतवारिणा  
६०। पाणी साथे छे पानीसे, पिबेत् पीवे। पीवे,  
त्रिफलायाः रसैः अथवा त्रिफलाना रस साथे अथवा  
त्रिफलाके कषायसे, त्रिवृताम् वा अपि नसे।तरु पीतुं  
त्रिवृत्को पीवे ॥ ५५-५९ ॥

55-59½. If, as the result of treatment by the aforesaid unctuous remedies, the anemia-patient is found to be rendered sufficiently unctuous, he should thereafter be subjected to frequent

purgation by means of pure cow's milk or cow's milk mixed with cow's urine. The patient may be given a purgative which is also curative of anemia consisting of the lukewarm decoction of red physic-nut, either cooked with 16 tolas of white teak or mixed with 16 tolas of triturated grapes. The anemia-patient with provoked pitta should take a potion of 2 tolas of turpeth with twice that measure of sugar, while the anemia patient with an excess of kapha should take with cow's urine the powder of chebulic myrobalans softened in cow's urine. The patient may take purging cassia, the three spices and bael leaves mixed with the juice of the sugar-cane, white yam and emblic myrobalan for the cure of jaundice. The jaundice patient may take either the paste of red physic nut  $\frac{1}{2}$  tola with twice the quantity of gur in cold water or the powder of turpeth in the juice of the three myrobalans.

विशालादिकाष्टः —

विशालात्रिफलामुस्तकुष्ठदारुकलिङ्गकान् ॥६०॥

कार्षिकानर्धकर्षां कुर्यादतिविषां तथा ।

कर्षौ मधुरसाया द्वौ सर्वमेतत् सुखाम्बुना ॥६१॥

मृदितं तं रसं पूतं पीत्वा लिङ्गाच्च मध्वनु ।

कासं श्वासं ज्वरं दाहं पाण्डुरोगमरोचकम् ॥६२॥

गुष्मामाहामघातांश्च रक्तपित्तं च नाशयेत् ।

विशाला- धन्वाभ्यां इन्द्रकवणी, त्रिफला- त्रिदश ।

६०. विशाला त्रिफला-विशाला कटुका (व.)

६१. कार्षिकानर्धकर्षां कुर्वादतिविषां तथा-कर्षोन्मितातिविषां कर्षार्धं च दापयेत् (फ.)

॥ सर्वमेतत्-सर्व पूर्ण (क. ख. फ.)

त्रिफला, मुस्त- मोथ मोथा, कुष्ठ- ऊँ कूठ, दारु- देवदार देवदार, कलि कान् धन्वा इन्द्रजौ, कार्षिकान् दरेक ओकेक तोले। हरेक एक एक कर्ष, तथा तथा तथा, अतिविषाम् अतिविष अतीस, अर्धकर्षांशाम् अर्धौ तोले। आषा कर्ष, मधुरसायाः मोरवेले मोरवेले, द्वौ कर्षौ २ तोले। दो कर्ष, एतत् औ इन, सर्वम् सर्वेषु सबका, सुखाम्बुना नवशेका पाखीथी गुनगुने जलसे, मृदितम् कुर्यात् मर्दन करुं मल कर, पूतम् भाणैले छाने हुए, तम् रसम् ते रस डस रसको, पीत्वा च पीने पीकर, अनु पछी पीछे, मधु मधु शहर, लिङ्गाश्च आटुं चाटे, कासम् आ ईट उधरस यह फांट कास, श्वासम् श्वास श्वास, ज्वरम् नवर ज्वर, दाहम् दाह दाह, पाण्डुरोगम् पाण्डुरोग पाण्डुरोग, अरोचकम् अरुचि अरुचि, गुल्म- गुल्म गुल्म, आनाह- आनाह आनाह, आमवातान् च आमवात आमवात, रक्तपित्तम् च रक्ते रक्तपित्तने। और रक्तपित्तको, नाशयेत् नाश करे छे नष्ट करता है ॥ ६०-६२३ ॥

60-62 $\frac{1}{2}$ . Take one tola each of colocynth, the three myrobalans, nut-grass, costus, deodar and kurchi seeds, half a tola of atees and two tolas of trilobed virgin's bower and crushing the whole in sufficient quantity of water, reduce to paste and strain. This as potion should be taken and immediately after, honey should be licked. This medicament cures cough, dyspnea, fever, burning, anemia, anorexia, gulma, constipation, chyme and vata disorders, as also hemothermia.

कतिपययोगः —

त्रिफलाया गुडूच्या वा दाढ्या निम्बस्य वा रसम् ६३ शीतं मधुयुतं प्रातः कामलार्तः पिबेन्नरः ।

६३ $\frac{1}{2}$ . शीतं मधुयुतं प्रातः-प्रातः प्रातर्मधुयुतं (व. फ.)

॥ शीतं मधुयुतं प्रातः कामलार्तः पिबेन्नरः-प्रातः प्रातर्मधुयुतः

शीतितः कामलार्तः (इ. व.)

कामलातः कमलाता रोगी पीलियासे पीडित, नरः  
भनुष्ये पुरुष, त्रिफलायाः त्रिफला त्रिफला, गुडुच्याः  
वा अथवा गौ। या गिलोय, दारुण्यः दारुण्यः दारु-  
हली, निम्बस्य वा अथवा दीमजाने। या नीमका,  
रसम् अथवा कषाय, शीतम् अथवा शीतल होने  
पर, मधुयुक्तम् मधु सेणवीने मधुयुक्त करके, प्रातः  
स्नानार्थम् प्रातःकालमें, पिबेत् पीवे। पीवे ॥ ६३३ ॥

63-63½. The patient suffering from  
jaundice should take early in the  
morning the cold infusion of the three  
myrobalans or guduch or indian ber-  
berry or neem mixed with honey.

क्षीरमूत्रं पिबेत् पक्षं मध्वं माहिषमेव वा ॥६४॥  
पाण्डुर्गोमूत्रयुक्तं वा सप्ताहं त्रिफलारसम् ।

पाण्डुः पाण्डुरोगवाला अथवा पाण्डुरोगी, गन्धम् आधनां  
गौ, माहिषम् एव वा के के सनां या मैसके, क्षीर-  
मूत्रम् दूध तथा मूत्र दूध और मूत्रको, पक्षम् पक्ष  
दिवस एक पक्ष, पिबेत् पीवे। पीवे, गोमूत्र-युक्तम्  
वा अथवा गोमूत्रसहित अथवा गोमूत्रयुक्त, त्रिफलारसम्  
त्रिफलासे रस त्रिफलाका रस, सप्ताहम् सात दिवस सुधी  
पीवे। एक सप्ताह पीवे ॥ ६४३ ॥

64-64½. The anemia-patient should  
take for a period of a fortnight the  
course of cow's or buffalo's urine cum  
milk; or he may take for a period  
of seven days the decoction of the  
three myrobalans mixed with cow's  
urine.

तरुजान् ज्वलितान्मूत्रे निर्वप्यामुष्य चाङ्कुरान् ॥६५॥  
मातुलुङ्गस्य तत् पूतं पाण्डुशोथहरं पिबेत् ।

मातुलुङ्गस्य अथवा मातुलुङ्गस्य विजोरेके तरुजान् वृक्ष  
परना गोवेके, ज्वलितान् अथवा जलाये हुए, अङ्कुरान्

६४. पिबेत् पक्षं पिबेत् पक्षं (क.)

६४½. पाण्डुर्गोमूत्रयुक्तं-पाण्डुर्गोमूत्रयुक्तं (ब.)

६५½. पाण्डुशोथहरं-पाण्डुशोथहरं (ब.)

अङ्कुरान् अङ्कुरोंको, मूत्रे गोमूत्रम् गोमूत्रमें, निर्वप्य  
हारीने बुझाकर, आम्रम् च अने सेणवीने और मलकर,  
पूतम् गाण्डु छाने हुए, तत् ते उस, पाण्डु-शोथ-  
पाण्डुरोग तथा सेणवीने पाण्डु तथा शोथको, हरम् हर  
करना। गोमूत्र हरनेवाले गोमूत्रको, पिबेत् पीवे  
पीवे ॥ ६५३ ॥

65-65½. Take tender sprouts of  
pomelo and having roasted them on  
the fire, quench and crush them up  
in cow's urine. A potion of its filtered  
solution is curative of edema induced  
by anemia.

स्वर्णक्षीरी त्रिवृच्छ्यामे भद्रदार समागरम् ॥६६॥

गोमूत्राञ्जलिना पिष्टं मूत्रे वा कथितं पिबेत् ।

क्षीरमेभिः शृतं वाऽपि पिबेद्दोषानुलोमनम् ॥६७॥

स्वर्णक्षीरी स्वर्णक्षीरी स्वर्णक्षीरी, त्रिवृत्-श्यामे  
घाण्डु नसोतर, काण्डु नसोतर त्रिवृत्, श्यामा, समागरम्  
सं सं सोंठ, भद्रदार अने देवदार अथवा और देवदार  
इनको, गोमूत्र-गोमूत्र गोमूत्रके, अञ्जलिना १६ तोला  
साथे एक कुब्जसे, पिष्टम् पीटने पीसकर, मूत्रे वा  
अथवा गोमूत्रम् या गोमूत्रमें, कथितम् अथवा  
उनका काथकर, पिबेत् पीवे। पीवे, पृथिः वा अपि  
अथवा अथवा या उनसे, शृतम् सिद्ध करे। शृत,  
दोषानुलोमनम् दोषानु अनुलोमन करना। दोषोंके  
अनुलोमक, क्षीरम् दूध दूधको, पिबेत् पीवे  
पीवे ॥ ६६-६७ ॥

66-67. The patient may take the  
yellow milk-plant, white and black  
turpeths, deodar and dried ginger  
either reduced to paste in 16 tolas of  
cow's urine or decocted in the cow's  
urine or boiled in cow's milk. This  
medicament is promotive of the elimi-  
nation of the waste products in the body.

६७. पिष्टं-कथितं (ब. क. ग.)



हृत्तकीं प्रयोगेण गोमूत्रेणाथवा पिबेत् ।

जीर्णे क्षीरेण भुञ्जीत रक्तेन जम्बुरेण वा ॥६८॥

अथवा अथवा या, प्रयोगेण सात दिवस  
प्रयोगेण एक सप्ताहके प्रयोगे, गोमूत्रेण गोमूत्र-  
साथे गोमूत्रके साथ, हरीतकीम् हरीतकी के साथ  
पीवी पीवे, जीर्णे मयी मया पीवी जीर्णे गोमूत्र-  
क्षीरेण दूधसहित दूधसे जम्बुरेण रक्त या जम्बू-  
अधुर भूसिरसेसहित या मधुर या रक्ते भुञ्जीत  
कोमल करपु भोजन से ॥ ६८ ॥

68. Or the patient may take a course of the chebulis myrobalan in conjunction with cow's urine. On the dose being digested, he should take his meals mixed either with milk or with sweet meat-juices.

सप्तरात्रं गवां मूत्रे भाषितं वाऽप्ययोरजः ।

पाण्डुरोगप्रशान्त्यर्थं पयसा वासधेन्द्रिणम् ॥६९॥

अथ वा अथवा या, मिश्रम् पीवे वेद्य सप्तरात्रम्  
सात रात्रिपर्यंत सात रात्रिपर्यंत, गवां मूत्रे  
गोमूत्र-गोमूत्रसे, भाषितम् भावना दीधितुं भावना  
दिये गये अयोरजः दोहयुक्त लोहचूर्णको, पयसा  
दूध साथे दूधसे, पाण्डुरोग-पाण्डुरोग-पाण्डुरोगकी,  
प्रशान्त्यर्थं शांत भाटे शान्तिके लिए, पयसे पातुं  
पिलावे ॥ ६९ ॥

69. Or the physician should cause the patient to drink, for the cure of anemia, the iron powder soaked in cow's urine along with milk, for a period of seven days.

नवायसचूर्णम्—

ज्यूषणत्रिफलामुस्तविडङ्गचित्रकाः समाः ।

नवायोरजसो भागास्तच्चूर्णं क्षौद्रसर्पिषा ॥७०॥

भक्षयेत् पाण्डुहृद्रोगकुष्ठार्शःकामलापहम् ।

६८. हरीतकीं प्रयोगेण गोमूत्रेणाथवा पिबेत्—हरीतकीं मूत्र-  
प्रयोगेणाथवा पिबेत् (य. फ.)

नवायसमिदं चूर्णं कृष्णात्रेयेण भाषितम् ॥७१॥

इति नवायसचूर्णम् ।

ज्यूषण-त्रिडटु त्रिडटु, त्रिफला-त्रिदला त्रिफला,  
मुस्त-मोथ मोथा, विडङ्ग-विडङ्ग वायविडङ्ग, चित्रकाः  
समाः अने चित्रक औषधीना अर्थेकतुं सम भागे यूर्ण  
और चित्रक इनमेंसे प्रत्येकका सम भागसे चूर्ण, अयोरजसः  
दोहयुक्त लोहचूर्णके, नव नव नौ, भागाः भाग  
भाग तत् चूर्णम् ते यूर्ण इस चूर्णको, क्षौद्रसर्पिषा  
भक्ष तथा धीधी मधु और घीसे, भक्षयेत् भवभावपुं  
खिलावे, पाण्डु ते यूर्ण पाण्डुरोग वह चूर्ण पाण्डुरोग,  
हृद्रोग-हृद्रोग हृद्रोग, कुष्ठ-कुष्ठ कुष्ठ, अर्शः-अर्श अर्श  
कामलापहम् अने कुष्ठाने इर करनातुं छे और  
कामलाका नाशक है, इदम् आ यह, नवायसम् नवायस  
यूर्ण नवायस चूर्ण, कृष्णात्रेयेण कृष्णात्रेये कृष्णात्रेयने,  
भाषितम् उहेलुं छे कहा है ॥ ७०-७१ ॥ इति आ  
यह, नवायसचूर्णम् नवायस यूर्ण छे नवायसचूर्ण है।

70-71. Take one part of the powder of the three spices, the three myrobalans, nut grass, embelia and white-flowered leadwort, and 9 parts of iron-powder and mix them with honey and ghee. This is curative of anemia, gastric disorders, dermatosis, piles and jaundice. This nine-fold iron-preparation is highly valued by Krishna Atreya. Thus has been described the Nine-fold Iron-powder.

मण्डूरवटकाः—

गुडनागरमण्डूरतिलांशाश्मानतः समान् ।

पिप्पलीद्विगुणां कुर्यादुटिकां पाण्डुरोगिणे ॥७२॥

मानतः वजनथी मानसे, गुड-गुड गुड, नागर-  
सूठ सौठ, मण्डूर-मण्डूर मण्डूर, तिल-तथा तिलना  
तथा तिलके, अंशान् भागे भाग, समान् समान दोवा  
समान लेवे, पिप्पली-अने पीपरने भाग और पिप्पलीका  
भाग, द्विगुणम् अमलु दोवा दूना लेवे, पाण्डुरोगिणे  
औषधने औषध भेजनी पाण्डुरोगी भाटे इनको एकत्र

मिनाकर पाण्डुरोगीके लिये, गुटिकां गेणी गुटिका,  
कुर्मात् अनावली बनावे ॥ ७२ ॥

72. Take equal parts of gur, dry ginger, iron rust and til, and double that of long pepper. Pills may be prepared from this for the patient suffering from anemia.

त्र्यूषणं त्रिफला मुस्तं विडङ्गं चव्यचित्रकौ ।  
दार्वीत्वङ्माक्षिको धातुर्ग्रन्थिकं देवदारु च ॥७३॥  
एतान् द्विपलिकान्भागान्शूर्णं कुर्यात् पृथक् पृथक् ।  
मण्डूरं द्विगुणं चूर्णाच्छुद्धमज्जमसन्निभम् ॥७४॥  
गोमूत्रेऽष्टगुणे पक्त्वा तस्मिन्स्तत् प्रक्षिपेत्ततः ।  
उदुम्बरसमानकृत्वा वटकांस्तान् यथास्ति ना ॥७५॥  
उपयुज्जीत तत्रेण सात्स्यं जीर्णं च भोजनम् ।  
मण्डूरवटका ह्येते प्राणदाः पाण्डुरोगिणाम् ॥७६॥  
कुष्ठान्यजीर्णकं शोथमूरुस्तम्भं कफामयान् ।  
अर्शांसि कामलां मेहं स्त्रीहानं शमयन्ति च ॥७७॥  
इति मण्डूरवटकाः ।

त्र्यूषणम् त्रिफटु त्रिफटु, त्रिफला त्रिफला, त्रिफला,  
मुस्तम् मोथा मोथा, विडङ्गम् वावडङ्ग वावविडङ्ग, चव्य-  
चित्रकौ यवक-चित्रक चव्य-चित्रक, दार्वीत्वक् दावुड-  
दन्वी छल दावहलीकी छल, माक्षिकः धातुः सुवर्ण-  
मर्षक्षि स्वर्णमाक्षिक, ग्रन्थिकम् पीपरीभूतना गेणी  
पिपलीमूल, देवदारु च अने देवदार और देवदार, एतान्  
ऐऐऐना इनके, पृथक् पृथक् अलग अलग पृथक्  
पृथक्, द्विपलिकान् ८ तोलाना दो दो पलके, भागान्  
भागान् भागोंका, चूर्णम् यूर्ण चूर्ण, कुर्यात् करवुं करे,  
चूर्णां आ यूर्णथी इस चूर्णसे, द्विगुणम् अमभुं  
द्विगुना, शुद्धम् शुद्ध शुद्ध, अज्जमसन्निभम् अज्जम  
अज्जु सुरमे जैसा काला, मण्डूरम् मंडूर मंडूर, अष्टगुणे  
अष्टगुणा आठगुने, गोमूत्रे गोमूत्रमा गोमूत्रमे,  
पक्त्वा पकानीने पकाकर, तस्मिन् तेमा उसमें, तत् ते  
तत्तु वह चूर्ण, प्रक्षिपेत् नापवुं छोड़े, ततः पछी  
तदनन्तर, उदुम्बरसमान् अष्ट तोलानी एक कर्ष-

७७. कुष्ठान्यजीर्णकम्-कुष्ठान्यजरकम् (घ.)

-गुरुमान्यजरकम् (घ. क.)

प्रमाणके, वटकान् गेणी वटक, कृत्वा करी बनाकर,  
ना मनुष्ये पुख, तान् तेऐऐना उनको, यथास्ति  
अदराभिना अल प्रमाणे अग्निके अनुसार, तत्रेण अशरी  
छाछसे, उपयुज्जीत उपयोग करवे उपयोग करे, जीर्ण  
पथी गया पछी औषध पचने पर, सात्स्यम् च सात्स्य  
सात्स्य, भोजनम् भोजना करवुं भोजन करे, एते हि  
आ ये, मण्डूरवटकाः मंडूर वटक मण्डूर वटक, पाण्डु-  
रोगिणाम् पांडुरोगीऐऐने पांडुरोगियोंके लिए, प्राणदाः  
प्राणदायक छे प्राणप्रद है, कुष्ठानि अने कुष्ठ और  
कुष्ठ, अजीर्णकम् अजीर्ण, शोथम् शोथ शोफ,  
ऊरुस्तम्भम् उरुस्तंभ ऊरुस्तंभ, कफामयान् कफना  
रोगा कफज रोग, अर्शांसि अर्श अर्श, कामलाम्  
कमला पीलिया, मेहम् प्रमेह प्रमेह, स्त्रीहानम् च अने  
स्त्रीहाने और स्त्रीहाको, शमयन्ति शांत करे छे शान्त  
करते हैं ॥ ७३-७७ ॥ इति आ ने, मण्डूरवटकाः मंडूर-  
वटका छे मण्डूरवटक हैं ।

73-77. Take 8 tolas of each of the three spices, the three myrobalans, nut-grass, embelia, chaba pepper, white-flowered leadwort, indian berberry, yellow pyrites, piper root and deodar and pulverise them. Take double this quantity of iron rust which is purified and of a color as black as antimony. Boil it in 8 times its quantity of cow's urine and then add the above powder to it; prepare pills, each of one tola in weight. The patient may take these pills with butter-milk according to the strength of his gastric fire, and when it is digested, he should take a wholesome meal. These iron-rust pills give new life to the patient suffering from anemia. They also alleviate dermatosis, indigestion, edema, spastic paraplegia, disorders of kapha, piles, jaundice and urinary anomalies. Thus



have been described the Ironrust-pills.

ताप्यादियोगः—

बाप्याद्रिजतुरूप्यायोमलाः पञ्चपलाः पृथक् ।  
चित्रकत्रिफलाव्योषविडङ्गैः पलिकैः सह ॥७८॥  
शर्कराष्टपलोन्मिधामूर्णिता मधुनाऽऽप्लुताः ।  
अभ्यस्यास्त्वक्षमात्रा हि जीर्णे हितमिताक्षिना ॥७९॥  
कुलत्थकाकमाच्यदिकपोतपरिहारिणा ।

ताप्य- सुवर्णभाक्षिक स्वर्णमाक्षिक, अद्रिजतु-  
शिलाजित शिलाजीत, रूप्य- रुपाने भण चांदीकी किट्ट,  
अयोमलाः भंडूर मंडूर, पृथक् दरेक प्रत्येक, पञ्चपलाः  
२० तोला पांच पल, पलिकैः आर आर तोला एक  
एक पल, चित्रक- चित्रक चित्रक त्रिफला- त्रिफला  
त्रिफला, व्योष- त्रिफला त्रिफला, विडङ्गैः अने बावडिंग  
ओओनी और बायविडंग इनके, सह साथे साथ, शर्करा-  
अष्टपल- ३२ तोला आठ पल चीनी, उन्मिधाम-  
भेणवी मिलाकर, चूर्णिताः तोओना भूषणे उनके  
चूर्णको, मधुना मधुनी शहदसे, आप्लुताः भेणवीने  
घोलकरके, अक्षमात्राः तु ओके तोओला मात्रा एक कर्षकी  
मात्रामें, अभ्यस्याः हि निरंतर भापुं प्रतिदिन सेवन  
करे, जीर्णे अने पथी गया पथी औषध जीर्ण होनेपर,  
कुलत्थ- डण्ठी कुलथी, काकमाची- पीछुडी मकोय,  
आदि- धत्यादिने आदिको, कपोत- तथा ड्यूतरना  
भासने तथा कवृतरके मांसको, परिहारिणा परिहार  
करी त्याग कर, हित-मित- हितकारी अने प्रभासुर  
हितकर और नियमित, अक्षिना भोजन करनार भुपुं  
आहार सेवन करनेवाला होना चाहिए ॥ ७८-७९॥

78-79½. Take 20 tolas of iron pyrites, mineral pitch, silver and iron-rust and 4 tolas of white-flowered leadwort, the three myrobalans, the three spices, embelia and 32 tolas of sugar; pulverise and mix them together. This powder should be habitually taken in a dose

७९. हितमितक्षिना-नियमितक्षिना (घ.)

of 1 tola, mixed liberally with honey. The patient should avoid horse-gram, black night-shade and the flesh of pigeon, and should resort to a wholesome and moderate diet, after the dose is digested.

त्रिफलायास्त्रयो भागास्त्रयस्त्रिकटुकस्य च ॥८०॥  
भागश्चित्रकमूलस्य विडङ्गानां तथैव च ।  
पञ्चाश्मजतुषो भागास्तथा रूप्यमलस्य च ॥८१॥  
माक्षिकस्य च शुद्धस्य लौहस्य रजसस्तथा ।  
अष्टौ भागाः सितायाश्च तत्सर्वं सूक्ष्मचूर्णिनम् ८२॥  
माक्षिकेणाप्लुतं स्थाप्यमायसे भाजने शुभे ।  
उदुम्बरसमां मात्रां ततः खादेद्यथाग्नि ना ॥८३॥  
दिने दिने प्रयुञ्जीत जीर्णे भोज्यं यथेप्सितम् ।  
वर्जयित्वा कुलत्थानि काकमाचीं कपोतकम् ॥८४॥  
योगराज इति ख्यातो योगोऽयममृतोपमः ।

त्रिफलायाः त्रिफलानां त्रिफलाके, त्रयः त्रयु भाग  
तीन भाग, त्रिकटुकस्य च अने त्रिफलानां और त्रिकटुकै,  
त्रयः त्रयु तीन, भागाः भाग भाग, चित्रकमूलस्य  
चित्रकमूलने चित्रकमूलका, तथा एव तैमज एवं,  
विडङ्गानां च बावडिंगने बायविडंगका, भागः ओके ओके  
भाग एक एक भाग, अश्मजतुषः शिलाजितना शिलाजीतके,  
तथा रूप्यमलस्य च तथा रुपाना भणना और चांदीकी  
किट्टके, शुद्धस्य शुद्ध शुद्ध, माक्षिकस्य सुवर्णभाक्षिकना  
स्वर्णमाक्षिकके, तथा लौहस्य रजसः च अने दोहचूर्णना  
और लोहचूर्ण, पञ्च भागाः पांच पांच भाग पांच  
पांच भाग, सितायाः च सांडर और चीनीके, अष्टौ  
भागः आठ भाग आठ भाग, तत् सर्वम् ओ भुपुं  
उन सबका, सूक्ष्म- सूक्ष्म बारीक, चूर्णितम् चूर्ण करीने  
चूर्ण करके, माक्षिकेण मधुना मधुसे, आप्लुतम् भेणवीने  
मिलाकर, आयसे दोहाना लोहेके, शुभे निर्भण साफ,  
भाजने पात्रमां घरेमें, स्थाप्यम् राखपुं रख

८२. रजसस्तथा-रजसस्तथा च (फ)

” सूक्ष्म-सूक्ष्म (व.)

८४. प्रयुञ्जीत-प्रयोगेण (व.)

” वर्जयित्वा कुलत्थानि-परित्यज्य कुलत्थानि (घ.)

८५. ख्यातो-प्रोक्तो (व.)

देवे, ततः तेषां ती उस्मैसे, ना भन्त्ये पुरुष, उदुम्बरसमाश् ओष्ठ तेषां ती एक कर्षकी मात्राम् मात्राभा मात्रामे, यथानि अग्निमल प्रभां अग्निके अनुसार, खादेत् अक्षुषु उरुषु खावे, जीर्णे पथी गथा पथी औषध जीर्णे होनेपर, दिने दिने दूरेण प्रतिदिन, कुलत्थानि उण्थी कुलथी, काकमाचीम् पीलुडी मकोय, कपोतकम् अने उभूतरना भासने और कबूतरके मांसको, वर्जयित्वा तथेने छोड़कर, यथेप्सितम् पुच्छा प्रभां इच्छानुसार, भोज्यम् भोजन भोजन, प्रयुजीत उरुषु करे, अयम् आ यह, अमृतोपमः अमृत समान अमृत जैसा, योगः योग योग, योगराजः योगराज योगराजके, इति जी नाम्नी नामसे, ख्यातः प्रख्यात से विख्यात है ॥ ८०-८४ ॥

80-84½. Take three parts of the three myrobalans and 3 parts of the three spices, one part of white-flowered leadwort and of embelia, 5 parts of mineral pitch and similarly of silver rust and yellow pyrites, and pure iron powder, and 8 parts of sugar; make a very fine powder of all these and mixing it liberally with honey, put it in a clean metallic receptacle. The person may take from it a dose of one tola according to his digestive power. It should be habitually taken and when the dose is digested, he should take his food ad libitum, avoiding horsegram, black night-shade and flesh of pigeon. This recipe is called Yogaraja or sovereign recipe and is comparable to ambrosia in its effects.

रसायनमिदं श्रेष्ठं सर्वरोगहरं शिवम् ॥८५॥  
पाण्डुरोगं विषं कासं यक्ष्माणं विषमज्वरम् ।

कुष्ठान्यजीर्णकं मेहं शोषं श्वासमरोचकम् ॥८६॥  
विशेषाद्विषमज्वरं पाण्डुरोगं गुदजानि च ।  
इति योगराजः ।

इदं आ यह, रसायनम् रसायन रसायन, श्रेष्ठम् श्रेष्ठ श्रेष्ठ, सर्वरोगहरम् सर्व रोगने हरने, सर्वरोग-मान्, शिवं च अने उदुम्बरसमानी से औ कलत्थान-कम् है पाण्डुरोगम् अने ते पाण्डुरोग ५ भाग पाण्डुरोग, विषम् विष विष, कासं कास कासी, यक्ष्माणम् क्षय रोगयक्ष्मा विषमज्वरम् विषम ज्वर विषम ज्वर, कुष्ठानि कुष्ठ कुष्ठ अजीर्णकं अजीर्ण अजीर्ण, मेहम् प्रमेह प्रमेह, शोषं शोष शोष, श्वासम् श्वास श्वास, अरोचकम् अरुचि अरोचक, अपस्मारम् अपस्मार अपस्मार कामला, उभूती पीलुधा, गुदजानि च अने दूरस्य ऐश्वर्या और अर्श इन्को, विशेषात् विशेषे करीने विशेषतः, इति नाम्नी उरु से लक्ष करता है ॥ ८५-८६ ॥ इति आ यह, योगराजः योगराज से योगराज है ।

85-86½. This is a supreme vitalizer, panacea and blessing. It cures anemia, toxicosis, cough, consumption irregular fever, dermatosis indigestion, urinary disorders, dehydration, dyspnea and anorexia, and it cures particularly epilepsy, jaundice and piles. Thus has been described the Yogaraja, the sovereign recipe.

शिलाजतुवटकाः—

कौटजत्रिफलानिभ्यपटोलघननागरैः ॥८७॥  
भावितानि दशहानि रसद्वित्रिगुणानि वा ।  
शिलाजतुपलान्यष्टौ तावती सितशर्करा ॥८८॥  
त्वक्क्षीरी पिप्पली धात्री कर्कटाख्या पलोन्मिता ।  
निदिग्ध्याः फलमूलाभ्यां पलं युक्त्या त्रिगन्धकम् ८९

८७ कुष्ठान्यजीर्णकं-कुष्ठान्यज्वरकं (व. व.)

८८ विषमज्वरं, श्वासं विक्रमं (व.)

चूर्णितं मधुनः कुर्यात् त्रिफलेनाक्षिकान् गुडान् ।  
दाडिमाम्बुपयःपक्षिरसतोयसुरासवान् ॥९०॥  
तान् भक्षयित्वाऽनुपिषेक्षिरक्षो भुक्त एव वा ।

कौटज- ४८-५०५ एन्ड्रोजी, त्रिफला- त्रिफला त्रिफला,  
निम्ब- दीमडे वीम, पट्टे- पट्टे परवल, वन- मोथ  
मोथा, नागरेः अने अने और लौठके, रसेः अथथी  
कायसे, दशाहानि द्विद्विगुणं वा दक्ष, वीस के वीस  
द्विस सुधी दस, बीस या तीस दिन, आक्षितानि आवन  
दीधिल भावित, जड़ो खिलजड़- पलानि ३२ तोला  
शिलाजित आठपल शिलाजित, तमली- तेदलीज उतनी  
ही सितार्करा सडे सडे चीनी, त्वक्क्षीरी अने  
वंशदीयन और वंशलोचन, पिप्पली पीपर पिप्पली,  
भात्री आभर्मा आंबला, कर्कटाख्या तथा डांङ्ग-  
शींगी तथा काकडासिगी, पलोन्मिता दरेकुं और  
आर तोला यूज् पत्थिका एक एक पल चूर्ण,  
निदिग्ध्याः बोरींगलीनां छोटी हटेरीके, फलमूलाभ्याम्  
इण तथा भूण फल और मूळ, पलम् अने भणी ४  
तोला यूज् दोनोंका मिलकर एकपल, युक्त्या युक्ति-  
पूर्वक युक्तिपूर्वक, चूर्णितम् यूज् करवाभां आवेल  
चूर्ण किया गया, त्रिगन्धकम् त्रिगन्ध (तजः तमाळपत्र  
तथा औलथी) औलोने त्रिगन्धक (तज, तमाळपत्र  
तथा इलायची) उतको, मधुसः त्रिफलेन १२ तोला  
भभर्मा भेणवी तीनपल गहदसे मिलाकर, आक्षिकान्  
औक औक तोलाना एक एक कर्षप्रमाणसे, गुडान् १२५  
वटक, कुर्यात् करवा बनावे, निरसः अथ आधा विना  
अथ खाये विना, भुक्तः एव वा अथवा आधने या  
खा कर, सान् तेओने उतको, भक्षयित्वा आधा पक्षी  
खा कर, दाडिम-अम्बु- दाडिमो २५ अनारके रस, पयः-  
६५ दूध, पक्षिरस- पक्षीओना भांसने २५ पक्षियोंके  
मांसरस, तोय- पाणी जल, सुरा- सुरा सुरा, आसवान्  
के आसवनुं या आसवकर, अनुपिषेत् अनुपान करवुं  
अनुपान करे ॥ ८७-९० ॥

87-90½. Take 32 tolas of mineral  
pitch, impregnate it with the juices of  
kurchi seeds, the three myrobalans,  
neem, snake gourd, nut-grass and dry  
ginger for 10, 20 or 30 days; add to  
it 32 tolas of white sugar and 4 tolas of  
each of bamboo manna, long pepper,  
emblic myrobalans and galls, and 4  
tolas of the entire plant of indian night-  
shade and the powder of the three  
fragrant substances—cinnamon, car-  
damom and mace; pulverise all of  
them and mix with 12 tolas of honey  
and prepare into pills of one tola each.  
The patient may take them on an  
empty stomach or after meals followed  
by a drink of the juice of pomegra-  
nate or of milk or meat-juice of birds,  
or of water, or sura or other wines.

पाण्डुकुष्ठज्वरह्रीहतमकार्शोभगन्दरान् ॥९१॥  
पूतिहृच्छुकमूत्राग्निदोषशोषगरोदरान् ।  
कासासृग्दरपित्तासृक्शोथगुल्मगलामयान् ॥९२॥  
ते च सर्वव्रणान् हन्युः सर्वरोगहराः शिवाः ।  
इति शिलाजितुवटकाः ।

ते च ते १२५ वे वटक पाण्डु- पांडुरोग पांडु-  
रोग, कुष्ठ- कुष्ठ कुष्ठ, ज्वर- १२२ ज्वर, ह्रीह- ह्रीह  
ह्रीहा, तमक- तमक तमक, अर्शः- ६२५ अर्श,  
भगन्दरान् भगंदर भगंदर, पूति- पूतिदोष पूतिदोष,  
हृत्- हृद्दोग हृदयरोग, शुक्र- शुक्रदोष शुक्रदोष, मूत्र-  
मूत्रदोष मूत्रदोष, अग्निदोष- अग्निदोष अग्निदोष, शोष-

९२. पूतिहृच्छुकमूत्राग्नि-हृद्दरोगशुक्रमूत्राग्नि (घ. च.)

, शोथ-शोथ (ब.)

, गलामयान्-गरामयान् (ड. फ.)

९२½. सर्वव्रणान्-वर्धमानान् (फ.)

, , -व्रणभयान् (ब.)

९०. चूर्णितं मधुनः कुर्यात्-मधुनिफलेभ्युः (ग.)

, मधुनः-मधुरम् (ग.)

, चूर्णितं मधुनः कुर्यात् त्रिफलेनाक्षिकान् गुडान्-मधुत्रिफल-

संयुक्तान् कुर्यादक्षिकान् गुडान् (फ. ब.)

१, इति पुनर्नवामण्डूरम्-आश्रयेण पुनर्नवामण्डूरं कीर्तितं  
परम् (द.)



शीतं मधुप्रस्थयुतं लिङ्गात् पाणितलं ततः ॥१०१॥  
हन्त्येष कामलां पित्तं पाण्डुं कासं हलीमकम् ।

इति धान्यबलेहः ।

द्विपलांशाश्च आठ आठ तोला दो दो पल,  
तुगाक्षीरीम् पंशद्वेयन वंशलोचन, नागरम् स्रं स्रं,  
मधुयष्टिकाम् जेठीभध, मुढढठी, प्रास्थिकीम्  
योसठ तोला एक प्रस्थ, पिप्पलीम् पीपरी पिप्पली,  
द्राक्षाम् अने द्राक्ष और मुनके, शुभाम् शर्करा-बर्धतुला,  
२०० तोला स्रं स्रं आधी तुला सफेद चीनी,  
चूर्णितम् ओओतुं यूषुं करीने इनका चूर्ण करके,  
धारीफलरसद्रोणे आमर्णांना १०२४ तोला रसमां  
आंवलेके एक द्रोण रसमें, लेहवद् आटलु जेवुं लेह  
जैसा, पचेत् पडावतुं पकावे, ततः पछी पीछे, शीतम्  
ठंडुं तथा पछी ठंडा होने पर, मधुप्रस्थयुतम् ६४ तोला  
भध जेठवी एक प्रस्थ मधु मिलाकर, पाणितलम् ओक  
तोला कर्षभर, लिङ्गात् आटलुं चाटे, एषः आ आटलु  
यह अवलेह, कामलाम् उभगा पीलिया, पित्तम् पित्त  
पित्त, पाण्डुम् पांडुरोग पाण्डुरोग, कासम् उधरस कास,  
हलीमकम् च अने हलीमकने और हलीमकको, हन्ति  
नाश करे छे नष्ट करता है ॥ १००-१०१॥ इति आ  
यह, धान्यबलेहः धान्यबलेह छे धान्यबलेह है ।

100-101½. Take 8 tolas of bamboo  
manna, dry ginger and liquorice, and  
64 tolas of long pepper and grapes  
and 200 tolas of white sugar. Prepare  
this powder into a linctus by boiling  
it in 1024 tolas of the juice of emblic  
myrobalan; when it is cold, add 64

१०२. शीतं मधुप्रस्थयुतं लिङ्गात् पाणितलं ततः—शीतं मधुयुतं

लोढा नित्यं पाणितलं ततः (ध.)

१०१½. हन्त्येष कामलां पित्तं पाण्डुं कासं हलीमकम्—हलीमकं

पाण्डुरोगं कामलां च विनाशयेत् (ग)

” ” ” —हलीमकं पाण्डुरोगं कामलां चैव

नाशयेत् (ध. द. फ. व.)

” इति धान्यबलेहः—आत्रेयकीर्तिरसस्त्वेष धारीकैः परः

स्मृतः (द.)

tolas of honey. This should be taken  
as a linctus in the dose of one tola at  
a time. It cures jaundice, anemia,  
excess of pitta, cough and Haleemaka.  
Thus has been described the linctus  
of the Emblic Myrobalan.

मण्डूरवटकाः—

ज्यूषणं त्रिफला चक्रं चित्रको देवदारु च ॥१०२॥  
विडङ्गान्यथ मुस्तं च वत्सकं चेति चूर्णयेत् ।  
मण्डूरतुल्यं तच्चूर्णं गोमूत्रेऽष्टगुणे पचेत् ॥१०३॥  
ज्ञानैः सिद्धास्तथा शीताः कार्याः कर्षसमा गुडाः ।  
यथाग्नि भक्षणीयास्तैः प्रीहपाण्डुमवापहाः ॥१०४॥  
ग्रहण्यशोऽनुदश्चैव तक्रवाट्याग्निः स्मृताः ।

इति मण्डूरवटकाः ।

ज्यूषणम् त्रिकटु त्रिकटु, त्रिफला त्रिफला त्रिफला,  
चक्रम् अथ चक्र चक्र, चित्रको चित्रको, देवदारु  
च अने देवदारु देवदारु, विडङ्गानि विडङ्गानि वायविकं,  
अथ मुस्तम् च मोथ मोथ, कर्षकम् च अने उडाछाछ  
कुटजकी छाल, इति ओ अथ द्रव्येना इन नारह द्रव्योका,  
चूर्णयेत् उभान भागमां यूषुं करतुं सम भागमें चूर्ण  
करे, मण्डूरतुल्यम् तत्त-चूर्णम् सधगा द्रव्येना सामटा  
प्रमाणवाणा मण्डूरना यूषुंनी साथे ते द्रव्येना  
यूषुंने सब द्रव्योके मिलित परिमाणवाले मण्डूरचूर्णके  
साथ उन द्रव्योके चूर्णको अष्टगुणे आठगुणा आठ-  
गुने गोमूत्रे गोमूत्रमां गोमूत्रमें पचेत् पडावतुं पकावे,  
ज्ञानैः धीरे धीरे धीरे धीरे, सिद्धाः पाक्या पकने,  
तथा शीताः तथा ठंडा ठंडा होने पर, कर्ष-  
समाः ओक ओक तोलाना एक कर्षमात्राके, गुडाः गटक  
वटक, कार्याः अनाववा बनवे, ते ते उनका, यथाग्नि  
अग्निना अथ प्रमाणे अग्निबले अनुसार, भक्षणीयाः  
आवा सेवन करे, तक्रवाटय-अग्निः तेओने तके तथा  
यवाजतुं भक्ष्युं करनार शीतानी वे छाछ और यवाज

१०३. विडङ्गान्यथ मुस्तं च—विडङ्गान्यथ मुस्तं (क छ.)

” विडङ्गान्यथ मुस्तं च वत्सकं चेति चूर्णयेत्—विडङ्गानि  
समांशानि चित्रको चेति चूर्णयेत् (ड)

” विडङ्गान्यथ मुस्तं च—विडङ्गाश्च वत्सकानि (घ.)

સેવન કરનેવાલે કે, છોહ- પ્લીહા છોહા, પાણ્ડુમયાપદ્માઃ તથા પાંડુરોગિણો નાશ કરનાર ઔર પાણ્ડુરોગકે નાશક, ગ્રહણી-અર્શઃ-નુદઃ ચ એવ તેમજ અહણી અને હરસને દૂર કરનાર એવ ગ્રહણીરોગ ઔર અર્શકે નાશક, સ્મૃતાઃ માનેશ છે માને ગયે છે ॥ ૧૦૨-૧૦૪૩ ॥ હિતિ આ યે, મળ્ડૂરવટકાઃ મળ્ડૂરવટકા છે મળ્ડૂરવટકા છે ।

102-104. Take equal quantities of the three spices the three myrobalans, chaba pepper, white-flowered leadwort, deodar, embelia, nutgrass and kurchi bark; pulverise all these and adding an equal quantity of iron-rust, boil the whole in eight times the quantity of cow's urine. The cooking should be done over a low fire and when the preparation is cooled, make pills of one tola each. These should be taken according to the digestive power. They are curative of splenic disorders, anemia, assimilation-disorders and piles; the patient should take a diet of butter-milk and barley-meal during the course of treatment. Thus has been described Iron-rust pills.

ગોઢોરિષ્ટઃ—

મજ્જિષ્ઠા રજની દ્રાક્ષા બલામૂલાન્યયોરજઃ ॥૧૦૫॥  
લોધ્રં ચૈતેષુ ગૌઢઃ સ્યાદરિષ્ટઃ પાણ્ડુરોગિણામ્ ।  
હિતિ ગૌઢોરિષ્ટઃ ।

મજ્જિષ્ઠા મળ્ડૂ મંજીઠ, રજની હળદર હલ્દી, દ્રાક્ષા શ્રાક્ષ મુનકા, બલામૂલાનિ બલાનાં મૂળ બલામૂલ, અયોરજઃ શ્વેતચૂર્ણ લોહચૂર્ણ, લોધ્રમ્ ચ અને શ્વેતઃ ઔર લોધ્ર, પતેષુ ઐઓને. ઇનકા, ગૌઢઃ ગોળથી સિદ્ધ કરેલ ગુણે વજા, અરિષ્ટઃ અરિષ્ટ અરિષ્ટ, પાણ્ડુ-રોગિણામ્ પાંડુરોગીઓ માટે પાંડુરોગિયોંકે લિણ, સ્વાવ

૧૦૫. મજ્જિષ્ઠા રજની દ્રાક્ષા-દ્રાક્ષા હરિદ્રા મજ્જિષ્ઠા (ધ.ર.ક.વ.)

હિતકર છે હિતકર છે ॥ ૧૦૫૩ ॥ હિતિ આ યદ, ગૌઢઃ અરિષ્ટઃ ગૌઢ અરિષ્ટ છે ગૌઢ અરિષ્ટ છે ।

105-105. The medicated gur wine prepared with indian madder, turmeric, grapes, roots of sida, iron-powder and lodh is beneficial for the patients suffering from anemia. Thus has been described the Medicated Gur-wine.

વીજકારિષ્ટઃ—

વીજકાત્પોઢશપલં ત્રિફલાયાશ્ચ વિંશતિઃ ॥૧૦૬॥  
દ્રાક્ષાયાઃ પચ્ચ લાક્ષાયાઃ સસ દ્રોણે જલસ્ય તત્ ।  
સાઘ્યં પાદાવશેષે તુ પૂતશેષે સમાવપેત્ ॥૧૦૭॥  
શર્કરાયાસ્તુલાં પ્રસ્થં માશ્નિકસ્ય ચ કાર્ષિકમ્ ।  
વ્યોષં વ્યાઘ્રનલોશીરં ક્રમુકં સૈલચાલુકમ્ ॥૧૦૮॥  
મધુકં કુષ્ઠમિત્યેતદ્ધૃણિતં ઘૃતભાજને ।  
યવેષુ દશરાત્રં તદ્ગ્રીષ્મે દ્વિઃ શિશિરે સ્થિતમ્ ॥૧૦૯॥  
પિબેત્તદ્ગ્રહણીપાણ્ડુરોગાર્શઃશોથગુલ્મનુત્ ।  
મૂત્રકૃચ્છ્રાશ્મરીમેહકામલાસન્નિપાતજિત્ ॥૧૧૦॥  
વીજકારિષ્ટ ઇત્યેષ આત્રેયેણ પ્રકીર્તિતઃ ।  
હિતિ વીજકારિષ્ટઃ ।

વીજકાત્ બિધી વિજયસાર, પોઢશપલમ્ ૬૪ તોલા સોલહ પલ, ત્રિફલાયાઃ ચ ત્રિફલા ત્રિફલા. વિંશતિઃ ૮૦ તોલા વીસ પલ, દ્રાક્ષાયાઃ પચ્ચ શ્રાક્ષ ૨૦ તોલા મુનકા પાંચ પલ, લાક્ષાયાઃ સસ લાખ ૨૮ તોલા લાલ સાત પલ. તત્ ઐઓને ઇનકો, જલસ્ય દ્રોણે ૪૯ ૧૦૨૪ તોલામાં એક દ્રોણ જલમાં, સાઘ્યમ્ પડાવવાં પકાવે, પાદાવશેષે ચતુર્થાંશ બાકી રહે ત્યારે ચૌથાઈ અવશેષ રહને પર, પૂતશેષે તુ ગાળી લઈ તેમાં છાતકર ઉપમેં, શર્કરાયાઃ

૧૦૬. સમાવપેત્-પ્રદાપયેત્ (વ.)

૧૦૭. દશરાત્રં તદ્ગ્રીષ્મે-દશરાત્રસ્યં ગ્રીષ્મે (ધ. વ.)

૧૧૦. રોગાર્શઃશોથગુલ્મનુત્-રોગાર્શઃકામલાશ્નિ- (શ.)

,, મેહ-શ્વામ (વ.)

,, સન્નિપાતજિત્-સન્નિપાતનુત્ (લ.)

૧૧૧. ઇત્યેષ-પવેષ (વ.)



તુલાદ સાકર ૪૦૦ તોલા ચીનીકી એક તુલા, માક્ષિકસ્ય મધ શહદ, પ્રસ્થમ્ ચ ૬૪ તોલા એક પ્રસ્થ, ગ્યોવમ્ ત્રિફલુ ત્રિફલુ, ગ્યાગ્રનચ- વ્યાગ્રનચ વ્યાગ્રનચ, ઝશીરમ્ વાળે ચસ, સૈલવાલુકમ્ એલવાલુકમ્ સહિત એલવાલુકકે સાથ, કમુકમ્ સોપારી સુપારી, મધુકમ્ બેરીમધુ મુલહરી, કુષ્ઠમ્ ચ અને કઠ ઔર કૂઠ, કાર્ષિકમ્ એક એક તોલા પ્રત્યેક એક એક કર્ષ, હિતિ એતત્ ચૂર્ણિતમ્ એએના ચૂર્ણને इनके चूर्णको, घृतभाजने धी योपडेवा दास्यन्तुमा घृतक्षिप्त वरतनमें, समावपेव नाभयुं छेदे, यवेषु ज्वना दग्धामां जौकी राशिमें, ग्रीष्मे ग्रीष्म ऋतुमां ग्रीष्ममें, दशरात्रम् दस रात्रि दस रात्रि, शिशिरे અને શિશિર ઋતુમાં ઔર શિશિરमें, द्विः वीस रात्रि बीस रात्रि, स्थितम् रात्रेयुं रखा गया, तत् ते यूर्णुं वह चूर्णं, ग्रहणी- ग्रहणी ग्रहणी, पाण्डुरोग- पांडुरोग पांडुरोग, अर्जः- हरस अर्ज, शोथ- सोथ, गुल्ममुत्त युद्भने हर करनेपर और गुल्मको दूर करनेवाले, मूत्रकृच्छ्र- અને भूतकृच्छ्र और मूत्रकृच्छ्र, अश्मरी- पथरी अश्मरी, मेह- प्रमेह प्रमेह कामला- कभणौ कामला, सन्निपातजित् तथा सन्निपातने नाश करनेपर तथा सन्निपातको नष्ट करनेवाला, तत् ते यूर्णुं उस चूर्णको, पिबेत् पीयुं पीवे, इति आ प्रभाञ्छे इस तरह, आत्रेयेण आत्रेये आत्रेयेने, एषः आ यह, बीजकारिष्टः ग्रीष्मकारिष्ट बीजकारिष्ट, प्रकीर्तितः कश्चो छे बताया है ॥ १०६-११० ॥

106-110. Decoct 64 tolas of the kino tree, 80 tolas of the three myrobalans, 20 tolas of grapes and 28 tolas of lac in 1024 tolas of water; when it is reduced to  $\frac{1}{4}$  of its quantity, filter it, and when cold add 64 tolas of honey and a tola of each of the three spices, shell, cuscus grass, bettle nut, cherry tree, mahwa and costus and put the mixture in a pot saturated with ghee, hidden in a heap of common barley for ten nights in summer and double that number in

the cold season; and then it should be prescribed as pottion. It is curative of assimilation-disorder, anemia, piles, edema, gulma, dysuria, lithiasis, urinary disorders, jaundice and tridiscordance. The recipe of this medicated wine of the indian kino tree has been propounded by Atreya. Thus has been described the Kino-tree Medicated-wine.

ધાત્રીફલઃ —

ધાત્રીફલસહસ્રે દ્વે પીડયિત્વા રસં તુ તમ્ ॥૧૧૧॥  
ક્ષૌદ્રાષ્ટાંશેન સંયુક્તં કૃષ્ણાર્ધકુહલેન ચ ।  
શર્કરાર્ધતુલોન્મિશ્રં પક્ષં સ્નિગ્ધઘટે સ્થિતમ્ ॥૧૧૨॥  
પ્રપિબેન્માત્રયા પ્રાતર્જીર્ણે હિતમિતાશનઃ ।

દ્વે ધાત્રીફલસહસ્રે આમળા નંચ ૨૦૦૦ દો હજાર આંવલોંકો, પીડયિત્વા પીડીને નિચોડકર, તમ્ રસમ્ તુ તે રસને વજ રસકો, ક્ષૌદ્ર-અષ્ટાંશેન અષ્ટમાંશ મધ અષ્ટમાંશ શહદસે, કૃષ્ણા-અર્ધકુહલેન ચ તથા ૮ તોલા પીપર સાથે તથા આવે કુહલ પિપ્પલીસે, સંયુક્તમ્ મેગવી યુક્તકર, શર્કરા-અર્ધતુલોન્મિશ્રત તથા ૨૦૦ તોલા સાકરથી મિશ્રિત કરી તથા આવી તુલા ચીનીમેં મિલાકર, પક્ષમ્ પંદર દિવસ એક પક્ષ, સ્નિગ્ધઘટે ધી યોપડેલા બડામાં ધી ચુપડે ઘડેમેં, સ્થિતમ્ રાત્રીને રાત્ર કરકે, પ્રાતઃ સવારમાં સુવહમેં, માત્રયા માત્રાથી યોગ્ય માત્રાસે, પ્રપિબેત્ પીવે પીવે, જીર્ણે તે પચી બમા પછી વહ જીર્ણ હોનેપર, હિત-મિત-અશનઃ દિતકારી અને પ્રમાણુસર ખેરાક ખાવે હિત કોર મિત આહાર-સેવી બને ॥ ૧૧૧-૧૧૨ ॥

111-112. Extract by pressure the juice of 2000 emblic myrobalans and then mix the juice with  $\frac{1}{4}$  quantity

૧૧૧. તુ તમ્-નિષ્ક (વ. ક.)

૧૧૨. ક્ષૌદ્રાષ્ટાંશેન સંયુક્તં કૃષ્ણાર્ધકુહલેન ચ ક્ષૌદ્રાષ્ટમાંશ  
પિપ્પલીસાર્ધકુહલાયુતમ્ (મ. ક. વ.)

૧૧૨. હિતમિતાશનઃ-મિતહિતાશનઃ (સ.)



of honey and eight tolas of long pepper and 200 tolas of sugar, and then keep it in a ghee-pot for a fortnight. This should be drunk in proper dosage in the morning, and the rules of beneficial dietetic regimen should be observed.

कामलापाण्डुहृद्रोगवातासृग्बिषमज्वरान् ॥११३॥  
कासहिकारुचिश्वासांश्चैषोऽरिष्टः प्रणाशयेत् ।  
इति घात्र्यरिष्टः ।

एषः अरिष्टः आ अरिष्टं यद् अरिष्टं, कामला-  
कमला, पाण्डु-पाण्डुरोग पाण्डुरोग, हृद्रोग- हृद्य  
रोग हृद्रोग, वातासृक्- वातरक्त वातरक्त, बिषमज्वरान्  
बिषम ज्वर बिषम ज्वर, कास- उभरस खांसी, हिका-  
होउडी हिचकी, अरुचि- अरुचि अरुचि, स्वासान् च  
अने स्वासने और स्वासको, प्रणाशयेत् नाश करे छे  
नष्ट करता है ॥ ११३३ ॥ इति आ यद्, घात्र्यरिष्टः  
घात्र्यरिष्ट छे घात्र्यरिष्ट है ।

113-113½. This is curative of  
jaundice, anemia, cardiac diseases  
rheumatic conditions, fevers of irre-  
gular type, cough, hiccup, anorexia and  
dyspnea. Thus has been described the  
Medicated Emblic Myrobalan-wine.

पाण्डुकामलग्नोः पानाहारे तोयम्—

स्थिरादिभिः शृतं तोयं पानाहारे प्रशस्यते ॥११४॥  
प्राण्डूनां, कामलार्तानां सृङ्गीकामलकीरसः ।

पाण्डूनाम् पाण्डुरोगीओने पाण्डुरोगियोंके लिए,  
स्थिरादिभिः शाब्दपर्यायं वगैरेथी स्थिरादिसे शृतम्  
तोयम् उडगैलुं पाणी शृत जल, कामलार्तानाम् च अने  
कमलावाणोओने और कामलाके रोगियोंके लिए, सृङ्गीका-  
आमलकी- रसः द्राक्ष अने आमलाओने रस मुनके और  
आंबलकोका रस, पान-आहारे पीया तथा जमवांमां  
पान तथा आहारमें, प्रशस्यते श्रेष्ठ छे उत्तम है ॥११४३॥

114-114½. The water decocted with  
the drugs of the tick-trefoil group is

recommended for use in the dietary  
of the anemia-patients and as regards  
those suffering from jaundice, the juice  
of grapes and of emblic myrobalans is  
recommended.

दोषापेक्षिणी चिकित्सा—

पाण्डुरोगप्रशान्त्यर्थमिति प्रोक्तं महर्षिणा ॥११५॥  
विकल्प्यमेतद्विषजा पृथग्दोषबलं प्रति ।  
वातिके स्नेहभूयिष्ठं, पैत्तिके तिक्तशीतलम् ॥११६॥  
श्लैष्मिके कटुतिक्तोष्णं, विमिश्रं सान्निपातिके ।

पाण्डुरोग- पाण्डुरोगनी पाण्डुरोगकी, प्रशान्त्यर्थम्  
शान्तिने भाटे शान्तिके लिए, महर्षिणा महर्षिओ महर्षिने,  
इति आ प्रमाणे इस तरह, प्रोक्तम् कहे छे कहा है,  
विषजा परंतु वैद्य परन्तु वैद्यको, पृथक् पृथक् पृथक्  
पृथक् अलग अलग, दोषबलम् प्रति दोषना जल प्रमाणे  
दोषबलके अनुसार, वातिके वातज पाण्डुरोगमां वातिक  
पाण्डुरोगमें, स्नेहभूयिष्ठम् थल्ल स्नेहवाणं स्नेहभूयिष्ठ,  
पैत्तिके पित्तज पाण्डुरोगमां पैत्तिक पाण्डुरोगमें, तिक्त-  
शीतलम् तिक्त अने शीतल तिक्त और शीतल, श्लैष्मिके  
कृष्ण पाण्डुरोगमां कफज पाण्डुरोगमें, कटुतिक्तोष्णम् कटु,  
तिक्त अने उष्ण कटु तिक्त और उष्ण सान्निपातिके  
तथा सान्निपातज पाण्डुरोगमां और सान्निपातमें, विमिश्रम्  
विमिश्र विमिश्र, इति ओ प्रमाणे इस तरह, एतत्  
विकल्प्यम् आ चिकित्सांनी उपेक्षना करवी इस  
चिकित्साकी कल्पना करनी चाहिए ॥ ११५-११६३ ॥

115 116½. Thus, the measures for the  
cure of anemia have been expounded  
by the great sage. The physician  
should administer these according to the  
predominant morbid humors and the  
vitality of the patient. In anemia due

११५. वातिके स्नेहभूयिष्ठं, पैत्तिके तिक्तशीतलम्—स्नेहप्राप्यं  
पवनजे तिक्तशीतं तु पैत्तिके (थ ब.)

११६. कटुतिक्तोष्णं—कटुश्लोष्णं (घ. थ. फ. व.)

„ कटुतिक्तोष्णं, विमिश्र सान्निपातिके—कटुश्लोष्णं, मिश्रं  
सन्निपातिके (घ.)

to predominance of vata-provocation, the treatment must be chiefly by unctuous medications. In anemia due to predominance of pitta, the treatment must be chiefly by bitter and cooling medicaments. In anemia due to predominance of kapha-provocation, the treatment must be chiefly by bitter, pungent and hot drugs. In tridiscordance condition it should be of the mixed nature

મૃજપાન્ડુરોમસ્ય ચિકિત્સા—

નિપાતયેચ્છરીરાત્તુ મૃત્તિકાં ભક્ષિતાં ભિષક્ ॥૧૧૭॥  
યુક્તિજ્ઞઃ શોધનૈસ્તીક્ષ્ણૈઃ પ્રસમીક્ષ્ય બલાચલમ્ ।

યુક્તિજ્ઞઃ યુક્તિને બાળનારા યુક્તિજ્ઞ, ભિષક્ વૈદ્યે વૈય, ચલ-ચલમ્ બલાચલને બલાચલકો, પ્રસમીક્ષ્ય વિચાર કરીને દેશકર, ભક્ષિતામ્ ખાધેલી ખાઈ હૈ, મૃત્તિકામ્ તુ મૃત્તિકાને મિટ્ટીકો, તીક્ષ્ણૈઃ તીક્ષ્ણ તીક્ષ્ણ, શોધનૈઃ શોધન ઔષધીથી શોધનોંઘે, ચરીરાત્ત શરીરથી શરીરસે, નિપાતયેત્ બહાર કાઢવી નિકાલે ॥ ૧૧૭ ॥

117-117½. The skilful physician should expel the ingested earth from the body by strong purificatory measures, after due consideration of the vitality of the patient.

ગ્યોષાયં ઘૃતમ્—

શુદ્ધકાયસ્ય સર્પીષિ બલાધાનાનિ યોજયેત્ ॥૧૧૮॥  
ગ્યોષં વિશ્વં હરિદ્રે દ્વે ત્રિફલા દ્વે પુનર્નવે ।

મુસ્તાન્વયોરજઃ પાઠા વિઢક્કં દેવદારુ ચ ॥૧૧૯॥  
શુશ્કિકાલી ચ ભાર્ગી ચ સક્ષીરૈસ્તૈઃ સમૈર્ઘૃતમ્ ।

સાઘયિત્વા પિબેદુક્ત્યા નરો મૃદોષપીઢિતઃ ॥૧૨૦॥  
તદ્ઘૃત્ કેશરયષ્ટ્યાદ્ધિપ્પલીક્ષારશાદૃલૈઃ ।

૧૨૦. સક્ષીરૈઃ—સક્ષારૈઃ (ચ. ક.)

„ સમૈર્ઘૃતમ્—શૃતં ઘૃતમ્ (ચ.)

„ „ —પ્રબોધયેત્ (ચ.)

૧૨૦½. પિપ્પલીક્ષાર—પિપ્પલીક્ષીર (ચ.)

„ ક્ષાર—ક્ષીર (ચ.)

„ ક્ષારશાદૃલૈઃ—કોષશાદૃલૈઃ (ક.)

શુદ્ધકાયસ્ય શુદ્ધ શરીરવાળાને શુદ્ધ શરીરવાળાને  
લિપ્, બલાધાનાનિ બલાધાન બલપદ, સર્પીષિ ઘૃતોની  
ઘૃતોંકા, યોજયેત્ યોજના કરવી પ્રયોગ કરે, ગ્યોષમ્  
નિઝડુ ત્રિકડુ, વિશ્વમ્ ખીલું વેલગિરી, દ્વે હરિદ્રે હળદર,  
દારુહળદર હલ્દી, દારુહલ્દી, ત્રિફલા ત્રિફલા ત્રિફલા,  
દ્વે પુનર્નવે ધોળી તથા રાતી સાટોડી દોનોં પુનર્નવા,  
મુસ્તાનિ મોથ મોથા, મયોરજઃ દોઢશૂર્ણ લોહચૂર્ણ,  
પાઠા કાબીપાઠ પાઠી, વિઢક્કમ્ વાવડિંગ વાવડિંગ,  
દેવદારુ ચ અને દેવદારુ ઓર દેવદારુ, શુશ્કિકાલી ચ  
ખાબવણી બૃહ્ણા, ભાર્ગી ચ ભાર્ગી મંગેરન, સક્ષીરૈઃ  
દૂધસહિત દૂધયુક્ત, સમૈઃ તૈઃ સરખે વજને લીધેલા  
તેઓથી સમ ભાગમેં લિપ્ હુપે ઉત્તરે, ઘૃતમ્ ધી ધીકો,  
સાઘયિત્વા પકાવીને સિદ્ધ કરકે, મૃત્-દોષ-પીઢિતઃ  
માટીના દોષથી પીડાતા મૃત્તિકાકે રોષસે પીડિત, નરઃ  
મનુષ્યે પુરુષ. યુક્ત્યા યુક્તિથી યુક્તિપૂર્વક, યિવેત્ પીલું  
પીવે, કેશર-નાબકેસર નાગકેસર, યષ્ટ્યાદ્ધ-ગેડીમધ  
મુલહઠી. પિપ્પલી- પીપર પિપ્પલી, ક્ષાર-જવખાર  
યવશાર, શાદૃલૈઃ અને દૂધથી સિદ્ધ કરેલું ધી  
પીલું ઓર દૂધાં ઉત્તરે સિદ્ધ કિયા હુઆ ધી પીવે  
॥ ૧૧૮-૧૨૦½ ॥

118-120½. And when the body has been purified, strength-promoting ghee should be administered. The person suffering from the morbid effects of geophagism should drink, according to the prescribed procedure, the medicated ghee prepared with the three spices, bael, turmeric and indian berberry, the three myrobalans, the two varieties of hog's weed, nut-grass, iron powder, patha, embelia. deodar, climbing nettle mercury and beetle killer along with milk and ghee. Similarly, he may drink the medicated ghee prepared with fragrant poon, liquorice, long pepper, alkali and scutch grass.

मृद्वक्षणादातुरस्य लौक्यादविनिवर्तिनः ॥१२१॥  
द्वेष्यार्थं भावितां कामं दद्यात्तदोषनाशनैः ।  
विडङ्गैकानिविषया निम्बपत्रेण पाठया ॥१२२॥  
वार्ताकैः कटुरोहिण्या कौटजैर्मूर्खवाऽपि वा ।

लौक्यात् लाक्षणार्थं जिह्वालौक्यसे. मृद्वक्षणात्  
भाटी भावानुं मिट्टी खानेसे, अविनिवर्तिनः न छोडना  
परावृत्त न होनेवाले, आतुरस्य रोगीने रोगसे, तद-दोष-  
नाशनैः ते दोष हर करनेवाला उष दोषके नाशक,  
विडङ्ग-वायुविडङ्ग, एला-ओक्षयी इलायची,  
अतिविषया अतिविष अतीस, निम्बपत्रेण दक्षिणानां  
पान नीमके पत्ते, पाठया डाणीपाठ पाठी, वार्ताकैः  
रींगलु बॅमन, कटुरोहिण्या कडु कटुकी, कौटजैः  
छन्दम्व इन्द्रजौ, मूर्खया अपि वा अथवा मोरवेखथी  
पक्ष वा मूर्खि मी, भाविताम् भावना दीयेदी भाटी  
भावित मिट्टीको, द्वेष्यार्थम् अलुगमे उत्पन्न करने भाटे  
द्वेष उत्पन्न करनेके लिए, कामम् छन्दम्व प्रमाणे देवी  
इच्छानुसार देवे ॥ १२१-१२२३ ॥

121-122. If the patient is unable to leave off geophagism owing to loss of self-control, in order to make him averse to it, he should be given earth treated with drugs which have also the power to neutralise its bad effects. These drugs are embelia, atees, leaves of neem, patha, brinjal, kurroa, kurchi seeds and roots of trilobed virgin's bower.

१२१. मृद्वक्षणात्-मृदोऽनिवर्तमानाय लौक्यात्प्रत्यह-

मक्षणात् (घ.)

,, अविनिवर्तिनः-अविनिवर्तनः (घ. घ.)

१२२. द्वेष्यार्थं-द्वेषार्थं (क.)

,, -द्वेषार्थं (व.)

,, दोषनाशनैः-दोषनाशने (घ. घ.)

,, विडङ्गैकानिविषया निम्बपत्रेण पाठया-शुद्धानिविषया  
निर्विषिङ्गैः कुटजेन च (घ. क.)

१२२. कौटजैः-पाठया (फ.)

यथादोषं प्रकुर्वीत मैषज्वं पाण्डुरोगिणाम् ॥१२३॥  
क्रियाविशेष एषोऽस्य मतो हेतुविशेषतः ।

पाण्डुरोगिणाम् भाटीथी थयेला पाण्डुरोगवालाओनी  
मिट्टीसे उत्पन्न हुए पाण्डुरोगवालोंकी, यथादोषम् पाण्डु-  
रोगने उत्पन्न करनेवाला दोषने अनुसरी पाण्डुरोगके  
उत्पन्न करनेवाले दोषके अनुसार, मैषज्वम् शिडित्वा  
चिकित्सा, प्रकुर्वीत करने करे, कस्य आ पाण्डुरोगने  
इस पाण्डुरोगका, हेतुविशेषतः भाटीथी विशिष्ट हेतुथी  
मिट्टीरूप विशिष्ट हेतुसे, एषः आ यह, क्रियाविशेषः  
शिडित्वाले चिकित्साभेद, मतः कहेवाला आलोये  
छे कहा गया है ॥ १२३३ ॥

123-123. The patient suffering from anemia due to geophagism should be treated with medication indicated in anemia, according to the morbid humor. This special mode of treatment is indicated by the special etiological factors.

कामलाया आवस्तिष्वै चिकित्सा—

तिलपिष्टनिभं यस्तु वर्चः सृजति कामली ॥१२४॥  
श्लेष्मणा रुद्धमार्गं तत् पित्तं कफहरैर्जयेत् ।

यः तु जे जो, कामली कभलाने रोगी कामलाका  
रोगी, तिल-पिष्ट-निभम् तिलना कल्ल जेवा तिलपिष्ट  
जैसा, वर्चः भग्न मन, सृजति त्यजते। होय स्वागता  
है तत् ते उस, श्लेष्मणा कइथी कफसे. रुद्धमार्गम्  
रुंधायेला मार्गवाला रुके हुए मार्गवाले, पित्तं पित्तने  
पित्तको, कफहरैः कइने हर करनेवाली औषधी कफहर  
द्रव्योंसे, जयेत् लुत्तुं जीते ॥ १२४३ ॥

124-124. If the jaundice-patient is seen passing stools of the color of the paste of til (clay color) the physician should know that the pitta in the body is occluded in its course and he should alleviate this condition by drugs curative of kapha

१२४. वर्चः सृजति कामली-कामलायामुत्पन्नमलम् (घ. व. क. घ.)

રુક્ષશીતગુરુસ્વાદુવ્યાયામૈર્વેગનિગ્રહૈઃ ॥૧૨૫॥  
કફસંમૂર્ચ્છિતો વાયુઃ સ્થાનાત્ પિત્તં ક્ષિપેદ્વલી ।

રુક્ષ- રુક્ષ રુક્ષ, શીત- શીત શીત, ગુરુ- ગુરુગુરુ, સ્વાદુ અને મધુર અજપાનથી ઓર મધુર અજપાનસે, વ્યાયામૈઃ અતિશય વ્યાયામથી અતિ વ્યાયામસે, વેગનિગ્રહૈઃ તથા વેગ રોકવાથી તથા વેગવિધારણસે, કફસંમૂર્ચ્છિતઃ કફથી ભિષ્મિત કફસે મિલા હુબા, વલી વાયુઃ અજપાન વાયુ બલવાન વાયુ, સ્થાનાત્ પોતાના સ્થાનમાંથી અપને સ્થાનસે, પિત્તમ્ પિત્તને પિત્તકો, ક્ષિપેત્ ફેંકે છે ફેંકતા હૈ ॥ ૧૨૫૩ ॥

125 125½. The pathogenesis of the above-mentioned condition is as follows— as the result of undue indulgence in dry, cold, heavy and sweet articles of diet and in exercise and suppression of natural urges, the vata combined with kapha gets provoked and expels the pitta from its seat.

હારિદ્રનેત્રમૂત્રત્વક્ શ્વેતવર્ચાસ્તદા નરઃ ॥૧૨૬॥  
ભવેત્ સાટોપવિષ્ટમ્ભો ગુરુણા હૃદયેન ચ ।  
દૌર્બલ્યાભ્યાગ્નિપાર્શ્વર્તિહિકાશ્વાસારુસિજ્વરૈઃ ॥૧૨૭॥  
ક્રમેણાત્પેડનુસજ્વેત પિત્તે શાશ્વાસમાશ્રિતે ।

તદા ત્યારે તબ, નરઃ મનુષ્ય પુરુષ, હારિદ્ર- પીળા પીલે, નેત્ર-મૂત્ર- ત્વક્ નેત્ર, મૂત્ર અને ત્વચાવાળા નેત્ર, મૂત્ર ઓર ત્વચાવાળા, શ્વેતવર્ચાઃ સફેદ મળવાળા સફેદ મલવાળા, સાટોપ-વિષ્ટમ્ભઃ પેટમાં ગડગડટ અને મલ- બદ્ધતાવાળો થાય છે આટોપ ઓર વિષ્ટમ્ભસે યુક્ત, ગુરુણા હૃદયેન ચ તેમજ ભારે હૃદયવાળો. एवं भारी हृदयसे युक्त, ભવેત્ થાય છે હોતા હૈ, અલ્પે પિત્તે અલ્પ પિત્ત ઓરેસે પિત્તકે, શાશ્વા- શાશ્વાઓને શાશ્વામૈ, સમાશ્રિતે આશ્રય કરે છે ત્યારે આશ્રિત હોનેવર, ક્રમેણ અતુકસે

કપશઃ, દૌર્બલ્ય- દુર્બલતા દૌર્બલ્ય, અભ્યાગ્નિ- મંદાગ્નિ મન્દાગ્નિ, પાર્શ્વર્તિ- પડખામાં પીડા પાર્શ્વરજા, હિકા હેડકી ટિચકી, શ્વાસ- શ્વાસ શ્વાસ, અરુચિ- અરુચિ અરુચિ, જ્વરૈઃ અને જ્વરથી ઓર જ્વરસે, અનુસજ્વેત યુક્ત થાય છે પીડિત હોતા હૈ ॥ ૧૨૬-૧૨૭૩ ॥

126-127½. The patient then develops yellow coloration of the eyes, urine and skin, whitish stools, tympanites and intestinal torpor, and gradually becomes afflicted with heaviness of heart, debility, low digestive power, pain in the sides, hiccup, dyspnea, anorexia and fever on account of the pitta having suffered diminution and receded to the peripheral system.

વર્હિતિત્તિરિદ્ધાણાં રુક્ષામ્લૈઃ કટુકૈ રસૈઃ ॥૧૨૮॥  
શુષ્કમૂલકકૌલત્યૈર્યૃષૈશ્ચાન્નાનિ ભોજયેત્ ।

વર્હિ ઓર રોગીને ઓર એસે રોગીકો મોર, તિત્તિરિ- તેતર તીતર, રુક્ષાણામ્ અને કૂકડાના ઓર મુર્ગે इनके रुक्ष- रक्ष रुक्ष, અમ્લૈઃ ખાટા અમ્લ, કટુકૈઃ અને તીખા ઓર કટુ, રસૈઃ મીઠાસેની સાથે માંસરસોસે, શુષ્ક-મૂલક- તેમજ મુકા મૂળા एवं सूखी मूली, કૌલત્યૈઃ અને કળથીના ઓર કુલથીકે, યૃષૈઃ ચ યૃષોની સાથે યૃષોસે, અન્નાનિ અન્નને અન્ન, ભોજયેત્ ખાડાર કરાવવો સેવન કરાવે ॥ ૧૨૮૩ ॥

128-128½. In such conditions, the physician should give the patient diet mixed with meat-juices of peacock, partridge and cock, seasoned with dry, acid and pungent articles, as also thin gruels prepared with dry radish or horse-gram.

માતુલુક્કરસં ક્ષૌદ્રપિપ્પલીમરિચાન્વિતમ્ ॥૧૨૯॥  
સનાગરં પિબેત્ પિત્તં તથાડસ્યૈતિ સ્વમાશયમ્ ।

૧૨૯૩. તથાડસ્યૈતિ સ્વમાશયમ્-તથાએતિ સ્વમાશયમ્ (મ.)

૧૨૫૩. ક્ષિપેદ્વલી-ક્ષિપેદ્વહિઃ (વ.)

૧૨૭. હિકાશ્વાસારુચિ-હિકાશ્વાસારુચિ (ધ. વ.)

૧૨૭૩. ક્રમેણાત્પેડનુસજ્વેત-ક્રમેણાત્પેડનુસજ્વેત (ધ.)

૧૨૭. અનુસજ્વેત-અનુસજ્વેત (ક.)

औद- ओ रेजीओ भध वह रोगी मधु, पिप्पली-  
पीपर पिप्पला, मरिचान्वितम् अने मरीची युक्त और  
मरिच इनसे युक्त, सनागरम् मूँसखित सोंठके साथ,  
मातुलङ्ग- पीओराने। बिजौरका, रसश्च रश्च रश्च, पिवेत्  
पीवे। पीवे, तथा ओम डरवाथी ऐसा करनेसे, अस्य  
ओनु इसका, पित्तम् पित्त पित्त, स्वम आशयम् पीताना  
स्थानम्। अपने आशयको, एति आवी न्यथ छे पहुँचता  
हे ॥ १२९३ ॥

129-129½. The patient may take as  
potion the juice of pomello mixed  
with honey, long pepper and dry  
ginger in order to induce the provoked  
pitta to return to its normal habitat.

कटुतीक्ष्णोष्णलवणैर्भृशाम्लैश्चाप्युपक्रमः ॥१३०॥  
आपित्तरागाच्छकृतो वायोश्चाप्रशमाद्भवेत् ।

शकृतः भणभां मलमें, पित्तरागात् आ पित्तने। रंभ  
आवे त्यां सुधी पित्तका रंग आने तक, वायोः च  
तथा वायुनी और वायुके, प्रशमात् आ शांति थाय त्यां  
सुधी शान्त होने तक, कटु- कटु कटु, तीक्ष्ण- तीक्ष्ण  
तीक्ष्ण, उष्ण- उष्ण उष्ण, लवणैः लवण लवण,  
मृशाम्लैः च अने अत्यंत अम्ल द्रव्योंथी और खूब  
अम्ल द्रव्योंसे, अपि पशु मी, उपक्रमः चिकित्सा  
उपचार, भवेत् डरवी करे ॥ १३०३ ॥

130-130½. Treatment with pungent,  
strong, hot, saltish and very acid drugs  
should be persisted in, till the fecal  
matter acquires the coloration of pitta  
and the vata is alleviated.

स्वस्थानमागते पित्ते पुरीषे पित्तरञ्जितं ॥१३१॥  
निवृत्तोपद्रवस्य स्यात् पूर्वः कामलिको विधिः ।

१३०. कटुतीक्ष्णोष्णलवणैर्भृशाम्लैश्चाप्युपक्रमः-- तीक्ष्णाम्लैः कटु-  
रूक्षोष्णैर्लवणैश्चाप्युपक्रमः (श.)

१३०½. आपित्तरागाच्छकृतो--आपित्तरोगाच्च कृतो (प.)

१३१ पुरीषे पित्तरञ्जिते--मले पित्तामुरञ्जिते (गं क. व.)

१३१½. निवृत्तोपद्रवस्य स्यात्--निवृत्तोपद्रवस्यास्य (ज)

,, पूर्वः--पूर्वः (फ.)

पित्ते पित्त न्यारे पित्तके, स्वस्थानम् पीताना  
स्थानम्। अपने स्थानमें, आगते आवी न्यथ आने पर,  
पुरीषे च अने भण और मलके, पित्तरञ्जिते पित्तथी रंगान्  
न्यथ पित्तके रंग जाने पर, निवृत्तोपद्रवस्य न्येना उपद्रवे।  
शांत था। छे ओवा रेजीने जिसके उपद्रव निवृत्त हुए  
हैं इसके लिए, पूर्वः पूर्वः डरेवी प्रथम कही, कामलिकः  
कमलानी कामलकी, विधिः स्यात् चिकित्साविधि डरवी  
चिकित्साविधि करे ॥ १३१३ ॥

131-131½. When the pitta has  
returned to its habitat, the fecal matter  
becomes colored with pitta and there  
is subsidence of complications, the line  
of treatment laid down earlier for  
jaundice, should be resumed.

हलीमकस्य लक्षणम्--

यदा तु पाण्डोर्वर्णः स्याद्वरितश्चावपीतकः ॥१३२॥  
बलोत्साहक्षयस्तन्द्रा मन्द्राग्निर्त्वं मृदुज्वरः ।  
स्त्रीष्वहर्षोऽङ्गमर्दश्च श्वासस्तृष्णाऽरुचिर्भ्रमः ॥१३३॥  
हलीमकं तदा तस्य विद्यादनिलपित्ततः ।

यदा तु न्यारे जब, पाण्डोः पांडुरेजीने। पांडु-  
रोगीका, वर्णः पशु वर्ण, हरित- हरी। नीला, श्याव-  
डाणो। श्याव, पीतकः डे पीणो या पीला, स्यात् भाय  
होवे, बल-उत्साह-क्षयः अथ तथा उत्साहने। क्षय बल  
और उत्साहका क्षय, तन्द्रा तन्द्रा तन्द्रा, मन्द्राग्निर्त्वं  
मंदाग्निपशु मंदाग्निता, मृदुज्वरः मंदज्वर मंदज्वर,  
स्त्रीष्वहर्षः स्त्री विषे अहर्ष क्रियोंमें अनुत्साह  
अङ्गमर्दः च अंग भागवां अंग तूटना, श्वासः श्वास  
श्वास, तृष्णा तथा प्यासः अरुचिः अरुचि अरुचि, भ्रमः  
च अने भ्रम भाय और भ्रम होवे, तदा तयारे तब,  
तस्य तेने उसको, अनिक-पित्ततः वातपित्तथी वातपित्तसे,  
हलीमकम् हलीमक थये। छे हलीमक हुआ हे, विद्यात्  
ओम न्यारु पुं ऐसा जाने ॥ १३२-१३३३ ॥

132-133½. If in an anemia-patient  
the physician marks green, black or  
yellow coloration of skin, together  
with lowered vitality and spirits,

torpor, loss of gastric fire, low fever, insensitiveness to women, body-ache, dyspnea, thirst, anorexia and vertigo, he should recognise it as Halimaka-jaundice resulting from the provocation of vata and pitta.

हलीमकस्य चिकित्सा—

गुडूक्षीस्वरसक्षीरसाधितं माहिषं घृतम् ॥१३४॥  
स पिबेत् त्रिवृतां क्षिण्यो रसेनामलकस्य तु ।  
विरिको मधुरप्रायं भजेत् पित्तानिलापहम् ॥१३५॥

सः ते वह, गुडूक्षी-स्वरस- गण्डोने स्वरस गिलोयके स्वरससे, क्षीरसाधितम् अने दूधथी सिद्ध करेहुं और दूधसे सिद्ध किया, माहिषम् ओंसुं मैसक, घृतम् घी घी, पिबेत् पीवुं पीवे, क्षिण्यः तु घीक्षी रसेहन यत्ता बीसे स्नेहन हो जाने पर, अमलकस्य आमणाना आंवलेके, रसेन रसथी रससे, त्रिवृताम् नसेतर पीवुं त्रिवृत पीवे, विरिक्तः अने रथ आया पछी और विरेचन हो जाने पर, मधुरप्रायम् मधुररसप्रधान मधुररसप्राय, पित्तानिलापहम् पित्त तथा वातने नाश करनेपर अजतुं पित्त और वातके नाशक अचका, भजेत् सेवन करे ॥ १३४-१३५ ॥

134-135. In this condition, the patient may drink the medicated ghee prepared from buffalo's ghee, with the juice of guduch and milk; when the oleation is sufficient, he may take turpeth mixed with juice of emblic myrobalan, and on sufficient purgation, he may resort to articles mainly of the sweet taste, which are curative of pitta and vata

द्राक्षालेहं च पूर्वोक्तं सर्पीषि मधुराणि च ।  
यापनात् क्षीरवस्तींश्च श्लेष्मलवस्त्वानुवासनान् ॥१३६॥  
माद्वीकारिष्टयोगांश्च पिबेद्युक्त्याऽमित्रवृद्धये ।

१३६. युक्त्याऽमित्रवृद्धये—युक्त्या निवृद्धये (१.)

पूर्वोक्तम् रेजीमे पूर्वे कहेथे। रोगी पूर्वोक्त, द्राक्षा-लेहम् च द्राक्षावलेह द्राक्षावलेह, मधुराणि मधुर, मधुर, सर्पीषि च घृते घी, साजुवासनान् अनुवासनसहित अनुवासनवस्तियों, यापनात् यापनवस्तियों, यापन-वस्तियों, क्षीरवस्तीन् च अने क्षीरवस्तियों और क्षीरवस्तियोंका, श्लेष्मलवस्त्वानुवासनान् श्लेष्मल-वस्तियोंका, मधुराणि मधुर, माद्वीकारिष्टयोगान् च तेभ्यः द्राक्षारिष्टना योगान् एवं द्राक्षारिष्टयोगोंको, मित्रवृद्धये मित्रवृद्धये वृद्धि भाटे मित्रवृद्धिके लिए, युक्त्या युक्तिथी युक्तिपूर्वक, पिबेत् पीवुं पीवे ॥ १३६ ॥

136-136½. The patient may use the afore-said grape linctus, sweet ghees, palliative enemata, compound milk enemata and unctuous enemata. He may drink in due manner the medicated wine made from grapes to promote the gastric fire.

कासिकं क्षामयालेहं पिप्पलीं मधुकं बलाम् ॥१३७॥  
पयसा च प्रयुजीत यथादोषं यथाबलम् ।

कासिकम् अने छिदरसना भ्रंशरुमा कहेथ और कासप्रकरणमें कहा हुआ, क्षामयालेहम् च ६२३ने अन्वेह हरकका अवलेह, पिप्पलीम् पीपर पिप्पली, मधुकम् गेडीमध मुलहरी, बलाम् च तथा अक्षाने तथा बला इनका, यथादोषम् दोषने अनुसरीने यथादोष, यथाबलम् अने अक्षने अनुसरीने और यथाबल पयसा दूधथी दूधके साथ, प्रयुजीत प्रयोग करे ॥ १३७ ॥

137-137½. According to the morbid humor concerned and the patient's vitality, he may use the chebulic myrobalan linctus prescribed in the treatment of cough, or long pepper, liquorice and heart-leaved sida mixed with milk.

अध्यायोक्तविषयाः—

तत्र श्लोकौ—

पाण्डोः पञ्चविधस्योक्तं हेतुलक्षणमेवजम् ॥१३८॥  
कामला द्विविधा तेषां साध्यासाध्यत्वमेव च ।



तत्र ते विषयमां उस विषयों, श्लोकों उपसंहारना  
ये श्लोका के के उपसंहारके दो श्लोक हैं कि पञ्च-  
विधस्य पांथ पाण्डुरोगा पांथ प्रकारके पाण्डुरोः पांठु-  
रोगनां पांठुरोगके, वेदु-लक्षण-मेवज " कारणी, लक्षणो  
अने औषधी हेतु-लक्षण और पांथ, उक्तम् कर्त्ता के  
कहे हैं, द्विविधा तेभ्यः के प्रकारने। एवं दो प्रकारकी,  
कामला कभगी। कारला, तेभ्यः अने तेभ्योः की वर  
उनकी, साध्य- साध्यता साध्यता असाध्यत्वम् च एव  
तथा असाध्यत पांठु कर्त्ता के तथा असध्यता भी कही  
है ॥ १३८३ ॥

Here are the two recapitulatory  
verses—

१३८-३८३. The causes, symptoms  
and treatment of the five types of  
anemias, and the two types of jaun-  
dice, their curability and incurability;

तेषां विकल्पो यश्चाभ्यो महाव्याधिर्हलीमकः ।

तस्य चोक्तं समासेन व्यञ्जनं सचिकित्सितम् १३९

तेभ्यः तेभ्योना उनके, विकल्पः भेद भेद, यः च  
अने ने और जो, अन्यः भीजे दूसरी, महाव्याधिः  
महाराग महाव्याधि, हलीमकः हलीमक के हलीमक है,  
तस्य च तेनां पांठु उनके भी, सचिकित्सितम् चिकित्सा-  
सहित चिकित्सासहित, व्यञ्जनम् लक्षणो लक्षण,  
समासेन टूटकाभ्यो संक्षेपमें, उक्तम् कर्त्ता के कहे  
हैं ॥ १३९ ॥

१३९. Their variations and the grave  
type of anemia known as Halimaka,  
together with its diagnosis and treat-  
ment in general, have been described  
herein.

इत्यग्निवेशकृते तन्त्रेऽप्राप्ते दृढबलसंपूरिते  
चिकित्सास्थाने पाण्डुरोगचिकित्सितं  
नाम षोडशोऽध्यायः ॥१६॥

१३९. तेषां विकल्पः—तेषां विकल्पः (य.)

, व्यञ्जनं—लक्षणं (द. क. व.)

इति आ प्रमाणे इस प्रकार, अग्निवेशकृते अग्निवेशे  
श्लोका अग्निवेशसे बनाये, तन्त्रे अने यरक्ष्मी  
प्रतिस्तरकार पाभेदा आ शास्त्रमां और चरकके द्वारा  
संस्कृत इस शास्त्रके, अप्राप्ते अप्राप्त, दृढबलसंपूरिते  
अने दृढबले पूरा करेला और दृढबलसे पूरित किये गये,  
चिकित्सास्थाने चिकित्सास्थान विषे चिकित्सास्थानमें,  
पाण्डुरोगचिकित्सितम् 'पांठुरोगचिकित्सित' 'पाण्डुरोग-  
चिकित्सित', नाम नामने। नामका, षोडशः सोलहवां,  
सोलहवां, अध्यायः अध्याय संपूर्ण भयो अध्याय समाप्त  
हुआ ॥ १६ ॥

16. Thus in the Section on Thera-  
peutics in the treatise compiled by  
Agnivesa and revised by Caraka the  
sixteenth chapter entitled 'The Thera-  
peutics of Anemia' not being available,  
the same as restored by Dridhabala is  
completed.

## सप्तदशोऽध्यायः ।

सत्तरमेो अध्याय अध्याय सत्रहवां

## Chapter XVII

हिक्काश्वासचिकित्सितोपक्रमः—

अथातो हिक्काश्वासचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥१॥

इति ह स्माह भगवानात्रेयः ॥२॥

अथ अतः हवे अलीथी अब आगे, हिक्काश्वासचि-  
कित्सितम् 'हिक्काश्वासचिकित्सित' नामना अध्यायानु-  
'हिक्काश्वासचिकित्सित' नामके अध्यायका, व्याख्यास्यामः  
व्याख्यान करुं व्याख्यान करेंगे ॥ १ ॥

भगवान् भगवान् भगवान्, आत्रेयः आत्रेये आत्रेयने,  
इति ह आ विषयमां नीये प्रमाणे न इस विषयमें  
निम्न प्रकारसे ही, आह सस कहेलुं के कहा है ॥ २ ॥

1. We shall now expound the  
chapter entitled 'The Therapeutics of  
Hiccup and Dyspnea.'

2. Thus declared the worshipful  
Atreya.

वेदलोकार्थतत्त्वज्ञमात्रेयमृषिमुत्तमम् ।

अपृच्छत् संशयं धीमानग्निवेशः कृताञ्जलिः ॥ ३ ॥

धीमान् बुद्धिमान् धीमान्, अग्निवेशः अग्निवेशे अग्निवेशने कृताञ्जलिः दाथ जेडी हस्त जोड़कर, वेद लोक वेद तथा लोकना वैदिक और लौकिक, अर्थतत्त्वज्ञम् पदार्थोना तत्त्वने अखुनार पदार्थोके तत्त्वको जाननेवाले, उत्तमम् उत्तम श्रेष्ठ, आत्रेयम् आत्रेय आत्रेय, ऋषिम् ऋषिने ऋषिको, संशयम् संशय संशय, अपृच्छत् पूछा पूछा ॥ ३ ॥

3. Agnivesa, with folded hands, asked the following question of Atreya, the greatest of sages, the knower of the nature of truth contained in both the scriptures as well as the world.

य इमे द्विविधाः प्रोक्तास्त्रिदोषास्त्रिप्रकोपणाः ।

रोगा नानात्मकास्तेषां कस्को भवति दुर्जयः ॥ ४ ॥

ये इमे जे आ जो ये, द्विविधाः ये प्रकारना दो प्रकारके, त्रिदोषाः त्रिषु दोषवाणा तीन दोषवाले, त्रिप्रकोपणाः त्रिषु हेतुओंथी प्रकोप पाभनारा तीन हेतुओंसे प्रकुपित होनेवाले, नानात्मकाः अने नाना स्वरूपवाणा और नाना स्वरूपवाले, रोगाः प्रोक्ताः रोगो कहेंगे ओ रोग कहे हैं, तेषाम् तेषांथी उनमें कस्कः कथो कथो कौन कौन, दुर्जयः कष्टसाध्य कष्टसाध्य, भवति ओ ? हैं ? ॥ ४ ॥

4. Which of the diseases which are classified into two categories (general and specific or mild and acute) resulting from the morbidity of any or all of the three humors and caused by the three kinds of etiological factors and manifesting various kinds of symptoms, are difficult of cure?

३. वेदलोकार्थ—वेदलकार्थ (ध.)

, ऋषिमुत्तमम्—ऋषिभिः स्तुतम् (ध.)

४. नानात्मकाः—नानाविधाः (ग. व. क.)

अग्निवेशस्य तद्वाक्यं श्रुत्वा मतिमतां वरः ।

उवाच परमप्रीतः परमार्थविनिश्चयम् ॥ ५ ॥

अग्निवेशस्य अग्निवेशनु अग्निवेशके, तत् वाक्यम् ते वाक्य उस वाक्यको, श्रुत्वा सांभलीने सुनकर, परमप्रीतः अत्यंत प्रसन्न थियेला अत्यन्त प्रसन्न हुए, मतिमताम् बुद्धिमानोंभा बुद्धिमानोंमें, वरः श्रेष्ठ आत्रेय मुनिओ श्रेष्ठ आत्रेय मुनिने, परम-मर्थ-विनिश्चयम् सत्य अर्थओ निश्चय सत्यार्थके निर्णयको, उवाच कहा ॥ ५ ॥

5. On hearing these words of Agnivesa, Atreya the foremost of wise men being exceedingly pleased, delivered in the following manner the established truth on this most vital subject.

हिकाश्वासयोः शीघ्रं प्राणहरत्वं तत्र हेतुश्च—

कामं प्राणहरा रोगा बहवो न तु ते तथा ।

यथा श्वासश्च हिका च प्राणानाशु निष्कन्ततः ॥ ६ ॥

बहवः धन्य बहुतसे, रोगाः रोगो रोग, कामम् अरेअर सचमुच, प्राणहराः प्राणहरण करनारा ओ प्राण-नाशक हैं, ते तु पक्षु तेओ किंतु वे, यथा श्वासः च जेम श्वास जैसे श्वास, हिका च अने हेडडी और हिका, आशु शीघ्र शीघ्र, प्राणाश् प्राणुं प्राणोंको, निष्कन्ततः हरणु करे ओ नष्ट करते हैं, तथा न तेम नखडी प्राणुओ नाश करता नथी जैसे शीघ्र प्राणोंका नाश नहीं करते ॥ ६ ॥

6. Although many are the diseases which take away human life, there are none that terminate a patient's life so rapidly as hiccup and dyspnea.

अन्यैरप्युपसृष्टस्य रोगैर्जन्तः पृथग्विधः ।

अन्ते संजायते हिका श्वास्तो वा तीव्रवेदनः ॥ ७ ॥

५. अग्निवेशस्य तद्वाक्यम्—इत्यग्निवेशस्य वचः (ग. व. क. व.)

, परमार्थविनिश्चयम्—परमार्थप्रयोजनम् (व.)

६. प्राणानाशु निष्कन्ततः—हरतः प्राणमाशु वै (ध.)



पृथग्विधैः शुद्ध शुद्ध प्रकारना अलग अलग प्रकारके, अन्यैः भीष्म अन्य, रोगैः उपसृष्टस्य रोगोत्थी वेदशैथी रोगोत्थे पीकित, जन्तोः अपि प्राणीने पक्षु प्राणीको सी, अन्ते अन्ते अन्तमें, हिक्का हेल्ली हिचकी, तीव्रवेदनः अथवा तीव्र वेदनावाणे। या तीव्र पीडादायक, श्वासः वा श्वास श्वास, संजायते भाय छे हो जाता है ॥ ७ ॥

7 Even in patients affected with various other kinds of disease, there develops in the end hiccup or accurately painful dyspnea (terminal complications).

कफवातात्मकवेतौ पित्तस्थानसमुद्भवौ ।  
हृदयस्य रसादीनां घातूनां चोपशोषणौ ॥८॥  
तस्मात् साधारणावेतौ मतौ परमदुर्जयौ ।  
मिथ्योपचरितौ क्रुद्धौ इत आशीविषाविव ॥९॥

कफ-वात-आत्मकौ कफवातस्व३५ कफवातात्मक, पित्तस्थान- पित्तस्थानभाथी पित्तस्थानसे, समुद्भवौ उत्पन्न भयेथी उत्पन्न, एतौ ओ अन्ते वे दोनों, हृदयस्य हृदयना हृदयके, रसादीनाम् तेभ्य रसादि एवं रसादि, घातूनाम् च घातुभ्यो घातुभ्योके, उपशोषणौ शोषणु करनार छे शोषक हैं, तस्मात् तेथी उस कारणसे, साधारणौ अभान वक्ष्यमाण। समान लक्षणसे युक्त, एतौ ओ अन्ते वे दोनों, परम-दुर्जयौ अत्यन्त दुष्टसाध्य अत्यन्त कष्टसाध्य, मतौ भनाथा छे माने गये हैं, मिथ्या उपचरितौ मिथ्या उप-चार करवाभा आवतां तेभ्य अन्ते मिथ्या उपचार करनेसे वे दोनों, क्रुद्धौ कुपित भयेथी कुपित हुए, आशीविषौ ओ सपौनी दो सपौकी, इव येठे तरह, इतः भारी नाछे छे मार गजते हैं ॥ ८-९ ॥

8-9. These two are due to the nature of kapha and vata and originate in the seat of pitta in the body and

८. पित्तस्थानसमुद्भवौ-मतौ सममुद्भवौ (न.)

९. परमदुर्जयौ-सममुद्भवौ (घ. ड. फ. व.)

dry up the nutrient fluid and other body-elements of the stomach. Thus these two diseases are considered to be of similar nature and very intractable, and if wrongly treated, get exacerbated and kill the patient as rapidly as snake-venom.

हिक्काश्वासयोः निदानं संप्राप्तिश्च —

पृथक् पञ्चविधावेतौ निर्दिष्टौ रोगसंग्रहे ।

तयोः शृणु समुत्थानं लिङ्गं च समिषग्नितम् ॥१०॥

रोगसंग्रहे अष्टोदरीय अध्यायभा अष्टोदरीय अध्यायमें, एतौ ओ अन्ते वे दोनों, पृथक् पृथक् पृथक् पृथक् पृथक् पञ्चविधौ पांथ प्रकारना पांच प्रकारके, निर्दिष्टौ वृत्ता छे निर्दिष्ट हैं, तयोः ते अन्ते उन दोनोंके, समुत्थानम् उत्पन्न कारण समिषग्नितम् अने चिकित्सासहित और चिकित्साके साथ, लिङ्गम् च वक्ष्य लक्षण, शृणु सांभलो सुनो ॥ १० ॥

10. Each of these two is described to be of five kinds in the chapter on Eight Abdominal Diseases (Chap. 19 Sutra). Now listen to a description of their etiology, symptoms and treatment.

रजसा धूमवाताभ्यां शीतस्थानाम्बुसेवनात् ।  
व्यायामाद्भ्राम्यधर्माध्वरुक्षान्नविषमाशनात् ॥११॥  
आमप्रदोषादानाहाद्रौक्ष्यादत्यतर्पणात् ।  
दौर्बल्यान्मर्मणो घाताद् दम्बाच्छुद्धयतियोगतः १२  
अतीसारज्वरच्छर्दिप्रतिश्यायक्षतक्षयात् ।  
रक्तपित्तादुदावर्ताद्विसृज्यलसकादपि ॥१३॥  
पाण्डुरोगाद्विषाच्चैव प्रवर्तते गदाविमौ ।  
निष्पावमाषपिण्याकतिलतैलनिषेवणात् ॥१४॥

१०. समिषग्नितम्-सचिकित्सितम् (घ.)

१२. आमप्रदोषा.....योगतः ॥-आमप्रदोषादानाहाराद्रौक्ष्या देग-विषारणात्। धर्माभिवातादौर्बल्यात् दम्बाच्छुद्धयतियोगतः ॥

११. दौर्बल्यान्मर्मणो घातात्-धर्माभिवातादौर्बल्यात् (ग. व.)

१४. प्रवर्तते गदाविमौ-रोगावेतौ प्ररोहतः (ग. ड. व. फ.)

पिष्टशालूकविष्टम्भिद्विहृगुरुभोजनात् ।

जलजानूपपिशितदध्यामक्षीरसेवनात् ॥१५॥

अभिष्यन्धुपचारश्च श्लेष्मलानां च सेवनात् ।

कण्ठोरसः प्रतीघाताद्विवन्धैश्च पृथग्विधैः ॥१६॥

रजसा धूण्थी धूम्रसे, धूमवाताभ्याम् धूम्रश्लेष्मी, वायुथी घुवाँसे, वायुसे, शीत-स्थान- ठंडा स्थान ठंडी जगह, अम्बुसेवनात् अने ठंडा जलना सेवनथी और ठंडे जलके सेवनसे, व्यायामात् अधिक व्यायामथी अति व्यायामसे, ग्रास्यधर्म- अत्यंत भैथुनथी अत्यन्त व्यवायसे, अध्व- अधिक पशुथी अत्यन्त मार्ग चलनेसे, रुक्षाण- रक्ष अक्षथी रुक्ष अक्षसे, विषम- विषम और विषम, अक्षानात् भोजनथी भोजनसे आमप्रदोषात् आभक्ष्यथी आमशेषसे, आनादात् आनादथी आनादसे, रौक्ष्यात् रक्षताथी रुक्षतासे, अपतर्पणत् अत्यंत अपतर्पणथी अत्यंत अपतर्पणसे, दौर्बल्यात् दुर्बलताथी दुर्बलतासे, मर्मणः मर्मणः मर्मणः, घातात् आघातथी आघातसे, द्वन्द्वात् शीत उष्ण आदि विपरीत पदार्थोना कभ नगर सेवनथी शीत उष्ण आदि भावोंके क्रमरहित सेवनसे, शुद्धि- शोधनना शुद्धिके अतियोगतः अतियोगथी अतियोगसे, अतिसार- अतिसारथी अतिसारसे, ज्वर- ज्वरथी ज्वरसे, छर्दि- छर्दिथी कैसे, प्रतिश्याय- प्रतिश्यायथी प्रतिश्यायसे, क्षतक्षयात् उरःक्षतथी, क्षयथी उरःक्षतसे, क्षयसे, रक्तपित्तात् रक्तपित्तथी रक्तपित्तसे, उदावर्तात् उदावर्तथी उदावर्तसे, विसूची- विसूचिकथी विसूचिकासे, अलसकात् अपि अलसकथी अलसकसे, पाण्डुरोगात् पाण्डुरोगथी पाण्डुरोगसे, विषात् च एव अने विषथी और विषसे, निष्पाव- नाश सेम, माष- अउद उदद, पिण्याक- पिण्याक तिलकक, तिल-तैल- अने तदन तदन और तिलका तैल, निषेवणात् सेवनथी इनके सेवनसे, पिष्ट- पिष्टना पदार्थो पीठी, शालूक- उभक्षकं कमलकन्द, विष्टम्भि- विष्टम्भी विष्टम्भी, विदाहि- विदाही विदाही, गुरु भोजनात् अने गुरु पदार्थोना भोजनथी और गुरु द्रव्योंके भोजनसे, जलज-जानूप- जलज अने आनूप देशना प्राणीओना जलीय और आनूप प्राणियोंके पिशित- भांस मांस, दधि- दही दही, आमक्षीर- अने १६. श्लेष्मलानां-श्लेष्मिकाणां (ब)

ऊँसा दूधना और लूचे दूधके, सेवनात् सेवनथी सेवनसे, अभिष्यन्धि- अभिष्यन्धी पदार्थोना अभिष्यन्धी पदार्थोंके, उपचारात् च सेवनथी सेवनसे, कण्ठ- उरसः ऊँ अने छातीमा कंठ और छातीमें, प्रतीघातात् आघातथी चोट लगनेसे, पृथग्विधैः अने जुदा जुदा प्रकारना और भिन्न भिन्न प्रकारके, विवन्धैः च विवन्धैथी विवन्धोंमें, इसी मदीं आ जने रोगो इन दोनों रोग, प्रवर्तते थावे होते हैं ॥ १५-१६ ॥

11-16. From dust from smoke and wind, from residence in cold climates and use of cold water from undue exertion or sex-act, from excessive walking, and from taking of dry and irregular diet, from chyme disorders, constipation, dehydration and extreme inanition, from debility and trauma to vital organs, from recourse to mutually antagonistic procedures, from overdoing of purificatory procedures, from diarrhea, fever, vomiting, coryza, wasting due to pectoral lesions, hemothermia, misperistalsis, acute gastro-intestinal irritation, intestinal torpor, anemia and toxicosis these two diseases take their origin. Also by the habitual use of lablab bean black gram, til paste and til oil, by eating preparations of paste, lotus rhizomes and food that is slowly digested, irritant or heavy, by constant use of the flesh of the aquatic and wet-land animals curds and raw milk, by liquefacient medications and by indulgence in kapha-producing articles, by trauma and constriction of various kinds affecting the throat and chest, these two diseases are produced.

मारुतः प्राणवाहीनि स्रोतांस्यविश्य कुप्यति ।  
उरःस्थः कफमुद्धूय हिक्काश्वासान् करोतिसः ॥१७॥  
घोरान् प्राणोपरोधाय प्राणिनां पञ्च पञ्च च ।

मारुतः वायु वायु, प्राणवाहीनि प्राणवाही प्राणवाह,  
स्रोतांसि स्रोतांसि स्रोतोर्मै, आविश्य प्रवेश करीने  
बुसकर, कुप्यति प्रदूषित थापे प्रकुपित होता है,  
उरःस्थः अने छातीमें रहने और छातीमें स्थित,  
सः ते वह, कफम् उड़ने कफको, उद्धूय उपरनी तरङ्ग  
थलावीने ऊपर हटा कर, प्राणिनाम् प्राणीओंनां  
प्राणियोंके प्राणोपरोधाय प्राणोंने रोडना भाटे प्राणोंको  
रोकनेके लिए, घोरान् भयंकर भयंकर, पञ्च पांच पांच,  
पञ्च च पांच प्रकारना पांच प्रकारके, हिक्का-हेउडी  
हिचकी, श्वासान् तथा श्वासने और श्वासको, करोति  
उत्पन्न करे छे करता है ॥ १७३ ॥

17-17½. The vata, having entered  
the respiratory channels, becomes irri-  
tated and rouses up the kapha lying  
in the chest and produces hiccup and  
dyspnea, each of which is of five  
varieties, dreadful and often fatal to  
life.

हिक्काश्वासयोः पूर्वरूपाणि—

उभयोः पूर्वरूपाणि शृणु वक्ष्याम्यतः परम् ॥१८॥

उभयोः अ-नेनां दोनोंके, पूर्वरूपाणि पूर्वार्थ पूर्व-  
रूपोंको, अतः परम् इसे पछी अब आगे, वक्ष्यामि  
उड़ीश बहूंगा, शृणु सांभलो सुनो ॥ १८ ॥

18. Now, I shall describe the  
premonitory symptoms of both these.  
Listen.

कण्ठोरसोर्गुरुत्वं च वदनस्य कषायता ।  
हिक्कानां पूर्वरूपाणि कृश्वेराटोप एव च ॥१९॥

१९. उरःस्थः कफमुद्धूय—उरःस्थकफमुद्धूय (य.)

,, करोति सः—करोत्यथ (य.)

आनाहः पार्श्वशूलं च पीडनं हृदयस्य च ।  
प्राणस्य च विलोमत्वं श्वासानां पूर्वलक्षणम् ॥२०॥

कण्ठ-कंठ कंठ, उरसोः अने छाती । और छातीका,  
गुरुत्वम् भारेपणुं भारीपन वदनस्य भुजनी मुंडका,  
कषायता च तुराश कसैलापन कुक्षेः अने पेटमें और  
पेटमें, आटोपः च एव गडगडाट आटाप, हिक्कानाम् छे  
हेउडीनां ये हिचकियोंके, पूर्वरूपाणि पूर्वार्थ छे पूर्वरूप  
हैं, आनाहः आनाह आनाह पार्श्वशूलम् च पार्श्वोंमें  
शूल पार्श्वशूल, हृदयस्य हृदयमें हृदयका, पीडनम् च  
पीडा पीडन, प्राणस्य अने प्राणनी और प्राणका,  
विलोमत्वम् च उलटी गति उलट वादन, श्वासानाम् छे  
श्वासनां ये श्वासके, पूर्वलक्षणम् पूर्वार्थ छे पूर्वरूपों  
हैं ॥ १९-२० ॥

19-20. Heaviness in the throat and  
chest, astringent taste in the mouth as  
well as distension of the abdomen are  
the premonitory symptoms of hiccup.  
Constipation, pleurodynia, sense of  
compression on the heart, and derange-  
ment of the respiratory function are  
the premonitory symptoms of dyspnea.

महाहिक्कायाः लक्षणम्—

प्राणोदकाग्रवाहीनि स्रोतांसि सकफोऽनिलः ।  
हिक्काः करोति संरुध्य तासां लिङ्गं पृथक् शृणु ॥२१॥

सकफः उद्धूयता कफयुक्त, अनिलः वायु वायु प्राण-  
उदक-प्राण, अथ प्राण, उदक, अग्रवाहीनि स्रोतांसि अने  
अग्रवां वदन करनेवाले स्रोतांसि और अग्रवाही स्रोतोंको,  
संरुध्य रोडीने रोककर, हिक्काः हेउडी हिचकियोंको, करोति  
करे छे करता है तासाम् तेशोंनां उनके, पृथक् पृथक्  
पृथक् पृथक् पृथक्, लिङ्गम् लक्षणो लक्षण, शृणु सांभलो  
सुनो ॥ २१ ॥

21. The vata, combined with kapha,  
obstructing the respiratory and deglu-  
titary channels, produces various kinds  
of hiccup. Now listen to a description

of the signs and symptoms of each type.

क्षीणमांसबलप्राणतेजसः सकफोऽनिलः ।  
गृहीत्वा सहसा कण्ठमुच्चैर्घोषवतीं भृशम् ॥२२॥  
करोति सततं हिकामेकद्वित्रिगुणां तथा ।  
प्राणः स्रोतांसि मर्माणि संरुध्योष्माणमेव च ॥२३॥  
संज्ञां मुष्णाति गात्राणां स्तम्भं संजनयत्यपि ।  
मार्गं चैवाजपानानां रुणद्धुषहतस्मृतेः ॥२४॥  
साश्रुविप्लुतनेत्रस्य स्तब्धशङ्खच्युतश्रुवः ।  
सक्तजल्पप्रलापस्य निर्वृतिं माधिगच्छतः ॥२५॥  
महामूला महावेगा महाशब्दा महाबला ।  
महाहिकेति सा नृणां सद्यः प्राणहरा मता ॥२६॥  
इति महाहिका ।

सकफः अनिलः उद्धृक्ता वायु कफयुक्त वायु, क्षीण- क्षीयं यथेष्टं छे क्षीण, मांस-बल-प्राण-तेजसः मांस, बल, प्राण, अने तेज गेनां अवा अनुप्यना मांस, बल, प्राण और तेजवाले पुरुषके, कण्ठम् कंठना कंठके, उच्चैः ऊँचा भागने ऊर्ध्वं देशको, सहसा अेकअेक सहसा, गृहीत्वा पकडीने पकड़ कर, भृशम् अहु बहुत, घोष-वतीम् अवाअवाणी आवाज करनेवाली, एक-द्वि- त्रैकली, अेवडी एक एक, दो दो, त्रिगुणाम् अने त्रेवडी और तीनतीन वेगवाली, हिकाम् छेउडी हिककीको, सततम् निरंतर सतत, करोति करे छे करता है, तथा प्राणः तथा प्राणवायु एवं पाणवायु, स्रोतांसि स्रोते। स्रोतीको, मर्माणि मर्मा मर्मीको, ऊष्माणम् एव च अने ऊष्माने और ऊष्माको, संरुध्य रुंधीने रोककर, संज्ञाम् संज्ञाने चेतनाको, मुष्णाति क्षोप करे छे नष्ट करता है, गात्राणाम् गात्रेने। अंगोंकी, स्तम्भम् अपि स्तंभ जड़वाहटको, संजनयति करे छे करता है, अजपानानाम् अने अजपानना और अजपानोंके, मार्गम् च एव

भागीनी मार्गको, रुणद्धि अटकायत करे छे रोक देता है, उपहतस्मृतेः स्मृतिना नाशवाणी नष्टस्मृतिवाले, साश्रु- अश्रुपूर्णा अश्रुपूर्ण, विप्लुतनेत्रस्य अने अंयण नेत्रवाणी और चंचल आंखोंवाले, स्तब्धशङ्ख- ७५ शंअप्रदेशवाणी जकड़े हुए शंखवाले, च्युतश्रुवः ७५ छूटिवाणी अपने स्थानसे हटी हुई भौंदेवाले, सक्तजल्प- अटकती वाणीकी रुकती हुई बोलीसे युक्त, प्रलापस्य अजवाहवाणी प्रलाप करनेवाले, निर्वृतिम् शांतिने शान्ति, न अधिगच्छतः नहि प मता पुरुषनी न पाते हुए पुरुषकी, महामूला महाभूणवाणी महामूलवाली, महाशब्दा महाशब्दवाणी बड़ा शब्द करनेवाली, महाबला अने महाअलवाणी छेउकी और महा बलवान हिका, महा हिका महाहिका महाहिका, इति अे नामभी छेउवाय छे इस नामसे कहलाती है, सा ते वह, नृणाम् मनुष्याना पुरुषोंके लिए सद्यः शीघ्र तुरंत, प्राणहरा प्राणहरण करनारी प्राणकी नाशक, मता अक्षुयेव छे मानी गयी है ॥ २२-२६ ॥ इति आ यह, महाहिका महाहिका छे महाहिका है ।

22-26. In the body of the patient whose flesh strength, vitality and lustre have wasted away, the vata, in association with kapha, laying spasmodic hold of the patient's throat, produces persistent hiccup characterised by loud and strident sound, which manifests in a series of one, two or three at a time in each paroxysm. The Prana-vata, further smothering the body-channels, vital organs and the vital fire, deprives the man of his consciousness, causes stiffness of the limbs, obstructs the deglutitory passage and also causes loss of memory; the patient's eyes are suffused with tears; his temples are rigid and his eye-brows are askew; his speech is spasmodic and delirious, and the patient finds no

२३. एकद्वित्रिगुणां तथा—द्वित्रिगुणां तथा (घ.)

२४. उपहतस्मृतेः—अपहतस्मृतेः (क.)

२५. गात्राणाम्—गात्रस्य (घ.)

२६. —गात्रेषु (घ.)

२६. महामूला....महाबला—महाशब्दा महावेगा महातेजा महाबला (घ.)

relief whatever. This hiccup, originating as it does from the vital parts of the body and being exceedingly fulminating, exceedingly strident, and exceedingly powerful, is called the Hiccup Major; it is regarded as immediately destructive of life. Thus has been described the Hiccup Major (Terminal Hiccup.)

गम्भीराख्यहिक्कायाः लक्षणम्—

हिक्कते यः प्रवृक्षस्तु कुशो दीनमना नरः ।  
जर्जरेणोरसा कृच्छं गम्भीरमनुनादयन् ॥२७॥  
संजृम्भन् संक्षिपंश्चैव तथाऽङ्गानि प्रसारयन् ।  
पार्श्वे चोभे समायम्ब कूजन् स्तम्भरुगर्दितः ॥२८॥  
नामेः पकाशयाद्वाऽपि हिक्का चास्योपजायते ।  
क्षोभयन्ती भृशं देहं नामयन्तीव ताम्यतः ॥२९॥  
रुणधुच्छ्वासमार्गं तु प्रनष्टबलचेतसः ।  
गम्भीरा नाम सा तस्य हिक्का प्राणान्तिकी मता ३०  
इति गम्भीरा हिक्का ।

प्रवृक्षः अत्यंत वृक्ष अत्यंत वृद्ध, कुशः कुश, दीनमनाः तु दीन मनवाला, दीन मनवाला, यः ने जो, नरः अनुप्य पुरुष, जर्जरेण जर्जरित जर्जरित, उरसा छातीधी छातीसे युक्त दोकर, गम्भीरम् गंभीर गंभीर, अनुनादयन् अवाज करती प्रतिध्वनि करता हुआ, संजृम्भन् अवाज आते। जम्भई केता हुआ। अंगानि अंगोने अंगोंको, संक्षिपन् च एव पडाउते। फैकता हुआ, तथा अने और, प्रसारयन् प्रसारित करती प्रसार करता हुआ, उभे अने दोनों, पार्श्वे च पडाओने पार्श्वोंको, समायम्ब पुडावीने तानकर स्तम्भरुग्-स्तम्भता तथा पीडाभी जकड़ाहट और हजासे, गर्दितः पीडायेक्षो अतो पीकित होता हुआ, कूजन् अने अवाज करती और कूजन करता हुआ, हिक्कते हेडकी भाय छे तेनी छे हेडकी हिचकी केता है उसकी वह हिचकी, अस्य अथवा अने या इसके, नामेः नाभि नाभि, पकाशया वा अपि के पकाशयभाभी पक्षु या पका-

२७. प्रवृक्षस्तु-प्रवृक्षस्तु (घ.)

शयसे भी हिक्का उपजायते ने हेडकी उत्पन्न थाय छे ते जो हिक्का होती है वह, ताम्यतः देहम् ग्गानि पाभना तेना देहने रगानिको प्राप्त हुए इसके देहको, भृशम् अत्यंत अत्यन्त क्षोभयन्ती क्षुब्ध करती क्षुब्ध करती हुई, नामयन्ती इव अणु नभावती होय तेम मानो नमाती हो वैसे, प्रनष्ट- नष्ट थाय छे नष्ट हुए, बलचेतसः तु अण तथा चेतन नेना अण शैलीना कळ और चेतनावल्ले रोगिके, उच्छ्वासमार्गम् प्रश्वासमार्गने उच्छ्वासमार्गको, रुणद्धि रैके छे रोकती है, सा ते हेडकी वह हिचकी, गम्भीरा गंभीरा गंभीरा, नाम हिक्का नामनी हेडकी नामकी हिचकी, तस्य तेना उसके, प्राणान्तिकी प्राणुदरक्ष करनारी प्राणकी नाशक, मता मनाय छे मानी जाती है ॥ २७-३० ॥ इति आ- यह, गम्भीरा हिक्का गंभीरा हेडकी छे गंभीरा हिक्का है ।

27-30. The person who is aged, emaciated and dispirited, hiccups painfully producing deep resonating sounds from the dilapidated chest. He pendiculates, contracts and extends his limbs, and being afflicted with rigidity and pain, he presses in both his sides and groans; his hiccup rises either from the umbilical region or from the lower part of the abdomen; his whole body is greatly agitated and flexed; he feels choked as the result of obstructions in the respiratory tract; his strength and mind are depressed; this condition is named the Deep Hiccup. This too, is considered fatal. Thus has been described the Deep Hiccup.

व्यपेताख्यहिक्कायाः लक्षणम्—

व्यपेता जायते हिक्का याऽन्नपाने चतुर्विधे ।  
आहारपरिणामान्ते भूयश्च लभते बलम् ॥३१॥

३१. व्यपेता-व्यपेते (घ.)

३२. जृम्भणः-जृम्भतः (घ. क.)

પ્રલાપચમ્યતીસારતુષ્ણાર્તસ્ય વિચેતસઃ ।

જૃમ્ભિજો વિપ્લુતાક્ષસ્ય શુષ્કાસ્યસ્ય વિનામિનઃ ૩૨  
પર્યામાતસ્ય હિકા યા જત્રમૂલાદસન્તતા ।

સા વ્યપેનેતિ વિજ્ઞેયા હિકા પ્રાણોપરોધિની ॥૩૩॥

इति व्यपेता हिका ।

યા જે જો, ચતુર્વિધે ચાર પ્રકારના ચતુર્વિધ. અન્નપાને જાયતે અન્નપાનમાં ઉત્પન્ન થાય છે અન્નપાનમાં ઉત્પન્ન होती है, आहार- અને આહાર और आहारके, परिणामान्ते च पथी गया पथी पाचनके अन्तमें, भूयः अधिक अधिक, बलम् लभते भणवाणी थाय છે તે बलको प्राप्त करती है वह, व्यपेता हिका व्यपेता नामની હેડી છે વ્યપેતા નામની હિકા છે, પ્રલાપ-વળી પ્રલાપ फिर प्रलाप, वमी-अतीसार-उदरी, अतिसार कै, अतिसार, तृष्णार्तस्य અને તૃષ્ણાર્થી પીડાતા और प्याससे पीड़ित, विचेतसः तथा आनर्दित विघ्नोत मनवाले, जृमिभजः भणवाणी आता जम्माई लेनेवाले, विप्लुताक्षस्य अन्धण नेत्रवाणा चंचल नेत्रवाले, शुष्कास्य सूक्ष्मेण भुभवाणा शुष्क मुंहवाले, विनामिनः शरीरने नभापता देह नवानेवाले, पर्यामातस्य અને અન્યંત આધ્માનવાળા પુરુષને और अत्यंत आध्मानसे युक्त पुरुषकी, या જે જો, जत्रमूलाद् जत्रुना भूणभाथी उत्पन्न થઈ जत्रमूलसे उत्पन्न होकर, असन्तता निरंतर आक्षती नहीं निरन्तर प्रवृत्त नहीं रहती, प्राणोपरोधिनी અને પ્રાણને રોકે છે और प्राणवायुको रोकती है, सा हिका ते હેડીને उस हिककीको, व्यपेता इति व्यपेता नामनी व्यपेता नामकी, विज्ञेया अस्वी जाने ॥ ૩૧-૩૩ ॥ इति आ यह, व्यपेता हिका व्यपेता હેડી છે વ્યપેતા હિકા છે ।

31-33. The hiccup which appears on ingesting food and drink of any of the four types, gains greatly in intensity at the time when the digestion is completed. It is accompanied with delirium, vomiting, diarrhea, thirst and unconsciousness. The patient pendiculates often; his eyes are flowing with tears; his mouth is dry; his body becomes flexed; his abdomen is distended

all round. This hiccup originates from the clavicular region of the body and is not continuous. This is called the Cyclical Hiccup. It is also harmful to life. Thus has been described the Cyclical Hiccup

શુદ્ધાસ્યહિકાયાઃ લક્ષણમ્—

શુદ્ધવાતો યદા કોષ્ટાદ્યાયામપરિઘટ્ટિતઃ ।

કળ્થે પ્રપચતે હિકાં તદા શુદ્ધાં કરોતિ સઃ ॥૩૪॥

વ્યાયામ- વ્યાયામથી વ્યાયામસે, પરિઘટ્ટિતઃ પ્રેરાયેલો ઢકેલા હુઆ, શુદ્ધવાતઃ ઉદાનવાયુ શુદ્ધવાત, યદા જ્યારે જબ, કોષ્ટાદ કોષ્ટામાંથી કોષ્ટસે, કળ્થે કંઠમાં કંઠમાં, પ્રપચતે પ્રાપ્ત થાય છે આતા હૈ, તદા સઃ ત્યારે તે તબ વહ, શુદ્ધામ્ શુદ્ધા શુદ્ધા, હિકામ્ હેડીને હિકાકો, કરોતિ ઉત્પન્ન કરે છે ઉત્પન્ન કરતા હૈ ॥ ૩૪ ॥

34. When a small part of vata constrained by violent exercise. is driven up from the alimentary tract into the throat, it gives rise to the hiccup called Hiccup Minor.

અતિદુઃશ્વા ન સા ચોરઃશિરોમર્મપ્રવાધિની ।

ન ચોચ્છ્વાસાન્નપાનાનાં માર્ગમાવૃત્ય તિષ્ઠતિ ॥૩૫॥

સા તે વહ, અતિદુઃશ્વા અતિ કટ્ટહાયક અત્યંત दुःखदायक, ડરઃ- શિરઃ- અને છાતી, મરતકે और छाती, शिर, मर्म- तथा भर्भने तथा मर्मको, प्रवाधिनी च आधा કરનારી વાધા દેનેવાલી, ન નથી નહીં होती, उच्छ्वास- તેમજ ઉચ્છ્વાસ एवं प्रश्वास, अन्नपानानां तथा अन्नपानना तथा अन्नपानके, मार्गम् च मार्गम्

૩૪. કળ્થે-કળ્થે (વ. વ.)

૩. કળ્થે પ્રપચતે....કરોતિ સઃ-કળ્થે પ્રપચતે હિકાં શુદ્ધાં સંજનયેત્તદા (ક. ધ. વ. ક)

૩૫. અતિદુઃશ્વા ન સા-અતિદુઃશ્વેન સા (વ.)

„ ચોરઃ શિરો-નોરઃશિરો (વ.)

„ મર્મપ્રવાધિની-મર્મપ્રવાધિની (વ.)



मार्गको, आवृत्य आवरणु करी आवृत कर, न तिष्ठति रहेती नथी नहीं रहती ॥ ३५ ॥

35. This variety of hiccup is not very painful nor does it afflict much the vital centres in the chest and head; nor does it obstruct the respiratory and deglutitory passages.

वृद्धिमायस्यतो याति भुक्तमात्रे च मार्दवम् ।  
यतः प्रवर्तते पूर्वं तत एव निवर्तते ॥३६॥  
हृदयं क्लोम कण्ठं च तालुकं च समाश्रिता ।  
मृद्वी सा क्षुद्रहिकेति नृणां साध्या प्रकीर्तिता ॥३७॥  
इति क्षुद्रहिका ।

आयस्यतः ने भेदनत करवाथी जो श्रम करनेसे, वृद्धिम् याति वधि छे बढ़ती है, भुक्तमात्रे च अने भोराक देनाभा आवतां न और भोजन करते ही, मार्दवम् मृदु थाय छे मृदुताको प्राप्त होती है, यतः ने करवाथी जिस हेतुसे, पूर्वम् पहलेवा प्रथम, प्रवर्तते शर थाय छे उत्पन्न होती है, ततः एव ते न हेतुथी सही हेतुसे, निवर्तते निवृत्त थाय छे निवृत्त होती है, हृदयम् हृदय हृदय, क्लोम क्लोम क्लोम, कण्ठम् च कंठ कंठ, तालुकम् च अने तालुवाने और तालुमें, समाश्रिता आश्रय करीने रहे छे आश्रित है, मृद्वी तथा मृदु होय छे तथा मृदु होती है, सा ते वह, क्षुद्र-हिका इति क्षुद्रहिका क्षुद्रा हिका, प्रकीर्तिता कहेवाय छे कहलाती है, नृणाम् मनुष्येन्ती ते हेउकी मनुष्योंकी वह हिका, साध्या साध्य छे साध्य है ॥ ३६-३७ ॥ इति आ यह क्षुद्रहिका क्षुद्रहिका छे क्षुद्रहिका है ।

36-37. This condition is aggravated by exertion and abates immediately on the ingestion of food. It disappears as abruptly as it comes into appearance. Affecting the heart, the Kloman, the throat and the palate, this mild variety of hiccup in men, known as the minor, is said to be curable. Thus has been described the Hiccup Minor.

अज्ञजहिकायाः लक्षणम्—

सहसाऽत्यभ्यवहृतैः पानान्नैः पीडितोऽनिलः ।  
ऊर्ध्वं प्रपद्यते कोष्ठान्मधैर्वाऽतिमदप्रदैः ॥३८॥  
तथाऽतिरोषभाष्याध्वहास्यभारातिवर्तनैः ।  
वायुः कोष्ठगतो धावन् पानभोज्यप्रपीडितः ॥३९॥  
उरःस्रोतः समाविश्य कुर्याद्विकां ततोऽज्ञजाम् ।  
तथा शनैरसंबन्धं ध्रुवंश्चापि स हिकते ॥४०॥  
न मर्मबाधाजननी नेन्द्रियाणां प्रबाधिनी ।  
हिका पीते तथा भुक्ते शमं याति च साऽज्ञजा ॥४१॥  
इत्यज्ञजा हिका ।

अति- अधिक अत्यंत, अभ्यवहृतैः उपयोगभा दीधेवा सेवन किये, पानान्नैः अन्नपानथी पान और अन्नसे, अतिमदप्रदैः अथवा अत्यंत मद्द करनारी या अत्यंत मदकारक, मधैः वा मद्यथी मद्योंसे, पीडितः अनिलः पीडितेवा वायु पीडित वायु, कोष्ठान् कोष्ठमाथी कोष्ठसे, सहसा ऐकदम एकरम, ऊर्ध्वम् उपरना प्रदेश तरई ऊपर, प्रपद्यते आप्त थाय छे आता है, तथा अतिरोष- तथा अतिशय क्रोध तथा अत्यंत क्रोध, भाष्य-अध्व- भाषण, पंथ भाषण, मार्ग चकनेका श्रम, हास्य-भार- हास्य तेभज भारनुं वहन हास्य एवं भार- वहन, अतिवर्तनैः अतिशय करवाथी अत्यंत करनेसे, कोष्ठगतः वायुः प्रकुपित अथेवा कोष्ठगत वायु प्रकुपित हुई कोष्ठि त वायु, पान-भोज्य-प्रपीडितः पान अने भोजनथी पीडित अधिने पान भोजनसे पीडित हो कर, धावन् होउती होउती दौडकर, उरःस्रोतः छातीना स्रोतभा उरःस्रोतमें, समाविश्य प्रवेश करके, ततः ते पछी तदनन्तर, अज्ञजाम् अज्ञज-अज्ञजा, हिकाम् हेउकीने हिकाको, कुर्यात् उपरन करे छे पैदा करती है, तथा च तथा तथा, सः ते वह, ध्रुवन् च अपि छीके आते छीकते हुए, शनैः धीरे धीरे धीरे धीरे, असंबन्धम् नुटक नुटक लगातार न हो इस

३८. सहसाऽत्यभ्यवहृतैः—सहस्रैवातिसंयुक्तः (फ. ब.)

४०. उरःस्रोतः समाविश्य कुर्याद्विकां ततोऽज्ञजां-  
प्रकरोत्यज्ञजां हिकामुरःस्रोतः समावितः (ग. व. फ.)

,, शनैरसंबन्धं—शनैर्मन्दशब्दः (व.)

४१. प्रबाधिनी—प्रबाधिनी (ज. ब.)

तरह, हिकते हेडकी आये छे हिचकी लेता है, या मर्म-  
ने मर्मने जो मर्मको, बाधाजननी न तुकसान करती नथी  
बाधा नहीं उत्पन्न करती, इन्द्रियाणाम् इन्द्रियाने  
इन्द्रियोंको, प्रबाधिनी न आधा करती नथी बाधा नहीं  
करती, भुक्ते अने आवाथी और खाने, तथा पीते  
तथा पीवाथी पीनेपर, बामम् च याति शान्त थाय छे  
शांत होती है, सा हिका ते हेडकी वह हिचकी, अन्नजा  
अन्नज छे अन्नजा है ॥ ३८-४१ ॥ इति आ यद्,  
अन्नजा हिका अन्नज हिकका छे अन्नजा  
हिका है।

38-41. By the ingestion of food and drink in great haste or in excessive quantities or by consuming highly intoxicating drinks, the vata, getting compressed, travels upwards, from the alimentary tract. So too, by inordinate indulgence in anger, talk, way-faring, laughing and load-carrying, the vata which is normally located in the alimentary tract, getting compressed by the ingested food and drink, goes wandering hither and thither in the body. In such conditions, it enters the passages in the chest and gives rise to the hiccup which makes its appearance on ingestion of meals. When under the attack, the patient hiccups at long and uneven intervals and even while sneezing. This variety of hiccup does not cause affliction to the vital centres nor does it afflict the sense-organs. It subsides on ingestion of food and drink. This is the alimantal hiccup induced by ingestion of food. Thus has been described the Alimantal Hiccup.

हिकावाः साध्यासाध्यविचारः—

अतिसंचितदोषस्य भक्तच्छेदकशस्य च ।  
व्याधिभिः क्षीणदेहस्य वृद्धस्यातिव्यवायिनः ॥४२॥  
आस्तां या सा समुत्पन्ना हिका हन्त्याशु जीवितम् ।  
यमिका च प्रलापार्तिवृणामोहसमन्विता ॥४३॥

अतिसंचित- अत्यंत संचित थयेला अतिसंचित  
हुए, दोषस्य दोषनाणाने दोषवालेको, भक्तच्छेद- भोजन  
न करवाथी अनशनसे, कृशस्य च दुर्बल थयेलाने दुर्बलको,  
व्याधिभिः रोगथी व्याधियोंसे, क्षीणदेहस्य क्षीण शरीर-  
नाणाने क्षीण देहवालेको, वृद्धस्य वृद्धने वृद्धको, अति  
अने अत्यंत और अत्यंत, व्यवायिनः मैथुन करनारने  
व्यवाय करनेवालेको, आसाम् आमाथी इनमेंसे, या ने  
हेडपल्लु जो किसी एक भी, समुत्पन्ना उत्पन्न थाय  
उत्पन्न हो, सा ते वह, हिका हिकका हिका, जीवितम्  
अवनने आयुको, आशु हन्ति शीघ्र नाश करे छे शीघ्र  
नष्ट करती है, प्रलाप-अर्ति- तथा प्रलाप, पीडा तथा  
प्रलाप, पीडा, वृणामोह- तृषा अने भूखी प्यास और  
मोह, समन्विता ऐंऐथी युक्ता इनसे युक्त, यमिका च  
यमिका पल्लु यमिका भी, आशु बलही अवनने नाश  
करे छे शीघ्र जीवनको नष्ट करती है ॥ ४२-४३ ॥

42-43. The hiccup that occurs in persons suffering from excessive accumulation of morbidity or from emaciation resulting from abstinence or in persons with bodies that have been wasted away by disease, or in persons who are aged or given to inordinate indulgence in sex, soon takes away the life of its victim. When the curable varieties of hiccup mentioned above are seen to occur in paroxysms of two hiccups at a time, they are called the 'Twin Hiccups' and is marked by delirium, distress, thirst and fainting.



अक्षीणश्चाप्यदीनश्च स्थिरघातविस्मियश्च यः ।  
तस्य साधयितुं शक्या यमिका हृत्पथतोऽन्यथा ४४

यः नो जो, अक्षीणः च क्षीण न होय क्षीण नहीं है, अदीनः च अपि दीन न होय दीन नहीं है, स्थिर-धातु- अने स्थिर धातु और स्थिर धातु, इन्द्रियः तथा इन्द्रियवाणी होय तथा इन्द्रियवाला है, तस्य तेनी उसकी, यमिका यमिका यमिका, साधयितुम् शक्या भटाडी शक्य है ठीक की जा सकती है, अतः अन्यथा आनाथी विपरीत स्थितिमा इससे विपरीत स्थितिमें, हन्ति भारी नाथे से नष्ट करती है ॥ ४४ ॥

44. This variety of hiccup occurring in a patient who is neither wasted in body, nor run down, but has his body-elements and sense-organs in a sound condition, is curable. Under other circumstances, it terminates fatally.

श्वासानां संप्राप्तिः—

यदा स्रोतांसि संरुध्य मारुतः कफपूर्वकः ।  
विष्वग्ब्रजति संरुद्धस्तदा श्वासान्करोति सः ॥४५॥

यदा न्यारे जब, कफपूर्वकः ऊर्ध्वमान कफप्रधान, मारुतः वायु वायु, स्रोतांसि स्रोतोंको, संरुध्य अंध डरीने रोककर, संरुद्धः तथा पोते पथु ऊर्ध्वी रोकायेवे। थर् तथा स्वयं भी कफसे रुका हुआ बनकर, विष्वक् ब्रजति न्यारे तरङ्ग अथ छे चारों ओर चलता है, तदा न्यारे तब, सः ते वह, श्वासान् श्वासोंको, करोति उत्पन्न करे से करता है ॥ ४५ ॥

45. If vata, in association with kapha, obstructing the respiratory passages, gets itself obstructed and spreads in all directions, it causes disorders of respiration.

महाश्वासस्य लक्षणम्—

उद्ध्वमानचातो यः शब्दवहुःक्षितो नरः ।  
उच्चैः श्वसिति संरुद्धो मत्तर्षभ इवानिशम् ॥४६॥

४४. यमिका-या यमिका (य.)

प्रनष्टज्ञानविज्ञानस्तथा विभ्रान्तलोचनः ।  
विकृताक्ष्याननो बद्धमूत्रवर्चा विशीर्णवाक् ॥४७॥  
दीनः प्रश्वसितं चास्य दूराद्विज्ञायते भृशम् ।  
महाश्वासोपसृष्टः स क्षिप्रमेव विपद्यते ॥४८॥  
इति महाश्वासः ।

उद्ध्वमान- उद्ध्वगतिथी युक्त ऊर्ध्वगतिसे युक्त, वातः वायुवाणी वायुवाला, दुःखितः दुःखी थोता दुःखित, यः नरः नो मनुष्य जो पुरुष, संरुद्धः अन्धन पामेक्षा रोके हुए, मत्तर्षभः इव भेदा-भत साठनी पेठे मत बैलकी तरह, अनिश्चय निरंतर निरंतर, उच्चैः उंचा जोरसे, शब्दवत् अवाभयुक्त आवाजके साथ, श्वसिति श्वास छे छे श्वास लेता है, प्रनष्ट- ते नष्ट थयेव छे नष्ट हुए, ज्ञानविज्ञानः ज्ञान अने विज्ञान नेना ओवे। ज्ञान और विज्ञानवाला, तथा विभ्रान्त- अथवा विभ्रान्त, लोचनः नेत्रवाणी आंखोंवाला, विकृत- विकृत थयेव विकृत, अक्षि-आननः आंभो अने मुणवाणी आंख और मुंहवाला, बद्ध-मूत्र-वर्चाः रोकायेवे। मूत्र अने मूत्रवाणी मूत्र और मलके विवधवाला, विशीर्ण- बाण्डी-तूटी खलित, वाक् वाणीवाणी वाणीवाला, दीनः अने दीन थाय छे और दीन हाता है, अस्य च तेने। उसका, भृशम् अत्यंत अत्यंत, प्रश्वसितम् श्वास श्वास, दूरात् दूरसे, विज्ञायते संभणाय छे सुना जाता है, सः ते वह, महाश्वास- भेदाश्वासभी महाश्वाससे, उपसृष्टः बेराध पीड़ित होकर, क्षिप्रम् एव शीघ्र न तुरंत ही, विपद्यते मृत्यु पामे छे मृत्यु पाता है ॥ ४६-४८ ॥ इति आ यह, महाश्वासः भेदाश्वास छे महाश्वास हैं ।

46-48. The person, in whom the expiratory movement of vata is aroused, is greatly afflicted and being obstructed in his respiration, breathes incessantly with a loud and long stertor like an intoxicated bull. He loses all sense of knowledge and understanding; his eyes are restless; his face gets distorted,

४७. विकृताक्ष्याननः-विकृताक्ष्याननः (य.)

his urine and feces get constipated; his voice is weakened; he gets into a moribund state; and his intensely hurried breathing is noticeable even from a distance. A person afflicted with this greatest of disorders of breathing will indeed succumb to it soon. Thus has been described Dyspnea Major (Terminal Dyspnea.)

ऊर्ध्वश्वासस्य लक्षणम्—

दीर्घं श्वसिति यस्तूर्ध्वं न च प्रत्याहरत्यधः ।  
श्लेष्मावृतमुखस्रोताः क्रुद्धगन्धवहार्दितः ॥४९॥  
ऊर्ध्वदृष्टिर्विपश्यंश्च विभ्रान्ताक्ष इतस्ततः ।  
प्रमुखान् वेदनार्तश्च शुष्कास्योऽरतिपीडितः ॥५०॥  
ऊर्ध्वश्वासे प्रकुपिते ह्यधःश्वासो निरुध्यते ।  
मुह्यतस्ताम्यतश्चोर्ध्वं श्वासस्तस्यैव हन्त्यसून् ॥५१॥  
इत्यूर्ध्वश्वासः ।

श्लेष्म- आवृत- ४९थी घेरायेला कफसे आवृत,  
मुख- स्रोताः मुख तथा श्वासवह स्रोतोवाणो मुंह  
और श्वासवह स्रोतोवाण, क्रुद्ध-गन्धवह- तथा कुपित  
वायुथी और दुष्ट वायुसे, अर्दितः यः पीडायेला ने  
शेभी पीडित जो रोगी, दीर्घम् ऊर्ध्वम् श्वसिति बाआ  
वमत सुधी अहर न श्वास दे छे देरतक ऊपर ही  
ऊपर श्वास लेता है, अधः च अने नीचे और नीचे,  
न प्रत्याहरति श्वास छोडते। नथी श्वास नहीं छोडता,  
ऊर्ध्वदृष्टिः ते जेथी दृष्टिवाणो वह ऊपरकी नजरसे  
देखनेवाला, विभ्रान्ताक्षः अने अर्थवाण नेत्रवाणो अर्थ  
और चंचल आंखवाला हो कर, इतस्ततः च आभतेम  
इधर उधर, विपश्यन् भेता आंख फेरता हुआ, प्रमुखान्  
भूयभी भाई मोहको पा कर, वेदना-जार्तः वेदनाभी  
पीडा छे वेदनासे पीडित होता है, शुष्क- आस्यः सूडा

मुखवाणो भाय छे शुष्क मुखवाला होता है, अरति-  
भेयेनीथी बेचैनीसे, पीडितः पीडा छे पीडित होता है,  
ऊर्ध्वश्वासे ऊर्ध्वश्वास ऊर्ध्वश्वासके, प्रकुपिते हि  
प्रकुपित भर्ता प्रकुपित होने पर, अधःश्वासः नीचेने  
श्वास अधःश्वास, निरुध्यते रुंभाई अय छे रुक  
जाता है, मुह्यतः तयारे भोह पाभता तब मोहको  
पानेवाले, ताम्यतः च अने ग्लानि पाभता और  
ग्लानिवाले, तस्य ते शेभीना उस रोगीका, ऊर्ध्वम् श्वासः  
ऊर्ध्वश्वास ऊर्ध्वश्वास, असून् प्राणुने प्राणोंको, हन्ति  
एव हण्टे छे नष्ट ही करता है ॥ ४९-५१ ॥ इति आ  
यह, ऊर्ध्व- श्वासः ऊर्ध्वश्वास छे ऊर्ध्वश्वास है।

49-51. That condition is known as expiratory dyspnea where the expiratory phase is prolonged while the inspiratory process is insignificant. The mouth and respiratory tract are obstructed by mucus; the patient is greatly afflicted with his provoked vata; his eyes are turned upwards, he is oblivious to his surroundings (coma vigil) and his gaze is restless, moving hither and thither. Afflicted with pain, he passes into a stupor; his mouth is parched and he is listless and in great distress. His expiratory process, being excessively provoked and the inspiratory process obstructed, the patient suffers from delusion and fainting. This condition of expiratory dyspnea soon takes away the patient's life. Thus has been described the Expiratory Dyspnea.

उच्छ्वसस्य लक्षणम्—

यस्तु श्वसिति विच्छिन्नं सर्वप्राणेन पीडितः ।  
न वा श्वसिति दुःखार्तो मर्मच्छेदकगर्दितः ॥५२॥

५२. सर्वप्राणेन पीडितः—सूक्ष्म प्राणेन पीडितः (य.)

४९. दीर्घं श्वसिति यस्तूर्ध्वं—ऊर्ध्वं श्वसिति नो दीर्घं (य. फ.)

५०. शुष्कास्योऽरतिपीडितः—शुष्कास्योऽतिनिपीडितः (य.)

५१. प्रकुपिते ह्यधःश्वासो निरुध्यते—प्रकुपिते च अधःश्वास-

रोषभाक् (ख. य.)

आनाहस्वेदमूच्छर्त्तो दह्यमानेन बस्तिना ।

विप्लुताक्षः परिक्षीणः श्वसन् रक्तकलोचनः ॥५३॥

विचेताः परिशुष्कास्यो विवर्णः प्रलपन्नरः ।

छिन्नश्वासेन विच्छिन्नः स शीघ्रं प्रजहात्यसून् ॥५४॥

इति छिन्नश्वासः ।

સર્વપ્રાણેભ્ય સર્વ પ્રાણુભ્ય સર્વ પ્રાણે, પીઢિતઃ  
 પીડાયેથેા પીઢિત, યઃ તુ જે જો, વિચ્છિન્નઃ તુ ડક  
 વિચ્છિન્ન, અસિતિ શ્વાસ છે છે શ્વાસ લેતા હૈ દુઃખાર્તઃ  
 અથવા દુઃખપીડિત થઈને યા દુઃખસે પીઢિત હોકર,  
 મર્મચ્છેદ- મર્મચ્છેદ જેવી મર્મમેદકીસી, રુગર્ધિતઃ  
 પીડાથી પીડાઈને પીઢસે પીઢિત હોકર, ન અસિતિ  
 શ્વાસ લેતો નથી શ્વાસ નહીં લેતા, સઃ નરઃ તે મનુષ્ય  
 વહ મનુષ્ય, આનાહ- આનાહ આનાહ, સ્વેદ-મૂર્ચ્છા-  
 પરસેવો અને મૂર્ચ્છાથી પસીના ઓર મૂચ્છાસિ, આર્તઃ  
 પીડાયેથેા પીઢિત, દશમાનેન બળતરાવાળી જલતી હુઈ,  
 વસ્તિના ચ અસ્તિવાળેા વસ્તિસે યુક્ત, વિપ્લુતાશઃ  
 અત્યંત નેત્રવાળેા ચંચલ આંઘ્રોવાળા, પરિક્ષીણઃ અત્યંત  
 ક્ષીણ અત્યંત ક્ષીણ, અશ્નઃ શ્વાસ લેતો શ્વાસ લેતા  
 હુઆ, રક્ત-રાતા લાલ, ફલોચ્ચનઃ એક નેત્રવાળો ફલ  
 હી આંધવાળા, વિચેતાઃ બાનરહિત ચેતનાહીન, પરિશુષ્કઃ  
 અત્યંત શુષ્ક અત્યંત શુષ્ક, આશ્લઃ મુખવાળો મુંઢવાળા,  
 વિવર્ણઃ વિકૃત વર્ણવાળો વિકૃત વર્ણવાળા, પ્રલપન્ પ્રલાપ  
 કરતો પ્રલાપ કરતા હુઆ, છિન્નશ્વાસેન છિન્ન શ્વાસથી  
 છિન્ન શ્વાસસે, વિચ્છિન્નઃ ઠીકા સંધિબંધનવાળેા થઈને  
 વિમુક્ત સંધિબંધવાળા હોકર, અસૂન્ પ્રાણુનેા પ્રાણોકો,  
 શીઘ્રમ્ પ્રજહાતિ બલદી ત્યાગ કરે છે શીઘ્ર ત્યાગતા  
 હૈ ॥ ૫૨ ૫૪ ॥ इति आ यह, छिन्नश्वासः छिन्नश्वास  
 છે છિન્નશ્વાસ હૈ।

52-54. In that condition, the patient, being afflicted in all his vital breaths, breathes with interruptions or ceases to breathe altogether (apnea) and is in great distress and afflicted with pain as if his vital parts had been

५३. दक्षमानेन वसिष्ठना-वसिष्ठदाहनिरोधवान् (घ.)

५४. प्रजहाति-विजहाति (क.)

sundered. He is afflicted with constipation, sweat and fainting, burning and retention of urine; his eyes are filled with tears; he is greatly emaciated; while struggling for breath his eyes become excessively injected; he is unconscious; his mouth is dry; he is cyanosed; he becomes delirious; a man who is thus broken down with interrupted breathing (Cheyne-Stoke's Respiration) soon abandons his life. Thus has been described the interrupted respiratory dyspnea (Cheyne-Stoke's Respiration).

तमकश्वासस्य लक्षणम्—

प्रतिलोमं यदा वायुः स्रोतांसि प्रतिपद्यते ।

ग्रीवां शिरश्च संगृह्य श्लेष्माणं समुदीर्य च ॥५५॥

करोति पीनसं तेन रुद्धो घूर्णरुक् तथा ।

अतीव तीव्रवेगं च श्वासं प्राणप्रपीडकम् ॥५६॥

प्रताम्यत्यतिवेगाच्च कास्यते सन्निरुध्यते ।

प्रमोहं कासमानश्च स गच्छति मुहुर्मुहुः ॥५७॥

श्लेष्मण्यमुच्यमाने तु भृशं भवति दुःखितः ।

तस्यैव च विमोक्षान्ते मुहूर्तं लभते सुखम् ॥५८॥

अथास्योद्धंसते कण्ठः कृच्छ्राच्छक्रोति भाषितुम् ।

न चापि निद्रां लभते शयानः श्वासवीडितः ॥५९॥

पार्श्वे तस्यावगृह्णाति शयानस्य समीरणः ।

आसीनो लभते सौख्यमुष्णं चैवाभिनन्दति ॥६०॥

उच्छ्रिताक्षो ललाटेन स्विद्यता भृशमर्तिमान् ।

विशुष्कास्यो मुहुःश्वासो मुहुश्चैवावधम्यते ॥६१॥

मेघाम्बुशीतप्राग्वातैः श्लेष्मलैश्चाभिवर्धते ।

स याप्यस्तमकश्वासः साध्यो वा स्यान्नवोत्थितः ६२

इति तमकश्वासः ।

यदा अग्नौ जलं, वायुः वायुं वायुं, प्रतिलोमम्  
प्रतिलोम गतिथी प्रतिलोम होकर, ओतांसि ओताने

५७. प्रताम्यहप्रतिवेगाच्च-प्रताम्यनि स वेगेन (ध. व.)

६२. शेषमलैः-शीतलैः (ब.)

३३ शेषमलैश्चाभिवर्धते-शेषमलैश्च प्रवर्तते (क.)

क्षीतौको, प्रतिपद्यते प्राप्तं भायं छे प्राप्तं कर्ता है, प्रीचाम्  
 त्यारे ते श्रीवा तब वह गरदन, शिरः च तथा मस्तकने  
 और शिरको, संगृह्य ग्रहण्य करीने पकड़कर, श्लेष्माणम्  
 च अने छेने और कफको, समुदीर्य उदीर्य करीने  
 प्रकृषित करके, पीनसम् पीनस पीनस, करोति उत्पन्न  
 करे छे पैदा करता है, तथा तथा तथा, तेन रुद्धः  
 तेनाथी रुंधाणि उससे रुके जाने पर, घुर्घुरकम् घुर्घुर  
 अवाजने घुर्घुरशब्दको, अतीव तथा अत्यंत और  
 अत्यंत, तीव्रवेगम् तीव्र वेगवाला तीव्र वेगवाले, प्राण-  
 प्रपीडकम् प्राणनाशक प्राणोंको पीड़ा देनेवाले, श्वासम्  
 च श्वासने उत्पन्न करे छे श्वासको पैदा करता है,  
 प्रताम्यति रोगी गजानि पामे छे रोगी तड़पता है,  
 अतिवेगात् अतिवेगशी अत्यंत वेगसे, कासते उधरस  
 भाय छे खांसता है, सन्निरुध्यते च श्लेश्मरहितं भाय छे  
 रुकावट पाता है, कासमानः च सः अने उधरस  
 भाते। ते और खांसता हुआ वह, सुहुः सुहुः बारं बार  
 पुनः पुनः, प्रमोहम् भ्रूणं मूर्च्छांको, गच्छति पामे छे  
 पाता है, श्लेष्मणि कश्च कफके, अनुस्यमाने तु न हृते  
 त्यां सुधी ते। न निकलने पर तो, भृशम् अत्यंत  
 बहुत, दुःखितः दुःभी दुःखित, भवति भाय छे होता  
 है, तस्य च अने ते और उसके, विमोक्षान्ते एव  
 हृत्या पक्षी न निकलने पर ही, सुहृत्तं भरीकवार  
 क्षणभर, सुखम् सुभ सुख, कभते पामे छे पाता है,  
 अथ अस्मै तुं इसका, कण्ठः भृशं गला, उद्धंसते भेरी  
 गला छे बैठ जाता है, कृच्छ्रात् भेनेतथी कष्टसे,  
 आशितुम् भेदी बोल, आक्रोति शके छे सकता है,  
 आयानः अपि शयनं करवा छता सोते हुए भी,  
 श्वासपीडितः श्वासशी पीडाणि श्वाससे पीड़ित होकर  
 निद्राम् च निद्रा निद्राको, न कभते प्राप्त करते। नथी  
 नहीं पाता, समीरणः अने वायु और वायु, आयानस्य  
 स्रोतेषां सोते हुए, तस्य ते रोगीनां उस रोगीके, पार्श्व-  
 पश्चांने पार्श्वोंको, अवगृह्णाति पकडे छे पकड़ लेता है,  
 आसीनः भेदां भेदां ते बैठने पर वह, सौख्यम् आराम  
 सुख, कभते भेजवे छे पाता है, उष्णम् च एव अने  
 गन्धी वस्तुओंने न और उष्ण द्रव्यको ही, अभिनन्दति  
 पसंद करे छे पसंद करता है, स्थिता पसीनावाला  
 पसीजते, कलाटेन कपालवाणी कलाहसे बुझ, उच्छि-

તક્ષઃ બહાર નીકળી આવેલો આયોવાળો વાહ  
નીકલી હુઈ આંચોવાલા, મૃત્માન્ અત્યંત અત્યન્ત,  
અતિમાન્ પીકાવાળો પીકાવાલા, વિશુષ્કાસ્યઃ સૂકા  
મુખવાળો શુષ્ક મુંહવાલા, મુદુઃશ્વાસઃ અને વખતો-  
વખત શ્વાસવાળો તે ઔર બારબાર શ્વાસવાલા વહ,  
મુદુઃ ચ એવ વખતોવખત બારબાર, અવધમ્મયે  
ધમણુની માફક શ્વાસ લે છે વાયુસે પ્રધ્માત હોતા હૈ,  
મેઘ-અમ્બુ-મેઘજલ વર્ષા, શીત- ઠંડી શીત, પ્રાગ્વાતેઃ  
પૂર્વનો વાયુ ઔર પૂર્વકા વાયુ इनसे, શ્લેષ્મલઃ ચ અને  
કફકર પદાર્થોથી ઔર કફકરોપક દ્રવ્યોસે, અભિવર્ધયે  
વધે છે વદતા હૈ. સઃ તમકશ્વાસઃ તે તમક શ્વાસ વહ  
તમક દ્વાજ, યાપ્યઃ યાપ્ય છે યાપ્ય હૈ, નવોસ્થિતઃ વા  
અથવા નવો થયેલો યા નવા ઉત્પન્ન, સાધ્યઃ સ્વાત્ તે  
સાધ્ય છે વહ સાધ્ય હૈ ॥ ૫૫-૬૨ ॥ इति આ અહ,  
તમકશ્વાસઃ તમક શ્વાસ છે તમક શ્વાસ હૈ ।

55-62. If the vata, becoming reversed in its course, reaches the respiratory tract, lays hold of the neck and the head and rouses up the kapha, then it causes coryza. Obstructed by this coryza there is produced a variety of dyspnea associated with a wheezing sound and characterized by acute condition and causing great affliction to the vital breath. On account of the force of the paroxysm the patient faints, coughs and becomes motionless. While thus constantly coughing, he feels faint frequently. Owing to inability to expectorate, he feels greatly distressed and on the sputum being expectorated he feels comfort for a while. His throat is afflicted and he can hardly speak, and embarrassed by dyspnea, he is not able to get sleep while lying flat in his bed, because the vata presses upon both his sides

while he is in bed. He finds comfort in a sitting posture (orthopnea), and he likes only hot things. His eyes are wide open; his forehead is covered with sweat; he is in great distress all the time, his mouth is dry, he breathes easily once and again his respiration becomes violent. These proxysms are intensified by cloudy, humid and cold weather and an easterly wind, as well as by kapha-increasing things. This bronchial asthma is palliable. It is curable if it be of recent origin. Thus has been described (Tamaka-swasa) Bronchial Asthma.

प्रतमकसंतमकयोः लक्षणम्—

ज्वरमूर्च्छांपरीतस्य विद्यात् प्रतमकं तु तम् ।  
उदावर्तरजोऽजीर्णक्लिन्नकायनिरोधजः ॥६३॥  
तमसा वर्धतेऽत्यर्थं शीतैश्चाशु प्रशाम्यति ।  
मज्जनस्तमसीवाऽस्य विद्यात् संतमकं तु तम् ॥६४॥  
इति प्रतमकसंतमकश्वासौ ।

ज्वर-मूर्च्छा-ज्वर और मूर्च्छासे, परीतस्य युक्त भनुष्यने। पीड़ितको, उदावर्त-ने उदावर्त जो उदावर्त, रजः-अजीर्ण-धूलि, अजीर्ण, क्लिन्नकाय-वृद्धावस्था, निरोधजः तथा वेग रोकनाथी उत्पन्न थये। होय तथा वेगविघाणसे उत्पन्न है, तम् तु तेने उसको, प्रतमकम् प्रतमक प्रतमक, विद्यात् अल्पवे। समझे, तमसा अने ने तमे-शुलुथी और जो तमोगुणसे, अत्यर्थम् अत्यंत अत्यंत, वर्धते वृद्धि पाये छे बढ़ता है, शीतैः च तथा ठंडा पदार्थों तथा शीत द्रव्योंसे, आशु प्रशाम्यति शीघ्र शांत पाये छे शीघ्र शांत होता है, तमसि अने अधकारमा और अंधकारमें, मज्जनः हव अल्पे दुखते। होय मानो डूब रहा हो, अस्य अये। ओ रोगीना ऐसे इस रोगीके, तम् तु ते श्वासने उस श्वासको, संतमकम्

संतमकं संतमक, विद्यात् अल्पवे। समझे ॥ ६३-६४ ॥  
इति आ ये, प्रतमकसंतमकश्वासौ प्रतमकं तथा संतमकं श्वासौ छे प्रतमक तथा संतमक श्वास हैं।

63-64. That should be known as Pratamaka or febrile dyspnea which appears in a patient overcome with fever and fainting. That which is excited by misperistalsis, inhalation of dust, indigestion, old age or debilitated condition or the suppression of natural urges, which is greatly aggravated during night and which is alleviated by cold medications and in which the patient feels as if he is submerged in a sea of darkness, is to be known as Santamaka or cardiac asthma. Thus has been described the Febrile Dyspnea and Cardiac Asthma.

शुद्रश्वासस्य लक्षणम्—

रूक्षायासोद्भवः कोष्ठे शुद्रो वात उदीरयन् ।  
शुद्रश्वासो न सोऽत्यर्थं दुःखेनाङ्गप्रबाधकः ॥६५॥  
हिनस्ति न स गात्राणि न च दुःखो ययेतरे ।  
न च भोजनपानानां निरुण्ण्युचितां गतिम् ॥६६॥  
नेन्द्रियाणां व्यथां नापि काञ्चिदापादयेदुजम् ।  
स साध्य एको बलिनः सर्वे चाव्यक्तलक्षणाः ॥६७॥  
इति श्वासाः समुद्दिष्टा हिक्काश्चैव स्वलक्षणैः ।

रूक्ष-आयास-रूक्ष अन्नपान तथा परिश्रमभी रूक्ष अन्नपान और परिश्रमसे, उद्भवः थये। उत्पन्न, शुद्रः वातः शुद्रवात योडा वायु, कोष्ठे उदीरयन् कोष्ठमें उद्भिर्गति करते। कोष्ठमें ऊर्ध्व गति करता हुआ, शुद्र-श्वासः शुद्रश्वास उडेवाय छे शुद्रश्वास कहाता है, सः ते वह, दुःखेन दुःख आपी दुःख देकर, अत्यर्थम् अङ्गप्रबाधकः अंगोंने अत्यंत पीडा आपनार अंगोंको अत्यंत पीडा देनेवाला, न नथी नहीं होता, सः ते वह,

६५. शुद्रो वात-शुद्रवात (व.)

„ उदीरयन्-उदीरयेत् (व.)

६४. संतमकं-प्रतमकम् (व.)

ગાત્રાણિ ગાત્રોનો અવયવોનો, ન હિનસ્તિ નાશ નથી કરતો. નષ્ટ નહીં કરતા, યથા હૃત્તરે અને બીજા સ્વાસોની જેમ દસરે શ્વાસોની તરહ, દુઃખઃ ચ કષ્ટસાધ્ય કષ્ટ-સાધ્ય, ન નથી નહીં હૈ, મોજનપાનાનાન્ અન્નપાનની મોજન ઓર પાનકો, ઉચિતાન્ ઉચિત ઉચિત, ગતિમ્ ગતિને ગતિકો, ન ચ રુણદ્વિ અટકાવતો નથી નહીં રોકતા, ઇન્દ્રિયાણામ્ ઇન્દ્રિયોને ઇન્દ્રિયોનો, વ્યથાન્ વ્યથા નથી કરતો. વ્યથા નહીં કરતા, કાંચિત્ અપિ અને કોઈ પણ ઓર કોઈ મી, રુઝમ્ રોગને રોગ, ન આપાદયેત્ કરતો નથી નહીં કરતા, સઃ સાધ્યઃ તે ક્ષુદ્રશ્વાસને સાધ્ય વહ ક્ષુદ્રશ્વાસ સાધ્ય, ઉક્તઃ ઉક્તો છે કહા ગયા હૈ, બલિનઃ બળવાન મનુષ્યના વલવાનકે, સર્વે ચ મહાશ્વાસ વગેરે સ્થળા અસાધ્ય શ્વાસો પણ મહાશ્વાસ આદિ સર્વ અસાધ્ય શ્વાસો મી, અવ્યક્તલક્ષણાઃ એ અસ્પષ્ટ લક્ષણવાળા હોય તો તેઓને સાધ્ય કહ્યા છે. યદિ અસ્પષ્ટ લક્ષણવાળે હોં તો તે સાધ્ય કહે ગયે હૈં, इति आ प्रभाषे इस तरह, શ્વાસાઃ શ્વાસો શ્વાસ, દિક્ષાઃ ચ એવ અને હેડકોઓ ઓર દિક્ષાઈ, સ્વલક્ષણેઃ પોતપોતાનાં લક્ષણોથી અપને અપને લક્ષણોં, સમુદિષ્ટાઃ કહેવામાં આવ્યાં છે અઝી પ્રકાર કહે મયે હૈં ॥ ૬૫-૬૭ ॥

65-67. Owing to the use of ununctuous things or to exertion there takes place a minor disturbance of vata in the alimentary tract, which causes dyspnea minor. This minor dyspnea does not afflict the body with great pain; it does not hurt the limbs, and is not so formidable as the other types of dyspnea. It does not interfere with the normal course of food and drink, or afflict the sense-organs, or cause painful conditions. This condition is regarded as curable. All the other conditions too, where the symptoms are not fully manifest and occur in strong people, are similarly curable. Thus the

different varieties of dyspnea and hiccup, together with their different symptoms, have been described.

શ્વાસાનાં સાધ્યાસાધ્યવિચારઃ —

एषां प्राणहरा वर्ज्या घोरास्ते ह्याशुकारिणः ॥६८॥

મેષજૈઃ સાધ્યયાપ્યાંસ્તુ ક્ષિપ્રં મિષગુપાચરેત્ ।

उपेक्षिता दहेयुर्हि शुष्कं कक्षमिवानलः ॥६९॥

एषाश्च औक्षीर्भांधी इनमेंसे, प्राणहराः प्राणनाशक महाश्वास वगेरे प्राणनाशक महाश्वास आदि, वर्ज्याः चिकित्साने योग्य नहीं अचिकित्स्य हैं ते हि डारखु डे तेओ क्योंकि वे, घोराः अयं डर भयंकर, आशुकारिणः अने शीघ्रकारी છે ઓર શીઘ્ર મૃત્યુ કરનેવાળે હૈં, मिषक् वैवे वैय, साध्ययाप्यान् तु साध्य तथा याप्यन्ती साध्य तथा याप्योक्ता. मेषजैः औषधीभी औषधोंसे, क्षिप्रम् शीघ्र शीघ्र, उपाचरेत् चिकित्सा કરવી ઉપચાર કરે, हि डारखु डे क्योंकि, अनलः अग्नि अग्नि, शुष्कम् सूखा शुष्क, कक्षम् हृव धासने જેમ બાળી નાં છે તેમ તુળકો જૈસે જલાતી હૈ વૈસે હી, उपेक्षिताः उपेक्षा કરેલા તેओ उपेक्षा કिये गये वे, दहेयुः देहने बाणी नां છે देहको जलाते हॆ ॥ ६८-६९ ॥

68-69. From among these, those that are fatal should not be accepted for treatment; for they are indeed serious and fulminating. As regards those which are curable or palliable, the physician should take them in hand immediately. If they are neglected they will consume the patient as fire consumes dry grass

દિક્ષાશ્વાસોઃ સામાન્યાશ્ચક્રિયાક્રમઃ —

कारणस्थानमूलैक्यादेकमेव चिकित्सितम् ।

इयोरपि यथादृष्टमृषिमिस्तन्निबोधत ॥७०॥

૬૮. આશુકારિણઃ—પ્રાણહારકાઃ (૫.)



द्वयोः अपि भूतानां दोनोंको भी, कारण-स्थान-कारण, स्थान कारण, स्थान, मूलैक्यत्वात् अने भूत ओक होनाथी और मूल एक होनेसे, एकम् एव ओम् ए एक ही, चिकित्सितम् चिकित्सा ओ चिकित्सा है, ऋषिभिः ऋषिओओ ऋषियोंने, यथादृष्टम् ओ चिकित्साने ओम् कही ओ तेम् उस चिकित्साको जैसे निर्दिष्ट किया है, तत् ते उसे, निबोधत साधवोः तुम सुनो ॥ ७० ॥

70. In view of the fact that the pathogenetic factors, habitat and humoral morbidity being the same in both the diseases (hiccup and asthma), the treatment too, follows the same lines. Now learn from me the line of treatment as laid down by the sages.

हिकाश्वासार्दितं स्निग्धैरादौ स्वेदैरुपाचरेत् ।  
आकं लवणतैलेन नाडीप्रस्तरसंकरैः ॥७१॥

हिका-श्वास-होकी अने श्वासार्दः हिका और श्वाससे, अर्दितम् पीडायेध रोगीने पीड़ित रोगीको, आदौ प्रथम प्रथम, लवणतैलेन लवणमिश्रित तैलेने लवण और तैलसे, आकम् अभ्यङ्ग करी अभ्यङ्ग कक्के, स्निग्धैः स्निग्ध स्निग्ध, नाडी- नाडी नाडी, प्रस्तर-संकरैः प्रस्तर अने संकर प्रस्तर और संकर, स्वेदैः स्वेदथी स्वेदोंम्, उपाचरेत् उपचार करे उपचार करे ॥ ७१ ॥

71. The patient afflicted with hiccup and dyspnea should be first anointed with salted oils and then subjected to unctuous sudation by methods of steam-kettle sudation, hot-bed sudation and mixed sudation.

तैरस्य ग्रथितः श्लेष्मा स्रोतःस्वभिचिलीयते ।  
खानि मार्दवमायान्ति ततो वातानुलोमता ॥७२॥

तैः ते स्वेदथी उन स्वेदोंने, अस्य ओम् इसका, ग्रथितः श्लेष्मा गांठयेधो कड़े गांठदार कफ, स्रोतःसु

स्रोतःसु स्रोतोंमें, अभिचिलीयते ओगणी अथ ओ विलीन होता है, खानि छिद्रो स्रोत, मार्दवम् मृदुताने मृदु, आयान्ति पाये ओ हो जाते हैं, ततः त्पार पछी तदनन्तर, वातानुलोमता वायुनी अनुलोमता थाथ ओ वायुकी अनुलोमता होती है ॥ ७२ ॥

72. By these procedures, the kapha which has become inspissated in the patient's body, gets dissolved in the body passages, the body-outlets become softened and as a result, the movement of vata is restored to normal condition.

यथाऽद्रिकुञ्जेष्वर्काशुतप्तं विष्यन्दते हिमम् ।  
श्लेष्मा तप्तः स्थिरो देहे स्वेदैर्विष्यन्दते तथा ॥७३॥

यथा ओम् जैसे, अद्रिकुञ्जेषु पर्वतोंना कुञ्जे पर रहेध पर्वतोंके कुञ्जों पर रही हुई, हिमम् अरु बरफ, अर्काशु- सूर्यनां छिद्रेषुथी सूर्यकी किरणोंसे, तप्तम् तपीने तपी हुई, विष्यन्दते ओगणी अथ ओ पिघलती है, तथा तेम् वैसे, देहे देहमां देहमें, स्वेदैः तप्तः स्वेदथी तपेधो स्वेदोंसे तप्त, स्थिरः श्लेष्मा असेधो कड़े जमा हुआ कफ, विष्यन्दते ओगणी ओ पिघलता है ॥ ७३ ॥

73. Just as the snow lying in mountain-bushes thaws, warmed by the rays of the sun, in the same manner the congealed kapha in the body melts when subjected to the sudation therapy.

स्निग्धं ज्ञात्वा ततस्तूर्णं भोजयेत् स्निग्धमोदनम् ।  
मत्स्यानां शूकराणां वा रसैर्दध्युत्तरेण वा ॥७४॥

ततः ते पछी तदनन्तर, स्निग्धम् रोगीने स्वेदन थाथ ओ रोगीका स्वेदन हुआ है, ज्ञात्वा ओम् जानकीने ऐसा जानकर, तूर्णम् तुरंत शीघ्र, मत्स्यानाम् माछां मत्स्य, शूकराणाम् वा के सूअरना या सूअरके, रसैः भांसरसो साथे भांसरसोंसे, दध्युत्तरेण वा अथवा दहीनी मलाई साथे या दहीकी मलाईके साथ, स्निग्धम् स्नेहयुक्त स्निग्ध, ओदनम् आत मात, भोजयेत् भोजायेवो खिलावे ॥ ७४ ॥

७२. खानि मार्दवमायान्ति ततो वातानुलोमता-खानि मार्दव-मायान्ति वातानुलोमताम्. (ड. य. फ.)

74. When the patient is ascertained to have sweated in the proper degree, he should be immediately given to eat a dish of unctuous rice supplemented with the soup either of fish or pig's flesh and the supernatant part of curds.

ततः श्लेष्मणि संवृद्धे वमनं पाययेत्तु तम् ।  
पिप्पलीसैन्धवक्षौद्रैर्युक्तं वाताविरोधि यत् ॥७५॥

ततः पछी पश्चात्, श्लेष्मणि उद्ध कफके, संवृद्धे  
ज्वारे वृद्धि पात्रे त्वारे बढ़ने पर, तम् तु तेने उसको,  
यत् जे जो, वाताविरोधि वातनुं अविरोधी होय वातका  
विरोधी न हो, तत् त्वैसे, वमनम् वमनकर औषध वमन-  
कारक औषधको, पिप्पली-सैन्धव-क्षौद्रैः युक्तम् पीपर,  
सिन्धवाक्षु अने भक्षणी युक्त पिप्पली, सैन्धानमक और  
मधुसे युक्तकरके, पाययेत् पावुं पिलावे ॥ ७५ ॥

75. When as the result of this diet the kapha is increased in the patient, he should be administered an emetic, compounded of long pepper, rock-salt and honey, taking care to see that such an emetic is not antagonistic to vata.

निर्हते सुक्षमाप्नोति स कफे दुष्टविग्रहे ।  
स्रोतःसु च विशुद्धेषु चरत्यविहतोऽनिलः ॥७६॥

दुष्ट-विग्रहे दूषित स्वरूपवाणे दूषित, कफे उद्ध  
कफके, निर्हते अहार नीकणवाणी निकलने पर, सः ते  
वद, युक्तम् सुष्ठु सुख, ज्ञानोति पात्रे छे पाता है,  
स्रोतःसु च अने स्रोते और स्रोतोंके विशुद्धेषु शुद्ध  
भर्ता विशुद्ध होने पर, अनिलः वायु वायु, अविहतः  
अटका पिना बिना रुकावट, चरति गति करे छे  
श्रुता है ॥ ७६ ॥

76. When the vitiated and stagnant kapha has thus been expelled from

the system, the patient attains ease and the body-channels being purified, the vata moves through the channels unimpeded.

हरिद्राद्यधूमवर्तिः—

लीनश्चेदोषशेषः स्याद्धूमैस्तं निर्हरेद्बुधः ।  
हरिद्रां पत्रमेरण्डमूलं लाक्षां मनःशिलाम् ॥७७॥  
सदेवदार्वलं मांसीं पिष्ट्वा वर्तिं प्रकरयेत् ।  
तां घृताकां पिबेद्धूमं यवैर्वा घृतसंयुतैः ॥७८॥

दोषशेषः ओ दोषने। अवशेष यदि कुछ शेष दोष,  
लीनः च लीन थयो लीन, स्यात् चेत् होय तो हो  
जावे तो, बुधः विद्वान वैद्य बुद्धिमान वैद्य, तम् तेने  
उसका, धूमैः धूमपान वडे धूमपानसे, निर्हरेत् अहार  
डाहवे। निर्हरण करे, हरिद्राम् अण्डर हल्ली, पत्रम् तमाक्ष-  
पत्र तमालपत्र, एरण्डमूलम् औरंगानु मूल एरंडमूल,  
लाक्षाम् लाष् लाक्षा, मनःशिलाम् मनःशिला मैन-  
सिल, सदेवदारु देवदारु देवदारु, अलम् अरताक्ष हरिताल,  
मांसीम् अने जटामांसीने और जटामांसी, पिष्ट्वा वाटीने  
इनको पीसकर, वर्तिम् वर्ति वर्ति, प्रकरयेत् अनाववी  
बनावे, ताम् घृताकाम् तेने घी यो पीसी उसको घीसे लिप्त  
कर, धूमम् पिबेत् धूमपान करवुं धूमपान करे, घृतसंयुतैः  
यवैः वा अथवा घृतयुक्त अवधी वर्ति अनाववी धूमपान  
करवुं या घीसे संयुक्त यवोंसे वर्ति बनाकर धूमपान करे ॥७७-७८॥

77-78. If at the end of the above treatment there is found residue of morbidity still lodged in the body, the wise physician should endeavour to remove it by means of the inhalation therapy. Thus cigars should be made of the paste of turmeric, cassia cinnamon, the roots of the castor plant, lac, red arsenic, deodar, yellow orpiment and nardus; these cigars should be smeared with ghee and



smoked; also the patient may inhale the fumes of barley-paste mixed with ghee.

कतिपयधूमयोगाः—

मधूच्छिष्टं सर्जरसं घृतं मल्लकसंपुटे ।  
कृत्वा धूमं पिवेच्छृङ्गं वालं वा स्नायु वा गवाम् ७९  
स्योनाकवर्धमानानां नाडीं शुष्कां कुशस्य वा ।  
पद्मकं गुग्गुलुं लोहं शल्लकीं वा घृताप्लुतम् ॥८०॥

मल्लक-संपुटे शङ्कराना संपुटभा शरावके संपुटमें, मधूच्छिष्टम् भीष्म मोम, सर्जरसम् राण सर्जरस, घृतम् अने घृतने ची इनको, गवाम् अथवा गायना अथवा गौके, शुङ्गम् वालम् वा श्लिंगां, वाण शींग, बाल, स्नायु वा अथवा स्नायुने या स्नायुको, कृत्वा राभीने ओओतुं रखकर इनका, धूमम् चिवेत् धूमपान करवुं धूमपान करे, स्योनाक- अरंडूसे स्योनाक, वर्धमानानाश्च अने ओरंडानी और एरंडकी, कुशस्य वा अथवा इर्षनी या कुशकी, शुष्काश्च नाडीम् सूडी भूगणीने थी योपडी धूमपान करवुं सूखी नलीको चीसे लिप्तकर धूमपान करे, पद्मकम् अथवा पद्मकाष्ठ अथवा पद्माख, गुग्गुलुम् गुग्गुलु गूल, लोहम् अगर अगर, शल्लकीम् वा अथवा सालिडुं या सलई इसको, घृताप्लुतम् थी योपडी अथवा ओनी वर्तिने शङ्कराना संपुटभा राभीने धूमाडे पीवे चीसे लिप्तकर अथवा इसकी वर्तिको शरावके संपुटमें रखकर धूम पीवे ॥ ७९-८० ॥

79-80. Or the patient may inhale the fumes of bee's-wax, sal resin and ghee by burning them in a couple of earthen vessels placed one above the other the upper being provided with holes for the escape of the fumes. Or the patient may inhale the fumes of the horns, the hairs or sinews of a cow, or of indian calosanthus, castor plant, wild pot herb, dry reeds of small sacrificial grass, himalayan cherry, or gum

guggul, eaglewood or indian olibanum soaked in ghee.

अनुबन्धजहिकाश्वासचिकित्सा—

स्वरक्षीणातिसारासृक्पित्तदाहानुबन्धजान् ।  
मधुरस्निग्धशीताद्यैर्हिकाश्वासानुपाचरेत् ॥८१॥

स्वरक्षीण- स्वरक्षय क्षीणस्वर, अतिसार- अतिसार अतिसार, असृक्पित्त- रक्तपित्त रक्तपित्त दाहानुबन्धजान् तथा दाहना अनुबन्धधी उत्पन्न थयेव और दाह इनके अनुबन्धसे उत्पन्न, हिकाश्वासान् हेडडी तथा श्वासने। हिका तथा श्वासको, मधुर-स्निग्ध- मधुर, स्निग्ध मधुर, स्निग्ध, शीताद्यैः अने शीत वगेरेथी और शीतदिकोंसे, उपाचरेत् उपचार करवे उपचार करे ॥ ८१ ॥

81. The dyspnea and cough, appearing as sequelæ of laryngeal affection, diarrhea, hemothermia and burning should be treated by means of therapeutic agents which are sweet, unctuous, refrigerant etc.

अस्वेद्याः हिकाश्वासादुराः—

न स्वेद्याः पित्तदाहार्ता रक्तस्वेदातिवर्तिनः ।  
क्षीणधातुबला रूक्षा गर्भिण्यश्चापि पित्तलाः ॥८२॥

पित्तदाहार्ताः पित्त तथा दाहनी पीडाता पित्त और दाहसे पीडित, रक्त-स्वेद-अतिवर्तिनः ओओने अतिशय रक्तस्त्राव तथा पसीने। अर्ता होय ओवा ज्यादा रक्तस्त्राववाले और ज्यादा पसीनावाले, क्षीण-धातुबलाः क्षीण धातु तथा बलवाण। क्षीण धातु और बलवाले, रूक्षाः रूक्ष रूक्ष, गर्भिण्यः गर्भिणी गर्भिणी, पित्तलाः च अपि अने पित्तप्रकृतिना अनुबन्धने पक्ष और पित्तप्रकृतिवाले भी, न स्वेद्याः स्वेदन आपवुं नहि स्वेदनयोग्य नहीं हैं ॥ ८२ ॥

82. The following dyspnea and hiccup-patients should not be subjected to sudation-therapy. Those afflicted with pitta and burning, those evincing

hemorrhagic tendency and hyperhidrosis, those who have suffered loss of body-elements and strength, those who are dehydrated, gravida and those who are of the pitta habitus.

कोष्णैः काममुरःकण्ठं स्नेहसेकैः सशर्करैः ।

उत्कारिकोपनाहैश्च स्वेदयेत् सृग्भिः क्षणम् ॥८३॥

कोष्णैः शैलादिभिः थोड़ेसे गरम, स्नेह-सेकैः स्नेहनां परिप्रेयनां स्निग्ध सेकोंसे, सृग्भिः भृदु भृदु, सशर्करैः साकरयुक्त शर्करायुक्त, उत्कारिका-उडारिका उत्कारिकाओंसे, उपनाहैः च तथा उपनाहोथी तथा उपनाहसे उरः-कण्ठम् छाती तथा कंठने उर और कण्ठका कामम् भृग्ना प्रभाणे इच्छानुसार, क्षणम् शैलीवार क्षणभर, स्वेदयेत् स्वेदन आपवुं स्वेदन करे ॥ ८३ ॥

83. If sudation therapy be found desirable, they should be made to sweat only for a short while by the use of luke-warm unctuous affusion or by mild Utkarika poultices mixed with sugar, applied preferrably to the neck and chest.

तिलोमामाषगोधूमचूर्णैर्वातहरैः सह ।

स्नेहोत्कारिका साम्लैः सक्षीरैर्वा कृता हिता ॥८४॥

वातहरैः वातहर वातनाशक, तिल-उमा-तल-अलसी तिल, अलसी, माष-अलसी उडद, गोधूमचूर्णैः अने भट्ठनां यूषीं साथे और गेहूं इनके चूर्णोंके साथ, साम्लैः अम्ल द्रव्योंसहित अम्ल द्रव्योंके साथ, सक्षीरैः वा डे दूधसहित या दूधके साथ, स्नेहैः सह स्नेहोथी स्नेहोंसे, कृता करेल बनायी, उत्कारिका उडारिका उत्कारिका, हिता हितकारी छे हितकर है ॥ ८४ ॥

84. The poultice which is made of the powder of til seeds, linseeds, blackgram and wheat mixed with unctuous substances that are alleviative of vata

and combined with acid articles or with cow's milk is recommended.

द्विक्वाथासयोरवस्थिकी चिकित्सा—

नवज्वरामदोषेषु रुक्षस्वेदं विलङ्घनम् ।

समीक्ष्योल्लेखनं वाऽपि कारयेत्पुष्पाम्बुना ॥८५॥

नवज्वर- नवज्वर नवज्वर, आमदोषेषु तथा आम-दोषेषु आम आमदोषोंमें, समीक्ष्य विचार करीने अच्छी तरह देख कर, रुक्षस्वेदम् रुक्ष स्वेदन रुक्ष स्वेदन, विलङ्घनम् तथा लंघन तथा लंघन, पुष्पाम्बुना वा अपि अथवा सिंधालपुष्पमिश्रित जलथी या सैन्धा-नमकके पानीसे, उल्लेखनम् लम्बन बमन, कारयेत् करावपुं करावे ॥ ८५ ॥

85. In cases of recent fever and chyme disorders, the physician should prescribe dry sudation in conjunction with fasting or he may, after careful examination, administer emesis by means of saline water

अतियोगोद्धतं वातं दृष्ट्वा वातहरैर्मिश्रम् ।

रसाद्यैर्नातिशीतोष्णैरभ्यक्षैश्च शमं नयेत् ॥८६॥

मिश्रम् वैद्य वैद्य, अतियोग अतियोगथी अतियोगसे, उद्धतम् प्रबल थोड़ा प्रकुपित, वातम् दृष्ट्वा वातने ओर वायुको देखकर, वातहरैः वातहर वातहर, रसाद्यैः रस वजरेथी रसादिसे, न अतिशीत अने अतिशीत नहि तथा न अत्यन्त शीत, उष्णैः तेभ्यः अति उष्ण पणु नहि औवा एवं न अत्यन्त उष्ण, अभ्यक्षैः च अभ्यक्षोथी अभ्यक्षसे, शमम् तेन शमन उसको शांत, नयेत् करवुं करे ॥ ८६ ॥

86. The physician, if he finds that the vata has become exacerbated by the over-action of the purificatory procedures, should bring it under control by the administration of meat-juices etc., which are alleviative of vata and by means of inunctions which are neither too hot nor too cold.

उदावर्ते तथाऽऽध्माने मातुलुङ्गाम्लवेतसैः ।

हिङ्गुपीलुबिडैश्चात्र युक्तं स्यादनुलोमनम् ॥८७॥

उदावर्ते उदावर्त उदावर्त, तथा आध्माने तथा आध्मानर्भा तथा आध्मानर्मे, मातुलुङ्ग- अक्षेतु- चकोत्रा, अम्लवेतसैः अम्लवेतस अम्लवेतस, हिङ्गु-पीलु- हिङ्ग, पीलु हींग, पीलु, बिडैः च अने अम्लबलुथी और बिडनमकसे, युक्तम् युक्त युक्त, अन्नम् अन्न अन्न, अनुलोमनम् अनुलोमन अनुलोमन, स्यात् थाय छे होता है ॥ ८७ ॥

87. In disorders of misperistalsis and abdominal distension, a diet containing pomello, common sorrel, asafetida, tooth-brush tree and vid salt, brings about the rectification of the peristaltic movement of vata.

हिक्काश्वासयोः शोधनविचारः—

हिक्काश्वासामयी ह्येको बलवान् दुर्बलोऽपरः ।

कफाधिकस्तथैवैको रूक्षो बह्वनिलोऽपरः ॥८८॥

एकः ऐक एक, हिक्का-श्वास- हेउडी तथा स्वासने। हिक्का और स्वासका आमयी हि रेगी रोगी, बलवान् भगवान् होय छे बलवान् होता है, अपरः अने भीजे और दुसरा, दुर्बलः दुर्भाग होय छे दुर्बल होता है, तथा एव वणी फिर, एकः ऐक हेउडी तथा स्वासने। रेगी एक हिक्का तथा स्वासका रोगी, कफाधिकः अधिक उड़वाणी होय छे कफकी अधिकतावाला होता है, अपरः च अने भीजे और दूसरा, रूक्षः रूक्ष रूक्ष, बह्वनिलः तेभज अधिक वायुवाणी होय छे एवं अधिक वातवाला होता है ॥८८॥

88. Among the patients suffering from hiccup and dyspnea, some are of strong constitution and others are of weak constitution; some again, show a preponderance of kapha and others are marked by dryness and excess of vata.

कफाधिके बलस्थे च वमनं सविरेचनम् ।

कुर्यात् पथ्याग्निने धूमलेहादिशमनं ततः ॥८९॥

कफाधिके अधिक उड़वाणी रेगीने कफकी अधिकतावाले रोगीको, बलस्थे च अने भगवान् रेगीने और बलवान् रोगीको, सविरेचनम् विरेचन विरेचन, वमनम् तथा वमन तथा वमन, कुर्यात् हेवुं देवे, ततः च अने ते पछी उसके बाद, पथ्याग्निने पथ्य बोधन करनेवाले तेओने पथ्य सेवन करनेवाले उसको, धूम-लेह- धूमपान, लेह धूम, लेह, आदि- वगेरे आदि, शमनम् शमन औषध आपवुं शमन औषध देवे ॥ ८९ ॥

89. As regards patients who are characterised by the excess of kapha, as also those who are of strong constitution, emesis in conjunction with purgation should be carried out. After the patient has been put on the proper diet, sedation-therapy by means of inhalation and linctuses, should be given.

वातिकान् दुर्बलान् बालान् वृद्धान्श्चानिलसूदनैः ।

तर्पयेदेव शमनैः स्नेहयूपरसादिभिः ॥९०॥

वातिकान् वातप्रकृतिवागाने वातिक, दुर्बलान् दुर्भाग दुर्बल, बालान् बाल बालक, वृद्धान् च अने वृद्धने और वृद्धोंको, अनिलसूदनैः वातने नाश करनेवाले वातनाशक, शमनैः तथा स्वास अने हेउडीनुं शमन करनेवाले और स्वास एवं हिक्काके शमन करनेवाले, स्नेह-यूष- स्नेह, यूप स्नेह, यूप, रसादिभिः तथा मांसरस अन्नादिभिः और मांसरसादिसे, तर्पयेत् एव तर्पण करे ॥ ९० ॥

90. Those who evince an excess of vata or are of weak constitution or those who are young or aged should only be impleted by means of sedative unctuous articles, soups, meat-juices etc., which are curative of vata.

अनुत्क्रिष्टकफास्विन्नदुर्बलानां विशोधनात् ।  
वायुर्लब्धास्पदो मर्म संशोण्याशु हरेदसू ॥९१॥

अनुत्क्रिष्टकफ- उईना उत्क्रिष्टस्थी रहित कफके उत्क्रिष्ट-  
शसे रहित, अस्विन्न-स्वेदन न करेवा स्वेदन न किये हुए,  
दुर्बलानाम् अने दुर्बलने दुर्बल रोगियोंमें, विशोधनात्  
विशोधन करवाथी विशोधनसे, लब्ध-आस्पदः स्थान  
भेजवी स्थान पा कर, वायुः वायु वायु, मर्म मर्म  
मर्मको, संशोण्य शोधण्य करीने सुखाकर, असू प्राप्नु  
प्राणोंका, आशु शीघ्र शीघ्र, हरेत् हरण्य करे छे हरण  
करता है ॥ ९१ ॥

91. By administering purificatory  
procedures to those whose kapha has  
not been relaxed, the vata, gaining  
ground, will dry up the vital parts,  
and take away the life of the patient.

दृढान् बहुकफांस्तस्माद्रसैरानूपवारिजैः ।  
तृप्तान्विशोचयेत्स्विन्नान् बृंहयेदितरान् भिषक् ९२

तस्मात् तेथी इस लिए, भिषक् वैद्य वैद्य, दृढान्  
मज्ज्भूत शरीरवाला दृढ शरीरवाले बहुकफान् अने  
जुहु उईवाला रोगियोंने और बहुत कफवाले रोगियोंको,  
आनूप- आनूप आनूप, वारिजैः रसैः तथा अक्षय  
प्राणियोंना मांसरसोंथी और जलीय प्राणियोंके मांस-  
रसोंसे, तृप्तान् तृप्त करी तृप्त कर, स्विन्नान् तेभ्यः  
स्वेदन आपी एवं स्वेदन देकर, विशोचयेत् संशोधन  
करवुं विशोधन करे, इतरान् भीमियोंने और अन्योको,  
बृंहयेत् बृंहण्य करवुं बृंहण करे ॥ ९२ ॥

92. Therefore, the patients with  
strong constitution and those having  
an excess of kapha, should first be  
impleted by means of meat-juices of  
wet-land and aquatic animals and then  
sweated before they are administered  
the purificatory measures. The other  
kinds of patients (those of weak  
constitution and having an excess of

vata) should be given impletion-therapy  
straight-way by the physician.

वर्हितित्तिरिदक्षाश्च जाङ्गलाश्च मृगव्रिजाः ।  
दशमूलीरसे सिद्धाः कौलस्थे वा रसे हिताः ॥९३॥

दशमूलीरसे दशमूलीना उनाथभा दशमूलके काथमें,  
कौलस्थे वा अथवा उनाथीना या कुलथीके, रसे  
उनाथभा काथमें, सिद्धाः सिद्ध करेवा सिद्ध किये, वर्हि-  
त्तिरि- मोर, तीतर मोर, तीतर, दक्षाः दुधका मुर्गे,  
जाङ्गलाः च तथा जंगल और जंगल, मृगव्रिजाः च  
पशुपक्षियोंना मांसरसों पशुपक्षियोंके मांसरस, हिताः  
हितकारी छे हितकर हैं ॥ ९३ ॥

93. For this purpose, the fleshes of  
peacock, partridge, cock and birds  
and animals of the jangala type, pre-  
pared with the decoction of the deca-  
radices or with the soup of horse-gram  
are beneficial.

कतिपययोगाः —

निदिग्धिकां बिन्वमध्यं कर्कटाख्यां तुरालभाम् ।  
त्रिकण्टकं गुडूचीं च कुलस्थांश्च सचित्रकान् ॥९४॥  
जले पक्त्वा रसः पूतः पिप्पलीघृतभर्जितः ।  
सनागरः सलवणः स्याद्यूषो भोजने हितः ॥९५॥

निदिग्धिकां कोरी गल्ली छोटी कटेरी, बिन्वमध्यम्  
भीलीने गर्भ बेलगिरी, कर्कटाख्याम् काकडासिंगी,  
कर्कडासिंगी, तुरालभाम् धमासा धमासा, त्रिकण्टकम्  
गोखरु, गुडूचीम् च गणी मिलोय, सचित्रकान्  
अने त्रिकण्टकसहित और चित्रकके साथ, कुलस्थाम् च  
उनाथी कुलथी, जले ओओने अक्षभा इनको जलमें,  
पक्त्वा पकावीने पकाकर, पूतः रसः गणी बीधेदे  
उनाथ छाना हुआ रस, पिप्पली- पीपरी पिप्पली, घृत-  
भर्जितः तथा बीथी पधारेदे और घीसे छोका हुआ,  
सनागरः संसहित सोंठसे युक्त, सलवणः तथा सिन्धा-  
लुप्तसहित और सैधानमकसे युक्त, यूषः यूष यूष,

९३. वर्हि-शिखि (ब.)

९५. रसः पूतः पिप्पलीघृतभर्जितः—रसे पूते पिप्पलीघृतभर्जिताः (ब.)

भोजने बोधनभां भोजनमें, हितः हितकारी छे हितकर है ॥ ९४-९५ ॥

94-95. Take a quantity of indian night-shade, the pulp of bael fruit gall, cretan prickly clover, small caltrops, guduch, horse-gram and white flowered leadwort; cook these in water. The decoction, when filtered, should be seasoned with ghee and long peppers. Taken with the addition of the powder of dry ginger and salt, this soup makes a good article of diet.

राक्षां बलां पञ्चमूलं हस्वं मुद्रान् सचित्रकान् ।  
पक्त्वाऽऽमसि रसे तस्मिन् यूषः साध्यश्च पूर्ववत् ९६

राक्षनाम् राक्षना राक्षना, बलाम् अक्षी बला, हस्वम् क्षु छोटा, पञ्चमूलम् पञ्चमूल पञ्चमूल, सचित्रकान् अने चित्रकसहित चित्रकके साथ, मुद्रान् भग ऐऐने मूंग इनको, अमसि पाण्डुभां जलमें, पक्त्वा पकावी पकाकर, तस्मिन् ते उस, रसे करायभां रसमें, पूर्ववत् च पूर्व प्रमाणे पूर्ववत्, यूषः साध्यः यूष सिद्ध करे ॥ ९६ ॥

96. Take a quantity of indian groundsel, heart-leaved sida, minor pentaradices, green gram and white-flowered leadwort, and having cooked them in water, prepare as before, a soup out of the decoction thus obtained.

पल्लवाणामुलुङ्गस्य निम्बस्य कुलकस्य च ।  
पक्त्वा मुद्रांश्च सज्योषान् क्षारयूषं विपाचयेत् ॥९७॥  
क्त्वा सलवणं क्षारं शिशूणि मरिचानि च ।  
युक्त्या संसाधितो यूषो हिक्काश्वासविकारनुत् ९८

९६. बलां-मूलं (ग. घ.)

९७. हस्वं मुद्रान्-हस्वान् चैवम् (घ.)

९७. क्षारयूषं-क्षारयूषम् (घ.)

९८. क्षारं-क्षीरं (क.)

मातुलुङ्गस्य यक्षोत्तरां चकोत्रे, निम्बस्य क्षीमयानां तीम, कुलकस्य च अने करैलीनां और करैलेके, पल्लवान् पान पत्तोंको, सज्योषान् अने त्रिकटुसहित और त्रिकटुसहित, मुद्रान् च भगने मूंगको, पक्त्वा पकावीने पकाकर, क्षारयूषम् क्षारयुक्त यूष क्षारयूष, विपाचयेत् पकावे। पकावे, सलवणम् सिंधालसहित सैधानमकके साथ, क्षारम् यवक्षार यवक्षार, शिशूणि सरगवानी शींगो सहजन, मरिचानि च अने भरी और मरिच इनको, क्त्वा नाभीने मिलाकर, युक्त्या युक्तिथी युक्तिपूर्वक, संसाधितः सिद्ध करेक्षे सिद्ध किया गया, यूषः यूष यूष, हिक्काश्वास-हेड्डी तथा श्वास हिक्का और श्वास, विकारनुत् ऐ विकारने दूर करनेर छे इन विकारोंका नाशक होता है ॥ ९७-९८ ॥

97 98. Take the tender shoots of pomello, neem and of the carilla fruit and boil these together with green gram and the three spices and prepare an alkaline soup. A soup skillfully prepared by means of barley-alkali, drumstick and black pepper makes a good remedy for the disorders of hiccup and dyspnea.

कासमर्दकपत्राणां यूषः शोभाजनस्य च ।  
शुष्कमूलकयूषश्च हिक्काश्वासनिवारणः ॥९९॥

कासमर्दक-कासमर्दनां कसौदीके, पत्राणाम् पानने। पत्तोंका, शोभाजनस्य च तथा सरगवाने तथा सहजनका, यूषः यूष यूष, शुष्क-मूलक-तेमल सूडा मूंगाने एवं सूखी मूलीका, यूषः च यूष यूष, हिक्का-श्वास-हेड्डी तथा श्वासने। हिक्का और श्वासका, निवारणः नाश करनेर छे निवारक होते हैं ॥ ९९ ॥

99. The soup made from the leaves of negro coffee and of drum-stick, as also the soup prepared from dry

९९. कासमर्दक-कासमर्दक (घ.)

radish, are curative of hiccup and dyspnea.

सदधिव्योषसर्पिष्को यूषो वार्ताकजो हितः ।  
शालिषष्टिकगोधूमयवाभ्रान्यनवानि च ॥१००॥

सदधि- छड़ी दही, व्योष-सर्पिष्कः त्रिफल तथा  
धृतसहित त्रिकटु और घीसे युक्त, वार्ताकजः रींग-  
खुरीना बेंगनसे बनाया, यूषः हितः यूष हितकारी छे यूष  
हितकर है, अनवानि अने भूना और पुराने, शालि-  
शाण शालि चावल, षष्टिक- साठी थोभा सांठी चावल,  
गोधूम- धुई गोहूँ, यवाभ्रानि च तथा अवनु  
अन्न हितकर छे और जौका अन्न हितकर है  
॥ १०० ॥

100. The soup made of brinjals mixed with curds, the three spices and ghee is beneficial in conditions of hiccup and dyspnea, as also a boiled dish of old sali or shashtika rice or wheat or barley.

हिङ्गुसौवर्चलाजाजीविदपौष्करचित्रकैः ।

सिद्धा कर्कटशृङ्गया च यवागूः श्वासहिक्किनाम् १०१

हिङ्गु- हिंग हींग, सौवर्चल- संचल सौचलनमक,  
अजाजी- शुरु जीरा, विड- भिडलवधु बिडलवण,  
पौष्कर- पुष्करभूष पोखरमूल, चित्रकैः चित्रक चित्रक,  
कर्कटशृङ्गया च तथा डाङ्गसीं गीथी और काकडा  
सिंगीसे, सिद्धा सिद्ध करेदी सिद्ध, यवागूः यवागू  
यवगू, श्वास- श्वास श्वास, हिक्किनाम् तथा हेडकीना  
हडकीने हितकारी छे और हिचकीके रोगियोंके लिए  
हितकर है ॥ १०१ ॥

101. The thin gruel prepared with asafetida, sanchal salt, cumin seeds, vid salt, orris rot, white-flowered leadwort and galls, is good for patients suffering from hiccup and dyspnea.

१०१. सिद्धा कर्कटशृङ्गया-सर्कटशृङ्गः सिद्धा (ख.)

दशमूलीशटीरास्त्रापिप्पलीमूलपौष्करैः ।

शृङ्गीतामलकीभार्गीगुडूचीनागराम्बुभिः ॥१०२॥

यवागू विधिना सिद्धां कषायं वा पिबेन्नरः ।

कासहृद्ग्रहपाश्वर्तिहिक्काश्वासप्रशान्तये ॥१०३॥

नरः भनुष्ये पुरुष, दशमूली- दशभूष दशमूल,  
शटी-रास्त्रा- कयूरे, शरना कचूरा, रास्त्रा, पिप्पलीमूल-  
पीपरीमूल पिप्पलीमूल, पौष्करैः पोषरमूल पोहकरमूल,  
शृङ्गी-तामलकी- डाङ्गसीं गीथी, कोयथाभेदी काकडा-  
सिंगी, भुईआंवला, भार्गी- भारंगी भारंगी, गुडूची-  
गुडूची गिलेय, नागर- सूँठ सोंठ, अम्बुभिः अने वाणायी  
और गुग्गुवाला इनसे, विधिना विधिपूर्वक विधिपूर्वक,  
सिद्धा सिद्ध करेदी सिद्ध, यवागू यवागू यवागू,  
कषायम् वा अथवा कषाय या कषाय, कास-हृद्ग्रह-  
उधरस, हृद्ग्रह खांसी, हृदयग्रह, पार्श्व-वर्ति- पार्श्वपीडा  
पार्श्वमें पीडा, हिक्का- हेडकी हिचकी, श्वास- तथा  
श्वासनी और श्वासकी, प्रशान्तये शान्त भाटे शान्तिके  
लिए, पिबेत् पीवे पीवे ॥ १०२-१०३ ॥

102-103. For the relief of cough, cardiac seizure, pain in the sides, hiccup, and dyspnea, one should drink the gruel or decoction made in prescribed manner from deca-radices, long zedoary, indian groundsel, the roots of long pepper, orris root, galls, feather foil, beetle killer, guduch, dry ginger and water.

पुष्कराहशटीव्योषमातुलुङ्गाम्लवेतसैः ।

योजयेदन्नपानानि ससर्पिर्विदहिङ्गुभिः ॥१०४॥

पुष्कराह- पोषरमूल पोहकरमूल, शटी-व्योष-  
कयूरे, त्रिफल कचूर, त्रिफल, मातुलुङ्ग- योतुं बिजोरा,  
अम्लवेतसैः अने अम्लवेतस और अम्लवेतस,  
ससर्पिः धृतसहित घी, विद-हिङ्गुभिः भिडलवधु अने

१०२. दशमूली दशमूल (ब.)

॥ पिप्पलीमूलपौष्करैः—पिप्पलीमूलपौष्करैः (ब.)

॥ नागराम्बुभिः—नागराक्षिभिः (ब.)



हिङ्गली साथे बिडलवण और हिण्डके साथ, अन्नपानानि अन्नपानन्ती अन्नपात्रकी, योजयेत् थोड़ा डरवी योजना करे ॥ १०४ ॥

104. To the diet of these patients should be added either as drink or as food, the following articles:-orris root, long zedoary, the three spices, pomello and common sorrel, seasoned with ghee, vid salt and asafetida.

दशमूलस्य वा काथमथवा देवदारुणः ।

तृषितो मदिरां वाऽपि हिक्काश्वासी पिबेन्नरः ॥१०५॥

हिक्काश्वासी हेडडी तथा श्वासना रोगी हिचकी और श्वासका रोगी, नरः तृषितः मनुष्ये तथा बाजे थारे पुरष प्यासी होने पर, दशमूलका वा दशमूलना दशमूलका, अथवा अथवा या, देवदारुणः देवदारुना देवदारुका, काथम् क्वाथम् काथ, मदिराम् वा अपि अथवा मधुम् अथवा मदिरा, पिबेत् पान करे ॥ १०५ ॥

105. The dyspnea or hiccup patient should drink for the relief of thirst, the decoction either of deca-radices, or of deodar, or madira wine.

पाठां मधुरसां राक्षां सरलं देवदारु च ।

प्रक्षाल्य जर्जरीकृत्य सुरामण्डे निघापयेत् ॥१०६॥

पाठाम् डालीपाठ पाठी, मधुरसाम् मोरवेळ मोरवेळ, राक्षाम् राक्षना राक्षना, सरलम् थोड़ा धूपसरल, देवदारु च अने देवदारुने और देवदारु इनको, प्रक्षाल्य धोकर, जर्जरीकृत्य भाँडीने कुचल कर, सुरामण्डे सुरामण्डा सुरामण्डे, निघापयेत् नाथवा छोड़ देवे ॥ १०६ ॥

106. Taking the trilobed virgin's bower, indian groundsel, long-leaved pine and deodar and having washed and ground them into bits, the physician should drop these into a vessel containing the supernatant part of sura wine.

१०६. सुरामण्डे-सुरामण्डे (व. व.)

तं मन्दलवणं कृत्वा भिषक् प्रसृतसंमितम् ।

पाययेत्तु ततो हिक्का श्वासश्चैवोपशाम्यति ॥१०७॥

तम् तेने उसको, मन्दलवणम् थोड़ा सिंधालवण-वाणु कुछ नमकीन, कृत्वा डरीने बनाकर, भिषक् वैद्य वैद्य, प्रसृतसंमितम् तु ८ तोला मात्राथी एक प्रसृत मात्रासे, पाययेत् पावुं पिलावे, ततः तथी उससे, हिक्काश्वासः च एव हेडडी तथा श्वास हिक्का और श्वास, उपशाम्यति शांत थर्ड अथ छे शान्त हो जाते हैं ॥ १०७ ॥

107. Salting it slightly, he should cause the patient to drink the potion in the dose of 8 tolas. This potion relieves hiccup as well as dyspnea.

हिङ्गु सौवर्चलं कोलं समङ्गां पिप्पलीं बलाम् ।

मातुलङ्गरसे पिष्टमारनालेन वा पिबेत् ॥१०८॥

हिङ्गु हिङ्गु हींग, सौवर्चलम् संचल सौचलनमक, कोलम् थोड़ा वेर, समङ्गां रीसाभण्डी लाजवन्ती, पिप्पलीम् पीपर पिप्पली, बलाम् अने बलाने और बलाको, मातुल -रसे थोड़ातरना रसमां बिजौरा निम्बूके रसमें, पिष्टम् वाटीने पीसकर, आरनालेन वा अथवा डालीथी अथवा कांजीसे, पिबेत् पीवा पीवे ॥ १०८ ॥

108. The patient may drink asafetida, sanchal salt, jujube, sensitive plant, long pepper and heart-leaved sida, reduced to paste in the juice of pomello or mixed with sour conjee.

सौवर्चलं नागरं च भार्गी द्विशर्करायुतम् ।

उष्णाम्बुना पिबेदेतद्विक्काश्वासविकारनुत् ॥१०९॥

सौवर्चलम् संचल सौचलनमक, नागरम् सूंड सोंठ, भार्गी च भार्गी इरेक थोड़ा साग थोड़ा मंगेरन इनको, द्विशर्करायुतम् साकर थोड़ा भाग भेजवी दुधुनी चीनी मिलाकर, उष्णाम्बुना ठीना पाण्डीथी गरम जलसे,

१०८. समङ्गां-समुद्रगं (व.)

,, ,, -समुद्रां (व.)

,, समङ्गां पिप्पलीं बलाम्-सुखपिप्पलीतुलं (व.)

पिबेत् पीवा पीवे, एतत् आ यह, हिक्का-श्वास- हेंडी  
तथा श्वासना दिचकी और श्वासके, विकारनुत् (वडा-  
रने हूर डरनार छे विकारका नाशक है ॥१०९॥

109. The paste of sanchal salt, dry ginger and beetle killer mixed with double the measure of sugar should be taken as potion in hot water. This is curative of hiccup and dyspnea.

भार्गीनागरयोः कल्कं मरिचक्षारयोस्तथा ।

पीतद्रुचित्रकास्फोतामूर्वाणां आम्बुना पिबेत् ११०

भार्गी- भारंगी मंगेरन, नागरयोः तथा संहने  
तथा सोंठके तथा अथवा अथवा, मरिच-क्षारयोः भरी  
तथा ७७भारने। काली मिरच तथा यवक्षारके, पीतद्रु-  
के देवदार या देवदार, चित्रक- (चित्रक चित्रक, आस्फोता-  
सारिवा कपूरी, मूर्वाणाम् च तथा भेदवेदनो तथा  
मूर्वाके, कल्कम् उदकं कल्कको, अम्बुना पाणीयं जलसे,  
पिबेत् पीवे पीवे ॥ ११० ॥

110. One may drink with water the paste of beetle killer and dry ginger, or the paste of black pepper, and barley-alkali, or the paste of indian berberry, white-flowered leadwort, indian sarsaparilla and trilobed virgin's bower.

मधूलिका तुगाक्षीरी नागरं पिप्पली तथा ।

उत्कारिका घृते सिद्धा श्वासे पित्तानुबन्धजे ॥१११॥

पित्तानुबन्धजे पित्तना अनुबन्धथी थयेदा पित्तके  
अनुबन्धसे युक्त, श्वासे श्वासर्मा श्वासमें, मधूलिका  
मधूलिका मधूलिका, तुगाक्षीरी वंशदेवयन वंशलोचन,  
नागरम् संह सोंठ, तथा तथा तथा, पिप्पली पीपर  
ऐऐऐनी पिप्पली इनकी, घृते घीमा घीमें, सिद्धा सिद्ध  
उरेली सिद्ध, उत्कारिका उत्कारिका हितकारी छे  
उत्कारिका हितकर है ॥ १११ ॥

१११. उत्कारिका-तकारिका (थ.)

111. In dyspnea, resulting from complications of pitta, one may take small wheat, bamboo manna, dry ginger and long pepper made into utkarika pancakes and cooked in ghee.

श्वासे च शशमांसं च शल्लकस्य च शोणितम् ।

पिप्पलीघृतसिद्धानि श्वासे वातानुबन्धजे ॥११२॥

वातानुबन्धजे श्वासे वातना अनुबन्धथी उत्पन्न  
थनार श्वासर्मा वातके अनुबन्धसे उत्पन्न होनेवाले  
श्वासमें, पिप्पली-घृत- पीपर तथा घृतथी पिप्पली और  
घीसे, सिद्धानि सिद्ध उरेल सिद्ध किये गये, श्वासे च  
शशमांसं मांस बशी सेहका मांस, शशमांसं च  
शल्लकस्य मांस खरगोशका मांस, शल्लकस्य अने नान्दी  
शल्लकस्य मांस और छोटी सेहका मांस, शोणितम् च  
तथा रक्त हितकारी छे एवं रक्त हितकर है ॥११२॥

112. In dyspnea occurring as a complication of vata-discordance one may take the flesh of the porcupine and the rabbit and the blood also of the pangolin. each cooked with ghee and long pepper.

सुवर्चलारसो दुग्धं घृतं त्रिकटुकान्वितम् ।

शाब्दोदनस्यानुपानं वातपित्तानुगे हितम् ॥११३॥

वातपित्तानुगे वात तथा पित्तना अनुबन्धथी  
उत्पन्न थनार श्वासर्मा वात और पित्तके अनुबन्धसे  
उत्पन्न होनेवाले श्वासमें, सुवर्चलारसः सुरजमुखीने।  
रस सुरजमुखीका खरस, दुग्धम् दूध दूध, त्रिकटुक-  
अन्वितम् त्रिकटु तेमज त्रिकटु एवं, घृतम् घृत ऐऐऐन  
घृत इनका, शाब्दोदनस्य अनुपानम् शाणना भातना  
कोज्जन पछी पान शाब्द चावलके मोजनके पश्चात् पान,  
हितम् हितकारी छे हितकर है ॥ ११३ ॥

113. In dyspnea occurring as a sequel of vata and pitta, the juice of the leaves of the heliotrope, cow's milk and ghee seasoned with the three spices



as a beverage, following a dish of boiled sali rice is beneficial.

शिरिषपुष्पस्वरसः सप्तपर्णस्य वा पुनः ।

पिप्पलीमधुसंयुक्तः कफपित्तानुगे मतः ॥११४॥

कफपित्तानुगे छद् तथा पित्तना अनुपपन्नं थि  
उत्पन्नं थनार स्वासर्भा कफ और पित्तके अनुबन्धसे  
उत्पन्न होनेवाले स्वासर्भे. पिप्पली-मधुसंयुक्तः पीपर  
तथा मधुथी युक्त पिप्पली और मधुसे युक्त, शिरिष-पुष्प-  
स्वरसजनां पुष्पेना शिरिषपुष्पका स्वरसः स्वरसने  
स्वरस, सप्तपर्णस्य वा अथवा सातवर्षुनी छादन  
स्वरसने वा सप्तपर्णकी रक्का स्वरस, मतः हितकारी  
मान्यो छे हितकर माना गया है ॥ ११४ ॥

114. The expressed juice of the siris flower or that of the dita bark mixed with the powder of long pepper and honey is regarded as beneficial in hiccup and dyspnea following on the provocation of kapha and pitta.

मधुकं पिप्पलीमूलं गुडो गोश्वशकृद्रसः ।

घृतं क्षौद्रं कासश्वासहिक्काभिष्यन्दिनां शुभम् ११५

मधुकं गेहीमधु मुलहठी, पिप्पलीमूलं पीपरी-  
मूल पिप्पलीमूल, गुडः गोण गुड, गो-अश्व-गाय  
तथा घेजानां गौ और घोबेके, शकृद्र-रसः ताजं छाधु  
तथा लादने रस ताजे गोबर तथा लीदका रस, घृतम्  
घृत घी, क्षौद्रम् अने मधु और मधु, कास-श्वास-  
हिक्का- उधरस, स्वास, छेडकी खांसी, स्वास, हिचकी,  
अभिष्यन्दिनाम् तथा अभिष्यन्दिना रोणीयाने और  
अभिष्यन्दिनालोको, शुभम् इत्याधुकारी छे कल्याणकारी  
हैं ॥ ११५ ॥

115. Liquorice, the roots of long pepper, gur, the juice of the dung of cow or horse, ghee and honey are good for those affected with cough,

११५. शुभम्-हितम् (ड. व.)

hiccup and dyspnea with profuse expectoration.

स्वराश्वोष्ट्रवराहाणां मेघस्य च गजस्य च ।

शकृद्रसं बहुकफे चैकैकं मधुना पिबेत् ॥११६॥

बहुकफे अहु छेनाणां स्वासर्भा बहुत कफसे युक्त  
स्वासर्भे, स्वर-अश्व-गेधेज, घेज गदहा, घोडा, उष्ट्र-छे  
ऊँट, वराहाणां सूवर सूवर, मेघस्य च घेज मेघ,  
गजस्य च अने हाथी और हाथी, एकैकम् ऐश्वर्याथी  
छेडकी ऐडकी इनमेंसे किसी एकके, शकृद्रसम् मणने  
रस मलका रस, मधुना मधुनी साथे मधुके साथ,  
पिबेत् पीवे पीवे ॥ ११६ ॥

116. In affections of hiccup and dyspnea marked by an excess of kapha, the patient should drink along with honey, the juice of any of the dungs of ass, horse, camel, boar, ram and elephant.

क्षारं चाप्यश्वगन्धाया लिह्यान्ना क्षौद्रसर्पिषा ।

ना रोणी मधुथे स्वासी पुरुष, अश्वगन्धायाः च  
अपि आसेदने पधु असगंधका मी, क्षारम् क्षार  
क्षार, क्षौद्रसर्पिषा मधु तथा घीथी मधु और घीसे,  
लिह्यात् आटवे चाटे ।

116. The patient may lick the alkali of winter-cherry with honey and ghee.

मयूरपादनालं वा शकलं शल्लुकस्य वा ॥११७॥

श्वाविज्जाण्डकचापाणां रोमाणि कुररस्य वा ।

११६. शकृद्रसं बहुकफे चैकैकं मधुना पिबेत्-शकृद्रसं पृथग्विधा-  
रसक्षौद्रं तु कफेऽधिके (फ.)

११६. लिह्यान्ना-लेहयेत् (घ.)

११७. श्वाविज्जाण्डकचापाणां-श्वाविद्रोहकचापाणां (घ. फ.)

,, ,, -श्वाविज्जाण्डकचापाणां (घ.)

,, कुररस्य वा-कुररस्य च (ड.)

शृङ्गयेकद्विशफानां वा चर्मास्थीनि खुरांस्तथा ११८  
सर्वाण्येकैकशो वाऽपि दग्ध्वा क्षौद्रघृतान्वितम् ।  
चूर्णं लीढ्वा जयेत् कासं हिकां श्वासं च दारुणम् ११९  
एते हि कफसंरुद्धगतिप्राणप्रकोपजाः ।  
तस्मात्तन्मार्गशुद्ध्यर्थं देया लेहा न निष्कफे ॥१२०॥

मयूरपाद- मोरना पगनी मोरके पैरकी, नालम् वा अने पीछानी नाण और पिच्छकी नील, शल्लुकस्य अथवा नानी शाडुडीनु या छोटी सेहका, शकलम् वा पीछुं कांटा, श्रावित अथवा मोटी शाडुडी अथवा बबी सेह, जाण्डक- अंडक, चाषाणाम् याष चाष, कुररस्य अने कुररना और कुररके, रोमाणि वा इवाडां रोएं, शृङ्गि- शींगडांवाण शृङ्गवाले, एकद्विशफानाम् तेभ्य ओड के ये भरीवाण पशुओना एवं एकशफ या द्विशफ पशुओंके, चर्म-अस्थीनि आभाडा- डाडां चमडी- हड्डियां, तथा तथा तथा, खुरान् भरीओ खुर, सर्वाणि ओ अधोने इन सबको, एकैकशः वा अपि अथवा ओड ओडने या एक एक करके, दग्ध्वा आगोने जलाकर, चूर्णम् तेओणी भरभना यूखुने उसकी मसीके चूर्णको, क्षौद्र-घृत- भध तथा धीथी मधु और घीसे, अन्वितम् युक्त मिलाया हुआ, लीढ्वा यादी चाटकर, कासम् उपरस खांसी, हिकाम् हेडां हिचकी, दारुणम् तथा डाडुखु और भयंकर, श्वासम् च श्वासने श्वासको, जयेत् शतवारो जीते, एते हि आ रोगो ये रोग, कफ-संरुद्ध- उडथी रुंधाई गथैल कफसे रोके गये, गतिप्राण-गतिवाणा प्राणवायुना गतिवाले प्राणवायुके, प्रकोपजाः प्रकोपथी उपपन्न थनारा छे प्रकोपसे उत्पन्न होनेवाले हैं, तस्मात् तेथी उस लिए, तन्मार्ग- ते प्राणना मार्गानी उस प्राणके मार्गके, शुद्ध्यर्थम् शुद्धिने भाटे शोधनके लिए, लेहाः देयाः याटखु आपवा लेह देने चाहिएं, निष्कफे उद्धरित यत् कफरहित होने पर, न नहि देवा न देवे ॥ ११७-१२० ॥

११८. शृङ्गयेकद्विशफानां वा चर्मास्थीनि खुरांस्तथा-एकद्विशफ-शृंगाणि चर्मास्थीनि खुरांस्तथा (ग. व. थ. व. व.)

११९. सर्वाण्येकैकशो-समस्तान्येकशो (ग.)

„ लीढ्वा-लिहन् (छ. व. व.)

१२०. प्रकोपजाः-प्रकोपजाः (व. व. फ.)

„ देवा-सेका (ह. त.)

„ निष्कफे-निष्कफे (व.)

117-120. He will get over severe attacks of hiccup and dyspnea by licking mixed with ghee and honey, the powder consisting of the ashes of the talons and quills of the peacock or the quills of the pangolin, or the bristles of the porcupine, the armadillo, the blue jay, or of osprey, and the horns of the single hoofed or cloven hoofed animals, as also their skins, bones and hooves. These ailments of kapha, hiccup and dyspnea arise as the result of provocation of the life breaths whose course has been obstructed by the accumulation of kapha; therefore it is only with a view to clearing the respiratory passages of morbid kapha that the linctuses mentioned above should be given and not in conditions where there is no morbidity of kapha.

कासिनेच्छर्दनं दद्यात् स्वरभङ्गे च बुद्धिमान् ।  
वातश्लेष्महरैर्युक्तं तमके तु विरेचनम् ॥१२१॥

बुद्धिमान् बुद्धिमान् वैद्ये बुद्धिमान् वैद्य, कासिने स्वरभङ्गे च स्वरभंगवाणा उपरसना रोगीने स्वर-भंगवाले खांसीके रोगीको, वातश्लेष्म- वात तथा उडने वात तथा कफके, हरैः हर उरनारा औषधी नाशक द्रव्योंसे, युक्तम् सहित युक्त, छर्दनम् वमन वमन, दद्यात् आपवुं देवे, तमके तु अने तमके श्वासभा और तमक श्वासमें तो, विरेचनम् उपर उडेवा औषधी-सहित विरेचन आपवुं उपयुक्त द्रव्योंसे युक्त विरेचन देवे ॥ १२१ ॥

121. The intelligent physician should give emesis medicated with drugs alleviative of vata and kapha

१२१. स्वरभङ्गे-स्वरभेदे (व.)

to patients suffering from cough and cracked voice (hoarseness); and to asthmatics he should give purgation medicated with drugs alleviative of vata and kapha.

उदीर्यते भृशतरं मार्गरोधाद्बहज्जलम् ।

यथा तथाऽनिलस्तस्य मार्गं नित्यं विशोधयेत् १२२

यथा जेभ जैसे, बहुत जलम् बहेतुं अथ बहुत पानी, मार्गरोधात् मार्गं अथ यथ जलवाथी मार्गकी रुकावटसे, भृशतरम् अथ बहुत, उदीर्यते वधी अथ छे बढ़ता है, तथा तेम वैसे, अनिलः वायु मार्गं अथ यथ जलवाथी अथ वधी अथ छे वायु मार्गकी रुकावटसे बहुत बढ़ता है, तस्य तेना उसके, मार्गम् मार्गं मार्गका, नित्यम् नित्य नित्य, विशोधयेत् शोधन करे ॥ १२२ ॥

122. Just as the flowing waters of a stream, when dammed in their course, swell up and press on all sides, so does the constantly moving vata behave. Hence its passage should ever be kept clear.

शब्दाय चूर्णम्—

शटीचोरकजीवन्तीत्वक्कुस्तं पुष्कराह्वयम् ।

सुरसं तामलक्येला पिप्पल्यगुरु नागरम् ॥१२३॥

वालकं च समं चूर्णं कृत्वाऽष्टगुणशर्करम् ।

सर्वथा तमके श्वासे हिक्कायां च प्रयोजयेत् ॥१२४॥

शटी-चोरक- अथुरी, शैरुड कचूर, चोरक. जीवन्ती- होडी जीवन्ती, त्वक्-मुस्तम् तज, मोथ तज, मोथा, पुष्कराह्वयम् पोअरभूण पोहकरमूल, सुरसम् सुरस सुरस, तामलकी मोयआमली मुईआवला, एला ओअथी इलायची, पिप्पली पीपर पिप्पली, अगुरु अगुरु अगर, नागरम् सुंड सोंठ, वालकम् च अने वागै ओओनु और सुगंधवाला इनका, समम् सम भागवाणुं समभाग, अष्टगुण- अने आठगुणी आठगुनी, शर्करम् आठरवाणु चीनीवाला, चूर्णम् कृत्वा धूलुं करी चूर्ण

बनाकर, तमके श्वासे तेने। तमके श्वासमा उनका तमके श्वासमें, हिक्कायाम् च तथा हेडडीमा और हिचकीमें, सर्वथा सर्व रीते सर्वथा, प्रयोजयेत् प्रयोग करे। प्रयोग करे ॥ १२३-१२४ ॥

123-124. Take equal quantities of long zedoary, angelica, cork swallow wort, cinnamon-bark, nutgrass, orris root, holy basil, feather foil, long pepper, eagle-wood, dry ginger and fragrant sticky mallow and reducing all these to powder, mix with eight times the total quantity of sugar. This powder may be used in all therapeutic modes in asthma and hiccup.

मुक्ताय चूर्णम्—

मुक्ताप्रवालवैदूर्यशङ्खस्फटिकमञ्जनम् ।

ससारगन्धकाचार्कसूक्ष्मैलालवणद्वयम् ॥१२५॥

ताम्रायोरजसी रूप्यं ससौगन्धिकसीसकम् ।

जातीफलं शणाद्वीजमपामार्गस्य तण्डुलाः ॥१२६॥

एषां पाणितलं चूर्णं तुल्यानां क्षौद्रसर्पिषा ।

हिक्कां श्वासं च कासं च लीढमाशु नियच्छति १२७

मुक्ता- मोती मोती, प्रवाल- परवाणां मूंगा, वैदूर्य- वाङ्ग- वैदूर्य, शंख वैदूर्य, शंख, स्फटिकम् स्फटिक स्फटिक, मञ्जनम् मञ्जन सोतोजन, ससार- ससार ससार, गन्धकाच- गंधक, अथ गंधक, काच, अर्क- आठगुनां भूण आठके मूल, सूक्ष्म-एला- नान्दी ओअथी छोटी इलायची, लवणद्वयम् संयुग-सिंधालु दोनो नमक, ताम्र- ताम्रधूलुं ताम्रचूर्ण, अयः- रजसी- दोहधूलुं और लोहेका चूर्ण, रूप्यम् आदीनुं धूलुं चांदीका चूर्ण,

१२५. ससारगन्धकाचार्क-ससारगन्धकाचार्क (ब)

,, ,, -ससारगन्धकाचानि (घ. फ.)

१२६. समौगन्धिकसीसकम्-सौगन्धिकसीसकम् (ख. ब. घ.)

,, ,, -ससौगन्धिकमेव च (थ.)

,, सीसकम्-कशेरुकम् (द)

,, जातीफलं शणाद्वीजमपामार्गस्य-जातीफलं शणफलान्यपामार्गस्य (घ. ब.)

सलौगन्धिक- सौगन्धिक माणिक्य, सीसकम् सीसक सीसा, जातीफलम् अथर्षा जायफल, ज्ञाणात् बीजम् शलुनां पीज् ज्ञाणे बीज, अपामार्गस्य तण्डुलाः अर्धेन पीज् अपामार्गके बीज, तुल्यानाम् सरभे वजने समान भागवाले, एषाम् औऔनुं इनका, पाणितलम् ओष्ठ तेलो। एक कर्षे, चूर्णम् यूष् चूर्ण, औद्र- सर्पिषा मध तथा धीथी मधु और घीसे, लीडम् आटवाथी चाटनेसे, हिकाम् डेडडी हिका, श्वासम् च श्वास श्वास, कासम् च अने उधरसने और खांसीको, आशु जलदी औघ्र, नियच्छति भटाडे छे नष्ट करता है ॥ १२५-१२७ ॥

125-127. Pearl, coral, cat's eye beryl, conch, crystal, antimony, motely gem, sulphur, glass, mudar, small cardamom, rock salt and sanchal salt, powders of iron, copper and silver, sulphur, lead, nutmeg, seeds of flax hemp and seeds of rough chaff; the compound powder of these, licked in the dosage of 1 tola mixed with an equal quantity of honey and ghee is curative of hiccup, dyspnea and cough.

अञ्जनात्तिमिरं काचं नीलिकां पुष्पकं तमः ।  
मख्यं कण्डूमभिष्यन्दमर्म चैव प्रणाशयेत् ॥१२८॥  
इति मुक्ताद्यं चूर्णम् ।

अञ्जनात् अञ्जनथी अंजन करनेसे, तिमिरम् तिमिर, काचम् काच, नीलिकाम् नीलिका, नीलिका, पुष्पकम् पुष्पक, तमः तम, तम, मख्यम् कण्डूम्

१२८. मख्यं-पिछे (क. म. ब.)

„ „ -पेछे (झ.)

„ „ -पैख्यं (ङ.)

„ „ -पैछे (त.)

„ नीलिकां-नीलिक (त.)

„ मख्यं कण्डू-पिचकण्डू (ब.)

„ मख्यकण्डूमभिष्यन्दमर्म चैव प्रणाशयेत् - पिछकण्डूमभिष्य-  
न्दमखकामर्म एव च (ब.)

नेत्रनी भक्षयुता, नेत्रनी भरज मलयुक्त आंखोका होना, नेत्रकी कण्डू, अभिष्यन्दम् अभिष्यन्द अभिष्यन्द, अर्म एव च तथा अर्भने। और अर्मको, प्रणाशयेत् नाश करे छे नष्ट करता है ॥ १२८ ॥ इति आ। यह, मुक्ताद्यम् मुक्ताद्य मुक्ताद्य, चूर्णम् यूष् छे चूर्ण है।

128. If used as collyrium, it cures Timira, Kacha, Neelika, Pushpaka, Tama, Malya, Kandua, Abhishyanda and Arma. Thus has been described the compound Pearl Powder.

हिकामां कतिपययोगाः —

शटीपुष्करमूलानां चूर्णप्रामलकस्य च ।  
मधुना संयुतं लेह्यं चूर्णं वा काललोहजम् ॥१२९॥

शटी- ड्युरे क्वार, पुष्करमूलानाम् पोअरभूक्ष पोहकमूल, आमलकस्य च तथा आमलानुं और आंवलेका, चूर्णम् यूष् चूर्ण, काल- लोहजम् वा अथवा तीक्ष्ण दोहनुं या तीक्ष्ण लोहका, चूर्णम् यूष् चूर्ण, मधुना मधु मधुने, संयुतम् साथे युक्तकर, लेह्यम् आटवुं चाटे ॥ १२९ ॥

129. The patient may lick the compound powder of long zedoary, orris root and emblic myrobalan or the powder of eagle-wood with honey.

सशर्करां तामलकीं द्राक्षां गोश्वशकृद्रसम् ।  
तुल्यं गुडं नागरं च प्राशयेन्नावयेत्तथा ॥१३०॥

सशर्कराम् साधरसहित चीनीमिश्रित, तामलकीम् तेलीयामली भुईआंवला, द्राक्षाम् द्राक्ष मुनके, गो-श्वश- गाय अने दोहानां गौ और घोड़ेके, शकृद्रसम् जालु तथा दाहने रस गोबर और लोहका स्वरस, गुडम् गोण गुड, नागरम् च अने सूडे और सोंठ, तुल्यम् औ अधुं सरभे वजने समान भागमें, प्राशयेत् भवभावपुं खिलवे, तथा तथा तथा, नावयेत् औऔनुं नश्य देवुं इनका नश्य देवे ॥ १३० ॥

130. The patient may eat and use as nasal errhine the compound prepared of sugar, feather foil, grapes, juice of cow dung and horse-dung, gur and dry ginger.

लघुनस्य पलाण्डोर्वा मूलं गृह्णनकस्य वा ।  
नावयेच्चन्दनं वाऽपि नारीक्षीरेण संयुतम् ॥१३१॥

लघुनस्य लससुनुं लहसुन, पलाण्डोः वा के कुङ्कु-  
मीतुं या प्याजका, गृह्णनकस्य वा के सलगमनुं या  
सलगमका, मूलम् भूषण मूल, चन्दनम् वा अपि अथवा  
चन्दन या चन्दन, नारीक्षीरेण श्रीना दूधथी लोके दूधसे,  
संयुतम् युक्त करी युक्तकर, नावयेत् नस्य आपवुं नस्य  
देवे ॥ १३१ ॥

131. The patient may take a nasal errhine of the juice of the roots of garlic, onion or turnip, or of sandal-wood mixed with breast milk.

सुखोष्णं घृतमण्डं वा सैन्धवेनावचूर्णितम् ।  
नावयेन्माक्षिकीं विष्टामलक्तकरसेन वा ॥१३२॥

सैन्धवेन अथवा सिंधालू या सैन्धवनमक, अवचूर्णितम्  
छाटीने छोडकर, सुखोष्णम् नवशेका सुहाता हुआ गरम,  
घृतमण्डम् वा घृतमंडनुं घीका मण्ड, मलक्तक- अथवा  
अलक्तकना या लाक्षाके, रसेन वा रससहित रससे,  
माक्षिकीम् विष्टम् माक्षिकी विष्टानुं मक्खीकी बीठसे,  
नावयेत् नस्य आपवुं नस्य करावे ॥ १३२ ॥

132. The patient may take a nasal errhine of the supernatant part of ghee sprinkled with rock-salt or the fecal deposits of flies mixed with the juice of lac.

नारीक्षीरेण सिद्धं वा सर्पिर्मधुरकेरपि ।  
पीतं नस्तो निषिक्तं वा सद्यो हिक्कां नियच्छति १३३

मधुरकैः अथवा मधुरक ओषधौ सहित या

१३२. माक्षिकीं विष्टाम्-मलिकाविष्टान् (घ. ब.)

१३३. नारीक्षीरेण-क्रियाः स्तन्येन (घ.)

जीवनीयगणसे युक्त, नारीक्षीरेण वा श्रीना दूधथी लोके  
दूधसे, सिद्धम् सिद्ध करेधुं सिद्ध, सर्पिः अपि घृत पक्षु  
वीभी, पीतम् पीवाथी पिया हुआ, नस्तः निषिक्तम् वा  
के नस्य करवाथी या नस्य रूपमें लिया हुआ, हिक्काम्  
हेडडीने हिक्काको, सद्यः तुरंत तुरंत, नियच्छति भटाडे  
छे रोकता है ॥ १३३ ॥

133. Or the medicated ghee prepared with breast-milk and the paste of the drugs of the sweet group, used either as potion or as nasal errhine cures hiccup immediately.

सकृदुष्णं सकृच्छीतं व्यत्यासाद्विक्रिनां पयः ।  
पाने नस्तःक्रियायां वा शर्करामधुसंयुतम् ॥१३४॥

हिक्किनाम् हेडडीना रेग्लीयोने हिचकीके रोगियोंको,  
शर्करा-मधु- साकर तथा मधुथी चीनी और मधुसे,  
संयुतम् युक्त युक्त, पयः दूध दूध, सकृत् उष्णम् ओक-  
वार उतुं एकवार गरम, सकृत् शीतम् अने ओकवार  
ठंडुं और एकवार ठंडा, व्यत्यासात् ओम पर्यायथी ऐसे  
बदलकर, पाने पीवाभा पानमें, नस्तःक्रियायाम् वा  
अथवा नस्य करवाभा हितकारी छे या नस्य करनेमें  
हितकर है ॥ १३४ ॥

134. The milk mixed with sugar and honey should be given as potion and nasal errhine to the hiccup-patient; it should be administered hot and cold alternately.

अधोभागैर्घृतं सिद्धं सद्यो हिक्कां नियच्छति ।  
पिप्पलीमधुयुक्तौ वा रसौ घात्रीकपित्थयोः १३५

अधोभागैः विरेचन द्रव्येथी विरेचन द्रव्योसे,  
सिद्धम् सिद्ध करेधुं सिद्ध, घृतम् घृत घी, पिप्पली-मधु-  
अथवा पीपरी तथा मधुथी या पिप्पली और सहसे,  
युक्तौ वा मिश्रित युक्त घात्री- आमणां आवला,  
कपित्थयोः अने डाडना और कैथ इनके, रसौ रस रस,  
सद्यः शीघ्र तुरंत, हिक्काम् हेडडीने हिचकीको, नियच्छति  
भटाडे छे नष्ट करते हैं ॥ १३५ ॥

135. The medicated ghee prepared with purgative drugs soon cures hiccup; the juice of emblic myrobalan or of wood apple mixed with long pepper and honey, acts similarly.

लाजालाक्षामधुद्राक्षापिप्पल्यश्वशकृद्रसान् ।  
लिह्यात् कोलमधुद्राक्षापिप्पलीनागराणि वा ॥१३६॥

लाजा-लाक्षा-लाभ, लाभ लाजा, लाख, मधु-द्राक्षा-  
मध, द्राक्ष मधु, मुनका, पिप्पली- पीपर पिप्पली, श्व-  
शकृत् અને થોડાની લાદને। और घोड़ेकी लीद इनके,  
रसान् रस रस, कोल-मधु अथवा और, मध या बेर,  
शहद, द्राक्षा- द्राक्ष मुनके, पिप्पली- पीपर पिप्पली,  
नागराणि वा અને સૂંઠ और सोंठको, लिह्यात् आटावा  
चाटे ॥ १३६ ॥

136. The patient with hiccup should take as linctus roasted paddy, lac, honey, grapes and long pepper, with the juice of the horse-dung, or he may lick jujube, honey, grapes, long pepper and dry ginger.

शीताम्बुसेकः सहसा त्रासो विस्मापनं भयम् ।  
क्रोधहर्षप्रियोद्वेगा हिक्काप्रच्यावना मताः ॥१३७॥

शीताम्बुसेकः ठंडा पाण्डुपुं परिधेयन ठंडे जलसे  
आसिचन, सहसा ओकाओक सहसा, त्रासः त्रास त्रासन,  
विस्मापनम् (वस्त्रभय उत्पन्न करने) विस्मय उत्पन्न करना,  
भयम् भय भय, क्रोध-हर्ष-क्रोध- हर्ष क्रोध-हर्ष, प्रिय-  
उद्वेगाः અને વહાલી વસ્તુઓમાં ઉદ્વેગ और प्रिय-  
वस्तुओंमें उद्वेग, हिक्का- ओओ हेउडीने ये हिचकीको,  
प्रच्यावनाः भय करनेवाला सात करनेवाले, मताः मानेले  
छे माने गये हैं ॥ १३७ ॥

137. Subjecting the patient to sudden affusions of cold water, to intimidation, distraction and fright, or

१३७. पिप्पल्यश्वशकृद्रसान्-पिप्पल्यश्व शकृद्रसं (घ.)

rousing him to anger, pleasure, love or anxiety, is said to avert an attack of hiccup.

हिक्काश्वासविकाराणां निदानं यत् प्रकीर्तितम् ।  
वर्ज्यमारोग्यकामैस्तद्विक्काश्वासविकारिभिः ॥१३८॥

हिक्का- हेउडी हिचकी, श्वास- અને શ્વાસના और  
श्वासके, विकाराणाम् विकारतुं रोगोंका, यत् ने जो,  
निदानम् निदान निदान, प्रकीर्तितम् कहे छे कहा है,  
तत् ते वह, आरोग्यकामैः आरोग्यनी छान्छावाणी  
आरोग्यकी इच्छा करनेवाले, हिक्का-श्वास- हेउडी तथा  
श्वासना हिक्का और श्वासके, विकारिभिः रोगीओओ  
रोगियोंको, वर्ज्यम् तज्युं छोड़ देना चाहिए ॥ १३८ ॥

138. Whatever has been laid down as being causative of hiccup and dyspnea should be eschewed by subjects of hiccup and dyspnea who desire to keep themselves in health.

हिक्काश्वासानुबन्धा ये शुष्कोरः कण्ठतालुकाः ।  
प्रकृत्या रुद्धदेहाश्च सर्पिर्भिस्तानुपाचरेत् ॥१३९॥

ये ने जो, हिक्का-श्वास-अनुबन्धाः हेउडी तथा  
श्वासना अनुबन्धवाला हिचकी और श्वासके अनुबन्धवाले,  
शुष्क- उरः- शुष्क छती शुष्क छाती, कण्ठ- तालुकाः  
कंठ અને તાળવાળા गले और तालुका, प्रकृत्या અને  
प्रकृतिथी और प्रकृतिसे, रुद्धदेहाः रुद्ध देहावाला होय  
रुद्ध शरीरवाले हों, तान् तेओओ उनका, सर्पिर्भिः  
धृतिथी धृतिसे, उपाचरेत् उपचार करवे उपचार  
करे ॥ १३९ ॥

139. Those who suffer from the complications of hiccup and dyspnea,

१३९. हिक्काश्वासानुबन्धा....कण्ठतालुकाः । —शुष्कक्षीणको-

रुद्धा हिक्काश्वासानुबन्धिनः । (घ. व.)

, शुष्कोरः कण्ठतालुकाः-शुष्कक्षीणकोरुक्ताः (घ.)

, हिक्काश्वासानुबन्धा....प्रकृत्या रुद्धदेहाश्च-शुष्काः क्षीणको-  
फोरुक्ता हिक्काश्वासानुबन्धिनः । ये प्रकृत्या रुद्धदेहाः (घ.)

, रुद्धदेहाश्च-रुद्धदेहा ये (घ.)

whose chest throat and palate have been rendered dry, and who are by nature dry, should be treated with ghee.

हिक्कायां दशमूलार्थं घृतम्—

दशमूलरसे सर्पिर्विचिमण्डे च माधयेत् ।

कृष्णासौवर्चलभारवयःस्थाहिक्कुचोरकैः ॥१४०॥

कायस्थया च तत् पानाद्विकाश्वासौ प्रणाशयेत् ।

दशमूलरसे दशमूलानां अनाथमां दशमूलके कायस्थे, विचिमण्डे च पञ्चा द्दुहिणी अनाथमां और दहीके नितारमें, कृष्णा पीपर पिप्पली, सौवर्चल-संथल सौचल नमक, क्षार-अवभार यतक्षार, वयःस्था-वयःस्था, हिक्कुचोरकैः (हिंज, येरंड हींग, चौरक, कायस्थया च अने कायस्थायी और कायस्थसे, सर्पिः साधयेत् घृत सिद्ध करवुं घी सिद्ध करे, तत् पानात् ते पीयायी वह पान करनेसे, हिक्काश्वासौ हेडकी तथा श्वासने हिचकी और श्वासको, प्रणाशयेत् नाश करे छे नष्ट करता है ॥ १४०३ ॥

140-140½. The medicated ghee prepared with the decoction of decaradices, ghee and the supernatant fluid of curd adding the paste of long pepper, sanchal salt, alkali, emblic myrobalans, asafetida, angelica and chebulic myrobalans, is curative of hiccup and dyspnea.

तेजोवत्याद्यं घृतम्—

तेजोवत्यभया कृष्टं पिप्पली कटुरोहिणी ॥१४१॥

भूतीकं पौष्करं मूलं पलाशश्चित्रकः शटी ।

सौवर्चलं ताम्रकी सैन्धवं बिम्बपेशिका ॥१४२॥

तालीसपत्रं जीवन्ती वचा तैरक्षसंमितैः ।

हिक्कुपादैर्घृतप्रस्थं पचेत्तोये चतुर्गुणे ॥१४३॥

तेजोवती तेजोवत्य तेजोवती, अभया ६२३ हरक,

कृष्टम् ३६ कूठ, पिप्पली पीपर पिप्पली, कटुरोहिणी

१४०३. तत् पानात्-संसिद्धं (घ.)

॥ प्रणाशयेत्-निवच्छति (फ. व.)

३६ कटुकी, भूतीकम् अजयमे। अजवायन, पौष्करम् मूलम् पुष्करभूण पोखरमूल, पलाशः चित्रकः आभुरे, चित्रकं दाक, चित्रक, शटी ड्युरे। कचूर, सौवर्चलम् संथल सौचलनमक. ताम्रकी बोयआभणी मुई-आंवला, सैन्धवम् सिंधादुष्य सैधानमक, बिम्बपेशिका भीलीमे। ७२ बेलगिरी, तालीसपत्रम् तालीसपत्र तालीस-पत्र, जीवन्ती अवंती जीवन्ती, वचा अने १०४ और वच, अक्षसंमितैः ६२३ येड तोलाना भापवाणा एक एक कर्षवां, तैः तेथेथी उनसे, हिक्कुपादैः अने पा तोला हिंजवा और चौथाई हींगसे, चतुर्गुणे चतुर्गुणा चौगुने, तोये पाणीमा जलमें, घृतप्रस्थम् ६४ तोला घी एक प्रस्थ घी, पचेत् पकावतुं पकावे ॥१४१-१४३॥

141-143 A medicated ghee should be prepared of 64 tolas of ghee with the paste of 1 tola of each of indian tooth-ache tree, chebulic myrobalan, costus, long pepper, kurroa ginger grass orris root, palash, white-flowered leadwort, long zedoary, anchal salt, feather foil, rock salt, pulp of bael, bark of the himalayan fir tree cork swallow-wort and sweet flag, and 1/4th its quantity of asafetida, in four times its quantity of water.

एतद्यथाबलं पीत्वा हिक्काश्वासौ जयेन्नरः ।

शोथानिलाशोप्रहणीहृत्पार्श्वरुज एव च ॥१४४॥

इति तेजोवत्यादिघृतम् ।

नरः मनुष्य पुरुष, एतत् अेतुं इसको, यथाबलम् यथाशक्ति बलके अनुरूप, पीत्वा पान करीने पीकर, हिक्काश्वासौ हेडकी, आस हिचकी, श्वास, शोथ-अनिल-सोअ, वातव्याधि शोक, वातव्याधि, अर्शः- ६२४ अर्श, ग्रहणी- अक्षुणी ग्रहणी, हृत्-पार्श्व- अने हृदय तथा पञ्चानी हृदय और पार्श्वकी, रुजः एव च पीजने रुजाको, जयेत् छते छे जीते ॥ १४४॥ इति आ यद,

१४४. शोथानिलाशो-शोथानिलाशो (घ. व. फ.)



તેજોવત્યાદિઘૃતઃ તેજોવત્યાદિ ઘૃત છે તેજોવત્યાદિ ઘૃત છે ।

144. This, taken in proper dosage, cures hiccup, dyspnea, edema, piles due to vata provocation, assimilation-disorders, pain in the cardiac region and pleurodynia. Thus has been described the Compound Cinnamon-leaf Ghee.

મનઃશિલાદિઘૃતમ્—

મનઃશિલાસર્જરસલાક્ષારજનિપચકૈઃ ।

મજ્જિષ્ઠૈશ્ચ કર્ણાશૈઃ પ્રસ્થઃ સિદ્ધો ઘૃતાદિતઃ ॥૧૪૫॥

મનઃશિલા- મનઃપ્રશલ મૈનસિલ, સર્જરસ- રાજ સર્જરસ, લાક્ષા- લાખ લાલ, રજનિ-પચકૈઃ ૬૭૬૨, ૫૬૩૮૪ હલ્દી, પચાલ, મજ્જિષ્ઠા-પલ્લેઃ ૬ મઝુઠ અને એલચી મજીઠ ઓર ઇલાયચી, કર્ણાશૈઃ એ પ્રત્યેકના એકએક તોલાથી એક એક કર્ણ ભાગવાલે ૬૪ દ્રવ્યોસે, ઘૃતાદિ સિદ્ધઃ પ્રસ્થઃ સિદ્ધ કરેલ ૬૪ તોલા થી સિદ્ધ એકપ્રસ્થ થા, દિતઃ હિતકારી છે દિતકર છે ॥ ૧૪૫ ॥

145. The medicated ghee prepared of 64 tolas of cow's ghee with one tola each of red arsenic, calophany, lac, turmeric, himalayan cherry, indian madder and cardamom, is beneficial.

जीवनीयोपसिद्धं वा सक्षौद्रं लेहयेद्भूतम् ।

ज्यूषणं द्वाधिकं वाऽपि पिबेद्वासाघृतं तथा ॥१४६॥

इति मनःशिलादिघृतम् ।

જીવનીય-ઉપસિદ્ધમ્ જીવનીયમણની ઓપધિઓથી સિદ્ધ કરેલ જીવનીયગણસે સિદ્ધ, સક્ષૌદ્રમ્ અથવા મધ-યુક્ત યા મધુયુક્ત, ઘૃતમ્ વા ઘૃત થી, લેહયેત્ આટવું ચાટે, તથા તથા ઓર, જ્યૂષણમ્ જ્યૂષણુઘૃત જ્યૂષણ-ઘૃત, દાધિકમ્ દાધિક ઘૃત દાધિકઘૃત, વાસાઘૃતમ્ અપિ વા કે વાસાઘૃત યા વાસાઘૃત, પિબેત્ પીવું

૧૪૬. જ્યૂષણ દાધિક વાઽપિ પિબેદ્વાસાઘૃતં તથા-વાસાઘૃતં દાધિકં વા પિબેજ્યૂષણમેવ વા (ગ, ય, પ.)

પીવે ॥ ૧૪૬ ॥ इति आ यह, मनःशिलादिघृतम् मनः-शिलादिघृत છે મનઃશિલાદિઘૃત છે ।

146. Or the medicated ghee prepared with the drugs of the life-promoter group with honey may be taken as linctus, or the Compound Three Spices ghee, or the Compound Curd ghee or the Compound Vasaka ghee may be taken as potion. Thus has been described the Compound Red-Arsenic ghee.

द्विकायां चिकित्सासूत्रम्—

यत्किंचित् कफवातघ्नमुष्णं वातानुलोमनम् ।

मेघजं पानमन्नं वा तद्धितं श्वासद्वિક્ષિने ॥१४७॥

યત્ કિંચિત્ જે કાઈ જો કુલ, મેઘજાં ઓપધ ઓપધ, પાનમ્ પાન પાન, અન્નમ્ વા કે અન્ન યા અન્ન, કફવાતઘ્નમ્ કફ તથા વાતનો નાશ કરનારું કફ ઓર વાતકા નાશક, ઉષ્ણમ્ ઉષ્ણ ઉષ્ણ, વાતાનુલોમનમ્ અને વાતનું અનુલોમન કરનારું હોય ઓર વાતકા અનુલોમન કરનેવાલા હો, તત્ તે વદ, શ્વાસદ્વિક્ષિને શ્વાસ તથા હેડકીના રોગીને શ્વાસ ઓર દિક્ષાકે રોગીકો, દિતમ્ દિતકારી છે દિતકર છે ॥ ૧૪૭ ॥

147. Whatever drug, food or drink is alleviative of kapha and vata, heat giving and regulative of the movements of vata is beneficial for patients afflicted with hiccup and dyspnea.

वातकृद्वा कफहरं कफकृद्वाऽनिलापहम् ।

कार्यं नैकान्तिकं ताभ्यां प्रायઃ શ્રેયોઽનિલાપહમ્ ૧૪૮

વાતકૃદ્ વા જે દ્રવ્ય વાતને કરનારું જો દ્રવ્ય વાતકારક, કફહરમ્ તથા કફને હરનારું હોય ઓર કફહારક હો કફકૃદ્ વા તથા કફને કરનારું યા કફકારક, અનિલાપહમ્ અને વાતને હરનારું હોય ઓર વાતનાશક હો, એકાન્તિકમ્ તેને પ્રયોગ એકાન્ત-

૧૪૮. તદ્વિત શ્વાસદ્વિક્ષિને-દિક્ષાશ્વાસેષુ તદ્વિતમ્ (ય, જ, ધ.)



३५थी उसका प्रयोग एकांतरूपसे, न कार्य न करे।  
न रे, ताम्बाक ते अन्नेभासी उनमेंसे, अनिलावहम्  
वातने करनारुं द्रव्य वातहारक द्रव्य प्रायः प्रायः प्रायः,  
श्रेयः श्रेष्ठ छे श्रेयस्कर है ॥ १४८ ॥

148. One should not use exclusively  
drugs that belong to either of the  
two groups viz. those which alleviate  
kapha but aggravate vata; and those  
which alleviate vata but aggravate  
kapha. If one has to choose between  
the two, the drugs alleviative of vata  
are to be preferred.

सर्वेषां बृंहणे ह्यल्पः शक्यश्च प्रायशो भवेत् ।  
नात्यर्थं शमनेऽप्ययो भृशोऽशक्यश्च कर्शने ॥ १४९ ॥

प्रायशः प्रायः प्रायः, सर्वेषां सधना रेगीओनी  
सब रोगियोंके बृंहणे भृंहणुक्रियाभां बृंहण करनेमें,  
अपायः हानि अपाय, अल्पः हि ओछी छे अल्प है,  
शक्यः च अने सुसाध्य पक्ष और वह सुसाध्य भी  
भवेत् छे है, शमने शमनभां शमनमें, अत्यर्थं न हानि  
अत्यंत नथी हानि अत्यंत नहीं है, कर्शने परंतु कर्शनभां  
तो परंतु कर्शनमें तो, भृशः अत्यंत हानि छे अत्यंत  
हानि है, अशक्यः च अने ते असाध्य पक्ष छे और  
वह असाध्य भी है ॥ १४९ ॥

149. The undesirable side effects of  
treatment by roborant drugs are, in all  
cases, slight and for the most part  
easily corrected. As regards treatment  
by sedative drugs, there is not great  
risk; while in that by depletive drugs,  
the ill-effects are many and intractable.

तस्माच्छुद्धानशुद्धांश्च शमनैर्बृंहणैरपि ।  
हिकाश्वासार्द्रिताञ्जन्तून् प्रायशः समुपाचरेत् १५०

१४९. सर्वेषां बृंहणे ह्यल्पः—सर्वो वा बृंहणो ह्यल्पः (घ. ब.)  
,, नात्यर्थं—नावश्यं (घ. ब.)

तस्मात् तेशी इस लिए, हिका-श्वास-अर्द्रितान्  
हेडो तथा श्वासशी पीडायेला हिका तथा श्वाससे  
पीडित, शुद्धान् शोधन करवाभा आवेला शोधन किये,  
अशुद्धान् च अने शोधन नहीं करवाभा आवेला और  
शोधन नहीं किये, जन्तून् रेगीओनी रोगियोंका, प्रायशः  
प्रायः प्रायः, शमनैः शमनशी शमन, बृंहणैः अपि  
तेभ्यः भृंहणुक्रिया पक्ष एवं बृंहणोंसे भी, समुपाचरेत्  
उपचार करे उपचार करे ॥ १५० ॥

150. Therefore, persons suffering  
from hiccup and dyspnea should, as a  
rule, be treated with drugs that are  
sedative and roborant, whether these  
persons have undergone preliminary  
purificatory procedures or not

अध्यायोक्तविषयाः—

तत्र श्लोकः—

दुर्जयत्वे समुत्पत्तौ क्रियैकत्वे च कारणम् ।  
लिङ्गं पथ्यं च हिकानां श्वासानां चेह दक्षितम् १५१

तत्र श्लोकः ते विषयभा उपसंहारने श्लोक छे के  
उप विषयमें उपसंहारका श्लोक है कि, इह आ अध्यायभां  
इस अध्यायमें, हिकानाम् हेडोनी दिक्कीकी श्वासानाम्  
च तथा श्वासान् और श्वासकी, दुर्जयत्वे उष्टसाध्यता  
कृच्छ्रसाध्यता, समुत्पत्तौ उत्पत्ति उत्पत्ति, क्रिया- अने  
चिकित्सानी और चिकित्साकी, एकत्वे च ऐक्यताभां  
एकतामें, कारणम् कारण कारण, लिङ्गम् च लक्षण  
लक्षण, पथ्यम् च अने पथ्य पथ्य, दक्षितम् दर्शनीयां  
छे बताये हैं ॥ १५१ ॥

Here is the recapitulatory verse—

151. Their formidable nature, rea-  
sons explaining the commonness in  
their manifestation and treatment of  
both hiccup and dyspnea, the signs and  
symptoms of these disorders and the  
dietetic rules to be observed, have all  
been set forth in this chapter.

इत्यग्निवेशकृते तन्त्रे चरकप्रतिसंस्कृतेऽप्राप्ते  
दृढबलसंपूरिते चिकित्सास्थाने हिक्काश्वास-  
चिकित्सितं नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥१७॥

इति आ प्रभाषे इस प्रकार, अग्निवेशकृते अग्नि-  
वेशे रयेला अग्निवेशसे बनाये, चरकप्रतिसंस्कृते तन्त्रे  
अने २२३वीं प्रतिस्तरकार पायेला आ शास्त्रना  
और चरकके द्वारा संस्कृत इस शास्त्रके अप्राप्ते अप्राप्त  
अप्राप्त, दृढबलसंपूरिते अने दृढबले पूरा करेला  
और दृढबलसे पूरित किये गये, चिकित्सास्थाने  
चिकित्सास्थान विषे चिकित्सास्थानमें, हिक्का-श्वास-  
चिकित्सितम् 'हिक्काश्वासचिकित्सित' 'हिक्काश्वास-  
चिकित्सित', नाम नामने नामका, सप्तदशः सप्तदशे  
सत्रहवाँ, अध्यायः अध्याय संपूर्ण थये। अध्याय  
समाप्त हुआ ॥ १७॥

17. Thus in the Section on Thera-  
peutics in the treatise compiled by  
Agnivesa and revised by Caraka, the  
seventeenth chapter entitled 'The  
Therapeutics of Hiccup and Dyspnea'  
not being available, the same as resto-  
red by Dridhabala, is completed.

### अष्टादशोऽध्यायः।

अठारहो अध्याय अध्याय अष्टारहवाँ

### Chapter XVIII

कासचिकित्सोपक्रमः—

अथातः कासचिकिति त व्याख्यास्यामः ॥१॥

इति ह स्माह भगवानात्रेयः ॥२॥

अथ अतः हवे अहीथी अब आगे, कास-  
चिकित्सितम् 'कासचिकित्सित' नामना अध्यायतु  
'कासचिकित्सित' नामके अध्यायका, व्याख्यास्यामः  
व्याख्यान करेथुं व्याख्यान करेंगे ॥ १॥

भगवान् भगवान् भगवान्, आत्रेयः आत्रेये आत्रेयने,  
इति आ विषयमा नीये प्रभाषे ७ इस विषयमें  
भिन्न प्रकारसे ही, आह का उहेलुं छे कहा है ॥ २॥

1. We shall now expound the chapter  
entitled 'The Therapeutics of Cough  
disorder.'

2. Thus declared the worshipful  
Atreya.

तपसा यशसा धृत्या धिया च परयाऽन्वितः ।  
आत्रेयः कासशान्त्यर्थं प्राह सिद्धं चिकित्सितम् ॥३॥

तपसा तपश्चर्या तपसे, यशसा यश यशसे, धृत्या  
धैर्यं धैर्यसे, परया अने उताप धीं श्रेष्ठ, धिया च  
अन्वितः बुद्धिधी युक्त बुद्धिसे युक्त, आत्रेयः  
भगवान् आत्रेये भगवान् आत्रेयने, कास- उधरसनी  
कासकी शान्त्यर्थम् शांतिने भूटे शान्तिके लिए, सिद्ध  
सिद्ध सिद्धफलदायी, चिकित्सितम् चिकित्सा चिकित्सा  
प्राह उही कही ॥ ३॥

3. Atreya endowed with austerity  
renown, resolution and intelligence of  
the highest order, declared thus  
the line of treatment which had proved  
itself the most efficacious in the alle-  
viation of cough-disorder.

कासस्य मेदाः—

वातादिजास्त्रयो ये च क्षतजः क्षयजस्तथा ।

पञ्चैते स्युर्नृणां कासा वर्धमानाः क्षयप्रदाः ॥४॥

वातादिजाः वात वजरेथी यथेल वातादिसे उत्पन्न,  
ये च त्रयः ते त्रयु जो तीन, क्षतजः क्षतथी यथेली  
उरःक्षतजनित, तथा तथा तथा, क्षयजः क्षयथी यथेली  
धातुक्षयजन्य, एते पञ्च आ पांच ये पांच, कासाः  
उधरसे कास, वर्धमानाः वधी वर्धने बढ़ कर,  
नृणाम् मनुष्योंने पुरुषोंको, क्षयप्रदाः क्षय उत्पन्न करवा-  
वाणी क्षय करनेवाले, स्युः थाय छे होने हैं ॥ ४॥

4. The three kinds of cough each  
due to each of the humors vata,  
pitta and kapha, one due to pectoral  
lesions and another to loss of body  
elements: these are the five cough

३. यशसा—नेजना (घ)



વિશેષથી કફાદિ આવરણવિશેષે, કાસાનામ્ કાસોનાં કાસોંકી, વેદના- પીડા વેદના, શબ્દ- તથા શબ્દની બૌર શબ્દકી, વૈશિષ્ટ્યમ્ બિનતા મિથતા, ઉપજાયતે થાય છે ઉત્પન્ન होती है ॥ ૯ ॥

9. The characteristic sound and pain of cough is produced as a result particularly of the obstruction to the forceful movement of the vata.

વાતકાસસ્ય નિદાનલક્ષણે —

રુક્ષશીતકષાયાર્પપ્રમિતાનશનં સ્ત્રિયઃ ।

વેગધારણમાયાસો વાતકાસપ્રવર્તકાઃ ॥ ૧૦ ॥

રુક્ષ-શીત-રુક્ષ, ઠંડા રુક્ષ, ઠંડા, કષાય- તૂરા કસૈલા, અલ્પ-પ્રમિત- અલ્પ, અત્યંત અલ્પ ભોજન થોડાં બોજન, અતિ અલ્પ ભોજન, અનશનમ્ ઉપવાસ અનશન, સ્ત્રિયઃ સ્ત્રીસંગ સ્ત્રીસંગ, વેગધારણમ્ વેગ રેકલા વેગધારણ, આયાસઃ અને પરિશ્રમ ઓર પરિશ્રમ, વાત-કાસ- એએ વાતની ઉધરસને વાતજન્ય કાસકો પ્રવર્તકાઃ ઉત્પન્ન કરનારાં છે કરનેવાળે છે ॥ ૧૦ ॥

10. Dry, cold, astringent, scanty and measured diet, indulgence in women, suppression of natural urges and overstrain are the causative factors of the vata type of cough-disorder.

હૃત્પાશ્વોરઃશિરઃશૂલસ્વરમેદકરો મૃશમ્ ।

શુષ્કોરઃકઠવક્રસ્ય હૃષ્ણોન્નઃ પ્રતામ્યતઃ ॥ ૧૧ ॥

નિર્ઘોષદૈન્યસ્તનનદૌર્બલ્યક્ષોભમોહકૃત્ ।

શુષ્કકાસઃ કફં શુષ્કં કૃચ્છાન્મુક્ત્વાઽરપતાં વ્રજેત્ ॥

સ્નિગ્ધામ્લલઘ્વણેષ્વ મુક્તપીતૈઃ પ્રશામ્યતિ ।

ઊર્ધ્વવાતસ્ય જીર્ણેઽન્ને વેગવાન્મારુતો ભવેત્ ॥ ૧૨ ॥

મૃશમ્ અત્યંત અત્યંત, હૃત્-પાશ્વ- હૃદય, પાશ્વ- હૃદય, પાશ્વ, ડરઃ- શિરઃ- છાતી અને મસ્તકમાં છાતી ઓર શિર ઇનમેં, શૂલ- શૂલ કરનારી શૂલ કરનેવાળી,

૧૦. પ્રમિતાનશનં સ્ત્રિયઃ-પ્રમિતાઃ શતશઃ (સ્ત્રીયઃ, ૫.)

૧૧. વક્રસ્ય-વક્રાસ્ય (સ્ત્રી.)

૧૨. મુક્તપીતૈઃ-મુક્તમાત્રે (૫.)

સ્વરમેદકરઃ સ્વરભંગ કરનારી સ્વરભેદ કરનેવાળી, શુષ્ક-ડરઃ- સૂકી છાતી શુષ્ક છાતી, કઠ-વક્રસ્ય કંઠ અને મુખવાળા કંઠ ઓર મુંદવાળે, હૃષ્ણોન્નઃ ઊભા થતાં રૂંવાડાવાળા રોમહર્ષયુક્ત, પ્રતામ્યતઃ અને મુંડાતા રોગીનાં ઓર મ્લનિયુક્ત પુરુષકે નિર્ઘોષ- મોટા અવાજ પ્રતિધ્વનિયુક્ત અવાજ, દૈન્ય- દીનતા દૈન્ય, સ્તનન- કંઈને ખડખડાટ કફકે ક્ષોભકા શબ્દ, દૌર્બલ્ય- દુર્બલતા દુર્બલતા, ક્ષોભ- ક્ષોભ ક્ષોભ, મોહકૃત્ અને મૂર્છા એએને કરનારી ઓર મોહ ઇત્તો કરનેવાળી, શુષ્કકાસઃ સૂકી ઉધરસ શુષ્ક સાંસી, શુષ્ક- સૂકાપેશા શુષ્ક, કફન્ન કંઈને કફકો, કૃચ્છાન્ મહેનતથી કઠસે, મુક્ત્વા બહાર કાઢીને બાહિર નિકાલકર, અરપતામ્ એછી કમ, વ્રજેત્ થાય છે હોતી છે, સ્નિગ્ધ-અમ્લ- સ્નિગ્ધ, અમ્લ, સ્નિગ્ધ, અમ્લ, લઘ્વ- ખારાં લઘ્વ ડહળેઃ સ્ત્રી અને ઊભુ ઓર ડહળ, મુક્તપીતૈઃ અન્નપાનથી ભોજન એવં પાનોસે, પ્રશામ્યતિ શાંત થાય છે શાંત હોતી છે, અન્ન અને અન્ન ઓર નજ, જીર્ણે પચી ગયા પછી જીર્ણ હોનેપર, ઊર્ધ્વવાતસ્ય ઊર્ધ્વ વાયુવાળા રોગીને ઊર્ધ્વ વાતવાળે રોગીકો મારુતઃ વાયુ વાયુ, વેગવાન્ વેગવાળો વેગવાન, મવેત્ થાય છે હો જાતો છે ॥ ૧૧ ૧૨ ॥

11-13. Its symptoms are—pain in the cardiac region, sides chest and head; great alteration in voice; dryness of chest, throat and mouth; horripilation; faintness rattling sound in the throat; depression of spirits; hollow sound of cough; weakness; agitation and stupor. The cough is dry and the patient expectorates with great difficulty dry sputum and after expectoration the cough is diminished. It is alleviated by unctuous, acid, salt and hot foods and drinks. This variety of cough, which is caused by the provocation of the expiratory movement of vata, is aggravated at the time of the completion of digestion.

પિત્તકાસસ્ય નિદાનલક્ષણે—

કટુકોષ્ણવિદાહ્યમ્લક્ષારાણામતિસેવનમ્ ।

પિત્તકાસકરં ક્રોધઃ સંતાપશ્ચાગ્નિસૂર્યજઃ ॥૧૪॥

કટુક- તીખા કટુ, ઉષ્ણ- ઊના ઉષ્ણ, વિદાહિ-  
અમ્લ- વિદાહી, ખાટા વિદાહી, અમ્લ, ક્ષારાણા અને  
ક્ષારવાળા પદાર્થોનું ઔર ક્ષારકા, અતિસેવનમ્ અતિસેવન  
અત્યન્ત સેવન, ક્રોધઃ ક્રોધ ક્રોધ, અગ્નિસૂર્યજઃ અગ્નિ  
અને સૂર્યનો અગ્નિ ઔર સૂર્યકા, સંતાપઃ ચ તાપ એ  
તાપ યે, પિત્તકાસ- પિત્તની ઉધરસ પિત્તજન્ય ઝાંસીકો,  
કરમ્ કરનાર છે કરનેવાળે હોતે હૈ ॥ ૧૪ ॥

14. Excessive indulgence in the  
use of pungent, hot, irritant, acid and  
alkaline articles; anger and heat of  
fire and sun are the causative factors  
of the pitta type of cough-disorder.

પીતનિષ્ઠીવનાશ્લિત્વં તિક્તાસ્યત્વં સ્વરામયઃ ।

ઝરોધૂમાયનં તૃષ્ણા દાહો મોહોઽરુચિર્મ્રમઃ ॥૧૫॥

પ્રતતં કાસમાનશ્ચ જ્યોત્તીવીવ ચ પશ્યતિ ।

શ્લેષ્માણં પિત્તસંસૃષ્ટં નિષ્ઠીવતિ ચ પૈત્તિકે ॥૧૬॥

પૈત્તિકે પિત્તજન્ય ખાંસીમાં પૈત્તિક કાશ્મં, પીત-  
નિષ્ઠીવન-અશ્લિત્વમ્ થૂક તથા અખતું પીળાપાણું  
થૂક તથા આંસોંકા પીળા હોના, તિક્તાસ્યત્વમ્ મુખને  
કડવો રસાદ સુંદકા કડવાપન, સ્વરામયઃ સ્વરભંગ  
સ્વરકી વિકૃતિ, ઝરોધૂમાયનમ્ ઝાતીમાંથી ધૂમાડા જેવું  
નીકળું છાતીસે ધૂઆં જેસા નિકલના, તૃષ્ણા દાહઃ વ્યા,  
દાહ પ્યાસ, દાહ, મોહઃ અરુચિઃ મૂર્છા, અરુચિ મોહ,  
અરુચિ, મ્રમઃ તથા ભ્રમ થાય છે તથા ચક્કર હોતે હૈ,  
પ્રતતમ્ અને સતત ઔર લગાતાર, કાસમાનઃ ચ  
ઉધરસ ખાતો પુરુષ ઝાંસનેવાળા પુરુષ, જ્યોત્તીવીવ દિવ  
ચ પશ્યતિ તારા જેવું બુએ છે તારે જેસા દેખતા હૈ,  
પિત્તસંસૃષ્ટમ્ તેમજ પિત્તયુક્ત એવં પિત્તસે મિલે હુએ,  
શ્લેષ્માણમ્ કંઈને કફકો, નિષ્ઠીવતિ થૂક છે થૂકતા  
હૈ ॥ ૧૫-૧૬ ॥

15-16. There is yellow expectoration,  
icteric tinge of the eyes, bitter taste in

the mouth, disorder of voice, sensation  
of burning in the chest, thirst, burning,  
stupor, anorexia and giddiness; and  
due to prolonged coughing the patient  
is so dazed that he feels he perceives  
the vision of the stars; he expectorates  
sputum mixed with bile. These are  
the symptoms of the pitta type of  
cough-disorder.

શ્લેષ્મકાસસ્ય નિદાનલક્ષણે—

ગુર્વભિષ્યન્દિમધુરશ્નિગ્ધસ્વપ્નાવિષેષ્ટનૈઃ ।

વૃદ્ધઃ શ્લેષ્માઽનિલં રુદ્ધા કફકાસં કરોતિ હિ ॥૧૭॥

ગુરુ- યુરુ મારી, અભિષ્યન્દિ- અભિષ્યન્દી અભિષ્યન્દી,  
મધુર-શ્નિગ્ધ- મધુર અને સ્નિગ્ધ દ્રવ્યોનું સેવન મધુર  
એવં સ્નિગ્ધ દ્રવ્યોંકે સેવન, સ્વપ્ન- નિદ્રા નિદ્રા, અવિષેષ્ટનૈઃ  
અને ક્રિયાના અભાવથી ઔર આરામ- તલવીસે, વૃદ્ધઃ  
શ્લેષ્મા વધેલો કંઈ વધા હુઆ કફ, અનિલમ્ વાયુને  
વાયુકો, રુદ્ધા રુધીને રોકકર, કફ-કાસમ્ કંઈની  
ઉધરસને કફજન્ય ઝાંસીકો, કરોતિ હિ ઉત્પન્ન કરે છે  
કરતા હૈ ॥ ૧૭ ॥

17. The kapha, increased by the  
use of heavy, liquefacient, sweet and  
unctuous articles, by day sleep and  
habitual inactivity, obstructs the course  
of vata and produces the cough-  
disorder of the kapha type.

મન્દાગ્નિત્વારુચિચ્છર્દિપીનસોત્ક્રેશગૌરવૈઃ ।

લોમહર્ષાસ્યમાધુર્યક્લેદસંસદનૈર્યુતમ્ ॥૧૮॥

વહુલં મધુરં શ્નિગ્ધં નિષ્ઠીવતિ ઘનં કફમ્ ।

કાસમાનો હ્યહમ્ વક્ષઃ સંપૂર્ણમિવ મન્યતે ॥૧૯॥

મન્દાગ્નિત્વ- કંઈજન્ય ખાંસીમાં મંદાગ્નિ કફજન્ય  
ઝાંસીમેં અગ્નિમાંથ, અરુચિ-અરુચિ અરુચિ, હર્દિ- ઉશ્કડી

૧૭. કફકાસં કરોતિ હિ-કફકાસસુદીરયેત્ (બ. ધ. ફ.)

૧૮. નિષ્ઠીવતિ ઘનં કફમ્-ઘનં ક્ષીવેત્કફં તથા (ધ.)

૧૯. કાસમાનો હ્યહમ્ વક્ષઃ-કાસમાનોઽતિશયં વક્ષઃ (ક.)

કે, પીનસ- પીનસ પીનસ ડરકેચ-ગૌરવેઃ ઉત્કલેશ. શરીરનું બારેપણું મિતલી, મારીપન, હોમહર્ષ- રંગાઈ બિભા થવાં રોમહર્ષ, આસ્વાપ્ચુર્ય- મુખની મધુરતા મુંઢકા મીઠાપન, ક્ષેદ- ક્ષેદ ક્ષેદ, સંસદનૈઃ અગ્નિ શિથિલતાથી ઔર લીલાપનસે, યુત્તર યુક્ત યુક્ત, મહુલમ્ ધણે. જગદા માત્રામે, મધુરમ્ મીઠું મધુર, સ્તિગ્ધમ્ સ્તિગ્ધ સ્તિગ્ધ, ઘનમ્ કફમ્ અને ધારી કફ ઔર ઘને કફકો, નિષીવતિ રોગી થુંકે છે રોગી થૂકતા હૈ, અદક દિ અને પીડારત્ત ઔર રુજારદિત, કાસમાનઃ ઉધરસ ખાતે તે ધાંસનેવાલા વદ, વક્ષઃ છાતી છાતીકો, સંપૂર્ણ બરી હોય મરી હુઈ હો, હવ એમ એસા, મન્યવે માને છે માનતા હૈ ॥ ૧૮-૧૯ ॥

18-19. Its symptoms are-- weakness of the gastric fire, anorexia, vomiting, coryza, nausea, heaviness, horripilation, sweet taste in the mouth, increased secretions and asthenia. The patient expectorates dense, sweet, sticky and thick sputum. While coughing he does not feel much pain and he feels as though his chest is over-full.

ક્ષતકાસસ્ય નિદાનલક્ષણે—

અતિવ્યવાયમાત્મકત્વયુક્તશ્વાશ્વગજવિગ્રહૈઃ ।

રુક્ષસ્થોરઃ ક્ષતં વાયુર્ગૃહીત્વા કાસમાવદેત્ ॥૨૦॥

અતિ-વ્યવાય- અતિ મૈથુન અચ્યન્ત મૈથુન, માર- અધ્વ- બાર ઉપાડવો. પંથ કાપવો. મારવહન, માર્ગ વલતા, યુદ્ધ- અને યુદ્ધથી ઔર યુદ્ધસે, અશ્વ-ગજ- તથા ઘોડા અને હાથીને ઘોડે તોર હાથીકો, વિગ્રહૈઃ રોગી રાખવાથી રોકનેસે, રુક્ષસ્ય રક્ષ પુરુષની રક્ષ હુણ પુરુષકો, વાયુઃ વાયુ વાયુ, ક્ષતમ્ ક્ષતમ્થી ક્ષત કુણ, ડરઃ છાતીને ડરકા, ગૃહીત્વા ગ્રહણ કરીને આગ્રય કરકે, કાસમ્ ઉધરસ ધાંસી, માવદેત્ કરે છે કર દેતી હૈ ॥ ૨૦ ॥

૨૦. 'The vata getting lodged in the pectoral lesions of the person who is dehydrated as the result of excessive sex-indulgence or weight-carrying way-faring, wrestling and restraining horses and elephants will lead to cough-disorder.

સ પૂર્વે કાસતે શુક્રં તતઃ છીલેન સશોનિતમ્ ।

કળ્થેન રજતાઽપ્યર્થં વિરુગ્મેન ચોદસા ॥૨૧॥

સૂચીભિરિવ તીક્ષ્ણમિસ્તુધમાનેન શૂલિના ।

દુઃસ્વસ્પર્શોન શૂલેન મેદવીઢામિતાપિના ॥૨૨॥

પર્વમેદજ્વરશ્વાસતૃષ્ણાદિસ્વર્યપીઢેનઃ ।

પારાવત દ્વચક્રજ્વર કાસવેગાત મનોદ્ભવાત્ ॥૨૩॥

સઃ તે હ. દર્શન પ્રથમ પ્રથમ, શુક્રકળ સુદી સૂત્રા, કાસને ઉધરસ ખાંસ છે જાંસતા હૈ, તતઃ પછી ફિ, અર્થમ્ આતશય અર્થત, રજતા પીડાવાળા રજાયુક્ત કળ્થેન કંઠથી કંઠસે, વિરુગ્મેન હર બલે દરવણી કોય એવી માનો રજાયુક્ત હુઈ તે એસી, તીક્ષ્ણમિઃ અને પશુદર ઔર તીક્ષ્ણ, સૂચીઃ અણે સોઈએથી માનો સૂઈયોં, તુદ્યામાનેન હવ આંધાતી કોય એવી ચુમાતી હો એસી, શૂલિના શૂલવાળી, શૂલવાળી, ડરસા વ છાતીથી યુક્ત છાતીને યુક્ત, મેદ-પીઢા- કાસા એવી પીડાથી મેદન જેસી પીઢસે, અમિતાપિના અને સંતાપ આપના ઔર મેદન તે દુઃ. દુઃસ્વ સ્પર્શોન દુઃખકર સ્પર્શ કરવા કષ્ટદાયક સ્પર્શવાલે, શૂલેન શૂલથી યુક્ત તે શૂલસે યુક્ત વદ વર્ણવે. પર્વ- મેદ પર્વોકા દૂડના, ડર જાવ અર્થ શ્વાસ વદ, શ્વાસ, તૃષ્ણા- તથા પ્યાસ, સંસ્વર્ય. અને અનુભવથી ઔર સ્વરવિકૃતિસે પીઢિતઃ પીડા પામી પીઢિત હોકર. પારાવતઃ હવ ખૂબ ની થુંકે કબૂતરી તરત. આકૂજવ અચાજ કરતો. આજાન કરતા હુખા. ક્ષોભવાત્ ક્ષતથી ઉત્પન્ન થયેલ ક્ષતસે ઉત્પન્ન, કાસવેગાત ઉધરસના વેગથી ધાંસીકે વેગસે, મશોનિતમ્ રક્તરક્ત રક્તયુક્ત, હીવેત્ થુંકે છે થૂકતા હૈ ॥ ૨૧-૨૩ ॥

21-23. The patient has a dry cough in the beginning; later on, he expectorates blood. He gets severe pain in the throat; he feels acute pain in the chest; he feels severe shooting and pricking pain as though pierced by sharp needles; there is tenderness to touch in the part; he is afflicted with great stabbing and lancinating pains; he is affected with arthralgia, fever, dyspnea, thirst, cacophonia and during the paroxysm of cough, he coos like a pigeon. These are the symptoms of cough due to pectoral lesions.

क्षयकासस्य निदानलक्षणे--

विषमासात्म्यभोज्यातिव्यवायाद्वेगनिग्रहात् ।  
घृणिनां शोचतां नृणां व्यापन्नेऽग्नौ त्रयोमलाः ॥२४॥  
कुपिताः क्षयजं कासं कुर्युर्देहक्षयप्रदम् ।

विषम- विषम, असात्म्य- असात्म्य असात्म्य, भोज्य- भोजन, अतिव्यवायात् अति मैथुन अति व्यवाय, वेगनिग्रहात् अने वेग रोकवाथी और वेगविधारणसे, घृणिनाम् घृष्टा करता अर्थात् घृष्टा करता थी घृणा करनेवाले अर्थात् घृणा करनेसे, शोचताम् तथा शोक करता अर्थात् शोक करता थी तथा शोक करनेवाले अर्थात् शोक करनेसे, नृणाम् मनुष्योन्माद पुरुषोंकी, अग्नौ अग्नि अग्निके, व्यापन्ने विकृत यथा विकृत होने पर, कुपिताः प्रकुपित यथने प्रकुपित हुए त्रयो त्रये तीनों, मलाः दोषो दोष, देह-क्षयप्रदम् देहने क्षय करनेवाली शरीरका नाश करनेवाली, क्षयजम् क्षयजन्य घातुक्षयजन्य, कासम् उधरसने खांसीको, कुर्युः उत्पन्न करे छे करते हैं ॥ २४३ ॥

24-24½. The gastric fire being vitiated in squeamish or mournful persons as the result of unbalanced or unwholesome diet, excessive sexual indulgence and suppression of natural urges, the

three humors become provoked and produce the cough, born of wasting, which in turn leads to the consumption of the body.

दुर्गन्धं हरितं रक्तं घ्रीवेत् पूयोपमं कफम् ॥२५॥  
स्थानादुत्कासमानश्च हृदयं मन्यते व्युतम् ।  
अकस्मादुष्णशीतार्तो बह्वशी दुर्बलः कशः ॥२६॥  
स्निग्धाच्छमुखवर्णत्वक् श्रीमद्दर्शनलोचनः ।  
पाणिपादतलैः श्लक्ष्णैः सततासूयको घृणी ॥२७॥  
ज्वरो मिश्राकृतिस्तस्य पार्श्वरुक् पीनसोऽरुचिः ।  
भिन्नसंहतवर्चस्त्वं स्वरभेदोऽनिमित्ततः ॥२८॥  
इत्येष क्षयजः कासः क्षीणानां देहनाशनः ।  
साध्यो बलवतां वा स्याद्याप्यस्त्वेवं क्षतोत्थितः २९

दुर्गन्धम् क्षयजं कासमां रोगी दुर्गन्धवाणे क्षयज कासमें रोगी दुर्गन्धयुक्त, हरितम् लीले हरा, रक्तम् रातो लाल, पूयोपमम् पुरु नेवे पूय जैसा, कफम् कफ, घ्रीवेत् थूके छे थूकता है, उत्कासमानः च उधरस आती पभते खांसते समय, हृदयम् हृदय हृदयको, स्थानात् पीतानां स्थानमांथी अपने स्थानसे, व्युतम् भसी भयेकु हटा हुआ, मन्यते माने छे मानता है, अकस्मात् हेतुरहित बिना हेतुसे, उष्ण-शीत-उष्णथी के शीतथी गरमी या ठंडसे, आर्तः पीडितो

२६. स्थानादुत्कासमानश्च हृदयं मन्यते व्युतम्-कासमानश्च हृदयं स्थानादुत्कासमानश्च हृदयं मन्यते (क. घ. ष. फ.)  
२७. स्निग्धाच्छमुखवर्णत्वक्-प्रसन्नस्निग्धवदनः (द. फ.)  
२८. स्निग्धाच्छमुखवर्णत्वक् श्रीमद्दर्शनलोचनः-प्रसन्नस्निग्धवदनः श्रीमद्दर्शनलोचनः (घ.)  
२९. दर्शनलोचनः-दर्शनलोचनः (क.)  
लोचनः-लोचनैः (घ.)  
पाणिपादतलैः श्लक्ष्णैः-पाणिपादतलौ श्लक्ष्णौ (घ.)  
सततासूयको घृणी-घृणावानभ्यसूयकः (घ. फ.)  
२८. भिन्नसंहतवर्चस्त्वं-भिन्नसंघातवर्चस्त्वं (फ.)  
भिन्नसंहतवर्चस्त्वं स्वरभेदोऽनिमित्ततः-स्वरभेदोऽनिमित्ततः भिन्नसंहतवर्चस्त्वं (घ. फ.)  
२९. साध्यः-साध्यः (ख. ग. घ. ष.)



पीडित, बद्धाशी- अने धलुं भातां छतां बहुत खाने पर  
सी, दुर्बलः दुर्बल दुर्बल, कृशः कृश होय छे कृश होता है,  
स्निग्ध- स्निग्ध स्निग्ध, अच्छमुख- तथा निर्भण मुण  
तथा स्वच्छ मुंह, वर्णवक्त्रं वक्त्रं अने त्वचावाणो रंग  
और त्वचावाला, श्लेष्मैः क्षीमां चिकने, पाणि-पादतलैः  
हाथ-पगनां तणियां साथे हाथ और पैरोंके  
तलुवोंसे युक्त, श्रोमद्दर्शन- अतियुक्त ३५ कांति-  
मान रूप, लोचनः अने नेत्रोवाणो और आंखोंवाला,  
सततासूयकः सदा भीभना गुष्ठोभां दोष भेनार  
निरंतर असूया करनेवाला, घृणी अने घृष्टुवाणो थाय  
छे और घृणा करनेवाला होता है, तस्य तेने उसको,  
मिश्राकृतिः मिश्र लक्षणवाणो मिश्र लक्षणवाला, ज्वरः  
ताप ज्वर होता है, पाक्षिकं पक्षिभां पीडा पाइवोंमें  
बजा, पीनसः पीनस पीनस, अरुचिः अरुचि अरुचि,  
मिन्न-संघट्ट- पातणो छे अंधायेल मिन्न और घन,  
वर्चस्वम् भक्षणापणुं मलका होना, स्वरभेदः अने  
स्वरभंज और स्वरभेद, अनिमित्ततः कारणं विना  
थाय छे बिना कारणके होते हैं, इति एषः आ  
यह, क्षयजः क्षयथी यथेक्षयज, कासः उपरस कास,  
क्षीणानाम् क्षीण मनुष्यानां क्षीण पुरुषोंके, देहनाशनः  
देहने नाश करनेवाले छे देहका नाशक है, बलवताम् वा  
अथवा अणवान् मनुष्याने अथवा बलवान् मनुष्योंका,  
साध्यः साध्य साध्य, स्यात् थाय छे होता है,  
एवम् ऐव प्रमाणे इसी प्रकार, क्षतोस्थितः तु  
क्षतथी उत्पन्न यथेक्ष कास तो क्षतज कास तो,  
याप्यः अणवान् मनुष्याने याप्य थाय छे बलवान्  
मनुष्योंको याप्य होता है ॥ २५-२९ ॥

25-29. Its symptoms are—the patient expectorates offensive, greenish, sanguinous or purulent sputum. During the fit of coughing, he feels as though his heart were displaced; he becomes affected with cold or heat without any apparent cause; he eats in excess but is weak and emaciated; his complexion and skin are glossy and clear. There is a glow in his looks

and eyes; his palms and soles are smooth; he is always carping and squeamish; he suffers from a mixed type of fever, from pain in the sides of the chest, coryza and anorexia; he passes irregularly unformed or formed feces and suffers from alteration of voice without any apparent cause. Such is the cough disorder born of wasting. When occurring in an emaciated person, it causes death. It is curable in strong persons; it is only palliable if it arises from pectoral lesions.

कासानां साध्यासाध्यविचारः —

नवौ कदाचित् सिध्येतामेतौ पादगुणान्वितौ ।  
स्थविराणां जराकासः सर्वो याप्यः प्रकीर्तितः ॥ ३० ॥

एतौ आ अने आसी ये दोनों कास नवौ अने  
नवीन होय तो यदि नये हों तो, पादगुणान्वितौ थार  
पादना गुणुथी युक्त थतां चतुष्पादके गुणोंसे युक्त  
होनेपर, कदाचित् कदा वार कदाचित्, सिध्येताम् साध्य  
थाय छे साध्य हो सकते हैं, स्थविराणाम् वृद्ध मनुष्याने  
बूढ़ेके, सर्वः जराकासः वृद्धावस्थाभां यथेक्षी सधणी  
आसी वृद्धावस्थामें उत्पन्न सब कास, याप्यः याप्य याप्य,  
प्रकीर्तितः ऊही छे कहे हैं ॥ ३० ॥

30. The last two kinds of cough are sometimes curable if the four basic factors of treatment are fully available. All kinds of senile cough occurring in old persons are regarded as palliable.

श्रीनसाध्यान्साधयेत्पूर्वान् पथ्यैर्याप्यांश्च यापयेत् ।  
चिकित्सायत ऊर्ध्वं तु गृणु कासनिर्बहिणीम् ॥ ३१ ॥

पूर्वान् पहले, श्रीन् त्रेण् तीन, साध्यान्  
साध्य उपरसनी साध्य कासोंको, साधयेत् चिकित्सा

३०. नवौ कदाचित् सिध्येताम्—कदाचिदपि सिध्येताम् (न.)



उरवी सिद्ध करे, बाष्पान् च अने जील क्षयज तथा क्षतज याप्य उधरसत्तुं और अन्य क्षयज तथा क्षतज याप्य कासोक्ता, पथ्यैः पथ्यथी पथ्योसे, यापयेत् यापन उरतुं यापन करे, अतः ऊर्ध्वम् तु हने पथी अब आगे, कास- उधरसने। कासको, निर्वाहिणीम् नाश उरनारी नष्ट करनेवाली, चिकित्साम् चिकित्सा चिकित्सा, शृणु सांख्यो सुनो ॥ ३१ ॥

31. Thus the physician should aim at a radical cure in the case of the three curable varieties of cough described at the outset; in the case of the other varieties admitting only of a palliative treatment, he should administer wholesome palliative remedies. Now listen to a general description of therapeutic measures curative of cough.

वातकासे चिकित्साक्रमः —

रुक्षस्यानिलजं कासमादौ स्नेहैरुपाचरेत् ।  
सर्पिर्भिर्बस्तिमिः पेयायूषक्षीररसादिभिः ॥३२॥  
वातघ्नसिद्धैः स्नेहाद्यैर्धूमैर्लेहैश्च युक्तितः ।  
अभ्यङ्गैः परिषेकैश्च स्निग्धैः स्वेदैश्च बुद्धिमान् ॥३३॥  
बस्तिमिर्बद्धविडातं शुष्कोर्ध्वं चोर्ध्वभक्तिकैः ।  
घृतैः सपित्तं सकफं जयेत् स्नेहविरेचनैः ॥३४॥

बुद्धिमान् बुद्धिमान् वैद्ये बुद्धिमान् वैद्य, रुक्षस्य रुक्ष रोगीनी रुक्ष रोगीकी, अनिलजम् वातज वातजन्य कासम् उधरसनी खांसीका, आदौ प्रथम प्रथम, स्नेहैः स्नेहोथी स्नेहोसे, सर्पिर्मिः धृतोथी घृतोसे, बस्तिमिः अस्तिथी बस्तियोसे, पेया-यूष-क्षीर-रसादिभिः पेया, यूष, क्षीर अने मांसरस वगैरेथी पेया, यूष, दूध और मांसरसादिकोसे, वातघ्नसिद्धैः वातनाशक पदार्थोथी सिद्ध उरेखा वातघ्न द्रव्योसे सिद्ध, स्नेहाद्यैः स्नेहादिथी स्नेहादिकोसे, धूमैः धूमोथी धूमोसे, लेहैः च अने खाटोथी और लेहोसे, युक्तितः युक्तिपूर्वक युक्तिपूर्वक, स्निग्धैः स्निग्ध स्निग्ध, अभ्यङ्गैः अभ्यङ्गोथी अभ्यङ्गोसे, परिषेकैः च परिषेकोथी परिषेकनोसे,

३३. वातघ्नसिद्धैः—वातघ्नयुक्तैः (ब.)

स्वेदैः च स्वेदोथी तथा स्वेदनोसे, उपाचरेत् चिकित्सा उरवी उपचार करे, बद्धविडातम् भण तथा वात नेमा रोकथेखा होय येवा वातकासने मल और वातके विबन्धसे युक्त वातकासको, बस्तिमिः अस्तिथी बस्तियोसे, शुष्कोर्ध्वम् सुकोथेख उर्ध्व भागवाला शुष्क ऊर्ध्व शरीरवाले, सपित्तम् च अने पित्तवाला वात-कासने और पित्तयुक्त वातकासको, ऊर्ध्वभक्तिकैः भाधा उपर सेवन करेखा भोजनोत्तर सेवन किये गये घृतैः धृतोथी घृतोसे, सकफम् अने कफयुक्त वात-कासने और कफयुक्त वातकासको, स्नेह-विरेचनैः स्नेहयुक्त विरेचनथी स्नेहविरेचनोसे, जयेत् अतवी जीते ॥ ३२-३४ ॥

32-34. The intelligent physician should treat the cough due to vata occurring in a dehydrated person by the skilful application of general oleative measures consisting of potions of ghee unctuous enemata, gruels soups, milk, meat-juices etc., medicated with drugs curative of vata, as also of unctuous foods, smokes, electuaries, inunctions, unctuous baths and sudations. If the patient suffers from obstructed feces and flatus, he should be treated by means of enemata; if the upper part of his body is dehydrated, he should be given post-prandial potions; if he suffers from cough associated with pitta, he should be treated by medicated ghees and if the cough is associated with kapha, the treatment should include unctuous purgations.

कण्टकारीघृतम्—

कण्टकारीगुडूचीभ्यां पृथक् त्रिंशत्पलाद्रसे ।  
प्रस्थः सिद्धो घृताद्वातकासनुबद्धिदीपनः ॥३५॥  
इति कण्टकारीघृतम्

कण्टकारी- भोरीगण्डी कटेरी, गुडूचीभ्याम् अने भणो और गिलोय. पृथक् दरेकना पृथक् पृथक्, त्रिकल्पकात् १२० तोला तीस पलके, रसे क्वाथभा काथमें, सिद्धः सिद्ध करेख सिद्ध किये, घृतात् धृत चीका, प्रस्थः ६४ तोला एक प्रस्थ, वातकासनुत् वातजन्य उपरसने दूर करनेपर वातकासका नाशक, बहिदीपनः तथा अमिदीपन छे और अमिदीपन होता है ॥ ३५ ॥ इति आ यह, कण्टकारीघृतम् कंटकारी-घृत छे कंटकारीघृत है।

35. The medicated ghee prepared in the decoction of indian nightshade 120 tolas and guduch 120 tolas, taking 64 tolas of ghee, is curative of cough due to vata and is also promotive of the gastric fire. Thus has been described the Compound Indian Nightshade Ghee.

पिप्पल्यादिघृतम्—

पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकनागरैः ।

धान्यपाठावचारास्त्रायाहक्षारहिङ्गुभिः ॥३६॥

कोलमात्रैर्घृतप्रस्थाद्दशमूलीरसाढके ।

सिद्धाच्चतुर्थिकां पीत्वा पेयामण्डं पिबेदनु ॥३७॥

तन्मूलकासहृत्पार्श्वप्रहणीदोषगुल्मनुत् ।

पिप्पल्याद्यं घृतं चैतदात्रेयेण प्रकीर्तितम् ॥३८॥

इति पिप्पल्यादिघृतम् ।

पिप्पली- पीपर पीपर, पिप्पलीमूल- पीपरीमूलना भणोडा पिप्पलीमूल, चव्य-चित्रक-यवक, चित्रक चव्य, चित्रक, नागरैः सुंड सोठ, धान्य-पाठा- धाण्डा, पाठा धनिया, पाठा, वचा-रास्त्रा- वच, रास्त्रा, पट्ट्याह- नेडीमधः मुलहठी, क्षार- जन्मपर यवक्षार, हिङ्गुभिः डिंभ हींग, कोलमात्रैः दरेक अर्धा तोलाने ६६६ दरेक एक एक कोलका कलक, दशमूली- दशमूलना दशमूलके, रसाढके २५६ तोला क्वाथभा एक आढक काथमें, सिद्धम् पडावेख सिद्ध, घृत-प्रस्थात् ६४ तोला घृतभाथी एक प्रस्थ चीमेंसे, चतुर्थिकाम् ४ तोला एक पल, पीत्वा पीने पीकर, पेयामण्डम् पेयाने भंड पेमाकी मांढ, अनुपिवेत् उपर पीवे। ऊपर पीवे, तव

ते वद, खास-काम- श्वास, उपरस श्वास, कास, हृत्-पार्श्व हृदयरोग पडावानी पीडा हृदयरोग, पार्श्वपीडा, ग्रहणी-दोष तथा ग्रहणीरोग ग्रहणीरोग, गुल्मनुत् अने गुल्मने। नाश करे छे और गुल्मनाशक है, एतत् आ यह, पिप्पल्याद्यम् पिप्पल्यादि पिप्पल्यादि, घृतम् च घृत घृत आत्रेयेण आत्रेये आत्रेयने, प्रकीर्तितम् कलुं छे बताया है ॥ ३६-३८॥ इति आ यह पिप्पल्यादि पिप्पल्यादि पिप्पल्यादि, घृतम् घृत छे घृत है।

36-38. A medicated ghee should be prepared of long pepper, roots of long pepper, chaba pepper white-flowered leadwort, ginger, coriander, patha, sweet flag, indian groundsel, liquorice, alkali and asafetida taken in the quantity of 1/2 tola each, together with 64 tolas of ghee and the decoction of 256 tolas of decaradices. This prepared ghee should be taken in the dosage of 4 tolas and it should be followed by a potion and the supernatant part of thin gruel This ghee cures dyspnea, cough, cardiac disorders, pleurodynia, assimilation disorders and gulma. This compound long pepper ghee is propounded by Atreya. Thus has been described the Compound Long Pepper Ghee.

त्र्यूषणाद्यं घृतम्—

त्र्यूषणं त्रिफलां द्राक्षां काशमर्याणि परूषकम् ।

द्वे पाठे देवदार्वृद्धिं स्वगुप्तां चित्रकं शटीम् ॥३९॥

ब्राह्मीं तामलकीं मेदां काकनासां शतावरीम् ।

त्रिकण्टकं विदारीं च पिष्ट्वा कर्षसमं घृतात् ॥४०॥

प्रस्थं चतुर्गुणे क्षीरे सिद्धं कासहरं पिबेत् ।

ज्वरगुल्माकचिह्नीहृदिरोहृत्पार्श्वशूलनुत् ॥४१॥

४० ब्राह्मी-व्याघ्री (व. द. ब.)

४१. पार्श्वशूलनुत्-पार्श्वरोगनुत् (व.)

कामलाशोऽनिलाष्टीलाक्षतशोषक्षयापहम् ।

ऽयूषणं नाम विख्यातमेतद्धृतमनुत्तमम् ॥४२॥

इति ज्यूषणाद्यं घृतम् ।

ज्यूषणम् त्रिदंडु त्रिकण्डु, त्रिकलाञ्ज त्रिङ्गा त्रिकला,  
 ब्राह्मणम् दक्ष मुनिके, काशमणि शीवल्लुना इणगमारीके  
 फल, परुषकम् दक्षसा फालसा, द्वे पाठे ये भतनी  
 पादा दोनों पादी, देवदारु देवदार देवदार, क्रद्धिम्  
 क्रद्धि क्रद्धि, स्वगुणम् डौवथ कौच चित्रकम् चित्रक  
 चित्रक, शटीम् पट्टकथूरो कचूर, ब्राह्मीम् आर्षी  
 ब्राह्मी, तामलकीम् भोयिआभणी मुंईआंवला, मेदा  
 भेदा मेदा. काकनासाम डौवादेडी कौआठोबी,  
 शतावरीम् शतावरी शतावर, त्रिकण्टकम् गोभरु  
 गोखरु, विदारीम् च अने इगिशै. और विदारीकन्द,  
 कर्ष-समम् हरेड ओड तोडा. हरेक एक एक कर्ष, पिष्टा  
 डड्ड करी पीसकर, चतुर्गुणे चारगुणा चौगुने, क्षीरे  
 दूधमा दूधमें, घृतात् घृत वीका, प्रस्थम् ६४ तोला एक  
 प्रस्थ, सिद्धम् पडावेड ते सिद्ध किये हुए वह, कामहरम्  
 उधरसेने हरनार कामहारक, पिबेत् पीवुं पीवे, ज्वर-गुल्म-  
 ज्वर, गुल्म ज्वर, गुल्म, अरुचि- अरुचि अरुचि,  
 स्त्रीह-धिर:- स्त्रीहा, भरतडपीडा स्त्रीहा, धिरःशूल, हृत्-  
 हृदय हृदय, पार्श्वशूलनुत पडणाना शूलने दूर करना  
 और पार्श्वशूल इनका नाशक, कामला- डभणे। पीलिया,  
 अर्शः- हरस अर्श, अनिलाछीला- वाताछीला वाताछीला,  
 क्षत-शोष- उरःक्षत, शोष उरःक्षत, शोष, क्षयापहम्  
 अने क्षय ओओने दूर करना. और क्षय इनका नाशक,  
 एतत् आ यह, अनुत्तमम् अत्यंत उत्तम अत्यंत उत्तम,  
 घृतम् घृत घी, ज्यूषणम् ज्यूषण ज्यूषण, नाम नामधी  
 नामसे, विख्यातम् विख्यात है विख्यात है ॥३९-४२॥  
 इति आ यह, ज्यूषणाद्यम् ज्यूषणाद्य ज्यूषणाद्य, घृतम्  
 घृत है घृत है।

39-42. A medicated ghee may be prepared from one tola each of the paste of the three spices, the three myrobalans, grapes, white teak, sweet falsah, the two varieties of patha, deodar, riddhi, cowage, white-flowered

४२. ज्यूषणं नाम-ज्यूषणाद्यं तु (म.)

leadwort, long zedoary, brahmi, ground  
phyllathus, small stinking swallow- wort,  
climbing asparagus, small caltrops and  
white yam, 64 tolas of ghee and milk  
four times this quantity. This taken  
as a potion is curative of cough. It is  
curative also of fever, gulma, anorexia,  
disorders of spleen, of head and heart,  
pleurodynia, jaundice. piles, stony-hard  
tumour due to vata provocation, pectoral  
lesions, wasting and consumption. This  
ghee called the compound three spices  
ghee is reputed to be unsurpassed.  
Thus has been described the Compound  
Three Spices Ghee.

राम्नाष्टकम्—

द्रोणेऽपि साधयेद्रास्त्रां दशमूर्तीं शतावरीम् ।

पलिकां माणिकांशांस्तु कुलत्थान्बदरान्यवान् ॥४३॥

तुलार्थं चाजमांसस्य पादशेषेण तेन च ।

घृताढकं सगक्षीरं जीवनीयैः पलोन्मितैः ॥४४॥

सिद्धं तद्दशभिः कलैर्नस्यपानानुवासनैः ।

समीक्ष्य वातरोगेषु यथावस्थं प्रयोजयेत् ॥४५॥

अपाम् पाण्डु जल, द्रोणे १०२४ तोलाभां एक द्रोणमे, राक्षाम् रास्ना रास्ना, दशमूलीम् दशमूण दशमूल, शतावरीम् तथा शतावरी तथा शतावर, पलिकाश्च दरेक ४ तोला प्रत्येक एक पल, कुलत्थान् ३७५ कुलथी, बदरान् ७१२ वें, यवान् च अने ७५ और जौ, माणिकांशान् दरेक ३२ तोला प्रत्येक ३२ तोले, अजमांसस्य च अने ७८२५ भांस और बकरेका मांस, तुलार्घ्य २०० तोला २०० तोले; साधयेत् पक्कावतुं सिद्ध करे, पादशेषेण यत्पुर्थांश आधी रहेता चौथाई शेष रखे हुए, तेन च तेनाथी इससे, पलोन्मिश्रितैः दरेक ४ तोला प्रमाणानां प्रत्येक ४ तोले प्रमाणके

४३. माणिकोशांस्तु—माणिकांशांस्त्रीन् (घ.)

४३. पानानुवाहनैः—शमात्तु तेषैः (घ.)

३९ ११ - पानानुलेपवैः (॥.१)

द्वन्नामिः दश दस, जीवनीयैः ७०००० जीवनीय  
प्रयोगैः, कल्कैः ३६३०० कल्कोसे, समशीरम् समान  
भाग द्वितीय समभाग दधसे, सिद्धम् पञ्चावैद्य सिद्ध,  
घृतावकम् घृत २५६ तोला वी २५६ तोले, समीक्ष्य  
विचार करीने अच्छी प्रकार विचारकर, वातरोगेषु वात-  
रोगोभां वातरोगोंमें, नस्य-पान- नस्य पान नस्य, पान,  
अनुवासनैः अने अनुवासन द्वारा और अनुवासन द्वारा,  
यथावस्थम् अवस्था प्रमाणे अवस्थानुसार, प्रयोजयेत्  
प्रयोज्येत् प्रयोग करना चाहिए ॥ ४३-४५ ॥

43-45. Take four tolas of each of  
indian groundsel, each of the deca-  
radices, climbing asparagus and 32  
tolas each of horse-gram, jujube,  
common barley and 200 tolas of the  
flesh of goat, and boil the whole to-  
gether in 1024 tolas of water. When the  
decoction is reduced to 1/4 its quantity,  
filter it and prepare medicated ghee  
taking 256 tolas of ghee, 256 tolas of  
milk and 4 tolas of the paste of each  
of the drugs of the life-promoter group.  
The ghee thus prepared may be admi-  
nistered after careful investigation.  
in vata-disorders as errhine, potion  
or unctuous enema according to  
requirement.

पञ्चकासान् शिरःकम्पं शूलं वङ्कणयोनिजम् ।  
सर्वाङ्गैकाङ्गरोगांश्च सङ्गीहोर्ध्वानिलाजयेत् ॥४६॥  
इति रास्नाघृतम् ।

पञ्च-कासान् ते वी पांच प्रकारनी उधरस वह  
वी पांचों कास, शिरःकम्पम् शिरःकंप शिरःकम्प,  
वङ्कणयोनिजम् वंक्षल अने योनिनु वंक्षण और योनिना,  
शूलम् शूल शूल, सर्वाङ्ग-एकाङ्गरोगान् सर्वांग तथा  
ओड अंगना रोगोने सर्वाङ्ग तथा एकांग रोगको, सङ्गीह-  
उर्ध्वानिलान् च तथा धीहासहित उर्ध्ववातना  
रोगोने धीहा और उर्ध्ववातको, जवेत् शते छे जीतता

है ॥ ४६ ॥ इति आ यह, रास्नाघृतम् रास्नाघृत छे  
रास्नाघृत है ।

46. This ghee cures all the five  
types of cough-disorders, tremors of  
the head, colicky pain in groin and  
pelvis, vata-disorder affecting all the  
limbs or a single limb, splenic  
disorders and disorders of the expira-  
tory function of vata. Thus has been  
described the Compound Indian Grou-  
ndsel Ghee.

विडङ्गादिवर्णम्—

विडङ्गं नागरं रास्ना पिप्पली हिङ्गु सैन्धवम् ।  
भार्गी क्षारश्च तच्चूर्णं पिबेद्वा घृतमात्रया ॥४७॥  
सकफेऽनिलजे कासे श्वासहिक्काहताग्निषु ।

विडङ्गम् वावडिंग वायविकंग, नागरम् सूँठ सोंठ,  
रास्ना रास्ना रास्ना, पिप्पली पीपरी पिप्पली, हिङ्गु  
हिंग हींग, सैन्धवम् सिंधावल्लु सैंधानमक, भार्गी  
भारंगी भारंगी, क्षारः च अने नवभार और यक्क्षार,  
तच्चूर्णम् वा ओओनु चूर्ण इनका चूर्ण, सकफे उधरस  
कफयुक्त, अनिलजे वातव्य वातिक, कासे उधरसभां  
कासमें, श्वास-हिक्का- श्वास, डेडडी श्वास, हिक्की, हता-  
ग्निषु च अने भंदाग्निभां और भंदाग्निमें, घृतमात्रया  
घृतनी मात्राधी घृतको मात्रासे, पिबेत् पीवुं पीना  
चाहिए ४७-४७३ ॥

47-47½. In cough due to vata and  
kapha provocation, in dyspnea, hiccup  
and impaired digestion, the patient  
may take the powdered mixture of  
embelia, dry ginger, indian groundsel,  
long pepper, asafetida, rock salt, beetle  
killer and alkali mixed with ghee  
in proper dose.

द्विहारादिवर्णम्—

द्वौ क्षारौ पञ्चकोलानि पञ्चैव लवणानि च ॥४८॥

शटीनागरकोदीच्यकलकं वा वस्त्रगालितम् ।  
पाययेत् धृतोन्मिश्रं वातकासनिवर्हणम् ॥४९॥

द्वौ क्षारौ ७५५५२, सा७५५२ यवक्षार और सर्जिक्षार, पञ्चकोलानि पंचकोल पंचकोल, पञ्च एव च अने पांच और पांचों, लवणानि लवण लवण, शटी- अथवा कपूर- कायदी या शटी, नागरक- सेंड सोंठ, उदीच्य- अने वातौ। ओओ।नो। और सुगन्धवाला इनके, कलकम् वा कलकने कलकको, वस्त्रगालितम् वस्त्रथी गाली वस्त्रसे छानकर, धृतोन्मिश्रम् धृतथी मिश्र करीने धी मिलाकर, पाय- बेत् पावे। पिलावे, वात-कास- आ वातनी उधरसने यह वातजनित कासका, निवर्हणम् दूर करनार छे नाशक है ॥ ४८-४९ ॥

48-49. The two alkalies, the five spices and the five salts, or else long zedoary, dry ginger and cuscus made into paste and filtered through cloth and mixed with ghee, may be given as a potion. It is curative of cough-disorder arising from vata provocation.

दुरालभादिलेहः—

दुरालभां शटीं द्राक्षां शृङ्गवेरं सितोपलाम् ।  
लिङ्गात् कर्कटशृङ्गीं च कासे तैलेन वातजे ॥५०॥

दुरालभाम् धमासे। धमासा, शटीम् कपूर कायदी शटी, द्राक्षाम् द्राक्ष मुनक्का, शृङ्गवेरम् आदु अदरक, सितोपलाम् साडर चीनी, कर्कटशृङ्गीम् च अने कडक- शींजी और काकडासिंगीको, वातजे वातजन्य वातिक, कासे उधरसभा कासमें, तैलेन तैलथी तैलसे, लिङ्गात् आटवां चाटे ॥ ५० ॥

50. The patient with cough due to vata provocation may lick the powder of cretan prickly clover, long zedoary, grapes, dry ginger, sugar-candy and galls mixed with oil.

दुःस्पर्शं पिप्पलीं सुस्तं भार्गीं कर्कटकीं शटीम् ।  
पुराणगुडतैलाभ्यां चूर्णितं कासश्च लेहयेत् ॥५१॥

दुःस्पर्शाम् धमासे। धमासा, पिप्पलीम् पीपरी पिप्पली, सुस्तम् मोथ मोथा, भार्गीम् भार्गी भार्गी, कर्कटकीम् कडकशींजी काकडासिंगी, शटीम् कपूर- कायदी शटी, चूर्णितम् ओओ।तुं चूर्ण करीने इनका चूर्ण करके, पुराण-गुड- भूना गोलथी पुराने गुड, तैलाभ्याम् अने तैलथी और तैलसे, लेहयेत् आटवां चाटे ॥ ५१ ॥

51. Or else, he may make a linctus of the powder of cretan prickly clover, long pepper, nut-grass, beetle killer, galls, long zedoary and old gur mixed with oil.

विडङ्गादिलेहः—

विडङ्गं सैन्धवं कुष्ठं व्योषं हिङ्गु मनःशिलाम् ।  
मधुसर्पिर्युतं कासहिक्काश्वासं जयेद्विहन् ॥५२॥

विडङ्गम् वावडिंग वायविङ्ग, सैन्धवम् सिंधवाल्ल सैधानमक, कुष्ठम् कठ कूठ, व्योषम् त्रिकटु त्रिकटु, हिङ्गु हिङ्ग हींग, मनःशिलाम् अने मनःशिलाने और मैनसिल, मधुसर्पिर्युतम् मध तथा धी सहित मधु और धीसे मिलाकर, लिहन् आटनार चाटनेवाला, कास- हिक्का- उधरस, लेडकी खांसी, हिचकी, श्वासम् तथा श्वासने और श्वासको, जवेत् छते छे नष्ट करता है ॥ ५२ ॥

52. A linctus of embelia, rock salt, costus, the three spices, asafoetida and red arsenic, mixed with ghee and honey, cures cough, hiccup and dyspnea.

चित्रकादिलेहः—

चित्रकं पिप्पलीमूलं व्योषं हिङ्गु दुरालभाम् ।  
शटीं पुष्करमूलं च श्रेयसीं सुरसां वषाम् ॥५३॥

५२. मधुसर्पिर्युतं कासहिक्काश्वासं जयेद्विहन्-विक्काश्वासे च कासे

च लिङ्गात्क्षौद्रतडुताम् (व. न.)

," " " -विक्काश्वासे च कासे च लिङ्गात्क्षौद्र-

तडुताम् (व. न.)

भार्गी लिङ्गरुहां रास्नां शृङ्गीं द्राक्षां च कार्षिकान् ।  
कल्कानर्धतुलाकाथे निदिग्ध्याः पलविंशतिम् ॥५४॥  
दत्त्वा मत्स्यण्डिकायाश्च घृताश्च कुडवं पचेत् ।  
सिद्धं शीतं पृथक् क्षौद्रपिप्पलीकुडवान्वितम् ॥५५॥  
चतुष्पलं तुगाक्षीर्याश्चूर्णितं तत्र दापयेत् ।  
लेहयेत् कासहृद्रोगश्वासगुन्मनिवारणम् ॥५६॥  
इति चित्रकादिलेहः ।

चित्रकम् चित्रकं पिप्पलीमूलम् पीपरी-  
भूषणा गण्डोऽपि पिप्पलीमूल, व्योषश्च त्रिफलं विकटु,  
हिङ्गु- हिङ्गु हींग, दुरालभाम् धमासे घमासा, चाटीश्च  
उपूरकायली शटी, पुष्करमूलम् च पोभरभूण  
पोहकरमूल, श्रेवसीम् गजपीपर गजपिप्पली, सुर-  
साम् पुत्रसी तुलसी वचाश्च गज वच, भार्गीं भार्गी  
भार्गी, लिङ्गरुहां गण्डो गिलोय, रास्नाम् रास्ना  
रास्ना, शृङ्गीम् उड्डोश्रीं काकडासिङ्गी, द्राक्षाम् च  
अने शक्ष और सुतका, कार्षिकान् हरेक ओड ओड  
तोला प्रत्येक एक एक तोला, कल्कान् ४६४ कुरीने  
इनका कल्क करके, निदिग्ध्याः भेरी बेरी गण्डोना  
कटेरीके, कर्धतुलाकाथे २०० तोला कथाथमा २००  
तोले काथमें, मत्स्यण्डिकायाः च भांड खांड, पल-  
विंशतिम् ८० तोला ८० तोले, दत्त्वा नाभूने मिलाकर,  
घृतात् च घी घी, कुडवं १६ तोला १६ तोले  
पचेत् पडावतुं पकावे, सिद्धम् तैयार थयेद सिद्ध,  
शीतम् अने ठंडुं थया पछी तेभा तया ठंडा  
होनेके बाद उसमें, पृथक् लुई पृथक् पृथक्,  
क्षौद्र-पिप्पली- भध, पीपर मधु और पिप्पली,  
कुडवान्वितम् हरेकना १६ तोला प्रत्येकका एक  
कुडव मिलावे, तुगाक्षीर्याः वांसकपूरतुं वंशलोचनका,  
चूर्णितम् शूलं चूर्ण, चतुष्पलम् १६ तोला १६ तोले,  
तत्र तेभा उसमें, दापयेत् नाभूतुं मिलावे, कास-हृद्रोग-

५४. शृङ्गीं द्राक्षां-कर्कटाङ्गां (ग. थ.)

५५. कल्कानर्धतुलाकाथे निदिग्ध्याः-कल्कान् निदिग्ध्यधतुलं  
निकाशय क. म. फ.)

५६. कल्कानर्धतुलाकाथे निदिग्ध्याः पलविंशतिम्-कल्कान् निदि-  
ग्ध्यधतुलं निदिग्ध्या पलविंशतिम् (व.)

५५. घृतात्-तैयारः (क.)

उधरस, उधरस, कास, हृद्रोग, श्वास-गुन्म- श्वास अने  
गुन्मने श्वास और गुन्म, निवारणम् मत्स्यण्डो ते निवारक  
उसको, लेहयेत् चतुः चार ॥५३-५६॥ इति आ-  
यह, चित्रकादि- चित्रकादि चित्रकादि, लेहः लेह  
छे लेह है।

53-56. Take one tola of each of  
leadwort, roots of long pepper, the  
three spices, asafetida, cretan prickly  
clover, long zedoary, orris root elephant  
pepper, holy basil, sweet flag, beetle  
killer guduch, indian groundsel, galls  
and grapes, and reduce the whole to  
paste. In 200 tolas of the decoction of  
indian nightshade, add 80 tolas of  
treacle and cook 16 tolas of ghee  
adding the paste mentioned above.  
When it is cold, add to it 16 tolas  
of each of honey, long pepper and  
bamboo manna. This linctus is curative  
of cough, cardiac disorders, dyspnea  
and gulma Thus has been described  
the Compound White-flowered Lead-  
wort Linctus.

अमस्यहरीतकीलेहः—

दशमूर्लीं स्वयङ्गतां शङ्खपुष्पीं शटीं बलाम् ।  
हस्तिपिप्पल्यपामार्गपिप्पलीमूलचित्रकान् ॥५७॥  
भार्गी पुष्करमूलं च द्विपलांशं यवादकम् ।  
हरीतकीशतं चैकं जले पञ्चादके पचेत् ॥५८॥  
यवैः श्वित्रैः कषायं तं पूतं तश्चाभयाशतम् ।  
पचेद्दुडतुलां दत्त्वा कुडवं च पृथग्घृतात् ॥५९॥  
तैलात् सपिप्पलीचूर्णात् सिद्धशीते च माक्षिकात् ।  
लिह्याद्द्वे चाभये नित्यमतः खादेद्रसायनात् ॥६०॥

५८. चैकं-मदस (व.)

५९. यवैः श्वित्रैः-यवैः श्वित्रैः (क. क.)



दशमूलीम् दशभूषा दशमूल, स्वयङ्गुसाम् डौवय  
कौच, शङ्खपुष्पीम् शंभावली शंखाहुकी, शटीम् ५५२-  
५५३ शटी, बलाम् अला बला, हस्तिपिप्पली- गज-  
पीपर गजपिप्पली, अपामार्ग- अवेडे। चिरचिटा,  
पिप्पलीमूल- पीपरीभूषणा गंडोडा पिप्पलीमूल, चित्रकान्  
चित्रक चित्रक, भार्गीम् भार्गी, पुष्करमूलम् च  
अने पुष्करभूषा और पोहकरमूल, द्विपलांशम् ६२३ ८  
तोला प्रत्येक ८ तोले, यवाढकम् ७५ २५६ तोला जौ  
२५६ तोले, एकम् हरीतकी-शतम् अने ओडसे। ६२३  
और हरद्व एक सौ, पञ्चाढके १२८० तोला १२८० तोले,  
जले पाण्डीमा जलमें, पचेत् सिद्ध करवां पकावे,  
यवैः ७५ जौ, स्विन्नैः अक्षरि ७५ तयारे  
पक जानेपर, पूतम् गाणीने छानकर, तम्  
कषायम् ते कनाथने उस कषायको, तत् च अने  
ते और उन, अमयाशतम् सो ६२३ने सौ हरद्वको,  
गुडतुलाम् गेण ४०० तोला ४०० तोला गुड,  
घृतात् धी वी, सपिप्पली- पीपरनु और पिप्पलीका,  
चूर्णात् यूर्ण चूर्ण, तैलात् च तथा तेल और तैल,  
पृथक् पृथक् पृथक् पृथक्, कुडवम् १६ तोला  
१६ तोले, इत्वा पचेत् नाभीने पडावतुं मिलाकर पकावे,  
सिद्धशीते तयार भर्षने ६६ यतां सिद्ध होकर शीत  
होने पर, मास्त्रिकात् च तेमां भध १६ तोला नाभतुं  
उसमें मधु एक कुडव मिलावे, अतः रसायनात् च अने  
आ रसायन इस रसायनको, लिङ्गात् याटतुं चाटे,  
द्वे अने तेमांशी मे और उसमेंसे दो, अमये नित्यम्  
६२३ ६२३शां हरद्व नित्य खावेत् भावी खावे ॥५७-६०॥

57-60 Decoct 8 tolas of each of  
decaradices, cowage, small leaved  
convolvulus, long zedoary, sida, ele-  
phant pepper, rough chaff, roots of  
long pepper, white-flowered leadwort,  
beetle killer and orris root, 256 tolas  
of common barley, and 100 chebulic  
myrobalans in 1280 tolas of  
water. When the barley is cooked,  
the decoction should be filtered.  
Take the filtered decoction and add-

ing 400 tolas of gur and 16 tolas  
of each of ghee and oil, cook the  
one hundred chebulic myrobalans  
mentioned above. When it is cooled,  
add to it long pepper and honey.  
The cough-patient may take this  
vitalising linctus and may eat two  
chebulic myrobalans daily.

तद्वलीपलितं हन्ति वर्णायुर्बलवर्धनम् ।

पञ्चकासान् क्षयं श्वासं हिक्कां च विषमज्वरम् ॥६१॥

हन्यात्तथाऽशोप्रहणीहृद्दोगारुचिपीनसान् ।

अगस्त्यविहितं श्रेष्ठं रसायनमिदं शुभम् ॥६२॥

हरयगस्त्यहरीतकी ।

तत् ते रसायन वह रसायन, वलीपलितम् वणिग्यां  
तेमम् वणिग्याने वली एवं पलितका, हन्ति नाश करे छे  
नाश करता है, वर्ण-आयुः-वर्ण, आयुष्य वर्ण, आयु, बल-  
वर्धनम् अने अक्षने वधारनार छे और बलके वर्धक है,  
पञ्चकासान् पांथ प्रकारनी उधरस पांचों कास क्षयम्  
श्वासम् क्षय, श्वास क्षय, श्वास, हिक्काम् हेडडी  
हिचकी, विषमज्वरम् च विषमज्वर विषमज्वर, तथा  
अशो-प्रहणी- ६२३, अशो अशो, प्रहणी, हृद्दोग-  
अरुचि- हृद्दोग, अरुचि हृद्दोग, अरुचि, पीनसान्  
अने पीनसने और पीनस इनको, हन्यात् नाश करे  
छे नष्ट करता है, इदम् आ वह, अगस्त्य- अगस्त्य  
अगस्त्यसे, विहितम् कहेतुं कथित, शुभम् रसायनम्  
शुभ रसायन शुभ रसायन, श्रेष्ठम् श्रेष्ठ छे श्रेष्ठ है ॥६१-६२॥  
इति आ यह, अगस्त्यहरीतकी अगस्त्यहरीतकी छे  
अगस्त्यहरीतकी है ।

61-62. This elixir cures wrinkles  
and grey hair and improves com-  
plexion, life-span and strength. It is  
also curative of the five types of  
cough-disorder, consumption, dyspnea,  
hiccup, irregular fevers, piles.

६१. हन्ति-हन्यात् (ग.)

६२. श्रेष्ठं रसायनमिदं शुभम्-धन्यमिदं श्रेष्ठं रसायनम् (ध.)

assimilation-disorders, heart-diseases, anorexia and coryza. This is an excellent elixir prescribed by the sage Agastya. Thus has been described the Agastya Chebulic Myrobalan.

कतिपययोगाः—

सैन्धवं पिप्पलीं भार्गीं शृङ्गवेरं दुरालभाम् ।  
दाडिमाम्लेन कोष्णेन भार्गीनागरमम्बुना ॥६३॥  
पिबेत् खदिरसारं वा मदिरादधिमस्तुभिः ।  
अथवा पिप्पलीकल्कं घृतभृष्टं ससैन्धवम् ॥६४॥

ससैन्धवम् सिंधावुष्ण सैन्धव, पिप्पलीम् पीपर पिप्पली, भार्गीम् भार्गी भासंगी, शृङ्गवेरम् आदु अदरक, दुरालभाम् अने धमासे और घमासा, दाडिमाम्लेन दाडिमा भाटा रसथी अनारकौ खटाईसे, भार्गी- अथवा भार्गी अथवा भारङ्गी, नागरम् अने सूँठ और सोंठ, कोष्णेन नवशेका सुखोष्ण, अम्बुना पाण्ठीथी जलसे, खदिरसारम् वा अथवा खेरसार अथवा खेरसार, मदिरा-दधि- मदिरा तथा दहीना मदिरा और दहीके, मस्तुभिः मस्तुथी मस्तुसे, पिबेत् पीवा पीवे, अथवा अथवा वा, घृतभृष्टम् घीमा भूजेव घीमें भूने हुए, ससैन्धवम् सिंधावुष्णसहित सैन्धानमकके साथ, पिप्पली- पीपरने पिप्पलीके, कल्कम् कटक मदिरा तथा दहीना मस्तुथी याटवै कल्कको मदिरा और दहीके मस्तुसे चाटे ॥ ६३-६४ ॥

63-64. The patient may drink the powder of rock-salt, long pepper, beetle killer, dry ginger and cretan prickly clover with the juice of acid pomegranate; or he may drink the powder of beetle killer and dry ginger with warm water or he may drink catechu powder with madira wine and whey, or he may take the paste of long

pepper, seasoned in ghee mixed with madira wine, whey and rock-salt.

धूमपानम्—

शिरसः पीडने स्नावे नासाया हृदि ताम्यति ।  
कासप्रतिश्यायवतां धूमं वैद्यः प्रयोजयेत् ॥६५॥

शिरसः पीडने भस्तक-पीडना शिरदर्दने, नासायाः नाडना नाक, स्नावे स्नावना बहने पर, हृदि अने हृदयने और हृदयकी, ताम्यति ताम्ना यतां ग्लानि होने पर, वैद्यः वैद्य वैद्य, कासप्रतिश्यायवताम् उधरस तथा शरीरना रोगीओ भाटे खांसी और प्रतिश्यायके रोगियोंके लिए, धूमम् धूमने धूमका, प्रयोजयेत् प्रयोग करे ॥ ६५ ॥

65. When there is a sense of pressure in the head, excessive nasal secretion, shortness of breath, cough and coryza, the physician may prescribe inhalation therapy.

दशाङ्गुलोन्मितां नाडीमथवाऽष्टाङ्गुलोन्मिताम् ।  
शरावसंपुटच्छिद्रे कृत्वा जिह्वां विचक्षणः ॥६६॥  
वैरेचनं मुखेनैव कासवान् धूममापिबेत् ।  
तमुरः केवलं प्राप्तं मुखेनैवोन्नमेत् पुनः ॥६७॥  
स ह्यस्य तैक्ष्ण्याद्विच्छिद्य श्लेष्माणमुरसि स्थितम् ।  
निष्कृष्य शमयेत् कासं वातश्लेष्मसमुद्भवम् ॥६८॥

विचक्षणः विचक्षण वैद्य विचक्षण वैद्य, दशाङ्गुल- दश अंगुल दस अङ्गुल, उन्मिताम् दांणी लम्बी, अथवा अथवा या, अष्टाङ्गुल- आठ अंगुल आठ अङ्गुल, उन्मिताम् दांणी लम्बी, नाडीम् नाडी नाडी, शराव- संपुटच्छिद्रे- शरावसंपुटना छिद्रमा शरावसंपुटके छिद्रमें, जिह्वां कृत्वा दांणी डरी दांणी टेढ़ी करके लगादे, कासवान् उधरसना रोगीओ कासका रोगी, मुखेन एव मुखथी ७ मुखसे ही, वैरेचनम् वैरेचनने वैरेचनिक, धूमम् धूम धूमको, आपिबेत् पीवे पीवे केवलम् पूर्ण रूपसे, उरः प्रासम्

६६. संपुटच्छिद्रे-संपुटच्छिद्र (ख व.)

॥ जिह्वां-जिह्वा (थ.)

६७. वैरेचनं मुखेनैव-मुखेन वैरेचनिक (फ.)



छातीमां प्राप्त भवेत् छातीमें आने पर, तम् तेने उसको, पुनः शरीरे पुनः, सुखेन एव मुपशोभ्य मुखसे ही, उद्धमेत् अक्षर डाढेने बाहिर निकाले, सः हि ते वह, तैक्ष्ण्यात् तीक्ष्णपशुने क्षीने तीक्ष्णताये, अथ आ शरीरीति इस रोगीकी जरसि छातीमां छातीमें, स्थितम् रहैवा स्थित, श्लेष्माणश्च उद्धने कफको, निच्छिद्य ऊपीने काटकर, निष्कृष्य अने अक्षर डाढीने और बाहिर निकाल करके, वात-श्लेष्म-वात तथा क्षीणी वात तथा कफसे, समुद्भवम् भवेत् उत्पन्न, कासान् उद्धरसने खांसीको, क्षमयेत् मटाडे के शान्त करता है ॥ ६६-६८ ॥

66-68. The skilful physician should take two earthen concave dishes and place one over the other mouth to mouth with the edges well closed; and then should make a hole in the top vessel and attach at an angle a pipe eight or ten inches in length. The patient of cough may inhale this purificatory fumes by mouth only. When the fumes have reached the lungs fully, they should be exhaled by the mouth only. This inhalation, on account of its acute properties, breaks up the kapha lodged in the chest and expelling it, allays the cough born of vata and kapha.

मनःशिलादिधूमः—

मनःशिलालमधुकमांसीमुस्तेद्भुदैः पिबेत् ।  
धूमं तस्यानु च क्षीरं सुखोष्णं सगुडं पिबेत् ॥६९॥  
एष कासान् पृथग्दोषसन्निपातसमुद्भवान् ।  
धूमो हन्यादसंसिद्धानन्यैर्योगशतैरपि ॥७०॥

मनःशिला. मनःशिला मेनसिल, आल-मधुक-हरताल, जेठीमध हरिताल, मुलहरी, मांसी-मुस्ता- जटा-मांसी, मोथ जटामांसी, मोथा, इजुदैः अने धीमेरियाना

इलीने। और हिंगोटके फलका, धूमम् धूम धूम, पिबेत् पीवे पीवे, तस्यनु च अने तेनी पछी और इसके पश्चात्, सगुडम् गोजेवाणुं गुडके साथ, सुखोष्णम् नवशेकुं सुहाता हुआ गरम, क्षीरम् दूध दूध, पिबेत् पीवे पीवे एषः आ धूम यह धूम, पृथक्-दोष-पृथक् पृथक् दोषधी पृथक् पृथक् दोषजनित, सन्निपात-तथा सन्निपातधी तथा सन्निपातसे, समुद्भवान् उत्पन्न भवेत् उत्पन्न अन्यैः अने पीअ और इमरे, योगशतैः सेंकडे उपशोधी सैकड़ों योगोंसे, अपि पशु भी असंसिद्धान् न भटेदी नहीं हटती हुई, कासान् उद्धरसने खांसीको, हन्यात् नाश करे छे नष्ट करता है ॥ ६९-७० ॥

69-70. Make a blend of red and yellow arsenics, liquorice, nut-grass and zachum oil tree, and inhale the smoke, the smoke being followed by a potion of warm milk mixed with gur. This smoke cures coughs which are born of any one or all of the morbid humors and which have not been amenable to hundreds of other medicaments.

प्रपौण्डरीकाद्यधूमवर्तिः—

प्रपौण्डरीकं मधुकं शार्ङ्गैश्च समनःशिलाम् ।  
मरिचं पिप्पलीं द्राक्षांमेलां सुरसमञ्जरीम् ॥७१॥  
कृत्वा वर्तिं पिबेद्धूमं क्षौमचेलानुवर्तिताम् ।  
घृताक्कामनु च क्षीरं गुडोदकमथापि वा ॥७२॥

प्रपौण्डरीकम् प्रपौंडरीक पुंडरीककाष्ठ, मधुकम् जेठीमध मुलहरी, समनःशिलाश्च मनःशिलसहित मेनसिल, शार्ङ्गैश्च पीपुडी मकोय, मरिचम् डाणां भरी मिरच, पिप्पलीम् पीपर पिप्पली, द्राक्षाश्च द्राक्ष मुनक्का, एलाश्च ऐलथी इलायची, सुरस- तुलसीनां तुलसीकी, मञ्जरीश्च मांजर ऐओनी मंजरी इनको, क्षौम-चेल-क्षौमवस्त्र पर क्षौमवस्त्र पर, अनुवर्तिताम् क्षेप करी लिप्तकर, घृताक्काम् सूडपा पछी धी थोपडी शुष्क होने पर धी चुपड़ करके, वर्तिम् पीपी वर्ति, कृत्वा करीने बनाकर, धूमम् धूम धूम, पिबेत् पीवे पीवे, अथ च



अने साठी येाभानुं और सांठी चावलको, ग्राम्य-  
ग्राम्य ग्राम्य, आनूप- आनूप आनूप, औदकैः तथा  
जलचर प्राणीभिरा और जलीय प्राणियोंके, रसैः  
भासना रसधी मांसरसोंसे, माष-आत्मगुहानाम् के  
अऽऽ अने कौथाना या उद्ध और कौचके, यूषैः वा  
यूषाधी यूषोंसे, भोजयेत् वातज कासवाणा रोगीने  
भोजन करावतुं वातजकासी रोगीको भोजन करावे ॥ ७६ ॥

76. Sali rice, common barley, wheat  
and shashtika rice should be eaten-with  
the meat-juice of domestic, wet-land  
and aquatic animals or with the thin  
gruel of black gram and cowage.

यवानीपिप्पलीबिल्वप्रध्यनागरचित्रकैः ।

रास्नाजाजीपृथक्पर्णीपलाशशटिपौष्करैः ॥७७॥

क्षिग्धाम्ललवणां सिद्धां पेयामनिलजे पिवेत् ।

कटीहृत्पार्श्वकोष्ठार्तिश्वासहिक्काप्रणाशिनीम् ॥७८॥

अनिलजे वातजन्य उधरसभा वातज कासमें,  
यवानी- अजवायन, पिप्पली- पीपर पिप्पली,  
बिल्वमध्य- पीलीने। गर बेलगिरी, नागर-चित्रकैः सुंठ,  
चित्रक सोंठ, चित्रक, रास्ना- रास्ना रास्ना, अजाजी-  
जिरा, पृथक्पर्णी- पीठवन, पीठवन, पलाश-  
भाभरी डाक, शटि- कपूर कायली शटी, पौष्करैः अने  
पोभरभूणधी और पोहकरमूल इनसे, सिद्धाम् सिद्ध  
करेख सिद्ध, स्निग्ध-अम्ल-लवणाम् रनेह, अम्लद्रव्य  
तथा सिंधालूखवाणी स्निग्ध, अम्ल और नमकीन.  
कटी-हृत्- कभर, हृद्य कटी, हृद्य, पार्श्व- पार्श्व पार्श्व,  
कोष्ठार्ति- अने कौथानी पीडा और कोष्ठकी पीडा, श्वास-  
श्वास श्वास, हिक्का- तथा हड्डिनी और हिचकीको,  
प्रणाशिनीम् नाश करनारी नाश करनेवाली, पेयाम् पेया  
पेयाको, पिवेत् पीवी पीवे ॥ ७७-७८ ॥

77-78. The patient with cough  
due to vata provocation may drink the  
thin gruel prepared of bishop's weed,  
long pepper, bael-pulp, dry ginger

७७. बिल्वमध्यनागरचित्रकैः-बिल्वशटिचित्रकपुष्करैः (ब. फ.)

७८. शटिपौष्करैः-विश्वमेधैः (ब. फ.)

and white-flowered leadwort, indian  
groundsel, cumin, painted leaved tick-  
trefoil, palas, long zedoary and orris  
root mixed with unctuous and acid  
articles. This thin gruel cures pain in  
the waist, heart, sides and abdomen,  
as well as dyspnea and hiccup.

दशमूलरसे तद्वत्प्रकोलगुडान्विताम् ।

सिद्धां समतिलां दद्यात्क्षीरे वाऽपि ससैन्धवाम् ७९

मात्स्यकौकुटवाराहैरामिषैर्वा घृतान्विताम् ।

सिद्धां ससैन्धवां पेयां वातकासी पिबेन्नरः ॥८०॥

तद्वत् ते ७९ प्रमाणे इसी प्रकार, दशमूलरसे  
दशभूणना क्वाथभां दशमूलके काथमें, सिद्धाम् पेयाने  
सिद्ध करी पेयाको सिद्धकर, पञ्चकोक- तेभा पंचकोकानु  
यूष्य उसमें पञ्चकोकका चूने, गुड-अन्विताम् तथा गोण  
नाभी तथा गुड डालकर, दद्यात् वातनी उधरसवाणाने  
पावी वातकासीको पिलावे, समतिलाम् अथवा तद्व  
तथा येाभाने समान लवणभां भेणवी अथवा तिल  
तथा चावलको सम परिमाणमें मिलाकर, क्षीरे वा अपि  
दूधभां सिद्ध करी दूधमें सिद्धकर, ससैन्धवाम् सिंधा-  
लूखसहित पेया वातनी उधरसवाणाने पावी  
सैधानमक युक्त पेया वातकासीको पिलावे, मात्स्य- अथवा  
मात्स्यना अथवा मात्स्य, कौकुट- कूकडना सुगें, वाराहैः  
अने सूवरना और सुअरके, आमिषैः वा भासथा  
मांससे, सिद्धाम् सिद्ध करेखी सिद्ध, घृतान्विताम् घृत-  
युक्त घृतयुक्त, ससैन्धवाम् अने सिंधालूखसहित  
और सैधानमक मिलायी हुई, पेयाय पेया पेया, वात-  
कासी वातनी उधरसवाणा वातकासी, नरः रोगी  
रोगी, पिवेत् पीवी पीवे ॥ ७९-८० ॥

79-80. Similarly may be prepared a  
thin gruel of the decoction of deca-  
radices mixed with the five spices and  
gur, or a thin gruel in milk with

७९. सिद्धां समतिलां दद्यात्-सिद्धां स्निग्धां सलवणां (फ.)

८०. सिद्धां ससैन्धवां पेयां वातकासी पिबेन्नरः-ससैन्धवां पाय-  
येत यवागुं वातकासिनम् (द. ब. फ. न.)

equal quantity of til and rice; adding a little of rock-salt. The patient suffering from cough due to vata-provocation, may drink a thin gruel prepared from the flesh of fish, cock or boar, mixed with ghee and rock-salt.

वास्तुको वायसीशाकं मूलकं सुनिषण्णकम् ।

स्नेहास्तैलादयो भक्ष्याः क्षीरेशुरसगौडिकाः ॥८१॥

दध्यारनालाम्लफलप्रसन्नापानमेव च ।

शस्यते वातकासे तु स्वाद्वम्ललवणानि च ॥८२॥

इति वातकासचिकित्सा ।

वातकासे तु वातनी उधरसभा वातज खांसीमें, वास्तुकः अथवा बथुआ, वायसीशाकम् वायसीशाक मकोय, मूलकम् भूगै मूली, सुनिषण्णकम् जलकपा-सिया चौपत्तिया, तैलादयः तैल वजरे तैल आदि, स्नेहाः रनेह स्नेह, क्षीर- दूध दूध, इक्षुरस- शैलडीने। रस इखका रस, गौडिकाः अने गोणभाथी अनावेवा और गुडके, भक्ष्याः भक्ष्य पदार्थी भक्ष्य, दधि-भारनाल-हरी, डाँठ दही, कांजी, अम्लफल- आटा इण खट्टे फल, प्रसन्ना- अने सुराभंडुं और प्रसन्ना इनका, पानम् एव च पान पान, स्वादु-अम्ल- तेमज भीड़ा, आटा एवं मधुर, अम्ल, लवणानि च अने आरा पदार्थी और नमकीन पदार्थी, शस्यते श्रेष्ठ छे प्रशस्त हैं ॥ ८१-८२ ॥ इति आ यह, वातकासचिकित्सा वात-कासनी चिकित्सा छे वातकासकी चिकित्सा है ।

81-82. White goose foot, hound's berry, radish, marsillia, unctuous substances like oil etc., milk, sugarcane juice and preparations of gur, curds, sour conjee, acid fruits and potions of prasanna wine, as also sweet, acid and saltish substances are beneficial in cough due to vata-provocation. Thus has been described the line of treatment in cough due to vata provocation.

पैत्तिककासे चिकित्साक्रमः—

पैत्तिके सकफे कासे वमनं सर्पिषा हितम् ।

तथा मदनकाश्यमधुककथितैर्जलैः ॥८३॥

यष्ट्याह्वफलकलकैर्वा विदारीक्षुरसायुतैः ।

हृतदोषस्ततः शीतं मधुरं च क्रमं भजेत् ॥८४॥

सकफे उद्धुक्त कफयुक्त, पैत्तिके पित्तनी पैत्तिक, कासे उधरसभा खांसीमें, सर्पिषा धृतनी घीके साथ, तथा तथा तथा, मदन- भीड़ा मैनक, काश्यम- शीवल्लुना इण गमारीके फल, मधुक-कथितैः अने जेठीभक्ष्यी उड्डाणेवा और मुलहठी इनसे कथित, जलैः जलथी जलसे, विदारी- अथवा विदारीकंद या विदारी, इक्षुरस- तथा शेरडीना रसथी और इखके रससे, आयुतैः युक्त युक्त यष्ट्याह्व- जेठीभक्ष्य मुलहठी, फलकलकैः वा अने भीड़णा उड्डाथी और मैनफलके कलकसे, वमनम् वमन वमन, हितम् हितकारी छे हितकर है, हृतदोषः ततः दोष नीकली गया पछी दोष निकल जानेके बाद, शीतम् शीतनी शीत, मधुरम् च अने मधुर और मधुर, क्रमम् क्रमनं क्रमका, भजेत् सेवन करे ॥ ८३-८४ ॥

83-84. In the case of cough due to pitta associated with kapha, emesis with medicated ghee is beneficial; the patient may be given emesis with the decoction of common emetic nut, white teak and mahwa or with the paste of liquorice and emetic-nut mixed with the juice of white yam and sugar-cane. When the morbid matter is expelled, the patient should be put on a course of sweet and cold thin gruel.

पैत्ते तनुकफे कासे त्रिवृतां मधुरैर्युताम् ।

दद्याद्वनकफे तिकैर्विरेकायै युतां भिषक् ॥८५॥

८३. पैत्तिके सकफे कासे-पित्तकासे तु सकफे (ब. फ.)

८४. इक्षुरसायुतैः इक्षुरसायुतैः (ब.)

मिषक् वैद्ये वैद्य, तनुकफे पातणा उक्ष्वाणी पतले कफवाले, पैत्ते पित्तनी पैत्तिक, कासे उधरसभा कासमें, मधुरैः युताम् मधुर द्रव्यैः सहित मधुर द्रव्योंसे युक्त, घनकफे अने घाटा उक्ष्वाणी उधरसभा और घट्ट कफवाले कासमें, तैक्कैः तिक्त द्रव्यैः युताम् त्रिवृताम् सहित नसोत्तर युक्त निशोक्को, विरे- कार्थे विरेचन भाटे विरेचनके लिए, दद्यात् आप्नुं देवे ॥ ८५ ॥

85. In cough due to pitta-provocation and where the phlegm is thin, the physician should prescribe turpeth with sweet drugs; and if the phlegm is viscid and thick, it should be prescribed with bitter drugs for purpose of purgation.

स्निग्धशीतस्तनुकफे रुक्षशीतः कफे घने ।

कमः कार्यः परं भोज्यैः स्नेहैर्लेहैश्च शस्यते ॥ ८६ ॥

तनुकफे विरेचन पछी पातणा उक्ष्वाणाने विरेचनके पश्चात् पतले -कफवालेको, स्निग्धशीतः स्निग्ध तथा शीत स्निग्ध तथा शीत, घने कफे अने घाटा उक्ष्वाणाने और घट्ट कफवालेको, रुक्षशीतः रुक्ष तथा शीत रुक्ष तथा शीत, कमः कार्यः पेयादिना कम कराने के लिये, परम् ते पछी इसके बाद, भोज्यैः आहार भोज्य, स्नेहैः स्नेह स्नेह, लेहैः च तथा लेह्यैः उपचार तथा लेहसे उपचार, शस्यते प्रशस्त छे प्रशस्त है ॥ ८६ ॥

86. In condition of thin phlegm, unctuous and cold treatment is indicated and in condition of viscid and thick phlegm dry and cold treatment is indicated in the form of diet, unctuous articles and linctuses.

लेहयोगः—

शृङ्गाटकं पद्मबीजं नीलीसाराणि पिप्पली ।

पिप्पलीमुस्तयश्वाह्वद्राक्षामूर्वामहौषधम् ॥ ८७ ॥

लाजाऽमृतफला द्राक्षा त्वक्क्षीरी पिप्पली सिता ।  
पिप्पलीपञ्चकद्राक्षा बृहत्याश्च फलाद्रसः ॥ ८८ ॥

खर्जूरं पिप्पली वांशी श्वदंष्ट्रा चेति पञ्च ते ।

घृतक्षौद्रयुता लेहाः श्लोकावैः पित्तकासिनाम् ८९

शृङ्गाटकम् शींगोडा सिंघाटा, पद्मबीजम् कमल-  
उक्ष्वाणी कमलगट्टा, नीलीसाराणि नीलीसार नीलीघार,  
पिप्पली तथा पीपर तथा पिप्पली, पिप्पली- पीपर  
पिप्पली, मुस्त- मोथ मोथा, श्वदंष्ट्रा- जेठीमध मुलहठी,  
द्राक्षा- द्राक्ष मुनका, मूर्वा- मोरवेद मूर्वा, महौषधम्  
तथा सूड तथा लोठ, लाजा क्षाम लाजा, अमृतफला  
आमृता आंवला, द्राक्षा द्राक्ष मुनका, त्वक्क्षीरी  
वंशलोचन वंशलोचन, पिप्पली पीपर पिप्पली, सिता  
तथा साकर तथा चीनी, पिप्पली- पीपर पिप्पली,  
पञ्चक- पञ्चक पञ्चाक्ष, द्राक्षा द्राक्ष मुनका, बृहत्याः  
तथा जीभी बोरींगलीनां तथा बनभाटाके, फलाद्र  
फलनां फलका, रसः च रस रस, खर्जूरम् तथा जम्बूर  
और खजूर, पिप्पली पीपर पिप्पली, वांशी वंशलोचन  
वंशलोचन, श्वदंष्ट्रा च तथा जेठीमध और गोखरू, इति  
श्लोकावैः छे अर्धा अर्धा श्लोकाश्चि कहेवा ये आवे  
आवे श्लोकसे कहे हुए, पञ्च लेहाः पांच अवलेहो पांच लेह,  
घृत-क्षौद्र- घी तथा मधुनी घी तथा मधुके, युताः  
साथे साथ, पित्तकासिनाम् पित्तनी उधरसवाणा  
शरीराने भाटे हितकर छे पित्तज खांसीके रोगियोंके लिए  
हितकर हैं ॥ ८७-८९ ॥

87-89. (1) Water chestnut, lotus seeds, indigo pulp, and long pepper; (2) long pepper, nut-grass, liquorice, grapes, trilobed virgin's bower and ginger; (3) roasted paddy, emblic myrobalan, grapes, bamboo manna, long pepper and sugar; (4) long pepper, himalayan cherry, grapes and the juice of the fruits of yellow-berried night-shade; (5) dates, long pepper, bamboo manna and small caltrops;

८९. वांशी श्वदंष्ट्रा चेति पञ्च ते—द्राक्षा श्वदंष्ट्रा चेति पञ्च ते (५)

these five recipes each described in a hemistich if taken as linctus with ghee and honey prove beneficial in cough due to pitta provocation

શર્કરાદિલેહઃ—

શર્કરાચન્દનદ્રાક્ષામધુઘાત્રીફલોત્પલૈઃ ।

પૈત્તે, સમુસ્તમરિચઃ સકફે, સપૃતોડનિલે ॥૧૦॥

પૈત્તે કેવળ પિત્તજન્ય કાસમાં કેવલ પિત્તજન્ય કાસમાં, શર્કરા-સાકર ચીની, ચન્દન-ચંદન ચન્દન, દ્રાક્ષા-મધુ-દ્રાક્ષ, મધ મુનક્કા, શહદ, ઘાત્રીફલ-આમળા આવળા, ડરપલૈઃ અને નીલકમળથી કરેલા અવલેહનો પ્રયોગ કરાવવો બેઈએ અને નીલકમળ અને બનાવે લેહકા પ્રયોગ કરાવવા જોઈએ. સકફે કશ્યુકત પૈત્તિક કાસમાં કફયુક્ત પૈત્તિક કાસમાં, સમુસ્તમરિચઃ આ અવલેહનો મોથ તથા મરીસહિત આ લેહકા મોથ અને મરિચકે યુક્ત, અનિલે તેમજ વાયુયુક્ત પૈત્તિક કાસમાં અને વાયુ-યુક્ત પૈત્તિક કાસમાં, સપૃતઃ આ અવલેહનો ધીસહિત પ્રયોગ કરવો બેઈએ આ લેહકા ધીસે યુક્ત પ્રયોગ કરવા જોઈએ ॥ ૧૦ ॥

90. The physician may prescribe in cough due to pitta alone, a medicament prepared of sugar, sandal wood, grapes, honey, emblic myrobalan and blue lily. If pitta is associated with kapha, the foregoing medicament should be prescribed along with nut-grass and black pepper, and if associated with vata it should be prescribed with ghee

મૃદ્વીકાદિલેહઃ—

મૃદ્વીકાર્ધશતં ત્રિશત્પિપ્પલીઃ શર્કરાપલમ્ ।

લેહયેન્મધુના ગોર્વા ક્ષીરપં ચ શકૃદ્રસમ્ ॥૧૧॥

૧૧ મૃદ્વીકાર્ધશતં-પૃષ્ઠીકાર્ધશતં (ધ.)

,, ક્ષીરપં ચ-ક્ષીરપસ્ય (વ.)

,, ક્ષીરપં ચ શકૃદ્રસ-ક્ષીરે પક્ષ્વા શકૃદ્રસમ્ (ખ. ફ.)

ક્ષીરપસ્ય ચ દૂધ પર રહેલા રોગીને દુધમોજી રોગીને, મૃદ્વીકા-અર્ધશતમ્ દ્રાક્ષ પચાસ નંગ મુનક્કા પચાસ અદદ, ત્રિશત્ પિપ્પલીઃ પીપર ત્રીસ નંગ પિપ્પલી ત્રીસ અદદ, શર્કરાપલમ્ અને સાકર ચાર તોલા એએને એકત્ર વાટી જોઈ ચીની ૪ તોલે અને એકત્ર પીસકા, મધુના મધથી મધુને, લેહયેન્મ ચટાડવો ચટાવે, ગોઃ વા અથવા ગાયના અથવા ગૌકે, શકૃદ્રસમ્ જાણીને રસ મધથી ચટાડવો ગોવરકા રસ મધુને ચટાવે ॥ ૧૧ ॥

91. The patient while living on milk-diet may take the linctus made from 50 grapes, 30 long peppers and 4 tolas of sugar mixed with honey or cow-dung juice with honey.

ત્વગાદિલેહઃ—

ત્વગેલાવ્યોષમૃદ્વીકાપિપ્પલીમૂલપૌષ્કરૈઃ ।

લાજામુસ્તશઢીરાઘાત્રીફલભિમીતકૈઃ ॥૧૨॥

શર્કરાક્ષૌદ્રસર્પિર્ભિલેહઃ કાસવિનાશનઃ ।

શ્વાસં દિક્કાં ક્ષયં ચૈવ દ્વદ્રોગં ચ પ્રણાશયેત્ ॥૧૩॥

ત્વક્-પલા-તળ, એલચી દાલચીની, ફાલચી, જ્યોષ-મૃદ્વીકા ત્રિકટુ, દ્રાક્ષ ત્રિકટુ, મુનક્કા, પિપ્પલીમૂલ-પીપર-મૂળના ગોડા પિપ્પલીમૂલ, પૌષ્કરૈઃ પોષ્કરમૂળ પોષ્કર-મૂલ, લાજા-મુસ્ત-લાબ, મોથ લાજા, મોથા, શઢી-રાસના-પદ્મચૂરો, રાસના કચૂર, રાસના, ઘાત્રીફલ-આમળા આવળા, ભિમીતકૈઃ બેઈએ અને બહેકા, શર્કરા-ભૌદ્ર-સાકર, મધ ચીની, મધુ, સર્પિર્ભિલેહઃ તથા ધીથી કરેલો અને ધી અને બનાવે, લેહઃ અવલેહ લેહ કાસ-વિનાશનઃ ઉધરસનો નાશ કરનાર છે કાસનાશક છે, શ્વાસમ્ અને શ્વાસ અને શ્વાસ, દિક્કામ્ હેડકી દિવકી, ક્ષયમ્ ચ એવ ક્ષય ક્ષય, દ્વદ્રોગમ્ ચ તથા હૃદયરોગનો તથા દ્વદ્રોગકાં, પ્રણાશયેત્ નાશ કરે છે નશ કરતા છે ॥ ૧૨-૧૩ ॥

92-93. Or a linctus prepared from cinnamon bark, small cardamom, the three spices, grapes, roots of long pepper, orris root, roasted paddy, nut-grass,



long zedoary, indian groundsel, emblic and beleric myrobalans along with sugar, honey and ghee. This linctus cures cough, dyspnea, hiccup, wasting and heart-disease.

पिपल्यादिलेहः—

पिप्पल्यामलकं द्राक्षां लाक्षां लाजां सितोपलाम् ।  
क्षीरे पक्त्वा घनं शीतं लिह्यात् क्षौद्राष्टभागिकम् ९४

पिप्पली. पीपर पिप्पली, आमलकम् आमला आंवला, द्राक्षाश्च लाक्षाम् द्राक्ष, लाज सुनका, लाख, लाजाम् लाज लाजा, सितोपलाम् अने साकरने और चीनीको क्षीरे दूधमें दूधमें, पक्त्वा पकावी पकाकर, घनम् जगरे भावे जली अथ तयारे जब मात्रा बन जाय तब, शीतम् ठंडुं अथ पछी तेमा ठंडा होने पर इसमें, क्षौद्राष्टभागिकम् अथ आठमे भागे में जलीने मधुका अष्टमांश मिलाकर, लिह्यात् आठवुं चाटे ॥९४॥

94. The patient may take a linctus prepared from long pepper, emblic myrobalan, grapes, lac, roasted paddy and sugar-candy cooked with milk and when it is thickened and cooled mixed with 1/8 quantity of honey.

विदारीशुमृणालानां रसान् क्षीरं सितोपलाम् ।  
पिबेद्वा मधुसंयुक्तं पित्तकासहरं परम् ॥९५॥

विदारी- इगिथे बिलाई कन्द, इक्षु- शेरडी ईख, मृणालानाम् अने मृणालना और मृणालके, रसान् रसे रस, क्षीरम् सितोपलाम् दूध तथा साकरने दूध तथा चीनी इनको, मधुसंयुक्तम् मधुसहित शर्दद मिलाकर, पिबेत् पीवा पीवे, परम् ये उत्तम यह श्रेष्ठ, पित्तकासहरम् पित्तजन्य उपशान्तु नाशक छे पैत्तिक कासका नाशक है ॥ ९५ ॥

९५ मधुसंयुक्तं पित्तकासहरं परम्- मधुसंयुक्तं पित्तकासहरां पगम् (ब.)

95. The patient may drink the juices of white yam, sugar cane and lotus filaments mixed with milk, sugar-candy and honey. This is an excellent cure for cough due to pitta provocation.

पित्तकासे अन्नपानम् —

मधुरैर्जाङ्गलरसैः श्यामाकयवकोद्रवाः ।  
मुद्रादियूवैः शाकैश्च तिक्तकैर्मात्रया हिताः ॥९६॥

मधुरैः मधुर रसवाणा मधुर, जाङ्गलरसैः जंगलीआना मांसरसैश्च जंगल प्राणियोंके मांसरसों, मुद्रादियूवैः मग वजरेना यूपो मृग आदिके यूपों, तिक्तकैः तथा कडवा और तिक्त, शाकैः च शाक साधे शाकोंके साथ, मात्रया योग्य मात्राभा योग्य मात्रामें, श्यामाक- साभा सांवा, यव-कोद्रवाः जव अने केदरा जौ और कोदों, हिताः हितकारी छे हितकर हैं ॥ ९६ ॥

96. The diet for the patient with cough due to pitta provocation is sanwa millet, common barley and common millet with the sweet meat-juice of jangala animals, thin gruel of green gram etc., and bitter vegetables taken in the proper quantity.

घनश्लेष्मणि लेहास्तु तिक्तका मधुसंयुताः ।  
शालयः स्युस्तनुकफे षष्टिकाश्च रसादिभिः ॥९७॥

घनश्लेष्मणि घाटा कडवा वट्ट कफमें, मधुसंयुताः मधुयुक्त मधुयुक्त, तिक्तकाः तिक्त रसवाणा तिक्त रसवाले, लेहाः अपवेड लेह, तनुकफे च अने पातणा कडवा और पतले कफमें, रसादिभिः मांसरससहित मांसरससहित, षष्टिकाः साडी योभा सांठी चावल, शालयः तथा शल और शलि चावल, स्युः हितकारी छे हितकर हैं ॥ ९७ ॥

97. In conditions of viscid and thick phlegm, the linctuses should be prepared from bitter drugs and taken with honey; while in conditions of thin

phlegm they should be made from sali and shashtika rice and taken with meat-juices.

शर्कराम्भोऽनुपानार्थं द्राक्षेक्षणां रसाः पयः ।  
सर्वे च मधुरं शीतमविदाहिं प्रशस्यते ॥९८॥

अनुपानार्थम् अनुपान भाटे अनुपानके लिए, शर्कराम्भः साकरनुं पाण्डी चीनीका शरबत, द्राक्षा-  
इक्षणाम् द्राक्ष तथा शेरडीना मुनके और ईखके, रसाः  
रस रस, पयः दूध दूध, सर्वम् अने सधणा और सब,  
मधुरम् मधुर मधुर, शीतम् शीत शीत, अविदाहि च  
अने अविदाही द्रव्य और अकिदाही द्रव्य, प्रशस्यते  
हितकारी छे प्रशस्त हैं ॥९८॥

98. For a post-prandial drink, the patient may be given sugar-water or the juices of grapes and sugar-cane and milk; in fact all that is sweet, cold and non-irritant, is recommended.

काकोलीबृहतीमेदायुग्मैः सवृषणागरैः ।  
पित्तकासे रसान् क्षीरं यूषांश्चाप्युपकल्पयेत् ॥९९॥

पित्तकासे पित्तजन्य उधरसभा पित्तिक कासमें,  
सवृषणागरैः अरंडसी अने सूं संहित अहूसे और  
सोंसे युक्त, काकोली- डांडेली काकोली, बृहती- ओली  
बोरीगल्ली बनभाटा, मेदायुग्मैः मेदा तथा महामेदा  
ओओना कवाथथी मेदा और महामेदा इनके काससे,  
रसान् क्षीरम् भसिरस, दूध मांसरस, दूध, यूषान् च  
अपि अथवा यूषोनी अथवा यूषोकी, उपकल्पयेत्  
उपना उरवी कल्पना करे ॥९९॥

99. For the patient with cough due to pitta the physician may prepare meat-juice, milk or soup of kakoli, yellow berried and indian nightshades, meda and mahameda, vasaka and dry ginger.

९८. रसाः-रसा (व.)

शरादिपञ्चमूलक्षीरम्—

शरादिपञ्चमूलस्य पिप्पलीद्राक्षयोस्तथा ।  
कषायेण शृतं क्षीरं पिबेत् सममुशर्करम् ॥१००॥

शरादि- शरादि शरादि, पञ्चमूलस्य पंचमूलना  
पंचमूलके, तथा तथा तथा, पिप्पलीद्राक्षयोः पीपल  
अने द्राक्षना पिप्पली और मुनका इनके, कषायेण  
कषाथथी कषायसे, शृतम् सिद्ध करे सिद्ध किये हुए,  
क्षीरम् दूधने दूधसे, सममुशर्करम् मधु तथा साकर-  
सहित मधु तथा चीनी मिलाकर, पिबेत् पीपुं  
पीवे ॥ १०० ॥

100. The patient may drink the medicated milk cooked with the decoction of the drugs of penta-radices of the penreed group and long pepper and grapes, and mixed with honey and sugar.

स्थिरासितापृश्निपर्णीभावणीबृहतीयुगैः—

स्थिरासितापृश्निपर्णीभावणीबृहतीयुगैः ।  
जीवकर्षभकाकोलीतामलकयृद्धिजीवकैः ॥१०१॥  
शृतं पयः पिबेत् कासी ज्वरी दाही क्षतक्षयी ।

स्थिरा-सिता- शाखयलु, साकर सरीवन, चीनी,  
पृश्निपर्णी- पीठयलु पीठवन, भावणी- मोटी गोरभ-  
मुंडी बरीमुंडी, बृहतीयुगैः ओली अने ओली बोरीगल्ली  
छोटी और बड़ी कटेरी, जीवक- लवक जीवक, ऋषभक-  
ऋषभक ऋषभक, काकोली- डांडेली काकोली तामलकी  
बोव्यामली मंटेब्यामली, यृद्धि- ऋद्धि ऋद्धि,  
जीवकैः अने लवकथी और जीवक इनसे, शृतम् सिद्ध  
करे पकाया हुआ, पयः दूध दूध, कासी ज्वरी उधरस,  
ज्वर कष, ज्वर, दाही दाह दाह, क्षतक्षयी अने क्षत  
क्षयना रोगीओ और क्षतक्षयका रोगी, पिबेत् पीपुं  
पीवे ॥ १०१ ॥

101-101. The patient with cough, fever, burning, pectoral lesions and

१०१. जीवकर्षभ-वीरधमक (व.)

,, जीवकैः-जीवकैः (त)



cachexia may drink the medicated milk prepared with ticktrefoil, sugar, painted-leaved uraria, white teak, yellow-berried and indian night-shades, jeevaka, rishabhaka, kakoli ground phyllanthus, riddhi and jeevaka.

तज्जं वा साधयेत् सर्पिः सक्षीरेक्षुरसं भिषक् ॥१०२॥  
जीवकाद्यैर्मधुरकैः फलैश्चाभिषुकादिभिः ।  
कल्कैस्त्रिकार्षिकैः सिद्धे पूतशीते प्रदापयेत् ॥१०३॥  
शर्करापिप्पलीचूर्णं त्वक्क्षीर्णां मरिचस्य च ।  
शृङ्गाटकस्य चावाप्य क्षौद्रगर्भान्पलोन्मितान् १०४  
गुडान् गोधूमचूर्णेन कृत्वा ह्यादेद्विताशनः ।  
शुक्रासृग्दोषशोषेषु कासे क्षीणक्षतेषु च ॥१०५॥

भिषक् अथवा वैद्ये अथवा वैद्यः तज्जम् तेभ्योऽपि  
उपनयनं यथैव उससे निकाले सर्पिः वा धृतं वीको,  
सक्षीरेक्षुरसम् इध तथा शेरडीना रस साथे दूध और  
इखके रसके साथ साधयेत् सिद्ध करने सिद्ध करे,  
जीवकाद्यैः अथवा जीवकादि, मधुरकैः मधुरभाज्य  
मधुरगण, अभिषुकादिभिः तथा अशिषुकादि तथा पिस्ता  
आदि, फलैः इधना फलोंके, त्रिकार्षिकैः त्रय तोलाना  
पर्येकके ३ तोले, कल्कैः ३८५ धी, कल्कमे, सिद्धे सिद्ध  
करे सिद्ध किये गये, पूतशीते अने गाणीने क्षरी  
नाथे तै धीमां और छानकर ठंडे किये गये उस बीमे,  
शर्करा- साकर चीनी, पिप्पली- चूर्णम् तथा पीपरनु  
यूर्ण तथा पिप्पलीका चूर्ण, त्वक्क्षीर्णाः तेभ्यो वंश-  
दोयन वंशलोचन, मरिचस्य च डाणां भरी मरिच,  
शृङ्गाटकस्य अने शी.गो.डा.नुं यूर्ण और सिंघाड़ेके चूर्णका,  
आवाप्य नाथीने प्रक्षेप देकर, क्षौद्रगर्भान् मधु  
मेथवी मधुको मिलाकर, गोधूम-चूर्णेन धुँना दोटथी  
गेहूँके आटेसे, पलोन्मितान् चार तोलाना चार तोलके,  
गुडान् बाहु लडू, कृत्वा क्षरी बनाकर, हितान्ननः हित-  
भोजन करना तथा हितभोजी हो कर, शुक्र- वीर्य-  
दोष शुक्रशोष, असृग्दोष- रक्तदोष रजोदोष, शोषेषु  
शोष शोष, कासे उधरस कास, क्षीणक्षतेषु च अने क्षय

तथा उरःक्षतम् और क्षय तथा उरःक्षतम्, सादेव  
आवा खावे ॥ १०२ १०५ ॥

102-105. Or the physician may obtain ghee from the aforesaid medicated milk and prepare with the juice of sugar-cane and milk adding the paste of the sweet drugs of the life-promoter group and the paste of fruits of the Abhishuka group taking each of these drugs in the quantity of three tolas; when the ghee is prepared, filter it and when it is cold, add sugar, powder of long pepper, bamboo manna black pepper and prepare boluses of this with wheat flour of 4 tolas each putting honey in their inside. These balls should be eaten by the patient suffering from morbidity of semen and blood, consumption, cough, pectoral lesions and cachexia.

शर्करानागरोदीच्यं कण्टकारीं शटीं समम् ।  
पिष्ट्वा रसं पिबेत्पूतं वस्त्रेण घृतमूर्च्छितम् ॥१०६॥

शर्करा- साकर चीनी, नागर- सूँठ सोंठ, उदीच्यम्  
सुंगधी वागै। सुंगधवाला, कण्टकारीम् ऐडी भोरी गण्डी  
कटेरी, शटीम् पट्टयूरे। कचूर, समम् पिष्ट्वा ऐओने  
सम परिमाणमां जलनी साथे वाटी इनको सम  
परिमाणमें जलके साथ पीसकर, रसम् रसने रसको,  
वस्त्रेण वस्त्रेथी कपड़ेसे, पूतम् गाणी छानकर, घृत-  
मूर्च्छितम् अने घृत मेथवी और बीसे मिलाकर, पिबेत्  
पीवे पीवे ॥ १०६ ॥

106. Or, the patient may drink the cloth-filtered juice of the paste of sugar, dry ginger, cuscus, indian nightshade and long zedoary, these being taken in equal quantities, and mixed with ghee.

મહિષ્યજાવિગોક્ષીરધાત્રીફલરસૈઃ સમૈઃ ।

સર્પિઃ સિદ્ધં પિબેદ્યુક્તયા પિત્તકાસનિર્બર્હણમ્ ॥૧૦૭॥

इति पित्तकासचिकित्सा ।

સમૈઃ સરખે વજને સમભાગમે. મહિષી- ભેંસ  
મૈસ, અજા- અવિ- બકરી, ઘેંટી વકરી, મેઢી, ગોક્ષીર-  
અને ગાયનાં દૂધ ઓર ગૌકે દૂધ, ધાત્રીફલ- તથા  
આમળાના તથા જાવલેકે, રસૈઃ ૨૨૫થી રસસે, સિદ્ધમ્  
સિદ્ધ કરેલ સિદ્ધ, પિત્તકાસ- પિત્તની ઉધરસને. વૈત્તિક  
કાસકા, નિર્બર્હણમ્ નાશ કરનાર નાશક સર્પિઃ ધૃત ઘી,  
યુક્તયા પિબેત્ યુક્તિથી પીવું યુક્તિપૂર્વક પીવે ॥૧૦૭॥  
इति आ यह, पित्तकास पित्तनी उधरसनी वैतिक  
कासकी, चिकित्सा चिकित्सा छे चिकित्सा है।

107. Or, the patient may drink the medicated ghee prepared with equal quantities of the milks of buffalo, goat, sheep and cow, and the juice of emblic myrobalan. This medicated ghee taken in the proper manner, is curative of cough due to pitta provocation. Thus has been described the line of treatment for cough due to pitta provocation.

कफकासे चिकित्साक्रमः—

बलिनं वमनैरादौ शोषितं कफकासिनम् ।

यवाजैઃ કદુરુક્ષોણૈઃ કફઘ્નૈશ્ચાપ્યુપાચરેત્ ॥૧૦૮॥

જાદો પ્રથમ પ્રથમ, વમનૈઃ વમનથી વમનસે,  
શોષિતમ્ થુદ કરેલ શોષિત, બલિનમ્ બળવાન બલવાન,  
કફકાસિનમ્ કફની ઉધરસવાળા રોગીને કફજ કાસ-  
રોગીની, કફઘ્નૈઃ કફનાશક કફનાશક, કદુ-રુક્ષ- કડુ,  
રુક્ષ કદુ રુક્ષ, ડબ્બૈઃ જ અપિ અને ઉષ્ણ ઓર ઉષ્ણ,  
યવાજૈઃ જવાનાં અનોથી યવાજોસે, ઉપાચરેત્ ઉપચાર  
કરવે ચિકિત્સા કરે ॥ ૧૦૮ ॥

108 If the patient suffering from cough due to morbid kapha is strong enough, he should first be purified by emetics and then treated by a course of

barley diet and by pungent, dry and hot articles curative of kapha.

पिप्पलीक्षारिकैर्यूषैः कौलथैर्मूलकस्य च ।

લઘૂન્યન્નાનિ ભુજીત રસૈર્વા કટુકાન્વિતૈઃ ॥૧૦૯॥

धान्वबैलरसैः क्षेहैस्तिलसर्वपवित्रजैः ।

પિપ્પલી- પીપર પિપ્પલી ક્ષારિકૈઃ તથા જવખાર  
વગેરે ક્ષારોથી વધારેલ તથા યવક્ષાર આદિ ક્ષારોસ  
સંસ્કૃત, કૌલથૈઃ કળાથીના કલધીકે. મૂલકસ્ય  
ચ તથા મૂળાના ઓર મૂલીકે, યૂષૈઃ યૂષોથી યૂષોમે,  
કટુકાન્વિતૈઃ અથવા કટુ દ્રવ્યથી યુક્ત યા કટુ દ્રવ્યોમે  
યુક્ત, રસૈઃ વા મંસરસોની સાથે માંસરસોસે, ધાન્વ-  
અંગલ જાજ્જલ, બૈલ- તથા બિલેશય પ્રાણીઓના તથા  
વિલેશય પ્રાણીઓ, રસૈઃ મંસરસોની સાથે માંસરસોસે,  
તિલ-સર્ષપ- તેમજ તલ, સરસવ એવં તિલ, સરસો,  
વિલ્વજૈઃ કે બીજીનાં યા વેલકે, ક્ષેહૈઃ વા તેલોથી  
તૈલોસે. લઘૂનિ હલકાં લઘુ, અન્નાનિ અનોનું અજ,  
ભુજીત ભોજન કરવું મોજન કરે ॥ ૧૦૯ ॥

109-110. The patient may eat light food consisting of soups made from horse-gram and radish, mixed with long pepper and alkali; or he may take the meat-juice of jaugala or terriculous animals mixed with pungent drugs and oil of til, rape seed or bael.

मध्वम्लोष्णाम्बुतक्रं वा मद्यं वा निगदं पिबेत् ११०

મધુ-અમ્લ- અનુપાન માટે મધનું શરબત, ખાટા રસ  
અનુપાનકે લિપ શદ્દકા શરબત, અમ્લ દ્રવ, ડબ્બામ્બુ-  
જીનું પાણી ગરમ પાતી, તકમ્ તક છાછ, નિગદમ્ કે  
નિર્મળ યા નિર્મલ, મદ્યમ્ વા મદ્ય મધ, પિબેત્ પીવું  
પીવે ॥ ૧૧૦ ॥

110. He may drink the medicated water, acid water, hot water, butter-milk or clear wine.

१०९. ધાન્વબૈલરસૈઃ - ધાન્વતૈલેસ્તથા (વ.)

पौष्कराग्वधं मूलं पटोलं तैर्निशास्थितम् ।  
जलं मधुयुतं पेयं कालेष्वाग्नस्य वा त्रिषु ॥१११॥

अग्नस्य अथवा अग्न्या अथवा अग्न्येवनके, त्रिषु कालेषु वा त्रिषु वभते तीनों कालोंमें, पौष्कर- पौष्कर- भूषण पोद्दकरमूल, आरग्वधम् तथा गरभाणानु और अमलतासक्ती, मूलम् भूषण जड़, पटोलम् परवत् परवल, तैः ओओने ओओने इन्हें, निशास्थितम् आभी रात्रि रात्रि रातभर रखा, जलम् पाणी जल मधुयुतम् पेयम् मधुयुक्त करीने पीउं मधुसे मिलाकर पीवे ॥ १११ ॥

111. Or, he may drink the medicated water prepared by immersing the roots of orris and purging cassia and snake-gourd in water overnight mixed with honey, before, during and after meals.

कट्फलादिकाथः—

कट्फलं कत्तुणं भागीं मुस्तं धान्यं वचाभये ।  
शुण्ठीं पर्पटकं शृङ्गीं सुराहं च शृतं जले ॥११२॥  
मधुहिङ्गयुतं पेयं कासे वातकफात्मके ।  
कण्ठरोगे मुखे शूने श्वासहिक्काज्वरेषु च ॥११३॥

वातकफात्मके वातकफात्मके वातकफम्, कासे उधरसभा खांसीमें, कण्ठरोगे कंठरोगभा कंठरोगमें, मुखे शूने मुखना सोओभा मुखशोषमें, श्वासहिक्का-श्वास, हेउडी श्वास, हिचकी, ज्वरेषु च अने ज्वरभा और ज्वरमें, कट्फलम् कायकल कायफल, कत्तुणम् रोहिष धास रुशा घास, भागीम् भारंगी भारङ्गी, मुस्तम् मोथा मोथा, धान्यम् धाण धनिया, वचा-वभये वज, हरउ वच, हरइ, शुण्ठीम् सूंठ सोंठ, पर्पटकम् भउसदियो पित्तपापका, शृङ्गीम् डाउडाशीमी काकडा-सिंगी, सुराहम् च अने देवदार ओओने और देवदार

इनका, जले शृतम् पाणीभा क्वाथ करीने जलमें काथ करके, मधु-हिङ्ग- मध तथा हिङ्ग मधु और हींग, युतम् सहित मिलाकर, पेयम् पीवे पीवे ॥ ११२-११३ ॥

112-113. Prepare a decoction of box-myrtle, ginger grass, beetle killer, nutgrass, coriander, sweet flag, chebulic myrobalan, ginger, trailing rungia, galls and deodar mixed with asafetida and honey. The patient suffering from cough due to the provocation of vata and kapha or diseases of the throat, edema of the face, dyspnea, hiccup and fever may drink this decoction

पाठादियोगः—

पाठां शुण्ठीं शटीं मूर्वां गवाक्षीं मुस्तपिप्पलीम् ।  
पिष्ट्वा घर्माम्बुना हिङ्गसैन्धवाभ्यां युतां पिबेत् ॥११४॥

पाठाम् शुण्ठीम् अथवा पाठां सूंठ अथवा पाठी, सोंठ, शटीम् पट्टयूरे कचूर, मूर्वां मोरवेद मूर्वा, गवाक्षीम् धन्वराजुणी इन्द्रवारुणी, मुस्त-पिप्पलीम् मोथा अने पीपरने मोथा और पिप्पली इनको, पिष्ट्वा भांडीने पीसकर, हि-सैन्धवाभ्याम् हिङ्ग अने सिंधावुथी हींग और सैन्धानमक, युताम् युक्त करी मिलाकर, घर्माम्बुना छिना पाणीथी गरम जलसे, पिबेत् पीवा पीवे ॥ ११४ ॥

114. Or, he may drink the mixture made of the paste of patha, dry ginger, long zedoary, trilobed virgin's bower, colocynth, nut-grass and long pepper-rubbed in warm water, adding asafetida and rock-salt.

नागरादियोगः—

नागरातिविषे मुस्तं शृङ्गीं कर्कटकस्य च ।  
हरीतकीं शटीं चैव तेनैव बिम्बिना पिबेत् ॥११५॥

१११. पटोलं तैः-पटोलान्तम् (त.)

११२. वचाभये-वचाभया (व.)

११३. मुखे शूने-क्षये शूले (व.)

નાગર- અથવા સૂંઠ અથવા સોંઠ, અતિવિષે અતિ-  
વિષની કળી અતીષ, મુસ્તશ્ મોથ મોથા, કર્કટકલ્પ  
શૃંગીમ્ ચ કાકડાશીખી કાકડાસિંગી, હરીતકીમ્ હરડે  
હરફ, શટીમ્ એવ ચ અને પટકચૂરો એએને ઔર  
કચૂર इनको, तेन एव ते च इसी, विविना विधिश्च  
विधिसे, पिबेत् पीवा पीवे ॥ ११५ ॥

115. Or, he may drink in the same manner, the mixture of the paste of ginger, atees, nut-grass, galls, chebulic myrobalan and long zedoary.

पिप्पलीप्रयोगः—

તૈલમૃદ્ધં ચ પિપ્પલ્યાઃ કલ્કાશ્નં સસિતોપલમ્ ।  
પિબેદ્વા શ્લેષ્મકાસઘ્નં કુલત્થરસસંયુતમ્ ॥ ૧૧૬ ॥

સસિતોપલમ્ વા અથવા સાકરસહિત અથવા ચીનીકે  
સાથ, પિપ્પલ્યાઃ પીપરનેા પિપ્પલીકા, કલ્કાશ્નમ્ કલ્ક એક  
તોલા કલ્ક એક તોલા, તૈલ-મૃદ્ધમ્ ચ તેલમાં મૂંઠ  
તૈલમેં મૂનકર, કુલત્થરસ- કળબીના રસમાં કુલથીકે  
રસસે, સંયુતમ્ મેળવી મિલાકર, શ્લેષ્મ-કાસઘ્નમ્ કફ-  
જન્ય ઉધરસનેા નાશ કરનાર એ કલ્ક કફકાસકે  
નાશક હસ કલ્કકો, પિબેત્ પીવા પીવે ॥ ૧૧૬ ॥

116. Or, the patient may take as potion, the paste of one tola of long pepper seasoned in til oil and mixed with sugar-candy and the decoction of horse-gram. This is curative of cough due to kapha provocation.

કતિપ્રયોગઃ—

કાસમર્દાશ્વવિદ્ભુજરાજવાર્તાકજો રસઃ ।  
સશ્વૌદ્રઃ કફકાસઘ્નઃ સુરસસ્યાસિતસ્ય ચ ॥ ૧૧૭ ॥

કાસમર્દ- કાસુદરેા કસૌરી, અશ્વવિદ્ બેઝાની લાદ  
ચોડેકી લોદ, મુજરાજ- ભાંગરે ભાંગરા, વાર્તાકજઃ અને

૧૧૭. વાર્તાકજો રસઃ-વાર્તાકજા રસઃ (બ.)

„ સશ્વૌદ્રઃ કફકાસઘ્નઃ-સશ્વૌદ્રઃ કફજનમઃ (બ.)

„ „-શ્વૌદ્રયુક્તાઃ કફહરાઃ (બ.)

રીંગાણનેા ઔર બેગનકા, અસિતસ્ય અને કાળી ઔર  
કાલી, સુરસસ્ય ચ રસઃ તુલસીનેા રસ તુલસીકા રસ,  
સશ્વૌદ્રઃ મધસહિત પીવાથી મધુ મિલાકર પીનેસે,  
કફકાસઘ્નઃ કફજન્ય ઉધરસનેા નાશ કરનાર થાય છે  
કફજન્ય કાસકા નાશક હોતા હૈ ॥ ૧૧૭ ॥

117. The juice of round podded cassia, horse dung, trailing eclipta, briajal and black holy basil should be taken with honey. It is curative of cough due to kapha provocation.

દેવદાર શટી રાસ્ના કર્કટાશ્વ્યા દુરાલભા ।  
પિપ્પલી નાગરં મુસ્તં પથ્યાધાત્રીસિતોપલાઃ ॥ ૧૧૮ ॥  
અધુતૈલયુતાવેતૌ લેહૌ વાતાનુગે કફે ।

દેવદાર દેવદાર દેવદાર, શટી રાસ્ના પટકચૂરો,  
રાસ્ના કચૂર, રાસ્ના, કર્કટાશ્વ્યા કાકડાશીખી કાકડા-  
સિંગી, દુરાલભા તથા ધમસેા તથા ધમાસા, પિપ્પલી  
અને પીપર ઔર પિપ્પલી, નાગરમ્ સૂંઠ, મુસ્તમ્  
મોથ મોથા, પથ્યા-ધાત્રી હરડે. આમળા હરફ, આંબલા,  
મિતોપલાઃ તથા સાકર તથા ચીની, યૌ આ વે, મધુ-  
તૈલયુતૌ મધ તથા તેલ મેળવેલા મધુ ઔર તૈલ  
મિલાયે દુદ, લેહૌ એ અવલેહૌ દો લેહ, વાતાનુગે  
વાતાનુબંધી વાતાનુબધયુક્ત, કફે કફકાસમાં દિતકારી  
છે કફજ સાંસીમેં પ્રશસ્ત હૈ ॥ ૧૧૮ ॥

118-118½. Prepare a linctus of deodar, long zedoary, indian groundsel, galls, cretan prickly clover, or a linctus of long pepper, ginger, nut-grass, chebulic myrobalan, emblic myrobalan and sugar-candy. Either of these two linctuses, mixed with honey and til oil, is curative of cough due to kapha provocation occurring as sequela to vata morbidity.

પિપ્પલી પિપ્પલીમૂલં ચિત્રકો હસ્તિ પિપ્પલી ॥ ૧૧૯ ॥  
પથ્યા તામલકી ધાત્રી મદ્રમુસ્તા ચ પિપ્પલી ।

૧૧૯. મદ્રમુસ્તા ચ-મદ્રમુસ્તાને (બ)

देवदार्वभया मुस्तं पिप्पली विश्वमेघजम् ॥१२०॥  
विशाला पिप्पली मुस्तं त्रिवृता चेति लेहयेत् ।  
चतुरो मधुना लेहान् कफकासहरान् भिषक् १२१

पिप्पली पीपूर पिप्पली, पिप्पलीमूलम् पीपरी-  
भूणना गरीडा पिप्पलीमूल, चित्रकः चित्रक चित्रक,  
हस्तिपिप्पली तथा भूपीपूर तथा गजपिप्पली, पथ्या  
हरडे हरड, तामलकी बेथआमदी मुईआंवला,  
घात्री आभणी आंवला, मदमुस्ता अद्रमेथ मदमुस्ता,  
पिप्पली च तथा पीपूर तथा पिप्पली, देवदारु देवदार  
देवदारु, जमया हरडे हरड, मुस्तम् मोथ मोथा,  
पिप्पली पीपूर पिप्पली, विश्वमेघजम् तथा सूं तथा  
सोंठ, विशाला अने ध-द्रवागुष्ठी और इंद्रायण, पिप्पली  
पीपूर पिप्पली, मुस्तम् मोथ मोथा, त्रिवृत्त च तथा  
नसेतर तथा त्रिवृत्त, इति आ इन, कफकासहरान् उक्ष्णी  
उधरसने नाश करनार कफकासके नाशक, चतुरः लेहान्  
यार अचछेडे चारों लेहोंको, भिषक् वैद्य वैद्य, मधुना  
लेहयेत् मधुसहित चटाउवा सहदसे चटावे ॥११९-१२१॥

119-121. (1) Long pepper, root of long pepper, white-flowered leadwort and elephant pepper; (2) chebulic myrobalan, ground phyllanthus, emblic myrobalan, indian cyprus and long pepper; (3) deodar, chebulic myrobalan, nutgrass, long pepper and dry ginger; (4) colocynth, long pepper, nutgrass and turpeth—any of these four groups of drugs may be taken as a linctus with honey. The physician should prescribe them for the cure of cough due to kapha.

सौवर्चलाभयाघात्रीपिप्पलीक्षारनागरम् ।

चूर्णितं सर्पिषा वातकफकासहरं पिबेत् ॥१२२॥

सौवर्चल- सूर्यण सौवर्चलमक, जमया- हरडे हरड,  
घात्री- आभणी आंवला, पिप्पली- पीपूर पिप्पली, क्षार-  
नागरम् भूभभार अने सूं ओओतुं यवक्षार और  
सोंठ इनका, चूर्णितम् चूर्ण चूर्ण करके, वात-कफ- वात

तथा उक्ष्णी थथेक्ष वात तथा कफसे उत्पन्न, कासहरम्  
उधरसने नाश करनार ते चूर्णने कासके नाशक उस चूर्णको,  
सर्पिषा धीन्नी साथे बीसे, पिबेत् पीपुं पीवे ॥१२२॥

122. Powders of sanchal salt, chebulic myrobalan, emblic myrobalan, long pepper, alkali and dry ginger should be taken with ghee; this is curative of cough due to provocation of kapha and vata.

दशमूलादिघृतम्—

दशमूलादके प्रस्थं घृतस्याक्षसमैः पचेत् ।

पुष्कराद्विंशतीवित्तसुरसव्योषहिङ्गुभिः ॥१२३॥

पेयानुपानं तत् पेयं कासे वातकफात्मके ।

श्वासरोगेषु सर्वेषु कफवातात्मकेषु च ॥१२४॥

इति दशमूलादिघृतम् ।

दशमूलादके दशभूणना २५६ तोला अथवा  
दशमूलके २५६ तोले काथमें, अक्षसमैः ओं ओं  
तोले एक एक तोले, पुष्कराद्व- पोपूरभूण पोहकरम्,  
शटी-बिल्व- पट्टयूरो, जीली कूर, बेल, सुरस- तुलसी  
तुलसी, द्योव- त्रिकटु त्रिकटु, हिङ्गुभिः अने हिङ्ग  
साथे और हिङ्ग इनसे, घृतस्य धी बीसे, प्रस्थम् १४  
तोला ६४ तोले, पचेत् पकावतुं पकावे, वातकफात्मके  
वातकफात्मके वातकफात्मके, कासे उधरसभा कासमें,  
कफवातात्मकेषु अने उक्ष्णीतात्मके और कफवातात्मके,  
सर्वेषु सर्व सब, श्वासरोगेषु च श्वासरोगोंमें, पेयानुपानम् पेयाना अनुपानथी पेयाके अनु-  
पानसे, तत् तत् इसको, पेयम् पीपुं पीवे ॥ १२३-१२४ ॥  
इति आ यह. दशमूलादिघृतम् दशमूलादिघृत उ  
दशमूलादिघृत है ।

123-124. A medicated ghee may be prepared of 256 tolas of the decoction of deca-radices in 64 tolas of ghee with the paste of one tola each of orris root, long zedoary, bael, holy basil, the three spices and asafetida. This ghee should be taken by the patient suffering from cough due to provocation of vata and

kapha, dyspnea and all respiratory disorders due to provocation of vata and kapha. The draught of this ghee should be followed by a potion of thin gruel. Thus has been described the Compound Decaradices Ghee.

कण्टकारीघृतम्—

समूलफलपत्रायाः कण्टकार्या रसाढके ।

घृतप्रस्थं बलाव्योषविडङ्गशट्चित्रकैः ॥१२५॥

सौवर्चलयवक्षारपिप्पलीमूलपौष्करैः ।

वृश्चीरवृहतीपथ्यायवाबीदाहिमधिमिः ॥१२६॥

द्राक्षापुनर्नवाचव्यदुरालम्भाम्लवेतसैः ।

शृङ्गीतामलकीभार्गीरास्त्रागोक्षुरकैः पचेत् ॥१२७॥

कल्कैस्तत् सर्वकासेषु हिक्काश्वासेषु शस्यते ।

कण्टकारीघृतं ह्येतत् कफव्याधिनिस्सदनम् ॥१२८॥

इति कण्टकारीघृतम् ।

समूल-फल- मूल, फल, पत्रायाः तथा पादसहित तथा पत्रयुक्त, कण्टकार्याः कोरी गण्डीना कटेरीके, रसाढके २५६ तोला रसभां एक आढकरसमें, बलाव्योष- भला, त्रिकटु बला, त्रिकटु, विडङ्ग वावडिङ्ग वायविडङ्ग, शट्चित्रकैः ५८३यूरो, चित्रक कचूर, सौवर्चल- सयण सौचलनमक, यवक्षार- ७५- भार यवक्षार, पिप्पलीमूल- पीपरीमूलना गडोड पिप्पलीमूल, पौष्करैः पोभरमूल पोहकरमूल, वृश्चीर- सई पुनर्नवा श्वेत पुनर्नवा, वृहती- ७७७ कोरी गण्डी वनसाटा, पथ्या- ६२३ हरद, यवानी- २२२ अजवायन, दाहिम- ६३३ अनार, कद्विमिः अद्वि अद्वि, द्राक्षा- ६३३ सुनका, पुनर्नवा- ६३३ साटोडी गदहपुरना, चव्य- ५५३ चव्य, दुरालम्भा धमासा धमासा, अम्लवेतसैः अम्लवेतस अम्लवेतस, शृङ्गी- ३३३ शृङ्गी काकडा- सिगी, तामलकी- ७७७ आमली मुईआंवला, भार्गी-

१२६. पिप्पलीमूलपौष्करैः—निस्वामकपौष्करैः (६ थ.)

१२७. वृश्चीर-वृश्चीक (ख.)

१२८. ह्येतत्—सिद्धं (ग.)

१२९. ह्येतत् कफव्याधिनिस्सदनम्—सिद्धं कफव्याधिनिस्सदनम् (घ.)

भारंगी भारंगी, रास्त्रा- २२२ रास्त्रा, गोक्षुरकैः अने गोभरुना और गोखरु इनके, कल्कैः ५८३थी कल्कसे, घृतप्रस्थम् ६४ तोला घृत- ६४ तोले घृत, पचेत् ५८३युं पकावे, तत् ते वह, सर्वकासेषु सधणी उध- रस सब प्रकारकी खांसीमें, हिक्का-श्वासेषु च हेडोडी तथा श्वासभां हिचकी तथा श्वासमें, शस्यते श्रेष्ठ प्रशस्त है, एतद् हि आ यह, कण्टकारीघृतम् कंटकारीघृत कंटकारीघृत, कफ-व्याधि- ५८३ना रेगोने कफज व्याधिका निस्सदनम् नाश करेना २५६ छे माशक है ॥ १२५-१२८ ॥ इति आ यह, कण्टकारीघृतम् कंटकारीघृत छे कण्टकारीघृत है ।

125-128. Prepare a medicated ghee in 256 tolas of the decoction of the roots, fruits and leaves of indian night-shade, of 64 tolas of ghee with the paste of heart-leaved sida, the three spices, embelia, zedoary, white flowered leadwort, sanchal salt, alkali of barley, roots of long pepper and orris, white hogweed, yellow-berried night shade, chebulic myrobalan, bishop's weed, pomegranate, riddhi, grapes red hogweed, chaba pepper, cretan prickly clover amlavetasa, galls ground phyllanthus, beetle killer, indian groundsel and small caltrops. This compound indian night shade ghee is good for all types of cough, hiccup and dyspnea and is curative of diseases due to kapha provocation Thus has been described the Indian Night-shade Ghee.

कुलत्थादिघृतम्—

कुलत्थरसयुक्तं वा पञ्चकोलघृतं घृतम् ।

पाययेत् कफजे कासे हिक्काश्वासे च शस्यते ॥१२९॥

इति कुलत्थादिघृतम् ।

कुलथरस- अथवा कुलथीना क्वाथ अथवा कुलथीके काथसे, युक्तम् वा सहित युक्त, पञ्चकोल-तेमञ्च पञ्चकोलना क्वाथथी एवं पंचकोलके काथसे, शृतम् घृतम् सिद्ध करेत् घृत सिद्ध किया हुआ घृत, कफजे कासे उद्भूत-य उधरसर्मा कफज कासमें, पाययैत् पातुं पिलावे, हिक्का-श्वासे च आ वी हेडो अने स्वासर्मा पक्षु यह घृत हिक्का और श्वासमें भी, कासले पण्डित्य से प्रशस्त है ॥ १२९ ॥ इति आ यद्. कुलथादिघृतम् कुलथादिघृत से कुलथादिघृत हैं ।

129. The physician may give as potion, the medicated ghee prepared with the decoction of horse gram and the pentad of spices, to the patient suffering from cough due to kapha provocation. It is also recommended in hiccup and dyspnea. Thus has been described the Compound Horsegram Ghee.

धूमयोगः —

धूमांस्तानेव दद्याच्च ये प्रोक्ता वातकासिनाम् ।  
कोशातकीफलाम्मध्यं पिबेद्वा समनःशिलम् ॥ १३० ॥  
वे ने धूम जो धूम, वातकासिनाम् वातनी उधरसर्मा रेगीओने भाटे वातज कासके रोगियोंके लिए, प्रोक्ताः उक्ता से कहे हैं, तान् एव च ते न उन्ही, धूमान् धूमा धूमोंको, दद्यात् आपना देवे, समनःशिलम् वा अथवा मनःशिलसहित या मैनसिल, कोशातकी- कोशातकीना और कड़वी तोरंडके, फलात् इक्षने फलका, मध्यम् गर्भं मध्यभाग, पिबेत् पीवे पीवे ॥ १३० ॥

130. The patient may be given the inhalation of the fumes which were earlier recommended for patients suffering from cough due to vata provocation; or else the patient may smoke red arsenic kept in the interior of a bottle-gourd.

दोषापेक्षिणी चिकित्सा—

तमकः कफकासे तु स्याच्चेत् पित्तानुबन्धजः ।  
पित्तकासक्रियां तत्र यथावस्थं प्रयोजयेत् ॥ १३१ ॥

कफकासे तु उद्भूती उधरसर्मा कफज कासमें, पित्तानुबन्धजः ओ पित्तानुबन्धथी थयेत् यदि पित्तानुबन्धजनित, तमकः तमक तमक त्यात् चेत् थाय तो। होवे तो, तत्र त्यां वहां, यथावस्थम् रेगीनी स्थिति प्रमाणे रोगीके स्थितिके अनुसार, पित्तकास- पित्तकासनी पित्तकासकी, क्रियाम् चिकित्सा चिकित्सा, प्रयोजयेत् उरवी करे ॥ १३१ ॥

131. If the cough due to kapha-provocation is complicated by asthma associated with pitta, the line of treatment laid down for cough due to pitta-provocation should be followed with due regard to the condition of the patient.

वाते कफानुबन्धे तु कुर्यात् कफहरीं क्रियाम् ।  
पित्तानुबन्धयोर्वातकफयोः पित्तनाशिनीम् ॥ १३२ ॥

कफानुबन्धे उद्भूता अनुबन्धवाणे। किन्तु कफके अनुबन्धयुक्त, वाते तु वात होय तो। वातमें, कफ-हरीम् उद्भूते इर उरनारी कफहारक, क्रियाम् चिकित्सा चिकित्सा, कुर्यात् उरवी करे, पित्तानुबन्धयोः पित्तानुबन्धवाणा पित्तके अनुबन्धयुक्त, वातकफयोः वात अने उद्भूती वात और कफकी, पित्तनाशिनीम् पित्तनाशक चिकित्सा उरवी पित्तनाशक चिकित्सा करे ॥ १३२ ॥

132. If cough due to vata provocation gets associated with kapha morbidity, the line of treatment should be one that is curative of kapha. If cough due to provocation of vata and kapha, gets associated with morbid pitta, the line of treatment should be one that is curative of pitta.



आर्द्रं विरुक्षणं, शुष्के स्निग्धं, वातकफात्मके ।  
कासेऽन्नपानं कफजे सपित्ते तिक्तसंयुतम् ॥१३३॥  
इति कफजकासचिकित्सा ।

वातकफात्मके वातकफात्मके वातकफात्मके, आर्द्रं कासे धृष्टा कृशवाणी उधरसर्मा बहुत कफवाले कासमें, विरुक्षणम् रक्ष रुक्ष. शुष्के अने कृश वगैरनी उधरसर्मा और कफरहित कासमें, स्निग्धम् स्निग्ध स्निग्ध, सपित्ते कफजे तथा पित्तसहित कृशवन्त्य उधरसर्मा और पित्तयुक्त कफज कासमें, तिक्तसंयुतम् तिक्तद्रव्यसहित तिक्तद्रव्ययुक्त, अन्नपानम् अन्नपान आपपुं अन्नपान देवे ॥ १३३ ॥ इति आ. यह, कफज-कास-कृशवन्त्य उधरसर्मा कफज कासकी, चिकित्सा चिकित्सा है ।

133. If the cough due to provocation of vata and kapha is associated with excessive secretion of phlegm, the desiccant line of treatment should be given. If there is dry cough the unctuous medicaments should be prescribed. If the cough due to kapha provocation is associated with morbid pitta, the patient should be given eats and drinks mixed with bitter drugs. Thus has been described the treatment indicated in cough due to kapha provocation.

क्षतजसे चिकित्साक्रमः —

कासमात्ययिकं मत्वा क्षतजं त्वरया जयेत् ।  
मधुरैर्जीवनीयैश्च बलमांसविवर्धनैः ॥१३४॥

क्षतजम् क्षतवन्त्य क्षतज. कासज् उधरसर्मा कासको, आत्ययिकम् विनाशकारक खतरनाक, मत्वा अक्षुण्णिने मानकर. बल-मांस-अथ तथा मांसने बल और मांसको, विवर्धनैः वधारेनामा बढ़ानेवाले, मधुरैः मधुर मधुर, जीवनीयैः च अने जीवनीय पदार्थोत्थी और जीवनीय द्रव्योंसे, त्वरया शीघ्र शीघ्र, जयेत् जिते ॥ १३४ ॥

134. Knowing the cough due to pectoral lesions to be an urgent condition, it should be treated with all promptness with drugs of the sweet group as well as of the life-promoter group which are promotive of strength and flesh.

पिप्पल्यादिलेहः —

पिप्पली मधुकं पिष्टं कार्षिकं ससितोपलम् ।  
प्रास्थिकं गव्यमाजं च क्षीरमिश्रुरसस्तथा ॥१३५॥  
यवगोधूममृद्धीकाचूर्णमामलकाद्रसः ।  
तैलं च प्रसृतांशानि तत् सर्वं मृदुनाऽग्निना ॥१३६॥  
पचेत्लेहं घृतक्षौद्रयुक्तः स क्षतकासहा ।  
श्वासहृद्रोगकाश्येषु हितो वृद्धेऽल्परेतसि ॥१३७॥

पिप्पली पीपर पिप्पली, ससितोपलम् साकर-सहित चीनी, मधुकम् गेडीमधु मुलहठी, कार्षिकम् प्रत्येकने ओके ओके तोला प्रत्येक एक एक तोलाका, पिष्टम् कट्ठ कल्क, प्रास्थिकम् ६४ तोला ६४ तोले, गव्यम् गायुं गौका, आजम् च अने अडरीनुं और बकरीका, क्षीरम् दूध दूध, तथा तथा तथा, इक्षुरसः ६४ तोला शेरडीने रस ६४ तोले ईश्वका रस, यव-अवने दोट जौका आटा, गोधूम-अडने दोट गेहूँका आटा, मृद्धीका-चूर्णम् ६६६ मुनकेका कल्क, आमलकात् आमलाने आंवलेका, रसः रस रस, तैलम् च अने तेक्ष और तैल, प्रसृतांशानि दरेक ८ तोला प्रत्येक ८ तोले, तत् सर्वम् ओ अक्षुण्णिने सबको, मृदुना मधु मन्द, अग्निना अक्षुणी आंचसे, लेहम् लेह अणुं थाय तथा सुधी लेह होनेतर, पचेत् पकावपुं पकावे, घृत-क्षौद्र-घी तथा मधु वी और मधु, युक्तः भेगवेक्ष युक्त, सः ते अपवेक्ष वह लेह, क्षतकासहा क्षतवन्त्य उधरसर्मा नाश करे छे क्षतज कासका नाशक है, श्वास-हृद्रोग-श्वास, हृद्रोग-श्वास, हृद्रोग, काश्येषु

१३६ आमलकाद्रस-आमलकीरसः (म.)

१३७ काश्येषु कासेषु (त.)

वृद्धेऽल्परेतसि-वृद्धेऽल्परेतसे (घ.)

वृद्धेऽल्परेतसे (घ.)

अने कृशताभा और कृशतामें, वृद्धे अने वृद्ध पुरुषने और वृद्ध पुरुषको, अल्परेतसि तथा अल्प वीर्यवाला पुरुषने तथा अल्प वीर्यवाले पुरुषको, हितः हितकारी छे हितकर है ॥ १३५-१३७ ॥

135-137. Take one tola of the paste of each of long pepper, liquorice and sugar-candy, 64 tolas of each of cow's milk, goat's milk and juice of sugar cane, 8 tolas of each of the flour of barley and wheat and powder of grapes, juice of emblic myrobalan and til oil. Mix the whole and boil on a slow fire and cook it into a linctus and take it with ghee and honey. This linctus is curative of cough due to pectoral lesions, dyspnea, heart-disease and emaciation; it is also beneficial in senility and oligospermia

आवस्थिकी चिकित्सा—

क्षतकासाभिभूतानां वृत्तिः स्यात् पित्तकासिकी । क्षीरसर्पिर्मधुप्राया संसर्गे तु विशेषणम् ॥ १३८ ॥

क्षतकास- क्षतकासना क्षतज काससे, अभिभूतानाश्च रेण्वीनी पीडितोंकी, वृत्तिः चिकित्सा चिकित्सा, पित्तकासिकी पित्तजन्य उधरसंगेवी पित्तकास जैसी, क्षीर- तथा दूध तथा दूध, सर्पिः-मधु-प्राया धृत अने मधुनी प्रधानतावाणी ची और मधुकी प्रधानतावाली, स्यात् करवी होती है, संसर्गे तु अने दोषोने संसर्ग होय तो और दोषोंका संसर्ग होने पर, विशेषणम् विशेष चिकित्सा करनी चाहिए ॥ १३८ ॥

138 In cases of cough due to pectoral lesions the line of treatment to be followed is the same as that laid down in cases of cough due to pitta provocation. The treatment mainly consists of milk, ghee and honey. If, however, the cough due to pectoral

lesions is complicated by other morbid humors, this line of treatment should be supplemented by remedies indicated in such conditions.

वातपित्तादितेऽभ्यङ्गो गात्रमेदे घृतैर्हितः ।

तैलैर्मारुतरोगघ्नैः पीड्यमाने च वायुना ॥ १३९ ॥

वातपित्त- वातपित्तथी वातपित्तसे, अदिते पीडिता रेण्वीनी पीडित रोगीके, गात्रमेदे गात्रमेद तथा अंगमेद होने पर, घृतैः घृतथी घृतोंसे, वायुना च अने वायुधी और वायुसे, पीड्यमाने पीडा भती होय तो पीडा होने पर, मारुतरोगघ्नैः वातघ्न वातरोगनाशक, तैलैः तैलोथी तैलोंसे, अभ्यङ्गः हितः अभ्यङ्ग हितकारी छे अभ्यङ्ग हितकर है ॥ १३९ ॥

139. If the patient is afflicted with body-ache due to vata and pitta, inunction with ghee is beneficial. In afflictions due to vata provocation, the medicated oils prepared with the drugs which are curative of vata are prescribed.

हृत्पार्श्वार्तिषु पानं स्याज्जीवनीयस्य सर्पिषः ।

सदाहं कासिनो रक्तं घृवतः सबलेऽनले ॥ १४० ॥

सदाहम् दहसहित दाहयुक्त, रक्तम् रक्त रक्त, घृवतः थूकता थूकनेवाले, कासिनः उधरसना रेण्वीने। खांसीवाले रोगीकी, अनले अग्नि अग्नि, सबले अदीप्त होय तो बलवान होने पर, हृत्-पार्श्व- हृत् तथा पार्श्वानी हृदय और पार्श्वके, अतिषु पीडाभां शूलमें, जीवनीयस्य जीवनीय जीवनीय, सर्पिषः घृतनुं चीका, पानम् स्यात् पान करनुं पान करना चाहिए ॥ १४० ॥

140. If the patient with cough due to pectoral lesions suffers from pain in the cardiac region, pleurodynia and cough accompanied with burning and hemoptysis, and if the condition of his gastric fire is strong, he should be given a potion of the compound life-promoter drugs ghee.

मांसोचितेभ्यः क्षामेभ्यो लावादीनां रसा हिताः ।  
तृष्णार्तानां पयश्छागं शरमूलादिभिः शृतम् १४१

मांसोचितेभ्यः मांसना अभ्यासवाणा मांसके  
सात्म्यवाले, क्षामेभ्यः क्षीण अथवा रोगीभ्योने क्षीण  
पुरुषोंके लिए, लावादीनाम् लाव धत्यादिना लावादिकोंके,  
रसाः मांसरसो मांसरस, हिताः हितकारी छे हितकर  
हैं, तृष्णार्तानाम् तृषाथी पीजता रोगीभ्योने प्याससे  
पीड़ितोंको, शरमूलादिभिः शरमूला धत्यादिथी शरमूलादि  
पंचतृणमूलसे, शृतम् सिद्ध करेयुं सिद्ध किया हुआ, छागम्  
भक्षरीतुं बकरीका, पयः दूध हितकारी छे दूध हितकारी  
है ॥ १४१ ॥

141. For emaciated patients who  
are accustomed to a meat-diet, the  
meat-juices of the quail group of cre-  
atures is beneficial. If the patient is  
afflicted with excessive thirst, medicated  
milk prepared from goat's milk with  
roots of the drugs of the pen-reed  
group should be prescribed.

रक्ते स्रोतोभ्य आस्याद्वाऽप्यागते क्षीरजं घृतम् ।  
नस्यं पानं यवागूर्वा भ्रान्ते क्षामे हतानले ॥१४२॥

स्रोतोभ्यः स्रोतोभांथी स्रोतोसे, अपि वा आस्याद्  
के भुभभांथी या मुखमेंसे, रक्ते रक्ताक्षी रक्त, आगते  
आवतुं होय तो आने पर, क्षीरजम् दूधभांथी काढेयुं  
दूधसे निकाला हुआ, घृतम् घीतुं घीका, नस्यम् पानम्  
नस्य तथा पान हितकर छे नस्य तथा पान हितकर है,  
भ्रान्ते अने थाडेका और थके हुए, क्षामे कृश कृश, हतानले  
तथा भ्रंशजिवाणा क्षतज कासना रोगीने मन्दाग्निवाले  
क्षतज कासके रोगीको, यवागूः वा यवागू हितकर छे  
यवागू हितकर है ॥ १४२ ॥

142. If there is hemorrhage through  
the mouth or any other of the chann-  
els, the patient should be given an  
errhine or potion of the ghee prepared

१४१. क्षामेभ्यो-कासिभ्यो (ड.)

॥ छागं-आमं (त.)

directly from milk; and if the patient  
is exhausted, emaciated and suffers from  
impaired gastric fire, he should be  
treated with gruel.

स्तम्भायामेषु महतीं मात्रां वा सर्पिणः पिबेत् ।  
कुर्याद्वा वातरोगघ्नं पित्तरक्ताविरोधि यत् ॥१४३॥

स्तम्भ- स्तम्भवाली स्तंभ आशामेषु तथा आशामर्मां  
तथा आशामर्मे, सर्पिणः घृतनी वीर्य, महतीम् मोटी  
जड़ी, मात्राय पिबेत् मात्रा पीवी मात्रा पीवे, यत् वा  
अथवा अथवा जो, वातरोगघ्नम् वातरोगनाशक  
होय वातरोगनाशक हो, पित्त-रक्त- परंतु पित्त तथा  
रक्तने परन्तु पित्त और रक्तको, अविरोधि यथाधरनारी  
न होय अथवा विहितता बढ़ानेवाली न हो ऐसी चिकित्सा,  
कुर्यात् करवी करे ॥ १४३ ॥

143. In the case of stiffness or  
contractions, the patient should be  
given a large dosage of ghee or in the  
alternative he should be given the  
treatment curative of diseases due to  
vata and which is at the same time  
not contra-indicated in hemothermic  
conditions.

धूमयोगाः —

निवृत्ते क्षतदोषे तु कफे वृक्ष उरः क्षते ।

दाह्यते कासिनो यस्य स धूमाश्चापिबेदिमान् १४४

क्षतदोषे क्षतस्थ दोष क्षतदोषके, निवृत्ते तु  
निवृत्त अथवा होय निवृत्त होजाने पर, कफे-वृक्षे अने  
कफ वृद्धि पाभ्यो होय तयारे और कफके बढ़ने पर,  
यस्य कासिनः अथवा उधरसना रोगीने जिस खांसीवाले  
रोगीके, क्षते क्षतभा क्षतमें, उरः दाह्यते छाती थिराती

१४४ उरः क्षते उरः क्षितः (व. ध.)

॥ दाह्यते-दाह्यते (व.)

॥ ॥ -जीव्यते (ध.)

॥ ॥ -चाह्यते (फ.)

॥ ॥ -पीड्यते (फ.)

होय ओवी पीडा थाय छे छातीमें दखेकी तरह पीडा होती है, सः ना ते भनुष्ये वह पुरुष, इमान् आ. छेवाभां आवनार। इन कहे जानेवाले, धूमन् धूमेनु धूमोको, पिबेत् पान करुं पीवे ॥ १४४ ॥

144. If the patient suffering from cough is cured of the pectoral lesions but if owing to the provocation of kapha there is aching in the chest or head, the patient should inhale the fumes of the following drugs.

द्विमेदादिधूमवर्तिः—

द्वे मेदे मधुकं द्वे च बले तैः क्षौमलककैः ।  
वर्तितैर्धूममापीय जीवनीयघृतं पिबेत् ॥१४५॥

द्वे मेदे मेदा, महामेदा मेदा, महामेदा, मधुकम् मेदीमधु मुलहठी, द्वे च बले अला, अतिअला बला, अतिबला, तैः तेओथी इनसे, वर्तितैः द्वेप करवाभां आवेला अने सूकाया पछी पीडी अनाववाभां आवेला लिम और सूख जाने पर वर्ति किये गवे, क्षौमलककैः क्षौमना टुकडाओथी क्षौम वखके टुकडोंसे, धूमम् धूमनुं धूम, आपीय पान करीने पान करके, जीवनीयघृतम् अजीवनीयघृत जीवनीयघृत, पिबेत् पीपुं पीवे ॥१४५॥

145. Take two types of medas, liquorice, sida and country mallow. The paste of these should be smeared on a cloth of linseed and when dried, a cigar should be made of it and then it should be smoked. After smoking the patient may drink the medicated ghee of the drugs of the life-promoter group.

मनःशिलापलाशाजगन्धात्वक्क्षीरिनागरैः ।  
भावयित्वा पिबेत् क्षौममनु चेक्षुगुडोदकम् ॥१४६॥

१४५. क्षौमलककैः—क्षौमलककैः (५)

१४६. अनुचेक्षुगुडोदकम्—शर्करेक्षुगुडोदकम् (६.)

“ “ “—ससितेक्षुगुडोदकम् (६.)

मनःशिला- मनःशिला मैनसिल, पलाश- आभरे। टाक, अजगन्धा- आङ्गी डुकु, त्वक्क्षीरि- वंशक्षीरन वंशलोचन, नागरैः अने संधी और सोंठ इनसे, क्षौमम् क्षौम वखने क्षौम वखको, भावयित्वा भावना दधिने भावना देकर, पिबेत् धूमपान करुं धूमपान करे, अनु च अने ते पछी और पश्चात्, हेक्षु-गुडोदकम् शेर-डीने रस अथवा ओखनुं पाली ईखका रस या गुडका पानी, पिबेत् पीपुं पीवे ॥ १४६ ॥

146. Or, the patient may smoke the cigar rolled from the cloth of linseed impregnated with red arsenic, palas, wild carrot, bamboo manna and dry ginger. After smoking, the patient may drink the juice of sugar-cane or gur-water

पिष्टा मनःशिलां तुल्यामार्द्रया वटशुक्रया ।  
ससर्पिष्कं पिबेद्भूमं तित्तिरिप्रतिभोजनम् ॥१४७॥

आर्द्रया लीला गीले, वटशुक्रया वडना अंडुरेथी वटांकुरोंके तुल्याम् सरपे वखने समान भागमें, मनः-शिलाम् मनःशिलाने मैनसिलको, पिष्टा वाटीने पीसकर, ससर्पिष्कम् घृतसहित घृत मिलाकर, धूमम् पिबेत् धूमपान करुं धूमपान करे, तित्तिरि-प्रतिभोजनम् पछी तेतरना भांसरसथी ओखन करुं पश्चात् तीतरके मांसरससे भोजन करे ॥ १४७ ॥

147. Or, the patient may smoke a cigar made of pounded red arsenic and fresh sprouts of banyan, and mixed with honey. After smoking, he may take the meat-juice of partridge.

भावितं जीवनीयैर्वा कुलिङ्गाण्डरसायुतैः ।  
क्षौमं धूमं पिबेत् क्षीरं शृतं चायोगुडैरनु ॥१४८॥

इति क्षतजकासचिकित्सा ।

कुलिङ्ग-अण्ड- अंडवाना अंडाना चिड़ियांके अंडोंके, रसायुतैः रसथी युक्त रससे युक्त, जीवनीयैः अजीवनीय अखुना द्रव्योंना कवाथथी जीवनीयोंक औषधियोंसे,

भावितम् आपना दधि भावित, क्षौमम् क्षौम वस्त्रेणा  
क्षौम वस्त्रके, धूमम् पिबेत् धूमपुं पानं कुरुं धूमका  
पानं करे, अनु च अने पछी और पश्चात्, अयोगुदैः  
दोढाना जोषाने तपावी तपावी क्षरीने लोहेके  
गोलको तपा तपाकर बुझानेसे, शृतम् क्षीरम् उडाले  
दूध पीवुं उवाला हुआ दूध पीवे ॥ १४८ ॥ इति आ  
यह, क्षतज- क्षतज क्षतज, कासचिकित्सा उधरसनी  
चिकित्सा छे कासकी चिकित्सा है ।

148. Or, the patient may smoke a  
cigar made of the cloth of linseed  
impregnated with the drugs of the  
life-promoter group and the juice of  
the eggs of sparrow. After smoking,  
he may drink milk heated with hot  
iron balls put into it. Thus has been  
described the treatment in cough due  
to pectoral lesions.

क्षयकासे चिकित्साक्रमः —

संपूर्णरूपं क्षयजं दुर्बलस्य विवर्जयेत् ।

नवोत्थितं बलवतः प्रत्याख्यायाचरेत् क्रियाम् १४९

दुर्बलस्य दुर्बल शरीरनी दुर्बल पुरुषमें, संपूर्णरूपम्  
संपूर्ण लक्षणोंवाली संपूर्ण लक्षणोंसे युक्त क्षयजम्  
क्षयजन्य उधरसनी क्षयज कासकी, विवर्जयेत्  
चिकित्सा न करवी चिकित्सा न करे, बलवतः भग-  
वाननी बलवान पुरुषके, नवोत्थितम् नवी उत्पन्न  
भयेक्ष क्षयनी उधरसनी नवोत्पन्न क्षयकासकी, प्रत्याख्याय  
तेने असाध्य जखानी उसे असाध्य कहकर, क्रियाम्  
चिकित्सा चिकित्सा, आचरेत् करवी करे ॥ १४९ ॥

149. The patient suffering from  
cough born of consumption with all the  
symptoms of consumption fully deve-  
loped, and who is debilitated should be  
considered incurable; but if the cough  
is of recent origin and the patient  
is strong, the treatment should be

undertaken despite declaring it to be  
of the incurable type.

तस्मै बृंहणमेवादौ कुर्यादग्नेश्च दीपनम् ।

बहुदोषाय सखेहं मृदु दद्याद्विरेचनम् ॥१५०॥

आदौ प्रथम प्रथम, तस्मै तेनी उसकी, बृंहणम्  
एव अंगुलु बृंहण, अग्नेः च दीपनम् तथा अग्निदीपन  
चिकित्सा तथा अग्निदीपन चिकित्सा, कुर्यात् करवी करे,  
बहुदोषाय धन्युः दोषनाशने शरीरने बहुत दोषयुक्त  
रोगीको, सखेहम् रनेक्षयुक्त खेहयुक्त, मृदु मृदु मृदु,  
विरेचनम् विरेचन विरेचन, दद्यात् आपवुं देवे ॥१५०॥

150. Such a patient should first  
of all be administered medications  
which are roborant and promotive of  
the gastric fire; and if he shows much  
morbidity, he should be given a mild  
unctuous purgative.

शम्पाकेन त्रिवृतया मृद्वीकारसयुक्तया ।

तिस्त्वकस्य कषायेण विदारीस्वरसेन च ॥१५१॥

सर्पिः सिद्धं पिबेद्युक्तया क्षीणदेहो विशोधनम् ।  
(हितं तद्देहबलयोरस्य संरक्षणं मतम् ॥१५२॥)

क्षीणदेहः क्षीण देहवालाको क्षीण देहवाला पुरुष,  
शम्पाकेन गरमागो असक्ततासे, मृद्वीका-रस-युक्तया  
शिक्षना रससहित मुनकेके रससे युक्त, त्रिवृतय  
नसोत्तरथी त्रिवृतसे, तिस्त्वकस्य तिस्त्वकना तिस्त्वकके,  
कषायेण कषाथथी कषायसे, विदारी- अने इगियाना  
और बिलाईकन्दके, स्वरसेन च स्वरसथी स्वरससे,  
सिद्धम् सिद्ध करेक्ष सिद्ध, विशोधनम् विशोधन कर-  
नापुं विशोधन करनेवाला, सर्पिः धृत दूत, युक्तया  
युक्तिथी युक्तिपूर्वक, पिबेत् पीवुं पीवे, तत् ते वह,  
अस्य देहबलयोः अना शरीर तथा भगवुं उसके देह  
और बलका, संरक्षणम् संरक्षक संरक्षक, हितम् मतम्  
तथा हितकारक मानेक्ष छे तथा हितकारक माना गया  
है ॥ १५१-१५२ ॥

१५०. तस्मै बृंहण-तथा बृंहण (ध.)

,, दीपनम्-वर्धनम् (व.)

151-152. For the purpose of purification of the debilitated patient, the medicated ghee prepared with purging cassia turpeth, juice of grapes, decoction of tilwaka and juice of yam should be given to drink with due consideration to the condition of the patient. This ghee is good for the body as well as for the vitality and is considered to be protective of the patient.

पित्ते कफे च संक्षीणे परिक्षीणेषु धातुषु ।

घृतं कर्कटकीक्षीरद्विबलासाधितं पिबेत् ॥१५३॥

पित्ते कफे पित्त तथा कफ पित्त और कफ, संक्षीणे क्षीण यत्ना अत्यंत क्षीण होने पर, धातुषु अने धातुओं और धातुओंके, परिक्षीणेषु अत्यंत क्षीण यत्ना अत्यंत क्षीण होने पर, कर्कटकी- काकडासिंही, क्षीर- दूध दूध, द्विबला- बला अने अतिबलाधी बला और अतिबला इनसे, साधितम् सिद्ध करेखुं साधित, घृतम् पिबेत् घृत पीवुं घी पीवे ॥ १५३ ॥

153. The medicated ghee prepared with cow's milk, galls, milk, sida and country mallow should be given to the patient as potion when there is a diminution of pitta, kapha and other body-elements.

विद्वारीभिः कदम्बैर्वा तालसस्यैस्तथा शृतम् ।

घृतं पयश्च मूत्रस्य वैवर्ण्यं कृच्छ्रनिर्गमे ॥१५४॥

तथा तेभ्य तथा, मूत्रस्य मूत्रनी मूत्रकी, वैवर्ण्यं विवर्ण्यतामा विवर्ण्यतामे, कृच्छ्रनिर्गमे तथा मूत्र मुश्केलीथी नीकण्ठं हृद्य त्वां और मूत्र कष्टसे बाहर आता हो तब, विद्वारीभिः इगियाथी बिलाईकन्द, कदम्बैः कदम्बी कदम्ब, तालसस्यैः ताडनी इक्षथी ताडफल इनसे, शृतम् सिद्ध करेख सिद्ध किये हुए,

१५४. घृतं—शृतं (व.)

घृतम् पयः च वा पिबेत् वी अथवा दूध पीवुं वी अथवा दूध पीवे ॥ १५४ ॥

154. If there is discoloration of the urine and painful micturition, the patient should be given the medicated ghee or milk prepared with white teak, cadamba and fruit of palmyra palm.

शूने सवेदने मेद्रे पायौ सश्रोणिबंधणे ।

घृतमण्डेन मधुनाऽनुवास्यो मिश्रकेण वा ॥१५५॥

जाङ्गलैः प्रतिभुक्तस्य वर्तकाद्या विलेशयाः ।

क्रमशः प्रसहाश्चैव प्रयोज्याः पिशिताग्निनः ॥१५६॥

मेद्रे मूत्रेऽपि मूत्रेऽपि, सश्रोणि- कटी श्रोणीप्रदेश, बंधणे वंक्षणे वंक्षणे, पायौ तथा गुदाभां तथा गुदामें, सवेदने वेदना वेदना, शूने तथा स्रोतो ह्रोत्रे त्वां तथा शोक होने पर, घृतमण्डेन घृतमंडली वीकी तरीसे, मधुना मधुनी मधुसे, मिश्रकेण वा ३ मिश्रक- रनेहथी या मिश्रकस्नेहसे, अनुवास्यः अनुवासन करवुं अनुवासन देवे, जाङ्गलैः अनुवासन पछी जंगल प्राणुलीओना मांसरसोत्थी अनुवासनके पश्चात् जंगल जीवोंके मांससे, प्रतिभुक्तस्य भोजने भोजन किये के ओवा रोगीने भोजन किये रोगीकी, वर्तकाद्याः वर्तक पत्रों बटेर आदि, विलेशयाः विलेशय विलमें रहनेवाले, पिशिताग्निनः तथा मांसभक्षक और मांसाहारी, प्रसहाः च एव प्रसह प्राणुलीओना मांसरसोत्थी प्रसह जीवोंके मांसरसोंका, क्रमशः क्रमशः क्रमशः, प्रयोज्याः प्रयोग करेख प्रयोग करे ॥ १५५-१५६ ॥

155-156 Or, in cases of painful edema of the phallus, anus, buttocks and groin, the patient should be given an unctuous enema prepared with supernatant part of ghee or with the mixture of ghee and oil. This should be followed by a diet of meat-juices of the jangala animals. Thereafter the patient may eat in regular

१५५ मधुना—मधुना (व. व.)



succession the meat-juices of the quail group of birds, of the terriculous group of creatures and of the carnivorous creatures belonging to the tearer group.

औष्ण्यत् प्रमाथिभावाच्च स्रोतोभ्यश्चययन्ति तेः  
कफं, शुद्धैश्च तैः पुष्टिं कुर्यात्सम्यग्बह्व्रसः ॥१५७॥

ते ते वे, औष्ण्यत् गरम उष्ण, प्रमाथिभावात्  
तथा प्रमाथी होनाथी और प्रमाथी होनेके कारण,  
स्रोतोभ्यः स्रोतोभाथी स्रोतोसे, कफम् उद्धने कफको,  
व्यावयन्ति डाढी नाभे से निकालते हैं, शुद्धैः च अने  
शुद्ध थयेल और शुद्ध हुए, तैः ते स्रोतोद्वारा इन  
स्रोतोद्वारा, सम्यक् सारी रीते अच्छी तरह बहन्  
पड़ेते। बहता हुआ, रसः रस रस, पुष्टिम् कुर्यात्  
पुष्टि करे से पुष्टि करता है ॥ १५७ ॥

157. As the meat-juices are hot in  
potency and expulsive of secretions they  
expel the phlegm from the channels;  
and after the purification of the chan-  
nels by them, the nutrient fluid,  
flowing properly, nourishes the body.

द्विपञ्चमूलादिघृतम्—

द्विपञ्चमूलीत्रिफलाचविकाभार्गिचित्रकैः ।

कुलत्थपिप्पलीमूलपाठाकोलयवैर्जले ॥१५८॥

शृतैर्नागरदुःस्पर्शापिप्पलीशटिपौष्करैः ।

कल्कैः कर्कटशृङ्गया च समैः सर्पिर्विपाचयेत् १५९

सिद्धेऽस्मिन्मूर्गितौ क्षारौ द्वौ पञ्च लवणानि च ।

दत्त्वा युक्त्या पिबेन्मात्रां क्षयकासनिपीडितः ॥१६०

इति द्विपञ्चमूलादिघृतम् ।

जले शृतैः पाण्डुभिः कराथ करेण पानीमें पकाये  
हुए, द्विपञ्चमूली- लघु तथा शूदत् पंचमूल दोनो पंच

१५८. कफ शुद्धैश्च तैः पुष्टिम्—कफे शुद्धे अनेः पुष्टिम् (क.)

१५८. द्विपञ्चमूलीत्रिफलाचविकाभार्गिचित्रकैः—चविकात्रिफलाभार्गि.

दशमूलैः सचित्रकैः (क.)

१५९. पिप्पलीशटिपौष्करैः—शटिपौष्करपिप्पलीः (क.)

मूल, त्रिफला- त्रिफला त्रिफला. चविका- यवउ चव्य,  
भार्गी- भारंगी भारंगी चित्रकैः चित्रक चित्रक,  
कुलत्थ- कुलथी कुलथी, पिप्पलीमूल- पीपरीमूलना  
गठेडा पिप्पलीमूल, पाठाकोल- पाठा, जेवर पाड़ी, बेर,  
यवैः अने जवथी और जौ इनसे. नागर- शूठ सोंठ,  
दुःस्पर्शा- अभासो धमासा, पिप्पली- पीपरी पिप्पली,  
शटि- पट्ठयूरे कचूर, पौष्करैः पोअरमूल पोअरमूल,  
कर्कटशृङ्गया च अने डाकडाश्रींगीना और काकडासिंगी,  
समैः कल्कैः से इरेडना समान इरेडथी इनके समभाग  
कल्कसे, सर्पिः घृत घी, विपाचयेत् पकावतुं पकावे,  
अस्मिन् सिद्धे तैयार थयेल अनेभां सिद्ध हुए इसमें,  
मूर्गितौ द्वौ क्षारौ यूर्गु करेण जवआर तथा साठ-  
आर चूर्ण किये हुए यवक्षार और सर्जिक्षार, पञ्चलवणानि  
च अने पांच लवण और पांचों नमक, युक्त्या दत्त्वा  
युक्तिथी नाभीने युक्तिपूर्वक मिलाकर, क्षय-कास-  
क्षयज्वर-य उधरसथी क्षयकाससे निपीडितः पीडाता मनुष्ये  
पीडित पुरुष, मात्राम मात्रानुसार योग्यमात्रामें, पिबेत्  
पीवुं पीवे ॥१५८-१६०॥ इति आ यह, द्विपञ्चमूलादि-  
घृतम् द्विपञ्चमूलादिघृत अने द्विपञ्चमूलादिघृत है।

158-160. Prepare a medicated ghee  
by cooking ghee in the decoction of the  
two varieties of penta-radices, the three  
myrobalans, chabba pepper, beetle killer,  
white-flowered leadwort, horse-gram,  
root of long pepper, patha, jujube and  
barley, with the paste of equal parts of  
dry ginger, cretan prickly clover, long  
pepper, long zedoary, orris root and  
galls. When this ghee is prepared the  
two varieties of alkalis and the five  
varieties of salts should be added to  
it. The patient suffering from cough  
due to consumption may take this ghee  
in proper dosage and according to  
the prescribed mode. Thus has been  
described the Compound double Penta-  
radices Ghee.



गुडूच्यादिघृतम्—

गुडूचीं पिप्पलीं मूर्वा हरिद्रां श्रेयसीं वचाम् ।  
निदिग्धिकां कासमर्दं पाठां चित्रकनागरम् ॥१६१॥  
जले चतुर्गुणे पक्त्वा पादशेषेण तत्समम् ।  
सिद्धं सर्पिः पिबेद्गुल्मश्वासार्तिक्षयकासनुत् ॥१६२॥  
इति गुडूच्यादिघृतम् ।

गुडूचीम् गजैः मिलोय, पिप्पलीम् पीपर पिप्पली  
मूर्वाम् मेरवेक्ष मूर्वा, हरिद्राम् ६७६२ इत्दी, श्रेयसीम्  
गजपीपर गजपिप्पली, वचाम् वज्र वच, निदिग्धिका  
भेडी बोरीगण्डी कटेरी, कासमर्दम् डालूद्रो कधौरी,  
पाठाम् पाठा पाठी, चित्रक- चित्रक चित्रक, नागरम् अने  
सूँठ और सोंठ इनका, चतुर्गुणे जले चारगुणा पाण्डुभां  
चौगुणे जलमें, पक्त्वा क्वाथ करी काय करके, पादशेषेण  
अर्धश भांडी रहेला क्वाथभी चौथाई शेष कायसे,  
तत्समम् तेना गेटुं इसके समान भागमें, सिद्धम्  
सिद्ध करेहुं सिद्ध किया हुआ, गुल्म-श्वास- गुल्म, श्वास  
गुल्म, श्वास, अतिक्षय- पीडा अने क्षयजन्य पीडा और  
क्षयसे उत्पन्न, कासनुत् छिन्नसने नाश करनेवाला कासका  
नाशक, सर्पिः धी धी, पिबेत् पीवुं पीवे ॥ १६१-१६२ ॥  
इति अ। यह, गुडूच्यादिघृतम् गुडूच्यादि घृत छे  
गुडूच्यादि घृत है।

161-162. Decoct equal quantities  
of guduch, long pepper, trilobed vir-  
gin's bower, turmeric, white teak, sweet  
flag, indian night-shade, round podded  
cassia, patha, white-flowered leadwort  
and dry ginger in four times the qua-  
ntity of water and when it is reduced  
to 1/4 its original quantity, prepare  
a medicated ghee by adding an equal  
quantity of cow's ghee to this. This  
ghee is curative of gulma, respiartoy  
disorders, consumption and cough.  
Thus has been described the Compound  
Guduch<sup>3</sup> Ghe .

कासमर्दादिघृतम्—

कासमर्दाभयामुस्तपाडाकटफलनागरैः ।  
पिप्पलीकटुकाद्राक्षाकाशमर्यसुरसैस्तथा ॥१६३॥  
अक्षमात्रैर्घृतप्रस्थं क्षीरद्राक्षारसाढके ।  
पचेच्छोषज्वरप्लीहसर्वकासहरं शिवम् ॥१६४॥

कासमर्द- डालूद्रो कसौरी, अभया- ६२३ हरड़,  
मुस्त-पाठा- मोथ, पाठा मोथा, पाठी, कटफल- डायङ्ग  
कटफल, नागरैः सूँठ सोंठ, तथा तथा तथा, पिप्पली- पीपर  
पिप्पली, कटुका-द्राक्षा- डूँ, द्राक्ष कटुकी, मुनका, काशमर्य-  
शीवखुना इण गम्भारीके फल, सुरसैः तुलसी तुलसी,  
अक्षमात्रैः छे छे छे छे छे छे छे छे छे छे छे छे छे छे छे छे छे  
तोला, क्षीर-द्राक्षा- दूध तथा द्राक्षना दूध और मुनकाके,  
रसाढके २५६ तोला २५६ तोले रसमें, घृत-  
प्रस्थम् घृत ६४ तोला धी ६४ तोले, पचेत् पकावतुं  
पकावे, (तत् घृतम्) छे घृत यह घृत, शोष-ज्वर-  
शाथ, ज्वर शोष, ज्वर, प्लीह-सर्वकास- प्लीहा तथा  
सधणी छिन्नसने प्लीहा और सब प्रकारके कासोंका,  
हरम् हर करनेवाला नाशक, शिवम् अने कल्याणकारी छे  
और कल्याणकारी है।

163-164. Prepare a medicated ghee from  
256 tolas of each of milk and the juice  
of grapes. and 64 tolas of cow's ghee  
along with the paste of one tola each of  
round podded cassia, chebulic myro-  
balan, nut-grass, patha, box myrtle, dry  
ginger, long pepper, kurroa, grapes,  
white teak and deodar. This ghee is  
auspicious and curative of consumption,  
fever, splenic disorders and all types  
of cough-disorder.

अतिपयघृतयोगः—

धान्रीफलैः क्षीरसिद्धैः सर्पिर्वाऽप्यवचूर्णितम् ।  
द्विगुणे दाडिमरसे विपकं व्योषसंयुतम् ॥१६५॥  
पिबेदुपरि भक्तस्य यवक्षारघृतं नरः ।  
पिप्पलीगुडसिद्धं वा जागक्षीरयुतं घृतम् ॥१६६॥

क्षीरसिद्धैः दूधमां भाड़ेला दूधमें पकाये हुए, धात्रीफलैः आमलोंजुं आवलोंका, अवचूणितम् सर्पिः यूर्षु नाथीने धी पीजुं चूर्ण डालकर घृत् पीवे, द्विगुणे वा अथवा अमल्ला अथवा दुग्ने, दाडिमरसे दाडिमना रसमां अनारके रसमें, ज्योषसंयुतम् त्रिफलसहित त्रिकटुसहित, विषकम् यवक्षार-घृतम् पकावेला धीमां जवपार नाथी पकाये हुए धीमें यवक्षार डालकर, नरः पुत्रुषे पुरुष भक्तस्य उपरि कोज्ज् उपरि भोजनके पीछे, पिबेत् ते पीजुं उसे पीवे, पिप्पली- अथवा पीपर अथवा पिप्पली, गुडसिद्धम् वा अने गोणथी सिद्ध करेहुं और गुडसे सिद्ध, घृतम् धी धी, छागक्षीरयुतम् अक्षरीना दूधसहित धीजुं बकरीके दूधके साथ पीवे ॥ १६५-१६६ ॥

165 166. The patient may take ghee prepared with milk, sprinkled over with the powder of the emblic myrobalans or he may take the medicated ghee prepared from two parts of ghee and one part of the juice of pomegranate along with the paste of the three spices. This ghee should be taken mixed with barley-alkali immediately after food, or he may take the medicated ghee prepared with long pepper and gur mixed with goat's milk.

एतान्यग्निविबुद्धयर्थं सर्पीषि क्षयकासिनाम् ।  
स्फुटोषबद्धकोष्ठोरःस्रोतसां च विशुद्धये ॥ १६७ ॥

एतानि आ ये, सर्पीषि धृता धी, क्षय-कासिनाम् क्षतजन्म उपरसवाणाने क्षतज कासके रोगियोंकी, अग्नि-विबुद्धयर्थम् अग्निनी वृद्धि भाटे अग्निको बढ़ानेके लिए, दोष-बद्ध तथा दोषधी अधाधेक्ष तथा दोषोंसे बद्ध, कोष्ठ-उरः-कोठा, छाती कोष्ठ, छाती, स्रोतसाम् तथा स्रोतोन्मी और स्रोतोंकी, विशुद्धये च शुद्धि भाटे शुद्धिके लिए, स्युः छे हैं ॥ १६७ ॥

167. These medicated ghees are prescribed for the purposes of promo-

ting the gastric fire and for clarifying the alimentary and respiratory passages that have been occluded by morbid matter in the patient suffering from cough due to consumption.

हरीतकीलेहः —

हरीतकीर्यवकाथद्याहके विंशतिं पचेत् ।

खिन्ना मृदित्वा तास्तस्मिन् पुराणं गुड-षट्पलम् १६८  
दद्यान्मनःशिलाकर्षं कर्षार्धं च रसाज्जनात् ।  
कुड्वार्धं च पिप्पल्याः स लेहः श्वासकासनुत् १६९  
इति हरीतकीलेहः ।

यवकाथ- द्याहके जवना ५१२ तोला क्वाथमां जोके ५१२ तोले काथमें, विंशतिम् बीस बीस, हरीतकीः हरडे हरड़, पचेत् पकावली पकावे, खिन्नाः अर्धार्ध अथेदी खिन्न हो जाने पर, ताः तेओने उनको, मृदित्वा पीसीने पीसकर, तस्मिन् ते क्वाथमां उस काथमें, पुराणम् जूने। पुराना गुड-षट्पलम् जोण २४ तोला गुड २४ तोला, मनःशिला- मनःशिला मनसिल, कर्षम् ओड तोला एक तोला, रसाज्जनात् च रसज्जनात् रसोत्, कर्षार्धम् अर्धो तोला आधा तोला, पिप्पल्याः च अने पीपर और पिप्पली, कुड्वार्धम् ८ तोला ८ तोले, दद्यात् नाथवा छोड़े, सः लेहः ते अवधेह वह लेह, श्वास-कासनुत् श्वास तथा उपरसने दूर करनेपर छे श्वास तथा कासका नाशक है ॥ १६८-१६९ ॥ इति आ यद्, हरीतकीलेहः हरीतकीलेह छे हरीतकीलेह है ।

168-169. Boil 20 chebulic myrobalans in 512 tolas of the decoction of common barley; when the myrobalans have been boiled, take them out and crush them to pulp and mix with 24 tolas of old gur, one tola of red arsenic, 1/2 tola of extract of indian berberry and 8 tolas of long pepper. This linctus is curative of dyspnea and cough. Thus has been described the Chebulic Myrobalan Linctus.

कतिपयलेह्योगाः —

श्वाविधः सूचयो दग्धाः सघृतक्षौद्रशर्कराः ।  
श्वासकासहरौ बर्हिपादौ वा क्षौद्रसर्पिषा ॥१७०॥

दग्धाः आगेक्षा जलाई हुई, सघृत-क्षौद्र-शर्कराः ते भृत्, मधु तथा साकर भेजवेक्षा एवं घी, मधु और चीनीयुक्त. श्वाविधः शेरुधनी सेहकी, सूचयः डाँटा सुइयां, श्वास-कासहराः श्वास अने कासने हरनारा छे श्वास और कासका नाशक हैं, बर्हिपादौ वा अथवा मोरना आगेक्षा पगे। अथवा मोरके जलाये हुए दो पैर, क्षौद्रसर्पिषा मधु तथा घी साथे खाटवाथी मधु और घीके साथ चाटनेसे, श्वास-कास- श्वास अने छहरसने श्वास तथा कासके हरौ दूर करनार छे नाशक हैं ॥ १७० ॥

170. The ashes of the burnt quills of the porcupine, mixed with ghee, honey and sugar, is curative of dyspnea and cough. Similar is the effect of the burnt legs of peacock taken with honey and ghee.

एरण्डपत्रक्षारं वा व्योषतैलगुडान्वितम् ।  
लिह्यादेतेन विधिना सुरसैरण्डपत्रजम् ॥१७१॥

एरण्ड-पत्र- ओरंडानां पानने। एरण्डपत्रका, क्षारश्च क्षार क्षार, व्योष-तैल- त्रिफलुतेक्ष त्रिकटुतैल, गुडान्वितम् तथा गोण-सहित और गुड़ मिलाकर, सुरसा-अथवा तुलसी या तुलसी, एरण्डपत्रजम् वा अने ओरंडानां पानने। क्षार और एरण्डपत्रका क्षार, एतेन आ ७ इसी, विधिना विधिनी विधिसे, लिह्यात् खाटवे। चाटे ॥ १७१ ॥

171. Or the patient may lick the alkali of leaves of castor plant mixed with the three spices, oil and gur, or, he may lick the alkali of leaves of holy basil and castor plant with the same adjuvants.

१७०. श्वाविधः-श्वविधां (घ.)

॥ -क्षौद्रसर्पिषा-मधुसर्पिषा (फ.)

द्राक्षापञ्चकवार्ताकपिप्पलीः क्षौद्रसर्पिषा ।

लिह्यात् ज्यूषणचूर्णं वा पुराणगुडसर्पिषा ॥१७२॥

द्राक्षा-पञ्चक- द्राक्ष, पञ्चक ४ सुनका, पञ्चाख, वार्ताक-री गल्ला बैंगन, पिप्पलीः अने पीपरने और पिप्पलीको, क्षौद्रसर्पिषा मधु तथा घीथी खाटवां मधु और घीसे चाटे, ज्यूषणचूर्णम् वा अथवा त्रिफलुं यूसुं अथवा ज्यूषणचूर्ण, पुराणगुड- भूना गोण पुराने गुड़, सर्पिषा तथा घृतथी तथा घीसे, लिह्यात् खाटवुं चाटे ॥१७२॥

172. The patient may take as linctus the powder of grape, himalayan cherry, brinjal and long pepper with ghee and honey, or the powder of the three spices with old gur and ghee.

चित्रकं त्रिफलाजाजी कर्कटाख्या कटुत्रिकम् ।  
द्राक्षां च क्षौद्रसर्पिभ्यां लिह्याद्द्याद्रुडेन वा ॥१७३॥

चित्रकम् चित्रक चित्रक, त्रिफला त्रिफला, अजाजी अरुं जीरा, कर्कटाख्या डाउडशींगी काकड़ा-सिंगी, कटुत्रिकम् त्रिफलु त्रिकटु, द्राक्षाम् च अने द्राक्ष और सुनका, क्षौद्रसर्पिभ्याम् ओओने मधु तथा घृतथी इनको मधु और घीसे, लिह्यात् खाटवां चाटे, गुडेन वा अथवा गोणथी या गुडसे, अद्यात् आनां खावे ॥१७३॥

173. The patient may take as linctus, white-flowered leadwort, the three myrobalans, cumin, galls, the three spices and grapes mixed with ghee and honey, or he may take these powders mixed with gur.

पञ्चकालिहः —

पञ्चकं त्रिफलां व्योषं विडङ्गं सुरदारु च ।

बलां रास्नां च तुल्यानि सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् १७४  
सर्वैरेभिः समं चूर्णैः पृथक् क्षौद्रं घृतं सिताम् ।  
विमथ्य लेहयेत्लेहं सर्वकासहरं शिवम् ॥१७५॥

१७२ द्राक्षापञ्चकवार्ताकपिप्पलीः क्षौद्रसर्पिषा-वार्ताकपिप्पली-  
पञ्चकं मधुसर्पिषा (फ.)

१७४. बलां रास्नां च तुल्यानि सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत्-बलारास्ना-  
घृतं सूक्ष्मं शर्कराक्षौद्रसर्पिषा (फ.)

पद्मकम् पञ्चशङ्ख पद्माक्ष, त्रिफलाम् त्रिदंश त्रिफला, व्योषम् त्रिडटु त्रिकटु, विडङ्गम् वावडिङ्ग वायविङ्ग, सुरदारु च अने देवदार और देवदारु, बलाम् रास्नाम् च गन्धा अने रास्ना बला और रास्ना, तुल्यानि सरभे वजने बर्ध समान भागमें लेकर, सूक्ष्मचूर्णानि सूक्ष्म यूर्णु शरीक चूर्ण, कारयेत् धरवुं करे, एभिः सर्वैः ये सर्वे इन सब, चूर्णैः यूर्णुनी साधे चूर्णोंके साथ, पृथक् समम् पृथक् पृथक् समान पृथक् पृथक् समान भागमें, औद्रम् घृतम् मधु, घृत मधु, घी, सिताम् च अने सांडर और चीनी, विमथ्य मथन करीने मथकर, सर्वकासहरम् सधणी उधरसने हर करनेपर सब प्रकारके कासका नाशक, शिवम् लेहम् आ शुभ अवलेह इस कल्याणकारक लेहको, लेहयेत् आटवे चाटे ॥ १७४-१७५ ॥

174-175. Crush equal quantities of himalayan cherry, the three myrobals, the three spices, embelia, deodar, sida and indian groundsel to fine powder and prepare a linctus by mixing with ghee, honey and sugar, each of these three being equal in amount to the total quantity of the powder. This auspicious linctus is curative of all types of cough-disorder.

पद्मकादिलेहः—

जीवन्ती मधुकं पाठां त्वक्क्षीरीं त्रिफलां शटीम् ।  
मुस्तैले पद्मकं द्राक्षां द्वे बृहत्यौ वितुन्नकम् ॥१७६॥  
सारिवां पौष्करं मूलं कर्कटाख्यां रसाञ्जनम् ।  
पुनर्नवां लोहरजस्त्रायमाणां यवानिकाम् ॥१७७॥  
भार्गी तामलकीमृद्धिं विडङ्गं धन्वयासकम् ।  
क्षारचित्रकचव्याम्लवेतसव्योषदारु च ॥१७८॥  
चूर्णीकृत्य समांशानि लेहयेत् क्षौद्रसर्पिषा ।  
चूर्णात्पाणितलं पञ्च कासानेतद् व्यपोहति ॥१७९॥  
इति पद्मकादिलेहः ।

जीवन्तीम् देडी जीवन्ती, मधुकम् जेडीमधु मुलहरी, पाठाम् पाठा पाढी, त्वक्क्षीरीम् वंशदेयन वंशलोचन, त्रिफलाम् त्रिदंश त्रिफला, शटीम् पटुथूरी कचूर, मुस्ता-पुले मोथा, अदथी मोथा, इलायची, पद्मकम् पञ्चक पद्माक्ष, द्राक्षाम् द्राक्ष मुनका, द्वे बृहत्यौ जेडी अने जेडी जोरीगल्ली छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, वितुन्नकम् वाङ्ग धनिया, सारिवां सारिवा कपूरी, पौष्करम् मूलम् पोष्करमूल पौष्करमूल, कर्कटाख्यम् डाड्डा-शीणी काकडासिगी, रसाञ्जनम् रसवन्ती रसौत, पुनर्नवाम् साटोडी गदहपुरना, लोहरजः लोहयूर्णु लोह-चूर्ण, त्रायमाणाम् त्रायमाण असवंग, यवानिकाम् अजवायन, भार्गीम् भारंगी भारङ्गी, तामलकीम् जेलियाभली मुईभांवाला, ऋद्धिम् ऋद्धि ऋद्धि, विडङ्गम् वावडिङ्ग वायविङ्ग, धन्वयासकम् धमासे धमासा, क्षार-ज्वभार यवक्षार, चित्रक- (येत्रक चित्रक, चव्य-यवक चव्य, अम्लवेतस-अम्लवेतस अम्लवेत, व्योष-त्रिडटु त्रिकटु, दारु च अने देवदार और देवदारु, समांशानि ऐऐने सरभे वजने इनको समान भागमें लेकर, चूर्णीकृत्य यूर्णु करीने चूर्ण करके, चूर्णात् यूर्णुभांशी इव चूर्णमेंसे, पाणितलम् ओठ तोले। एक तोले, क्षौद्रसर्पिषा मधु तथा घी मधु और घीसे, लेहयेत् आटवुं चाटे, एतत् आ यूर्णु यह चूर्ण, पञ्च कासान् पांच प्रकारनी उधरसने। पांचो प्रकारके कासोंका, व्यपोहति नाश करे छे नाश करता है ॥ १७६-१७९ ॥ इति आ यह, पद्मकादिलेहः पद्मकादि-लेह छे पद्मकादिलेह है ।

176-179. Take equal quantities of cork swallow-wort, liquorice, patha, bamboo manna, the three myrobals, long zedoary, nut grass small cardamom, himalayan cherry grapes, yellow berried nightshade, coriander, sarsaparilla, orris root, galls, extract of indian berberry, hog's weed, iron powder, zalil, bishop's weed, beetle killer, ground phyllanthus, riddhi, embelia, cretan prickly clover, alkali, white-

१७६. पद्मकं—पिप्पलीम् (क.)

१७८. क्षारचित्रक—क्षौरचित्रक (क.)

flowered leadwort, chaba pepper, amlavetasa, the three spices and deodar, and reduce the whole to powder. This powder should be taken as linctus mixed in the dosage of one tola with honey and ghee. It cures all the five types of cough. Thus has been described the Compound Swallow-wort Linctus.

लिङ्गान्मरिचचूर्णं वा सघृतक्षौद्रशर्करम् ।  
बदरीपत्रकल्कं वा घृतभृष्टं ससैन्धवम् ॥१८०॥  
स्वरभेदे च कासे च लेहमेतं प्रयोजयेत् ।

सघृत-क्षौद्र- घृत, मधु घी, मधु, शर्करम् तथा साधरसहित तथा चीनीके साथ, मरिच-चूर्णम् डाण्डी मरीनुं थूल् काली मिर्चका चूर्ण, घृतभृष्टम् धीमां शेकेध वीमें भूना, ससैन्धवम् सिंधावुसु भेणवीने सैधानमक मिलाकर, बदरी-पत्र- भेरीडीनां पानने। बेरकी पत्तियोंका, कल्कम् ३६३ कल्क, लिङ्गात् आटवे। चाटे, एतम् लेहम् आ. अवलेहने। इस लेहका, स्वरभेदे च स्वरभेदमां स्वरभेदमें, कासे च आने उधरसमां और खांसीमें, प्रयोजयेत् अथेग करे। प्रयोग करे ॥ १८०३ ॥

180-180½. A linctus prepared of powdered black pepper mixed with ghee, honey and sugar may be taken or a linctus prepared of the paste of the leaves of jujube seasoned with ghee mixed with rock-salt. These linctuses may be prescribed in alteration of voice and cough.

क्षयकासे अन्नपानम्—

पत्रकल्कं घृतभृष्टं तिल्वकस्य सशर्करम् ॥१८१॥  
पेया चोत्कारिका छर्दितृक्षासामातिसारानुत् ।

१८०. अस्य पूर्वार्धादनन्तरम्—

सर्वकाष्ठहरं भेष्यं लेहं कामादितो गरः ॥

इत्यधिकः पाठः (व. ड. द.) पुस्तकेषु ।

१८०½. स्वरभेदे च-स्वरपवाते (व.)

घृतैः मृष्टम् धीमां शेकेध वीमें भूने हुए, तिल्वकस्य तिल्वकनां तिल्वककी, पत्रकल्कम् पानना ३६३मां पत्तियोंके कल्कमें, सशर्करम् साधर भेणवीने चीनी मिलाकर, उत्कारिका तैयार करेदी उत्कारिका बनाई हुई उत्कारिका, पेया च आने पेया और पेया, छर्दि-तृष्- उल्टी, तथा वमन, प्यास, कास- उधरस खांसी, आमातिसार- आने आमातिसारने और आमातिसारकी, अनुत् हूर करे छे नाशक है ॥ १८१३ ॥

181-181½. Or. he may take the thin gruel or pan-cake prepared from the paste of leaves of tilvaka seasoned in ghee and mixed with sugar. This is curative of vomiting, thirst, cough and diarrhea due to indigestion.

गौरसर्वपगण्डीरविडङ्गव्योन्नचित्रकान् ।  
साधयान् साधयेत्तोथे यवागूं तेन चाम्भस्ता ॥१८२॥  
ससर्पिल्वणां कासे हिकाश्वासे सपीनसे ।  
पाण्डामये क्षये शोथे कर्णशूले च दापयेत् ॥१८३॥

साधयान् हरडेसहित हरड, गौरसर्वप- सईद सरसव सफेद सरसों, गण्डीर- गंड़ीर गंड़ीर, विडङ्ग- पावडिंग वायविडंग, व्योन्न- त्रिकटु त्रिकटु, चित्रकान् आने चित्रकने और चित्रक इनको, तोथे पाण्डुमां जलमें, साधयेत् पडाववां पकावे, तेन च ते उस, चाम्भस्ता पाण्डुमां पडावेज जलसे बनाई, यवागूं यवागूं यवागूं, ससर्पिल्वणाम् घृत तथा सिंधावुसुसहित घी और नमक मिलाकर, कासे सपीनसे उधरस, पीनस खांसी, पीनस, हिका-श्वासे हेडकी, श्वास हिचकी, श्वास, पाण्डु- मये पांडुरोग पांडुरोग, क्षये जोथे क्षय, सोन्न क्षय, शोथ, कर्णशूले च आने कर्णशूलमां और कर्णशूलमें, दापयेत् आपनी देवे ॥ १८२-१८३ ॥

182-183. Decoct rape-seeds, thorny milk-hedge, embelia, the three spices, white-flowered leadwort, and chebulic

१८३. शोथे-जोथे (व.)

„ दापयेत्-शस्यते (व. ड.)

myrobalan in water. With this decoction prepare a gruel. This gruel mixed with ghee and salt is curative of cough, hiccup, dyspnea, coryza, anemia, wasting, edema and ear-ache.

**कण्टकारीरसे सिद्धो मुद्रयूषः सुसंस्कृतः ।  
सगौरामलकः साम्लः सर्वकासमिषजितम् १८४**

कण्टकारीरसे भोरीगुणीनां क्वाथभां कटेरीके रसमें, सिद्धः सिद्ध करे सिद्ध, सुसंस्कृतः अने सारी रीते पधारये। और अच्छी प्रकार संस्कृत, सगौर-ताज, आमलकः आमलावाणें आंवलोंसे मिलाया हुआ, साम्लः अने आटे और अम्ल बनाया हुआ, मुद्रयूषः भगने ५५ मूंगका यूष, सर्वकास-सधणीं उधरसे। तुं सर्व प्रकारके कासकी, मिषजितम् औषध छे औषध है ॥ १८४ ॥

184 The soup of green gram prepared with the juice of indian nightshade, well seasoned and containing golden tinged emblic myrobalan and rendered acid to taste, is a cure for all types of cough.

**वातघ्नौषधनिष्कायं क्षीरं यूषान् रसानपि ।  
वैष्किरप्रतुदान् बैलान् दापयेत् क्षयकासिने ॥१८५॥**

क्षयकासिने क्षयणी उधरसवाणाने क्षयजन्य कासके रोगीको, वातघ्न-वातघ्न वातघ्न, औषध-औषधियों। औषधियोंका, निष्कायन् क्वाथ काय, क्षीरम् दूध दूध, यूषान् ५५ यूष, वैष्किर-विष्किर विष्किर, प्रतुदान् प्रतुद प्रतुद, बैलान् तथा भिक्षेश्य प्राणीशोना और बिलेश्य जीवोंके, रसान् अपि मांसरसे पशु मांस-रसोंकी सी, दापयेत् आपवा देवे ॥ १८५ ॥

185. Medicated milks, soups, meat-juices of the gallinaceous and pecker group of birds and of the terriculous group of animals, prepared with the decoction of the drugs alle-

viative of vata, should be given to the patient with cough born of consumption.

**क्षतकासे च ये धूमाः सानुपाणा निदर्शिताः ।  
क्षयकासेऽपि तानेव यथावस्थं प्रयोजयेत् ॥१८६॥**

क्षतकासे च क्षतजन्य उधरसभां क्षतज कासमें, ये जे जो, सानुपाणाः अनुपानसहित अनुपानके साथ, धूमाः धूमे। धूम, निदर्शिताः कक्षा छे बताये हैं, तान् एव तेओने। ज उन्हींका, क्षयकासे अपि क्षयजन्य उधरसभां पशु क्षयजन्य कासमें सी, यथावस्थम् अवस्थासार अवस्थाके अनुसार, प्रयोजयेत् प्रयोग करे ॥ १८६ ॥

186. Inhalations together with their adjuvant drinks, which have been prescribed in the treatment of cough due to pectoral lesions are to be administered mutatis mutandis, in the case of cough due to consumption as well.

**दीपनं बृंहणं चैव स्रोतसां च विशोधनम् ।  
व्यत्यासात्क्षयकासिभ्यो बल्यं सर्वं हितं भवेत् १८७**

दीपनम् दीपन दीपन, बृंहणम् च एव बृंहण बृंहण, स्रोतसाम् स्रोतों। स्रोतोंका, विशोधनम् विशो-धन करने। विशोधक, बल्यम् च अने अत्य और बलकारक, सर्वम् सधणुं सब, व्यत्यासात् पथ्यिकभमी हेरफेरका, क्षयकासिभ्यः क्षयजन्य उधरसवाणाने क्षय-जन्य कासके रोगियोंके लिए, हितम् भवेत् हितकारी छे हितकारक होता है ॥ १८७ ॥

187. If the measures that are promotive of the gastric fire and roborant, as well as the measures purificative of the channels are administered alternately, they will become strength-giving and beneficial.

१८६. क्षयकासेऽपि-क्षयकासोऽपि (घ.)

१८७. सर्वं हितं भवेत्-सर्वं मितं हितम् (ङ.)



सन्निपातभवोऽप्येष क्षयकासः सुदारुणः ।

सन्निपातहितं तस्मात् सदा कार्यं भिषग्जितम् १८८

सन्निपातभवः अपि सन्निपातधी यथेष्ट सन्निपात-  
जनित, एषः आ यह, क्षयकासः क्षयजन्य उधरस  
क्षयज कास, सुदारुणः अत्यंत दारुण्यं अत्यन्त भयंकर  
है, तस्मात् भाटे इस लिए, सदा सदा सदा, सन्निपात-  
सन्निपातभा सन्निपातमें, हितम् हितकारी हितकारी,  
भिषग्जितम् औषध औषध, कार्यम् करवुं करे ॥१८८॥

188. As the cough due to consump-  
tion is born of tridiscordance it is a  
severe condition; the line of treatment  
should always be one curative of tridis-  
cordance.

दोषानुबलयोगाच्च हरेद्रोगबलाबलम् ।

कासेष्वेषु गरीयांसं जानीयादुत्तरोत्तरम् ॥१८९॥

दोष-अनुबल- दोषना अनुबलने अनुबल दोषोंके  
अनुबलके अनुबल, योगाच्च योगाचे योगोंसे,  
रोग- रोगना रोगके, बल- अबलम् अनुबलना तथा  
ननुबल दोषने प्रबल और निर्बल दोषको, हरेत् हर करे  
शान्त करें, एषु आ इन, कासेषु उधरसोभा कासोंमें,  
उत्तरोत्तरम् उत्तरोत्तरने उत्तरोत्तरको, गरीयांसम्  
अनुबलान बलवान, जानीयात् अनुबली समझें ॥ १८९ ॥

189. As the virulent or non viru-  
lent type of the disease is dependent  
on the association of the morbid  
element, the chief morbid element  
should be treated. The physician  
should know that the virulence of the  
types of cough up to that of consumption  
is in the ascending order.

कासमेषज्यसंग्रहः—

भोज्यं पानानि सर्पीषि लेहाश्च सह पानकैः ।

क्षीरं सर्पिर्गुडा धूमाः कासमेषज्यसंग्रहः ॥१९०॥

१८९. हरेद्रोगबलाबलम्—हरेद्रोगबलाबलम् (घ.)

१९०. लेहाश्च सह पानकैः—लेहाः पावनकानि च (ख.घ.स.ब.घ.)

भोज्यम् भोज्य पदार्थ आहार, पानानि पीवानी  
पदार्थ पेय पदार्थ, सर्पीषि धृते धी, पानकैः सह अने  
अनुपान सहित और अनुपानके साथ, लेहाः च अनु-  
लेहा लेह, क्षीरम् दूध दूध, सर्पिर्गुडाः सर्पिर्गुड  
सर्पिर्गुड, धूमाः च अने धूमपान और धूमपान, कास-  
मेषज्य- आ उधरसानी चिकित्सानी यह खांसीके  
औषधोंका, संग्रहः संग्रह्यं संग्रह है ॥ १९० ॥

190. Eats, drinks, ghees and  
linctuses, potions, milks, ghee-balls and  
inhalation—these, in short, are the  
remedies used in cough-disorder.

अध्यायोक्तविषयाः—

तत्र श्लोकः—

संख्या निमित्तं रूपाणि साध्यासाध्यत्वमेव च ।

कासानां मेषजं प्रोक्तं गरीयस्त्वं च कासिनः ॥१९१॥

तत्र ते विषयभा उस विषयमें, श्लोकः उपसंहारने।  
श्लोक छे के उपसंहारका श्लोक है, कि, कासानाम्  
उधरसानी कासोंकी, संख्या संख्या संख्या, निमित्तम्  
हेतु हेतु, रूपाणि रूप लक्षण, साध्य- साध्यता साध्यता,  
असाध्यत्वम् असाध्यता असाध्यता, मेषजम् औषध  
औषध, कासिनः अने उधरसना रोगीकोनी और कास-  
रोगियोंके, गरीयस्त्वम् च उधरसनी अनुबलाननुबली  
गुणना कासके बलवत्त्वकी तुलना, प्रोक्तम् उक्ते छे  
कही है ॥ १९१ ॥

Here is the recapitulatory verse—

191. The number of the varieties  
of cough, their causation, their signs  
and symptoms, their curability and  
incurability, the various remedies indi-  
cated, and their comparative gravity—  
all this has been set out in this  
chapter.

इत्यग्निवेशकृते तन्त्रे चरकप्रतिसंस्कृतेऽप्राप्ते हृद-  
बलसंपूरिते चिकित्सास्थाने कासचिकित्सितं  
नामाष्टादशोऽध्यायः ॥१८॥



इति आ प्रभाषे इस प्रकार, अग्निवेशकृते अग्नि-  
वेशे रथेष्टा अग्निवेशसे बनाये, चरकप्रतिसंस्कृते तन्त्रे  
अने अरुद्धी प्रतिसंस्कार पायेला आ शास्त्रभा-  
और चरकके द्वारा संस्कृत इस शास्त्रके, अप्राप्ते अप्राप्त,  
दृढबलसंपूरिते अने दृढबले पुरा करेला और दृढबलसे  
पूरित किये गये, चिकित्सास्थाने चिकित्सास्थान विषे  
चिकित्सास्थानमें, कास-चिकित्सितम् 'कासचिकित्सित' 'कासचिकित्सित', नाम  
नामने नामका, अष्टादशः अष्टादशे अठारहवाँ, अध्यायः  
अध्याय संपूर्ण थये अध्याय समाप्त हुआ ॥ १८ ॥

18. Thus in the Section on Therapeutics, in the treatise compiled by Agnivesa and revised by Caraka, the eighteenth chapter entitled 'The Therapeutics of Cough-disorder not being available, the same as restored by Dridhabala' is completed.

### एकोनविंशोऽध्यायः ।

आगच्छीसमे अध्याय अध्याय उन्नीसवाँ  
Chapter XIX

अतीसारचिकित्सितोपक्रमः—

अथातोऽतीसारचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥१॥

इति ह स्माह भगवानात्रेयः ॥२॥

अथ अतः ढवे अह्नीथी अब आगे, अतीसार-  
चिकित्सितम् 'अतीसारचिकित्सित' नामका अध्यायतु  
अतीसारचिकित्सित नामके अध्यायका, व्याख्यास्यामः  
व्याख्यान करुं व्याख्यान करेंगे ॥ १ ॥

भगवान् भगवान् भगवान्, आत्रेयः आत्रेये आत्रेयने,  
इति ह आ विषयमा नीये प्रभाषे ॥ इस विषयमें  
निम्न प्रकारसे ही, जाह सा उहेलुं छे कहा है ॥ २ ॥

1. We shall now expound the chapter entitled 'The Therapeutics of Diarrhea'.

2. Thus declared the worshipful Atreya.

अतीसारस्य प्रागुत्पत्तिः—

भगवन्तं स्तब्धत्रेयं कृताह्निकं हुताग्निहोत्र-  
मासीनमृषिगणपरिवृतमुत्तरे हिमवतः पार्श्वे  
विनयादुपेत्याभिवाद्य चाग्निवेश उवाच—भगवन्!  
अतीसारस्य प्रागुत्पत्तिनिमित्तलक्षणोपशमनानि  
प्रजानुग्रहार्थमाख्यातुमर्हसीति ॥ ३ ॥

कृताह्निकम् जेहे नित्यकर्म कर्तुं छे जेना आह्निक  
कर्म किये हुए, हुताग्निहोत्रम् जेहे अग्निहोत्र हेतुम्  
छे जेना अग्निहोत्रमें आहुति दिये हुए, ऋषिगण- ऋषि-  
समूहथी ऋषिगणोंसे, परिवृतम् वीर्यपायेला घिरे हुए,  
हिमवतः तथा हिमालयना तथा हिमालयके, उत्तरे  
पार्श्वे उत्तर दिशागर्भा उत्तर विभागमें, मासीनम् जेहेला  
बैठे हुए, भगवन्तम् भगवान् भगवान्, आत्रेयम् खलु  
आत्रेयने आत्रेयको, अग्निवेशः अग्निवेशे अग्निवेशने,  
विनयात् विनयपूर्वक विनयसे उपेत्य पासे जेध पास  
पहुँचकर, अभिवाद्य च अने प्रणाम करीने और प्रणाम  
करके, उवाच उल्लुं कहा भगवन् हे भगवान् हे भगवान्,  
अतीसारस्य अतीसारनी अतीसारकी, प्राक्-उत्पत्ति-पूर्व-  
त्पत्ति प्रथम उत्पत्ति, निमित्त-कारण हेतु, लक्षण-लक्षण  
लक्षण, उपशमनानि अने शमन और उपशमनोंको,  
प्रजानुग्रहार्थम् प्रजाना अनुग्रह भाटे प्रजा पर  
अनुग्रह करनेके लिए, आख्यातुम् उहेलाने कहनेकी,  
अर्हसि इति कृपा करे कृपा कीजिए ॥ ३ ॥

3. Having approached obediently the worshipful Atreya as he was seated in the northern region of the Himalayas surrounded by an assembly of sages after he had concluded his daily austerities and fed the sacred fire, Agnivesa after salutations said, 'Worshipful one! it behoves you to instruct for the well-being of the humanity, regarding the primogenesis, etiology, signs and symptoms and therapeutics of Diarrhea.'

३. गणपरिवृतमुत्तरे हिमवतः—गणपरिवृतं हिमवतः (क.)

अथ भगवान् पुनर्वसुरात्रेयस्तदग्निवेशवचनमनुनिशम्योवाच—श्रूयतामग्निवेश ! सर्वमेतदखिलेन व्याख्यायमानम् । आदिकाले खलु यज्ञेषु पशवः समालभनीया बभूवुर्नालम्भाय प्रक्रियन्ते स्म । ततो दक्षयज्ञं प्रत्यवरकालं मनोः पुत्राणां नरिष्यन्नाभागेश्वाकुनृगशर्यात्यादीनां क्रतुषु पशूनामेवाभ्यनुज्ञानात् पशवः प्रोक्षणमवापुः । अतश्च प्रत्यवरकालं पृषध्रेण दीर्घसत्रेण यजता पशूनामलाभाद्द्वामालम्भः प्रवर्तितः । तं दृष्ट्वा प्रव्यथिता भूतगणाः, तेषां चोपयोगादुपाकृतानां गवां गौरवादौण्यादसात्म्यत्वाद्दशस्तोपयोगाच्चोपहताग्नीनामुपहतमनसां चातीसारः पूर्वमुत्पन्नः पृषध्रयज्ञे ॥४॥

अथ त्वा२ पछी तदनन्तर, भगवान् भगवान् भगवान्, आत्रेयः आत्रेय आत्रेय, पुनर्वसुः पुनर्वसुये पुनर्वसुने, तत् ते उस, अग्निवेश-अग्निवेशन् अग्निवेशके, वचनम् वचन वचनको, अनुनिशम्य सांभगीने सुनकर, उवाच उलुं कदा, अग्निवेश हे अग्निवेश ! हे अग्निवेश !, अखिलेन संपूर्ण रीति संपूर्ण रूपमें, व्याख्यायमानम् सभअवागुं कहा जानेवाला, एतत् सर्वम् आ अंधुं यह सब, श्रूयताम् सांभगी सुनो, आदिकाले सत्ययुगभां आदिकालमें, यज्ञेषु खलु यज्ञेभां यज्ञमें, पशवः पशुओनु पशुओंका, समालभनीयाः बभूवुः अ(अभ)त्रलु करी तेओने छोड़ी देवाभां आवतीं इती अभिमन्त्रण कर उनका परित्याग किया जाता था, आलम्भाय वध माटे वधके लिए, न प्रक्रियन्ते स्म तेओने सस्कार करताभां

४. भगवान् पुनर्वसुरात्रेयः—भगवान् आत्रेयः (ड.)
- „ समालभनीया—समालम्भनीया (ब.)
- „ नालम्भाय प्रक्रियन्ते स्म—नारम्भाय प्रक्रियन्ते स्म (क.ब.)
- „ दक्षयज्ञं प्रत्यवरकालं—दक्षयज्ञं प्रत्यवरकालम् (ख.)
- „ पुत्राणां नरिष्यन्नाभागेश्वाकुनृगशर्यात्यादीनाम्—पुत्राणां नरिष्यन्तनाभागेश्वाकुरिष्टशर्यात्यादीनाम् च (ख. व. ड.)
- „ नरिष्यन्नाभाग—नरिष्यन्तनाभाग (झ.)
- „ इक्ष्वाकुनृग—इक्ष्वाकुरिष्ट (ट.)
- „ प्रोक्षणमवापुः—प्रोक्षणमेवाप्नुयुः (थ. ब.)
- „ गवामालम्भः—गवामारम्भः (थ. ब.)
- „ उपयोगाच्चोपहताग्नीनाम्—उपयोगात्सादोपयोगाच्चोपहताग्नीनाम् (घ.)

आवती। न इती। उनका संस्कार नहीं किया जाता था, ततः ते पछी उसके पीछे, दक्षयज्ञम् दक्षना यज्ञ दक्षयज्ञके, प्रत्यवरकालम् पछीना डालभां बादके कालमें, नरिष्यत् नरिष्यत् नरिष्यत्, नाभाग- नाभाग नाभाग, इक्ष्वाकु- इक्ष्वाकु इक्ष्वाकु, नृग- नृग नृग, शर्याति- आदीनाम् शर्याति वगेरे शर्याति आदि, मनोः भुनुना मनुके, पुत्राणाम् पुत्रोना पुत्रोंके, क्रतुषु यज्ञेभां यज्ञोंमें, पशूनाम् एव पशुओनी ४ पशुओ ही, अभ्यनुज्ञानात् प्रेरणुधी प्रेरणासे, पशवः पशुओ पशुओंका, प्रोक्षणम् विधिपूर्वक वध विधिपूर्वक वध, अवापुः पाभ्यां किया गया, अतः च ते पछी इसके मी, प्रत्यवरकालम् पाछगीना वधतभां बादके समयमें, दीर्घसत्रेण यजता दीर्घसत्रेयी यजन करता दीर्घसत्रसे यजन करते हुए, पृषध्रेण पृषध्रे पृषध्रे, पशूनाम् पशुओ पशुओंके, अलाभात् न भगवाधी प्राप्त न होनेसे, गवाम् गाओने गौओंका, आलम्भः वध मारण, प्रवर्तितः शस्त्र कथी शुरू किया, तम् ते उसको, दृष्ट्वा ओधने देखकर, भूतगणाः प्राणीमात्र भूतगण, प्रव्यथिताः व्यथा पाभ्यां अत्यन्त व्यथित हो गये, उपहतमनसाम् च हलाथेला भनवाणा उपहत मनवाले, उपाकृतानाम् अने अलिभंत्रलु करीने वध करवाभां आवेदी और मंत्रित करके मारी गई, गवाम् च गाओने गौओंके, उपयोगात् उपयोगधी उपयोगसे, अज्ञस-उपयोगात् अज्ञसे गाओने निध उपयोग करवाधी अर्थात् गौका निध उपयोग करनेसे, गौरवात् तेओनां मांसन् आरेपलुं होवाधी उनका मांस भारी होनेसे, औण्यात् औण्यालुं होवाधी उष्ण होनेसे, असात्म्यत्वात् च तथा असात्म्यपलुं होवाधी तथा असात्म्य होनेसे, उपहत-अग्नीनाम् च हलाथेला अभिवाणा नष्ट हुए अग्निवाले, तेषाम् तेओने उनको, पृषध्रयज्ञे पृषध्रना यज्ञभां पृषध्रेके यज्ञमें, पूर्वम् सर्वथी पहले सबसे पूर्व, अतीसारः अतिसारनी अतिसारकी, उत्पन्नः उत्पत्ति थी उत्पत्ति हुई ॥ ४ ॥

4. Hearing these words of Agnivesa, the worshipful Punarvasu Atreya said, 'Listen, Agnivesa ! to the full exposition of the subject During the first or the golden age, the sacrificial animals were

indeed only sanctified and turned away but never slaughtered. But after the time of Daksha's sacrifice, in the sacrifices performed by the sons of Manu—Narishyat, Nabhaga, Ikshvaku, Nriga, Saryati and others, the animals were sacrificed at their instinctive acquiescence. After that, during the long sacrifice that Prishadhra performed, as goats were not obtainable, cows were offered up for sacrifice, perceiving which, all living creatures were grief-stricken. When the flesh of these sanctified cows were eaten, by the heavy, hot and disagreeable nature of their flesh, as well as by the use of what was not prescribed by the scriptures, people got impaired in their gastric fire and diminished in their mental faculties and were afflicted with diarrhea, for the first time during the sacrifice performed by Prishadhra.

वातातिसारस्य निदानसंपाप्तिलक्षणानि—

अथावरकालं वातलस्य वातातपन्यायामातिमात्रनिषेविणो रुक्षारूपप्रमिताक्षिन्स्तीक्ष्णमद्यव्यवाय-  
नित्यस्योदावर्तयतश्च वेगान् वायुः प्रकोपमापद्यते,  
पक्ता चोपहन्यते; स वायुः कुपितोऽग्रावुपहते  
मूत्रस्वेदौ पुरीषाशयमुपहृत्य, ताभ्यां पुरीषं  
द्रवीकृत्य, अतीसाराय प्रकरपते ।

अथ अवरकालम् पाछणना वपतर्भा पीछेके कालमें,  
वातलस्य वातप्रधान प्रकृतिवाणा वातलप्रकृति, वात-  
वायु वायु, वातप- तड्डे धूप, व्यायाम- अने  
व्यायामनु और व्यायामका, अतिमात्र- अत्यंत अति-  
मात्रामें, निषेविणः सेवन करनेवाला सेवन करनेवाले, रुक्ष-  
रुक्ष, अल्प- अल्प अल्प, प्रमिताक्षिन्ः अने वपत  
वीत्या पछी होअन करनेवाला और समय कीत जानेपर  
भोजन करनेवाले, तीक्ष्ण- तीक्ष्ण तीक्ष्ण, मद्य- मद्य मद्य,

५-१). पुरीषाशयमुपहृत्य—पुरीषाशयमग्निहृत्य (ख.)

व्यवाय- तथा मैथुननु और मैथुन, नित्यस्य नित्य  
सेवन करनेवाला नित्य सेव- करनेवाले, वेगान् वेगने  
वेगको, उदावर्तयतः च उदावर्तयतः च उदावर्तयतः च उदावर्तयतः च  
पुरुषका, वायुः वायु वायु, प्रकोपम् प्रकोपित प्रकोपित,  
आपद्यते थाय छे होता है, पक्ता च अने अग्नि और  
अग्नि, उपहन्यते नष्ट थाय छे नष्ट होता है, कुपितः  
कुपित यथैवे कुपित, सः वायुः ते वायु वह वायु,  
अग्नौ अग्नि आग्निके, उपहते नष्ट अती नष्ट होनेपर,  
मूत्र-स्वेदौ मूत्र तथा पसीनाने मूत्र और स्वेदको,  
पुरीषाशयम् मलाशयम् मलाशयमें, उपहृत्य अधि अधिने  
ले जाकर, ताभ्याम् तेनाया उन दोनोंसे, पुरीषम् मलने  
मलको, द्रवीकृत्य प्रवाही अनावीने द्रव बनाकर, अती-  
साराय अतीसार अतीसारको, प्रकरपते छरे छे करता है ।

5-(1). In the present days, in a person of vata habitus, the vata gets provoked by excessive exposures to wind and sun, by over-exertion, by dry, scanty and late meals, daily indulgence in strong wine, and the sexual act and the suppression of peristaltic movement of natural urges, the gastric fire gets impaired and provoked vata consequent upon the impairment of the gastric fire, carries the urine and the sweat to the habitat of the fecal matter and liquefying the fecal matter with these fluids, produces diarrhea.

तस्य रूपाणि—विजलमामं विप्लुतमवसादि  
रुक्षं द्रवं सशूलममगन्धमीषच्छब्दमशब्दं वा  
विबद्धमूत्रवातमतिसार्यते पुरीषं, वायुश्चान्तःकोष्ठे  
सशब्दशूलस्तिर्यक् चरति विबद्ध इत्यामातिसारो  
वातात् ।

तस्य तेनां उत्तरे, रूपाणि लक्षणं, विजलम्  
जलमके— पिच्छल जैसेकि— पिच्छल, आमम् आमयुक्त

५-२). मूत्रवातम् मूत्रवातम् (द.)

आमयुक्त, विद्रुतम् पथराधं अथ अथ प्रसरणमिल, अवसादि ढीला अवसादि, रुक्षम् रुक्ष रुक्ष, द्रवम् द्रवम् द्रव, सशूलम् शूलसहितं शूलयुक्त, आमगन्धम् आमगन्धवाणो आमगन्धयुक्त, ईषण्णशब्दश्च शैला अवाञ्च-वाणो किञ्चित् आवाजसे युक्त, अशब्दश्च वा के अवाञ्च-पिनाना या आवाजसे रहित, विबद्ध-मूत्र-वातश्च मूत्र तथा वायुज्ज्वला रोडाधं गन्धं छे अथवा मूत्र और वायुके विबन्धयुक्त पुरीषम् भणने। मलका, अतिसार्यते अतिसार थाय छे अतिसरण होता है, वायुः च अने वायु और वायु, अन्तःकोष्ठे केडाहनी अन्तर कोष्ठके अन्दर, सशब्दशूलः शब्द तथा शूल सहित शब्द और शूलके साथ, विबद्धः अर्धार्ध विबन्धयुक्त, तिष्ठेत् आडे। तिरछा, चरति आधे छे चलता है, इति आ यह, वातात् वायुथी वातज, आमातिसारः आमातिसार छे आमातिसार है।

5-(2). Its signs and symptoms are—the patient passes stools that are slimy, that contain undigested matter, that are flowing and sink when put into water, which are dry and liquid, attended with pain, smelling like putrid flesh and are passed with or without making sounds and accompanied with retention of urine and flatus. The vata, lodged in the alimentary tract, getting obstructed moves obliquely making gurgling sounds and causing colicky pain. Thus has been described the diarrhea of indigestion due to vata.

पक्वं वा विबद्धमल्पाल्पं सशब्दं सशूलफेनपिच्छापरिकर्तिकं हृष्टरोमा विनिःश्वसन् शुष्कमुखः कट्यूरुत्रिकजानुपृष्ठपार्श्वशूली भ्रष्टगुदो मुहुर्मुहुर्विप्रथितमुपवेश्यते पुरीषं वातात् तमाहुरनुप्रथितमित्येके, वातानुप्रथितवर्चस्त्वात् ॥ ५ ॥

हृष्टरोमा जेनां इवाडां जेनां अथ छे जेना रोमहर्ष युक्त, विनिःश्वसन् श्वास देतो। सांस छोडता हुआ, शुष्कमुखः सूखायेला मुणवाणो। मुखशोषयुक्त, कटि-उभर कमर, ऊरु-साथण ऊरु, त्रिक-त्रिक त्रिक,

जानु-गांठश्च घुटनं, पृष्ठ-पीठ पीठ, पार्श्व-अने पडभाभां और पार्श्वोमे, शूली शूलवाणो शूलयुक्त, भ्रष्टगुदः गुदभ्रंशवाणो। गुदभ्रंशयुक्त, पक्वं वा पाकेला पका हुआ, विबद्धम् अर्धार्धेला बंधा हुआ, अल्पाल्पम् शैला शैला अल्प अल्प, सशब्दश्च अवाञ्चसहित शब्दयुक्त, सशूल-शूल शूल, केन-हीलु ज्ञाण, पिच्छा-तथा पिच्छा पिच्छा, परिकर्तिकम् तथा परिकर्तिका सहित और परिकर्तिकासे युक्त, विप्रथितम् गंडायेला बंधा हुआ, पुरीषम् भणने। मल, मुहुःमुहुः बार-बार बारबार, वातात् वायुथी वातके कारण, उपवेश्यते त्याग करे छे त्यागता है, वातानुप्रथितवर्चस्त्वात् वायुथी गंठाधं गयेला भण होवाथी कयुसे मल गांठदार होनेसे, एके केटलाओके डोडा कोई लोग, तम् तेने उसको, अनुप्रथितम् इति अनुप्रथित अनुप्रथित, आहुः उहे छे कहते हैं ॥ ५ ॥

5. Or the patient passes stools that are fully digested or hardened, in very scanty measure, attended with sound and colicky pain, that is frothy and slimy and accompanied with griping pain, horripilation, groans, parching of the mouth, pain in the waist, thigh, hips, knees, back and sides and attended with prolapse of rectum. He passes stools frequently in scybalous masses owing to morbid vata. Some call it scybalous diarrhea as the stools contain scybalous masses due to vata.

पित्तातिसारस्य निदानसंप्राप्तिलक्षणानि—

पित्तलस्य पुनरम्ललवणकटुकक्षारोष्णतीक्ष्ण-तिमात्रनिषेविणः प्रतताग्निसूर्यसंतापोष्णमाकृतोप-हतगात्रस्य क्रोधेर्ष्याविदुलस्य पित्तं प्रकोपमापद्यते। तत् प्रकुपितं द्रवत्वादुष्माणमुपहत्य पुरीषाशय-विस्तृतमौष्ण्याद् द्रवत्वात् सरत्वाच्च भित्त्वा पुरीषमतिसाराय प्रकल्पते ।

६-(१) पुरीषाशयनेस्तम्-पुरीषाशयमाश्रितम् (ख. व. ड.)  
,, ,, -पुरीषाशयाश्रितम् (फ.)

पित्तलस्य पुनः पित्तप्रधान पित्तप्रकृतिवाले, अम्ल-  
भाटा अम्ल, लवण- भारा लवण, कटुक- तीखा कटु-  
क्षार- क्षार क्षार, उष्ण- उष्ण उष्ण, तीक्ष्णातिमात्र-  
अने तीक्ष्ण पदार्थोत्तुं अतिशय और तीक्ष्ण पदार्थोंके  
अतिमात्रामें, निषेविणः सेवन करनेपर सेवन करनेवाले,  
प्रवत- सतत निरंतर, अग्नि- सूर्य- अग्नि अने सूर्यना  
अग्नि और सूर्यके, संताप- ताप ताप, उष्ण- अने ज्वर  
और उष्ण, माहृत- वायुधी वातसे, उपहत- क्षुब्ध  
उपहत, गात्रस्य गान्धोवाणा शरीरवाले, क्रोध-ईर्ष्या-  
बहुलस्य धृष्टा क्रोध अने ईर्ष्यावाणा पुरुषनु बहुत क्रोध  
और ईर्ष्यावाले पुरुषका, पित्तम् पित्त पित्त, प्रकोपम् प्रकोप  
प्रकोपित, आपघते पासे छे होता है, प्रकोपितम् प्रकोपित  
धृष्टुं प्रकोपित, तत् ते वह पित्त, द्रवत्वात् प्रवाही  
होवाथी द्रवत्वके कारण, ऊष्माणम् गरभीने अग्निको,  
उपहत्य नाश करीने नष्टकर, पुरीषाशय- भणशयभा  
मलाशयमें, विस्तृतम् ईक्षाध पटुंचकर, औष्ण्यात् उष्ण  
होवाथी उष्ण होनेसे, द्रवत्वात् प्रवाही होवाथी द्रव  
होनेसे, सरस्वात् च अने सर होवाथी और सर होनेसे,  
पुरीषम् भणने मलको, मित्र्वा बेटीने मित्रकरके,  
अतिसाराय अतिसार अतिसार, प्रकल्पते करे छे  
करता है।

6-(1). In a person of pitta habitus, pitta gets provoked by excessive use of acid, salt, pungent, alkaline, hot and acute articles of diet, by the impairment of the body by the strong effects of long exposure to fire, sun heat and hot wind. By the effects of strong emotions of anger and envy, the pitta gets provoked. The provoked pitta due to its fluid nature, impairing the vital heat, flows into the colon; by its qualities of heat, liquidity and fluidity it breaks up the stools and produces diarrhea.

तस्य रूपाणि—हारिद्रं हरितं नीलं  
कृष्णं रक्तपित्तोपहितमतिदुर्गन्धमतिसार्यते पुरीषं,  
तृष्णादाहस्वेदमूर्च्छाशूलव्रधसंतापपाकपरीत इति  
पित्तातिसारः ॥ ६ ॥

तस्य तेनां उसके, रूपाणि लक्षण लक्षण, तृष्णा-  
लेभके- तृष्णा जैसेकि- प्यास, दाह- दाह दाह, स्वेद-  
स्वेद पसीना, मूर्च्छा- मूर्च्छा मूर्च्छा, शूल- शूल शूल,  
व्रध-संताप- शुभ तापही गुदसंताप, पाकपरीतः अने  
शुभाना पाकथी युक्त शरीने और गुदपाकमें पीड़ित  
रोगी, हारिद्रम् पीला पीला, हरितम् हरीला हरे,  
नीलम् नीला नीले, कृष्णम् कृष्ण कांरे, रक्तपित्त-  
रक्त तेमज्ज पित्तथी रक्त एवं पित्तमें, उपहितम् युक्त  
युक्त, अतिदुर्गन्धम् अने अतिशय दुर्गन्धवाणा और  
अत्यन्त दुर्गन्धयुक्त, पुरीषम् भणने मलको, अतिसार्यते  
अतिसार आय छे त्यागता है इति अ- यह, पित्ता-  
तिसारः पित्तातिसार छे पित्तातिसार है ॥ ६ ॥

6 Its signs and symptoms are— the patient passes liquid stools which are yellowish, greenish, bluish, blackish, tinged with blood and pitta, and very offensive. He is afflicted with thirst, burning, perspiration, fainting, colic and heat in the anal region and inflammation.

श्लेष्मातिसारस्य निदानसंप्राप्तिलक्षणानि—

श्लेष्मलस्य तु गुरुमधुरशीतस्निग्धोपसेविनः  
संपूरकस्याचिन्तयतो दिवास्वप्नपरस्यालसस्य  
श्लेष्मा प्रकोपमापद्यते। स सभावाद् गुरुमधुर-  
शीतस्निग्धः स्रस्तोऽग्निमुपहत्य सौम्यस्वभावात्  
पुरीषाशयमुपहत्योपक्लेद्य पुरीषमतिसाराय कल्पते।

श्लेष्मलस्य तु उद्गप्रधान कफप्रकृति, गुरु- शुभ  
भारी, मधुर- मधुर मधुर, शीत- शीत ठंडा, स्निग्ध-  
अने स्निग्ध पदार्थोत्तुं और स्निग्ध आहारका, उपसेविनः  
सेवन करनेपर सेवन करनेवाले, संपूरकस्य अद्भुत कोज्जन

६. कृष्णं रक्तपित्तोपहितम्—रक्तपित्तोपहितम् (ब. ब. क.)

—कृष्णपित्तोपहितम् (झ.)

७-(१). पुरीषाशयमुपहत्य—पुरीषाशयमुपगत्य (क. छ. फ.)

उरनार अर्थात् भरपेट खानेवाले, अचिन्तयतः चिन्ता न  
उरनार चिन्ता न करनेवाले, दिवा-दिवसे दिनमें, स्वप्न-  
परस्य सुनार सोनेमें परायण, अलसस्य अने आणसु  
भासुसने। और आलसी पुरुषका, श्लेष्मा उद्द कफ,  
प्रकोपस्य प्रकोप प्रकुपित, आपद्यते पाभे छे हो जाता  
है, स्वभावात् स्वभावशी स्वभावसे, गुरु-शुभु गुरु,  
मधुर-भधुर मधुर, शीत-शीत ठंडा, स्निग्धः स्निग्ध  
स्निग्ध, स्वस्तः अने शिथिल और शिथिल, सः ते उद्द  
वह कफ, सौम्य-पेताना जलीय अपने जलीय,  
स्वभावात् स्वभावशी स्वभावसे, अग्निम् अग्निने।  
अग्निको, उपहत्य नाश करीने नष्ट कर, पुरीषाज्यम्  
भणाययभा मलाशयमें, उपहत्य ज्वरने जाकर, पुरीषम्  
भणने मलको, उपहृष्य क्लिप्त करीने क्लिप्तकर, अति-  
साराय अतिसार अतिसारको, कल्पते करे छे उत्पन्न  
करता है।

7 (1). In a person of kapha habitus,  
the kapha gets provoked by constant  
use of heavy, sweet, cold and unctuous  
articles, by excessive impletion, by a  
thoughtless life, by habitual day-sleep  
and lethargy. The kapha possessing  
naturally the qualities of heaviness,  
sweetness, coldness and unctuousness,  
and getting loosened, impairs the vital  
heat; and spreading down the colon  
it liquefies the feces by its watery  
quality and thus produces diarrhea.

तस्य रूपाणि - स्निग्धं श्वेतं पिच्छिलं तन्तु-  
मदामं गुरु दुर्गन्धं श्लेष्मोपहितमनुबद्धशूलमरुपा-  
ल्पमभीक्ष्णमतिसार्यते सप्रवाहिकं, गुरुदरगुदब-  
स्तिवक्ष्णदेशः कृतेऽप्यकृतसंज्ञः सलोमहर्षः  
सोत्क्लेशो निद्रालस्यपरीतः सदनोऽन्नद्वेषी चेति  
श्लेष्मातिसारः ॥ ७ ॥

तस्य तेना उसके, रूपाणि लक्षणैः लक्षण, गुरु-  
ज्वरः-भारे जैसेकि- भारी, उदर-पेट पेट, गुद-  
७. श्वेतम्-शीतम् (ब)

गुदा गुदा, बस्ति अस्ति बस्ति, वक्ष्णदेशः अने वक्ष्ण  
प्रदेशवाला और वक्ष्ण प्रदेशवाला, कृते अपि वेग समाप्त  
थथा छतां पक्ष वेगके समाप्त होने पर भी, अकृतसंज्ञः  
वेगने पूर्ण थथा नहीं माननार वेगको पूर्ण हुआ नहीं  
माननेवाला, सलोमहर्षः श्लेष्मा इवासावाणा रोमहर्ष  
गुक्त, सोत्क्लेशः उच्छेदशवाणा मिचलीसे गुक्त, निद्रा-  
निद्रा नींद, आलस्य-परीतः तथा आणसथी व्याप्त  
और आलस्यसे पीड़ित, सदनः शिथिल शिथिल, अन्नद्वेषी  
च अने अन्नमें द्वेष करनार रोगीने और अन्नद्वेष-  
वाला रोगी, स्निग्धः स्निग्ध स्निग्ध, श्वेतम् श्वेत  
सफेद, पिच्छिलम् पिच्छिल पिच्छिल, तन्तुमत् तांतु-  
वाणा पतला, आमम् आम आम, गुरु शुभु भारी,  
दुर्गन्धम् दुर्गन्धवाणा दुर्गन्धगुक्त, श्लेष्म-उद्द कफसे,  
उपहितम् युक्त युक्त, अनुबद्धशूलम् शूलसहित  
शूलके अनुबद्धसे युक्त, अल्पाम् अल्प थोड़ा थोड़ा थोड़ा  
थोड़ा, सप्रवाहिकम् अने प्रवाहिकासहित और  
प्रवाहिकासहित, अभीक्ष्णम् बार-बार पुनः पुनः,  
अतिसार्यते अतिसार आय छे मल त्यागता है,  
इति आ यह, श्लेष्मातिसारः उद्द अतिसार छे  
कफातिसार है ॥ ७ ॥

7 Its signs and symptoms are—  
the patient passes frequent, watery and  
flowing stools which are unctuous,  
whitish and slimy and contain fibrinous  
shreds and undigested matter, that are  
heavy, offensive and containing mucus  
and which are scanty and accompanied  
with griping pain. The patient feels  
a sense of heaviness in the abdomen,  
rectum, hypo-gastric and ilio-inguinal  
regions; even after passing stools he feels  
he has not evacuated stools. He suffers  
horripilation. He is afflicted with nausea,  
drowsiness and lethargy. He suffers  
from asthenia, and repugnance for  
food. Thus has been described the  
diarrhea due to kapha.



प्रणिपातात्तिष्ठारस्य निदामसंप्राप्तिलक्षणानि—

अतिशीतस्निग्धरूक्षोष्णगुरुखरकठिनविषमवि-  
रुद्धासात्म्यभोजनादभोजनात् कालातीतभोजनाद्  
यत्किञ्चिदभ्यवहरणात् प्रदुष्टमद्यपानीयपानादति-  
मद्यपानादसंशोधनात् प्रतिकर्मणां विषमगमनाद्-  
नुपचाराज्ज्वलनादित्यपक्वसलिलातिसेवनादस्वप्ना-  
दतिस्वप्नाद्वेगविधारणादनुविपर्ययादयथाबलमार-  
म्भाद्भयशोकचित्तोद्वेगातियोगात् कृमिशोषज्व-  
राशोविकारात्तिकर्षणाद्वा व्यापन्नाग्नेस्त्रयो दोषाः  
प्रकुपिता भूय एवाग्निमुपहत्य पकाशयमनुप्रवि-  
श्यातीसारं सर्वदोषलिङ्गं जनयन्ति ॥ ८ ॥

अतिशीत- अत्यंत शीतल अत्यंत शीत, स्निग्ध-  
स्निग्ध स्निग्ध, रूक्ष- रूक्ष रूक्ष, उष्ण- उष्ण उष्ण,  
गुरु- गुरु गुरु, खर- खर खरदरा, कठिन- कठिन कठिन,  
विषम- विषम विषम, विरुद्ध- विरुद्ध विरुद्ध, असात्म्य-  
अने असात्म्य और असात्म्य, भोजनात् भोजन  
करवाथी भोजनसे, अभोजनात् भोजन न करवाथी  
अभोजनसे, कालातीत- पणत वीत्या पछी भोजन कालके  
टल जाने पर, भोजनात् भोजन करवाथी भोजन करनेसे,  
यत्किञ्चित् गमे ते जो कुछ भी, अभ्यवहरणात् आध  
देवाथी खा जानेसे, प्रदुष्ट- भराभ अत्यंत दूषित, मद्य-  
पानीय- मद्य अने पाणी मद्य और जलके, पानात्  
पीवाथी पीनेसे, अतिमद्यपानात् अति मद्य पीवाथी  
अति मद्य पीनेसे, असंशोधनात् संशोधन न करवाथी  
संशोधन न करनेसे, प्रतिकर्मणां पंचकर्मणा पंचकर्मके,  
विषमगमनात् विषम प्रयोगथी असम्यक् प्रयोगसे,  
अनुपचारात् रोगने उपचार न करवाथी रोगका उपचार  
न करनेसे, ज्वलन- अग्नि अग्नि, आदित्य- सूर्य सूर्य,  
पवन- पवन वायु, सलिल- अने पाणीना और पानीके,  
अतिसेवनात् अति सेवनथी अत्यंत सेवनसे, अस्वप्नात्  
निद्रा न करवाथी न सोनेसे, अतिस्वप्नात् अतिशय  
निद्रा करवाथी अतिमात्रामें सोनेसे, वेग- वेग वेगके,  
विधारणात् रोकवाथी विधारणसे, ऋतु- ऋतुमा ऋतुओंकी,  
विपर्ययात् ईश्वर थाथी विकृतिसे, अयथाबलम्  
आमरभात् शक्तिथी बंधारे काम करवाथी अपने बलसे  
अधिक कार्य करनेसे, मय- मय मय, शोक- शोक शोक,

८. अतिकर्षणाद्वा व्यापन्नाग्नेः—अतिकर्षणैः व्यापन्नाग्निः (४).

चित्त-उद्वेग- तथा चित्तना उद्वेगना तथा मनका उद्वेग  
इनके, अतियोगात् अतियोगथी अतियोगसे, कृमि-  
अथवा कृमि या कृमि, ज्वर- ज्वर ज्वर, अशोविकार-  
अने हरसरोगथी और अशोरोम इनसे, अतिकर्षणात्  
वा अति कृश भवाथी अत्यंत कृश होनेसे, व्यापन्नाग्नेः  
नष्ट अग्निवाणा पुरुषना नष्ट अग्निवाके पुरुषके प्रकुपिताः  
प्रकुपित प्रकुपित, त्रयः दोषाः त्रय दोषों तीनों दोष,  
भूयः एव अधिक रीते और भी, अग्निम् अग्निने  
अग्निको, उपहत्य हसीने नष्टः पक्वज्वर पक्वज्वरमां  
पकाशयमें, अनुप्रविश्य प्रवेश करी प्रवेशकर, सर्वदोष-  
सधना दोषना सब दोषोंके, लिङ्गं लक्षणोवाणा  
लक्षणोंवाले, अतीसारम् अतीसारने अतीसारको,  
जनयन्ति उत्पन्न करे छे उत्पन्न करता है ॥ ८ ॥

8. By taking very cold. unctuous. dry. hot, heavy, rough, hard, irregular, antagonistic and non-homologatory articles of diet, by abstinence from diet, or by late meals, by eating whatever comes in hand, by drinking vitiated wine or beverage, by excessive indulgence in wine. by lack of seasonal purification, by the wrongful effects of therapeutics or by lack of therapeutics or excessive exposure to fire, sun, wind and water, by lack of sleep or by excessive sleep by suppression of the natural urges, by abnormality of season, by exertions beyond one's capacity, by excess of fear, grief and mental anxiety, and by excessive emaciation due to helminthiosis, consumption, fever and piles— by these factors the gastric fire gets affected as a consequence of which all the three humors get provoked and impair the vital heat still further and entering the colon, produces diarrhea



manifesting the combined symptoms of all the above-described varieties of diarrhea.

अपि च शोणितादीन् घातूनतिप्रकृष्टं दूषयन्तो घातुदोषस्वभावकृतानतीसारवर्णानुपदर्शयन्ति ।

अपि च अने वृणी और भी, शोणितादीन् रक्त भत्यादि शोणितादि, घातून घातुओंने घातुओंको अति-प्रकृष्ट अत्यंत अत्यन्त, दूषयन्तः दूषित करते। तब दोषो दूषित करते हुए तीनों दोष, घातु-दोष- घातु तथा दोषना घातु और दोष इनके, स्वभावकृतान् स्वभावे उरेला स्वभावसे बने, अतीसारवर्णान् अती-सारना वर्णोंने अतीसारके रंगोंको, उपदर्शयन्ति अतावे छे दिखाते हैं।

9-(1). Further, the morbid humors excessively vitiate the blood and other body-elements and manifest in the stools various colors characteristic of the body-elements which are vitiated.

तत्र शोणितादिषु घातुवृत्तिप्रदुष्टेषु हरिद्र-हरितनीलमाजिष्ठमांसघावनसन्निकाशं रक्तं कृष्णं श्वेतं वराहमेदःसदृशमनुबद्धवेदनमवेदनं वा समा-सव्यत्यासादुपवेक्ष्यते शकृद् प्रथितमामं सकृद्, सकृदपि पक्वमनतिक्षीणमांसशोणितबलो मन्दाग्नि-विहतमुखरसश्च; तादृशमातुरं कृच्छ्रसाध्यं विद्यात् ।

तत्र ते उन, शोणितादिषु रक्त वजरे शोणितादि, घातुषु घातुओं घातु, अतिप्रदुष्टेषु अत्यंत दूषित भती अत्यन्त दूषित होने पर, अनति-क्षीण-मांस-शोणित-बलः जेना मांस, दोढी. तथा अण अतिक्षीण भया नथी जेना जिसके मांस, कधिर तथा बल क्षीण नहीं हुए हैं ऐसा, मन्दाग्निः मृदाग्निवाणौ मन्दाग्निवाला, विहत-अने हलायेला और नष्ट हुए, मुखरसः च भुभरसवाणौ रोगी मुखरससे युक्त रोगी, हरिद्र- पीला

पीले, हरित- पीला हरे, नील- नीला नीले, माजिष्ठ- भोजना रंग जेना मंजीठ जैसे, मांस-घावन-सन्निकाशम् अने मांसना घोख जेना और मांसके घावन जैसे, रक्तम् कृष्णम् लाइ, काणा लाल, काले, श्वेतम् श्वेत सफेद, वराह-मेदः- सुपरनी अरणी सूअरकी चर्बी, सदृशम् जेना जैसे, अनुबद्धवेदनम् अतत वेदनावाणा सतत वेदनासहित, जवेदनम् वा य वेदनारहित या वेदनारहित, समास-तन्मात्र लक्षणोंसहित सब लक्षणोंके साथ, व्यत्यासात् छे काछ काछ लक्षणोंसहित या कुछ लक्षणोंके साथ, सकृद् काछवार कभी, आमम् अपक्व कच्चे, प्रथितम् अने गंदायेला और बंधे हुए, सकृद् अपि अने काछ वार और कभी, पक्वम् पाकेला पके हुए, सकृद् भण्णो मलका उपवेक्ष्यते त्याग करे छे त्याग करता है, तादृशम् तेना उस प्रकारके, आतुरम् रोगीने रोगीको, कृच्छ्रसाध्यम् कष्टसाध्य कष्टसाध्य, विद्यात् अथुवे समझे ।

9-(2). If the blood and other body-elements are excessively vitiated, the stools are yellow, green, blue, coffee-brown of the color of flesh-washed water, red, black, white or of the color of hog's fat; the patient passes stools with much pain or slight pain. The above colors are seen individually or combined. The patient passes indeterminately hard and undigested stools or even digested stools. He may not suffer from great loss of flesh, blood or vitality, his gastric fire gets dull; he suffers loss of taste in the mouth. Such a case is to be known as of a formidable type.

एभिर्वर्णैरतिसार्यमाणं सोपद्रवमातुरमसा-ध्योऽयमिति प्रत्याचक्षीत;

एभिः आ नीये जखुवेला इन निम्रोफ, वर्णैः वर्णोंसहित रंगसहित, अतिसार्यमाणम् अतिसारवाणा

१-(१). घातूनतिप्रकृष्टं-घातूनतिप्रदुष्टान् (ध.)

१-(२). अतिप्रदुष्टेषु-अतिप्रदुष्टेषु (ध.)

,, मांसघावनसन्निकाशं-मांसघावनवेदनं (ध.)

અતિસારવાલે, સોપદ્રવમ્ અને ઉપદ્રવસંહિતઃ ઔર ઉપ-  
દ્રવોસે યુક્ત, આતુરમ્ રોગીની ચિકિત્સાભો રોગીકો  
ચિકિત્સાકા, જયમ્ આ યદ્ધ. અસાધ્યઃ અસાધ્ય છે  
અસાધ્ય છે, હિતિ ઔમ કહી એલા કહકર, પ્રત્યાચક્ષીત  
નિષેધ કરવો નિષેધ કરે.

૧-(૩). If the patient who passes stools  
of the colors described below develops  
complications he should be pronounced  
to be incurable and sent away.

તથા—પક્ષોગિતામં ચક્રત્વણ્ડોપમં મેદો-  
માંસોદકસન્નિકાશં દધિધૃતમજ્જતૈલવસાક્ષીરવે-  
સવારાભમતિનીલમતિરક્તમતિકૃષ્ણમુદકમિવાચ્છં  
પુનર્મેચકામતિચ્છિગ્ધં હરિતનીલકષાયવર્ણં કર્બુર-  
માખિલં પિન્નિલં તન્તુમદામં ચન્દ્રકોપગતમતિ-  
કુણપપૃતિપૂયગન્ધ્યામામતસ્યગન્ધિ મશ્નિકાકાન્તં  
કુચિત્બહુધાતુસ્ત્રાવમરુપુરીષમપુરીષં વાડાસાર્ય-  
માણં તૃણાદાહજ્વરભ્રમતમકહિકાશ્વાસાનુબન્ધમ-  
તિવેદનમવેદનં વા સ્તપકગુદં પતિતગુદવલિ  
મુક્તનાલમતિક્ષીણબલમાંસશોણિતં સર્વેપર્વાસ્થિ-  
શૂલિનમરોચકારતિપ્રલાપસંમોહપરીતં સહસાપ-  
રતવિકારમતિસારિણમચિકિત્સ્યં વિદ્યાત્; હિતિ  
સન્નિપાતાતિસારઃ ॥ ૧ ॥

તથા જેમકે જેસે, પક્ષ- પક્ષ પક્ષ, ઓગિતામ્  
રક્ત જેવા રક્ત જેસી આભાવાલે, ચક્રત્વણ્ડ-ઉપમમ્  
ચક્રના કડકા જેવા ચક્રત્વે લખડ જેસા, મેદઃ- માંસ-  
મેદ તથા માંસના મેદ ઔર માંસકે, ઉદક- ધાતુ  
બોધનકે, સન્નિકાશમ્ જેવા સદશ, દધિ-ધૃત- દહીં, ઘી

દહી, ઘી, મજ્જાતૈલ- મજ્જા, તેલ મજ્જા, તેલ, વસા-ક્ષીર-  
વસા, દૂધ ચર્બી, દૂધ, વેતવારામન અને વેતવાર જેવા  
ઔર વેતવાર જેસે, અતિનીલમ્ અતિશય નીલ અત્યંત  
નીલે, અતિરક્તમ્ અતિરાતા અતિલાલ, અતિકૃષ્ણમ્  
અતિકાળા અતિકાળે, પુનઃ ઉદકમ્ હવ વળી પાણી  
જેવા ફિર જલ જેસે અચ્છં ૨૫૨૭ સ્વચ્છ, મેચકામમ્  
ચળકતા કાળા મોરકી પ્રીવા જેસે નીલે ઔર ચમકદાર,  
અતિસ્નિગ્ધમ્ અતિસ્નિગ્ધ અત્યંત સ્નિગ્ધ, હરિત- લીલા  
હરે, નીલ- નીલા નીલે, કષાયવર્ણમ્ અને કષાય  
વર્ણવાળા ઔર મેઘવે રંગકે, કર્બુરમ્ કાબરચીતર  
ચિતકબરે, આખિલમ્ ખલિન મલિન, પિન્નિલમ્ ચીકણ  
પિન્નિલ, તન્તુમદ તાંતણવાળા તાર નિકલનેવાલે,  
આમમ્ આમ આમ, ચન્દ્રકોપગતમ્ ચાંદરડાવાળા  
મોરપંજકે જેસે ચક્રોસે યુક્ત, અતિકુણપ- અત્યંત શયના  
જેવી અત્યંત મુરંદેકીસી, પતિ- સડેલી સર્પી, પૂય- અને  
પૂયના જેવી ઔર પૂયકે સમાન, ગન્ધિ- ગંધવાળા  
ગંધવાળે, આમ- આમગંધવાળા આમગંધવાળે, આમ-  
મત્સ્યગન્ધિ અને કાચી માછલી જેવી ગંધવાળા  
ઔર કષાં મઝલી જેસી ગંધવાળે, મશ્નિકાકાન્તમ્ માખી-  
ઓને પ્રિય મશ્નિકાઓકે પ્રિય, કુચિત- સડેલા સર્પી હુઈ,  
બહુ-ધાતુસ્ત્રાવમ્ અને ઘણા ધાતુઓના સ્રાવવાળા  
બહુ ધાતુઓકે સ્રાવસે યુક્ત, અરુપુરીષમ્ થોડા મળવાળા  
થોડે મલસે યુક્ત, અપુરીષમ્ વા અથવા મળારહિત વા  
મળરહિત, અતિસાર્યમાણમ્ અતિસારથી યુક્ત અતિસારસે  
યુક્ત, તૃણાદાહ- તૃણા, દાહ પ્યાસ, દાહ, જ્વર-ભ્રમ- ભ્રમ,  
ભ્રમ જ્વર, ભ્રમ, તમક- તમક તમક શ્વાસ, હિકા-  
હોકી હિચકી, શ્વાસ-અનુબન્ધમ્ અને શ્વાસના અનુ-  
બંધવાળા एवं શ્વાસકે અનુબન્ધસે યુક્ત, અતિવેદનમ્  
અતિ વેદનાવાળા અત્યંત વેદનાસે યુક્ત, અવેદનમ્ વા  
કે વેદનારહિત વા વેદનારહિત, સ્તપ- શોષથલ સ્થિલ,  
પક્ષ- અને પાકેલી ઔર પક્ષ, ગુદમ્ ગુદાવાળા ગુદાવાલે,  
પતિત- નષ્ટ થયેલ નષ્ટ, ગુદવલિમ્ ગુદવલિવાળા ગુદ-  
વલિવાલે, મુક્તનાલમ્ ગુદ જેવી બહાર નીકળી ગઈ  
હોય એવા ગુદપ્રાસે યુક્ત, અતિક્ષીણ- અતિ ક્ષીણ  
થયેલ છે અત્યંત ક્ષીણ, ચક્ષ-માંસ- બલ, માંસ વલ,  
માંસ, ઓગિતમ્ તથા રક્ત જેવી એવા ઔર રક્તવાલે,  
સર્વેપર્વ- સર્વળાં પર્વે સર્વ પર્વ, અસ્થિ- અને હાડકાં

૧. પક્ષોગિતામં—કાથોગિતામં (સ. ઘ. છ. ઢ. ત. દ. ષ.)

,, ચક્રત્વણ્ડોપમં—ચક્રત્વણ્ડોપમં (ઘ. છ. ઢ.)

,, પિન્નિલં તન્તુમદામં—તન્તુમદામં (સ.)

,, મશ્નિકાકાન્તં—મશ્નિકાકાન્તમ્ (ત. ષ.)

,, પુરીષમપુરીષં—પુરીષમપુરીષં સ્વરૂપુરીષમ્ (ઘ.)

,, મુક્તનાલમ્—મુક્તનાલમ્ (સ.)

,, , , —સ્તપકગુદમ્ (ઘ.)

,, અરોચકારતિપ્રલાપસંમોહપરીતં—અરોચકારતિપ્રલાપસંમોહપરીતં(ઘ.)

और हृदियोंमें, झूलिनम् शूलिनाम् शूलवाले, अरोचक-  
अरुचि अरुचि, अरति- अरति अरति, प्रलाप- प्रलाप  
प्रलाप, संमोह- तथा मूर्च्छांती तथा मूर्च्छांसे,  
परीतम् युक्त पीबित, सहसा अने औकाओक और सहसा,  
उपरत- शांत थाय से शांत हुए, विकारम् विकारो  
नेना ओवा विकारवाले, अतिसारिणम् अतिसारना  
रोग्गीने अतिसारके रोगीओ, अचिकित्स्यम् चिकित्सा  
करवाने अथोग्य अचिकित्स्य, विद्याम् अजुवे जाने, इति  
आ यह, सन्निपातातिसारः सन्निपातातिसार से  
सन्निपातातिसार है ॥ ९ ॥

9. They are of the color of the digested blood (melena or tar-colored stools) or like the bits of liver tissue, of the appearance of the washings of fat and flesh; of the likeness of curds ghee, marrow, fat, milk and minced meat. Excessively blue-red, dark limpid like water, of the color of tar, excessively unctuous, green, blue or brown in color, variegated, dirty, slimy, containing fibrinous shreds, undigested, refracting various colors, attended with offensive and putrid smell as of putrified flesh or of raw fish. Attracting flies, containing sloughs and discharge of body-tissues and very little or no fecal matter, very frequent stools complicated by thirst, burning fever, giddiness, asthma, hiccup and dyspnea; attended with acute or mild pain and prolapse or inflammation of the rectum, drooping of rectal folds, and prolapse of the rectal tube with excessive loss of vitality, flesh and blood, pain in all the bones and joints, anorexia, apathy, delirium and delusion, and characterised by sudden cessation

of symptoms; know such a patient with these symptoms to be incurable. Thus has been described the diarrhea due to tridiscordance.

तमसाध्यतामसंप्राप्तं चिकित्सेद् यथाप्रधानोप-  
क्रमेण हेतूपशयदोषविशेषपरीक्षया चेति ॥१०॥

असाध्यताम् असाध्यताने असाध्य, असंप्राप्तम्  
न प्राप्त थयेला न हुए, तम् ते रोगीनी उस रोगीकी,  
यथाप्रधान- दोषनी प्रधानताने अनुसरी प्रधानदोषके  
अनुसार, उपक्रमेण उपचारद्वारा चिकित्साक्रमसे, हेतु-  
तथा हेतु और हेतु, उपशय- उपशय उपशय, दोष-  
विशेष- अने दोषविशेषनी और विशिष्ट दोषकी,  
परीक्षया च परीक्षाद्वारा परीक्षासे, चिकित्सेद् इति  
चिकित्सा करवी चिकित्सा करे ॥ १० ॥

10. Before it passes into the incurable stage, the physician by investigating the etiological factors, homologatory signs and the morbidity of humors should begin the treatment of the most predominant morbid humor in the condition.

भयशोकातिसारयोः लक्षणम्—

आगन्तु द्वावतीसारौ मानसौ भयशोकजौ ।  
तत्तयोर्लक्षणं वायोर्यदतीसारलक्षणम् ॥११॥

आगन्तु आगंतु हेतुथी न-मेला आगन्तु हेतुसे  
पैदा हुए, मानसौ मानसिक दोषरूप, भयशोकजौ भय अने शैक्षथी थयेला भय और  
शोकसे जनित, दौ ओ दो, अतीसारौ अतिसार से  
अतिसार हैं, वायोः वायुथी उत्पन्न थयेला वायुसे उत्पन्न  
हुए, यत् अतीसार-लक्षणम् अतिसारना से लक्षणो से  
अतिसारके जो लक्षण हैं, तत् ते वही, तयोः तेओना  
उनके, लक्षणम् लक्षणो से लक्षण हैं ॥ ११ ॥

१०. तमसाध्यतामसंप्राप्तं—तमसाध्यमसाध्यतामसंप्राप्त (द.)

११. अस्माच्छोकारपूर्वम्—

‘भवन्ति वात्र’ इति (य.) पुस्तके १२३ ।

11. The exogenous type of diarrhea born of psychic factors is of two kinds. One is born of fright and the other of grief. The signs and symptoms of both of them are the same as those of the diarrhea due to vata.

मारुतो भयशोकाभ्यां शीघ्रं हि परिकुप्यति ।  
तयोः क्रिया वानहरी हर्षणाश्वासनानि च ॥१२॥

भय-शोकाभ्याम् भय तथा शोकाभ्यां भय और शोकसे, मारुतः वायु वायु, शीघ्रम् शीघ्र शीघ्र, परिकुप्यति हि कुपित भाव से कुपित होता है, तयोः भयम् तथा शोकम् अतिसारभां भयज तथा शोकज अतिमात्रम्, वानहरी वातहर वातहर, क्रियाः चिकित्सा उपचार, आश्वे से चिकित्सा की जाती है, हर्षण- से उपरांत शोभीने आनंद इसके अतिरिक्त रोगीको आनंद, आश्वासनानि च तथा आश्वासन आपवां ओषधौ तथा आश्वासन देना चाहिए ॥ १२ ॥

12. The vata gets quickly provoked by fear and grief. Their treatment is of the vata-curative type along with inducing cheerfulness and comfort.

इत्युक्ताः षडतीसाराः साध्यानां साधनं त्वतः ।  
प्रवक्ष्याम्यनुपूर्वेण यथावत्तन्निबोधत ॥१३॥

इति आ श्रमाश्चु इस तरह, षट् छ छः, अतीसाराः अतिसार अतिसार, उक्ताः उक्ता से कहे हैं, अतः तु हवे तो अब तो, साध्यानाम् साध्य अतिसारोन्नी साध्य अतिसारोन्नी, साधनम् चिकित्सा चिकित्सा, अनुपूर्वेण अनुक्रमेण यथाक्रम, प्रवक्ष्यामि उद्दीश में कहूंगा, तत् ते उसको, यथावत् यथार्थ रीति यथार्थ रीतिसे, निबोधत साध्यानां सुनो ॥ १३ ॥

13. Thus have been described the six varieties of diarrhea. I shall now describe the treatment of the curable conditions in due order. Listen with diligence.

आमातिसारे संप्रहणौषधनिषेधः—

दोषाः सन्निविता यस्य विदग्धाहारमूर्च्छिताः ।  
अतीसाराय कल्पन्ते भूयस्तान् संप्रवर्तयेत् ॥१४॥

यस्य जेना जिसके, विदग्ध- अपक्व अपक्व, आहार- अहारही आहारसे, मूर्च्छिताः कुपित यधने मूर्च्छित होकर सन्निविताः संस्थित यधेक्ष संस्थित हुए, दोषाः दोषो दोष, अतीसाराय अतिसार अतिसार, कल्पन्ते करे से उत्पन्न करते हैं, तान् तेओन्नी उनको, भूयः अधिक खूब, संप्रवर्तयेत् प्रवृत्ति करावली प्रवृत्त करे ॥ १४ ॥

14. The patient in whom all the morbid humors are aggravated by the undigested food accumulated in the intestines and cause diarrhea, must be purged again in order to expel the fecal matter.

न तु संप्रहणं देयं पूर्वमामातिसारिणे ।  
विवक्ष्यमानाः प्राग्दोषा जनयन्त्यामयान् बहून् १५  
दण्डकालसकाध्मानग्रहण्यर्शोगदांस्तथा ।  
शोथपाण्ड्यामयप्लीहकृष्ठगुल्मोदरज्वरान् ॥१६॥

आमातिसारिणे तु आमातिसारना शोभीने तो आमातिसारके रोगीको तो, पूर्वम् प्रथम प्रथम, संप्रहणम् संप्रहणम् औषध संप्रहणीय औषध, न देयम् न आपवुं नहीं देना चाहिए, प्राग् प्रथम न प्रारंभमें ही, विवक्ष्यमानाः शोकाभां आवेक्ष्य गेके जाने पर, दोषाः दोषो दोष, बहून् थल्लु बहुतसे, आमयान् शोभीने रोगीको, दण्डक- जेवाडे:- दंडक जैमकि:- दंडक, अलसक- अलसक अलसक, आध्मान- आध्मान आध्मान, ग्रहणी- ग्रहणी ग्रहणी, अर्शोगदान हरस अर्शोगीको, तथा शोथ- सोथ शोथ पाण्ड्यामय- पांडुरोग पांडुरोग, प्लीह- प्लीहा प्लीहा, कृष्ठ- कृष्ठ कृष्ठ, गुल्म- गुल्म गुल्म,

१४. संप्रवर्तयेत्-संप्रकल्पयेत् (य.)

१५. संप्रवर्तयेत् (य. ब.)

१६. विवक्ष्यमानाः प्राग्दोषा-दोषास्वादौ विवक्ष्यमानाः (य.)

१७. -दोषा आदौ विवक्ष्यमानाः (य.)

उदर- उदररोग उदररोग, ज्वरान् तथा ७५२ने तथा  
ज्वरको, जनयन्ति उत्पन्न करे छे उत्पन्न करते हैं ॥१५-१६॥

15-16. No astringent treatment should be given in the first stages of diarrhea when undigested stools are passed. If this morbid matter is retained in the body it produces many disorders such as body-stiffness due to intestinal torpor, distention of the abdomen, assimilation-disorder, piles, edema, anemia, splenic disorders, dermatosis, gulma, abdominal diseases and fever.

तस्मादुपेक्षेतोत्क्रिष्टान् वर्तमानान् स्वयं मलान् ।  
कृच्छ्रं वा वहतां दद्यादभयां संप्रवर्तिनीम् ॥१७॥

तस्मात् तेथी उस लिए, उत्क्रिष्टान् अहार नीकणवा  
तेथार थर् उत्क्रिष्ट होकर, स्वयम् पोतानी भेगे स्वयं  
वर्तमानान् अहार नीकणता प्रवृत्त. मलान् भोगानी  
मलौकी, उपेक्षेत उपेक्षा करवी उपेक्षा करनी चाहिए,  
कृच्छ्रम् वा अथवा कृच्छ्री या कठिनतासे वहतां  
थोड़ी भति करता होय तो थोड़ा निकलते हों तो, संप्र-  
वर्तिनीम् सारी रीति प्रवृत्ति करानारी अच्छी तरह  
प्रवृत्त करनेवाली, अभयाम् हरडे हरड़ दद्यात् आपवी  
देवे ॥ १७ ॥

17. Hence the physician must allow the morbid matter to get expelled spontaneously. If it does not flow down easily, the patient may be given chebulic myrobalan which has a purgative action.

आमातिसारे अनुलोमनाथं हरीतकीयोगः —

तथा प्रवाहिते दोषे प्रशाम्यत्युदरामयः ।  
जायते देहलघुता जठराग्निश्च वर्धते ॥१८॥

तथा तेथी उससे, दोषे दोष दोषका, प्रवाहिते अहार  
नीकणता प्रवाहण होने पर, उदरामयः उदरनी व्याधि  
उदरका रोग, प्रशाम्यति शांत थाय छे शान्त होता है,

देहलघुता देह लघुता देह हलका, जायते थाय छे होता  
है, जठराग्निः च अने ७५२अग्नि और जठराग्नि, वर्धते  
वर्धे छे बढ़ती है ॥ १८ ॥

18 The morbid matter thus discharged, sedates the abdominal condition. The body becomes lighter and the gastric fire increases.

आमातिसारे प्रमथ्याः —

प्रमथ्यां मध्यदोषाणां दद्याद्दीपनपाचनीम् ।

लङ्घनं चाल्पदोषाणां प्रशस्तमतिस्सारिणाम् ॥१९॥

मध्यदोषाणाम् मध्यम दोषाणां मध्यम दोषवादे,  
अतिसारिणाम् अतिसारना रोगीअने अतिसारके  
रोगियोंको, दीपन-पाचनीम् दीपन तथा पाचन करना  
दीपन-पाचन, प्रमथ्याम् कषाय कषाय, दद्यात् आपवी  
देवे, अल्प-अने अल्प और अल्प, दोषाणाम् च  
दोषाणां दोषवालोंको लङ्घनम् लघु लङ्घन कराना,  
प्रशस्तम् श्रेष्ठ छे प्रशस्त है ॥ १९ ॥

19. If the morbid humors are of moderate intensity, the patient may be given the decoction of digestive stimulants and if the morbid humor is of very slight intensity, lightening therapy is recommended for the patient.

पिप्पली नागरं धान्यं भूतीकमभया वचा ।

हीवेरं भद्रमुस्तानि बिस्वं नागरधान्यकम् ॥२०॥

पृश्निपर्णी श्वदंष्ट्रा च समङ्गा कण्टकारिका ।

तिस्त्रः प्रमथ्या विहिताः श्लोकाद्यैरतिसारिणाम् २१

पिप्पली पीपल पिप्पली, नागरम् सूंठ सोंठ, धान्यम्  
धान्य धनिया, भूतीकम् अजमोद अजमोद, अभया  
हरडे हरड़, वचा अने वज और वच, हीवेरम् पाणो  
सुगन्धवाला, भद्रमुस्तानि अजमोद भद्रमुस्त, बिस्वम्  
भीदी बेल नागर- सूंठ सोंठ, धान्यकम् अने धान्य  
और धनिया, पृश्निपर्णी पृश्निपर्णी, श्वदंष्ट्रा  
गोअरु गोखरू, समङ्गा रीसाभण्डी लाजवंती, कण्टकारिका

१९. मध्यदोषाणाम्—मध्यदोषेभ्यो (क व, छ.)

च अने भेडी बोरी गण्डी और कटेरी, श्लोकायैः आ  
त्रयु अर्ध अर्ध श्लोकायै इति तीन श्लोकायै, अति-  
सारिणाम् अतिसारना रेण्डिओने भाटे अतिसारियोंके  
लिए, तिष्ठः त्रयु तीन, प्रमथ्याः प्रमथ्याओ प्रमथ्या,  
विहिताः डली छे कही हैं ॥ २०-२१ ॥

20-21. Long pepper, dry ginger, coriander, bishop's weed, chebulic myrobalan and sweet flag; (2) black cuscus, large variety of nut-grass, bael, dry ginger and coriander; (3) painted leaved tick-trefoil, small caltrops, madder and indian night-shade; these three groups are described one in each hemistich for patients suffering from diarrhea.

वचाप्रतिविषाभ्यां वा सुस्तपपटकेन वा ।

हीवेरभृक्कवेराभ्यां पक्कं वा पाययेज्जलम् ॥२२॥

वचा- वच, प्रतिविषाभ्याम् वा तथा अति-  
विषयी तथा अतीससे, सुस्त- अथवा मोथ अथवा मोथ,  
पपटकेन तथा अश्लक्ष्णायी तथा पित्तपापकासे, हीवेर-  
अथवा वागे। अथवा सुगन्धवाला, शृङ्गवेराभ्याम् वा  
तथा आदुधी तथा अदरकसे, पक्कम् उडालेखुं पकाया,  
जलम् पाणी जल, पाययेत् पिबेत्पुं पिबावे ॥ २२ ॥

22. Or, the physician may give as  
potion the water boiled with sweet  
flag and indian atees or with nut-grass  
and trailing rungia or with black  
cuscus and dry ginger.

अतिसारे अन्नपानम्—

युक्तेऽन्नकाले क्षुत्क्षामं लघून्वन्नानि भोजयेत् ।

तथा स शीघ्रमाप्नोति रुचिमग्निबलं बलम् ॥२३॥

क्षुत्क्षामम् क्षुधायी क्षीण अतिसारना रेण्डिओने  
कुषासे क्षीण रोगीको, युक्ते योग्य योग्य, अन्नकाले  
अन्नकालमें अन्नकालमें, लघूनि हलका लघु, अन्नानि  
अन्न अन्नसे, भोजयेत् भोजन भोजन करावे, तथा

तेज करवाथी बैसा करनेसे, सः ते वह; रुचिम् रुचि  
रुचि, अग्निबलम् अग्निना अग्नि अग्निका बल, बलम्  
अग्ने शरीर अग्ने और शरीर बलको, शीघ्र अल्पी  
शीघ्र, आप्नोति पाप्मे छे प्राप्त करता है ॥ २३ ॥

23. The physician should feed the  
patient who is emaciated by hunger  
with light diet at each meal-time. In  
this way the patient soon regains  
appetite, the strength of the gastric fire  
and vitality.

तन्नेणावन्तिसोमेन यवाग्वा तर्पणेन वा ।

सुरया मधुना चादौ यथासात्म्यमुपाचरेत् ॥२४॥

आदौ सर्वथी प्रथम सबसे प्रथम, यथासात्म्यम्  
सात्म्यने अनुसरी सात्म्यके अनुसार, तन्नेण आहारमा  
तक आहारमें छान्द, अवन्तिसोमेन डाल कांजी, यवाग्वा  
यवागू यवागू, तर्पणेन वा तर्पण तर्पण सुरया सुरा  
सुरा, मधुना च अने मधुना प्रयोगधी और शब्दके  
प्रयोगसे, उपाचरेत् उपचार करे ॥ २४ ॥

24. At first he should be treated  
with butter-milk, sour conjee, gruel,  
demulcent drink or with sura wine or  
honey according to his homologation.

यवागूभिर्विलेपीभिः खडैर्यूषै रसोदनैः ।

दीपनप्राहिसंयुक्तैः क्रमश्च स्यादतः परम् ॥२५॥

अतः परम् ते पछी इसके बाद, दीपन- दीपन दीपन,  
प्राहि- तथा आली औषधी और प्राही द्रव्योंसे, संयुक्तैः  
युक्त युक्त, यवागूभिः यवागू यवागू, विलेपीभिः विलेपी  
विलेपी, खडैः अल खड, यूषैः यूप यूप, रसोदनैः च  
अने मांसरससहित आतपी और मांसरससहित चावल  
इनसे, क्रमः क्रम क्रम, स्यात् करे ॥ २५ ॥

25. Thereafter, his dietetic regimen  
should consist of thin gruel, thick  
gruel and vegetable soups, pulse, and  
rice mixed with meat-juices and the



drugs stimulative of the gastric fire and astringent in action.

शालपर्णी पृश्निपर्णी बृहती कण्टकारिकाम् ।  
बलां श्वदंष्ट्रां बिल्वानि पाठां नागरधान्यकम् ॥२६॥  
शटीं पलाशं हृषुषां वचां जीरकपिप्पलीम् ।  
यवानीं पिप्पलीमूलं चित्रकं हस्तिपिप्पलीम् ॥२७॥  
वृक्षाम्लं दाडिमाम्लं च सहिष्णुं विडसैन्धवम् ।  
प्रयोजयेदन्नपाने विधिना सूपकल्पितम् ॥२८॥  
वातश्लेष्महरो ह्येष गणो दीपनपाचनः ।  
ग्राही बल्यो रोचनश्च तस्माच्छस्तोऽतिसारिणाम् २९

शालपर्णीम् शालाग्रं खरीवन, पृश्निपर्णीम् पृश्नि-  
पर्णीं पृश्निपर्णी, बृहतीम् बृहती, भोरीगण्डी, वनभाटा,  
कण्टकारिकाम् भोरी, भोरीगण्डी, कटेरी, बलाश्च भला,  
बला, श्वदंष्ट्राम् गोभुषु गोखरु, बिल्वानि भीक्षीनां इष्य  
बेलगिरी, पाठाम् पाठा पाठी, नागर- सूत सोंठ, दान्यकम्  
धान्य धनिया, शटीम् पट्टयूरे कचूर, पलाशश्च  
आभरे दाक, हृषुषाम् हाउरेर हाउवेर, वचाम् वच  
वच जीरक- शुरु जीरा, पिप्पलीम् पीपर पिप्पली,  
यवानीम् अजमे अजवायन, पिप्पलीमूलम् पीपरी-  
मूलना गोंडा पिप्पलीमूल, चित्रकम् चित्रक चित्रक,  
हस्तिपिप्पलीम् गजपीपर गजपिप्पली, वृक्षाम्लम्  
वृक्षाम्ल, दाडिमाम्लम् च भाटुं दाडिम  
खट्टा अनार, सहिष्णु- हिं ग हींग, विडसैन्धवम्  
भिडवल्, सिंधावल् विडनमक, सैन्धवमक, विधिना  
ये द्रव्योनी विधिपूर्वक इत द्रव्योकी विधिपूर्वक,  
सूपकल्पितम् सारी रीते कल्पना करीने अच्छी तरह  
कल्पना कर, अन्नपाने अन्नपानमां अन्नपानमे, प्रयोजयेत्  
प्रयोग करे, एषः आ यह, गणः गण  
गण, वातश्लेष्महरः वातश्लेष्मे हर करनार वातकफहारक,  
दीपन- दीपन दीपन, पाचनः पाचन पाचन, ग्राही  
ग्राही ग्राही, बल्यः बल्य बलकारक, रोचनः च हि तथा  
रोचन छे और रुचिकारक है, तस्मात् तेथी उस लिए,  
अतिसारिणाम् अतिसारना रोगीओने अतिसारके  
रोगियोंके लिए, अस्तः हितकारी छे प्रशस्त है ॥२६-२९॥

26-29. Ticktrefoil painted leaved

uraria, yellow-berried night-shade, indian night-shade, heart-leaved sida, small caltrops, bael, patha, dry ginger, coriander, long zedoary, palas, common juniper, sweet flag, cumin seeds, long pepper, bishop's weed, the roots of long pepper, white-flowered leadwort, elephant pepper, cocum butter, sour pomegranate, asafoetida, bid salt and rock salt; the physician should use the above-mentioned articles methodically prepared in the patient's food and drink. This group of articles is curative of vata and kapha, digestive-stimulant, digestive-astringent, and promotive of strength and appetite. Hence it is recommended for the patient suffering from diarrhea.

आमे परिणते यस्तु विबद्धमतिसार्यते ।  
सशूलपिच्छमल्पार्णं बहुशः सप्रवाहिकम् ॥३०॥  
यूषेण मूलकानां तं बदराणामथापि वा ।  
उपोदिकायाः क्षीरिण्या यवान्या वास्तुकस्य वा ॥३१॥  
सुवर्चलायाश्चञ्चोर्वा शाकेनावलुगजस्य वा ।  
शल्याः कर्कारुकाणां वा जीवन्त्याश्चर्मटस्य वा ३२  
लोणिकायाः सपाठायाः शुष्कशाकेन वा पुनः ।  
दधिदाडिमसिद्धेन बहुश्लेहेन भोजयेत् ॥३३॥

आमे परिणते आयो अनरस पाठी अतां  
आमके पक जाने पर, यः तु ये रोगी जो रोगी,  
सशूलपिच्छम् शूलसहित अमे श्रीशशयुक्त शूल  
और चिकाशसे युक्त, विबद्धम् अंधायेक्ष भक्षने  
बंधे हुए मलका, सप्रवाहिकम् प्रवाहिकासहित  
प्रवाहिकके साथ, अल्प-अल्पम् थोडा थोडा अमाशुमां  
थोड़े थोड़े प्रमाणमें, बहुशः धण्डीवार बहुत दफे,  
अतिसार्यते अतिसारना इपमां त्याग करे छे अतिसारके  
रूपमें त्याग करता है, तम् तेने उसे, मूलकानाम्  
मूलांना मूलीके, अथ अपि वा अथवा या, बदराणाम्



भोरना बेरके, यूषेण यूष साधे यूषके साथ, उपोदिकायाः  
अथवा योर्धना अथवा पोई, क्षीरिण्याः क्षीरिणी  
क्षीरिणी, यवान्याः अजवायनके पत्र, वास्तुकस्य वा वास्तुक वास्तुक, सुवर्चलायाः सुवर्चमुष्णी  
सूरजमुखी, चञ्चोः वा अंयु चंचु, अवलुगजस्य वा  
भावय्नीनां पान बाकुचीकी पत्तियां, शल्याः पट्टयूरे  
कचूर, कर्कारुकाणाम् वा सडरेटी खरबूज, जीवन्त्याः  
दोही जीवन्ती, चिर्भटस्य यीभडं चिर्भट,  
सपाठायाः पाठानां पांठानां पाठीकी पत्तियां, लोणिकायाः  
अथवा लूनीनी जालना अथवा नोनियाके, शाकेन शाक  
साधे शाकके साथ, दधि-दाडिम- अथवा दही अने  
दाडिमना रसथी अथवा दही तथा अनाररुसे, सिद्धेन  
भनावेला बनाये हुए, बहुस्नेहेन अने धलु धी अथवा  
तेलवाणा और प्रभूत धी या तैलवाण, शुष्कजाकेन सूडा  
शाक साधे शुष्क शाकके साथ, भोजयेत् शाधि वगेरे  
हलडा अलनु जोवन करावुं जोधो शालि आदि  
लघु अन्नका भोजन कराना चाहिए ॥ ३०-३३ ॥

30-33. If the patient, even when his chyme is ripened, still passes his stools excessively formed and in scybalous masses accompanied with colic and mucus or scantily or passes the stools very often accompanied with griping pain, the physician should feed him with soups of radish and jujube or with curries prepared of indian spinach, asthma weed, bishoo's weed, white goose-foot, sun-flower, changchu, babchi seeds, long zedoary, cork swallow wort, sweet cucumber, patha or also with dried vegetables, prepared with curds and pomegranate and mixed profusely with unctuous article.

कल्कः स्याद्बालविवानां तिलकल्कश्च तत्समः ।  
दध्नः सरोऽम्बुल्लेहाद्यः खडो हन्यात् प्रवाहिकाम् ॥

३४. सरोऽम्बुल्लेहाद्यः-सरोस्पलेहाद्यः (क.)

बालविवानां छायां पीलांभोरना कच्चे बेलका,  
कल्कः कल्क करक, स्यात् करवे करे, तत्समः च अने  
तेनी समान और इसके समान, तिलकल्कः तिलने  
कल्क लेवे। तिलोका कल्क लेवे, दध्नः सरः तेओभा  
दहीनी उपली तर उनमें दहीधी मलाई, अम्बुल्लेहाद्यः  
अंश तथा धी वगेरे स्नेह नाभी तैयार करेवे  
खटाई तथा घृत आदि स्नेह डालकर तैयार किया हुआ,  
खडः भड खड, प्रवाहिका प्रवाहिकाने प्रवाहिकाको,  
हन्यात् नाश करे छे नष्ट करता है ॥ ३४ ॥

34. The vegetable-soup prepared with equal quantity of the paste of tender bael and til paste mixed with supernatant part of curds, acid substances, and unctuous article, cures dysentery

यवानां मुद्गमाषाणां शालीनां च तिलस्य च ।  
कोलानां बालविवानां धान्ययूषं प्रकल्पयेत् ॥ ३५ ॥  
ऐक्यं यमके भृष्टं दधिदाडिमसारिकम् ।  
वर्चक्षये शुष्कमुखं शाल्यघ्नं तेन भोजयेत् ॥ ३६ ॥

यवानाम् जौ, मुद्गमाषाणाम् मग अने अड  
मूना और उदद, शालीनां तथा शाधि योभा तथा  
शालि चावल, तिलस्य च अने तल और तिल, कोला-  
नाम् तथा भेर तथा बेर, बालविवानाम् च तथा  
छायां पीलांभोरना गर्भ आ भधाने और कच्ची बेल-  
गिरी इन सबको, ऐक्यम् ऐक्य करी एकत्र कर,  
धान्य-यूषम् धान्ययूष धान्ययूष, प्रकल्पयेत् भनावेला  
बनावे, यमके धी तथा तेल ये भ-नेभी धी और तैल  
इन दोनोंसे, भृष्टम् पधारी छोककर, दधिदाडिमसारिकम्  
तेभज दही तथा दाडिमना रसने सडकार आपी एवं  
दही तथा अनाररुका संस्कार देकर, तेन ते धान्य-  
यूषधी उस धान्ययूषसे, शुष्कमुखम् सूडाध गयेले मुष्णी  
युक्त अतिसारवाणने सूखे गये मुखसे युक्त अतिवार-  
वालेको, वर्चक्षये भलेने क्षय यतां मलका क्षय होने  
पर, शाल्यघ्नम् शाधि योभाने जात शालिचावलका  
भात, भोजयेत् भवडावेला खिलावे ॥ ३५-३६ ॥

३५. कोलानाम्-बालानाम् (ध.)

35-36. Prepare a cereal-soup of barley, green gram, black gram, sali rice, til, jujube and tender bael fruits; season it with oil and ghee mixed together and add to it the supernatant part of curds and the juice of pomegranate. The physician should feed the patient afflicted with scanty formation of stools and dryness of mouth, with the cooked sali rice mixed with the above-mentioned soup.

दध्नः सरं वा यमके भृष्टं सगुडनागरम् ।

सुरां वा यमके भृष्टां व्यञ्जनार्थं प्रदापयेत् ॥३७॥

फलाम्लं यमके भृष्टं यूषं गृह्णनकस्य वा ।

लोपाकरसमम्लं वा स्निग्धाम्लं कच्छपस्य वा ॥३८॥

सगुडनागरम् अथवा गोण अने सुंठसहित या गुड और सोंठके साथ, यमके धी अने तेदभा धी और तैलमें, भृष्टम् पधारेदी छोंकी हुई दध्नः सरम् दहीनी तर दहीकी मलाई, यमके अथवा धी अने तेदभा अथवा धी और तैलमें, भृष्टम् पधारेदी छोंकी हुई, सुराम् वा मदिरा सुरा, व्यञ्जनार्थं रुचि उत्पन्न करवा भाटे रुचि उत्पन्न करनेके लिए, प्रदापयेत् आपनी देवे, यमके अथवा धी अने तेद ये भेडभा अथवा धी और तैल इन दोनोंसे, भृष्टम् पधारेदी छोंका हुआ, फलाम्लम् भाटा इणोनो रस अम्ल फलोंका रस, गृह्णनकस्य वा अथवा सलगमने या सलगमका, यूषम् यूष यूष, अम्लम् वा अथवा भाटा रसधी युक्त या खट्टे रससे युक्त, लोपाकरसम् दोड़डीने मांसरस लोमड़ीका मांसरस, स्निग्धाम्लम् अथवा धी पजेरे स्नेहोधी स्निग्ध अने भाटा इणोनो रसधी भाटा पनावेदी अथवा घृत आदि स्नेहोसे स्निग्ध और अम्ल फलोंके रससे अम्ल बनाया हुआ, कच्छपस्य वा कायभाणे कछुएका, रसम् मांसरस रुचि उत्पन्न करवा भाटे आपने मांसरस रुचि उत्पन्न करनेके लिए देवे ॥ ३७-३८ ॥

37-38. Or, he may give in the place of sauce, the supernatant part of curds seasoned with oil and ghee and mixed with gur and dry ginger, or sura wine seasoned with oil and ghee or the fruit acids seasoned with oil and ghee or the soup of carrot similarly seasoned, or the sour meat-juice of the fox or the unctuous and sour meat-juice of tortoise may be given.

बहिर्तित्तिरिदक्षणां वर्तकानां तथा रसाः ।

स्निग्धाम्लाः शालयश्चाग्न्या वर्चःक्षयरुजापहाः ॥३९॥

बहि- मोर मोर, तित्तिरि- तेतर तीतर, दक्षणाम् अने इंडोनेसिया और सुगोंके, तथा तेमन एवं, वर्तकानाम् वर्तकना बटेरके, स्निग्धाम्लाः तेद तथा भाटाश युक्त तैल तथा खटाईसे युक्त, रसाः मांसरस मांसरस, अग्न्याः च तथा गूना और पुराने, शालयः शालि योभा शालिचावल, वर्चः-क्षय- भणना क्षयधी थली मलक्षयसे होनेवाली, रुजापहाः पीडने डरनाश साथ छे पीडाको हटते हैं ॥ ३९ ॥

39. Or the meat juices of the peacock, partridge, cock and quail and cooked sali rice mixed with unctuous and sour articles are the best remedies in pain due to acoprosis.

अन्तराधिरसं पूत्वा रक्तं मेषस्य चोभयम् ।

पचेद्दाडिमसाराम्लं सधाम्यक्षेहनागरम् ॥४०॥

मेषस्य घेंटाना मेषके, अन्तराधि- मध्यदेहना मध्य- देहके, रसम् मांसरसने मांसरसको, पूत्वा पत्रधी भाणीने वज्रसे छानकर, रक्तम् च तेभा घेंटानुं न दोड़ी भेणवी उसमें भेड़के ही रक्तको मिश्रित कर, उभयम् पन्नेने दोनोंको, सधाम्य- धालुसहित धनियाके साथ, क्षेह- नागरम् तेद अने सुंठनुं यूषं भेणवीने तैल तथा सोंठका चूर्ण मिलाकर, दाडिमसार- अने दाडिमना धालुधी

और अनारदानेसे, अम्लम् आटा करीने खट्टे करके, पचेत् पकावना पकावे ॥ ४० ॥

40. Filter the meat-juice of the flesh from goat's trunk as also its blood; mix them both and prepare with coriander, unctuous article and dry ginger and acidify by adding the juice of pomegranate.

ओदनं रक्तशालीनां तेनाद्यात् प्रपिबेच्च तत् ।  
तथा वर्चःक्षयकृतैर्व्याधिभिर्विप्रमुच्यते ॥४१॥

तेन ते भंसरस साथे उस मांसरसके साथ, रक्त-शालीनाम् शर्ती शाणना येआने। लाल शालि चात्रलोका, ओदनम् आत मात, अद्यात् आवे। खावे, तम् च अने ते और उसको, प्रपिबेत् पीवे। पीवे, तथा तेम् कर-वायी ऐसा करनेसे, वर्चःक्षयकृतः भवना अथवा थथेला मलका क्षय होनेसे उत्पन्न, व्याधिभिः व्याधि-ओथी रोगोंसे, विप्रमुच्यते छुटकारे भगे छे मुक्ति पाता है ॥ ४१ ॥

41. The patient should eat cooked red sali rice with this meat-juice and also take it as potion. By this he will be relieved of the afflictions caused by acoprosis (decrease of feces).

गुदभ्रंशे चिकित्सा—

गुदनिःसरणे शूले पानमम्लस्य सर्पिषः ।

प्रशस्यते निरामाणामथवाऽप्यनुवासनम् ॥४२॥

निरामाणम् आभयी रहित आडवाणाओनी आमसे रहित पुरीषवालोकी, गुदनिःसरणे शुद्ध जे अक्षर आपती होय गुदा स्थानसे बाहर आती हो, शूले अने शूल होय तो और शूल भी हो तो, अम्लस्य अम्लरसथी साथेला अम्लरससे पकाये हुए, सर्पिषः वीतुं बीका, पानम् पान करवुं पान करना, अथवा अपि अथवा या, अनुवासनम् अनुवासनस्थिति आपनी अनुवासन

४१. ओदनम्-भोजनम् (ख. घ. फ. व.)

“ „ -भोजने (द.)

वस्ति देना, प्रशस्यते श्रेष्ठ भनाय छे श्रेष्ठ माना जाता है ॥ ४२ ॥

42. In conditions of the prolapse of rectum and colic, the potion of acidified ghee is recommended or unctuous enemata, if the patients are free from cyhme disorders.

चाङ्गेरीघृतम्—

चाङ्गेरीकोलदध्यम्लनागरक्षारसंयुतम् ।

घृतमुत्कथितं पेयं गुदभ्रंशरुजापहम् ॥४३॥

इति चाङ्गेरीघृतम् ।

चाङ्गेरी- चाङ्गेरी चांगेरी, कोल- ओर बेर, दध्यम्ल- आट्टुं दही खट्टा दही, नागर- सुंठ सोंठ, क्षार- अने अत्रआर और सबक्षारको, संयुतम् साथे मेलवीने मिलाकर, उत्कथितम् उकाणेनुं लवाला हुआ, गुदभ्रंश- गुदभ्रंशनी गुदभ्रंशकी, रुजापहम् पीडने हरनारु पीडाको हरनेवाला, घृतम् घृत घृत, पेयम् पीवुं पीना चाहिए ॥ ४३ ॥ इति आ यह, चाङ्गेरीघृतम् चाङ्गेरी-घृत छे चाङ्गेरीघृत है ।

43. The patient should drink ghee boiled and mixed with yellow wood-sorrel, jujube, sour curds, acid article, dry ginger and alkali, for the cure of the pain due to anal prolapse. Thus has been described the Yellow Wood-sorrel Ghee.

चव्याधिघृतम्—

सचव्यपिप्पलीमूलं सव्योषविडवाहिमम् ।

पेयमम्लं घृतं युक्त्या सघाम्याजाजिचित्रकम् ॥४४॥

इति गुदभ्रंशे चव्याधिघृतम् ।

सचव्य- चवड चवक, पिप्पलीमूलम् पीपरीमूलना गेटोडा पिप्पलीमूल, सव्योषम् त्रिकटु त्रिकटु, विडवाहिमम् जिडववल्गु अने दाडिम बिडलवण और अनार, सघाम्य-

४३. संयुतम्-साधनम्(व.)

४४. सघाम्याजाजिचित्रकम्-शान्ताजीधान्यनागरम् (द.)

धातुः अनिया, अजाजि- ७३ जीरा, चित्रकम् અને ચિત્રક એઝીથી સિદ્ધ કરેલા और चित्रक इनसे सिद्ध किये हुए, अम्लम् અને ખાટા રસથી युक्त और खट्टे रससे युक्त, घृतम् घी घीको, युक्तया युक्तिनથી युक्तिने, पेयम् पीपुं पीना चाहिए ॥ ४४ ॥ इति आ. यह, गुदभ्रंशे शुद्धं श भाटे गुदभ्रंशके लिए. चव्यादिघृतम् चव्यादिघृत છે ચવ્યાદિઘૃત તે.

44. The patient may drink in due dose the sour ghee prepared with the paste of chaba pepper, roots of long pepper, the three spices, bid salt, pomegranate, coriander, cumin seeds and white-flowered leadwort. Thus has been described the Compound Chaba-pepper Ghee for anal prolapse.

अनुवासनम्—

दशमूलोपसिद्धं वा सविल्वमनुवासनम् ।  
शटीशताह्वाविल्वैर्वा वचया चित्रकेण वा ॥ ४५ ॥  
इति गुदभ्रंशेऽनुवासनम् ।

दशमूलोपसिद्धम् दशमूलના કવાથથી સિદ્ધ કરેલું દશમૂલકે કાયસે સિદ્ધ કિયા હુઆ, સવિલ્વમ્ વા અથવા ખીલાના ગર્ભસહિત અથવા બેલગિરીસે યુક્ત, શાટી-અથવા પટકયૂરો યા કચ્છર, કાતાહ્વા સુવા સોયા, વિલ્વૈઃ વા અને ખીલાના ગર્ભથી और बेलगिरीसे, वचया અથવા વજ યા વચ, ચિત્રકેણ વા અને ચિત્ર-કના કવાથથી और चित्रकके कાયसे, अनुवासनम् સિદ્ધ કરેલું અનુવાસન આપું સિદ્ધ કિયા હુઆ અનુવાસન દેવે ॥ ૪૫ ॥ इति आ. यह, गुदभ्रंशे शुद्धं शने भाटे गुदभ्रंशके लिए, अनुवासनम् अनुवासन છે અનુવાસન હે.

45. Or, the physician may give unctuous enemata prepared with decaradices and with bael, or with dill seeds, long zedoary and bael, or with sweet

૪૫. શતાહ્વાવિલ્વૈર્વા-શતાહ્વાકુઠૈર્વા (અ. દ. બ.)

flag and white-flowered leadwort. Thus has been described the Unctuous Enema for anal prolapse.

સ્તબ્ધભ્રષ્ટગુદે પૂર્વે ક્ષેદસ્વેદો પ્રયોજયેત્ ।  
સુસ્વિન્નં તં મૃદુભૂતં પિચુના સંપ્રવેશયેત્ ॥ ૪૬ ॥

સ્તબ્ધ-ભ્રષ્ટ-ગુદે ગુદા એ પહેલાં સ્તબ્ધ થઈને ખસી બચે તે. ગુદા अगर पहले स्तब्ध होकर खीसक जावे तब, पूर्वम् शरीरात्तर्भा प्रारम्भमें, स्नेह-स्वेदो स्नेह અને સ્વેદનો સ્નેહ और स्वेदका, प्रयोजयेत् प्रयोग કરવો. प्रयोग करना चाहिए, सुस्विन्नम् सारी रीति स्वेदनक्रियाથી अच्छी तरहकी स्वेदन-क्रियासे, मृदुभूतम् मृदु થયેલ મૃદુ बने हुए, तम् ते गुदभागने उस गुदभागको, पिचुना पचना पीता વડે વજ્રકે ટુકડેસે, સંપ્રવેશયેત્ અ-દર ખેસાડી દેવો મીતર ઘુસા દેવે ॥ ૪૬ ॥

46. When the anal prolapse is irreducible, the oleation and sudation procedures should be first administered; when the anus is well sweated and softened, reduce it with the help of a thick cloth and push it in.

વાતાતિસારે આવસ્થિકી ચિકિત્સા—

વિવદવાતવર્ચસ્તુ बहुशूलप्रवाहिकः ।  
सरकपिच्छस्तृष्णार्तः क्षीरसौहित्यमर्हति ॥ ४७ ॥

વિવદ-વાત-વર્ચાઃ તુ જે અતિસારવાળો વાયુ અને મલની અટકાયતવાળો હોય જો અતિસારવાળા વાયુ और मलकी कवजियातवाला हो, बहुशूल-अतिथल ज्यादा शूल, प्रवाहिकः અને પ્રવાહિકાથી પીડાયેલો હોય और प्रवाहिकासे पीड़ित हो, सरकपिच्छः જેને ચીકણ-સહિત ટુધિર પાતું હોય जिसको चिकणके साथ खन गिरता हो, तृष्णार्तः અને તરસથી પીડાતો હોય તેને और प्याससे पीड़ित हो उसको, क्षीरसौहित्यम् तृप्तिपर्यन्त दूधनुं पान तृप्तिपर्यन्त दूधका पान, मर्हति કરાવવું એઈએ કરાના चाहिए ॥ ૪૭ ॥

૪૬. તં-ચ (ધ.)

47. The patient afflicted with retention of flatus and feces who painfully passes liquid motions mixed with blood and mucus and who is afflicted with thirst, should be given a full diet of milk.

यमकस्योपरि क्षीरं धारोष्णं वा पिवेन्नरः ।

शृतमेरण्डमूलेन बालबिल्वेन वा पयः ॥४८॥

नरः अतिसारवाणा पुरुषे अतिसारवाले पुरुषको, यमकस्य धी अने तेल धीने वी और तैल पीकर, उपरि तेना उपर उसके ऊपर, धारोष्णम् शैःकुटुं धारोष्ण, क्षीरम् वा दूध दूध, एरण्डमूलेन अथवा औरंडाना भूणथी यारेंडीके मूलसे, बालबिल्वेन वा अथवा डाला भिलावा गभथी या कच्ची बेलगिरीसे, शृतम् पकावेहुं पकाया हुआ, पयः दूध दूध, पिवेत् पीवुं पीना चाहिए ॥ ४८ ॥

48. Or, the patient may drink udder-warm milk after taking a mixture of oil and ghee; or he may drink milk boiled with the root of castor plant or with tender bael.

एवं क्षीरप्रयोगेण रक्तं पिच्छा च शाम्यति ।

शूलं प्रवाहिका चैव विबन्धश्चोपशाम्यति ॥४९॥

एवम् आ प्रभाष्ये इस प्रकार, क्षीरप्रयोगेण दूधना प्रयोगथी दूधके प्रयोगसे, रक्तम् पिच्छा च अङ्गमां पडातां डोढी अने जलश अतिसारमें गिरते खून और आँसू, शाम्यति शान्त भाव छे शांत होते हैं, शूलम् तेमज थल और शूल, प्रवाहिका च एव प्रवाहिका प्रवाहिका, विबन्धः च तथा कुण्ठयति तथा मल और वायुकी रुकावट भी, उपशाम्यति मटी भम छे हट जाती है ॥ ४९ ॥

49. By the administration of milk in this way, the blood and mucus get

cured; colic, diarrhea and constipation too get relieved.

पित्तातिसारे चिकित्सक्रमः —

पित्तातिसारं पुनर्निदानोपशयाकृतिभिरामान्व-  
यमुपलभ्य यथाबलं लङ्घनपाचनाभ्यामुपाचरेत् ।

पित्तातिसारम् (पित्तातिसारने पित्तातिसारको, पुनः तो तो, निदान- हेतु निदान, उपशय- उपशय उपशय, आकृतिभिः अने लक्षणैःथी और लक्षणोंसे, आमान्वयम् आभवाणो आमवाला, उपलभ्य जलुपी जानकर, लङ्घन- लंघन लंघन, पाचनाभ्याम् अने पाचन पडे और पाचनसे, यथाबलम् शैलीना अव प्रभाष्ये रोगीके बलके अनुसार, उपाचरेत् उपचार करवे उपचार करे।

50-(1). The physician diagnosing the diarrhea attended with mucus to be of the pitta type by its etiology, homologation and signs and symptoms, should treat the condition according to its intensity, administering to the patient lightening and digestive therapies.

तृष्यतस्तु मुस्तर्पटकोशीरसारिवाचन्दन-  
किरातत्तिककोदीच्यवारिभिरुपचारः ।

तृष्यतः तु शैली तथातुर भाव तो रोगीको प्यास लगने पर, मुस्त- मोथ मोथा, पटको- भंडसक्षिथे पित्तपापडा, उशीर- वीरक्षुने वागे खस, मारिवा- सारिवा कपूरी, चन्दन- चंदन चन्दन, किरातत्तिक- किरातु चिरायता, उदीच्य- अने सुभंधी वाधाना और सुगन्ध वाला इनके, वारिभिः उडगोला डवाथथी उवाले हुए पानीसे, उपचारः उपचार करवे उपचार करना चाहिए।

50-(2). When afflicted with thirst, the patient should be given water boiled with nut-grass, trailing rungia, black cuscus, indian sarsaparilla, sandal, chiretta and fragrant sticky mallow.

लङ्घितस्य चाहारकाले बलातिबलासूर्पपर्णी-  
शालपर्णीपृश्निपर्णीबृहतीकण्टकारिकाशतावरीश्व-  
दंष्ट्रानिर्यूहसंयुक्तेन यथासात्म्यं यवागूमण्डादिना  
तर्पणादिना वा क्रमेणोपचारः ।

लङ्घितस्य च लंघनं कर्तव्यं पछी लंघन करानेके  
पश्चात्, आहारकाले भोजन वधते भोजनके समय, बला-  
यक्षा बला, अतिबला- अपाट कंधी, सूर्पपर्णी- जंगली  
भग वनमूंग, शालपर्णी- शाक्षपल्लु सरीसृप, पृश्निपर्णी-  
पृश्निपर्णी पृश्निपर्णी, बृहती- ऐली कोरीगल्ली बनभाटा,  
कण्टकारिका- ऐली कोरीगल्ली कटेरी, शतावरी- शतावरी  
शतावर, श्वदंष्ट्रा- अने गोभुज ऐसीना और गोखरू  
इनके, निर्यूह- संयुक्तेन क्तायधी मिश्रित करेवा काथसे  
मिश्रित किये हुए, यवागू- यवागूना यवागूके, मण्डादिना  
भंड वगेरेशी मंड आदिसे, तर्पणादिना वा अथवा  
संतर्पण वगेरेशी या संतर्पण आदिसे, क्रमेण कृमपूर्वक  
क्रमसे, यथासात्म्यम् सात्म्य प्रमाणे सात्म्यके अनुसार,  
उपचारः उपचार करेवा उपचार करना चाहिए ।

50-(3). When he has undergone  
lightening therapy he should be given,  
at the meal time with due considera-  
tion to his homologation, the dietetic  
regimen consisting of the supernatant  
fluid of barley gruel, or demulcent  
drink etc., mixed with the decoction  
of heart-leaved sida, country mallow,  
wild green gram, ticktrefoil, painted  
leaved uraria, yellow-berried night-  
shade, indian night-shade, climbing  
asparagus and small caltrops.

मुद्गमसूरहरेणुमकुष्ठकाढकीयूषैर्वा लावकपि-  
ञ्जलशशहरिणैकालपुच्छकरसैरिषदम्लैरनम्लैर्वा  
क्रमशोऽग्निं सन्धुक्षयेत् ।

मुद्ग भग मूंग, मसूर, भसूर, मसूर, हरेणु- वटाछा  
मटर, मकुष्ठक- भंड मोठ, जाढकीयूषैः वा अने पुषरना

५०. शतावरीश्वदंष्ट्रा-श्वदंष्ट्रा (ब.)

,, हरेणुमकुष्ठकाढकीयूषैर्वा-हरेणुमकुष्ठयूषैर्वा (ख.)

यूषे। वडे और अरहरके यूषोंसे, ईषत् अम्लैः अथवा  
थोड़ा आटा या थोड़े खट्टे, अनलैः वा डे नडि आटा  
या अम्लतारहित, लाव- लाव बटेर, कपिञ्जल- कपि-  
जल कपिञ्जल, शश- ससदा खरगोश हरिण- हरण  
और हरिण, एण- मोटा भृग एण, कालपुच्छक- अने  
काणियारना तथा कालामृग इनके, रसैः भांसरसोथी  
मांसरससे, क्रमशः कृमपूर्वक क्रमपूर्वक, अग्निम् अग्निने  
जठराग्निको, सन्धुक्षयेत् प्रदीप्त करेवा प्रदीप्त करे ।

50-(4). His digestive power should be  
gradually increased by the use of soups  
of green gram, lentils, peas, tapery  
beans and pigeon pea or meat-juices  
of quail, partridge, rabbit, deer and  
black-tailed deer in both cases mixed  
slightly with acid or unmixed with it.

अनुबन्धे त्वस्य दीपनीयपाचनीयोपशमनीय-  
संप्रहणीयान् योगान् संप्रयोजयेदिति ॥५०॥

अस्म आ इस, अनुबन्धे तु पित्तातिसारने। थोड़ा  
अंश रहती गये। होय तो पित्तातिसारका थोड़ासा अंश  
रह गया हो तो, दीपनीय- दीपन दीपन, पाचनीय-  
पाचन करना और पाचन करनेवाले, उपशमनीय- शान्ति  
करना शतमक, संप्रहणीयान् तथा आडे। भंड करना  
तथा मलके रोकनेवाले, योगान् थोड़ेना योगोंका, संप्रयो-  
जयेत् इति प्रयोग करेवा प्रयोग करना चाहिए ॥ ५० ॥

50. When the diarrhea is accom-  
panied with pitta complications, diges-  
tive stimulant, digestive, sedative and  
astringent preparations should be  
administered.

पित्तातिसारे कतिपययोगाः —

सक्षौद्रातिविषं पिष्टा वत्सकस्य फलत्वचम् ।  
पिबेत् पित्तातिसारघ्नं तण्डुलोदकसंयुतम् ॥५१॥

५०. संप्रयोजयेदिति-प्रयोजयेदिति (ब.)

५१. अस्माच्छ्लोकात्पूर्वम्-

‘भवन्ति चात्र’ इति (ब.) पुस्तके पठ्यते ।

,, पिबेत् पित्तातिसारघ्नं तण्डुलोदकसंयुतम्-तण्डुलोदकसंयुक्तं  
पेयं पित्तातिसारघ्नम् (ब.)







और मलकी रुकावट करनेवाले, रसैः मसूरसे। मांसरसोंके, युक्तः सहित साथ, पुराणाः जुना पुराणे, रक्तशालयः दाल ये। भा। लाल चावल, शस्यन्ते श्रेष्ठ मनाय छे श्रेष्ठ माने जाते हैं ॥ ५६ ॥

56. When the dose has been digested, a meal of old red sali rice and meat-juices prepared methodically with astringent drugs are beneficial.

पित्तातिसारो दीप्ताग्नेः क्षिप्रं समुपशाम्यति ।  
अजाक्षीरप्रयोगेण बलं वर्णश्च वर्धते ॥ ५७ ॥

दीप्ताग्नेः प्रदीप्त जुहुराग्निवाणा। प्रदीप्त जठराग्नि-वालेका, पित्तातिसारः पित्तातिसार पित्तजन्य अतिसार, अजा-क्षीर-अक्षरीना दूधना बकरीके दूधके, प्रयोगेण प्रयोगशी प्रयोगसे, क्षिप्रम् जल्दी शीघ्र, समुपशाम्यति मदी अय छे मिट जाता है, बलम् अने शरीरनुं अल और शरीरका बल, वर्णः च तथा रंग और वर्ण, वर्धते वृद्धि पाये छे वृद्धिको प्राप्त होता है ॥ ५७ ॥

57. The diarrhea of the pitta type is soon cured, if the patient's gastric fire is in a strong condition, by the administration of the course of goat's milk; and his vitality and complexion also get enhanced.

बहुदोषस्य दीप्ताग्नेः संप्राणस्य न तिष्ठति ।  
पैत्तिको यद्यतिसारः पयसा तं विरेचयेत् ॥ ५८ ॥

बहुदोषस्य धातु। दोषवाण। बहुत दोषवाले, दीप्ताग्नेः प्रदीप्त जुहुराग्निवाणा। प्रदीप्त जठराग्निवाले, संप्राणस्य अने अणवान रोगीने। और बलवान रोगीका, पैत्तिकः पित्तभी थयेवे। पित्तजन्य, अतिसारः अतिसार अतिसार, यदि अे यदि, न तिष्ठति शान्त न थाय तो शान्त न हो तो, तम् तेने उसको, पयसा दूधशी दूधसे, विरेचयेत् विरेचन करानुं विरेचन कराना चाहिए ॥ ५८ ॥

58. If the diarrhea of the pitta

type in a strong person with powerful gastric fire does not abate, he should be purged with medications mixed with milk

पलाशफलनिर्यूहं पयसा सह पाययेत् ।

ततोऽनुपाययेत् कोष्णं क्षीरमेव यथाबलम् ॥ ५९ ॥

पलाश-फल-भाभराना। इणीना ढाकके फलोंके निर्यूहम् क्वाथने काथको, पयसा दूधनी दूधके, सह साथे साथ, पाययेत् पीवराववे। पिलावे, ततः त्थार पक्षी उसके बाद, कोष्णम् थोडाडा डीना थोडासा गरम, क्षीरम् एव दूधनुं अ दूधका ही, यथाबलम् शक्ति प्रमाणे शक्तिके अनुसार, अनुपाययेत् अनुपान करानुं अनुपान कराना चाहिए ॥ ५९ ॥

59. The patient should be given as potion the decoction of the seeds of palas mixed with milk, followed by an after-potion of genially warm milk according to his strength.

प्रवाहिते तेन मले प्रशाम्यत्युदरामयः ।

पलाशवत् प्रयोज्या नात्रायमाणा विशोचिनी ॥ ६० ॥

तेन ते क्वाथशी उस काथसे, मले मल मलके, प्रवाहिते नीकशी अती वाहिर बह जाने पर, उदरामयः पित्तने। अतिसार पित्तका अतिसार, प्रशाम्यति शांत थाय छे शांत होता है, पलाशवत् भाभराना क्वाथनी पेडे ढाकके काथके सहस्र, विशोचिनी मलनुं शोधन कराने मलके शोधन करनेवाली, त्रायमाणा वा त्राय-माणने। पक्षु असर्वका मी, प्रयोज्या प्रयोग कराने। प्रयोग करना चाहिए ॥ ६० ॥

60. Thus by means of this medication when the morbid matter in his bowel gets flushed out, the abdominal trouble gets relieved. Zalil should be used in the same manner as a purificatory agent.

पित्तातिसारे अनुवासनम्—

सांसर्ग्यां क्रियमाणायां शूलं यद्यनुवर्तते ।

स्रुतदोषस्य तं शीघ्रं यथावदनुवासयेत् ॥६१॥

स्रुतदोषस्य विरेचनं तथा पछी विरेचन होनेके बाद, सांसर्ग्याम् संसर्जनं कम् संसर्जनं क्रम, क्रियमाणायाश्च कृत्वाभी आवत्तां छत्तां पछु किये जाने पर भी, यदि ओ यदि, शूलश्च शूलतुं शूलका, अनुवर्तते अनुवर्तनं होय तो अनुवर्तन हो तो, तम् तेने उसको, यथावत् विधिपूर्वकं विधिपूर्वक, शीघ्रम् जल्दीथी तुरन्त ही, अनुवासयेत् अनुवासनभस्ति आपवी अनुवासनवस्ति देवे ॥ ६१ ॥

61. While being subject to rehabilitative procedure if the patient suffers from colic, he should be given purgation followed quickly by unctuous enema in systematic manner.

शतपुष्पावरीभ्यां च पयसा मधुकेन च ।

तैलपादं घृतं सिद्धं सखिल्वन्ननुवासनम् ॥६२॥

शतपुष्पा सुवा शोया, वरीभ्याम् च शतावरी शतावर, पयसा तथा दूध दूध, मधुकेन च गेहीभध सुलहडी, सखिल्वम् तथा भीक्षाना गर्भ साथे और बेलगिरीके साथ, तैलपादम् धीथी येथा भागनुं तैल भेजवीने बीसे चौथा भाग तैल मिलाकर, सिद्धम् अनावेधुं बनाये हुए, घृतम् धी धीको, अनुवासनम् अनुवासनभस्तिभी आपवुं अनुवासनवस्तिमें देना चाहिए ॥ ६२ ॥

62. The unctuous enema should be of ghee mixed with 1/4 its quantity of oil and prepared with the paste of dill seed, climbing asparagus, liquorice and bael.

पित्तातिसारे पिच्छावस्तिः—

कृतानुवासनस्यास्य कृतसंसर्जनस्य च ।

वर्तते यद्यतीसारः पिच्छावस्तिरतः परम् ॥६३॥

कृत-अनुवासनस्य नेने अनुवासनभस्ति आपवत्तां आवी होय जिसको अनुवासन दिया गया हो, कृतसंसर्जनस्य च तथा नेछे संसर्जनकम् कराव्यो होय और संसर्जनकम् कराया हो, अस्य ओवा आ रोगीने ऐसे इस रोगीको, यदि ओ यदि, अतीसारः अतिसार रोग अतिसार रोग, वर्तते आधु रहे जारी रहे, अतःपरम् तो ते पछी तो तदनन्तर, पिच्छावस्तिः तेने पिच्छावस्ति आपवी ओछो इसको पिच्छावस्ति देनी चाहिए ॥ ६३ ॥

63. If even after the administration of the unctuous enema and of the rehabilitative regimen diarrhea still persists then the mucilaginous enema should be given.

परिवेष्ट्य कुशैराद्रैराद्रवृन्तानि शास्मलेः ।

कृष्णमृत्तिकयाऽऽलिप्य स्वेदयेद्गोमयाग्निना ॥६४॥

सुशुष्कां मृत्तिकां ज्ञात्वा तानि वृन्तानि शास्मलेः ।

शृते पयसि मृद्वीयादापोप्योत्क्षले ततः ॥६५॥

पिष्टं मुष्टिसमं प्रस्थे तत् पूतं तैलसर्पिषोः ।

स्नेहितं मात्रया युक्तं कर्ककेन मधुकस्य च ॥६६॥

वस्तिमभ्यक्तगात्राय दद्यात् प्रत्यागते ततः ।

स्नात्वा भुञ्जीत पयसा जाङ्गलानां रसेन वा ॥६७॥

शास्मलेः शास्मलिनो शास्मलिके, आद्रवृन्तानि धीली डाभणीओ हरे वृन्तोंको आद्रैः धीक्षा रागी, कुशैः द्रुमोवडे कुशाओसे, परिवेष्ट्य आरे तरुधो वीटीने चारों ओर लपेटकर, कृष्णमृत्तिकया काली माटीधो काली मिट्टीसे, आलिप्य लेपन करीने लेपन करके गोमयाग्निना अग्नीधो अग्निधो कण्डोंके अग्निसे, स्वेदयेत् स्वेद आपवेत् स्वेद देना चाहिए, ततः त्पार पछी उसके बाद, मृत्तिकाम् माटीने मिट्टीको, सुशुष्काम्

६४. सुशुष्कां—शुष्कां व (ब.)

६५. पिष्टम्—पिष्टम् (क, ख, ग)

स्नेहितं—योजितं (घ, त, थ, ध)

६७. अस्माच्छ्लोकादनन्तरम्—

‘इतिपिच्छावस्तिः’ इति (क.) पुस्तके पठ्यते ।

सारी रीते सूक्ष्मेष्टी अच्छी तरहसे सूख गई, ज्ञात्वा  
अष्टीने जानकर, ताम्रि भाक्ष आपचामां आवेष्टी ते  
बाष्प दिये हुए उन, शाल्मल्ले: शैभगानी शाल्मल्लिके,  
वृन्तानि उभगानीने वृन्तोंको, उल्लखले भाक्षिण्यामां  
ऊखलमें, आपोष्य भाक्षीने कूटकर, मुष्टिसमम्  
४ तोलाना ४ तोलेके, पिण्डम् [प]उने पिण्डको, शिस्थे  
शैसु तोला चौसठ तोले, श्रुते पयसि गरभ  
कुरेला दूधमां गरम किये हुए दूधमें, मृद्वीयाव  
शैली नाभवी मसल देना, पृथक् तत् पञ्चथी  
गाणेश तेने वस्त्रसे छाने हुए उसको, तैलसर्पिषो:  
तेल अने धीनी तैल और धीकी, मात्रया मात्राथी  
मात्रासे, स्नेहितम् स्निग्ध करीने स्निग्ध करके, मधुकस्य  
च अने जेडीमधना और मुलहठीके, कल्केन कट्क  
साथे कल्के साथ, युक्तम् मिश्रित करीने मिलाकर,  
अभ्यक्तगात्राय तेलने अभ्यंग जेना गात्रोमां कुरेला  
छे जेवा ते रोगीने जिसके गात्रोमें तैलका अभ्यंग  
हुआ हो ऐसे रोगीको, बस्तिम् अस्ति बस्ति, दद्यात्  
आपवी देनी चाहिए, ततः त्पार पछी पश्चात्, प्रत्या-  
गते आवेष्टी अस्ति पाछी करे त्पारे की हुई बस्ति  
लौट आने पर, स्नात्वा स्नान करीने स्नान करके,  
पयसा दूधनी साथे दूधके साथ, जाङ्गलानाव अथवा  
अंगद भाक्षीओना या जाङ्गल प्राणियोंके, रसेन वा  
भाक्षरसनी साथे मांवरससे, सुजीत बोजन कुरवुं  
भोजन करना चाहिए ॥ ६४-६७ ॥

64-67. Envelop the green leaf-  
stalks of silk-cotton tree with green  
sacrificial grass and plaster it with  
black earth and steam-boil it in the  
cow-dung fire, till the earth gets  
dried up Take out the leaf-stalks of  
silk cotton and crush them in boiled  
milk and pound them in a mortar and  
make into balls of 4 tolas each. The  
ball should be mixed with 64 tolas of  
oil and ghee and filtered and adding  
the paste of liquorice, this unctuous  
enema should be given to the patient

previously inuncted. After the enema  
has returned, the patient should take  
his bath and then eat his meal along  
with milk or with meat-juice of  
jangala animals.

पित्तातिसारज्वरशोथगुल्म-

जीर्णातिसारग्रहणीप्रदोषान् ।

जयत्ययं शीघ्रमतिप्रवृद्धान्

विरेचनास्थापनयोश्च बस्तिः ॥६८॥

अथम् आ यह, बस्तिः पित्तातिसार-  
अतिप्रवृद्धान् अति वधी गयेला बहुतसे बढ़ गये हुए,  
पित्तातिसार- पित्तातिसार पित्तातिसार, ज्वर- ज्वर  
ज्वर, शोथ- शोथ शोथ, गुल्म- गुल्म गुल्म,  
जीर्णातिसार- जीर्णा अतिसार पुराने अतिसार, ग्रहणीप्रदो-  
षान् अने ग्रहणीना दोषों और ग्रहणीके दोषों, विरेचन-  
आस्थापनयोः च तथा विरेचन तेमज आस्थापनना  
अतियोगने तथा विरेचन एवं आस्थापनके अतियोगको,  
शीघ्रम् अल्हदी तुरन्त, जयति अते छे जीतती है ॥ ६८ ॥

68. This purgative as well as co-  
rective enema cures quickly severe  
types of diarrhea of the pitta type,  
fever, edema, gulma, chronic diarrhoea,  
and assimilation disorders.

रक्तातिसारलक्षणम्—

पित्तातिसारी यस्त्वेतां क्रियां मुक्त्वा निवेद्यते ।

पित्तलान्यन्नपानानि तस्य पित्तं महाबलम् ॥६९॥

कुर्याद्रक्तातिसारं तु रक्तमाशु प्रदूषयेत् ।

तृष्णां शूलं विदाहं च गुदपाकं च दारुणम् ॥७०॥

यः तु जे जो, पित्तातिसारी पित्तातिसारी पुत्रुप  
पित्तजन्य अतिसारवाला पुरुष, एताम् आ इस, क्रियाम्

६८. शोथगुल्म-शोथगुल्म (क.)

॥ बस्तिः-बस्तिः (ब. फ.)

७०. कुर्याद्रक्तातिसारं तु रक्तमाशु प्रदूषयेत्-रक्तातिसारं कुर्यात्

रक्तमाशु प्रदूषयेत् (ब. क.)

॥ कुर्याद्रक्तातिसारं तु-रक्तातिसारं कुर्यात् (ब.)

त्रिद्विस्त्रासे विकृतिस्त्राको, मुक्त्वा ओडीने छोड़कर, पित्तकानि पित्तने पधारनारं पित्तको बढ़ानेवाले, अन्नपानानि अन्नपानेनुं अन्नपानादिकका, निषेवते सेवन करे छे सेवन करता है, तस्य तेनुं उसका, महाबलम् अत्यंत बधी गयेछुं अधिक बढ़ा हुआ, पित्तम् पित्त पित्त, आशु बलदी तुरन्त, रक्तम् तु बोलीने खूनको, प्रदूषयेत् दूषित करे छे दूषित करता है, रक्तातिसारम् बोलीथी मिश्रित अतिसार खूनसे मिश्रित अतिसार, तृष्णाम् तृष्णा प्यास, शूलम् शूल शूल, विदाहम् च अने विदाह और विदाह, दारुणम् तथा भयंकर तथा खतरनाक, गुदपाकम् च गुदपाकने गुदपाकको, कुर्यात् उत्पन्न करे छे पैदा करता है ॥६९-७०॥

69-70. If the patient suffering from pitta type of diarrhea gives up the treatment and indulges in pitta-provoking eats and drinks, his pitta gets greatly provoked and produces dysentery or hemorrhagic-diarrhea, vitiates the blood and produces thirst, colic, burning sensation and serious anal inflammation.

रक्तातिसारविकृतिस्त्रा—

तत्रच्छागं पयः शस्तं शीतं समधुशर्करम् ।  
पानार्थं व्यञ्जनार्थं च गुदप्रक्षालने तथा ॥७१॥

तत्र ते अवस्थाभां उस अवस्थामें, पानार्थम् पीवाने भाटे पीनेके लिए, भोजनार्थम् भजवाने भाटे खानेके लिए, तथा तथा तथा, गुदप्रक्षालने च शुद्धने धोवा भाटे गुदाको धोनेके लिए, शीतम् ठंडे ठंडा, समधुशर्करम् मधु अने साकर भेजवेछुं शहद तथा चीनी मिलाया हुआ, जागम् अकरीनु बकरीका, पयः दूध दूध, अन्नम् प्रशस्त छे प्रशस्त है ॥ ७१ ॥

71. In this condition goat's cold milk mixed with honey and sugar is

recommended as drink and sauce and also for anal douching.

ओदनं रक्तशालीनां पयसा तेन भोजयेत् ।  
रसैः पारावतादीनां घृतभृष्टैः नशर्करैः ॥७२॥

तेन अकरीना ते बकरीके उस, पयसा दूधथी दूधसे, रक्तशालीनाम् दूध येभां लाल चावलका, भोजनम् भोजन भोजन, भोजयेत् भजवपुं खिलावे, घृतभृष्टैः अथवा घीथी पधारेवा अथवा घीसे छोंके हुए, नशर्करैः साकरवाला चीनीसे युक्त, पारावतादीनाम् पारावत वजरेना पारावत आदिके, रसैः मांसरसे वा भोजन करावपुं मांसरसेसे भोजन करावे ॥ ७२ ॥

72. The patient should be made to eat cooked red sali rice with this milk or with meat-juices of the pigeon and other birds, seasoned with ghee and mixed with sugar.

शशपक्षिमृगाणां च शीतानां घन्वचारिणाम् ।  
रसरनम्लैः सघृतैर्भोजयेत् सशर्करैः ॥७३॥

शीतानाम् शीत वीर्यवाला शीत वीर्यवाले, घन्वचारिणाम् अने सूडी भूमिभां चरनारं और जंगल भूमिमें चरनेवाले, शश-पक्षि ससवां, पक्षीओ खरगोश, पक्षिगण, मृगाणाम् तथा पशुओनां औरप शुभोंके, अनम्लैः अटाश विनाना खटाई नहीं डाले हुए, सघृतैः घीथी मिश्रित करेवा घीसे मिश्रित, सशर्करैः अने साकर भेजवेवा और चीनी मिलाये हुए, रसैः मांस-रसेथी मांसरसेसे, तस्य तेने उसको, भोजयेत् भोजन करावपुं खिलाना चाहिए ॥ ७३ ॥

73. He may be fed with the non-acidified meat-juices of rabbits, birds and animals of the jangala type which are cooling in action, seasoned with ghee and mixed with sugar.

७२ ओदनं-भोजन (ख. म. छ. ड. न. य. व.)

७३. शशपक्षिमृगाणां न शीतानां घन्वचारिणाम् शशानां

घन्वचारिणं न शीतानां मृगपक्षिणाम् (घ.)

रुधिरं मार्गमाजं वा घृतभृष्टं प्रशस्यते ।  
काश्मर्यफलयूषो वा किञ्चिदम्लः सशर्करः ॥७४॥

घृतभृष्टम् धीमां वधारेणुं बीसे छोंका हुआ, मार्गम् हरिणुं हरिणका, आजम् वा के अकरीनुं या बकरीका, रुधिरम् रक्त रुधिर, किञ्चिदम्लः अथवा श्लेष्मिक अम्लवाणो या थोड़ीसी खटाईवाला, सशर्करः साकर-सहित चीनीके साथ, काश्मर्यफलयूषः वा शीतलानुं इणो यूप गम्भारीफलोंका यूप, प्रशस्यते श्रेष्ठ मनाय छे श्रेष्ठ माना जाता है ॥ ७४ ॥

74. The blood of the deer or of the goat seasoned with ghee, or the slightly acidified soup of the fruits of silk-cotton tree mixed with sugar, is recommended in the above condition

नीलोत्पलं मोचरसं समङ्गा पद्मकेशरम् ।  
अजाक्षीरयुतं दद्याज्जीर्णं च पयसौदनम् ॥७५॥  
दुर्बलं पाययित्वा वा तस्यैवोपरि भोजयेत् ।  
प्राग्भक्तं नवनीतं वा दद्यात् समधुशर्करम् ॥७६॥

नील-उत्पलम् नील कुमण नीलोफर, मोचरसम् मेथुरस मोचरस, समङ्गा रीसामण्डी लाजवन्ती, पद्मकेशरम् तथा कुमणना तंतु ओओना यूर्णने तथा कमलकेशर इनके चूर्णको, अजाक्षीर- अकरीना दूधमां बकरीके दूधमें, युतम् भेणवीने मिलाकर, दद्यात् आपवा देना चाहिए, जीर्णं च अने ते पयसी अध त्पारे और वह पच जाय तब, पयसा दूधनी साथे दूधके साथ, ओदनम् भात आपवे भात देना चाहिए, दुर्बलम् वा अथवा दुर्बल रक्तातिसारवाणाने या बलहीन रक्तातिसारवालेको, पाययित्वा नीलोत्पलादि यूर्ण अकरीना दूध साथे पाईने नीलोत्पलादि चूर्णको बकरीके दूधके साथ मिलाकर, तस्य एव तेना उसके, उपरि उपर ही, भोजयेत् ओओन करावपुं भोजन कराना चाहिए, प्राग्भक्तम् वा अथवा नभवा पहलेका अथवा भोजनके पहले, समधुशर्करम् अध अने साकरसहित शहद और चीनीसहित, नवनीतम् भाण्डु मक्खन, दद्यात् आपवुं देना चाहिए ॥ ७५-७६ ॥

75-76. Blue lily, the gum of silk-cotton, madder and lotus anthers should be given mixed with goat's milk; and when this dose is digested milk and rice should be given as diet. If the patient is weak, he should be given this potion and should immediately be made to take his food, or he should be given butter with honey and sugar before meals.

प्राश्य क्षीरोत्थितं सर्पिः कपिञ्जलरसाशनः ।  
त्र्यहादारोग्यमाप्नोति पयसा क्षीरमुक् तथा ॥७७॥

कपिञ्जल- कपिञ्जलना कपिञ्जलके, रसाशनः मांस-रसने आहार करते। मांसरसका आहार करता हुआ, तथा अथवा अथवा, क्षीरमुक् केवल दूधने आहार करते। इन्दी सिर्फ दूधका ही आहार करता हुआ रोगी, क्षीरोत्थितम् दूधमांथी डाढ़ेणु दूधसे निकाले हुए, सर्पिः धी धीको, पयसा दूध साथे दूधके साथ, प्राश्य पाईने खाकर, त्र्यहाद् त्रय दिवसमा तीन रोजमें, आरोग्यम् आरोग्यने आरोग्यको, आप्नोति आप्त करे छे प्राप्त करता है ॥ ७७ ॥

77. The person, taking the meat-juice of partridge for his diet, or living on a milk diet, recovers within three days from this disease by taking milk-churned ghee with milk.

पीत्वा शतावरीकल्कं पयसा क्षीरमुञ्जयेत् ।  
रक्तातिसारं पीत्वा वा तथा सिद्धं घृतं नरः ॥७८॥

क्षीरमुक् केवल दूधने आहार करते। केवल दूधका आहार करता हुआ, नरः पुरुष पुरुष, शतावरी- शतावरीना शतावरके, कल्कम् कुडकुने कल्कको, पयसा दूधनी साथे दूधसे, पीत्वा पीने पीकर, तथा सिद्धम् अथवा तेनाथी सिद्ध करेला और इससे सिद्ध किये हुए, घृतम् वा धीने धीको, पीत्वा पीने पीकर, रक्तातिसारम् रक्तातिसारने रक्तातिसारको, जयेत् निर्भूण करे छे नष्ट करता है ॥ ७८ ॥

78. The patient observing milk diet should get his hemorrhagic diarrhea (dysentery) cured by drinking the paste of climbing asparagus mixed with milk or by drinking ghee prepared with climbing asparagus.

घृतं यथागूमण्डेन कुटजस्य फलैः शृतम् ।  
पेयं तस्यानु पातव्या पेया रक्तोपशान्तये ॥७९॥

रक्त- रक्तातिसारभा पडता बोलीनी रक्तातिसारमें गिरते हुए खूनकी उपशान्तये शान्तिने भाटे शान्तिके लिए, कुटजख फलैः धनंशोवेधी इन्द्रजोसे, वृत्तम् तैयार करेलुं तैयार किये, वृत्तम् धी वीको, यवागू- मण्डेन यवागूना भंडथी यवागूके मंडसे, पेयम् पीवुं पीवे, तस्य तेना उसके, अनु पथी वाद, पेया पेया पेयाका, पातव्या पीवी पान करना चाहिए ॥ ७९ ॥

79. Ghee prepared with the paste of kurchi seeds may be taken with the supernatant part of gruel, followed by a potion of thin gruel for the cure of blood in the stools.

तव् च दारुहरिद्रायाः कुटजस्य फलानि च ।  
पिप्पली शृङ्गवेरं च द्रक्षा कटुकरोहिणी ॥८०॥  
षड्भिरैतैर्घृतं सिद्धं पेयामण्डावचारितम् ।  
अतीसारं जयेच्छीघ्रं त्रिदोषमपि दारुणम् ॥८१॥

दारुहरिद्रायाः त्वक् च दारुणदरनी अक्ष दारु-  
 हलीकी छाल, कुटजस्य फलानि च पद्मं च इन्द्रजौ,  
 पिप्पली पीपर पिप्पली, शृङ्गवेरम् आङ्गु अदरक,  
 द्राक्षा दक्ष सुनके, कटुकरोहिणी च अने कडु और  
 कटुकी, एतेः आ इत, षडभिः च द्रव्यैश्चैः छः द्रव्यैश्चैः,  
 सिद्धम् पञ्चैषु तैयार किया, घृतम् धी घी, पेया-मण्ड-  
 पेयाना म'उनी साथे पेयाके मण्डके साथ, अवधारितम्  
 बोधनम् उपयोगे कुर्यात् भोजनम् लेसे, त्रिदोषम्

८०. त्वक् च दाहरीदायाः कुण्डस्य फलानि च-रामकस्य  
च बीजानि दावर्षाश्च त्वच उच्छपाः (य. द. फ. ब.)  
; दाक्षा लाक्षा (घ.)

त्रिदोषधी यथेवा त्रिदोषसे उत्पन्न, दाहणम् धरुषु  
अयंकर, अतिसारम् अतिसारने अतिसारको, नपि पक्ष  
मी शीघ्रम् ज्वरधी शीघ्रतासे, जवेव अते छे  
जीतता है ॥ ८०-८१ ॥

80-81. The ghee prepared with the bark of indian berberry, kurchi seeds, long pepper, ginger, grapes and kurroa, when taken with the supernatant part of gruel, cures quickly even severe diarrhea caused by tridiscordance.

कृष्णमृन्मधुकं शङ्खं रुधिरं तण्डुलोदकम् ।  
पीतमेकत्र सक्षौद्रं रक्तसंग्रहणं परम् ॥८२॥

कृष्णमृत काली भाटी काली मिट्टी, मधुकम् गेहीमध  
मुलहठी, गङ्गम् शंभना दुकडानी भरम शंभके दुकडेकी  
भस्म, रुधिरम् केसर केसर, तण्डुलोदकम् योभानु धासु  
चावलकोका घोवन, सक्षौद्रम् मध साथे शहदके साथ,  
एकत्र औकत्र करीने एकत्र करके, पीतम् पीनाभा आवे  
ते। ते पिया जाय तो वह, परम् श्रेष्ठ श्रेष्ठ, रक्तसंमहणम्  
धोहीने भंघ करनाउं छे खुनको बंध करनेवाला है ॥८२॥

82. Black earth, liquorice, conch, saffron and rice-water mixed together and taken with honey, act as a good hemostatic.

पीतः प्रियङ्गुकाकरकः सक्षौद्रस्तण्डुलाम्भसा ।  
रक्तन्नावं जयेच्छीघ्रं घन्वमांसरसाशिनः ॥८३॥

सकौद्रः भधनी साधे शहदे साथ, तण्डुकाभसा  
 येआनु घाष्ट भेगवीने चाबलोकें धोवनको भिलाकर,  
 पीतः पीधेधो पिबा हुआ, प्रियकुका धडंलाने। प्रियकुका,  
 कलकः कलक कलक, धन्व-भंगल प्राष्टीयेना जंगिल  
 प्राणियोंकें, मांसरसाक्षिनः मांसरसनुं पथ्य राभनार  
 रेग्वीना मांसरसका पथ्य रसनेवाले रोगीकें, रक्तखावम्  
 रक्तखावने रक्तखावको, शीघ्रम् जलदीधी क्षीघ्रतासे,  
 जयेत् अते छे जीतता है ॥ ८३ ॥

83. The paste of perfumed cherry, taken with honey and rice water, stops quickly the hemorrhage in a person

living on a diet of the meat-juice of jangala animals.

कक्कस्तिलानां कृष्णानां शर्करापञ्चभागिकः ।  
आजेन पयसा पीतः सद्यो रक्तं नियच्छति ॥८४॥

शर्करा- साकरना चीनीके, पञ्चभागिकः पाँचभा-  
गायथी कीधेय पांचवें हिस्सेसे लिया हुआ, कृष्णा-  
नाम् डाण्डा काले, तिलानाम् तलने तिलोंका, कक्कः  
कक्क कक्क, आजेन अजरीना बकरीके, पयसा दूधनी  
साथे दूधके साथ, पीतः पीयाथी पीनेसे, रक्तम् रक्तको,  
सद्यः तुरत तुरन्त, नियच्छति डाधूमां दाने छे  
रोकता है ॥ ८४ ॥

84. The paste of black til mixed with five times its quantity of sugar taken with goat's milk stops the blood in stools immediately.

पलं वत्सकबीजस्य श्रपयित्वा रसं पिबेत् ।  
यो रसाशी जयेच्छीघ्रं स पैतृ जठरामयम् ॥८५॥

रसाशी भांसरसदुं पथ्य राभनारे। मांसरसका  
पथ्य रखनेवाला, यः जे पुरुष, जो पुरुष, वत्सकबीजस्य  
हंभवना इन्द्रजौके, पलम् थार तोलाने चार तोलको,  
श्रपयित्वा डिकाणीने उबालकर, रसम् तेना उवाथने  
उसके काथको, पिबेत् पीछे छे पीता है, सः ते वह,  
पैतृम् पित्तभी थयेला पित्तसे उत्पन्न हुए, जठरामयम्  
अतिसारने अतिभारको, शीघ्रम् जल्दीथी जल्दीसे,  
जयेत् भटाडे छे मिटाता है ॥ ८५ ॥

85. The man who observes a diet of meat-juice, gets cured of stomach-disorders due to pitta by taking the decoction of four tolas of kurchi seeds.

पीत्वा सशर्कराक्षौद्रं चन्दनं तण्डुलाम्भसा ।  
दाहतृष्णाप्रमेहेभ्यो रक्तस्रावाच्च मुच्यते ॥८६॥

८६. तण्डुलाम्भसा-तण्डुलाम्बुना (ब.)

सशर्करा- साकर चीनी, क्षौद्रम् मधु शहद, चन्दनम्  
तथा चन्दनने तथा चन्दनको, तण्डुलाम्भसा थोभाना  
धौलुथी चावल्लोंके धोवनसे, पीत्वा पीने पीकर, दाह-  
दाह दाह, तृष्णा- तरस प्यास, प्रमेहेभ्यः प्रमेह प्रमेह,  
रक्तस्रावाच्च च अने रक्तस्रावथी और रक्तस्रावसे,  
मुच्यते अनुष्य मुक्त थाय छे अनुष्य मुक्त होता है ॥ ८६ ॥

86. By taking sandal mixed with sugar, honey and rice water, the patient gets cured of burning, thirst, urinary disorders and hemorrhage.

पित्तातिशारे गुदवलीपाकचिकित्सा—

गुदो बहुभिरुत्थानैर्यस्य पित्तेन पच्यते ।  
सेचयेत् सुशीतेन पटोलमधुकाम्बुना ॥८७॥  
पञ्चवल्कमधूकानां रसैरिक्षुरसैर्घृतैः ।  
छागैर्गव्यैः पयोभिर्वा शर्कराक्षौद्रसंयुतैः ॥८८॥

बहुभिः अनेके वपत अनेके दफे, उत्थानैः  
भक्षोत्सर्ग भाटे उठावाथी मलत्यागके लिए उठनेसे,  
यस्य जेनी जिसकी, गुदः गुद गुदा, पित्तेन पित्तभी  
पित्तसे, पच्यते पाडी अथ छे पक जाती है, तत्र तेनी  
ते गुदा पर उसकी उस गुदा पर, सुशीतेन अत्यंत  
ठंडा अतिशीत, पटोल- परवण परवल, मधुक-मधुना  
अने जेडीमधना उवाथ और मुलहठीके काथ,  
पञ्चवल्क- पाँच क्षीरी वृक्षनी छाल पाँच क्षीरी वृक्षकी  
छाल, मधूकानाम् तथा महुडाना तथा महुवेके, रसैः  
उवाथ काथ, इक्षुरसैः शेरडीना रसो ईखके रस, शर्करा-  
क्षौद्र- अथवा साकर अने मधु जयवा चीनी और शहदसे,  
संयुतैः साथे भेगवेय मिले हुए, छागैः अजरीना  
बकरीके, गव्यैः वा के गायनां या गौके, घृतैः घी घी,  
पयोभिः के दूधथी या दूधसे, सेचयेत् परिषेक करवे  
परिषेक करना चाहिए ॥ ८७-८८ ॥

87-88. If the anus of the patient gets inflamed by frequent passing of stools, it should be affused with well-cooked decoction of wild snake-gourd

८८. क्षौद्रसंयुतैः-मधुसंयुतैः (ब.)



and liquorice, or with the decoction of the bark of the pentad of milk-exuding trees and liquorice, or with sugar-cane juice or with goat's or cow's ghee or milk mixed with sugar and honey.

प्रक्षालनानां कर्कैर्वा ससर्पिष्कैः प्रलेपयेत् ।

एषां वा सुकृतैश्चूर्णैस्तं गुदं प्रतिसारयेत् ॥८९॥

प्रक्षालनानाम् अथवा प्रक्षालन भाटेनां द्रव्येनां अथवा प्रक्षालनके द्रव्योंके, ससर्पिष्कैः धीक्षितं घी- सहित, कर्कैः वा कटुकां वडे कल्कोसे, प्रलेपयेत् प्रक्षेप करवा प्रलेप करना चाहिए, एषाम् वा अथवा आ द्रव्येनां या इन द्रव्योंके सुकृतैः सारी रीति तैयार करेवा अच्छी तरहसे बने हुए, चूर्णैः यूक्षीं वडे चूर्णोंसे, तम् ते उस, गुदम् गुदा उपर गुदाके ऊपर, प्रतिसारयेत् प्रतिसारण करवुं प्रतिसारण करना चाहिए ॥ ८९ ॥

89. The anus should be smeared with the paste of the drugs described with reference to affusion, mixed with ghee; or the prolapsed anus may be dusted with the fine powder of those drugs

घातकीलोध्रचूर्णैर्वा समांशैः प्रतिसारयेत् ।

तथा स्रवति नो रक्तं गुदं तैः प्रतिसारितम् ॥९०॥

पक्ता प्रशमं याति वेदना चोपशाम्यति ।

समांशैः अथवा सरभा भागभां क्षीघ्रैर्वा अथवा समान भागमें लिये, घातकी- धावडीनां द्रव्य घायके फूल, लोध्रचूर्णैः वा अथवा दोधरनां यूक्षीं वडे और जोषके चूर्णोंसे, प्रतिसारयेत् प्रतिसारण करवुं प्रतिसारण करना चाहिए, तथा तैः आ प्रमाणे तेनाथी इस प्रकार इनसे, प्रतिसारितम् प्रतिसारण करेवा प्रतिसारण करने पर, गुदम् गुदा गुदासे, रक्तम् रक्तादिने रक्त, नो स्रवति

९०. समांशैः-समांशैः (व.)

॥ तथा स्रवति नो रक्तम्-तथा न च स्रवत्यस्यम् (त.)

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ -तथा रक्तं न स्रवति (व. व.)

स्रवती नहीं नहीं बहता, पक्ता अने गुदानो परिपाक और गुदाका परिपाक, प्रशमम् शान्तिने शान्त, याति पाये छे होता है, वेदना च तेभ्य पीडानुं एवं वेदनाका, उपशाम्यति शमन थाय छे शमन होता है ॥ ९० ॥

90-90½. Or. the prolapsed anus may be dusted with the powder of fulsee flower and lodh in equal quantity. The anus thus dusted does not bleed, the inflammation gets alleviated and the pain relieved.

यथोक्तैः सेचनैः शीतैः शोणितेऽतिस्त्रवत्यपि ॥९१॥

गुदवङ्क्षणकटथरु सेचयेद्भूतभावितम् ।

चन्दनाद्येन तैलेन शतघौनेन सर्पिषा ॥९२॥

कार्पाससंगृहीतेन सेचयेद्गुदवङ्क्षणम् ।

शोणिते धोड़ी रक्के, अतिस्त्रवति अपि अति प्रमाणभां स्रवतुं होय तो बहुत प्रमाणमें गिरने पर, भूतभावितम् धीधी भाविश करेवा बीसे भावित, गुद- वङ्क्षण- गुदा, वङ्क्षण गुद, वङ्क्षण, कटि- कटि, ऊरु- अने साथगने और ऊरुको, यथोक्तैः उपर कहेवा प्रथम कहे हुए, शीतैः ठंडा ठंडे, सेचनैः सेचनेथी सेचनसे, सेचयेत् परिषेक करवा परिषेकन करे, कार्पास- र्पास पूमाभां रुईके कायेसे, संगृहीतेन क्षीघ्रैश्च लिये, चन्दनाद्येन चन्दनादि चन्दनादि, तैलेन तेलथी तैल, शतघौनेन अथवा सौ वज्रत धोईवा या सो दके घोये, सर्पिषा धीधी बीसे गुदवङ्क्षणम् गुदा अने वङ्क्षण पर गुदा और वङ्क्षण पर, सेचयेत् सेचन करवुं सेचन करना चाहिए ॥ ९१-९२ ॥

91-92½. If the bleeding still continues even after the above described cool affusions, the anus, groins, waist and thighs should be anointed with ghee and affused. The anus and groins

९१. शोणितेऽतिस्त्रवत्यपि-शोणिते निःस्रवत्यपि (व.)

९२. सेचयेत्-भावयेत् (त. व. फ.)

should be affused with a swab soaked in the Compound Sandal Oil or with the hundred times washed ghee.

रक्तसिखारे चिकित्साक्रमः—

अवपापं बहुशो रक्तं सशूलमुपवेक्ष्यते ॥९३॥  
यदा वायुविवद्धश्च कृच्छ्रं चरति वा न वा ।  
पिच्छावस्ति तदा तस्य यथोक्तमुपकल्पयेत् ॥९४॥  
प्रपौण्डरीकसिद्धेन सर्पिषा चानुवासयेत् ।

यदा न्यारे जब, बहुशः धृष्टी पतत बहुत दफे, अवप-अवपम् थोडुं थोडुं थोडा थोडा, सशूलम् शूल-सहित शूलके साथ, रक्तम् रुधिर खून, उपवेक्ष्यते आवे छे आता है, वायुः च अने वायु और वायु, विवद्धः गुंथनायेछे होछे रुककर, कृच्छ्रम् उल्टपूवक कष्ट-पूर्वक, चरति इधुं करे छे गति करता है, न वा अथवा सर्वथा इरते। नथी या धर्वथा गति नहीं करता, तदा त्वारे तब, तस्य तेने उसको, यथोक्तम् उपर उहेछी पूर्वोक्त, पिच्छावस्तिम पिच्छावस्ति पिच्छावस्ति, उपकल्पयेत् देवी देनी चाहिए प्रपौण्डरीक-अने प्रपौंडरीकथी और प्रपौंडरीकछे, सिद्धेन तैयार करेछा तैयार किये, सर्पिषा च धीथी घीसे, अनुवासयेत् अनुवासनभरित आपवी अनुवासनबरित देनी चाहिए ॥ ९३-९४ ॥

93-94. If the patient passes scanty and frequent stools mixed with blood and accompanied with colic, and if he passes the obstructed flatus with difficulty or does not pass at all, he should be given the mucilaginous enema as described before or the unctuous enema of ghee medicated with tubers of white lotus.

प्रायशो दुर्बलगुदाश्चिरकालातिसारिणः ॥९५॥  
तस्मादभीक्ष्णशस्तेषां गुदे स्नेहं प्रयोजयेत् ।

९५. चिरकालाति-दीर्घकालाति (ब.)

९५. गुदे स्नेहम्-गुदस्नेहम् (त)

चिरकाल- क्षाया काण सुधी दीर्घकाल पर्यन्त, अतिसारिणः अतिसारथी पीडाता रोगीथी। अतिसारसे पीडित रोगियों, प्रायशः धृष्टुं इरीने बहुत करके, दुर्बल-गुदाः दुर्बली गुदावाला होय छे दुर्बल गुदावाले होते हैं, तस्मात् ते हेतुथी उस कारणसे, तेषाम् गुदे तेथीनी गुदाभां उनकी गुदानें, अभीक्ष्णशः बार-बार बारबार, स्नेहम् स्नेहने। स्नेहका, प्रयोजयेत् प्रयोग करवे। प्रयोग करवा चाहिए ॥ ९५ ॥

95-95. The anus of patients suffering from chronic diarrhea generally gets weak; hence repeated application of unctuous substance should be given to it.

पवनोऽतिप्रवृत्तो हि स्वे स्थाने लभतेऽधिकम् ॥९६॥  
बलं तस्य सपित्तस्य जयार्थं बस्तिरुत्तमः ।

अतिप्रवृत्तः अतिवेगवाली। अतिवेगवाला, पवनः पवन वायु, स्वे स्थाने पीताना स्थानभां अपने स्थानमें, अधिकम् अधिक अधिक, बलम् बलने बलको, लभते प्राप्त करे छे पाता है, सपित्तस्य पित्तयुक्त पित्तयुक्त, तस्य ते वायुनी उस वायुकी, जयार्थं शान्तिने माटे शान्तिके लिए, बस्तिः भरित बस्ति, उत्तमः श्रेष्ठ उत्तम छे श्रेष्ठ उपाय है ॥ ९६ ॥

96-96. The vata that is excessively agitated gets even more augmented in its own habitat; to subdue its strength when in association with pitta, the emema is the best remedy.

रक्तं बिट्सहितं पूर्वं पश्चाद्वा योऽतिसार्यते ॥९७॥  
शतावरीघृतं तस्य लेहार्थमुपकल्पयेत् ।

बः ने जो, पूर्वम् मलविसर्जन पहले मल-त्यागके पूर्व, पश्चात् वा अथवा मलविसर्जन पछी अथवा मलविसर्जनके बाद, बिट्सहितम् मलसहित, रक्तम् रुधिरने रुधिरको, अतिसार्यते आडा पाटे अडार डाढे छे बहाता है, तस्य तेना उसके,

९६. पवनोऽतिप्रवृत्तो हि-अतिप्रवृत्तो हि पवनः (ध. ब.)

लेहार्थम् आट्ठु भाटे चाटनेके लिए, शतावरीघृतम् शतावरीघृत, उपकल्पयेत् तैयार करुं तैयार करना चाहिए ॥ ९७३ ॥

97-97½. For the patient who passes blood with or before or after the stools, the medicated Climbing Asparagus ghee should be prepared and administered as a linctus.

शर्करार्धांशिकं लीढं नवनीतं नवोद्धृतम् ॥९८॥  
क्षौद्रपादं जयेच्छीघ्रं तं विकारं हिताशिनः ।

शर्करा-अर्धांशिकम् अर्धाभागनी साकरवाणुं आवे भागकी चीनीसे युक्त, क्षौद्रपादम् अने योथा भागना भधवाणुं और चौथे भागके सहदसे युक्त, नव-उद्धृतम् ताणुं ताजा, नवनीतम् भाणु मक्खन, हिताशिनः हित भोजन करनेवाले रोगीके, तम् ते उस, विकारम् विकारने विकारको, शीघ्रम् जल्दी तुरन्त, जयेत् जिते से से मिटाता है ॥ ९८३ ॥

98-98½. This disorder in a man observing wholesome dietetic regimen, will be cured by fresh churned butter mixed with half its quantity of sugar and one fourth its quantity of honey.

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थशुक्लानापोष्य वासयेत् ॥९९॥  
अहोरात्रं जले तप्ते घृतं तेनाम्भसा पचेत् ।

न्यग्रोध- वड बरगद, उदुम्बर- उमरडो गूलर, अश्वत्थशुक्लान् अने पीपलाना अंकुराने और पीपल इनके अंकुरोंको, आपोष्य क्यारीने कुचलकर, तप्ते गरम गरम, जले जलमें, अहोरात्रम् ओंके द्विस अने ओंके रात सुधी एक दिन और एक रात्रिपर्यन्त, वासयेत् रखेवा देना रख छोड़ना चाहिए, तेन ते उस, अम्भसा जलसे, घृतम् घीने घीको, पचेत् पाक करनेका पका लेना चाहिए ॥ ९९३ ॥

99-99½. Reduce into paste the buds of banyan, gular fig and holy fig and

keep them one day and night in hot water; prepare ghee with this water.

तदर्धशर्करायुक्तं लिह्यात् सक्षौद्रपादिकम् ॥१००॥  
अथो वा यदि वाऽप्यूर्ध्वं यस्य रक्तं प्रवर्तते ।

अथः वा नीचेना भागधी नीचेके भागसे, यदि अपि ऊर्ध्वम् वा अथवा उपरना भागधी या उपरके भागसे, यस्य जेने जिसका, रक्तम् रक्त खून, प्रवर्तते पडुं होय तेजे गिरता हो वह, अर्धशर्करा- अर्धा भागनी साकरधी आवे हिस्सेकी चीनीसे, युक्तम् मेलवेलुं मिला हुआ, सक्षौद्रपादिकम् अने योथा भागना भधधी मेलवेलुं और चौथे भागके सहदसे मिला हुआ, तत् ते घृत वह घृत, लिह्यात् आटुं चाटे ॥ १००३ ॥

100-100½. This ghee should be used as linctus mixed with 1/2 its part of sugar and 1/4 its part of honey and given to one who bleeds from the orifices of the upper or lower region of the body.

यस्त्वेवं दुर्बलो मोहात् पित्तकाम्येव सेवते ॥१०१॥  
दाहणं स वलीपाकं प्राप्य शीघ्रं विपद्यते ।

यः तु जे अतिसारवाणो रोगी जो अतिसारवाला रोगी, दुर्बलः दुर्बल चर्मा पक्ष दुर्बल होने पर सी, एवम् ओ प्रमाणे इस प्रकार, मोहात् मोहने लडने मोहसे, पित्तकानि पित्तवर्धक द्रव्योंनु पित्तवर्धक द्रव्योंका, एव ज ही, सेवते सेवन करे से सेवन करता है, सः ते वह, दाहणम् भयंकर भयंकर, वलीपाकम् शुक्ली वलीजीना पाकने गुदवलीके पाकको, प्राप्य प्राप्त करके, शीघ्रम् जल्दी शीघ्र, विपद्यते भरक्ष पात्रे से मर जाता है ॥ १०१३ ॥

101-101½. The person that is debilitated and still makes use of pitta-provoking articles out of ignorance, soon comes to grief, being afflicted

१००. लिह्यात् सक्षौद्रपादिकम्-लेहयेत् क्षौद्रपादिकम् (च. क. व.)

with severe suppuration of the anal region.

श्लेष्मातिसारे चिकित्साक्रमः —

श्लेष्मातिसारे प्रथमं हितं लङ्घनपाचनम् ॥१०२॥  
योज्यधामातिसारघ्नो यथोक्तो दीपनो गणः ।

श्लेष्मातिसारे कृद्वा अतिसारभा कफजन्य  
अतिसारमें, प्रथमम् प्रथम प्रथम, लङ्घनपाचनम् लङ्घन  
तथा पाचन चिकित्सा लङ्घन तथा पाचन चिकित्सा,  
हितम् हितकारक है, यथोक्तः पहेला कहेला  
पूर्वोक्त, धामातिसारघ्नः आमातिसार नाशक धामातिसार-  
नाशक, दीपनः अने दीपन द्रव्योंसे और दीपन, गणः  
च गणुनी गणकी, योज्यः योज्यना करवी ओईओ  
योजना करनी चाहिए ॥ १०२३ ॥

102-102½. In diarrhea due to kapha, lightening and digestive therapies are beneficial to begin with. The drugs of the digestive-stimulant group, if used in the early stage of diarrhea, prove beneficial.

श्लेष्मातिसारघ्नाः कतिपययोगाः —

लङ्घितस्यानुपूर्व्यां च कृतायां न निवर्तते ॥१०३॥  
कफजो यद्यतीसारः कफघ्नैस्तमुपाचरेत् ।

लङ्घितस्य अने लङ्घन करीयुं होय ओवा कृद्वा  
अतिसारवालांनी जिसको लङ्घन कराया गया हो ऐसे  
कफातिसारवालेकी, जानुपूर्व्याम् क्रमिक चिकित्सा क्रमिक  
चिकित्सा, कृतायाम् च थर्ड गया छता पक्ष होने पर  
भी, यदि ओ यदि, कफजः कृद्वा कफका, अतिसारः  
अतिसार अतिसार, न निवर्तते भट्टेता न होय तो बंद  
न होता हो तो, तम् तेने उचका, कफघ्नैः कृद्वा  
द्रव्योंसे, उपाचरेत् उपचार करवे।  
उपचार करे ॥ १०३३ ॥

103-103½. Even if after lightening therapy and observance of progressive dietetic regimen, the diarrhea born

of kapha does not abate, it should be treated with articles possessing kapha-curing properties.

बिल्वं कर्कटिका मुस्तमभया विश्वमेवजम् ॥१०४॥  
वचा विडङ्गं भृतीकं धान्यकं देवदारु च ।  
कुष्ठं सातिविषा पाठा चव्यं कटुकरोहिणी ॥१०५॥  
पिप्पली पिप्पलीमूलं चित्रकं हस्तिपिप्पली ।  
योगाङ्गुलीकार्धविहितांश्चतुरस्तान् प्रयोजयेत् ॥१०६॥  
शृताङ्गुलीश्लेष्मातिसारेषु कायाग्निबलवर्धनान् ।

बिल्वम् भीलुं बेलगिरी, कर्कटिका ककडी खीरा,  
मुस्तम् मोथ मोथा, अभया हरदे हरद, विश्वमेवजम्  
अने सूठ और सोंठ, वचा वच वच, विडङ्गम्  
वावडिंग वायविङ्ग, भृतीकम् अजवायन,  
धान्यकम् धाया धनिया, देवदारु च अने देवदार  
और देवदारु, कुष्ठम् कठ कूठ, सातिविषा अतिविषी  
कणी अलीस, पाठा पाठा पादी, चव्यम् चवक चव्य,  
कटुकरोहिणी अने कटु और कटुकी, पिप्पली पीपर  
पिप्पली, पिप्पलीमूलम् पीपरीभूला गठोडा पिप्पली-  
मूल, चित्रकम् चित्रक चित्रक, हस्तिपिप्पली अने अज-  
पीपर और गजपिप्पली, तान् ओ उन, श्लोकार्ध- अर्ध  
अर्ध श्लोकार्थी आवे आवे श्लोकार्ध, विहितान् कहेला  
कहे गये, कायाग्नि- अङ्गुलीं जठराग्निके, बलवर्धनान्  
अणि वधारनारा बलको बढ़ानेवाले, शृतान् अने श्लोकार्थी  
तैयार करेला और उवाल कर तैयार किये हुए, चतुरः  
चार, योगान् श्लोकार्थी योगोंका, श्लेष्मातिसारेषु  
कृद्वा अतिसारभा कफके अतिसारमें, प्रयोजयेत् प्रयोग  
करवे। प्रयोग करे ॥ १०४-१०६३ ॥

104-106½. (1) Bael, galls, nut-grass, chebulic myrobalan and dry ginger; (2) sweet flag, embelia, bishop's weed, coriander and deodar; (3) costus, indian atees, patha, chaba pepper and kurroa; (4) long pepper, roots of long pepper, white-flowered leadwort and elephant pepper—these four recipes each described in a hemistich should be decocted

and used in diarrhea due to kapha; these are promotive of the metabolic heat and body-strength.

**मजाजीमसितां पाठां नागरं मरिचानि च ॥१०७॥**

**धातकीद्विगुणं दद्यान्मातुलुङ्गरसाप्लुतम् ।**

**रसाञ्जनं सातिविषं कुटजस्य फलानि च ॥१०८॥**

**धातकीद्विगुणं दद्यात् पातुं सखौद्रनागरम् ।**

मजाजीम् ७३ गुं जीरा, असिताम् पीपरी, पिप्पली, पाठाम् पाठा पाद्री, नागरम् सूंठ सोंठ, मरिचानि च डाणां भरी काली मिर्च. धातकीद्विगुणं २ भाग धातकीनां फूल थे भाग और धायके फूल दो भाग, मातुलुङ्गरसाप्लुतम् च थेथेने थडोटारना रसभा मेणवीने इनको चकोत्राके रसमें मिलाके, दद्यात् आपवा देवे, सातिविषम् अति-विषनी कणी अतीस, रसाञ्जनम् रसवन्ती रसोंठ, कुटजस्य च फलानि ४-६००० इन्द्रजौ, धातकीद्विगुणम् २ भाग धातकीनां फूल थे भाग और धायके फूल दो भाग. सखौद्र-नागरम् सूंठ २ भाग मध साथे सोंठ और शहदेके साथ, पातुम् पीवाने पीनेके लिए, दद्यात् आपवा देवे ॥१०७-१०८३॥

107-108½. Take cumin seeds, long pepper, patha, dry ginger and black pepper one part each and two parts of fulsee flower; give these mixed liberally with the juice of pomello. Take extract of indian berberry, indian ateas and kurchi seeds in one part each and fulsee flower in two parts and give as potion mixed with honey and dry ginger.

**धातकी नागरं बिस्वं लोभं पद्मस्य केशरम् ॥१०९॥**  
**जम्बूवङ्गागरं धान्यं पाठा मोचरसो बला ।**  
**समङ्गा धातकी बिस्वमध्यं जम्बूवाप्रयोस्त्वचः ११०**  
**कपित्थानि विडङ्गानि नागरं मरिचानि च ।**

१०८. फलानि च—फलस्य भ्रम (फ.)

१०८½. पातुं सखौद्रनागरम्—मातुलुङ्गरसान्वितम् (व.)

**चाङ्गेरीकोलतक्राम्लांश्चतुरस्तान् कफोत्तरे ॥१११॥**  
**श्लोकार्धविहितान् दद्यात् सन्नेहलवणान् खडान् ।**

धातकी धातकीनां फूल धायके फूल, नागरम् सूंठ सोंठ, बिस्वम् भीधुं बेलगिरी, लोभम् लोभनी छाल लोभकी छाल, पद्मस्य केशरम् २ भाग धातकीनां केशर और कमलके केशर, जम्बूवङ्गम् जम्बूवङ्गनी छाल जामुनके पेड़की छाल, नागरम् सूंठ सोंठ, धान्यम् धान्य धनिया, पाठा पाठा पाद्री, मोचरसः शोभनीने गुंठर मोचरस, बला २ भाग और खिरौटी. समङ्गा रीसाभण्णी लाजवंती, धातकी धातकीनां फूल धायके फूल, बिस्व-मध्यम् भीधुनीने गर बेलगिरी, जम्बू- २ भाग जामुन, जाम्बयोः त्वचः तथा आभानी छाल तथा आमके पेड़की छाल, कपित्थानि ३० कैंथ, विड-ङ्गानि वावडिअ वायविङ्ग, नागरम् सूंठ सोंठ, मरिचानि च २ भाग डाणां भरी और काली मिर्च, तान् २ भाग, श्लोकार्ध- अर्धा अर्धा श्लोकाधी आवे आवे श्लोकाधे, विहितान् ३० कैंथ कहे गये, चाङ्गेरी- चाङ्गेरी स्वरस चाङ्गेरी- स्वरस, कोल- कोल बेर, तक्राम्लान् २ भाग आभानी अर्धावाणी और तक्रामी खडार्हेमे युक्त, सन्नेह-लवणान् तथा तैल २ भाग मेणवी बनावेला तथा तैल और नमक डालकर प्रस्तुत किये गये, चतुरः चार चार, खडान् ३० भाग खडोंको, कफोत्तरे ३१ भाग अतिसारभा-कफके अतिसारमे, दद्यात् आपवा देवे ॥ १०९-१११३॥

109-111½. Take, (1) fulsee flower, dry ginger, bael, lodh and lotus anthers; (2) jambul bark, dry ginger, coriander, patha, gum of silk cotton, and heart leaved sida; (3) madder, fulsee flower, the pulp of bael, the barks of jambul and mango tree; (4) wood apple embelia, dry ginger and black pepper; prepare four vegetable soups of the drugs described above in each hemistich, acidified with yellow-wood sorrel, jujube and buttermilk and mixed with unctuous article and salt, and administer it in diarrhea attended with excess of kapha.

कपित्थमध्यं लीङ्वा तु सव्योषक्षौद्रशर्करम् ॥११२॥  
कट्फलं मधुयुक्तं वा मुच्यते जठराग्नयात् ।

सव्योष-क्षौद्र-शर्करम् तु सेंड, मरी, पीपर, मधु  
अने साकर साथे सोंठ, मिरच, पिप्पली, शहद और चीनीके  
साथ, कपित्थमध्यम् कोशने। अर कैथका गूदा, मधुयुक्तम्  
अथवा मधु साथे अथवा शहदके साथ, कट्फलम् वा  
कायकण्ठी छाकने कट्फलकी छालको, लीङ्वा तु आटीने  
चाटकर, जठराग्नयात् रोगी अतिसारथी रोगी अतिसारसे,  
मुच्यते मुक्त थाय छे मुक्त होता है ॥ ११२३ ॥

112-112½. By taking as linctus the  
pulp of wood-apple mixed with the  
three spices. honey and sugar or the  
powder of box myrtle with honey, the  
patient gets cured of gastric disorder.

कणां मधुयुतां पीत्वा तक्रं पीत्वा सचित्रकम् ॥११३॥  
जग्ध्वा वा बालबिल्वानि मुच्यते जठराग्नयात् ।

मधुयुताम् मधु साथे शहदके साथ कणां पीत्वा  
पीपरने आटीने पिप्पलीको चाटकर, सचित्रकम्  
त्रिफला मूला यूर्ध्व साथे चित्रकमूलके चूर्णके साथ,  
तक्रम् छाश तक्र, पीत्वा पीने पीकर, बालबिल्वानि वा  
अथवा कुमणां भीलां अथवा कच्ची बेलगिरीको, जग्ध्वा  
आधीने खाकर, जठराग्नयात् रोगी अतिसारथी रोगी  
अतिसारसे, मुच्यते मुक्त थाय छे मुक्त होता है ॥ ११३३ ॥

113-113½. By a potion of long pep-  
per with honey or butter-milk mixed  
with the powder of white flowered  
leadwort or by eating tender bael,  
the patient gets cured of gastric  
disorders

बालबिल्वं गुडं तैलं पिप्पलीं विश्वमेघजम् ।  
लिङ्गाद्वाते प्रतिहते सशूलः सप्रवाहिकः ॥११४॥

११३. पीत्वा-लीङ्वा (ब.)

११४. सशूलः सप्रवाहिकः-सशूलं सप्रवाहिकं (थ.)

वाते वायुने। वायुके, प्रतिहते अवरोध था।  
अवरुद्ध होनेपर, सशूलः यूँडसहित शूलयुक्त, सप्रवाहिकः  
भरधावाणा रोगीये प्रवाहिकावाला रोगी, बालबिल्वम्  
कोमल भीलुं कच्ची बेलगिरी, गुडम् गोण गुड, तैलम्  
तैलनुं तैल तिलका तैल, पिप्पलीम् पीपर पिप्पली,  
विश्वमेघजम् अने संलुं यूर्ध्व और सोंठका चूर्ण,  
लिङ्गात् आटुं चाटे ॥ ११४ ॥

114. Tender bael, gur, oil, long  
pepper and dry ginger should be  
taken by a patient as linctus in obstruc-  
tion of vata accompanied with colic and  
dysentery.

भोज्यं मूलकषायेण वातघ्नैश्चोपसेवनैः ।

वातातिसारविहितैर्यूपैर्मांसरसैः खडैः ॥११५॥

मूलकषायेण मूलांना यूप साथे मूलीके यूपके साथ,  
वातघ्नैः च वायुनाशक वायुनाशक, उपसेवनैः व्यंजनैः  
साथे व्यंजनोके साथ, वातातिसार-वायुना अतिसार  
भाटे वायुके अतिसारके लिए, विहितैः उहेला कहे हुए,  
यूपैः यूपो साथे यूपोके साथ, मांसरसैः मांसरसो साथे  
मांसरसके साथ, खडैः अने भंडो साथे अथवा खडोंके  
साथ, भोज्यम् खोजन करुं भोजन करे ॥ ११५ ॥

115. He may take his food with the  
decoction of radish and sauces prepared  
with the vata-curative articles and also  
with soups, meat-juices and vegetable  
soups recommended in diarrhea due  
to vata.

पूर्वोक्तमम्लसर्पिर्वा षट्पलं वा यथाबलम् ।

पुराणं वा घृतं दद्याद्यवागूमण्डमिश्रितम् ॥११६॥

यवागूमण्डमिश्रितम् राभना मंड साथे यवागूके  
मंडके साथ, पूर्वोक्तम् पहेला उहेलुं पूर्वोक्त, अम्ल-  
सर्पिः अम्लसर्पिः अम्लसर्पि, षट्पलम् वा अथवा षट्-  
पल घृत या षट्पल घृत, पुराणम् वा अथवा जूनुं  
या पुराना, घृतम् घी घी, यथाबलम् अथ प्रभाणु बलके  
अनुसार, दद्यात् आपुं देवे ॥ ११६ ॥

११५ मूलकषायेण-मूलकषायेण (ग. घ. छ. थ. व.)



116. Or, he may take sour ghee mentioned before or the Shatpala ghee or old ghee mixed with supernatant part of gruel according to his strength.

वातश्लेष्मविबन्धे वा कफे वाऽतिस्त्रवत्यपि ।  
शूले प्रवाहिकायां वा पिच्छावस्ति प्रयोजयेत् ॥११७॥

वात- वायु वायु, श्लेष्म- श्लेष्म और कफके, विबन्धे वा विषमभां विबन्धमें, अतिस्त्रवति अपि अथवा अतिस्त्रवती या अतिस्त्रववाले, कफे वा कफमें, शूले वा शूलभां शूलमें, प्रवाहिकायाम् वा अथवा प्रवाहिकाभां या प्रवाहिकामें, पिच्छावस्तिम् पिच्छावस्तिमें। पिच्छावस्तिं, प्रयोजयेत् प्रयोग करने ॥ ११७ ॥

117. In obstruction of vata and kapha or in excessive discharge of mucus, in colic, or in dysentery, the mucilaginous enema should be given.

पिप्पलीबिम्बकुष्ठानां शताह्वावचयोरपि ।  
कल्कैः सलवणैर्युक्तं पूर्वोक्तं सन्निधापयेत् ॥११८॥

पिप्पली- पीपर पिप्पली, बिम्ब- भीष्म बेलगिरी, कुष्ठानाम् ऊँ कूठ, शताह्वा सुवा सोया, वचयोः अपि वच वच, सलवणैः अने सिंहालसुना और सैषवके, कल्कैः उदकेली कल्कसे, युक्तम् साथे युक्त, पूर्वोक्तम् पूर्वोक्त पिच्छावस्ति पूर्वोक्त पिच्छावस्ति, सन्निधापयेत् देवी ओष्ठये देवे ॥ ११८ ॥

118. The mucilaginous enema should be given mixed with the paste of long pepper, bael, costus, dill seeds and sweet flag, mixed with salt.

प्रत्यागते सुखं स्नातं कृताहारं दिनात्यये ।  
बिल्वतैलेन मतिमान्सुखोष्णेनानुवासयेत् ॥११९॥

११७. कफे वाऽतिस्त्रवत्यपि-कफे वारे स्त्रवत्यपि (ब.)

११९. सुखं स्नातं-सुखे स्नातं (ब.)

प्रत्यागते पिच्छावस्ति पाछी आवी अथ त्पारे पिच्छावस्तिके लौटनेके बाद, सुखम् सुखपूर्वकं सुखपूर्वक, स्नातम् नवरात्री नहाकर, कृताहारम् भोजन करना देव शरीरमें भोजन कराये हुए रोगीको, दिनात्यये स्नाते शामको, सुखोष्णेन सखेवा अथ गरम सुहाते हुए गरम, बिल्वतैलेन बिल्वतैलनुं बिल्वतैलमें, मतिमान् बुद्धिमान् वैद्वे बुद्धिमान् वैद्वे, अनुवासयेत् अनुवासन देव अनुवासन देवे ॥ ११९ ॥

119. When the enema fluid has returned, the wise physician should give unctuous enema of genially warm medicated bael-oil in the evening after the patient has bathed comfortably and has taken his meal.

वचान्तेरथवा कल्कैस्तैलं पक्त्वाऽनुवासयेत् ।  
बहुशः कफवातार्तस्तथा स लभते सुखम् ॥१२०॥

अथवा अथवा अथवा, वचान्तैः वच सुधीनां वचापर्यन्त द्रव्योके, कल्कैः उदकेली कल्कसे, तैलम् तैल तैल, पक्त्वा पकायीने पकाकर, बहुशः बहु वषत बहुत दफे, अनुवासयेत् अनुवासन देव अनुवासन देवे, तथा अथ करनाथी ऐसा करनेसे, कफवातार्तः कफवायुभी पीजते। कफवायुसे पीजित, सः ते शरीर वह रोगी, सुखम् आरोग्य आरोग्यको, लभते भोगदे छे प्राप्त करता है ॥ १२० ॥

120. Or, unctuous enema may be given very often with the oil prepared with the group of drugs ending with sweet flag; thus treated, the patient suffering from kapha and vata disorders, gets relieved.

अतिसारे वातादिचिकित्साक्रमः ---

स्वे स्थाने मारुतोऽवश्यं वर्धते कफसंक्षये ।

स वृद्धः सहसा हस्यात्तस्मात् त्वरया जयेत् ॥१२१॥

१२१. कफसंक्षये-कफसंक्षयात् (ब. क.)



कफसंक्षये कश्चेन क्षयः अती कफके क्षयः हेने पर, मारुतः वायु वायु, स्वे स्थाने पोताना स्थानमां अपने स्थानमें, अवश्यम् अवश्य अवश्य, वर्धते वर्धते वृद्धि पाता है, वृद्धः सः अने वृद्धे। ते वायु और बढ़ा हुआ वह वायु, सहसा ज्वरं शीघ्र, हन्वात् भारी नाभे छे मार डालता है, तस्मात् देखी इस लिए, तत्र ते वायुने उस वायुको, त्वरया शीघ्र शीघ्र, जयेत् अतवे। जीतना चाहिए ॥ १२१ ॥

121. The vata necessarily gets aroused in its own habitat consequent upon the decrease of kapha. Thus aroused, it may suddenly cause death; hence the physician should subdue it quickly.

वातस्यानु जयेत् पित्तं, पित्तस्यानु जयेत् कफम् ।  
त्रयाणां वा जयेत् पूर्वं यो भवेद्बलवत्तमः ॥१२२॥

वातस्य अनु वायु पछी वायुके बाद, पित्तं पित्तने पित्तको, जयेत् अतवे। जीते, पित्तस्य अनु पित्त पछी पित्तके बाद, कफम् कश्चेन कफको, जयेत् अतवे। जीते, त्रयाणाम् वा अथवा त्रयुमां अथवा तीनोंमें, वः जे जो, बलवत्तमः वधारे अणवान उयादा बलवान, भवेत् होय हो, तत्र तेने उसको, पूर्वम् पछे। पहले, जयेत् अतवे। जीते ॥१२२॥

122. The pitta should be subdued after the vata is subdued and the kapha should be subdued after the pitta; or, that humor should be controlled first which happens to be the most predominant of all the three.

अध्यायोक्तविषयाः—

तत्र श्लोकः—

प्रागुत्पत्तिनिमित्तानि लक्षणं साध्यता न च ।  
क्रिया चावस्थिकी सिद्धा निर्विघ्ना अतिसारिणाम् १२३

तत्र ते विषयमां उस विषयमें, श्लोकः उपसंहारने। श्लोक छे के उपसंहारका श्लोक है कि अतिसारिणाम् हि अतिसारवाणाना अतिसारनी अतिसारवालोंके अतिसारकी, प्रागुत्पत्ति- प्रथम उत्पत्ति प्रथम उत्पत्ति, निमित्तानि कारण, लक्षणम् लक्षण लक्षण, साध्यता न च साध्यता-असाध्यता साध्यता-असाध्यता, आवस्थिकी अने अवस्थानुसार और अवस्थानुसार, सिद्धा सिद्ध सिद्ध, चिकित्सा चिकित्सा चिकित्सा, निर्विघ्ना छडी छे कह दी है ॥ १२३ ॥

Here is the recapitulatory verse—

123. The primogenesis, etiology, signs and symptoms, curability or otherwise, and treatment according to the stage of disease of diarrhea patients have been described herein.

इत्यग्निवेशकृते तन्त्रे चरकप्रतिसंस्कृते  
चिकित्सास्थानेऽतिसारचिकित्सितं  
नामैकोनविंशोऽध्यायः ॥१९॥

इति आ प्रभाषे इस प्रकार, अग्निवेशकृते अग्नि-वेशे रयेदा अग्निवेशसे बनाये, चरकप्रतिसंस्कृते तन्त्रे अने चरकथी प्रतिसंस्कार पायेदा आ शास्त्रमां और चरकके द्वारा संस्कृत इस शास्त्रके, चिकित्सास्थाने चिकित्सास्थान विषे चिकित्सास्थानमें, अतिसारचिकित्सितम् 'अतिसारचिकित्सित' 'अतिसारचिकित्सित', नाम नामने। नामका, एकोनविंशः अगलीसभे। उनीसवीं, अध्यायः अध्याय संपूर्ण थये। अध्याय समाप्त हुआ ॥ १९ ॥

19. Thus in the Section on Therapeutics, in the treatise compiled by Agnivesa and revised by Caraka, the nineteenth chapter entitled 'The Therapeutics of Diarrhea' is completed.

१२२. बलवत्तमः-बलवत्तरः(ब.)

१२३. निमित्तानि-निदानानि (य.)

„ अतिसारिणाम्-अतिसारिकी (क.)

## विंशोऽध्यायः ।

वीसमे। अध्याय अध्याय बीसवाँ

## Chapter XX

छर्दिचिकित्सितोपक्रमः—

अथातश्छर्दिचिकित्सितं व्याख्यास्यामः॥१॥

इति ह स्माह भगवानात्रेयः ॥२॥

अथ अतः हवे अही थी अब आगे, छर्दि-  
चिकित्सितम् 'छर्दिचिकित्सित' नामना अध्यायम्  
'छर्दिचिकित्सित' नामके अध्यायका, व्याख्यास्यामः  
व्याख्यान करुं व्याख्यान करेंगे ॥ १ ॥

भगवान् भगवान् भगवान्, आत्रेयः आत्रेये आत्रेये,  
इति ह आ विषयमा नीये प्रमाणे न इस विषयमें  
निम्न प्रकारसे ही, आह स कहेंगे छे कहा है ॥ २ ॥

1. We shall now expound the chapter entitled "The Therapeutics of Vomiting"

2. Thus declared the worshipful Atreya.

छर्दिविषयेऽग्निवेशस्य प्रश्नः—

यशस्विनं ब्रह्मतपोद्युतिभ्यां

ज्वलन्तमग्न्यकंसमप्रभावम् ।

पुनर्वसुं भूतहिते निविष्टं

पप्रच्छ शिष्योऽग्निजमग्निवेशः ॥ ३ ॥

यशस्विनम् यशस्वी यशस्वी ब्रह्म- अक्षतान्  
ब्रह्मज्ञान, तपः- तथा तपना और तपके, द्युतिभ्याम्  
तेजसी तेजसे, ज्वलन्तम् देदीप्यमान देदीप्यमान, अग्नि-  
अग्नि अग्नि, अर्क- अने सूर्य और सूर्यके, सम- समान  
समान, प्रभावम् प्रभावशाली प्रभावशाली, भूत- अने  
प्राणीभूतना और प्राणियोंके, हिते हितमा हितमें,  
निविष्टम् तत्पर तत्पर, अग्निजम् आत्रेय आत्रेय, पुन-  
र्वसुम् पुनर्वसुने पुनर्वसुको, शिष्यः शिष्य शिष्य,  
अग्निवेशः अग्निवेशे अग्निवेशने, पप्रच्छ पूछ्य पूछा ॥३॥

3. Agnivesa, the disciple, inquired of Punarvasu, the illustrious son of

Atri, who was engrossed in thinking out the well-being of humanity and glowing with the lustre of spiritual wisdom and austerity with a brilliance rivalling that of the fire and the sun.

याश्छर्दयः पञ्च पुरा त्वयोक्ता

रोगाधिकारे भिषजां वरिष्ठ ! ।

तासां चिकित्सां सनिदानलिङ्गां

यथावदान्स्व नृणां हितार्थम् ॥ ४ ॥

भिषजाम् वरिष्ठ! हे वैद्योमां श्रेष्ठ! हे वैद्योमां श्रेष्ठ,  
पुरा पहले पदमे, रोगाधिकारे भूतस्थानना अष्टोदरीय  
अध्यायमां सूत्रस्थानके अष्टोदरीय अध्यायमें, याः ये  
जो, पञ्च पांच पांच, छर्दयः छर्दि- छर्दियां, त्वया  
आपे आपने, उक्ताः उही छे कही हैं, तासाम् तेओनी  
उनकी, स-निदान-लिङ्गाम् निदान तथा बिंगसहित  
निदान और लिङ्गके साथ यथावत् यथावत् यथावत्,  
चिकित्साम् चिकित्सा चिकित्सा, नृणाम् मनुष्योना  
मनुष्योंके, हितार्थम् हित भाटे हितके लिए, आचक्ष्व  
कहो कहिये ॥ ४ ॥

4. 'O, best of physicians! describe fully, for the sake of the well-being of humanity what the five kinds of vomiting are that have been stated in the chapter on nosology (Classification of diseases, Sutra. 10) by you, as also their etiology, symptoms and treatment.'

छर्दः भेदाः—

तदग्निवेशस्य वचो निशम्य

प्रीतो भिषक्छ्रेष्ठ इदं जगाद ।

याश्छर्दयः पञ्च पुरा मयोक्ता-

स्ता विस्तरेण ब्रुवतो निबोध ॥ ५ ॥

अग्निवेशस्य अग्निवेशन् अग्निवेशके, तद् ते उस,  
वचः वचन वचनको, निशम्य सुनिशीने सुनकर, प्रीतः  
५. नृणां हितार्थम्-हितार्थ नृणः (५.)

प्रसन्न थयेत्। प्रसन्नं हृष्टं, भिषक्- वैद्योर्भा वैद्योर्मे, श्रेष्ठः श्रेष्ठं पुनर्वसुं श्रेष्ठं पुनर्वसुने, इदं आ यद्, जगद् उद्युं कदा, पुरा पठेत्। पठेत्, मया मे मने, याः जे जो, पञ्च पांच पांच, छर्दयः छर्दिओ छर्दियां, उक्ताः उछी छे कही हैं, ताः ते उनको, विस्तरेण विस्तार-पूर्वकं विस्तारसे, ब्रुवतः उछेत्। ऐवा भारी पासेभी कहते हुए सुनसे, निबोध भाँझौ सुनो ॥ ५ ॥

5. Hearing those words of Agni-vesa and being pleased, the foremost among physicians spoke thus: "Listen as I describe elaborately the five types of vomiting that were spoken of by me before.

छर्दः पूर्वरूपम्—

दोषैः पृथक्त्रिप्रभवाश्चतस्रो  
द्विष्टार्थयोगादपि पञ्चमी स्यात् ।  
तासां हृदुक्लेशकफप्रसेकौ  
द्वेषोऽशने चैव हि पूर्वरूपम् ॥ ६ ॥

पृथक् शुद्ध शुद्ध पृथक् पृथक्, दोषैः दोषधी उत्पन्न थयेत्। दोषसे उत्पन्न हुई, त्रिप्रभवाः अने सन्निपातधी उत्पन्न थयेत्। और सन्निपातसे उत्पन्न हुई, चतस्रः छे चार ये चार, द्विष्टार्थ- तथा द्विष्ट विषयना और द्विष्ट विषयके, योगात् योगधी योगसे, पञ्चमी पांचमी पांचवीं, अपि पञ्चमी, स्यात् छर्दि छे छर्दि है, हृद्- हृदयने। हृदयका, उक्लेश- उल्लेख उल्लेख, कफ- उछेत्। कफका, प्रसेकौ स्नाय साव, अशने अने भोजनभां और भोजनमें, द्वेषः च एव द्वेष छे। द्वेष ये, तासां तेओनां उनके, पूर्वरूपम् हि पूर्वरूप छे पूर्वरूप हैं ॥ ६ ॥

6. There are three kinds of vomiting each of which is caused by a single morbid humor, a fourth kind

६. दोषैः पृथक्त्रिप्रभवाश्चतस्रो—दोषास्त्रयस्तत्प्रभवाश्चतस्रः

(घ. फ. व.)

॥ पृथक् त्रिप्रभवाश्चतस्रो—पृथक् त्रिप्रभवाश्चतस्रीं (घ. त. व.)

caused by the three morbid humors combined, and a fifth that results from contact of unpleasant sense-objects. Their premonitory symptoms are twisting in the stomach, excessive salivation and disgust for food.

वातच्छर्दः निदानलक्षणे—

न्यायामतीक्ष्णौषधशोकरोग-

भयोपवासाद्यतिकर्शितस्व ।

वायुर्महास्रोतसि संप्रवृद्ध

उत्क्लेश्य दोषांस्तत ऊर्ध्वमस्यन् ॥ ७ ॥

आमाशयोत्क्लेशकृतां च मर्म

प्रपीडयच्छर्दिमुदीरयेत् ।

हृत्पाश्वपीडासुखशोषमूर्ध-

नाभ्यर्तिकासस्वरमेदतोदैः ॥ ८ ॥

उद्गारशब्दप्रबलं सफेनं

विच्छिन्नकृष्णं तनुकं कषायम् ।

कृच्छ्रेण चास्यं सहता च वेगे-

नार्तोऽनिलाच्छर्दयतीह दुःखम् ॥ ९ ॥

न्यायाम- न्यायाम न्यायाम, तीक्ष्ण- तीक्ष्ण तीक्ष्ण, औषध- औषध औषध, शोक- शोक शोक, रोग- रोग रोग, भय- भय भय, उपवास- उपवास उपवास, आदि- पजेरेथी आदिसे, अतिकर्शितस्व अतिकृश थयेत् रोगीने अतिकृश हुए रोगीका, संप्रवृद्धः प्रकुपित प्रकुपित हुआ, वायुः वायु वायु, महास्रोतसि महास्रोतभां महास्रोतमें, दोषान् दोषाने दोषोंको, उत्क्लेश्य उल्लेखित उल्लेखित करके, ततः पछी पीछे, दोषान् दोषाने

७. वायुर्महास्रोतसि संप्रवृद्ध उत्क्लेश्य दोषांस्तत ऊर्ध्वमस्यन्—

कुब्जो महास्रोतसि मातरिश्वा दोषान्

समुत्क्लेश्य तद् ऊर्ध्वमस्यन् (ग. ड. व.)

॥ " " " —कुब्जो महास्रोतसि मातरिश्वा दोषा

समुत्क्लेश्य तद् ऊर्ध्वमस्यन् (घ. घ.)

॥ तत ऊर्ध्वमस्यन्—तथा तमस्यन् (फ. व.)

८. आमाशयोत्क्लेशकृतां च आमाशयोद्वेगयुतश्च (घ. फ.)

॥ " " —आमाशयोद्वेगयुतश्च (फ.)

॥ " " —आमाशयोद्वेगवतश्च (घ.)

दोषोंको, ऊर्ध्वम् शिथे ऊपरकी ओर, अत्यन्त ईं कते। फैकता हुआ, मर्म च अने भर्भने और मर्मको, प्रपीडयन् पीडा करेता पीड़ित करता हुआ, आमाशय- आमाशयना आमाशयके, उत्क्रेश- उत्क्रेशे उत्क्रेशसे, कृतम् उत्पन्न करेली उत्पन्न हुई, छर्दिम् उलटीन् छर्दिको, तु ते। तो, उदीरयेत् उदीरय करे छे प्रेरित करता है, अनिलात् वायुथी वायुसे, आर्तः पीडित शोभी पीड़ित रोगी, इह आ वातनी छर्दिम्। इस वातकी छर्दिमें, कृच्छ्रेण मुश्किलीये कठिनाईसे, महता च अने मोटा और बड़े, वेगेन वेगथी वेगके साथ, दुःखम् कष्टथी दुःखसे, हृत्- हृदय हृदय, पार्श्व- तथा पार्श्वानी और पार्श्वोंमें, पीडा- पीडा पीडा, मुखशोष- मुखशोष मुखशोष, मूर्ध- माथुं शिर, नाभि- तथा नाभिमा तथा नाभिमें, जति- पीडा पीडा, कास- कास कास, स्वरमेद- स्वरमेद स्वरमेद, तोदः तथा तोदसहित तथा तोदसहित, उद्गार- उद्गारना उद्गारका, शब्दप्रबलम् प्रबल शब्दवाणी प्रबल शब्दवाला, सफेनम् झिल्लुवाणी ज्ञागदार, विच्छिन्न- टुकडे टुकडे आवती टुकके टुकके आता, कृष्णम् काली काला, तनुकम् पातणी पतला, कषायम् कषायरसयुक्त कषाय- रसयुक्त, अल्पम् च अने थोड़ी और थोड़ा, उर्ध्ववति उलटी करे छे वमन करता है ॥ ७-९ ॥

7-9. In a person extremely emaciated by exercise, acute medications, grief, disease, fear, or starvation, the vata gets greatly increased in the alimentary tract, agitates the humors and then pushing them upward, and putting pressure on the internal viscera, precipitates the humors in the stomach and causes vomiting. The patient suffering from vomiting of the vata type is afflicted with pain in the stomach and hypo-chondriac regions, parching of the mouth, pain in the head and umbilical region, cough, change of voice and pricking pain. Being afflicted with a violent urge

for vomiting, he ejects out painfully and with great difficulty a little quantity of frothy, broken up, dark, thin, and astringent matter, making a great noise while vomiting.

पित्तच्छर्दः निदानलक्षणे—

अजीर्णकटुम्लविदाहशीतै-

रामाशये पित्तमुद्गीर्णवेगम् ।

रसायनीभिर्विस्तृतं प्रपीड्य

मर्मोर्ध्वमागम्य वमिं करोति ॥१०॥

अजीर्ण अजीर्ण, कटु- कटु कटु, अम्ल- अम्ल अम्ल, विदाहि- विदाही विदाही, अशीतैः अने उष्ण द्रव्योंना सेवनथी और उष्ण द्रव्योंके सेवनसे, आमाशये आमाशयमा आमाशयमें, उद्गीर्णवेगम् उद्गीर्ण वेगवाणुं प्रबल वेगवान, रसायनीभिः तथा ओतिसादा तथा स्रोतकिद्वारा, विस्तृतम् फैलायेहुं फैला हुआ, पित्तम् पित्त पित्त, मर्म भर्भने मर्मको, प्रपीडय पीडित करी पीड़ित करके, ऊर्ध्वम् ऊपर ऊपर, आमाशय आशीने आकर, वमिम् उलटी वमन, करोति करे छे करता है ॥ १० ॥

10. As a result of taking predigestion-meals, or taking pungent, acid, irritant and hot articles of diet, the pitta gets precipitated and flowing out with force through the biliary passages, and causing pressure to these, it spreads upwards in the stomach and gives rise to vomiting.

मूर्च्छापिपासामुखशोषमूर्ध-

तास्वक्षिर्वातपतमोक्षमार्तः ।

पीतं भृशोष्णं हरितं सतिक्तं

धूर्ध्रं च पित्तेन वमेत् सदाहम् ॥११॥

१०. विदाहशीतैः-विदाहिन्यैः (व.)

११. पिपासामुखशोषमूर्ध-पिपासामय मूर्धकण्ठ (म.)

પિત્તેન પિત્તથી પિત્તસે, મૂર્છા- મૂર્છા મૂર્છા, પિપાસા- તરસ તૃષા, મુલશોષ- મુખશોષ મુલશોષ, મૂર્ધ- માથું શિર, તાલુ- તાળવું તાલુ, અક્ષિ- અને આંખનાં આંખકે, સંતાપ- સંતાપથી સતાપસે, તમઃ- અંધારાં આવવાથી અન્ધેરી આનેસે, બ્રમ- તેમજ બ્રમથી एवं બ્રમસે, આર્તઃ પીડાયેલો અર્ધને પુરુષ પીડિત હોઈ પુરુષ, પીત્તમ્ પીત્તી પીત્ત, મૃત્ત- અત્યંત અત્યન્ત, ડબ્બ- ડબ્બ, સતિકમ્ તિક્ત તિક્ત, હરિતમ્ લીલી હરા, બ્રૂમ્ ધૂમાડા જેવી ઘૂંપકે વર્ણકા, સદાશ્વ ચ અને દાહયુક્ત ઓર દાહયુક્ત, વમેત્ ઉલટી કરે છે વમન કરતા હે ॥ ૧૧ ॥

11. A person affected with vomiting of the pitta type is afflicted with fainting, thirst, parching of the mouth, burning in the head, palate and eyes, faintness and giddiness accompanied with burning pain, and vomits copious, yellow, hot, greenish, bitter and smoky vomitus.

કફચ્છદેઃ નિદાનલક્ષણે—

શ્લિષ્ઠાતિગુર્વામવિદાહિમોજ્યૈઃ

સ્વપ્નાદિમિશ્રૈવ કફોડતિવૃદ્ધઃ ।

ઉરઃ શિરો મર્મ રસાયનીશ્ચ

સર્વાઃ સમાવૃત્ય વર્મિ કરોતિ ॥૧૨॥

શ્લિષ્ઠ- સ્નિગ્ધ શ્લિષ્ઠ, અતિગુરુ- અતિયુગ્મ અતિગુરુ, આમ- આમજનક આમજનક, વિદાહિ- અને વિદાહી ઓર વિદાહી, મોજ્યૈઃ ભોજ્યેથી ભોજનસે, સ્વપ્ન- તથા ઉંઘ તથા નિદ્રા, આદિભિઃ ચ એવ વર્મેથી આદિસે, અતિવૃદ્ધઃ અતિશય વધેલો અત્યન્ત વધા હુઆ, કફઃ કફ, ઉરઃ હાલી ઉર, શિરઃ માથું શિર, મર્મ મર્મ મર્મ, સર્વાઃ અને બધી ઓર સર્વ, રસાયનીઃ ચ એતિને સ્તોતોંકો, સમાવૃત્ય બંધ કરીને આચ્છાદિત કરકે, વર્મિ ઉલટી કમન, કરોતિ કરે છે ઉત્પન્ન કરતા હે ॥ ૧૨ ॥

12. As a result of very unctuous, very heavy, raw and irritant articles

of diet, or excess of sleep and similar other things, the kapha gets greatly increased and occluding the chest, head, viscera and all the channels concerned, the kapha causes vomiting.

તન્દ્રાસ્યમાધુર્યકફપ્રસેક-

સંતોષનિદ્રારુચિગૌરવાર્તઃ ।

શ્લિષ્ઠં ઘનં સ્વાદુ કફાદિશુષ્કં

સલોમહર્ષોડ્વપરુજં વમેત્ ॥૧૩॥

કફાત્ કફથી કફસે, તન્દ્રા- તન્દ્રા તન્દ્રા, આશ્વ- મુખની મુલકા, માધુર્ય- મધુરતા મીઠાપન, કફપ્રસેક- કફપ્રસેક કફપ્રસેક, સંતોષ- સંતોષ સંતોષ, નિદ્રા- નિદ્રા નિદ્રા, અરુચિ- અરુચિ અરુચિ, ગૌરવ- અને શુભ્રતાથી ઓર ગુરુતાસે. આર્તઃ પીડિત અર્ધને પીડિત હોઈ, સલોમહર્ષઃ લોમહર્ષયુક્ત પુરુષ રોમાંચયુક્ત પુરુષ, ઘનં તે, શ્લિષ્ઠમ્ સ્નિગ્ધ શ્લિષ્ઠ, ઘનમ્ ઘાટું ગાઠા, સ્વાદુ મીઠું મધુર, વિશુદ્ધ શુદ્ધ શુદ્ધ, અલ્પ- રુજશ્ અને થોડી પીડનાળું ઓર અલ્પ દર્દકે સાથ, વમેત્ વમન કરે છે વમન કરતા હે ॥ ૧૩ ॥

13. The patient affected with vomiting of the kapha type is afflicted with torpor, sweet taste in the mouth, ptialism, sense of satiety, somnolence, anorexia and heaviness, and vomits sticky, dense, sweet and clear vomitus, accompanied with horripilation and slight pain.

સન્નિપાતચ્છદેઃ નિદાનલક્ષણે—

સમક્ષતઃ સર્વરસાન્ પ્રસક્ત-

મામપ્રદોષર્તુવિપર્યયૈશ્ચ ।

સર્વે પ્રકોપં યુગપત્ પ્રપન્ના-

દહર્દિ ત્રિદોષાં જનયન્તિ દોષાઃ ॥૧૪॥

૧૩. કફોત્-કફમ્ (ક. વ.)

૧૪. આમપ્રદોષર્તુ-આમપ્રદોષર્તુ (વ.)

प्रसक्तम् निरन्तरं लगातार, सर्वस्वान् भक्ष्यं  
सर्व रसोक्तं, समस्ततः समश्ननं कर्तारना समश्ननं करनेवालेके,  
आमप्रदोष- आमदोषधी, आमदोषसे, ऋतु- अने ऋतु-  
ओना और ऋतुओंके, विपर्ययैः च विपर्ययधी विपर्ययसे.  
युगपत् ओकसाथे एकसाथ, प्रकोपम् प्रकोप, प्रकोप-  
पाभेदा पाये हुए, सर्वे अथा सब, दोषाः दोषो.  
दोष, त्रिदोषाम् त्रिदोषध्या त्रिदोषजन्य, छर्दिम् छर्दि.  
छर्दिको, जनयन्ति उत्पन्न करे छे उत्पन्न करते हैं ॥१४॥

14. As a result of constant indulgence in promiscuous diet consisting of all the categories of taste combined together, or as a result of chyme-disorders, or of the abnormality in seasons, all the three humors getting simultaneously provoked, produce vomiting of the tridiscordance type.

शूलविपाकारुचिदाहतृष्णा-

श्वासप्रमोहप्रबला प्रसक्तम् ।

छर्दिस्त्रिदोषाल्लवणाम्लनील-

सान्द्रोष्णरक्तं वमतां नृणां स्यात् ॥१५॥

त्रिदोषात् त्रिदोषधी त्रिदोषसे, लवण- लवण, लवण-  
अम्ल- अम्ल, अम्ल, नील- नील, नील, सान्द्र- धाटी  
गाढा, उष्ण- गरम गरम, रक्तम् तथा लाल और लाल,  
वमताम् उबटी करती वमन करते हुए, नृणाम्  
मनुष्योंने मनुष्योंको, शूल- शूल, शूल, अविपाक-  
अविपाक अविपाक, अरुचि- अरुचि, अरुचि, दाह-  
दाह, दाह, तृष्णा- तृष्णा, तृष्णा, श्वास- श्वास, श्वास,  
प्रमोह- तथा अधिक मोह तथा अधिक मोहसे, प्रबला  
ज्या प्रबल रूपमें छे ज्योती प्रबल रूपवाला, छर्दिः  
छर्दि वमन, प्रसक्तम् आलु ने आलु लगातार, स्वात्  
शरीर रहे छे होता रहता है ॥ १५ ॥

15. A person affected with vomiting of the tridiscordance type suffers from colic, mis-digestion, anorexia, burning, thirst, dyspnea, faintness and incessant

and violent fits of vomiting; and he vomits saltish, acid, blue, dense, hot and reddish matter.

छर्दिरुपद्रवाः-

विट्स्वेदमूत्राम्बुवहानि वायुः

स्रोतांसि संरुध्य यदार्ध्वमेति ।

उत्सन्नदोषस्य समाचिंत्य तं

दोषं समुद्भूय नरस्य कोष्ठात् ॥१६॥

विण्मूत्रयोस्तत् समवर्णगन्धं

तद्श्वासहिकार्तियुतं प्रसक्तम् ।

प्रच्छर्दयेद्दृष्टां महातिवेगा-

तयाऽर्दितश्चाशु विनाशमेति ॥१७॥

यदा न्याये जब, वायुः वायु, वायु, विट्- आड़े  
मल, स्वेद- पसरेवा स्वेद, मूत्र- मूत्र, मूत्र, अम्बुवहानि  
अने अलवाही और जलवाही, स्रोतांसि स्रोतोंनु स्रोतोंको,  
संरुध्य रंधन करी रोककर, उत्सन्न- प्रवृद्ध बढ़े हुए,  
दोषस्य दोषवाणा दोषवाण, नरस्य मनुष्यना पुरुषके,  
कोष्ठात् आश्रमधी कोष्ठमें, समाचिंत्य संचित थयेछ  
संचित हुए. तम ते उस, दोषस्य दोषने दोषको, समुद्भूय  
दोषवाणीने विचलित करने, ऊर्ध्वम् ऊँचे ऊपरकी ओर,  
एति अथ छे ते जाती है, तया तया नव, अतिवेगात्  
महा वेगपूर्वक अत्यन्त वेगपूर्वक, विट्- आड़ा मल, मूत्रयोः  
अने पेशावना और मूत्रके, सम- समान समान, वर्ण-  
वर्ण वर्ण, गन्धम् अने गन्धयुक्त और गन्धयुक्त, तद्-  
तथा तथा, श्वास- श्वास श्वास, हिकार- हिकार हिकार,  
अर्तियुतम् अने पीडायुक्त और पीडायुक्त, दृष्टम् दोषवाणं  
दोषवाला, प्रसक्तम् अने अप्रियच्छिन्न और अप्रियच्छिन्न,  
प्रच्छर्दयेत् वमन करे छे वमन करता है, तया  
तया पीडा उससे, अर्दितः च पीडित पुरुष पीडित पुरुष,  
आशु जल्दी शीघ्र, विनाशम् नाश नष्ट, एति पाये छे  
हो जाता है ॥ १६-१७ ॥

16-17. When the morbid vata, obstructing the passages of the feces,

\* ६. समुद्भूय-समुद्भूय क. द.

१७. अतिवेगात्-प्रतियोगात् (र.)

sweat, urine and body-fluid. proceeds upwards carrying with it the morbid matter accumulated in the emunctories, it causes elimination of the morbid matter from the alimentary tract by inducing vomiting. This vomitus which is fetid and ejected with great force, has the color and smell of feces and urine, and is accompanied with thirst, dyspnea, hiccup and pain. The patient rapidly succumbs to the violence of the fit.

द्विष्टार्थजायाश्छर्दः निदानलक्षणम्—

द्विष्टप्रतीपाशुचिपूत्यमेध्य-

बीभत्सगन्धाशनदर्शनैश्च ।

यच्छर्दयेत्तमना मनोन्नै-

द्विष्टार्थसंयोगभवा मता सा ॥१८॥

मनोन्नैः मनने आधात करनेवाला मनको आहत करनेवाले, द्विष्ट- अप्रिय द्विष्ट, प्रतीप- विपरीत विपरीत, अशुचि- अशुद्ध अशुद्ध, पूति- सूँडें पूति, अमेध्य- अमेध्य अमेध्य, बीभत्स- भीभत्स बीभत्स, गन्ध- गन्ध गन्ध, अस्नन- स्नान स्नान, दर्शनैः च अने दृश्योत्थ और दृश्योत्थ, तममनाः उत्तम मनवाले। पुरुष उपतम मनवाला पुरुष, यत् ने जो, छर्दयेत् वमन करे छे वमन करता है, सा ते वह, द्विष्ट- न गमे जेवा द्विष्ट, अर्थ- विषयना विषयोंके, संयोगभवा संयोगभवी उत्पन्न थयेकी संयोगसे उत्पन्न हुई, मता माने छे मानी गई है ॥ १८ ॥

18. When a person vomits, as a result of mental disgust occasioned by sense-contact with nauseating, unseemly, unclean, foul-smelling, unholy and gruesome sights or articles of diet or odours, it is known as vomiting induced by contact with hateful things.

छर्दरसाध्यलक्षणम्—

क्षीणस्य या छर्दिरतिप्रवृद्धा

सोपद्रवा शोणितपूययुक्ता ।

सचन्द्रिकां तां प्रवदन्त्यसाध्यां

साध्यां चिकित्सेदनुपद्रवां च ॥१९॥

क्षीणस्य क्षीण पुरुषानी क्षीणपुरुषकी, या ने जो, छर्दिः छर्दि छर्दि, अतिप्रवृद्धा अतिशय वधेकी अत्यन्त बढ़ी हुई, सोपद्रवा उपद्रवयुक्त उपद्रवयुक्त, शोणित- अने खोड़ी और कथिर, पूययुक्ता तथा पुरुषाणी होय छे तथा पूययुक्त होती है, ताम् ते वह, सचन्द्रिकां ने अन्द्रिकावाणी होय तो यदि चन्द्रिकावाली हो तो, असाध्याम् तेने असाध्य उनको असाध्य, प्रवदन्ति उहे छे कहते हैं, अनुपद्रवाम् उपद्रव विनानी उपद्रवसे रहित, साध्याश्च च साध्य छर्दिनी साध्य छर्दिकी, चिकित्सेत् चिकित्सा करनी चिकित्सा करनी चाहिए ॥ १९ ॥

19 That is regarded as an incurable case of vomiting which occurs in an emaciated person and continues incessantly, which is associated with complications, and which contains blood, pus and glistening matter. The physician should undertake treatment of cases of vomiting which are curable and not of those associated with complications.

वातच्छर्द्याश्चिकित्सा—

आमाशयोत्क्लेशमवा हि सर्वा-

छर्द्यो मता लङ्घनमेव तस्मात् ।

प्राकारयेन्मारुतजां विमुच्य

संशोधनं वा कफपित्तहारि ॥२०॥

सर्वाः यधी अतनी सब प्रकारकी, छर्द्यः छर्दिछे। छर्दिवां, आमाशय- आमाशयना आमाशयके, उत्क्लेश- उत्क्लेशथी उत्क्लेशसे, मवाः उत्पन्न थयेके उत्पन्न होनेवाली, मताः हि माने छे मानी गई हैं, तस्मात् तेथी अतः, मारुतजाम् वातजन्य छर्दिने वातज छर्दिकी, विमुच्य

१९. अतिप्रवृद्धा-अतिप्रसक्ता (क. छ. य. व.)



છેડી દધને છોડકર, લઙ્ગનશ્ચ ઇવ લંઘન લંઘન,  
કફપિત્તહારિ વા અથવા કફ-પિત્તહારિ વા કફપિત્તનાશક,  
સંશોધનશ્ચ સંશોધન સંશોધન, પ્રાક્ પ્રથમ પ્રથમ,  
કારણે કારણ કરાવું કરાવનાં चाहिए ॥ ૨૦ ॥

20. As all the varieties of vomiting are considered to originate from the agitation of the humors in the stomach, it is either starvation-therapy that should first be prescribed except in cases of vomiting due to vata, or purificatory procedure curative of kapha and pitta.

चूर्णानि लिह्यान्मधुनाऽभयानां  
इयानि वा यानि विरेचनानि ।

मद्यैः पयोभिश्च युतानि युक्त्या  
नयन्त्यघो दोषमुदीर्णमूर्ध्वम् ॥ २१ ॥

મધુના મધની સાથે શરદકે સાથ, અમયાનાશ  
કરેતું હરકકા, ચૂર્ણાનિ ચૂર્ણ ચૂર્ણ, લિહ્યાન્ ચાટવું ચાટે,  
યાનિ અથવા જે અથવા જો ઇયાનિ હવે હવે,  
વિરેચનાનિ વિરેચના વિરેચનો, ઉર્ધ્વમ્ ઉપરની બાજુએ  
ઝપરકી ઓર, ઉદીર્ણમ્ ઉદીર્ણ યથેલા પ્રેરિત હું,   
દોષમ્ દોષને દોષકો, અથઃ નીચેની બાજુએ નીચેની  
ઓર, નયન્તિ અથ એ લે જાતે હૈં, તાનિ વા તેઓને  
ડાકો, મદ્યૈઃ મધ મધ, પયોમિઃ ચ અને દૂધથી ઓર  
દધસે, યુતાનિ યુક્ત કરી યુક્ત કરકે, યુક્ત્યા યુક્તિપૂર્વક  
પીવાં યુક્તિપૂર્વક પીવે ॥ ૨૧ ॥

21. The patient may take the pulvis of chebulic myrobalans with honey or palatable purgatives skilfully combined with wine or milk; this draws down the morbid matter that has been impelled to flow upward.

वल्लीफलाद्यैर्मनं पिबेद्वा  
यो दुर्बलस्तं शमनैश्चिकित्सेत् ।

रसैर्मनोबૈર્લયુર્મિર્લયુક્તૈઃ  
મધ્યૈઃ સમોજ્યૈર્વિવિધેષ્વ પાનૈઃ ॥ ૨૨ ॥

વલ્લીફલાદ્યૈઃ વા અથવા વલ્લીફલાદિવત્ યા  
વલ્લીફલાદિ દ્વારા, શમનમ્ શમન વપન, પિબેદ્ દેવું  
કેનાં વાહિય, યઃ જે જો, દુર્બલઃ દુર્બળ હોય દુર્બલ  
હો, તમ્ તેનો ઉત્તરી, શમનૈઃ શમન ઔષધોથી શમન  
ઔષધસે. મનોજ્યૈઃ જેવાં કે:-મનપસંદ જેસેકિ:-મન-  
પસંદ, રસૈઃ રસોથી રસોસે, કઘુમિઃ કઘુ લઘુ, વિગુપ્તૈઃ  
અને સુકાં ઔર શુષ્ક, સમોજ્યૈઃ સોજ્યસહિત મોજ્ય-  
સહિત, મધ્યૈઃ મધ્યોથી મધ્યોસે, વિવિધૈઃ અને વિવિધ  
ઔર વિવિધ, પાનૈઃ ચ પાનોથી પાનોસે, ચિકિત્સેત્  
ઉપચાર કરવો ચિકિત્સા કરે ॥ ૨૨ ॥

22. He may also take the emetic dose prepared of the drugs of the valliphala group or if the patient is weak the physician may treat him with sedative measures by giving him palatable meat-juices, light and dried articles fo diet along with various kinds of drinks.

सुसंस्कृतास्तित्तिरिर्बर्हिनाव-  
रसा व्यपोहन्त्यनिलप्रवृत्ताम् ।

छर्दिं तथा कोलकुलस्थघाम्य-  
बिद्धादिमूलाम्लयवैश्च यूषः ॥ २३ ॥

સુસંસ્કૃતાઃ સુસંસ્કૃત સુસંસ્કૃત, તિત્તિરિ- તેતર સીતર,  
બર્હિ- ખેર મોર, લાવ- અનેલાવના ઓર બટોરોકે, રસાઃ  
માંસરસો માંસરસ, તથા તથા તથા, કોલ- ખેર બેર,  
કુલત્ય- કળથી કુલયી, ધાન્વ- ધાણા ધનિયા, બિદ્ધાદિ-  
મૂલ- બિલ્વાદિ પંચમૂળ બિલ્વાદિ પંચમૂલ, અમ્લ-  
અમ્લ દ્રવ્ય અમ્લ દ્રવ્ય, યવૈઃ અને બવથી બનાવેલ  
ઔર જોસે બનાયા, યૂષઃ યૂષ યૂષ, અનિલપ્રવૃત્તામ્  
વાતજન્ય વાતજન્ય, છર્દિમ્ છર્દિને છર્દિકો, વ્યપોહન્તિ  
દૂર કરે છે દૂર કરતે હૈં ॥ ૨૩ ॥

23 The meat-juice of the partridge, the peacock and the quail, properly prepared, controls vomiting caused

૨૩. સુસંસ્કૃતાઃ-સુસંસ્કૃતઃ (૧.)

; રસાઃ-રસૈઃ (૨.)

by vata as also the soup prepared of jujube, horse gram, coriander, roots of the bael group of drugs, acid articles and barley.

वातात्मिकायां हृदयद्रवातो

नरः पिबेत् सैन्धववद्धृतं तु ।

सिद्धं तथा धान्यकनागराभ्यां

दध्ना च तोयेन च दाडिमस्य ॥२४॥

वातात्मिकायाम् वातजन्य छर्दिर्भा वातजन्य छर्दिर्भा, हृदयद्रव- हृदयानी उतावणी गतिभी हृदयकी शीघ्र गतिसे, आतेः पीडित पीडित, नरः मनुष्ये मनुष्य, सैन्धववत् सैन्धववाणु सैन्धानमकसे युक्त, घृतम् घी घृत तथा धान्यक-अथवा धाया या धनिया, नागराभ्याम् सूँडे सोठ, दध्ना च दही दही, दाडिमस्य च अने दाडिमनी और अनारके, तोयेन रसथी रससे, सिद्धम् पकावेव भी सिद्ध घी, पिबेत् पीवुं पीवे ॥ २४ ॥

24. If the patient suffering from vomiting of the vata type is afflicted with palpitation of the heart he may take ghee with rock-salt or ghee prepared with coriander, dry ginger, curds and pomegranate juice.

व्योषेण युक्तां लवणैस्त्रिभिश्च

घृतस्य मात्रायथवा चिदध्यात् ।

स्निग्धानि हृद्यानि च भोजनानि

रसैः सयूषैर्दधिदाडिमाम्लः ॥२५॥

अथवा अथवा अथवा, व्योषेण त्रिकटु त्रिकटु, त्रिभिः अने त्रिषु और तीन, लवणैः च लवणैः लवणोंसे, युक्ताम् युक्त युक्त, घृतस्य घीनी पीकी, मात्राय मात्रा, चिदध्यात् आपनी देवे, सयूषैः अने सूषा-सहित और यूषोंके साथ, दधि- दही दही, दाडिम- तथा

२५. वातात्मिकायां हृदयद्रवातो.—वातात्मके हृदयद्रवातो

(ख. झ ड थ व फ.)

,, नरः—कासी (द.)

,, ,—कमम् (थ व.)

दाडिमथी और अनारसे, अम्लैः आटा डरेखा खड़े किये, रसैः भासिरसोसहित मांघरसोंसे, स्निग्धानि स्निग्ध स्निग्ध, हृद्यानि च तेभ्यः हृद्य एवं हृद्य, भोजनानि भोजनो आपनी भोजनोंको देवे ॥ २५ ॥

25. Or, he may take a proper measure of ghee mixed with the three spices and the three varieties of salts, or he may take unctuous and palatable foods mixed with meat-juices or with soups acidified with curds and sour pomegranate.

पित्तच्छर्द्याश्चिकित्सा—

पित्तात्मिकायामनुलोमनाथं

ब्राह्मविदारीक्षुरसैस्त्रिवृत् स्यात् ।

कफाशयस्थं त्वत्तिमात्रवृद्धं

पित्तं हरेत् स्वादुभिर्कूर्चमेव ॥२६॥

पित्तात्मिकायाम् पित्तजन्य छर्दिर्भा पित्तजन्य छर्दिर्भा, अनुलोमन-अर्थम् अनुलोमन भाटे अनुलोमनके लिए, ब्राह्म- ब्राह्म मुनके, विदारी- बेलीयडाणु बिलाईकन्द, इक्षु- अने शेरबडीना और इंसके, रसैः रस साथे रसके साथ, त्रिवृत् नसोतर त्रिवृत, स्वात् आपवुं देवे, कफाशयस्थम् अने कफाशयभां रहेव और कफाशयमें स्थित, अतिमात्र- अत्यंत अत्यन्त, वृद्धम् वृद्ध बढ़े हुए, पित्तम् पित्तने पित्तको, तु ते तो, स्वादुभिः मधुर औषधीयडे मधुर औषधियोंसे, कूर्चम् कर्च ७५२२ की आलुओथी ऊपरके भागसे, एव न ही, हरेत् हरेवुं निकाले ॥ २६ ॥

26. The physician should administer the pulvis of turpeth mixed with the juices of grape, white yam or sugar-cane for laxative action in cases of vomiting of the pitta type. But if the pitta, in an excessively increased condition, is lodged in the seat of kapha (stomach), it should be eliminated

through the mouth by means of sweet emetics.

**शुद्धाय काले मधुशर्कराभ्यां**

**लाजैश्च मन्थं यदि वाऽपि पेयाम् ।**

**प्रदापयेन्मुद्गरसेन वाऽपि**

**शाक्योदनं जाङ्गलजै रसैर्वा ॥२७॥**

शुद्धाय शुद्ध पुरुषने शुद्ध पुरुषको, काले भोजन वभते भोजनके समय, मधु- मध मधु, शर्कराभ्याम् तथा आउरसहित और चीनीसहित, लाजैः धाअने लाजाका, मन्थम् मन्थ मन्थ, यदि वा अथवा अथवा, पेयाम् पेया पेया, अपि पलु भी, मुद्गरसेन वा अथवा भगना यूप साथे या मूंगका यूपके साथ, जाङ्गलजैः अथवा जंगल भाषीओना या जंगल प्राणियोंके, रसैः वा भासरसे साथे या सरसोंसे, शाक्योदनम् शाकि योआने भात शाकि चावलोंका भात, अपि पलु भी, प्रदापयेत् आपवे देवे ॥ २७ ॥

27. After the patient has been cleansed by purificatory treatment, he should be given at the proper time, the demulcent drink prepared of roasted paddy, honey and sugar, or thin gruel. He may be given cooked sali rice with the soup of green gram, or meat-juice of jangala creatures.

**सितोपलामाक्षिकपिप्पलीभिः**

**कुम्भाषलाजायवसक्तुगृञ्जान् ।**

**कर्जूरमांसान्यथ नारिकेलं**

**द्राक्षामथो वा बदराणि लिङ्गात् ॥२८॥**

कुम्भाष- अरुआ आइला धुँ, यक्ष्मा वजरे कुम्भाष, लाजा- धाअ लाजा, यवसक्तु- जवना साथवा जोके सत्, गृञ्जान् मंडयुक्त जवना अस मंडयुक्त यवान, कर्जूर- भजूरने खजूरका, मांसानि गभं गूदा, अथ तेभ्य एवम्, नारिकेलम् नारियेल नारियल, द्राक्षाम् दाअ मुनके, अथो वा अथवा अथवा, बदराणि

२८. लिङ्गात्-दवात् (न.)

भोरने बेरको, सितोपला- साउर चीनी माक्षिक- मधु शहद, पिप्पलीभिः अने पीपर साथे और पिप्पलीके साथ, लिङ्गात् आटावा चाटे ॥ २८ ॥

28. Or, the patient may take a linctus of half boiled grain roasted paddy and barley flour and cooked barley along with its scum, date-pulp, coconut, grapes or jujube and mixed with sugar-candy, honey and long pepper.

**श्रोतोजलाजोत्पलकोलमज्ज-**

**चूर्णानि लिङ्गान्मधुनाऽभ्यां च ।**

**कोलास्थिमज्जाव्रजमक्षिकाविड्-**

**लाजासितामागचिकाकणान् वा ॥२९॥**

श्रोतो- श्रोताजन श्रोताजन, लाजा- धाअ लाजा, उत्पल- नीलकण्ठ नीलकर, कोल- अने भोरनी और बेरकी, मज्ज- मज्जना मज्जाके, चूर्णानि यूछोने चूर्णको, अभ्याम् च अथवा दरुने अथवा हरके चूर्णको, कोल- अथवा भोरना अथवा बेरकी, अस्थि- हडिआनी गुठलीकी, मज्ज- मज्ज मज्जा, व्रज- श्रोताजन संताजन, मक्षिका- भाषीनी मक्षिकाकी, विड्- विड विड, लाजा- धाअ लाजा, सिता- साउर चीनी, मागचिका- पीपरना पिप्पलीके, कणान् वा कलु ओओने ओदन डरी कण इनको एकत्र कर, मधुना मधु साथे शहदके साथ, लिङ्गात् आटावा चाटे ॥ २९ ॥

29. Or, the patient may take the pulvis of riverine antimony, roasted rice, blue water lily, the pulp of jujube or chebulic myrobalan mixed with honey; or, he may take the kernel of jujube-stone, antimony, the excreta of flies, roasted paddy, candied sugar, and the grains of long pepper mixed with honey.

**द्राक्षारसं वाऽपि पिबेत् सुशीतं**

**मृदुहलोष्टप्रभं च जलं वा ।**

जम्बुवायः पल्लवजं कषायं

पिवेत् सुशीतं मधुसंयुतं वा ॥३०॥

सुशीतम् सुशीतम् सुशीतम्, द्राक्षारसम् वा अपि  
द्राक्षेनो रसं मुनकेका रसं, मृदुष्टलोह-प्रभवम् अथवा  
तपावेष्टा भाटीना देहानुं हारेणुं या तपाये हुये मिट्टीके  
ढेलका बुझाये हुए, जलम् वा पाण्डू पानी, जम्बू अथवा  
अधुना या जामुन, वायः अने आभाना पानने। और  
आमके पल्लवका, मधुसंयुतम् मधुयुक्त शहदके साथ,  
कषायम् वा अनाथ कषाय, पिवेत् पीवे। पीवे ॥ ३० ॥

30. Or, the patient may drink cool  
grape juice or the cooled water  
prepared with baked clay or earth, or  
he may drink the cooled decoction of  
the sprouts of jambul or mango mixed  
with honey.

निशि स्थितं वारि समुद्रकृष्णं

सोशीरधाम्यं चणकोदकं वा ।

गवेषुकामूलजलं गुडूच्या

जलं पिवेदिधुरसं पयो वा ॥३१॥

निशि रात्रिभर रात्रिभर, स्थितम् जलम् ७८ भां ७८ वी  
रात्रेक्ष जलमें मिगोकर रखे गये, समुद्र-भगसहित  
मूंगके साथ, कृष्णम् पीपरनुं पिप्पलीयुक्त, वारि पाण्डू  
जल, स-वशीर-वीरधुना वाणासहित खसके साथ,  
धान्यम् धाणुं पाण्डू धनियाका जल, चणक-यधुनुं  
चनेका, उदकम् वा पाण्डू जल, गवेषुका-उसधुना कसईके,  
मूल-भूणुं मूलका, जलम् पाण्डू जल, गुडूच्याः  
गणानुं गिलोयका, जलम् पाण्डू जल, इधुरसम् शेष-  
डीने। रस ईखका रस, पयः वा अथवा दूध अथवा  
दूध, पिवेत् पीवुं पीवे ॥ ३१ ॥

31. Or, he may take water prepared  
by steeping green gram, long pepper,  
cuscut grass and coriander overnight  
in it, or water prepared with chick  
pea or with the roots of 'job's tears';

३१. धान्य-मुस्तम् (१.)

or he may take the cold infusion of  
guduch, or sugarcane juice or milk.

सेव्यं पिवेत् काञ्चनगैरिकं वा

सबालकं तण्डुलधावनेन ।

चात्रीरसेनोत्तमचन्दनं वा

तृष्णावमिघ्नानि समाक्षिकाणि ॥३२॥

सेव्यम् छाणा वाणानुं यक्षुं खसका चूर्ण, तण्डुल-  
धावनेन योभाना धाणु साथे तण्डुलके धोवनके साथ,  
पिवेत् पीवुं पीवे, सबालकम् अथवा वाणासहित  
अथवा सुगन्धवालायुक्त, काञ्चनगैरिकम् वा सोनागेरु  
योभाना धाणु साथे पीवे। स्वर्णगैरिक तण्डुलके धोवनके  
साथ पीवे, उत्तमचन्दनम् अथवा सुभज अथवा बेत-  
चन्दनको, चात्रीरसेन वा आभाना रस साथे पीवुं  
आंवलेके रसके साथ पीवे, समाक्षिकाणि मधुयुक्त ते  
त्रयु योभो शहदके साथ वे तीन योग, तृष्णा-तरस तृषा,  
वमिघ्नानि अने छिटी भटाउनार छे और छर्दिके नाशक  
हैं ॥ ३२ ॥

32. He may also take fragrant  
sticky mallow or yellow chalk and  
fragrant sticky mallow with rice water,  
or he may take white sandal wood  
with the juice of emblic myrobalan or  
he may take adipous and anti-emetic  
drugs mixed with honey.

कल्कं तथा चन्दनचव्यमांसी-

द्राक्षोत्तमाबालकगैरिकाणाम् ।

शीताम्बुना गैरिकशालिचूर्णं

मूर्वा तथा तण्डुलधावनेन ॥३३॥

तथा चन्दन-अंघ्रि चन्दन, चव्य-अंघ्रि चव्य,  
मांसी-भांसी मांसी, द्राक्षोत्तमा-उत्तम द्राक्ष उत्तम  
मुनके, बालक-वाणो सुगन्धवाला, गैरिकाणाम् अने  
सोनागेरुने। और स्वर्णगैरिका, कल्कम् उदक कल्क,  
शीताम्बुना हंडा पाण्डू साथे पीवे। शीतल जलसे  
पीवे, गैरिक-अथवा सोनागेरु या स्वर्णगैरिका, शालि-अने

३३. चम्ब-सेव्य (क. घ. छ. ट. व.)

शाक्षि योऽभातुं और शाक्षिका, चूर्णम् यूष् चूर्ण, स्त्रिवा-  
म्बुना ४३। पाप्पु साधे पीपुं शीतल कलसे पीपे, तथा  
तथा तथा, मूर्चाम् भूर्वा मूर्वा, तण्डुल- योऽभाना तण्डुलके,  
धावनेन धोषु साधे धोवनके साथ, विवेत् पीपी पीपे ॥३३॥

33. He may also take the paste of  
sandal wood, chaba pepper, nardus,  
large grapes, fragrant sticky mallow  
and red ochre with cold water, or  
the pulvis of red ochre, rice and  
trilobed virgin's bower with rice water.

कफच्छर्वाधिकारिणा—

कफात्मिकायां वमनं प्रवृत्तं  
स्वपिप्पलीसर्षपनिम्बतैः ।

विण्डीतकैः सैन्धवसंप्रसूकै-

वैष्णो कफामाशयशोधनार्थम् ॥३४॥

कफात्मिकायाम् ३४। कफजन्य, वम्याम् ३४। क  
कदिने, कफ-आमाशय- ३४। तथा आमाशय-  
कफजन्य और आमाशयके, शोधनार्थम् शोधन करने भाटे  
शोधनके लिए, सैन्धव-संप्रसूकैः सिंधु-पाप्पु-युक्त सैन्ध-  
नमकसे युक्त, विण्डीतकैः मीठाना यूष्-भागे। नैनफलके  
चूर्णवाके, स्वपिप्पली- पीपु-सिप्पली, सर्षप- सरसव  
सरसों, निम्ब-अने लीनाना और नीमके, तैः ३४। यथा  
कायसे, वमनम् वमन करने वमन कराना प्रवृत्तम्  
प्रवृत्त है ॥ ३४ ॥

34. In vomiting of the kapha type,  
it is beneficial to administer emesis  
with the emetic nut mixed with the  
decoction of long pepper, rape-seed  
and neem adding rock-salt, with a view  
to cleansing the seat of kapha and  
chyme.

गोधूमशालीन् सवधान् पुराणान्  
यूषैः पटोलामृतवित्रकाणाम् ।

३४. वम्यां-छर्वा (व. व.)

३५. यूषैः-कयैः (व. व.)

व्योषस्य निम्बस्य च तक्रसिद्धे-

यूषैः फलाम्लैः कटुभिस्तथाऽद्यात् ॥३५॥

सवधान् यवसहित औषहित, पुराणान् नूना  
पुराने, गोधूम- धुं मेहूं, शालीन् अने शाक्षियोऽभाना  
अन और शाक्षि चावलके अन, पटोल- पटोल परवल,  
अमृत- गणो गिलोय, वित्रकाणाम् अने वित्रकना और  
वित्रकके, यूषैः यूषे साधे यूषसे, तक्र- ३५। तक्रमें,  
सिद्धैः सिद्ध करेह सिद्ध किवा गणा, व्योषस्य त्रिकटु  
त्रिकटु, निम्बस्य च अने लीनाना और नीमके, यूषैः  
यूषे साधे यूषसे, फल- ३५। फलोंके, अम्लैः  
अम्लैः यथा खटाईसे अम्ल, तथा तथा तथा,  
कटुभिः कटु ३५। युक्त यथा ३५। यूषे साधे  
कटु ३५। युक्त दूसरे कफज यूषोंके साथ, अद्यात्  
आवा खावे ॥ ३५ ॥

35. The patient may take old  
wheat, sali rice or barley with the  
soups prepared of snake-gourd, guduch,  
and white-flowered leadwort, or with  
the soups of the three spices and neem  
prepared with butter-milk, acidified  
with fruit acids and mixed with pun-  
gent articles.

रसांश्च शूल्यानि च जाङ्गलानां

मांसाणि जीर्णान्मधुसीचरिणान् ।

रागांस्तथा वाङ्मवाचकाणि

द्राक्षाकषित्यैः फलपूरकैश्च ॥३६॥

जाङ्गलानाम् अंगल प्राणी-आनां जांगल प्राणियोंके,  
रसान् च मांसरसे मांसरस, शूल्यानि अने शूल्य और  
शूल्य, मांसाणि च मांस मांस, जीर्णान् मधु जीर्ण, मधु-  
मधु मधु, सीधु- सीधु सीधु, अरिणान् अरिष्टों अरिष्ट,  
द्राक्षा- द्राक्षा मुगको, कषित्यैः ३६। कैय, फलपूरकैः च अने  
लीनाना और विजोरेसे बनाये, रागान् राग राग,  
तथा वाङ्म- वाङ्म वाङ्म, पानकानि अने पानकाने।  
प्रयोग करे ॥ ३६ ॥

३६. वाङ्म-वाङ्म (व. व.)

36. The meat-juices and spit-roasted flesh of jangala creatures, old honey wine, sidhu-wine and medicated wines, or condiment, confectionery and beverages prepared of grapes, wood apple and citrons, may also be used.

**मुद्रान्मसूरांश्चणकान् कलायान्**

**भृष्टान् युताम्नागरमाक्षिकाभ्याम् ।**

**लिह्यात्तथैव त्रिफलाविडङ्ग-**

**चूर्णं विडङ्गप्लवयोस्तथो वा ॥३७॥**

भृष्टान् शैकेला भूने हुए, मुद्रान् भग मूंग, मसूरान् भसर मसूर, चणकान् यक्षु चना, कलायान् अने पटाक्षु ओओने और मटर इनको, नागर- सूँडे सोंठ, माक्षिका-भ्याम् अने भभन्दी साथे और शहदके साथ, युतान् भेगनी मिल्कर लिह्यात् आटवा चाटे, त्रिफला- के त्रिकला या त्रिफला, विडङ्ग- अने वावडिंगुन और वायविङ्गके चूर्णश्च यूर्णं चूर्णको, जथो वा अथवा अथवा विडङ्ग-वावडिंग वायविङ्ग, प्लवयोः अने केवडीमेथनु और केवटीमोयके, चूर्णश्च यूर्णं चूर्णको, तथा एव ते प्रभाषेन आटवुं उसीप्रकार ही चाटे ॥ ३७ ॥

37. The patient may take roasted green gram, lentils chick pea and chickling vetch mixed with dry ginger and honey; or, likewise the pulvis of the three myrobalans and embelia, or the pulvis of embelia and rush nut.

**सजाम्बवं वा बदराम्लचूर्णं**

**मुस्तायुतां कर्कटकस्य शृङ्गीम् ।**

**दुरालमां वा मधुसंप्रयुतां**

**लिह्यात् कफच्छर्दिनिनिग्रहार्थम् ॥३८॥**

३७. विडङ्गप्लवयोस्तथो वा- विडङ्गप्लवयो रसे वा (ब. ड. त. य.)

३८. बदराम्लचूर्णं-बदरस्य चूर्ण (द. य.)

॥ मुस्तायुतां-सपिप्पली (य.)

कफ- ३३७-य कफजन्व, छर्दि- छर्दि छर्दिको, विनिग्रहार्थम् भटाडवा भाटे काबूमें लानेके लिए, सजाम्बवं अथवा सजित जामुनसहित, बदराम्ल- भाटा औरनुं खड़े बेरका, चूर्णम् वा यूर्णं चूर्ण, मुस्ता- अथवा नागर-मेथनी अथवा मोथसे, युताम् युक्त युक्त, कर्कटकस्य शृङ्गीम् वा ३३८-शींगीनुं यूर्णं काकडासिंगीका चूर्ण, दुरालमाम् वा ३३९-भासातुं यूर्णं या क्पासाका चूर्ण, मधु- मधु शहद, संप्रयुक्ताम् भेगनी मिलाकर, लिह्यात् आटवुं चाटे ॥ ३८ ॥

38. Or, the powder of jambul and sour jujube or the powder of galls mixed with nut-grass, or cretan prickly elover, mixed with honey may be taken for stopping vomiting of the kapha type

**मनःशिलायाः फलपूरकस्य**

**रसैः कपिस्थस्य च पिप्पलीनाम् ।**

**क्षौद्रेण चूर्णं मरिचैश्च युक्तं**

**लिह्यज्येच्छर्दिमुदीर्णवेगाम् ॥३९॥**

फलपूरकस्य पीलेरां बीजौरे, कपिस्थस्य च अने डाडना कैथके, रसैः रसथी रससे, क्षौद्रेण तेभन भध एवं शहद, मरिचैः च तथा भरीथी तथा मरिचसे, युक्तम् युक्त युक्त, मनःशिलायाः मनःशिलानुं मैनसिलका, पिप्पलीनाम् च तथा पीपरनुं और पिप्पलीका, चूर्णम् यूर्णं चूर्ण, लिह्यन् आटनार चाटनेवाला, उदीर्णवेगाम् प्रभण वेगवाणी प्रबलवेगवती, छर्दिम् छर्दिने छर्दिके, जवेत् अते छे जीतता है ॥ ३९ ॥

39 Or, one can subdue the generated urge for vomiting by taking the pulvis of red arsenic mixed with honey and black pepper in the juice of the citron, or by taking the pulvis of long pepper mixed with honey and pepper in the juice of the wood-apple.

३९. चूर्णं मरिचैश्च युक्तं-युक्तं मरिचस्य चूर्णम् (ब. क. य.)





लेहाः अने अपचेहो और अवलेह, यूषाः यूष यूष, रसाः रस रस, काम्वलिकाः काम्वलिका काम्वलिक, खडाः च अड खड, मांसानि मांस मांस, घानाः शेडेवां अनाज भूने हुए घान्य, त्रिविधाः अनेक प्रकारना और नानाकारके, मक्ष्याः च लक्ष्य पदार्थ मक्ष्य पदार्थ, गन्ध- गन्ध गन्ध, वर्ण- वर्ण वर्ण, रसैः अने रसथी और रससे उपेतानि युक्त युक्त फलानि इतौ। फल, मूलानि च अने कंदमूल और कंदमूल, वमिम् उलटीने वमनको, जयन्ति अने जीतते हैं ॥ ४२-४३ ॥

42-43. various kinds of mentally cheering odours of clay, flowers, vinegar and fruits, well prepared vegetables, articles of food, drinks and well-seasoned condiments, confectionery, linctuses, soups, meat-juices, curd soup, curry soup, meat, cereals and various kinds of eatables; fruits and roots possessed of excellent odours, color and taste—the use of these things subdues the fit of vomiting.

गन्धं रसं स्पर्शमथापि शब्दं  
रूपं च यद्यत् प्रियमप्यसात्म्यम् ।  
तदेव दद्यात् प्रशमाय तस्या-  
स्तज्जो हि रोगः सुख एव जेतुम् ॥ ४४ ॥

यत् यत् ने ने जो जो, गन्धम् गन्ध गन्ध, रसम् रस रस, स्पर्शम् स्पर्श स्पर्श, अथ अपि शब्दम् शब्द शब्द, रूपम् च तथा रूप एवं रूप, प्रियम् प्रिय होय प्रिय हो, असात्म्यम् अपि अने लक्ष्य असात्म्य पक्ष होय और चाहे असात्म्य भी हो, तत् ते वह, एव ए ही तस्याः ते उलटीनी उस वमीकी, प्रशमाय शान्ति भाटे शान्तिके लिए, दद्यात् आपवां लेधके देना चाहिए हि डारखु के क्योंकि, तज्जः असात्म्यथी थथेध असात्म्यसे

४४. यद्यत्प्रियमप्यसात्म्यम्—सात्म्यं प्रियमस्य योज्यम् (क)  
, दद्यात्—कुर्यात् (ड.)  
, तस्याः—चैवम् (व.)

उत्पन्न हुआ. रोगः रोग रोग, जेतुम् अतवे। जीतना, सुखः एव सुखे। ए छे सुख ही है ॥ ४४ ॥

44. In general, whatever odour, taste, contact, sound or sight is pleasing should be given to the patient although it may be normally unwholesome. For, any disorder that may result from the use of such unwholesome agent is easily curable.

छर्द्युपद्रवचिकित्सा—

छर्द्युत्थितानां च चिकित्सितात् स्वा-  
चिकित्सितं कार्यमुपद्रवाणाम् ।  
अतिप्रवृत्तास्तु विरेचनस्य  
कर्मातियोगे विहितं विधेयम् ॥ ४५ ॥

छर्दि-वस्थितानाम् उलटीथी उत्पन्न थथेध छर्दिसे उत्पन्न हुए, उपद्रवाणाम् च उपद्रवेनी उपद्रवोंकी, स्वात् पोतपोतानी अपनी अपनी, चिकित्सितात् चिकित्साभां उल्लेख चिकित्सामें कही हुई, चिकित्सितम् चिकित्सा चिकित्सा, कार्यम् करनी करे, अतिप्रवृत्तास्तु उलटीनी अति प्रवृत्ति यतां छर्दिकी अति प्रवृत्ति होने पर, विरेचनस्य विरेचनना विरेचनके, अतियोगे अतियोगभां अतियोगमें, विहितम् उल्लेखी कही हुई, कर्म चिकित्सा चिकित्सा, विधेयम् करनी लेधके करनी चाहिए ॥ ४५ ॥

45. The treatment of complication arising from vomiting should be done according to the medication indicated in each case; and in case of excessive vomiting, treatment that is indicated in the condition of excessive purgation should be carried out.

चिरप्रवृत्तछर्दिचिकित्सा—

वमिप्रसङ्गात् पवनोऽप्यवश्यं  
घातुक्षयाद्ब्रिमुपैति तस्मात् ।

४५. च चिकित्सितात् स्वात्—तु चिकित्सितं स्यात् (थ.)

## चिरप्रवृत्ताखनिलापहानि

कार्याण्युपस्तम्भनबृंहणानि ॥४६॥

वमिप्रसङ्गात् उलटी आधु रडेवाथी छर्दियोंके बने रहनेसे, धातुक्षयात् धातुक्षयने वीधे धातुक्षयके कारण, पवनः वायु वायु, अपि पक्षु मी, अवश्यम् अवश्य अवश्य, वृद्धिम् वृद्धि वृद्धि, उपैति पात्रे छे पाता है, तस्मात् तेशी इसलिए, चिरप्रवृत्तासु धातुक्षयकी थयेवी उलटीआभा दीर्घकालसे उत्पन्न हुई छर्दियोंमें, अनिल-अपहानि वायुनाशक वायुनाशक, उपस्तम्भन-उलटीने रोकनारी छर्दि रोकनेवाली, बृंहणानि तेभ्य शरीरानु पोषण उन्नारी चिकित्साओ शरीरको पुष्ट करनेवाली चिकित्साएं, कार्याणि करवी करनी चाहिएं ॥ ४६ ॥

46. The vata inevitably gets increased by the loss of body-elements, caused by constant vomiting; hence in case of vomiting persisting for a long time, medications which are curative of vata and are anti-emetic and roborant should be administered.

## सर्पिगुंडाः क्षीरविधिर्वृतानि

कल्याणकज्यूषणजीवनानि ।

वृष्यास्तथा मांसरसाः सलेहा-

अिरप्रसक्तां च वमि जयन्ति ॥४७॥

सर्पिगुंडाः सर्पिगुंडा सर्पिगुंड, क्षीरविधिः क्षीर-विधि क्षीरविधि, कल्याणक-उद्याणुक कल्याणक, ज्यूषण-ज्यूषण, जीवनानि तथा जीवनिय और जीवनीय, वृतानि धृतो वृत, तथा अने और, वृष्याः वृष्ययोगे वृष्ययोग, सलेहाः तेभ्य लेहसहित एवं अवलेहसहित, मांसरसाः च मांसरसे। मांसरस, चिरप्रसक्ताम् दीर्घ-कालनी आधु रडेवी दीर्घकालसे प्रवृत्त हुए, वमिम् उलटीने वमनको, जयन्ति जते छे जीतते हैं ॥ ४७ ॥

47. Ghee-boluses, milk, therapy and medicated ghee, such as Kalyanaka, the

४७. चिरप्रसक्तां च वमि जयन्ति-छर्दि विरोधां प्रशमं नयन्ति (द. फ. व.)

three spices and life-promoter ghees virilfic recipes, meat-juices and linctuses, subdue vomiting even of long duration.

अध्यायोक्तविषयाः —

तत्र श्लोकः—

हेतुं संख्यां लक्षणमुपद्रवान् साध्यतां न योगांश्च ।  
छर्दीनां प्रशमार्थं प्राह चिकित्सितं मुनिवर्यः ॥४८॥

तत्र श्लोकः ते विषयमां उस विषयमें, श्लोक उपसंहारने। श्लोक छे उपसंहारका श्लोक है कि, मुनिवर्यः मुनिवर आत्रेये मुनिवर आत्रेयने, छर्दीनाम् छर्दीओनी छर्दियोंकी, प्रशमार्थं शान्ति भाटे शान्तिके लिए, संख्याम् तेओनां संख्या उनकी संख्या, हेतुम् हेतु हेतु, लक्षणम् लक्षण, उपद्रवान् उपद्रव उपद्रव, साध्यताम् साध्यता साध्यता, न असाध्यता असध्यता, योगान् च योगे योग, चिकित्सितम् अने चिकित्सा और चिकित्सा, प्राह उक्ता छे कही है ॥ ४८ ॥

Here is the recapitulatory verse—

48. The etiology, number, symptoms, complication, curability or otherwise, recipes and line of treatment for the relief of vomiting—all these, the foremost of the sages has described in this chapter.

इत्यग्निवेशकृते तन्त्रे चरकप्रतिसंस्कृतेऽप्राप्ते दृढ-  
बलसंपूरिते चिकित्सास्थाने छर्दिचिकित्सितं  
नाम विशोऽध्यायः ॥ २० ॥

इति आ प्रमाणे इस प्रकार, अग्निवेशकृते अग्नि-वेशे रथेला अग्निवेशसे बनाये, चरकप्रतिसंस्कृते तन्त्रे अने यरुथी प्रतिसंस्कार पाभेला आ शास्त्रमां और चरकके द्वारा संस्कृत इस शब्दके, अप्राप्ते अप्राप्त अप्राप्त, दृढबलसंपूरिते अने दृढबले पूरा करेला और दृढबले पूरित किये गये, चिकित्सास्थाने चिकित्सा-स्थान विधे चिकित्सास्थानमें, छर्दिचिकित्सितम्

४८. न-च (द. ड. त.)

,, प्राह चिकित्सितं मुनिवर्यः-चिकित्सिते प्राह मुनिवर्यः (ध. व.)

‘अर्द्धिचिकित्सित’ ‘अर्द्धिचिकित्सित’, नाम नामना नामक,  
विषयः वीसमे वीसवाँ, अध्यायः अध्याय संपूर्ण यथा  
अध्याय समाप्त हुआ ॥ २० ॥

20. Thus in the Section on Therapeutics in the treatise compiled by Agnivesa and revised by Caraka, the twentieth chapter entitled ‘The Therapeutics of Vomiting’ not being available, the same as restored by Drīdhābala is completed.

### एकविंशोऽध्यायः ।

#### अथ वीसमे अध्याय अध्याय इकीसवाँ Chapter XXI

विसर्पचिकित्सितोपक्रमः—

अथातो विसर्पचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥१॥  
इति ह स्माह भगवानात्रेयः ॥२॥

अथ अतः हवे अर्द्धीथी अब आगे, विसर्पचिकित्सितम् ‘विसर्पचिकित्सित’ नामना अध्यायतुं ‘विसर्पचिकित्सित’ नामके अध्यायका, व्याख्यास्यामः व्याख्यान करूँ ॥ १ ॥

भगवान् भगवान् भगवान्, आत्रेयः आत्रेये आत्रेयने, इति ह आ विषयमां नीये प्रमाणे न इस विषयमें निम्न प्रकारसे ही, आह रम कहेंगे छे कहा है ॥२॥

1. We shall now expound the chapter on “The Therapeutics of Acute Spreading Affections.”

2. Thus declared the worshipful Atreya.

विसर्पविषये अग्निवेशस्य प्रश्नाः—

कैलासे किन्नराकीर्णे बहुप्रसन्नवर्णौषधे ।

पादपैर्विविधैः स्निग्धैर्मित्यैः कुसुमसंपदा ॥ ३ ॥

३. कुसुमसंपदा—कुसुमसंपदः (ब.)

” ” कुसुमसंपदः (छ.)

” ” कुसुमसंपदः (ब.)

वमद्भिर्मधुरान् गन्धान् सर्वतः स्वभ्यलङ्कते ।

विहरन्तं जितात्मानमात्रेयमृषिवन्दितम् ॥ ४ ॥

महर्षिभिः परिवृतं सर्वभूतहिते रतम् ।

अग्निवेशो गुरुं काले विनयादिदमुक्तवान् ॥ ५ ॥

किन्नराकीर्णे किन्नरीथी व्याप्त किन्नरोंसे व्याप्त, बहुप्रसन्नवर्णौषधे बहु अरुणां अने औषधवाणी बहुत झरने और औषधियोंसे युक्त, नित्यम् नित्य नित्य, कुसुमसंपदा पुष्पनी संपत्तिथी पुष्पसम्पत्तिसे, मधुरान् मधुर मधुर, गन्धान् गन्धो गन्ध, वमद्भिः वमद्भिः वमद्भिः उगलते हुए, विविधैः अनेक प्रकारकी नाना प्रकारके, पादपैः वृक्षैः वृक्षोंसे, सर्वतः आरे आरे सब ओरसे, स्वभ्यलङ्कते सुशोभित सुशोभित, कैलासे कैलास पर्वतमां कैलास पर्वतमें, विहरन्तम् इतरता विहार करते हुए, जितात्मानम् जितेन्द्रिय जितात्मा, ऋषि-ऋषिऔथी ऋषियोंसे, वन्दितम् वन्दित वन्दित, महर्षिभिः महर्षिऔथी महर्षियोंसे, परिवृतम् वीर्यशाली परिवेष्टित, सर्वभूत-प्राणीमानना सब प्राणियोंके, हिते हितमां हितमें, रतम् अभिरत रत. गुरुम् गुरु गुरु, आत्रेयम् आत्रेयने आत्रेयको, अग्निवेशः अग्निवेशे अग्निवेशने, काले योग्य काले उचित अवसर पाकर, विनयात् विनयपूर्वक विनयपूर्वक, इदम् आ यह, उक्तवान् पूछुं पूछा ॥ ३-५ ॥

3-5. Unto the teacher Atreya the self-controlled, the revered of the sages, and devoted to the good of all creatures, as he was roaming at his pleasure, surrounded by the great sages, in Kailasa peopled by Kinnaras, abounding in streams and sovereign herbs, adorned with various kinds of resinous trees bowed under a wealth of flowers throughout the year and redolent with sweet smells, Agnivesa, choosing the proper moment, made the following submission with due deference.

४. वमद्भिः—वमद्भिः (ड.)

५. सर्वभूतहिते रतम्—विभु भूतहिते रतं (झ.ड.)

भगवन् ! दाहणं रोगमाशीविषविषोपमम् ।  
विसर्पन्तं शरीरेषु देहिनामुपलक्षये ॥६॥

भगवन् हे भगवान् हे भगवान्, देहिनाम् मनुष्यानां प्राणियोंके, शरीरेषु शरीरमें, आशीविष-विष-उपमम् सर्पना विष जैसा सर्पविषके समान, विसर्पन्तम् प्रसरता फैलते हुए, दाहणम् भयंकर दाहण, रोगम् रोग रोगको, उपलक्षये हुं भेडं धुं मैं देखता हूं ॥६॥

6. 'O Worshipful one! I see in the bodies of human beings a fell disease which spreads with the virulence of snake-venom.'

सहस्रैव नरास्तेन परीताः शीघ्रकारिणा ।  
विनश्यन्त्यनुपक्रान्तास्तत्र नः संशयो महान् ॥७॥

शीघ्रकारिणा तुरंत विनाश करनेवाला तुरंत प्राणघातक, तेन ते रोगधीं उक्त रोगके, परीताः घेरायेला व्याप्त, नराः मनुष्य मनुष्य, अनुपक्रान्ताः थिकित्सा न थी चिकित्सा न होने पर, सहसा एव अेकायेक सहसा, विनश्यन्ति नाश पाये छे नष्ट होते हैं, तत्र तेमां उसमें, नः हमने हमें, महान् भयान महान, संशयः शंका छे संशय है ॥७॥

7. Those men who are attacked by this fulminating disease succumb to it speedily, unless treated promptly. Now, concerning this disease, we are in great need of enlightenment.

स नाम्ना केन विज्ञेयः संज्ञितः केन हेतुना ।  
कतिमेदः कियद्वातुः किनिदानः किमाश्रयः ॥८॥  
सुखसाध्यः कृच्छ्रसाध्यो ज्ञेयो यन्नानुपक्रमः ।  
कथं कैलक्षणैः किं च भगवन् ! तस्य शेषजम् ॥९॥

सः तेने उसको, केन क्या किस, नाम्ना नाम्ना नामसे, विज्ञेयः जानये ? जानना चाहिए ?, केन क्या किस, हेतुना हेतुथी कारणसे, संज्ञितः तेनुं छे नाम

८. कतिमेदः कियद्वातुः किनिदानः किमाश्रयः-कतिवातुः कतिविषो जायते कैस्य हेतुभिः (ग.द.)

पाउनुं छे ? उसको वह नाम दिया है ?, कतिमेदः तेना कटवा भेड छे ? उसके कितने भेद हैं ?, कियद्वातुः कटवा वातुआने दूषित करे छे ? कितनी वातुओंको दूषित करता है ?, किनिदानः तेनुं निदान थुं छे ? उसका निदान क्या है ?, किमाश्रयः तेना आश्रये कालु छे उसके आश्रय कौन हैं, सुखसाध्यः सुअसाध्य सुखसाध्य, कृच्छ्रसाध्यः कष्टसाध्य कष्टसाध्य, यः च अने के और जो, अनुपक्रमः असाध्य छे असाध्य हैं, कथम् ते शीघ्रते वह कैसे, कैः अने क्यां और किन, लक्षणैः लक्षणोंसे, ज्ञेयः जानये ? जाना जाता है ?, भगवन् अने हे भगवान् और हे भगवान्, तस्य च तेनुं उसका, किम् थुं क्या, शेषजम् औषध छे ? औषध हैं ? ॥८-९॥

8-9. By what name should it be known? How does it derive its name? What are its varieties? How many and what are the body elements that it affects? What is its etiology? What is its seat? How are we to know which variety of it is easily curable; which again is formidable and which incurable? What is their differential diagnosis? And, finally, O Worshipful one! what is the method of its treatment?'

तदग्निवेशस्य वचः श्रुत्वाऽऽत्रेयः पुनर्वसुः ।  
यथावदखिलं सर्वं प्रोवाच मुनिसत्तमः ॥१०॥

अग्निवेशस्य अग्निवेशना अग्निवेशके, तत् ते उस, वचः वचने वचनको, श्रुत्वा सांभलीने सुनकर, मुनिसत्तमः मुनिश्रेष्ठ मुनिश्रेष्ठ, आत्रेयः आत्रेय आत्रेय, पुनर्वसुः पुनर्वसुथे पुनर्वसुने, सर्वम् सधनुं सब, अखिलम् संपूर्णताथी संपूर्णतया, यथावत् यथाथोअ यथावत्, प्रोवाच कहुं व्याख्यान किया ॥ १० ॥

10. Hearing these words of Agni-vesa, Atreya Punarvasu, the foremost

१०. तदग्निवेशस्य वचः श्रुत्वाऽऽत्रेयः पुनर्वसुः-तत्रात्रेयोऽग्नि-वेशस्य वचः श्रुत्वा पुनर्वसुः (क.)

among sages, declared every thing fully and precisely concerning the subject.

विसर्पस्य निरुक्तिः —

विविधं सर्पति यतो विसर्पस्तेन स स्मृतः ।

परिसर्पोऽथवा नाम्ना सर्वतः परिसर्पणात् ॥११॥

विविधम् विविध प्रकारे विविध प्रकारसे, सर्पति प्रसरे छ फैलता है, तेन सः तेथी ते इसलिए वह, विसर्पः विसर्प विसर्प, स्मृतः उद्देवाथो छ कहाता है, अथवा अथवा अथवा, सर्वतः सर्व ओर, परिसर्पणात् प्रसरवाथी फैलनेसे, नाम्ना परिसर्पः 'परिसर्प' को नामथी उद्देवाथ छ 'परिसर्प' इस नामसे कहाता है ॥ ११ ॥

11. "Because it spreads in various directions, it is said to be 'Visarpa' or acute spreading affection. It is also known by the name of 'Parisarpa' because it spreads in all directions.

विसर्पस्य भेदाः—

स च सप्तविधो दोषैर्विज्ञेयः सप्तधातुकः ।

पृथक् प्रत्यस्त्रिभिश्चैको विसर्पो द्वन्द्वजास्त्रयः ॥१२॥

सः ते वह, दोषैः दोषोथी दोषभेदसे, सप्तविधः सात प्रकारने छ सात प्रकारका है, सप्तधातुकः च अने तेने सात धातुवाणो और उसको सात धातुओवाला, विज्ञेयः ओखुवो जानना चाहिए, पृथक् ओछा ओछा दोषथी पृथक् पृथक् दोषसे, त्रयः त्रय तीन, त्रिभिः च त्रिदोषथी सन्निपातसे, एकः विसर्पः ओछ विसर्प एक विसर्प, द्वन्द्वजाः अने ६-६० और द्वन्द्वज, त्रयः त्रय छ तीन हैं ॥ १२ ॥

12. This disease should be known to be of seven kinds by reason of the differences in morbidity and it affects seven different body-elements.

There are three varieties of it due to the morbidity of individual humors; there is one variety which is due to the morbidity of all the three humors combined i. e. to tri-discordance; and there are three varieties due to the morbidity of any two humors (i. e. bi-discordance).

वातिकः पैत्तिकश्चैव कफजः सान्निपातिकः ।

चत्वार एते विसर्पा वक्ष्यन्ते द्वन्द्वजास्त्रयः ॥१३॥

वातिकः वातिक वातिक, पैत्तिकः पैत्तिक पैत्तिक, कफजः ६५ कफज, सान्निपातिकः च एव अने सान्निपातिक और सान्निपातिक, एते ओ ये चत्वारः चार चार, विसर्पाः विसर्पो उछा छ विसर्प कहे हैं, द्वन्द्वजाः अने ६-६० और द्वन्द्वज, त्रयः त्रय तीन, वक्ष्यन्ते उद्देवाथो कहे जायेंगे ॥ १३ ॥

13. Thus the vata type, the pitta type, the kapha type and the tri discordance type constitute four varieties and the remaining three varieties of bi-discordance type will now be described.

आग्नेयो वातपित्ताभ्यां ग्रन्थ्याख्यः कफवातजः ।

यस्तु कर्दमको घोरः स पित्तकफसंभवः ॥१४॥

आग्नेयः आग्नेय नामने विसर्प आग्नेय नामका विसर्प, वातपित्ताभ्याम् वात तथा पित्थी उत्पन्न थाय छ वायु और पित्तसे उत्पन्न होता है, ग्रन्थ्याख्यः ग्रन्थि नामने विसर्प ग्रन्थि नामका विसर्प, कफवातजः ६६ तथा वातथी उत्पन्न थाय छ कफ और वातसे उत्पन्न होता है, यः तु अने ओ और जो, घोरः घोर भयंकर, कर्दमकः कर्दमक नामने विसर्प छ कर्दमक नामका विसर्प है, सः ते वह, पित्तकफसंभवः पित्त तथा ६६थी उत्पन्न थाय छ पित्त और कफसे उत्पन्न होता है ॥ १४ ॥

१४. स पित्तकफसंभवः—स त्याद पित्तकफात्मकः (क.)

,, पित्तकफसंभवः—स पित्तकफात्मकः (ब.)

११. स स्मृतः—संस्मृतः (ब)

14. The first is the 'Fiery' variety (St. Anthony's Fire) due to vata-cum-pitta; the second is the 'Nodular' variety due to kapha-cum-vata and the third is the fearful 'Kardamaka' or slimy variety; this last is due to pitta-cum-kapha.

विसर्पस्य दोषद्वयसंग्रहः—

रक्तं लसीका त्वद्धांसं दूष्यं दोषास्त्रयो मलाः ।  
विसर्पाणां समुत्पत्तौ विज्ञेयाः सप्त धातवः ॥१५॥

रक्तम् रक्तं रक्त, लसीका लसीका लसीका, त्वक्  
आम्ली त्वक्, मांसम् अने मांस और मांस, दूष्यम्  
ये चार दूष्य, त्रयः वात, पित्त तथा  
कफ ये तीन, मलाः  
मलश्च मलरूप, दोषाः दोषो भण्डी दोषो मिलकर, सप्त  
धातवः सात धातुओ, खात धातुएं, विसर्पाणाम् विसर्पोनी  
विसर्पोंकी, समुत्पत्तौ उत्पत्तिमा उत्पत्तिमें, विज्ञेयाः  
ज्ञातु ओखतुवा कारण जाननी चाहिए ॥ १५ ॥

15. Blood, lymph, skin and flesh—  
these four body-elements, together with  
the three morbid humors (viz. vata,  
pitta and kapha) are to be known as the  
seven sources for the rise of acute  
spreading affections of all kinds.

विसर्पस्य सामान्यनिदानम्—

लवणाम्लकटूष्णानां रसानामप्तिसेवनात् ।  
दध्यम्लमस्तुशुक्तानां सुरासौवीरकस्य च ॥१६॥  
व्यापन्नबहुमद्योष्णरागषाडवसेवनात् ।  
शाकानां हरितानां च सेवनाच्च विदाहिनाम् ॥१७॥  
कूर्चिकानां किलाटानां सेवनात्मन्दकस्य च ।  
दध्नः शाण्डाकिपूर्वाणामासुतानां च सेवनात् ॥१८॥

१५. मलाः—मताः (६.)

१६. शाण्डाकि—सिण्डाकि (६.)

तिलमाषकुलत्थानां तैलानां पैष्टिकस्य च ।  
ग्राम्बानूपैदकानां च मांसानां लघुनस्य च ॥१९॥  
प्रक्षिप्तानामसात्स्यानां विरुद्धानां च सेवनात् ।  
अत्यादानाह्निचास्त्रमदजीर्णाधिक्येनान् क्षतात् ॥२०॥  
क्षतबन्धप्रपतनाद्धर्मकर्मतिसेवनात् ।  
विषवासाग्निदोषाच्च विसर्पाणां समुद्भवः ॥२१॥

लवण- लवण लवण, अम्ल- अम्ल अम्ल, कटु-  
कटु कटु, उष्णानाम् तथा उष्ण और उष्ण, रसानाम्  
रसोना रसोंके, अतिसेवनात् अतिसेवनथी अतिसेवनसे,  
दध्यम्ल- आटुं खड़ी खड़ी दही, मस्तु- दहीनुं पाणी  
मस्तु, शुक्तानां शुक्त शुक्त, सुरा- सुरा सुरा, सौवीरकस्य  
सौवीरक सौवीरक, व्यापन्न-बहु-मद्य- तेभ्यः भण्डी  
गयेव भव, अहु भव विगडी हुई भव, अधिक मद्य,  
उष्ण- उष्ण दूष्य उष्ण दूष्य, राग- राग राग, षाडव-  
अने पाडवोना और षाडवोंके, सेवनात् सेवनथी  
सेवनसे, हरितानाम् हरित वर्गोना हरित वर्गके,  
शाकानाम् पत्रशाक पत्रशाक, विदाहिनाम् च तथा  
विदाही दूष्योना और विदाही दूष्योंके, सेवनात् च  
सेवनथी सेवनसे, कूर्चिकानाम् कूर्चिका कूर्चिका,  
किलाटानाम् किलाट किलाट, मन्दकस्य च अने नदि  
अमेव और मन्दक, दध्नः च दहीना दहीके, सेवनात्  
सेवनथी सेवनसे, शाण्डाकि- शाण्डाकि शाण्डाकि,  
पूर्वाणाम् वजरे आदि आसुतानाम् च आसुत दूष्योना  
आसुत दूष्योंके, सेवनात् च सेवनथी सेवनसे, तिल-  
तिल तिल, माष- अहु उहु, कुलत्थानाम् कुलथी  
कुलथी, तैलानाम् तैलो तैल, पैष्टिकस्य च भेद पीठी,  
ग्राम्य- ग्राम्य-ग्राम्य-ग्राम्य, ग्राम्य, ग्राम्य अने  
अन्यत्र ग्राम्योनां ग्राम्य, ग्राम्य और जलचर

१९. पैष्टिकस्य—विष्टिकस्य (घ.)

२०. प्रक्षिप्तानाम्—प्रक्षिप्तानाम् (ख. ड.)

२०. प्रक्षिप्तानाम्—प्रक्षिप्तानां च मत्स्यानां (व.)

२१. क्षतबन्ध—वधबन्ध (घ. ड. घ.)

२१. धर्मकर्मतिसेवनात्—दन्तक्षनात् नखात् (घ.)

२१. क्षतबन्धप्रपतनाद्धर्मकर्मतिसेवनात्—वधबन्धप्रपतनाद्धर्म-  
दन्तक्षतात् नखात् (घ. व.)

२१. वधबन्धप्रपतनाद्धर्मकर्मतिसेवनात्—वधबन्धप्रपतनाद्धर्म-  
दन्तक्षतात् नखात् (घ. व.)

प्राणियोंके, आंसानाङ्ग भांस मांस, लघुनस्य च दसलु लहसुन, प्रक्षिप्तानाम् सडेदां गणैदां सडे- गळे, असा-  
ख्यानाम् असात्म्य असात्म्य, विरुद्धानाम् च अने विरुद्ध द्रव्योंके, सेवनात् सेवनथी सेवनसे, अस्वादानात् अतिशय भोजनथी अति भोजनसे, दिवास्वप्नात् दिवसे सुवाथी दिनमें सोनेसे, अजीर्ण-  
अलुर्ण पर अजीर्ण पर, अध्यक्षानाङ्ग इरी भोजन करनाथी पुनः भोजन करनेसे, क्षतात् क्षतथी चोट लगनेसे, क्षत-  
ज्वरमथी ज्वरसे, बन्ध- कस्तीने होरी वगेरे आधवाथी कसकर रस्सी आदिके बांधनेसे, प्रपतनात् पड़ी  
जर्ध आधात लाजवाथी गिरकर चोट लगनेसे, शर्मकर्म- स्वेद आदि उपलु उपचारोंने स्वेद आदि उष्ण उपचारोंके, अतिसेवनात् अति सेवनथी अति सेवनसे,  
विष-वात-अग्नि- तेमज विष, वायु अने अग्निना एवं विष, वायु और अग्निके, दोषात् च दोषथी दोषसे, विसर्पणाम् विसर्पणी विसर्पोंकी, सङ्कुलवः उत्पत्ति थाय छे उत्पत्ति होती है ॥ १६-२१ ॥

16-21. The following are the causative factors of the spreading affections: excessive indulgence in saline, acid, pungent and hot tastes; as also in sour curds, whey, vinegars and in sura and sauveeraka wines; the use of stale or excessive liquor or heat-inducing condiments and confectionery; the use of irritating vegetables and greens, of cheese, inspissated milk and immature curds; the use of such fermented wines as Saudaki, as also of pastries made of sesamum, black gram and horse gram and of oils, the use of the flesh of domesticated, wet-land and aquatic animals and of garlic; the use of food stuffs that have gone soft or that are not homologous to one's system or are mutually incompatible; over-eating; sleeping during the day, predigestion-

meals, eating on a loaded stomach; wounds, injuries inflicted by blows, ligatures or falls; over-exposure to sun, over-strain and poisonous gases or burns.

एतैर्निदामैर्व्यामिश्रैः कुपिता मारुतादयः ।

दूष्यान् संदूष्य रक्तादीन् विसर्पन्त्यहिताशिनाम् २२

एतैः आ इन, व्यामिश्रैः सेणभेण थयेदा मिश्रित, निदानैः निदानों वडे निदानोंसे, कुपिताः कोपेदा कुपित हुए, मारुतादयः वायु वगेरे दोष वायु आदि दोष, अहिताशिनाम् अहित भोजन करनारनां अहित भोजन करनेवालोंके, रक्तादीन् रक्त वगेरे रक्त आदि, दूष्यान् दूष्योंने दूष्योंको, संदूष्य दूषित करीने अतिदूषित करके, विसर्पन्ति विसर्प करे छे विसर्प करते हैं ॥ २२ ॥

22. By combinations of the above-mentioned etiological factors, the vata and the other two humors getting provoked affect the susceptible body-elements such as blood etc., and spread in the whole body of the persons who are given to unwholesome eating.

विसर्पस्य साध्यासाध्यलक्षणम्—

बहिःश्रितः श्रितश्चान्तस्तथा चोभयसंश्रितः ।

विसर्पों बलमेतेषां ज्ञेयं गुरु यथोत्तरम् ॥२३॥

विसर्पः विसर्प विसर्प, बहिःश्रितः बहिराश्रित बहिराश्रित, अन्तःश्रितः च अन्तराश्रित अन्तराश्रित, तथा उभयसंश्रितः च अने उभयाश्रित छे एवं उभयाश्रित है, एतेषाम् येथीनुं इनका, बलम् अथ बल, यथोत्तरम् पछी पछी अतावेध पदार्थना क्रमथी यथोत्तर, गुरु पदार्थ अधिक, ज्ञेयम् अलुपुं जानना चाहिए ॥२३॥

23. These acute spreading affections have their habitats in the periphery, in the internal organs and in both these habitats at the same time. Their

२३. बलमेतेषां—बलमेषां तु (घ.)



severity is to be known as progressively increasing in the order of their statement.

बहिर्मागश्रितं साध्यमसाध्यमुभयाश्रितम् ।  
विसर्पं दारुणं विद्यात् सुकृच्छ्रं त्वन्तराश्रयम् ॥२४॥

બહિર્માગશ્રિતં સાધ્યમસાધ્યમુભયાશ્રિતમ્ ।  
વિસર્પં દારુણં વિદ્યાત્ સુકૃચ્છ્રં ત્વન્તરાશ્રયમ્ ॥૨૪॥  
બહિર્માગશ્રિતં બહિર્માગમાં રહેલા બહિર્માગમાં  
આશ્રિત, વિસર્પં વિસર્પને વિસર્પકો, સાધ્યમ્ સાધ્ય  
સાધ્ય. ઉભયાશ્રિતમ્ બહાર અને અંદર બે માગમાં  
રહેલા વિસર્પને બાહિર ઓર અન્દર દોનો માગોમાં  
આશ્રિત વિસર્પકો, દારુણમ્ દારુણ દારુણ, અસાધ્યમ્  
તેમજ અસાધ્ય એવં અસાધ્ય, અન્તરાશ્રયમ્ તુ અને  
અંદરના માગમાં રહેલા વિસર્પને ઓર અન્તર્માગમાં  
આશ્રિત વિસર્પકો, સુકૃચ્છ્રમ્ અતિકૃષ્ણસાધ્ય અતિકૃષ્ણસાધ્ય,  
વિદ્યાત્ બહુવેા જાનના ચાહિયે ॥ ૨૪ ॥

24. The external affection is curable; that which spreads both externally and internally, is incurable and that which is internal is to be known as serious and can be cured only with great difficulty.

વિસર્પસ્ય બાહ્યાભ્યન્તરાશ્રયભેદન દ્વિવિધ્યમ્—

અન્તઃપ્રકુપિતા દોષા વિસર્પસ્યન્તરાશ્રયે ।  
બહિર્બહિઃપ્રકુપિતાઃ સર્વત્રોભયસંશ્રિતાઃ ॥૨૫॥

અન્તરાશ્રયે અંતરાશ્રિત વિસર્પમાં અન્તરાશ્રિત  
વિસર્પમાં, અન્તઃ અંદર અન્દર, પ્રકુપિતાઃ પ્રકોપેલા  
પ્રકુપિત હુય, દોષાઃ દોષો અંદર ફેલાય છે દોષ અન્દર  
વિસર્પન કરતે હે, બહિઃ- બહિરાશ્રિત વિસર્પમાં બહાર  
બહિરાશ્રિત વિસર્પમાં બાહિર, પ્રકુપિતાઃ પ્રકોપેલા દોષો  
પ્રકુપિત દોષ, બહિઃ બહાર ફેલાય છે બાહિર વિસર્પન  
કરતે હે, ઉભયસંશ્રિતાઃ અને ઉભયાશ્રિત વિસર્પમાં  
બહાર અને અંદર બન્ને સ્થાનમાં પ્રકોપેલા દોષો ઓર  
ઉભાશ્રિત વિસર્પમાં બાહિર તથા અન્દર દોનો સ્થાનમાં  
પ્રકુપિત દોષ, સર્વત્ર સર્વત્ર સર્વત્ર, વિસર્પશ્રિત ફેલાય છે  
વિસર્પન કરતે હે ॥ ૨૫ ॥

૨૪. સ્વન્તરાશ્રય-સ્વન્તરાશ્રિત (વ.)

25. The humors provoked in the internal parts of the body spread causing the affection in the internal regions, if provoked in the external parts then in the peripheral regions, and if in both these regions they spread everywhere.

मर्मोपघातात् संमाहादयनानां विघट्टनात् ।  
तृष्णातियोगाद्वेगानां विषमाणां प्रवर्तनात् ॥२६॥  
विद्याद्विसर्पमन्तर्जमाशु चाग्निबलक्षयात् ।  
अतो विपर्ययाद्वाह्यमन्यैविद्यात् स्वलक्षणैः ॥२७॥

મર્મોપઘાતાત્ મર્મના ઉપઘાતાથી મર્મકે ઉપઘાતસે,  
સંમાહાત્ મૂર્છાથી મૂર્છાસે, અયનનામ્ ઓતેના  
સોતેકે, વિઘટ્ટનાત્ રોકાઈ જવાથી રુક જાનેસે, તૃષ્ણાતિ-  
યોગાત્ અતિશય તૃષ્ણાથી અત્યન્ત તૃષ્ણાસે, વિષમાનામ્  
વેગાનામ્ વેગોના વિષમ વેગોકે વિષમ, પ્રવર્તનાત્  
પ્રવર્તનથી પ્રવર્તનસે, આશુ ચ અને સહસ્રા ઓર સ્ત્રીઘ્ર,  
અગ્નિબલ- અગ્નિનું બલ અગ્નિબલકે, ક્ષયાત્ ક્ષીણ  
થવાથી ક્ષીણ હોનેસે. અન્તર્જમ્ અંતરાશ્રિત અન્તરાશ્રિત,  
વિસર્પં વિસર્પ વિસર્પ, વિદ્યાત્ બહુવેા જાનના ચાહિયે,  
અતઃ આનાથી ફસસે, વિપર્યયાત્ વિપરીત વિપરીત,  
અન્યૈઃ બીજાં અન્ય, સ્વલક્ષણૈઃ પોતાનાં લક્ષણોથી  
અપને લક્ષણોસે, બાહ્યમ્ બાહ્ય વિસર્પ બાહ્ય વિસર્પકો,  
વિદ્યાત્ બહુવેા જાનના ચાહિયે ॥ ૨૬-૨૭ ॥

26-27. From the injury to vital parts, stupefaction, the forcible dilatation of the passages, excessive thirst and irregular discharge of the natural urges and the diminution of the gastric fire, the condition is readily recognised as affection of the internal type. From the contrary symptoms to these, the affection of the external type should be

૨૬ તૃષ્ણાતિયોગાદ્વેગાનાં વિષમાણાં પ્રવર્તનાત્-તૃષ્ણાતિયોગાદ્

વેગાનાં વિષમ ચ પ્રવર્તનાત્ (ગ.)

૨૭ વિદ્યાદ્વિસર્પમન્તર્જમાશુ-વિદ્યાદ્વિસર્પમન્તર્જમાશુ (ખ.)

૨૭ વિદ્યાદ્વિસર્પમન્તર્જમાશુ-વિદ્યાદ્વિસર્પમન્તર્જમાશુ (ખ.)

recognised and likewise other conditions by their characteristic symptoms.

असाध्यविसर्पलक्षणम्—

यस्य सर्वाणि लिङ्गानि बलवद्यस्य कारणम् ।

यस्य चोपद्रवाः कष्टा अर्भगो यश्च हन्ति सः ॥२८॥

यस्य जेना जिसमें, सर्वाणि सर्व सब, लिङ्गानि लक्षण होय लक्षण हों, यस्य जेनुं जिसका, कारणम् कारण, बलवत् अलवान होय बलवान हो, यस्य च जेना जिसमें, कष्टाः कष्टायुक्त कष्टप्रद, उपद्रवाः उपद्रव होय उपद्रव हों, यः च अने जे और जो, अर्भगः भर्भ सुधी पढ़ेयों होय मर्म तक पहुंच गया हो सः ते वह, हन्ति भारी नाशे छे मार डालता है ॥२८॥

28. The condition, all of whose symptoms and etiological factors are severe, which is associated with formidable complications and which has affected a vital part, proves fatal.

वातविसर्पस्य निदानलक्षणे—

रूक्षोष्णैः केवलो वायुः पूरणैर्वा समावृतः ।

प्रदुष्टो दूषयन् दूष्यान् विसर्पति यथाबलम् ॥२९॥

रूक्षोष्णैः रूक्ष तथा उष्ण पदार्थोंना सेवनशी रूक्ष तथा उष्ण द्रव्योंके सेवनसे, पूरणैः वा अथवा अति भोजनशी अथवा अति भोजनसे, समावृतः आवृत भयेवे आवृत हुआ, प्रदुष्टः अने दुष्ट थयेवे और दूषित हुआ, केवलः केवल केवल, वायुः वायु वायु, दूष्यान् दूष्येने दूष्योंको, दूषयन् दूषित करीने दूषित करता हुआ, यथाबलम् योताना अथ प्रभावे अपने बलके अनुसार, विसर्पति विसर्प करे छे विसर्प उत्पन्न करता है ॥ २९ ॥

29. The vata that is provoked by dry and hot articles of diet or by the blockage due to impletion, impairs the

body elements and spreads in proportion to its strength.

तस्य रूपाणि—भ्रमद्वयपिपासानिस्तोदशूलाङ्ग-  
मर्दोद्वेष्टनकम्पज्वरतमककासास्थिसंधिमेदविश्लेष-  
णवेपनारोचकाविपाकाश्चक्षुषोराकुलत्वमन्नागमनं  
पिपीलिकासंचार इव चाङ्गेषु, यस्मिन्नावकाशो  
विसर्पो विसर्पति सोऽवकाशः इयावद्व्याघ्राभासः  
श्वपथुमान् निस्तोदमेदशूलाग्रामसंकोचहर्षस्फुरणै-  
रनिमात्रं प्रपीड्यते, अनुपक्रान्तश्चोपचीयते शीघ्र-  
मेदैः स्फोटकैस्तनुभिररुणामैः इयावैर्वा तनुविश-  
दांरुणाल्पास्त्रावैः, विवद्धवातमूत्रपुरीषश्च भवति,  
निदानोक्तानि चास्य नोपशेरते विपरीतानि  
चोपशेरत इति वातविसर्पः ॥ ३० ॥

तस्य तेना इसके, रूपाणि लक्षण, भ्रम-  
जेनाके:- भ्रम जैसेकि:- भ्रम, द्वय- दह दाह, पिपासा-  
तरस प्यास, निस्तोद- तोद तोद, शूल- थूल शूल, अङ्गमर्द-  
अंगमर्द अंगमर्द, उद्वेष्टन- उद्वेष्टा यद्वेष्टा ऐंठन, कम्प-  
कम्प कम्प, ज्वर- ज्वर ज्वर, तमक- तमक श्वास तमक  
श्वास, कास- उधरस कास, अस्थिसंधिमेद- अस्थिमेद,  
संधिमेद अस्थि और संधियोंमें मेदनवत् पीड़ा,  
विश्लेषण- संधिविश्लेष विश्लेषण, वेपन- वेपन वेपन,  
अरोचक- अरुचि अरुचि, अविपाकाः अविपाक अविपाक,  
चक्षुषोः आंखोंमें, आकुलत्वम् व्याकुलता  
आकुलता, अन्नागमनम् आसु आववा आसु आना,  
अङ्गेषु च अने अवयवो उपर और अंगोंके ऊपर,  
पिपीलिका- डीडीयो चीटियोंके, संचारः इरती होय  
चलनेकीसी, इव तेम आगवुं प्रतीति होना, यस्मिन् च  
अने जे और जिस, अवकाशो अगांछे जगह पर,  
विसर्पः विसर्प विसर्प, विसर्पति विसर्पछे करे छे  
कैलता है, सः ते वह, अवकाशः अगा जगह, इयाव-

३०. कम्पज्वर—कम्पज्वर (क.)

विश्लेषण—विश्लेष (क.)

वेपन—व्रमन (व.)

विसर्पति—अनुविसर्पति (व. छ व.)

तनुविशदांरुणाल्पास्त्रावैः—तनुविषमदांरुणांशस्त्रावैः (ड.)

अरुणामैः—अरुणैः (व.)

२८. लिङ्गानि—रूपाणि (फ. व.)

२९. समावृतः—समावितः (ड.)



तस्य रूपाणि—ज्वरस्त्वणा मूर्च्छा मोहश्छर्दि-  
ररोचकोऽङ्गमेदः स्वेदोऽतिप्राग्मन्तर्दाहः प्रलापः  
शिरोरुक् चक्षुषोराकुलत्वमस्त्रप्ररतिर्भ्रमः शीत-  
वातवारितर्षोऽतिमात्रं हरितहारिद्रनेत्रमूत्रवर्षस्त्वं  
हरितहारिद्ररूपदर्शनं च, यस्मिन्नावकाशो विसर्पोऽ-  
नुसर्पति सोऽवकाशस्ताम्रहरितहारिद्रनीलकृष्ण-  
क्तानां वर्णानामन्यतमं पश्यति, सोऽस्वेद्यश्चातिप्राग्  
दाहसंमेदनपरीतैः स्फोटकैरुपचीयते दुग्धवर्णा-  
स्त्रावैश्चिरपाकैश्च, निदानोक्तानि चास्य नोपशेस्ते  
विपरीतानि चोपशेस्त इति पित्तविषयः ॥३२॥

तस्य तेनां उक्ते, स्वप्नि लक्षणं ज्वरः  
नेत्रादिः- ज्वरं ज्वरेण- ज्वर, तृण्य तस्मै प्याज,  
मूर्च्छा मूर्च्छा मूर्च्छा, मोहः मोह, छर्दिः छर्दि  
वमन, अरोचकः अरुचि अरुचि, अङ्गमेदः अङ्गमेदः  
अङ्गमेद, स्वेदः परस्वेदः पसीना, अतिप्राग् अतिप्राग्  
अत्यन्त, अन्तर्दाहः अन्तर्दाह अन्तर्दाह, प्रलापः प्रलापः  
प्रलाप, शिरोरुक् माथाभां पीडा शिरसे पीडा, चक्षुषोः  
आभेदी आभेदी, आकुम्भम् आकुम्भम् आकुलता  
अस्त्रप्रमं उध न आवन्ती अनिद्रा, हरितः हरित्री  
वेचैनी, भ्रमः भ्रम भ्रम, अतिप्राग्म अतिप्राग्म अत्यन्त,  
शीत- शीतल शीतल, वात- पवन वायु, वारितर्षः अने  
पाणीनी भृच्छा थनी और जलक्षी आकांक्षा, हस्ति-  
हारिद्र-नेत्र-मूत्र-वर्षस्त्वम् मूत्र तथा मलना वल्लुं  
लीला के हण्डर नेवा अतुं मूत्र तथा मलके वर्णका  
हरा वा हलीसा होना, हरित- लीलां हरित, हरिद्र- के  
हण्डर नेवां या हलीके वर्णके, रूपदर्शनम् रूपां  
दर्शनं थपुं रूपका दर्शन होना, यस्मिन् च अने ने  
और जिस, अवकाशो न्यथा जगह विसर्पः विसर्प  
विसर्प, अनुसर्पति विसर्पणुं करे छे फैलता है, सः ते  
वह, अवकाशः जगह जगह तात्र- तात्र लाल,

हरित- लीला। हरित, हरिद्र- हण्डर नेवा हरिद्र,  
नील- नील नील, कृष्ण- छाणी। काला, रक्तनाम्  
तथा रक्ता तथा रक्त, वर्णानाम् ये वल्लुंभांथी  
इन वर्णोंमेंसे, अन्यतमम् डाँध छेक वल्लुंनी कोई एक  
वर्णकी, पश्यति आय छे होती है, सोऽस्वेद्यः च तथा  
अतिप्राग्म शोथयुक्त, अतिप्राग्म अतिप्राग्म अत्यन्त,  
दाह- दाह दाह, संमेदन- अने मेदनथी और मेदनसे,  
परीतैः युक्त युक्त, दुग्ध- सधाम समान, वर्ण- वल्लुंनी  
वर्णके, आकाशः आवन्ती लावण्ये, चिरपाकेः च  
अने अने समये पाकता और दीर्घ कालमें पकनेवाले,  
स्फोटकः फोड़कायेथी फोड़ोते, उपचीयते उपचित  
आय छे मसी होती है, अत्र च तेने उसको, निदानो-  
क्तानि निदानमां कहेले अक्षरविहार निदानोक्त  
आहारविहार, न उपशेस्ते भङ्क आवता नथी  
अनुकूल नहीं होते, विपरीतानि च अने तेथी विपरीत  
अक्षरविहार और इसके विपरीत आहारविहार,  
उपशेस्ते भङ्क आवे छे अनुकूल होते हैं, इति आ-  
वद, पित्तविषयः पित्तविसर्प छे पित्तविसर्प है ॥३२॥

32. Its signs and symptoms are fever, thirst, fainting, stupefaction, vomiting, anorexia, body-ache, excessive perspiration, burning, delirium, headache, agitation of the eyes, insomnia, apathy, giddiness, excessive craving for cold air and water, greenish or yellowish coloration of eyes, urine and feces, greenish or yellowish appearance of the body. In the region where the inflammation spreads, the parts become swollen and acquire any of the following colors:- coppery, greenish, yellowish, bluish, blackish or reddish. Then this swelling becomes affected with burning and splitting pain and covered with eruptions which break open soon and are followed by discharge of a similar coloration. The

३२. हरिद्रनेत्रमूत्र हरिद्रमूत्र (क व.)

.. पश्यति पश्यति (ड.)

.. संमेदन-संमेदन (क.व.)

.. तुल्यवर्णास्त्रावैश्चिरपाकैश्च-तुल्यवर्णास्त्रावैश्चिरपाकैश्च  
भवति (ब.)

वर्णास्त्रावैः-वर्णास्त्रावैः (ब.)

.. चिरपाकैश्च-अचिरपाकैः (ड.)

factors described as causative of Visarpa are not homologatory to the patient while the opposite kind of factors are homologatory. These are the signs and symptoms of acute spreading affection of the pitta type.

कफविसर्पस्य निदानलक्षणम्—

स्वादुम्ललवणस्निग्धगुरुर्वज्रप्रसंज्ञितः ।

कफः संदूषयन् दूष्यान् कृच्छ्रमङ्गे विसर्पति ॥३३॥

स्वादु- मधुर मधुर, अम्ल- अम्ल अम्ल, लवण-  
लवण लवण, स्निग्ध स्निग्ध स्निग्ध, गुरु- तथा गुरु  
तथा गुरु, अज- अजीर्ण भोजन, स्वप्न- अने द्विसन्धी  
अंधधी और दिवास्वप्नसे, संचितः संचित थयेसे  
संचित हुआ, कफः ऊँ कफ, दूष्यान् दूष्येने दूष्योको,  
संदूषयन् दूषित करीने दूषितकरके, अङ्गे शरीरमें  
अंगोंमें, कृच्छ्रम् अंगतिवाले मंदगतिवाले, विसर्पति  
विसर्प करे छे विसर्पको उत्पन्न करता है ॥ ३३ ॥

33. The kapha being accumulated by the ingestion of sweet, acid, salt, unctuous and heavy foods, as also by excessive sleep, vitiates the susceptible body-elements and spreads slowly in the body.

तस्य रूपाणि-शीतकः शीतज्वरो गौरवं निद्रा  
तन्द्राऽरोचको मधुरास्यत्वमास्योपलेपो निष्ठीविका  
छर्दिरालस्यं स्तैमित्यमग्निनाशो दौर्बल्यं च, यस्मि-  
न्नावकाशो विसर्पोऽनुसर्पति सोऽवकाशः श्वयथु-  
मान् पाण्डुर्नातिरक्तः स्नेहसुप्तिस्तम्भगौरवैरन्वितो-  
ऽल्पवेदनः कृच्छ्रपाकैश्चिरकारिमिर्वहुलत्वगुपलेपैः  
स्फोटैः श्वेतपाण्डुभिरनुबध्यते, प्रभिन्नस्तु श्वेतं  
पिच्छिलं तन्नुमद्वनमनुबद्धं स्निग्धमास्त्रावं स्रवति,  
ऊर्ध्वं च गुरुभिः स्थिरैर्जालावततैः स्निग्धैर्बहुल-

३४. बहुल-बहुल (तः)

,, निष्ठीविका-प्रसेकः (द.फ.)

,, विसर्पोऽनुविसर्पति-विसर्पति (इ.)

त्वगुपलेपैर्वर्णैरनुबध्यतेऽनुबद्धी च भवति, श्वेतन-  
खनयनवदनत्वङ्मन्त्रवर्चस्त्वं, निदानोक्तानि चास्य  
नोपशेरते विपरीतानि चोपशेरत इति श्लेष्म-  
विस्मर्पः ॥३४॥

तस्य तेना इसके, रूपाणि लक्षण लक्षण,  
शीतकः शीत शीतलता जैसेकि शैत्य, शीतज्वरः  
शीतज्वर शीतज्वर, गौरवम् गौरव गौरव, निद्रा निद्रा  
निद्रा, तन्द्रा तन्द्रा तन्द्रा, अरोचकः अरुचि अरुचि,  
मधुरास्यत्वम् मधुमधुर् मुखका मीठा होना, आस्य-  
उपलेपः मधुने उपलेप मुंहमें उपलेप, निष्ठीविका पार-  
वार थूँधपुं बार बार थूँकना, छर्दिः उल्टी छर्दि, आल-  
स्यम् आलस आलस, स्तैमित्यम् स्तिमितता स्तिमितता,  
अग्निनाशः अग्निनाश अग्निनाश, दौर्बल्यम् च दुर्बलता दुर्ब-  
लता, यस्मिन् च अने और जिस, अवाकाशो अवकाश  
स्थानमें, विसर्पः विसर्प विसर्प, अनुसर्पति विसर्प  
करे छे फैलता है, सः ते वह, अवकाशः अवकाश जगह,  
श्वयथुमान् सोमवाणी सूजनयुक्त, पाण्डुः पीछडी पाण्डुवर्ण,  
न अतिरक्तः थोड़ी दाढ़ बोबी लालीवाली, स्नेह-रनेह  
स्निग्धता, सुप्ति-स्पर्शज्ञानथी रहितपण्डु सुप्ति, स्तम्भ-  
स्तम्भ स्तम्भ, गौरवैः तथा गुरुता ओओथी तथा  
गुरुता इनसे, अन्वितः युक्त युक्त, अल्पवेदनः अल्प-  
वेदनावाणी अल्पवेदनावाली, कृच्छ्रपाकैः कृच्छ्राथी पाके  
ओओ कृच्छ्रपाकी, चिरकारिभिः दाढ़े वज्रते मटता  
चिरकारी, बहुलत्वक् अडी आमडी मोटी त्वचा, उपलेपैः  
अने उपलेपवाणा और उपलेपयुक्त, श्वेत- तथा सईह  
श्वेत, पाण्डुभिः तेमग पीछडी एवं पाण्डुवर्णके, स्फोटैः  
ईडडाओना फोडोंसे, अनुबध्यते अनुबधवाणी थाय छे  
व्याप्त होती है, प्रभिन्नः बेदन थता इन फोडोंके फूटने  
पर, श्वेतम् सईह सफेद, पिच्छिलम् पीछिले पिच्छिल,  
तन्नुमद तन्नुओवाणी तंतुदार, घनम् घन घट्ट, अनु-  
बद्धम् अनुबद्ध अनुबद्ध, स्निग्धम् अने स्निग्ध और  
स्निग्ध आस्त्रावम् साप आस्त्राव, स्रवति स्रवे छे बहाती है,  
ऊर्ध्वम् च अने पछी और इसके पश्चात्, गुरुभिः भारे  
गुरु स्थिरैः स्थिर स्थिर, जालावततैः अजथी व्याप्त  
जालसे व्याप्त, स्निग्धैः स्निग्ध स्निग्ध, बहुलत्वक् अडी  
आमडी मोटी त्वचा, उपलेपैः तथा उपलेपवाणा तथा  
उपलेपयुक्त, व्रणैः प्रथेना व्रणोंका, अनुबध्यते

अनुपधनाणी थाय छे अनुबन्धवाली होती है, अनुबन्धी च अने दाधो समथ और चिरकालतक, भवति ओवीर स्थितिमा रहे छे ऐसी ही स्थितिमें रहती है, श्वेत-नख-नयन-वदन-त्वक्-मूत्र-वर्चस्त्वम् अने नभ, नेत्र, भुज, आमडी, भूत तथा मधना वर्णतु और नख, नेत्र, मुख, त्वचा, मूत्र तथा मलके वर्णही श्वेतता होती है, अथ च आ रोगीने इस रोगीको, निदानोक्तानि निदानमा डहेल आहारोवहार निदानोक्त आहारविहार, न उपशेरते भाइके आवता नथी अनुकूल नहीं होते, विपरीतानि च अने तेथी विपरीत आहारनिहार और इसके विपरीत आहारविहार, उपशेरते भाइके आवे छे अनुकूल होते हैं, इति श्लेष्मविसर्पः आ श्लेष्म-विसर्पः छे यह श्लेष्मविसर्प है ॥ ३४ ॥

34. Its signs and symptoms are—chills, algid fever, heaviness somnolence, torpor, anorexia, sweet taste in the mouth, formation of fur and sordes in the mouth, ptyalism, vomiting, lethargy, rigidity, loss of the gastric fire and prostration. Locally, in the region where the inflammation spreads, the part becomes swollen and is characterised by pallor or slight redness, greasiness, numbness, rigidity and heaviness, and only slight pain. It suppurates with difficulty and after a long time, and is studded with eruptions which are covered with a thick skin over them and are white, or yellowish white in color. When this breaks open, there is white, slimy, fibrinous, dense, sticky and viscid discharge from it. Thereafter it is followed by a heavy and firm network of slough-covering and firmly adhering to the wound. There is pallor of nails, eyes, face, skin, urine and

feces and the factors described as causative of Visarpa of this type are not homologatory to the patient, while the antagonistic factors are homologatory. These are the signs and symptoms of the acute spreading affections of the kapha type.

अग्निविसर्पस्य निदानलक्षणे—

वातपित्तं प्रकुपितमतिमात्रं स्वहेतुभिः ।

परस्परं लब्धबलं दहद्रात्रं विसर्पति ॥ ३५ ॥

स्वहेतुभिः पोतपोताना हेतुभिर्यो अपनेअपने कारणोंसे, अतिमात्रम् अतिशय असन्त, प्रकुपितम् प्रकोप पाभेद प्रकुपित हुए, वातपित्तम् वातपित्त वातपित्त, परस्परम् परस्पर परस्पर, लब्धबलम् अण भेदनीने बलवान होकर, गात्रम् अंगमा गात्रको, दहत् दह करती जलाते हुए विसर्पति अग्निविसर्प करे छे अग्निविसर्पको उत्पन्न करते हैं ॥ ३५ ॥

35. Vata-cum-pitta getting excessively provoked by their respective etiological factors and strengthened by each other, spread inflaming the affected region.

तदुपपादातुरः सर्वशरीरमङ्गारैरिवाकीर्यमाणं मन्यते, छर्द्यतीसारमूर्च्छादाहमोहज्वरतमकारोच-कास्थिसंधिमेदतृष्णाविपाकाङ्गमेदादिभिश्चाभिभू-यते, यं यं खावकाशं विसर्पोऽनुसर्पति सोऽवकाशः शान्ता रमकाशोऽतिरक्तो वा भवति, अग्निदग्ध-प्रकारैश्च स्फोटैरुपचीयते, स शीघ्रगत्वादाश्वेष मर्मानुसारी भवति, मर्मणि चोपतसे पवनोऽतिबलो भिनश्यङ्गान्यतिमात्रं प्रमोहयति संज्ञां, हिक्काश्वासौ जनयति, नाशयति निद्रां, स नष्टनिद्रः प्रमूढसंज्ञो व्यथितचेता न कचन सुखमुपलभते, अरतिपरीतः स्थानादासनाच्छ्रयां क्रान्तुमिच्छति, क्लिष्टभूयिष्ठ-

३५. दहद्रात्रं—शीघ्रमगे (ग.)



आशु निद्रां भजति, दुर्बलो दुःखप्रबोधश्च भवति;  
तमेवंविधमग्निविसर्पपरीतमचिकित्स्यं विद्यात् ॥३६॥

तदुपतापात् तेना उपतापथी इसके उपतापसे,  
आतुरः रोगी रोगी, सर्वशरीरम् आत्मा शरीर पर  
समस्त शरीर पर, अङ्गारैः अवकीर्यमाणम् इव अग्नि  
अङ्गारा नाभवाभा आत्मा होय जैसे अङ्गारे बिखरे हुए  
हों ऐसा, मन्वते मने छे मानता है, छर्दि- अने  
छेदी छर्दि, अतीसार- अतिसार अतिसार, मूर्च्छा-  
भूच्छा मूर्च्छा, दाह- दाह दाह, मोह- मोह मोह, ज्वर-  
ज्वर ज्वर, तमक- तमक स्वास तमक स्वास, अरोहक-  
अरुचि अरुचि, अस्थिसंविमेद- अस्थिमेद, संचितोद-  
अस्थि और संधियोंमें भेदनवत् पीड़ा, तृष्णा- तृष्णा तृष्णा,  
अविपाक- अविपाक अविपाक, अङ्गमेदादिभिः च तथा  
अङ्गमेद पत्रेथी तथा अङ्गमेद आदिसे, अभिसूचते  
पीडय छे पीड़ित होता है, अथ अथ च अने ने ने  
और जिस जिस, अवकाशः प्रदेशमा प्रदेशमें, विसर्पः  
विसर्प विसर्प, अमुसर्पति विसर्पणु करे छे फैलता है,  
सः ते ते वह वह, अवकाशः प्रदेश स्थान, ज्ञान्त-  
अङ्गार-प्रकाशः छुआयेला आगाश नेवा बुझे हुए  
अङ्गारेके समान, अतिरक्तः वा के अतिशय रते। या  
अतिरक्त, भवति थाय छे होता है, अग्निद्रव्य-प्रकारैः  
अने अग्निथी अग्नि आभ पर नेवा इहला छेदी आवे  
छे और अग्निसे जळे हुए अंग पर जैसे स्फोट उठ आते  
हैं, स्फोटैः च तेवा इहलाओथी वैसे फोफेसे, उपचीयते  
भराध जय छे भरा जाता है, सः ते वह,  
शीघ्रगत्वात् शीघ्र गतिवाणै। होवाथी शीघ्र  
फैलनेवाला होनेसे, आशु एव शीघ्र शीघ्र ही,  
मर्माजुसारी भर्माभा पहुँची जनारे मर्ममें पहुँच  
जानेवाला, भवति थाय छे होता है, मर्मणि च अने  
भर्मा और मर्मके, उपतसे पीडित थता उपतप्त होने  
पर, अतिबलः अतिभलवान् अतिबलवान, पवनः वायु  
वायु, अङ्गानि अङ्गाने अङ्गोंको, अतिमात्रम् अतिशय  
अत्यन्त, भिन्नति भेदे छे विबीर्ण करता है, संज्ञाम्

संज्ञाने। संज्ञाको, प्रमोहयति नाश करे छे नष्ट करता है,  
हिक्काश्वसौ हेडकी तथा श्वासने हिक्का तथा श्वासको,  
जनयति उत्पन्न करे छे उत्पन्न करता है, निद्राम् निद्राने।  
निद्राको, नाशयति नाश करे छे नष्ट करता है, नष्टनिद्रः  
निद्राना नाशवाणो नष्ट हुई निद्रावाला, प्रमूढसंज्ञः संज्ञाना  
भेदवाणो संज्ञारहित, व्यथितचेताः अने चित्तनी  
व्यथावाणो। चित्तकी व्यथावाला, सः ते रोगी वह रोगी,  
कचन कयाय पशु कहीं भी, सुखं भुञ्ज सुख, न नथी  
नहीं, उपलभते भेजवती। पाता, अतिपरीतः भेजेनीथी  
व्यास बेचैनीसे परेशान होकर, स्थानम् आसनात्  
उभवा तथा भेसवानुं छोड़ी खड़े होने तथा बैठनेको  
त्यागकर, शय्याम् पश्चरीमा शय्यामें, क्रान्तुम् छेत्वानी  
लेटना, इच्छति भूच्छा करे छे चाहता है, क्षिप्तमूर्च्छः  
च अने भूछ दुःखी अवाथी तेने और अत्यन्त दुःखी  
होनेसे उसको, आशु केकदम शीघ्र, निद्राम् शीघ्र नींद,  
लभते आवे छे आ जाती है, दुर्बलः दुर्बल दुर्बल,  
दुःख- अने दुःखेथी और कठिनाईसे, प्रबोधः च भगृत  
जागृत, भवति थाय छे होता है, अग्निविसर्प- आभ-  
विसर्पथी अग्निविसर्पसे, परीतम् घेरायेला पीड़ित, एवं-  
विधम् आवा प्रकारना इस प्रकारके, तम् ते रोगीने  
जस रोगीको अचिकित्स्यम् अचिकित्स्य अचिकित्स्य,  
विद्यात् आशुवे। जानना चाहिए ॥ ३६ ॥

36. The signs and symptoms of this condition are—the patient affected with this type of Visarpa feels as if his body is sprinkled over with live coals. He is overcome with fits of vomiting, diarrhea, fainting, burning, faintness fever, asthma, anorexia, pain in the bowes and joints, thirst, indigestion, body-aches and similar other symptoms. Locally, the region where it spreads acquires the color of extinguished embers (blackish). They become covered with such blebs as are produced by burns due to fire. Due to its rapid progress, it soon

३६. भजति, दुर्बलो—लभते (व.)

“ भजति—लभते (त.व.)

“ दुर्बलो—अवलो (इ.)

“ तमेवंविधं—तमेवंविधमातुरं (क.)



spreads to the vital regions. When the vital regions are affected, the vata, which has become very strong, causes excessive disintegration of the tissues and leads to dullness of mental processes, produces hiccup, dyspnea and loss of sleep. The patient who has thus lost his sleep, whose mental processes are dulled and whose mind is afflicted, does not find relief anywhere. He is overcome with apathy, and desires to go to bed leaving his seat or reclining position. Thus exceedingly exhausted he soon falls into a coma. Being very debilitated, he is roused from this state with difficulty. One afflicted with this fiery type of Visarpa is to be regarded as incurable.

कर्मविसर्पस्य निदानलक्षणे—

कफपित्तं प्रकुपितं बलवत् स्वेन हेतुना ।  
विसर्पत्येकदेशे तु प्रकृदेयति देहिनम् ॥३७॥

स्वेन पीतानां अपने अपने हेतुना हेतुभी कारणोंसे, प्रकुपितम् प्रकुपितं यथेष्टं प्रकुपितं हुए बलवत् अगवान् बलवान्, कफपित्तम् कुपितं कफपित्तं, एकदेशे ओष्ठ स्थानम् एकदेशमे, विसर्पति कर्मविसर्पं करे छे कर्म विसर्पको उपपन्न करते हैं, देहिनम् अने मनुष्यने और मनुष्यके उस भागमें, तु ते तो, प्रकृदेयति प्रकृष्टित करे छे अत्यन्त क्रोध उपपन्न करते हैं ॥ ३७ ॥

37. Kapha-cum-pitta, getting excessively provoked by their respective etiological factors, spread in the body causing softening of the tissues locally.

३७. बलवत् स्वेन—बलवत्स्वेन (ब.)  
देहिनम्—वाचिकम् (क. घ. फ.)

तद्विकाराः—शीतज्वरः शिरोगुरुत्वं दाहः स्तैमित्यमङ्गावसदनं निद्रा तन्द्रा मोहोऽन्नद्वेषः प्रलापोऽग्निनाशो दौर्बल्यमस्थिभेदो मूर्च्छा पिपासा स्रोतसां प्रलेपो जाड्यमिन्द्रियाणां प्रायोपवेशनमङ्गविक्षेपोऽङ्गमर्दोऽरतिरौत्सुक्यं चोपजायते, प्रायश्वायाशये विसर्पत्यलङ्क एकदेशग्राही च, यस्मिन्श्चावकाशे विसर्पति विसर्पति सोऽवकाशो रक्तपीतपाण्डुपिङ्गवावकीर्ण इव मेचकाभः कालो मलिनः स्निग्धो बहुष्मा गुरुः स्तिमितवेदनः श्वयथुमान् गम्भीरपाको निरास्त्रावः शीघ्रक्रोधः स्निग्धपूतिमांसत्वक् क्रमेणास्पृक् परामृष्टोऽवदीर्यते कर्म इवावपीडितोऽन्तरं प्रयच्छत्युपक्लिन्नपूतिमांसत्यागी सिरास्त्रायुसंदर्शी कुणपगन्धी च भवति संज्ञास्मृतिहन्ता च; तं कर्मविसर्पपरीतमचिकित्स्यं विद्यात् ॥३८॥

तद्विकाराः तेनां वक्ष्यते उसके लक्षण, शीतज्वरः ज्वर ३-शीतज्वर जैसेकि:- शीतज्वर, शिरोगुरुत्वं माथुं भारं यत् शिरोगुरुत्वा, दाहः दाह दाह, स्तैमित्यम् स्तिमितता स्तैमित्य, अङ्गावसदनम् शरीरनी शिथिलता अङ्गोंकी शिथिलता, निद्रा निद्रा निद्रा, तन्द्रा तन्द्रा तन्द्रा, मोहः मोह मोह, अन्नद्वेषः अन्नद्वेष अन्नद्वेष, प्रलापः अल्लाह प्रलाप, अग्निनाशः अग्निनाश अग्निनाश, दौर्बल्यम् दुर्बलता दुर्बलता, अस्थिभेदः अस्थिभेद अस्थिभेद, मूर्च्छा भूच्छा मूर्च्छा, पिपासा तरस प्यास, स्रोतसाम् स्रोतोभां स्रोतोभां, प्रलेपः अलेप प्रलेप, इन्द्रियाणाम् इन्द्रियाणी इन्द्रियोंकी, जाड्यम् जडता जडता, प्रायोपवेशनम् अन्त्याग अन्त्याग, अङ्गविक्षेपः अङ्गविक्षेप अङ्गोंका विक्षेप, अङ्गमर्दः अङ्गमर्द अङ्गमर्द, अरतिः अरति बेचैनी,

३८. शिरोगुरुत्वं—शिरोरोगो गौरवं (ब.)  
शिरोगुरुत्वं दाहः—शिरोगौरवं त्वदाहः (फ.)  
दौर्बल्यं—निस्तोदो दौर्बल्यं (फ.)  
प्रायोपवेशनं—आमोपवेशनं (ग. श. घ. ङ.)  
पिङ्गवावकीर्ण इव मेचकाभः कालो मलिनः—पिङ्गवावकीर्णोऽस्तिमेचकाभो मलिनः (ब.)  
स्मृतिहन्ता—स्मृतिहर्ता (ब.)

ઓત્સુકયર્ ચ અને ઉત્સુકતા ઓર ઉત્સુકતા, ઉપજાયતે થાય છે હોતે હૈં, અલસકઃ આ મંદવિસર્પી વિસર્પી યદ ધીમે ફેલનેવાલા વિસર્પ પ્રાયઃ ચ થણું કરીને પ્રાયશઃ, આમાશયે આમાશયમાં આમાશયમેં, વિસર્પતિ પ્રસરે છે ફેલતા હૈ, એકદેશગ્રાહી ચ અને એક જગાએ થનાર છે ઓર એકદેશમેં હોતા હૈ, ચક્ષિન્ ચ અને જે ઓર જિસ, અવકાશે જગાએ સ્થાનમેં, વિસર્પઃ આ વિસર્પી યદ વિસર્પ, વિસર્પતિ પ્રસરે છે ફેલતા હૈ, સઃ તે વહ, અવકાશઃ જગા સ્થાન, રક્ત- રક્ત લાલ, પીત- પીળા પીત, પાણ્ડુ- અને પાંડુ ઓર પાણ્ડુ, પિષ્કાવકીર્ણઃ ફેડવીએથી બ્યાપ્ત પિષ્કાઓસે ભરા, દુઃખ યથા જેવી હુઆ જૈસા, મેચકાશઃ મેશના જેવી ધૂપછાંદકે રંગકા, કાલઃ કાળી કાલા, મલિનઃ મલિન મલિન, સ્નિગ્ધઃ સિનગ્ધ ચીકના, બહુશ્ચા બહુ ગરમ અતિ ઉષ્ણ, ગુરુઃ ભારે ગુરુ, સ્તિમિતવેદનઃ સ્તિમિત વેદનાવાળી સ્થિર વેદનાયુક્ત, શ્યથુમાન્ સોબવાળી સૂજનવાલા, ગમ્મીરપાકઃ ગંભીર પાકવાળી ગમ્મીર- પાકયુક્ત, નિરાશ્વાઃ શ્વાવિનાની શ્વાવરહિત, શીઘ્ર- ક્લેદઃ એકદમ ક્લેદવાળી થનાર શીઘ્ર ક્લેદ યુક્ત હોનેવાલા, સ્વિન્ન- સ્વેદયુક્ત પસીનાવાલે, ક્લિન્ન- ક્લેદયુક્ત ક્લેદવાલે, પૂતિમાંસ- દુર્ગંધયુક્ત માંસ પૂતિમાંસ, ત્વક્ તથા આમડીવાળી ઓર ત્વચાસે યુક્ત, ક્રમેણ અને ક્રમે ક્રમે ઓર ક્રમશઃ, અવપરુક્ શેડી પીડાવાળી હોય છે મન્દપીડાયુક્ત હોતા હૈ, પરામૃદઃ અડકતાથી છૂને પર, અવધીર્યતે ક્ષાટી બધ છે ફટ જાતા હૈ, કર્દમઃ કાદવની કીચડકી, દ્વ પેઠે માંતિ, અવપીચિતઃ દ્વાવત્તા દબાનેસે, અન્તરમ્ પ્રયચ્છતિ દ્વાર્ધ બધ છે દબ જાતા હૈ, રૂપક્લિન્ન- તેમાંથી ક્લેદયુક્ત ઉસસે ક્લેદયુક્ત, પૂતિ- માંસસ્વાગી તથા દુર્ગંધયુક્ત માંસ નીકળે છે ઓર સકા દુર્ગંધયુક્ત માંસ નિકલતા હૈ, સિરાશ્ચાયુ- સિરા અને સ્નાયુઓ સિરાણે ઓર સ્નાયુ, સંદર્શી દેખાય છે રીકતે હૈં, કુણવગન્ધી અને મડદના ગંધવાળી હોય છે ઓર શબકે સમાન ગન્ધવાલા હોતા હૈ, સંજ્ઞાસ્મૃતિ- સંજ્ઞા તથા સ્મૃતિને સંજ્ઞા તથા સ્મૃતિકો, હન્તા ચ હરનાર નહ કરનેવાલા, મન્વતિ થાય છે હોતા હૈ, કર્દમવિસર્પ- કર્દમવિસર્પથી કર્દમવિસર્પસે, પરીતઃ થેરાથેલ પોચિત, તસ્મ તે મનુષ્યને ઉસ મનુષ્યએ, અપિચિત્ત્વ-અપિચિત્ત્વ

વિકિત્સાકે લિયે અયોગ્ય, વિશ્વાત્ બહુવેા જાનના ચાહિય ॥ ૩૮ ॥

38 Its signs and symptoms are—algid fever, heaviness of the head, burning, stiffness, flabbiness of the limbs, somnolence, torpor, stupefaction, repugnance to food, delirium, loss of digestive fire, prostration, pain in the bones, fainting, thirst, increased secretion in the channels, dullness of the senses, loss of the zest for living, subsultus tendinum, body-ache, listlessness, anorexia and anxiety. Mostly this kind of Visarpa spreads in the upper part of the alimentary tract. It spreads slowly and affects one region only. Locally where this affection spreads, the part looks red, yellow or pale in color as though studded with eruptions. It is cyanosed black, dirty-looking, greasy, very hot, heavy, afflicted with dull pain, edematous, attended with deep suppuration, devoid of any discharge, rapidly softening, containing moist and putrid flesh and skin, and attended with gradual diminution of pain. On being touched, it spills like slush and when pressed, goes down (pits on pressure), and softened and putrid flesh sloughs out, exposing vessels and muscular tissues; it smells like putrid flesh and causes loss of consciousness and memory. The patient afflicted with this condition known as Kardama Visarpa is to be regarded as incurable.



morbid humors getting excessively provoked vitiate the susceptible body-elements and produce acute spreading affection. Thereafter the vata, being obstructed by kapha in its progress and making its way by dispersing kapha in various directions produces in due course a series of glandular enlargements which are slow in suppurating and difficult of cure, in the habitats of kapha. And in the plethoric patient it vitiates the blood and produces a series of localized swellings situated in the vessels, muscles, flesh and skin. These swellings may be acutely painful, large or small, oval or round in shape and of red color. As a result of this affection, the following complications arise—fever, diarrhea, cough, hiccup, dyspnea, emaciation, faintness, discoloration, anorexia, indigestion, ptyalism, vomiting, fainting, body-ache, somnolence, listlessness, asthenia etc. The patient who is affected with these complications is too far gone for any therapeutic measures and is to be given up as incurable. Thus the nodular type of Visarpa has been described.

उपद्रवस्य लक्षणम्, उपद्रवस्य आशुप्रतिकारोपदेशः—

उपद्रवस्तु खलु रोगोत्तरकालजो रोगाश्रयो रोग एव स्थूलोऽणुर्वा, रोगात् पश्चाज्जायत इत्युपद्रवसंज्ञः। तत्र प्रधानो व्याधिः, व्याधेर्गुणभूत उपद्रवः, तस्य प्रायः प्रधानप्रशमे प्रशमो भवति ।

४०. रोगोत्तरकालजो-रोगान्तरकालजो (व. फ.)

„ गुणभूतः-गुणीभूतः (व.)

स तु पीडाकरतरौ भवति पश्चादुत्पद्यमानो व्याधिपरिक्रिष्टशरीरत्वात्; तस्मादुपद्रवं त्वरमाणोऽभिवाधेत ॥ ४० ॥

रोग- रोगना रोगके, उत्तरकालजः पीडाका-  
समयमां न-मेव उत्तर कालमें उत्पन्न होनेवाला,  
रोगाश्रयः रोगना आश्रित रोगका आश्रित, स्थूलः स्थूल  
स्थूल, अणुः वा के आशु या अणु, रोगः एव तु रोग न  
रोग ही, उपद्रवः खलु उपद्रव छे उपद्रव है, रोगात्  
रोगना यह रोगके, पश्चात् पीडाका पीछे, जायते  
उत्पन्न थाय छे उत्पन्न होता है, इति भाटे इस लिए,  
उपद्रव- उपद्रव उपद्रव, संज्ञः उद्देश्य छे कहाता है,  
तत्र तेभां इसमें, व्याधिः व्याधि व्याधि, प्रधानः  
प्रधान छे प्रधान होता है, उपद्रवः अने उपद्रव  
और उपद्रव, व्याधेः व्याधिना करती व्याधिकी  
अपेक्षासे, गुणभूतः गौलु छे गौण होता है, प्रायः धक्षुं  
करीने प्रायः, प्रधानप्रशमे भुज्यन्ती शान्ति  
भती प्रधानकी शान्तिसे, तस्य तेनी उसकी, प्रशमः  
शान्ति शान्ति, भवति थाय छे होती है, पश्चात्  
पीडाका पीछे, उत्पद्यमानः पैदा भती उत्पन्न होता  
हुआ, सः तु ते वह, व्याधि-व्याधिभी रोगसे, परिक्रिष्ट-  
शरीरत्वात् रोगीनुं शरीर परिक्रिष्ट यथैव होनाथी  
रोगीका शरीर परिक्रिष्ट होनेसे, पीडाकरतरः वधारे पीडा  
करनेर अधिक पीडाकर, भवति थाय छे होता है,  
तस्मात् तेभी इस लिए, त्वरमाणः त्वरणापूर्वक जल्दीसे,  
उपद्रवञ्च उपद्रवने उपद्रवका, अभिवाधेत नाश करेवा  
जोभी नाश करना चाहिए ॥ ४० ॥

40. Complication occurs as a sequela following and resulting from the main disease. It may be in the nature of a major or minor ailment. The sequela is so called because it is consequent on the disease. The disease is the main ailment and the sequela is secondary to the main disease. It generally disappears with the disappearance of the main disease. It is more

४०. शरीरत्वात्-शरीरवातुत्वात् (व.)

troublesome than the main disease itself, because it appears in the later stages of disease when the body is already weakened. Hence, the physician should be very prompt in the treatment of complications.

सन्निपातिकविसर्पलक्षणम्—

सर्वायतनसमुत्थं सर्वलिङ्गव्यापितं सर्वधात्वनु-  
सारिणमाशुकारिणं महात्ययिकमिति सन्निपात-  
विसर्पसचिकित्स्यं विद्यात् ॥४१॥

सन्निपातविसर्पम् सन्निपातविसर्पं सन्निपातविसर्प,  
सर्वायतन-सर्वं निदानेऽपि सब निदानोंसे, समुत्थम्  
उत्पन्न थयेक्ष उत्पन्न हुआ, सर्वलिङ्ग-सर्वं दोषानां  
दशधुत्थी सर्व दोषोंके लक्षणसे, व्यापितम् युक्त युक्त,  
सर्वधात्वनुसारिणम् सर्वं धातुओंने अनुसरनार सब  
धातुओंको अनुसरनेवाला, आशुकारिणम् शीघ्रकारी  
शीघ्रकारी, महात्ययिकम् इति अने महात्ययकारी  
होवाथी और महान विनाशकारक होनेसे, अचिकित्स्यम्  
तेने अचिकित्स्य उसको अचिकित्स्य, विद्यात् अणुने  
जानना चाहिए ॥ ४१ ॥

41. The acute spreading affection due to tri-discordance, which results from the combination of all the etiological factors, which manifests a combination of all the signs and symptoms, which spreads in all the body-elements, which spreads very rapidly and which is excessively fulminating, should be regarded as irremediable.

विसर्पाणां साध्यासाध्यविचारः—

तत्र वातपित्तश्लेष्मनिमित्ता विसर्पास्त्रयः साध्या  
भवन्ति; अग्निकर्दमाख्यौ पुनरनुपसृष्टे मर्मेणि

अनुपगते वा सिरास्नायुमांसह्लेदे साधारणक्रिया-  
भिरुभावेवाभ्यस्यमानौ प्रशान्तिमापयेयाताम्,  
अनादरोपक्रान्तः पुनस्तयोरन्यतरो हन्यादेहमा-  
श्वेदाशीविषवत्;

तत्र तेभां उनमें, वात-पित्त-श्लेष्म-निमित्ताः वात, पित्त  
अने उद्धृथी उत्पन्न थयेक्ष वातज-पित्तज-कफज, त्रयः त्रयः  
तीन, विसर्पाः विसर्पो विसर्प, साध्याः साध्य साध्य,  
भवन्ति ये होते हैं. अग्निकर्दमाख्यौ अग्निविसर्प अने  
उर्ध्वविसर्प अग्निविसर्प और कर्दमविसर्प, पुनः उभौ एव  
अने दोनों, मर्मेणि मर्मभां मर्ममें, अनुपसृष्टे पहोन्था न  
होथ न पहुंचे हों, सिरा-स्नायु-सिरा, स्नायु सिरा, स्नायु,  
मांसह्लेदे अने मांसने उर्ध्व और मांस गल गये,  
अनुपगते वा न थये होथ ते न हो तो, साधारण-  
साधारण साधारण, क्रियाभिः चिकित्सा चिकित्साके,  
अभ्यस्यमानौ सतत करवाथी लगातार करनेपर, प्रशान्तिम्  
शान्त शान्त, आपयेयाताम् थय ये हो जाते हैं, तयोः  
ते अभांथी उन दोनोंमें, पुनः अन्यतरः गमे ते अेक कोई  
भी एक, अनादरोपक्रान्तः अनादर चिकित्सा न थतां  
सम्यक् चिकित्सा न करने पर, आशीविषवत् सर्पनी  
पेडे सर्पकी तरह, आशु एव शीघ्र शीघ्र ही, देहम्  
शरीरने देहको, हन्यात् हथे ये नष्ट करता है।

42-(1). The three varieties of acute spreading affections namely the vata type, the pitta type and the kapha type, are curable. The varieties, namely the fiery and slimy types of acute spreading affection, if not attended with complications, if not spread into vital regions, and if the vessels, muscles and flesh are not softened, can be subdued by the systematic and repeated application of the general measures of treatment. If treatment is not properly carried out, either of these types of

४२. साधारणक्रियाभिरुभावेवाभ्यस्यमानौ-साधारणक्रियाभिरुपायैः  
तावेवाभ्यस्यमानौ (ख. ड.)

४२. पुनरनुपसृष्टे-पुनरनुपसृष्टौ (ब.)

affections will destroy the body like a venomous serpent.

તથા ગ્રન્થિવિસર્પમજાતોપદ્રવમારમેત ચિકિત્સિતુમ્, ઉપદ્રવોપદ્રુતં ત્વેનં પરિહરેત્; સન્નિપાતજં તુ સર્વધાત્વનુસારિત્વાદાશુકારિત્વાદિરુદ્ધોપક્રમત્વાચ્છાસાધ્યં વિદ્યાત્ ॥૪૨॥

તથા તથા તથા, અજાતોપદ્રવજ્ઞ ઉપદ્રવ ચિનાના ઉપદ્રવરહિત, ગ્રન્થિવિસર્પમ્ ગ્રન્થિવિસર્પની ગ્રન્થિવિસર્પકી, ચિકિત્સિતુમ્ ચિકિત્સાનો ચિકિત્સા, આરમેત આરભ કરવો શુરુ કરે, ઉપદ્રવોપદ્રુતમ્ ઉપદ્રવયુક્ત ઉપદ્રવયુક્ત, એનમ્ તેને ઉસકો, તુ તેા તેા, પરિહરેત તથા દેશે હોજ દે, સન્નિપાતજમ્ તુ સન્નિપાતજન્ય તેા સન્નિપાતજ તેા, સર્વધાત્વનુસારિત્વા સર્વ ધાતુને અનુસરનાર સર્વ ધાતુઓકો અનુસરનેવાલા, આશુકારિત્વા આશુકારી આશુકારી, ચિકિત્સાવિરુદ્ધોપક્રમત્વા અને વિરુદ્ધ ઉપક્રમેવાળો હોવાથી ઓર વિરુદ્ધ ઉપક્રમવાલા હોનેસે, અસાધ્યમ્ અસાધ્ય અસાધ્ય, વિદ્યાત્ બાણુવો જાનનાં વાદિય ॥ ૪૨ ॥

42. As regards the nodular type of acute spreading affection, the treatment should be begun well before complications have supervened. The patient overtaken by complications is to be given up as hopeless. As regards the acute spreading affection of the tridiscordance type, it should be considered incurable as it gets spread into all the body-elements, as it is of the fulminating character, and as there are mutually antagonistic measures involved in the line of treatment.

વિસર્પેષુ ચિકિત્સાસૂત્રમ્—

તત્ર સાધ્યાનાં સાધનમનુવ્યાખ્યાસ્યામઃ ॥૪૩॥

૪૨. સર્વધાત્વનુસારિત્વા આશુકારિત્વા—સર્વધાતુસુપસારિત્વા (ધ.)

તત્ર તેઓભાં ઉતર્મે, સાધ્યાનામ્ સાધ્યની સાધ્યોકી, સાધનમ્ ચિકિત્સાનું ચિકિત્સાકા, અનુવ્યાખ્યાસ્યામઃ અમે વ્યાખ્યાન કરશું વ્યાખ્યાન કરેમે ॥૪૩॥

43. We shall hereafter describe the remedies for those varieties of acute spreading affections which are curable.

લઙ્ઘનોલ્લેખને શસ્ત્રે તિક્તકાનાં ચ સેવનમ્ ।

કફસ્થાનગતે સામે રુક્ષશીતૈઃ પ્રલેપયેત્ ॥૪૪॥

સામે એ દોષ આમયુક્ત હોય વદિ દોષ આમયુક્ત હો, કફસ્થાનગતે અને કફસ્થાનગત હોય તેા ઓર કફસ્થાનગત હો તેા, લઙ્ઘનોલ્લેખને લંઘન-વમન લઙ્ઘન-વમન, શસ્ત્રે પ્રશસ્ત છે પ્રશસ્ત હૈં, તિક્તકાનામ્ ચ અને તિક્ત દ્રવ્યોનું ઓર તિક્ત દ્રવ્યોકા, સેવનમ્ સેવન પણ પ્રશસ્ત છે સેવન મી પ્રશસ્ત હૈ, રુક્ષશીતૈઃ વળી રુક્ષ તથા શીતળ દ્રવ્યોથી પુનઃ રુક્ષ તથા શીતળ દ્રવ્યોસે, પ્રલેપનમ્ પ્રલેપન કરવું એઈ એ પ્રલેપ કરના વાદિય ॥૪૪॥

44. In the acute spreading affection that affects the habitat of kapha and is accompanied with chyme morbidity, fasting and emesis are recommended as also the use of bitter drugs and applications of drugs that are dehydrating and refrigerant.

પિત્તસ્થાનગતેऽપ્યેતત્ સામે કુર્યાન્નિચિકિત્સિતમ્ ।

શોણિતસ્યાવસેકં ચ વિરેકં ચ વિશેષતઃ ॥૪૫॥

સામે એ દોષ આમયુક્ત હોય વદિ દોષ આમયુક્ત હો, પિત્તસ્થાનગતે અને પિત્તસ્થાનગત હોય તેા ઓર પિત્તસ્થાનગત હો તેા, અપિ પણ મી, પૃત્ત આ બે યદી, ચિકિત્સિતમ્ ચિકિત્સા કરવી ચિકિત્સા કરની વાદિય, વિશેષતઃ અને વિશેષમાં ઓર વિશેષમે, શોણિતસ્ય અવસેકમ્ રક્તાવસેચન રક્તમોક્ષણ, વિરેકમ્ ચ અને વિરેચન ઓર વિરેચન, કુર્યાન્ આપતું દેના વાદિય ॥ ૪૫ ॥

૪૪. સેવનમ્—સાધનમ્ (વ.)

,, પ્રલેપયેત્—ચ લેપનમ્ (ગ.)

,, ,, —પ્રલેપનમ્ (વ.)

૪૫. ચિકિત્સિતમ્—મિપિજિતમ્ (ગ. બ.)



45. The same treatment holds good in acute spreading affection that affects the habitat of pitta and is associated with chyme morbidity. In addition, blood letting and purgation are specially to be carried out.

मारुताशयसंभूतेऽप्यादितः स्याद्विरूक्षणम् ।  
रक्तपित्तान्वयेऽप्यादौ स्नेहनं न हितं मतम् ॥४६॥

मारुताशय- वाताशयभा वाताशयमें, संभूते उत्पन्न थयेले विसर्पभा उत्पन्न हुए विसर्पमें, अपि पलु सी, आदितः प्रथमथीन प्रथम, विरूक्षणम् विश्लेषण रूक्षण, स्नान करुं करे, रक्तपित्तान्वये रक्तपित्तने अनुपयुक्त अर्था रक्तपित्तका अनुबन्ध होनेपर, अपि पलु सी, आदौ प्रथम प्रथम, स्नेहनम् स्नेहन स्नेहन, हितम् हितकारक हितकर, न मतम् मान्युं नहीं नहीं माना गया है ॥४६॥

46. Even in the case of disorder that affects the habitat of vata, measures that cause the de-oiled condition of the system are indicated at first. Even in spreading disorder of the hemothermic condition, the use of unctuous articles is regarded as contra-indicated.

वातोल्बणे तिक्तघृतं पैत्तिके च प्रशस्यते ।  
लघुदोषे, महादोषे पौत्तिके स्याद्विरेचनम् ॥४७॥

वातोल्बणे वातप्रधान विसर्पभा वातप्रधान विसर्पमें, लघुदोषे अने लघु दोषयुक्त और अल्प दोषयुक्त, पौत्तिके च पौत्तिक विसर्पभा पौत्तिक विसर्पमें, तिक्तघृतम् तिक्तघृत तिक्तघृत, प्रशस्यते प्रशस्त छे प्रशस्त है, महादोषे महादोषयुक्त महादोषयुक्त, पौत्तिके पौत्तिक विसर्पभा पौत्तिक विसर्पमें, विरेचनम् विरेचन विरेचन, स्यात् आपनुं लेई देना चाहिए ॥ ४७ ॥

47. In disorders characterised by excess of vata, as also by disorders caused by pitta of mild intensity, ghee medicated with bitter drugs is recom-

mended; but if the pitta is of great intensity then purgation should be resorted to.

न घृतं बहुदोषाय देयं यन्न विरेचयेत् ।  
तेन दोषो ह्यपष्टब्धस्त्वङ्मांसरुधिरं पचेत् ॥४८॥

बहुदोषाय बहुदोषवाशने बहुदोषवालेको, यन्न लेजो, न विरेचयेत् विरेचन न करावे औषुं लेथ विरेचन न हो, तत् ते वह, घृतम् घी घृत, न देयम् न देवुं नहीं देना चाहिए, हि कारुण्य के क्योंकि, तेन तेथी उससे, अपष्टब्धः अटकावथेले रुके हुए, दोषः दोष दोष, त्वङ्मांसरुधिरम् त्वचा, मांस अने रक्तने त्वचा, मांस और रक्तको, पचेत् पकावे छे पकाते हैं ॥ ४८ ॥

48. That patient, in whom the pitta disorder is of great intensity, should not be given ghee that does not cause purgation, for, the morbid matter thus getting occluded, consumes the skin, flesh and blood.

तस्माद्विरेकमेवादौ शस्तं विद्याद्विसर्पिणः ।  
रुधिरस्यावलेकं च तद्व्यस्याश्रयसंज्ञितम् ॥४९॥

तस्मात् तेथी इसलिए, विसर्पिणः विसर्पभा रोगीने भाटे विसर्पके रोगीके लिए, आदौ प्रथमथी प्रथम, विरेकम् एव विरेचन विरेचन, ज्ञास्तम् प्रशस्त प्रशस्त, विद्यात् आधुनुं जाने, रुधिरस्य अवलेकम् च तथा रक्तान्वसेयनने पलु प्रशस्त आधुनुं तथा रक्तमोक्षणको भी प्रशस्त जाने, हि कारुण्य के क्योंकि, तत् ते दुष्ट रुधिर वह दुष्ट रुधिर, अस्य आ विसर्पभा इस विसर्पका, आश्रयसंज्ञितम् आश्रय कहेवाथ छे आश्रय कहाता है ॥ ४९ ॥

49. In view of this, it should be known that in acute spreading

४८. यन्न-तं च (घ. फ.)

४९. विसर्पिणः-विचक्षणः (घ. ब.)

,, रुधिरस्य-शोणितस्य (घ.)

,, तद्व्यस्याश्रय-तद्व्यपाश्रय (त.)



affections, purgation is the first procedure that should be carried out and then blood letting, for the blood is considered the support or the means for the spread of the disorders.

इति वीसर्पण्युक् प्रोक्तं समासेन चिकित्सितम् ।  
एतदेव पुनः सर्वं व्यासतः संप्रवक्ष्यते ॥५०॥

इति आम् इस प्रकार, विसर्पण्युक् विसर्पण्युक् विसर्पण्युक्, चिकित्सितम् (चिकित्सा चिकित्सा, समासेन सञ्क्षेपणी संक्षेपसे, प्रोक्तम् उद्धृष्टं कही है, एतद् एव येन येन वही, सर्वम् अधुना सब, पुनः द्वितीय फिसे, व्यासतः विस्तारणी विस्तारसे, संप्रवक्ष्यते उद्धृष्टं कही जायगा ॥ ५० ॥

50. Thus has been described the therapeutics of Visarpa in brief. The subject is again dealt with in extenso.

विसर्पे वमनम् —

मदनं मधुकं निम्बं वत्सकस्य फलानि च ।  
वमनं संप्रदातव्यं विसर्पे कफपित्तजे ॥५१॥

कफपित्तजे उद्धृष्टान्म कफपित्तजन्य, विसर्पे विसर्पे विसर्पे, मदनम् भीमं मैनफल, मधुकम् नेली-मधु मुलहठी, निम्बम् भीमं नीम, वत्सकस्य फलानि च अने धन्वन्त और इन्द्रजौ, वमनम् ये वमन उद्वा-नार्त द्रव्य ये वमनार्थ द्रव्य, संप्रदातव्यम् आपना देना चाहिए ॥ ५१ ॥

51. In Visarpa born of kapha-cum-pitta provocation, the physician should administer an emetic made of common emetic nut, liquorice, neem and the fruits of kurchi.

पटोलपिचुमर्दाभ्यां पिप्पल्या मद्नेन च ।  
विसर्पे वमनं शस्तं तथा चेन्द्रयवैः सह ॥५२॥

५०. इति वीसर्पण्युक् प्रोक्तं-इति वीसर्पण्युक् (क. व. छ.)  
५२. पिचुमर्दाभ्याम्-पिचुमर्दाभ्याम् (व.)

विसर्पे विसर्पे विसर्पे, पटोल- पटोल पटोल, पिचुमर्दाभ्याम् भीमं नीम, पिप्पल्या पीपल पिप्पली, मद्नेन च अने भीमं नीम और मैनफलसे, तथा तथा तथा, इन्द्रयवैः सह धन्वन्तरी इन्द्रजौसे, वमनम् वमन उद्वा-नार्त वमन कराना, शास्त्रम् प्रशस्त छे प्रशस्त है ॥५२॥

52. In Visarpa, the administration of emesis with the decoction of the bitter snake gourd, neem, long pepper and emetic nut, as also with the pulvis of kurchi seeds, is recommended.

यांश्च योगान् प्रवक्ष्यामि कल्पेषु कफपित्तिनाम् ।  
विसर्पिणां प्रयोज्यास्ते दोषनिर्हरणाः शिवाः ॥५३॥

कल्पेषु उद्धृष्टान्म कल्पस्थानमें, कफपित्तिनाम् उद्धृष्टान्म रोगीओ भाटे कफपित्तवालोंके लिए, यान् ने जिन, योगान् च योगो योगों, प्रवक्ष्यामि उद्धृष्टान्म मैं कहूंगा, ते ते वे, दोषनिर्हरणाः दोष हरना दोषनाशक, शिवाः अने उद्धृष्टान्म रोगीओ एवं कल्याणकारी योगों, विसर्पिणाम् विसर्पे रोगीओने विसर्पेवालोंको, प्रयोज्याः प्रयोग उद्वा-नार्त नेधुं प्रयोग कराने चाहिए ॥ ५३ ॥

53. Further, all those medicaments which will be described in the Section on Pharmaceutics in connection with the disorders of kapha and pitta, are recommended in cases of Visarpa, for these medicaments are eliminative of morbidity and generally beneficial.

विसर्पण्युक् कषाययोगाः—

सुस्तनिम्बपटोलानां चन्दनोत्पलयोरपि ।  
सारिवामलकोशीरमुस्तानां वा विचक्षणः ॥५४॥  
कषायान् पाययेद्वैद्यः सिद्धान् वीसर्पण्युक् ।

५३. प्रयोज्यास्ते-तु योज्यास्ते (व.)

५४. शिवाः-परम् (व.)

५४. पाययेद्वैद्यः-योजयेद्वैद्यः (व. त.)

विचक्षणः विचक्षणः, वैद्यः वैद्ये वैद्य, सुस्त  
नागरमेथ मोथ, निम्ब- लीमशे नीम, पटोलानाम्  
अने परवणना और पटोलके, चन्दनोरपलयोः अपि  
अथवा अंन अने नीलकुम्भणना अथवा चन्दन और  
नीलोकरके, सारिवा- अथवा उपलसरी अथवा सारिवा,  
कामलक- आमणा आंबला, उशीर- वाणो खस, मुस्ता-  
नाम् वा अने नागरमेथना एवं मोथके, सिद्धान् सिद्ध  
सिद्ध, वीसर्पनाशनान् विसर्पनाशक विसर्पनाशक, कषायान्  
कषायोको, पाययेत् पावा पिलावे ॥ ५४३ ॥

54-54½. The skilful physician should  
administer, for the cure of acute spread-  
ing affections, the decoctions of tested  
efficacy of nut-grass, neem, wild snake-  
gourd, or of sandal wood and blue  
water lily or of indian sarsaparilla,  
emblic myrobalan, cuscus grass and  
nut grass.

किराततित्कादिकषायः—

किराततित्ककं लोध्रं चन्दनं सदुरालभम् ॥ ५५ ॥  
नागरं पद्मकिञ्जल्कमुत्पलं सबिभीतकम् ।  
मधुकं नागपुष्पं च दद्याद्वीसर्पशान्तये ॥ ५६ ॥

किराततित्ककम् किरियातुं चिरायता, लोध्रम् शोध्र  
लोध्र, सदुरालभम् अमासे दुरालभा, चन्दनम् अंन  
चन्दन, नागरम् सूँठ सोंठ, पद्मकिञ्जल्कम् पद्मना केसर  
पद्मकेसर, सबिभीतकम् अहेडा बहेडा, उत्पलम् नीलकुम्भ  
नीलोकर, मधुकम् लोठीमधु मुलहठी, नागपुष्पम् च  
अने नागकेसर ऐओनो कषाय और नागकेसर इनका  
काथ, विसर्प- विसर्पनी विसर्पकी, शान्तये शान्ति भाटे  
शान्तिके लिए, दद्यात् आपवे देवे ॥ ५५-५६ ॥

55-56. Or, he may administer for  
the alleviation of Visarpa, the decoction  
of chiretta, lodh, sandal wood, cretan  
prickly clover, dry ginger, the stamens

५६. मधुकं नागपुष्पं च दद्याद्वीसर्पशान्तये—नागपुष्पं च रोध्रं च  
तेनैव विधिना पिबेत् (ग.)

of red lotus, blue water lily, emblic  
myroablan, liquorice and fragrant  
poon.

प्रपौण्डरीकादिकाथः—

प्रपौण्डरीकं मधुकं पद्मकिञ्जल्कमुत्पलम् ।  
नागपुष्पं च लोध्रं च तेनैव विधिना पिबेत् ॥ ५७ ॥

प्रपौण्डरीकम् प्रपौंडरीक पुण्डरीक, मधुकम् लोठी-  
मधु मुलहठी, पद्मकिञ्जल्कम् कुम्भणना केसर कमलकेसर,  
उत्पलम् नीलकुम्भ नीलोकर, नागपुष्पम् च लोध्र  
नागकेसर रक्त नागकेसर, लोध्रम् च अने शोध्र  
ऐओनो कषाय और लोध्र इनका काथ, तेन एव ते व  
उसी, विधिना विधिनी विधिसे, पिबेत् पीवे पीवे ॥ ५७ ॥

57. Or tubers of white lotus, liquo-  
rice, the stamens of the red lotus, blue  
water lily, fragrant poon and lodh  
may likewise be decocted and drunk.

द्राक्षादिशीतकषायः—

द्राक्षां पर्पटकं शुण्ठीं गुडूचीं घन्वयासकम् ।  
निशापर्युषितं दद्यात्तृष्णावीसर्पशान्तये ॥ ५८ ॥

निशा- आभी रात रातभर, पर्युषितम् पाणीमां  
रात्रेक्षा जलमें रखे हुए, द्राक्षां द्राक्ष मुनका, पर्पटकम्  
असर्पक्षये पित्तपापडा, शुण्ठीम् सूँठ सोंठ, गुडूचीम् गौ  
गिलोय, घन्वयासकम् अने अमासे ऐओनु हिम और  
अमासा इनके हिमको, तृष्णा- तृष्णा प्यास, वीसर्पशान्तये  
अने विसर्पनी शान्ति भाटे और विसर्पकी शान्तिके लिए,  
दद्यात् देव देना चाहिए ॥ ५८ ॥

58. For the alleviation of the thirst  
accompanying acute spreading affections  
as also of the disease itself, the physi-  
cian should give a potion of the cold  
infusion made from grapes, trailing  
rurgia, dry ginger, guduch and cretan

५८. द्राक्षां पर्पटकं शुण्ठीं—दुरालभां पर्पटकम् (ग.)

., द्राक्षां पर्पटकं शुण्ठीं गुडूचीं घन्वयासकम्—दुरालभां पर्पटकं  
गुडूचीं विश्वमेपजम् (द.)

prickly clover, which have been kept overnight.

પટોલં પિચુમર્દં ચ દાર્ઘીં કટુકરોહિણીમ્ ।

યદ્યથાહ્વાં ત્રાયમાણાં ચ દદ્યાદ્વીસર્પશાન્તયે ॥૫૯॥

પટોલ ૫૨૧ળ પાવલ, પિચુમર્દ ૯૧૩૦ નીમ, દાર્ઘીમ્ ૬૨૬૧૬૨ વાલ્હલી, કટુકરોહિણીમ્ ચ કટુ કટુકી, યદ્યથાહ્વાં ૯૯૧૩૫ મુલહરી, ત્રાયમાણામ્ ચ અને ત્રાયમાણુ ઔર ત્રાયમાણા, વીસર્પશાન્તયે વિસર્પની શાન્તિને માટે વિસર્પકી શાન્તિકે લિપ્, દદ્યાત્ આપરું દેવે ॥ ૫૯ ॥

59. The physician may also give the decoction of the wild snake gourd, neem, indian berberry, kurroa, liquorice and zalil for the alleviation of Visarpa.

પટોલાદિકષાયઃ—

પટોલાદિકષાયં વા પિબેત્ ત્રિફલયા સહ ।

મસૂરવિદલૈર્યુક્તં ઘૃતમિશ્રં પ્રદાપયેત્ ॥૬૦॥

પટોલાદિકષાયમ્ વા અથવા પટોલાદિ કનાથ અથવા પટોલાદિ કાથકો, ત્રિફલયા સહ ત્રિફળાની સાથે ત્રિફલકે સાથ, પિબેત્ પીલો પીલે, મસૂરવિદલૈઃ અથવા મસૂરની દાળની અથવા મસૂરકી દાલકે, યુક્તમ્ સાથે સાથ, ઘૃતમિશ્રમ્ ઘૃતમિશ્ર કરી વી મિલાકર, પ્રદાપયેત્ પટોલાદિ કનાથ આપરું પટોલાદિ કાથ દેવે ॥ ૬૦ ॥

60. The patient may also take the decoction of the wild snake gourd etc., (mentioned above) with the pulvis of the three myrobalauns, or he may be given a potion of the aforesaid decoction mixed with the soup of lentil-pulse mixed with ghee.

પટોલપત્રસુદાનાં રસમામલકસ્ય ચ ।

પાયયેત્ ઘૃતોન્મિશ્રં નરં વીસર્પપીડિતમ્ ॥૬૧॥

૫૯. વીસર્પશાન્તયે-વીસર્પનાશનમ્ (ધ.)

૬૦. પિબેત્ ત્રિફલયા-મિશ્રક ત્રિફલયા (ધ.)

પટોલપત્ર- ૫૨૧ળનાં પાન પરવલકે પત્તે, સુદાનામ્ મળ મુંગ, મામલકસ્ય ચ અને આમળાને ઔર આવલકે, રસમ્ કનાથ કષાયકો, ઘૃત-ઝન્મિશ્રમ્ ધીથી મિશ્રિત કરી ઘૃતકે મિશ્રિત કર, વીસર્પપીડિતમ્ વિસર્પથી પીડાયેલા વિસર્પકે પીડિત, નરમ્ મનુષ્યને મનુષ્યકો, પાયયેત્ પાવો પિલાવે ॥ ૬૧ ॥

61. The patient afflicted with acute spreading affections should be given as potion the decoction of the leaves of the wild snake-gourd, green gram and emblic myrobalauns, mixed with ghee.

વિસર્પે વિરેચનમ્—

યદ્ય સર્પિર્મહાતિકં પિત્તકુષ્ઠનિર્બર્હણમ્ ।

નિર્દિષ્ટં તદપિ પ્રાજ્ઞો દદ્યાદ્વીસર્પશાન્તયે ॥૬૨॥

પિત્તકુષ્ઠ- પિત્તકુષ્ઠને પિત્તકુષ્ઠકા, નિર્બર્હણમ્ ૬૬૫નાર નાશક, યત્ ચ ને જો, મહાતિકમ્ મહાતિકત મહાતિક, સર્પિઃ થી ઘૃત, નિર્દિષ્ટમ્ કહ્યું છે કહા છે, તત્ તે ઉપકો, અપિ પશુ મી, પ્રાજ્ઞઃ બુદ્ધિમાન વૈદ્યે બુદ્ધિમાન વૈદ્ય, વીસર્પશાન્તયે વિસર્પની શાન્તિ માટે વિસર્પકી શાન્તિકે લિપ્, દદ્યાત્ આપરું દેવે ॥ ૬૨ ॥

62. The intelligent physician may also give for the alleviation of Visarpa, the ghee named Maha-Tikta—the Great Bitter Ghee, which is laid down as curative of dermatosis of pitta type.

ત્રાયમાણાઘૃતં સિદ્ધં ગૌલ્મિકે યદુદાહૃતમ્ ।

વિસર્પાણાં પ્રશાન્ત્યર્થે દદ્યાત્તદપિ બુદ્ધિમાન્ ॥૬૩॥

ગૌલ્મિકે ગુલ્મચિકિત્સામાં ગુલ્મચિકિત્સામે, યત્ ને જો, સિદ્ધમ્ સિદ્ધ વિદ્, ત્રાયમાણાઘૃતમ્ ત્રાયમાણુ-ઘૃત ત્રાયમાણાઘૃત, ઉદાહૃતમ્ કહ્યું છે કહા છે, તત્ તે ઉપકો, અપિ પશુ મી, બુદ્ધિમાન્ બુદ્ધિમાન વૈદ્યે બુદ્ધિમાન વૈદ્ય, વિસર્પાણામ્ વિસર્પાની વિસર્પકી, પ્રશાન્ત્યર્થમ્ શાન્તિ માટે શાન્તિકે લિપ્, દદ્યાત્ આપરું દેવે ॥ ૬૩ ॥

63. The wise physician may also give for the alleviation of Visarpa the ghee made of zalil, which has been described as a tried remedy for gulma.

त्रिवृच्चूर्णं समालोक्ष्य सर्पिषा पयसाऽपि वा ।  
घर्माभुना वा संयोज्य सृङ्गीकानां रसेन वा ॥६४॥  
विरेकार्थं प्रयोक्तव्यं सिद्धं वीसर्पनाशनम् ।  
त्रायमाणानृतं वाऽपि पयो दद्याद्विरेचनम् ॥६५॥

त्रिवृत्- नसे।तरना निशोथके, चूर्णम् यूखुने चूर्णको, सर्पिषा धी भी, पयसा जपे वा दूध, घर्माभुना वा डे गरम पाखीमा या गरम पानीमें, समालोक्ष्य आलोक्षित करीने मिलाकर, सृङ्गीकानाम् वा अथवा प्राक्षणा या मुतकाके, रसेन रसमा रससे, संयोज्य भेणवीने मिलाकर, विरेकार्थम् विरेचन भाटे विरेचनके लिए, प्रयोक्तव्यम् ये।वृत् प्रयुक्त करे, सिद्धम् ते सिद्ध वह सिद्ध, वीसर्पनाशनम् विसर्पनाशक छे विसर्पनाशक है, त्रायमाणानृतम् वा अपि अथवा त्रायमाणुथी पडावेध और त्रायमाणसे सिद्ध किया हुआ, पयः दूध, विरेचनम् विरेचन भाटे विरेचनार्थ, दद्यात् आपवुं पिलावे ॥ ६४-६५ ॥

64-65. For the eradication of Visarpa, the physician may administer as a purgative the pulvis of turpeth mixing it well with ghee or milk, or the pulvis may be given in hot water or with the juice of grapes, or milk in which zalil has been decocted may be given to induce purgation.

त्रिफलारससंयुक्तं सर्पिस्त्रिवृतया सह ।  
प्रयोक्तव्यं विरेकार्थं विसर्पज्वरनाशनम् ॥६६॥

त्रिफलारस- त्रिफलानां अनाथथी त्रिफलाके कषायसे, संयुक्तम् युक्त युक्त, सर्पिः धी वृतका, त्रिवृतया नसे।तर

निशोथके, सह साथे साथ, विरेकार्थम् विरेचन भाटे विरेचनके लिए, प्रयोक्तव्यम् ये।वृत् प्रयोग करे, विसर्प- ज्वर-नाशनम् ते विसर्प तथा ज्वरने। नाश करे छे वह विसर्प तथा ज्वरको नष्ट करता है ॥ ६६ ॥

66. The ghee mixed with the decoction of the three myrobalans and the pulvis of turpeth should be used as a purgative in cases of acute spreading affections accompanied with fever

रसमामलकानां वा घृतमिश्रं प्रदापयेत् ।  
स एव गुरुकोष्ठाय त्रिवृच्चूर्णयुतो हितः ॥६७॥  
दोषे कोष्ठगते भूय एतत् कुर्याच्चिकित्सितम् ।

घृतमिश्रम् अथवा घृतमिश्रित या घृतमें मिलाकर, आमलकानाम् आमलानां आवलेका, रसम् वा रस रस, प्रदापयेत् आपवे। देवे, त्रिवृत्- नसे।तरना निशोथके, चूर्ण- यूखुथी चूर्णसे, युतः युक्त युक्त, सः एव ते वही आवलेका रस, गुरुकोष्ठाय गुरुकोष्ठ पुरुषने गुरुकोष्ठ-वालेके लिए, हितः हित करने।र छे अच्छा है, कोष्ठगते कोष्ठगत कोष्ठगत, दोषे दोषमा दोषमें, भूयः बहु।अरुं प्रायः, एतत् आ यह, चिकित्सितम् चिकित्सा चिकित्सा, कुर्यात् करे। करे ॥ ६७ ॥

67-67½. Or the juice of emblic myrobalans mixed with ghee may be given. The same combined with turpeth powder is recommended in a patient with hard bowels. If the morbidity has passed into the alimentary tract, this should be the line of treatment.

विसर्पे रक्तनावः—

शाखादुष्टे तु रुधिरं रक्तमेवादितो हरेत् ॥६८॥  
मिषग्वान्वितं रक्तं विषाणेन निनिर्हरेत् ।  
पित्तान्वितं जलौकोभिः, कफान्वितमलाबुभिः ६९  
यथासक्तं विकारस्य व्यधयेदाशु वा सिराम् ।  
त्वक्कांसलायुसंक्षेपो रक्तक्षेदादि जायते ॥७०॥

रुधिरं दोषा रक्तं, आखादुद्वे शाखायां दूषितं यत्।  
शाखाओंमें दूषित होनेपर, तु तो तो, जादितः एव  
प्रथमं च प्रथम ही, रक्तम् रक्तं रक्तका हरेत् निर्दोषं  
उत्पुं मोक्षण करना चाहिए, मिषकू वैद्य वैद्य, वाता-  
नितम् वातयुक्तं वातयुक्त, रक्तम् रक्तने रक्तको,  
विषाणेन शीघ्रं शीघ्र से, पित्तान्वितम् पित्तयुक्त  
रक्तने पिषयुक्त रक्तको, जलौकोभिः जलौकी जोंकसे,  
कफान्वितम् च चने कफयुक्त रक्त और कफयुक्त रक्तको,  
जलावुभिः तूंगीयौ तुम्बीसे, विनिर्दोषं उत्पुं निकाले,  
विकारस्य अध्वना रोगस्थानं या विकारके स्थानके,  
यथासंभव पासे रहेली पास रही हुई, सिराया वा शिराने  
सिराको, आशु औकम शीघ्र, व्यवयेत् वीधरी वेधन करे,  
दि उत्पुं के क्योंकि, रक्तहेदात् रक्तने कहेदात् यत्  
रक्तके कहेदात्, त्वक्-मांस-आम्ली, मांस त्वचा, मांस,  
स्नायुसंकेदः अने स्नायुने कहेदात् और स्नायुओंमें कहेदात्,  
जायते थाय छे होता है ॥ ६८-७० ॥

68-70. If the blood has been viti-  
ated in the peripheral region, then it  
is blood-letting that the physician  
should do at the outset. The physician  
should perform depletion by the suda-  
tion method with the use of the  
cupping horn, if the blood has been  
vitiated by vata; if by pitta, by the  
application of leeches; and if the blood  
is vitiated by kapha, then blood should  
be let by means of the vacuum method  
with the use of the bitter gourd. It is  
the vein that is situated nearest the site  
of the affection that should be promptly  
opened; for it is on account of the  
vitiation of the blood that the vitiation  
of the skin, flesh and tendons ensues.  
विसर्पे प्रदेहयोगः—

अन्तःशरीरे संशुद्धे दोषे त्वङ्मांससंश्रिते ।

७१. अन्तःशरीरे संशुद्धे-एवं निवृत्तदोषाणां (ब. त. द. घ. क.)

७१. , , , , -बाह्यनिवृत्तदोषाणाम् (घ. न.)

आसितो वाऽल्पदोषाणां क्रिया बाह्या प्रवक्ष्यते ॥७२॥

अन्तःशरीरे अन्तःशरीर अन्दरके शरीरके, संशुद्धे  
शुद्ध यत् शुद्ध होचामे पर, दोषे नेओला दोषो जिवके  
दोष, त्वङ्मांस-आम्ली अने मांसमां त्वचा और  
मांसमें, संश्रिते रक्ता होय तेओने भाटे रहे हों उनके  
लिए, आदितः वा अध्वना प्रथमं च या प्रथमसे ही,  
अल्पदोषाणाम् नेओ अल्प दोषाणाम् होय तेओने  
भाटे जो अल्प दोषवाले हों उनके लिए, बाह्या बाह्य  
बाह्य क्रिया यिदित्सा क्रिया, प्रवक्ष्यते कहेचामां याचसे  
कही जायेगी ॥ ७१ ॥

71 When, by the above-mentioned  
procedures, the inside of the body has  
been purified, and the morbidity  
remains only in the skin and the flesh,  
or in the case of slight morbidity of  
humors from the very outset, the  
external treatment to be carried out  
will now be described.

उदुम्बरादिप्रदेहः—

उदुम्बरत्वङ्मधुकं पद्मकिञ्जल्कमुत्पलम् ।

नागपुष्पं प्रियङ्गुश्च प्रदेहः सघृतो हितः ॥७२॥

उदुम्बरत्वक् उमरडानी आल गुलकी छाल,  
मधुकम् नेहीमधु मुलहठी, पद्मकिञ्जल्कम् पद्मनी केसर  
पद्मकेसर, उत्पलम् नीलकेसर नीलोकर, नागपुष्पम् आल  
नागकेसर रक्त नागकेसर, प्रियङ्गुः च चने घडेला  
ओओने और प्रियंगु इनका, सघृतः घी भेजवेद्य घीके  
साथ, प्रदेहः लेप लेप, हितः हितकर्ता छे हितकारी  
है ॥ ७२ ॥

72. An application of the paste of  
the bark of gular fig, liquorice,  
stamens of the red lotus and the blue  
water lily, fragrant poonand perfumed  
cherry mixed with ghee is beneficial.

७१. वाऽल्पदोषाणां (ब.)

७१. , , , , क्रिया बाह्या प्रवक्ष्यते-क्रिया बाह्यां प्रयोजयेत् (घ. न.)

न्यग्रोधपादाद्यलेपः—

न्यग्रोधपादास्तरुणाः कदलीगर्भसंयुताः ।

विसम्प्रस्थिश्च लेपः स्याच्छतघृतवृताप्लुतः ॥७३॥

कदलीगर्भः डेणना रसधाना पत्राणां दंड कदलीके स्तम्भके बीचके दण्डके, संयुताः अर्द्धित साथ, तरुणाः डेणना कोमल, न्यग्रोधपादाः पत्रार्ध कटकी जडा, विसम्प्रस्थिः च अने डेणनाके और कमलकन्द, इत्येवम् ओओने। इनका सतघृत-से। पश्चात् दोधैः। सतघृत, घृताप्लुतः बीमां भेजवे। घृतमें मिलाया हुआ लेपः दोषलेप, स्यात् करवे। करना चाहिए ॥ ७३ ॥

73. The paste made of the tender aerial roots of the banyan tree together with the pith of the plaintain and lotus nodes and mixed with the hundred times washed ghee, makes a good unguent.

कालीयादिप्रलेपः—

कालीयं मधुकं हेम जन्मं चन्दनपद्मकौ ।

एला मृणालं फलिनी प्रलेपः स्याद्घृताप्लुतः ॥७४॥

कालीयम् पीणुं यन्म पीला चन्दन, मधुकम् जेडीमध मुलहठी, हेम लाव नागसेसर रक्त नागकेसर, जन्मम् डेवडीमोथ केवटीमोथा, चन्दन- अन्म चन्दन, पद्मकौ पद्मक पद्माक्ष, एला ओल्लयी इलायची, मृणालम् भृशुल मृणाल, फलिनी च अने धडिं। ओओने और प्रियंगु इनको, घृताप्लुतः बीमां भेजवे। घृतमें मिलाया हुआ लेपः दोषलेप, स्यात् करवे। करना चाहिए ॥ ७४ ॥

74. A good application may also be made from the paste of yellow sandal, liquorice, fragrant poon, rush nut, sandal wood, himalayan cherry, small cardamom, lotus stalks and perfumed cherry mixed with ghee.

शाद्वलादिप्रदेहः—

शाद्वलं च मृणालं च शङ्खं चन्दनमुत्पलम् ।

वेतसस्य च मूलानि प्रदेहः स्यात् सतण्डुलः ॥७५॥

शाद्वलम् च ध्रुव, मृणालम् च भृशुल मृणाल, शङ्खम् शंख शङ्ख, चन्दनम् अन्म चन्दन, उत्पलम् नील डेणना नीलोफर, वेतसस्य अने वेतसना और वेतसके, मूलानि च भूण मूल, एतेष्वम् ओओने। इनका, सतण्डुलः तण्डुलनी साथे तण्डुलके साथ, प्रदेहः दोषलेप, स्यात् करवे। करना चाहिए ॥ ७५ ॥

75. Scutch grass, lotus stalks, the pulvis of conch shells, sandal wood, blue water-lily and the roots of the country willow, together with rice may be reduced to paste and used as an application.

सारिवादिप्रलेपः—

सारिवा पद्मकिञ्जल्कमुशीरं नीलमुत्पलम् ।

मज्जिष्ठाचन्दनं लोधमभया च प्रलेपनम् ॥७६॥

सारिवा सारिवा कपूरी, पद्मकिञ्जल्कम् डेणनाकेसर पद्मकेसर, मुशीरम् वीरुने। वाणे। खस, नीलम् उत्पलम् नीलडेणना नीलोफर, मज्जिष्ठा मज्जि मंजीठ, चन्दनम् अन्म चन्दन, लोधम् दोध। लोध, अभया च अने डेरे ओओने। और इरड उनका, प्रलेपनम् दोषलेप, स्यात् करवे। करना चाहिए ॥ ७६ ॥

76. The paste of indian sarsaparilla, the stamens of the red lotus, cuscus grass, blue water lily, madder, sandal wood, lodh and chebulic myrobalan, makes a good application.

नलदादिप्रलेपः—

नलदं च हरेणुश्च लोधं मधुकपद्मकौ ।

दूर्वा सर्जरसश्चैव सघृतं स्यात् प्रलेपनम् ॥७७॥

७३. विसम्प्रस्थिश्च लेपः स्याच्छतघृतवृताप्लुतः—पद्मं मृणालं फलिनी प्रलेपः स्याद्घृताप्लुतः (क.)

७४. एला-पद्म (व. त. द. फ.)

७५. शाद्वलं-शाद्वलं (क. त. फ.)

, स्यात् सतण्डुलः-स्याद् घृतप्लुतः (व.)

७७. मधुकपद्मकौ-मधुकमुत्पलम् (व. त. व. क.)

नलदम् च जटामांसी जटामांसी, हरेणुः च रेणु-  
रेणुका, लोध्रम् धोधर लोध, मधुक- जेरीमध मुलहठी,  
पद्मकौ पद्मक पद्माख, दुर्वा ध्री दुव, सर्जरसः च एव  
अने राण ऐओने। और राल इनका, सघृतम् धीथी  
मुक्त घृतमें मिलाकर, प्रलेपनम् लेप लेप, खाद  
करवा करे ॥ ७७ ॥

77. Nardus and fragrant piper,  
lodh, liquorice, himalayan cherry,  
scutch grass and calophany mixed  
with ghee make a good application.

प्रदेहयोगाः—

यावकाः सक्तवश्चैव सर्पिषा सह योजिताः ।  
प्रदेहो मधुकं वीरा सघृता यवसक्तवः ॥७८॥

यावकाः जवनी यवागू जौकी यवागू, सक्तवः अने  
साथवे। ऐओमांसी डोई ओकने और सत् इनमेंसे किसी  
एकको, सर्पिषा धीनी घृतके, सह साथे साथ, योजितः  
मेणवीने प्रदेह करवा मिलाकर प्रदेह करे, मधुकम् जेरी-  
मध मुलहठी, वीरा शतावरी शतावर, यवसक्तवः अने  
जवने। साथवे। ऐओने पक्षु और जौका सत् इनको  
सी, सघृता धीमां मेणवी धीमें मिलाकर, प्रदेहः लेप  
करवा प्रलेप करना चाहिए ॥ ७८ ॥

78. A good application may also  
be made of the paste of barley flour  
or roasted paddy flour mixed with  
ghee; or of fried barley flour mixed  
with liquorice, milky yam and ghee.

बलामुत्पलशालूकं वीरामगुरुचन्दनम् ।  
कुर्यादालेपनं वैद्यो मृणालं च बिसान्वितम् ॥७९॥

वैद्यः वैद्य वैद्य, बलाम् जला बला, उत्पल- नील-  
उभण नीलोफर, शालूकम् उभणकंद कमलकंद, वीराम्  
शतावरी शतावर, अगुरु- अगुरु अगर, चन्दनम् चन्दन  
चंदन, बिसान्वितम् उभणभूण कमलमूल, मृणालम्

७८. प्रदेहो-प्रदेहा (क. व.)

७९. कुर्याद-दद्यात् (व. थ.)

अने उभणकंद ऐओने। और कमलकंद इनका, आलेपनम्  
लेप लेप. कुर्यात् करवा करे ॥ ७९ ॥

79. The physician may prepare a  
good application from the paste of  
heart-leaved sida, blue water lily,  
lotus rhizome, milky yam, eagle wood,  
sandal wood or lotus stalks taken with  
their tubers.

यवचूर्णं समधुकं सघृतं च प्रलेपनम् ।  
हरेणवो मसूराश्च समुद्राः श्वेतशालयः ॥८०॥  
पृथक् पृथक् प्रदेहाः स्युः सर्वे वा सर्पिषा सह ।

समधुकम् जेरीमधमुलहठीके साथ, यवचूर्णम्  
जवना डोईने जौके चूर्णको, सघृतम् धीनी साथे मेणवी  
धीके साथ मिलाकर, प्रलेपनम् लेप करवा लेप करे,  
हरेणवः रेणुके रेणुका, मसूराः अने मसूर और मसूर,  
समुद्राः भग मूंग, श्वेतशालयः च अने सफेद शालि  
योभा और सफेद शालिचावलों. पृथक् पृथक् ऐओ-  
मांसां प्रत्येकना इनमेंसे प्रत्येकके, सर्वे वा अथवा  
सधणाना या सबके, सर्पिषा सह धी साथे धीके साथ,  
प्रदेहाः लेप लेप, स्युः करवा करे ॥ ८० ॥

80-80½. Barley flour mixed with  
liquorice and ghee makes a good  
application. Peas, lentils, green gram,  
and white sali rice, may be used with  
ghee either singly or in combination,  
as an application.

पश्चिनीकर्दमः शीतो मौक्तिकं पिष्टमेव वा ॥८१॥  
शङ्खः प्रवालः मुक्तिर्वा गैरिकं वा घृताप्लुतम् ।  
(पृथगेते प्रदेहाश्च हिता ज्ञेया विसर्पिणाम्) ।

शीतः शीतल शीतल, पश्चिनीकर्दमः उभनिनीनी  
भूण पर दागेवे। डाहव पश्चिनीकी जड़ पर लगा कीचड़,  
मौक्तिकम् मोती मुक्ता, पिष्टम् एव वा योभा।ने डोई  
चावलका आटा, शङ्खः अथवा शंभ अथवा शंख,

८१. गैरिकं वा घृताप्लुतम्-गैरिको वा घृताप्लुतः (व.)



प्रवालः प्रवाल, शुक्तिः छीप सीप, गैरिकम् वा जेरु गेरु, एते पृथक् ऐंऐंभांथी प्रत्येकभां जुदा जुदा इनमेंसे प्रत्येकमें अलग अलग, घृताहुतम् धी भेजवी करवाभां आवेक्षा जी मिलाकर किये हुए एते ऐं वे, प्रदेहाः च देप लेप, विसर्पिणां विसर्पना इरीऐंने विसर्पवालोंके लिए, हिन्नाः छितकर हीतकर, ज्ञेयाः अथुवा जानने चाहिए ॥ ८१३ ॥

81-81½. The cooling mud at the root of lotus, pearls and rice-flour or conch shells, coral, mother of pearl and red ochre should be used individually mixed with ghee as applications. They are known to be beneficial in acute spreading affections.

प्रपौण्डरीकं मधुकं बला शालुकमुत्पलम् ॥ ८२ ॥  
न्यग्रोधपत्रदुग्धीके सघृतं स्यात् प्रलेपनम् ।

प्रपौण्डरीकम् प्रपौंडरीक प्रपौण्डरीक, मधुकम् मेठी-मधु मुलहठी, बला अला बला, शालुकम् उमलकन्द कमलकन्द, उत्पलम् नीलकमल नीलोफर, न्यग्रोधपत्र-वडनां पान वडके पत्ते, दुग्धीके अने नागला इषेदी ऐंऐंने और वृषिमा इनका, सघृतम् घृतयुक्त घीके साथ, प्रलेपनम् देप लेप, स्यात् करवेा करे ॥ ८२३ ॥

82-82½. The paste of the tubers of white lotus, liquorice, heart-leaved sida, lotus tubers, blue water lily, the leaves of the banyan tree and asthma weed mixed with ghee, are good as application

विसानि च मृणालं च सघृताश्च कशेरुकाः ॥ ८३ ॥  
शतावरीविदार्योश्च कन्दौ धौतघृताप्लुतौ ।

विसानि च उमण्डनां भूण कमलदंडके मूल, मृणालम् च भृशुल मृणाल, कशेरुकाः च अने कसेला ऐंऐंने और कशेरु इनको, सघृताः धीभां भेजवी देप करवेा धीमें मिलाकर लेप करे, धौतघृताप्लुतौ

८२½. न्यग्रोधपत्रदुग्धीके-न्यग्रोधपत्र दुग्धीका (ब.)

८३½. शतावरीविदार्योश्च-शतावरी विदार्याश्च (ब.)

,, धौतघृताप्लुतौ-धौतघृतं यथा (द.)

धौशेला धीभां भेजवेक्ष बोवे हुए धीके साथ, शतावरी शतावरी शतावर, विदार्योः कन्दौ च अने बोयडोण् ऐंऐंने देप करवेा और बिलाईकन्द इनका लेप करे ॥ ८३३ ॥

83-83½. So also are the following viz., lotus-fibres, lotus stalks and the seeds of rushnut mixed with ghee, and the bulbs of the climbing asparagus and white yam mixed copiously with the washed ghee.

शैवालं नलमूलामि गोजिह्वा वृषकर्णिका ॥ ८४ ॥  
इन्द्राणिशाकं सघृतं शिरीषत्वग्बलाघृतम् ।

शैवालम् शैवाल शैवाल, नलमूलामि नाक्षीनां भूण नल, गोजिह्वा गजछली गोप्ती वृषकर्णिका वृषकर्णिका, इन्द्राणिशाकम् अने उरुसालनी छाल ऐंऐंने शिरीषकी छाल इनका, सघृतम् धीनी साथे देप करवेा धीके साथ लेप करे, बलाघृतम् अने अलाघृतनो देप करवेा और बलाघृतका लेप करे ॥ ८४३ ॥

84-84½. Moss and roots of the great reed, elephant's foot, kidney-leaved ipomea and chaste tree mixed with ghee, or the bark of the siris tree, heart-leaved sida and ghee;

न्यग्रोधोदुम्बरपुष्पवेतसाश्वत्थपल्लवैः ॥ ८५ ॥

त्वक्ककैर्बहुसर्पिभिः शीतैरालेपनं हितम् ।

बहुसर्पिभिः अथु धीनाणा बहुत धीसे युक्त, शीतैः शीतल, न्यग्रोध- वड बरगद, उदुम्बर- उमरडो मूलर, पुष्प- पीपण और पिलखन, वेतस- वेतस वेतस, अश्वत्थ- अने पीपणाना और पीपलके, पल्लवैः पान पत्ती, त्वक्- तथा छालना और छालके, ककैः उदंडाथी कलकोसे, बालेपनम् देप करवेा लेप करना, हितम् छितकर छे हितकर है ॥ ८५३ ॥

८४. वृषकर्णिका-वृषपर्णिका (ब.)

८४½. शिरीषत्वग्बलाघृतम्-वेपं वा दाहशान्तये (ब.)

८५. अश्वत्थपल्लवैः-अश्वत्थनाम्बवैः (ब. छ. ब.)

85-85½. the cold application made from the tender roots of the banyan tree, gular fig, yellow barked fig tree, country willow and the holy fig. or from the paste of the barks of the above trees copiously mixed with ghee is recommended.

प्रदेहाः सर्व एवैते वातपित्तोत्थणे शुभाः ॥८६॥  
सकफे तु प्रवक्ष्यामि प्रदेहान्परान् हितान् ।

एते सर्वे एव आ अध्याये वे बनी, प्रदेहाः देधे। लेप, वातपित्तोत्थणे वातपित्तप्रधान निक्षर्पभा वात-पित्तप्रधान निक्षर्पमे, शुभाः शुभकारक के शुभाश्च हैं, सकफे उद्भूतान् निक्षर्पभा कफप्रधान निक्षर्पमे, तु ते। तो, अपरान् भीन अन्य, हितान् हितकर, प्रदेहान् देधे। लेपको, प्रवक्ष्यामि हुं उद्गीश्र मैं कहूँगा ॥ ८६½ ॥

86-86½. All the above-mentioned varieties of applications are beneficial in disorders arising from the provocation of the vata and pitta humors. I shall now describe other kinds of application which are useful when the disorder is associated with predominant kapha.

त्रिफलां पद्मकोशीरं समजां करवीरकम् ॥८७॥  
नलमूलान्यनन्तां च प्रदेहमुपकल्पयेत् ।

त्रिफलाम् त्रिंश। त्रिफला, पद्मक- पद्मक पद्माक्ष, उशीरम् वीरक्षुने वाणे। खज, समजाश् रीसाम्भुली लाजवन्ती, करवीरकम् उरेक्षु कनेर, नलमूलानि नादीरन्। भूण नलके मूळ, अनन्ताम् च अन्ये सारिवा ओष्ठीने।

और कपूरी इनका, प्रदेहम् देधे प्रदेह, उपकल्पयेत् करवे। करे ॥ ८७½ ॥

87-87½. In such a condition, an application may be made from the three myrobalans, himalayan cherry, cuscus grass, sensitive plant, indian oleander, roots of the great reed and indian sarsaparilla.

खदिरं सप्तपर्णं च सुस्तमारवधं धवम् ॥८८॥  
कुरण्टकं देवदारु दद्यादालेपनं मिषक् ।

मिषक् देवे वैद्य खदिरम् भेर खैर सप्तपर्णम् आतनक्षु अतिवम, सुस्तमार सुस्त सुस्त, आरवधश्च गरभाणी। अमलताश्, धवम् च धावडे। धाव, कुरण्टकम् पीणां दूधने। उदशेणिधे। पीला कटसरैया, देवदारु च अन्ये देवदार ओष्ठीने। और देवदार इनका, आले-पनम् देधे आलेपन, दद्यात् करवे। करे ॥ ८८½ ॥

88-88½. The physician may also give an application made from the paste of the bark of catechu dita bark nut grass, purging cassia, cane tree, yellow nail dye and deodar

आरवधश्च पत्राणि त्वचं श्लेष्मातकस्य च ॥८९॥  
इन्द्राणिशाकं काकाह्नां शिरीषकुसुमानि च ।

शैवालं नलमूलानि वीरां गन्धप्रियङ्गुकाम् ॥९०॥

त्रिफलां मधुकं वीरां शिरीषकुसुमानि च ।

प्रपौण्डरीकं ह्रीवेरं दावींत्वच्छाधुकं बलाम् ॥९१॥

पृथगालेपनं कुर्याद्द्वन्द्वशः सर्वशोऽपि वा ।

प्रदेहाः सर्व एवैते देयाः स्वरूपघृताप्लुताः ॥९२॥

आरवधश्च गरभाणी। अमलतासके, पत्राणि पान एते, श्लेष्मातकस्य च अन्ये गूदान्। और लसूबेही,

८६. वातपित्तोत्थणे—रक्तपित्तोत्थणे (ध. न. फ. ब.)

॥ वातपित्तोत्थणे शुभाः—रक्तपित्तोत्थणे हिताः (ध.)

८६½. सकफे—कफजे (ध.)

॥ प्रदेहान्—प्रलेपान् (ख.)

॥ प्रदेहान्परान् हितान्—प्रलेपान्परान् शुभान् (ड.)

८८. धवय—वचाश्च (फ.)

८८½ मिषक् हितान् (ध.)

८९. श्लेष्मातकस्य च—श्लेष्मान्नकस्य च (ड.)

९२ घृताप्लुताः—घृतायुताः (ड.)

॥ स्वरूपघृताप्लुताः—सर्वघृताप्लुताः (ध.)

त्वचम् छाद्य छाल, इन्द्राणिशाकम् नजोडनां शाक  
मेडरके पत्ते, काकाहाम् तरवारदीनी छाद्य सेमकी छाल,  
क्षिरीष-अने सरसधानां और क्षिरीषके, कुसुमानि च  
झूल फूल, शैवालम् शैवाण शैवाल, नलमूल्यानि नाडीनां  
भूण नलके मूल, वीराम् शतावरी शतावर, गन्धप्रिय-  
ङ्गकाम् अने धडोला और प्रियंगु, त्रिफलाश्च त्रिङ्गु  
त्रिफला, मधुकम् नैडीभध मुलहठी, वीराम् शतावरी  
शतावर, क्षिरीष-अने सरसधानां और क्षिरीषके, कुसु-  
मानि च झूल फूल, प्रणोणरीकम् प्रणोरीक प्रणोणरीक,  
हवीरम् वाणैः सुगन्धवाला, दावीत्वक् दारुणदरनी  
छाद्य दारुहल्लीकी छाल, मधुकम् नैडीभध मुलहठी,  
बलाम् अने भद्रा और बला पृथक् औ पांथ शैवोने।  
भुद्धे भुद्धे इन पांच योगोंका पृथक् पृथक् द्वन्द्वशः  
अथवा भे भेने ऐक्य भेणवी अथवा दो दोको एकत्र  
मिलाकर, सर्वशः अपि वा अथवा भधाथने। ऐक्य  
भेणवी या सबको एकत्र मिलाकर, आलेपनम् देप लेप,  
कुर्यात् करवा करे, एते आः इन, सर्व सर्वे सब, एव  
प्रदेहाः देपो। प्रदेहोंके साथ, स्वल्पघृताप्लुताः थोडुं घी  
भेणवीने थोड़ा घी मिलाकर, देयाः करवा भेधे औ  
लगाने चाहिए ॥ ८९-९२ ॥

89-92. (1) The leaves of the purging cassia and the bark of the assyrian palm; (2) twigs of chaste tree, sword bean and the flowers of the siris; (3) moss, the roots of the great reed, milky yam and perfumed cherry; (4) the three myrobalans, liquorice, milky yam and the flowers of siris; (5) lotus rhizomes, fragrant sticky mallow, the bark of indian berberry, liquorice and heart-leaved sida; each one of these or each two of these or all of them together, may be used as an application. The application should in every case be mixed with only a small quantity of ghee and given.

वानपित्तोत्थने ये तु प्रदेहास्ते घृताधिकाः ।

ये तु ते जो, प्रदेहाः देपो। लेप. वातपित्तोत्थने  
वात तथा पित्तनी प्रधानतावाणा विसर्प भाटे उद्या  
छे वातपित्तकी प्रधानतावाले विसर्पके लिए कहे हैं, ते तेऔ  
वै, घृताधिकाः अधिक घीवाणा करवा भेधे औ अधिक  
घीसे युक्त होने चाहिए ॥ ९२ ॥

92½. In conditions of provoked vata and pitta these applications should be mixed with plenty of ghee.

घृतेन शतघौतेन प्रदिह्यात् केवलेन वा ॥९३॥

घृतमण्डेन शीतेन पयसा मधुकाम्बुना ।

पञ्चवल्ककषायेण सेवयेच्छीतलेन वा ॥९४॥

वातासृक्पित्तबहुलं विसर्पं बहुशो भिषक् ।

भिषक् वैवे वैद्य, वात असृक्-पित्त-बहुलम् वायु,  
रक्त तथा पित्तनी प्रधानतावाणा विसर्प पर वायु,  
रक्त और पित्तकी प्रधानतावाले विसर्प पर, केवलेन  
ऐक्य केवल, शतघौतेन से वायुत शैवेला शतघौत,  
घृतेन वा घीसे वीसे, प्रदिह्यात् देप करवा लेप करे,  
शीतेन शीतल ठंडे घृतमण्डेन घीना भंडी घृत-  
मण्डसे, पयसा दूधसे, मधुकाम्बुना नैडीभधना  
कवाथी मुलहठीके काथसे, शीतलेन अथवा शीतल  
अथवा शीतल, पञ्चवल्क-पांथ क्षीरीश्वोनी छाद्यना  
पांच क्षीरीश्वोकी छालके, कषायेण वा क्वाथयी काथसे,  
बहुशः बारवार बारवार, सेचयेत् परिषेधन करुं  
परिषेधन करे ॥ ९४ ॥

93-94½. Or, in such conditions an application consisting purely of the hundred times washed ghee may be given In acute spreading affection characterized by an excess of vata and pitta in the blood, the physician may

९२½. वानपित्तोत्थने ये तु प्रदेहास्ते घृताधिकाः—क्षणे क्षणे युक्त्य-

मानाः पूर्वमुद्धृत्य लेपनम् (क.)

९४. वल्क-कल्क (ग.)

९४½. बहुशो भिषक्-बहुशः पृथक् (ग. त.)

repeatedly affuse the affected parts with the cold supernatant part of ghee, or with milk or with liquorice water or with the cold decoction of the five barks.

सेचनास्ते प्रदेहा ये त एव घृतसाधनाः ॥९५॥  
ते चूर्णयोगा वीसर्पव्रणानामवचूर्णनाः ।

ये जो, प्रदेहाः लेपना योगो छे प्रदेह हैं, ते ते वे, सेचनाः सेचनना योगो छे सेचनके योगों हैं, ते एव अने ते ओ ओर बेही, घृतसाधनाः घृत बनाववाना योगो छे बी बनानेके योगों हैं, ते अने ते ओ ओर वे ही, चूर्णयोगाः चूर्णयोगो, वीसर्प-विसर्पना विसर्पके, व्रणानाम् व्रणोपर व्रणों पर, अवचूर्णनाः अवचूर्णन करनारा योगो छे अवचूर्णन करनेवाले योगों हैं ॥ ९५३ ॥

95-95½. The drugs which have been described above in the preparation of applications may also be used in the preparation of douches and ghees; they are also good as pulvis to be used for dusting the wounds of Visarpa.

दूर्वास्त्रससिद्धं च घृतं स्याद्गणरोपणम् ॥९६॥  
दार्वीस्त्वङ्मधुकं लोभं केशरं चावचूर्णनम् ।  
पटोलः पिचुमर्दश्च त्रिफला मधुकोत्पले ॥९७॥  
एतत् प्रक्षालनं सर्पिव्रणचूर्णं प्रलेपनम् ।

दूर्वास्त्रस- ध्रोना स्वरसर्मा दूबके स्वरससे, सिद्धम् पडावेह सिद्ध, घृतम् घी घी, व्रणरोपणम् च मधु ३३५५१२ व्रणरोपण, स्वात् छे है, दार्वीस्त्वङ् दारु- ६७६२११ छाल दारुद्वयोकी छाल, मधुकम् मेडीमध

९५. घृतसाधनाः—घृतसाधिताः (ग.)

९५½. व्रणानाम्—चूर्णानाम् (ङ.)

९७. चावचूर्णनम्—चावचूर्णितम् (क. घ.)

„ पटोलः पिचुमर्दश्च त्रिफला मधुकोत्पले—पटोलं पिचुमर्दं च त्रिफला मधुकोत्पलम् (ङ.)

९७½. सर्पिव्रणचूर्णं—सर्पिव्रणे चूर्णं (घ.)

मुलहठी, लोघ्रम् डोधर लोव, केशरम् च अने दाह नागकेसर ओओनु और रक्त नागकेसर इनका, अवचूर्णनम् अवचूर्णन करवुं अवचूर्णन करे, पटोलः परवल, पिचुमर्दः धीमडो नीम, त्रिफला त्रिफला त्रिफला, मधुक- मेडीमध मुलहठी, उत्पले च अने नीलकमल और नीलोफर, एतत् आ दावीं वजेरे द्रव्योथी इन दावीं आदि द्रव्योसे, प्रक्षालनम् प्रक्षालनने भाटे क्वाथ करवे। प्रक्षालनाथे काथ करे, सर्पिः धी तैयार करवुं घृत सिद्ध करे। व्रणचूर्णम् मधु पर अवचूर्णन करवा भाटे चूर्ण करवुं व्रण पर अवचूर्णनके लिए चूर्ण करे, प्रलेपनम् तथा मधु पर लगाववा भाटे प्रलेप करवे और व्रण पर लगानेके लिए प्रलेप करे ॥ ९६-९७½ ॥

96-97½. The ghee prepared in the expressed juice of scutch grass makes a good healing unguent for wounds. The pulvis of the bark of indian berberry, liquorice, lodh and fragrant poon is to be used as dusting powder; the pulvis of the bark of wild snake gourd, neem, the three myrobalans, liquorice and the blue water lily may be used either in the form of lotion, ghee, dusting powder or an application.

प्रलेपविषये कर्तव्याकर्तव्योपदेशः —

प्रदेहाः सर्व एवैते कर्तव्याः संप्रसादनाः ॥९८॥  
क्षणे क्षणे प्रयोक्तव्याः पूर्वमुद्धृत्य लेपनम् ।

संप्रसादनाः उक्तपितने शुद्ध करनार रक्तपिचको शुद्ध करनेवाले, एते आ इन, सर्वे एव अध्याय सब, प्रदेहाः लेपो लेप, कर्तव्याः करवा ओछो करने चाहिए पूर्वम् पहलेवा। पूर्वकिये, लेपनम् लेप लेपको, उद्धृत्य उठेहीने हटाकर, क्षणे क्षणे क्षणो क्षणो बारवार, प्रयोक्तव्याः थोववा ओछो करने चाहिए ॥ ९८½ ॥

९८ संप्रसादनाः—संप्रसादनाः (ङ)

९८½. प्रयोक्तव्याः—युक्तव्याः (घ.)

98-98½. All the above-mentioned clarificative applications should be given and should be applied at frequent intervals having each time removed the previous application.

अधावनोद्धृते पूर्वे प्रदेहा बहुशोऽघनाः ॥९९॥  
देयाः प्रदेहाः कफजे पर्याधानोद्धृते घनाः ।

पूर्वे प्रथमने लेप पूर्व लेप, अधावनोद्धृते घेया विना अशुष्क अवस्थाभां उतारतां विना घेये अशुष्क अवस्थामें, उतारने पर, बहुशः बारवार, अघनाः पातला पातला पतले पतले, प्रदेहाः लेप लेप, देयाः करवा करने चाहिए, कफजे उद्धृत्य विसर्पभां कफज विसर्पमें, पर्याधानोद्धृते प्रथमने लेप शुष्क अवस्थाभां उतारतां पूर्व लेपको शुष्क अवस्थामें उतारने पर, घनाः अघा घने, प्रदेहाः लेप करवा ओछी लेप लगाने चाहिए ॥९९॥

99-99½. The previous application being removed without washing: a number of thin coatings should be applied at frequent intervals. In spreading affections born of kapha, thick application should be applied and removed when dry.

त्रिभागाङ्गुष्ठमात्रः स्यात् प्रलेपः कल्कपेषितः ॥१००॥  
नातिस्निग्धो न रुक्षश्च न पिण्डो न द्रवः समः ।

प्रलेपः लेप लेप, त्रिभागाङ्गुष्ठमात्रः अंगुष्ठानां तृतीयांशभाग ओछेला अघा अंगुठेकी चौड़ाईके तीसरे भाग जितना घना, कल्कपेषितः उद्धृतां ओछेला पीसेला कल्कके सहस पीसा हुआ न अतिस्निग्धः न तो अहु स्निग्ध न तो बहुत स्निग्ध, न रुक्षः न तो अहु रुक्ष न तो बहुत रुक्ष, न पिण्डः न तो पिंडा कृति, न द्रवः च स्यात् अने न तो द्रव होवे ओछी और न तो ९९. अधावनोद्धृते पूर्वे प्रदेहा बहुशोऽघनाः—अधवीनाद्धृते पूर्वे प्रदेहा बहुशो घनाः (ख. झ.)

.. अधावनोद्धृते—अधवीनाद्धृते (ब.)

.. बहुशोऽघनाः—बहुशो घनाः (ग)

पतला होना चाहिए, समः परंतु समान होवे ओछी परंतु समान होना चाहिए ॥ १०० ॥

100-100½. The coating of the paste applied should be as thick as one third of the thickness of the thumb. An application should be neither too unctuous nor too dry, neither too solid nor too fluid, but of the right consistency.

न च पर्युषितं लेपं कदाचिदवचारयेत् ॥१०१॥  
न च तेनैव लेपेन पुनर्जातु प्रलेपयेत् ।

पर्युषितम् वासी वासी लेपश्च च लेप लेपको, कदाचित् उद्धृति कभी, न अवचारयेत् दगाओ नहि न लगावे, तेन एव च अने तेना ते व और उसी ही, लेपेन लेपने लेपको, पुनः इरीवार फिरसे, जातु उद्धृति कभी, न प्रलेपयेत् दगाओ नहि न लगावे ॥ १०१ ॥

101-101½. At no time should an application that has gone stale be made use of, nor should the same application be used a second time.

ह्रस्ववीसर्पशूलानि सोष्णाभावात् प्रवर्तयेत् ॥१०२॥  
लेपो ह्युपरि पट्टस्य कृतः स्वेदयति व्रणम् ।

पट्टस्य पाटा वल्लके, उपरि उपर उपर, कृतः करेला किया हुआ, लेपः लेप लेप, सोष्णाभावात् गरमी रेडाई नवाने लीधे गरमी रुक जानेके कारण, ह्रस्ववीसर्प- उद्धृति, विसर्प ह्रस्व, विसर्प, शूलानि अने शूल और शूल, प्रवर्तयेत् करे छे उत्पन्न करता है, व्रणम् तथा प्राणु तथा व्रणका, स्वेदयति स्वेदन करे छे स्वेदन करता है ॥ १०२ ॥

102-102½. Such an application will cause softening, acute spreading affection and pain in the affected part on

१०२. मोष्णाभावात्—सोष्णभावात् (क. ख. घ. झ. त)

.. .. —साम्नाभावात् (घ. व.)

.. .. —सोष्णभावात् (फ)

account of the accumulation of heat. If the application is applied over the bandage it tends to promote perspiration in the affected part.

स्वेदजाः पिडकास्तस्य कण्डूश्चैवोपजायते ॥१०३॥

उपर्युपरि लेपस्य लेपो यद्यवचार्यते ।

तानेव दोषाञ्जनयेत् पट्टस्योपरि यान् कृतः ॥१०४॥

तस्य तेथी तेभां उसमें, स्वेदजाः स्वेदजनित स्वेदसे, पिडकाः पिडकाओं फुन्सियां, कण्डूः च एव अने ५२५ और खुजली, उपजायते थाय छे उत्पन्न होती है, लेपस्य लेपनी लेपके, उपरि उपरि उपरने उपर ऊपर ही ऊपर, यदि ओ यदि, लेपः लेप लेप, अवचार्यते डरेवाभां आवे ते। ते लगाया जाये तो वह, पट्टस्य पाटनी कपड़ेके, उपरि उपर ऊपर, कृतः डरेवा लेप किया हुआ लेप, यान् दोषान् ओ दोषाने उत्पन्न करे छे जिन दोषोंको उत्पन्न करता है, तान् एव ते ओ दोषाने उन्हीं दोषोंको, जनयेत् उत्पन्न करे छे उत्पन्न करता है ॥ १०३-१०४ ॥

103-104. And as a result, pimples due to the retention of perspiration and pruritus are induced. If applications are made one over the other, the same undesirable results are produced as those mentioned in the case of applications over the bandage.

अतिस्निग्धोऽतिद्रवश्च लेपो यद्यवचार्यते ।

त्वचि न श्लिष्यते सम्यङ्ग दोषं शमयत्यपि ॥१०५॥

अतिस्निग्धः अतिस्निग्ध अतिस्निग्ध, अतिद्रवः च अने अति पातणो और अति पतला, लेपः लेप लेप, यदि ओ यदि, अवचार्यते डरेवाभां आवे ते। लगाया जावे तो, त्वचि ते त्वचाने वह त्वचासे, न श्लिष्यते थोऽती। नथी नहीं लगता, दोषम् अने दोषाने और दोषोंको, सम्यक् शारी रीते सम्यक् प्रकारसे, न शमयति अपि शांत नथी डरेवा शमन नहीं करता ॥ १०५ ॥

105. The application that is either too unctuous or too fluid does not adhere properly to the skin and cannot therefore alleviate the diseased condition.

तन्वालिप्तं न कुर्वीत संशुष्को ह्यापुटायते ।

न चौषधिरसो व्याधिं प्राप्नोत्यपि च शुष्यति १०६

तनु-आलिप्तस्य पातणो लेप पतला लेप, न कुर्वीत पशु न डरेवा भी न करे, हि डारणु के क्योंकि, संशुष्कः ते सूक्ष्मतां वह सूखने पर, आपुटायते तराई अथ छे फट जाता है औषधिरसः च अने ते औषधिने २५ और वह औषधिका रस, व्याधिम् व्याधि सुधी व्याधि नक, न प्राप्नोति पहुँचते। नथी नहीं पहुँचता, अपि च परन्तु परन्तु शुष्यति सूक्ष्म अथ छे सूख जाता है ॥१०६॥

106. Thin applications should not be applied, for, drying up rapidly, they become fissured and cracked. Consequently the healing property of the drugs does not even reach the seat of affection, for it dries up quickly.

तन्वालिप्तेन ये दोषास्तानेव जनयेद्भृशम् ।

संशुष्कः पीडयेद्वापि निःस्नेहो ह्यवचारितः ॥१०७॥

अवचारितः डरेवा किया हुआ, निःस्नेहः स्नेह-वगरेवा लेप स्नेहरहित लेप, तन्वालिप्तेन पातणो लेपथी पतले लेपसे, ये दोषाः ओ दोषो डरेवा छे जो दोष कहे हैं, तान् एव ते दोषाने उन्हीं दोषोंको, भृशम् जनयेत् अत्यंत उत्पन्न करे छे अधिक उत्पन्न करता है, हि संशुष्कः डारणु के सूक्ष्मलेवा लेप क्योंकि सूखा हुआ लेप, व्याधिम् पीडयेत् विसर्पना प्रशुभां पीडा उत्पन्न करे छे विसर्पके व्रणमें पीडा उत्पन्न करता है ॥१०७॥

107. The undesirable consequences which ensue from the use of thin applications are also frequently produced by the use of applications that are not sufficiently unctuous;



being quite dry they tend to aggravate the disorder further.

विसर्पे अन्नपानम्—

अन्नपानानि वक्ष्यामि विसर्पिणां निवृत्तये ।  
लङ्घितेभ्यो हितो मन्थो रुक्षः सक्षौद्रशर्करः ॥१०८॥  
मधुरः किञ्चिदम्लो वा दाडिमामलकान्वितः ।  
सपरुषकमृद्वीकः सखर्जूरः शृताम्बुना ॥१०९॥  
तर्पणैर्यज्ञशालीनां सस्नेहा चावलेहिका ।

विसर्पिणाम् इवे विसर्पिणी अब विसर्पिके, निवृत्तये निवृत्तिने भाटे निवारणार्थ, अन्नपानानि अन्नपान अन्नपानोको, वक्ष्यामि उल्लिखि कहूंगा, लङ्घितेभ्यः लङ्घन करेवाओने रोगियोंके लक्षणके पश्चात्, रुक्षः ३३ रुक्ष, सक्षौद्र- मधु, मधु, शर्करः अने साकरवाणो और चीनीके साथ, मधुरः मधुर मधुर, किञ्चिदम्लः वा अथवा उल्लिखि अम्लतावाणो अथवा कुल अम्लतायुक्त, दाडिम- अर्थात् दाडिम अर्थात् अनार, आमलकान्वितः तेभ्य आभणवाणो एवं आंवलासे युक्त, सपरुषक- अने शलसा और फालसा, मृद्वीकः तेभ्य दाक्ष एवं सुनका, सखर्जूरः तथा भणूरयुक्त और खर्जूरयुक्त, शृताम्बुना अने अवशित जलवाणी और शृत जलसे, मन्थः अनावेष्टो मन्थ बना हुआ मन्थ हितः हितकर छे हितकर है, अव- अव जौ, शालीनाम् अने शालि- ओआना और शालि चावलके, तर्पणैः स्नाथवाओथी तर्पणसे, सस्नेहा स्नेहयुक्त स्नेहयुक्त, अवलेहिका यादृश अनावी ओआन भाटे देवुं चाटन बनाकर भोजनार्थ देवे ॥ १०८-१०९ ॥

108-109. I shall now describe the diet that should be observed in the treatment of Visarpa. To patients that have undergone the lightening therapy, the following articles of food are beneficial; demulcent drink that is devoid of unctuousity and is mixed with honey and sugar or that is sweet and slightly acidified

by the addition of the juice of pomegranate and emblic myrobalans, or demulcent drink prepared with the fruits of sweet falash, grapes and dates in boiled water. Thereafter a linctus made of the flour of roasted barley and sali rice and mixed with unctuous articles should be given.

जीर्णे पुराणशालीनां यूषैर्भुञ्जीत भोजनम् ॥११०॥  
मुद्गान्मसूरांश्चणकान् यूषार्थमुपकल्पयेत् ।  
अनम्लान् दाडिमाम्लान् वा पटोलामलकैः सह १११

जीर्णे अवलेहिका पत्नी अर्था अवलेहिका जीर्ण होने पर, पुराणशालीनाम् जूना शालि ओआनुं पुराने शालिचावलका, भोजनम् भोजन भोजन, यूषैः यूषो साथे यूषोंके साथ, भुञ्जीत भुज्जुं खावे, अनम्लान् अटाश चिनाना खटाईरहित, दाडिमाम्लान् वा उ दाडिमानी अटाशवाणा या अनारकी खटाई डालकर तैयार किये, मुद्गान् भग मूंग, मसूरान् भसर मसर, चणकान् अने अणुने और चनेको, पटोल- परवल, आमलकैः अने आभण और आंवलेके, सह साथे साथ, यूषार्थम् यूष भाटे यूषके लिए, उपकल्पयेत् सिद्ध करे ॥ ११०-१११ ॥

110-111. When this is digested the patient should eat a meal consisting of old sali rice along with soups. These soups should be made of green gram, lentils and chick peas. They should not be made sour or if made sour, they should be rendered so with the juice of the pomegranate and prepared with wild snakegourd and emblic myrobalan.

जाङ्गलानां च मांसानां रसांस्तस्योपकल्पयेत् ।  
रुक्षान् परुषकद्राक्षादाडिमामलकान्वितान् ॥११२॥

११०. यूषैर्भुञ्जीत-यूषेणाद्यु (क.)

१११. अनम्लान्-अनन्ता (ब.)



तस्य ते रेणुभाटे उस रोमीके लिए, पुरुषक- द्रव्यस्य।  
फालसा, द्राक्षा- द्राक्ष सुनक्का, दाहिम- द्रव्यस्य अनार,  
आमलकान्वितान् तथा आमलान्वित और आवलायुक्त,  
जाङ्गलानाम् अंगद प्राणुलीनां जाङ्गल प्राणियोंके,  
मांसानाम् मांसना मांसके, रुक्मान् रसेऽ वज्रना स्नेहरहित,  
रसान् रसे। रसोको, उपकल्पयेत् अनापवा बनावे ॥११२॥

112. The patient should be nourished with the un-unctuous meat juices of jangala animals mixed with the juice of sweet falsah, grapes, pomegranates and emblic myrobalans.

रक्ताः श्वेता महाद्वाश्च शालयः षष्टिकैः सह ।  
भोजनार्थे प्रशस्यन्ते पुराणाः सुपरिष्कृताः ॥११३॥

पुराणाः नूना पुराने, सुपरि ताः अशुभर  
ओसावेक्षा अच्छी तरहसे माण्ड निकाले हुए, रक्ताः  
शता लाल, श्वेताः सफेद, महाद्वाः शालयः च  
अने महा शालियेआ और महा शालिचावल, षष्टिकैः  
सह तथा साठी येआ तथा सांठी चावल, भोजनार्थ  
बोअन भाटे भोजनके लिए, प्रशस्यन्ते प्रशस्त छे  
प्रशस्त हैं ॥११३॥

113. For such a patient, old and well-cooked rice of red, white and the big variety, in combination with shashtika rice, is recommended as food.

यवगोधूमशालीनां सात्म्यान्वेव प्रदापयेत् ।  
वेषां नात्युचितः शालिर्नरा ये च कफाधिकाः ११४

वेषाव् नेओने जिन्हें, शालिः शालियेआ शालि-  
चावल, न अति उचितः अत्यंत अनुकूल न होय अन्यन्त  
अनुकूल नहीं हों, वे च अने ने और जो, नराः  
मनुष्ये। मनुष्यों, कफाधिकाः कफाधिक होय तेओने कफ-  
बहुल हों उन्हें, यव-गोधूम- अन्ध, धूर्त जौ, गेहूं, शाली-  
नाम् अने शालि येआमांथी और शालि चावलोंमेंसे,

११४. यवगोधूमशालीनां-यवगोधूमशालीनां (घ.)

सात्म्यानि एव ने सात्म्य होय ते ओ जो सात्म्य हो  
वही, प्रदापयेत् आपवा देना चाहिए ॥११४॥

114. Out of barley, wheat and rice, only that should be given to which the patient is accustomed and which is homologatory. Barley and wheat alone should be given to those patients to whom rice is not particularly suitable or who have an excess of kapha in their constitution.

विरूपे वर्ज्यानि—

विदाहीन्यन्नपानानि विरुद्धं स्वपनं दिवा ।  
क्रोधव्यायामसूर्याग्निप्रवातांश्च विवर्जयेत् ॥११५॥

विदाहीनि विदाही विराही, अन्नपानानि अन्नपान  
अन्नपा, विरुद्धम् विरुद्ध आहार विरुद्धभोजन, दिवा द्विपसे  
दिनमें, स्वपनम् सुपुं सोना, क्रोध- क्रोध क्रोध, व्यायाम-  
व्यायाम व्यायाम, सूर्याग्नि- तड्डा, अग्नि धूप, अग्नि,  
प्रवाताश्च अने प्रवात ओओने। और प्रवात इनका,  
विवर्जयेत् त्याग करवे। सेवन छोड़ना चाहिए ॥११५॥

115 Patients suffering from acute spreading affections should avoid food and drink that are irritant, as well as all antagonistic indulgences, day-sleep, anger, exercise, exposure to the sun, fire and strong winds.

विरूपे दोषभेदेन चिकित्सा—

कुर्याच्चिकित्सितादस्वाच्छीतप्रायाणि पैत्तिकैः ।  
रूक्षप्रायाणि कफजे कौटिकान्यनिलात्मके ॥११६॥

अस्मात् आ इस, चिकित्सिताव् चिकित्सितामांथी  
चिकित्सासे, पैत्तिके पैत्तिके पैत्तिके पैत्तिके पैत्तिके,  
शीतप्रायाणि शीतप्रधान कम् शीतप्रधान चिकित्सा,  
कफजे कफजन्य पैत्तिके कफजन्य पैत्तिके, रूक्ष-  
प्रायाणि रूक्षप्रधान कम् रूक्षप्रधान चिकित्सा, अग्नि-  
कात्मके च अने वातजन्य पैत्तिके और वातजन्य

विसर्पमे, स्नेहिकानि स्नेहप्रधानं कम् स्नेहप्रधान चिकित्सा, कुर्यात् कुर्यात् करनी चाहिए ॥११६॥

116. From among the remedial measures described above, those partaking mostly of a refrigerant nature should be employed in Visarpa of the pitta type, those partaking mostly of a dry nature in Visarpa of the kapha type and those of an unctuous kind in Visarpa of the vata type.

वातपित्तप्रशमनमग्निवीसर्पणे हितम् ।

कफपित्तप्रशमनं प्रायः कर्दमसंज्ञिते ॥११७॥

अग्निवीसर्पणे अग्निवीसर्पणम् अग्निवीसर्पणे, वातपित्त-वातपित्तनी वातपित्तकी, प्रशमनम् शमनं चिकित्सा, शमक चिकित्सा, हितम् हितकरं हितकर है, कर्दम-संज्ञिते अने कर्दमविषयम् और कर्दमविषयमे, प्रायः धृष्टं प्रायः, कफपित्त-कफपित्तनी कफपित्तकी, प्रशमनम् शमनं चिकित्सा हितकरं हितकर है ॥११७॥

117. In the Visarpa known as 'Agni Visarpa' or Erysipelas, the sedation of the provoked vata and pitta is indicated; in the disorder known as 'Kardama' or of slushy type, the sedation of kapha and pitta is generally indicated.

ग्रन्थिविसर्पस्य चिकित्सा—

रक्तपित्तोत्तरं दृष्ट्वा ग्रन्थिवीसर्पमादितः ।

रुक्षणैर्लघुनैः सेकैः प्रदेहैः पाञ्चवल्कलैः ॥११८॥

सिरामोक्षैर्जलौकोभिर्वमनैः सविरेचनैः ।

घृतैः कषायतिकैश्च कालज्ञः समुपाचरेत् ॥११९॥

११७. अग्निवीसर्पणे—अग्निवीसर्पणे (घ. ज. ब.)

,, अग्निवीसर्पणे हितम्—अग्निवीसर्पणो मतम् (घ.)

११८. दृष्ट्वा—ज्ञात्वा (क.)

,, पाञ्चवल्कलैः—पाञ्चवल्कलैः (ख. ड.)

११९. घृतैः—घृतैः (क. घ. द. ब.)

कालज्ञः काले अज्ञाने वैद्ये कालको जाननेवाला वैद्य, ग्रन्थिवीसर्पम् ग्रन्थिवीसर्पमे ग्रन्थिवीसर्पको, रक्तपित्तोत्तरम् रक्तपित्तप्रधान रक्तपित्तप्रधान, दृष्ट्वा ज्ञात्वा देखकर, आदितः प्रथमम् अथवा प्रथम, रुक्षणैः रक्षणैः प्रयोग रक्षण प्रयोग, लघुनैः लघुनैः लघुन, पाञ्चवल्कलैः पाञ्च वल्कली वल्कली छालके काथ और चूर्णसे, सेकैः प्रदेहैः परिषेचन तथा सेपे। वडे परिवेचन तथा प्रदेहसे, सिरामोक्षैः सिरामोक्षैः वडे सिरामोक्षणसे, जलौकोभिः जलो। वडे जौकसे, सविरेचनैः विरेचन विरेचन, वमनैः तथा वमन वडे और वमनसे, कषाय-तिकैः च तथा कषाय अने तिक्त द्रव्योंसे साधित, घृतैः घृतैः वडे घृतोंसे, समुपाचरेत् चिकित्सा करवी उपचार करे ॥११८-११९॥

118-119. The physician who knows the right time for each remedial measure should on finding that a spreading inflammation of the Granthi or nodular type is likely to result in a vitiated condition of blood and pitta, treat the patient promptly with the procedures of de-oleation, lightening, affusions, applications made from the five medicinal barks, blood letting with leeches with emesis and purgation and with ghees that have been medicated with astringent and bitter drugs.

ऊर्ध्वं चाधश्च शुद्धाय रक्ते चाप्यवसेचिते ।

वातरुग्णप्रहरं कर्म ग्रन्थिवीसर्पिणे हितम् ॥१२०॥

ऊर्ध्वम् च अधश्च वमनसे, अधः च अने विरेचन-नथी और विरेचनसे, शुद्धाय शुद्ध करवाभा आवर्त शोधन करने पर, रक्ते च अपि अने वणी रक्तानु और फिर रक्तका, अवसेचिते मोक्षैः करवाभा मोक्षण कराने पर, ग्रन्थि-वीसर्पिणे ग्रन्थिवीसर्पणा रोगीने ग्रन्थिवीसर्पके रोगीको,

१२०. वातरुग्णप्रहरं—वातरुग्णकरं (ग.)

वातक्षेम- हरम् वातक्षेम वातकफहर, कर्म चिकित्सा  
चिकित्सा, हितम् हितकर्ता छे हितकारक है ॥ १२० ॥

120. After the patient has been cleansed in the upper and lower regions of the body and blood-letting has been carried out, procedures alleviative of vata and kapha should be resorted to in affections of nodular type of Visarpa.

उत्कारिकाभिरुष्णाभिरुष्णाहः प्रशस्यते ।

स्निग्धाभिर्वेशवारैर्वा ग्रन्थिवीसर्पशूलिनाम् ॥ १२१ ॥

ग्रन्थिवीसर्प- ग्रन्थिवीसर्पना ग्रन्थिवीसर्पमें, शूलि-  
नाम् शूलनामाओंने शूल होने पर, उष्णाभिः उष्ण  
उष्ण, स्निग्धाभिः तथा स्निग्ध तथा स्निग्ध, उत्कारि-  
काभिः उत्कारिकाओंथी उत्कारिकाओंसे, वेशवारैः वा  
अथवा वेशवारोंथी अथवा वेशवारोंसे, उपनाहः उपनाह  
उपनाह, प्रशस्यते श्रेष्ठ छे श्रेष्ठ है ॥ १२१ ॥

121. For patients affected with nodular Visarpa accompanied with severe pain, the use of hot poultices with 'utkarika' pancake or with unctuous 'vesavara' i. e. prepared meat, is recommended.

दशमूलोपसिद्धेन तैलेनोष्णेन सेचयेत् ।

कुष्ठतैलेन चोष्णेन पाक्यक्षारयुतेन च ॥ १२२ ॥

गोमूत्रैः पत्रमिर्युहैरुष्णैर्वा परिषेचयेत् ।

दशमूल- दशमूलथी दशमूलसे, उपसिद्धेन पकावेष्ट  
सिद्ध किये, उष्णेन उष्ण गरम, तैलेन तैलथी तैलसे,  
पाक्यक्षार- अने पाक्यक्षारथी और पाक्यक्षारसे, युतेन  
च युक्त युक्त, उष्णेन च उष्ण गरम, कुष्ठतैलेन कुष्ठना  
तैलथी कुष्ठके तैलसे, सेचयेत् परिषेचन करवुं परिषेक  
करे, उष्णैः अथवा उष्ण अथवा गरम, गोमूत्रैः गोमूत्रथी

१२१. वीसर्पशूलिनाम्-वीसर्पशूलिनः (क. ध.)

१२२. पाक्य-यव (क. ख. छ. झ. ड. फ. ब.)

„ „ -पक (त. फ.)

गोमूत्रसे, पत्रमिर्युहैः वा छे वातक्षेम पादोंथीना उष्ण  
अथवाथी या वातकफनाशक पत्रोंके गरम कावोंसे, परिषे-  
चयेत् परिषेचन करवुं परिषेचन करे ॥ १२२ ॥

122-122½. Or, the patient may be treated with hot affusions of oil medicated with deca-radices or with hot affusions of the oil of costus mixed with prepared alkalis or with hot affusions of cow's urine or with hot decoctions of remedial leaves.

मुखोष्णया प्रदिह्याद्वा पिष्टया चाश्वगन्धया ॥ १२३ ॥

मुखोष्णया अथवा नवशेका अथवा सुहाते हुए,  
पिष्ट या अश्वगन्धया च आओंथीना कुष्ठथी अश्वगन्धके  
कलकसे, प्रदिह्यात् वा क्षेप करवो लेप करे ॥ १२३ ॥

123. Or else, the patient may be treated with genially warm application of the paste of winter cherry.

शुष्कमूलककल्केन नक्तमालत्वचाऽपि वा ।

विभीतकत्वचां वाऽपि कल्केनोष्णेन लेपयेत् ॥ १२४ ॥

शुष्कमूलक- सुष्का मूलना सूखी मूलके, कल्केन  
कुष्ठथी कल्कसे, नक्तमालत्वचा अपि वा अथवा नक्त-  
मालनी छालना कुष्ठथी नक्तमालकी छालके कल्कसे,  
विभीतकत्वचा अपि वा अथवा अहोदानी छालना  
अथवा बहेबेकी छालके, उष्णेन उष्ण गरम, कल्केन  
कुष्ठथी कल्कसे, लेपयेत् क्षेप करवो लेप करे ॥ १२४ ॥

124. Or, the patient may be smeared with the paste of dry radish, or of the bark of indian beech or of the bark of the beleric myrobalan, applied warm.

१२३ चाश्व-ऊष्ण (क. छ. झ. ड. ब.)

१२४ विभीतकत्वचां वाऽपि-विभीतकत्वचा वा अन्धि (ख. घ. झ. ड. ब.)

„ „ -विभीतकत्व अन्धि वा (घ.)

„ लेपयेत्-सेचयेत् (ड.)

बलां नागबलां पथ्यां भूर्जग्रन्थि विभीतकम् ।  
वंशपत्राण्यग्निमन्थं कुर्याद्ग्रन्थिप्रलेपनम् ॥१२५॥

बलाम् अथवा बला, नागबलाम् गजेंद्र गौरन,  
पथ्याम् हरदे हरद, भूर्जग्रन्थिम् को०५५५५ गौ० भोज-  
पत्रकी ग्रन्थि, विभीतकम् अहेडा बहेडा, वंशपत्राणि  
वांसना पान वांसके पत्ते, अग्निमन्थम् च अग्ने अरुणीने।  
और अरनीका, ग्रन्थि- गौ० ३५२ ग्रन्थि पर, प्रलेपनम्  
लेप लेप, कुर्यात् करे ॥१२५॥

125. In nodular Visarpa, the affected  
parts should be smeared with the paste  
of heart-leaved sida, gingo fruit,  
chebulic myrobalan, the knotty portions  
of the bark of birch, beleric myrobalan,  
bamboo-leaves and the wind killer.

दन्त्यादिलेपः —

दन्ती चित्रकमूलत्वक् सुधार्कपयसी गुडः ।  
भल्लातकास्थि कासीसं लेपो भिन्धाच्छिलामपि १२६

दन्ती दन्ती दन्ती, चित्रकमूलत्वक् शिवाना  
भूणी ७७ चित्रके मूलकी लाल, सुधा- धार सुहर,  
धर्क- अने आड्डाणा एवं आड्डके, पयसी दूध दूध, गुडः  
गो० गुड, भल्लातकास्थि (बलाभाणा ४०५५५५ मिलाविका  
बीज, कासीसम् अने छीरकरी ओ०००० और कासीस  
इनका, लेपः लेप लेप, शिलाम् अपि पथ्यरने पथ्य  
शिलाको भी, भिन्धाश्वा हाडी नाभे छे फाड देता है ॥१२६॥

126. An application made of the  
paste of red physic nut, the root-  
bark of the white-flowered leadwort  
and the milks of the thorny milk  
hedge plant and mudar, gur, the  
seeds of the marking nut and green  
vitriol will break open even a stone.

बहिर्गन्धितं ग्रन्थि किं पुनः कफसंभवम् ।

१२७. मार्गस्थितम्—मार्गाश्रितम् (क. घ. ङ.)

बहिर्गन्धितम् दै। पथी आश्रितम् अश्रित तो फिर  
बाहिर मार्गमें हुई, कफसंभवम् ३३५५५ कफजन्य,  
ग्रन्थिम् पुनः किम् ग्रन्थिने हाडी नाभे ओ० ३३५५५  
शुं ? ग्रन्थिको फाड बाले इसमें क्या कहना ?

126½. What then need be said of  
nodular affections born of kapha that  
are situated in the external regions of  
the body !

दीर्घकालस्थितं ग्रन्थि भिन्धाद्वा मेषजैरिमैः ॥१२७॥  
मूलकानां कुलस्थानां यूवैः सक्षारदाडिमैः ।  
गोधूमानैर्यवानैर्वा ससीधुमधुशर्करैः १२८॥  
सक्षौद्रैर्वा रुणी-मण्डैर्मातुलङ्गरसान्वितैः ।  
त्रिफलायाः प्रयोगैश्च पिप्पलीक्षौद्रसंयुतैः ॥१२९॥  
मुस्तभल्लातशक्नां प्रयोगैर्माक्षिकस्व च ।  
देवदारुगुडूच्योश्च प्रयोगैर्गिरिजस्य च ॥१३०॥  
धूमैर्विरैकैः शिरसः पूर्वोक्तैर्गुग्गुलुमेदनैः ।  
अयोलवणपाषाणहेमताम्रप्रपीडनैः ॥१३१॥

इमैः अथवा आ अथवा इन, मेषजैः वा ओषध  
वजरेथी जीवध आदिसे, सक्षार- ओ० ३३ :- ५५५५५  
जैसेकि:- यवक्षार, दाडिमैः अने ६५५५५५ और अना-  
रके साथ, मूलकानाम् भूणाना मूली, कुलस्थानाम् अने  
कुलस्थाना और कुलस्थाने, यूवैः यूषाना पानथी यूवोंके  
पानसे, ससीधु- सीधु सीधु, मधु- मधु शहद, शर्करैः  
अने साड्डरसाड्डत और चीनीके साथ, गोधूमानैः  
धूनां ओ००००० गेहूँके भोजनोंसे, यवानैः वा  
३३५५५ ओ००००० अथवा यवानोंके भोजनोंसे,  
सक्षौद्रैः मधुयुक्त शहदके साथ, मातुलङ्ग- थकेतराना  
चक्रोप्राके, रसान्वितैः रसवाणा रसयुक्त, वाङ्गी- वाङ्ग-  
शीना वाङ्गीके, मण्डैः मण्डै मण्डसे, पिप्पली- पी५२  
पीपर, क्षौद्र- अने मधु और शहदके, संयुतैः युक्त  
साथ, त्रिफलायाः त्रिफलाणा त्रिफलाके, प्रयोगैः च

१२७. मेषजैरिमैः—मेषजोषमैः (ङ.)

„ —मेषजैः शरैः (घ. फ. व.)

१२८. शक्नाम्—सकुनाम् (ग.)

„ गुडूच्योश्च—पट्टच्योश्च (ङ.)

१२९. हेमताम्र—हेमत्त (व.)

प्रयोगोऽथी प्रयोगसे, सुस्त-मुस्त सुस्त, अङ्गात-भिलाभा  
मिलावे, कफनाम् साथवा सत्तू, माक्षिकस्य च अने  
मधना और राहवके, प्रयोगैः प्रयोगोऽथी प्रयोगसे,  
देवदारु-देवदारु देवदारु, गुडुच्योः च गणो गिलोय,  
गिरिजस्य च अने शिलाश्चित्तना और शिलाजीतके,  
प्रयोगैः प्रयोगोऽथी प्रयोगसे, धूमैः धूमपानथी धूम-  
पानसे, शिरसः विरेकैः शिरोविरेचनोऽथी शिरोविरेचनसे,  
पूर्वोक्तैः पहेला उहेला पूर्वोक्त, गुल्ममेदनैः गुल्ममेदनना  
योगोऽथी गुल्ममेदनके योगसे, अयोलवण-तथा तपावेद्य  
दोह-मीडुं और तप्त लोहा, नमक, पाषाण-पथर पथर,  
हेम-ताम्र-सेना तथा त्रिभा वगेरे वडे सुवर्ण, ताम्रादि  
द्वारा, प्रपीडनैः द्वावनाथी दवाव डालनेसे, कीर्वाकाल-  
लाभो वभत कीर्वा कालसे, स्थितम् रडेदी रडी हुई,  
ग्रन्थिम् अग्निने ग्रन्थिका, सिग्नात् भेदी मेदन  
करे ॥ १२७-१३१ ॥

127-131. For breaking open chronic types of nodular affections, the following medications should be used. Soups made of radish and horse gram mixed with alkalis and the juice of pomegranate, cooked wheat or barley mixed with sidhu wine, honey and sugar; the top part of the varuni wine mixed with honey and the juice of pomello; the systematic use of the three myrobalans mixed with long pepper and honey, or of nut-grass, marking nut and the flour of roasted barley, or of honey, or of the bark of deodar and guduch and of mineral pitch; the use of fumigations and errhines, and of procedures described earlier as helping to break open the gulmas, and compression with iron, salt, stones, gold and copper.

आभिः क्रियाभिः सिद्धाभिर्विविधाभिर्बली स्थिरः ।  
ग्रन्थिः पाषाणकठिनो यदा नैवोपशाम्यति ॥ १३२ ॥

अथास्य दाहः क्षारेण शरैर्हैन्नाऽथवा हितः ।

आभिः आ इन, सिद्धाभिः सिद्ध सिद्ध, विविधाभिः  
विविध नानाप्रकारकी, क्रियाभिः क्रियाओऽथी क्रियाओंसे,  
बली अक्षयान बलवान, स्थिरः स्थिर स्थिर, पाषाण-  
कठिनः पथर गेवी उहेलु और पाषाणके सहस कठिन,  
ग्रन्थिः ग्रन्थि ग्रन्थि, यदा व्यापरे यदि, न एव उपशाम-  
यति शान्त न थाय शान्त न हो, अथ त्यारे तब,  
अस्य तेने इसको, क्षारेण क्षारथी क्षारसे, शरैः भाषुथी  
बाणसे, अथवा अथवा अथवा, हैन्ना सेनाथी सुवर्णसे,  
दाहः दाह उरेवा जलना, हितः हितउर छे  
हितकर है ॥ १३२ ॥

132-132. If despite the use of all these various proven methods of treatment, the nodular swellings do not subside and are hard as stone, then cauterization by means of caustics or heated instruments or gold is useful.

पाकिभिः पाचयित्वा वा पाटयित्वा समुद्धरेत् १३३  
मोक्षयेद्दुःशश्चास्य रक्तमुक्लेशमागतम् ।  
पुनश्चापहृते रक्ते वातश्चेष्मजिदौषधम् ॥ १३४ ॥  
धूमो विरेकः शिरसः स्वेदनं परिमर्दनम् ।

पाकिभिः च अथवा पकावनार द्रव्योऽथी अथवा  
पकानेवाके द्रव्योंसे, पाचयित्वा पकावनीने पुलटिस आदिसे  
पकाकर, पाटयित्वा वा पाटन करी विधीर्ण करके, समु-  
द्धरेत् अग्नि डाढी लेनी ग्रन्थिको निकाल देने, अस्य  
तेना उससे, उक्लेशम् आगतम् उक्लेशित अयेला  
उक्लेशित हुए, रक्तम् च दोहोनु रक्तको, बहुधा बार-बार  
बारबार, मोक्षयेत् मोक्षलु उरेवु निकाले, पुनः च अने  
दरीथी और फिरसे, रक्ते रक्तनु रक्तको, अपहृते मोक्षलु  
उथी पछी निकालनेके बाद, वातश्चेष्मजित् वातउहेलु  
वातकफनाशक, औषधम् औषध औषध, धूमः धूमपान  
धूमपान, शिरसः विरेकः शिरोविरेचन शिरोविरेचन,

१३२. शरैर्हैन्नाऽथवा-शरैर्लोहेन वा (क. ख. घ. ङ. ट. ध. न.)

१३४. रक्तमुक्लेशमागतम्-उक्लेशमागतम् (व.)

उक्लेशमागतम्-उष्णमुपागतम् (थ.)

पुनश्चापहृते-पुनश्चास्य हृते (क. घ. ङ.)

स्वेदनम् स्वेदनं स्वेदनं, परिमर्दनम् अने मर्दनं करवा  
ओर मर्दन करना चाहिए ॥ १३३-१३४३ ॥

133-134. Or, after maturing them with suppuratives or by incising them, the tumors may be removed. Further, the patient's blood which is in a vitiated condition should be repeatedly let. After this, when the blood has been sufficiently let, the physician should administer medicine curative of vata and kapha. If even after the above methods, the morbidity is not allayed, then recourse to fumigation, errhines, sudation, pressure on the affected parts or use of suppurative drugs is recommended.

अप्रशाम्यति दोषे च पाचनं वा प्रशस्यते ॥१३५॥  
प्रक्लिन्नं दाहपाकाभ्यां भिषक् शोधनरोपणैः ।  
बाह्यैश्चाभ्यन्तरैश्चैव व्रणवत् समुपाचरेत् ॥१३६॥

दोषे च अथवा दोषान् अथवा दोषका, अप्रशाम्यति  
शमनं न तथा शमनं न होतो, पाचनम् वा तेने पडावे। ओ  
उसको पकाना, प्रशस्यते प्रशस्त छे प्रशस्त है, भिषक्  
वैद्य, दाहपाकाभ्याम् दाह तथा पाकथी युक्त दाह  
एवं पाकसे युक्त, प्रक्लिन्नम् अत्यंत क्लिन्न अन्धने।  
अत्यंत क्लिन्न हुई ग्रन्थिको, बाह्यैः च आह्य बाह्य,  
आभ्यन्तरैः च अने आभ्यन्तर और आभ्यन्तर, शोधन-  
शोधन शोधन, रोपणैः तथा रोपणैथी और रोपणसे,  
व्रणवत् प्रत्यु प्रभाषे व्रणके सदृश, समुपाचरेत् उपचार  
करवा उपचार करे ॥ १३५-१३६ ॥

135-136. When the ulcers of Visarpa have become softened as the result of the above-mentioned procedures of cauterization and maturation, the physician should treat the condition with

१३५. दोषे च पाचनं-दाहेन पाटनं (ध. क.)

the measures employed in the case of wounds, by means of external and internal measures of purification and healing.

कम्पिलकं विडङ्गानि दावीं कारञ्जकं फलम् ।  
पिष्ट्वा तैलं विपक्तव्यं ग्रन्थिव्रणचिकित्सितम् ॥१३७॥

कम्पिलकम् कपीले। रोरी, विडङ्गानि पावडिंग  
वायविडंग, दावीम् दाहुडगदर दाहल्ली, कारञ्जकम्  
अने कलुञ्जना और करंजके, फलम् च इणने।  
फलका, पिष्टा कट्ट करी तेथी कल्कर उससे, तैलम्  
तेल तैल, विपक्तव्यम् पकावपुं पकावे, ग्रन्थिव्रण- आ  
ग्रन्थिव्रणनी यह ग्रन्थिव्रणकी, चिकित्सितम् चिकित्सा  
छे चिकित्सा है ॥ १३७ ॥

137. Kamala, embelia, indian berry and the fruits of the indian beech should be reduced to paste. Oil should be cooked with this paste to make a good remedy for the ulcers of the nodular type.

द्विव्रणीयोपदिष्टेन कर्मणा चाप्युपाचरेत् ।  
देशकालविभागज्ञो व्रणान् वीसर्पजान् बुधः ॥१३८॥  
इतिग्रन्थिविसर्पचिकित्सा ।

देशकालविभागज्ञः देशकालना विभागेने आधुना  
देशकालके विभागको जाननेवाला, बुधः विद्वान् वैद्य  
विद्वान् वैद्य, वीसर्पजान् वीसर्पजन्य वीसर्पजन्य,  
व्रणान् व्रणाने। व्रणोंका, द्विव्रणीयोपदिष्टेन द्विव्रणीय  
अध्यायमा कहेल द्विव्रणीयोक्त, कर्मणा च अपि चिकि-  
त्साने पद्य अनुसारी चिकित्साके अनुसार मी, उपाचरेत्  
उपचार करवा उपचार करे ॥ १३८ ॥ इति आ यह,  
ग्रन्थिविसर्प- ग्रन्थिविसर्पनी ग्रन्थिविसर्पकी, चिकित्सा  
चिकित्सा छे चिकित्सा है ।

१३८. विभागज्ञः-विकारज्ञः (ध. क. व.)

" " -प्रमाणज्ञः (फ.)

" व्रणान् वीसर्पजान् बुधः-व्रणग्रन्थिविसर्पवत् (ख. ड.)

138. The intelligent physician fully conversant with the aspects of place, time and classification, may also treat the ulcers of spreading affections according to the line of treatment indicated in the chapter on the 'Two kinds of Ulcers' (Chikitsa chapter 25). Thus has been described the treatment of the nodular variety of Visarpa.

ગલગણ્ડચિકિત્સા—

ય એવ વિચિરુદ્ધિયો ગ્રન્થીનાં વિનિવૃત્તયે ।

સ એવ ગલગણ્ડાનાં કફજાનાં નિવૃત્તયે ॥૧૩૯॥

યઃ એવ ને જો, વિધિઃ ચિકિત્સાક્રમ ચિકિત્સાક્રી વિધિ, ગ્રન્થીનામ્ ગ્રન્થિની ગ્રન્થિયૌકે, વિનિવૃત્તયે શાન્તિ માટે નિવારણકે લિપ્ત, ઉદ્દિષ્ટઃ ક્ષયો છે કહી ગઈ છે, સઃ એવ તે જ વદ, કફજાનામ્ કફજન્ય, ગલગણ્ડાનામ્ ગલગંડની ગલગણ્ડોકી, નિવૃત્તયે નિવૃત્તિ માટે છે નિવૃત્તિકે લિપ્ત છે ॥ ૧૩૯ ॥

139. Whatever line of treatment has been laid down in the cure of nodular type of Visarpa applies with equal force in the cure of goitre due to kapha.

ગલગણ્ડાસ્તુ વાતોત્થા યે કફાનુગતા નૃણામ્ ।

ઘૃતક્ષીરકષાયાણામભ્યાસાન્ન ભવન્તિ તે ॥૧૪૦॥

નૃણામ્ મનુષ્યેના મનુષ્યૌકે, યે તુ ને જો, ગલગણ્ડાઃ ગલગંડ ગલગણ્ડ, વાતોત્થાઃ વાતજન્ય, કફાનુગતાઃ તથા કફના અનુબંધવાળા હોય છે ઓર કફકે અનુબંધવાળે હોતે હૈં, તે તે વે, ઘૃતક્ષીર- ઘી, દૂધ, કષાયાણામ્ અને કષાયોનાં એવં કષાયૌકે, અભ્યાસાન્ અભ્યાસથી નિરન્તર સેવનસે, ન ભવન્તિ રહેતા નથી નહીં રહેતે ॥ ૧૪૦ ॥

140. As regards those affections of goitre, which owe their origin to vata

and kapha, they are prevented by the regular use of a diet consisting of ghee, milk and astringent articles.

વિસર્પે રક્તમોક્ષણપ્રયોગ—

યાનીહોક્તાનિ કર્માણિ વિસર્પાણાં નિવૃત્તયે ।

એકતસ્તાનિ સર્વાણિ રક્તમોક્ષણમેકતઃ ॥૧૪૧॥

વિસર્પાણામ્ વિસર્પોની વિસર્પૌકે, નિવૃત્તયે શાન્તિને માટે નિવારણકે લિપ્ત, યાનિ ને જો, કર્માણિ કર્મો કર્મ, હદ અહીં યહાં, ઉક્તાનિ ક્ષણો છે કહે હૈં, તાનિ તે વે, સર્વાણિ સઘળાં સર્વ, એકતઃ એક બાબુએ છે એક ઓર છે, રક્તમોક્ષણમ્ ચ અને કેવળ રક્તમોક્ષણ ઓર એકલા રક્તમોક્ષણ, એકતઃ બીજી બાબુએ છે દુસરી ઓર છે ॥ ૧૪૧ ॥

141. If all the therapeutic measures described here as curative of Visarpa be put on one side and blood-letting on the other, they will be found equal.

વિસર્પો ન હ્યસંસૃષ્ટો રક્તપિત્તેન યાયતે ।

તસ્માત્ સાધારણં સર્વમુક્તમેતદ્વિકિત્સિતમ્ ॥૧૪૨॥

રક્તપિત્તેન રક્તપિત્તના રક્તપિત્તકે, અસંસૃષ્ટઃ હિ સંસર્ગે વિના સંસર્ગકે વિના, વિસર્પઃ વિસર્પ વિસર્પ, ન યાયતે થતે નથી નહીં હોતા, તસ્માત્ તેથી સસંકારણસે, એતદ્ આ યદ્, સર્વમ્ સઘળી સર્વ, સાધારણમ્ સામાન્ય સામાન્ય, ચિકિત્સિતમ્ ચિકિત્સા ચિકિત્સા, ઉક્તમ્ કહી છે કહી છે ॥ ૧૪૨ ॥

142. Visarpa never occurs without the association of the condition of hemothermia. Consequently whatever has been described here by way of

૧૪૧. નિવૃત્તયે—પ્રાપ્તિયે (વ.)

૧૪૨. વિસર્પો ન હ્યસંસૃષ્ટો રક્તપિત્તેન યાયતે—વિસર્પો યાસંસૃષ્ટો રક્તપિત્તેન રક્તપિત્તે (વ.)

૧, હ્યસંસૃષ્ટો—હ્યસંસૃષ્ટા (વ.)

૨, યાયતે—લક્ષ્યતે (વ.)

૩, —લક્ષ્યતે (વ.)

૧૪૦. કફાનુગતા—કફાનુબળા (ક. વ. ત. વ. વ.)

૧, ક્ષીર—ક્ષાર (સ. વ.)



remedial measures is the general line of treatment.

विशेषो दोषवैषम्याच्च नोक्तः समासतः ।

समासव्यासनिर्दिष्टां क्रियां विद्वानुपाचरेत् ॥१४३॥

दोषवैषम्यात् अने दोषनी विषमताने क्षीघ्रे और दोषकी विषमताके कारण, विशेषः च विशेष चिकित्सा विशेष चिकित्सा, समासतः संक्षेपमां संक्षेपमे, न उक्तः कही नहीं कही है, न ऐभ नथी ऐसा नहीं, विद्वान् वैद्य वैद्य, समास- संक्षेप समास, व्यास- अने विस्तारथी और विस्तारसे, निर्दिष्टाय कहेली बताई हुई, क्रियाम् उपाचरेत् चिकित्सा कर्त्तवी चिकित्सा करे ॥ १४३ ॥

143. We have not, however, omitted to outline in brief, specific treatment relating to the special nature of morbidity requiring such treatment. The expert physician should call into service the entire therapeutic procedure whether laid down in brief or in extenso

अध्यायोक्तविषयाः—

तत्र श्लोकाः—

निरुक्तं नामभेदाच्च दोषा दृश्याणि हेतवः ।

आश्रयो मार्गतश्चैव विसर्पगुरुल्लाघवम् ॥१४४॥

लिङ्गान्युपद्रवा ये च यल्लक्षण उपद्रवः ।

साध्यत्वं, न च, साध्यानां साधनं च यथाक्रमम् १४५

इति पिप्रक्षवे सिद्धिमग्निवेशाय धीमते ।

पुनर्वसुखाचेदं विसर्पाणां चिकित्सितम् ॥१४६॥

१४३. समासव्यासनिर्दिष्टां क्रियां विद्वानुपाचरेत्—समासव्यास-

निर्देशरुक्तं चेतश्चिकित्सितम् (द. घ. क. व)

१४४. निरुक्तं—निरुक्तिः (ब. छ.)

१४५. साध्यानां—साध्यत्वं (ब.)

१४६. पिप्रक्षवे—पिप्रियया (घ)

सिद्धिम्—सिद्धिम् (क. त. घ.)

पुनर्वसुखाचेदं विसर्पाणां चिकित्सितम्—उक्तं भगवान्

क्षतदीप्तर्पाणां चिकित्सिते (घ.)

तत्र श्लोकाः ते विषयमां उपसंहारना श्लोको छे ३ उस विषयमे उपसंहारके श्लोक हैं कि, निरुक्तम् निरुक्ति निरुक्ति, नामभेदाः नामना भेदे नामभेद, दोषाः दोषो दोष, दृश्याणि दृश्यो दृश्य, हेतवः निदान हेतु, आश्रयः आश्रय आश्रय, मार्गतः च एव मार्ग प्रमाणे मार्गके अनुसार, विसर्प- विसर्पनी विसर्पकी, गुरु- शुरुता गुरुता, ल्लाघवश्च अने क्षुब्धता और लघुता, लिङ्गानि लक्षणो लक्षण, ये च अने ७ और जो, उपद्रवाः उपद्रवो उपद्रव, यत्- ७ जो, लक्षणः लक्षण्युपागो लक्षणयुक्त, उपद्रवः उपद्रव उपद्रव, साध्यत्वञ्च साध्यता साध्यता, न च असाध्यता असाध्यता, यथाक्रमञ्च अने क्रम प्रमाणे और यथाक्रम, साध्यानाञ्च साध्यनी साध्यकी, साधनम् च चिकित्सा चिकित्सा, इति ऐभ इस प्रकार, पिप्रक्षवे पूछना २ पूछनेवाले, धीमते धीमान् बुद्धिमान्, अग्निवेशाय अग्निवेशने अग्निवेशको, पुनर्वसुः भगवान् पुनर्वसुमे भगवान् पुनर्वसुने, विसर्पाणाञ्च विसर्पनी विसर्पकी, इदम् आ यह, चिकित्सितञ्च चिकित्सा चिकित्सा, सिद्धिम् च अने सिद्धि और सिद्धि, उवाच कही छे कही है ॥१४४-१४६॥

Here are the recapitulatory verses—

144-146. The definition of Visarpa, synonyms by which it is known, the morbid humors, the morbidised body-elements, the etiological factors, the habitat of the disease, the severity of mildness of the affection as determined by the way it spreads the signs and symptoms, the complications, the nature of these complications, the curability or otherwise of a particular type, the remedial measures in due order of the curable types—all this has Punarvasu declared in this chapter concerning the proven line of treatment for spreading affections, to the inquiring and intelligent Agnivesa.

इत्यग्निवेशकृते तन्त्रे चरकप्रतिसंस्कृते  
चिकित्सास्थाने विसर्पचिकित्सितं  
नामैकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

इति ऐम इस प्रकार, अग्निवेशकृते अग्निवेशे २२५  
अग्निवेशे बनाये, चरकप्रतिसंस्कृते तन्त्रे अने २२५  
प्रतिसंस्कार पामेवा आ शास्त्रमां और चरकके  
द्वारा संस्कृत इस शास्त्रके, चिकित्सास्थाने चिकित्सास्थान  
विषे चिकित्सास्थानमें, विसर्पचिकित्सितम् 'विसर्प-  
चिकित्सित' 'विसर्पचिकित्सित', नाम नामने  
नामका, एकविंशः अष्टादशमे इकोसवाँ, अध्यायः  
अध्याय संपूर्ण थै अध्याय समाप्त हुआ ॥ २१ ॥

21. Thus in the Section on Thera-  
peutics, in the treatise compiled by  
Agnivesa and revised by Caraka, the  
twenty-first chapter entitled 'The The-  
rapeutics of Acute Spreading Affections'  
is completed.

### द्वाविंशोऽध्यायः ।

आवीसमे अध्याय अध्याय बाईसवाँ  
Chapter XXII

तृष्णाचिकित्सितोपक्रमः—

अथातस्तृष्णाचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥१॥  
इति ह स्माह भगवानात्रेयः ॥२॥

अथ अतः ६५६ अर्थात् अब आगे, तृष्णाचिकि-  
त्सितम् 'तृष्णाचिकित्सित' नामने अध्यायतुं  
'तृष्णाचिकित्सित' नामके अध्यायका, व्याख्यास्यामः  
व्याख्यान करुं व्याख्यान करेंगे ॥ १ ॥

भगवान् भगवान् भगवान्, आत्रेयः आत्रेये  
आत्रेयने, इति ह आ विषयमां नीचे प्रमाणे न इस  
विषयमें निम्न प्रकारसे ही, आह स्म उद्धृत है ॥२॥

1. We shall now expound the cha-  
pter entitled 'The Therapeutics of  
Dipsosis (morbid thirst)'.

2. Thus declared the worshipful  
Atreya.

ज्ञानप्रशमतपोभिः ख्यातोऽत्रिभुतो जगद्धितेऽभि-  
रतः ।  
तृष्णानां प्रशमार्थं चिकित्सितं प्राह पञ्चानाम् ॥३॥

ज्ञान-प्रशम- ज्ञान, शम ज्ञान, शम, तपोभिः अने  
तपशी और तपसे, ख्यातः प्रसिद्ध प्रसिद्ध, जगत्-हिते  
तथा जगतना हितमां और जगतके हितमें, अभिरतः  
अभिरत अभिरत, अत्रिभुतः आत्रेये आत्रेयने, पञ्चानाम्  
पांच पांचों, तृष्णानाम् तृष्णानां तृष्णाओंकी, प्रशमार्थम्  
शान्त भाटे शान्तिके लिए, चिकित्सितम् चिकित्सा  
चिकित्सा प्राह उड़ी कही ॥ ३ ॥

3. The son of Atri famed for his  
wisdom tranquility and austerity and  
devoted to the well-being of the world,  
expounded the therapeutics of the five  
kinds of Dipsosis.

तृष्णानां निदानं संशसिम्—

क्षोभाद्भ्रूयाच्छ्रमादपि शोकात्क्रोधाद्विलङ्घनान्मघात्  
क्षाराम्ललवणकटुकोष्णरूक्षशुष्काक्षसेवाभिः ॥ ४ ॥

धातुक्षयगदकर्षणवमनाद्यतियोगसूर्यसंतपैः ।

पित्तानिलौ प्रवृद्धौ सौम्यान्धातूश्च शोषयतः ॥ ५ ॥

रसवाहिनीश्च नालीजिह्वामूलगलनालुककृन्तः ।

संशोष्य नृणां देहे कुरुतस्तृष्णां महाबलावेतौ ॥ ६ ॥

क्षोभात् क्षोभधी क्षोभसे, भ्रूयात् भ्रूयधी भ्रूयसे,  
श्रमात् श्रमधी श्रमसे, शोकात् शोकाधी शोकसे, क्रोधात्  
क्रोधधी क्रोधसे, विलङ्घनात् विलङ्घनी अतिलङ्घनसे,  
मघात् मघधियानी मघधियानसे, क्षार- क्षार क्षार,  
अम्ल- अम्ल अम्ल, लवण- लवण लवण, कटुक- कटुक  
कटुक, उष्ण- उष्ण उष्ण, रूक्ष- रूक्ष रूक्ष, शुष्क-  
अने शुष्क और शुष्क, अक्ष- अक्षना अक्षके, सेवाभिः

४. क्षोभात्-क्रोधात् (य.)

५. नालीः-जपनीः (य. प. क. व.)

६. महाबलावेतौ-अतिलङ्घनौ (व.)

સેવનથી સેવન કરનેસે, ધાતુક્ષય-ધાતુક્ષય ધાતુક્ષય, ગદ-કર્ષણ. રોગથી થયેલી કૃશતા રોગસે ઉત્પન્ન હુઈ કૃશતા, વમનાસિ-વમનઆદિના વમનઆદિકે, અતિ-યોગ-અતિથોગથી અતિયોગસે, સૂર્યસંતાપે: અને સૂર્યના તાપથી ઓર સૂર્યકી ધૂપસે, પ્રવૃદ્ધો વધેલા પ્રકુપિત, પિત્તાભિલૌ પિત્ત અને વાત પિત્ત ઓર વાત, સૌમ્યાન્ બદીય સૌમ્ય, ધાતુન્ ચ ધાતુઓનું ધાતુઓના, શોષયત: શોષણ કરે છે શોષણ કરતે હૈ, છતૌ આ એ, મહાબલૌ મહાબળવાન પિત્ત તથા વાત બન્ને મહાબલવાન પિત્ત તથા વાત બંને, રસવાહિની: ચ રસવાહિની રસવાહિની, નાલી: નાડીઓ નાડિયાં, જિહ્વામૂલ-જિહ્વા મૂળ, જિહ્વામૂલ, ગલ-ગળું ગલા, તાલુક-તાળુ તાલુ, ક્લોમ્ન: ચ અને ક્લોમને ઓર ક્લોમકો, સંશોષ્ય સૂકવીને સૂકાકર, તૃણાન્ મનુષ્યના મનુષ્યકે, દેહે દેહમાં દેહમેં, તૃણાન્ તરસ પ્યાસ, કુરુત: પેદા કરે છે ઉત્પન્ન કરતે હૈ ॥ ૪-૬ ॥

4-6. As a result of shock, fear, fatigue, grief, anger, extreme inanition, alcoholism, constant use of alkaline, acid, salt, pungent, hot, dry and dehydrated food or emaciation due to loss of body-element or to disease, or of over-agitation of purificatory procedures and excessive insolation, the pitta and vata get greatly increased and dry up the watery contents of the body-elements. These two humors becoming very strong dehydrate the fluid-carrying ducts and channels situated at the base of the tongue, throat palate and Kloman and cause dipsosis in a man.

પીતં પીતં હિ જલં શોષયતસ્તાવતો ન યાતિ શમમ્ ।  
ચોરગ્યાચિકૃશાનાં પ્રભવત્યુપસર્ગભૂતા સા ॥ ૭ ॥

૭. શોષયતસ્તાવતો ન યાતિ શમમ્-શોષયતસ્તાવતિબલૌ ન યાતિ શમમ્ (ક.)

,, ઉપસર્ગભૂતા-ઉપસર્ગરૂપા (ધ.)

તૌ તેઓ બન્ને વે બંને, પીતમ્ પીતમ્ વારંવાર પીધેલ્ વારવાર પિયે હુઈ, જલમ્ પાણીને જલકો, શોષ-યત: હિ શોષે છે સૂકાતે રહતે હૈ, અત: આથી इस लिए, શમમ્ તરસ શાન્ત પ્યાસ શાન્ત, ન યાતિ યતી નથી નહીં હોતી, ચોરગ્યાચિ-ચોર વ્યાધિને લીધે ચોર વ્યાધિયોસે, કૃશાનામ્ કૃશ થયેલા રોગીઓમાં કૃશ હુઈ રોગિયોમેં, સા તે વહ, ઉપસર્ગભૂતા ઉપદ્રવરૂપે ઉપદ્રવ-રૂપસે, પ્રભવતિ થાય છે હોતી હૈ ॥ ૭ ॥

7. Though he repeatedly drinks water yet his thirst is not quenched. Such dipsosis arises as a complication in persons suffering emaciation due to severe diseases.

તૃણાનાં પૂર્વરૂપં સામાન્યલક્ષણં ચ—

પ્રાગ્રૂપં મુખશોષ: , સ્વલક્ષણં સર્વદાઽમ્બુકામિત્વમ્ ।  
તૃણાનાં સર્વાસાં લિજ્જાનાં લાઘવમપાય: ॥ ૮ ॥

મુખશોષ: મુખશોષ મુખશોષ, પ્રાગ્રૂપમ્ એ તૃણાનું પૂર્વરૂપ છે યહ તૃણાકા પૂર્વરૂપ હૈ, સર્વદા સર્વદા નિરન્તર, અમ્બુકામિત્વમ્ બલની ઇચ્છા થવી જલકો ઇચ્છા, સ્વલક્ષણમ્ એ તૃણાનું પેાતાનું લક્ષણ છે યહ તૃણાકા અપના લક્ષણ હૈ, લિજ્જાનામ્ અને લક્ષણોની ઓર લક્ષણોંકી, લાઘવમ્ લઘુતા એ લઘુતા યહ, સર્વા-સામ્ સર્વ સર્વ, તૃણાનામ્ તૃણાઓની તૃણાઓંકી, અપાય: શાન્તિ છે શાન્તિ હૈ ॥ ૮ ॥

8. The premonitory symptoms are dryness of the mouth and the pathognomic symptom is constant craving for water. The reduction to a state of mildness of all the characteristic symptoms of the disease is the sign of its cure.

તૃણાનામુપદ્રવા: —

મુખશોષસ્વરમેદઞ્ચમસંતાપપ્રલાપસંસ્તમ્ભાન્ ।  
તાલ્વોષ્ઠકણ્ઠજિહ્વાકર્કશતાં ચિત્તનાશં ચ ॥ ૯ ॥

૯. સ્વલક્ષણમ્-સ્વલક્ષ્ય: (ધ.)

,, અમ્બુકામિત્વમ્-અમ્બુકામિત્વમ્ (ક.)

જિહ્વાનિર્ગમમરુચિ વાધિર્ય મર્મદૂયનં સાદમ ।  
તૃષ્ણોદ્ભૂતા કુરુતે, પञ्चविधां लिङ्गतः शृणु ताम् ॥૧૦॥

જઙ્ઘાતા વૃદ્ધિ પામેલી વધી હુઈ, તૃષ્ણા તૃષ્ણા  
પ્યાસ, મુક્ષશોષ- મુખશોષ મુખશોષ, સ્વરમેદ- સ્વરમેદ  
સ્વરમેદ, અમ- ભ્રમ અમ, સંતાપ- સંતાપ સંતાપ, પ્રલાપ-  
પ્રલાપ પ્રલાપ, સંસ્તમ્ભાન્ બંધાઈ બંધું સંસ્તમ્ભ, તાલુ-  
તાળુ તાલુ, ઓછ- હોઠ હોઠ, કઠ- કંઠ કંઠ, જિહ્વા-  
અને ઓળની, ઓર જીમમે. કર્કશતામ્ કંકશતા કર્કશતા,  
ચિત્તનાશમ્ ઓછોશી ચિત્તનાશ, જિહ્વાનિર્ગમમ્ ઓળનું  
બહાર નીકળવું જીમકા બહાર નિકલ આના, અરુચિમ્  
અરુચિ અરુચિ, વાધિર્યમ્ બંધેરાપણું બધિરતા, મર્મદૂ-  
યનમ્ મર્મપીડા મર્મપીડા, સાદમ્ ચ અને શિથિલતા  
ઓછો અને ચિથિલતા इनको, કુરુતે ઉત્પન્ન કરે છે  
ઉત્પન્ન કરતી છે, પञ्चविधाम् પાંચ પ્રકારની પાંચ  
પ્રકારની, તામ્ તે તૃષ્ણાને उस तृष्णाको, लिङ्गतः  
લક્ષણોથી લક્ષણોસે, शृणु स्मभवे। सुनो ॥૧-૧૦॥

9-10. Dryness of the mouth, change of voice, giddiness, burning, delirium, rigidity, roughness of the palate, lip, throat and tongue, stupefaction, protrusion of the tongue, anorexia, deafness, sense of burning in internal organs, and asthenia are the symptoms of dipsosis. Now listen to the symptoms of each of the five varieties of dipsosis individually.

વાતતૃષ્ણાયાઃ સંપ્રાપ્તિર્લક્ષણં ચ—

અઘ્ધાતું દેહસ્થં કુપિતઃ પવનો યદા વિશોષયતિ ।  
તસ્મિન્શુષ્કે શુષ્કત્યબલસ્તૃષ્યત્યથ વિશુષ્યન્ ॥૧૧॥

વદા અધારે જવ, કુપિતઃ કોપેલ કુપિત હુઆ,  
પવનઃ વાયુ વાયુ, દેહસ્થમ્ દેહસ્થ દેહસ્થિત, અઘ્ધાતુશ્ચ

૧૦. મર્મદૂયનં સાદમ્—મર્મનાં પીડનં મદનમ્ (ય.)

૧, મર્મદૂયનં—મર્મપીડનં (ફ. વ.)

૧, તામ્—તાઃ (ધ.)

૧૧. દેહસ્થં—દેહસ્થ (ફ.)

અઘ્ધાતુને જઘ્ઘાતુકા, વિશોષયતિ શેષે છે શોષણ  
કરતા છે, તસ્મિન્ ત્યારે તે તબ उसके, શુષ્કે સુકાતા  
સૂકને પર, અબલઃ નિર્બળ પુરુષ દુર્બલ પુરુષ, શુષ્કયતિ  
શેષાય છે સૂકતા છે, અથ અને ઓર, વિશુષ્યન્  
શેષાપાત્ તે સૂકતા હુઆ વદ, તૃષ્ણતિ તરસેથી થાય છે  
તૃષ્ણાનો પ્રાપ્ત હોતા છે ॥ ૧૧ ॥

11. When the provoked vata absorbs the watery element in the body, the weak person gets dehydrated by the absorption of this fluid and consequently suffers from dipsosis.

નિદ્રાનાશઃ શિરસોઽમ્રપ્રસ્થા શુષ્કવિરસમુલ્લતા ચ  
સ્રોતોઽવરોધ इति च स्याद्विद्धं वाततृष्णायाः ॥૧૨॥

નિદ્રાનાશઃ નિદ્રાનાશ નિદ્રાનાશ, શિરસઃ અમ્રઃ  
શિરોભ્રમ શિરોભ્રમ, તથા શુષ્કવિરસમુલ્લતા ચ  
શુષ્કમુખતા, વિરસમુખતા મુખકા શુષ્ક હોના એવં મુખકી  
વિરસતા, સ્રોતોઽવરોધઃ અને સ્રોતોને અવરોધ ઓર  
સ્રોતોના અવરોધ, इति च એ ये, વાતતૃષ્ણાયાઃ વાત-  
જન્ય તૃષ્ણાના વાતજન્ય તૃષ્ણાને, લિઙ્ગમ્ લક્ષણો લક્ષણ,  
સ્યાન્ છે હૈ ॥ ૧૨ ॥

12. Loss of sleep, whirling of the head, dryness and loss of taste in the mouth and occlusion of the channels are the symptoms of dipsosis of the vata type.

પિત્તતૃષ્ણાયાઃ સંપ્રાપ્તિર્લક્ષણં ચ—

પિત્તં મતમાગ્રેયં કુપિતં ચેત્તાપયત્યપાં ધાતુમ્ ।  
સંતપ્તઃ સ હિ જનયેત્તૃષ્ણાં દાહોલ્બ્ધાં નૃનામ્ ॥૧૩॥

પિત્તમ્ પિત્તને પિત્તકો, આગ્રેયમ્ આગ્રેય આગ્રેય,  
મતમ્ માન્યું છે માના છે, કુપિતમ્ કુપિત થઈ કુપિત હો  
કર, અપાન્ન ધાતુમ્ અઘ્ધાતુને જલઘાતુકો, તાપયતિ  
ચેત્ત એ તપાવે તે। यदि तपाता है तो, संतप्तः सः  
તપી ગયેલ તે અઘ્ધાતુ તપી હુઈ વદ જલઘાતુ,

૧૨. સ્રોતોઽવરોધ—કળ્ઠાવરોધ (ફ.)

नृणाम् मनुष्याणां मनुष्योर्मै, दाहोत्पन्नान् दाहप्रधानं दाहप्रधानं, तृष्णाम् तृष्णा तृष्णाको, जननेत् उत्पन्न उत्पन्न करती है ॥ १३ ॥

13. The pitta is regarded as the thermal element in the body. If it is provoked, it heats the watery element and the watery element being heated, there occurs thirst and excessive burning sensation in the man.

तिक्तास्यत्वं शिरसो दाहः शीतामिनन्दता मूर्च्छा।  
पीताक्षिमूत्रवर्चस्त्वमाकृतिः पित्ततृष्णायाः ॥१४॥

तिक्तास्यत्वम् तिक्तभुजता। मुखकी तिक्ता, शिरसः दाहः माथामां दाह शिरमें दाह, शीतामिनन्दता शीतल परतुनी धृष्ट शीतल पदार्थोंको पसन्द करना, मूर्च्छा भ्रमं मूर्च्छा, पीताक्षिमूत्रवर्चस्त्वम् आंभ, मूत्र अने आडे पीणां भवां आंख मूत्र और पुरीषका पीला होना, पित्ततृष्णायाः ओ पित्तजन्य तृष्णानां ये पित्तजन्य तृष्णाके, आकृतिः लक्षणं लक्षण हैं ॥ १४ ॥

14. Bitter taste in the mouth, burning sensation in the head, desire for cold things, fainting and icteric tinge of the eyes, urine and the feces, are the signs of dipsosis of the pitta type.

आमजतृष्णायाः संप्राप्तिर्लक्षणं च—

तृष्णा याऽऽमप्रभवा साऽप्याग्नेयाऽऽमपित्तजनि-  
तत्वात् ।

लिङ्गं तस्याश्चारुचिराध्मानकफप्रसेकौ च ॥१५॥

या ओ जो, तृष्णा तृष्णा तृष्णा, आमप्रभवा आमजन्य ओ आमजन्य है, सा ते वह, अपि पक्षु मी, आमपित्त- आमभी अवरोध पायेला पित्तभी आम-वरुद्ध पित्तसे, जनितत्वात् उत्पन्न अयेली होवाली उत्पन्न होनेसे, आग्नेया आग्नेय ओ आग्नेय है, अरुचिः च

१५. साऽप्याग्नेयाऽऽमपित्तजनितत्वात्—साऽप्याग्नेयी न पित्तजनि-  
तत्वात् (ब.)

लिङ्गं तस्याश्चारु-तलिङ्गं स्यात् (य.)

अरुचि अरुचि, आध्मान- आध्मान आध्मान, कफप्रसेकौ च अने कफप्रसेक ओ और कफका प्रसेक होना ये, तस्याः तेनां उसके, लिङ्गं लक्षणं लक्षण हैं ॥ १५ ॥

15. Dipsosis which originates from chyme morbidity is also of the thermal type as it originates from chyme and the pitta. Its symptoms are anorexia, flatulence and ptyalism.

क्षयजतृष्णायाः संप्राप्तिर्लक्षणं च—

देहो रसजोऽम्बुभवो रसश्च तस्य क्षयाच्च तृष्येद्धि ।  
दीनस्वरः प्रताम्यन् संशुष्कहृदयगलतालुः ॥१६॥

देहः देह देह, रसजः रसजन्य ओ रससे उत्पन्न होता है, रसः अने रस और रस, अम्बुभवः च भव्यथी उत्पन्न थाय ओ जलसे उत्पन्न होता है, तस्य तेनां उसके, क्षयाच्च क्षयथी क्षयसे, तृष्येद्धि मनुष्यने तृष्णा थाय ओ तृष्णा होती है, दीनस्वरः ते दीन स्वरवाणी थाय ओ वह दीन स्वरवाला होता है, प्रताम्यन् तेने अधारां आवे ओ उसको अन्वेषा आता है, संशुष्कहृदयगलतालुः अने तेनां हृदय, कंठ तथा तालुं शुष्क हो जाते हैं ॥ १६ ॥

16. The body is made of colloidal fluid and the colloidal fluid of the body is in turn made of the aqueous element. The loss of this watery element induces thirst, the voice becomes low, the man becomes faint and his stomach, throat and palate get parched.

उपसर्गजतृष्णायाः संप्राप्तिर्लक्षणं च—

भवति खलु योपसर्गात्तृष्णा सा शोषिणी कष्टा ।  
ज्वरमेहक्षयशोषश्वासाद्युपसृष्टदेहानाम् ॥१७॥

१६. तृष्येद्धि-तृष्येत्तु (ब.)

, संशुष्कहृदयगलतालुः—दीनः संशुष्कगलतालुः (क. ब.)

१७. योपसर्गात्—योपसर्गा (ब.)

, शोष-कास (ब.)

ज्वर- ज्वर ज्वर मेह- प्रमेह प्रमेह, क्षय- क्षय क्षय, शोष- शोष शोष, आसाद्युपसृष्ट- आस वजरेभी युक्त आस आदिसे युक्त, देहानाम् देहवाणांओने देह-धारियोंमें, उपसर्गात् उपसर्गरे उपसर्गरूपसे, या जे जो, तृष्णा तृष्णा तृष्णा, भवति थाय छे होती है, सा ते वह, खलु अरेअर सचमुच, शोषिणी शोष डरनार शोषण करनेवाली, कष्टा अने कष्टसाध्य छे और कष्टसाध्य है ॥ १७ ॥

17. The dipsosis which occurs as a complication in persons affected with fever, urinary disorders, wasting, consumption, dyspnea and similar other diseases, causes great dehydration of the body and is of the formidable type.

असाध्यतृष्णायाः लक्षणम्—

सर्वास्त्वितिप्रसक्ता रोगकृशानां वमिप्रसक्तानाम् ।  
घोरोपद्रव्ययुक्तास्तृष्णा मरणाय विज्ञेयाः ॥१८॥

रोगकृशानाम् रोगभी कृश रोगसे कृश, वमिप्रसक्तानाम् अने खाधुने खाधु उलटीथी पीछाधेला और निरन्तर वमनसे पीड़ित मनुष्यमें, अतिप्रसक्ताः अतिशय वधेली अत्यन्त बड़ी हुई, घोरोपद्रव्ययुक्ताः तथा घोर उपद्रव्य युक्त और घोर उपद्रवसे युक्त, सर्वाः अथी सब, तृष्णाः तु तृष्णाओने तृष्णाओंको, मरणाय मरुषु डरवा भाटे उपपन्न थयेली मृत्यु करनेके लिए उत्पन्न हुई, विज्ञेयाः अक्षुपी जाननी चाहिए ॥ १८ ॥

18. All varieties of dipsosis which are incessant, which occur in patients emaciated by disease and afflicted with continuous vomiting and which are attended with severe complications should be known as being indicative of approaching death.

तृष्णायां वातपित्तबोहेतुत्वम्—

नास्ति विना हि तर्षः पवनाद्वा तौ हि शोषणे हेतु ।  
जब्धातोऽतिवृषावपां क्षये तृष्यते नरो हि ॥१९॥

अग्निम् अग्नि अग्नि, पवनात् वा डे वायु या वायुके, विना विना विना, तर्षः तरस तृषा, न नशी नहीं हो सकती, हि डारुषु डे क्योंकि, अतिवृद्धौ अति-शय वधेले अत्यन्त बड़े हुए, तौ हि ते ये ये दोनोंही, जब्धातोः जब्धधातुना जब्धधातुके, शोषणे शोषणुमां शोषणमें, हेतु डारुषु छे कारण हैं, जपाम् जब्धने जलके, क्षये क्षय थाता क्षीण होने पर, नरः मनुष्य मनुष्यको, तृष्यते हि अवश्य तरस्ये थाय छे अवश्य प्यास लगती है ॥ १९ ॥

19. Thirst cannot occur without heat or without the vata; the excessive increase of these two elements is the cause indeed of the absorption of the watery element, on loss of which, man is afflicted with thirst.

गुर्वन्नपयःक्षेहैः संमूर्च्छन्निर्विदाहकाले च ।  
यस्तृष्येद्वृतमार्गे तत्राप्यमिलानलौ हेतु ॥२०॥

गुरु-जन्न-पयः- गुरु जोअन, दूध गुरु अन्न, दूध, क्षेहैः अने रनेहो और खेहोंके, संमूर्च्छन्निः उदरमां व्याप्त थवाने एषि उदरमें व्याप्त होनेके कारण, विदाहकाले च तथा अन्न पयवाने सभये तथा विदाहके समयमें, वृतमार्गे मार्गोअंध होवाने एषि मार्ग आवृत होनेके कारण, यः जे मनुष्य जो मनुष्य, तृष्येत् तरसथी पीछाय छे तृषासे पीड़ित होता है, तत्र अपि त्यां वहां, जलिकानलौ वायु अने आंस ज वायु और अग्नि ही, हेतु डारुषु थाय छे कारण होते हैं ॥ २० ॥

20. Even in a condition, where a person having taken heavy food, milk and unctuous articles, feels thirsty owing to the channels being occluded by the food-mixture during the digestive process, the vata and the thermal element act as the causative factors.

तीक्ष्णोष्णरूक्षभावाभ्यग्रं पित्तानिलौ प्रकोपयति ।  
शोषयतोऽपां धातुं तावेव हि मद्यशीलानाम् ॥२१॥

मद्यम् मद्य मद्य, तीक्ष्ण- तीक्ष्ण तीक्ष्ण, उष्ण-  
उष्ण उष्ण, रुक्षभावात् अने रुक्षपक्षुधी और रुक्ष  
होनेसे, पित्तानिलौ पित्त अने वायुने पित्त और वायुको,  
प्रकोपयति प्रकोपावे छे प्रकुपित करता है, तौ एव अने  
ते ये अ और वे दोनों ही, मद्यशीलानाम् मद्यना  
अध्यासीओनी मद्यसेवन करनेवालोंकी, अपाम् वातम्  
अध्यातुने जलधातुको, शोषयतः हि अश्श शोषे छे  
सूखा देते हैं ॥ २१ ॥

21. Alcohol by its quality of being  
acute, hot and dry, provokes the pitta  
and vata. It is therefore that in alcohol-  
addicts these two factors dry up the  
watery element of the body

तृष्णायां शीतजलं देयम्—

तप्ताखिव सिकतासु हि तोयमाशु शुष्यति क्षितम् ।  
तेषां संतप्तानां हिमजलपानाद्भवति शर्म ॥ २२ ॥

तप्तासु तपेदी तपी हुई, सिकतासु इव रेतीभां  
नाजेला अणनी पेठे वालमें डाले हुए जलकी तरह,  
क्षितम् तप्त शरीरमां नाजेधुं तप्त शरीरमें डाला हुआ  
तोयम् अण जल, आशु तुरत उरत, शुष्यति हि सुकधि  
अथ छे सूख जाता है, तेषां ते उन, संतप्तानाम्  
संतप्त पुरुषोंने सन्तप्त पुरुषोंको, हिमजलपानात् ईडुं  
अथ पीनाथी शीतल जल पीनेसे, शर्म सुख सुख,  
भवति थाय छे होता है ॥ २२ ॥

22. Just as hot sand absorbs and  
dries up the water poured on it, so  
such heated persons find relief by the  
potion of ice-cold water.

उष्णकान्तस्य सहसा शीतजलदाननिषेधः—

शिशिरस्नातस्योष्मा रुद्धः कोष्ठं प्रपद्य तर्षयति ।  
तस्मान्नोष्णकान्तो भजेत सहसा जलं शीतम् ॥ २३ ॥

२२. हि तोयमाशु शुष्यति क्षितम्—तद्यं पित्तं अशुष्यति क्षिप्रम् (फ)

११ क्षिप्रम्—क्षिप्रम् (व.)

२३. तस्मान्नोष्णकान्तो....जलं शीतम्—तस्माद्भजेत सहसा  
नोष्णकान्तो जल शीतम् (व. फ.)

शिशिर- ठंडा अथवा शीतल जलसे, स्नातस्य  
नाहेल पुरुषानी स्नान किये हुए पुरुषकी रुद्धः रोकायेदी  
रुकी हुई, उष्मा ओष्मा गरमी, कोष्ठम् डे.डमां कोष्ठमें,  
प्रपद्य अर्धने जाकर, तर्षयति तरस पे.ड करे छे  
प्यासको उत्पन्न करती है, तस्मात् तेधी इन लिए,  
उष्णकान्तः गरमीथी अध्यायेला पुरुषे गरमीने पीडित  
पुरुष, सहसा अकहम् शीघ्र, शीतम् शीतल शीतल,  
जलम् अणतुं जलका, न भजेत सेवन करतुं नहि सेवन  
न करे ॥ २३ ॥

23. The body-heat of the person  
who has taken a cold bath being  
obstructed in the peripheral region  
passes to the internal organs and  
creates thirst. Therefore the person  
who is fatigued by insolation should  
not use cold water immediately.

सर्वतृष्णानामनिल पित्त-क्षयजरवम्—

लिङ्गं सर्वाखेताखनिलक्षयपित्तजं भवत्यथ तु ।  
पृथगागमाच्चिकित्सितमतः प्रवक्ष्यामि तृष्णानाम् २४

एतासु आ इन, सर्वासु अधणी तृष्णाभां सब  
तृष्णामें, अनिल- वायुथी यथेलां वायुसे उत्पन्न हुए, क्षय-  
अथ आतुना क्षयथी यथेलां जलधातुके क्षयसे उत्पन्न  
हुए, पित्तजम् अने पित्तथी यथेलां और पित्तसे उत्पन्न  
हुए, लिङ्गम् लक्षणे लक्षण, भवति थाय छे होते हैं,  
अथ तु हवे अब, मतः अहीथी यहांसे, आगमात्  
आयुर्वेदना आभाष्यथी आयुर्वेदके प्रामाण्यसे, तृष्णानाम्  
तृष्णाओनी तृष्णाकी, पृथक् चिकित्सितम् जुदी जुदी  
चिकित्सा भिन्न भिन्न चिकित्सा, प्रवक्ष्यामि कह्यी  
कहूंगा ॥ २४ ॥

24. In all these varieties of dipsosis,  
symptoms arising from the provocation  
of the vata and the pitta and loss of  
watery element of the body, are mani-  
fest. Hereafter I shall describe the  
treatment of dipsosis of the various

२४. स्वनिलक्षयपित्तजं—स्वनिलक्षयात् पित्तजं (व.)



types one by one, according to the authoritative tradition.

તૃણાયાઃ સામાન્યચિકિત્સા—

અપાં ક્ષયાદિ તૃણા સંશોષ્ય નરં પ્રણાશયેદાશુ ।  
તસ્માદેન્દ્રં તોયં સમધુ પિબેત્તદ્દુષ્ણં વાઽન્યત્ ॥૨૫॥

તૃણા તૃણા તૃણા, અપામ્ બલધાતુના જલ-  
ધાતુકે, ક્ષયાત્ ક્ષયથી ક્ષીણ હોનેસે, નરમ્ મનુષ્યને  
મનુષ્યકો, સંશોષ્ય શોષીને સૂચાકર, આશુ શીઘ્ર શીઘ્ર,  
પ્રણાશયેત્ હિ મારી નાખે છે નષ્ટ કરતી હૈ, તસ્માત્  
તેથી इस लिए, સમધુ મધયુક્ત મધયુક્ત, એન્દ્રમ્  
વરસાદનું આન્તરીક્ષ, તોયમ્ પાણી પાણી, તદ્દુષ્ણમ્ અથવા  
તેવા યુક્તવાળું અથવા ઉત્તકે સમાન ગુણવાળા, અન્યત્  
વા બીજું પાણી દૂસરા પાણી, પિબેત્ પીવું પીવે ॥૨૫॥

25. Owing to the loss of the watery  
element, thirst dehydrates the man  
and soon kills him; the patient should  
therefore drink pure rain-water with  
honey, or any other water having  
similar qualities.

કિંચિદ્ધુવરાનુરસં તન્નુ લઘુ શીતલં સુગન્ધિ  
સુરસં ચ ।  
અનભિષ્યન્દિ ચ યત્તસ્થિતિગતમપ્યેન્દ્રવજ્જેયમ્ ૨૬

યત્ ને જો, કિંચિત્તમ્ પૃથ્વી ૫૨ રહેલું બલ  
પૃથ્વીકે કપરકા જલ, કિંચિત્ સહેજ કુલ, ધુવરાનુરસં  
કપાય અનુરસવાળું કપાય અનુરસયુક્ત, તન્નુ ૨૫૨૭  
સ્વચ્છ, લઘુ હલકું હલકા, શીતલમ્ શીતળ શીતલ,  
સુગન્ધિ સુમધવાળું સુગન્ધિ, સુરસમ્ સારા રસવાળું  
ઉત્તમ રસયુક્ત, અનભિષ્યન્દિ ચ અને અનભિષ્યન્દી  
હોય બૌર અનભિષ્યન્દિ હો, તત્ અપિ તેને પણ ઉસે  
મી, એન્દ્રવત્ વરસાદના પાણી જેવું વર્ષાત્રલકે સમાન,  
જેયમ્ બલધુ જાનના ચાહિય ॥ ૨૬ ॥

૨૫. અપાં ક્ષયાદિ—અપસંક્ષયાદિ (ક.)

૨૬. ધુવરાનુરસં તન્નુ—કપાયધુવરાનુરસં સ્વ (સ.)

૧. તન્નુ લઘુ—લઘુ લઘુ (ક.)

26. The water that has got a slightly  
astringent secondary taste, which is  
light, cool, possessed of good smell  
and devoid of deliquescent quality,  
should be considered similar to celestial  
water in effect though it be terrestrial.

શૃતશીતં સસિતોપલમથવા શરપૂર્વપચ્ચમૂલેન ।  
લાજાસક્તુસિતાહ્વામધુયુતમૈન્દ્રેણ વા મન્થમ્ ॥૨૭॥  
વઃત્વં વાઽસમયવાનાં શીતં મધુશર્કરાયુતં દદ્યાત્ ।  
પેયાં વા શાલીનાં દદ્યાદ્વા કોરદૂષાણામ્ ॥૨૮॥

શરપૂર્વ- શરદિ શરદિ, પચ્ચમૂલેન પચ્ચમૂલથી  
પંચમૂલસે, શૃતશીતમ્ શૃતશીત બલ શૃતશીત જલ,  
સસિતોપલમ્ સાકરની સાથે દેવું ચીનીકે સાથે દેવે,  
અથવા અથવા યા, લાજાસક્ત- લાજાને સાથે  
લાજાકે સક્ત સિતાહ્વા- સાકર શર્કરા, મધુયુતમ્ અને  
મધ મેળવી બનવેલો બૌર શહદસે બનાયા હુઆ,  
મન્થમ્ મન્થ મન્થ એન્દ્રેણ વા વરસાદના પાણી સાથે  
દેવે આન્તરીક્ષ જલસે દેવે, આમયવાનામ્ અથવા કાયા  
બનને અથવા કચે જૌકા, શીતલ્ શીતળ શીતલ,  
વાટયમ્ વાટય (મંડ) વાટય, મધુશર્કરાયુતમ્ મધ અને  
સાકરથી યુક્ત મધુ બૌર શર્કરાકે સાથે, દદ્યાત્ આપવે  
દેવે, શાલીનામ્ અથવા શાલિ ચેખાની અથવા શાલિ  
ચાવલ, કોરદૂષાણામ્ વા કે કોદરાની યા કોદોસે બનાઈ,  
પેયામ્ વા પેયા પેયાકો, દદ્યાત્ આપવી દેવે ॥૨૭-૨૮॥

27-28. The physician may give the  
water decocted with the roots of the  
pentad of roots beginning with reed  
grass, cooled and mixed with candied  
sugar or the demulcent drink prepared  
of roasted paddy powder, sugar, honey  
and rain water; or he may give the  
top part of half cooked barley gruel  
cooled and mixed with sugar; or he

૨૭ લાજાસક્તુસિતાહ્વામધુયુતમૈન્દ્રેણ વા મન્થમ્—લાજાનાં સક્તનાં  
સમધુસિતં મન્થમૈન્દ્રેણ (પ્ર. ત. બ. જ.)

૨૮. દદ્યાત્—બોડવા (બ.)

may give the thin gruel of sali rice or of common millet.

पयसा शृतेन भोजनमथवा मधुशर्करायुतं योज्यम् ।  
पारावतादिकरसैर्घृतमृष्टैर्वाऽप्यलवणाम्लैः ॥२९॥

शृतेन उडानेला गरम, पयसा दूध साथे दूधके साथ अथवा अथवा या, अलवणाम्लैः लवणु अने अम्लरहित नमक और अम्लरहित, घृतमृष्टैः घीभां वधारेला घीमें छोके हुए, पारावतादिकरसैः वा अपि पारावत वजेरेना भांसरस साथे पारावतादिके मांसरसोंके साथ, मधुशर्करायुतम् मधु अने साकरयुक्त शहद और शर्कराके साथ, भोजनम् लेलेन भोजन, योज्यम् योज्युं लेलेने देवे ॥ २९ ॥

29. Or, food may be given mixed with boiled milk or with honey and sugar, or mixed with the meat-juice of the pigeon and other birds of its group seasoned with ghee without adding either acid or salt.

तृणपञ्चमूलमुज्जातकैः प्रियालैश्च जाङ्गलाः सुकृताः ।  
शस्ता रसाः पयो वा तैः सिद्धं शर्करामधुमत् ॥३०॥

तृणपञ्चमूल-तृणपञ्चमूल तृणपञ्चमूल, मुज्जातकैः भुंजतके मुज्जातक, प्रियालैः च अने चारोणाथी और चिरौजीसे, सुकृताः सारी रीते संस्कार आपेला सुसंस्कृत, जाङ्गलाः रसाः अंगल प्राणीओना भांसरसो जांगल प्राणियोंके मांसरस, शस्ताः प्रशस्त छे प्रशस्त हैं, तैः अथवा तेओथी या उनसे. सिद्धम् सिद्ध करेले सिद्ध किया हुआ, शर्करामधुमत् साकर अने मधुयुक्त शर्करा और मधुके साथ, पयः वा दूध प्रशस्त छे दूध प्रशस्त है ॥ ३० ॥

30. The meat juices of jangala animals well prepared with the roots of the pentad of grasses, salep and buehanan's mango is recommended; or

२९. योज्यम्-भोज्यम् (व.)

३०. प्रियालैश्च-पियालैश्च (व.)

the milk prepared with the above drugs mixed with sugar and honey.

शतघृतघृतेनाक्तः पयः पिबेच्छीततोयमवगाह्य ।  
मुद्रमसूरचणकजा रसास्तु भृष्टा घृते देयाः ॥३१॥

शतघृत-शे। वभत घीशेला शतघृत, घृतेन घीभी वीसे, अक्तः अभ्यंग करेला रोगीओ अभ्यंग किया हुआ रोगी, शीततोयम् शीतल जलमें, अवगाह्य अवगाहन करीने अवगाहन करके, पय-दूध दूध, पिबेत् पीवुं पीवे, घृते भृष्टाः घीभां वधारेला घीसे छोके हुए, मुद्र-भग मूंग, मसूर-भक्षर मसूर, चणकजाः अने अलुना और चनेके, रसाः तु श्ले। यूष, देयाः आपना देवे ॥ ३१ ॥

31. Or, the patient anointing himself with the hundred times washed ghee and taking a cold tub-bath, should drink milk or soups of green-gram, lentils and chick peas, seasoned with ghee.

मधुरैः सजीवनीयैः शीतैश्च सत्तिकैः शृतं क्षीरम् ।  
पानाभ्यञ्जनसेकेष्विष्टं मधुशर्करायुक्तम् ॥३२॥

मधुरैः मधुर मधुर, शीतैः च तथा शीतवीर्य तथा शीतवीर्य, सजीवनीयैः अवनीय अलुना द्रव्योथी जीवनीय गणके द्रव्योंसे, सत्तिकैः तेभ्य तिक्त द्रव्योथी एवं तिक्त द्रव्योंसे, शृतम् उडानेला पकाया हुआ, क्षीरम् दूध दूध, मधुशर्करायुक्तम् मधु अने साकरनी साथे शहद और चीनीके साथ, पान- पान पान, अभ्यञ्जन-अभ्यंग अभ्यंग, सेकेषु अने परिषेधन करवाभां और परिषेकके लिए, इष्टम् छष्ट छे इष्ट है ॥ ३२ ॥

32. The milk boiled with drugs of the sweet group, or life-promoter group, refrigerant and bitter group mixed with honey and sugar may be used as potion, inunction and affusion.

३१. भृष्टा घृते-घृतमजिता (व. त. व. क.)

તજ્જં વા ઘૃતમિષ્ટં પાનામ્બજ્જેષુ નસ્યમપિ ચ ત્યાત્ ।  
નારીપયઃ સશર્કરમુષ્ટ્યા અપિ નસ્યમિશ્વરસઃ ॥૩૩॥

તજ્જમ્ વા અથવા તે સિદ્ધ દૂધમાંથી કાઢેલું યા  
રસ સિદ્ધ રૂપે નિકાળા હુઆ, ઘૃતમ્ ધી વી, પાનામ્બજ્જેષુ  
પાન અને અમ્બજ્જમાં પાન એવં અમ્બજ્જમે, ઇષ્ટ ૪૯  
છે ઇષ્ટ હૈ, નસ્યમ્ ચ અપિ આ ધીનું નસ્ય પાણુ ઇષ્ટ  
ચીકા નસ્ય મી, ત્યાત્ આપવામાં આવે છે દિવા જાતા  
હૈ સશર્કરશ્ચ સાકરયુક્ત શર્કરાકે સાથ, નારીપયઃ સ્ત્રીનું  
ધાવણુ સ્ત્રીકે રૂપ, મુષ્ટ્યાઃ સંકુલિતું દૂધ કંચનીકે  
રૂપ, ઇશ્વરસઃ અને શેરડીના રસનું ઓર ઇશ્વરસકા,  
અપિ પાણુ મી, નસ્ય ન્ નસ્ય આપવામાં આવે છે નસ્ય  
દિવા જાતા હૈ ॥ ૩૩ ॥

33. Or, the ghee prepared out of  
this medicated milk is beneficial as  
potion and inunction as well as nasal  
medication. Breast milk or camel's milk  
with sugar, or sugar-cane juice is good  
as nasal medication.

શ્વીરેશ્વરસગુહોદકસિતોપલાક્ષોદ્રસીધુમાર્દીકૈઃ ।  
વૃક્ષામ્લમાતુલુકૈર્ગન્ધૂષાસ્તાલુશોષઘ્નાઃ ॥૩૪॥

શ્વીર- દૂધ રૂપ, ઇશ્વરસ શેરડીના રસ ઇશ્વરસ,  
ગુહોદક- ગોળનું પાણી ગુહકા પાની, સિતોપલા-  
સાકર ચીની, ક્ષોદ્ર- મધ શરદ, સીધુ- સીધુ સીધુ,  
માર્દીકૈઃ માર્દીક સૂદીકાકે મધ, વૃક્ષામ્લ- કાકમ  
વૃક્ષામ્લ, માતુલુકૈઃ અને ખીખેરના ઓર વિજીરેકે,  
ગન્ધૂષાઃ ગંડૂષા ગન્ધૂષ, તાલુશોષઘ્નાઃ તાળવાના  
શોષને હરનાર છે તાલુશોષકે નાશક હૈ ॥ ૩૪ ॥

34. The gargles of milk, sugar-  
cane juice, gur-water, candied sugar,  
honey, sidhu wine, grape wine,

૩૩. નારીપયઃ...નસ્યમિશ્વરસઃ-નારીપયસા ઘૃતં સશર્કરમુષ્ટ્યાશ્ચ-  
નસ્યમિશ્વરસઃ (પ.)

૩૪. શ્વીરેશ્વરસ-સમપુરેશ્વરસ (પ.)

,, માર્દીકૈઃ-માષ્ઠીકૈઃ (ર. પ.)

citron and pomello are curative of  
dryness of the palate

જમ્બુઆમ્રાતકવદરીવેતસપશ્ચવલ્કપશ્ચામ્લૈઃ ।

હન્મુશ્વશિરઃપ્રદેહાઃ સઘૃતા મૂર્છાશ્રમતૃષ્ણાઘ્નાઃ સ્યુઃ

જમ્બુ- જાંબુડી જામુન, આમ્રાતક- આંબાડે  
આમ્રાતક, વદરી- ઓરડી વદરી વેતસ- વેતસ વેતસ,  
પશ્ચવલ્ક- પંચવલ્કલ પંચવલ્કલ, પશ્ચામ્લૈઃ અને  
પશ્ચામ્લ નડે ઓર પંચામ્લકે, સઘૃતાઃ ઘૃતયુક્ત વીકે  
સાથ, હન્- મુશ્વ- હૃદય, મુખ હૃદય, મુશ્વ, શિરઃ- પ્રદેહાઃ  
અને માથા ઉપર કહેલા લેપો ઓર શિર પર કિયે હુણ  
પ્રદેહ, મૂર્છા-શ્રમ-મૂર્છા, શ્રમ મૂર્છા, શ્રમ, તૃષ્ણાઘ્નાઃ અને  
તૃષ્ણાના નાશક ઓર તૃષ્ણાકે નાશક, સ્યુઃ છે હૈ ॥ ૩૫ ॥

35. The applications of jambul  
indian hog plum, jujube, country  
willow the pentad of barks and the  
pentad of acids mixed with ghee, when  
applied over peri-cardial region, face  
and head are curative of fainting,  
giddiness and thirst.

દાહિમદધિસ્થલોઘ્નૈઃ સવિદારીવીજપૂરકૈઃ શિરસઃ ।  
લેપો ગૌરામલકૈર્ઘૃતારનાલાયુતૈશ્ચ હિતઃ ॥૩૬॥

સવિદારી- વિદારીકંદ વિદારીકંદ, વીજપૂરકૈઃ ખીખેર  
વિજીરે, દાહિમ- દાહમ અનાર, દધિસ્થ- કાક કૈય, લોઘ્નૈઃ  
લોધર લોધ, ઘૃત- ધી વી, આરનાલાયુતૈઃ અને કાંજી  
મેળવી ઓર કાંજીકે સાથ, ગૌરામલકૈઃ ચ તાલ્પ પરિ-  
પકવ આમળાથી તાજે પરિપક આંબાલેસે, શિરસઃ શિરને  
શિરમેં, લેપઃ લેપ કરવો લેપ લગાના, હિતઃ હિતકર્તા  
છે હિતકર હૈ ॥ ૩૬ ॥

36. The unguent prepared of  
pomegranate, wood apple, lodh, white  
yam and citron or of whitish emblic

૩૫. વદરી-વદરીનલ (હ.)

,, પશ્ચવલ્કપશ્ચામ્લૈઃ-પશ્ચવૈશ્ચામ્લાઃ (સ. ર.)

,, પશ્ચામ્લૈઃ-પશ્ચામ્લાઃ (પ.)

,, પ્રદેહાઃ-પ્રલેપાઃ (જ.)

myrobalans mixed with ghee and sour wheat conjee, proves beneficial.

शैवलपङ्काम्बुरुहैः साम्लैः सघृतैश्च शकुभिलैः ।  
मस्त्वारनालार्द्रवसनकमलमणिहारसंस्पर्शाः ॥३७॥  
शिशिराम्बुचन्दनार्द्रस्तनतटपाणितलगात्रसंस्पर्शाः  
क्षौमार्द्रनिवसनानां वराङ्गनानां प्रियाणां च ॥३८॥

साम्लैः अभ्ययुक्त खटाईके साथ, शैवलपङ्काम्बुरुहैः शेवाण, डाहन तथा डभणथी शेवाल, कीचड़ तथा कमलका, सघृतैः तेमज घृतयुक्त एवं घीके साथ, शकुभिः च साथनाथी सकुओंका लेपः दोष लेप, मन्तु- छुंनना पाण्णीथी दहीके पानीसे, आरनाल- डां आरनालसे, आर्द्रवसन- पद्मगेड वस्त्र भिंगोये हुए कपड़े, कमल- डभल कमल, मणिहार- भस्त्रि अने छारना मणि और हाके, संस्पर्शाः स्पर्शां स्पर्श, क्षौमार्द्र- तेमज रेशमी बीना एवं रेशमी गीले, निवसनानाम् वस्त्र पड़ेरे वस्त्र पहनी हुई, प्रियाणाम् प्रिय प्रिय, वराङ्गनानाम् च सुंदरीओना सुंदर स्त्रियोंके, शिशिराम्बु- शीतल जल, चन्दन- अने चंदनथी और चन्दनसे, आर्द्र बीना भिंगोये हुए, स्तनतट- स्तनतट स्तनतट, पाणितल- छेणी पाणितल, गात्र- वगेरे अंगोना आदि अवयवोंके, संस्पर्शाः स्पर्शां तृष्णानो नाश करे छे स्पर्श तृष्णाको नष्ट करते हैं ॥ ३७-३८ ॥

37-38. Or, the applications prepared of moss, mud, and lotuses or with roasted paddy powder mixed with acid articles and ghee, or the application of wet cloth soaked in whey or sour wheat conjee or application of lotuses or of garlands of precious stones should be done. The cool contact of the

breasts and hands of beautiful and beloved women clad in wet silken garments and besmeared with cool and fragrant waters or sandal paste, proves beneficial.

हिमवद्दरीवनसरित्सरोऽम्बुजपवनेन्दुपादशिशिरा-  
णाम् ।  
रम्यशिशिरोदकानां स्मरणं कथाश्च तृष्णाघ्नाः ॥३९॥

हिमवत्-दरी- दिमादथनी गुहाओ हिमालयकी कन्दरा, वन- वन वन, सरित्- नदी नदी, सर- सरोवर सरोवर, अम्बुज- डभल कमल, पवन- पवन पवन, इन्दुपाद- अने चंदन की छिछोरीथी और चन्द्रकी किरणोंसे शिशिराणाम् शीतल शीतल, रम्य- तेमज रम्य एवं रम्य, शिशिरोदकानाम् तथा डां जखानु तथा शिशिर जलका, स्मरणम् स्मरण स्मरण, कथाः च अने तेओनी कथाओ पद्य और उनकी कथायें मी, तृष्णाघ्नाः तृष्णानो नाश करे छे तृष्णाका नाश करती हैं ॥ ३९ ॥

39. The recollection of or listening to the description of the Himalayan caves, woods, streams, lakes, lotuses, breezes, moonlight and other cool things as well as of lovely and cool waters—these have an allaying effect on dipsosis.

तृष्णाया वैशेषिकी चिकित्सा—

वातघ्नमन्नपानं मृदु लघु शीतं च वाततृष्णायाम् ।  
क्षयकासनुच्छतं क्षीरघृतमूर्ध्वावाततृष्णाघ्नम् ॥४०॥  
स्याज्जीवनीयसिद्धं क्षीरघृतं वातपित्तजे तर्पे ।

३९. रम्यशिशिरोदकानां—रम्योदकयुक्तानां (घ. द.)

.. .. रम्योदकशिशिराणां (घ.)

.. .. आरामशिशिरोदकानाम् (घ.)

४०. वाततृष्णायाम्—वाततृष्णायाः (क. ख. ज. घ.)

.. क्षीरघृतमूर्ध्वावात—क्षीरमूर्ध्वावात (घ.)

.. क्षीरघृतमूर्ध्वावाततृष्णाघ्नम्—क्षीरघृतं वाततृष्णाघ्नम् (घ.)

३७. शैवलपङ्काम्बुरुहैः—शैवालपङ्कजलैः (फ.)

.. शकुभिलैः—सकुभिलैः (घ.)

.. आर्द्रवसनकमल—कमलजलार्द्रवसन (घ.)

३८. पाणितलगात्रसंस्पर्शाः—पाणितलसंस्पर्शाः (ख.)

.. क्षौमार्द्रनिवसनानां—मौक्तिकक्षौमार्द्रवसनानाम् (घ. त.)

वातवृणायाम् वातवृ तृष्णाम् वायुजन्य तृष्णाम्, वातघ्नम् वातघ्न वातघ्न, मृदु मृदु मृदु, लघु लघु लघु, शीतम् च अने शीतल और शीतल, अन्नपानम् अन्नपान अन्नपान, क्षयकासनुत् तथा क्षय अने कासघ्न द्रव्योत्थी और क्षयकासघ्न द्रव्योत्थी, शृतम् उष्णोष्ण गरम किया हुआ, क्षीरघृतम् दूधोष्ण शीतल दूधसे निकाला हुआ घी, ऊर्ध्ववात श्वास श्वास, तृष्णाघ्नम् अने तृष्णा मटाउनार छे और तृष्णके नाशक हैं, जीवनीय- जीवनीय-जीवनीय जीवनीय- रागसे, सिद्धम् पक्ववेष्ट सिद्ध, क्षीरघृतम् दूधोष्ण शीतल दूधसे निकाला हुआ घी, वातपित्तजे वात-पित्तजन्य वातपित्तजन्य, तर्षे तृष्णाम् तृष्णाम्, स्यात् हितकर छे हितकर हैं ॥४०३॥

40-40½. In dipsosis of the vata type soft, light and cooling food and drink curative of vata are recommended as also boiled ghee, which is churned directly from milk and which is indicated in the treatment of cough due to wasting and is curative of dipsosis and dyspnea. In dipsosis due to vata-cum-pitta, the ghee taken out of milk prepared with the drugs of the life-promoter group of drugs, is recommended

पित्तजतृष्णायाः चिकित्सा—

पैत्ते द्राक्षाचन्दनसर्जूरुशीरमधुयुतं तोयम् ॥४१॥

लोहितशालितण्डुलसर्जूरपरूषकोत्पलद्राक्षाः ।

मधु पक्वलोष्टमेव च जले स्थितं शीतलं पेयम् ॥४२॥

पैत्ते पित्तजन्य तृष्णाम् पित्तजन्य तृष्णाम्, द्राक्षा- द्राक्षा द्राक्षा, चन्दन- चन्दन चन्दन, सर्जूर- अम्ल सर्जूर, उशीर- वागे। खस, मधुयुतम् अने मधु औषधीय युक्त और शहद इनसे युक्त, तोयम् पाणी जल, लोहित-शालितण्डुल- रता शालि योभा काल शालि चावल, सर्जूर- अम्ल सर्जूर, परूषक- शालसा

४१. पैत्ते-पित्ते (व)

„ द्राक्षाः-क्षुण्ण (द.)

„ जले स्थितं-जले शृतं (व)

कालसा, उत्पल- नीलकमल, द्राक्षाः अने द्राक्षा औषधीय युक्त पाणी और द्राक्षा इनसे युक्त जल, पक्वलोष्टम् अने तपावेष्टी भाटीना देखने और तपावे हुए मिट्टीके ढेलोको, जले स्थितम् पाणीमा ढारी जलमें बुझाकर, शीतलम् ते पाणी ठंडुं तथा पछी उस जलके ठंडा होने पर, मधु च एव तेमां मधु नाभी उसमें शहद डालकर, पेयम् पीवुं पीवे ॥ ४१-४२ ॥

41-42. In dipsosis of the pitta type, the water mixed with grapes, sandal-wood, date, cuscus and honey; as also the cold water in which red sali rice, tandula rice, dates, falsa, blue water lily, grapes, honey and a baked lump of earth have been kept may be given as potion.

लोहितशालिप्रस्थः सलोध्रमधुकाञ्जनोत्पलः क्षुण्णः पक्वामलोष्टजलमधुसमायुतो मृन्मये पेयः ॥४३॥

सलोध्र- धोधर लोध्र, मधुक-काञ्जन- गेहीमधु, रसा- जन मुलहठी, रसाजन, उत्पलः अने उत्पलसहित और उत्पलमहित, लोहित-शालि-प्रस्थः ६४ तोला लाल शालि योभाने ६४ तोले लाल शालि चावलको, क्षुण्णः अम्ल- उशीर। डरी दरकच करके, मृन्मये भाटीना वासुधुमा मिट्टीके पात्रमें, पक्व-आमलोष्ट-जल-मधु-समायुतः पक्ववेष्टी काशी भाटीना देखने ढारी गरम करेखुं नण ठंडुं तथा तेमां धोल्या पछी तेने गाणी मध नाभी तपावे हुए कच्ची मिट्टीके ढेलोको बुझाकर ठंडे हुए जलमें आलोकित कर छानकर शहद डाल करके, पेयः मात्राशी पीवा मात्रासे पीवे ॥ ४३ ॥

43. Or, the water kept in an earthen pot in which 64 tolas of red sali rice, pounded with lodh, liquorice, anti-mony and blue water lily are put and

४३. शालिप्रस्थः-शालितण्डुलप्रस्थः (क ड.)

„ क्षुण्णः-क्षुण्ण (व.)

„ पक्वामलोष्टजलमधुसमायुतो-पक्वामलोष्टजलमधुसमायुतः (व.)

in which a baked clod of clay, water, and honey have been added. This is a curative drink in dipsosis.

वटमातुलुङ्गवेतसपल्लवकुशकाशमूलयष्ट्याह्वैः ।  
सिद्धेऽम्भस्यग्निनिभां कृष्णमृदं कृष्णसिकतां वा ४४  
तप्तानि नवकपालान्यथवा निर्वाप्य पाययेताच्छम् ।  
आपाकशर्करं वाऽमृतवह्नुयुदकं तृषां हन्ति ॥४५॥

वट- १३ वरगद, मातुलुङ्ग- भीमेरुं विजौरा,  
वेतसपल्लव- वेतसपत्र वेतसके पत्ते, कुश- कुश कुश,  
काशमूल- काशनां भूषण काशके मूल, यष्ट्याह्वैः तथा  
नेहीभधभी तथा मूलहठीसे, सिद्धे पडावेलां सिद्ध किये  
हुए, अम्भसि पाणीमां जलमें, अग्निनिभाम् अग्निमां  
तपावेली होवाशी अग्नि नेही लाध अग्निमें तप्त  
होनेके कारण अग्निके समान लाल, कृष्णमृदम् डाणी भाटी  
काली मिट्टी, कृष्णसिकताम् वा के डाणी रेतली या काली  
वाल, अथवा अथवा या, तप्तानि तपावेलां तपाये हुए,  
नवकपालानि नवां डीकरां नवीन मिट्टीके कपाल, निर्वाप्य  
धुआवी बुझाकर, अच्छम् नीतधुं पाणी नितारा हुआ  
जल, पाययेत पापुं पिलावे, आपाक- अथवा पडाववा  
भाटे या सिद्ध करनेके लिए, शर्करम् नेमां तपेला  
डांकरा नाभवाभां आल्या छे ओपुं जितमें तप्त कंकर डाले  
गये हैं ऐसा, अमृतवह्नुयुदकम् वा गणैनुं अथ गुह्यचीका  
जल, कृष्णम् तृष्याने तृषाको, हन्ति छले छे नष्ट करता  
है ॥ ४४-४५ ॥

44-45. In the water prepared with  
sprouts of banyan, pomello, country  
willow, roots of sacrificial and thatch  
grass and liquorice, put a lump of  
black earth or black sand or pieces  
of new earthen vessel which have  
been heated red and allow it to

४४ सिद्धेऽम्भस्यग्निनिभां-सिद्धेऽम्भस्यग्निनिभाः (क.)

४५ पाययेताच्छम्-पाययेच्छोचम् (ग.)

,, आपाकशर्करं वाऽमृतवह्नुयुदकं तृषां हन्ति-अथपक्वशर्करावृत-  
वह्नुयुदकं वा तृषां हन्ति (क. ग. घ. ङ. च. द.)

cool; then decant the clear water and  
give it to the patient; or give the  
water prepared with guduch added  
with red-hot pebbles and cooled. It is  
curative of dipsosis

क्षीरवतां मधुराणां शीतानां शर्करामधुविमिधाः ।  
शीतकषाया मृद्मृष्टसंयुताः पित्ततृष्णाघ्नाः ॥४६॥

मृद्मृष्ट- तपावेली भाटी तपाई हुई मिट्टीसे, संयुताः  
युक्त युक्त, क्षीरवताम् क्षीरीश्व क्षीरीश्व, मधुराणाम्  
मधुराणाम् मधुर, शीतानाम् अने शीतानीम् द्रव्योंका  
और शीतवीर्य द्रव्योंके, शर्करा- साकर चीनी, मधु-  
विमिधाः अने मधु मेलवेला और शहद मिलाये हुए,  
शीतकषायाः शीतल कषायाः शीत कषाय, पित्ततृष्णाघ्नाः  
पित्तजन्य तृष्या डरनार छे पित्तजन्य तृषाके नाशक  
हैं ॥ ४६ ॥

46. The cold infusions prepared of  
the drugs of the lactiferous plants and  
drugs of sweet group and of cold  
potency, mixed with sugar and honey  
and with baked clay put into them,  
are curative of dipsosis of the pitta  
type.

कफजतृष्णायाः चिकित्सा—

व्योषवचामल्लतकतिककषायास्तथाऽऽमृतृष्णाघ्नाः  
यद्योक्तं कफजायां वस्यां तद्यैव कार्यं स्यात् ॥४७॥

तथा तथा तथा, व्योष- त्रिकटु त्रिकटु, वचा- १७  
वचा, मल्लतक- शिलाभां मिलावा, तिककषायाः अने  
तिकल द्रव्योंका कषाध और तिक द्रव्योंके कषाय,  
आमृतृष्णाघ्नाः आमृतृष्याना नाशक छे आमृतृष्णाके  
नाशक हैं, कफजायाम् कफजन्य कफजन्य, वस्याम्  
वस्यामां वसनमें, यत् च ने डांछ जो कुछ, उक्तम्  
उक्त छे कहा है, तत् च एव ते पक्षु वह भी, कार्यम्  
कार्य अह्नीं करवुं यहां करे ॥ ४७ ॥

४६ पित्ततृष्णाघ्नाः-पित्तजन्यताः (क.)

४७ आमृतृष्णाघ्नाः-आमृतृष्णाघात (ग.)

47. In dipsosis due to chyme morbidity the decoctions of the three spices, sweet flag, marking nut and drugs of the bitter group prove beneficial; or the line of treatment, indicated in vomiting of the kapha type, may be given.

स्तम्भारुच्यविपाकालस्यच्छर्दिषु कफानुगां तृष्णाम् ।  
ज्ञात्वा दक्षिमधुतर्पणलवणोष्णजलैर्वमनमिष्टम् ४८

सन्ध्या- ७३३८ स्तम्भता, अरुचि- अरुचि अरुचि, अविपाक- अविपाक अविपाक, आलस्य- आलस्य आलस्य, छर्दिषु अने छर्दि भूतां और छर्दि होने पर, तृष्णाम् तृष्णाने तृष्णाको, कफानुगाम् कफानुग-धी कफके साथ अनुबन्धवाली, ज्ञात्वा अज्ञानीने जानकर, दक्षि-मधु- दही, मधु दही, मधु, तर्पण-लवण- तर्पण, लवण तर्पण, नमक, उष्णजलैः अने उष्ण जलानी और गरम जलसे, वमनम् वमन कराना, इष्टम् इष्ट छे इष्ट है ॥ ४८ ॥

48. Knowing that rigidity, anorexia indigestion, lethargy and vomiting are the sequela of the kapha type of dipsosis, it is desirable to induce vomiting by a dose prepared of curds, honey, demulcent drink, salt and warm water.

दाहिममम्लफलं वाऽप्यन्यत् सकषायमथ लेहम् ।  
पेयमथवा प्रद्याद्रजनीशर्करायुक्तम् ॥४९॥

४९. दाहिम....शर्करायुक्तम्-दाहिममदनफलं वाप्यन्यतमकषाय-  
मथ लेहम् । पेयमथवा हरिद्राम्बुशर्कराक्षौद्रसंयुक्तम् (स.)

” ” ” -सकषायलोहकवर्णं दाहिममम्लं फलं  
न लेहं वा । पेयमथवा हरिद्राम्बु शर्कराक्षौद्रसंयुक्तम् (फ)

” दाहिममम्लफलं-दाहिममदनफलं (ब. ड.)

” वाऽप्यन्यत् सकषायमथ-वाप्यन्यतमकषायमथ (ब.)

” प्रद्याद्रजनीशर्करायुक्तम्-हरिद्राम्बुशर्कराक्षौद्रसंयुक्तम्  
(क. ब. घ. ङ. त. व.)

” रजनी-रजनीजम् (द.)

दाहिमम् दही अना, अन्यत् अथवा भीरुं या दूसरा, अम्लफलम् वा अपि भाटुं इति खट्टा फल, अथ सकषायम् अथवा कषायसहित अथवा कषाय-सहित, लेहम् लेह लेह, अथवा अथवा अथवा, रजनी रजनी हल्दी, शर्करायुक्तम् तथा साकरयुक्त तथा चीनीके साथ, पेयम् पेय पेय, प्रद्यात् आपयुं देना चाहिये ॥ ४९ ॥

49. The physician may give pomegranate or other sour fruit or the linctus mixed with astringent substances or he may give a potion containing turmeric and sugar.

क्षयजतृष्णायाः चिकित्सा—

क्षयकासेन तु तुल्या क्षयतृष्णा सा गरीयसी नृणाम् ।  
क्षीणक्षतशोषहितैस्तस्मात्तां मेघजैः शमयेत् ॥५०॥

क्षयतृष्णा क्षयजन्य तृष्णा क्षय-  
कासेन तु क्षयजन्य कासेनी क्षयज कासके, तुल्या समान छे समान है, सा ते वह, नृणाम् मनुष्याने मनुष्योंको, गरीयसी अत्यन्त छे भयजनक है, तस्मात् तेथी इस लिए क्षीणक्षत- क्षीण- क्षत क्षीण- क्षत, शोषहितैः अने शोषभां क्षितकर्ता और शोषमें हितकारी, मेघजैः औषधोथी औषधोंसे, ताम् तेने उसकी, शम-येत् शान्त करनी चाहिए ॥ ५० ॥

50. Dipsosis in men, born of wasting is equally serious like the cough due to wasting; therefore this variety of thirst should be quieted with medications indicated in the condition of cachexia due to pectoral lesions and consumption.

क्षयजतृष्णायाः चिकित्सा—

पानतृषार्तः पानं त्वर्धौदकमम्ललवणगन्धाढ्यम् ।

शिशिरस्नातः पानं मद्याम्बु गुडाम्बु वा तृषितः ५१

५१ त्वर्धौदकमम्ललवणगन्धाढ्यम्-त्वर्धौदकमम्ललवणसंभोग्यम् (ब.)

” शिशिरस्नातः-शिशिरस्नानम् (घ.)



भक्तोपरोधतृषितः स्नेहतृषार्तोऽथवा तनुयवागूम् ।  
प्रपिबेद्गुहणा तृषितो भुक्तेन तदुद्धरेद्भुक्तम् ॥५२॥

पानतृषार्तः-तु भक्षपानजन्य तृष्णायी पीयैषेदा  
 रोगीये ते। मद्यपानसे उत्पन्न तृषासे पीडित रोगी तो,  
 अर्धोदकम् अधी जलपी मिश्रित आवे जलसे मिश्रित,  
 अम्ल-लवण-अम्ल, क्षरु, अम्ल, नमकीन, गन्धाढ्य  
 अने गंध द्रव्याणुं तथा सुगन्धित द्रव्योंसे युक्त, पानम्  
 मद्य पीवुं मद्य पीवे, क्षिशिरस्नातः ठंडा पाणीपी  
 स्नान करवाने लीधे शीतरू पानीसे स्नान करने पर  
 तृषितः तरस्या भनुष्ये तृषा उत्पन्न हो तो, मद्यारु  
 भक्षार्थं भक्षैषुं जल मद्यमें मिलाया हुआ जल, गुडा-  
 र्मु वा के गोणतुं पाणी या गुडका पानी, पानम् पीवुं  
 पीवे, भक्षोपरोध-लंघनपी लंघनसे उत्पन्न, तृषितः  
 तरस्या भनुष्ये तृषामें अथवा अथवा अथवा, स्नेह-  
 तृषार्तः-स्नेहपान करवायी तरस्यः भनुष्ये स्नेहपान-  
 जन्य तृषामें, तनु पातणी पतली, यवागू यवागू  
 यवागू, प्रपिबेत् पीवी पीवे, गुरुणा भारे गुरु,  
 भुक्तेन बोधनपी भोजनसे उत्पन्न, तृषितः तरस्या  
 भनुष्ये तृषामें, तव ते उच, भुक्तम् बोधनतुं भोज-  
 नका, उद्धरेत् वमन करवुं वमन करे ॥ ५१-५२ ॥

51-52. In dipsosis due to alcoholism, a potion of wine diluted with equal amount of water mixed with acid, salt and a liberal quantity of fragrant substances is recommended. In thirst immediately after a cold bath, a drink of diluted wine or gur-water is recommended. If thirst is due to abstinence from food or to ingestion of unctuous diet, the patient may take thin medicated gruel; if the thirst is due to a heavy meal, the patient may vomit out the food ingested.

मध्याम्बु वाऽम्बु कोष्णं बलवांस्तपितः समुल्लिखेत्  
पीत्वा ।

५२. मुक्तेन तदुदरेदमुक्तम्-मुक्तेनादरेद मुक्तम्. (ब.)

मागधिकाविशदमुखः सशर्कं वा पिबेन्मन्थम् ५३

तृषितः शुद्ध लोणतथी तरस्या गुरुभोजनसे तृषा-  
युक्त, बलवान् अक्षवान् मनुष्ये बलवान् मनुष्य,  
सद्याम्बु भक्षमिथ पाणी मयमिश्रित जल, कोष्णम् अथवा  
नवशेकुं या सुहाता हुआ गरम, अम्बु वा पाणी जलं,  
पीत्वा पीने पीकर, समुल्लिखेत् दम्भन करेत् वमन करे,  
सागधिका- अथवा पीपरथी अथवा पिप्पलीके चूर्णसे,  
विशदमुखः मुष्पने यीकाश वगरन् करी मुखको विशद  
करके, सशर्करम् साकरयुक्त शर्करायुक्त, मन्थम् वा मन्थ  
मन्थ, पिबेत् पीवे पीवे ॥ ५३ ॥

53. And if the vitality of the patient be strong, he may drink a dose of wine and water or warm water before vomiting or having cleansed the mouth with long pepper; he may take a demulcent drink with sugar.

बलवांस्तु तालुशोषे पिबेद्धृतं तृष्यमद्याच्च ।  
सर्पिर्भृष्टं क्षीरं मांसरसांश्चाबलः स्निग्धान् ॥५४॥

तालुशोषे तालुशोषभां तालुशोषमें, बलवान् तु  
 पक्षवान् पुत्रुषे तो बलवान् पुरुष तो, घृतम् धी घृत,  
 पिबेत् पीबुं पीवे, नृष्यम् च अने तृषाभां हितकर  
 और तृषानाशक, अद्यात् क्रोश्न कर्तुं भोजन खावे,  
 अबलः च अने निर्बल भतुष्ये और अबल मनुष्य,  
 सर्पिर्मुष्टम् धीथी संस्कार आपेक्षुं घीमें भूने, क्षीरम्  
 द्वध दूधको, स्निग्धान् अथवा स्निग्ध या स्निग्ध, मांस-  
 रसान् च मांसरसो पीवा मांसरसोंको पीवे ॥ ५४ ॥

54. If the thirsty patient is strong and suffers from parching of the palate he may drink adipous ghee, or use it in his food; if the patient is weak, he may take milk seasoned with ghee or unctuous meat-juice.

१४. तुल्यम्-वृत्त्यमलम् (क.)

तुभ्यमयाच-तुभ्यमयमयाच (क.)

११ ११ - इष्यमनुमयम् (ख, घ. ज. झ. ङ. तं) .

અતિરુક્ષુર્બલનાં તર્ષે શમયેન્નૃણામિદાશુ પયઃ ।  
છાગો વા ઘૃતમૃદ્ધઃ શીતો મધુરો રસો દ્વચઃ ॥૫૫॥

હા અહીં યદાં, અતિરુક્ષ- અતિશય રૂક્ષ અતિરુક્ષ,  
દુર્બલાનામ્ અને દુર્બલ ઓર દુર્બલ, નૃણામ્ મનુષ્યોની  
મનુષ્યકો; તર્ષઃ તૃષ્ણા તૃષ્ણાકો, પયઃ દૂધ દૂધ, આશુ  
એકદમ સીમ્ર શમયેત્ શમાવે છે શાન્ત કરતા હૈ,  
ઘૃતમૃદ્ધઃ અથવા ઘીથી સંસ્કાર આપેલ અથવા ઘીમે  
ભૂને, છાગઃ બકરાનો વકરેકા, શીતઃ શીતળ શીતલ,  
મધુરઃ અને મધુર ઓર મધુર, રસઃ વા માંસરસ  
માંસરસ, દ્વચઃ હૈય માટે હિતકર છે હૃદયકે લિપ્ત  
હિતકર હૈ ॥ ૫૫ ॥

55. The thirst in persons who are  
extremely dehydrated and weak gets  
immediately quenched by taking milk  
or the cool and sweet meat-juice of the  
goat seasoned with ghee is a cordial  
drink.

શિગ્ધેડન્ને ભુક્તે યા તૃષ્ણા સ્યાત્તાં ગુડામ્બુના શમયેત્ ।  
તર્ષે મૂર્છાભિહતસ્ય રક્તપિત્તાપહેર્હન્યાત્ ॥૫૬॥

શિગ્ધેડન્ને સિન્ધવે ભોજન સિન્ધવે બજ, ભુક્તે  
બજ્યાથી ભોજન કરને પર, યા જે જો, તૃષ્ણા તૃષ્ણા  
તૃષ્ણા, સ્યાત્ આપે છે વસ્પજ હોવે, તામ્ તેને ઉસકો,  
ગુડામ્બુના ગેળના પાણીથી ગુરૂકે જલસે, શમયેત્  
શાન્ત કરવી શાન્ત કરની ચાહિપ્, મૂર્છાભિહતસ્ય મૂર્છા-  
પીડિતની મૂર્છાસે પીડિત મનુષ્યકો, તર્ષઃ તૃષ્ણાને  
તૃષ્ણાકો, રક્તપિત્તાપહેઃ રક્તપિત્તહર ઔષધીથી રક્ત-  
પિત્તાપાક- દ્રવ્યોસે, હન્યાત્ હલુવી શાન્ત કરની  
ચાહિપ્ ॥ ૫૬ ॥

56. The thirst resulting from  
eating unctuous food should be quen-  
ched with gur-water; and the  
thirst in a person who has fainted

૫૬. અશમાન્નુકાદતન્નરમ્—

શીતમુષ્ણજ્જલં કુત્ર દેયં વર્જ્યં વા કુત્રેન્દ્રાહ્નમ્ (ક. ત.)  
પુસ્તકનો: પઠ્યતે ।

,, તાં ગુડામ્બુનાં શમયેત્—તર્ષુક્ષામ્બુના શમયેત્ (ચ.)

should be cured by medications cura-  
tive of hemothermia

શીતમુષ્ણં ચ જલં કુત્ર દેયં કુત્ર વા વર્જ્યમ્—

તૃડ્વાહમૂર્છાન્નમ્ક્રમમદાત્યયાસ્ત્રવિષપિત્તે ।  
શસ્તં સ્વભાવશીતં, શ્વતશીતં સન્નિપાતેડમ્બઃ ॥૫૭॥

તૃડ્- તૃષ્ણા તૃષ્ણા, દાહ- દાહ દાહ, મૂર્છા- મૂર્છા  
મૂર્છા, અમ- અમ અમ, ક્રમ- ક્રમ ક્રમ, મદાત્ય-  
મદાત્ય મદાત્ય, અસ્ત્ર- રક્તપિત્ત રક્તપિત્ત, વિષ- વિષ  
વિષ, પિત્તે અને પિત્તમાં ઓર વિષમાં, સ્વભાવશીતમ્  
સ્વાભાવિક શીતલ પાણી સ્વાભાવિક શીતલ જલ,  
સન્નિપાતે અને સન્નિપાતમાં ઓર સન્નિપાતમાં, શ્વત-  
શીતમ્ શ્વતશીત શ્વતશીત, અમ્બઃ પાણી જલ, શસ્તમ્  
પ્રશસ્ત છે અચ્છા હૈ ॥ ૫૭ ॥

57. In dipsosis, burning, fainting,  
giddiness, exhaustion, alcoholism, vitia-  
tion of blood and toxicosis, and dis-  
orders of pitta and fresh cold water is  
beneficial, while in the condition of  
tridiscordance, water boiled and cooled  
is good.

દિક્કાશ્વાસનવજ્વરપીનસઘૃતપાર્શ્વગલરોગે ।  
કફવાતકૃતે સ્ત્યાને સઘઃશુદ્ધે ચ હિતમુષ્ણમ્ ॥૫૮॥

કફવાતકૃતે કફવાતકૃત- કફવાતકૃત, દિક્કા-  
હેડીમાં દિક્કામે, શ્વાસ- શ્વાસમાં શ્વાસમે, નવજ્વર-  
નવજ્વરમાં નવજ્વરમે, પીનસ- પીનસ પીનસમે, ઘૃતપીત-  
પાર્શ્વગલરોગે પાર્શ્વરોગમાં તથા ગળાના રોગમાં ઘીનું  
પાન કર્યા પછી તુરત જ પાર્શ્વરોગમે તથા ગળેકે રોગમે  
ઘૃતકા પાન કરનેકે તત્કાલ પશ્ચાત્, સ્ત્યાને દેધોના  
થડપણમાં દોષોકે ઘના હોનેમે, સઘઃશુદ્ધે ચ અને વમન  
વિરેચન વગેરેથી રોગીનું શોષન થયા પછી તરત જ

૫૭. તૃડ્વાહ-તૃડ્વાહિદાહ (ક. વ.)

,, , -હર્ષસ્કદાહ (વ. દ. વ.)

,, તૃડ્વાહમૂર્છાન્નમ્ક્રમ-હર્ષસ્કદાહમૂર્છાન્નમ્ક્રમ (સ. ત.)

૫૭. અમ-અમઃ (ક.)

,, સન્નિપાતેડમ્બઃ-સન્નિપાતે તુ (ચ.)

और वमन विरेचन आदिसे रोगीके शोथन होनेके तत्काल पश्चात्, दण्डम् उष्ण जल गरम जल, हितम् हितकर है ॥ ५८ ॥

58. In conditions of hiccup, dyspnea, recent fever, coryza, excessive ingestion of ghee, pleurodynia and disorders of the throat caused by kapha and vata, or when the humors are still congested in the body and just after the purificatory treatment, a drink of warm water is beneficial.

पाण्डुरपीनसमेहगुल्ममन्दानलातिसारेषु ।

प्रीहि च तोयं न हितं काममसह्ये पिवेदल्पम् ॥ ५९ ॥

पाण्डु- पाण्डुरोग, पाण्डुरोग, उदर- उदररोग, उदर, पीनस- पीनस, पीनस, मेह- प्रमेह, प्रमेह, गुल्म- गुल्म, गुल्म, मन्दानल- आग्निमांश, मन्दानि, अतिसारेषु अतिसार, अतिसार, प्रीहि च अने पेलीडारोगमा और ग्रीहारागमें तोयम् जल न हितम् हितकर नहीं है, कामम् असह्ये मले, अल्पम् थोड़ा पाण्डु योड़ा जल, पिवेत् पीवुं पीवे ॥ ५९ ॥

59. In anemia, abdominal diseases, coryza, urinary diseases, gulma, weak gastric fire, diarrhea and splenic disorders the drinking of water is not beneficial; but if the thirst be unbearable, the patient may drink a small quantity of water.

पूर्वामयातुरः सन् दीनस्तृष्णादितो जलं काङ्क्षन् ।

न लभेत स चेन्मरणमाश्वेवाप्रयादीघरोगं वा ॥ ६० ॥

पूर्वामयातुरः सन् ओ पहले कहेवा रोगोपायो प्रयुक्त यदि पूर्वोक्त रोगोंवाला पुरुष, तृष्णादितः तृष्णा पीडा तृषासे पीड़ित होकर, जलम् काङ्क्षन् जलनी धन्यता राखते होय जलकी इच्छा रखता हो, न लभेत

६०. न लभेत स चेन्मरणम्—कभते मरणं शीघ्रम् (व.)

चेत् पशु तेने जल न भजे ते। परन्तु उसको जल न मिले तो, आशु एव ते शीघ्रम् वह शीघ्र ही, मरणम् मरनेने मृत्यु, दीर्घरोगम् वा ३ दीर्घ रोगने या दीर्घ रोगको, प्राप्नुयात् पाभे छे प्राप्त करता है ॥ ६० ॥

60. For if the patient who is suffering from the above-mentioned diseases has become miserably afflicted with thirst and craving for water does not get it he may soon die or be afflicted with chronic illness.

तस्माद्धान्याम्बु पिवेत्तृष्यन् रोगी सशर्कराक्षौद्रम् ।

यद्वा तस्यान्यत्स्यात् सात्म्यं रोगस्य तच्चेष्टम् ॥ ६१ ॥

तस्मात् तेथी इस लिए, तृष्यन् तरस्या तृषा होने पर, रोगी रोगीछे रोगी, सशर्करा- साकर शर्करा, क्षौद्रम् अने मधुयुक्त और मधु मिठाकर, धान्याम्बु धान्याम्बु पाण्डु धान्याम्बु, पिवेत् पीवुं पीवे, तस्य अथवा ते अथवा उस, रोगस्य रोगने भाटे रोगकेलिए, यत् अन्यत् वा ने पीवुं छे जो दूसरा कोई, सात्म्यम् सात्म्य सात्म्य, स्यात् होय हो, तत् च ते वह, इष्टम् पीवुं छे पीना इष्ट है ॥ ६१ ॥

61. Therefore the thirsty patient may drink coriander-water mixed with honey and sugar, or whatever other medicated water is wholesome in his condition.

तृष्णायाः शीघ्रप्रतिकार्यत्वम्—

तस्यां विनिवृत्तायां न ज्ञान्य उपद्रवः सुखं जेतुम् ।

तस्मात्तृष्णां पूर्वं जयेद्बहुभ्योऽपि रोगेभ्यः ॥ ६२ ॥

तस्याम् ते तृषाके, विनिवृत्तायाम् भटता निवृत्त होने पर, तत् तेनाथी उससे, ज्ञान्यः अथेष्ट उत्पन्न हुए, उपद्रवः उपद्रव उपद्रवको जेतुम् सुखम् सुखेती उताय छे जीतना सरल है तस्मात् तेथी इस लिए, बहुभ्यः अद् बहुतसे, रोगेभ्यः अपि रोगोंमा पशु रोगोंमें भी, पूर्वम् प्रथम पहले, तृष्णाम् तृष्णाने तृष्णाको, जयेद् जीते ॥ ६२ ॥

62. If dipsosis is cured, it is easy to subdue the complications arising from it; therefore dipsosis, of all diseases, should be first treated.

अध्यायोक्तार्थसंग्रहः—

तत्र श्लोकः—

हेतु यथाऽग्निपवनौ कुरुतः सोपद्रवां च पञ्चानाम् ।  
तृष्णानां पृथगाकृतिरसाध्यता साधनं चोक्तम् ६३

तत्र ते विषयभां इस विषयमें, श्लोकः उपसंहारने श्लोक छे छे उपसंहारका श्लोक है कि, यथा ज्वरी रीते जैसे, अग्निपवनौ अग्नि अने वायु अग्नि और वायु, हेतु उभेका कारण बनकर, सोपद्रवाम् उपद्रव-सहित उपद्रवयुक्त, कुरुतः तृष्णा पेदा करे छे ये तृष्णाको उत्पन्न करते हैं वह, पञ्चानाम् तथा पांच तथा पांच, तृष्णानाम् तृष्णाओंनां तृष्णाओंके, पृथक् भुदां भुदां पृथक् पृथक्, आकृतिः लक्षण लक्षण, असाध्यता असाध्यता असाध्यता, साधनम् च अने चिकित्सा और चिकित्सा, उक्तम् उक्तां छे कह दिये हैं ॥ ६३ ॥

Here is the recapitulatory verse—

63. How the thermal factors and the vata are the two causative factors for the five kinds of dipsosis, their separate characteristics, the incurable condition and the method of cure have all been described.

इत्यग्निवेशकृते तन्त्रे चरकप्रतिसंस्कृतेऽप्राप्ते  
हृदबलसंपूरिते चिकित्सास्थाने तृष्णारोग-  
चिकित्सितं नाम द्वाविंशोऽध्यायः ॥२२॥

इति आ प्रभाषे इस प्रकार, अग्निवेशकृते अग्नि-  
वेशे रयेका अग्निवेशसे बनाये, चरकप्रतिसंस्कृते तन्त्रे  
अने अरुंधती प्रतिसंस्कार पायेका आ शास्त्रभां और  
चरकके द्वारा संस्कृत इस शास्त्रके, अप्राप्ते अप्राप्त,  
हृदबलसंपूरिते अने हृदयके पूरा करेका और हृदबलसे  
पूरित किये गये, चिकित्सास्थाने चिकित्सास्थान विषे  
चिकित्सास्थानमें, तृष्णारोगचिकित्सितम् 'तृष्णारोग-

६३. पृथगाकृतिः—पुनराकृतिः (ब.)

चिकित्सित' 'तृष्णारोगचिकित्सित', नाम नामने  
नामका, द्वाविंशः अष्टादशवां वाईसवां, अध्यायः  
अध्याय संपूर्ण थये। अध्याय समाप्त हुआ ॥ २२ ॥

22. Thus in the Section on Therapeutics in the treatise compiled by Agnivesa and revised by Caraka, the twenty-second chapter entitled "The Therapeutics of Dipsosis" not being available, the same as restored by Dridhabala, is completed.

## त्रयोविंशोऽध्यायः ।

त्रेवीसमे अध्याय अध्याय तेईसवां

Chapter XXIII

विषचिकित्सितोपक्रमः—

अथातो विषचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥१॥

इति ह स्माह भगवानात्रेयः ॥२॥

अथ अतः हवे आहीथी अब आगे, विष-  
चिकित्सितम् 'विषचिकित्सित' नामना अध्यायनुं  
'विषचिकित्सित' नामके अध्यायका, व्याख्यास्यामः  
व्याख्यान करेथुं व्याख्यान करेंगे ॥ १ ॥

भगवान् भगवान् भगवान्, आत्रेयः आत्रेये आत्रेयने,  
इति ह आ विषयभां नीचे प्रभाषे अ इस विषयमें  
निम्न प्रकारसे ही, आह सा उहेथुं छे कहा है ॥ २ ॥

1. We shall now expound the chapter entitled "The Therapeutics of Toxicosis."

2. Thus declared the worshipful Atreya.

प्रागुत्पत्तिं गुणान् योनिं वेगाँल्लिङ्गान्युपक्रमान् ।

विषस्य ब्रवतः सम्यग्निवेश निबोध मे ॥३॥

अग्निवेश हे अग्निवेश ! हे अग्निवेश !, विषस्य  
विषनी विषकी, प्रागुत्पत्तिम् पूर्वोत्पत्ति प्रथम उत्पत्ति,

३. सम्यग्निवेश निबोध मे—सम्यग्निवेशावधारण (क.)

गुणान् शुभं गुण, योनिश्च येनि योनि, वेगान् वेग वेग, लिङ्गानि वक्ष्ये। लक्षण, उपक्रमान् અને ચિકિત્સા और उपक्रमको, ब्रुवतः मे कहते। येवा भारी पासेथी कहते हुए मुझसे, सम्यक् सारी रीते अच्छी तरह, निबोध सांभलो। सुनो ॥ ३ ॥

3. Listen O, Agnivesa! attentively as I describe to you the primogenesis, the properties, the source, the stages of virulence, the symptoms and the therapeutics of toxicosis.

विषस्य प्रागुत्पत्तिः, निरुक्तिश्च—

अमृतार्थं समुद्रे तु मथ्यमाने सुरासुरैः ।  
जज्ञे प्रागमृतोत्पत्तेः पुरुषो घोरदर्शनः ॥ ४ ॥  
दीप्ततेजाश्चतुर्दंष्ट्रो हरिकेशोऽनलेक्षणः ।  
जगद्विषण्णं तं दृष्ट्वा तेनासौ विषसंज्ञितः ॥ ५ ॥

अमृतार्थम् अमृतने भाटे अमृतप्राप्तिके लिए, सुरासुरैः देवता અને રાક્ષસોથી દેવતા और राक्षसोंसे, समुद्रे समुद्रतुं समुद्रका, मथ्यमाने तु मथन થતું હતું ત્યારે મંથન હોને પર, અમૃતોત્પત્તેઃ અમૃતની ઉત્પત્તિ અમૃતોત્પત્તિકે, પ્રાક્ પહેલાં પૂર્વે, ઘોરદર્શનઃ ભયંકર દેખાવવાળો દેખનેમેં મયાનક, દીપ્તતેજાઃ પ્રદીપ્ત તેજવાળો પ્રદીપ્ત તેજવાલા, ચતુર્દંષ્ટઃ ચાર દાઢોવાળો ચાર દાઢવાલા, હરિકેશઃ પિંગળા વાળવાળો પિંગલ વાલોવાલા, અનલેક્ષણઃ અને અગ્નિ જેવાં નેત્રવાળો और आग जैसी आंखोंवाला, पुरुषः पुरुष पुरुष, जज्ञे પેદા થયો उत्पन्न हुआ, तम् तेने उसको, दृष्ट्वा બેઠું દેખકર, જગત્ જગત્ જગત, વિષણ્ણમ્ વિષણ્ણ (ખિન્ન) અયુઃ વિષણ્ણ (ચિન્ન) હુઆ, તેન તેથી इस लिए, असौ ते वह, विषसंज्ञितः 'વિષ' એ નામથી કહેવાય છે 'વિષ' इस नामसे कहा जाता है ॥ ४-५ ॥

4-5. When the ocean was being churned by the gods and the demons for the sake of ambrosia there emerged prior to the nectar, a fearful looking person. He had a resplendent appearance, four fangs, tawny hair and fiery eyes and the world despaired at the sight of him. Hence he was known as 'Visha' poison, the despair of the world.

विषस्य योनिप्रभावादि—

जङ्गमस्थावरायां तद्योनौ ब्रह्मा न्ययोजयत् ।  
तदम्बुसंभवं तस्माद् द्विविधं पावकोपयम् ॥ ६ ॥  
अष्टवेगं दशगुणं चतुर्विंशत्युपक्रमम् ।

બ્રહ્મા બ્રહ્માએ બ્રહ્માને, તત્ તેને उसको, जङ्गम-जङ्गम जङ्गम, स्थावरायाम् અને સ્થાવર और स्थावर, योनौ येनिभा योनिमें, न्ययोजयत् नियुक्त કરુ' નિયુક્ત કર દિયા, तस्मात् તેથી इस लिए, अम्बुसंभवम् જલમાંથી પેદા થયેલું जलसे उत्पन्न, तत् ते વિષ वह विष, द्विविधम् એ પ્રકારનું दो प्रकारका, पावकोपयम् અગ્નિ જેવું अग्नि जैसा, अष्टवेगम् આઠ વેગવાળું आठ वेगवाला, दशगुणम् દશ ગુણવાળું दस गुणवाला, चतुर्विंशति- અને ચૌવીસ और चौबीस, उपक्रमम् ઉપક્રમવાળું છે उपक्रमवाला है ॥ ६ ॥

6-6½. Brahma deposited this poison in two places, namely, the mobile and immobile things of his creation. Thus the poison born of the sea became of two types. It resembles fire and has eight stages of virulence, ten qualities and twenty-four modes of treatment.

वर्षासु विषस्य तीक्ष्णत्वं, शरदि मन्दवीर्यत्वं च—

तद्वर्षास्त्रम्बुयोनित्वात् संકેદં गुडवद्गतम् ॥ ७ ॥

૪. અમૃતાર્થં સમુદ્રે તુ મથ્યમાને સુરાસુરૈઃ—મથ્યમાને જલનિધાવ-

મૃતાર્થં સુરાસુરૈઃ (ય. ક.)

૫. હરિકેશોઃ હરિકેશો (ક.)

,, તેનાસૌ વિષસંજ્ઞિતઃ—વિષં સ તુ વિષાદનાદ (ય. બ.)

સર્પત્યમ્બુધરાપાયે તદગસ્ત્યો હિનસ્તિ ચ ।

પ્રયાતિ મન્દવીર્યત્વં વિષં તસ્માદ્વનાત્યયે ॥૮॥

અમ્બુ- જલ, યોનિત્વાત્ યોનિ હોવાથી યોનિ હોનેસે, વર્ષાસુ વર્ષા ઋતુમાં વર્ષા ઋતુમાં, ગુહવત્ ગોળની પેઠે ગુફા સમાન, સંક્રેદન્ ક્રેદને ક્રેદકો, ગતમ્ પ્રાપ્ત મળી પ્રાપ્ત હુઆ. તત્ તે વદ, સર્પંતિ પ્રસરે છે ફેલતા હૈ, અમ્બુધરાપાયે વાદળાં નષ્ટ થતાં મેઘોંકે દૃટજાને પર, અગસ્ત્યઃ અગસ્ત્ય અગસ્ત્યકા તારા, તત્ તેને। उसको, હિનસ્તિ ચ નાશ કરે છે નષ્ટ કરતા હૈ, તસ્માત્ તેથી इस लिए, ઘનાત્યયે શરદ્ ઋતુમાં શરદ્ ઋતુમાં, વિષમ્ વિષ વિષ, મન્દ- મંદ મન્દ, વીર્યત્વમ્ વીર્યવાળું વીર્યવાળા, પ્રયાતિ થાય છે હો જાતા હૈ ॥ ૭-૮ ॥

7-8. Having its origin in water, in the rainy season, it melts like gur and spreads, and it is Agastya that can destroy its evil. Hence when the clouds disappear at the end of the rainy season, poison becomes mild in effect.

જન્મવિષસ્ય મેદાઃ—

સર્પાઃ કીટોન્દુરા લૂતા વૃશ્ચિકા ગૃહગોષિકાઃ ।

જલૌકામત્સ્યમણ્ડુકાઃ કણભાઃ સક્રકણ્ટકાઃ ॥૯॥

શ્વસિંહવ્યાઘ્રગોમાયુતરશ્ચુનકુલાદયઃ ।

દંષ્ટ્રિણો યે વિષં તેષાં દંષ્ટ્રોત્યં જક્ષમં મતમ્ ॥૧૦॥

સર્પાઃ સર્પ સાંપ, કીટ- કીટ, કીટ, ઉન્દુરાઃ ઉંદર ચૂહા, લૂતાઃ લૂતા મકડી, વૃશ્ચિકાઃ વીંછી વિચ્છ, ગૃહ- ગોષિકાઃ ગરેળી છિપકલી, જલૌકા- જોળી જોળ, મત્સ્ય- માછલી મછલી, મણ્ડુકાઃ દેડકાં મેંઢક, સક્રકણ્ટકાઃ કુકટક કુકટક, કણભાઃ કણભ કણમ, શ્વ- કુતરા કુતરા, સિંહ- સિંહ સિંહ, વ્યાઘ્ર- વાઘ વાઘ, ગોમાયુ- ગોમાયુ લોમડી, તરશ્ચુ- ઝરખ માછ, ચુનકુલાદયઃ નોળિયા વગેરે નેવલા આદિ, યે યે જો, દંષ્ટ્રિણઃ દાદવાળાં પ્રાણીઓ છે દાદવાળે પ્રાણી હૈ, તેષામ્ તેઓનીં ઉનકી,

૮. હિનસ્તિ ચ—નિહન્તિ ચ (વ.)

૯. ગૃહગોષિકાઃ—ગૃહગોષિકાઃ (ફ.)

૧૦. કણભાઃ સક્રકણ્ટકાઃ—શલભાઃ સર્પકણ્ટકાઃ (ર.)

દંષ્ટ્રોત્યમ્ દાદમાંથી નીકળેલ દાદસે સ્પર્શ હુઆ, વિષમ્ વિષને વિષ, જક્ષમમ્ જંગમ જંગમ, મતમ્ માનવામાં આવે છે માના જાતા હૈ ॥ ૯-૧૦ ॥

9-10. Serpents, insects, rats, spiders, scorpion, house lizards, leeches, fishes, frogs, hornets krikantaka, dogs, lions, tigers, hyena, mongoose and similar other animals are the fanged animals from whose fangs comes out the poison known as animal poison (mobile poison).

સ્થાવરવિષસ્ય મેદાઃ—

મુસ્તકં પૌષ્કરં કૌશ્ઞં વત્સનામ્ બલાહકમ્ ।

કર્કટં કાલકૂટં ચ કરવીરકર્મશ્ચક્રમ્ ॥૧૧॥

પાલકેન્દ્રાયુધં તૈલં મેષકં કુશપુષ્પકમ્ ।

રોહિષં પુણ્ડરીકં ચ લાઙ્ગલક્યજનામકમ્ ॥૧૨॥

સંકોચં મર્કટં શૃંગીવિષં હાલાહલં તથા ।

પંચમાદીનિ ચાન્યાનિ મૂલજાનિ સ્થિરાણિ ચ ॥૧૩॥

મુસ્તકમ્ મુસ્તક મુસ્તક, પૌષ્કરમ્ પોષકરમ્ પોષકરમ્ પોષકરમ્, કૌશ્ઞં કૌશ્ઞ કૌશ્ઞ, વત્સનામ્ વત્સનામ્ વચનામ્ બલાહકમ્ બલાહક બલાહક, કર્કટમ્ કર્કટ કર્કટ, કાલકૂટમ્ કાલકૂટ કાલકૂટ, કરવીરક-સંશકમ્ કરવીર નામતું કનેર મામક, પાલક- પાલક પાલક, હન્દ્રા-યુધમ્ હન્દ્રાયુધ હન્દ્રાયુધ, તૈલમ્ તૈલ તૈલ, મેષકમ્ મેષક મેષક, કુશપુષ્પકમ્ કુશપુષ્પક કુશપુષ્પક, રોહિ-ષમ્ રોહિષ રોહિષ, પુણ્ડરીકમ્ પુંડરીક પુંડરીક, લાઙ્ગલકી લાંગલકી કલિહાસી, જનામકમ્ જનામકમ્ જનામકમ્, સંકોચમ્ સંકોચ સંકોચ, મર્કટમ્ મર્કટ મર્કટ, શૃંગીવિષમ્ શૃંગીવિષ શૃંગીવિષ, તથા તથા તથા, હાલાહલમ્ હાલાહલ હાલાહલ, પંચમ્ પાંચમી ધન્યાદિ इत्यादि, અન્યાનિ ચ અને બીજાં ઔર અન્ય, મૂલજાનિ મૂલજા વિષે મૂલજન્ય વિષ, સ્થિરાણિ ચ સ્થિરાં છે સ્થાવર હૈ ॥ ૧૧-૧૩ ॥

૧૧. કરવીરકર્મશ્ચક્રમ્—કરવીરકર્મશ્ચક્રમ્ (ક. થ. ર.)

૧૨. પાલકેન્દ્રાયુધમ્—પાલકેન્દ્રાયુધમ્ (ક. ફ.)

,, મેષકં—મેષકં (વ.)

11-13. Mustaka, pushkara, krauncha, aconite, balahaka, karkata, kalakuta and that which is known as oleander. Palaka, indrayudha, taila, meghaka and kusa-pushpaka, rohisha, punda rika, and glory lily and anjanabhaka, sankocha, markata, shringi poison halahala etc., and such other are poisons derived from roots of plants (vegetable poison).

गरविषस्य लक्षणानि—

गरसंयोगजं चान्यद्गरसंज्ञं गदप्रदम् ।  
कालान्तरविपाकित्वाच्च तदाशु हरत्यसूत्र ॥१४॥

गरसंयोगजम् गरसंयोगजन्यं गरसंयोगजन्यं गदप्रदम् च अने रोगप्रद और रोग करनेवाला, अन्यत् भीष्म दूसरा, गरसंज्ञम् गर नामतुं विष छे गर नामक विष है, तत् ते वह, कालान्तर- क्षणे कालान्तरमें, विपाकित्वात् विपाक पाभनार होवाथी विपाकशील होनेसे, असूत्र प्राणोने प्राणोंका, आशु अक्षी जल्दी, न हरति हरतुं नहीं हरण नहीं करता ॥ १४ ॥

14. There is another variety of poison called artificial poison which is produced by combination of substances and which gives rise to disease-condition. Being slow in its development and action, it does not kill swiftly.

जङ्गमविषलिङ्गानि—

निद्रां तन्द्रां क्लमं दाहं सपाकं लोमहर्षणम् ।  
शोफं चैवातिसारं च जनयेज्जङ्गमं विषम् ॥१५॥

१५. गरसंयोगजम्-परसंयोगजं (क.)

१५. क्लमं दाहम्-मेहं दाहं (घ.)

१५. दाहं, सपाकं-दाहसपाकं (घ.)

१५. जनयेज्जङ्गमं-जङ्गमं (घ. त.)

जङ्गमम् अंगम जङ्गम, विषम् विष विष, निद्रा निद्रा, तन्द्रा तन्द्रा तन्द्रा, क्लमम् थक थकावट, सपाकम् पाक पाकयुक्त, दाहम् दाह दाह, लोमहर्षणम् रोमहर्ष रोमहर्ष, शोफम् च एष सोओ शोफ, अतिसारम् च अने अतिसार और अतिसार, जनयेत् पैदा करे छे उत्पन्न करता है ॥ १५ ॥

15. Animal poison causes somnolence, torpor, fatigue, burning, inflammation, horripilation, edema and diarrhea.

स्थावरविषलिङ्गानि—

स्थावरं तु ज्वरं हिक्कां दन्तहर्षं गलग्रहम् ।  
फेनवम्यरुचिश्वासमूर्च्छाश्च जनयेद्विषम् ॥१६॥

स्थावरम् विषम् तु स्थावर विष स्थावर विष, ज्वरम् ज्वर ज्वर, हिक्काम् हेउकी हिचकी, दन्तहर्षम् दन्तहर्ष दन्तहर्ष, गलग्रहम् गलग्रह गलग्रह, फेनवमि- झीझ आवावा झाग आना, अरुचि- अरुचि अरुचि, श्वास- स्वास स्वास, मूर्च्छाः च अने मूर्च्छा और मूर्च्छाको, जनयेत् पैदा करे छे उत्पन्न करता है ॥ १६ ॥

16. While vegetable poison causes fever, hiccup, setting the teeth on edge, spasm of the throat, frothy salivation, vomiting, anorexia, dyspnea and fainting.

जङ्गमस्थावरौभयविषप्रभावः—

जङ्गमं स्यादधोभागमूर्ध्वभागं तु मूलजम्  
तस्माद्विष्टाविषं मौलं हन्ति मौलं च दंष्ट्रजम् ॥१७॥

जङ्गमम् अंगम विष जंगम विष, अधोभागम् नीचेनी भागोने गति करनेवाला, मूलजम् तु अने मूलज विष और मूलज

१७. वमि-छर्वि (घ.)

१७ जङ्गमं स्यादधोभागमूर्ध्वभागं तु मूलजम्-जङ्गमं स्यादधो-  
भागमधोभागं तु मूलजम् (घ. त.)

१७. तस्माद्विष्टाविषं-तस्माद्विष्टाविषं (घ.)

१७. दंष्ट्रजम्-दंष्ट्रजम् (घ.)



વિષ, ઊર્ધ્વભાગમ્ ઉપરની આબુએ ગત કરનારું  
 ઊર્ધ્વભાગમે ગતિ કરનેવાલા, સ્વાત્ છે હૈ, તસ્માત્ તેથી  
 હસ લિપ્, દંડ્રાવિષમ્ દંડ્રાવિષ દંડ્રાવિષ, મૌલમ્  
 મૂલજ વિષને મૂલજ વિષકો, મૌલમ્ ચ અને મૂલજ  
 વિષ ઓર મૂલજ વિષ, દંડ્રાજમ્ દંડ્રાવિષને દંડ્રાવિષકો,  
 હન્તિ હણે છે નષ્ટ કરતા હૈ ॥ ૧૭ ॥

17. Animal poison affects the lower part of the alimentary tract more, while the vegetable poison affects more the upper part. Therefore, animal poison neutralises the effects of vegetable poison and vegetable poison neutralises the animal poison.

મનુષ્યશરીરે વિષસ્ય સ્પત્તવેગાનાં પૃથક્લક્ષણાનિ—

તૃપ્તમોહદન્તહર્ષપ્રસેકવમથુક્લમા ભવન્ત્યાયે ।

વેગે રસપ્રદોષાવસુક્ષ્મદોષાદ્ દ્વિતીયે તુ ॥૧૮॥

વૈવર્ણ્યભ્રમવેપથુમૂર્છાજૃમ્ભાક્કચિમિચિમાતમકાઃ ।

દુષ્ટપિશિતાત્તૃતીયે મળ્ડલકળ્ડશ્વયથુકોટાઃ ॥૧૯॥

વાતાદિજાશ્ચતુર્થે દાહચ્છર્વક્ષૂશૂલમૂર્છાઘાઃ ।

નીલાદીનાં તમસશ્ચ દર્શનં પશ્ચમે વેગે ॥૨૦॥

ષષ્ઠે હિક્કાઃ ભક્તઃ સ્કન્ધસ્ય તુ સપ્તમેઽષ્ટમે મરણમ્ ।  
 નૃપાં,

માથે પહેલા પ્રથમ, વેગે વેગમાં વેગમે. રસ-  
 પ્રદોષાત્ રસ દૂષિત થવાથી રસ દૂષિત હોનેસે, તૃપ્તમોહ-  
 તરસ, મૂર્છા પ્યાસ, મૂર્છા, દન્તહર્ષ- દન્તહર્ષ દન્તહર્ષ,  
 પ્રસેક- પ્રસેક પ્રસેક, વમથુ- વમન વમન, ક્લમાઃ અને  
 ક્લમ ઓર થકાવટ મવન્તિ થાય છે હોતી હૈ, દ્વિતીયે તુ  
 બીજા વેગમાં દૂસરે વેગમે, અસુક્- રક્ત રક્તકે, પ્રદોષાત્  
 દૂષિત થવાથી દૂષિત હોનેસે, વૈવર્ણ્ય- વિવર્ણતા વિવર્ણતા,  
 ભ્રમ- ભ્રમ ભ્રમ વેપથુ- કંપ કમ્પ, મૂર્છા- મૂર્છા  
 મૂર્છા, જૃમ્ભા- બગાસાં જમ્માઈ, અક્કચિમિચિમા- દેહમાં

૧૮. તૃપ્તમોહ-તૃપ્તમોહ (ફ)

૧૯. ચિમિચિમાતમકાઃ-ચિમિચિમાતમકાઃ (છ. ટ. ફ.)

,, તમકાઃ-જૃમ્ભાઃ (વ.)

૨૦. સ્કન્ધસ્ય તુ-સ્કન્ધે સ્વાતુ (વ.)

અમથમાટ અજ્ઞોમે ચિમિચિમાટ, તમકાઃ અને તમક  
 થાય છે ઓર તમક હોતે હૈ, તૃતીયે ત્રીજા વેગમાં  
 નીસરે વેગમે, દુષ્ટપિશિતાત્ માંસ દૂષિત થવાથી  
 માંસકે દૂષિત હોનેસે, મળ્ડલ- મંડલ મંડલ,  
 કળ્ડ- ખરજી, શ્વયથુ- સોબે શોફ,  
 કોટાઃ અને કોટ થાય છે ઓર કોટ હોતે હૈ, ચતુર્થે  
 ચોથા વેગમાં ચતુર્થ વેગમે, વાતાદિજાઃ વાતાદિજન્ય  
 વાતાદિજન્ય, દાહ- દાહ દાહ, છર્દિ- ઉલટી વમન, અક્ક-  
 ચૂલ- શરીરમાં ચળ શરીરમે ચૂલ, મૂર્છાઘાઃ અને મૂર્છા  
 વગેરે થાય છે ઓર મૂર્છા આદિ હોતે હૈ, પશ્ચમે પાંચમા  
 વેગમાં પાંચવે, વેગે વેગમાં વેગમે, નીલાદીનામ્ વાદળી  
 વગેરે રૂપ નીલે આદિ રૂપ, તમસઃ ચ અને અંધારાં  
 ઓર અંધેરા, દર્શનમ્ દેખાય છે દિખાઈ દેતે હૈ, ષષ્ઠે  
 છઠ્ઠા વેગમાં છઠ્ઠે વેગમે, હિક્કા હેડકી થાય છે હિચકી  
 હોતી હૈ, સપ્તમે તુ સાતમા વેગમાં સાતવે વેગમે,  
 સ્કન્ધસ્ય કંધ કન્ધેકા, મઃ નમી બધ છે મંગ હોતા  
 હૈ, અષ્ટમે અને આઠમા વેગમાં ઓર આઠવે વેગમે,  
 નૃણામ્ મનુષ્યનું મનુષ્યકી, મરણમ્ મરણ થાય છે  
 મૃત્યુ હો જાતી હૈ ॥ ૧૮-૨૦ ॥

18-20. In the first stage of poisoning, as a result of vitiation of the body nutrient fluid, there occur, at first, thirst, stupor, setting the teeth on edge, ptyalism, vomiting and prostration. In the second stage when the blood gets vitiated, there occur discoloration, giddiness, tremors, fainting, sternutation, tingling pain in the body and asthma. In the third stage of poisoning when the flesh gets vitiated there will be eruption, pruritus, edema, and wheals. In the fourth stage when there is vitiation of vata and other humors there will be burning, vomiting, body-ache and fainting etc. In the fifth stage, there will be darkness of vision or vision of various colors. In the sixth

stage, there will be hiccup; and in the seventh stage there will be paralysis of the muscles supporting the shoulder girdle. In the eighth, there occurs death. These are the eight stages of toxicosis.

पशुपक्षिशरीरे विषवेगस्य लक्षणानि—

चतुष्पदां स्याच्चतुर्विधः, पक्षिणां त्रिविधः ॥२१॥

सीदत्वाद्ये भ्रमति च, चतुष्पदो वेपते, ततः शून्यः।

मन्दाहारो म्रियते श्वासेन हि चतुर्थवेगे तु ॥२२॥

ध्यायति विहगः प्रथमे वेगे, प्रभ्राम्यति द्वितीये तु।

स्रस्ताङ्गश्च तृतीये विषवेगे याति पञ्चत्वम् ॥२३॥

चतुष्पदाम् पशुभ्योर्भा पशुभ्योर्भा, चतुर्विधः विषने। वेग आर प्रकाशने। थाय छे विषका वेग चार प्रकारका होता है, पक्षिणां पक्षीभ्योर्भा पक्षियोंमें, त्रिविधः विषने। वेग त्रय प्रकाशने। विषका वेग तीन प्रकारका, स्थाय थाय छे होता है, चतुष्पदः पशु पशु, आद्ये पहेला वेगभा प्रथम वेगमें, सीदति शिथिल थाय छे शिथिल हो जाता है, भ्रमति अने थड्डर भाय छे और भ्रमसे पीड़ित होता है, वेपते च भीम वेगभा डूबे छे दूसरे वेगमें कांपता है, ततः शून्यः त्रीम वेगभा शून्य थाय छे तीसरे वेगमें शून्य होता है, चतुर्थवेगे तु अने योथा वेगभा और चतुर्थ वेगमें,

२२. सीदत्वाद्ये भ्रमति च चतुष्पदो वेपते—आद्ये भ्रमति चतुष्पदो-  
ऽवसीदति (घ)

,, ,, —अथ भ्रमति चतुष्पात् सीदत्वाद्ये भ्रमति  
च वेपते (थ.)

,, ततः शून्यः—ततः शून्यः (क. थ. फ. ब.)

,, मन्दाहारो म्रियते श्वासेन हि चतुर्थवेगे तु—मन्दाहारश्च ततो  
म्रियते श्वासेन हि चतुर्थे (फ.)

,, हि चतुर्थवेगे—हि चतुर्थे वेगे (ब.)

,, ध्यायति विहगः प्रथमे वेगे प्रभ्राम्यति द्वितीये तु—आद्ये वेगे  
पक्षी प्रभ्राम्यति द्वितीयवेगे तु (फ.)

मन्दाहारः शोभा आहारवाणं थर्ध अल्प आहारवाला होकर, श्वासेन श्वासस्थी श्वासे, म्रियते हि मरुणु पाभे छे मृत हो जाता है, विहगः पक्षी पक्षी, प्रथमे प्रथम प्रथम, वेगे वेगभा वेगमें, ध्यायति शि-ताभ्रस्त नेपुं थाय छे एक टक देखता है, द्वितीये तु भीम वेगभा दूसरे वेगमें, प्रभ्राम्यति थड्डर इथा डरे छे चक्कर खाता है, तृतीये विषवेगे अने विषना त्रीम वेगभा और विषके तीसरे वेगमें, स्रस्ताङ्गः च शिथिल अंगवाणं थर्ध शिथिल शरीरवाला होकर, पञ्चत्वम् याति मरुणु पाभे छे मृत हो जाता है ॥ २१-२३ ॥

21-23. There are four stages in the case of quadrupeds, and three stages in that of birds. In the animal, in the first stage, there will be asthenia and whirling; in the second stage the animal quivers; and in the third, passes into stupor and takes no food. In the fourth stage respiration becomes hard and it dies. The bird in the first stage of poisoning feels depression and in the second stage whirling, in the third stage its limbs get paralysed and death ensues.

विषस्य दश गुणाः—

लघु रुक्षमाशु विशदं व्यवायि तीक्ष्णं विकासि  
सूक्ष्मं च ।

उष्णमनिर्देश्यरसं दशगुणमुक्तं विषं तज्ज्ञैः ॥२४॥

तज्ज्ञैः विषवैद्येभ्यो विषको जाननेवालोंने, विषम् विषने विषको, लघु लघु लघु, रुक्षम् रुक्ष रुक्ष, आशु आशुकारी आशुकारी, विशदम् विशद विशद, व्यवायि व्यवायी व्यवायी, तीक्ष्णम् तीक्ष्ण तीक्ष्ण, विकासि विकासी विकासी, सूक्ष्मम् सूक्ष्म सूक्ष्म, उष्णम् उष्ण उष्ण, अनिर्देश्यरसम् अने अनिर्देश्य रसवाणं और अनिर्देश्य रसवाला, दशगुणम् च येम दश गुणवाणं इन दस गुणोंवाला, उक्तम् उक्तुं छे कहा है ॥२४॥

24. Lightness, dryness, quickness, clearness, diffusiveness, acuteness, expansiveness, subtleness, heat and indistinct taste are the ten qualities of poison described by toxicologists.

रौक्ष्याद्वातमशैत्यात्पित्तं सौक्ष्म्यादसृक् प्रकोपयति ।  
कफप्रव्यक्तं रसत्वाद्भ्रंशानुवर्तते शीघ्रम् ॥२५॥  
शीघ्रं व्यापिभावादाशु व्याप्नोति केवलं देहम् ।  
तीक्ष्णत्वान्नर्ममं प्राणघ्नं तद्विकासित्वात् ॥२६॥  
दुरुपक्रमं लघुत्वाद्द्वैधात् स्यादसक्तगतिदोषम् ।  
दोषस्थानप्रकृतीः प्राप्यान्यतमं हृदीरयति ॥२७॥

तत्र ते विष बह विष, रौक्ष्यात् रक्षताथी रक्षतासे, वातश्च वायुने वायुको, अशैत्यात् उष्णताथी उष्णतासे, पित्तम् पित्तने पित्तको, सौक्ष्म्यात् सूक्ष्मताथी सूक्ष्मतासे, असृक् रक्तने रक्तको, अव्यक्त- तथा अव्यक्ता तथा अव्यक्त, रसत्वात् रसवाणापणुताथी रसवाला होनेसे, कफश्च च क्षने कफको, प्रकोपयति प्रकुपित करे छे प्रकुपित करता है, शीघ्रम् शीघ्रपणुताथी शीघ्र होनेसे, भ्रंशरसान् च भ्रंशरसानु भ्रंशरसोंका, शीघ्रम् शीघ्र शीघ्र, अनुवर्तते अनुवर्तन करे छे अनुवर्तन करता है, व्यापिभावात् व्यापिपणुताथी व्यापी होनेसे, केवलम् आभा संपूर्ण, देहम् देहमां देहमें, आशु ओष्ठम शीघ्र, व्याप्नोति व्याप्ता था छे व्याप्त होता है, तीक्ष्णत्वात् तीक्ष्णताथी तीक्ष्ण होनेसे, मर्मघ्नम् मर्मघाती छे मर्म-नाशक है, विकासित्वात् विकासीपणुताथी विकासी होनेसे, प्राणघ्नम् च प्राणघातक छे प्राणनाशक है, लघुत्वात् लघुताथी लघु होनेसे, दुरुपक्रमम् मुश्किली छे यिद्विस्सा कराय ऐतुं छे दुश्चिकित्स्य है, वैश्वाद्यात् निशङ्कताथी विशद होनेसे, असक्तगतिदोषम् स्यात् गति अने दोषनी अटकायत् विनानु छे गति और दोषोंकी रुकावटसे रहित है, दोषस्थान- अने दोषनां स्थान और दोषके स्थान, प्रकृतीः तथा रोगीनी प्रकृतिने तथा रोगीकी प्रकृतिको, प्राप्य प्राप्त करीने प्राप्त करके, अन्यतमम् त्रुष्ट दोषो-भांना ओक दोषनुं तीन दोषोंमेंसे किसी एक दोषको, हृदीरयति हि हृदीरय करे छे प्रकुपित करता है ॥२५-२७॥

25-27. By its dryness it provokes the vata, by its heat it provokes the pitta, and by its subtleness it vitiates the blood. By its indistinctness of taste it provokes the kapha and spreads quickly in the body-nutrient fluid. By its diffusive quality it spreads quickly in the entire body. By its acuteness it is injurious to the vital organs and by its expansiveness it destroys life. Owing to its lightness, it is difficult of treatment, and on account of its limpidness its flow cannot be stopped. Having reached the seat of the humor and according to the habitus of the patient, it provokes other complications.

दोषस्थानप्रकृतीः प्राप्य विषं यत् करोति—

स्याद्वातिकस्य वातस्थाने कफपित्तलिङ्गमीषत्तु ।  
तृणमोहारतिमूर्च्छां गलग्रहच्छर्दिफेनादि ॥२८॥

वातिकस्य विष वातप्रकृतिवाणा पुरुषना विष वात-प्रकृतिवाले पुरुषके, वातस्थाने वाताशयमां रक्षुं होय तो वाताशयमें रहा हो तो, कफपित्तलिङ्गम् तु कफ अने पित्तनां लक्षणो कफ और पित्तके लक्षण, ईषत् स्यात् ओष्ठ होय छे अने वातनां नीचे उठेवां लक्षणो विशेष होय छे योजे होते हैं और वातके निम्नोक्त लक्षण विशेष होते हैं, तृट् गेवा ३:- तृट् जैसेकि—प्याय, मोह- मोह मोह, अरति- अयेनी अरति, मूर्च्छा- मूर्च्छा मूर्च्छा, गलग्रह- गलग्रह गलग्रह, छर्दि- उलटी वमन, फेनादि झीझु वगेरे फेन आदि ॥ २८ ॥

28. If the patient is of vata habitus and the poison affects the seat of vata, there will be marked symptoms of vata and only slight symptoms of kapha and pitta. They are—thirst, stupor, apathy, fainting, spasm of the throat, vomiting and frothy salivation.

पित्ताशयस्थितं पैत्तिकस्य कफवातयोर्विषं तद्वत् ।  
तृट्कासज्वरवमथुक्कमदाहतमोतिसारादि ॥२९॥

विषम् विष विष, पैत्तिकस्य पित्तप्रकृतिवाजा पुरुषना  
पित्तप्रकृतिवाले पुरुषके, पित्ताशय- पित्ताशयमा पित्ताशयमे,  
स्थितम् चेत् रक्षुं होय तो रहा हो तो, कफवातयोः क  
अने वातना दक्षणे कफ और वातके लक्षण, तद्वत्  
ओछा होय छे अने पित्तना नीचे उहेवा दक्षणे विशेष  
होय छे थोड़े होते हैं और पित्तके निम्नोक्त लक्षण विशेष  
होते हैं, तृट् नेवाके:- तरस जैसेकि:- प्यास, कास-  
उधरस खांसी, ज्वर- ज्वर ज्वर, वमथु- वमथु वमन,  
कम- कथम थकावट, दाह- दाह दाह, तमः- अंधारा  
आवना तम, अतिसारादि अतिसार वगेरे अतिसार  
आदि ॥ २९ ॥

29. If a patient is of pitta habitus  
and the poison affects the seat of  
pitta, there will be marked symptoms  
of pitta and only slight symptoms of  
kapha and vata. They are—thirst,  
cough, fever, vomiting, prostration,  
burning, darkness of vision and  
diarrhea etc

कफदेशगं कफस्य च दर्शयेद्वातपित्तयोश्चेपत् ।  
लिङ्गं श्वासगलप्रहकण्डूलालावमथवादि ॥३०॥

कफस्य च विष उद्भूतिवाजा पुरुषना कफ  
प्रकृतिवाले पुरुषके, कफदेशगम् चेत् उद्भूतिवाजा रक्षुं होय  
तो ते कफाशयमे रहा हो तो वद, वातपित्तयोः वात  
अने पित्तना वात और पित्तके, लिङ्गम् च दक्षणे  
लक्षण, ईषत् दर्शयेत् ओछा अतावे छे अने उद्भूना  
नीचे उहेवा दक्षणे विशेष अतावे छे थोड़े बताता है  
और कफके निम्नोक्त लक्षण विशेष बताता है, श्वास-

नेवाके:- श्वास जैसेकि:- श्वास, गलप्रह- गलप्रह  
गलप्रह, कण्डू- भ्रम कंडू, लाला- लाला लाला,  
वमथु-आदि वमन वगेरे वमन आदि ॥ ३० ॥

30. If a patient is of kapha habitus  
and the poison affects the seat of  
kapha, there will be marked symptoms  
of kapha and only slight symptoms of  
vata and pitta. They are—dyspnea,  
spasm of the throat, pruritus, salivation  
and vomiting etc.

दूषीविषस्य लक्षणम्—

दूषीविषं तु शोणितदुष्ट्याहःकिटिमकोठलिङ्गं च ।  
विषमेकैकं दोषं संदूष्य हरस्यसूनेवम् ॥३१॥

दूषीविषम् दूषीविष दूषीविष, तु वगी तो, शोणित-  
रक्ताने रक्तको, दुष्ट्या दूषित करीने दूषित करके, अहः-  
इहवा-इहवा कोड़े-फुन्सया, किटिम- किटिम किटिम,  
कोठ- अने कोठ धौर कोठ, लिङ्गम् च ओ दक्षणेवाणुं  
होय छे इन लक्षणवाला होता है. एवम् आ रीते  
इस प्रकार, विषम् विष विष, एकैकम् ओड ओड एक  
एक, दोषम् दोषने दोषको, संदूष्य अधिक दूषित करीने  
अधिक दूषित करके, असून् प्राण प्राणोंका, हरति हरे  
छे हरण करता है ॥ ३१ ॥

31. The artificial poison vitiating  
the blood, causes ulcers and killoids,  
and the poison, vitiating gradually one  
after another of the body elements,  
kills the man ultimately.

विषं यथा मारयति—

क्षरति विषतेजसाऽसृक्

तत् खानि निरुध्य मारयति जन्तुम् ।

पीतं मृतस्य हृदि तिष्ठति

दृष्टविद्ययोर्दशदेशे स्यात् ॥३२॥

२९. कफवातयोः—कफपित्तयोः (३.)

३०. कफदेशगं कफस्य च दर्शयेद्वातपित्तयोश्चेपत्—कफदेशगं

व. कफाधिकस्य वातपित्तयोश्च दर्शयति (व.)

३१. किटिमकोठलिङ्गम्—किटिमकोठलिङ्गम् (क.)

३२. तत् खानि निरुध्य—खानि निरुध्याद्यु (थ फ.)

विष-विषना विषके, तेजसा तेजसी तेजसे, अमृक्  
 धोहीनु रक्तका, क्षरति क्षरन् धाय छे क्षरण होता है,  
 त्व ते वह, खानि श्रोताने। श्रोतोंको, निरुध्य रोध  
 करीने रोककर, जन्तुश् प्राणुने प्राणीको, मारयति भारी  
 नाणे छे मार डालता है, पीतम् पीषितुं विष पिषा  
 हुआ विष, मृतस्य भरेखा मनुष्यना मृत मनुष्यके, हृदि  
 हृदयमा हृदयमें, तिष्ठति रहे छे ठहरता है, दृष्ट-अने  
 दृष्ट और दृष्ट, विद्वयोः तथा विद्व मनुष्यमा विष  
 तथा विद्व मनुष्यमें विष, दंशदेशे दंशना प्रदेशमां दंश  
 किये हुए प्रदेशमें, स्यात् रहे छे रहता है ॥ ३२ ॥

32. The blood undergoes vitiation due to fiery quality of the poison, and occludes the circulatory channels and kills the man. The poison which has been taken orally lies in the stomach of the deceased, while the poison in one that is stung or bitten lies in the region stung or bitten.

विषमृतस्य लिङ्गानि—

नीलौष्ठदन्तशैथिल्यकेशपतनाङ्गभङ्गविक्षेपाः ।  
 शिशिरैर्न लोमहर्षो नाभिहृते दण्डराजी स्यात् ॥ ३३ ॥  
 क्षतजं क्षताच्च नायात्येतानि भवन्ति मरणलिङ्गानि ।  
 एभ्योऽन्यथा चिकित्स्यास्तेषां चोपक्रमाञ्जृणु मे ३४

नीलौष्ठ- नील होः नीले होठ, दन्तशैथिल्य-  
 दांतनी शिथिलता दांतोंका हिलना, केशपतन- पाण  
 उतरना बालोंका झडना, अङ्गभङ्ग- अंग भागवां  
 अङ्गभङ्ग, विक्षेपाः अंगविक्षेप विक्षेप, शिशिरैः ठंडी  
 थीनेना स्पर्श वजरेथी शीतल द्रव्योंके स्पर्श आदिते,  
 लोमहर्षः न इवासां उभां न यवां रोमांच न होना,  
 नाभिहृते धाडडी भारवाथी पक्षु दंडसे आघात करने  
 पर भी, दण्डराजी- धाडडीनी सौण दण्डके आघात

३३. दण्डराजी स्यात्-दण्डराजी च (ख. घ.)

३४. एतानि भवन्ति-उक्तानि एतानि (ङ.)

„ जृणु मे-जृणुत (ब.)

चिह्नका, न स्यात् न उद्गीर्णा न बनना, क्षतजम् अने  
 धोहीनुं और रक्तका, क्षताच्च क्षतभाथी क्षतसे,  
 न आयाति न आयातुं न वहना, एतानि ये ये, मरण-  
 लिङ्गानि मरणानां चिह्नो मृत्युके लक्षण, भवन्ति धाय छे  
 होते हैं, एभ्यः आ। लक्षणवाणांओथी इन लक्षणवालोंसे,  
 अन्यथा विपरीत लक्षणवाणां मनुष्ये। विपरीत लक्षण-  
 वाले मनुष्य, चिकित्स्याः चिकित्सा करवा ऐह्य छे  
 चिकित्सा करने योग्य हैं, तेषां तेओना उनके, उपक्र-  
 मान् च उपक्रमे। उपक्रम, मे भारी पालेथी मुझसे,  
 जृणु सांभलो सुनो ॥ ३३-३४ ॥

33-34. Cyanosis of the lips, loosening of teeth, falling of the hair, paralysis of the body, rigor mortis, absence of horripilation at the touch of cold, non-formation of contusion-marks on the body in reaction to blows, absence of the flow of blood on inflicting a wound—these are the signs and symptoms of death. Those, in whom the above symptoms are not seen, are to be treated. Now listen to their therapeutics, as I describe it.

विषस्य चतुर्विंशत्युपक्रमाः—

मन्त्रारिष्टोत्कर्तननिष्पीडनचूषणाग्निपरिषेकाः ।  
 अवगाहरक्तमोक्षणवमनविरेकोपधानानि ॥ ३५ ॥

हृदयावरणाङ्गननस्यधूमलेहौषधप्रशमनानि ।  
 प्रतिस्वारणं प्रतिविषं संज्ञासंस्थापनं लेपः ॥ ३६ ॥  
 मृतसञ्जीवनमेव च विंशतिरेते चतुर्भिरधिका ।  
 स्युरुपक्रमा यथा ये यत्र योज्याः शृणु तथा तान् ३७

मन्त्र- मन्त्र मन्त्र, अरिष्टा- अरिष्टा अरिष्टा, उत्कर्तन  
 उत्कर्तन उत्कर्तन, निष्पीडन निष्पीडन निष्पीडन,  
 चूषण- चूषण चूषण, अग्नि- अग्नि अग्नि, परिषेकाः

३६. प्रशमनानि-प्रशमनानि (फ.)

३७. अधिका-अन्यधिका (ङ.)

„ स्युरुपक्रमा यथा ये-दुपक्रमा यथा यत्र (घ.)

परिषेक परिषेक, अवगाह-अवगाहन अवगाहन, रक्त-  
मोक्षण-रक्तमोक्षु रक्तमोक्षण, वमन-वमन वमन,  
विरेक-विरेचन विरेचन, उपधानानि उपधान उपधान,  
हृदयावरण-हृदयावरण हृदयावरण, अञ्जन-अञ्जन अञ्जन,  
नस्य-नस्य नस्य, धूम-धूम धूम, लेह-लेह लेह,  
औषध-औषध औषध, प्रशमनानि प्रशमन प्रशमन,  
प्रतिसारणम् प्रतिसारण प्रतिसारण, प्रतिविषम् प्रतिविष  
प्रतिविष, संज्ञासंस्थापनम् संज्ञासंस्थापन संज्ञा-  
संस्थापन, लेपः लेप लेप, मृतसञ्जीवनम् च एव अने  
मृतसञ्जीवन और मृतसञ्जीवन, एते ऐ ये, चतुर्भिः  
अधिका विंशतिः योनीस चौबीस, उपक्रमाः उपक्रमे  
उपक्रम, स्युः छे हैं, ये नेशेना जिनके, यत्र न्यां  
जहां, यथा ने रीतना जिस तरहके, योज्याः प्रयोग  
थवा नेशे प्रयोग होने चाहिएं, तथा तान् ते उप-  
क्रमेना त्यां ते रीतना ते प्रयोगे उन उपक्रमोंके वहां  
उस तरहके उन प्रयोगोंको, शृणु साधनो सुनो ॥३५-३७॥

35-37. Incantations, amulets, excision, compression, suction, cauterization by heat, affusion, bath, depletion, emesis, purgation, scalp-incision (upadhaza), protection of the heart, eye-medication, nasal medication, inhalation, linctuses, sedative medications, alkaline applications, counter-poison, resuscitation, external application and re-animation—these four and twenty are the therapeutic measures. Now listen to the narration of how and when each of them is to be administered.

विषे वेणिकावन्ध-निष्पीडनोत्कर्तनानि, विषे चूषणम्—

दंशात्तु विषं दृष्ट्याविस्तृतं वेणिकां भिषग्बद्धा ।

निष्पीडयेद्दंशं दंशमुद्धरेन्मर्मवर्जं वा ॥३८॥

तं दंशं वा चूषेन्मुखेन यवचूर्णपांशुपूर्णेन ।

भिषक् वैद्य वैद्य, दृष्ट्य दंश पांशुया पुरुषना दृष्ट  
हुए पुरुषके, दंशात् दंशभांश दंशमेंसे, भविष्यत्तु

विषम् तु विष अस्युं न होय तो शरीरमें न फैले  
विषको, वेणिकाय वेणिका वेणिका, बद्धाभांशोने बांधकर,  
मृदाय अहु जोरसे, निष्पीडयेत् पीडन करवुं दबावे,  
मर्मवर्जम् अथवा मर्मने छोड़ी छे या मर्मको छोड़कर,  
दंशाय दशने दंशको, उद्धरेत् कापी काढे काटकर  
निकाले, तच्च अथवा ते अथवा उस, दंशम् दंशने  
दंशको, यवचूर्ण-जवना दोहथी जौके आटे, पांशुपूर्णेन  
के धूणथी भरदो या धूससे भरे हुए, मुखेन मुख ने  
मुखसे, चूषेत् वा यूसवे चूसे ॥ ३८३ ॥

38-38½. In the case of a poisonous bite, the physician should apply a ligature above the region of the bite and squeeze the part well, before the poison has spread in the body or should try to cut out that part except in the region of the vital organs; or, the physician filling his mouth with barley flour or earth must suck up the poison from the bitten area with his mouth.

विषे रक्तलावणम्, प्रदेह-सेकाः —

प्रच्छन्नशृङ्गजलौकाव्यधनैः स्वाव्यं ततो रक्तम् ॥३९॥

रक्ते विषप्रदुष्टे दुष्येत् प्रकृतिस्ततस्त्यजेत् प्राणान् ।

तस्मात् प्रघर्षणैरसृगवर्तमानं प्रवर्त्य स्यात् ॥४०॥

भ्रिकदुग्धधूमरजनीपञ्चलवणरोचनाः सवार्ताकाः ।

घर्षणमतिप्रवृत्ते वटादिभिः शीतलैर्लेपः ॥४१॥

रक्तं हि विषाधानं वायुरिवाग्नेः प्रदेहसैकैस्तत् ।

शीतैः स्कन्दति तस्मिन् स्कन्ने व्यपयाति विषवेगः ॥

३९. प्रच्छन्नशृङ्गजलौकाव्यधनैः—प्रच्छन्नवेधजलौकः शृङ्गः (घ. ड. ज.)

स्वाव्यं ततो रक्तम्—स्वावयेदा रुधिरम् (घ.)

४०. पञ्चलवणरोचनाः—पञ्चलवणरोचकाः (घ. घ. फ.)

४१. शीतैः स्कन्दति तस्मिन् स्कन्ने व्यपयाति विषवेगः—सेकः

स्कन्दति तस्मिन् क्षते व्यपयाति विषवेगः (ड.)

, व्यपयाति—व्ययं याति (ड.)



વિષવેગાન્મદમૂર્ચ્ઞાવિષાદહૃદયદ્રવાઃ પ્રવર્તન્તે ।  
શીતૈર્નિર્વર્તયેતાન્ વીજ્યાશ્ચાલોમહર્ષાત્ સ્યાત્ ॥૪૩॥

તતઃ પછી પીછે, પ્રચ્છન- છેકા મારીને પ્રચ્છન, શૂઘ્ન- શીંગડીથી સીંગી, જલોકા- જળોથી જૌક, દયધનૈઃ કે શિરાવેધથી યા શિરાવેધે, રક્તમ્ રક્તપું રક્તકા, સ્નાવ્યમ્ સ્નાવણુ કરવું સ્નાવ કરનાં; ચાદિષ, રક્તે રક્ત રક્ત, વિષદ્રવ્યે વિષથી દૂષિત થતાં વિષસે દૂષિત હોને પર, પ્રકૃતિઃ પ્રકૃતિ પ્રકૃતિ, વૃષ્ટેત્ દૂષિત થાય છે દૂષિત હોતી છે, તતઃ અને પછી મનુષ્ય ઔર પશ્ચાત્ મનુષ્ય, પ્રાણાન્ પ્રાણુનો પ્રાણોકા, ત્યજેત્ ત્યાગ કરે છે ત્યાગ કરતા છે, તસ્માત્ તેથી સ્થિતિ, અવર્તમાનમ્ ન અવર્તતા અપ્રવૃત્ત, અસુક્ લોહીને રક્તકો, પ્રવર્ષજૈઃ પ્રવર્ષ- છોથી પ્રવર્ષણોસે, પ્રવર્ષમ્ સ્યાત્ પ્રવર્ષાવું પ્રવૃત્ત કરના ચાદિષ, સવાર્તાકાઃ ભોરીંગણી કટેરી, ત્રિકટુ- ત્રિકટુ ત્રિકટુ, ગૃહધૂમ- ઘરનો ધૂમાડો ઘરની ધુવાડી, રજની- હળદર હલદી, પચ્છલવણ-પાંચેય લવણ પાંચો નમક, રોચનાઃ અને ગોરોચનપું ઔર ગોરોચનકો, વર્ષણમ્ વર્ષણુ કરવું રમણે, અતિપ્રવૃત્તે લોહી બહુ વહેતાં રક્તકી અતિ પ્રવૃત્તિ હોને પર, વટાદિભિઃ બડ વગેરે વટાદિ, શીતલૈઃ શીતલ પ્રત્યેથી શીતલ દ્રવ્યોસે, લેપઃ લેપ કરવો પ્રલેપન કરે, વાયુઃ બેધ વાયુ જૈસે વાયુ, અગ્નિઃ અગ્નિને દેલાવે છે અગ્નિકો ફેલાતા છે, રક્તમ્ રક્ત રક્ત વૈસે રક્ત, વિષા- ધાનમ્ હિ વિષને દેલાવે છે વિષકો ફેલાતા છે, તત્ તે વહ, ક્ષીતઃ શીતળ શીતલ, પ્રદેહ- લેપ લેપ, સેકૈઃ અને પરિષેકાથી ઔર પરિષેકોસે, રક્ત્વતિ બમી બમ છે ગાઢા હોતા છે, તર્જનમ્ અને તે ઔર ડસકે, રક્ત્વે બમી બમતાં વધા હોને પર, વિષવેગઃ ચ્યવયાતિ વિષને વેગ હોી બમ છે વિષકા વેગ હટ જાતા છે, વિષવેગાત્ વિષના વેગથી વિષવેગસે મદ- મદ મદ, મૂર્ચ્ઞા- મૂર્ચ્ઞા મૂર્ચ્ઞા, વિષાદ- વિષાદ વિષાદ, હૃદયદ્રવાઃ અને હૃદયના વેગવું વધવું ઔર હૃદયકી ગતિકા વધના, પ્રવર્તન્તે થાય છે ઉત્પન્ન હોતે છે, તાન્ તેઓને સનકો, ક્ષીતૈઃ શીતળ

ઉપક્રમેથી શીતલ ઉપચારોસે, નિર્વર્તયેત્ મટાડના નિવૃત્ત કરે, આલોમહર્ષાત્ અને રવાડાં ઊભાં થતાં સુધી ઔર લોમહર્ષ હો વધાં તક, વીજ્યાઃ ચ સ્યાત્ પંખાનો પવન નાખવો. પંખેછી વાયુ ડાલની ચાદિષ ॥ ૩૯-૪૩ ॥

39 43. Then he should perform depletion of blood by wet-cupping with the horn or by leeching or by venesection. Else the blood being vitiated by the poison, the entire body gets vitiated and the man dies. Therefore the blood which does not flow out must be forced out by means of friction-massage. The three spices, kitchen soot, turmeric, the pentad of salt, ox-bile and indian nightshade make a good rubbing powder for inducing bleeding. If the blood is flowing out too much, cooling application of the banyan and similar other trees should be given. The blood is the vehicle of the poison just as the wind is of fire. So it should be treated with applications and affusions. As a result of cooling measures, the blood congeals and the blood being congealed the spreading of the poison is prevented. It is owing to the spreading of the poison that there occur intoxication, fainting, asthenia and tachycardia. So this should be alleviated by means of cooling measures and the patient should be fanned till there is horripilation owing to the cold induced.

૪૩, શીતૈર્નિર્વર્તયેતાન્ વીજ્યાશ્ચાલોમહર્ષાત્ સ્યાત્-શીતૈર્નિર્વર્ત-

યેતાન્ હતશ્ચાન્ લોમહર્ષઃ સ્યાત્ (ય.)

,, વીજ્યાશ્ચાલોમહર્ષાત્ સ્યાત્-ન વીજ્યાશ્ચ લોમહર્ષઃ સ્યાત્ (ર.ખ.)

,, ,, ,, -વીજ્યાશ્ચાલોમહર્ષઃ (વ.)

વિષે દંશચ્છેદાચ્છણારિષ્ટાદાહવિસ્ત્રાવણવમનવિરેકાઃ :-

તરુરિવ મૂલચ્છેદાદંશચ્છેદાન્ વૃદ્ધિમેતિ વિષમ્ ।

આચ્છણમાનયનં જલસ્ય સેતુર્યથા તથાડરિષ્ટાઃ ॥૪૪॥



त्वज्जांसगतं दाहो दहति विषं स्त्रावणं हरति रक्तात् ।  
पीतं वमनैः सद्यो हरेद्विरैकैर्द्वितीये तु ॥४५॥

मूलच्छेदात् जेम मूल कापनाथी जिस प्रकार जड़को काटनेसे, तरुः इव वृक्ष नाश पाये छे वृक्ष नष्ट हो जाता है, दंशच्छेदात् तेम दंश कापनाथी उस प्रकार दंशस्थानको काट डालनेसे, विषम् विष विष, वृद्धिम् वृद्धि बढ़ने, न णति पाभुत् नथी नहीं पाता, आचूषणम् यूक्षणाथी आचूषणसे, आनयनम् विषने अहार वाक्वाभां आवे छे विष बाहिर खींच लिया जाता है, यथा जेम जैसे, सेतुः भंध बांध, जलस्य पाणीने रोधी दीये छे पानीको रोक देता है, तथा तेम वैसे, अरिष्टाः अरिष्टा विषने रोधी दे छे अरिष्टा विषको रोक देती है, दाहः दाह दाह, त्वज्जांसगतम् थाभधी अने भांसभां रहेला त्वचा तथा भांसमें रहे हुए, विषम् विषने विषको, दहति आये छे जला देता है, स्त्रावणम् रक्तस्त्रावण रक्तस्त्राव, रक्तात् रक्त-भांथी विषने रक्तसे विषको, हरति हरे छे बाहिर निकाल देता है, पीतम् पीयेला विषने पीये हुए विषको, सद्यः जल्दी तुरन्त, वमनैः हरेत् वमन करावीने अहार डाढवुं वमनसे निकाले, द्वितीये तु भीम वेगभां ते। दूसरे वेगमें तो, विरेकैः विरेचनेभी अहार डाढवुं विरेचनसे निकाले ॥ ४४-४५ ॥

44-45. Just as a tree ceases to grow when its root is cut, similarly by the excision of the bite, the effects of poison cease to develop. By suction the poison is induced to flow out; and the amulet ligatures act with regard to poison as dam acts with regard to flowing water. Cauterization burns the poison which has spread into the skin and the flesh, and depletion removes the poison from the blood. The poison which is drunk must be

removed immediately by emesis; and purgation should be given if symptoms of the second stage of poisoning have set in.

सप्तविषवेगानां चिकित्सा—

आदौ हृदयं रक्ष्यं तस्यावरणं पिबेद्यथालाभम् ।  
मधुसर्पिर्मज्जपयोर्गैरिकमथ गोमयरसं वा ॥४६॥

आदौ प्रथम प्रथम, हृदयम् हृदयनी हृदयकी, रक्ष्यम् रक्षा करवी जेध अरे रक्षा करनी चाहिए, मधु-सर्पिः- मधु, धी मधु, घृत, मज्जा-पयोः- गैरिकम् मज्जा, दूध, जेरु मज्जा, दूध, गेरु, अथ वा अने और, गोमय-रसम् गोमया छाछुने। रस गोमयका रस, यथालाभम् आवरणम् जेमभुत् जे कांछे हृदयरक्षक औषध मजे इन्मेंसे जो कुछ हृदयरक्षक औषध प्राप्त हो, पिबेत् ते पीवुं वह पीवे ॥ ४६ ॥

46. First, the heart should be well protected and whatever of the protective remedies for the heart are available should be taken. The patient may immediately take honey, ghee, marrow, milk, red ochre or the juice of cowdung.

इक्षुं सुपकमथवा काकं निष्पीड्य तद्रसं वरणम् ।  
छागादीनां वाऽसृग्भस्म मृदं वा पिबेदाशु ॥४७॥

सुपकम् सुपक सुपक, इक्षुम् शेरडीने। रस इक्षुका रस, अथवा अथवा या, काकम् कागजना भांसने सारी रीति पडावी कौएके भांसको सुस्विज कर, निष्पीड्य नीथेवी निचोड़कर, तत्- रसम् काढेला तेने। रस निकाला हुआ उसका रस, छागादीनाम् वा अथवा अथवा वजे-रेतुं अथवा बकरे आदिका, असृक् छोड़ी रक्त, भस्म भस्म, मृदम् वा अथवा साटी या मिट्टी,

४६. मधुसर्पिर्मज्जपयोर्गैरिकमथ-मज्जानं मधुघृतगैरिकमथ (ख. घ. ङ.)

„ मज्जपयोर्गैरिकमथ-मज्जानं गैरिकमथ (घ.)

४७. इक्षुं सुपकमथवा-इक्षुं सपकमथवा (घ. च. फ)

„ वरणम्-वस्यम् (घ. ड.)

४५. त्वज्जांसगत-त्वज्जांसगतः (क.)

„ स्त्रावणं हरति रक्तात्-स्त्रावणं रक्तात् (घ.)

„ हरति-स्त्रावणं (त.)

વરણમ્ ને હૃદયરક્ષક છે જો હૃદયરક્ષક છે, આશુ તે પુરત વહ શીઘ્ર, વિવેક પીવાં પીવે ॥ ૪૭ ॥

47. Or the patient should immediately take boiled sugarcane juice or the meat-juice squeezed out of crow's flesh, or the blood of the goat and other animals of that group or ash or earth.

ક્ષારાગદસ્તૃતીયે શોફહરૈલેખનં સમધ્વમ્બુ ।  
ગોમયરસશ્ચતુર્થે વેગે સકપિત્થમધુસર્પિઃ ॥ ૪૮ ॥

તૃતીયે ત્રીજા વેગમાં તૃતીય વેગમાં, ક્ષારાગદઃ ક્ષાર-અગદ પાવો ક્ષાર-અગદ પિલાવે, સમધ્વમ્બુ મધ અને બહુ સહિત મધુ ઓર જલસહિત, શોફહરૈઃ શેાફ઼ દ્રવ્યોથી શોફહર દ્રવ્યોસે, લેખનમ્ લેખન કરવું લેખન કરે, ચતુર્થે ચોથા વેગે, વેગે વેગમાં વેગમાં, સકપિત્થ-કેાક કપિત્થ, મધુસર્પિઃ મધ અને ઘીથી યુક્ત મધુ ઓર વીસે યુક્ત, ગોમયરસઃ ગાયના ઝાણુનો રસ પાવો ગોમયકા રસ પિલાવે ॥ ૪૮ ॥

48. In the third stage of toxicosis he should take alkaline antidotes and revulsive drugs that are curative of edema together with honey and water. In the fourth stage of poisoning, he should take the juice of cowdung mixed with wood-apple, honey and ghee.

કાકાકાન્ડશિરીષામ્થાં સ્વરસેનાશ્ચ્યોતનાજ્ઞને નસ્યમ્ ।  
સ્વાત્પન્નમેડથ ષષ્ઠે સંજ્ઞાયાઃ સ્થાપનં કાર્યમ્ ॥ ૪૯ ॥

પન્નમે પાંચમા વેગમાં પાંચવે વેગમાં, કાકાકાન્ડ-કાકાકાન્ડ બઢી કવચ, શિરીષામ્થામ્ તથા સરસાગના તથા શિરીષકે, સ્વરસેન સ્વરસથી સ્વરસે, આશ્ચ્યોતના-આશ્ચ્યોતના આશ્ચ્યોતના, અજ્ઞને અજ્ઞન અંજન, નસ્યમ્

૪૮ શોફહરૈલેખનં-શોફહરૈશ્ચર્દનં (૫.)

,, ,, -શોફહરચર્દનમ્ (૫.)

૪૯, અજ્ઞને-અજ્ઞનમ્ (જ.)

તથા નસ્ય તથા નસ્ય, સ્યાવ કરવું કરે, ષષ્ઠે અને છઠા વેગમાં ઓર છઠે વેગમાં, સંજ્ઞાયાઃ સ્થાપનમ્ સંજ્ઞા-સ્થાપન સંજ્ઞાસ્થાપન, કાર્યમ્ કરવું કરના ચાહિયે ॥ ૪૯ ॥

49. In the fifth stage, he should use eye-salve and nasal medication prepared with the juice of sword bean and black siris; and in the sixth stage measures of resuscitation should be resorted to.

ગોપિત્તયુતા રજની મજ્જિષ્ઠામરિચપિપ્પલીપાનમ્ ।  
વિષપાનં દષ્ટાનાં વિષપીતે દંશનં ચાન્તે ॥ ૫૦ ॥

ગોપિત્તયુતા રજની ગોરોચનયુક્ત હળદરનું આશ્ચ્યોતના વગેરે કરવું ગોરોચનકે સાથ હલ્દીકા આશ્ચ્યોતના આદિ કરે, મજ્જિષ્ઠા અને મજ્જા ઓર મજીઠ, મરિચ-મરી કાલી મીર્ચ, પિપ્પલીપાનમ્ ચ તથા પીપરનું પાન દ્વિતકર છે તથા પિપ્પલીકા પાન દ્વિતકર છે, અન્તે છેલ્લા વેગમાં અન્તિમ વેગમાં, દષ્ટાનામ્ સર્પથી દંશ પામેલને સર્પદંટોકો, વિષપાનમ્ વિષપાન વિષપાન, વિષપીતે તથા વિષ પીધેલને તથા વિષપીતકો, દંશનમ્ ચ સર્પથી ડસાવવેા સર્પ કટવાના દ્વિતકર છે ॥ ૫૦ ॥

50. He should be given a potion of turmeric, madder, black pepper and long pepper mixed with ox-bile. Finally in the seventh stage he must take a potion of vegetable-poison in cases of poisonous bites, and bites by poisonous animals in the case of vegetable poisoning.

વિષદ્વરા અગદયોગાઃ—

શિશિપિસાર્ધયુતં સ્યાત્ પલાશવીજમગદો મૃતેષુ વરઃ  
વાર્તાકુફાણિતાગારધૂમગોપિત્તનિમ્બં વા ॥ ૫૧ ॥

૫૦. ગોપિત્તયુતા રજની-ગોપિચયુક્તરજની (ઘ.)

,, દંશનં ચાન્તે-નાશને વાતે (ચ)

૫૧. મૃતેષુ વરઃ-મૃતેષુ મગઃ (લ. ઢ)

,, વરઃ-દિતઃ (લ.)

मृत्यु मरी भयेदा नेवा मनुष्ये भाटे विषसे मृतवत् प्रतीत होते हुए मनुष्योंके लिए, शिखिपित्तार्ध-युतम् अधुं मोरतुं पित्त भेजवेद मयूरपित्तके आधे भागके साथ, पलाशबीजम् आभरानां औष आपवां ओ ढाकके बीज मिजाकर देना यह, वरः श्रेष्ठ उत्तम, अगदः स्यात् औषध छे औषध है, वार्ताकु-लोरी गण्डी कटेरी, फाणित-जोणनी राय राव, अगारधूम-धरने धूमाडे प्रहधूम, गोपित्त-गायतुं पित्त मोरोचन, निम्बम् वा अने वीमडे पाचं और नीम पिलावे ॥ ५१ ॥

51. In the eighth stage, when the patient is apparently dead, the antidote of palas seeds mixed with double its quantity of peacock's bile is good, or of indian night-shade, treacle, kitchen soot, ox-bile and neem.

गोपित्तयुतैर्गुटिका सुरसाग्रन्थिद्विरजनीमधुककुष्ठैः शस्ताऽमृतं तुल्या शिरीषपुष्पकाकाण्डकरसैर्वा ५२

गोपित्तयुतैः गोपित्तयुक्त गोपित्तयुक्त, सुरसा-ग्रन्थि-सुरसा, पीपरीमूला सुरसा, पिप्पलीमूल, द्विरजनी-दण्डर, दण्डण्डर हल्ली, दाहल्ली, मधुक-नेमीमधु मुलहठी, कुष्ठैः अने कठई और कूठसे, शिरीष-पुष्प-अथवा सरसजनां दूध अथवा शिरीषपुष्प, काकाण्डकरसैः वा अने कडकाना रसथी अनावेदी और काकाण्डके रससे बनाई हुई, गुटिका गोपित्त-गोलियां, शस्ता प्रशस्त प्रशस्त, अमृतं तुल्या च अने अमृत समान छे और अमृततुल्य हैं ॥ ५२ ॥

52. The pills prepared of cow's bile, holy basil, root of long pepper, turmeric, indian berberry, liquorice, and costus, or of the juice of siris flowers and sword been act like ambrosia.

काकाण्डसुरसगवाक्षीपुनर्नवावायसीशिरीषफलैः ।

- ५२ गुटिका-गुटिका (ब. ज.)  
 , सुरसाग्रन्थिद्विरजनी-सुरसाग्रन्थिद्विरजनी (ब.)  
 , द्विरजनी-द्विरजनी (त.)

उद्वन्धविषजलमृते लेपोपधिनस्यपानानि ॥५३॥

उद्वन्ध-इंसाथी भरेदा नेवा कांसीसे मरे हुए के तुल्य, विष-विषथी भरेदा नेवा विषसे मरे हुए के तुल्य, जलमृते अथवा जलथी भरेदा नेवा मनुष्य भाटे अथवा जलसे मरे हुए के तुल्य मनुष्योंके लिए, काकाण्ड-कडकाना काकाण्ड, सुरस-सुरसा सुरसा, गवाक्षी-गन्धकाना इन्द्रायण, पुनर्नवा-सादेरी गदहपुरना, वायसी-पीपुडी मकोय, शिरीषफलैः अने सरसजनां इन्दी तैयार करेदा और शिरीषके बीजोंसे तैयार किये हुए, लेप-लेप लेप, उपधि-उपधि उपधि, नस्य-नस्य नस्य, पानानि अने पान प्रशस्त छे और पान प्रशस्त हैं ॥ ५३ ॥

53. Applications, scalp-incisions, errhines and potions may be prepared out of the fruits of sword bean, holy basil, colocynth, hog's weed, black nightshade and siris for the cure of those that are apparently dead as a result of strangulation, by poison or drowning in water.

स्पृक्षाप्लवस्थौण्यकांक्षीशैलेयरोचनाभगरम् ।  
 ध्यामककुङ्कुममांसीसुरसाग्रेलालकुष्ठमम् ॥५४॥  
 बृहती शिरीषपुष्पं श्रीवेष्टकपञ्चचारटिविशालाः ।  
 सुरदारुपञ्चकेशरसावरकमनःशिलाकौन्त्यः ॥५५॥  
 जात्यर्कपुष्परसरजनीद्वयहिङ्गुपिप्पलीलाक्षाः ।  
 जलमुद्रपणिचन्दनमधुकमदनसिन्धुवाराक्ष ॥५६॥  
 शम्पाकलोध्रमयूरकगन्धफलानाकुलीविडङ्गाश्च ।  
 पुष्ये संहृत्य समं पिष्ट्वा गुटिका विधेयाः स्युः ॥५७॥

५३. लेपोपधिनस्यपानानि-लेपापधिनस्यपानानि (क. ब.)

” ” -लेपौषधिनस्यपानानि (ब.)

” ” -लेपापधिनस्यपानानि (घ.)

५४. कौन्त्यः-बालय (ब.)

५५. अर्कपुष्परसरजनी-अर्कपुष्पसर्षप (ब.)

५६. गन्धकला-गन्धकली (ख. ब. ड.)

” विडङ्गाश्च-विडङ्गं च (घ.)

” गुटिका-गुटिका (घ.)

સ્વૃક્ષા- સ્વૃક્ષા સ્વૃક્ષા, પ્લુવ- કેવડીમેથ કેવડી-  
મોથા, સ્થોળેય- સ્થોળેયક સ્થોળેયક, કાંક્ષી- ફટકડી  
કાંક્ષી, શૈલેય- શૈલેય શૈલેય, રોચના- ગોરોચન ગોરોચન,  
તગરમ્ તગર તગર, ધ્યામક- ધ્યામક ધ્યામક, કુહુમ-  
કેસર કેસર, માંસી- જટામાંસી જટામાંસી, સુરસામ-  
સુરસાની મંજરી સુરસામ, પ્લા- એલચીં ઇલાયચી,  
બાલ- હરતાલ હરિતાલ, કુષ્ઠમ્ ખેર જૈર, વૃહતી ઊભી  
ભોરીગણી બનમાટા, શિરીષપુષ્પ- સરસાનાં ફૂલ  
શિરીષપુષ્પ, શ્રીવેષ્ટક- ગંધાબરોઅ ગંધવિરોજા, પચા-  
કમળ કમલ, ચારટિ- સ્થલકમલિની, વિશાલા-  
મન્દાગુણી હન્દાચન, સુરદાહ- દેવદાહ દેવદાહ, પચ્ચકેશર-  
કમળનાં કેસર કમલકેસર, સાવરક- સાવરક સાવર  
લોધ, મનઃશિલા- મનઃશિલ મૈનસિલ, કૌન્થ- રેણુક-  
ખીન્ રેણુકા, જાતિ- ચમેલી ચમેલી, અર્કપુષ્પ- અને  
આકાશનાં ફૂલનો ઓર આકાશ ફૂલના રસ- રસ રસ,  
રજતીદ્રવ્ય- હળદર, હરુહળદર હલ્દી, દારુહલ્દી, હિન્દુ-  
હિંગ હીંગ, પિપ્પલી- પીપર પિપ્પલી, લાક્ષા- લાખ  
લાક્ષા, જલ- વાળો સ્વ, મુદ્ગપર્ણિ- જગલી મગ  
મુદ્ગપર્ણી, ચન્દન- ચન્દન ચન્દન, મધુક- જેડીમધ  
મુલહઠી, મદન- મીઠળ મૈનફલ, સિન્ધુવારા- ચ નગેડ  
મેઢરી, શમ્પાક- ગરમાળો અમલતાસ, લોધ- લોધ  
લોધ, મયૂરક- અથેડો ચિત્તિડા, ગન્ધકલા- ધર્ડેલા  
પ્રિયકુ, નાકુલી- નોળવૈલ ફેલમૂલ, વિહંગા- ચ વાવડેંગ  
વાયવિદંગ, પુષ્કે એએને પુષ્પ નક્ષત્રમાં ફેલકો પુષ્પ  
નક્ષત્રમે, સંહત્ય લાવી લેકર, સમસ્ અને સરખે ભાગે  
ઓર સમ ભાગમે, પિષ્ટા પીસી પીસકર, ગુલિકા-  
ગોળીઓ ગોળિયાં, વિષેવા- સ્યુઃ બનાવવી બેઈ એ  
બનાવી વાહિ ॥ ૫૪-૫૭ ॥

54-57 Melilot, rushnut, glory tree,  
yellow ochre, lichen, gall-stone, indian  
valerian, ginger grass, saffron, nardus.  
the seed-blossom of holy basil, small  
cardamom, yellow arsenic, catechu,  
yellow-berried nightshade, siris flow-  
ers, pine resin, beetle killer, colocynth,  
deodar, lotus anthers, sabar lodh, red  
arsenic, fragrant piper, jasmīn's flowers,

flowers of mudar, turmeric, indian berbe-  
rry, asafetida, long pepper, lac, nut-  
grass, wild green gram, red sandal, liquo-  
rice, emetic nut, chaste tree, purging  
cassia, lodh, rough chaff, perfumed  
cherry, indian groundsel and embelia;  
take the above mentioned articles in  
equal quantities under the asterism of  
Pushya, pulverise them and make  
into pills.

સર્વવિષમ્ જયકૃદ્વિષમૃતસંજીવનો જ્વરનિહન્તા ।  
ત્રેયવિલેપનધારણધૂમગ્રહણૈર્ગૃહસ્થઃ ॥૫૮॥  
મૃતવિષજન્મલક્ષ્મીકાર્મણમન્ત્રાઙ્ગશન્યરીન્ હન્યાત્  
દુઃસ્વપ્નશ્ચીદોષાનકાલમરણામ્બુચૌરમયમ્ ॥૫૯॥  
ઘનધાન્યકાર્યસિદ્ધિઃ શ્રીપુષ્ટ્યાયુર્વિવર્ધનો ઘન્યઃ ।  
મૃતસંજીવન એવ પ્રાગમૃતાદ્બ્રહ્મણા વિહિતઃ ॥૬૦॥  
इति मृतसंजीवनोऽगदः ।

અમૃતાદ્ અમૃતની ઉત્પત્તિથી અમૃતકી ઉત્પત્તિકે, પ્રાક્  
પહેલાં પહેલ, બ્રહ્મણા બ્રહ્માએ બ્રહ્મણે, વિહિતઃ બનાવેલ  
બનાયા હુઆ, એવઃ આ યદ્, મૃતસંજીવનઃ મૃતસંજી-  
વન અગદ મૃતસંજીવન અગદ, સર્વવિષમ્ સર્વવિષમ્  
સર્વ વિષોકા વિનાશક, જયકૃત્ જય આપનાર વિજયપ્રદ,  
વિષમૃત- વિષથી મરેલાને વિષસે મૃતકો, સંજીવનઃ  
જીવનાર જીવનાવાલા, જ્વરનિહન્તા અને જ્વરદ્ છે  
ઓર જ્વરવિનાશક હૈ, ત્રેય- સંધ્યાથી સંધ્યેસે, ત્રિલેપન-  
ત્રિલેપન કરવાથી ત્રિલેપન કરનેસે, ધારણ- ધારણ  
કરવાથી ધારણ કરનેસે, ધૂમગ્રહણેઃ ધૂમપાન કરવાથી  
ધૂમપાન કરનેસે, ગૃહસ્થઃ ચ અને ઘરમાં રાખવાથી  
આ અગદ ઓર ઘરમે રખનેસે યદ્ અગદ, મૃત- મૃત મૃત,  
વિષ- વિષ વિષ, જન્તુ- જન્તુ જન્તુ, અલક્ષ્મી- અલક્ષ્મી  
અલક્ષ્મી, કાર્મણ- કાર્મણ કાર્મણ, મન્ત્ર- મંત્ર મન્ત્ર,  
અગ્નિ- અગ્નિ અગ્નિ, અશક્તિ- વજ્ર વજ્ર, અરીન્ શત્રુઓ  
શત્રુઓ, દુઃસ્વપ્ન- અરાબ સ્વપ્ન બૂરે સ્વપ્ન, શ્ચીદોષાન્  
શ્ચીદોષ શ્ચીદોષ, અકાલ- અકાલે અકાલમે, મરણ-  
મરણ મૃત્યુ, અમ્બુચૌરમયમ્ બલને ભય અને ચોરને

अथ जलका मय और चोरका मय, इत्यात् ऐशेने हस्ते छे उनका निराण करता है, धन- धन धन, धान्य- धान्य धान्य, कार्य- अने कार्यानी और कार्यकी, सिद्धिः सिद्धि आपे छे सिद्धि देता है, श्री- तेभञ्ज लक्ष्मी एवं लक्ष्मी, पुष्टि- पुष्टि पुष्टि, आयुः- अने आयुष्यने और आयुको, विवर्धनः बढ़ावे छे बढ़ाता है, धन्यः तथा अभ्युदय करे छे और अभ्युदय करता है ॥ ५८-६० ॥ इति आ गृह, मृतसंजीवनः मृतसंजीवन मृतसंजीवन, अगदः अगद छे अगद है ।

58-60. This pill counteracts all kinds of poison, gives success in treatment, and brings back to life those apparently dead by the effects of poison, and is a febrifuge. By smelling it, by its application, by wearing it on the body, by fumigation with it and by keeping it in the house, all dangers from evil spirits, poisonous creatures, poverty, black magic, fire, lightning and foes are destroyed. It also obviates the fear of bad dreams poisoning by women, premature death, drowning and fear of thieves. It bestows wealth, good crops and success in undertaking auspiciousness, plumpness, long life and wealth. Thus has been described the antidote that revives the dead (Mrita-Sanjeevana).

विषे मन्त्रयोगः—

मन्त्रैर्धमनीबन्धोऽवमार्जनं कार्यमात्मरक्षा च ।  
दोषस्य विषं यस्य स्थाने स्यात्तं जयेत्पूर्वम् ॥६१॥

मन्त्रैः मन्त्रोत्थी मन्त्रोत्थे, धमनीबन्धः धमनी-  
बन्धन धमनीबन्धन, अवमार्जनम् अवमार्जन अव-  
मार्जन, कार्यम् आत्मरक्षा च अने आत्मरक्षा करवा

लेईओ और आत्मरक्षण करना चाहिए, विषम् विष  
विष, यस्य जे जिस, दोषस्य दोषना दोषके, स्थाने  
स्थानमा स्थानमें, स्यात् हो हो, तम् तेने उसको, पूर्वम्  
प्रथम प्रथम, जयेत् जितवे। लेईओ जीतना  
चाहिए ॥६१॥

61. The tourniquet application, and stroking the poison down should be done to the accompaniment of chanting of incantations and also the protection of oneself from evil spirits. That humor should be first subdued in whose habitat the poison has got localised.

दोषस्थानभेदेन विषचिकित्सा—

वातस्थाने स्वेदो दध्ना नतकुष्ठकल्कपानं च ।  
घृतमधुपयोऽम्बुपानावगाहसेकाश्च पित्तस्थे ॥६२॥

वातस्थाने ले विष वातस्थानमा रहुं होय ते।  
वातस्थानमें यदि विष रहा हो तो, स्वेदः स्वेदन करवुं  
लेईओ स्वेदन करना चाहिए, दध्ना अने दही साथे  
और दहीके साथ नत- तगर तगर, कुष्ठकल्क- तथा  
कठना कटुतुं तथा कूटके कल्कका, पानम् च पान करवुं  
पान करना चाहिए, पित्तस्थे ले विष पित्तस्थानमा  
रहुं होय ते। यदि विष पित्तस्थानमें रहा हो तो, घृत-  
मधु-पयः- घी, मधु, दूध घी, शहद, दूध, अम्बुपान-  
अने जलपान पान और जलका पान, अवगाह-सेकाः च  
तेभञ्ज अवगाहन तथा परिषेक करवा एवं अवगाहन  
तथा परिषेक करना चाहिए ॥ ६२ ॥

62. When it is in the abode of the vata, the procedures taken should be sudation and a potion of curds mixed with the paste of indian valerian and costus. When it is in that of the pitta, potion, tub-bath and affusion with ghee, honey, milk and water should be given.

क्षारागदः कफस्थानगते स्वेदस्तथा सिराव्यधनम् ।  
दूषीविषेऽथ रक्तस्थिते सिरा कर्म पञ्चविधम् ॥६३॥

कफस्थानगते ओ विष कफस्थानभां रह्युं होय ते।  
यदि विष कफस्थानमें रहा हो तो, क्षारागदः क्षारा-  
गद क्षारागद, स्वेदः स्वेदन स्वेद, तथा तथा तथा,  
सिराव्यधनम् सिरावेध करवां सिरावेध करना चाहिए,  
अथ दूषीविषे अने ओ दूषीविष और यदि दूषीविष,  
रक्तस्थिते रक्तभां रह्युं होय ते। रक्तमें रहा हो तो,  
सिरा सिरावेध सिरावेध, पञ्चविधम् कर्म तथा पंचकर्म  
करवां तथा पंचकर्म करना चाहिए ॥६३॥

63 When it is in the habitat of  
kapha, alkaline antidotes as also sudation  
and venesection should be tried. When  
an artificial and slow poison is in the  
blood, blood-letting and all the pentad  
of purificatory procedures should be  
resorted to.

भेषजमेवं कल्प्यं भिषग्विदाऽऽलक्ष्य सर्वदा सर्वम् ।  
स्थानं जयेद्धि पूर्वं स्थानस्थस्याविरुद्धं च ॥६४॥

एवम् ओ भभाषे इस प्रकार, भिषग्विदा विद्वान्  
वैद्ये विद्वान् वैद्य, आलक्ष्य अलाभ्य विचार करी देखकर,  
सर्वदा सर्वदा सर्वदा, सर्वम् भेषजम् सर्व औषधनी  
सब औषधकी, कल्प्यम् कल्पना करनी कल्पना करे,  
स्थानम् वातादिस्थानभां रहेला वात वजेरेने वातादि-  
स्थानमें रहे हुए वातादिको, पूर्वम् पहले, जयेत्  
हि शतवा जीते, स्थानस्थस्य अने वातादिस्थानभां  
रहेला विषने और वातादिस्थानमें रहे हुए विषको,  
अविरुद्धम् च ओ चिकित्सा विरुद्ध न होय ते  
करनी ओईओ जो चिकित्सा विरुद्ध न हो वह  
करनी चाहिए ॥ ६४ ॥

64. Treatment should be prescribed  
in this way by the wise physician,

६३. क्षारागदः—क्षारोऽगदः (घ)  
,, सिराव्यधनम्—सिरावेधः (ध. फ. व.)  
,, सिरा कर्म—विषाण कर्म (घ. त.)

always after full consideration of all  
the factors. The habitat of the poison  
should first be attacked and the treat-  
ment should not be antagonistic to  
the particular humor abiding there.

विषसंकमणार्थमुपधानम्—

विषदूषितकफमार्गः स्रोतःसंरोधरुद्धवायुस्तु ।  
मृत इव स्वसेनमर्त्यः स्यादसाध्यलिङ्गैर्विहीनश्च ॥६५॥  
चर्मकषायाः कटकं बिल्वसमं मूर्ध्नि काकपदमस्य ।  
कृत्वा दद्यात्कटभीकटुकटफलप्रधमनं च ॥६६॥

विष- विषधी विषसे, दूषित- दूषित अथैला दूषित हुए,  
कफमार्गः कफमार्गवाला कफमार्गवाले, मर्त्यः तु मनुष्यना  
मनुष्यका, स्रोतःसंरोध- स्रोतों अंध धंधे अवाधी स्रोतके  
बन्ध हो जानेसे, रुद्धवायुः वायु रोकाई अथ छे वायु  
रुका रहता है, मृतः तेथी ते मृतप्राय पुरुषनी इस लिए  
मरणासन्न पुरुषके, इव ऐठे सदृश, असेत् आस ले छे  
आस लेता है, असाध्य- ओ ते असाध्य यदि वह असाध्य,  
लिङ्गैः लक्षणेथी लक्षणोंसे, विहीनः च रहित रहित,  
स्यात् होय ते। होता है तो, अस्य ऐना इसके, मूर्ध्नि  
भाथे गिर पर, काकपदम् कटकपद काकपद, कृत्वा करी  
करके, चर्मकषायाः चर्मकषायां चर्मकषाके, बिल्वसमम्  
ऐक पल एक पल, कटकम् कटक कटको, दद्यात्  
भुक्तवा लगावे, कटभी- कटभी कटभी, कटुक- निडु निडु,  
कटफल अने कटुफल और कायफलका, प्रधमनम् च  
प्रधमन करनी प्रधमन करे ॥६५-६६॥

65-66. If a man has his channels  
of kapha vitiated by poison and the  
passage of his vata obstructed due to  
occlusion of channels and as a result,  
he breathes like a dying man but does

६५. कृत्वा दद्यात्कटभी—कृत्वा कुर्यात्कटभी (ख.)

,, दद्यात्—कुर्यात् (छ.)

,, कटभीकटुककटफलप्रधमनं च—कटभीजालिनीकटुकैः प्रधमनं  
च (घ. ड.)

,, —कटुकोठफलप्रधमनं च (फ.)

not show symptoms of incurability, he may be treated in the following manner. A crow-foot-like incision should be made over the top of his scalp and 4 tolas of the paste of soap pod should be applied over it and insufflation of the pulvis of white siris, kurroa and box-myrtle should be given.

छागं गव्यं माहिषं वा मांसं कौकुटमेव वा ।  
दद्यात् काकपदे तस्मिन्ततः संक्रमते विषम् ॥६७॥

छागम् भट्टर। वकरे गव्यम् गाय, माहिषम् वा भेस भैस, कौकुटम् एव वा अथवा कुडकुतुं अथवा मुगैके, मांसम् भास मांसको, तस्मिन् ते उस, काकपदे कडपडे उपर, दद्यात् भूकुतुं रखे, ततः तेथी इससे, विषम् विष विषका, संक्रमते संक्रमण होता है ॥ ६७ ॥

67. The flesh of the goat, cow, buffalo or cock should be placed over the scarified area. Thus treated, the poison comes out.

विषे नस्यम्—

नासाक्षिकर्णजिह्वाकण्ठनिरोधेषु कर्म नस्तः स्यात् ।  
वार्ताकुबीजपूरज्योतिष्मत्यादिभिः पिष्टैः ॥६८॥

नासा- नाड नाक, अक्षि- आंख, कर्ण- कान, जिह्वा- जीभ, कण्ठ- अने कंठना और कंठके, निरोधेषु निरोधभा निरोधमें, पिष्टैः कटक कटेकी कटक किये गये, वार्ताकु- जीभी भोरी गल्ली बनभाटा, बीजपूर- जीभीरुं बिजोरा, ज्योतिष्मत्यादिभिः भाडकगल्ली वजरेथी मालकांगनी आदिसे, नस्तः कर्म नस्यकर्म नस्यकर्म, स्यात् कटुं करना चाहिए ॥ ६८ ॥

६७. छागं गव्यं माहिषं वा  
मांसं कौकुटमेव वा  
दद्यात् काकपदे तस्मिन्  
ततः संक्रमते विषम्

—छागं गव्यमाहिषा ।  
विककौकुटाज्जमांसं च ।  
दद्यात् काकपदोपरि ।  
मन्त्रविषेणैव सहसा ।  
(ख. घ. ङ. च. फ.)

६८. नासाक्षि —ब्राणाक्षि (घ.)

68. In a condition of obstruction in the nose, eyes, ears, oral cavity and the throat, nasal medication with the pulvis of seeds of the indian nightshade, citron, staff tree and similar other drugs may be administered.

विषे अञ्जनम्—

अञ्जनमक्षुपरोधे कर्तव्यं वस्तमूत्रपिष्टैस्तु ।  
दारुव्योषहरिद्राकरवीरकरञ्जनिम्बसुरसैस्तु ॥६९॥

अक्षुपरोधे तु आंखना उपरोधभा आंखोंके उपरोधमें, वस्तमूत्र- अञ्जना मूत्रभा वकरेके मूत्रसे, पिष्टैः वाटेकी पीसे हुए, दारु- देवदार देवदार, व्योष- त्रिफुल त्रिफुल, हरिद्रा- हल्दी, करवीर- करवीर, करञ्ज- करञ्ज, छीमेहरी, निम्ब- नीम, सुरसैः तु अने तुलसी ऐओथी और तुलसी इनसे, अञ्जनम् अञ्जन अञ्जन, कर्तव्यम् कर्तव्य करे ॥ ६९ ॥

69. In impairment of the vision, collyrium made of the paste of deodar, dry ginger, black pepper, long pepper, turmeric, indian oleander, indian beech, neem and holy basil prepared with goat's urine, should be used.

विषे गन्धहस्तिनामागदः—

श्वेता चचाऽश्वगन्धा

हिङ्गवमृता कुष्ठसैन्धवे लघुनम् ।

सर्वपक्वपित्तमध्यं

दण्डुककरञ्जबीजानि ॥७०॥

व्योषं शिरीषपुष्पं द्विरजन्वौ वंशकोचनं च समम् ।  
पिष्ट्वाऽजस्य मूत्रेण गोश्वपित्तेन सप्ताहम् ॥७१॥

६९. करञ्जनिम्बरसस्तु—करञ्जसुरसैस्तु (ख)

७०. अश्वगन्धा—विडङ्ग (घ. फ.)

—सुगन्धाम् (घ.)

७१. दण्डुक—बंभूक (घ. फ. घ.)

७१. व्योषं—बृहती (घ. फ.)

द्विरजन्वौ—दे च निशे (घ. व.)

वंशकोचनं—वशलेखनं (घ. फ.)

पिष्ट्वाऽजस्य मूत्रेण गोश्वपित्तेन—पिष्ट्वाऽज वस्तमूत्रेण गोश्व-

पित्तेन (घ. ङ.)



व्यत्यासभावितोऽयं

निहन्ति शिरसि स्थितं विषं क्षिप्रम् ।

सर्वज्वरभूतग्रह-

विस्त्रुचिकाजीर्णमूर्च्छार्त्तिः ॥७२॥

उन्मादापस्मारौ काचपटलनीलिकाशिरोदोषान् ।

शुष्काक्षिपाकपित्तार्बुदार्मकण्डूतमोदोषान् ॥७३॥

क्षयदौर्बल्यमदात्ययपाण्डुगदांश्चाञ्जनात्तथा मोहान् ।

लेपाद्विषदिग्धक्षतलीढदष्टपीतविषवाती ॥७४॥

अर्शःस्वानक्षेत्रेषु च गुदलेपो योजिलेपनं स्त्रीणाम् ।

मूढे गर्भे दुष्टे ललाटलेपः प्रतिश्याये ॥७५॥

वृद्धौ किटिमे कुष्ठे श्वित्रविचर्चिकादिषु लेपः ।

गज इव तरून् विषगदांश्चिह्नन्त्यगदगन्धहस्त्येषः ७६

इति गन्धहस्तिनामाऽगदः ।

श्वेता भेदेऽथेता, वचा १०४ वच, अश्वगन्धा आसेऽह  
असगन्ध, हिङ्गु हिङ्ग हींग, अमृता गणैः गिलोय, कुष्ठ-  
ऊँ कूठ, सैन्धवे सिन्धालु सैधव, लघुनम् लसलु  
लहसुन, सर्षप- सरसव सरसों, कपित्थ- डोऽनेः कैयका,  
मध्यम् गर्भं गूदा, दुण्डुक- अरलु टैटू, करञ्ज- करञ्जनां  
ठीठोहरीके, बीजानि भीज बीज, व्योषस् त्रिकटु त्रिकटु,  
क्षिरीषपुष्पम् सरसजनां इक्षु क्षिरीषपुष्प, द्विरजन्वौ  
हृण्दर, हृण्दुहृण्दर हल्दी, दाहहल्दी, वंशलोचनम् च वास-  
कपूर वंशलोचन, समम् दरेक सरणे बागे लछने सम  
भागमें लेकर, अजस्य अङ्कुराना बकरेके, मूत्रेण पिष्टा  
भूतथी पीसीने मूत्रसे पीसकर, गो- गाय गाय, अश्व-  
तथा घोडाना तथा घोडेके, पित्तेन पित्तथी पित्तसे,  
सप्ताहम् सात दिवस सात दिन, व्यत्यास- वारां हुरती  
पर्यायक्रमसे, भावितः भावना आपेक्ष भावना दिया

७२. मूर्च्छार्त्तिः-मूर्च्छार्त्तिः (क छ. घ. ब.)

७३. शिरोदोषान्-सिरादोषान् (छ.)

७४. मोहान्-मोहान् (ग. ब.)

,, लेपाद्विषदिग्धक्षत-लेपाद्विषक्षत (ब.)

,, दष्टपीतविषवाती-विषपीतविषवाती (फ.)

७६. वृद्धौ किटिमे कुष्ठे-दन्तुकण्डूकिटिमे (ख.)

,, वृद्धौ-वृद्धौ (घ. घ. फ.)

,, ,, -कण्डूनां (फ.)

हुआ, अयम् आ अगद यह अगद, शिरसि भाथाभा  
मस्तकमें, स्थितम् रहेल रहे हुए, विषम् विषमें विषको,  
क्षिप्रम् छेकदम क्षीप्र, निहन्ति हण्णे छे नष्ट करता है,  
अञ्जनात् आ अगद अञ्जन करवाथी यह अगद अञ्जन  
करनेसे, सर्वज्वर- अथ १०४ सब ज्वर, भूतग्रह- भूतना  
वर्णगाउ भूतावेश, विस्त्रुचिका- विस्त्रुचिका विस्त्रुचिका,  
अजीर्ण अजीर्ण अजीर्ण, मूर्च्छा- मूर्च्छा मूर्च्छा, अर्त्तिः  
च पीडा पीडा, उन्माद- उन्माद उन्माद, अपस्मारौ  
अपस्मार अपस्मार, काच- काच काच, पटल- पटल  
पटल, नीलिका- नीलिका नीलिका, शिरोदोषान् शिरोदोष  
शिरोदोष, शुष्काक्षिपाक- शुष्काक्षिपाक शुष्काक्षिपाक, पित्ता-  
पित्त पित्त, अर्बुद- अर्बुद अर्बुद, अर्मे- अर्मे अर्मे, कण्डू-  
कण्डू कण्डू, तमोदोषान् तमोदोष तमोदोष, क्षय- क्षय क्षय,  
दौर्बल्य- दुर्बलता दुर्बलता, मदात्यय- मदात्यय मदात्यय,  
पाण्डुगदान् च तथा पाण्डुरोग पाण्डुरोग, तथा मोहान् अने  
मोहने भटाडे छे और मोहको नष्ट करता है, लेपान् लेप  
करवाथी लेप करनेसे, विषदिग्ध- विष सेपडेल शस्त्रथी  
थयेल विषदिग्ध शस्त्रसे हुए, क्षत- क्षतना क्षतके, लीढ-  
जेरी प्राणीना आटवाना विषवाले प्राणीके चाटनेके,  
दष्ट- जेरी प्राणीना दंशना विषवाले प्राणीके दंशके,  
पीतविषवाती- अने विषतुं पान करनाराना विषने नाश  
करे छे और विषके पान करनेवालेके विषको नष्ट करता है,  
अर्शःसु हरस अर्श, आनक्षेत्रेषु च आनक्षेत्र रफसे पूर्ण हों तो,  
गुदलेपः गुदापर लेप करवे। गुदापर लेप करना चाहिए,  
स्त्रीणाम् स्त्रीणां स्त्रियोंके, मूढे मूढ मूढ, गर्भे  
गर्भभां गर्भमें, योजिलेपनम् योजिने पर लेप  
करवे। योजि पर लेप करना चाहिए, दुष्टे दुष्ट दष्ट,  
प्रतिश्याये प्रतिश्यायभां प्रतिश्यायमें, ललाटलेपः कपाण  
पर लेप करवे। ललाट पर लेप करना चाहिए, वृद्धौ- तेम  
अउष्टि एवं अंष्टि, किटिमे किटिमे किटिम, कुष्ठे  
कुष्ठ कुष्ठ, श्वित्र- श्वित्र श्वित्र, विचर्चिकादिषु च अने  
विचर्चिका वगेरेभां और विचर्चिका आदिमें, लेपः लेप  
करवे। लेप करना चाहिए, गजः तरून् इव गेभ हाथी  
अउने। नाश करे छे जैसे हाथी वृक्षको नष्ट कर देता है,  
एष तेभ आ वैसे यह, अगदगन्धहस्ती- गन्धहस्ती अगद  
गन्धहस्ती अगद, विषगदान् विषना रोगाना विषके  
रोगोंको, निहन्ति नाश करे छे नष्ट कर देता है

॥ ७०-७६ ॥ इति आ। यद्, गन्धहस्तिनाम्ना अगदः  
'गन्धहस्ती' नामने। अगदं छे 'गन्धहस्ती'  
नामका अगद है।

70-76. Take equal parts of white mussel shell creeper, sweet flag, winter cherry, asafetida, guduch, costus, rock salt garlic, rape seed, pulp of the wood apple, indian calosanthus, seeds of indian beech, dry ginger, black pepper, long pepper siris flower, turmeric indian berberry and bamboo manna; pulverise them and impregnate alternately with goat's urine and cow's and horse's bile for seven days; this cures quickly the poison lodged in the head. Used as a collyrium, it cures all pains due to fever, spirit possession, acute intestinal irritation, dyspepsia, fainting, insanity, epilepsy, cataract, Patala, Nee- lika, diseases of the head (pterygium), dry-eye, Paka, Pilla, Arbuda, Arma, itching and night-blindness, wasting, weakness, alcoholism, anemia and fainting. Used as an application, it cures poisoning, and poisonous wounds, licks, bites and potion. It should be painted on the anus in swollen piles, and on vaginal region of women in case of obstructed labor, and on the forehead in severe coryza. It is good as an application in conditions of enlargement of the scrotum, keloids, dermatosis, leucoderma, bullous eruption etc. This perfumed elephant antidote eradicates disorders due to toxicosis, even as an elephant uproots trees. Thus has been described

the perfumed elephant antidote known as 'Gandha-hasti'.

विषे महागन्धहस्तिनामागदः—

पत्रागुरुमुस्तैला निर्यासाः पञ्च चन्दनं स्पृका ।  
त्वङ्नलदोत्पलबालकहरेणुकोशीरवन्यनखाः ॥७०॥

सुरदारुकनककुङ्कुमध्यामककुष्ठप्रियङ्गवस्तगरम् ।  
पञ्चाङ्गानि शिरीषाद्योषालमनःशिलाजाज्यः ॥७१॥

श्वेतकटभीकरञ्जौ रक्षोघ्नी सिन्धुवारिका रजनी ।  
सुरसाञ्जनगैरिकमज्जिष्ठानिम्बनिर्यासाः ॥७२॥

वंशत्वगश्वगन्धाहिङ्गुदधित्थाम्लवेतसं लाक्षा ।  
मधुमधुकसोमराजीवचारहारोचनातगरम् ॥७३॥

अगदोऽयं वैश्रवणायाख्यातस्यम्बकेण पृथक्कृतः ।  
अप्रतिहतप्रभावः ख्यातो महागन्धहस्तीति ॥७४॥

पित्तेन गवां पेष्यो गुटिकाः कार्यास्तु पुण्ययोगेन ।  
पानाञ्जनप्रलेपैः प्रसाधयेत् सर्वकर्मणि ॥७५॥

पत्र- तमाक्षपत्र तेजपात, अगुरु- अमर अगुरु,  
मुस्त- नागर भोय मोथा, एलाः औक्षयी इलाची,  
पञ्च निर्यासाः पांच मतना युंठ पांच प्रकारके गोंद,  
चन्दनम् चन्दन चन्दन, स्पृका स्पृका, स्वक-  
तल दालचीनी, नलद- अटामांसी जटामांसी, उत्पल-  
नीलकमल, बालक- वाणो सुगन्धवाला,  
हरेणुक- रेणुभीरु रेणुका, उशीर- वीरलुनो वाणो  
खम, वन्य- डेवरीभोय केवरीभोय, नखाः नखला  
नखी, सुरदारु- देवदार देवदार, कनक- बाधनाग-  
डेसर रक्त नागकेसर, कुङ्कुम- डेसर केसर, ध्यामक-

७७ वन्यनखाः—व्याघ्रनखाः (ख. व. ड.)

७८ शिलाजाज्यः—शिलाजिष्ठीः (यं.)

७९. श्वेतकटभीकरञ्जौ रक्षोघ्नी—श्वेता कटभी करञ्जो रक्षोघ्नी (व.)

—श्वेता कटभी करञ्जो रक्षोघ्नी (व.)

८०. सुरसाञ्जन—सुरसरसाञ्जन (छ.)

८१. निम्बनिर्यासाः—निम्बपत्रनिर्यासाः (व.)

८२. रचनाहारोचनातगरम्—रचनाभया रोचना न गवां (क.)

८३. ख्यातोः स्मृतो (व.)

८४. पेष्यो गुटिकाः—पेष्या गुटिकाः (व.)

८५. गुटिकाः—गुलिकाः (ज.)

ध्यामक, कुठ- कठ कूठ, त्रियङ्गुवः धडिंदा।  
 त्रियङ्गु, तगरम् तगर तगर, क्षीरीषात् सरसजनां  
 शिरीषके, पञ्चाङ्गानि पञ्चांग पंचांग, ब्योष- त्रिकटु-  
 त्रिकटु, आल- हरताल हरिताल, मनःशिला- मनःशिला  
 मैनसिल, अजाज्यः अजुं जीरा, श्वेतकटभी- श्वेत वापुंदा।  
 श्वेत कटभी, करञ्जौ- करञ्ज ठीठोहरी, रश्मोत्री वल् वच,  
 सिन्धुवारिका नगोड संभाल, रजनी हगहर हल्दी,  
 सुरसा तुलसी तुलसी, अज्जन- रसज्जन अज्जन, गैरिक-  
 सेनागेरु गैरिक, मज्जिष्ठा- मज्जु मंजीठ, निम्ब-  
 दीमजनां पान नीमके पत्ते, निर्यासाः दीमजने।  
 शुंढ नीमका गोंद, वंशत्वक् वासनी आल बांसकी  
 जाल, अश्वगंधा- आसौंढ असगन्ध, हिङ्गु- हिंङ्ग हींग,  
 दक्षिण्य- डोड कैथ, अम्लवेतसम् अम्लवेतस अम्लवेतस,  
 काष्ठा लाण लाक्षा, मधु- मधु मधु, मधुक- गेठीमध  
 मुलहठी, सोमराजी- आवथी बाकुची, वचा- वल् वच,  
 रुहा- वांढो बंदक, रोचना- गोरेश्वन रोचना, तगरम्  
 तगर तगर, षष्ठ्यङ्गः आ सांढ अंगवाणो इन साठ  
 द्रव्योवाला, अयम् आ यह, अगदः अगद अगद, त्र्यम्बकेण  
 अम्बके त्र्यम्बकेने वैश्रवणाय कुबेरने कुबेरको, आख्यातः  
 उलो हते। कहा था, अप्रतिहत- अप्रतिहत अप्रतिहत,  
 प्रभावः प्रभाववाणो ते प्रभाववाला वह, महागन्धहस्ती  
 'महागन्धहस्ती' 'महागन्धहस्ती', इति ओ नामे इस  
 नामसे, ख्यातः प्रसिद्ध छे प्रसिद्ध है, पुण्ययोगेन पुण्य  
 नक्षत्रना योगभां पुण्य नक्षत्रमें, गवाम् गाधना गायके,  
 पित्तेन पित्तभां पित्तसे, पेष्यः वाटीने पीसकर, गुटिकाः  
 तु तेनी गोणाओ गोलियां, कार्याः अनावली बनावे,  
 पान- आ अगद पान यह अगद पान, अज्जन- अज्जन  
 अज्जन, प्रलेपैः अने लेप करवाथो और लेपसे, सर्व-  
 कर्माणि सर्वकर्मो सब कर्मोको, प्रसाधयेत् साधे छे सिद्ध  
 करता है ॥ ७७-८२ ॥

77-82. Cinnamon leaves, eaglewood, nut-grass, small cardamom, the pentad of gummy exudations red sandal, melilot, cinnamon bark, nardus, blue water lily, fragrant sticky mallow, fragrant piper, cuscus grass, rushnut, shell, deodar, fragrant poon, saffron,

ginger grass, costus, perfumed cherry, indian valerian, the five parts of siris tree (flowers, fruits, leaves, root and bark), dry ginger, black pepper, long pepper, red arsenic, cumin seeds, white siris, indian beech, jungle cork tree, sweet flag, chaste tree, turmeric, holy basil, the dry extract of indian berberry, red ochre, indian madder, the gum of neem tree, the bark of the bamboo, winter cherry, asafetida, wood apple, amlavetasa, lac, honey, liquorice, babchi seeds, sweet flag, orchid, gall stone, indian valerian —mix all these above-mentioned articles and make a paste with ox-bile and make it into pills under the asterism of Pushya. This remedy consisting of sixty drugs was taught to Kubera (the celestial treasurer) by Tryambaka, the three-eyed Siva. It is infallible in its effect. This is renowned as major perfumed elephant antidote. By using this antidote as potion, collyrium or application, success may be achieved in all therapeutic measures.

पिष्टं कण्डूं तिमिरं राश्यान्धं काचमर्बुदं पटलम् ।  
 हन्ति सततप्रयोगाद्विहितमितपथ्याशिनां पुंसाम् ८३

सतत- सतत सतत, प्रयोगात् प्रयोग करवाथो  
 आ अगद प्रयोग करनेसे यह अगद, हितमित-  
 हित, हित हित, मित, पथ्याशिनाम् अने पथ्य बोधन  
 करनार और पथ्य भोजन करनेवाले, पुंसाम् मनुष्योंना  
 मनुष्योंके, पिष्टम् पिष्ट पिष्ट, कण्डूम् अर्बुद कण्डू, तिमिरम्  
 तिमिर तिमिर, राश्यान्धम् रतांधणापक्षुं रात्रिमें  
 अन्धता, काचम् काच काच, अर्बुदम् अर्बुद अर्बुद, पटलम्  
 अने पटल ओ शोभने और पटल इन रोगोंको,  
 हन्ति हन्ति छे नष्ट करता है ॥ ८३ ॥

83. When used regularly by a person observing wholesome, measured and prescribed dietetic regimen, it cures Pilla, pruritus darkness of vision, night-blindness, Kacha, tumor and cataract.

विषमज्वरानजीर्णान्द्रुं कण्डूं विस्चिकां पामाम् ।  
विषमूषिकलूतानां सर्वेषां पक्षगानां च ।

आशु विषं नाशयति समूलजमथ कन्दजं सर्वम् ॥८४॥

विषमज्वरान् आ अगद विषम ज्वर यह अगद विषम ज्वर, अजीर्णान् अज्जीर्ण अजीर्ण, दद्रुम् दद्रु, कण्डूम् अन्त्र कण्डू, विस्चिकाम् विस्चिका विस्चिका, पामाम् तेभ्य पामाने एवं पामाका, विषमूषिक- अरी उद्भूत विषयुक्त चूहा, लूतानाम् तथा लूताना विषने तथा लूताके विषका, सर्वेषाम् अधाये सब, पक्षगानाम् च सपेना सर्पोंके, विषम् विष विषका, अथ अने और, समूलजम् मूलज-य मूलजन्य, कन्दजम् तथा कन्दजन्य तथा कन्दजन्य, सर्वम् सर्व विषने सब विषोंका, आशु शीघ्र शीघ्र, नाशयति नाश करे छे नाश करता है ॥८४॥

84. This is curative also of irregular fevers, dyspepsia, ring-worm, pruritus, acute intestinal irritation, scabies, and the poison of mice, spiders, all kinds of serpents, as well as vegetable poisoning from roots and bulbs.

एतेन लिप्तगात्रः सर्पान् गृह्णाति भक्षयेच्च विषम् ।  
कालपरीतोऽपि नरो जीवति नित्यं निरातङ्कः ॥८५॥

८४. दद्रुं कण्डूं विस्चिकां पामाम्-दद्रुं कण्डूं विस्चिकां चोपहन्ति नृणाम् (ख)

- १. दद्रुं कण्डूं-दद्रुं सविस्चिकां (ग.)
- २. समूलजमथ-मूलजमथ (घ.)
- ३. अस्माच्छ्लोकादनन्तरम्-

कुण्ठं सिद्धिं चित्रं विचित्रिकां चोपहन्ति नृणाम्  
इत्यधिकः (क. घ. छ. य.) पुस्तकेषु ।

- ८५. गृह्णाति भक्षयेच्च विषम्-गृह्णाति भक्षयेच्च विषम् (फ.)
- १. कालपरीतोऽपि-कालपरीतोऽपि हि (घ.)
- २. " -कालपरीतोऽपि (फ. ब.)
- ३. नित्यं-क्रिश्चिय (क. फ. ब.)

एतेन येनाथी इसका, लिप्तगात्रः क्षिप्त गात्रवाणो मनुष्य शरीर पर लेप करके मनुष्य, सर्पान् सर्पोंको, गृह्णाति पकड़ी शके छे पकड़ सकता है, विषम् च अने विष और विष, भक्षयेच्च आर्ध शके छे खा सकता है, कालपरीतः नष्ट मृत्युवाणो कालप्रस्त, अपि पशु भी, नरः मनुष्य मनुष्य, नित्यम् नित्य नित्य, निरातङ्कः नीरोग अर्ध नीरोगी होकर, जीवति छवे छे जीता है ॥ ८५ ॥

85. By smearing this antidote over his body or his hand and other limbs a man can handle serpents and also drink poison, with immunity. A person, though on the verge of death, enjoys his full span of life in good health by a regular use of this.

आनन्दे गुदलेपो योनौ लेपश्च मूढगर्भाणाम् ।  
मूर्च्छातिषु च ललाटे प्रलेपनमाहुः प्रधानतमम् ८६

आनन्दे आनाहर्मा आनाहर्मे, गुदलेपः गुदा पर लेप गुदा पर लेप, मूढगर्भाणाम् मूढगर्भावाणी स्त्रीयोनी मूढगर्भाओंकी, योनौ योनि पर योनि पर, लेपः चलेप लेप, मूर्च्छा- अने मूर्च्छा और मूर्च्छा, अतिषु तथा पीडायां तथा पीडामें, ललाटे च छपाणी पर ललाट पर, लेपनम् लेप करवा लेप करना, प्रधानतमम् ये सर्व छपायां मनुष्य छे यह सब उपयोगमें मुख्य है, माहुः येम उहे छे ऐसा कहते हैं ॥ ८६ ॥

86. In constipation, it should be smeared over the anal region; and on the vagina in obstructed labor; in fainting, smearing it on the forehead is considered as the foremost remedy.

मेरीमृदङ्गपटहांश्छन्नाप्यमुना तथा ध्वजपताकाः ।  
लिप्त्वाऽहिविषनिरस्त्यै प्रध्वनयेद्दर्शयेन्मतिमान् ८७

८६. प्रलेपनमाहुः-लेपनमाहुः (घ.)

८७. लिप्त्वाऽहिविषनिरस्त्यै प्रध्वनयेद्दर्शयेन्मतिमान्-कृत्वा विषनिरस्त्यै प्रध्वनयेन्मानवो मतिमान् (घ.)

मतिमान् बुद्धिमान् वैद्ये बुद्धिमान् वैद्यः अहिषि-  
सर्पविषना सर्पविषका, निरस्त्यै निवारण भाटे निवारण  
करनेके लिए, अमुना आथी इससे, भेरी- भेरी भेरी,  
सुदङ्ग- सुदङ्ग सुदङ्ग, पटहान् डोल डोल, छत्राणि छत्र  
छत्र, तथा तथा तथा ध्वजपताकाः ध्वज अने  
पताकाओं ७५२ ध्वज और पताकाओं पर, लिप्त्वा लेप  
करी लेप करके प्रध्वनयेत् सर्पदष्ट मनुष्य पास भेरी  
वज्रे वज्राडवां सर्पदष्ट मनुष्यके पास भेरी आदि बजावे,  
दर्शयेत् अने तेने छत्र वज्रे देखाडवां और उसको  
छत्रादि दिखावे ॥ ८७ ॥

87. This antidote may also be  
applied over war-drums, umbrellas,  
banners and pennants and these should  
be sounded and shown before the  
poison-afflicted man by the wise  
physician for the cure of toxicosis.

यत्र च सन्निहितोऽयं न तत्र बालग्रहा न रक्षांसि ।  
न च कार्मणवेताला वहन्ति नाथर्वणा मन्त्राः ॥८८॥

यत्र च जहाँ जहाँ, अथक् आ. लेप यह लेप,  
सन्निहितः भूक्यो होय रहता है, तत्र त्यों वहाँ, न न  
ते। न, बालग्रहाः आक्षत्रो बालग्रह, न न ते। न,  
रक्षांसि राक्षसो राक्षस, न कार्मणवेतालाः च न ते।  
डामणि। अने न ते। वेतालो रहे छे न कार्मण और  
न वेताल रहते हैं, आथर्वणाः अने अथर्ववेदना और  
आथर्वण, मन्त्राः च भन्ते। मंत्र, न वहन्ति अभाव-  
शाली नथी यत्ना प्रभावशाली नहीं होते ॥ ८८ ॥

88. The house containing this anti-  
dote cannot be entered into by evil  
spirits afflicting children or by rakshasas  
or hobgoblins, nor can evil charms or  
black magic gain entry into the house.

सर्वग्रहा न तत्र प्रभवन्ति न चाग्निशस्त्रनृपचौराः ।  
लक्ष्मीश्च तत्र भजते यत्र महागन्धहस्त्यस्ति ॥८९॥

८९. कार्मणवेताला वहन्ति—कार्मणमन्त्रा भजन्ति (ब.)

„ वहन्ति—भजन्ति (क. फ.)

यत्र जहाँ जहाँ, महागन्धहस्ती महागन्धहस्ती  
अगद महागन्धहस्ती अगद अस्ति होय छे रहता है,  
तत्र त्यों वहाँ, सर्वग्रहाः न सर्वग्रहोने। प्रभाव पडते।  
नथी सब ग्रहोंका प्रभाव नहीं होता, अग्नि- अग्नि अग्नि,  
शस्त्र- शस्त्र शस्त्र, नृप- राजा राजा, चौराः च अने  
चोरोंने। और चोर, न प्रभवन्ति प्रभाव पडते। नथी  
अपना प्रभाव नहीं दिखला सकते, तत्र त्यों वहाँ, लक्ष्मीः  
च लक्ष्मी लक्ष्मी, भजते रहे छे निवास करती है ॥८९॥

89. Where there is this perfumed  
elephant-antidote there none of the  
evil spirits can enter, nor can evil  
occur there from fire, weapons,  
kings and thieves, but the spirit of  
auspiciousness makes its dwelling  
there.

पिष्यमाण इमं चात्र सिद्धं मन्त्रमुदीरयेत् ।  
‘मम माता जया नाम जयो नामेति मे पिता ॥९०॥  
सोऽहं जयजयापुत्रो विजयोऽथ जयामि च ।  
नमः पुरुषसिंहाय विष्णवे विश्वकर्माणे ॥९१॥  
सनातनाय कृष्णाय भवाय विभवाय च ।  
तेजो वृषाकपेः साक्षस्तेजो ब्रह्मेन्द्रयोर्यमे ॥९२॥  
यथाऽहं नाभिजानामि वासुदेवपराजयम् ।  
मातुश्च पाणिग्रहणं समुद्रस्य च शोषणम् ॥९३॥  
अनेन सत्यवाक्येन सिध्यतामगदो ह्ययम् ।  
हिलिमिलिसंस्पृष्टे रक्ष सर्वमेवजोत्तमे स्वाहा’ ॥९४॥  
इति महागन्धहस्तिनामाऽगदः ।

अत्र च तेने उसको, पिष्यमाणे वाटती वधते  
पीसते समय, इमम् आ. इस, सिद्धम् सिद्ध सिद्ध, मन्त्रम्  
मन्त्र मन्त्रका, उदीरयेत् ओक्षवे। उच्चारण करे, जया

९०. पिष्यमाण इमं चात्र सिध्यमाणे चात्रेमां (क.)

„ जयो नामेति—विजयो नाम (क. ब. ड. त. थ. फ.)

९४. हिलिमिलिसंस्पृष्टे—हिलिहिलिमिलिमिलिसंस्पृष्टे (क. ब. न.)

„ निहिनिहिमेनिमिनिसंस्पृष्टे (द.)

„ हिलिमिलि....स्वाहा—हिलिहिलिमिलिमिलिसंस्पृष्टे रक्ष रक्ष सर्वमेव-

जोत्तमे स्वाहा (ब. फ. ग.)

नाम जयः नाम्नी जया नामकी, मम माता भारी  
माता ॐ मेरी माता है, जयः इति नाम जय नामने।  
जय नामका, मे पिता भारी पिता ॐ मेरा पिता है,  
सः ते वह, अहम् हुं मैं, जयजयापुत्रः जय अने  
जयाने। पुत्र जय और जयाका पुत्र, विजयः विजय  
नामने। छुं विजय नामका हूं, अथ च जयामि अने जय  
पातुं छुं और जय पाता हूं, पुरुषसिंहाय नृसिंह नर्मिह,  
विष्णवे विष्णु विष्णु, विश्वकर्मेणे विश्वकर्मा विश्वकर्मा,  
सत्तातनाय सत्तातन सत्तातन, कृष्णाय कृष्ण कृष्ण, भवाय  
भव भव, विभवाय च अने विभवने और विभवको,  
नमः नमस्कार हो, वृषाकपे तेजः भद्रदेवना  
तेजः महावेवका तेजरूप, ब्रह्मेन्द्रोः ब्रह्मा, भद्र ब्रह्मा,  
इन्द्र, यमे तथा यमना तथा यमका, साक्षात् साक्षात्  
साक्षात्, तेजः तेजः रूप हूं छुं तेजरूप मैं हूं, अहम्  
हुं मैं, वासुदेव- वासुदेवना वासुदेवके, पराजय पर-  
जयने पराजयको, मातुः माताना माताके, पाणिग्रहणम्  
च पाणिग्रहणने पाणिग्रहणको, समुद्रस्य अने समुद्रना  
समुद्रके, शोषणश्च च शोषणने शोषणको, न अभिजा-  
नामि अक्षुते। नदी नदी जागता, यथा ॐ वात सत्य  
ॐ यह वात सत्य है, अनेन आ इत्, सत्यवाक्येन  
सत्य वाक्यशी सत्य वाक्यसे, अयम् आ यह, अगदः  
अगद अगद सिध्यताम् हि सिद्ध थाये। सिद्ध दो,  
हिलिमिलि- हिलिमिलिथी हिलिमिलिसे, संस्पृष्टे संस्पृष्ट  
संस्पृष्ट, सर्वभेषजोत्तमे हे सर्वभेषजोत्तम ! हे सर्वभेष-  
जोत्तम !, रक्ष तुं रक्षुं करतू रक्षा कर, स्वाहा स्वाहा  
स्वाहा ॥ ९०-९४ ॥ इति आ यह, महागन्धहस्तिनामा  
अगदः 'महागन्धहस्ती' नामने। अगद ॐ 'महागन्ध-  
हस्ती' नामका अगद है ।

90-94. While rubbing this paste dur-  
ing preparation the following efficacious  
holy incantation should be uttered:  
'My mother's name is Jaya (victory) and  
my father also is Jaya (victory) and I  
am Vijaya (victory), the son of Victory  
Jaya and Jaya and hence I conquer.  
Salutation to the lion among beings, to  
God Vishnu, the maker of the world,

to the eternal Krishna, the source  
and the glory of life. I am  
the very light of Vrishakapi the  
very light of Vishnu and that of Brahma.  
Indra and Yama As surely as I have  
never heard of the defeat of god Vasude-  
va, and of the wooing of a mother's hand  
and of the drying up of the ocean, so  
surely may this antidote achieve success  
by the truth of these words. O, thou,  
best among remedies, allied with  
Hili-Mili! give protection. Praise be  
unto thee. Thus has been described  
the antidote named the Major  
perfumed elephant-antidote, known  
as 'Mahagandha-hasti'

विषेऽगदाः —

ऋषभकजीवकभार्गीमधुकोत्पलधान्यकेशराज्जाज्यः ।  
ससितगिरिकोलमध्याः पेयाः श्वासज्वरादिहराः ९५

श्वास- श्वास श्वास, ज्वरादिहराः अने ज्वर वगेरेने  
हरनारी और ज्वरादिको हरनेवाकी, ससितगिरि- श्वेत-  
गरली इवेत कोयल, कोलमध्याः अने गोरना ठणियाना  
भीजसहित और बेरकी गुठलीकी मींगीके साथ, ऋषभक-  
ऋषभक ऋषभक, जीवक- जीवक जीवक, भार्गी- भार्गी  
भार्गी, मधुक- गेहीमध मुलहठी, उत्पल- नीलकमल  
नीलकमल, धान्य- धान्ना धनिया, केशर- लाल  
नागकेसर रक्त नागकेसर, अजाज्यः अने अजुं औ  
औषधऔ और जीरा इन औषधियोंको, पेयाः पीवी  
पीवे ॥ ९५ ॥

95. Take Rishabhaka Jivaka, beetle  
killer, liquorice, blue water-lily, cori-  
ander, fragrant poon, cumin seeds, white  
mussel shelll creeper and the conte-  
nts of jujube seeds. These taken with  
water cure asthma, fever and other  
complications due to poisoning.



हिङ्गु च कृष्णायुक्तं कपित्थरसयुक्तमश्वयलवणं च ।  
समधुसितौ पातव्यौ ज्वरहिक्काश्वासकासघ्नौ ॥९६॥

कृष्णायुक्तम् पीपरयुक्तं पिप्पलीयुक्तं, हिङ्गु च  
हिङ्गु हींग, कपित्थरस- अने डाहना रसयी और कैथके  
रससे, युक्तम् युक्त युक्त, अश्वयलवणम् च सिंधावृक्ष के  
मैथुन-ये, ज्वर- ज्वर, हिक्का- हेड्डी हिचकी, श्वास-  
श्वास, कासघ्नौ अने उधरस हरनार और खांसीको  
नष्ट करनेवाले, समधुसितौ ये ये।गे। मधु अने साकर  
साथे दोनों योगोंको मधु और शर्कराके साथ,  
पातव्यौ पीना पीवे ॥ ९६ ॥

96. The physician may give a  
potion of asafetida and long pepper  
or of the juice of wood-apple and rock  
salt, each mixed with honey and sugar.  
These two recipes are curative of  
fever, hiccup, asthma and cough.

विषे धूमागदाः —

लेहः कोलास्थ्यञ्जनलाजोत्पलमधुघृतैर्वम्याम् ।  
बृहतीद्वयाढकीपत्रधूमवर्तिस्तु हिक्काघ्नी ॥९७॥

वम्याम् उल्टीभां वमनमें, कोलास्थि- औरना  
हृगिथा बेरकी गुठली, अञ्जन- रसयंती अंजन, लाज-  
दाभा लाजा, उत्पल- नीलकमल, मधुघृतैः  
मधु अने घीने। मधु और घृतका, लेहः अवलेह  
आटेवे। अवलेह चाटे, बृहतीद्वय- ऐडी अने उल्टी  
बोरीगण्डी दोनों कटेरी, आढकी- अने पुवेरना और  
अरहरके, पत्र- पाननी पत्तोंकी, धूमवर्तिः तु धूमवर्ति  
धूमवर्ति, हिक्काघ्नी हेड्डीनी नाशक छे हिक्काको नष्ट करती  
है ॥ ९७ ॥

97. A linctus prepared of the  
contents of jujube seeds, dry extract  
of berberry, roasted paddy, blue  
water lily, honey and ghee is recom-  
mended in vomiting due to poisoning.  
The cigar rolled out of yellow-berried

nightshade, indian nightshade and  
leaves of pigeon-pea is curative of  
hiccup

शिखिबर्हबलाकास्थीनि सर्वपाञ्चन्दनं च घृतयुक्तम्  
धूमो गृहशयनासनवस्त्रादिषु शस्यते विषनुत् ॥९८॥

शिखि-बर्ह औरना पीछा मयूरके पंख बलाकास्थीनि  
अने अगवाना डाहना एवं बगुलाकी हड्डियां, सर्वपाः  
सरसव सरसों, चन्दनम् च अने चन्दन ऐऐ।ना यलुने  
और चन्दन इनके चूर्णको, घृतयुक्तम् घी साथे मेशनी  
ऊरनाभा आवेदे। बीकी साथ मिलाकर किया हुआ, विषनुत्  
विषघ्न विषघ्न, धूमः धूमाडे। धूम, गृह- घर घर, शयन-  
पथारी बिस्तर, आसन- आसन आसन, वस्त्रादिषु अने  
वस्त्र वगेरे भाटे और वस्त्रादिके लिए, शस्यते प्रशस्त  
छे प्रशस्त है ॥ ९८ ॥

98. The fumigation with peacock's  
feather, bones of the crane, rape seeds  
and sandal mixed with ghee is recom-  
mended for disinfecting houses, beds  
seats, clothes etc. It is destructive of  
poisonous vermin.

घृतयुक्ते नतकुष्ठे भुजगपतिशिरः शिरीषपुष्पं च ।  
धूमागदः स्मृतोऽयं सर्वविषघ्नः श्वयथुहृत् ॥९९॥

घृतयुक्ते घीयुक्त घृतयुक्त, नतकुष्ठे तगर अने  
कठ तगर और कूठ, भुजगपतिशिरः सापनुं माथुं  
सांपका शिर, शिरीषपुष्पम् च अने सरसजानां कूट  
और शिरीषका पुष्प, श्वयम् आशयह, धूमागदः धूमागदने  
धूमागद, सर्वविषघ्नः सर्व विषने हरनार सब विषका  
नाशक, श्वयथुहृत् च अने सौभा हरनार और सूजनको  
नष्ट करनेवाला, स्मृतः कही छे कहा गया है ॥ ९९ ॥

99. Fumigate with indian valerian  
costus, head of the king cobra and  
flowers of siris. This antidote is

९८ विषनुत्-विषहा (फ.)

९९. भुजगपतिशिरः-भुजगस्य शिरः (क.)

१०. धूमागदः-धूमोऽगदः (ब.)



considered to be a destroyer of all kinds of poisons and to be curative of edema.

जतुसेव्यपत्रगुग्गुलुमल्लतकककुम्भपुष्पसर्जरसाः ।  
श्वेता च धूम उरगाखुकीटवस्त्रकिमिनुदग्र्यः ॥१००॥

जतु- लाभ काख, सेव्य- वाणी खस, पत्र- तमालपत्र  
तेजपात, गुग्गुलु- गुग्गुलु गुग्गुल, मल्लतक- भिलाभा मिलावां,  
ककुम्भ- अर्जुनना कौहाके, पुष्प- दूध फूल, सर्जरसाः  
राग राल, श्वेता च अने सईद गरुडी और श्वेता  
अपराजिता, धूमः ओओने। धूमाडो इनका पुंवा,  
अग्र्यः उरगा-बाखु-कीट-वस्त्रकिमि-नुद साप, उंदर,  
डीडा अने वस्त्रना कृमिओने। उत्तम नाशक छे साप  
चूहा, कीट और वस्त्रके कीड़ोंका उत्तम नाशक  
है ॥१००॥

100 Fumigation with lac, fragrant sticky mallow, cinnamon leaves, gum guggul, marking nut arjuna-flowers, calophany and white mussel shell creeper, is the best destroyer of reptiles, mice, worms and of cloth-insects.

विषे क्षारागदः—

तरुणपलाशक्षारं क्षुतं पचेज्जितैः सह समांशैः ।  
लोहितमृदजनीद्वयशुक्लसुरसमञ्जरीमधुकैः ॥१०१॥  
लाक्षासैन्धवमांसीहरेणुहिङ्गुद्विसारिवाकुष्ठैः ।  
सव्योषैर्बाह्लीकैर्दर्वीविलेपनं घट्टयेद्यावत् ॥१०२॥  
सर्वविषशोथगुल्मत्वग्दोषार्शोभगन्दरुहीहः ।  
शोथापसारकमिभूतस्वरमेदपाण्डुगदान् ॥१०३॥

१००. श्वेता च धूम-श्वेता धूमा (ब.)

॥ किमिनुदग्र्यः—कृमिहराः स्युः (ख. घ. ड.)

॥ —कृमिहरः स्वाद (ग.)

१०३. ड्रीहः—ड्रीहः (ग.)

॥ शोथापसार-शोथापसार (घ.)

॥ स्वरमेदपाण्डुगदान्—स्वरमेदकण्ठपाण्डुगदान् (घ.)

मन्दाग्नित्वं कासं सोन्मादं नाशयेयुरथ पुंसाम् ।  
गुटिकाश्छायाशुष्काः कोलसमास्ताः समुपयुक्ताः ॥  
इति क्षारागदः ।

क्षुतम् तरुणपलाशक्षारम् नाना भाभराजो परिश्रुत  
क्षार छोटे ढाकके वृक्षके क्षारको विधिसे परिश्रुत करके,  
समांशैः तेना समान भागे समभाग, ज्जितैः यूर्णैरूप  
अनावैल चूर्णरूप किये गये लोहितमृद- लाक्ष माटी  
लाल मिट्टी, रजनीद्वय- ६५६२, ६२६७६२ हल्दी, दाहहल्दी,  
शुक्लसुरसमञ्जरी- सईद पुष्टसीनां भस्म सफेद तुलसीकी  
मंजरी, मधुकैः जेहीमध मुलहठी, लाक्षा- लाक्ष लाख,  
सैन्धव- सिंघव सैन्धव, मांसी- जटामांसी जटामांसी,  
हरेणु- रेणुकी रेणुका, हिङ्गु- हिङ्गु हींग, द्विसारिवा-  
जे सारिवा दो कपूरी, कुष्ठैः ३३ कूट, सव्योषैः त्रिफल  
त्रिकटु, बाह्लीकैः अने डेसरनी और कैसरके, सह साथे  
साथ पचेत् पकाववे पकावे दर्वी- डडलीने कडलीसे,  
विलेपनम् थोटे ओतुं थाय लमे ऐसा गाढा होवे, यावत्  
त्या सुधी तब तक, घट्टयेत् घाटुं डरतुं गाढा करे,  
अथ पछी इसके पीछे, कोलसमाः थोरे जेवडी बरेके  
समान, छायाशुष्काः छायाभां शुष्क करेसी छायासे सुखाई  
हुई, ताः तेनी उसकी, गुटिकाः गोलीओ गोलीवां,  
समुपयुक्ताः थोअनाथी प्रयुक्त करने पर पुंसाम् मनुष्योंनां  
मनुष्योंके, सर्वविष- सर्वविष सब विष, शोथ- शोथ  
सूजन, गुल्म- शुल्म गुल्म, त्वग्दोष- तथा आभडीना  
रोग तथा त्वचाका रोग, अर्शः- अर्श अर्श, भगन्दर-  
भगन्दर भगन्दर, ड्रीहः ड्रीहा ड्रीहा, शोथ- शोथ  
शोथ, अपसार- अपसार अपसार, किमि- कृमि कृमि,  
भूत- भूत भूत, स्वरमेद- स्वरमेद स्वरमेद, पाण्डुगदान्  
पाण्डुरोग पाण्डुरोग, मन्दाग्निम् मन्दाग्नि मन्दाग्निता,  
सोन्मादम् उन्माद उन्माद, कासम् अने डेसरनी और  
कासको, नाशयेयुः नाश करे छे नष्ट करता है ॥ १०१-  
१०४ ॥ इति आ यह, क्षारागदः क्षारागदः डडली छे  
क्षारागद कहा है ।

101-104. Prepare alkali by decan-  
ting ashes of young palas and mix it

१०४. नाशयेयुः पुंसाम्—नाशयेयुःपुंसाम् (ड.)

॥ गुटिका—गुटिका (घ.ज)

with equal quantity of red ochre, turmeric, indian berberry, and the seed blossom of white holy basil, liquorice lac, rock salt, nardus, fragrant piper, asafoetida, dark blue sarsaparilla, indian sarsaparilla, costus, dry ginger, black pepper, long pepper, and saffron, till it becomes a semi solid paste. Then prepare pills of half a tola each and dry them in the shade. Proper use off these pills cures all varieties of edema due to poisoning, gulma, dermic disorders, piles, anal fistula, splenic diseases, edema, epilepsy, worms, spirit possession, vocal disorders, throat-affection, anemia, dullness of gastric fire, cough and insanity. Thus has been described the Alkali antidote.

विषप्रदातुर्लक्षणानि—

विषपीतदृष्टविद्वेष्वेतद्दिग्धे च वाच्यमुद्दिष्टम् ।  
सामान्यतः, पृथक्त्वाभिर्देशमतः शृणु यथावत् १०५

विषपीत- विषपीत विषपीत, दृष्ट- विद्वेषु ६०२, विद्व- दष्ट, विद्व, दिग्धे च अने दिग्ध पुरुषो भाटे और दिग्ध पुरुषों के लिए, सामान्यतः सामान्य रीति सामान्य- तथा, वाच्यम् ने उड़ेवानुं ६०३ जो कहता था एतत् ओ यह, उद्दिष्टम् उद्दिष्ट कह दिया, अतः हवे अब, पृथक्त्वात् ६०४ पृथक् पृथक्, निर्वेशम् उद्दिष्ट ६०५ ते कहता हू उसे, यथावत् ७२५२ ध्यानसे, शृणु आंशुलो सुनो ॥ १०५ ॥

105. The treatments for poisoning due to poisonous potion bite, sting, and application have been described in general. Henceforth, listen to them described individually and in full detail.

रिपुयुक्तेभ्यो नृभ्यः स्वेभ्यः स्त्रीभ्योऽथवा भयं नृपतेः ।  
आहारविहारगतं तस्मात् प्रेष्यान् परीक्षेत ॥१०६॥

नृपतेः राजाने राजाको, रिपुयुक्तेभ्यः शत्रुओंकी स्त्रीभ्योः स्त्रीयोंसे, आहार-आहार आहार, विहारगतम् तथा विहारमां तथा विहारमें, अयम् अथ रहे छे भय रहता है, तस्मात् तेथी इस लिए, प्रेष्यान् नेकर-आकरेनी नोकरचाकरोंकी, परीक्षेत परीक्षा करनी परीक्षा करनी चाहिए ॥ १०६ ॥

106. There is danger to a king of being poisoned by persons employed by his enemies as his own attendants and wives through the agency of food and other articles of daily use; therefore the attendants should be carefully watched.

अत्यर्थशङ्कितः स्याद्बहुवागथवाऽल्पवाग्विगतलक्ष्मीः  
प्राप्तः प्रकृतिविकारं विषप्रदाता नरो ज्ञेयः ॥१०७॥

अत्यर्थशङ्कितः ने अहुअ शंकावालो होय जो अत्यंत शंकाशील हो, बहुवाक् अहु ओलनार होय बहुत बोलता हो, अथवा ३ या, अल्पवाक् ओलुं ओलनार होय बहुत कम बोलता हो, विगतलक्ष्मीः कंतिरहित होय जिसकी कान्ति नष्ट हो जाये, प्रकृतिविकारम् तथा ने प्रकृतिना विकारने तथा जो स्वभावसे परिवर्तनको, प्राप्तः प्राप्त थयेल होय प्राप्त हुआ हो, नरः ते मनुष्यने उस मनुष्यको, विष-प्रदाता विष आपनार विष देनेवाला, ज्ञेयः अखुवो जानना चाहिए ॥ १०७ ॥

107. The man that is extremely suspicious, either very garrulous or very reticent, devoid of lustre in the countenance and has undergone change in his entire nature should be recognised as a potential poisoner.

१०६. स्वेभ्यः—स्वभावाः (छ.)

१०७. प्राप्तः प्रकृतिविकारं—प्राप्तप्रकृतिविकारः (फ.)

सविषाजलक्षणम्—

दृष्ट्वैवं न तु सहसा भोज्यं कुर्यात्तदन्नमसौ तु ।  
सविषं हि प्राप्यान्नं बहून्विकारान् भजत्यग्निः ॥१०८॥

एवम् ऐ भुज्य ऐसा, दृष्ट्वा तु ऐर्ध देखकर, सहसा ऐकदम सहसा, न भोज्यम् भोजन न करे, तत् ते उस, अन्नम् तु अन्ने अन्नको, अग्नी अग्निमां अग्निमें, कुर्यात् नाभ्युं डाले, हि डारल्युं डे क्योंकि, अग्निः अग्नि अग्नि, सविषम् विषयुक्त विष-युक्त, अन्नम् अन्न अन्नको, प्राप्य प्राप्त करी प्राप्त करके, बहून् धन्युं अनेक, विकारान् विकारवाणे विकारोंको, भजति थाय छे प्राप्त होती है ॥ १०८ ॥

108. Seeing such a person, the food given by him should not be taken straight-away but it should be tested by throwing a part of it in the fire. The fire burns abnormally undergoing various changes when food containing poison is cast into it.

शिखिबर्हविचित्रार्चिस्तीक्ष्णाक्षमरुक्षकुणपधूमश्च ।  
स्फुटति च लशब्दमेकावर्तो विहृताचिरपि च  
स्यात् ॥१०९॥

शिखि-बर्ह- अग्नि मोरना पीछा नेवी अग्नि मोर-पंखे सदृश, विचित्र- रंगभेदगी विचित्र, अर्चिः ज्वाला-वाणे। ज्वालावाली, तीक्ष्ण- तीक्ष्ण तीक्ष्ण, अक्षम- न सहेवाय ऐवे। न सहन हो सके ऐसी, रुक्ष- अने रक्ष और रुक्ष, कुणप- मुड्डानी मधथी युक्त मुड्की गन्धसे युक्त, धूमः च धूमाडावाणे थाय छे धुंवावाली होती है, लशब्दम् शब्दनी साथे शब्दके साथ, स्फुटति च थटथट करे छे चटचट करती है, एकावर्तः ऐक थड्डरथी युक्त ज्वालावाणे। एक ही चक्र खाती हुई ज्वालावाली,

१०८. कुर्यात्तदन्नमसौ तु—न्यस्येचदन्नमसौ तु (ख. ड.)

—पश्येचदन्नमसौ तु (ब.)

—कुर्यात्तदन्नमसौ तु (ब. फ.)

तदन्न—ददन्न (ब.)

१०९ तीक्ष्णाक्षमरुक्षकुणपधूमश्च—तीक्ष्णाक्षमरुक्षकुणपधूमश्च

(ब. फ.)

विहृत-अर्चिः तथा ज्वाला विनाशे तथा ज्वालासे रहित, अपि च पल्यु मी, स्यात् अर्ध अथ छे हो जाती है ॥ १०९ ॥

109. The flames become variegated in color like the feathers of the peacock and the smoke is acrid, intolerable, dry and smells like a corpse. It burns with a crackling noise and the tongue of the flame curls in a spiral or the flames get extinguished.

पात्रस्थं च विवर्णं भोज्यं स्यान्मक्षिकाश्च मारयति ।  
क्षामस्वरान्श्च काकान् कुर्याद्विरजेच्चकोराक्षि ॥११०॥

पात्रस्थम् पात्रमां राभेलुं पात्रमें रक्खा हुआ, भोज्यम् भोजन भोजन, विवर्णम् विवृत रंगलुं विवर्ण, स्यात् अर्ध अथ छे हो जाता है, मक्षिकाः च माष्ठी-ऐने मक्खियोंको, मारयति मारी नाभे छे मार डालता है, काकान् च अने डगडाऐने और कौओंको, क्षामस्वरान् कुर्यात् साद ऐसाडी दे छे क्षीण स्वराळे करता है, चकोराक्षि अने ते अक्षथी अडारनी आणे और उस अक्षे चकोर पक्षीकी आंखें, विरजेत् च रंग वगरनी थाय छे बिना रंगकी होजाती है ॥ ११० ॥

110. The food in the dish becomes discolored and the flies settling on it are killed. When eaten by the crows, it makes their voices weak. When given to Chakora birds, their eyes suffer discoloration.

पाने नीला राजी वैवर्ण्यं खां च नेक्षते क्षयाम् ।  
पश्यति विहृतामथवा लवणाक्ते फेनमाला स्यात् १११

पाने अेरयुक्त पाणी विषयुक्त पानीमें, नीला नीली नीली, राजी लीलीऐ। रेखायें, वैवर्ण्यम् तथा विवृत रंग होय छे तथा विहृत वर्ण होते हैं, स्वास् च भुज्य येतानी मनुष्य अपनी, क्षयाम् क्षया क्षया, न ईक्षते ऐभते। नथी नहीं देखता, अथवा अथवा या,

१११. पश्यति विहृतामथवा—विहृतामथवा पश्यति (ब. फ.)

विकृतम् विकृतं पश्यति दृष्टे छे देखता है, कवणात्के अने सिंधावृक्ष नाभता और सैधानमक डाकने पर, केनमाला स्यात् अहु झीय आवे छे बहुत ज्ञाग उठती है ॥ १११ ॥

111. The drink containing poison becomes streaked with blue lines or becomes discolored. It fails to reflect one's image, or reflects it in a distorted form; and when salt is thrown into it there is effervescence.

पानाज्योः सविषयोर्गन्धेन शिरोरुगृदि च मूर्च्छा च स्पर्शेन पाणिशोथः सुप्त्यङ्गुलिदाहतोदनखमेदाः ११२ मुखगे त्वोष्ठचिमिचिमा जिह्वा शूला जडा विवर्णा च । द्विजहर्षहनुस्तम्भास्यदाहलालगलविकाराः ॥ ११३ ॥

सविषयोः विषवाणं विषवाले, पानाज्योः अन्न-पान्ती अन्नपानकी, गन्धेन गंधशी गन्धसे, शिरोरुक् आथानी पीडा शिरदर्द, इदि रुक् अने हृद्यनी पीडा और हृद्यमें पीडा, मूर्च्छा च अने भूच्छा और मूर्च्छा, स्पर्शेन स्पर्शशी स्पर्शसे पाणिशोथः हाथने सौजे हाथमें शोफ, सुप्ति-स्पर्शज्ञानने नाश स्पर्शज्ञानका नाश, अङ्गुलि-आंगुलीओमां अङ्गुलियोंमें, दाह-तोद-दाह, तोद दाह, तोद, नखमेदाः अने नखोंनु इटवुं और नाखूनका फटना, मुखगे विष मुभमां अतां विष मुँहमें शक्नेसे, तु तो तो, ओष्ठचिमिचिमाः होंहोंमां यमयभाट होठोंमें चिमचिमिचिमा, जिह्वा शूल जीभ, शूला सोल-वाणी शोधयुक्त, जडा जडा जडा, विवर्णा च अने विकृत रंगनी और विकृतवर्णवाली, द्विजहर्ष-दंतहर्ष-दन्तहर्ष, हनुस्तम्भ-हनुस्तम्भ हनुस्तम्भ, आस्यदाह-मुभदाह मुँहमें दाह, लाका-लाण अरवी लालासाव,

११२. गन्धेन शिरोरुगृदि च मूर्च्छा च । स्पर्शेन पाणिशोथः—विषयो गन्धेन रुक् इदि च । मूर्च्छास्यपाणिशोथः (ख)

१, पाणिशोथः—पाणिशोफः (ग.)

११३. मुखगे त्वोष्ठचिमिचिमा जिह्वा शूला जडा विवर्णा च—मुख-नाखोष्ठचिमिचिमा जडा विवर्णाकुला च जिह्वा स्वात् (घ.)

१, मुखगे त्वोष्ठ-मुखोष्ठावोष्ठ (द. ग.)

गलविकाराः अने गलाना रोग थाय छे और गलेमें विकार होते हैं ॥ ११२-११३ ॥

112-113. The smell of poisoned eats and drinks causes headache, and if the heart gets affected it causes faintness. Their touch causes swelling of the hands, loss of sensation, burning and pricking in the fingers and onychoclasia. When put into mouth, they cause tingling of the lips and the tongue becomes swollen and numb and discolored. The teeth are set on edge and there occur rigidity of the jaw, burning in the mouth, ptyalism and throat disorders.

आमाशयं प्रविष्टे वैषण्यं खेदसदनमुत्फेदः ।

दृष्टिहृदयोपरोधो बिन्दुशतैश्चीयते चाङ्गम् ॥ ११४ ॥

आमाशयम् विषने आमाशयमां विषके आमाशयमें, प्रविष्टे प्रवेश अतां पहुंचनेपर, वैषण्यम् विषयता विवर्णता, खेद-परसेवे पसीना, सदनम् शिथिलता शिथिलता, उत्फेदः उत्फेद उत्फेद, दृष्टि-हृदय-दृष्टि अने हृद्यने दृष्टि और हृद्यका, उपरोधः उपरोध उपरोध, चाङ्गम् च अने शरीर और शरीर, बिन्दुशतैः भिन्दु नेवी सेकंडे इंडीओथी बिन्दुके सदश सैकड़ों फुन्सियोंसे, चीयते व्याप्त थाय छे व्याप्त हो जाता है ॥ ११४ ॥

114. When the poison enters the gastric region, it produces discoloration, sweating, asthenia, nausea impairment of the vision and heart and a condition where the body is covered with hundreds of bead-like eruptions.

पकाशयं तु याते मूर्च्छामदमोहदाहबलनाशः । तन्द्रा कार्यं च विषे पाण्डुत्वं चोदरस्ये स्यात् ११४

११४. उत्फेदः—उत्फेदः (घ.)

विषे विष विषके, पकाशयम् तु पक्वाशयम् पका-  
शयमे, याते अर्ता पहुँचने पर, मूर्च्छा- मूर्च्छा मूर्च्छा,  
मद- मद मद, मोह- मोह मोह, दाह- दाह दाह, बल-  
नाशः अने पक्ष्मो नाश थाय छे और बलका नाश  
होता है उदरस्थे च अने विष उदरमा अर्ता और  
विषके उदरमे पहुँचने पर, तन्द्रा तन्द्रा तन्द्रा, काश्यम्  
च कुशला कृशता, पाण्डुत्वम् च तथा पाण्डुता तथा  
पाण्डुता, स्यात् थाय छे होती हैं ॥ ११५ ॥

115 When the poison reaches the  
lower part of the digestive tract it  
produces fainting, intoxication, delu-  
sion, burning, asthenia, torpor and  
emaciation, and getting localized in the  
stomach, causes anemia.

सविष-दन्तपवन-शिरोभ्यङ्गाजन-रोगानोदकोत्सादन-वस्त्रालङ्कार-  
वर्णक-भू-पादुकाश्चर्यवर्म-केतुशयनासनमाल्यलक्षणम्—

दन्तपवनस्य कूर्चो विशीर्यते दन्तौष्ठमांसशोफश्च ।  
केशच्युतिः शिरोरुग्रन्थयश्च सविषेऽथ शिरोभ्यङ्गे ॥

दन्तपवनस्य दातशु विषयाणुं होय तो दातशुने  
दातौनके विषयुक्त होने पर दातौनकी, कूर्चः कुचो कूर्ची,  
विशीर्यते टूटी अथ छे विक्षीर्ण हो जाती है, दन्तौष्ठमांस-  
तथा दंतमांस (पेढी) अने होठना मांसमा तथा  
दंतमांस (मसूड़ों) और होठके मांसमें, शोफः च से।ओ  
थाय छे शोफ हो जाता है, अथ शिरोभ्यङ्गे शिरोभ्यङ्ग  
शिरोभ्यङ्गे, सविषे विषयुक्त होय तो विषयुक्त होने  
पर, केशच्युतिः पाण अरे छे बाल गिर जाते हैं,  
शिरोरुग्र अने शिरोरोग और शिरोरोग, ग्रन्थयः च  
तथा भाभाभा गांठा थाय छे तथा शिरमें ग्रन्थियां  
हो जाती हैं ॥ ११६ ॥

116. If the poison is mixed in  
the tooth twig, the brush-like top  
part falls off and swelling of teeth,

११६. कूर्चो विशीर्यते—कूर्चः पतति हि (फ.)

„ केशच्युतिः शिरोरुग्रन्थयश्च सविषेऽथ शिरोभ्यङ्गे—

केशच्युतिः शिरोग्रन्थयस्य सविषे शिरोभ्यङ्गे (ख.)

„ सविषेऽथ शिरोभ्यङ्गे—विशीर्णश्च कूर्चः, स्यात् (द.)

lips and the flesh is induced. If the  
poison is mixed in oil for toileting  
the head, it causes the falling-off of  
the hair, and pain and tumors in  
the head.

दुष्टेऽञ्जनेऽक्षिदाहन्नावाप्युपदेहशोथरागाश्च ।

खाद्यैरादौ कोष्ठः स्पृश्यैस्त्वग्दूष्यते दुष्टैः ॥११७॥

अञ्जने अञ्जन अञ्जनके, दुष्टे विषयाणुं होय तो  
विषयुक्त होने पर, अक्षिदाह- अक्षिदाह अक्षिदाह,  
न्नाव- अक्षिन्नाव अक्षिन्नाव, अत्युपदेह- अतिशय उपदेह  
अति उपदेह, शोथ- से।ओ सूजन, रागाः च अने रताश  
थाय छे और आंखमें लाली होती है, दुष्टैः दूषित दूषित,  
खाद्यैः आद्योथी खानपानसे, कोष्ठः दे।ष्ट कोष्ठ, स्पृश्यैः  
च अने स्पृश्योथी और स्पृश्यसे, त्वक् आभरी त्वचा,  
आदौ प्रथम प्रथम, दूष्यते दूषित थाय छे दूषित होती  
है ॥ ११७ ॥

117. The poisoned collyrium causes  
burning in the eyes, tears, excessive  
excretion of the eye, edema and  
redness. The eating of poisoned food  
and tactual contact with poisoned things  
cause the vitiation, at the outset, of  
the stomach and the skin respectively

जानाम्यङ्गोत्सादनवस्त्रालङ्कारवर्णकैर्दुष्टैः ।

कण्डूर्तिकोठपिडकारोमोद्गमचिमिचिमाः शोथाः ॥११८॥

११७. खाद्यैः—आद्यैः (ब. घ.)

„ स्पृश्यैस्त्वग्दूष्यते—स्पृश्यैस्त्वग्दूष्यते (ब.)

११८. स्नानाम्यङ्गोत्सादनवस्त्रालङ्कारवर्णकैर्दुष्टैः—स्नानोत्सादनव-  
र्णकवस्त्रालङ्कारमर्दुष्टैः (घ.)

„ वस्त्रालङ्कारवर्णकैर्दुष्टैः—वस्त्रालङ्कारवैर्दुष्टैः (फ.)

„ „—वस्त्रालङ्कारभूषणैर्दुष्टैः (फ.)

„ कण्डूर्तिकोठपिडकारोमोद्गमचिमिचिमाः शोथाः—कण्डूर्तिलोम-  
हर्णाः कोठपिडकाचिमिचिमाः शोथाः (क. घ. ड.)

„ रोमोद्गम—लोमहर्णाः (त. ब.)

દુષ્ટે: દૂષિત દૂષિત, જ્ઞાન- રત્નાન જ્ઞાન, અમ્યજ્ઞ- અમ્યજ્ઞ અમ્યજ્ઞ ઉત્સાદન- ઉત્સાદન ઉત્સાદન. વસ્ત્ર- વસ્ત્ર વસ્ત્ર, અલક્ષાર- અલક્ષાર અલક્ષાર, વર્ણકૈઃ અને અંગરાગથી ઔર અંગરાગસે, કણ્ઠ- ખરજ કણ્ઠ, અતિ- પીડા રુજા, કોઠ- કોઠ કોઠ, પિડકા- પિડકા પિડકા, રોમોદ્ગમ- રોમોદ્ગમ રોમોદ્ગમ, ચિમ્ચિમાઃ અમ્યમાટ ચિમચિમાટ, કોથાઃ અને સૌખ્ય થાય છે ઔર સૂજન હોતે હૈ ॥ ૧૧૮ ॥

118. The bath, inunction, rubbing, clothes, ornaments, toilet-creams and similar other articles contaminated with poison, cause pruritus, pain, pimples, horripilation, tingling sensation and edema.

एते करचरणदाहतोदकुमाविपाकाश्च ।

भूपादुकाश्वगजवर्मकेतुशयनासनैर्दुष्टैः ॥ ११९ ॥

मास्यमगन्धं म्लायति शिरोरजालोमहर्षकरम् ।

દુષ્ટે: વિપથી દૂષિત વિષસે દૂષિત, મ- જમીન પૃથ્વી, પાદુકા- પાદુકીઓ પાદુકા, અશ્વ-ધોડા અશ્વ, ગજ- હાથી હાથી, વર્મ- અખતર કવચ, કેતુ- ધ્વજ ધ્વજ, જયન- શયન શયન, આસનૈઃ અને આસનથી ઔર આસનસે, एते આ એ, કર-ચરણ- હાથ તથા પગના હાથ તથા પૈરમેં દાહ- દાહ દાહ, તોદ- તેમજ તોદ एवं તોદ, કુમ-અવિપાકાઃ ચ કુલમ અને અપયો થાય છે કુમ ઔર અપચન હોતે હૈ માસ્યમ્ વિપથી દૂષિત પુષ્પમાળા વિષસે દૂષિત પુષ્પમાળા, અગન્ધમ્ ગંધ વિનાની થાય છે ગન્ધરહિત હો જાતી હૈ, મ્લાયતિ કરમાઈ અપ છે સુક્ષ્મા જાતી હૈ, શિરોરજા- અને માથામાં પીડા ઔર શિરમેં પીડા, લોમહર્ષકમ્ તથા લોમ હર્ષ કરે છે તથા રોમાંચ ઉત્પન્ન કરતી હૈ ॥ ૧૧૯ ॥

119-119½. The burning and pricking of hands and feet, exhaustion and indi-

૧૧૯. તોદકુમાવિપાકાશ્ચ-તોદકુમાધિરાગાશ્ચ (ફ)

વર્મ-વર્મ (બ.)

૧૧૯½. શિરોરજાલોમહર્ષકમ્-શિરસો રુક્ષોલોમહર્ષકમ્ (ક.)

gestion are caused by contact with contaminated earth, sandals, horse, elephant, armour, flags, beds and seats. The contaminated garland is odorless; it withers and causes headache and horripilation.

सविषधूलक्षणम्—

સ્તમ્ભયતિ જ્ઞાનિ નાસામુપહન્તિ દર્શનં ચ ધૂમઃ ૧૨૦

ધૂમઃ વિપથી દૂષિત ધૂમાડો વિષસે દૂષિત ધૂવા, જ્ઞાનિ જ્ઞાતોને જ્ઞાતોંકો, સ્તમ્ભયતિ સ્તબ્ધ કરે છે જહ કરતા હૈ, નાસાશ્ચ અને નાક ઔર નાસિકા, દર્શનમ્ ચ તથા ચક્ષુને તથા આંખોંકો, ઉપહન્તિ ઉપધાત કરે છે ઉપવાત કરતા હૈ ॥ ૧૨૦ ॥

120. The contaminated smoke blocks the natural orifices and injures the nose and the eyes.

सविषजलक्षणम्—

કૂપતડાગાદિજલં દુર્ગન્ધં સકલુષં વિવર્ણં ચ ।  
પીતં શ્વયથું કોઠાન્ પિડકાશ્ચ કરોતિ મરણં ચ ૧૨૧

કૂપતડાગાદિ- વિપથી દૂષિત કૂવા, તળાવ વગેરેનું વિષસે દૂષિત કુંવા, તાલાવ, આદિકા, જલજ્ઞ જળ જલ, દુર્ગન્ધમ્ દુર્ગન્ધયુક્ત દુર્ગન્ધયુક્ત, સકલુષમ્ ડહોળાયેલ કલુષિત, વિવર્ણમ્ ચ અને વિકૃત રંગવાળું થાય છે ઔર વિવર્ણ હો જાતા હૈ, પીતમ્ પીવામાં આવેલું તે પિયા દુઝા વહ, શ્વયથુમ્ સૌખ્યે સૂજન, કોઠાન્ કોઠ, પિડકાઃ ચ પિડકા પિડકા, મરણમ્ અને મરણ ઔર મૃત્યુ, કરોતિ કરે છે કરતા હૈ ॥ ૧૨૧ ॥

121. The contaminated water of wells, lakes etc, stinks, gets dirty, discolored and when drunk, causes

૧૨૦. નાસામુપહન્તિ દર્શનં ચ ધૂમઃ-દર્શનમુપહન્તિ ચ નાસિકાં

ધૂમઃ (ક.)

, દર્શનં ચ ધૂમઃ-ચ દર્શનં ધૂમઃ (બ.)

૧૨૧. મરણં-મરણ (ક.)



edema, wheals and pimples, and even death.

स्थानविशेषो विषे चिकित्सा—

आदावामाशययो वमनं त्वक्स्थे प्रदेहसेकादि ।

कुर्याद्विषक् चिकित्सां दोषबलं चैव हि समीक्ष्य १२२  
इति मूलविषविशेषाः प्रोक्ताः

दोषबलम् च एव दोषाः अने अक्षनी दोष और बलकी, समीक्ष्य हि समीक्षा करीने समीक्षा करके, मिषक् वैद्ये वैद्य, आमाशययो विष आमाशयमां जतां विषके आमाशयमें पहुँचने पर, बाह्ये प्रथम प्रथम, वमनम् वमन वमन, त्वक्स्थे तथा आभडीमां रहेतां तथा त्वचामें रहने पर, प्रदेहसेकादि प्रदेहसेकादि प्रदेह परिकेकादि, चिकित्सां चिकित्सा चिकित्सा, कुर्यात् करी करे, इति आभ इस प्रकार, मूलविष-मूल-विषना मूलविषके, विशेषाः भेदे भेद, प्रोक्ताः कहे छे कह दिये हैं ॥ १२२ ॥

122-122½. The physician should first of all administer emesis in cases of poison which has reached the stomach, and applications and affusions in cases of external contamination through the skin. He should treat the patient, having ascertained the strength of the humoral morbidity and the vitality of the patient. Thus have been described the particulars relating to Root-poisons.

शृणु जङ्गमस्यातः ।

सविशेषचिकित्सितमेवादौ तत्रोच्यते तु सर्पिणाम् ॥

अतः हवे अब, जङ्गमस्य जङ्गम विषनी चिकित्सा जंगम विषकी चिकित्सा, शृणु सांभवे सुनो, तत्र आदौ तेभां प्रथम उनमें प्रथम, सर्पिणाम् तु सर्पिणी सर्पकी, सविशेष- भेदसहित भेदसहित, चिकित्सितम् एव चिकित्सा चिकित्सा, उच्यते कहेवाछे छे कही जाती है ॥ १२३ ॥

123. Now listen to the exposition of animal-poison. In the beginning the detailed treatment of snake-poison will be described.

सर्पभेदाः तेषां लक्षणानि च—

इह दर्वीकरः सर्पो मण्डली राजिमानिति ।

त्रयो यथाक्रमं वातपित्तश्लेष्मप्रकोपणाः ॥ १२४ ॥

इह अछी यहाँ, दर्वीकरः सर्पः दर्वीकर सर्प, मण्डली मण्डली सर्प, राजिमान् अने राजिमान सर्प और राजिमान सर्प, इति छे ये, त्रयः त्रय तीन, सर्पाः सर्पा सां, वात- अतु- क्के वात क्रमशः वात, पित्त- पित्त, श्लेष्म- तथा कहे तथा ककको, प्रकोपणाः प्रकोपित करे छे प्रकोपित करते हैं ॥ १२४ ॥

124. The indian cobra, the Russel's viper and the Rajiman are regarded as the snakes provoking vata, pitta and kapha respectively.

दर्वीकरः फणी ज्ञेयो मण्डली मण्डलाफणः ।

बिन्दुलेखविचित्राङ्गः पञ्चगः रणात्तु राजिमान् ॥ १२५ ॥

फणी इक्ष्वाकु सर्पने फनवाले सर्पको, दर्वीकरः दर्वीकर दर्वीकर, ज्ञेयः अछवे जाने, मण्डलाफणः मण्डलाफण इक्ष्वाकु सर्पने मण्डलाकार फनवाले सर्पको, मण्डली मण्डली अछवे मण्डली जाने, बिन्दुलेख- अने टपकां तेमज्ज वीटीओथी युक्त बिन्दु एवं रेखायुक्त, विचित्राङ्गः तथा चित्रविचित्र अंगवाला तथा विशेषतः चित्रित अङ्गवाले, पञ्चगः तु सर्पने सर्पको, राजिमान् राजिमान राजिमान, स्यात् अछवे जाने ॥ १२५ ॥

125. The indian cobra should be known to have a spoon-like hood. the viper a round hood and the

१२४. इह दर्वीकरः सर्पो मण्डली राजिमानिति—दर्वीकरः मण्डलानि राजिमन्तस्तथैव च (घ, ङ, च, फ, व.)

त्रयो—सर्पा (घ.)



Rajiman as a snake with variegated spots and lines on its body.

विशेषाद्भक्षकटुकमम्लोष्णं स्वादु शीतलम् ।

विषं यथाक्रमं तेषां तस्माद्वातादिकोपनम् ॥१२६॥

विशेषात् विशेषे करी विशेष करके, तेषाम् तेओनुं उनका विषम् विष विष, यथाक्रमम् अनुक्रमे क्रमशः, रुक्ष-कटुकम् रुक्ष-कटु रुक्ष-कटु, अम्ल-उष्णम् अम्ल-उष्ण अम्ल-उष्ण, स्वादुशीतलम् अने मधुर-शीतल होय छे और मधुर-शीतल होता है, तस्मात् तेथी इस लिए, वातादि- तेओनुं विष अनुक्रमे वातादिने उनका विष क्रमशः वातादिको, कोपनम् प्रदुषित करे छे प्रकुषित करता है ॥ १२६ ॥

126. Their poisons are predominantly dry and pungent, acid and hot, and sweet and cool respectively. Hence they are provocative of the vata and other humors corresponding to those three groups of qualities.

दर्वीकरकृतदंशलक्षणम्—

दर्वीकरकृतो दंशः सूक्ष्मदंष्ट्रापदोऽसितः ।

निरुद्धरक्तः कूर्माभो वातव्याधिकरो मतः ॥१२७॥

दर्वीकरकृतः दर्वीकरे करेला दर्वीकरसे किया हुआ, दंशः दंशने दंश, सूक्ष्मदंष्ट्रापदः दाढ़ना सूक्ष्म चिह्नवाणो दाढ़के सूक्ष्म चिह्नसे युक्त, असितः काँवा काला, निरुद्ध-रक्तः रक्तान्दी अडकायतवाणो जिसमें रक्त रुक गया हो ऐसा, कूर्माभः कायवा ळेवा कछुएके सदृश, वात-व्याधिकरः अने वातव्याधि करनेवाले और वात-रोग करनेवाला, मतः माना-थे छे माना गया है ॥१२७॥

127. The bite of the cobra shows minute marks of fangs and is black in color and the blood being prevented from flowing out, it causes a tortoise-shaped swelling. It is regarded as causative of vata disorders.

मण्डलिकृतदंशलक्षणम्—

पृथ्वर्पितः सशोथश्च दंशो मण्डलिना कृतः ।

पीताभः पीतरक्तश्च सर्वपित्तविकारकृत् ॥१२८॥

मण्डलिना भंडलीओ मंडलीसे, कृतः करेला किया हुआ, दंशः दंश दंश, पृथ्वर्पितः भिंछे गहरा, सशोथः च सोओवाणो शोथयुक्त, पीताभः पीला होओवाणो पीली आभावाला, पीतरक्तः पीलो-लाल पीला-लाल, सर्वपित्त- अने सर्व प्रकारना पित्तना और सब प्रकारके पित्तके, विकारकृत् च रोग करनेवाले होय छे विकारको करनेवाला होता है ॥ १२८ ॥

128. The bite of the viper shows deep marks of the fangs and the wound is spread over a large surface accompanied with edema. It is yellowish or yellowish-red in color and is causative of all varieties of pitta disorders.

राजिमकृतदंशलक्षणम्—

कृतो राजिमता दंशः पिच्छिलः स्थिरशोफकृत् ।

स्निग्धः पाण्डुश्च सान्द्रासृक् श्लेष्मव्याधिसमीरणः ॥

राजिमता राजिमानथी राजिमानसे, कृतः करेला किया हुआ, दंशः दंश दंश, पिच्छिलः पिच्छिल पिच्छिल, स्थिर- स्थिर स्थिर, शोफकृत् सोओ करनेवाला, स्निग्धः स्निग्ध स्निग्ध, पाण्डुः पाँडु पाण्डु, सान्द्रासृक् ओओला होओवाणो गाढ़े रक्तसे युक्त, श्लेष्म-व्याधि- अने श्लेष्मना व्याधिओने और कफज रोगोंको, समीरणः च उत्पन्न करनेवाले छे उत्पन्न करनेवाला है ॥ १२९ ॥

129. The bite of the Rajiman causes soft and fixed swelling. It is unctuous and pale and contains

१२८. पृथ्वर्पितः—पृथुपित्तः (घ.)

.. मण्डलिना—मण्डलिमिः (घ.)

१२९. एतच्छोकानन्तरम्—

नपुंसकत्वं जानीयाच्छिन्नं संकरदंशनाय ।

रत्नधिकः पाठः (घ.) पुस्तके ।

thick blood. It is causative of various disorders of kapha.

सर्पाणां पुंस्त्रीनपुंसकभेदेन लक्षणानि—

वृत्तभोगो महाकायः श्वसन्नूर्ध्वेक्षणः पुमान् ।  
स्थूलमूर्धा समाङ्गश्च स्त्री त्वतः स्याद्विपर्ययात् ॥१३०॥

वृत्तभोगः गोल गूथगोलवालो गोल भोगवाला, महाकायः भडाकाय बड़े शरीरवाला, श्वसन् ईश्वर भारते। फुंक करनेवाला, ऊर्ध्वेक्षणः ऊँचे भेतो। ऊँचे देखनेवाला, स्थूलमूर्धा मोटा माथावाला। बड़े खिरबाका, समाङ्गः अने सरभा अंगवालो और समान शरीरवाला सांप, पुमान् पुरुष होय छे पुरुष होता है, अतः स्त्रीनाथी इससे, विपर्ययात् तु विपरीत लक्षणयुक्त सर्प विपरीत लक्षणयुक्त सांप, स्त्री स्त्री स्त्री, स्यात् होय छे होती है ॥ १३० ॥

130. The snake that makes a round coil, has a huge body, that hisses and looks upwards and has a large head and an even body is a male; and the one possessing just the contrary characteristics is a female.

कृबिन्नसत्यघोदृष्टिः स्वरहीनः प्रकम्पते ।  
स्त्रिया दृष्टो विपर्यस्तैरैतैः पुंसा नरो मतः ॥१३१॥  
व्यामिश्रलिङ्गैरैतैस्तु कृबिदष्टं नरं वदेत् ।  
इत्येतदुक्तं सर्पाणां स्त्रीपुंस्त्रीनिदर्शनम् ॥१३२॥

त्रसति न उरते। होय छे जो डरता है, कृबिः ते कधीय होय छे वह नपुंसक होता है, स्त्रिया स्त्रीथी स्त्रीसर्पसे, दृष्टः उसायेल काटा हुआ मनुष्य, अघोदृष्टिः नीथी दृष्टिवाला। नीचेकी और दृष्टिवाला, स्वरहीनः अने

भेसेला स्वरवाला होय छे और स्वरहीन होता है, प्रकम्पते डम्पे छे कांपता है विपर्यस्तैः एतैः आनाथी विपरीत लक्षणोथी युक्त इससे विपरीत लक्षणोंसे युक्त, नरः मनुष्य मनुष्य, पुंसा पुरुष सर्पथी उसायेल पुरुष सर्पसे काटा हुआ, मतः मनाथ छे माना जाता है, एतैः आ ये, व्यामिश्रलिङ्गैः तु लक्षणो परस्पर मिश्रित थतां होय तो लक्षण परस्पर मिश्रित हों तो, नरम् मनुष्य मनुष्य, कृबि नपुंसक सर्पथी नपुंसक सर्पसे, दृष्टम् उसायेल छे काटा गया है, वदेत् ऐम उहेवुं ऐसा कहना चाहिए, इति ऐम इस प्रकार, एतत् आ ये, सर्पाणां सर्पोंमां सर्पोंमें, स्त्री-पुं-स्त्री, पुरुष स्त्री, पुरुष, कृबिनिदर्शनम् अने नपुंसकने अनुवा भाटे लक्षणो और नपुंसकके ज्ञानके लिए लक्षण, उक्तम् उक्तां छे कह दिये हैं ॥ १३१-१३२ ॥

131 132. The serpent that is timid is sexless. The person bitten by the female serpent has drooping looks, shivers and suffers loss of voice; and symptoms contrary to these show a person to have been bitten by the male serpent. By a combination of these symptoms the person is to be known to have been bitten by a sexless serpent. Thus have been described the distinctive signs of the female, the male and the sexless among serpents.

गर्भिण्या सूतया च दृष्टस्य लक्षणम्—

पाण्डुवक्त्रस्तु गर्भिण्या शूनौष्ठोऽप्यसितेक्षणः ।  
जम्भाकोचोपजिह्वार्तः सूतया रक्तमूत्रवान् ॥१३३॥

गर्भिण्या तु गर्भिणी सर्पिणीथी उसायेल मनुष्य गामिन सापिनसे काटा हुआ मनुष्य, पाण्डुवक्त्रः पांडु भुजवाणी पाण्डु मुदवाला, शूनौष्ठः सन्नेला होवाणी और सूजे होठवाला, असितेक्षणः अने उला नेत्रवाणी होय छे और काली आंखवाला हो जाता है, सूतया प्रसव

१३०. श्वसन्—फणन् (ब.)

॥ स्थूलमूर्धा समाङ्गश्च—समाङ्गः शिरसा स्थूलः (ध. फ.)

१३१. कृबिन्नसत्यघोदृष्टिः—कृबिः स्रस्तस्त्वघोदृष्टिः (ध. ध.)

॥ —कृबिन्नसत्यघोदृष्टिः (ध.)

१३२. व्यामिश्रलिङ्गैरैतैस्तु कृबिदष्टं नरं वदेत्—लिङ्गैरैतैस्तु व्यामिश्रैः

पण्डदष्टं विनिर्दिशेत् (ब.)

॥ कृबिदष्टं नरं वदेत्—पण्डदष्टं विनिर्दिशेत् (ब.)

१३२. सूतया—सूतया (ड.)

पाशेन सर्पिणीयाः साशेन मनुष्य प्रसूतासे काटा हुआ मनुष्य, जम्भा- अग्रासा जम्भाई, क्रोध- डोष क्रोध, उपजिह्वार्तः अने उपजिह्वविकृती पीडय छे और उपजिह्विकसे पीडित होता है, रक्तमूत्रवान् अने रक्तमिश्रित मूत्रवाणी होय छे और रक्तमिश्रित मूत्र त्याग करता है ॥ १३३ ॥

133. The person bitten by a pregnant female snake is afflicted with pallor of the face, swelling of the lips and black coloration of the eyes; the person bitten by a female snake in her puerperal period is afflicted with yawning, anger, elongation of the little tongue and hematuria.

गौघेरकलक्षणम्—

सर्पो गौघेर(य)को नाम गोघायां स्याच्चतुष्पदः ।  
कृष्णसर्पेण तुल्यः स्यान्नाना स्युर्मिश्रजातयः ॥१३४॥

गौघेरकः गौघेरक गौघेरक, नाम नाभने। नामका, चतुष्पदः चार पगवाणे। चार पैरवाला, सर्पः सर्प सर्प, गोघायाम् गोघामा गोघामें, स्यात् थाय छे होता है, कृष्णसर्पेण अने कृष्ण सर्पना और काले सांपके, तुल्यः समान समान, स्यात् होय छे होता है, मिश्रजातयः आ सर्पनी मिश्र अतिओ। इस सर्पकी मिश्र जातियां, नाना अनेक प्रकारनी नाना प्रकारकी, स्युः होय छे होती हैं ॥ १३४ ॥

134. The snake known as lizard-snake, a hybrid offspring of the snake in the lizard, has four legs. He resembles the black snake in other respects. There are many varieties of cross-breeds.

सर्पदंशानामाकृतिमेवेन मृदुदासणत्वम्—

गूढसंपादितं वृत्तं पीडितं लम्बितार्पितम् ।  
सर्पितं च भृशाबाधं, दंशा येऽन्ये न ते भृशाः ॥१३५॥

१३४. गौघेरकः—गोघायकः (फ.)

.. गोघायां—गोघया (घ.)

१३५. गूढसंपादितं वृत्तं—गूढसंपादितोद्धृतं (घ. फ.)

गूढसंपादितम् छिडे। कुरायेक गहरा किया हुआ, वृत्तम् गोण गोल, पीडितम् पीडित पीडित, लम्बितार्पितम् लम्बितार्पितम् थागेदो लम्बा लगा हुआ, सर्पितम् च अने प्रसरेक और फैला हुआ, भृशाबाधम् ओ दंशो अत्यंत पीडा करनार छे ये दंश अति पीडाकारक होते हैं, ये अने ओ और जो इससे अन्ये भी। अन्य, दंशा दंशो छे दंश होते हैं, ते ते वे, न भृशाः अत्यंत पीडा करनार नथी अधिक पीडाकारक नहीं होते ॥ १३५ ॥

135. Bites that are deep, round, very painful, inflicted by prolonged stay of the fangs and that have spread are very serious. The bites with other characteristics are not so serious.

सर्पाणामवस्थाभेदेन तीक्ष्णविषत्वम्—

तरुणाः कृष्णसर्पास्तु गोनसाः स्थविरास्तथा ।  
राजिमन्तो वयोमध्ये भवन्त्याशीविषोपमाः ॥१३६॥

कृष्णसर्पाः तु कृष्ण सर्पो काले सर्प, तरुणाः तरुण अवस्थाभा। तरुण अवस्थामें, गोनसाः गोनस सर्पो गोनस सांप, स्थविराः वृद्धावस्थाभा। वृद्धावस्थामें, तथा राजिमन्तः अने राजिमान सर्पो और राजिमान सर्प, वयोमध्ये मध्य अवस्थाभा। मध्य अवस्थामें, आशीविष-उपमाः महाविष सर्पो ओवा महाविष सर्पके सदृश, भवन्ति थाय छे होते हैं ॥ १३६ ॥

136. Black snakes when they are young, the Gonasa when they are old, and the Rajiman in their middle age become as virulently poisonous as the serpents that kill by their mere look and breath.

सर्पविषं कस्यां दंश्यायां तिष्ठति—

सर्पदंष्ट्राश्चतस्रस्तु तासां वामाधरा सिता ।  
पीता वामोत्तरा दंष्ट्रा रक्तदयावाऽधरोत्तरा ॥१३७॥

१३७. रक्तदयावाऽधरोत्तरा—रक्तदयावा तथापरे (घ. फ.)

સર્પદંટ્રાઃ તુ સર્પની દાદો સર્પકી દાદે, ચત્ત્રઃ ચાર હોય છે ચાર હોતી હૈં, તાસામ્ તેઓમાં ઉનમેસે, અધરા નીચેની નીચેકી, વામા ડાબી દાદ બાંચી દાદ, સિતા ઘેળી શ્વેત, ઉત્તરા તથા ઉપરની તથા ऊपरकी, વામા દંટ્રા ડાબી દાદ બાંચી દાદ, પીતા પીળી હોય છે પીલી હોતી હૈ, અધરા ઉત્તરા રક્ત-શ્યાવા અને જમણી નીચેની દાદ લાલ તથા ઉપરની દાદ શ્યામ હોય છે દાદિની નીચેકી દાદ લાલ તથા ऊपरकी દાદ શ્યામ હોતી હૈ ॥ ૧૩૭ ॥

137. The snake has four fangs, the lower left one of them is white in color, the upper left one is yellowish and the lower right one is reddish and the upper right one is dark.

यन्मात्रः पतते बिन्दुर्गोबालात् सलिलोद्धृतात् ।  
वामाधरायां दंष्ट्रायां तन्मात्रं स्यादहेविषम् ॥ १३८ ॥

સલિલોદ્ધૃતાત્ ગોબાલાત્ પાણીમાંથી કાઢેલ ગાયના પૂંઝાના વાળ ઉપરથી જલસે નિકાલે ગાયકી પૂંઝકે બાલમે, યન્માત્રઃ જેટલાં જિતની, બિન્દુઃ ખૂંદ બૂંદ, પતતે પડે છે નિરતી હૈં, તન્માત્રમ્ તેટલા પ્રમાણનું ઉત્તરે પ્રમાણકા, વિષમ્ વિષ વિષ, અહેઃ સર્પની સર્પકી, વામાધરાયાન્ નીચેની ડાબી નીચેકી બાંચી, દંટ્રાયાન્ દાદમાં દાદમેં, સ્યાત્ હોય છે હોતા હૈ ॥ ૧૩૮ ॥

138. The lower left fang of a serpent contains as many drops of poison as the drops of water that fall off a hair of a cow's tail if dipped in water and lifted out of it.

एकद्वित्रिचतुर्विधविषभागोत्तरोत्तराः ।

सवर्णस्तत्कृता दंष्ट्रा बहुस्तरविषा भृशः ॥ १३९ ॥

એક-દ્વિ-ત્રિ-ચતુઃ-વૃદ્ધ-વિષભાગ-ઉત્તરોત્તરાઃ યીજી દાદોમાં ઉત્તરોત્તર વિષનું ઓક ઓક બિન્દુ અધિક

મતું બધ છે અર્થાત્ ડાબી તરફની નીચેની દાદમાં વિષનું ઓક બિન્દુ તથા ઉપરની દાદમાં તેનાં બે બિન્દુ અને જમણી તરફની નીચેની દાદમાં ત્રણ બિન્દુ તથા ઉપરની દાદમાં ચાર બિન્દુ હોય છે દૂમરી દાદોમેં ઉત્તરોત્તર વિષકા માપ એક-દો-ત્રીન ઓર ચારકે હિસાબસે વધતા જાતા હૈં અર્થાત્ આ દાદમેં વિષકા એક બિન્દુ તથા ऊपरकी દાદમેં ઉત્તરે દો બિન્દુ ઓર દાદિની ઓરકી નીચેકી દાદમેં ત્રીન બિન્દુ તથા ऊपरकी દાદમેં ચાર બિન્દુ હોતે હૈં, તત્-કૃતાઃ દાદથી થયેલાં ઉન દાદસે ઉત્પન્ન હુએ, દંશાઃ દંશો દંશ, સવર્ણાઃ દાદનાં વર્ણને અનુસરનાર વર્ણવાળાં હોય છે દાદકે વર્ણકે અનુસાર વર્ણવાળે હોતે હૈં, બહુ-ઉત્તર-વિષાઃ અને ઉત્તરોત્તર દાદના ક્રમ પ્રમાણે અધિક વિષવાળા ઓર ઉત્તરોત્તર દાદકે ક્રમકે અનુસાર અધિક વિષવાળે, ભૃશાઃ તેમજ અધિક કષ્ટસાધ્ય હોય છે એવં અધિક કષ્ટ-સાધ્ય હોતે હૈં ॥ ૧૩૯ ॥

139. The quantity of poison in the other fangs is greater in arithmetical progression in the order of their statement. The bites caused by them are similar in color to their own and are increasingly poisonous in the order of their statement.

सर्पविषमूत्रजाः कीटाः —

सर्पाणामेव विषमूत्रात् कीटाः स्युः कीटसंमताः ।

दूषीविषाः प्राणहरा इति संक्षेपतो मताः ॥ १४० ॥

સર્પાણામ્ એવ સર્પોનાં જ સર્પોની દૂધ, વિષમૂત્રાત્ મૂત્ર-મૂત્રથી વિષા ઓર મૂત્રસે, કીટાઃ જે કીડાં માપ છે જો કીટ ઉત્પન્ન હોતે હૈં, કીટસંમતાઃ સ્યુઃ તેઓ કીડા કહેવાય છે જે કીટ કહે ગયે હૈં, સંક્ષેપતઃ સંક્ષેપમાં સંક્ષેપમે, દૂષીવિષાઃ તેઓને દૂષીવિષ જે દૂષીવિષ, પ્રાણ-હરાઃ અને પ્રાણહર જોર પ્રાણહર, ઇતિ એ બે પ્રકારનાં આ દો પ્રકારકે, મતાઃ માન્યા છે માને ગયે હૈં ॥ ૧૪૦ ॥

140. Insects, included in category of worms (already described), are born of the fecal and urinary excrement of

૧૩૮. ગોબાલાત્-ગોપુચ્છાત્ (ક)

.. સલિલોદ્ધૃતાત્-સલિલે મુત્રાત્ (ખ.)

૧૩૯. ચતુર્વિધવિષ-ચતુર્વિધવિષ (ગ. જ.)

snakes themselves. They are divided broadly into two groups, one causing chronic poisoning and the other being destructive of life.

સર્પવિકૃતદષ્ટલક્ષણમ્—

ગાત્રં રક્તં સિતં કૃષ્ણં શ્યાવં વા પિડકાન્વિતમ્ ।  
સકણ્ઢદાહવીસર્પપાકિ સ્યાત્ કુચિતં તથા ॥૧૪૧॥  
કીટૈર્દૂષીવિષૈર્દદ્યં લિઙ્ગં પ્રાણહરં શૃણુ ।  
સર્પદષ્ટે યથા શોથો વર્ધતે સોમ્રગન્ધ્યસુક્ ॥૧૪૨॥  
દંશેડક્ષિગૌરવં મૂર્છાં સ રુગાર્તઃ શ્વસિત્યપિ ।  
તૃણારુચિપરીતશ્ચ ભવેદ્દૂષીવિષાદિતઃ ॥૧૪૩॥

દૂષીવિષૈઃ કીટૈઃ દૂષીવિષ કીટાથી દૂષીવિષ કીટોંસે, દષ્ટમ્ કરડાથેલા કાટા હુઆ, ગાત્રમ્ અંગ અંગ, રક્તમ્ રાતું લાલ, સિતમ્ ધોળું શ્વેત, કૃષ્ણમ્ કાળું કાલા, શ્યાવમ્ વા કે સ્થામ યા શ્યામ, પિડકાન્વિતમ્ પિડકાવાળું પિડકાવાળા, સકણ્ઢ- કરડૂ કણ્ઢ, દાહ- દાહ દાહ, વીસર્પ- વીસર્પ વીસર્પ, પાકિ અને પાકવાળું થાય છે. ઔર પાકવાળા હોતા હૈ, તથા તેમજ એવ, કુચિતમ્ સ્યાત્ સડી બધ છે સડ જાતા હૈ, પ્રાણહરમ્ પ્રાણહર કીટાથી કરડાથેલા પુરુષનાં પ્રાણહર કીટોંસે કાટે હુએ પુરુષકે, લિઙ્ગમ્ લક્ષણો લક્ષણો, શૃણુ સાંભળો સુનો, સર્પદષ્ટે સાપ ડસતાં સર્પકે કાટને પર, યથા જેવો જૈવા, સોમ્રગન્ધ્યસુક્ ઉશ ગન્ધયુક્ત રક્તવાળો સોમ્રગન્ધ્યસુક રક્તવાળો, શોથઃ સોભો સૂજન, વર્ધતે વધે છે વડતી હૈ, દંશે તેવો સોભો પ્રાણહર કીટા કરડતાં વધે છે વેસી સૂજન પ્રાણહર કીટોંકે કાટને પર વડતી હૈ, અક્ષિ- આંખમાં આંખોંમે, ગૌરવમ્ ગૌરવ આરીપન, મૂર્છાં તેમજ મૂર્છાં થાય છે એવં મૂર્છાં હોતી હૈ, રુગાર્તઃ અને વેદનાથી ખીડાયેલા ઔર વેદનાસે પીડિત, સઃ તે પુરુષ

વહ પુરુષ, અસિતિ અપિ હૈં છે હાંકતા હૈ, દૂષીવિષાદિતઃ દૂષીવિષ કીટાથી કરડાથેલા પુરુષ દૂષીવિષસે કાટા હુઆ મનુષ્ય, તૃણારુચિ- તૃણા અને અરુચિથી તૃણા ઔર અરુચિસે, પરીતઃ ચ ભવેદ્ બ્યાપ થાય છે વ્યાપ હોતા હૈ ॥ ૧૪૧-૧૪૩ ॥

141-143. The area bitten by the worms causing chronic poisoning, gets red, pale, black or dark in color, and covered with pimples and is afflicted with pruritus, burning, acute spreading affection, suppuration and putrefaction. Now hear the signs of the bite which leads to death. On the site of the bite, the same type of swelling develops as in the case of snake-bite, accompanied with bleeding and strong smell. The patient suffers from heaviness in the eyes, fainting, pain, dyspnea, thirst and anorexia, when bitten by creatures causing slow-poisoning.

લૂતાદષ્ટલક્ષણમ્—

દંશસ્ય મધ્યે યત્ કૃષ્ણં શ્યાવં વા જાલકાવૃતમ્ ।  
દગ્ધાકૃતિ શૂશં પાકિ ક્ષેદશોથજ્વરાન્વિતમ્ ॥૧૪૪॥  
દૂષીવિષાભિર્લૂતાભિસ્તં દષ્ટમિતિ નિર્દિશેત્ ।

દંશસ્ય દંશના દંશકે, મધ્યે મધ્યમાં મધ્યમે, યત્ બે યદિ, કૃષ્ણમ્ કાળો કાલા, શ્યાવમ્ વા અથવા સ્થાવ અથવા શ્યામ, જાલકાવૃતમ્ બાહથી આશ્રત જાલકુક, દગ્ધાકૃતિ બળેલા જેવો દગ્ધકે સદશ, શૂશમ્ એકદમ વહુત, પાકિ પાકી બનાર પકનેવાળા, ક્ષેદ- કોથ- ક્ષેદ, સોભ ક્ષેદ, શોથ, જ્વરાન્વિતમ્ તથા બપરથી

૧૪૧. પિડકાન્વિતમ્—પિડકાન્વિતમ્ (ક.)

,, દાહ—રાગ (વ.)

૧૪૨. દદ્યં—દષ્ટે (ક.)

,, પ્રાણહર—પ્રાણહરઃ (ફ.)

,, અશા—અશા (વ.)

,, શોથો—શોથો (ફ.)

,, વર્ધતે સોમ્રગન્ધ્યસુક્—વર્ધતે અશ્વગૌરવમ્ (વ.)

૧૪૩. દંશે—શિરો (ત.)

૧૪૪. દગ્ધાકૃતિ—વીર્ષાકૃતિ (ફ.)

,, દગ્ધાકૃતિ શૂશં પાકિ ક્ષેદશોથજ્વરાન્વિતમ્—દગ્ધાકૃતિ શૂશં પાકિક્ષેદશોથજ્વરાન્વિતમ્ (વ.)

,, પાકિ ક્ષેદશોથ—પાકિક્ષેદશોથ (વ.)

,, શોથ—કોથ (વ.)

युक्त भाग होय तो और ज्वरसे युक्त भाग हो तो, तम् ते रोणी वह रोगी, दूषीविषाभिः दूषीविषयुक्त दूषीविषवाली, लताभिः लताओथी लताओंसे, दष्टम् असाथेय छे काटा हुआ है, इति ओम् ऐसा, निर्दिशेत् निर्देश करवे। निर्देश करे ॥ १४४३ ॥

144-144½. When there is in the centre of the bite a network-like black or dark patch resembling a burn, and accompanied with excessive suppuration, sloughing, swelling and fever, it should be diagnosed to be a bite by a spider causing slow-poisoning.

सर्वासामेव तासां च दंशे लक्षणमुच्यते ॥१४५॥  
शोकः श्वेतासिता रक्ताः पीता वा पिडका ज्वरः ।  
प्राणान्तिको भवेच्छ्वासो दाहद्विकाशिरोग्रहाः ॥१४६॥

तासाम् ते उन, सर्वासाम् एव सधणी लताओनां सब लताओंके, दंशे च दंशमां यत्ता दंशमें होनेवाले, लक्षणम् लक्षण, उच्यते उच्यते छे कहे जाते हैं, शोकः सोओ सृजन, श्वेतासिताः सफेद, पीली सफेद, काली, रक्ताः राती लाल, पीताः वा के पीली और पीली, पिडकाः पिडकाओ फुन्सियाँ, ज्वरः ज्वर ज्वर, प्राणान्तिकः तथा प्राणान्तिक तथा प्राणघातक, श्वासः श्वास श्वास, भवेत् थाय छे होते हैं, दाहः तेभज दाह एवं दाह, द्विका- डेडकी द्विका, शिरोग्रहाः अने शिरोग्रह पक्षु थाय छे और शिरोग्रह भी होते हैं ॥ १४५-१४६ ॥

145-146. Here are described the symptoms of the bite by all kinds of poisonous spiders. There occur swelling, pimples of pale, black red or yellow color, fever, terminal dyspnea, burning, hiccup and stiffness of the head.

१४६ भवेच्छ्वासो दाहद्विकाशिरोग्रहाः-भवेद्दाहो श्वापद्विकाशिरो-  
ग्रहाः (क छ)  
" प्राणान्तिकाभिः स्वासा दाहद्विका-  
शिरोग्रहाः (फ.)

मूषिकविषलक्षणम्—

आदंशाच्छोणितं पाण्डु मण्डलानि ज्वरोऽरुचिः ।  
लोमहर्षश्च दाहश्चाप्याखुदूषीविषादिते ॥१४७॥

आखु- उदरना चूहेके, दूषीविषादिते दूषीविषयी पीडितमां दूषीविषसे पीडितमें, आदंशात् दंशमांथी दंशमेंसे, पाण्डु पांडु पक्षुनु पाण्डु वर्णका, शोणितम् डोही पहे छे रक्तका साव होता है, मण्डलानि अने भंड और चकते, ज्वरः ज्वर ज्वर, अरुचिः अरुचि अरुचि, लोमहर्षः च रोमहर्ष रोमहर्ष, दाहः च तथा दाह और दाह, अपि पक्षु थाय छे भी होते हैं ॥ १४७ ॥

147. Immediately after a bite by a rat causing slow-poisoning, pale blood flows out; circular patches on the body appear as well as fever, anorexia, horripilation and burning.

मूर्च्छाक्लेशोथवैवर्ण्यक्लेदशब्दाध्रुतिज्वराः ।  
शिरोगुरुत्वं लालासृक्छर्दिश्चासाध्यमूषिकैः ॥१४८॥

असाध्य. असाध्य असाध्य, मूषिकैः उदरेथी दंश यत्ता चूहोंके काटने पर, मूर्च्छा- मूर्च्छा मूर्च्छा, अक्लेशोथ- अक्लेशोथ अक्लेशोथ, वैवर्ण्य- विवर्णता विवर्णता, क्लेद- क्लेद क्लेद, शब्दाध्रुति- ओडेलानु अश्रवण शब्द सुनाई न देना, ज्वराः ज्वर ज्वर, शिरोगुरुत्वं भाभानु भारे यत्ता शिरका भारीपन, लाला- लाणी लाला, सृक्छर्दिः च अने डोहीनी उबटी थाय छे और रक्तका वमन होते हैं ॥ १४८ ॥

148. Fainting, edema of the limb, discoloration, sloughing, deafness, fever, heaviness in the head, ptyalism and hematemesis are the symptoms of the incurable type of rat-bite.

१४७, दाहश्च-मोहश्च (य.)

કુકલાસકદષ્ટલક્ષણम्—

इयावत्वमथ काष्ण्यं वा नानावर्णत्वमेव वा ।  
मोहः पुरीषभेदश्च दष्टे स्यात् कुकलासकैः ॥१४९॥

કુકલાસકૈઃ ડાઢીડાથી ગિરગટકે, દષ્ટે ડસાતાં કાઢને પર, ઇયાવત્વમ્ શ્યાવતા ઇયાવતા, કાષ્ણ્યમ્ કૃષ્ણતા કૃષ્ણતા, અથવા અથવા અથવા, નાનાવર્ણત્વમ્ ઈવ વા બુદ્ધ બુદ્ધ વર્ણથી યુક્તપણું મિત્ર મિત્ર વર્ણસે યુક્ત હોના, મોહઃ મોહ મોહ, પુરીષભેદઃ ચ અને પુરીષ-ભેદઃ ઓર મલભેદ, સ્યાત્ થાય છે હોતે હૈં ॥ ૧૪૯ ॥

149. Dark or black coloration or variegated coloration stupefaction and passing of loose motions are the symptoms of the bite of a chameleon.

वृश्चिकदष्टलक्षणम्—

दहत्यग्निरिवाद्वा तु भिनत्तीवોर्ध्वमाशु च ।  
वृश्चिकस्य विषं याति दंशे पश्चात् तिष्ठति ॥१५०॥

વૃશ્ચિકસ વીછીનું વિચ્છુકા, વિષજ્ઞ ઝેર વિષ, આદો તુ પ્રથમ પ્રથમ, અગ્નિઃ અગ્નિની અગ્નિકો, હવ પેઠે માંતિ, દહતિ દાહ કરે છે જલન કરતા હૈ, મિનત્તિ ઇવ બળે બેદુનું હેય એમ લાગે છે મેદન કરતા હો એસા પ્રતીત હોતા હૈ, આશુ ચ ઓકદમ સીવ, ઝર્ધ્વમ્ ઊંચે ઊપરકો ઓર, યાતિ બાધ છે જાતા હૈ, પશ્ચાત્ તુ અને પછી ઓર આખિરમે, દંશે દંશમાં દંશસ્થાનમે, તિષ્ઠતિ આવે છે આ જાતા હૈ ॥ ૧૫૦ ॥

150. The poison of the scorpion causes burning like fire and then a cutting pain rapidly spreads upwards; but afterwards it gets localized in the area of the bite.

૧૪૯ પુરીષભેદશ્ચ-પુરીષભેદો વા (ધ.)

,, પુરીષભેદશ્ચ દષ્ટે સ્યાત્ કુકલાસકૈઃ-વચસો મેદો દષ્ટસ

સ્વાય કુકલસકૈઃ (ધ.)

,, કુકલાસકૈઃ-કુકલસકૈઃ (મ. ં.)

दष्टोऽसाध्यस्तु हरघ्राणरसनोपहतो नरः ।

मांसैः पतद्भिरत्यर्थं वेदनातो जहात्यसून् ॥१५१॥

અસાધ્યઃ અસાધ્ય અસાધ્ય વિચ્છુકે, દષ્ટઃ દષ્ટ કાઢને પર, નરઃ તુ પુરુષ મનુષ્ય, હરઘ્રાણ-દષ્ટિ, નાકે દષ્ટિ, નાસિકા, રસનોપહતઃ અને ઝાલના ઉપધાતવાળો ઓર રસનાકે ઉપધાતવાળો, પતદ્ભિઃ અને ખરવા માંડેલાં ઓર પડને લગતે, માંસૈઃ માંસથી માંસસે, લત્યર્થમ્ અતિશય અત્યન્ત, વેદનાતોઃ વેદનાથી પીડાયેલો થઈ વેદનાસે પીડિત હોઈ, અસૂન્ પ્રાણ પ્રાણોકો, જહાતિ તને છે ત્યાગ કરતા હૈ ॥ ૧૫૧ ॥

151. A person stung by the incurable type of scorpion loses the function of sight, smell and taste accompanied with the sloughing of tissues and great pain and gives up his life

कणभदष्टलक्षणम्—

विसर्पः श्वयथुः शूलं ज्वरश्छर्दिरथापि च ।

लक्षणं कणभेदेष्टे दंशश्चैव विशीर्यते ॥१५२॥

કણભૈઃ કણભથી કણમસે, દષ્ટે ડસાતાં કાઢને પર, વિસર્પઃ વિસર્પ વિસર્પ, શ્વયથુઃ સોળે શોથ, શૂલમ્ શૂળ શૂલ, જ્વરઃ જ્વર જ્વર, અથ અપિ અને ઓર, છર્દિઃ ચ ઉલટી વમન, લક્ષણમ્ ઓ લક્ષણો થાય છે વે લક્ષણ હોતે હૈ, દંશઃ ચ ઈવ અને દંશસ્થાન ઓર દંશ-સ્થાન વિશીર્યતે ખરડું બાધ છે ગિરને લગતા હૈ ॥ ૧૫૨ ॥

152. Acute spreading affection, edema, colic, fever and vomiting are the symptoms of the sting of a poisonous hornet. The site of the sting sloughs away.

सच्चिटिङ्गदष्टलक्षणम्—

हृष्टरोमोच्चिटिकेन स्तब्धलिङ्गो भृशार्तिमान् ।

दष्टः शीतोदकेनेष सिकान्यङ्गानि मन्यते ॥१५३॥

૧૫૧. હરઘ્રાણ-હરઘ્રાણ (ધ.)



उच्छिष्टिनेन उच्छिष्टिज्जली उच्छिष्टिग के, दष्टः उच्छिष्टि  
काटनेपर, हृष्टोमा उच्छिष्टि अथवा उच्छिष्टिवागी रोमाश्चित,  
स्तब्धलिङ्गः स्तब्ध विगवागी स्तब्ध लिङ्गवाला, भृशा-  
विमान् अने अहु पीडयुक्त मनुष्य और अत्यन्त पीडा-  
वाला मनुष्य, अज्ञानि अज्ञाने अंगोको, शीतोदकेन  
उच्छिष्टि पाणीनी क्षीतल जलसे, सिक्ताणि हव सिंचित  
अथवा परिषेचन किये हुएकी भांति, मन्थते भाने छे  
मानता है ॥ १५३ ॥

153. The person stung by the  
crab is afflicted with horripilation,  
rigidity of the phallus, excessive pain,  
and feels as if his body were affused  
with cold water

सविषमण्डूकदण्डलक्षणम्—

एकदंष्ट्रादितः शूनः सरुक् स्यात् पीतकः सतृट् ।  
उर्दिनिद्रा च मण्डूकैः सविषैर्दण्डलक्षणम् ॥ १५४ ॥

एकदंष्ट्रादितः एक दाहना दंशथी पीडयथे  
मनुष्य एक दाहके दंशसे पीडित मनुष्य, सरुक् शूनः  
पीडयथी युक्त सोम्भवागी पीडासे युक्त शोथवाला पीतकः  
पीणो पीला, सतृट् अने तृषायुक्त और तृषायुक्त  
स्यात् थाय छे होता है, उर्दिः तेने उदटी थाय छे  
कै आती है, निद्रा च तथा निद्रा आवे छे तथा निद्रा  
आती है, सविषैः मण्डूकैः दण्डलक्षणम् आ वक्ष्ये  
विषयुक्त दंशयोनोना दंशथी थाय छे ये लक्षण विष-  
युक्त मंडूकके काटने पर होते हैं ॥ १५४ ॥

154. If, in the bite by a poisonous  
toad, only a single fang has pierced,  
there is edema accompanied with pain,  
icteric tinge of the body and thirst; vom-  
iting and drowsiness are the symptoms  
of the bite by all types of poisonous frogs  
सविषमत्स्यजलौकोदण्डलक्षणम्—

मत्स्यास्तु सविषाः कुर्याद्विशोफरुजस्तथा ।

कण्डू शोथं ज्वरं मूर्च्छां सविषास्तु जलौकसः १५५

१५४. एकदंष्ट्रादितः—एकदंष्ट्रादितः (फ.)

१५४. —एकदंष्ट्रादितः (फ.)

१५४. पीतकः सतृट्—पीतकसविषा (फ.)

सविषाः विषयुक्त विषयुक्त, मत्स्याः तु माछवा  
मछलियां, दाह- दाह दाह, शोफ- सोम्भे शोफ, रुजः  
अने पीडा करे छे और दर्द करती हैं, तथा तथा तथा,  
सविषाः विषयुक्त विषयुक्त, जलौकसः तु जलौक जौक,  
कण्डूश्च कण्डू खुजली, शोफम् सोम्भे शोफ, ज्वरम्  
ज्वर ज्वर, मूर्च्छाम् अने मूर्च्छा और मूर्च्छा, कुर्युः  
करे छे करती हैं ॥ १५५ ॥

155. Poisonous fishes cause burning,  
edema, and pain; while the poisonous  
leeches cause itching, edema, fever  
and fainting.

गृहगोधिका-शतपदीदण्डलक्षणम्—

दाहतोदस्वेदशोथकरी तु गृहगोधिका ।

दंशे स्वेदं रुजं दाहं कुर्याच्छतपदीविषम् ॥ १५६ ॥

गृहगोधिका तु गरीशी छिपकली, दाह- दाह दाह,  
तोद- तोद तोद, स्वेद- स्वेद स्वेद, शोथकरी अने सोम्भे  
करे छे और शोथ करती है, शतपदी- तथा शतपदी-  
गोजरका, विषम् विष विष, दंशे दंशमां दंशस्थानमे,  
स्वेदम् स्वेद स्वेद, रुजम् पीडा रुजा, दाहम् अने दाह  
और दाह, कुर्यात् करे छे करता है ॥ १५६ ॥

156. The poisonous house-lizard  
causes burning, pricking pain, sweating  
and edema; the poison of the centiped  
causes local sweating, pain and burning  
in the site of the sting.

मशकदण्डलक्षणम्—

कण्डूमान्मशकैरीषच्छोथः स्यान्मन्दवेदनः ।

असाध्यकीटसदृशमसाध्यमशकक्षतम् ॥ १५७ ॥

१५६. दाहतोदस्वेदशोथकरी तु—विदाहं ददथुं तोदं मूर्च्छां च (व.)

१५६. दाहतोदस्वेदशोथकरी तु गृहगोधिका विदाहं शयथुं  
तोदं स्वेदं च गृहगोधिका (ग.)

१५६. —विदाहं शयथुं तोदं स्वेदं तु गृहगोधिका (घ. फ.)

१५६. गृहगोधिका—गृहगोधिका (ख. घ. ड. त.)

१५६. कुर्याच्छतपदीविषम्—करोति च शतापदी (ड.)

मशकैः मच्छरेणा दंशन्ती मच्छरौके दंशसे, कण्डू-  
मान् अरजवाणी खुजलीवाला, मन्दवेदनः तथा मं  
पीडावाणी तथा मन्द वेदनावाला, ईषत् थोडा थोडासा,  
शोथः सोओ शोथ, स्यात् थाय छे होता है, असाध्य-  
असाध्य असाध्य, मशकक्षतश्च मच्छरेणा दंशे मच्छरका  
दंश, असाध्य- असाध्य असाध्य, कीट- कीटना दंश कीट-  
दंशके, सदृशश्च ज्येष्ठो होय छे सदृश होता है ॥ १५७ ॥

157. The sting of the mosquito  
causes slight edema with itching and  
mild pain; but the incurable sting of  
a mosquito has all the characteristics of  
an incurable sting of any insect.

मक्षिकादण्डलक्षणम्—

सद्यःप्रस्राविणी श्यावा दाहमूर्च्छाज्वरान्विता ।  
पीडका मक्षिकादंशे तासां तु स्थगिकाऽसुहृत् १५८

मक्षिकादंशे भाषीना दंशे उपर मक्षिकाके दंश  
पर, सद्यः ओकदम शीघ्र, प्रस्राविणी आववाणी साव-  
वाली, श्यावा श्याव काली, दाह- दाह दाह, मूर्च्छा-  
भूच्छा मूर्च्छा, ज्वरान्विता अने ज्वरवाणी और ज्वर-  
वाली, पीडका पिडा थाय छे पिडका होती है, तासाम्  
तेओभा उनमें, स्थगिका तु स्थगिका भाषी तो  
स्थगिका नामकी मक्षिका तो, असुहृत् प्राणु डरे छे  
प्राणोंको हरती है ॥ १५८ ॥

158. Immediate bleeding, dark  
coloration, burning sensation, fainting,  
fever and pimples are caused by the  
fly-sting; the sting of the 'Sthagika'  
fly (tse-tse) is fatal.

स्थान-काल-स्वभाव-प्रदेशैः सर्पदष्टानामसाध्यत्वम्—

श्मशानचैत्यवल्मीकयज्ञाश्रमसुरालये ।  
पक्षसन्धिषु मध्याह्ने सार्धरात्रेऽष्टमीषु च ॥ १५९ ॥

१५८. ज्वरान्विता-रुजान्विता (ब.)

„ स्थगिका-स्थगिका (फ.)

„ „ -छप्पिका (फ.)

१५९. मध्याह्ने सार्धरात्रे-मध्याह्नेष्वर्धरात्रे (ब. फ.)

न सिध्यन्ति नरा दष्टाः पाषण्डायतनेषु च ।  
दृष्टिश्चासमलस्पर्शविषैराशीविषैस्तथा ॥ १६० ॥  
विनश्यन्त्याशु संप्राप्ता दष्टाः सर्वेषु मर्मसु ।

श्मशान- श्मशानभा श्मशानमें, चैत्य- चैत्यभा  
चैत्यमें, वल्मीक- राईडाभा वल्मीकमें, यज्ञ- यज्ञभा  
यज्ञमें, आश्रम- आश्रमभा आश्रममें, सुरालये देव-  
मंदिरभा देवालयमें, पक्षसन्धिषु- पक्षन्ती संधिओभा  
पक्षकी सन्धिमें, सार्धरात्रे अर्धी रात्रे अर्धरात्रिमें,  
मध्याह्ने- मध्याह्ने मध्याह्नमें, अष्टमीषु च अष्टमीने  
दिनसे अष्टमीके दिन, पाषण्डायतनेषु च अने पाण्ड-  
ओओना स्थानभा और पाषण्डियोंके स्थानमें, दष्टाः  
उसायेक्ष काटे हुए, नराः मनुष्यो मनुष्य, न सिध्यन्ति  
साध्य तथा नहीं बचते, तथा तथा तथा, दृष्टि-  
दृष्टि दृष्टि श्वास- श्वास श्वास, मलस्पर्श- मल तथा  
स्पर्शभा मल और स्पर्शमें, विषैः विषयी युक्त विषसे  
युक्त, आशीविषैः आशीविषना आशीविषके, संप्राप्ताः  
संसर्गवाणी सम्पर्कवाले, सर्वेषु तथा अपां तथा सब,  
मर्मसु मर्मोभा मर्मस्थानमें, दष्टाः उसायेक्ष मनुष्यो  
काटे हुए मनुष्यों, आशु ओकदम शीघ्र, नश्यन्ति नाश  
पाये छे नष्ट होते हैं ॥ १५९-१६० ॥

159 160. The persons bitten in the  
cremation ground or under the tutelary  
tree, or on an ant-hill or in the place  
of sacrifice or a hermitage, or temple  
or at the conjunction of the two fort-  
nights i. e. new moon and full moon  
days, or at mid-noon and mid-night  
or on the eighth day of the fortnight  
or in the houses of people who have  
no faith in the vedas, prove incurable.  
Those who come in contact with the  
sight, breath, excretions and the touch  
of those violently poisonous celestial  
snakes, as also those that are bitten in  
their vital parts by serpents, perish  
quickly.

१६०. सर्वेषु-सर्वे (क.)

सर्पाणां कालादिभेदेन तीक्ष्णमन्दविषत्वम्—

(येन केनापि सर्पेण संभवः सर्व एव च)

भीतमत्ताबलोष्णक्षुत्तृषार्ते वर्धते विषम् ।

विषं प्रकृतिकालौ च तुल्यौ प्राप्याल्पमन्यथा ॥१६२॥

येन केन अथ ते किसी, जयि पक्षु भी, सर्पेण सर्पथी सांपसे, सर्वः सर्वरीतने। सब प्रकारके, एव आवे। अ ऐसे ही, संभवः च संभव छे होनेका संभव है, भीत- मत्ता- भीषेक्ष, भूत भीत, मत्त, अबल- अल्प अबल, उष्ण- उष्णार्त उष्ण-प्रकृति, क्षुत्- भूय क्षुधा, तृषार्ते तथा तरसथी पीडानारभा तथा प्याससे पीडितमें, विषम् विष विष, वर्धते वधि छे बढ़ता है, तुल्यौ च तेभ्यः समान एवं समान, प्रकृतिकालौ प्राप्य प्रकृति तथा कालने पाभी प्रकृति तथा कालको पाकर, विषम् विष वधि छे विष बढ़ता है, अन्यथा भिन्न प्रकृति तथा कालने पाभी भिन्न प्रकृति तथा कालको पाकर, अल्पम् औष्ठु वधिछे थोड़ा बढ़ता है ॥ १६१-१६२ ॥

161-162. All these symptoms may appear as the result of any type of serpent-bite too. The toxic condition is aggravated if the person is alarmed, intoxicated, weak or afflicted with hunger and thirst, and also if aided by the favourable conditions of the habitus of the person and the season. The symptoms are mild if the conditions are otherwise.

वारिविप्रहताः क्षीणा भीता नकुलनिर्जिताः ।

वृद्धा बालास्त्वचो मुक्ताः सर्पा मन्दविषाः स्मृताः ॥

वारि- विप्रहताः पाण्डीथी विधात पाभेक्ष पानीसे आहत हुए, क्षीणाः क्षीण क्षीण, भीताः भीषेक्ष बरे हुए, नकुल- निर्जिताः नोणिथी भितायेक्ष नेबलोंसे परास्त हुए, वृद्धाः वृद्ध वृद्ध, बालाः आण्ड बालक, त्वचः मुक्ताः अने कान्छणी कान्छेक्ष और त्वचामुक्त, सर्पाः सर्पों सांपोंके, मन्दविषाः मंद विषवाण मन्दविष, स्मृताः उल्लेख छे कहे हैं ॥ १६३ ॥

१६२. प्राप्याल्पमन्यथा-प्राणाल्पमन्यथा (ब.)

163. The snakes that are buffeted about by waters, that are emaciated, frightened, that have escaped from a mongoose, that are very aged or very young, or that have shed their skin, are considered to be mildly poisonous.

सर्वदेहाश्रितं क्रोधाद्विषं सर्पो विमुञ्चति ।

तदेवाहारहेतोर्वा भयाद्वा न प्रमुञ्चति ॥१६४॥

सर्पः सर्प सर्प, क्रोधात् क्रोधथी क्रोधसे, सर्वदेहा- श्रितम् आभा देहभा स्थित संपूर्ण देहमें स्थित, विषम् विषने विषको, विमुञ्चति अहार कान्छे छे त्याग देता है, आहारहेतोः वा आहार भाटे आहारके हेतु से, भयात् वा अथवा भयथी वा भयसे, तत् एव ते विष वह विष न प्रमुञ्चति अहार कान्छेता नथी नहीं त्यागता ॥ १६४ ॥

164. When enraged, the snake emits all the poison available in its entire body while it does not emit anything like the same quantity, when it bites for securing its food or when in fright.

कीटानां वातोत्खणादित्वम्—

वातोत्खणविषाः प्राय उच्छिदिङ्गाः सवृश्चिकाः ।

वातपित्तोत्खणाः कीटाः श्लैष्मिकाः कणभादयः ॥

सवृश्चिकाः वींछीसहित विच्छुओंके साथ, उच्छि- दिङ्गाः उच्छिदिंग उच्छिदिंग, प्रायः अल्प करी प्रायः, वातोत्खण- वातप्रधान वातप्रधान, विषाः विषवाण होय छे विषवाले होते हैं, कीटाः कीट कीट, वातपित्तो- त्खणाः वातपित्तप्रधान विषवाण वातपित्तप्रधान विषवाले, कणभादयः अने कणभ वगेरे और कणभादि, श्लैष्मिकाः उद्भ्रमप्रधान विषवाण होय छे कफप्रधान होते हैं ॥ १६५ ॥

165. The poison of the crabs and scorpions is mostly vata-provoking.

१६५. उच्छिदिङ्गाः सवृश्चिकाः-उच्छिदिङ्गाश्च वृश्चिकाः (क.)

,, कणभादयः-कणभासवः (ख.)

The poison of insects provokes the vata and pitta, and the poison of hornets and other insects provokes kapha.

यस्य यस्य हि दोषस्य लिङ्गाधिक्यानि लक्षयेत् ।  
तस्य तस्यौषधैः कुर्याद्विपरीतगुणैः क्रियाम् ॥१६६॥

यस्य ने जिस, यस्य हि ने जिस, दोषस्य दोषना दोषके, लिङ्गाधिक्यानि लक्षणे। अधिक लक्षण अधिक, लक्षयेत् दोषाय देखे, तस्य ते उस, तस्य ते दोषथी उस दोषके, विपरीतगुणैः विपरीत गुणवाला विपरीत गुणवाले, औषधैः औषधाधी औषधोंसे, क्रियाम् चिकित्सा चिकित्सा, कुर्यात् करवी करे ॥ १६६ ॥

166. The physician should carry out treatment with the medication that is antagonistic in qualities to the type of the predominance of humor observed by its symptoms.

वातिकविषलक्षणम्—

हृत्पीडोर्ध्वानिलः स्तम्भः सिरायामोऽस्थिपर्वरुक् ।  
घूर्णनोद्वेष्टनं गात्रश्यावता वातिके विषे ॥१६७॥

वातिके वातप्रधान वातप्रधान, विषे विषमा विषमें, हृत्पीडा हृदयनी पीडा हृदयमें पीडा, ऊर्ध्वानिलः ऊर्ध्ववात ऊर्ध्ववात, स्तम्भः स्तम्भ स्तम्भ, सिरायामः सिरायाम सिराओंका संकोच, अस्थिपर्वरुक् हाडकी अने पर्वनी पीडा अस्थि और संघियोंमें पीडा, घूर्णन-चक्र आवली चक्र आना, उद्वेष्टनम् उठाना अडवाँ ऐठन, गात्रश्यावता च तथा गात्रनुं श्यामपणुं ये लक्षणे। श्याम छे और गात्रमें श्यामवर्णता ये लक्षण होते हैं ॥ १६७ ॥

167. Cardiac pain, impeded breathing, rigidity, dilatation of vessels, pain in the bones and joints, tremors and cramps and dusky coloration of

the body are the symptoms of the poison of the vata-provoking type.

पैत्तिकविषलक्षणम्—

संज्ञानाशोष्णनिश्वासौ हृद्दाहः कटुकास्यता ।  
दंशावदरणं शोथो रक्तपीतश्च पैत्तिके ॥१६८॥

पैत्तिके पित्तप्रधान विषमा पित्तप्रधान विषमें, संज्ञानाश-संज्ञानाश संज्ञानाश, उष्णनिश्वासौ उष्ण निश्वास उष्ण निश्वास, हृद्दाहः हृदयमाँ दाह हृदयमें दाह, कटुकास्यता मोढामाँ कटुता मुखकी कटुता, दंशावदरणं दंश इटके दंशका फटना, रक्तपीतः रक्त रक्त रक्त पीला और लाल और पीला, शोथः सोओ ये लक्षणे। श्याम छे शोथ ये लक्षण होते हैं ॥ १६८ ॥

168. Loss of consciousness, hot breath, heart-burn, pungent taste in the mouth, sloughing of tissue in the region of the bite, edema and red and yellow coloration are caused by the poison of the pitta-provoking type.

श्लैष्मिकविषलक्षणम्—

वम्यरोचकहृत्लासप्रसेकोत्क्रेशगौरवैः ।  
सशैत्यमुखमाधुर्यैर्विद्याच्छ्लेष्माधिकं विषम् ॥१६९॥

सशैत्य-शीतगता शैत्य, मुखमाधुर्यैः तथा भुषनी मधुरता तथा मुखकी मधुरतासे, वमि-तेमन उलटी एव वमन, अरोचक-अरुचि अरुचि, हृत्लास-हृदयमाँ हृत्लास, प्रसेक-प्रसेक प्रसेक, उत्क्रेश-उत्क्रेश उत्क्रेश, गौरवैः अने शुरुता ये लक्षणे। शीत और गुरुता इन लक्षणोंसे, विषम् विषने विषको, श्लेष्माधिकम् कफप्रधान कफप्रधान, विद्यात् अलुत् जाने ॥ १६९ ॥

169. The physician should recognise the poison to be principally provocative of kapha, by the symptoms

१६८. दंशावदरणं-मांसावदरणं (श. च. ब.)

१६९. गौरवैः-पीनसैः (फ.)

१६६. लिङ्गाधिक्यानि लक्षयेत्-लिङ्गाधिक्यं प्रतर्कयेत् (ब. छ. ब.)

of nausea, ptyalism, retching, heaviness and cold and sweet taste in the mouth.

कीटविषचिकित्सा—

खण्डेन च व्रणालेपस्तैलाभ्यङ्गश्च वातिके ।

स्वेदो नाडीपुलाकाद्यैर्बृंहणश्च विधिर्हितः ॥१७०॥

वातिके वातप्रधान विषमा वातप्रधान विषमें, खण्डेन च अर्धशी खांडका, व्रणालेपः पशु उपर लेप व्रण पर लेप, तैलाभ्यङ्गः च तेलने अभ्यंग तैलको मालिश, नाडी- नाडी नाडी, पुलाकाद्यैः अने पुलाक वजरेथी और पुलाक आदिसे, स्वेदः स्वेदन स्वेदन, बृंहणः च अने अर्धपशु और बृंहण, विधिः विधि विधि, हितः हितकारी छे हितकारक हैं ॥ १७० ॥

170. In poison of vata-provoking type the treatment should be application of the syrup of sugar-candy to the wound, inunction with oil, sudation with kettle-sudation procedure or poultices with pulaka grain etc., and the administration of the roborant therapy.

सुशीतैः स्तम्भयेत् सेकैः प्रदेहैश्चापि पैत्तिकम् ।  
लेखनच्छेदनस्वेदवमनैः शैष्मिकं जयेत् ॥१७१॥

सुशीतैः अर्ध अर्ध अधिकशीतल, सेकैः परिषेक परिषेक, प्रदेहैः च अने देपोथी और प्रदेहसे, अपि पशु सी, पैत्तिकम् पित्तप्रधान विष पित्तप्रधान विषको, स्तम्भयेत् रोकना रोकना चाहिए, लेखन- अने छेदन और लेखन, छेदन छेदन छेदन, स्वेद- स्वेदन स्वेदन, वमनैः तथा वमने वउ तेजा वमनसे, शैष्मिकम् कश- प्रधान विषने कफप्रधान विषको, जयेत् जितपु जीते ॥ १७१ ॥

171. The poison of the pitta-provoking type should be arrested with

१७०. खण्डेन च—पिण्याकेन (व.)

“ “ —गुणेन च (व.)

cold affusions and applications; and that of the kapha-provoking type should be subdued with scarification, excision, sudation or with vomition.

विषेष्वपि च सर्वेषु सर्वस्थानगतेषु च ।

अवृश्चिकोच्चिटिङ्गेषु प्रायः शीतो विधिर्हितः ॥१७२॥

अवृश्चिक-उच्चिटिङ्गेषु वीछी अने उच्चिटिङ्गना विष सिवाय विच्छ और उच्चिटिङ्गके विषके बिना, सर्वस्थान- सर्व स्थान सर्वस्थानोंमें, गतेषु च गत पहुंचे, सर्वेषु सर्व सब, विषेषु च विषमा विषोंमें, अपि पशु सी, प्रायः धनुं अर्ध प्रायः, शीतः शीतल शीतल, विधिः विधि विधि, हितः हितकारी छे हितकर होती है ॥ १७२ ॥

172. In all cases of poison except those of the scorpion and the crab, affecting any part of the body, cooling remedies are generally beneficial.

वृश्चिके स्वेदमभ्यङ्गं घृतेन लवणेन च ।

सेकांश्चोष्णान् प्रयुञ्जीत भोज्यं पानं च सर्पिषः १७३

वृश्चिके वीछीना विषमा विच्छके विषमें, स्वेदश्च स्वेदन स्वेदन, घृतेन घी घी, लवणेन च अने सिंध- वथी और नमकसे, अभ्यङ्गश्च अभ्यंग अभ्यंग, उष्णान् गरम गरम, सेकान् च परिषेथने परिषेक, सर्पिषः अने घीना और चीके, भोज्यम् भोजन भोजन, पानम् च तथा पानने और पानका, प्रयुञ्जीत भोजन प्रयोग करना चाहिए ॥ १७३ ॥

173. In cases of scorpion poison, sudation, inunction with ghee and rock salt, hot affusions and eating articles prepared in ghee and potion of ghee are beneficial.

एतदेवोच्चिटिङ्गेऽपि प्रतिलोमं च पांशुभिः ।

उद्धर्तनं सुखाम्बुष्णैस्तथाऽवच्छादनं घनैः ॥१७४॥

१७४. उच्चिके-वातिके (व.)

उच्चिद्विज्ञे उच्चिद्विज्ञेना विषमा उच्चिद्विज्ञे विषमे,  
अपि पक्षु मी, एतत् एव ऐनी ऐन विधि करवी  
यही चिकित्सा करे, सुखाम्बूजैः नवशेका पाण्डुथी  
गरम करेव सुहाते हुए गरम जलसे गरम की हुई, घनैः  
थन बहुतसी, पांशुभिः धूणथी धूलसे, प्रतिलोमम्  
दंश पर प्रतिलोम दंश पर प्रतिलोम, उद्धर्तनम् च  
उद्धर्तन करने उबटन करना चाहिए, तथा तथा तथा,  
अवच्छादनम् दंशने ढांकी देवे। ओष्ठ ओ दंशको ढांप  
देना चाहिए ॥ १७४ ॥

174. The same treatment should be done in the case of the crab in addition the use of friction-massage in the reverse direction to the course of the poison, with sand and genially warm water and covering of the area with a thick coating of the same is recommended.

सविषकुंजुरादिदष्टलक्षणम्—

श्वा त्रिदोषप्रकोपात्तु तथा घातुविपर्ययात् ।  
शिरोऽभितापी लालास्राव्यधोवक्त्रस्तथा भवेत् १७५

त्रिदोषप्रकोपात् त्रिदोषना प्रकोपथी त्रिदोषके  
कोपसे, तथा तथा तथा, घातुविपर्ययात् घातुनी विप-  
मताथी घातुके विपर्ययसे, श्वा तु इतरो कुत्ता, शिरोभि-  
तापी आआना अभितापवाणी शिरके अभितापवाला,  
कालास्रावी दूणना स्राववाणी लालाके स्राववाला,  
तथा अने और, अधोवक्त्रः नीच्या मुणवाणी नीचे रखे  
हुए मुखवाला, भवेत् आम् छे होता है ॥ १७५ ॥

175. In the case of a dog-bite, consequent upon humoral tridiscordance and vitiation of the body elements, there occur burning in the head, ptialism and drooping of the head.

१७५. शिरोऽभितापी कालास्राव्यधोवक्त्रस्तथा भवेत्-शिरो-  
वितापकालास्राव्यधोवक्त्रस्तथा भवेत् (ब. ल.)

अन्येऽप्येवंविधा व्यालाः कफवातप्रकोपणाः ।

हृच्छिरोरुज्वरस्तम्भतृषामूर्च्छाकरा मताः ॥ १७६ ॥

अन्ये भीम अन्य, अपि पक्षु मी, एवम्-विधाः  
ऐना प्रकोपना इसी प्रकारके, व्यालाः हिंसक प्राणी-  
ऐना दंश। हिंसक पक्षुके दंश, कफ-वात-प्रकोपणाः  
उक्ष तथा वातने। प्रकोप कराना। कफ तथा वातके  
प्रकोपको करनेवाले, हृच्छिरोरुक् हृदयरोग, शिरोरोग  
हृदय और शिरमें पीड़ा, ज्वर-स्तम्भ ज्वर, अक्षय उबर,  
स्तम्भता, तृषा- तरस प्यास, मूर्च्छाकराः मताः अने  
मूर्च्छा कराना मानाय छे और मूर्च्छा करनेवाले माने  
जाते हैं ॥ १७६ ॥

176. Many other fierce animals whose bites are provocative of kapha and vata are known to cause cardiac pain, headache, fever, stiffness, thirst and fainting.

सविषदंशस्य निर्विषदंशस्य च लक्षणम्—

कण्डूनिस्तोदवैवर्ण्यसुसिक्केदोपशोषणम् ।

विदाहरागरुक्पाकाः शोफो ग्रन्थिनि कुञ्चनम् ॥ १७७ ॥

दंशावदरणं स्फोटाः कर्णिका मण्डलानि च ।

ज्वरश्च सविषे लिङ्गं विपरीतं तु निर्विषे ॥ १७८ ॥

सविषे विषवाणा दंशभा विषले दंशमे, कण्डू- अर  
खुजली, निस्तोद- तोद तोद, वैवर्ण्य- विवर्णता  
विवर्णता, सुसि- सुसता सुसता, क्लेद- क्षेद क्लेद, उप-  
शोषणम् उपशोषण उपशोषण, विदाह- त्रिदंश विदाह,  
राग- रोग लालिमा, रुक्- पीडा रुजा, पाकाः पाक पाक,  
शोफः सोओ सूजन, ग्रन्थि- ग्रन्थिनी उत्पत्ति ग्रन्थिकी  
उत्पत्ति, निकुञ्चनम् अंगने। संकोच अङ्गका संकोच,  
दंशावदरणम् दंशतुं क्षाटी ज्वर दंशका फटना, स्फोटाः  
स्फोट फोड़े, कर्णिका कर्णिका कर्णिका, मण्डलानि च  
मण्डल मण्डल, ज्वरः च अने ज्वर और ज्वर, लिङ्गम्  
ओ लक्षण। थाय छे ये लक्षण होते हैं, निर्विषे तु अने  
विपरहित दंशभा विपरहित दंशमें, विपरीतम् उलट  
लक्षण। थाय छे विपरीत लक्षण होते हैं ॥ १७७-१७८ ॥

१७७. क्लेदोपशोषणम्-क्लेदोपशोषणम् (ब.)

१७८. ग्रन्थिनि कुञ्चनम्-ग्रन्थिनि कुञ्चनम् (ब.)

177-178. Itching, pricking pain, discoloration, numbness, discharge, dehydration, burning, red coloration, pain, suppuration, swelling, formation of knots on the body, contraction, local cracks in the bite, boils, nodes, rounded patches and fever are the symptoms of a poisonous bite; the opposite symptoms are those of a non-poisonous bite.

विषे हृदिदाहप्रसेकयोश्चिकित्सा—

तत्र सर्वे यथावस्थं प्रयोज्याः स्युरूपक्रमाः ।  
पूर्वोक्ता विधिप्रत्यं च यथावद्ब्रुवतः शृणु ॥१७९॥

तत्र तेजोभां उनमें, यथावस्थम् अवस्था भुज्ज अवस्थाके अनुसार, पूर्वोक्ताः पहेलां डहेला पूर्वोक्त, सर्वे उपक्रमाः अधा उंकेमे। सब उपक्रम, प्रयोज्याः स्युः योज्वा जेधे प्रयुक्त करने चाहिएं, अन्यम् अने पीछ और अन्य, विधिम् च विधि विधिको, यथावत् भरभर यथावत्, ब्रुवतः डहेला जेवा भारी पासेथी कहते हुए मुझसे, शृणु सांभलो सुनो ॥ १७९ ॥

179. In these conditions all the procedures already described are to be applied to suit each condition. Listen as I describe other measures.

हृदिदाहे प्रसेके वा विरेकवमनं भृशम् ।  
यथावस्थं प्रयोक्तव्यं शुद्धे संसर्जनक्रमः ॥१८०॥

हृदिदाहे हृदयभां दाहः हृदयमें दाहः प्रसेके वा अथवा प्रसेक थतां और प्रसेक होने पर, यथावस्थम् अवस्था भुज्ज अवस्था अनुसार, भृशम् डरी डरी पुनः पुनः, विरेक-वमनम् विरेक अने वमन विरेकन और वमन, प्रयोक्तव्यम् योज्वा करने चाहिएं, शुद्धे शुद्ध थतां शुद्ध हो जाने पर, संसर्जन-क्रमः संसर्जनक्रम डरववे। संसर्जनक्रम करावे ॥ १८० ॥

१७९. पूर्वोक्ता-पूर्वोक्त (व.)

180. In heart-burn or ptyalism, strong purgation or emesis should be given as indicated in the particular condition, and when the patient has been cleansed he should be given the rehabilitating diet.

विषे शिरोगते चिकित्सा—

शिरोगते विषे नस्तः कुर्यान्मूलानि बुद्धिमान् ।  
बन्धुजीवस्य भार्ग्याश्च सुरसस्यासितस्य च ॥१८१॥

शिरोगते भरतडगत शिरोगत, विषे विषभां विषमें, बुद्धिमान् बुद्धिमान वैद्य बुद्धिमान वैद्य, बन्धुजीवस्य पुत्र- ७५ जीवापोता, भार्ग्या चः भार्ग्या भार्ग्या, असितस्य सुरसस्यस्य च अने डाली तुलसीनां और काली तुलसीकी, मूलानि, भूगोथी जड़से, नस्तः नश्यडभं नश्य, कुर्यात् डरवुं देवे ॥ १८१ ॥

181. In a condition where the poison has reached the head, the wise physician should administer errhine prepared with the roots of putranjiva beetle killer and black holy basil.

दक्षकाकमयूराणां मांसासृङ्गस्तके क्षते ।  
उपवेयमघोददृष्ट्योर्ध्वदृष्टस्य पादयोः ॥१८२॥

अथः नीथेना भागभां नीचेके भागमें, दृष्टस्य उसाथेय पुरुषना काटे हुए पुरुषके, मस्तके भाभाभां मस्तकमें, क्षते क्षत डरी ते डपर क्षत करके उसके ऊपर, उर्ध्व- अने डपरना भागभां और ऊपरके भागमें, दृष्टस्य उसाथेय पुरुषना काटे हुए पुरुषके, पादयोः पगभां क्षत डरी ते डपर पैरमें क्षत करके उसके ऊपर, दक्ष- डूडका मुर्गा, काक- डाला कौआ, मयूराणाम् डे भोरतुं या मोरका, मांसासृङ्ग रक्तयुक्त भांस रक्त- युक्त मांस, उपवेयम् भूकुं रखना चाहिए ॥ १८२ ॥

१८२. उपवेयम्-मूर्ति देवम् (व. ड. त. व.)

उपवेयमघोददृष्ट्योर्ध्वदृष्टस्य पादयोः-मूर्ति देवमघोदहे मूर्ति दृष्टस्य पादयोः (व.)



182. If a person is bitten on the lower part of the body, i. e. the legs, then the flesh and the blood of the cock, 'crow and peacock should be placed over the scarified scalp; and if he is bitten on the upper part of the body, then on the soles of the feet.

विषे अक्षिगते चिकित्सा—

पिप्पलीमरिचक्षारवचासैन्धवशिमुकाः ।

पिष्टा रोहितपित्तेन घ्नन्त्यक्षिगतमञ्जनात् ॥१८३॥

पिप्पली. पीपर पिप्पली, मरिच- डाणां मरी काली मिर्च, क्षार- ७१७१२ क्षार, वचा- ७१३१७१ वच, सैन्धव- सिन्धव सैन्धानमक, शिमुकाः अने सरगवे। ऐऐने और सहजन इनको, रोहितपित्तेन रोहित मत्स्यना पित्तथी रोहित मत्स्यके पित्तसे, पिष्टाः पीसीने पीसकर, मञ्जनात् आ७१७१३ तेऐ। अञ्जन करनेसे वे, अक्षिगतम् अक्षिगत विषने अक्षिगत विषको, घ्नन्ति ७१७१३ नष्ट करते हैं ॥ १८३ ॥

183. The collyrium of the paste of long pepper, black pepper, alkali, sweet flag, rock salt and drum-stick mixed with the bile of the rohita fish cures poison that has reached the eyes.

विषे कण्ठगते चिकित्सा, विषे आमाशयगते चिकित्सा—

कपित्थमामं ससिताक्षौद्रं कण्ठगते विषे ।

लिह्यादामाशयगते ताभ्यां चूर्णपलं नत्वात् ॥१८४॥

कण्ठगते कंठगत कंठगत, विषे विषमां विषमें, ससिता- सा३२ चीनी, क्षौद्रम् अने मध साथे और मधुके साथ, आमम् डा३० कबे, कपित्थम् डा३० कैथको, लिह्यात् आ१२३ चाटे, आमाशयगते अने आमाशय- गत विषमां और आमाशयगत विषमें, ताभ्याम् तेऐ। ऐ साथे शर्करा और मधुके साथ, नत्वात् तगरनुं

१८४. कपित्थमामं ससिताक्षौद्रं कण्ठगते विषे—विषे कण्ठगते मांसं कपित्थात् ससितामधु (फ.)

तगरनुं, चूर्णपलम् ऐक पल यूर्ण आ१२३ एक पल चूर्ण चाटे ॥१८४॥

184. When poison has reached the throat, the patient should be given green wood-apple with sugar-candy and honey and when it has reached the epigastric region, he should take the above-said remedy mixed with four tolas of indian valerian.

विषे पकाशयगते चिकित्सा—

विषे पकाशयगते पिप्पलीं रजनीद्वयम् ।

मञ्जिष्ठां च समं पिष्ट्वा गोपित्तेन नरः पिबेत् ॥१८५॥

पकाशयगते पकाशयगत, पकाशयगत, विषे विषमां विषमें, नरः मनुष्ये मनुष्य, पिप्पलीम् पीपर पिप्पली, रजनीद्वयम् ७१६२. डा३०७६२ हल्दी, दारु- हल्दी, मञ्जिष्ठाम् च अने मञ्जिष्ठे और मजीठको, समम् सरगे सा३० समभागमें, पिष्ट्वा पीसीने पीसकर, गोपित्तेन गायना पित्त साथे गायके पित्तके साथ, पिबेत् पीवा पान करे ॥ १८५ ॥

185. If the poison has reached the hypogastric region, he should take the paste of equal quantities of long pepper, turmeric, indian berberry, and indian madder rubbed with cow's bile, as potion.

विषे रसगते चिकित्सा—

रक्तं मांसं च गोधायाः शुष्कं चूर्णीकृतं हितम् ।

विषे रसगते पानं कपित्थरससंयुतम् ॥१८६॥

रसगते रसगत रसगत, विषे विषमां विषमें, गोधायाः दोनां गोहके, शुष्कम् सुकायेक सूखे, चूर्णी- कृतम् अने यूर्ण करेक और चूर्ण किये गये, रक्तम् दोही रक्त, मांसम् च तथा मांसनुं तथा मांसका, कपित्थरस- डा३०१ रसथी कैथके रसके, संयुतम् युक्त साथ, पानम् पान करेनुं पान करना, हितम् हितकर है ॥ १८६ ॥

186. If the poison has reached the nutrient fluid, the potion of the pulvis of the dried flesh and blood of the iguana mixed with the juice of the wood-apple is beneficial.

विषे रक्तगते आंसगते च चिकित्सा—

शेलोर्मूलतगग्राणि बादरौदुम्बराणि च ।

कटभ्याश्च पिबेद्रक्तगते, मांसगते पिबेत् ॥१८७॥

सक्षौद्रं खदिरारिष्टं कौटजं मूलमम्भसा ।

सर्वेषु च बले द्वे तु मधूकं मधुकं नतम् ॥१८८॥

रक्तगते रक्तगत विषमां रक्तगत विषमें, शेलोः शेलु लसुङ्गे, कटभ्याः च अने बापुंभाना और कटभीके, मूलस्वक् भृग, छाल मूल, छाल, अग्राणि अने पत्राकुश और कौपल्लोको, बादरौदुम्बराणि च अने ओरडी तथा उमरगाना भृग, छाल अने पत्राकुश और बेर और गुलरके मूल, छाल और कौपल्लोको, पिबेत् पीवा पीवे, मांसगते मांसगत विषमां मांसगत विषमें, सक्षौद्रम् मधुयुक्त मधुके साथ, खदिर- गेर खैरकट्या, खरिहृज् दीमडी नीम, कौटजम् अने डडाना और कुटजके मूलम् भृग मूलके, अम्भसा पाण्डु साथे पीवा जलके साथ पान करे, सर्वेषु तु अने अर्धा विषमां और सब विषोंमें, द्वे बले थे भक्षा बला, अतिबला, मधूकम् महुडा महुवा, मधुकम् जेडीमधु मुलइठी, नतम् च अने तगर पीवा और तगर इनको पीवे ॥१८७-१८८॥

187-188. If the poison has penetrated the blood, the root bark and the sprouts of assyrian plum, jujube and gular fig and of the white siris should be used as poition. If the poison has penetrated the flesh. medicated catechu wine with honey, or kurchi root with water should be taken. When the poison has penetrated all the body elements, heart-leaved

sida, evening mallow, mahwa flowers, liquorice and indian valerian should be used.

विषे कतिपयसिद्धयोगाः —

पिप्पलीं नागरं क्षारं मवनीतेन मूर्च्छितम् ।

कफे भिषगुदीर्णे तु विदध्यात्प्रतिसारणम् ॥१८९॥

उदीर्णे उदीर्ण बडे हुए, कफे तु डडमां कफमें, सिक्क वेद्ये वैद्य, पिप्पलीम् पीपर पिप्पली, नागरम् सड सौठ, क्षारम् अने जवभार और यवक्षार, मवनीतेन मूर्च्छितम् मांभक्षमां मेणवीने मक्खनमें मिलाकर, प्रतिसारणम् प्रतिसारण प्रतिसारण, विदध्यात् डरवु देवे ॥ १८९ ॥

189. If the poison has provoked kapha morbidity, the physician should administer the pulvis of long pepper, dry ginger and alkali mixed with fresh butter as application.

मांस्यादियोगः —

मांसीकुङ्कुमपत्रत्वग्रजनीनतचन्दनैः ।

मनःशिलाव्याघ्रनखसुरसैरम्बुपेषितैः ॥१९०॥

पाननस्याञ्जनालेपाः सर्वशोथविषापहाः ।

अम्बुपेषितैः पाण्डुपी पीसेल जलमें पीसकर, मांसी- जडमांसी, कुङ्कुम- डेसर केसर, पत्र- तमाक्षपत्र तेजपत्र, स्वक्- तज दालचीनी, रजनी- हण्डर हल्ली, नत- तगर तगर, चन्दनैः चंदन चन्दन, मनः- शिला- मनःशिल मैनसिल, व्याघ्रनख- नभला नखी, सुरसैः अने तुलसी वडे डरेल और तुलसीसे किये हुए, पान- पान पान, नस्य- नस्य नस्य, अञ्जन- अञ्जन अञ्जन, आलेपाः अने लेप और लेप, सर्वशोथ- भक्षा सोभा सब प्रकारके शोथ, विषापहाः अने विषने। नाश डरनार छे और विषको नष्ट करते हैं ॥१९०॥

१८९. नागर-मरिच (घ.)

कफे भिषगुदीर्णे तु विदध्यात्प्रतिसारणम्—प्रबुद्धे केसपणि सिक्क प्रदबाव प्रतिसारणम् (द. क.)

१९०. अम्बुपेषितैः—अम्बुपेषितैः (क.)

१८७. पिबेत्—विषे (क.)

190-190½. The pulvis of nardus, fragrant poon, cinnamon leaves, cinnamon bark, turmeric, indian valerian, red sandal, red arsenic, shell and holy basil, levigated in water, should be used as potion, errhine, eye-salves and application. These are curative of all kinds of edema and poison.

चन्दनादियोगः—

चन्दनं तगरं कुष्ठं हरिद्रे द्वे त्वगेव च ॥१९१॥  
मनःशिला तमालश्च रसः कैशर एव च ।  
शार्दूलस्य नखश्चैव सुपिष्टं तण्डुलाम्बुना ॥१९२॥  
हन्ति सर्वविषाण्येव वज्रिवज्रमिवासुरान् ।

चन्दनम् चन्दन, तगरम् तगर, कुष्ठम् कूठ, द्वे हरिद्रे ६१६२, तण्डुलाम्बुना हल्दी, शार्दूलस्य नखः च १५० दालचीनी, मनःशिला मनःशिला, तमालः च तमाल, तमाल, कैशरः नागकेसरः। नागकेसरका रसः च एव रस रस शार्दूलस्य नखः च एव च १५० नखः च १५० और नखी इनको, तण्डुलाम्बुना योभाना घोलुं तण्डुलोदकके साथ, सुपिष्टम् भरभर वाटीने करेले। योभाना बारीक पीस कर किया हुआ योग, वज्रि-जम् ४-५० जैसे इन्द्रका, वज्रम् वज्र, असुरान् इव असुरोने हले छे तेम असुरोको नष्ट करता है वैसे, सर्व-सर्व सब, विषाणि विषोने विषको, हन्ति एव हले छे नष्ट करता है ॥१९१-१९२॥

191-192½. Sandal, indian valerian, costus, turmeric, indian berberry, cinnamon bark, red arsenic, tamala, juice of fragrant poon, and shell well pasted with rice-water and taken, destroy all varieties of poison as effectively as Indra destroys the Asuras with the thunder-bolt.

१९२. कैशर-कैशर (त.)

रसे शिरीषपुष्पस्य सप्ताहं मरिचं सितम् ॥१९३॥  
भावितं सर्पदद्यानां नखपानाञ्जने हितम् ।

शिरीषपुष्पस्य सरसजनां ३५० शिरीषपुष्पके, रसे २५० रससे, सप्ताहम् सात दिवस सात दिन, भावितम् भावना आपेक्ष भावित की हुई, सितम् मरिचम् सफेद नदी सफेद मिर्च सर्पदद्यानां सर्प उल्लेख भवुष्येना सर्पदद्यांके लिए, नख-नख नख, पान-पान पान, अञ्जने अने अञ्जनम् और अञ्जनम्, हितम् हितकर छे हितकर है ॥ १९३॥

193-193½. White pepper impregnated for seven days in the juice of siris-flowers is beneficial as errhine, collyrium and potion, in cases of snake-bite.

द्विपलं नलकुष्ठाभ्यां घृतक्षौद्रचतुष्पलम् ॥१९४॥  
अपि तक्षकदद्यानां पानमेतत् सुखप्रदम् ।

नल-तगर, कुष्ठाभ्याम् अने कूठ और कूठ, द्विपलम् ये पल ८ तोले, घृतक्षौद्र-घी अने मधु घृत और मधु, चतुष्पलम् चार पल १६ तोले, एतत् ये इनका, पानम् पान पान, तक्षक-तक्षकी तक्षकसे, दद्यानाम् उल्लेखने दद्यांको, अपि पल १५, सुखप्रदम् सुख आपनार छे सुखप्रद है ॥ १९४॥

194-194½. A potion prepared with 8 tolas of indian valerian and costus, and 16 tolas of ghee and honey, gives relief even to those bitten by even Takshaka, the prince among snakes.

सिन्धुवारादियोगः—

सिन्धुवारस्य मूलं च श्वेता च गिरिकर्णिका ॥१९५॥  
पानं दर्बीकरैर्दृष्टे नस्यं समधु पाकलम् ।

दर्बीकरैः दर्बीकर सपेयं दर्बीकरसे, दृष्टे दृश थत् दृश होने पर, सिन्धुवारस्य नखोडनां सम्भालकी, मूलम् च मूल जड़, श्वेता अने सफेद और सफेद, गिरिकर्णिका च

१९३. रसे शिरीषपुष्पस्य-शिरीषपुष्पस्वरसे (फ.)

१९५. सिन्धुवारस्य-सेन्दुवारस्य (ब.)

भरणीतुं कोयलका, पानम् पान पान, समञ्ज आने  
मधुयुक्त और मधुयुक्त, पाकलम् उरुतुं कूठका, नखम्  
नख उरुतुं नख करावे ॥ १९५३ ॥

195-195½. The potion of the root of  
black chaste tree and white mussel  
shell creeper, and the errhine made of  
the paste of costus and honey are  
beneficial in cobra-bite.

मज्जिष्ठादियोगः—

मज्जिष्ठा मधुयुष्टी च जीवकर्षभकौ सिता ॥१९६॥  
काश्मर्यं वटशुक्लानि पानं मण्डलिनां विषे ।

मण्डलिनाम् भंडली सर्पिणा मंडली सर्पोंके, विषे  
विषभा विषमें, मज्जिष्ठा मज्जि मजीठ, मधुयुष्टी जेठीमध  
मुलहठी, जीवक- श्वक जीवक, ऋषभकौ ऋषभक  
ऋषभक, सिता साकर चीनी, काश्मर्यम् शीशु गम्भारी,  
वटशुक्लानि च आने वटनी कृपणीतुं और वटकी कोप-  
लौका, पानम् पान उरुतुं पान करना चाहिए  
॥१९६३॥

196-196½. The potion prepared with  
indian madder, liquorice, jivaka and  
rishabhaka, candied sugar, the fruits of  
white teak and banyan stipules is bene-  
ficial in the poison of Russel's viper.

व्योषादियोगः—

व्योषं सातिविषं कुष्ठं गृहधूमो हरेणुका ॥१९७॥  
तगरं कटुका क्षौद्रं हन्ति राजीमतां विषम् ।

सातिविषम् अतिविषनी उणी अतीव, व्योषम्  
त्रिकटु त्रिकटु, कुष्ठम् उरु कूठ, गृहधूमः धरने। धूमांडी  
घरका धुवा, हरेणुका रेणुधुली रेणुकाबीज, तगरम्  
तगर तगर, कटुका उरु कटुकी, क्षौद्रम् आने मध और  
मधु, राजीमताम् राजिमानेना राजिमानोंके, विषम्  
विषने विषको, हन्ति हने छे नष्ट करता है ॥ १९७३ ॥

१९६. मधुयुष्टी च-मधुयुष्ट्या (ब.)

197-197½. The three spices, indian  
atees, costus, kitchen soot, fragrant  
piper, indian valerian, kurroa and  
honey combined, cure the poison of  
the Rajiman or the striped snake

गृहधूमादियोगः—

गृहधूमं हरिद्रे द्वे समूलं तण्डुलीयकम् ॥१९८॥  
अपि वासुकिना दष्टः पिबेन्मधुघृताप्लुतम् ।

वासुकिना वासुकिनामथी वासुकिने, दष्टः उखा-  
शेखाओ काटा हुआ, अपि पक्षु मी, मधु- मध मधु,  
घृताप्लुतम् आने घी भेणवी और घी मिलाकर, गृह-  
धूमम् धरने। धूमांडी घरका धुवां, द्वे हरिद्रे हरीदर,  
हनुडहर हल्दी दारुहल्दी, समूलम् आने मूलसहित  
और मूलसहित, तण्डुलीयकम् तण्डुलीयक चोलाईका,  
पिबेत् पान उरुतुं पान करे ॥ १९८३ ॥

198-198½. Kitchen soot, turmeric,  
indian berberry and the entire plant  
of the prickly amaranth along with  
its roots, soaked in honey and ghee,  
if given as potion cure poison even  
if the person be bitten by Vasuki  
himself, the deadliest of serpents.

कीटविषे लेपः—

क्षीरिवृक्षत्वगालेपः शुद्धे कीटविषापहः ॥१९९॥  
मुक्तालपो वरः शोथदाहतोद्वज्वरापहः ।

शुद्धे अनुपम वमनादिथी शुद्ध अती मनुष्यके  
वमनादिसे शुद्ध होने पर, क्षीरिवृक्ष- उरुताभा आवेक्षा  
क्षीरीवृक्षनी किया हुआ क्षीरी वृक्षकी, त्वगालेपः छालने।  
लेप त्वचाओंका लेप, कीटविषापहः कीटविषने हरे छे  
कीटविषको हरता है, शोथ- सोथ शोथ, दाह- दाह दाह,  
तोद- तोद तोद, ज्वरापहः आने ज्वरने। नाशक और  
ज्वरनाशक, मुक्तालपः मोतीने। लेप पक्षु मोतियोंका लेप  
मी, वरः श्रेष्ठ छे श्रेष्ठ है ॥ १९९३ ॥

१९८३. मधुघृताप्लुतम्-मधुघृताप्लुतम् (इ. ब.)

१९९३. मुक्तालपो-मुक्तालपो (ब.)

199-199½. The application made of the barks of lactiferous plants after giving the purificatory procedure cures toxicosis due to insect-bites. The application of pearl is curative of edema, burning, pricking pain and fever.

लूताविषे सिद्धयोगः—

चन्दनं पद्मकोशीरं शिरीषः सिन्धुवारिका ॥२००॥  
क्षीरशुक्ला नतं कुष्ठं पाटलोदीच्यसारिवाः ।  
शेखरसपिष्टोऽयं लूतानां सार्वकामिकः ॥२०१॥  
(यथायोगं प्रयोक्तव्यः समीक्ष्यालेपनादिषु) ।

चन्दनम् सुगन्धं चन्दन, पद्मक- पद्मक पद्मक, पद्मकोशीरम् वीरशुक्ला वाणो खस, शिरीषः सरसडो शिरीष, सिन्धुवारिका नजोड संभालू, क्षीरशुक्ला क्षीरविदारी क्षीरविदारी, नतम् तगर तगर, कुष्ठम् कठ कूठ, पाटला-पाटला पाडल, उदीच्य- वाणो सुगन्धवाला, सारिवाः अने सारिवा ओओने और कपूरी इनको, शेख- गूँदना लसूडेके, खरस- रसभा रसमें, पिष्टः पीसी तैयार करेके पीसकर तैयार किये हुए, अयम् आ योग इस योगको, लूतानाम् लूताओना दंशना संभंधमा लूता-ओंके दंशके बारेमें, सार्वकामिकः देप नश्य आदि भधा कर्मभा उपयोगी छे लेप नश्य आदि सब कर्मोंमें प्रयोग करे, आलेपनादिषु आलेपन आदिमा आ योगने लेपन आदिमें इस योगका, समीक्ष्य विचार करीने विचार करके, यथायोगम् यथायोग्य यथायोग्य, प्रयोक्तव्यः यथायोग्य उपयोग करना चाहिए ॥२००-२०१॥

200-201. The paste of sandal, himalayan cherry, cuscus grass, siris, chaste tree, milky yam, indian valerian, costus, trumpet flower, fragrant sticky mallow and indian sarsaparilla rubbed in the juice of the assyrian plum should

२००. शिरीषः—पाटलः (ड.)

२०१. पाटलोदीच्यसारिवाः—सारिवोदीच्यपाटलाः (क.)

,, ,, —शिरीषोदीच्यसारिवाः (ड.)

be used as application etc., as found suitable to the condition on hand after full investigation in poison due to spider-bite.

मधूकादियोगः—

मधूकं मधुकं कुष्ठं शिरीषोदीच्यपाटलाः ।  
सनिम्बसारिवाक्षौद्राः पानं लूताविषापहम् ॥२०२॥

मधूकम् महुडा महवा, मधुकम् गेहीमध मुलहठी, कुष्ठम् कठ कूठ, सनिम्ब- लीमडो नीम, सारिवा- सारिवा कपूरी, क्षौद्राः अने मध और शहद, शिरीष- सरसडो शिरीष, उदीच्य- वाणो सुगन्धवाला, पाटलाः अने पाटला और पाडल, आसाम् ओओनु' इनका, पानम् पान पान, लूताविषापहम् लूतानु' विष डरनार छे लूताविषका नाशक है ॥ २०२ ॥

202. The potion prepared of mahwa flowers, liquorice, costus, siris, fragrant sticky mallow, trumpet flower, neem indian sarsaparilla and honey is curative of spider-poison.

कुसुम्भपुष्पं गोदन्तः स्वर्णक्षीरी कपोतविट् ।  
दन्ती त्रिवृत्सैन्धवं च कर्णिकापातनं तयोः ॥२०३॥

कुसुम्भपुष्पम् कुसुम्भानु' फूल कुसुम्भपुष्प, गोदन्तः गायना दांत गायके दांत, स्वर्णक्षीरी हारुडी स्वर्णक्षीरी, कपोतविट् कपूतरन्दी थरड कपोतकी विष्टा, दन्ती नेपाणी दन्ती, त्रिवृत् नसोतर निशोथ, सैन्धवम् च अने सिंधव ओओने देप और सैधानमक इनका लेप, तयोः लूता तथा डीटथी मथेला प्रशुनी लूता तथा कीटसे उत्पन्न व्रणकी, कर्णिकापातनम् कर्णिकाओनु' पातन डरनार छे कर्णिकाओंको नष्ट करता है ॥ २०३ ॥

203. Safflower, cow's tooth, yellow milk plant, the excreta of pigeons, red

२०२. शिरीषोदीच्य—सारिवोदीच्य (झ.)

,, सनिम्बसारिवाक्षौद्राः सनिम्बसारिवाक्षौद्राः (ज.)

,, क्षौद्राः—क्षौद्रं (घ.)

२०३. सैन्धवं च—सैन्धवका (ड. त.)

physic nut, turpeth and rock salt, when applied, will remove the granulomatous growth in the wound inflicted by the spider or the insect.

कटभ्यर्जुनशैरीषशेलुक्षीरिद्रुमत्वचः ।

कषायकल्कचूर्णाः स्युः कीटलूताव्रणापहाः ॥२०४॥

कटमी- वायुंशा कटमी, अर्जुन- सागुड अर्जुन, शैरीष- सरसो शिरीष, शेलु- यूँदा लसूडा, क्षीरिद्रुम- अने क्षीरी वृक्षोनी और पांचों क्षीरी वृक्षोंको, त्वचः छालना छालका, कषाय- डेकाला कषाय, कल्क- डेड कल्क, चूर्णाः अने यूँदी और चूर्ण, कीट- डीट कीट, लूता- अने लूताना और लूताके, व्रणापहाः स्युः प्रयोगेने हथे छे व्रणको नष्ट करते हैं ॥ २०४ ॥

204. White siris, arjun, siris, assyrian plum and the bark of milky trees should be used to make decoctions, pastes and powders which are curative of ulcers resulting from insect and spider bites.

मूषकविषे अगदः —

त्वचं च नागरं चैव समांशं रुक्णपेषितम् ।  
पेयमुष्णाम्बुना सर्वं मूषिकाणां विषापहम् ॥२०५॥

समांशम् सरसो भागे सम भागमें, रुक्ण- अने सारी पेठे और अच्छी तरह, पेषितम् पीसेछ पीसे हुए, त्वचम् च तज दाकचीनी, नागरम् च एव अने सड और सोंठ, सर्वम् ओ सर्व इन सबको, उष्णाम्बुना छिना पाछी साथे गरम जलसे, पेयम् पीना पीवे, मूषिका- णाम् ओ डेडरेना यह चूहोंके, विषापहम् विषने हथे छे विषको नष्ट करता है ॥ २०५ ॥

205. Cinnamon bark and dry ginger, taken in equal proportion and reduced to fine powder, should be taken with warm water. This is curative of poison due to all varieties of rats.

२०४. कटभ्यर्जुनशैरीष-कटभ्यर्जुनचूर्णानि (क.)

वृश्चिकारिविषे अगदः —

कुटजस्य फलं पिष्टं तगरं जालमालिनी ।

तिकेक्ष्वाकुश्च योगोऽयं पानप्रथमनादिभिः ॥२०६॥

वृश्चिकोन्दुलूतानां सर्पाणां च विषं हरेत् ।

समानो ह्यमृतेनायं गराजीर्णं च नाशयेत् ॥२०७॥

पिष्टम् वाटेछ पीसे हुए, कुटजस्य फलम् ४'२०५ इन्द्रजौ, तगरम् तगर तगर, जालमालिनी अल- मालिनी देवदाली, तिक-इक्ष्वाकुः च अने डडवी तुंभडी और तीतीलौकी, अयम् आ यह, योगः योग योग, पान- पान पान, प्रथमनादिभिः प्रथमन नश्य नजेरे वडे प्रथमन आदिसे, वृश्चिक- वीछी बिच्छू, उन्दुह- डेडर चूहा, लूतानाम् लूता लूता, सर्पाणाम् च तथा सर्पना तथा सर्पके, विषम् विषने विषको, हरेत् हरे छे नष्ट करता है, अमृतेन हि समानः अमृत समान अमृत समान, अयम् आ योग यह योग, गराजीर्णम् च गर अने अलछुने गराविष और अजीर्णका, नाशयेत् नाश डरे छे नाशक है ॥२०६-२०७॥

206-207. The combined pulvis of kurchi seeds, indian valerian, bristly luffa, bitter gourd and used as potion, insufflation etc., is curative of the poison of scorpions, rats, spiders and snakes. This acts like ambrosia and cures dyspepsia due to chronic poisoning.

दुर्दुर-मत्स्य-जलौक-उचिटीङ्ग-कणभविषे चिकित्सा —

सर्वेऽगदा यथादोषं प्रयोज्याः स्युः कृकण्टके ।

कपोतविष्मातुलुङ्गं शिरीषकुसुमाद्रसः ॥२०८॥

२०६. पिष्टं-कुष्ठं (व)

,, योगोऽयं-पिष्टानि (क.)

२०७. विषं हरेत्-विषापहः (व.)

,, —विषापहम् (ड.)

२०८. स्युः कृकण्टके-स्युश्चिकण्टके (घ.)

,, कपोतविष्मातुलुङ्गं शिरीषकुसुमाद्रसः-कुसुमपुष्पं गोदन्ताः

स्वर्णक्षीरी कपोतविट (क.)





गुहामतिगुहां श्वेतामजगन्धां शिलाजतु ।  
कचृणं कटभीं क्षारं गृहधूमं मनःशिलाम् ॥२१३॥  
रोहीतकस्य पित्तेन पिष्ट्वा तु परमोऽगदः ।  
नस्याञ्जनादिलेपेषु हितो विश्वम्भरादिषु ॥२१४॥

वचाश्च घेऽधपश्च वच, वंशत्वचश्च वांसनी छाल  
वांसकी छाल, पाठाश्च पाठा पाढी, नतम् तगर तगर,  
सुरसमञ्जरीम् तुलसीनां मञ्जरी तुलसीकी मंजरी, द्वे  
बले-भे भला बला महाबला, नाकुलीम् नोणवेक्ष ईशरमूल,  
कुडम् कठ कूठ, क्षीरवंम् क्षरसेडो क्षीरव, रजनीद्वयम्  
हणदर, धारुहणदर हल्दी, दारुहल्दी, गुहाश्च पीडवल्  
पृथ्वीपर्णी, अतिगुहाश्च शाखवल् सरीवन. श्वेतम् गन्धु  
श्वेत कोयल, अजगन्धाम् आङ्गणी डकु, शिलाजतु  
शिलाजित शिलाजतु, कचृणम् रोहिष धास रुषा घास,  
कटभीम् वायुंश्च कटभी, क्षारम् ज्वभार यवक्षार,  
गृहधूमम् धरने धूमाडो घरका धुंवा, मनःशिलाश्च अने  
मनःशिक्ष और मैनसिल, रोहीतकस्य रोहितक भरथना  
रोहित मछलीके, पित्तेन पित्थी पित्ते, पिष्ट्वा पीसीने  
भनावेक्ष पीसकर बनाया हुआ, परमः परम परम,  
अगदः तु अगद अगद, विश्वम्भरादिषु विश्वम्भरा वगेरेना  
दंश पर विश्वम्भरा आदिके दंश पर, नस्याञ्जनादि- नस्थ-  
अञ्जन वगेरेभां नस्याञ्जन आदिमें, लेपेषु तथा  
लेपोभां और लेपोंके लिए, हितः हितकारी छे  
हितकर है ॥२१३-२१४॥

212-214. Prepare an excellent  
remedy for poisonous bites by Viswam-  
bhara and other insects by making  
a paste of sweet flag, bark of babmoo,  
patha, indian valerian, the seed-blossom  
of holy basil, heart-leaved sida, evening  
mallow, indian birch wort, costus,  
siris, turmeric and indian berberry,  
painted leaved uraria, tick-trefoil,  
white mussel shell creeper, wild carrot  
mineral pitch, lemon grass, white siris

२१३. अजगन्धां-अश्वगन्धां (ब.)

२१४. रोहीतकस्य-रोहीतक (ब.)

,, नस्याञ्जनादिलेपेषु-नस्याञ्जनाङ्गलेपेषु (क.)

barley-alkali, kitchen soot and red  
arsenic rubbed with the bile of the  
rohita fish. This can be used as errhine,  
collyrium or by other modes of appli-  
cations.

शतपदीविषे चिकित्सा—

स्वर्जिकाऽजशकृत्क्षारः सुरसाऽथाक्षिपीडकः ।  
मदिरामण्डसंयुक्तो हितः शतपदीविषे ॥२१५॥

स्वर्जिका साशुभार सर्जिक्षार, अजशकृत् अङ्गरीनी  
क्षी'डीने। बकरीकी मँगनियोंसे बनाया. क्षारः क्षार क्षार,  
सुरसा तुलसी तुलसी, अथ अने और, अक्षिपीडकः  
आंभूटामण्डी ओओने अक्षिपीडक इनको, मदिरामण्ड-  
संयुक्तः मदिराना भ'उभां भेगवी मदिराके मंडमें मिलाकर,  
शतपदीविषे शतपदीना विषमां लेप, पान वगेरे द्वारा  
प्रयोग करने। शतपदीके विषमें लेप पान आदि द्वारा  
प्रयोग करना, हितः हितकर छे हितकर है ॥ २१५ ॥

215. The salsoda alkali, the alkali  
got out of goat's droppings, holy basil  
and ctenolepis mixed with the superna-  
tent part of Madira wine is beneficial  
in poisoning due to centipede-bite

गृहगोधाविषे चिकित्सा—

कपित्थमक्षिपीडोऽर्कवीजं त्रिकटुकं तथा ।  
करञ्जो द्वे हरिद्रे च गृहगोधाविषं जयेत् ॥२१६॥

कपित्थम् डोड कैथ, अक्षिपीडः आंभूटामण्डी  
अक्षिपीडक, अर्कवीजम् आङ्गनी पीथ आकके, बीज,  
तथा तथा तथा, त्रिकटुकम् त्रिकटु त्रिकटु, करञ्ज. करञ्ज  
ओओदरी, द्वे हरिद्रे च हणदर अने धारुहणदर आ शोभ  
हल्दी और दारुहल्दी यह योग, गृहगोधा- गरीणीना  
छिपकलीके, विषम् विषने विषको, जयेत् जते छे  
जीतता है ॥ २१६ ॥

216. Wood apple, ctenolepis, mudar  
seeds, the three spices, indian beech,

२१६. गृहगोधा-लंगोड्या (ब. ड. ब. फ.)

,, -गृहगोली (थ.)

jungle cork tree, turmeric and indian  
berberry cure poison of the house-  
lizards.

विषे पञ्चशिरीषोऽगदः—

काकाण्डरससंयुक्तो विषाणां तण्डुलीयकः ।

प्रधानो बहिपित्तैन तद्वद्वायसपीलुकः ॥२१७॥

शिरीषफलमूलत्वक्पुष्पपत्रैः समैर्धृतैः ।

श्रेष्ठः पञ्चशिरीषोऽयं विषाणां प्रवरो वधे ॥२१८॥

इति पञ्चशिरीषोऽगदः ।

काकाण्डरससंयुक्तः काकाण्डरससंयुक्तः २२५१ युक्त काकाण्डके  
रसके साथ, तण्डुलीयकः तण्डुलीयकः चौलाई, विषाणाम्  
विषाणी चिकित्सायां विषाणी चिकित्सायाम्, प्रधानः श्रेष्ठः  
श्रेष्ठः है, बहिपित्तैनः अने औरना पित्तयुक्त और  
मयूरपित्तसे युक्त, वायसपीलुकः वायसपीलुकः काकजंवा,  
तद्वत् पक्षुः ते प्रमाणे छे भी वसी प्रकार है, समैः धृतैः  
समये भागे दीधैर्वा समान भागमें लिये हुए, शिरीष-  
फल- २२५३ का शिरीषके फल, मूल- २२५४ मूल, त्वक्-  
छाल छाल, पुष्प- २२५५ पुष्प, पत्रैः अने पानथी  
पानथेल और पत्तोंसे किया हुआ, अयम् आ यह,  
श्रेष्ठः श्रेष्ठः श्रेष्ठः पञ्चशिरीषः पञ्चशिरीषः अगदः पंच-  
शिरीष अगदः, विषाणाम् विषाणी विषाणी, वधे  
वधे २२५६ नष्ट करनेमें, प्रवरो प्रवरो छे श्रेष्ठः है  
॥ २१७-२१८ ॥ इति आ यह, पञ्चशिरीषः पञ्च-  
शिरीष पंचशिरीष, अगदः अगदः छे अगदः है ।

217-218. The prickly amaranth  
mixed with the juice of the sword bean  
is the foremost of antidotes. Similar  
in effect are black nightshade and tooth  
brush tree mixed with peacock's bile.  
The siris-pentad antidote prepared  
with pulvis of the fruits, roots, bark,

२१७. काकाण्डरससंयुक्तो—काकाण्डरससंयुक्तः सर्वेषां (ब.)

.. प्रधानो—सर्वेषां (ड.)

२१८. श्रेष्ठः—विष्टैः (घ.)

.. प्रवरो वधे—प्रवरो विधिः (घ.)

flowers and leaves of siris mixed with  
an equal quantity of ghee is foremost  
among antidotes. Thus has been desc-  
ribed the siris pentad antidote.

नखदन्तविषलक्षणं तद्विषित्वा च—

चतुष्पद्भिर्द्विपद्भिर्वा नखदन्तक्षतं तु यत् ।

शूयते पच्यते चापि स्रवति ज्वरयत्यपि ॥२१९॥

सोमवल्कोऽश्वकर्णश्च गोजिह्वा हंसपद्मपि ।

रज्जन्यौ गैरिकं लेपो नखदन्तविषापहः ॥२२०॥

चतुष्पद्भिः चतुष्पद्भिः चौपदे, द्विपद्भिः वा अथवा  
छे पद्मपादां प्राप्नुयाना अथवा दो पैरवाले प्राणियोंके,  
यत् तु नखदन्तक्षतम् न नष्टम् तथा दन्तक्षतं यत्  
छे जो नखदन्त और दन्तक्षत होते हैं, शूयते तेनो सूख  
अथ छे वे सूजनयुक्त होते हैं, पच्यते च अपि पाके छे  
पक जाते हैं, स्रवति च अपि स्रवे छे बहते हैं, ज्वर-  
यति अपि अने ज्वर पक्षु लावे छे और ज्वर भी  
लपते हैं, सोमवल्कः सडेह गेर खैर, अश्वकर्णः च शाद  
साखु, गोजिह्वा गोजिह्वा गोमी, हंसपदी अपि हंसपदी  
हंसपदी, रज्जन्यौ हज्जर, हज्जर हज्जर हज्जर, दारुहल्ली,  
गैरिकम् अने गेरुना और गेरुका, लेपः लेप लेप,  
नखदन्त- नख अने दन्तना नख और दन्तके, विषापहः  
विषने हरनार छे विषका नाशक है ॥ २१९-२२० ॥

219-220. In case of wounds caused  
by the claws and teeth of the quad-  
rupeds and bipeds, there occur edema,  
suppuration, discharge and fever.  
The application of gum arabic tree,  
sal, elephant's foot, maiden hair,  
turmeric, indian berberry and red  
chalk is curative of the poison due  
to injury by teeth and claws.

शङ्खाविषलक्षणम्—

दुस्त्वक्कारे विषस्य केनचिद्विषशङ्कया ।

विषोद्वेगाज्वरश्चर्बिर्भूच्छा दाहोऽपि वा भवेत् ॥

२२१. विषस्य—दहस्य (त. घ.)

ग्लानिमोहोऽतिसारश्चाप्येतच्छङ्कादिवं मतम् ।

चिकित्सितमिदं तस्य कुर्यादाश्वासयन् बुधः २२२

दुरन्धकारे भाटा अंधकारभा गह अन्धकारमें, केनचित्  
कोई वस्तुकी किसी वस्तुसे, बिद्वस्य वीधायेल पुरुषने  
सुमे हुए पुरुषको, विषशङ्कया विषकी शंकाधी किसी  
आशंकासे, विषोद्देगात् विषको उद्देग अर्था विषका उद्देग होने  
पर, ज्वरः अथ ज्वर, छर्दिः उल्टी वमन, मूर्च्छा भूम्भा  
मूर्च्छा, अपि वा अथवा अथवा, दाहः दाह, ज्वेत्  
थाम् छे होता है, ग्लानिः ज्वर ग्लानि, मोहः मोह  
मोह, अतिसारः च अथवा अतिसार अथवा अतिसार,  
अपि पक्ष्मी, भवेत् थाम् छे होता है, दृष्ट् आने यह,  
शङ्काविषम् शंकाविष शङ्काविष, मतम् मान्युं छे माना  
गया है, बुधः डाका वैद्य बुद्धिमान वैद्य, आश्वासयन्  
आश्वासन आपत्ता आश्वासन देता हुआ, तस्य तेनी  
उसकी, इदम् आ यह, चिकित्सतश्च चिकित्सा चिकित्सा,  
कुर्यात् करवी करे ॥ २२१-२२२ ॥

221-222. When a person, bitten by anything in pitchy darkness, gets alarmed and suspects a poisonous bite he develops symptoms of pseudo-poison in the form of fever, vomiting, fainting and burning, as well as prostration, stupefaction and diarrhoea; this is regarded as fear-poison. The following treatment in such a case should be given by a wise physician speaking comforting and reassuring words.

सिता वैगन्धिको द्राक्षा पयस्या मधुकं मधु ।  
पानं समन्त्रपूताम्बु प्रोक्षणं सान्त्वहर्षणम् ॥२२३॥

२२२. कुर्यादाश्वासयन्-कुर्यादाश्वासनं (फ.)

२२३. सिता वैगन्धिको-सिता वैगन्धिका (क.)

२२३. सिताजगन्धिका (फ.)

२२३. वैगन्धिको-वैगन्धिक (ब)

२२३. सान्त्वहर्षणम्-सान्त्वनं तथा (ग.)

सिता सांडर शर्मा, वैगन्धिकः गंधक गन्धक,  
द्राक्षा द्राक्ष द्राक्षा, पयस्या इमियो बिलाईकन्द, मधुकम्  
मेरीमूख मुलहठी, मधु अने मध और मधु, पानम्  
अश्विनु पान आपनुं इनका पान देवे, समन्त्र-मंत्रधी  
मंत्रोंसे, पूताम्बु पवित्र करेख पाणी पवित्र किये हुए  
जलसे, प्रोक्षणम् छोटवुं छोटि देवे, सान्त्वहर्षणम् सान्त्वन  
करवुं तथा हर्ष आनंद सान्त्वन दे तथा प्रसन्न  
करे ॥ २२३ ॥

223. The potion of sugar, purified sulphur, grapes, milky yam, liquorice and honey should be given mixed with water sanctified by holy incantations, and the sprinkling of such sanctified water and inducing of comfort and cheer constitute the treatment in such fear-poison.

विषातानां हितान्यनपानानि—

शालयः षष्टिकाश्चैव कोरदूषाः प्रियङ्गवः ।

भोजनार्थं प्रशस्यन्ते लवणार्थं च सैन्धवम् ॥२२४॥

भोजनार्थं भोजनने भाटे भोजनके लिए, शालयः  
शालि येआ शालि चावल, षष्टिकाः साडी येआ सांठी  
चावल, कोरदूषाः कोहरी कोहरी, प्रियङ्गवः च एव अने  
डांग और कंगुनी, प्रशस्यन्ते प्रशस्त छे प्रशस्त हैं, लव-  
णार्थं च अने लवण भाटे और नमकके लिए, सैन्धवम्  
सिंधव प्रशस्त छे सैन्धानमक प्रशस्त है ॥ २२४ ॥

224. Sali rice, shashtika rice, common millet and indian millet are recommended as diet, and rock-salt for salting purposes.

तण्डुलीयकजीवन्तीवार्ताकसुनिषण्णकाः ।

चुचूर्मण्डूकपर्णी च शाकं च कुलकं हितम् ॥२२५॥

तण्डुलीयक- तण्डुले चौलाई, जीवन्ती- डाडी  
जीवन्ती, वार्ताक- रींगला बैंगन, सुनिषण्णकाः अलक-  
पाक्षिया चौपत्तिया, चुचूर् चुचूर् मोटी छूछ बड़ी चंच,  
मण्डूकपर्णी च अश्विनीनु खट्वाही, कुलकम् अने  
करेलीनु और करैलाका, शाकम् च शाक शाक, हितम्  
हितकरता छे हितकर है ॥ २२५ ॥

225. Prickly amaranth, cork swallow wort, brinjal, marsilia, malta jute and indian penny-wort and carilla fruit are wholesome as vegetables.

ધાત્રી દાહિમમ્ભાર્યે યૂષા મુદ્ગહરેણુભિઃ ।

રસાશ્વેણશિલિશ્વાવિહ્વાવતૈત્તિરપાર્ષતાઃ ॥૨૨૬॥

વિષઘ્નોષધસંયુક્તા રસા યૂષાશ્ચ સંસ્કૃતાઃ ।

અવિદાહીનિ ચાષ્ણાનિ વિષાર્તાનાં મિષગ્જિતમ્ ૨૨૭

અમ્ભાર્યે ખટાશ ખાટે લટાઈકે લિષ, ધાત્રી આમળાં આંબા, દાહિમમ્ દાહમ અનાર, મુદ્ગ- મગ મૂંગ, હરેણુભિઃ અને રેશુકબીજથી ઓર હરેણુસે, યૂષાઃ યૂષ યૂષ, ઇળ- એલુ ઇળ, શિલિ- શીર મયૂર, શાવિત્- શાહુડી સેદ, લાવ- લાવ લટેર, તૈત્તિર- તેતર તીતર, પાર્ષતાઃ તથા પૃષ્ઠતના તથા પૃષ્ઠત ફનકે, રસાઃ માંસરસો દિતકર છે માંસરસ દિતકર હૈં, વિષઘ્ન- વિષ- હર વિષઘ્ન, ઔષધ- ઔષધિઓથી ઔષધોસે, સંયુક્તાઃ યુક્ત યુક્ત, રસાઃ માંસરસો માંસરસ, સંસ્કૃતાઃ સંસ્કૃત સંસ્કૃત, યૂષાઃ ચ યૂષો યૂષ, અવિદાહીનિ અને વિદાહ ન કરે એવાં ઓર અવિદાહી, અષ્ણાનિ ચ ભોજનો એ અજ એ, વિષાર્તાનામ્ વિષપીડિતોનું વિષપીડિતોંકે લિષ, મિષગ્જિતમ્ ઔષધ છે ઔષધ હૈં ॥ ૨૨૬-૨૨૭ ॥

226-227. For acids. emblic myrobalan and sour pomegranate are good, and soups of green gram and common pea. the meat juices of antelope, peacock, porcupine, common quail, partridge and spotted deer, soups and meat juices prepared with drugs curative of poison and the food that is non-irritant are remedies in cases of poison.

વિષાર્તાનામદિતાનિ અજપાનાનિ—

વિરુદ્ધાશ્વેણશિલિશ્વાવિહ્વાવતૈત્તિરપાર્ષતાઃ ।

વર્જયેદ્વિષમુક્તોઽપિ દિવાસ્વપ્નં વિશેષતઃ ॥૨૨૮॥

૨૨૬. રસાશ્વેણશિલિશ્વાવિહ્વાવતૈત્તિરપાર્ષતાઃ—રસાશ્વેણશ્ચ શિલિનાં

શ્વાવતૈત્તિરપાર્ષતાઃ (૫.)

વિષમુક્તઃ વિષથી મુક્ત થયેલા પુરુષે પુરુષ વિષમુક્ત હોનેપર, અપિ પણ મી, વિરુદ્ધ- વિરુદ્ધ ભોજન વિરુદ્ધ ભોજન, અશ્વેણ- અશ્વેણ અશ્વેણ, ક્રોધ- ક્રોધ ક્રોધ, ક્રુધ- ક્રુધ મૂલ, અથ- અથ મય, આયાસ- મહેનત પરિશ્રમ, મૈથુનમ્ મૈથુન મૈથુન, દિવાસ્વપ્નમ્ અને દિવાસ્વપ્નનો ઓર દિવાસ્વપ્નનો, વિશેષતઃ ખાસ કરીને વિશેષકર, વર્જયેત્ ત્યાગ કરવે ત્યાગ દે ॥૨૨૮॥

228. The person though cured of poison should avoid antagonistic diet, over-feeding, anger, fear, exertion and sexual intercourse and day-sleep particularly.

દષ્ટાનાં ચતુષ્પદાનાં વિષલક્ષણાનિ ચિકિત્સા ચ—

મુહુર્મુહુઃ શિરોન્યાસઃ શોથઃ સ્વસ્તૌષ્ઠકર્ણતા ।

જ્વરઃ સ્તબ્ધાક્ષિગાત્રત્વં હનુકમ્પોઽક્કમર્દનમ્ ૨૨૯

રોમાપગમનં ગ્લાનિરરતિર્વેપથુર્ઘ્રમઃ ।

ચતુષ્પદાં ભવત્યેતદ્દષ્ટાનામિહ લક્ષણમ્ ॥૨૩૦॥

મુહુઃ મુહુઃ વારંવાર બારબાર, શિરોન્યાસઃ માથું હલાવવું સિરકા હિલના, શોથઃ સોબે શોથ, સ્વસ્તૌષ્ઠ- કર્ણતા હોઠ અને કાનનું શિથિલ થવું હોઠ ઓર કાનકા શિથિલ હોના, જ્વરઃ જ્વર જ્વર, સ્તબ્ધાક્ષિગાત્રત્વમ્ આંખો અને શરીરનું સ્તબ્ધ થવું આંખ ઓર શરીરકા સ્તબ્ધ હોના, હનુકમ્પઃ હનુકમ્પ હનુકમ્પ, અક્કમર્દનમ્ અંગમર્દ અંગમર્દ, રોમાપગમનમ્ રંગાં ખરી જવાં રોમોંકા ગિર જાના. ગ્લાનિઃ ગ્લાનિ ગ્લાનિ, અરતિઃ અશુભ વેચેની, વેપથુઃ કમ્પ કમ્પ, ઘ્રમઃ અને ઘ્રમ ઓર ઘ્રમ, ઇત્ત એ એ, હહ આ શાશ્વમાં હસ શાશ્વમેં, દષ્ટાનામ્ કરડાયેલ કાટે ગયે, ચતુષ્પદામ્ ચોપગાંમાં ચોપગાંમેં, લક્ષણમ્ લક્ષણો લક્ષણ, અવતિ થાય છે હોતે હૈં ॥ ૨૨૯ ૨૩૦ ॥

229-230. Repeated jerks of the head, edema, drooping of the lips and

૨ ૨. સ્વસ્તૌષ્ઠકર્ણતા—સ્વસ્તૌષ્ઠકર્ણતા (ધ)

—સ્વસ્તૌષ્ઠકર્ણતા (ધ.)

૨૩૦. વેપથુર્ઘ્રમઃ—વેપથુર્ઘ્રમઃ (ઙ.)

—વેપથુર્ઘ્રમઃ (ઙ.)

the ears, fever, rigidity of eyes and limbs, tremors of the jaw, contortions of the body, falling of hair, exhaustion, depression, trembling and circum-ambulation are the symptoms in quadrupeds bitten by poisonous creatures.

देवदारु हरिदे द्वे सरलं चन्दनागुरु ।  
राक्षा गोरोचनाञ्जाजी गुग्गुल्विधुरसो नतम् २३१  
चूर्णं ससैन्धवानन्तं गोपित्तमधुसंयुतम् ।  
चतुष्पदानां दृष्टानामगदः सार्वकामिकः ॥२३२॥

देवदारु देवदारु देवदारु, द्वे हरिदे ६७६२, ६७६२-६७६२ हल्दी, दाहहल्दी, सरलम् ७१३ धूप सरल, चन्दन-अर्धं चन्दन, अगुरु अगुरु अगुरु, राक्षा राक्षा राक्षा, गोरोचना गोरोचना गोरोचना, अजाजी ७३ अजाजी, गुग्गुलु- गुग्गुलु गुग्गुलु, इक्षुरसः शेरडीना २२ इक्षुरस, नतम् तगर तगर, गोपित्त-मधु- गायत्रि पित्त अने मधुश्री गायत्रि पित्त और शहरके, संयुतम् युक्त साथ, ससैन्धव- सिन्धव सैन्धानमक, अनन्तम् अने उप-ध-सरीनु और अनन्ताक, चूर्णम् यूथु चूर्ण, दृष्टानाम् इन्द्रायैक काटे गये, चतुष्पदानाम् योपगा भाटे चोपा-गोंके लिए, सार्वकामिकः दोष आदि सर्व कथीभां उपधोपी लेप आदि सब कार्योंमें प्रयुक्त होनेवाला, अगदः अगद छे अगद है ॥ २३१-२३२ ॥

231-232. Deodar, turmeric, indian berberry, long leaved pine, sandal eaglewood, indian groundsel, gall-stone of the cow, cumin, gum guggul, indian valerian, rock salt and indian sarsapilla, powdered and mixed with sugar-cane juice, cow's bile and honey makes a universal remedy for poisonous bites in the case of quadrupeds.

२३१. सरलं-सुरसे (ब. फ.)  
,, गुग्गुल्विधुरसो-गुग्गुल्विधुरका (ब.)  
,, इक्षुरसो इक्षुरकौ (छ. ब.)

गरलक्षणं तच्चिकित्सा च—

सौभाग्यार्थं स्त्रियः स्वेदरजोनानाङ्गजाम्लान् ।  
शत्रुप्रयुक्तांश्च गरान् प्रयच्छन्त्यन्नमिश्रितान् ॥२३३॥

स्त्रियः श्रीश्री स्त्रियां, सौभाग्यार्थम् सौभाग्यने भाटे सौभाग्यके लिए, स्वेद- पंसेवे पसीना, रजः- २७ रज, नानाङ्गजान् ७७६ ७७६ अंगोना विभिन्न अङ्गोंके, मलान् भक्ष मलको, शत्रुप्रयुक्तान् अने शत्रुश्रीश्री योनेश और शत्रुप्रयुक्त गरान् च गर गरको, अन्न- अन्नभां अन्नमें, मिश्रितान् भेगवी मिलाकर, प्रयच्छन्ति आपे छे देती हैं ॥ २३३ ॥

233. With a view to gain the favour of their husbands, women administer to them their sweat, menstrual discharge, saliva and excreta from other parts of the body as also artificial poisons prepared by enemies, mixing these with the food.

तैः स्यात् पाण्डुः कुशोऽल्पाग्निर्गर्भश्चास्योपजायते ।  
मर्मप्रथमनाध्मानं श्वयथुं हस्तपादयोः ॥२३४॥  
जठरं ग्रहणीदोषो यक्ष्मा गुल्मः क्षयो ज्वरः ।  
एवंविधस्य चान्यस्य व्याधेरुल्लिङ्गानि दर्शयेत् ॥२३५॥

तैः तेनाथी इनसे वह मनुष्य, पाण्डुः पांडु पाण्डु, कुशः कुश कुश, अल्पाग्निः च अने अल्प अग्निवाला और अल्प अग्निवाला, स्यात् थाय छे होजाता है, अथ तेने

२३३. नानाङ्गजान्-कालाङ्गजान् (ब.)

२३४. गरभस्यास्योपजायते-ज्वरभ्यास्योपजायते (फ.)

,, -मर्मप्रथमोपजायते (फ.)

,, मर्मप्रथमनाध्मानं-मर्मप्रथमनाध्मानं (फ.)

,, -मर्माग्निवातनाध्मानं (फ.)

,, मर्मप्रथमनाध्मानं श्वयथुं हस्तपादयोः-मर्मप्रथमनाध्मान-हस्तपाच्छोथकक्षणः (ब.)

,, -हस्तपाच्छोथकक्षणाः (ड.)

२३५ जठरं ग्रहणीदोषो यक्ष्मा गुल्मः क्षयो ज्वरः-जठरं ग्रहणी-दोषं यक्ष्मां विषमज्वरम् (ब.)

इच्छते, मरः च भरेश्च गरुडो, उपजायते शाय उ होता है, मर्मप्रघमन-भर्मप्रघमन मर्मप्रघमन, अग्निमान् आग्निमान्, हस्तपादयोः तथा हाथ-पानो तथा हाथ और पैरोंमें, श्वश्रुः स्नेहो शोथ, जठरम् उदरेश्च उदरेश्च, प्रहणीदोषः अक्षुणीरोग प्रहणीरोग, यक्ष्मा राज्यक्ष्मा यक्ष्मा, गुल्मः शुल्म गुल्म, क्षयः क्षय क्षय, ज्वरः अने ज्वर और ज्वर, एवम्-विवक्ष्य तथा और प्रहणीरोग तथा इस प्रकारके, अन्यस्य भी अन्य, व्याधेः च व्याधिनां रोगके, लिङ्गानि वक्ष्ये लक्षण मी, वक्ष्ये देयाय उ दिखाई देते हैं ॥२३४-२३५॥

234-235. As a result of such administration of poison, the person will show symptoms of anemia, emaciation, weakness of the digestive fire, palpitation of the heart, distension of the abdomen and edema of hands and feet, abdominal diseases, assimilation disorders, consumption, gulma, wasting fever and similar other diseases.

स्वप्ने मार्जारगोमायुव्यालान् सनकुलान् कपीन् ।  
प्रायः पश्यति नद्यादीन्प्लुङ्कांश्च सवनस्पतीन् ॥२३६॥

स्वप्ने स्वप्नभां भरेश्च स्वप्नमें गरुडो प्रायः श्वश्रुं प्रायः, मार्जार- भिक्षाया मार्जार, गोमायु- व्यालान् शियाल, शाय गोमायु, सांप, सनकुलान् नेजिया नेवले, कपीन् वाँदरा बन्दर, शुष्कान् शुष्क सूखी हुई, सवनस्पतीन् वनस्पतिश्री वनस्पतियोंको, नद्यादीन् च अने नदीश्री बजेरेने और नदी आदिको, पश्यति बुध्ते उ देखता है ॥ २३६ ॥

236. He perceives in his dreams generally cats, jackals, cruel animals, mongooses and monkeys as well as dried up rivers and other sources of water and withered trees.

कालश्च गौरमात्मानं स्वप्ने गौरश्च कालकम् ।  
विकर्णनासिकं चाऽपि प्रपश्येद्विहतेन्द्रियः ॥२३७॥

स्वप्ने स्वप्नभां भरेश्च स्वप्नमें गरुडो, कालः च पैतानो वधुं कालो होवा छता पक्षु अपना वर्ण काला होने पर मी, आग्निमान् पैताने अपनेको, गौरम् गौरो गोरा, गौरः च अने पैतानो वधुं गौरो होवा छता पक्षु पैताने और अपना वर्ण गोरा होने पर मी अपनेको, कालकम् कालो काला, विहतेन्द्रियः अथवा क्षीण इन्द्रियवाणो ते पैताने अथवा क्षीण इन्द्रियवाला वह अपनेको, विकर्णनासिकम् वा अपि कान तथा नाक वगैरेश्च कान तथा नाकसे रहित, प्रपश्येत् बुध्ते उ देखता है ॥ २३७ ॥

237. If he be dark complexioned, he sees himself as bright in dreams or if bright, he sees himself dark or finds himself without his ears and nose or injured in his sense-organs in dreams.

तमवेक्ष्य भिषक् प्राज्ञः पृच्छेत् किं कैः कदा सह ।  
जग्धमित्यवगम्याशु प्रदद्याद्वमनं भिषक् ॥२३८॥

तम् तेने उसको, अवेक्ष्य ओधने देखकर, प्राज्ञः बुद्धिमान् बुद्धिमान्, भिषक् वैद्य वैद्य, कदा क्यारे कब, कैः कान्ति किनके, सह साथे साथ, किम् अने शुं और क्या, जग्धम् भाधुं हटुं खाया था, इति पृच्छेत् और पृच्छुं ऐसा पूछे, अवगम्य ते भाधुने इसे जानकर, भिषक् वैद्य वैद्य, आशु औक्ष्म शीघ्र, वमनम् वमन वमन, प्रदद्यात् आपधुं देवे ॥ २३८ ॥

238. Seeing such a person, the intelligent physician should ask what kind of food, when and in whose company, he had eaten, and ascertaining the cause, should administer him emesis.

२३७. प्रपश्येद्विहतेन्द्रियः—प्रपश्येद्विहतेन्द्रियः (च. फ.)

२३८. तमवेक्ष्य—तदवेक्ष्य (फ.)

„ अवगम्य—अभिगम्य (र.)



सूक्ष्मं ताम्ररजस्तस्मै सक्षौद्रं हृदिशोधनम् ।  
शुद्धे हृदि ततः शार्णं हेमचूर्णस्य दापयेत् ॥२३९॥

तस्मै तेने उसके, हृदिशोधनम् छेयनु शोधन  
३२ना२ हृदयकी शुद्धि करनेवाला, सक्षौद्रम् अथयुक्त शब्दके  
साथ, सूक्ष्मम् सूक्ष्म सूक्ष्म, ताम्ररजः ताँबातुं यूर्ण  
आपुं ताम्रचूर्ण देवे, ततः हृदि पछी छेय फिर  
हृदय, शुद्धे शुद्ध यत्ना शुद्ध होने पर, हेमचूर्णस्य  
से।नातुं यूर्ण सुवर्णचूर्ण, शार्णम् त्रण भाप तीन  
मासा, दापयेत् आपुं देवे ॥ २३९ ॥

239. Copper-dust mixed with honey  
is a good stomach cleanser for a person.  
After the stomach has been cleansed  
he should be given  $\frac{1}{2}$  tola of the  
colloidal powder of gold.

हेम सर्वविषाण्याशु गरांश्च विनियच्छति ।  
न सज्जते हेमपाङ्गे विषं पद्मदलेऽम्बुवत् ॥२४०॥

हेम से।तु सुवर्ण, सर्वविषाणि सर्व निषोने सब  
विषोको, गरान् च अने गरोने और गरोको, आशु  
छेयदम शीघ्र, विनियच्छति शीत करे छे शान्त कर  
देता है, पद्मदले पद्मना पत्र पर कमलपत्र पर,  
अम्बुवत् जेम जल टकुं नथी जैसे जल नहीं टिकता,  
हेमपाङ्गे तेम से।तु पीना२ना शरीरमां वैसे सुवर्ण  
सेवन करनेवालेके अङ्गमें, विषम् विष विष, न सज्जते  
टकुं नथी नहीं टिकता ॥ २४० ॥

240. Gold quickly destroys all  
kinds of poison either natural or  
artificial. No poison affects one that  
takes gold i. e. it confers immunity,  
just as no water wets the lotus leaf.

२३९. ताम्ररजस्तस्मै-ताम्ररजस्यापि (क.)

„ ततः शार्णं-तथा शार्णम् (घ.)

„ दापयेत्-वा पिबेत् (ङ.)

२४०. न सज्जते हेमपाङ्गे विषं पद्मदलेऽम्बुवत्-हेमपास सज्जते  
नहि पद्मेऽम्बुवद्विषम् (ङ.)

नागदन्तीत्रिवृद्धन्तीद्रवन्तीक्षुपयःफलैः ।  
साधितं माहिवं सर्पिः सगोमूत्राढकं हितम् ॥२४१॥  
सर्पकीटविषातानां गरार्तानां च शान्तये ।

नागदन्ती-नागदन्ती हकूम, त्रिवृद्ध-नसी।तर त्रिवृत्,  
दन्ती-नेपाणो। दन्ती, द्रवन्ती-रतननेत जंगली एण्डी,  
क्षुप-शे।रतुं शुहरका, ययः-इध इध, फलैः अने  
मी।दण औऔ।धी और मैनकल इनसे, साधितम् पडावेद  
पकाया, सगोमूत्राढकम् २५६ तोला गोमूत्र युक्त २५६  
तोले गोमूत्रसे युक्त, माहिवम् ले।सतुं मैसका, सर्पिः धी  
धी, सर्पकीट-साप अने कीटना साप और कीटके,  
विषातानाम् विषाथी पी।ता विषसे पीवित, गरार्ता-  
नाम् च तेमज् गरार्थी पी।ता मनुष्याने एवं गरसे  
पीवित मनुष्योंको, शान्तये शान्त आपवा भाटे शान्त  
देनेके लिए, हितम् हितकरा छे हितकर है ॥ २४१ ॥

241-241½. Take long leaved croton,  
turpeth, red physic nut, physic nut,  
milk of thorny milk-hedge and emetic  
nut and with these prepare buffalo's  
ghee, adding 256 tolas of cow's urine.  
This is an effective remedy in case of  
poison due to snake and insect bites  
and in artificial poison.

सर्वविषेष्वमृतं घृतम्—

शिरीषत्वक् त्रिकटुकं त्रिफलां चन्दनोत्पले ॥२४२॥

द्वे बले सारिवास्फोतासुरभीनिम्बपाटलाः ।

बन्धुजीवाढकीमूर्वावासासुरसवत्सकान् ॥२४३॥

पाठाङ्गोलाश्वगन्धार्कमूलयष्ट्याहपथकान् ।

विशालां बृहतीं लाक्षां कोविदारं शतावरीम् ॥२४४॥

कटभीदन्त्यपामार्गान् पृश्निपर्णीं रसाञ्जनम् ।

श्वेतमण्डाश्वसुरकौ कुष्ठदारुप्रियङ्गुकान् ॥२४५॥

२४२. कीट-दह (र.)

२४४. पाठाङ्गोलाश्वगन्धार्क-पाठां कोलाश्वगन्धार्क (ख.)

२४५. श्वेतमण्डाश्वसुरकौ-श्वेतौ बाणाश्वसुरकौ (घ. ङ. द. व.)



વિદારી મધુકાત્ સારં કરજસ્ય ફલત્વચૌ ।  
 રજન્યૌ લોઘ્રમક્ષાંશં પિષ્ઠા સાધ્યં ઘૃતાઢકમ્ ॥૨૪૬॥  
 તુલ્યામ્બુચ્છાગમોમૂત્રઝ્યાઢકે તદ્વિષાપહમ્ ।  
 અપસારશ્ચયોન્માદભૂતગ્રહગરોદરમ્ ॥૨૪૭॥  
 પાણ્ડુરોગકિમીગુલ્મગ્રીહોરુસ્તમ્ભકામલાઃ ।  
 હનુસ્કન્ધગ્રહાદીંધ પાનામ્યજ્જનનાવનૈઃ ॥૨૪૮॥  
 હન્યાત્ સંજીવયેચ્ચાપિ વિષોદ્વન્ધમૃતાન્નરાન્ ।  
 નાન્નેદમમૃતં સર્વવિષાણાં સ્યાદ્ધૃતોત્તમમ્ ॥૨૪૯॥  
 इत्यमृतघृतम् ।

શિરીષત્વક્ સરસડાની ઝાલ શિરીષકી ઝાલ, ત્રિકટુમ્ ત્રિકટુ ત્રિકટુ, ત્રિકામ્ ત્રિકા ત્રિકા, ચન્દન- ચન્દન ચન્દન, ડત્પલે નીલકમલ નીલકમલ, દ્વે વલે બે બલા, અતિબલા, સારિવા- સારિવા કપૂરી, આસ્ફોતા- કાળી સારિવા કાલી કપૂરી, સુરમી- સુરમી સુરમી, નિમ્બ- લીમડે નીમ, પાટલા- પાટલા પાટલ, ચન્ડુલીવ- પુત્રાન્ જીવાપોતા, આઢકી- ટુવેર અરહર, મૂર્વા- મોરવેલ મૂર્વા, વાસા- અરડુસી અઢૂવા, સુરસ- તુલસી તુલસી, વસકાન્ કડો કઢા, પાઠા- પાઠા પાઠો, અઢ્ઢોલ- અઢોલ અંકોલ, અશ્વગન્ધા- આસોદ અસગન્ધ, અર્કમૂલ આકડાના મૂલ આકકા મૂલ, યષ્ટયાઢ- જેઠીમધ મુલહટી, પચ્ચકાન્ પચ્ચકા પચ્ચાલ, વિજાલામ્ ધન્વારુણી હન્દ્રાયન, બૃહતીમ્ ઊભી ભોરીંગણી વન- માટા, લાક્ષામ્ લાખ લાલ, કોવિદારમ્ કાંચનાર કાંચનાર, જાતાવરીમ્ શતાવરી શતાવર, કટમી- વાપુંભા

૨૪૬. મધુકાત્ સારં કરજસ્ય ફલત્વચૌ—મધુકં સાગ કરજસ્ય ફલં વચામ્ (છ. ફ.)

„ ફલત્વચૌ—ફલં વચામ્ (છ. ફ.)

„ „ —ફલત્વચામ્ (છ. ફ.)

૨૪૯. હન્યાત્ સંજીવયેચ્ચાપિ વિષોદ્વન્ધમૃતાન્નરાન્ ।  
 નાન્નેદમમૃતં સર્વ વિષાણાં સ્યાદ્ધૃતોત્તમમ્ ॥

હન્યાત્ સંજીવયેચ્ચાપિ વિષોદ્વન્ધમૃતાન્નરાન્ ।  
 નાન્નેદમમૃતં સર્વ વિષાણાં સ્યાદ્ધૃતોત્તમમ્ (દ.)

„ વિષોદ્વન્ધમૃતાન્—વિષોદ્વિષ્ણુતાન્ (અ.)

„ „ —વિષોદ્વિષ્ણુતાન્ (ત. દ. ફ. વ.)

કટમી, દન્તી- નેપાળે દન્તી, અપામાર્ગાન્ અધેડે વિચિદા, ટૃશ્નિપર્ણીમ્ પીઠવલ્લુ ટૃશ્નિપર્ણી, રસાજનમ્ રસવંતી રસોત, શ્વેતમળ્લા- સફેદ ભંડા શ્વેતમળ્લા, અમ્બુરકૌ ગરુડી અપરાજિતા, કુષ્ઠ- કંઠ કૂઠ, દારુ- દેવદાર દેવદાર, પ્રિયકુકાન્ ધઉંલા પ્રિયંગુ, વિદારીમ્ ફગિથે વિલાઈકન્દ, મધુકાત્ જેઠીમધને મુલહટીકા, સારમ્ સાર સાગ, કરજસ્ય કરજના ઠીઠોદરીકી, ફલત્વચૌ ફળ અને ઝાલ ફલ ઓર ઝાલ, રજન્યૌ હળદર, દારુ- હળદર હલી, દારુહલી, લોઘ્રમ્ અને લોધર ઓર લોધ, અક્ષાંશાન્ દરેક એક કપ્ પ્રત્યેક એક તોલા, પિષ્ઠા વાટી પીસકર, તુલ્યામ્બુ- સરખા પાણી સમ ભાગમેં જલ, છાગ-મોમૂત્ર-ચાઢકે અને બકરી તથા ગાયના મૂત્રના ત્રણ આઢકમાં ઓર વકરી તથા ગાયકે ૭૬૮ તોલે મૂત્રમેં, ઘૃતાઢકમ્ એક આઢક થી ૨૫૬ તોલે થી, સાધ્યમ્ પકાવવું સિદ્ધ કરે, તત્ તે વઢ, વિષાપહમ્ વિષહર છે વિષનાશક હૈ, અપસાર- અપસાર અપસાર, ક્ષય- ક્ષય ક્ષય, ઝન્માદ- ઝન્માદ ઝન્માદ, મૂતગ્રહ- મૂતદોષ, ગ્રહ મૂતદોષ, ગ્રહ, ગર- ગરવિષ ગરદોષ, ઝદરમ્ ઊદરરોગ ઝદરરોગ, પાણ્ડુરોગ- પાંડુરોગ પાણ્ડુરોગ, કિમી- કૃમિ કૃમિ, ગુલ્મ- ગુલ્મ ગુલ્મ, ગ્રીહ- પેડીલા ગ્રીહ, ઝરુસ્તમ્- ઊરુસ્તમ્ ઝરુસ્તમ્, કામલાઃ કમળો કામલા, હનુસ્કન્ધગ્રહાદીન્ ચ હનુઝડ, રકંધઝડ વગેરેને હનુગ્રહ, અંસગ્રહ આદિ રોગોંકો, પાન- પાન પાન, અમ્યજ્જન- અંજન અજ્જન, નાવનૈઃ અને નસ્ય કરવાથી ઓર નસ્યસે, હન્યાત્ હણે છે નષ્ટ કરતા હૈ, વિષ- ડદ્વન્ધ- વિષ તથા ફાંસીથી વિષ ઓર ફાંસીસે, મૃતાન્ મૃતતુલ્ય મૃતતુલ્ય, નરાન્ મનુષ્યોને પુરુષકો, અપિ પણ મી, સંજીવયેત્ ચ જીવાડે છે જીવિત કર દેતા હૈ, નામ્ના અમૃતમ્ અમૃત નામનું અમૃત નામકા, હૃદમ્ આ યહ, ઘૃતોત્તમમ્ ઉત્તમ થી શ્રેષ્ઠ ઘૃત, સર્વવિષાણાન્ સર્વ વિષોનું સર્વ વિષોંકા, સ્યાત્ નાશક છે નાશક હૈ ॥ ૨૪૨-૨૪૯ ॥ इति आ यह, अमृतघृतम् अमृत घृत છે અમૃત ઘૃત હૈ ।

242-249 Take one tola each of siris bark, dry ginger, black pepper, chebulic myrobalan, beleric myrobalan,

emblic myrobalan, red sandal blue water lily. heart-leaved sida evening mallow, indian sarsaparilla, asafetida, indian groundsel, neem, trumpet flower. putranjiva, pigeon pea, trilobed virgin bower, wasaka, holy basil kurchi seeds, patha, alangy, winter cherry, colocynth yellow berried nightshade lac, variegated mountain ebony. climbing asparagus, white siris, red physic nut. rough chaff, painted leaved uraria, dry extract of indian berberry white turpeth root, white mussel shell creeper costus, deodar, perfumed cherry white yam, pith of mahwa. fruits and bark of indian beech, turmeric, indian berberry and lodh; prepare 256 tolas of ghee with this in equal quantity of water and 768 tolas of cow's and goat's urine. This is curative of poison. When used as potion, inunction and nasal medication, it cures epilepsy, consumption, insanity, spirit-possession, chronic poisoning, abdominal diseases anemia, helminthiasis, gulma, splenic disorders, spastic paraplegia, jaundice, stiffness of jaw and shoulder, and similar other disorders. It can revive those that are apparently dead due to poisoning and strangulation. This ghee is known by the name of 'Nectar' and is the best antidote for all poisons. Thus has been described the Nectar-ghee.

सर्वविषे सामान्यचिकित्सा—

भवन्ति चात्र—

छत्री स्रग्भरपाणिश्च चरेदात्रौ तथा दिवा ।

तच्छायाशब्दविप्रस्ताः प्रणश्यन्त्याशु पञ्चगाः २५०

अत्र च आ विषयमां इस विषयमें, भवन्ति श्लोकाः छे छे श्लोक हैं कि, दिवा दिनसे दिनमें, छत्री छत्री छाता, रात्रौ स्रग्भरपाणिः च अने रात्रे थिरायेव वास छाथमां लक्ष और रात्रिमें फूटे हुए बांसकी लकड़ी हाथमें लेकर, चरेत् इत्युं विचरण करे, तद् तेभ्योऽनी उत्सृजे, छायाशब्द- छाया अने अवाज्यथी छाया और आवाजसे, विप्रस्ताः ५.५ पायेका डरकर, पञ्चगाः स्रपे सांप, आशु शीघ्र शीघ्र, प्रणश्यन्ति नासी अथ छे भाग जाते हैं ॥ २५० ॥

Here are verses again—

250. One should move about with an umbrella in the day and a rattle in hand at night, so that snakes might get frightened by the shade and the noise respectively, and disappear.

दष्टमात्रो दशेदाशु तं सर्पं लोष्टमेव वा ।

उपर्यरिष्टां बध्नीयाद्दंशं छिन्द्याद्देहत्तथा ॥२५१॥

दष्टमात्रः इत्यादि ७ पुरुषे काटने पर तुरंत पुरुष, तम् ते उसी, सर्पम् सर्पने सांपको, लोष्टम् एव वा छे भाटीना देखने या मिट्टीके ढेल्लेको, आशु शीघ्र जल्दी, दशेत् इत्युं काटे, उपरि उपर दंश स्थानके ऊपर, अरिष्टाम् अरिष्टा अरिष्टाको, बध्नीयाद् बाधनी बांध देवे, दंशम् अने दंशने और दंशस्थानको, छिन्द्याद् छेदने काट डाले, तथा दहेत् अथवा आगवे या जला देवे ॥ २५१ ॥

251. Immediately after the snake-bite one should bite the snake itself or even a clod of earth and tie a ligature above the bite and either tear open or cauterise the wound.

वज्रं मरकतः सारः पिचुको विषमूषिका ।

कर्कतनः सर्पमणिर्वैदूर्यं गजमौक्तिकम् ॥२५२॥

२५१. दंशं छिन्द्याद्देहत्तथा- दंशं छित्त्वा दहेत् वा (घ)

२५२. कर्कतनः सर्पमणिर्वैदूर्यं-कर्कतनं मणिः सर्पिवैदूर्यं (घ.)

धार्यं गरमणिर्थाश्च वरौषध्यो विषापहाः ।  
खगाश्च शारिकाकौञ्चशिखिहंसशुकादयः ॥२५३॥

वज्रम् ढीरे वज्र मरकतः भरतः मरकतः सारः  
सार सार, पिचुकाः पियुङ्ग पिचुक, विषमूषिका विष-  
मूषिका विषमूषिका, कर्कतः पद्मराग पद्मराग, सर्पमणिः  
सर्पमणिः सर्पमणि, वैदूर्यम् वसुधैव वैदूर्य, गज-  
मौक्तिकम् गजमौक्तिका और गजमुक्ता, धार्यम् धारण  
करना ओं ओं धारण करे, गरमणिः गरमणि गरमणि,  
याः च अने अने और जो, विषापहाः विषघ्न विषघ्न,  
वरौषध्यः अथ औषधियो होय तेने पणु धारणु करवी  
ओं ओं उत्तम औषधियाँ हों उनको भी धारण करना चाहिए,  
शारिका तथा मेना तथा मेना, कौञ्च कौञ्च कौञ्च,  
शिखि- मेर मोर, हंस- हंस हंस, शुकादयः अने  
घोषट वजेरे और तोता आदि, खगाः च पक्षीओ पणु  
पाणवा ओं ओं पक्षियोंको अपने निवासस्थानमें रखे  
॥२५२-२५३॥

252-253. The wearing on one's person of diamond, emerald, Sara, the pichuka grain, the bead that is antidote for mouse-poison, the ruby, the gem in the serpent's hood, the vaidurya, the elephant pearl and the anti-poison stone as well as of the anti-poison herbs gives immunity from poison. The rearing of birds such as Sarika, demoiselle crane, peacock, swan and parrot is beneficial.

अध्यायोक्तार्थसंग्रहः—

तत्र श्लोकः—

इतीदमुक्तं द्विविधस्य विस्तरैः  
बहुप्रकारं विषरोगमेषजम् ।

२५३. गर-वर (३.)

,, शारिकाकौञ्च-सारसाः कौञ्चः (४.)

२५४. द्विविधस्य-द्विविधस्य (५.)

अधीत्य विज्ञाय तथा प्रयोजयन्  
व्रजेद्विषाणामविषह्यतां बुधः ॥२५४॥

तत्र ते विषयमां उस विषयमें, श्लोकः उपसंहारमें।  
श्लोक छे छे उपसंहारका श्लोक है कि, इति आ  
प्रमाणे इस तरह, इदम् द्विविधस्य बहुप्रकारम्  
विषरोगमेषजम् आ ओ प्रकारना विषयी तथा विष-  
रोगनुं पणु प्रकारनुं औषध यह दो प्रकारके विषसे  
होते हुए विषरोगकी बहुत प्रकारकी औषध, विस्तरैः  
विस्तारयी विस्तारसे, उक्तम् उक्तं छे कही है, अधीत्य  
ओने भाणुी इसे पढ़कर, विज्ञाय तथा भाणुीने और  
यथावत समझकर, तथा ते प्रमाणे उसी तरह, प्रयोजयन्  
प्रयोग करनार प्रयोग करता हुआ, बुधः समजु भनुष्य  
ज्ञानी पुरुष, विषाणाम् विषधी विषसे, अविषह्यताम्  
व्रजेय असह्यताने पावे छे अर्थात् विषधी पराभूत  
भते। नथी असह्यताको प्राप्त करता है अर्थात् विषसे  
पराभूत नहीं होता ॥ २५४ ॥

Here is the recapitulatory verse—

254. Thus, here has been given an elaborate exposition of the various methods of treatment of toxicosis of both the varieties. The wise physician after study and full understanding of the subject should apply the remedies and neutralise the effects of poison.

इत्यग्निवेशकृते तन्त्रे चरकप्रतिसंस्कृते  
चिकित्सास्थाने विषचिकित्सितं  
नाम त्रयोविंशोऽध्यायः ॥२३॥

इति आ प्रमाणे इस प्रकार, अग्निवेशकृते अग्निवेशे  
रथेक्षा अग्निवेशसे बनाये, चरकप्रतिसंस्कृते तन्त्रे अने  
ग्रन्थी प्रतिसंस्कार पसेक्षा आ शास्त्रमां और चरकके  
द्वारा संस्कृत इस शास्त्रके, चिकित्सास्थाने चिकित्सास्थान  
विषे चिकित्सास्थानमें, विषचिकित्सितम् 'विष-  
चिकित्सित' 'विषचिकित्सित', नाम नामने।

२५४. अधीत्य विज्ञाय तथा प्रयोजयन्-अधीत्य तत् सम्यगिह  
प्रयोजयेत् (५.)

,, बुधः-विष् (५.)

नामका, त्रयोविंशः त्रेवीसमे। तेईसवाँ, अध्यायः  
अध्याय संपूर्ण थै। अध्याय समाप्त हुआ ॥ २३ ॥

23. Thus in the Section on Therapeutics, in the treatise compiled by Agniveśa and revised by Caraka, the twenty-third chapter entitled 'The Therapeutics of Toxicosis' is completed.

### चतुर्विंशोऽध्यायः ।

त्रेवीसमे। अध्याय अध्याय त्रैवीसवाँ

### Chapter XXIV

मदात्ययचिकित्सोपक्रमः—

अथातो मदात्ययचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥१॥

इति ह स्माह भगवानात्रेयः ॥२॥

अथ अतः हवे अर्होथी अब आगे, मदात्ययचिकित्सितम् 'मदात्ययचिकित्सित' नामना अध्यायनम् 'मदात्ययचिकित्सित' नामके अध्यायका, व्याख्यास्यामः व्याख्यान करुं व्याख्यान करेंगे ॥ १ ॥

भगवान् भगवान् भगवान्, आत्रेयः आत्रेये आत्रेयने, इति ह आ विषयमां नीये प्रमाणे अ इस विषयमें निम्न प्रकारसे ही, आह स्म उहेयुं अ कहा है ॥२॥

1. We shall now expound the chapter entitled 'The Therapeutics of Alcoholism'.

2. Thus declared the worshipful Atreya.

मद्यप्रसंवा—

सुरैः सुरेशसहितैर्या पुरा परिपूजिता ।

सौत्रामण्यां हूयते या कर्मभिर्या प्रतिष्ठिता ॥ ३ ॥

३. पुरा-पुरा (व)

यज्ञौही या यया शक्रः सोमातिपतितो भृशम् ।  
निरोजास्तमसाऽऽविष्टस्तस्मादुर्गात् समुद्धृतः ॥४॥  
विधिभिर्वेदविहितैर्या यजद्भिर्महात्मभिः ।  
दद्यात् स्पृश्या प्रकल्प्या च यज्ञीया यज्ञसिद्धये ॥५॥  
योनिसंस्कारनामाद्यैर्विशेषैर्वहुधा च या ।  
भूत्वा भवत्येकविधा सामान्यान्मदलक्षणात् ॥६॥  
या देवानमृतं भूत्वा स्वधा भूत्वा पितृंश्च या ।  
सोमो भूत्वा द्विजातीन् या युद्धं श्रेयोभिरुत्तमैः ॥७॥  
आश्विनं या महत्तेजो बलं सारस्वतं च या ।  
वीर्यमैन्द्रं च या सिद्धा सोमः सौत्रामणौ च या ॥८॥  
शोकारतिभयोद्वेगनाशिनी या महाबला ।  
या प्रीतिर्या रतिर्या वाग्या पुष्टिर्या च निर्वृतिः ॥९॥  
या सुरासुरगन्धर्वयक्षराक्षसमानुषैः ।  
रतिः सुरेत्यभिहिता तां सुरां विधिना पिबेत् ॥१०॥

या अ जो, पुरा पूर्वप्राक्षमा पूर्वकालमें, सुरेश-  
भृश इन्द्र, सहितैः सहित सहित, सुरैः देवताओंकी  
देवोंसे, परिपूजिता पूजार्थ अ अत्यन्त पूजी गई है, या  
अ जिसका, सौत्रामण्याम् सौत्रामण्युत्तमां सौत्रामणि-  
यज्ञमें, हूयते होमाय अ होम किया जाता है, या अ  
जो, कर्मभिः कर्मकारोंकी यज्ञकरनेवालोंसे, प्रतिष्ठिता  
प्रतिष्ठा पान्ना अ प्रतिष्ठाको प्राप्त हुई है, या अ जो,  
यज्ञौही यज्ञनु वहन करे अ यज्ञवाहक है, यया अनेकी  
जिससे, सोम-सोमना अतिशय पानकी सोमपानसे,  
अतिपतितः पड़ी अत्यधिक गिरा हुआ, भृशम् अत्यन्त  
अत्यन्त, निरोजाः ओषधिरहित ओजरहित, तमसा अने

४. यज्ञौही या यया शक्रः सोमातिपतितो भृशम्—यज्ञेऽभिषवसक्तस्य  
सोमस्याभिषवो यथा (ब.)

५. सोमातिपतितो-सोमातिपतितः (फ.)

६. निरोजाः—नीरजः (ख.)

७. एकविधा-एवंविधा (ब.)

८. द्विजातीन् या-द्विजातीनाम् (घ.)

९. बलं-वीर्यं (ग. ड.)

१०. वीर्यम्-बलम् (क. ग. घ. झ. ङ. ब.)

११. वीर्यमैन्द्रं च या सिद्धा सोमः सौत्रामणौ च या-सौत्रामण्याम्  
या सोमः सिद्धं शक्रवर्कं च या (घ. फ.)

१२. रतिः-मतिः (घ.)

અંધારામાં ઔર તમસે, આવિષ્ટઃ પ્રવિષ્ટ થયેલ આવિષ્ટ  
હુઆ, શક્રઃ ધન્વન્ન, તસ્યાત્ તે ઉસ, દુર્ગાત્ ખાડા-  
માંથી ગહેસે, સમુદૃતઃ ઉદૃત થયેા છે નિકાલા ગયા  
હે, યજ્ઞીયા યતુસંધી યજ્ઞીય, યા ને જો, વેદ-  
વેદમાં વેદમેં, વિહિતૈઃ કહેલ કહી, વિધિમિઃ વિધિ વડે  
વિધિસે, યજઙ્ઃ યજ કરતા યજ કરનેવાલે, મહાત્મમિઃ  
મહાત્માઓથી મહાત્માઓસે, યજ્ઞ- યજ્ઞની યજ્ઞકી, સિદ્ધયે  
સિદ્ધિ માટે સિદ્ધિકે લિપ્, દશ્યા દર્શનને યોગ્ય દર્શનકે  
યોગ્ય, સ્પૃશ્યા સ્પર્શને યોગ્ય સ્પર્શકે યોગ્ય, પ્રકલ્પયા  
અને અભિષવને યોગ્ય છે ઔર અભિષવકે યોગ્ય હે,  
યા ચ વળી ને ઔર જો, યોનિ-સંસ્કાર- યોનિ, સંસ્કાર  
યોનિ, સંસ્કાર, નામ- નામ નામ, આયૈઃ આદિ આદિ,  
વિશેષઃ વિશેષોથી વિશિષ્ટતાઓસે, બહુધા બહુ પ્રકારની  
વહુત પ્રકારકી, મૃત્વા હોવા છતાં પણ હોતે હુપ મી,  
મદલક્ષણાત્ મદને ઉત્પન્ન કરનારપણા રૂપ મદજનક  
સ્વરૂપ, સામાન્યાત્ સામાન્યથી સામાન્યસે, એકવિધા  
એક ને પ્રકારની એકઠી પ્રકારકી, અવતિ છે હોતી હે,  
યા ને જો, અમૃતમ્ અમૃત અમૃત, મૃત્વા બનીને  
બનકર, દેવાન્ દેવાને દેવોકો, યા ને જો, સ્વધા રૂપ  
સ્વધા, મૃત્વા બનીને બનકર, પિતૃન્ પિતૃઓને પિતરોકો,  
યા અને ને ઔર જો, સોમઃ સોમ સોમ, મૃત્વા બનીને  
બનકર, દ્વિજાતીન્ ચ બ્રાહ્મણેને બ્રાહ્મણોકો, ઉત્તમૈઃ  
ઉત્તમ ઉત્તમ શ્રેયોમિઃ શ્રેયોથી કલ્યાણસે, યુક્તકેભેડે  
છે યુક્ત કરતી હે, યા ને જો, અશ્વિનમ્ અશ્વિનીકુમારોન્  
અશ્વિનીકુમારકા, મહત્ મહાન મહાન, તેજઃ તેજ છે તેજ હે,  
યા ચ ને જો, સારસ્વતમ્ સરસ્વતીતું સરસ્વતીકા,  
બલમ્ બળ છે બલ હે, યા ચ ને જો, એન્દ્રમ્ ધંતું  
ઇન્દ્રકા, વીર્યમ્ વીર્ય છે વીર્ય હે, સિદ્ધા અને સિદ્ધ  
થયેલ ઔર સિદ્ધ હૈ, યા ચ ને જો, સૌત્રામણૌ  
સૌત્રામણિ યત્રમાં સૌત્રામણિ યજ્ઞમેં, સોમઃ સોમરૂપ છે  
સોમ હે, યા ને જો, શોક- શોક શોક, અરતિ-ભેચ્છની  
બેચ્છની, મય- ભય મય, ઉદ્વેગ- તથા ઉદ્વેગને। एवं  
ઉદ્વેગકા, નાશિની નાશ કરનાર છે નાશ કરનેવાલી હે,  
મહાબલા ને મહાબલવાળી છે જો મહાન બલવાલી હે,  
યા ને જો, પ્રીતિઃ પ્રીતિ છે પ્રીતિ હે, યા ને જો,  
રતિઃ રતિ છે રતિ હે, યા ને જો, વાક્ વાણી છે વાણી  
હે, યા ને જો, પુષ્ટિઃ પુષ્ટિ છે પુષ્ટિ હે, યા ચ અને ને

ઔર જો, નિર્વૃત્તિઃ સુખરૂપ છે સુખરૂપ હે, યા ને જો,  
સુર- દેવ દેવ, અસુર- અસુર અસુર, ગન્ધર્વ અંધર્વ  
ગન્ધર્વ, યક્ષ- યક્ષ યક્ષ, રાક્ષસ- રાક્ષસ રાક્ષસ, માનુષૈઃ  
અને મનુષ્યોથી ઔર મનુષ્યોસે, રતિઃ રતિ રતિ, સુરા  
તથા સુરા ઔર સુરા, રતિ એ નામથી રતિ નામસે,  
અભિહિતા કહેવામાં આવે છે કહી જાતી હે, તામ્ તેને  
રતિ, સુરાન્ સુરાને સુરાકો વિધિના વિધિ પ્રમાણે  
વિધિપૂર્વક, પિવેત્ પીવી પીવે ॥ ૩-૧૦ ॥

3 10. Wine, that was greatly wors-  
hipped of old by the gods and their  
king that which was invited by the  
ritualist and established in the sacrifice  
called Sautramani, she that upholds  
the sacrifices, that by which devitalised  
Indra was uplifted from the impenet-  
rable gloom of faintness into which  
he had fallen owing to excessive addi-  
tion to soma, that which is worthy  
of being seen touched and mixed by  
holy men who offer sacrifices in the  
manner prescribed by the vedas, that  
which is derived from a variety of  
sources and yet has the one common  
quality of intoxication, that which  
endows the gods with choicest pros-  
perity in the form of ambrosia, the  
manes in the shape of 'Swadha' and  
the twice-born in the shape of 'Soma',  
that which is the splendour, might and  
the wisdom of the Aswin twins, that  
which is the power of Indra, that  
which is the 'Soma' prepared in the  
'Sautramani' sacrifice, that which is  
the destroyer of sorrow, unhappiness,  
fear and distress, which is powerful,  
and which itself turns into and causes  
love joy, speech and nourishment, and

beatitude, that which has been praised as the joyful wine by the gods, Gandharvas, Yakshas, Rakshasas and mortals, should be take : in the enjoined manner.

सुरापानविधिः—

शरीरकृतसंस्कारः शुचिकृत्तमगन्धवान् ।  
प्रावृतो निर्मलैर्वस्त्रैर्यत्तूहामगन्धिभिः ॥११॥  
विचित्रविविधस्रग्गी रत्नाभरणभूषितः ।  
देवद्विजातीन् संपूज्य स्तुष्ट्वा मङ्गलमुत्तमम् ॥१२॥  
देशे यथर्तुकै शस्ते कुसुमप्रकरीकृते ।  
सरसासंमते मुख्ये धूपसंमोदबोधिते ॥१३॥  
सोपधाने सुसंस्तीर्णे विहिते शयनासने ।  
उपविष्टोऽथवा तिर्यक् स्वशरीरमुखे स्थितः ॥१४॥  
सौवर्णे राक्षतैश्चापि तथा अणिमयैरपि ।  
भाजनैर्विमलैश्चान्यैः सुकृतैश्च पिबेत् सदा ॥१५॥  
रूपबौवनमस्ताभिः शिक्षिताभिर्विशेषतः ।  
वस्त्राभरणमाल्यैश्च भूषिताभिर्यथर्तुकैः ॥१६॥  
शौचानुरागयुक्ताभिः प्रमदाभिरितस्ततः ।  
संवाह्यमान इष्टाभिः पिबेन्मद्यमनुत्तमम् ॥१७॥  
मद्यानुकूलैर्विविधैः फलैर्हरितकैः शुभैः ।  
लवणैर्गन्धपिशुनैरवधंशैर्यथर्तुकैः ॥१८॥

११. प्रावृतो निर्मलैर्वस्त्रैर्यत्तूहामगन्धिभिः—उहामगन्धिभिर्वस्त्रैर्वि-

मलैर्विस्तरकृतैः (य व.)

१२. शस्ते कुसुमप्रकरीकृते—शुद्धे कुसुमप्रकरीकृते (य. व.)

१३. प्रकरीकृते—प्रसरीकृते (व.)

१४. सरसासंमते—संवाससंमते (व. ड. ब.)

१५. विमलैश्चान्यैः—विविधैश्चान्यैः (य.)

१६. रूपबौवन—स्त्रीभिर्यौवम (अ. ड.)

१७. विशेषतः—यथर्तुकैः (ख. ड.)

१८. यथर्तुकैः—विभूषितैः (ड.)

१९. संवाह्यमान इष्टाभिः—संवाह्यमाणमिष्टाभिः (य. व.)

२०. मद्यानुकूलैर्विविधैः—पिबेन्मद्यानुकूलैर्वा (ड. व.)

भूधैर्मासैर्बहुविधैर्भुजलाम्बरचारिण्यम् ।

पौरोगवर्गविहितैर्भक्ष्यैश्च विविधात्मकैः ॥१९॥

पूजयित्वा सुरान् पूर्वमाशिषः प्राक् प्रयुज्य च ।

प्रदाय सजले मद्यमर्थिभ्यो वसुधातले ॥२०॥

शरीर-कृत-संस्कारः स्नानं वजरे ६२२ शरीर-ने।

संस्कारं करी स्नान आदि द्वारा शरीरका संस्कार करके, शुचिः पवित्र यथ पवित्र होकर, उत्तम- अनुष्ठे उत्तम मनुष्य उत्तम, गन्धवान् यत्तूहाम वजरेतुं अनुष्ठेपन करी चन्दन आदिका अनुष्ठेपन कर, यथर्तु- ऋतु सुभय ऋतुके अनुकूल, उहाम- तीव्र तीव्र, गन्धिभिः गंधवानां गन्धोंसे युक्त, निर्मलैः निर्मल निर्मल, वस्त्रैः वस्त्रैः वस्त्रोंको, प्रावृतः षडेरी धारण किये हुए, विचित्र- विचित्र विचित्र, विविध- अने गुटी गुटी और विविध, स्रग्गी भागाओं। षडेरेख मङ्गलमें पहने हुए, रत्न- रत्न रत्न, आभरण- अने आभूषणों। और आभरणसे, भूषितः भूषित यथ भूषित होकर, देव- देव देव, द्विजातीन् अने आभूषणोंने और ब्राह्मण इनकी, संपूज्य पूज पूजा करके, उत्तमम् उत्तम उत्तम मङ्गलम् भङ्गल वस्तुओंने। मङ्गल वस्तुओंको, स्तुष्ट्वा स्तुष्ट करी स्पर्श करके, यथर्तुकै ऋतुने अनुष्ठेपन ऋतुके अनुकूल कुसुम- फूल फूल, प्रकरीकृते पाथरेख बिसरे हुए, सरसासंमते प्रियाओंने षष्ट प्रियाओंको इष्ट, धूप- धूपनी धूपकी, संमोद- मन्मथी मन्मथसे, बोधिते सुगन्धित भाविद, शस्ते प्रशस्त प्रशस्त, मुख्ये अने श्रेष्ठ और उत्तम, देशे प्रदेशभा देशमें, विहिते भूके। रक्खे हुए, सोपधाने उपधानयुक्त उपधावयुक्त, सुसंस्तीर्णे सारी रीते अच्छादेख अच्छी तरह बिलाने हुए,

१९. भूधैः—सृष्टेः (व.)

२०. पौरोगवर्गविहितैः—पौरोगवर्गैश्च विहितैः (व. फ.)

२१. विविधात्मकैः—विविधैश्च (फ.)

२०. पूजयित्वा सुरान् पूर्व-  
माशिषः प्राक् प्रयुज्य च  
प्रदाय सजले मद्य-  
मर्थिभ्यो वसुधातले ॥

पिबेत् संपूज्य विभुषा-  
नाशिषः संप्रयुज्य च ।  
प्रदाय यजनं चात्रे  
त्वर्थिभ्यः पृथिवीतले (व. फ.)

२१. पूजयित्वा सुरान् पूर्वमाशिषः प्राक् प्रयुज्य च—पिबेत् सुरां

पूजयित्वा सुराचार्यः प्रयुज्य च (य.)

२२. अर्थिभ्यः—आदित्ये (ख. ड.)

२३. —आदित्ये (झ.)



સ્વ- પોતાના અપને, શરીર- શરીરને શરીરનો, સુષ્કે સુખ પડે તેમ સુશ્વર્ણક, સ્વચ્છ- શયન ગદે, આસને અને આસન પર ઓર બેઠક પર, ઉપવિષ્ઠઃ ઘેસી બેઠકર, અથવા અથવા અથવા, તિર્યક્ આડા તિરછા, સ્થિતઃ પડીને રચકર, સૌવર્ણેઃ સુવર્ણનાં સુવર્ણકે. રાજતૈઃ ચ અપિ રૂપાનાં ચાંદીકે, તથા તથા તથા, મણિમયૈઃ અથિ મણિનાં સ્તનકે, સુકૃતૈઃ સારી રીતે બનાવેલ અઢી પ્રકાર બનાવે, અઢ્યૈઃ ધીમં અન્વ, વિમલૈઃ સ્વચ્છ સ્વચ્છ, માનવૈઃ ચ પાત્રો વડે વરતનોંઠે, સદા દરેરોજ સદા, પિવેત મધ પીવું પીવે, રૂપ- રૂપ રૂપ, ચૌવત્- અને ચૌવત્થી ઓર ચૌવત્સે, મત્તામિઃ મત મત, વિશેષતઃ વિશેષે કરી વિશેષ કરકે, શિક્ષિતામિઃ શિક્ષણ પામેલી શિક્ષિત, ચતુર્થકૈઃ ઋતુ અનુસાર ઋતુકે અનુસાર, વસ્ત્ર- વસ્ત્ર વસ્ત્ર, આભરણ- આભૂષણ આમૂષણ, માતૃચૈઃ ચ અને માતૃઓથી ઓર માતાઓસે, મૂષિતામિઃ ભૂષિત ભૂષિત, ઘૌચ- પવિત્રતા પવિત્રતા, અનુરાગ- અને પ્રેમથી ઓર અનુરાગસે, યુક્તામિઃ યુક્ત યુક્ત, દૃષ્ટામિઃ ઇષ્ટ ઇષ્ટ, પ્રમદામિઃ અપ્રેમથી સ્ત્રિઓસે, ઇતઃ અહીં ઇધર, તતઃ તહીં ઉધર, સંવાહ્યમાનઃ શરીર ચંપાનતાં અઢીકો દવાતે હુણ, પૂર્વમ્ પ્રથમ પહેલે, સુરામ્ દેવતાઓને દેવોનો, પૂજ્યસ્તિવા પૂજ્યને પૂજા કરકે, પ્રાક્ અને પ્રથમ ઓર પ્રથમ, આન્નિષઃ પ્રયુજ્ય ચ સ્વસ્તિવાચન કરાવી સ્વસ્તિ- વાચન કરાકે, વસુધાતલે પૃથ્વી ઉપર જમીન પર, અર્થિમ્યઃ અર્થિઓને અર્થિઓકે લિણ, સજલમ્ બલયુક્ત જલમિશ્ર, મધમ્ મધ મધ, પ્રદાવ આપીને દે કર, મદ્ય- મદ્યને મદ્યકે, અનુકૂલૈઃ અનુકૂળ અનુકૂલ, વિવિચૈઃ ભુદાં ભુદાં વિવિધ, શુભૈઃ શુભકારી શુભ, હરિતકૈઃ હરિત વર્ગનાં હરિત વર્ગકે, ફલૈઃ ફળોસહિત ફળોકે સાથ, ચતુર્થકૈઃ ઋતુને ઋતુચ ઋતુકે યોગ્ય, લવણૈઃ લવણ નમકીન, ગન્ધપિશુનૈઃ ગન્ધધૃત્યથી યુક્ત ગન્ધવહુલ, અવદંશો અવદંશસહિત ચટની આદિકે સાથ, સૂ- ભૂમિ ભૂમિ, જલ- બલ જલ, અમ્બર- અને આકાશમાં ઓર આકાશમે, ચારિણાશ્વ દરનાર પ્રાણીઓનાં ફિરેવાકે જીવોકે, વહુ વિધેઃ વિવિધ વિવિધ, મૃદૈઃ શેકેલાં મૂને, માંસેઃ માંસોસહિત માંસોકે સાથ, યૌરોગવર્મ- અને રસોધિઆ- યોધી ઓર દૂપશાસ્ત્ર પુરણોને, વિહિતઃ બનાવેલા બનાવે, વિવિધાત્મકૈઃ ભુદાં ભુદાં વિવિધ, સ્વચ્ચૈઃ બલ્યોસહિત

મધ્યોકે સાથ, અનુસમમ્ ઉત્તમ ઉત્તમ, મધ્યમ્ મધ્યમ, પિવેત પીવું પીવે ॥ ૧૧-૨૦ ॥

11-20. Having attended to the internal and external needs of the body and having bathed and painted himself with fragrant sandal, a person must wear clean clothing along with ornaments and fragrances suitable to the season. Then decking himself with garlands of variegated flowers and with jewels and ornaments, he should worship the gods and the brahmanas and touch the most auspicious articles. Seating himself comfortably in a sitting or lounging position on a well-made bed with pillows, in a spot scattered with flowers that are best suited to each season and fumigated with fragrant smoke, he should drink wine always in vessels of gold or silver or vessels set with precious stones or other vessels clean and well shaped. He should drink while being shampooed by clean, loving, beautiful, young and well trained women decked in fine clothes, jewels and flowers suitable to the season. He should eat while drinking, green fruits and salted fragrant flesh and other sauces agreeable to the wine and proper to the season, and the fried flesh of many kinds of creatures of the land, water and the air and many kinds of puddings made by expert cooks. He should drink, having before prayed to the gods and having first received their grace and



having poured the libations of wine on the earth mixed with water for the desiring spirits.

वासिकादीनां पानविधिः—

अभ्यङ्गोत्सादनस्नानवासोधूपानुलेपनैः ।

स्निग्धोष्णैर्भाविताश्चाग्नेर्वातिको मद्यमाचरेत् ॥२१॥

वातिकः वातिकः पुरुषे वातिक पुरुष, अभ्यङ्ग-  
अभ्यङ्ग अभ्यङ्ग, उत्सादन-उत्सादन उत्सादन, स्नान-  
स्नान स्नान, वासः-वासः वस्त्र, धूप-धूपन धूप,  
अनुलेपनैः-अने अनुलेपनथी सुशोभित यत् और  
अनुलेपनसे सुशोभित हो कर, स्निग्ध-तथा स्निग्ध तथा  
स्निग्ध, उष्णैः-अने उष्ण और उष्ण, अग्नैः-च  
अग्नौ अग्निका, भावितः भावने भोजन करके, मद्यम्  
मद्य मद्य, आचरेत् पीवुं पीवे ॥२१॥

21. The person of the vata habi-  
tus should take inunction, oil-massage  
and bath, and put on good raiment,  
treat himself to fragrant smoke and  
paint himself with sandal paste  
and should take the food prepared  
with unctuous and hot articles; after  
that he should drink wine.

शीतोपचारैर्विविधैर्मधुरस्निग्धशीतलैः ।

पैत्तिको भाविताश्चाग्नेः पिबन्मद्यं न सीदति ॥२२॥

पैत्तिकः पैत्तिकः पुरुषने पैत्तिक पुरुषको, विविधैः  
विभिन्न विविध, शीतोपचारैः शीतल उपचाराथी शीतल  
उपचारोंसे, मधुर-मधुर मधुर, स्निग्ध-स्निग्ध स्निग्ध,  
शीतलैः-अने शीतल और शीतल, अग्नैः-च अग्नौ  
अग्नौसे, भावितः भावने करीने भोजन करके, मद्यम्  
मद्य मद्य, पिबन् पीता पीते हुए, न सीदति हानि  
थती नथी हानि नहीं होती ॥ २२ ॥

22. If the person with the pitta  
habitus after treating himself to

२१. वातिको मद्यमाचरेत्-पिबन्मद्यं न सीदति (घ.)

various cooling things such as bath  
etc, and eating food consisting of sweet,  
unctuous and cooling articles, takes  
wine, it will not impair his health.

उपचारैरशिशिरैर्यवगोधूमभुक् पिबेत् ।

शैष्मिको घन्वजैर्मांसैर्मद्यं मारिचकैः सह ॥२३॥

अशिशिरैः उष्ण उष्ण, उपचारैः उपचाराथी युक्त  
यत् उपचारोंसे भावित, यव-यव जौ, गोधूम-अने  
गोधूम और गेहूँ, भुक् भोजन करनार खानेवाला,  
शैष्मिकः शैष्मिक पुरुषे कफप्रकृति पुरुष, मारिचकैः  
मरीची संस्कृत मरिचसे संस्कृत, घन्वजैः जंगल  
आणीमोनां जंगल जीवोंके, मांसैः मांस मांसोंके, सह  
साथे साथ, मद्यम् मद्य मद्य, पिबेत् पीवुं पीवे ॥२३॥

23. The person of the kapha  
habitus living on food prepared of  
barley and wheat should treat himself  
to hot things and take the flesh of  
jungle animals prepared with black  
pepper and then take wine.

विविधैस्तुमतामेष भविष्यद्विभवाश्च ये ।

यथोपपत्तिं तैर्मद्यं पातव्यं मात्रया हितम् ॥२४॥

वस्तुमताम् धनाढ्योनां धनाढ्योंके लिए, एषः-आ  
यह, विधिः विधि छे विधि है, ये च-अने-अने और  
जो, भविष्यद्-विभवाः भविष्यद् धनाढ्य भवाना होय  
भविष्यमें वैभवयुक्त होनेवाले हों, तैः-तैः तैः उनको,  
हितम् हितकरी हितकर, मद्यम् मद्य मद्य, यथोपपत्तिं  
यथावत् स्थिति अनुसार अपनी स्थितिके अनुसार,  
मात्रया मात्राभा मात्रापूर्वक, पातव्यम् पीवुं पीना  
चाहिए ॥ २४ ॥

24. This is the procedure of drink-  
ing in the case of rich people and those

२३. मारिचकैः-मारिचकैः (त.)

२४. भविष्यद्विभवाश्च-भविष्यद्भवश्च (फ.)

२. यथोपपत्तिं तैर्मद्यं-यथोपपत्तिं मद्यम् (घ.)

who are on the path to riches should treat themselves to things that are available according to their circumstances and should drink wine in wholesome doses.

वातिकेभ्यो हितं मद्यं प्रायो गौडिकपैष्टिकम् ।  
कफपित्ताधिकेभ्यस्तु माद्वीकं माधवं च यत् ॥२५॥

वातिकेभ्यः वातप्रधान पुरुषेभ्यो वातप्रबल पुरुषोंके लिए, प्रायः शङ्खुं करी प्रायः, गौडिक- जोलनुं भक्ष्य शुष्का मद्य, पैष्टिकम् तथा द्रोणुं भक्ष्य तथा आटेका मद्य, कफपित्ताधिकेभ्यः अने कक्षपित्ताधिकेने भाटे और कफपित्तप्रबल पुरुषोंके लिए, तु ते। तो, यत् ने जो, माद्वीकम् च द्राक्षानुं अङ्गूरोंका, माधवम् अने भधनुं और शहदका, मद्यम् भक्ष्य भे ते मद्य है वह, हितम् हित करनार भे हितकर है ॥ २५ ॥

25. For persons of vata habitus, generally the wine prepared of gur and flour is wholesome; while the persons with kapha-cum-pitta habitus should take grape-wine or honey-wine.

विधिवेवितमद्यगुणः—

बहुद्रव्यं बहुगुणं बहुकर्म मदात्मकम् ।  
गुणैर्दोषैश्च तन्मद्यमुभयं चोपलक्ष्यते ॥२६॥

बहुद्रव्यम् अहु द्रव्यमर्थी भनार बहुत द्रव्योंसे बनेवाला, बहुगुणम् अहु गुणवान् बहुत गुणयुक्त, बहुकर्म अहु काम करनार बहुत कार्य करनेवाला, मदात्मकम् च अने मद्य करनार और मद करनेवाला, तत् ते वह, मद्यम् भक्ष्य मद्य, गुणैः गुण गुण, दोषैः च अने दोषो वडे और दोषोंसे, उभयम् ये प्रकटनुं अर्थात् गुणयुक्त अने दोषयुक्त दो प्रकारका अर्थात् गुणकर और दोषकर, उपलक्ष्यते हेभाय भे देखा जाता है ॥२६॥

२५. माद्वीकं माधवं च यत्—फाकमाधवशर्करम् (क.ख. ड. त.)

२६. बहुकर्म मदात्मकम्—बहुकर्मप्रदात्मकम् (क.)

,, उभयं चोपलक्ष्यते—उभयैव उपलक्ष्यते (क.)

26. Wine is prepared from various substances and possesses various qualities. It has various actions on the body. It is intoxicating in nature. Hence it should be viewed from the point of view of both its good as well as its evil effects.

विधिना मात्रया काले हितैरन्नैर्यथाबलम् ।  
प्रहृष्टो यः पिबेन्मद्यं तस्य स्वादमृतं यथा ॥२७॥

यः ने जो, प्रहृष्टः प्रहृष्ट पुरुष, प्रहृष्ट पुरुष, काले योग्य कालमें, विधिना विधि प्रभावे विधिसे, मात्रया मात्रामां मात्रामें, यथाबलम् अणु मुण्ण बलके अनुसार, हितैः हितकर हितकर, अन्नैः अन्ना साधे अन्नोंके साथ, मद्यम् भक्ष्य मद्य, पिबेत् पीये भे पीता है, तस्य तेने भाटे उसके लिए, अमृतम् यथा ते अभूत समान वह अमृतके सदृश, स्वाद भाय भे होता है ॥ २७ ॥

27. If a person takes it in right manner, in right dose, in right time and along with wholesome food, in keeping with his vitality and with a cheerful mind, to him, wine is like ambrosia.

आविधिपीतमद्यदोषाः—

यथोपेतं पुनर्मद्यं प्रसङ्गाद्येन पीयते ।  
रूक्षव्यायामनित्येन विषवद्याति तस्य तत् ॥२८॥

रूक्ष- रूक्ष द्रव्य रूक्ष द्रव्य, व्यायाम- अने व्यायामनुं और व्यायामका, नित्येन नित्य सेवन करनार पुरुष नित्य सेवन करनेवाला पुरुष, वेन ने जो, पुनः वणी फिर, यथोपेतम् नेतुं भगे तेतुं जैसा मिले वैसा, मद्यम् भक्ष्य मद्य, प्रसङ्गात् अतिशय अतिशय, पीयते पीये भे पीता है तस्य तेने भाटे उसके लिए, तत् ते वह, विषवत् विषसमान विषके सदृश, याति भाय भे हो जाता है ॥ २८ ॥

28. While to a person who drinks whatever kind comes in hand to him

and whenever he gets an opportunity and whose body is dry on account of constant exertion, this very wine acts as a poison.

मद्यस्य दशगुणाः तेषां कर्माणि च—

मद्यं हृदयमाविश्य खगुणैरोजसो गुणान् ।  
दशभिर्दश संक्षोभ्य चेतो नयति विक्रियाम् ॥२९॥

मद्यं भव मद्य, हृदयम् हृदयम् हृदयम्, आविश्य पेसीने प्रविष्ट हो कर, दशभिः स्वगुणैः पोतान् दश गुणैः पडे अपने दस गुणोंसे, ओजसः ओजसो ओजके, दश दश दश, गुणान् गुणैः गुणोंको, संक्षोभ्य संक्षुब्ध करीने क्षुब्ध करके चेतः चित्तने चित्तको, विक्रियाम् विकृत विकृत, नयति भ्रमादे छे बनाता है ॥ २९ ॥

29 Alcohol reaching the brain disturbs all the ten qualities of the vital essence by its ten-fold nature of action and thus leads to the derangement of the mind (protoplasmic poison).

लघुगुणतीक्ष्णसूक्ष्माम्लव्यवाय्याशुगमेव च ।  
रूक्षं विकाशि विशदं मद्यं दशगुणं स्मृतम् ॥३०॥

मद्यम् मद्यने मद्यको, लघु- लघु लघु, दृग्ण- दृग्ण, तीक्ष्ण- तीक्ष्ण तीक्ष्ण सूक्ष्म- सूक्ष्म सूक्ष्म, अम्ल- अम्ल अम्ल, व्यवायि- व्यवायी व्यवायी, आशुगम आशुकारी शीघ्र क्रिया करनेवाला, रूक्षम् रूक्ष रूक्ष, विकाशि विकाशी विकाशी, विशदम् च एव अने विशद और विशद, दशगुणम् ओ दश गुणोंको इन दस गुणोंसे युक्त, स्मृतम् मान्युं छे माना है ॥ ३० ॥

30. They are—lightness, heat, acuteness, subtleness, acidity, diffusiveness, quickness, dryness expansive-

ness and limpidness. These are described to be the ten qualities of alcohol.

गुरु शीतं मृदु श्लक्ष्णं बहलं मधुरं स्थिरम् ।  
प्रसन्नं पिच्छिलं स्निग्धमोजो दशगुणं स्मृतम् ॥३१॥

ओजः ओज ओजको, गुरु गुरु गुरु, शीतम् शीत शीत, मृदु मृदु मृदु, श्लक्ष्णम् श्लक्ष्ण श्लक्ष्ण, बहलम् बहल बहल, मधुरम् मधुर मधुर स्थिरम् स्थिर स्थिर, प्रसन्नम् प्रसन्न प्रसन्न पिच्छिलम् पिच्छिल पिच्छिल, स्निग्धम् अने स्निग्ध और स्निग्ध, दशगुणम् ओ दश गुणोंको इन दस गुणोंसे युक्त, स्मृतम् मान्युं छे माना है ॥ ३१ ॥

31. While heaviness, coldness, softness, smoothness, denseness, sweetness, fixity, clearness, viscosity and unctuousness are laid down as the ten qualities of vital essence.

गुरुत्वं लाघवाच्छैत्यमौष्ण्यादम्लस्वभावतः ।  
माधुर्यं मार्दवं तैक्ष्ण्यात्प्रसादं चाशुभावनात् ॥३२॥  
रौक्ष्यात् स्नेहं व्यवायित्वात् स्थिरत्वं श्लक्ष्णतामपि ।  
विकासिभावात्पिच्छिल्यं वैशद्यात्सान्द्रतां तथा ॥३३॥  
सौक्ष्म्यान्मद्यं निहन्त्येवमोजसः खगुणैर्गुणान् ।  
सत्त्वं तदाश्रयं चाशु संक्षोभ्य जनयेन्मदम् ॥३४॥

लाघवात् लघुताथी लघुतासे, गुरुत्वं गुरुतासे, शैत्यम् शीत- ताने शीतलताको, अम्ल- अम्ल अम्ल, स्वभावतः स्वभावथी स्वभावसे, माधुर्यम् मधुरतासे मधुरताको, तैक्ष्ण्यात् तीक्ष्णताथी तीक्ष्णतासे, मार्दवं मृदुतासे मृदुताको, आशुभावनात् च आशुकारी होवाथी आशु- कारी होनेसे, प्रसादम् प्रसादने प्रसादको, रौक्ष्यात् रूक्षताथी रूक्षतासे, स्नेहम् स्नेहने स्नेहको, व्यवायित्वात् व्यवायी होवाथी व्यवायी होनेसे, स्थिरत्वं स्थिरतासे स्थिरताको, विकासिभावात् विकाशी होवाथी विकाशी

३०. लघुगुणतीक्ष्णसूक्ष्माम्लव्यवाय्याशुगमेव च-लघुनस्वस्य

तीक्ष्णाम्लव्यवाय्याशुगमेव च (ध.)

३२. गुरुत्वं-गौरवं (फ.)

३४. जनयेत्-कुरुते (फ. म.)

होनेसे, श्लक्ष्णताम् अपि श्लक्ष्ण्यताने श्लक्ष्णताको, वैषाद्यान् विशदताधी विशदतासे, पैच्छिल्यम् पिच्छिल-  
ताने पिच्छिलताको, तथा तथा तथा सौक्ष्म्यान् सूक्ष्म-  
ताधी सूक्ष्मतासे, सान्द्रताम् सान्द्रताने सान्द्रताको,  
एवम् औम इस प्रकार, मद्यम् मद्य मद्य, स्वगुणैः  
प्रेताना गुणैः। वरे अपने गुणोंसे, ओजसः औजस औजके,  
गुणान् गुणाने गुणोंको, सिहन्ति हन्ते छे नष्ट करता है,  
सर्वान् च मनने सर्वको, तदाश्रयम् अने औजस आश्रय  
हृदये और ओजके आश्रय हृदयको, आशु शीघ्र शीघ्र,  
संक्षोभ्य संक्षोभ पमाडीने क्षुब्ध करके, मदम् मद्य  
मद्य, जनयेत् पैदा करे छे उत्पन्न करता है ॥ ३२-३४ ॥

32-34. Heaviness is destroyed by  
lightness, coldness by heat, sweetness by  
acidity, softness by acuteness, clearness  
by quickness, unctuousness by dryness,  
fixity by diffusiveness, smoothness by  
expansiveness, viscidness by limpidness  
and density by subtleness. Thus  
alcohol by its characteristic actions  
destroys the ten qualities of the vital  
essence. It acts as a protoplasmic  
poison. As a result, alcohol agitates  
the mind, and its foundation, namely,  
the heart (brain), and quickly produces  
intoxication.

रसवातादिमार्गानां सत्त्वबुद्धीन्द्रियात्मनाम् ।  
प्रधानस्यौजसश्चैव हृदयं स्थानमुच्यते ॥३५॥

हृदयम् हृदय हृदय, रस- रस रस, वात- अने  
वातादिना और वातादिके, मार्गानां मार्गानां मार्गोंका,  
सत्त्व- मन मन, बुद्धि- बुद्धि बुद्धि, इन्द्रिय- इन्द्रियो  
इन्द्रिय, आत्मनाम् तथा आत्मानां और आत्माका,  
प्रधानस्य अने श्रेष्ठ और श्रेष्ठ, ओजसः च एव औजस  
ओजका, स्थानम् स्थान स्थान, उच्यते उच्यते छे कहा  
जाता है।

३५. वातादि-वातादि (ड. व. फ.)

,, ,, -रसादि (त.)

35. The heart is considered to be  
the seat of the circulatory channels  
of the body-nutrient fluid, the vata  
and other humors and of the mind,  
intellect and the senses, as also of the  
vital essence.

अतिपीतेन मद्येन विहतेनौजसा च तद् ।

हृदयं याति विकृतिं तत्रस्था ये च धातवः ॥३६॥

अतिपीतेन अतिशय पीये अतिशय अधिक मात्रामें पीये  
हुए, मद्येन मद्येन मद्यसे, विहतेन अविहते अविहते,  
ओजसा च औजसा ओजसे, तद् ते वह, हृदयम्  
हृदय हृदय, विकृतिम् विकृति विकृति, याति पाये छे  
पाना है, तत्रस्थाः अने त्यां रहें और उसमें स्थित,  
ये च ते जो, धातवः धातुओ होय छे तेओ पण विकृत  
थाय छे धातुएं हैं वे भी विकृत हो जाती हैं ॥ ३६ ॥

36. By excessive use of alcohol  
and the resulting impairment of the  
vital essence, the brain becomes dis-  
ordered along with the body-elements  
situated there.

ओजस्यविहते पूर्वो हृदि च प्रतिबोधिते ।

मध्यमो विहतेऽल्पे च विहते तूत्तमो मदः ॥३७॥

ओजसि औज ओजके, अविहते विकृत न थाता  
विकृत न होने पर, हृदि च अने हृदय और हृदयके,  
प्रतिबोधिते प्रतिबोधित थाता जागृत होने पर, पूर्वः  
प्रथम मद्य प्रथम मद्य, अल्पे च अल्प अल्प, विहते  
विधात थाता विकृत होने पर, मध्यमः मध्यम मद्य  
(पीओ मद्य) मध्यम मद्य (दूसरा मद्य), विहते अने संपूर्ण  
विधात थाता और पूर्णरूपमें विकृत होने पर तु तो  
तो, उत्तमः उत्तम (तीओ) अन्तिम (तीसरा), मदः मद्य  
थाय छे मद्य होता है ॥ ३७ ॥

37. In the first stage of intoxica-  
tion the vital essence is not affected but  
the mind becomes stimulated. In the

३६. अतिपीतेन-अतिशीतेन (व.)

याति विकृति-विकृतं याति (व.)

second stage, the vital essence is slightly affected and in the third stage it is completely affected.

नैवं विघातं जनयेन्मद्यं पैष्टिकमोजसः ।

विकारिशूक्ष्मविशदा गुणास्तत्र हि नोऽस्वणाः ॥३८॥

पैष्टिकम् क्षौद्रं आटेका, मद्यम् मद्यं मद्यं, एवम् उद्देष्टा प्रकाशं उक्तं प्रकाशं, ओजसः ओजसो ओजसा, विघातम् नाश नाश, न नशी नशी, जनयेत् करुणं उत्पन्न करता, हि कारुण्ये कर्माणि, तत्र तेभ्यो उत्पन्नं, विकारि-विशदा विकारि, शूक्ष्म-शूक्ष्म शूक्ष्म, विशदाः अने निशदा और विशदा, गुणाः शुभो गुण, उऽस्वणाः तीव्र तीव्र, न हेतु नशी नहीं होते ॥ ३८ ॥

38. The wine prepared from flour does not produce much impairment of the vital essence, because the qualities of expansiveness, dryness and clearness are not in it in a pronounced degree.

मदलक्षणम्—

हृदि मद्यगुणाविष्टे हर्षस्तर्षो रतिः सुखम् ।

विकाराश्च यथासत्त्वं चित्रा राजसतामसाः ॥३९॥

जायन्ते मोहनिद्रान्ता मद्यस्यातिनिषेवणात् ।

स मद्यविभ्रमो नाम्ना 'मद' इत्यभिधीयते ॥४०॥

मद्यस्य मद्यना मद्यके, अतिनिषेवणात् अति सेवनशी अधिक सेवनसे, हृदि हृदयम् हृदयम्, मद्य-मद्यना मद्यके, गुण-शुभो गुण, आविष्टे द्रव्यं यथा प्रविष्ट होने पर, हर्षः हर्षं हर्षं, तर्षः अभिलाषा अभिलाषा, रतिः रति रति, सुखम् सुखं सुखं, यथासत्त्वं तथा मन अनुसार तथा मनके अनुसार, मोहनिद्रान्ताः अने मोहनिद्राभा अन्त पाभनारा और मोहनिद्रामे अन्त पानेवाले, चित्राः शुभं शुभं भिन्न भिन्न, राजस-राजस राजस, तामसाः च अथवा तामस और तामस, विकाराः विकारि विकार, जायन्ते थाय्ये होते हैं, सः ते वह, मद्य-मद्यजनित

मद्यजनित, विभ्रमः भ्रम भ्रम, मदः मद मद, इति ओ इस, नाम्ना नामशी नामसे, अभिधीयते उद्देष्टा ओ कहा जाता है ॥ ३९-४० ॥

39-40 When the brain is affected by the action of alcohol, there will result exhilaration, ardent desire, exultation, sense of happiness and various kinds of changes according to the psychic make-up of the person and according to its rajasic or tamasic qualities. Owing to excessive use of alcohol, stupor terminating in narcosis is produced. This is the delusion caused by wine and is known as alcoholic intoxication.

मदस्य त्रयो भेदाः तेषां लक्षणानि च—

पीयमानस्य मद्यस्य विज्ञातव्यास्तयो मदाः ।

प्रथमो मध्यमोऽन्त्यश्च लक्षणैस्तान् प्रचक्ष्महे ॥४१॥

पीयमानस्य पीयता विद्ये हुए, मद्यस्य मद्यना मद्यके, प्रथमः प्रथम प्रथम, मध्यमः मध्यम मध्यम, अन्त्यः च अने अन्त्य ओ और अन्त्य ये, त्रयः त्रय तीन, मदाः मद मद, विज्ञातव्याः अज्ञेय जानने चाहिए, तान् तेओने इनको, लक्षणैः लक्षणैः लक्षणोंसे, प्रचक्ष्महे उद्देष्टा ओ कहते हैं ॥ ४१ ॥

41. Three stages of intoxication are observed in a person who drinks wine: the first, the middle or the second and the last or the third. We shall describe the characteristics of each of them.

प्रहर्षणः प्रीतिकरः पानाश्रगुणदर्शकः ।

वाद्यगीतप्रहासानां कथानां च प्रवर्तकः ॥४२॥

न च बुद्धिस्मृतिहरो विषयेषु न चाक्षमः ।

सुखनिद्राप्रबोधश्च प्रथमः सुखदो मदः ॥४३॥

३८. जनयेत्-करुते (फ.)

४०. मोहनिद्रान्ता-मोहनिद्रातां (ड. न.)

४१. प्रचक्ष्महे-प्रवक्ष्यते (ड. न.)

४२. वाद्य-पाठ (र.)

प्रथमः प्रथम प्रथम, मदः भद मद, प्रहर्षणः हर्ष  
 ४२ना२ हर्षको बढ़ानेवाला, प्रीतिकरः प्रीति ४२ना२  
 प्रीति करनेवाला, पान- पान पान, अन्न- अने अन्नना  
 और भोजनके, गुण- गुणोने। गुणोंको, दर्शकः दर्शक  
 दिखानेवाला, वाद्य- वाद्य वाद्य, गीत- गीत गीत,  
 प्रहासानाम् हास्य हास्य, कथानाम् च अने कथाओंको  
 और कथाओंकी, प्रवर्तकः प्रवर्तक होय छे प्रवृत्ति  
 करानेवाला होता है, बुद्धि- बुद्धि बुद्धि, स्मृति- तथा  
 स्मृतिने और स्मृतिहा, हरः च ४२ना२ नाशक, न  
 नथी नहीं है, विषयेषु विषयेषां विषयोंके भोगमें,  
 अक्षमः च असमर्थ ४२ना२ असमर्थ करनेवाला, न  
 नथी नहीं है, सुख- तथा सुभेथे एवं सुखसे, निद्रा-  
 निद्रा निद्रा, प्रबोधः तथा अगृति ४२ना२ तथा जागृति  
 करनेवाला, सुखदः च अने सुखदाता छे और सुखदाता  
 है ॥ ४२-४३ ॥

42-43. It produces exhilaration, delight, a finer discrimination of the qualities of food and drink, desire for music, song, jokes and stories. It does not impair the intellect or memory, and causes no incapacity for sense pleasures. It promotes sound sleep as well as happy awakening. This is the first and the happy stage of alcoholic effects.

मुहुः स्मृतिर्मुहुर्मोहोऽव्यक्ता सज्जति वाङ्मुहुः ।  
 युक्तायुक्तप्रलापश्च प्रचलायनमेव च ॥४४॥

स्थानपानान्नसांकथ्ययोजना सविपर्यया ।  
 लिङ्गान्येतानि जानीयादाबिष्टे मध्यमे मदे ॥४५॥

मध्यमे मध्यम मध्यम मदे ४४भा मदर्में, आविष्टे  
 प्रवेश भती प्रविष्ट होने पर, मुहुः धीकभा क्षणमें,  
 स्मृतिः स्मृति स्मृति, मुहुः धीकभा क्षणमें, मोहः  
 मोह मोह, मुहुः धीकभा क्षणमें, अव्यक्ता वाक् अस्पष्ट  
 वाणी अस्पष्ट वाणी, सज्जति तेभ्य वाङ्मूनि अटकी

४४. मोहोऽव्यक्ता-व्यक्ताऽव्यक्ता च (घ.)

॥ प्रचलायनमेव-प्रपलायनमेव च (ख. फ.)

७५ एवं वाणीकी रुकावट, युक्त- योग्य योग्य, अयुक्त- अने  
 अयोग्य और अयोग्य, प्रलापः च अक्षवाह प्रलाप, प्रचला-  
 यनम् च एव अक्षर आवर्त चक्र आना, सविपर्यया तथा  
 विपरीततासहित तथा विपर्ययके साथ, स्थान- स्थान  
 स्थान, पान- पान पान, अन्न- भोजन भोजन, सांकथ्य-  
 अने बातचीतनी और वार्तालापकी, योजना योजना  
 योजना, एतानि ये इन, लिङ्गानि लक्षणोंको,  
 जानीयाव आखुवा जाने ॥ ४४-४५ ॥

44-45 Fitful recollection, fitful forgetfulness, frequent indistinct, thick and laryngeal speech, indiscriminate talk, unsteady gait, impropriety in sitting, drinking, eating, and conversation—these are to be known as the symptoms of the second stage of alcoholic effects.

मध्यमं मदमुत्क्रम्य मदमाप्राप्य चोत्तमम् ।  
 न किञ्चिन्नाशुभं कुर्युर्नरा राजसतामसाः ॥४६॥

राजस- राजस राजस, तामसाः अने तामस और  
 तामस, नराः पुरुषो पुरुष, मध्यमम् मध्यम मध्यम,  
 मदम् मदम् मदको, उत्क्रम्य उल्लंघन करी लांघकर,  
 उत्तमम् उल्लंघन अन्त्य, मदम् च भदने मदको, आप्राप्य  
 प्राप्त भती प्राप्त होकर, किञ्चित् केवुं केहि पक्ष ऐसा  
 कोई सी, अशुभम् अशुभ अशुभ, न नथी नहीं है, कुर्युः  
 के तेओ करे जो वे करते, न नहि नहीं ॥ ४६ ॥

46. After transcending the second stage and before reaching the last stage, there is no impropriety which persons of the rajasic and tamasic nature will not commit.

को मदं तादृशं विद्वानुन्मादमिव दारुणम् ।  
 गच्छेद्धवान्मस्वन्तं बहुदोषमिवाध्वगः ॥४७॥

अस्वन्तम् दुःप्रकर अन्तर्वाणी दुःस्वकारक अन्त-  
 वाले, बहुदोषम् अहु दोषवाणी बहुत दोषयुक्त,

४६. मदमाप्राप्य-मदमाप्राप्य (घ)

अध्वानम् भर्गे मार्ग पर, अध्वगः भुसाक्ष सुसाफिर, इव जेम जेतो नथी तेम ते दृष्टांत लघु जैसे नहीं जाता वैसे उस दृष्टांतको लेकर, उन्मादम् उन्माद उन्माद, इव जेवा जैसे, दारुणम् दारुण दारुण, मदम् भदने मदको, कः कथे कौन, विद्वान् सभञ्जु भनुष्य विद्वान् मनुष्य, गच्छेत् प्राप्त करे? अर्थात् प्राप्त न करे प्राप्त करे? अर्थात् प्राप्त न करे ॥ ४७ ॥

47. Which wise man would ever wish to be intoxicated to an extent which is as frightful as insanity even as no traveller will select a road which leads to an unhappy end and which is beset with many troubles?

तृतीयं तु मदं प्राप्य भग्नदार्ढ्यं निष्क्रियः ।  
मदमोहावृतमना जीवन्नपि मृतैः समः ॥ ४८ ॥

तृतीयम् तृतीय तृतीय, मदम् भदने मदको, तु तो, प्राप्य प्राप्त करीने प्राप्त करके, भग्न-भाग्य कटे हुए, दारु दारुणी लकड़की, इव पेठे भांति, निष्क्रियः निष्क्रिय निष्क्रिय, मद-भद मद, मोह-तथा मोहभी और मोहसे, आवृत-आवृत आवृत, मनाः मनवाला भनुष्य मनवाला मनुष्य, जीवन् जिवते जीवित, अपि छता पक्षु होने पर भी, मृतैः भरेवा भनुष्ये मृत मनुष्योंके, समः जेवा छे सदृश है ॥ ४८ ॥

48. Having reached the third stage of intoxication, he becomes paralysed like a felled tree with his mind submerged in intoxication and stupor, and though alive, resembles a dead man.

रमणीयान् स विषयान्न वेत्ति न सुहृज्जनम् ।  
यदर्थं पीयते मद्यं रतिं तां च न विन्दति ॥ ४९ ॥

सः ते वह, रमणीयान् आनन्ददायक आनन्द-दायक, विषयान् विषयाने विषयोंको, न नथी नहीं,

वेत्ति अक्षुते। पहिचानता, सुहृज्जनम् मित्रेने पक्षु मित्रोंको भी, न नथी अक्षुते। नहीं जानता, यदर्थम् जेनी पक्षुथी जिसकी मतलबसे, मद्यम् भदने मद्यको, पीयते पीये छे पीता है, ताम् ते उस, रतिम् च सुभने पक्षु सुखको भी, न नथी नहीं, विन्दति भेजवते। प्राप्त करता ॥ ४९ ॥

49. He does not discriminate or recognise either the qualities of things or his friends. He does not possess even a sense of his own happiness for the very sake of which alcohol is drunk.

कार्याकार्यं सुखं दुःखं लोके वद्विहितम् ।  
यदवस्थो न जानाति कोऽवस्थां तां ब्रजेद्विचः ॥ ५० ॥

वद्विचः जे अवस्थामां रही भनुष्य जिस अवस्थामें रह कर मनुष्य, लोके संसारमां संचारमें, कार्य-कार्य कार्य, अकार्यम् अकार्य अकार्य, सुखम् सुभ सुख, दुःखम् दुःख दुःख, यत् च अने जे और जो, द्वित-द्वित द्वित, अद्वितम् तथा अद्वित तथा अद्वित, न नथी नहीं, जानाति अक्षुते। जानता, ताम् ते उस, अवस्थाम् अवस्थाने अवस्थामें, कः कथे कौन, बुधः अक्षु पुरुष बुद्धिमान, ब्रजेत् प्राप्त करे? जायेगा? ॥ ५० ॥

50. Which wise man would like to attain that state in which he cannot discriminate between what ought to be done and what ought not to be done, between pleasure and pain and between what is good and what is evil in the world?

स दूष्यः सर्वभूतानां निन्द्याप्राज्ञ एव च ।  
व्यसन्ति त्वादुर्दके च स दुःखं व्याधिमश्नुते ॥ ५१ ॥

सः ते वह, सर्वभूतानाम् सर्व प्राणीओंने सब प्राणियोंका, दूष्यः दोषकर्ता दोषकर्ता, निन्द्याः च निन्द्या निन्द्या, अप्राज्ञः च एव अने अप्राज्ञ भय छे और

५१. दूष्यः—दूष्यः (ब.)

” ” —दूष्यः (फ.)

४८. मदमोह-बहुमोह (ब.)



मग्राह्य होता है, सः ते वह, व्यसनित्वात् व्यसनी-  
पक्षुने दीर्घे व्यसनी होनेसे, उदके परिक्षुभभां परि-  
गममे, दुःखम् दुःखकारि दुःखकर, व्याधिम् च व्याधि  
व्याधि, अश्रुते भेजवे छे प्राप्त करता है ॥ ५१ ॥

51. On account of his addiction,  
he is condemned and censured by all  
people and is regarded an unworthy  
man by them, and he later on devel-  
ops painful diseases as a result of  
his addiction.

मद्यदोषाः—

प्रेत्य चेह च यच्छ्रेयः श्रेयो मोक्षे च यत् परम् ।  
मनःसमाधौ तत् सर्वप्रायत्तं सर्वदेहिनाम् ॥ ५२ ॥

सर्वदेहिनाम् प्राणीमात्रं सब प्राणिनोके लिए,  
प्रेत्य च जन्मान्तरभां जन्मान्तरमें, इह च अने आ  
दोषभां और इस लोकमें, यत् ने जो, श्रेयः श्रेय छे  
श्रेय है, मोक्षे च तथा मोक्षभां एवं मोक्षमें, यत् ने  
जो, परम् श्रेष्ठ श्रेष्ठ, श्रेयः दुःखाशु छे कल्याण है,  
तत् ते वह. सर्वम् सर्व सब, मनःसमाधौ मननी  
समाधिने मनकी समाधिको, आयत्तम् आधीन छे  
अधीन है ॥ ५२ ॥

52. For all men all that which is  
contributive of well-being in this life  
and the other, and happiness in that  
higher life of liberation, is established  
in the perfect tranquility of mind.

मद्येन मनसश्चास्य संक्षोभः क्रियते महान् ।  
महामारुतवेगेन तटस्थस्येव शाखिनः ॥ ५३ ॥

महामारुतवेगेन नेम वायुना महान वेगशी जैसे  
वायुके बड़े वेगसे, तटस्थस्य किनारे उपर रहेछ किनारे  
पर स्थित, शाखिनः आउने वृक्षको, इव महान क्षोभ  
क्षोभभां आवे छे तेम महान क्षोभ किया जाना है  
वैसे, मद्येन मद्यशी मद्यसे, अस्य आना इसके, मनसः  
मनने मनमें, महान् महान महान, संक्षोभः च संक्षोभ  
संक्षोभ, क्रियते करवाभां आवे छे किया जाता है ॥ ५३ ॥

53. Wine causes great agitation to  
such a tranquil mind, like the strong  
wind that shakes the trees on a bank.

मद्यप्रसङ्गं तं चाज्ञा महादोषं महागदम् ।  
सुखमित्यधिगच्छन्ति रजोभोहपराजिताः ॥ ५४ ॥

रजः- रजोगुण रज, मोह- तथा मोहशी तथा मोहसे,  
पराजिताः पराजित पाभेक्ष पराजित, अज्ञाः अज्ञानीशी  
मूर्खलोग, महादोषम् महादोषभां महादोषयुक्त, महा-  
गदम् महारोगरूप महारोगरूप, तत् च ते वह. मद्य-  
प्रसङ्गम् मद्यप्रसंगने मद्यसेवनको, सुखम् सुख छे  
सुख देनेवाला है, इति ऐम ऐसा, अधिगच्छन्ति भाने छे  
समझते हैं ॥ ५४ ॥

54. Ignorant men who are addicted  
to and are blinded by intoxication and  
overcome by passion and ignorance, con-  
sider the intoxicated state which is a  
greatly morbid and diseased condition,  
to be a state of happiness.

मद्योपहतविज्ञाना वियुक्ताः सात्त्विकैर्गुणैः ।  
श्रेयोभिर्विप्रयुज्यन्ते मदान्धा मदलालसाः ॥ ५५ ॥

मद्य- मद्यशी मद्यसे, उपहत- नष्ट नष्ट, विज्ञानाः  
ज्ञानवाला ज्ञानवाले, सात्त्विकैः सात्त्विक सात्त्विक, गुणैः  
गुणशी गुणसे, वियुक्ताः रहित रहित, मदान्धाः मदान्ध  
मदान्ध, मदलालसाः अने मदना वास्यु दोषा और  
मदके लोभी लोग, श्रेयोभिः दुःखाशुशी कल्याणसे,  
विप्रयुज्यन्ते विप्रयुज्य ५३ छे अलग हो जाते हैं ॥ ५५ ॥

55. These men enslaved and blinded  
by alcoholism, are deprived of wisdom  
and sattwic qualities and are lost to all  
goodness.

मद्ये मोहो भयं शोकः क्रोधो मृत्युश्च संश्रितः ।  
सोन्मादमदमूर्च्छायाः सापसारापतानकाः ॥ ५६ ॥

५४ चाज्ञा-ज्ञात्वा (इ. त. फ. ब.)

,, पराजिताः-परायणाः (य. फ.)

मद्ये भयम् भयम्, सोन्मादः उन्मादः उन्मादः, मदः भयं मदः, मूर्च्छायाः मूर्च्छा मूर्च्छा, सापसार-  
अपस्मारः अपस्मारः, अपतानकाः अने अपतानक और  
अपतानक, मोहः मोहः मोहः, भयम् भयं भयं, शोकः  
शोकः शोकः, क्रोधः क्रोधः क्रोधः, मृत्युः च अने मृत्यु  
और मृत्यु, संश्रितः रहेल छे आश्रित हैं ॥ ५६ ॥

56. Wine is also the cause of great delusion, fear, grief, anger and death as well as insanity, toxicosis, fainting, epilepsy and convulsions.

यत्रैकः स्मृतिविभ्रंशस्तत्र सर्वमसाधुवत् ।

इत्येवं मद्यदोषज्ञा मद्यं गर्हन्ति यत्नतः ॥ ५७ ॥

यत्र जहाँ जहाँ, एक एक एक, स्मृतिविभ्रंशः  
स्मृतिविभ्रंश छे स्मृतिविभ्रंश है, तत्र तहाँ वहाँ, सर्वम्  
अधुं सब कुछ, असाधुवत् अशुभ जेवुं छे बुरासा ही  
है, इति एवम् ऐम् इस प्रकार, मद्य- मद्यना मद्यके,  
दोषज्ञाः दोष अज्ञाना दोषोंको जाननेवाले पुरुष,  
यत्नतः यत्नपूर्वक यत्नपूर्वक, मद्यम् मद्यने मद्यको,  
गर्हन्ति निंदा छे निंदा मानते हैं ॥ ५७ ॥

57. When a man is deprived of his very memory, then everything that follows upon it, is necessarily evil. Thus those who know the evils of drink, condemn the habit of drink strongly.

सत्यमेते महादोषा मद्यस्योक्ता न संशयः ।

अहितस्यातिमात्रस्य पीतस्य विधिवर्जितम् ॥ ५८ ॥

अहितस्य अहितकर अहितकर, अतिमात्रस्य अति-  
मात्राम् अतिमात्रामें, विधिवर्जितम् तथा विधिरहित  
तथा विधिको छोड़कर, पीतस्य पीयेला पिये हुए, मद्यस्य  
मद्यना मद्यके, सत्यम् सत्येसाथ वास्तवमें, एते ऐ वे,

५७. असाधुवत्-असाधुवत् (ब.)

५. गर्हन्ति-निन्दन्ति (ड. थ. ब.)

५. यत्नतः-तत्पराः (ड.)

५८. विधिवर्जितम्-विधिवर्जनम् (ड.)

महादोषाः महादोषो महादोष, उक्ताः उक्ता छे कहे हैं,  
संशयः ऐम् संशय इसमें संशय, न नहीं नहीं है ॥ ५८ ॥

58. True and undoubted indeed are these great evil effects described about wine, if it is unwholesome or taken in excess or taken disregarding the prescribed regulations.

मद्यस्य स्वभावोक्तस्तुल्यत्वम्—

किंतु मद्यं स्वभावेन यथेवात्रं तथा स्मृतम् ।

अयुक्तियुक्तं रोगाय युक्तियुक्तं यथाऽस्मृतम् ॥ ५९ ॥

किंतु परंतु परन्तु मद्यम् मद्य मद्य, स्वभावेन  
एव स्वभावही स्वभावसे ही, यथा जेवुं जैसा,  
अत्रम् अत्र छे अत्र है, तथा तेवुं वैसा ही,  
स्मृतम् उक्तुं छे कहा गया है, अयुक्ति-अयोग्य रीति  
अयोग्य रूपमें, युक्तम् उपरान्त प्रयुक्त होने पर, रोगाय  
रोगने भाटे छे रोगके लिए है, युक्ति-अने योग्य रीति  
और युक्तिपूर्वक, युक्तम् उपरान्त प्रयुक्त होने पर,  
अस्मृतम् अस्मृत अस्मृतके, यथा जेवुं छे समान है ॥ ५९ ॥

59. But wine, by nature, is regarded similar to food in its effects. It is productive of disease if taken in improper manner, and is like ambrosia if taken in proper manner.

प्राणाः प्राणभृतामन्नं तदयुक्त्या निहन्त्यसूत्र ।

विषं प्राणहरं तच्च युक्तियुक्तं रसायनम् ॥ ६० ॥

अन्नम् अन्न अन्न, प्राणभृताम् प्राणभृताम् प्राणियोंके,  
प्राणाः प्राण छे प्राण हैं, अयुक्त्या परंतु अयोग्य  
रीति सेवन करवाही परंतु युक्तिविरुद्ध सेवनसे, तत्  
ते वह. अन्नम् प्राणुना प्राणोंको, निहन्ति नाश करे छे  
नष्ट करता है, विषम् जेभके विष जेहेकि विष, प्राण-  
हरम् प्राणनाशक छे प्राणहर है, युक्ति- परंतु युक्ति-  
पूर्वक परंतु युक्तिपूर्वक, युक्तम् योग्य प्रयुक्त, तत् च  
ते वह रसायनम् रसायनरूप छे रसायनरूप है ॥ ६० ॥

60. Food, which is the life of living creatures, if taken in improper manner

destroys life, and even poison, which by nature is destructive of life, if taken in proper manner, acts as an elixir.

युक्तिपीतमद्यगुणाः —

हर्षमूर्जे मुदं पुष्टिमारोग्यं पौरुषं परम् ।

युक्त्या पीतं करोत्याशु मद्यं सुखमदप्रदम् ॥६१॥

युक्त्या युक्तिपूर्वकं युक्तिपूर्वक, पीतम् पीयेद्य पिया हुआ, सुख- सुभ सुखकर, मद्य- मद्य मद, प्रदम् आपनार देनेवाला, मद्यम् मद्य मद्य, हर्षम् हर्ष हर्ष, ऊर्जम् उत्साह उत्साह, मुदम् संतोष संतोष, पुष्टिम् पुष्टि पुष्टि, आरोग्यम् आरोग्य आरोग्य, परम् अने परम् और श्रेष्ठ, पौरुषम् पौरुष पौरुषको, आशु शीघ्र शीघ्र, करोति उत्पन्न करेता है ॥ ६१ ॥

61. Wine taken in proper manner soon gives exhilaration, courage, delight, strength, health, great manliness and joyous intoxication.

रोचनं दीपनं हृद्यं स्वरवर्णप्रसादनम् ।

प्रीणनं बृंहणं बल्यं भयशोकभ्रमापहम् ॥६२॥

स्वापनं नष्टनिद्राणां मूकानां वाग्विबोधनम् ।

बोधनं चातिनिद्राणां विबन्धानां विबन्धनुत् ॥६३॥

वधबन्धपरिक्लेशदुःखानां चाप्यबोधनम् ।

मद्योत्थानां च रोगाणां मद्यमेव प्रबाधकम् ॥६४॥

रोचनम् मद्य रुचि करनार मद्य रुचिकारक, दीपनम् दीपन दीपन, हृद्यम् हृद्य हृद्य, स्वर- स्वर स्वर, वर्ण- अने वर्णने और वर्ण, प्रसादनम् प्रसाद करनार

६१. हर्षमूर्जे मुदं-हर्षमूर्ज्यामुदम् (घ.)

परम्-बलम् (घ.)

सुखमदप्रदम्-मद्यसुखावहम् (घ.)

मदसुखावहम् (छ.)

६३. वाग्विबोधनम्-वाक्यबोधनम् (फ.)

६४. चाप्यबोधनम्-चाप्यबोधनम् (क.)

प्रबाधकम्-प्रसाधकम् (झ.)

प्रबाधकम् (घ.)

बढ़ानेवाला, प्रीणनम् प्रीणन प्रीणन, बृंहणम् बृंहण बृंहण, बल्यम् बल्य बल्य, भय- भय भय, शोक- शोक शोक, भ्रम- भ्रम भ्रम, भ्रमभ्रम और भ्रमका, अपहम् नाशक छे नाशक है, नष्टनिद्राणां नष्टनिद्रा ने निद्रा न आवती होय जोवा अनुष्ठाने नींद न आनेवालोंके लिए, स्वापनम् छे स्वप्न स्वप्न नींद लानेवाला, मूकानाम् मूकानाम् मूकोंके लिए, वाक्- वाक् वाक् वाक्, विबोधनम् विबोधन विबोधन, विबन्धानाम् विबन्धानाम् विबन्धन विबन्धन, विबन्धनुत् विबन्धनुत् विबन्धन विबन्धन, विबन्धन विबन्धन, परिक्लेश- परिक्लेश परिक्लेश, दुःखानाम् च तथा दुःखानाम् और दुःखोंका, अपि पक्षु मी, विबोधनम् अनुभव थावा न देनेार छे अनुभव न होने देनेवाला है, मद्यम् च मद्य मद्य और मद्य ही, मद्योत्थानाम् मद्योत्थानाम् मद्यजनित, रोगाणाम् रोगाणाम् रोगोंका, प्रबाधकम् नाशक छे नाशक है ॥ ६२-६४ ॥

62 64. It is an appetiser, digestive-stimulant, cordial, promoter of voice and complexion and is nourishing, roborant and strengthening. It relieves fear, grief and fatigue. It acts as a soporific to those suffering from insomnia and as a stimulant of speech in reticent people. It keeps awake people given to excess of sleep and relieves obstruction in the body-passages, renders the mind unconscious of the pain of trauma, ligature and other kinds of pain and suffering. It acts as a cure for the disorders resulting from alcoholism.

रतिविषयसंयोगे प्रीतिसंयोगवर्धनम् ।

अपि प्रवयसां मद्यमुत्सवामोदकारकम् ॥६५॥

६५. संयोगे-संयोग (ग.)

संयोगवर्धनम्-सौभाग्यवर्धनम् (फ व.)

मद्यम् मद्य मद्य रतिः आनन्दं छे आनन्द है, विषय-संयोगे अने विषय-संयोगमा और विषयोपभोगमें, प्रीति- प्रीति प्रीति, संयोग- तथा संयोगने तथा संयोगको, वर्धनम् वर्धनम् छे बढ़ानेवाला है, प्रवयसाश्च तेभ्यः वृद्धोने वृद्धोको, अपि पशु भी. उत्सव- उत्सव उत्सव, आमोद- अने आनन्द और आनन्द, कारकम् करानेवाला छे करानेवाला है ॥ ६५ ॥

65. It increases the enjoyment of sense-pleasures and the desire for the continuance of such pleasures Even to the very aged alcohol gives elation and delight.

पञ्चस्वर्थेषु कान्तेषु या रतिः प्रथमे मदे ।  
यूनां वा स्थविराणां वा तस्य नास्त्युपमा भुवि ६६

यूनाश्च वा युवानो युवकोंको, स्थविराणाम् वा छे वृद्धोने अथवा वृद्धोको, प्रथमे प्रथम प्रथम, मदे मदमा मदमें, कान्तेषु काम्येषु, पञ्चसु पांचे पांचों, अर्थेषु अर्थेषु विषयोंमें, या जे जा, रतिः आनन्द आवे छे आनन्द आता है, तस्य तेनो उसके लिए, उपमा उपमा उपमा, भुवि पृथ्वीमा पृथ्वीमें, न अस्ति नथी नहीं है ॥ ६६ ॥

66. There is nothing comparable on earth to the delight derived, during the first stage of alcoholic effects, from the perceptions of the five senses in the case of either the young or the aged.

बहुदुःखहतस्यास्य शोकेनोपहतस्य च ।  
विधामो जीवलोकस्य मद्यं युक्त्या निषेवितम् ॥ ६७ ॥

युक्त्या युक्तिपूर्वक युक्तिपूर्वक, निषेवितम् सेवेतुं सेवित, मद्यम् मद्य मद्य, बहु- बहु बहुत, दुःख- दुःखी दुःखसे हतस्य दुःखी दुःखी. शोकेन च अने शोकथी और शोकसे, उपहतस्य दुःखी पीड़ित अस्य आ इस.

६६. कान्तेषु-काम्येषु (फ)

६७. हतस्यास्य-हतस्यास्य (व.)

जीवलोकस्य उपलक्षणं जीवलोकके लिए विश्रामः विश्रामस्थान छे विश्रामस्थान है ॥ ६७ ॥

67. Alcohol, taken in the proper way, is a relaxation for all people afflicted with a multitude of sufferings and sorrow.

अन्नपानवयोव्याधिवलकालत्रिकाणि षट् ।  
श्रोत्रदोषास्त्रिविधं सत्त्वं ज्ञात्वा मद्यं पिबेत्सदा ॥ ६८ ॥

षट् छ छः, अन्नपान- अन्नपान अन्नपान, वयः- उमर वय व्याधि- व्याधि व्याधि, बल- अण बल, काल- अने कालना और कालके, त्रिकाणि त्रिक त्रिक, त्रीन् त्रिन् तीन, दोषान् दोष दोष, त्रिविधम् तथा त्रिन् प्रकारना एवं तीन प्रकारके, सत्त्वं सत्त्वंने सत्त्वको, ज्ञात्वा अणुने जानकर, सदा सर्वदा हमेशा, मद्यम् मद्य मद्य, पिबेत् पीवुं पीवे ॥ ६८ ॥

68. One should take wine keeping always in view the three-fold classification in each of the six things—food, drink, age, disease, vitality and season as well as the triad of morbid humors and the triad of the psychic types.

तेषां त्रिकाणामष्टानां योजना युक्तिरुच्यते ।  
यया युक्त्या पिवन्मद्यं मद्यदोषैर्न युज्यते ॥ ६९ ॥

तेषाम् ते उन, अष्टानाम् आठे आठ. त्रिकाणाम् त्रिकाणी त्रिकोंकी, योजना योजना योजना, युक्तिः युक्ति युक्ति, उच्यते उच्यते छे कही जाती है, यया जे जित, युक्त्या युक्तिथी युक्तिसे, मद्यम् मद्य मद्य, पिवन् पीते। अनुप्य पीता हुआ अनुप्य, मद्य- मद्यना मद्यके, दोषैः दोषैथी दोषोंसे, न युज्यते जोडती नथी युक्त नहीं होता ॥ ६९ ॥

69. The correlating of the triads of these eight factors is known as the proper mode, and the use of alcohol taken in such proper mode is never attended with the evil effects of drinking.

मद्यस्य च गुणान् सर्वान् यथोक्तान् स समश्नुते ।  
धर्मार्थयोरपीडाया नरः सत्त्वगुणोच्छ्रितः ॥७०॥

सत्त्वगुण- सत्त्वगुणानी सत्त्वगुणकी, उच्छ्रितः प्रधान-  
तावाणी। प्रधानतावाला, सः ते वह नरः मनुष्य मनुष्य,  
धर्मार्थयोः धर्म और अर्थनी धर्म और अर्थका  
अपीडायाँ हानि बिना पीड़न न करते हुए, मद्यस्य च  
मद्यना मद्यके, सर्वान् सर्व सब, यथोक्तान् यथोक्त  
यथोक्त, गुणान् गुणों। गुणोंको, समश्नुते भेजवे छे प्राप्त  
करता है ॥ ७० ॥

70. On the contrary, the person  
enjoys all the good effects ascribed to  
drinking, and without endangering  
his virtue or wealth, he obtains the  
exalted state of the mind.

सत्त्वानि तु प्रबुध्यन्ते प्रायशः प्रथमे मदे ।  
द्वितीयेऽव्यक्ततां यान्ति मध्ये चोत्तममभ्ययोः ७१

प्रथमे प्रथम प्रथम, मदे मदमाँ मदमें, सत्त्वानि  
मन मन, तु तो तो, प्रायशः धष्टुं करी प्रायः,  
प्रबुध्यन्ते उद्वेग पाभे छे उल्लसित होते हैं, द्वितीये  
पीछे मदमाँ दूसरे मदमें, अव्यक्तताम् नरा व्यक्त-  
पक्षाने थोड़ी व्यक्तताको, यान्ति पाभे छे पाते हैं,  
उत्तमभ्ययोः मध्ये च त्रीन तथा पीछे मदमाँ संधिमाँ  
संपूर्ण व्यक्तपक्षाने पाभे छे अने त्रीन मदमाँ तो  
सर्वथा अव्यक्तपक्षाने पाभे छे तीसरे तथा दूसरे  
मदकी सन्धिमें संपूर्ण अव्यक्तताको पाते हैं और तीसरे  
मदमें तो सर्वथा अव्यक्तताको पाते हैं ॥ ७१ ॥

71. Generally, in the first stage of  
intoxication, mental faculties get stimu-  
lated. In the second stage, the real  
nature of the man is slightly revealed  
and in between the second and the  
third, it is fully revealed.

७१. मध्ये-मदे (त. फ.)

मद्यस्य प्रकृतिदर्शकत्वम्—

सस्यसंबोधकं वर्षं, हेमप्रकृतिदर्शकः ।

हुताशः, सर्वसत्त्वानां मद्यं तूभयकारकम् ॥७२॥

वर्षं वर्ष १२५६ वर्षा, सस्य- अनामने अन्नको,  
संबोधकम् उगाडनार छे उगानेवाली है, हुताशः अग्नि  
अग्नि, हेम- रेतानाणी सुवर्णकी, प्रकृति- प्रकृति प्रकृति,  
दर्शकः देखाडनार छे दिखानेवाली है, मद्यम् अने मद्य  
और मद्य, तु तो तो, सर्वसत्त्वानाम् अन्नानि भोजनानि  
सब प्रकारके मनोमें, उभय- ओओने अग्रत करवाँ तथा  
ओओने गुणाने दर्शववा ओ ओ कार्यने उनको जाग्रत  
करना और उनके गुणोंको दर्शाना इन दोनों कार्यको,  
कारकम् करनार छे करनेवाला है ॥ ७२ ॥

72. As rain stimulates the growth  
of crops and fire reveals the quality  
of gold, similarly drink produces both  
these effects on the minds of men.

प्रधानावरमध्यानां रूपाणां व्यक्तिदर्शकः ।

यथाऽग्निरेवं सत्त्वानां मद्यं प्रकृतिदर्शकम् ॥७३॥

यथा अग्नि जैसे, अग्निः अग्नि अग्नि, प्रधान- अन्न  
अन्न, अवर- कनिष्ठ कनिष्ठ, मध्यानाम् अने मध्यम  
और मध्यम, रूपाणाम् इत्येने रूपोंको, व्यक्ति-दर्शकः  
स्पष्ट दर्शानार छे स्पष्ट बतानेवाला है, एवम् तेभ  
वैसे, मद्यम् मद्य मद्य, सत्त्वानाम् सत्त्वानी सत्त्वकी,  
प्रकृति- प्रकृति प्रकृति, दर्शकम् अतावनार छे दिखानेवाला  
है ॥ ७३ ॥

73. Just as fire reveals the high,  
medium and low quality of gold

७२. सस्य-सत्त्व (ख. झ.)

॥ सस्यसंबोधकं-सत्त्वसंबोधकम् (ब.)

॥ सस्यसंबोधकं वर्षं हेमप्रकृतिदर्शकः- सत्त्वसंबोधकं हर्षमोह-  
प्रकृतिदर्शकम् (ङ)

॥ हेमप्रकृति लोहप्रकृति (घ)

॥ दर्शकः-दर्शनः (च.)

॥ तूभयकारकम्-भूतापकारकम् (घ.)

७३. रूपाणाम्-वक्त्राणां (ब. झ.)

similarly drink reveals the true quality of the mind concerned.

सात्त्विक-राजस-तामसानामापानानां लक्षणानि—

सुगन्धिमाख्यगन्धर्व सुप्रणीतमनाकुलम् ।

मिष्टान्नपानविशदं सदा मधुरसंकथम् ॥७३॥

सुखप्रपानं सुमदं हर्षप्रीतिविवर्धनम् ।

स्वन्तं सात्त्विकमापानं न चोत्तममदप्रदम् ॥७५॥

सुगन्धि- सुगन्धित सुगन्धयुक्त, आख्य- भाषा माला, गन्धर्व अने गायनयुक्त एवं संगीतके साथ, सुप्रणीत अरि रीति अनावेक्ष अच्छी तरह बनाया, अनाकुलम् ग्रीरदी विनाशुं सीधसे रहित, मिष्ट- मीठा मीठे, अन्नपान- अन्नपानन्दी अन्नपानकी, विशदम् विशदतावाणुं विशदतासे युक्त, सदा सर्वदा निरन्तर, मधुर- मधुर मधुर, संकथम् वातावाणुं कथायोंके साथ, सुखप्रपानम् सुखप्रपानवाणुं पीनेमें सुखकर, सुमदम् सारा मद्य उत्पन्न करनेपर अच्छे मद्यको करनेवाला, हर्ष- हर्ष हर्ष, प्रीति- तथा प्रीति और प्रीति, विवर्धनम् वधरनर बढ़ानेवाला, स्वन्तम् सारा अन्तवाणुं अच्छा अन्तवाला, न च उत्तममदप्रदम् अने छेला मद्यने नहि करनेपर मद्यपान और अन्तिम मद्यको नहीं करनेवाला मद्यपान, सात्त्विकम् सात्त्विक, आपानम् मद्यपान उहेवाय छे मद्यपान कहाता है ॥ ७४-७५ ॥

74-75. That is the Sattvic manner of drinking where it is drunk after adorning oneself with fragrant flower-garlands and to the accompaniment of song, where the wine has been properly prepared and pure, and taken along with delicious and clean foods and drinks, which is drunk always to the

accompaniment of delightful conversation, which is taken in happy mood, which is attended with a healthy sense of exaltation and which increases cheerfulness and love, which has a happy termination and which does not lead to the extreme stage of intoxication.

वैगुण्यं सहसा यान्ति मद्यदोषैर्न सात्त्विकाः ।  
मद्यं हि बलवत्सत्त्वं गृह्णाति सहसा न तु ॥७६॥

सात्त्विकाः सात्त्विक बोझे सात्त्विक लोग, मद्य- मद्यना मद्यके, दोषैः दोषो वडे दोषोंद्वारा, वैगुण्यम् (वयुष्टुता) विगुणताको, सहसा ओकदमसे, न यान्ति पाभता नहीं प्राप्त नहीं होते, हि उरखुडे क्योंकि, मद्यम् मद्य मद्य, बलवत् अणवान बलवान, सत्त्वं मनने मनको, तु तो तो, सहसा ओकदमसे, न गृह्णाति अहलु करतुं नहीं ग्रहण नहीं करता ॥७६॥

76. The people of Sattvic temperament are not immediately subject to the morbid effects of intoxication Wine cannot quickly impair the quality of a strong mind.

सौम्यासौम्यकथाप्रायं विशदाविशदं क्षणम् ।

चित्रं राजसमापानं प्रायेणास्वन्तकाकुलम् ॥७७॥

सौम्य- सौम्य सौम्य, असौम्य- अने असौम्य और असौम्य, कथाप्रायम् कथायुक्त कथायुक्त, क्षणम् क्षणमा क्षणमें, विशद- प्रसन्नता प्रसन्नता, अविशदम् अने अप्रसन्नतायुक्त और अप्रसन्नतायुक्त, चित्रम् विचित्र विचित्र, प्रायेण अहलु करी प्रायः, अस्वन्तक- परित्यागमा दुःख आपनार अन्तमें दुःख देनेवाला, आकुलम् अने बीडवाणुं मद्यपान और मीडवाला मद्यपान, राजसम्

७३. मद्यदोषैर्न—मद्ययोगाच्च (फ.)

, मद्यं हि बलवत्सत्त्वं गृह्णाति सहसा न तु—सहसा न तु

गृह्णाति मद्यः सत्त्वबलाधिक्य (क.)

, —सहसा नावगृह्णाति मद्यं सत्त्वबलाधिक्य (ब.क.)

७७. क्षणात्-क्षणे (फ.)

७४ सदा मधुरसंकथम्—सदा मधुरसंकरम् (फ.)

७५. सुखप्रपानं सुमदं—सुखपानं सुमदं च (ब.)

, —सुखप्रमाणं सुमदं (ब.)

, स्वन्तं—स्वतुं (त. द. फ.)

રાજસ રાજસ, આપાનમ્ મધપાન કહેવાય છે મધપાન કહાતા હૈ ॥ ૭૭ ॥

77. That is the Rajasic manner of drinking which causes speech that is partly gentle and partly rude, partly distinct and partly indistinct and varying every moment in its nature and is incoherent and generally ending in an unhappy condition.

હર્ષપ્રીતિકથાપેતમતુષ્ઠ પાનભોજને ।

સંમોહક્રોધનિદ્રાન્તમાપાનં તામસં સ્મૃતમ્ ॥૭૮॥

હર્ષ- હર્ષ હર્ષ, પ્રીતિ- તથા પ્રીતિની ઔર પ્રીતિકી, કથા- કથાથી કથાસે, અપેતમ્ રહિત રહિત, પાન- પાન પાન, ભોજને તથા ભોજનમાં એવં ભોજનમે, અતુષ્ટમ્ અસંતુષ્ટ અસંતુષ્ટ, સંમોહ- મોહ મોહ ક્રોધ- ક્રોધ ક્રોધ, નિદ્રાન્તમ્ અને નિદ્રામાં અંત પામનારું મધપાન ઔર નિદ્રામે અન્ત પાનેવાલા મધપાન, તામસમ્ તામસ તામસ, આપાનમ્ મધપાન મધપાન, સ્મૃતમ્ કહેવાય છે કહાતા હૈ ॥ ૭૮ ॥

78. That is regarded as the Tamasic manner of drinking wherein speech that is not characterised by cheerfulness and affection is indulged, where there is no satisfaction in the food and drink taken, and which terminates in delusion, passion and sleep.

મધપાને સુખાઃ સહાયાઃ —

આપાને સાત્વિકાન્ લુહ્યા તથા રાજસતામસાન્ ।

જહ્યાત્સહાયાન્ ચૈઃ પીત્વા મધદોષાનુશ્ચુતે ॥૭૯॥

આપાને મધપાનમાં મધપાનમે, સાત્વિકાન્ સાત્વિક શરિવક, તથા રાજસ- રાજસ રાજસ, તામસાન્ અને તામસ ઔર તામસકો, લુહ્યા બહીને જાનકર, ચૈઃ જેની જિનકે, સહ સાથે સાંચ, પીત્વા પીવાથી પાન કરનેસે,

મધ- મધના મધકે, દોષાન્ દોષો દોષકો, ઉપાશુતે પ્રાપ્ત કરે છે પ્રાપ્ત હોતા હૈ, સહાયાન્ તે સાથીઓને ડન સાથિયોંકો, જહ્યાત્ છેડી દેવા છોડ દેવે ॥ ૭૯ ॥

79. It is therefore that a man should recognise, among those given to drink, the men of the Sattvic type by means of the aforesaid characteristics and avoid the company of the Rajasic and Tamasic types so as to avert the risk of the morbid effects of drinking after their manner.

સુખશીલાઃ સુસંભાષાઃ સુમુખાઃ સંમતાઃ સતામ્ ।

કલાસ્વવાહ્યા વિશદા વિષયપ્રવણાશ્ચ ચે ॥૮૦॥

પરસ્પરવિધેયા ચે ચેષામૈક્યં સુહૃત્ત્વા ।

પ્રહર્ષપ્રીતિમાધુર્યૈરપાનં વર્ધયન્તિ ચે ॥૮૧॥

ઉત્સવાદુત્સવતરં ચેષામન્યોન્યદર્શનમ્ ।

તે સહાયાઃ સુખાઃ પાને તૈઃ પિબન્સહ મોદતે ॥૮૨॥

ચે જે જો, સુખશીલાઃ સુખકર આચરણવાળા સુખકર આચરણવાળે, સુસંભાષાઃ સારું બોલનાર મધુર-ભાષી, સુમુખાઃ પ્રસન્ન સુખવાળા પ્રસન્ન મુખવાળે, સતામ્ સન્નિબોધી સજનોસે, સંમતાઃ પ્રશંસિત પ્રશંસિત, કલાસુ કલાઓ કલાઓંકો, અવાહ્યાઃ બહુનાર જાનને-વાળે, વિશદાઃ નિર્મળ નિર્મલ, વિષય- તેમજ વિષયમાં એવં વિષયમે, પ્રવણાઃ ચ તત્પર હોય તત્પર હૈ, ચે જે જો, પરસ્પર- પરસ્પરનું એક દુમરેકા, વિધેયાઃ કહું કરનાર કહા માનનેવાળે, સુહૃત્ત્વા મિત્રતાથી મિત્રતાકે કારણ, ચેષામ્ જેઓનું જિનમે, એક્યમ્ એક્ય હોય છે એક્ય હૈ, ચે જેઓ જો. પ્રહર્ષ- હર્ષ હર્ષ, પ્રીતિ- પ્રીતિ પ્રીતિ, માધુર્યૈઃ અને મધુરતાથી ઔર મધુરતાસે, આપાનમ્ મધપાનને મધપાનકો, વર્ધયન્તિ વધારે છે વધાતે હૈ, ચેષામ્ જેઓમાં જિનમે, અન્યોન્ય- પરસ્પરનું એક દુમરેકો, દર્શનમ્ દર્શન દેખના, ઉત્સવાત્ ઉત્સવથી પણ ઉત્સવસે મી, ઉત્સવતરં વધારે ઉત્સવને પ્રસંગ અને છે અધિક ઉત્સવ બનતા હૈ, તે તે વે, સહાયાઃ



साथीओ साथी, पाने मद्यपानमा मद्यपानमें, सुखाः सुभङ्गाः २५ थोय छे सुखकर होते हैं, तेः सह तेओ साथे उनके साथ, पिबन् मद्य पीते। मनुष्य मद्य पीता हुआ मनुष्य, मोदते आनन्द पाये छे आनन्दित होते हैं ॥८०-८१॥

80-82. The men of excellent character, those that are pleasant of speech, that are amiable in expression, that are applauded by the good, that are not unversed in the arts, that are clean of heart and quick in the grasp of things, those that are mutually helpful and whose coming together is out of sincere friendship, who enhance the pleasure of drinking by their joy, affection and sweetness of manner and the seeing whom causes mutual increase of joyous spirits—such men indeed make happy companions at drink, for, drinking in their company one enjoys delight.

रूपगन्धरसस्पर्शैः शब्दैश्चापि मनोरमैः ।

पिबन्ति सुसहाया ये ते वै सुकृतिभिः समाः ॥८३॥

पञ्चभिर्विषयैरिष्टैरुपेतैर्मनसः प्रियैः ।

देशे काले पिबेन्मद्यं प्रहृष्टेनान्तरात्मना ॥८४॥

वे जेओ जो, सुसहायाः सारा साथीओनी साथे भेसीने अच्छे साथियोंके साथ बैठकर, रूप- ३५ रूप, गन्ध- २५ गन्ध, रस- २५ रस, स्पर्शः २५ स्पर्श, मनोरमैः अने मनोहर और मनोरम, शब्दैः च अपि शब्दैः सहित वचनोंके साथ, पिबन्ति मद्य पीये छे मद्य पीते हैं, ते वै तेओ वे, सुकृतिभिः पुण्यशाली पुण्यवानोंके, समाः सरभा छे समान हैं, उपेतैः प्राप्त थयेवा प्राप्त हुए, मनसः मनने मनके, प्रियैः प्रिय प्रिय, इष्टैः तथा छष्ट एवं इष्ट, पञ्चभिः पांचे पांचों, विषयैः विषयोथी श्रुत धर्त विषयोंसे युक्त होकर, प्रहृष्टेन प्रसन्न प्रसन्न, अन्तरात्मना अतथी चित्तसे, देशे प्रशस्त देशमा प्रशस्त देशमें, काले तथा तथा

८४. रिष्टैरुपेतैर्मनसः-रिष्टैरुपेतो मनसः (ज. ब. फ.)

प्रशस्त देशमा तथा प्रशस्त कालमें, मद्यम् मद्य मद्य, विषयं पीवुं पीवे ॥ ८३-८४ ॥

83-84. They indeed are equal to the most blessed of men who drink in the company of such good friends while enjoying the pleasures of lovely objects of the five senses of sight, smell, taste, touch and hearing and paying due heed to the circumstances of place and time and with a joyous heart.

के विषय के च शीघ्र मानन्ति—

स्थिरस्त्वशरीरा ये पूर्वाज्ञा मद्यपान्वयाः ।

बहुमद्योच्छिता ये च साद्यन्ति सहसा न ते ॥८५॥

वे जेओ जो, स्थिर- स्थिर स्थिर, स्त्व- मन् मन, शरीराः अने शरीरवाला होय छे और शरीरवाले होते हैं, मद्यप- मद्य पीनारना मद्य पीनेवालोंके अन्वयाः वंशज होय छे वंशज होते हैं, पूर्वाज्ञाः मद्यपान पहलेवा जेओ बोझन करता होय छे मद्यपानके पहले जो भोजन करते हैं, ये च अने जेओ और जो, बहु- बहुत, मद्य- मद्यना मद्य पीनेके, उच्छिताः अभ्यासी होय छे अभ्यासी होते हैं, ते तेओने वे सहसा अकस्मात् एकदमसे, न साद्यन्ति न भव्यन्ते नथी मदाक्रान्त नहीं होते ॥८५॥

85. Those who are strong of mind and body, those who are habituated to drink after their meals, those who have inherited the habit of drinking and those that have by practice got habituated to large doses of drink, do not get quickly intoxicated.

क्षुत्पिपासापरीताश्च दुर्बला वातपैत्तिकाः ।

रूक्षास्वप्नमिताहारा विष्टब्धाः सत्त्वदुर्बलाः ॥८६॥

८५. पूर्वाज्ञा-पुराणा (ख. ड. त. ब.)

८६. क्षुत्पिपासापरीताश्च-प्राक्पिपासाः क्षुत्पिपासाः (ज. ड. ब. फ.)

,, विष्टब्धाः-विमृष्टाः (घ. ज.)

क्रोधिनाऽनुचिताः क्षीणाः परिश्रान्ता मदक्षताः ।  
स्वरूपेनापि मदं शीघ्रं यान्ति मद्येन मानवाः ॥८७॥

ध्रुव- भूय ध्रुवा, पिपासा- तथा तरसथी और  
प्याससे, परीताः घेरायेला पीड़ित दुर्बलाः दुर्बल दुर्बल,  
वातपैतिकाः वातपित्तप्रधान भ्रूतिवाणा वातपित्त-  
प्रधान प्रकृतिवाले, रुक्ष- रूक्ष रुक्ष, अल्प- अल्प अल्प,  
प्रमित- तथा प्रमित तथा प्रमित, आहाराः कोजन  
करनार भोजन करनेवाले, विष्टवाः विष्टभवाणा विष्टम्भ-  
वाले, सखदुर्बलाः नभणा भनवाणा दुर्बल दिलवाले,  
क्रोधिनाः क्रोधी क्रोधी, अनुचिताः मद्यना अभ्यास विनाना  
मद्यके अभ्याससे रहित, क्षीणाः क्षीण क्षीण, परिश्रान्ताः  
अत्यन्त थोड़ेला अत्यन्त थके हुए, मदक्षताः अने  
मद्यथी थयेला क्षतवाणा और मद्यसे क्षतयुक्त, मानवाः  
भनुष्ये। पुरुष, स्वरूपेन थे।। थोड़ेसे, अपि पक्ष सी,  
मद्येन मद्यथी मद्यसे, शीघ्रम् ऐकदम शीघ्र, मदम् मद  
मदको, यान्ति पाये छे प्राप्त हो जाते हैं ॥ ८६-८७ ॥

86-87. Those men who are afflicted  
with hunger and thirst, who are  
debilitated, who are of vata or pitta  
habitus, who are given to dry and  
insufficient and very limited diet, who  
are sluggish in digestion and who  
are mentally weak, those that are of  
wrathful nature, those that are not  
habituated to drink, those that are  
emaciated, those that are greatly  
exhausted and those that are suffering  
from lesions due to alcoholism—all  
such get intoxicated quickly even  
by a small dose of wine.

वातिकमदात्ययस्य निदानलक्षणे—

ऊर्ध्वं मदात्ययस्वातः संभवं स्वस्वलक्षणम् ।  
अग्निवेश! चिकित्सां च प्रवक्ष्यामि यथाक्रमम् ८८

अग्निवेश! हे अग्निवेश! हे अग्निवेश!, अतः  
अग्निथी यहासे, ऊर्ध्वम् आगण आगे, मदात्ययस्य

८८. स्वरूपलक्षणम्—विषु लक्षणम् (य.)

आर मदात्ययने। चार मदात्ययके, संभबम् हेतु हेतु,  
स्वस्व- अने ऐशानां पेटपेटानां और इनके अपने  
अपने, लक्षणम् लक्षण लक्षण, चिकित्सां च तथा  
चिकित्सा एवं चिकित्सा, यथाक्रमम् अनुक्रमे क्रमशः,  
प्रवक्ष्यामि डलीश कहूंगा ॥ ८८ ॥

88. Agniveśa! Hereafter I shall  
describe the etiology, the signs and  
symptoms and the therapeutics of  
each type of alcoholism in due order.

स्त्रीशोकभयभारात्त्वकर्मभिर्योऽतिकर्षितः ।  
रूक्षात्प्रमिताशी च यः पिबत्यतिमात्रया ॥८९॥  
रूक्षं परिणतं मद्यं निशि निद्रां विहत्य च ।  
करोति तस्य तच्छीघ्रं वातप्रायं मदात्ययम् ॥९०॥

स्त्री- स्त्री स्त्री, शोक- शोक शोक, भय- भय भय,  
भार- भार भार, अश्व- भुसाक्षरी मुसाक्षरी, कर्मभिः  
अने कामथी और कामसे, अतिकर्षितः गड्डु क्षीण  
थयेला हो।। बहुत क्षीण हुआ हो, रुक्ष- अने रूक्ष और  
रूक्ष, अल्प- अल्प अल्प, प्रमित- तथा प्रमित तथा  
प्रमित, आशी च आहार करनार आहार करनेवाला,  
यः जो जो, निशि रात्रिसे रात्रिमें, निद्राम् निद्राने।  
निद्राका, विहत्य नाश करीने नाश करके, अतिमात्रया  
अतिमात्राम् अतिमात्रामें, रूक्षम् रूक्ष रूक्ष, परिणतम्  
गूतुं पुराना, मद्यम् मद्य मद्य, पिबति पीछे छे पीता  
है, तस्य तेने उसको, तत् ते वह, शीघ्रम् ऐकदम  
शीघ्र, वातप्रायम् वातप्रधान वातप्रधान, मदात्ययम्  
मदात्यय मदात्यय, करोति करे छे करता है ॥ ८९-९० ॥

89-90. If a person that is greatly  
emaciated by indulgence in women,  
by grief, fear, load carrying, wayfar-  
ing and such other strenuous activity,  
or if a person habituated to dry, scanty  
and limited diet takes dry and  
highly fermented wine in excess at  
night and losing his sleep, he will soon  
be subject to alcoholism of the vata  
type.

हिकाश्वासशिरःकम्पपार्श्वशूलप्रजागरैः ।

विद्याद्बहुप्रलापस्य वातप्रायं मदात्ययम् ॥९१॥

बहुप्रलापस्य अकु अकुनाइ करनारने बहुत प्रला-  
पीको, हिका- हेउडी हिचकी, श्वास- श्वास श्वास, शिरः-  
कम्प शिरःकम्प शिरःकम्प, पार्श्वशूल- पाश्वशूल  
पार्श्वशूल, प्रजागरैः तथा उभगराथी और जागरणसे,  
वातप्रायम् वातप्रधान वातप्रधान, मदात्ययम् मदा-  
त्यय मदात्यय, विद्यात् यथे छे ऐम भेलुपु हुआ है  
ऐसा जाने ॥९१॥

91. Hiccup, dyspnea, tremors of  
the head, pleurodynia, insomnia and  
excessive garrulity are to be known  
as the signs and symptoms of alcohol-  
ism of the vata type.

पैतिकमदात्ययस्य निदानलक्षणे—

तीक्ष्णोष्णं मद्यमलं च योऽतिमात्रं निषेवते ।  
अम्लोष्णतीक्ष्णभोजी च कोधनोऽग्न्यातपप्रियः ९२  
तस्योपजायते पित्ताद्विशेषेण मदात्ययः ।  
स तु वातोत्थस्याशु प्रशमं याति हन्ति वा ॥९३॥

यः जे जो, तीक्ष्ण- तीक्ष्ण तीक्ष्ण, उष्णम् उष्ण  
उष्ण, अम्लम् च अने अम्ल और अम्ल, मद्यम् मद्य  
मद्यका, अतिमात्रम् अतिशय अतिशय, निषेवते सेवन  
करे छे सेवन करता है, अम्ल- अम्ल अम्ल, उष्ण-  
उष्ण उष्ण, तीक्ष्ण- अने तीक्ष्ण और तीक्ष्ण, भोजी  
भोजन करनार भोजन करनेवाला, कोधनः क्रोधी क्रोधी,  
अग्नि- तथा अग्नि एवं अग्नि, आतप- अने तउडाने  
और धूपको, प्रियः च आह्वान छे चाहनेवाला है,  
तस्य तेने उसको, विशेषेण विशेषे करी विशेष करके,  
पित्तात् पित्तार्थ पित्तसे, मदात्ययः मदात्यय मदात्यय,  
उपजायते थाय छे होता है, वातोत्थस्य वातप्रधान  
प्रकृतिवाणाने वातप्रधान प्रकृतिवालेको, तु ते। तो, सः  
ते वह, आशु शीघ्र शीघ्र, प्रशमम् शीत शान्त, याति

थाय छे हो जाता है, हन्ति वा अथवा मारी नाछे छे  
अथवा मार डालता है ॥ ९२-९३ ॥

92-93. He who takes strong, acute  
and acid wine and who habitually  
takes acid, hot and acute articles of  
diet, who is of a irritable temperament  
and who loves exposing himself to  
the fire and the sun, will be subject  
to alcoholism mostly of the pitta type.  
But in a person with excess of vata,  
this alcoholism due to pitta either  
subsides immediately or causes death.

तृष्णादाहज्वरस्वेदमूर्च्छातीसारविभ्रमैः ।

विद्याद्धरितवर्णस्य पित्तप्रायं मदात्ययम् ॥९४॥

हरित- हरि हरि, वर्णस्य वर्णवाणाने रंगवालेको,  
तृष्णा- तृष्ण प्यास, दाह- दाह दाह, ज्वर- ज्वर  
ज्वर, स्वेद- स्वेद स्वेद, मूर्च्छा- मूर्च्छा मूर्च्छा, अतीसार-  
अतिसार अतिसार, विभ्रमैः तथा विभ्रम वउ और  
विभ्रमसे, पित्तप्रायम् पित्तप्रधान पित्तप्रधान, मदात्ययम्  
मदात्यय मदात्यय, विद्यात् यथे छे ऐम भेलुपु हुआ  
है ऐसा जाने ॥ ९४ ॥

94. Thirst burning, fever, perspi-  
ration, fainting, diarrhea, giddiness,  
and icteric tinge of the body are to be  
known as the symptoms of alcoholism  
of the pitta type.

शैथिलिकमदात्ययस्य निदानलक्षणे—

तरुणं मधुरप्रायं गौडं वैष्टिकमेव वा ।

मधुरस्निग्धगुर्वाशी यः पिबत्यतिमात्रया ॥९५॥

अव्यायामदिवास्वप्नशय्यासनसुखे रतः ।

मदात्ययं कफप्रायं स शीघ्रमधिगच्छति ॥९६॥

मधुर- मधुर मधुर, स्निग्ध- स्निग्ध स्निग्ध, गुरु- गुरु  
गुरु और गुरु, शीघ्र- शीघ्र शीघ्र, प्रशमम् शीत शान्त, याति

९३. स तु वातोत्थस्याशु प्रशमं याति हन्ति वा कक्षणाति  
अवस्थस्य याति तानि निषेवते (व. त. व. च. क.)

९६. शीघ्र-कफप्रायं (ग.)

यः ते जो, तरुणम् नये। ताजा, मधुर-प्रायम् भुङ्क्ते मधुर अति मधुर, गौडम् गौड गौड, पैष्टिकम् वा एव अधवा पैष्टिक मधु या पैष्टिक मद्य, अतिमात्रया अतिमात्राभा अतिमात्रामें, पिबति पीने छे पीता है, अव्यायाम- आराम आराम, दिवास्वप्न- दिवास्वप्न दिनमें सोना, शय्या- शय्या शय्या, आसन- आने आसनना और आसनके, सुखे सुखभा सुखमें, रतः रत छे आसक्त रहता है, सः ते वह, कफप्रायम् ऊर्ध्वप्रधान कफ-प्रधान, मदात्म्यम् मदात्म्यने मदात्म्यको, शीघ्रम् शीघ्रम् शीघ्र, अभिगच्छति भाग्य करे छे प्राप्त करता है ॥९५-९६॥

95 96. In a person who excessively drinks fresh wine, mainly sweet or prepared of gur or flour, who is habituated to sweet, unctuous and heavy diet and who is given to non exercise, day-sleep and the pleasures of sedentary and indolent life, soon develops alcoholism characterised by predominance of kapha.

अरोचकहृत्तासतन्द्रास्तैमित्यगौरवैः ।

विद्याच्छीतपरीतस्य कफप्रायं मदात्म्यम् ॥९७॥

शीत- देहनी शीतताथी देहकी शीततासे, परीतस्य परीतने पीकितको, अर्द्ध- उलटी वमन, अरोचक- अरुचि अरुचि, हृत्ता- हृत्तास मितली, तन्द्रा- तन्द्रा तन्द्रा, तैमित्य- स्तिमितता स्तिमितता, गौरवैः अने औरवथी और गुरुतासे, कफप्रायम् ऊर्ध्वप्रधान कफप्रधान, मदात्म्यम् मदात्म्य मदात्म्य, विद्यात् अथो छे अभिगच्छति हुआ है ऐसा जाने ॥ ९७ ॥

97. Vomiting, anorexia, nausea, torpor, rigidity, heaviness and chilliness are to be known as symptoms of alcoholism of the kapha type.

सर्वेषामपि मदात्म्यस्य त्रिदोषजत्वम् --

विषस्य ये गुणा दृष्टाः सन्निपातप्रकोपजाः ।

त एव मद्ये दृश्यन्ते विषे तु बलवत्तराः ॥९८॥

सन्निपात- सन्निपातने सन्निपातको, प्रकोपजाः प्रकोपजनना प्रकृषित करनेवाले, ये ते जो, गुणाः गुणाः गुण, विषस्य विषभा विषमें, दृष्टाः देखाया छे देखे गये हैं, ते ते वे, एव न ही, मद्ये मद्यभा मद्यमें, दृश्यन्ते देखाय छे देखे जाते हैं, विषे तु परंतु विषभा तेथो परंतु विषमें वे, बलवत्तराः बलवा अगवान होय छे अधिक बलवान होते हैं ॥ ९८ ॥

98. Whatever qualities in poison are observed to provoke the tridiscordant condition, the same are also observed in alcohol. In poison they are of a stronger nature.

हन्त्याशु हि विषं किञ्चित् किञ्चिद्रोगाय कल्पते ।  
यथा विषं तथैवान्त्यो ज्ञेयो मद्यकृतो मदः ॥९९॥

किञ्चित् अर्ध कोई, विषम् विष विष, आशु शीघ्र शीघ्र, हन्ति हि भारे छे घातक होता है, किञ्चित् अर्ध कोई, रोगाय रोग रोगको, कल्पते उत्पन्न करे छे उत्पन्न करता है, मद्यकृतः मद्यजन्य मद्यजन्य, ज्ञेयः छेष्टा अन्तिम, मदः मद्यने मदको, यथा जेवुं जैसा, विषम् विष छे विष है, तथा एव तेवो न वैसा ही, ज्ञेयः अनुभवो जानना चाहिए ॥ ९९ ॥

99. Some poisons kill immediately while others lead to diseases. The last stage produced in alcoholic intoxication should be regarded as similar to poison in effect.

तस्मात् त्रिदोषजं लिङ्गं सर्वत्रापि मदात्म्ये ।

दृश्यते रूपवैशेष्यात् पृथक्त्वं चास्य लक्ष्यते ॥१००॥

तस्मात् तेथी इसलिए, सर्वत्र अथा सब, मदात्म्यमे मदात्म्येभा मदात्म्यमें, अपि पक्ष सी, त्रिदोषजम् त्रिदोषजन्य त्रिदोषके, लिङ्गम् शेष लक्षण, दृश्यते देखाय छे दिखाई देते हैं, रूप- परंतु शेषान्तर परंतु लक्षणोंकी, वैशेष्यात् च विशेषता वरि विशेषतासे,

अस्य येनै इमं, पृथक्स्वम् बुद्धिं भिन्नता, लक्ष्यते  
अस्यायं छे देखी जाती है ॥ १०० ॥

100. Therefore the symptoms born of tridiscordance are observed in all types of alcoholism; but owing to the predominance of special symptoms in each type, they are classified into separate categories.

मदात्ययस्य सामान्यलक्षणम्—

शरीरदुःखं बलवत् संमोहो हृदयव्यथा ।

अरुचिः प्रतना तृष्णा ज्वरः शीतोष्णलक्षणम् ॥ १०१ ॥

शिरःपार्श्वस्थिसन्धीनां विद्युत्तुल्या च वेदना ।

जायतेऽतिबला जृम्भा स्फुरणं वेपनं श्रमः ॥ १०२ ॥

उरोविबन्धः कासश्च हिक्का श्वासः प्रजागरः ।

शरीरकम्पः कर्णाक्षिमुखरोगस्त्रिकप्रहः ॥ १०३ ॥

छर्द्यतीसारहृल्लासा वातपित्तकफान्मकाः ।

श्रमः प्रलापो रूपाणामसतां चैव दर्शनम् ॥ १०४ ॥

तृणभस्मलतापर्णपांशुभिश्चावपूरणम् ।

प्रधर्वणं विहृङ्गैश्च भ्रान्तचेताः स मन्यते ॥ १०५ ॥

व्याकुलानामशस्तानां स्वप्नानां दर्शनानि च ।

मदक्षयस्य रूपाणि सर्वाण्येतानि लक्षयेत् ॥ १०६ ॥

बलवत् अत्यन्त अत्यन्त, शरीरदुःखम् शरीरमां  
दुःखं देहका दुःख, संमोहः मोह, हृदयव्यथा  
हृदयमां पीडा हृदयमें पीडा, अरुचिः अरुचि, अरुचि,  
प्रतना अत्यन्त अत्यन्त, तृष्णा तृष्णा, शीत-  
शीत शीत, तृष्णा-तथा तृष्णा तथा तृष्णा, लक्षणः लक्षण-

१०१. संमोहो-संतर्प (ध.)

१०२. -प्रमोहो (फ.)

१०३. प्रतना-प्रमोहः (ध.)

१०४. विद्युत्तुल्या च वेदना-वेदना विक्षेपे यथा (द. घ.)

१०५. इतिबला-विपुला (फ.)

१०६. कम्प-कण्ठ (ध.)

१०७. छर्द्यतीसारहृल्लासा-छर्दिबिड्भेद उत्क्षेपो (ध. क.)

१०८. हृल्लासा-उत्क्षेपो (ख. ड.)

१०९. चावपूरणम्-चातिपूरणम् (क.)

पाणि लक्षणोंवाला, ज्वरः ज्वर, शिरः-भाथुं  
शिर, पार्श्व-पार्श्व, अस्थि-हड्डियां, सन्धीनाम्  
तथा संधिस्थानां तथा सन्धियों इन्में, विद्युत्तुल्या वीजणी  
वेदी विद्युत जैसी, वेदना च पीडा पीडा, अतिबला  
अति अतिबल अत्यन्त बलवान, जृम्भा अभासां  
जम्भाई, स्फुरणम् स्फुरण, वेपनम् उन्मत्त कम्पन,  
श्रमः च श्रम और श्रम, जायते थाय छे होते  
हैं, उरोविबन्धः उरोविबन्ध छातीका रुकना, कासः  
उधरस खांसी, हिक्का हड्डिका हिक्की, श्वासः श्वास  
श्वास, प्रजागरः उभयगरो नोंद न आना, शरीरकम्पः  
शरीरमें उन्मत्त देहका कंपना, कर्ण-कान कान, अक्षि-  
आंख आंख, मुख-अन्त मुखना और मुँहके, रोगः  
रोग रोग, त्रिकप्रहः त्रिक अक्षयों त्रिकप्रह,  
वातपित्तकफान्मकाः वातपित्तकफान्मकाः वातपित्तकफान्मकाः  
वातज, पित्तज एवं कफज, छर्दि-उलटी वमन, अतीसार-  
अतिसार अतिसार हृल्लासाः अने भोग आनंदी और  
जी मचलाना, श्रमः श्रम श्रम, प्रलापः अक्षय प्रलाप,  
असताम् च एव अने न होय अंवा और न होय, रूपा-  
णां रूपोंका, दर्शनम् देखावा आ लक्षणों पल्लु  
थाय छे दिखाई देना ये लक्षणों भी होते हैं, भ्रान्तचेताः  
भ्रान्त भ्रान्तगो चित्तभ्रमवाला, सः ते पेटाने वह  
अपनेको, तृण-तृण तृण, भस्म-राख भस्म, लता-  
वेला लता, पर्ण-पांछा पत्ते, पांशुभिः अने धूणधी और  
धूलसे, अवपूरणम् हटाती मरा हुआ, विहृङ्गैः च अने  
पक्षीओधी और पक्षियोंसे, प्रधर्वणम् आधात पाभते।  
पराजित हुआ, मन्यते माने छे मानता है, व्याकुलानाम्  
पणी तेने व्याकुल और उसको घरानेवाले, अशस्तानाम्  
अप्रशस्त अप्रशस्त, स्वप्नानाम् स्वप्नाना स्वप्नोंके,  
दर्शनानि च दर्शन थाय छे दर्शन होते हैं, एतानि ये  
इन, सर्वाणि अंधाने सबको, मदात्यय-मदात्ययनां  
मदात्ययके, रूपाणि रूपों लक्षण, लक्षणम् लक्षणों  
जाने ॥ १०१-१०६ ॥

101-106. Severe aches in the entire body, stupefaction, cardiac pain, anorexia, incessant thirst, fever with the characteristics of either cold or heat, lightning-like pains in the head, sides

of the chest, bones and joints; severe pendiculation, throbbing, twitchings, fatigue, obstruction in the chest, cough, hiccup, dyspnea, insomnia, tremors all over the body, disease of the ear, eye and mouth, stiffening of the waist, vomiting, diarrhea and nausea of vata, pitta or of the kapha type, giddiness, delirium, hallucinations of sight and bewilderment of the mind and a feeling of being covered with hay, ash, creepers, leaves or earth and that, animals and birds are crawling over his body, as well as dreaming of unhappy and inauspicious dreams—all these are to be regarded as the symptoms of alcoholism.

मदात्ययचिकित्सासूत्रम्—

सर्वं मदात्ययं विद्यात् त्रिदोषमधिकं तु यम् ।  
दोषं मदात्यये पश्येत् तस्यादौ प्रतिकारयेत् ॥१०७॥

सर्वम् अर्थात् सब, मदात्ययम् मदात्ययने मदात्ययको, त्रिदोषम् त्रिदोषजन्य त्रिदोषजन्य, विद्यात् आधुना जाने, मदात्यये मदात्ययभा मदात्ययमें, यम् तु ने जिस, दोषम् दोष दोषको, अधिकम् अधिक, पश्येत् देखे, तस्यादौ प्रथम पहले, तस्य तेने उसका, प्रतिकारयेत् आतङ्कार करे ॥ १०७ ॥

107. All kinds of alcoholism are to be known as resulting from tridiscordance; the physician should treat first that particular humor which is observed to be most predominant in alcoholism.

कफस्थानानुपूर्व्या च क्रिया कार्या मदात्यये ।  
पित्तमारुतपर्यन्तः प्रायेण हि मदात्ययः ॥१०८॥

१०७. तस्यादौ—तमादौ (व. त.)

मदात्यये मदात्ययभा मदात्ययमें, कफस्थान- ३६-स्थानकी कफस्थानकी, आनुपूर्व्या च पहले- पहले, क्रिया चिकित्सा चिकित्सा, कार्या करनी के- करनी चाहिए, हि आतङ्कार के क्योंकि, मदात्ययः मदात्यय मदात्यय, प्रायेण अधुना प्रायशः, पित्तमारुतपर्यन्तः अंतर्भा पित्त अने वायुकी प्रबलतावाला हो- हो के अन्तमें पित्त और वायुकी प्रबलतावाला होता है ॥ १०८ ॥

108. In alcoholism the line of treatment should generally begin with the seat of kapha and then of pitta and lastly of vata.

समपीतमद्यस्य मदात्ययप्रशमकत्वम्—

मिथ्यास्तिहीनपीतेन यो व्याधिरुपजायते ।  
समपीतेन तेनैव स मद्येनोपशाम्यति ॥१०९॥

मिथ्या- मिथ्या मिथ्या, अति- अति अति, हीन- अने. हीन और हीन, पीतेन पानशी पीनेसे, यः ने जो, व्याधिः व्याधि व्याधि, उपजायते आयु होता है, सः ते वह, समपीतेन सममात्राभा पीनेसे सम मात्रामें पिये हुए, तेन ते उसी, एव ए ही, मद्येन मद्यही मद्यसे, उपशाम्यति शांत थायु हो जाता है ॥ १०९ ॥

109. Diseases arising from wrongful, excessive and too meagre use of alcohol are alleviated by taking it in due measure.

मदात्यये मद्यप्रयोगः—

जीर्णममद्यदोषाय मद्यमेव प्रदापयेत् ।  
प्रकाङ्गालाघवे जाते यद्यदस्मै हितं भवेत् ॥११०॥  
सौवर्चलानुसंविद्धं शीतं सविडसैन्धवम् ।  
मातुलुङ्गार्द्रकोपेतं जलयुक्तं प्रमाणवित् ॥१११॥

जीर्ण- शुद्ध अर्थात् गेयो के जीर्ण हो गया है, आम- अर्थात् कषा, मद्य- मद्यने मद्यका, दोषाय दोष नेने, अथवा पुत्रुपने दोष जिसका ऐसे पुरुषको, प्रकाङ्गा-

११०. यद्यदस्मै—यद्यदस्मै (ग.)

१११. प्रमाणवित्—प्रमाणवत् (व. प्र. क.)



मद्यपानं अथवा आहारनी अल्पं खनन या आहारकी इच्छा, लाघवे अने लाघव और लघुता, जाते पेदा तथा उत्पन्न होने पर, यह के जो, बस्ये अने इसके लिए, हितम् दितकर हितकर, भवेत् होय हो, शीतम् मद्यम् ते ते हं दुं भव उत्त उत्त ठंडा मद्य, एव न ही, प्रमाणवित् मात्रा अनुनारे मात्रा जानने वाला वैद्य, सौवर्चल- संचयणी सौचर नमकसे, अनुसंविदम् युक्त युक्त, सविडग्नैश्चम् (अवधायक) तथा सैन्धवयुक्त विवर्णक और सैन्धवानमकसुक्त, मातुलुङ्ग-युक्तोत्तुं चिकोवा, आर्द्रक- तथा आदुना रस्यथी और अदरकके रससे, उपेतम् युक्त युक्त, कलशुकम् अने न-य-युक्त और जल मिलाकर, प्रदापयेत् देव देवे ॥११०-१११॥

110-111. When the morbid effects of all the alcohol ingested are completely gone down and the body becomes lighter and the patient develops a craving for drink, the physician, who is expert in posology should give him wine which is agreeable to him mixed with sanchal and rock salts combined with the juice of the citron and ginger, cooled and diluted with water.

तीक्ष्णोष्णेनातिमात्रेण पीतेषाम्लविदाहिना ।  
मद्येनान्नरसोत्क्रोदो विदग्धः क्षारतां नतः ॥११२॥  
अन्तर्दाहं ज्वरं तृष्णां प्रमोहं विभ्रमं मदम् ।  
जनयत्याशु तच्छान्त्यै मद्यमेव प्रदापयेत् ॥११३॥

अतिमात्रेण अतिमात्राभा अतिमात्रासे, पीतेन पीये हुए, तीक्ष्ण- तीक्ष्ण तीक्ष्ण, उष्णेषु उष्ण उष्ण, अम्ल- अम्ल अम्ल, विदाहिना अने विदाही और विदाही, मद्येन मद्येन मद्येन, विदग्धः विदग्ध विदग्ध, क्षारताम् अने क्षार और क्षार, नतः अने न बने हुए, अन्नरस- अन्नरसका अन्नरसका, उत्क्रोदः उत्क्रोद उत्क्रोद, अन्तर्दाहम् अन्तर्दाह अन्तर्दाह, ज्वरम्

ज्वर ज्वर, तृष्णाम् तृष्ण व्यास, प्रमोहम् प्रमोह मूर्च्छा, विभ्रमम् विभ्रम भ्रम, मदम् अने मद और मद, आशु शीघ्र शीघ्र, जनयेत् पेदा करे छे उत्पन्न करता है, तत्- तेनी उसकी, आन्त्रे शान्ति भाटे शान्तिके लिए, मद्यम् मद्य मद्य, एव न ही, प्रदापयेत् आपवुं देना चाहिए ॥ ११२-११३ ॥

112-113. The excessive drinking of acute, acid and irritant wine causes dilution of food-juice by excessive secretion specially of mucus leading to misdigestion and alkaline formation producing quickly internal heat, fever, thirst, stupor, giddiness and intoxication; wine itself should be given to alleviate the condition.

क्षारो हि याति माधुर्यं शीघ्रमम्लोपसंहितः ।  
श्रेष्ठमम्लेषु मद्यं च यैर्गुणैस्तान् परं शृणु ॥११४॥

अम्ल- अम्ल अम्ल, उपसंहितः युक्त युक्त, क्षारः क्षार क्षार, शीघ्रम् शीघ्र शीघ्र, माधुर्यम् मधुरता मधुरताको, याति हि पाये छे प्राप्त हो जाता है, अम्लेषु अम्ल द्रव्योंमें, मद्यम् मद्य मद्य, ये न तिन, गुणैः च युक्त्येथी गुणोंके कारण, श्रेष्ठम् श्रेष्ठ छे श्रेष्ठ है, तान् ते उसे, परम् हवे अब्, शृणु संचयणी सुनो ॥११४॥

114. The alkali quickly changes to sweet taste when mixed with the acidity of wine (neutralization of alkali by acid); listen now to those qualities of wine by which it is considered to be the best of acids.

मद्यस्याम्लस्त्वभावस्य चत्वारोऽनुरक्षाः स्मृताः ।  
मधुरश्च कषायश्च तिक्तः कटुक एव च ॥११५॥  
गुणाश्च दश पूर्वोक्तास्तैश्चतुर्दशभिर्गुणैः ।  
सर्वेषां मद्यमम्लानामुपर्युपरि तिष्ठति ॥११६॥

११४ उपसंहितः—उपसंस्कृतः (ड.)

११६ तिष्ठति—वर्तते (व.)



अम्ल- अम्ल अम्ल, स्वभावस्य स्वभाववाणा स्वभाववाले, मद्यस्य मद्यना मद्यमें, मधुरः च मधुर मधुर, कषायः च कषाय कषाय, तिक्तः तिक्त तिक, कटुकः एव च अने कटु और कटु, चत्वारः ये चार, अनुरसाः अनुरस अनुरस, स्मृताः मान्या छे माने गये हैं, दश च अने दश और दस, गुणाः गुण गुण, पूर्व- पहलेवां पहले, उक्ताः उहेवाछि गया छे कहे जा चुके हैं, तैः ते वे, चतुर्दशभिः चौद चौदह, गुणैः गुणैशी गुणोंके कारण, मद्यम् मद्य मद्य, सर्वेषाम् अर्था सब, अम्लानाम् अम्ल द्रव्योंमां अम्ल द्रव्योंमें, उपरि उपरि सर्वेषां अथ सबमें अथ, तिष्ठति रहे छे रहता है ॥ ११५-११६ ॥

115-116. The wine of sour taste is regarded to have four after-tastes. They are sweet, astringent, bitter and pungent tastes. On account of these four tastes and the ten-fold actions described previously, wine is the superior-most among acid substances.

मद्योत्किञ्चन दोषेण रुद्धः स्रोतः सु मारुतः ।  
करोति वेदनां तीव्रां शिरस्यस्थिषु सन्धिषु ॥११७॥

मद्य- मद्यथी मद्यसे, उत्किञ्चन उहदेशिउ उहदेचित, दोषेण दोषथी दोषसे, स्रोतः सु स्रोतोमां स्रोतोमें, रुद्धः रोकथेय रुका हुआ, मारुतः वायु वायु, शिरसि भाभाभां सिरमें, अस्थिषु हाडकांभां अस्थियोंमें, सन्धिषु अने सांधाभां और सन्धियोंमें, तीव्रान् तीव्र तीव्र, वेदनाम् वेदनां वेदना, करोति करे छे करता है ॥ ११७ ॥

117. The vata, blocked up in the channels as a result of the precipitation of the morbid humors by alcohol, causes acute pain in the head, bones and joints.

दोषविष्यन्दनार्थं हि तस्मै मद्यं विशेषतः ।  
व्यवायितीक्ष्णोष्णतया देयमम्लेन्येषु सत्स्वपि ११८

११७. रुद्धः-रुद्धः (घ.)

११८. दोषविष्यन्दनार्थं हि तस्मै-विष्यन्दनार्थं रोगस्य तस्य (घ.)

" " - विष्यन्दनार्थं दोषस्य तस्य (घ. फ.)

तस्मै ते रोगीने उस रोगीको, दोष- दोषना दोषको, विष्यन्दनार्थं हि विष्यन्दनने भाटे बहा देनेके लिए, अम्लेषु अम्ल अम्लद्रव्योंके, सत्सु होवा छता होने पर, अपि पक्षु भी, व्यवायि- व्यवायि व्यवायी, तीक्ष्ण- तीक्ष्ण तीक्ष्ण, उष्णतया अने उष्ण होवाथी और उष्ण होनेके कारण, मद्यम् मद्य मद्य, विशेषतः विशेषे करीने विशेष करके, देयम् आपवुं देना चाहिए ॥ ११८ ॥

118. In this condition the patient should be given wine in spite of its acid quality for liquefaction of the morbid humors by its diffusive, acute and hot qualities.

स्रोतोविवन्धनुन्मद्यं मारुतस्यानुलोमनम् ।  
रोचनं दीपनं चाग्नेरभ्यासात् साम्यमेव च ॥११९॥

मद्यम् मद्य मद्य, स्रोतोविवन्धनुत् स्रोतोना विध- धने। नाश करनेवा छे स्रोतोकी रुकावटको खोलता है, मारुतस्य वायुन् वायुका, अनुलोमनम् अनुलोमन करनेवा छे अनुलोमन करनेवाला है, रोचनम् तथा रुचिकर तथा रुचिकर, अग्नेः अग्निं अग्निका, दीपनम् च दीपन करनेवा दीपन, अभ्यासात् च अने अभ्यासथी और अभ्याससे, साम्यम् एव च साम्य पक्षु छे साम्य भी है ॥ ११९ ॥

119. When taken regularly, wine is wholesome, relieves the obstructions in the channels, regulates the peristaltic movement of vata, acts as an appetiser stimulates the gastric fire and becomes homologatory by habituation.

रुजः स्रोतःस्वरुद्धेषु मारुते चानुलोमिते ।  
निवर्तन्ते विकाराश्च शाम्यन्त्यस्य मदोदयाः ॥१२०॥

स्रोतः सु स्रोतोना स्रोतोकी, अरुद्धेषु विधध रु अर्ता रुकावटके हट जाने पर, मारुते च अने वायुन्

११९. विष्यन्धनुन्मद्यं विष्यन्धनुन्मद्य (ख)

१२०. रुजः स्रोतःस्वरुद्धेषु-उरःस्रोतः सु रुद्धेषु (घ.)

और वायुका, अनुलोमिते अनुलोमन तथा अनुलोमन हो जाने पर, मस्य तेनी उसकी, रुजः पीडाये। वेदनायें, निवर्तन्ते नाश पाये छे नष्ट हो जाती हैं, मद्बोदयाः च अने मद्बन्धित और मद्जन्य, विकाराः विकारे। विकार, साम्यन्ति शांत थाय छे शान्त हो जाते हैं ॥ १२० ॥

120. The channels carrying the body-fluid being cleared and the peristaltic movement of vata being regulated, the pains and disorders due to alcoholism subside and the vata due to intoxication abates.

वातिकमदात्ययस्य चिकित्सा—

बीजपूरकवृक्षाम्लकोलदाडिमसंयुतम् ।

यवानीहपुषाजाजीशृङ्गवेरावचूर्णितम् ॥१२१॥

सखेहैः शकुमिर्युकमवदंशैर्विरोचितम् ।

दद्यात् सलवणं मद्यं पैष्टिकं वातशान्तये ॥१२२॥

बीजपूरक- बीजेरुं बिजौरा निम्बु, वृक्षाम्ल- वृक्षाम्ल इक्षाम्ल, कोल- और बेर, दाडिम- अने दाडमयी और अनारसे, संयुतम् युक्त युक्त, यवानी- अजवावन, हपुषा- हाउवेर हाऊवेर, अजाजी- जीरा, शृङ्गवेर- तथा आहुनु तथा अदरकका, अवचूर्णितम् चूर्ण नायेछुं चूर्ण डाला हुआ, सखेहैः रनेहयुक्त जेहयुक्त, शकुमिः साथवाथी सगुसे, युक्तम् युक्त युक्त, अवदंशैः अने अप- दंशैथी और अवदंशोंसे, विरोचितम् युक्तिर अनावेक्ष इचिकर बनावा हुआ, पैष्टिकम् पैष्टिक पैष्टिक, मद्यम् मद्य मद्य, वात- वातनी वातकी, शान्तये शान्तिने भाटे शान्तिके लिए, सलवणम् लवणयुक्त लवणयुक्त, दद्यात् आपुं देवे ॥ १२१-१२२ ॥

121-122. For the alleviation of vata, the patient should be given wine prepared out of pastry, acidified with

citron, kokam butter, jujube, pomegranate and sprinkled with the powder of bishop weed, common juniper, cumin and dry ginger, and flavoured with sauces and mixed with a little of salt and fried barley powder and with unctuous articles.

इष्ट्वा वातोल्बणं लिङ्गं रसैश्चैनमुपाचरेत् ।

लावतिस्त्रिदक्षाणां स्निग्धाम्लैः सिखिनामपि १२३

पक्षिणां मृगमत्स्यानामानूपामां च संस्कृतैः ।

भूशयप्रसहानां च रसैः शाक्योदनेन च ॥१२४॥

वातोल्बणम् वातप्रधान वातप्रधान, लिङ्गम् इष्ट्वा लक्षण, इष्ट्वा ओछने देखकर, लाव- लाव लाव, तित्तिर- तेतर तीतर, दक्षाणां दुक्का मुर्गे, सिखिनाम् अने मोरना और मोरके, अपि पक्षु मी, स्निग्ध- स्निग्ध स्निग्ध, अम्लैः अने अम्ल और अम्ल, रसैः मांसरसोष्णी मांसरसोंसे, पक्षिणाम् अने पक्षीयो और पक्षी, मृग- मृग मृग, मत्स्यानाम् माछली मछली, आनूपानाम् च आनूप और आनूप, भूशय- इरभा वसनारी विलेशय, प्रसहानाम् च अने प्रसह प्राणीयोना और प्रसह प्राणियोंके, संस्कृतैः संस्कृत संस्कृत, रसैः मांसरसो साधे मांसरसोंके साथ, शाक्योदनेन च तथा शाक्योभावा आतथी तथा शालिके आतसे, इष्ट्वा ओछने देखकर, उपाचरेत् उपचार करवे। उपचार करे ॥ १२३-१२४ ॥

123-124. Recognising the symptoms of provoked vata, the patient should be treated with unctuous, sour and well prepared meat-juices of common quail, partridge, cock and also of peacock and of birds, beasts and fishes of the wet-land group and with the meat-juices of terricolous creatures and the tearer group of beasts and birds, mixed with cooked sali rice.

१२२. अवदंशैर्विरोचितम्—अवदंशैर्विरोचितम् (ब. च.)

“ “ —अवदंशैर्विरोचितम् (ड.)

स्निग्धोष्णलवणाम्लैश्च वेश्मनैर्विषमैः ।  
चित्रैर्गोधूमिकैश्चासैर्वारुणीमण्डसंयुतैः ॥१२५॥  
पिशिताद्रकगर्भाभिः स्निग्धभिः पूषवर्तिभिः ।  
माषपूपलिकाभिश्च वातिकं समुपाचरेत् ॥१२६॥

स्निग्ध- स्निग्ध स्निग्ध, उष्ण- उष्ण, लवण- लवण, अम्लैः आटा खट्टे, मुखप्रियैः च अने स्वादवाण और स्वादु, वेश्मनैः वेश्मनार वेश्वार, वारुणीमण्ड- वारुणीमण्ड वारुणीमण्ड, संयुतैः युक्त युक्त, चित्रैः शुद्ध शुद्ध विविध प्रकारके, गोधूमिकैः धुँनी अनापटना गेहूँद्वारा बनाये गये, अश्वैः अश्वमै मोहन, पिशित- भांस मांस, आद्रक- अने आदुषी और अदरकसे, गर्भाभिः भरेल मरी हुई, स्निग्धभिः स्निग्ध स्निग्ध, पूषवर्तिभिः पूषवर्तिभिः पूषवर्तियों, माष- अने अउदनी और उदकी, पूषलिकाभिः च पूषलिकाओंथी पूषलिकाओंसे, वातिकं वातप्रधान पुरुषने वातप्रधान पुरुषका, समुपाचरेत् उपचार करे ॥ १२५-१२६ ॥

125-126. The patient of vata habitus should be treated with unctuous, hot, salt, sour and delicious Vesawara, a variety of preparations of wheat flour mixed with supernatant part of Varuni wine, and with unctuous pan-cakes and coils stuffed with meat and ginger and with pan-cakes prepared out of black gram.

नातिस्निग्धं न चाम्लेन युक्तं समरिष्वार्द्रकम् ।  
मेघं प्रागुदितं मांसं दाडिमश्चरसेन वा ॥१२७॥  
पृथक्त्रिजातकोपेतं सधान्यमरिचार्द्रकम् ।  
रसप्रलेपि संपूपैः सुखोष्णैः संप्रदापयेत् ॥१२८॥

१२५. चित्रैः-स्निग्धैः (ब.)

१२६. पूषवर्तिभिः-परिवर्तिभिः (ब.)

१२७. मेघं-मण्ड (ख, ड)

१२८. रसप्रलेपि संपूपैः-रसप्रलेपवृत्तैः (ब. क.)

प्राक् अथवा पहले अथवा पहले, दाडिम उदके कहा हुआ, मेघम् मेघनाम् मेघ, मण्डम् भांस मांस, न अतिस्निग्धम् अति स्नेह विना न बहुत स्नेहके विना, न च अम्लेन युक्तम् अम्ल विना न अम्लके विना, समरिच-आद्रकम् तम् मरी अने आदुषी आपु तथा मरिच और अदरकयुक्त देवे, दाडिम- अथवा दाडिम अथवा अनारके, चरसेन वा रस साजे देवे रससे देवे, त्रिजातक- अथवा त्रिजातक अथवा त्रिजातकसे, उपेतम् युक्त युक्त, सधान्य- अने धान और धनिया, मरिच- मरी मरीच, आद्रकम् अने आदुसहित और अदरक सहित, रसप्रलेपि भांसने प्रलेपाकृति रस (प्रलेह) मांसका प्रलेपाकृति रस (प्रलेह), सुखोष्णैः नवशेक सुहाते हुए गरम, संपूपैः पूषे अथवा पूषोंके साथ, पृथक् अथवा अलग संप्रदापयेत् देवे देना चाहिए ॥ १२७-१२८ ॥

127-128. Or, he may be given the flesh of the fatty creatures previously described, prepared with black pepper and ginger and with a small quantity of unctuous substance and without any acid, or mixed with pomegranate juice; or, he may be given the pudding prepared with the three spices, coriander, black pepper and ginger, taken with genially warm pan-cakes.

शुके तु वारुणीमण्डं दद्यात् पातुं विषासवे ।  
दाडिमस्य रसं वाऽपि जलं वा पाञ्चमूलिकम् ॥१२९॥  
धान्यनामरतोषं च दक्षिमण्डमथापि वा ।  
अम्लकाञ्जिकामण्डं वा सुकोदकमथापि वा ॥१३०॥

शुके आधा आद खाविके बाद, तु तो तो, विषासवे तत्स्थाने प्यासीको, वारुणीमण्डम् वारुणीमण्ड, दाडिमस्य दाडिमने अनारका, रसम् वा अपि रस रस, पाञ्चमूलिकम् जलम् वा अथवा पञ्चमूलिकने अथवा

१२९. शुके तु-शुकेन (ब. ग. घ.)

अथवा पंचमूलका ज्ञाय, वा अथवा अथवा, चाण्य-  
धालु घनिया, नागर- अने सूंठनु और सोंठका,  
तोयम् च पाण्डी पानी, अथ अपि वा अथवा  
अथवा, दधिमण्डल दहीनु पाण्डी दहीका पानी जम्ल-  
अथवा भाही अथवा खट्टी, काञ्जिक- डालनी कांजीका,  
मण्डम् वा आल मण्ड, अथ अपि वा अथवा अथवा,  
शुक्रोदकम् वा शुक्रतनु पाण्डी शुक्रका पानी, पातुम्  
पीवाने पीनेको, दद्यात् आपवुं देवे ॥ १२९-१३० ॥

129-130. When the patient gets thirsty after meals, he should be given the supernatant part of Varuni wine as potion or the juice of pomegranate or the decoction of pentaradices or the water boiled with coriander and dry ginger or whey or the supernatant part of sour gruel or vinegar.

कर्मणाऽनेन सिद्धेन विकार उपशाम्यति ।  
मात्राकालप्रयुक्तेन बलं वर्णश्च वर्धते ॥१३१॥

मात्रा- मात्रा मात्रा, काल- अने काल अनुसार  
और कालके अनुसार, प्रयुक्तेन योगेन प्रयुक्त की हुई,  
अनेन आ इस, सिद्धेन सिद्ध सिद्ध, कर्मणा चिकित्सायां  
चिकित्सासे, विकारः रोग विकार, उपशाम्यति शान्त  
थाय छे शान्त हो जाता है, कलम् तथा अण तथा बल,  
वर्णः च अने वर्ण और वर्ण, वर्धते वर्ध छे बढ़ते  
हैं ॥ १३१ ॥

131. By the administration of this tested remedy in proper dose and time, the disorder gets alleviated and the patient's vitality and complexion promoted.

रागषाण्डसंयोगैर्विविधैर्मकरोचनैः ।  
पिप्पितैः शाकपिष्टाक्षैर्यवगोधूमशालिभिः ॥१३२॥

१३२. शाकपिष्टाक्षैः-शुक्रपिष्टाक्षैः (ख. ब.)

अभ्यङ्गोत्सादनैः स्नानैरुष्णैः प्राक्पर्यैर्धनैः ।  
घनैरगुरुपक्कैश्च धूपैश्चागुरुजैर्धनैः ॥१३३॥  
नारीणां यौवनोष्णानां निर्दयैरुपगृह्णैः ।  
श्रोण्यूरुकुचभारैश्च संरोधोष्णसुखावहैः ॥१३४॥  
शयनाच्छादनैरुष्णैरुष्णैश्चान्तर्गृह्णैः सुखैः ।  
मल्लतप्रबलः शीघ्रं प्रशाम्यति मदात्ययः ॥१३५॥

मक्क- स्नानभां भोजनमें, रोचनैः रुचि उत्पन्न  
करना रवि उत्पन्न करनेवाले, विविधैः जुद्ध जुद्ध  
विविध प्रकारके, राग- राग राग, पाण्डव- तथा पाण्डवना  
तथा पाण्डवके, संयोगैः योगयोग योगसे, पिप्पितैः मांसोष्ण  
मांसोष्ण, शाक- शाक शाक, पिष्टाक्षैः पिष्टाक्ष पिष्टाक्ष,  
यव- यव जौ, गोधूम- धूप गोधूम, शालिभिः शाखि  
शोभा शालिचावल, उष्णैः उष्ण उष्ण, अभ्यङ्ग-  
अभ्यङ्ग अभ्यङ्ग, उत्सादनैः उत्सादन उत्सादन, स्नानैः  
तथा स्नानयोग और स्नानसे, धनैः अक्ष घने, प्राक्पर्यैः  
प्राक्पर्यै प्राक्पर्यै, धनैः अक्ष घट अगुरु- अगुरुना  
अगुरुका, पक्कैः च धूप धमावनाथी लेप लगानेसे, घनैः  
धाटा घट, अगुरुजैः अगुरुना अगुरुके, धूपैः च  
धूपथी धूपसे, यौवन- यौवननी यौवनके कारण,  
उष्णानाम् उष्णानाम् उष्णानाम्, नारीणाम् नारीणां  
नारियोंके, निर्दयैः गूढ गूढ, उपगृह्णैः आक्षिप्तोष्ण  
आक्षिप्तोष्ण, संरोध- संरोधोष्ण संरोधजनिव, उष्ण-  
उष्णोष्ण उष्णोष्ण, सुखावहैः सुख देना सुखको  
देनेवाले, श्रोणि- श्रोणि श्रोणि, कुरु- शायन कुरु, कुच-  
अने स्तनना और स्तनोंके, भारैः च भारी भारसे,  
उष्णैः उष्ण उष्ण, शयन- शयन शयन, मल्लतप्रबलैः  
अने आच्छादन और ओढनेके बलोंसे, सुखैः तेजस्व  
सुखकरके एवं सुखदायक, उष्णैः अने उष्ण और उष्ण,  
अन्तर्गृह्णैः च अन्तर्गृह्णैः अन्तर्गृह्णैः, मल्लत- वातनी  
वायुकी, प्रबलः प्रबलतायुगे। प्रबलतावाला, मदात्ययः  
मदात्यय मदात्यय, शीघ्रं शीघ्र शीघ्र, प्रशाम्यति  
शान्त थाय छे शान्त हो जाता है ॥ १३२-१३५ ॥

१३४. उपगृह्णैः-अवगृह्णैः (ब.)

॥ निर्दयैरुपगृह्णैः-निर्दयैरुपगृह्णैः (ब.)

॥ सुखावहैः-सुखप्रदैः (ग. ब.)

132-135. By various kinds of Raga and Shadava confections and various appetisers which make the patient relish the food, meat preparations, vegetables, pastry and barley, wheat and sali rice and by the aid of inunction, dry massage, hot baths, covering with thick blankets and smearing the body with the thick paste of eagle-wood, and fumigation with the aid of dense smoke of eagle-wood, and by the aid of affectionate embraces of women's bodies full of the warmth of youth, by the warm clasp of their waists, thighs and full grown breasts, by the warmth of the bed and the cover and the warmth of happiness and cheer of the interior apartments, alcoholism of the vata type gets subdued effectively.

पित्तमदात्यये चिकित्सा—

भव्यखर्जूरमृद्वीकापरूषकरसैर्युतम् ।  
सदाहिमरसं शीतं सकुम्भिश्चावचूर्णितम् ॥१३६॥  
सशर्करं शार्करं वा मार्द्वीकमथवाऽपरम् ।  
दद्याद्बृहदकं काले पातुं पित्तमदात्यये ॥१३७॥

भव्य- करंभण कमरख, खर्जूर- भजूर खजूर, मृद्वीका- दक्ष मुनके, परूषक- तथा दक्षसाला तथा फालसेके, रसैः रसमी रससे, युतम् युक्त युक्त, सदाहिमरसम् दाडमना रससहित अनाररससहित, शीतम् शीतल फीतल, सकुम्भिः साथवानु सनुजोसे, अवचूर्णितम् च चूर्ण नाजेक्ष अवचूर्णित, सशर्करम् आस युक्त खांडसे मिला हुआ, बृहदकम् भक्ष पाणी-

१३६. भव्य-मद्यं (न. द. व.)

,, चावचूर्णितम्-स्ववचूर्णितम्. (ख. घ.)

१३७. मार्द्वीकम्-माषीकम् (घ.)

वाणुं बहुत जलवाला, शार्करम् शार्कर, मार्द्वीकम् मार्द्वीक, अथवा अथवा अथवा, अपरम् भीणुं भक्ष अन्य मद्य, काले यथाकाल युक्त समयमें, पित्तमदात्यये पित्तमदात्ययम् पित्तमदात्ययमें, पातुम् पीना पीनेके लिए, दद्याद् आधुं देना चाहिए ॥ १३६-१३७ ॥

136-137. In alcoholism of the pitta type, wine added with sugar, wine made of sugar, grape-wine or any other variety of wine diluted with plenty of water mixed with the juices of showy dillenia, dates, grapes, sweet falsa and pomegranate, and sprinkled with roasted paddy flour and cooled, should be given as potion at the proper time.

शशान् कपिञ्जलानेणौल्लवानसितपुच्छकान् ।  
मधुराम्लान् प्रयुञ्जीत भोजने शालिषष्टिकान् ॥१३८॥

भोजने शोभनम् भोजनमें, शशान् ससला खरगोश, कपिञ्जलान् कपिञ्जल, एणान् ऐलु एण, लवान् लाव लाव, असितपुच्छकान् असित-पुच्छक असितपुच्छक, मधुर- अने मधुर और मधुर, अम्लान् तेमन् अम्ल एवं अम्ल, शालि- शालि शालि, षष्टिकान् अने साठी योअने और सांठीके भातका, प्रयुञ्जीत प्रयोग करवे प्रयोग करे ॥ १३८ ॥

138. The flesh of rabbits, grey pratrige, antelope, common quail, and black tailed deer, sweet and sour articles and sali and shashtika rice should be used in the dietary.

पटोलयूषमिश्रं वा छागलं कल्पयेद्रसम् ।  
सतीनमुद्गरमिश्रं वा दाडिमामलकान्वितम् ॥१३९॥

दाडिम- अथवा दाडम अथवा अनार, आमलक- तथा आमणीथी और आंवलेसे, कल्पयेत् युक्त युक्त,

पटोल- अने परवणना और परवलके, यूष- यूषी  
 यूषसे, मिश्रम् वा भेजवेक्ष मिश्रित, सतीत- अथवा  
 भठ अथवा मठ, सुद्र- तेभश्च भगथी एवं मूंगसे  
 मिश्रम् वा मिश्रित मिश्रित, छागलम् अङ्गराना वकरके,  
 रसम् मांसरसना मांसरसका, कल्पयेत् प्रयोग करवे  
 ज्येष्ठियो प्रयोग कर्वा चाहिए ॥ १३९ ॥

139. Or meat-juice of the goat may be prepared with the soup of the wild snake-gourd or with the soup of math-gram and green-gram mixed together and acidified with the pomegranate and the emblic myrobalan may be given.

द्राक्षामलकखर्जूरपरुषकरसेन वा ।

कल्पयेत्तर्पणान् यूषान् रसांश्च त्रिविधात्मकान् १४०

द्राक्षा- अथवा द्राक्ष अथवा मुनक्का, आमलक-  
आमर्णा आंवला, खर्जूर- भणूर खजूर, पल्लवक- तथा  
हाथिसाना तथा फालसाके, रसेन वा रसधी रससे,  
विविधात्मकान् शुद्ध शुद्ध विविध प्रकारके, तर्पणान्  
तर्पण करनेवाले तर्पण करनेवाले, गृधान् यूपो यूप,  
हस्वान् च अने भक्षितसोनी और मांसरसोकी, कल्पयेत्  
कल्पना करवी कल्पना करे ॥१४०॥

140. Various demulcent drinks, gruels and meat-juices may be prepared out of the juices of grapes, emblic myrobalan, dates and sweet falsah.

आमाशयस्थमुत्क्रिष्टं कफपित्तं मदात्यये ।

विज्ञाय बहुदोषस्य दृश्यमानस्य तृण्यतः ॥१४१॥

मद्यं द्राक्षारसं तोयं दत्त्वा तर्पणमेव वा ।

निःशेषं वामयेच्छीघ्रमेवं रोगाद्विमुच्यते ॥१४२॥

मदात्यये मदात्ययभा मदात्ययमे, बहुदोषस्य अहु  
 दोषयुक्त बहु दोषयुक्त, दृष्टमानस्य अणीता दाद, वृष्यतः  
 अने तरस्या रेणीता और प्यासवाले रोगीके, आमा-

त्रयस्यम् आभाशयश्च आमाशयमें स्थित, कफपित्तम्  
 कक्षपित्तने कफपित्तको, उत्क्रिष्टम् उत्क्रिष्टं यथैव उत्क्रिष्ट  
 हुआ, विज्ञाय आशुने जानकर, मद्यम् मद्यं मद्य, द्राक्षा-  
 रसम् द्राक्षने। रस द्राक्षका रस, तोयम् पाणी पानी,  
 तर्पणम् एव वा के तर्पणं या तर्पण, दत्त्वा पाठने  
 पिष्टाकर, कीघ्नम् ऐकघ्नं शीघ्र ही, निःशेषम् निःशेष  
 सम्पूर्ण, वापयेत् उडेली करावली वमन कराना चाहिए,  
 एवम् आ प्रमाणे करावली इस प्रकार करनेसे, रोगान्  
 मनुष्य रोगाथी मनुष्य रोगसे, विमुच्यते मुक्त थाय छे  
 मुक्त हो जाता है ॥ १४१-१४२ ॥

141-142. Finding that the kapha and the pitta are in a provoked condition in the stomach of the alcoholic patient and that he is afflicted with thirst and burning due to excessive morbidity, the physician should first give him wine, grape juice, water or a demulcent drink and then immediately administer emesis so as not to allow any residue to remain in the stomach. In this way the patient gets quickly cured of his condition.

काले पुनस्तर्पणाद्यं क्रमं कुर्यात् प्रकाङ्क्षिते ।

तेनाग्निर्दीप्यते तस्य दोषशेषान्नपाचकः ॥१४३॥

प्रकाङ्क्षिते भूय द्वागता भूख लगने पर, काले  
 यथाकावे योग्य कालमें, पुनः इरीथी फिरसे,  
 तर्पणाद्यम् तर्पणादि तर्पणादि, कमम् कम् कम, कुर्यात्  
 करे, तेन तेनाथी उससे, तस्य तेना उसके,  
 दोषशेष-दोषशेष अवशिष्ट दोष, अन्नपाचकः अने अचने  
 पचान्तर और अन्नको पचानेवाली, अग्निः अग्नि अग्नि,  
 दीप्यते दीप्त याय छे दीप्त हांती है ॥ १२३ ॥

143. When he desires food, he should be given demulcent drink and

treated systematically with the rehabilitation procedure. As a result, his gastric fire gets enkindled and digests the residual fraction of morbidity as also the food.

कासे सरकनिष्ठीवे पार्श्वस्तनरुजासु च ।  
तृष्यते सविदाहे च सोत्केशे हृदयोरसि ॥१४४॥  
गुडूचीभद्रमुस्तानां पटोलस्याथवा भिषक् ।  
रसं सनागरं दद्यात् तित्तिरिप्रतिभोजनम् ॥१४५॥

कासे ७।५२स खांसी, सरकनिष्ठीवे रक्तयुक्त थूक रक्तयुक्त थूक, पार्श्व-पडभां पार्श्व, स्तन-अने स्तनभां और स्तनमें, रुजासु च पीडा वेदना, तृष्यते तरस प्यास, सविदाहे विदाह विदाह, हृदय- तथा हृदय एवं हृदय, उरसि अने छातीना और छातीके, सोत्केशे उत्केशभां उत्केशमें, भिषक् वैद्य वैद्य, सनागरम् सूंठ-युक्त सोंठयुक्त, गुडूची- गजौ गिलोय, भद्रमुस्तानाम् अने नागरभोधने और नागरमोथका, अथवा अथवा अथवा, पटोलस्य परवणनां पत्रना परवले पत्रोंका, रसम् रस रस, दद्यात् देवे देवे, तित्तिरिप्रतिभोजनम् औषध पथी गथा पछी रेजीजी तेतरना भांसरस साथे शाखि पत्रेनुं अथ भावुं ओछी औषधके जीर्ण होने पर रोगीको तीतरके भांसरसके साथ शाखि आदिका भोजन करना चाहिए ॥ १४४-१४५ ॥

144-145. In conditions of cough, spitting of sputum mixed with blood, pleurodynia, mammary pain, thirst, mis-digestion, agitation in the stomach and chest, the physician should give soup of guduch, large variety of nut grass, or snake-gourd mixed with dry ginger followed by a diet of partridge-flesh.

तृष्यते चातिबलवद्वातपित्ते समुद्धते ।  
दद्याद् द्राक्षारसं पातुं शीतं दोषानुलोमनम् ॥१४६॥

१४६ तित्तिरिप्रतिभोजनम्-नैश्चिरेः प्रतिभोजनम् (ध.)

अतिबलवत्- अतिबलवान् अतिबलवान्, वातपित्ते वातपित्तं वातपित्त, समुद्धते तीव्र तथा तीव्र होने पर, तृष्यते च तरस्याने प्यासीको, दोष- दोषानु दोषका, अनुलोमनम् अनुलोमन ३२ना२ अनुलोमन करनेवाला, शीतम् शीतल शीतल, द्राक्षारसम् द्राक्षेना रस अंगूरका रस, पातुम् पीनाने पीनेको, दद्यात् आपनो देवे ॥ १४६ ॥

146. If the patient is afflicted with great thirst owing to excessive provocation of vata and pitta, he may be given grape-juice to drink, as it is cooling and a regulator of the humors.

जीर्णं समधुराम्लेन छागमांसरसेन तम् ।  
भोजनं भोजयेन्मद्यमनुतर्षं च पाययेत् ॥१४७॥  
अनुतर्षस्य मात्रा सा यथा नो दृष्यते मनः ।

जीर्णं पन्था पछी जीर्ण हो जाने पर, समधुर- मधुर मधुर, अम्लेन अने अम्लयुक्त और अम्लयुक्त, छाग- पकुराना बकरेके, मांसरसेन भांसरसथी मांस-रससे, तम् तेने उसको, भोजनम् भोजन भोजन, भोजयेत् भोजावुं खिलावे, अनुतर्षम् च अने भोजन वधते तरस लागता और भोजनके समय प्यास लगने पर, मद्यम् मद्य मद्य, पाययेत् पावुं पिलावे यथा जेनाथी जिससे, मनः मन मन, नो दृष्यते दृषित न भाय दृषित न हो, सा ते वह, अनुतर्षस्य अनुतर्षनी अनुतर्षकी, मात्रा मात्रा छे मात्रा है ॥ १४७३ ॥

147-147½. When this potion has been digested he should be fed with a diet of the meat-juice of the goat mixed with sweet and sour things and when thirsty, wine should be given as post-prandial potion. That is the proper dose for the post-prandial potion which does not adversely affect the mind.

१४७. पाययेत्-दापयेत् (ध.)

॥ दृष्यते-दृश्यते (ड. त. ध. ध. फ.)

॥ -नोदृश्यते (ध.)



तृष्यते मद्यमरुपात्पं प्रदेयं स्याद्बहुदकम् ॥१४८॥  
तृष्णा येनोपशाम्येत मद्यं येन च नापुयात् ।

तृष्यते तत्रैव क्षागतां प्यासं लगने पर, बहुदकम्  
अहु पाणी भेजवेद्य अधिक पानी मिलाकर, अरुपात्पम्  
थोडुं थोडुं थोडा थोडा, मद्यम् मद्य मद्य, प्रदेयः स्यात्  
आपुं देना चाहिए, येन जेना वडे जिससे, तृष्णा  
तथा प्यास उपशाम्येत शान्त थाथ गान्त हो, येन च  
अने जेना वडे और जिससे, मद्यं मद्य मद्य, न आपुयात्  
नडे नडे न चडे ॥ १४८३ ॥

148-148½. When thirsty, he should  
be given wine frequently and in small  
quantities diluted liberally with water  
so as to quench his thirst and also  
avoid intoxication.

परूषकाणां पीलूनां रसं शीतमथापि वा ॥१४९॥  
पर्णिनीनां चतसृणां पिबेद्वा शिशिरं जलम् ।  
मुस्तदाडिमलाजानां तृष्णाघ्नं वा पिबेद्रसम् ॥१५०॥

परूषकाणाम् इत्यस्याने फालसाका, अथ अपि वा  
अथवा अथवा, पीलूनाम् पीलूने पीलूका, शीतम् शीतल  
शीतल, रसम् रस रस, चतसृणाम् अथवा आरे या चारों,  
पर्णिनीनाम् पणिनीनां पर्णिनीयांका, शिशिरम् शीतल  
शीतल, जलम् वा जल जल, पिबेद् पीपुं पिये, मुस्त-  
अथवा मुस्त अथवा मुस्त, दाडिम- दाडिम अनार,  
लाजानाम् अने दाजाने और लाजाओंका, तृष्णाघ्नम्  
तथा भटाजानां तृष्णानाशक, रसम् वा रस रस, पिबेद्  
पीवे पिये ॥ १४९-१५० ॥

149-150. The patient may drink  
the cold infusion of sweet falsah  
or tooth-brush tree water, or the cool  
decoction of the tetrad of leafy drugs,  
(ticktrefoil, painted leaved uraria, wild

green gram, wild black gram) or the  
adipsous juice of nut-grass, pomegra-  
nate and roasted paddy.

पञ्चाम्लकयोगः—

कोलदाडिमवृक्षाम्लचुकीकाचुक्रिकारसः ।

पञ्चाम्लको मुखालेपः सद्यस्तृष्णां नियच्छति १५१

कोल- कोर बेर, दाडिम- दाडिम अनार, वृक्षाम्ल-  
डाडिम वृक्षाम्ल, चुकीका- आगेरी चागेरी, चुक्रिका-  
तथा चुक्राने और चुकाकी भाजीका, रसः रस रस,  
पञ्चाम्लकः ये पञ्चाभ्यने। इन पांचों अम्लोंका, मुख-  
भुज पर डरेये। मुख पर किया हुआ, आलेपः लेप  
लेप, सद्यः शीघ्र शीघ्र, तृष्णाम् तृष्णाने तृष्णाको,  
नियच्छति शान्त करे छे शान्त करता है ॥ १५१ ॥

151. The juice of the sour pentad  
viz., jujube, pomegranate, kokam butter,  
yellow wood sorrel and country sorrel,  
used as a mouth-paint, immediately  
quenches the thirst.

शीतला बाह्योपचाराः—

शीतलान्यन्नपानानि शीतशय्यासनानि च ।

शीतवातजलस्पर्शाः शीतान्युपवनानि च ॥१५२॥

क्षौमयघ्नोत्पलानां च मणीनां मौक्तिकस्य च ।

चन्दनोदकशीतानां स्पर्शाश्चन्द्रांशुशीतलाः ॥१५३॥

हेमराजतकांस्थानां पात्राणां शीतवारिमिः ।

पूर्णानां हिमपूर्णानां इतीनां पवनाहताः ॥१५४॥

संस्पर्शाश्चन्द्रनार्द्राणां नारीणां च समारुताः ।

चन्दनानां च मुख्यानां शस्ताः पित्तमदात्यये ॥१५५॥

शीतवीर्यं यदन्यथा तत् सर्वं विनियोजयेत् ।

१५२. शीतशय्यासनानि च—शीतानि सदनानि च (ब. क.)

१५३. शीतानां—सिक्तानां (घ.)

१५५. संस्पर्शाश्चन्द्रनार्द्राणां  
नारीणां च समारुताः ।  
चन्दनानां च मुख्यानां  
शस्ताः पित्तमदात्यये ॥

संस्पर्शाश्चन्द्रनार्द्राणां  
नारीणां पित्तमदात्यये (ब.)

१४९. शीतमथापि वा—शीतमथाम्बु वा (घ. घ. क.)

१५०. शिशिरं—शीतलं (क.)

जलम्—रसम् (घ.)

मुस्तदाडिमलाजानां—मुस्तदाडिमलाजानां (ब.)

શીતલાનિ શીતળ શીતલ, અન્નપાનાનિ અન્નપાન  
અન્નપાન, શીત- શીતળ શીતલ, શ્વેદ્યા- શ્વેદન વિઘ્નૌના,  
આસનાનિ ચ તથા આસન ઔર આસન, શીત- શીતળ  
શીતલ, વાત- વાયુ વાયુ, જલ- અને જળનેા ઔર  
જલકા, સ્પર્શાઃ સ્પર્શી સ્પર્શ, શીતાનિ શીતળ શીતલ,  
અપવનાનિ ચ ઉપવનેા ઉપવન, ચન્દન- ચન્દનના  
ચન્દનકે, સદ્ગ- જળથી જલસે, શીતાનામ્ શીતળ  
શીતલ, ક્ષૌમ- ક્ષૌમ વસ્ત્ર ક્ષૌમ વસ્ત્ર, પદ્મ- કુમળ  
કમલ, ઉત્પલાનામ્ ચ નીલકુમળ નીલોત્પલ, મણીનામ્  
મણિ મણિ, મૌક્તિકા ચ અને મોતીના ઔર મોતિયોંકે,  
ચન્દ્ર- ચન્દ્રનાં ચન્દ્રકી, અંશુ- કિરણુ જેવા કિરણોં જેસે,  
શીતલાઃ શીતળ શીતલ સ્પર્શાઃ સ્પર્શી સ્પર્શ, શીત-  
કુંડાં શીતલ, વારિમિઃ જળથી જલસે, પૂર્ણાનામ્ ભરેલ ભરે  
હુણ, હેમ- સોના સોને, રાજત- ચાંદી ચાંદી, કાંસ્યાનામ્  
અને કાંસાનાં ઔર કાંસેકે, પાત્રાનામ્ વાસણેા પાત્રોંકા,  
હિમ- તેમજ બરફ એવં વરફસે, પૂર્ણાનામ્ ભરેલી ભરી,  
હતીનામ્ મશકોના સ્પર્શી મશકોંકે સ્પર્શ, પવન- પવનના  
વાયુકા, આદ્રતાઃ આદ્રતાવાળા આદ્રતાવાળે, સમા-  
હતાઃ તેમજ વાયુવાળા એવં વાયુયુક્ત, ચન્દન- ચન્દનથી  
ચન્દનકે ભાલેપનેસે, સાર્દાનામ્ ભીની આદ્ર, નારીનામ્  
ચ સ્ત્રીઓના સ્ત્રિયોંકે, મુલ્યાનામ્ તથા મુખ્ય ભતનાં  
ઔર મુખ્ય જાતિકે, ચન્દનાનામ્ ચ ચન્દનોના ચન્દનોંકે,  
સંસ્પર્શાઃ સ્પર્શી સ્પર્શ, પિત્ત- પિત્તજન્ય પિત્તજન્ય,  
મદાત્મયે મદાત્મયમ્ મદાત્મયમેં, શસ્તાઃ પ્રશસ્ત છે  
પ્રશસ્ત હૈં, યત્ અને જે ઔર જો, અન્યત્ ચ બીજું  
કંઈ કુલ અન્ય, શીતવીર્યમ્ શીતવીર્ય હોય શીતવીર્ય  
હો, તત્ તે उस, સર્વં બધું સર્વકા, વિનિયોજયેત  
યોગ્ય પ્રયોગ કરે ॥ ૧૫૨-૧૫૫ ॥

152-155. Cooling eats and drinks, cool beds and seats, the touch of cool breezes and waters, cool gardens, the contact of silken garments, sacred lotuses, water lilies and precious stones and pearls sprinkled over with sandal-scented water, cool as the light of the moon, the touch of vessels of gold, silver and bronze filled with cool

water and of skin bags filled with ice and exposed to draughts of breeze; the contact of women smeared with sandal paste and of the breeze heavy with the scent of the best varieties of sandal; these are recommended in alcoholism of the pitta type. The physician may make use of whatever other things there are which have a cooling potency.

કુમુદોત્પલપત્રાણાં સિક્તાનાં ચન્દનામ્બુના ॥૧૫૬॥  
હિતાઃ સ્પર્શા મનોહ્રાનાં દાદે મદ્યસમુત્થિતે ।

મદ્યસમુત્થિતે મદ્યજન્ય મદ્યજન્ય, દાદે દાદમ્બા  
દાદમેં, ચન્દન- ચન્દનના ચન્દનકે, અમ્બુના જળથી જલસે,  
સિક્તાનામ્ ઇંડકારેલ સીંચે ગથે, કુમુદ- કુમુદ કુમુદ,  
ઉત્પલ- તથા નીલકુમળના ઔર નીલોત્પલકે, પત્રાણામ્  
પાનના પત્તોંકે, સ્પર્શાઃ સ્પર્શી સ્પર્શ, હિતાઃ હિતકર છે  
હિતકર હૈં ॥ ૧૫૬ ॥

156-156. In burning due to excessive drinking, the touch of the petals of white lily and night flowering lotus wetted with sandal water, as also the touch of pleasing objects is beneficial.

કથાશ્ચ વિવિધાઃ શસ્તાઃ શબ્દાશ્ચ શિખિનાં શિવાધી  
તોયદાનાં ચ શબ્દા હિ શમયન્તિ મદાત્મયમ્ ।

વિવિધાઃ બુદી બુદી વિવિધ, શસ્તાઃ પ્રશસ્ત  
પ્રશસ્ત કથાઃ ચ કથાઓ કથાએં, શિખિનામ્ મોરના  
મોરકે, શિવાઃ કલ્યાણકારી કલ્યાણકારક, શબ્દાઃ શ-  
શબ્દ શબ્દ, તોયદાનામ્ અને વાદળોના ઔર વાદલોંકી,  
શબ્દાઃ ચ અવાજ અવાજ, મદાત્મયમ્ મદાત્મયમેં  
મદાત્મયકો, શમયન્તિ શીત કરે છે શાન્ત કરતી  
હૈં ॥ ૧૫૭ ॥

૧૫૭ શસ્તાઃ શીતાઃ (બ)

—ચિત્રાઃ (ધ)

૧૫૭. શબ્દા હિ—સંશબ્દા (બ)

157-157½. The narration of wonderful stories, the pleasant cries of the peacock and the rumbling of thunder alleviate the effects of intoxication.

जलयन्त्राभिवर्षीणि वातयन्त्रवहानि च ॥१५८॥  
कल्पनीयानि भिषजा दाहे धारागृहाणि च ।

भिषजा वैद्ये वैद्यको, दाहे दाहभा दाहमें, जलयन्त्र-  
जलयन्त्रसे, अभिवर्षीणि वर्षा कराने  
करनेवाले, वातयन्त्रवहानि च अने वातवाहक यन्त्रोंसे  
युक्त और वायुको वहानेवाले यन्त्रोंसे युक्त, धारागृहाणि  
च धारागृहोन्मी धारागृहोंका, कल्पनीयानि योजनी  
करनी अर्थात् प्रवन्ध करना चाहिए ॥ १५८ ॥

158-158½. Various devices of showering water and blowing breezes and rooms equipped with cascades, should be devised by the physician for the cure of burning due to alcoholism.

फलिनीसेव्यलोध्राम्बुहेमपत्रं कुटञ्जटम् ॥१५९॥  
कालीयकरसोपेतं दाहे शस्तं प्रलेपनम् ।

फलिनी- धडंला प्रियङ्गु, सेव्य- सुगंधी बाजो। सुगन्ध-  
बाला, लोध्र- दोधर लोध, अम्बु- सुगंधी बाजो। सुगन्ध-  
बाला, हेम- धातु नागकेसर रक्त नागकेसर, पत्रम्  
तेजपत्र तेजपात, कुटञ्जटम् अने केवडी मोथ अथवा  
और केवटी मोथ इनका, कालीयक- पीला अंजनना पीले  
चन्दनके, रस- रसकी रससे, उपेतम् युक्त युक्त, प्रलेपनम्  
लेप लेप, दाहे दाहभा दाहमें, शस्तं प्रशस्त अथवा  
प्रशस्त है ॥ १५९ ॥

159-159½. Painting the body with perfumed cherry, cuscus grass, lodh, fragrant sticky mallow, fragrant poon, cinnamon leaves and nut-grass mixed with decoction of sandal is recommended in burning.

बद्रीपल्लवोत्थश्च तथैवारिष्टकोद्भवः ॥१६०॥  
फेनिलायाश्च यः फेनस्तैर्दाहि लेपनं शुभम् ।

दाहे दाहभा दाहमें, बद्री- मैरडीना बेरीके,  
पल्लवोत्थः च पाननु पत्तेका, तथा एव अरिष्टकोद्भवः  
लीमडाना पाननु नीमके पत्तेका, फेनिलायाः च तेमअ  
अरीडानु एवं रीठेका, यः फेन जो, फेनः झीझु अथवा फेन है,  
तैः तेनाशी उनसे, लेपनम् लेप करवा लेप करना,  
शुभम् शुभकारक अथवा शुभकारक है ॥ १६० ॥

160-160½. An application with the lather of jujube sprouts, neem and soap-nut is beneficial in burning.

सुरां समण्डा दध्यम्लं मातुलुङ्गरसो मधु ॥१६१॥  
सेके प्रदेहे शस्यन्ते दाहघ्नाः साम्लकाञ्जिकाः ।

दाहघ्नाः दाहनाशक, साम्लकाञ्जिकाः  
भाटी अथवा दही काजीयुक्त, समण्डा मंड-  
युक्त मण्डयुक्त, सुरा सुरा सुरा, दध्यम्लम् भाटी दही  
अथवा दही, मातुलुङ्ग- अथवा तेलने। चिकोत्राका, रसः रस  
रस, मधु अने मध और मधु सेके सेक परिषेक, प्रदेहे  
अने प्रदेहभा और प्रदेहमें, शस्यन्ते प्रशस्त अथवा प्रशस्त  
हैं ॥ १६१ ॥

161-161½. Sura wine, supernatant part of sura wine, sour curds, pomello-juice and honey along with sour conjee are curative of burning and are recommended as affusion and application.

परिषेकावगाहेषु व्यञ्जनानां च सेवने ॥१६२॥  
शस्यन्ते शिशिरं तोयं दाहवृण्णाप्रशान्तये ।

परिषेक- परिषेचन परिषेचन अवगाहेषु अवगाहन  
अवगाहन, व्यञ्जनानां च अने व्यञ्जनोंकी और  
व्यञ्जनोंके सेवने सेवनभा सेवनमें, दाह- तथा दाह  
तथा दाह, वृण्णा- अने तरेसनी और प्यासको, प्रशान्तये  
शान्ति भाटे शान्त करनेमें, शिशिरम् शीतल शीतल,  
तोयम् अथवा जल, शस्यन्ते प्रशस्त अथवा प्रशस्त हैं ॥ १६२ ॥

162-162½. Cold water is recommended for use as affusion, immersion and

for wetting the fans to allay burning and thirst.

मात्राकालप्रयुक्तेन कर्मणाऽनेन शाम्यति ॥१६३॥  
धीमतो वैद्यवश्यस्य शीघ्रं पित्तमदात्ययः ।

मात्रा- योग्य मात्रा योग्य मात्रा, काल-तथा योग्य  
कालमा और योग्यकालमें, प्रयुक्तेन प्रयोग्य प्रयुक्त,  
अनेन अ। इस, कर्मणा कर्मधी कर्मसे, धीमतः  
शुद्धिमान बुद्धिमान, वैद्यवश्यस्य तथा वैद्यवश्य मनुष्यने।  
तथा वैद्यवश्य मनुष्यका, पित्तमदात्ययः पित्तमदात्यय  
पित्तमदात्यय, शीघ्रं शीघ्र शीघ्र, शाम्यति शान्त  
थाय से शान्त होता है ॥ १६३॥

163-163½. If these procedures are administered in proper dose and in proper time, alcoholism of the pitta type gets allayed quickly if the patient strictly carries out the instructions of the physician.

कफमदात्ययस्य चिकित्सा—

उल्लेखनोपवासाभ्यां जयेत् कफमदात्ययम् ॥१६४॥  
तृण्यते खलिलं चास्मै दद्याद्भीवेरसाधितम् ।  
बलया पृश्निपर्ण्या वा कण्टकार्याऽथवा शृतम् ॥१६५॥  
सनागरामिः सर्वोभिर्जलं वा शृतशीतलम् ।  
दुःस्पर्शेन समुस्तेन मुस्तपर्पटकेन वा ॥१६६॥  
जलं मुस्तैः शृतं वाऽपि दद्याद्दोषविपाचनम् ।

उल्लेखन- वमन वमन, उपवासाभ्याम् अने उप-  
वासाधी और उपवाससे, कफमदात्ययम् कफमदात्ययने  
कफमदात्ययको, जयेत् जितवे जीते। तृण्यते तरस्याने  
प्यास लगने पर, अस्मै तेने उसको, भीवेर- सुगन्धी  
वागन्धी सुगन्धवालासे, साधितम् सिद्ध करेद सिद्ध किया,  
बलया अथवा बलासे, पृश्निपर्ण्या वा अथवा पृश्नि-  
पर्ण्याधी अथवा पृश्निपर्णीसे, अथवा अथवा अथवा,  
कण्टकार्या शैरी कोरीगण्डीकी कटेरीसे, शृतम् पकावेद

१६३. मात्राकालप्रयुक्तेन कर्मणाऽनेन शाम्यति-कर्मणानेन सिद्धेन  
विकार उपशाम्यति (ब. फ.)

१६६. दुःस्पर्शेन समुस्तेन-दुःस्पर्शितेन मुस्तेन (ब.)

पकाया, खलिलं पाणी जल, दद्यात् देवुं देवे, सना-  
गरामिः अथवा सूँठसहित अथवा सौंठसहित, सर्वोभिः  
आ अथवाही इन सबसे, शृत- पकावेद पकाया, शीत-  
लम् अने ठंडुं करेवुं और शीतल किया, जलम् वा  
अथवा जल, समुस्तेन अथवा मोथसहित अथवा मोथा-  
सहित, दुःस्पर्शेन अथवा यवासा, सुस्त- मोथ और  
मोथा, पर्पटकेन वा तथा पित्तपापडा और पित्तपापडा,  
मुस्तैः वा अपि अथवा केवल मोथधी या केवल  
मोथसे, शृतम् उकागेवुं साधित, दोष- दोषुं दोषको,  
विपाचनम् पाचन करनेवाला, जलम् अथवा जल,  
दद्यात् देवुं देवे ॥ १६४-१६६॥

164-166½. Alcoholism of the kapha type should be cured by means of emesis and fasting. When thirsty, the patient should be given water boiled with fragrant sticky mallow or with heart-leaved sida or painted leaved uraria or yellow-berried nightshade or water boiled with all these together and dry ginger, and cooled; or the physician may give water boiled with cretan prickly clover and nut-grass, or with nut-grass and trailing rungia or water boiled with nut-grass only, as each of these causes the digestion of the morbid humor.

एतदेव च पानीयं सर्वत्रापि मदात्यये ॥१६७॥  
निरत्ययं पीयमानं पिपासात्वरनाशनम् ।  
निरामं काङ्क्षितं काले सखौद्रं पाययेत्तु तम् ॥१६८॥  
शार्करं मधु वा जीर्णमरिष्टं सीधुमेव वा ।  
रूक्षतर्पणसंयुक्तं यवानीनागरान्वितम् ॥१६९॥

१६८. सखौद्रं पाययेत्तु तम्-पाययेद्दुग्धाक्षिकम् (क. घ. ष.)

१६९. मधु वा-माधुम् (ब.)

रूक्षतर्पणसंयुक्तं यवानीनागरान्वितम्-रूक्ष तर्पणसंयुक्तं  
यवान्वा प्रदापयेत् (ब.)

यवानी-यमानी (द.)

नागरान्वितम्-ना प्रदापयेत् (द.)

सर्वत्र अपि अधाये सभी प्रकारके, मदास्यये मदास्ययर्मा मदास्ययर्मे, निरस्ययम् हानि पशरनुं हानि-रहित, पीयमानम् पीयानुं पान कराया हुआ, एतत् आ यह, एव च अ ही पानीयम् पाणी जल, पिपासा-तरस प्यास, उवर- अने अवरने और उवरका, नाशनम् नाश करे छे नाशक है, निरामम् आभदोपरहित आमदोषरहित, तम् तेने उसको, काङ्क्षितम् भूष धाये अन्नको इच्छा होने पर, काले यथासमय गोय समयमें, सक्षौद्रम् मधुयुक्त मधुयुक्त, रुक्ष- रक्ष रुक्ष, तर्पण- तर्पण्थी तर्पणसे, संयुक्तम् युक्त सिला, यवानी-यवानी यवानी, नागर- अने सूक्ष्मी और सौंठसे, अन्वितम् युक्त युक्त, शार्करम् शार्कर शार्कर, मधु मधु मधु, जीर्णम् भूने पुराना, अरिष्टम् वा अरिष्ट अरिष्ट, सीधुम् एव वा अथवा सीधु या सीधु, पाक्येत पुावे पिलावे ॥ १६७-१६९ ॥

167-169. The same is recommended as a potion in every kind of alcoholism. This is harmless as a drink and is curative of thirst and fever. Sugar wine, honey wine, old medicated wine or sidhu wine, mixed with honey and ununctuous and demulcent articles added with the pulvis of bishop's weed and dry ginger, may be given to the patient to drink when the chyme is digested and he feels thirsty.

यावगौधूमिकं चात्रं रुक्षयूषेण भोजयेत् ।  
कुलस्थानां सुशुष्काणां मूलकानां रसेन वा ॥१७०॥  
तनुनाऽप्येन लघुना कटुम्लेनापसर्पिषा ।

याव- अव जौ, गौधूमिकम् अने अङ्गना और गेहूँका, अन्नम् च भोजन भोजन, कुलस्थानाम् कुलस्थानी कुलस्थीके, सुशुष्काणाम् अथवा सारी पेठे सूक्ष्मे या अच्छी तरह सूखी, मूलकानाम् वा भूणाना मूलके, तनुना पातणा पतले, अप्येन भोज्ये भोज्ये, लघुना लघुका हलके, कटु- कटु कटु, अम्लेन अम्ले अम्ल, अन्न- अन्न भोज्ये, सर्पिषा भीषाणी भीषाणी हुए,

रुक्ष- रक्ष रुक्ष, यूषेण यूप साथे यूपके साथ, रसेन वा अथवा रस साथे या रसके साथ, भोजयेत् अभाज्या खिलावे ॥ १७० ॥

170-170½. He should be given a diet of barley and wheat with un-unctuous soups of horsegram or of dried raddish. This soup should be cooked thin and given in small quantity. It should be made light and mixed with articles which are pungent and acid in taste and also with slight quantity of ghee.

पटालयूषमम्लं वा यूपमामलकस्य वा ॥१७१॥  
प्रभूतकटुसंयुक्तं सयवात्रं प्रदापयेत् ।  
व्योषयूषमथाम्लं वा यूपं वा साम्लवेतसम् ॥१७२॥  
छागमांसरसं रुक्षमम्लं वा जाङ्गलं रसम् ।

प्रभूत- पुङ्गु बहुत, कटु- कटु अथवा कटु हर्षोसे, संयुक्तम् युक्त युक्त अम्लम् आटे खट्टा, पटोक- पर-वणने परवलोका, यूपम् वा यूप यूप, मामलकस्य के आमलानी या आवलेका, यूपम् वा यूप यूप, सयवा-न्नम् अन्नना अन्नो साथे जौके अन्नके साथ, प्रदापयेत् आपवे देवे, अथवा अथवा अथवा, अम्लम् अम्ल अम्ल, व्योष- त्रिकटुने त्रिकटुका, यूपम् यूप यूप, साम्ल-वेतसम् के अम्लवेतसयुक्त या अम्लवेतसयुक्त, यूपम् वा यूप यूप, रुक्षम् अथवा रक्ष अथवा रुक्ष, अम्लम् अने अम्ल और अम्ल, छाग- अङ्गाने बकरेका, मांसा-रसम् वा मांसरस मांसरस, जाङ्गलम् वा के अम्ल आण्णीओने या जांगल जीवोका, रसम् मांसरस देवे मांसरस देवे ॥ १७१-१७२ ॥

171-172½. He should be fed on a diet of barley along with sour soup of snake-gourd or the soup of emblic myrobalan mixed profusely with pungent articles. He may also be given the sour soup of the three spices or

of Amlavetasa or meat juice of the goat prepared with sour articles and without unctuous substance or the meat-juice of jangala creatures in the same way.

स्थान्यां वाऽथ कपाले वा भृष्टं निर्द्रववर्तितम् १७३  
कटुमल्लवणं मांसं भक्षयन् वृणुयान्मधु ।

स्थान्याम् वा कडाईभां कड़ाही, कपाले वा अथवा भाटीना कपाईभां या मिट्टीके कपालमें, निर्द्रववर्तितम् इव विनातुं अर्थां सुधीं इवरहित होने तक, भृष्टम् शैकेषु भूना हुआ, कटु-कटु कटु, अम्ल-अम्ल अम्ल, कवणम् अने क्षणेषुवाणुं और नमकीन, मांसम् मांस मांस, भक्षयन् भाँटने सेवन करके, मधु मधु मधु, वृणुयात् पीवे। पीवे ॥ १७३ ॥

173-173½. Meat should be roasted in a dish or an earthen pan till it is completely dry and then pungent, sour and salt articles should be added; the patient should take honey-wine while eating them.

व्यक्तमारीचकं मांसं मातुलुङ्गरसाम्बितम् ॥१७४॥

प्रभृतकटुसंयुक्तं यवानीनागरान्वितम् ।

भृष्टं दाडिमसाराम्लमुष्णपूषोपवेष्टितम् ॥१७५॥

यथाग्निं भक्षयेत् काले प्रभूताद्रकपेशिकम् ।

पिबेच्च निगदं मद्यं कफप्राये मदात्यये ॥१७६॥

व्यक्त- व्यक्त व्यक्त, मारीचकम् भरीना रसा-  
वाणुं मरिचके स्वादवाला, मातुलुङ्ग- थोडातरानां चिको-  
त्राका, रस- रसयी रस, अन्वितम् युक्त मिलाया हुआ,  
प्रभृत- भुष्ट आत, कटु- तीभां प्रथेथी तीरे प्रथसे,  
संयुक्तम् युक्त युक्त, यवानी- यवानी यवानी, नागर-  
तेमल- सुंथी एवं सोंठसे, अन्वितम् युक्त युक्त, भृष्टम्  
शैकेषु भूना हुआ, दाडिमसाराम्लम् दाडिमना रसयी  
भाँटुं अनारके रससे खाड़ा, उष्ण- गरम उष्ण, पूष-

पूषभां पूषमें, उपवेष्टितम् ठंडाथैक्ष लपेटा हुआ, प्रभृत-  
भुष्ट बहुतसे, आद्रक- आद्रना आद्रकके, पेशिकम्  
टुकड़ावाणुं भाँस टुकड़ोंसे मिला हुआ मांस, काले  
यथाकाले योग्य समयमें, यथाग्निं अग्नि प्रभाणुं अग्निके  
अनुसार, भक्षयेत् भाँटुं खावे, कफप्राये अने कफप्रधान  
और कफप्रधान, मदात्यये च मदात्ययभां मदात्ययमें,  
निगदम् निहीष निर्दोष, मद्यम् मद्य मद्य, पिबेत् पीवुं  
पीवे ॥ १७४-१७६ ॥

174-176. In alcoholism of the kapha type, the patient should eat, according to the strength of his gastric fire, at proper meal-time, meat copiously flavoured with black pepper and mixed with juice of pomello and large mea-  
sure of pungent articles as well as with bishop's weed and dry ginger, and acidified with the juice of pome-  
granate and mixed copiously with pieces of green ginger and rolled up in a hot pancake; he should then take a draught of wholesome wine

सौवर्चलमजाजी च वृक्षाम्लं साम्लवेतसम्

त्वग्नेलामरिचार्धांशं शर्कराभागयोजितम् ॥१७७॥

एतल्लवणमष्टाङ्गमग्निर्दीपनं परम् ।

मदात्यये कफप्राये दद्यात् स्रोतोविशोधनम् ॥१७८॥

सौवर्चलम् संयुक्त सौवर्चलमक, अजाजी ७३  
जीरा, साम्लवेतसम् अम्लवेतससहित अम्लवेतससहित,  
वृक्षाम्लम् डोडम वृक्षाम्ल, त्वक्- त्वक् दालचीनी, एका-  
अध्यायी इलायची, मरिच- भरी मरिच, अर्धांशम् ६२३  
अधीभाग प्रत्येक आधाभाग, शर्करा- साकर चीनी,  
भाग- अर्धभाग एकभाग, योजितम् शेणुके मिलाया  
हुआ, परम् श्रेष्ठ श्रेष्ठ, अग्निर्दीपनम् अग्निदीपक  
अग्निदीपक, स्रोतोविशोधनम् अने स्रोतोविशोधन करनेवा  
और स्रोतोका विशेषक, एतत् आ यह, दद्यात् दद्यात्  
अर्धभाग अर्धभाग, लवणम् क्षण, कफप्राये कफप्रधान

१७३. निर्द्रववर्तितम्-नीरसवर्तितम् (व. व. व. क.)

१७५. प्रभृतकटुसंयुक्तं यवानी-प्रभृतकटुसंयुक्तं यवानी (व.)



कफप्रधान, मदात्यये मदात्ययम्। मदात्ययम्, दद्यात्  
देवुं देवे ॥ १७७ १७८ ॥

177-178. Take sanchal salt, cumin seeds, kokam butter and Amlavetasa one part each, cinnamon, cardamom and black pepper 1/2 part each and mix with one part of sugar. This salt preparation containing eight ingredients (Ashtanga salt) is an excellent promoter of the gastric fire and should be given in alcoholism of the kapha type, for cleansing the body-channels.

एतदेव पुनर्युक्त्या मधुराम्लैर्द्रवीकृतम् ।

गोधूमान्नयवाश्रानां मांस्वानां चातिरोचनम् ॥१७६॥

पुनः वशी फिर, युक्त्या युक्तिपूर्वकं युक्तिपूर्वकं, मधुर-मधुर मधुर, अम्लैः अने अम्ल द्रव्योंशी और अम्ल द्रव्योंसे, द्रवीकृतम् द्रव करेलुं द्रवरूप बनाया गया, एतत् एव आश्चर्य अष्टांग लक्षण सही अष्टांग लक्षण, गोधूमाक्ष-धुंनों बोधन गेहूँके भोजन, यवा-जानाम् यवनां बोधन जीके भोजन, मांसानाम् च अने मांसनां बोधनने और मांसके भोजनको, क्षतिरोचनम् अति रुचिकर बनावे छे अति रुचिकर बनाता है ॥ १७९ ॥

179. The same Ashtanga salt duly diluted with sweet and acid juices, adds relish to articles of wheat and barley and also to meat preparations.

पेषयेत् कटुकैर्युक्तां श्वेतां बीजविवर्जिताम् ।

मृद्वीकां मातुलुकस्य दाडिमस्य रसेन वा ॥१८०॥

सौवर्चलैलामरिचैरजाजीभृङ्गदीप्यकैः ।

स रागः क्षौद्रसंयुक्तः श्रेष्ठो रोचनदीपनः ॥१८१॥

बीज- ७००० बीजसे विवर्जिताम् रहित रहित,  
कटुकैः ५००० बीज कटुप्रभोंसे, युक्तम् युक्त युक्त, श्वेताम्

१८१. स रागः कोटसंयुक्तः-सनातनकोटसंयुक्तः (म.)

સેષ્ઠ સફેદ, મુઠ્ઠીકાશ્વ પ્રાક્ષને મુનકેકો માતુલુકશ્વ  
ચક્રાતરાના ચિકોત્રાકે, દાહિમશ્વ વા અથવા દાહમના  
યા અનારકે, રસેન રસથી રસસે, સૌવર્ચલ- સંચળ  
સૌવલનમક ઇલા- કૈલથી ઇલાયચી, મરિચૈઃ મરી  
મરિચ, અજાજી- ૭૩ જીરા, મુક્ત- તજ દાલચીની, દીપ્યકૈઃ  
અને અજમાસહિત ઔર અજવાયનસહિત, પેષવેશ  
વાટવી પીસે, ક્ષૌદ્ર- મધથી મધુસે, સંયુક્તઃ યુક્ત યુક્ત,  
સઃ તે વદ, રાગઃ રાગ રાગ, શ્રેષ્ઠઃ શ્રેષ્ઠ શ્રેષ્ઠ, રોચન-  
રોચન ટેવન, દીપનઃ અને દીપન છે ઔર અમિદીપક  
૬ ॥ ૧૮૦-૧૮૧ ॥

180-181. Reduce into paste, along with spices, white grapes after taking out the seeds, with the juice of pomello or of pomegranate and add sanchal salt, cardamom, black pepper, cumin seeds cinnamon bark and bishop's weed; this chutney mixed with honey, serves as an excellent appetiser and promoter of the gastric fire.

मृष्ट्रीकाया विधानेन कारयेत् कारवीमपि ।

शुक्लमत्स्यण्डिकोपेतं रागं दीपनपाचनम् ॥१८२॥

सूचीकायाः द्राक्षणा मुनकाक्षी, विधानेन विधानथी  
 अ विधिसे ही, कारवीमू नान्नी द्राक्षणा छोटी मुनकाका,  
 अपि पक्षु मी, शुक्ल-शुक्ल शुक्ल, मत्स्यण्डिका-अने  
 भूतस्थंडिका (राज्य)थी और मत्स्यण्डिका (राज्य)से, उपेतम्  
 युक्त युक्त, दीपन-दीपन दीपन, पाचनम् तथा पाचन  
 और पाचन, रागम् राग राग, कारयेत् अनानवे  
 बनावे ॥ १८२ ॥

182. A chutney may be prepared out of small grapes too in the same manner; this chutney, mixed with vinegar and liquid gur, acts as a digestive-stimulant and digestive.

१८२. कास्येत् = कल्पयेत् (घ.)

॥ शुक्र-शुक्र (स. ६)

दीपकपात्रमय-रोजनीदीप्तम् (द. फ. ५३)



183-184. Prepare separate chutneys of mango-pulp and pulp of emblic myrobalan, adding coriander, sanchal salt, cumin seeds, celery and black pepper, gur and honey, and prepare it so as to have a predominantly sour and salt taste; food articles, taken along with this chutney, are relished much and are also properly digested.

१८४. गुडेन मधुशुक्तेन व्यक्ताम्ललवणीकृतान् - गुडेन मधुशुक्तेन व्यक्ताम्लमधुरीकृतान् (ध.)

११ व्यक्तामल्लवणीकृतान्-व्यक्तामल्लमधुरीकृतान् (घ.)

—व्यक्ताम्नां मधुरीकृताण् (क. व.)

सम्बन्धसुक्तं च जीर्यति-सुक्ते सम्बन्धं जीर्यति (व.)

रूक्ष- रक्ष रक्ष, उष्णेन अने उष्णु और उष्ण, अक्षपानेन अनपानथी अक्षपानसे, अक्षिशिरेण अग्रभ उष्ण, स्नानेन च स्नानथी स्नानसे, व्यायाम- व्याया- मथी व्यायामसे, लङ्घनाभ्याम् च लङ्घनथी उपवाससे, युक्तया युक्तिपूर्वक युक्तिपूर्वक, जागरणेन च अग्ररक्ष उरनाथी जागरण करनेसे, काल- योग्य काले योग्य कालमें, युक्तेन योग्य प्रयुक्त, रूक्षेण रक्ष रूक्ष, स्नानेन स्नानथी स्नानसे, उद्वर्तनेन च तथा उद्वर्तनथी तथा उद्वर्तनसे, प्राण- प्राणुकर प्राणकारक, वर्णकराणाम् च तेभ्यः वर्णुकर एवं वर्णकारक, प्रवर्षाणाम् यक्षु आदिना प्रवर्षाणाना चूर्ण आदिके प्रवर्षणोंके, सेवया च सेवनथी सेवनसे, गुरूणाम् भारे भारी, वसनाणाम् वस्त्राणां वस्त्रोंके, अगुरोः च अने अग्ररना और अग्ररके, अपि पक्षु मी, सेवया सेवनथी सेवनसे, संकोच- संकोचथी संकोचसे, उष्ण- उष्णु उष्ण, सुख- अने सुभकारक तथा सुखवाले, अङ्गीनाम् अङ्गीवाणी शरीरवाली, अन्नानाम् अन्नाना चिचियोंके, सेवया च सेवनथी सेवनसे, सुख- अने सुभकर और सुखकर, शिक्षित- अने शिक्षाकुशल और शिक्षित, हस्तानाम् हाथवाणी हाथवाली, स्त्रीणां स्त्रीयाना चिचियोंके, संवाहनेन च संवाहनथी संवाहनसे, कफप्रायः कफप्रधान कफप्रधान, मदात्मकः

१८५ रुक्षोष्णेनाश्वपानेन-रुक्षाम्लेनाश्वपानेन (ध फ.)

॥ स्वानेना-सोष्णेना (फ.):

॥ युक्त्या युक्ताभ्याम् (क.)

१८६ प्राणवर्णकराणां च-स्नानवर्णकबासानां (ध. फ. ड.)

प्रवर्षाणां-प्रहर्षाणां (ख. ४.)

१८७. सेवका वसुनानां च—प्राणवर्णकराणां च (ख. ड.)

संक्षोभः-संक्षोभः (क. ख. घ. ङ. त.)

मदात्यय मदात्यय, शीघ्रम् हि ततश्च शीघ्र ही,  
उपशाम्यति शीतं यद् अयं शान्तं हो जाता  
है ॥ १८५ १८८ ॥

185-188. By non-unctuous and hot  
eats and drinks, warm baths, proper  
exercise, fasting, systematic waking  
in the nights, systematic dry baths  
and massages at the proper time, by  
friction massage which is promotive of  
life and color, by wearing heavy  
clothings, by the use of eagle-wood  
paste by the warm and joyous embr-  
aces of young women and soothing  
warm massage of the body by the  
well trained hands of women—by such  
means, the alcoholism of the kapha  
type abates quickly.

सन्निपातमदात्ययस्य चिकित्सा—

यदिदं कर्म निर्दिष्टं पृथग्बोधवलं प्रति ।

सन्निपाते दशविधे तद्विकल्पं मिषविवदा ॥१८९॥

पृथक् बुद्धि बुद्धि अलग अलग, दोषबलम् हेतुबलम्  
बोधवलके प्रति प्रति लिए, यत् ने जो, इदम् आ  
यद् कर्म कर्मने कर्म, निर्दिष्टम् निर्देश उभे  
बतलाया है, तत् तेने उसका, मिषविवदा वैद्य वैद्य,  
दशविधे दश प्रकारना दस प्रकारके, सन्निपाते सन्नि-  
पातमा सन्निपातमे, विकल्पम् विकल्प उरवे विकल्प  
करे ॥ १८९ ॥

189. The measures which are  
described regarding each morbid  
humor separately, should be given in  
skilful combination, for the cure of  
the remaining ten types of tridiscor-  
dance, by the wise physician.

यस्तु दोषविकल्पो यश्चौषधिविकल्पवित् ।

स साध्यान्साधयेद्वाधीन् साध्यासाध्यविभाग-  
वित् ॥१९०॥

यः तु ने जो, दोष- दोषना दोषके, विकल्पज्ञः  
विकल्पना जाननेवाला होय छे विकल्पको जाननेवाला है,  
यः च अने ने और जो, औषधि- औषधना औषधके,  
विकल्पवित् विकल्पने अज्ञानार होय छे विकल्पको  
जाननेवाला है, साध्य- अने ने साध्य और जो साध्य,  
असाध्य- तथा असाध्यना और असाध्यके, विभागवित्  
विभागने अज्ञानार होय छे विभागको जाननेवाला है,  
सः ते वह, साध्यान् साध्य साध्य, व्याधीन् व्याधि-  
ओने व्याधियोंको, साधयेत् मटाडे छे शान्त करता  
है ॥ १९० ॥

190. The physician, who is an  
expert in pathology as well as in  
pharmaceutics and knows the science  
of prognosis as regards curable and  
uncurable diseases, cures all curable  
diseases

मदात्यये द्वितो विहारः—

वनानि रमणीयानि सपन्नाः सलिलाशयाः ।

विशदान्यन्नपानानि सहायाश्च प्रहर्षणाः ॥१९१॥

मादयानि गन्धयोगाश्च वासांसि विमलानि च ।

गान्धर्वशब्दाः कान्ताश्च गोष्ठ्याश्च हृदयप्रियाः १९२

संकथाहास्यगीतानां विशदाश्चैव योजनाः ।

प्रियाश्चानुगता नार्यो नाशयन्ति मदात्ययम् ॥१९३॥

रमणीयानि रमणीय रमणीय, वनानि वने वन,  
सपन्नाः पशुपुक्त पशुपु भरे, सलिलाशयाः जलाशये  
जलाशय, विशदानि शुद्ध शुद्ध, नक्षपानानि अनपान  
अन्नपान, प्रहर्षणाः हर्ष उरावनार हर्ष देनेवाले, सहायाः  
च साथीदारे साथी, मादयानि माणाओ माणाएँ,  
गन्धयोगाः च सुगन्धना योगे (गन्धन वजेरे सुगन्धी  
योगे) सुगन्धके योगों (चन्दन आदि सुगन्धी द्रव्यों),  
विमलानि विभज विमल, वासांसि च पशुपु वन,  
कान्ताः मनोरम मनोरम, गान्धर्वशब्दाः च गायनना  
गायनके शब्द, हृदयप्रियाः हृदयप्रिय हृदयको प्रिय,  
गोष्ठ्याः ओशी गोष्ठियां, संकथा- कथा कथा, हास्य- हास्य

१९१. सपन्नाः—पश्विन्यः (व.)

हास्य, गीतानाम् अने जीतिनी और गीतकी, विवादाः  
विशद विशद, योजनाः च एव शैल्यनाथो योजनाएं,  
अनुगताः अने अनुगामी और अनुगामिनी, प्रियाः  
तथा प्रिय तथा प्रिय, नार्यः च स्त्रीयो क्रियाँ,  
मदात्ययम् भदात्ययने। मदात्ययको, नाशयन्ति नाश  
करे छे नष्ट करते हैं ॥ १९१-१९३ ॥

191-193. Lovely woodlands, lakes,  
ponds full of lotuses, flowers, clean  
food and drink, cheering companions,  
garlands, varieties of perfumes, clean  
garments, musical notes, endearing  
and delightful company, the blameless  
exposition of stories, humorous anec-  
dotes and songs and the companionship  
of beloved women act as curatives of  
alcoholism.

नाक्षोभ्य हि मनो मद्यं शरीरमविहृत्य च ।  
कुर्यान्मदात्ययं तस्मादेष्वन्या हर्षणी क्रिया ॥१९३॥

मद्यम् मद्य मद्य, मनः मनने मनको, अक्षोभ्य  
क्षुब्ध क्षीं बिना क्षुब्ध किये बिना, शरीरम् अने  
शरीरने। एवं शरीरको, अविहृत्य च उपधातु क्षीं  
बिना आघात किये बिना, मदात्ययम् भदात्यय मदात्यय,  
न कुर्यात् हि करतुं नथी नही करता, तस्मात् तेथी  
इस लिए, हर्षणी हर्ष करनी। हर्षकारक, क्रिया। अङ्कित्सा  
चिकित्सा, पृष्ट्या पृष्ट छे इष्ट है ॥ १९४ ॥

194. Alcohol does not cause morbid  
intoxication without first agitating the  
mind, nor without affecting the body.  
Hence treatment that is mentally  
cheering and enlivening should be  
given.

मदात्यये क्षीरप्रयोगः—

आभिः क्रियाभिः सिद्धाभिः शमं याति मदात्ययः ।  
न चेन्मद्यविधिं मुक्त्वा क्षीरमस्य प्रयोजयेत् ॥१९५॥

१९४. अविहृत्य—अवहृत्य (त.)

१९५. मुक्त्वा—वित्वा (क. छ. ड.)

आभिः आः इन, सिद्धाभिः सिद्ध सिद्ध, क्रियाभिः  
अङ्कित्साओथी चिकित्साओथे, मदात्ययः भदात्यय  
मदात्यय शमम् शान्त शान्त, न याति चेत् न थाय ते।  
न हो तो, मद्यविधिम् मद्यविधि मद्यविधिको, मुक्त्वा  
छोड़ी हथने छोड़कर, अस्य आ रोगीने इस रोगीको,  
क्षीरम् दूधने। क्षीरका, प्रयोजयेत् प्रयोग करवे। प्रयोग  
करावे ॥ १९५ ॥

195. With the above tested reme-  
dies alcoholism gets alleviated; if it does  
not then a course of milk-diet should  
be resorted to giving up the use of  
wine altogether.

लङ्घनैः पाचनैर्दोषशोधनैः शमनैरपि ।  
त्रिमद्यस्य कफे क्षीणे जाते दौर्बल्यलाघवे ॥१९६॥  
तस्य मद्यविदग्धस्य वातपित्ताधिकस्य च ।  
ग्रीष्मोपतप्तस्य तरोर्यथा वर्षं तथा पयः ॥१९७॥

लङ्घनैः लंघन लंघन, पाचनैः पाचन पाचन,  
दोषशोधनैः दोषशोधन दोषशोधन, शमनैः शमि अने  
शंशमने। वरे पशु और संशमनने सी, त्रिमद्यस्य मद्य-  
रहितने। नगरहितका, कफे कफ कफ, क्षीणे क्षीण भता  
क्षीण होने पर, दौर्बल्य- तथा दुर्बलता तथा दुर्बलता,  
लाघवे अने लघुता और लघुता, जाते उत्पन्न भता  
उत्पन्न होने पर, यथा जेम जिस प्रकार, ग्रीष्म- श्रीष्म  
ऋतुर्भा ग्रीष्म ऋतुमें, उपतप्तस्य तपेला तपे हुए, तरोः  
आउने वृक्षके लिए, वर्षम् वर्षसाह छे वर्षा है, तथा  
तेम उस प्रकार, मद्यविदग्धस्य मद्यविदग्ध मद्यविदग्ध,  
वातपित्ताधिकस्य च अने वातपित्तनी अधिकतावाला  
और वातपित्तकी अधिकतावाले, तस्य ते रोगीने उस  
रोगीके लिए, पयः दूध छे दूध है ॥ १९६-१९७ ॥

196-197. Owing to the lightening  
therapy and digestive, cleansing and  
soothing procedures, the patient,  
who gives up wine, becomes weak  
and lightened by the reduction of

१९६. दोषशोधनैः शमनैरपि—चेव दोषशोधनैरपि (ड.)

kapha. For such a patient [whose systems have been burnt up by alcohol and whose morbid vata and pitta are increased, milk is as wholesome as rains are for the summer-scorched tree.

पयसाऽभिहृते रोगे बले जाते निवर्तयेत् ।  
क्षीरप्रयोगं मद्यं च क्रमेणाव्याप्यमाचरेत् ॥१९८॥

पयसा दुधसे, रोगे रोग रोगका, अभिहृते हराता हरण होने पर, बले अने अण और बल, जाते उत्पन्न तथा उत्पन्न होने पर, क्षीरप्रयोग दुधने। प्रयोग दुधका प्रयोग निवर्तयेत् दुधसे अथ करे। क्रमशः बन्द करे, क्रमेण अने दुधसे और क्रमशः, व्याप्यमाचरेत् योऽयं योऽयं योऽयं योऽयं, मद्यं मद्य मद्य, आचरेत् पापुं पिलावे ॥ १९८ ॥

198. When the disease has been cured by the administration of milk and the patient has acquired strength, the milk regimen should be gradually reduced and alcohol substituted little by little.

मदोत्थयोर्ध्वंसकविक्षयकरोगयोर्लक्षणम्—

विच्छिन्नमद्यः सहसा योऽस्तिमद्यं निवेवते ।  
ध्वंसको विक्षयश्चैव रोगस्तस्योपजायते ॥१९९॥

विच्छिन्नमद्यः मद्य गेले छोड्युं होय यीवा मद्यकी आदत जिसने छोड़ी हो ऐसा, यः गे पुरुष जो पुरुष, सहसा सहसा सहसा, अतिमद्यः अतिमद्यनु अतिमद्यका, निवेवते सेवन करे छे सेवन करता है, तस्य तेने उसको, ध्वंसकः ध्वंसक ध्वंसक, विक्षयः च एव अने विक्षय और विक्षय, रोगः रोग रोग, उपजायते थाय छे हो जाते हैं ॥ १९९ ॥

199. The person who, after withdrawal from drink-habit, takes again suddenly to drinking excessively

succumbs to the disorders named 'Dhwansaka and Vikshaya'.

व्याध्युपक्षीणदेहस्य दुश्चिकित्स्यतमौ हि तौ ।  
तयोर्लिङ्गं चिकित्सा च यथावदुपदेक्ष्यते ॥२००॥

व्याधि- व्याधिधी व्याधिसे, उपक्षीण- क्षीण धर्मे क्षीण हुए, देहस्य शरीरवाणाना शरीरवाले पुरुषमें, तौ ते वे वे दोनों, दुश्चिकित्स्यतमौ हि धर्मे दुश्चिकित्स्य छे अत्यन्त दुश्चिकित्स्य हैं, तयोः तेषां उनके, लिङ्गं लक्षण लक्षण, चिकित्सा च अने चिकित्सा और चिकित्सा, यथावत् यथावत् यथावत्, उपदेक्ष्यते कहेवामा आवशे कहे जायेंगे ॥ २०० ॥

200. These two diseases occurring in a person already wasted by disease are the most formidable of all diseases. Their signs and symptoms and treatment will now be described systematically.

श्लेष्मप्रसेकः कण्ठास्यशोषः शब्दासहिष्णुता ।  
तन्द्रानिद्रातिथोगश्च ज्ञेयं ध्वंसकलक्षणम् ॥२०१॥

श्लेष्मप्रसेकः श्लेष्मप्रसेक कफका प्रसेक, कण्ठः कंठ कंठ, आस्य- अने मोढाने और मुंहका, शोषः शोष शोष, शब्द- शब्द शब्दका, असहिष्णुता सहन न थना सहन न होना, तन्द्रा- तन्द्रा तन्द्रा, निद्रा- अने निद्राने और निद्राको, अनियोगः च अनियोग अनियोग, ध्वंसकः ध्वंसकना ध्वंसकके, लक्षणम् लक्षण लक्षण, ज्ञेयम् अर्थवा जाने ॥ २०१ ॥

201. Excessive discharge of mucus, dryness of throat and mouth, intolerance to sound, excessive torpor, and somnolence should be known to be the symptoms of 'Dhwansaka'.

२००. हिमौ-मनौ (क. छ)

२०१. श्लेष्मप्रसेकः-श्लेष्मप्रकोषः (ख.)

,, कण्ठास्यशोषः-कण्ठस्य शोषः (ग.)

१९९. ध्वंसको विक्षयश्चैव-ध्वंसो विक्षेपकश्चैव (ग.)

हृत्कण्ठरोगः संमोहश्छर्दिरङ्गुजा ज्वरः ।

तृष्णा कासः शिरःशूलमेतद्विक्षयलक्षणम् ॥२०२॥

हृत्- हृदय, कण्ठ- अने कंठना और गलेके, रोगः रोग रोग, संमोहः भूछा मूछा, छर्दिः उलटी वमन, अङ्गुजा अंगुली शरीरमें पीड़ा, ज्वरः ७५२ ज्वर, तृष्णा तरेस प्यास, कासः उधरेस खांसी, शिरः- शूल अने शिरःशूल और शिरमें शूल, एतत् ये ये, विक्षय- विक्षयना विक्षयके, लक्षणम् लक्षणो छे लक्षण हैं ॥ २०२ ॥

२०२. Cardiac and throat disorders, stupefaction, vomiting, body-ache, fever, thirst, cough and headache are the signs and symptoms of 'Vikshaya'.

तयोः कर्म तदेवेष्टं वातिके यन्मदात्यये ।

तौ हि प्रक्षीणदेहस्य जायेते दुर्बलस्य वै ॥२०३॥

यत् ते जो, वातिके वातिके वातिक, मदात्यये मदात्ययनी मदात्ययकी, कर्म चिकित्सा छे चिकित्सा है, तत् एव ते ७ वही, तयोः ते भेदा उन दोनोंमें, इष्टं छे इष्ट है, तौ हि ते भेदे दोनों, प्रक्षीण- देहस्य क्षीण देहवाणाने क्षीण देहवाले, दुर्बलस्य- अने दुर्बलाने ७ और दुर्बलको ही, जायेते वै थाय छे होते हैं ॥ २०३ ॥

२०३. The same medicament is recommended in these conditions as is prescribed in alcoholism of the vata type, for they occur in emaciated and debilitated persons.

तयोश्चिकित्सा—

वस्तयः सर्पिषः पानं प्रयोगः क्षीरसर्पिषोः ।

अभ्यङ्गोद्धर्तनस्नानान्यन्नपानं च वातनुत् ॥ २०४ ॥

वस्तयः वातहर अस्ति अवातहर वस्तियां, सर्पिषः वातहर धीनुं वातहर घृतका, पानम् पान पान, क्षीर-

इष्ट इष्ट, सर्पिषोः अने धीने और घीका, प्रयोगः प्रयोग प्रयोग, अभ्यङ्ग- तथा अभ्यङ्ग तथा अभ्यङ्ग, उद्धर्तन- उद्धर्तन उद्धर्तन, स्नानानि स्नान स्नान, वातनुत् अने वातनुत् और वातनुत्, अन्नपानम् च अन्नपानम् प्रयोग करे ॥ २०४ ॥

२०४. Enemata, potion of ghee, courses of milk and ghee, inunction massage, baths, and food and drink that are curative of vata should be resorted to.

ध्वंसको विक्षयश्चैव कर्मणाऽनेन शाम्यति ।

युक्तमद्यस्य मद्योत्थो न व्याधिरुपजायते ॥ २०५ ॥

अनेन आ इस, कर्मणा चिकित्साथी चिकित्सासे, ध्वंसकः ध्वंसक ध्वंसक, विक्षयः एव च अने विक्षय और विक्षय, शाम्यति शांत थाय छे शान्त होते हैं, युक्त- योक्त रीते योग्य रीतिसे, मद्यस्य मद्य पीनारने मद्य पीनेवालोंमें, मद्योत्थः मद्यजन्य मद्यजन्य, व्याधिः व्याधि व्याधि, न उपजायते उत्पन्न थते नथी उत्पन्न नहीं होती ॥ २०५ ॥

२०५. With these procedures 'Dhwa-nsaka' and 'Vikshaya' get alleviated. No disorder due to alcohol can occur in a person who takes wine in proper manner.

मद्यनिवृत्तेर्गुणाः—

निवृत्तः सर्वमद्येभ्यो नरो यश्च जितेन्द्रियः ।

शारीरमानसैर्धर्मान् विकारैर्न स युज्यते ॥२०६॥

यः ते जो, जितेन्द्रियः जितेन्द्रिय जितेन्द्रिय, नरः मनुष्य मनुष्य, सर्व- सर्व प्रकारना सब प्रकारके, मद्येभ्यः मद्यथी मद्यसे, निवृत्तः च निवृत्त रहे छे निवृत्त होता है, सः ते वह, धीमान् बुद्धिमान् बुद्धिमान, शारीर- शारीर शारीर, मानसैः अने मानसिक और मानसिक, विकारैः

२०५. शाम्यति-सिध्यति (ग)

२०६. निवृत्तः-निरतिः (घ)

यश्च-न स्यात् (घ)

न स युज्यते-न प्रयुज्यते (घ)

२०४. उद्धर्तन-उत्सादन (ग)

अन्नपानं-अनुपानं (घ)

विश्रांती विकारोंसे, न युज्यते युक्त अती नभी युक्त नहीं होता ॥ २०६ ॥

206. The wise man who abstains from all kinds of intoxicating drink and who has his senses under control, is not afflicted with any disorder due to alcohol either somatic or psychic.

अध्यायोक्तार्थप्रहः—

तत्र श्लोकाः—

यत्प्रभावा भगवती सुरा पेया यथा च सा ।  
यद्द्रव्या यस्य या चेष्टा योगं चापेक्षते यथा ॥२०७॥  
यथा मदयते यैश्च गुणैर्युक्ता महागुणा ।  
यो मदो मदमेवाश्च ये त्रयः स्वस्वलक्षणाः ॥२०८॥  
ये च मद्यकृता दोषा गुणा ये च मदात्मकाः ।  
यच्च त्रिविधमापानं यथासत्त्वं च लक्षणम् ॥२०९॥  
ये सहायाः सुखाः पाने चिरक्षिप्रमदा नराः ।  
मदात्ययस्य यो हेतुर्लक्षणं यद् यथा च यत् ॥२१०॥  
मद्यं मद्योत्थितान् रोगान् हन्ति यश्च क्रियाक्रमः ।  
सर्वं तदुक्तमखिलं मदात्ययचिकित्सिते ॥२११॥

तत्र श्लोकाः ते विषयभा उपसंहारना श्लोक छे के उस विषयमें उपसंहारके श्लोक हैं कि, भगवती भगवती भगवती, सुरा सुरा सुरा, यत्-ने जो, प्रभावा प्रभाव छे प्रभाव है, यथा च नेवी रीते जिस विधिसे, सा ते वह, पेया पीवी ओईये पीनी चाहिए, यद्द्रव्या ने द्रव्योंनी ते अने छे जिस द्रव्यसे बनी है, यस्य नेने भाटे जिसके लिए, या च ने जो, इष्टा छे इष्ट है, यथा च नेवी रीते जिन प्रकारके, योगश्च योगनी योगकी, अपेक्षते अपेक्षा राणे छे अपेक्षा रखती है, यथा नेवी रीते जिस तरह, मदयते मदेने उत्पन्न करे छे मदको उत्पन्न करती है, महागुणा महागुणवाली, यैः ने जिन, गुणैः गुणैः गुणोंसे, युक्ता

२१०. पाने-ये च (ब. ब. ब.)

॥ चिकित्सा-चिरम्बत् (ब.)

॥ सुखाः-सुरा (ब.)

युक्त छे युक्त है, यः ने जो, मदः मदे छे मद है, ये च ने जो, स्वस्व-पेतापेताना अपने अपने, लक्षणाः लक्षणवाली लक्षणवाले, त्रयः त्रय तीन, मद- मदेना मदके मेदाः मेदा छे मेद हैं, ये च ने जो, मद्यकृताः मद्यजन्य मद्यजन्य, दोषाः दोषा छे दोष हैं, ये च ने जो, मदात्मकाः मदात्मक मदात्मक, गुणाः गुणा छे गुण हैं, यत् च ने जो, त्रिविधश्च त्रय अतनुं तीन प्रकारका, आपानश्च अध-पान छे मद्यपान है, यथासत्त्वं च सत्त्वं भुञ्जन् सत्त्वं अनुसार, लक्षणम् लक्षण छे लक्षण है, ये ने जो, पाने मद्यपानभा मद्यपानमें, सुखाः सुखकर सुखप्रद, सहायाः साथीओ छे साथी हैं, चिर-क्षिप्र-मदाः ने लंबे पणते अने जल्दी मदे अछे ओना जो देरसे और जल्दी मदयुक्त होनेवाले, नराः मनुष्यो छे मनुष्य हैं, मदा-त्ययस्य मदात्ययतुं मदात्ययका, यः ने जो, हेतुः कारण छे कारण है, यत् ने जो, लक्षणम् लक्षण छे लक्षण है, यथा च नेवी रीते जिस प्रकार, यत् ने जो, मद्यम् मद्य मद्य, मद्योत्थितान् मद्यजनित मद्यजनित, रोगान् रोगोंने रोगोंको, हन्ति हन्ति छे नष्ट करता है, यः च अने ने और जो, क्रियाक्रमः चिकित्साक्रम छे चिकित्साक्रम है, तत् ते वह, सर्वम् अधुं सब, अखिलम् संपूर्ण रीते संपूर्णरूपसे, मदात्ययचिकित्सिते मदात्यय चिकित्सित नामना अध्यायभा मदात्ययचिकित्सित नामके अध्यायमें, उक्तम् कथुं छे कहा है ॥२०७-२११॥

Here are the recapitulatory verses—

207-211. The powers of the goddess of wine, the manner of drinking wine, the articles of which it is prepared, the action of each of them, and the nature of the combination it demands, how it intoxicates, combined with what qualities it yields excellent result, the nature of intoxication and the three different stages of intoxication, and their respective characteristic symptoms, the ill-effects of alcohol, as well as its good effects, the three modes of

drinking and the signs and symptoms according to the particular type of the mind, the nature of the boon-companions at drinking that makes for happiness, the persons that are intoxicated quickly and those that are intoxicated slowly, the cause of alcoholism and its signs and symptoms, how and which wine cures the diseases produced by alcohol and what is the line of treatment—all this, is elaborately described in this chapter on the therapeutics of alcoholism.

इत्यग्निवेशकृते तन्त्रे चरकप्रतिसंस्कृते  
चिकित्सास्थाने मदात्मयचिकित्सितं  
नाम चतुर्विंशोऽध्यायः ॥२४॥

इति આ પ્રમાણે इस प्रकार, अग्निवेशकृते अग्निवेशे  
२४वा अग्निवेशसे बनाये, चरकप्रतिसंस्कृते तन्त्रे अने  
२४व्या प्रतिसंस्कार पत्रेला आ शास्त्रमा और चरकके  
द्वारा संस्कृत इस शास्त्रके, चिकित्सास्थाने चिकित्सास्थान  
विषे चिकित्सास्थानमें, मदात्मयचिकित्सितम् 'मदात्मय-  
चिकित्सित' 'मदात्मयचिकित्सित', नाम नामने  
नामका, चतुर्विंशः चोवीसवाँ, अध्यायः  
अध्याय संपूर्ण थै। अध्याय समाप्त हुआ ॥ २४ ॥

24. Thus in the Section on Therapeutics, in the treatise compiled by Agnivesa and revised by Caraka the twenty-fourth chapter entitled 'The Therapeutics of Alcoholism' is completed.

## पञ्चविंशोऽध्यायः ।

પચીસમો અધ્યાય અધ્યાય પચીસવો  
Chapter XXV

द्वित्रणीयचिकित्सितोपक्रमः—

अथातो द्वित्रणीयचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥१॥

इति ह स्माह भगवानात्रेयः ॥२॥

અથ અતઃ હવે અહીંથી અવ આગે, દ્વિત્રણીયચિકિ-  
ત્સિતમ્ 'દ્વિત્રણીયચિકિત્સિત' નામના અધ્યાયનું  
'દ્વિત્રણીયચિકિત્સિત' નામકે અધ્યાયકા, વ્યાખ્યાસ્યામઃ  
વ્યાખ્યાન કરશું વ્યાખ્યાન કરેંગે ॥ ૧ ॥

મગવાન્ મગવાન મગવાન, આત્રેયે  
આત્રેયને, इति ह आ विषयमा नीये प्रमाणे अ इस  
विषयमें निम्न प्रकारसे ही, आह स्म कहेलुं छे  
कहा है ॥२॥

1. We shall now expound the chapter entitled 'The Therapeutics of the two kinds of Wounds'.

2. Thus declared the worshipful Atreya.

त्रणविषयेऽग्निवेशस्य प्रश्नाः—

परावरजमात्रेयं गतमानमदव्यथम् ।

अग्निवेशो गुरुं कालે विनयादिदमब्रवीत् ॥३॥

પરાવરજમ્ પર અને અવરને બાલુનાર પર और  
अवरको जाननेवाला, गत-मान-मद-व्यथम् मान, मद  
अने व्यथाभी रहित मान, मद और व्यथासे रहित, गुरुम्  
गुरु, आत्रेयम् आत्रेयने आत्रेयको, अग्निवेशः अग्नि-  
वेशे अग्निवेशने, काले योग्य समयसे योग्य समयमें  
विनयात् विनयपूर्वकं विनयपूर्वक, इदम् आ यह,  
अब्रवीत् पूछयुं पूछा ॥ ३ ॥

3. Approaching the Master Atreya endowed with the knowledge of this

૧. દ્વિત્રણીય-ત્રણીય (૧)

૨. અત્રીય-વક્તાવ (અ. ૧.)



world and the other, and freed from the faults of pride, passion and fear, Agnivesa at the proper time, put the following question with due modesty.

भगवन् ! पूर्वमुद्दिष्टौ द्वौ व्रणौ रोगसंग्रहे ।  
तयोर्लिङ्गं चिकित्सां च वक्तुमर्हसि शर्मन् ॥४॥

भगवन् हे भगवान् ! हे भगवान् !, रोगसंग्रहे रोगसंग्रह अध्यायमां रोगसंग्रह अध्यायमें, पूर्वम् पहले प्रथम, द्वौ व्रणौ ये प्रश्न दो व्रण, उद्दिष्टो उद्दिष्टमां आल्यां छे कहे गये हैं, शर्मन् ! हे सुभक्त ! हे सुखदाता !, तयोः ते अन्तेमां उन दोनोंके, लिङ्गम् लक्षण, चिकित्सां च अने चिकित्सा और चिकित्सा, वक्तुम् उद्दिष्टी कहनी, अर्हसि अर्हते चाहिए ॥ ४ ॥

4. "O, worshipful one ! in the Section on Nosology, you made mention of two kinds of wounds. O, giver of healing ! it behoves you to tell us concerning their symptoms and treatment".

आग्नेयस्योत्तरम्—

इत्यग्निवेशस्य वचो निशम्य गुरुरब्रवीत् ।  
यौ व्रणौ पूर्वमुद्दिष्टौ निजश्चागन्तुरेव च ॥५॥  
भूयतां विधिवत् सौम्य ! तयोर्लिङ्गं च भेषजम् ।

इति आ. इस, अग्निवेशस्य अग्निवेशना अग्निवेशके, वचः वचने वचनको, निशम्य सांभली सुनकर, गुरुः गुरुने, अब्रवीत् उल्लुं कहा, सौम्य ! हे सौम्य ! हे सौम्य !, निजः च निज निज, आगन्तुः एव च अने आगन्तु और आगन्तु, यौ येना ये ऐसे जो, व्रणौ ये प्रकारना प्रश्न दो प्रकारके व्रण, पूर्वम् प्रथम पहले, उद्दिष्टो उद्दिष्टी छे कहे हैं, तयोः ते अन्तेमां उन

दोनोंके, लिङ्गम् लक्षण लक्षण, भेषजम् च तथा चिकित्सा तथा चिकित्साको, विधिवत् विधिसहित विधिसहित. श्रयताम् सांभली सुनो ॥ ५३ ॥

5-5½. Having heard these words of Agnivesa, the teacher replied, "O, gentle one ! regarding the two kinds of wounds viz. the endogenous and exogenous, which have been described previously, now listen to a systematic description of their symptoms and treatment.

व्रणभेदाः—

निजः शरीरदोषोत्थ आगन्तुर्बाह्यहेतुजः ॥६॥

निजः निज प्रश्न निज व्रण, शरीर- शरीरना शरीरके, दोषोत्थः दोषोत्थी उत्पन्न थाय छे दोषोंसे उत्पन्न होता है, आगन्तुः अने आगन्तु और आगन्तु, बाह्यहेतुजः बाह्यहेतुना हेतुओत्थी थाय छे बाहरके हेतुओंसे होता है ॥ ६ ॥

6. The endogenous type is due to internal morbidity of the body and the exogenous type is due to external causes

आगन्तुव्रणानां हेतुः चिकित्सा च—

वधबन्धप्रपतनाहंष्ट्रादन्तनखक्षतात् ।  
आगन्तवो व्रणास्तद्वद्विषस्पर्शाग्निशस्त्रजाः ॥७॥  
मन्त्रागदप्रलेपाद्यैर्भेषजैर्हेतुभिश्च ते ।  
लिङ्गैकदेशैर्निर्दिष्टा विपरीता निजैर्व्रणैः ॥८॥

आगन्तवः आगन्तुक आगन्तुक, व्रणाः प्रश्नो व्रण, वधः आघात आघात, बन्ध- बन्ध बन्ध, प्रपतनात् तथा पतन तथा पतनसे, हंष्ट्रा- दाद दाद, दन्त- दात दात, नख- तथा नखना तथा नखके, क्षतात् आघात आघातसे, तद्वत् विषस्पर्श- तेमव विषना स्पर्शोत्थी एवं विषके स्पर्शसे, अग्नि- अने अग्नि और अग्नि, शस्त्रजाः तथा शस्त्रोत्थी

४ द्वौ व्रणौ—यौ व्रणौ (य.)

५ इत्यग्निवेशस्य—युताश्वेशस्य (ग.)

॥ च भेषजम्—समेषजम् (घ. क.)

८. प्रलेपाद्यैः—प्रलेपैश्च (घ.)

॥ निजैर्व्रणैः—निजैर्व्रणैः (घ. ज. त. घ.)

માય છે તથા શસ્ત્રસે હોતે હૈં, તે તે પ્રણેાને ઁન વ્રણોંકો, મન્ત્ર- મન્ત્ર મન્ત્ર, અગદ- અગદ અગદ, પ્રલેપાદૈઃ તથા પ્રલેપ વગેરે તથા પ્રલેપ આદિ, મેષજૈઃ ઔષધોંથી ઔષધોંસે, હેતુમિઃ હેતુઓંથી હેતુઓંસે, લિઙ્ગ- અને લક્ષણોંના ઔર લક્ષણોંકે, દુઃકદેશૈઃ ચ ઔક ભાગથી દુઃકદેશસે, નિજૈઃ વ્રણૈઃ નિજ પ્રણેાથી નિજ વ્રણોંસે, વિપરીતાઃ વિપરીત વિપરીત, નિર્દિષ્ટાઃ કહેલા છે કહે ગયે હૈં ॥ ૭-૮ ॥

7-8. The exogenous wounds are caused by trauma, ligature, falls and by injuries resulting from fangs, teeth and nails and also by contact with toxic or poisonous substances or fire or cutting weapons. These exogenous wounds are distinguished from the endogenous variety by the difference in their treatment consisting of charms, talisman, external application etc., by their different causative factors and by their being local affections (affecting the injured region alone).

વ્રણાનાં નિજહેતુનામાગન્તુનામશામ્યતામ્ ।  
કુર્યાદ્દોષવલાપેક્ષી નિજાનામૌષધં યથા ॥૯॥

નિજહેતુનામ્ નિજહેતુક અનેલા નિજ હેતુસે વને હૂર, આગન્તુનામ્ આગન્તુક આગન્તુક, વ્રણાનામ્ પ્રણેા વ્રણોંકે, અશામ્યતામ્ શાંત ન થતાં શાન્ત ન હોનેપર, દોષવલાપેક્ષી દોષના બળનેા વિચાર કરી દોષકે વલકા વિચાર કરકે, નિજાનામ્ યથા નિજ પ્રણેાના જેવી નિજ વ્રણોંકે સમાન, ઔષધમ્ ચિકિત્સા ચિકિત્સા, કુર્યાત્ કરવી બેઈ એ કરની ાહિર ॥ ૯ ॥

9. If the wounds of the exogenous variety do not yield to the aforesaid treatment on account of their association with endogenous morbid factors,

the physician should treat them with the medications indicated in the endogenous type of wounds, according to the predominant morbid humor.

નિજવ્રણાનાં સંપ્રાપ્તિઃ—

યથાસ્વૈર્હેતુમિદુંદુષ્ટા વાતપિત્તકફા નૃણામ્ ।  
બહિર્માર્ગે સમાશ્રિત્ય જનયન્તિ નિજાન્ વ્રણાન્ ॥૧૦॥

યથાસ્વૈઃ પેાતપેાતાનાં અપને અપને, હેતુમિ હેતુઓંથી કારણોંસે, દુષ્ટાઃ દુષ્ટ યથેલા દુષ્ટ હૂર, વાત- પિત્તકફાઃ વાત, પિત્ત તથા કફ વાત, પિત્ત તથા કફ, બહિર્માર્ગે બાહ્ય માર્ગનેા બાહ્ય માર્ગકા, સમાશ્રિત્ય આશ્રય કરીને આશ્રય કરકે, નૃણામ્ મનુષ્યોંને મનુષ્યોંકો, નિજાન્ વ્રણાન્ નિજ પ્રણેા નિજ વ્રણ, જનયન્તિ ઉત્પન્ન કરે છે ઉત્પન્ન કરતે હૈં ॥ ૧૦ ॥

10. The three humors—vata, pitta and kapha, being provoked by their respective etiological factors and getting lodged in the external regions, produce ulcers or wounds of the endogenous type.

વાતિકવ્રણસ્ય લક્ષણં ચિકિત્સા ચ—

સ્તબ્ધઃ કઠિનસંસ્પર્શો મન્દસ્ત્રાવોઽતિતીવ્રચક્ ।  
તુષ્ટતે સ્ફુરતિ દયાવો વ્રણો મારુતસંભવઃ ॥૧૧॥

મારુતસંભવઃ મારુતજન્ય વાતજન્ય, વ્રણઃ પ્રણ વ્રણ, સ્તબ્ધઃ સ્તબ્ધ સ્તબ્ધ, કઠિનસંસ્પર્શઃ કઠિન સ્પર્શ-વાળો કઠિન સ્પર્શવાળા, મન્દસ્ત્રાવઃ મન્દ સ્ત્રાવયુક્ત મન્દ સ્ત્રાવયુક્ત, અતિતીવ્રચક્ અતિતીવ્ર પીડાવાળો અત્યન્ત તીવ્ર પીડાયુક્ત, દયાવઃ સ્થાવવર્ણનેા દયાવર્ણકા, તુષ્ટતે તેાદ્યુક્ત તેાદ્યુક્ત, સ્ફુરતિ તથા સ્ફુરણયુક્ત હોય છે તથા સ્પન્દયુક્ત હોતા હૈં ॥ ૧૧ ॥

11. The wounds which are indurated, hard to the touch, attended with the scanty discharge, acute pain.

pricking pain and throbbing, and which are of dusky coloration, are caused by the morbidity of vata.

संपूरणैः स्नेहपानैः स्निग्धैः स्वेदोपनाहनैः ।  
प्रदेहैः परिषेकैश्च वातव्रणमुपाचरेत् ॥१२॥

संपूरणैः अंडलु बृंहण, स्नेहपानैः स्नेहपान, स्निग्धैः तथा स्निग्ध तथा स्निग्ध, स्वेद- स्वेद स्वेद, उपनाहनैः उपनाह, प्रदेहैः प्रदेह प्रदेह, परिषेकैः च अने परिषेकाधी और परिषेकोसे, वातव्रणम् वातव्र प्रक्षुणे वातव्र व्रणका, उपाचरेत् उपचार करवे। ओष्ठो उपचार करना चाहिए ॥ १२ ॥

12. The physician should treat these wounds due to vata, with impletion therapy, potion of unctuous substances, with sudation and poultices prepared with unctuous substances and with applications and affusions.

पैतिकव्रणस्य लक्षणं चिकित्सा च—

तृष्णामोहज्वरस्वे(क्ले)ददाहदुष्टयवदारणैः ।  
व्रणं पित्तकृतं विद्याद्गन्धैः स्रावैश्च पूतिकैः ॥१३॥

तृष्णा- तृप्त प्यास, मोह- मोह मोह, ज्वर- ज्वर ज्वर, स्वेद- पसीने पसीना, (क्लेद- क्लेद क्लेद), दाह- दाह दाह, दुष्टि- दुष्टि दुष्टि, अवदारणैः प्रक्षुभा थीरा पसीना व्रणका फटना, पूतिकैः तथा दुग्धी तथा बदबूदार, गन्धैः गंध गन्ध, स्रावैः च अने स्रावधी और स्रावसे, व्रणम् प्रक्षुणे व्रणको, पित्तकृतम् पित्तजन्य पित्तजन्य, विद्याद् अखुणे जानना चाहिए ॥ १३ ॥

13. The physician should know the wound to be due to pitta if it be attended with thirst, stupefaction, fever, sweat or softening, burning, putrefaction, tissue destruction, foul smell and discharge.

शीतलैर्मधुरैस्तिक्तैः प्रदेहपरिषेचनैः ।

सर्पिष्पानैर्विरेकैश्च पैत्तिकं शमयेद्ब्रणम् ॥१४॥

शीतलैः शीतल शीतल, मधुरैः मधुर मधुर, तिक्तैः अने तिक्त द्रव्योधी तैयार करेवा और तिक्त द्रव्योसे तैयार किये हुए, प्रदेह- प्रदेह प्रदेह, परिषेचनैः अने परिषेका ६२१ और परिषेकोसे, सर्पिष्पानैः घृतपान घृतपान, विरेकैः च अने विरेचनो ६२१ और विरेचनोसे, पैत्तिकम् व्रणम् पैत्तिक प्रक्षुणे पैत्तिक व्रणको, शमयेत् शान्त करवे। ओष्ठो शान्तकरना चाहिए ॥ १४ ॥

14. The physician should alleviate these wounds of the pitta type with applications and affusions prepared with cooling, sweet and bitter drugs, by the potion of medicated ghee as also by purgation.

कफव्रणस्य लक्षणं चिकित्सा च—

बहुपिच्छो गुरुः स्निग्धः स्तिमितो मन्दवेदनः ।  
पाण्डुवर्णोऽल्पसंक्लेदश्चिरकारी कफव्रणः ॥१५॥

कफव्रणः क्लेश प्रक्षु कफव्र व्रण, बहुपिच्छः गुरु पिच्छायुक्त बहुत पिच्छायुक्त, गुरुः गुरु गुरु, स्निग्धः स्निग्ध स्निग्ध, स्तिमितः स्तिमित स्तिमित, मन्दवेदनः मन्द वेदनायुक्त मन्द वेदनायुक्त, पाण्डुवर्णः पाण्डु वर्णो पाण्डुवर्णका, अल्पसंक्लेदः अल्प क्लेदयुक्त अल्प क्लेदयुक्त, चिरकारी अने चिरकारी होय छे और चिरकारी होता है ॥ १५ ॥

15. The wound, born of kapha morbidity, is characterised by very sticky discharge, thickness, greasiness, fixity, slight pain, pale coloration, slight softening and chronicity.

कषायकटुक्षोणैः प्रदेहपरिषेचनैः ।

कफव्रणं प्रशमयेत्तथा लङ्घनपाचनैः ॥१६॥

१४ तिक्तैः-स्निग्धैः (घ.)

१६. पाचनैः-शोषनैः (घ. द. घ. व.)

१३. गन्धैः स्रावैश्च पूतिकैः-गन्धस्रावैः संपूरणैः (घ.)

कषाय- उपाय कषाय, कटु- कटु कटु, रुक्ष- रुक्ष रुक्ष, उष्णः तथा उष्ण तथा उष्ण, प्रदेह- प्रदेह प्रदेह, परिषेचनैः अने परिषेचनैः द्वात्रिंश और परिषेचनों द्वारा, तथा तथा तथा, लङ्घन- लङ्घन लङ्घन, पाचनैः अने पाचनैः और पाचनोंसे, कफव्रणम् उद्भूतम् अने कफज व्रणको, प्रसमयेत् शांत करवे अर्धे शान्त करना चाहिए ॥ १६ ॥

16. The physician should cure the wounds of the kapha type by means of applications and affusions prepared with astringent, pungent, dry and hot articles as also by lightening therapy and the administration of digestive drugs.

अस्मिन्नध्याये वक्ष्यमाणा विषयाः—

तौ द्वौ नानात्वमेदेन निरुक्ता विंशतिर्व्रणाः ।  
येषां परीक्षा त्रिविधा, प्रदुष्टा द्वादश स्मृताः ॥१७॥  
स्थानान्यष्टौ तथा गन्धाः, परिस्त्रावाश्चतुर्दश ।  
षोडशोपद्रवा दोषाश्चत्वारो विंशतिस्तथा ॥१८॥  
तथा चोपक्रमाः सिद्धाः षट्त्रिंशत् समुदाहृताः ।  
विभज्यमानाऽऽकृणु मे सर्वानितान् यथेरितान् ॥१९॥

तौ द्वौ ते ये प्रश्नानि ये दो व्रणों, नानात्वमेदेन भिन्न भिन्न दोषोंसे भिन्न भिन्न मेदोंसे, विंशतिः बीस प्रकारकी व्रणाः प्रदुष्टा व्रण, निरुक्ताः उद्भूता अने उद्भूत माने गये हैं, स्थानानि स्थान स्थान, तथा तथा तथा, गन्धाः गन्ध गन्ध, अष्टौ आठ अने आठ हैं, परिस्त्रावाः परिस्त्रावा परिस्त्राव, चतुर्दश चौदह अने

चौदह हैं उपद्रवाः उपद्रवाः उपद्रव, षोडश सोलह अने सोलह हैं दोषाः दोषा दोष, विंशतिः तथा चत्वारः बीस अने चौबीस हैं, तथा तथा तथा, सिद्धाः सिद्ध सिद्ध, उपक्रमाः च उपक्रमा उपक्रम, षट्त्रिंशत् छत्तीस अने छत्तीस, समुदाहृताः उद्भूता अने उद्भूत माने गये हैं, यथेरितान् उद्भूता मुज्य कथन अनुसार, एतान् सर्वान् ये सध-  
गाने इन सबको, विभज्यमानान् भुङ्क्षु भुङ्क्षु जुदा जुदा, मे भारी पासेथी मुझसे, शृणु अभिज्ञान सुनो ॥१७-१९॥

17-19. These two varieties of wounds (exogenous and endogenous) are further divided into twenty kinds according to their varying characteristics. As regards these, the clinical examination is conducted in three ways. Excessively morbid conditions are said to be twelve. Their seats of affection are eight. Similarly eight are the pathological odors associated with them. Fourteen kinds of discharge are observed in these wounds. The complications are sixteen and the morbid factors for the non-healing of these ulcers are twenty-four. Thirty-six are the effective measures laid down for the treatment of these wounds. Listen, as I describe all these separately.

व्रणानां विंशतिर्मेदाः—

कृत्योत्कृत्यस्तथा दुष्टोऽदुष्टो मर्मस्थितो न च ।  
संवृतो दारुणः स्त्रावी सविषो विषमस्थितः ॥२०॥

२०. कृत्योत्कृत्य-कृत्याकृत्य (घ.)

,, उदुष्ट-नथा (ख. झ. ड. त. द.)

,, न च-नवः (ख. झ. ड. त. द.)

,, दारुणः स्त्रावी-दारुणोत्तमः (थ.)

,, स्त्रावी-उन्नः (घ.)

१७. तौ द्वौ-द्वौ द्वौ (घ. फ.)

,, निरुक्ताः-भिन्नाः स्युः (घ. फ.)

१९. विभज्यमानान्-विभाज्यमानान् (घ. फ.)

,, मे-तान् (घ.)

उत्सङ्गयुत्सन्न एषां च व्रणान् विद्याद्विपर्ययात् ।  
इति नानात्वमेदेन निरुक्ता विंशतिर्व्रणाः ॥२१॥

कृत्योक्त्यः कृत्य, उक्त्य कृत्य, उत्कृत्य, तथा दुष्टः  
दुष्ट दुष्ट, अदुष्टः अदुष्ट अदुष्ट, मर्मस्थितः मर्मस्थित  
मर्मस्थित, न च अमर्मस्थित ये च प्रत्यु अमर्मस्थित  
ये छः व्रण, संवृतः संप्रत संवृत, दारुणः दारुण दारुण,  
खावी आपवाणी, साव्युक्त, सविषः सविष सविष,  
विषमस्थितः विषमस्थित विषमस्थित, उत्सङ्गी- उत्सङ्गी  
उत्सङ्गी, उत्सङ्गः अने उत्सङ्ग और उत्सङ्ग. एषाम् च  
ये सातथी इन सातसे, विपर्ययात् विपरीत विपरीत,  
व्रणान् विपरीत, मृदु आदि भीम सात प्रत्यु विपरीत, मृदु  
आदि दूसरे सात व्रण, विद्यात् आधुना जानने चाहिए,  
इति आ प्रमाणे इन प्रकार, नानात्वमेदेन नानात्वना  
मेथी नानात्वके मेदसे, विंशतिः बीस बीस. व्रणाः  
प्रत्यु व्रण, निरुक्ताः उद्धृता ये कहे हैं ॥ २०-२१ ॥

20-21. The operable and the inoperable, putrid and non-putrid, affecting the vital organs and not affecting them, open and closed, hard and soft, with scanty and profuse discharge, toxic and non toxic, regular and irregular, with and without deep burrows and pouches (undermined edges), with depressed and elevated surface—thus are described the twenty varieties of wounds, classified according to their various characteristics.

व्रणानां त्रिविधा परीक्षा—

दर्शनप्रश्नसंस्पर्शैः परीक्षा त्रिविधा स्मृता ।

दर्शन- दर्शन दर्शन, प्रश्न- प्रश्न प्रश्न, संस्पर्शः  
अने संस्पर्शथी और संस्पर्शसे, परीक्षा परीक्षा परीक्षा,  
त्रिविधा प्रत्यु प्रकारकी तीन प्रकारकी. स्मृता उद्धृता  
छे कही है ॥ २१ ॥

21½ The method of clinical examination is laid down as of three kinds viz.: inspection, interrogation and palpation.

वयोवर्णशरीराणामिन्द्रियाणां च दर्शनात् ॥२२॥

हेत्वर्निस्वात्म्याग्निबलं परीक्ष्यं वचनाद्बुधैः ।

स्पर्शान्मादवशैत्ये च परीक्ष्ये सविपर्यये ॥२३॥

बुधैः बुद्धिमान् वैद्योऽथे बुद्धिमान् वैद्य, वयः- वय  
वय, वर्ण- वर्ण वर्ण, शरीराणाम् शरीर शरीर, इन्द्रि-  
याणाम् च तथा इन्द्रियोऽपि परीक्षा तथा इन्द्रियोऽपि  
परीक्षा, दर्शनात् ज्ञेयथी करवी देखनेसे करे. हेतु- हेतु  
हेतु, अग्नि- पीडा पीडा, सात्म्य- सात्म्य सात्म्य, अग्नि-  
बलम् अग्नि तथा अग्नी अग्नि तथा बलकी, वचनात्  
परीक्ष्यम् परीक्षा प्रश्नथी करवी परीक्षा प्रश्नसे करे,  
सविपर्यये अने विपर्ययसहित और विपर्ययसहित,  
मादवशैत्ये च मृदुता तथा शीतलताऽपि मृदुता तथा  
शीतलताकी, स्पर्शान् परीक्ष्ये परीक्षा स्पर्शथी करवी  
अथे परीक्षा स्पर्शसे करनी चाहिए ॥ २२-२३ ॥

22 23. The examination of age, color, body and sense organs is done by inspection; the examination of etiological factors, the kind of pain, homologation and strength of gastric fire is done by taking the history of the case, by the skilful diagnostician; he should investigate whether there is softness or hardness, coldness or heat in the part by the method of palpation.

द्वादश दुष्टव्रणाः—

श्वेतोऽवसन्नवर्माऽतिस्थूलवर्माऽतिपिञ्जरः ।

नीलः श्यावोऽतिपिङ्गको रक्तः कृष्णोऽतिपूतिकः २४

२१. उत्सङ्गी-स्वस्थङ्गी (ख. ड. त.)

२२. निरुक्ताः-निष्ठाः स्युः (घ.)

२४. अवसन्नवर्मा-अवसन्नचर्मा (द. घ.)

२५. अतिस्थूलवर्मा-अतिस्थूलचर्मा (द. घ.)

रोप्यः कुम्भीमुखश्चेति प्रदुष्टा द्वादश व्रणाः ।

चतुर्विंशतिरुद्दिष्टा दोषाः कल्पान्तरेण वै ॥२५॥

श्वेतः श्वेत, अवसन्नवर्मा अवसन्नवर्मा, अवसन्नवर्मा, अनिस्थूलवर्मा अतिस्थूलवर्मा, अतिस्थूलवर्मा, अतिपिण्डः अतिपिण्डः, अतिपिण्डः, नीलः नील, श्यावः श्याव, श्याव, अतिपिण्डकः अतिपिण्डकः, अतिपिण्डकः, रक्तः रक्त, रक्त, कृष्णः कृष्ण, कृष्ण, अतिपूतिकः अतिपूतिकः, अतिपूतिकः, रोप्यः रोप्य, रोप्य, कुम्भीमुखः च अने कुम्भीमुख और कुम्भीमुख, इति ये ये, द्वादश बार बारह, प्रदुष्टाः दुष्ट दुष्ट, व्रणाः व्रणां छे व्रण हैं, कल्पान्तरेण वै अन्य कल्पनाथी दूसरे कल्पसे, दोषाः दोषो दोष, चतुर्विंशतिः येनीस चौबीस, उद्दिष्टाः उद्दिष्टां छे कहे हैं ॥ २४-२५ ॥

24-25. The pale one, the one with depressed edges, the one with greatly thickened edges, the one that is yellowish red, blue or dusky-red in color, the one covered with pustules, the red one, the black one, the very putrid one, the recurrent one and the pin-pointed one, are described as the twelve excessively morbid types of wounds. These morbid conditions are divided by a different mode of classification into twenty-four.

अष्टौ व्रणस्थानानि—

त्वक् सिरामांसमेदोऽस्थिस्नायुमर्मन्तराश्रयाः ।

व्रणस्थानानि निर्विष्टान्यष्टावेतानि संग्रहे ॥२६॥

त्वक्- त्वया त्वचा, सिरा- सिरा सिरा, मांस- मांस मांस, मेदः- मेद मेद, अस्थि- हड्डी हड्डी, स्नायु- स्नायु स्नायु, मर्म- मर्म मर्म, अन्तराश्रयाः अने

२५. चतुर्विंशति....वै ॥—कल्पेनान्येन दोषाणां चतुर्विंशति-

रुच्यते (छ. फ.)

—कल्पेनानेन दोषाणां चतुर्विंशतिरुच्यते

(स. ड. त.)

—बोडशोपद्रवाः प्रोक्ता व्रणानां व्रणचिन्तकैः (व.)

१४ और कोष्ठ, एतानि ये ये, अष्टौ आठ आठ, व्रण- स्थानानि व्रणानां स्थान व्रणके स्थान, संग्रहे संक्षेपमा संक्षेपमें, निर्विष्टानि अतीव्यां छे बतलाये हैं ॥ २६ ॥

26. Skin, vessels, flesh, fat, bone, sinews, vital parts and the organs in the internal cavities of the body—these eight have been succinctly described as the seats of affection for ulcers and wounds.

अष्टौ व्रणगन्धाः—

सर्पिस्तैलवसापूयरक्तश्यावाम्लपूतिकाः ।

व्रणानां व्रणगन्धश्चैरष्टौ गन्धाः प्रकीर्तिताः ॥२७॥

व्रणगन्धजैः व्रणानी गंध व्रणानाराओओ व्रणोंकी गन्ध जाननेवालोंने, व्रणानाम् व्रणानी व्रणोंकी, सर्पिः- धी वृत्त, तैल- तैल तैल, वसा- वसा वसा, पूय- पूय पूय, रक्त- अने रुधिर गेवी और रुधिरके सदृश, श्याव- श्याव श्याव, अम्ल- आटी खट्टी, पूतिकाः अने पूतिक और पूतिक, अष्टौ ये आठ ये आठ, गन्धाः गंध गन्ध, प्रकीर्तिताः छुड़ी छे कही हैं ॥ २७ ॥

27. The odors of ghee, oil, fat, pus, blood, rust, acid and putridity—these eight kinds of odors are described to emanate from wounds by physicians specially versed in the osmology of wounds.

चतुर्दश व्रणस्त्रावाः—

लसीकाजलपूयासृग्घारिद्रारुणपिञ्जराः ।

कषायनीलहरितस्निग्धरूक्षसितासिताः ॥२८॥

इति रूपैः समुद्दिष्टा व्रणस्त्रावाश्चतुर्दश ।

लसीका- लसीका लसीका, जल- जल जल, पूय- पूय पूय, असृक् तथा रुधिर गेवुं तथा रुधिरके सदृश, हारिद्र- हारिद्र हारिद्र, हस्ती जैसा, अरुण- अरुण अरुण, पिञ्जराः पिञ्जरा पिञ्जरा, कषाय- कषाय कषाय, नील- नील नील, हरित- हरी हरी, स्निग्ध- स्निग्ध स्निग्ध, रूक्ष- रूक्ष रूक्ष, सिता- सिता सिता, सिता- सिता सिता,

२७. श्यावाम्ल-मांसाम्ल (व.)

रुक्म- रुक्म रुक्म, सित- सईध खेत, असिताः अने कणुं और काला, इति औ इन, रूपैः इपोथी रूपोंसे, व्रणजावाः प्रलुना आवा व्रणके खाव, चतुर्वर्ण यौध प्रकारना चौदह प्रकारके, समुद्दिष्टाः कला छे कहे गये हैं ॥ २८३ ॥

28-28½. The colors of the lymph, serum, pus and blood as also yellow, dusky-red, yellowish red, blue, green, greasy, dry, white and black are regarded to be the fourteen varieties of the color of the discharge from wounds.

षोडश व्रणोपद्रवाः—

विसर्पः पक्षाघातश्च सिरास्तम्भोऽपतानकः ॥२९॥

मोहोन्मादव्रणरुजो ज्वरस्तृष्णा हनुग्रहः ।

कासश्छर्दिः रतीसारो हिक्का श्वासः सवेपथुः ॥३०॥

षोडशोपद्रवाः प्रोक्ता व्रणानां व्रणचिन्तकैः ।

व्रणचिन्तकैः प्रलुखांतकोणे व्रणचिन्तकोंने, व्रणानाम् प्रलुना व्रणोंके, विसर्पः विसर्प विसर्प, पक्षाघातः च पक्षाघात पक्षाघात, सिरास्तम्भः सिरास्तम्भ, अपतानकः अपतानक अपतानक, मोह- भौह मोह, उन्माद- उन्माद उन्माद, व्रणरुजः प्रलुनी वेदना व्रणकी वेदना, ज्वरः ज्वर ज्वर, तृष्णा तरस प्यास, हनुग्रहः हनुग्रह हनुग्रह, कास- आसी खांसी, छर्दिः छर्दि छर्दि, अतीसार अतीसार, हिक्का हिक्का हिक्का, सवेपथुः वेपथु वेपथु, श्वासः अने श्वास और श्वास, इति औ ये, षोडश षोडश सोलह, उपद्रवाः उपद्रवा उपद्रव, प्रोक्ताः कला छे कहे हैं ॥ २९-३० ॥

29-30½. Acute spreading affection, hemiplegia, vascular thrombosis, convulsions, stupefaction, insanity, acute pain in the wound, fever, thirst, lock-jaw, cough, vomiting, diarrhea, hiccup, dyspnea and tremors are the sixteen complications of wounds described by the specialists in the subject of wounds.

प्रकारान्तरेण चतुर्विंशतिर्विषदोषाः—

व्यायुक्लेदात्सिराक्लेदाद्गाम्भीर्यात्कृमिभक्षणात् ॥३१॥

अस्थिभेदात् सशय्यत्वात् सविषत्वाच्च सर्पणात् ।

नखकाष्ठप्रभेदाच्च चर्मलोमातिघट्टनात् ॥ ३२ ॥

मिथ्याबन्धादतिस्नेहादतिभैषज्यकर्षणात् ।

अजीर्णादतिमुक्ताच्च विरुद्धासात्म्यभोजनात् ॥३३॥

शोकात् क्रोधाद्दिवास्वप्नाद्द्वयायामान्मैथुनात्तथा ।

व्रणा न प्रशमं यान्ति निष्क्रियत्वाच्च देहिनाम् ॥३४॥

व्यायुक्लेदात् व्यायुओना उद्वेधी व्यायुओंके क्लेदसे, सिराक्लेदात् सिराओना उद्वेधी सिराओंके क्लेदसे, गाम्भी- र्यात् गंभीरताओ गम्भीरतासे, कृमिभक्षणात् कृमिओओ भक्षण करवाओ कृमिओंद्वारा खाये जानेसे, अस्थिभेदात् हड्डीके टूटनेसे, सशय्यत्वात् शय्ययुक्त होनाओ शय्ययुक्त होनेसे, सविषत्वात् विषयुक्त होनाओ विषयुक्त होनेसे, सर्पणात् च ईलावाओ फैलनेसे, नख- नख नख, काष्ठ- तथा हड्डी तथा लकड़ीके, प्रभे- दात् वागवाओ लगनेसे, चर्म- चामडी खचा, लोम- अथवा ईलाओना अथवा लोमोंके, अतिघट्टनात् च घट्टा धर्षणओ अधिक घर्षणसे, मिथ्याबन्धात् सरणी रीति न आधवाओ ठीक प्रकार न बांधनेसे, अतिस्नेहात् अधिक स्नेह लगावाओ अधिक स्नेह लगानेसे, अति- भैषज्यकर्षणात् औषधीओ अतिक्रिपित भवाओ औषधोंसे अतिक्रिपित होनेसे, अजीर्णात् अजीर्णओ अजीर्णसे, अतिमुक्तात् च अने बहुत आवाओ और अधिक खानेसे, विरुद्ध- विरुद्ध विरुद्ध, असात्म्य- अने असात्म्य और असात्म्य, भोजनात् भोजनओ भोजनसे, शोकात् शोकाओ शोकसे, क्रोधात् क्रोधओ क्रोधसे, दिवास्वप्नात् दिवसभा ओधवाओ दिनमें सोनेसे, व्यायामात् व्यायामओ व्यायामसे, तथा तथा तथा, मैथुनात् मैथुनओ मैथुनसे, निष्क्रि- यत्वात् च अने शिकत्सा न करवाओ और चिकित्सा न

३१. सिराक्लेदात् सिराक्लेदात् (घ. ब.)

, कृमिभक्षणात्—कृमिभक्षणम् (ब. ड.)

३२. सविषत्वाच्च सर्पणात्—सविषत्वादतिकर्षणात् (घ.)

, सर्पणात्—सर्पणात् (घ.)

, प्रभेदाच्च—प्रभेदाच्च (ग. क.)

, अतिभैषज्यकर्षणाच्च—अतिभैषज्यकर्षणाच्च (ब. ड.)



करवानेसे, देहिनाम् मनुष्येना मनुष्योके, व्रणाः प्रक्षु  
व्रण, प्रक्षमम् न यान्ति शांतं अती नथी शांतं नही  
होते ॥ ३१-३४ ॥

31-34. The softening of the sinews, softening of the vessels, deep-seatedness, destruction of tissues by parasites, the presence of sequestrum or foreign bodies, toxic conditions, tendency to spread, constant injury by nails and wood, excessive pressure of the skin and the hair, faulty bandaging, excessive oleation, emaciation due to excessive medication, indigestion, over-eating, antagonistic and unwholesome diet, grief, anger, day-sleep, physical exercise, sex-act and neglect of treatment—these are the factors which cause non-healing of wounds in the human body.

परिक्षावाच्च गन्धाच्च दोषाच्चोपद्रवैः सह ।

व्रणानां बहुदोषाणां कृच्छ्रत्वं चोपजायते ॥ ३५ ॥

उपद्रवैः सह उपद्रवैः सहित उपद्रवोंके साथ, परिक्षावाच्च च परिक्षावथी परिक्षावसे, गन्धात् च गंधथी गन्धसे, दोषाव च तथा दोषथी तथा दोषसे, बहुदोषाणाम् बहु दोषाणां बहुत दोषवाले, व्रणानाम् व्रणोंकी, कृच्छ्रत्वं कृच्छ्रत्वात् कृच्छ्रत्वाध्यता, कृच्छ्रत्वाध्यता, उपजायते थाय छे होती है ॥ ३५ ॥

35. The excessively morbid wounds become formidable by reason of their excessive discharge, smell, morbidity and complications.

व्रणानां साध्यासाध्यलक्षणानि—

त्वक्मांसजः सुखे देशे तरुणस्यानुपद्रवः ।

बीमतोऽमिषवः काळे मुखसाध्यः स्मृतोऽमलः ॥ ३६ ॥

तरुणस्य तरुण तरुण, बीमवः तथा बुद्धिमाननो तथा बुद्धिमानका, सुखे देशे भर्मा वगैरना स्थानमां मर्मरहित स्थानमें, त्वक्मांसजः त्वक्मांसे अने मांसमां भवेदे। त्वक्मां और मांसमें उत्पन्न हुआ अमिषवः नवीन नवीन, अनुपद्रवः अने उपद्रवरहित और उपद्रवरहित, व्रणः प्रक्षु व्रण, काळे मुखे योज्य काणमां योग्य कालमें, मुखसाध्यः मुखसाध्य मुखसाध्य, स्मृतः कहेदे। छे कहा है ॥ ३६ ॥

36. The wounds that occur in the skin and the flesh, in regions which are easy of approach, which are not associated with complications, which are of recent origin and which occur in favourable seasons and in young and intelligent persons are considered easily curable.

गुणैरन्यतमेहीनस्ततः कृच्छ्रो व्रणः स्मृतः ।

सर्वैर्विहीनो विज्ञेयस्त्वसाध्यो निरुपक्रमः ॥ ३७ ॥

अन्यतमैः उपरना गुणैर्माथी कर्ष्योऽप्युपवृत्त गुणोंमेंसे किसी एक, गुणैः गुणैः गुणैः गुणैः, हीनः हीन व्रणः प्रक्षु व्रण, ततः तेना करता उसकी अपेक्षासे, कृच्छ्रः कृच्छ्रत्वात् कृच्छ्रत्वाध्य, स्मृतः कहेदे। छे कहा गया है, सर्वैः अने सध्या गुणैर्माथी और सब गुणोंसे, विहीनः न रहित प्रक्षुने ते। हीन व्रणको तो, असाध्यः असाध्य असाध्य निरुपक्रमः तेभ्यः अतिक्रिय एवं अतिक्रिय, विज्ञेयः जानना चाहिए ॥ ३७ ॥

37. When the wound is not characterised by all of the above conditions but is lacking in some, then it is considered formidable; and if all the above conditions are lacking, then the condition should be considered incurable.

३७. कृच्छ्रो व्रणः—कृच्छ्रव्रणः (क. ड)

निरुपक्रमः—निरुपक्रमः (प. क.)

व्रणानां षट्त्रिंशदुपक्रमाः—

व्रणानामादितः कार्यं यथासन्नं विशोधनम् ।

ऊर्ध्वभागैरधोभागैः शस्त्रैर्वस्तिभिरेव च ॥३८॥

सद्यः शुद्धशरीराणां प्रशमं यान्ति हि व्रणाः ।

यथाक्रममतश्चोर्ध्वं शृणु सर्वानुपक्रमान् ॥३९॥

व्रणानाम् प्रथोभा व्रणोर्ध्वे, आदितः प्रथमं प्रथमं, ऊर्ध्वभागैः वमनद्वारा वमनसे, अधोभागैः विरेचनद्वारा विरेचनसे, शस्त्रैः शस्त्रोद्धारं शस्त्रोत्तरे, वस्तिभिः एव च तथा अस्तिद्वारा तथा वस्तिसे, यथासन्नम् न्ये पासे होय ते जो पासमें हो वह, विशोधनम् निशोधनं विशोधन, कार्यम् करतुं कोष्ठमें करना चाहिए, हि उद्धारं के क्योंकि, शुद्धशरीराणाम् शुद्ध शरीराणां शुद्ध शरीरवालोंके, व्रणाः प्रथु व्रण, सद्यः शीघ्र शीघ्र, प्रशमम् यान्ति शान्त थाय छे शान्त होते हैं, अतः ऊर्ध्वं हवे पछी इसके आगे, यथाक्रमम् क्रम मुअथ क्रम अनुसार, सर्वान् सध्या सब, उपक्रमात् उपक्रमोने उपक्रमोंको, शृणु सांभलो सुनो ॥ ३८-३९ ॥

38-39. In cases of wounds, the first thing to be done is the administration of cleansing agents which operate on the region nearest to the site of the wounds. Thus, emetics, purgatives, enemata and operative procedure may be used as the situation demands. Once the body has been cleansed of its morbid matter, wounds and ulcers immediately subside. Listen hereafter to the exposition, in their due order, of all the therapeutic measures.

शोफघ्नं षड्विधं चैव शस्त्रकर्मावपीडनम् ।

निर्वापणं ससन्धानं स्वेदः शमनमेवणम् ॥४०॥

शोधनौ रोपणीयौ च कषायौ सप्रलेपनौ ।

द्वे तैले तद्गुणे पत्रं छादने द्वे च बन्धने ॥४१॥

भोज्यमुत्सादनं दाहो द्विविधः सावसादनः ।

काठिन्यमार्दवकरे धूपनालेपने शुभे ॥४२॥

व्रणावचूर्णनं वर्ण्यं रोपणं लोमरोहणम् ।

इति षट्त्रिंशदुद्दिष्टा व्रणानां समुपक्रमाः ॥४३॥

शोफघ्नम् च शोफघ्नकर्म, षड्विधम् एव छ प्रकारनु छः प्रकारका, शस्त्रकर्म च एव शस्त्रकर्म, शस्त्रकर्मावपीडनम् अपपीडनकर्म, अवपीडनकर्म, ससन्धानम् सन्धानकर्म, सन्धानकर्म, निर्वापणम् निर्वापणकर्म, स्वेदः स्वेद स्वेद, शमनम् शमन, एवणम् एषण, शोधनौ शोधन शोधन, रोपणीयौ च तथा रोपण्युत्पुवाणा तथा रोपण गुणवाले, सप्रलेपनौ प्रलेप प्रलेप, कषायौ अने कषाय और कषाय, तद्गुणे शोधन तथा रोपण्युत्पुवाणा शोधन तथा रोपण गुणवाले, द्वे तैले अने धी तथा तैले दोनों की तथा तैले, पत्रम् पत्र पत्र, द्वे छादने छे प्रकारका आच्छादन दो प्रकारके आच्छादन, बन्धने च तेभ्यो बन्धन एवं बन्धन, भोज्यम् पथ्य भोजन पथ्य भोजन, उत्सादनम् उत्सादन उत्सादन, सावसादनः अवसादन अवसादन, द्विविधः दाहः छे प्रकारका दाह दो प्रकारका दाह, काठिन्यमार्दवकरे कठिनता तथा मृदुता कठिनता तथा मृदुता करनेवाले, शुभे शुभ शुभ, धूपन- धूपन धूपन, आलेपने तेभ्यो आलेपन एवं आलेपन, वर्ण्यम् वर्ण्यं वर्ण्यं वर्ण्यं, लोमरोहणम् तथा लोमरोहण्युत्पुवाणा तथा लोमरोहण, व्रणावचूर्णनम् व्रणावचूर्णन व्रणावचूर्णन, रोपणम् अने प्रथु रोपण्युत्पुवाणा व्रणरोपण, इति छे ये, षट्त्रिंशत् छत्तीस छत्तीस, व्रणानाम् प्रथोभा व्रणोंके, समुपक्रमाः उपक्रमाः उपक्रम, उद्दिष्टाः उद्दिष्टा छे कहे गये हैं ॥ ४०-४३ ॥

४०. द्वे तैले-द्वौ स्नेहौ (ख.)

४१. तद्गुणे-तद्गुणौ (ख.)

४२. -च छते (न. घ. क.)

४३. तद्गुणे पत्रं-तद्गुणापत्रे (ब.)

४४. आलेपने-उन्मर्दने (ब.)

४५. रोपणं-लेपनं (क. घ. ङ.)

४६. लोमरोहणम्-लोमरोपणम् (ङ.)

40-43. There are six kinds of operative measures in swelling, compression, refrigeration, henosis, sweating, sedation, probing, the use of cleansing and healing decoctions, applications, use of cleansing and healing oils, leaves, two methods of covering, two methods of bandaging, diet, elevation, two kinds of cauterization (heat and caustic alkali), depression, two kinds of fumigation and application of hardening and softening procedures, dusting of wounds, restoring the skin pigment, healing and hair-restoring. Thus these thirty-six are regarded as the therapeutic measures in wounds

વ્રણશોથવ્રણમની ચિકિત્સા—

પૂર્વરૂપં મિષગ્નુદ્ધા વ્રણાનાં શોકપ્રાદિતઃ ।

રક્તાવસેચનં કુર્વાદ્જાતવ્રણશાન્તયે ॥૪૩॥

અજાતવ્રણશાન્તયે ઉત્પન્ન ન થયેલા વ્રણની શાન્તિ માટે ઉત્પન્ન થયેલ વ્રણની શાન્તિકે લિપ્ત, મિષક વેગે વેગે, વ્રણનામ્ વ્રણોના વ્રણોને, પૂર્વરૂપમ્ પૂર્વરૂપ, શોકમ્ શોકને શોકો, ગુદ્ધા અણુને જાનકર, પ્રાદિતઃ પ્રથમથી પ્રથમસે, રક્તાવસેચનમ્ રક્ત-મોક્ષણ રક્તમોક્ષણ, કુર્વાત્ કરવું એકી કરે ॥ ૪૪ ॥

44. Knowing that swelling is the premonitory symptom of a wound, the physician should treat it, at the very beginning, by depletion of blood so as to prevent it from terminating in a wound.

શોષયેદ્વદ્વદોષાંસ્તુ સ્વરૂપદોષાન્ વિલઙ્ગયેત્ ।

પૂર્વ કષાયસર્પિર્મિજયેદ્વા મારુતોત્તરાન્ ॥૪૫॥

૪૫. મારુતોત્તરાન્—મારુતોત્તરમ્ (સ.)

” ” —મારુતોત્તરે (ત.)

વદ્વદોષાન્ તુ અહુ દોષવાળાને વદ્વદોષવાળોને, પૂર્વમ્ પ્રથમ પહેલે, શોષયેત્ શોષન કરાવવું શોષન કરાવે, સ્વરૂપદોષાન્ અહ્ય દોષવાળાને અહ્ય દોષવાળોને, વિલઙ્ગયેત્ લંઘન કરાવવું લંઘન કરાવે, મારુતોત્તરાન્ અને વાતપ્રધાનના વાતને જોર વાતોત્તરણોને વાતકો, કષાયસર્પિર્મિઃ કષાય અને ઘી દ્વારા કષાય જોર ઘી દ્વારા, જયેત્ જીતવે જીતે ॥ ૪૫ ॥

45. If there is excessive morbidity, purificatory procedures should be done, and if the morbidity is slight, the patient should be given lightening therapy, and if vata provocation is predominant, it should first be cured by decoctions and medicated ghees.

ન્યમ્રોધોદુમ્બરાશ્વત્થપ્લક્ષ્ણેતસવલ્કલૈઃ ।

સસર્પિકૈઃ પ્રલેપઃ સ્થાવ્રલોપનિર્વાપણઃ પરમ્ ॥૪૬॥

સસર્પિકૈઃ ઘી સાથે સીકે સાથ, ન્યમ્રોધ- ૧૩ બરગદ, ઉદુમ્બર- ઊંમરો ગૂલર, અશ્વત્થ- પીપ્પળા પીપ્પળ, પ્લક્ષ્ણ- પીપ્પળા પાકર, લેપસ- અને લેપસની જોર લેપસની, વલ્કલૈઃ જાલપી બનાવેલા જાલોસે બનાવા હુઆ, પ્રલેપઃ લેપ લેપ, પરમ્ શ્રેષ્ઠ શ્રેષ્ઠ, શ્લોક- મોખરું શોફકા, નિર્વાપણઃ સ્વાત્ નિર્વાપણ કરનાર છે નિર્વાપણ કરનાર છે ॥ ૪૬ ॥

46. The application, prepared of the barks of banyan, gular fig, holy fig, wave-leaved fig and country willow, is an excellent refrigerant.

વિજયા મધુકં વીરા વિસગ્રન્થિઃ શતાવરી ।

નીલોત્પલં નાગપુષ્પં પ્રદેહઃ સ્થાત્ સચન્દનઃ ॥૪૭॥

વિજયા વિજયા વિજયા, મધુકમ્ જેડીમધ મુલહરી, વીરા વીરા વીરા, વિસગ્રન્થિઃ બિસની ગાંઠ વિસગ્રન્થિ, શતાવરી શતાવરી શતાવરી, નીલોત્પલમ્ નીલોત્પલ નીલોત્પલ, નાગપુષ્પમ્ અને નાગપુષ્પર એએએ જોર નાગપુષ્પર જનકા, સચન્દનઃ ચંદનની સાથે ચન્દનકે સાથ, પ્રદેહઃ બેડો લેપ પ્રદેહ, સ્થાત્ કરવે કરે ॥ ૪૭ ॥

૪૬. સસર્પિકૈઃ—સસર્પિકઃ (સ.)

” પ્રલેપઃ—પ્રદેહઃ (દ.)

47. The applications of sida, liquorice, milky yam, lotus, tubers, climbing asparagus, blue lily, fragrant poon and sandal act similarly.

सक्तुवो मधुकं सर्पिः प्रदेहः स्यात् सशर्करः ।  
अविदाहीनि चाज्ञानि शोफे भेषजमुत्तमम् ॥४८॥

शोफे सोमनाश शोफमें, सक्तुवः साधना सक्तू, मधुकम् गेहीमध मुलहठी, सर्पिः तथा धी ओओनो तथा घृत इनका, सशर्करः साउर साधे शर्कराके साथ, प्रदेहः स्यात् भडो दीप करवे प्रदेह करना चाहिए, अविदाहीनि च अने अविदाही और अविदाही, अज्ञानि अन्न अन्न, उत्तमम् उत्तम उत्तम, भेषजम् औषध छे औषध है ॥ ४८ ॥

48. Powder of roasted paddy, liquorice, ghee and sugar should be made into an application which is good for swelling. The non-irritant foods are a beneficial measure in swelling.

व्रणशोधनार्थम् उपनाहः—

स चेदेवमुपक्रान्तः शोफो न प्रशमं व्रजेत् ।  
तस्योपनाहैः पक्वस्य पाटनं हितमुच्यते ॥४९॥

एवम् ओ प्रभाषे इस प्रकार, उपक्रान्तः उपचार करवा छत पक्षु उपचार करने पर भी, सः शोफः ते सोओ वह शोफ, प्रशमम् शान्त शान्त, न व्रजेत् चेत् न थाय तो न होवे तो, उपनाहैः पोटीसोदास उपनाहोंसे, पक्वस्य पकायीने पकाकर, तस्य तेत्तु उसका, पाटनम् पाटन चीरना, हितम् हितकर हितकर, उच्यते उच्यते छे कहा जाता है ॥ ४९ ॥

49. If, along these lines of treatment, the swelling does not subside, it should be made to mature by means of poultices. When it is ripe, opening of it, is said to be beneficial.

तैलेन सर्पिषा वाऽपि ताभ्यां वा सक्तुपिण्डिका ।  
सुखोष्णा शोफपाकार्यमुपनाहः प्रशस्यते ॥५०॥

तैलेन तैलसे, सर्पिषा वा अपि अथवा धीध्री अथवा वीसे, ताभ्याम् वा अथवा अने मेणवीने अनावेली या दोनों मिलाकर बनाई हुई, सुखोष्णा नमशेडी सुहावे हुई गरम, सक्तुपिण्डिका साधनानी पिंडीसे सक्तुकी पिण्डिका, उपनाहः उपनाह उपनाह, शोफपाकार्यम् सोओने पकानवा भाटे शोफको पकानेके लिए, प्रशस्यते प्रशस्त छे प्रशस्त है ॥ ५० ॥

50. The poultice prepared of the powder of roasted grain mixed with ghee or oil, or with both and applied warm is recommended for the suppuration of swelling.

सतिला सातसीबीजा दध्यम्ला सक्तुपिण्डिका ।  
सकिण्वकुष्ठलवणा शस्ता स्यादुपनाहने ॥५१॥

सतिला तिल साधे तिलके साथ, सातसीबीजा अणसीनां बीनी साधे अलसीके बीजके साथ, दध्यम्ला भाटा दहीवाणी लट्टी दहीके साथ, सकिण्वकुष्ठलवणा किण्व, कुष्ठ अने लवणुधी अनावेली किण्व, कूठ और नमकसे बनाई हुई, सक्तुपिण्डिका साधनानी पिंडीसे सक्तुकी पिंडी, उपनाहने उपनाहना उपनाहमें, शस्ता स्यात् प्रशस्त छे प्रशस्त है ॥ ५१ ॥

51. The poultice prepared of the powder of roasted grain mixed with til, linseed, sour curds, yeast, costus and salt is also recommended.

विदग्धस्य संपक्वस्य च शोथस्य लक्षणम्—

रुग्दाहरागतोदैश्च विदग्धं शोफमादिशेत् ।

जलवस्तिरसमस्पर्शं संपक्वं पीडितोन्नतम् ॥५२॥

रुक् पीडा पीका, दाह- दाह दाह, राग- लाठी लाठी, तोदैः च अने तोदथी और तोदसे, शोफम् सोओने सूजनको, विदग्धम् पाकवा आवेष्टा पाकभिसुख,

५२. पीडितोन्नतम्-पिण्डितोन्नतम् (स. ब. क.)

आदिशेत् अशुवे। जानना चाहिए, जलबस्तिम-  
स्पर्शम् स्पर्शं कर्त्ता पाणी भरेली पभा। नेवे।  
स्पर्श करने पर जलसे भरी हुई बस्तिके समान, पीडितो-  
न्नतम् अने दबाववाली छपर ज़िरी आवता सोअने  
और दबाने पर ऊपर आनेवाली सूजनको, संपक्कम्  
सुपक्कम् अशुवे। नेधंओ सुपक जानना चाहिए ॥ ५२ ॥

52. The swelling which is charac-  
terised by pain, burning, redness  
and pricking pain, which feels to touch  
like a water bag i. e. when pressed, it  
is depressed and on the removal of  
the pressure it swells again (fluctua-  
tion test), should be diagnosed to be  
a suppurated swelling.

पक्कजगणोषमेदनो मेषजगणः—

उमाऽथो गुग्गुलुः सौधं पयो दक्षकपोतयोः ।  
विट् पलाशभवः क्षारो हेमक्षीरी मुकूलकः ॥ ५३ ॥  
इत्युक्तो मेषजगणः पक्कजगणप्रमेदनः ।  
सुकुमारस्य, कृच्छ्रस्य शस्त्रं तु परमुच्यते ॥ ५४ ॥

उमा अणसी अलसी, अयो अने और, गुग्गुलुः  
गूगल गूगल, सौधम् पयः थे।रनुं दध थूरका दध,  
दक्ष- कृच्छ्र मुर्गे, कपोतयोः अने उभूतरनी और कवूतरकी,  
विट् थरक बीठ, पलाशभवः क्षारः आभरादे। आर  
ढाकका क्षार, हेमक्षीरी कृच्छ्र कृच्छ्र, मुकूलकः अथपाण  
जयपाल, इति ओ यह, सुकुमारस्य सुकामणना सुकुमारके,  
पक्कजगण- पाडेवा सोअने पके हुए शोफको, प्रमेदनः  
झुडनादे। फोडनेवाला, मेषजगणः औषधवर्ग औषधवर्ग,  
उक्तः उक्तो ओ कहा गया है, कृच्छ्रस्य सहनशीलने भाटे  
सहनशीलके लिए, तु ते। तो, शस्त्रम् शस्त्रने शस्त्रको,  
परम् श्रेष्ठ श्रेष्ठ, उच्यते उच्यते। आवे ओ कहा जाता  
है ॥ ५३-५४ ॥

53-54. In case of delicate patients,  
linseed, gum guggul, milk of thorny

५३. उमाऽथो-तमारस्य (व.)

„ मुकूलकः-मकुलकः (ख. घ.)

milk hedge, the dung of cock and  
pigeon, palas-alkali, yellow thistle and  
red-physic nut are the group of drugs  
to be used for breaking open the  
suppurated swelling. In other cases,  
the operative measure is, of course,  
regarded the best treatment.

त्रणे षड्विधं शस्त्रकर्म—

पाटनं व्यधनं चैव छेदनं लेखनं तथा ।  
प्रच्छन्नं सीवनं चैव षड्विधं शस्त्रकर्म तत् ॥ ५५ ॥

पाटनम् पाटन पाटन, व्यधनम् च एव व्यधन  
व्यधन छेदनम् छेदन छेदन, लेखनम् लेखन लेखन,  
तथा प्रच्छन्नम् प्रच्छन्न प्रच्छन्न, सीवनम् च एव अने  
सीवन और सीवन, तत् ओ प्रभाणे ते इस प्रकार  
वह, शस्त्रकर्म शस्त्रकर्म शस्त्रकर्म, षड्विधम् छ प्रकाशनुं  
छे छः प्रकारका है ॥ ५५ ॥

55. Incision, puncturing, excision,  
scraping, scarification and suturing—  
these six are the operative measures.

नाडीव्रणाः पक्कजगणस्तथा क्षतगुदोदरम् ।  
अन्तःशल्याश्च ये शोफाः पाट्यास्ते तद्विधाश्च ये ।

नाडीव्रणाः नाडीव्रणो नाडीव्रण, पक्कजगणः  
पक्कजगण पक्कजगण, तथा तथा तथा, क्षतगुदोदरम् क्षत  
क्षतक्षत क्षतगुदोदर, ये शोफाः तेभज ओ सोअओ एवं  
जो शोफ, अन्तः-शल्याः अन्तः शल्यावाणा होय भीतर  
शल्ययुक्त हैं, ये च अने ओ और जो, तद्विधाः तेना  
नेवा होय उनके समान हैं, ते तेओ वे, पाट्याः  
पाटनयोय ओ पाटनयोग्य हैं ॥ ५६ ॥

56. Sinuses and fistulas, suppurated  
swellings, intestinal perforation and  
obstruction, foreign bodies inside and

५६. च ये-चर्म (घ.)

„ शोफाः-देशाः (क. ग. त. थ. घ. ङ.)

similar other conditions indicate the operative measure of incision.

दकोदराणि संपका गुल्मा ये ये च रक्तजाः ।

व्यध्याः शोणितरोगाश्च विसर्पपिडकादयः ॥५७॥

दकोदराणि जलोदरे जलोदर, वे गुल्माः वे शुष्म जो गुल्म, संपकाः भरोभर पाडेला होय सुपक हों, ये च तथा वे तथा जो, रक्तजाः रक्तजन्य शुष्म छे रक्तजन्य गुल्म हैं, विसर्प- तथा विसर्प तथा विसर्प, पिडकादयः पिडका वगेरे पिडका आवि, शोणितरोगाः च रक्तरोगे छे रक्तरोग हैं, व्यध्याः ते व्यधन-शैल्य छे वे व्यधनयोग्य हैं ॥ ५७ ॥

57. Ascites, fully suppurated gulma, and uterine gulma and diseases due to vitiation of blood, such as acute spreading affections, pimples etc., indicate the operative measure of puncturing.

उद्धृतान् स्थूलपर्यन्तानुत्सन्नान् कठिनान् व्रणान् ।  
अर्शःप्रभृत्यधीमांसं छेदनेनोपपादयेत् ॥५८॥

उद्धृतान् सौम्यगुणो जपर उठे हुए, स्थूलपर्यन्तान् स्थूल किनारीवाला स्थूल किनारेवाले, उत्सन्नान् उभेया उभरे हुए, कठिनान् तथा डालु तथा कठिन, व्रणान् प्रक्षो व्रण, अर्शःप्रभृति- अने दरस वगेरे और अर्श आदि, अधीमांसम् अधिमांसतु अधिमांसका, छेदनेन छेदन छेदन, उपपादयेत् उरवुं जोधो करना चाहिए ॥ ५८ ॥

58. Swollen wounds, wounds with thick edges, elevated wounds, hard wounds, excrescent growth of flesh such as piles and others indicate the operative measure of excision.

किलासानि सङ्कुष्ठानि लिखेल्लेख्यानि बुद्धिमान् ।  
वातासृग्प्रण्णिविडकाः सकोठा रक्तमण्डलम् ॥५९॥

कुष्ठान्यभिरुः चाङ्गं शोथान् प्रच्छयेद्विषक् ।

सीग्यं कुक्ष्युदराद्यं तु गम्भीरं यद्विपाटितम् ॥६०॥

इति षड्विधमुद्दिष्टं शस्त्रकर्म मनीषिभिः ।

बुद्धिमान् बुद्धिमान् वैद्ये बुद्धिमान् वैद्य, लेख्यानि लेखनयोग्य लेखनयोग्य, सङ्कुष्ठानि सङ्कुष्ठित कुष्ठसहित, किलासानि किलासकुष्ठोक्त किलासकुष्ठोक्त, लिखेल्लेख्यानि लिखेल्लेखन करे, सकोठाः कोठ कोठ, वातासृक्-वातरक्त वानरक्त, प्रण्णिवि-प्रण्णिवि, विडकाः पिडका पिडका, रक्तमण्डलम् रक्तमण्डल रक्तमण्डल, कुष्ठानि कुष्ठ कुष्ठ, अङ्गिहृतम् धा वागेधुं चोट लगा हुआ, अङ्गम् अङ्ग अङ्ग, शोथान् च अने सौम्यगुणो और सूत्रनोंका, विषक् वैद्ये वैद्य, प्रच्छयेत् प्रच्छन उरवुं प्रच्छन करे, कुक्षि- कुक्षि कुक्षि, उदराद्यम् उदर आदि उदर आदि, यत् तु वे जो, गम्भीरम् गंभीर गम्भीर, विपाटितम् यीरेधुं होय चीरा गया हों, सीग्यम् तेने सीधुं जोधो उसे सीना चाहिए, इति एव यह, षड्विधम् ७ प्रकारका, शस्त्रकर्म शस्त्रकर्म शस्त्रकर्म, मनीषिभिः बुद्धिमानोने बुद्धिमानोंने, उद्दिष्टम् उद्दिष्ट छे कहा है ॥ ५९-६० ॥

59-60. Leprous lesions and other skin diseases indicating scaping, should be scraped by the intelligent physician. Rheumatic conditions, tumors, pimples, circular red eruptions, various lesions of dermatosis and parts that have suffered injury and swelling indicate the procedure of scarification. Deep opening of the lumbar or the abdominal region indicate suturing. Thus the wise physicians have described the six varieties of operative procedures.

व्रणे पीडनविधिः—

सूक्ष्माननाः कोषवन्तो ये व्रणास्तान्प्रपीडयेत् ६१

वे व्रणाः वे प्रक्षो जो व्रण, सूक्ष्माननाः सूक्ष्म मुखवाले, कोषवन्तः अने कोषधुता

होय और कोषयुक्त हों, तान् तेओने उन्हें, प्रपीडयेत्  
दध्नाया ओधये दवाना चाहिए ॥ ६१ ॥

61. The suppurated wounds with narrow opening and capacious interior indicate compression.

कलायाश्च मसूराश्च गोधूमाः सहरेणवः ।

कल्कीकृताः प्रशस्यन्ते निःक्षेहा व्रणपीडने ॥ ६२ ॥

निःक्षेहाः स्नेहदुर्लभं मेहराणि, कल्कीकृताः ३६३  
अनावेक्षा कल्क किये हुए, कलायाः पटाशु मटर,  
मसूराः मसूर मसूर, सहरेणवः नाना पटाशु छोटी  
मटर, गोधूमाः च अने धुँ और गेहूँ, व्रणपीडने प्रश-  
सीकृतम् व्रणपीडनमें, प्रशस्यन्ते प्रशस्त छे प्रशस्त  
हैं ॥ ६२ ॥

62. Common pea, lentils, wheat and pigeon pea made into paste and unmixed with unctuous substances are recommended for compressing the above-said wounds.

व्रणे निर्वपणविधिः—

शास्त्रमलीत्वग्बलामूलं तथा न्यग्रोधपल्लवाः ।  
न्यग्रोधादिकमुद्दिष्टं बलादिकमथापि वा ॥ ६३ ॥  
आलेपनं निर्वपणं तद्विद्यात्तैश्च सेचनम् ।

शास्त्रमलीत्वक् श्लिभजानी अल सेमली छाल,  
बलामूलम् अलामूल बलामूल, तथा न्यग्रोध-  
वरगदके, पल्लवाः दूँपणो पल्लव, उद्दिष्टम् पलेक्षा छेले  
पहले कहा हुआ, न्यग्रोधादिकम् न्यग्रोधादि न्यग्रोधादि,  
अथापि वा अने और, बलादिकम् अल आदिभूतं  
बलादिकका, आलेपनम् ने आलेपन जो आलेपन,  
तत् तेने उसे, निर्वपणम् निर्वपण निर्वपण, विद्यात्  
जानना चाहिए, तैः च तेओशी उनसे, सेचनम्  
परिषेक करने ओ पण निर्वपण छे परिषेक करना  
भी निर्वपण है ॥ ६३ ॥

63-63½. The bark of the silk-cotton tree, the roots of sida and the sprouts of banyan, or the banyan group of drugs or the sida group of drugs—these used as applications, are refrigerants; and affusions of these drugs have similar action.

सर्पिषा शतधौतेन पयसा मधुकाम्बुना ॥ ६४ ॥  
निर्वापयेत् सुशीतेन रक्तपित्तोत्तरान् व्रणान् ।

रक्तपित्तोत्तरान् रक्तपित्तप्रधान रक्तपित्तधान,  
व्रणान् प्रक्षेपने व्रणोंको, शतधौतेन सो बार पियेक्ष सौ  
बार धोये हुए, सर्पिषा धीधी घीसे, सुशीतेन अहुन  
शीतल अतिशीतल, पयसा दूधपडे दूधसे, मधुकाम्बुना  
अथवा गेहीमधुना अथवा अथवा सुलहठीके मधुसे,  
निर्वापयेत् (निर्वापण करने) निर्वापण करना चाहिए ॥ ६४ ॥

64 64½. The wounds, associated with hemothermia, should be soothed by affusion with the hundred times washed ghee or with very cold milk or with very cold liquorice-water.

लम्बानि व्रणवांसानि प्रलिप्य मधुसर्पिषा ॥ ६५ ॥  
संदधीत समं वैद्यो बन्धनैश्चोपपादयेत् ।

वैद्यः वैद्य वैद्य, लम्बानि लटकेला लटकते हुए,  
व्रणवांसानि प्रलुभसिने व्रणवांसोंको, मधुसर्पिषा मधु  
तथा धीधी मधु तथा घृतसे, प्रलिप्य लेपन करीने  
लेपन करके, समम् समान समान, संदधीत जोड़ववा  
सुव्यवस्थित करे, बन्धनैः च अने अधनेशी और  
बन्धनोंसे, उपपादयेत् आधी देवा बांध दे ॥ ६५ ॥

65-65½. If there are loosely hanging bits of flesh in the wounds, they should be painted with ghee and honey and replaced properly; and then the physician should bandage the wound.



त्रणे सन्धानविधिः—

तान्समान्सुस्थितान्ज्ञात्वा फलिनीलोध्रकट्फलैः ६६  
समज्ञाधातकीयुक्तैश्चूर्णितैरवचूर्णयेत् ।

तान् ते औषधि उन्को, समान् सूरभां समान रूपसे,  
सुस्थितान् गोवायेदा व्यवस्थित, ज्ञात्वा अष्टुनि  
जानकर, चूर्णितैः यूक्षुं उरेदां चूर्णं किये हुए, समं-  
भक्तं मंजीठ, धातकीयुक्तैः अने भावडीनां दूधसहित  
और धातकीपुष्पसहित, फलिनी- धुँला प्रियंगु, लोध्र-  
दोष्र लोध्र, कट्फलैः अने डायङ्गन वडे और कट्फलसे  
सबचूर्णयेत् ते औषधि पर अवयूक्षुन उरवुं ओष्ठौ  
उत्तर अवचूर्णन करना चाहिए ॥ ६६ ॥

66-66½. When they are replaced  
properly, the wound should be dusted  
with the powders of perfumed cherry,  
lodh, box-myrtle and madder and  
fulsee flowers.

पञ्चवल्कलचूर्णैर्वा शुक्तिचूर्णसमायुतैः ॥६७॥  
धातकीलोध्रचूर्णैर्वा तथा रोहन्ति ते व्रणाः ।

शुक्तिचूर्ण- छीपना यूक्षुं सीवीके चूर्ण, समायुतैः  
सहित सहित, पञ्चवल्कलचूर्णैः वा पञ्चवल्कलनां यूक्षुं  
पञ्चवल्कलके चूर्णोंसे, धातकी- अथवा धावडी अथवा वाय,  
लोध्र- अने दोध्रनां और लोध्रके, चूर्णैः वा यूक्षुं  
अवयूक्षुन उरवुं ओष्ठौ चूर्णोंसे अवचूर्णन करना चाहिए,  
तथा औषधि उरवाधी ऐसा करनेसे, ते व्रणाः ते व्रणो  
रोहन्ति ३औं अथ ३ सरजाते हैं ॥ ६७ ॥

67-67½. The wounds heal similarly  
with the use of the powders of the  
pentad of milky trees mixed with the  
powder of pearl-oystershell; or, with the  
use of the of powder of fulsee flowers  
and lodh also the wounds get healed.

६६. समान्सुस्थितान्—मानसंस्थितान् (द.)

॥ तान् समान्सुस्थितान्ज्ञात्वा—तानि ज्ञात्वा सुसंस्थानि (क.)

६६½. युक्तैः—युक्तैः (ग.)

अस्थिभग्नं च्युतं सन्धिं संदधीत समं पुनः ॥६८॥  
समेन सज्जप्रज्ञेन कृत्वाऽन्येन विचक्षणः ।

अस्थिभग्नं आगेव हाडकावाणाने अस्थिभग्नं च्युतं  
सन्धिम् तथा संधिः भडी गयो होय तेने तथा च्युतसंधिको  
विचक्षणः विशिष्टः वैद्ये विचक्षण वैद्य, अन्येन भीम  
दूसरे, समेन समान समान, अज्ञेन अंगना अज्ञके साथ,  
समं कृत्वा समान करीने समान करके, पुनः ३री  
फिर, समं सज्जं बराबर, संदधीत भेडी देवुं जोड़  
देवे ॥ ६८ ॥

68-68½. The fractured bone or  
dislocated joint should be set right by  
the skilled physician on a par with  
its parallel limb of the body.

स्थिरैः कवलिकावन्धैः कुशिकामिभ्य संस्थितम् ॥  
पट्टैः प्रभूतसर्पिक्कैर्वन्धीयादचलं सुखम् ।

संस्थितम् सारी रीते भेसाडेवा ते अंगने ठीक  
बिठाये हुए उस अङ्गको, स्थिरैः स्थिर स्थिर, कवलिका-  
वन्धैः कवलिकावन्धीयाधी आधी कवलिकावन्धसे बांधकर,  
कुशिकामिः च अने कुशिकादारा और कुशिकाओं द्वारा,  
संस्थितम् स्थिर करी स्थिर करके, प्रभूत सर्पिकः अङ्ग  
धीवाणा बहुत घृतयुक्त, पट्टैः पाटाओंधी पट्टियोंसे,  
अचलम् हाडी चढ़ि औम दिके नंगा ऐसा, सुखम् अने  
सुख रहे औम और सुख रहे उस प्रकार, वन्धीयात्  
आधवुं ओष्ठौ बांधना चाहिए ॥ ६९ ॥

69-69½. When it is fixed in proper  
position it should be bandaged with  
cotton splints and cloth and then ban-  
daged with cloth well-soaked in ghee in  
such a way that the part is immovable  
and comfortable.

अविदाहिसिरसैश्च पैष्टिकैस्तमुपाचरेत् ॥७०॥

ग्लानिर्हि न हिता तस्य सन्धिविषयकारिका ।

६८½. विचक्षणः—परीक्षकः (क.)

७०. पैष्टिकैस्तमुपाचरेत्—पैष्टिकैः समुपाचरेत् (क.)

અવિદાદિભિઃ વિદાહ નહિ કરનારાં વિદાહ ન કરનેવાલે, પૈષ્ટિકૈઃ પૈષ્ટિક પૈષ્ટિક, જલ્લૈઃ અનોઘો અનોસે, તમ્ભ તેનો સલકા, ઉપાચરેત્ ઉપચાર કરવો જોઈએ ઉપચાર કરના હાઈ કેમકે ક્યોંકિ, સત્ય તેના સસકી, સ્વસ્થિ-અંગના સંધિને અજ્ઞસન્ધિકો, વિશ્લેષ-કારિકા બુદ્ધો કરનારી જલન કરનેવાલી, મ્લાનિઃ મ્લાનિ મ્લાનિ, દિવા ન દિતકારક નથી દિતકારક નહીં છે ॥ ૭૦-૭૧ ॥

70-71. The patient should then be given non-irritant pastry articles of diet; and any kind of exertion which disturbs the joined part is not good.

વિચ્યુતાભિહતાજ્ઞાનાં વિલ્પર્પીવીરુદ્ધવાન્ ॥૭૧॥  
ઉપાચરેદ્યથાકાલં કાલજઃ સ્વાચ્છિકિત્સિતાત્ ।

વિચ્યુત-ચ્યુત ચ્યુત, અભિહત-થા લાગેલ ચોટ લગે હુણ, અજ્ઞાનામ્ અંગવાળાના અજ્ઞાલોકે, વિલ્પર્પ-વીન્ વિલ્પર્પ આદિ વિલ્પર્પ આદિ, ઉપદ્રવાન્ ઉપદ્રવોનો ઉપદ્રવોંકા, કાલજઃ કાળજ વૈદ્યે કાલજ વૈદ્ય, સ્વાત્ પેતપેતાની અપની અપની, ચિકિત્સિતાત્ ચિકિત્સાથી ચિકિત્સાસે, યથાકાલજ્ સમયાનુસાર સમય અનુસાર, ઉપાચરેત્ ઉપચાર કરવો ઉપચાર કરે ॥ ૭૧-૭૨ ॥

71-71½. If the dislocated or injured part is complicated with acute spreading affections, the physician, expert in the knowledge of the various stages of treatment, should do the treatment of that particular condition as required in that stage.

વ્રણે સ્વેદનવિધિઃ—

શુષ્કા મહારુજઃ સ્તબ્ધા યે વ્રણા મારુતોત્તરાઃ ।

સ્વેદ્યાઃ સજ્જરકલ્પેન તે સ્યુઃ કુશરપાવસૈઃ ॥૭૨॥

ગ્રામ્યવૈભામ્બુજાનૂપૈવૈશવારૈશ્ચ સંસ્કૃતૈઃ ।

ઉત્કારિકામિશ્રોષ્ણામિઃ સુખી સ્યાદ્ગણિતસ્તથા ૭૩

૭૨. ઉપાચરેત્-ઉપકમેત (વ. જ. પ.)

યે મારુતોત્તરાઃ જે વાતપ્રધાન જો વાતપ્રધાન, શુષ્કાઃ શુષ્ક શુષ્ક, મહારુજઃ ખુબ પીડાવાળા વહુત રુજાવાલે, સ્તબ્ધાઃ અને સ્તબ્ધ ઓર સ્તબ્ધ, વ્રણાઃ વ્રણો હોય વ્રણ હોં, તે તેઓને ઉન્દે, કુશરપાવસૈઃ કુશરા અને પાવસદ્વારા કુશરા ઓર સ્તબ્ધ, ગ્રામ્ય-ગ્રામ્ય ગ્રામ્ય, વૈભ-બિદેશ્ય વિલેશ્ય, અમ્બુજ-અળચર જલચર, જાનૂપૈઃ અને જાનૂપ જોઈએ ભાંસના ઓર જાનૂપ જીવોંકે માંસકે, સંસ્કૃતૈઃ વધાર દીધેલા છોંકે હુણ, વૈશવારૈઃ ચ વૈશવારૈથી વૈશવારૈસે, ઉષ્ણામિઃ ચ અને ગરમ ઓર ગરમ, ઉત્કારિકામિઃ ઉત્કારિકાઓથી ઉત્કારિકાઓસે, સજ્જરકલ્પેન સંકરસ્વેદની વિધિથી સંકર-સ્વેદની વિધિસે, સ્વેદ્યાઃ સ્વેદ આપવો જોઈએ સ્વેદ દેના હાઈ, તથા એમ કરનાથી એસા કરનેસે, ગણિતઃ વ્રણ-રોગી વ્રણકા રોગી, સુખી સ્યાત્ સુખી થાય છે સુખી હોતા હે ॥ ૭૨-૭૩ ॥

72-73. If the wounds with the predominance of vata-provocation are dry, excessively painful and indurated, they should be given mixed sudation treatment by means of hot poultices, prepared from the flesh of domestic, terribulous, aquatic and wet-land animals till the patient gets relief.

સદાહા વેદનાવન્તો યે વ્રણા મારુતોત્તરાઃ ।  
તેષામુમાં તિલાંશ્ચૈવ મૃદ્ધાન્ પયસિ નિર્વૃતાન્ ॥૭૪॥  
તેનૈવ પયસા પિપ્પા કુર્યાદાલેપનં મિષક્ ।

યે મારુતોત્તરાઃ જે વાતપ્રધાન જો વાતપ્રધાન, વ્રણાઃ વ્રણો વ્રણ, સદાહાઃ દાહ્યુક્ત દાહ્યુક્ત, વેદ-નાવન્તઃ અને વેદનાવાળા હોય ઓર વેદનાવાલે હોં, તેષામ્ તેઓ પર ઉત પર, મિષક્ વૈદ્ય વૈદ્ય, ઉમાન્ અળસી અળસી, તિલાન્ ચ એવ તથા તલને તથા તિલોંકો, મૃદ્ધાન્ શેડીને મૃતકર, પયસિ દૂધમાં દૂધસે, નિર્વૃતાન્ ઠારવા બુઝાવે, તેન એવ પછી તે જ પશ્ચાત્ ઉસી પયસા દૂધથી દૂધસે, પિપ્પા પીપ્પાને પીપ્પકર, આલેપન આલેપન, કુર્યાત્ કરે કરે ॥ ૭૪-૭૫ ॥

74-74½. If in wounds with predominance of vata-provocation, there is burning and pain, they should be treated. by the physician, with applications prepared by soaking fried linseed and til in milk and rubbing them with the same milk.

बला गुडूची मधुकं पृश्निपर्णी शतावरी ॥७५॥

जीवन्ती शर्करा क्षीरं तैलं मन्स्यवसा घृतम् ।  
संसिद्धा समधूच्छिष्टा शूलघ्नी ज्वेदशर्करा ॥७६॥  
द्विपञ्चमूलकथितेनाम्भसा पयसाऽथवा ।  
सर्पिषा वा सतैलेन कोष्णेन परिवेचयेत् ॥७७॥

बला भला बला, गुडूची भली गिलेय मधुकम्  
नेलीमध मुलहरी, पृश्निपर्णी पृश्निपर्णी, शतावरी शतावरी शतावरी, जीवन्ती डोडी जीवन्ती,  
शर्करा साकर शर्करा, क्षीरम् दूध दूध, तैलम् तेल  
तैल, मन्स्यवसा माछवाली पसा मछलीकी वसा,  
घृतम् अने धीथी और घीसे, संसिद्धा सारी रीति  
सिद्ध करेदी अच्छी तरह सिद्ध की हुई, समधूच्छिष्टा  
अने भीखु भेजवेदी और मोम मिलाई हुई, ज्वेद-  
शर्करा स्नेहशर्करा स्नेहशर्करा शूलघ्नी शूलनाशक छे  
शूलनाशक है, द्विपञ्चमूल- अथवा छे पञ्चमूलथी अथवा  
दो पञ्चमूलसे, कथितेन पडावेला पकाये हुए, कोष्णेन  
नवशेका सुहाते हुए गरम, अम्भसा पाली वडे जलसे,  
अथवा अथवा अथवा, पयसा दूध वडे दूधसे, सतैलेन  
अथवा तैल भेजवेला या तैल मिलाये हुए सर्पिषा वा धीथी  
घीसे, परिवेचयेत् परिवेचन करवुं परिवेचन करे ॥७५-७७॥

75-77. The unctuous sugar-preparation made of sida, guduch, liquorice, painted leaved uraria, climbing asparagus, cork swallow wort, sugar, milk, oil, fat of fish, ghee and bee's wax is curative of piercing pain in the wound. The wound should be

affused with genially warm water milk, or ghee with oil prepared with decaradices.

यवचूर्णं समधुकं सतिलं सह सर्पिषा ।  
दद्यादालेपनं कोष्णं दाहशूलोपशान्तये ॥७८॥

दाह- दाह दाह, शूल- अने शूलनी और शूलकी,  
उपशान्तये शान्ति भाटे शान्तिके लिए, समधुकम् नेली-  
मध मुलहरी, सतिलम् तैल तिल, सर्पिषा सह अने  
धीनी साथे और घीके साथ, यवचूर्णम् जवना चूर्णम्  
जौके चूर्णका, कोष्णम् सुषोष्ण सुखोष्ण, आलेपनम्  
आलेपन आलेपन, दद्यात् करवुं भेजवे करना  
चाहिए ॥ ७८ ॥

78. To alleviate burning and pricking pain the wound should be anointed with the warm application prepared of powdered barley, liquorice and til mixed with ghee.

उपनाहश्च कर्तव्यः सतिलो मुद्रपायसः ।  
रुग्दाहयोः प्रशमनो व्रणेष्वेव विधिर्हितः ॥७९॥

रुग्दाहयोः पीडा अने दाहने शान्त करवा भाटे  
पीडा और जलनको शान्त करनेके लिए, प्रशमनः तेजीने  
शान्त करनेको सनको शान्त करनेवाला, सतिलः तैलवाणी  
तिलसहित, मुद्रपायसः मधनी भीरने। मूंगकी खीरका,  
उपनाहः उपनाह उपनाह, कर्तव्यः करवे भेजवे करना  
चाहिए, व्रणेषु प्रक्षेप्य व्रणोंमें, एषः विधिः आ विधि  
यह विधि, हितः हितकर है ॥ ७९ ॥

79. To soothe the pain and burning, the poultice of til mixed with the milk-pudding prepared of green gram should be applied. This is the line of treatment laid down as beneficial in wounds.

७८. सतिलं-सतैलं (फ. ब.)

७९. विधिर्हितः-विधिः श्रुतः (क. घ. छ.)

વ્રણે एषणविधिः—

सूक्ष्मानना बहुस्त्रावाः कोषवन्तश्च ये व्रणाः ।  
न च मर्माश्रितास्तेषामेषणं हितमुच्यते ॥८०॥

ये વ્રણાઃ ને પ્રણે જો વ્રણ, સૂક્ષ્માનનાઃ સૂક્ષ્મ મુખવાળા સૂક્ષ્મ મુખવાળે, बहुस्त्रावाः थलु आववाण। बहुत स्त्रावयुक्त, कोषवन्तः च અને કોષવાળા હોય और कोषवाले हों, न च मर्माश्रिताः અને मर्माश्रित न होय और मर्माश्रित न हों, तेषाम् तेओनु उनका, एषणम् ओषण एषण, हितम् हितकारक हितकारक, उच्यते उच्यते છે कहा जाता है ॥ ८० ॥

80 Probing is beneficial in wounds having narrow mouths, excessive discharge, capacious interior and not located in the vital regions.

द्विविधामेषणीं विद्यान्मृद्नीं च कठिनामपि ।  
औद्भिदैर्भृदुभिर्नोल्लोहानां वा शलाकया ॥८१॥

औद्भिदैઃ વનસ્પતિની વનસ્પતિકે, મૃદુભિઃ કોમળ કોમળ, નાલૈઃ નળીઓથી નાલોસે, મૃદ્વીક્ કોમળ કોમળ, लोहानाम् वा અને ધાતુઓની और धातुभोंकी, शलाकया सणीઓથી શલાકાઓસે, कठिनाम् च अपि કઠણ કઠિન, द्विविधाम् એ એ પ્રકારની इन दो प्रकारकी, एषणीम् ओषणी एषणी, विद्यान् બલ્યવી જાનની चाहिए ॥ ८१ ॥

81. There are two types of probes (1) soft and (2) hard. The soft probe is made of stalks of herbs and the hard one is made of metal rod.

गम्भीरे मांसले देशे पात्र्यं लौहशलाकया ।  
एष्यं विद्याद्वणं नालैर्विपरीतमतो मिषक् ॥८२॥

૮૦. મર્માશ્રિતાઃ-મર્મસ્થિતાઃ (વ.)

૮૧. ઔદ્ભિદૈઃ-ઉદ્ભિદૈઃ (વ.)

૮૨ ગમ્ભીરે-ગમ્ભીરં (વ. ત.)

૧, પાત્ર્ય-પાત્ર્યં (સ. ડ. ક.)

મિષક્ પૈલે વૈશ, ગમ્ભીરે ગંભીર ગમ્ભીર, માંસલે અને માંસલ और मांसल, देशे प्रदेशमा प्रदेशमें, पात्र्यम् थीरवा थोय चीरने योग्य, व्रणम् प्रलुने व्रणको, लौह- धातुनी धातुकी, शलाकया शलाकाથી शलाकासे, अतः અને તેનાથી और इससे, विपरीतम् विपरीत प्रलुने विपरीत व्रणको, नालैः नालद्वारा नालोंसे. एष्यम् ओष्य एष्य, विद्यात् બલ્યવી જાને ॥ ८२ ॥

82. If the wound is on a fleshy part and deep seated, it should be probed with a metallic director, and in the opposite condition the physician may use the stalk of herbs, as a probe.

વ્રણે શોધનવિધિઃ—

पूतिगन्धान् विवर्णाश्च बहुस्त्रावान्महारुजः ।  
व्रणानशुद्धान् विज्ञाय शोघनैः समुपाचरेत् ॥८३॥

પૂતિગન્ધાન્ સડેલ ગંધવાળા સર્વો દુર્ગંધ ગન્ધસે युक्त, विवर्णान् विवर्ण विवर्ण, बहुस्त्रावान् બહુ આવવાળા बहुत स्त्रावाले, महारुजः च અને ધણી પીડાવાળા और बहुत पीडावाले, व्रणान् प्रलુને व्रणोंको, अशुद्धान् अशुद्ध, विज्ञाय બલ્યીને જાનકર, शोघनैः शे।धने।द्वारा शोधनोंसे, समुपाचरेत् ઉપચાર કરવે। ओष्ठओ उपचार करना चाहिए ॥ ८३ ॥

83. The wounds having foul smell, discoloration, excessive discharge and pain should be known to be unhealthy and they should be treated with purificatory measures.

त्रिफला खदिरो दावीं न्यग्रोधादिर्वला कुशः ।  
निम्बकोलकपत्राणि कषायाः शोघना मताः ॥८४॥

૮૩. સમુપાચરેત-તાતુપાચરેત (ક. વ.)

૮૪ ન્યગ્રોધાદિર્વલા-ન્યગ્રોધોડિર્વલા (વ.)

૧, ન્યગ્રોધાડિર્વલા (ક.)

૧, નિમ્બકોલકપત્રાણિ-નિમ્બઃ કલકપત્રાણિ (વ.)

૧, નિમ્બઃ કુલકપત્રાણિ (ક.)

૧, કષાયાઃ શોષનાં મતાઃ-કષાયઃ શોષને હિતઃ (વ. વ.)

त्रिफला त्रिफला त्रिकला, खदिरः जेर खैर, दावी  
हाडुडगडर दारुहली, न्यग्रोधादिः न्यग्रोधादिगुलु  
न्यग्रोधादिगण, बला भला बला, कुशः कुश कुश,  
सिम्ब- एमिडो नीम, कोकक- अने जेरडीना और  
बेरीके, पत्राणि पान पत्ते, कषायाः जेओना उपायोने  
इनके कषाय, शोचनाः शोधन शोधन, मत्ताः मानेला  
छे माने गये हैं ॥ ८४ ॥

84. The decoctions of the three  
myrobalans, catechu, indian berberry,  
drugs of the banyan group, heart-  
leaved sida, sacrificial grass, neem  
and the leaves of jujube are said to  
be purifying agents.

तिलककः सलवणो द्वे हरिद्रे त्रिवृद्धृतम् ।  
मधुकं निम्बपत्राणि प्रलेपो व्रणशोधनः ॥ ८५ ॥

सलवणः एवमुक्त लवणसहित, तिलककः  
तिलको ३६३ तिलका कक, द्वे हरिद्रे ६७६२ अने  
हाडुडगडर इली और दारुहली, त्रिवृष नसोतर निशोय,  
धृतम् धी धी, मधुकम् जेडीमध मुलहठी, निम्बपत्राणि  
अने एमिडोना पान और नीमके पत्ते, प्रलेपः जेओने।  
लेप इनका लेप, व्रणशोधनः मधुशोधन छे व्रण-  
शोधन है ॥ ८५ ॥

85. The unguent made with the  
paste of til mixed with salt, turmeric  
and indian berberry, turpeth, ghee,  
liquorice and leaves of neem is a  
purifier of wounds.

शुद्धव्रणलक्षणम्—

नातिरक्तो नातिपाण्डुर्नातिश्यावो न चातिरक्तः ।  
न चोत्सन्नो न चोत्सङ्गी शुखो रोप्यः परं व्रणः ८६

न अतिरक्तः जे भुडु राते। न होय जो बहुत रक्त  
न हो, न अतिपाण्डुः जे भुडु पांडु न होय जो बहुत  
पाण्डु न हो, न अतिश्यावः जे भुडु श्याव वधुने। न  
होय जो बहुत श्याव न हो, न च अतिरक्त जे भुडु

८६. रोप्यः—सेव्यः (व.)

पीडायुक्त न होय जो बहुत पीडायुक्त न हो, न च  
उत्सङ्गः जे भुडु छेतो न होय जो बहुत उमरा हुआ  
न हो, न च उत्सङ्गी अने जे भुडु उत्सङ्गी न होय  
और जो बहुत उत्सङ्गी न हो, व्रणः ते मधु बह व्रण,  
शुद्धः परम् शुद्ध यथा पछीय शुद्ध होने पर ही, रोप्यः  
शेपल्योय छे रोपणयोग्य है ॥ ८६ ॥

86. The wound which is not very  
red not very pale, not very dark-red,  
not very painful nor much elevated,  
nor having thick edges etc., is consi-  
dered a healthy wound and should be  
treated with healing agents

व्रणे रोपणविधिः—

न्यग्रोघोदुम्बराश्वत्थकदम्बप्लक्षवेतसाः ।

करवीरार्ककुटजाः कषाया व्रणरोपणाः ॥ ८७ ॥

न्यग्रोघ- १३ बरगद, उदुम्बर उमरडो गूलर,  
अश्वत्थ- पीपगो पीपल, कदम्ब- ३६३ कदम्ब, प्लक्ष-  
पीपल पाकर, वेतसाः वेतस वेतस, करवीर- ३६३  
करवीर, अर्क- आकडो आक, कुटजाः अने ३६३ और  
कुटजावक्, कषायाः जे उपायो ये कषाय, व्रणरोपणाः  
मधुशोधन छे व्रणरोपण हैं ॥ ८७ ॥

87. Decoctions of banyan, gular fig,  
holy fig, cadamba, yellow berried fig,  
country willow, oleander, mudar and  
kurchi are healing agents.

चन्दनादियोगः—

चन्दनं पञ्चकिञ्चलकं दासीत्वङ्नीलसुवल्गम् ।

मेदे मूर्वा समञ्जसं च यथाहं व्रणरोपणम् ॥ ८८ ॥

चन्दनम् अन्धे चन्दन, पञ्चकिञ्चलकम् पञ्चकेसर  
कमलके केसर, दासीत्वक् हाडुडगडरनी छाव दारुहलीकी  
छाव, नीलम् उत्पलम् नीलकमल नीलोफर, मेदे मेदा,  
महामेदा मेदा, महामेदा, समञ्जसं रीसाभधुनी काजवन्ती,

८७. व्रणरोपणाः—रोपणाः स्मृताः (ख.)

८८. मेदे—मेदा (व. क.)

મૂર્વા મેરુદેહ મૂર્વા, યષ્ઠાહ્લમ્ ચ અને જેડીમધ જૌર મુલહટી, વ્રણરોપણમ્ એ પ્રભુરોપણુ છે એ વ્રણરોપણ હૈ ॥ ૮૮ ॥

88. Sandal wood, lotus filaments, bark of indian berberry, cinnamon, blue water-lily, the two Medas, trilobed virgin's bower, indian madder and liquorice are also healing agents in ulcers.

પ્રપૌંડરીકાયં તૈલમ્—

પ્રપૌંડરીકં જીવન્તી ગોજિહ્વા ધાતકી બલા ।  
રોપણં સતિલં દધાત્ પ્રલેપં સઘૃતં વ્રણે ॥ ૮૯ ॥

પ્રપૌંડરીકમ્ પ્રપૌંડરીક પ્રપૌંડરીક, જીવન્તી ડોડી જીવન્તી, ગોજિહ્વા ગળજીભી ગોજિહ્વા, ધાતકી ખાવડી ધાતકી, બલા બલા બલા, સતિલમ્ એએને । તથા इनका तिल, सघृतम् અને ધીની સાથે જૌર ઘોઠે સાથ, રોપણમ્ રોપણુ રોપણ, પ્રલેપમ્ પ્રલેપ પ્રલેપ, વ્રણ પ્રભુમા વ્રણમે, દધાત્ કરવે લગાવે ॥ ૮૯ ॥

89. The unguent prepared of rhizomes of lotus, cork swallow wort, elephant foot, fulsee flowers, heart leaved sida, til and ghee should be applied for promoting the healing of wounds.

કમ્પિહ્લાયં તૈલમ્—

કમ્પિહ્લકં વિહ્ગ્ગાનિ ઘત્સકં ત્રિફલાં વલામ્ ।  
પટોલં પિષ્તુમર્દં ચ લોધ્રં મુસ્તં પ્રિયક્કમ્ ॥ ૯૦ ॥  
સદિરં ધાતકીં સર્જમેલામગુરુચન્દને ।  
પિષ્ઠા સાધ્યં મધેસૈલં તત્ પરં વ્રણરોપણમ્ ॥ ૯૧ ॥

કમ્પિહ્લકમ્ કંપીલો કમીલા, વિહ્ગ્ગાનિ વાવડિંગ વાવડિંગ, ઘત્સકમ્ કડાઝાલ દગત્વક, ત્રિફલામ્ ત્રિફળા ત્રિફળા, વલામ્ બલા બલા, પટોલમ્ પરવળ પરવળ, પિષ્તુમર્દમ્ લીમડે નીમ, લોધ્રમ્ લોધ્ર લોધ્ર

મુસ્તમ્ નાગરમેધ મોથા, પ્રિયક્કમ્ ચ ધર્ધિલા પ્રિયમ્, સદિરમ્ ખેર જૌર, ધાતકીમ્ ખાવડી ધાતકી, સર્જમ્ રાજી રાજી, પલામ્ એએથી ફલાયલી, અગુરુ-અગર અગુરુ, ચન્દને તથા ચન્દન જૌર ચન્દન, પિષ્ઠા એએને પીસી इनको पीसकर, તૈલમ્ તેલમે તૈલ, સાધ્યમ્ સિદ્ધ કરવું સિદ્ધ કરે, તત્ તે વહ પરમ્ શ્રેષ્ઠ શ્રેષ્ઠ, વ્રણરોપણમ્ મધેસ પ્રભુરોપણુ છે વ્રણરોપણ હૈ ॥ ૯૦-૯૧ ॥

90-91. The medicated oil, prepared of the paste of kamala, embelia, kurchi, the three myrobalans heart-leaved sida, wild snake-gourd, neem, lodh, nut-grass perfumed cherry, catechu, fulsee flowers, sal, cardamom, eaglewood and sandalwood is an excellent promoter of the healing of wounds.

પ્રપૌંડરીકાયં તૈલમ્—

પ્રપૌંડરીકં મધુકં કાકોલ્યૌ દ્વે ચ ચન્દને ।  
સિદ્ધમેતઃ સમૈસ્તૈલં પરં સ્યાદ્ વ્રણરોપણમ્ ॥ ૯૨ ॥

પ્રપૌંડરીકમ્ પ્રપૌંડરીક પ્રપૌંડરીક, મધુકમ્ જેડીમધ મુલહટી, કાકોલ્યૌ કાકોલી, કીરકાકોલી કાકોલી, જૌરકાકોલી, દ્વે ચ ચન્દને અને બે પ્રકારનાં ચન્દન જૌર દોનોં ચન્દન, સમૈઃ સમ ભાગે બધું એએથી સમ પ્રમાણમે લે કર इनसे, સિદ્ધમ્ પકાવેલું પકાયા હુઆ, તૈલમ્ તેલ તૈલ, પરમ્ પરમ પરમ, વ્રણરોપણમ્ સ્યાત પ્રભુરોપણુ છે વ્રણરોપણ હૈ ॥ ૯૨ ॥

92. The medicated oil, prepared of equal quantities of rhizomes of lotus, liquorice, Kakoli, Kshira-kakoli and the two varieties of sandal wood, is an excellent promoter of the healing of wounds.

अन्ये योगाः—

दूर्वास्वरससिद्धं वा तैलं कम्पिल्लकेन च ।  
दार्वातिवचश्च कल्केन प्रधानं व्रणरोपणम् ॥९३॥

दूर्वास्वरस- दूर्वाणां स्वरसस्यो दूर्वाके स्वरससे, सिद्धम्  
वा सिद्धं करेत् सिद्धं किया हुआ कम्पिल्लकेन वा  
अथवा कम्पिल्लाथी अथवा कमीलेसे, दार्वातिवचः अथवा  
दारुहणदरनी छावनी अथवा दारुहलीकी छालके, कल्केन  
कल्केथी सिद्धं करेत् कल्केसे सिद्ध किया हुआ, तैलम्  
तैल तैल, व्रणरोपणम् प्रत्युरोपण्यं व्रणरोपण है ॥९३॥

93. The medicated oils prepared of  
the juice of scutch grass, of kamala or  
the paste of the bark of indian  
berberry, are excellent promoters of  
healing in ulcers.

येनैव विधिना तैलं घृतं तेनैव साधयेत् ।

रक्तपित्तोत्तरं दृष्ट्वा रोपणीयं व्रणं भिषक् ॥९४॥

भिषक् वैद्य वैद्य, रोपणीयम् रोपणीयम् रोपण-  
योग्य व्रणम् प्रत्युने व्रणको, रक्तपित्तोत्तरं रक्तपित्त-  
प्रधान रक्तपित्तप्रधान, दृष्ट्वा भेदने देखकर, येन एव  
विधिना ते विधिथी जिय विधिसे, तैलम् तैल सिद्ध  
करनाम् आदे छे तैल पकाया जाता है, तेन एव ते  
विधिथी उसी विधिसे, घृतम् घीने घीको, साधयेत्  
सिद्धं करेत् सिद्ध करना चाहिए ॥९४॥

94. Recognising the wound to be  
associated with the hemothermic con-  
dition, the medicated ghee prepared in  
the same way as the medicated oil  
described above, should be used for  
healing purposes.

व्रणे पत्रदानम्—

कदम्बार्युननिम्बानां पाटल्याः पिप्पलस्य च ।

व्रणप्रच्छादने विद्वान् पञ्चाण्यकस्य चाविशेत् ॥९५॥

९४. दृष्ट्वा-ज्ञात्वा (य.)

„ व्रणं भिषक्-घृतं तथा (ख. ह. ड.)

„ „ -रक्तपित्तम् (फ.)

विद्वान् विद्वान् वैद्ये विद्वान् वैद्य, व्रणप्रच्छादने  
प्रत्युने छेदनाम् व्रणप्रच्छादने कदम्ब- कदम्ब, अर्जुन-  
अर्जुन-सायक अर्जुन, निम्बानाम् नीमके नीम, पाटल्याः  
पाटल पाटल, पिप्पलस्य च पीपला पीपल, अकस्य च  
तथा आकस्यनां तथा आकसे, पत्राणि पाटल्याः उपधात  
करनां आटे पत्रोंका उपयोग करनेके लिए, आविशेत्  
छेदयेत् कहे ॥ ९५ ॥

95. The leaves of cadamba, arjun,  
neem, trumpet flower, holy fig or  
mudar are recommended for use as  
covering in wounds.

व्रणे हितः पट्टः—

वाक्शोऽथवाऽऽजिनः क्षौमः पट्टो व्रणहितः स्मृतः ।  
बन्धश्च द्विविधः दास्तो व्रणानां सव्यदक्षिणः ॥९६॥

वाक्शः वृक्षना वृक्षाने वृक्षके वृक्षका, आजिनः  
अजयम्बुने अजयम्बुका, अथवा अथवा अथवा, क्षौमः  
अजसीना अजने अजसीके बन्धका, पट्टः पाटो पट्ट,  
व्रण प्रत्यु आटे व्रणके लिए, हितः हितकर हितकर,  
स्मृतः कही छे कहा है, सव्यः दक्षिण बायाँ, दक्षिणः  
अने अमथो और दाहिना, द्विविधः छे छे प्रकारों  
इन दो प्रकारका, बन्धः बन्ध बन्ध, व्रणानां प्रत्युने आटे  
व्रणोंके लिए, दास्तः प्रक्षस्त छे प्रक्षस्त है ॥ ९६ ॥

96. The bandages made of plant-  
fibre, skin of animals and silk-cloth  
are considered good for wounds. Two  
methods of bandaging are recommen-  
ded; one from left to right and the  
other from right to left

व्रणे अहितं हितं चान्नयामम्—

लवणाम्लकटूष्णानि विदाहीनि गुरुणि च ।

वर्जयेदन्नपानानि ब्रष्मी मैथुनमेव च ॥९७॥

९६. वाक्शोऽथवाऽऽजिनः क्षौमः—वाक्शोऽथ वादरमैव (ख. ड. त.)



વ્રણે પ્રણનાળાંકૌ વ્રણરોગી, કવણ- કવણ કવણ, અમ્લ- અમ્લ અમ્લ, કટુ- કટુ કટુ, ઉષ્ણાનિ ઉષ્ણાનિ ઉષ્ણ, વિદાહીનિ વિદાહી વિદાહી, ગુરુણિ ચ અને યુરુ ઓર ગુરુ, અન્નપાનાનિ અન્નપાન અન્નપાન, મૈથુનમ્ ચ એવ અને મૈથુન ઓર મૈથુનકા, વર્જયેત્ તજ્વાં બેઈએ ત્યાગ કરે ॥ ૯૭ ॥

97. The persons suffering from wounds should avoid salty acid, pungent, hot, irritant and heavy eats and drinks and the sex-act.

નાતિશીતગુરુસ્તિગ્ધમવિદાહિ યથાવ્રણમ્ ।  
અન્નપાનં વ્રણહિતં હિતં આસ્વપનં દિવા ॥૯૮॥

યથાવ્રણમ્ પ્રણની રીતિને અનુસાર વ્રણકી સ્થિતિકે અનુસાર, ન-અતિ-શીત-ગુરુ-સ્તિગ્ધમ્ અતિશીત, અતિયુરુ અને અતિસ્તિગ્ધ ન હોય એવું અતિશીત, અતિગુરુ ઓર અતિસ્તિગ્ધ ન હો એસા, અવિદાહિ અને અવિદાહી ઓર અવિદાહી, અન્નપાનમ્ અન્નપાન અન્નપાન, વ્રણહિતમ્ પ્રણ માટે હિતકર છે વ્રણકે લિપ્ હિતકર હે, દિવા દિવસમાં દિનમેં, અસ્વપનમ્ ન સ્વપ્ન ન સોના, હિતમ્ હિતકરકર છે હિતકારક હે ॥ ૯૮ ॥

98. According to the condition of the wound, eats and drinks which are not very cold, heavy, unctuous and irritant as well as avoidance of day-sleep are beneficial.

વ્રણે ઉત્સાદનવિધિઃ—

સ્તન્યાનિ જીવનીયાનિ બુંદળીયાનિ યાનિ ચ ।  
ઉત્સાદનાર્થં નિમ્નાનાં વ્રણાનાં તાનિ કલ્પયેત્ ૯૯

યાનિ જે જો, સ્તન્યાનિ સ્તન્યવર્ગની સ્તન્યવર્ગકી, જીવનીયાનિ જીવનીયવર્ગની જીવનીયવર્ગકી, બુંદળીયાનિ ચ અને બુંદળીયવર્ગની ઔષધિઓ છે ઓર બુંદળીયવર્ગકી ઔષધિયાં હે, તાનિ તેઓનેા ઉત્તકા, નિમ્નાનામ્ નીચા નીચે, વ્રણનામ્ પ્રણના વ્રણોંકે,

ઉત્સાદનાર્થમ્ ઉત્સાદન માટે ઉત્સાદનકે લિપ્, કલ્પયેત્ પ્રયોગ કરવો બેઈએ પ્રયોગ કરના ચાહિપ્ ॥૯૯॥

99. In depressed ulcers, drugs of the 'galactagogue', 'life-promoter' and 'roborant' groups should be used for stimulating the elevation of the depressed wound.

વ્રણે અવસાદનવિધિઃ—

ભૂર્જગ્રન્થિશ્ચકાસીસમધોભાગાનિ ગુग्ગુલુઃ ।  
વ્રણાવસાદનં તદ્વત્ કલવિક્કકપોતવિદ્ ॥૧૦૦॥

ભૂર્જગ્રન્થિ- ભૂર્જગ્રન્થિ ભૂર્જગ્રન્થિ; અશ્મકાસીસમ્ ધાતુ- કાસીસ ધાતુકાસીસ અધોભાગાનિ વિરેચન દ્રવ્ય વિરેચન દ્રવ્ય, ગુગ્ગુલુઃ તથા યુગળ એઓ તથા યુગલ એ, વ્રણ- અવસાદનમ્ પ્રણોતું અવસાદન કરનાર વ્રણોંકે અવસાદન કરનેવાલે હે, તદ્વત્ તે પ્રમાણે, હસી તરહ, કલવિક્ક- ચકલા ચટક, કપોતવિદ્ અને કબૂતરની ચરક પ્રણોતું અવસાદન કરનાર છે ઓર કબૂતરકી વીટ વ્રણોંકા અવસાદન કરનેવાલી હે ॥ ૧૦૦ ॥

100. In the case of excessive granulation, nodes of birch tree, crystals of vitriol, purgative drugs, gum guggul and droppings of house-sparrows and pigeons should be used for the depression of the wound.

વ્રણે અગ્નિકર્મવિધિઃ—

રુધિરેડતિપ્રવૃત્તે તુચ્છિન્ને છેદ્યેડધિમાંસકે ।  
કફગ્રન્થિષુ ગળ્દેષુ વાતસ્તમ્ભાનિભાર્તિષુ ॥૧૦૧॥  
ગૃહપૂયલસીકેષુ ગમ્મીરેષુ સ્થિરેષુ ચ ।  
ક્લૃતેષુ ચાક્ષ્ણવેશેષુ કર્માગ્નેઃ સંપ્રશસ્યતે ॥૧૦૨॥

રુધિરે અતિપ્રવૃત્તે તુ ઘોહીની અતિ પ્રવૃત્તિમાં રક્તકી અતિ પ્રવૃત્તિમેં, ચ્છિન્ને ઇન્દ્ર અંગમાં ઇન્દ્ર અન્નમેં, છેદ્યે

૧૦૧ ચ્છિન્ને-ચ્છિન્ને (ક.)

૧૦૨. ક્લૃતેષુ-ક્લૃતેષુ (ચ. મ. ક. સ. હ. ત. ધ.)

,, , -ક્લૃતેષુ (દ. ધ.)

छेदना शोथ छेदके योग्य, अविमांसके अधिमांसभा अविमांसमें, कफप्रस्थिषु कङ्क अस्थिभा कफज प्रस्थियोंमें, गण्डेषु गंडोभा गण्डोंमें, वातस्तम्भ- वायुस्तम्भ- स्तम्भभा वातज स्तम्भमें, जलिलालिषु तथा वायुनी पीडाओभा और वायुकी पीडाओंमें, गूढ-पूय-लसीकेषु गूढ पूय तथा लसीकावाणा गूढ पूय तथा लसीकासे युक्त, गम्भीरेषु गंभीर गम्भीर, स्थिरेषु च स्थिर स्थिर, कृसेषु च अने कपाई गयेला और कटे हुए, अत्रदेशेषु अंगभागभा अङ्गभागमें, अग्नेः कर्म अग्नि-कर्म अमिकर्म, संप्रसृत्यते श्रेष्ठ गल्लाय श्रेष्ठ माना जाता है ॥१०१-१०२॥

101-102. Cauterization procedure is recommended in conditions of excessive hemorrhage after excision of the excrescent growth of flesh, as also in tumors of the kapha type, adenocarcinoma, rigidity and pain due to vata, deep seated discharge of pus and serum, fixed and deep seated regions of the body and in cases where any part is cut.

मधूच्छिष्टेन तैलेन मज्जस्रौद्रवसावृतैः ।  
तत्सैर्वा विविचैर्लोहैर्दहेद्वाहविशेषवित् ॥१०३॥

दाहविशेषवित् दाहविशेषमें अलुनारा वैद्य दाह-विशेषको जाननेवाला वैद्य, तसैः गरम करेव गरम की हुई, मधूच्छिष्टेन मीलुथी मोमसे, तैलेन तैलुथी तैलसे मज्ज- मज्जुथी मज्जासे, स्रौद्र- मधुथी शहदसे, वसा- वसाथी वसासे, वृतैः ढे भीथी या ढीसे, विविचैः वा अथवा तथावेदी विविध प्रकारकी, लोहैः धातुओथी धातुओंसे, दहेत् अथ दहे दाग दे ॥ १०३ ॥

103. The physician, expert in cauterization, may cauterize it with heated bee's wax, oil, bone marrow, honey, fat or ghee or with various heated metallic instruments.

रक्षाणां सुकुमाराणां गम्भीरान्माहृतोत्तरान् ।  
दहेत् स्नेहमधूच्छिष्टैर्लोहैः क्षौद्रैस्ततोऽप्यथा ॥१०४॥

रक्षाणाम् रक्ष रक्ष, सुकुमाराणाम् अने सुकोमल अनुष्मना और सुकुमार मनुष्यके, गम्भीरान् गंभीर गम्भीर, माहृतोत्तरान् तथा वातप्रधान प्रक्षोभे तथा वातप्रधान त्रणोंको, स्नेह- स्नेह स्नेह, मधूच्छिष्टैः तथा मीलुथी तथा मोमसे, ततः अन्यथा अने तेथी प्रक्षोभे और उनसे भिन्न त्रणोंको, लोहैः धातुओथी धातुओंसे, क्षौद्रैः तथा मधुथी तथा शहदसे, दहेत् आगवा दाग दे ॥ १०४ ॥

104. Persons whose constitutions are dehydrated and who suffer from deep-seated lesions with predominance of vata-provocation, should be cauterized with unctuous substances and bee's wax, and in other conditions with metallic instruments.

बालदुर्बलवृद्धानां गर्भिण्या रक्तपित्तिनाम् ।  
तृष्णाज्वरपरीतानामबलानां विषादिनाम् ॥१०५॥  
नाशिकर्मोपदेष्टव्यं स्नायुर्मर्मत्रणेषु च ।  
सविषेषु सशक्येषु नेत्रकुष्ठत्रणेषु च ॥ ॥१०६॥

बाल- आण्ड बालक, दुर्बल- दुर्बल कमजोर, वृद्धानाम् तथा वृद्धोना तथा वृद्धोंके, गर्भिण्याः गर्भिणी- स्त्रीना गर्भिणीके, रक्तपित्तिनाम् रक्तपित्तवाणा रक्तपित्त-वाले, तृष्णा- तृष्णा तृष्णा, ज्वर- तथा ज्वरथी तथा ज्वरसे, परीतानाम् पीडित पीडित, अबलानाम् अणुहीन बलहीन, विषादिनाम् अने भेदवाणा अनुष्मना प्रक्षोभा और विषादयुक्त मनुष्योंके त्रणोंमें, स्नायु- स्नायु स्नायु, मर्मत्रणेषु च अने मर्मस्थानना प्रक्षोभा और मर्मस्थानोंके त्रणोंमें, सविषेषु च विषवाणा विषवाले, सशक्येषु तथा शक्यवाणा प्रक्षोभा तथा शक्ययुक्त त्रणोंमें, नेत्र- अने नेत्रना और नेत्रके, कुष्ठ- तथा कुष्ठना तथा कुष्ठके, त्रणेषु प्रक्षोभा त्रणोंमें, नाशिकर्म अग्नि- कर्मना नाशिकर्मका, उपदेष्टव्यम् उपदेश नहि करेवे ओष्ठो औ उपदेश नहीं करना चाहिए ॥ १०५-१०६ ॥

१०४. ततोऽप्यथा-ततोऽपि तैः (च. क.)

105-106. Cauterization with heat is contra-indicated in children, debilitated and aged persons, pregnant women, patients with hemothermia, persons overcome with thirst and fever, weak persons and in those suffering from grief and lesions situated in the sinews and vital regions and poisonous wounds and those pierced with foreign bodies, as well as those with lesions of the eye and dermatosis.

व्रणे क्षारकर्मविधिः—

रोगदोषबलापेक्षी मात्राकालाग्निकोविदः ।

शस्त्रकर्मसिक्तस्थेषु क्षारमण्यवचारयेत् ॥१०७॥

मात्रा- मात्रा मात्रा, काल- उक्त काल, अग्निकोविदः—  
अने अभिकर्मभा कुशल वैद्य और अभिकर्ममें कुशल  
वैद्य, रोग- रोग रोग, दोष- दोष दोष, बलापेक्षी अने  
अग्नेने लक्ष्मी २४५ और बलको ध्यानमें रखकर,  
शस्त्रकर्म- शस्त्रकर्म शस्त्रकर्म, असिक्तस्थेषु अने अभि-  
कर्मभा और अभिकर्ममें, क्षारम् अपि क्षारने। पक्षु  
क्षारका सी, अवचारयेत् प्रयोग करे। प्रयोग करे ॥१०७॥

107. The specialist in cauterization, versed in pathology and in the science of dosage and the line of treatment, should make use of even caustic alkali in place of operative treatment or thermic cauterization.

व्रणे धूपनविधिः—

कठिनत्वं व्रणा यान्ति गन्धैः सारैश्च धूषिताः ।  
सर्पिर्मज्जवसाधूपैः शैथिल्यं यान्ति हि व्रणाः ॥१०८॥

गन्धैः मन्त्रद्रव्य गन्धद्रव्य, सारैः च तथा सारै  
वडे तथा सारैसे, धूषिताः धूपित करे। धूपित किये हुए,  
व्रणाः प्रक्षेप व्रण, कठिनत्वम् यान्ति कठिनताने प्राप्त  
आय छे कठिनताको प्राप्त होते हैं, सर्पिः- तथा धी  
तथा धी, मज्ज- मज्जा मज्जा, वसा- अने वसाना और

१०८. गन्धैः सारैश्च-गन्धसारैश्च (क.)

वसाके धूपैः धूपयति धूपसे, व्रणाः प्रक्षेप व्रण, शैथिल्यम्  
यान्ति हि शैथिल्य आय छे शिथिल हो जाते हैं ॥१०८॥

108. The wounds become hard by fumigation with fragrant drugs and pith; and they become soft by fumigation with ghee, bone-marrow and fat.

व्रजः स्नावाश्च गन्धाश्च कुमयश्च व्रणाश्रिताः ।

शैथिल्यं मार्दवं चापि धूपनेनोपशाम्यति ॥१०९॥

धूपनेन धूपनवे धूपनसे, व्रणाश्रिताः प्रक्षेप रहे।  
व्रणगत, व्रजः पीडा पीडा, स्नावाः च स्नाव स्नाव,  
गन्धाः च गन्ध गन्ध, कुमयः च कुमयै। कुमि, शैथि-  
ल्यम् शिथिलता शिथिलता, मार्दवं च अपि अने  
भुक्त पक्षु और सुदुता सी उपशाम्यति शांत आय छे  
शान्त हो जाती है ॥ १०९ ॥

109. Pain, discharge, odor, parasites infesting wounds, softness and hardness in wounds, are cured by fumigation.

व्रणे प्रलेपविधिः—

लोध्नम्यम्रोधशुक्रानि खदिरस्त्रिफला घृतम् ।

प्रलेपो व्रणशैथिल्यसौकुमार्यप्रसाधनः ॥११०॥

लोध्न- लोध्न लोध्न, म्यम्रोध- अने वडना और बरगदके,  
शुक्रानि कुपणै। अंकर, खदिरः भेर खैर, त्रिफला त्रिफला  
त्रिफला, घृतम् अने घी और घी, प्रलेपः ओओने।  
लेप इनका प्रलेप, व्रण- प्रक्षेप व्रणकी, शैथिल्य- शिथिलता  
शिथिलता, सौकुमार्य- अने सुकुमारताने और सुकुमार-  
ताका, प्रसाधनः दूर करे छे नाशक है ॥ ११० ॥

110. The unguent prepared of lodh, sprouts of banyan, catechu, the three myrobalans and ghee is curative of the looseness and softness of wounds.

१०९. शैथिल्यं-कठिन्यं (क. द. य.)

चापि-वापि (क. ज.)

११०. प्रसाधनः-प्रसाधकः (क. क. ग.)

,, ,, -प्रबोधनः (ख. झ. ङ. क.)

,, ,, -प्रबोधकः (ग.)

सरुजः कठिनाः स्तब्धा निरास्त्रावाश्च ये व्रणाः ।  
यवचूर्णैः सस्पर्षिणैर्बहुशस्तान् प्रलेपयेत् ॥१११॥

ये व्रणः ७२ प्रभेदाः जो व्रण, सरुजः पीडयुक्त पीडयुक्त, कठिनाः कठिनाः स्तब्धाः स्तब्धाः स्तब्ध, निरास्त्रावाः च आने आपरहित होय और स्त्रावरहित हों, तान् देखो पर उन पर, सस्पर्षिणः धीसहित, यवचूर्णैः यवना यूर्णैः जोके चूर्णका, बहुशः अहुवार बहुत दफे, प्रलेपयेत् लेप करवे। ओछो लेप करना चाहिए ॥ १११ ॥

III. The wounds which are painful, hard, indurated and non-discharging should be anointed often and often with the powder of barley mixed with ghee.

मुद्रषष्टिकशालीनां पायसैर्वा यथाक्रमम् ।  
सघृतैर्जीवनीयैर्वा तर्पयेत्तान्भीक्ष्णशः ॥११२॥

यथाक्रमम् क्रमानुसार कमानुसार, मुद्र- भग मृग, षष्टिक- साठी योभा साठी चावल, शालीनाम् तथा शाणना योभानी तथा शालिके चावलोंकी, पायसैः वा भीरथी खीरसे, सघृतैः अथवा धीसहित अथवा घीसहित, जीवनीयैः वा शुक्लीयगन्धुनी औषधियोंकी जीवनीयगन्धों औषधोंसे, तान् देखो उनका, भीक्ष्णशः बारबार बारबार, तर्पयेत् तर्पण करवुं ओछो तर्पण करना चाहिए ॥ ११२ ॥

112. Or they should be given applications of gruels of green gram, shashtika rice and sali rice successively or they should be tended repeatedly with nourishing preparations of the life-promoter group of drugs mixed with ghee.

अथ अवचूर्णनम्—

ककुभोदुम्बराश्चत्थलोभ्रास्ववकटफलैः ।  
स्वचमाश्वेव गृह्णन्ति स्वक्चूर्णैश्चूर्णिता व्रणाः ॥११३॥

ककुभ- साज अर्जुन उदुम्बर- उमरु गूलर, चत्थ- पीपणो पीपल, लोभ्र- खोभ्र लोभ्र, जाम्बव- अशुडो जामुन, कटफलैः आने कटफलोंकी और कटफलकी, स्वक्चूर्णैः छावना यूर्णोंकी छालोंके चूर्णोंसे, चूर्णिताः अवयूर्णित करेखा अवचूर्णित किये हुए, व्रणाः प्रभेदा व्रण, आशु एव अक्षदीर्घी ७२ व्रीध ही। त्वचम् आभडीने त्वचाको, गृह्णन्ति अक्षु करे छे ग्रहण करते हैं ॥ ११३ ॥

113. Wounds dusted with the powders of barks of arjun, gular fig, holy fig, lodh, jambul and box myrtle, soon promote epithelial tissue.

अथ त्वग्विशुद्धिकरो लेपः—

मनःशिलैला मज्जिष्ठा लाक्षा च रजनीद्वयम् ।  
प्रलेपः सघृतक्षौद्रस्त्वग्विशुद्धिकरः परः ॥११४॥

मनःशिला मनःशिला मैनसिल, एला ओदथी इलायची, मज्जिष्ठा मज्जिष्ठ मंजीठ, लाक्षा लाक्षा लाक्षा, रजनीद्वयम् च हण्डर आने हण्डर हल्ली और दादहल्ली, सघृतक्षौद्रः ओभने। धी तथा भक्षसहित इनका धी तथा शहदके साथ, प्रलेपः लेप लेप, परः श्रेष्ठ श्रेष्ठ, त्वग्विशुद्धिकरः त्वग्वि शुद्धि करनेवाले छे त्वचाकी शुद्धि करनेवाला है ॥ ११४ ॥

114. The unguent prepared of arsenic, cardamom, indian madder, lac, turmeric and indian 'berberry mixed with honey and ghee is an excellent cleanser of the skin.

अथ सवर्णीकरणविधिः—

अयोरजः सकासीसं त्रिफलाकुसुमानि च ।  
करोति लेपः कृष्णत्वं सद्य एव नवत्वचि ॥११५॥

११३ स्वचमाश्वेव गृह्णन्ति—स्वचमाशु निगृह्णन्ति (द. फ.)

११४ मनःशिलैला—मनःशिला (ब. ध.)

—मनःशिलालं (फ.)

११५. करोति लेपः कृष्णत्वं—प्रलेपः कृष्ण कायायै। (ब. ध.)

સકાસીસમ્ હીરાકસી કાસીસ, અયોરજઃ દોહચૂર્ણં  
લોહચૂર્ણ, ત્રિફલાકુસુમાનિ ચ અને ત્રિક્ષણાં વૃક્ષોનાં  
પુષ્પાં ઓર ત્રિફલાકે વૃક્ષકે ફૂલ, લેપઃ એઓનાં લેપ  
इनका लेप, नवत्वचि नवी आभडीमां नवी त्वचामे,  
સચઃ એવ જલદી કોષ્ટ્ર હી, કૃષ્ણત્વમ્ કાળાશ કાલાપન,  
કરોતિ લાવે છે કરતા હૈ ॥ ૧૧૫ ॥

115. The unguent prepared of the powders of iron, and iron-sulphide and flowers of the three myrobalan trees, gives quickly the black pigment to the new skin.

કાલીયકનતામ્રાસ્થિહેમકાન્તારસોત્તમૈઃ ।

લેપઃ સગોમયરસઃ સવર્ણીકરણઃ પરઃ ॥૧૧૬॥

કાલીયક- પીળું ચંદન પીલા ચન્દન, નત- તગર  
તગર, આમ્રાસ્થિ- આંબાની ગોહલી આમકી ગુઠલી,  
હેમ- નાગકેસર નાગકેસર, કાન્તા- મજીઠ મંજીઠ,  
રસોત્તમૈઃ અને પારાનો ઓર પારાકા, સગોમયરસઃ  
ગોબરના રસ સાથે ગોબરકે રસકે સાથ, લેપઃ લેપ  
લેપ, પરઃ પરમ પરમ, સવર્ણીકરણઃ દેહ જેવા વર્ણને  
કરનારો છે દેહકે સદૃશ વર્ણકો કરનેવાળા હૈ ॥ ૧૧૬ ॥

116. The unguent, prepared of sandal wood, indian valerian. mango-stone, fragrant poon, indian madder and mercury mixed with the juice of cow dung, is an excellent restorer of the normal coloration of the skin.

ધ્યામકાશ્વત્થનિચુલમૂલં લાક્ષા સગૈરિકા ।

સહેમધ્યામૃતાસજ્ઞઃ કાસીસં ચેતિ વર્ણકૃત્ ॥૧૧૭॥

૧૧૬. કાલીયકનતામ્રાસ્થિ-કાલીયકનતામ્રાસ્થિ (ધ.)

.. હેમકાન્તા-હેમકાન્તા (ધ. હ.)

.. કાન્તારસોત્તમૈઃ-કાલાયસોત્તમૈઃ (ધ.)

.. સવર્ણીકરણઃ-સવર્ણકરણઃ (ધ. વ.)

૧૧૭. ધ્યામકાશ્વત્થ-લસકાશ્વત્થ (ધ.)

.. નિચુલમૂલં-નિચુલં ત્વચઃ (ધ.)

.. લાક્ષા સગૈરિકા-લાક્ષાસગૈરિકા (ધ.)

ધ્યામક. ધ્યામક ધ્યામક, અશ્વત્થ- પીપળા પીપલ,  
નિચુલમૂલમ્ જળવેતસનું મૂળ જલવેતસકા મૂલ, સગૈ-  
રિકા સોનાગેરુ સ્વર્ણગૈરિક, લાક્ષા લાક્ષા લાક્ષા, સહેમઃ  
નાગકેસર નાગકેસર, અમૃતાસજ્ઞઃ મોરચૂથુ તૃતીયા,  
કાસીસમ્ ચ અને હીરાકસી ઓર કાસીસ, કૃતિ એ  
યે, વર્ણકૃત્ આમડીના વર્ણને બધારે છે ત્વચાકે વર્ણકો  
બદાવે હૈ ॥ ૧૧૭ ॥

117. The unguent prepared of roots of ginger grass, holy fig and hijjal tree along with lac and red chalk, mixed with fragrant poon and blue vitriol, is a promoter of skin-color.

વ્રણે લોમસંજનનમ્—

ચતુષ્પદાનાં ત્વગ્લોમચુરશ્ચક્રાસ્થિભસ્મના ।

તૈલાકા ચૂર્ણિતા ભૂમિર્ભવેલોમવતી પુનઃ ॥૧૧૮॥

ચતુષ્પદાનામ્ ચાર પગવાળાં પશુઓનાં ચૌપાયોકે,  
ત્વક્- આમડાં ચમડે, લોમ- રૂંવાડાં રોમ, ચુર- ખરીઓ  
ચુર, ચક્ર- શીંગડાં સીંગ, અસ્થિભસ્મના અને હાડકાંની  
ભસ્મ ઓર હડિયોંકી ભસ્મસે, ચૂર્ણિતા ભભરાવેલી  
છિંકી હુઈ, તૈલાકા તેલ ચોપડેલી તેલ લગાઈ હુઈ,  
ભૂમિઃ પ્રણુભૂમિ વ્રણભૂમિ, પુનઃ ફરીને ફિરે, લોમવતી  
રોમવાળી રોમજુત, અવેલ થાય છે હોતી હૈ ॥ ૧૧૮ ॥

118 The dusting with the ashes of hide, hair, hoof, horn, and bone of quadrupeds, on the part previously anointed, promotes the growth of hair on the region.

વ્રણોપદ્રવચિકિત્સા—

વોહશોપદ્રવા યે ચ વ્રણાનાં પરિકીર્તિતાઃ ।

તેવાં ચિકિત્સા નિર્વિદ્ધા યથાસ્વં સ્વે ચિકિત્સિતે ॥

વ્રણાનામ્ પ્રણુના વ્રણોકે, યે જે ઝો, વોહશ  
સોળા સોલહ, ઉપદ્રવાઃ ઉપદ્રવા ઉપદ્રવ, પરિકીર્તિતાઃ  
ગણુઆ છે બિનાવે હૈ, તેવામ્ તેઓની વનકી, યથાસ્વમ્

૧૧૮. લોમવતી-લોમજુતા (ધ.)

पेतापेतानी अपनी अपनी, चिकित्सा चिकित्सा चिकित्सा, स्वे चिकित्सते पेतापेतानी चिकित्साना अध्यायम्। अपने अपने चिकित्सा-अध्यायमें, निर्दिष्टा अतावी छे बतलाई है ॥ ११९ ॥

119. The treatment of the sixteen complications narrated above will be discussed while describing their respective treatments.

अध्यायोक्तद्विषयाः—

तत्र श्लोकौ—

द्वौ व्रणौ व्रणमेदाश्च परीक्षा दुष्टिरेव च ।

स्थानानि गन्धाः स्नावाश्च सोपसर्गाः क्रियाश्च याः ॥

व्रणाधिकारे सप्रश्नमेतन्नवकमुक्तवान् ।

मुनिर्व्याससमासाभ्यामग्निवेशाय धीमते ॥२२॥

तत्र ते विषयम्। उस विषयमें, श्लोकौ उप-  
संहारना छे श्लोका छे छे उपसंहारके दो श्लोक हैं कि,  
द्वौ व्रणौ छे प्रकारना प्रश्न दो प्रकारके व्रण, व्रणमेदाः  
च प्रश्नना छे व्रणके मेद, परीक्षा परीक्षा परीक्षा, दुष्टिः  
एव च दुष्टि दुष्टि, स्थानानि स्थाने स्थान, गन्धाः गन्ध  
गन्ध, स्नावाः च स्नावे स्नाव, सोपसर्गाः च अपने उपसर्ग  
और उपसर्ग, याः तथा ते तथा जो, क्रियाः च चिकित्सा  
चिकित्सा, एतत् छे इन, नवकम् नव विषयोंने  
नव विषयोंको सप्रश्न प्रश्नना प्रत्युत्तरसहित प्रश्नोंके  
प्रत्युत्तरके साथ, मुनिः मुनि आत्रेये मुनि आत्रेयने,  
धीमते बुद्धिमान् बुद्धिमान्, अग्निवेशाय अग्निवेशने  
अग्निवेशको, व्यास- विस्तार विस्तार, समासाभ्याम् अने  
समासथी और समाससे, व्रणाधिकारे व्रणाधिकारम्  
व्रणाधिकारमें, उक्तवान् उक्ता छे कहा है ॥ १२०-१२१ ॥

Here are the two recapitulatory verses—

120-121. The two classifications of wounds, their varieties, examination, morbidity, seats of affection, odors, discharges, complications and line of treatment—these nine subjects which

were asked to be taught are expounded in brief and in extenso to the intelligent Agnivesa by the sage, in this chapter on Wounds.

इत्यग्निवेशकृते तन्त्रे चरकप्रतिसंस्कृतेऽप्राप्ते  
दृढबलसंपूरिते चिकित्सास्थाने द्विवर्णीय-  
चिकित्सितं नाम पञ्चविंशोऽध्यायः ॥२५॥

इति आ अभ्याषे इस प्रकार, अग्निवेशकृते अग्निवेशे  
रथेला अग्निवेशसे बनाये, चरकप्रतिसंस्कृते तन्त्रे अने  
चरकथी प्रतिसंस्कार पाभेला आ शास्त्रम् और चरकके  
ारा संस्कृत इस शास्त्रके, अप्राप्ते अप्राप्त, दृढबल-  
संपूरिते अने दृढबलसे पूरा करेला और दृढबलसे पूरित  
किये गये, चिकित्सास्थाने चिकित्सास्थान विषे चिकित्सा-  
स्थानमें, द्विवर्णीयचिकित्सितम् 'द्विवर्णीयचिकित्सित'  
'द्विवर्णीयचिकित्सित', नाम नामने। नामका, पञ्चविंशः  
पञ्चीसमे। पञ्चीसवाँ, अध्यायः अध्याय संपूर्ण यज्ञे।  
अध्याय संपूर्ण हुआ ॥ २५ ॥

25. Thus, in the Section on Therapeutics in the treatise compiled by Agnivesa and revised by Caraka, the twenty-fifth chapter entitled 'The Therapeutics of the two kinds of Wounds' not being available the same as restored by Dridhabala, is completed.

षष्ठविंशोऽध्यायः ।

७०वीसमे। अध्याय अध्याय ७०वीसवा

Chapter XXVI

त्रिमर्मीयचिकित्सितोपक्रमः—

अथातस्त्रिमर्मीयचिकित्सितमध्यायं

व्याख्यास्यामः ॥१॥

इति इ स्माह भगवानात्रेयः ॥२॥

अथ अतः हवे अहोथी अब आगे, त्रिमर्मीयचिकि-  
त्सितम् 'त्रिमर्मीयचिकित्सित' नामना 'त्रिमर्मीय-

चिकित्सित' नामके, अध्यायम् अध्यायानुं अध्यायका,  
व्याख्यास्यामः व्याख्यानं करुं व्याख्यानं करेंगे ॥ १ ॥

भगवान् भगवान् भगवान्, आत्रेयः आत्रेये  
आत्रेयेने, इति ह आ विषयमां नीये प्रभाषे ॥ इस  
विषयमें निम्न प्रकारसे ही, आह हम कहेंगे ॥ २ ॥

1. We shall now expound the chapter,  
entitled 'The Treatment of the Affections of the Three Vital Regions'.

2. Thus declared the worshipful  
Atreya.

मर्मणां संख्या, तत्र त्रयाणां प्राधान्यम्

सप्तोत्तरं मर्मशतं यदुक्तं

शरीरसंख्यामधिकृत्य तेभ्यः ।

मर्माणि वसन्ति हृदयं शिरश्च

प्रधानभूतानि वदन्ति तज्ज्ञाः ॥३॥

प्राणाश्रयात्, तानि हि पीडयन्तो

वातादयोऽसूनपि पीडयन्ति ।

तत्संश्रितानामनुपालनार्थं

महागदानां शृणु सौम्य रक्षाम् ॥४॥

शरीरसंख्याम् शरीरसंख्यानां शरीरसंख्याके,  
अधिकृत्य अधिकारमां अधिकारमें, यत् ७० जो, सप्तो-  
त्तरम् मर्मशतम् ७० से सात मर्म एक सौ सात  
मर्म, उक्तम् उक्ता ७० के कहें हैं, तेभ्यः तेभांही उनमेंसे,  
प्राणाश्रयात् प्राणना आश्रय होवाधी प्राणके आश्रय  
होनेसे, वसन्ति वसित बसित, हृदयम् हृदय हृदय, शिरः  
शिरः शिरः शिरः और शिर इनको, तज्ज्ञाः मर्म  
प्राणनां वैद्यो मर्म जाननेवाले वैद्य, प्रधानभूतानि  
प्रधान प्रधान, मर्माणि मर्म मर्म, वदन्ति उक्ते ७०  
कहते हैं, तानि हि तेभांही इनको, पीडयन्तः पीडित

पीडित करते हुए, वातादयः वातादिक वातादि दोष, असून  
अपि प्राणानां पक्ष प्राणोंको भी, पीडयन्ति पीडे ७०  
पीडित करते हैं, सौम्य हे सौम्य! हे सौम्य!, तत्-  
संश्रितानाम् आ प्राणना आश्रयभूत वसित वगेरेनु  
प्राणके आश्रयभूत वसित आदिका, अनुपालनार्थम्  
रक्षण करवा भाटे रक्षण करनेके लिए, महागदानाम्  
उदावर्त वगेरे महारोगोन्नी उदावर्त आदि  
महारोगोंकी, रक्षाम् चिकित्सा चिकित्सा, शृणु  
संलग्न सुनो ॥ ३-४ ॥

3-4. Out of the 107 vital organs  
described in the chapter on the enu-  
meration of body-parts, the specialists  
regard three of them as the principal  
ones. They are genito-urinary organs,  
the heart and the head. The vata and  
other humors afflicting these regions  
which are the seats of life, endanger  
life itself. With a view to protect  
these vital regions which are the seats  
of life, listen, O, good one! to the  
description of the therapeutics of the  
major diseases affecting them.

उदावर्तस्य निदानसंप्राप्तिरक्षणानि—

कषायतिकोषणरूक्षभोज्यैः

संधारणाभोजनमैथुनैश्च ।

पक्वाण्ये कृष्यति चेदपानः

स्रोतांस्यधोगानि बली स रुद्धा ॥५॥

करोति विण्मारुतमूत्रसङ्गं

क्रमादुदावर्तमतः सुधोरम् ।

रुक्वस्तिहृत्कुक्ष्युदरेष्वमीक्ष्णं

सपृष्ठपाश्वर्ष्वतिदारुणा स्यात् ॥६॥

कषाय- ५५५ कषाय, तिक- ५५५ तिक, कषण-  
टीभां कटु, रूक्ष- ५५५ और रूक्ष, भोज्यैः ५५५  
ने।भां भोजनोंसे, संधारण- ५५५ रोकवाधी वेग विधारणसे,

५. संधारणाभोजन—संधारणोदीरण (व, च. फ.)

३. तेभ्यः—तस्मात् (फ.)

४. प्रधानभूतानि वदन्ति तज्ज्ञाः—प्रधानभूतान्युपधो वदन्ति (फ.)

५. तानि हि पीडयन्तो—ताम्परिपीडयन्तो (फ.)

६. तत्संश्रितानाम्—तत्संस्तानाम् (फ.)

७. महागदानाम्—महागदेभ्यः (फ. ब.)



અમોજન- ભોજન ન કરવાથી ઉપવાસે, મૈથુનૈઃ ચ અને મૈથુનથી ઓર મૈથુનસે, અપાનઃ પકાશયે જે અપાન વાયુ પકાશયમાં સદિ અપાન વાયુ પકાશયમે, કુપ્યતિ ચેત્ પ્રકોપ પામે તેા પ્રકુપિત હો તો, બલી સઃખલવાન તે બલવાન વહ અપાનવાયુ, અધોગાનિ અધોગામી અધોગામી, સ્તોતાંસિ સ્તોતોને સ્તોતોંકો, રુદ્ધા રોકીને રોકકર, વિદ્- મળ મળ, મારુત- વાયુ વાયુ, મૂત્રસજ્જ અને મૂત્રની રુકાવટવાળા ઓર મૂત્રકી રુકાવટવાલે, સુધોરમ્ અત્યંત ભયંકર અત્યંત મયંકર, ઉદાવર્તમ્ ઉદાવર્તને ઉદાવર્તકો, ક્રમાત્ ક્રમે ક્રમે ક્રમશઃ, કરોતિ ઉત્પન્ન કરે છે ઉત્પન્ન કરતા હે, જતઃ આથી હસે, સપ્તપાશ્વેષુ પીઠ, પડમાં પોઠ, પાર્શ્વ, વસ્તિ- અસ્તિ વસ્તિ, હૃદય હૃદય, કુક્ષિ- કુક્ષિ કુક્ષિ, ઉદરેષુ અને ઉદરમાં ઓર ઉદરમે, અમીક્ષણમ્ વારંવાર વારંવાર, અતિદારુણા રુક્ અતિશય ભયંકર વેદના અતિ દારુણ પીડા, સ્વાદ થાય છે હોતી હે ॥ ૫-૬ ॥

5-6. By the ingestion of astringent, bitter, pungent and dry articles of diet, by the suppression of the natural urges; by excessive indulgence in eating and sex, the Apana vata is provoked in the colon: growing strong, it causes obstruction in the lower part of the alimentary tract and produces retention of feces. flatus and urine and thenceforward, gradually, produces very serious disorders of misperistalsis.

આધ્માનહૃલાસવિકર્તિકાશ્ચ

તોદોઽવિપાકશ્ચ સબસ્તિશોથઃ ।

વર્ચોઽપ્રવૃત્તિર્જઠરે ચ ગળ્ઢા-

ન્યૂર્ધ્વશ્ચ વાયુર્વિહતો ગુદે સ્યાત્ ॥૭॥

આધ્માન- આધ્માન આધ્માન, હૃલાસ- મોળ મિતલી, વિકર્તિકાઃ ચ વાઠ વિકર્તિકા, સબસ્તિશોથઃ અસ્તિનો સોભે વજ્રિપ્રદેશકા શોથ, તોદઃ અવિપાકઃ ચ સોર્ધ ભોંકવા જેવી પીડા, અપચો સુઈ પુમને જૈસી

પીડા, અપચન, વર્ચોઽપ્રવૃત્તિઃ મળની પ્રવૃત્તિ મલકી અપ્રવૃત્તિ, જઠરે ચ અને જઠરમાં ઓર પેટમે, ગળ્ઢાનિ મંડ થાય છે ગળ્ઢ હોતે હૈં, ગુદે વિહતઃ અને ગુદામાં રોકાયેલ ઓર ગુદામે રુકા હુળા, વાયુઃ ઊર્ધ્વઃ ચ વાયુ ઊંચી ઊંચી ગતિવાળો વાયુ ઊર્ધ્વે ગતિવાળો, સ્વાદ થાય છે હોતા હે ॥ ૭ ॥

7. Its signs and symptoms are— constant and severe pain in the hypo-gastric, epigastric, lumbar and the umbilical regions as well as in the back and the hypochondriac regions distension of the abdomen, nausea, griping pain, pricking pain, indigestion swellings in the abdomen, and vata, being obstructed in the rectum, flows upward in the reverse way (reverse peristalsis).

કુચ્છેણ શુષ્કસ્ય ચિરાત્ પ્રવૃત્તિઃ

સ્યાદ્વા તનુઃ સ્યાદ્ ચરુક્ષ્ણશીતા ।

તતશ્ચ રોગા જ્વરમૂત્રકુચ્છ-

પ્રવાહિકાહૃદ્ગ્રહણીપ્રદોષાઃ ॥૮॥

શુષ્કસ્ય શુષ્ક મળની શુષ્ક મલકી, કુચ્છેણ મુરકેલીથી કઠિનહૈંસે, ચિરાત્ પ્રવૃત્તિઃ અને લાંબે વખતે પ્રવૃત્તિ ઓર દેરસે પ્રવૃત્તિ, સ્વાદ થાય છે હોતી હે, તનુઃ અથવા તેા મળ પાતળો અથવા તો મળ પતળા, ચરુક્ષ્ણશીતા વા ખર, રૂક્ષ અને શીત હુરદરા, રુક્ષ ઓર શીત, સ્વાદ થાય છે હોતા હે, તતઃ ચ તે પછી સસકે પશ્ચાત્, જ્વર- જ્વર જ્વર, મૂત્રકુચ્છ- મૂત્રકુચ્છ મૂત્રકુચ્છ, પ્રવાહિકા- પ્રવાહિકા પ્રવાહિકા, હૃદ- હૃદય- રોગ હૃદયરોગ, ગ્રહણીપ્રદોષાઃ અને ગ્રહણીરોગ થાય છે ઓર ગ્રહણીરોગ હોતેહૈં ॥ ૮ ॥

8. The patient passes, with difficulty and after a long delay dry stools or stools that are thin. dry, rough and cold. There occur the disorders of

fever, dysuria, dysentery, gastric disorders and assimilation-disorders.

बन्ध्यान्ववाधिर्यशिरोऽमिताप-

वातोदराष्टीलमनोविकाराः ।

तृष्णाक्षपित्तारुचिगुल्मकास-

श्वासप्रतिश्वादि तपार्श्वरोगाः ॥९॥

अन्ये च रोगा बहवोऽमिलोत्था

भवन्त्युदावर्तकृताः सुघोराः ।

चिकित्सितं चास्य यथावदूर्ध्वं

प्रवक्ष्यते तच्छृणु चाग्निवेश ! ॥१०॥

वमि- उल्टी वमन, आन्ध्य- आंध्य, अंधता, बाधिर्य- अहोरात्र बहरापन, शिरोऽमिताप- शिरभा सताप शिरोमिताप, वातोदर- वातोदर वातोदर, अष्टीक- अष्टीका अष्टीला, मनोविकाराः भ्रमेऽनिकार मानसिक रोग, तृष्णा- तृषा तृषा, अक्षपित्त- रक्तपित्त रक्तपित्त, अरुचि- अरुचि अरुचि, गुल्म- गुल्म गुल्म, कास- कास कास, श्वास- श्वास श्वास, प्रतिश्वा- सगैभम जुखाम, अर्दित- अर्दित अर्दित, पार्श्व- पार्श्व पार्श्व, रोगाः रोग रोग, उदावर्तकृताः अने उदावर्तकृती यथेष्टा और उदावर्तके कास्य उत्पन्न, अनिलोत्थाः वायुमन्य वायु-जनित, अन्ये च ७०० अन्य, सुघोराः अति भयंकर अति भयंकर, बहवः धन्य बहवसे, रोगाः रोग रोग, भवन्ति भवन्ति होते हैं, अग्निवेश ! हे अग्निवेश ! हे अग्निवेश !, अथ च तेन उच्यते, चिकित्सितम् चिकित्सा चिकित्सा, यथावत् ऊर्ध्वम् सत्यं स्वर्ग्यम् ६०० यथावत् अब आगे, प्रवक्ष्यते कहेवाभा आगे बताई जावेगी, तत् च ते उच्यते, शृणु सांभवे सुनो ॥ ९-१० ॥

9-10. Also vomiting, blindness, deafness, pain in the head, abdominal affections of vata type, hard tumor, psychic disorders, thirst, hemothermia, anorexia, gulma, cough, dyspnea, coryza, partial paralysis and diseases in

the hypochondriac region as also many other serious disorders of vata resulting from misperistalsis occur. O! Agnivesa! listen hereafter, as I describe the treatment of these disorders.

उदावर्तस्य चिकित्सा—

तं तैलशीतज्वरनाशनकं

स्वेदैर्यथोक्तैः प्रविलीनदोषम् ।

उपाचरेद्वर्तिनिरुहवस्ति-

स्नेहैर्विरेकैरनुलोमनाम्नैः ॥११॥

तैल-शीतज्वरनाशन शीतज्वरनाशन तैल शीत-ज्वरनाशन तैल, अक्षय्य-यौग्यं चुपड़कर, यथोक्तैः पूर्वोक्त स्वेदथी पूर्वोक्त स्वेदोक्ते, प्रविलीन-दोषम् प्रविलीन दोषवाले, तम् ते शीतज्वरनाशन रोगीको, वर्ति- वर्ति वर्ति, निरुह- निरुह निरुह, वस्ति- अस्ति वस्ति, स्नेहैः स्नेह स्नेह, विरेकैः विरेक विरेक, अनुलोमनाम्नैः अने अनुलोमक अलोली और अनुलोमक अलोली, उपाचरेत् उपचार उपचार उपचार करे ॥ ११ ॥

11 The patient should be anointed with oil used in the treatment of algid fever and then made to undergo sudation in the proper manner. When all the morbid matter has been dissolved he should be treated with suppositories, evacuative or unctuous enemata, unctuous purgatives and with diet that promotes the peristaltic movement.

श्यामाधिरतिः—

श्यामाधिरतिः सप्तर्षी

गोमूत्रपिष्टां दशभागमाषाम् ।

सनीलिकां द्विर्लवणां गुडेन

वर्ति करारुष्टनिर्मां विदध्यात् ॥१२॥

सप्तर्षी ६-पीपुला श्लेष्माग दन्ती एक भाग, सनीलिकाम् गण्डी श्लेष्माग नीली एक भाग,

દિલ્લવાન્ન સિંધાલુ એ ભાગ સૈંધાનમક દો ભાગ, દશ-  
ભાગમાયામ્ અડધે દશ ભાગ ઉદ્ધવ દસ ભાગ, શ્યામા  
અને કાળું નસોતરે અને શ્યામા, ત્રિવૃત્ત નસોતરે  
ત્રિવૃત્ત. માગધિકામ્ તથા પીપર પ્રત્યેક એક એક  
ભાગ તથા પિપ્પલી પ્રત્યેક એક એક ભાગ, ગોમૂત્રપિષ્ઠા  
એકોને ગોમૂત્રમાં પીસી. इनको गोमूत्रमें पीकर,  
गुदेन गोलथी गुडसे, कराकृष्णिमाक्ष् डायना अंगूठा  
जेली हाथके अंगूठे जैसी, वर्तिम् वर्ति वर्ति, पिदध्यात्  
अनावली बनावे ॥ १२ ॥

12. Take one part each of black  
turpeth, turpeth, long pepper and red  
physic nut; ten parts of black gram.  
one part of indigo plant, and  
two parts of rock salt. Mix these with  
gur, rub well in cow's urine and  
prepare a suppository of the size of  
the thumb.

અન્યા વર્તયઃ, પ્રથમનર્ચ્ણે ચ—

પિપ્પાકસૌવર્ચલદિહ્રુમિર્વા

સસર્ષપત્ર્યૂષણયાવશકૈઃ ।

કિમિન્નકમ્પિલકશક્તિનીમિઃ

સુધાર્કજકીરગુદૈર્યુતામિઃ ॥૧૩॥

સ્યાત્ પિપ્પલીસર્ષપરાદવેદમ-

ધૂમૈઃ સગોમૂત્રગુદૈશ્ચ વર્તિઃ ।

શ્યામાફલાલાલુકપિપ્પલીનાં

નાડયાઽથવા તત્ પ્રથમેત્તુ ચૂર્ણમ્ ॥૧૪॥

રક્ષોમ્તુમ્બીકરદાદકૃષ્ણા-

ચૂર્ણે સજીમૂતકસૈન્ધવં વા ।

શિંગધે ગુદે તામ્યનુલોમયન્તિ

નરસ્ય વર્ષોઽનિલમૂત્રસક્તમ્ ॥૧૫॥

સસર્ષપ- સરસવ સરસો, ત્ર્યૂષણ- યાવશકૈઃ ત્રિઙ્કુ

અને જવખારથી યુક્ત ત્રિકુટુ અને ચવચારસે ચુક.

૧૪. શ્યામાફલાલાલુકપિપ્પલીનાં-શ્યામાફલેશ્વાલુકપિપ્પલીકં

(સ. ક.)

નાડયાઽથવા તત્ પ્રથમેત્તુ ચૂર્ણમ્-નાડયાઽથવાઽનિલમૂત્રસક્તમ્

ચૂર્ણમ્ (ક.)

પિપ્પાક- તદ્વત્ તિલકલક, સૌવર્ચલ- સૌચળ, સૌચલ,  
દિહ્રુમિઃ વા તથા હિંગ વડે ઓર હીંગસે, સુધા- અથવા  
શેરનું દૂધ યા સેટુંકા દૂધ, જર્કજ-કીર- આકાશનું દૂધ  
આકાશ દૂધ, ગુદૈઃ અને ગોળથી ઓર ગુદસે, યુતામિઃ  
યુક્ત ચુક. કિમિન્ન- વાવડિંગ વાયવિકૃત્, કમ્પિલક-  
કંપીલો કમીલા, શક્તિનીમિઃ તથા શંખિની વડે તથા  
શક્તિનીસે, સગોમૂત્ર- અથવા ગોમૂત્ર વા ગોમૂત્ર,  
ગુદૈઃ ચ અને ગોળથી યુક્ત ઓર ગુદસે ચુક, પિપ્પલી-  
પીપર પિપ્પલી, સર્ષપ- સરસવ સરસો, રાદ- મીઠળ  
મૈનફલ, વેદમધૂમૈઃ વા અને ખરના ધૂમ વડે ઓર  
ચરકે ધુંવેસે, વર્તિઃ સ્યાત્ વર્તિ અનાવલી વર્તિ બનાવે,  
અથવા અથવા અથવા, શ્યામા- કાળું નસોતરે ત્રિવૃત્ત,  
ફલ- મીઠળ મૈનફલ, અલાલુક- અલાલુ કઢવી તુમ્બી,  
પિપ્પલીનામ્ તુ અને પીપરનું ચૂર્ણ કરી ઓર પિપ્પલીકા  
ચૂર્ણ કર, તત્ ચૂર્ણ તે ચૂર્ણને ડાઘ ચૂર્ણકો, નાડયા  
પ્રથમેત્ નાડીદ્વારે ફેંકવું નાડીસે પ્રથમન કરે, સજીમૂતક-  
જીમૂતક, સૈન્ધવમ્ સિંધાલુ સૈંધાનમક, રક્ષોમ્-  
સરસવ સરસો, તુમ્બી તુમ્બી તુમ્બી, કરદાદ- મીઠળ  
મૈનફલ, કૃષ્ણા- અને પીપરનાં ઓર પિપ્પલીકે, ચૂર્ણમ્  
ચૂર્ણને નાડીદ્વારે ફેંકવું ચૂર્ણકો નાડીસે પ્રથમન કરે,  
શિંગધે ગુદે શિંગધે ગુદમાં શિંગધે ગુદામેં, તામિ  
પ્રયોજેલાં તે વર્તિ અને પ્રથમન પ્રયુક્ત કી હુઈ વર્તિ  
ઓર પ્રથમન, નરસ્ય પુરુષનાં રોગી પુરુષકે, વર્ષ-  
મળ મલ, અનિલ- વાયુ વાયુ, મૂત્રસક્તમ્ અને મૂત્રના  
નિરોધનું ઓર મૂત્રકી રુનાવટકા, અનુલોમયન્તિ  
અનુલોમન કરે છે અનુલોમન કરતે હૈં ॥ ૧૩-૧૫ ॥

13-15. Or, prepare a suppository of  
oil-cake, sanchal salt, asafoetida, rape  
seeds, the three spices and barley-  
alkali or of embelia, kamala, cteno-  
lepis and milk of thorny milk hedge  
plant and mudar, mixed with gur.  
The suppository may also be prepared  
of long pepper, rape seed, emetic nut,  
and kitchen root mixed with gur  
and rubbed in cow's urine. Or, the  
physician may insufflate into the

rectum through a tube. the powder of black turpeth, emetic nut, bottle gourd and long pepper. Or, the physician, after lubricating the rectum, may insufflate the pulvis of rape seed, bottle gourd, emetic nut, long pepper, bristly luffa and rock salt. This will regulate the normal peristaltic movement and relieve the retention of feces, flatus and urine.

निरुहविधानम्—

तेषां विधाते तु भिषग्विदभ्यात्  
स्वभ्यक्तसुखिन्नतनोर्निरुहम् ।

ऊर्ध्वानुलोमौषधमूत्रतैल-

क्षाराम्लवातघ्नयुतं सुतीक्ष्णम् ॥ १६ ॥

घातेऽधिकेऽम्लं लवणं सतैलं,  
क्षीरेण पिप्पे तु, कफे समूत्रम् ।

स मूत्रवर्चोऽनिलसङ्गमाशु

गुदं सिराश्च प्रगुणीकरोति ॥ १७ ॥

तेषाम् तेऽऽ इत्ये, विधाते तु काम न करे तो काम न होने पर, भिषक् वैद्य वैद्य, स्वभ्यक्त- सारी येठे अभ्यङ्ग मली प्रकार अभ्यङ्ग, सुखिन्नतनोः अने स्वेदन करेख शरीरवाणाने और स्वेदन किये हुए मनुष्यको, ऊर्ध्वानुलोम- वमन अने विरेचन वमन और विरेचन, औषध- औषध औषध, मूत्र- गोमूत्र गोमूत्र, तैल- तैल तैल, क्षार- क्षार क्षार, अम्ल- अम्ल अम्ल, वातघ्न- अने वातनाशक द्रव्योत्थी और वातघ्न औषधोंसे, युक्त युक्त युक्त, सुतीक्ष्णम् सारी येठे तीक्ष्ण अत्यन्त तीक्ष्ण, निरुहम् निरुह अस्ति निरुहको, विदभ्यात् देवी देवे, घाते अधिके वायु अधिक होता वायुकी अधिकतामें, सतैलम् अम्लम् तैल, अम्ल द्रव्य तैल, अम्ल द्रव्य, लवणम् तथा लवणयुक्ता युक्त निरुह अस्ति तथा लवणसे युक्त निरुह बस्ति, पिप्पे तु पित्त अधिक होता पित्तकी अधिकतामें, क्षीरेण दूधो युक्त निरुह अस्ति दूधसे युक्त निरुह बस्ति, कफे अने कर अधिक होता और कफकी अधिकतामें, समूत्रम् गोमूत्रो युक्त निरुह अस्ति

आपवी ओष्ठे गोमूत्रसे युक्त निरुह बस्ति देनी चाहिए, सः ते वह, मूत्रवर्चोऽनिलसङ्गम् मूत्र, भण अने वायुना निरोधने मूत्र, मल और वायुकी रुकावटको, माशु अलदी दूर करे छे शीघ्र ही दूर करती है, गुदम् तथा शुद्ध तथा गुदा, सिराः च अने सिराओंने और सिराओंको, प्रगुणीकरोति उत्तम शुद्धयुक्त करे छे उत्तम गुणयुक्त करती है ॥ १६-१७ ॥

16-17. If these measures fail the physician after subjecting the patient well to oleation and sudation procedures, should give a strong evacuative enema prepared with emetic and purgative drugs, cow's urine, oil, alkali acid and other vata-curative drugs. In a condition of the predominance of vata, the enema should be prepared with acid and oil; in predominance of kapha, it should be prepared with milk and in kapha with cow's urine. Such enema quickly relieves the retention of urine, feces and flatus and re-establishes the function of the rectum and the vessels.

उदावर्ते भक्षणम्—

त्रिवृत्सुधापत्रतिलादिशाक-

प्राम्यौदकानूपरसैयवाजम् ।

अन्यैश्च सृष्टानिलमूत्रविद्भि-

रघात् प्रसजानुदसीधुपायी ॥ १८ ॥

त्रिवृत्- त्रिवृत् त्रिवृत्, सुधापत्र- शेरना पान सेहुंडके पत्ते, तिलादि- तैल वजरेना तिलादिके, शाक- शाक शाक, प्राम्य- आम्र आम्र, औदक- ओदक जलीय, आनूप- अने आनूप और आनूप जीवोंके, रसैः भासिरस साथे भासिरसोंसे, सृष्ट-जनित-मूत्र-विद्भिः अने वायु, मूत्र तथा भणने प्रवृत्त करे ओवा बह वायु, मूत्र तथा मलको प्रवृत्त करनेवाले, अन्यैः च अने अन्य द्रव्योंसे, यवाजम् ज्वानु अन्न जौका अन्न, अघात् आधुं कावे, प्रसजा- अने प्रसजानु और प्रसजाका,

गुडसीधुपायी तथा ओजर्षः तैयार करेवा सीधुना अनुपान करे ॥ १८ ॥

18. Leaves of turpeth and thorny milk-hedge plant and til plant etc., should be given as cooked dishes at meals and barley as staple diet should be given along with the meat-juice of domestic, aquatic and wet-land animals, or with articles which are inducive of the flow of flatus, urine and feces; while the clear top-portion of gur and sidhu wine should be given as post-prandial potions.

उदावर्ते विरेचनमनुवासनं च—

भूयोऽनुबन्धे तु भवेद्विरेच्यो

मूत्रप्रसक्तादधिमण्डशुकैः ।

स्वस्थं तु पश्चादनुवासयेत्

रौक्ष्याद्धि सङ्कोऽनिलवर्चसोश्चत् ॥१९॥

मूत्रः इरीने फिर अनुबन्धे तु उदावर्तने अनुबन्ध रहेता उदावर्तका अनुबन्ध होनेपर, मूत्र-ओभ्रत गोमूत्र, प्रसक्ता-प्रसक्ता प्रसक्ता, दधिमण्ड-इरीने मंड दहीका पानी, शुकैः विरेच्यः अने शुक्लथी विरेचन और शुकसे विरेचन, भवेत् आपवुं ओधं ओ देवे, स्वस्थम् स्वस्थ थया पछी स्वस्थ होने पर, तत् तु तेने उसे, रौक्ष्यात् हि ओ रक्षताने ओ रक्षतासे, अनिल-वायु वायु, वर्चसोः अने मणने और मलके, सङ्कोः रौक्ष सकावट, चेत् थाय ते हो तो, पश्चात् पछी पीछे, अनुवासयेत् अनुवासनवास्त आपवली ओधं ओ अनुवासनवस्ति देवे ॥ १९ ॥

19 If, again, the patient gets constipated he should be purged with

१९. मण्डशुकैः मण्डशुकैः (ल. ड. न. य. व.)

१९ भूयोऽनुबन्धे तु-भूयोऽनुबन्धेषु (क.)

वर्चसोश्चत् वर्चसोः स्वस्थ (क.)

purgative drugs mixed with cow's urine the clear top-portion of wine, whey or vinegar. If, after returning to normal health, he suffers from retention of flatus and feces owing to the dehydrated condition of the body, he should be given unctuous enema.

हिङ्गवादिचूर्णम्—

द्विरुत्तरं हिङ्ग वचाग्निकुष्ठं

सुवर्चिका चैव विडङ्गचूर्णम् ।

सुखाम्बुनाऽऽनाहविसृचिकार्ति-

हृद्रोगगुल्मोर्ध्वसमीरणघ्नम् ॥२०॥

द्विरुत्तरम् ओऽ ओऽथी ओभ्रत उत्तरोत्तर दुगुने, हिङ्गु हिङ्ग हींग, वचा- वच, अग्नि- अग्नि चित्रक, कुष्ठम् कठ कूठ, सुवर्चिका साधुभार सजिहार, विडङ्गचूर्णम् च एव अने वावडिंगनु थूल् और वायविडङ्गका चूर्ण, सुखाम्बुना नवशेडा पाणी साथे सेवन करवाथी सुहाते हुए गरम जलके साथ सेवन करनेसे, आनाह- आनाह आनाह, विसृचिका-अर्ति- (विसृचिका- रोग) विसृचिकारोग, हृद्रोग- हृद्रोग हृद्रोग, गुल्म- गुल्म गुल्म, ऊर्ध्व-समीरणघ्नम् अने ऊर्ध्ववातने नाश करनेवाले साथ छे और ऊर्ध्ववातका नाश करनेवाला होता है ॥ २० ॥

20. The pulvis of asafetida, sweet flag, white flowered leadword, costus, salsoda and embelia, taken in geometrically progressive doses along with genially warm water, is curative of constipation, pain of acute gastro-intestinal irritation gastric disorders, gulma and misperistalsis.

वचादिचूर्णम्—

वचाभयाचित्रकयावशुक्रान्

सपिप्पलीकातिविषान् सकुष्ठान् ।

२०. वचाभयाचित्रकयावशुक्रान् (क.)

२० विसृचिकार्ति-विसृचिकार्ति (क.)

उष्णाम्बुनाऽऽनाहविमूढवातान्

पीत्वा जयेद्वाशु रसौदवाशी ॥ २१ ॥

સવિષ્પલીક- પીપર વિષ્પલી, અતિવિષાન્ અતિ-  
વિષની કેળી અતિવિષા, સકુદાન્ અનેકકાને ઓર કૂઠ,  
વચા- વજ વચ, અમયા- હરડે હરડ, ચિત્રક- ચિત્રક  
ચિત્રક, ચાવશુકાન્ અને વજનાર એએને ઓર યવક્ષાર  
इनका, उष्णाम्बुना ७११ पाणीथी गरम जलसे, पीत्वा  
पी पीकर, रसौदवाशी भासरसनी साथे भात भानार  
मांसरसके साथ भातका भोजन करनेवाला पुरुष, आनाह-  
आनाह आनाह, विमूढवातान् અને મૂઢવાતને ઓર  
मूढवातको, वाशु ७७१ पी जल्दीसे, जयेद् ७७१ ते ७  
जीतता है ॥ २१ ॥

21. Keeping himself on a diet of  
cooked rice and meat-juice, a person  
can quickly subdue constipation, and  
claudication of vata by taking the  
pulvis prepared of sweet flag, chebulic  
myrobalan white-flowered leadwort,  
barley-alkali long pepper indian atees  
and costus, along with warm water.

अपरं हिङ्गवादिचूर्णम्—

हिङ्गप्रगन्धाविडशुण्यजाजी-

हरीतकीपुष्करमूलकुष्ठम् ।

यथोत्तरं भागविबुद्धमेतत्

श्रीहोदराजीर्णविसृचिकासु ॥ २२ ॥

હિંકુ- હિંગ હીંગ, પ્રગન્ધા- વજ વચા, વિ-  
ભિડગણુ વિઢલગણ, શુણી- સૂંઠ સોંઠ, અજાજી- ७૭૭  
जीरा, हरीतकी- ७२३ हरड, पुष्करमूल- १०१२७७  
पोइकर मूल, कुष्ठम् અને કઠ ઓર કૂઠ, एतत् ७७१ ने  
इनका, यथोत्तरम् ७७१ ते ७७१ क्रमशः, भागविबुद्धम् ७७१  
७७१ भाग ७७१ दरी ७७१ भाग ७७१ आवेत् ७७१ एक एक  
भाग बढ़ाकर किया हुआ चूर्ण, श्रीहोदर- ७७१ ७७१ श्रीहोदर,  
अजीर्ण- ७७१ अजीर्ण, विसृचिकासु અને વિસ્રિચિકાસા  
दितकर ७७१ और विसृचिकामें हितकर है ॥ २२ ॥

22. Take asafetida, root of sweet-  
flag, bid salt, dry ginger, cumin seeds,  
chebulic myrobalan, orris root and  
costus in arithmetical progression. The  
powder prepared of these should be  
used in splenic disorders, abdominal  
affections, indigestion and acute gastro-  
intestinal irritation.

स्थिराद्यं घृतम्—

स्थिरादिवर्गस्य पुनर्नवायाः

शम्पाकपूतीककरञ्जयोश्च ।

सिद्धः कषाये द्विपलांशिकानां

प्रस्थो घृतात् स्यात् प्रतिरुद्धवाते ॥ २३ ॥

સ્થિરાદિવર્ગસ્ય સ્થિરાદિ પંચમૂળ લઘુ પંચમૂળ,  
પુનર્નવાયાઃ સાટેડી પુનર્નવા, શમ્પાક- શમ્પાક અમલ-  
તાવ, પૂતીકકરજયોઃ ચ અને પૂતિકરજ ઓર પૂતિ-  
કરજ, द्विपलांशिकानां એએઆથી પ્રત્યેકના ૮-૮  
તોલા ૯૭૧ इनमेंसे प्रत्येकके आठ आठ तोले ले कर,  
कषाये ७७१ કરેલા કષાયમાં કિયે हुए काथमें, सिद्धः सिद्ध  
अयेव सिद्ध हुआ, घृतात् प्रस्थः ६४ तोला घी ६४  
तोले घी, प्रतिरुद्धवाते ७७१ કષાયેલા વાયુમાં રુકી हुई  
वायुमें, स्यात् दितकर आय ७७१ दितकर होता है ॥ २३ ॥

23. Prepare a medicated ghee from  
64 tolas of cow's ghee with the  
decoction of 8 tolas each of the drugs  
of the tick-trefoil group and 8 tolas  
of hog's weed, purging cassia, bonduc,  
indian beech and jungle cork tree; this  
should be given when the movement  
of vata is obstructed.

लवणयोगः—

फलं च मूलं च विरेचनोक्तं

हिङ्गवर्कमूलं दशमूलमध्यम् ।

૨૩. શમ્પાક-શમ્પાક (ક.)

૨૪. હિંગવર્કમૂળ-હિંગવર્કમૂળ (ક.)

सुक् चित्रकश्चैव पुनर्नवा च

तुल्यानि सर्वैर्लवणानि पञ्च ॥ २३ ॥

ज्वैः समूत्रैः सह जर्जराणि

शरावसन्धौ विपचेत् सुलिप्ते ।

पक्वं सुपिष्टं लवणं तदन्त्रैः

पानैस्तथाऽऽनाहरुजाग्रमद्यात् ॥ २५ ॥

विरेचनोक्तम् विरेचनभोगोभिः कृते विरेचन-  
योगोर्मे कहे गये, फलम् च इह फल, मूलम् च अने  
भूण और मूल, द्विजु द्विजु हीन, अर्कमूलम् आकाम्  
भूण और आकाम् मूल, अश्वत्थम् अश्व, शाकपुष्पं पगेरे  
अश्व शाकपुष्पं आदि, दशमूलम् दशभूण दशमूल, सुक्  
शे।२ सेहुंङ, चित्रकः च एव चित्रक चित्रक, पुनर्नवा च  
साठोडी पुनर्नवा, सर्वैः तुल्यानि अने अने नेटवा अ  
प्रभाषुर्मा इन सबके समान प्रमाणमें, पञ्च पांच पांचों,  
लवणानि लवण लवण, जर्जराणि अने अने आडीने  
इनको कूटकर, समूत्रैः ज्वैः सह रसैहो तथा भोगोभिः  
साथ भोगोभिः ज्वैः तथा गोमूत्रके साथ मिलाकर, सुलिप्ते  
शरावसन्धौ कटोराना संपुटमा कपडमट्टी करी शराव-  
संपुटमें कपडमट्टी करके, विपचेत् पकाने पर, पकावे,  
पक्वं पाडी गया पछी पकने पर, सुपिष्टम् सादी  
पेठे पीसेलु बारीक पीसकर, आनाहरुजाग्रम् आनाह  
अने थगने। नाश कराने आनाह और रुजाके नाशक,  
तत् लवणम् ते लवण इस नमकको, अन्त्रैः अने अने,  
तथा तथा तथा, पानैः पान साथ पानके साथ अद्यात्  
आहुं खावे ॥ २४-२५ ॥

24-25. Take equal parts of fruits  
and roots described as the purgative  
group of drugs, asafetida, roots of  
mudar, the best of the roots of deca-  
radices, thorny milk-hedge plant, white-  
flowered leadwort and hogweed and add

२४. सुक्-त्वक् (ड.)

१, चित्रकश्चैव-चित्रकौ च (व)

२५. समूत्रैः सह जर्जराणि-समूत्राणि सजर्जराणि (द.)

१, रुजाग्रमद्यात्-रुजाग्रमध्यम् (फ.)

to it an equal quantity of the pentad  
of salts and triturate and mix them  
with unctuous substance and cow's  
urine and pack in earthen saucers  
sealed with earth; then subject them  
to heating When that medicated salt  
is ripe, it should be made into fine  
powder and taken along with food or  
drink. It is curative of constipation  
and colic.

आनाहलक्षणं तच्चिकित्सा च—

हृत्स्तम्भसूर्धामयगौरवाभ्या-

मुद्गारसङ्गेन सपीनसेन ।

आनाहमामप्रभवं जयेत्

प्रच्छर्दनेर्लङ्घनपाचनैश्च ॥ २६ ॥

हृत्स्तम्भ-हृत्पुच्छ हृदयका जकड़ जाना, मूर्धामय-  
शिरोरेग शिरोरोग, गौरवाभ्याम् भारेपक्षु भारीपन,  
सपीनसेन सगेअम पीनस, मुद्गारसङ्गेन ओछारने।  
निशेध उद्गारका रुकना, आमप्रभवम् अने आमप्रभव  
और आमजन्य, आनाहम् आनाह अने अने आनाह  
इनको प्रच्छर्दनेः वमन वमन, लङ्घन-लङ्घन लघन,  
पाचनैः च अने पाचनशी और पाचनोसे, जवेत्  
उतवा जीते ॥ २६ ॥

26. Heart-block, headache heaviness,  
retention of eructation and  
coryza, which are born of constipation  
and undigested chyme, should be  
subdued by emesis, starvation and  
the administration of digestive drugs.

(गुल्मोदरवृणार्शःप्लीहोदावर्तयोनिशुक्रगदे ।

मेदःकफसंस्थे मास्रतरकेऽवगाढे च ॥ २७ ॥

गृध्रसिपश्ववधादिषु विरेचनाहेषु वातरोगेषु ।

वाते विबद्धमार्गे मेदःकफपित्तरुकेन ॥ २८ ॥

पयसा मांसरसैर्वा त्रिफलारसयूषमूत्रमदिरासिः ।

दोषानुबन्धयोगात् प्रशस्तमेरण्डजं तैलम् ॥ २९ ॥



गुल्मोदर- शुद्ध- उदर गुल्म-उदर, ब्रह्म- अश्व- अश्व, अश्वः- अश्वः अश्वः, ग्रीह- ग्रीहः ग्रीहः, उदावर्त- उदावर्तः उदावर्तः, योनि- योनिः योनिः, योनिः- योनिः योनिः, शुक्रगदे- शुक्रगदे- शुक्रगदे, अने- अने- अने, वीर्य- वीर्यः वीर्यः, शोभ- शोभः शोभः, मेदः- मेदः मेदः, कफ- कफः कफः, अने- अने- अने, कफसे, सँसृष्टे संसृष्टः संसृष्टः, युक्त, अवगाढे गंभीर गंभीर, माहतरके च वातरक्त वातरक्त, गृध्रसि- गृध्रसि, गृध्रसी- गृध्रसी, पक्षवधादिषु पक्षवध- पक्षवध, वज्रे- पक्षवधादि, विरे- चनाहेषु विरेचनने योग्य विरेचनयोग्य, वातरोगेषु वातरोग वातरोग, मेदः- मेदः मेदः, कफ- कफः कफः, पित्तकेन पित्त अने रक्तथी पित्त एवं रक्तसे, विषद- मार्गे रोकार्थ गृध्रसि भागवाणे रोकें गये मार्गवाला, वाते वायु औष्ण्यमां वायु इतमें, दोषानुबन्ध- दोषानु अनुभव दोषके अनुबंधके, योगात् अनुसार अनुसार पयसा दूध दूध, मांसरसः मांसरस मांसरस, त्रिफला- रस- त्रिफलाना क्वाथ त्रिफलाकाथ, यूष- यूष यूष, सूत्र- गोभृत् गोभृत्, मदिराभिः वा के मदिरा साथे या मदिराके साथ, एरण्डजम् औरंगु एरण्डका, तैलम् तैल तैल, प्रशस्तम् प्रशस्त छे प्रशस्त है ॥ २७-२९ ॥

27-29. In gulma, abdominal disease, inguinal swelling, piles, splenic disorder, disorders of misperistalsis, gynecic and seminal disorders, in deep rheumatic conditions associated with vitiation of fat and kapha, and in sciatica and hemiplegia and other disorders of vata wherein purgation is indicated, in such conditions if the course of vata is obstructed by fat, kapha, pitta or blood, it is best to give castor oil mixed with milk, meat-juice or the decoction of the three myrobalans, pulse-soups, cow's urine or madira wine, according to the association of the morbid humor.

तदातनुस्वभावात्संयोगवशाद्विरेचनाच्च जयेत् ।  
मेदोसृक्पित्तकफोन्मिथानिलरोगजित्स्मात् ३०

३०. च जयेत्-च तथा (च.)

बलकोष्ठव्याधिवशादापञ्चपला भवेन्मात्रा ।

मृदुकोष्ठारूपबलानां सहभोज्यं तत्प्रयोज्यं व्यात् ३१)

इत्युदावर्तचिकित्सा ।

तत् ते औरंग तैल यह एरण्ड तैल, स्वभावात् रक्षावथी स्वभावसे ही, वातनुत् वातरक्त छे वातनाशक है संयोगवशात् परंतु भीष्म प्रयोगनी साथे संयोगने बधने परन्तु अन्य द्रव्योंके साथ संयोगके कारण, विरेचनान् च अने विरेचन गुल्मथी और विरेचन गुणसे, मेदः- मेदः मेदः, वसृक्-पित्त- रक्तपित्त रक्तपित्त, कफोन्मिथ- अने उक्ष्थी मिश्रित और कफसे मिश्रित, अनिलरोगजित् वातरोगने पक्षु उत्तमार्थ साथ छे वातरोगको भी जीतने- वाला होता है, तस्मात् तैथी इसलिये, जयेत् ते उक्त रोगोंने छते छे वह उक्त रोगोंको जीतता है, बल- बल बल, कोष्ठ- कोष्ठ कोष्ठ, व्याधिवशात् अने व्याधि अनुसार और व्याधिके अनुसार, आपञ्चपला वीस तैला सुधीनी वीस तोले तक, मात्रा मात्रा मात्रा, भवेत् साथ छे होती है, मृदु- मृदु मृदु, कोष्ठ- कोष्ठवाणा कोष्ठवाले, अहव-बलानाम् तथा अहव भगवाना भाटे और कमजोर मनुष्योंके लिए, तत् तेने उमका, सह- भोज्यम् भोजन साथे च भोजनके साथ ही, प्रयोज्यम् स्वात् प्रयोग करवै औरंग प्रयोग करना चाहिए ॥ ३०-३१ ॥ इति आ यह, उदावर्तचिकित्सा उदावर्त- चिकित्सा छे उदावर्तचिकित्सा है ।

30-31 On account of its natural vata-curative action, and on account of its allowing of various combinations and owing to its purgative action, castor oil cures disorders of vata associated with the vitiation of fat, blood, pitta and kapha. Its dose should be upto 20 tolas in the case of patients who are strong and are hard-bowelled and whose morbidity is great, while it should be given mixed with their food in the case of those who are soft-bowelled and of low vitality.

Thus has been described the treatment of misperistalsis.

मूत्रकृच्छ्रस्य निदानसंप्राप्तिलक्षणानि—

व्यायामतीक्ष्णौषधरूक्षमद्य-

प्रसङ्गनित्यद्रुतपृष्ठयानात् ।

आनूपमस्तस्याध्यशनादजीर्णात्

स्युर्मूत्रकृच्छ्राणि नृणामिहाद्यौ ॥ ३२ ॥

व्यायाम- व्यायामश्च व्यायाम, तीक्ष्णौषध- तीक्ष्ण औषधयः तीक्ष्ण औषध रूक्ष- रूक्ष रूक्ष, मद्यप्रसंग- मद्यना प्रसंगयः मद्यके प्रसंग, नित्यद्रुतपृष्ठयानात् वेगवान् प्राप्नुयन् पीठ पर ऐसी नित्य जगती तेज घोड़े दिके ऊपर सवारी करना, आनूपमस्यात् आनूप भास तथा मत्स्यात् सेवनयः आनूप मांस तथा मत्स्यात् सेवन, अध्यशनात् अने भाषा उपर भाषा अध्वशन, अजीर्णात् अने अजुर्णयः और अजीर्णसे, नृणाम् मनुष्योने पुरुषोंको, इह अहो गद्गं, अद्यौ आठ प्रका- रना आठ प्रकारके, मूत्रकृच्छ्राणि मूत्रकृच्छ्र मूत्रकृच्छ्र, स्युः थाप छे होते हैं ॥ ३२ ॥

32. There are eight varieties of dysuria afflicting men as a result of excessive physical exertion, strong medications, continual indulgence in dry wine, mounting fast horses, ingestion of the flesh of wet-land creatures and fishes, taking pre-digestion meals and owing to indigestion.

पृथक्कालाः स्वैः कुपिता निदानैः

सर्वेऽथवा कोपमुपेत्य वस्तौ ।

मूत्रस्य मार्गं परिपीडयति

यदा तदा मूत्रयतीह कृच्छ्रात् ॥ ३३ ॥

स्वैः पोतपोतानां अपने अपने, निदानैः निदानयः हेतुसे, कुपिताः कुपित थयेला कुपित, पृथक् पृथक् पृथक् पृथक्, अथवा सर्वे मलाः अथवा सर्व दोष या सब दोष, वस्तौ कोपम् अस्तिभा प्रकल्प वस्तिमें कुपित, उपेत्य पाभीने होकर, मूत्रस्य मूत्रना मूत्रके,

मार्गम् मार्गने मार्गको, यदा जगती जग, परिपीडयन्ति अतिशय पीडित करे छे अतिशय पीडित करते हैं, तदा इह तदरे तव मनुष्य, कृच्छ्रात् कृच्छ्रपूर्वक कष्टसे, मूत्रयति पेशाभ करे छे मूत्र त्याग करता है ॥ ३३ ॥

33. The humors, being provoked by their respective etiological factors individually or all together and reaching the urinary passages, begin to compress them on all sides. When this occurs, the patient urinates with pain, that is, there results dysuria.

तीव्रा रुजो वङ्कणवस्तिमेद्वे

स्वरूपं मुहुर्मूत्रयतीह वातात् ।

पीतं सरकं सरुजं सदाहं

कृच्छ्रान्मुहुर्मूत्रयतीह पित्तात् ॥ ३४ ॥

वातात् इह वायुने लक्ष वायुके कारण, वङ्कण- मनुष्यने वङ्कण मनुष्यको वङ्कण, वस्ति अस्ति वस्ति, मेद्वे तथा शिश्नभा तथा मेद्वेमें, तीव्राः तीव्र तीव्र, रुजः वेदना भाष छे रुजा होती है, स्वरूपम् अने ते थोडा थोडा और वह थोडा थोडा, मुहुः तेमज बारवार और बारबार, मूत्रयति पेशाभ करे छे मूत्र त्याग करता है, पित्तात् इह पित्तने लक्षने पित्तसे, पीतम् मनुष्य पीणो मनुष्य पीला, सरकम् रक्तसहित रक्तके साथ, सरुजम् वेदनासहित दर्दके साथ, सदाहम् दाहयुक्त दाहके साथ, कृच्छ्रात् मुश्केलीथी कष्टसे, मुहुः अने बारवार और बारबार, मूत्रयति पेशाभ करे छे मूत्रत्याग करता ॥ ३४ ॥

34. In a condition of provoked vata, there will be acute pain in the groin, hypogastric region and genitals; and the patient passes frequently scanty quantities of urine. In a

condition of provoked pitta, the patient passes frequently yellow or reddish urine accompanied with pain and burning, and with difficulty.

**वस्तेः सलिङ्गस्य गुरुत्वशोथौ**

**मूत्रं सपिच्छं कफमूत्रकृच्छ्रे ।**

**सर्वाणि रूपाणि तु सन्निपाता-**

**द्भवन्ति तत् कृच्छ्रतमं हि कृच्छ्रम् ॥ ३५ ॥**

कफमूत्रकृच्छ्रे कश्चन भूतकृच्छ्रमां कफजन्य मूत्र-  
कृच्छ्रम्, सलिङ्गस्य शिश मेदु, वस्तेः अने अस्तिमां  
और वस्तिमें, गुरुत्वशोथौ आरेपणुं अने सोओ थाय  
छे मारीपन और शोथ, मूत्रम् सपिच्छम् तेमज भूत  
पिच्छायुक्त थाय छे एवं मूत्र पिच्छायुक्त होता है,  
सन्निपाताद तु सन्निपातने अर्धने सन्निपातके कारण,  
सर्वाणि रूपाणि अर्धाय लक्षणे। सब लक्षण, भवन्ति  
थाय छे होते हैं, तत् ते वह, कृच्छ्रम् भूतकृच्छ्र मूत्र-  
कृच्छ्र, कृच्छ्रतमम् शोथी आधिक कष्टसाध्य छे सबसे  
अधिक कष्टसाध्य है ॥ ३५ ॥

35. In a condition of dysuria due to kapha there will be heaviness and swelling of the bladder and the phallus, and the patient passes slimy urine. In a condition of dysuria due to tridiscordance there appear all these symptoms together. This is the most formidable type of dysuria-

**विशोषयेद्वस्तिगतं सशुक्रं**

**मूत्रं सपिच्छं पवनः कफं वा ।**

**यदा तदाऽश्मर्युपजायते तु**

**क्रमेण पित्तेष्विव रोचना गोः ॥ ३६ ॥**

यदा न्यारे जब, पवनः वायु वायु, वस्तिगतम्  
अस्तिमां रहेला वस्तिमें पहुँचे, सशुक्रम् वीर्यसहित  
शुक्रके साथ, सपिच्छम् मूत्रम् तथा पित्तसहित भूतने  
और पित्तके साथ मूत्रको, कफम् वा छे कश्चने या कफको,  
विशोषयेत् शोषी वे छे शुष्क करता है, तदा तु तयारे

तब, गोः वस्तेषु गायना पित्तथी गायके पित्तसे, रोचना  
इव जेम जोरोथन थाय छे तेम जैसे शोरोचना बनती है  
वैसे, क्रमेण कृमे कृमे क्रमशः, अश्मरी अश्मरी अश्मरी,  
उपजायते उत्पन्न थाय छे उत्पन्न हो जाती  
है ॥ ३६ ॥

36. If the vata dries up the urine in the bladder along with the semen, pitta and kapha then gradually a calculus is formed, just as a gall-stone is formed from the bile of the cow.

**कदम्बपुष्पाकृतिरश्मतुल्या**

**श्लक्ष्णा त्रिपुट्यव्यथवाऽपि मृद्वी ।**

**मूत्रस्य चेन्मार्गमुपैति रुद्धा**

**मूत्रं रुजं तस्य करोति वस्तौ ॥ ३७ ॥**

कदम्बपुष्पाकृतिः कदम्बना फूल जेवी आकृतिवाणी  
कदम्बके फूलकीसी आकृतिवाली, अश्मतुल्या श्लक्ष्णा पाण्डु  
जेवी दीप्ती पत्थर जैसी चिकनी, त्रिपुटी अपि त्रिपु  
पुटवाणी तीन पुटवाली, व्यथवा अपि मृद्वी अथवा  
भृदु अश्मरी या मुलाबम अश्मरी, मूत्रस्य जे मूत्रना  
यदि मूत्रके, मार्गम् उपैति चेत् मार्गमां आवी पडे छे  
ते। मार्गमें पहुँचे तो, मूत्रम् ते मूत्रने वह मूत्रको, रुद्धा  
रोधीने रोककर, तस्य तेनी उसकी, वस्तौ अस्तिमां  
वस्तिमें, रुजम् वेदना रुजा, करोति करे छे उत्पन्न,  
करती है ॥ ३७ ॥

37. This calculus is just like a stone and may be of the appearance of either kadamba flower (mulberry or oxalate stone) or it may be a smooth and three layered stone (uric acid stone) or a soft stone (phosphatic stone). If it passes into the urinary passage, it causes obstruction in the passage of urine and produces pain in the course of the urinary tract.

सखेवनीमेहनवस्तिशूलं

विशीर्णधारं च करोति मूत्रम् ।

मृदाति मेदं स तु वेदनाती

मुहुः शङ्खमुञ्चति मेहते च ॥३८॥

सः ते रोगी वह रोगी, सखेवनी- सैवनी सेवनी, मेहन- शिश मेहन, वस्ति- तथा अस्तिमा और वस्तिमें, शूलम् शूलसहित शूलसहित, विशीर्णधारम् च नुटक धारे रुक रुक कर, मूत्रम् पेशाव मूत्रका, करोति करे छे त्याग करता है, वेदनातीः तु अने वेदनाथी पीडाधने और वेदनासे पीडित होनेके कारण, मेदम् शिशने मेदको, मृदाति योनी छे मलता है, मुहुः तथा बार बार तथा बार बार, शङ्ख मुञ्चति भक्षोत्सर्ग करे छे मल त्याग करता है, मेहते च तेभ्य पेशाव करे छे एवं मूत्रोत्सर्ग करता है ॥ ३८ ॥

38. It causes pain in the perinium, phallus and hypogastric region and the stream of the urine gets split. Being afflicted with pain, he squeezes the phallus and frequently passes feces and urine.

क्षोभात् क्षते मूत्रयतीह सासृक्

तस्याः सुखं मेहति च व्यपायात् ।

पवाऽश्मरी मारुतमिजमूर्तिः

स्याच्छर्करा मूत्रपथात् क्षरन्ती ॥३९॥

क्षोभात् क्षते अश्मरीना क्षोभाथी क्षत यता अश्मरीके क्षोभसे क्षत होने पर, इह सासृक् ते शोषीसहित रक्त-युक्त, मूत्रयति पेशाव करे छे मूत्र त्यागता है, तस्याः व्यपायात् अने मूत्रमार्गथो ते भरती जाता और अश्मरीके मूत्रमार्गसे हट जाने पर, सुखम् भुजेथी सुखपूर्वक, मेहति च पेशाव करे छे मूत्रत्याग करता है, पवा आ यह, अश्मरी अश्मरी अश्मरी मारुतमिज-मूर्तिः वायुथी जागीने शुकसे यता वायुसे छिज मिज हो कर चूर्णरूपमें, मूत्रपथात् मूत्रमार्गथी मूत्रमार्गसे,

क्षरन्ती अरती निकलती हुई, शर्करा खाव शर्करा उड़ेवाय छे शर्करा कहाती है ॥ ३९ ॥

39. He passes urine mixed with blood if there is ulceration due to the movement of stone, and when the stone passes down, he passes urine happily. This stone, when broken up by vata, forms sand which passes out through the urinary passage.

(रेतोऽभिघाताभिहतस्य पुंसः

प्रवर्तते यस्य तु मूत्रकृच्छ्रम् ।

व्याधेदना वङ्गणवस्तिमेहे

तस्यातिशूलं वृषणातिवृत्ते ॥४०॥

शुक्रेण संरुद्धगतिप्रवाहो

मूत्रं स कृच्छ्रेण विमुञ्चतीह ।

तमण्डयोः स्तब्धमिति ब्रुवन्ति

रेतोऽभिघातात् प्रवदन्ति कृच्छ्रम् ॥४१॥)

रेतोऽभिघात- वीर्यना विघातथी शुक्रके वेगके रुकनेसे, अभिहतस्य पीडाथी पीडित, यस्य ने जित, पुंसः तु पुरुषने पुरुषको, मूत्रकृच्छ्रम् मूत्रकृच्छ्र मूत्रकृच्छ्र, प्रवर्तते भाव छे होता है, तस्य तेने उसे, वङ्गण- वंक्षण वंक्षण, वस्ति- अस्ति वस्ति, मेहे अने शिशमा और मेदमें वेदना वेदना भाव छे वेदना होती है, वृषणा-तिवृत्ते अने वृषणो मोटा थवाथी और वृषणोके बढ़नेसे, अतिशूलम् अतिशय शूल अत्यन्त शूल, खाव भाव छे होता है, शुक्रेण वीर्यथी शुक्रसे, संरुद्ध-गतिप्रवाहः भाग तथा प्रवाह रोकथी व्याथी मार्ग तथा प्रवाह रुक जानेके कारण, सः ते अनुष्य वह पुरुष, कृच्छ्रेण मुश्केलीथी कष्टसे, मूत्रम् पेशाव मूत्र, विमुञ्चति करे छे त्याग करता है, तम् तेने उसको, अण्डयोः अंडमा अंडोंमें, स्तब्धम् इति स्तब्ध स्तब्ध, ब्रुवन्ति उहे छे कहते हैं, रेतोऽभि-घातात् अने तेने वीर्यना विघातथी भयेथी और

४०. वस्त्र-तस्त्र (व.)

४१. प्रवर्तते वस्त्र-प्रवर्तते तस्त्र (व.)

३८. मेहते-वेपते (व. ह. व. क.)

उसे शुक्रके विघातसे उत्पन्न, कृच्छ्रम् भूतृच्छ्रं मूत्रकृच्छ्रं, प्रवदन्ति उहे छे कहते हैं ॥ ४०-४१ ॥

40-41. In dysuria which occurs in a man consequent upon his being afflicted with the obstruction of semen, there will be pain in the groin bladder, phallus, and great and painful enlargement of the testes. He passes urine with difficulty as its flow is obstructed by semen. It is called the cirrhotic condition of the testes. This kind of dysuria is said to occur owing to obstruction of semen

शुक्रं मलाश्चैव पृथक् पृथग्वा  
मूत्राशयस्थाः प्रतिवारयन्ति ।  
तद्याहतं मेहनवस्तिशूलं  
मूत्रं सशुक्रं कुरुते विबद्धम् ॥४२॥  
स्तब्धश्च शूलो भृशवेदनश्च  
तुघेत वस्तिवृषणौ च तस्य ।

पृथक् पृथक् वा शुक्रं शुक्रं अथवा पृथक् पृथक् वा, मूत्रा-  
शयस्थाः मूत्राशयभां रहेश्च मूत्राशयमें स्थित, मलाः च  
एव अथवा दोषो सब दोष, शुक्रम् वीर्यं शुक्रको,  
प्रतिवारयन्ति अटकेले छे रोकते हैं, व्याहतम् अटकेलुं  
रुका हुआ, तत् ते वह, मेहनवस्तिशूलम् शिश्नं अने  
अस्तिभां शुक्र मूत्रेन्द्रिय और वस्तिमें शूल, सशुक्रम्  
तथा वीर्यसहित तथा शुक्रसहित, मूत्रम् मूत्रको  
मूत्रको, विबद्धम् कुरुते विभंघ करे छे रोकता है, तस्य  
तेनी उसकी, वस्तिः अस्ति वस्ति, स्तब्धः च स्तब्ध  
स्तब्ध, शूलः सेअवाणी शोफयुक्त, भृशवेदनः भूय  
वेदनायुक्त अत्यन्त वेदनायुक्त, तुघेत च तथा सेअ  
भोकाया जेवी अथवाणी थाय छे तथा सुई चुभने

४२. मूत्राशयस्थाः—मूत्राशयस्थाः (ध. फ.)

.. कुरुते विबद्धम्—कुरुते विबद्धम् (ध.)

.. तद्याहतं—तद्याहते (ध.)

.. विबद्धम्—विबद्धम् (ध.)

जैसी पीड़ावाली होती है, वृषणौ च अने अंशोभां पक्षु  
अस्ति जेवां न स्तब्धता वगेरे थाय छे और अंडोंमें भी  
बाँसके सहस्र ही स्तब्धता आदि होते हैं ॥ ४२ ॥

42-42½. If morbid humors, lodged in the urinary tract, separately or together obstruct the passage of semen, there will be pain in the phallus and bladder, and retention of urine and semen. The bladder and testes become indurated, swollen and very painful.

क्षतामिघातात् क्षतजं क्षयाद्वा  
प्रकोपितं वस्तिगतं विबद्धम् ॥४३॥  
तीव्रार्ति मूत्रेण सहाशमरीत्व-  
मायाति तस्मिन्नतिसंचिते च ।  
आध्माततां विन्दति गौरवं च  
वस्तेर्लघुत्वं च विनिःसृतेऽस्मिन् ॥४४॥  
इति मूत्रकृच्छ्रनिदानम् ।

क्षतामिघातात् क्षतशी, अमिघातशी क्षतसे, चोट  
लगनेसे, क्षयात् वा छे क्षातक्षयशी या क्षातक्षयसे,  
प्रकोपितम् प्रकुपित अथेलुं प्रकुपित, विबद्धम् अने  
विभंघ पक्षेलुं और विबद्ध हुआ, वस्तिगतम् अस्तिगत  
वस्तिमें स्थित, तीव्रार्ति तीव्र वेदना करतुं तीव्र रजा-  
युक्त, क्षतजम् रक्त रक्त मूत्रेण सह मूत्रनी साथे मूत्रके  
साथ, अशमरीत्वम् आयाति अशमरी अनी अथ छे  
अशमरीरूप बनजाता है, तस्मिन् च ते रक्तने। उस  
रक्तके, अतिसंचिते अतिशय संचित यतां अति संचित  
हो जाने पर, आध्माततां गौरवम् च विन्दति अस्ति  
हूली अथ छे तथा भारे थाय छे वस्ति फूल जाती है  
और भारी होती है, अस्मिन् विनिःसृते अने अनी  
नीकणी अता और इसके निकल जाने पर, वस्तेः  
लघुत्वम् च अस्ति हलकी अनी अथ छे वस्तिमें  
हलकापन होता है ॥ ४३-४४ ॥ इति आ यह, मूत्र-  
कृच्छ्रनिदानम् मूत्रकृच्छ्रनिदान छे मूत्रकृच्छ्रनिदान है ।

४३. क्षतामिघातात्—क्षतामिघातात् (ध.)

४४. सहाशमरीत्वमायाति—सहाशमरीत्वमायाति (ध. व. त.)

43-44. The blood, that is provoked by lesions or trauma or by emaciation, gets lodged and obstructed in the bladder and comes out with the urine causing severe pain; or, if it accumulates much in the bladder, it gets formed into a stone and causes distension and heaviness. When it is discharged, the bladder becomes light. Thus has been described the pathology of dysuria.

वातजमूत्रकृच्छ्रस्य चिकित्सा—

अभ्यञ्जनस्नेहनिःसृजवस्ति-

क्षेहोपनाहोत्तरवस्तिसेकान् ।

स्थिरादिभिर्वातहरैश्च सिद्धान्

व्याघ्रसांभ्रानिलमूत्रकृच्छ्रे ॥४५॥

जलिकमूत्रकृच्छ्रे वातजन्य मूत्रकृच्छ्रम् । वातजन्य मूत्रकृच्छ्रमे, अभ्यञ्जन-अभ्यञ्ज अभ्यञ्ज, स्नेह- स्नेहपान स्नेहपान, निःसृजवस्ति- निःसृजवस्ति निःसृजवस्ति स्नेहो- पनाह- स्नेहोपनाह उपनाह, उत्तरवस्ति- उत्तरवस्ति उत्तरवस्ति, सेकान् परिशेक परितेक, स्थिरा- दिभिः तथा स्थिरा जमेरे और लघु पंचमूलादि, व्याघ्र- हरेः च वातहर द्रव्येभ्यो वातहर द्रव्येभ्यो, सिद्धान् रसात् च सिद्धं कुरेत् । आसुरस सिद्धं क्विं मांसरस, व्याघ्र आपवा देवे ॥ ४५ ॥

45. In condition of dysuria due to vata, inunction, unctuous and evacuative enemata, unctuous poultices, urethral douche and affusion prepared with the tick-trefoil group of drugs and other vata-curative articles should be administered.

४५. स्नेहो-स्नेहो (द. व.)

॥ व्याघ्र-व्याघ्र (द.)

पुनर्नवादिमिश्रकस्नेहः—

पुनर्नवैरण्डशतावरीभिः

पत्तूरवृक्षीरबलाश्ममिद्रिः ।

द्विपञ्चमूलेन कुलत्थकोल-

यवैश्च तोयोत्कथिते कषाये ॥४६॥

तैलं वराहर्क्षवसा घृतं च

तैरेव कर्कैर्लवणैश्च साध्यम् ।

तन्मात्रयाऽऽशु प्रतिहन्ति पीने

शूलान्वितं मासतमूत्रकृच्छ्रम् ॥४७॥

पुनर्नवा- साटोडी गदहपुरना, एरण्ड- और और, शतावरीभिः शतावरी शतावरी, पत्तूर- धोपडी सिंह- याजी, वृक्षीर- धोणी साटोडी श्वेत पुनर्नवा, बला- भला बला, जश्ममिद्रिः पापामुमेद पाषाणमेद, द्विपञ्च- मूलेन दशमूला दशमूल, कुलत्थ- कुलथी कुलथी, कोल- और और, यवैः च अने जव साधे और जौ इनसे, तोयोत्कथिते पाणी नाभी ठीकालेवा जलमें बनावे, कषाये कषायभा कषायमें, तैलम् तेल तैल, वराह- वराहणी औरणी सूअरकी चर्बी, कर्क्षवसा अने रीछणी थरणी और भालकी चर्बी, घृतम् च अने घी और घृत, तैः एव ते ज डपर डहेली वस्तुओंना उन्हीं पूर्वोक्त द्रव्योंके, कर्कैः कुड्कुथी कल्कसे, लवणैः च अने लवणोंकी और नमकसे, साध्यम् सिद्धं कुरेत् । सिद्धं करे, मात्रया मात्राक्षर योग्य मात्रामें, पीतम् पीनाथी पिवा हुआ, तत् ते स्नेह वह स्नेह, शूलान्वितम् शूलयुक्त शूलयुक्त, मासतमूत्रकृच्छ्रम् वायुजन्य मूत्रकृच्छ्रे वातजन्य मूत्र- कृच्छ्रको, मात्रा जलदीथी क्षीघ्र, प्रतिहन्ति दहे छे नष्ट करता है ॥ ४६-४७ ॥

46-47. The mixed unction made of oil, the fat of hog and bear and ghee prepared in the decoction of hog weed, castor, climbing asparagus, coxcomb, white hogweed and heart-leaved sida and indian rockfoal along with decaradices, horsegram, jujube and barley, adding the paste of the same drugs and the pointed of

salts, when taken in proper dose quickly subdues painful dysuria due to vata.

एतानि चान्यानि वरौषधानि

पिष्टानि शस्तान्यपि चोपनाहे ।

स्युर्लाभस्तैलफलानि चैव

खेदाहम्लयुक्तानि सुखोष्णवन्ति ॥४८॥

पिष्टानि आडेवा पीसे हुए, एतानि आ ये, अन्यानि च अने धीमा और अन्य, वरौषधानि श्रेष्ठ औषधो श्रेष्ठ औषध, खेदाहम्लयुक्तानि तेभ्यश्च स्नेह तथा अम्ल इत्येव साधे एवं स्नेह और अम्ल इत्येक साथ, लाभतः ये भग्नी शङ्गे ते जो मिल सके वे, तैलफलानि च एव तैली भिन्ना तैलफल, सुखोष्णवन्ति नरश्रेष्ठा हेम त्वारे सुहाते हुए गरम होने पर, उपनाहे च अपि उपनाहमा उपनाहके लिए, शस्तानि अशस्त प्रशस्त, स्युः छे हैं ॥ ४८ ॥

48. These and other effective drugs, ground into powder, are recommended as poultices; as also whatever oil seeds are available be used, mixed with unctuous and acid articles and in genially warm condition.

पित्तजमूत्रकृच्छ्रविक्षिप्ताः—

सेकावगाहाः शिशिराः प्रदेहा

प्रेम्नो विधिर्वस्तिपयोविरेकाः ।

द्राक्षाविदारीधुरसैर्वृत्तैश्च

कृच्छ्रेषु पित्तप्रभवेषु कार्याः ॥४९॥

पित्तप्रभवेषु (पित्तजन्य पित्तजन्य, कृच्छ्रेषु मूत्र-कृच्छ्रेषु मूत्रकृच्छ्रेषु शिशिराः शीतल, सेकाव-गाहा परीषेक, अवगाह सेक, अवगाहन, प्रदेहा अने अरेक और प्रदेह, प्रेम्नः आत्म स्तुते आटे कडेव औषध कड़की, विधिः विधि विधि, द्राक्षा- दाक्ष मुनके

४८. पिष्टानि-सर्वाणि (स. ड. म. ध.)

४९. आर्वाः-वेला (व.)

विदारी- विदारीकड विदारी, इक्षुरसैः शेरडीने, ईख रस, घृतैः च अने धी साधे और धीमे, बन्ति- भस्ति बस्ति, पयः-दूधने प्रथम दूधका प्रयोग, विरेकाः अने विरेचन और विरेचन, कार्याः करवां छेधो करे ॥ ४९ ॥

49 Cold affusion, immersion bath and applications, the cooling summer-regimen, enemata, milk, purgation, the juice of grapes, white yam, and sugarcane, and ghee are to be given in condition of dysuria born of pitta.

शतावरीविकाथः—

शतावरीकाशकुशश्वदंष्ट्रा-

विदारिशालीधुकरोहकाणाम् ।

काथं सुशीतं मधुशर्कराभ्यां

युक्तं पिबेत् पैंत्तिकमूत्रकृच्छ्री ॥५०॥

पैंत्तिक- (पित्तजन्य पित्तजन्य, मूत्रकृच्छ्री मूत्रकृच्छ्र-वाणो मूत्रकृच्छ्रका रोगी, शतावरी- शतावरी शतावर, काश- काश काश, कुश- कुश कुश, श्वदंष्ट्रा- गोभरु गोवरु विदारी- विदारीकड विदारी, शालि- शालि शालि, इक्षु- शेरडी ईख, कुरोहकाणां अने कुरोहकाणां और कुरोह इनके, सुशीतम् सारी चो शीतल अत्यन्त शीतल, काथम् काथने काथको, मधुशर्कराभ्याम् मधु अने साकरधी मधु और चीनीसे, युक्तम् मिश्रित करी मिश्रितकर पिबेत् पीवे छेधो पीवे ॥ ५० ॥

50. Climbing asparagus, thatch grass, sacrificial grass, small catpaws, white yam, sali rice, sugarcane and rushnut—these, made into a cold decoction and mixed with honey and sugar, should be taken as potion by one suffering from dysuria of pitta type.

कतिपययोगाः—

पिबेत् कषायं कमलोत्पलानां

कुङ्कुमावलीवचना विदारी ।



दण्डैरकाणामथवाऽपि मूलं

पूर्वेण कल्पेन तथाऽम्बु जीतम् ॥५१॥

कमलोपलानाम् इमं तथा विपक्षेण कथं तथा उत्पलका, अथवा अथवा या, शूहाटकानाम् शीतानि सिवावेन, विदारीः अथवा विदारीकन्दका, कषायम् कथं काय, अथवा अथि अथवा तो या दण्डैरकाणाम् दण्डैरकाणा दण्डैरकाके, मूलम् भूगणे। कथं मूलका काय, शीतम् अथवा शीतम् या शीतम्, अथवा जल, पूर्वेण अथवा उद्वेग पूर्वोक्त, कल्पेन विधिः विधिसे, विवेक पीवा पीवे ॥५१॥

51. The decoction of lotus and blue water-lily, or of water chest nut or white yam or roots of elephant grass. prepared in the aforesaid manners, should be taken; or simple cold water may be taken.

एवास्वीजादियोगः—

एवास्वीजं त्रपुषात् कुसुम्भात्

सकुङ्कुमः स्याद्वषकश्च पेयः ।

द्राक्षारसेनाश्मरिशर्करासु

सर्वेषु कृच्छ्रेषु प्रशस्त एषः ॥५२॥

एवास्वीजम् डाडडीनां पीज ककरीके बीज, त्रपुषात् त्रपुषतुं पीज खीरेके बीज, कुसुम्भात् कुसुम्भात् पीज कुसुम्भके बीज, सकुङ्कुमः डेसर केशर, वृषकः च अने अरुणो और अहसा, द्राक्षारसेन द्राक्षना कथं साथे मुनकेके कषायके साथ, पेयः स्यात् पीवा पीने चाहिए, अश्मरिशर्करासु अश्मरी, शर्करा अश्मरी, शर्करा, सर्वेषु अने सर्व और सब प्रकारके, कृच्छ्रेषु च भूतकृच्छ्रमां मूत्रकृच्छ्रमे, एषः आ योग यह योग, प्रशस्तः प्रशस्त छे प्रशस्त है ॥५२॥

५१. दण्डैरकाणाम्—दण्डोपलानाम् (व. ड त. द. ध. फ.)  
तथाऽम्बु जीतम्—तथा सुतीतम् (व. व.)

५२. सकुङ्कुमः—सकुङ्कुमात् (फ.)

52. The seeds of phut cucumber, common cucumber and safflower mixed with saffron and vasaka, taken with grape juice, prove beneficial in condition of stone, gravel and all kinds of dysuria.

एवास्वीजं मधुकं सदाह

पैसे विवेतण्डुलघावनेन ।

दावीं तथैवाग्रलकीरसेन

समाश्लिकां पित्तकृते तु कृच्छ्रे ॥५३॥

पैसे पित्तजन्य मूत्रकृच्छ्रमां पित्तजन्य मूत्रकृच्छ्रमे, एवास्वीजम् डाडडीनां पीज ककरीके बीज, सदाह देनहार देवदार, मधुकम् अने गेडीमध और मुकडी, तण्डुलघावनेन योभाना घाल साथे इनको चावलके घोलनेसे, विवेत पीवी पीवे तथा एव ते न प्रभाषे वेसे ही, पित्तकृते पित्तजन्य पित्तजन्य, कृच्छ्रे तु मूत्रकृच्छ्रमां मूत्रकृच्छ्रमे समाश्लिकां मधुसहित मधुसुक्त दावीं दारुणहर दारुहल्लीको, आग्रलकीरसेन आभ. गाना कथं साथे पीवी आवलोंके साथसे पीवे ॥५३॥

53. The seeds of phut cucumber liquorice and deodar should be taken with rice-water, in condition of dysuria of pitta type. Similarly indian berberry should be taken with the juice of emblic myrobalan and honey in dysuria of the pitta type.

कफजमूत्रकृच्छ्रचिकित्सा—

क्षारोष्णतीक्ष्णौषधमज्जपानं

स्वेदो यवान्नं वमनं निरुद्धाः ।

तर्कं सातैकौषधसिद्धनैल-

मध्यज्जपानं कफमूत्रकृच्छ्रे ॥५४॥

कफमूत्रकृच्छ्रे कफजन्य मूत्रकृच्छ्रमां कफजन्य मूत्रकृच्छ्रमे, क्षार-क्षार क्षार, उष्ण-उष्ण उष्ण, तीक्ष्ण-तीक्ष्ण तीक्ष्ण, औषध औषध औषध, अज्जपानम्

५३. सदाह—सदावि (व.)

તથા અજપાન તથા અજપાન, સ્વેદઃ સ્વેદન સ્વેદન, યવાન્નમ્  
અવતું અજ યવાન્ન, વમનમ્ વમન વમન, નિરુહાઃ  
નિરુહરિત નિરુહરિત, તક્કમ્ અશ તક્ક, સત્તિકૌષધ-  
અને તિક્ત ઔષધિર્મી ઔર તિક્ત ઔષધિર્મી, સિદ્ધ-  
તૈલમ્ સિદ્ધ કરેલ તેલનાં સિદ્ધ તૈલકે, અમ્બઙ્ગપાનમ્  
અમ્બઙ્ગ અને પાન દિતકર છે અમ્બઙ્ગ ઔર પાન  
હિતકર હૈ ॥ ૫૪ ॥

54. Alkali, hot and acute drugs,  
eats and drinks, sudation, barley-  
diet, emesis and evacuative enemata,  
potion of butter milk, inunction and  
potion of oil medicated with bitter  
drugs—these are beneficial in dysuria  
of the kapha type.

ઓષધિર્ચૂર્ણમ્—

વ્યોષં શ્વંદ્રાત્તુટિસારનાસ્થિ  
કોલપ્રમાણં મધુમૂત્રયુક્તમ્ ।

પિબેત્ ત્વટિ ક્ષૌદ્રયુતાં કદંબ્યા  
રસેન કેઢર્બરસેન વાપિ ॥૫૫॥

કોલપ્રમાણમ્ અર્ધાં તેલા જેટલાં આવે તાલે  
પ્રમાણમેં, વ્યોષમ્ ત્રિકટુ ત્રિકટુ, શ્વંદ્રા ઝોખડુ ગેલક,  
ત્વટિ- નાની એલચી છોટી ફલાયચી, સારસાસ્થિ અને  
સારથ પક્ષીનું હાડકું એઓના ચૂર્ણને ઔર સારથ  
પક્ષીની હડી અનેકે ચૂર્ણકો, મધુમૂત્રયુક્તમ્ મધ અને મૂત્ર  
સાથે મધુ ઔર મૂત્રકે સાથ, પિબેત્ પીવું પીવે, ક્ષૌદ્ર-  
યુતામ્ અથવા મધયુક્ત અથવા મધયુક્ત, ત્વટિ નાની  
એલચીનું ચૂર્ણ છોટી ફલાયચીના ચૂર્ણ, કદંબ્યાઃ કેળના  
કેલકે, રસેન રસ સાથે રસે, કેઢર્બરસેન વા અપિ  
અથવા મીઠા લીમડાના રસ સાથે પીવું યા મીઠે  
નિમ્બકે રસકે સાથ પીવે ॥ ૫૫ ॥

55. In the condition of dysuria of  
kapha type, the three spices, small  
caltrop, cardamom and the bones of

sarasa bird each taken 1/2 tola and  
mixed with honey and cow's urine  
may be taken or cardamom mixed with  
honey and the juice of plaintain or  
curry neem may be taken.

ત્રક્રેણ યુક્તં ક્રિતિવારકસ્ય

વીજં પિબેત્ કૃચ્છ્રવિનાશહેતોઃ ।

પિબેત્તથા તણ્ડુલધાવનેન

પ્રવાલચૂર્ણ કફમૂત્રકૃચ્છ્રે ॥૫૬॥

કૃચ્છ્ર- વિનાશ- હેતોઃ મૂત્રકૃચ્છ્રના વિનાશ માટે  
મૂત્રકૃચ્છ્રકે નાશકે લિપ્ત, ત્રક્રેણ યુક્તમ્ અશ સાથે તક્રે  
યુક્ત, ક્રિતિવારકસ્ય લેખીનાં સિંદિયાલીકે, વીજમ્ પીજ  
વીજ, પિબેત્ પીવું પીવે, તથા તથા તથા, કફમૂત્ર-  
કૃચ્છ્રે કફમૂત્ર મૂત્રકૃચ્છ્રનાં કફમૂત્ર મૂત્રકૃચ્છ્રમેં, પ્રવાલ-  
ચૂર્ણમ્ પ્રવાલચૂર્ણ પ્રવાલના ચૂર્ણ, તણ્ડુલ-ધાવનેન  
ચેખાના ધોણ સાથે ચાવલકે ધોવનકે સાથ, પિબેત્  
પીવું પીવે ॥ ૫૬ ॥

56. Or, the seeds of coxcomb mixed  
with butter-milk should be taken as  
potion for the cure of dysuria. Simi-  
larly, one should drink the powder of  
coral mixed with rice-water, in dysuria  
of the kapha type.

સત્ત્વદારિયવાગુઃ કાથઃ વા—

સત્ત્વદારિયવાગુકેલુકૈલા-

ધર્વં કરલં કુટ્જં ગુહ્મીમ્ ।

પક્ષવા જલે તેન પિબેચવાગું

સિદ્ધં કપાયં મધુસંયુતં વા ॥૫૭॥

સત્ત્વદ- સાતપણ સતિવન, દારિયવ- અગાળો  
અમલતાસ, કેલુક- કેલુક કેલુક, પલા- નાની એલચી છોટી  
ફલાયચી, ધર્વ ધાવડો ધવ, કરલમ્ કરલ ઠીઠાદરી,  
કુટ્જમ્ કુટ્ કોરેયાકી છાલ, ગુહ્મીમ્ અને ગળેને  
ઔર પિલોય અનેકો, જલે નક્ષત્રાં જલમેં પક્ષવા પક્ષ-  
વીને પક્ષકર. તેન તેથી સિદ્ધ કરેલી અનેકે સિદ્ધ,

૫૬. કૃચ્છ્રવિનાશહેતોઃ—કૃચ્છ્રવિનાશહેતોઃ (૫, ૬.)

૫૫. ત્વટિસારસાસ્થિ—ક્રિમિસારસાસ્થિ (૬.)

.. .. ક્રિમિસારસાસ્થિ (૫.)

यवागूश्च यवाभू यवागू, पिबेत् पीवी पीवे, मधुमंयुतम्  
अथवा मधु साधे अथवा मधुयुक्त, सिद्धम् सिद्धं कुरेत्  
सिद्धं, कषायम् वा कषाय कषायको, पिबेत् पीवे  
पीवे ॥ ५७ ॥

57. Dita bark, purging cassia, Kebuka, cardamom, crane-tree, indian beech, kurchi seeds and guduch are to be decocted in water and a gruel prepared in it and taken or the decoction may be taken mixed with honey.

संक्षिप्तचिकित्सासूत्रकृच्छ्रचिकित्सा—

सर्वे त्रिदोषप्रभवे तु वायोः

स्थानानुपूर्व्या प्रसमीक्ष्य कार्यम् ।

त्रिभ्योऽधिके प्राग्बमनं कफे स्यात्

पित्ते विरेकः पवने तु वस्तिः ॥ ५८ ॥

इति सूत्रकृच्छ्रचिकित्सा ।

त्रिदोषप्रभवे तु त्रिदोषस्थी उत्पन्नयथेष्टं सूत्रकृच्छ्रम् ।  
त्रिदोषोत्पन्न सूत्रकृच्छ्रं वायोः वायुना वायुके, स्थानानु-  
पूर्व्या स्थानानुक्रमेण अनुसारं स्थानके अनुक्रमसे, प्रसमीक्ष्य  
अत्रात्र ओष्ठने अच्छी प्रकार देखकर, सर्वम् कार्यम्  
संभोगी चिकित्सा करवी ओष्ठने सब चिकित्सा करे,  
त्रिभ्यः त्रयेभ्यो तीनोंमें, कफे अधिके कफ अधिक होता  
कफ अधिक होने पर, प्राक् पहले प्राग् प्रथम, वमनम् स्वात्  
वमन करवानुं वमन करावे, पित्ते पित्त अधिक होता  
पित्त अधिक होने पर, विरेकः प्रथम विरेचन देवुं प्रथम  
विरेचन देवे, पवने तु आने वायु अधिक होता और  
वायु अधिक होने पर, वस्तिः प्रथम अत्रित देवी प्रथम  
वस्ति देवे ॥ ५८ ॥ इति आ यद्, सूत्रकृच्छ्रचिकित्सा  
सूत्रकृच्छ्रचिकित्सा ॥ सूत्रकृच्छ्रचिकित्सा है ।

58. In conditions of tridiscordance where all three humors are equally provoked, the treatment of vata should be undertaken first. If the kapha is the predominant humor, emesis should be undertaken first, and if pitta,

purgation; and if the vata is predominant, enema should be administered. Thus has been described the therapeutics of dysuria.

अश्मरीसूत्रकृच्छ्रचिकित्सा—

क्रिया हिता खाऽश्मरीशर्कराभ्यां

कृच्छ्रे यथैवेह कफानिलाभ्याम् ।

कार्याऽश्मरीमेदनपातनाय

विशेषयुक्तं शृणु कर्म सिद्धम् ॥ ५९ ॥

यथा एव ७ प्रभाषे जिस प्रकार, कफानिलाभ्याम्  
उह आने वायुभी भयेह कफानिला और वातजन्य,  
इह कृच्छ्रे आ सूत्रकृच्छ्रम् चिकित्सा छे ते प्रभाषे इस  
सूत्रकृच्छ्रं चिकित्सा है उस प्रकार, अश्मरीशर्कराभ्याम्  
अश्मरी आने शर्कराभी यथैह सूत्रकृच्छ्रम् अश्मरी  
और शर्करासे उत्पन्न सूत्रकृच्छ्रं, सा ते वह, हिता हितकर  
हितकर, क्रिया चिकित्सा चिकित्सा, कार्या करवी  
ओष्ठने करनी चाहिए अश्मरीमेदन-अश्मरीने तोड़ना  
अश्मरीको तोड़ने, पातनाय डे डेही नाभवा या निकाल-  
नेके लिए, विशेषयुक्तम् विशेष चिकित्साभी युक्त विशेष  
चिकित्सासे युक्त, सिद्धम् सिद्धं सिद्ध, कर्म चिकित्सा  
चिकित्साको, शृणु संभोगी सुनो ॥ ५९ ॥

59. In the condition of stone or gravel in the urinary tract, the treatment indicated in the condition of dysuria due to kapha and vata is beneficial. Hear now the successful method of treatment for the dissolution and expulsion of the stone in the urinary tract.

पाषाणमेदादि घूर्ण घूर्त वा—

पाषाणमेदं कृष्कं श्वेदं घृ-  
पाठाभयाभ्यां शिष्टीनि कुम्भाः ।

हिवाक्षराभ्यां शिष्टीनि कुम्भाः ।

मेवाक्षराणां त्रिषुष्य बीजम् ॥ ६० ॥

उत्कुञ्चिका हिक्कु सवेतसाम्लं

स्याद् द्वे घृह्यौ हपुषा वचा च ।

चूर्णं पिबेदश्मरिभेदपक्व

सर्पिश्च गोमूत्रचतुर्गुणं नैः ॥६१॥

पाषाणभेदम् पाषाणभेद पाषाणभेद, वृषकम् वृषक वासा, खट्वं- गोभृश गोखर, पाठा- काष्ठी पाठ पदी, चरक- हरे हरद, श्योष- त्रिभु त्रिभु, कटी- कृष्णकटि, क्वर, निकुम्भा- निकुम्भ निकुम्भ, हिस्सा-श्री केरी गल्ली, पीण- कटेरी के बीज, खराशा- अश्वत्था अजराशन, गिरि- वारकाणाश्च क्षीपरीनां पीण- सिरियालीके बीज, पुर्वा- हकाणाम् काष्ठिनीनां पीण- ककड़ी के बीज कपुडम् तथा त्रिपुण्ड्रं खीरेके, बीजम् पीण- बीज, उरकुञ्जिका काष्ठी श्री काला जीरा, खवेतसाम्लश्च अश्वत्थेतस्य अश्वत्थेतस्य, हिङ्गु हिङ्गु हींग, द्वे वृद्धयौ अने केरी गल्लीओ कटेरी, बनभाटा, हनुषा हाडिमेर हाडिमेर, वचा च अने वन और वच स्यात् क्षीरा लेवे, चूर्णम् अने चूर्णने इनके चूर्णने, पिबेत् पीवुं पीवे, तैः तैः अने साथे इनके साथ, गोमूत्र- चतुर्गुणं चारगुणा गोमूत्रमां चतुर्गुणे गोमूत्रमे अश्मरि- भेदपक्व अश्मरि भेदपक्व माटे पकावेसुं अश्मरीको तोड़नेके लिए पकाया हुआ, सर्पिः च धी पीवुं धी पीवे ॥६०-६१॥

“61. Indian rock-foil, vasaka, small caltrops, patha, chebulic myrobalan, the three spices, long zedoary, red physic nut, yellow-berried nightshade, celery, coxcomb, seeds of phut cucumber and common cucumber, black cumin seed, asafetida, common sorrel, yellow-berried nightshade, indian nightshade, common juniper and sweet flag—the powder of these or the ghee prepared of the above drugs and four times the quantity of cow's urine, should be taken for dissolving the calculus.

अन्ये योगाः—

मूलं श्वदंष्ट्रेश्वरकोरुबूकात्

क्षीरेण पिष्टं बृहतीद्वयाच्च ।

आलोड्य दध्ना मधुरेण पेयं

दिनानि सप्ताश्वरिभेदनाय ॥६२॥

श्वदंष्ट्रा- गोभृश गोखर, इक्षुरक- ओषधे ताश्मखाना, उरुबूकात् ओरुडो एरंड, बृहतीद्वयात् च अने अने केरी गल्लीनां और दोनों (छेदी और बड़ी) कटेरीको, मूलं मूला जड़, क्षीरेण क्षीरानी साथे इसके साथ, पिष्टम् पीसी पीकर, मधुरेण दध्ना मधुर दहीनी साथे मीठी दहीने, आलोड्य क्षीरानि चोलकर, अश्मरि- भेदनाय अश्मरी तोड़ना माटे अश्मरी तोड़नेके लिए, सप्त सात सात, दिनानि दिवस सुधी दिवसक, पेयम् पीवां पीवे ॥ ६२ ॥

62. The roots of small caltrops, long leaved barleria and red flowered castor, yellow berried nightshade and indian nightshade pasted with milk and mixed with sweet curds and taken for seven days dissolve calculus.

पुनर्नवायोरजनीश्वदंष्ट्रा-

फलगुप्फालाश्च सदर्मपुष्पाः ।

क्षीराम्बुमधेश्वरसैः सुपिष्टं

पेयं भवेदश्मरिशर्करासु ॥६३॥

सदर्मपुष्पाः दर्भनां इल दामके पुष्प, पुनर्नवा- साटेही पुनर्नवा, अयः- वेदयूष्म ओदचूर्ण, रजनी- हगदर हल्ली, श्वदंष्ट्रा- गोभृश गोखर, फलगु- इष्टु गूजर, प्रवालाः अने प्रवालचूर्णने और प्रवालचूर्णको, क्षीर- क्षीर दूध अम्बु- जल जल, मध- मध मध, इक्षु- रस अने शेरडीना रस साथे और इसके रसके साथ, सुपिष्टम् पीसीने पीकर, अश्मरि- अश्मरी अश्मरी, शर्करासु तथा शर्कराभां तथा शर्करावे, पेयम् भवेत् पीवां पीवे पीना चाहिए ॥ ६३ ॥

६३. पुनर्नवायोरजनी—पुनर्नवायो रजनी (फ.)

, सुपिष्टं पेयं भवेदश्मरिशर्करासु प्रयेयाः कच्छेषु मृदाश्मरि- शर्करासु (फ.)

६१. अश्मरिभेदपक्व—अश्मरिभेदि पक्व(व.)

—अश्मरिभिदिपक्व (क.)

६२. बृहतीद्वयाच्च—बृहतीद्वयं च (ब.)

63. Hog's weed, iron, turmeric, small caltrops, common fig, coral and blossoms of sacrificial grass are to be well pasted with milk, water, wine and sugar-cane juice and taken as potion in condition of stone or gravel in the urinary tract.

ब्रुव्यादिचूर्णम्—

हुटि सुराहं लवणानि पञ्च

यवाप्रजं कुन्दुरुकाश्ममेदौ ।

कस्त्रिल्लकं गोक्षुरकस्य बीज-

मेवांस्वीजं त्रपुषस्य बीजम् ॥६४॥

चूर्णीकृतं चित्रकहिङ्गमांसी-

यवानितुल्यं त्रिकलाद्विभागम् ।

अम्लैरशुकै रत्नमद्ययुजैः

पेयं हि गुल्माश्मरिमेदनार्थम् ॥६५॥

हुटिम् नान्दी ऐक्षथी छोटी इलायची, सुराहम् देवदार देवदार, पञ्च पायैय पांचों, लवणानि श्वेतु नमक, यवाप्रजम् यवप्रज यवप्रज, कुन्दुरुक- ३-६३३ कुन्दुरु, अश्ममेदौ पाषाणमेद पाषाणमेद, कस्त्रिल्लकम् ३ पीछा कमीडा, गोक्षुरकस्य गोक्षुरना गोखरके, बीजम् पीज बीज, एवांस्वीजम् ३३३३ पीज कस्त्रिक बीज, त्रपुषस्य अने त्रपुषना और खीरेके, बीजम् पीज बीज, चित्रक- चित्रक चित्रक, हिङ्ग- हिङ्ग हींग, मांसी- मांसी- मांसी जटामांसी, यवानि- यवानि अजमोदा, तुल्यम् ऐक्षथी अक्षथी भागनु इनके समान मात्रा, त्रिकला- द्विभागम् अने त्रिकला अने त्रिकला और त्रिकलाके दो भागका, चूर्णीकृतम् चूर्ण करीने चूर्ण लेकर, अशुकैः शुकैः सिवायना शुकको छोड़कर, अम्लैः अम्ल अम्ल, रत्नमद्ययुजैः अम्लरस, अम्ल अथवा मधु साथे मॉलस,

६४. हुटि सुराहं एका शताह्वा (८)

एवांस्वीजं त्रपुषस्य बीजम्—एवांस्वीजम् त्रपुषां व बीजम् (२)

सुराहं—शताह्वा (४ क)

६५. यवानितुल्यं—यवानितुल्यं (४)

अशुकैः—अशुकैः (४)

मय अथवा यूपके साथ. गुल्म- गुल्म गुल्म, अश्मरिमेदन- अश्मरिमेदन अश्मरी तोड़ना साटे और अश्मरी तोड़नेके लिए, पेयम् हि पीवु ओछे ओ पीवे ॥६४-६५॥

64-65 Cardamom, deodar, the five salts, barley alkali, oilbanum, indian rockfoil kamala, seeds of small caltrops, phut cucumber and of common cucumber—these in equal quantities, are to be powdered along with white flowered leadwort, asafetida, nargus and bishop's weed taken in similar quantity, and twice the quantity of the three myrobalaas. This powder should be taken mixed with any sour article excepting vinegar, or with meat-juice or wine or gruel, for the cure of gulma and for dissolving calculus.

अन्ये योगाः—

विष्वप्रमाणो घृततैलभृशो

यूषः कृतः शिमुकमूलकस्कात् ।

जीतोऽश्ममिच्छायाश्चिमण्डयुक्तः

पेयः प्रकामं लवणेन युक्तः ॥६६॥

शिमुकमूलकस्कात् अश्ममूल भूजना ३३३३ राउजनकी जड़के कलकके, विष्वप्रमाणः ४ तोला ६६ ४ तोले लेकर, घृततैलभृशः घी अने तेलमा भू ७ वी और तेलसे छोक करके, कृतः यूषः अथवा आवेवे मधु किया हुआ यूष, जीतः शीतल अर्था ठंडा होने पर, अश्ममिच्छायाश्चिमण्डयुक्तः शीतले मधु मधुवी बहीके पानीसे युक्त करके, प्रकामं ओछे ओ तैलवा इच्छामुसार, लवणेन युक्तः श्वेतुसहित नमकके साथ, पेयः पीवे पीना चाहिए, अश्ममिच्छायाश्चिमण्डयुक्तः ओ अश्मरी तोड़ना के वह अश्मरी तोड़ देता है ॥६६॥

६६. यूषः कृतः शिमुकमूलकस्कात्—शिमुक मूलके घृततैल-

अम्लम् (४)

66. Four tolas of the roots of drumstick tree crushed and made into a soup and seasoned with ghee and oil taken after it is cooled and mixed with curds and salt, dissolves calculus.

जलेन शोभाञ्जनमूलककः

शीतो हितश्चाश्मरिशर्करासु ।

सितोपला वा समयावशका

कृच्छ्रेषु सर्वेष्वपि मेषजं स्यात् ॥६७॥

शीतः शीतल, शोभाञ्जनमूलक- अश्मभाना  
भूषणे। सहजानके मूलका, ककः च ६६३ कक, जलेन पाण्डू  
भावे पानीके साथ, अश्मरि- शर्करासु अश्मरी अने  
शर्कराभा अश्मरी और शर्करामें, हितः हितकर छे हितकर  
है, समयावशका अथवा समप्रमाणमें अवधारणी युक्त  
अथवा समप्रमाणमें यवधारसे युक्त, सितोपला वा सांडर  
चीनी, सर्वेषु सर्वे सभी, कृच्छ्रेषु अपि भूत्रकृच्छ्रमा मूत्र-  
कृच्छ्रमें, मेषजम् औषधम् औषधरूप, स्यात् छे है ॥६७॥

67. The roots of drumstick tree, made into paste with cold water and taken, acts beneficially in condition of stone and gravel in the urinary tract. White sugar candy and barley alkali mixed in equal parts, is a remedy for all varieties of dysuria.

पीत्वाऽथ मयं निगदं रयेन

इयेन वा शीघ्रजवेन वाचात् ।

तैः शर्करा प्रच्यवतेऽश्मरी तु

शाम्येच्च चैच्छवविदुदरेणाम् ॥६८॥

निगदम् निर्भण निर्मल, मयम् मूत्र मय, पीत्वा  
पीने पीकर, शीघ्रजवेन शीघ्रवेगवाणा तेज वाकके,

६७. अश्मरिशर्करासु-अश्मरिशर्करासु (६.)

६८. पीत्वाऽथ-पीत्वा च (६.)

१. मय-मूत्र (६)

रयेन रथभां रथसे, इयेन वा छे वे। ५२ येसीने  
वा घोड़े पर बैठकर, वाचात् भूषुं भेष्ये चके, तैः  
शर्करा तेनाभी शर्करा उससे शर्करा, प्रच्यवते पीडणी  
अथ छे निकलती है, अश्मरी तु पक्षु अश्मरी और  
अश्मरी, न शाम्येत् चेत् शांत न थाय तो शांत न  
हो तो, चैच्छवित् शस्थ अक्षुनार वेवे शल्यतन्त्र  
आजनेवाला वैद्य ताम् तेने उसको, उदरेत् पक्षार  
छादी नाभवी निकाल लेवे ॥ ६८ ॥

68. Having quaffed wholesome wine, the patient should ride a chariot or a horse at great speed. Then the calculus or gravel slips down and is expelled. Otherwise the surgeon should remove it by operative measure.

रेतोभिषातजमूत्रकृच्छ्रविक्रिया—

रेतोभिषातप्रभवे तु कृच्छ्रे

समीक्ष्य दोषं प्रतिकर्म कुर्यात् ।

कार्पासमूलं वृषकाश्ममेदौ

बला स्थिरादीनि गवेधुकां च ॥६९॥

वृश्चीर पेन्द्री च पुनर्नवा च

शतावरी मध्वसनाक्षयपथ्यौ ।

तत्काथसिद्धः पवने रसः स्यात्

पित्तेऽधिके क्षीरमथापि खरिः ॥७०॥

क्रफे च यूषादिकमजपानं

संस्वर्गजे सर्वहितः क्रमः स्यात् ।

रेतोभिषात- पीडना विषातभी शुक्रको रोक्नेसे,  
प्रभवे उत्पन्न शरीर उत्पन्न, कृच्छ्रे तु भूत्रकृच्छ्रमा मूत्र-  
कृच्छ्रमें, दोष दोष दोषका, समीक्ष्य भेष्ये विचार करके,

६९. रेतोभिषात-रेतोभिषात (६.)

१. वृषकाश्ममेदौ-वृषकाश्ममेदौ (६.)

७०. शतावरी... रसः स्यात्-शतावरी मध्वसनाक्षयपथ्यौ ।

तत्काथसिद्धः पवने नश्यति (६.)

२. मध्वसनाक्षयपथ्यौ-मध्वसनाक्षयपथ्यौ (६.)

३. मध्वसनाक्षयपथ्यौ (६. त.)

७०. क्रमः स्यात्-क्रमः (६.)

प्रतिकर्म कुर्यात् चिकित्सा करे कार्या-  
समूलम् कपासं भृश कपासकी जड़, वृषक- अरुद्रसे  
अङ्गुली, अङ्गुली पाषाणमेद, बला  
अङ्गुली, अङ्गुली स्थिरादीनि स्थिरादि पञ्चभृश लघु पञ्चमूल,  
गवेधुका च गवेधुका गवेधुका, वृश्चोरः धौली साठोरी  
श्वेत पुनर्नवा, ऐन्द्री च ऐन्द्री ऐन्द्री, पुनर्नवा च  
साठोरी पुनर्नवा, शतावरी शतावरी शतावरी मधु-  
अङ्गुली गिलोय, असनाख्यपण्यौ अने असनपण्यौ और  
असनपण्यौ, तत्कायसिद्धः तेजोना कपासकी सिद्ध करे  
उनके कायसे सिद्ध, रसः भस्मिन् मांसरस, पवने स्वात  
वात प्रधान शुक्ल मूत्रकृच्छ्रमा देवे वात प्रधान शुक्ल  
मूत्रकृच्छ्रमे देवे, पित्ते अधिक शुक्ल मूत्रकृच्छ्रमा पित्तनी  
अधिकता होय तो शुक्ल मूत्रकृच्छ्रमे पित्तनी अधिकता  
हो तो, क्षीरस अथ अपि सर्पिः उक्त कपासकी सिद्ध दूध  
अथवा घी हेतु उक्त कायसे सिद्ध दूध अथवा घी देवे, कफे  
च अने शुक्ल मूत्रकृच्छ्रमा कफनी अधिकता होय तो  
और शुक्ल मूत्रकृच्छ्रमे कफनी अधिकता हो तो, यूषादिकम्  
उक्त कपासकी सिद्ध यूषादिके उक्त कायसे सिद्ध यूषादि,  
अन्नपानम् अन्नपान देवा अन्नपान देवे, संसर्गजे तत्रे  
होयथी भयेका शुक्ल मूत्रकृच्छ्रमा तीनों दोषोंसे उत्पन्न  
शुक्ल मूत्रकृच्छ्रमे सर्वहितः सर्व दोषमा हितकर सब  
दोषोंमें हितकर, क्रम स्वात उपचार करेवे अङ्गुली  
चिकित्साकर्म करे ॥ ६९-७० ॥

69-70. In dysuria born of the  
seminal obstruction the treatment  
should be carried out after proper  
investigation of the condition. Take  
the roots of cotton plant vasaka,  
indian rock foil, heart leaved sida,  
ticktrefoil group of drugs and job's  
tears, white hogweed, Aindri hog's  
weed, climbing asparagus, guduch,  
mussel-shell creeper and prepare a  
decoction. The meat-juice prepared  
with this decoction is beneficial in  
calculus of the vata type. In condition  
of the predominance of pitta, milk or

ghee medicated with the aforesaid  
decoction is beneficial; and in the pre-  
dominance of kapha, gruels and foods  
medicated with this decoction are  
beneficial; in condition of tridiscor-  
dance, there should be a combination  
of all the remedies.

एवं न चेच्छाम्यति तस्य शुद्धयात्  
सुरां पुराणां मधुकासवं वा ॥७१॥  
विहङ्गमांसानि च बृंहणाय  
वस्तीश्च शुकाशयशोधनार्थम् ।  
शुद्धस्य तृप्तस्य च वृष्ययोगैः  
प्रियानुकूलाः प्रमदा विधेयाः ॥७२॥

एवम् ऐ प्रमाणे इस प्रकार, न शाम्यति चेत् ऐ  
शान्त न थाय तो यह शान्त न हो तो, तस्य तेने उसको,  
पुराणां मधुकासवं या मधुकासवं या मधुकासवं या मधुकासवं  
वा अथवा मधुकासवं या मधुकासवं या मधुकासवं या मधुकासवं  
देवे प्रयोग करे, बृंहणाय च अने बृंहणाय च अने बृंहणाय  
बृंहणके लिए, विहङ्गमांसानि पक्षी अने भस्म पक्षियोंके  
मांस, शुकाशय- तेमन् वीर्याशयना एवं शुकाशयके,  
शोधनार्थम् च शोधन भाटे शोधनके लिए, वस्तीश्च  
वस्तीश्च वस्तीश्च वस्तीश्च वस्तीश्च वस्तीश्च वस्तीश्च वस्तीश्च  
और शुद्ध होनेपर, वृष्ययोगैः वृष्य योगैः वृष्य योगैः वृष्य योगैः  
तृप्तस्य च तृप्त यथेका पुरुषे सन्तर्पित वह पुरुष,  
प्रियानुकूलाः प्रिय अने अनुकूल प्रिय और अनुकूल,  
प्रमदाः प्रमदा अने तृप्त क्रियाओं, विधेयाः सेवन  
करवुं अङ्गुली सेवन करे ॥ ७१-७२ ॥

71-72. If the patient is not relieved  
by these methods, he must be given  
a potion of old sura wine or madhu  
wine. He must be given the flesh of  
birds for roboration and urethral  
douche for purifying the seminal tract.  
When the seminal tract is cleansed  
and the patient has been implected



by virilific medications, he should be prescribed the society of loveable and affable young women.

रक्तमूत्रकृच्छ्रचिकित्सा—

रक्तोद्भवे तूपलनालताल-

काशेषुवालेक्षुकशेरुकाणि ।

पिवेत् सिताक्षौद्रयुतानि खादे-

दिक्षु विदारी त्रपुषाणि चैव ॥७३॥

रक्तोद्भवे तु रक्तजन्य मूत्रकृच्छ्रमां रक्तजन्य मूत्र-  
कृच्छ्रमे, उत्पलनाल- उत्पलनाली नाम कमलनाल, ताल-  
ताल, काल- काल काय, इक्षुवाला- धनुआला  
इक्षुवाला, इक्षु- शेरडी ईख, कशेरुकाणि अथ शेरुके  
और कशेरुका, सिता- साफ़ चीनी, क्षौद्र- तथा मधु  
तथा मधुके, युतानि साथे साथ, पिवेत् पीनां पीवे,  
इक्षुम शेरडी यूसवी ईख चूसे, विदारीम् अने विदारी-  
डंड और विदारी, त्रपुषाणि च तथा त्रपुष और खीरेको,  
खादेत् आनां खावे ॥ ७३ ॥

73. In dysuria born of vitiation of blood, the stalks of blue water-lily, the tender blossom of palmyra, thatch grass, sugarcane, tender sugarcane and rushnut should be taken as potion with sugar and honey. Or, sugarcane, white yam and common cucumber may also be taken.

श्वदंष्ट्रास्त्रसेन—

घृतं श्वदंष्ट्रास्त्रसेन सिद्धं

क्षीरेण चैवाष्टगुणेन वेद्यम् ।

स्थिरादिकानां कतकादिकानां-

मेकैकशो वा विधिनैव तेन ॥७४॥

७३. उत्पलनालताल-उत्पलनालताम्र (ब.)

१. कशेरुकाणि-कशेरुकाणि (फ.)

७४. स्थिरादिकानां कतकादिकानाम्-स्थिरादिकालक्षणादि-  
कानाम् (ब. क.)

श्वदंष्ट्रास्त्रसेन गोभरुना स्वरस साथे गोखरुके  
स्वरसे, अष्टगुणेन आष्टगुणा अठगुने, क्षीरेण च एव  
दूधथी दूधसे, सिद्धम् सिद्ध करेहुं सिद्ध किया हुआ,  
घृतम् पेयम् घी पीवुं वी पीवे, स्थिरादिकानाम् अथवा  
स्थिरादिकानां अथवा लघुपंचमूल, कतकादिकानाम्  
अथवा कतकादिकानां और कतकादिसे, एकैकशः ओंश  
ओंश औषधियों एक एक औषधिसे. तेन एव विधिना  
पहेंवा डहेली विधिनीय सिद्ध करेहुं वी पीवुं पूर्वोक्त  
विधिसे ही सिद्ध किया हुआ वी पीवे ॥ ७४ ॥

74. The potion of medicated ghee prepared with the expressed juice of small caltrops and eight times its quantity of milk should be taken or the ghee prepared with the juice of the radices of the tictrefoil group and the drugs of the fragrant poon group, either together or separately, should be taken in similar manner.

क्षीरेण वस्तिर्मधुरौषधेः स्या-

सैलेन वा स्वादुफलोत्थितेन ।

यन्मूत्रकृच्छ्रे विहितं तु पैसे

कार्यं तु तच्छोणितमूत्रकृच्छ्रे ॥७५॥

मधुरौषधेः मधुर औषधियों सिद्ध मधुर औषधोंसे  
सिद्ध, क्षीरेण दूधथी दूधसे, स्वादुफलोत्थितेन अथवा  
मधुर इषोथी डाढेला या मधुर फलोंसे निकाले, तैलेन  
वा तैलथी तैलसे, वस्तिः अस्ति वस्ति, स्वादु देवी  
मेधो देवे, पैसे पित्तजन्य पित्तजन्य, मूत्रकृच्छ्रे  
मूत्रकृच्छ्रमां मूत्रकृच्छ्रमे, यत् तु ने जो, विहितम् उक्तुं  
उं कहा गया है, एव तु ते वस्ति, शोणितमूत्रकृच्छ्रे  
रक्तजन्य मूत्रकृच्छ्रमां रक्तजन्य मूत्रकृच्छ्रमे, कार्यम्  
करवुं मेधो देवे करना चाहिए ॥ ७५ ॥

75. The patient should be given urethral douche of milk medicated with the drugs of the sweet group, or with oil medicated with mahwa, walnut and other fruits of the sweet

group. Whatever treatment is recommended in dysuria of the pitta type is to be administered also in conditions of dysuria caused by vitiated blood.

मृत्तुकृच्छ्रेऽपथ्यानि—

व्यायानाधारणशुष्कक्ष-  
पिष्टाश्वानार्ककरव्यायान् ।

खर्जूरशालूककपित्थजम्बू-  
बिसं कषायं न रसं भजेत् ॥७६॥

इत्यश्मरीचिकित्सा ।

व्यायाम- व्यायाम व्यायाम. संधारण- वेगो रोहना  
वेगवेधारण, शुष्क- सूखा पदार्थो शुष्क द्रव्य, रुक्ष- रूक्ष  
पदार्थो रुक्ष द्रव्य, पिष्टाश्न- पिष्टाश्न लोभन पीडीके  
पदार्थका भोजन, वात- पवनना अपाटा वायुके झोंके,  
सर्केकर- सुर्धना डिरणु सूर्यकी धूप व्यवायान् मैथुन  
मैथुन, खजूर- पनूर खजूर, जालुक- डभण्डक कमल-  
कन्द, कपित्थ- डेह कैथ, जम्बू- अंशु जामून,  
बिलम् डभण्डक बिल, कषायम् रसम् अने कषाय  
रस ओओनुं और कसैला रस इनका, न भजेत सेवन  
करवुं न ओधीओ सेवन नहीं करना चाहिए ॥ ७६ ॥  
इति आ यह, अश्मरीचिकित्सा अश्मरीचिकित्सा ओ  
अश्मरीचिकित्सा है ।

76. Exercise, suppression of natural urges dried and un-unctuous articles, pastry, exposure to wind and sun sex-act, dates, lotus-rhizomes, wood apple, jambul, lotus stalk and articles of astringent taste are to be avoided by the patient. Thus has been described the treatment of calculus.

୭୬. ରୁକ୍ଷ-ଭକ୍ଷ (୪, ୮)

॥ शुष्करूक्ष-शुष्कमक्ष्य (ड.)

॥ न रसं भजेत-च रसं भजेत् (७.)

### हृदोगस्य निदानसंप्राप्तिलक्षणानि—

व्यायामतीक्ष्णातिविरेकवस्ति-

चिन्ताभयत्रासगदातिचाराः ।

सुधर्मसंधारणकर्शनानि

हृद्रोगकर्तृणि तथाऽभिघातः ॥७७॥

वैवर्ण्यमूच्छाज्वरकासहिका-

श्वान्नास्यैरस्यतृणमोहाः ।

छर्दिः कफोत्क्षेशरुजोऽरुचिश्च

हृद्रोगजाः सप्तविंशतिभ्योऽन्ये ॥७८॥

### हृच्छून्यभावद्रवशोषमेद-

स्तम्भाः समोहाः पञ्चाद्विनेषः ।

पित्तात्तमोदूयनशहमोहाः

संग्रासतापञ्चरपीतभावाः ॥७९॥

स्तब्धं गुरु स्यात् स्तिमितं च मर्म

कफात् प्रसेकज्वरकासतन्द्राः ।

विद्यात् त्रिदोषं त्वयि सर्वलिङ्गं

तीव्रार्तितोदं कृमिजं सकण्डूम ॥८०॥

व्यायाम- व्यायाम व्यायाम, तीक्ष्ण तीक्ष्ण  
तीक्ष्ण, अतिविरेक- डे अतिप्रमासुर्मा विरेचन या  
अति विरेचन, वस्ति- अस्ति वस्ति, चिन्ता- चिन्ता  
चिन्ता, भय- भय भय, त्रास- त्रास त्रास, गदातिचाराः  
शोभा- अथोऽथ उपचार रोगोके अयोग्य उपचार,  
छर्दि- छर्दि वमन, आम- आमोष आमोष, संधारण-  
वेगधारण वेगविचारण, कर्षणानि कर्षण कर्षण, तथा  
तथा तथा, अभिधातः अभिधात चोट, हृद्दोगकर्तृणि  
ओ हृद्दोग करनारां ओ ये हृदयरोग करनेवाले हैं, वैवर्ण्य-  
विवर्ण्यता विवर्ण्यता, मूर्च्छा- मूर्च्छा मूर्च्छा, ज्वर- ज्वर  
ज्वर, कास- कास कास, हिक्का- हिक्का हिक्का, श्वास-  
श्वास श्वास, नास्यवैरस्य- नास्यवैरस्य नास्यवैरस्य  
विरसता, तृषा- तृषा प्यास, प्रमोहाः प्रमोह चक्रर,  
छर्दि- छर्दि वमन, कफोत्केशरुजः कफोत्केशरुज उत्पन्न  
वेदना कफके उत्केशसे उत्पन्न वेदना, अरुचिः च अरुचि

७७. त्रासगदालिचाराः—त्रासभ्रशलिचाराः (ख. ड. त.)

७८ ज्वर-ग्रस (फ. व.)

८०. नन्दाः-तंत्राः (३.)

અરુચિ, તથા અન્યે તથા પીઞ તથા અન્ય, વિવિધાઃ વિવિધ વિવિધ, વિકારાઃ વિકારો વિકાર, હૃદયોગ્નાઃ સ્યુઃ હૃદયોગ્ની ઉત્પન્ન થાય છે હૃદયોગ્ને સ્વપ્ન હોતે હૈં, પવનાત વાયુથી થયેલા હૃદયોગ્ના વાતજ હૃદયરોગકે, હૃત- હૃદયમાં હૃદયમેં, શૂન્યભાવ- શૂન્યપણું શૂન્યતા, દ્રવ- હૃદયમાં થડકે હૃદયકા ઘડકના, શોષ- હૃદયને શોષ હૃદયકા શોષ, મેદ- હૃદયમાં ભેદન જેવી પીડા હૃદયમેં મેદન જેસી પીડા, સ્તમ્ભાઃ હૃદયસ્તંભ હૃદયકા જકઢાના, સમોહાઃ વિશેષઃ અને વિશેષે કડી મોહ એ લક્ષણો થાય છે ઓર વિશેષતઃ મોહ ચે લક્ષણ હોતે હૈં, પિત્તાત્ પિત્તથી થયેલા હૃદયરોગનાં પિત્તજ હૃદયરોગસે, તમઃ- અંધારાં આનનાં અંધેરા છા જાના, દૂયન- ઉપતાપ દૂયન, દાહ- દાહ દાહ, મોહાઃ મોહ મોહ, સંત્રાસ- સંત્રાસ સંત્રાસ, તાપ- તાપ તાપ, જ્વર- જ્વર જ્વર, પીત્તભાવાઃ અને પીળા થવું એ લક્ષણો થાય છે ઓર અંગકા પીલાપન ચે લક્ષણ હોતે હૈં, કફાત્ કફથી થયેલા હૃદયરોગનાં કફજ હૃદયરોગસે, મર્મ હૃદયનું હૃદયકી, સ્તબ્ધમ્ સ્તબ્ધ- પણું સ્તબ્ધતા, ગુરુ ભારેપણું ગુરુતા, સ્તિમિતમ્ ચ અને જકઢાયેલપણું ઓર સ્તિમિતતા, સ્વાત્ એ લક્ષણો થાય છે ચે લક્ષણ હોતે હૈં, પ્રસેક- એ ઉપગંત લાળનું ઝરવું અને અતિરિક્ત લાળપ્રસેક, જ્વર- જ્વર જ્વર, કાસ- કાસ કાસી, તન્દ્રાઃ અને તન્દ્રા એ લક્ષણો પણ થાય છે ઓર તન્દ્રા ચે લક્ષણોં સી હોતે હૈં, ત્રિદોષશ્ચ તુ અપિ ત્રણ દોષથી થયેલા હૃદયરોગને ત્રિદોષજ હૃદય- રોગકો, સર્વલિઙ્ગમ્ ત્રણ દોષનાં સર્વ લક્ષણવાળો ત્રીન દોષકે સર્વ લક્ષણોંસે યુક્ત, કૃમિજમ્ અને કૃમિથી થયેલા હૃદયરોગને ઓર કૃમિજ હૃદયરોગકો, સીત્વાર્તિતોદશ્ચ તીવ્ર વેદના તથા સોય ભોકાયા જેવી વ્યથાવાળો તીવ્ર વેદના તથા સોયવાળા, સકળ્દુમ્ અને અજ્વાળવાળો ઓર કળ્દુસે યુક્ત, વિચાત્ બાણુવો જાને ॥ ૭૭-૮૦ ॥

77-80. Excessive exertion, excessive use of irritant articles, purgation and enema, excessive worry, fear, agitation and improper treatment of diseases, emesis, indigestion, suppression of urges and emaciation—all these are

causative factors of cardiac disorders. Even so is trauma. Discoloration, fainting fever, cough, hiccup, dyspnea, bad taste in the mouth, thirst stupefaction, vomiting, nausea, pain and anorexia—these and various other conditions are born of cardiac disorder. In cardiac disorder of the vata type there will be a sense of emptiness in the heart, tachycardia, emaciation, breaking pain, heart-block and stupefaction. In condition of the pitta type there will be darkness of vision, sense of heat, burning, stupefaction, fear, distress, fever and icteric tinge of the body. In condition of the kapha type there occur brady-cardia, heaviness, fixity, ptialism, fever, cough and torpor. When all these symptoms are seen, it must be recognised as a case of tridiscordance. There will manifest acute pain, pricking and itching in a condition of parasitic infection of the heart.

વાતજહૃદયોગ્નસ્ય ચિકિત્સા—

તૈલં સસૌવીરકમસ્તુતકં

વાતે પ્રપેયં લવણં સુખોળ્ગમ્ ।

મૂત્રામ્બુસિદ્ધં લવણેશ્ચ તૈલ-

માનાહગુરુમાર્તિહૃદામયઘ્નમ્ ॥૮૧॥

વાતે વાતજન્ય હૃદયોગ્નાં વાતજન્ય હૃદયોગ્ને, સ- સૌવીરકસૌવીરક સૌવીરક, મસ્તુ- દહીંનું પાણી મસ્તુ, તકમ્ ઝાશ તક, તૈલમ્ તેલ તૈલ, લવણમ્ અને સિંધાલણુ ઓર સૈંધાનમક, સુખોળ્ગમ્ નવશેકાં સુદાતે દુણ્ડુ ગરમ, પ્રપેયમ્ પીવાં બેઈં એ પીને વાહિં, મૂત્રામ્બુસિદ્ધમ્

૮૧. લવણં-સવિંડં (ઘ.)

૮. પ્રપેયં-પ્રદેયં (ઘ.)

૮. મૂત્રામ્બુસિદ્ધં-મૂત્રામ્કસિદ્ધં (ઘ.)

गोमूत्र आने पाणी साथे सिद्ध करेहुं गोमूत्र और जलसे सिद्ध तैलम् तैल तैल, लवणः पांशु धवलो साथे पांचों लवणके साथ, आनाह- आनाह आनाह, गुल्मार्ति- गुल्मरोग गुल्मरोग, हृदानयत्रम् तथा हृदो- गने नाश करनेपर छे तथा हृदयरोगका नाशक होता है ॥ ८१ ॥

81. Oil, sauveeraka wine, whey and butter milk, mixed with salt should be taken as potion in congenially warm condition; or oil prepared with cow's urine, water and salt when taken cures constipation gulma. pain and cardiac disorders.

पुनर्नवांश तैलम्—

पुनर्नवांश दारु सपञ्चमूलं

रास्नां यवान् बिल्वकुलत्थकोलम् ।

पक्त्वा जले तेन विपाच्य तैल-

अभ्यङ्गपानेऽनिलहृद्दघ्नम् ॥ ८२ ॥

पुनर्नवांश आटेडी गदहपुरना, सपञ्चमूलम् पांशुमूल पंचमूल, दारु देवदार देवदार, रास्नाम् रास्ना वायमूर्ई, यवान् जौ, बिल्व- भीखुं बेल, कुलत्थ- कुलथी कुलथी, कोलम् आने ओरने और बेर इनको, जले जलमें, पक्त्वा पकावीने पकाकर, तेन तेनाथी उससे, तैलम् तैलने तैलको, विपाच्य पकावी तैयार करने पकाकर तैयार करे, अभ्यङ्गपाने अभ्यंग तथा पान करनेवाथी ते तैल अभ्यङ्ग और पान करनेसे वह तैल, अनिल- वायुजन्य वायुजन्य, हृद्दघ्नम् हृदोगने नाश करनेपर थाय छे हृदोगका नाशक होता है ॥ ८२ ॥

82. Hog's weed, deodar, penta-radices, indian groundsel, barley, bael, horsegram and jujube should be cooked in water; and the oil prepared with that decoction is beneficial in heart-disease of vata type, taken as inunction and potion.

८२. गदहनम्-गदोडयम् (ह.)

हरीतक्यादिष्टम्

हरीतकीनागरपुष्कराह्ण-

वैयःकयन्मालवणश्च कल्काः ।

सहिष्णुभिः स्थायिनमयसर्पि-

गुल्मे सहस्रपार्श्वगदेऽनिलोत्थे ॥ ८३ ॥

हरीतकी- हरड नागर- सूंड मोंठ, पुष्कराह्ण-

पोषभूण पोहकरमूल वयःकयन्माल- गुली, पांशुमी मिलोय मयला लवणः धवलो लवण, सहिष्णुभिः आने दिग्गन्ध और हीन कल्काः च हरेड की इनके इनके साथ, स्थायिनागर सार्पिः सिद्ध मिश्र द्रव्यः मयसर्पिः श्रेष्ठ बी श्रेष्ठ बी, अनिलोत्थे अनिल- वायुजन्य, सहस्रपार्श्वगदे हृदोग पदार्थानां श्लक्ष्ण हृदोग पार्श्वगुह, गुल्मे आने गुल्ममां क्षितिके छे और गुल्मने क्षितकर है ॥ ८३ ॥

83. A medicated ghee, prepared with the paste of chebulic myrobalan, dry ginger, orris root, guduch, emblic myrobalan and the five salts and asafetida, is a foremost remedy in gulma, cardiac disease and pain in the sides, due to vata.

पुष्कराम्बुसर्पिकल्कः—

सपुष्कराह्णं फलपूरमूलं

महौषधं शत्रुमया च कल्काः ।

क्षाराम्बुसर्पिलवणविमिश्राः

स्युर्वतहृद्रोगविकर्तिकाघ्नाः ॥ ८४ ॥

सपुष्कराह्ण पोषभूण पोहकरमूल, फलपूरमूलम् भीमशर्मा मूण विजैरेकी जड़, महौषधम् सूंड मोंठ, शरी उरुशायवी कच्चा, मयया च आने हरेड भेओना और हरड इनके, क्षार-अम्बु- क्षारजन्य क्षारजल सर्पिः- बी बी, लवणैः आने सिंघावुथी और सैवानमकसे, विमिश्राः मिश्रित करेला मिलाये हुए, कल्काः उडो कल्क, वात- वातजन्य वातजन्य, हृद्रोग- हृदोग हृद्रोग.

८४. पूर-पुष्प (ग.)

„ क्षाराम्बुसर्पिलवणैः—क्षाराम्बुसर्पिलवणैः (फ.)

त्रिकर्तिकाग्राः स्युः अने वाटने। नाश करनार थाय छे और परिकर्तिकाग्राक शोते हैं ॥ ८४ ॥

१४. Orris root, root of citron, dry ginger, long zedoary and chebulic myrobalan, rubbed into paste and mixed with alkali water, ghee and the five salts make a beneficial remedy for cardiac disorders and cutting pain in the heart, due to vata.

काथः कृत्तः पौष्करपतुलुङ्ग-

पलाशभृतीकशटीसुराहः ।

सनागराजजिलवावानी-

क्षारः सुखोष्णो लवणश्च पेयः ॥ ८५ ॥

पथ्याशटीपौष्करपञ्चकोलाव

समातुलुङ्गायमकेन कलकः ।

गुडप्रपञ्चालवणश्च भृष्टो

हृत्पार्श्वपृष्ठोदरयोनिशूले ॥ ८६ ॥

पौष्कर- पोष्करभृण पोष्करमूल, जातुलुङ्ग- यक्षोत्तु  
चकोला, पलाश- आभरी डाक, भृतीक- भृतीक भृतीक  
शटी- ऊपरुआयली कचूर, सुराहः अने देवदारवी और  
देवदारु इत्यादि, कृतः केशी बनाया, काथः कथाय काथ,  
सनागर- सूँठ सोंठ, सजाजी- शुरु जीरा, वचा- वज्र  
वच, ववाणी- अजमेला अजवायन, क्षारः लवणः च अजवायन  
तथा, सिंधिलुण्ठ मेणवी यवक्षार तथा सैदानमकके साथ,  
सुखोष्णः नवशेकः सुहाना हुन्ना गरम, पेयः पीवे।  
पीवे, समातुलुङ्गाय यक्षोत्तुना भृण चकोलाके मूल,  
पथ्या- हरडे हरड, शटी- ऊपरुआयली कचूर, पौष्कर-  
पोष्करभृण पोष्करमूल, पञ्चकोलाव अने पञ्चकोलावना  
एवं पंचकोल इनके, कलकः कलकके कलकको, यमकेन बी

८५. पलाशराजजिलवावानी.....पेयः ॥-पञ्चपञ्चराजजीववावानी-  
सक्षार लवणो लवणश्च पेयः (न)

.. ववाणी-ववाणी (व.)

.. सनागर-सुशुण्ठी (ड.)

.. लवणश्च-लवणेन (क.)

८६. पृष्ठोदर-गुहमोर (ड.)

तथा तेलभा जी और तेलमें, भृष्टः भृष्ट भृष्टकर हव-  
लव्य हवय, पार्श्व- पार्श्व पार्श्व पृष्ठ- पीठ पीठ, उदर-  
उदर उदर, योनिशूले अने योनिना शूलभा और  
योनिके शूलमें, गुड- गेण गुड, प्रसन्ना- प्रसन्ना प्रसन्ना,  
लवण च अने लवण साथे पीवे और लवणके साथ  
पीवे ॥ ८५-८६ ॥

85-86. The decoction of orris root, pomello palm, bishop's weed, long zedoary and deodar, mixed with the paste of dry ginger, cumin seeds, sweet flag, bishop's weed, barley-alkali and the five salts should be taken in congenially warm condition. Chebulic myrobalan, long zedoary, orris root, the five kinds of jujube and pomello should be made into paste and fried in a mixture of equal parts of oil and ghee, and mixed with the supernatant fluid of wine, gur and salt; this, when taken as potion, is beneficial in pain in the heart, sides, back, abdomen and pelvis.

त्र्यूषणाद्यं घृतम्—

स्यात् त्र्यूषणं द्वे त्रिफले सपाठे

निदिग्धिकागोधुरकौ बले द्वे ।

कद्विखुरिस्तामलकी खगुता

मेदं मधुकं मधुकं स्थिरा च ॥ ८७ ॥

शनावनी जीवकपृष्ठिपण्यौ

द्रव्यैरिमैरक्षसमैः सुपिष्टैः ।

प्रस्थं घृतस्येह पचेद्विधिः

प्रस्थेन दध्ना त्वघ माहिषेण ॥ ८८ ॥

त्र्यूषणम् त्र्यूषण त्रिकटु, सपाठे पाठा पाठी, द्वे  
त्रिफले ये त्रिफला (हरडे, अहर्षा, आभरी) तथा प्राक्ष,  
शीवणु, शलसाना इत्यादि दोनों त्रिफला (हरडे, बहेरा

८७. त्रिफले-तल्लिके (क. व.)

आंवला तथा द्राक्षा, काश्मरी, कालमा), जिदिविका- नान्दी  
 मोरी गण्डी छोटी कटेरी, गोक्षुरकौ गोअनु गोखरु, दे  
 बले भे अला बला, अतिवला, क्रदिः अदि क्रदि,  
 व्रुटिः नान्दी ओदयी छोटी इलायची, ताम्रलकी-  
 भोयिआअली मुहंआंवला, स्वगुला डोया औव मेदे  
 अन्ने मेदा मेदा, महामेदा, मधुकर्म मधुर्ध महुवा,  
 मधुकर्म जेठीमध मुकहठी, शंखरा च सालपण्डी  
 सालपर्णी, शतावरी शतावरी कतावर, जीवक- ७५३  
 जीवक, पृश्निपर्ण्यौ पृश्निपर्णी पृश्निपर्णी, इमैः आ हरेकले  
 इन प्रत्येकका, अक्षसमैः ओड ओड तोले. दध एक एक  
 तोला ले कर, सुविष्टैः सारी पेठ पीसेवां बारीक पीसे  
 हुए, द्रव्यैः आ द्रव्योली इन द्रव्योसे, वृत्त्य तु प्रत्येक  
 ६४ तोला थी ६४ तोल थी, प्रत्येक ६४ तोला  
 ६४ तोले, माहिषेण भेसना भेसके, दध्ना दधी साथे  
 दहीके साथ, विभिन्नः विधि आधुना २ वेद्ये विधिको  
 जाननेवाला वैद्य, इह आ रोग आटे इस रोगके लिए,  
 पचेत् पक्षावधु पकावे ॥ ८७-८८ ॥

87-88. The three spices, the three  
 myrobalans, the three fruits i. e.  
 (grape date and white teak). Patba,  
 indian nightshade, small caltrops,  
 heart-leaved sida, evening mallow,  
 riddhi, cardamom, featherfoil, cowage,  
 the two Medas, mahwa, liquorice  
 ticktrefoil, climbing asparagus, Jivaka,  
 painted-leaved uraria and tick-trefoil  
 —with the paste of one tola of each  
 of these drugs the pharmacologist  
 should prepare a medicated ghee by  
 taking 64 tolas of ghee and 64 tolas  
 of buffalo's curds.

मात्रां पलं चार्धपलं पिबुं वा  
 प्रयोजयेन्माक्षिकसंयुक्तम् ।  
 आसे सकासे त्वय पाण्डुरोगे  
 हलीयके हृद्ग्रहणीमदोमे ॥ ८९ ॥

माक्षिकसंयुक्तम् अथ अथे भेजवी मधु मितायी  
 हरे, पलम् ४ तोला ४ तोल, अर्धपलम् च २ तोला  
 २ तोल पिबुम् वा ३ ओड तोला ओदयी या एक  
 तोलेसे, मात्रां मात्राने मात्राका. सवासे काश काश,  
 आसे आसे आसे पाण्डुरोगे पाण्डुरोग पाण्डुरोग, हली-  
 मके हलीमके हलीमके. हन- हरीय हरीय, ग्रहणी-  
 ग्रहणी ग्रहणी ग्रहणी ग्रहणी ग्रहणी रोगके, प्रयो-  
 जयेत् अथ अथी प्रयोग करे ॥ ८९ ॥

89. This should be administered in  
 a dose of four tolas or two tolas or  
 one tola, mixed with honey, in dyspnea,  
 cough, anemia, Halimaka jaundice,  
 and cardiac and assimilation disorders.

पित्तजहृद्ग्रहण चिकित्सा—

शीताः प्रदेहाः परिवेचनानि  
 तथा विरेको हृदि पित्तदुष्टे ।  
 द्राक्षासिताक्षौद्रपरूषकैः स्या-  
 च्छुद्धे तु पित्तापहमजपानम् ॥ ९० ॥

हृदि हृदय हृदय, पित्तदुष्टे पित्तदुष्टे दुष्ट अतः पित्तसे  
 दुष्टि होने पर, शीताः शीतल शीतल, प्रदेहाः प्रदेहाः प्रदेह,  
 परिवेचनानि अने परिवेचनो करने और परिवेचन करे,  
 तथा तथा तथा, द्राक्षा द्राक्षा मुनके, सिता- सित- चीनी,  
 क्षौद्र- मधु मधु, परूषकैः अने द्राक्षाक्षौद्र शुद्ध और  
 फालसासे युक्त, विरेकः विरेचन विरेचन, स्वाद करने  
 ओड ओ देवे, शुद्धे तु शुद्ध थाय तारे शुद्ध होने पर  
 पित्तापहम् पित्तनाशक पित्तनाशक, अजपानम् अजपान  
 आपना अजपान देवे ॥ ९० ॥

90. In cardiac disorders due to  
 pitta the patient should be given cold  
 applications, affusions and purgation  
 mixed with grape, sugar, honey and  
 sweet falsah. After the body has been  
 cleansed, he should be given food and  
 drink curative of pitta.

यष्ट्याह्निकात्तिककरोहिणीभ्यां  
कल्के पिबेच्चपि सिताजलेन ।

क्षते च सर्पीषि हितानि सर्पि-

गुंडाञ्च ये तान् प्रसमीक्ष्य सम्यक् ॥९१॥

यष्ट्याह्निका- ज्येष्ठीभयं मुकुट्ठी, तिककरोहिणीभ्याम्  
तन्मः कुटुने और कुटुकी कल्क- ५६३ इनका कल्क,  
सिताजलेन - पि स डरना शांभत साथे चीनीके  
शर्बतसे, पिबेत् च पावा पीवे, क्षते च - अपने क्षत-  
क्षीक्ष्मा और क्षतक्षीणमें, सर्पीषि - जे धी जो धी,  
हितानि हितकर के हितकर हैं, ये च - अपने जे और जो,  
सर्पि गुंडा- सर्पिगुंडा हितकर के सर्पिगुंडा हितकर हैं, तान्  
तेओतुं पक्षु उतका नी, सम्यक् - भराभर अच्छी  
तरहसे, प्रसमीक्ष्य - छेड़ने सेवन करवुं समझकर सेवन  
करे ॥ ९१ ॥

91. The paste of liquorice and  
kurroa should be taken with sugar  
water. Medicated ghees and ghee  
boluses which are beneficial in pectoral  
lesions, should be prescribed here after  
proper investigation

दद्याद्भिषगधन्वरसाञ्च गण्य-

क्षीराणिनां पित्तहृदामयेषु :

तैरेव सर्वे प्रशमं प्रयान्ति

पित्तामयाः शोणितसंश्रया ये ॥९२॥

भिषक् वैद्य वैद्य, पित्तहृदामयेषु - पित्तहृद-  
भभां पित्तजन्य हृदोगमें, गण्यक्षीराणिनाम् - गान्धना दूध  
पर रहेनार शेओओने गौके दूधका आहार लेनेवालोंको,  
धन्वरसाञ्च - भ-भल पशुपक्षीओना भांसरस आंगल  
पशुपक्षियोंके मांसरस, दद्यात् - देता देवे, तैः एव तेओथी  
अ उन्होंसे, सर्वे सर्पि सब, पित्तामयाः - पित्तविश्रुते  
पित्तारोग, ये अपने जे और जो, शोणितसंश्रयाः - रक्ताश्रित

९१. यष्ट्याह्निका.....सिताजलेन-पिबेत् पिबेच्चपि सिताजलेन ।

यष्ट्याह्निकं तिककरोहिणी (द. ब. क.)

९२. क्षते.....सम्यक् क्षतेषु सर्पीषि च तदशुद्धा  
ये ते च शस्ता हृदि पिबेदुते (फ.)

९३. धन्वरसाञ्च गण्य-धन्वरसाञ्चवाही (ब.)

रोग होय ते रक्ताश्रित रोग होते हैं वे, प्रशमम्  
प्रयान्ति शान्त थाय छे शान्त होते हैं ॥ ९२ ॥

92. And the physician should give  
in cardiac disorders born of pitta,  
meat-juice of jangala animals and a  
diet of cow's milk. By means of  
these, all the disorders born of pitta  
and of vitiated blood get alleviated.

द्राक्षाञ्च घृतम्—

द्राक्षाबलाश्रेयसिशर्कराभिः

खजूरवीर्यभक्तोत्पलैश्च ।

काकोलिमेदायुगजीवकैश्च

क्षीरेण सिद्धं महिषीघृतं स्यात् ॥९३॥

द्राक्षा- द्राक्ष मुनका, बला- भला बला, श्रेयसि-  
गन्धभीपर गन्धिप्यली, शर्कराभिः - साडर चीनी, खजूर-  
अभूर खजूर, वीरा- शतावरी शतावर, ऋषभक-  
ऋषभक ऋषभक, उत्पले- च नीलकण्ठ नीलकण्ठ,  
काकोलि- काकोली काकोली, मेदायुग- भ-भे मेदा मेदा,  
महामेदा, जीवक- अपने उरुथी और जीवकसे, क्षीरेण च  
दूधभां दूधमें, सिद्धम् सिद्ध करेले सिद्ध किया, महिषीघृतम्  
ले सनुं धी भैसका धी, स्यात् आपनुं देवे ॥ ९३ ॥

93. The medicated ghee made of  
buffalo's ghee prepared with milk and  
the pastes of grapes heart-leaved sida,  
elephant pepper and sugar, or with  
dates Vira Rishabhaka and blue water-  
lily, or with Kakoli. Meda Mahameda  
and Jivaka, is beneficial in cardiac  
disorders

कशेरुकाञ्च घृतम्—

कशेरुकाशवलशुक्रघेर-

प्रपौण्डरीकं मधुकं विसृज्य ।

प्रन्थिञ्च सर्पिः पयसा पचेत्तैः

क्षौद्रान्वितं पित्तहृदामयघ्नम् ॥९४॥

९३. क्षीरेण सिद्ध-क्षीरे च सिद्ध (फ.)

९४. शैबक-सैम्बक (फ.)



कशेरुका- कसेवां कसेरु, केवल- शेराना मयल  
शृङ्गवेर- आहु अदरक, प्रपौण्डरीकम् प्रपौण्डरीक मयल-  
रीक, मधुकर्म केरीमध मुलहरी, बिसस्य अने उमल-  
दण्डी और कमलदण्डी, ग्रन्थिः च मीठ वाट, तैः  
तेओनी साथे इनके साथ, यवसा दूधमा दूधमें, सर्पिः  
धी धी पचेत पक्षः पचावे, औदाम्बिलम् मयसहित  
ते धी मधुपुक्त रह धी, वितहदायप्रप पित्तजन्य  
हृदरोगना नाश करनार छे पित्तजन्य हृदरोगना नाशक  
है ॥ ९४ ॥

94. Rushnut, moss, dry ginger, tubers  
of white lotus, liquorice, lotus-rhizomes  
and ghee—these, cooked with milk and  
mixed with honey, make a remedy for  
cardiac disorders born of pitta.

स्थिरादिकर्कः पप्रसा च सिद्धं

द्राक्षारसेनेशुरसेन वाऽपि ।

सर्पिर्हितं स्वादुफलेक्षुजाश्च

रसाः सुशीता हृदि पित्तदुष्टे ॥९५॥

पित्तदुष्टे पित्तधी दूषित अथैव पित्तसे दूषित, हृदि  
हृदयमा हृदयमें, स्थिरादिकर्कः स्थिरादि पत्रमूलना  
उदक साथे लघु पत्रमूलके चल्कसे, यवसा च दूधमा  
दूधसे, द्राक्षारसेन द्राक्षना रसधी द्राक्षके रसमे इक्षु-  
रसेन वा अपि अथवा शेरडीना रसधी या ईखके  
रससे, सिद्धम् सिद्ध करेख सिद्ध, सर्पिः धी धी, हितम्  
हितकर छे हितकर है, स्वादुफल- मधुर द्रव्यना मधुर  
फल, इक्षुजाः अने शेरडीना और ईखके, सुशीताः  
सारी पेठे शीतल अत्यन्त शीतल, रसाः रसे हितकर  
छे रस हितकर हैं ॥ ९५ ॥

95. The ghee, prepared with the  
paste of the drugs of ticktrefoil group  
and equal quantity of milk or grape  
juice or sugar cane juice, is very ben-  
eficial in cardiac disorders born of pitta.

Cold juice of sweet group of fruits and  
of sugar-cane are good as beverage.

कफजहृदोपस्थ चिकित्सा—

स्विन्नस्य वान्तस्य विलङ्घितस्य

क्रिया कफघ्नी कफमर्मरोगे ।

कफमर्मरोगे उद्वेग-य हृदोपमा कफजन्य हृदोपमें,  
स्विन्नस्य स्वेदन त्वेदन, वान्तस्य वमन वमन, विलङ्घि-  
तस्य अने लंघन करना पछी और लंघन क्रिये हुएकी,  
कफघ्नी उद्वेगनाशक कफनाशक, क्रिया चिकित्सा करवी  
चिकित्सा करे ॥ ९५३ ॥

95३. In cardiac disorders of the  
kapha type, all the remedies curative  
of kapha should be administered, after  
subjecting the patient to sudation,  
emesis and lightening procedures.

कालन्धधान्यैश्च रसेयवाञ्च

पानानि तीक्ष्णानि च शङ्कराणि ॥९६॥

मूत्रे श्रुताः कटुलशृङ्गवेर-

पीतद्रुपथ्यातिविषाः प्रदेयाः ।

कुण्ठाशटीपुष्करमूलरास्ना-

सन्नाभयानागरचूर्णकं च ॥९७॥

कौलथ- उणधी कुलथी, अन्यैः अने धातुना  
कराथ साथे और धनिया इनके साथ, रसेः च अने भांशरस  
साथे और मांसरसके साथ, यवाजम् जवना अज जौका  
अज, तीक्ष्णानि तथा तीक्ष्ण और तीक्ष्ण, पानानि च  
पीधु पान, शङ्कराणि उद्वेगनाशक छे हितकर हैं,

९५३. कफमर्मरोगे-कफमर्मरोगे (ह.)

९६. यवाज-यवाजः (ब.)

१. शङ्कराणि-शङ्कराणि (ड ड.)

१. च शङ्कराणि-सशङ्कराणि (ड.)

९७. कुण्ठाशटी.....चूर्णकं च-तथा शटीपुष्करमूलपुष्कर-  
रास्नाचपुष्करमूलचूर्णम् (ग. घ.)

मूत्रे गोमूत्रम्। गोमूत्रम्, शृताः शिकण्डिका पकाये, कटु-  
फलः कषायः कायफलः, शृङ्गवेर-आहु अदरक, पीतकु-  
शुन्दिका, नासतुन्दरी, पथ्या, हरिद्र, अतिविषाः अने  
अतिविषादी कुण्ठी और अर्जुन, देवाः देवा येन ये  
देने योग्य हैं, कृष्णा- पीपरी पिप्पली, शटी- पट्टचूरी  
कचूर, पुष्करमूल- येन अर्जुन पोहकरमूल, रास्ना रास्ना  
वायसुरि, वचा- वच, अश्वत्थ- हरिद्र, नागर-  
चूर्णकश्च अने सूक्ष्मं चूर्णं ५५०-य हस्तेनमा देवुं  
और सेंठका चूर्ण कफजन्म हृदोगमें देवे ॥ ९६ ९७ ॥

96-97 Cooked barley should be eaten along with the soup of horse-gram and coriander; and a potion medicated with acute drugs should be taken. Box myrtle, dry ginger, indian berberry, chebulic myrobaian and indian atees, decocted in cow's urine, should be given. Or long pepper long zedoary, orris root, indian groundsel, sweet flag, chebulic myrobalan and ginger should be powdered and given in kapha type of cardiac disorders.

उदुम्बरादिदेहः—

उदुम्बराभ्यन्धवटार्जुनाख्ये  
पालाशरौहीतकखादिरे च ।

काये त्रिवृत्त्र्यूषणचूर्णसिद्धौ

लेहः कफघ्नोऽशिशिराम्बुयुक्तः ॥९८॥

उदुम्बर- शिखरी गूल, अश्वत्थ- पीपरी, पीपल,  
वट- वट, अर्जुनाख्ये अर्जुन वृक्ष अर्जुन, पालाश-  
आजो डाक, रौहीतक- रोहीतक रोहीतक, खादिरे च  
अने येर अशोना और खैरकथा इनके, काये  
उपायमा कायमें, त्रिवृत्- नसोतर निशोध, त्र्यूषण- अने  
त्रिदुग्ध और त्रिकटु, चूर्णसिद्धः चूर्ण नाभी सिद्ध

इत्यादि इनके चूर्णसे सिद्ध किया, लेहः लेह लेह, अक्षि-  
सिगम्बुयुक्तः गरम पाणी साथे देवाथी गरम जलके  
साथ लेने पर, कफघ्नः ५५०-५५० याय छे कफघ्न होता  
है ॥ ९८ ॥

98. The bark of the gular fig, the holy fig, the banyan arjun, palas, white cedar and catechu, decocted and made into linctus mixed with powder of turpeth and the three spices and taken along with warm water, is curative of kapha.

शिलाह्वयं वा मिषगप्रमत्तः

प्रयोजयेत् कक्षपिधानदिष्टम् ।

प्राशं तथाऽऽगस्त्यमथापि लेहं

रसायनं ब्राह्ममथामलक्याः ॥९९॥

अप्रमत्तः प्रभाकरसिद्धि अप्रमत्त, मिषक् वेले वैद्य,  
कक्षपिधानदिष्टम् ५५५विधानमा भतावेक्ष कक्षपिधानमें  
कहे, शिलाह्वयम् वा शिलाजतुने। शिलाजतुका, प्रयो-  
जयेत् प्रयोग करे। प्रयोग करे, तथा ते न प्रभाक्षे  
तथा, प्राशम् अवनप्राशने। अवनप्राशका, अथापि  
अथवा या, आगस्त्यम् अगस्त्ये ५५५ अगस्त्योक्त,  
लेहम् लेहने। लेहका, ब्राह्मम् रसायनम् ब्राह्म रसायनने।  
ब्राह्म रसायनका, अथ आमलक्याः अने आमलकी  
रसायनने। प्रयोग करे। और आमलकी रसायनका  
प्रयोग करे ॥ ९९ ॥

99. Mineral pitch should be administered by the wise physician, in accordance with the pharmacological procedure described; or the linctus called the Chyavanaprasa, or the one described by Agastya called the

९९. दिष्टम्-दिष्टम् (त.)

, प्राशं तथाऽऽगस्त्यमथापि लेहं-प्राशं तथाऽऽगस्त्यमथापि

तुकी च (क. ब.)

, प्राशं तथाऽऽगस्त्यमथापि लेहं-प्राशं तथाऽऽगस्त्यमथापि

chebulic myrobalan linctus or Brahma elixir or the elixir of emblic myrobalans should be given.

त्रिदोषजहृद्दोगस्य चिकित्सा—

त्रिदोषजे लङ्घनमादितः स्या-

दक्षं च सर्वेषु हितं विधेयम् ।

हीमातिमध्यमवेक्ष्य चैव

कार्यं त्रयाणामपि कर्म शस्तम् ॥१००॥

त्रिदोषजे त्रिदोषजन्य हृद्दोगमां त्रिदोषजन्य हृद्दोगमे आदितः प्रथमं प्रथमं, लङ्घनम् अथवा लघनं, स्वाद उपपुं ओष्ठ्ये देवे, सर्वेषु च पक्षी अधोना दोषोभा पश्चात् सब दोषमे, हितम् दितकर हितकर, अन्नम् अन्नं अन्न, विधेयम् आपपुं ओष्ठ्ये देवे, त्रयाणाम् अपि त्रयेण दोषोभा अधुं तीनों दोषोंके बलका, हीन-हीन-पक्षुं हीनत्व, अति-अधिकपक्षुं अधिकत्व, मध्यमम् च अने मध्यमपक्षुं और मध्यमस्व, जवेक्ष्य ओष्ठ्ये देखकर, क्स्वम् एव त्रयेयने दितकर तीनोंके लिए हितकर, कर्म कार्यम् चिकित्सा करवी ओष्ठ्ये चिकित्सा करे ॥ १०० ॥

100. In cardiac disorder due to tridiscordance, lightening therapy should be first prescribed and then the dietetic regimen that is conducive to the condition. It is, after investigating the relative strength of the morbid humors, that their treatment successively should be undertaken.

शूलस्य चिकित्सा—

भुक्तेऽधिकं जीर्यति शूलमह्यं

जीर्णे स्थितं चेत् सुरदाहकुष्ठम् ।

सतिस्वकं द्वे लवणे विडङ्ग-

मुष्णाम्बुना सातिविषं पिबेद् सः ॥१०१॥

भुक्ते भोजनं उर्या पक्षी भोजन करने पर, अति-कम शूलम् हृद्दोगमां अधिक शूल थाय हृद्दोगमे अधिक

१००. सर्वेषु-सर्वत्र (व. ड)

शूल हो, जीर्णे च अने पथ्या पक्षी और पच जाने पर, स्थितम् चेत् शूल रोकध गम्य ते। ठहर जाय तो, सतिस्वकम् तिस्वकं तिस्वक, सुरदार-देवदार देवदार, कुष्ठम् उठ कूठ, द्वे लवणे ये लवण दोनों नमक, सातिविषम् अतिविषयी उर्या अर्थात्, विडङ्ग अने वावडिङ्गने और वायविडङ्ग इनको, सः तेले वह, मुष्णाम्बुना गरम पाणी साथे गरम जलसे, पिबेद् पीवा पीवे ॥ १०१ ॥

101. If there is great pain occurring just after meals and lessening during digestion and ceasing at the end of digestion, the patient should take the pulvis of deodar, costus, Tilvaka, the two salts, embelia and indian atees with warm water.

जीर्णेऽधिके स्नेहविरचनं स्यात्

फलैर्विरेच्यो यदि जीर्यति स्यात् ।

त्रिष्वेव कालेष्वधिके तु शूले

तीक्ष्णं हितं मूलविरचनं स्यात् ॥१०२॥

यदि जीर्णे ओ पथी गया पक्षी यदि अन्न पच जाने पर, अधिक अधिक शूल थाय तो अधिक शूल हो तो, स्नेहविरचनम् स्निग्ध विरेचन स्निग्ध विरेचन, स्वाद देवुं देवे, जीर्यति ओ पथ्या अधिक शूल थाय तो यदि पकते समय अधिक शूल हो तो, फलैः शोथी फलोंसे, विरेच्यः स्वात् विरेचन देवुं विरेचन देवे, त्रिषु एव अने ओ त्रयेषु और यदि तीनों ही, कालेषु डाणे कालमें, अधिक अधिक अधिक, शूले तु शूल थाय तो शूल हो तो, तीक्ष्णम् तीक्ष्ण तीक्ष्ण, मूलविरचनम् भूयोतुं विरेचन मूलोंका विरेचन, हितम् हितकर, स्वात् थाय छे होता है ॥ १०२ ॥

102. If the pain be greater at the end of digestion unctuous purgatives should be given. If pain be greater during digestion, mild purgatives of sweet fruits should be given. If just after food, during and at the end of

digestion, the pain remains uniformly severe, a severe purgative prepared with the root-group of drugs should be given.

प्रायोऽनिलो रुद्धगतिः प्रकुप्य-

त्यामाशये शोधनमेव तस्मात् ।

कार्यं तथा लङ्घनपाचनं च

सर्वं कृमिघ्नं कृमिहृद्दे च ॥१०३॥

इति हृद्दोगचिकित्सा ।

आमाशये अधोना प्रकारना हृदयरोगमा आमाशयमा सब प्रकारके हृदयरोगमें आमाशयमें, रुद्धगतिः गति रुद्धाधी जवाधी रुद्ध गतिवाला, अनिलः वायु वायु प्रायः अक्षुभ्रुं प्रायः, प्रकुप्यति प्रक्षोभ प्राप्ते के प्रकुपित होता है तस्मात् तेभी इस लिए, शोधनम् एव शोधन शोधन, तथा लङ्घनपाचनम् च लङ्घन अने पाचन लङ्घन और पाचन, कार्यम् करना ओछी करना चाहिए, कृमिहृद्दे च अने कृमिजन्य हृद्दोगमा और कृमिजन्य हृद्दोगमें, सर्वम् सर्व सब, कृमिघ्नम् कृमिनाशक चिकित्सा करना ओछी कृमिघ्न औषध करे ॥ १०३ ॥ इति आ. यह, हृद्दोगचिकित्सा हृद्दोगचिकित्सा के हृद्दोगचिकित्सा है ।

103. Generally in all cardiac disorders, the vata getting obstructed is provoked and lodged in the stomach. Hence, only purification and the lightening and digestive therapies should be done. And in parasitic condition of the heart, treatment curative of parasites should be undertaken. Thus has been described the treatment of cardiac disorders.

प्रतिश्यायस्य निदानसंप्राप्तिलक्षणानि—

संचारणाजीर्णरजोतिभाष्य-

क्रोधर्तुवैषम्यशिरोमितापैः ।

प्रजागरातिस्वपनाम्बुशीतै-

रजश्चैव मैथुनबाष्पधूमैः ॥१०४॥

संस्त्यानदोषे शिरसि प्रवृद्धो

वायुः प्रतिश्यायमुदीरयेत् ।

प्राणार्तिनोद्यो क्षवथुर्जलाभः

स्त्रावोऽनिलात् खखरमूर्धरोगः ॥१०५॥

नासाग्रपाकऽधरवक्त्रशोष-

तृष्णोऽणपीनस्रवणानि पिच्छात् ।

कःसारुणिस्त्रावघनपक्षैकः

कफाद्गृहः स्रोतसि चापि कण्डूः ॥१०६॥

सर्वाणि रूपाणि तु सन्निपातात्

स्युः पीनसे तीव्ररजोऽतिदुःखे ।

संचारण-वेग रोकवाधी वेगविधारण, अजीर्ण-अक्षुभ्रुं अजीर्ण, रजः-धूम्रवाधी घूल, अतिभाष्य-अत ओछवाधी अधिक बोझता, क्रोध-क्रोधशी क्रोध, क्रतुवैषम्य-असुखी (असुखता) क्रतुकी विषमता, शिरोऽमितापैः मथाना संतापशी शिरके संताप, प्रजागर-प्रजागराशी रात्रिमें जागना, अनिस्वपन-अहु निद्रा उन्वाधी अत्यन्त सोना, अम्बुशीतैः शीतल जल, अजश्चैव अक्षुभ्रुं अक्षुभ्रुं पड़ना, मैथुन-मैथुनशी मैथुन, बाष्पधूमैः आसुशी, धून्वाधी रोना और धुवां इनमें, संस्त्यानदोषे दोष धृष्ट तथाशी दोष घट हो जाने पर, शिरसि अस्तकमां शिरमें, प्रवृद्धः वायुः तु वृद्धे वायु बड़ा हुआ वायु, प्रतिश्यायश्च अजीर्णम जुलामको, उदीरयेत् पेडा करे के उत्पन्न करता है, अनिलात् वायुशी तथा प्रतिश्यायमां वायुजन्य प्रतिश्यायमें, प्राणार्ति-नासिकाभां वेदना नाकमें वेदना, लोदौ सोय लोकाया जेवी पीडा तोद, क्षवथुः छीक छीक, स्रवमूर्धरोगः रजरोध अने अस्तकना रोग खरमेद और शिरका रोग, जलाभः स्त्रावः अने पाणी जेवा स्त्राव थाप के और पानी जैसा स्त्राव होते हैं, पिच्छात्

१०४. धूमैः-सैः (व.)

—शोकैः (क.)

—वर्षैः (क.)

१०५. मूर्धरोगः-शीर्षरोगः (व.)

१०६. तीव्ररजोऽतिदुःखे-अतीवक्रोऽतिदुःखे (ब.)

पितृयी भूता प्रतिश्यायभा पित्तजन्य प्रतिश्यायमें, नासाग्रपाक- नाडिका टेरमाने पाक नाकके अग्रभाग-पा पकना, ज्वर- ताप ज्वर, तक्त्रक्षोष- भुभशेष मुखका सुखना, तृष्णा- तरस प्यास, उष्णपीतस्रवणाने तथा नाडिकाधी गरम अने पीला शीटुं नीडगुं अथ छे और नाकमें गरम और पीला सावका बहना होते हैं, कफात् छद्मयी भूता अतिश्यायभा कफजन्य प्रतिश्यायमें, कास- उधरस खांसी, अरुचि- अरुचि अरुचि, स्वाद- वनप्रसेका- नासिकाभाधी धक्का छीट तथा भुभभाधी धाटी क्षाण नीडगे छे बहुत साव और घना दालाप्रसेक, स्रोतसि च तेभ्य नासाभाभा एवं नासाग्रोतमें, गुरु- कण्डू- च अणि अत्यंत भुभदी साथ छे अत्यन्त खुजली होती है, सन्निपातान् तु अने सन्निपातधी भूता और सन्निपातजन्य, नीत्ररुजे तीन दरवाणा नीत्र रुजावाले, अतिदुखे अति दुःखधी अत्यन्त दुःख- दायक, पीनसे प्रतिश्यायभा प्रतिश्यायमें, सर्वाणि भूता सव, रूपाणि दक्षिणे लक्षण स्युः थाय छे गेने हैं ॥ १०४-१०६३ ॥

104-106½. The suppression of natural urges, indigestion, inhalation of dust, excessive speech, anger, abnormality of season, affliction of the head, excessive waking, excessive sleep, very cold water, frost, excessive sexual indulgence, weeping and smoking are the factors by which in a condition where the morbid humor is in a congealed state in the head, the vata gets increased and gives rise to coryza. There will be pain and pricking sensation in the nose, sternutation, watery discharge and affection of the voice and the head due to vata; inflammation of the tip of the nose, fever, dryness of mouth, thirst, and hot and yellow discharge from the nose, in a condition due to pitta; and cough,

anorexia, thick and profuse discharge, heaviness and itching in the nasal passage occur in a condition due to kapha. All the symptoms occur with acute pain and great discomfort in rhinitis due to tridiscordance type.

दुष्टप्रतिश्यायजा रोगाः—

सर्वोऽतिवृद्धोऽहितभोजनात्

दुष्टप्रतिश्याय उपेक्षितः स्यात् ॥ १०७ ॥

ततस्तु रोगाः अवयुः नासा-

शोषः प्रतीनाहपरिस्रवौ च ।

घ्राणस्य प्रतिलम्बपीतस्रस्र

सपाकशोथार्बुदपूरकाः ॥ १०८ ॥

अरुचि शीर्षश्रवणाक्षिरोग-

खालित्यहर्षर्जस्रोमभावाः ।

तृट्श्वायकासज्वररक्तपित्त-

वैस्वर्यशोषश्च ततो भवन्ति ॥ १०९ ॥

सर्वे भूता प्रतिश्याय सब प्रतिश्याय, अहितभोज- नात् तु अहित भोजनधी अहित भोजनसे, उपेक्षितः तथा अतिश्याय न दरवाणी तथा उपेक्षा करनेसे, अतिवृद्धः अत्यंत वधीने अत्यन्त बढ़कर, दुष्टप्रतिश्यायः त्याव दुष्ट प्रतिश्याय यथे अथ छे दुष्ट प्रतिश्याय हो जाता है, ततः तु तेषी उससे, अवयुः अवयुः अवयुः नासाशोषः च नासाशोष नासाशोष, प्रतीनाह- प्रतीनाह प्रतीनाह, परिस्रवौ च परिस्रव परिस्रव, घ्राणस्य घ्राणस्य घ्राणस्य घ्राणका, प्रतिलम्ब प्रतिलम्ब दुर्गंधिता प्रतीभाव, अपीनसः च अपीनस अपीनस, सपाक- नासापाक नासापाक, शोथ- नासाशोष नासाशोष, अर्बुद- नासाशुद्ध नासाशुद्ध, पूरकाः अने पूरकत और पूरक, रोगाः ये रोगे थाय छे ये रोग होते हैं, ततः च वधी तेषी पुनः उससे, अरुचि नाडिका शीटुं नीडगे नाकमें कुन्सियां, शीर्ष- शीर्ष सिर, श्रवण- डाल कान, अक्षिरोग- अने आभना गेने और आंखके रोग, खालित्य- आक्षित्य खालित्य,

१०९. शीर्षश्रवणाक्षिरोग-मूत्रश्रवणाक्षिरोग (अ. ४.)

,, वैस्वर्य-वैवर्ण्य (इ.)

હરિ-અર્જુન-કોમભાવાઃ રંગાદિભીર્ન કપિલ તેમજ  
સ્વેતપક્ષુઃ ઓર લોમોઃ કપિચના એવં શ્વેતતા, તુટ-તરસ  
પ્લાસ, ખાસ-શ્વાસ, શ્વાસ, કાસ-ઉપાસ કાસ, ઝવર-  
તાપ ઝવર, રક્તપિત્ત-રક્તપિત્ત રક્તપિત્ત, વૈસ્વર્વ-વિસ્વરતા  
સ્વરભેદ, શોષાઃ અને શોષ અને શોષ ભવન્તિ એ  
રોગો ધણ થાય છે એ રોગ સી ઉત્પન્ન હોય  
છે ॥ ૧૦૭-૧૦૯ ॥

107-109. All kinds of rhinitis described above, if aggravated by unwholesome diet or neglect, will develop into a pernicious type of rhinitis. Then, it will give rise to various disorders of sternutation, atrophic rhinitis, nasal obstruction, nasal catarrh, ozena, chronic rhinitis, suppurative rhinitis, edematous rhinitis, nasal growth, sanguineous purulent rhinitis, furunculosis, the disorders of the head, ear and eye alopecia, tawnyiness or greyiness of the hair thirst, dyspnea, cough, fever, hemothermia and alteration of the voice and consumption.

દુષ્ટપ્રતિશ્યાયસ્ય લક્ષણમ્—

રોગાભિગાતસ્રવશોષપાકૈ-

ગ્રાણં યુતં યદ્વ ન વેત્તિ ગન્ધમ્ ।

દુર્ગન્ધિ ત્વાસ્યં બહુશઃ પ્રકોપિ

દુષ્ટપ્રતિશ્યાયમુદાહરેત્તમ્ ॥૧૧૦॥

ગ્રાણમ્ જેમાં નાસિકા જિમ્મે નાસિકા, રોવ-રોવ  
રુકાવટ, અભિગાત-પ્રહાર ચોટ, સ્રવ-શ્વાસ સ્રાવ,  
શોષ-શોષ શોષ, પાકૈઃ યુતમ્ અને પાકથી યુક્ત થાય  
છે ઓર પાકથી યુક્ત હોતી છે, યઃ ચ જેમાં મનુષ્ય  
જિમ્મે મનુષ્ય, ગન્ધમ્ ગન્ધને ગન્ધકો, ન વેત્તિ પારખતો  
નથી મહી જાનતા, ત્વાસ્યં ચ જેમાં મુખ મુલ,  
દુર્ગન્ધિ વાસ માટે છે દુર્ગન્ધયુક્ત હોતા છે, બહુશઃ  
અને વારંવાર ઓર વારંવાર, પ્રકોપિ પ્રહાર પામે છે

પ્રકુપિત હોતા છે, તમ્ તેને અને, દુષ્ટપ્રતિશ્યાયમુદા  
પ્રતિશ્યાય દુષ્ટ પ્રતિશ્યાય, ઉદાહરેત્ કહે છે કહ્યો  
છે ॥ ૧૧૦ ॥

110. Nasal obstruction, ulceration, discharge, atrophy or suppuration, loss of the sense of smell, fetor oris and frequent attacks of the disease—know all these to be the symptoms of the pernicious type of rhinitis.

શ્વથોઃ, નાસાશોષસ્ય ચ લક્ષણમ્—

સંસ્પૃશ્ય મર્માગ્બનિલસ્તુ મૂર્ધ્નિ

વિષ્વકપથસ્યઃ શ્વથું કરોતિ ।

ક્રુદઃ સ સંશોષ્ય કફં તુ નાસા-

શુક્લાટકગ્રાણવિશોષણં ચ ॥૧૧૧॥

મૂર્ધ્નિ મસ્તકમાં સિરમે, વિષ્વકપથસ્યઃ, સર્વ માર્ગમાં  
રહેલો ચારો ઓર રહ્યા હુઆ, બનિલઃ તુ વાયુ વાયુ,  
મર્માગ્નિ મર્માને મર્મા, સંસ્પૃશ્ય સ્પર્શ કરી સ્પર્શ  
કરકે, શ્વથુમ્ છીક છીક, કરોતિ ઉત્પન્ન કરે છે  
ઉત્પન્ન કરતા છે, સઃ તે વાયુ વદ વાયુ, ક્રુદઃ ક્રુપિત  
થઈ ક્રુપિત હો કર, કફમ્ તુ કફને કફકો, સંશોષ્ય  
સૂકાવી સુકાવર, નાસાશુક્લાટક- નાસાશુક્લાટક નાસા-  
શુક્લાટક, ગ્રાણવિશોષણમ્ ચ તથા ગ્રાણેન્દ્રિયને શોષ કરે  
છે ઓર ગ્રાણકા શોષ કરતા છે ॥ ૧૧૧ ॥

111. The vata, affecting the vital organs in the head and getting lodged in its passages, causes sternutation. The vata, getting provoked, dries up the kapha and causes atrophy of the turbinated bones and loss of smell (atrophic rhinitis)

પ્રતીનાહસ્ય લક્ષણં નાસાસ્રાવસ્ય લક્ષણં ચ—

ઉચ્છ્વાસમાર્ગં તુ કફઃ સવાતો

ચન્ધ્યાત્ પ્રતીનાહમુદાહરેત્તમ્ ।

यो मस्तुलुङ्गाद्वनपीतपकः

कफः स्रवेदेष परिस्रवस्तु ॥११२॥

सवातः ने रोगभा वायुसहित वातके साथ, कफः तु उद् कफ, उच्छ्वासमार्गम् उच्छ्वासमार्गने प्रश्वासके मार्गको, रुन्ध्यात् रोद्धे छे रोकता है, तस् तेने उसे, प्रतीनाहम् प्रतीनाह प्रतीनाह, उदाहरेत् उद्देवे। कहना चाहिए, यः ने जो, मस्तुलुङ्गात् मस्तिष्कमार्गं मस्तिष्कसे, घन-भाटे घना, पीत-पीजौ पीला, पकः अने पाडेवे। और पका हुआ, कफः उद् कफ, स्रवेत् स्रवे छे बहता है, एवः तु ते वह, परिस्रवः परिस्रव उद्देवाय छे परिस्रव कहा जाता है ॥ ११२ ॥

112. It should be known as nasal obstruction, when the kapha with vata obstructs the channels of breathing. That is the condition of nasal catarrh where there is thick yellow and ripe discharge from the head or brain.

पूतिनस्य, अपीनसस्य च लक्षणम्—

वैवर्ण्यदौर्गन्ध्यमुपेक्षया तु

स्यात् पूतिनस्यं श्वयथुर्ग्रमम् ।

आनद्यते यस्य विशुष्यते च

प्रक्रियते धूप्यति चापि नासा ॥११३॥

न वेत्ति यो गन्धरसांश्च जस्तु-

जुष्टं व्यवस्येत्तमपीनसेन ।

तं चानिलश्लेष्मभवं विकारं

ब्रूयात् प्रतिश्यायसमानलिङ्गम् ॥११४॥

उपेक्षया तु उपेक्षा उद्देवाभी उपेक्षासे, वैवर्ण्य- ने रोगभा नाउने। रंग अद्वाध अय छे नासिका विवर्ण होती है, दौर्गन्ध्यम् अने तेभा दुर्गन्ध साथ छे और उसमें दुर्गन्ध होती है, श्वयथुः सोने साथ छे शोक होता है, ग्रमः च तेभ्य अक्षर और चहर, स्वाद आने छे आता है, पूतिनस्यम् ते पूतिनस्य उद्देवाय छे वह पूतिनस्य कहा जाता है, यस्य नेनु जिसकी, नासा नाक नासा, आनद्यते आनद्युक्त साथ छे आनद्युक्त होती है, चिकित्सते चिकित्सते अने छे चिकित्स

होती है, प्रक्रियते उद्देवुक्त साथ छे क्रियुक्त होती है, धूप्यति च अपि अने धूमाडा नेनु नीकणतुं होय अवे साथ छे और धूमा निकलने जैसे भावसे युक्त होती है, यः जस्तुः तथा ने मनुष्य और जो मनुष्य, गन्धरसांश्च गंध तथा रसने गंध और रसोंको, न वेत्ति अश्नुते न होय नहीं पहिचानता, तस् ते भास्- सने वह, अपीनसेन जुष्टम् अपीनसे रोग यथे छे अपीनसे आकान्त है, व्यवस्येत् अयम् अश्नुतुं ऐसा जाने अनिक- रात वात, श्लेष्म- तथा उद्देवा तथा कफम् मवस्य उत्पन्न यथेवा उत्पन्न, तस् च ते रोगने उस रोगको, प्रतिश्याय- प्रतिश्यायना प्रतिश्याय, समान- लिङ्गम् समान लक्षणवाला जैसे लक्षणवाला, ब्रूयात् उद्देवा कहे ॥ ११३-११४ ॥

113-114. Due to neglect, there develop discoloration, stinking, swelling, and giddiness; this condition is called 'ozena'. Where there is obstruction, drying, softening or fuming in the nose, the person is not able to recognise smell or taste, know him to be affected with rhinitis. It should be regarded as disorder due to vata-cum-kapha if its symptoms are like those of acute rhinitis.

घ्राणपाकस्य लक्षणं, नासाश्वयथोः लक्षणं, नासावुद्धस्य लक्षणं च —

सदाहरागः श्वयथुः सपाकः

स्यात् घ्राणपाकोऽपि च रक्तपित्तात् ।

घ्राणाश्रितास्तृप्तिभृतीन् प्रदूष्य

कुर्वन्ति नासाश्वयथुं मलाश्च ॥११५॥

घ्राणे तथोच्छ्वासगतिं निरुध्य

मांसाश्च दोषावपि चार्बुदाणि ।

रक्तपित्तात् च अपि दोषा तथा पित्तभी रक्त और पित्तसे, सदाहरागः दाह तथा आवाशभी युक्त दाह और लालीसे युक्त, सपाकः श्वयथुः अने पाकवाला सोने



आयुं छे आर पाकयुक्त शोक होता है। प्राणशक्तः छे प्राणुप्रायः वह प्राणशक्त, नासः छे कहल जाता है। मलाः च वात, पित्त आने छे वातादि दोष, प्राणाश्रित- नासिका छे नासाश्रित, पित्त- प्रभृतीन् दोषी वगेरे पातु शोने रक्तदोष, प्रदूषण इषित करी अत्यन्त दूषित करके, नासाश्रयस्थुं नासिका से आने नासाका शोक कुर्वन्ति करे - करते हैं। तथा तथा तथा। प्राणे नासिका नासिका, उच्छ्वासगतिम् उच्छ्वासगति गतिने स्वाश्वसी गतिको, निरुध्य रेडी रोककर, नास- मन्त्र-दोषात् अपि भक्ष तथा दोषीना दोषी पक्ष मांस तथा रक्तको दुष्टिने भी अर्बुदानि च अर्बुदोने उत्पन्न करे छे अर्बुदोको उत्पन्न करते हैं ॥ ११५ ॥

115-115. The inflammation of the nose due to vitiation of blood and pitta, will cause burning, redness, swelling and suppuration. The morbid humor vitiating the blood and some other tissues of the nasal region cause swelling in the nose; and as a result of the vitiation of flesh and blood, there will form nasal growths which cause obstruction to breathing.

पूरकस्य लक्षणम्—

प्राणात् खवेत्वा भवणात्मुखाद्वा

पित्ताकमसं त्वपि पूरकम् ॥११६॥

प्राणात् नासिकां नासिका भवणात् कानमांसी कानसे, मुखात् वा छे मुखांसी या मुखासे, पित्ताकम् पित्तसहित पित्तयुक्त, मन्त्रं तु अपि ने दोषी जो रक्त, खवेत् नहे छे बहता है वह, पूरकम् पूरक छे नास छे पूरक कहा जाता है ॥ ११६ ॥

116. There will be discharge from the nose, ear, or the mouth, of the blood, tinged yellow with the color of

pitta. This is called sanguino purulent rhinitis.

अरुषिभ्याः लक्षणं दीप्तस्य लक्षणं च—

कर्णात् सपित्तं पवनस्त्वगादीन्

संदूष्य चारुषि सपाकवन्ति ।

नासा प्रदीप्तेव नरस्य यस्य

दीप्तं तु तं रोगमुदाहरन्ति ॥११७॥

इति नासारोगनिदानम् ।

सपित्तः पित्तसहित पित्तयुक्त, पवनः पवन वायु, त्वगादीन् तथा वगेरेने त्वका आदिको, संदूष्य सारी रीते दूषित करी अत्यन्त दूषित करके, सपाकवन्ति पाकवाणी पाकयुक्त, अरुषि च दोषीओने उत्पन्न करे छे अरुषिकाको उत्पन्न करता है, यस्य ने जिस, नरस्य पुरुषो पुरुषको। नासा नास नासा, प्रदीप्ता इव अक्षे सजगत् दोष जलती हुई सी प्रतीत हो, तम् तु ते उस, रोग रोगने रोगको, दीप्त दीप्त दीप्त, उदाहरन्ति उहे छे कहते हैं ॥ ११७ ॥ इति आ। यह, नासारोग- निदानम् नासारोगनिदान छे नासारोगनिदान है।

117. The vata combined with pitta vitiating the skin and the superficial tissues, causes 'furunculosis' which suppurates. They call that condition red-nose, the condition where a man's nose is shining bright and red like fire. Thus has been described the pathology of diseases of the nose.

शिरोरोगस्य वातजादिमेवेन लक्षणानि—

भृशार्तिशूलं स्फुरतीह वातात्

पित्तात् सदाहार्ति कफाद्गुरु स्यात् ।

सर्वेस्त्रिदोषं किमिभिस्तु कण्डू-

दौर्गन्ध्यतोदातिर्युतं शिरः स्यात् ॥११८॥

इति शिरोरोगनिदानम् ।

वातान्न वातभी वातसे, भृशार्तिशूलम् आधुं  
अत्यंत पीडा तथा शूलवन्तुं यमसिं बहुत पीडा  
और शूलसे युक्त होकर, इह स्फुरति इरडे छे फड़कता है,  
पित्ताद् पित्तीय पित्तसे, सदाहार्ति दाहयुक्त पीडावन्तुं  
आधु छे दाहयुक्त पीडावाला होता है, कफाद् उक्षी  
कफसे गुरु भारे भारी, स्याद् आधु छे होता है, सर्वैः  
अने सर्व दोषे थी और सब दोषों, त्रिदोषम् त्रि  
दोषेवाणुं आधु छे तीन दोषवाला होता है, क्रिमिभिः  
तु इभ्यो क्रिमिजोसे, शिरः भरतश्च सिर, कण्डू- अरज  
खुजली, दौर्गन्ध- दुर्गन्ध दुर्गन्ध, तोद-अग्नि-युतम् तोद  
तथा पीडावन्तुं तोद तथा पीडासे युक्त स्याद् आधु छे  
होता है ॥ ११८ ॥ इति आ यह, शिरोरोगनिदानम्  
शिरोरोगनिदान छे शिरोरोगनिदान है।

118. In headache due to vata, there  
will be severe pain, ache, or throbbing;  
in pitta type, pain and burning; and  
in kapha type, heaviness; and all  
symptoms in tridiscordance type; while  
in case of parasitic infection, there  
occur itching, stink, pricking sensation  
and pain. Thus has been described  
the pathology of the diseases of the  
head.

मुखरोगस्य वातजादिभेदेन लक्षणानि—

मुखामये मारुतजे तु शोष-

कार्कश्यरौक्ष्याणि चला रुजश्च

कृष्णारुणं निष्पतनं सशीतं

प्रसंसनस्पन्दनतोदभेदाः ॥११९॥

तृष्णाज्वरस्फोटकतालुदाहा

धूमायनं चाप्यवदीर्णता च ।

पित्तात् समूर्च्छा विविधा रुजश्च

वर्णाश्च शुक्लारुणवर्णवर्ज्याः ॥१२०॥

१२०. तृष्णाज्वरस्फोटकतालुदाहा तृष्णाज्वरस्फोटक-

दाहपाकाः (ब.)

वर्ण-पाण्डु (ब.)

कण्डूगुरुत्वं सितविज्जलत्वं

स्नेहोऽरुचिर्जाड्यकफप्रसेकौ ।

उत्क्लेशमन्दानलता च तन्द्रा

रुजश्च मन्दाः कफवक्त्ररोगे ॥१२१॥

मारुतजे तु वातभी थयेदा वातजन्य, मुखामये मुख-  
रोगभा मुखरोगमें, शोष- शोष शोष, कार्कश्य- कठोरता  
कठोरता, रौक्ष्याणि रूक्षता रूक्षता, चलाः अने अली  
तली इरती और अस्थिर रुजा च पीडाओ वेदनमें,  
स्युः आधु छे होती हैं, लशीतम् लंशी दागवाथी सरकी  
लगनेसे, कृष्ण- दागः काली, अरुणम् तथा दाह पथुने।  
और लाल वर्णसे, निष्पतनम् मुखस्याव लालका बहना,  
प्रसंसन- दाता पडुं दांतका गिरना, तोद- व्यथा तोद,  
भेदाः तथा इट और भेदनके समान पीडा, पित्तात्  
पित्तीय थयेदा मुखरोगभा पित्तजन्य मुखरोगमें, तृष्णा-  
तरस प्यास, ज्वर- तात्र ज्वर, स्फोटक- छाया  
विस्फोटक, तालु- ताणवाने। तालुका, दाहाः दाह दाह,  
धूमायनं च अपि मुखभाथी धूमाधु नेपुं नीकणपुं मुखसे  
धुवां निकलने जैसा भाव, अवदीर्णता दाह वगेरेतुं इटपुं  
होट आदिका फटना, समूर्च्छाः भू-छा मूर्च्छा, विविधाः  
अतःअतन्नी त्रिविध प्रकारकी, रुजः च पीडा पीडा,  
शुक्ल- अने मुख पर श्वेत और मुख पर श्वेत, अरुण-  
अने दाह और लालको, वर्ज्याः च सिवायना छोड़कर,  
वर्णाः रोग उत्पन्न आधु छे जोष रंग होते हैं, कफ-  
वक्त्ररोगे अने उक्षी उत्पन्न थयेदा मुखरोगभा और  
कफजन्य मुखरोगमें, कण्डूः अरज खुजली, गुरुत्वम्  
भारेपणुं भारीपन, सितविज्जलत्वम् श्वेतरंग, जिडाश,  
सफेदी पिच्छिलता, स्नेहः स्निग्धता जिरगता, अरुचिः  
अनुचि अरुचि, जाड्य- जडता जडता, कफप्रसेकौ  
उक्षुं नीकणपुं कफका प्रसेक, उत्क्लेश- मोण उत्क्लेश,  
मन्दानलता च भृशनिपणुं अग्निमांश, तन्द्रा तन्द्रा  
तंद्रा, मन्दाः अने मंद और मंद, रुजः पीडाओ  
आधु छे रुजा होती हैं ॥ ११९-१२१ ॥

119-121. In diseases of the mouth  
due to vata, there will be dehydration,  
roughness, dryness, fleeting pain,

121. स्नेहो-स्नेहो (ब.)

dusky red coloration, salivation, coldness, loosening of teeth, throbbing, pricking pain and fissures. In a condition due to pitta, there will be thirst, fever, sores burning of the palate, fuming and ulcerations, fainting, various kinds of pain and discoloration excepting that of white and dusky-red one. And in the diseases of mouth due to kapha, there will be itching, heaviness, pallor, sliminess, unctuousness, anorexia, dullness, increase of mucus, ptyalism, nausea, weakness of the gastric fire, torpor and dull pain.

सर्वाणि रूपाणि तु वक्त्ररोगे

भवन्ति यस्मिन् स तु सर्वजः स्यात् ।

संस्थानदूष्याकृतिनामभेदा-

चौले चतुःषष्टिविधा भवन्ति ॥१२२॥

यस्मिन् ७ जिव. वक्त्ररोगे भुभ्रशेभर्त्ता मुखरोगमें, सर्वाणि रूपाणि सब, रूपाणि ३५ लक्षण, भवन्ति होय छे होते हैं, सः तु ते वह, सर्वजः त्रिदोषी उत्पन्न सन्निपातजन्य, स्यात् अथो होय छे होता है, एते च आ आर भुभ्रशेभो ये रोग, संस्थान-स्थान संस्थान, दूष्य-दूष्य दूष्य, आकृति-आकृति आकृति, नामभेदात् तथा नामना भेदो और नामके भेदसे, चतुःषष्टि-थोसठ चौसठ, विधाः प्रकारना प्रकारके, भवन्ति थाय छे होते हैं ॥ १२२ ॥

122. If all these symptoms appear together, then it is to be regarded as mouth-disease due to tridiscordance. These diseases of the mouth are sixty-four in number when designated according to seat of affection, susceptible body-tissue and shape.

१२१. सर्वजः स्वाद-सन्निपातात् (क.)

शालाक्यतन्त्रेऽभिहितानि तेषां  
निमित्तरूपाकृतिभेदजानि ।

यथाप्रदेशं तु चतुर्विधस्य

क्रियां प्रवक्ष्यामि मुञ्जामयस्य ॥१२३॥

इति मुखरोगनिदानम् ।

नेषाम् तेभ्योनां उनके, निमित्त-हेतु हेतु, रूप-पूर्व ३५ पूर्व रूप, आकृति- ३५ रूप, भेदजानि तथा औषध तथा चिकित्सा, शालाक्यतन्त्रे शालाक्यतन्त्रे, अभिहितानि ३६ छे कहे गये हैं, चतुर्विधस्य आर प्रकारना चार प्रकारके, मुञ्जामयस्य तु भुभ्रशेभो मुखरोगके, यथाप्रदेशम् प्रसंग अनुसार प्रसंगके अनुसार क्रियां चिकित्सा चिकित्सा, प्रवक्ष्यामि ३६ छे कहूंगा ॥ १२३ ॥ इति आ यह, मुखरोग-निदानम् भुभ्रशेभोनिदान छे मुखरोगनिदान है ।

123. In the treatise dealing with the special branch of Salakya-tantra are described the etiology, signs and symptoms, shape and treatment of these disorders in full. I shall describe the treatment of only four main types of mouth diseases in their relevant situations in this treatise. Thus has been described the pathology of the diseases of the mouth.

अरोचकस्य वातजादभेदेन लक्षणानि--

वातादिभिः शोकभयातिलोभ-

क्रोधैर्मनोघ्नाशनगन्धरूपैः ।

अरोचकाः स्युः परिहृष्टदन्तः

कषायवक्त्रश्च मतोऽनिलेन ॥१२४॥

१ ३ क्रियां प्रवक्ष्यामि मुञ्जामयस्य-चिकित्सां

वक्त्रगदस्य वक्ष्ये (फ. ५)

यथाप्रदेशं तु-अश्व-यथायं तु (क.)

१२४. क्रोधैर्मनोघ्नाशन-क्रोधावह्नाशन (क.)

अशन-अश्वि (द.)

स्युः परिहृष्टदन्तः कषायवक्त्रश्च मतोऽनिलेन-कर्कशहीत-  
दन्तकषायवक्त्रस्य मतोऽनिलेन (क.)

वातादिभिः वात वज्रेण वातादिस्ते, शोक- शोक, भय- भय भय, अतिक्रोम- अतिदोष अतिक्रोम, क्रोधैः क्रोध क्रोध, क्रोधोन्मत्त- क्रोधोन्मत्त आधातु करनः और मनके लिए अप्रिय, अज्ञान- भोजन भोजन, गन्ध- गन्ध गन्ध, रूपैः तथा उपधी तथा रूपे, अरोचकाः अरोचक अरोचक, स्युः थाय छे उत्पन्न होते हैं, अनिलेन वातधी धयेदा अरोचकभा नानज अरोचकमें, परिहृष्टदन्तः मनुष्यना दन्त आभाध अय छे मनुष्यको दन्तहर्ष होता है, कषायवक्त्रः च अने भुषने स्वाद उसायेदा थाय छे और मुखना स्वाद कसैला होता है, मतः अभिमानाभा आवे छे ऐसा माना जाता है ॥ १२४ ॥

124. Anorexia is caused by the provocation of vata and other humors as also by grief, fear, excessive greed, anger, unpleasant foods, smells and sights; setting the teeth on edge and astringent taste in the mouth are known to result from morbid vata.

कटुम्लमुष्णं विरसं च पूते  
पित्तेन विद्याल्लवणं च वक्त्रम् ।  
माधुर्यपैच्छिन्नगुरुत्वशैत्य-  
विवक्षसंबन्धयुतं कफेन ॥ १२५ ॥

पित्तेन पित्तधी धयेदा अरोचकभा पित्तज अरोचकमें, वक्त्रम् भुष मुख, कटु कटु कटु, अम्लम् अम्ल अम्ल, उष्णम् उष्ण उष्ण, विरसम् विरस विरस, पूति च दुर्गन्धयुक्त दुर्गन्धी, लवणम् च तथा भातुं थाय छे तथा नमस्त्रिण होता है, कफेन अने उक्षी धयेदा अरोचकभा भुष और कफजन्य अरोचकमें मुख माधुर्य-भधुरता मिठास, पैच्छिन्न- पिच्छिलता, गुरुत्व- भारेपक्षुं भारीपन, शैत्य- ठंडापक्षुं शीतलता, विवक्ष- आहारभा असमर्थपक्षुं आहारमें असमर्थता, संबन्ध- युतम् तथा उक्षे संधि औषधी युक्त थाय छे तथा कफका संबन्ध इनसे युक्त होता है ॥ १२५ ॥

125. Pungent taste, acid taste hot and bad taste, stinking and salt taste in the mouth should be regarded as a result of morbid pitta. There will be sweet taste in the mouth and sliminess, heaviness and coldness and discharge of lumpy mucus in conditions due to kapha.

अरोचके शोकभयातिक्रोम-  
क्रोधाद्यद्व्याशयगन्धजे स्यात् ।  
स्वाभाविकं वक्त्रमथारुचिश्च  
त्रिदोषजे नैकरसं भवेत् ॥ १२६ ॥

इत्यरोचकनिदानम् ।

शोक- शोक शोक, भय- भय भय, अतिक्रोम- अतिदोष अतिक्रोम, क्रोधादि- क्रोध वज्रे क्रोधादि, गन्ध- आधुमभता हृदयके लिए अप्रिय, अज्ञान- भोजन भोजन, गन्धजे अने गन्धधी धयेदा और गन्धजे उत्पन्न, अरोचके अरोचकभा अरोचकमें, वक्त्रम् भुष मुख, स्वाभाविकम् स्वाभाविक रसवाणुं होय छे स्वाभाविक रसयुक्त होता है, अथ परंतु परन्तु अरुचिः अरुचि अरुचि, स्वात् होय छे होती है, त्रिदोषजे तु अने त्रिषु दोषधी उत्पन्न धयेदा अरोचकभा और त्रिदोष-जन्य अरोचकमें, नैकरसत्वं भुष अने उक्षे रसवाणुं मुख अने रसयुक्त, भवेत् होय छे होता है ॥ १२६ ॥ इति आ यह, अरोचकनिदानम् अरोचकनिदान छे अरोचकनिदान है ।

126. In anorexia due to grief, fear, excessive greed, anger, and unpleasant food and smell, though the mouth is in a normal condition, yet there will be anorexia. In condition of tridiscordance, there will be

१२६. हृषाशन-हृषाशुचि (व. व.)

स्वाभाविकं वक्त्रमथारुचिश्च-स्वाभाविकस्वात्परसोदरुचिश्च

१२५. विवक्षसंबन्धयुतम्-विवक्षसंस्तम्भयुतम् (व.)

(व)

varying tastes in the mouth. Thus has been described the pathology of anorexia.

कर्णरोगस्य वातजादिभेदेन लक्षणानि—

नादोऽतिरुक्कर्मलस्य शोषः

स्त्रावस्तनुश्चाश्रवणं च वातात् ।

शोकः सरागो दरणं विदाहः

सपीतपूतिस्त्रवणं च पित्तात् ॥१२॥

वैश्रुत्यकण्डूस्थिरशोफशुक्ल-

स्निग्धस्रुतिः श्लेष्मभवेऽवरुक् च ।

सर्वाणि रूपाणि तु सन्निपातात्

स्त्रावश्च तत्राधिकदोषवर्णः ॥१२८॥

इति कर्णरोगनिदानम् ।

वातात् वातधी भयेदा कर्णरोगमा वातज कर्ण-  
रोगमें, नादः नाद आवाज, अतिरुक् अतिपीडा अत्यन्त  
वेदना, कर्मलस्य डाननी भेदन कानके मेलका,  
शोषः सूखाई अर्बु शुष्क होना, तनुः स्त्रावः पातणै।  
स्त्राव पतला स्त्राव, अश्रवणम् च तथा भहेरापणु  
थाय अ तथा बहेरापन होता है पित्तात् पित्तधी  
भयेदा कर्णरोगमा पित्तज कर्णरोगमें, सरागः दाह श-  
सहित लालीके साथ, शोकः सेओ शोथ, दरणम् दाट  
फटना, विदाहः विदाह विदाह, सपीत- अने पीणे।  
और पीले रंगसे युक्त, पूतिस्त्रवणम् च तथा दुर्गन्धिवाणै।  
पुनुने स्त्राव थाय अ तथा सड़ा हुआ स्त्राव होता है, श्लेष्मभवे  
उद्धथी भयेदा कर्णरोगमा कफज कर्णरोगमें, वैश्रुत्य-  
साभगवानी भाभी विकृत सुनना, कण्डू- अरु खुजली  
स्थिरशोफ- स्थिर सेओ स्थिर शोथ, शुक्लस्निग्ध- धीणै।  
तथा स्निग्ध सफेद और स्निग्ध, स्रुतिः पुनुने स्त्राव स्त्राव  
अवरुक् च तथा थोड़ी पीडा थाय अ तथा अल्प पीडा होती  
है, सन्निपातात् तु अने सन्निपातधी भयेदा कर्णरोगमा  
और सन्निपातजन्य कर्णरोगमें, सर्वाणि रूपाणि त्रये रोगमा  
लक्षणे। थाय अ सब लक्षण होते हैं, तत्र अने तेमा और  
वहां, अधिकदोषवर्णः स्त्रावः च अ दोषनी अधिकता  
होय अ ते रोगना रंग नेवे। पुनुना स्त्रावने। रंग  
होय अ प्रबल दोषके अनुसार रंगवाला स्त्राव होता है।

॥ १२७ १२८ ॥ इति कर्णरोगनिदानम् अथ कर्णरोग-  
निदान अथ कर्णरोगनिदान है ।

127-128. Tinnitus (noises in the ear),  
excessive pain, drying of the ear-wax,  
thin discharge and deafness occur in  
condition due to vata. Swelling, red-  
ness bursting, burning, yellow and  
putrid discharge occur in condition  
due to pitta. Dys-acousma, itching, rigid  
swelling, white and sticky discharge  
and slight pain occur in condition  
caused by kapha. In condition of  
tridiscordance, there will be all the  
signs and symptoms and the discharge  
excessively morbid and containing  
many colors. Thus has been described  
the pathology of ear-diseases.

नेत्ररोगस्य वातजादिभेदेन लक्षणानि —

अल्पस्तु रागोऽनुपदेहर्लाक्ष

सतोदमेदोऽनिलजाक्षिरोगे ।

पित्तात् सदाहोऽतिरुजः सरागः

पीतोपदेहः सुभ्रशोष्णवाही ॥१२९॥

अनिलज- वातधी भयेदा वातजन्य, अक्षिरोगे नेत्र-  
रोगमा नेत्ररोगमें, अल्पः तु आभमा थोड़ी थोड़ी  
रागः रताश होय अ लाली होती है, अनुपदेहवान् च  
थीपडा नगता नथी और मैल नहीं आता, सतोदमेदः  
अने पीडा तथा भेद थाय अ और तोद तथा मेद  
होते हैं, पित्तात् पित्तधी भयेदा नेत्ररोगमा पित्तजन्य  
नेत्ररोगमें, सदाहः दाह दाह, अतिरुजः अति पीडा

॥ १२९ ॥ अल्पस्तु.....रोगे-अल्पस्तु रागोऽनुपदेहर्लाक्ष अल्पस्तु-

अतिरुजश्च वातात् (अ. ब. ड. व.)

, सुभ्रशोष्णवाही-सुभ्रशोष्णमस्रु (अ. क.)

, -सुभ्रशोष्णमस्रु (ख.)

, पित्तात्.....सुभ्रशोष्णवाही-पित्तात् सदाहोऽतिरुजोऽति-

रागाः पीतोपदेहः सुभ्रशोष्णमस्रु (अ. ड.)

अत्यन्त रुजा, सरागः तथा रक्तशः अथ छे तथा काली होती है, पीतोपदेहः तेभ्यः पीणः पीपः वणे ८ पीला मैल, सुभृज्ज- अने अत्यन्त नीर अत्यन्त, उष्ण- बाही भिना आंसु बहे छे मयम खाव होता है ॥१२९॥

129. Slight redness absence of mucus, secretion and lachrymation, and pricking and cutting pains occur in eye disease due to vata. In condition due to pitta, there will be burning acute pain great redness yellow discharge and profuse and warm lachrymation.

### शुक्रोपदेहं बहुपिच्छिलाश्च

नेत्रं कफान् स्याद्गुरुता सकण्डूः ।

सर्वाणि रूपाणि तु त्रिदोषात् ।

त्रेवामयाः षण्णवतिस्तु मेदात् ॥१३०॥

कफात् उक्षी भूक्षी नेत्ररोगमा ककजन्व नेत्ररोगमें, नेत्रम् शुक्रोपदेहम् आभमा पीणः पीपः वणे छे नेत्र सफेद मैलसे युक्त रहते हैं बहु- धृष्टा अत्यन्त, पिच्छिल- पीपः पिच्छिल, अश्रु आंसु बहे छे आंसु बहते हैं, सकण्डूः तेभ्यः अरभ एवं खुजली, गुरुता अने भारेपण्युं थाय छे और भारेपन होता है, त्रिदोषात् तु त्रिदोषात् भूक्षी नेत्ररोगमा त्रिदोष- जन्व नेत्ररोगमें, सर्वाणि रूपाणि त्रिदोषात् सधणा दक्षिणः थाय छे तीन दोषके सब लक्षण होते हैं, मेदात् स्थान आदिना भेदधी स्थान आदिके मेदसे, नेत्रादयाः आ नेत्ररोगना इस नेत्ररोगके, षण्णवतिः ८६ अक्षय थाय छे ९६ प्रकार होते हैं ॥ १३० ॥

130. White discharge, profuse and viscid lachrymation heaviness of the eye and itching occur in the kapha type. All these symptoms together occur in condition of tridiscordance. All

१३०. शुक्रोपदेहं-शुक्रोपदेहो (क.)

,, नेत्रामयाः षण्णवतिस्तु मेदात्-षट्सप्ततिर्नेत्ररोगास्तु

मेदात् (ड. फ.)

eye diseases are classified into ninety six varieties

तेषामपि चिकित्सा विविधा

शालाक्यतन्त्रेषु चिकित्सितं च ।

पराधिकारे तु न विस्तरोक्तिः

शस्तेति तेनात्र न नः प्रयासः ॥१३१॥

इति नेत्ररोगनिदानम् ।

तेषाम् नेत्राणां रोगके, अभिव्यक्तिः दक्षिणः लक्षण, चिकित्सितं च तः चिकित्सा तथा चिकित्सा, शालाक्यतन्त्रेषु शालाक्यतन्त्रेषु शालाक्यतन्त्रमें, अभि- तदिष्टा उक्ता छे उक्ते हैं, पराधिकारे तु अभिभवा अधिकारमा दूसरेका अधिकार होनेसे, विस्तरोक्तिः विस्तारथी उक्ते विस्तारमें कहना, न कस्ता इति योज्य तथी प्रयास नहीं है, तेनात्रः तथी अभ्यासे उसमें हमारा, अत्र छे विशेष इस विषयमें, प्रयासः प्रयास प्रयास, न तथी नहीं है ॥१३२॥ इति आ ग्रह, नेत्ररोग- निदानम् नेत्ररोगनिदानम् नेत्ररोगनिदानम् है ।

131. Their signs, symptoms and treatment are described in the treatise on the special branch of Salakva-tantra. It is not attempted by us to expatiate on them here, as that belongs to the province of specialists. Thus has been described the pathology of the disease of the eye

स्वास्थ्यं उक्षणं पलितस्य लक्षणं च -

तेजोऽनिलाद्यैः सह केशभूमि

दग्ध्वाऽऽशु कुर्यात् स्वस्ति नरस्य ।

किञ्चित् दग्ध्वा पलितानि कुर्या-

द्धरिप्रभत्यं च शिरोरक्षणम् ॥१३२॥

तेजः शरीरानी भरमी शरीरिक ऊष्मा, अनिलाद्यैः सह वायु वजरेनी साथे अग्नी वातदिके साथ, केश- भूमिम् केशनी भूमिमें केशभूमिको, दग्ध्वा आग्नी जलाकर, नरस्य मनुष्यने पुरुषमें, स्वस्ति दक्षिण स्वास्त्य, आशु तत्त शीघ्र, कुर्यात् उरे छे

१३२. अनिलाद्यैः सह-संशतं खड्ड (ड. फ.)

उत्पन्न करता है, किंचित् तु देशेन भूमिने शोभी केश भूमिको शोभा, दग्ध्वा आग्नीने जलाकर, पलितानि पाण्डितं धोणापक्ष्णं पालित्य, शिरोरुहाणां तन्मा पाण्डितं और बालोंमें, हरिप्रभत्वस् च भूरापक्ष्णं भूरापन, कुर्यात् करे छे करता है ॥ १३२ ॥

132. The thermal element, combined with the vata and other humors, scorches up the scalp and produces alopecia. By partial scorching, it causes grayness or tawny color of the hair.

ऊर्ध्वजत्रुरोगनिदानोपसंहारः—

इत्यूर्ध्वजत्रुत्थगदैकदेशः-

तन्त्रे निबद्धोऽयमशून्यतार्थम् ।

अतः परं मेषजसंग्रहं तु

निबोध संक्षेपत उच्यमानम् ॥ १३३ ॥

इति खालित्वरोगनिदानम् ।

હતિ આ પ્રમાણે હવ પ્રકાર અયમ્ આ યત્, ऊर्ध्वजत्रुत्थ- ઉર્ધ્વજત્રુજ, गदैकदेशः- ગદૈકદેશઃ, रोगोऽयं भागं रोगोका एक भाग, तन्त्रे आ शास्त्रम्, इस शास्त्रमें, अशून्यतार्थम्-અશૂન્યતાર્થમ્, न्यूनतायां परिहार भाटे न्यूनताके परिहाके लिए निबद्धः उक्तो छे कहा है, अतः परम् एवं पक्षी अब आगे, संक्षेपतः संक्षेपथी संक्षेपसे, उच्यमानम् उच्यमाना अप्रता कहे जानेवाले, मेषजसंग्रहं तु औषधेना संग्रहने औषधसंग्रहको, निबोध आग्रही सुनो ॥ १३३ ॥ इति आ यह खालित्वरोगनिदानम् आक्षित्वरोगनिदान छे खालित्व-रोग निदान है ।

133. The local affections, occurring in the upper supra-clavicular part of

૧૩૩. તન્ત્રે-સૂત્રે (ધ.)

.. તન્ત્રે.....ઉચ્યમાનમ્-પ્રોક્તશિક્તિભાં ત પરં નિબોધ ।

વિસ્તારતઃ સંગ્રહનમ્ સમ્યગ્ ચથાક્રમં સૌમ્ય મયોચ્ય-  
માનામ્ (ક. દ. ખ.)

.. અતઃ પરં.....ઉચ્યમાનમ્-પ્રોક્તશિક્તિભાં ત પરં

નિબોધ તન્ત્રે નિબદ્ધોઽયમશૂન્યતાર્થમ્ (ક.)

the body is described here; in order to obviate the censure of an absolute omission of them in this treatise. Henceforth, listen to the excellent epitome of their therapeutics succinctly described. Thus has been described the pathology of alopecia.

પીનસનાસારોગચિકિત્સા—

वातात् सकासवैस्वर्ये सक्षारं पीनसे घृतम् ।

पिवेद्रसं पयश्चाणं स्नेहिकं धूममेव वा ॥ १३४ ॥

વાતાત્ વાતથી થયેલ વાતજન્ય, सकासवैस्वर्ये ખાંસી, स्वरमेदः खांसी, स्वरमेद, पीनसे અને पीनसभा और पीनसमें, सक्षारम् अवभारसहित यवक्षारयुक्त, घृतम् भी घी. रसम् भांसरस मांसरस, उष्णम् च पयः अथवा शितुं दूध अथवा गरम दूध, स्नेहिकम् કે સ્નેહિક या स्नेहिक, धूमम् एव वा पिवे धूमपान કરવું ધૂમ પીવે ॥ ૧૩૪ ॥

134. In coryza due to vata: accompanied with cough and laryngeal disorders, the patient may drink ghee mixed with alkali or meat-juice or warm milk or may inhale unctuous smoke.

शताह्वा त्वग्बला मूलं स्योनाकैरण्डविल्वजम् ।

सारग्वधं पिवेद्वर्ति मधूच्छिष्टवसाधृतैः ॥ १३५ ॥

શતાહ્વા મુલા સૌક ત્વક્ તજ દાલચીની, बला पक्षातुं भूषा बलाकी जड़, स्योनाक- टेण्डु टेण्डુ, एरण्ड- એરંડા एरण्ड. विल्वजम् मूला અને ખીલીનાં મૂળની બાલ और बेलकी जड़की छाल, सारग्वधम् અને ગરમાણાની બાલ એઓની और अमलतासकी छाल इनकी, मधूच्छिष्ट- મીષુ સોમ, वसा- वसा वसा, घृतैः तथा घीनी साथे तथा घीसे, वर्तिम् पिवेत् ખીડી કરી પીવી વર્તિ बनाकर पीवे ॥ १३५ ॥

૧૩૪. વૈસ્વર્ય-વૈસ્વર્ય (ક.)

૧૩૫. સ્યોનાકૈ-શ્યોનાકૈ (ક.)



135. He should smoke cigar prepared of dill seeds, cinnamon bark, roots of heart-leaved sida, indian calosanthos, castor plant, bael, purging cassia, bee's wax, fat and ghee.

सकुपूसः—

अथवा सघृतान् सकून् कृत्वा मल्लकसंपुटे ।  
नवप्रतिश्यायवतां धूमं वैद्यः प्रयोजयेत् ॥१३६॥

अथवा अथवा या, मल्लकसंपुटे नगीनाणां शक्ति-  
राना संपुटमां शरावोंके संपुटमें, सघृतान् धीनाणां  
वीके साथ, सकून् कृत्वा साथवा अथ करी मल्लको  
बन्दकर वैद्यः वैद्य वैद्य, नव-नवी नवोत्पन्न प्रतिश्याय-  
वताम् शरीरवाणा रोगीने प्रतिश्यायके रोगीको, धूम  
तेने धूमाडा उत्तका धूमका, प्रयोजयेत् पावे प्रयोग  
करावे ॥१३६॥

136. Or the physician may administer inhalation by mixing powder of roasted paddy and ghee, and filling them in a pipe to the patients suffering from recent coryza.

आवस्थिकी चिकित्सा—

शङ्खमूर्धललाटातौ पाणिस्वेदापनाहनम् ।  
स्वभ्यक्ते श्वयुक्तावरोधादौ संकराद्यः ॥१३७॥

शङ्ख-धमल्लु शंखप्रदेश, मूर्ध-मस्तक सिर, लला-  
टातौ तथा ललाटनी पीडा होय ते तथा ललाट इनमें  
पीडा होने पर, पाणि-स्वेद-हस्तस्वेद हाथसे स्वेद, उप-  
नाहनम् तथा उपनाह करवा ओर्ध्वा और उपनाह  
करना चाहिए, श्वयु-छींके छींक, श्वयु-परिभाष  
नाकका बहना, रोधादौ तथा प्रतीनाह वजरेमां तथा  
प्रतीनाह आदिमें, स्वभ्यक्ते सारी रीते तेव आपडी  
अच्छी तरह अभ्यस करने पर, संकराद्यः संकर वजरे  
स्वेद आपवा ओर्ध्वा संकरादि स्वेद देवे ॥१३७॥

137. In pain in the temples, head and forehead, palm sudation or poul-

tices should be done; and in sneezing, nasal catarrh and nasal obstruction, mixed-sudation and other varieties of sudation should be administered, after duly inuncting the patient.

त्रेयाश्च रोहिषाज्जीवचातकारेचोरकाः ।  
सकृत्पत्रमरिचलानां चूर्णा वा सोपकुञ्चिका ॥१३८॥

रोहिष रोहिष धातु रोहिष घन, अजाजी-अजु-  
जीरा, बच्चा पत्र वच, तकारि-अरुणी अरणी, चोरकाः  
चोरक तथा चोचक, सोपकुञ्चिका-काणीअरी काया जीरा,  
त्वक्-तम् दालचीनी, पत्र-तमाक्षपत्र तेजपत्र, मरिच-  
काणी अरी मरिच गुलानास अने ओक्षली और  
इलायची. चूर्णाः वा ओक्षलीनां यूक्षीने इनके चूर्णको  
त्रेयाः च संघनां सूचे ॥१३८॥

138. The powders of ginger grass, cumin seed, sweet flag, wind killer, angelia as also the powders of cinna-  
mon, cinnamon leaves, black pepper, cardamom and black cumin should be used as snuff.

श्रोतःशृङ्गाटनासाक्षिशोषे तैलं च नावनम् ।  
तमाव्याजे तिलान् क्षीरे तेन पिष्टांस्तदूष्मणा ॥१३९॥  
मन्दस्निग्धान् सयष्ट्याश्चूर्णांस्तेनैव पीडयेत् ।

श्रोतः-श्रोत नासाश्रोत, शृङ्गाट-शृङ्गाटक शृङ्गाटक,  
नासाक्षिशोषे नासिका तथा नेत्र संक्षीर्ण अथ त्वारे  
नासा तथा आंख सूख जायें तब, तैलम् च तैलनु  
तैलका, नावनम् नावन आपवुं ओर्ध्वा नख करे,  
आजे क्षीरे अकरीना इधनी बकरीके दूधमें, तिकान्  
तदने तिलोंको, प्रमाव्य भावना आपी भावित करके,  
तेन ते इधनी साथे उध दूधके साथ, पिष्टान् पीसेधा पीसे  
हुए, तदूष्मणा अने तेनी गरमीशी और उसकी गरमीसे,  
मन्दस्निग्धान् धीमी आचमी पक्षाधि भयेधा ते तदने  
अद आचसे स्वेदित हुए उन तिलोंको, सयष्ट्याश्चूर्णांस्तेनैव

नेडीमधना यूर्ध्वनी साथे जेनी मुलहठीके चर्मे साथ  
सिलाकर, पच मूत्र पीवसेन् । नी अक्षरीके दूध नीभी  
तेभीने नीयेनी देखे, उनमें अक्षरीका दूध डालकर  
उनको निकोड लेवे ॥ १३९३ ॥

139-139½. In dryness of the inter-communicating channels of the nose ear and eyes, oil should be used as nasal medication. Soak til seeds in goat's milk and paste them with the same milk. Then, add to the paste the pulvis of liquorice and cook it with goat's milk-steam on a low fire, and express oil from it with the help of the same milk.

दशमूलस्य निष्काये रास्नामधुकककवत् ॥१३९०॥  
सिद्धं ससैन्धवं तैलं दशकृत्वोऽणु तत् स्मृतम् ।  
स्निग्धस्यास्थापनैर्दोषं निर्हरेद्वातपीनसे ॥१३९१॥

दशमूलस्य दशमूलना दशमूलके निष्काये कनाथभां  
काथमें, ससैन्धवम् सिंधुधालुसु सैन्धानमक, रास्ना- रास्ना  
रास्ना, मधुक- अने नेडीमधना और मुलहठीके, कक-  
वत् उड्डनी साथे ककके साथ, दशकृत्वः दशवार  
दसवार, सिद्धम् सिद्ध करेहुं सिद्ध त्वा हुआ, तत्  
तैलम् ते तैल वह तैल, अणु आणुतैल अणुतैल, स्मृतम्  
उडेनाथ छे कहा जाता है, वातपीनसे वायुना पीनसभां  
वायुके पीनसमें, स्निग्धस्य ते तैलथी स्नेहन कया, पछी  
उस तैलसे स्नेहन करनेके बाद, आस्थापनैः आस्थापना-  
द्वारा आस्थापनसे, दोषश्च दोषनु दोषका, निर्हरेत् हरण  
करे ॥ १४०-१४१ ॥

140-141. This medicated oil prepared in ten times the decoction of the deca-radices with the paste of indian groundsel, liquorice and rock salt, is known as 'Anu oil'. In coryza due to vata, the morbid humors should be cured by corrective enema given after duly oleating the patient.

स्निग्धस्य स्निग्धैश्च लघ्वन्नं प्रास्यादीनां रसैर्हितम्  
उष्णाम्बुना स्नानपाने निवातोष्णप्रतिश्रयः ॥१४२॥

स्निग्ध- स्निग्ध स्निग्ध, अम्ल- अम्ल अम्ल,  
उष्णः च अने उष्ण द्रव्ये साथे और उष्ण द्रव्योंके  
साथ, प्रास्यादीनाम् आभ्य आदि प्राणीओना प्रास्य  
आदि जीवोंके, रसैः भांसरसे वडे मांसरसोंके, लघ्वन्नश्च  
लघु अन्न लोअन लघु अन्नका भोजन, हितम् हित-  
कर है हितकर है स्नान- स्नान स्नान, पाने तथा पान  
तथा पान, उष्णाम्बुना गरम अणथी करवां गरम जलसे  
करना चाहिए, निवात- तेमअ पवनरहित एवं पवन-  
रहित, उष्ण- अने गरम और गरम, प्रतिश्रयः स्थानभां  
देनुं स्थानमें रहना चाहिए ॥ १४२ ॥

142. Light diet with unctuous, sour and hot meat-juices of domestic and other animals, the use of warm water for bath and potion, and warm lodging free from draught are beneficial.

चिन्ताव्यायामवाक्चेष्टाव्यवायविरतो भवेत् ।  
वातजे पीनसे धीमानिच्छेन्नवातमनो हितम् ॥१४३॥

आध्वनः पेटानु अपने, हितम् हित हितको, इच्छन्  
एव भच्छता चाहनेवाले, धीमान् बुद्धिमाने बुद्धिमानको,  
वातजे पीनसे वातज पीनसभां वातजन्य पीनसमें,  
चिन्ता- चिन्ता चिन्ता, व्यायाम- व्यायाम व्यायाम,  
वाक्- वाणी वाणी चेष्टा- चेष्टा, व्यवाय- अने  
व्यवायथी और व्यवायसे, विरतः निवृत्त निवृत्त, भवेत्  
थपुं भेधये होना चाहिए ॥ १४३ ॥

143 The intelligent patient, desiring his well-being, should avoid worry, exercise, speech and exertion and sexual intercourse, when affected with coryza due to vata.

पैत्तिकप्रतिश्रयायचिकित्सा—

पैत्ते सर्पिः पिबेत् सिद्धं शूकरवेरमृतं पयः ।  
पाचनार्थं पिबेत् पके कार्यं मूर्धविरेचनम् ॥१४४॥

१४४. सिद्ध-सिद्ध (प.)

पक्ते पथारी धूसरे प्रतिश्चयमां पित्तजन्य  
प्रतिश्यायमे, सितम् सिद्ध करेयुं सिद्ध किया हुआ  
सर्पिः धी धी पिबेत् पीपुं ओधये पीना चाहिए,  
नाचनार्थक दोषोक्त पथारी भाटे दोषोक्त पकानेके लिए,  
शृंगवेरवृत्तय सुस्थी सिद्ध करेयुं सोठसे सिद्ध किया  
हुआ, पत्रः इव दूध, पिबेत् पीपुं पीना चाहिए, पक्वे  
प्रतिश्चय पक्वे यत्तां प्रतिश्चयके पक्वे पर, सूर्ज-  
विरेचन शिरोविरेचन विरोविरेचन, कार्यक करेयुं  
ओधये करवाना चाहिए ॥ १४४ ॥

144. In coryza due to pitta, medi-  
cated ghee and medicated milk with  
dry ginger should be taken in order  
to ripen it; and when ripe errhines  
should be administered

पाठार्थं तैलम्—

पाठाद्विरजनीमूर्वापिप्पलीजातिपल्लवैः ।

दन्त्या च साधितं तैलं नखं स्यात् पक्वीनसे १४५

पक्वीनसे पाठेका पीनसमां पके हुए पीनसमें,  
पाठा- पाठा पादी, द्विरजनी- हज्जर अने दारुहज्जर  
हल्ली और दारुहल्ली, मूर्वा- मूर्वा मूर्वा, पिप्पली- पीपर  
पिप्पली, जातिपल्लवैः ओधनीं पान चमेलीके पत्ते,  
दन्त्या च अने दंतीमूली और दन्तीमूलसे,  
साधितम् सिद्ध करेया सिद्ध किये हुए, तैलं तैल  
तैलका, नखम् स्यात् नख आपवुं नख देना  
चाहिए ॥ १४५ ॥

145. Oil prepared with patha tur-  
meric, indian berberry, trilobed virgin  
bower, long pepper, jasmine sprouts  
and red physic nut may be used as  
nasal medication in ripe coryza.

आयुर्विज्ञान आरम्भः—

पूयास्त्रे रक्तपित्तघ्नाः कषाया नादनाति च ।

पाकदाहाद्यरुक्तेषु शीता लेपाः ससेचनाः ॥ १४६ ॥

१४५. स्यात् पक्वीनसे-संपक्वीनसे (४.)

१४६. लेपाः ससेचनाः-सेकाः प्रलेपनाः (५)

पूयास्त्रे रक्तपित्तघ्नाः कषायाः स्वादुशीतलाः ।

पूयास्त्रे पूयस्त्रमां पूयस्त्रमे, रक्तपित्तघ्नाः रक्त-  
पित्तघ्नाः रक्तपित्तघ्नाः, कषायाः कषायाः कषाय,  
नादनाति च अने नख देना और नख देने चाहिए,  
पाकदाहादि- पाक दाह पको पक, दाह आदि, अरुक्तेषु  
रुक्तेषु शीतलीमां तथा फुन्सिमे, ससेचनाः सेचना-  
साधित परिपक्वनोंके साथ, शीताः शीतल शीतल, लेपाः  
लेपोना प्रयोग करेये ओधये लेपोका प्रयोग करना  
चाहिए, घेय- तथा सुंधवानां प्रयोग तथा सुंधनेके द्रव्य,  
नख- नख नख, उपवागः च अने आहारविहार  
आदि सधन उपवागे और आहारविहार आदि नव  
उपवाग, कषायाः कषाय रसवाग कषाय रसवागे,  
स्वादुशीतलाः स्वादु अने शीतल होना ओधये स्वादु  
और शीतल होने चाहिए ॥ १४६ ॥

146-146½. In conditions of discharge  
of pus and blood from the nose, decoc-  
tions and nasal medications indicated  
in the vitiated condition of blood and  
pitta and in suppuration, burning  
and similar other complications and  
furunculosis, cooling applications and  
affusions, as well as astringent, sweet  
and cooling snuffs and nasal medica-  
tions should be administered.

मन्दपित्ते प्रतिश्याये स्निग्धैः कुर्याद्विरेचनम् १४७॥

मन्दपित्ते मन्दपित्तवाणा मन्दपित्तयुक्त, प्रतिश्याये  
प्रतिश्यायमां प्रतिश्यायमे, स्निग्धैः स्निग्ध द्रव्योंकी  
स्निग्ध द्रव्योंसे, विरेचनम् विरेचन विरेचन, कुर्यात्  
करावपुं ओधये करवाना चाहिए ॥ १४७ ॥

147. In coryza due to slight pitta,  
errhination should be carried out with  
unctuous medications

१४६. घेयनस्य-स्नेहजम्बू उद न द. घ.

१४७. मन्दपित्ते-पके पित्त फ. ब)

घृतं क्षीरं यवाः शालिर्गोधूमा जाङ्गला रसाः ।  
शीताम्लास्तिकशाकानि यूषा मुद्गादिमिर्हिताः ॥१४८॥

घृतम् धी घी, क्षीरम् दूध दूध, यवाः जौ, जालिः शालिः शै.भा. शालिचावल, गोधूमाः धउं गेहूं, जांगलाः रसाः जंगल प्राणीओना मांसरस जांगल जीवोंके मांसरस. शीताम्लाः शीतल तेमल अम्ल द्रव्ये. शीतल एवं अम्ल द्रव्य, तिकशाकानि उड्यां शाक तिक शाक, मुद्गादिभिः अने भज वजरेना और मूंगआदिके. यूषाः धूप धूप, हिताः हितकारक छे हितकारक है ॥१४८॥

148. Ghee, milk, barley, sali rice, wheat, meat-juices of jangala animals, cold and acid articles, bitter vegetables and the soup of green-gram and other pulses are beneficial.

गौरवारोचकेष्वदौ लङ्घनं कफपीनसे ।  
स्वेदाः सेकाश्च पाकार्थं लिप्ते शिरसि सर्पिषा ॥१४९॥

કફપીનસે કડી થયેલા પીનસમાં કફજ પીનસમેં, ગૌરવ- ગૌરવ ગૌરવ, સરોચકેષુ અને અરુચિ થતાં. ગૌરવ હોને પર, આદૌ પ્રથમ પ્રથમ, લઙ્ઘનશ્ચ લંઘન કરાવવું લંઘન કરાનાં. પાકાર્થં પીન- સમેં પકાવવા. પીનસકો પકાનેકે લિપ્તે, સર્પિષા ધી ઘી, લિપ્તે ચે.પડેલાં ચુપકે હૂણે. શિરસિ શિર પર શિર પર, સ્વેદાઃ સ્વેદ સ્વેદ, સેકાઃ સેક અને પરિષેક કરવા. બેઠેલે અને પરિષેક કરનેં. ॥ ૧૪૯ ॥

149. In heaviness, anorexia and other conditions in coryza due to kapha, lightening therapy should be given in the beginning and in order to ripen it, sudation and hot affusions should be given, after anointing the head with ghee.

लगुनं मुद्गचूर्णेन व्योषक्षारघृतैर्युतम् ।  
देयं कफप्रवमनमुत्क्रिष्टश्लेष्मणे हितम् ॥१५०॥

૧૪૮. શીતામ્લાસ્તિકશાકાનિ-શિતગ્રામ્લતિકશાકાનિ (ફ.)

૧૪૯. સર્પિષા-સર્પિષેઃ (ધ. ફ.)

વ્યોષ-ત્રિકટુ ત્રિકટુ, ક્ષાર- જવખાર ચવધાર, ઘૃતૈઃ અને ઘીથી. ઘૃતસે. યુતમ યુક્ત યુક્ત, લઙ્ઘનમ્ લંઘન. મુદ્ગચૂર્ણેન મુદ્ગના ચૂર્ણ સાથે મૂંગકે ચૂર્ણકે વચ, દેયમ્ આપવું બેઠેલે દેવાં. વાહિષ, ઉત્ક્રિષ્ટ- ઉત્ક્રિષ્ટયુક્ત ઉત્ક્રિષ્ટયુક્ત, શ્લેષ્મણે કફપીનસના પુરુષને કફપીનસના પુરુષને કફપ્રવમનશ્ચ કફ પ્રવમન કફ નાશક વમન, હિતમ્ હિતકર છે હિતકર છે ॥ ૧૫૦ ॥

150. Garlic mixed with the flour of green gram and the three spices, alkali and ghee should be given; and when the kapha is precipitated, emesis with kapha-curing drugs is beneficial.

अपीनसे पूतिनस्ये प्राणस्त्रावे सकण्डुके ।  
धूमः शस्तोऽवपीडश्च कटुभिः कफपीनसे ॥१५१॥

સકણ્ડુકે ખરબચડા હુજલીયુક્ત, અપીનસે અપી- નસમાં અપીનસમેં, પૂતિનસ્યે પૂતિનસ્યમાં પૂતિનસ્યમેં, પ્રાણસ્ત્રાવે નાસાસ્ત્રાવમાં નાસાસ્ત્રાવમેં, કફપીનસે અને કફ પીનસમાં. ગૌરવ ગૌરવ, અવપીડશ્ચ અને અવપીડ. કટુ દ્રવ્યોંકા, ધૂમઃ ધૂમ ધૂમ, અવપીડશ્ચ અને અવપીડ. શસ્ત. શસ્ત છે પ્રશસ્ત છે ॥ ૧૫૧ ॥

151. In condition of chronic rhinitis in nasal catarrh accompanied with itching, and in coryza due to kapha, inhalation and nasal drops, prepared with pungent articles, should be given.

मनःशिला वचा व्योषं विडङ्गं हिङ्गु गुग्गुलुः ।  
चूर्णो ब्रेयः प्रथमनं कटुभिश्च फलैस्तथा ॥१५२॥

મનઃશિલા મનઃશિલ મૈનશિલ, વચા વજ વચ, વ્યોષમ્ ત્રિકટુ ત્રિકટુ, વિડઙ્ગ વાવડંગ વાયવિડંગ, હિંગુ હિંગ હીંગ, ગુગ્ગુલુઃ અને ગૂગ્ગુલુઃ. ચૂર્ણો ચૂર્ણ, બ્રેયઃ સૂંઘવું બેઠેલે સૂંઘવાં. તથા તથા તથા, કટુભિઃ કટુરસનાળાં કટુ રસવાલે.

૧૫૧. અપીનસે પૂતિનસ્યે પ્રાણસ્ત્રાવે-સકળે પીનસે પૂતિપ્રાણસ્ત્રાવે (ફ.)

૧૫૨. ફલૈસ્તથા-ફલૈઃ સહ (ધ.)

ચૂર્ણો બ્રેયઃ-ચૂર્ણઃ પ્રાણઃ (ક. તે.)

फलैः शूलैः फलोंका, प्रथमनद प्रथमन देवुं ओष्ठौ प्रथमन देना चाहिए ॥ १५२ ॥

152. The powder of red arsenic, sweet flag, the three spices, embelia, asafetida. and gum-guggul may be inhaled, or insufflation should be done with pungent fruits.

भार्गीमदनतर्कारीसुरसादि-वपाचिते ।

मूत्रे लाक्षा वचा लम्बा विडङ्गं कुष्ठपिप्पली ॥ १५३ ॥  
कृत्वा करकं करजं च तैलं तैः सार्षपं पचेत् ।

पाकान्मुक्ते घने नस्यमेतन्नोदोनिमे कफे ॥ १५४ ॥

भार्गी- भार्गी भार्गी, मदन- भीटण मदनफल, तर्कारी- अरुणी अरनी, सुरसादि- अने सुरसादि गन्धुभी और सुरसादिसे, विपाचिते पकावेष्टा पकाये हुए, मूत्रे गोभूतर्मा गोमूत्रमें, लाक्षा लाक्षा, वचा वचा, लम्बा कटुतुभी कटुतुम्बी, विडङ्ग वायविङ्ग, कुष्ठ- कठ कूठ, पिप्पली पीपर पिप्पली, करजम् अने करजने और करजका, कलक कलक, कृत्वा करीने करके, तैः शीथैः इनसे, सार्षपम् तैलम् सरसिधुं तैल सरसोंका तैल, पचेत् पकावतुं पकाना चाहिए, पाकात् पाकीने पककर, मेदोनिमे मेदना नये। मेदके समान, घने गाढे गाढा, कफे कफ, मुक्ते छूटे पडे त्पारे निकलने पर, एतद् नस्यम् आ तैलनुं नस्य देवुं इस तैलका नस्य देवे ॥ १५३-१५४ ॥

153-154. Decoct in cow's urine beetle killer, emetic nut, wind killer, holy basil and similar other articles. Prepare a medicated oil from rape seed oil and the above decoction with the paste of lac, sweet-flag, gourd, embelia costus, long pepper and indian beech. This should be used as nasal medication, when the coryza has ripened and thick mucus of the color of yellow fat, is being discharged.

१५३. लम्बा-लिम्ब (क.)

१५४. मेदोनिमे-मेदोनिविते (ह.)

स्निग्धस्य व्याहृते वेगे छर्दनं कफपीनसे ।

वमनीयशृतक्षीरतिलमाषवागुना ॥ १५५ ॥

वार्ताककुलकव्योषकलत्थादकिमुद्रजाः ।

यूषाः कफघ्नमञ्चं च शस्तमुष्णास्त्रुसेच(व)नम् १५६

कफपीनसे उक्षपीनसर्मा कफपीनसमें, वेगे व्याहृते पीनसने। वेग रोडता पीनसके वेगके हक जानेपर, स्निग्धस्य स्नेह्य उक्षपी स्नेह्य कराके, वमनीय- वमनीय द्रव्यैश्च वमनीय द्रव्योंसे, शृतक्षीर- पकावेष्टा इधनी पकाये हुए इधनी, तिल- तैल तिल, माष- अने अक्षुभी और उबदसे, यवागुना तैयार करेदी यवागु- ६१२ तैयार की हुई यवागुदाग, छर्दनम् वमन कराना चाहिए, वार्ताक- रीगुष्ठा बैंगन, कुलक- करैले, व्योष- त्रिकटु त्रिकटु, कुलत्था- कुलथी कुलथी, आढकि- पुवेर अरहर, मुद्रजाः अने भगना और मूंगके, यूषाः यूषा यूप, कफघ्नम् मज्जन च उक्ष अने कफघ्न अल, उष्णान्त्रु- तथै गरम नलानुं तथा गरम जलका, सेचनम् सेयन सेचन, शस्तम् साउं छे अच्छा है ॥ १५५-१५६ ॥

155-156. When the coryza due to kapha is reduced to a mild state, emesis should be administered, after previous oleation of the patient, with milk or gruel of til and black gram medicated with the emetic group of drugs. Soups of brinjals, carilla fruit, the three spices, horse-gram, pigeon pea and green gram and a diet of articles curative of kapha and affusion (and potion) of warm water, are beneficial.

सर्वजित् पीनसे दुष्टे कार्ये शोफे च क्रोफजित् ।

आरोऽर्जुदाधिमांसेषु क्रिया शेषेष्वेक्ष्य च ॥ १५७ ॥

इति पीनसनासारोगचिकित्सा ।

१५५. वमनीयशृतक्षीरतिलमाषवागुना-ववागुना मदनक्षीर- तिलमाषोपसिद्धा (द.)

यवागुना-ववागुभिः (ब.)

१५६. वार्ताककुलकव्योष-कफघ्नमञ्चं वार्ताक (द. क.)

દુષ્ટ પીનસે દુષ્ટ પીનસમાં દુષ્ટ પીનસમે સર્વજિદ  
ત્રિદોષનાશક ત્રિદોષનાશક, હોકે ચ અને નાકન.  
સોષમાં ઓર નાસમાં સૂચનમે, શોકજિદ સોષને  
અત્યારી સૂચનકો જીતનેવાલી, કાર્યમ ચિદિત્સા કરવી  
ચિકિત્સા કરની વાદિય, અર્બુદ અર્બુદ અર્બુદ અધિ-  
મંસેષુ અને અધિમંસમાં ઓર અધિમંસમે, કાર:  
કાર થે.એવો કાર પ્રયુક્ત કરના વાદિય, શેષેષુ ચ અને  
શેષ નાસારોગમાં ઓર શેષ નાસારોગમે, અવેદ્ય  
પરીક્ષા કરીને પરીક્ષા કરકે, ક્રિયા ચિદિત્સા કરવી  
એઈએ ચિકિત્સા કરની વાદિય ॥ ૧૫૭ ॥ इति आ-  
यह, પીનસનાસારોગચિકિત્સા પીનસનાસારોગ-  
ચિકિત્સા છે પીનસનાસારોગચિકિત્સા છે ।

157. In pernicious type of coryza, treatment curative of tridiscordance should be done; in edema of the nose, the treatment curative of edema. In tumor and fleshy growths, caustic alkali should be used; and for the rest, treatment should be done after proper investigation. Thus has been described the treatment of coryza.

વાતિકશિરોરોગચિકિત્સા—

વાતિકે શિરસો રોગે સ્નેહાન્ સ્વેદાન્ સનાવનાન્ ।  
પાનાન્નમુપનાહાન્ કુર્યાદ્વાતામયાપહાન્ ॥૧૫૮॥

વાતિકે વાતથી થયેલા વાતવ્રન્ય, શિરસ: રોગે  
શિરોરોગમાં શિરોરોગમે, વાતામયાપહાન્ વાતરોગ-  
નાશક વાતરોગનાશક, સનાવનાન્ નર્યો નસ્ય, સ્નેહાન્  
સ્નેહ સ્નેહ, સ્વેદાન્ સ્વેદો સ્વેદ, પાન- પાન પાન,  
અન્નમ અન્ન અન્ન, ઉપનાહાન્ ચ અને ઉપનાહો ઓર  
ઉપનાહ, કુર્યાન્ કરવા એઈએ કરને વાદિય ॥ ૧૫૮ ॥

158. In diseases of head due to vata, oleation, sudation and nasal medication, and food and drink and poultices that are curative of vata-disorders, should be prescribed.

તૈલમૃદુરગુર્જીવી: સુખોજ્જૈરુખ્તાહનમ્ ।

જીવનીય: સુમનસા મન્સ્યેમોલૈશ્વ જાન્યન્ ॥૧૫૯॥

તૈલમૃદુ: તૈલથી મૃદુલા તૈલમે મૂને દુગ, સુખોજ્જ:  
સુખોજ્જ સુખોજ્જ, અગુર્જીવી: અગુર્જીવી: અગુર્જીવી:  
આદિકા, જીવનીય: અગુર્જીવી: અગુર્જીવી: જીવનીય  
અગુર્જીવી, સુમનસા અગુર્જીવી અગુર્જીવી: અગુર્જીવી:  
આદિકે ફૂલોના, પ્રસ્ય: માહુલા: મહુલોના, માંસ:  
ચ અને માંસોના ઓર માંસોના, ઉપનાહનમ્ ઉપનાહ  
ઉપનાહ, જાન્યન્ પ્રશસ્ત છે પ્રશસ્ત છે ॥ ૧૫૯ ॥

159. Genially warm poultices, prepared with drugs of the eagle wood group fried in oil, or poultices prepared with life-promoter group of drugs or with jasmibe or with fish or flesh, are recommended.

રાજાદિતૈલમ—

રાજાદિતૈલમિદિશિ સિદ્ધં તક્ષીર નસ્યમતિનુત્ ।

તૈલં રાજાદિકાકોલીનાર્કરામિરથાપિ જા ॥૧૬૦॥

રાજા રાજના રાજા, સ્થિરાદિશિ: અગુર્જીવી: અગુર્જીવી:  
અગુર્જીવી ઓર શાલપર્ણી સ્થિરાદિશિ: અગુર્જીવી: અગુર્જીવી:  
તો અથવા તો, રાજા: રાજના રાજા, દિકાકોલી- કોકોલી,  
દીરકોકોલી કોકોલી, કોરકોલી. અર્કરામિ: અને  
રાકોલી ઓર અર્કરામે, તક્ષીરમ્ દૂધ સાથે દૂધકે સાથ,  
તિદ્ધન્ સિદ્ધ કરેલા સિદ્ધ કિયે દુગ, તૈલમ્ તૈલમ્  
તૈલકા, નસ્યમ નસ્ય નસ્ય, અતિનુત્ શિરસી પોડાને  
નાશ કરે છે શિરસીકા નાશક છે ॥ ૧૬૦ ॥

160. Nasal medication with the oil prepared with milk and drugs of the indian groundsel group and ticktrefoil group, or the medicated oil prepared with indian groundsel, the two Kakolis and sugar, is also curative of pain.

૧૫૯. જીવનીય: સુમનસા-જીવનીયમ્ પુષ્પૈશ્વ (ક.)





prepare 64 tolas of ghee with equal quantity of milk in that decoction adding the paste of one tola each of the drugs of the sweet group. This ghee, known popularly as the Peacock-ghee, is curative of diseases of the head, facial paralysis, diseases of the ear, eyes, nose, tongue, palate mouth and throat; and it is curative of upper supra-clavicular diseases. Thus has been described the Peacock-ghee.

शिरोरोगे महामायूरधृतम्—

एतेनैव कषायेण घृतप्रस्थं विपाचयेत् ।

चतुर्गुणेन पयसा कर्कशैर्मिश्र कर्षिकैः ॥१६६॥

जीवन्तीत्रिकलामेदामृद्वीकर्षिपरुषकैः ।

सप्तकाचविकाभार्गीकाश्मरीसुरदारुभिः ॥१६७॥

आत्मगुतामहामेदातालखर्जूरमस्तकैः ।

मृणालविषशालूकशृङ्गीजीवकपत्रकैः ॥१६८॥

शतावरीविदारीशुब्रुहतीसारिवायुगैः ।

सूर्वाश्वदंष्ट्रभक्तशृङ्गाटककसेरुकैः ॥१६९॥

रास्नास्थिरातामलकीसूक्ष्मैलाशटिपौष्करैः ।

पुनर्नवातुगाक्षीरीकाकोलीधन्वयासकैः ॥१७०॥

खर्जूरक्षोटवातामसुजाताभिषुकैरपि ।

१६६. पयसा—दुधेन (फ)

१६७. मृद्वीकर्षिपरुषकैः—मधुकर्षिपरुषकैः (ड.)

॥ सुरदारुभिः—कर्कशादयैः (ए. क.)

१६८. मृणालविषशालूकशृङ्गीजीवकपत्रकैः—मृणालविषशालूकशृङ्गीजीवकपत्रकैः (फ.)

॥ शालूक—खर्जूर (क. फ)

॥ शालूकशृङ्गीजीवकपत्रकैः—खर्जूरमधुकर्षि सजीवकैः (घ. छ.)

॥ —खर्जूरमधुकर्षि सजीवकैः (घ.)

१७१. खर्जूरक्षोट—मधुकाक्षोट (क. घ.)

॥ —मधुकाक्षोट (ख. ड. घ.)

॥ —मधुकाक्षोट (घ. ड.)

द्रव्यैरेभिर्मथालाभं पूर्वकरुणेन साधितम् ॥१७१॥

नस्ये पाने तथाऽभ्यङ्गे वस्तौ चैव प्रयोजयेत् ।

एतेन एव आ. अ. इ. ई. कषायेण कषायेथी काथसे, चतुर्गुणेन चतुर्गुणः चौगुने, पयसा दूधनी साथे दूधके साथ, घृतप्रस्थम् ६४ तोला घी ६४ तोले घी, जीवन्ती-श्री जीवन्ती, त्रिकला- त्रिकला त्रिकला, मेदा-मृद्वीका-मेदा, दाक्ष मेदा, मुनका, कर्षि-कर्षि कर्षि, परुषकैः शालूक फालना, सप्तका रीसाभणी लजावन्ती, चविका-भार्गी-अवक, भारंगी चव्य, भार्गी, काश्मरी-श्रीवल्ली गम्भारी, सुरदारुभिः देवदारु देवदारु, आत्मगुता-ओषध केवौच, महामेदा-महामेदा महामेदा, ताल-ताल-भरतक तालमस्तक, खर्जूरमस्तकैः अमूर्तभरतक खर्जूरमस्तक, मृणाल-विष-कमलनाभ, कमलनाभ, कमलदण्ड, शालूक-शृङ्गी-कमलनाभ, कर्कशादयः शालूक, कर्कशासीगी, जीवक-जीवक जीवक, पत्रकैः पत्रक पत्राख, शतावरी-शतावरी शतावरी, विदारी-इक्षु-लोपिकेणु, शेरडी बिलाईकन्द, ईख, बृहती-श्री लोरी-श्री वन-भाटा, सारिवायुगैः अने अतनी सारिवा दो प्रकारकी कपूरी, सूर्वा-श्वदंष्ट्रा-भोरवेख, जोअरु सूर्वा, गोखरु, कृष्णक-कृष्णक कृष्णक, शृङ्गाटक-श्रीगोडा सिंघाडा, कसेरुकैः कसेरु कसेरु, रास्ना-स्थिरा-रास्ना-शावली रास्ना, सरीवन, तामलकी-लोय अथली मुई आवला, सूक्ष्मैला-नानी ओदयी लोटी इलायची, आदि-पट्ट-उथुरो कचूर, पौष्करैः पुष्करभूषण पोहकरमूल, पुनर्नवा-साठीडी गदहपुरना, तुगाक्षीरी-वासकपूर वंशलोचन, काकोली-काकोली काकोली, धन्वयासकैः धमासा, खर्जूर-अमूर्त खर्जूर, अक्षोट-अभरोट असरोट, वाताम-अहम बाहाम, मुजात-बाहोरी साधम लाहोरी सालम, अभिषुकैः अने पिस्ता और पिस्ता, यथालाभम् जेथला भणे तेथला जितने मिल सके इतने, एभिः द्रव्यैः अपि ओ द्रव्यैःअथी इन द्रव्योंमेंसे, कर्षिकैः प्रत्येक ओक ओक तोला बर्ध प्रत्येकका एक

१७२. नस्ये पाने तथाऽभ्यङ्गे वस्तौ चैव प्रयोजयेत्—पाने वस्तौ तथाभ्यङ्गे नस्ये चैतत्प्रदापयेत् (ग.)

॥ नस्ये पाने तथाऽभ्यङ्गे—तत्त पक्कं नावनेऽभ्यङ्गे (ड.)

॥ प्रयोजयेत्—प्रदापयेत् (घ.)

एक तोला ले कर, एभिः कल्कैः च औ ४ २०थीना उरुथी इन्हींके कल्कोस, विपाचयेत् पडावतुं पकावे, पूर्वकल्पेन पूर्वनी विधि प्रमाणे प्रथम विधिसे, साधितम् सिद्ध करेवा औ धीना सिद्ध किए हुए इस घृतका, नखे नख, नख, बाने पान पान, तथा अभ्यङ्गे अभ्यङ्गे, बस्तौ च अने अस्तिभा और बस्तिमें, प्रयोज-  
येत् प्रयोग करेवा प्रयोग करना चाहिए ॥१६६-१७१३॥

166-171½. Prepare 64 tolas of medicated ghee in the decoction described above, with four times its quantity of water, adding the paste of one tola each of the following drugs:- cork swallow wort, the three myrobalans, Meda, grapes, Riddhi, sweet falsah, madder, chaba pepper beetle killer, white teak, deodar, cowage, Mahameda, the top of palmyra palm and date, lotus stalk and fibres, lotus rhizomes, climbing asparagus, white yam, sugar-cane, yellow berried nightshade, indian sarsaparilla, black sarsaparilla, trilobed virgin's bower, small caltrops. Risha-  
bhaka, indian water chest-nut, rushnut, indian groundsel, ticktrefoil, feather-  
foil, small cardamom, long zedoary, orris root, hog's weed, bamboo manna, Kakoli, cretan prickly clover, dates, walnut, almond, salep and Abhishuka nut or as many of these drugs as are available, according to the above-mentioned procedure. This ghee should be used as nasal medication, potion, inunction and enema.

शिरोरोगेषु सर्वेषु कासे श्वासे च दाहणे ॥१७२॥  
मन्यापृष्ठग्रहे शोषे स्वरमेदे तथाऽर्दिते ।  
योम्यसृग्गुक्रदोषेषु शस्तं वन्यासुतप्रदम् ॥१७३॥

सर्वेषु आ धी सर्व यह घृत सब प्रकारके, शिरो-  
रोगेषु शिरोरोगे शिरोगत रोगोंमें, कासे श्वासे च दाहणे दाहणे दाहण, श्वासे च श्वासे च श्वासे, मन्यापृष्ठग्रहे मन्यापृष्ठ, पृष्ठग्रहे मन्यापृष्ठमें, पृष्ठग्रहे, शोषे शोषे शोषमें, स्वरमेदे स्वरमेदे स्वरमेदमें, तथा अर्दिते अर्दिते अर्दितमें, योनि-असृग्गु-शोनिशोष, रक्तदोष योनिरोगमें, रक्तदोषमें, गुक्रदोषेषु अने वीर्य-  
दोषभा और गुक्ररोगोंमें, शस्तं प्रशस्त छे प्रशस्त है, वन्यासुतप्रदम् च अने वन्याने पुत्र आपनानुं छे तथा वंध्यको पुत्र देनेवाला है ॥ १७२-१७३ ॥

172-173. It is recommended in all kinds of affections of the head, cough, severe dyspnea, stiffness of neck and back, emaciation, change of voice and in facial paralysis. This is beneficial in disorders affecting the vagina and vitiation of the menses and semen. It bestows offspring even on barren women.

ऋतुजाता तथा नारी पीत्वा पुत्रं प्रसूयते ।

महामायूरमित्येतद्भूतमात्रेयपूजितम् ॥१७४॥

इति महामायूरघृतम् ।

तथा तथा तथा, ऋतुजाता ऋतुजाता ऋतुजाता, नारी औ नारी, पीत्वा आ पीतुं पान करी इस बीका पानकर, पुत्रम् पुत्रम् पुत्रको, प्रसूयते जन्म देती है, मात्रेय-आत्रेयना मात्रेयके द्वारा, पूजितम् अहु मानतुं पात्र प्रसूयते, एतत् घृतम् आ धी यह बी, महामायूरम् 'महामायूर' 'महामायूर', इति औ नामथी उहेनाथ छे इस नामसे कहा जाता है ॥ १७४ ॥ इति आ यह, महामायूरघृतम् महामायूर बी छे महामायूर घृत है ।

174. Taking a potion of it at the end of her menstrual period, a woman will bring forth a male child; this great medicated 'Peacock ghee' thus described, is valued highly by Atreya.



लाल चन्दन, अजन्ता-शीरसिद्धम् सः रिवा अने दुधनी साथे पडावेला वीनुं कपूरी और दूबने सिद्ध किये, शर्करा द्राक्षा अथवा सांडर, द्राक्षा या चीनी, सुगन्धे, मधूकैः वा तथा महुज्जनी साथे पडावेला और महुवेके कक्कसे सिद्ध किये. घृतम् वीनुं चीका, नावनम् नरम नस्य, हितम् हिनडरी छे हिनकर है ॥ १७९ ॥

179. In diseases of the head due to pitta, ghee prepared with liquorice, sandal and indian sarsaparilla in milk, or with sugar, grapes and liquorice, is beneficial as nasal medication.

कफजशिरोगस्य चिकित्सा—

कफजे स्वेदितं धूमनम्यप्रथमनादिभिः ।  
शुद्धं प्रलेपपानाद्यैः कफघ्नैः समुपाचरेत् ॥१८०॥  
पुराणसर्पिषः पानैस्तीक्ष्णैर्वस्त्रिभिरेव च ।

कफजे ऊईथी थयेला शिरोरोगभां कफजन्य शिरो-रोगमें, स्वेदितम् स्वेदन आपेक्ष स्वेदन दिये दूध, धूम-नस्य- अने धूम, नरम धूम, नस्य, प्रथमनादिभिः अने प्रथमन वजरेथी और प्रथमन नस्य आदिसे, शुद्धम् शुद्ध ऊरेला रोगीने शुद्ध किये दूध रोगीका, कफघ्नैः ऊईने छलुनारां कफघ्न, प्रलेप-पान- प्रक्षेप, पान प्रलेप, पान, अन्नः तथा अन्ननवडे और अन्नसे, समुपाचरेत् उपचार ऊरेवा उपचार करे, पुराणसर्पिषः ऊईथ शिरोरोगभां रोगीने आना धूना धीना कफज शिरोगवाले रोगीकी पुराने चीके, पानैः पानथी पानसे, तीक्ष्णैः तथा तीक्ष्ण तथा तीक्ष्ण, वस्त्रिभिः एव च अस्तिओथी पक्षु चिकित्सा ऊरेवी ओईथी वस्त्रियोंसे भी चिकित्सा करनी चाहिए ॥ १८० ॥

180-180. In affections of the head due to kapha, the patient, after being subjected to sudation and being purified by the administration of smoke, nasal medications and insufflation, should then be treated well, with application and food and drink, curative of kapha.

कफानिलोत्थिते दाहः शेषयो रक्तमोक्षणम् ॥१८१॥  
परण्डनलक्ष्मौमगुग्गुस्वगुरुचन्दनैः ।  
धूमवर्ति पिबेद्रन्ध्रैरकुष्ठतगरैस्तथा ॥१८२॥

कफ-अनिल- ऊई तथा वायुथी कफ तथा नातसे, वस्त्रियने उत्पन्न थयेला शिरोरोगभां उत्पन्न शिरोरोगमें, दाहः दाह दाह, शेषयोः अने पित्तज तथा सन्निपा-तज शिरोरोगभां और पित्तज तथा सन्निपातज शिरो-रोगमें, रक्तमोक्षणम् रक्तापसेथन ऊरेवा रक्तावसेचन करे, परण्ड- और डो एरंड, नलद-श्रौम- जटाभांसी, क्षौम जटाभांसी, क्षौम, गुग्गुलु- गुग्गुलु गुग्गुल, जगुरु- अजर अगर, चन्दनैः रतांजली लाल चन्दन, अकुष्ठ-तगरैः अने ऊई तथा तगर सिनायनां और कूड तथा तगरको छोड़कर अन्य, गन्धैः अंध द्रव्योंथी अनावेदी गन्धद्रव्योंसे सिद्ध, धूमवर्तिम् पीडी धूमवर्ति, पिबेद पीवी पीबे ॥ १८१-१८२ ॥

181-182. He should also be treated with potions of old ghee and with enemata prepared with acute drugs. In affections due to kapha and vata, cauterization, and blood-letting in the remaining conditions, should be done. Cigar prepared of castor plant, nardus, angelica gum guggul, eagle wood, sandal and the fragrant group of drugs, excepting costus and indian valerian, should be smoked.

सन्निपातजस्य शिरोगस्य चिकित्सा—

सन्निपातजस्य कार्या सन्निपातहिता क्रिया ।

सन्निपातजस्य सन्निपातथी थयेला शिरोरोगभां सन्निपातजन्य शिरोगमें, सन्निपातहिता सन्निपातने हितकारी सन्निपातमें हितकर, क्रिया चिकित्सा चिकित्सा, कार्या ऊरेवी ओईथी करनी चाहिए ॥ १८२ ॥

१८१. कफानिलोत्थिते-कफानिलोत्थिते (१.)

.. दाहः शेषयो-दाहशेषयो (२.)

१८२. अकुष्ठ-मकुष्ठ (३.)

१८२. सन्निपातहिता-सन्निपातहिता (४.)

182½. In condition due to tridiscordance, the general treatment beneficial in tridiscordance should be done.

कृमिज्विरोरोगस्य चिकित्सा—

क्रिमिजे चैव कर्तव्यं तीक्ष्णं मूर्धविरेचनम् ॥१८३॥

त्वग्दन्तीव्याघ्रकरजविडङ्गनपालिकाः ।

अपामार्गफलं बीजं नक्तमालाशिरापयोः ।

श्वकोऽश्मन्तको बिल्वं हरिद्रा हिङ्ग यूथिका ॥१८४॥

फणिज्जकश्च तैस्तैलमन्त्रिमूत्रं चतुर्गुणे ।

सिद्धं व्याघ्रावतं चूर्णं त्रैषां प्रथमं हितम् ॥१८५॥

फलं शिमुकरजाम्ब्यां सव्योषं चावपीडकः ।

कषायः स्वरसः क्षारश्चूर्णं कल्कोऽवपीडकः ॥१८६॥

शुक्ततिलकदुःशौद्रकषायैः कवलप्रहः ।

इति शिरोरोगचिकित्सा ।

क्रिमिजे च एव अने क्रिमिजी अयेला शिरो-  
रोगभा और क्रिमिजन्य शिरोरोगमें, तीक्ष्ण च तीक्ष्ण  
तीक्ष्ण, मूर्धविरेचनम् शिरोविरेचन शिरोविरेचन, कते-  
व्यम् आपवुं मेधो देवे, त्वक्-दन्ती- तथा, दन्ती  
दालचीनी, दन्ती, व्याघ्र-करज- व्याघ्रनय नखी, विडङ्ग-  
नावडिग वायविङ्ग, नवमाळिकाः भोगरे मुत्रा,  
अपामार्ग- अवेडाना चिचिटेके, फलम् पीबीज, नक्तमाल-  
गरभाणो कमलताम्र, शिरापयोः अने अरसडाना और  
शिरीषके, बीजम् पी बीज, श्वकः नाडशीडछी  
वाकळीकनी, अश्मन्तकः अश्मन्तक अश्मन्तक, बिल्वम्  
पीछुं वेक, हरिद्रा डणार हल्ली, हिङ्गु हिङ्गु हीग,  
यूथिका आपुना डूब जूही, फणिज्जकः च तथा भरवाना  
पी तथा मवेके बीज, तैः तैमोषी जनसे, चतुर्गुणे  
आरमल्ल चौरुणे, अन्त्रिमूत्रे गाडरना भूतभा मेडके मूत्रमें,  
सिद्धम् तैलम् पडावेड तैलथी सिद्ध कवे तैलका, नावक  
नरम नख, व्याघ्र आपवुं देवे, श्वाम् च अने तथा  
परेरेना और दालचीनी आदिके, चूर्णम् आपुं चूर्णका,

१८८. त्वग्दन्तीव्याघ्रकरज-त्वक् दन्ती व्याघ्रमुखं दन्ती (क)

१८९. चतुर्गुणे-हिरण्यक (ग)

१८६. शुक्ततिलकदुःशौद्रकषायैः कवलप्रहः-शुक्ततिलकदुःशौद्र-  
नैर्नैः कवलप्रहः । (ग.)

अश्मन्तक प्रथमम् प्रथमम्, हितम् शिराक्षरी छे हितकर  
दे, सव्योषम् त्रिष्टु विकटु, शिमुकरजाम्ब्याम् भरवाना  
अने अरसडाना सहजन और अरंजे, फलच पीबीजो  
बीजका, अवपीडकः अवपीडक देवे। अवपीडक देवे,  
कषायः कषाय कषाय, स्वरसः क्षारः स्वरस, क्षार स्वरस,  
क्षार चूर्णम् कल्को यूपुं तथा डेडने। चूर्ण तथा कल्क  
डका, अवपीडक अवपीडक अवपीडक, शुक्त- अने  
शुक्त शुक्त, तिल- तिल तिल, कदु- कदु कदु, शौद्र-  
मधु मधु, कषायैः तथा कषाय रसवाना द्रव्योषी तथा  
कषाय रसवाले द्रव्योषे, कवलप्रहः कवलप्रह आपवे।  
अने येषु हितकर छे कवलप्रह देवा येषु भी हितकर छे  
॥ १८३-१८६ ॥ इति आ. नह. शिरोरोगचिकित्सा  
शिरोरोगचिकित्सा छे शिरोरोगचिकित्सा छे ।

183-186½. In condition due to worms, drastic errhines should be administered. Prepare a medicated oil with the paste of cinnamon bark, red physic nut, shell, embelia, double jasmine, rough chaff, indian beech, indian siris, sneeze wort, common mountain ebony, bael, turmeric, asafetida, jasmine and sweet marjoran, and four times the quantity of sheen's urine. This medicated oil is a good nasal medication. The fruits of drumstick and indian beech mixed with the three spices make good nasal drops. Decoction or expressed juice, alkali, pulvis, paste, nasal drops, mouth-wash with vinegar or with bitter, pungent and astringent articles and with honey are beneficial. Thus has been described the treatment of the diseases of the head.

मुखरोगस्य चिकित्सा—

धूमः प्रथमं मुखिरावर्द्धनकृत्तम् ॥१८७॥

मीथे च मुखरोगेषु प्रपाद्वे दोषमुद्धृतम् ।

पिप्पल्यगुरुदार्वीत्यश्वत्थाररसाञ्जनम् ॥१८८॥  
पाठां तेजोवतीं पथ्यां समभागं विचूर्णयेत् ।  
मुखरोगेषु सर्वेषु सक्षौद्रं तद्विचारयेत् ॥१८९॥  
सीधुसाधवमाध्वीकैः श्रेष्ठोऽयं कवलप्रहः ।

धूमः धूम धूमपान, प्रवल्नम् प्रधमन प्रधमन  
अधः शुद्धिः विरेचन विरेचन. कर्दन-कदनम् धूमन  
धूमन वमन, लघन, यथास्वम् अने ते ते दोषने  
अनुसार और उन दोषोंके अनुसार, दोषनुष  
दोषने दूर करनेपर दोषनाशक, भोज्यम् च भोजन  
आहार, मुखरोगेषु मुखरोगभां मुखरोगमें, हितक  
हितकर छे हितकर है, पिप्पली- पीपर पिप्पली, अगुरु-  
दार्वीत्यक्- अगर, दारुहलीकरनी छात्र अगर, दारुहलीकी  
छाल, यवक्षार- ज्वभार यवक्षार, रसाञ्जनम्  
रसजन्ती रसौल, पाठाम् पाठा पादी, तेजोवती  
तेजोवती तेजोवती, पथ्याम् अने हरउनुं और हरइका,  
समभागम् सम भागे समभाग. विचूर्णयेत् यूष्ं करुं  
चूर्ण करे, सक्षौद्रम् तव भक्षयहित ते मधुयुक्त वम  
चूर्णको, सर्वेषु मुखरोगेषु सर्वे मुखरोगभां सब  
मुखरोगोंमें, विचारयेत् मुखभां धारण करुं मुखमें  
धारण करना चाहिए, सीधु-साधव- सीधु, माध्व सीधु,  
माधव, माध्वीकैः अने माध्वीक साधे और माध्वीक  
इनके साथ, अयम् आ यूष्ंने इस चूर्णका, कवलप्रहः  
कवलप्रह कवलप्रह, श्रेष्ठः श्रेष्ठ छे श्रेष्ठ है ॥१८७-१८९॥

187-189½. Smoke, insufflation, pur-  
gation, emesis, starvation and dietetic  
regimen—these administered according  
to the morbid humor, are beneficial in  
affections of the mouth. Take the  
powders of long pepper, eagle wood,  
bark of indian berberry, barley-alkali,  
dry extract of indian berberry, patha,  
indian toothache tree and chebulic

१८८ पिप्पल्यगुरुदार्वीत्यश्वत्थाररसाञ्जनम्—पिप्पली अगर क्षार  
दार्वीलोह रसाञ्जनम् (क)

१८९. मुखरोगेषु सर्वेषु सक्षौद्रं तद्विचारयेत्—सक्षौद्रं पाययेदेव-  
मुखरोगेषु बुद्धिमान् (क)

myrobalan in equal quantity; this mixed  
with honey, should be kept in the  
mouth in all varieties of oral disorders.  
This, again, prepared with sidhu  
wine, madhu wine or with madhuka  
wine makes an excellent mouth-wash.

तेजोवतीपथ्यामेलां समभां कटुकां घनम् ॥१९०॥  
पाठां ज्योतिष्मतीं लोभं दार्वीं कुष्ठं च चूर्णयेत् ।  
दन्तानां वर्षणं रक्तसावकण्डूरुजापहम् ॥१९१॥  
पञ्चकोलकालीसपत्रैलामरिचत्वचः ।  
पलाशमुष्ककक्षारयवक्षाराश्च चूर्णिताः ॥१९२॥  
गुडे पुराणे द्विगुणे कथिते गुटिकाः कृताः ।  
कर्कन्धुमात्राः सप्ताहं स्थिता युष्ककभस्मि ॥१९३॥  
कण्ठरोगेषु सर्वेषु धार्याः स्युरवतोपमाः ।

तेजोवती तेजोवती तेजोवती, समभागम् समभां  
पलाशम् समझार अक्षयी, रीशामण्डी इलायची, लज्जा-  
मती, कटुकाम् कटु कटुकी, घनम् मोथ मोथा, पाठाश्च  
पाठा पादी, ज्योतिष्मतीश्च आशुभाण्डी मालकंगुनी,  
लोभश्च क्षेत्र और लोभ, दार्वीम् दारुहलीकर दारुहली,  
कुष्ठम् च अने कुष्ठुं और कूठ इनका, चूर्णयेत् यूष्ं  
करुं चूर्ण करे, दन्तानाम् दांत पर दांतों पर, वर्षणम्  
आ यूष्ंने धारणाशी ते इस चूर्णको मलनेसे बह,  
रक्तसाव-कण्डू- रक्तसाव, अक्षयणी रक्तसाव, खुजली,  
रुजापहम् अने वेदनाने भटाउ छे और वेदनाको नष्ट  
करता है, पञ्चकोलक- पंचकोलक पंचकोलक तालीसपत्र-  
तालीसपत्र तालीसपत्र, पला- अक्षयी इलायची, मरिच-  
काणी मरी मरिच त्वचः त्वच दालचीनी, पलाश-  
भाभरो डाक, मुष्कक्षार- मोमानो क्षार मोखाका  
क्षार, यवक्षाराः च अने ज्वभार और यवक्षार, चूर्णिताः  
अभोजन यूष्ं करी इनका चूर्ण करके, कथिते अभिधी  
पीगाणी अग्निमें पीकाके हुए. द्विगुणे भभलु दुगुने  
पुराणे भूना पुराने, गुडे भोलाभां गुडमें, कर्कन्धुमात्राः  
अक्षुभोर ज्वडी हज्जवरके बराबर, गुटिकाः कृताः  
भोलीओ वाणी गोलियां बनाकर, मुष्कक-भस्मि

१९०. ज्योतिष्मती-रसाञ्जनं (द)

१९३. गुटिकाः-गुटिकाः (ब. ज.)

भोजाना क्षारभा मोक्षाक्षारमें, सप्ताहम् सात दिवस  
भुक्षी एक सप्ताह तक, स्थिताः राभतां रखी हुई गोलियां,  
अमृतोपमाः अमृत जैसी थाय छे अमृत जैसी होती हैं,  
सर्वेषु सर्व सब, कण्ठरोगेषु कंठरोगभा कण्ठरोगमें,  
धार्याः रस्युः ओ धारण करवा योग्य छे इनको धारण  
करनी चाहिए ॥ १९०-१९३३ ॥

190-193½. Reduce to powder indian  
toothache tree, chebulic myrobalan,  
cardamom, madder, kurroa, nut grass,  
patha, staff tree, lodh, indian berberry  
and costus; cleansing the teeth with this  
powder is curative of bleeding from the  
gums, itching and aches. Reduce to  
powder the five spices, leaves of hima-  
layan silver fir, cardamom, black pepper,  
cinnamon bark, alkalis obtained from  
palas, weaver's bean tree and barley;  
boil them with the double quantity  
of old gur and make pills of  
1/2 tola each in weight; place these  
for seven days under the heap of  
weaver's bean-ash. These, if kept in  
mouth, in all kinds of throat affections,  
act beneficially.

कालकचूर्णम्—

गृहधूमो यवक्षारः पाठा व्योषं रसाञ्जनम् ॥१९४॥  
तेजोह्वा त्रिफला लोघं चित्रकश्चेति चूर्णितम् ।  
सक्षौद्रं धारयेदेतद्रोगविनाशनम् ॥१९५॥  
कालकं नाम तच्चूर्णं दन्तास्यगलरोगनुत् ।  
इति कालकचूर्णम् ।

१९४. गृहधूमो यवक्षारः पाठा व्योषं रसाञ्जनम्—आगरधूम-  
त्रिफला व्योषपाठासचित्रका (ब.)

१९५. तेजोह्वा त्रिफला लोघं चित्रकश्चेति चूर्णितम्—तेजोह्वा त्रिफ-  
ला लोघं चित्रकं चेति चूर्णितम् (ड.)

१९५३. कालकं नाम तच्चूर्णं दन्तास्यगलरोगनुत्—कालकं नाम  
चूर्णं तु माक्षिकेण समायुतम् (ब.)

॥ कालकम्—काणकम् (र.)

गृहधूमः गृहधूम घरका धुवां, यवक्षारः जवभात  
यवक्षार, पाठा पाठा पादी, व्योषम् त्रिफल त्रिफल, रसा-  
ञ्जनम् रसवन्ती रसोत, तेजोह्वा तेजोवन्ती तेजबल,  
त्रिफला त्रिफला त्रिफला, लोघम् लोघर लोघ, चित्रकः  
च अने चित्रक और चित्रक, चूर्णितम् ओओनां यूर्ण  
करी इनका चूर्णकर, गलरोगविनाशनम् गलाना रोगाने  
नाश करनारा कंठरोगके नाशक, एतत् ओ यूर्णने  
इस चूर्णका सक्षौद्रम् मधु साथे भोजनी मधुसे मिलाकर,  
धारयेत् मुभभा धारण करवुं मुखमें धारण करे,  
कालकम् नाम कालक नामन्तु कालक नामका, तत्  
चूर्णम् ते यूर्णं वह चूर्ण, दन्तास्यगल- दांत, मुभ तथा  
गलाना दांत, मुंह तथा गलेके, रोगनुत् रोगने हर  
करनार छे रोगोंका नाशक है ॥ १९४-१९५३ ॥ इति आ  
यह, कालकचूर्णम् कालकयूर्णं छे कालकचूर्ण है ।

194-195½. Reduce to powder kit-  
chen soot, barley-alkali, patha, the three  
spices, dry extract of indian berberry,  
indian toothache tree, the three myroba-  
lans, lodh and white flowered lead wort.  
This should be kept in the mouth  
mixed with honey to cure throat  
affections; this pulvis known as Kalaka.  
is curative of affections of the tooth,  
mouth and throat. Thus has been  
described the pulvis Kalaka.

पीतकचूर्णम्—

मनःशिला यवक्षारो हरितालं सलैन्धवम् ॥१९६॥  
दार्ढ्यत्वक् चेति तच्चूर्णं माक्षिकेण समायुतम् ।  
मूर्च्छितं घृतमण्डेन कण्ठरोगेषु धारयेत् ॥१९७॥  
मुखरोगेषु च श्रेष्ठं पीतकं नाम कीर्तितम् ।  
इति पीतकचूर्णम् ।

मनःशिला मनःशिल मैनसिल, यवक्षारः जवभात  
यवक्षार, सलैन्धवम् सिंधावल् सैधानमक, हरितालम्  
हरिताल हरिताल, दार्ढ्यत्वक् च इति अने दादुहणहरनी  
छाल और दादहलीकी छाल, तत् ओओना उनके,  
चूर्णम् यूर्णने चूर्णको, माक्षिकेण मधुभा मधुमें,



समायुक्तं भेगवीने मिलाकर, घृतमण्डेन धीना मंडी चीके मण्डसे, मूर्च्छितम् मिश्रित करी मिश्रित करके, कण्ठ-रोगेषु कंडूरेगोभा कंडरोगोंमें, धारवेत् धारखु करवुं धारण करे, पीतकम् नाम पीतक नामथी पीतक नामसे, कीर्तितम् असिद्ध आ यूष्णे प्रसिद्ध यह चूर्ण, मुखरोगेषु मुखरोग भाटे मुखरोगोंके लिए श्रेष्ठम् श्रेष्ठ श्रेष्ठ श्रेष्ठ है ॥ १९६ १९७३ ॥ इति आ यह, पीतकचूर्णम् पीतकयूष्णे से पीतकचूर्ण है ।

196-197. Powder of red arsenic, barley alkali, yellow arsenic, rock salt and bark of indian berberry mixed with honey and the top part of ghee, should be kept in the mouth in throat affections. This is an excellent remedy for oral affections and is popularly known as Pitaka or yellow powder. Thus has been described the yellow powder.

मृद्वीकादिचूर्णम्—

मृद्वीका कटुका व्योषं दार्वीत्वक् त्रिफला घनम् १९८ मूर्च्छितं घृतमण्डेन कण्ठरोगेषु धारयेत् ।

मृद्वीका द्राक्ष मुनका कटुका व्योषम् उडु, त्रिकटु कटु बी, त्रिकटु, दार्वीत्वक् दारुद्रोहनी डाक्ष दारुद्रोहनी छाल, त्रिफला त्रिफला त्रिफला, घनम् अने मोथना यूष्णे और मोथाके चूर्णको, घृतमण्डेन धीना मंडी साथे चीके मण्डसे, मूर्च्छितम् भेगवी मिलाकर कण्ठ-रोगेषु कंडूरेगोभा कंडरोगोंमें, धारवेत् भुभभा धारखु करवुं मुखमें धारण करे ॥ १९८३ ॥

198-198. The pulvis of grape, kurroa, dry ginger, bark of indian berberry, the three myrobalans and nut grass, mixed with the supernatant part of ghee, should be kept in the mouth in throat affections.

पाठा रसाजनं मूर्वा तेजोवृत्ति च चूर्णितम् ॥१९९॥

१९८३. अस्मादनन्तरम्—

इति मृद्वीकादि चूर्णम् इति (अ.) पुस्तके पठयेत् ।

क्षौद्रयुक्तं विधातव्यं गलरोगे भिषग्जितम् ।

पाठा पाठा पाठी, रसाजनम् रसाजनी रसोत, मूर्वा मूर्वा मूर्वा, तेजोवृत्ति इतिच अने तेजोवृत्तिना और तेजवल् इनका, चूर्णितम् यूष्णे चूर्ण करके क्षौद्रयुक्तम् भुभभा साथे भेगवी मधुके साथ मिलाकर, विधातव्यम् भुभभा धारखु करवुं मुखमें धारण करे, गलरोगे आ गलाना रोगभा यह कंडरोगोंमें, भिषग्जितम् भिषग्जितम् औषध है ॥ १९९३ ॥

199 199. Patha, dry extract of indian berberry, trilobed virgin's bower and indian toothache tree, mixed with honey, should be kept in the mouth as a remedy for throat affections.

योगास्त्रेते त्रयः प्रोक्ता वातपित्तकफापहाः ॥२००॥

वातपित्तकफापहाः वात, पित्त तथा कफके नाशक एत आ ये, त्रयः त्रय तीन, योगाः योगे योग, प्रोक्ताः उद्धेताभा आया छे कहे गये हैं ॥ २०० ॥

200. Thus, the three recipes curative of morbid vata, pitta and kapha have been described.

कटुकादिकायः—

कटुकातिविषापाठादार्वीमुस्तकलिङ्गकाः ।

गोमूत्रकथिताः पेयाः कण्ठरोगविनाशनाः ॥२०१॥

गोमूत्रकथिताः गोमूत्रभा क्वाथ करी गोमूत्रमें काथ करके, कटुका- उडु कटुकी, अतिविषा- अतिविषयनी उणी अतीस, पाठा-दार्वी- पाठा, दारुद्रोहनी पाठी, दारु-द्रोहनी, मुस्त- मोथ मोथा, कलिङ्गकाः अने धन्द्रज्व- नीर इन्द्रजौ, गोमूत्रकथिताः ओओने गोमूत्रभा क्वाथ करी इनका गोमूत्रमें काथकर, पेयाः पीवा पीवे, कण्ठ-रोग- ते कंडरोग वे कंडरोगके, विनाशनाः भटाशनार छे नाशक हैं ॥ २०१ ॥

201. Kurroa, indian atees, patha, indian berberry, nut grass and kurchi seeds decocted in cow's urine should

१९९३. गलरोगे भिषग्जितम्—गलरोग भिषग्जितम् (अ.)

be used as potion; they are curative of throat affections.

**स्वरसः कथितो दाढ्या घनीभूतो रसक्रिया ।  
सस्रौद्रा मुखरोगास्तृणोषणाडीव्रणापहा ॥२०२॥**

दाढ्याः क्षारुहणान्ना काकदलीके स्वरसः २५२से स्वरसको, कथितः क्षिप्राणि स्वालकर, घनीभूतः धाटो भनावतां गाढा बनाने पर, रसक्रिया ते रसक्रिया छडेपाय छे वह रसक्रिया कहाता है, सस्रौद्रा मध साथे मेणवेडी ते मधुके साथ मिलायी हुई वह, मुख-रोग-मुभरोग मुखरोग, अस्तदोष-अस्तदोष रक्तदोष, नाडीव्रण-अने नाडीप्रखुने और नाडीव्रणको, अपहा दूर करे छे नष्ट करती है ॥ २०२ ॥

202. The expressed juice of indian berberry, boiled and thickened in its consistency is called soft extract. This extract taken with honey is curative of oral affections, blood-disorders and sinuses.

**तालुशोषचिकित्सा—**

**तालुशोषे त्वतृणस्य सर्पिरौत्तरभक्तिकम् ।  
नावनं मधुराः स्निग्धाः शीताश्चैव रसा हिताः २०३**

तालुशोषे तु तालुशोषभां तालुशोषमें, अतृणस्य तथा वपरना अतृणने पदामने रहित मनुष्यको, औत्तरभक्तिकम् लोभन पछी भोजनके बाद, सर्पिः धृतपान घी, नावनम् नरस्य नस्य, मधुराः अने मधुर और मधुर, स्निग्धाः स्निग्ध स्निग्ध, शीताः तथा शीतल तथा शीतल, रसाः च एव भक्षरस मांसरस, हिताः हितकर छे हितकर हैं ॥ २०३ ॥

203. In dryness of palate, if the person is affected with meagre thirst, a post-prandial potion of ghee, nasal medications and a diet of sweet, unc

२०३. त्वतृणस्य-सतृणस्य (ड. घ.)

" " -संतृणस्य (फ.)

tuous and cooling meat-juices are beneficial.

**मुखपाकचिकित्सा—**

**मुखपाके सिराकर्म शिरःकायविरचनम् ।  
मूत्रतैलघृतक्षौद्रक्षीरैश्च कवलग्रहाः ॥२०४॥**

मुखपाके मुखपाकभां मुखपाकमें, सिराकर्म सिरावेध सिरावेध, शिरःकायविरचनम् शिरःविरचन, क्षाय-विरचन शिरःविरचन, कायविरचन, मूत्र-तैल-गोभूत, तैल गोभूत, तैल घृत-क्षौद्र-घी, मधु घी, जघु, क्षीरैः च तथा दूधना तथा दूधके, कवलग्रहाः कवलग्रह हितकर छे कवलग्रह हितकर हैं ॥ २०४ ॥

204. In inflammation of the mouth, venesection, errhination, purgation and mouth-washes, with cow's urine, oil, ghee, honey and milk should be administered.

**खक्षौद्रास्त्रिफलापाठामृद्वीकाजातिपल्लावाः ।**

**कषायतिककाः शीताः काथाश्च मुखधावनाः २०५**

सक्षौद्राः मधु साथे मधुयुक्त, त्रिफला-त्रिफला, पाठा-मृद्वीका-पाठा, क्षौद्रा पाठी, मुनका, जाति-पल्लावाः तथा अर्धनां पान ओषधेना क्वाथो तथा चमेलीके पत्ते इनके काथ, कषायतिककाः तथा भीम कषाय, तिक्ता तथा दूधरे कषाय, तिक, शीताः च अने शीतल और शीतल, काथाः क्वाथो कषाय, मुख-धावनाः मुखशोधन करनात छे मुखशोधन करनेवाले हैं ॥ २०५ ॥

205. The decoction of the three myrobalans, Patha, grapes, and jasmine leaves mixed with honey and also other astringent, bitter and cooling decoctions, may be used as mouth-wash.

**मुखरोगे खदिगदिगुदिका—**

**तुलां खदिरस्तारस्य त्रिगुणामरिमेदसः ।**

**प्रक्षाल्य जर्जरिक्तस्य चतुर्द्रोणैः पचेत् ॥२०६॥**

२०६. त्रिगुणम्-त्रिगुणम् (घ. क. द. त.)

द्रोणशेषं कषायं ते पुत्रा भूयः पचेच्छनैः ।  
ततस्तस्मिन् घनीभूते चूर्णीकृत्याश्चमणिकम् ॥२०७॥  
चन्दनं पञ्चकोशीरं मखिष्टा घातकी घनम् ।  
प्रयौण्डरीकं यष्ट्याह्वत्वगोलापञ्चकेशरम् ॥२०८॥  
लाक्षां रसाञ्जनं मांसीत्रिफलालोध्रवालकम् ।  
गजज्यौ फलिनीमेलां समङ्गां कदफलं वचाम् ॥२०९॥  
यवासागुरुपक्ष्मगैरिकाञ्जनमावपेत् ।  
लवङ्गनखककोलजातिकोशान् पलोन्मितान् ॥२१०॥  
कर्पूरकुडवं चापि क्षिपेच्छीतेऽवतारिते ।  
ततस्तु गुटिकाः कार्याः शुष्काश्चास्थेन धारयेत् ॥२११॥

अरिसारम् १२५२ खैरकासार, तुलाम् ४००  
तोला ४०० तोले, अरिमेदसः ६२५ आंवण  
रेवां, त्रिगुणाम् ५५५ ८०० तोल के कर, प्रक्षाल्य  
धार्ध चोकर, जर्जरीकृश आडीने कुचलकर, अम्लस-  
ज्जलके, चतुर्द्रोणे ४०८६ तोलामां ४०९६ तोलेमें,  
पचेत् पञ्चवर्षा पकावे, द्रोणशेषम् १०२४ तोला आडी  
रहे त्पारे १००४ तोले शेष रहने पर, पुत्रा गाभी धर्ध  
छानकर, भूयः शनैः इरीधी धीमे धीमे फिर धीरे धीरे,  
पचेत् पञ्चवर्षा पकावे, ततः पछी पश्चात् घनीभूते  
अधारे ते धाटे आय त्पारे जब वह घना बन जाये तब,  
तस्मिन् तेमां इसमें, अश्चमणिकम् ऐक ऐक तोला एक  
एक तोला, चन्दनम् अम्ल चन्दन, पञ्चक- पञ्चक पञ्चाख,  
उशीरम् वीरक्षुमे वागे। लव, मखिष्टा मञ्जु मंजीठ,  
घातकी- धावडी घातके फूल, घनम् मेध मोया,  
प्रयौण्डरीकम् अपौ इरीक प्रयौण्डरीक, यष्ट्याह्व- जेहीमध  
मुलहठी, लवङ्ग-पुला- तज, ऐकभी दालचीनी, इकाषची,  
पञ्च- कुमण कमल, केसरम् धाव नागकेसर रफ  
नागकेसर, काशात धाव लाख, रसाञ्जनम् रसवन्ती  
रसौत, मांसी-त्रिफला- अटामांसी, त्रिफला गटामांसी,  
त्रिफला, कोष- दोधर लोव, बाककम् सुगंधी वागे।  
गुग्गुलु वाक, रजज्जौ ६५६२, क्षुद्रकुण्डर इली.

दाहहवी कलिनी ५६६६ कलिनी, एकाव-  
ऐकभी इलायची, समङ्गा रीसा-मञ्जु लज्जवन्ती,  
कदफलम् ५५६५ कादफल, वचाम् ५५५ वच,  
यवासा- ५५५५ जवासा, अगुरु- अगुरु अगुरु, पक्ष्म-  
रत(अणी लाक चन्दन, गैरिक- अगुरु गेरु, अञ्जनम् अने  
रसवन्ती ऐक(तुं और रसौत इनका, चूर्णीकृत्य सूक्ष्म  
इरी चूर्ण करके, आवपेत् आवणुं छोके, अवतारिते तेने  
जोपारीने इसे अवतारकर, शीते शीतण धया पछी तेमां  
ठंडा होने पर उनमें, पलोन्मितान् ४-४ तोला ४-४  
तोले, लवङ्ग-नख- क्षेपण, नखला लौग, नख, ककोल-  
अक्षुद्रभाण कवाचचीनी, जातिकोशान् अवन्ती बावित्री,  
कर्पूरकुडवम् च अपि तमा ५५२ १६ तोला और  
कर्पूर १६ तोले, क्षिपेत् नागवर्षा मिलावे, ततः तु तेथी  
इसमें, गुटिकाः कार्याः गोणीऐ। इरवी गोलियां  
बनावे, शुष्काः च अने सूक्ष्म गया पछी और सूख  
जाने पर साखेन भुजभां मुहमें, धारयेत् धारय  
इरवी धारण करे ॥ २०६-२११ ॥

206-211. Triturate 400 tolas of  
the pith of catechu wood, 800 tolas  
of white babool and decoct in 4096  
tolas of water till it be reduced to 1024  
tolas. Then, filter and heat it again  
slowly; when it gets thickened, add  
to it the paste of one tola each of  
sandal, himalayan cherry, cuscus  
grass, indian madder, fulsee flower,  
nut grass, tubers of white lotus, liquo-  
rice, cinnamon bark, cardamom, frag-  
rant poon, lac, dry extrat of indian  
berberry, hardus, the three myrobalans,  
lodh, fragrant sticky mallow, turmeric,  
indian berberry perfumed cherry,  
cardamom, indian madder, box myrtle,  
sweet flag, camel's thorn, eagle wood,  
red sandal, red ochre and antimony;  
stir it and take it down. When cooled,  
add to it 4 tolas each of cloves, shell,

२०७. पुत्रा-पुत्रा (प. त.)

अश्चमणिकम्-अश्चमणिकम् (प.)

२११. क्षिपेत्-पुतः (न.)

गुटिकाः-गुटिकाः (प. न.)

शुष्काश्चास्थेन धारयेत्-शुष्काश्चास्थेन धारयेत् (न.)

cubeb pepper, spanish jasmine and 16 tolas of camphor; make pills out of it which, when dried, should be used for keeping in the mouth.

તૈલં જાનેન કલ્કેન કષાયેણ ચ સાધયેત્ ।  
 દન્તાનાં ચલનશ્રંશસૌષ્ઠ્યક્રિમિરોગનુત્ ॥૨૧૨॥  
 મુખપાકાસ્યદૌર્ગન્ધ્યાજાઘ્યારોચકનાશનમ્ ।  
 સ્નાવોપલેપપૈષ્ઠિક્યવૈસ્વર્યગલશોષનુત્ ॥૨૧૩॥  
 દન્તાસ્યગલરોગેષુ સર્વેષ્વેતન્ત્ પરાયણમ્ ।  
 સ્વદિરાદિગુટ્ટીકેયં તૈલં ચ સ્વદિરાદિકમ્ ॥૨૧૪॥

इति स्वदिरादिगुट्टिका तैलं च ।

જાનેન આ દ્રવી, કલ્કેન ચ કંઠક કલ્ક, કષાયેણ ચ  
 અને કષાયથી ઓર કષાયસે, તૈલમ્ તૈલ તૈલ, સાધયેત્  
 સિદ્ધ કરવું સિદ્ધ કરે, દન્તાનાશ તે તૈલ સંતનું વહ  
 તૈલ દાતોંકા, ચલન-શ્રંશ-કાલપુ, પડી જવું હિલના, ગિરના,  
 સૌષ્ઠ્ય- સુપિરતા ચોસલા હો જાના, ક્રિમિરોગનુત્ અને  
 કૃમિરોગ ઓછોના નાશ કરે છે ઓર કીડે લગજાના  
 ફનકા નાશ કરતા હૈ, મુખપાક- મુખપાક મુખપાક,  
 આસ્યદૌર્ગન્ધ- મુખની દુર્ગંધતા મુંદમે દુર્ગંધ, જાઘ્ય-  
 મુખની જડતા મુખકો જડતા, અરોચક- અને અરોચકને  
 ઓર અરુચિકા નાશનમ્ નાશ કરે છે નાશ કરતા હૈ,  
 સ્નાવ- સ્નાવ સ્નાવ, ડપલેપ- મલ્લિકામતા મલાત્રત  
 હોના, પૈષ્ઠિક્ય- પૈષ્ઠિક્યતા પિષ્ઠિક્યતા, વૈસ્વર્ય-  
 સ્વરની નિકૃતતા સ્વરમેદ, ગલશોષ- અને કંઠ-  
 શોષને ઓર કળ શોષકો, નુત્ મટાડનાર છે નષ્ટ કરતા  
 હૈ. હવન્ આ યદ, સ્વદિરાદિગુટ્ટીકા સ્વદિરાદિગુટ્ટીકા  
 સ્વદિરાદિકમ્ સ્વદિરાદિક સ્વદિરાદિક તૈલમ્ ચ તૈલ તૈલ, સર્વેષુ  
 સર્વ સર્વ, દન્ત-જાઘ્ય- દંત, મુખ, દંત, મુંદ, ગલરોગેષુ  
 અને જાના રોગોના ઓર કંઠકે રોગોમે, પરાયણમ્  
 શ્રેષ્ઠ ઔષધ છે શ્રેષ્ઠ ઔષધ હૈ, इति स्वदिरादि- આ  
 અસ્તિત્ત્વે સ્વદિરાદિ, ગુટ્ટીકા તૈલમ્ ચ ગુટ્ટીકા અને  
 તૈલ છે ગુટ્ટીકા ઓર તૈલ હૈ ॥ ૨૧૨-૨૧૪ ॥

212-214. Oil may also be prepared with the aforesaid paste and decoction. This compound Catechu pill and the compound Catechu Oil are curative of (1) odontoseisis, (2) odontoptosis, (3) caries dentis (odonto porosis), (4) parasitic infection. They cure inflammatory condition of the mouth, fetor oris, heaviness and anorexia as well as pyalism, furred condition, stickiness of mouth, alteration of the voice and dryness of the throat. These are excellent remedies in all kinds of diseases of the teeth, mouth and throat. Thus have been described the compound Catechu Pill and the compound Catechu Oil.

अरोचकानां चिकित्सा—

अरुचौ कवलप्राहा धूमाः समुखधावनाः ।

मनोज्ञमज्ञपानं च हर्षणाश्वासनानि च ॥२१५॥

અરુચો અરુચિમાં અરુચિમે, કવલપ્રાહાઃ કવલપ્રહ  
 કવલપ્રહ, સમુખધાવનાઃ મુખનું શોષન કરનાર કષાય  
 વગેરે મુખકો શોષન કરનાર કષાયાદિ, ધૂમાઃ ધૂમપાન  
 ધૂમપાન, મનોજ્ઞમ્ મનઃજ્ઞતા મનકે અનુકૂલ, અજ્ઞપાનમ્  
 અજ્ઞપાન અજ્ઞપાન, હર્ષણ- પ્રસન્નતા ઉત્પન્ન કરવી  
 પ્રસન્નતા ઉત્પન્ન કરના, આશ્વાસનાનિ ચ અને આશ્વાસન  
 હિતકર છે એવં આશ્વાસન હિતકર હૈ ॥ ૨૧૫ ॥

215. In anorexia, mouth-washes, inhalations, cleansing of mouth, pleasant eats and drinks, cheering and comforting measures should be given

कुष्ठसौवर्चलाजाजीशर्करामरिचं बिडम् ।

घाड्येलापन्नकोशीरपिप्पल्युत्पलचन्दनम् ॥२१६॥

लोभं तेजोवती पथ्या ज्यूषणं सयवापजम् ।

भार्गवाक्षिमर्षिषालश्चाजाजीशर्करायुतः ॥२१७॥

૨૧૬. પૈષ્ઠિક્ય-પૈષ્ઠિક્ય (ચ.)

ગલશોષનુત-ગલરોગનુત (ક.)

સતૈલમાક્ષિકાસ્તૈતે ચત્વારઃ કવલગ્રહાઃ ।  
ચતુરોઽરોચકાન્ હન્યુર્વાતાયેકજસર્વજાન્ ॥૨૧૮॥

કુઠ- ૬૬ કૂઠ, સૌવર્ચલ- સંયળ સૌંચર નમક, બજાજી- ૭૨ું જીરા, શર્કરા-મરિચમ્ સાકર, કાળાં મરી ચીની, મરિચ, વિદમ્ અને બિડ લવણુ ઓર વિદ નમક, ધાત્રી- ૫૫૬, આમળાં, એલચી આંબલા, ફલાયતી, પચાક-કશીર- ૫૫૬, વીરણુનો વાળો, પચાચ, લવ, પિપ્પલી- ૫૫૨ પિપ્પલી, કપ્પલ- નીલકમળ નીલોફર, ચન્દનમ્ અને ચંદન ઓર ચન્દન લોધમ્ દેશર લોચ. તેજોવતી તેજોવતી તેજબલ, પથ્થા હરડે હરડ, સયવામ્રજમ્ જનખાર યવશ્ચાર, મ્યૂષળમ્ ત્રિકટુ ત્રિકટુ, બજાજી- ૭૨ું જીરા, શર્કરા- ૫૫૬ અને સાકરયુક્ત ઓર ચીનીયુક્ત, આદ- તામ- તાને, દાહિમનિર્ગમઃ દાહમને ૨૨૫ અનારકા રમ, અને આ એ, સતૈલમાક્ષિકાઃ તેલ અને મધસહિત તૈલ ઓર મધયુક્ત, ચત્વારઃ ચાર ચાર, કવલગ્રહાઃ કવલગ્રહોઃ કવલગ્રહ, વાતાદિ-૫૫૬ વાતાદિ, પિત્તજ, કફજ વાતજન્ય, પિત્તજન્ય, કફજન્ય, સર્વજાન્ અને સંજિપાતજ ઓર સંજિપાતજન્ય, ચતુરઃ ચાર ચારો, અરોચકાન્ અરોચકો, હન્યુ- હણુ છે નષ્ટ કરતે હૈ ॥૨૧૬-૨૧૮॥

216-218. (1) Costus, sanchal salt, cumin-seeds, sugar, black pepper and bid salt; (2) emblic myrobalan, cardamom, himalayan cherry, cuscus grass, long pepper, blue water lily and sandal; (3) lodh, indian tooth-ache tree, chebulic myrobalan, the three spices, and barley-alkali, (4) the juice of green pomegranate, cumin seeds and sugar—these are four kinds of mouth-washes to be taken mixed with oil and honey. These four recipes cure respectively, anorexia due to single discordances of vata etc., as well as that due to tridiscordance.

કારવીમરિચાજાજીદ્રાક્ષાવૃક્ષામ્લદાહિમમ્ ।  
સૌવર્ચલં ગુઢઃ ક્ષૌદ્રં સર્વારોચકનાશનમ્ ॥૨૧૯॥

કારવી- બેડી અબમેદ અમોદ, મરિચ- કાળાં મરી મરિચ, બજાજી- ૭૨ું જીરા, દ્રાક્ષા- ૫૫૬ મુનક્ષા, વૃક્ષામ્લ- ૫૫૬ વૃક્ષામ્લ, દાહિમમ્ દાહમ અનાર, સૌવર્ચલમ્ સંયળ સૌંચરનમક, ગુઢઃ ગોળ ગુઢ, ક્ષૌદ્રમ્ અને મધ ઓર મધુ, સર્વારોચક- સર્વ અરોચકોનો સ્વ અરોચકકા, નાશનમ્ નાશ કરે છે નાશ કરતે હૈ ॥૨૧૯॥

219. Celery, black pepper, cumin, grapes, kokam butter fruit, pomegranate, sanchal salt, gur and honey, are curative of anorexia of every kind.

વસ્તિ સમીરણે, પિત્તે વિરેકં, વમનં કફે ।  
કુર્યાદ્ધાનુકૂલાનિ હર્ષણં ચ મનોમ્નજે ॥૨૨૦॥

હત્યરોચકચિકિત્સા ।

સમીરણે વાયુથી થયેલા અરોચકમાં વાતજન્ય અરોચકમે, વસ્તિમ્ બસ્તિ બસ્તિ પિત્તે પિત્તથી થયેલા અરોચકમાં પિત્તજન્ય અરોચકમે, વિરેકમ્ વિરેચન વિરેચન, કફે કફથી થયેલા અરોચકમાં કફજન્ય અરોચકમે, વમનમ્ વમન વમન, મનોમ્નજે ચ અને મનના વિશ્વાતથી થયેલા અરોચકમાં ઓર મનોવિશ્વાતજન્ય અરોચકમે, હન્યુ-અનુકૂલાનિ હન્યુને હિતકર અને મનને અનુકૂલ હૃદયકે લિપ્ત હિતકર ઓર મનકે લિપ્ત અનુકૂલ, હર્ષણમ્ ચ અને હર્ષણયક ચિકિત્સા ઓર હર્ષણયક ચિકિત્સા, કુર્યાત્ કરવી બેઈએ કરે ॥૨૨૦॥ હનિ આ વહ, અરોચકચિકિત્સા અરોચકચિકિત્સા છે અરોચકચિકિત્સા હૈ ।

220. When anorexia is due to vata, enema is indicated; when due to pitta purgation; and when due to kapha emesis; when due to mental shock whatever measures are cordial and cheering are indicated. Thus has been described the treatment for anorexia.

કર્ણરોગચિકિત્સા—

કર્ણશૂલે તુ વાતગ્રી હિતા પીનસવત્ ક્રિયા ।  
પ્રદેહાઃ પૂર્ણ નસ્યં પાકસ્ત્રાવે વ્રણક્રિયાઃ ॥૨૨૧॥  
મોઝ્યાનિ ચ યથાદોષં કુર્યાં જ્ઞેહાંશ્ચ પૂરણમ્ ।

કર્ણશૂલે તુ કહ્લુશ્લક્ષ્મી કર્ણશૂલમે, પીનસવત્ પીનસની પેઠે પીનસ જેવી, વાતગ્રી વાતનાશક વાતનાશક, ક્રિયા હિતા ચિકિત્સા હિતકર છે ચિકિત્સા હિતકર છે, પ્રદેહાઃ પ્રદેહ પ્રદેહ, પૂરણમ્ તેલ બગેરે નાખવાં છે તેલ આદિ કાનમાં ઢાલના, નસ્યમ્ અને નસ્ય હિતકર છે ઓર નસ્ય હિતકર છે, પાકસ્ત્રાવે કાનમાં પાક અને આત્ર થતાં કાનમાં પાક તથા સાવ હોને પર, વ્રણક્રિયાઃ વ્રણ પ્રમાણે ચિકિત્સા વ્રણચિકિત્સા, યથાદોષમ્ ચ અને દોષાનુસાર એવં દોષોંકે અનુસાર, મોઝ્યાનિ બોબન કરવાં બોધે આદાર કરનાં चाहिए, જ્ઞેહાંશ્ચ અને સ્નેહો ઓર સ્નેહકા, પૂરણમ્ ચ કુર્યાં કાનમાં નાખવાં બોધે પૂરણ કરનાં चाहिए ॥ ૨૨૧૩ ॥

221-222½. In ear-ache, the vata-curative treatment, as in the case of coryza, is beneficial as also applications, ear-drops and nasal medication. When there are suppuration and discharge, procedures as in the case of a wound, and diet suitable to the particular morbid humor, and ear-drops of oil should be applied.

દિગ્વાદિતૈલમ્—

હિઙ્ગતુમ્બકશુન્ઠીમિસ્તૈલં તુ સાર્ષપં પચેત્ ॥૨૨૨॥  
પતદિ પૂર્ણં શ્રેષ્ઠં કર્ણશૂલનિવારણમ્ ।

હિઙ્ગ-તુમ્બક હિંગ, તેજશ્વળ હીંગ, તેજશ્વળ, શુન્ઠીમિઃ તુ અને સઠ એઓશી ઓર સોઠાંકે, સાર્ષપમ્ સરસવતુ સરસોંકા, તૈલમ્ તેલ તેલ, પચેત્ પકાવતું પકાવે, પૂરણમ્ કાનમાં નાખવાનું પૂરણમ્, પતદિ હિ આ તેલ વદ તેલ, શ્રેષ્ઠમ્ કર્ણશૂલ-નિવારણમ્ કહ્લુશ્લક્ષ્મીનું નિવારણ કરવામાં શ્રેષ્ઠ છે કર્ણશૂલકા નિવારણ કરવેકે હિંગ શ્રેષ્ઠ છે ॥ ૨૨૨૩ ॥

222-222½. Make a medicated oil, by preparing rapeseed oil with the paste of asafetida, indian tooth-ache tree and dry ginger. This, administered as ear-drops, is an excellent remedy for ear ache.

દેવદાર્શિકિત્સા—

દેવદારુ-વચાશુન્ઠીસતાઢાકુષ્ઠસૈન્ધવૈઃ ॥૨૨૩॥  
તૈલં સિદ્ધં વસ્તમૂત્રે કર્ણશૂલનિવારણમ્ ।

દેવદારુ- દેવદાર, વચા- વચ વચ, શુન્ઠી- સઠ સોઠ, સતાઢા- સુપા સોપા, કુષ્ઠ- કઠ કઠ, સૈન્ધવૈઃ અને સિન્ધાવૃક્ષ સાથે ઓર સૈંધાનમકસે, વસ્તમૂત્રે બગેરેના મૂત્રમાં વકરેકે મૂત્રમાં, સિદ્ધમ્ તૈલમ્ સિદ્ધ કરેલું તેલ સિદ્ધ તૈલ, કર્ણશૂલ- કહ્લુશ્લક્ષ્મી કર્ણશૂલકા, નિવારણમ્ મટાકનાર છે નિવારક છે ॥ ૨૨૩૩ ॥

223-223½. Medicated oil, made by preparing til oil with the paste of deodar, sweet flag, dry ginger, dill seeds, costus and rock salt, in goat's urine, is curative of ear-ache.

વરાટકાનુ સમાહૃત્ય વહેન્નમ્સ્રાજને નવે ॥૨૨૪॥  
તદ્ગન્ધસ્ય શ્ચોતયેત્તેન ગન્ધતૈલં વિપાચયેત્ ।  
રસાજનસ્ય શુષ્કઘ્વાશ્ચ કલ્પકામ્યાં કર્ણશૂલનુત્ ૨૨૫

વરાટકાનુ કેડીઓ કૌડિયોંકો, સમાહૃત્ય લાવીને લાકર, નવે નવાં નવે, મ્સ્રાજને માટીનાં વાસણમાં મિટ્ટીકે વરતનમાં, વહેન્ન બાળવી જલાવે, તદ્ગન્ધસ્ય તે ભસ્મને उस भस्मको, શ્ચોતયેત્ બળમાં ઘોળી ગાળી લેવી જલમાં ઘોલકર છાન લે, તેન તે ક્ષારબળ उस क्षारजल, રસાજનસ્ય રસાંતી રસોંત, શુષ્કઘ્વાઃ ચ અને સંકેતા ઓર સોઠકે, કલ્પકામ્યામ્ કલ્પકાંકે, ગન્ધ-તૈલમ્ ગંધતેલ ગન્ધતૈલ, વિપાચયેત્ પકાવતું સિદ્ધ કરે, કર્ણશૂલનુત્ તે તેલ કહ્લુશ્લક્ષ્મી નાશ કરનાર છે વદ તેલ કર્ણશૂલનાશક છે ॥ ૨૨૪-૨૨૫ ॥

૨૨૫ ક્ષોતયેત્-જાનવેત્ (ક. ધ. ત. ધ. ફ.)



224-225. Take cowries and burn them in a new earthen pot and decant the ash produced; prepare a fragrant oil in this fluid and with the paste of the dry extract of indian barberry and dry ginger; this oil is curative of ear-ache.

क्षारतैलः—

शुष्कमूलकशुण्ठाणां क्षारो द्विः महौषधम् ।  
 शतपुष्पा वचा कुष्ठं दास शिष्टं रसाञ्जलम् ॥२२६॥  
 सौवर्चलवधक्षारस्त्रिजिह्वोद्विदसंभवम् ।  
 भूर्जग्रन्थिविडं मुस्तं मधुशूकं चतुर्गुणम् ॥२२७॥  
 मातुलुङ्गरसश्चैव कदल्या रस एव च ।  
 सर्वैरेतैर्यथोद्दिष्टैः क्षारैस्तैलं विशचयेत् ॥२२८॥

शूष्कमूलकशुण्ठानाम् सप्त भूगणोः सूक्ष्मसूतीनां,  
क्षारः क्षार क्षार, हिङ्गु हिङ्गु, ह्रींग, मधौवधम् सप्त  
पौठ, शतपुष्पा भुवा सोडा. वचा वचा वचा, कुष्ठम्  
दारु दारु, देवदारु कूठ. देवदारु, शिग्रु शरगवानां श्रीग्र  
सहजनेके बीज, रसाञ्जनम् रसाञ्जनी रसाञ्जनी, सौचर्वल-  
संयुक्त सौचल, यवक्षार- यवक्षार यवक्षार, स्वजिका-  
साञ्जिका रजिक्सार, इन्द्रिजैन्धवम् इन्द्रिजैन्धवम्,  
सिन्धालूष्ण उद्भिद, सैन्धवनमक, भूर्जप्रन्थिः भूर्ज-  
प्रन्थि गार्भ भूर्जप्रन्थि, बिडम् बिडम् इवल् विडनमक,  
मुस्तम् मोथ मोथा, चतुर्गुणम् चतुर्गुणम् सौगुना,  
मधुशुक्ल मधुशुक्ल मधुशुक्ल, मातुलुरमः च एव  
प्रीत्योशने रस विजौरैका रस. कदल्याः रसः च एव  
केनेका रस केनेका स्वरस, यथोद्भिष्टैः उपर कहेतामां  
आवेक्षा उपर्युक्त, एतैः सर्वैः आ सर्वैः द्रव्यैः  
इन सब द्रव्योसे, क्षारतैलम् क्षारतैल क्षारतैल, विपाचयेत्  
पकायुं पकावे ॥ २२६ २२८ ॥

226.228. Take alkali of dry radish  
asafetida, and ginger, dill seeds, sweet

२६. शुद्धमूलशुष्कानां शुद्धमूलशुष्कानां (५)

११                      ११                      बालमूलप्रशुष्ठानां (घ.)

२२८. सर्वैरेतैर्षयोद्दिष्टैः क्षारत्वेन विपाचयेत्- तैलमेभिर्विपक्तव्यं  
कर्णशूलहरं परम् (ब. फ.)

flag, costus, deodar, drumstick, dry extract of indian berberry sanchal salt, barley alkali, salsoda alkali, efflorescent salt. rock salt, the tubers of birch bid-salt, nut grass and four times the quantity of honey-vinegar. the juices of pomelo and of plaintain—with all these above-mentioned articles prepare the alkali-oil.

नाधिर्ये कर्णनादश्च पूयन्नावश्च दारुणः ।

क्रिमयः कर्णशूलं च पूरणादस्य नश्यति ॥२२९॥

अस्य आ तेषु इम तैलके पूरणाय जानमा  
नाभवाथी कानमें पूरणसे, बाधिर्यम् भङ्गशपथु बहिरा-  
न, कर्णनादः च कर्णनादः कर्णनाद, दारुणः भय डर  
भयंकर, पूषस्त्रावः च परुने स्त्राय, पूषका सव, क्रिप्यः  
किमिषो कृति, कर्णशूलम् च अने कर्णशूल और कर्ण-  
शूल नश्यन्ति नाश पाये छे नष्ट होते हैं ॥ २२९ ॥

229. Deafness, buzzing in the ears  
excessive discharge of pus, parasites  
and ear-ache are cured by ear-drops  
with this oil.

मुखकणाक्षिरोगेषु यथोक्तं पीनसे विधिम् ।

कुर्याद्विषक् त्वमीक्ष्यादौ दोषकालबलाबलम् २३०  
इति कर्णरोगचिकित्सा ।

मुख-कण- भुज, शिरः मुख, कान, अक्षरोगेषु अने  
आँखना रोगोभा और नाँखके रोगोमें, मिषक् जादौ वैद्य  
पहिला वैद्य पहिले, दोष-काल- दोष तथा कालनां दोष तथा  
कालके, बलाबलम् भल अने अशुभ बल और अवलको,  
समीक्ष्य ओछिने देखकर, पीनसे पीनसभा पीनसमें,  
यथोक्तम् विविध दुहेली चिकित्सा कही चिकित्सा,  
कुर्याद करवी करे ॥ २३० ॥ इति श्री यह, कर्णरोग-  
चिकित्सा उल्लंघनचिकित्सा छे कर्णरोग चिकित्सा है ।

२२९. बाधिर्.....नश्यति ॥—पूरणादस्त्वलक्ष्य क्रियते

कर्णमात्रिणाः। क्षिप्रं प्रणार्शं गच्छन्ति कुष्णात्रेयस्य

शासनात् । क्षारनैलमिदं भेष्टं मुखदन्तामयापहम् ॥ (ब. क.)

२३०. दुर्गादिष्वक समीक्ष्यादौ-आदौ समीक्ष्य वैषस्तु (ब.)



230. The physician, after due consideration of the relative strength of morbid humors and season, should administer the same treatment in diseases of the mouth, ear and eye as indicated in coryza. Thus has been described the treatment of the diseases of the ear.

नेत्ररोगे विहालकाः —

उत्पन्नमात्रे तरुणे नेत्ररोगे विहालकः ।

कार्यो दाहोपदेहाश्रुशोफरागनिवारणः ॥२३१॥

उत्पन्नमात्रे केवल उत्पन्न अथवा उत्पन्न होनेके साथ ही, तरुणे नवीन नये, नेत्ररोगे नेत्ररोगभाँखके रोगोंमें, दाह- दाह दाह, उपदेह- भक्षितता उपदेह, अश्रु- आंसु आंसु बहना, शोफ- सोओ शोथ, राग- अने रताश और लाली, निवारणः भटाउनार दर करनेवाला, विहालकः भिडावक छेप विहालक छेप, कार्यः करने के छेप करना चाहिए ॥ २३१ ॥

231. Treatment in eye-diseases, in their initial stages when they are still mild, consists of external eye-applications curative of burning, mucus discharge, lachrymation, swelling and redness.

नागरं सैन्धवं सर्पिर्मण्डेन च रसक्रिया ।

निवृष्टं वातेके तद्वन्मधुसैन्धवगैरिकम् ॥२३२॥

वातिके वातिक नेत्ररोगभाँ वातजन्य आँखके रोगमें, नागरम् सूँठ सोंठ, सैन्धवम् च अने सिंधालूने भेणवी और सैधानमकको मिलाकर, सर्पिर्मण्डेन धीना भंड साथे पीसीने चीके मण्डके साथ पीसकरके, रसक्रिया रसक्रिया करने की रसक्रिया करे, तद्वत् ते अ प्रभाछे इसी प्रकार, निवृष्टम् पीसेल पीसे हुए, मधु- मधु मधु, सैन्धव-

सिंधालू सैन्धानमक, गैरिकम् अने सोनागेरुनी पक्ष रसक्रिया थाय छे और स्वर्णगैरिककी भी रसक्रिया होती है ॥ २३२ ॥

232. In eye-affections due to vata, an external application of a soft extract may be prepared by making the paste of dry ginger and rock salt, with the supernatant part of ghee. It may also be prepared of honey, rock salt and red ochre.

तथा शारकं लोभं घृतभृष्टं विहालकः ।

तद्वत् कार्यो हरीतक्या घृतभृष्टो रुजापहः ॥२३३॥

तथा ते प्रभाछे इसी प्रकार, घृतभृष्टम् धीमाँ भूँछे चीमें भूने हुए, शारकम् लोभम् शारक धोअने शारक लाग्रका विहालकः भिडावक छेप विहालक छेप, कार्यः करने के छेप करना चाहिए, तद्वत् ते अ प्रभाछे इसी तरह, घृत-भृष्टः धीमाँ भूँछे चीमें भूनी, हरी- तक्याः करने पक्ष भिडावक छेप हरकका भी विहालक छेप, रुजापहः वेदनानाशक छे दर्दको हटानेवाला है ॥ २३३ ॥

233. An external eye-application may be prepared of the Savaraka variety of lodh, fried in ghee, or with chebulic myrobalan fried in ghee; they are both curative of pain

पैत्तिके चन्दनानन्तामज्जिष्ठाभिर्विहालकः ।

कार्यः पञ्चकयष्ट्याह्वमांसीकालीयकैस्तथा ॥२३४॥

पैत्तिके पित्तजन्य नेत्ररोगभाँ पैत्तिक अक्षरोगमें, चन्दन- चंदन चंदन, अनन्ता- भ्रो दूब, मज्जिष्ठाभिः अने मज्जिष्ठा और मजीठ इनसे, तथा तथा तथा, पञ्चक- पञ्चक पञ्चक, यष्ट्याह्व- जेठीमधु मुलहठी, मांसी- जटामांसी जटामांसी, कालीयकैः अने पीणा

२३१. उत्पन्नमात्रे तरुणे नेत्ररोगे-नेत्ररोगे समुत्पन्ने तरुणे तु (त.)

२३२. मधु-मुस्त (ध.)

२३३. तद्वत्.....रुजापहः-कार्या हरीतकी तद्वत् घृतभृष्टा

रुजापह (ध.)

अधनथी और पील चन्दनसे, बिडालकः [अ. १६. ३]  
बिडालक, कार्यः करने के ॥ २३४ ॥

234. In eye-diseases due to pitta, external eye-application may be prepared with sandal, indian sarsaparilla, and indian madder, or with himalayan cherry, liquorice, nardus and yellow sandal.

गैरिकं सैन्धवं मुस्तं रोचना च रसक्रिया ।  
कफे कार्या तथा शौद्रं प्रियङ्गुः समनःशिला ॥ २३५ ॥

कफे ऊँधी अथवा नेत्ररोगभां कफज नेत्ररोगमें, गैरिकम् सोनागेरु स्वर्णगैरिक, सैन्धवम् सिंधालूख, सैवानमक, मुस्तम् नागरमेथ मोथा, रोचना च अने गोरोचननी और गोरोचनकी, रसक्रिया रसक्रिया, कार्या करने करनी चाहिए, तथा रोचना एवं, शौद्रम् अध मधु, समन शिला भनःशिला मैमसिल, प्रियङ्गुः अने धुँलाने [अ. १६. ३] लेप करने और प्रियङ्गु इनसे बिडालक लेप करे ॥ २३५ ॥

235. Red ochre, rock salt, cut-grass and cow's bile may be made into soft extract and used in eye-diseases due to kapha, or an external application may also be prepared of honey, perfumed cherry and red arsenic.

सन्निपाते तु सर्वैः स्याद्बहिरक्ष्णोः प्रलेपनम् ।  
पक्ष्माण्यस्पृशता कार्यं संपक्वे त्वञ्जनं ज्यहात् ॥ २३६ ॥

सन्निपाते तु सन्निपातधी अथवा नेत्ररोगभां सन्निपातजन्य नेत्ररोगमें, सर्वैः सर्व औषधेधी सब औषधोंसे, बहिरक्ष्णोः बहिः आभननी अह्मर आखोंके बाहर,

२३५. गैरिकं सैन्धवं मुस्तं रोचना च—रोचनामुस्तजन्य.

गैरिकम् (घ)

२३६. सन्निपाते.....प्रलेपनम्—सन्निपाते तु तत्सर्वं बहिरक्ष्णोः  
प्रलेपयेत् (ङ.)

॥ पक्ष्माण्यस्पृशता.....ज्यहात्—प्रक्षाल्य स्पृशता कार्यं  
सम्यक् नेत्राञ्जनं ज्यहात् (त. द. घ. ङ.)

पक्ष्माणि पाँपलूने पलकोंको, अस्पृशता स्पृश करी पत्र स्पृश न करता हुआ प्रलेपनम् लेप, कार्यम् करने के ॥ २३६ ॥

236. When the disease is due to tridiscordance, an external application for the eye may be made of all these articles combined and applied, without touching the eye-lashes; when after three days the condition is mature, collyrium may be applied.

नेत्ररोगे आख्यायाणि

आश्रयोतनं मारुतजे काथो बिल्वादिभिर्हितः ।  
कोष्णः सैरण्डतर्कारीबृहतीमधुशिमुभिः ॥ २३७ ॥

मारुतजे वातधी अथवा नेत्ररोगभां वातजन्य नेत्ररोगमें, स-एरण्ड- और उ एरण्ड, तर्कारी- तर्कारी अन्तरी, बृहती- मोटी बोरी-गुली बरी कटेरी, मधु- शिमुभिः अने भीड़ा भरगवा साथे मीठा सहिजन, बिल्वा- दिभिः पीली नगेशी सिद्ध करने और बिल्वादि पञ्चमूलसे सिद्ध किया, कोष्णः काथः नवशेडा अथ सुहाताहुआ गरम काथ, आश्रयोतनम् नेत्रसिन्धन भाटे आश्रयोतनके लिए, हितः हितकर छे हितकर है ॥ २३७ ॥

237. In diseases due to vata, eye-douche with luke-warm decoction of the drugs of the bael group is beneficial, or decoction of castor plant, wind killer, yellow berried nightshade and sweet drumstick, is beneficial.

पृथ्वीकादार्धिमञ्जिष्ठाकाक्षगृह्णामधुकोष्यलैः ।

काथः सर्शकरः शीतः पूरणं रक्तपित्तनुत् ॥ २३८ ॥

२३७. हितः—शुभः (ङ.)

२३८. पृथ्वीका—बृहतीका (घ. ङ. त. द.)

पृथ्वीका- भोटी ओखली बड़ी इलायची, दारि-  
हादुहलहर दासहली मजिष्टा- भुछ मजीठ, लाक्षा-  
लाभ लाभ, हिमशुक- ओ गेरीभध मुहठी, जलमुलहठी,  
रूपलैः अने नीलकमलने। और नीलीफर इनका,  
समर्करः साडरभडित चीनी मिला, काथः कवाथ काथ,  
शीतः शीतल अता शीतल होने पर, पूरणम् आभमा  
नाभवे। आखमें डालना, रक्तपित्तनुव ओ नेत्रगत रक्त  
अने पित्तना प्रक्षेपने करे छे यह नेत्रगत रक्त  
और पित्तके प्रक्षेपको इटाता है ॥ २३८ ॥

238 Eye-drops with the cooled  
decoction of great cardamom, indian  
berberry, indian madder, lac, liquorice  
and aquatic liquorice and blue water-  
lily, mixed with sugar, is curative of  
the condition due to morbid blood  
and pitta.

नागरत्रिफलासुस्तनिम्बवासारसः कफे  
कोष्णमाश्रयोतनं मिथैरौषधैः सान्निपातके ॥२३९॥

कफे उद्धृती अथेला नेत्ररोगमां कफजन्य नेत्र-  
रोगमें, नागर- सुठ सोंठ, त्रिफला- त्रिफला त्रिफला सुस्त-  
भोथ सोथ निम्ब- धीअडे नीम वासा- अने अरदुसीन-  
और वासाका रसः कवाथनु काथका, कोष्णम् नवशेकु  
सुहाता हुआ, आश्रयोतनम् नेत्रसिंघन आश्रयोतन के  
सान्निपातिके अने सन्निपातथी अथेला नेत्ररोगमां  
और सन्निपातजन्य नेत्ररोगमें, मिथैः भिन्न भिन्न दोषों  
अनुसारी भेदवेदां पृथक् पृथक् दोषके अनुसार मिलाये  
हुए औषधैः औषधैथी नेत्रसिंघन करवुं द्रव्योंसे  
आश्रयोतन करना चाहिए ॥ २३९ ॥

239. In diseases due to kapha  
eye-douche may be given with the  
decoction of dry ginger, the three  
myrobalans, nut-grass, neem and vasaka.  
In a condition of tridiscordance, an  
eye-douche with the luke-warm decoc-

tion of all these drugs should be  
given.

नेत्ररोगे अज्वानि—

बृहत्पेरण्डमूलत्वक् शिग्रोः पुष्पं ससैन्धवम् ।  
अजाक्षीरेण पिष्टं स्याद्वर्तिर्वाताक्षिरोगनुत् ॥२४०॥

बृहती भोटी बेरिंगली बड़ी कटेरी, एरण्डमूलत्वक्  
और अजां भूणी छाल एरण्डमूलकी छाल, ससैन्धवम्  
सिंघावुसु सैन्धानमक, शिग्रोः अने सरगवानां और  
सहजनके, पुष्पम् सूखने फूट इनको, अजाक्षीरेण अक्षरीना  
इध साथे बकरीके दूधके साथ, पिष्टम् वाटी पीसकर,  
वाताक्षिरोगनुत् वातजन्य नेत्ररोगने भटाडनार वातजन्य  
अक्षिरोगको नाश करनेवाली, वर्तिः वाट वर्ति, स्यात्  
अनावली बनावे ॥ २४० ॥

240. Reduce to paste, yellow-berried  
nightshade, castor root-bark, flower  
of drumstick and rock-salt with  
goat's milk, and roll it into a bougie;  
this is curative of disorders of the eye  
due to vata.

सुमनःकोरकाः शङ्खखिफला मधुकं बला ।  
पित्तरक्तापहा वर्तिः पिष्टा दिव्येन वारिणा ॥२४१॥

सुमनःकोरकाः अर्धनी उणीओ चमेलीकी कली,  
शङ्खः शंभयुर्लुं शंखचूर्ण, त्रिफला त्रिफला त्रिफला,  
मधुकम् गेरीभध मुलहठी, बला अने अथाने और  
बला इनको, दिव्येन वर्षांना वर्षाके, वारिणा अथमां  
जलसे, पिष्टा वाटीने पीसकर बनायी हुई, वर्तिः वर्ति  
वर्ति, पित्तरक्तापहा पित्त अने रक्तदोषने हरे छे  
पित्त और रक्तदोषको हरती है ॥ २४१ ॥

241. A bougie, prepared with the  
paste of jasmine buds, conch, the  
three myrobalans, liquorice and heart-  
leaved sida with rain water, is curative

२४०. शिग्रोः पुष्पं-शिग्रोमूलं (व. क.)

२४१. कोरकाः-क्षारकाः (व.)

,, , -क्षारकः (द. व.)

२३९. सुस्तनिम्बवासारसः-निम्बवासाकोअरसः (व. व.)

of eye-disease due to morbid pitta and blood.

सैन्धवं त्रिफला व्योषं शङ्खनाभिः समुद्रजः ।

फेनः शैलेयकं सर्जो वर्तिः श्लेष्माक्षिरोगनुत् ॥२४२॥

सैन्धवम् लिंघावृक्ष सैवानमक, त्रिफला त्रिफला त्रिफला, व्योषम् त्रिफला त्रिफला, शङ्खनाभिः शङ्खनाभिः शङ्खनाभिः समुद्रजः फेनः समुद्रजः समुद्रफेन, शैलेयकम् शैलेयक, सर्जः अने रागनी और सर्जरस इनसे बनायी गई, वर्तिः वर्ति वर्ति, श्लेष्माक्षिरोगनुत् ३३-४४ नेत्ररोगने भट्टाडे के कफजन्य अक्षिरोगको नष्ट करती है ॥ २४२ ॥

242. A bougie prepared of rock salt, the three myrobalsans the three spices conch, cuttle fish bone, lichen and common sal, is curative of eye-diseases due to morbid kapha.

अमृताह्वादिवर्तिः —

अमृताह्वा विसं चित्तं पटोलं लागलं शङ्ख ।  
प्रपौण्डरीकं यष्ट्याहं दार्वी कालानुसारिवा ॥२४३॥

एवमष्टपलान् भागान् सुधौताञ्जरीकृतान् ।

तोये पक्त्वा रसे पूते भूयः पके रसे घने ॥२४४॥

कर्षं च श्वेतमरिचाज्जातीपुष्पाभवात् पलम् ।

चूर्णं क्षिप्वा कृता वर्तिः सर्वघ्नी हृक्प्रसादनी २४५

अमृताह्वा गणेश गिलोय, विसम् विस विस, चित्तम् भीली बेल, पटोलम् पटोल परवल, लागलम् अकुरु अकरीनी बीडी बकरीकी मँगनियां, प्रपौण्डरीकम् प्रपौण्डरीक पुण्डरीककाष्ठ, यष्ट्याहम् गेहीमध मुलहठी, दार्वी डाडुगण्डर दादहली, कालानुसारिवा अने

डाडुनुसारिवा और कालानुसारिवा, एवम् औषधानां प्रत्येकना इनमेंसे प्रत्येकके सुधौतान् खरी पेठे धोयेवा अच्छी तरह धोये हुए अञ्जरीकृतान् घने अष्टपलान् ३२ तोलाना भागने ३२ तोलके भागोंका, तोये पाणीभां जलमें, पक्त्वा पकायी पकाकर, पूते रसे रस गाणी धार रसको छानकर, भूयः इरीथो फिर रसे पके ओ रसने पकायी इस रसको पकाकर, घने घट अतां घन होने पर, श्वेतमरिचाज् कर्षम् तेभां ओठ तोलै धोना भरी एक तोल सफेद मरिच, नवम् जातीपुष्पात् पलम् च अने थार तोल तोल आधनां धुलना और चार तोले नये चमेलीके फूलोंके, चूर्णम् चूर्णने चूर्णको, क्षिप्वा नाथी मिलाकर, कृता अनवेधी बनायी, वर्तिः वर्ति वर्ति, सर्वघ्नी सर्व दोषोंने नाश करना सब दोषोंका नाश करनेवाली, हृक्प्रसादनी तथा नेत्रने निर्माण करनारी थाय के तथा दृष्टिको साफ करनेवाली होती है ॥ २४३-२४५ ॥

243-245. Take 32 tolas of each of guduch lotus rhizome bael, snake gourd, goat's dung, tubers of white lotus liquorice, indian berberry, and dark blue creeper; wash them and triturate and boil in water, and after filtering, boil it again into a soft consistency. Add to this soft extract one tola of the pulvis of white pepper and 4 tolas of fresh jasmine flower, and roll into a bougie; this is curative of every kind of eye-affection and brightens the vision.

शङ्खादिवर्तिः —

शङ्खप्रवालवैदूर्यलौहताम्रपुष्पास्त्रिभिः ।

स्रोतोश्च श्वेतमरिचैर्वर्तिः सर्वाक्षिरोगनुत् ॥२४६॥

शङ्ख- शंख शंख, प्रवाल- प्रवाल मृगा, वैदूर्य- वैदूर्य वैदूर्य, लौह- लोह लोह, ताम्र- ताम्र ताम्र

२४६. शङ्खप्रवाल-शङ्खप्रवाल (घ)

२४३. अमृताह्वा विसं चित्तं - अमृता मधुकं चित्तं (घ. क)

प्रपौण्डरीकं यष्ट्याहं - वासाप्रपौण्डरीकं च (क)

कालानुसारिवा - वाटपलांशिकाम् (झ. ड)

२४४. तोये - जले (ग. ड)

भूयः पक्त्वा - पुनः पक्त्वा (ग. ड)

२४५. सर्वघ्नी - दोषघ्नी (घ. घ)

ह्रवास्थितिः अने प्लवनां दाडकां ह्रवकी हड़ी, चोतोज-  
भोतोअन चोतोजन, खेतसरिचैः तथा धोणा भरी  
ओओने लेणां चाटी अनानेदी तथा सफेद मिरच इनको  
एकत्र पीसकर बनायी, वर्तिः वर्ति वर्ति, सर्वाक्षिरोगनुव  
आभना सर्व रोगने भटाउनार आय छे आंखके सब  
रोगोंको हरनेवाली होती है ॥ २४६ ॥

246. A bougie, prepared with conch,  
coral, cat's eye beryl, iron, copper,  
bones of pelican, black antimony and  
drumstick-seeds, is curative of every  
kind of eye-disease.

चूर्णाञ्जनम्—

शाणार्धे मरेवाद् द्वौ च पिप्पल्यणवफेनयोः ।  
शाणार्धे सैन्धवाच्छाणा नव सौवीरकाञ्चनात् २४७  
पिष्टं सुसूक्ष्मं चित्रायां चूर्णाञ्जनमिदं शुभम् ।  
कण्डूकाचकफार्तानां मलानां च विशोधनम् ॥ २४८ ॥

मरिचाद् भरी काली मिरच, शाणार्धम् अर्धे  
शाख दो आनीभर, पिप्पली- पीपर पिप्पली, अणव-  
फेनयोः अने समुद्रीख और समुदफेन, द्वौ ये शाख  
आवा तोला, सैन्धवाद् सिंधाख सैन्धानमक शाणा-  
र्धम् अर्धे शाख दो आनीभर, सौवीरकाञ्चनात् अणै।  
सुरभे सौवीराञ्जन, नव शाणाः नव शाख ओ सर्वने  
१ तोला दो आनीभर इन सबको, चित्रायाम् चित्रा  
नक्षत्रमां चित्रा नक्षत्रमें, सुसूक्ष्मम् सारी पेठे आरीक  
अत्यन्त बारीक, पिष्टम् पीसीने तैयार करेखुं पीसकर  
तैयार किया हुआ, इदम् आ यह, चूर्णाञ्जनम् यूख-  
अन चूर्णाञ्जन, कण्डू- भववाण कण्डू, काच- मोतिशे।  
काच, कफार्तानाम् अने कड़वी पीडाधैव रेखीओ।  
भाटे और कफज अक्षिरोगवालोंके लिए, शुभम् शुभ  
छे कल्याणकारक है, मलानाम् अने भणोतुं और  
मलका, विशोधनम् च शोधन करनेवाले छे विशोधक  
है ॥ २४७-२४८ ॥

247-248. Take 1/8 tola of black  
pepper, 1/2 tola of long pepper,  
1/2 tola of cuttle fish bone, 1/8 tola

of rock salt and 1 1/2 tolas of antimony  
sulphide, and make a fine powder of  
these, when the moon is in the const-  
ellation of Chitra. This collyrium is  
wholesome for those affected with  
itching, cataract and kapha eye-diseases  
and is also a cleanser of the dischar-  
ging condition of the eye.

बस्तमूत्रे ज्यहं स्थाप्यमेलाचूर्णं सुभावितम् ।  
चूर्णाञ्जनं हि तैर्मिर्यकमिपिल्लमलापहम् ॥ २४९ ॥

एलाचूर्णम् नानी ओदधीनां यूखने छोटी इलाय-  
चीके चूर्णको, बस्तमूत्रे भटारना भूत्रमां बकरेके मूत्रमें,  
ज्यहम् त्रखु दिवस सुधी तीन दिन, स्थाप्यम् राखी  
भूकुपुं रखे, सुभावितम् आभ सारी पेठे भावना  
दीधेखुं इस प्रकार अच्छी तरहसे भावित, चूर्णाञ्-  
नम् ते यूखान वह चूर्णाञ्जन, तैर्मिर्य- तिभिरोग  
तिमिर, क्रिमि- क्रिमि क्रिमि, पिल्ल- पित्तरेण पिल्ल, मला-  
पहम् हि अने नेत्रमलने। नाश करनेवाले आय छे और  
नेत्रमलको नाश करनेवाला होता है ॥ २४९ ॥

249 Saturate the pulvis of small  
cardomom in goat's urine for three  
days; the collyrium made of this  
well-impregnated pulvis is curative of  
diseases of dark vision, parasites, Pilla  
and discharge.

सौवीराञ्जनादिवर्तिः—

सौवीरमञ्जनं तुस्थं ताप्यो घातुर्मनःशिला ।  
चक्षुष्या मधुकं लोहा मणयः पौष्पमञ्जनम् ॥ २५० ॥  
सैन्धवं शौकरी दंष्ट्रा कतकं चाञ्जनं शुभम् ।  
तिमिरादिषु चूर्णं वा वर्तिवैयमनुसमा ॥ २५१ ॥

सौवीरम् अञ्जनम् अणै। सुरभे सौवीराञ्जन,  
तुस्थम् तुस्थ तुस्थ, ताप्यः घातुः सुवर्णं भाक्षिक

२४९. एला-चिड (र. व. क.)

हि तैर्मिर्ये-इदं सम्यक् (क.)

२५१. कतकं-कनकं (व.)

स्वर्णमाक्षिक, मनःशिला मनःशिक्ष मैनसिल, चक्षुष्या  
यक्षुष्या वनकुलथी, मधुकम् गेहीमध मुलहठी, लोहाः  
लोहचूर्ण, मणयः भक्षुको मणि, पौष्पम्  
अज्जनम् पुष्पाञ्जन पुष्पाञ्जन, सैन्धवम् सिन्धवल्लु  
सैन्धानमक, औकरी सुनरणी सूयरी, दंष्ट्रा दंष्ट दाद,  
कतकम् च अने डतके ओओलु और निर्मली इनका,  
अज्जनम् अञ्जन अज्जन, शुभम् श्रेष्ठ छे श्रेष्ठ है, चूर्णम्  
वा आ ओषध यूथुना ३५भां यह औषध चूर्णके  
रूपमें, इयम् वर्तिः वा अथवा आ वर्तिना ३५भां  
अथवा इस वर्तिके रूपमें, तिमिरादिषु तिमिरादि  
रोगभां तिमिरादि रोगमें, अजुतमा अति उत्तम छे अति  
उत्तम है ॥ २५०-२५१ ॥

250-251. Antimony sulphide copper  
sulphate, iron pyrites, red arsenic, wild  
horse-gram, liquorice, iron powder, pre-  
cious stones, white zinc, rock-salt, hog's  
tusk and clearing nut, make a good co-  
llyrium. In dimness of vision and other  
eye-diseases, used as pulvis or bougie, this  
acts as an unsurpassed remedy.

नेत्ररोगे सुखावती वर्तिः —

कतकस्य फलं शङ्खः सैन्धवं ज्यूषणं सिता ।  
फेनो रसाञ्जनं क्षौद्रं विडङ्गानि मनःशिला ॥२५२॥  
कुक्कुटाण्डकपालानि वर्तिरेषा व्यपोहति ।  
तिमिरं पटलं काचं मलं चाशु सुखावती ॥२५३॥  
इति सुखावती वर्तिः ।

कतकस्य डतकनु निर्मलीका, फलम् इण फल, शङ्खः  
शंखचूर्ण, सैन्धवम् सिन्धवल्लु सैन्धव, ज्यूष-  
णम् त्रिडु त्रिडु, सिता साडर बीनी, फेनः समुद्र-  
शीलु समुद्रफेन, रसाञ्जनम् रसाञ्जन रसोत, क्षौद्रम्  
मधु, विडङ्गानि वावडिग वायविङ्ग, मनःशिला  
मनःशिक्ष मैनसिल, कुक्कुटाण्ड- डूडङ्गानां डूडङ्गानां सुगेंके  
अण्डेके, कपालानि डायक्षा डिलके, एषा आ इनकी  
यह, सुखावती सुखावती नामनी सुखावतीनामक,

वर्तिः वर्ति वर्ति, तिमिरम् तिमिर तिमिर, पटलम्  
पडल पटल, काचम् डाय काच, मलम् च अने  
मलने और मलको, आशु ततत क्षीघ्र, व्यपोहति नाश  
करे छे दूर करती है ॥ २५२-२५३ ॥ इति आ यह,  
सुखावती वर्तिः सुखावती वर्ति छे सुखावती वर्ति है ।

252 253. Take clearing nut, conch,  
rocksalt, the three spices, sugar, cuttle  
fish bone, dry extract of indian berberry,  
honey, embelia and red arsenic and  
the shell of hen's egg, and prepare a  
bougie out of this, known as the Plea-  
sant bougie which quickly cures  
diseases of vision, palate and Kacha  
and discharge. Thus has been desc-  
ribed the Pleasant bougie.

नेत्ररोगे दृष्टिप्रदा वर्तिः —

त्रिकलाकुक्कुटाण्डत्वक्कासीसमयसो रजः ।  
नीलोत्पलं विडङ्गानि फेनं च सरितां पतेः ॥२५४॥  
आजेन पयसा पिष्ट्वा भावयेन्नाम्रभाजने ।  
सप्तरात्रं स्थितं भूयः पिष्ट्वा क्षीरेण वर्तयेत् ॥२५५॥  
एषा दृष्टिप्रदा वर्तिरन्धस्याभिन्नचक्षुषः ।  
इति दृष्टिप्रदा वर्तिः ।

त्रिकला- त्रिधा त्रिकला, कुक्कुटाण्डत्वक्- डूडङ्गानां  
डूडङ्गानां डायक्षा सुगेंके अंडेका डिलका, कासीसम्  
कासीस कासीस, अवसः रजः लोहचूर्ण, लोहचूर्ण,  
नीलोत्पलम् नीलोत्पल नीलोफर, विडङ्गानि वावडिग  
वायविङ्ग, सरिताम् पतेः फेनम् च अने समुद्रशीलुने  
और समुद्रफेनको, आजेन अकरीना बकरीके, पयसा  
दूधभां दूधमें, पिष्ट्वा पीसीने पीसकरके, ताम्रभाजने  
ताम्रभाजनां ताम्रके पात्रमें, भावयेत् धीधी हेतु डेप  
करे, सप्तरात्रं स्थितम् सात रात सुधी तेने रात्रीने  
सात राततक रखकर, भूयः क्षीरी फिरे, क्षीरेण  
दूधनी साथे दूधमें, पिष्ट्वा पीसीने पीसकर, वर्तयेत्  
वर्तिं अनावती वर्ति बनाये, एषा आ यह, वर्तिः  
वर्ति वर्ति, अभिन्न- चक्षुषः नेत्री आंख इंद्री नयने

गर्भ औषा आंख न फूटे हुए, अन्वस्य आध्वजने अंधेको, दृष्टिप्रदा दृष्टि देनेवाली छे दृष्टि देनेवाली है ॥ २५४-२५५ ॥ इति आ. यह, दृष्टिप्रदा वर्तिः दृष्टि-प्रदा वर्ति छे दृष्टिप्रदा वर्ति है।

254-255½. Make a paste of the three myrobalans, the shell of hen's egg, iron sulphide, iron dust, blue water lily, embelia and cuttle fish bone with goat's milk and saturate it in the same milk, placing in a copper vessel for 7 nights; then, again rub it and roll into bougie with milk; this bougie bestows sight on those who have gone blind but whose eyes have not undergone organic change or damage. Thus has been described the Sight-bestowing bougie.

नेत्ररोगे अन्यान्यजनानि—

वदने कृष्णसर्पस्य निहितं मासमञ्जनम् ॥२५६॥

ततस्तस्मात् समुद्धृत्य सुशुष्कं चूर्णयेद्बुधः ।

सुमनःकोरकैः शुष्कैरर्घाशैः सैन्धवेन च ॥२५७॥

एतन्नेत्राञ्जनं कार्यं तिमिरघ्नमनुत्तमम् ।

कृष्णसर्पस्य भरेखा काणा सर्पनीः सूत कृष्ण सर्पके, वदने सुभभा सुहमे, अञ्जनम् अञ्जन (काणा सुभभा) अञ्जन, मासम् ऐक मास एक मासतक, निहितम् राखवे। रत्न देवे, ततः पछी पीछे, बुधः विद्वान वैवे विद्वान वैव, तस्मात् तेभाथी उसमेंसे, समुद्धृत्य काढी बाधने निकालकर, सुशुष्कम् सारी पेठे सुखायेव अच्छी तरह शुष्क होने पर, अर्घाशैः तेने अरघा आभाषुभा उसको आधी मात्रामें, शुष्कैः सूकेयी सूखी हुई, सुमनः-कोरकैः चमेदीनी कण्ठीओ चमेलीकी कलियां, सैन्धवेन च अने सिंधावुषु साथे और सैन्धानमकसे मिनाकर, चूर्णयेत् थूथुं करवुं चूर्ण करे, एतत् आ. थूथुंनु इस चूर्णका, तिमिरघ्नम् तिमिरनाशक तिमिरनाशक, अनु-

त्तमम् सर्वं औष उत्तम, नेत्राञ्जनम् नेत्राञ्जन नेत्राञ्जन, कार्यम् अनावबुं बनावे ॥ २५६-२५७ ॥

256-257½. The wise physician should place antimony sulphide in the mouth of a dead black cobra for a month and taking it out, triturate it adding half that quantity of dried jasmine-buds and rock-salt. This made into collyrium is the best remedy for dimness of vision.

पिप्पल्यः किंशुकरसो वसा सर्पस्य सैन्धवम् २५८ जीर्णं घृतं च सर्वाक्षिरोगघ्नी स्याद्रसक्रिया ।

पिप्पल्यः पीपर पिप्पली, किंशुकरसः केसुर्गने। रस टेंसुके फुलोंका रस, सर्पस्य सर्पनी सांपकी, वसावसा चर्बी, सैन्धवम् सिंधावुषु सैन्धानमक, जीर्णम् अने गूनी और पुराने, घृतम् च घीनी घृतकी, रसक्रिया रसक्रिया रसक्रिया, सर्व-सर्व सब, अक्षिरोगघ्नी नेत्र-रोगने नाश करनार थाय छे अक्षिरोगकी नाशक, स्यात् थाय छे होती है ॥२५८ ॥

258-259½. Take long pepper, palas-flower juice, snake's fat, rock salt and old ghee and prepare a soft extract out of this. It is curative of all kinds of eye-disorders.

कृष्णसर्पवसा क्षौद्रं रसो घाड्या रसक्रिया ॥२५९॥ शस्ता सर्वाक्षिरोगेषु काचार्बुदमलेषु च ।

कृष्णसर्पवसा काणा सर्पनी वसा काले सर्पकी वसा, क्षौद्रम् भध मधु, घाड्याः अने आभाणा और आंवलेके, रसः रसनी रसकी, रसक्रिया रसक्रिया रसक्रिया, सर्व-सर्व सब, अक्षिरोगेषु नेत्ररोगोंमा अक्षिरोगमें, काच-काच काच, अर्बुद-अर्बुद अर्बुद, मलेषु च अने नेत्रमलमां और नेत्रमलमें, शस्ता प्रशस्त छे प्रशस्त है ॥२५९ ॥

२५६. कृष्णसर्पस्य (५)

२५७. कोरकैः-कोरकैः (क. ह.)

२५८. पिप्पल्यः किंशुकरसो वसा सर्पस्य सैन्धवम्-स्वरसः

किंशुकस्याहेवसा कृष्णस्य सैन्धवम् (क.)



259-259½. The soft extract, prepared of the fat of black cobra, honey and juice of emblic myrobalan is recommended in all kinds of eye-diseases, Kacha, tumor and discharge of excreta.

ધાત્રીરસાજ્ઞનઘૌદ્રસર્પિર્મિસ્તુ રસક્રિયા ॥૨૬૦॥  
પિત્તરક્તાક્ષિરોગાદી તૈર્મિર્યપટલાપહા ।

ધાત્રી- આમળાં આંબલા, રસાજ્ઞન- રસોત, ઘૌદ્ર- મધ મધુ, સર્પિર્મિ: તુ અને ધીથી બનાવેલી, ઓર વૃત્તે વળી, રસક્રિયા રસક્રિયા, રસક્રિયા- પિત્તરક્ત અને ૨૬૦૫ પિત્તજન્ય એવં રક્તજન્ય અક્ષિરોગાદી નેત્રરોગોને નાશ કરનાર અક્ષિરોગનાશક, તેમિર્ન- તથા ત્રિમિર ઓર તિમિર, પટલાપહા અને પડળને મટાડનાર છે ઓર પટલકો દૂર કરવાલાઈ છે ॥ ૨૬૦૩ ॥

260-260½ The soft extract, prepared of emblic myrobalan, dry extract of indian berberry, honey and ghee, is curative of eye diseases due to morbid pitta and blood, and also of dimness of vision and Patala

ધાત્રીસૈન્ધવપિપ્પલ્લ: સ્પુરરૂપમરિવા: સમા: ॥૨૬૧॥  
ઘૌદ્રયુક્તા ત્રિહન્ટ્યાન્ધ્યં પટલં ચ રસક્રિયા :

इति नेत्ररोगचिकित्सा ।

ધાત્રી- આમળાં આંબલા, સૈન્ધવ- સિંધાભૂષ્ય સૈવાનમક, પિપ્પલ્લ: પીપર પિપ્પલી, સમા: સમ પ્રમાણમાં સમ ભાગમાં, સ્પુરરૂપમરિવા: સ્પુ: અને મરી થોડાક ઢેલાં ઓર કાલી મિર્ચ થોડી લેવે, ઘૌદ્ર- યુક્તા તેની મધ્યુક્ત અનેકી મધુ મિલાકર વનાઈ, રસ- ક્રિયા રસક્રિયા રસક્રિયા, આન્ધ્યન્ અન્ધાપાનેા અંધા- પન, પટલમ્ ચ અને પડળનેા ઓર પટલકો, ત્રિહન્ટિ નાશ કરે છે નદ કરતી છે ॥ ૨૬૧૩ ॥ इति आ यद्, नेत्ररोगचिकित्सा नेत्ररोगचिकित्सा છે નેત્રરોગચિકિત્સા છે ।

261-261½. The soft extract of emblic myrobalan, rock salt and long pepper in equal proportions mixed with a little black pepper and honey cures blindness and Patala. Thus has been described the treatment of eye-diseases.

આલિત્યદિચિકિત્સા-—

આલિત્યે પલિતે વલ્યાં હરિલોમ્નિ ચ શોષિતમ્ ૨૬૨  
મસ્તૈસ્તૈલૈઃ શિરોવક્ત્રજલેપૈશ્ચાણુપાચરેત્ ।

આલિત્યે ટાલ આલિત્ય, પલિતે પળિયાં પાલિત્ય, વલ્યામ્ કરમલી વલી, હરિલોમ્નિ ચ પીળમટા નાળ મતાં ઓર મૂરે વાલ લેને પર, શોષિતમ્ મનુષ્યદ્ સંશો- ધન કરી શોષન કિયે હુઈ રોગીકમ, નસ્યે: નસ્ય નસ્યે, તૈલૈ: તેલેથી તેલેલે, શિરોવક્ત્ર- અને મસ્તક તથા મુખ પર ઓર શિર તથા મુખ પર, પ્રલેપૈ: ચ પ્રલેપ કરીને પ્રલેપોલે, અપિ પશુ સ્ત્રી, ઉપાચરેત્ ઉપચાર કરવા ઉપચાર કરે ॥૨૬૨૩॥

262-262½. In conditions of falling of hair, grey hair, wrinkles in the face, and tawny hair, the patient, after being duly cleansed, should be treated with oily medications and with applications over the head and face.

સિદ્ધં વિદારીગન્ધાઘૈર્જીવનીયૈરથાપિ ચ ॥૨૬૩॥  
નસ્યં સ્વાદણુતૈલં વા આલિત્યપલિતાપહમ્ ।

વિદારીગન્ધાઘૈ: વિદારીગંધા વજેરે વિદારી- ગન્ધા આલિત્યે, અથ અપિ અને ઓર, જીવનીયૈ: ચ જીવનીયગણુથી જીવનીયગણસે, સિદ્ધમ્ સિદ્ધ કરેલ તેલનું સિદ્ધ તેલકા, અણુતૈલમ્ વા કે અણુ તેલનું યા અણુ તેલકા, નસ્યમ્ નસ્ય નસ્ય, આલિત્ય- ટાલિયાપણું આલિત્ય, પલિતાપહમ્ અને પળિયાં મટાડનાર છે ઓર પલિતકો દૂર કરવાલા, આપ છે છે ॥ ૨૬૩૩ ॥

263-263½. Nasal medication with oil prepared with the tick-trefoil group

of drugs, or life promoter group of drugs, or with Anu oil, is curative of alopecia and greyness of hair.

क्षीरात् सहचराद्भृङ्गराजाच्च सौरसाद्रसात् ॥२६४॥  
प्रस्थस्तु कुडवस्तैलाद्यष्ट्याह्वलककितः ।  
सिद्धः शिलासमे भाण्डे मेघशृङ्गादिषु स्थितः ॥२६५॥  
नस्यं स्याद्विषजा सम्यग्योजितं पलितापहम् ।

क्षीरात् गायतुं दूध गायका दूध, सहचरात् आस-  
भान्नी दूधना डाटाशै(गयानो) रस नीलपुष्पवाले  
कटसरैयाका रस, भृङ्गराजात् भांगरानो रस भृङ्गराजाका  
स्वरस, सौरसात् च अने तुणसीनो और तुलसीका,  
रसात् रस रस, प्रस्थः तु प्रत्येकना ६४-६४ तोलाथी  
प्रत्येकके ६४-६४ तोलेसे, यष्ट्याह्व- अने जेरीमधना  
और मुलहठीके, पल- ४ तोला ४ तोले, कलकतः  
३६३थी कलकसे, तैलात् कुडवः १६ तोला तेदने १६  
तोले तैलको, सिद्धः सिद्ध करुं सिद्ध करे, शिलासमे  
पथ्यरना पथ्यरके, भाण्डे वासुधुर्मा बरतनमें, मेघशृ-  
ङ्गादिषु अथवा घे'राना शी'गडा जेरेमा या मेघके  
धीग आदिमें, स्थितः राभपुं रक्खे, मिषजा वैध वैध,  
सम्यक् सरभी रीते अच्छी प्रकार, नस्य तेना नस्य  
तरीके उसका नस्यरूपमें, योजितम् प्रयोगे तो प्रयोग  
करे तो, पलितापहम् ते पणिधनिना नाश करना  
पलितरोगनाशक, स्यात् थाय छे होता है ॥२६४-२६५॥

२६४. क्षीरात्-क्षारान् (ब.)

„ क्षीरात्-क्षारात् (क.)

„ भृङ्गराजाच्च-भृङ्गरजसः (द.)

„ सौरसात्-सुरसात् (इ.)

„ क्षीरात् सहचराद्भृङ्गराजाच्च सौरसाद्रसात्-लक्षाकालसा-  
लोहवरांगरजसो रसात् (॰)

२६५. शिलासमे-शैलासने (ब.)

„ मेघशृङ्गादिषु-मेघशृङ्गेऽथवा (ब.)

„ मेघशृङ्गादिषु स्थितः-मेघशृङ्गे च संस्थितः (क.)

२६६. मिषजा-नस्यं स्यात् (क.)

264-265½. Take 64 tolas of milk, juice of crested purple nail-dye, trailing eclipta and holy basil, 16 tolas of oil and 4 tolas of the paste of liquorice and prepare a medicated oil out of it. When it is prepared, keep it in a receptacle made of stone or sheep's horn. Nasal medication with this, well administered by the physician, is curative of grey hair.

मिषजा क्षीरपिष्टौ वा दुग्धिकाकरवीरकौ ॥२६६॥  
उत्पाद्य पलिते देयौ तावुभौ पलितापहौ ।

मिषजा अथवा वैधे अथवा वैध, क्षीरपिष्टौ  
दूधमा पीसीने दूधमें पिसी हुई, दुग्धिका- नागवा-  
दूधी दुग्धिका, करवीरकौ वा अने करवीरको घेप और  
कनेरका लेप, पलिते पणिधनिना पालित्यमें, उत्पाद्य  
वाण डिमेडी वालोंको उखाड़ कर उस स्थानमें, देयौ  
दगावै। लगावे, तौ ते ये, उभौ अने दोनों, पलि-  
तापहौ पणिधनिना नाश करना छे पालित्यको दूर  
करनेवाले हैं ॥ २६६॥

266-266½. The physician may apply  
asthma weed or indian oleander,  
pasted with milk, over the scalp after  
pulling out the grey hair. Both these  
drugs are curative of grey hair.

मार्कवस्वरसात् क्षीराद् द्विप्रस्थं मधुकात् पलम् २६७  
तैः पचेत् कुडवं तैलात्तप्तस्यं पलितापहम् ।

मार्कव- भांगरानो भांगरेका, स्वरसात् स्वरस  
स्वरस, क्षीरात् अने दूध और दूध, द्विप्रस्थम् १२८  
तोला १२८ तोले, मधुकात् जेरीमध मुलहठी, पलम्  
४ तोला ४ तोले, तैः ओओथी इनसे, तैलात् तेद  
तैल, कुडवम् १६ तोला १६ तोले, पचेत् पकावुं

२६७. मार्कवस्वरसात्-समार्कवस्वरसात् (ब.)

„ मार्कवस्वरसात् क्षीराद् द्विप्रस्थं मधुकात् पलम्-क्षारात्  
समार्कवस्वरसात् द्विप्रस्थे मधुकात्पले (क.)

पकावे, तत् तेतुं इसका दस्य नस्य नस्य, पलिता-  
पह्न पणिथां भटाउनर छे पलितको दूर कानेवाला  
है ॥ २६७३ ॥

267-267½. Take 128 tolas of milk  
and the juice of trailing eclipta, four  
tolas of the paste of liquorice and  
prepare 16 tolas of oil with them.  
Nasal medication with this oil, is  
curative of grey hair.

आदित्यपलितयोः महानीलतैलम्—

आदित्यवल्लया मूलाणि कृष्णशैरेयकस्य च ॥२६८॥  
सुरसस्य च पत्राणि पञ्च कृष्णशणस्य च ।  
मार्कवः काकमाची च मधुकं देवदारु च ॥२६९॥  
पृथग्दशपलांशानि पिप्पल्यस्त्रिफलाऽञ्जनम् ।  
प्रपौण्डरीकं मञ्जिष्ठा लोभ्रं कृष्णागुरुत्पलम् ॥२७०॥  
आम्रास्थि कर्दमः कृष्णो मृणालं रक्तचन्दनम् ।  
नीली भल्लातकास्थीणि कासीसं मदन्यन्तिका ॥२७१॥  
सोमराज्यसनः शस्त्रं कृष्णौ पिण्डीतचित्रकौ  
पुष्करार्जुनकाश्मर्याण्याम्रजम्बूफलानि च ॥२७२॥  
पृथक् पञ्चपलांशानि तैः पिष्टैराढकं पचेत् ।  
वैभीतकस्य तैलस्य घात्रीरसचतुर्गुणम् ॥२७३॥  
कुर्यादादित्यपाकं वा यावच्छुष्को भवेद्रसः ।  
लोहपात्रे ततः पूतं संशुद्धमुपयोजयेत् ॥२७४॥  
पाने नस्यक्रियायां च शिरोभ्यङ्गे तथैव च ।  
एतच्चक्षुष्यमायुष्यं शिरसः सर्वरोगनुत् ॥२७५॥

२६८. आदित्यवल्लया-आदित्यवल्गा (त. द.)

—आदित्यपर्णा (व. फ.)

२६९. पञ्च-पञ्च (क. घ. ङ.)

२७०. मृणालं-मृणाली (व.)

२७२. शस्त्रं कृष्णौ-शस्तकृष्णं (द.)

पुष्करार्जुन-पुष्पाण्यर्जुन (व.)

२७३. पृथक् पञ्चपलांशानि तैः पिष्टैराढकं पचेत्-पृथक् पञ्चपलं-  
भागैः सुपिष्टैराढकं पचेत् (द. फ.)

महानीलमिति ख्यातं पलितघ्नमनुत्तमम् ।

इति महानीलतैलम् ।

आदित्यवल्लयाः सुरभुशीनां सूयमुसी, कृष्णशैरे-  
यकस्य च अने आसमान्नी कुलनां डांटाशेणियाःनां  
और आसमान्नी कटसरैयाकी, मूलाणि मूला जड़, सुरसस्य  
च तुलसीनां तुलसीकी, पत्राणि पान पत्तियां, कृष्ण-  
शणस्य च शल्लूधूरानां मंजनिआ बनसनके, पत्रम्  
पत्र पत्ते, मार्कवः आंगुरे भांगरा, काकमाची च  
पीपुडी काकमाची, मधुकम् जेहीमध मुलहरी, देवदारु  
च अने देवदार और देवदार. पृथक् ओ दरेके पृथक्  
पृथक्, दशपलांशानि ४० तोला ४० तोले, पिप्पल्यः  
पीपल पिप्पली, त्रिफला त्रिफला त्रिफला, अञ्जनम्  
रसाञ्जन रसोत, प्रपौण्डरीकम् प्रपौण्डरीक पुण्डरीकअण्ड,  
मञ्जिष्ठा मञ्जिठ, लोभ्रम् लोभर लोभ्र, कृष्णागुरु  
डाणो अगुर काला अगुर, उत्पलम् नीलकमल नीलौकर,  
आम्रास्थि आभानी जेहदी आमकी गुठली, कृष्णः कर्दमः  
डाणो कर्दम काला कर्दम, मृणालम् मृणाल मृणाल,  
रक्तचन्दनम् रक्तचन्दन रक्तचन्दन, नीली मणी नीली,  
भल्लातकास्थीणि भिडामा भिलांकेकी गुठली, कासी-  
सम् डीराडसी कासीस, मदन्यन्तिका मेदी मेहदी, सोम-  
राजी आभथी बाकुची, असनः असन असन, शस्त्रम्  
कुल्लू लोह काला लोहा, कृष्णौ डाणो काण, पिण्डीत-  
मीढण मैनफल, चित्रकौ डाणो चित्रक काला चित्रक,  
पुष्कर-पुष्करमूला पुष्करमूल, अर्जुन-अर्जुन कौहा,  
काश्मर्याणि काश्मर्या गमारोका फल, आम्र-आभा आम,  
जम्बूफलानि च अने अंभुनां कुण और बामुनके फल,  
पृथक् ओ दरेके पृथक् पृथक्, पञ्चपलांशानि २० तोला २०  
तोले, तैः तैःओने इनको, पिष्टः पीसीने ते कुटुथी पीसकर  
इस कल्कसे, लोहपात्रे लोहपात्रे पात्रमां लोहके बरतनमें,  
घात्रीरस-आभणाना रसथी आवलेके रससे, चतुर्गुणम्  
चारगुण चौगुने, वैभीतकस्य अहेडुतुं वहेडेका, तैलस्य  
तेल तैल, आढकम् २५६ तोला २५६ तोले, पचेत्  
पकावतुं पकावे, यावत् अथवा न्यां सुधी अथवा  
जब तक रसः रस रस, शुष्कः भवेत् सुखाधि अथ न्यां  
सुधी सूख जाये तब तक, आदित्यपाकम् वा आदित्य-  
पाक आदित्यपाक, कुर्यात् कुर्वे करे, ततः ते पथी  
उसके बाद, पूतम् गाणीने छाबकर, संशुद्ध शुद्ध

अथैव तेलने। शुद्ध किये तैलका, चामे पान पान, नखाःक्रियायाम् च अने नश्यद्विया और मसकर्ममें, तथा एव तैमज और, शिरोमन्त्रे च भाथाभा माक्षीअ करवाभा सिरके अम्यजमें, सपञ्चकवेत् उपयोग करवे। उपयोग करे, महानीलम् मङ्गनील महानील, इति नाम्नी नामसे, क्वातम् प्रसिद्ध निरुयात्, इतत् आ तेल यह तैल, चक्षुष्यम् अक्षुष्य चक्षुष्य, आयुष्यम् आयुष्यवर्धक आयु बढ़ानेवाला, शिरसः अने भस्तकना और सिरके, सर्वरोगवृत् अर्वा रोग भटाञ्जार छे सब रोगोंका नाशक है, अद्भुतमम् अने सर्व श्रेष्ठ और अत्यन्त उत्तम, पलितमम् पण्डिताना नाश करनार छे पलितनाशक है ॥ २६८-२७५ ॥ इति आ यह, महानील-तैलम् मङ्गनील तेल छे महानील तेल है।

268-275½. Take 40 tolas of roots of heliotrope and purple nail-dye. the leaves of holy basil, blue flowered flax hemp, trailing eclipta, black night shade, liquorice, deodar. 20 tolas each of long pepper, the three myrobalans, dry extract of indian berberry, lotus rhizomes, madder lodh black eagle wood, blue water lily, mango stone, slush of black earth, lotus stalk, red sandal. indigo, marking nut, iron sulphide, henna, babchi. spinous kino, steel, black emetic nut, blue flowered lead wort, flowers of Pushkara Arjun. white teak, fruits of mango and jambool. With the paste of these articles and 4 times the quantity of the juice of emblic myrobalan, prepare 256 tolas of beleric myrobalan-oil with either fire heat or with solar heat till all the watery portion is evaporated from the iron vessel; then filter and purify it; this may be used as potion, and nasal medication or as inunction of

the head. This is beneficial to the eyes, life-giving and curative of all head-affections; this oil known as the Great Black oil is unsurpassed as a cure for grey hair Thus has been described The Great Black oil.

खालिष्यपलितयोः अन्ये कतिपययोगाः —

प्रपौण्डरीकमधुकपिप्पलीचन्दनोत्पलैः ॥२७६॥

कार्षिकैस्तैलकुडवो द्विगुणभलकीरसः ।

सिद्धः स प्रतिमर्शः स्वात् सर्ववर्धगदापहः ॥२७७॥

(पलितघ्नो विशेषेण कृष्णात्रेयम् भाषितः।)

प्रपौण्डरीक- प्रपौण्डरीक पुण्डरीककाष्ठ, मधुक- जेहीमध मुलहरी, पिप्पली- पीपर पिप्पली, चन्दन- अंदन चंदन, उत्पलैः अने नीलकमल और नीलोत्पल, कार्षिकैः जेभांन प्रत्येकना जेक जेक तोला उडकी इनमेंसे प्रत्येकके एक एक तोले कल्लसे, द्विगुण- अमला दुगुने, आमलकीरसः आमलांना रसशी युक्त जल- लेके रससे युक्त, तैलकुडवः १६ तोला तैल १६ तोला तैल, सिद्धः सिद्ध करी सिद्ध करे, प्रतिमर्शः आशी प्रतिमर्श नश्य इससे प्रतिमर्श नश्य, स्वात् सेवु लेवे, सः ते यह, सर्ववर्ध- आमान्य रीति सर्व भस्तकना सामान्यतः सब सिरके, गदापहः रोगने नाश करनार छे रोगोंको दूर करनेवाला है, कृष्णात्रेयम् कृष्णात्रेये कृष्णात्रेयने, विशेषेण विशेषे करी विशेषतः, पलितघ्नः तेने पण्डिताना नाश करनार पलितनाशक, भाषितः उद्धेव छे कहा है ॥ २७६-२७७ ॥

276-277½. Prepare 16 tolas of oil with one tola each of the paste of tubers of white lotus, liquorice, long pepper, sandal and blue water lily in double its quantity of the juice of emblic myrobalan. This when used with a wick as nasal medication. cures

all kinds of head affections. (Krishna Atreya is of opinion that it is specially curative of greyness).

क्षीरं प्रियालयप्लवाङ्गे जीवकाद्यो गणस्तिलाः ॥२७८॥  
कृष्णा वक्त्रे प्रलेपः स्याद्वहिलोमनिवारणः ।

क्षीरम् दूध, प्रियाल- प्रियाल चित्तौजी, यव्याङ्गे  
नेरीमधु मुलहरी, जीवकाद्यः शुभकादि जीवकादि, गणः  
गण गण, तिलाः तिल, कृष्णा અને પીપરને।  
और पिपलीका, वक्त्रे मुष्पर डरनामा आवेदे। मुख  
पर किया हुआ, प्रलेपः लेप प्रलेप, हरिलोम- पीप-  
यथा वाणने भूरे बालोंको, निवारणः दूर डरनाम हटाने  
वाला, स्यात् थाय्य छे होता है ॥ २७८॥

278-278½. The application, made of  
milk, buchanan's mano, liquorice,  
the jivaka group drugs, til and long  
pepper, applied over the scalp is  
curative of tawny hair.

तिलाः सामलकाश्चैव किञ्चुको मधुकं मधु ॥२७९॥  
बृंहयेद्रज्येचैतत् केशान्मूर्धप्रलेपनात् ।

सामलकाः आमला आवले, तिलाः तिल, किञ्चुकः  
किञ्चुकः डिन्डक पत्रकेसर, मधुकं नेरीमधु मुलहरी,  
मधु च एव અને મધુ और मधु, एतत् औने। इनका,  
मूर्धप्रलेपनात् भस्तक पर लेप डरनामी ते सिरपर लेप  
करनेसे वह, केशान् वाणने बालोंको, बृंहयेत् वधारे छे  
बढ़ाता है, रज्येचैत् च અને કાળા કરે छे और काले  
करता है ॥ २७९॥

279-279½. Til, emblic myrobalan,  
lotus-anthers, liquorice and honey, if  
applied over the scalp, promote the  
growth and color of the hair.

२७८. प्रियालयप्लवाङ्गे-प्रियालयप्लवाङ्गे (व.)

२७८½. वक्त्रे प्रलेपः-क्षीरप्रलेपः (व.)

,, वक्त्रे प्रलेपः स्याद्वहिलोमनिवारणः-क्षीरप्रलेपः स्याद्वहिलोमनिवारणः (व.)

२७९½. प्रलेपनात्-प्रलेपनात् (व.)

पचेत्सैन्धवशुक्लाम्लैरयश्चूर्णं सतण्डुलम् ॥२८०॥

तेनालितं शिरः शुद्धमस्त्रिगुणमुषितं निशि  
तत् प्रातस्त्रिफलाद्यौतं स्यात् कृष्णमृदुमूर्धजम् २८१

सैन्धव. सिन्धुसैन्धवमक, शुक्ल- शुक्ल शुक्ल,  
अम्ल અને અમ્લ ૬૦૫। साथे और अम्ल द्रव्योंके  
साथ, सतण्डुलम् थाभासहित चावलसहित, अयश्चूर्णम्  
धोढातु शुद्ध लोहचूर्णको, पचेत् पकावतुं पकावे,  
तेन तेथी उसमे, आलितम् लेप करेथुं लेप किया हुआ,  
शुद्ध शुद्ध शुद्ध, अस्त्रिगुणम् અને સ્નેહ ત્રિનાનું  
स्निग्धतारहित, शिरः भस्तक सिर, निशि इषितम्  
रातभर तेम रहैथ देथुं रात्रिभर वैसा ही रखे प्रातः  
सवाभर प्रातःकालमें, त्रिफला- त्रिफलाशी त्रिफलासे,  
द्यौतम् धोढा नाथेथुं धोया हुआ, तत् ते वह, कृष्ण-  
मृदु- काला અને કામળ કાલે और मुलायम, मूर्धजम्  
वाणवाणुं बालोंवाला, स्यात् थाय्य छे होता  
है ॥२८०॥

280-281. Boil iron powder with  
rock salt honey, vinegar and rice;  
apply it over the scalp, after cleansing  
the head and making it free from  
greensiness, and go to sleep with it. In  
the morning, the head should be washed  
with the decoction of the three myro-  
balans. This promotes the growth of  
black and soft hair.

अयश्चूर्णोऽम्लपिष्टश्च रागः सत्रिफलो वरः ।

सत्रिफलः त्रिफला त्रिफलाके साथ, अम्लपिष्टः च  
अने અમ્લપિષ્ટ साथे पीसेव और अम्लद्रव्योंसे पीसा  
हुआ, अयश्चूर्णः धोढातु लोहचूर्ण, वरः उत्तम अष्ट,  
रागः केशराग (केश) અને છે કેશરાગ होता है।

281½. Iron powder rubbed with acid  
articles and the three myrobalans,  
makes an excellent hair-dye.

२८१. अयश्चूर्णो-अयश्चूर्णो (व.)

કુર્યાન્હેષેષુ રોગેષુ ક્રિયાં સ્વાં સ્વાચ્ચિકિત્સિતાત્ ।  
શેષેષ્વાદૌ ચ નિર્દિષ્ટા સિદ્ધૌ ચાન્યા પ્રવક્ષ્યતે ॥૨૮૨॥  
इति खालित्यादिचिकित्सा ।

શેષેષુ આડીના બચે હુણ રોગેષુ રોગોર્મો, સ્વાત્ પોતપોતાના અપને અપને, ચિકિત્સિતાત્ ચિકિત્સાધ્યાયમાંથી ચિકિત્સાધ્યાયસે, સ્વાત્ પોતપોતાની અપની અપની, ક્રિયામ્ ચિકિત્સા ચિકિત્સા, કુર્યાત્ કરવી બેઈએ કરની ચાહિય, શેષેષુ આડીનાઓની ચિકિત્સા અવશિષ્ટ રોગોંકી ચિકિત્સા, આદૌ ચ શરુ-આતમાં પ્રથમ, નિર્દિષ્ટા દર્શાવી છે કહી છે, સિદ્ધૌ ચ અને સિદ્ધિસ્થાનમાં ઔર ચિકિત્સાગમે, અન્યા યીછુ દસરી, પ્રવક્ષ્યતે કહેવામાં આવશે કહી જાયગી ॥૨૮૨॥  
इति आ यह, खालित्यादिचिकित्सा आखित्यादि-चिकित्सा છે खालित्यादिचिकित्सा છે ।

282. In the remaining diseases, treatment suited to the condition, should be given. These measures have already been briefly indicated at the very beginning of this chapter. The tested remedies will be described in the Section on "Success in Treatment." Thus has been described the treatment of alopecia etc.

સ્વરમેદચિકિત્સા -

सर्पिण्युपरिभक्तानि स्वरमेदेऽनिलात्मके ।

तैलैश्चतुष्प्रयोगैश्च बलाराक्तामृताह्वयैः ॥२८३॥

અભિકાત્મકે પાતજન્ય વાતજન્ય, સ્વરમેદે સ્વર-ભેદમાં સ્વરમેદમે, ઉપરિભક્તાનિ શોભન ઉપર મોજનકે પચાઈ, સર્પિણિ થી વી, ચતુષ્પ્રયોગેઃ અને ચાર પ્રકારે પ્રયોજતાં ઔર ચાર પ્રકાર (પાન, અભ્યંગ, ગણ્ઘણ ઔર અનુવાસન) વસ્તિસે પ્રયુજ કિયે જાતે, બલ્કા-અથવા બલા, રાક્ષા-રાક્ષા રાક્ષા, અમૃતાહ્વયેઃ અને ગૌનાં ઔર અમૃતાકે, તૈલૈઃ ચ તેલોથી ચિકિત્સા કરવી બેઈએ તૈલોસે ચિકિત્સા કરની ચાહિય ॥ ૨૮૩ ॥

૨૮૩. તૈલૈશ્ચતુષ્પ્રયોગૈશ્ચ-ચતુષ્પ્રયોગતૈલૈશ્ચ (ક.)

283. In laryngeal diseases due to vata, post-prandial potion of ghee and administration of oil prepared with heart leaved sida, indian groundsel and guduch, given in the four modes of potion, inunction, gargle and unctuous enema, are beneficial.

बहिर्निचिरिदक्षाणां पञ्चमूलशृतान् रसान् ।

मायूरं क्षीरसर्पिर्वा पिबेत् द्यूषणमेव वा ॥२८४॥

પચ્ચમૂલશૃતાન્ પાંચ મૂળમાં ઉકાળેલ પંચનૂલપે પકાયે હુણ, બર્હિ- મોર મોર, તિત્તિરિ- તેતર તીતર, દક્ષાણામ્ અને કૂકડાનાં એવં મુર્ગે, રસાન્ માંસરસ માંસરસ, માયૂરમ્ ક્ષિરસર્પિઃ વા અથવા માયૂર ક્ષીર, અથવા માયૂરધૂત અથવા માયૂરક્ષીર અથવા માયૂરધૂત, ડ્યૂષણમ્ એવ વા કે ડ્યૂષણધૂત યા ડ્યૂષણધૂત, પિબેત્ પીવું પીને ॥૨૮૪॥

284. The patient should take the meat-juices of peacock, partridge and cock, prepared with penta-radices, or the peacock milk, the peacock ghee or 'the three spices ghee'.

पैत्तिके तु विरेकः स्यात् पयश्च मधुरैः शृतम् ।

सर्पिर्गुडा घृतं तिक्तं जीवनीयं वृषस्य वा ॥२८५॥

પૈત્તિકે તુ વિરેકઃ સ્થાત્ પયશ્ચ મધુરૈઃ શૃતમ્ ।  
સર્પિર્ગુડા ઘૃતં તિક્તં જીવનીયં વૃષસ્ય વા ॥૨૮૫॥  
પૈત્તિકે તુ વિરેચન વિરેચન, સ્વાત્ કરાવવું કરાવે, મધુરૈઃ અને મધુર દ્રવ્યોથી ઔર મધુર દ્રવ્યોસે, શૃતમ્ સાધિત શૃત, પયઃ ચ દૂધ દૂધ, સર્પિર્ગુડાઃ સર્પિર્ગુડા સર્પિર્ગુડ, તિક્તમ્ શૃતમ્ તિક્તા ધૂત તિક્તધૂત, જીવનીયમ્ જીવનીય-ધૂત જીવનીયધૂત, વૃષસ્ય વા કે વાસાધૂત શોભવું બેઈએ યા વાસાધૂત દેવે ॥ ૨૮૫ ॥

285. In the disease due to pitta, purgation should be given, and milk

૨૮૫ પચ્ચમૂલશૃતાન્ પચ્ચમૂલશૃતાન્ (ક.)

૨૮૫. શૃતં તિક્તં જીવનીયં વૃષસ્ય વા-જીવનીયં વાસાગેઠ્ઠં

— તથા- (ક. ધ. છ. ડ.)



prepared with the drugs of the sweet group medicated ghee foluses, life promoter ghee, as also vasaka ghee, should be given.

कफजे स्वरभेदे तु तीक्ष्णं मूर्धनिरेचनम् ।

विरेको वयनं धूमो यत्रात्रकटुसेवनम् ॥२८६॥

कफजे स्वरभेदे तु कफजन्य स्वरभेदभां कफजन्य रोगभेदे, तीक्ष्णं तीक्ष्ण, मूर्धनिरेचनं शिरः- निरेचनं शिरःविरेचनं, विरेकः निरेचनं विरेचनं, वयनञ्च वयनं वयनं, धूमः धूमपानं धूमपानं, यत्रात्र यत्रात्र जौका भोजनं, कटु तया कटु द्रव्यैः तथा कटु द्रव्यैका सेवनम् सेवनं कटुं सेवनं करे ॥ २८६ ॥

286. In laryngeal disorders due to kapha, acute errhine, enema purgation, emesis, inhalation, barley-diet and pungent articles should be given.

चव्यभाग्यभयाव्योषक्षारमाक्षिकचित्रकान्

लिङ्गाद्वा पिप्पलीपथ्ये तीक्ष्णं मद्यं पिबेच्च सः ॥२८७॥

सः ते रोगीन्ने वह रोगी, चव्य-चव्य चव्य, भागी-क्षार-भागी, भयभा-हरहे हरहे, व्योष-त्रिकटु त्रिकटु, क्षार-व्योष-व्योष-माक्षिक-भयं मद्यं, चित्रकान् और चित्रक, लिङ्गाद्वा यादवा चादे, पिप्पली-अथवा पीपर अथवा पिप्पली, पथ्ये वा अने हरहेतुं येषु भयभां यादवुं और हरहे मद्यसे चादे, तीक्ष्णम् अने तीक्ष्ण और तीक्ष्ण, मद्यम् च भयं मद्यं, पिबेच्च पीवुं पीवे ॥ २८७ ॥

287. The patient should take a linctus of chaba pepper, beele. killer. chebulic myrobalan, the three spices, barley alkali, honey and white flowered leadwort, or milk, long pepper and chebulic myrobalan and strong wines.

रक्तजे स्वरभेदे तु सघृता जाङ्गला रसाः ।

द्राक्षाविदारीक्षुरसाः सघृतसौदशर्कराः ॥२८८॥

पञ्चोक्तं क्षयकासघ्नं तच्च सौ चिकित्सितम् ।

पित्तजस्वरभेदघ्नं सिरावेधश्च रक्तजे ॥२८९॥

रक्तजे रक्तजन्य रक्तजन्य, स्वरभेदे तु स्वरभेदभां स्वरभेदभां, सघृताः घृतयुक्तं घृतयुक्तं, जाङ्गलाः जंगल प्राणीभिः जंगल जीवैः रसाः मांसरस मांसरस, सघृत-तथा घी तथा घृत, सौद-भयं मद्यं शर्कराः अने साकरसहित और चीनीने युक्त, द्राक्षा-द्राक्षा मुनके, विदारी-विदारीकंद विदारीकंद, इक्षु-अने शेर-डीना और इखके, रसाः रसो पीना रसको पीवे, क्षयकासघ्नम् क्षय अने कास हलुनार क्षय रोग कासका नाशक, पित्तजस्वरभेदघ्नं च तथा पित्तजन्य स्वरभेद भटाहनात् तथा पित्तजस्वरभेदका नाशक, यत् च च चिकित्सां चो, उक्तं उक्तं छे उक्तं है, तच्च ते वह, सर्वे सर्वं सर्व, सिरावेधः च अने शिरावेध पथ्ये रोग सिरावेध भी, रक्तजे रक्तजन्य स्वरभेदभां रक्तजन्य स्वरभेदभां, चिकित्सितम् चिकित्सा छे चिकित्सा है ॥ २८८-२८९ ॥

288-289 In laryngeal disorders due to morbid blood, meat-juices of jungala animals, mixed with ghee, or the juices of grapes, white yam and sugar-cane mixed with honey, ghee and sugar, should be taken. The line of treatment described as curative of consumption and cough is also curative of laryngeal disorders due to morbid pitta; and blood-letting should be resorted to in laryngeal disorders due to morbid blood.

सन्निपाते हिताः सर्वाः क्रिया न तु सिरावेधः ।

इत्युक्तं स्वरभेदस्य समासेन चिकित्सितम् ॥२९०॥

इति स्वरभेदचिकित्सा ।



સન્નિવાતે સાન્નિપાતિક સ્વરભેદમા સન્નિપાતજન્ય સ્વરભેદમે સર્વાઃ ઉપર્યુક્ત સર્વા યથોક્ત સર્વા, ક્રિયાઃ ક્રિયાઓ નિકૃત્ત્યા, હિતાઃ હિતકર છે હિતકર છે, સિરા- વ્યથઃ તુ પશુ શિશુવેધ કિન્તુ શિશુવેધ, ન હિતકર નથી હિતકર નથી, હિતિ આ પ્રમાણે, આ પ્રકાર, સ્વરભેદસ્ય સ્વરભેદની સ્વરભેદનો ચિકિત્સિતઃ ચિકિત્સા ચિકિત્સા, સમાસેન સંક્ષેપમા સંક્ષેપમે, ઉક્તમ્ કહી છે કહી છે ॥૨૧૦॥ હિતિ આ, આ, સ્વરભેદચિકિત્સા સ્વરભેદચિકિત્સા છે સ્વરભેદચિકિત્સા છે.

290. In laryngeal disorders due to tridiscordance, all the remedies described are beneficial except blood letting. This is, in brief, the treatment of laryngeal disorders. Thus has been described the treatment of laryngeal disorders.

દોષામાં સ્થાનવાસીપ્યાદ્યજનુચિત્વ—

भवन्ति चात्र—

वातपित्तकफा नृणां वस्तिहृन्मूर्धसंश्रयाः ।

तस्मात्तत्स्थानसामीप्याद्धर्तव्या वमनादिभिः २९१

અત્ર ચ આ વિષયમાં, આ વિષયમાં, મનુષ્યોને, વાત- વાત, વાત, પિત્ત- પિત્ત, પિત્ત, કફાઃ અને કફ, વસ્તિ- અરિત વસ્તિ, હૃત્- હૃદય હૃદય, મૂર્ધ- અને મસ્તકમાં, ઓર શિરમાં, સંશ્રયાઃ આશ્રિત છે આશ્રિત છે, તસ્માત્ તેથી આ, આ, તત્ સ્થાન- તે તે સ્થાનની, તસ તસ સ્થાનની, સામીપ્યાત્ સમીપતા અતુસાર સમીપતાકે અનુસાર, વસ્તનાદિભિઃ તેઓનું વમન વગેરેથી, તનકા વમન આદિસે, હર્તવ્યાઃ નિર્હરણ કરવું એથી નિર્હરણ કરના ચાહિય ॥ ૨૯૧ ॥

Here are the verses again—

291. The vata, pitta and kapha in men are located in the pelvic region, stomach region and head region respectively. Hence, emesis, etc., must be

prescribed as is suitable to the regions near to the affected part

વસ્તુગુણ અપિ દોષાઃ પરસ્પરં નો-ગ્રાન્ —

अध्यात्मलोको वाताद्यैर्लोको वातरवीन्दुभिः ।

पीड्यते धार्यते चैव विकृतावિકૃતૈસ્તथा ॥૨૯૨॥

વિકૃત- જેવી રીતે વિકૃત, જિસ પ્રકાર વિકૃત, અવિકૃતઃ અને અવિકૃત, ઓર અવિકૃત, વાત- વાયુ વાયુ રવિ- સૂર્ય સૂર્ય, હિન્દુભિઃ અને ચંદ્રમાથી ઓર ચંદ્રમાથી, લોકઃ બહુત જગત, પીડ્યતે ધાર્યતે ચ એવ પીડાય છે અને ધારણ કરાય છે પીડિત હોતા છે ઓર ધારણ કરાય છે, તથા તેવી રીતે, ઓર વાતાદિઃ વિકૃત અને અવિકૃત વાતાદિથી વિકૃત ઓર અવિકૃત વાતાદિસે, અધ્યાત્મલોકઃ ચેતન લોક પીડાય છે અને ધારણ કરાય છે ચેતનલોક પીડિત હોતા છે ઓર ધારણ કરાય છે ॥ ૨૯૨ ॥

292 The sentient world i. e., life is either maintained or afflicted by the vata and other humors even as the world is by the wind, sun and moon respectively, both in their normal, as well as their morbid states

विरुद्धैरपि न त्वेते गुणैर्घ्नन्ति परस्परम् ।

दोषाः सहजसात्म्यत्वाद्वિषं घोरमहीनिव ॥૨૯૩॥

ઘોરમ્ વિષમ્ જેવી રીતે ભયંકર વિષ સ્વાભાવિક સાત્મ્ય સાત્મ્યને લઈ જિસ તરફ મર્યકર વિષ સ્વાભાવિક સાત્મ્ય હોનેસે, અહીન્ ઇષ સર્પોને કષ્ટુ નથી સર્પોનો નષ્ટ નહીં કરતા, એવે તેવી રીતે આ, આ, તત્ તરફ ચે, દોષાઃ દોષો દોષ, સહજ સ્વાભાવિક સ્વાભાવિક, સાત્મ્યત્વાત્ સાત્મ્યને લઈ સાત્મ્ય હોનેસે, વિરુદ્ધઃ વિરુદ્ધ વિરુદ્ધ ગુણેઃ અપિ યુક્તિથી પણ ગુણોંસે સી, પરસ્પરમ્ પરસ્પરને, એક દૂસરેનો, ન ઘ્નન્તિ હણતા નથી નષ્ટ નહીં કરતે ॥ ૨૯૩ ॥

293. These humors never destroy one another though possessed of antagonistic qualities, because of their mutual natural homologation even as

virulent poison does not destroy the snakes.

अध्यायोक्त्यसंग्रहः —

तत्र श्लोकः—

त्रिमूर्तिजानां रोगाणां निदानाकृतियेषजम् ।  
विस्तरणं पृथग्निष्टं त्रिमूर्तिचिकित्सितं २९३।

तत्र ते विषयभा उक्त विषयमें, श्लोकः उपसंहारका श्लोक है कि, त्रिमूर्तिज आ त्रिमूर्तिय इस त्रिमूर्तीय, चिकित्सिते चिकित्साध्यायभा चिकित्साध्यायमें, त्रिमूर्तिजानां प्रत्यु भर्त्ता अथवा यत्ना तीन मर्तामें उत्पन्न, रोगाणाम् रोगोना रोगोंके निदान-निदान निदान, आकृति- २९३५ स्वरूप, मेघजम् अने औषध और औषध, विस्तरणं विस्तरणपूर्वक विस्तारसे पृथक् अने गुहां गुहां और अलग अलग, निष्टं दर्शयितुं भा आया है बताये हैं ॥ २९४ ॥

Here is the recapitulatory verse —

294. The etiology signs and symptoms and the therapeutics of the diseases of the three vital regions have been described individually and elaborately in this chapter on 'The Therapeutics of the affections of three vital regions.'

इष्टविशेषकृते तन्त्रे चरकप्रतिसंस्कृतेऽप्राप्ते  
दृढबलसंप्रति चिकित्सास्थाने त्रिमूर्तीय-  
चिकित्सितं नाम षड्विंशोऽध्यायः ॥२९॥

इति आ प्रभाषे इस प्रकार, अष्टिविशेषकृते अष्टिविशेषे श्लेष अष्टिविशेषे बनाये, चरकप्रतिसंस्कृते तन्त्रे अने यरुथी प्रतिसंस्कार पायेला आ शास्त्रभा और चरकके द्वारा संस्कृत इस शास्त्रके, अप्राप्ते अप्राप्त अप्राप्त, दृढबल-संप्रति अने दृढबल पूरा करेला और दृढबलसे प्रति किये गये. चिकित्सास्थाने चिकित्सास्थान विषे चिकित्सा-स्थानमें, त्रिमूर्तीयचिकित्सितम् 'त्रिमूर्तीयचिकित्सित' 'त्रिमूर्तीयचिकित्सित', नाम नामना नामका, षड्विंशः छव्वीसभा छव्वीसवाँ, अध्यायः अध्याय संपूर्ण अध्याय संपूर्ण हुआ ॥ २९ ॥

29. Thus, in the section on Therapeutics in the treatise compiled by Agniveśa and revised by Caraka, the twenty-sixth chapter entitled 'The Therapeutics of the affections of the three vital regions as reconstructed by Dridhabala, is completed.

## सप्तविंशोऽध्यायः ।

सत्तावीसभा अध्याय अध्याय सत्ताईसवाँ  
Chapter XXVII

ऊरुस्तम्भचिकित्सितोपक्रमः—

अयान ऊरुस्तम्भचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥१॥

इति ह स्माह भगवानात्रेयः ॥२॥

अथ अतः इवे अर्थात् अब आगे, ऊरुस्तम्भचिकित्सितम् 'ऊरुस्तम्भचिकित्सित' नामना अध्यायम् ऊरुस्तम्भचिकित्सित नामके अध्यायका, व्याख्यास्यामः व्याख्याना करुं व्याख्यान करेंगे ॥ १ ॥

भगवान् भगवान् भगवान्, आत्रेयः आत्रेये आत्रेये, इति ह आ विषयभा नीचे प्रभाषे ॥ इस विषयमें अने प्रकारसे ही, आह सा उल्लेख है कहा है ॥ २ ॥

1. We shall now expound the chapter on 'The Therapeutics of Spastic paraplegia.'

2. Thus declared the worshipful Atreya.

ऊरुस्तम्भस्य निदानं संक्षिप्तम्—

प्रिया परमया ब्राह्मया परया च तपःश्रिता ।  
अहीनं चन्द्रसूर्याभ्यां सुमेरुमिव पर्वतम् ॥३॥

3. प्रिया परमया ब्राह्मया-ब्राह्मप्रिया चोत्तमया (ब.)

॥ अहीनं चन्द्रसूर्याभ्यां सुमेरुमिव पर्वतम्-अहीनपूर्व चन्द्रार्का-दिभ्यो मेरुमिवाचलम् (ब.)

॥ सुमेरुमिव पर्वतम्-सुमेरुमिव चाचलम् (फ.)

॥ पर्वतम्-चाचलम् (ब.)

धीधृतिस्मृतिविज्ञानज्ञानकीर्तिक्षमालयम् ।

अग्निवेशो गुरुं काले संशयं परिपृष्टवान् ॥४॥

चन्द्रसूर्याभ्याम् चन्द्रं अने सूर्यशी चन्द्र और सूर्यसे सुमेरुम् सुमेरु सुमेरु, पर्वतम् इव पर्वतनी पेठे पर्वतकी भांति, परमया परम परम, ब्राह्मया श्रिया ब्राह्मी क्षान्ति ब्राह्मो कान्ति, परया अने श्रेष्ठ और श्रेष्ठ, तपःश्रिया च तपनी क्षतिशी तपके तेजसे, अहीनम् युक्त युक्त, धी- अने बुद्धि एवं बुद्धि- धृति- धैर्य धृति, स्मृति- स्मृति स्मृति, विज्ञान- विज्ञान विज्ञान, ज्ञान- ज्ञान ज्ञान, कीर्ति- क्षति क्षति, क्षमा- अने क्षमानां और क्षमाके, आलयम् निवासस्थान निवासस्थान, गुरुम् गुरु आत्रेयने गुरु आत्रेयसे अग्निवेशः अग्निवेशे अग्निवेशने, संशयम् संशय संशयको, काले समयसर उचित कालमें, परिपृष्टवान् पूछये पूछा ॥३-४॥

3-4. Standing before the teacher Atreya who, like Mount Meru with its twin luminaries of the Sun and the Moon, was unbereft of the highest Brahmic excellence and the supreme excellence born of austerity, and was the very abode of intelligence resolution memory, science, knowledge, renown and patience, Agnivesa, choosing the right moment, inquired as follows.

भगवन् पञ्च कर्माणि समस्तानि पृथक् तथा ।

निर्विद्यम्यामयानां हि सर्वेषामेव भेषजम् ॥५॥

दोषजोऽस्यामयः कश्चिद्यस्य तानि भिषग्वर ! ।

न स्युः शक्तानि शमने साध्यस्य क्रियया सतः ॥६॥

भगवन् हे भगवान् ! हे भगवान् ! समस्तानि समस्त समस्त, तथा अने और, पृथक् भुङ्क्ते भुङ्क्ते पृथक् पृथक्, पञ्च कर्माणि पञ्चकर्मांको, सर्वेषाम् एव सर्वेषां सब, आमयानाम् रोगानुं व्याधियोंका, भेषजम् हि औषध औषध, निर्विद्यानि उद्देह छे कही

है, भिषग्वर हे वैद्यश्रेष्ठ ! हे भिषक्श्रेष्ठ ! कश्चिद् अने दोष जो कया कोई ऐसा, दोषजः दोषजन्य दोषज, सामयः रोग रोग, अस्ति है ? है ? क्रियया ये चिकित्सायां जः चिकित्सायां, साध्यस्य सतः साध्य होय साध्य हो, यस्य शमने परंतु जेना शमनमां परन्तु जिसकी शान्तिमें, तानि ते पञ्चकर्मां उन पंचकर्म, शक्तानि शक्तिमान् शक्तिमान्, न स्युः न थाय ? न हों ? ॥ ५-६ ॥

5-6. O, Worshipful one! the quinary purificatory procedures, individually or altogether are laid down as the medicament in the treatment of all diseases. O, best of physicians! is there any morbid condition in which these purificatory measures are not capable of bringing about cure when applied, although the condition is curable by proper treatment.

अस्यूरुस्तम्भ इत्युक्ते गुरुणा तस्य कारणम् ।

सलिलज्वरजं भूयः पृष्टस्तेनाब्रवीद्गुरुः ॥७॥

ऊरुस्तम्भः अस्ति उरुस्तम्भ छे ऊरुस्तम्भ है, इति अने ऐसा, गुरुणा गुरुने गुरुके, उक्ते कहे त्वारे कहने पर, तेन तेसे उसने, सलिलज्वरजम् तेनां लक्षण औषध उसके लक्षण और औषध, कारणम् अने कारण और कारण, भूयः इसीने फिर, पृष्टः पूछता पूछने पर, गुरुः गुरुने, अब्रवीद् कहे कहा ॥७॥

7. On the teacher replying that there is one such morbid condition viz. spastic paraplegia, the pupil again inquired concerning its etiology signs and symptoms and treatment. The teacher described the disease as follows.

क्षिग्घोष्णलघुशीतानि जीर्णाजीर्णं समश्नतः ।  
द्रवशुष्कदधिशीरग्राम्यानूपौदकामिषैः ॥८॥

पिष्टव्यापन्नमघातिदिवास्वप्नप्रजागरैः ।  
 लङ्घनाभ्यशनायासमयकेगन्धिधारणैः ॥१०॥  
 स्नेहाश्यामं चित्तं कोष्ठे वातादीन्मेदसा सह ।  
 रुद्धाऽऽशु गौरवाद्गुरु यान्प्रचोतैः सिरादिभिः ॥१०॥  
 पर्यन् सक्थिजङ्घोरु दोषो मेदोबलोत्कटः ।  
 अविधेयपरिरूपन्दं जनयत्यव्यधिकमम् ॥११॥

जीर्णजीर्णे आहारसे उर्ध्व भाग पचने अने उर्ध्व भाग नांछ पचने आहारका कोई भाग पचने पर और कोई भाग न पचने पर क्षिप्र-उष्ण-रिन्ध्र-उष्ण क्षिप्र-उष्ण लघु-शीताभि लघु अने श्लेष्म लघु और जीत सप्रश्रवः क्षिताक्षत प्रोक्तेने भिक्षित आहार उपाधी दित्तित द्रव्योका मिश्रित आहार करनेसे, द्रव-शुष्क-द्रव अने सूका आहारथी द्रव और सूखे आहारसे, दधि-और-दही दूध दही दूध, प्राम्म-आनूर-आभ्य आनूर प्राम्म-आनूप, औदक-अने अक्षथर प्राणीओनां और जलचर प्राणियोंके आमिषः मसिथी मांससे, पिष्ट-पिष्ट लोभनथी पिष्ट भोजनसे व्यापन्नमघ-विकृत अक्षथी विकृत मद्यसे, अति अतिशय अतिशय, दिवास्वप्न-दिवसे निद्रा उग्रथी दिनमें सोनेसे, प्रजागरैः अतिशय उभयगामी अति गति-जागरणसे, लङ्घन-क्षधनथी लङ्घन, अध्यशन-आभ्य उपर आवाथी अध्यशन, आयास-भडेनतथी आयास, मय-अथथी मय, वेगविधारणैः अने वेग धारण उरवाथी और वेग विचारण करनेसे स्नेहात् च तेभ्य स्नेहेने अधिक प्रयोग उरवाथी एवं स्नेहोका अधिक प्रयोग करनेसे, कोष्ठे उष्माभां कोष्ठमें, चित्तं संशित थैल संचित हुआ, आमम् आम आम, मेदसा-सह मेदनी साथे भूमी मेदके साथ मिलकर वातादीन् वातादिने वातादिको, रुद्धा-रोधी अवरोध करके, गौरवात् शुभुताने उर्ध्व गुरु होनेसे, अघोगैः अधोगामी अधोगामी, सिरादिभिः शिराओः द्वारा सिराओं द्वारा, आशु अवधीथी शीघ्र, ऊरु ऊरुओभां ऊरुओंमें, याति पहुँचने छे पहुँचता है, मेदोबलोत्कटः मेदनी

अक्षथी उर्ध्व थैल मेदके पचने परम्त दोषः दोष दोष, सक्थि-जङ्घा-ऊरु-सक्थि उर्ध्व अने ऊरुओमें पर-जङ्घा और ऊरुओं पर्यन् पूर्ण अक्षथर अविधेय-परिस्पर्श द्रव अक्षथी अत्यन्त हलन चळनमें अत्यन्त व्यर्थिकम् च तथा अक्षथेष्टाभां और अत्यन्त युक्त जनयने करे कर देता है ॥ १०-११ ॥

8-11. By taking unctuous hot light and cold articles; by eating pre-digestion meals or promiscuous diet; by taking continually liquid and dried articles curds milk and flesh of domestic wet-land and aquatic creatures; by taking articles of pastry and stale wine, by over-much day sleep and night-vigils by starvation by eating on a loaded stomach; by over exertion fear and suppression of the natural urges and by excessive use of unctuous articles, the chyme becomes accumulated in the alimentary system and combining with the fat, obstructs the functions of the vata and other humors and by reason of its heaviness, quickly goes down and settles in the thighs; through the downward-carrying vessels and the morbid humor, excessively provoked by the fat, fills up the hip, thigh and calf regions and causes uncontrollable tremors and weakness of muscular movement.

महासरसि गम्भीरे पूर्णोऽम्बु स्तिमितं यथा ।  
 तिष्ठति स्थिरश्चोभ्यं तद्गदूदगतः कफः ॥१२॥

पूर्ण पूरा भरेव पूर्ण भरे हुए, गम्भीरे ऊर्ध्व गहरे, महासरसि महासरोवरभां बड़े तालावमें, यथा जैसी रीति जिस तरह, अम्बु पाणी जल, स्तिमितम् निश्चिन्त स्तिमित, स्थिर स्थिर स्थिर, अक्षोमम् अने

क्षोभरहित और क्षोभरहित, तिष्ठति रहे छे रहता है, तद्वत् तेवी रीते उसी प्रकार, ऊरुगतः अरुश्चि गयेछे। ऊरुमें पहुँचा हुआ, कफः ऊँ पक्षु निश्चल, स्थिर अने क्षोभरहित रहे छे कफ भी स्थिति, स्थिर और क्षोभरहित रहता है ॥ १२ ॥

12. As water lies motionless in a large, deep and still lake, so does the kapha, which has settled in the thighs, lie firm, unagitated and motionless.

गौरवायाससङ्कोचदाहकसुतिकम्पनैः ।

भेदस्फुरणतोदैश्च युक्तो देहं निहन्यसूनु ॥ १३ ॥

गौरव- भारेपक्षु भारीपन, आयास- परिश्रम थकान, सङ्कोच- संकोच दाह- दाह दाह, कङ्क- पीडा पीडा, सुति- स्थिति स्थिति स्पर्शका अज्ञान, कम्पनैः ऊर्ध्वन ऊर्ध्वन, भेद- भेद भेद, स्फुरण- स्फुरण स्फुरण, तोदै- च अने मोय मोय मोय मोय वेदनाथी और सुई चुभने जैसी पीडाछे, युक्तः युक्त ते ऊँ युक्त वह कफ, देहः देहने शरीरको असून अने आछेने और प्राणोंको, निहन्ति छे छे नष्ट करता है ॥ १३ ॥

13. Then the symptoms of heaviness, fatigue, contraction, burning, pain, anesthesia, tremor, breaking pain, throbbing and pricking pain develop and take away the patient's life.

ऊरु श्लेष्मा समेदको वातपित्तेऽभिभूय तु ।

ऊरुश्लेष्मयेत्यैर्यैश्चैत्याभ्यामूरुस्तम्भस्ततस्तु सः ॥ १४ ॥

समेदकः भेद्युक्त मेदके काय, श्लेष्मा तु ऊँ कफ, वातपित्ते वायु अने पित्तने वायु और पित्तको, अभिभूय पराभव पराधी अभिभूत करके, तैर्यै- स्थिरता स्थिरता, श्लेष्माभ्याम् अने शीतलता वडे और शीतलतासे, ऊरु

अरुश्चि ऊरुओंको, ऊरुश्लेष्मयेत्यैर्यैश्चैत्याभ्यामूरुस्तम्भस्ततस्तु सः ॥ १४ ॥

14. The kapha, combined with the fat, over-powers vata and pitta and produces spasticity of the thighs by its qualities of firmness and coldness; hence the disease is called Urusthambha or spastic condition of the thigh i. e. spastic paraplegia.

ऊरुस्तम्भस्य पूर्वरूपाणि—

प्राग्रूपं ध्याननिद्रातिस्तेमित्यारोचकज्वराः ।

लोमहर्षश्च छर्दिश्च जङ्घोर्वोः सदनं तथा ॥ १५ ॥

ध्यान- ध्यान एक एक देखना, निद्रा- निद्रा निद्रा, अति- अति अति, स्तेमित्य- स्थिति स्थिति स्थिति, आरोचक- अरुचि अरुचि, ज्वराः ज्वर ज्वर, लोमहर्षः च इवाडा उभा थवा रोमहर्ष, छर्दिः च उल्टी वमन, तथा तथा तथा, जङ्घा-ऊर्वोः ऊँ अने अरुश्चिनी जंघा और ऊरुओंकी, सदनम् शिथिलता और शिथिलता ये, प्राग्रूप ऊरुस्तम्भना पूर्वरूप छे ऊरुस्तम्भके पूर्वरूप हैं ॥ १५ ॥

15. Its premonitory symptoms are— self-absorption, somnolence, excessive immobility, anorexia, fever, horripilation vomiting and asthenia of the muscles of the thigh and the calf.

1. प्राग्रूपं ध्याननिद्रातिस्तेमित्यारोचकज्वराः (य)

2. स्तेमित्यारोचकज्वराः ध्यानं स्थिति स्थिति ज्वरः (य)

3. ध्याननिद्रातिस्तेमित्यारोचकज्वराः- तरः निद्राऽनिध्यानं स्थिति स्थिति ज्वरः (य)

4. लोमहर्षश्च छर्दिश्च-लोमहर्षोऽरुचिश्चर्दिः (य)

5. जङ्घोर्वोः सदनं तथा-जङ्घोरुसदनं तथा (य)

1. यास-याम (य)

2. युक्तो-युक्ता (य)

3. वातपित्तेऽभिभूय तु-दोषी दापभिभूय तु (अ. द.)

4. ततस्तु सः-ततः स्तुतः (क.)

5. -ततो मः (य. त.)

ऊरुस्तम्भे स्नेहप्रयोगजा दोषाः—

वातशङ्किभिरङ्गानात्तस्य स्यात् स्नेहनात् पुनः ।

पादयोः सदनं सुप्तिः कृच्छ्रादुद्धरणं तथा ॥१६॥

अज्ञानात् अज्ञानने क्षमने अज्ञानके कारण, वात-  
शङ्किभिः वातनी शङ्कावाणः वैषी वायुकी शंकावाले  
वैष, तस्य ओ ते, यदि उसका, स्नेहनात् स्नेहन करे  
स्नेहन करे, पुनः तो तो, पादयोः सदनम् पगोनी  
शिथिलता पैरोंमें शिथिलता, सुप्तिः स्पर्शान  
स्पर्शका ज्ञान न होना, तथा तथा तथा, कृच्छ्रात् मुश्के-  
लीथी कठिनाईसे, उद्धरणम् पग उपाडवा ओ दोषो पैरको  
उठाना ये दोष, स्यात् उत्पन्न थाय छे उत्पन्न होते हैं ॥१६॥

16. The physician mistaking this to be a condition of the morbidity of vata, may treat it with the unctuous therapy. As a result, the symptoms of the disease will be aggravated and the patient develops asthenia and anesthesia of the lower extremities; he lifts the feet with difficulty.

ऊरुस्तम्भस्य लक्षणानि—

जङ्घोर्गलानिरत्यर्थं शश्वच्चादाहवेदना ।

पदं च व्यथते न्यस्तं शीतस्पर्शं न वेत्ति च ॥१७॥

अत्यर्थम् अतिशय अत्यंत, जङ्घा-ऊरु- ४४ था अने  
ऊरुओनी जंघा और ऊरुमें गलानिः निर्जगता गलानि,  
शश्वत् च तथा हरहमेश तथा निरंतर, आदाह-  
वेदना थोडा थोडा दाह अने वेदना भाय छे कुछ  
कुछ दाह और वेदना होती हैं, पदम् च पग पैरके,  
न्यस्तम् भुक्तता रखने पर, व्यथते पीडा भाय छे पीडा  
होती है, शीतस्पर्शम् च अने शीत शीतत्व वस्तुना  
स्पर्शने और रोगी शीतल वस्तुके स्पर्शको, न वेत्ति  
अभुते नथी नहीं जानता ॥ १७ ॥

१६ स्नेहनात्—स्नेहनात् (फ.)

१७ दाहवेदना—दाहवेदने (ध.)

१८ व्यथते—वेपने (फ.)

17. There is marked exhaustion of the muscles of the calf and the thigh continuous burning and pain: the patient feels pain on putting his feet on the ground and he does not feel the sensation of cold contacts.

तंस्थाने पीडने गत्यां चालने चाप्यनीश्वरः ।

अन्यनेयौ हि संभ्रमावूरु पादौ च मन्यते ॥१८॥

तंस्थाने गिआ रहेवाभां खड़े होनेमें, पीडने दमा-  
पनभां दबानेमें, गत्याम् आश्रवामां चलनेमें, चालने च  
अने दबानेवाभां और डिलानेमें, अपि पक्षु भी कनी-  
श्वरः ते शक्तिमान होते नथी वह असमर्थ होता है,  
वूरु पादौ च अने ऊरु तथा पगने ऊरु और पैरोंको,  
संभ्रमौ भांगेवा दूटे हुए, अन्यनेयौ च हि अने पीडा  
कांथी अक्षानता और दूसरे कोईसे चलाये जाते,  
मन्यते माने छे मानता है ॥१८॥

18. He has no control over the functions of standing, pressing, moving or walking; he feels as if his feet and thighs are broken and are being propelled by someone else.

ऊरुस्तम्भस्य साध्यासाध्यलक्षणम्—

यदा दाहार्तितोदातो वेपनः पुरुषो भवेत् ।

ऊरुस्तम्भस्तदा हन्यात् साधयेदन्यथा नवम् ॥१९॥

यदा न्यारे जब, पुरुषः पुरुष पुरुष, दाह- दाह  
दाह, अर्तिः पीडा रुजा, तोद-भार्तः सौमथी पीडावा  
नेवी पीडाथी भुक्त तोदसे पीडित, वेपनः तथा कं-  
भुक्त तथा कांपनेवाला, भवेत् थाय छे होता है, तदा  
न्यारे तब, ऊरुस्तम्भः ऊरुस्तम्भ ऊरुस्तम्भ, हन्यात् तेने  
हने छे उसको मारता है, अन्यथा ओथी विपरीत स्थितिमा  
अन्यथा, नवम् नवम ऊरुस्तम्भ नीचे उत्पन्न ऊरुस्तम्भकी,  
माधवेत् चिकित्सा करवी चिकित्सा करे ॥ १९ ॥

19. If the patient is further afflicted with burning, pricking pain, and

१९. साधयेदन्यथा नवम्—साध्यः स्वादन्यथा नवः (फ.)

tremors, the condition of spastic paraplegia will lead to the patient's death. The condition where the above symptoms are not developed and is of recent origin, is curable.

अकृतम्भस्य चिकित्सासूत्रम्—

तस्य न स्नेहनं कार्यं न वस्तिर्न विरेचनम् ।  
न चैव वमनं यस्मात्तन्निबोधत कारणम् ॥२०॥

यस्मात् न आशु जिस कारणसे तस्य तेने इसको, स्नेहनम् न स्नेहन नहीं, वस्तिः न वस्ति नहीं, विरेचनम् न विरेचन नहीं, वमनम् च अने वमन पशु और वमन भी, न एव कार्यम् नहि आपनुं अर्थी नहीं देना चाहिए, तत् कारणम् ते आशु उस कारणको, निबोधत ध्यानपूर्वक सांभलो ध्यानपूर्वक सुनो ॥ २० ॥

20. The oleation treatment should not be given to such a patient, nor enema, nor purgation, nor even emesis. Hear the reasons why I forbid these measures.

वृद्धये स्नेह्यणो नित्यं स्नेहनं वस्तिर्न च ।  
तस्यस्योदरणे चैव न समर्थं विरेचनम् ॥२१॥

स्नेहनम् स्नेहन स्नेहन, वस्तिर्न च अने वस्ति-  
कर्म और वस्तिर्न, नित्यम् नित्य, स्नेह्यणः  
उदरम् कफको वृद्धये वृद्धि माटे थाय छे वृद्धिके लिए  
होते हैं, विरेचनम् च अने विरेचन और विरेचन  
तस्यस्य तस्य रहेछा उदरे उपरमें रहे हुए कफको, उद-  
रणे च अदर डाढनामा निकालनेमें, न एव समर्थम्  
समर्थ नहीं, समर्थ नहीं होता ॥ २१ ॥

21. Oleation and unctuous enemata always lead to increase of kapha, while purgation is not able to eliminate the kapha which is localised in the affected region.

२०. विरेचनम्—विज्ञोषनम् (क.)

२१. विरेचनम्—विज्ञोषनम् (क.)

कफं कफस्थानगतं पित्तं च वमनात् सुखम् ।  
हर्तुनामाशयस्थौ च खलनात्तानुभावपि ॥२२॥

कफस्थानगतम् उदरे स्थानमां रहेछा कफके  
स्थानमें स्थित, कफम् उदर कफ, पित्तम् च अने पित्तने  
भोज पित्त, वमनात् वमनद्वारा वमनद्वारा, आमाशय-  
स्थौ अने आमाशयमां रहेछा और आमाशयमें स्थित,  
तौ च ते वे, उदर अपि अनेयने पशु दोनों भी,  
खलनात् विरेचनस्थ विरेचनसे, हर्तुम् सुखम् अदर  
डाढना रहेछा छे सुखपूर्वक बाहर निकाले जा सकते  
हैं ॥ २२ ॥

22. Emesis can remove with ease, only kapha or pitta that has become lodged in the habitat of the kapha. Purgation can remove both the above humors only if they are lodged in the stomach;

पकाशयस्थाः सर्वेऽपि वस्तिभिर्मूलनिर्जयात् ।

शक्या न त्वाममेदोभ्यां स्तब्धा जङ्गोरुस्थिताः २३

पकाशयस्थाः पकाशयमां रहेछा पकाशयमें स्थित,  
सर्वे अपि सर्वेय दोषो सभी दोषोको, वस्तिभिः वस्तिभिः  
उदर वस्तिभिः द्वारा, मूलनिर्जयात् मूलनुं छेदन उदरस्थी  
जङ्गो नष्ट करनेसे, उदरुम् अदर डाढना बाहर  
निकालना, शक्याः शक्य थाय छे शक्य होता हैं, आम-  
मेदोभ्याम् पशु आम अने मेदोभ्यां किन्तु आम और  
मेदसे, स्तब्धाः स्तब्ध अथवा स्थिर हुए, जङ्गोरु-  
स्थिताः तु अने जङ्गो तथा उदरुमां रहेछा तो एवं  
जङ्गो और उदरमें स्थित तो, न अदर डाढनामा शक्य  
भला नहीं, बाहर निकालना शक्य नहीं होता ॥२३॥

23 While enemata may radically eliminat even all the three humors if they are lying in the colon. But the morbidity which has settled and become fixed in the thighs, by a

२२ कफं कफस्थानगतं—कफस्थानगतः कफः (क.)

२३ सर्वेऽपि—सर्वे च (क.)



combination of the chyme and fat cannot be eliminated by any of these methods

वातस्थाने हि तच्छैत्याद् द्वयोः स्तम्भाश्च तद्रताः ।  
न शक्याः सुखमुखतुं जलं निम्नादिव स्थलात् २४

वातस्थाने हि वायुना स्थानभां वायुके स्थानमें, तत्- शैत्यात् तेनी शीतलताथी उसकी शीतलता होनेसे, द्वयोः तथा आम अने भेटे डरेला तथा आम और मेदद्वारा, स्तम्भात् च रोकाशुथी रुके हुए होनेसे, तद्रताः जंघा अने गिरुभां अथेला दोष जंघा और ऊरुमें गये हुए दोष, निम्नात् नीचाशुवाणा नीची, स्थलात् स्थलथी जगहसे, जलम् इव जेम पाणी सहेलाधथी छियाशुभां लावी शकातुं नथी तेम जैसे जल सुगमतासे ऊपरकी ओर नहीं लाया जा सकता वैसे, सुखम् सहेलाधथी सरलतासे, उद्धर्तुम् षडर डाढवा बाहर निकालनेमें, न शक्याः शक्य थता नथी सरल नहीं होते ॥ २४ ॥

24. Owing to the quality of coldness of the seat of vata, the chyme and the fat, which have gone there and become fixed, cannot be easily eliminated, just as it is difficult to lift up water from a deep pit.

तस्य संशमनं नित्यं क्षपणं शोषणं तथा ।  
युक्त्यपेक्षी भिषक् कुर्यादधिकत्वात्कफामयोः ॥२५॥

कफामयोः कफ अने आमनी कफ और आमकी, अधिकत्वात् अधिकताने लध अधिकता होनेसे, युक्त्यपेक्षी युक्ति अशुनार युक्तिको जाननेवाला, भिषक् वैद्य वेष तका तेओनु उनका, नित्यम् नित्य नित्य, संशमनम् संशमन संशमन, क्षपणम् क्षपण क्षपण, तथा अने और, शोषणम् शोषण शोषण, कुर्यात् करेनु ओधये करे ॥ २५ ॥

२४. द्वयोः-तयोः (ब.)

२५. युक्त्यपेक्षी भिषक् कुर्यादधिकत्वात्कफामयोः-आधिक्या-

दामकफयोर्बुधपेक्षः सदा भिषक् (ब.)

25. The physician guided by reason should continually carry out the sedation, elimination and dehydration of the excessive accumulations of kapha and chyme.

सदा रूक्षोपचाराय यवश्यामाककोद्रवान् ।

शाकैरलवणैर्दद्याज्जलतैलौपसाधितैः ॥२६॥

सुनिषण्णकनिम्बार्कवेप्रारग्वधपल्लवैः ।

वायसीवास्तुकैरन्यैस्तिक्तैश्च कुलकादिभिः ॥२७॥

सदा सदा सदा रूक्षोपचाराय रूक्ष उपचारवाला रोगीको, अलवणैः लवण- रक्षित नमकरहित, जल-तैल-उपसाधितैः जल अने तैलथी साधेला जल और तैलसे पकाये हुए, सुनिषण्णक- अलकपासिया चौपतिया, निम्ब- लीमडे नीम, अर्क- आकडे आक, वेप्र- वेप्र वेत, आरग्वध- अने अर- भाणानां और अमलतासकी, पल्लवैः पल्लव पतियां, वायसी- पीलुडी मकोय, वास्तुकैः थिद वयुआ, अन्यैः च अने अनीनां और अन्य, कुलकादिभिः डारेला वजेरे करैले आदि, तिक्तैः कडवां तिक्त, शाकैः शाका साधे शाकोसे, यव- जौ, श्यामाक- साभे सांवा, कोद्रवान् अने डाढरा और कोदों, दद्यात् देवा ओधये देवे ॥ २६-२७ ॥

26-27. For carrying out the dehydration procedure, the patient should be continually given the diet of barley, sanwa millet and common millet along with vegetables prepared with water and oil but without adding salt, or with sprouts of marsilia plant, neem, mudar, country willow, purging cassia, black nightshade and white goose foot, or bitter group of drugs such as carella fruit etc.

२६. दद्याज्जलतैलौ-दद्यात्तैलौ (ब.)

„ दद्यात्-अद्यात् (ब.)



may be given mixed with honey for the cure of spastic paraplegia.

साङ्गैर्वादिभ्योः —

आर्क्षेष्टां मदर्ष दन्तीं वत्सकम् फलं वचाम् ॥३३॥  
मूर्वाभारग्वधं पाठां करञ्जं कुङ्कुमं तथा ।  
पिवेन्मधुपुतं तुल्यं चूर्णं वा वारिणाऽऽपुनम् ॥३४॥  
सक्षौद्रं दक्षिमण्डैर्वाऽप्युक्तम्भविनाशनम् ।

आर्क्षेष्टम् अक्षौरी रती, मदन्म् भीमम् मैनफल,  
दन्तीम् इन्दीमूल दन्ती, वत्सकम् फलम् ४' २०' इन्द्रजौ,  
वचाम् १०० वच, मूर्वाम् मूर्वा मूर्वा, भारग्वधम्  
भारमायो अमकलास, पाठाम् पाठा पाठी, करञ्जम्  
४' २० करञ्ज, तथा कुङ्कुम् तथा ४' २०' इन्द्र  
करैका, तुल्यम् चूर्णम् औक्षौरी अमभमाद्यु चूर्णम्  
इनका समभाग चूर्णं करके, मधुपुतम् मधु साधे मधुके  
साध, वारिणा आपुनम् वा अथवा पाणीनां घाणीने  
अथवा जलसे घोलकर, सक्षौद्रम् अथवा मधुसहित  
अथवा मधुयुक्त, दक्षिमण्डैः क्षमि क्षौरीनां ३' ४' साधे दधि-  
मधुके साथ, पिवेत् पीपुं पीवे, कक्षाम्भविनाशनम्  
आ योऽपि औपुस्तकने। नाक्ष करे के यह योग कक्षाम्भको  
नष्ट कर देता है ॥ ३३-३४॥

33-34. Equal parts of the powders of jequirity, emetic nut, red physie nut, seeds of kurchi, sweet flag trilobed virgin's bower, purging cassia, Patha, indian beech and carella fruit should be given to drink mixed with honey or dissolved in water or with whey and honey, as a cure for spastic paraplegia.

मूर्वादिभ्योः —

मूर्वामतिविषां कुष्ठं चित्रकं कटुरोहिणीम् ॥३५॥

३३. वत्सकम् फलं वचाम्-वत्सकं स्वादुकण्टकं (क.)

„ वचाम्-वचाम् (व.)

३४. दक्षिमण्डैः-दक्षिमण्डं (क.)

पूर्ववद्गुगुलं सूत्रे रात्रिस्थितमद्यापि वा ।

मूर्वाम् मूर्वा मूर्वा, अतिविषाम् अतिविष अतीव,  
कुष्ठम् ४' ४' कुष्ठ, चित्रकम् चित्रक चित्रक, कटुरोहिणीम्  
अने ४' ४' और कटुरोहिनी इन्को, पूर्ववत् अमभदिनी  
पीपुं पीपुं पूर्वकी अति पीपे, मधु अथ वा मधुना वा,  
सूत्रे रात्रिस्थितम् गोभूत्रभां रातभर रात्रे। गोमूत्रमे  
रतभर रक्ता हुआ, गुगुलुम् वा गुग्गु पीपे। गुग्गु  
पीपे ॥३५॥

35-35. Trilobed virgin's bower, atees, costus, white flowered leadwort and kurroa should be given as potiaon as before. Similarly the patient may drink the gum guggul immersed in cow's urine during night.

स्वर्णक्षीर्यादिभ्योः —

स्वर्णक्षीरीमतिविषां सुस्तं तेजोवतीं वचाम् ॥३६॥  
सुराहं चित्रकं कुष्ठं पाठां कटुरोहिणीम् ।  
लेहयेन्मधुना चूर्णं सक्षौद्रं वा जलापुतम् ॥३७॥

स्वर्णक्षीरीम् स्वर्णक्षीरी स्वर्णक्षीरी, अतिविषाम्  
अतिविष अतीव, सुस्तम् नागरमोथ मोथा, तेजो-  
वतीम् तेजोवती तेजबल, वचाम् १०० वच, सुराहम्  
देवदार देवदार, चित्रकम् चित्रक चित्रक, कुष्ठम् ४' ४' कुष्ठ,  
पाठाम् पाठा पाठी, कटुरोहिणीम् अने ४' ४' और  
कटुरोहिनी, चूर्णम् चूर्णम् इनका चूर्ण, मधुना मधु साधे  
मधुके साथ, लेहयेत् यापुं चाटे, जलापुतम् अथवा  
पाणीनां घाणीने वा पानीमें घोलकर, सक्षौद्रम् वा  
मधुसहित पीपुं मधुसहित पीपे ॥ ३६-३७॥

36-37. The powders of yellow milk plant, atees, nut-grass indian toothache tree, sweet flag, deodar, white flowered leadwort, cuscus, Patha and kurroa mixed with honey should be given as

३५. पूर्ववद्गुगुलं सूत्रे-पूर्ववत् पिवेत्तयि (क. ख. ड. घ.)

३६. चित्रकं-कुष्ठं (व.)

„ जलापुतम्-जलान्वितम् (व. छ. ड. फ.)



८ तोले, अजलिह वा अपि ३ १६ तोला या १६ तोले,  
पिबेत् पीवी पीवे ॥ ४१-४२ ॥

41-42. The medicated oil prepared with trilobed virgin's bower, milky yam, indian groundsel, small caltrops, sweet flag, long leaved pine, eaglewood and Patha and mixed with 8 tolas of honey, should be given to the patient as potion in the dosage of 16 tolas.

कुष्ठाय तैलम्—

कुष्ठश्रीवेष्टकोदीच्यसरलं दारु केशरम् ।  
अजगन्धाऽश्वगन्धा च तैलं तैः सार्वपं पचेत् ॥४३॥  
सक्षौद्रं मात्रया तच्चाप्यूरुस्तम्भादितः पिबेत् ।  
(रौक्ष्यान्मुक्त ऊरुस्तम्भात्ततश्च स विमुच्यते ॥४४॥)

कुष्ठ- ४४ कुष्ठ, श्रीवेष्टक- गंधजिरेञ्ज गंधविरोजा, उदीच्य- सुगन्धी वाणो, सुगन्धवाला, सरलम् भरल सरल, दारु देवदार देवदार, केशरम् नागकेशर नागकेशर, अजगन्धा अजगन्धा अजगन्धा, अश्वगन्धा च अश्वगन्धा और अश्वगन्धा, तैः ऐशोथी इनसे, सार्वपम् सरसपतुं सरसोंका, तैलम् तैल तैल, पचेत् पकावपुं पकावे तत् च अपि ते उसको, ऊरुस्तम्भ-अदितः ७२-स्तंभथी पीडाशैल भुष्यै ऊरुस्तंभसे पीडित मनुष्य, सक्षौद्रम् मधुसहित मधुके साथ, मात्रया मापसर योग्य मात्रासे, पिबेत् पीपुं पीवे सः तेथी ते इससे वह, रौक्ष्यात् रक्षताथी रक्षतासे, मुक्तः मुक्त आय छे मुक्त होता है, ततः च अने त्याग पीछी और तदनन्तर, ऊरुस्तम्भात् च ७२-स्तंभथी पक्ष ऊरुस्तंभसे भी, विमुच्यते मुक्त आय छे मुक्त होता है ॥४३-४४॥

43-44. The medicated oil made from rape seed oil prepared with the paste of costus, pine resin, fragrant sticky mallow, long leaved pine, deodar, fragrant poon, wild carrot and winter cherry, should be given mixed with

४४. रौक्ष्यान्मुक्त ऊरुस्तम्भात्ततश्च स विमुच्यते-अपतर्पणतो  
रौक्ष्यादूरुस्तम्भी विमुच्यते (द.)

honey in proper dosage, to the patient suffering from spastic paraplegia. Thus when the dryness is removed, the patient gets cured of spastic paraplegia.

सैन्धवाय तैलम्—

द्वे पले सैन्धवात् पञ्च गुण्ठया ग्रन्थिकचित्रकात् ।  
द्वे द्वे भल्लातकास्थीनि विंशतिर्द्वे तथाऽऽढके ॥४५॥  
आरनालात् पचेत् प्रस्थं तैलस्यैतैरपत्यदम् ।  
गृध्रस्यूरुमहाशोर्निर्ध्रुवातविकारजुत् ॥४६॥

सैन्धवात् सिंधु-सैन्धवजक, द्वे पले ये पक्ष ८ तोले, गुण्ठयाः पञ्च भुंठ पांच पक्ष मोठ २० तोले, ग्रन्थिक-चित्रकात् पीपसीयूग अने अत्रिः पिप्पलीमूल और चित्रक, द्वे द्वे भल्ले पक्ष ८-८ तोले, विंशतिः बीस बीस, भल्लातकास्थीनि भिल्लभा मेलविके बीज, तथा अने और, आरनालात् आरनाल कांजी, द्वे आढके ये आढक ५१२ तोले, एतैः ऐशोथी इनसे, तैलस्य तैल तैल, प्रस्थम् अष्ट प्रस्थ ६४ तोले, पचेत् पकावपुं पकावे, अपत्यदम् ते तैल संतानदायक वह तैल संतानदायक, गृध्रसी गृध्रसी गृध्रसी, ऊरुग्रह- ७२-स्तंभ ऊरुस्तंभ, अशः- अशः अशः, अर्ति- पीडा पीडा, सर्ववातविकारजुत् अने सर्व वातविकार. इर ४२नार छे और सब वातविकारका नाश करत है ॥ ४५-४६ ॥

45-46. The medicated oil prepared with 8 tolas of rock salt, 20 tolas of dry ginger, 8 tolas of roots of long pepper, 8 tolas of white flowered leadwort, 20 marking-nut stones, added to 64 tolas of til oil and 512 tolas of sour gruel, is procreant and is curative of sciatica, spastic paraplegia, painful piles and all the diseases due to vata-provocation.

४६. अपत्यदम्-सुशोत्पदम् (व.)

अष्टकट्वरं तैलम्—

पलाभ्यां पिप्पलीमूलनागरादष्टकट्वरः ।

तैलप्रस्थः समो दद्याद्गृध्रस्यूतग्रहापहः ॥४७॥

इत्यष्टकट्वरतैलम् ।

पिप्पलीमूल- पीपरीभूण पिप्पलीमूल, नागरात्  
अने मूळ और सोंठ, पलाभ्याम् ओ पक्ष ८-८ तोले,  
अष्टकट्वरः ७११ आठ प्रस्थ छाल ५१२ तोले, दद्या  
समः अने ६६० ग्रेडुं अ अर्थात् ६६० ओं ३ प्रस्थ  
वहीं ६४ तोले, तैलप्रस्थः तैल ओं ३ प्रस्थ तैल ६४  
तोले, गृध्रसी ओं ३०० सिद्ध करेहुं तैल गृध्रसी इनसे  
सिद्ध किया हुआ तैल गृध्रसी, ऊरुमह- अथ ७२-  
स्तम्भने। और ऊरुस्तम्भका, अथः नाश करेना  
भा ओ नाशक होता है ॥४७॥ इति आ यह, अष्ट-  
कट्वरतैलम् अष्टकट्वरतैल ओ अष्टकट्वर तैल है ।

47. The medicated oil, prepared with  
8 tolas of each of roots of long pepper  
and dry ginger added to 64 tolas of  
til oil and 512 tolas of butter milk, is  
curative of sciatica and spastic para-  
plegia. Thus has been described the  
oil called the medicated 'Eightfold  
Butter-milk Oil'.

ऊरुस्तम्भे बाह्यचिकित्सा—

इत्याभ्यन्तरमुद्दिष्टमूरुस्तम्भस्य मेघजम् ।

श्लेष्मणः क्षयणं त्वन्यद्वाह्यं शृणु चिकित्सितम् ॥४८॥

इति आ यह, ऊरुस्तम्भस्य ऊरुस्तम्भ  
ऊरुस्तम्भका, आभ्यन्तरम् अंदरुं आभ्यन्तर, मेघजम्  
औषध औषध, उद्दिष्टम् उद्दिष्ट ओ कहा है, श्लेष्मणः  
ऊर्ध्वे। कफको, क्षयणम् क्षय करेना क्षीण करनेवाली,  
अन्यत् बाह्यम् भी ७ अक्षरणी अन्य बाह्य, चिकित्सा-  
तम् तु चिकित्सा चिकित्सा, शृणु आश्रय। सुनो ॥४८॥

48. Thus, the medicaments for  
internal administration for the patient  
afflicted with spastic paraplegia, have  
been described; now listen to a desc-

ription of the external treatment which  
helps to diminish kapha.

वल्मीकमृत्तिकाकुत्साक्षमम्—

वल्मीकमृत्तिका मूलं करञ्जस्य फलं त्वचम् ।

इष्टकानां ततश्चूर्णैः कुर्यादुत्सादनं भृशम् ॥४९॥

वल्मीक- मृत्तिका राइडानी भाटीतुं यूथुं बमीकी  
मिट्टीका चूर्ण, करञ्जस्य तथा करंजनां और करंजके, मूलम्  
भूण मूल, फलम् फल, त्वचम् अने छालतुं यूथुं  
और जलका चूर्ण, इष्टकानाम् तेमभ १६० यूथुं  
ओं ३०० ओं ३ प्रस्थ एवं ईटका चूर्ण इनको एकत्र करे,  
ततः तत्समं तदनन्तर, चूर्णैः ते यूथुं ३०० उत चूर्णसे,  
मृत्तिका सादी ये छे खद, उत्सादनम् उत्सादन उत्सादन,  
कुर्वात् करेहुं करे ॥४९॥

49. The physician should prescribe  
frequent massage with the earth of  
the ant-hills, the powdered root, fruit  
and bark of indian beech and powdered  
brick.

अन्वे वोगः—

मूलेर्वाऽप्यध्वगन्धावा मूलैरर्कस्य वा मिषक् ।

पिबुमर्दस्य वा मूलैरथवा देवदारुणः ॥५०॥

शौद्रसर्वपवल्मीकमृत्तिकासंयुतैर्भिषक् ।

गाढमुत्सादनं कुर्यादूरुस्तम्भे प्रलेपनम् ॥५१॥

दन्तीद्रवस्तीक्षुरसाखर्षपैश्चापि बुद्धिमान् ।

शौद्र- भय मधु, सर्वप- सरसव सरसों, वल्मीक-  
मृत्तिका अने राइडानी भाटीथी और बमीकी मिट्टीसे,  
संयुतैः युक्त युक्त, अध्वगन्धावाः अध्वगन्धावा अध्वगन्धकी,  
मूलैः वा अपि भूथी जड़से, अर्कस्य अथवा आइडानी  
अथवा आककी, मूलैः वा भूथी जड़से, पिबुमर्दस्य वा  
अथवा दीमडानी भूथी अथवा नीमकी जड़से, अथवा

४९ वल्मीकमृत्तिका मूलं-मिट्टी सर्वपमूलं च (छ.)

अस्य श्लोकस्य द्वितीयपादस्यामे-

पिबुमर्दस्य मूत्रेऽध्युषितं स्वात् प्रलेपनम् ।

इत्यधिकः पाठः (ब) पुस्तके ।

करञ्जस्य फलं त्वचम्-करञ्ज फलत्वचम् (क.)



अथवा अथवा, देवदारुणः देवदारुणां देवदारुणी, मूलेः मूली जड़से, बुद्धिमान् बुद्धिमान् बुद्धिमान्, भिषक् वैद्य वैद्य, ऊरुस्तम्भो ऊरुस्तम्भो ऊरुस्तम्भो, गाढः गाढः उत्सादनम् उत्सादनम् उत्सादनम्, कुर्यात् कुर्यात् करे, दन्ती दन्ती दन्ती, द्रवन्ती द्रवन्ती द्रवन्ती, सुरसा-तुलसी तुलसी सर्वपैः च अपि अने सरसवर्षी और सरसोसे, प्रलेपनम् लेपन कुर्यात् प्रलेपन करे ॥५०-५१३॥

50-51½. Or with the roots of winter cherry, mudar, neem or of deodar; any one of these should be mixed with honey, rape-seed and the earth of ant-hills, and prescribed for strong massage in the treatment of spastic paraplegia. The paste prepared by pounding together red physic nut, physic nut, holy basil and rape-seed, should be given as application to the patient afflicted with spastic paraplegia by the wise physician

तर्कारीशिशुसुरसाविश्ववत्सकनिम्बजैः ॥५२॥

पत्रमूलफलैस्तोयं शृतमुष्णं च सेचनम् ।

तर्कारी- तर्कारी जयंती, शिशु- सरसो, सहजन, सुरसा- तुलसी तुलसी, विश्व- सेंडा सेंडा, वत्सक- कुटज, निम्बजैः अने बीभर्तानी और नीमके, पत्र- पान पत्र, मूल- मूल जड़, फलैः अने इंगोथी और फलोंसे, शृतम् उकागेलुं पकाया हुआ, उष्णम् तोयम् च अतुं पाणी गरम जलसे, सेचनम् स्त्रीयुं सेचन करे ॥ ५२३ ॥

52-52½. The warm decoction made of the leaves, roots and fruits of common sesbane, drumstick, holy basil, dry ginger, kurchi and neem should be given for affusion of the affected part

५२. तर्कारीशिशुसुरसाविश्ववत्सकनिम्बजैः-विश्ववत्सकतर्कारी-

शिशुमूलफलीपत्रैः (फ.)

पिष्टं तु सर्वपं मूत्रेऽभ्युषितं स्यात् प्रलेपनम् ॥५३॥

मूत्रे गोमूत्रमां गोमूत्रमं अभ्युषितम् रातभर रात्री रातभर रख कर, पिष्टम् पीसेका पीसे हुए, सर्वपम् तु सरसवर्षी सरसोका, प्रलेपनम् लेपन प्रलेप, स्यात् कुर्यात् करे ॥५३॥

53. The paste, made of rape-seeds pounded with cow's urine and kept overnight, should be used as application.

वत्सकादिप्रलेपः —

वत्सकः सुरसं कुष्ठं गन्धास्तुम्बुरुक्षिभुको ।

हिंघार्कमूलवस्मीकमृत्तिकाः सकुटेरकाः ॥५४॥

दधिसैन्धवसंयुक्तं कार्यमेतैः प्रलेपनम् ।

(ऊरुस्तम्भविनाशाय भिषजा जानता क्रमम् ॥५५॥)

क्रमम् उपचारक्रमने उपचारक्रमको, जानता अभ्युनार जाननेवाला, भिषजा वैद्य वैद्य, ऊरुस्तम्भ- ऊरुस्तम्भो ऊरुस्तम्भो विनाशाय नाश भाटे नष्ट कानेके लिए, वत्सकः कुटज कुटजकी छाल, सुरसम् तुलसी तुलसी, कुष्ठम् कठ कूठ, गन्धाः गन्धद्रव्ये गन्धद्रव्य, तुम्बुरु तेजवर्षी तेजबल, क्षिभुकेः सरसो, सहजन, सकुटेरकाः कुटेरक कुटेरक हिंघा हिंघा हिंघा, वस्मीक- आकानी मूल आकानी जड़, वस्मीकमृत्तिका अने राक्षानी भाटी और बसीकी मिट्टी, एतैः ऐसीने इनको, दधि- दही दही, सैन्धव- तथा सिंघावस्य साथे तथा सैषानमकके साथ, संयुक्तम् भेजनीने मिलाकर, प्रलेपनम् लेपन प्रलेपन, कार्यम् कुर्यात् करे ॥५४-५५॥

५३. पिष्टं-पिष्टा (घ.)

.. पिष्टं तु सर्वपम्-पिष्टामसर्वपम् (ङ.)

५४. वत्सकः सुरसं कुष्ठं गन्धास्तुम्बुरुक्षिभुको-गन्धाः स्वरम-  
क्षिभुको कुष्ठं तुम्बुरु वत्सकम् (ग.)

.. .. -गन्धाः वत्सकक्षिभुको कुष्ठं तुम्बुरु-  
वत्सको (फ.)

.. हिंघार्कमूल-हिंघार्कमूल (घ.)



54-55. The physician, conversant with the line of treatment, may give an application to the affected part, with the paste of kurchi, holy basil, costus, fragrant group drugs, indian toothache, drumstick, indian nightshade, mudar-roots, the earth of ant-hills and shrubby basil pounded along with curds and rock salt for the cure of spastic paraplegia.

इयोनाकादिपरिषेकः प्रलेपः वा—

इयोनाकं खदिरं विष्वं बृहत्यौ सरलासनौ ।

शोभाजनकतर्कारीश्वदंष्ट्रासुरसार्जकान् ॥५६॥

अग्निमन्थकरञ्जौ च जलेनोत्काश्य सेचयेत् ।

प्रलेपो मूत्रपिष्टैर्वाऽप्यूरुस्तम्भनिवारणः ॥५७॥

इयोनाकम् इयोनाक इयोनाक, खदिरम् खेर, विष्वम् पीली बेल, बृहत्यौ बने बोरीगण्डी बनी और छोटी कटेरी, सरल- सरल सरल, असनौ असन असन, शोभाजनक- सरगवे सहजन, तर्कारी- तर्कारी जीवन्ती, श्वदंष्ट्रा- गोभृगु गोलरु, सुरसा- तुलसी तुलसी, अर्जकान् रान तुलसी इवना, अग्निमन्थ- अरुणी अरणी, करञ्जौ च अने करञ्जने और करञ्ज इनका, जलेन पाणी साथे जलमें, उत्काश्य छिड़की काय करके, सेचयेत् तेनु सिंथन करवु उससे परिषेक करे, मूत्र- पिष्टैः वा अपि अथवा गोभृगुभा पीसेवा अथवा गोभृगुमें पीसा हुआ, प्रलेपः छेछोने दोप इनका प्रलेप, ऊरुस्तम्भ- ऊरुस्तम्भने ऊरुस्तम्भको, निवारणः मटा- नां छे दूर करनेवाला है ॥ ५६-५७ ॥

56-57. The decoction made in water of indian calosanthus, catechu, bael, indian nightshade and yellow-berried nightshade, long leaved pine, spinous kino, drumstick, common sesbane,

small caltrops, holy basil, shrubby basil, wind killer and indian beech, should be prescribed for the purpose of affusing the affected part; or the above-mentioned drugs should be used as application, pounded with cow's urine, as a cure for spastic paraplegia.

कफक्षयार्थं शक्येषु व्यायामेष्वनुयोजयेत् ।

स्थलान्याक्रामयेत् कस्यं शर्कराः सिकतास्तथा ॥५८॥

कफक्षयार्थम् छेछोने क्षय भाटे रोजीने कफको क्षीण करनेके लिए रोगीको, शक्येषु यर्ध शके येवा शक्य, व्यायामेषु व्यायामभा व्यायाममें, अनुयोजयेत् येवाये प्रवृत्त करावे, कस्यम् प्रातःकालभा प्रातःकालमें, शर्कराः छिड़का काकड़, तथा तथा तथा, सिकताः रेतीवाणा रेतीके, स्थलानि स्थानेभा स्थानोंमें, आक्रामयेत् यथावे। चलावे ॥५८॥

58. To reduce kapha, exercise, when possible, should be prescribed; or the patient may be made to walk on uneven ground covered with gravel and sand.

प्रतारयेत् प्रतिस्रोतो नदीं शीतजलां शिवाम् ।

सरश्च विमलं शीतं स्थिरतोयं पुनः पुनः ॥५९॥

तथा विशुष्केऽस्य कफे शान्तिमूरुग्रहो व्रजेत् ।

शीतजलाम् अथवा शीतल जलवाणी वा शीतल जलवाली, शिवाम् नदीम् हिंसक जलवां तु बगरी नदीभा भयरहित नदीमें, प्रतिस्रोतः सामे भवाहे प्रवाही विरुद्ध दिशामें, प्रतारयेत् रोजीने तरावे। रोगीको तैरावे, विमलम् निर्मल साफ, शीतम् शीतल, स्थिरतोयम् स्थिर जलवाणी और स्थिर जल-वाली, सरः च सरोवरभा तालावमें, पुनःपुनः दूरी दूरीने तरावे। बार बार तैरावे, तथा अस्य आ प्रभावे येने।

५८. शक्येषु व्यायामेष्वनुयोजयेत्-व्यायामेष्वेनं शक्येषु चोत्सृ-

जेत् (च. क.)

५९. शक्येषु-सक्येषु (च.)

५६. सरलासनौ-सुरलासने (च.)

५७. -समुनयेने (च. क.)

इस प्रकार इसे कफे विद्युत्के ६३ सडाई ७०० कफके सूख जाने पर, ऊरुग्रहः ७२२००० ऊरुस्तम्भ, शान्तिम् शान्ति शान्त, बजेन् पाये ३३ हे जात है ॥ ५९ ॥

59-59½. The patient may swim frequently against the current of a river flowing with cold and wholesome water, or in a pond having clear cold and still waters. Thus when the kapha is dried up, spastic paraplegia is cured.

ऊरुस्तम्भचिकित्सासूत्रम्—

श्लेष्मणः क्षपणं यत् स्यान्न च मारुतमावहेत् ॥६०॥  
तत् सर्वं सर्वदा कार्यमूरुस्तम्भस्य मेघजम् ।  
शरीरं बलमग्निं च कार्यैषा रक्षता क्रिया ॥६१॥

यत् ७० जो, श्लेष्मणः ६३३ कफको, क्षपणम् ६३३ ६२००० कम करनेवाला, स्यात् ६०० होवे, मारुतम् च ७०० वायुने और वायुको, न आवहेत् ६०० न बढावे, तत् ६०० वह, सर्वम् सर्वं सब, ऊरुस्तम्भस्य ७२२००० ऊरुस्तम्भका, मेघजम् औषध औषध, सर्वदा ६०० निरन्तर, कार्यम् ६२०० ओष्ठ ७०० करना चाहिए, शरीरम् शरीर शरीर, बलम् ७०० बल, अग्निम् च तथा अग्निनी तथा अग्निकी, रक्षता रक्षा ६२०० रक्षा करते हुए, एषा क्रिया आ चिकित्सा यह चिकित्सा, कार्य ६२०० ओष्ठ ७०० करनी चाहिए ॥ ६०-६१ ॥

60-61. All the remedies which are reductive of kapha and non-provocative of vata should be prescribed at all times as a remedy for spastic paraplegia; and the line of treatment should be such as to protect the body-vitality and the gastric fire.

६०. श्लेष्मणः क्षपणं यत् स्यान्न च मारुतमावहेत् यत् स्यात्  
कफप्रशमनं च न मारुतकोपनम् (६०.)

६१. —यत् कफप्रशमनं च च मारुतकोपनम् (६१.)

६१. मारुतमावहेत्—मारुतकोपनम् (६१. त. व.)

अध्यायोक्तार्थसंग्रहः—

तत्र श्लोकः—

हेतुः प्राग्रूपलिङ्गानि कर्मायोग्यत्वकारणम् ।  
द्विविधं मेघजं चोक्तमूरुस्तम्भचिकित्सिते ॥६२॥

तत्र श्लोकः ते विषयमा उच्यते ॥ ६२ ॥  
उस विषयमें उपसंहारका श्लोक है कि, ऊरुस्तम्भ-चिकित्सितं ७२२००० अथिडित्सा अध्यायमा ऊरुस्तम्भचिकित्सित अध्यायमें, हेतुः हेतु हेतु, प्राग्रूप-पूर्व ६२०० पूर्वरूप, लिङ्गानि ६२०० लक्षण, कर्म-पञ्चकर्मनी पञ्चकर्मका, अयोग्यत्व-थिडित्सानी अयोग्यतातुं चिकित्साके योग्य न होनेका, कारणम् ६२०० कारण, द्विविधं मेघजम् च ७०० अने ७०० (आप्यन्तर तथा आप्य) प्रकरन् औषध और दो प्रकारका औषध, उक्तम् ६२०० उक्त है ॥ ६२ ॥

Here is a recapitulatory verse—

62. In this chapter on the therapeutics of spastic paraplegia, the etiology, premonitory symptoms, the signs and symptoms, the cause for the contra-indication of the quinary purificatory processes and the two effective lines of treatment are described.

इत्यग्निवेशकृते तन्त्रे चरकप्रतिसंस्कृतेऽप्राप्ते दृढबलसंपूरिते चिकित्सास्थाने ऊरुस्तम्भचिकित्सितं नाम सप्तविंशोऽध्यायः ॥२७॥

इति आ प्रमाणे इस प्रकार, अग्निवेशकृते अग्निवेशे २७०० अग्निवेशसे बनाये, चरकप्रतिसंस्कृते तन्त्रे ७०० अने अरुथी प्रतिसंस्कार पायेला आ आश्रमा और चरकके द्वारा संस्कृत इस शास्त्रके, अप्राप्ते अप्राप्त अप्राप्त, दृढबलसंपूरिते ७०० अने दृढबले पूरा करेला और दृढबलसे पूरित किये गये, चिकित्सास्थाने चिकित्सा-स्थान विषे चिकित्सास्थानमें, ऊरुस्तम्भ-चिकित्सितम् 'ऊरुस्तम्भचिकित्सित' 'ऊरुस्तम्भचिकित्सित' नाम नामना नामका, सप्तविंशः सप्तावीसवा सप्ता-

६२. प्राग्रूपलिङ्गानि—सलिङ्गप्राग्रूप (६२.)

६२. कर्मायोग्यत्वकारणम्—कर्मायोग्यत्वमेव च (६२. क. त.)

એવળી, અધ્યાયઃ અધ્યાય સ પૂર્ણ થયે અધ્યાય સમાપ્ત  
કુઆ ૩ ૨૭ ॥

27. Thus in the Section on Therapeutics in the treatise compiled by Agnivesa and revised by Caraka, the twenty-seventh chapter entitled 'The Therapeutics of Spastic Paraplegia' not being available, the same as restored by Dridhabala, is completed.

### અષ્ટાવિંશોઽધ્યાયઃ।

અષ્ટાવીસમેઽધ્યાય અધ્યાય અઢાઈસવાં  
Chapter XXVIII

વાતવ્યાધિચિકિત્સિતોપક્રમઃ —

અથાહો વાતવ્યાધિચિકિત્સિતં વ્યાખ્યાસ્યામઃ ॥૧॥

इति ह स्माह भगवानात्रेयः ॥ २ ॥

અથઃ અતઃ હવે અહીંથી જવ આગે, વાતવ્યાધિ-  
ચિકિત્સિતસ્ય 'વાતવ્યાધિચિકિત્સિત' નામના અધ્યા-  
યનું 'વાતવ્યાધિચિકિત્સિત' નામકે અધ્યાયકા, વ્યાખ્યા-  
સ્યામઃ વ્યાખ્યાન કરશું વ્યાખ્યાન કરેગે ॥૧॥

મગવાન્ ભગવાન્ મગવાન્, આત્રેયઃ આત્રેયે  
આત્રેયને, इति ह આ વિષયમાં નીચે પ્રમાણે જ આ  
વિષયમેં નિમ્ન પ્રકારસે હી, આહ સ્વ કહેલું છે કહા હે ॥૨॥

1. We shall now expound the chapter entitled 'The Therapeutics of Vata Diseases'.

2. Thus declared the worshipful Atreya.

વાયોઃ સ્વભાવઃ —

वायुराधुर्बलं वायुर्नाधुर्बला शरीरिणाम् ।

वायुर्विष्णुमिदं सर्वं प्रभुर्वायुश्च कीर्तितः ॥ ૩ ॥

૩. વાતા શરીરિણામ્—વાતશરીરિણામ્ (૩.)

વાયુઃ વાયુઃ વાયુ આયુષ્ય છે વાયુ આયુષ્ય હે,  
વાયુઃ બલશ્ચ વાયુ બલ છે વાયુ બલ હે, વાયુઃ વાયુ વાયુ,  
શરીરિણામ્ શરીરિણામે પ્રાણિયોકા, ધાતા ધાતા છે  
ધાતા હે, વાયુઃ વાયુ વાયુ, હૃદમ્ આ મહઃ સર્વમ્  
લિષ્ઠમ્ સર્વં વિશ્વ છે સર્વ વિશ્વ હે, વાયુઃ ચ અને  
વાયુને જૌર વાયુ, પ્રભુઃ પ્રભુ પ્રભુ, કીર્તિતઃ કહેવામાં  
આવે છે કહા ગયા હે ॥૩॥

3. Vayu is life and vitality; Vayu is the supporter of all embodied beings; Vayu is verily the whole universe; and Vayu is the Lord of all. Thus is Vayu extolled.

અવ્યાહતગતિર્યસ્ય સ્થાનસ્થઃ પ્રકૃતૌ સ્થિતઃ ।  
વાયુઃ સ્યાત્સોઽધિકં જીવેદ્વીતરોગઃ સમાઃ શતમ્ ૪

યસ્ય વાયુઃ નેનો વાયુ જિસકા વાયુ, અવ્યાહત-  
ગતિઃ અવ્યાહત ગતિવાળો હોય અવ્યાહતગતિવાળો હો,  
સ્થાનસ્થઃ પોતાના સ્થાનમાં સ્થિત હોય અને સ્થાનમેં  
સ્થિત હો, પ્રકૃતૌ અને પ્રકૃતિમાં જૌર સામ્યાવસ્થામેં,  
સ્થિતઃ રહ્યો સ્થિત, સ્યાત્ હોય હો, સઃ તે વહ,  
અધિકમ્ હોયો વખત લગ્વે સમય તક, દ્વીતરોગઃ  
નીરોગી રહી નીરોગી હોકર, શતમ્ સમાઃ સો વર્ષ  
સો વર્ષતક જીવેત્ શુદ્ધ છે જીતા હે ॥ ૪ ॥

4. The man, in whose body the vata is unimpeded in its course and lies in its normal habitat and is in its normal condition, lives longer than even a hundred years fully free from disease.

વાયોઃ પञ्च मेधाः तेषां स्थानानि कर्म च—

प्राणोदानसमानाख्यव्यानापायैः स पञ्चधा ।

देहं तन्त्रयते सम्यक् स्थानेष्वव्याहृतश्चरन् ॥ ૫ ॥

સઃ તે વાયુ વાયુ, પ્રાણ-દાન-પ્રાણ, ઉદાન પ્રાણ,  
ઉદાન, સમાનાખ્ય-સમાન સમાન, વ્યાન- વ્યાન વ્યાન,  
આપાન અને આપાન જૌર આપાન, પંચધા એ પાંચ  
મેદાથી અને પાંચ મેદાસે, સ્થાનેષુ પોતાના સ્થાનમાં

अपने स्थानमें, अग्न्याहुतः अष्टकान् विना विना वाधासे,  
चरन् इरते। संचार करता हुआ, देहक देहसे देहको  
सम्बन्ध सारी रीति सम्बन्ध प्रकाशसे, तन्त्र अपने धान्य  
उरे से धारण करता है ॥ ५ ॥

5. The vata, which is of fivefold nature, viz., Prana, Udana, Samana, Vyana and Apana, by the unimpeded movement of each of these, in their normal regions, regulate the functions of the entire body.

स्थानं प्राणस्य मूर्धोऽङ्गुलिद्वयान्तिकाः ।  
 शीवनश्चतुष्पदश्चास्वाहाहारदि कर्म च ॥६॥

मूर्ध-उर- माथुं, अती शिर, कर्ण, कण्ठ-वं  
कण्ठ, जिह्वा-भास-श्रोत्र, नेत्रं जीमः मुँह नासिका  
अने नाड और नासिका, प्रणय स्वतन्त्र थे माथुन  
स्थान से वे प्रणयके स्थाप हैं, उद्विक्त-अने धूँकुं और  
झुलना शब्द-उद्गार-भीड़ पापी, मोहोर लौकना,  
वकार, श्वास-माहार-आदि तथा श्वासेच्छ्वास अने  
आहारादि तथा श्वास और माहार आदि, कर्म च अने  
उभे से इसके कार्य हैं ॥६॥

6. The seats of Pran-avata are the head, chest, throat, tongue, mouth and nose; salivation, sternutation, eructation, respiration, deglutition and similar other processes are its functions.

उदासस्य पुनः स्थानं नाभ्युहः कण्ठ एव च ।  
वाक्प्रवृत्तिः प्रसन्नोर्जोबलवर्णादि कर्म च ॥७॥

नामि-उरः नामि, छाती नामि, ऊप्ती, कण्ठः एव  
 च अने कंठे और कण्ठ ये, पुनः उदानस्य वशी  
 उदानके, स्थानम् स्थानं छे स्थानं है, वाक्प्रवृत्तिः अने

६. मूर्ध्वारः कण्ठ-शीर्षारः कर्ण (अ. त.)

मूर्धोरः कण्ठजिह्वास्थनासिकाः—मूर्धोरः कर्णजिह्वास्थनासिकाः

(ध. ष.)

१. जीवनक्षयश्चात्र आसाहस्यदिकर्म च-जीवनक्षयश्चात्र आसाहस्यदिकर्म  
द्विकर्म च (५८.)

वाष्पिनी प्रवृत्ति और वाणीकी प्रवृत्ति, प्रयत्न-ऊर्ज-  
प्रयत्न, डिसाइल प्रयत्न, उदराल, वल-वर्ण-अथ, वलु वल,  
वर्ण, जादि भोरे करवां ओ अदिका करना ये कर्म च  
ओनां ऊर्जा छे इसके कर्म हैं ॥ ७ ॥

7. The seats of Udana-vata are the umbilicus, the chest and the throat. Speech, endeavour, enthusiasm, vitality, complexion and such other things are its functions.

स्वेददोषाम्बुवाहीनि स्रोतांसि समधिष्ठितः ।  
अन्तरमेव पार्श्वस्थः तृणानोऽग्निवलयदः ॥ ८ ॥

स्वेद-शेष- स्वेदन ही दोषप्राप्ति, स्वैरहः श्वेत्तव,  
अम्बुवाहीति तथा जलवाही तथा प्रचलत, आंतरांति  
समाविधितः अंतर्गतः स्वेद केवलमें अभ्यत, अन्तरांते  
अने अन्तरमिक्ष और अन्तरस्थि, पश्चात्तः व  
पञ्चभानां रसेव कर्ममें भूयत समाप्तः समान वायु  
समान वायु, अग्निबलप्रदः अग्नि अने अक्ष देनाउडे  
अग्नि और बलको देता है ॥ ८ ॥

8. The Samana-vata which regulates the channels carrying sweat, waste matter and water lies in the neighbourhood of the seat of the gastric fire and is the promoter of the gastric fire and vitality.

इहं व्याप्नोति सर्वं तु व्यस्तः शीघ्रगतिर्वृणान् ।  
गतिप्रसारणाक्षेपनिमेषादिक्रियः सदा ॥९॥

इतिव्रगतिः आधी गतिवाणे कौप्र गतिवाद्य, व्यानः  
तु व्यान तो व्यान तो, नृणाम् भनुष्योना मनुष्योंके,  
सर्वदेहम् आभा शरीरभा सम्पूर्ण देहमें, व्याप्नोति  
आधी अथ के व्याप्त रहता है, सदा अने सर्वदा  
और सदा, गति-प्रसारण- गति, प्रसारण, व्याप्नोति-  
आप्नोति व्याप्नोति, निमेषादि- अने निमेषादि  
और निमेषादि, क्रियः क्रिया करना के क्रियाओंको  
करता रहता है ॥ ९ ॥

८. वाहीसि-वाहानि (ड.)

9. The Vyana-vata, which is swift-moving, pervades the entire body of man; its functions are motion, extension, contraction, winking of the eyes and similar other movements.

વૃષ્ણૌ વસ્તિમેદું ચ નાભ્યૂરૂ વંક્ષણૌ ગુદમ્ ।  
અપાનસ્થાનમન્ત્રસ્થઃ શુક્રમૂત્રશક્નિત્ત્વં ચ ॥૧૦॥  
સૂજત્યાતર્તવગર્ભૌ ચ યુક્તાઃ સ્થાનસ્થિતાશ્ચ તે ।  
સ્વકર્મ કુર્વંતે દેહો ધાર્યંતે તૈરનામયઃ ॥૧૧॥

વૃષ્ણૌ વૃષ્ણ, વસ્તિ-મેદૂં અસ્તિ, ઉપસ્થ અસ્તિ, મેદૂં, નાભિ-કરૂ નાભિ, સાથળ નાભિ, સક્તિ વંક્ષણૌ વંક્ષણ, ગુદમ્ ચ અને ગુદાં અને ગુદા, અપાન-સ્થાનમ્ અપાનનાં સ્થાન છે અપાનવાયુકે સ્થાન છે, અન્ત્રસ્થઃ તેમજ આત્મનાં પણ અપાનનાં સ્થાન છે એવં આતેં સ્ત્રી અપાનકે સ્થાન છે, શુક્ર-મૂત્ર-તે શુક્ર, મૂત્ર વહ શુક્ર, મૂત્ર, શક્નિત્ત્વં ચ મળ મલ, આર્તવગર્ભૌ ચ આર્તવ અને ગર્ભને આર્તવ અને ગર્ભકો, સૂજતિ બહાર કાઢે છે બાહ્ય નિકાલતા છે, યુક્તાઃ પ્રકૃતિસ્થ પ્રકૃતિસ્થ, સ્થાનસ્થિતાઃ ચ અને પોતાનાં સ્થાનમાં રહેલાં હોય અને અપને સ્થાનમાં સ્થિત, તે તેઓ વે, સ્વકર્મ પોતાપોતાનાં કાર્ય અપને અપને કર્મ, કુર્વંતે કરે છે કરતે છે, તૈઃ અને તેઓથી અને તેઓ, દેહઃ દેહ દેહ, અનામયઃ નીરોગ નીરોગ રહતા હોય, ધાર્યંતે ધારણ કરવામાં આવે છે ધારણ ક્રિયા જાતા છે ॥૧૦-૧૧॥

10-11. The seats of the Apana-vata are the two testes, the bladder, the phallus, the umbilicus, thighs, groins, rectum and the lower part of the intestines. Its function is the elimination of the semen, urine, menstrual blood and fetus. If these five kinds of vata are normal and situated in their normal habitats, they perform their

functions properly and sustain the body in good health.

વિગુણવાતાનાં કાર્યમ્—

વિમાર્ગસ્થા હ્યયુક્તા વા રોગઃ સ્વસ્થાનકર્મજૈઃ ।  
શરીરં પીડયન્ત્યેતે પ્રાણાનાશુ હરન્તિ ચ ॥૧૨॥

વિમાર્ગસ્થાઃ વિમાર્ગસ્થ વિમાર્ગમાં સ્થિત અયુક્તાઃ વા અને વિકૃત અને વિકૃત, અને ઐઐ યે, સ્વસ્થાન-પોતાનાં સ્થાન અપને અપને સ્થાન, કર્મજૈઃ રોગઃ અને કર્મથી થતા રોગો વડે અને અપને કર્મજન્ય રોગો, શરીરમ્ શરીરને શરીરકો, પીડયન્તિ હિ પીડે છે પીડા પહુંચાતે છે, આશુ અને શીઘ્ર અને શીઘ્ર, પ્રાણા પ્રાણ પ્રાણોનો, હરન્તિ ચ હરી છે છે હર લેતે છે ॥૧૨॥

12. When these five kinds of vata move in the wrong directions and become deranged, they afflict the body with disease characteristic of the habitat and the functions of each of them and may also quickly take away the man's life.

સહ્યમપ્યતિવૃત્તાનાં તજ્ઞાનાં હિ પ્રધાનતઃ ।  
અશીતિર્નશ્વમેદાદ્યા રોગાઃ સૂત્રે નિર્દર્શિતાઃ ॥૧૩॥

તજ્ઞાનામ્ તેઓથી થતા તજ્ઞન્ય, સંલગ્નામ્ અપિ અતિવૃત્તાનામ્ અસંખ્ય રોગોમાંથી સંખ્યાસે અગિનિત રોગોમાં, પ્રધાનતઃ મુખ્યત્વે પ્રધાનત્વા, નશ્વમેદાદ્યાઃ નશ્વમેદાદિ નશ્વમેદાદિ, અશીતિઃ ઐશી અસ્તી રોગાઃ હિ રોગો રોગ, સૂત્રે સ્વસ્થાનમાં સૂત્રસ્થાનમાં, નિર્દર્શિતાઃ બતાવ્યા છે નિર્દિષ્ટ ક્રિયે, ગયે છે ॥૧૩॥

13. Though the diseases caused by these deranged vatas are innumerable, yet the eighty principal disorders headed by the splitting of nails etc., have been enumerated in the Section on General Principles.

૧૦. નાભ્યૂરૂ-બેળૂરૂ (ક.)

૧, શુક્રમૂત્રશક્નિત્ત્વં ચ-શુક્રમૂત્રશક્તિઃ (ખ.)

तानुच्यमानान् पर्यायैः सहेतुष्वकमाञ्जृणु ।

केवलं वायुमुद्दिश्य स्थानमेवातथाऽऽवृत्तम् ॥१४॥

स्थानदेदाव स्थानभेदोऽथ स्थानभेदं, केवलम् अवृत्त  
केवलं तथा तथा तथा आवृत्तम् आवृत्त (भिन्नत)  
आवृत्त, वायुम् वायुः वायुको द्वादेश्य उद्देश्ये उद्देश्य,  
सहेतूपकमान् निदानान्ते शिष्टिस्मादित निदान और  
चिकित्साके साथ, पर्याये पर्याये वरे पर्याये  
उच्यमानान् उद्देश्यम् अवृत्तं ज्ञेयं ज्ञेयं, तान्  
ते रोगेन जन रोगोक्तं, शृणु साधनैः सुतो ॥ १४ ॥

14. Now listen to the description of these disorders along with their synonyms, etiology and treatment, described with reference to vata alone, classified according to the seat of affection as well as the description of the conditions when vata is occluded.

वायुरोगाणां सामान्यनिदानं संपातिष्व...

रुक्षशीतादपलध्वन्नव्यथायातिप्रजागरैः ।

त्रिविधादुपचाराच्च दोषास्तुक्खवणादिति ॥३५॥

लङ्कनप्लवनात्यश्वव्याधामातिविशेषितैः ।

धातूनां संक्षयाच्चिन्ताशोकरोगातिकर्षणात् ॥१६॥

दुःखशय्यासनात् क्रोधादिवाक्स्पर्शादयादपि ।

वेगसंघारणाद्वासादभिघातादभोजनात् ॥१७॥

सर्मावाताद्गोष्ठाश्वशीघ्रयानापतंसनात् ।

देहे स्रोतांसि रिक्तानि पूरयित्वाऽनिलो बली ॥१८॥

करोति त्रिविधानं व्याधीन् सर्वाङ्गैकाङ्गसंश्रितान् ।

રક્ષ-શીત-રક્ષ, શીતળ રક્ષ, શીત, અલ્પ-લઘુ-  
 થોડું તથા થલુ અલ્પ ઔર લઘુ, અન્ન-ભોજન મોજન,  
 વ્યવાય-મૈથુન મૈથુન, અતિપ્રજાગરેઃ યદુ ઉજાગરઃ અતિ  
 જાગરણ, વિષમાત વિષમ વિષમ, ઉપચારાત ઉપચારોભી  
 ઉપચાર, અતિ ક્રોધ-અત્યુક્ત-સ્ત્રવણમ ચ અને દોષ તથા

[illegible]

15-18½. By a diet that is dry cold, scanty and light, by sexual excess excessive waking and wrongful treatment, by the excessive loss of waste-matter or blood, by excessive starvation swimming, wayfaring, exercise and other excessive activity; by the loss of body-elements, by excessive emaciation due to worry, grief and disease, by habitual use of uncomfortable beds and seats, by anger, day-sleep, fear, suppression of the natural urges, chyme-disorder,

१८. शीघ्रयाः नागतं सनात्-शीघ्रयाः नागतिसेवनात् (थ. फ.)

१९ संभितान्-संश्रयात् (थ.)

—संशयान् (फ.)







of the hands, back and head, lameness of hands and feet, hunch-back, atrophy of the limbs, insomnia, destruction of fertility, fetus and menses, tremors, anesthesia and paralysis of limbs, ticks of the muscles of the head, nose, eyes, shoulder, girdle and neck, splitting pain, pricking pain, agony, convulsions, delusion and fatigue—such are the general symptoms which the provoked vata manifests. On account of the difference in the etiological factors and in the seats of affection, it produces the specific characteristics of each disease.

कोष्ठे प्रकुपितस्य वातस्य लक्षणम्—

तत्र कोष्ठाश्रिते दुष्टे निग्रहो मूत्रवर्चसोः ॥२४॥  
ब्रह्महृद्रोगगुल्मार्शःपार्श्वशूलं च मासते ।

तत्र कोष्ठाश्रिते कोष्ठभां रहस्य कोष्ठाश्रित, मासते दुष्टे वायु इषित यत्ता वायुके दुष्ट होने पर, मूत्रवर्चसोः निग्रहः मूत्र अने मलनी अटकायत मूत्र और पुरीषकी रुकावट, ब्रह्म- अर्श- ब्रह्म, हृद्रोग- हृद्रोग, गुल्म- शुद्ध गुल्म, अर्शः- अर्श अर्श, पार्श्वशूलम् च अने पार्श्वशूल थाय छे और पार्श्वशूल होते हैं ॥२४॥

24-24½. If the vata, located in the abdomen, becomes vitiated, there occur retention of urine and feces, disorders of the inguinal and epigastric regions, Gulma, piles and pleurodynia.

सर्वाङ्गकुपितस्य वातस्य लक्षणम्—

सर्वाङ्गकुपिते वाते गात्रस्फुरणमञ्जने ॥२५॥  
वेदनाभिः परीतस्य स्फुटस्तीवास्य सम्बन्धः ।

२५. गात्रस्फुरणमञ्जने-गात्रस्फुरणमञ्जने (क.)

२५½. परीतस्य-परीतास्य (क. अ.)

वाते वायु वायुके, सर्वाङ्गकुपिते आभा शरीरभां इषित यत्ता सर्वाङ्गमें कुपित होने पर, गात्र- स्फुरण- अञ्जने। इरकाट थाय छे अंगोंमें स्फुरण होता है, मञ्जने तथा अञ्जने भाञ्जने छे तथा अंग टूटते हैं, वेदनाभिः अने रोगी वेदनाओधी और रोगी वेदनासे, परीतः च घेराई भाय छे व्याप्त होता है, सम्बन्धः तथा तेना साध्या तथा इसकी सम्बन्ध, स्फुटन्ति इव इटता अक्षुप्त छे फूटती हों ऐसा अनुभव होता है ॥२५॥

25-25½. If the vata pervading the entire body is provoked, there occur body tremors and breaking pain and the patient will be afflicted with all sorts of pains and with a feeling as if his joints are falling asunder.

गुदे प्रकुपितस्य वातस्य लक्षणम्—

ग्रहो विष्मूत्रकृतासां शूलाध्मानाश्मशर्कराः ॥२६॥  
अङ्गोदन्त्रिकपातपृष्ठरोगशोषौ गुदस्थिते ।

गुदस्थिते गुदस्थित वायु इषित यत्ता गुदाश्रित वायुके इषित होनेपर, विष्मूत्र- अञ्जो, पेक्षाण विष्ठा, मूत्र, वातानाश् अने अधोवायुनी और मलवायुकी, ग्रहः अटकायत रुकावट, शूल-आध्मान- शूल, आध्मान शूल, आध्मान, अश्मशर्कराः अश्मरी, शर्करा अश्मरी, शर्करा, अङ्गा-ऊर- पिंडी, साध्या अङ्गा, ऊर, त्रिक-पात- त्रिक, पञ्च त्रिक, पाद, पृष्ठ- अने पीठभां और पीठमें, रोग- शोषौ रोगी अने शोष भाय छे रोग तथा शोष होते हैं ॥ २६॥

26-26½. If the vata located in the rectal region is provoked, there occur the retention of feces, urine and flatus, colic, flatulence, formation of sand and stone, pain and atrophy in the region of the calves, thighs, pelvis and the back.

२६½. रोगशोषौ-रोगशोषाः (ब.)

२६. रोगशोषौ (ब.)

२६. रोगशोषौ गुदस्थिते-रोगशोषा गुदे स्थिते (ब.)

अमाशये प्रकुपितस्य वातस्य लक्षणम् —

हृत्तामिषाश्वोद्वरस्कृत्पणोद्गारविसृचिकाः ॥२७॥

कासः कण्ठास्यशोषश्च श्वासश्चापामाशयस्थिते

आमाशयस्थिते आमाशयस्थित वायु इषित यत्तां  
आमाशयस्थित वायुके दूषित होने पर, हृत्- नाभि- उदर,  
नाभि हृदय, नाभि, पार्श्व- उदर- पृष्ठां अने पैठभां  
पार्श्व और उदरमें, स्कृ- पीडा पीडा, तृषा- उद्गार-  
तरस, ओउडार तृषा, उद्गार, विसृचिकाः विमुचिका विसृ-  
चिका, कासः कास कास, कण्ठास्यशोषः च गणुं तथा  
भां सूक्ष्मां कण्ठाशोष तथा मुखशोष, श्वासः च अने  
श्वास थाय छे और श्वास डोते हैं ॥२७॥

27-27½. If the vata located in the stomach is provoked, there occur pain in the regions of the pericardia, umbilicus, sides and the stomach, thirst, eructations and acute gastro-intestinal irritation, cough, parching of the throat and mouth, and dyspnea.

पकाशये प्रकुपितस्य वातस्य लक्षणम्—

पकाशयस्योऽन्त्रकूजं शूलाटोपौ करोति च ॥२८॥

कृच्छ्रमूत्रपुरीषत्वमानाहं त्रिकवेदनाम् ।

ओत्रादिष्विन्द्रियवधं कुर्यादुष्टसमीरणः ॥२९॥

पकाशयस्यः पकाशयभां रहेल पकाशयमें स्थित,  
दुष्टसमीरणः दुष्ट वायु दुष्ट वायु, अन्त्रकूजम् अन्त्रकूजन  
अन्त्रकूजन, शूलाटोपौ च शूल, आटोप शूल, आटोप,  
कृच्छ्रमूत्रपुरीषत्वम् मूत्र तथा मणुं कृच्छ्री आवतुं मूत्र  
तथा पुरीषका कष्टसे आना, आनाहम् आनाह आनाह,  
त्रिकवेदनाम् तथा त्रिकणी वेदना तथा त्रिककी वेदना,  
करोति च ओ रोगो करे छे इन रोगोंको करता है,  
ओत्रादिषु अने डान वजेरेभां दुष्ट वायु और ओत्रा-  
दिमें दुष्ट वायु, इन्द्रियवधम् इन्द्रियोना वध इन्द्रियोंका  
वध, कुर्यात् करे छे करता है ॥ २८-२९ ॥

28-29. If the vata located in the colon is provoked, there occur gurgling, colic, meteorism, difficulty in micturition and defecation, constipation and pain in the pelvic region. The vata provoked in the sense-organs, such as the ears etc., impairs or destroys the sensory functions.

त्वचि प्रकुपितस्य वातस्य लक्षणम्—

त्वयूक्षा स्फुटिता सुप्ता कृशा कृष्णा च तुद्यते ।

आतन्यते सरागा च पर्वरुक् त्वक्स्थितेऽनिले ॥३०॥

त्वक्स्थिते आभडीभां रहेल त्वगाश्रित, अनिले  
वायु इषित यत्तां वायुके दूषित होने पर, त्वक् रुक्षा  
आभडी रक्ष त्वक् रुक्ष, स्फुटिता स्फुटी फटी हुई,  
सुप्ता स्पर्शज्ञान विनानी सुप्त, कृशा पातणी कृश,  
कृष्णा काली काली, तुद्यते तथा सेय बोझाया नेवी  
पीडायाणी थाय छे तथा तोदयुक्त होती है, आतन्यते  
नणी ते भे थाय छे फिर वह तन जाती है, सरागा च  
स्ताशवाणी थाय छे लालीयुक्त होती है, पर्वरुक् च तथा  
पर्वोभां पीडा थाय छे तथा पर्वोमें दर्द होता है ॥ ३० ॥

30. If the vata pervading the skin gets provoked, the skin gets dry, fissured, numb shrivelled and black, and feels pricking sensation. It becomes stretched and reddened, and there occurs pain in the joints.

असृजि प्रकुपितस्य वातस्य लक्षणम्—

रजस्तीव्राः ससंतापा वैवर्ण्यं कृशताऽरुचिः ।

गात्रे चारुषि भुक्तस्य स्तम्भश्चासृगतेऽनिले ॥३१॥

असृगते रक्तगत रक्तगत, अनिले वायु इषित यत्तां  
वायुके दूषित होने पर, तीव्राः तीव्र तीव्र, ससंतापाः  
संतापयुक्त सन्तापयुक्त, रजः पीडा पीडा, वैवर्ण्यम्  
विवर्णता विवर्णता, कृशता दुर्भणता कृशता, अरुचिः

અરુચિ અરુચિ ગાત્ર અરુચિ ચ ગાત્ર ઉપર ફેડીએ શરીર પર ફુલિયાં, મુક્તસ અને ખાધેલા અન્નની જોરે ખાધે હુએ અન્નકો, સ્વસ્થઃ ચ બદલાય થાય છે રુકાવટ હતી છે ૩૧ ૬

31. If the vata located in the blood gets provoked, there occur acute pain, burning, discoloration, emaciation, anorexia, rashes on the body, and spasticity of limbs after meals.

માંસમેદોગતે પ્રકુપિતસ્ય વાતસ્ય લક્ષણમ્—

ગુર્વક્રં તુલ્યતેડત્યર્થે દણ્ડમુષ્ટિહતં તથા ।

સરુક્ શ્રમિતમત્યર્થે માંસમેદોગતેડનિલે ॥૩૨॥

માંસમેદોગતે માંસ અને મેદોગત માંસ જોર મેદોગત. અનિલે વાયુ દૂષિત થતાં વાયુકે દૂષિત હોને પ, અન્નમ્ ગુરુ અંગેમાં ગુરુતા થાય છે અંગ મારી હોતે હૈ, અત્યર્થમ્ અતિશય અત્યન્ત, તુલ્યતે વ્યથા થાય છે તોદ હોતા હૈ, દણ્ડમુષ્ટિહતમ્ અને જેમ લાકડી કે મુક્કી મારવાથી અધિક પીડા તથા શ્રમ થાય છે તેમ જૈસે દણ્ડ વા મુક્કિયાં મારનેસે અધિક પીડા તથા શ્રમ હોતે હૈ વૈસે, અત્યર્થમ્ અતિશય અત્યન્ત, સરુક્ પીડા વેદના. શ્રમિતમ્ તથા થાક બહુાય છે તથા થકાવટ માલુમ પડતી હૈ ॥ ૩૨ ॥

32. If the vata located in the flesh and fat gets provoked, there occur heaviness of the body, severe aches as if the body had been beaten with a cudgel or fist cuffs, pain and extreme exhaustion.

મજ્જાસ્થનોઃ પ્રકુપિતસ્ય વાતસ્ય લક્ષણમ્ —

મેદોડસ્થિપર્વણાં સન્નિધશૂલં માંસબલક્ષયઃ ।

અસ્થમ્ સંતતા રુક્ ચ મજ્જાસ્થિકુપિતેડનિલે ॥૩૩॥

મજ્જાસ્થિકુપિતે અનિલે મજ્જા અને અસ્થિયત વાયુ દૂષિત થતાં મજ્જા જોર અસ્થિમે સ્થિત વાયુકે

૩૨. તંબા-વંચા (જ.)

,, અસ્તિમરશર્વ-સિમિતમરશર્વ (પ. ક.)

દૂષિત હોને પર. અસ્થિપર્વણામ્ હાડકાં અને પર્વોને। અસ્થિ જોર પર્વોમે, મેદઃ મેદઃ મેદઃ, સન્નિધશૂલમ્ સાંધા-ઓમાં શૂલ સંધિયોમે શૂલ, માંસ-બલ-માંસ અને અલનો માંસ જોર બલકા, ક્ષયઃ ક્ષય ક્ષય, અસ્થમઃ અંધનો નાશ નિદ્રાનાશ, સંતતા અને સતત જોર સતત. રુક્ ચ પીડા થાય છે વેદ - વેદની છે ૩૩ ૧

33. If the vata located in the bone and bone-marrow gets provoked, there occur breaking pain in the fat, bones and joints, arthralgia, loss of flesh and strength, loss of sleep, and constant pain.

શુક્રસ્થસ્ય પ્રકુપિતસ્ય વાતસ્ય લક્ષણમ્—

શ્ચિન્નં મુઞ્ચતિ વદ્ધાતિ શુક્રં ગર્ભમયાપિ વા ।

વિકૃતિં જનયેન્ધાપિ શુક્રસ્થઃ કુપિતોડનિલઃ ॥૩૪॥

શુક્રસ્થઃ શુક્રસ્થ શુક્રગત, કુપિતઃ દૂષિત દૂષિત, અનિલઃ વાયુ વાયુ, શુક્રમ્ શુક્રનું શુક્ર. અથ અપિ ગર્ભમ્ તથા ગર્ભનું તથા ગર્ભકા, શ્ચિન્નં મુઞ્ચતિ શીઘ્ર પતન કરે છે શીઘ્ર છાવ કરતા હૈ, વદ્ધાતિ વા કે તેઓની અટકાયત કરે છે વા અનેકો રોક વેતા હૈ, વિકૃતિમ્ અપિ ચ અને વિકૃતિ પણ જોર વિકૃતિ મી, જનયેન્ પેદા કરે છે उत्पन्न करता है ॥ ૩૪ ॥

34. If the vata located in the secretory system is provoked, there occur either the premature expulsion or undue retention of the semen or of the fetus or causes deformity to the fetal body.

સ્નાયુગતસ્ય પ્રકુપિતસ્ય વાતસ્ય લક્ષણમ્—

વાહ્યાભ્યન્તરમાયામં સહિં કુજ્જત્વમેવ ચ ।

સર્વાઙ્ગેકાઙ્ગરોગાંશ્ચ કુર્યાત્ સ્નાયુગતોડનિલઃ ॥૩૫॥

સ્નાયુગતઃ સ્નાયુગત સ્નાયુગત, અનિલઃ દૂષિત વાયુ દૂષિત વાયુ, વાહ્યાભ્યન્તરમ્ બાહ્ય અને આભ્યન્તર વાહ્ય જવા આભ્યન્તર, આવાયમ્ આયામ આયામ, સહિં અસ્થિ સહિ, કુજ્જત્વમ્ ઘન ચ કુજ્જત્વમ્

कुवडापन, सर्वज्ञ-मुका- अने भुवंग तथा ओकांग और सर्वीय तथा एभक, रोमान् च रोमो रोगोको, कुर्यात् करे छे करता छे ॥ ३५ ॥

35. If the vata located in the sinews is provoked, there occur the opisthotonus and emprosthotonus conditions, pain in the extremities, hunch-back and general or local disorders.

सिरागतस्य प्रकुपितस्य वातस्य लक्षणम्—

शरीरं मन्दरुक्कोफं शुष्यति स्पन्दते तथा ।  
सुप्तास्तन्व्यो मृहस्यो वा सिरा वाते सिरागते ॥३६॥

सिरागते प्रसृजत सिरागत, वाते वायु दूषित भता वायुके दूषित होने पर शरीरम् शरीर देह, मन्दरुक्-कोफम् थोड़ी पीडा तथा थोड़ा सौम्यवाणुं थाय छे मंद वेदना और थोड़ी सूजनवाला होना है, शुष्यति सूखाय छे सूख जाता है, तथा स्पन्दते तथा कम्पे छे और कांपता है, सिराः सुप्ताः अने सिरायां स्पन्दन-रहित और सिराये स्पन्दनरहित, तन्व्यः पातली पतली, मृहस्यः वा छे भोली थाय छे या बड़ी हो जाती हैं ॥३६॥

36. If the vata located in the vessels is provoked, there occur mild pain and edema all over the body, atrophy, throbbing, loss of pulsation and contraction or dilatation of the vessels.

सन्धिगतस्य प्रकुपितस्य वातस्य लक्षणम्—

वातपूर्णदतिस्पर्शः शोथः सन्धिगतेऽनिले ।  
प्रसारणाकुञ्चनयोः प्रवृत्तिश्च सवेदना ॥३७॥  
(इत्युक्तं स्थानमेवेन वायोर्लक्षणमेव च ।)

३६. शरीरं मन्दरुक्कोफं—मन्दरुक्कोफं वाक् (फ.)

,, तथा-अपि वा (व.)

३७. प्रवृत्तिश्च-अप्रवृत्तिः (व.)

-निवृत्तिश्च (व.)

सन्धिगते सन्धिगत सन्धिगत, अनिले वायु दूषित भता वायुके दूषित होने पर, वातपूर्ण- वायुपूर्ण वायुपूर्ण, दतिस्पर्शः मशकना स्पर्श नेना स्पर्शवाणे। मशकके समान स्पर्शयुक्त, शोथः सौम्य शोथ, सवेदना तथा वेदनायुक्त एवं वेदनायुक्त, प्रसारण- प्रसारण प्रसारण, आकुञ्चनयोः अने आकुञ्चनयी और आकुञ्चनी, प्रवृत्तिः च प्रवृत्ति थाय छे प्रवृत्ति होती है ॥ ३७ ॥ इति आम् इस प्रकार, स्थानमेवेन स्थानना भेदे प्रमाणे स्थानमेवेन, वायोः वायुना वायुके, लक्षणम् लक्षणम् लक्षणम्, उक्तम् एव च उक्तां छे कहे गये हैं ।

37. If the vata located in the joints is provoked, there occur the swelling of the joints which feed on palpation as if they were bags inflated with air and the movements of extension and flexion are accompanied with pain. (Thus have been described the signs and symptoms of morbid vata, classified according to the various parts of the body.)

अतिस्य लक्षणम्—

अतिवृद्धः शरीरार्धमेकं वायुः प्रपद्यते ।  
यदा तदोपशोष्यासृग्बाहुं पादं च जानु च ॥३८॥  
तस्मिन् सङ्कोचयत्यर्धं मुखं जिह्वं करोति च ।  
वक्रीकरोति नासाभ्रूललाटाक्षिह्नूस्तथा ॥३९॥

अतिवृद्धः वायुः अतिशय वधेक्षे वायु अत्यन्त बड़ा हुआ वायु, यदा न्तरे जब, एकम् शरीरार्धम् शरीरना ओक अधी भागभा देहके एक अर्ध भागको, प्रपद्यते प्राप्त थाय छे आक्रांत करता है, तदा न्तरे तब, तस्मिन् अर्धे ते अर्धभागभा उस अर्धभागमें, असृग्-बाहुम् थोड़ी, हाथ रक्त, बाहु, पादम् च पग पैर, जानु च अने ठीयलुने और घुटनेको, उपशोष्य थोड़ी लई सुखाकर, सङ्कोचयति सङ्कोचे छे संकुचित करता है, मुखम् च अने मोहने और मुचको, जिह्वम् नाक देह, करोति करे छे कर देता है, तथा तथा तथा,

નાભા-અ- નાક, બમર નાસિયા, મોઢે, લલાટ-અક્ષિ-  
કપાળ, આંખ લલાટ, નેત્ર, હનુઃ અને હનુને તથા હનુકો,  
વક્રીકરોતિ વાકા કરે છે ટેકે કર દેતા હૈ ॥૩૮-૩૯॥

38-39 If the excessively increased  
vata affects one half of the body, it dimi-  
nishes the blood in the arms, feet and  
knees and causes contraction of these  
parts. It causes distortion of one side  
of the face and produces asymmetry  
of the nose, eye-brow, forehead, eye  
and jaw.

તતો વક્રં વ્રજત્યાસ્યે ભોજનં વક્રનાસિકમ્ ।  
સ્તબ્ધં નેત્રં કથયતઃ ક્ષવથુઃ નિગૃહ્યતે ॥૪૦॥  
દીના જિહ્વા સમુત્થિષ્ઠા કલા સજ્જતિ ચામ્પ વાક્ ।  
દન્તાશ્ચલન્તિ વાધ્યેતે શ્રવણૌ મિથ્યતે સ્વરઃ ॥૪૧॥  
પાદહસ્તાક્ષિજ્ઞોરશ્ચક્રશ્રવણગण्डरुक् ।  
अर्थे तस्मिन्मुखायै वा केवले आसत्तर्दितम् ॥४२॥

તતઃ તેથી ઇસે, આસ્યે મોઢામાં મુખમાં, ભોજનમ્  
ભોજન ભોજન, વક્રમ્ વ્રજતિ વક્ર થઈને બધા છે  
ટેકા હોકર જાતા હૈ, કથયતઃ બોલતી વખતે  
વાત કરતે સમય, વક્રનાસિકમ્ નાક વાકું નાસિકા  
ટેકી, નેત્રમ્ તથા નેત્રો તથા નેત્ર, સ્તબ્ધમ્ સ્તબ્ધ થાય  
છે સ્તબ્ધ હો જાતે હૈ, ક્ષવથુઃ ચ અને છીકે ઓર  
છીક, નિગૃહ્યતે રોકાઈ બધા છે રુક જાણી હૈ, અસ્ય  
વાક્ તેની વાણી, ઉસકી વાણી, દીના જિહ્વા દીન, વાકી  
દીન, વક્ર, સમુત્થિષ્ઠા અતિ ઝડપવાળી અતિ શીઘ્રતાવાળી,  
કલા તેમજ અભ્યક્ત થાય છે એવં અવ્યક્ત હોતી હૈ, સજ્જતિ  
ચ અને બોલતાં રોકાઈ બધા છે ઓર બોલતે સમય રુક  
જાતી હૈ, દન્તાઃ દાંત દાંત, અલન્તિ હલે છે હિલતે

૪૦. વ્રજત્યાસ્યે-વ્રજત્યાસ્ય (ફ)

,, વક્રનાસિકમ્-વક્રદર્શનઃ (ક. વ. ષ)

૪૧. સમુત્થિષ્ઠા કલા-સમુત્થિષ્ઠાકલા (વ)

,, કલા-કલા (ક.)

,, ,, -અવકા (ધ. ફ)

,, ,, -અવકા (ધ. ફ.)

૪૨. પાદહસ્તાક્ષિ-પાદહસ્તાક્ષિ (ક. ષ.)

હૈ, શ્રવણૌ કાન કાન, વાધ્યેતે વેત્તું કામ કરના  
નથી અપના કામ તરી કરતે, સ્વરઃ મિથ્યતે અપ્રભેદ થાય  
છે સ્વરભેદ હો જાતા હૈ, પાદ-હસ્ત અને પગ હાથ ઓર  
પેર, હાથ, અક્ષિ-જઙ્ઘા-અંગુળ પિંડી પાંચ અંગુળ, અન્તરાયામ-  
આંતરાયામ, શ્રવણ-ગण्ड, શ્રવણ-ગण्ड, કાન તથા ગण्डમાં,  
કાન તથા ગण्डમાં, રુક્ પીડા થાય નીકા હોતી હૈ,  
તસ્મિન્ આ લક્ષણે તે વે કલ્પા ઉપ, અર્થે અર્થો  
શરીરમાં આથે શરીરમાં, કેવલે વે સંપૂર્ણ વા સંપૂર્ણ,  
મુખાર્થે વા અર્થમાં, મોઢામાં હૈ, તે વે અથવા  
આથે મુખમાં હોતો, તથા તે વક્ર, અર્થિત્વમ્ અર્થિત અર્થિત,  
સાત કહેવાય છે કરા જાતા હૈ ॥૪૦-૪૧॥

40-42. The food, instead of going  
straight goes into one side of the  
mouth. While speaking, the nose gets  
curved the eyes remain rigid and wink-  
less and the sneeze gets suppressed.  
His speech is faint distorted stuttery,  
indistinct and thick. His teeth get  
shaky; there is pain in his ears and  
his voice is broken; there is pain in  
his feet hands eyes, calves, thighs  
temples ears and cheeks. This condi-  
tion, whether it occurs in association  
with paralysis of half the body or  
occurs by itself, that is, affecting the  
face only, is called facial paralysis.

અન્તરાયામસ્ય લક્ષણમ્—

મન્યે સંશ્રિત્ય વાતોઽન્તર્યદા નાડીઃ પ્રપચતે ।  
મન્યાસ્તમ્મં તદા કુર્યાન્તરાયામર્સજિતમ્ ॥૪૩॥

યદા વાતઃ બ્યારે વાયુ જબ વાયુ, મન્યે બન્ને  
મન્યાઓમાં દોનો મન્યાઓના સંશ્રિત્ય આશ્રય કરીને  
આશ્રય કરકે, અન્તઃ નાડીઃ અંતર્નાડીમાં અન્તર્નાડીઓમાં,  
પ્રપચતે પ્રાપ્ત થાય છે પહુંચ જાતા હૈ, તદા ત્યારે તથ,  
અન્તરાયામર્સજિતમ્ અંતરાયામ નામના અન્તરાયામ  
નામકે, મન્યાસ્તમ્મમ્ મન્યાસ્તમ્ બને મન્યાસ્તમ્મકો,  
કુર્યાવ કરે છે કરતા હૈ ॥ ૪૩ ॥

43. If that vata, getting localised in the side of the neck, spreads into the internal channels, it will cause spasticity of the neck. It is called Antarayama (emprosthotonous condition).

अन्तरायम्यने ग्रीवा मन्या च स्तम्यते भृशम् ।  
दन्तानां दंशनं लाला पृष्ठायामः शिरोग्रहः ॥४४॥  
जृम्भा वदनसङ्ग्राप्यन्तरायामलक्षणम् ।  
( इत्युक्तस्त्वन्तरायामो )

ग्रीवा अन्तः गरदन अंदरनी आधु गरदन मीत-  
रकी ओर, आयम्यते येथाय छे खींच जाती है,  
मन्या च अने मन्या और मन्या, भृशम् अहु अ  
अत्यन्त, स्तम्यते स्तम्भ आय छे स्तब्ध हो जाती है,  
दन्तानां दंत दाँत, दंशनम् डटडटावे छे कटकटाता है,  
लाला लाण अरे छे लालाजाव होता है, पृष्ठायामः पीठ  
अधर उपरी आवे छे पीठ पीछे उभर आती है,  
शिरोग्रहः माथुं अड्डाय छे सिर जकड़ा जाता है जृम्भा  
अगासी आवे छे जम्माई आती है वदनसङ्गः अने मुण  
अंध अर्ध अय छे और मुख नहीं खुलता, एतद् अये मे,  
अन्तरायाम- लक्षणम् अन्तरायामनी लक्षण छे अन्तरा-  
यामके लक्षण हैं, इति आ यह अन्तरायामः अन्तरा-  
याम अन्तरायाम, उक्तः उक्थो छे कहा गया हैं ॥४४॥

44-44½. The upper and lower part of the neck becomes flexed and very stiff, the teeth become clenched; there is salivation, contraction of the back-muscles and spasm of the muscles of the head; pendiculation and lock-jaw;

४४. अन्तरायम्यने-अन्तरायम्यते (ड.)

४४. दन्तानां दंशनं.....शिरोग्रहः-दन्तानां दंशनं लाला  
पृष्ठाक्षेपशिरोग्रहः (थ.)

„ दंशनम्-दंशनम् (क.)

„ पृष्ठायामः-पृष्ठाक्षेपः (क. घ. ङ त. थ. व.)

„ शिरोग्रहः-शिरोरुद्धा (फ.)

४४½. वदन-वचन (ड.)

these are the symptoms of 'Antarayama' (emprosthotonous condition).

बहिरायामस्य लक्षणम्—

बहिरायाम उच्यते ॥४५॥ )  
पृष्ठमन्याश्रिता बाह्याः शोषयित्वा सिरा बली ।  
वायुः कुर्यादनुस्तम्भं बहिरायामसंज्ञकम् ॥४६॥

बहिरायामः इवे अहिरायाम अब बहिरायाम,  
उच्यते उक्थेवामा आवे छे कहा जाता है, बली वायुः  
अक्षयान वायु बलवान वायु, पृष्ठमन्याश्रिताः पीठ अने  
मन्यामां रहेली पीठ और मन्यामें आश्रित, बाह्याः  
सिराः आधु शिराओंने बाहरकी ओरकी सिराओंके,  
शोषयित्वा शोषीने सुखाकर, बहिरायाम- संज्ञकम्  
अहिरायाम नामने बहिरायाम नामके, अनुस्तम्भम्  
धनुस्तम्भ धनुस्तम्भको, कुर्यात् करे छे करता है  
॥ ४५-४६ ॥

45-46. 'Bahirayama' i.e. opisthotonous condition, will now be described. The strongly provoked vata, getting localised in the back and the sides of the neck and constricting the external vessels, causes bow-like rigidity of the body which condition is called Bahirayama or opisthotonous condition.

चापवन्मान्मन्मासन्म पृष्ठतो नीयते शिरः ।

उर उक्लिप्यते मन्या स्तब्धा ग्रीवाऽवमृद्यते ॥४७॥

दन्तानां दंशनं जृम्भा लालास्रावश्च वाग्ग्रहः ।  
जातवेगो निहन्त्येष वैकर्यं वा प्रयच्छति ॥४८॥

चापवद् धनुषी पेठे चापकी भांति, नाम्यमानस्य  
नभावाता इरीतुं देहको नमाकर शिरः माथुं सिर,  
पृष्ठतः अरु तरु पीठकी ओर, नीयते ऊड़ी अय छे

४६. वायुः कुर्यादनुस्तम्भं-श्रितः कुर्यादनुस्तम्भं (ख. ड.)

„ वायुः-वतः (घ)

४७. नीयते-हियते (फ.)

„ अवमृद्यते-व मृद्यते (ङ)

झुक जाता है, उरः छाती छाती, अधिक्षिप्यते ज्ञेये आदे  
छे ऊंची उठती है, मन्था मन्थ मन्था, स्तब्ध स्तब्ध  
थाय छे स्तब्ध हो जाती है, ग्रीवा गर्दनभा गर्दनमें,  
अवसृजते अवमर्दन थाय छे मर्दनवत् पीड़ा होती है,  
दन्तानाख दन्ति दाँतोंको, दशनक उठाने छे कि-  
कटाता है, जुम्भा भगामा आवे छे जम्भाई होती है,  
लालास्रावः क्षाण अरे छे लालास्राव होता है, वाग्महः  
च अने वाष्पी रोकः अथ छे और बाणीकी रुकावट  
होती है, जातवेगः वेग अवसृजते वेगके उत्पन्न होने  
पर, एषः निहन्ति आ रोग भारी नाभे छे यह रोग  
मार डालता है, वैकल्पिक वा अथवा तो विकल्पा या  
तो विकलता, प्रयच्छति पैदा करे छे पैदा करता  
है ॥ ४७-४८ ॥

47-48. The body being bent like a bow, his head gets retracted almost touching his back and his chest is thrown forward, the sides of the neck become rigid and there is squeezing pain in the neck and clenching of teeth, salivation and aphasia. This attack either kills the patient or causes deformity.

हनुग्रहस्य लक्षणम्—

हनुमूले स्थितो बन्धात् संसृत्यनिलो हनु ।  
विवृतास्यत्वमथवा कुर्यात् स्तब्धमवेदनम् ॥४९॥  
हनुग्रहं च संस्तम्भ हनुं(नू)संवृतवक्त्रताम् ।

हनुमूले हनुना भूणभा हनुमूलमें, स्थितः रहेदे।  
स्थित, अतिलः वायु वायु, हनु हनुने हनुको, बन्धात्  
बंधभांथी बन्धसे, संसृत्यति अरुडावे छे स्यावष्ट कर  
देता है, विवृतास्यत्वम् अने भौं पहेणुं करे छे ओम  
पहेली जतना हनुग्रहने करे छे और मुख खुला कर देता  
है इस तरह पहले प्रकारके हनुग्रहको करता है, अथवा  
हनुम् अथवा हनुने अथवा हनुको, संस्तम्भ स्तब्ध  
करी स्तम्भित करके, संवृतवक्त्रताम् भौं दुं अंध करे छे

४९. स्तब्धमवेदनम्—संवृतमानसम् (ड. त. ४)

५०. हनुं—हनु (फ.)

अथ मुंह बन्द कर देता है इस तरह, स्तब्धम् स्तब्ध  
स्तब्ध, अवेदन अने वेदन विनाश और वेदन  
बिनाके, हनुग्रहं च प्लीख प्रकारना हनुग्रहने दूसरे  
प्रकारके हनुग्रहको, कुर्यात् करे छे करता है ॥ ४९ ॥

49-50. The vata, when it gets localised at the root of the jaws causes dislocation of the jaws and produces the condition of a gaping mouth or a painless, stiff condition where the mouth cannot be closed. By causing spasticity of the jaw, it produces a condition of lock-jaw, when the mouth becomes fixed and cannot be opened.

आक्षेपकस्य लक्षणम्—

मुहुःप्रक्षिपति कुक्षो मासाण्याक्षेपकोऽक्षिलः ॥५०॥  
पक्षिणां च संक्षेप सिराः खञ्जापृक्कण्डराः ।

कुह कुपिद कुपित, क्षिलः वायु वायु, पाणि-  
पादस्य क्षय पक्ष हाथ पै, खञ्जापृक्कण्डराः अने  
स्नायु तथः उडान्छेसहित और खानु तथा कण्ड-  
राओंके नाथ, सिराः च सिराओंके सिगओंको, संक्षेप  
शेष्ठीने सुखकर, मुहुः पात्राणि गात्रेने बारबार  
अक्षोंको बारबार, आक्षिपति जेथे छे आक्षिप करत है,  
आक्षेपकः ते आक्षेपक उडेत्य छे इसे आक्षेपक कहते  
हैं ॥ ५० ॥

50-50. That condition is called Akshepaka or spasmodic contraction, where the provoked vata, constricting the muscles of the hands and feet together with vessels, sinews and tendons, causes frequent spasmodic contractions.

दण्डकस्य लक्षणम्—

पाणिपादक्षिरःपृष्ठभोक्षीः स्तब्धति शालनः ॥५१॥  
दण्डकस्तब्धगमनस्य दण्डकः सोऽनुपक्रमः ।

५१. स्तब्धति शालनः—स्तब्धतेऽक्षिलः (फ.)



મારુતઃ અપારે વાયુ જવ વાયુ, પાણિ-પાદ- હાથ પગ હાથપૈર, શિરઃ-પૃષ્ઠ- માથું, પીઠ શિર, પૃષ્ઠ, શ્રોણીઃ અને શ્રીણીને ઔર શ્રોણીકો, સ્તમ્ભાતિ અક્કડ કરી દે છે સ્તમ્ભિત કરતા છે, દળ્ઘવત્ ત્યારે દંડ બેવા તબ દળ્ઘકી તરહ, સ્તબ્ધગાત્રસ્ય અક્કડ ગાત્રવાળાના તે રોગને સ્તબ્ધ ગાત્રવાળે ઉત્ત રોગનો, દળ્ઘકઃ દંડક બહુવેલો દળ્ઘક જાને, સઃ તે વહ, અનુપક્રમઃ અસાધ્ય છે અસાધ્ય છે ॥ ૫૧૧ ॥

51-51½. That is called staff-like rigidity or tonic contraction of the muscles, where the vata causes tonic rigidity of muscles of the hands, feet, head, back and hips, so that the body becomes as rigid as a staff. This condition is irremediable.

અર્દિતાવીનાં સમાનં લક્ષણમ્—

સ્વસ્થઃ સ્યાદર્દિતાવીનાં મુહુર્વેગે ગતેડગતે ॥ ૫૨ ॥  
પીડ્યતે પીડનૈસ્તૈસ્તૈર્ભિષગેતાન્ વિવર્જયેત્ ।

અર્દિતાવીનાં અર્દિત આદિના અર્દિત આવિકે, મુહુઃ વેગે વારંવાર આવતા વેગે વારંવાર આતે વેગેકે, ગતે બતા રહેતાં ચલે જાને પર, સ્વસ્થઃ સ્યાત્ દરદી સ્વસ્થ થાય છે દરદી સ્વસ્થ હો જાતા છે, અગતે અને શાંત ન થતાં વેગેકે બને રહને પર, તૈઃ તૈઃ તે તે ઉન ઉન, પીડનૈઃ પીડાઓથી પીડાઓસે, પીડ્યતે પીડાય છે પીડિત રહતા છે, ભિષગ્ વૈષે વૈષ, एतान् તેઓને અન્હે, વિવર્જયેત્ ત્યાગ કરવો છોડ દે ॥ ૫૨ ॥

52-52½. When the force of the paroxysm is gone in the above condition, the patient returns to normal. If the paroxysm does not leave, the patient gets afflicted with pain and other characteristics peculiar to the

૫૨. મુહુર્વેગે ગતેડગતે—પૂર્વવેગે ગતેડનિલે (ખ.)

,, ,, —પૂર્વવેગગતેડનિલે (ફ. બ.)

,, ,, —મુહુર્વેગગતે ગતે (ક. ડ. ત. બ. ફ.)

lesions Physicians should regard this condition as incurable.

एकाङ्गरोगस्य सर्वाङ्गरोगस्य च लक्षणम्—

हृत्वेकं मारुतः पक्षं दक्षिणं वाममेव वा ॥ ૫૩ ॥  
कुर्याच्छेष्टानिवृत्तिं हि रुजं वाक्स्तम्भमेव च ।  
गृहीत्वाऽर्धं शरीरस्य सिराः स्नायूर्विशोष्य च ॥ ૫૪ ॥  
पादं संकोचयत्येकं हस्तं वा तोदशूलकृत् ।  
एकाङ्गरोगं तं विद्यात् सर्वाङ्गं सर्वदेहजम् ॥ ૫૫ ॥

મારુતઃ વાયુ વાયુ, દક્ષિણમ્ શરીરના જમણા શરીરકે દક્ષિણ, વામમ્ એવ વા કે ડાબા યા વામ, પક્ષમ્ એક પક્ષને। એક પક્ષકો, હૃત્વા વધ કરીને આક્રાન્ત કરકે, ચેષ્ટાનિવૃત્તિમ્ તેની ચેષ્ટાને બંધ કરે છે ઉસકી ચેષ્ટાકો બન્દકર દેતા છે, રુજમ્ તથા પીડા તથા પીડા, વાક્સ્તમ્ભમ્ એવ ચ અને વાણીનું સ્તંભન ઔર વાણીસ્તમ્ભ, કુર્યાત્ હિ કરે છે કર દેતા છે, શરીરસ્ય વળી તે શરીરના ફિર વહ શરીરકે, જર્ધમ્ અર્ધી ભાગનું આધે ભાગકો, ગૃહીત્વા ગ્રહણ કરી પકડ કર, સિરાઃ સ્નાયુઃ શિરા તથા સ્નાયુઓને સિરા ઔર સ્નાયુઓકો, વિશોષ્ય ચ શોષીને સુષ્કાકર, એકમ્ હસ્તમ્ એક હાથ એક હાથ, પાદમ્ વા કે એક પગને। યા એક પૈરકો, સંકોચયતિ સંકોચ કરે છે સંકુચિત કર દેતા છે, તોદશૂલકૃત્ તેમજ તોદ અને થલ કરે છે એવં તોદ ઔર શૂલકો કરતા છે, તમ્ તેને ઉસકો, એકાઙ્ગરોગમ્ એકાંગ રોગ એકાંગ રોગ, સર્વદેહજમ્ અને આખા દેહને દબાવનારા વાયુને ઔર સર્વદેહકો આક્રાન્ત કરનેવાલે વાયુકો, સર્વાંગમ્ સર્વાંગ રોગ સર્વાંગ રોગ, વિદ્યાત્ બહુવેલો જાને ॥ ૫૩-૫૫ ॥

53 55. That condition is called hemiplegia or paralysis of one side of

૫૪. કુર્યાન્નિવૃત્તિમ્ હિ—ચેષ્ટાનિવૃત્તિમ્ કુરુતે (ફ.)

,, વાક્સ્તમ્ભમેવ ચ—વાક્સ્તમ્ભમેવ ચ (બ.)

,, ગૃહીત્વાર્ધં શરીરસ્ય—ગૃહીત્વાર્ધં શરીરાર્ધં (ક.)

૫૫. શૂલકૃત્—શૂલકૃત્ (ડ.)

,, એકાઙ્ગરોગં....સર્વદેહજમ્—એકાઙ્ગરોગં તં વિદ્યાત્વનાત્ કુશળો મિષક્ । સર્વાઙ્ગરોગં તદ્વચ સર્વદેહાનુમેડનિલે ॥ (ખ.)

the body where the morbid vata seizing the vessels, controlling the function of the side of the body and constricting the sinews, afflicts the right or the left half of the body producing loss of movement, pain and loss of speech. That condition is to be known as the lesion of one limb 'Monoplegia' where a single foot or a single hand gets contracted and afflicted with aching and pricking pain. And that condition is called the lesion of the whole body where the entire body is affected.

गृध्रस्याः लक्षणम्—

स्फिकपूर्वा कटिपृष्ठोरुजानुजङ्घापदं क्रमात् ।  
गृध्रसी स्तम्भरुकोदैर्गृह्णाति स्पन्दते मुहुः ॥५६॥  
वाताद्वातकफात्तन्द्रागौरवारोचकान्विता ।

गृध्रसी गृध्रसी गृध्रसी, वातात् वायुशी वायुसे, स्तम्भरुक् स्तम्भन, वेदना स्तम्भन, वेदना, तोड़े: अने तोड़ पड़े और तोड़से, स्फिकपूर्वा मूत्रम स्थिक् पहले स्फिक, कटि-पृष्ठ-केड, पीठ कटि, पृष्ठ, ऊरु-जानु-साथण, ठीयण ऊरु, जानु, जङ्घा-पदम् पिंड़ी अने पगने जङ्घा और पैरको, क्रमात् क्रमशः क्रमशः, गृह्णाति पकड़ी ले छे पकड़ती है, वातकफात् अने वातकफाशी और वात-कफसे, तन्द्रा-गौरव-तन्द्रा, शुभ्रता तन्द्रा, गुहता, अरोचक-अने अशुचिशी और अरुचिसे, अन्विता युक्त आय छे युक्त होती है ॥ ५६३ ॥

56-56½. That condition is said to be Sciatica, where first the hip and then waist, back, thigh, knee and calf are gradually affected with stiffness, pain and pricking sensations and associated with frequent twitching due to

vata. If this condition is due to vata and kapha combined, there will be additional symptoms of torpor, heaviness and anorexia.

खल्लाः लक्षणम्—

खल्ली तु पादजङ्घोरुकरमूलाग्रमोटनी ॥५७॥

पाद-जङ्घा- पग, पिंड़ी पैर, जङ्घा, ऊरु तथा साथ-अने तथा ऊरुको, करमूला अने हाथना भूणने और हाथके मूलको, अग्रमोटनी तु भरडी नाभनारने तो मरोड़ देनेवालीको तो, खल्ली अष्टवी उहे छे खल्ली कहते हैं ॥५७॥

57. That condition is known as Khalli where there is kneading (neuralgic) pain referable to feet, calf, thigh and shoulder.

पित्तादिसंयुग्मज्ञानम्—

स्थानानामनुरूपैश्च लिङ्गैः शेषान् विनिर्दिशेत् ।  
सर्वेष्वेतेषु संसर्गं पित्ताद्यैरुपलक्षयेत् ॥५८॥

शेषान् आङ्गीना वातरोजेने शेष वातरोगेका, स्थानानाम् स्थानने स्थानके, अनुरूपैः अनु३५ अनुरूप, लिङ्गैः च लक्षणैः पड़े लक्षणोंसे, विनिर्दिशेत् निर्देश करे। निर्देश करना चाहिए, एतेषु आ इन, सर्वेषु अधर्मा सबमें, पित्ताद्यैः पित्तादिने। पित्तादिसे, संसर्गम् संसर्ग पक्ष संसर्ग सी, उपलक्षयेत् लेवे। लेधले जानना चाहिए ॥ ५८ ॥

58. The rest of the disorders should be diagnosed according to the symptoms characteristic of the seat of affection. In all these disorders, one should diagnose the condition of the association of pitta and other morbid elements

वायोर्धातुक्षयात् कोपो मार्गस्याद्वैर्येण च (वा) ।  
वातपित्तकफा देहे सर्वस्रोतोऽनुसारिणः ॥५९॥

वायुरेव हि सूक्ष्मत्वाद् द्वयोस्तत्राप्युदीरणः ।  
कुपितस्तौ समुद्भूय तत्र तत्र क्षिपन् गदान् ॥६०॥  
करोत्यावृतमार्गत्वाद् रसादींश्चोषशोषयेत् ।

धातुक्षयात् धातुना क्षयशी धातुक्षयसे मार्गस्थ  
अने भागीना और मार्गोंके, आवरणेन च आवरस्थ  
अवरणसे, वायोः कोषः वायुने प्रक्षेप भाय छे वायुका  
प्रक्षेप होता है, देहे देहमें देहमें, वात- पित्त- वात-  
पित्त वात- पित्त- कफाः अने कफ और कफ, सर्वत्रोत्प-  
त्तया भोतेने सब स्रोतोंका, अनुसारिणः अनुसरनेवाला  
छे अनुगमन करते हैं, तत्र अपि तेऽस्मात् पक्षे उनमें  
सी, वायुः एव हि वायु अ वायु ही, सूक्ष्मत्वात् सूक्ष्म  
होवाथी सूक्ष्म होनेके कारण, द्वयोः भेदो दोनोको,  
उदीरणः उदीरण छे प्रेरित करता है, कुपितः प्रकु-  
पित अथेवा ते प्रकुपित हुआ वह, तौ ते अनेने उन  
दोनोंको, समुद्भूय प्रकुपित करीने प्रकुपित करके तत्र  
तत्र अस्मिन् तस्मिन् इधर उधर, क्षिपन् ईकते। फैक कर,  
आवृतमार्गत्वाद् मार्ग अथ होवाथी मार्ग बन्द होनेसे,  
गदान् रोगो रोगोंको, करोति छे करता है, रसा  
दीन् च अने रसादि धातुओंने पक्ष और रसादि धातु-  
ओंकी सी, उपशोषयेत् सूखाने छे सूखा डालता है  
॥५९-६०॥

59-60. The provocation of vata is due to diminution of body-elements or due to obstruction to its normal circulation caused by occlusion in the body-channels. The vata pitta and kapha circulate through all the body-channels and spaces. The vata, on account of its quality of subtleness, is really the impeller of the other two humors. When the vata is provoked, it agitates the other two humors and throwing them about here and there, causes occlusion of the body-channels, thereby producing disorders. It also

leads to the diminution of the body nutrient fluid and other body-elements.

कफपित्तरावृतस्य वायुर्लक्षणानि—

लिङ्गं पित्तावृते दाहस्तृष्णा शूलं भ्रमस्तमः ॥६१॥  
कटुमल्लवणोष्णैश्च विदाहः शीतकामिता ।

पित्तावृते पित्तशी आवृत वायुर्भा पित्तसे आवृत  
वायुमें, दाहः दाह दाह, तृष्णा तरस तृषा, शूलम्  
शूल, भ्रमः तमः भ्रम, अंधारा आवृत भ्रम,  
अंधारा आना, कटु-अम्ल-उदु, अम्ल कटु, अम्ल, लवण-  
उष्णः क्षयश्च तथा गरम द्रव्योंकी लवण तथा उष्ण  
द्रव्योंसे, विदाहः च विदाह अथे विदाह होना, शीत-  
कामिता अने शीतल द्रव्योंकी इच्छा, लिङ्गम् अथे लक्षणोंका भाय छे ये  
लक्षण होते हैं ॥ ६१ ॥

61-61. When the vata is occluded by pitta, the following symptoms are observed—burning, thirst, colic, giddiness, darkness of vision, heart-burn on eating pungent, acid, salt and hot things and craving for cold things.

शैत्यगौरवशूलानि कट्वाद्युपशयोऽधिकम् ॥६२॥  
लङ्घनायासरूक्षोष्णकामिता च कफावृते ।

कफावृते वायु कफशी आवृत यत्ना वायुके कफसे  
आवृत होने पर, शैत्य- गौरव- शीतलता, शुभ्रता शैत्य,  
गौरव, शूलानि शूल शूल, कटु-आदि उदु आदि कटु  
आदिका, अधिकम् अथे अति, उपशयः मादक आवृत  
अनुकूल आना, लङ्घन- क्षय लङ्घन, आयास- आयास  
आयास, रूक्ष-उष्ण- रूक्ष अथे उष्ण द्रव्योंकी रूक्ष  
और उष्ण द्रव्योंकी कामिता च शुभ्रता भाय छे कामना  
होती है ॥ ६२ ॥

62-62. If the vata is occluded by kapha, there will be cold, heaviness,

६१. तमः—भ्रमः (ब.)

६१. शीतकामिता—शीतकामिता (ब.)

६२. कामिता—कामिता (ब.)

colic, pronounced homolagation to pungent and similar other articles, craving for fasting, exertion and dry and hot things.

रक्तादिवातुभिरावृतस्य वायोर्लक्षणानि—

रक्तावृते सदाहार्तिस्त्वङ्मांसान्तरजो भृशम् ॥६३॥  
भवेत् सरागः श्वयथुर्जायन्ते मण्डलानि च ।

रक्तावृते वायु रक्तस्थी आवृत यता वायुके रक्तसे आवृत होने पर, सदाहार्तिः दाह અને પીડાયુક્ત दाह और पीडाके साथ, त्वक्-मांस-आमसी तथा मांसना त्वचा तथा मांसके, अन्तरजः पथ्य आगर्भा मध्य प्रदेशमें, सरागः मांसयुक्त लालिमायुक्त, श्वयथुः सोओ सूजन, भृशम् भवेत् अत्यंत थाय छे अत्यन्त होती है, मण्डलानि च અને માંડેલી और मण्डल, जायन्ते उत्पन्न थाय छे उत्पन्न होते हैं ॥ ६३३ ॥

63-63½. If it is occluded in the blood, there will be severe burning pain in the area between the skin and the flesh, and there will be edema with reddish tinge and rashes.

कठिनाश्च विवर्णाश्च पिङ्काः श्वयथुस्तथा ॥६४॥  
हर्षः पिपीलिकानां च संचार इव मांसगे ।

मांसगे वायु मांसस्थी आवृत यता वायुके मांसमे आवृत होने पर, कठिनाः च कठिना, विवर्णाः च तथा (विवर्ण) और विवर्ण, पिङ्काः (पिङ्काओ) पिङ्काएँ, तथा श्वयथुः सोओ सूजन, हर्षः तथा रोमहर्ष थाय छे तथा रोमहर्ष होते हैं, पिपीलिकानाम् च અને ઝીડીઓ और चिर्लटियोंके, संचारः इव आवाती होय ओवु अवाय छे चलनेका सा अनुभव होता है ॥ ६४३ ॥

64-64½. When the vata is occluded in the flesh there will appear hard pigmented pimples and swellings, horripilation and formication.

चलः क्षिण्यो मृदुः शीतः शोफोऽङ्गेवचस्त्वया ६५  
आढ्यवान् इति ज्ञेयः स कुच्छो मेदसाऽऽवृतः ।

मेदसा आवृतः वायु मेदस्थी आवृत यता वायुके मेदसे आवृत होने पर, अङ्गेव अंगोभा अंगोंमें, चलः चल अस्थिर, क्षिण्यः क्षिण्य स्थाय, मृदुः शीतः काम्य અને શીતળ મૃદુ और शीतल, शोफः सोओ शोथ, अरुचिः तथा अरुचि थाय छे तथा अरुचि होती है, आढ्यवातः इति आ रोगने आढ्यवात इस रोगको आढ्यवात, ज्ञेयः अलुबो ओईओ जानना चाहिए, सः ते वह, कुच्छः कुच्छाध्य छे कष्टसाध्य है ॥ ६५३ ॥

65-65½. When the vata is occluded in the adipose tissue, there will be produced local swellings that are movable, smooth, soft and cold, as well as anorexia. This condition is known as a rheumatic condition and is difficult of cure.

स्पर्शमस्थनाऽऽवृते तूष्णं पीडनं चाभिनन्दति ॥६६॥  
संभज्यते सीदति च सूचीभिरिव तुघते ।

अस्थना वायु अस्थिस्थी वायुके अस्थिसे, आवृते तु आवृत यता रोगी आवृत होने पर रोगी, उष्णम् उष्ण, स्पर्शम् स्पर्शनी स्पर्शको, पीडनम् च तथा दबावानी और दबानेको, अभिनन्दति उच्छा करे छे चाहता है, संभज्यते तेनां अंग तूरे छे उसके अङ्ग टूटते हैं, सीदति ते सीदय छे वह कष्ट अनुभव करता है, सूचीभिः इव અને સોયો ભોંકાયા જેવી और सूइयोंके चुभनेकी सी, तुघते च पीड भोगवे छे व्यथा भोगता है ॥ ६६३ ॥

66-66½. When the pitta is occluded in the osseous tissue, the patient likes warmth and pressure; and he becomes exhausted, experiences splitting pain and feels as though his body is being pricked with needles.

मज्जावृते विनामः स्याज्जृम्भणं परिवेष्टनम् ॥६७॥  
शूलं तु पीड्यमाने च पाणिभ्यां लभते सुखम् ।

मज्जावृते वायु मज्जामयी आवृत यता वायुके मज्जासे आवृत होने पर, विनामः विनाम (देहना नभी ननु) विनाम (देहका नम जाना), जृम्भणम् भगमां आवर्णा जम्माई, परिवेष्टनम् परिवेष्टन परिवेष्टन, शूलम् तु अने शूल और शूल, स्वाद थाय छे होते हैं, पाणिभ्याम् तथा हाथी तथा हाथोंसे, पीड्यमाने च दबावतां रोगी दवाने पर रोगी, सुखम् सुख सुख, लभते पाये छे सुख पाता है ॥ ६७ ॥

67-67½. When the vata is occluded in the marrow, there will be flexure of the body, pendiculation, girdle pain and colicky pain; on being pressed with the hand the patient gets relief.

शुक्रावेगोऽतिवेगो वा निष्फलत्वं च शुक्रगे ॥६८॥

शुक्रगे वायु शुक्रयी आवृत यता वायुके शुक्रसे आवृत होने पर, शुक्रावेगः शुक्रने वेग यता नभी शुक्रका वेग नहीं होता, अतिवेगः वा अथवा अधिक वेग थाय छे अथवा अतिवेग होता है, निष्फलत्वं च अने शुक्र प्रजोत्पत्ति आटे निष्पन्न थाय छे और शुक्र प्रजोत्पत्तिके लिए निष्फल होता है ॥ ६८ ॥

68. If the vata is occluded in the seminal passages there results either no discharge of semen or hurried discharge of it or a sterile condition of the semen.

अजावृतस्य वायोरलक्षणानि—

भुके कुक्षौ च रुज्जीर्णे शाम्भ्यव्यावृतेऽनिले ।

६९. विनामः स्याज्जृम्भणं परिवेष्टनम्—विनामनि जृम्भते

परिवेष्टते (ब.)

—विनामनि जृम्भते परिवेष्टते (फ.)

६८. शुक्रावेगो.....शुक्रगे—शुक्रातिवेगोऽप्यथवा निष्फलत्वं च

शुक्रगे (ब.)

अनिले अजावृते वायु मज्जामयी आवृत यता वायुके अजसे आवृत होने पर, भुके कुक्षौ पीडा थाय छे कुक्षिमें पीडा होती है, जीर्णे च अने पच्यमाने और भोजनका पाचन होनेके बाद, शाम्भ्यति शान्ति थाय छे शान्ति होती है ॥ ६८ ॥

68½. If the vata is occluded by food there will be pain in the stomach on ingestion of food and disappearance of pain at the end of digestion.

मूत्रावृतस्य वातस्य लक्षणम्—

मूत्राप्रवृत्तिराध्मानं वस्तौ मूत्रावृतेऽनिले ॥६९॥

अनिले वायु वायुके, मूत्रावृते मूत्रयी आवृत यता मूत्रसे आवृत होने पर, मूत्राप्रवृत्तिः मूत्रनी अटकायत मूत्रकी अवृत्ति, वस्तौ मूत्र अस्तिमा और वस्तिमें, अध्मानम् अध्मान थाय छे अध्मान होता है ॥ ६९ ॥

69. If the vata is occluded by urine, there occurs retention of urine and distension of bladder.

पुरीषावृतस्य वातस्य लक्षणम्—

वर्चसोऽतिविबन्धोऽथः स्वे स्थाने परिक्रमति ।  
व्रजत्याशु जरां स्नेहो भुके चानद्यते नरः ॥७०॥

चिरात् पीडितमग्नेन दुःखं शुष्कं शक्यं सृजेत् ।

श्रोणीविक्षणपृष्ठेषु रुचिबलोमश्च माकृतः ॥७१॥

अस्वस्थं हृदयं चैव वर्चसा त्वावृतेऽनिले ।

अनिले तु वायु वायुके, वचेमा जावृते मज्जामयी आवृत यता मलसे आवृत होने पर, वर्चसः अथः मज्जामयी नीचेनी आशु मल नीचेकी ओर, अतिविबन्धः अतिशय विबन्ध थाय छे बिल्कुल प्रवृत्त नहीं होता, स्वे स्थाने तेना स्थानमा उसके स्थानमें, परिक्रमति परिक्रमितीका थाय छे परिक्रमिती होती है, स्नेहः स्नेह, शक्यं

७०. वर्चसोऽतिविबन्धोऽथः—वर्चोवृते विबन्धोऽथः (क. ड. फ.)

स्वे स्थाने—स्थाने च (ब.)

७१. वर्चसा त्वावृतेऽनिले—स च वर्चोवृतेऽनिलः (ब.)

७३. पक्षवन्तो.....खुडवातता-सन्निवच्युतिः पक्षवणः पाङ्गुर्यं  
खुडवातता (ब. ष. क.)



वातरोगेषु स्नेहविधिः —

क्रियामतः परं सिद्धां वातरोगापहं शृणु ।  
केवलं निरुपस्तम्भमादौ स्नेहैरुपाचरेत् ॥७५॥

वायुं सर्पिर्वसातैलमज्जपानैर्नरं ततः ।  
स्नेहकान्तं समाश्वास्य पयोभिः स्नेहयेत् पुनः ॥७६॥  
यूवैर्गाम्याम्बुजानूपरसैर्वा स्नेहसंयुतैः ।  
पायसैः कुशरैः साम्ललवणैरनुवासनैः ॥७७॥  
नावनैस्तर्पणैश्चाञ्चैः

अतः परम् आ. ५४१। इसके बाद, वातरोगापहम् वातरोग ६२ना२ वातरोगनाशक, सिद्धात् सिद्ध सिद्ध, क्रियाम् क्रिया क्रियाको, शृणु सांभणो सुनो, आदौ प्रथम पहले, केवलम् केवल केवल, निरुपस्तम्भम् उपस्तम्भ विनाना आवरणहित, वायुम् वायुनी वायुकी, स्नेहैः स्नेहथी चिकित्सा ३२वी स्नेहोसे चिकित्सा करनी चाहिए, सर्पिः- वसा- घी, वसा घी, वसा, तैल- मज्ज- तैल अने मज्जना तैल और मज्जाके, पानैः पानथी पानसे, उपाचरेत् वायुने उपचार ३२वा वायुकी चिकित्सा करे, ततः ५४१ बादमें, स्नेहकान्तम् स्नेह- पानथी थाकेल स्नेहपानसे उक्ताने हुए, नरम् मनुष्यने मनुष्यको, समाश्वास्य आश्वासन आपीने सम्यक् आश्वासन दे कर, पयोभिः दूधथी दूधसे, स्नेहसंयुतैः स्नेहयुक्त स्नेहयुक्त, यूवैः यूपो यूप, गाम्य-अम्बुज- आम्भ, लवण्य गाम्य, जलचर, जानूपरसैः तथा आनूप प्राणियोंना आंशुरसोथी और आनूप प्राणियोंके मांसरससे, पायसैः दूधपाक पायस, कुशरैः कुशरा कुशरा, साम्ललवणैः वा अथवा अम्भ तथा लवणयुक्त या अम्भ तथा लवणयुक्त, अनुवासनैः स्नेहमस्तिओ स्नेहवस्तिथां, नावनैः नस्थ नस्थ, तर्पणैः च तर्पण्य तर्पण, अञ्चैः अने ओम्भनथी और भोजनसे, पुनः ३२वी फिर, स्नेहयेत् स्नेहन आपणुं स्नेहन देवे ॥७५-७७३॥

75-77½. Now listen to the exposition of the line of treatment of the diseases

७५. परं सिद्धां-सिद्धतां. (क. ड. व.)

.. निरुपस्तम्भमादौ-निरुपस्तम्भमादौ (ब.)

७८. आचैः-आनैः (ब.)

due to the provocation of vata. If there is a simple provocation of vata without any kind of occlusion it should be treated at first with oral administration of unctuous preparations such as ghee fat oil and marrow. The person, when overstrained by the oleation therapy, should be comforted by rest for a while and should again be oleated with milk or thin gruels and meat-juices of domestic, wet-land and aquatic animals mixed with unctuous articles or with milk-pudding or kedgeree mixed with acid and salt articles and then given unctuous enemata, nasal medications and demulcent food.

वातरोगेषु स्वेदविधिः —

सुस्निग्धं स्वेदयेत्ततः ।

स्वभ्यक्तं स्नेहसंयुक्तैर्नाडीप्रस्तरसङ्करैः ॥७८॥

तथाऽन्यैर्विविधैः स्वेदैर्यथायोगमुपाचरेत् ।

सुस्निग्धम् सारी पीठे स्नेहन आपेक्ष २०पीने अच्छी प्रकार स्नेहन करके, स्वेदयेत् स्वेदन आपणुं स्वेदन देवे, ततः ५४१ पीठे, स्वभ्यक्तम् सारी पीठे अभ्यङ्ग करावेक्षने अच्छी तरह अभ्यङ्ग कराके, स्नेहसंयुक्तैः स्नेहयुक्त स्नेह- युक्त, नाडी-प्रस्तर- नाडी, प्रस्तर नाडी, प्रस्तर, सङ्करैः संकर संकर, तथा अन्यैः तथा ७८१ तथा अन्य, विविधैः विविध विविध, स्वेदैः स्वेदथी स्वेदोसे यथायोगम् यथा- योग उसकी यथायोग्य, उपाचरेत् चिकित्सा ३२वी चिकित्सा करे ॥ ७८३ ॥

78-78½. When he is well oleated, he should be subjected to sudation therapy and should be given sudation treatment as required, after he has been well inuncted with the kettle-sudation and mixed steam kettle



sudation and such other varieties of sudation processes in which unctuous articles have been mixed

स्नेहाक्तं खिन्नमङ्गं तु वक्रं स्तब्धमथापि वा ॥७९॥  
शनैर्नामयितुं शक्यं यथेष्टं शुष्कदारुवत् ।

स्नेहाक्तं स्नेह योऽपि स्नेहन, खिन्नम् अने स्वेदित और स्वेदन किये, अङ्गं तु अंग अंगको, वक्रम् वाङ् देहा, अथ अपि के या, स्तब्धम् वा अङ्ग होय छत्ता पक्ष स्तब्ध होने पर भी, शुष्कदारुवत् नेम स्नेह योऽपि स्वेदन करवाया आवेयुं सङ्गं वाङ्ग वणे छे तेम स्नेह चुपकर स्वेदन किये सूखे काठकी भांति, यथेष्टम् भन मुञ्च यथेष्ट, शनैः धीमे धीमे बीरे बीरे, नामयितुम् वाणी नमाना, अङ्गम् शङ्का छे शक्य है ॥ ७९३ ॥

79-79½. With the aid of oleation and sudation procedures, even a distorted and the stiffened limb can be slowly brought back to normality, just as it is possible to bend, according to one's desire, even a dried piece of wood by such measures.

हर्षतोदरगायामशोथस्तम्भग्रहादयः ॥८०॥

खिन्नस्याशु प्रशाम्यन्ति मार्दवं चोपजायते ।

खिन्नम् स्वेदन आपेक्ष पुरुषना स्वेदन दिये पुरुषके, हर्ष-तोद-६५, तोद हर्ष, तोद, रुक्-पीडा रुजा, गायाम-अंगोनुं भेयापुं (तात्त्व) खिन्नावट, शोथ-स्तम्भ-शोथ, स्तम्भ शोथ, स्तम्भ, ग्रह-बादयः अने वायुथी अर्थात् वायु वजरे और वायुसे पकड़ा जाना आदि, आशु ऐकदम शीघ्र, प्रशाम्यन्ति शांत अर्ध अथ छे शान्त होते हैं मार्दवम् च अने मृदुता और मृदुता, उपजायते आवे छे उत्पन्न होती है ॥ ८०३ ॥

80-80½. Horripilation, pricking pain, aches, extensive swelling, stiffness and

spasticity and similar other conditions can be quickly cured and the softness of the part restored by means of sudation.

स्नेहश्चातृन्संशुष्कान् पुष्पाभ्यां प्रयोजितः ॥८१॥  
बलमग्निबलं पुष्टिं प्राणाश्वाप्यभिवर्धयेत् ।

आशु ऐकदम शीघ्र, प्रयोजितः अथोक्त प्रयोग किया हुआ, स्नेहः च स्नेहन स्नेहन संशुष्कान् शुष्क शुष्क, चातृन् चातृने चातृको, पुष्पाति येषे छे पुष्ट करता है, बलम् अने अक्ष और बल, अग्निबलम् अग्निबल अग्निबल, पुष्टिम् पुष्टि पुष्टि, प्राणाश्वा च अने तथा प्राणोनी तथा प्राणोकी, अभिवर्धयेत् आबृद्धि करे छे अभिवृद्धि करता है ॥ ८१३ ॥

81-81½. And the oleation therapy, when applied quickly, replenishes the diminished body elements and increases the vitality, strength of the gastric fire, robustness and the life-span

असङ्कतं पुनः स्नेहैः स्वेदैश्चाप्युपपादयेत् ॥८२॥  
तथा स्नेहमृदौ कोष्ठे न तिष्ठन्त्यनिलामयाः ।

तम् पुनः ते शोथीने उस रोगीकी, असङ्कतं वाग्वार बारवार, स्नेहैः स्नेहन स्नेहनसे, स्वेदैः च अपि अने स्वेदन और स्वेदनसे, उपपादयेत् उपपादा चिकित्सा करे, तथा तेम करवाथी ऐसा करनेसे, स्नेहमृदौ स्नेहथी मृदु यथेक्ष स्नेहसे मृदु हुए, कोष्ठे कोष्ठे, अनिलामयाः वातना शोथ वायुके रोग, न तिष्ठन्ति रहेता नहीं ठहर नहीं सकते ॥ ८२३ ॥

82-82½. The oleation and sudation procedures should be repeatedly administered in order that the disorders of vata may not stay in the viscera softened by oleation procedure.

वातरोगेषु संशोधनम्—

वयनेन सदोषत्वात् कर्मणा न प्रक्षाम्यति ॥८३॥  
मृदुभिः स्नेहसंयुक्तैरौषधैस्तं विशोधयेत् ।

यदि जे यदि, सदोषत्वात् दोषयुक्त होवाथी दोष-  
युक्त होनेके कारण, वनेन अ. इस, कर्मणा क्रिया ७३  
कर्मने, न प्रक्षाम्यति बाहु शांत न थाय तो बाहु शक्त  
न हो तो, मृदुभिः कामण मृदु, स्नेहसंयुक्तैः तथा  
स्नेहयुक्त तथा स्नेहयुक्त, औषधै औषधाथी औषधोंसे,  
तम् ते रोगीज उस रोगीका, विशोधयेत् शोधन  
करवुं विशोधन करे ॥ ८३३ ॥

83-83½. If, due to excessive morbi-  
dity, the humors do not subside with  
the above procedure, the patient  
should then be cleansed by means  
of mild drugs mixed with unctuous  
articles.

घृतं तिलवकसिद्धं वा सातलासिद्धमेव वा ॥८४॥  
पयसैरण्डतैलं वा पिबेहोषहरं शिबम् ।

दोषहरम् दोषने करनेपर दोषको हनेवाला, शिबम्  
तथा शुभकारके तथा शुभकारक, तिलवकसिद्धम् एव वा  
तिलवकथी पकावेक तिलवकसे सिद्ध, सातलासिद्धम्  
एव वा अथवा तो सातलाथी पकावेक वा सातलासे  
सिद्ध, घृतम् घी थी, पयसा अथवा दूध साथे वा दूधके  
साथ, एरण्डतैलम् वा और उडुं तेल एरण्ड तैलको, पिबेह  
पीवुं पीवे ॥ ८४३ ॥

84 84½. For this purpose the pati-  
ent may take the medicated ghee  
prepared with Tilwaka or round milk-  
hedge or he may take castor oil with  
milk; these are beneficial and expel  
the morbid humors.

क्षिग्धासल्लवणोष्णाद्यैराहारैर्हि सलक्षितः ॥८५॥  
श्रोतो बद्धाऽनिलं रुग्णात्तस्मात्तनुलोमयेत् ।

८५३. बद्धाऽनिलं रुग्णात्—वर्णाति तं बद्धा (घ.)

क्षिग्ध- रिनग्ध स्निग्ध, असल-लवण- अम्ल, क्षुब्ध  
असल, लवण, इष्णाद्यैः उष्ण आदि उष्मादि, आहारैः हि  
आहारेथी आहारोंसे, चितः मलः क्लेशित भवेत्।  
मल संचित मल, श्रोतः श्रोति। श्रोतको, बद्धा अ. ब  
कटीने रोककर, अनिलं नाथी वायुको, रुग्णात्  
रुग्णादे से रोकता है, तस्मात् रुग्ण रोगी 'तनु' अतः  
उत्तमा, अनुलोमयेत् अनुलोमन करवुं ओषधै  
अनुलोमन करे ॥ ८५३ ॥

85-85½. By excessive use of un-  
ctuous, acid, saltish and hot articles  
of diet, the excretory matter gets  
accumulated and occluding the ali-  
mentary passage, obstructs the vata;  
hence the normal peristaltic move-  
ment of vata should be stimulated  
to expel it.

वातरोगेषु सामान्यचिकित्सा—

दुर्बलो योऽविरेच्यः स्यात्तं निरुहैतपाचरेत् ॥८६॥  
पाचनैर्दीपनीयैर्वा भोजनैस्तनुतैर्नरम् ।

यः दुर्बलः जे दुर्बल होवाथी जो दुर्बल होनेसे,  
अविरेच्यः अविरेच्य विरेचके लिए अयोग्य, स्यात्  
होय हो तम् नरम् ते मनुष्यनी उस मनुष्यकी, पाचनैः  
पाचन पाचन, दीपनीयैः वा अने दीपन और दीपन,  
निरुहैः निरुह अरितथी निरुह वस्तियोंसे, दानुतैः  
अथवा पाचन तथा दीपन द्रव्योंथी युक्त वा पाचन तथा  
दीपन द्रव्योंसे युक्त, भोजनैः वा भोजनैथी भोजनोंसे,  
उपाचरेत् (चिकित्सा) करवी चिकित्सा करे ॥ ८६३ ॥

86-86½. The patient, who is debili-  
tated and as a consequence, in whom  
purgation is contra-indicated, should  
be given evacuating enema followed  
by a diet consisting of, or mixed with,  
the drugs of the digestive and diges-  
tive-stimulant groups.

८६३. भोजनैस्तनुतैः—भोजनैर्वर्तयुतं (घ.)

संशुद्धस्योत्थिते बाम्नौ ज्वेदस्वेदौ पुनर्हितौ ॥८७॥

संशुद्धस्य अरुणर शुद्ध अथेदानीं शुद्ध हुए पुरुषकी, बाम्नौ च अग्नि अग्निके उत्थिते पुनः प्रदीप्त यत्। इरीवार पदीप्त होने पर पुनः, स्नेहस्वेदौ स्नेहन अने स्वेदन स्नेहन और स्वेदन द्वितौ द्वितकारक छे द्वितकर हैं ॥ ८७ ॥

87. Sudation and oleation procedures, repeated again, are beneficial for those whose gastric fire has been stimulated as a result of the purification procedure.

स्वाद्रमल्लवणस्निग्धैराहारैः सततं पुनः ।

नावनैर्धूमपानैश्च सर्वानेवोपपादयेत् ॥८८॥

इति सामान्यतः प्रोक्तं वातरोगचिकित्सितम् ।

सर्वान् एव लवण, स्निग्ध, आहारैः सततं पुनः इरीभी फिरसे, सततम् निरंतर निरंतर, स्वादु-अम्ल-रसादु, अम्ल स्वादु, अम्ल, लवण-लवण, स्निग्धैः अने स्निग्ध और स्निग्ध, आहारैः आहारैः आहारोंसे, नावनैः नश्य नावनोंसे, धूमपानैः च तथा धूमपानभी तथा धूमपानसे, उप-पादयेत् (चिकित्सा करनी चिकित्सा करे, इति आ यह, वातरोग-चिकित्सितम् वातरोगनी (चिकित्सा वातरोगोंकी चिकित्सा, सामान्यतः सर्वसमानपणुभी सर्वसमानतया, प्रोक्तम् कही छे कही गई है ॥ ८८ ॥

88 88½. All diseases due to vata-provocation are always to be continually treated with sweet, acid, saltish and unctuous articles of diet, nasal errhines and inhalations. Thus has, the treatment of diseases due to vata provocation, been expounded in general.

८८. धूमपानैः—कमे पानैः (व.)

कोष्ठस्थे वाते चिकित्सा—

विशेषतस्तु कोष्ठस्थे वाते क्षारं पिबेन्नरः ॥८९॥  
पाचनैर्दीपनैर्युक्तैरम्लैर्वा पाचयेन्मलान् ।

विशेषतः तु हवे तो वातरोगनी विशेषे करीने (चिकित्सा कही जायगी, कोष्ठस्थे कोष्ठस्थित, वाते वायुभी वायुमें, नरः मनुष्ये मनुष्य, क्षारम् पिबेत् क्षार पीवे। क्षार पीवे, पाचनैः अथवा पाचन अथवा पाचन, दीपनैः युक्तैः अने दीपन द्रव्योंकी युक्त और दीपन द्रव्योंसे युक्त, अम्लैः वा अम्ल पदार्थोंकी अम्ल पदार्थोंसे, मलान् मलाने मलोंका, पाचयेत् पकाववा पाचन करे ॥ ८९ ॥

89-89½. Now will be described the treatment of particular disorders. In the condition of morbid vata lodged in the alimentary tract, the patient should drink alkali mixed with drugs of the digestive and digestive stimulant groups and of the acid group, for helping the digestion of the undigested matter.

शुद्धपकाशयस्थे वाते चिकित्सा—

शुद्धपकाशयस्थे तु कर्मोदावर्तनुद्धितम् ॥९०॥

शुद्ध-शुद्ध शुद्ध पकाशयस्थे तु अने पकाशयस्थ वायुभी और पकाशयस्थित वायुमें, उदावर्तनुद्धितम् उदावर्त उदावर्त उदावर्तनाशक, कर्म (चिकित्सा कर्म, हितम् द्वितकारी छे द्वितकर है ॥ ९० ॥

90. In condition of morbid vata lodged in the rectum or the colon, the treatment curative of misperistalsis should be given.

८९. क्षार-क्षीर (द. व.)

८९½ पाचनैर्दीपनैर्युक्तैरम्लैर्वा—पाचनैः तैर्दीपनैः (द. व.)

„ अम्लैर्वा—अम्लैर्वा (व. व.)

आमाशयस्थे वाते चिकित्सा—

आमाशयस्थे शुद्धस्य यथादोषहरीः क्रियाः ।

आमाशयस्थे आमाशयस्थ वातभां आमाशयस्थित वायुमें, शुद्धस्य पुरुषने संशोधन आपी पुरुषको संशोधन देकर, यथादोषहरीः दोषने अनुसार ते ते दोषने हरनारी दोषके अनुसार उस उस दोषको हरनेवाली, क्रियाः चिकित्सा करनी चाहिए ॥९०३॥

९०३. If it is lodged in the stomach, the treatment curative of the particular aspect of morbidity should be given after the purificatory process.

सर्वाङ्गकुपिते वाते चिकित्सा—

सर्वाङ्गकुपितेऽभ्यङ्गे बस्तयः सानुवासनाः ॥९१॥

सर्वाङ्गकुपिते वायु सर्वाङ्गभां कुपित यत्तां वायुके सर्वाङ्गमें कुपित होने पर, अभ्यङ्गः अभ्यङ्ग अभ्यङ्ग, सानुवासनाः बस्तयः अने अनुवासनअस्तिये देनी और अनुवासनवस्तियाँ देवे ॥ ९१ ॥

९१. When the vatai s provoked in the entire body, inunction, evacuative enemata and unctuous enemata should be given.

त्वगाश्रिते वाते चिकित्सा—

स्वेदाभ्यङ्गावगाहाश्च हृद्यं चार्धं त्वगाश्रिते ।

त्वगाश्रिते त्वगाश्रित वायुभां त्वगाश्रित वायुमें, स्वेद-अभ्यङ्ग-स्वेद, अभ्यङ्ग स्वेद, अभ्यङ्ग, अवगाहाः च अने अवगाहन और अवगाहन, हृद्यम् तेभ्य हृद्य एवं हृद्यके लिए हितकर, अर्धम् च अर्धो आपर्वा अर्ध देवे ॥९१३॥

९१३. And when the skin is affected, sudation, inunction and bath as also cordial food should be given.

९०३. यथादोषहरीः-यथादोषहरीः (ब.)

९१. स्वेदाभ्यङ्गावगाहाश्च-स्वेदाभ्यङ्गनिर्वाहानि (ब. ड.)

रक्तस्थे वाते चिकित्सा—

शीताः प्रदेहा रक्तस्थे विरेको रक्तमोक्षणम् ॥९२॥

रक्तस्थे रक्तस्थ वायुभां रक्तगत वायुमें, शीताः शीतल शीत, प्रदेहाः क्षेपे। प्रदेह, विरेकः विरेचन, विरेचन, रक्तमोक्षणम् अने रक्तमोक्षाय करवा और रक्तमोक्षण करे ॥ ९२ ॥

९२. When the blood is affected, cold applications, purgation and venesection are good.

मांसमेदःस्थे वाते चिकित्सा—

विरेको मांसमेदःस्थे निरुहाः शमनानि च ।

मांसमेदःस्थे मांस अने मेदस्थ वायुभां मांस और मेदमें स्थित वायुमें, विरेकः विरेचन, विरेचन, निरुहाः निरुह अस्तिये। निरुह वस्तियाँ, शमनानि अने शमन औषधियाँ देनी और शमन औषधियाँ देवे ॥९२३॥

९२३. And if the flesh is affected, purgation, evacuative enemata and sedation therapy should be administered.

अस्थिमज्जगते वाते चिकित्सा—

बाह्याभ्यन्तरतः स्नेहैरस्थिमज्जगतं जयेत् ॥९३॥

अस्थिमज्जगतम् अस्थि अने मज्जगत वायुने अस्थि और मज्जगत वायुको, बाह्याभ्यन्तरतः आन्तर्य अने आभ्यन्तर बाह्य और आभ्यन्तर, स्नेहैः स्नेहना प्रयो-गे। स्नेहोंके प्रयोगोंसे, जयेत् जितवे। शान्त करे ॥९३॥

९३. If the osseous tissue or bone-marrow is affected, it should be treated with internal and external oleation therapy.

शुक्रस्थे वाते चिकित्सा—

हृषोऽन्नपानं शुक्रस्थे बलशुक्रकरं हितम् ।

विबलमार्गे हृष्टा वा शुक्रं दद्याद्विरेचनम् ॥९४॥

९२३. निरुहाः-निरुहः (ब.)

९४. हृषोऽन्नपानं-प्रहृषोऽन्नं च (क.)

शुक्रस्थे शुक्रस्थ वायुर्भा शुक्रस्थित वायुर्मे, हर्षः  
हर्षं हर्षं, बलशुक्रकरम् तथा बल अने शुक्रं तथा  
बल और शुक्रवर्धक, अन्नपानम् अन्नपानं अन्नपान,  
हितम् हितकरं छे हितकारक है, शुक्रम् अने शुक्रं  
और शुक्रके, विबद्धमार्गम् रेखाशैलः मार्गवाणुं मार्गको  
रुका हुआ, दृष्टा वा ओष्ठने जान कर, विरेचनम्  
विरेचन विरेचन, दद्यात् देवुं देवे ॥९४॥

94. If the semen is affected, virilific  
eats and drinks or drugs promotive  
of strength and semen are beneficial.  
If the passage of semen is found to  
be occluded, purgation should be  
administered.

विरिकप्रतिशुक्रस्य पूर्वोक्तं कारयेत् क्रियाम् ।

विरिक- (विरेचन अथवा आदि विरेचनके बाद, प्रति-  
शुक्रस्य ओष्ठन करवैक्षणने भोजन कराकर, पूर्वोक्तम्  
पहिलां कहेली पूर्वोक्त, क्रियाय् चिकित्सा क्रियाको,  
कारयेत् करवी करे ॥ ९४ ॥

94½. Only after purgation and  
ingestion of diet, the aforesaid  
line of treatment should be carried  
out

गर्भे शुक्रे तु वातेन बालानां चापि शुष्यताम् ॥९५॥  
सिताकाशमर्यमधुकैर्हितमुत्थापने पयः ।

वातेन वायुथी वायुसे, गर्भे तु गर्भा गर्भके शुक्रे  
शुक्रार्थं अर्था सूखने पर, बालानाम् च अपि अने आण्डा  
पक्षु और बालकोंके भी, शुष्यताम् सूक्ष्म अर्था सूखने  
पर, उत्थापने पुष्टिने माटे पुष्टिके लिए, सिता-काशमर्य-  
साकर, शीतपक्षु चीनी, गम्भारीफल, मधुकैः अने गेही-  
मधुथी और मुलहठीसे, पयः पकावेयुं दूध सिद्ध किया  
इस, हितम् हितकर छे हितकर है ॥ ९५ ॥

95-95½. If the fetus or a child is  
emaciated by vata-provocation, milk

prepared with sugar, white teak and  
liquorice is beneficial in rehabilitation.

हृदि प्रकुपिते वाते चिकित्सा—

हृदि प्रकुपिते सिद्धमंशुमत्या पयो हितम् ॥९६॥

हृदि वायु हृद्यर्भा वायुके हृद्यर्मे, प्रकुपिते प्रकुपित  
थर्ता प्रकुपित होने पर, अशुभमत्या शाश्वतपक्षु शालपर्णीसे,  
सिद्ध पकावेय सिद्ध किया हुआ, पयः दूध दूध हितम्  
हितकर छे हितकर है ॥ ९६ ॥

96. If the provoked vata is located  
in the cardiac region, the milk pre-  
pared of ticktrefoil is beneficial.

मत्स्यान्नाभिप्रदेशस्थे सिद्धान् विव्वशलादुभिः ।

नाभिप्रदेशस्थे वायु नाभिप्रदेशर्भा कुपित थर्ता  
वायुके नाभिप्रदेशर्मे कुपित होने पर, विव्वशलादुभिः  
कः थर्ता जीलांथी कच्चे बिलसे, सिद्धान् पकावेय सिद्ध,  
मत्स्यान् भाज्य मछलियां, दद्यात् देवां खिलावे ॥९६॥

96½. And if it is located in the  
umbilicus, fish prepared with unripe  
bael fruits should be given.

वायुना गात्रे वेष्ट्यमाने चिकित्सा, वायुना गात्रे संकुचिते  
चिकित्सा च—

वायुना वेष्ट्यमाने तु गात्रे स्यादुपनाहनम् ॥९७॥

तैलं संकुचितेऽभ्यङ्गो माषसैन्धवसाधितम् ।

वायुना वायुथी वायुसे, गात्रे गात्रेर्भा शरीरके,  
वेष्ट्यमाने तु गोटां थर्ता एँठ जाने पर, उपनाह-  
नम् उपनाह उपनाह, स्यात् करवी करे, संकुचिते अने  
गात्र संकुचित थर्ता और शरीरके संकुचित होने पर,  
माष-सैन्धव- अण्ड अने सिंधावलूथी उबद और सैन्धवसे,  
साधितम् पकावेय सिद्ध, तैलम् तैलने तैलका, अभ्यङ्गः  
अभ्यङ्ग करवी अभ्यङ्ग करे ॥ ९७ ॥

97-97½. If there are cramps in any  
part of the body, poultice should be

applied, and if any part of the body is contracted, inunction with the medicated oil prepared with black-gram and rock salt should be prescribed.

बाहुशीर्षगते वाते चिकित्सा, नामधेयो वाते प्रकुपिते च चिकित्सा—

बाहुशीर्षगते नख्यं पानं चौत्तरभक्तिकम् ॥९८॥

वस्तिकर्म त्वधो नामधेः शस्यते आवपीडकः ।

बाहुशीर्षगते आहुत अने शिरोधत वायु कुपित थता बाहु और शिरमें स्थित वायुके कुपित होने पर, चौत्तरभक्तिकम् अर्थात् आद खानेके बाद, तस्यम् नख्यं पानम् च अने स्नेहपान कराने और स्नेहपान करावे, नामधेः अथः तु तथा नाभिनी नीचे रहेष वायु कुपित थता तथा नाभिके नीचे वायुके कुपित होने पर, वस्तिकर्म अर्थात् वस्तिकर्म, अवपीडकः च अने अवपीडक और अवपीडक, शस्यते प्रशस्त है ॥ ९८ ॥

98-98½. If there is vata provocation in the arm or head, nasal errhine should be given and a post-prandial potion of oily preparations; and if the morbid vata is localised below the umbilical region, enemata and pre-prandial potion of ghee are recommended.

अर्धितस्य चिकित्सा—

अर्धिते नावनं मूर्ध्नि तैलं तर्पणमेव च ॥९९॥

नाडीस्वेदोपमाह्वानानूपपिष्टितैर्हिताः ।

अर्धिते अर्धितभा अर्धितमें, नावनम् नख्यं नावन, मूर्ध्नि मूर्ध्नाभा शिरमें, तैलम् तेल तेल, तर्पणम् एव च अने तर्पण और तर्पण, अन्नूप- तेमज्ज आनुष पशुओंना एवं अन्नूप पशुओंके, पिष्टितैः भक्षितैः मांसोसे, नाडीस्वेद- नाडीस्वेद नाडीस्वेद, उपमाह्वानः च

अपि तथा उपमाह्वान तथा उपमाह्वान, हिताः हितकारक है ॥ ९९ ॥

99-99½. In facial paralysis, inunction and anointing the head with medicated oil, impletive diet, kettle sudation and poultices prepared of the flesh of aquatic animals are beneficial.

पक्षाघातस्य चिकित्सा—

स्नेहं स्नेहसंयुक्तं पक्षाघाते विरेचनम् ॥१००॥

पक्षाघाते पक्षाघातभा पक्षाघातमें स्नेहसंयुक्तम् स्नेहसहित स्नेहयुक्त, स्नेहसंयुक्त स्नेहन स्नेहन, विरेचनम् अने विरेचन देव् ओष्ठो और विरेचन देना चाहिए ॥ १०० ॥

100. In hemiplegia, sudation with unctuous preparations and purgation are beneficial.

गृध्रप्राः चिकित्सा—

अन्तरा कण्डरागुल्फं सिरा वस्त्यग्निकर्म च ।

गृध्रसीषु प्रयुज्जीत

गृध्रसीषु गृध्रसीषां गृध्रसीमें, कण्डरा- कण्डरा, गुल्फम् तभा गुल्फना तथा गुल्फके, अन्तरा अन्तरा आगभा मध्य प्रदेशमें, सिरा सिराभा वेध सिराका वेध, वस्त्य- अर्थात् वस्त्य, अग्निकर्म च अने अग्निकर्म (दाह) और अग्निकर्म (दाह) की, प्रयुज्जीत प्रयोजन ओष्ठो योजना करनी चाहिए ॥ १०० ॥

100-100½. In sciatica ~~venesection~~ of the vein situated between khandara (tendro-calcaneus) and gūphā (Malleolus) enemata and cauterization should be resorted to.

१०० ॥ कण्डरागुल्फं—कण्डरागुल्फोः (व. च. क.)

॥ सिरा वस्त्यग्निकर्म च—सिरावेधोऽग्निकर्म च (व.)

९९ ॥ अन्नूपपिष्टितैर्हिताः—अन्नूपपिष्टितैः (क.)

खलयाः चिकित्सा—

खलयां तृणोपनाहकम् ॥१०१॥

पायसेः कृकरोर्जायैः क्षस्त्रं तैलपूतान्ध्रियैः ।

खल्यस्थं तु अने भस्त्रिभां और खलीये, तैल-  
तैल तैल, घृत- अने बीभी और घृतसे, खलीयेः मुक्ता  
मुक्त, दास्यैः पायस पायस, कृकरोः ईश्वर कृकरो,  
मांसैः अने खांसि। वडे और मांसोसे, खल्येयनाहकम्  
गर्भं उपनाह मरम उपनाह, खल्य प्रशस्त है ॥ १०१॥

101-101½. In khalli, hot poultices  
prepared with milk pudding or ked-  
geree or flesh mixed with oil and  
ghee are beneficial.

हनुमहस्य चिकित्सा—

व्याघ्रानये हनुं विद्यालङ्घनभ्यां प्रपीड्य च ॥१०२॥

प्रदेक्षिनीभ्यां चोक्षाम्य चिकुकोशालनं हितम् ।

क्षस्त्रं च गमयेत्स्थानं स्तब्धं स्निग्धं विनामयेत् ॥१०३॥

व्याघ्रानने पुष्ट्या भुज्जाला हनुमहस्यं लुके  
मुँदनासे हनुमहमें, विद्याम् स्वेद आपेक्ष स्वेद ही हुई,  
हनुम् हनुने हनुको, लङ्घनाभ्याम् अने भुज्जालो। वडे  
दो अंगूठोसे, प्रपीड्य ह्वापी दबाकर, प्रदेक्षिनीभ्याम् च  
अने बी तर्जनी अंगूठोसे। वडे दो तर्जनी अङ्गुलिओसे,  
क्षस्त्रम् उपर ह्वापीने ऊपर उठाकर, चिकुको- हनुमहमें  
चिकुको, उक्षामय अंगूठी ऊपर करवा, हितम्  
हितकर है हितकर है, स्तब्धम् स्थानस्थित हनुने  
विषकी हुई हनुको, स्निग्धम् स्थानम् चोक्षान् स्थानमा  
अपने स्थानमें, गमयेत् अंगूठोसे विनादे, स्तब्धम् अने

१०१½. कृकरोर्जायैः—कृकरोर्जायै (घ. ड. त. व.)

१०२. व्याघ्रानने—व्याघ्रानने (घ. व.)

„ व्याघ्रानने हनुं विद्यालङ्घन—विद्यालङ्घने हनुं विद्यां (घ.)

१०३. प्रदेक्षिनीभ्यां.....विनामयेत् ॥—प्रदेक्षिनीभ्यां संग्रह्य  
चिकुकोशालनं हितम् । प्रस्तं च दमयेत् स्थानं स्निग्धं  
स्निग्धं च नामयेत् ॥ (घ.)

„ चोक्षाम्य—चोक्षाम्य (घ.)

„ स्तब्धं स्निग्धं विनामयेत्—स्निग्धं स्निग्धं च नामयेत् (घ.)

२३९५ हनुमे और स्तब्ध हनुको, चिकुको स्वेद  
आपीने स्वेद देकर, विनामयेत् दमयेत् चोक्षाम्य  
चाहिए ॥१०२-१०३॥

102-103. In a case of fixed graining  
mouth the right way of correcting  
the condition is as follows:—The  
jaw should be subjected to sudation  
procedure first, and then it should be  
pressed downwards by the thumbs  
(inserting in the mouth and pressing  
on the molar teeth) and pushed up-  
wards by the fingers (which are placed  
externally below the chin). In a con-  
dition of sub-luxation, it should be  
made to go to its proper position; and  
in a condition of fixity it should be  
subjected to sudation procedure and  
flexed.

प्रत्येकं स्थानदूष्यादिक्रियाविशेष्यमाचरेत् ।

प्रत्येकम् हरेकनी प्रत्येककी, स्थानदूष्यादि स्थान  
दूष्यादिना कोथी स्थान दूष्यादिके मेदसे, क्रियाविशेष्यम्  
लुटी लुटी क्रिया लुटी लुटी क्रिया, आचरेत् हरेकी  
कोथी करनी चाहिए ॥१०३॥

103½. Each case should be given  
special treatment according to the  
particular seat of affection, the parti-  
cular body-element affected, and such  
other factors.

वातरोगिणां वरप्रशस्तम्—

क्षपिस्तैलकसामज्जसेकाभ्यजनवस्तयः ॥१०४॥

क्षिग्धाः हवेदा निवातं च स्थानं प्राचरणानि च ।  
रसाः पक्षांसि भोज्यानि स्वादुस्थलवणानि च ॥१०५॥  
वृंहणं यच्च तत् सर्वं प्रशस्तं वातरोगिण्याम् ।

१०४½ क्षिपावैशेष्यमाचरेत्—क्षिपां सर्वत्र कारयेत् (घ.)

१०५. सेकाभ्यजन—पानाभ्यजन (घ. व. फ.)



સર્પિઃ- શી વી, તૈલ- તેલ તૈલ, વસા- વસા પત્તા, મજ્જ- મજ્જા મજ્જા, સેક- પરિષેક પરિષેક, અમ્બજન- અમ્બજન અમ્બજન, વસ્ત્રયઃ- વસ્ત્રિયો વસ્ત્રિયાં, સ્નિગ્ધાઃ- સ્નિગ્ધ સ્નિગ્ધ, સ્વેદાઃ- સ્વેદો સ્વેદ, સિવાતચ- ચ પવન- રહિત પવનરહિત સ્થાનમ્- સ્થાન સ્થાન, પ્રાવરણાણિ- ચ પ્રાવરણો પ્રાવરણ, રસાઃ- માંસરસો માંસરસ, પચાંસિ- દૂધ દૂધ, સ્વાદુ- મધુર મધુર, અમ્લ- ખાટાં સ્વદે, લવણાણિ- ચ તથા ખારાં તથા નમ્કીન, યોગ્યાણિ- ભોજન ભોજન, યસ- ચ અને ને ઓર જો, વૃંદણમ્- બુંદણ છે વૃંદણ છે, તસ- તે વડ, સર્વસ- બધું સર્વ, વાતરોગિણા- વાતરોગીઓ માટે વાતરોગિયોંકે હિં, પ્રશસ્ત- પ્રશસ્ત છે પ્રશસ્ત વે ॥ ૧૦૪-૧૦૫૩ ॥

104-105. Ghee, oil, fat, marrow, affusion, inunction, enemata, oleation, sudation, windless places, covering with blankets, meat-juices, medicated milks, articles of diet of sweet, acid and salt tastes and whatever is roborant are beneficial for the patient afflicted with the disorders due to morbid vata.

વાતરોગે માંસરસઃ —

વલાયાઃ પન્નમૂલસ્ય દશમૂલસ્ય વા રસે ॥ ૧૦૬ ॥  
અજશીર્ષામ્બુજાનૂપમાંસાદપિશિતૈઃ પૃથક્ ।  
સાધયિત્વા રસાન્ સ્નિગ્ધાન્દધ્યમ્લવ્યોષસંસ્કૃતાન્ ॥  
ભોજયેદ્વાતરોગાર્તે તૈર્વ્યક્તલવણૈર્નરમ્ ।

વલાયાઃ બલાના વલાકે, પન્નમૂલસ્ય પન્નમૂળના પન્નમૂલકે, દશમૂલસ્ય વા અથવા દશમૂળના અથવા દશ- મૂલકે, રસે ક્વાથમાં ક્વાથમેં, અજશીર્ષ- અકરાતું માથું બકરેકે શિર, અમ્બુજ- બળજર જલચર, આનૂપ- આનૂપ આનૂપ, માંસાદ- અને માંસાદ પ્રાણીઓનાં ઓર માંસાદ પ્રાણીઓંકે, પિશિતૈઃ માંસોથી માંસોંકે, પૃથક્- પૃથક્ પૃથક્ અલગ અલગ, રસાન્ રસોંકે રસોંકો, સાધયિત્વા સિદ્ધ કરીને સિ કરકે, સ્નિગ્ધાન્ તે માંસોંકે- શી- વગેરેથી સ્નિગ્ધ કરી- ઉન માંસોંકો વૃત આલિસે સ્નિગ્ધ કર, દધિ- દહીં દહીં, અમ્લ- ખટાઈ સ્વદે, વ્યોષ- અને ત્રિકટુ

વડે ઓર ત્રિકટુસે, સંસ્કૃતાન્ સંસ્કૃત કરી સંસ્કૃત કરકે, વ્યક્તલવણૈઃ સારા પ્રમાણમાં મીઠું નાખી નમક જ્યાદા ઢાલ કર, તૈઃ તેઓ વડે- ઉનસે, વાતરોગ- વાયુના રોગથી વાયુકે રોગસે, આર્તમ્ પીડિત પીડિત, નરમ્- મનુષ્યને મનુષ્યકો, ભોજયેદ્ ભોજન કરાવતું ભોજન કરવાનાં- ચાહિં ॥ ૧૦૬-૧૦૭૩ ॥

106-107. The patient afflicted with vata disorders should be given the diet of the meat-juices of the flesh of the head of the goat, or of the aquatic, wetland or carnivorous creatures prepared separately in the decoction of sida or penta-radices or deca-radices and seasoned with unctuous articles, sour curds and the three spices, and salted liberally.

વાતરોગે સ્વેદઃ —

પૈરેવોપનાહાંશ્ચ પિશિતૈઃ સંપ્રકરણયેત્ ॥ ૧૦૮ ॥  
વૃતતૈલયુતૈઃ સામ્લૈઃ ક્ષુણ્ણસ્વિઞ્ચૈરનસ્થિભિઃ ।

વૃતતૈલયુતૈઃ શી તથા તેલથી યુક્ત- શી તથા તેલસે યુક્ત, સામ્લૈઃ અમ્બુજ-બળજરોંકે અમ્લદ્રવ્યવાલે, અનસ્થિભિઃ અસ્થિરહિત અસ્થિરહિત, ક્ષુણ્ણસ્વિઞ્ચૈઃ અને છુંદીને ખાટાં ઓર કૂટકર ક્વાલે હુપ, પૈતૈઃ- પૈતૈઃ પૈતૈઃ અને- અને, પિશિતૈઃ માંસોથી માંસોંકે, ઉપનાહાન્ ઉપનાહોંકે- ઉપનાહોંકો, સંપ્રકરણયેદ્- તૈયાર કરવા બેઈએ તૈયાર કરના ચાહિં ॥ ૧૦૮૩ ॥

108-108. Poultices should be prepared from the same flesh mixed with ghee, oil and acid articles, with the flesh well crushed, steamed and the bones removed.

પત્રોત્કાથપયસ્તૈલદ્રોણ્યઃ સ્યુરવગાહને ॥ ૧૦૯ ॥

પત્રોત્કાથ- વાતપત્રોના ક્વાથ વાતપત્રોંકે ક્વાથ, પયઃ- દૂધ દૂધ, તૈલ- અને તેલથી બરેથી ઓર- ઓર તેલસે મરી હુડે, દ્રોણ્યઃ કાઠીઓ કોઠીયોં, અવગાહને

अवगाहन भाटे अवगाहनके लिए, स्युः प्रशस्त छे प्रशस्त हैं ॥ १०९ ॥

109. For immersion-bath the vessel should be filled with the decoction of the leaves curative of vata or with medicated milk or oil.

स्वभ्यक्तानां प्रशस्यन्ते सेकाश्चानिलरोगिणाम् ।

स्वभ्यक्तानाम् सारी पेठे अभ्यंग करावेळ अच्छी तरह अभ्यंग किये हुए, अनिलरोगिणाम् वातरोगीओ भाटे वातरोगियोंके लिए, सेकाः परिधेका परिवेक, प्रशस्यन्ते प्रशस्त छे प्रशस्त हैं ॥ १०९ ॥

109½. Affusions are recommended after a good inunction to the patient suffering from vata-disorder.

आनूपौदकमांसानि दशमूलं शतावरीम् ॥११०॥

कुलत्थान् बदरान्प्राणांस्तिलाव्राक्षां यवान् बलाम् ।  
वसादध्यारनालाम्लैः सह कुम्भ्यां विपाचयेत् १११

वसा- वसा वसा, दधि-आरनाल-अम्लैः आटा दही तथा डाल खट्टी दही तथा कांजीके, सह साथे साथ, आनूप- आनूप आनूप, औदक- तथा जल तथा प्राणीओना तथा जलवर जीवोंके, मांसानि मांसोंके, दशमूलम् दशमूल दशमूल, शतावरीम् शतावरी सतावर, कुलत्थान् कुलथी कुलथी, बदरान् बेर बेर, प्राणान् अण्ड उडद, तिलान् तेल तिल, राक्षाम् राक्षना राक्षना, यवान् जौ जौ, बलाम् अने भलाने और बलाको, कुम्भ्याम् ढाडीमा ढंडीमें, विपाचयेत् पकावेना पकावे ॥ ११०-१११ ॥

110-111. Cook in a pot the flesh of wetland and aquatic creatures, deca-radices, climbing asparagus, horsegram, jujube, black gram, til, indian groundsel, barley and sida along with fat, curds, sour conjee and acid articles.

नाडीस्वेदं प्रयुजीत पिष्टैश्चानुपनाहनम् ।

तैश्च सिद्धं घृतं तैलमभ्यङ्गं पानमेव च ॥११२॥

नाडीस्वेदम् तेओने नाडीस्वेदमां उनका नाडीस्वेदमें, प्रयुजीत प्रयोग करवे प्रयोग करे, पिष्टैः च अपि पानी पीसीने ओओथी और पीसकर उनमें, उपनाहम् उपनाह करवे उपनाह करे, तैः च अने तेओथी और उनसे, सिद्धम् सिद्ध करेवा सिद्ध किये, घृतम् घी घी, तैलम् तेल तैलना तथा नैलक, अभ्यङ्गम् अभ्यंग अभ्यङ्ग पानम् च एव तेओ पान करवा एवं पान करे ॥ ११२ ॥

112. Administer this in the form of kettle sudation. The paste made of these may also be used as poultice. And medicated ghee and oil prepared with this may be used as inunction and potion.

मुस्तं किण्वं तिलाः कुष्ठं सुराह्णं लवणं नतम् ।  
दधिक्षीरचतुःस्नेहैः सिद्धं स्यादुपनाहनम् ॥११३॥

दधि- दही दही, क्षीर- दूध दूध, चतुःस्नेहैः अने चार स्नेहोथी और चार स्नेहोंसे, सिद्धम् सिद्ध करेवा सिद्ध किये हुए, मुस्तम् मोश् मोश्, किण्वम् किण्व किण्व, तिलाः तेल तिल, कुष्ठम् कठ कूठ, सुराह्णम् देनदार देवदार, लवणम् सिंघावूय सैवव, नतम् तथा तगरना और तगरका उपनाहनम् खात् उपनाह करवे उपनाह करे ॥ ११३ ॥

113. The preparations made of nutgrass, yeast, til costus, deodar, rock-salt and indian valerian, along with curds, milk and the tetrad of unctuous articles should be used as poultice.

उत्कारिकावैषवारक्षीरमावतिष्ठौदनः ।

परण्डबीजगोधून्मयवकोलस्थिरादिभिः ॥११४॥

११२. पिष्टैश्चानुपनाहनम्-पिष्टैश्चानुपनाहनम् (व.)

११३. किण्वं-कुष्ठं (ग)

११४. उत्कारिका-उत्कारिका (घ).

सङ्कोचः सक्तं वायुमाक्षिप्य बहुलं भिषक् ।  
एरण्डपक्षैर्घृणीवाङ्गौ कथं विमोक्षयेत् ॥११५॥

भिषक् कैले वैद्य, सक्तम् पीयूषं वेदसायुज,  
गण्डम् यो भजे लङ्का, रक्तौ रते रात्रिमें, एरण्डपक्षैः  
स्नेहयुक्त, उष्णारिका- उष्णारिका उष्णारिका,  
वेसवार- वेसवार वेसवार, क्षीर- दूध दूध, माष- अज  
उद, तिल- तिल तिल ओदनैः सात सात, एरण्डबीज-  
ओरंडाणी पीप एरण्डबीज, गोधूम- धुं गेहूं, यव-  
जौ, कोक- ओर वैर, स्थिरादिभिः तथा स्थिरा-  
दिभिः तथा स्थिरादिभिः, बहुलम् अतो गाढा, माक्षिप्य  
द्वेप क्षीने लेप करके, एरण्डपत्रैः ओरंडाणा पत्रैः  
वते एरण्डके पत्रोंसे, वक्षीयाद् दक्षीने आधुं ठंकर  
बांध देवे, कल्पम् अने अवारम् और सुबहमें, विमो-  
क्षयेत् छोड़ी बाधुं खोल देवे ॥ ११४-११५ ॥

114-115. The physician should give  
on the painful part, a thick application  
prepared of pancakes, vesavara prepara-  
tion, milk, black gram, til, cooked  
rice, castor seeds, wheat, barley, jujube  
and ticktrefoil group of drugs, mixed  
with unctuous articles. This application  
should be made at night and bandaged  
with castor leaves, and the bandage  
should be removed the next morning.

क्षीराम्बुना ततः शिकं पुनश्चैवोपनाहितम् ।

सुश्रेद्वात्रौ दिवाचक्षं चर्मभिश्च सलोमभिः ॥११६॥

ततः पक्षी पीले, क्षीराम्बुना दूध तथा पाणी वते  
दूध और जलसे, शिकं परिषेक्ष क्षीने परिषेक्ष करके,  
उचः च एव क्षीने फिरसे, उपनाहितम् उपनाह लगाई

११५. बहुलं-बहुलं (ग.)

॥ वक्षीयाद्वात्रौ कथं विमोक्षयेत्-प्रकटाव रात्रौ कथं  
विमोक्षयेत् (ख.)

॥ वक्षीयाद्-प्रकटाव (ग.)

॥ कथं-कथं (घ.)

११६. क्षीराम्बुना-क्षीराम्बुना (फ.)

उपनाह लगाकर, सलोमभिः श्वेतानां कोमलक,  
चर्मभिः आभूषी चर्मोंसे, दिवा दिवसमा दिनभर,  
बद्धम् आधी रात्री देवे बांधकर उसे, रात्रौ रात्रे  
रात्रिमें, सुश्रेद्वा ओरंडुं खोल दे ॥ ११६ ॥

116. Then the part should be  
affused with milk and water and again  
poulticed. The bandage which is  
applied during the day must be of  
hide containing hair, and it should  
be removed at night.

फलानां तैलयोनीनामम्लपिष्टान् सुशीतलान् ।

प्रदेहानुषणाहंश्च गन्धैर्वीतहरैरपि ॥११७॥

पावसैः कुशरैश्चैव कारयेत् स्नेहसंयुतैः ।

तैलयोनीनाम् तैलवाणा तैलवाले, फलानाम् फलोंसे  
फलोंको, म्लपिष्टान् अम्ल द्रव्योंकी पीसीने अम्ल  
द्रव्योंसे पीसकर, सुशीतलान् शीतल सुशीतल, प्रदेहान्  
क्षेपे क्षेपे लेप लगावे, स्नेहसंयुतैः अने स्नेहयुक्त  
और स्नेहयुक्त, वातहरैः वातहर वातहर, गन्धैः गंध  
द्रव्यों मन्ध द्रव्यों पावसैः दूधपाके पावस, कुशरैः च  
एव अने कुशराक्षी ११ कुशराक्षीसे, उपनाहान् उपनाहों  
उपनाह, कारयेत् आधवा बांधे ॥ ११७ ॥

117-117½. Applications can be made  
of oleiferous seeds well pasted with  
acid articles and made very cold. And  
poultices can be made of the fragrant  
group of drugs curative of vata, milk  
padding or kedgerie mixed with  
unctuous articles.

वातरोमहृशः स्नेहयोगः --

रुक्षशुद्धानिलातानामतः स्नेहान् प्रचक्ष्महे ॥११८॥

विषिधान् विविधव्याधिप्रसङ्गायामृतोपमान् ।

अतः हवे अतः, रुक्ष- रुक्ष क्षीरवाणा रुक्ष-  
क्षीरवाले, शुद्ध- तथा केवण तथा केवल, अनिलातानाम्  
वायुधी पीडित रोगीओणी वायुसे पीडित रोगियोंके,

११८. प्रचक्ष्महे-प्रचक्ष्महे (ख. ग.)

विविध- नाना प्रकारका नाना प्रकारके, स्वादि. स्वाधि-  
यौनी स्वाधिवीकी, ब्रह्माय सन्ति माते स्वाधिके  
लिह, विविधाव् जुहा जुहा नाना प्रकारके, वस्तुतोपमान्  
अमृतसमान अमृतसमान, खेहान् स्नेहोये स्नेहोको,  
प्रचक्षते उद्धीये उद्धीये कहते हैं ॥ ११८३ ॥

118-118½. We shall describe the  
various unctuous preparations which are  
comparable to ambrosia and are curative  
of various disorders in those who are  
afflicted with dryness and pure vata-  
provocation.

द्रोणेऽम्भसः पचेद्भाणान् दक्षमूलावतुष्यलान् ११९  
यवकोलकुलस्थानां भागैः प्रस्थोन्मिलैः सह ।  
पादशेषे रसे षष्ठैर्जीवनीयैः सक्कैरैः ॥ १२० ॥  
तथा कर्जूरकाश्मर्यद्राक्षावदरपल्लुभिः ।  
सङ्गीरैः सर्पिषः प्रस्थः सिद्धः केवलवातमुत् ॥ १२१ ॥  
निरत्त्वयः प्रयोक्तव्यः पानाभ्यञ्जनवस्तिषु ।

यव- ७५ जी, कोल- ७५ बीर, कुलस्थानाव् अने  
कुलस्थी दरेकना और कुलस्थी प्रत्येकके, प्रस्थोन्मिलैः  
प्रस्थोन्मिलैः ६४ तोले, भागैः सह भागसहित भाग-  
सहित, दक्षमूलाव् दक्षमूलका दक्षमूलके, चतुष्यलान्  
सर्वना साथे भणी ५२ पक्ष सबके मिलित १६ तोले,  
भाणान् भाणोने भाणोको, अम्भसः द्रोणे ओके द्रोण  
७५ भां १०२४ ताल जलमें, पचेत् पकाववा पकावे,  
पादशेषे यत्पुर्थांश शेष रहेवा चतुर्थांश शेष रहे हुए,  
रसे क्वाथभां काथमें, सक्कैरैः साकरसहित सक्करा-  
सहित, जीवनीयैः षष्ठैर्जीवनीय द्रव्ये जीवनीय द्रव्य, तथा  
सङ्गीर- ७५ बीर खजूर, काश्मर्य- ७५ बीरानी ६५ अम्भसिके  
फल, द्राक्षा- ६५ द्राक्ष, बदर- ७५ बीर, फल्लुभिः  
फल्लुभिः ७५ बीर तथा अंजीरके, पिष्टैः उद्धीये कक्कोरि,  
सङ्गीरैः दूध साथे दूधके साथ, सिद्धः सिद्ध करेवा सिद्ध  
किये हुए, सर्पिषः वीणा वीका, प्रस्थः प्रस्थ प्रस्थ,  
केवलवातमुत् केवल वातनाशक केवल वातनाशक,  
निरत्त्वयः अने हानिरहित छे और हानिरहित है,  
सः तेने उसका, पान- पान पान, अभ्यञ्जन- अभ्यञ्ज  
अभ्यञ्ज, वस्तिषु अने वस्तिभां और वस्तिमें,

प्रयोक्तव्यः प्रयोग करेवा ओद्धीये प्रयोग करेवा  
चाहिए ॥ ११९-१२३ ॥

119-121½. Sixteen tolas of deco-radices  
should be decocted in 1024 tolas  
of water adding 64 tolas of barley,  
jujube and horse gram. When it is  
reduced to one fourth quantity, pre-  
pare a medicated ghee in this decoct-  
ion by taking 64 tolas of ghee  
and adding milk, the paste of the  
life-promoter group of drugs, sugar,  
date, white teak, grape, jujube and fig.  
This ghee is curative of disorders due  
purely to vata. This preparation is  
harmless and should be used as potion,  
inunction and enemata.

चित्रकं नागरं राक्षं पौष्करं पिप्पलीं सङ्गीम् १२२  
विष्टा विपाचयेत् सर्पिर्वातरोगहरं परम् ।

चित्रकम् चित्रकमूल चित्रकमूल, नागरम् ना-  
ग, राक्षं राक्षना राक्षना, पौष्करम् पुष्कर-  
पुष्करमूल, पिप्पलीम् पीपर पिप्पली, सङ्गीम् तथा  
केपूरकायदी तथा कचूरको, विष्टा पीप्पलीने पीसकर,  
सर्पिः वी वी, विपाचयेत् पकाववु पकावे परम् ते श्रेष्ठ  
वह श्रेष्ठ, वातरोगहरम् वातरोहक छे वातरोग-  
हर है ॥ १२२ ॥

122-122½. Medicated ghee, prepared  
with the paste of white flowered lead-  
wort, dry ginger, indian berry,  
orris root, long pepper and zedoary,  
is an excellent cure for vata disorders.

बलाविवर्धयते क्षीरे घृतमण्डं विपाचयेत् ॥ १२३ ॥  
तस्य शुक्तिः प्रकुञ्चो वा नखं मूर्धगतेऽनिले ।

बला- ७५ बला, विवर्ध- अने उद्धीये उद्धीये और  
विवर्धकी छालसे, घृते पकाववा पकावे हुए, क्षीरे दूधभां  
दूधमें, घृतमण्डम् वीणा भांने घृतमण्डका, विपाचयेत्

પકાવવા પકાનાં વાહિય, તસ્ય તેનાં ફસકે, યુક્તિઃ ૨ તોલા ૨ તોલે, પ્રકુચ્ચઃ વાઃ અથવા ૪ તોલાયુ અથવા ૪ તોલેકા, મૂર્ધંગતે શિરોગત શિરોગત, અનિલે વાયુમાં વાયુમેં, નસ્યમ્ નસ્ય આપયુ નસ્ય દેના વાહિય ॥૧૨૩૩॥

123-123½. The supernatant part of ghee should be prepared with the milk boiled with sida and bael. Two or four tolas of this should be used as nasal medication (sternutatory) in condition of morbid vata affecting the head.

ગ્રામ્યાનૂપૌદકાનાં તુ મિત્વાઽસ્થીનિ પચેજ્જલે ૧૨૪  
તં સ્નેહં દશમૂલસ્ય કષાયેણ પુનઃ પચેત્ ।  
જીવકર્ષભકાસ્ફોતાવિદારીકપિકચ્છુમિઃ ॥૧૨૫॥  
વાતઘ્નૈર્જીવનીયૈશ્ચ કલ્કૈઃક્રિશીરભાગિકમ્ !

ગ્રામ્ય- ગ્રામ્ય ગ્રામ્ય, આનૂપ- આનૂપ આનૂપ  
પૌદકાનામ્ અને જળચરોનાં ઔર જલચરોંકી, અસ્થીનિ  
હાડકાં હડિયાં, મિત્વા ફેડીને ફોફર, જલે પાણીમાં  
જલમેં, પચેત્ પકાવવાં પકાવે, પુનઃ તમ્ સ્નેહમ્ પછી તે  
સ્નેહને ફિર ઝન સ્નેહકો, દશમૂલસ્ય દશમૂલનાં દશ-  
મૂલકે, કષાયેણ કષાયથી કાઢસે, જીવક- ૭૧૬ જીવક,  
ઋષભક- ૪૫૭૬ ઋષભક, આસ્ફોતા- સારિવા સારિવા,  
વિદારી- વિદારીકંદ વિદારીકંદ, કપિકચ્છુમિઃ કોચાં  
કૌંચવીજ, વાતઘ્નૈઃ વાયુનાશક વાતઘ્ન, જીવનીયૈઃ ચ અને  
૭૫૭૬ગણુના ઔર જીવનીયગણકે, કલ્કૈઃ કલ્કથી  
કલ્કોસે, ક્રિશીરભાગિકમ્ એ ભાગ દૂધ નાખીને દો  
માગ દૂધ ઢાલકર, પચેત્ પકાવવાં પકાવે ॥૧૨૪-૧૨૫૩॥

124-125½. The bones of domestic wet-land and aquatic creatures should be broken to bits and cooked in water. The unctuous fluid obtained should again be cooked in the decoction of the deca-radices, adding the

૧૨૪. ગ્રામ્યાનૂપૌદકાનાં તુ-ગ્રામ્યાનૂપૌદકાનાં તુ (ક. ક. જ.)  
૧૨૫૩. વાતઘ્નૈર્જીવનીયૈશ્ચ-વાતઘ્નૈર્જીવનીયૈશ્ચ (મ.)

paste of Jivaka, Rishabhaka indian sar-saparilla, white yam and cowage and of vata-curative drugs or the life-promoter group of drugs and double the quantity of milk.

તત્સિદ્ધં નાવનાભ્યક્તાત્તયા પાનાનુવાસનાત્ ॥૧૨૬॥  
સિરાપર્વાસ્થિકોષ્ઠસ્યં પ્રણુદત્યાશુ મારુતમ્ ।

સિદ્ધમ્ સિદ્ધ થયેલું સિદ્ધ હુઆ, તત્ તે વદ,  
નાવન- નસ્ય નાવન, અભ્યક્તાત્ અભ્યંગ અભ્યંગ, તયા  
પાન- પાન પાન, અનુવાસનાત્ અને અનુવાસનથી ઔર  
અનુવાસનસે, સિરા- સિરા સિરા, પર્વ- પર્વ પર્વ, અસ્થિ-  
અસ્થિ અસ્થિ, કોષ્ઠસ્યમ્ અને કોષ્ઠસ્થિત ઔર કોષ્ઠ-  
સ્થિત, મારુતમ્ વાયુને વાયુકો, આશુ શીઘ્ર શીઘ્ર,  
પ્રણુદતિ દૂર કરે છે દટાવા હે ॥ ૧૨૬૩ ॥

126-126½ By the use of this preparation as nasal medication, inunction, potion and unctuous euema, the morbid vata affecting the vessels, joints, bones and other cavities gets quickly cured.

યે સ્યુઃ પ્રક્ષીણમજ્જાનઃ ક્ષીણશુક્રૌજસશ્ચ યે ॥૧૨૭॥  
વલપુષ્ટિકરં તેષામેતત્ સ્યાદમૃતોપમમ્ ।

યે જે જા, પ્રક્ષીણ-મજ્જાનઃ ક્ષીણ મજ્જાવાળા હોય  
ક્ષીણ મજ્જાવાલે હોં, યે ચ અને યેઓનાં ઔર જિનકે,  
ક્ષીણશુક્રૌજસઃ સ્યુઃ શુક્ર અને ઓજ ક્ષીણ થયેલ હોય  
શુક્ર ઔર ઓજ ક્ષીણ હુઈ હોં, તેષામ્ તેઓને માટે અનેક  
ક્રિય, એતત્ આ યદ, વલપુષ્ટિકરમ્ બળપુષ્ટિકારક  
બળપુષ્ટિકારક, અમૃતોપમમ્ અને અમૃતસમાન ઔર  
અમૃત સમાન, સ્યાત્ હે હે ॥ ૧૨૭૩ ॥

127-127½. For those suffering from loss of marrow as well as those who suffer from loss of semen and vital essence, this imparts strength and robustness and acts like ambrosia.

तद्वत्सिद्धा वसा नक्रमत्स्यकूर्मचुल्लकजा ॥१२८॥  
प्रत्यग्रा विधिनाऽनेन नस्यपानेषु शस्यते ।

तद्वत् तेनी पेडे इसी प्रकार, सिद्धा सिद्ध डरेडी सिद्ध की हुई, नक- नक नक, मस्य- भाछडी मछजी, कूर्म- कायथा कछुआ, चुल्लकजा अने युवुडनी और चुल्लककी, प्रत्यग्रा ताछ ताजी, वसा वसा वसा, अनेन आ इसी, विधिना विधिधी विधिसे, नस्य- नस्य नस्य पानेषु अने पानभा और पानमें, शस्यते प्रशस्त छे प्रशस्त है ॥ १२८३ ॥

128-128½. The fresh fat of the alligator, fish, tortoise or the porpoise prepared similarly (as described above) is recommended as nasal medication and potion.

प्रस्थः स्वात् त्रिफलायास्तु कुलत्थकुडचद्वयम् ॥१२९॥  
कृष्णगन्धात्वगाढकयोः पृथक् पञ्चपलं भवेत् ।  
रास्त्राचित्रकयोर्द्वे द्वे दशमूलं पलोन्मितम् ॥१३०॥  
जलद्रोणे पचेत् पादशेषे प्रस्थान्मिनं पृथक् ।  
सुरारनालदध्यम्लसौवीरकतुषोदकम् ॥१३१॥  
कोलदाडिमवृक्षाम्लरसं तैलं वसां घृतम् ।  
मज्जानं च पथञ्चैव जीवनीयपलानि षट् ॥१३२॥  
कस्कं दत्त्वा महास्नेहं सम्यगेन विपाचयेत् ।

त्रिकलायाः तु त्रिफला त्रिफला, प्रस्थः ओष्ठ प्रस्थ एक प्रस्थ, कुलत्थ- डण्डी कुलथी, कुडचद्वयम् छे कुडच दो कुडच, स्वात् होय होवे, कृष्णगन्धात्वक्- सुरगवानी छाल शोभाजनकी छाल, आढकयोः अने तुवेर और भरहर, पृथक् द्वे द्वे प्रत्येक, पञ्चपलम् पांच पल पांच पल, भवेत् छेवां छेवे, रास्त्रा- रास्त्रा रास्त्रा, चित्रकयोः अने चित्रकनी और चित्रकके, द्वे द्वे छे छे पल दो दो पल, पलोन्मितम् अने पलप्रमाण और पल-

१२८३. नस्यपानेषु-नस्ये पाने च (फ.)

१२९ रसं तैलं-रसांस्तैलं (फ.)

१३१. कस्कं दत्त्वा-कस्कीकृत्य (फ.)

॥ सम्यगेन विपाचयेत्-सम्यगेभिर्विपाचयेत् (क. फ.)

प्रमाण, दशमूलम् ॥१३०॥ जलद्रोणे ओष्ठ द्रोण पछीमा एव द्रोण पानीमें, पचेत् पकावना पकावे, पादशेषे अनुयांश आधी छे चोपाके शेष रहने पर, सुरा- सुरा सुरा, आरनाल- डण्डी आरनाल, दध्यम्ल- अण्डुं छाली चडी दनी, सौवीरक- सौवीरक सौवीरक, तुषोदकम् तुषोदक तुषोदक, कोल- कोल वेर, दाडिम- दाडिम दाडिम, वृक्षाम्ल- वृक्षाम्ल और अडमला और वृक्षाम्ल, रसम् रस रस, तैल- तैल तैल, वसा- वसा वसा, घृतम् घी घृत, मज्जानम् मज्जान मज्जान, पथः च पथ अने छे छे और पथ पृथक् द्वे द्वे प्रत्येक, प्रस्थान्मितम् ओष्ठ प्रस्थ १४ तोला षट् जीवनीयपलानि अने छ पल अण्णीय अण्णीय ७ २४ तोले जीवनीय औषधियोंका, कलकम् दत्त्वा डरेड आधी कलक डालकर पनक् आ इस, महास्नेहम् महास्नेहने महास्नेहका, सम्यक् अण्णर सम्यक्, विपाचयेत् पकावने पाक करे ॥ १२९-१३२३ ॥

129-132½. Take 64 tolas of the three myrobalans, 32 tolas of horsegram, 20 tolas each of the bark of drumstick and pigeon pea, 8 tolas each of indian groundsel and white flowered leadwort and four tolas of each of the deca-radices and decoct them in 1024 tolas of water, till reduced to one fourth its quantity. Then add 64 tolas each of sura wine, sour conjee, sour curds, sauveera wine, tushodaka wine, the decoction of small jujube, pomegranate, kokam butter, oil, fat, ghee, marrow, milk and 24 tolas of the paste of the life-promoter group of drugs, and prepare the great unctuous preparation in due manner.

सिरामज्जास्थिगे चाते सर्वाङ्गैकाङ्गरोगिषु ॥१३३॥  
वेपनाक्षेपशूलेषु तमभ्यङ्गे प्रयोजयेत् ।



સિરા-મજા- શિરા, મજા શિરા, મજા, અસ્થિને અને અસ્થિમત્ત ઔર અસ્થિમત્, વાને વામુમાં વાદુને, સર્વાન્ન-શ્કાન્ન- સર્વાન્ન અને શ્લેષ્મીન્ન સર્વાન્ન ઔર શ્લેષ્મી, તેમણે રોગોમાં રોગને, વેગન-આક્ષેપ- ક્રાંતિ, આક્ષેપ કમ્પ, આક્ષેપ, શ્લેષ્મી અને શ્લેષ્મી ઔર શ્લેષ્મી, અમ્લકે અમ્લક ક્રાંતિ આટે અમ્લકાર્થ, તમ્ તે સ્નેહને ઉપ બેઠકા પ્રયોજયેત યોગ્યેઃ પ્રયોગ કરે ॥ ૧૩૩૩ ॥

133-133½. This should be used as inunction in morbid vata affecting the vessels, marrow and bones, as well as in conditions of tremors contractions and colic, and vata disorder affecting the entire body or only a part of the body.

નિર્ગુણ્ડ્યા મૂલપત્રાભ્યાં ગૃહીત્વા સ્વરસં તતઃ ॥૧૩૩૪॥  
તેન સિદ્ધં સમં તૈલં નાડીકુષ્ઠાનિભાર્તિષુ ।  
હિતં પામાપચીનાં ચ પાનાભ્યજનપૂરણમ્ ॥૧૩૩૫॥

નિર્ગુણ્ડ્યાઃ નગોડનાં નિર્ગુણ્ડીકે, મૂલપત્રાભ્યાં મૂળ અને પાનમાંથી મૂલ ઔર પત્રોકે, સ્વરસ સ્વરસ, ગૃહીત્વા કઢીને લેકર, તતઃ પછી તેનાથી ફિર ફરવે, સિદ્ધ પકાવેલ સિદ્ધ કિયા હુઆ, સમમ્ તેના જેટલું સમમાન, તૈલમ્ તેલ, નાડીકુષ્ઠ- નાડીપ્રભુ, કુષ્ઠ નાડીવ્રજ, કુષ્ઠ, અનિભાર્તિષુ અને વાતની પીડા-ઓમાં ઔર વાતપીડાને, પામા-અપચીનાં ચ તથા પામા અને અપચીમાં એવં પામા તથા અપચીમાં પાન-અભ્યજન-પાન, અભ્યંગ પાન, અભ્યંગ, પૂરણમ્ અને પૂરણને માટે ઔર પૂરણને, હિતમ્ હિતકર્તા છે હિતકારી છે ॥૧૩૪-૧૩૫॥

134-135. The expressed juice of the root and leaves of the chaste tree should be cooked with an equal quantity of oil. This oil used as potion, inunction and earfill, is beneficial in sinuses or fistula-in-ano, dermatosis and

other vata disorders as well as in scabies and scrofula.

કાપાસાસ્થિકુલસ્થાનાં રસે સિદ્ધં ચ વાતનુલ્ ॥

કાપાસાસ્થિક- કપાસિયા વિનોને, કુલસ્થાનાં તથા કુલસ્થાના ઔર કુલસ્થિકે રસે કપાસમાં રસે, સિદ્ધ ચ પકાવેલ તેલ સિદ્ધ કિયા હુઆ તૈલ, વાતનુલ્ વાતને છે વાતનાશક છે ॥ ૧૩૫૩ ॥

135½. The oil prepared with the decoction of cotton seeds and horsegram is also curative of vata.

મૂલકસ્વરસે શીરસમે સ્થાપ્યં ડ્યહં દધિ ॥૧૩૬॥  
તસ્યામ્લસ્ય ત્રિમિઃ પ્રસ્થૈસ્તૈલપ્રસ્થં વિપાચયેત્ ।  
પપ્ત્વાદ્દશકેરારાસ્નાલવણાર્દ્રકનાગરૈઃ ॥૧૩૭॥  
સુપેષ્ટૈઃ પલિકૈઃ પાનાત્તદમ્યજ્ઞાચ વાતનુલ્ ॥

શીરસમે દૂધના સમાન માગવાળા દૂધકે સમાનમાન, મૂલકસ્વરસે મૂળના સ્વરસમાં મૂલીકે સ્વરસમે, દધિ દહીં દહીકો, ડ્યહન્ ત્રણ દિવસ ત્રીન દિનતક, સ્થાપ્યમ્ રાખવું રાખવે, તસ્ય તે ઉપ, અમ્લસ્ય અમ્લના અમ્લકે, ત્રિમિઃ ત્રિમિઃ ત્રણ પ્રસ્થથી ૧૧૨ તોલેમ, સુપેષ્ટૈઃ તથા સારી રીતે કલક કરેલા ઔર અચ્છી તરફમે કલક બનાવે હુઆ, પલિકૈઃ ઔઠ ઔઠ પલ પ્રમાણનાં એક એક પલ પ્રમાણકે, યજ્ઞાદ્- જેઠમથ મુલકટી, શર્કરા-રાસ્ના-સઃકર, રાસ્ના શર્કરા, રાસ્ના, લવણ-સિંધુલુ સંધાનમક, આર્દ્રક- આદુ આર્દ્રક, નાગરૈઃ અને સૂતથી ઔર સોંઠસે, તૈલપ્રસ્થમ્ ઔઠ પ્રસ્થ તેલને એક પ્રસ્થ તેલકો, વિપાચયેત્ પકાવવું પકાવે, તત્ તે વહ, પાનાત્ પાન કરવાથી પાન, અમ્યજ્ઞાત્ ચ અને અમ્યંગ કરવાથી ઔર અમ્યંગસે, વાતનુલ્ વાતને છે વાતનાશક છે ॥૧૩૬-૧૩૭॥

136-137½. Curds should be kept for three days in a mixture of equal measures of the expressed juice of radish and milk. Prepare a medicated oil by taking 64 tolas of oil and treble the quantity of this sour preparation

૧૩૪ નિર્ગુણ્ડ્યા.....તતઃ--મૂલપત્રાં નિર્ગુણ્ડી પીડયિત્વા  
રસેન વ (ફ. વ.)

૧૩૫ નાડીકુષ્ઠાનિભાર્તિષુ--નાડીકુષ્ઠાનિભાર્તિષુ (ફ.)



adding the paste of 4 tolas each of liquorice, sugar, india groundsel rock salt and green ginger. This oil, taken as potion and friction is curative of vata.

पञ्चमूलकषायेण पिण्याकं बहुवार्धिकम् ॥३८॥

पक्त्वा तस्य रसं पूत्वा तैलं दधत् विपाचयेत् ।

पक्त्वाऽऽद्युपैतैस्त्वं सर्वेनातविकारनुत् ॥३९॥

संस्त्रे श्लेष्मणा वतह्वाते शस्तं विशेषतः ।

बहुवार्धिकम् अहु वरभना बहुत वर्षकी, पिण्याकम् भोजने खलीको, पञ्चमूल- पञ्चभूजना पञ्चमूलके, कषायेण उवाचथी कायसे, पक्त्वा पडावी पकाकर, तस्य रसस्य तेनो रस उसके रसको, पूत्वा आभी बर्धने छातकर, अद्युपेन तेभा अद्युपेन उसमें आद्युपेन, पक्त्वा इधथी दूधसे, तैलप्रसम् अंक प्रस्य तैल १४ तोले तैल, विपाचयेत् पडावपुं पकावे, एतत् आ यह, सर्व- सर्व सब, वात-विकारनुत् वातविकारने नाश करे के वातविकारका नाशक है, एतत् आ तैल यह तैल, श्लेष्मणा संस्त्रे अन्नी आगे भोजेना कफसंस्त्रे, वाते च वायुभा वायुमें, विशेषतः भास्य करीने विशेषतः, सस्य प्रशस्त के प्रशस्त है ॥ १३८-१३९ ॥

138-139½. Cook very old oil-cake in the decoction of penta-radices; strain the solution and prepare a medicated oil in this solution by taking 64 tolas of oil and eight times the quantity of milk. This oil is curative of all disorders of vata. This is specially recommended in conditions of vata associated with kapha.

यवकोलकुलस्थानां श्रेयसाः शुष्कमूलकात् ॥४०॥

१३८. पञ्चमूलकषायेण-पञ्चमूलकषायेण (ब.)

१३९. पक्त्वा तस्य रसं पूत्वा-पक्त्वाऽम्भसि रसे तस्मिन् (ब.)

,, पक्त्वा तस्य रसं-पक्त्वाऽम्भसि रसे (क.)

विद्वान्वाक्छिमेकैकं द्रवैरम्लैर्विपाचयेत् ।

तेन तैलं कषायेण कलाहलेः कटुभिस्तथा ॥४१॥

पिष्टैः सिद्धं महावातैरार्तः शीते प्रयोजयेत् ।

यवकोल- यव, कोल जौ, वेर, कुलस्थानम् इण्डी कुलवी, श्रेयसाः मन्प्रीपर गजपिप्पली, शुष्कमूलकात् यडा रणे सखी मली, विद्वान् च अने भीषीनी छावन्नी और वेल्की छाव, पक्त्वाये अंक और हर एकके, अजलिम् अजलिने ११ तोलेको, अम्लः द्रवैः अम्ल द्रवो आगे लम्ब द्रव्योंसे, विपाचयेत् पडावपी पकावे, तेन ते इस, कषायेण उवाचथी कायसे, कलाहलेः भाटा इण्डीनां कड़े फलोंसे, तथा कटुभिः अने कटु द्रव्योंना तथा कटु द्रव्योंके पिष्टैः कटुथी बत्तसे, सिद्धम् तैलम् सिद्ध करेगा देखने सिद्ध किये हुए तैलको, शीते ठंडे अथवा पछी सौतल होने पर, महावातैः महावातथी महावायुसे, आर्तः पीडासेवा भुगुप्पे पीड़ित मनुष्य, प्रयोजयेत् उपयोगभा लेवुं प्रयुक्त करे ॥ १४०-१४१ ॥

140-141½. Take 16 tolas each of barley, jujube, horsegram, elephant pepper, dry radish and bael, and cook them in a sour solution (such as sour gruel or curds). The medicated oil prepared with this decoction along with fruit acids and the paste of pungent spices, should be used by the patient suffering from pernicious disorders of vata, in the cold season.

वातरोगे बलातैरम्—

सर्ववातविकाराणां तैलान्यन्याभ्यतः शृणु ॥४२॥

चतुष्प्रयोगवायुष्यबलवर्णकराणि च ।

रजःशुक्रप्रदोषघ्नान्यपत्यजननानि च ॥४३॥

निरस्यणानि सिद्धानि सर्वदोषहराणि च ।

अतः हवे अब, सर्व- सधभा सब, वातविकाराणां वातविकारनेभा उपयोगी भनार वातविकारोंमें प्रयुक्त होनेवाले, अन्यानि भीष्म दूधसे, तैलानि तैलो तैलोंको, शृणु सांभलो सुनो, चतुष्प्रयोगाणि ते तैलोने नार

પ્રકારે પ્રયોજી શકાય છે. એ તૈલ ચાર પ્રકારે પ્રયુક્ત હોઈ શકે છે, આયુષ્ય-બલ-અયુષ્ય, બલ, આયુષ્ય, વલ, વર્ણ-કરાણિ ચ અને પશ્ચી કરનાર છે. ઔર વર્ણ-કર છે, રજઃ-શુક્ર-પ્રદોષગ્નાનિ એદોષ અને શુક્રદોષના નાશ કરનાર છે. ચાર્તવ ઔર શુક્રકે દોષોને હરનેવાલે છે, અપચ્ચજનનાનિ ચ સંતાન ઉત્પન્ન કરનાર છે અપચ્ચજનક છે, નિરચ્ચયાનિ તુકસાન કરનાર નથી હાનિ કાનેવાલે નથી છે, સિદ્ધાનિ અકસીર છે અકસીર છે, પર્વદોષહરાણિ ચ અને સર્વ દોષ કરનાર છે ઔર સર્વ દોષ હરનેવાલે છે ॥ ૧૪૨-૧૪૩ ॥

142-143. Listen now to the description of other preparations of oils that are beneficial in all disorders of vata that can be used in all the four therapeutic modes, that are promotive of longevity, strength and complexion, that are curative of menstrual and seminal disorders, which are inductive of procreation, and which are free from harmful effects and are generally curative of all kinds of morbidity.

સહાચરતુલાયાઃ રસે તૈલાઢકં પચેત્ ॥૧૪૨॥  
મૂલકલ્કાદશપલં પયો દત્ત્વા ચતુર્ગુણમ્ ।  
સિદ્ધેઽસ્મિન્નકરાર્ચુર્નાદિષ્ટાદશપલં મિષક્ ॥૧૪૫॥  
વિનીય દારુણેત્તદ્વાતવ્યાધિષુ યોજયેત્ ।

સહાચરતુલાયાઃ ચ સહાયના ઔકે તુલા સહાચરકે ૪૦૦ તોલે, રસે ક્વાથમાં કાથમે, તૈલાઢકક ઔકે આઠકે તેલ ૨૫૬ તોલે તૈલ, પચેત્ પકાવેત્ પકાવે, મૂલકલ્કાત્ સહાયરના મૂળને કલ્કે સહાચરકે મૂલકા કલ્ક દશ-પલમ્ ૬૫ પલ ૪૦ તોલે, ચતુર્ગુણમ્ અને ચારગુણુ ઔર ચૌગુના, પયઃ દૂધ દૂધ, દૂધના નાખીને ઢાલકર, સિદ્ધે અસ્મિન્ સિદ્ધ કરેલા ઔમાં સિદ્ધ હોને પર રસમે, નકરાર્ચુર્નાત્ સાકરતું ચૂર્ણુ ચીનીકા ચૂર્ણ, બઢાદશ-

પલમ્ ૨૫૬ પલ ૪૨ તોલે વિનીય મેખલીને મિલકર, મિષક્ પૈલે વૈધ, દારુણેષુ બધકર દારુણ, વાતવ્યાધિષુ તત્ત વ્યાધિઓમાં વાતવ્યાધિઓમે, એત્ત ઔમે. રસકા, પ્રયોજયેત્ યે.અર્ણુ પ્રયોગ કરે ॥૧૪૪-૧૪૫ ॥

144-145. Prepare a medicated oil in 400 tolas of the decoction of crested purple nail dye, by using 256 tolas of oil and adding 40 tolas of the paste of radish and four times the quantity of milk. The physician should use this oil mixed with 72 tolas of powdered sugar, in severe types of vata-disorder.

શ્વદંટ્રાસ્વરસપ્રસ્યો દ્વૌ સમૌ પયસા સહ ॥૧૪૬॥  
ષટ્પલં શૃંગ્વેરસ્ય ગુડ્યાષ્ટપલં તથા ।  
તૈલપ્રસ્થં વિપકં તૈર્દવાત્ સર્વાનિભાર્તિષુ ॥૧૪૭॥  
ઝીર્ણે તૈલે ચ દુગ્ધેન પેયાકલ્પઃ પ્રશસ્યતે ।

પયસા સહ દૂધની સાથે દૂધકે સાથ, સમૌ દ્વૌ સમ પ્રમાણમાં સમ માયમે, શ્વદંટ્રા ગોખરુને ગોલકકા, સ્વરસપ્રસ્યો સ્વરસ એ પ્રસ્થ સ્વરસ ૧૨૮ તોલે, શૃંગ્વેરસ્ય મૂઠ શૃંગ્વેર, ષટ્પલમ્ ૭ પલ ૨૪ તોલે, ગુડ્યઃ તથા ગેળ તથા ગુડ, અષ્ટપલમ્ આઠ પલ ૩૨ તોલે, તૈઃ તે.ઔથી રસે, વિપક્મ્ પકાવેત્ પકાયા હુઆ, તૈલપ્રસ્થઃ ઔકે પ્રસ્થ તેલને ૬૪ તોલે તૈલ, સર્વા-નિભાર્તિષુ સર્વ વાતવ્યાધિઓમાં સર્વ વાતરોગમે, દવાત્ દેવું વેવે, તૈલે ઝીર્ણે ચ અને તેલ ૫૨ની વર્તા ઔર તૈલ ઝીર્ણ હોને પર, દુગ્ધેન દૂધની સાથે દૂધકે સાથ, પેયાકલ્પઃ પેયાના ઉપયોગ પેયાપ્રયોગ, પ્રશસ્યતે પ્રશસ્ત છે પ્રશસ્ત છે ॥ ૧૪૬-૧૪૭ ॥

146-147. Prepare a medicated oil by taking 64 tolas of oil along with 128 tolas of the expressed juice of small caltrops, equal quantity of milk,

૧૪૬. શ્વદંટ્રા.....પયસા સહ-શ્વદંટ્રાયાઃ કષાયસ્ય દ્વૌ પ્રસ્યો પયસા સમૌ (ક.)

૧૪૭. ષટ્પલં-કટ્પલં (ક.)

૧૪૫. પયો દત્ત્વા-પચ્વા ક્ષીરે (ક.)

૧, ચતુર્ગુણમ્-ચતુર્ગુણે (વ.)

one fourth part of guduch and one

eighth quantity of indian groundsel. and cook in 25600 tolas of water till it is reduced to one tenth of the quantity. Prepare 256 tolas of oil with this decoction, adding equal quantities of whey, sugar-cane juice and vinegar along with half the quantity of goat's milk and the paste of four tolas of the leaves of each of the following drugs:— zedoary, long leaved pine deodar small cardamom, indian madder, eagle wood, sandal, himalayan cherry atea, nut grass, wild bean, pea, liquorice, holy basil, shell Rishabhaka, Jivaka, palas juice, musk, hairy onesma, buds of spanish jasmine melilat, saffron, lichen, nutmeg, musk mallow fragrant sticky mallow, cinnamon, resin of indian olebanum, camphor, liquid storax, yellow resin, cloves shell cubeb pepper, costus, nardus, perfumed cherry, glory tree, indian valerian, ginger grass, sweet flag, sprouts of emetic nut and fragrant poon. This should then be strained and the paste of fragrant drugs be added to it and administered duly.

भास्यं कासं ज्वरं हिक्कां छर्दिं गुल्माच्च अतं क्षयम् ॥  
प्रीहशोषावपस्मारमलक्ष्मीं च प्रणाशयेत् ।

बलातैलमिदं श्रेष्ठं वातश्याधिनिनाशनम् ॥१५६॥  
(अग्निवेशाय गुग्गुणा कृष्णात्रेयेण भाषितम् ।)

इति बलातैलम् ।

भास्यं कासम् ते तेन श्वासः, कास वह तैल श्वात्, कास, ज्वरम् ज्वरं ज्वर, हिक्काम् हेङ्गी हिक्का, छर्दिम् छर्दि, गुल्माच्च शुद्धं गुल्म, क्षयम् क्षयश्च क्षत, क्षय क्षत, क्षय, प्रीह-शोषो प्रीहः, शोषः प्रीहा, शोषः,

१५५. हिक्कां-मूर्च्छां (क. त. द. व. ञ)

अपस्मारम् अपस्मारं अपस्मार, मलक्ष्मीम् च अग्ने  
अलक्ष्मीने। जीव अलक्ष्मी इत्युक्ता, प्रणाशयेत् नाश करे  
के नाश करता है, वातश्याधि- वातश्याधिना वातरोमका,  
निनाशनम् नाश करनेवाला नाशक, श्रेष्ठम् श्रेष्ठ श्रेष्ठ, इदम्  
आमह बलातैलम् अलातैल बलातैल, गुग्गुणा गुग्गु गुग्गु,  
कृष्णात्रेयेण कृष्णात्रेये कृष्णात्रेये, अग्निवेशाय अग्नि-  
वेशने अग्निवेशने, भाषितम् अक्षि अक्षि के कहा है  
॥ १५५ ॥ १५६ ॥ इति आमह बलातैलम् अलातैल के  
बलातैल है ।

155-156. This excellent Sida oil is curative of vata disorders in general and particularly of dyspnea, cough, fever hyecup. vomiting, gulma, pectoral lesions, cachexia, splenic disorders, consumption, epilepsy and lack-lustre appearance. (This has been taught to Agnivesa by his guru Krishna Atreya). Thus has been described the Sida oil.

वातरोगे अमृताद्यं तैलम्—

अमृतावास्तुलाः पञ्च द्रोणेष्टयस्वगां पचेत् ॥१५७॥

पादशेषे समक्षीरं तैलस्य द्वायाढकं पचेत् ।

पलाभांसीनतोशीरसारिककुष्ठवन्दनैः ॥१५८॥

बलातामलकीमेदाशनपुष्पधिजीवकैः ।

काकोलीक्षीरकाकोलीभावावधतिबलानलैः ॥१५९॥

महाभावणिजीवन्तीविदासैकपिकच्छुभिः ।

शतावरीमहामेदाकर्कटाख्याहरेणुभिः ॥१६०॥

१५७. अमृतावास्तुलाः पञ्च-द्रुणाः पञ्च गुडूच्यास्तु

(क. व. छ. त. फ.)

१५८. पला-चला (छ. फ.)

१५९. बलातामलकी.....जीवकैः—शतपुष्पावलामेदामहामेदधि-

जीवकैः (व. ञ.)

—शतपुष्पावलामेदामहामेदहिजीवकैः (घ.)

१६०. महाभावणि-सहाभावणी (व.)

॥ महामेदा-तामलकी (घ. त.)

वन्नागोक्षुरकैरण्डराक्षाकालावहावरैः ।  
वीराश्लकिमुस्तत्वक्षपत्रर्षभकालकैः ॥१६१॥  
सहैलाकुङ्कुमसृक्कात्रिदसाहैश्च कर्षिकैः ।  
मन्त्रिष्ठायास्त्रिकर्षेण मधुकाष्ठपलेन च ॥१६२॥  
कश्कैस्तत्र क्षीणवीयाग्नेबलतन्मूढचेतसः ।  
उन्मादादत्यपस्वारेराताश्च प्रकृतिं नयेत् ॥१६३॥  
वातव्याधिहरं श्रेष्ठं तैलाद्यममृताह्वयम् ।  
(कृष्णात्रेयेण गुरुणा भाषितं वैद्यपूजितम् ॥१६४॥)

इत्यमृताद्यं तैलम् ।

अमृताद्याः गन्गा मिलेय, पञ्च तुलाः पाच्य तुलाने  
२००० तोलेनो, अपाङ्ग पाण्डु तिल, कष्टसु द्रोणेषु आठ  
द्रोण्युमां ८१९२ तोलेमें, पचेत् पडावपी पकावे, बाद-  
शेषे श्रुतांश्च आशी रहे त्पारे चतुर्थांश रोच रहने पर,  
समक्षीरम् समान प्रमात्र्युमां द्वय साथे समभागमें दध  
डाककर, तैलस्य तैल तैल, द्वादाहकम् मे आठउ ५१२ तोले,  
कार्षिकैः अने तेमां अकैकै उर्ष उन्नमें एकएक तोला,  
पुला- नान्दी मेक्षथी छोटी इलायची, मांसी-नत- नडा-  
मांसी, तगर कटायांसी, तगर, उक्षीर- काणै ११ तोला स्वस,  
साहिवा- साहिवा साहिवा, कुष्ठ-चन्दनै. उठ, यन्दन कूठ,  
चन्दन, बला- भवा बला, तालकली- ताम्रकली मुंहे  
आंवला, मेदा- मेदा मेदा, अतपुष्पा- शतपुष्पा सोया,  
अवि- अर्द्ध अर्द्ध, जीवकैः शुक्ल जीवक काकोली-  
काकोली, क्षीरकाकोली- क्षीरकाकोली क्षीर-  
काकोली, अश्वत्थी- अश्वत्थी आनपी, अतिवला-अति-  
वला अतिवला, नखः नखः नख, महाश्रावणि- महा-  
श्रावणी महाश्रावणी, जीवन्ती- श्वन्ती जीवन्ती, विदारी-  
विदारी उंठ विदारी, कविकच्छुभिः कोथी कौबचीज,  
अतावरी- शतावरी शतावर, महामेदा- महामेदा महा-  
मेदा, कर्कटाक्ष्या- काकडासीगी, हरेणुभिः  
हरेणु हरेणुका, वन्ना-गोक्षुरक- वन्ना, गोक्षुर, वन्ना,  
गोखर, पुरण्ड-रास्ना और उंठ, रास्ना एरण्ड, रास्ना,  
काका- काका काला, सहाचरैः सहाचर सहाचर,  
वीरा- वीरा वीरा, अश्लकि- अश्लकी शलकी, मुस्त-त्वक्-

मेध, तत्र मोषा, हलचीनी, पत्र- तेजपत्र तेजपत्र,  
क्षपमक अक्षपमक क्षपमक, बालकैः सुमथी नागो  
गन्धवाला, सहा- पुला- सहा नान्दी मेक्षथी सहा,  
छोटी इलायची, कुङ्कुम-सृक्का- उंठ, २५३३ केसर सृक्का,  
त्रिदसाहैः च अने देवदारुनो और देवदारुका, कश्कैः  
उंठ नान्दी कल्क डालकर, मन्त्रिष्ठाया. म०१४ मजीठ,  
त्रिकर्षेण त्रिषु उर्ष तीन तोले, मधुकाष्ठपलेन च अने  
मेदीमध आठ पक्ष नान्दी और मुलहरी ३२ तोले  
डाककर, पचेत् पडावपुं सिद्ध करे. तत् ते तैल यह  
तैल, क्षीण-जीव- क्षीणजीव- जीवक्षीण, अश्वत्थ- क्षीण  
अश्वि अने क्षीण अजनागाने क्षीणाग्नि, क्षीणक,  
संमूढचेतसः तथा मूढ चित्तवागाने तथा मूढ चित्तवालेको,  
उन्माद- अने उन्माद और उन्माद, अरति- मेथेनी  
मेथेनी, अपस्वारेः तथा अपस्वाराथी तथा अपस्वारके,  
आर्ताश्च च पीडायेकाथीने रोगियोंको, प्रकृतिम् बचेत्  
स्वस्थ करे छे प्रकृतिमें छे आता है. गुरुणा शुद्ध गुरु.  
कृष्णात्रेयेण कृष्णात्रेये कृष्णात्रेयेसे, भाषितम् उंठेक्षु कहा  
हुथा, वैद्यपूजितम् वैद्यीये पूजेक्षु वैद्यीये पूजित,  
अमृताह्वयम् आ अमृताद्य नान्दी तैल यह अमृताद्य  
नामक तैल, तैलाह्वयम् तैलाह्वय उतम तैलोंमें उतम, श्रेष्ठम्  
वातव्याधिहरम् अने श्रेष्ठ वातव्याधि हरनार छे  
और श्रेष्ठ वातव्याधिहर है ॥ १५७-१६४ ॥ इति आ  
यह, अमृताद्यम् तैलम् अमृताद्य तैल छे अमृताद्य तैल है ।

157-164. Decoct 2000 tolas of  
guduch in 8192 tolas of water till  
reduced to one fourth its quantity.  
Prepare a medicated oil in this  
solution by adding 512 tolas of til oil  
and equal quantity of milk along with  
the the paste of one tola each of carda-  
mom. nardus. indian valerian. cuscus,  
indian sarsaparilla, costus, sandal, sida,  
ground phyllanthus, Meda, dill seed,  
Ridhi, Jivaka, Kakoli, Kshira-kakoli  
small east indian globe thistle, evening  
mallow, shell, east indian globe  
thistle, cork swallow wort, white yam,

१६१. वीराश्लकि.....बालकैः-वीरासहैक्षपमकत्रिदसाहैश्च

कर्षिकैः (द. व.)

१६२. सहैला-महैला (ख. क. व.)

१६४. अमृताह्वयम्-अमृतापमम् (व.)

cowage, climbing asparagus, Mahameda, galls, pea, sweet flag, indian caltrop, castor, indian groundsel, dark blue creeper, crested purple nail dye, climbing asparagus indian olebanum, nut-grass, cinnamon cassia cinnamon, Rishabaka, fragrant sticky mallow, wild black gram, large cardamom saffron, melilol, deodar three tolas of indian madder and 32 tolas of liquorice. This medicated oil restores the health of those affected with loss of semen, gastric power and vitality and of those who are deluded of mind, and also of those who suffer from insanity and epilepsy. This foremost of medicated oils, which is curative of vata-disorders, is known by the name of Amrita or Gaduch oil. (This oil described by the preceptor Krishna Atreya is held in high regard by the physicians). Thus has been described the compound Gaduch oil.

वातरोगे रास्नातैलम्—

रास्नासहस्रानैर्युहे तैलद्रोणं विपाचयेत् ।

गन्धैर्हैमवतैः पिष्टैरेलाचैश्चानिलातिनुत् ॥१६५॥

कन्पोऽयमश्वगन्धायां प्रसारण्यां बलाद्वये ।

काथककपयोभिर्वा बलादीनां पचेत् पृथक् ॥१६६॥

इति रास्नातैलम् ।

रास्नासहस्र- ओङ्क ६५२ पक्ष रास्नाना रास्नाके चार हजार तोले, निर्युहे ३५५५ काथमें, तैलद्रोणम्

१६५. विपाचयेत्—विपाचितम् (ब.)

१६६. कल्पः—कल्कः (त.)

१. कन्पोऽय-बलाद्वये—एष कल्पस्तु बलायोः प्रसारण्याश्वगन्धयोः (ब. ब.)

२. —एष कन्पोऽश्वगन्धाया बलातिबलास्तथा (ब.)

३. —एष कन्पोऽश्वगन्धायाः प्रसारण्या बलाद्वयोः (क.)

४. पचेत् पृथक्—पृथक् पचेत् (ब.)

ओङ्क श्लेष्म तैल तैल १०२४ तोले, हैमवतैः डिमालयभा डिपक्ष यथेक्ष डिमालयमें डोनेवाले, गन्धैः सुगंधी ६०५५५ गन्ध द्रव्योंसे एलाचैः तथा नान्नी ओलथी चोरेना तथा एलादिके. पिष्टैः च ६६६ अथे कल्कसे, विपाचयेत् पकावपु पकावे अनिलातिनुत् ओ वात-व्याधि मटाडना ओ यह वातपीडनाशक है, अथ कल्पः ओ ६६५ प्रभाषे इस कल्पक अनुसार, अश्व-गन्धाया अश्वगन्ध तैल अश्वगन्धा तैल, प्रसारण्या प्रसारणी तैल प्रसारणी तैल, बलाद्वये अने अने बलानां तैल तैयार करवाभा आने ओ और दोनो बलाओंके तैल तैयार किये जाते हैं, बलादीनाम् अथवा अश्व चोरेना या बलादिके. काथ-कल्क पयोभिः वा काथ, ६६६ अने दूध साथे काथ, कल्क और दूधसे, पृथक् पृथक् पृथक् पृथक्, पचेत् तैल पकावपु तैल पकावे, इति रास्ना-तैलम् आ रास्ना तैल है रास्ना तैल है १६५-१६६ ॥

165-166. Prepare a medicated oil taking 1024 tolas of oil and cooking it in 4000 tolas of the decoction of indian groundsel along with the paste of the fragrant group of drugs grown in the Himalayas, as well as the cardamom group of drugs. This oil is curative of vata. Similarly may be prepared the medicated oil of winter cherry, chinese moon creeper and the two varieties of sida or the medicated oil of sida and other drugs may be prepared using these drugs individually in the form of decoction, paste or milk. Thus has been described the Indian Groundsel oil.

वातरोगे मूलकायं तैलम्—

मूलकखरसं क्षीरं तैलं दध्यम्लकाजिकम् ।

तुल्यं विपाचयेत् कर्कैर्बलाच्चित्रकसैन्धवैः ॥१६७॥

१६७. तुल्यं...सैन्धवैः—तैलं विपाचयेत् कर्कैः बलाक्षिमुकसैन्धवैः (ब.)

२. बलाच्चित्रकसैन्धवैः—बलाक्षिमुकसैन्धवैः (क.)

३. बला—बला (ब.)



पिप्पल्यसिचिविषाणविकागुरुशिग्रुकैः ।  
 मल्लातकवचाकुडुश्वदंष्ट्राविश्वमेधजैः ॥१६८॥  
 पुष्कराद्वशटीबिल्वशताह्वाननदारुभिः ।  
 तस्मिन् पीतमन्त्रयुगान् हन्ति वातात्मकाश्च गदान् ।  
 इति मूलकायं तैलम् ।

तुल्यम् सप्त प्रमाणाभां त्रयभाग, मूलकस्वरचः  
 भूषाणे २५२५ मूलीका स्वरस, क्षीरम् दूध दूध, तैलम्  
 तैल तैल, दुध्मन्ल आटुं ६६१ श्वदंष्ट्री, काञ्जिकम्  
 अने डां७ ओओने और कांजी इतक, बला-चित्रक-  
 भवा, शिचक बला, चित्रक, सैन्धवैः सैन्धव सैन्धव-  
 पिप्पली- पीपर पिप्पली, अतिविषा- अतिविषा अतिविषा,  
 रास्ना- रास्ना रास्ना, चविका- चविक चविका, अगुरु-  
 अगुरु अगुरु, शिग्रुकैः सरगवान् भूषाणी छात्र सहजन-  
 जडकी छाल, मल्लातक- शिवाभे, मिलावा, वचा-कुष्ठ- ५५  
 ४६ वचा, कूठ, श्वदंष्ट्रा- गोभद्र गोखरु, विश्वमेधजैः सुं  
 सोंठ, पुष्कराद्व- पुष्करभूषा पोंहकरमूल, शटी- ४५२  
 कायली कचूर, बिल्व- भीली बिल्वका जड, शताह्व  
 शताह्व सोया, क्त-दारुभिः तगर अने देवदारना तगर  
 और देवदारुके, कर्कैः ४६६ साथे कर्कके साथ, विषा-  
 चयेत् पञ्चान्वं पकावे, सिद्धम् तत् सिद्ध करेव ते ते  
 सिद्ध किया हुआ वह तैल, पीतम् पीतम् आतता  
 पीनेपर, अन्त्रयुगान् अति अथ कर अति उग्र, वातात्मकान्  
 गदान् वातरोगीने वातरोगीको, हन्ति हन्ति छे नष्ट करता  
 है ॥ १६७-१६९ ॥ इति आ यह, मूलकायम् मूलकाय  
 मूलकाय, तैलम् तैल छे तैल है ।

167-169. Prepare a medicated oil by taking 64 tolas of oil and cooking it in equal quantities of radish-juice, milk, sour curds and sour conjee, adding the paste of sida, white flowered leadwort, rock salt, long pepper, eaglewood, drumstick, marking nut, sweet flag costus, indian caltrops,

१६८. शिग्रुकैः-चित्रकैः (५.)

dry ginger,orris root, zedaira, hiel, dill seed, indian valerian and deodar. This medicated oil, when taken as lotion, cures even very severe types of vata-disorders. Thus has been described the Compound Radish oil.

वातरोगे वृषमूलादितैलम् —

वृषमूलगुडूचयोश्च त्रिशतस्य शतस्य च ।  
 चित्रकात् साध्वगन्धाच्च काये तैलाढकं पचेत् १७०  
 सक्षीरं वायुना भग्ने दद्याज्जरेने तथा ।  
 प्राक्तैलावाप सिद्धं च भवेदेतद्गुणोत्तरम् ॥१७१॥  
 इति वृषमूलादितैलम् ।

त्रिशतस्य भसे। भसे। पक्ष ८००-८०० तैल,  
 वृषमूल- अट्टसाला मूल वायमूल गुडूचयोः च अने  
 गणै। और गिलोय, साध्वगन्धात् अश्वगन्धा, अश्वगन्धा,  
 चित्रकात् च अने शिचक और चित्रक अतस्य च से। से।  
 पक्ष ४००-४०० तैले, काये सक्षीरम् ओओना ३५५ भां  
 दूधसहित इतके कायमें दूधके साथ, तैलाढकम् ओक  
 आढक तैल तैल २५६ तैले, पचेत् पक्षः ५५५ मिद करे,  
 वायुना भग्ने वायुनी भजन वायुसे भजन, तथा जर्जरिते  
 अने भर्जरित यथेक्षाने तथा भर्जरित भंगवालोंके,  
 दद्यात् ते देवुं इसे देना चाहिए, प्राक्तैल- पूर्वोक्त  
 तैलना पूर्वोक्त तैलके, आवापसिद्धम् द्रव्य साथे  
 सिद्ध करवाना आवे तो द्रव्योंके प्रयोगसे सिद्ध किया  
 जाय तो, एतत् च अय यह, गुणोत्तरम् गुणुभां श्रुति-  
 वाणुं अधिक गुणवान, भयेत् थाय छे होता  
 है ॥ १७०-१७१ ॥ इति आ यह, वृषमूलादितैलम्  
 वृषमूलादि तैल छे वृषमूलादि तैल है ।

170-171. Prepare a medicated oil by taking 256 tolas of til oil and cooking it in 800 tolas of the decoction of vasaka-roots and guduch, and 400 tolas of the decoction of white flowered

१७०. वृषमूल-गुडूचमूल (५.)

१७१. चित्रकात् साध्वगन्धा-अश्वगन्धाचित्रकयोः (५ फ.)



leadwort, winter cherry and milk  
This medicated oil should be prescribed  
in fractured or carious conditions of  
bone due to vata. If this oil is pre-  
pared with the previously described  
medicated oils, the potency of its action  
becomes doubly intensified (dynamisa-  
tion). Thus has been described the  
Compound Vasaka-roots oil.

वातरोगे मूलकतैलम्—

रास्नाशिरीषपट्याङ्गुलीसहचरामृताः ॥१७२॥

स्योनाकदारुशम्पाकहयगन्धात्रिकण्टकाः ।

एषां दशपलान् भागान् कषायमुपकरयेत् ॥१७३॥

रास्ना-शिरीष-रास्ना, शिरीष रास्ना, शिरीष, पट्याङ्ग-  
जलीमध मुलहठी, गुण्ठी- मुंठ सोंठ, सहचरा- सहचर  
सहचर, अमृताः गणै गिलोय, स्योनाक- श्योनाक  
श्योनाक, दारु-शम्पाक- देवदार, शम्पाक देवदार,  
अमरुतास, हयगन्धा- अश्वगन्धा अश्वगन्धा, त्रिकण्टकाः  
अने जेभरु और गोखरु, एषाम् ओ देरुने। इनके  
प्रत्येकके, दशपलान् दश दश पल ४०-४० तोले,  
भागान् भाग धर्मा भाग लेकर, कषायम् कषाय काय,  
उपकरयेत् अनाववे। तैयार करे ॥ १७२-१७३ ॥

172-173. Prepare a decoction by  
taking 40 tolas of each of indian  
groundsel, siris, liquorice, dry ginger,  
crested purple nail dye, guduch, indian  
colosanthus, deodar, purging cassia,  
winter cherry and indian caltrop.

ततस्तेन कषायेण सर्वगन्धैश्च कार्षिकैः ।

दध्यारनालप्राषाम्बुमूलकेशुरसैः शुभैः ॥१७४॥

१७३. स्योनाकदारुशम्पाक-श्योनाक दारुक मांसी (ग.)

१. शम्पाक-स्योनासी (ग.)

१७४. मांसी-मांसी (ग.)

पृथक् प्रस्थान्मितैः सर्वैश्च तैलप्रस्थं विपाचयेत् ।

प्लीहमूत्रग्रहश्वासकाशमारुतरोगनुत् ॥१७५॥

एतन्मूलकतैलाख्यं वर्णायुर्वलवर्धनम् ।

इति मूलकतैलम् ।

तत हेतु ते पछी ते तदनन्तर उस, कषायेण  
अनाथी कायसे, कार्षिकैः अने ओं ओं ओं ओं और  
एक एक तोला प्रमाण, सर्वगन्धैः च सर्व गंधा साथे सब  
गन्धोंके कलकसे, प्रस्थान्मितैः प्रस्थ ओं ओं ६४ तोले  
जितने पृथक् ओं ओं पृथक् पृथक्, शुभैः शुभ  
शुभ, दधि- दही दही, आरनाल- आरनाल आरनाल,  
प्राष-अम्बु- अम्बुने कषाय उड़का काय, मूलक-इक्षुरसैः  
मूलाने रस अने शेरडीने रस ओं ओं मूली और  
इक्षुरा रस इनके, साथम् साथ साथ, तैलप्रस्थम् ओं  
प्रस्थ ते ६४ तोले तैल, विपाचयेत् पकवतुं पकावे,  
मूलकतैल- मूलकतैल मूलकतैल, आख्यम् नामम् नामक,  
एतत् आ ते ६४ तैल, प्लीह-मूत्रग्रह- प्लीहा, मूत्रग्रह  
प्लीहा, मूत्रग्रह, श्वास-काश- श्वास, कास श्वास, कास,  
मारुतरोगनुत् अने वातरोगने हूर डरनार छे और  
वातरोगका नाशक है, वर्ण-आयुः-बल- तथः आयु, आयु  
आयु अने वर्ण, आयु एवं बलको, वर्धनम् वर्धनार  
वर्धनेवाला है ॥ १७४-१७५ ॥ इति आ यह,  
मूलकतैलम् मूलकतैल छे मूलकतैल है ।

174-175. Prepare a medicated oil  
by taking 64 tolas of til oil and  
cooking it in the above-said decoction  
along with 64 tolas each of curds,  
sour congee, decoction of black gram,  
juices of good quality of radish and  
sugar cane, adding one tola of the

१७४. प्रस्थान्मितैः सर्वैश्च-प्रस्थान्मितैः सिद्धम् (ग.)

१. प्लीहमूत्रग्रह-प्लीहा मूत्रग्रह (ग. व. त. द. व. व.)

१७५. एतन्मूलकतैलाख्यं-रास्नातैलाख्यं रूपान्

(ग. द. त. व. फ.)

१. तैलाख्यं-तैलाख्यं (ग. द. व. फ.)

१. वर्णायुर्वलवर्धनम्-पुनर्वसुनिर्दिष्टम् (द.)

१. इति मूलकतैलम्-इति रास्नातैलम् (ग. व. फ.)

१. -इति रास्नातैलम् (ग.)

paste of each of the fragrant group of drugs. This oil known as the Medicated Radish oil is curative of splenic disorders, retention of urine, dyspnea, cough and other vata disorders. It is also promotive of complexion, life and vitality. Thus has been described the Medicated Radish oil.

वातरोगे अन्ये तैलयोगः—

यवकोलकुलस्थानां मत्स्यानां शिमुबिल्वयोः ।  
रसेन मूलकानां च तैलं दधिपयोन्वितम् ॥१७६॥  
साधयित्वा भिषग्दद्यात् सर्ववातामवाहहम् ।

यव-कोल- यव, जौ, बेर, कुलस्थानाम् कुलथी, मत्स्यानाम् मत्स्य, शिमुबिल्वयोः सरगवे, भीक्षी शिमु, बिल्व मूलकानाम् च अने भूषणानां और मूलकके, रसेन उरुथ आथे काथके साथ, दधि-पयः दही अने दूध दही और दूधके अन्वितम् सिद्धि साध, तैलम् तैल तैल, साधयित्वा सिद्ध करीने सिद्ध करके, भिषक् वैद्य वैद्य, सर्ववातामवा- सर्व वातरोगने सब वातरोगके अण्डम् दूर करेनाए ते तैल नाशक उस तैलको, दद्यात् आप्युं देवे ॥ १७६॥

176-176½. Preparing a medicated oil by taking til oil and cooking it in the decoction of barley, jujube, horsegram, fish, drumstick, bael, radish, curds and milk, the physician should administer it to the patient. This is curative of all vata-disorders.

लघुनखरसे सिद्धं तैलमेभिश्च वातनुत् ॥१७७॥

लघुन- लघुना लघुनके, खरसे खरसे २४२सभा खरसमें, एभिः उपयुक्त द्रव्ये साधे उपयुक्त द्रव्योंके साथ, सिद्धम् सिद्ध करेहुं सिद्ध किया, तैलम् च तैल पशु तैल भी, वातनुत् वातदूर के वातनाशक है ॥१७७॥

177. The medicated oil prepared in the expressed juice of garlic and

the articles mentioned above, is curative of vata-disorders.

तैलान्येतान्युतुखानामङ्गनां पाययेत् च ।

पीत्वाऽन्यतममेवां हि वन्ध्याऽपि जनयेत् सुतम् ॥१७८॥

एतानि आ ये, तैलानि तैलो तैल, अणुखाताम् ऋतुनात् ऋतुस्वान की हुई, अङ्गनाम् अंगने छोको, पाययेत् च पायां ओष्ठो पिलावे, हि वन्ध्याम् डारधु के ओभां नु क्योंकि इनमेंसे, अन्यतमम् डार्ध पशु ओठ किसी एक तैलको, पीत्वा पीने पीकर, वन्ध्या अपि वन्ध्या पशु वन्ध्या भी, सुतम् दीकरने पुत्रको, जनयेत् जनये आपे के जन्म देती है ॥ १७८ ॥

178. This oil may be given as potion to a woman who has just taken the purificatory bath on the cessation of menses. By taking any of these medicated oils as potion, even a sterile woman will become fertile and give birth to a son.

यच्च शीतज्वरं तैलमगुर्वाद्यमुदाहृतम् ।

अनेकशतशस्तच्च सिद्धं स्याद्वातरोगनुत् ॥१७९॥

शीतज्वरे शीतज्वरभां शीतज्वरमें, यत् च ओष्ठो, अगुर्वाद्यम् अगुर्वाद्य अगुर्वाद्य, तैलम् तैल तैल, उदाहृतम् उदाहुं के कहा है, यत् च ते वर, अनेकशतशः अनेक जो बार अनेक सौ बार, सिद्धम् सिद्ध करनेसे, वातरोगनुत् वातरोग मटाइनाए वातरोग-नाशक, स्यात् अने के होता है ॥१७९॥

179. The compound eaglewood oil which has been described in the treatment of algid fever, if cooked over and over again many hundred times, acquires dynamisation and becomes curative of vata-disorders.

७८. तैलान्येता.....पाययेत् च-ऋतुस्नातां तथा नारी तैलान्येतासि पाययेत् (क.)

वक्ष्यन्ते यानि तैलानि वातशोणितकेऽपि च ।  
तानि चानिलशान्त्यर्थं सिद्धिकामः प्रयोजयेत् १८०

वातशोणितके च अपि १८१ वातरक्तनी चिकित्साभां  
पुनः वातरक्तकी चिकित्सायै, यानि ते जो, तैलानि तेथे।  
तैल वक्ष्यन्ते उद्धेनाभां आशे कहे जायेंगे, तानि च  
तेथेने पक्षु उनका मी, सिद्धिकामः सिद्धि प्रयुक्तान्  
वैद्य सिद्धिकी कामना करनेवाला वैद्य, अनिलशान्त्यर्थम्  
वायुनी शान्ति भाटे वायुकी शान्तिके लिए, प्रयोजयेत्  
प्रयोगवां भेद्ये प्रयोग करे ॥ १८० ॥

180. And the medicated oils which  
will be described (in the next chapter)  
in the therapeutics of rheumatic con-  
ditions, may be prescribed for the  
alleviation of vata-disorders, by the  
physician desirous of success in treat-  
ment

नास्ति तैलात् परं किंचिदौषधं मायतापहम् ।  
व्यवायुपुष्पगुहस्नेहात् संस्काराद्वलवत्तरम् ॥ १८१ ॥

तैलान् तेक्षथी तैलो, परम् अधिक अधिक, मायता-  
पहम् वातनाशक वातनाशन, किञ्चिन् पीलुं कोर्ध पक्षु  
अन्य कोई भी, औषधम् औषध औषध, न अस्ति नथी  
नहीं है, व्यवायि- कारक्षु के ते व्यवायि (संपूर्ण देहमें  
व्यापी अर्ध पयनारुं) क्योंकि यह व्यवायी (संपूर्ण देहमें  
व्याप्त होकर पचनेवाला), पुष्प-गुरु- उष्ण, युक्त उष्ण, गुरु,  
स्नेहात् अने स्नेह से और स्नेह है, संस्कारात् तथा  
संस्कारथी तथा संस्कारसे, बलवत्तरम् वातने नाश  
करनाभां अधिक अश्वान अने से वातको नष्ट करनेमें  
अधिक बलवान हो जाता है ॥ १८१ ॥

181. There exists no medication  
superior to oil as a remedy for vata.  
Owing to its qualities of diffusiveness,  
heat, heaviness and unctuousness and  
by virtue of becoming more powerful  
on being medicated with the vata-  
curative group of drugs,

वातरोगे तैलशोषा --

गणैर्वानहरेस्तस्माच्छतशोऽथ सहस्रशः ।  
सिद्धं क्षिप्रतरं हन्ति सूक्ष्ममार्गस्थितान् गदान् १८२

वातहरैः वातहर वातहर गणैः गणैथी गणोंसे,  
तस्मात् तेना करता इससे अपेक्षासे शतशः सौवार  
सौवार सहस्रशः के हज्रवार अक्षरे या सहस्रवार  
अधिक, सिद्धम् सिद्ध करेथे तैल सिद्ध किया हुआ तैल,  
सूक्ष्ममार्ग- सूक्ष्ममार्गभां सूक्ष्ममार्गमें, स्थितान् रहेथे  
स्थित, गदान् गेथेने पक्षु रोगोंको मी, क्षिप्रतरम् अशी  
अवधीथी अधिक औषधसे, हन्ति हल्ले से नष्ट करता  
है ॥ १८२ ॥

182 and being also capable of  
still further intensification of potency  
i. e. dynamisation, by being cooked  
over and over again for hundreds or  
thousands of times, it very quickly  
cures the diseases which have pervaded  
into even the minutest part of the  
body.

क्रिया साधारणी सर्वा संसृष्टे चापि शस्यते ।  
वाते पित्तादिभिः स्रोतःस्वावृत्तेषु विशेषतः ॥ १८३ ॥

संसृष्टे वाते च अपि संसृष्टयुक्त वायुभां पक्षु  
संसृष्ट वातमें भी, विशेषतः अने आस उरीने और  
विशेष करके, पित्तादिभिः पित्तादिभिः पित्तादिसे, आवृ-  
त्तेषु स्रोतःसु च स्रोते उपाध अतां स्रोतोंके आवृत्त  
होने पर, सर्वा अधुनी साग, साधारणी साधारण  
साधारण, क्रिया चिकित्सा क्रियाएँ, शस्यते प्रशस्त से  
प्रशस्त हैं ॥ १८३ ॥

183. This general line of treatment  
is also recommended in conditions of  
association with morbidity of other  
humors, but specially when the body-  
channels have been occluded by pitta  
and kapha, in vata-disorders.

१८३. वाते पित्तादिभिः-वातपित्तादिभिः (५.)

दोषान्तरादिसंसृष्टे वाते चिकित्सा—

पित्तावृते विशेषेण शीतामुष्णां तथा क्रियाम् ।  
व्यत्यासात् कारयेत् सर्पिर्जीवनीयं च शस्यते ॥१८४॥  
धन्वमांसं यवाः शालिर्यापनाः क्षीरवन्तयः ।  
विरेकः क्षीरपानं च पञ्चमूलीबलाशुतम् ॥१८५॥

पित्तावृते वायु पित्तकं आवृत भूतं वायुके पित्तसे आवृत होने पर, शीताम् शीतल शीत. तथा उष्णाम् तथा उष्ण तथा उष्ण, क्रियात् चिकित्सा चिकित्साको, विशेषेण भास करीने विशेष करके, व्यत्यासात् वाता- ३२० पर्यायक्रमसे, कारयेत् करवी करे, जीवनीयम् च अने ज्वनीय और जीवनीय, सर्पिः शृत शृत, धन्व- मांसम् अंगधमांस जांगलमांस, यवाः शालिः ज्व, शाण जौ, शालि, यवनाः यूपन-अस्तिके। यूपन वस्त्रियां, क्षीरवन्तयः क्षीर-अस्तिके। क्षीरवस्त्रियां, विरेकः विरेचन विरेचन. पञ्चमूलीबला- अने पंच- मूली तथा भक्ष्या और पञ्चमूली तथा बलासे, शृतम् साधित सिद्ध किया, क्षीरपानम् च दूधनुं पान क्षीरपान, शस्यते प्रशस्त छे प्रशस्त हैं ॥१८४-१८५॥

184-185. 'In condition of occlusion of pitta, the physician should administer cold and hot lines of treatment in alternation; the medicated life-promoter ghee is recommended; he should be given the flesh diet of jangala creatures, barley and sali rice; he should be given yavana-enemata, milk enemata, purgation, potion of milk and decoction of penta-radices and sida.

मधुयष्टिबलातैलघृतक्षीरैश्च सेवनम् ।  
पञ्चमूलकपायेण कुर्याद्वा शीतवारिणा ॥१८६॥

१८४ च शस्यते—तु पाययेत् (\*)

१८५. पञ्चमूली—पञ्चमूल (क.)

.. पञ्चमूलीबलाशुतम्—पञ्चमूलीशलाधितम् (क.)

१८६. घृतक्षीरैश्च—घृतक्षीरैश्च (क.)

.. पञ्चमूल—पञ्चमूली (ग. ब. क.)

मधुयष्टि- गेहीमधु मुलहरी, बलातैल- अने भक्ष्यानां तैल और बलानै, घृत-क्षीरैः च घी तथा दूधभी घी तथा दूधसे, पञ्चमूलकपायेण पंचमूलना भक्ष्याश्च पंचमूलके कायसे शीतवारिणा वा छे शीतल जलवी या शीतल जलसे, सेवनम् परिप्रेचन परिप्रेचन, कुर्यात् करु करे ॥१८६॥

186. He should be given affusion with the medicated oil or ghee or milk prepared with liquorice and sida, or with the decoction of penta-radices, or with cold water.

कफावृते यवान्नानि जाङ्गला मृगपक्षिणः ।  
स्वेदास्तीक्ष्णा निरुहाश्च वमनं च विरेचनम् ॥१८७॥  
जीर्णं सर्पिस्तथा तैलं तिलसर्पपत्रं हितम् ।

कफावृते वायु कश्ची आवृत भूतं वायुके कफसे आवृत होने पर, यवान्नानि यवानां अन्न जीके अन्न, जाङ्गलाः अंगध जांगल, मृगपक्षिणः पशुपक्षी-आनां मांस। मृगपक्षियोंके मांस, तीक्ष्णाः तीक्ष्ण, तीक्ष्ण, स्वेदाः स्वेद स्वेद, निरुहाः च निरुध-अस्तिके। निरुध वस्त्रियां, सविरेचनम् विरेचन विरेचन, वमनम् वमन वमन, जीर्णम् सर्पिः शृत घी पुराना घृत, तथा तिल- सर्पपत्रम् तथा तक्षुं अने सरसवत् एवं तिलका और सरसोका, तैलम् तैल तैल, हितम् हितकर छे हितकर हैं ॥१८७॥

187-187½. In condition of occlusion by kapha, he should be given as diet, articles made of barley and the flesh of jangala beasts and birds. He should be given a strong dose of sudation, evacuative enema and emesis along with purgation. Cold ghee. til oil and rape seed oil are beneficial.

१८७½. जीर्णं सर्पिस्तथा तैलं—पुराणमपिस्तेकं (ब.)

.. —पुराणमपिस्तेकं च (क.)

.. हितम्—शुभम् (क. क. क.)

संसृष्ट कफपित्ताभ्यां पित्तप्रादौ विनिर्जयेत् ॥१८८॥

कफपित्ताभ्याम् वायुने उद्भूते पित्तने। वायुके कफ और पित्तमे, संसृष्टे अंसर्गं यथे होय ने। संसृष्ट होने पर, पित्तम् पित्तने पित्तको, आदौ प्रथम पहले, विनिर्जयेत् अर्थात् देवुं ओष्ठकी जीने ॥ १८८ ॥

१८९. In the condition of occlusion by both kapha and pitta, pitta must first be subdued.

आमाशयगतं मत्वा कफं वमनप्राचरेत् ॥१८९॥  
पक्वाशये विरेकं तु पित्ते सर्वत्रगो तथा ।

कफम् उद्भूते कफको, आमाशयगतम् आमाशयभां गयेथे। आमाशयगतं, मत्वा अर्थात् मानकर, वमनम् वमन उद्भूतं ओष्ठकी वमन करना चाहिए, पक्वाशये उद्भूत पक्वाशयभां अर्थात् कफके पक्वाशयमें जाने पर, तथा पित्ते तथा पित्त तथा पित्तके, सर्वत्रगो सर्वत्रगानभां अर्थात् सब स्थानमें जाने पर, विरेकम् तु विरेचन विरेचन, आचरेत् आपवृं देवे ॥ १८९ ॥

१८९-१८९½. On finding that kapha is located in the stomach, emesis should be given and if it be located in the colon, purgation should be given, and if pitta has pervaded the entire system, purgation should be given.

स्वेदैर्विष्यन्दिनः श्लेष्मा यदा पक्वाशये स्थितः १९०  
पित्तं वा दर्शयेद्विज्ञं वस्तिभिस्तौ विनिर्हरेत् ।

स्वेदैः स्वेदनशी स्वेदनसे, विष्यन्दिनः द्रव अनावेस्य विषय हुआ, श्लेष्मा उद्भूत कफ, यदा अर्थात् जब, पक्वाशये पक्वाशयभां पक्वाशयमें, स्थितः रहेथे। होय रहा हो, पित्तम् वा अथवा पित्त या पित्त, विज्ञं योऽर्थात् लक्षण अपने लक्षणको, दर्शयेत् अर्थात् देय

ते। दिखावे तो, तौ ते अर्थात् उन दोनोंको, वस्तिभिः अस्तिभिः वस्तिमे, विनिर्हरेत् अर्थात् उद्भूत नाभवां बाहर निकाल दे ॥ १९० ॥

१९०-१९०½. If morbid kapha is liquified by sudation and flows down and accumulates in the colon or the symptoms of pitta become manifest, both of these morbid elements should be eliminated by means of enemata.

श्लेष्मणाऽनुगतं वातमुष्णैर्गोमूत्रसंयुतैः ॥१९१॥

निरुहैः पित्तसंसृष्टं निर्हरेत् क्षीरसंयुतैः ।

अधुरौषधसिद्धैश्च तैलेस्तनुवासेयेत् ॥१९२॥

श्लेष्मणा उद्भूत कफको, अनुगतम् अनुगम्यवाणा अनुबन्धवाले वातम् वायुने वायुको, उष्णैः उष्ण उष्ण, गोमूत्रसंयुतैः गोमूत्रयुक्त गोमूत्रयुक्त, पित्तसंसृष्टम् अने पित्तना संसृष्टनाणा वायुने और पित्तसंसृष्ट वायुको, क्षीरसंयुतैः दूधयुक्त क्षीरयुक्त निरुहैः निरुहैः निरुहैः होये, निर्हरेत् अर्थात् उद्भूत ओष्ठकी निकालना चाहिए, तम् तथा तेने और इस रोमीको, अधुरौषध-अधुर औषधशी अधुर औषधोंसे, सिद्धैः च सिद्ध उद्भूत सिद्ध, तैलेः तैलशी तैलोंसे, अनुवासेयेत् अनुवासेन उद्भूत ओष्ठकी अनुवासेन देवे ॥ १९१-१९२ ॥

१९१-१९२. If vata is associated with kapha, it should be eliminated by warm evacuative enema mixed with cow's urine. If vata is associated with pitta, it should be eliminated by evacuative enema mixed with milk. Then the patient should be given unctuous enema, prepared with the sweet group of drugs.

क्षीरोगते तु सकृदे धूमनस्यादि कारयेत् ।

१८९. मत्वा-दृष्ट्वा (ग.)

१८९½. सर्वत्रगो-सर्वत्रगो (घ.)

१९०. पक्वाशये स्थितः-पक्वाशयस्थितः (ङ.)

१९१½. अस्मादनन्तरम्-

रसायने लङ्घनं रसायनादि च शरयते

इत्यधिकः पाठः (क. छ.) पुस्तकानोः ।

सकके छेनी संसर्गधी युक्त वायु ककके संसर्गसे युक्त वायुके, क्षिरोगते तु भरतकभा अर्था मस्तकमें जाने पर धूमनस्य- धूम, नस्य धूम, नस्य, जाति वजरे आदि, कारयेत् करवाये ॥१९२३॥

192½. In condition of vata located in the head and associated with kapha, inhalation and nasal medication should be given.

हृते पित्ते कफे यः स्यादुरःस्रोतोऽनुगोऽनिलः ॥१९३॥  
सशेषः स्यात् क्रिया तत्र कार्या केवलवातिकी ।

पित्ते कफे पित्त अने कफ पित्त और कफके, हृते दूर अर्था दूर हो जाने पर, उरःस्रोतोऽनुगः उरः-स्रोतभा अनुगत उरःस्रोतमें अनुगत, यः अनिलः अने वायु जो वायु, सशेषः स्यात् आधी रही गयो होय शेष रहा हो, तत्र तीभा उसमें, केवलवातिकी केवल वायुनी केवल वायुकी, क्रिया थिकित्सा चिकित्सा, कार्या स्यात् करवी ओर्थी करे ॥ १९३३ ॥

193-193½. If after the elimination of pitta and kapha, there remains a residual morbidity of vata in the channels of the chest-region (respiratory channels), the treatment indicated in pure vata conditions should be given.

शोणितेनावृते कुर्याद्वातशोणितकीं क्रियाम् ॥१९४॥

शोणितेन वायु रक्तधी वायुके रक्तसे, आवृते आवृत अर्था आवृत होने पर, वातशोणितकीम् वात-रक्तनी वातरक्ती, क्रियाम् थिकित्सा चिकित्सा, कुर्यात् करवी ओर्थी करे ॥ १९४ ॥

194. If vata is occluded in the blood, the line of treatment should be the same as indicated in rheumatic conditions.

प्रमेहवातमेदोघ्नीमाप्रवाते प्रयोजयेत् ।

आमवाते आमवातभा आमवातमें, प्रमेह-वात-प्रमेह, वात प्रमेह, वायु, मेदोघ्नीम् अने मेदो नाश करवाये थिकित्सा और मेदनाशक चिकित्सा, प्रयोजयेत् करवी ओर्थी करे ॥१९४३॥

194½. In condition of occlusion in the chyme, treatment curative of urinary disorders, morbid vata and fat, should be given.

स्वेदाभ्यङ्गरक्ष्मीरेहमांसावृते हिताः ॥१९५॥

मांसावृते वायु भांसधी आवृत अर्था वायुके मांसमें आवृत होने पर, स्वेद-अभ्यङ्ग-स्वेदन, अभ्यङ्ग स्वेदन, अभ्यङ्ग रक्ष्मीर-भांसरक्ष, द्वय मांसरक्ष, द्वय, रेहः अने स्नेह और स्नेह, हिताः हितकर छे हितकर हैं ॥ १९५ ॥

195. If vata is occluded in the flesh, sudation,unction, meat-juices, milk and unctuous medications are recommended.

महास्नेहोऽस्थिमज्जस्ये पूर्ववद्वेतसाऽऽवृते ।

अस्थिमज्जस्ये वायु हाडकी तथा मज्जस्थी आवृत अर्था वायुके अस्थि और मज्जासे आवृत होने पर, महा-स्नेहः महास्नेह (घी, तैल, वसा अने मज्जा)ने प्रयोग करवाये महास्नेह (घी, तैल, वसा और मज्जा)का प्रयोग करे. रेतसा अने वायु वीर्यधी और वायुके शुक्से, आवृते आवृत अर्था आवृत होने पर, पूर्ववत् अगुणिनी पेठे थिकित्सा करवी पूर्णक चिकित्सा करे ॥१९५३॥

195½. If vata is occluded in the osseous tissue or the marrow, the preparation of the tetrad of unctuous articles should be given. If occluded

१९३३. सशेषः स्यात्-सर्वपत्न्य (घ.)

१९३४. सशेषः-सर्वेषां (घ.)

१९४. शोणितेनावृते कुर्याद्वातशोणितकीं क्रियाम् (घ.)

१९४३. आमवाते-आमवाते (घ. व. घ.)

१९४३. चिकित्सा-चिकित्सा (घ.)

in the semen, the treatment is as has already been described.

अन्नावृते तदुल्लेखः पाचनं दीपनं लघु ॥१९६॥

अन्नावृते वायु अमली आवृत भता वायुके अणसे आवृत होने पर, तदुल्लेखः तेभां वमन उममें वमन, पाचनम् पाचन पाचन, दीपनम् तथा दीपन और दीपन, लघु तेभां द्रव्यकां द्रव्य येभां ओष्ठये और लघु द्रव्योऽं प्रयोग करे ॥ १९६ ॥

196. If vata is occluded by food, emesis, digestives, digestive-stimulants and light diet are recommended.

मूत्रलानि तु मूत्रेण स्वेदाः सोत्तरवस्तयः ।

शकृता तैलमैरण्डं क्षिप्रोदावर्तवत्क्रिया ॥१९७॥

मूत्रेण तु वायु मूत्रां आवृत भता वायुके मूत्रसे आवृत होने पर, मूत्रलानि मूत्रविरेचक द्रव्यो मूत्रल औषधियां सोत्तरवस्तयः उत्तरवस्तये उत्तरवस्ति, स्वेदाः तथा स्वेदन येभां ओष्ठये तथा स्वेदनका प्रयोग करे, शकृता अने मण्डी आवृत भता और मण्डी आवृत होने पर, ऐरण्डम् तैलम् और द्रव्य तेदने प्रथम करे। ऐरण्डतैलका प्रयोग करे, उदावर्तवत् अने उदावर्त येवी और उदावर्तकी भांति क्षिप्र क्षिप्र क्रिया चिकित्सा येवी चिकित्सा करे ॥ १९७ ॥

197. If occluded by urine, diuretics, sudation and urethral douches are recommended. If vata is occluded

by fecal matter, castor oil and unctuous therapy as indicated in misperistalsis are the remedies.

स्वस्थानस्थो बली दोषः प्राक् तं स्वैरौषधैर्जयेत् ।  
वमनैर्वा विरेकैर्वा वस्तिभिः शमनेन वा ॥१९८॥

स्वस्थानस्थः ओ पेताना स्थानभां रहेद्ये यदि अपने स्थानमें स्थित, दोषः बली दोष अणवान हेद्ये तो दोष बलवान हो तो, तम् प्राक् तेने प्रथम उसको प्रथम, स्वैः औषधैः पेताना औषधियां अपनी औषधियोंसे, वमनैः वा अने वमन और वमन, विरेकैः वा विरेचन विरेचन, वस्तिभिः भरित वस्ति, शमनेन वा के शमनकी या शमनके द्वारा, जयेत् शतवे ओष्ठये शान्त करना चाहिए ॥ १९८ ॥

198. A morbid humor, while in its natural habitat, develops great strength; hence it should be first subdued by suitable medications such as emesis, purgation, enemata or sudation.

(इत्युक्तमावृते वाते पित्तादिमिर्यथायथम् ।)

इति आ प्रभाषे इव प्रकार, वाते वायु वायुके, पित्तादिभिः पित्त वजरेथे पित्तादिसे, आवृते आवृत भता तेनी आवृत होने पर उसकी, यथायथम् यथा-येद्ये चिकित्सा यथायोग्य चिकित्सा, उक्तम् उक्ती के कही गई है ॥ १९८ ॥

198½. Thus has been described systematically the treatment of conditions of occlusion of vata by pitta etc.

पञ्चानां मारुतानामन्योन्यावरणे लिङ्गानि तेषां चिकित्सा च—  
मारुतानां हि पञ्चानामन्योन्यावरणे शृणु ॥१९९॥  
लिङ्गं व्याससमासाभ्यामुच्यमानं मथाऽनघ ।

अनघ ! हे निष्पाप ! हे निष्पाप !, पञ्चानाम् हि पथिय पांच, मारुतानाम् वायुओतुं वायुओके, अन्यो-न्यावरणे ओष्ठ ओष्ठ आवरण करती परस्परका

१९६. तदुल्लेखः-त वमनं (ड. न. ब.)

१९७. मूत्रलानि तु मूत्रेण-मूत्रावृते मूत्रलानि (फ.)

„ मूत्रेण-मूत्रस्ये (घ. ड.)

„ शकृता-संशीरण (घ.)

„ शकृता तैलमैरण्डं-ऐरण्डतैलं वर्चःस्ये (ख. ड. फ.)

„ शकृता....क्षिप्र-ऐरण्डतैलं वर्चःस्ये वस्तिः स्नेहाश्च

मैदिनः (घ. त.)

„ क्षिप्रोदावर्तवत्क्रिया-वत्क्रियाः स्नेहाश्च मैदिनः (घ. ड.)

१९८. प्राक् तं-प्रोक्ते (ड. घ.)

१९९. व्याससमासाभ्यामुच्यमाने (घ.)



आवरण करने पर अथापराधी मैं, व्यास-समासाभ्याम्  
विस्तारपूर्वकं अने संक्षेपभां विस्तार और संक्षेप,  
उच्यमानम् लिङ्गम् उद्देवातुं वक्ष्ये लक्षण कहता हूँ,  
शृणु साधने वह सुनो ॥ १९९३ ॥

199-199½. O sinless one! listen now  
to the symptoms described by me, in  
extenso as well as in brief, of the  
conditions of occlusion brought about  
by mutual obstruction between the  
five types of vata.

प्राणो वृणोत्युदानादीन् प्राणं वृण्वन्ति तेषां च २००

प्राणः प्राण प्राण, उदानादीन् उद्देव न चरेने  
उदानादिको, वृणोति आवृत करे छे आवृत करता है,  
ते च अपि अने तेओ वणी और वे भी, प्राणम् प्राणने  
प्राणको, वृण्वन्ति आवृत करे छे आवृत करते हैं ॥ २०० ॥

200. The Prana vata occludes the  
Udana and other types of vata while  
they too may occlude the Prana

उदानाद्यास्तथाऽन्यान् सर्व एव यथाक्रमम् ।

विंशतिर्वरणान्येतान्युखणानां परस्परम् ॥ २०१ ॥

मारुतानां हि पञ्चानां तानि सम्यक् प्रतर्कयेत् ।

तथा ते न प्रभाषे वैसे ही, सर्वे एव सर्वेय सब,  
उदानाद्याः उदानादिक उदानादि, यथाक्रमम् क्रमानुसार  
क्रमानुसार, अन्योन्यम् ओके बीजने आवरे छे एक  
दूसरेको आवृत करते हैं, उखणानाम् वृद्धि पाभेक्षा बढ़े  
हुए, परस्परम् अने परस्पर भणेल और परस्पर मिले  
हुए, पञ्चानाम् पाँच पाँच, मारुतानाम् वायुना वायुओंके,  
एतानि विंशतिः आ वीस ये बीस, वरणानि हि  
आवरण थाय छे आवरण होते हैं, तानि तेओने इनको,  
सम्यक् सारी रीते अच्छी प्रकार, प्रतर्कयेत् समझवा  
ओधओ जाने ॥ २०१ ॥

201-201½. Udana and all other  
types of vata may occlude one another

२००- वृणोत्युदानादीन्-वृणोत्युदानादीन् (क.)

२०१-विंशतिर्वरणानि-विंशत्वावरणानि (ब-घ.)

in the same manner. There would  
occur twenty conditions of occlusion  
caused by mutual obstruction of these  
five types of provoked vata. The phy-  
sician should be able to diagnose  
these conditions properly.

सर्वेन्द्रियाणां शून्यत्वं ज्ञात्वा स्मृतिबलक्षयम् २०२  
व्याने प्राणावृते लिङ्गं कर्म तत्रोर्ध्वजत्रुकम् ।

व्याने व्यान व्यानके, प्राणावृते प्राणथी आवृत  
थता प्राणने आवृत होने पर, सर्वेन्द्रियाणाम् सर्व  
इन्द्रियोंकी सब इन्द्रियोंमें, शून्यत्वम् शून्यता शून्यता,  
स्मृतिबल तदा स्मृति अने अशरी तथा स्मृति और  
बलका क्षयम् क्षय क्षय, लिङ्गम् ओ वक्ष्ये इन  
लक्षणोंको, ज्ञात्वा ज्ञाणीने जानकर, तत्र तेभां वहाँ  
ऊर्ध्वजत्रुकम् ऊर्ध्वजत्रुक (धूमपान, नस्त्रादि) ऊर्ध्व  
जत्रुक (धूमपान, नस्त्रादि), कर्म चिकित्सा करवी  
ओधओ कर्म करना चाहिए ॥ २०२ ॥

202-202½. On observing the loss of  
function of all the sense-organs, and loss  
of memory and strength, it should be  
diagnosed as the condition of the  
occlusion of Vyana by Prana. The  
treatment is as indicated in diseases  
occurring in the parts above the supra-  
clavicular region of the body.

स्वेदोऽत्यर्थं लोमहर्षस्त्वग्दोषः सुप्तमात्रता ॥ २०३ ॥  
प्राणे व्यानावृते तत्र स्नेहयुक्तं विरेचनम् ।

प्राणे प्राण प्राणके, व्यानावृते व्यानथी आवृत  
थता व्यानसे आवृत होने पर, अत्यर्थम् अतिशय  
अत्यन्त, स्वेदः परसेवे पसीना, लोमहर्षः इवाङ्ग ओभा  
अर्वा लोमहर्ष, त्वग्दोषः आभरीना दोष त्वग्दोष, सुप्त-  
मात्रता अने सुप्तमां आली राखी ओ वक्ष्ये  
थाय छे और गावोंकी सुप्ता ये लक्षण होते हैं, तत्र  
तेभां उसमें, स्नेहयुक्तम् स्नेहयुक्त स्नेहयुक्त, विरेचनम्  
विरेचन देव ओधओ विरेचन देना चाहिए ॥ २०३ ॥

203-203½. On observing excessive perspiration, horripilation dermic morbidity and numbness of limbs, it should be diagnosed as the condition of Prana occluded by Vyana. The treatment in this is purgation combined with unctuous articles.

प्राणावृत्ते समाने स्युर्जङ्गमदमूकताः ॥२०४॥

चतुष्प्रयोगाः शस्यन्ते स्नेहास्तत्र सयापनाः ।

समाने समान वायु समान वायुके, प्राणावृत्ते प्राणुथी आवृत अर्था प्राणसे आवृत होने पर, जङ्गमदमूकताः अर्थात् भ्रूणपण्डु और मूकता, स्युः अर्थात् वक्षुः थाय अर्थात् वे लक्षण होते हैं, तत्र तेभ्यो वहां। सयापनाः यथापन अर्थात् यथापन-वस्तिपां, चतुष्प्रयोगाः स्नेहाः अर्थात् चार प्रकारे प्रथि-अर्थात् स्नेहो और चार प्रकारके स्नेहोंका प्रयोग, शस्यते प्रशस्त अर्थात् प्रशस्त है ॥२०४॥

204-204½. In condition of occlusion of Samana by Prana, there will be scanty or slurring speech, or muteness. All the four modes of unctuous therapy along with Yapana enema are recommended as treatment.

समानेनावृत्तेऽपाने ग्रहणीपार्श्वहृद्गदाः ॥२०५॥

शूलं चामाशये तत्र दीपनं सर्पिरिष्यते ।

अपाने अपान वायु अपान वायुके, समाने समान वायुथी समान वायुसे, आवृत्ते आवृत अर्थात् आवृत होने पर, ग्रहणी-पार्श्व-अर्थात् पार्श्व-ग्रहणी, पार्श्वपीडा, हृद्गदाः हृद्गो हृद्गो, अमाशये तथा अमाशयभर्मा तथा अमाशयमें, शूलम् च शूल अर्थात् वक्षुः थाय अर्थात् वे लक्षण होते हैं, तत्र तेभ्यो वहां, दीपनम् दीपन दीपन, सर्पिः सर्पिः धी धी, इष्यते इष्ट अर्थात् इष्ट है ॥२०५॥

२०५ समानेनावृत्ते.....हृद्गदाः-समानेनावृत्ते प्राणे ग्रहणी-पार्श्वपीडा (घ.)  
॥ ग्रहणीपार्श्वहृद्गदाः-ग्रहणीपार्श्ववेदना (ख, ड, त.)

205-205½. In condition of the occlusion of Apana by Samana, there will occur assimilation disorders and diseases of the organs situated in hypochondriac region, gastric disorders and colicky pain of the stomach. Here the treatment indicated is the ghee medicated with digestive-stimulants.

शिरोग्रहः प्रतिश्यायो निःश्वासोच्छ्वाससंग्रहः २०६

हृद्गो मुखशोषश्चाप्युदाने प्राणसंवृत्ते ।

तत्रोर्ध्वभागिकं कर्म कार्यमाश्वासनं तथा ॥२०७॥

उदाने उदानवायु उदानवायुके, प्राणसंवृत्ते प्राणुथी आवृत अर्थात् प्राणसे आवृत होने पर, शिरोग्रहः शिरोग्रहः शिरोग्रहः, प्रतिश्यायः सङ्गोभम प्रतिश्याय, निःश्वास-निःश्वास निःश्वास, उच्छ्वास-तथा उच्छ्वास-तथा उच्छ्वासका, संग्रहः निरोध अवरोध, हृद्गो हृद्गो मुखशोषः च अपि अर्थात् मुखशोष अर्थात् वक्षुः थाय अर्थात् वे लक्षण होते हैं, तत्र तेभ्यो वहां, और्ध्वभागिकं और्ध्वभागिकी और्ध्वभागिकी, कर्म चिकित्सा चिकित्सा, तथा आश्वासनम् अर्थात् आश्वासन अपवातु तथा आश्वासन, कार्यम् कर्तुं अर्थात् करना चाहिए ॥ २०६-२०७ ॥

206-207. In conditions of occlusion of Udana by Prana, there will occur spasticity of the head, coryza, impediment to inspiration and expiration, cardiac disorders and dryness of the mouth. Here, the treatment is as indicated in diseases of the parts above the supra-clavicular region and also comforting measures.

कर्मौजोवर्णानां नाशो मृत्युरथापि वा ।

उदानेनावृत्ते प्राणे तं शनैः शीतचारिणा ॥२०८॥

सिद्धेदाश्वासयेच्चैनं सुखं चैवोपपादयेत् ।

२०८ कर्मौजोवर्णानां-कर्मणां वर्णानां (घ.)

प्राणे प्राणुवायु प्राणके, उदानेन उदानथी उदानसे, आवृते आवृतं यत् आवृत होने पर, कर्म-ओजः-कर्म, ओज-कर्म, ओज, बल-वर्णानाम् अक्ष अने बलुने। बल और वर्णका, नाशः नाश नाश, अथवा अथवा अथवा, मृच्छुः अपि भुवु पक्षु आय छे मृच्छु भी होता है, वम् ते रोगीने उस रोगीको, शनैः धीमे धीमे धीरे धीरे, क्षीतवारिणा शीतल जलते, सिद्धेव सिध्यन् कर्तुं सिधन करे, एनम् ओदे उसको, आश्वासयेत् च आश्वासन आपवुं आश्वासन देवे, सुखम् अने सुख आय तेम और सुख सिधे ऐसा, उपपादयेत् च एव कर्तुं कार्य करना चाहिए ॥२०८३॥

208-208½. In condition of occlusion of Prana by Udana, there will occur loss of function, vital essence strength and of complexion or even death. This condition should be treated by gradual affusion with cold water and comforting measures in such a way that the patient may be restored to health.

ऊर्ध्वगेनावृतेऽपाने छर्दिश्वासादयो गदाः ॥२०९॥  
स्युर्वति तत्र वस्त्यादि भोज्यं चैवानुलोमम् ।

अपाने वाते अपान वायु अपान वायुके, ऊर्ध्वगेन उदानथी उदानसे, आवृते आवृतं यत् आवृत होने पर, छर्दि-श्वास-उदटी अने श्वास छर्दि और श्वास, आदयः वजेरे आदि, गदाः स्युः रोगी आय छे रोग होते हैं, तत्र तेमां वहां, वस्त्यादि अस्ति वजेरे कर्म वस्ति आदि कर्म, अनुलोमम् अने अनुलोमन कर्तार और अनुलोमक, भोज्यम् च एव भोजन भोजन को भोजन देना चाहिए ॥२०९३॥

209-209½. In condition of the occlusion of Apana by Udana, there will occur vomiting, dyspnea and

similar other disorders. The treatment therein is enema and similar measures, and diet inducing regular peristalsis.

मोहोऽहोऽस्मिन्तीसार ऊर्ध्वगेऽपानसंवृते ॥२१०॥  
वाते स्यादमत्रं तत्र दीपनं ग्राहि चाशनम् ।

ऊर्ध्वगे वाते उदान वायु उदान वायु, अपानसंवृते अपानथी अपानसे आवृत होने पर, मोहः मोह मोह, अतः अग्निः मन्दाग्नि मन्दाग्नि, अतीसारः अने अतिसार आय छे और अतिसार होते हैं, तत्र तेमां इसमें, वमनम् वमन वमन, दीपनम् दीपन दीपन, ग्राहि अने ग्राही और ग्राही, अशनम् च भोजन भोजन, स्यात् भक्ष्य छे देना चाहिए ॥२१०३॥

210-210½. In condition of the occlusion of Udana by Apana, there occur stupefaction, dullness of the gastric fire and diarrhea. The treatment, there is emesis and diet that is digestive stimulant and astringent.

वम्याध्मानमुदावर्तगुल्मार्तिपरिकर्तिकाः ॥२११॥  
लिङ्गं व्यानावृतेऽपाने तं खिद्यैरनुलोमयेत् ।

अपाने अपानवायु अपानवायुके, व्यानावृते व्यानथी आवृतं यत् व्यानसे आवृत होने पर, वमि-आध्मानम् उदटी, आध्मान वमन, आध्मान, उदावर्त-उदावर्त उदावर्त, गुल्मार्ति-गुल्मरोग गुल्मरोग, परिकर्तिकाः अने वाढ और परिकर्तिका लिङ्गम् अने लक्षण आय छे ये लक्षण होते हैं, वम् तेनुं इसका, खिद्यैः स्निग्ध द्रव्येथी स्निग्ध औषधोंसे, अनुलोमयेत् अनुलोमन कर्तार ॥२११३॥

211-211½. In condition of occlusion of Apana by Vyana, there occur

२१०. मोहोऽहोऽस्मिन्तीसार-मोहोऽहोऽस्मिन्तीसारः (क.)

” ” ”-मोहोऽहोऽस्मिन्तीसारः (क.)

२११. वम्याध्मान-उदावर्त (क. छ. य.)

” गुल्मार्ति गुल्मार्तिः (ख.)

२०९. ऊर्ध्वगेनावृतेऽपाने-उदानेनावृतेऽपाने (क.)

” ” ”-लङ्घनेनावृतेऽपाने (क.)

२०९½. भोज्यं चैवानुलोमनं-सर्वं चैवानुलोमनम् (ख.)

the symptoms of vomiting, distension of abdomen, misperistalsis, Gulma, colic and griping pain. This condition should be treated by regulating peristalsis by means of unctuous medications.

अपानेनावृते ज्ञाने भवद्विषमूत्ररतखाध् ॥२१२॥  
अतिप्रवृत्तिसत्रादि सर्व संग्रहणं मतम् ।

ग्याने ०५.११ व्याकृते, अपानेन अपान वायुर्था  
 अपान वायुसे, आवृत्तेन आवृत्त धर्ता आवृत्त हेने परः  
 विष्णुः भणः भूत पुनीत, मूत्र, रेतसाश्च पक्षे वीर्यं न  
 और शुक्रकी, अतिप्रवृत्तिः अतिप्रवृत्ति अतिप्रवृत्ति,  
 भवेत् थाय्य छे होती है. तत्र अपि तेभां पक्ष्य उसमें  
 सी, सर्वम् सर्व सब, संग्रहणम् संग्रहाद्धी उपधार  
 संग्रहाद्धी उपचार, मतम् मान्य छे इतिकारी हैं ॥२१२३॥

212-212½. In condition of occlusion of Vyana by Apana, there occur excessive discharge of feces, urine and semen. There the treatment indicated is astringent therapy.

सूच्छां तन्द्रां प्रलापोऽङ्गसादोऽभ्युज्ज्वलक्षयः २१३  
समानेनावृते व्याने व्यायामो लघुभोजनम् ।

व्याने व्यान व्यानके, समानेन समान वायुथी  
समान्ते, आवृते आवृत भर्ता आवृत होने पर, मूर्च्छा  
तन्द्रा भूच्छा, तन्द्रा मूर्च्छा, तन्द्रा, प्रलापः पथडाट  
प्रलाप, अङ्गसादः शरीरन्ती शिथिलता अङ्गसाद, अग्नि-  
अभिक्षय अभिक्षय, ओजः- बलक्षयः ओजक्षय अने  
पक्षक्षय याय छे ओजक्षय और बलक्षय होते हैं,  
व्यायामः तैर्भा व्यायाम इसमें व्यायाम, लघुभोजनम्  
अने हलधुं बोधन ४४ छे और लघु भोजन हितकर  
है ॥ २१३३ ॥

213-213½. In condition of occlusion of Vyana by Samana, there occur fainting, torpor, garrulity, asthenia of

the limbs, loss of gastric fire, vital essence and of strength. There, the treatment is exercise and light diet.

सुबध्यतः। ऽल्पाग्निताः ऽस्वेदश्चेष्टादानिर्निर्मीलनम् २१४  
उदानेनावृते व्याने तत्र पथ्यं मितं लघु ।

व्याने व्यान व्यानके, उदनेन उदान वायुर्वा  
 उगतये, आवृते अःपत यतां आवृत होने पर, स्ववृता  
 रत्नवृता स्ववृता, जलप्राप्तिता अमिर्भांघ अलप्राप्तिता,  
 अन्वेदः पक्षिणां अक्षय स्वदेका न आता, चेष्टाहातिः  
 येष्टानाश चेष्टाहानि, निमीकनश्च अने आभितुं अंध  
 धनुं थाय छे और आँखोंका बन्द होना होते हैं। तत्र  
 रत्नां इसमें, मितश्च कष्टु भूपत्तर इवकुं परिमित और  
 णु भोजन, पथ्यम् पथ्य छे पथ्य है ॥ २१४३ ॥

214-214½. In condition of occlusion of Vyana by Udaa, there occur rigidity, dullness of gastric fire, anhidrosis, loss of movement and absence of winking. There, the treatment is wholesome, measured and light diet.

पञ्चान्योन्यावृत्तानेवं वातान् बुध्येत लक्षणैः ॥२१५॥  
एषां स्वकर्मणां हानिर्वृद्धिर्वाऽऽवरणे गता ।

एवम् आ प्रमाणे इस प्रकार, अन्योन्यावृत्तान्  
परस्पर आवृत्त भयेद्वा परस्पर आवृत्त, पञ्चवातान्  
पाथे वायुभिः पांचों वायुको, लक्षणैः लक्षणेषु वडे  
लक्षणोंसे, बुद्धेत ओणभवत् जाने, आवरणे आवृत्त  
थत्ता आवरण होने पर, एषाम् ऐशानां इनके,  
स्वकर्मणाम् पोतानां कर्मनी अपने कर्मोंसे, हानिः वृद्धिः  
वा हानि के वृद्धि हानि या वृद्धि, मत्ता भानेव छे  
मानी है ॥ २१५३ ॥

215-215½. By their symptoms one should diagnose the condition of mutual occlusion of these five types of vata and it has been laid down that

२१४. स्तब्धताऽस्याग्निनाऽस्वेदः—स्वेदोऽग्निनाशः स्तब्धत्वं (फ.)

२१५. आवरणे मत्ता-आवरणं सतं (थ. फ.)

there will occur either the increase or decrease of its actions as the particular type of vata is affected.

यथास्थूलं समुद्दिष्टमेतदाकर्ण्येऽष्टकम् ॥२१६॥

सलिङ्गमेषजं सम्यग्बुधानां बुद्धिवृद्धये ।

बुधानाम् डाह्वा अनुप्रेरणी बुद्धिमानोंकी, बुद्धि-  
वृद्धये बुद्धिनी वृद्धि भाटे बुद्धिको बढ़ानेके लिए,  
यथास्थूलम् स्थूल रीते स्थूल रीतिसे, एतत् आ ये,  
आवरणे अष्टकम् आठ आवरण आठ आवरण सलिङ्ग-  
मेषजम् तेषीनां लक्षणम् अने औषधसहित उनके  
लक्षण और औषधसहित, सम्यक् सारी रीते सम्यक्  
प्रकारसे, समुद्दिष्टम् दर्शायां छे कहे हैं ॥ २१६ ॥

216-218. Thus have been described in general this octad of the conditions of mutual occlusion along with their symptoms and treatment, in order to aid the understanding of intelligent physicians.

स्थानान्यवेक्ष्य वातानां वृद्धिं हानिं च कर्मणाम् २१७

द्वादशावरणान्यन्यान्यभिलक्ष्य भिषग्जितम् ।

कुर्यादभ्यञ्जनस्नेहपानवस्त्यादि सर्वशः ॥२१८॥

क्रममुष्णमनुष्णं वा व्यत्यासादवचारयेत् ।

वातानाम् वायुओंकी, वायुओंके, स्थानानि स्थान  
स्थानोंको, कर्मणाम् तथा कर्मीनी तथा कर्मोंकी, वृद्धिम्  
हानिम् च वृद्धि अने हानि वृद्धि और हानिको, अवेक्ष्य  
ओधने देखकर, अन्यानि अने पीडा और अन्य, द्वादश  
आठ बारह, आवरणानि आवरणोंने आवरणोंको,

२१६ आवरणेऽष्टकम्—आवरणाष्टकम् (छ. ड. ब.)

, अष्टकम्—पृथक् (ख. ड. ब.)

, बुधानां बुद्धिवृद्धये—वृष्ण एवं बुद्धिवृद्धये (ख. ड. ब.)

, सम्यग्बुधानां—भूयो बुधानां (फ.)

२१८. पानवस्त्यादि—नस्यपानादि (ब. द. ब. फ.)

, सर्वशः—सर्वतः (ब.)

, अवचारयेत्—अपयोजयेत् (ब.)

अभिलक्ष्य लक्षणों की भाँतीने स्थानमें रखनेके, अन्यत्र-  
अन्यत्र अभ्यग, स्नेहपान स्नेहपान स्नेहपान बस्त्रादि  
तथा अस्ति वजरे तथा वस्त्रिमादि भिषग्जितम् उपचार  
मेषज, सर्वशः संपूर्णपक्षे सम्पूर्ण रूपमें कर्मात्  
करना करे, व्यत्यासात् अथवा वारंशः की वा पर्याप्त  
क्रमसे, उष्णम् अनुष्णम् उष्ण अने शीत उष्ण और  
शीत, क्रमम् वा उपचार उपचारको, अवचारयेत्  
प्रयोज्यता कर्मणा चणिए ना २१७-२१८ ॥

217-218. On investigating the habitat of each type of vata, as well as the signs of increase or decrease of its functions, the physician should diagnose the remaining twelve conditions of mutual occlusions and should treat them by means of inunction, unctuous potion, enemata and all other procedures, or he may be given cold and hot measures in alternation.

उदानं योजयेदूर्ध्वपानं चानुलोमयेत् ॥२१९॥

समानं शमयेच्च त्रिधा व्यानं तु योजयेत् ।

प्राणो रक्ष्यश्चतुर्भ्योऽपि स्थाने ह्यस्य स्थितिर्धृषा २२०  
स्वं स्थानं शमयेदेवं वृत्तानेतान् विमार्गमाह ।

उदानम् उदानने उदानको, ऊर्ध्वम् उपर तरफ  
ऊपरकी ओर, योजयेत् धौजवे ले जाय, अपानम् च  
अपानतुं अपानका, अनुलोमयेत् अनुलोमन करने, समानम्  
समानतुं समानका, शमयेत् च  
संशमन करने, व्यानम् तु अने व्यानने  
और व्यानको, त्रिधा त्रिधे प्रकारे तीन प्रकारसे, योज-  
येत् च एक धौजवे प्रवृत्त करे, चतुर्भ्यः अपि पक्ष  
आ चारेयथी परस्तु इन चारोंसेमी, प्राणः प्राणतुं  
प्राणको, रक्ष्यः विशेष करीने रक्ष्य करने ओधने रक्षा  
विशेष रूपमें करनी चाहिए, हि ऊपरछुके क्योंकि, स्थाने  
ते योतानां स्थानमां रहेतां न इसके स्थानमें रहने  
पर ही, अस्ति स्थितिः उपनन्ती स्थिति जीवन्की स्थिति,  
धृषा निश्चित छे निश्चित है, एवम् आ प्रभावे इस

२२०. ह्यस्य—तस्य (ब.)

પ્રદાર, વૃતાન્ આદિન વાતુત, ત્વમાર્ગમાન અને વિભાગી-  
અર્થે, ધૌર વિમાર્ગમી પુનામ એકીને ફન વાયુઓ, સ્વમ્ સ્થાનક પોતાને સ્થાને અને સ્થાનમે, સમયેન  
લઈ જવા બેઠકો કે જાણાં વાદિયે ॥૨૧૯-૨૨૦૩॥

219-220. The Udana should be re-  
gulated upwards and the Apana down-  
wards. The Samana should be sedated  
and the Vyana should be treated by  
all the three methods. Even more  
carefully than the other four types of  
vata, the Prana should be maintained,  
because life depends on the proper  
maintenance of it in its habitat. Thus  
the physician should regulate and  
establish in their normal habitats the  
various types of vata that have been  
occluded and misdirected.

મૂર્છા દાહાં અમઃ શૂં વિદાહઃ સ્મીતકામિતા ૨૨૧  
હર્દનં ચ વિદગ્ધસ્ય પ્રાણે પિત્તસમાવૃતે :

પ્રાણે પ્રાણ પ્રાણકે, પિત્તસમાવૃતે પિત્તથી આવૃત  
અર્થાં પિત્તસે આવૃત હોને પર, મૂર્છા મૂર્છા મૂર્છા,  
દાહઃ અમઃ દાહ, પ્રમ દાહ, અમ. શૂલક શૂલક શૂલ, વિદાહઃ  
વિદાહ વિદાહ, સ્મીતકામિતા સ્મીત વસ્તુની ધ્રુવ  
સ્મીતકામિતા, વિદગ્ધસ્ય અને વિદગ્ધ એકાકીની બાં  
વિદગ્ધ મોજનકા, હર્દનર ચ ઉદરી થાય છે વમન હોત  
કે ॥ ૨૨૧૩ ॥

221-221. In condition of occlusion  
of Prana by pitta, there occur fainting,  
burning, giddiness, colic misdigestion,  
craving for cold things and vomiting  
of misdigested food.

ઘ્રીવનં શ્વયુદ્ધારનિઃશ્વાસોચ્છાસસંબ્રહઃ ॥૨૨૨॥  
પ્રાણે કપાવૃતે રૂપાણ્યરુચિરહર્દિરેવ ચ ।

પ્રાણે પ્રાણ પ્રાણકે, કપાવૃતે કફથી આવૃત અર્થાં  
કફસે આવૃત હોને પર, ઘ્રીવનમ્ થૂંક આવવું ઘ્રીવન,

શ્વયુ-છીંક શ્વયુ વદાર-એકકાર ઉદાર, નિઃશ્વાસ-  
નિઃશ્વાસ નિઃશ્વાસ, ઉચ્છાસ-અને ઉચ્છાસનો ધૌર  
ઉચ્છાસકી, સંબ્રહઃ રોષ રુકાવટ, અરુચિઃ અરુચિ  
અરુચિ, હર્દિઃ પૃથુ ચ અને ઉદરી એ ધૌર વમન કે,  
રૂપાણિ લક્ષણો થાય છે લક્ષણ હોતે હૈં ॥૨૨૨૩॥

222-222. In condition of occlusion  
of Prana by kapha there occur  
symptoms such as salivation, sterna-  
tion eructation, impediment to the  
inspiration and expiration, anorexia  
and vomiting.

મૂર્છાવાનિ ચ કપાણિ દાહો નામ્યુરસઃ ક્રમઃ ૨૨૩  
ઓજોઘ્રંશઃ સાદશ્ચાપ્યુદાને પિત્તસંવૃતે ।

ઉદાને ઉદાન ઉદાનકે, પિત્તસંવૃતે પિત્તથી આવૃત  
અર્થાં પિત્તસે આવૃત હોને પર, મૂર્છાવાનિ ચ મૂર્છા  
મૂર્છા મૂર્છા, તાપિ-હરસઃ તાપિ અને ઘ્રીમી નામિ  
ધૌર છાતીમે, દાહઃ દાહ દાહ, ક્રમઃ ક્રમ ક્રમ,  
ઓજોઘ્રંશઃ ચ ઓજોમે દાહ મોજનકા ઘ્રંશ, સાદઃ ચ  
અપિ અને શિથિલતા એ ધૌર શિથિલતા કે, રૂપાણિ  
લક્ષણો થાય છે લક્ષણ હોતે હૈં ॥ ૨૨૩૩ ॥

223 223. In condition of occlusion  
of Udana by pitta there occur  
symptoms such as fainting and similar  
conditions, burning in the umbilical  
region and chest exhaustion, loss of  
vital essence and asthenia.

આવૃતે શ્લેષ્મણોદાને વૈવર્ણ્યં વાકસ્વરગ્રહઃ ॥૨૨૪॥  
દૌર્બલ્યં ગુરુગાત્રત્વમરુચિરોપજાયતે ।

ઉદાને ઉદાન ઉદાનકે, શ્લેષ્મણા કફથી શ્લેષ્માસે,  
આવૃતે આવૃત અર્થાં આવૃત હોને પર, વૈવર્ણ્યમ્  
વિવર્ણતા વિવર્ણતા, વાક્-સ્વર વાણી સ્વર વાણી ધૌર

૨૨૪. ક્રમઃ-અમઃ (ધ)

૨૨૫. ઓજોઘ્રંશઃ-કર્ધઘ્રંશઃ (ધ. દ.)

,, સાદશ્ચાપ્યુદાને-શ્વાસશ્ચાપ્યુદાને (ધ. ફ)

સ્વરત્રી, મદહઃ ઝશાઈ બર્ષા રુકાવટ, દૌર્બલ્યમ્ દુર્બળતા દુર્બલતા, ગુરુતાગ્રસ્ત્યમ્ અંગેનું ભારેપણું ગાત્રોંકી ગુરુતા અરુચિઃ ચ અને અરુચિઃ ઓર અરુચિ, ઉપજાયતે ઉત્પન્ન થાય છે હોતી હૈ ॥ ૨૨૪૩ ॥

224-224½. In condition of occlusion of Udana by kapha. there occur discoloration, the spasm of speech and voice, debility, heaviness of the body and anorexia.

અતિસ્વેદસ્ત્વા દાહો મૂર્છા ચારુચિરેવ ચ ॥૨૨૫॥  
પિત્તાવૃત્તે સમાને સ્યાદુષ્ણાતસ્તથોષ્મણઃ ।

સમાને સમાન સમાનકે, પિત્તાવૃત્તે પિત્તથી આવૃત થતાં પિત્તસે આવૃત્ત હોને પર, અતિસ્વેદઃ અતિશય પરસેવે અતિસ્વેદ, તથા દાહઃ તથા, દાહ પ્યાસ, દાહ, મૂર્છા ચ મૂર્છા મૂર્છા, અરુચિઃ ચ એવ અરુચિઃ અરુચિ, તથા તથા તથા, ઝશાઈ ઝશાઈ, ઉપવાતઃ ઘટાડો એ લક્ષણ કમી થે લક્ષણ, સ્વાદ ઉત્પન્ન થાય છે ઉત્પન્ન હોતે હૈ ॥૨૨૫૩॥

225-225½. In condition of occlusion of the Samana by pitta, there occur hyperidrosis, thirst, burning, fainting, anorexia and loss of body-heat.

અસ્વેદો વહ્નિમાન્ધ્યં ચ લોમહર્ષસ્તથેવ ચ ॥૨૨૬॥  
કફાવૃત્તે સમાને સ્યાદ્ગાત્રાણાં ચાતિશીતતા ।

સમાને સમાન સમાનકે, કફાવૃત્તે કફથી આવૃત થતાં કફસે આવૃત્ત હોને પર, અસ્વેદઃ પરસેવાને અભાવ સ્વેદ ન આના, વહ્નિમાન્ધ્યમ્ ચ અગ્નિમાંધ્ય અગ્નિમાન્ધ્ય, તથા એવ લોમહર્ષઃ ચ રૂવાં ઊર્ભા થવાં રોમહર્ષ, ગાત્રાણામ્ અને ગાત્રોંકી ઓર ગાત્રોંકી, અતિશીતતા ચ અતિ શીતલતા એ લક્ષણ અતિશીતતા થે લક્ષણ, સ્વાદ ઉત્પન્ન થાય છે ઉત્પન્ન હોતે હૈ ॥ ૨૨૬૩ ॥

226-226½. In condition of occlusion of the Samana by kapha, there occur anidrosis, dullness of the gastric fire horripilation and excessive coldness of the limbs.

વ્યાને પિત્તાવૃત્તે તુ સ્વાદાહઃ સર્વાઙ્ગઃ ક્રુમઃ ॥૨૨૭॥  
ગાત્રવિક્ષેપસઙ્ગશ્ચ સસંતાપઃ સવેદનઃ ।

વ્યાને વ્યાન વ્યાનકે, પિત્તાવૃત્તે તુ પિત્તથી આવૃત થતાં પિત્તસે આવૃત્ત હોને પર, સર્વાઙ્ગઃ સર્વ અંગેના સર્વાઙ્ગમે, દાહઃ દાહ દાહ, ક્રુમઃ ક્રુમ યકાવટ, સસંતાપઃ સંતાપ સંતાપ, સવેદનઃ અને વેદનાસહિત ઓર વેદનાકે સથ, ગાત્રવિક્ષેપ- ગાત્રોંકી ચેષ્ટાનું ગાત્રોંકી ચેષ્ટામે, સઙ્ગઃ ચ બધ થવું એ લક્ષણ રુકાવટ થે લક્ષણ, સ્વાદ ઉત્પન્ન થાય છે ઉત્પન્ન હોતે હૈ ॥૨૨૭૩॥

227-227½. In condition of occlusion of Vyana by pitta, there occur burning all over the body, exhaustion, loss of the movement of limbs accompanied with temperature and pain.

ગુરુતા સર્વગાત્રાણાં સર્વસન્ન્યસ્થિજા રુજઃ ॥૨૨૮॥  
વ્યાને કફાવૃત્તે લિપ્તઃ ગતિસઙ્ગસ્તથાઽધિકઃ ।

વ્યાને વ્યાન વ્યાનકે, કફાવૃત્તે કફથી આવૃત થતાં કફસે આવૃત્ત હોને પર સર્વગાત્રાણામ્ સર્વ અંગેનું સર્વ ગાત્રોંકી, ગુરુતા ભારેપણું ગુરુતા, સર્વસન્નિ- સર્વ સાંધા સર્વ સન્નિ, અસ્થિજાઃ અને હાડકાંમાં ઓર અસ્થિમે, રુજઃ પીડા પીડા, તથા તથા તથા, અધિકઃ અધિક પ્રમાણમાં વિશેષતઃ, ગતિસઙ્ગઃ ગતિની રુકાવટ ગતિકી રુકાવટ, લિપ્તઃ એ લક્ષણ ઉત્પન્ન થાય છે થે લક્ષણ ઉત્પન્ન હોતે હૈ ॥ ૨૨૮૩ ॥

228-228½. In condition of occlusion of Vyana by kapha, there occur symptoms such as heaviness of the limbs, pain in all the bones and joints, and excessive loss of movement.

૨૨૫. ચારુચિરેવ ચ-ચીડરુચિરેવ ચ (વ. ક. વ.)

,, ,, -ચારુચિરેવ ચ (વ. ક.)

૨૨૮. સર્વસન્ન્યસ્થિજા રુજઃ-પર્વસન્ન્યસ્થિજા રુજઃ (ક. ઇ. વ.)



હારિદ્રમૂત્રવર્ચસ્વં તાપશ્ચ ગુદમેદ્વયોઃ ॥૨૨૨॥  
લિઙ્ગં પિત્તાવૃત્તેऽપાને રજસશ્ચાતિવર્તનમ્ ।

અપાને અપાન અપાનકે, પિત્તાવૃત્તે પિત્તથી આદૃત થતાં પિત્તસે આવૃત્ત હોને પર, હારિદ્ર- હળદર જેવાં પીળાં હલ્દીકે વર્ણકે, મૂત્રવર્ચસ્વમ્ મૂત્ર અને મળ મૂત્ર ઓર પુરીષ. ગુદમેદ્વયોઃ ગુદા અને શિશ્નમાં ગુદા ઓર મેદુરમેં, તાપ. ચ તાપ તાપ, રજસઃ ચ તથા આર્તવની ઓર આર્તવકો, અતિવર્તનમ્ અતિ પ્રદીપ્ત અભિપ્રવૃત્તિ. લિઙ્ગમ્ એ લક્ષણ ઉત્પન્ન થાય છે એ લક્ષણ ઉત્પન્ન હોતે હૈં ॥ ૨૨૨૩ ॥

229-223½. In condition of occlusion of Apana by pitta, there occur symptoms such as, yellow coloration of urine and feces, sensation of heat in the rectum and phallus and excessive flow of the menses.

મિશ્રામશ્લેષ્મસંસૃદ્ધગુરુવર્ચઃપ્રવર્તનમ્ ॥૨૩૦॥  
શ્લેષ્મણા સંવૃત્તેઽપાને કફમેદ્વય ચાગમઃ ।

અપાને અપાન અપાનકે, શ્લેષ્મણા કફથી કફસે, સંવૃત્તે આદૃત થતાં આવૃત્ત હોને પર, મિશ્રામ- પાતળા- આમ પતળા આમ, શ્લેષ્મસંસૃદ્ધ- કફના મિશ્રામવાળા કફસે મિલા, ગુદ- તથા હારે ઓર મારી, વર્ચઃપ્રવર્તનમ્ મળની પ્રદીપ્ત મલકો પ્રવૃત્તિ, કફમેદ્વય અને કફ- મેદુરની ઓર કફમેદ્વકો, આગમઃ ચ પ્રાપ્તિ એ લક્ષણ ઉત્પન્ન થાય છે પ્રાપ્તિ એ લક્ષણ ઉત્પન્ન હોતે હૈં ॥ ૨૩૦૩ ॥

230 230½. In condition of occlusion of Apana by kapha, there occur stools that are loose, heavy and mixed with undigested matter and mucus and discharge of urine mixed with mucus.

લક્ષણાત્તુ મિશ્રત્વં પિત્તસ્ય ચ કફસ્ય ચ ॥ ૨૩૧॥  
ઉપલક્ષ્ય મિષગિવદ્વાન્ મિશ્રમાવરણં વદેત્ ।

૨૨૨૩. રવસંશ્ચાતિવર્તનમ્-રજસઃ સંપ્રવર્તનમ્ (વ. ઘ.)

પિત્તસ્ય ચ પિત્તવાં પિત્ત, કફસ્ય ચ અને કફનાં ઓર કફકો, લક્ષણામાત્ તુ લક્ષણોના લક્ષણો, મિશ્રત્વમ્ મિશ્રપણુને મિત્તે, ઉપલક્ષ્ય એપ્રિને દેશકાર, વિદ્વાન્ વિદ્વાન વિદ્વાન, મિષક વૈદે વૈદ્ય, આવરણમ્ આવરણને આવરણકો, મિશ્રમ્ મિશ્ર મિશ્ર, વદેત્ કહેવું કહે ॥ ૨૩૧૩ ॥

231-231½. On observing the combined symptoms of pitta and kapha, the learned physician should diagnose it as a condition of combined occlusion.

યદ્યસ્ય વાયોર્નિર્દિષ્ટં સ્થાનં તથેતરૌ સ્થિતૌ ॥૨૩૨॥  
દોષૌ बहुविधान् व्याधीन् दर्शयेतां यथानिजान् ।

યસ્ય એ જિસ, વાયોઃ વાયુનું વાયુકા, યત્ એ જો, સ્થાનમ્ સ્થાન સ્થાન, નિર્દિષ્ટમ્ અતિવેદ્યું છે નિર્દિષ્ટ છે, તત્ર સ્થિતૌ હતરૌ દોષૌ તેમાં એ બીજા દોષો આવી રહે તે તેઓ. ઉકમેં વદિ મિજ દો દોષ સ્થિત હોં તો વે, યથાનિજાન્ પોતપોતાની અપની અપની, बहुविधान् બહુ પ્રકારની બહુત પ્રકારકો, व्याधीन् વ્યાધિઓ વ્યાધિયોં, दर्शयेताम् ઉત્પન્ન કરે છે ઉત્પન્ન કરતે હૈં ॥ ૨૩૨૩ ॥

232-232½ If the two other humors get located in the places described as the habitats of vata, they manifest various symptoms of disorders characteristic of each of them.

આવૃત્તં શ્લેષ્મપિત્તાભ્યાં પ્રાણં ચોદાનમેવ ચ ॥૨૩૩॥

ગરીયસ્ત્વેન પશ્યન્તિ મિષજઃ શાસ્ત્રચક્ષુષઃ ।  
વિશેષાઝીવિતં પ્રાણે ઉદાને સંશ્રિતં બલમ્ ॥૨૩૪॥  
સ્યાત્તયોઃ પીડનાદ્યાનિરાયુષશ્ચ બલસ્ય ચ ।

શાસ્ત્રચક્ષુષઃ શાસ્ત્રરૂપી નેત્રવાળા જ્ઞાનરૂપ નેત્રવાળે, મિષજઃ વૈદો વૈદ્ય, શ્લેષ્મપિત્તાભ્યાં કફ અને પિત્તથી

૨૩૨૩. बहुविधान् बहुविधौ (ક.)

૨૩૪. સંશ્રિતમ્-સંકુતમ્ (ક.)

कफ और पित्तसे, आवृतम् आवृत आवृत, प्राणम् च आधु प्राण, उदानम् च एव अने उदानने और उदान वायुको, गरीयस्त्वेन अधिक हानि करनार अधिक हानिकारक, पश्यन्ति लुओ छे समझते हैं, विशेषात् कारण के भास करीने क्योंकि विशेषकर, जीवितम् लुनन प्राणीका जीवन, प्राणे आधुने प्राणपर, बलम् अने अथ और बल, उदाने उदानने उदान पर, संश्रितम् आश्रित छे अवलंबित है, तयोः पीडनात् तेओन्दी विकृतिने क्षर्ध उन दोनोंकी विकृतिसे, आयुषः च आयुष आयु, बलस्य च अने अथन्दी और बलकी, हानिः स्यात् हानि थाय छे हानि होती है ॥२३३-२३४३॥

233-234. Medical authorities regard, as most serious, the condition of occlusion of Prana or Udana by kapha and pitta combined, because life is particularly dependent on Prana, and vitality on Udana; and occlusion of them, will result in loss of life and vitality.

सर्वेऽप्येतेऽपरिज्ञाताः परिसंवत्सरास्तथा ॥२३५॥  
उपेक्षणादसाध्याः स्युरथवा दुरुपक्रमाः ।

एते सर्वे आ अधायनी ये सभी, अपि पलु मी, अपरिज्ञाताः अथर न रहेवाथी न जाननेसे, परिसंवत्सराः ओक वर्ष करती वधारे लूना थवाथी एक वर्षसे अधिक पुराने हो जानेसे, तथा अने और, उपेक्षणात् उपेक्षा करवाथी उपेक्षासे, असाध्याः असाध्य असाध्य, अथवा अथवा या, दुरुपक्रमाः कष्टसाध्य कष्टसाध्य, म्युः अने छे हो जाते हैं ॥ २३५३ ॥

235-235. If all these conditions are either undiagnosed or neglected for longer than a year, they become either incurable or formidable.

हृद्रोगो विद्रधिः प्लीहा गुल्मोऽतीसार एव च ॥२३६॥  
भवन्त्युपद्रवास्तेषामावृतानामुपेक्षणात् ।

२३६३. दुरुपक्रमाः-दुरुपक्रमाः-(५)-

आवृतानाम् आवृत थयेवा आवृत हुए, तेषाम् तेओन्दी सनकी, उपेक्षणात् उपेक्षा करवाथी उपेक्षासे, हृद्रोगः हृद्रोग हृद्रोग, विद्रधिः विद्रधि विद्रधि, प्लीहा गुल्मः प्लीहा, गुल्म प्लीहा, गुल्म, अतीसारः एव च अने अतीसार और अतीसार, उपद्रवाः ओ उपद्रवा ये उपद्रव, भवन्ति थाय छे होते हैं ॥२३६३॥

236-236. As a result of the neglect of these conditions of occlusions, there occur complications such as cardiac disorders, abscesses, splenic disorders, gulma and diarrhea.

तस्मादावरणं वैद्यः पवनस्योपलक्षयेत् ॥२३७॥  
पञ्चात्मकस्य वातेन पित्तेन स्लेष्मणाऽपि वा ।

तस्मात् तेथी इस लिए, वैद्यः वैद्य वैद्यको, पञ्चात्मक . पांच २३५वाणी पांच प्रकारके, पवनस्य वायुनुं वायुका, वातेन वातथी वातसे, पित्तेन पित्तथी पित्तसे, स्लेष्मणा कपि वा के कश्ची वा कफसे, आवरणम् आवरण, उपलक्षयेत् अलुनुं ओछेओ बावका चाहिए ॥ २३७३ ॥

237-237. Therefore, the physician should diagnose the condition of occlusion of the five types of vata, by vata, pitta or kapha.

मिश्रजितमतः सम्यगुपलक्ष्य समाचरेत् ॥२३८॥  
अनमिष्यन्दिमिः क्षिप्रैः स्रोतसां शुद्धिकारकैः ।

अतः ओथी इस लिए, सम्यक् सारी रीते सम्यक् प्रकारसे, उपलक्ष्य परीक्षा करीने जानकर, अनमिष्यन्दिमिः अनमिष्यन्दी न होय ओवा अनमिष्यन्दी, क्षिप्रैः स्निग्ध क्षिप्र, स्रोतसाम् अने स्रोतोन्दी और स्रोतोंके, शुद्धिकारकैः शुद्धि करनार द्रव्योंथी शुद्धिकारक द्रव्योंसे,

२३७३. वातेन-वातस्य (क. छ. य. फ.)

२३८. मिश्रजितमतः-मिश्रजितैरतः (ब.)

.. .. -मिश्रजितैस्ततः (ध. द.)

.. शुद्धिकारकैः-शुद्धिकारिभिः (च. ञ.)

मिषजितम् चिकित्सा चिकित्सा, समाचरेत् कर्त्तुं ॥ २३८३ ॥

238-238½. After having well thought out the proper medications, he should treat the patient by measures which are non-liquefacient, unctuous and depurative of body-channels.

कफपित्ताविरुद्धं यद्यच्च वातानुलोमनम् ॥ २३९ ॥  
सर्वस्थानावृतेऽप्याशु तत् कार्यं मारुते हितम् ।

मारुते वायु वायु, सर्वस्थानावृते सर्व स्थानभूत आवृत होता। सब स्थानमें आवृत होने पर, अपि पितृ सी, यत् ने जो, कफ-पित्त- उद्ग तथा पित्तथी कफ तथा पित्तसे, अविरुद्धम् विरुद्ध न होय अविरुद्धी हो, यत् ने जो, वातानुलोमनम् वायुनु अनुलोमन कर्त्तुम् होय वायुका अनुलोमन करनेवाला हो, हितम् च अने ने हितकर होय और जो हितकर हो, तत् ते चिकित्सा वह चिकित्सा, आशु जल्दी, कार्यम् कर्त्तुं भेद-भेद करनी चाहिए ॥ २३९ ॥

239-239½. In condition of occlusion of vata in all its habitats, taking prompt measures which are regulative of vata and at the same time not antagonistic to kapha and pitta, is beneficial.

यापना वस्तयः प्रायो मधुराः सानुवासनाः ॥ २४० ॥  
प्रसमीक्ष्य बलाधिक्यं मृदु वा संसर्गं हितम् ।

प्रायः धलुं भृशं प्रायः, मधुराः मधुर मधुर, सानु-वासनाः अनुवासन अस्तित्वेऽसिद्धि अनुवासन वस्ति-सहित, यापनाः वस्तयः यापन अस्तित्वे यापन वस्ति, बलाधिक्यम् वा अथवा अधन्य अधिकता या बला-धिक्यको, प्रसमीक्ष्य भेद-भेद देख कर, मृदु संसर्गं मृदु विरुद्धन हल्का विरुद्धन, हितम् हितकर छे हितकर है ॥ २४० ॥

240-240½. The Yapana enemata as well as the unctuous enemata are

३९३, हितम्-हितम् (३.)

generally beneficial, and if the vitality of the patient be found to be great, mild laxatives are beneficial.

रसायनानां सर्वेषामुपयोगः प्रशस्यते ॥ २४१ ॥  
शैलस्य जतुनोऽत्यर्थं पयस्य गुग्गुलोस्तथा ।

सर्वेषाम् सर्व सब, रसायनानाम् रसायनोभा रसायनोभे, शैलस्य जतुनः शिलाजितने शिलाजीतका, तथा तथा तथा, पयसा दूधनी साथे दूधके साथ, गुग्गुलोः गुग्गुलो गुग्गुलका, उपयोगम् उपयोग उपयोग, अत्यर्थम् अत्यंत अत्यन्त, प्रशस्यते प्रशस्त छे प्रशस्त है ॥ २४१ ॥

241-241½ The use of all kinds of vitalisers is highly recommended. A course of mineral pitch and so too a course of gum guggul with milk are specially beneficial.

लेहं वा भार्गवप्रोक्तमभ्यसेत् क्षीरभुजः ॥ २४२ ॥  
अभयामलकीयोक्तमेकादशसिताशतम् ।

क्षीरभुज दूध उपर रखीने दूधका आहार करनेवाला, नरः मनुष्ये मनुष्य, भार्गवप्रोक्तम् लेहम् अथवा भुनिथे उहेवा अवलेकनु च्यवनप्राश अवलेहका, अभयामलकीय-उक्तम् अथवा आ रसायनना पहेवा रसायनाध्यायना 'अभयामलकीय' नामना पहेवा पादमा उहेवा अथवा इस स्थानके प्रथम रसायनाध्यायके 'अभयामलकीय' नामके पहले पादमें कहे हुए, एकादशसिताशतम् वा अगि-थारसे पद साकरवाणा प्रयोगनु ग्याहसौ पल चीनीवाले प्रयोगका, अभ्यसेत् सेवन कर्त्तुं सेवन करे ॥ २४२ ॥

242-242½. Or the patient living on milk diet, may take a course of the 'Chyavanaprasa' linctus or the vitalizer known as the course of chebulic and

२४२. नरः-मनुष्य (३.)

२४२½. अभयामलकीयोक्तम्-अभयामलकीयोक्तम् (३.)

॥ सिताशतम्-सिताशतः (३.)

॥ -मिगाननः (३.)

emblic myrobalans prepared with 4400 tolas of sugar.

अपानेनावृते सर्वं दीपनं ग्राहि मेघजम् ॥२४३॥  
वातानुलोमनं यच्च पकाशयविशोधनम् ।

अपानेन प्राणु वज्रे अपानधी प्राणादि अपानेनावृते आवृत भर्ता आवृत होने पर, दीपनम् ग्राहि दीपन प्राण्दी दीपन, ग्राही, वातानुलोमनम् वातानु अनुलोमेन उरवार वातका अनुलोमन करनेवाला, पकाशयविशोधनम् च अने पक्वाशयानु शोधन उरवार और पकाशय-शोधन, यत् मेघजम् ने औषध हेतु जो औषध को, सर्वम् ते सर्व उष सर्वका, प्रयोजनेषु हेतुं ओषधे प्रयोग करे ॥२४३३॥

243-243½. In condition of occlusion by Apāna, all measures that are gastric-stimulant, astringent, regulative of peristalsis and depurative of the colon, constitute the treatment.

इति संक्षेपतः प्रोक्तमावृतानां चिकित्सितम् ॥२४३॥  
प्रणादीनां सिक्कं कुर्याद्वितर्क्य स्वयमेव तत् ।

इति आ प्रमाणे इव प्रकार, आवृतानाम् आवृत आवृत, प्राणादीनाम् प्राणादिभिः प्राणादिकी, चिकित्सितम् चिकित्सा चिकित्सा, संक्षेपतः संक्षेपतः अक्षेपमा संक्षेपमे, प्रोक्तम् उद्धी छे कही है, सिक्कं वैद्य वैद्य, स्वयम् एव पोते न स्वयं, वितर्क्य समञ्ज समञ्जने सोच समझकर, तत् ते चिकित्सा उष चिकित्सा, कुर्यात् उरवी ओषधे करे ॥ २४४३ ॥

244-244½. Thus has been described in brief the line of treatment in conditions of occlusion of Prana and other types of vata; the physician should use his own discretion and give the proper treatment

२४३. अपानेनावृते—अपाने स्वावृते (क.)

पित्तावृते तु पित्तघ्नैर्महान्याविरोधिभिः ।

कफावृते कफघ्नैस्तु मास्रतस्यानुलोमनैः ॥२४५॥

पित्तावृते तु वात पित्तधी आवृत यत् वातके वित्तने आवृत होने पर, पित्तघ्नः पित्तनाशक पित्तनाशक, मास्रतस्य अने मास्रधी और वायुके, अविरोधिभिः विरोधी न होय ओषधे प्रोषधी अविरोधी द्रव्योक्षे, कफावृते तु तथा वात कफधी आवृत यत् तथा वातके कफसे आवृत होने पर, कफघ्नैः कफघ्न कफघ्न, मास्रतस्य अने वायुनु और वायुके, अनुलोमनैः अनुलोमन करनेवाले द्रव्योक्षे चिकित्सा करे ॥ २४५ ॥

245. He should use in a condition of occlusion of vata by pitta, medications curative of pitta and not antagonistic to vata, and in condition of its occlusion by kapha, medications curative of kapha and regulative of vata.

लोके वायवर्कसोमानां दुर्विज्ञेया यथा गतिः ।  
तथा शरीरे वातस्य पित्तस्य च कफस्य च ॥२४६॥  
क्षयं वृद्धिं समत्वं च तथैवावरणं सिक्कं ।  
विज्ञाय पवनादीनां न प्रमुह्यति कर्मसु ॥२४७॥

कथा ने प्रमाणे जिव प्रकार, लोके दोहभा लोकमें, वायु-वायु वायु, अर्क-सूर्य सूर्य, सोमानाम् अने यन्दनी और चन्द्रकी, गतिः गति गति, दुर्विज्ञेया असुनी मुश्केल छे दुर्विज्ञेय है, तथा ते प्रमाणे उसी प्रकार, शरीरे शरीरभा शरीरमें, वाक्स्व वात नास, पित्तस्य च पित्त पित्त, कफस्य च गतिः अने कफकी गति असुनी मुश्केल छे और कफकी गति, दुर्विज्ञेय है, पवनादीनाम् वायु वज्रेना वातादिकके, क्षयश्च क्षय क्षय, वृद्धिश्च वृद्धि वृद्धि, समत्वं समता समता, तथा एव आवरणम् च अने आवरणने और आवरणको, विज्ञाय

२४५. मास्रतस्यानुलोमनैः—मास्रतस्याविरोधिभिः (क. घ. छ. फ.)

२४७. प्रमुह्यति—विमुह्यति (छ.)

„ प्रमुह्यति कर्मसु—प्रमुह्यति कर्मविव (फ.)

અણી ઇઈ જાનસ, મિષક વૈદ્ય વૈદ્ય, કર્મસુ ચિકિત્સામાં  
ચિકિત્સામાં, ન પ્રમુદ્યન્તિ મૂંઝાતે નથી મૂલ નહીં  
કરતા ॥ ૨૪૬-૨૪૭ ॥

246-247. Just as in the universe the  
courses of the wind, the sun and the  
moon are difficult to comprehend, even  
so are the forces of the vata, pitta  
and kapha in the body. The physician  
who knows the condition of decrease,  
increase, normality and occlusion of  
vata and other humors, is not deluded  
with regard to treatment.

અધ્યાયોક્તવિષયાઃ—

તત્ર શ્લોકૌ—

પચ્ચાત્મનઃ સ્થાનવશાચ્છરીરે  
સ્થાનાનિ કર્માણિ ચ વેદઘાતોઃ ।  
પ્રકોપદેતુઃ કુપિતશ્ચ રોગાન્  
સ્થાનેષુ ચાન્યેષુ વૃત્તોઽવૃત્તશ્ચ ॥૨૪૮॥  
પ્રાણેશ્વરઃ પ્રાણમૃતાં કરોતિ  
ક્રિયા ચ તેષામશિલા નિરુક્તા ।  
તાં દેશસાત્મ્યતુલ્યાન્યવેદ્ય  
પ્રયોજયેચ્છાસ્ત્રમતાનુસારી ॥૨૪૯॥

તત્ર શ્લોકૌ તે વિષયમાં ઉપસંહારના બે શ્લોક છે  
કે એ વિષયમાં સરસંહારકે રો શ્લોક છે કે, સ્થાનવશાત્  
સ્થાન અનુસાર સ્થાનકે અનુસાર, પચ્ચાત્મનઃ પાંચ  
સ્વરૂપવાળા પાંચ સ્વરૂપવાળે, વેદઘાતોઃ વેદધારક  
વાયુના વેદધારક વાયુકે, શરીરે શરીરમાં શરીરમાં,  
સ્થાનાનિ સ્થાન સ્થાન, કર્માણિ ચ કર્મ કર્મ, પ્રકોપ-  
દેતુઃ અને પ્રકોપના કારણ કારણ કારણ કારણ કારણ  
કારણ કારણ, કુપિતઃ ચ કુપિત થયેલો વાયુ કુપિત  
રૂપા વાયુ, વૃત્તઃ આવૃત્તઃ ચ આવૃત્ત કે અનાવૃત્ત અનાવૃત્ત  
આવૃત્ત અને અનાવૃત્ત બનકર, સ્થાનેષુ પેટમાં સ્થાનેમાં  
અપને સ્થાનેમાં, અન્યેષુ ચ અને અન્ય સ્થાનેમાં અને

અન્ય સ્થાનેમાં, પ્રાણમૃતાન્ પ્રાણીઓના મનુષ્યોને,  
રોગાન્ રોગો રોગ, કરોતિ કરે છે ઉત્પન્ન કરતા હૈ,  
તેષામ્ અશિલા તેઓની સંપૂર્ણ અને સંપૂર્ણ, ક્રિયા  
ચ ચિકિત્સા ચિકિત્સા, નિરુક્તા કહી છે કહી હૈ,  
શાસ્ત્રમતાનુસારી શાસ્ત્રના મતને અનુસરનાર શાસ્ત્ર-  
મતકો અનુસરનારા, પ્રાણેશ્વરઃ વૈદ્ય વૈદ્ય, દેશ-સાત્મ્ય-  
દેશ, સાત્મ્ય દેશ, સાત્મ્ય, ઋતુબલાનિ ઋતુ અને બલ  
ઋતુ અને બલકો, અવેદ્ય બેદને દેશકર, તામ્ તે  
ચિકિત્સા એ ચિકિત્સાકો, પ્રયોજયેત્ પ્રયોજવી પ્રયુક્ત  
કરે ॥ ૨૪૮-૨૪૯ ॥

Here are the two recapitulatory  
verses—

248-249. The Vata being the subject of  
this chapter, the habitats and functions  
of the five-fold body-sustaining element  
Vata, have been dealt with here. The  
causes of provocation, the diseases  
which this life-controlling principle of  
vata gives rise to in persons, when  
provoked, both in its own habitat and  
in other places, both in conditions  
of occlusion and in non-occlusion,  
and the treatment of all those diseases  
have been fully expounded here. The  
physician, guided by the directions of  
the science, should administer the  
treatment, giving full consideration to  
factors of place, homologation, season  
and strength.

इत्यग्निवेशकृते तन्त्रे चरकप्रतिसंस्कृतेऽप्राप्ते दृढ-  
बलसंपूरिते चिकित्सास्थाने वातव्याधि-  
चिकित्सितं नामाष्टाविंशोऽध्यायः ॥२८॥

इति आ प्रमाणे इय प्रकार, અગ્નિવેશકૃતે અગ્નિ-  
વેશે રચેલા અગ્નિવેશકે બનાવે, ચરકપ્રતિસંસ્કૃતે તન્ત્રે  
અને ચરકથી પ્રતિસંસ્કાર પામેલા આ શાસ્ત્રમાં  
ઔર ચરકકે દ્વારા સંસ્કૃત ઇય શાસ્ત્રકે, અપ્રાપ્તે અપ્રાપ્ત

૨૪૮. વૃત્તોઽવૃત્તશ્ચ—વૃતાઽવૃત્તશ્ચ (વ.)

૨૪૯. સાત્મ્યતુલ્યાન્યવેદ્ય—સાત્મ્યતુલ્યાન્યવેદ્ય (વ.)

अथाह, दृढबलसंपूरिते अने दृढभवे पूरा करेवा और दृढबलसे पूरित किये गये, चिकित्सास्थाने चिकित्सा-स्थान विषे चिकित्सास्थानमे, वातव्याधिविकित्सितम् 'वातव्याधिविकित्सित' 'वातव्याधिविकित्सित', नाम नाभने नामका, अष्टाविंशः अष्टावीसमे अष्टाईसवौ, अध्यायः अध्याय संपूर्ण थये अध्याय समाप्त हुआ ॥ २८ ॥

28. Thus, in the Section on Therapeutics, in the treatise compiled by Agnivesa and revised by Caraka, the twenty-eighth chapter entitled 'The Therapeutics of Vata Diseases' not being available, the same as restored by Dridhabala, is completed.

### एकोनविंशोऽध्यायः।

आगस्त्यत्रीसमे अध्याय अध्याय उन्तीसवौ

### Chapter XXIX

वातरक्तचिकित्सोपक्रमः —

अथातो वातशोणितचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥ १ ॥

इति ह स्माह भगवानात्रेयः ॥ २ ॥

अथः अतः हवे अलीथी अब आगे, वातशोणित-चिकित्सितम् 'वातशोणितचिकित्सित' नामना अध्या-यनु 'वातशोणितचिकित्सित' नामके अध्यायका, व्याख्या-स्यामः व्याख्यान करेथुं व्याख्यान करेंगे ॥ १ ॥

भगवान् भगवान् भगवान्, आत्रेयः आत्रेये आत्रेयने, इति ह स्मा विषयमा नीये प्रभाषे ॥ इव विषयमें निम्न प्रकारसे ही, आह स्मा उद्धृत्य छे कहा है ॥ २ ॥

1. We shall now expound the chapter entitled "The Therapeutics of Rheumatic conditions".

2. Thus declared the worshipful Atreya.

वातरक्तस्य निदानं संप्रति य—

हुताग्निहोत्रमासीन्नृपिमध्ये पुनर्वसुम् ।

पृष्टवान् गुरुमेकाग्रमग्निवेशोऽग्निवर्चसम् ॥ ३ ॥

अग्निमारुततुल्यस्य संसर्गस्यानिलान्नृजोः ।

हेतुलक्षणभैषज्यान्यथास्मै गुरुरब्रवीत् ॥ ४ ॥

हुताग्निहोत्रम् अग्निहोत्रमा दे.म करी अग्निहोत्रमें होम करके, ऋषिमध्ये ऋषियोंने अध्यामा ऋषियोंके मध्यमें, आसीनम् बैठेवा बैठे हुए, अग्निवर्चसम् अग्नि नेना तेजस्वी अग्निके समान तेजस्वी एकाग्रम् ओकाग्र और एकाग्र, गुरुम् गुरु गुरु, पुनर्वसुम् पुनर्वसुने पुनर्वसुको, अग्निवेशः अग्निवेशे अग्निवेशने, अनिलासृजोः वायु अने रक्ताना वायु और रक्तके, अग्निमारुत-अग्नि तथा वायुना अग्नि और वायुके, तुल्यस्य जेवा तुल्य, संसर्गस्य संसर्गना अर्थात् वातरक्ताना संसर्गके अर्थात् वातरक्तके, हेतु- निदान हेतु, लक्षण- लक्षण लक्षण, भैषज्यानि अने चिकित्सा और चिकित्साको, पृष्टवान् पूछ्या पूछा, अथ पछी तदनन्तर, गुरुः गुरु अ गुरुने, अस्मै तेने उसे, अब्रवीत् उद्धृत्य कहा ॥ ३-४ ॥

3-4. Agnivesa addressed the master Punarvasu, who was seated in an attentive mood amidst the sages, glowing like fire, after completing his daily sacrificial rites, and requested him to explain the etiology, signs and symptoms and the therapeutics of the condition of pathological association of vata with the blood, a combination like that of the fire and the wind. The master answering him spoke thus:—

लवणाम्लकटुश्चरित्रघोष्णाजीर्णमोजनैः ।

क्लिन्नशुक्राम्बुजानूमांसपिण्डकमूलकैः ॥ ५ ॥

कुलत्थमाषनिष्पावशाकादिपल्लेक्षुभिः ।

दध्यानालसौवीरशुक्रतक्रसुरासवैः ॥ ६ ॥

१. अग्निवर्चसम्-अग्रवर्चसम् (भ.)



विरुद्धाभ्यशनक्रोधदिवास्वप्नप्रजगरैः ।

प्रायशः सुकुमाराणां मिष्टान्नसुखभोजनात् ॥ ७ ॥  
अच्छक्कमणशीलानां कुप्यते घातशोणितम् ।

लवण-अम्ल-क्षेत्र, अम्ल लवण, अम्ल, कटु-क्षार-  
कटु, क्षार कटु, क्षार, त्रिगुण-स्निग्ध-स्निग्ध, उष्ण-  
उष्ण, अजीर्ण-भोजनैः तथा अशुचि पर भोजन  
तथा अजीर्ण पर भोजन, क्लिष्ट-सुक्त-क्षिप्त शुष्क क्लिष्ट,  
शुष्क, अशुचि-अशुचि-अशुचि, आनूयमान-अनूयमान  
प्रणुशीलैः भांस और आनूयमान भांस, विषयाक-  
भोग विषयाक, मूलकैः भूमी मूलैः, कुलस्थ-कुलस्थ  
कुलस्थ, मांस-अम्ल उदर-निषाद-पाक्ष निषाद,  
आकादि-शाक पत्रे आकादि, पल्ल-भांस मांस,  
इक्षुभिः शेरडी ईन्, दधि-आरनाल-धुई, आरनाल  
दही, आरनाल, सौवीर-शुक्त-सौवीर-शुक्त सौवीर, शुक्त,  
तक्र-सुरा-अशु, सुरा छाल, सुरा, आसवैः अशु-अशु,  
विरुद्ध-विषुद्ध भोजन विरुद्ध भोजन, अध्यत्म-अध्यत्म  
शन अध्यशन क्रोध-क्षीय क्रोध, दिवास्वप्न-दिवसे  
सुप्त दिवास्वप्न, प्रजागरैः अने उभयसे ओओधी  
और रात्रिजगरणसे, प्रायशः धुई-करीने प्रायः,  
सुकुमाराणाम् सुकुमार सुकुमार, मिष्टान्न-मिष्टान्न  
आनूयमान मिष्टान्न भोजन करनेवाले, सुखभोजनात् सुख  
भोग्यमान सुख का उपयोग करनेवाले, अच्छक्कमणशीला-  
नाम् अने इक्षुभां देव विनाना दोआभां और घूमनेकी  
अद्वत न होनेवाले पुरुषोंमें, वातशोणितम् वातरक्तने।  
वातरक्त, कुप्यते क्षोभ थाय छे कुपित होता है ॥५-७३॥

5-7½. By habitual use of salt, acid, pungent, alkaline, unctuous and hot articles of diet, by predigestion meals, by excessive indulgence in stale or dry flesh of aquatic and wet-land animals, or in the use of til paste or radish, or by taking horsegram, black gram,

७. मिष्टान्नभोजनाम्-मिष्टान्नभोजनाम् (क. घ.)

„ „ -मिष्टान्नहारविहरणम् (ड. त. द. फ.)

„ „ -मिष्टान्नसभोजनाम् (घ. क.)

„ कुप्यते-नायते (फ.)

nishpava and other greens, oil-cakes and sugar-cane, and by the use of curds, sour conjee, sauvira wine, vinegar, butter-milk, sura wine and medicated wines, by antagonistic diet, by eating on a loaded stomach, by anger, by day-sleep and waking at night—by all these factors, the vata and the blood become provoked, specially in the body of delicate persons and of those who are accustomed to sumptuous and luxurious diet and who are given to sedentary habits.

अभिघातादशुब्धा च प्रदुष्टे शोणिते नृणाम् ॥ ८ ॥

कषायकटुतिक्तपक्ष्वाहारद्वभोजनात् ।

हयोष्ट्यानयानाम्बुकीडापुनलङ्घनैः ॥ ९ ॥

उष्णे चात्यध्ववैषम्याद्यवायाद्वेगनिग्रहात् ।

वायुर्विवृद्धो वृद्धेन रक्तेनावारितः पथि ॥ १० ॥

कृत्स्नं संदूषयेद्रक्तं तज्ज्ञेयं वातशोणितम् ।

खुडं वातवलासाख्यमाख्यवातं च नामभिः ॥ ११ ॥

अभिघातात् अभिघातस्थी अभिघातसे, अशुब्धा च अने अशुद्धिस्थी और अशुद्धिसे, नृणाम् मनुष्योंमें, प्रदुष्टे अशुद्धि में, दूषित होने पर, कषाय-कषाय कषैले, कटु-तिक्त-कटु, तिक्त चरपर, तिक्त, अल्प-रक्त-अल्प अने रक्त अल्प और रक्त, आहारात् आहारस्थी आहारसे, अशोजनात् उपवासस्थी भोजन न करनेसे, हयोष्ट्यान-धेया, गेह पत्रेस्थी

९. तिकाक्ष-तिकाक्ष (घ.)

„ रक्षाहारात्-भक्ष्याहारात् (ब.)

„ हयोष्ट्यानयानाम्बु-हयोष्ट्यानयानाम्बु (घ.)

„ लङ्घनैः-लङ्घनान् (क. ख. घ.)

१०. चात्यध्ववैषम्यात्-चात्यध्ववैषम्यात् (ड. द. घ.)

११. कृत्स्नं-वृद्धः (घ.)

„ आख्यवातं-अख्यवातं (घ. ब.)



अवाधी बोझा ऊट आदिसे गमनसे, खन-  
वाहने। उपर २५१री ३२वाधी वाहनसे मुसाफरी  
करनेसे, अम्बुकीडा- ७६३री ३२वाधी जल-  
क्रीडासे, फुवन- ६६३वाधी कूरनेसे, लङ्घन- ६६३वाधी  
लंघन करनेसे, उष्ण च उष्ण ३७१मां उष्ण चालमें,  
अति- ७६३ बहून, अश्ववैद्यम्बु मुसाफरी ३२वाधी  
उत्पन्न थपेदी वायुनी विपमताधी मुसाफरी करनेसे  
उत्पन्न हुई वानकी विपमतासे, वेगनिग्रहात् तथा वेग  
रोधी राभवाधी और वेगोंको रोकनेसे, विष्टुः ७६३  
बड़ा हुआ, वायुः वायु वायु, वृद्धेन ७६३  
हुए, रक्तेन २३३वाधी रक्तसे, पथि भाग्यमां मार्गमें, आवा-  
रितः रेडितां रोक जाकर, कृत्स्नम् अधा संपूर्ण, रक्तम्  
२३३ने रक्तको, संदूषयेत् दूषित करे छे दूषित करता  
है, तत् तेने उसे, वातजोणितम् वातशेषित  
वातशेषित, खुडम् ७७३ खुड, वातबलात्वाख्यम्  
वातबलात् वातबलात्, आढ्यवातम् च अने  
आढ्यवात ओ और आढ्यवात इन, नामभिः  
नामोधी नामोंसे, ज्ञेयम् अज्ञेयुं जानना चाहिए  
॥ ८-११ ॥

8-11. When the blood gets vitiated  
consequent upon trauma or the omi-  
ssion of seasonal purification, and the  
vata gets provoked by astringent,  
pungent, bitter, scanty and dry articles  
of diet or by abstinence from food, or  
by constant riding on horses or camels  
or in vehicles drawn by them or by  
aquatic games, swimming and jumping,  
by excessive wayfaring in summer,  
by sexual indulgence and in suppres-  
sion of the natural urges, the vata  
gets increased. Getting obstructed in  
its course by the increased state of  
the blood it vitiates the whole of  
the blood. This condition is known  
by various names namely, Vata-jonita,  
Khūḍa, Vata-bala and Adhya-vata.

वातरक्तस्थ स्थानम्—

तस्य स्थानं शौ पञ्चावङ्गल्यः सर्वसन्धयः ।  
हस्तपादौ हस्तपादे तु मूलं देहे विधायति ॥१२॥

कौ पामों ओ हाथ, ओ पां दोनों हाथ, दोनों पैर,  
अङ्गुल्यः अङ्गुलीओ अङ्गुलीयां, सर्वसन्धयः तथा अधा  
सांधा और सारी सन्धियां, तस्य तेनां उस वातरक्तके,  
स्थानम् स्थान छे स्थान है, आदौ ते पहले वह  
पदं, हस्तपादे तु हाथ अने पांमां हाथ और पैरमें,  
मूलम् पीतातुं भूय अपनी जड़, कृत्वा स्थिर करीने  
स्थिर करके, देहे शरीरमां देहमें विधायति देवाय छे  
फैलता है ॥ १२ ॥

12. The sites of its manifestation  
are hands, feet, fingers, toes and all  
the joints. It establishes its base first  
in the hands and feet, and then  
spreads in the entire body.

सौक्ष्म्यात् सर्वस्मत्वाच्च पवनस्यासृजस्तथा ।  
तद् द्रवत्वात् सरत्वाच्च देहं गच्छत् सिरायनैः ॥१३॥  
पर्वस्वभिहतं क्षुब्धं वक्रत्वादवतिष्ठते ।  
स्थितं पिच्छादिसंस्पृष्टं तास्ताः सृजति वेदनाः ॥१४॥  
करोति दुःखं तेष्वेव तस्मात् प्रायेण सन्धिषु ।  
अवन्ति वेदनास्तास्ता अत्यर्थं दुःसहा नृणाम् ॥१५॥

पवनस्य वायुना वायु, सौक्ष्म्यात् सूक्ष्मपक्षाधी  
सूक्ष्म, सर्वस्मत्वात् च अने सर्व तरङ्ग सरन्त-  
पक्षाधी एवं सर्वत्र गतिशील होनेसे, तथा तथा तथा,  
असृजः रक्तना रक्त, द्रवत्वात् द्रवपक्षाधी द्रव,  
सरत्वात् च तथा सरपक्षाधी और सर होनेसे, तत्  
देहम् ते आभा देहमां वह घारे शरीरमें, सिरायनैः

१२. सर्व-पर्व (ग.)

„ हस्तपादे तु-हस्तपादेषु (ब.)

„ देहे-देहं (छ.)

१३. पवनस्यासृजस्तथा-देहं गच्छत् सिरायनैः (ड. क.)

„ गच्छत्-गच्छेत् (ड.)

„ सिरायनैः-सिरापनैः (क.)

१४. क्षुब्ध-कुब्ध (क.)

શિરામાર્ગેથી સિરામાર્ગને, ગચ્છત મસરતાં ફેલતા હુઆ. પર્વસુ પર્વેભાં પર્વોમેં, વક્રસ્વાત્ વાંકાપણું હેવાથી વક્ર હોનેકે કારણ, અમિહતમ ત્યાં રોકાઈ રુક્ષર, છુબ્જમ્ છુબ્જ થઈને છુડ્ય હોકર. અવલેષ્ટને રહે છે ઠડગતા હૈ, સ્થિતમ્ અને ત્યાં રહીને સ્થિર હુઆ વદ, પિત્તાદિ- પિત્તદિથી પિત્તાદિસે, સંસ્રજ્ય સંયુક્ત થઈ મિલકર, તા તાઃ તે તે તે તે તે તે, વેદનાઃ વેદનાઓ વેદનાઓ, સ્વજતિ પેદા કરે છે ઉત્પન્ન કરતા હૈ, તસ્માત્ તેથી અત એવ, પ્રાયેણ ધણુંકરીને પ્રાયઃ, તેષુ એવ તે ને ઉઠ્ઠી, સન્ધિષુ સાંધાઓમાં સન્ધિયોમેં, દુઃખમ્ દુઃખ દુઃખ, કરોતિ કરે છે કરતા હૈ, નૃનામ્ અને મનુષ્યોને તેથી ઔર મનુષ્યોનો વસે, અર્થર્થમ્ અર્થર્થ અત્યંત અત્યંત, દુઃસહઃ ન સહેનાય એવી દુઃસહ, તાઃ તાઃ તે તે તે મિત્ર મિત્ર, વેદનાઃ વેદનાઓ વેદનાં, મવન્તિ થાય છે મોતી હૈં ॥ ૧૩-૧૫ ॥

13-15. By reason of the subtle and all-pervasive character of vata, and of the liquid and flowing nature of the blood, the toxic element, spreading by means of the circulatory channels into the whole body, gets obstructed in the joints; and being agitated, it gets localized in the joints due to the tortuous nature of its course in the joints. Once localised, it becomes associated with pitta or vata and causes pains characteristic of each humor. Hence it generally causes pain in those joints only. The various kinds of pains thus caused are indeed exquisitely agonizing to their victims.

વાતરક્તસ્ય પૂર્વલક્ષણમ્—

સ્વેદોડસ્યર્થ ન વાં કાષ્ઠ્યં સ્પર્શાશ્ચત્વ ક્ષતેડતિરુક્ ।  
સન્ધિશૈથિલ્યમાલસ્યં સદનં પિઙ્કોદ્ગમઃ ॥૧૬॥

૧૬. કાષ્ઠ્યં-કાષ્ઠ્યં (જ.)

જાનુજ્જ્વોરુકટ્યંસહસ્તપાદાક્ષસન્ધિષુ ।

નિસ્તોદઃ સ્ફુરણં મેદો ગુરુત્વં સુતિરેવ ચ ॥૧૭॥

કણ્ઠઃ સંધિષુ રમ્યમ્ભૂત્વા ભૂત્વા નશ્યતિ ચાસકત્ ।

વૈવર્ણ્યં મણ્ડલોત્પત્તિર્વાતાસુકૃપૂર્વલક્ષણમ્ ॥૧૮॥

અત્યર્થમ્ બહુ અત્યંત, સ્વેદઃ પરસેવો થવો પસીના આવા, ન વાં કે ન થવો યા સર્વથા ન આના, કાષ્ઠ્યમ્ કાષ્ઠ્ય કાલપન, સ્પર્શાશ્ચત્વમ્ સ્પર્શજ્ઞાનનો નાશ સ્પર્શજ્ઞાન ન હોના, ક્ષતે અતિરુક્ થાં ન થતાં બહુ પીડા ઘાવ હોને પર અત્યંત પીડા, સન્ધિશૈથિલ્યમ્ સાંધાઓની શિથિલતા સન્ધિયોંકી શિથિલતા, આલસ્યમ્ આળસ આલસ, સદનમ્ અંગસાદે વેદનં સિથિલતા, પિઙ્કોદ્ગમઃ ફેડાડીઓ ઉપડી આવવી ફુન્તિયોંકા નિકલના, જાનુજ્જ્વા- ઢીંચણુ, પીડી જાનુ જઘા, કરુ-કટિ- સાથજ, કેઃ કરુ, કટિ, અંશ-હસ્ત- અભા, હાથ અંસ, હાથ, પાદ- પગ પાદ, અક્ષસન્ધિષુ તથા શરીરના સાંધાઓમાં ઔર શરીરની સંધિયોંમેં, નિસ્તોદઃ તોડ નિસ્તોદ, સ્ફુરણમ્ ફરકાટ સ્ફુરણ, મેદઃ ભેદન મેદ, ગુરુત્વમ્ ભારેપણું ગુરુતા, સુતિઃ એવ ચ અને સુતિ ઔર સુતિ, કણ્ઠઃ ખરબે છુબ્જી, અસકત્ ચ વારંવાર વારવાર, સન્ધિષુ સાંધાઓમાં સંધિયોંમેં, રુક્ પીડા પીડા, ભૂત્વા ભૂત્વા થઈ થઈને હો હો કર, નશ્યતિ શાંત થાય છે શાન્ત 'હો જાતી હૈ, વૈવર્ણ્યમ્ વિવર્ણતા વિવર્ણતા, મણ્ડલોત્પત્તિઃ મંડોલો (અકરડાં) થવાં એ ઔર મણ્ડલોંકા પ્રકટ હોના યદ, વાતાસુક- વાતાસ્તનાં વાતરક્તકે, પૂર્વ-લક્ષણમ્ પૂર્વરૂપ છે પૂર્વરૂપ હૈં ॥૧૬-૧૮॥

16-18. Excess or absence of perspiration, swarthy, anasthesia, undue severity of pain on injury, looseness of the joints, lethargy, asthenia, appearance of pimples, pricking pain, splitting pain, enlargement and numbness of the knee, calf, thighs, waist, shoulder, hands, feet and other body parts; pruritus, frequent appearance and disappearance of pain in the joints, discoloration and appearance of round eruptions on the body—

these are the premonitory symptoms of (Vata-sanita rheumatic condition.

वातरक्तस्य मेदाः, तेषां लक्षणानि च—

उत्तानमथ गम्भीरं द्विविधं तत् प्रचक्षते ।

त्वङ्मांसश्रयमुत्तानं गम्भीरं त्वन्तराश्रयम् ॥१९॥

तत् ते वातरक्तने उस वातरक्तको, उत्तानम् उत्तान उत्तान, अथ अने और, गम्भीरम् गंभीर गम्भीर, द्विविधम् ये ये प्रकारोंका, प्रचक्षते छे छे कहते हैं, त्वङ्मांस-आमडी तथा मांसमा त्वचा और मांसमें, आश्रयम् रहेछ आश्रितको, उत्तानम् उत्तान (आख) उत्तान (बाह्य), अन्तराश्रयम् तु अने अंदरनी धातुआमा रहेछने और वातरक्ते धातुआमें आश्रितको, गम्भीरम् गंभीर छे छे गम्भीर कहते हैं ॥ १९ ॥

19. This condition is said to be of two kinds—superficial and deep. The superficial is the one affecting the skin and muscles; and the deep condition is the one affecting the deeper tissues of the body.

कण्डूदाहरुगायामतोदस्फुरणकुञ्चनैः ।

अन्विता श्यावरक्ता त्वग्बाह्ये ताम्रा तथेष्ट्यते ॥२०॥

बाह्ये आख वातरक्तमा बाह्य वातरक्तमें, त्वक् आमडी त्वचा, कण्डू-दाह-भरु, भणितरा खुजली, दाह, रुक्-पीडा पीडा, आयाम-तोद-भेयाख, तोद आयाम, तोद, स्फुरण-इरुकाट स्पन्दन, कुञ्चनैः तमा संकोचनी और संकोचसे, अन्विता युक्त युक्त, श्यावरक्ता श्याम राती श्याम रक्त, तथा ताम्रा अने ताम्राना रंगवाणी तथा ताम्रवर्ण, इत्यते धाव छे होती है ॥ २० ॥

20. Pruritus, burning, pain, extension, aching or throbbing pain and contraction, accompanied with the dusky red or coppery coloration of the

skin are considered the symptoms in the superficial type of rheumatic condition.

गम्भीरे श्वयथुः स्तब्धः कठिनोऽन्तर्भृशार्तिमान् ।

श्यावस्ताम्रोऽथवा दाहतोदस्फुरणपाकवान् ॥२१॥

गम्भीरे गंभीर वातरक्तमा गम्भीर वातरक्तमें, श्वयथुः सोओ शोथ, स्तब्धः स्तब्ध स्तब्ध, कठिन कठिण, अन्तः अंदरनी आश्रुये भीतरसे, भृशार्तिमान् अत्यंत पीडावाणो अत्यन्त पीडयुक्त, श्यावः छाणो श्याम, अथवा अथवा या, ताम्रः धाव ताम्रवर्ण, दाह-तोद-दाह, तोद दाह, तोद, स्फुरण-स्फुरण स्फुरण, पाकवान् तथा पाकवाणो होव छे और पाकवाला होता है ॥ २१ ॥

21. In the deeper type, there occur swelling, rigidity, hardness, agonizing pain inside the joints, dusky-red or coppery coloration, burning, pricking and throbbing pain, and tendency to suppuration.

रुग्निदाहान्वितोऽभीक्ष्णं वायुः सन्ध्यस्थिमज्जसु ।

छिन्दन्निव नरत्यन्तर्वक्त्रीकुर्वेच्च वेगवान् ॥२२॥

करोति खज्जं पङ्कं वा शरीरे सर्वतश्चरन् ।

सर्वैर्लिङ्गैश्च विज्ञेयं वातासृग्भयाश्रयम् ॥२३॥

अभीक्ष्णम् सतत घटत, रुक्-विदाह-पीडा अने विदाहपीडा, पीडा और विदाहसे, अन्वितः युक्त युक्त, वेगवान् वायुः वेगवान वायु वेगवान वायु, सन्धि-अस्थि-सांधा, दाहतां सन्धि, अस्थि, मज्जसु अने मज्जामा और मज्जामें, छिन्दन् इव कापवा जेपी पीडा करेता छेदनवत् वेदना, वक्त्रीकुर्वेच्च अने तेओने पाडा भनावते। तथा वक्ता उत्पन्न करता हुआ, अन्तः चरति अंदर छे भीतर विचरता है, शरीरे शरीरमा शरीरमें, सर्वतः सर्वत्र सब जगह चरन् गति करेता ते फिरता हुआ वह, खज्जम् रेगुने भंज रोगीको खंज, पङ्कं वा अथवा पंगु या पंगु, करोति भनावे छे करता है, सर्वैः लिङ्गैः अर्था बहोबोली युक्त सब लक्षणोंसे युक्त, वातासृक् वातरक्तसे-वातरक्तको,

उभयाश्रित उभयाश्रित, विज्ञेयम् अणुं  
जानता चादि ॥ २२-२३ ॥

22-23. The morbid vata, while causing pain and morbid changes in the joints, constantly rushes about in the joints, bone and marrow as if cutting away the tissues, and tends to deformity of the joints. While pervading the whole body, it produces lameness or paraplegia. If all these symptoms are observed together, then the condition should be known as a combined one, both of the superficial as well as of the deep types.

વાતાધિકસ્ય વાતરક્તસ્ય લિજ્ઞાનિ—

तत्र वातेऽधिके वा स्याद्विके पित्ते कफेऽपि वा ।

संस्पृष्टेषु समस्तेषु यच्च तच्छृणु लक्षणम् ॥ २४ ॥

તત્ર ત્યાં વહાં, વાતે વા વાત વાત, રક્તે રક્ત રક્ત, પિત્તે પિત્ત પિત્ત, કફે અપિ વા અથવા કફ અથવા કફકે, અધિકે અધિક હેતાં અધિક હોને પર, સંસ્પૃષ્ટે અને તેઓ- માંના એ કે ત્રણને સંસર્ગ થતાં બીજાં અને તેમાંથી એક તીનકા સંસર્ગ હોને પર, સમસ્તેષુ ચ તથા ચારે એકત્ર મળતાં એવં ચારોંકે એકત્ર મિલને પર, યદ્ લક્ષણમ્ વાતરક્તનાં બે લક્ષણે વાતરક્તકે જો લક્ષણ, સ્વાદ આમ છે હોતે હૈં, તદ્ તે સ્વકો, શૃણુ સંભળેા સુનો ॥ ૨૪ ॥

24. Listen now to the symptoms of the conditions of predominant provocation of each of vata, blood, pitta and kapha as well as of bidiscordances and combined discordance of all four.

विशेषतः सिरायामशूलस्फुरणतोदनम् ।

शोथस्य काष्ण्यं रौक्ष्यं च श्यावतावृद्धिहानयः ॥ २५ ॥

૨૪. યદ્ તચ્છૃણુ-યદ્ તચ્છૃણુ (ક.)

,, લક્ષણમ્-લક્ષણેઃ (ગ.)

૨૫. શૂલસ્ફુરણતોદનમ્-તોદસ્ફુરણતોદનમ્ (બ.)

,, શોથહાનયઃ-શોથહાનયઃ (ક.)

धम-यङ्गलिसन्धीनां सङ्कोचोऽङ्गमहोऽतिरुक् ।

कुञ्चनस्तम्भने शीतप्रद्वेषश्चानिलेऽधिके ॥ २६ ॥

અનિલે અધિકે વાતરક્તમાં વાત અધિક હેતાં વાત- રક્તમેં વાયુકે અધિક હોને પર, વિશેષતઃ વિશેષે કરીને વિશેષ કરકે, સિરા-આયામ- શિરાઓનું બેંચાણું શિરાઓમેં આવામ શૂલ-સ્ફુરણ-શૂળ, ફરકાટ શૂલ સ્ફુરણ, તોદનમ્ તોદ તોદ, શોથસ્ય સોબની શોથકા, કાષ્ણ્યમ્ કાળાશ કાલા- પન, રૌક્ષ્યમ્ રક્ષતા રક્ષતા, શ્યાવતા- તથા સ્થામતાનાં તથા શ્યામતાકી, વૃદ્ધિ- વૃદ્ધિ વૃદ્ધિ, હાનયઃ ચ તથા હાસ્ય ઓર હાસ, ધમની- ધમની ધમની, અઙ્ગુલિ- અને અંગુલીઓના ઓર અઙ્ગુલિઓની, સન્ધીનામ્ સંધાઓના સંધિઓકા, સંકોચઃ સંકોચ સંકોચ, અંગમહઃ અંગ બેકાઈ બેવાં અંગમહ, અતિરુક્ બહુ પીડા અતિ પીડા, કુઞ્ચનસ્તમ્ભને દેહનાં સંકોચ અને બેકાઈ બેવું દેહકે આકુંચન તથા સ્તમ્ભન, શીતપ્રદ્વેષઃ ચ તથા શીતળ યીએનેા દ્વેષ આપ છે ઓર શીતલે દ્વેષ હોતે હૈં ॥ ૨૫-૨૬ ॥

25-26. Excessive distension of the veins, colic, throbbing, pricking pain, swartheness and dryness, dark-red coloration, increase and decrease of the swelling, contraction of the vessels, fingers and the joints, spasticity of the limbs, acute pain, contraction and stiffness and dislike for cold things—these are the symptoms in condition of increased vata.

पित्ताधिकस्य वातरक्तस्य लिङ्गानि—

श्वयथुर्भृशरुक् तोदस्ताम्रश्चिमिचिमायते ।

स्निग्धरુક્ષૈઃ શમં નૈતિ કણ્ઠકેદામ્વિતોઽસુજિ ॥ ૨૭ ॥

અસુજિ વાતરક્તમાં રક્ત અધિક હેતાં વાતરક્તમેં રક્તકે અધિક હોને પર, શ્વયથુઃ સોબે શોથ, મૃશરુક્તોદઃ બહુ પીડા અને તોદથી યુક્ત અત્યન્ત પીડા તથા તોદસે યુક્ત, તામ્રઃ તથા ત્રાંબા જેવા રંગનેા આમ છે

૨૬. અનિલેઽધિકે-અનિલોપરે (ક. બ. ક.)

૨૭. શ્વયથુર્ભ્રશરુક્-રક્તે શોથોઽતિરુક્ (બ.)

,, કણ્ઠકેદામ્વિતોઽસુજિ-રક્ત સંકોચકણુમાન્ (ક. બ.)

और ताम्र वर्णका होता है, कण्डूकृद- भरत तथा कृत्रिणी खूजली और क्लेशसे, अन्नितः युक्त युक्त, चिमिचिमायते तेभां यमयभाट थाय छे उसमें चिमचिमाहट होती है, स्निग्धरुक्षैः तेभ्य ते स्निग्ध अने इस प्रयोगेथी एवं वह स्निग्ध और रुक्ष द्रव्योंसे, कामम् न एति शांत भते। नथी शान्त नहीं होता ॥२७॥

27. Swelling, excessive pain, pricking pain, coppery coloration, tingling sensation, non-yielding to either unctuous or dry treatment and accompaniment of pruritus and softening, are the symptoms in a condition of vitiation of blood.

विदाहो वेदना मूर्च्छा स्वेदस्तृष्णा मदो भ्रमः ।  
रागः पाकश्च भेदश्च शोषश्चोक्तानि पैत्तिके ॥२८॥

पैत्तिके पैत्तिक वातरक्तभां पैत्तिक वातरक्तमें, विदाहः विदाह विदाह, वेदना मूर्च्छा वेदना, मूर्च्छा वेदना, मूर्च्छा, स्वेद तृष्णा पदसेवा, तरस स्वेद, तृष्णा, मदः भ्रमः भ्रम, भ्रम मद, भ्रम, रागः राग लालिमा, पाकः च पाक पाक, भेदः च भेद भेद, शोषः च अने शोष और शोष, उक्तानि छे दक्षिणे। कक्षा छे ये लक्षण कहे हैं ॥ २८ ॥

28. Morbid change in the joints, pain, fainting, perspiration, thirst, intoxication, giddiness, redness, suppuration, breaking open and atrophy are the symptoms of the condition of increased pitta.

कफाधिकस्य वातरक्तस्य लक्षणानि—

स्तैमित्यं गौरवं स्नेहः सुप्तिर्मन्दा च रुक् कफे ।  
हेतुलक्षणसंसर्गाद्विद्याद् द्वन्द्वत्रिदोषजम् ॥२९॥

कफे वातरक्तभां कफ अधिक होता वातरक्तमें कफके अधिक होने पर, स्तैमित्यम् स्तिमितता स्तिमितता, गौरवम् भारेपक्षुं भारीपन, स्नेहः सुप्तिः स्निग्धता, स्पृश-

मानने नाश क्षिप्रता, सुप्ति, मन्दा रुक् च अने भेद पीडा छे दक्षिण थाय छे और मन्द वेदना ये लक्षण होते हैं, हेतुलक्षणसंसर्गाद् छे दोषेना हेतु तथा दक्षिणा संसर्गाथी अने त्रय दोषेना हेतु तथा दक्षिणा संसर्गाथी दो दोषोंके हेतु तथा लक्षणके संसर्गमें और तीन दोषोंके हेतु तथा लक्षणके संसर्गमें, द्वन्द्वत्रिदोषजम् वातरक्तने अनुक्रमे ६-६-७ अने त्रिदोषज वातरक्तके कनयः द्वन्द्व और त्रिदोषज, विद्याम् अणुषुं ज्येष्ठ छे जानना नाहिर ॥२९॥

29. Fixity, heaviness, unctuousness, numbness and mild pain are the symptoms in condition of increased kapha. Bidiscordance and tridiscordance of humors are to be recognised by the combinations of the etiological factors or of the symptoms in each case.

वातरक्तस्य साध्यासाध्यलक्षणम्—

एकदोषानुगं साध्यं नवं याप्यं द्विदोषजम् ।

त्रिदोषजमसाध्यं स्याद्यस्य च स्युरुपद्रवाः ॥३०॥

एकदोषानुगम् एक दोषेथी उत्पन्न थयेछुं एक दोषज, नवम् तथा नवुं वातरक्त और नया वातरक्त, साध्यम् साध्य छे साध्य है, द्विदोषजम् छे दोषेथी उत्पन्न थयेछुं वातरक्त द्विदोषज वातरक्त, याप्यम् याप्य छे याप्य है, त्रिदोषजम् अने त्रय दोषेथी उत्पन्न थयेछुं वातरक्त और त्रिदोषजन्य वातरक्त, यस्य च तथा ज्येष्ठ तथा क्षिप्रमें, उपद्रवाः उपद्रवे उपद्रव, स्युः होय हों, असाध्यम् ते वातरक्त असाध्य छे वह वातरक्त असाध्य है ॥ ३० ॥

30. That condition is curable which is of recent origin resulting from the provocation of a single humor. The condition resulting from bi-discordance is only palliable, and the condition born of tridiscordance as well as the one attended with complications, are incurable.

२८. शोषश्चोक्तानि—शोषश्चोक्तानि (र. क.)

२९. मन्दा च रुक् कफे—मन्दा रुक् कफे (ख.)

३०. स्याद्य'स-तु यस्य (क.)

અસ્વપ્નોચકશ્વાસમાંસકોથશિરોગ્રહાઃ ।  
 મૂર્છાચમદસ્તુષ્ણાજ્વરમોહપ્રવેપકાઃ ॥૩૧॥  
 હિકાપાક્ષુલ્યવીસર્પપાકતોદ્ભ્રમક્લમાઃ ।  
 અક્લિવક્રતા સ્ફોટા દાહમર્મગ્રહાર્બુદાઃ ॥૩૨॥  
 एतैरुपद्रवैर्वर्ज्यं मोहेनैकेन वाऽपि यत् ।  
 संप्रस्रावि विवर्णं च स्तब्धमर्बुदकृच्च यत् ॥૩૩॥  
 વર્જયેચ્ચૈવ સંકોચકરમિન્દ્રિયતાપનમ્ ।

અસ્વપ્ન- ઊંઘ ન આવવી અનિદ્રા, અરોચક- અરુચિ  
 બરચિ, શ્વાસ- શ્વાસ શ્વાસ, માંસકોથ- માંસનું સડવું  
 માંસકા સફના, શિરોગ્રહાઃ માથાનું બકડાવું શિરોગ્રહ,  
 મૂર્છાચ-મદ- મૂર્છા, મદ મૂર્છા, મદ, રુક્-તુષ્ણા- પીડા,  
 તરસ રજા, પ્યાસ, જ્વર-મોહ- જ્વર, મોહ જ્વર, મોહ,  
 પ્રવેપકાઃ કંપ કમ્પન, હિકા- હેઠી હિકા, પાક્ષુલ્ય-  
 પાગળાપણું પકુતા, વીસર્પ-પાક- વિસર્પ, પાક વિસર્પ,  
 પાક, તોદ-ભ્રમ- તોદ, ભ્રમ તોદ, ભ્રમ, ક્લમાઃ થાક ક્લમ,  
 અક્લિવક્રતા આંગળીઓનું વાકાપણું અક્લિયોકી  
 વક્રતા, સ્ફોટાઃ ફોટા ફોટા, દાહ-મર્મગ્રહ- દાહ, મર્મોનું  
 બકડાવું દાહ, મર્મગ્રહ, અર્બુદાઃ અર્બુદ અર્બુદ, એતૈઃ ઉપદ્રવૈઃ  
 એ ઉપદ્રવૈથી इन उपद्रवोंसे, युक्तम् युक्त युक्त, एकेन  
 કે એકથી या अकेले, मोहेन अपि वा मोहणी पक्षु  
 યુક્ત મોહને સી યુક્ત, यत् જે વાતરકત હોય જો વાતરક  
 હો, वर्ज्यम् તેને असाध्य अक्षुप्तुं उसे असाध्य जानना  
 ચાહિય, यत् च वणी જે વાતરકત ઔર જો વાતરક,  
 संप्रस्रावि आववाणं स्राववाला, विवर्णम् विवर्णं विवर्णं  
 સ્તબ્ધમ્ સ્તબ્ધ સ્તબ્ધ, अर्बुदकृच्च અને अर्बुद કરનારું  
 હોય ઔર અર્બુદકો પેદા કરનેવાળા હો, संकोचकरम्  
 સંકોચ કરતું હોય સંકોચકારક હો, इन्द्रियतापनम्  
 તથા इन्द्रियोने तथावनारुं હોય તેને પણ ઔર  
 इन्द्रियोंको संतप्त करनेवाला હો उसे भी, वर्जयेत् च  
 एव असाध्य अ अक्षुप्तुं असाध्य ही जाने ॥૩૧-૩૩॥

31-33. The condition, associated with insomnia, anorexia, dyspnea, putrefaction of the flesh, spasticity of the head, fainting, intoxication, pain,

thirst, fever, stupefaction, tremors, hiccup, lameness, acute spreading affection, suppuration, pricking pain, giddiness, exhaustion, deformity of fingers, moles burning affection of the vital parts and tumefaction (Arbuda) should not to be taken up for treatment as also the condition attended with stupefaction alone. Also the condition associated with discharge, discoloration, stiffness, tumefaction, contraction and heating of the senses, should not be taken up for treatment.

અકુત્સોપદ્રવં યાપ્યં સાધ્યં સ્યાન્નિરુપદ્રવમ્ ॥૩૪॥

અકુત્સનોપદ્રવમ્ જેમાં અથા ઉપદ્રવો ન થયા હોય તે જો સંપૂર્ણ ઉપદ્રવોસે યુક્ત ન હો વહ, યાપ્યમ્ યાપ્ય છે યાપ્ય હૈ, નિરુપદ્રવમ્ અને ઉપદ્રવ વિનાનું ઔર ઉપદ્રવરહિત, સાધ્યમ્ સાધ્ય સાધ્ય, સ્વાત્ છે હૈ ॥૩૪॥

34. That condition which is attended with only some of the aforesaid complications, is palliable; and the one which is free from any complication is curable.

વાતરકે રક્તમોક્ષણવિધિઃ —

રક્તમાર્ગં નિહન્ત્યાશુ શાસ્ત્રાસન્ધિષુ મારુતઃ ।  
 નિવિદ્યાન્યોન્યમાવાર્યં વેદનામિર્હેરદસૂત્ર ॥૩૫॥

મારુતઃ વાયુ વાયુ, શાસ્ત્રાસન્ધિષુ હાથપગના સાધા-  
 ઔમાં શાસ્ત્રાસન્ધિયોર્મે, નિવિદ્યા પ્રવેશ કરીને પ્રવિષ્ટ  
 હોકર, રક્તમાર્ગમ્ રક્તમાર્ગને રક્તકે માર્ગકો, આશુ  
 એકદમ શીઘ્ર, નિહન્તિ અંધ કરી દે છે રોક દેતા હૈ,  
 अन्योन्यश्च તેથી વાત તથા રક્ત એક બીજાને અતઃ વાત  
 તથા રક્ત એક દુસરેકો, आवार्यं રોકીને રોકકર, वेदनाभिઃ

૩૧. મૂર્છાચ-મૂર્છા ચ (વ.)

૩૩. વર્જયેચ્ચૈવ-વર્જયેચ્ચ (વ. વ.)

૩૫. નિહન્ત્યાશુ-વિદ્યાશુ (વ.)

,, આવાર્ય-આવાર્ય (વ.)



वेदनाभी वेदनाओंसे, असूत्र प्रक्षोभे प्राणोंको, हरेत् हरे छे हरता है ॥ ३५ ॥

35. The provoked vata, located in the joints of the extremities, block the channels of the blood. Then the blood and the vata obstruct each other's course and may even cause death, by the severity of the pain occasioned.

तत्र सुञ्चेदसूक् शृङ्गजलौकःसूच्यलावुभिः ।

प्रच्छन्नैर्वा सिराभिर्वा यथादोषं यथाबलम् ॥ ३६ ॥

तत्र तेभा इतमें, यथादोषम् दोषानुसार रूपके अनुसार, यथाबलम् अने अक्षानुसार और बलके अनुसार, शृङ्ग-शींगी सींग, जलौकः जलोका, सूची-अलावुभिः सोय तथा तुंगीथी सूई और अलावुसे, प्रच्छन्नैः वा अथवा छेका भारीने अथवा पछना, सिराभिः वा छे शिरावेधद्वारा या सिगवेधद्वारा, असूक् सुञ्चेत् रक्त छेदी नाभयुं रक्त मोक्षण करे ॥ ३६ ॥

36. In such a condition, depletion of blood must be resorted to by means of the horn or the leech or needle or by cupping with a gourd or by venesection in keeping the degree of the morbidity and the strength of the patient.

रुग्दाहशूलतोदार्तादसूक् स्राव्यं जलौकसा ।

शृङ्गैस्तुम्बैर्हरेत् सुप्तिकण्डूविमिचिमायनात् ॥ ३७ ॥

रुग्-दाह- पीडा, दाह पीडा, दाह, शूल- शूल शूल, तोद-आर्ता अने तोदथी पीडाथेवा रोगीना शरीरथी और तोदसे पीडित रोगीके शरीरसे, असूक् छेदी खून, जलौकसा जलोका वडे जलौकासे, स्राव्यम् स्रावयुं निकलवाना चाहिएं, सुप्ति-कण्डू-स्पर्शज्ञानथी रहितपक्षुं, अरण्य सुप्ति, कण्डू, विमिचिमायनात् अने अभयभाट-

युक्त रोगीना और विमिचिमाययुक्त रोगीके शरीरसे, शृङ्गः तुम्बै शींगी सींग तुंगीथी सूई और अलावुसे, हरेत् छेदी छेदी रक्त निकाले ॥ ३७ ॥

37. Blood-letting by means of leech must be done where there is pain, burning, piercing and pricking pain. The horn and the gourd should be applied where there is numbness, pruritus and tingling sensation.

देशादेशं वज्रं स्राव्यं सिराभिः प्रच्छन्नेन वा ।

अङ्गलानौ न तु स्राव्यं रुक्षे वातोत्तरे च यत् ॥ ३८ ॥

देशात् ओके प्रदेशभांथी एक प्रदेशमेंसे, देशम् भीम प्रदेशभां दूसरे प्रदेशमें वज्रं अथवा छेदीने जाते हुए रक्तका सिराभिः शिरा बांधीने सिरावेध द्वारा, प्रच्छन्नेन वा छे छेका भारीने या पाछक, स्राव्यम् स्रावयुं स्रावण करे अङ्गलानौ अंगशेषवाणा और अंग-शेषवाले, रुक्षे वातोत्तरे च रुक्ष तथा वातप्रधान रोगीभां रुक्ष और वातप्रधान रोगीमें, यत् न छेदी होय जो रक्त हो; न स्राव्यम् तेनु स्रावयुं न करयुं इसका स्रावण न करे ॥ ३८ ॥

38. Where the pain is moving from place to place, venesection or cupping should be done. In a condition of asthenia of limb, depletion of blood should not be done. Also in a condition where dryness is the dominant factor in vata-provocation, depletion should not be done.

गम्भीरं श्वयथुं स्तम्भं कम्पं स्रायुसिरामयान् ।

ग्लानिं चापि ससङ्कोचां कर्पाद्यायुस्सूक्ष्मयात् ३९

३८. अङ्गलानौ न तु स्राव्यं रुक्षे वातोत्तरे च यत्-अङ्गे ग्लाने

न तु स्राव्यं रुक्षं वातोत्तरे च यत् (क)

,, रुक्षे वातोत्तरे च यत्-रुक्षं वातोत्तरे च यत् (ख)

३७. रुग्दाहशूलतोदार्तादसूक्-रुग्दाहतोदरार्तादसूक् (ब. व.)

,, शृङ्गैस्तुम्बैर्हरेत् सुप्तिकण्डूविमिचिमायनात्-शृङ्गैस्तुम्बैर्हरेत् सुप्तिकण्डूविमिचिमायनात् (क.)



असकृन्नायः कश्चिदेकं रक्तमोक्षयति क्योक्ति रक्तक्षयने, वायुः वायु वायु, गम्भीरम् गम्भीर गम्भीर, मध्यम् मध्यम् सूजन, स्तम्भम् कम्पम् स्तम्भ, कम्प स्तम्भ, कम्प, स्नायु-सिरा-स्नायु तथा शिराश्रीना स्नायु और सिराओंके, आश्रयान् रोग रोग, ससंकोचाम् अने संकोचमहित और संकोचमहित, ग्लानिश्च च अपि ग्लानिने ग्लानिको, कुर्यात् करे छे करता है ॥ ३९ ॥

39. For, as a result of the loss of blood, the vata causes deep-seated edema, rigidity, tremors, disorders of the sinews and the vessels, asthenia and contractures.

स्नायुयादीन् वातरोगान् मृत्युं चात्यवसेचनात् ।  
कुर्यात्तस्मात् प्रमाणेन स्निग्धाद्रक्तं विनिर्हरेत् ॥४०॥

अत्यवसेचनात् अतिशय थोड़ीनु निर्दरु करवाधी अति रक्तमोक्षणसे, स्नायुयादीन् वायु अश्रयता प्रत्यादि वायु खंजतादि वातरोगान् च वातरोगो वातरोगोको, मृत्युम् च अने मृत्यु और मृत्युकोभी कुर्यात् करे छे करता है, तस्मात् तर्था इस लिए, स्निग्धात् स्निग्ध रोगीनुं स्निग्ध रोगीका, रक्तम् रक्त रक्त, प्रमाणेन प्रमाणेनुं उचित प्रमाणसे, विनिर्हरेत् श्रवणपुं निकाले ॥ ४० ॥

40. Lameness and such other disorders of vata or even death may result. Therefore, depletion in proper measure should be done, only in persons who are rich in the unctuous element.

वातरक्ते सामान्यचिकित्सा—

विरेच्यः स्नेहयित्वाऽऽदौ स्नेहयुक्तैर्विरेचनैः ।  
रुक्षैर्वा मृदुभिः शस्तप्रसक्तवृत्तिकर्म च ॥४१॥

४०. स्नायुयादीन्-खंजादीन् (ब.)  
,, चात्यवसेचनात्-चातीवसेचितम् (फ.)  
,, अवसेचनात्-अपसेचनात् (ड.)

आदौ प्रथम प्रथम, स्नेहयित्वा स्नेहन आपीने स्नेहन कराके, स्नेहयुक्तैः स्नेहयुक्त स्नेहयुक्त, रुक्षः वा के रुक्ष अथवा रुक्ष, मृदुभिः मृदु मृदु, विरेचनैः विरेचनो वरे विरेचनोसे, विरेच्यः विरेचन करवापुं विरेचन देवे, असकृत् तथा वारे वारे और बारबार, वृत्तिकर्म च अस्तिकर्म पक्षु वृत्तिकर्म सी, शस्तम् प्रशस्त छे प्रशस्त है ॥ ४१ ॥

41. The patient should first be oleated and then purged by means of unctuous purgative medications or by dry but mild purgative medications, and then, frequent enemata should be administered.

सेकाभ्यङ्गप्रदेहाज्ज्ञेहाः प्रायोऽविदाहिनः ।  
वातरक्ते प्रशस्यन्ते

वातरक्ते वातरक्तमा वातरक्तमे, प्रायः धलुं करीने प्रायः, अविदाहिनः अविदाही अविदाही, सेक-अभ्यङ्ग-परिषेक, अभ्यङ्ग सेचन, अभ्यङ्ग, प्रदेह-अज-प्रदेह, अज प्रलेप, अज, ज्ञेहाः तथा स्नेह और ज्ञेह, प्रशस्यन्ते प्रशस्त छे प्रशस्त हैं ॥ ४१ ॥

41. Affusion, inunction, applications, diet and unctuous substances that are non-irritant are recommended in rheumatic conditions.

वातरक्ते विशेषचिकित्सा—

विशेषं तु निबोध मे ॥४२॥

विशेषम् तु विशेष चिकित्साने विशेष चिकित्साको, मे निबोध भारी पासेधी तमे साभगे मुझसे तुम सुनो ॥ ४२ ॥

42. Listen hereafter to an elaborate description of the treatment therein.

वाह्यमालेपनाभ्यङ्गपरिषेकोपनाहनैः ।  
विरेकास्थापनस्नेहपानैर्गम्भीरमाचरेत् ॥४३॥

४३. परिषेकोपनाहनैः-परिषेकावगाहनैः (ड.)

आलेपन- देप आलेपन, अभ्यङ्ग- अभ्यङ्ग अभ्यङ्ग, परिषेक- परिषेक परिषेक, उपनाहनेः अने उपनाहोथी और उपनाहोसे, बाह्य उत्ताननी बाह्य वातरक्ती, विरेक- तथा विरेचन एवं विरेचन, आस्थापन- आस्थापन आस्थापन, जेहपानैः तथा स्नेहपानथी और जेहपानोसे, गम्भीरम् गंभीरनी गम्भीर वातरक्ती, आचरेत् चिकित्सा करवी चिकित्सा करे ॥ ४३ ॥

43. The superficial type should be treated with unguents, inunction affusions and poultices; while the deep type should be treated with purgation, corrective enema and unctuous potions.

सर्पिस्तैलवसामज्जापानाभ्यञ्जनवस्तिभिः ।

सुखोष्णैरुपनाहैश्च वातोत्तरमुपाचरेत् ॥ ४४ ॥

सर्पिः-तैल- घी, तैल घी, तैल, वसा-मज्जा- वसा तथा भोजनानी वसा और मज्जाके, पान- पान पान, अभ्यञ्जन- अभ्यङ्ग अभ्यङ्ग, वस्तिभिः अने अस्तिभंथी और वस्तिकर्मसे, सुखोष्णैः अने नवशेडा और सुखोष्ण, उपनाहैः च उपनाहो वडे उपनाहोसे, वातोत्तरम् वात- प्रधान वातरक्तनी वातप्रधान वातरक्ती, उपाचरेत् चिकित्सा करवी चिकित्सा करे ॥ ४४ ॥

44. The condition resulting from predominant provocation of vata should be treated with potions, inunctions and enemata of ghee, oil, fat, and marrow and with genially warm poultices.

विरेचनैर्वृतक्षीरपानैः सेकैः सबस्तिभिः ।

शीतैर्निर्वाणैश्चापि रक्तपित्तोत्तरं जयेत् ॥ ४५ ॥

विरेचनैः विरेचन विरेचन, वृतक्षीरपानैः घी तथा दुधनी पान वृत और क्षीरके पान, सबस्तिभिः अस्ति- भंथी वस्तिकर्मके साथ, सेकैः परिषेक परिषेक,

शीतैः तेजः शीतण एवं शीतल, निर्वाणैः दाहने शीत करनारा उपाथो वडे दाहनाशक उपाथोसे, रक्तपित्तोत्तरम् रक्त तथा पित्तप्रधान वातरक्तने रक्त एवं पित्तकी प्रधानतावाले वातरक्तको, जयेत् शतवृं शान्त करे ॥ ४५ ॥

45. The condition resulting from predominant provocation of blood and pitta should be subdued by purgation, potions of ghee and milk, affusions, enemata and cool and refrigerant applications.

वमनं मृदु नात्यर्थं ज्वेहसेकौ विलङ्घनम् ।

कोष्णा लेपाश्च शस्यन्ते वातरक्ते कफोत्तरे ॥ ४६ ॥

कफोत्तरे उद्धमधान कफप्रधान, वातरक्ते वात- रक्तभा वातरक्तमें, मृदु मृदु मृदु, वमनम् वमन वमन, नात्यर्थम् शैलां अल्प, ज्वेहसेकौ स्नेह, परिषेक स्नेह, परिषेक, विलङ्घनम् लंघन लङ्घन, कोष्णाः तथा नवशेडा तथा सुखोष्ण, लेपाः च देप देप, शस्यन्ते प्रशस्त छे प्रशस्त हैं ॥ ४६ ॥

46. In rheumatic condition resulting from predominant provocation of kapha, mild emesis, a not excessive measure of oleation, affusion and fasting, and genially warm applications are recommended.

कफवातोत्तरे शीतैः प्रलिप्ते वातशोणिते ।

दाहशोथरुजाकण्डूविबुद्धिः स्तम्भनाद्भवेत् ॥ ४७ ॥

कफवात-उत्तरे उद्धमधान कफवातप्रधान, वात- शोणिते वातरक्तभा वातरक्तमें, शीतैः प्रलिप्ते शीतण प्रथोने देप करती शीतल देप करनेपर, स्तम्भनाव रतंभनथी स्तम्भनसे, दाह-शोथ- दाह, शोथ दाह, शोथ, रुजा- कण्डू- पीडा अने भरनने रुजा और खुनलीकी, विबुद्धिः बुधरो बुद्धि, भवेत् भाव छे होसी है ॥ ४७ ॥

47. In a bidiscordant condition resulting from the predominant provocation of kapha-cum vata cold applications, by their astringent action, cause increase of burning, edema, pain and pruritus.

रक्तपित्तोत्तरे चोष्णैर्दाहः क्लेशोऽवधारणम् ।  
भवेत्तस्माद्भिषग्दोषवलं बुद्ध्वाऽऽचरेत्क्रियाम् ॥४८॥

रक्तपित्तोत्तरे रक्तपित्तप्रधान वातरक्तभां रक्तपित्तप्रधान वातरक्तमें, उष्णैः दाहः क्लेशः प्रोक्षितः दोषः उत्पद्यते दाहः उष्ण लेपोने दाहः क्लेशः उत्पद्यते दाहः, अवधारणम् च अने अवधारणम् और फटना, भवेत् थाय छे होते हैं, तस्मात् भाटे इस लिए, भिषक् वैद्य वैद्य, दोषवलम् दोषतुं अथ दोषवलको, बुद्ध्वा अर्थात् जानकर, क्रियाम् चिकित्सा चिकित्सा आचरेत् आचरेत् करे ॥ ४८ ॥

48. In a bidiscordant condition resulting from the predominant provocation of blood-cum-pitta, hot applications cause burning, softening and bursting. Hence, the physician should first determine the relative strength of the morbid humors, and then begin the treatment.

वातरक्ते अद्विधानि—

दिवास्वप्नं संसंतापं व्यायामं मैथुनं तथा ।  
कटूणां गुर्वभिष्यन्दि लवणाम्लं च वर्जयेत् ॥४९॥

संसंतापम् संताप संताप, दिवास्वप्नम् दिवसे सुषुप्तिं सोनां, व्यायामम् व्यायाम व्यायाम तथा मैथुनम् मैथुन मैथुन, कटू-उष्णम् कटु, उष्ण, कटु, उष्ण, गुह

४८ रक्तपित्तोत्तरे-पित्तरक्तोत्तरे (ग.)

॥ चोष्णैर्दाहः क्लेशोऽवधारणम्-दाहः क्लेशोऽवधारणं भवेत् (घ)

॥ रक्तपित्तोत्तरे-चोष्णैः-वातरक्तोत्तरे दाहः (ङ.)

॥ भवेत्तस्मात्-उष्णैस्तस्मात्- (च; ङ;)-

युद्धं गुह, अभिष्यन्दि अभिष्यन्दी अभिष्यन्दी, लवण-अम्लम् च लवण तथा अम्ल द्रव्यैः लवण और अम्ल द्रव्यैः वर्जयेत् त्याग करे त्याग करे ॥ ४९ ॥

49. Day sleep, excessive heat, exercise, sex-act as well as articles of diet that are pungent, hot, heavy, viscid, salt and acid should be avoided.

वातरक्ते हितमन्नपानम्—

पुराणा यवगोधूमनीवाराः शालिषष्टिकाः ।  
भोजनार्थं रसार्थं वा विष्किरप्रतुदा हिताः ॥५०॥

भोजनार्थम् भोजन भाटे भोजनके लिए, पुराणाः भूना पुराने, यवगोधूम-यव, धुं जी, गेहूं, नीवाराः अंटी नांवार, शालिषष्टिकाः शालिषष्टिका तथा सांठीषष्टिका शालि और सांठीचावल, रसार्थम् तेमन्न भांस्तरस भाटे एवं मांसरसके लिए, विष्किर-विष्किर विष्किर, प्रतुदाः तथा प्रतुदः पक्षीभोजनां भांस और प्रतुद वर्गके मांस, हिताः हितकर छे हितकर हैं ॥ ५० ॥

50. Barley, wheat and wild rice that are old or sali and shashtika rice are wholesome diet; and as meat-juices the flesh of gallinaceous and pecker birds is wholesome.

आढक्यश्चणका मुद्रा मसूराः समकुष्ठकाः ।  
यूपार्थं बहुसर्पिष्काः प्रशस्ता वातशोणिते ॥५१॥

वातशोणिते वातरक्तभां वातरक्तमें, यूपार्थम् यूप भाटे यूपके लिए, बहुसर्पिष्काः अहु धी नाभेद बहुत चीसे युक्त, आढक्यः तुवेर अरहर, चणकाः थलु चना, मुद्राः भग मूंग, समकुष्ठकाः भट भोट, मसूराः अने भसूर और मसूर, प्रशस्ताः प्रशस्त छे प्रशस्त हैं ॥ ५१ ॥

51. Red gram, bengal gram, green gram, lentils and kidney beans are recommended for use, mixed with plenty of ghee in the preparation of soups in rheumatic conditions.

५१. यूपार्थं-यूपार्थं (घ.)

सुनिषण्णकवेत्राप्रकाकमाचीशतावरी ।  
वास्तुकोपोदिकाशाकं शाकं सौवर्चलं तथा ॥५२॥  
घृतमांसरसैर्भृष्टं शाकसात्म्याय दापयेत् ।  
व्यञ्जनार्थं,

घृतमांसरसैः धी अने मांसरसमां घृत और मांसरसमें, मृष्टम् भूञ्जेश भूने हुए, सुनिषण्णक- सुनिषण्णक सुनिषण्णक, वेत्राग्र- नेतरने। अग्रभाग बेंतका अग्रभाग, काकमाची- पीलुडी काकमाची, शतावरी शतावरी शतावर, वास्तुक- अथवा बथुआ, उपोदिका- तथा पोर्ध ओओतुं और उपोदिका इनके, आकम् शाक शाक, तथा तथा तथा, सौवर्चलम् मूल्भुभीतुं सुवर्चलाका, आकम् शाक साग, आकसात्म्याय शाकना सात्म्यावाणाने जिसको साग सात्म्य हो उड़े, व्यञ्जनार्थम् भोजनना साधन तरीके भोजनके साधनरूपमें, दापयेत् आपवां देवे ॥५२॥

52-52½. Marsilia plant, sprouts of country willow, black nightshade, climbing asparagus, white goose foot, indian spinach and heliotrope should be fried in ghee and meat juice, and given as sauces to patients who are habituated to vegetable diet.

तथा गव्यं माहिवाजं पयो हितम् ॥५३॥

तथा तथा तथा, गव्यम् गाथनुं गायका, माहिवा- जाजम् भैंसनुं अने अडरीनुं भैंसका और बकरीका, पयः दूध दूध, हितम् हितकर है ॥ ५३ ॥

53. Similarly the milks of the cow, the buffalo and the goat are wholesome.

इति संक्षेपतः प्रोक्तं वातरक्तचिकित्सितम् ।

एतदेव पुनः सर्वं व्यासतः संप्रवक्ष्यते ॥५४॥

इति अथ इव प्रकार, वातरक्त- वातरक्तानी वातरक्तकी, चिकित्सितम् चिकित्सा चिकित्सा, संक्षेपतः संक्षेपमां संक्षेपसे, प्रोक्तम् उंही अे कही है, एतत्

५३. माहिवाजं-गायका (ग.)

५४. सर्वं-सर्व (क.)

सर्वम् एव अे सर्वम् वह सब ही, पुनः इसी- फिसे, व्यासतः विस्तारपूर्वक विस्तारसे, संप्रवक्ष्यते उड़ेवाभां आवशे कहा जायगा ॥ ५४ ॥

54. Thus has been described in a nut-shell the therapeutics of rheumatic conditions. All this will now be described in greater detail.

वातरक्ते घृतयोगः -

श्रावणीक्षीरकाकोलीजीवकर्पमकैः समैः ।

सिद्धं समधुकैः सर्पिः सक्षीरं वातरक्तनुत् ॥५५॥

समैः सरणे भागे वीधेश यम भागमें लिया हुआ, समधुकैः गेडीमधे सुलहरी, श्रावणी- जेरभमुंड़ी आकणी, क्षीरकाकोली- क्षीरकाकोली क्षीरकाकोली, जीवक- ७१३ जीवक, कर्पमकैः तथा मयभक ओओधी तथा श्वभक इनके, सिद्धम् पडावेद सिद्ध किया, सक्षीरम् दूधधित दूधके साथ सर्पिः धी धी वातरक्तनुत् वातरक्तकर है ॥ ५५ ॥

55. The medicated ghee prepared from equal quantities of east indian globe thistle, Kahirakakoli, Jeevaka, Rishabhaka and liquorice with milk and ghee, is curative of rheumatic condition.

बलामतिबलां मेदामात्मयुतां शतावरीम् ।

काकोलीं क्षीरकाकोलीं रास्नामृद्धिं च पेषयेत् ॥५६॥

घृतं चतुर्गुणक्षीरं तैः सिद्धं वातरक्तनुत् ।

हृत्पाण्डुरोगवीर्यसर्पकामलाज्वरनाशनम् ॥५७॥

बलाम् अथ बला, बलिवलाम् अतिबला अतिबला, मेदाम् मेध मेध, आत्मयुताम् ओयां कौचबीज, शतावरीम् शतावरी शतावर, काकोलीम् डाकोली काकोली, क्षीरकाकोलीम् क्षीरकाकोली क्षीरकाकोली,

५५. जीवकर्पमकैः समैः । सिद्धं समधुकैः सर्पिः सक्षीरं वातरक्त

नुत्-रास्नामृद्धिं च पेषयेत् घृतं चतुर्गुणे क्षीर

तैः सिद्धं वातरक्तनुत् (य)

५६. काकोली-आवणी (ग.)

५७. कामलाज्वर-कामलाज्वर (ब. ब.)

रास्त्राम् रास्त्रेना रास्त्रा, ऋद्धिम् च अने ऋद्धि सःणे  
आगे धर्ध और ऋद्धि समान भागमें ले कर, पेययेत्  
ओओने। उ६३ उ२वे। इनका कल्क करे, चतुर्गुणक्षीरम्  
आरभण्। इधमा चारगुने क्षीरमें, तैः सिद्धम् ते ५०धीना  
उ६३थी प३वेध सन द्रव्योंके कल्कसे पकाया हुआ,  
घृतम् धी धी, वातरक्तनुत् वातः३१ भ३३३ छे वातरक्त-  
नाशक है, हृत्-पांडुरोग- तथा उ६३थेग, पांडुरोग तथा  
हृदयरोग, पाण्डुरोग वीसर्प- विसर्प विसर्प, कामला-  
उभयो कामला, ज्वर- अने ज्वरने। और ज्वरका,  
वाक्कनम् नाश करे छे नाशक है ॥ ५८-५७ ॥

56-57. Make a paste of heart leaved  
sida, evening mallow, Meda, cowage,  
climbing asparagus, Kakoli, Kshiraka-  
koli, indian groundsel and Riddhi;  
prepare a medicated ghee by taking  
ghee and four times its quantity of  
milk. This is curative of rheumatic  
condition, cardiac disorders, anemia,  
acute spreading affections, jaundice and  
fever.

वातरक्ते पारुषकं घृतम्—

त्रायन्तिकातामलकीद्विकाकोलीशतावरी- ।

कशेरुकाकशयेन करकरेभिः पचेद्घृतम् ॥५८॥

दत्त्वा पारुषकाद्राक्षाकाशमर्येश्वरसान् समान् ।

पृथग्विदार्याः स्वरसं तथा क्षीरं चतुर्गुणम् ॥५९॥

त्रायन्तिका- त्रायमाण, तामलकी- शैथ  
आमली भुईआंवाला, द्विकाकोली- डांडेली, क्षीर-  
डांडेली काकोली, क्षीरकाकोली, शतावरी- शतावरी

५८. त्रायन्तिकातामलकीद्विकाकोली शतावरी-तामलकया द्वि-  
कोदयाः पिप्पलीत्रायमाणयोः (झ. ङ)

५९. त्रायन्तिका.....पचेद्घृतम् ॥-त्रायन्तिका तामलकी  
द्विकाकोली च पिप्पली । दत्त्वा पारुषकाद्राक्षा काशमर्येश्वरसं  
समम् ॥ (क.)

५९. स्वरसं-च रसम् (ङ)

५९. पृथग्विदार्याः स्वरसं-पृथक्प्रसं विदार्याणि (क.)

शतावरी, कशेरुका- अने उ६३थेनुना और कशेरुके, कषा-  
देण कषाथथी कायसे, एभिः कल्कैः अने ओओना  
उ६३थी और इनके कल्कसे, पारुषक- इ६३सा फालसा,  
द्राक्षा- द्राक्ष द्राक्षा, काशमर्य- शी३३ गम्भारी इक्षुरसान्  
अने शेरडीना रस और इक्षुके रस, विदार्याः तथा  
विदार्याओ एवं विदार्याका, स्वरसम् च स्वरस स्वरस,  
पृथक् ओओना दरेकने इतमेंसे प्रत्येकको, समान् धी  
समान भाग धीके समान भागमें, तथा चतुर्गुणम् तथा  
धीथी ओओण् तथा धीसे चारगुना, क्षीरम् दत्त्वा इध  
मेणवी दूध मिलाकर, घृतम् धी धी, पचेत् प३३३नुं  
पकावे ॥ ५८-५९ ॥

58-59. Prepare a medicated ghee  
by taking ghee along with equal  
quantities of the juice of sweet falsah,  
grape, white teak, sugarcane and white  
yam and four times the quantity of  
milk, adding the decoction and paste of  
zail, featherfoil, two varieties of kakoli,  
climbing asparagus and rushnut.

एतत् प्रायोगिकं सर्पिः पारुषकमिति स्मृतम् ।  
वातरक्ते क्षते क्षीणे वीसर्पे पैत्तिके ज्वरे ॥६०॥

इति पारुषकं घृतम् ।

एतत् आ यह, प्रायोगिकम् प्रायोगिक प्रायोगिक,  
सर्पिः धी धी, पारुषकम् ' पारुषक ' ' पारुषक ', इति  
स्मृतम् ओ नामथी उ६३थ छे इस नामसे कहा जाता  
है, वातरक्ते आ धी वातरक्त यह धी वातरक्त, क्षते  
क्षीणे क्षतक्षीण क्षतक्षीण, वीसर्पे विसर्प विसर्प, पैत्तिक-  
ज्वरे अने पैत्तिक ज्वरमा हितकर छे और पैत्तिक ज्वरमें  
हितकर है ॥ ६० ॥ इति आ यह, पारुषकम् घृतम्  
पारुषक घृत छे पारुषकघृत है ।

60. This is called the Compound  
Sweet-falash Ghee, a full course of  
which is recommended in rheumatic  
condition, pectoral lesions, cachexia,  
acute spreading affection and fever of

the pitta type. Thus has been described the Compound Sweet-falsah Ghee.

जीवनीयं घृतम्—

द्वे पञ्चमूले वर्षाभूमेरुण्डं सपुनर्नवम् ।  
मुद्गपर्णी महामेदां माषपर्णी शतावरीम् ॥६१॥  
शङ्खपुष्पीमवाक्पुष्पीं रास्नामतिबलां बलाम् ।  
पृथग्द्विपलिकं कृत्वा जलद्रोणे विपाचयेत् ॥६२॥  
पादशेषे समान् क्षीरचात्रीशुक्लालान् रसान् ।  
घृतादकेन संयोज्य शनैर्मुद्रग्निना पचेत् ॥६३॥  
कल्कानावाप्य मेदे द्वे काश्यप्यफलमुत्पलम् ।  
त्वक्क्षीरीं पिप्पलीं द्राक्षां पद्मवीजं पुनर्नवाम् ॥६४॥  
नागरं क्षीरकाकोलीं पद्मकं बृहतीद्वयम् ।  
वीरां शृङ्गाटकं भव्यमुरुषाणं निकोचकम् ॥६५॥  
सर्जूरक्षोटवाताममुञ्जातामिषुकांस्तथा ।  
एतैर्घृतादके सिद्धे क्षौद्रं शीते प्रदापयेत् ॥६६॥  
सम्पक् सिद्धं च विज्ञाय सुगुप्तं संनिधापयेत् ।  
कृतरक्षाविधिं चोक्षे प्राशयेदक्षतमितम् ॥६७॥

द्वे पञ्चमूले ये पञ्चभूषणं दोनों पंचमूल, वर्षाभूम  
सदेह साटेडी क्षेत्र पुनर्नवा, सपुनर्नवम् एव साटेडी  
सहित लाल पुनर्नवा, एरण्डम् और डो एरण्ड, मुद्गपर्णीम्  
मुद्गपर्णी मूंगपर्णी, महामेदाम् भक्षभेदा महामेदा,  
माषपर्णीम् माषपर्णी माषपर्णी, शतावरीम् शतावरी  
शतावरी, शङ्खपुष्पीम् शंखावली शंखपुष्पी, अवाक्-  
पुष्पीम् अवाक्पुष्पी विचारी, रास्नाम् रास्ना रास्ना, कति-  
बलाम् अतिबला अतिबला, बलाम् भला बला, पृथक्  
दरेक प्रत्येक, द्विपलिकम् ये ये पल ८-८ तोडा  
कृत्वा धर्त लेकर, जलद्रोणे ओड द्रोष पाणीमा १०२४

तोले जलमें, विपाचयेत् पञ्चभूषणं पकावे, पादशेषे  
अनुभांश रखे चौथाई शेष रहने पर, घृतादकेन ओड  
आदक धीनी स.थे घी के २५६ तोलेके साथ, समान्  
समान भाग सनभाग, क्षीरचात्री-इध, आभगीने २५  
द्व, आंवला, इधु-शैलीने २५ इधु, जगलान् अने  
भङ्गने लौर बकरेके, रमान् भास २५ नांवका  
रस, संयोज्य भेगवी मिलाकर, द्वे मेदे मेदा, भक्षभेदा  
मेदा, मह मेदा, काश्यप्यफलम् शीतलना इध गम्भारीके  
कक, उत्पलम् नीलकण्ठ नीलकण्ठ, त्वक्क्षीरीम् वास-  
कपूर वंशलोचन, पिप्पलीम् पीपर पिप्पली, द्राक्षाम् द्राक्ष  
द्राक्ष, पद्मवीजम् पद्मवीज पद्मवीज, पुनर्नवाम्  
साटेडी पुनर्नवा, नागरम् सूंठ सोंठ, क्षीरकाकोलीम्  
क्षीरकाकोली क्षीरकाकोली, पद्मकम् पद्मक पद्मक,  
बृहतीद्वयम् जेभी अने जेभी बोरीगल्ली दोनों बटेरी,  
वीराम् वृद्धिन्द वीरा, शृङ्गाटकम् शीमेडा शृंगाटक,  
भव्यम् भव्य भव्य, उरुमाणम् उरुमाण उरुमाण,  
निकोचकम् निकोचक निकोचक, सर्जूर-अभूर खरूर,  
क्षोट-अभरेट अक्षोट, वाताम-भदाम बदाम,  
मुञ्जात-मुञ्जात मुञ्जातक, अमिषुकान् तथा अने पिप्पली  
और अमिषुक, कल्कान् ओओने कल्क इनका कल्क,  
आवाप्य न.भी डालकर, मुद्गग्निना ज्वने: भुद्ग अग्नि  
पडे धीमेथी मृदु आंचसे धीरे धीरे, पचेत् पडापतुं  
पकावे, एतैः आ २०५१ना ५६५थो इन प्रयोगके कल्कसे,  
सिद्धे घृतादके सिद्ध यथेयुं ओड आ ६५ वी सिद्ध हुए  
२५६ तोले घीके, शीते शीतल अता तेमां शीतल  
होने पर उसमें, क्षौद्रम् भक्ष सहद, प्रदापयेत् नापतुं  
डाले, सम्पक् भराभर सम्पक्, सिद्धम् च सिद्ध यथेयुं  
सिद्ध हुआ, विज्ञाय भल्लीने जानकर, चोक्षे योभ्या  
धक्षमा स्वच्छ घटमें, कृतरक्षाविधिम् रक्षाविधान  
करीने रक्षाविधि करके, सुगुप्तं सुक्षित रीते सुरक्षित,  
संनिधापयेत् भुक्त्वं रख देवे, ब्रह्मसंमितम् तेमांथी  
अक्ष नेटलुं उसमेंसे एक तोला मात्रामें, प्राशयेत् आपुं  
सेवन करे ॥ ६१-६७ ॥

61-67. Decoct 8 tolas of each of the drugs of deca-radices, white hog's weed, castor oil plant, red hog's weed, wild green gram,

६२. शङ्खपुष्पीमवाक्पुष्पीं-शङ्खपुष्पी शतावरी च (य. फ.)

, पृथग्द्विपलिकं कृत्वा-पृथग्द्विपलिकान् भागान् (फ.)

, पृथग्द्विपलिकं-पृथग्द्विपलिकान् (य.)

६४ कल्कानावाप्य-कल्कं दद्यात् च (य.)

६५. पद्मकं-समगां (ड.)

, पद्मकं बृहतीद्वयम्-पद्मकां ब्रह्मणीद्वयम् (य.)

६६. सर्जूरक्षोट-बदराक्षोट (ड.)

६७. चोक्षे-चोक्षं (य.)

Mahameda. wild black gram, climbing asparagus, small leaved convolvulus. indian borage. indian groundsel, evening mallow and heart leaved sida in 1024 tolas of water, till it is reduced to 1/4th of its quantity; prepare a medicated ghee with this decoction mixed with 256 tolas of each of milk and the juices of emblic myrobalan and sugar cane, meat-juice of goat's flesh and ghee adding 256 tolas of the paste of the two Medas, fruit of white teak, blue water lily, bamboo manna, long pepper, grapes, lotus seed hogwood, dry ginger, Kshirakakoli, himalayan cherry, yellow berried and indian night shades, climbing asparagus, water chest nut, showy dillenia, Urumana, Lakoocha, edible date, walnut, almond salep and Abhishuka. When this ghee is cooled down. mix it with honey. Knowing it to be well prepared, preserve it in a clean vessel in a protected place after performing the protective ceremonial. This ghee should be administered in the dosage of one tola.

पाण्डुरोगं ज्वरं हिकाम् स्वरमेहं भगन्दरम् ।  
पार्श्वशूलं क्षयं कासं ह्रीहानं वातशोणितम् ॥६८॥  
क्षतशोषमपसारमश्मरीं शर्करां तथा ।  
सर्वाङ्गैकाङ्गरोगांश्च मूत्रसङ्गं च नाशयेत् ॥६९॥  
बलवर्णकरं घन्यं वलीपलितनाशनम् ।  
जीवनीयमिदं सर्पिवृष्यं वन्ध्यासुतप्रदम् ॥७०॥

इदम् आ। यह, जीवनीयम् अन्वीय जीवनीय,  
सर्पिः घृत घृत, पाण्डुरोगम् पाण्डुरोग, ज्वरम्

६९. क्षतशोष-क्षतशोष (व.)

ज्वर, हिकाम् हेडडी हिका, स्वरमेहम् स्वरमेह, भगन्दरम् भगन्दर भगन्दर, पार्श्वशूलम् पार्श्वशूल पार्श्वशूल, क्षयम् कासम् क्षय, कास क्षय, कास, ह्रीहानम् ह्रीहान ह्रीहान, वातशोणितम् वातरक्त वातरक्त, क्षतशोषम् क्षतशोष क्षतशोष, अपसारम् अपसार अपसार, अश्मरीम् अश्मरी अश्मरी, तथा शर्कराम् शर्करा शर्करा, सर्वाङ्ग-सर्वाङ्ग सर्वाङ्ग, एकाङ्ग-तेभ्यः ओङ्ग एवं एकाङ्ग, रोगान् च रोगो रोग, मूत्रसङ्गम् च अने मूत्र-सङ्गेन और मूत्रसङ्गको, नाशयेत् नाश करे छे नष्ट करता है, बलवर्णकरम् वणी ते अथ तथा वृष्यं करनार पुनः वह बल तथा वर्ण करनेवाला, घन्यम् अभ्युष्य आपनार घन्य, वलीपलित-वर्णिया-पणियांनो वली तथा पलितका, नाशनम् नाश करनार नाशक, वृष्यम् वृष्य वृष्य, वन्ध्यासुतप्रदम् अने वाञ्छुने दीकरे देनार छे और वन्ध्याको पुत्र देनेवाला है ॥ ६८-७० ॥

68-70. This is curative of anemia, fever, hiccup impairment of voice, fistula in ano, pleurodynia, wasting, cough, splenic disorders, rheumatic condition, pectoral lesions consumption, epilepsy, stone and gravel, affection of one limb or of all the limbs and retention of urine. This vitalising compound ghee is an excellent promoter of strength and complexion, destroyer of wrinkles and grey hair, and acts as a virilific and endows fertility on a sterile woman.

वातरक्ते घृतयोगः क्षीरयोगः च—

द्राक्षामधु(धू)कृतोयाभ्यां सिद्धं वा ससितोपलम् ।  
पियेद्धृतं तथा क्षीरं गुडूचीखरसे घृतम् ॥७१॥

द्राक्षा-द्राक्ष द्राक्षा, मधुक-तथा गेडीमधुना और मुलहठीके, तोयाभ्याम् कृतोयाथी काथसे, सिद्धम् घृतम् वा पडावे छे वी सिद्ध किया हुआ घी, ससितोपलम् साकर साथे चीनीके साथ, तथा अथवा अथवा, गुडूचीखरसे गूनीना स्वरसथी गिलोबके स्वरसे, घृतम्



क्षीरम् उक्तानि ६५ पकाया हुआ दूध, पियेर पीवु पीवे ॥ ७१ ॥

71. Or the patient may take with sugar-candy the medicated ghee prepared of cow's ghee with the decoction of grapes and liquorice, or the medicated milk prepared with the expressed juice of guduch.

चतुःस्नेहः —

जीवकर्षभकौ मेदामृष्यप्रोक्तां शतावरीम् ।  
मधुकं मधुपर्णी च काकोलीद्वयमेव च ॥७२॥  
मुद्गमाषाढ्यपर्णिन्यौ दशमूलं पुनर्नवाम् ।  
बलामृताविदारीश्च साश्वगन्धादममेदकाः ॥७३॥  
एषां कषायकल्काभ्यां सर्पिस्तैलं च साधयेत् ।  
लाभतश्च वसामञ्ज धान्वप्रातुदवैष्किरम् ॥७४॥  
चतुर्गुणेन पयसा तत् सिद्धं वातशोणितम् ।  
सर्ववेहाश्रितं हन्ति व्याधीन् घोरांश्च वानजान् ७५

जीवक- ७१३ जीवक, ऋषभकौ ४५७३ ऋषभक, मेदाम् मेदा मेदा, ऋष्यप्रोक्तम् अतिथला अतिबला, शतावरीम् शतावरी शतावर, मधुकम् जेहीमधुमुलहठी, मधुपर्णीम् च मधुपर्णी मधुपर्णी, काकोलीद्वयम् एव च डाडेढी, क्षीरडाडेढी काकोली, क्षीरकाकोली, मुद्ग-माषाढ्य-पर्णिन्यौ मुद्गपर्णी, माषपर्णी, दशमूलम् दशमूल दशमूल, पुनर्नवाम् साठेडी पुनर्नवा, स-अश्वगन्धा- आसेई अश्वगन्धा, अममेदकाः पाषाण-मेद पाषाणमेद, बला- अथवा बला, अमृता- गणो अमृता, विदारीः च अने विदारीकंद और विदारी, एषाम् औषधानां इनके, कषायकल्काभ्याम् कषाय तथा कडके वडे काष और कडके, सर्पिः धी धी, तैलम् च तेल तैल, लाभतः च तथा भली शके ते और जो मिल सके उन, धान्व-प्रातुद- अथवा देशनां, प्रतुद जांगल देशके, प्रतुद, वैष्किरम् अने विष्किर प्राप्तीऔनी और

७४. एषां कषायकल्काभ्यां सर्पिस्तैलं च साधयेत्—कुर्वात कषाय-  
कल्कं च ताभ्यां तैलं घृतं पचेत् (ग. क.)  
,, सर्पिस्तैलं च साधयेत्—ताभ्यां तैलं घृतं पचेत् (द.)

विष्किर पाणिप्रीची वनाञ्ज (सा तथा भोजने वसा तथा मज्जा), चतुर्गुणेन पयसा चतुर्गुणे, पयसा ६५भा-  
द्वयं, कषायकल्कं कषाय सिद्ध करे, सिद्धम् तन्म  
सिद्ध करे अथ अने सिद्ध किया हुआ यह स्नेह,  
सर्व-देह-आश्रितम् अने देहों में देहों के अश्रित  
आश्रित वातशोणितम् वात शोणित वात शोणित वातशोणित  
तथा पयसी तैलम् एवं वातमे लहरा, घोरांश्च  
घोरांश्च व्याधीन् च व्याधीने व्याधीने हन्ति  
हन्ति छे तष्ट करता है ॥ ७२-७५ ॥

72-75. Prepare a medicated ghee-cum-oil, by taking cow's ghee and til oil along with four times the quantity of milk, adding the fat and marrow of whatever may be available of jan-gala, gallinaceous and pecker group of creatures along with the decoction and paste of Jeevaka, Rishabhaka, Meda, evening mallow, climbing asparagus, liquorice, thorny staff tree, two Kakolis, wild green gram, wild black gram, deca-radices, hog's weed, heart leaved sida, guduch, white yam winter cherry and indian rock foil. This is curative of rheumatic condition and severe diseases due to vata provocation, affecting the whole body.

वानरके स्थिराद्यं घृतं तैलं वा—

स्थिरा श्वदंष्ट्रा बृहती सारिवा सशनावरी ।  
काशमर्याण्यात्मगुप्ता च वृक्षीरो द्वे वले तथा ॥७६॥  
एषां काये चतुःक्षीरं पृथक् तैलं पृथक् च नमः ।  
मेदाशतावरीयष्टिजीवन्तीजीवकर्षभैः ॥७७॥  
पक्त्वा मावा ततः क्षीरं चतुर्गुणं दध्निशर्करा ।  
खजेन मथिता पेया वानरके विहोपजे ॥७८॥

७६. वृक्षीरो-वृक्षीरं (ग)

७७. चतुःक्षीरं-चतुःक्षीरं (घ.)

७८. क्षीरत्रिगुणं-क्षीरद्विगुणं (ङ.)

,, जीवन्तीजीवकर्षभैः—जीवकर्षभकौ बला (द.)

स्थिरा शल्ववक्षु शाळपर्णी, शङ्खु गोजधु गोखरु,  
हृत्ती ठीठी मोरीगण्डी बड़ी कटेरी, सशतावरी  
शतावरी शतावर, सारिवा उपक्षसरी सारिवा, काश्म-  
र्याणि शीवक्षु गन्मारी, आत्मगुप्ता च कोथी कौचवीज,  
वृक्षीरः सैदे सःटे डी श्वेत पुनर्नवा, तथा तथा तथा,  
द्वे बले भक्ष तथा अतिभक्ष बला और अतिबला,  
एषाम् काये ओओना कःथभा इनके कायमें, चतुः-  
क्षीरम् व्यागण्डुं द्वि चारगुना दूध, मेदा- मेदा मेदा,  
शतावरी- शतावरी शतावर, दष्टि-जीवन्ती- नेडीभध,  
देडी मुगहठी, जीवन्ती, जीवक- ७५३ जीवक, ऋषभैः  
अने ऋषभकेना उदके नाभीने और ऋषभक इनका  
कलक डालकर, तैलम् घृतम् तेल अने घी तैल और  
घृत, पृथक् पृथक् लुई लुई पृथक् पृथक्, पक्षवा  
पक्षवी पकाकर, ततः मात्रा पक्षी तेनी मात्रा उसकी  
मात्रा, क्षीरत्रिगुणा त्रिगुणं द्वि तिगुना दूध, अभ्यर्ध-  
शर्करा अने दे डी साकर नाभी और डेडगुनी चीनी  
बालकर, खजेत रवेयथी खत्रवे, मयेता मथीने मय-  
करके, त्रिदोषजे त्रिदोषजन्य त्रिदोषजन्य, वातरक्ते वात-  
रक्तभा वातरक्तों, पेया पीवी पीवे ॥ ७६-७८ ॥

76-78. Prepare separately a medi-  
cated ghee or oil by taking cow's ghee  
or til oil and four times the quantity  
of milk along with the decoction of  
ticktrefoil, small caltrops, yellow berried  
nightshade, indian sarsaparilla, climb-  
ing asparagus, white teak, cowage,  
white flowered hog's weed, heart  
leaved sida and evening mallow along  
with the paste of Meda, climbing  
asparagus, liquorice cork swallow  
wart, Jeevaka and Rishabhaka. When  
it is well prepared, it should be  
taken in a proper dose mixed with  
three times its quantity of milk and  
one and half times of sugar and well  
churned with the churning stick. This

is curative of rheumatic conditions of  
the tridiscordance type.

वातरक्ते कतिपययोगाः—

तैलं पयः शर्करां च पाययेत्तु सुमूर्च्छितम् ।

सर्पिस्तैलसिताक्षौद्रैर्मिश्रं वाऽपि पिबेत् पयः ॥७९॥

तैलम् पयः तेल, दूध तैल, दूध, शर्कराम् च अने  
साकरने और चीनीके, सुमूर्च्छितम् भेगां करीने मिला  
कर, पाययेत् पायां पिलावे, सर्पि- तैल- घी, तेल घी,  
तैल, सिताक्षौद्रैः साकर अने भध शर्करा और शहद,  
मिश्रम् भेगवेत्तु मिलाकर, पयः अपि दूध पक्षु दूध मी,  
पिबेत् वा पीवुं पीवे ॥७९॥

79. The patient may also drink  
til oil well mixed with milk and sugar,  
or milk mixed with ghee, til oil, sugar  
and honey.

अंगुमत्या शृतः प्रस्थः पयसो द्विसितोपलः ।

याने प्रशस्यते तद्वत् पिप्पलीनागरैः शृतः ॥८०॥

अंगुमत्या शल्ववक्षुना कःथथी शाळपर्णीके कायसे,  
शृतः पक्षवेक्ष पकाया हुआ द्विसितोपलः तथा ओ पक्ष  
साकर नाभेक्ष ८ तोले चीनीके साथ, पयसः दूध दूध,  
प्रस्थः ओक प्रस्थ ६४ तोले, तद्वत् ते भुज्ज उची  
प्रकार, पिप्पलीनागरैः पीपर अने सूडथी पिप्पली और  
सोठसे, शृतः पक्षवेक्ष दूध पकाया हुआ दूध, पाने  
पीवाभा पीना, प्रशस्यते श्रेष्ठे प्रशस्त है ॥८०॥

80. The medicated milk prepared  
of the decoction of ticktrefoil with 64  
tolas of milk and 8 tolas of sugar-  
candy or similarly the medicated milk  
prepared with long pepper and dry  
ginger is recommended as potion for  
the rheumatic patient.

७९. तैलं पयः शर्करां च—पयस्तैलसिताक्षौद्रैर्वा (क.)

८०. द्विसितोपलः—सितोपलः (क.)

॥ पयसः—पयसा (क.)

बलाशतावरीराक्षादशमूलैः सपीलुभिः ।

इयामैरण्डस्थिरामिश्च वातार्तिघ्नं शृतं पयः ॥८१॥

सपीलुभिः पीडु पीड, बला- अला बला, शतावरी- शतावरी शतावर, राक्षा- राक्षा राज्ञ, दशमूलैः दशमूल दशमूल, इयामा-एरण्ड- श्यामा, ऐर- ऐर इयामा, एरण्ड, स्थिरामिः च अने शाक्षवल्गुभी और शालपर्णीसे, शृतम् पयः डिक्रैव दूध पकाया हुआ दूध, वातार्तिघ्नम् वातनी पीडा भटाङ्गनार से वातपीडाका नाशक है ॥ ८१ ॥

81. The medicated milk, prepared with heart-leaved sida, climbing asparagus, indian groundsel, deca-radices, indian tooth brush tree, black turpeth, castor plant and ticktrefoil, is curative of pain due to vata provocation.

वातरके संशोधनम्—

धारोष्णं मूत्रयुक्तं वा क्षीरं दोषानुलोमनम् ।

पिबेद्वा सत्रिवृच्चूर्णं पित्तरकावृतानिलः ॥८२॥

पित्तरक- अथवा पित तथा रक्तभी अथवा पित और रक्तसे, वावृतानिलः आवृत वायुवाला रोगी, दोषानुलोमनम् दोषानु अनुलोमन करनेवाला, मूत्रयुक्तम् मूत्रयुक्त गोमूत्रयुक्त, धारोष्णम् धारोष्ण धारोष्ण, क्षीरम् वा दूध दूध, सत्रिवृत्-चूर्णम् वा अथवा नसोत्तरना चूर्णसहित अथवा त्रिवृत्चूर्णयुक्त, पिबेत् दूध पीवुं दूध पीवे ॥ ८२ ॥

82. The udder-warm milk mixed with cow's urine being regulator of morbid humors, may be given as potion or the udder-warm milk prepared with the pulvis of turpeth may be given in rheumatic condition characterised by occlusion of vata by the pitta and blood.

क्षीरैरैरण्डतैलं वा प्रयोगेण पिबेन्नरः ।

बहुदोषो विरेकार्थं जीर्णं क्षीरौदवासजः ॥८३॥

बहुदोषः अथवा बहु दोषवाला अथवा बहुत दोषवाला, नरः विरेकार्थम् पुरुषे विरेचनने भाटे पुरुष विरेचनके लिए, प्रयोगेण दरेण प्रविदिन, एरण्डतैलम् वा ऐर- ऐर तैल एरण्डतैल, क्षीरेण वा दूध साथे दूधके साथ, पिबेत् पीवुं पीवे, जीर्णं पच्यमा आद जीर्ण होने पर, क्षीरौदवासजः दूधभातानुं भोजन करने दूध भात खावे ॥ ८३ ॥

83. The patient with severe morbidity may take a course of milk mixed with castor oil for purgation and on digestion of the dose of milk, he may take the diet of rice and milk.

कषायमभयानां वा घृतमृष्टं पिबेन्नरः ।

क्षीरानुपानं त्रिवृत्तचूर्णं द्राक्षारसेन वा ॥८४॥

नरः अथवा पुरुषे अथवा मनुष्य, घृतमृष्टम् घृत- मृष्ट घृतसे छोंकर, अभयानाम् दरेण हरका, कषायम् वा कषाय पीवे काय पीवे, क्षीरानुपानम् अथवा दूधना अनुपानथी अथवा दूधके अनुपानसे, त्रिवृत्तचूर्णम् नसोत्तरनुं चूर्णं त्रिवृत्तचूर्ण, द्राक्षारसेन वा द्राक्षना रसे साथे द्राक्षारसेके साथ, पिबेत् पीवुं पीवे ॥ ८४ ॥

84. Or the patient may drink the decoction of chebulic myrobalan seasoned with ghee; or the juice of grapes mixed with pulvis of turpeth. It may be followed by a potion of milk.

काश्मर्यं त्रिवृतां द्राक्षां त्रिकलां सपरुषकाम् ।

शृतं पिबेद्विरेकाय लवणक्षौद्रसंयुतम् ॥८५॥

काश्मर्यम् शीतलु गम्भारी, त्रिवृताम् नसोत्तर त्रिवृत्, द्राक्षाम् द्राक्ष द्राक्षा, सपरुषकाम् द्राक्ष काटका, त्रिकलाम् अने त्रिकला और त्रिकला, शृतम् ऐशाना क्नायने इनके कषको, लवण-क्षौद्र- सैव तथै अथ

८४. कषायमभयानां वा-कषायमभयानां वा (घ. फ.)

८५. त्रिकलां सपरुषकाम्-चूर्णं द्राक्षारसेन वा (घ.)

., शृतं-शुतां (घ.)

., संयुतम्-संयुतम् (घ.)

नमक और शहद. संयुक्त में पीने विरक्तक. विरेकान विरेचन भूटे विरेचनके लिए, पिबेत् पीने पीवे ॥८५॥

85. For the purpose of purgation, the patient may drink the decoction of white teak, turpeth, grapes, the three myrobalans and sweet falsah mixed with honey and salt.

त्रिफलायाः कषायं वा पिवेत् क्षौद्रेण संयुतम् ।

घात्रीहरिद्रामुस्तानां कषायं वा कफाधिकः ॥८६॥

कफाधिकः अथवा उदनी अधिकतावाला वातरक्तना रोगी अथवा कफकी अधिकतावाला वातरक्तका रोगी, त्रिफलायाः त्रिफलाया, त्रिफलाया, कषायम् वा कषाय काय, घात्री- अथवा आम्रं अथवा आम्रं, हरिद्रा- हरिद्रा, मुस्तानां तथा भोजनी और मोयका, कषायम् वा कषाय काय, क्षौद्रेण अथवा क्षौद्रेण शहदके साथ, पिबेत् पीवे, पीवे ॥ ८६ ॥

86. In a condition of the predominance of kapha-provocation, the patient may drink the decoction of the three myrobalans mixed with honey, or the decoction of emblic myrobalan, turmeric and nut grass. mixed with honey.

योगैश्च कद्विहितैरसकृत् विरेचयेत् ।

मृदुभिः स्नेहसंयुक्तैर्वा वातं मलावृतम् ॥८७॥

वातम् वायुने वायुको, मलावृतम् मलावृत, मलावृत, ज्ञात्वा अष्टौने जानकर, कद्विहितैः कद्विहितानाम् उदका कद्विहितानां, स्नेहसंयुक्तैः स्नेहसंयुक्त स्नेहयुक्त, मृदुभिः योगैः च मृदु योगैश्च मृदु योगैः, तम तेने उदको, असकृत् बारबार, विरेचयेत् विरेचन कसेवुं विरेचन देवे ॥ ८७ ॥

87. The physician, finding the vata to be occluded by the fecal matter,

८६. कफाधिकः—कफाधिके (क.)

८७. ज्ञात्वा वातं मलावृतम्—मला वातं मलावृतम् (अ.)

should frequently give mild purgative preparations described in the Section on Pharmaceutics, mixed with unctuous substances.

वात-के वस्तिः —

निर्हरेद्वा मलं तस्य सवृत्तैः क्षीरवस्तिभिः ।

न हि वस्तिसमं किञ्चिद्रातरकचिकित्सितम् ॥८८॥

तस्य अथवा ते रोगीना अथवा उन रोगीके, मलम् मलने मलको सवृत्तैः क्षीरवृत्त, क्षीरवृत्तिभिः वा दूधनी अस्ति अथवा क्षीरवृत्तिभिः, निर्हरेत् हरये निकाले, हि डारण्ड के क्योंकि, वस्तिसमम् अस्ति अथवा वस्तिके समान, वातरक्त- वातरक्तनी वातरक्तको, चिकित्सितम् चिकित्सा चिकित्सा, किञ्चित् भीष्म के अथ अन्य कोई, न नहीं है ॥ ८८ ॥

88. Or the fecal matter should be eliminated by means of milk-enema mixed with ghee; there is no remedy comparable to the enema, for the cure of rheumatic conditions.

वस्तिवक्ष्णवाश्वोरुपवस्तिजठरार्तिषु ।

उदावर्ते च शस्यन्ते निरूहाः सानुवासनाः ॥८९॥

वस्ति- अस्ति वस्ति, वक्ष्ण- वक्ष्ण, वक्ष्ण, पार्श्व- पार्श्व, पार्श्व, ऊरुपर्व- साधनानां पर्व ऊरुपर्व, अस्थि- अस्थि, जठर-वर्तिषु तथा उदरनी वेदनामा एवं उदरकी पीड़ामें, उदावर्ते च अने उदावर्तमा और उदावर्तमें, सानुवासनाः अनुवासनसहित अनुवासनके साथ, निरूहाः निरूह अस्ति अथवा निरूह वस्तिमां, शस्यन्ते प्रशस्त छे प्रशस्त हैं ॥ ८९ ॥

89. Evacuative and unctuous enemata are recommended in condition of pain in the hypogastric region, groin, sides, thighs, joints, bones and stomach and also in imperistalsis.

91-95. Decoct 400 tolas of  
liquorice in water till it is reduced to

one fourth of its quantity; prepare a medicated oil in it with 256 tolas of oil and an equal quantity of milk adding the paste of four tolas of each of dill seeds, climbing asparagus, trilobed virgin's bower, milky yam, eagle wood, sandal wood, ticktrefoil, maiden hair, nardus, the two Medas, guduch, Kakoli, Kshira-kakoli, featherfoil, Riddhi, himalayan cherry, Jeevaka, Rishabhaka, cork swallow wort, cinnamon bark, cinnamon leaves, shell, fragrant sticky mallow, lotus rhizome, madder, indian sarsaparilla, Aindri and coriander. This oil administered in the four modes cures rheumatic condition which is associated with complications or with pain in the body or which has pervaded the whole body. This is also curative of pain due to rheumatic condition, pitta-provocation, burning and fever, and acts as a promoter of strength and complexion. Thus has been described the Compound Liquorice Oil.

शतरक्तं सुकुमारकं तैलम्—

मधुकस्य सतं द्राक्षा खर्जूरानि परूषकम् ।  
मधूकौदनपाक्यौ च प्रस्थं मुञ्जातकस्य च ॥१६॥  
काश्मर्यादकमित्येतच्चतुर्द्रोणे पचेदपाम् ।  
शेषेऽष्टभागे पूते च तस्मिन्तैलाढकं पचेत् ॥१७॥  
तथाऽऽमलकाकाशमर्यादिविदारिभिरसैः समैः ।  
चतुर्द्रोणेन पयसा कल्कं दत्त्वा पलोन्मितम् ॥१८॥  
कदम्बमलकाशोटपद्मबीजकशेरुकम् ।  
शृङ्गादकं शृङ्गवेरं लवणं पिप्पलीं सिताम् ॥१९॥

जीवनीयैश्च संसिद्धं क्षौद्रप्रस्थेन संसृजेत् ।  
नस्याभ्यञ्जनपानेषु बस्तौ चापि नियोजयेत् ॥१००॥  
वातव्याधिषु सर्वेषु मन्यास्तम्भे हनुग्रहे ।  
सर्वाङ्गैकाङ्गवाते च क्षतक्षीणे क्षतज्वरे ॥१०१॥  
सुकुमारकमित्येतद्वातास्त्रामयनाशनम् ।  
खरवर्णकरं तैलमारोग्यबलपुष्टिदम् ॥१०२॥  
इति सुकुमारकतैलम् ।

मधुकस्य ण्डीमधु मुलहठी, शतम् से। पत्र ४००  
तोले, द्राक्षा द्राक्ष द्राक्ष, खर्जूरानि भजूर खजूर,  
परूषकम् शलसा फालसा, मधूक- मधुका मधुवेके फूल,  
ओदनपाक्यौ ओदनपाकी ओदनपाकी, मुञ्जातकस्य च  
अने मुञ्जातक और मुञ्जातक, प्रस्थम् ओड प्रस्थ ६४  
तोले, काश्मर्य-आढकम् शीवलय ओड आढक गम्भारीफल  
२५६ तोले, इति एतत् ओओने इनको, अपाम् चतु-  
र्द्रोणे आर द्रोण पाणीमां ४०९६ तोले जलमें, पचेत्  
पकावर्ण पकावे, तथा तथा तथा, अष्टभागे  
आष्टमे भाग अष्टमांश, शेषे पूते च आडी रक्ते गाणी  
क्षौद्र शेष होने पर छानकर, तस्मिन् तेभां उसमें,  
तैलाढकम् ओड आढक तेक्ष २५६ तोले तैल, समैः  
समानभागे समानभाग, आमलक- आमला आवला,  
काश्मर्य- शीवलय गम्भारी-फल, विदारी- विदारीकंद  
विदारीकंद, इक्षुरसैः अने शेरडी ओओने २५ और इक्षु  
इनका रस, चतुर्द्रोणेन आरद्रोण ४०९६ तोले, पयसा  
दूध दूध, कदम्ब- कदम्ब कदम्ब, आमलक- आमला  
आवला, अशोट- अशोट अशोट, पद्मबीज- कभण-  
काडी कमलगट्टा, कशेरुकम् कशेरु कशेरु, शृङ्गादकम्  
शीगोडा सिंघाडा, शृङ्गवेरम् शृङ्ग सोंठ, लवणम्  
सैधव सैधानमक, पिप्पलीम् पीपर पिप्पली, सिताम्  
सांकर शर्करा, जीवनीयः च अने ७५५५ गलुनी  
६५ औषधिओ और जीवनीय गणकी दस औषधियां,  
पलोन्मितम् इरेडने ओड पक्ष प्रत्येकके ४ तेंले,  
कल्कम् कल्क कल्क, दत्त्वा नाणी डालकर, पचेत् पका-  
वर्ण पकावे, संसिद्धम् सिद्ध इरेडा ते तेक्षमां सिद्ध

१००. संसिद्धं-तय सिद्ध (छ.)

१०१. सर्वाङ्गैकाङ्गवाते च क्षतक्षीणे क्षतज्वरे-सर्वाङ्गैकाङ्गवाते  
तेक्षमेतत् प्रशस्तै (क.)

१०२. खरवर्णकरं-खरवर्णकर (छ. त. द.)



किये उस तैलमें, क्षौद्रप्रस्थेन औंके प्रस्थ भव सहद ६४ तोले, संसृजेव मेणपुं मिलावे, नस्य- तेने नस्थ उसका नस्य, अम्यजन-पानेषु अभ्यंग, पान अम्यंग, पान, बस्तौ च अपि अने अस्तिभा और बस्तिमें, सर्वेषु सर्व सब, वातस्याधिपु वातव्याधिभा वातस्याधियोमें, मन्वा- स्तस्मे मन्वास्तत्तभा मन्वास्तन्ममें, हनुग्रहे हनुग्रहभा हनुग्रहमें, सर्वाङ्ग- सर्वाङ्गवात सर्वाङ्गवातमें, एकाङ्गवाते औंकेगवातभा एकाङ्गवातमें, क्षतक्षीणे क्षतक्षीणभा क्षत- क्षीणमें, क्षतज्वरे च अने क्षतज्वरभा और क्षतज्वरमें, नियोजयेत् थैलपुं प्रयोग करे, सुकुमारकम् 'सुकुमारक' 'सुकुमारक'. इति औ नाभनु इस नामवाला, एतत् आ यह, तैलम् तेह तैल, वाताद्यामय- वातरक्त रोगने वातरक्त रोगका, नाशनम् नाश करनेर अने नाशक है, स्वरवर्णकरम् स्वर तथा वर्ण करनेवाला है, आरोग्य- तथा आरोग्य तथा आरोग्य, बलपुष्टिदम् अथ अने पुष्टि आपनार अने बल और पुष्टि देनेवाला है ॥ ९६-१०२ ॥ इति आ यह, सुकुमारकतैलम् सुकुमारक तैल अने सुकुमारक तैल है।

96-102. Decoct 400 tolas of liquorice and 64 tolas each of grapes, dates, sweet falsah, mahwa, crested purple nail-dye, salep and 256 tolas of white teak in 4096 tolas of water till it is reduced to 1/8th quantity. Filter it and then prepare a medicated oil taking 256 tolas of oil with an equal quantity of the juices of emblic myrobalan, white teak, white yam and sugar cane and 4096 tolas of milk adding the paste of 4 tolas of each of cadamba, emblic myrobalan, walnut, lotus seeds, rush nut, water chest-nut, ginger, rock-salt, long pepper, sugar and drugs of the life-promoter group. When it gets cold, mix it with 64 tolas of honey. This oil should be used as nasal medi- cation, inunction, potion and enema

in all diseases due to vata provocation, as well as in rigidity of the neck, lock jaw and affection of a single limb or the whole body, cachexia due to pectoral lesion and in fever due to trauma. This 'Sukumar oil' is curative of rheumatic condition and is a promoter of the voice, complexion, health vitality and robustness. Thus has been described the 'Sukumaraka Oil'.

वातरक्ते अमृतार्धं तैलम्—

गुडचीं मधुकं ह्रस्वं पञ्चमूलं पुनर्नवाम् ।  
राक्षामेरण्डमूलं च जीवनीयानि लाभतः ॥१०३॥  
पलानां शकैर्भागैर्बलापञ्चशतं तथा ।  
कोलविश्वयवान्माशान्कुलार्थाश्चादकोन्मिताम् १०४  
काश्मर्याणां सुशुष्काणां द्रोणं द्रोणशनेऽम्भसि ।  
सावयेज्जर्जरं धौतं चतुर्द्रोणं च शेषयेत् ॥१०५॥  
तैलद्रोणं पचेत्तेन दत्त्वा पञ्चगुणं पयः ।  
पिष्ट्वा त्रिपलिकं चैव चन्दनोशीरकेशरम् ॥१०६॥  
पत्रैलागुरुकुष्ठानि दगारं मधुयष्टिकाम् ।  
मञ्जिष्ठाष्टपलं चैव तत् सिद्धं सार्वयौगिकम् ॥१०७॥  
वातरक्ते क्षनक्षीणे भारते क्षीणरेतसि ।  
वेपनाक्षेपभक्षानां सर्वाङ्गैकाङ्गरोणिषाम् ॥१०८॥  
योनिदोषमपसारामुन्मादं खञ्जपङ्कताम् ।  
हन्यात् प्रसवनं चैतत्तैलाम्बममृताह्वयम् ॥१०९॥  
इत्यमृतार्धं तैलम् ।

गुडचीम् अणो गिलोय, मधुकम् अणोभध गुनरडी, ह्रस्व पञ्चमूलम् अथ पञ्चमूल ह्रस्व पञ्चमूल, पुनर्नवाम् साठे.डी पुनर्नवा, राक्षाम् राक्षान् राक्षा, एरण्डमूलम्

१०३. त्रिपलिकं चैव-त्रिपलिकाक्षैव (ब.)

, केशर-केशरान् (ब.)

१०७. तत् सिद्धं-सर्वयौ (ब.)

१०९. खञ्जपङ्कताम्-विषमकरम् (ब. क. द. फ. व.)

, प्रसवनम्-पुंसवनम् (ब. द. व.)



એરંડાદુ મૂલ્ય અરણ્ડમૂલ, જીવનીયાનિ ચ અવનીય  
 ગણનાં દ્રવ્યો જીવનીય ગણકે ઔષધ, લાભતઃ એટલાં  
 મળે તેટલાં જિતને મિલ સકે વતને. પલાનામ્ કાતકૈઃ  
 માંગૈઃ પ્રત્યેક સેા પદ્ય પ્રત્યેક ૪૦૦ તોલે, બલાપચ્ચ-  
 ભતમ્ બદા પાંચસેા પદ્ય બલા ૨૦૦૦ તોલે. તથા  
 તંથા ઔર, કોલબિલ્વ-ઔર, બીલાં વેર, વેલગિરી, જવાન  
 જવ જૌ, માયાન અડદ, કુલ્થાન ચ કબચી  
 ફલથી, આલકોન્નિતાન પ્રત્યેક એક આદક પ્રત્યેક  
 ૨૫૬ તોલે, સુગુણાનામ્ સારી પેડે સુકાયેલાં અઠ્ઠી  
 પ્રકાર સૂએ, કાદમર્યાનામ્ શીરણનાં દ્વય ગમ્મારીકે  
 ફલ, દ્રોણમ્ ચ એક દ્રોણ ૧૦૨૪ તોલે, ઘૌતમ્ ઘૌધ  
 ઘોકર, જર્જરમ્ અષ્ઠકયાં કરી અથ કુટાકર, દ્રોણશતે  
 એકસેા દ્રોણ ૧૦૨૪૦૦ તોલે, અન્નમસિ પાણીમાં જલમેં,  
 સાધયેવ પકાવનાં પકાવે, ચતુર્દ્રોણમ્ ચ ચાર દ્રોણ  
 ૪૦૯૬ તોલે, શેષયેવ અઠ્ઠી રાખવું શેષ રાખે, તેન  
 તેમાં રસમેં, પચ્છગુણ પાંચગુણ પાંચગુણ, પયઃ દૂધ  
 દૂધ, દત્તવા નાખી ફાલકર, ચન્દન-વડીર-અન્દન,  
 વાગેા ચન્દન, ડશીર, કેશરમ્ નાગકેસર નાગકેસર, પત્ર-  
 પલા-તમાલપત્ર, એકથી તેજવત્ર, ફલાયત્રી, અગુર-  
 અગર અગુર, કુષ્માણી કડ કૂડ, તગરમ્ તગર  
 તગર, મધુવટિકામ્ અને જેડીમધ ઔર મુલહઠી,  
 ત્રિવલિકક ચ દ્વ પ્રત્યેક ત્રણ પદ્ય પ્રત્યેક ૧૨ તોલે,  
 મજ્જિષ્ઠા-મજ્જા મજીઠ, અષ્ઠપલમ્ આઠ પદ્ય ૩૨ તોલે,  
 વિષ્ણુ એએના કલકથી ફળકે કલકમે, તૈલદ્રોણમ્ એક  
 દ્રોણ તેલ ૧૦૨૪ તોલે તૈલ, પચેવ પકાવવું પકાવે,  
 સિદ્ધમ તત્ સિદ્ધ થયેલ તે તેલ સિદ્ધ હુઆ વહ તૈલ,  
 સાર્વૈયોગિકમ્ નર્ય અભ્યંગ આદિ સર્વ યોગેમાં  
 વાપરવામાં આવે છે નર્ય અભ્યંગ આદિ સર્વયોગોમેં  
 વરતા જાતા હૈ, અમૃતાદ્યમ્ 'અમૃતાદ્ય' નામનું  
 'અમૃતાદ્ય' નામકા, એવર આ વહ, સૈલાદ્યમ્ એક  
 તેલ એક તૈલ, વાતરકે વાતરકતાના વાતરકવાલે,  
 ક્ષતક્ષીણે ક્ષતક્ષીણ ક્ષતક્ષીણ, મારતે ભારથી પીડિત  
 મારકે થકે, ક્ષીણરેતસિ ક્ષીણવીર્ય ક્ષીણશુક્ર, વેપન-  
 કંપતા કાંપતે હુર, આક્ષેર-સંધિશ્ચ શવાળા સંધિત્રંચવાલે,  
 અગ્નાનામ્ ભાગેલાં અંગવાળા અગ્નઝાંવાલે, સર્વાઙ્ગ-  
 સર્વ અંગમાં સર્વ અઙ્ગોમેં, ફાકાઙ્ગ-અને એક અંગમાં  
 ઔર એક અઙ્ગમેં, રોચિનાદ રોચનાળા મનુષ્યે માટે

હિતકર છે રોગી મનુષ્યોકે લિપ્ત હિતકર હૈ, યોનિદોષમ્  
 વળી આ તેલ યોનિદોષ ઔર વહ તૈલ યોનિદોષ,  
 અપસારમ્ અપરમાર અપસાર, ઝન્માદમ્ ઉન્માદ  
 ઝન્માદ, સ્વપ્ન તામ્ અને લગ્નપાણ્ય, પાંચગુણ્ય  
 ઔર સ્વજતા તથા પક્ષ્તતાકો, હન્યાત્ર નષ્ટ કરે છે નષ્ટ  
 કરતા હૈ, પ્રસવનમ્ ચ તેમજ પ્રસૂતિ કરાવે છે એવું  
 પ્રસૂતિકારક હૈ ॥ ૧૦૩-૧૦૯ ॥ હિતિ આ વહ,  
 અમૃતાદ્યમ્ અમૃતાદ્ય અમૃતાદ્ય, તૈલમ્ તેલ છે તૈલ હૈ ।

103-109. Decoct 400 tolas of each  
 of guduch, liquorice, minor penta-  
 radices, hog's weed, indian groundsel,  
 root of castor plant and the available  
 drugs of the life-promoter group, 2000  
 tolas of heart leaved sida and 256  
 tolas of jujube, bael, barley, black  
 gram, horse gram, and 1024 tolas of  
 well dried fruits of white teak, with  
 102400 tolas of water till it is reduced  
 to 4096 tolas. The drugs used to  
 prepare the decoction should be cru-  
 shed and washed. Prepare a medicated  
 oil with the aforesaid decoction with  
 1024 tolas of oil and five times its  
 quantity of milk, with the paste  
 of 12 tolas of each of the paste of  
 sandal wood, cuscus grass, fragrant  
 poon, cinnamon bark, cardamom, eagle  
 wood, costus, indian valerian, liquorice  
 and 32 tolas of madder. Thus prepared,  
 this medicated oil can be used in all  
 modes as a remedy for rheumatic  
 condition, due to pectoral lesion,  
 exhaustion due to excessive load-  
 carrying, deficiency of semen, tremors,  
 convulsions, fractures affection of a  
 single limb or all the limbs, gynecic  
 disorders, epilepsy, insanity and

lameness of hands or legs. This excellent oil known as the Compound Guduch Oil is also ecbolic in action. Thus has been described the Compound Guduch Oil.

वातरक्ते महापद्मकं तैलम्—

पद्मवेतसयष्ट्याह्वफेनिलापद्मकोत्पलैः ।

पृथक्पञ्चपलैर्दर्भबलाचन्दनकिंशुकैः ॥११०॥

जले शृतैः पचेत्तैलप्रस्थं सौवीरसंमितम् ।

लोध्रकालीयकोशीरजीवकर्षभकेशरैः ॥१११॥

मदयन्तीलतापत्रपद्मकेशरपद्मकैः ।

प्रपौण्डरीककाश्मर्यमांसीमेदाप्रियङ्गुभिः ॥११२॥

कुङ्कुमस्य पलाघेन मञ्जिष्ठायाः पलेन च ।

महापद्ममिदं तैलं वातासृज्वरनाशनम् ॥११३॥

इति महापद्मं तैलम् ।

पद्म- ५५ पद्म, वेतस- वेतस वेतस, यष्ट्याह्व-  
नेलीमध मुल्हरी, फेनिला- पोथि उपोदिका, पद्मक- ५५-  
३४ पद्माक्ष, इत्यपलैः नीलकण्ठ नीलकण्ठ, दर्भ- ६५  
दर्भ बला-चन्दन- अथवा, अ-६५ बला, श्वेत चन्दन,  
किंशुकैः ३५५ टैसके फूल, पृथक् ६२६ प्रत्येक, पञ्चपलैः  
पांथ ५५ २० तोले, जले शृतैः पाण्डुरीमा ६३५  
इनको जलमें पकाकर, लोध्र- दोध्र लोध्र, कालीयक-  
३५५५ कालीयक, उशीर- वाणो खस, जीवक- ७५३  
जीवक, ऋषभ- ५५५५ ऋषभक, केशरैः नागकेशर  
नागकेशर, मदयन्ती- मेदी मेदी, लता-पत्र- धडैला,  
तमाक्षपत्र लता, पत्र, पद्मकेशर- ५५३५२ कमलकेशर,  
पद्मकैः ५५३५३ पद्माक्ष, प्रपौण्डरीक- पुण्डरीक ३५३  
काष्ठ, काश्मर्य- शीरक्ष गम्भारीके फल, मांसी-मेदा-  
५५५५५, मेदा जटामांसी, मेदा, प्रियङ्गुभिः धडैला  
प्रियङ्गु, कुङ्कुमस्य ३५२ केशर, पलाघेन अर्धो ५५  
प्रत्येक दो तोले, मञ्जिष्ठायाः अने ५५५ और मज्जोठ,  
पलेन च ओष्ठ ५५ नाथी ४ तोले डालकर, सौवीर-  
संमितम् तैल नेली (६४ तोला) इतः ५५५  
५५५५ ३५५, तैलके समान (६४ तोले) निस्तुष जोडी

कांजी, तैलप्रस्थम् अने ओष्ठ प्रस्थ तैल और तैल ६४ तोले,  
पचेर पक्षात्रपुं पकावे, इदम् आ यह, महापद्मम्  
महापद्म महापद्म, तैलम् तैल, वातासृक्- वातरक्त  
वातरक्त, ज्वरनाशनम् अने ५५५५ नाश ३५५५  
और ज्वरका नाशक है ॥ ११०-११३ ॥ इति आ यह,  
महापद्मतैलम् महापद्म तैल अने महापद्म तैल है ।

110-113. Decoct 20 tolas each of  
lotus, country-willow, liquorice, soap  
nut, himalayan cherry, blue water  
lily sacrificial grass, heart leaved  
sida, sandal wood and palas, with  
water; prepare a medicated oil with this  
decoction and 64 tolas of sauveeraka  
wine with the paste of two tolas of  
each of lodh, yellow sandal cuscus  
grass, Jivaka, Rishabhaka fragrant  
poon, henna, madder, cinnamon leaf,  
lotus filaments, himalayan cherry, lotus  
rhizomes, white teak, nardus, Meda,  
perfumed cherry and saffron  
and four tolas of madder. This  
major lotus oil is curative of rheu-  
matic conditions and fever. Thus has  
been described the Major Lotus Oil.

वातरक्ते खुड्वाकपद्मकं तैलम्—

पद्मकोशीरयष्ट्याह्वरजनीकाथसाधितम् ।

स्यात् पिष्टैः सर्जमञ्जिष्ठावीराकाकोलिचन्दनैः ॥११४॥

खुड्वाकपद्मकमिदं तैलं वातासृजदाहनु ।

इति खुड्वाकपद्मकं तैलम् ।

सर्ज- २५ राल, मञ्जिष्ठा-वीरा- ५५५, क्षीरकाकोली  
मज्जोठ, क्षीरकाकोली, काकोलि- ३५५५ काकोली, चन्दनैः  
तथा ५५५५ और चन्दनके, पिष्टैः ३५५५ कल्कमे,  
पद्मक- ५५५५५ पद्माक्ष, उशीर- वाणो खस, यष्ट्याह्व-  
नेलीमध मुल्हरी, रजनीकाथ- अने ५५५५ ३५५५  
और हल्दीके काथसे, साधितम् पक्षात्रे पकाया हुआ,

हृदय् आ यह, खुङ्गाकपञ्चकम् पुङ्गुङ्गपञ्चकं खुङ्गाकपञ्चकं,  
तेलम् तैल तैल, वाताज्जदाहनुत् वातरक्तं अने दाह  
भटाङ्गनार वातरक्त और दाहका नाशक, स्यात् छे है,  
॥११४॥ इति आ यह, खुङ्गाकपञ्चकम् पुङ्गुङ्गपञ्चकं  
खुङ्गाकपञ्चकं, तेलम् तैल छे तैल है ।

114-114½. Prepare a medicated oil with the decoction of himalayan cherry, cuscus grass, liquorice and turmeric adding the paste of sal, madder, climbing asparagus, Kakoli and sandal wood. This minor lotus oil is curative of rheumatic conditions and burning. Thus has been described the Minor Himalayan Cherry Oil.

वातरक्ते मधुकृतैलम्—

शतेन यष्टिमधुकात् साध्यं दशगुणं पयः ॥११५॥  
तस्मिन्सैले चतुर्दशे मधुकस्य पलेन तु ।  
सिद्धं मधुककाश्मर्यरसैर्वा वातरक्तनुत् ॥११६॥

यष्टिमधुकात् जेठीमधना मुलहठीके, कतेन सौ  
 पक्ष वडे ४०० तोलेसे, दक्षगुणम् पयः दशगुणं द्व  
 दशगुना दूध, साध्यम् पक्षावपुं पकावे, तस्मिन् तेभा  
 उत्तमै, मधुकस्य जेठीमधना मुलहठीके, पलेन तु ओष  
 पक्ष ३६३थी ४ तोले कल्कसे, चतुर्दोणे थार दोष  
 ४०९६ तोले, तैले तेक्ष पक्षावपुं तैल पकावे, वात-  
 रक्ताज्ज्वर आ तेक्ष वातरक्तने। नाश करे छे यह तैल  
 वातरक्ता नाश करता है, मधुक- अथवा जेठीमध  
 अथवा मुलहठी, काश्मर्य-रसैः वा अने शीतलपुना  
 कनाथथी बौर गम्मारोके कायसे, सिद्धम् सिद्ध करेव  
 तेक्ष वातरक्तने। नाश करे छे सिद्ध किया तैल वात-  
 रक्ता नाश करता है ॥ ११५-११६ ॥

115-116. Prepare a medicated milk taking 4000 tolas of milk and 400 tolas of liquorice. Prepare a medicated oil with this milk taking 4096 tolas of oil and adding four tolas of

---

११६. तर्पिस्तले चतुर्दशेण-तर्पिस्तले चतुर्दशेण (घ.)

the paste of liquorice; or the oil prepared with the juice of liquorice and white teak, may be taken; these are curative of rheumatic conditions.

मधुपर्ण्याः पलं पिष्ट्वा तैलप्रस्थं चतुर्गुणे ।  
क्षीरे साध्यं सतं कृत्वा तदेवं मधुकाञ्छते ॥११७॥  
सिद्धं देयं त्रिदोषे स्याद्वातास्त्रे श्वासकासनुत् ।  
हृत्पाण्डुरोगवीर्यसर्पकामलादाहनाशनम् ॥११८॥  
इति शतपाकं मधुकतैलम् ।

मधुपर्ण्याः गणैः गिलेय, पलञ्च औं ३ पक्ष  
४ तोले, पिष्ट्वा कट्क करी तेभी कल्ककर उससे, तैल-  
प्रस्थम् औं ३ प्रस्थ तेक्ष तैल ६४ तोले, चतुर्गुणे क्षीरे  
आरगक्षा दूधभां चारगुने दूधमें, साध्यम् पञ्चावपुं  
पकावे, एवम् आ प्रभाषे इस तरह, क्षतम् सो बार  
सौ बार, कृत्वा करी कर, मधुकाव चाते सो पक्ष  
जरीमधुयां सो पल मुलहरीसे, सिद्धम् सिद्ध करेहुं  
सिद्ध किये, तब ते तेक्ष उस तैलको, त्रिदोषे त्रिदोष-  
जन्य त्रिदोषजन्य, वाताक्षे वातरक्तभां वातरक्तमें,  
देयम् देयुं देना चाहिए, आसकासनुव ते क्षीरं तथा  
कासने द्वर करनार वह श्वास और कासको दूर करनेवाला  
है, हृत्पाण्डु- अने छदयरोग, पांडुरोग और हृदयरोग,  
पाण्डुरोग, वीसर्प- विषर्पं विषर्प, कामला- कुभजौ  
कामला, दाहनाक्षतम् तथा दाहने नाश करनार और  
दाहका नाशक, स्यात् छे है ॥११७७-११८॥ इति आ यद,  
शतपाकम् शतपाकं शतपाक, मधुकतैलम् मधुकतैल  
छे मधुकतैल है ।

117-118. Prepare a medicated oil taking 64 tolas of til oil in four times its quantity of milk with the paste of 4 tolas of guduch; repeat this procedure hundred times. Thus this oil, prepared with 400 tolas of liquorice is curative

११७. मधुपर्ण्याः-मधुयष्ट्याः (क).

५. शतं कृत्वा तदेवं-शतकृत्वस्तदेवं (ब.)

११८. त्रिदोषे स्याद्वाताग्ने श्वासकासनुव-विषोन्मादवाताग्न-  
श्वासकासनुव (ब. फ. घ.)

of tridiscordant type of rheumatic conditions, dyspnea, cough, cardiac disorders, anemia, acute spreading affections, jaundice and burning. Thus has been described the Hundred times prepared Liquorice Oil.

वातरक्ते बलातैलम्—

बलाकषायककाम्यां तैलं क्षीरसमं पचेत् ।  
सहस्रं शतवारं वा वातासृग्वातरोगनुत् ॥११९॥  
रसायनमिदं श्रेष्ठमिन्द्रियाणां प्रसादनम् ।  
जीवनं बृंहणं स्वयं शुक्रासृग्दोषनाशनम् ॥१२०॥  
इति सहस्रपाकं शतपाकं वा बलातैलम् ।

बला- अथाना बलाके, कषायककाम्याम् अनाथ  
अने ६६३थी काय और कलसे, क्षीरसमम् समान भाग-  
वाणा ६६३थी युक्त समभाग दूधसे युक्त, तैलम् तेल तैलको,  
सहस्रम् ६६३२५१२ हजारदफे, शतवारम् वा ३ से ५२  
वा सौवार, पचेत् ५३५५५ पकावे, वातासृग् ते तेल  
वातरक्त वह तैल वातरक्त, वातरोगनुत् अने वातरोगनु  
नाशक छे और वातरोगनाशक है, इदम् आ यह, श्रेष्ठम्  
श्रेष्ठ, रसायनम् रसायन छे रसायन है, इन्द्रिया-  
णाम् इन्द्रियोने इन्द्रियोको, प्रसादनम् दोषरहित करने  
छे दोषरहित करनेवाला है, जीवनम् अवन आपनार छे  
जीवनदाता है, बृंहणम् पुष्टि करने छे पुष्टिकारक है,  
स्वयम् स्वर माटे हितकर छे स्वरके लिए हितकर है, शुक्र-  
असृक् तथा शुक्र अने रक्तना तथा शुक्र और रक्ते,  
दोषनाशनम् दोषने नाश करने छे दोषोंका नाशक  
है ॥ ११९-१२० ॥ इति आ यह, सहस्रपाकम् सहस्र-  
पाक सहस्रपाक, शतपाकम् वा अथवा शतपाक अथवा  
शतपाक, बलातैलम् अथवा तैल छे बलातैल है ।

119-120. The medicated oil prepared of the decoction and paste of heart-leaved sida and oil, with an equal quantity of milk, by repeating

the procedure from a 100 to a 1000 times, is curative of rheumatic conditions and vata disorders; it is an excellent vitaliser, promoter of the clarity of the sense-perceptions, life-promoter, or oborant, promotive of voice and curative of the morbidity of semen and blood. Thus has been described the Hundred or Thousand times prepared Sida Oil.

वातरक्ते पिण्डतैलम्—

गुडूचीरसदुग्धाभ्यां तैलं द्राक्षारसेन वा ।  
सिद्धं मधुककाश्मर्यरसैर्वा वातरक्तनुत् ॥१२१॥

गुडूचीरस- गुणीना २५२५ मिलियके रस, दुग्धा-  
भ्याम् अने ६६३थी और दूधसे, द्राक्षारसेन वा ३  
द्राक्षना २५२५थी अथवा द्राक्षाका स्वरसे, मधुक- अथवा  
गेठीमध या मुलहठी, काश्मर्य- अने शीतलुना और  
गम्भारीके, रसैः वा अथवाथी कायसे, सिद्धम् पकावे  
सिद्ध किया हुआ, तैलम् तेल तैल, वातरक्तनुत्  
वातरक्तनाशक छे वातरक्तनाशक है ॥ १२१ ॥

121. The medicated oil prepared from til oil, with the juice of guduch and milk or with the juice of grapes, or with the juice of liquorice and of white teak, is curative of rheumatic conditions.

आरनालाढके तैलं पादसर्जरसं शृतम् ।  
प्रभूते खजितं तोये ज्वरदाहार्तितुत् परम् ॥१२२॥

आरनालाढके अथ ६६३ अंशमां आरनाल २५६  
तोलेमें, पादसर्जरसम् अतुर्थांश २५६ नाभी चौथाई  
सर्जरस मिलाकर, शृतम् पकावी पकाकर, प्रभूते भूज  
बहुत, तोये पाणीमां जलमें, खजितम् मधेलुं मधित,

१२१. वातरक्तनुत्-वातरोगनुत् (ग.)

१२२. शृतम्-पूतम् (क.)

१, खजित-मधित (ग. ड.)

११९. पचेत्-तथा (घ.)

१, सहस्रं शतवारं वा-सहस्रशतपाकं वा (घ.)

તૈલમ્ આ તેલ્લ યદ્ તેલ, પરમ્ અત્યંત અત્યન્ત,  
ઝવર-દાહ- ૦૪૨૨, ૬૧૬ ઝવર, દાહ, અતિનુર તથા પીડાને  
નાશ કરનાર થાય છે और પીડાકા નાશક હોતા હે ॥૧૨૨॥

122. The medicated oil prepared of til oil with 256 tolas of sour conjee, and one fourth the quantity of sal resin and well churned with water, is an excellent cure for pain due to fever and burning.

સમધૂચ્છિદ્રમાઞ્જિષ્ઠં સસર્જરસસારિવમ્ ।  
પિન્ડતૈલં તદ્ભ્યક્ત્વાતરક્તરજાપદમ્ ॥૧૨૩॥

इति पिण्डतैलम् ।

સ-મધૂચ્છિદ્ર-માઞ્જિષ્ઠમ્ મીઝુ અને મઝુના  
કદ્ધથી મોમ और મઞ્જિષ્ઠાકે કલકસે, સ-સર્જરસ-સારિવમ્  
તથા રાજ અને ઉપલસરીના કદ્ધથી પકાવી વઝૂથી  
અરમને ગરમ ગાળી લીધેલું તેલ एवं રાજ और  
સારિવાકે કલકસે પકાકર વઝૂસે ગરમ ગરમ હી છાના  
હુઆ તેલ, પિન્ડતૈલમ્ પિન્ડતૈલ કહેવાય છે પિન્ડતૈલ  
કહા જાતા હે, તત્ તે વહ, અભ્યક્ત્વા અભ્યંગ કરવાથી  
અભ્યન્ન કરતેસે, વાતરક્ત- વાતરકતની વાતરક્તકી, રજા-  
પીડાને પીડાકો, અપદમ્ નષ્ટ કરે છે નષ્ટ કરતા હે ॥૧૨૩॥  
इति आ यह- पिण्डतैलम् पिन्डतैल છે પિન્ડતૈલ હે ।

123. The medicated oil named 'pinda oil' prepared from til oil with bee's wax, madder, sal-resin and indian sarsaparilla used as inunction, is curative of the pain due to rheumatic conditions. Thus has been described Pinda oil or the 'Lumped Oil'.

વાતરકે શૂભાવિચિકિત્સા—

વશમૂલમૃતં ક્ષીરં સયઃ શૂલનિવારણમ્ ।  
પરિષેકોઽનિલપાયે તદ્વાત્ કોષ્ણેન સર્પિષા ॥૧૨૪॥

૧૨૩. માઞ્જિષ્ઠ-મઞ્જિષ્ઠ ( . )

દશમૂલ-શૃત્ત્વ દશમૂળથી ઉકાળેલ દશમૂલસે  
પકાયા હુઆ, ક્ષીરમ્ દૂધ દૂધ, સયઃ સ્ત્રીધ સ્ત્રીધ, શૂલ-  
નિવારણમ્ શૂળનો નાશ કરે છે શૂલનાશક હે, તદ્વાત્  
તે પ્રમાણે उसी प्रकार, अनिलपाये वातप्रधान वात-  
रक्तभा वातप्रधान वातरक्तमें, कोष्णेन नवशेका सुखोष्ण,  
सर्पिषा धीशी घृतये, परिषेकः परिषेक કરવેા પરિષેક  
કરે ॥ ૧૨૪ ॥

124. The medicated milk prepared of deca-radices is a quick cure for pain; similarly an affusion with warm ghee is curative of rheumatic condition due to vata-provocation.

જોદૈર્મધુરસિદ્ધૈર્વા ચતુર્ભિઃ પરિષેચયેત્ ।  
સ્તમ્ભાક્ષેપકશૂલાર્તે કોષ્ણૈર્દાહે તુ શીતલૈઃ ॥૧૨૫॥

સ્તમ્ભ- સ્તમ્ભ સ્તમ્ભ, આક્ષેપક- આક્ષેપક આક્ષેપક,  
શૂલાર્તમ્ અને શૂલના દરદી ઉપર और શૂલપીડિતકો,  
મધુરસિદ્ધૈઃ મધુર દ્રવ્યોથી પકાવેલ મધુર ઔષ્ધોસે  
સિદ્ધ કિયે હુણ, કોષ્ણૈઃ નવશેકા સુખોષ્ણ, ચતુર્ભિઃ ચારે  
ચાર, જોદૈઃ વા સ્નેહોથી સ્નેહોસે, પરિષેચયેત્ પરિષેક  
કરવેા પરિષેક કરે દાહે તુ અને દાહમાં और दाहमें,  
શીતલૈઃ શીતલ ચાર સ્નેહોથી પરિષેક કરવેા ઠંડે  
ચાર સ્નેહોસે પરિષેક કરે ॥ ૧૨૫ ॥

125. Warm affusion with the tetrad of unctuous substances prepared with the drugs of the sweet group should be done to the patient afflicted with stiffness, convulsion and pain; while in the case of the patient suffering from burning, cold affusion should be done

તદ્વાત્ત્રયાવિકચ્છાગ્નૈઃ ક્ષીરૈસ્તૈલવિમિશ્રિતૈઃ ।  
કાયૈર્વા જીવનીયામાં પદ્મમૂલસ્ય વા મિષક ॥૧૨૬॥

૧૨૪. કાયૈર્વા-જીવનીયામાં-મિષક-જીવનીયામાં ( . )

सद्वत् तेन प्रभाषे इसी प्रकार, मिषक वेवे वेव, तैल-मिश्रितः तैलयुक्त तैलमिश्रित, गठय-आजिक-भाय, घेटी गाय, मेड, छागैः अने भकरीनां और बकरीके, झीरैः दूधसे, जीवनीयानाम् तथा शुभनीय द्रव्यैनां तथा जीवनीय औषधिनांके, पञ्चमूलस्य वा के पञ्चमूलना या पंचमूलके, कायैः कृताशु परिषेक करेवा कायमे परिषेक करे ॥ १२६ ॥

126. Oil mixed with the milk of the cow, sheep and goat or with the decoction of the drugs of the life promoter group or of penta-radices may be similarly used by the physician.

द्राक्षेश्वरसमद्यानि दधिमस्तवम्लकाञ्जिकम् ।

सेकार्थे तण्डुलक्षौद्रशर्कराम्बु च शस्यते ॥१२७॥

द्राक्षा-इक्षु- द्राक्ष अने शेरडीने। द्राक्ष और इक्षुका, रस- रस रस, मद्यानि मद्ये मद्य, दधिमस्तु- दहीनुं पाणी दहीका पानी. म्लकाञ्जिकम् आटी डाँठ खड़ी कांजी, तण्डुल- येआनु पाणी तण्डुलेदक क्षौद्र- भधनुं शरभत शहदका शरबत, शर्करा-अम्बु च अने साकरनुं शरभत ये और चीनीका शरबत ये, सेकार्थे परिषेकने भाटे परिषेकके लिए, शस्यते प्रशस्त छे प्रशस्त है ॥१२७॥

127. For the purpose of affusion, the juices of grapes and sugar cane, wines, supernatant part of curds, sour conjee, rice water, honey-water and sugar-water are recommended.

वातरके दाहचिकित्सा—

कुमुदोत्पलपद्मचेर्मणिहारैः सचन्दनैः ।

शीततोयानुगैर्दाहे प्रोक्षणं स्पर्शनं हितम् ॥१२८॥

शीततोयानुगैः शीतल जलमिश्रित शीतल जल-विहित, कुमुद- कुमुद, कुमुद, उत्पल- नीलकमल नील-कमल, पद्म-पायैः अने पद्मपत्रेरेवडे और पद्म आदिसे, सचन्दनैः तथा चन्दनसहित तथा चन्दनसहित, मणि-

हारैः मणिना दारपी मणियोंके हारोंसे, प्रोक्षणम् प्रेक्षण प्रोक्षण, स्पर्शनम् अने स्पर्श और स्पर्श, दाहे दाहमां दाहमें, हितम् हितकारक छे हितकारी हैं ॥१२८॥

128. Sprinkling and application with night lotus, blue water lily, sacred lotus etc., diamond neckless and sandal immersed in cold water, are beneficial in condition of burning.

चन्द्रपादाम्बुसंसिके क्षौमपद्मदलच्छदे ।

शयने पुलिनस्पर्शशीतमास्तवीजिते ॥१२९॥

चन्दनार्द्रस्तनकराः प्रिया नार्यः प्रियंवदाः ।

स्पर्शशीताः सुखस्पर्शांघ्रिनि दाहं रुजं क्लमम् १३०

चन्दनार्द्र- चन्दनसहित चन्दनवित, स्तन-कराः स्तन तथा दाधवाणी स्तन और हापोंवाली, स्पर्शशीताः स्पर्शशीत शीतल स्पर्शमें शीतल, सुखस्पर्शाः अने सुखकारी स्पर्शशीतली और सुखकारी स्पर्शशीतली, नार्यः स्त्रीये बियां, चन्द्रपादाम्बु- चन्द्रनां डिरछोना पाणीची चंद्रके किरणके पानीसे, संसिके स्त्री येव संसिक, क्षौम- अणसीनां वस्त्र अतसीवस्त्र, पद्मदल- अने कमलनां पानपी और कमलके पत्तोंसे, छदे आच्छादित आच्छादित, पुलिन- अने जेना डीपर नदीतटना और जिवके ऊपर नदीके किनारोंके, स्पर्शशीत- स्पर्शशीत शीतल पदार्थसे स्पर्शसे शीतल बना हुआ, मास्त- पवन पवन, वीजिते वाता हावा येवा वह रहा हो ऐसे, रुजने शयनमां सता मनुष्यना शयनमें सोते हुए मनुष्यके, दाहं दाहने दाह, रुजम् रोज रोग, क्लमम् तथा थकने और क्लमको, घ्रिनि हाथों छे नष्ट करती हैं ॥ १२९-१३० ॥

129-130. The company of agreeable and beloved women, pleasant spoken, with their breasts and arms anointed with sandal paste, cool and delightful to the touch, remove the burning, pain and exhaustion in the patient who is



made to lie on a couch, sprinkled with dew water and spread over with fine linen and the petals of lotuses, and fanned by cool breezes blowing from river-banks.

सराने सरुजे दाहे रक्ते विज्ञान्य लेपयेत् ।

मधुकाश्वत्थत्वक्छांसीवीरोदुम्बरशाद्वलैः ॥१३१॥

जलजैर्यवचूर्णैर्वा सयन्त्याहपयोधृतैः ।

सर्पिषा जीवनीयैर्वा पिष्टैर्लेपोऽर्तिदाहनुत् ॥१३२॥

सराने रताश लाली, सरुजे दाहे अने पीडा-वाणा दाहभा और पीडायुक्त दाहमें, रक्तम् रक्तदु-रक्त, विज्ञान्य आवायु उरीने विज्ञावण करके, मधुक-गेरीमध मुलहठी, ज्वरस्थत्वक् पीपणानी भाव पीपलकी छाल, मांसी-वीरा-जटाभांसी, वीरा मांती, वीरा, उदुम्बर-उमरुआ गूलर, शाद्वलैः अने ध्रुवाड ओओने। और दवा इनका, लेपयेत् लेप करे। लेप करे, जलजैः उभगोथी कमलोसे, सयन्त्याह-अथवा गेरीमध या मुलहठी, पयोधृतैः दूध अने धीयुक्त दूध और घृतयुक्त, यवचूर्णैः वा जपना धोएथी जोके चूर्णसे, सर्पिषा धीधी वीहे, पिष्टैः जीवनीयैः वा अथवा ज्वरनीय द्रव्यता उन्कोथी या पीसी हुई जीवनीय औष-धोसे, लेपः लेप लेप, अर्तिदाहनुत् पीडा अने दाहने दूर करे छे पीडा और दाहका नाशक है ॥ १३१-१३२ ॥

131-132. In rheumatic conditions with redness, pain and burning, the blood should be depleted and the part should be treated with an application of liquorice, bark of holy fig, nardus, climbing asparagus, gular fig, scutch grass, aquatic drugs or barley powder mixed with liquorice, milk and ghee, or the ghee prepared with life promoter group of drugs can be used. This cures the pain and burning.

१३१. सराने सरुजे दाहे-सदाहे सरुजे वाते (ब.)

१३२. वीरोदुम्बरशाद्वलैः-वीरातुंबुरशाद्वलैः (ब.)

तिलाः प्रियालो मधुकं विसं मूलं च वेतसात् ।  
आजेन पयसा पिष्टः प्रलेपो दाहरामनुत् ॥१३३॥

तिलाः तक्ष तिल, प्रियालः थारोणी चिरौजी, मधुकम् गेरीमध मुलहठी, विसम् उभगोथी विस, वेतसात् अने नेतरना और वेतसकी, मूलम् मूलने जड़को, आजेन अउरीना बकरीके, पयसा पिष्टः दूधभां वाटी उरेवे। दूधमें पीपकर किया हुआ, प्रलेपः लेप लेप, दाहरामनुत् दाह अने रताशने नाश करे छे दाह और लालीका नाशक है ॥१३३॥

133. The application, made of til, buehanan's mango, liquorice, lotus rhizomes and root of country willow pounded with goat's milk, is curative of redness and burning.

प्रपौण्डरीकमखिष्टादार्वीमधुकचन्दनैः ।

सितोपलैरकासक्तुमसूरोशीरपञ्चकैः ॥१३४॥

लेपो रुग्दाहवीसर्परागशोफनिवारणः ।

पित्तरक्तोत्तरे त्वेते

प्रपौण्डरीक-पुंउरीकडाह प्रपौण्डरीक, मखिष्टा-मल्ल मजीठ, दार्वी मधुक-दाडुहणेर, गेरीमध दाहहल्ली, मुल-हठी, चन्दनैः रताजवी चन्दन, सितोपला साउर चर्करा, परका-सक्तु-ओरडा, साधने एरका, लतु, मसूर-उशीर-भसूर, वाणो मसूर, खम, पञ्चकैः अने पञ्चको और पञ्चाखका, लेपः लेप लेप, रुग्-दाह-पीडा, दाह पीडा, दाह, वीसर्व-विसर्प-विसर्प, राग-शोफ-रताश अने सोओ लाली और शोयका, निवारणः दूर करना छे नाशक है, एते तु आ लेपे ये लेपों, पित्तरक्तोत्तरे पित्त तथा रक्तनी प्रधानतावाणा वातरक्त भाटे छे पित्त और रक्तकी प्रधानतावाले वातरक्तके लिए हैं ॥१३४॥

१३३. तिलाः प्रिय लो मधुकं विसं-एल. प्रियाकमधुकविसं (ब.)

॥ विसं मूलं च-विंवीमूलं च (प.)

॥ आजेन-सद्यः (ब.)

१३४. मसूरोशीरपञ्चकैः-मुस्तकोशीरपञ्चकैः (फ.)

१३४. रागशोफनिवारणः-रक्तशोफनिवारणः (ब.)



134-134<sup>8</sup>. The application made of lotus rhizomes, madder, indian berry, liquorice, sandal wood, sugar candy, elephant grass, powder of roasted paddy, lentils, cuscus grass and himalayan cherry, is curative of pain, burning, acute spreading affection, redness and swelling. These applications are used in rheumatic conditions associated with predominant morbidity of pitta and blood.

वातः विकृताश्चिकित्सा—

लेपान् वातोत्तरे शृणु ॥१३५॥

वातघ्नैः साधितः क्षिग्धः सक्षीरमुद्रपायसः ।

तिलसर्वपिण्डैर्वाऽऽगुपनाहो रुजापहः ॥१३६॥

वातोत्तरे अने वातनी प्रधानतावाला वातरक्तने भाटे और वातप्रधान वातरक्तके लिए, लेपान् देखो। लेपोंको, शृणु समझो सुनो, वातघ्नैः वातघ्न द्रव्योंकी वातघ्न औषधोंसे, साधितः बनावेद साधित, क्षिग्धः स्नेहयुक्त क्षिग्ध, सक्षीर- दूधसहित दूधतहित, मुद्र- पायसः भगने। दूधपाक मूँफकी खीर, तिलसर्वप- के तिल अने सरसव अथवा तिल और सरसोंके, पिण्डैः वा पिंडकी डरवाभां आवेदे। पिंडके किया हुआ, उपनाहः अपि उपनाह उपनाह, रुजापहः पीड़ानाशक छे पीड़ा- नाशक है ॥ १३५-१३६ ॥

135-136. Now listen to the description of the applications for rheumatic condition associated with predominant vata-provocation. The poultice prepared with the drugs curative of vata-provocation, unctuous substances or the milk pudding prepared of green gram and milk, or with lumped til or rape-seed, is curative of pain.

१३५. सक्षीरमुद्र-कशरो मुद्र (क. ५.)

“ “ -सक्षीरमुद्र (क.)

औदकप्रसहानूपवेशवाराः सुसंस्कृताः ।

जीवनीयौषधैः स्नेहयुक्ताः स्युरुपनाहने ॥१३७॥

स्तम्भतोदरुगायामशोथाक्कप्रहनाशनाः ।

जीवनीयौषधैः सिद्धा सपयस्का वसाऽपि वा १३८

जीवनीय- जीवनीय जीवनीय, औषधैः औषधोंसे, सुसंस्कृताः सारी पेठे संस्कृत करेवा अच्छी प्रकार संस्कृत, स्नेहयुक्ताः स्नेहयुक्त स्नेहयुक्त, औदक- जलधर जलधर, प्रसह-आनूर- प्रसह अने आनूर प्राणियोंके, वेशवाराः वेशवारा वेशवारका, उपनाहने उपनाह उपनाह कर्ममें, स्युः वापरवा प्रयोग करे, स्तम्भ-तोड़- तेओ स्तम्भ, तोड़ वे स्तम्भ, तोड़, रुक्-आयाम पीड़ा, जेथालु पीड़ा आयाम, कोथ- सेओ कोथ, अङ्गप्रह- अने अङ्ग- अङ्गने और अङ्गप्रहका, नाशनाः नाश करे छे नाशक हैं, जीवनीयौषधैः जीवनीयगुणोंकी औषधोंकी जीवनीय औषधोंसे, सिद्धा सिद्ध करेवा सिद्ध की हुई, सपयस्का दूधयुक्त दूधके साथ, वसा अपि वसा पलु ओ अ थुलुवाणी छे वसा मी पूर्वोक्त गुणवाली है ॥१३७-१३८॥

137-138. Poultices should be made of the Vesavara preparation with the flesh of aquatic, tearer and wet-land groups of animals prepared with the drugs of life-promoter group and unctuous articles. This is curative of stiffness, pricking pain, aches extensions, edema and spasticity of limbs. Even fat prepared with the drugs of the life-promoter group and milk, has similar action.

घृतं सहचरान्मूलं जीवन्ती छागलं पयः ।

लेपः पिष्टास्तिलास्तद्वृष्टाः पयसि निर्वृताः ॥१३९॥

सहचराः छागलं छागलं सहचरा, मूलं मूल जीवन्ती जीवन्ती तथा दही ओओने। और जीवन्ती इनका, घृतं घी घी, छागलम् तथा अङ्गीरस एवं

१३८. सिद्धा-स्नेहः (क.)

“ सपयस्का वसाऽपि वा-सपयस्को रसोऽपि वा ख )

बकरीके पयः दूधभा वाटीने देप डरवे। दूधमें पीसकर लेप करे। तद्वत् ते ७४ प्रभाञ्जे इसी प्रकार, भृष्टाः शेडी भूनकर, पयसि दूधभा दूधमें, निवृत्ताः पद्मागेला निर्वपित, पिष्टाः तिलाः तलेने वाटी तिलोको पीसकर, लेपः देप डरवे। लेप करे ॥ १३९ ॥

139. The unguent prepared of the root of crested-purple nail dye and cork swallow wort, pounded with goat's milk and fried til, and cooled in milk, has similar effect.

क्षीरपिष्टममालेपमेरण्डन्य फलानि च ।

कुर्याच्छूलनिवृत्त्यर्थं शताह्वामनिलेऽधिके ॥१४०॥

अधिके अनिले वाताधिक वातरक्तभा वाताधिक वातरक्तमें, शूलनिवृत्त्यर्थं शूल भृष्टागला भाटे शूलको निवृत्तिके लिए, क्षीरपिष्टम् दूधभा वाटीने क्षीरसे पीसकर, उमालेपम् अणसीने। देप अणसीका लेप, एरण्डन्य अथवा ऐरंडानां या एरण्डके, फलानि भीज फलों, शताह्वम् च डे सुवाने। देप अथवा सोयाका लेप, कुर्यात् डरवे। करे ॥ १४० ॥

140. In predominance of vata-provocation, to alleviate the colicky pain, the physician should prescribe the unguent prepared of linseed or castor seeds, or of dill seeds pounded with milk.

समूलाग्रच्छद्वैरण्डकाये द्विप्रास्थिकं पृथक् ।

घृतं तैलं वसा मज्जा चानूपमृगपक्षिणाम् ॥१४१॥

कल्कार्थं जीवनीयानि गव्यं क्षीरमथाजकम् ।

हरिद्रोन्पलकुष्ठैलाशताह्वान् ॥१४२॥

विस्वमात्रान् पृथक् पुष्पं काकुभं चापि साधयेत् ।

मधूच्छिष्टपलान्यष्टौ दद्याच्छीतेऽवतारिते ॥१४३॥

१४१. द्विप्रास्थिकं—द्विप्रास्थिकं (ब.)

१४२. कल्कार्थं—कल्कार्थं (ब.)

„ अश्वहनच्छदान्—वर्णच्छदान् (ब. क.)

१४३. दद्याच्छीते—दत्ताऽशीते (घ.)

„ शीतेऽवतारिते—चान्नावतारिते (ब. क.)

शूलेनैषोऽर्दिताह्वानां लेपः सन्धिगतोऽनिले ।

वातरक्ते च्युते भग्ने खञ्जे कुब्जे च शस्यते ॥१४४॥

समूला- मूलसहित मूलसहित, अग्रच्छद-एरण्ड-काये ऐरंडानां नवा पानना उवाभभा एरण्डके नूतन पत्तोंके काथमें, घृतम् तैलम् धी, तेल घृत, तैल, आनूपमृग- तथा आनूप पशु तथा आनूप पशु, पक्षिणाम् अने पक्षीओनी और पक्षियोंकी, वसा वसा वसा, मज्जा च तथा मज्जा और मज्जा, पृथक् घृते पृथक् पृथक्, द्विप्रास्थिकम् ये अर्थ १२८ तोले, कल्कार्थं डरवे। भाटे कल्कके लिए, जीवनीयानि ज्वनीय द्रव्ये। जीवनीय औषधियां, गव्यम् गाय गाय, अथ अने और, आजकम् अडरीनु बकरीका, क्षीरम् दूध दूध, हरिद्रा- हरीदर इली, उत्पलकुष्ठ- नीलकुष्ठ, डं नीलकमल, कूठ, पला- शताह्व- ओदरी, सुवा इलायची, सोया, अश्वहन- डरेलुनां वनेरके, छदान् पान पत्ते, काकुभम् अने अणुननां और अर्जुनके, पुष्पम् च अपि दूध पुष्प, पृथक् घृते प्रत्येक, विस्वमात्रान् थार थार तोला नाभी चार चार तोले देकर, साधयेत् पडापुं सिद्ध करे, अवतारिते उतारी उतारकर शीते ठंडे थये ठंडा होने पर, अष्टौ आठ आठ, मधूच्छिष्टपलानि पल भीष्ट पल सोम, दद्यात् नाभपुं डाले, सन्धिगतो अनिले सन्धिगत वातभा सन्धि- गत वातमें, शूलेन शूलथी शूलसे, अर्दिताह्वानाम् पीडित अंगो पर पीडित अंगोंके ऊपर, वातरक्ते वातरक्त भाटे वातरक्तके लिए, च्युते भग्ने डाडुं पडी अर्ता तेमज्जा अंगी अर्ता अस्थिके खिसकने पर और तूटने पर, खञ्जे तथा अंज तथा खञ्ज, कुब्जे च अने कुब्ज भाटे और कुब्जके लिए, वृषः आ यह, लेपः देप लेप, शस्यते प्रशस्त छे प्रशस्त है ॥ १४१-१४४ ॥

141-144. An unguent should be prepared from 128 tolas from each of ghee, oil, fat and marrow of aquatic animals and birds, in the decoction of castor roots, sprouts and leaves, with the paste of the drugs of the life-promoter group and the milks of the cow and

१४४. च्युते-च्युते (ब. क.)

the goat, adding 4 tolas of each of turmeric, blue water lily, costus, cardamom, dill seeds, leaves of indian oleander and flowers of arjun. When this is prepared and is in a warm condition, mix it with 32 tolas of bee's wax. This unguent when cold should be applied in a condition of the affections of joints, pain in organs due to vata-provocation, in rheumatic condition, in dislocation and fracture of the joints, in lameness and deformity.

कफधिकवातरकचिकित्सा—

शोफगौरवकण्डाद्यैर्युक्ते त्वस्मिन् कफोत्तरे ।  
मूत्रक्षारसुरापक्व घृतमभ्यञ्जने हितम् ॥१४५॥

शोफ गौरव- सेल, गुरुता शोथ, गुरुता, कण्डाद्यैः  
अने भरभ आदिथी और खुजली आदिसे, युक्ते युक्त  
युक्त, कफोत्तरे तु अने उद्ग्रधान और कफोत्तर, अस्मिन्  
आ वातरक्तमा इस वातरक्तमें, मूत्र-क्षार- मूत्र, क्षार मूत्र,  
क्षार, सुरापक्व अने सुराभी पकावेक्ष और सुरापक्व,  
घृतम् धी धी, अभ्यञ्जने अभ्यञ्ज करवा भाटे अभ्यञ्जने,  
हितम् हितकतां छे हितकर है ॥१४५॥

145. In rheumatic condition associated with predominant kapha-provocation, when there is swelling, heaviness and itching etc., the medicated ghee prepared from cow's ghee, cow's urine, alkali and sura wine, used as inunction, is beneficial.

पद्मकं त्वक् समधुक् सारिवा चेति तैर्घृतम् ।  
सिद्धं समधुशुक् स्यात् सेकाभ्यङ्गे कफोत्तरे ॥१४६॥

कफोत्तरे उद्ग्रधान वातरक्तमा कफप्रधान वात-  
रक्तमें, समधुक् सेकाभ्यञ्जनी साथे मुलहठीके साथ,  
पद्मकम् पद्मकपद्म पद्माख, त्वक् सारिवा च इति तत्र

अने उपग्रहरी दातनीनी और सारिवा, तैः सिद्ध  
तेओधी पकावेक्ष इनमें सिद्ध किछे, समधुशुक् समधु  
तथा शुद्धशुद्ध मधु और शुद्धयुक्त, घृतम् घीने।  
धीका, सेकाभ्यङ्गे सेक अने अभ्यञ्ज सेक और अभ्यञ्ज-  
नमें, स्यात् इत्ये प्रयोग करे ॥१४६॥

146. The medicated ghee, prepared from ghee, with the paste of himalayan cherry, cinnamon bark, liquorice, indian sarsaparilla and mixed with honey-vinegar, is beneficial as inunction and affusion in rheumatic conditions associated with predominant kapha-provocation.

क्षारस्तैलं गवां मूत्रं जलं च कटुकैः शृतम् ।  
परिषेके प्रशंसन्ति वातरक्ते कफोत्तरे ॥१४७॥

कफोत्तरे उद्ग्रधान कफप्रधान, वातरक्ते वात-  
रक्तमा वातरक्तमें, कटुकैः शृतम् कटु द्रव्योधी पकावेक्ष  
कटु द्रव्योसे पकाया, क्षारः क्षार क्षार, तैलम् तैल तैल,  
गवाम् मूत्रम् गायुः मूत्र गोमूत्र, जलम् च अने  
जल और जल, परिषेके परिषेक करवा भाटे परिषेक  
करनेके लिए, प्रशंसन्ति प्रशस्त छे प्रशस्त हैं ॥१४७॥

147. In rheumatic conditions associated with predominant kapha-provocation, alkalis, oils, cow's urine, and water prepared with pungent drugs are recommended as affusion.

लेपः सर्वपनिम्बार्कहिंसाक्षीरतिलैर्हितः ।  
श्रेष्ठः सिद्धः कपित्थत्वग्घृतक्षीरैः ससकुमिः ॥१४८॥

१४७. क्षारस्तैलं-क्षीरं तैल (घ. द. द. घ.)

„ बलं-घृतं (घ.)

„ प्रशंसन्ति-प्रशस्त्यन्ते (द.)

„ कफोत्तरे-कफाधिके (द.)

१४८. क्षीरतिलैर्हितः-क्षारतिलैर्हितः (घ.)

„ श्रेष्ठः सिद्धः कपित्थत्वग्घृतक्षीरैः ससकुमिः-श्रेष्ठः सकु-  
घृतक्षीरकपित्थत्वग्घृतैरेव च (घ.)

„ -श्रेष्ठः सकुघृतक्षीरकपित्थत्वग्घृतैरेव च (घ.)

સર્વપ-લિમ્બ-સરમ્બ, લીમડો, સરનો, નીમ, બર્ક-અડડો, આક, હિંજીકીર હિંજીકીર શી, હિંજીકીર, તિલેઃ અને તલનો, ત્રીર તિલ લેપઃ દ્વિતઃ શ્રેષ્ઠ કિતકર્તા છે. આના કેપ હિતકર છે, તમકુમ્ભિઃ સાધવાસદિત સુકુ-સદિત, કપિત્થત્વક ડાહની બાદ કૈથકી છાઠ, ઘૃતશીરેઃ શી અને દૂધશી વી ખીર દૂધે સિદ્ધઃ સિદ્ધ કરેલ છે. સિદ્ધ કિયા હુઆ લેપ, શ્રેષ્ઠઃ શ્રેષ્ઠ છે શ્રેષ્ઠ છે ॥૧૪૮॥

148. The unguent prepared from rapeseed, neem, mudar, indian nightshade, alkali and til is beneficial; and the unguent prepared of the bark of wood apple, ghee and milk, along with the powder of roasted paddy, is most beneficial.

વાતકફાવિક્કવાતરક્કચિકિરસા—

ગૃહધૂમો વચા કુષ્ઠં શતાહ્વા રજનીદ્રયમ્ ।  
પ્રલેપઃ શૂલનુદ્રાતરકે વાતકફોત્તરે ॥૧૪૯॥

વાતકફોત્તરે વાતકફપ્રધાન વાતકકપ્રધાન, વાતરકે વાતરકત્તમાં વાતરકને, ગૃહધૂમઃ ધરનો ધૂમડો, ગૃહધૂમ, વચા કુષ્ઠમ્ ૧૪, ૪૪ વચ, કૂઠ, શતાહ્વા સુવા, સોયા, રજનીદ્રયમ્ ૬૭૬૨, દારુહલ્વી, દારુહલ્વી, પ્રલેપઃ એશીનો લેપ આના પ્રલેપ, શૂલનુદ્રાતરકે શૂલનો નાશ કરે છે શૂલકા નાશક છે ॥૧૪૯॥

149. The unguent, prepared from kitchen soot, sweet flag, costus, dill seeds, turmeric and indian berberry, is curative of rheumatic conditions associated with predominant provocation of vata-cum-kapha

૧૪૯. ગૃહધૂમો વચા કુષ્ઠં શતાહ્વા રજનીદ્રયમ્—દે હરિદ્રે વચા  
ગૌરધૂમકુષ્ઠશતાહ્વા (અ. ક. ૪)  
,, પ્રલેપઃ શૂલનુદ્રાતરકે વાતકફોત્તરે—લેપઃ શૂલકાનામે  
વાતરકે કફોત્તરે (અ.)

તગરં ત્વક્ શતાહ્વાલા કુષ્ઠં મુસ્તં હરેણુકા ।  
વારુ વ્યાગ્રનલ્લં ચામ્લપિષ્ઠં વાતકફાસનુત્ ॥૧૫૦॥

ચામ્લપિષ્ઠમ્ અમ્લ દ્રવ્યોથી પીસેલાં અમ્લ દ્રવ્યોસે પીસે હુણ, તગરમ્ તગર તગર, ત્વક્ ત્વ દાલચીનો, શતાહ્વા શતા સુવા, એલચી સોયા, ઇલાયચી, કુષ્ઠમ્ ૪૪ કૂઠ, મુક્તમ્ નાગરમોથ મોથા, હરેણુકા રેણુકાથી, હરેણુકા, વારુ-વ્યાગ્રનલ્લમ્ દેવદાર અને નખલાનો લેપ દેવદાર બીર વ્યાગ્રનલ્લકા લેપ, વાતકફાસનુત્ વાતકફ-પ્રધાન વાતરકત્તમાં નાશ કરે છે વાતકકપ્રધાન વાતરકકા નાશક છે ॥૧૫૦॥

150. The unguent, prepared from indian valerian, cinnamon bark, dill seeds, small cardamom, costus, nut grass, fragrant piper, deodar and shell rubbed with acid articles, is curative of rheumatic conditions associated with predominant provocation of vata-cum-kapha.

મધુશિગ્રોર્હિતં તદ્વદ્વીજં ધાન્યામ્લસંયુતમ્ ।  
મુહૂર્તં લિપ્તમ્લેષ્ય સિચ્છેદ્વાતકફોત્તરમ્ ॥૧૫૧॥

ધાન્યામ્લ-કાંબી ધાન્યામ્લસે, સંયુતમ્ પીસેલાં પીસે હુણ, મધુશિગ્રોઃ મીઠા સરગવાના મધુશિગ્રે, વીજમ્ બીજનો વીજકા, તદ્વદ્વ તે બ પ્રમાણે લેપ કરવો. આ પ્રકાર લેપ કરના, હિતમ્ હિતકર છે હિતકર છે, મુહૂર્તમ્ થોડીવાર સુધી થોડી વેર તક, લિપ્તમ્ લેપ રાખ્યા બાદ લેપકે લગા રહેનેકે પછાત, વાતકફોત્તરમ્ વાતકફપ્રધાન વાતરકત્તમાં વાતકકપ્રધાન વાતરકને, અમ્લેઃ ચ અમ્લ દ્રવ્યોથી અમ્લ દ્રવ્યોસે, સિચ્છેદ્ પરિષેચન કરવું બેધએ પરિષેચન કરના વાહિણ ॥૧૫૧॥

151. The unguent, prepared from the seeds of sweet drumstick pounded with sour conjee, acts similarly. After

૧૫૦. વાતકફાસનુત્—વાતકફાર્તિનુત્ (અ.)  
૧૫૧. લિપ્તમ્લેષ્ય સિચ્છેદ્વાતકફોત્તરમ્—લિપ્તમ્લેષ્ય ચ સિદ્ધ વાત-  
કફોત્તરે (અ.)  
,, કફોત્તરમ્—કફોત્તરે (અ.)

applying this unguent and keeping it there for a period of a muhurta (48 minutes), the part should be affused with acid lotions in rheumatic condition associated with predominant provocation of vata-cum-kapha.

त्रिकलाव्योषपत्रैलात्वक्षीरीचित्रकं वचाम् ।  
विडङ्गं पिप्पलीमूलं रोमशं वृषकस्वचम् ॥१५२॥  
ऋद्धिं तामलकीं चव्यं समभागानि पेयेत् ।  
कल्यं लिप्तमयस्पात्रे मध्याह्ने भक्षयेत्ततः ॥१५३॥  
वर्जयेद्दधिशुक्तानि क्षारं वैरोधिकानि च ।  
वाताग्ने सर्वदोषेऽपि हितं शूलार्दिते परम् ॥१५४॥

समभागानि सरभे भागे समभागमें, त्रिकला-  
त्रिकला त्रिकला, व्योष-पत्र- त्रिकटु, तमावपत्र त्रिकटु,  
तेजपत्र, मूला- ओषधी छोटी इलायची, त्वक्षीरी- वांस  
उपूर वंशलोचन, चित्रकम् चित्रक चित्रक, वचाम् वच  
वच, विडङ्गम् वायुडिङ्ग वायुविडङ्ग, पिप्पलीमूलम्  
पीपरीमूल पिप्पलीमूल, रोमशम् लीराउसी कासीस,  
वृषकस्वचम् अरुसानी छाल अह्वसेकी छाल, ऋद्धि  
ऋद्धि, तामलकीम् तामलकीम् मुईआवला,  
चव्यम् अने अचक और चव्यको, पेयेत् ७६भा पीसवा  
जलमें पीसे, ततः कल्यम् पक्षी सवारभा पमात प्रातः  
कालमें, अयस्पात्रे धोढाना पात्रभा लोहपात्रमें, लिप्तम्  
ते उड्डने लीपी छर् उस कल्को लीपकर, मध्याह्ने  
मध्याह्ने मध्याह्ने, भक्षयेत् भावे खावे, दधिशुक्तानि  
दही, सुरडा दही, सिरका, क्षारम् क्षार क्षार, वैरोधिकानि  
च अने विरोधी आहारोना और विरोधी भोजन,  
वर्जयेत् त्याग करवा छोड़ देवे, सर्वदोषे अपि सर्व  
दोषाधी पक्ष युक्त सब दोषोंसे भी युक्त, वाताग्ने

वातरक्तभा वातरक्ते, शूलार्दिते अने शूलपीडितने  
भाटे और मूलपीडितके लिए, परम् हितम् आ ४६४  
परम् हितकर्ता छे यह कल्क परम् हितकारी है ॥१५२-१५४॥

152-154. The paste should be prepared of equal parts of the three myrobalans, the three spices, cinnamon leaf, cardamom, bamboo manna, white flowered leadwort, sweet flag, embelia, root of long pepper, iron sulphide, bark of Vasaka, Riddhi, featherfoil and chaba pepper. A vessel should be lined with this paste in the morning, and in the noon the patient should eat his meals in that vessel. The patient should avoid curds, vinegars, alkali and other antagonistic articles. This soon cures severe rheumatic condition born of tridiscordance as well as colic.

बुद्धा स्थानविशेषांश्च दोषाणां च बलाबलम् ।  
चिकित्सितमिदं कुर्याद्दूहापोहविकल्पवित् ॥१५५॥  
ऊहापोह- तर्कवितर्कभी तर्कवितर्कसे, विकल्पवित्  
विडम्बने अलुनार वैद्य विकल्पको जाननेवाला वैद्य,  
स्थानविशेषान् आश्रयस्थानना विशेषे स्थानविशेष,  
दोषाणाम् च अने दोषाणां और दोषोंके, बलाबलम् च  
बलाबलने बल तथा अबलको, बुद्धा बुद्धीने जानकर,  
इदम् आ इस, चिकित्सितम् चिकित्सा चिकित्साको,  
कुर्यात् करवी करे ॥ १५५ ॥

155. The expert physician, versed in the science of pharmacentics, should carry out this treatment with due regard to the particular seat of affection and the relative strength of the morbid conditions.

वातरक्ते भावस्थिकी चिकित्सा—

कुपिते मार्गसंरोधान्मेदसो वा कफस्य वा ।

अतैवृद्ध्याऽनिले नादौ शस्तं कोहनबृंहणम् ॥१५६॥

१५६. अतिवृद्ध्याऽनिले-अतिवृद्ध्याऽनिले (च.)

१५२ रोमश-लोमश (च. त)

१५३. तामलकी-तामलकी (च. फ.)

,, कल्यं-कल्क (ख. झ. ड. त)

,, कल्यं लिप्तमयस्पात्रे-कल्यं लिप्तमयस्पात्रे पात्री (च.)

,, ,, -कल्कैर्लिप्तवायवी पात्री (च. फ.)

१५४. वैरोधिकानि-वैरोधिकानि च (ख.)

મેદસઃ વા મેદની મેદક્ષી. કફસ્ય વા અધવા  
કક્ષીયા કફકો, અતિવૃદ્ધ્યા અત્યંત વૃદ્ધિર્થા અસ્યન્ત  
વૃદ્ધિસે, માર્ગસંયોગાદ માર્ગ રોકાઈ જતાં માર્ગ રુદ્ધ  
હોનેસે, કુપિતે જનિલે કોપેક્ષા વાયુર્મા કુપિત વાયુર્મે, આદૌ  
પહેલાં પ્રારમ્ભમે, જોહન-વુંહણમ્ રનેહન અને બુંહણ  
ક્રિયા સ્નેહન ઔર વુંહણ ક્રિયા, ન ચાસ્તમ્ પ્રશસ્ત નથી  
પ્રશસ્ત નહીં હૈ ॥ ૧૫૬ ॥

156. When the vata is provoked  
as a result of the blockage in the  
body-channels caused by the excessive  
increase of fat and kapha, the oleation  
and roborant therapy in the early  
stage itself, is contra-indicated.

વ્યાયામશોધનારિષ્ટમૂત્રપાનૈર્વિરેચનૈઃ ।

તક્ષાભયાપ્રયોગૈશ્ચ ક્ષપયેત્ કફમેદસી ॥૧૫૭॥

કફમેદસી કફ અને મેદને કફ ઔર મેદકો,  
વ્યાયામ- વ્યાયામ વ્યાયામ, શોધન- શોધન શોધન,  
અરિષ્ટ- અરિષ્ટપાન અરિષ્ટપાન, મૂત્રપાનૈઃ ગેભૂતપાન  
ગોમૂત્રપાન. વિરેચનૈઃ વિરેચન વિરેચન, તક્ષા-ભયા- તથા  
છાશ અને હરડેના તથા તક ઔર હરડકે, પ્રયોગૈઃ ચ  
અયોગથી પ્રયોગોસે, ક્ષપયેત્ ક્ષીણ કરવા ક્ષીણ  
કરે ॥ ૧૫૭ ॥

157. The kapha and the fat should  
be reduced by means of exercise,  
purificatory procedures, potions of  
medicated wines and cow's urine.  
purgation and the courses of butter-  
milk and chebulic myrobalan.

બોધિવૃક્ષકવાયં તુ પ્રપિવેન્મધુના સહ ।

વાતરક્તં જયત્યાશુ ત્રિદોષમપિ દારુણમ્ ॥૧૫૮॥

પુરાણયવગોધૂમસીધ્વરિષ્ટસુરાસવૈઃ ।

શિલાજતુપ્રયોગૈશ્ચ ગુગુલોર્માશ્નિકસ્ય ચ ॥૧૫૯॥

૧૫૮. પ્રપિવેત-પિવેત તં (ક.)

૧૫૯. સીધ્વરિષ્ટસુરાસવૈઃ-મધ્વરિષ્ટાસવૈરતથા (ક.)

,, ,, -મધ્વરિષ્ટસુરાસવૈઃ (ક.)

બોધિવૃક્ષ- પીપળાનો પીપલેકે, કવાયન્ તુ કવાય  
કાથકો, મધુના સહ મધુના સાથે શહદકે સાથ, પ્રપિવેત  
પીવે પીવે, ત્રિદોષમ્ આ કવાયથી રોગી ત્રિદોષજન્ય  
ઇષ કવાયસે રોગી ત્રિદોષજન્ય, દારુણમ્ દારુણ દારુણ,  
વાતરક્તમ્ વાતરક્તને વાતરક્તકો, અપિ પશુ મી, આશુ  
જયતિ શીઘ્ર જીતે છે શીઘ્ર જીતતા હૈ, પુરાણ- જૂના  
પુરાણે, યવ-ગોધૂમ- જવ, ઘઉં જૌ, ગેહૂં, સીધુ-અરિષ્ટ- સીધુ,  
અરિષ્ટ સીધુ, અરિષ્ટ, સુરા-આસવૈઃ સુરા તથા આસવથી  
સુરા ઔર આસવસે, શિલાજતુ- તેમજ શિલાજિતના  
એવં શિલાજીતકે, પ્રયોગૈઃ પ્રયોગથી પ્રયોગસે, ગુગુલોઃ  
તથા ગૂગુળ તથા ગૂગુલકે, માશ્નિકસ્ય અને મધુના  
પ્રયોગથી, કફ અને મેદને દર્દિયે વાયુનો માર્ગ  
રોકાવાથી ઉત્પન્ન થયેલ વાતરક્તને જીતવે જોઈએ  
ઔર શહદકે, પ્રયોગસે, કફ ઔર મેદ દ્વારા વાયુકા  
માર્ગ રુદ્ધ જાને પર ઉત્પન્ન હુએ વાતરક્તકો જીતના  
વાહિયે ॥ ૧૫૮-૧૫૯ ॥

158-159. The decoction of the holy  
fig tree taken as a potion mixed  
with honey, subdues rheumatic condi-  
tion quickly even if caused by severe  
tridiscordance. The condition may  
also be cured by a course of old bar-  
ley, wheat, sidhu wine, medicated  
wine or sura wine, or by a course of  
mineral pitch and gum gugul or honey.

ગમ્મીરે રક્તમાક્રાન્તં સ્યાચ્છેત્તદ્વાતવજ્જપેત્ ।

પશ્ચાદ્વાતે ક્રિયાં કુર્યાદ્વાતરક્તપ્રસાદનીમ્ ॥૧૬૦॥

ગમ્મીરે એ ગંભીર વાતરક્તમાં যদি ગમ્મીર  
વાતરક્તમે, રક્ત રક્ત રક્ત, આક્રાન્તમ્ વાયુથી આક્રાન્ત  
વાયુસે આક્રાન્ત, સ્યા ચ્છેત્ થયું હોય તે હોવે તો,  
તત્ તેને સડકો, વાતવત્ વાયુની પેડે વાયુવત્, જયેત્  
જીતે, પશ્ચાદ્ પછી પીછે, વાતે વાતમાં વાયુમે,  
વાતરક્ત- વાતરક્તવત્ વાતરક્તકા, પ્રસાદનીમ્ શોધન

૧૬૦. વાતવજ્જયેત-તદ્વિવર્જયેત્ (ક. ફ.)

,, પશ્ચાદ્વાતક્રિયાં કુર્યાદ્વાતરક્તપ્રસાદનીમ્-પશ્ચાદ્વાતક્રિયાં  
કુર્યાદ્ વાત રક્તપ્રસાદની (ક.)



४२१। री शोधन करनेवाकी, क्रिया कुर्यात् चिकित्सा।  
४२२। चिकित्सा करनी चाहिए ॥ १६० ॥

160. When the rheumatic condition has affected the deep tissues, the physician should treat the condition as if it were a vata disorder. After the vata is subdued, the line of treatment curative of rheumatic conditions should be given.

रक्तपित्तातिवृद्ध्या तु पाकमाशु नियच्छति ।  
मिश्रं स्रवति वा रक्तं विदग्धं पूयमेव वा ॥ १६१ ॥  
तयोः क्रिया विधातव्या मेदशोषनरोपणैः ।  
कुर्यादुपद्रवाणां च क्रियां स्वां स्वाच्चिकित्सितात् ॥ १६२ ॥

रक्तपित्त- रक्त और पित्त रक्त और पित्तकी, अति-  
वृद्ध्या तु अत्यंत वृद्धता अतिवृद्धिसे, पाकश्चाशु  
नियच्छति वातरक्त शीघ्र पाकी अथ छे वातरक्त  
जल्दी पक जाता है, मिश्रम् अने कूटी अर्थात् और  
फूटने पर, विदग्धम् वा विदग्ध विदग्ध, रक्तम् रक्त  
रक्त, पूयम् एव वा अथवा पूय अथवा पूय, स्रवति  
स्रवे छे बहता है, तयोः तेओनी उनकी, क्रिया  
चिकित्सा चिकित्सा, मेद-शोधन- भेदन, शोषन मेदन,  
शोधन, रोपणैः अने रोपणुथी और रोपणसे, विधातव्या  
४२१। भेदछे करनी चाहिए, उपद्रवाणाम् अने  
उपद्रवोंकी और उपद्रवोंकी, स्वाम् क्रियाम् च पोत-  
पोतानी अपनी अपनी चिकित्सा, स्वाच्चिकित्सितात्  
पोतानी उनकी अपनी, चिकित्सितात् चिकित्सानी  
अनुसार चिकित्साके अनुसार, कुर्यात् ४२२। भेदछे  
करनी चाहिए ॥ १६१-१६२ ॥

161-162. Owing to the excessive increase of the blood and the pitta, the condition soon terminates in

१६१. रक्तपित्तातिवृद्ध्या तु-रक्तपित्तातिवृद्ध्या (घ.)

१६२. क्रिया विधातव्या-चिकित्सां प्रगणय (ङ. घ.)

मेदशोषनरोपणैः-अथशोषनरोपणैः (घ.)

मेदशोषनरोपणैः- (घ.)

suppuration; the part breaks open and discharges putrid blood or pus. Here, the treatment should be given of incision, purification and healing and the physician should treat the complications in the manner indicated in each of them.

अव्ययः योकार्थसंग्रहः—

तत्र श्लोकाः—

हेतुः स्थानानि मूलं च यस्मात् प्रायेण सन्निधयु ।  
कुप्यति प्राक् च यद्रूपं द्विविधस्य च लक्षणम् ॥ १६३ ॥  
पृथग्भिन्नस्य लिङ्गं च दोषाधिक्यमुपद्रवाः ।  
साध्यं याप्यपसाध्यं च क्रिया साध्यस्य चाखिला ॥

वातरक्तस्य निर्दिष्टा समासव्यासतत्तथा ।  
मूर्ध्विणाऽग्निवेशाय तथैवावस्थिकी क्रिया ॥ १६५ ॥

तत्र श्लोकाः ते विषयमां उपसंहारना श्लोका छे छे  
उप विषयमें उपसंहारके श्लोक हैं कि, वातरक्तस्य वात-  
रक्तानी वातरक्तके, हेतुः निदान हेतु, स्थानानि स्थान  
स्थान, मूलम् च मूल मूल, यस्मात् के कारणसे वह प्रायेण सन्निधयु  
धलुं करीने साध्याओमां प्रायः सन्निधयोंमें, कुप्यति कुपित था छे कुपित होता है, यत्  
वातरक्तानी के वातरक्तके जो, प्राक्- रूपम् पूर्वरूप छे  
पूर्वरूप है, द्विविधस्य छे प्रकारना वातरक्तानी दोनों  
प्रकारके वातरक्तके, लक्षणम् च लक्षण लक्षण, मिश्रस्य  
वातादि भेदछे भिन्न वातरक्तानी वातादि मेदसे  
भिन्न वातरक्तके, पृथक् दोषाधिक्यम् अथ अथ दोषोंकी  
अधिकता मिश्र मिश्र दोषोंकी अधिकता, लिङ्गम् दोषोंकी  
अधिकता, साध्यं दोषोंकी अधिकता लक्षण, उपद्रवाः  
च उपद्रव उपद्रव, साध्यम् वातरक्तानी साध्यता  
वातरक्तकी साध्यता, याप्यम् साध्यता याप्यता, अपसाध्यम्  
च अपसाध्यता अपसाध्यता, तथा साध्यस्य साध्य वातरक्तानी  
साध्य वातरक्तकी, समास- सन्निधयमां संनिधयमें, व्यासतः  
तथा विस्तारसे, अखिला संपूर्ण संपूर्ण, क्रिया च चिकित्सा चिकित्सा, तथा एव अने और,  
साध्यस्य आवस्थिकी आवस्थिकी आवस्थिकी, क्रिया चिकित्सा  
॥ १६३. प्रायेण-प्रायः (घ.)



એ સંધાનને ચિકિત્સા અને સર્વકા, મહર્ષિના મહર્ષિ  
આત્રેયે મહર્ષિ આત્રેયને, અગ્નિવેશાય અગ્નિવેશને  
અગ્નિવેશકો, નિર્દિષ્ટા ઉપદેશ કર્યો છે ઉપદેશ ક્રિયા  
દે ॥ ૧૬૩-૧૬૫ ॥

Here are the recapitulatory verses—

163-165. The causes of affection, sites and why it gets provoked mostly in the joints, the premonitory symptoms, characteristics of the two types signs and symptoms of each type, excessive morbidity, complications, curability, palliability and incurability, and the entire treatment of curative types of the rheumatic condition are described in general and in detail as also the treatment of different stages of the disease by the great sage to Agnivesa.

અન્યગ્નિવેશકૃતે તન્ત્રે ચરકપ્રતિસંસ્કૃતેઽપ્રાપ્તે  
દૃઢબલસંપૂર્ણિતે ચિકિત્સાસ્થાને વાતશોણિત-  
ચિકિત્સિતં નામૈકોનત્રિંશોઽધ્યાયઃ ॥૨૯॥

इति आ प्रभाषे इस प्रकार, અગ્નિવેશકૃતે અગ્નિ-  
વેશે રચેલા અગ્નિવેશકે બનાવે, ચરકપ્રતિસંસ્કૃતે તન્ત્રે  
અને ચરકથી પ્રતિસંસ્કાર પામેલા આ શાસ્ત્રમાં  
ઔર ચરકકે દ્વારા સંસ્કૃત આ શાસ્ત્રકે, અપ્રાપ્તે અપ્રાપ્ત  
અપ્રાપ્ત, દૃઢબલસંપૂર્ણિતે અને દૃઢમથે પૂરા કરેલા  
ઔર દૃઢબલસે પૂર્ણિત ક્રિયે ગયે, ચિકિત્સાસ્થાને ચિકિત્સા-  
સ્થાન વિષે ચિકિત્સાસ્થાનમાં, વાતશોણિતચિકિત્સિતમ્  
'વાતશોણિતચિકિત્સિત' 'વાતશોણિતચિકિત્સિત',  
નામ નામનો નામકા, ઇકોનત્રિંશઃ ઔગણ્ડીત્રીસમે  
અન્તીસર્વો, અધ્યાયઃ અધ્યાય સંપૂર્ણ થયે અધ્યાય  
સમાપ્ત બુધ્ધા ॥ ૨૯ ॥

29. Thus, in the Section on Therapeutics, in the treatise compiled by Agnivesa and revised by Caraka, the twenty-ninth chapter entitled 'The Therapeutics of Rheumatic conditions'

not being available, the same as restored by Dridhabala, is completed.

## ત્રિંશોઽધ્યાયઃ ।

### ત્રીસમે અધ્યાય અધ્યાય ત્રીસમો Chapter XXX

યોનિવ્યાપચ્ચિકિત્સિતોપક્રમઃ—

અથાતો યોનિવ્યાપચ્ચિકિત્સિતં વ્યાખ્યાસ્યામઃ ॥૧॥

इति ह स्माह भगवानात्रेयः ॥ २ ॥

અથઃ અતઃ હવે અહીંથી અથ આગે, યોનિવ્યાપ-  
ચ્ચિકિત્સિતમ્ 'યોનિવ્યાપચ્ચિકિત્સિત' નામના  
અધ્યાયનું 'યોનિવ્યાપચ્ચિકિત્સિત' નામકે અધ્યાયકા,  
વ્યાખ્યાસ્યામઃ વ્યાખ્યાન કરશું વ્યાખ્યાન કરેંગે ॥૧॥

મગવાન્ મગવાન્ મગવાન્, આત્રેયઃ આત્રેયે  
આત્રેયને, ઇતિ હ આ વિષયમાં નીચે પ્રમાણે જ આ  
વિષયમાં નિમ્ન પ્રકારે હી, આજ સ્મા કહેલું છે કહા હે ॥૨॥

1. We shall now expound the chapter entitled "The Therapeutics of Gynecic disorders".

2. Thus declared the worshipful Atreya.

યોનિવ્યાપદ્વિષયેઽગ્નિવેશસ્ય પ્રશ્નાઃ—

दिव्यतीर्थौषधिमतश्चित्रधातुशिलावतः ।

पुण्ये हिमवतः पार्श्वे सुरसिद्धर्विसेविते ॥ ३ ॥

विहरन्तं तपोयोगात्तत्त्वज्ञानार्थदर्शिनम् ।

पुनर्वसुं जितात्मानमग्निवेशोऽनुपृष्टवान् ॥ ४ ॥

દિવ્ય- દિવ્ય દિવ્ય, તીર્થ- તીર્થ તીર્થ, ઔષધિમતઃ  
અને ઔષધિઓવાળા ઔર ઔષધિઓવાળે, ચિત્રધાતુ  
બુદ્ધી બુદ્ધી ધાતુઓ નાના પ્રકારકી ધાતુઓ, શિલાવતઃ

૪. પુનર્વસુ-કૃષ્ણાત્રેયમ્ હ. ત. ૪. ૪.)

૫. અનુપ્રવચન-અથ પુષ્ટવાન્ (૪.)

अने शिवाओवाणा और शिलाओवाणे, हिमवान् हिमालयना हिमालयके, सुर- देवे देवों, सिद्धर्षि- सिद्धो अने ऋषिओथी सिद्धों और ऋषियोंसे, सेविते सेवता सेवित, पुण्ये पवित्र पवित्र, पार्श्वे पार्श्वप्रदेशभां पार्श्वमें, विहरन्तम् विहार करते विहार करते हुए, तपोयोगात् तपोयोगथी तपोयोगसे, तत्त्वज्ञान- तत्त्वज्ञानना तत्त्वज्ञानके, अर्थदर्शिनम् अर्थोंने समझनासे अर्थोंको समझनेवाले, जिज्ञास्मानम् अने जितेन्द्रिय और जितेन्द्रिय, पुनर्वसुम् पुनर्वसुने पुनर्वसुसे, अग्निवेशः अग्निवेशे अग्निवेशने, अनुवृष्टवान् पूछुं पूछा ॥ ३-४ ॥

3-4. Agnivesa inquired of Punarvasu, the self-controlled and the perceiver of the supreme truth through austerity and meditation, while he was once sojourning on the slopes of the sacred Himalayas which abound in sacred waters, medicinal herbs and various kinds of mineral substances and which are the resort of the gods, siddhas and sages, and said as follows:—

भगवन् ! यदपत्यानां मूलं नार्यः परं नृणाम् ।  
तद्विघातो गदैश्चासां क्रियते योनिमाश्रितैः ॥ ५ ॥  
तस्मात्तेषां समुत्पत्तिमुत्पन्नानां च लक्षणम् ।  
सौषधं श्रोतुमिच्छामि प्रजानुग्रहकाम्यया ॥ ६ ॥

भगवन् हे भगवान् ! हे भगवान् ! नृणाम् अनुष्ठानां मनुष्योंकी, यद् अपत्यानाम् जे संतानोंनुं जो संतानोंका, परम् श्रेष्ठ उत्तम, मूलम् मूल मूल, नार्यः स्त्रीओ छे स्त्रियां हैं, तद् विघातः ते संतानोंना विनाश उन संतानोंका विनाश, आसाम् ओ ओ स्त्रीओनी इन्हीं स्त्रियोंकी, योनिम् योनिने योनिका, आश्रितैः आश्रित करी रहेवा आश्रय करके होनेवाले, गदैः राजेश्वरी रोगोंसे, क्रियते कराव छे किया जाता है, तस्मात् तेशी इसलिए, प्रजा- प्रजा उपर प्रजा पर, अनुग्रह- अनुग्रह करनेवाणी अनुग्रह करनेकी, काम्यया

धर्म्यथी इच्छासे, तेषाम् तेषांनी उनकी, समुत्पत्तिम् उत्पत्ति उत्पत्ति, उत्पन्नानाम् च अने उत्पन्न थयेवा रोगोंना और उत्पन्न हुए रोगोंके, लक्षणम् लक्षण लक्षण, सौषधम् अने औषध और औषध, श्रोतुम् साधना सुनना, इच्छामि चाहूं छुं चाहता हूं ॥ ५-६ ॥

5 6. "O, worshipful one! women are the only source of human progeny. The disorders occurring in their genital organs cause impediment or injury to progeny. Therefore, the etiological factors of the gynecic diseases and the symptoms of the diseases occurring as also their treatment, do I wish to hear expounded in the interest of the welfare of the world."

योनिव्यापद्देशः—

इति शिष्येण पृष्टस्तु प्रोवाचर्षिवरोऽत्रिजः ।  
विंशतिर्व्यापदो योनेर्निर्दिष्टा रोगसंग्रहे ॥ ७ ॥

इति आ प्रभाणे इस प्रकार, शिष्येण शिष्यथी शिष्यसे, पृष्टः पूछाथेवा पूछे जाने पर, ऋषिवरः ऋषि- श्रेष्ठ ऋषिश्रेष्ठ, अत्रिजः आनेसे आत्रेयने, प्रोवाच कहूं कहा, रोगसंग्रहे रोगसंग्रह अध्यायभां रोगसंग्रह अध्यायमें, योनेः योनिना योनिने, विंशतिः बीस बीस, व्यापदः रोग रोग, निर्दिष्टाः कहेवा छे कहे गये हैं ॥ ७ ॥

7. Being thus questioned by the disciple, the foremost of sages, the son of Atri spoke and said, "Twenty are the gynecic disorders enumerated in the chapter on Nomenclature of diseases (Chapter XIX Sutra)."

योनिव्यापदों सामान्यहेतुः—

मिथ्याचारेण ताः स्त्रीणां प्रदुष्टेनार्तवेन च ।  
जायन्ते बीजदोषाश्च दैवाश्च शृणु ताः पृथक् ॥ ८ ॥

ताः ते व्यापदो वे व्यापदं, स्त्रीणाम् स्त्रीभिर्ना  
स्त्रियोंके, मिथ्याचारेण मिथ्या आचारी मिथ्या  
आचारसे, प्रदुष्टेन च आर्तदेन दुष्ट आर्तवथी दुष्ट  
आर्तवसे, बीजदोषात् भीजदोषधी बीजदोषसे, देवात्  
च तथा दैवशक्तात् तथा भाग्यदोषसे, जायन्ते उत्पन्न  
थाय छे उत्पन्न होती हैं, ताः तेभिर्ना उनको, पृथक्  
बुद्धी बुद्धी अलग अलग, शृणु श्रवणो सुनो ॥८॥

8. These diseases in women are  
born of wrongful behaviour, menstrual  
vitiation, germinal morbidity and  
destiny. Now listen as I describe them  
individually.

वातज्योनिव्यापत्तेर्निदानं लक्षणं च—

वातलाह्वारचेष्टाया वातलायाः समीरणः ।

विवृद्धो योनिमाश्रित्य योनेस्तोदं सवेदनम् ॥९॥

स्वम्भं पिपीलिकासृतिमिव कर्कशतां तथा ।

करोति सुप्तिमाशंसं वातजांश्चापरान् गदान् ॥१०॥

सा स्यात् सशब्दरुक्फेनतनुरुक्षार्तवाऽनिलात् ।

वातल- वायुवर्धकं वायुकारक, आहार- भोजन  
भोजन, चेष्टायाः अने चेष्टा करनेवाली और चेष्टा का-  
नेवाली, वातलायाः वातप्रभृतिवाणी स्त्रीना वातप्रकृति-  
वाली स्त्रीका, विवृद्धः वृद्धि पाभेला बड़ा हुआ, समीरणः  
वायु वायु, योनिम् योनिना योनिका, आश्रित्य  
आश्रय करीने आश्रय करके, योनेः येनिभा योनिमें,  
सवेदनम् वेदनासहित वेदनासहित, तोदम् तोड़ शल,  
स्वम्भम् स्वम्भ स्तब्धता, पिपीलिकासृतिम् इव कीड़ीकी  
आवृत्ति होय तैसा सगुणवाट चींटियोंके रेंगनेकी सी  
प्रतीति होना, तथा कर्कशताम् कर्कशता कर्कशता, सुप्तिम्  
स्वप्तिज्ञानने नाश स्पर्शज्ञानका न होना, आयासम्  
थक बकावट, अपरान् च अने भीम पक्ष और अन्य भी,  
वातजान् वातज वातज, गदान् रोगो रोग, करोति करे छे  
करता है, अनिलात् वायुधी वायुके कारण, सा ते शनि वह  
योनि, सशब्दरुक् शब्द अने दृढ़ साथे शब्द और  
पीडाके साथ, केन- झीलुवाणी ज्ञागदार, तनु- पातला

पतला, रुक्षार्तवा अने शुष्क आर्तववाणी और रुक्ष  
आर्तववाली, स्यात् होय छे होती है ॥९-१०॥

9-10. In the woman of vata habi-  
tus, the vata gets greatly increased by  
vata-inducing diet and behaviour, then  
gets localised in the gynecic organs and  
produces local pain and pricking sensa-  
tion, rigidity, formication, roughness  
numbness, exhaustion and various  
other disorders resulting from vata.  
The menstrual discharge will be atten-  
ded with sound and pain. It will be  
frothy, thin and un-unctuous due to  
vata.

पित्तज्योनिव्यापत्तेर्निदानं लक्षणं च—

व्यापत्कटुम्ललवणक्षाराद्यैः पित्तजा भवेत् ॥११॥

दाहपाकज्वरोष्णार्ता नीलपीतासितार्तवा ।

भृशोष्णकुणपस्त्रावा योनिः स्यात्पित्तदूषिता ॥१२॥

कटु- कटु कटु, अम्ल- अम्ल अम्ल, लवण- क्षार  
लवण, क्षाराद्यैः अने क्षार वर्गेकी और क्षार आदिसे,  
पित्तजा पित्तज पित्तज, व्यापत् व्यापत् व्यापत्, भवेत्  
थाय छे होती है, पित्तदूषिता पित्त वडे दूषित थैसी पित्तसे  
दूषित हुई, योनिः योनि योनि, दाह- दाह दाह, पाक- पाक  
पाक, ज्वर- ज्वर ज्वर, उष्णार्ता अने उष्णार्थी पीडित  
और उष्मासे पीडित, नील- नीला नीले, पीत- पीला  
पीले, असित- के काणा या काले, आर्तवा आर्तवयुक्त  
आर्तवसे युक्त, भृश- अने अत्यन्त और अत्यन्त, उष्ण-  
गरम गरम, कुणपस्त्रावा- अने शयना नैवी गंधधी  
युक्त आववाणी और शयनशीलावसे युक्त, स्यात्  
होय छे होती है ॥ ११-१२ ॥

11-12. Owing to the use of pun-  
gent, acid, salt, alkaline and similar  
articles, gynecic disorders of the pitta  
type will occur. The patient will be

afflicted with burning, suppuration, fever and heat and the menstrual blood will be of bluish, yellowish or black color, and there appears profuse, warm and offensive discharge from the vagina, in condition of vitiation due to pitta.

कफज्योनिव्यापत्तेर्निदानं लक्षणं च—

कफोऽभिष्यन्दिमिर्वृद्धो योनिं चेद्दूषयेत् स्त्रियाः ।  
स कुर्यात् पिच्छिलं शीतं कण्डुग्रस्तारपवेदनाम् १३  
पाण्डुवर्णं तथा पाण्डुपिच्छिलार्तवाहिनीम् ।

अभिष्यन्दिमिः अभिष्यन्दी ५०थी अभिष्यन्दी  
व्योसे, वृद्धः वृद्धे। बड़ा हुआ, कफः ३३ कफ, स्त्रियाः  
औनी स्त्रीकी, योनिम् योनिने योनिको, दूषयेत् चेत्  
दूषित करे तो। दूषित करे तो, सः ते वह, शीताम्  
योनिने शीतल योनिको शीतल, पिच्छिलाम् पिच्छिल  
पिच्छिल, कण्डुग्रस्त- अरभ्युक्त खजलीसे युक्त, अल्प-  
वेदनाम् थोड़ी वेदनावाणी थोड़ी वेदनावाली, पाण्डुवर्णां  
पाण्डुवर्णी पाण्डुवर्णकी, तथा तथा और, पाण्डु-  
पाण्डु पाण्डु, पिच्छिल- अने पिच्छिल और पिच्छिल  
आर्तव- आर्तव आर्तव, वाहिनीम् वहेवाणी बहानेवाली,  
कुर्यात् करे छे करता है ॥ १३३ ॥

13-13½. If the kapha increased by liquefacient factors vitiates the gynecic organs of the woman, it will cause the vagina to be slimy, cold, itching, mildly painful and pallid, and cause menstrual flow of a whitish and slimy character.

त्रिदोषज्योनिव्यापत्तेर्निदानं लक्षणं च—

समश्नन्त्या रसान् सर्वान्दूषयित्वा त्रयो मलाः ॥१४॥  
योनिगर्भाशयस्थाः स्त्रियोनिं युञ्जन्ति लक्षणैः ।  
सा भवेदाहशूलार्ता श्वेतपिच्छिलवाहिनी ॥१५॥

सर्वान् सधगा सब, रसान् रसे।नु रसोंका, समश्-  
न्त्याः समशन करने।री स्त्रीनां समशन करनेवाली स्त्रीकी,  
योनि- योनि योनि, गर्भाशयस्थाः अने गर्भाशयभा-  
रहेवा और गर्भाशयमें अवस्थित, त्रयो मलाः त्रये  
दोषो तीनों दोष, योनिम् योनिने योनिको, दूषयित्वा  
दूषित करीने दूषित करके, स्त्रेः लक्षणं योनिनां लक्ष-  
णोथी अपने लक्षणोंसे, युञ्जन्ति युञ्जत करे छे युक्त  
करते हैं, सा ते वह, दाह- दाह दाह, शूलार्ता अने  
शूलपीडित और शूलसे पीड़ित, श्वेत- तथा श्वेत तथा  
श्वेत, पिच्छिल- अने पिच्छिल और पिच्छिल, वाहिनी  
भवेत् आववाणी होय छे आववाली होती है ॥ १४-१५ ॥

14-15. In a woman taking promiscuous diet of all tastes and kinds, all the three humors seated in the uterus and vagina become provoked and produce locally their characteristic symptoms. The person becomes afflicted locally with burning and aching pains and there will be white and slimy vaginal discharge.

रक्तज्योनिव्यापत्तेर्निदानम्—

रक्तपित्तकरैर्नार्या रक्तं पित्तेन दूषितम् ।  
अतिप्रवर्तते योन्यां लब्धे गर्भेऽपि सासृजा ॥१६॥

रक्तपित्तकरैः रक्तपित्तकर ५०थी रक्तपित्तकर  
व्योसे, पित्तेन वृद्धे पित्तकी बड़े हुए पित्तसे, दूषितम्  
दूषित अर्थे दुष्ट हुआ, नार्याः स्त्रीनां स्त्रीका, रक्तम् रक्त  
रक्त, योन्याम् योनिभा योनिमें, गर्भे लब्धे अपि गर्भ  
प्राप्त भया उत्तं गर्भ प्राप्त होने पर भी, अतिप्रवर्तते  
अति प्रवृत्त भाव छे अति प्रवृत्त होता है, सा ते  
योनिव्यापत्ति वह योनिव्यापत्ति, सासृजा रक्तव्या-  
(रक्तयोनि) उहेवाय छे रक्तजन्य (रक्तयोनि) कहाती  
है ॥ १६ ॥

16. If the blood is vitiated by pitta in a woman by factors causative of hemothermia, there will be excessive

flow of blood from the uterus (Menorrhagia). Even after conception the discharge of blood from the uterus continues.

अरजस्काया योनिव्यापत्तेर्लक्षणम्—

योनिगर्भाशयस्थं चेत् पित्तं संदूषयेदसृक् ।

साऽरजस्का मता कार्श्यवैवर्ण्यजननी भृशम् ॥१७॥

योनि- योनि योनि, गर्भाशयस्थम् अने गर्भाशयभां रहेषु और गर्भाशयमें अवस्थित, पित्तम् पित्त पित्त, असृक् रक्तने रक्तको, संदूषयेत् चेत् दूषित करे तो, भृशम् अत्यन्त अत्यन्त, कार्श्य- कृशता कृशता, वैवर्ण्य- अने निवर्ण्यताने और विवर्णताको, जननी उत्पन्न करनेवाली उत्पन्न करनेवाली, सा ते योनि- व्यापत्ति वह योनिव्यापत्ति, अरजस्का अरजस्का अरजस्का, मता कहेवाय छे कहाती है ॥ १७ ॥

17. If the pitta seated in the vagina and uterus vitiates the blood, there will be absence of menstruation. This condition is known as Arajaska (Amenorrhoea). This condition causes extreme emaciation and discoloration of the body.

अचरणाया योनिव्यापत्तेर्लक्षणम्—

योन्यामधावनात् कण्डूं जाताः कुर्वन्ति जन्तवः ।

सा स्यादचरणा कण्ड्वा तयाऽतिनरकाङ्क्षिणी ॥१८॥

अधावनात् न धीवाशी न घनेके कारण, योन्याम् योनिभां योनिमें, जाताः उत्पन्न भयेष्टा उत्पन्न हुए, जन्तवः अन्तुष्टो जन्तु, कण्डूम् पुच्छी खुजली, कुर्वन्ति करे छे करते हैं, सा ते योनिव्यापत्ति वह योनिव्यापत्ति, अचरणा अचरणा अचरणा, स्यात् कहेवाय छे कही जाती है, तथा कण्ड्वा ते अरजस्का उत्पन्न खुजलीसे, अतिनरकाङ्क्षिणी श्री पुरुषना अतिशयने अधिक आहनेवाली थाय छे श्री पुरुषके संयोगको अधिक आहनेवाली होती है ॥ १८ ॥

18 Owing to lack of cleansing of the vagina, mycotic growth occurs there and causes itching. The condition is called Acharana (Colpitis mycotic). This causes itching, and the person is affected with excessive desire for the male.

अतिचरणाया योनिव्यापत्तेर्लक्षणम्—

पवनोऽतिव्यवायेन शोफसुतिरुजः स्त्रियाः ।

करोति कुपितो योनौ सा चातिचरणा मता ॥१९॥

अतिव्यवायेन अत्यन्त मैथुनशी अतिमैथुनसे, कुपितः डोपेष्टो कुपित हुआ, पवनः वायु वायु, स्त्रियाः स्त्रीनी स्त्रीकी, योनौ योनिभां योनिमें, शोफ- सोओ सूजन, सुति- संज्ञानाश संज्ञानाश, रुजः अने पीडा और पीडा, करोति करे छे करता है, सा च ते योनिव्यापत्ति वह योनिव्यापत्ति, अतिचरणा अतिचरणा अतिचरणा, मता कहेवाय छे कहाती है ॥ १९ ॥

19. The vata in women being provoked by excessive sexual congress produces in the vagina, edema, numbness and pain. This condition is called Aticharana (chronic Vaginitis).

प्राक्चरणाया योनिव्यापत्तेर्लक्षणम्—

मैथुनादतिबालायाः पृष्ठकट्यूहवंक्षणम् ।

रुजन् दूषयते योनिं वायुः प्राक्चरणा हि सा ॥२०॥

अतिबालायाः अत्यन्त आलाना अति बालके, मैथुनात् मैथुनशी मैथुनसे, वायुः डोपेष्टो वायु कुपित वायु, पृष्ठ- पीडा पीठा, कटि- कमर कमर, ऊह- साधन ऊह, वङ्गणम् अने वंक्षणुभा और वङ्गणको, रुजन् पीडा करीने पीड़ित करता हुआ, योनिम् योनिने योनिको, दूषयते दूषित करे छे दूषित करता है, सा ते योनिव्यापत्ति वह योनिव्यापत्ति, प्राक्चरणा प्राक्चरणा कहेवाय छे प्राक्चरणा कहाती है ॥ २० ॥

२०. कट्यूह-जङ्घा (ग. क. क.)

20. Owing to sexual congress in a girl of tender age, the vata getting provoked, vitiates the vagina and produces pain in the back, waist, thigh and groin. This condition is called Prakcharana (Deflorative Vaginitis).

उपप्लुताया योनिव्यापत्तेर्लक्षणम्—

गर्भिण्याः श्लेष्मलाभ्यासाच्छर्दिनिःश्वासनिग्रहात् ।  
वायुः क्रुद्धः कफं योनिमुपनीय प्रदूषयेत् ॥२१॥  
पाण्डुं सतोदमास्त्रावं श्वेतं स्रवति वा कफम् ।  
कफवातामयव्याप्ता सा स्याद्योनिरुपप्लुता ॥२२॥

गर्भिण्याः गर्भिणी स्त्रीनां गर्भवतीके, श्लेष्मल-  
कृच्छरके प्रयोजना कफकारक द्रव्योंके, अभ्यासात्  
अभ्यासशी अभ्याससे, छर्दि- उल्टी कै, निःश्वास-  
अने निःश्वासना और निःश्वासके, निग्रहात् रोकवाशी  
रोकनेसे, क्रुद्धः डोपेक्षे। कुपित हुआ, वायुः वायु वायु,  
कफम् कफने कफको, योनिम् योनिमां योनिमें, उपनीय  
छर्दि अर्धने ले जाकर, प्रदूषयेत् दूषित करे छे दूषित  
करता है, कफ- कफ कफ, वात- अने वायुना और  
वायुके, आमय- रोगीशी रोगोंसे, व्याप्ता व्याप्त व्याप्त,  
योनिः योनि योनि, सतोदम् तोदसहित तोदके साथ,  
पाण्डुम् पींडु पाण्डु, श्वेतम् सफेद श्वेत, आस्त्रावम्  
आस्त्राव आस्त्राव, कफम् वा अथवा कफने अथवा  
कफको, स्रवति स्रवे छे स्रवती है, सा ते योनि-  
व्यापत्ति वह योनिव्यापत्ति, उपप्लुता उपप्लुता कहेवाय  
छे उपप्लुता कहाती है ॥ २१-२२ ॥

21-22. In a gravida, by the habitual use of kapha-promoting articles or by suppression of the urge for vomiting and breathing, the vata gets provoked and carrying the kapha to the vagina, vitiates it giving rise to painful yellowish discharge or whitish

flow of mucus. The vaginal condition, thus being pervaded by kapha and vata, is known as Upapluta (Leucorrhoea).

परिप्लुताया योनिव्यापत्तेर्लक्षणम्—

पित्तलाया नृसंवासे क्षवथूद्वारघारणात् ।  
पित्तसंमूर्च्छितो वायुर्योनिं दूषयति स्त्रियाः ॥२३॥  
नृसंवासे पुरुषसमागमने समये पुरुषसमागमके  
समय, पित्तलायाः पित्तप्रकृतवाणी पित्तप्रकृतिवाणी,  
स्त्रियाः स्त्रीनां स्त्रीका, क्षवथु- छींछे छींछे, उद्वार-  
अने ओडकार और उद्वारके, विघारणात् रोकवाशी  
रोकनेसे, पित्तसंमूर्च्छितः पित्तमिश्रित पित्तमिश्रित, वायुः  
वायु वायु, योनिम् योनिने योनिको, दूषयति दूषित  
करे छे दूषित करता है ॥ २३ ॥

23. If a woman of pitta habitus suppresses the urge for sternutation or eructation during sexual congress, the vata combined with the pitta, vitiates her vagina.

शूना स्पर्शक्षमा सार्तिर्नीलपीतमसृक् स्रवेत् ।  
श्रोणिविक्षणपृष्ठार्तिज्वरातीयाः परिप्लुता ॥२४॥

श्रोणि- श्रोणि श्रोणि, बंधन- बंधन, पृष्ठार्ति-  
पृष्ठार्ति- अने पृष्ठमां पीडा और पृष्ठमें पीडा, ज्वरातीयाः  
तथा अन्यशी पीडित ते स्त्रीनी तथा ज्वरसे पीडित उस  
स्त्रीकी, शूना सूजनयुक्त सूजनयुक्त, स्पर्शक्षमा स्पर्श-  
सहनशी स्पर्शको न सहनेवाली, सार्तिः अने पीडयुक्त  
योनि और पीडयुक्त योनि, नीलपीतम् नीला पीला  
बीले पीले, असृक् रक्तने रक्तको, स्रवेत् स्रवे छे स्रवती  
है, परिप्लुता ते योनिव्यापत्ति परिप्लुता कहेवाय छे  
वह योनिव्यापत्ति परिप्लुता कहाती है ॥ २४ ॥

24. The vagina gets edematous, tender to the touch and painful, and there is a bluish or yellowish or sanguinous discharge. The woman becomes afflicted with pain in the



waist, groin and back and with fever. This condition is called Paripluta (Acute Vaginitis).

उदावर्तिन्या योनिव्यापत्तेर्लक्षणम्—

वेगोदावर्तनाद्योनिमुदावर्तयतेऽनिलः ।

सा रुगार्ता रजः कृच्छ्रेणोदावृत्तं विमुञ्चति ॥२५॥

वेगोदावर्तनात् वेगेने उपर येनवाथी वेगोको ऊपर लेजानेसे, अनिलः ऊपेधो वायु कुपित हुआ वायु, योनिश्च येनिमां योनिमें, उदावर्तयते उध्वर्गति उत्पन्न करे ये ऊर्ध्ववति उत्पन्न करता है, रुगार्ता दरद्वी पीअती दर्दसे पीडित, सा ते वह, उदावृत्तम् उपर गती ऊर्ध्वगामी, रजः रजने रजको, कृच्छ्रेण कष्टभी कष्टसे, विमुञ्चति छोडे छे छोडती है ॥२५॥

25. Owing to reversal of normal course of vata-movement, there occurs the reversal of the course of uterine contraction. The woman becomes afflicted with pain, and discharges with great difficulty the menses that is tending in a reverse direction.

आर्तवे सा विमुक्ते तु तत्क्षणं लभते सुखम् ।  
रजसो गमनादूर्ध्वं ज्ञेयोदावर्तिनी बुधैः ॥२६॥

आर्तवे विमुक्ते तु अने आर्तवमुक्त अर्ता और आर्तवमुक्त होने पर, सा ते श्री वह स्त्री, तत्क्षणम् तत्तत् तुरन्त ही, सुखम् सुख सुखको, लभते पाभे छे पाती है, रजसः आर्तव आर्तवके, ऊर्ध्वम् उपरनी आशुछे ऊपरकी ओर, गमनात् जानेने कीधे जानेसे, सा उत्पन्न थयेदी ते योनिव्यापत्तिने उत्पन्न हुई उस योनिव्यापत्तिको, बुधैः पंडितोये पंडित लोग, उदावर्तिनी उदावर्तिनी उदावर्तिनी, ज्ञेया अशुची जाने ॥ २६ ॥

26. But, immediately after the whole menstrual blood is discharged, she feels great relief. Owing to the

reverse movement of the menstrual flow, the condition is known by learned physicians as Udavartini (Dysmenorrhea).

कणिन्या योनिव्यापत्तेर्लक्षणम्—

अकाले बाह्यमात्राया गर्भेण पिहितोऽनिलः ।

कर्णिकां जनयेद्योनौ श्लेष्मरक्तेन मूर्च्छितः ॥२७॥

रक्तमार्गावरोधिन्या सा तथा कर्णिनी मता ।

अकाले प्रसव समय पहले प्रसव समयके पहले, बाह्यमात्रायाः प्रवाहो करनारी श्रीश्रीने प्रवाहण करनेवाली स्त्रीका, गर्भेण गर्भवे गर्भसे, पिहितः रोक्ये रूका हुआ, अनिलः वायु वायु, श्लेष्मरक्तेन कश्च अने रक्त साथे कफ और रक्तके साथ, मूर्च्छितः मणीने सिलकर, योनौ तेनी येनिमां उसकी योनिमें, कर्णिका कर्णिका कर्णिकाको, जनयेत् उत्पन्न करे छे उत्पन्न करता है, रक्तमार्ग-आर्तवना मार्गने आर्तवके मार्गका, अवरोधिन्या अवरोध करनारी अवरोध करनेवाली, तथा ते कर्णिकाभी उस कर्णिकासे, सा ते योनिव्यापत्ति वह योनिव्यापत्ति, कर्णिनी कर्णिनी कर्णिनी, मता कहवाती छे कहाती है ॥ २७ ॥

27-27½. If the gravida strains prematurely to expel the fetus, the vata gets obstructed by the fetus and thus gets provoked; being combined with the kapha and blood, it causes a tumefaction of the shape of the ear in the gynecic region. This causes obstruction to the passage of blood. It is called Kaniini (Endocervicitis.)

पुत्रव्या योनिव्यापत्तेर्लक्षणम्—

रौक्ष्याद्वायुर्यदा गर्भं जातं जातं विनाशयेत् ॥२८॥

दुष्टशोणितजं नार्याः पुत्रघ्नी नाम सा मता ।

२५. उदावर्त-उदावर्त (व.)

२६. आर्तवे सा-आर्तवे वा (व.)

२७. कण...मता-तथा कर्णिकाऽनिलता । सा योनिः सर्व-  
मिषया नामकः कर्णिनी मता ॥ (व.)



ચદા જેમાં જિવમેં, રૌક્ષ્યાત્ રક્ષતાથી કેપેલે  
રુક્ષતાસે કુપેત હુઆ, વાયુઃ વાયુ વાયુ, નાર્યાઃ સ્ત્રીના  
બીકે, દુષ્ટશોણિતજન્મ દુષ્ટ શોણિતજન્મ દુષ્ટશોણિતજન્મ,  
ગર્ભમ્ ગર્ભને ગર્ભકો, જાતમ્ જાતમ્ વારંવાર જન્મ્યા  
પછી વાર વાર જન્મકે વાદ, વિનાશકેવ નષ્ટ કરે છે  
નષ્ટ કરતા હૈ, સા તે યોનિવ્યાપતિ વહ યોનિવ્યાપતિ,  
પુત્રઘ્ની નામ પુત્રઘ્ની પુત્રઘ્ની, મતા કહેવાય છે કહાતી  
હૈ ॥ ૨૮૩ ॥

28-183. The condition where the vata,  
by its quality of dryness, destroys each  
and every conception produced from  
the vitiated germ, is known by the  
name of Putraghni (abortive tendency).

અન્તર્મુખ્યા યોનિવ્યાપતેર્લક્ષણમ્—

વ્યવાયમતિતૃપ્તાયા મજન્ત્યાસ્ત્વજ્જપીઢિતઃ ॥૨૯॥  
વાયુમિથ્યાસ્થિતાઙ્ગાયા યોનિચોતસિ સંસ્થિતઃ ।  
વક્રયત્યાનનં યોન્યાઃ સાડસ્થિમાંસાનિલાર્તિભિઃ ૩૦  
મૃશાર્તિમૈથુનાશકા યોનિરન્તર્મુખી મતા ।

અતિતૃપ્તાયાઃ પેટ ભરીને ભોજન કરી મર પેટ  
મોજન કરકે, મિથ્યાસ્થિતાઙ્ગાયાઃ શરીરને વિપમ રાખી  
દેહકો અનુચિત સ્થિતિમેં રાખકે, વ્યવાયમ્ મૈથુન મૈથુન,  
મજન્ત્યાઃ સેવન કરનારી સ્ત્રીને સેવન કરનેવાલી  
જીકા, જ્જપીઢિતઃ ભોજનથી દુઃખાયેલો મોજનસે દવા  
હુઆ, વાયુઃ વાયુ વાયુ, યોનિચોતસિ યોનિમાર્ગમાં  
યોનિમાર્ગમેં, સંસ્થિતઃ સ્થિત થઈને સ્થિત હોકર, યોન્યાઃ  
યોનિના યોનિકે, આનનમ્ મુખને મુલકે, વક્રયતિ વાકું  
કરી દે છે ટેકા કર દેતા હૈ, સા યોનિઃ એ યોનિ વહ  
યોનિ, અસ્થિ-હાડકાં હડ્ડી, માંસ-અને માંસમાં બૌર  
માસમેં, અનિલાર્તિભિઃ વાયુની પીડાથી વાયુની પીડાસે,  
મૃશાર્તિઃ અત્યન્ત પીડાવાથી થઈ અત્યન્ત પીડાયુક  
હોકર, મૈથુનાશકા મૈથુનમાં અસકત થાય છે મૈથુનમેં  
અશક હોતી હૈ, અન્તર્મુખી તે યોનિવ્યાપતિ અન્ત-  
ર્મુખી વહ યોનિવ્યાપતિ અન્તર્મુખી, મતા કહેવાય છે  
કહાતી હૈ ॥ ૨૯-૩૦ ॥

29-303. The vata, located in the  
uterine passage of a woman who has  
sexual congress just after a surfeit  
meal and who has assumed injurious  
postures during sexual congress, gets  
provoked and distorts the mouth of  
the uterus. The woman gets greatly  
afflicted with pain in the bone and  
flesh, and due to excessive pain, beco-  
mes incapable of sexual congress. This  
condition is called 'Antarmukhi'  
(inversion of uterus).

સૂચીમુખ્યા યોનિવ્યાપતેર્લક્ષણમ્—

ગર્ભસ્થાયાઃ સ્ત્રિયા રૌક્ષ્યાદ્વાયુર્યોનિ પ્રદૂષયન્ ॥૩૧॥  
માતૃદોષાદણુદ્વારાં કુર્યાત્ સૂચીમુખી તુ સા ।

માતૃદોષાત્ માતાના દોષથી માતૃદોષસે, વાયુઃ  
કેપેલે વાયુ કુપેત હુઆ વાયુ, રૌક્ષ્યાત્ પેતાની  
રક્ષતાથી અપતી રુક્ષતાસે, ગર્ભસ્થાયાઃ ગર્ભસ્થિત  
ગર્ભસ્થિત, સ્ત્રિયાઃ સ્ત્રીની બીકે, યોનિમ્ યોનિને યોનિકો,  
પ્રદૂષયન્ દૂષિત કરીને દૂષિતકરકે, અણુદ્વારામ્ સૂક્ષ્મ  
છિદ્રવાળી સૂક્ષ્મ છિદ્રયુક, કુર્યાત્ કરી દે છે કર દેતા  
હૈ, સા તુ તે યોનિવ્યાપતિ વહ યોનિવ્યાપતિ, સૂચી-  
મુખી સૂચીમુખી કહેવાય છે સૂચીમુખી કહાતી હૈ ॥ ૩૧ ॥

31. During the fetal life of a  
woman, if owing to the faulty behav-  
iour of the mother, the morbid vata  
by its dryness vitiates the gynecic  
organs of the embryo, there may  
occur stenosis of the gynecic passages.  
This condition is called 'Suchimukhi'  
(Colpostenosis).

વ્યવાયકાલે રુક્ષન્ત્યા વેગાન્ પ્રકુપિતોડનિલઃ ૩૨  
કુર્યાદિષ્ઠસૂચીમુખી શોભં યોનિમુખસ્વ ના

અવ્યયકાલે મૈથુન સમયે મૈથુનકે સમય, વેગાન્ વેગેને વેગોંકો, રુન્ધ્રસ્થાઃ રોકનારી સ્ત્રીને રોકનેવાલી સ્ત્રીકા, પ્રકુપિતઃ ક્રોધેલો કુપિત હુઆ, અનિલઃ વાયુ વાયુ, વિષ્મૂત્રસક્તઃ ઝાડા પેશાબની અટકાયત દસ્ત ઓર પેશાબકી રુકાવટ, આર્તિમ્ પીડા પીઢા, યોનિમુલસ્ય ચ તથા યોનિમુખને તથા યોનિમુલકે, શોષમ્ શેષ શોષકો, કુર્યાત્ કરે છે, તે યોનિવ્યાપતિ શુષ્કા કહેવાય છે ઉત્પન્ન કરતા હૈ, વહ યોનિવ્યાપતિ શુષ્કા કહાતી હૈ ॥૩૨૩॥

32-32½. The vata, provoked by suppression of the natural urges during the time of sexual congress, causes pain, retention of feces and urine, and dryness of the uterus. This condition is called Colpoxerosis.

વામિન્યા યોનિવ્યાપતેર્લક્ષણમ્—

ષડ્દિવાત્ સતરાત્રાદ્વા શુક્રં ગર્ભાશયં ગતમ્ ॥૩૩॥  
સરુજં નીરુજં વાડપિ યા સ્ત્રવેત્ સા તુ વામિની ।

યા જેમાં જિસમેં, ગર્ભાશયગતમ્ ગર્ભાશયમાં સ્થિત થયેલા ગર્ભાશયમે સ્થિત હુઆ, શુક્રમ્ શુક્ર શુક્ર, ષડ્દિવાત્ ૭ દિવસ પછી છઃ દિનકે બાદ, સતરાત્રાત્ વા અથવા તેા સાત રાત્રિ પછી અથવા સાત રાત્રિકે બાદ, સરુજમ્ પીડાસહિત પીઢાસહિત, નીરુજમ્ વા અપિ અથવા તેા પીડારહિત અથવા તેા બિના પીઢાકે, સ્ત્રવેત્ સ્ત્રવે છે સ્રવતા હૈ, સા તુ તે યોનિવ્યાપતિ વહ યોનિવ્યાપતિ, વામિની વામિની કહેવાય છે વામિની કહાતી હૈ ॥ ૩૩૩ ॥

33-33½. The condition, where the semen which has been deposited six or seven days previously in the genital passages is thrown out accompanied with or without pain, is called Vamini (Profluvium Seminis).

વળ્લા યોનિવ્યાપતેર્લક્ષણમ્—

બીજદોષાત્ ગર્ભસ્થમારુતોપદ્વતાશયા ॥૩૪॥  
નૃદ્વેષિણી ચૈવ વળ્લી સ્વાદનુપ્રસાદા ।

બીજદોષાત્ જેમાં બીજદોષથી જિસમેં બીજ-દોષસે, ગર્ભસ્થમારુત- ગર્ભમાં રહેલા વાયુથી ગર્ભસ્થિત વાયુસે, રુપદ્વતાશયા નષ્ટ ગર્ભાશયવાળી વિહત ગર્ભાશય-વાલી, નૃદ્વેષિણી પુરુષને દ્રેષ કરનારી પુરુષકા દ્રેષ કરનેવાલી, અસ્તની ચૈવ અને સ્તન વગરની સ્ત્રી ઓર સ્તનરહિત સ્ત્રી, સ્વાત ઉત્પન્ન થાય છે ઉત્પન્ન થોતી હૈ, વળ્લી તે યોનિવ્યાપતિ પંઢી વહ યોનિવ્યાપતિ વળ્લી, સ્વાત કહેવાય છે કહાતી હૈ ॥ ૩૪૩ ॥

34 34½ In a condition where the development of gynecic organs is disordered by the vata located in the uterus, the germinal morbidity produces a woman who has an aversion for man and who has no breasts. This is called gynandroid condition and is incurable.

મહાયોન્યા યોનિવ્યાપતેર્લક્ષણમ્—

વિષમં દુઃસ્વશય્યાયાં મૈથુનાત્ કુપિતોઽનિલઃ ॥૩૫॥  
ગર્ભાશયસ્ય યોન્યાશ્ચ મુલં વિષ્મમ્ભયેત્ સ્ત્રિયાઃ ।

દુઃસ્વશય્યાયામ્ દુઃખકારક શય્યામાં દુઃસ્વારક શય્યામેં, વિષમમ્ વિષમ વિષમ, મૈથુનાત્ મૈથુનથી મૈથુ-નસે, કુપિતઃ ક્રોધેલો કુપિત હુઆ, અનિલઃ વાયુ વાયુ, સ્ત્રિયાઃ સ્ત્રીના સ્ત્રીકે, ગર્ભાશયસ્ય ગર્ભાશય ગર્ભાશય, યોન્યાઃ ચ અને યોનિના ઓર યોનિકે, મુલમ્ મુખને મુલકો, વિષ્મમ્ભયેત્ વિસ્તૃત કરી દે છે વિસ્તૃત કર દેતા હૈ ॥૩૫૩॥

35-35½. The vata, being provoked by injurious postures in sexual congress or by uncomfortable beds, will dilate the orifice of the vagina and of the uterus of the woman.

અર્ધવૃત્તમુલ્લી સાર્તી રુક્ષફેનાસ્તવાહિની ॥૩૬॥  
માંસોસ્તજ્ઞા મહાયોનિઃ પર્વવંશજાશ્લિની ।

૩૬. વિષમ-વિષમાત્ (૩)

૩૬. સાર્તી રુક્ષફેનાસ્તવાહિની-સાર્તિઃ સ્વફેનાર્ધવવાહિની

(ત. ચ. વ. ક.)

नसंवृतमुक्ती न पुनः। मुभवाणी जो खुले मुँहवाणी,  
सातिः पीडायुक्त पीडायुक्त रुक्षः रक्षः रक्षः केन-  
शीलवाणी ज्ञागदार, अन्न-आर्तने आर्तवको, बाहिनी  
पडेनारी बहनेवाली, पर्व-पर्व पर्वो, वक्ष्णः अने  
वक्ष्णुमा और वक्ष्णमें, शूलिनी शूल उपभवनारी  
शूल कनेवाली, मांसोत्सन्ना तथा शीला उभयेवा  
मांसवाणी हेतु अ तथा उभय हुए मांसवाली होती है,  
महायोनिः ते येनिव्यापत्ति मद्योनि उदेवाय अ वद  
योनिव्यापत्ति महायोनि कहानी है ॥ ३६३ ॥

36-36½. It will cause the condition of  
dilatation of the external orifice, pain,  
and dry, frothy and sanguinous discha-  
rge. There appears a protuberance of  
flesh and causes pain in the joints  
and the groin. This is the condition  
of 'Mahayoni' (Prolapse of the Uterus).

व्यापन्नयोनेदरद्रवाः :-

इत्येतैर्लक्षणैः प्रोक्ता त्रिंशतिर्योनिजा गदाः ॥३७॥  
न शुक्रं धारयत्येभिर्दोषैर्योनिरुपद्रुता ।

तस्माद्गर्भं न गृह्णाति स्त्री गच्छत्यामयान् बहून् ३८  
गुल्मार्शःप्रदरादींश्च वाताद्यैश्चातिपीडनम् ।

इति आ प्रभाषे इस प्रकार, एतैः आ इन, लक्षणैः  
लक्षणैः। लक्षणोंसे, योनिजाः योनिमा यता योनिमें  
होनेवाले, त्रिंशतिः तीस बीस, गदाः ३७। रोग, प्रोक्ताः  
कहा अ कहे हैं, एभिः दोषैः अ दोषांशु इन दोषोंसे,  
उपद्रुता पीडाती आक्रान्त, योनिः योनि योनि, शुक्रम्  
शुक्रने शुक्रके, न धारयति धारण करती नहीं धारण  
नहीं कर सकती, तस्मात् तेषां इस लिए, स्त्री स्त्री स्त्री,  
गर्भम् गर्भने गर्भको, न गृह्णाति गृह्ण करती नहीं  
नहीं प्रवृत्त कर सकती, गुल्म- अने शुभ्र और गुल्म,  
अर्शः- ३८। अर्श, प्रदरादीन् प्रदर नजरे प्रदर आदि,  
बहून् भूषा बहुतसे, आमयान् रोगोंने रोगोंको, गच्छति  
प्राप्त आया अ प्राप्त होती है, वाताद्यैः च अने वातादि  
दोषांशु और वातादि दोषोंसे, अतिपीडनम् अत्यन्त  
पीडित आया अ अत्यन्त पीडित होती है ॥ ३७-३८ ॥

37-38½. Thus have been described  
the signs and symptoms of the twenty  
disorders affecting the gynecic organs.  
The gynecic organs, which are affected  
by these morbid conditions, do not  
retain the semen. The woman there-  
fore does not attain conception and  
becomes liable to many diseases like  
Gulma, piles, leucorrhoea and similar  
other conditions and gets greatly  
afflicted with the discordance of vata  
and other humors.

योनिव्यापत्तु दोषाधिक्यनिरूपणम्—

आसां षोडश यास्वन्त्या आद्ये द्वे पित्तदोषजे ३९  
परिप्लुता वामिनी च वानपित्तात्मिके मते ।  
कर्णिन्युपप्लुते वातकफाच्छेषान्तु वातजाः ॥४०॥  
देहं वातादयस्तासां खल्लिङ्गः पीडयन्ति हि ।

याः न जो, अन्त्याः अन्त्या आखिरकी, षोडश  
सोण अ सेलह हैं, आसां अमांसी इनमेंसे, आद्ये  
द्वे पहेली अ प्रथम दो, पित्तदोषजे पित्तदोष अ  
पित्तदोषज हैं, परिप्लुता परिप्लुता परिप्लुता, वामिनी च  
अने वामिनीने और वामिनी, वातपित्तात्मिके वात-  
पित्तात्मक वातपित्तात्मक, मते मानेयी अ मानी गई हैं,  
कर्णिनी कर्णिनी कर्णिनी, उपप्लुते अने उपप्लुता  
और उपप्लुता, वातकफात् वातकफात् अ वातकफ-  
जन्य हैं, दोषाः तु अने आधीनी और दोष, वातजाः  
वातजन्य अ वातजन्य हैं, वातादयः वातादि दोषे वातादि  
दोष, तासाम् अमांसी उनके, देहम् देहने देहको, खैः  
खिङ्गैः पित्तपेतानां लक्षणैः अपने अपने लक्षणोंसे,  
पीडयन्ति हि पीडित करे अ पीडित करते हैं ॥ ३९-४० ॥

39-40½. Out of the last sixteen  
disorders, the first two are due to  
vitiation of pitta; acute vaginitis and  
profluvium semenis are considered to  
be due to vata-cum-pitta. Leucorrhoea  
and endocervicitis are due to vata-  
cum-kapha. The remaining are due

to vata. The vata and the other morbid humors afflict the body with their characteristic symptoms.

योनिरोगाणां चिकित्सासूत्रम्—

श्लेहनस्वेदवस्यादि वातजास्वनिलापहम् ॥४१॥  
कारयेद्रक्तपित्तघ्नं शीतं पित्तकृतासु च ।  
श्लेष्मजासु च रूक्षोष्णं कर्म कुर्याद्विचक्षणः ॥४२॥  
सन्निपाते विमिश्रं तु संसृष्टासु च कारयेत् ।

विचक्षणः विद्वान् वैने विद्वान् नैस वातजासु वातजं योनिरोगोर्भा वातजन्य योनिरोगोर्मे, अनिलापहम् वातनाशकं वातनाशक, श्लेहन- स्नेहन स्नेहन, स्वेद- स्वेदन स्वेदन, बस्ति-आदि अस्ति वजरे चिकित्सा बस्ति आदि चिकित्सा, पित्तकृतासु च तथा पित्तजं योनिरोगोर्भा तथा पित्तजं योनिरोगोर्मे, रक्तपित्तघ्नम् रक्तपित्तनाशक, शीतम् शीत चिकित्सा शीत चिकित्सा, कारयेत् करवी करे, श्लेष्मजासु अने ४३२ योनिरोगोर्भा और कफजन्य योनिरोगोर्मे, रूक्षोष्णम् ३३३ रूक्षोष्ण, कर्म चिकित्सा चिकित्सा, कुर्यात् करवी करे, सन्निपाते तेभ्यः सन्निपातजन्य एवं सन्निपातजन्य, संसृष्टासु च तथा ये दोषोऽथी उत्पन्न भवेत्ता योनिरोगोर्भा तथा दो दोषसे उत्पन्न हुए योनिरोगोर्मे, विमिश्रम् मिश्र चिकित्सा मिश्र चिकित्सा, कारयेत् करवी करे ॥ ४१-४२ ॥

41-42½. In gynecic disorders born of vata, oleation, sudation, enemata etc., curative of vata should be administered; and the condition born of pitta should be treated with medications that are cooling and curative of hemothermia. In condition born of morbid kapha, dry and hot measures should be administered by the learned physician. In conditions of bi and tri-discordances of humors, medications

suitably combined should be administered.

स्निग्धस्निग्धां तथा योनिं दुःस्थितां स्थापयेत्पुनः ४३  
पाणिना नामयेज्जिह्वां संवृतां वर्धयेत् पुनः ।  
प्रवेशयेन्निःसृतां च विवृतां परिवर्तयेत् ॥४४॥  
योनिः स्थानापवृत्ता हि शल्यभूता मता स्त्रियाः ।

दुःस्थिताश्च दुःस्थित दुःस्थित, योनिश्च योनिने योनिर्को, स्निग्धस्निग्धाम् स्नेहन तथा स्वेदन करी स्निग्ध तथा स्निग्ध करके, पुनः इरीथी फिरसे, तथा स्थापयेत् प्रवृत्त अवस्थाभां स्थापित करवी प्रकृत अवस्थामें स्थापित करे, जिह्वायां वांकी योनिने देदी योनिर्को, पाणिना हाथथी हाथसे, नामयेत् नभाववी नभाये, संवृताम् पुनः अने अंध मुभवाणीने और संकुचित मुखवालीको, वर्धयेत् पढोणा मुभवाणी करवी चौड़े मुखवाली करे, निःसृताम् च अने अहार नीकलेदीने और बाहर निकली हुई को, प्रवेशयेत् अंदर दाखल करवी सीतर दाखल करे, विवृताम् मोटा मुभवाणीने बड़े मुखवालीको, परिवर्तयेत् संकुचित मुभवाणी करवी संकुचित मुखवाली करे, हि डेभडे क्योंकि, स्थानापवृत्ता स्थानथी हठी गथेदी स्थानसे हटी हुई, योनिः योनि योनि, स्त्रियाः स्त्रीने भाटे जीके लिए, शल्यभूता शल्यरूप शल्यरूप, मता मानेदी छे मानी गई है ॥ ४३-४४ ॥

43-44½. In conditions of displacement of uterus, the part should be given oleation and sudation procedures and then should be replaced in its proper position. If it be curled or distorted, it should be changed in its position by manipulation of the hand. If it is stenosed, it should be dilated. If it has slipped out of its normal position, it should be re-established in its position. If the orifice is unduly dilated, it should be constricted. If the uterus is prolapsed and completely

exposed, it should be considered and treated as a foreign body in the woman.

सर्वा व्यापन्नयोनिं तु कर्मभिर्वमनादिभिः ॥४५॥  
मृदुभिः पञ्चभिर्नारीं स्निग्धस्निग्धामुपाचरेत् ।

व्यापन्नयोनिम् येनिरोगिणी योनिरोगयुक्त, सर्वाम् सधणी सब, नारीम् श्रीश्रीने स्त्रियोको, स्निग्ध-स्निग्धाम् स्नेहन स्वेदन करावी स्नेहन स्वेदन कराके, मृदुभिः मृदु मृदु, वमनादिभिः वमनादि वमनादि, पञ्चभिः कर्मभिः पञ्चकर्मद्वारा पञ्चकर्मद्वारा, उपाचरेत् चिकित्सा करावी चिकित्सा करनी चाहिए ॥ ४५ ॥

45-45k. In all varieties of gynecic disorders, the patient should be treated with the pentad of purificatory procedures. emesis etc., in a mild degree after she has been first subjected to oleation and sudation therapies.

सर्वतः सुविशुद्धायाः शेषं कर्म विधीयते ॥४६॥

सर्वतः संपूर्णतया, सुविशुद्धायाः विशुद्ध भवेत् श्रीने विशुद्ध हुई श्रीको, शेषम् शेष शेष, कर्म कर्म कर्म, विधीयते करावनामा आवे छे करावाया जाता है ॥ ४६ ॥

46. When thoroughly cleansed by purification, the rest of the treatment is to be given to her.

वातिक्योनिरोगाणां चिकित्सा—

वातव्याधिहरं कर्म वातार्तानां सदा हितम् ।  
औदकानूपजैर्मांसैः क्षीरैः सतिलतण्डुलैः ॥४७॥  
सवातग्नौषधैर्नाडीकुम्भीस्वेदैरुपाचरेत् ।  
अक्तां लवणतैलेन साश्मपस्तरसङ्करैः ॥४८॥  
स्निग्धां कोष्णाम्बुसिकाङ्गीं वातग्नौषधैर्जयेत्सैः ।

वातार्तानाम् वायुधी पीजाली श्रीश्रीने वायुसे पीजित स्त्रियोको, वातव्याधिहरम् वातव्याधिहर वात-व्याधिनाशक, कर्म कर्म कर्म, सदा सदा सदा, हितम्

४८. अक्ता-युक्तम् (ब.)

हितकर छे हितकर है, लवणतैलेन सैधयुक्त तैल मैन्धानमकसे मिश्रित तैल, अक्ताम् अक्तामीने शरी श्रीने। उगाकर रोगी श्रीको, सतिलतण्डुलैः तैल तण्डुल तिल, तण्डुल, सवातग्नौषधैः अने वातग्न औषधाधी और वातग्न औषधोंसे, औदक-जलचर, आनूपजैः अने आनूप पशुश्रीना और आनूप पशुओंके, मांसैः मांस मांस, क्षीरैः अने दूधधी और दूधसे, साश्म-प्रस्तरसङ्करैः अने अश्मस्वेद, प्रस्तरस्वेद, सङ्करस्वेद और अश्मस्वेद प्रस्तरस्वेद, संकास्वेद, नाडी-नाडीस्वेद, नाडीस्वेद, कुम्भीस्वेदः कुम्भीस्वेदधी या कुम्भीस्वेदसे, उपाचरेत् उपचार करावे उपचार करे, स्निग्धाम् स्वेद आप्या आद स्वेदन करानेके बाद, कोष्णाम्बु-मुष्णाम्बु-जलधी सुखोष्ण जलसे, सिकाङ्गीम् अङ्गीने सीधी अङ्गीको सींचकर वातग्नः वातग्न वातग्न, रसैः मांसस्त्रोधी मांसस्त्रोंसे, मोजवेत् मोजन करावे मोजन कराना चाहिए ॥ ४७ ४८ ॥

47-48k. To those that are afflicted with morbid vata, the vata-curative medications are always beneficial. They should be given the diet of the flesh of aquatic and wet-land creatures along with milk, til and rice They should be subjected to kettle and pitcher bed sudation-procedures medicated with vata-curative drugs. And after anointing them with oil mixed with rock salt, they should be given stone-bed sudation and hot-bed sudation, mixed fomentation, then bathed in genially warm water and then given the diet of meat-juices medicated with vata-curative drugs.

वातिके योनिरोगे बलाघृतम्—

बलाघ्रोणद्वयकाये घृतनैलाढकं पचेत् ॥४९॥

स्थिरापयस्याजीवन्तीवीर्यभक्तजीवकैः ।

भावणीपिप्पलीमुद्गपीलुमाषाख्यपर्णिभिः ॥५०॥

४९. घृतनैलाढकं पचेत्-घृतनैलाढकद्वयम् (क प. फ.)

शर्कराक्षीरकाकोलीकाकनासाभिरेव च ।  
पिष्टैश्चतुर्गुणक्षीरे सिद्धं पेयं यथाबलम् ॥५१॥  
वातपित्तकृतान् रोगान् हत्वा गर्भं दधाति तत् ।

स्थिरा- शादपष्टुर् शालपर्णी, पयस्या- क्षीरविहारी  
क्षीरविहारी, जीवन्ती- शेडी जीवन्ती, वीरा- शतावरी  
शतावरी, ऋषभक- ऋषभक ऋषभक, जीवकैः ७५३  
जीवक, आवणी- गेरभुंड़ी मुंडी, पिप्पली- पीपर  
पिप्पली, मुद्ग- मुद्गपष्टुर् मुद्गपर्णी, पीलु- पीलुपष्टुर्  
पीलुपर्णी, माषाख्यपर्णिभिः माषपष्टुर् माषपर्णी, शर्करा-  
शर्करा शर्करा, क्षीरकाकोली- क्षीरकाकोली क्षीरकाकोली,  
काकनासाभिः च एव अने ऊकनासा और काकनासा,  
पिष्टैः अनेना ऊकथी इनके कल्कोसे, बलाद्रोणद्वय-  
काथे अनेना ये दोषु कथाथभा बलाके दो द्रोण काथमें,  
घृततैलाढकम् १ आढक वी तेल १ आढक वी तेल,  
चतुर्गुणक्षीरे आरगला दूधभा चौगुने दधमें, पचेत्  
पडावतुं पकावे, सिद्धम् सिद्ध थयेवा तेने सिद्ध हुए  
उनको, यथाबलम् अण अनुसार बलाजुसार, पेयम् पीवुं  
अधे पीना चाहिए, तत् ते वह वातपित्तकृतान्  
वातपित्तजन्य वातपित्तजन्य, रोगान् रोगोने रोगोंको,  
हत्वा हष्टुने नष्ट करके, गर्भम् गर्भने गर्भको, दधाति  
धारण कराने छे धारण करवाता है ॥ ४९-५१३ ॥

49-51½. Take 256 tolas made up of equal parts of ghee and oil, and cook in 2048 tolas of the decoction of heart-leaved sida and four times the quantity of milk, with the paste of ticktrefoil, milky yam, cork swallow wort, climbing asparagus, Rishabhaka, Jivaka, east indian globe thistle, long pepper, green gram, tooth-brush tree, wild black gram, sugar, Kshirakakoli and small stinking swallow wort. This should be given as potion in accordance with the patient's strength. This cures the disorders caused by vata and pitta and induces conception.

वातिके योनिरोगे काश्मर्यादिधृतम्—

काश्मर्यात्रिफलाद्राक्षाकासमर्दपरूषकैः ॥५२॥

पुनर्नवाद्विरजनीकाकनासासहाचरैः ।

शतावरी गुडूच्याश्च प्रस्थमक्षसमैर्वृतात् ॥५३॥

साधितं योनिवातघ्नं गर्भदं परमं पिबेत् ।

काश्मर्य- शीवष्टुर्ना ६० गम्भारीके फल, त्रिफला-  
त्रिफला त्रिफला, द्राक्षा- द्राक्ष द्राक्ष, कासमर्द- ऊधुंदरो  
कसौदी, परूषकैः ऊधुसा फालसा, पुनर्नवा- साठेडी  
गदहपुरना, द्विरजनी- ६०६२, ६२०६०६२ हल्दी, दारु-  
हल्दी, काकनासा- ऊकनासा काकनासा, सहाचरैः ऊटा-  
शेणियो सहचर, शतावरी- शतावरी शतावरी, गुडूच्याः  
च अने गणैना और गिलोयके, अक्षसमैः ऊधुप्रभाषु  
ऊकथी कर्षप्रमाण कल्कोसे, साधितम् सिद्ध ऊरेल सिद्ध  
किया हुआ, घृताय प्रस्थम् अथ प्रस्थ वी एक प्रस्थ  
घृत, योनिवातघ्नये- निवातनाशक योनिवातनाशक, परमम्  
गर्भदम् अने अथ गर्भप्रद होवाथी और अथ गर्भप्रद  
होनेसे, पिबेत् पीवुं पीना चाहिए ॥५२-५३३॥

52-53½. Prepare a medicated ghee taking 64 tolas of ghee and adding the paste of one tola each of white teak, the three myrobalans, grapes, negro coffee, sweet falsah, hog's weed, turmeric and indian berberry, small stinking swallow wort, crested purple nail dye, climbing asparagus, and guduch. If taken as potion, this is a remedy for all gynecic disorders born of vata, and induces conception.

वातिके योनिरोगे पिप्पल्यादिप्रयोगः—

पिप्पलीकुञ्जिकाजाजीवृषकं सैन्धवं वचाम् ॥५४॥

यवक्षाराजमोदे च शर्करां चित्रकं तथा ।

५४. गुग्गुलु-पचेत् (क.)

५४. साधितं योनिवातघ्नं गर्भदं परमं पिबेत्-सिद्धं पिबेदातयोनि.

दोषघ्नं गर्भदं परम् (ब.)

५४. कुञ्जिका-किंशुका (ब.)



पिप्पली सर्पिषि भृष्टानि पाययेत् प्रसन्नया ॥५५॥  
योनिपार्श्वार्तिहृद्रोगगुल्माशौचिनिवृत्तये ।

पिप्पली- पीपर पिप्पली, कुञ्जिका- कौ० ७ ७३  
काला जीरा, अजाजी- ७३ जीरा, वृषकम् अरुंडी  
अह्वा, सैन्धवम् सैन्धव सेवानमक, वचाम् वच, ववक्षार- ववक्षार ववक्षार, अजमोदे अजमो अजवायन,  
शर्कराम् साकर शर्करा, तथा तथा तथा, चित्रकम्  
चित्रकमे चित्रकको, पिष्ट्वा पीसीने पीसकर, सर्पिषि  
धीमां वृत्तमें, भृष्टानि शेकीने भूनकर, योनि- योनिस्थ  
योनिशूल, पार्श्वार्ति- पार्श्वस्थ पार्श्वशूल, हृद्रोग- हृद्रोग  
हृद्रोग, गुल्म- गुल्म गुल्म, अर्शः- अर्शः ६२५५ नी और  
बवासीरकी, विनिवृत्तये निवृत्ति भाटे निवृत्तिके लिए,  
प्रसन्नया प्रसन्नानी साथे प्रसन्नके साथ, पाययेत् पाय  
पिलावे ॥ ५४-५५३ ॥

54-55½. Rubbing into paste long pepper, black cumin, vasaka, rock salt, sweet flag, barley-alkali, celery seeds, sugar and white flowered leadwort, and mixing it with Prasanna wine, season with ghee, and administer it as potion to the patient. This is curative of pain in the gynecic organs and side of the chest, in cardiac disorders, gulma and piles.

वातिके योनिरोगे प्रयोगः—

वृषकं मातुलुङ्गस्य मूलानि मद्यन्तिकाम् ॥५६॥  
पिबेत् सलवणैर्मधैः पिप्पलीकुञ्जिके तथा ।

वृषकम् अरुंडी अह्वा, मातुलुङ्गस्य पीलेरानां  
विजोरेकी, मूलानि भूण जड़ें, मद्यन्तिकाम् मेदी  
महेदी, तथा पिप्पली- पीपर पिप्पली, कुञ्जिके कौ० ७

५५. सर्पिषि भृष्टानि पाययेत् प्रसन्नया—प्रसन्नयाऽऽनोक्तं वृत्त-  
भृष्टानि पाययेत् (त. व. द. व.)

” ” —प्रसन्नयाऽऽनोक्तं वृत्तभृष्टानि पाययेत्  
(क.)

५६. पिप्पलीकुञ्जिके—पिप्पली कुञ्जिके (क.)

७३ काला जीरा, सलवणैः से-सेने सैन्धव इनको  
सेवानमक, मधैः अर्शः भवनी साथे और मधके साथ,  
पिबेत् पीपा पीवे ॥ ५६३ ॥

56-56½. Or, give a potion prepared of vasaka, pomelo roots, henna, long pepper and black cumin seeds mixed with wine and a little of salt:

रास्नाश्चदंष्ट्रावृषकैः पिबेच्छूले शृतं पयः ॥५७॥  
गुडूचीत्रिफलादन्तीकाथैश्च परिपेचयेत् ।

शूले शूणभां शूलमें, रास्ना- रास्ना रास्ना, चदंष्ट्रा-  
चदंष्ट्रा गोखरू, वृषकैः अर्शः अरुंडीभी और अह्वासे,  
शृतम् पकेवेधुं पकावा हुआ, पयः दूध दूध, पिबेत्  
पीपा पीवे, गुडूची- गुणो गिलेय, त्रिफला- त्रिफला  
त्रिफला, दन्तीकाथैः च अर्शः इतीना डाढाथी और  
दन्तीके काथोंसे, परिपेचयेत् परिपेक करवे परिपेक  
करना चाहिए ॥ ५७३ ॥

57-57½. In pain in the gynecic organs, the patient, should drink milk boiled with indian groundsel, small caltrops and vasaka and the part should be affused with the decoction of guduch, the three myrobalans and red physic nut.

सैन्धवं तगरं कुष्ठं बृहती देवदारु च ॥५८॥  
समांशैः साधितं कल्कैस्तैलं धार्यं रुजापहम् ।

सैन्धवम् सैन्धव सेवानमक, तगरम् तगर, कुष्ठम्  
कुष्ठ कूठ, बृहती जेभी बेरी गंधी बड़ी कटेरी,  
देवदारु च अर्शः देवदारु और देवदारु, समांशैः से-सेने  
समभाग इनके समभाग, कल्कैः कल्कैः कल्कैः  
साधितम् सिद्ध करेधुं सिद्ध किया हुआ, रुजापहम्  
पीलेरानां पीलेरानां, तैलम् तैल तैल, धार्यं  
धार्य करेधुं धारण करना चाहिए ॥ ५८३ ॥

58-58½. The oil prepared with the paste of equal parts of rock salt, indian valerian, costus, yellow-barried night-



shade and deodar should be kept in the vagina. It is curative of the pain.

गुडूचीमालतीरास्नाबलामधुकचित्रकैः ॥५९॥

निदिग्धिकादेवदारुयूथिकाभिश्च कार्षिकैः ।

तैलप्रस्थं गवां मूत्रे क्षीरे च द्विगुणे पचेत् ॥६०॥

कार्षिकैः कर्षप्रभाम् कर्षप्रमाण, गुडूची- गजैः मिलेय, मालती- भाक्षती मालती, रास्ना रास्ना रास्ना, बला- भला बला, मधुक- गेहीमध मुकहठी, चित्रकैः चित्रक चित्रक, निदिग्धिका- भेडी बोरीगल्ली छेटी कटेरी, देवदारु- देवदार देवदारु, यूथिकामिः अने लुधियी और जूहीसे, तैलप्रस्थश्च ऐक प्रस्थ तैल एक प्रस्थ तैल, गवां मूत्रे गौमूत्र गौमूत्र, द्विगुणे च क्षीरे अने भभाम् दूधभा और दुग्नेदूधमें, पचेत् पकावपुं पकावे ॥५९-६०॥

59-60. Prepare a medicated oil by taking 64 tolas of til oil and double the quantity of each of cow's urine and milk, with the paste of one tola each of guduch, arabian jasmine, indian groundsel, heart-leaved sida, liquorice, white flowered leadwort, indian night-shade, deodar and yellow jasmine.

वातिके योनिरोगे कतिपययोगाः —

वातातार्तायाः पितुं दद्याद्योनौ च प्रणयेत्ततः ।

वातातार्तानां च योनीनां सेकाभ्यङ्गपितुक्रियाः ॥६१॥

(उष्णाः स्निग्धाः प्रकर्तव्यास्तैलानि स्नेहनानि च ।)

वातातार्तायाः वायुपीडित स्त्रीन् वायुपीडित स्त्रीकी, योनौ योनिभां योनिमें, पितुम् पितु पितु, दद्याद् धारश्च कडावपुं धारण करावे, ततः च अने पछी और पीछे प्रणयेत् उत्तरवर्ति देवी उत्तरवर्ति देवे, वातातार्तानाम् वायुपीडित वायुपीडित, योनीनाम् योनिओनां योनियोंको, उष्णाः स्निग्धाः उष्ण अने स्निग्ध उष्ण

और स्निग्ध, सेक- परिषेक परिवेक, अभ्यङ्ग- अभ्यङ्ग अभ्यङ्ग, पितुक्रियाः अने पितुक्रिया और पितुक्रिया, प्रकर्तव्याः कर्तव्यां ओधये करनी चाहिए, स्नेहनानि तैलानि च अने स्नेहन भाटे तैलोना पक्ष उपयोग करवे और स्नेहनके लिए तैलका प्रयोग करना चाहिए ॥ ६१३ ॥

61-61½. The physician should insert a tampon soaked in this oil into the vagina afflicted with morbid vata. It should be followed by a vaginal douche. The affusions, inunctions and tampons for the vata-afflicted gynecic organs ought to be done (with warm and unctuous articles. For oleation, oils should be made use of).

हिंक्षाकल्कं तु वातातार्ता कोष्णमभ्यङ्ग्य धारयेत् ।

पञ्चवल्कस्य पित्तार्ता श्यामादीनां कफातुरा ॥६२॥

वातातार्ता वायुपीडित स्त्रीं वायुपीडित स्त्रीकी, अभ्यङ्ग्य तैल योपरीने तैल लगाकर, कोष्णम् शुष्णम् सुखोष्ण, हिंक्षाकल्कम् बोरीगल्लीना उदकेने कटेरीके कल्कको, धारयेत् धारश्च करवे धारण करे, पित्तार्ता पित्त रोगवाली स्त्रीं पित्तजन्य रोगवाली स्त्री, पञ्चवल्कस्य पञ्चवल्कसना उदकेने पञ्चवल्कसके कल्कको, कफातुरा अने कङ्कन्य योनिरोगवाली स्त्रीं और कफ रोगयुक्त स्त्री, श्यामादीनाम् श्यामादीनां उदकेने धारश्च करवे श्यामादिके कल्कको धारण करे ॥६२॥

62. The patient with the vata-afflicted vagina should keep in her vagina the paste of yellow-berried night-shade after anointing the part with luke-warm oil; the patient afflicted with pitta should apply the paste of the pentad of barks, and the one afflicted with kapha should use the paste of the black turpeth group of drugs.

पैतिकयोनिरोगाणां चिकित्सा -

पित्तलानां तु योनीनां सेकाभ्यङ्गपित्तक्रियाः ।  
शीताः पित्तहराः कार्याः स्नेहनार्थं घृतानि च ॥६३॥  
(पित्तघ्नौषधसिद्धानि कार्याणि भिषजा तथा ।)

पित्तलानाम् पैतिक पित्तप्रधान, योनीनाम् योनि-  
ओनी योनियोकी, सेक- परिषेक परिषेक, अभ्यङ्ग-  
अभ्यङ्ग अभ्यङ्ग, पित्तक्रियाः अने पित्तक्रियाओ और  
पित्तक्रियाएँ, शीताः शीतल शीतल, पित्तहराः अने  
पित्तहर और पित्तहर कार्याः करने के लिये करने  
चाहिए, तथा तथा तथा, भिषजा वेधे वैद्य, स्नेहनार्थम्  
स्नेहन भाटे स्नेहनके लिए, घृतानि घी घृतोक्त, पित्तघ्न-  
पित्तघ्न पित्तघ्न, औषध- औषधोष्ठी औषधोष्ठी, सिद्धानि  
सिद्ध सिद्ध, कार्याणि करने के लिये करे ॥ ६३३ ॥

63-63½. Affusions, inunctions and  
tampons, for the pitta-afflicted gynecic  
organs, should be done with cool and  
pitta-curative articles; and ghee should  
be used for oleation. (All the remedies,  
prepared with drugs curative of pitta  
should be used by the physician).

पैतिके योनिरोगे शतावरीघृतम्—

शतावरीमूलतुलाश्चतस्रः संप्रीडयेत् ॥६४॥  
रसेन क्षीरतुल्येन पचेत्तेन घृताढकम् ।  
जीवनीयैः शतावर्या मृद्वीकाभिः परुषकैः ॥६५॥  
पिष्टैः प्रियालैश्चाक्षंशं द्विषष्टिमधुकैर्भिषक् ।  
सिद्धे शीते च मधुनः पिप्पल्याश्च पलायकम् ॥६६॥  
सितादशपलोन्मिश्रास्त्रिधा पाणितलं ततः ।

शतावरीमूल- शतावरीनां मूल शतावरीके मूल,  
चतस्रः तुलाः आठ तुलाने चार तुलाको, संप्रीडयेत्  
आरी घेठे आरीने रस डाले। अच्छी प्रकार दबाकर  
रस निकाले, क्षीरतुल्येन अने दूधना समान भागवाला  
और दूधके समान भागवाले, तेन रसेन ते रसवडे  
रस रसे, भिषक् वेधे वैद्य, अक्षंशैः ऊर्ध्वप्रभास्य कर्ष-

प्रमाण. पिष्टैः पीसेवा पीसी हुई, जीवनीयैः अन्ननीय  
औषधैः जीवनीय औषध, शतावर्या शतावरी शतावर,  
मृद्वीकाभिः मृदु सुनके परुषकैः दृढसां कालसे, प्रियालैः  
आरीणी चित्तैः, द्विषष्टिमधुकैः तथा अने प्रकारना  
ज्योतिषधी तथा दोनों सुकदलीसे, घृताढकम् १ आठ  
धी १ आठक घी, पचेत् पकेने पकावे, सिद्धे सिद्ध  
सिद्ध, शीते च अने ठंडुं तथा पानी और शीतल होनेके  
बाद, मधुनः मधु शहद, पिप्पल्याः च अने पीपल  
और पिप्पली, पलायकम् आठ पल आठ पल, सिवा-  
तेमज साकर एवं शर्करा, दशपल- दश पल दस पल,  
उन्मिश्राश्च ततः मेशपी तेमांसी मिलाकर उपमेन,  
पाणितलम् ऊर्ध्वप्रभास्य कर्षप्रमाण, लिङ्गात् आटवुं चाटे  
॥६४-६६३॥

64-66½. Take the expressed juice  
of 1600 tolas of roots of climbing  
asparagus. In this juice adding the  
same quantity of milk, the physician  
should prepare 256 tolas of ghee with  
the paste of one tola each of drugs  
of the life promoter group. climbing  
asparagus grapes, sweet falsah, bucha-  
nan's mango, and the two varieties of  
liquorice. When prepared and cooled  
down, 32 tolas of honey and long  
pepper and 40 tolas of sugar should  
be added. A dose of one tola of this  
preparation should be taken as a linctus.

योन्यसृग्शुक्रदोषघ्नं वृष्यं पुंसवनं च तत् ॥६७॥  
क्षतं क्षयं रक्तपित्तं कालं भासं हलीमकम् ।  
कामलां वातरक्तं च वीसर्पं हृच्छिरोग्रहम् ॥६८॥  
उन्मादादत्यपसारान् वातपित्तात्मकाञ्जयेत् ।  
इति बृहच्छतावरीघृतम् ।

तत् ते घी यह घी, योनि- योनि योनि, असृग्-  
आर्तव आर्तव, शुक्र- अने शुक्रना और शुक्रके, दोषघ्नम्  
दोषघने नाश करनेवाला, वृष्यम्

६४. पीठैः प्रियालैश्चाक्षंशैः—प्रियालैश्चाक्षंशैः पिष्टैः

(क. क. घ. क.)

६५. उन्मादादत्यपसारान्—उन्मादादामसम्बोद्धान् (क.)

પ્રથમ વૃદ્ધ, પુસ્તનમ્ ચ અને પુત્રોપાદક છે और  
પુત્રોત્પાદક છે, સ્તનમ્ ઉરક્ષત્ ડરક્ષત, ક્ષયમ્ ક્ષય  
ક્ષય, રક્તપિત્તમ્ રક્તપિત્ત રક્તપિત્ત, કામમ્ ઉપરસ્ત  
સાંસી, શ્વાસમ્ શ્વાસ શ્વાસ, હલીમકમ્ હલીમક હલીમક,  
કામકામ્ કમળો કામલા, વાતરક્તમ્ ચ વાતરક્ત  
વાતરક્ત. વીવર્પમ્ (વૃષર્પ) ત્રિવર્પ, હૃત્- હૃદયરોગ  
હૃદયરોગ, શિરોમહમ્ શિરોરોગ શિરોરોગ, ઝન્માદ-  
ઉન્માદ ઝન્માદ, અસ્તિ- ઐથેની વૈવેની, અપસારાન્  
અપસાર અપસાર, વાતપિત્તાત્મકાન્ અને વાતપિત્ત-  
અત્મ રોગોને और વાતપિત્તાત્મક રોગોનો, જાહેર છે તે છે  
ચીતતા છે ॥૬૭-૬૮૩॥ इति आ. यह, बृहच्छतावरीधृतम्  
भृहच्छतावरीधृत છે बृहच्छतावरीधृत છે ।

67-68½. This is curative of affections  
of the gynecic organs, menstrual and  
seminal morbidity. and is virilific and  
inducive of male progeny. This cures  
also pectoral lesions cachexia, hemo-  
thermia, cough, dyspnea, halimaka-  
jaundice, rheumatic condition, acute  
spreading affection, spasticity in the  
pectoral region and head, insanity,  
malaise and epilepsy caused by vata-  
cum-pitta. Thus has been described the  
Major Climbing Asparagus Ghee.

પેતકે ઓતિગેગે સીવનીયધૃતમ્—

एवमेव क्षीरसर्पिर्जीवनीगोपसाधितम् ॥६९॥

गर्भदं पित्तलानां च योनीनां स्याद्भिर्गजितम् ।

જુવમ્ જુવ એ જ પ્રમાણે, હસી પ્રકાર, જીવનીય-  
અવધીય ઓપધીય જીવનીય ઓપધીય, ડપસાધિતમ્  
સિદ્ધ કરેલું સિદ્ધ રિયા દુધ, ક્ષીરસર્પિઃ દુધપ્રાપ્તી  
કરેલું થી ક્ષીરધૃત, ગર્ભદમ્ ગર્ભપ્રદ ગર્ભપ્રદ, પિત્તલા-  
નામ્ ચ અને પિત્તજન્ય और પિત્તજન્ય, યોનીનામ્  
શીનરોગોનું યોનિરોગો, ભિર્ગજિતમ્ ઓપધ ઓપધ,  
સ્યા છે છે ॥ ૬૯૩ ॥

69-69½. The ghee churned out of  
the milk medicated in the above

mentioned manner, with the life-pro-  
moter group of drugs, is inducive of  
conception and serves as medicament  
for the gynecic organs afflicted with  
pitta.

શ્લેષ્મિકયોનિરોગણાં ચિકિત્સા—

योन्यां श्लेष्मप्रदुष्टायां वर्तिः संशोधनी हिता ॥७०॥  
વારાહે વહુશઃ પિત્તે ભાવિતૈર્લક્ષકૈઃ કૃતા ।

શ્લેષ્મપ્રદુષ્ટાયામ્ કંકદુષ્ટ કંકદુષ્ટ, યોન્યાશ્ચ યોનિમાં  
યોનિમાં, વારાહે વરાહના વરાહકે, પિત્તે પિત્તમાં પિત્તમાં,  
વહુશઃ બહુશર વહુશ દફે, ભાવિતૈઃ ભાવિત કરેલા  
ભાવિત કિયે હુપ, લક્ષકૈઃ કપડાના ડુકડાથી કપડેકે  
ટુકડેકે, કૃતા બનાવેલી બનાઈ હુઈ, સંશોધની સંશોધન  
સંશોધન, વર્તિઃ વર્તિ વર્તિ, હિતા હિતકારક છે હિતકર  
છે ॥ ૭૦૩ ॥

70 70½ For the gynecic organs  
afflicted with kapha, the purificatory  
wick-bougie rolled out of a piece of  
cloth and heavily impregnated with  
hog's bile is recommended.

भावितं पयसाऽर्कस्य यवचूर्णं ससैन्धवम् ॥७१॥  
વર્તિઃ કૃતા મુહુર્ચાર્યા તતઃ સેચ્યા સુશામ્નુતા ।

બર્કસ્ય આકડાના આકડે, પયસા દૂધથી દૂધે,  
ભાવિતમ્ ભાવિત કરેલા ભાવિત કિયે હુપ, યવચૂર્ણમ્  
જવચૂર્ણની જોકે ચૂર્ણકી, સસૈન્ધવમ્ સૈન્ધવ સાથે  
સૈન્ધવરહિત, કૃતા બનાવેલી બનાઈ હુઈ, વર્તિઃ વાટ  
વર્તિકો, મુહુઃ વારંવાર વારંવાર, ચાર્યા ધારણ કરવી  
ધારણ કરે, તતઃ અને વર્તિ કાઢ્યા પછી और વર્તિ  
નિકાલનેકે બાદ, સુશામ્નુતા મુખેથી જળથી સુશોષ  
જલસે, સેચ્યા થોનિનું પરિથેયન કરવું યોનિકા પરિથેયન  
કરના બાદિય ॥ ૭૧૩ ॥

71 71½. A bougie prepared with  
barley flour and rock-salt and

\* ૭૩ લક્ષકૈઃ-લક્ષકૈઃ (લ.)

\* ૭૧. યવચૂર્ણ-જવચૂર્ણ (જ. જ.)

impregnated with milk of mudar, should be inserted for a short while and afterwards the part should be douched with genially warm water.

योनिरोगे पप्पल्यादिवर्तिः—

पिप्पल्या मरिचैर्मर्चैः शताह्वाकुपुसैन्धवैः ॥७२॥  
वर्तिस्तुल्या प्रदेक्षिन्या घार्या योनिविशोधनी ।

पिप्पल्या पीपर पिप्पली, मरिचं मूली काली मिर्च, माषैः अउद उबद, शताह्वा- सुता सोया कुष्ठ- कृकृड, सैन्धवैः अने सैन्धवथी अनावेदी और सैन्धवसे की हुई, प्रदेक्षिन्या तुल्या तर्जनी आंगुली नेवडी तर्जनी अङ्गुलिके समान, योनिविशोधनी योनिविशोधन योनि-विशोधन, वर्तिः वाट वर्तिको, घार्या धारण करवी धारण करे ॥ ७२ ॥

72-72½. A bougie of the size of the index finger, prepared out of long pepper, black pepper, black gram, dill seeds, costus and rocksalt, should be used for the radical purification of the gynecic organs.

योनिरोगे उदुम्बरादितैलम्—

उदुम्बरशलाह्नां द्रोणमन्द्रोणसंयुतम् ॥७३॥

सपञ्चवल्ककुलकमालतीनिम्बपल्लवम् ।

निशां स्थाप्य जले तस्मिन्तैलप्रस्थं विपाचयेत् ॥७४॥

लाक्षाधवपलाशत्वङ्गिर्यासैः शास्मलेन च ।

पिष्टैः सिद्धस्य तैलस्य पित्तुं योनौ निधापयेत् ॥७५॥

सशर्करैः कषायैश्च शीतैः कुर्वीत सेचनम् ।

सपञ्चवल्क- पञ्चवल्क पंचवल्कल, कुलक- परवण परवल, मालती- भावती मालती, निम्ब- तथा लीमडानां तथा नीमके, पल्लवम् पान पत्त, उदुम्बर- अमरानां गूजरके बलाहनाम् काया क्वा कचे फल, द्रोणम् ओड द्रोण एक द्रोणको, मन्द्रोणसंयुतम् ओड द्रोण पाण्डुर्मा एक द्रोण जलमें, सिद्धाम् रात्रे रात्रिभर, स्थाप्य स्थापन

करिने स्थापनकरके तस्मिन् जले ते अमरानां उब जलमें, पिष्टैः पीसेवा पीसे हुए, लाक्षा- लाक्षा लाक्षा चव- धारवा घर, पलाश- अने भावना और ठाठके, स्वक्- निर्यावैः छल तथा शुद्धशी ठाल और गोवसे, शास्मलेन च तेमअ शीमडानी छल अने शुद्धशी एवं शेमलकी छल और गोवसे तैलमय ओड प्रस्थ तैल एक प्रस्थ तैल, विपाचयेत् पकायुं पकावे, सिद्धम् सिद्ध अयेवा सिद्ध हुए, तैलम् तैल, तैलके, पित्तुम् पित्तुने पित्तुने, योनौ योनिमां योनिमें, निधापयेत् रात्रि रात्रे, सशर्करैः अने स-कषायुक्त और शर्करा- युक्त, शीतैः ठंडे, कषायैः कषायोधी कषायोंसे, सेचनम् सेचन सेचन, कुर्वीत करवी करना चाहिए ॥ ७३-७५ ॥

73-75½. Put 1024 tolas of tender fruits of gular fig, the pentad of barks and leaves of careilla fruit, spanish jasmine and neem in 1024 tolas of water. Keep it overnight and in that water prepare 64 tolas of oil with the paste of lac, the bark and gum of crane tree and palas, and the bark and gum of silk cotton, a tampon soaked in this oil should be inserted in the vagina; and then the vagina should be douched with decoctions of cooling drugs mixed with sugar.

पिच्छिला विवृता कालदुष्टा योनिश्च दाहणा ॥७६॥  
सप्ताहाच्छुष्यति क्षिप्रमपत्यं चापि विन्दति ।

पिच्छिला तैथी पिच्छिल इससे पिच्छिल, विवृता विवृत विवृता, कालदुष्टा काला कावधी दुष्ट अयेवी चिरदुष्ट, दाहणाम् च अने दाहण और दाहण, योनिः योनि योनि, सप्ताहात् सात दिवसमां सात दिवसें शुष्यति शुद्ध अर्थ अथ छे शुद्ध हो जाती है, क्षिप्रम् च अने जलदी और क्षीघ्र, अपत्यम् अपि संतान पक्ष अन्तानको भी, विन्दति प्राप्त करे छे प्राप्त करती है ॥ ७६ ॥

76-76½. By means of this, slimy, dilated, chronically diseased and severe conditions of the gynecic organs get purified within a week. This quickly induces conception in the woman.

योनिरोगे उदुम्बरदुग्धप्रयोगः—

उदुम्बरस्य दुग्धेन षट्कृत्वो भावितात्तिलात् ॥७७॥  
तैलं कायेन तस्यैव सिद्धं धार्यं च पूर्ववत् ।

उदुम्बरस्य शिथिलानां गूलरके, दुग्धेन दूधधौ दूधसे, षट्कृत्वः छः बार छः दफे, भावितात् भावित करेखा भावित किये हुए, तिलात् तलमधौ तिलसे, तैलम् डालेयुं तेल निशाला हुआ तैल, तस्य एव तेनाञ्ज उसीके, कायेन डालाथी कायसे, सिद्धम् सिद्ध करीने सिद्ध करके, पूर्ववत् पहलेकी भाँति पूर्ववत्, धार्यम् धारण करुं ओछी धारण करना चाहिए ॥ ७७३ ॥

77-77½. The oil pressed out of til, impregnated six times with the milk of gular fig tree and also medicated with the same decoction, should be applied in the aforesaid manner.

योनिरोगे धातक्यादितैलम्—

धातक्यामलकीपत्रस्रोतोऽजमधुकोत्पलैः ॥७८॥  
जम्बूअम्रमध्यकासीसलोध्रकटफलतिन्दुकैः ।  
सौराष्ट्रिकादाडिमन्वगुदुम्बरशलादुभिः ॥७९॥  
अक्षमार्जूरजामूत्रे क्षीरे च द्विगुणे पचेत् ।  
तैलप्रस्थं पितुं दद्याद्योनौ च प्रणयेत्ततः ॥८०॥  
कटीपृष्ठत्रिकाभ्यङ्गं स्नेहवस्ति च दापयेत् ।

अक्षमार्जे: अक्षमार्ज कर्षप्रमाण, धातकी-धानडी धावडी, आमलकीपत्र-आमलीनां पान आंवलाके पत्ते, स्रोतोऽज-स्रोताञ्जन स्रोताञ्जन, मधुक-केडीअथ सुलहठी, उत्पलैः नीलकमल नीलकमल, जम्बूअथु जामुन, अम्रमध्य-अने आमलीनी आटली और आमकी गुठली, कासीस-हिराकसी कासीस, लोध्र-लोधर लोध्र, कटफल-डाली ३७ कटफल, तिन्दुकैः शिथिलानां तैल, सौराष्ट्रिका-हटकी फिटकरी, दाडिम-

त्वक्-दाडिमनी छाल दाडिमकी छाल, उदुम्बर-अने शिथिलानां और गूलरके, शलादुभिः डाली ३७ शलाकके फलोंसे, द्विगुणे अमली दूधसे, अक्षमार्ज अक्षरीनी भूतर्मा बकरीके मूत्रमें, क्षीरे च अने दूधमां और दूधमें, तैलप्रस्थञ्च ओछे अस्थ तेल एक प्रस्थ तैल, पचेत् पकावयुं पकावे, पितुम् तेना येताने उसके पितुको, योनौ योनिमां योनिमें दद्यात् धारण करवावे, ततः त्पार पछी उसके बाद, प्रणयेत् उतर-अस्ति आपनी उत्तरअस्ति देवे, कटी-कमर कमर, पृष्ठ-पीठ पीठ, त्रिक-अने त्रिकमां और त्रिकमें, अभ्यङ्गम् अभ्यङ्ग अभ्यङ्ग, स्नेहवस्तिम् च अने स्नेहअस्ति और स्नेहवस्ति, दापयेत् आपवां देवे ॥ ७८-८०३ ॥

78-80½. Prepare a medicated oil by taking 64 tolas of til oil, double the quantity of goat's urine and milk, with the paste of one tola each of fulsee flower, leaves of emblic myrobalan, lotus growing in flowing water, liquorice, blue water lily, jambool, mango stone, green vitriol, lodh, box myrtle, false mangosteen, yellow ochre, rind of pomegranate and tender gular figs; the physician should soak the tampon in this oil and insert it in the vagina and afterwards give a douche and inunction to the waist, back and sacral region and also unctuous enema. पिच्छिला स्त्राविणी योनिर्विप्लुतोपप्लुता तथा ॥८१॥ उत्ताना चोन्नता शूना सिध्येत् सस्फोटशूलिनी ।

पिच्छिला आना प्रयोगशी पिच्छिल इसके प्रयोगसे पिच्छिल, स्त्राविणी स्त्राविणी स्त्राविणी, विप्लुता विप्लुत विप्लुत, तथा उपप्लुता उपप्लुत उपप्लुत, उत्ताना उत्तान उत्तान, उन्नता उन्नत उन्नत, सस्फोटशूलिनी इच्छा तेमज शूनावाणी फोड़ों एवं शूलयुक्त शूना अने सूखेकी योनि और सूजी हुई योनि, सिध्येत् नीरोग याय छे नीरोग होती है ॥ ८१३ ॥

८१. पिच्छिला स्त्राविणी-पिच्छिलस्त्राविणी (५.)

81-81½. By this means, the condition of slimy and profuse discharge, acute vaginitis, leucorrhœa, and prolapsed, elevated and edematous conditions of the vagina, and also the condition accompanied with erosions and piercing pain, get cured.

योनिरोगे करीरादिप्रयोगः —

करीरघवनिम्बार्कवेणुकोशाघ्नजाम्बवैः ॥८२॥

जिङ्गिनीवृषमूलानां काथैर्माद्विकसीधुभिः ।

सशुकैर्धावनं मिश्रैर्योन्यान्नावविनाशनम् ॥८३॥

कुर्यात् सतक्रगोमूत्रशुकैर्वा त्रिफलारसैः ।

मिश्रैः शेषैश्च मिलाये ह्य, सशुकैः शुक्तोसहित शुक्लोहित, माद्विक- भृङ्गीकानां मृद्वीकके, सीधुभिः सीधुभी सीधुषे, करीर- करीर करीर, घव- घव घव, निम्ब- लीभये नीम, अर्क- आर्क आर्क, वेणु- वांस वांस, कोशाघ्न- अंभाघ्न कोशाघ्न, जाम्बवैः अंभुडे जाम्बुन, जिङ्गिनी- जिङ्गिनी जिङ्गिनी, वृष- अने अरदू- सीनां और अह्वसेके, मूलानाम् भूगना मूलोके, काथैः क्वाथुन काथके, तक्र- अशसहित लालके साथ, गोमूत्र- गोमूत्र गोमूत्र, शुकैः अने शुक्ती और शुक्से, त्रिफलारसैः वा अथवा त्रिफलानां क्वाथथी अथवा त्रिफलाके काथसे, धावनम् योनिनु प्रक्षालन योनिना प्रक्षालन, कुर्यात् कुरे करे, योनि-आन्नाव-विनाशनम् ते योनिना आन्नावनु विनाशक छे वह योनिके आन्नावका विनाशक है ॥ ८२-८३ ॥

82-83½. Vaginal douche with the decoctions of common caper, crane tree, neem, mudar, bamboo, ceylon oak, jambool tree, indian ash tree, root of vasaka, honey wine, sidhu wine and vinegar, all mixed together, or with decoction of the three myrobalans mixed with butter-milk, cow's urine and vinegar, is curative of morbid vaginal discharge.

योनिरोगे लोहचूर्णप्रयोगः —

पिप्पल्ययोरजःपथ्याप्रयोगा मधुना हिताः ॥८४॥

श्लेष्मलायां कटुप्रायाः समूत्रा वस्तयो हिताः ।

पित्ते समधुरक्षीरा वाते तैलाम्लसंयुताः ॥८५॥

सन्निपातसमुत्थायाः कर्म साधारणं हितम् ।

श्लेष्मलायाम् कटुश्च योनिरेजर्भा ककत्र योनिरोगमें, मधुना मधु साथे शहदके साथ, पिप्पली- पीपरी पिप्पली, अयोरजः- दोहचूर्ण लोहचूर्ण, पथ्या- तथा इरुना तथा इरुके, प्रयोगाः प्रयोगे प्रयोग, हिताः हितकारक छे हितकारक हैं, समूत्राः अने गोमूत्रसहित और गोमूत्र-सहित कटुप्रायाः कटुप्रधान कटुप्रधान, वस्तयः वस्तिभ्यो वस्तिभ्यो, हिताः हितकारक छे हितकारक हैं, पित्ते पित्तम् योनिरेजर्भा पित्तम् योनिरोगमें, समधुरक्षीराः मधुर द्रव्य अने क्षीरभी युक्त मधुर द्रव्य और दूधसे युक्त, वाते तेभ्य वातम् योनिरेजर्भा एवं वातज योनिरोगमें, तैल- तैल तैल, अम्लसंयुताः तथा अम्लद्रव्यभी संयुक्त वस्तिभ्यो हितकारक छे तथा अम्लद्रव्यसे संयुक्त वस्तिभ्यो हितकारक हैं, सन्निपात- समुत्थायाः अने सन्निपातज योनिरेजर्भा और सन्निपातज योनिरोगमें, साधारणम् कर्म साधारणम् कर्म साधारण कर्म, हितम् हितकर छे हितकर है ॥८४-८५॥

84-85½. The courses of long pepper, iron dust and chebulic myrobalan are recommended in the vaginal afflictions due to kapha; enemata with cow's urine mixed mainly with the pungent group of articles are beneficial. In condition of pitta, enemata mixed with milk and the sweet group of drugs, and in conditions of vata, enemata mixed with oil and acid articles, are beneficial; in the condition born of tridiscordance the treatment pertaining to all the three factors is recommended.

असृग्दरचिकित्सा—

रक्तयोन्यामसृग्दर्पणैरनुबन्धं समीक्ष्य च ॥८६॥

ततः कुर्याद्यथादोषं रक्तस्थापनमौषधम् ।

८५½. हितम्-मत्तम् (व.)



रक्तयोन्याम् रक्तयोनिर्भा रक्तयोनिर्मे, असृग्जैः रक्तानां पक्षुं उपरंथी रक्तके वर्णसे, अनुबन्धम् दोषना अनुबन्धने दोषानुबन्धको, समीक्ष्य अधीने जानकर, ततः पक्षी पश्चात्, यथादोषम् दोषानुसारं दोषानुसार, रक्तस्थापनम् रक्तस्थापन रक्तस्थापन, औषधम् औषध औषध, कुर्यात् करुणुं करे ॥ ८६३ ॥

86-86½. In condition of sanguinous discharge from the vagina, the physician, after finding out the predominant morbid humor and the probable after-effect from the coloration of blood, should administer hemostatic medications indicated in the particular morbid humor.

तिलचूर्णं दधि घृतं फाणितं शौकरी वसा ॥८७॥  
क्षौद्रेण संयुतं पेयं वातासृग्दरनाशनम् ।

क्षौद्रेण संयुतम् भक्ष साधे शहदके साथ, तिलचूर्णम् तिलचूर्णं, दधि दही, घृतम् घी जी, फाणितम् गेणनी शय फाणित, शौकरी वसा आने सूवरनी चरणी और सूअरकी वसा, पेयम् पीना पीनी चाहिए, वातासृग्दर- और वातसृग्दरनाशनम् यह वातसृग्दर रक्तप्रदाका, नाशनम् नाश करे छे नाशक है ॥८७३॥

87-87½. Til powder, curds, liquid gur and hog's fat should be taken as potion mixed with honey, for the cure of sanguinous discharge due to vata.

वराहस्य रसो मेघः सकौलथोऽनिलाधिके ॥८८॥  
शर्कराक्षौद्रयष्ट्याहनागरैर्वा युतं दधि ।

अनिलाधिके वाताधिक रक्तप्रदाका वाताधिक रक्तप्रदाके, सकौलथः उणीपीना उपाथ साथे कुलथीके काथके साथ, मेघः मेघवर्धक मेदवर्धक, वराहस्य रसः वराहना भासरस वराहका मांसरस, शर्करा- अथवा साकर अथवा शर्करा, क्षौद्र- भक्ष शहद, यष्ट्याह-

८८३. क्षौद्र-वेक (क. क.)

गेरीभक्ष मुग्दही, नागरैः वा युतम् आने सूं साधे और सोंठके साथ, दधि दही पीपुं दही पीना चाहिए ॥ ८८३ ॥

88-88½. In excessive vata, the meat-juice of the hog which is full of fat, mixed with horse-gram; or curds taken mixed with sugar, honey, liquorice and dry ginger, acts beneficially.

पयस्योत्पलशालूकविसकालीयकाम्बुदम् ॥८९॥  
सपयःशर्कराक्षौद्रं पैत्तिकेऽसृग्दरे पिबेत् ।

पैत्तिके पित्तस्य पित्तस्य, असृग्दरे रक्तप्रदाका रक्तप्रदाके, पयस्या- क्षीरनिक्षीरी क्षीरविदारी, उत्पल- नील उभय नील कमल, शालूक- उभयकंद कमलकन्द, विस- उभयनील मृगाल, कालीयक- पीपुं चन्दन पीत चन्दन, सम्बुदम् तथा भोयने और मोयको, सपयः- दूध दूध, शर्करा- साकर शर्करा क्षौद्रम् आने भक्ष साथे और शहदके साथ, पिबेत् पीपुं पीना चाहिए ॥८९३॥

89-89½. Milky yam, blue lily lotus bulbs, rhizomes, yellow-sandal and nut grass should be taken as potion mixed with milk, sugar and honey, in sanguinous discharge due to pitta.

असृग्दरे पुण्यानुगं चूर्णम्—

पाठा जम्बवाप्रयोर्मध्यं शिलोद्वेदं रसाञ्जनम् ॥९०॥  
अम्बुष्ठा शास्मलीश्लेवं समक्तां वत्सकत्वचम् ।  
बाह्लीकातिविषे बिस्वमुस्तं लोघ्नं सगैरिकम् ॥९१॥  
कटुह्नं मरिचं शुण्ठीं मृद्वीकां रक्तचन्दनम् ।

८९. अम्बुजम्-अम्बुजम् (क.)

८९½. पैत्तिके-पकशः (द. घ. ब. क.)

९१. अम्बुष्ठा शास्मलीश्लेवं-अम्बुष्ठीकी मोचरसं (क. छ. न.)

” ” -अम्बुष्ठा शास्मलीश्लेवं (घ. ड.)

” वत्सकत्वचम्-पथकेगरम् (श.)

९२. मरिचं-मधुकं (द.)

” मृद्वीकां-आर्द्रकं (ब.)

” ” -माचिकं (क.)



कटफलं वत्सकानन्ताघातकीमधुकार्जुनम् ॥९२॥  
पुष्पेणोद्भूतं तुल्यानि सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् ।  
तानि क्षौद्रेण संयोज्य पिवेत्तण्डुलवारिणा ॥९३॥  
अर्शःसु चातिनारेषु रक्तं यच्चापवेद्यते ।  
दोषागन्तुकृता ये च बालानां तांश्च नाशयेत् ॥९४॥  
योनिदोषं रजोदोषं श्वेतं नीलं सपीतकम् ।  
स्त्रीणां श्यावारुणं यच्च प्रसह्य विनिवर्तयेत् ॥९५॥  
चूर्णं पुष्यानुगं नाम हितमात्रेयपूजितम् ।  
इति पुष्यानुगचूर्णम् ।

पाठा- डाली पाठ पाद्री, जम्बू- अंशु जामुन, आम्रयोः  
मध्यम् અને આમ્રની એટલી और आमकी गुठली,  
खिलोजेदम् पाषाणमेद पाषाणमेद, रसाजनम् रसवर्ती  
रसौत, जम्बूडा अंशुडा अम्बुडा, आम्रमलीकेवम्  
श्रीमणाने। गुंहर सेमलका गोंद, समझाम् मल्ल मजीठ,  
वत्सकावचम् डालाख कुकेकी छाल, बाह्यिक- डेसर  
केसर, अतिविषे अतिरिपनी डली अतिविषा, बिस्वम्  
पीपु बेलगिरी, मुस्तम् मोथ मोथा, लोधम् लोधर  
लोध, सगैरिकम् सेनागेरु खर्गैरिक, कृष्णम्  
अरुक्षे अरु, मरिचम् भरी काजी मिर्च, गुण्डीम्  
सूँठ, मृद्रीकाश् द्राक्ष द्राक्षा, रक्तचन्दनम् रतजणी  
लालचन्दन, कटफलम् डायडणी कायफल वत्सक- डाल-  
ख कुटज, अनन्ता- अनंतभूण सारिवा, घातकी-  
घावडीनां डूब घायके फूल, प्रधुक्- नेडीमध मुलहठी,  
अर्जुनम् અને અર્જુનને और अर्जुनको, पुष्पेण पुष्प-  
नक्षत्रमां पुष्प नक्षत्रमें, तण्डुलवारिणा वलीने लाकर,  
तुल्यानि अमभामे समभाममें, सूक्ष्मचूर्णानि सूक्ष्मचूर्ण  
सूक्ष्मचूर्ण, कारयेत् डरवुं करे, तानि तेने उघको,  
जम्बूसु डरसमां बवासीरमें, अतिसारेषु च अति-  
सारमां अतिसारमें, यत् च અને नेमां और सितमें,  
रक्तम् खेडी रक्त, उपवेद्यते जीडा साथे अम छे  
दस्तोंमें जाता है, सेषु तेमां उनमें, क्षौद्रेण  
भर्ष साथे सहदेके साथ, संयोज्य भेगवी  
मिश्रकर, तण्डुलवारिणा येभाना पाषी साथे  
चाबलोकें पानोकें साथ, पिवेत् पीपुं पीवा बाहिए,  
मात्रेयपूजितम् आ मात्रेये वभाखेधुं वह मात्रेय-

संश्लिप्त, हितम् हितकारक, पुष्यानुगम् नाम  
'पुष्यानुग' नामनुं पुष्यानुग नामका, चूर्णम् चूर्ण  
चूर्ण बालानाम् आशुकेना बालकोंके, दोषागन्तुकृताः  
दोषागन्तु-अने आगन्तु-अन्तु दोषागन्तु और आगन्तु-  
अन्तु, ये च ने रोगो छे जो रोग हैं, तान् च तेओने  
उनको, नाशयेत् नष्ट करे छे नष्ट करता है, स्त्रीणां  
अ-ओना स्त्रियोंके, योनिदोषं येनिदोषेने योनिदोषोंको,  
यत् च અને ने और जो, श्यावारुणम् श्याव अरुण  
श्याव अरुण, सपीतकम् पीला पीला, नीलम् नीला  
नीला, श्वेतम् અને सहेद और सफेद, रजोदोषम् रजो-  
दोष छे तेने रजोदोष है उसे, प्रसह्य अणपूर्वक  
बलपूर्वक, विनिवर्तयेत् मिटता करे छे मिट्ट करता  
है ॥ ९०-९५ ॥ इति आ यह, पुष्यानुगचूर्णम् पुष्या-  
नुग चूर्ण छे पुष्यानुग चूर्ण है।

90-95. Patha, the seed-pulp of jambool and mango, rock-foil, extract of indian berberry, false pareira brava, gum of the silk cotton tree, sensitive plant, the bark of kurchi, saffron, atees, bael nut grass, lodh. red ochre, the tree of heaven, black pepper, dry ginger, grapes, red sandal, box myrtle, kurchi, indian sarsaparilla liquorice, fulsee flower and arjuna—these should be culled when the moon is in the Pushya constellation. All these taken in equal parts, should be finely triturated. That should then be taken mixed with honey as potion along with rice-water. This cures the condition of passing blood during defecation in piles and diarrhea. This also cures similar morbid conditions due to exogenous causes, occurring in children. This powder effectively cures gynecic and menstrual morbidities attended with whitish, bluish, yellowish and dark-

redish discharges. This powder known as the 'Pushyanuga pulvis' is very efficacious and valued highly by Atreya. Thus has been described the Pulvis Pushyanuga.

અસુગ્દરે કતિપયયોગઃ —

રસાઝનં ચ લાક્ષાં ચ છાગેન પયસા પિબેત્ ।

રસાઝનમ્ ચ રસવંતી રસૌત, લાક્ષામ્ ચ અને લાખને, ઝાગેન અકરીના વકરીકે, પયસા દૂધ સાથે રૂધકે સાથ, પિબેત્ પીવું પીવે ॥૧૬૩॥

96½. The roots of prickly amarant may be taken as potion mixed with honey and rice water, or indian berberry and lac mixed with goat's milk

પત્રકલ્કૌ ઘૃતે મૃદૌ રાજાદનકપિત્થયોઃ ॥૧૭॥

પિત્તાનિલહરૌ, પૈત્તે સર્વથૈવાસ્રપિત્તજિત્ ।

મધુકં ત્રિફલાં લોધ્રં મુસ્તં સૌરાષ્ટ્રિકાં મધુ ॥૧૮॥

મધૌર્નિમ્બગુહ્યૌ વા કફજેઽસુગ્દરે પિબેત્ ।

ઘૃતે ધીમાં ઘૃતમે, મૃદૌ શેકલાં મૂને દુણ, રાજાદન-સાથે સ્ત્રીની, કપિત્થયોઃ અને ડાહનાં ઔર કૈચકે, પત્રકલ્કૌ પાંદડાના કલ્ક પત્તોં કલ્ક, પિત્તાનિલહરૌ પિત્તવાતનાશક છે પિત્તવાતનાશક હૈ, પૈત્તે પિત્તબ્ રક્તપ્રદરમાં પિત્ત રક્તપ્રદરમે, સર્વથા એવ પ્રયોગ કરવાથી ઔષ્ઠી સર્વ પ્રકારે પ્રયોગ કરનેસે એ સજ પ્રકારસે, અસ્રપિત્તજિત્ રક્તપિત્તને શુદ્ધે છે રક્તપિત્તકો જીતવે હૈ, કફજે કફજ કફજ, અસુગ્દરે રક્તપ્રદરમાં રક્તપ્રદરમે, મધુકમ્ બેરીમધ મુલદ્દી, ત્રિફલામ્ ત્રિફળા ત્રિફલા, લોધ્રમ્ લોધ્ર લોધ્ર, મુસ્તમ્ મોચ મોચા, સૌરાષ્ટ્રિકામ્ કટકી ફિટકી, મધુ અને મધને ઔર શહરકો નિમ્બગુહ્યૌ વા અથવા લીમડા તથા બેળાને અથવા નીમ તથા મિલેચકો, મધૌઃ મધો સાથે મધોંકે સાથ, પિબેત્ પીવાં પીવે ॥૧૭-૧૮૩॥

97-98½. The pastes of the leaves of the indian ape-flower and bael fried

in ghee are curative of gynecic disorders due to pitta-cum-vata. If the condition be caused only by morbid pitta, all the measures indicated in hemothermia may be taken instead. Liquorice, the three myrobalans, lodh, nutgrass yellow ochre and honey mixed with wine, or neem and guduch with wine should be taken as potion in colporrhagia due to kapha

વિરેચનં મહાતિકં પૈત્તિકેઽસુગ્દરે પિબેત્ ॥૧૯॥  
હિતં ગર્ભપરિસ્થાવે યચ્ચોક્તં તચ્ચ કારયેત્ ।

પૈત્તિકે પિત્તબ્ પિત્તજ, અસુગ્દરે રક્તપ્રદરમાં રક્તપ્રદરમે, મહાતિકમ્ મહાતિકત મહાતિક, વિરેચનમ્ વિરેચન લી વિરેચન લીકો, પિબેત્ પીવું પીવે, યત્ ચ અને બે ઔર જો, ગર્ભપરિસ્થાવે ગર્ભપરિસ્થાવમાં ગર્ભપરિસ્થાવમે, હિતમ્ હિત હિત, યચ્ચ યચ્ચ છે કહા હૈ, તત્ ચ તે પણ હસે મી, કારયેત્ કરવું કરે ॥૧૯૩॥

99-99½. In colporrhagia of the pitta type, purgation and the Great Bitter Ghee are to be taken and whatever measures are indicated in threatened abortion should be done.

વિવિધયોનિરોગાણાં ચિકિત્સા —

કાશ્મર્યકુટજકાથસિદ્ધમુત્તરબસ્તિના ॥૧૦૦॥

રક્તયોન્યરજસ્કાનાં પુત્રઙ્ગ્યાશ્ચ હિતં ઘૃતમ્ ।

કાશ્મર્ય- સીવણનાં ફળ ગમ્ભારીકે ફલ, કુટજ- અને કડાબાલના ઔર કુદ્દેલી હાલકે, કાથ- ક્વાથથી કાથસે, સિદ્ધ સિદ્ધ કરેલ સિદ્ધ કિયા હુઆ, ઘૃતમ્ લી લી, રક્તયોનિ- રક્તયોનિ રક્તયોનિ, રજસ્કાનામ્ રજસ્કા રજસ્કા, પુત્રઙ્ગ્યાઃ ચ અને પુત્રઙ્ગી ઔ યોનિવ્યાપતિઓમાં ઔર પુત્રઙ્ગી इन યોનિવ્યાપતિઓમે, ઉત્તરબસ્તિના ઉત્તરબસ્તિ દ્વારા દેવું ઉત્તરબસ્તિદ્વારા દેના, હિતમ્ હિતકર છે હિતકર હૈ ॥૧૦૦૩॥



तैलैः तैलेऽपि तैलैः द्वारा आस्थाप्या च आस्थापन आस्थापन, अनुवासा च तथा अनुवासन देवुं भेद्ये तथा अनुवासन देना चाहिए, युक्तितः अने युक्तिपूर्वक और युक्तिपूर्वक, अनिलसूदनैः वातनाशक वातनाशक, स्नेहद्रव्यैः स्नेहद्रव्यैः स्नेहद्रव्यैः, तथा आहारैः आहारैः आहारैः उपनाहैः च तेभ्य उपनाहैः एवं उपनाहैः, स्नेहा च स्वेदन पक्षे उपनाहैः स्नेह स्वेदन मी करना चाहिए ॥ १०५३ ॥

105-105½. In conditions of deflorative vaginitis and acute vaginitis, corrective and unctuous enemata with the vata-curing oil that has been cooked a hundred times, should be given, and the patient should be skilfully given poultice-sudation and diet which consists of unctuous articles curative of vata.

शताह्वयवगोधूमकिण्वकुष्ठप्रियङ्गुभिः ॥१०६॥

बलाखुपर्णिकाश्याह्वैः संयावो धारणः स्मृतः ।

अवाहान- सुवा सोया, यव- जौ, गोधूम- भुङ्गे गेहूँ, किण्व- क्षिप्य किण्व, कुष्ठ- उठ कूठ, प्रियङ्गुभिः भुङ्क्ते प्रियंगु, बला- भला बला, आखुपर्णिका- उदरउन्नी मूषकपर्णी, श्याह्वैः अने अंधैरभने और गन्धविरोजेका, संयावः संयाव संयाव, धारणः धारण धारण, स्मृतः उक्तो उ कहा है ॥ १०६३ ॥

106-106½. Then, the Utkarika pancake made of dill seed, barley, wheat, yeast, costus and perfumed cherry should be inserted in the vagina.

वामिन्युपप्लुतानां च स्नेहस्वेदादिकः क्रमः ॥१०७॥  
कार्यस्ततः स्नेहपित्तस्ततः संतर्पणं भवेत् ।

१०७३. अवाहैः-स्नेहैः (त. द.)

१०७३. कार्यस्ततः-पूर्व कार्यः (क)

१०७३. -क्रमः कार्यः (व. द.)

१०७३. स्नेहपित्तस्ततः संतर्पणं-ततः स्नेहपित्तस्ततः संतर्पणं (क. व. द.)

वामिनी- वामिनी वामिनी, उपप्लुतानाम् च अने उपप्लुतानाम् और उपप्लुतानाम्, स्नेहस्वेदादिकः स्नेहन, स्वेदन आदि स्नेहन, स्वेदन आदि, क्रमः क्रम क्रम, कार्यः उपप्लुतानाम् करना चाहिए, ततः ते पक्षी उसके बाद, स्नेहपित्तः स्नेहपित्तः पित्तः धारण धारण करे, ततः ते पक्षी तत्पश्चात्, संतर्पणं संतर्पणं संतर्पण, भवेत् उपप्लुतानाम् करना चाहिए ॥ १०७३ ॥

107-107½. In condition of profluvium seminis and leucorrhea, oleation and sudation procedures are indicated after which an unctuous tampon should be kept in the vagina; and then impletive measures should be done.

शलकीजिह्विनीजम्बूधवत्क्वपञ्चवल्कलैः ॥१०८॥  
कषायैः साधितः स्नेहपित्तः स्याद्विप्लुतापहः ।

शलकी- शलकी शलकी, जिह्विनी- जलजी जिह्विनी, जम्बू- जम्बू जामुन, धवत्क्व- अने धवन्नी छात्र और धवकी छाल, पञ्चवल्कलैः तथा पञ्चवल्कलैः तथा पञ्चवल्कलैः, कषायैः कषायैः कषायैः, साधितः सिद्ध करे सिद्ध किया हुआ, स्नेहपित्तः स्नेहपित्तः स्नेहपित्तः, विप्लुतापहः विप्लुतानाशक विप्लुतानाशक, स्यात् थाय उ होता है ॥ १०८३ ॥

108-108½. The tampon soaked in the unctuous medications prepared with decoction of the bark of indian oilbanum, indian ash tree, jambool, crane tree, cinnamon and the pentad of barks, is curative of acute vaginitis.

कणिन्यां वर्तिका कुष्ठपिप्पल्यकार्कसैन्धवैः ॥१०९॥  
वस्तमूषकता धार्या सर्वं च श्लेष्मनुद्धितम् ।

कणिन्याम् कणिनीम् कणिनीम्, कुष्ठ- उठ कूठ, पिप्पली- पीपरी पिप्पली, कार्कस- आकसानी इपण आकसी कुण्ठिणी, सैन्धवैः सिन्धुधालू सैन्धव, वस्तमूषकता तथा वस्तमी मूषकी मूषकी तंजा वस्तमी

मूत्रसे बनाई हुई, वस्तिका वति वति, धार्या धार्या  
उरवी धारण कानी चाटिए, सर्वम च अने सधनु  
और सभी, श्लेष्मनुन उधनाशक उर्भ ककनाशक विक्रिस,  
द्वितम् द्वितउर छे द्वितकर है ॥ १०९३ ॥

109-109½. In endocervicitis, a medicated bougie prepared of costus, long pepper, sprouts of mudar and rock salt rubbed in goat's urine and inserted in the vagina, is beneficial. All measures curative of kapha are indicated in this condition.

अंवृतं स्नेहनं स्वेदां ग्राम्यानुपौदका रसाः ॥११०॥  
 दशमूलपयोवस्तिश्चोदावर्तानिलार्णिषु ।  
 अंवृतैर्नानुवास्या च वस्तिश्चोत्तरसंज्ञितः ॥१११॥  
 एतदेव महायोग्यां चस्तथायां च विधीयते ।

उदावर्ता- उदावर्ता उदावर्ता, अल्लिकार्तिपु अने  
वातज योनिव्यापत्तिशोभा और वातज योनिव्यापत्ति-  
योमें, त्रैवृतम् धी, तेद तथा वसांनुं धी, तैल तथा  
वसाका, स्नेहनम् स्नेहन स्नेहन, स्वेदः स्वेदन स्वेदन,  
प्राग्न्य- तथा प्राग्न्य तथा प्राग्न्य, आनूर- आनूर आनूर,  
औदकाः अने अण्णशेना और जलचरोके, रसाः भास्-  
रसे। मांसरस, दध्मूल- तेभ्म दध्मूलसाधित एवं  
दध्मूलपक, पयोबस्तिः दूधनी भरित दूधकी बस्ति, देयः  
देना देनी चाहिए, त्रैवृतेन धी तेद तथा वसाधो धी,  
तैल तथा वसासे, अनुवास्या अनुवासन अनुवासन, उत्तर-  
संज्ञितः बस्तिश्च अने उत्तरस्थिति पक्षु आपनी और  
उत्तरबस्ति सी देवे, महायोन्याम् भक्षायोनिभा महा-  
योनिमें, स्रस्तायाम् च अने स्रस्ताभा पक्षु और  
स्रस्तामें सी, एतद् एव आ जही, सिधीयते करनाभा  
आवे छे किया जाता है ॥ ११०-१११ ॥

110-111½. In dysmenorrhea and pain due to vata, oleation with unctuous articles prepared with turpeth, sudation procedure, diet of meat-juices of domestic, wet-land and aquatic creatures, and milk enema prepared

with deca-radices, are indicated. In conditions of prolapse and subluxation of uterus, enema and vaginal douche with the turpeth-oil is recommended.

वसा ऋक्षवराहाणां पुनं च मधुरं शुभम् ॥११२॥  
पूयित्वा सहायोनिं वधीयान् शौचलकैः ।

महायोगेनम् महायोगेनेने महायोगेनिष्ठे, ऋष- री'७  
 भाल्, वराहाणाम् अने वराहन्ती और म्रमरकी, वना  
 वना वना, मधुरेः च अने मधुर औषधोधी और  
 मधुर औषधोसे, शतम् सिद्ध उदेव सिद्ध किया हुआ,  
 शतम् धी धी, पूरयित्वा भरने भरकर, क्षौमलककैः  
 जणसीना वस्त्रना पाटाधी अलसीवस्त्रके दुबोसे,  
 वस्त्रोयान् आंधी देवी अर्धे ये बांध देना चाहिए ॥ ११२३॥

112-112½. The prolapsed uterus must be filled with the fat of the bear and the hog, and the ghee prepared with the sweet group of drugs, and should be bandaged with a piece of silk cloth.

प्रसूतां सर्पिषाऽभ्यज्य क्षीरस्निग्धां प्रवेश्य च ११३  
बन्ध्याद्वेशवारस्य पिण्डेनामूत्रकालतः ।

प्रचस्ताम् प्रचस्त योनिने प्रचस्त योनिक्, सर्षपा  
 अम्भज्य वी द्यावी वी लगाका, शीरस्त्रिणाम् दूधधी  
 स्वेदन करी दुधसे स्वेदनकरके, प्रवेश्य च अंदर प्रवेश  
 करावी मीतर प्रवेशकाके, वेशवारस्य देशचारने। वेश-  
 वारका, पिण्डेन (५३२) पीड रक्ककर, जामूत्रकाकतः  
 भूतकाण सुधी मूत्रकाल तक, बह्नीवात् वक्षधी आधवी  
 वक्षसे बांध देवे ॥ ११३३ ॥

113-113½. The sub-luxated uterus should be inuncted with ghee and given sudation with milk. Then it

११२. वसा ऋक्षराजाणां-कुलीरशृङ्गवसा (ब.)

—वसा दक्षवराहाणां (५)

-वराहकुल्यवसा (इ. ध. ष)

११३३ पुण्यित्वा-संश्लेष्य (घ. ङ. ञ. द.)

लङ्कै-नङ्कैः (ब.)

should be replaced in its position and bandaged with the padding of a lump of Vesavara preparation and retained till the urge for micturition is felt.

योनिरोगेषु आदौ वातशमनं कार्यम्—

यच्च वातविकाराणां कर्मोक्तं तच्च कारयेत् ॥११३॥  
सर्वव्यापत्सु मतिमान्महायोग्यां विशेषतः ।

नहि वातादृते योजितरीणां संप्रदुष्यति ॥११४॥  
शमयित्वा तमन्यस्य कुर्यादोषस्य मेघजम् ।

वातविकाराणाम् वातरोगेषु वातरोगोमे, यत् च कर्म ते कर्म जो चिन्तित, उक्तम् कहेल्ले छे कही है तत् च तेने पक्ष उसे भी, मतिमान् बुद्धिमान् वैद्य बुद्धिमान् वैद्यको, सर्वव्यापत्सु सधना योनिरोगेषु सब योनिरोगोमे विशेषतः अने पक्ष करीने और विशेष करके, महायोग्याम् भक्षयोनिसु महायोगिने, कारयेत् करवुं कर्मोक्ते करनी चाहिए, हि कहेल्ले क्योंकि, वातादृते वस्तु बिना वायुके बिना, नारीणाम् स्त्रीयोनी जियोकी, योजितः योनि यनि, न संप्रदुष्यति दूष्ट थरी नही दूष्ट नहीं होती, तम् भटे तेने इस लिए उसे, शमयित्वा शांत करीने शान्त करके, अन्यस्य भीअ अन्य, दोषस्य दोषनुं दोषही, मेघजम् औषध औषध, कुर्यात् करवुं करनी चाहिए ॥ ११४-११५ ॥

114-115½. In all gynecic disorders and particularly in prolapsed uterus, all the measures indicated in disorders of vata, should be administered. Women are never affected with gynecic disorders except as a result of morbid vata. The vata should therefore be first sedated and the treatment of other humors be undertaken thereafter.

पाण्डुरप्रदरचिकित्सा—

रोहीतकान्मूलककं पाण्डुरेऽसृग्दरे पिबेत् ॥११६॥

११६. रोहीतकान्मूलककं पाण्डुरेऽसृग्दरे पिबेत्—मूलककं तु रोहीतक पाण्डुरे प्रदरे पिबेत् (ब. क.)

जलेनामलकीबीजं कल्कं वा ससितामधुम् ।

पाण्डुरे असृग्दरे श्वेत प्रदरभां श्वेत प्रदरमें, रोहीतकात् रोहीतकना रोहीतकके, मूलककम् मूलकना कल्कम् मूलके कल्कमें, आमलकीबीजम् अथवा आमलकीना पीजना अथवा आमलकीके बीजके, कल्कम् वा कल्कना कल्कमें, ससितामधुम् साकर अने मधु भेजनी शर्करा और शहद मिलाकर, जलेन पाण्डुरी साथे जलके साथ, पिबेत् पीना पिये ॥ ११६ ॥

116-116½. In condition of whitish discharge due to gynecic morbidity, the paste of white cedar should be taken as potion with water, or the paste of the seeds of emblic myrobalans, mixed with sugar and honey, may be taken as potion with water.

मधुनाऽऽमलकाच्चूर्णं रसं वा लेहयेच्च ताम् ॥११७॥  
न्यग्रोधत्वक्कषायेण लोध्रकल्कं तथा पिबेत् ।

ताम् ते शशिष्ठीने उस रोगिणीको, मधुना मधु साथे शहदके साथ, आमलकात् आमलकीना आंवलेका, चूर्णम् चूर्णं चूर्ण, रसम् वा अथवा रस अथवा रस, लेहयेत् च यटाउवे चट वे, तथा अथवा अथवा, न्यग्रोधत्वक् वजनी छालना वरगदकी छालके, कषायेण कषायेण काथसे, लोध्रकल्कम् लोध्रकना कल्क लोध्रका कल्क, पिबेत् पियेना पिये ॥ ११७ ॥

117-117½. Or, the patient may be given, as linctus, the powder or the juice of emblic myrobalans mixed with honey; or, the patient may take as potion, the decoction of the bark of the banyan tree mixed with the paste of lodh.

११६. आमलकीबीजं कल्कं—आमलकात् बीजकल्कं (ब.)

११७. लेहयेच्च ताम्—लेहयेत् सिने (य. ब.)

११७. न्यग्रोध....पिबेत्—न्यग्रोधस्य कषायेण लोध्रकल्केन वा पिबेत् (ड.)



आस्रावे क्षौमपट्टं वा भावितं तेन धारयेत् ॥११८॥  
लुक्षत्वक्चूर्णपिण्डं वा धारयेन्मधुना कृतम् ।

आस्रावे अलु आवर्भा बहुत स्रावमें, तेन तेथी उममे, भावितम् भावित करेखा भावित किये हुए, क्षौमपट्टम् वा क्षौमपत्रने क्षौमवस्त्रको, धारयेत् धारण करे धारण करे, मधुना अथवा मधुनी अथवा शहदसे, कृतम् करेखा किये हुए, लुक्षत्वक्- पीपरनी छालना पाकरकी छालके, चूर्णपिण्डम् चूर्णना पिंडाने चूर्णके पिंडको, धारयेत् धारण करे धारण करे ॥ ११८३ ॥

118-118½. In case of excessive discharge, the silk cloth soaked in the aforesaid decoction may be kept in the vagina. Or the powder of yellow barked fig. made into a lump with honey, may be kept in the vagina.

योऽन्या स्नेहाक्तया लोघ्रप्रियङ्गुमधुकस्य वा ॥११९॥  
धार्या मधुयुता वर्तिः कषायाणां च सर्वशः ।

स्नेहाक्तया अथवा स्नेह लघावीने अथवा स्नेह लगाकर, योऽन्या योनिभां योनिमें, मधुयुता मधुनी अथवा शहदसे बनाई हुई, लोघ्र-लोघ्र लोघ्र, प्रियङ्गु-धडिला प्रियङ्गु, मधुकस्य अथवा मधुनी और मधु-हठीकी, कषायाणाम् च अथवा कषायवृक्षोनी एवं कषाय वृक्षोकी, वर्तिः वा वर्ति वर्ति, सर्वशः सर्व प्रकारकी सब प्रकारसे, धार्या धारण करे धारण करनी चाहिए ॥ ११९३ ॥

119-119½. After lubricating it with unctuous substance, the lump of lodh, perfumed cherry and liquorice may be inserted; or, the medicated bougie made of all the drugs of the astringent group mixed with honey may also be inserted in the vagina.

योनिरोगेष्ववावस्थिकी चिकित्सा—

सावच्छेदार्थमभ्यर्का धूपयेद्वा घृताप्लुतैः ॥१२०॥  
सरलागुग्गुलुयवैः सतैलकटुमस्यकैः ।

सावच्छेदार्थम् अर्कने रोडवा म.रे सावको रोनेके लिए अभ्यर्का के दिने स्नेह लघावीने योनिमें स्नेह लगाकर, सैल-तेलप्रदित तैलमदित, कटुमस्यकैः शङ्खरी पाँछडीके शङ्खरी मछलीके, घृताप्लुतः अथवा घी में रोडवा या घृ-मिश्रित, सरला-अ.स सरल, गुग्गुलु-गुग्गुलु गूल, यवै अने ज्वरना यूर्ध्वी और जवके चूर्णके, धारयेत् धूपने कटु घृतन वरना चाहिए ॥ १२०३ ॥

120-120½. Or for checking the discharge the vagina should be lubricated with oil and fumigated with deodar, gum guggul and barley soaked in ghee or with dry fish soaked in oil.

कासीसं त्रिफला कांक्षी समन्नाऽऽम्रान्मि घातकी ॥  
पैच्छिल्ये क्षौद्रसंयुक्तचूर्णो वैशद्यकारकः ।

पैच्छिल्ये पैच्छिल्ये विच्छिलनामें, कासीसम् छीराकसी कासीस, त्रिफला त्रिफला त्रिफला, कांक्षी इतडी फिटकी, समन्ना म.स मजीठ, आम्रान्मि आ.आनी गो.टली आमकी गुठनी, घातकी अने घात-डीनां दूध और आमके फूल, चूर्णः कै.मो. चूर्ण इनका चूर्ण, क्षौद्रसंयुक्तः म.स साथे शहदके साथ, वैशद्यकारकः विशदता करनार छे विशदताकारक है ॥ १२१३ ॥

121-121½. The powder of green virol, the three myrobalans, alum, sensitive plant, margo stone and fulsee flower mixed with honey and applied, is curative of the slimy condition of the vagina

योनिरोगेषु पलाशविकारकः—

पलाशसर्जजम्बूवृक्षसमन्नामोचघातकीः ॥१२२॥  
सपिच्छिलापरिक्षिप्तास्तम्भनः कटक इष्यते ।

पलाश-आ.भरी टाक, सर्ज-रा.ग रा.ग, जम्बूवृक्ष अने अ.भु.डीनी छाल और जामुनकी छाल समन्ना रीसाभल्ली काजवती, मोच-भे.थ.स मोचरस, घातकीः

१२१. समन्नाऽऽम्रान्मि-सावच्छेदार्थम् (४)



तथा धात्रीनीं कृत्वा तथा घायके फूल, कल्कः श्रीश्रीने।  
उदकं इनका कल्क, सविच्छिन्ना पिच्छिल पिच्छिल, परि-  
क्षिप्त्वा तेभ्यः परिक्षिप्तं योनिमां एवं परिक्षिप्तं योनिमें,  
स्त्रम्भनः स्तम्भनं भाटे स्त्रम्भनके लिए, इष्यते ४४ छे  
इष्ट है ॥ १२२३ ॥

122-122½. In the slimy and softened condition of the vagina, the paste made of the bark of palas, sal and jambhool, indian madder, plantain and fulsee flowers, which is astringent in action, is indicated.

स्तम्भयोन्याश्चिकित्सा—

स्तम्भानां कर्कशानां च कार्यं मार्दवकारकम् ॥१२३॥  
धारयेद्वेशवारं वा पायसं कुशरां तथा ।

स्तम्भानाम् स्तम्भ, कर्कशानाम् च अने  
उदकं श्रीश्रीनेमां और कर्कश योनियोंमें, मार्दवकारकम्  
मृदुधर्म मृदुधर्म, कार्यम् करणुं ओष्ठो करना चाहिए,  
वेशवारम् अथवा वेशवार अथवा वेशवार, पायसम्  
पायस पायस, तथा कुशराङ्क के कुशरां या कुशराको,  
धारयेत् धारयु करनी धारण करनी चाहिए ॥ १२३ ॥

123-123½. In conditions where the vagina has stiffened and has become rough, the keeping in the vagina of Vesavara pudding or milk-pudding or kedgeree, is inductive of softness in the vagina.

योनिदौर्गन्ध्यचिकित्सा—

दुर्गन्धानां कषायः स्यात्तौवरः कल्क एव वा ॥ १२४॥  
चूर्णं वा सर्वगन्धानां पूतिगन्धापकर्षणम् ।

तौवरः तुवरकेना तुवरका, कषायः कषाय कषाय,  
कल्कः एव वा अथवा उदकं अथवा कल्क, सर्वगन्धानाम्  
वा अथवा सर्व गन्धऔषधियोंमें, अथवा सर्व  
गन्धऔषधियोंका, चूर्णम् चूर्णं चूर्ण, दुर्गन्धानाम् दुर्गन्धि  
योनिश्रीने दुर्गन्धी योनियोंकी, पूतिगन्ध- भराग गंधने।

१२४. तौवरः—तैलं वा (व. ब. फ.)

पूतिगन्धको, अपकर्षणम् नाश करे छे नष्ट करता  
है ॥ १२४ ॥

124-124½. In a condition of foul smell in the vagina or vaginal stink, the decoction or the paste of white mangrove-seeds, or the powder of all the aromatic drugs, acts as a deodorant.

एवं योनिषु शुद्धासु गर्भं विन्दन्ति योषितः ॥१२५॥  
अदुष्टे प्राकृते बीजे जीवोपक्रमणे सति ।

एवम् श्री प्रभाषे इस प्रकार, योनिषु योनिश्री  
योनिश्रीके, शुद्धासु शुद्ध अर्थात् शुद्ध होने पर, प्राकृते  
स्वाभाविक शुद्धाश्री युक्त प्राकृत, अदुष्टे बीजे अने  
अदुष्ट श्रीश्रीमां और अदुष्ट बीजमें, जीवोपक्रमणे सति  
शुच्युं संक्रमण अर्थात् जीवका संक्रमण होने पर, योषितः  
श्रीश्री स्त्रियों, गर्भम् गर्भं गर्भ, विन्दन्ति धारयु करे  
छे धारण करती हैं ॥ १२५ ॥

125-125½. A woman, whose gynecic organs have been purified by these measures will be able to conceive if the seed be unimpaired and possessed of its natural qualities and if all the conditions for fertilization, such as entry of the soul, be present.

पञ्चकर्मविशुद्धस्य पुरुषस्यापि चेन्द्रियम् ॥१२६॥  
परीक्ष्य वर्णदोषाणां दुष्टं तद्गैरुपाचरेत् ।

पञ्चकर्म- पञ्चकर्मश्री पञ्चकर्मसे, विशुद्धस्य शुद्ध  
करेवा शुद्ध किये हुए, पुरुषस्य च अपि पुरुषना पुरुषके,  
इन्द्रियम् शुद्धनी शुद्धनी, दोषाणाम् दोषानां दोषोंके,  
वर्णः वर्णोद्वारा वर्णोद्वारा, परीक्ष्य परीक्षा करीने  
परीक्षा करके, दुष्टम् दोषाणुं दोष तो तेने दुष्ट होने  
पर उसका, तद्गैः ते दोषने नाश करना श्री औषधियों  
उन दोषके नाशक औषधोंसे, उपाचरेत् उपचार करवे।  
ओष्ठो उपचार करना चाहिए ॥ १२६ ॥

126-126½. The semen of a man that has been purified by the pentad

१२६. जीवोपक्रमणे—गर्भावक्रमणे (द.)

of purificatory measures should be tested by its color; and whatever humoral impairment is seen therein should be rectified by suitable curative measures.

भवन्ति चात्र—

सलिङ्गा व्यापदो योनेः सनिदानचिकित्सिताः १२७  
उक्ता विस्तरतः सम्यङ्मुनिना तत्त्वदर्शिना ।

अत्र च आ विषयमां इस विषयमें, भवन्ति श्लो३३  
छे ३ श्लोक हैं कि, तत्त्वदर्शिना तत्त्वदर्शिं तत्त्वदर्शी,  
मुनिना मुनिं मुनिने, सलिङ्गाः वक्ष्य लक्षण, सनिदान-  
निदान निदान, चिकित्सिताः अने चिकित्सासिद्धित  
और चिकित्सासहित, योनेः योनिना योनिने, व्यापदः  
रोगो रोगों, विस्तरतः विस्तारशी विस्तारपूर्वक, सम्यक्  
सारी रीति सम्यक् प्रकारसे, उक्ताः उक्ता छे कह दिये  
हैं ॥१२७३॥

Here are verses again—

127-127½. The gynecic disorders,  
have been described along with their  
signs and symptoms, etiology and  
treatment in extenso, by the great sage  
endowed with spiritual insight."

शुक्रदोषादिविषये आत्रेयं प्रत्यग्विवेशस्य प्रश्नाः—

पुनरेवाग्निवेशस्तु पप्रच्छ मिषजां वरम् ॥१२८॥

आत्रेयमुपसङ्गम्य शुक्रदोषास्त्वयाऽनघ ! ।

रोगाध्याये समुद्दिष्टा ह्यष्टौ पुंसामशेषतः ॥१२८॥

तेषां हेतुं भिषक्श्रेष्ठ ! दुष्टादुष्टस्य चाकृतिम् ।

चिकित्सितं च कात्स्न्येन क्लैब्यं यच्च चतुर्विधम् १३०

उपद्रवेषु योनीनां प्रदरो यच्च कीर्तितः ।

तेषां निदानं लिङ्गं च चिकित्सां चैव तत्त्वतः ॥१३१॥

समासव्यासमेदेन प्रब्रूहि मिषजांवर ! ।

१२७½. मुनिना तत्त्वदर्शिना—मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः (य.)

१३ ½ मेदेन—योगेन (ब.)

॥ प्रब्रूहि—ब्रूहि नो (य. ब.)

॥ —तच्च ब्रूहि (क.)

अग्निवेशः अग्निवेशे अग्निवेशने, मिषजाम् वरम्  
वैद्यश्रेष्ठ वैद्यश्रेष्ठ, आत्रेयम् आत्रेयनी आत्रेयके,  
उपसङ्गम्य पासो ७४३३ पास जा कर, पुनः पुन  
द्वितीयो फिर, पप्रच्छ पूछ्युं पूछा, अनघ हे निष्पाप  
हे निष्पाप, भिषक्श्रेष्ठ हे वैद्यश्रेष्ठ हे वैद्यश्रेष्ठ, भिष-  
जाम् वर हे वैद्यवर हे वैद्यवर, त्वया आपे आपने,  
रोगाध्याये अष्टोदरीय अध्यायमां अष्टोदरीय अध्यायमें,  
पुंसाश्च पुंसेना पुंसोंके, अष्टौ आठ आठ, शुक्रदोषाः  
शुक्रदोष शुक्रदोष, समुद्दिष्टाः अता०५५ छे बतलाये हैं,  
अशेषतः संपूर्णतया संपूर्णतया, तेषां तेषां उनके,  
हेतुं हेतु कारण, दुष्टादुष्टस्य दुष्ट अने अदुष्ट वीर्यनां  
दुष्ट और अदुष्ट वीर्यके, चाकृतिम् वक्ष्य लक्षण,  
कात्स्न्येन च अने संपूर्ण और संपूर्ण, चिकित्सितम्  
चिकित्सा चिकित्सा, यच्च च ७७ जो, चतुर्विधम् चार  
प्रकारकी चार प्रकारकी क्लैब्यम् नपुंसकता नपुंसकता,  
योनीनाम् तथा योनिने योनिना तथा योनिरोगोंके, उपद्र-  
वेषु उपद्रवेषु उपद्रवोंमें, यः च ७७ जो, प्रदरः प्रदर  
प्रदर, प्रकीर्तितः उद्धृत छे कहा गया है, तेषाम् तेषां  
उनके, निदानम् निदान निदान, लिङ्गं वक्ष्य लक्षण,  
चिकित्साम् च अने चिकित्साने और चिकित्साको,  
समास-संक्षेप संक्षेप, व्यासमेदेन अने निस्तारना  
श्लेष्मी और विस्तारमेदसे, तत्त्वतः यथार्थ रीति यथार्थ  
रीतिसे, प्रब्रूहि उद्धृत कहिये ॥ १२८-१३१॥

128-131½. Agnivesa, again approa-  
ching Atreya the foremost of physi-  
cians, said, "Describe, O, sinless one,  
and the best of physicians! the seminal  
disorders affecting men which have  
been enumerated as eight in the  
chapter on Nomenclature of diseases  
(chapter XIX Sutra); now, describe O,  
best of physicians! these disorders with  
their causes, the characteristics of heal-  
thy and morbid conditions, and their  
treatment in full detail. Describe also  
impotency which is of four types as  
well as the etiology, symptoms and

the lines of treatment of the complications of gynecic disorders in which colporrhea has been mentioned as one. Describe them in brief and in extenso too, O, best among physicians !”

तस्मै शुश्रूषमाणाय प्रोवाच मुनिपुङ्गवः ॥१३२॥

मुनिपुङ्गवः मुनिवरे मुनिवरे, शुश्रूषमाणाय साध-  
नान्दी भवति वाचा सुनेके इच्छावाने, तस्मै तेने  
उसको, प्रोवाच आ उपदेश कर्षी यह उपदेश  
किया ॥१३२॥

132. To the disciple who inquired  
thus, the best among sages replied  
and said:

दृष्टस्य शुक्रस्यार्वाकत्वम्—

बीजं यस्माद्व्यायाये तु हर्षयोनिस्तमुत्थितम् ।  
शुकं पौरुषमित्युक्तं तस्माद्वक्ष्यामि तच्छृणु ॥१३३॥

व्यायाये मैथुनार्वा मैथुनमे, हर्षयोनि- हर्षने करणे  
हर्षके कारण, तमुत्थितम् उत्पन्न अथेव उत्पन्न हुआ,  
पौरुषम् शुक्रम् पुत्रपुत्र वीर्यं पुरुषका शुक्र, यस्मात्  
ने करणार्वा जिस कारणसे, बीजम् इति बीज बीज,  
उक्तम् उक्तम् उ कदाता है, तस्मात् ते वह, वक्ष्यामि  
कहूँ छुँ कहता हूँ, तत् ते उसे, शृणु सांभलो  
सुनो ॥ १३३ ॥

133. Seminal secretion in man is  
born of the excitement due to the  
contact with female genital organ  
during sexual congress and acts as the  
fertilising agent. Listen as I now  
describe its morbid conditions.

यथा बीजमकालाम्बुकुमिकीटाग्निदूषितम् ।  
न विरोहति संदुष्टं तथा शुकं शरीरिणाम् ॥१३४॥

यथा ने प्रकारे जिस प्रकार, अकालाम्बु- अकाल  
वर्षा अकाल वर्षा, कुमि- कुमि कुमि, कीट- कीट कीट,

अग्नि- अग्नि अग्नि और अग्निसे, दूषितम् दूषित अथेव  
दूषित हुआ, बीजम् बीज बीज, न विरोहति अ-  
उत्पन्न करतुं नहीं अंकुरको उत्पन्न नहीं करता, तथा  
तेवी रीति उसी प्रकार, शरीरिणाम् पुत्रपुत्र पुरुषका,  
संदुष्टम् दूष्ट दूषित, शुकम् वीर्य अर्धने उत्पन्न करतुं  
नहीं वीर्य गर्भको उत्पन्न नहीं करता ॥ १३४ ॥

134. As the seed, which is impai-  
red by untimely watering or unsea-  
sonal rains or by parasites, insects  
and fire, does not grow, similar is  
the case with the vitiated semen in  
man.

शुकदुष्टेर्निदानं संप्राप्तिश्च—

अतिव्यायाद्व्यायामादसात्म्यानां च सेवनात् ।  
अकाले वाऽप्ययोनौ वा मैथुनं न च गच्छतः १३५  
रूक्षतिककषायातिलवणाम्लोष्णसेवनात् ।  
नारीणामरसज्ञानां गमनाच्चरया तथा ॥१३६॥  
चिन्ताशोकाद्विस्मम्भाच्छस्त्रक्षारान्निविभ्रमात् ।  
भयात्क्रोधादभीचाराद्याधिभिः कर्षितस्य च ॥१३७॥  
वेगाघातात् क्षताच्चापि घातूनां संप्रदूषणात् ।  
दोषाः पृथक् स्वमस्ता वा प्राप्य रेतोवहाः सिराः १३८  
शुकं संदूषयन्त्याशु

अतिव्यायात् अतिमैथुनार्वा अतिमैथुनसे, व्या-  
यामात् व्यायामार्वा व्यायामसे, असात्म्यानाम् च अने  
असात्म्याना और असात्म्यके, सेवनात् सेवनार्वा सेवनसे,  
अकाले वा अपि अकाले अकालमे, अयोनौ वा अथवा  
अथेनिर्वा अथवा अयोनिमे, मैथुनम् मैथुन करवाथी  
मैथुन करनेसे, न च गच्छतः निश्चयक मैथुन न करवाथी  
बिलकुल मैथुन न करनेसे, रूक्ष- रूक्ष रूक्ष, तिक्त- तिक्त  
तिक्त, कषाय- कषाय कषाय, अति- अत्यंत अत्यन्त,

१३५. अरमज्ञाना-अरसज्ञानात् (क. व. ष. फ.)

.. गमनात्-संज्ञानात् (व. ष. फ.)

१३७. शस्त्रक्षारान्निविभ्रमात्-शस्त्रक्षारान्निभिस्तथा (फ.)

.. अभीचारात्-अतीचारात् (व. ष.)

.. -अभीचारात् (व.)

लवण- लवण, अम्ल- अम्ल, उष्ण- तथा गरम तथा गरम, सेवनात् पदार्थानां सेवनात् द्रव्योंके सेवनासे, जरसज्ज्ञानात् अरसिक अरसिक, नारीणाम् स्त्रीणां साथे स्त्रियोंके साथ, गमनात् अभन करनेवाही गमन करनेसे, तथा जरया वृद्ध अवस्थाथी वृद्धावस्थासे, चिन्ता- चिन्ताथी चिन्तासे, शोकात् शोकथी शोकसे, अविश्रम्भात् अविश्रामथी अविश्रामसे, शस्त्र- शस्त्र शस्त्र, क्षार- क्षार क्षार, अग्नि- अग्नि अग्नि, अग्नि- अग्नि अग्नि, और अधिकर्मके, विभ्रमात् अनुचित अयोग्यथी अनुचित प्रयोगसे, भयात् भयथी भयसे, क्रोधात् क्रोधथी क्रोधसे, बर्षाचारात् अभिचारथी अभिचारसे, व्याधिभिः रोगान्ने बीधे रोगोंके कारण, कश्चित् च कश्चित् अथेही कृशताथी उत्पन्न हुई कृशतासे, वेगाद्यावात् वेगान्ने रोकनाथी वेगोंको रोकनेसे, क्षतात् क्षतथी क्षतसे, धातूनाम् अने धातुओंना और धातुओंके, संप्रवृत्तात् च अपि दूषित धातुथी दूषित होनेसे, पृथक् पृथक् पृथक् पृथक्, समस्ताः वा अथवा अथवा अथवा सती, दोषाः दोष दोष, रेतोवहाः शुक्रवाही शुक्रवाही, धमनीः नाडीभ्यां नाडियोंमें, प्राण्य अर्धने जाकर, शुक्रं शुक्रने शुक्रको, आशु अर्धही शीघ्र, संदूषयन्ति दूषित करे छे दूषित करते हैं ॥ १३५-१३८ ॥

135-138½. By excessive sexual indulgence, bodily exertion and habitual use of unwholesome diet, and by untimely sexual congress, or by sexual abuse or absolute sexual abstinence or by the habitual use of dry, bitter, astringent, very saltish, acid, or hot articles or sexual congress with an unresponsive woman or owing to old age, worry, grief, or lack of mutual confidence or to injury by weapon, caustics, or fire or owing to fear, anger, black magic, emaciation due to diseases, suppression of the natural urges or owing to injury or vitiation of body elements, the humors get provoked

either singly or collectively; and reaching the seminal vessels soon, they vitiate the semen excessively.

शुक्रदोषभेदाः—

तद्वक्ष्यामि विभागशः ।

फेनिलं तनु रुक्षं च विवर्णं पूति पिच्छिलम् ॥१३९॥

अन्यधातूपसंसृष्टमवसादि तथाऽष्टमम् ।

तद तेने उचे, विभागशः विभाग अनुसार विभागके अनुसार, वक्ष्यामि उल्लेख कहूंगा, फेनिलम् झीझुरी, तनु आगदार, तनु पातणु पतला, रुक्षं रुक्ष, विवर्णम् विवर्णं विवर्ण, पूति पूति पूति, पिच्छिलम् पिच्छिल पिच्छिल, अन्यधातूपसंसृष्टम् अन्य धातुथी दूषित अन्यधातुसे दूषित, तथा तथा तथा, अष्टमम् अष्टमं आठवाँ, अवसादि अरसादी, आम दूषित वीर्य अष्ट प्रकरनु छे अवसादी, इस तरह दूषित वीर्य आठ प्रकारका है ॥ १३९ ॥

139-139½. Now I shall describe each of the conditions according to its classification. Frothiness, thinness, dryness, discoloration, putrid smell, sliminess, admixture with other body elements and sinking when put in water, are the eight conditions of seminal morbidity.

वातदूषितशुक्रस्य लक्षणम्—

फेनिलं तनु रुक्षं च कृच्छ्रेणारूपं च मारुतात् ॥१४०॥  
भवत्युपहतं शुक्रं न तद् गर्भाय कल्पते ।

मारुतात् वायुथी वायुसे, उपहतम् दूषित अथेधुं दूषित हुआ, शुक्रं शुक्रं शुक्र, फेनिलम् झीझुरी, आगदार, तनु पातणु पतला, रुक्षं रुक्ष, कृच्छ्रेण भुकेलीथी कठिनाईसे, अल्पम् च अने शोथ प्रभाषुभा और दोहो मात्रामें, भवति प्रवृत्त भाव छे प्रवृत्त होता है, तद तेने वह गर्भाय अर्थ भाटे संभोग

१३९. विभागशः—विशेषतः (ब.)

लिर, न कल्पते समर्थं यत् नथी असमर्थ होता है ॥१४०३॥

140-140½. Owing to morbid vata, the semen becomes frothy, thin, ununctuous and scanty, and discharges with difficulty, suffers vitiation and precludes conception.

पित्तदूषितशुक्रस्य लक्षणम्—

सनीलमयवा पीतमत्युष्णं पूतिगन्धि च ॥१४१॥  
दहल्लिङ्गं विनिर्याति शुक्रं पित्तेन दूषितम् ।

पित्तेन पित्तं पित्ते, दूषितम् दूषित, शुक्रम् शुक्रं शुक्र, सनीलम् कंठिकं नीलं कुछ नीला, अयवा अथवा अयवा, पीतम् पीतं पीला, अत्युष्णम् अत्यन्त गरम अत्यन्त गरम, पूतिगन्धि च अने भराभ, अन्धवाणुं और पूनिगन्धवाला, लिङ्गम् अने शिशुर्मा और सिन्नमें, दहत् च दह करतुं जलन करता हुआ, विनिर्याति अद्भार नीकले से बाहर निकलता है ॥१४१३॥

141-141½. The semen, vitiated by pitta, is of bluish or yellowish tinge is very hot, putrid in smell, and causes burning in the phallus while it is being discharged.

श्लेष्मदूषितशुक्रस्य लक्षणम्—

श्लेष्मणा बद्धमार्गं तु भवत्यत्यर्थपिच्छिलम् ॥१४२॥

श्लेष्मणा तु अने कंठी और कफसे, बद्धमार्गम् रोकथेला मार्गवाणुं वीर्यं रुके हुए मार्गवाला वीर्य, अत्यर्थ-अत्यन्त अत्यन्त, पिच्छिलम् पिच्छिल, पिच्छिल, बंधति बंधा से होता है ॥१४२॥

142. When the seminal passage is obstructed by kapha, the semen becomes excessively viscid.

१४१. अत्युष्णं-मलिनं (क.)

१४२. बद्ध-बद्ध (ब.)

रुधिरान्वितशुक्रस्य लक्षणम्—

स्त्रीणामत्यर्थगमनादभिघातात् क्षतादपि ।

शुक्रं प्रवर्तते जन्तोः प्रायेण रुधिरान्वयम् ॥१४३॥

स्त्रीणाम् स्त्रीणां साथे स्त्रियोंके साथ, अत्यर्थ-अत्यन्त अत्यन्त, गमनात् समागम करवाथी समागम करनेसे, अभिघातात् अभिघातथी अभिघातसे, क्षतात् अपि अने क्षतथी पक्षु और क्षतसे भी, जन्तोः मनुष्यतुं मनुष्यका, शुक्रम् शुक्रं शुक्र, प्रायेण धातुं करीने बहुधा, रुधिरान्वयम् रक्तमिश्रित रक्तमिश्रित, प्रवर्तते प्रवर्तते से प्रवृत्त होता है ॥१४३॥

143. Owing to excessive sexual indulgence or to injury or ulcerations, the semen is discharged mixed generally with blood.

वेगसंधारणलक्षणां वायुना विहतं पथि ।

कृच्छ्रेण याति ग्रथितमवसादि तथाऽऽष्टमम् १४४  
इति दोषाः समाख्याताः शुक्रस्याष्टौ सलक्षणाः ।

तथा तथा तथा, वेगसंधारणात् वेगने रोकथेला वेगको रोकनेसे, वायुना वायुथी वायुसे, पथि मार्गमा मार्गमें, विहतम् रोकथेलुं अवरोध हुआ, शुक्रम् शुक्रं वीर्य, ग्रथितम् गंठित अर्ध ग्रथित होकर, कृच्छ्रेण मुश्केदीथी मुश्केदीसे, याति अद्भार आवे से बाहर निकलता है, अष्टमम् अवसादि आ वीर्य अवसादी नामना आठमा अद्भारतुं से यह वीर्य अवसादी नामके आठवें प्रकारका है, इति आ ये, शुक्रस्य शुक्रना शुक्रके, अष्टौ आठ आठ, दोषाः दोषा दोष, सलक्षणाः लक्षणसहित लक्षणसमेत, समाख्याताः कक्षा से कहे गये हैं ॥१४४३॥

144-144½. Owing to the suppression of natural urges, the semen being obstructed by vata in its course becomes clotted and is discharged with difficulty; it sinks when put in water. This is the eighth kind of

१४३. क्षतादपि-क्षतादपि (क.)

morbidity. Thus have been described the eight kinds of seminal disorders with their characteristic signs.

शुद्धस्य शुक्रस्य लक्षणम्—

स्निग्धं घनं पिच्छिलं च भक्षुरं चाविदाहि च ॥१४५॥  
रेतः शुद्धं विजानीयाच्छेनं स्फटिकनन्निभम् ।

स्निग्धम् रिनञ्च स्निग्ध, घनम् घन, घन, पिच्छि-  
लम् पिच्छिल, पिच्छिल, भक्षुरम् भक्षुर, भक्षुर, अविदाहि  
च अने अविदाही और अवेदाही, शेनम् शेन  
स्फेद, स्फटिक-सन्निभम् च अने स्फटिक समान और  
स्फटिकके समान, रेतः शुद्धे शुक्रको, शुद्धम् शुद्ध शुद्ध,  
विजानीयात् अलुत्तुं ओष्ठे जानेना चाहिए ॥१४५॥

145-145½. That should be known as pure or normal semen, which is viscid, dense, slimy, sweet, non-irritant and whitish, and transparent like a crystal in appearance.

शुक्रदोषाणां चिकित्सा—

वाजीकरणयोगैस्तेरुपयोगसुखंहितैः ॥१४६॥

रक्तपित्तहरैर्योगैर्योनिव्यापदिकैस्तथा ।

दुष्टं यदा भवेच्छुक्रं तदा तत् समुपाचरेत् ॥१४७॥

यदा न्यारे जब, शुक्रम् शुक्र शुक्र, दुष्टम् दुष्ट  
दुष्ट, भवेत् थाय होवे तदा त्वारे तव, तव तेनी  
उसकी, तैः ते ते उन उन, उपयोग-सुखैः उपयोगद्वारा  
आरोग्य आपनाश उपयोगद्वारा आरोग्य देनेवाले,  
हितैः अने हितकर और हितकर, वाजीकरणयोगैः-  
वाञ्छितशु शुक्रोत्थी वाजीकरण योगोंसे, रक्तपित्तहरैः रक्त-  
पित्तहर शुक्रोत्थी रक्तपित्तहर योगोंसे, तथा तथा तथा,  
योनिव्यापदिकैः योनिव्यापत्तिने नाश करनेवाले योनिव्याप-  
योनिव्यापदिकैः नाशक योगोंसे, समुपाचरेत् यैकित्सा करने  
ओष्ठे चिकित्सा करनी चाहिए ॥ १४६-१४७ ॥

१४५. चाविदाहि च—वारिवाहि च (फ)

१४५½. शेनं—शुद्धं (घ.)

१४७. शुक्रं—रेतः (घ. ड.)

146-147. When the semen gets vitiated, it should be treated with the virilific recipes which are pleasant to take and beneficial combined with the remedies indicated in hemothermia and gynecic complications.

घृतं च जीवनीयं यक्ष्यवनप्राश एव च :

गिरिजस्य प्रयोगश्च रेतोदोषानपोहति ॥१४८॥

यक्ष जीवनीयम् घृतम् च शुक्रोत्थी घृत के ते  
जो जीवनीय घृत है वह, यक्षवनप्राशः च एव यक्ष-  
प्रश्न यक्षवनप्राश, गिरिजस्य अने शिवजीवने और  
शिवजीवने, प्रयोगः च प्रयोग प्रयोग, रेतोदोषान्  
शुद्धेयाने शुक्रदोषोंको, अपोहति दूर करे छे दूर करते  
हैं ॥ १४८ ॥

148. The life-promoter ghee and the linctus named Chyavana-prasa and the course of mineral pitch, remove the seminal morbidity.

वातान्विते हिताः शुके निरुद्धाः सानुवासनाः ।

वातान्विते वायुयुक्त वातयुक्त, शुके शुक्रभा शुक्रमे,  
सानुवासनाः अनुवासनसहित अनुवासनके साथ,  
निरुद्धाः निरुद्ध अस्तिथी निरुद्ध बन्धन, हिताः हित-  
कर छे हितकर हैं ॥१४८॥

148½. When the semen is vitiated by vata, evacuative and unctuous ene-  
mata are beneficial.

अभयामलकीयं च पैत्ते शस्तं रसायनम् ॥१४९॥

पैत्ते पित्तथी दूषित शुक्रभा पित्तसे दूषित शुक्रमे,  
अभयामलकीयम् अक्षयामलकीय अभयामलकीय, रसा-  
यनम् रसायन रसायन, शस्तं प्रशस्त छे प्रशस्त है  
॥१४९॥

१४९. अभयामलकीयं—आश्वामलकीयं (द. घ. क.)

१. रसायनम्—विरिजस्य (घ)



149. And if it is vitiated by pitta, the compound vitalizing elixir of chebulic and emblic myrobalans is recommended.

માગધ્યમૃતલોહાનાં ત્રિફલાયા રસાયનમ્ ।  
કફોત્થિતં શુક્રદોષં હન્યાદ્મહાતકસ્ય ચ ॥૧૫૦॥

માગધી-પીપરતું રસાયન વિષ્ણલીકા રસાયન, અમૃત-આમલકીતું રસાયન આમલકીકા રસાયન, લોહાનામ્ લોહતું રસાયન લોહકા રસાયન, ત્રિફલાયાઃ ત્રિફળાતું રસાયન ત્રિફલાકા રસાયન, મહાતકસ્ય ચ અને બિશ્માનાતું બીર ભિલાંવિકા, રસાયનમ્ રસાયન રસાયન, કફો-ત્થિતમ્ કફજન્ય, શુક્રદોષમ્ શુક્રદોષને શુક્ર-દોષકો, હન્યાદ્ હણે છે નષ્ટ કરતે હૈ ॥ ૧૫૦ ॥

150. If the vitiation of semen is by kapha, then the course of vitalizing elixir of long pepper, guduch, iron or the three myrobalans, or that of the marking nut (Chapter I Chikitsa), removes the morbidity.

યદન્યઘાતુસંસૃષ્ટં શુક્રં તદ્વીક્ષ્ય યુક્તિઃ ।  
યથાદોષં પ્રયુજીત દોષઘાતુભિષગ્જિતમ્ ॥૧૫૧॥

યદ શુક્રમ્ ને શુક્રં જો શુક્ર, અન્યઘાતુ-બીજ ઘાતુથી અન્ય ઘાતુને, સંસૃષ્ટમ્ સંસૃષ્ટ હોય તે સંસૃષ્ટ હોને પર, તત્ વીક્ષ્ય તેને બોધને ઉસકો દેશકર, યુક્તિઃ યુક્તિથી યુક્તિ, યથાદોષમ્ દોષ અનુસાર દોષાનુસાર, દોષઘાતુ-દોષ અને ઘાતુ બન્નેના દોષઘાતુ દોષઘાતુ, ભિષગ્જિતમ્ ઔષધને ઔષધકા, પ્રયુજીત પ્રયોગ કરવે પ્રયોગ કરનાં જાણે ॥ ૧૫૧ ॥

151. If the semen be combined with any other body-element, the proper corrective for the morbid element should be combined and given after examining systematically the nature of the morbidity.

૧૫૧. તદ્વીક્ષ્ય યુક્તિઃ-વીક્ષ્ય મિષક્ ક્રિયાં (ક.)

સર્પિઃ પયો રસાઃ શાલિયંબગોધૂમપષ્ટિકાઃ ।  
શસ્તાઃ શુક્રદોષેષુ વસ્તિકર્મ વિશેષતઃ ॥૧૫૨॥  
ઇત્યષ્ટશુક્રદોષાણાં મુનિનોક્તં ચિકિત્સિતમ્ ।

શુક્રદોષેષુ શુક્રદોષોમાં શુક્રદોષોમાં, સર્પિઃ શી શૃત, પયઃ દૂધ દૂધ, રસાઃ નાંસરસ નાંસરસ, શાલિઃ શાલિ, યવ-બવ જૌ, ગોધૂમ-બઉં ગેહૂં, પષ્ટિકાઃ પાઠી ચોખા સાંઠી જાવલ, વિશેષતઃ અને ખાસ કરીને ખાસ કરકે, વસ્તિકર્મ વસ્તિકર્મ વસ્તિકર્મ, શસ્તાઃ પ્રશસ્ત છે પ્રશસ્ત હૈ, ઇતિ આ પ્રમાણે આ પ્રકાર, મુનિના મુનિએ મુનિને, અષ્ટ અષ્ટ બાઠ, શુક્ર-દોષાણામ્ શુક્રદોષોની શુક્રદોષોની, ચિકિત્સિતમ્ ચિકિત્સા ચિકિત્સા, ઉક્તમ્ કહી છે કહી હૈ ॥ ૧૫૨ ॥

152-152½. Ghee, milk, meat-juices, sali rice, barley, wheat and shashtika rice are beneficial in vitiated condition of the semen, and enemata are specially indicated. Thus have been described, by the sage, the treatment of the eight kinds of seminal morbidity.

કૈવલ્યસ્ય નિદાનં સામાન્યલક્ષણં ચ—

રેતોદોષોદ્ભવં કૈવલ્યં યસ્માન્નુષ્ઠયૈવ સિધ્યતિ ॥૧૫૩॥  
તતો વક્ષ્યામિ તે સમ્યગભિવેશ ! યથાતથમ્ ।

અભિવેશ ! હે અભિવેશ ! હે અભિવેશ !, યસ્માન્ નેથી જિસ કારણે, રેતોદોષોદ્ભવશ્ચ શુક્રદોષજન્ય, કૈવલ્યમ્ નપુંસકતા નપુંસકતા, શુદ્ધિયા એવ શુદ્ધિથી જ શુદ્ધિથી, સિધ્યતિ હૈ આપ છે દૂર થોતી હૈ, તતઃ તેથી આપે, તે તને તુમકો, યથાતથમ્ યથાથોમ્ યથાથોમ્, સમ્યક્ સારી રીતે અચ્છી તરહસે, વક્ષ્યામિ કહીશ કહુંગા ॥ ૧૫૩ ॥

153 153½. If impotency is caused by seminal morbidity, it gets cured by the purification of the semen. Henceforth, O, Agnivesa ! I shall fully describe systematically the subject of impotency.



बीजध्वजोपधाताभ्यां जरया शुक्रसंक्षयात् ॥१५४॥  
 क्लैब्यं संपद्यते तस्य शृणु सामान्यलक्षणम् ।

बीज- शुक्र शुक्र, ध्वज- अने शिशुना और शिशुके,  
उपचाताम्याम् द्रोषेऽथी दंघोसे, जरया प्रकापस्थाथी वृद्धा-  
वस्थासे, शुक्र- अने वीर्यनी और वीर्यकी संक्षयान्  
क्षीयताथी क्षीणतासे, क्लेश्यम् नपुंसकता नपुंसकता, संप-  
द्यते प्राप्त थाय अ प्राप्त होती है, तस्य तेन उसका,  
सामान्य- सामान्य सामान्य, लक्षणम् लक्षण लक्षण,  
द्रुण साधने सुनो ॥१५४॥

154-154½. Impotency results from seminal morbidity, the disorders of the phallus, old age and loss of semen. Now listen to an account of its general symptoms.

सङ्कल्पप्रवणो नित्यं प्रियां वदन्नामपि स्त्रियन् ॥१५५॥  
न याति लिङ्गशैथिल्यात् कदाचिद्याति वा यदि ।  
श्वासार्तः स्त्रिभगाग्रश्च मोघसङ्कल्पचेष्टितः ॥१५६॥  
म्लानशिशश्च निर्बीजः स्यादेतत् क्लैब्यलक्षणम् ।  
सामान्यलक्षणं ह्येतद्विस्तरेण प्रवक्ष्यते ॥१५७॥

નિત્યમ્ રોજ સદા, સદ્ગુણ- સંકલ્પમાં સંકલ્પમાં,  
પ્રવળઃ તત્પર તત્પર, લિંગશૈથિલ્યાત વિગ્નની શિથિલતાને  
લીધે લિંગકી શિથિલતાકે કારણ, પ્રિયામ્ પ્રિય પ્રિય,  
વચ્ચામ્ અને વચ્ચે ઔર વચ્ચે, સ્ત્રિયમ્ અપિ આ સ્ત્રિયે  
પશુ સ્ત્રીમેં મી, ન ચાતિ ગમન કરતે નથી ગમન  
નહીં કરતા, યદિ વા અથવા તેા અથવા તેા, કદાચિત્  
કદાચ કદાચિત્, ચાતિ ગમન કરે છે ગમન કરતા હૈ,  
આસાર્થઃ તેા આસ અટે છે તેા આસપીકિત્ હોતા હૈ, સ્વિચ્છ-  
ગાત્રઃ ચ શરીરમાં પસીનેા છૂટે છે શરીરમેં પસીના  
છૂટતા હૈ, મોચકલ્પવેદિતઃ તેનાં ચેષ્ટા અને સંકલ્પ  
બ્યર્થ બ્ય છે તસકે સંકલ્પ ઔર ચેષ્ટા વિફલ હોતે હૈ,  
મ્હાનશિક્ષઃ શિક્ષ શિથિલ થઈ બ્ય છે શિક્ષ સ્થિલ  
હો જાતા હૈ, નિર્વીજઃ ચ અને નિર્વીજ ઔર નિર્વીર્ય.  
આત્ હોય છે હોતા હૈ, અત્ આ યદ, કૈવલ્યલક્ષણમ્  
નપુસકતાવં લક્ષણ છે નપુસકતાકા લક્ષણ હૈ, અત્

अ। यह, सामान्य-सामान्य सामान्य, लक्षणम् लक्षणं  
लक्षण, विस्तरेण विस्तारः विस्तारम्, प्रवक्ष्यते कहेवाचं  
आवे ये वा जाता है ॥ १५५-१५७ ॥

155-157. The following are the characteristics of impotency:—though continually pre-occupied mentally with the sexual thoughts yet the person does not approach the willing partner, or approaches her very rarely if ever. Owing to impaired erectile power, he is afflicted with hard breathing, perspiration of the entire body, lack of erection and lack of sperm, and his desire and efforts at mating get frustrated. These are the general symptoms of impotency. They will now be described in detail.

बीजं पघात जर्कुव्यलक्षणम् :-

शीतरूलाख्यसंक्षिप्तविरुद्धाजीर्णभोजनात् ।  
 शोकचिन्तानयत्रासात् स्त्रीणां चात्यर्थसेवनान् ॥  
 अभिचाराद्विस्मभाद्रसादीनां च संशयात् ।  
 वातादीनां च वैश्याल्यवानशनाच्छ्रमात् ॥१५२॥  
 नारीणामरसञ्ज्ञत्वान् पञ्चकर्षापचारतः ।  
 बीजोपघाताद्भवति पाण्डुरर्णः सुदुर्बलः ॥१६०॥  
 अल्पप्राणोऽल्पहर्षश्च प्रमदाद् भवेन्नरः ।  
 हृत्पाण्डुरोगतमककामलाश्रमपीडितः ॥१६१॥  
 छर्द्यतीसारशूलार्तः कासज्वरनिपीडितः ।  
 बीजोपघातजं क्लैव्यं

शीत- शीतल शीतल, रुक्ष- रुक्ष रुक्ष, अर- अर-  
योडा, संक्षिप्त- मलिन मलिन, विरुद्ध- विरुद्ध विरुद्ध.

११८. शीतरूक्षाल्पमं क्लृष्टविषदाजीर्णभोजनात्-विषदा-

त्यस्य संक्षिप्तविषयान्ताद्यभोजनात् (ध.)

॥ विरुद्धाजीर्णभोजनात्-विरुद्धासाम्यभोजनात् (घं.)

शीतरुक्ष-पृथिरुक्ष (ब.)

१५७. निर्बीजः-निर्वीर्यः (ध.)

अजीर्ण-भोजनात् अने अलुब्धतां भोजनशी और अजी-  
र्णमें भोजन करनेसे, शोक- शोक शोक चिन्ता- चिन्ता  
चिन्ता, मय- मय मय, त्रासात् अने त्रासशी और  
त्रासे, स्त्रीणाम् च स्त्रीभ्योऽनु और स्त्रियोंके, अत्यर्थ-  
अत्यन्त अत्यन्त, सेवनात् सेवन करवायी सेवन करनेसे,  
अभिचारात् अभिचारशी अभिचारसे, अविस्मृतात्  
अविस्मृतासशी अविस्मृतासे, रसादीनाम् च रस  
प्रेरेणा रस आदिके, संक्षयात् बहुत क्षय  
थवाभी बहुत क्षय होनेसे, वातादीनाम् च वायुआदिनी  
वातादिकी, वैषम्यात् विषमताशी विषमतासे, तथा एव  
अननानात् अनननशी अनननसे, श्रमात् परिश्रमशी  
परिश्रमसे, नारीणाम् स्त्रीभ्योऽनु स्त्रियोंमें, अरसज्जत्वात्  
रसयत्ता नहीं होवाशी रसयत्ता न होनेसे, पञ्चकर्म-  
पञ्चकर्मना पंचकर्मके, अपचारात् अपचाराशी अपचारसे,  
बीजोपघातात् अने शुक्रक्षयशी और शुक्रक्षयसे, नरः  
मनुष्य मनुष्य, पाण्डुरवर्णः पाण्डुरवर्णने पाण्डुरवर्णका  
सुदुर्बलः अने अतिदुर्बल और अतिदुर्बल, भवति भवति  
छे होता है, प्रमदासु अने स्त्रीभ्योऽनु स्त्रियोंमें,  
अल्पप्राणः अल्पप्राणशी अल्पवल्युक्त, अल्पहर्षः च  
तथा अल्प हर्षवाणी तथा अल्प हर्षवाला, भवेत् होय छे  
होता है, हृत्- तथा हृदयरोग तथा हृदोग, पाण्डुरोग-  
पाण्डुरोग पाण्डुरोग, तमक- तमक श्वास तमक श्वास,  
कामला- कामला कामला, श्रमपीडितः अने श्रमशी  
पीडित और श्रमसे पीडित, छर्दि- तेभ्य उच्छ्वासी एवं  
कै. अतीसार- अतीसार अतीसार, शूलार्तः अने शूल-  
पीडित और शूलपीडित, कास- तथा उधरस तथा खांसी,  
ज्वर- अने तापशी और ज्वरसे, निपीडितः पीडित रहे  
छे पीडित रहता है, बीजोपघातजम् आ शुक्रना उप-  
धातशी भयेक्षी यह शुक्रक्षयजन्य, क्लेशश्च नपुंसकता  
छे नपुंसकता है ॥ १५८-१६१ ॥

158-161. As a result of cold, dry, scanty, vitiated and antagonistic diet or pre-digestion meals, owing to grief, anxiety, fear and terror, or due to excessive indulgence in women, loss of nutrient fluid and other body elements, owing to discordance of vata

and other humors, or owing to fasting, fatigue, lack of response in the sexual partner or wrongful effects of the quinary procedures of purification, there occurs vitiation of semen and the person becomes pale of color, very weak, low spirited and of feeble erective power. He gets afflicted with cardiac disorders, anemia, asthma, jaundice, prostration, vomiting, diarrhea and colicky pain, cough and fever. This is the impotency caused by seminal morbidity.

ध्वजभङ्गकृतकैवल्यलक्षणम्—

ध्वजभङ्गकृतं शृणु ॥१६२॥

अत्यम्ललवणक्षारविरुद्धासात्म्यभोजनात् ।  
अत्यम्बुपानाद्विषमात् पिष्टान्नगुरुभोजनात् ॥१६३॥  
दक्षिणीरानूपमांससेवनाद्याधिकर्षणात् ।  
कन्यानां चैव गमनादयोनिगमनादपि ॥१६४॥  
दीर्घरोगां चिरोत्सृष्टां तथैव च रजस्वलाम् ।  
दुर्गन्धां दुष्टयोनिं च तथैव च परिश्रुताम् ॥१६५॥  
ईदृशीं प्रमदां मोहाद्यो गच्छेत् कामहर्षितः ।  
चतुष्पदाभिगमनाच्छेफसञ्चभिघाततः ॥१६६॥  
अथावनाद्या मेदूष्य शस्त्रदन्तनखक्षतात् ।  
काष्ठप्रहारनिष्पेषाच्छूकानां चातिसेवनात् ॥१६७॥  
रेतसञ्च प्रतीघाताद्ध्वजभङ्गः प्रवर्तते ।

ध्वजभङ्गकृतम् ध्वजभङ्गकृतम् नपुंसकताने  
ध्वजभङ्गजन्य-नपुंसकताको, शृणु सांभवे। सुनो, अति-  
अत्यन्त अत्यन्त, अम्ल-अम्ल अम्ल, क्वण- क्वण लवण,  
क्षार- क्षार क्षार, विरुद्ध- विरुद्ध विरुद्ध, असात्म्य-  
भोजनात् अने असात्म्य भोजनशी और असात्म्य भोजनसे,

१६३. असात्म्य-अजीर्ण (ड.)

१६५. दीर्घरोगां-दीर्घरोगी (ब. क.)

परिश्रुताम्-परिश्रुताम् (ब.)

१६६. ईदृशीं प्रमदां मोहाद्यो गच्छेत् कामहर्षितः-नरस्य प्रमदां

मोहादतिहर्षात् प्रगच्छतः (क.)

अत्यम्बुपानात् घृष्टं पाण्डु पीनाथी बहुत जल पीनेसे, विषमात् विषम विवम, पिष्टान्न-पिष्टान्न पिष्टान्न, गुरु-भोजनात् अने भारे भोजनथी और गुरु भोजनसे, दक्षि-क्षीं दक्ष, क्षीर-क्ष दक्ष, आनूपमांस-तथा आनूप मांसना तथा आनूपमांसके, सेवनात् सेवनथी सेवनसे, व्याधिकर्षणात् व्याधिथी कृश यथाभी व्याधिसे कृश होनेसे, कन्यानाम् च कन्याभिः कन्याओंसे, गमनात् गमन करवाथी गमन करनेसे, अयोनिगमनात् अपि अने अयोनिगमन करवाथी पक्षुः प्रवर्ज्यं थाय छे और अयोनिगमनसे भी ध्वजमंग होना है, दीर्घरोगात् वणी दीर्घरोगिणी पुनः दीर्घरोगिणी, चिरोत्सृष्टात् अङ्गुष्ठं काण्ठी तन्मयेथी चिरत्यक्ता, तथा एव च रजस्वला रजस्वला रजस्वला, दुर्गन्धाम् दुर्गन्धवाणी दुर्गन्धवाली, दुष्टयोनिम् च दुष्ट योनिवाणी दुष्ट योनिवाली, तथा एव परिश्रुताम् च अने परिश्रुत योनिवाणी और परिश्रुत योनिवाली, ईदृशीम् ऐथी ऐसी, प्रमदाम् प्रमदाने विषे प्रमदासे, कामहर्षितः कामहर्षित कामहर्षित, यः नो जो, मोहात् मोहथी मोहसे, गच्छेत् गमन करे छे तेना प्रवर्ज्यं थाय छे गमन करता है उसका ध्वजमंग होता है, चतुष्पदाभिगमनात् तेभ्यः पशुभ्यः एवं पशुगमनसे, शेफसः च अने बिज्जं और लिंगं, अभिघाततः योऽ वाजवाथी चोट लगनेसे, मेढूश्वा अथवा बिज्जने अथवा लिंगको, अघावनात् न योवाथी न घनेसे, जल-श्लेष्म शल्ल, दन्त-दंत दांत, नख-अथवा नभथी अथवा नखसे, क्षतात् क्षत अथवा घाव होनेसे, काष्ठ-प्रहार-काष्ठानां प्रहारथी लकड़ीके प्रहारसे, निष्पेशात् पीसावाथी पीसे जानेसे, शूकानाम् च शूकानां शूकोंके, अतिसेवनात् अत्यन्त सेवनथी अत्यन्त सेवनसे, रेतसः च अने वीर्यना और वीर्यके, प्रतीघातात् प्रतिघातथी प्रतिघातसे, ध्वजमंगः प्रवर्ज्यं ध्वजमंग, प्रवर्तते थाय छे होता है ॥ १६२-१६७ ॥

162-167. Now listen to the description of the diseases of the phallus, leading to impotency. As a result of excessive intake of acid, salt, alkaline, antagonistic and unwholesome diet, or drinking excessive quantities of water

or eating irregular meals, or by taking heavy pastry, excessive use of curds, milk and the flesh of wetland animals, or owing to ematiation due to diseases, cohabitation with virgins, sexual enjoyment in parts other than the vagina cohabitation by one in a moment of excitement and passion with a woman who suffers from chronic disease or who has practised abstinence for long or who is in her menses, or whose vagina is diseased or is offensive in smell or is discharging profusely, owing to mating with a quadruped or trauma to the phallus, or want of proper cleansing of the penis, or owing to lesions caused by instruments teeth, nail or stick or compression, or by excessive use of suka worms for elongation of the phallus, and by suppression of seminal discharge, the phallus is afflicted with disorders.

(भवन्ति यानि रूपाणि तस्य वक्ष्याम्यतः परम् ।)  
अथयुर्वेदना मेढू रागश्चैवोपलक्ष्यते ॥१६८॥

तस्य तेनां उसके, यानि नो जो, रूपाणि रूपे। रूप, भवन्ति थाय छे तेनीने होते हैं उनको, अतः परम् हवे अब, वक्ष्यामि उल्लिख कर्हूंगा मेढू बिज्जं लिंगमें, अथयुः से।से सूजन, वेदना वेदना वेदना, रागः च एव अने वाही और काली, उपलक्ष्यते लक्ष्मा छे दिखाई देती है ॥ १६८ ॥

168. (I shall hereafter describe the signs and symptoms that occur in such condition). There are observed swelling, pain and redness in the phallus.

स्फोटश्च तीव्रा जायन्ते लिङ्गपाको भवत्यपि ।

तीव्राः च तीव्र तीव्र, स्फोटाः श्लेष्मा फोड़े, जायन्ते उत्पन्न थाय छे उत्पन्न होते हैं, लिङ्गपाकः अपि अने बिंभेमा पाके पक्षु और लिङ्गमें पाक भी, भवति थाय छे होता है ॥ १६८३ ॥

168½. There occur acute sores and also the suppuration of the phallus.

मांसवृद्धिर्भवेच्चास्य व्रणाः क्षिप्रं भवन्त्यपि ॥१६९॥  
पुलाकोदकसङ्काशः स्रावः श्यावारुणप्रभः ।  
बलयीकुरुते चापि कठिनश्च परिग्रहः ॥१७०॥

अस्य येना इसके, मांसवृद्धिः मांसकी वृद्धि मांसकी वृद्धि, भवेत् थाय छे होती है, व्रणाः अपि अने पक्षु पक्षु और व्रण भी, क्षिप्रम् शीघ्र शीघ्र, भवन्ति थाय छे होते हैं, पुलाकोदक- पुलाकेना व्रण पुलाके अलके, सङ्काशः गेवे सदश, श्याव- श्याव श्याव, अरुण- प्रभः अने अरुण रंगने। और अरुण रंगका, स्रावः स्राव थाय छे स्राव होता है, परिग्रहः अने वृद्धि पाभेक्षे प्रदेक्ष और बढ़ा हुआ प्रदेक्ष, बलयीकुरुते शिश्रमां बल्य उत्पन्न करे छे शिश्रमें बल्य कर देता है, कठिनः च अपि तथा कठिण थाय छे तथा कठिन होता है ॥ १६९-१७० ॥

169-170. There may occur fleshy growth or quick ulceration of the part. There will be discharge of dusky red coloration or of the color of rice water; there will be circular hard constriction formed just above the glans penis

उवरस्त्वृष्णा भ्रमो मूर्च्छा छर्विश्चास्योपजायते ।  
रक्तं कृष्णं स्रवेच्चापि नीलमाविलोहितम् ॥१७१॥

जल्य येने इसे, उवरः ज्वर ज्वर, तृष्णा तरस प्यास, भ्रमः भ्रम भ्रम, मूर्च्छा भ्रूच्छा मूर्च्छा, छर्विः च अने छल्टी के, उपजायते उत्पन्न थाय छे उत्पन्न होती है, अपि च अने और, कृष्णम् काला, नीलम् नीलुं नीला, आविल- उल्लो और गंदला, लोहितम् च अपि

अने दाह और लाल, रक्त देहली खून, स्रवेत् नीले छे बहता है ॥ १७१ ॥

171. The patient will suffer from fever, thirst, giddiness, fainting and vomiting. There may be red, dark, blue, turbid or sanguinous discharge.

अग्निनेव च दग्धस्य तीव्रो दाहः सवेदनः ।  
वस्तौ वृषणयोर्वाऽपि सीवण्यां वङ्गणेषु च ॥१७२॥  
कदाचित्पिच्छिलो वाऽपि पाण्डुः स्रावश्च जायते ।  
श्वयथुर्जायते मन्दः स्तिमितोऽल्पपरिस्रवः ॥१७३॥  
चिराच्च पाकं व्रजति शीघ्रं वाऽथ प्रमुच्यते ।  
जायन्ते क्रिमयश्चापि क्लिद्यते पूतिगन्धि च ॥१७४॥  
विशीर्यते मणिश्चास्य मेढ्रं मुष्कावथापि च ।

वस्तौ अस्तिमां वस्तिमें, वृषणयोः वृषणोमां वृषणोंमें, सीवण्याम् सीवणीमां सीवनीमें, वङ्गणेषु च जवि वा अने वङ्गणोमां और वङ्गणोंमें, अग्निना अग्निभी अग्निसे, दग्धस्य इव श्लेष्माना गेवे जलनेके सदश, सवेदनः वेदनासहित वेदनाके साथ, तीव्रः तीव्र तीव्र, दाहः दाह थाय छे दाह होता है, कदाचित् वा अपि अने कभी वृष्ण और कभी कभी, पिच्छिलः पिच्छिल पिच्छिल, पाण्डुः स्रावः च तथा पाण्डु स्राव तथा पाण्डु स्राव, जायते उत्पन्न थाय छे उत्पन्न होता है, मन्दः गणी मन्द फिर मन्द, स्तिमितः स्तिमित स्तिमित, अल्पपरिस्रवः अने अल्प स्रावयुक्त और अल्प स्रावयुक्त, श्वयथुः से।मे सूजन, जायते उत्पन्न थाय छे उत्पन्न होता है, चिरात् च अने दाहिं काले और देरसे, पाकम् व्रजति पाके छे पकता है, जयवा अथवा अथवा, शीघ्रम् औकटम् शीघ्र, प्रमुच्यते छूटी अथ छे छूट जाता है, क्रिमयः च अपि ते।मे कृमि। कृमि, जायन्ते उत्पन्न थाय छे उत्पन्न होते हैं, क्लिद्यते बिंभे क्लेदयुक्त लिङ्ग क्लेदयुक्त, पूतिगन्धि च अने सडेली गंधवायुं थाय छे और दुर्गन्धयुक्त होता है, जल्य बिंभे। लिङ्गी, मणिः भक्षु मणि, मेढ्रम् बिंभे लिङ्ग, जय अपि तथा तथा, मुष्को च वृषणो पक्षु

१७०. बलयीकुरुते....परिग्रहः—बल्यं कुरुते चापि कठिनं च

परिग्रहः (व. व. क.)

१७३. श्वयथुर्जायते मन्दः—श्वयथुः श्वयन्मन्दः (व. व. क.)

वृषण भी, विशीर्यते भरी पडे छे गिर जाते हैं ॥ १७२-१७४ ॥

172-174½. There will be acute burning pain as if burnt by fire, and pain in bladder, testes, perineum and groin. Sometimes there is slimy, yellowish white discharge; the part may be swollen; there may be dull pain, induration and scanty discharge. It may take time to suppurate or may abate quickly or it may be infected with parasites; and it becomes softened and putrid in smell. The glans penis drops off, or even the whole phallus and scrotum may slough out.

ध्वजमङ्गकृतं क्लेशमित्येतत् समुदाहृतम् ॥१७५॥  
एतं पञ्चविधं केचिद्ध्वजमङ्गं प्रचक्षते ।

इति एतत् आ. बह, ध्वजमङ्गकृतम् ध्वजमङ्गं  
अन्य ध्वजमङ्गकृतम्, क्लेशम् नपुंसकता नपुंसकता,  
समुदाहृतम् उद्देश्य छे कहाती है, एतत् आने इसे,  
केचित् उद्देश्य कई एक, पञ्चविधम् पांच प्रकारका, ध्वजमङ्गम् ध्वजमङ्ग, प्रचक्षते उद्देश्य  
छे कहते हैं ॥ १७५ ॥

175-175½. Thus has been described the impotency resulting from the disorders of the phallus. Some describe these disorders of the phallus as being of five kinds.

जरासंभवकृत्तलक्षणम्—

क्लेशं जरासंभवं हि प्रवक्ष्याम्यथ तच्छृणु ॥१७६॥  
जघन्यमध्यप्रवरं वयस्त्रिविधमुच्यते ।

अतिप्रवयसां शुक्रं प्रायशः क्षीयते नृणाम् ॥१७७॥

जघन्य मध्य प्रवर, जरासंभवम् जरासंभव, जरासंभव,  
क्लेशम् नपुंसकता नपुंसकताको, प्रवक्ष्यामि उद्देश्य छे  
कहाती हूँ, तत् ते उमे, शृणु सत्संगे सुने, वयः वय  
वय, जघन्य- जघन्य, मध्य- मध्य, प्रवर- प्रवर,  
प्रवरम् अने प्रवर और प्रवर, त्रिविधम् ये त्रि  
उद्देश्य इन तीन प्रकारकी, वयस्त्रिविधं उद्देश्य छे कहाती  
है, अतिप्रवयसान् अतिप्रवय अतिप्रवय, नृणाम् मनुष्यों  
मनुष्योंका, शुक्रं शुक्र शुक्र, प्रायशः प्रायः प्रायः,  
क्षीयते क्षीय छे क्षीय होता है ॥ १७६-१७७ ॥

176-177. Listen now as I describe the geratic impotency. Age is classified into three divisions: childhood, adulthood and senescence. The semen in senile persons gets generally low or diminished.

रसादीनां संक्षयाच्च तथेवावृत्तसेवनात् ।  
बलवीर्येन्द्रियाणां च क्रमेणैव परिक्षयात् ॥१७८॥  
परिक्षयादायुषश्चाप्यनाहाराच्छ्रमात् कृणान् ।  
जरासंभवज क्लेशमित्येतैर्नैव भिन्नानाम् ॥१७९॥  
जायते तेन सोऽत्यर्थं क्षीणघातु सुदुर्बल ।  
विवर्णो दुर्बलो दीनः क्षिप्रं व्याधिभयाश्रुते ॥१८०॥  
एतज्जरासंभवं हि

रसादीनाम् रसादि धातुओंके रसादि चापको,  
संक्षयार् क्षय क्षय, तथा एव अवृत्तसेवनात् अत्यर्थ  
पक्षधेयु सेवन अत्यर्थ पक्षधेयु सेवन, बल- बल  
बल, वीर्य- वीर्य वीर्य इन्द्रियाणां अने इन्द्रियोंके  
और इन्द्रियोंका, क्रमेण एव क्रमशः क्रमशः, परिक्षया  
क्षय क्षय, नाहारात् आहारको अहारात् न देवे  
आवश्यक आहार न देना, श्रमात् श्रम श्रम, कृणान्  
अने उद्यम और कर्म, इति एभिः हेतुभिः आ. हेतुओंके

१७८. रसादीनां संक्षयाच्च—धातुनां संक्षयाच्च (क.)

१८०. तेन सोऽत्यर्थं येन पुनः (घ.)

१. दुर्बलः—क्षीण (घ.)

१. क्षिप्रं व्याधिभयाश्रुते—आमादिभयाश्रुते (घ.)

१७५ ॥ एतं पञ्च (ब. घ.)

१. प्रचक्षते—वक्ष्यामि (ब. घ.)

इन हेतुओं नृणां मनुष्ये ने मनुष्योका, जरापंभव  
वृद्धावस्थान्त्य, कृष्यम् नपुंसकता  
नपुंसकता, जायने उत्पन्न थाय छे उत्पन्न होनी है,  
तेन तेथी उससे, सः ते वह, अन्यर्थम् अत्यन्त अत्यन्त  
क्षीणघातुः क्षीणघातुवाला, क्षीणघातुवाला, सुदुर्बलः  
अति दुर्गन्ध अत्यन्त दुर्बल विवर्णः विवर्ण, विवर्ण,  
दुर्बल दुर्गन्ध दुर्बल दीनः तथा दीन थछने तथा दीन  
होकर, क्षीण शीघ्र क्षीघ्र, व्याधिम् रोगने, रोगको,  
अधुने पामे छे पाना है, एतन् आ यह, जरापंभवम्  
हि जरापंभव नपुंसकता छे जरापंभव नपुंसकता है  
॥ १७८-१८० ॥

178-180½ Owing to diminution of the nutrient fluid and other body elements and the constant use of things which are detrimental to male-hood by gradual diminution of strength, vitality, the power of the sense organs and of the life-span, and owing to inanition fatigue and exhaustion there occurs geratic impotency in man. Affected by this, he becomes extremely wasted in all the body elements very weak, poor in complexion physically and mentally depressed, and soon falls a victim to diseases These are the characteristics of gerative impotency.

धातुक्षयमद्वैतलक्षणम् —

चतुर्थं क्षयजं शृणु ।

अतीव चिन्तनाच्च शोकात्क्रोधाद्भयान्तथा ॥१८१॥

ईष्योत्कण्ठामदोद्वेगान् सदा विशति यो नरः ।

कृशो वा सेवते रुक्मपानं तथौषधम् ॥१८२॥

१८१. अतीव चिन्तनाच्च-अतिप्रचिन्तनाच्च (क.)

तथा-अथ (घ)

१८२. ईष्योत्कण्ठामदोद्वेगान् सदा विशति-ईष्योत्कण्ठामदोद्वेगान् सदा विशति (क.)

दुर्बलप्रकृतिश्चैव निराहारो भवेद्यदि ।

अवात्म्यभोजनाच्चापि हृदये यो व्यवस्थितः ॥१८३॥

रसः प्रधानघातुर्हि क्षीयेताशु ततो नृणाम् ।

रक्तादयश्च क्षीयन्ते धातवस्तस्य देहिनः ॥१८४॥

शुक्रावसानास्तेभ्योऽपि शुक्रं धाम परं मतम् ।

चतुर्थं येथुं चौथी, क्षयजम् क्षयज नपुंसक-  
पक्षं क्षयजन्य नपुंसकताको, शृणु साधनो सुनो, अतीव  
अति अति, चिन्तनाच्च चिन्तनाच्च चिन्तनाच्च, शोकात्  
शे क्षी शोके, क्रोधात् क्रोधे, क्रोधे, तथा मयात्  
भयथी भयसे, यः नरः अने ने भाष्यस और यदि  
मनुष्य, सदा सदा सदा, ईष्या- ईष्या- ईष्या, उत्कण्ठा-  
उत्कण्ठा, उत्कण्ठा, मद- मद, उद्वेगान् तथा उद्वेगान्  
और उद्वेगका, विशति सेवन करे छे सेवन करता है,  
कृशः वा अथवा कृश थछ अथवा कृश होकर, रुक्म  
ने ते रुक्म यदि वह रुक्म, अन्नपानम् अन्नपान अन्नपान,  
तथा तथा तथा, औषधम् औषधम् औषधोका, सेवते  
सेवन करे छे सेवन करता है दुर्बलप्रकृतिः च एव  
अथवा दुर्गन्ध प्रकृतिवाला थछ अथवा दुर्बल प्रकृतिवाला  
होकर, यदि ने यदि निराहारः भवेत् ते भवेत्  
आहारने त्याग करे छे वह आवश्यक आहारका त्याग  
करता है, अवात्म्यभोजनाच्च अपि अथवा अवात्म्य  
भोजनाच्च छे अथवा अवात्म्य भोजन करता है,  
नृणाम् तो तेथी मनुष्यना तो उससे मनुष्यके, हृदये  
हृदये हृदये, यः ने जो, प्रधानघातुः प्रधानघातु  
प्रधानघातु रसः रस रस, व्यवस्थितः रक्षेता छे  
अवस्थित है, नाशु क्षीयेत हि ते ततः क्षीयु थाय छे  
वह क्षीय क्षीय होता है, ततः तेथी इससे, तस्य देहिनः  
ते मनुष्यनी उस मनुष्यकी, रक्तादयः रक्तादय भांडी  
रक्षे लेकर, शुक्रावसानाः शुक्र पर्वन्त शुक्र पर्वन्तके,  
धातवः धातुओ धातु, आशु शीघ्र क्षीय, क्षीयन्ते  
क्षीय थाय छे क्षीय होते हैं, तेभ्यः अपि तेथीभा.  
पक्ष उनमें भी शुक्रम् शुक्रने शुक्र परमम् धाम परम  
ते परम तेज, मतम् माने छे माना है ॥१८३-१८४॥

181-184½. Hear now about the fourth kind of impotency born of

१८३. अवात्म्यभोजनाच्च-अवात्म्यभोजनाच्च (क.)

१८४. तेभ्योऽपि-तेभ्यो अपि (क.)



wasting. By constant indulgence in worry, grief, anger, fear, envy, eagerness, intoxication and anxiety; by ununctuous eats and drinks or ununctuous remedies resorted to by a man who is emaciated; by resort to fasting by one who is weak by nature, and by unwholesome diet, the nutrient fluid which is the primary body-element and whose habitat is the stomach, gets soon diminished. Consequently, the blood and the other body elements leading upto the seminal secretion get diminished. The semen is considered the highest or the final product and state of the body-elements.

चेतसो वाऽतिहर्षेण व्यवायं सेवतेऽति यः ॥१८५॥  
तस्याशु क्षीयते शुक्रं ततः प्राप्नोति संक्षयम् ।  
घोरं व्याधिप्रवाप्नोति मरणं वा स गच्छति ॥१८६॥  
शुक्रं तस्माद्विशेषेण रक्ष्यमारोग्यमिच्छता ।  
एवं निदानलिङ्गाभ्यामुक्तं क्लेशं चतुर्विधम् ॥१८७॥

चेतसः वा अथवा तो चित्तना अथवा तो चित्ते,  
अतिहर्षेण अति कामाभिभूतपक्षुध्नी अति कामाभे-  
भूत होनेसे, यः जे जो, व्यवायम् मैथुनं मैथुनका,  
अतिसेवते अति सेवन करे छे अति सेवन करता है,  
तस्य तेन उवका, शुक्रम् शुक्रं शुक्र, आशु अथवा क्षीय,  
क्षीयते क्षीयु थाय छे क्षीय होता है, ततः तेन इवसे,  
सः ते वह, संक्षयम् सर्वनाशने सर्वनाशको, प्राप्नोति  
प्राप्त करे छे प्राप्त होता है, घोरम् अथवा घोर अथवा,  
व्याधिः रोगने रोगको, अवाप्नोति प्राप्त थाय छे प्राप्त  
होता है, मरणम् वा अथवा तो मरणने अथवा तो  
मृत्युको, गच्छति पामे छे प्राप्त होता है तस्मात् तेन  
इसी लिए, आरोग्यम् आरोग्यने अरोग्यको, इच्छता  
छच्छनार पुरुषे चाहनेवाले पुरुषको, शुक्रम् शुक्रं शुक्रको,

विशेषेण विशेष रूपे विशेष करने रक्षयम् रक्षा करनी  
और रक्षा करनी चाहिए, एवम् आ प्रभावे, इव  
प्रकार, निदान- निदान निदान, लिङ्गाभ्याम अने वक्ष्यो-  
सहित और लक्षणोंसेमेन. चतुर्विधम् चतुर्विधम् चतुर्विध  
चार प्रकारकी. क्लेशम् नपुंसकपक्षु नपुंसक, इच्छा  
छछु छे कही है ॥ १८५-१८७ ॥

185-187. If such a man, getting mentally excited and passionate, indulges excessively in sex, his semen gets soon exhausted and he becomes emaciated and will be subject to serious ailment or death itself. Therefore, one desirous of protecting his health, should specially preserve one's semen. Thus have been described the four kinds of impotency with their etiology and signs and symptoms.

एकीयमेतन् क्लेशनिदानम्—  
केचित् क्लेशे त्वसाध्ये द्वे ध्वजमङ्गलयोद्भवे ।  
वदन्ति शेरुसदृशद्वयणोत्पादनेन च ॥१८८॥

केचित् केवलक कई एक, ध्वजमङ्गल-ध्वजमङ्गल-  
ध्वजमङ्गलमङ्गल, क्षयोद्भवे अने क्षयम और क्षय,  
द्वे वे दो, क्लेशे नपुंसकताऔर नपुंसकताओंको,  
असाध्य असाध्य असाध्य, वदन्ति कहे छे कहते हैं,  
तथा तथा तथा, शेरुसः शिराना शिरके, उत्पन्न  
उत्पन्नी उत्पन्ने, वृत्तः अने वृत्ताने और वृत्तोंको,  
उत्पादनेन च छादी नाभवाथी उत्पन्न अथवा नपु-  
सकताने पक्ष असाध्य कहे छे निकाल देनेसे  
उत्पन्न हुई नपुंसकताको भी असाध्य कहते हैं ॥ १८८ ॥

188. Some say that the two kinds of impotency i.e. the one due to diseases of the phallus and the other to wasting, are incurable; similarly the impotency due to amputation of the penis or excision of the testes is regarded incurable.



मातापित्रोर्वीजदोषादशुभैश्चाकृतात्मनः ।  
गर्भस्थस्य यदा दोषा प्राप्य रेतोवहाः सिराः ॥१८९॥  
शोषयन्त्याशु तन्नाशाद्रेतश्चाप्युपहन्यते ।  
तत्र संपूर्णसर्वाङ्गः स भवत्यपुमान् पुमान् ॥१९०॥  
एते त्वसाध्या व्याख्याताः सन्निपातसमुच्छ्रयात् ।

मातापित्रोः मातापितराना मातापिताके, बीजदोषात् शुक्र-शोषिताना दोषधी बीजके दोषसे, गर्भस्थस्य च अने गर्भस्थित और गर्भस्थित. अकृतात्मनः पापात्माना पापत्माके, अशुभैः पूर्वकृत पापदोषधी पूर्वकृत पापोंसे, यदा अतरे जब, दोषाः दोषो दोष, रेतोवहाः शुक्र-वाहिनी शुक्रवाहिनी, सिराः धमनीओंमां धमनियोंमें, प्राप्य पड़ोथीने पहुँचकर, शोषयन्ति तेओने सूखी नाओ छे उनको सुखा देते हैं, तन्नाशान् तयारे नेओना नाशथी तब उनके नाशसे, रेतः अपि शुक्र पञ्च शुक्र भी, आशु शीघ्र शीघ्र, उपहन्यते नष्ट थाय छे नष्ट होता है, तत्र तयारे तब, संपूर्णसर्वाङ्गः सर्वाङ्ग संपूर्ण अर्थात् सर्वाङ्ग संपूर्ण होने पर भी, सः पुमान् ते पुरुष वह पुरुष, अपुमान् नपुंसक नपुंसक, भवति थाय छे होता है, सन्निपात- सन्निपातना सन्निपातके, समुच्छ्रयात् डोपने ढीधे कोपके कारण, एते तु उत्पन्न भवेत्वा आ नपुंसकाने उत्पन्न हुए ये नपुंसकों, असाध्याः असाध्य असाध्य, व्याख्याताः उल्ला छे कहे हैं ॥१८९-१९०॥

189-190. As a result of germospermic morbidity inherited from the parents or of the sins of past life, the morbid humors entering the seminal vessels during the embryonic life, cause the atrophy of the genital organs. Owing to this atrophy, the function of semen-formation is lost. In such condition the person, though having full physical development, becomes an emasculated man (androgynoid condition). Of the varieties of impotency described above, those caused by tridiscordance of humors are regarded incurable.

कैव्यचिकित्सा—

चिकित्सितमतस्तूर्ध्वं समासव्यासतः शृणु ॥१९१॥  
शुक्रदोषेषु निर्दिष्टं मेषजं यन्मयाऽनघ ! ।  
कैव्योपशान्तये कुर्यात् क्षीणक्षतहितं च यत् ॥१९२॥

अतः ऊर्ध्वं छे ऊपर ५४१ के बाद, समासव्यासतः संक्षेपमां अने विस्तारथी संक्षेपमें और विस्तारसे, चिकित्सितश्च चिकित्सा चिकित्सा, शृणु सांभगो सुनो, अनघ छे निष्पाप ! हे अनघ ! शुक्रदोषेषु शुक्रदोषोंमां शुक्रदोषोंमें यत् मेषजम् ने औषध जो औषध, मया मे मैंने, निर्दिष्टम् अतः ऊपर छे बतलायी है, क्षीणक्षत-हितम् च तथा क्षीण अने क्षतने माटे क्षितकर तथा क्षीणक्षतके लिए हितकर, यत् ने औषध छे ते जो औषध है वह, कैव्य- नपुंसकतात्वी नपुंसकताकी, उप-शान्तये शान्ति माटे शान्तिके लिए, कुर्यात् करतुं ओछे करनी चाहिए ॥१९१-१९२॥

191-192. Henceforth will be described the treatment of impotency in brief and in extenso. Now listen, O, sinless one! the medications indicated by me in the morbid condition of semen, cachexia and pectoral lesions are regarded beneficial in impotency.

वस्तयः क्षीरसर्पीषि वृष्ययोगाश्च ये मताः ।  
रसायनप्रयोगाश्च सर्वानेतान् प्रयोजयेत् ॥१९३॥  
समीक्ष्य देहदोषाग्निबलं मेषजं जालवित् ।  
व्यवायहेतुजे कैव्ये तथा धातुविपर्ययात् ॥१९४॥

मेषजकालवित् औषध अने डागने अशुभार वैदे औषध और कालको जाननेवाला वैद्य, देह- देह देह, दोष- दोष दोष, अग्निबलम् तथा अग्निबलने तथा अग्निबलको, समीक्ष्य अग्न्याग्ने अग्निने मझी मति जानकर, वस्तयः अस्तित्वो वस्तियों, क्षीरसर्पीषि दूध, शी दूध,

१९३. ये मताः—शास्त्रवित् (ध.)

१९४. व्यवायहेतुजे—वैचित्त्यहेतुजे (ब.)

„ तथा धातुविपर्ययात्—कुर्वात् हेतुविपर्ययात् (घ.)

„ —मेषजं धातुवर्धनम् (घ.)

घी, वे दृश्ययोगाः च अने ७२ पृथग्योगे। और जो दृश्य-योग, रसायनप्रयोगाः च तथा रसायनप्रयोगे। तथा रसायनःयोग, मताः मानेवा छे माने हुए हैं, तथा तथा तथा, व्यवयहेतुजे मैथुनभी भयेदी मैथुनसे उत्पन्न, धातुविपर्ययात् तथा धातुओंकी वैषम्यभी भयेदी तथा धातुओंके वैषम्यसे उत्पन्न हुई, क्लेश्वे नपुंसकताः। नपुंसकतामें, एतान् सर्वान् आ सधर्मानो इन सबका, प्रयोजयेत् प्रयोगे। इत्थे प्रयोग करे ॥ १९३-१९४ ॥

193-194. The physician, versed in the knowledge of the proper time of each therapeutic measure, should make use of enemata, milk and ghee and what ever are considered virilific medications and vitalizers, having diagnosed the strength of the body, the morbid humors and the gastric fire in the impotency caused by sexual indulgence as well as in that caused by the vitiation of body-elements.

दैवव्यपाश्रयं चैव भेषजं चाभिचारजे ।  
समासेनैतदुद्दिष्टं भेषजं क्लेशान्तये ॥१९५॥

अभिचारजे अभिचारजन्य नपुंसकता। अभिचार-जन्य क्लीबतामें, दैवव्यपाश्रयं दैवव्यपाश्रय दैव-व्यपाश्रय, च एव तथा दोषव्यपाश्रय तथा दोषव्यपाश्रय, भेषजम् चिकित्सा इत्थी चिकित्सा करे, एतत् ओ यह, क्लेशान्तये नपुंसकतानी शान्ति भाटे नपुंसकताकी शान्तिके लिए, समासेन संक्षेपमा संक्षेपमें, भेषजम् चिकित्सा चिकित्सा, उद्दिष्टा अतावी छे बतलाई है ॥ १९५ ॥

195. Where the impotency is caused by black magic, resort must be had to divine medication (through prayer and worship). Thus has been described in brief the treatment of impotency.

१९५. चैव भेषजं चाभिचारजे-तत्र भेषजं संक्षेपमेव (५.)

चित्तरेण प्रवक्ष्यामि क्लेशानां भेषजं पुनः ।  
सुखिन्नस्निग्धमात्रं यन्महयुक्तं विरेचनम् ॥१९६॥  
अन्नाशनं ततः कुर्यादथवाऽऽस्थापनं पुनः ।  
प्रदद्यान्मतिमान् वैद्यस्तनस्तमनुवाचयेत् ॥१९७॥  
पलाशैरण्डमुस्ताद्यैः पश्चादास्थानयेत्ततः ।

पुनः इत्थीने किसे, क्लेशानां नपुंसकताओंकी नपुंसकताओंकी, भेषजम् चिकित्सा चिकित्सा, चिकित्सेण विस्तारपूर्वक विस्तारसे, प्रवक्ष्यामि उद्दिष्टा उद्दिष्टा, सुखिन्न स्निग्ध-मात्रस्य इत्थी-नुं इत्थी रीति स्नेहन तथा स्नेहन इत्थी चरीरका भोजीमांति स्नेहन तथा स्नेहन करके, स्नेहयुक्तम् स्नेहयुक्त स्नेहयुक्त, विरेचनम् विरेचनम् आपत्तुं विरेचन देवे, ततः ते पछी उसके बाद पश्चात्तम् अन्नभोजन अन्नभोजन कुर्यात् करे करे, अथवा पुनः अथवा तो अथवा तो, आस्थापनम् आस्थापन आस्थापन, प्रदद्यात् आपत्तुं देवे, ततः त्थार पछी उसके बाद, मतिमान् शुद्धिमान् बुद्धमान्, वैद्यः वैद्य वैद्य, तत् तेने उसे, अनुवाचयेत् अनुवाचयेत् आपत्तुं अनुवाचन देवे, ततः पश्चात् ते पछी उसके बाद, पलाशः पलाशः ढाकः एरण्डः और उं एरण्डः, मुस्ताद्यैः अने मुस्ताद्यैः और मुस्तादिसे, आस्थापयेत् आस्थापन देवुं आस्थापन देवे ॥ १९६-१९७ ॥

196- 97½. I shall describe again, at length, the treatment of various kinds of impotency. The patient should be given unctuous purgative after oleation and sudation procedures. He must then be given food or corrective enema, after which the wise physician should give him an unctuous enema. He should again be given a corrective enema of palas, castor and nut grass.

वाजीकरणयोगाश्च पूर्वं ये तस्मदाहताः ॥१९८॥  
मिथजा ते प्रयोक्तव्याः स्युः क्लेशे वीजोपघातजे ।

पूर्वम् पड़ेवा पहले, वे ७२ जो, वाजीकरणयोगाः वाजीकरणयोग, तस्मदाहताः उद्देवा छे

કહે ગયે હૈં, તે નેએને ઉઠે, સિયજા વૈએ વૈયકો,  
વીજોપધાતજે બીએપધાતજ વીજોપધાતજન્ય, ક્લેબે નપું-  
સકતામાં નપુંસકતામેં, પ્રયોજ્યા: સ્યુ: પ્રયોજના બેધએ  
પ્રયુક્ત કરે ॥ ૧૯૮૬ ॥

193-198. Virilific medications, that have been already described should be given to him by the physician in the condition of impotency due to seminal morbidity.

ધ્વજમજ્જકૃતં ક્લેબ્યં જ્ઞાત્વા તસ્યાચરેત્ ક્રિયામ્ ૧૯૯  
પ્રદેહાન્ પરિષેકાંશ્ચ કુર્યાદ્વા રક્તમોક્ષણમ્ ।  
ક્ષોદ્ધપાનં ચ કુર્વીત સન્નેહં ચ વિરેચનમ્ ॥૨૦૦॥  
અનુવાસં તતઃ કુર્યાદથવાઽઽસ્થાપનં પુનઃ ।  
વ્રણવશ્ચ ક્રિયાઃ સર્વાસ્તત્ર કુર્યાદ્વિચક્ષણઃ ॥૨૦૧॥

ધ્વજમજ્જકૃતમ્ ૧૯૯ મ્ ૧૯૯ ન્ય ધ્વજમંગન્ય, ક્લેબ્યમ્  
નપુંસકતાને નપુંસકતાકો, જ્ઞાત્વા બાણીને જાનકર, તસ્ય  
તેની ઉસમી, ક્રિયામ્ ચિકિત્સા ચિકિત્સા, આચરેત્ કરવી  
બેધએ કરની યાદિય, પ્રદેહાન્ પ્રદેહ: પ્રદેહ, પરિષેકાન્  
પરિષેક પરિષેક, રક્તમોક્ષણમ્ વા અથવા રક્તમોક્ષણ  
અથવા રક્તમોક્ષણ, કુર્યાત્ કરવું બેધએ કરના યાદિય,  
સ્નેહશાનમ્ ચ તથા સ્નેહપાન તથા સ્નેહપાન, સસ્નેહશ્  
વિરેચનમ્ ચ અને સ્નેહસહિત વિરેચન ઓર સ્નેહયુક્ત  
વિરેચન, કુર્વીત કરવું બેધએ કરના યાદિય, તતઃ ત્યાર  
બાદ ઉસકે બાદ, અનુવાસનમ્ અનુવાસન અનુવાસન,  
અથવા પુનઃ અથવા અથવા, આસ્થાપનમ્ આસ્થાપન  
આસ્થાપન, કુર્યાત્ કરવું કરે, વિચક્ષણઃ વિચક્ષણ વૈએ  
વિચક્ષણ વૈયકો, તત્ર તેમાં ઉસમેં, સર્વા: બધી સર્વ,  
વ્રણવશ્ચ વ્રણ બેવી વ્રણકોસી, ક્રિયા: ચિકિત્સા  
ચિકિત્સા, કુર્યાત્ કરવી બેધએ કરની યાદિય  
॥ ૧૯૯-૨૦૧ ॥

199-201. If impotency is due to the loss of erectile power or phallic disorders, it should be treated in the following manner. The prescribed

૨૦૧. અનુવાસન-અન્વાસન (ધ. ક.)

applications, affusions or depletion of blood should be done; unctuous potion and unctuous purgation should be given followed by an unctuous or corrective enema. Thereafter, the intelligent physician should carry out the line of treatment indicated in wounds.

જરાસંભવજે ક્લેબ્યે ક્ષયજે ચૈવ કારયેત્ ।  
ક્ષોદ્ધસ્વેદોપપન્નસ્ય સન્નેહં શોચનં હિતમ્ ॥૨૦૨॥

જરાસંભવજે જરાજન્ય જરાજન્ય, ક્ષયજે ચૈવ તથા  
ક્ષયજન્ય તથા ક્ષયજન્ય, ક્લેબ્યે નપુંસકતામાં નપુંસકતામેં,  
સ્નેહ-સ્વદ-સ્નેહન, સ્વેદન સ્નેહન, સ્વેદન, ઉપપન્નસ્ય  
કરાવીને કરાકે, સસ્નેહમ્ સ્નેહયુક્ત સ્નેહયુક્ત, હિતમ્  
શોચનમ્ હિતકારક શોચન હિતકારક શોચન, કારયેત્  
કરાવવું કરાવે ॥ ૨૦૨ ॥

202 In geratic impotency and impotency due to wasting, the patient should be purified by means of unctuous measures after he has undergone oleation and sudation procedures.

ક્ષીરસર્પિર્વૃષ્યયોગા વસ્તયશ્ચૈવ યાપનાઃ ।  
રસાયનપ્રયોગાશ્ચ તયોર્મેજજનુચ્યતે ॥૨૦૩॥  
વિસ્તરેણેતદુદ્દિષ્ટં ક્લેબ્યાનાં મેજજં મયા ।

ક્ષીરસર્પિઃ ક્ષીરધૃત ક્ષીરધૃત, વૃષ્યયોગાઃ વૃષ્યયોગો  
વૃષ્યયોગ, યાપનાઃ ચૈવ અને યાપન ઓર યાપન,  
વસ્તયઃ અસ્તિએ અસ્તિયાં, રસાયનપ્રયોગાઃ ચ તથા  
રસાયનપ્રયોગોને તથા રસાયનપ્રયોગોનો, તયોઃ તે બે  
નપુંસકતાનું તન તેનો નપુંસકતાબોંકો, મેજજમ્ ઓષધ  
ઔષધ, ઇચ્યતે કહેવામાં આવે છે કહી દે,  
પત્ત આ યદ, મયા મેં મૈને, વિસ્તરેણ વિસ્તારથી  
વિસ્તારે, ક્લેબ્યાનામ્ નપુંસકતાબોંકો નપુંસકતાબોંકો,  
મેજજમ્ ચિકિત્સા ચિકિત્સા, ઉદ્દિષ્ટમ્ બતાવી છે  
બતાઈ દે ॥ ૨૦૩ ॥

203-203½. His further treatment consists of the administration of milk, ghee, virilific medications, Yapana enema and the use of vitalizing elixirs. Thus has been elaborately described by me the treatment of impotency.

प्रदरस्य निदानं संयतिश्च—

यः पूर्वमुक्तः प्रदरः शृणु हेत्वादिभिस्तु तत् ॥२०४॥

पूर्वम् पहेला पहले, यः ने जो, प्रदरः प्रदररोग प्रदररोग, उक्तः उक्तो छे कहा है, तम् तेने उसे, हेत्वादिभिः हेतुआदिथी हेतुआदिसे, शृणु अभिगे सुनो ॥ २०४ ॥

204. Now listen to the description of the etiology etc., of colporrhea which has been previously mentioned.

यास्त्यर्थं सेवते नारी लवणाग्नगुरुणि च ।  
कट्वन्यथ विदाहीनि स्निग्धानि पिशितानि च ॥२०५॥

प्रास्यौदकानि मेद्यानि कृशरां पायसं दधि ।  
शुकमस्तुसुरादीनि भजन्त्याः कुपितोऽनिलः २०६

रक्तं प्रमाणमुत्क्रम्य गर्भाशयगताः सिराः ।  
रजोवहाः समाश्रित्य रक्तमादाय तद्रजः ॥२०७॥

यस्माद्विवर्धयत्याशु रसभावाद्विमानता ।  
तस्मादसृग्दरं प्रादुरेतसन्प्रविशारदाः ॥२०८॥

रजः प्रदीर्यते यस्मात् प्रदरस्तेन स स्मृतः ।  
सामान्यतः समुद्दिष्टं कारणं लिङ्गमेव च ॥२०९॥

या नारी ने श्री जो श्री, लवण- लवण, अग्न- अग्न, गुरुणि च अने गुड और गुड, कट्वनि उट्टु कट्ट, अन्य विदाहीनि विदाही विदाही, स्निग्धानि तथा स्निग्ध तथा स्निग्ध, पिशितानि

२०६. दधि-गुहम (ब. क.)

२०७. रक्तं....तद्रजः ॥ रक्तं प्रमाणादधिकं पूर्वं च कुपितोऽनिलः ।

२०८. यस्माद...विशारदाः ॥ रजोवहाः समाश्रित्य वर्धयत्याशु तद्रजः ॥  
तस्मादसृग्दरं प्रादुरेतसन्प्रविशारदाः ।

(ब. क.)

२०९. सामान्यतः-रक्तपिण्डं समाश्रित्य (ब. क. क.)

भांसेतुं मांसोको, अत्यर्थं अति सेवन करे छे अति सेवन करती है, प्रास्य- दधि ने श्री आस्य पुनः जा श्री प्रास्य, औदकानि तेभ्यः अणयशेना एवं जलचरोके, मेद्यानि मेघ भांस मेघ मांस, कृशराम् कृशरा, पायसम् पायस पायस, दधि दही दही, शुक- शुक्र शुक. मस्तु- मस्तु मस्तु. सुरादीनि अने सुरा वगेरेतुं और सुरा आदियोंका, भजन्त्याः सेवन करे छे तेने सेवन करती है उसका, कुपितः कुपितो कुपित हुआ, अनिलः वायु वायु, रक्तम् रक्तने रक्तको, प्रमाणम् प्रमाणाधी प्रमाणसे, उत्क्रम्य उधारी बहाकर, गर्भाशयगताः गर्भाशयभां रहेंगी गर्भाशयस्थित, रजोवहाः रजोवहा रजोवह, सिराः सिराओंने सिराओंको. समाश्रित्य आश्रय करी आश्रय करके, रक्तम् रक्तने रक्तको, आदाय देने देकर तद्रजः ते आर्तवने उस आर्तवको, आशु अशु शीघ्र विवर्धयति उधारी है छे यश उता है, यस्मात् नेथी जिनसे, रसभावात् रस- भाव (रसपक्षु)ने रसभावाके कारण, विमानता रक्तना प्रमाणाधी उधारे रक्तके प्रमाणमें वृद्धि, भवति भाव छे होती है, तस्मात् तेथी इससे, एतद् अने इसे, तन्प्रविशारदाः तन्प्रविशारदे शास्त्रविशारद, असृग्दरम् असृग्दर असृग्दर, प्रादुः उधे छे कहते हैं, यस्मात् नेथी जिस कारणसे, रजः आर्तव आर्तव, प्रदीर्यते विस्तारवाणुं थाव छे विस्तारवाला होता है, तेन तेथी इस लिए, सः तेने उसे, प्रदरः प्रदर प्रदर, स्मृतः उधे छे कहा है, सामान्यतः प्रदरनां आ सामान्य प्रदरके ने सामान्य, कारणम् कारणम् कारण, किम् च एव तथा लक्षण तथा लक्षण, समुद्दिष्टं उक्त छे कह दिने हैं ॥ २०५-२०९ ॥

205-209. In a woman who is habituated to excess of salt, acid, heavy, pungent irritant and unctuous articles and to the flesh of domestic, aquatic and fatty creatures, or to kedgerree, milk pudding, curds, vinegar, whey, sura wine, and such other articles, the vata, getting provoked, increases the quantity of blood in the body and gets

lodged in the vessels that go to the uterus conveying the menstrual fluid; it leads the blood to that region. As it increases the menstrual fluid in quantity by its fluidity, it is called the blood-flow by the gynecologist. As the menstrual blood breaks its way from this sur-charge it is called Pradara or colporrhea (rhea—to flow). Thus has been described, in general, the etiology and the signs and symptoms.

चतुर्विधं व्यासतस्तु वाताद्यैः सन्निपाततः ।

व्यासतः तु अने विस्तारशील और विस्तारसे तो वाताद्यैः अर्थात् वात विक्षेपशी अर्थात् वातादिसे, सन्निपाततः तथा सन्निपातशी तथा सन्निपातसे, चतुर्विधम् अर्थात् चार प्रकारका है ॥२०९३॥

2093. There are four kinds of colporrhea caused by each of the three humors individually as well as the one caused by the tridiscordance of humors.

वातप्रदरस्य निदानलक्षणम्—

अतः परं प्रवक्ष्यामि हेत्वाकृतिभिर्गजितम् ॥२१०॥  
रूक्षादिभिर्मलितस्तु रक्तमादाय पूर्ववत् ।  
कुपितः प्रदरं कुर्याच्छृण्वं तस्य मे गृणु ॥२११॥

अतः परम् अर्थात् इसके बाद, हेतु-आ अर्थात् कारणों के कारण, आकृति-लक्षण, निर्गजितम् अर्थात् निःशुद्ध और निःशुद्ध, प्रवक्ष्यामि अर्थात् कहूँगा, रूक्षादिभिः अर्थात् रूक्षादिसे कुपितः अर्थात् कुपित हुआ, मादयः वायु वायु, पूर्ववत् आभवा अर्थात् अथवा पूर्व कथनके अनुसार, रक्तम् अर्थात् रक्तको, आदाय अर्थात् उरीने प्रद्वन करके, प्रदरम् अर्थात् प्रदरको, कुर्यात् अर्थात् करे अर्थात् करता है, तस्य तेषु इसके, लक्षणम् अर्थात् लक्षण, मे भारी पासेमी मुझे, गृणु

२११. लक्षणं तस्य मे गृणु-लिखितं वचनाचारम् (व.)

संभवे। सुनो ॥२१०-२११॥

210-211. Hereafter, I shall describe their causes and symptoms and treatment. The vata, provoked by dry articles etc., bringing blood as described already, causes colporrhea. Now listen to its signs and symptoms, as I describe them.

फेनिलं तनु रूक्षं च दयावं चारुणमेव च ।  
किंशुकोदकसङ्काशं सरुजं वाऽय नीरुजम् ॥२१२॥  
कटिवक्त्रणहृत्पार्श्वपृष्ठश्रोणिषु मारुतः ।  
कुरुते वेदनां तीव्रामेतद्वातात्मकं विदुः ॥२१३॥

फेनिलम् अर्थात् झागदार, तनु पातलम् पतला, रूक्षम् अर्थात् रूक्ष दयावं श्याम दयाव, चारुणम् अर्थात् अरुण, किंशुकोदक-अर्थात् पाण्डु हाकके फूलोंके जलके, सङ्काशम् अर्थात् सदा, सरुजम् तथा द्रव साथे तथा दरदके साथ, अथवा अथवा अथवा, नीरुजम् अर्थात् रूक्ष नीरुज अर्थात् दरदरहित रज निकलता है, मारुतः अर्थात् वायु और वायु, कटि-अर्थात् कमर, वक्षः-अर्थात् वक्षः, हृत्-अर्थात् हृदय, पार्श्व-अर्थात् पार्श्व, पृष्ठ-अर्थात् पृष्ठ, श्रोणिषु अर्थात् श्रोणिषु और श्रोणिषु, तीव्रम् तीव्र, वेदनाम् वेदना वेदनाको, कुरुते अर्थात् करे अर्थात् करता है, एतत् अर्थात् इसको, वातात्मकम् अर्थात् वातात्मक, विदुः अर्थात् कहे अर्थात् कहते हैं ॥२१२-२१३॥

212-213 The discharge is frothy, thin, unctuous, dusky-red and of the color of the juice of palas flower; and it may be painless or painful. The vata causes acute pain in the waist, groin, cardiac region, sides, back and hips. This is known as colporrhea due to vata.

वातप्रदरस्य निदानलक्षणम्—

अन्तोल्लङ्घनक्षारैः पित्तं प्रकुपितं यदा ।  
पूर्ववत् प्रदरं कुर्यात् पेशिकं लिङ्गतः गृणु ॥२१४॥

અમ્લ- અમ્લ અમ્લ, ડબ્બ- ડબ્બ ડબ્બ, લવણ- લવણ લવણ, ક્ષારૈઃ અને ક્ષારથી ઓર ક્ષારસે, પિત્તમ્ પિત્ત પિત્ત, યદા બ્યારે જબ, પ્રકુપિતમ્ પ્રક્રોપ પામે છે ત્યારે પ્રકુપિત હોતા છે તબ, પૂર્વવત્ પહેલાં કહ્યા મુજબ પૂર્વકથનકે અનુગામ, પ્રદરમ્ પ્રદરને પ્રદરકો, કુર્ચત્ કચે છે કરતા છે, પૈત્તિકમ્ ઓ પૈત્તિક પ્રદરને ઇસ પૈત્તિક પ્રદરકો, લિઙ્ગતઃ લક્ષણથી લક્ષણસે, શૃણુ સંભળો! સુનો ॥ ૨૧૪ ॥

214. The pitta, provoked by acid, hot, salt and alkaline articles. causes colporrhea, as already described, of the pitta type. Now listen to its signs and symptoms.

સનીલમથવા પીતમત્યુષ્ણમસિતં તથા ।  
નિતાન્તરકં સ્રવતિ મુદુર્મુદુરથાર્તિમત્ ॥૨૧૫॥  
દાહરાગત્વામોહજ્વરભ્રમસમાયુતમ્ ।  
અસૃગ્દરં પૈત્તિકં સ્યાત્

સનીલમ્ કંઈકે નીલું કુઠ નીલા, અથવા અથવા અથવા, પીતમ્ પીળું પીલા, અત્યુષ્ણમ્ અત્યંત ગરમ અતિ ડબ્બ, અસિતમ્ કાળું કાલા, નિતાન્ત- તથા અત્યંત તથા અત્યંત, રક્તમ્ લાલ રક્ત લાલ રજ, આર્તિમત્ પીડા સાથે પીડાકે સાથ, અથ અને ઓર, મુદુઃ મુદુઃ વારંવાર વારવાર, સ્રવતિ સ્રવે છે સ્રવતા છે, દાહ- દાહ દાહ, રાગ- લાલી લાલી, ત્વા- તરસ ત્વા, મોહ- મોહ મોહ, જ્વર- જ્વર જ્વર. ભ્રમ- અને ભ્રમથી ઓર ભ્રમસે, સમાયુતમ્ યુક્ત યુક્ત, અસૃગ્દરમ્ આ પ્રદર યહ પ્રદર, પૈત્તિકમ્ સ્વાદ પૈત્તિક કહેવાય છે પૈત્તિક કહાતા છે ॥ ૨૧૫ ॥

215-215<sup>3</sup>/<sub>4</sub>. There will be frequent and painful discharge which is bluish or yellowish, very warm, dark or deep red and is accompanied with local burning and redness. thirst. stupefaction.

fever and giddiness. This is colporrhea of the pitta type.

કફપ્રદરસ્ય નિશાનલક્ષણે—

શ્લેષ્મિકં તુ પ્રવક્ષ્યતે ॥૨૧૬॥

ગુર્વાદિમિહૈતુભિઃ પૂર્વવત્ કુપિતઃ કફઃ ।

પ્રદરં કુરુતે તસ્ય લક્ષણં તત્ત્વતઃ શૃણુ ॥૨૧૭॥

શ્લેષ્મિકમ્ તુ હવે કહેજ પ્રદર અથ કફજ પ્રદર, પ્રવક્ષ્યતે કહેવામાં આવે છે કહા જાતા છે, ગુર્વાદિમિઃ યુરુ આદિ ગુરુ આદિ, હૈતુભિઃ હેતુઓ વડે હેતુઓસે, કુપિતઃ ક્રોધેલો કુપિત, કફઃ કફ કફ પૂર્વવત્ પહેલાં કહ્યા મુજબ પૂર્વકથનકે અનુગામ, પ્રદરમ્ પ્રદર પ્રદરકો, કુરુતે કરે છે કરતા છે, તસ્ય તેનું સ્વકા, લક્ષણમ્ લક્ષણ લક્ષણ, તત્ત્વતઃ તત્ત્વથી તત્ત્વસે, શૃણુ સંભળો! સુનો ॥ ૨૧૬-૨૧૭ ॥

216-217. Now will be described colporrhea of the kapha type. The kapha, provoked by etiological factors such as heavy articles of diet etc., causes colporrhea of the kapha type. Now listen to its main characteristics.

પિચ્છિલં પાણ્ડુવર્ણં ચ ગુરુ શિથિલં ચ શીતલમ્ ।  
સ્રવત્યસૃક્ શ્લેષ્મલં ચ ઘનં મન્દરુચ્ચકરમ્ ॥૨૧૮॥  
ઊર્ધ્વોચકહલાસશ્વાસકાસસન્નિવતમ્ ।

પિચ્છિલમ્ પિચ્છિલ, પિચ્છિલ, પાણ્ડુવર્ણમ્ ચ પાણ્ડુરંગનું પાણ્ડુરંગકા, ગુરુ યુરુ ગુરુ, શિથિલમ્ સ્થિતિય શિથિલ, શીતલમ્ ચ શીતલ શીતલ, શ્લેષ્મલમ્ કફયુક્ત કફયુક્ત, ઘનમ્ ગાઢું ગાઢા, મન્દરુચ્ચકરમ્ ચ અને મંદ પીડા કરનારું ઓર મન્દ પીડાકારક, અસૃક્ રક્ત રક્ત, સ્રવતિ વહે છે સ્રવતા છે, ઊર્ધ્વ- અને તે ઊર્ધ્વ ઓર ઊર્ધ્વ, ઓરોચક- અરુચિ અરુચિ, હલાસ- હલાસ હલાસ, શ્વાસ- શ્વાસ શ્વાસ, કાસ અને ઉપરસથી ઓર સાંધીસે, સન્નિવતમ્ યુક્ત હોય છે યુક્ત હોતા છે ॥ ૨૧૮ ॥



218-218½. The discharge is slimy, yellowish, white in color, heavy, unctuous, cold, muco-sanguinous, dense and accompanied with mild pain. It is attended with vomiting, anorexia, nausea, dyspnea and cough.

સાન્નિપાતિકપ્રદરસ્ય નિવાનલક્ષણે—

(વક્ષ્યતે ક્ષીરદોષાણાં સામાન્યમિદં કારણમ્ ૨૧૯  
યત્તદેવ ત્રિદોષસ્ય કારણં પ્રદરસ્ય તુ ।)  
ત્રિલિઙ્ગસંયુતં વિદ્યાન્નૈકાવસ્થમસુગ્દરમ્ ॥૨૨૦॥

इह आ अध्यायभां इस अध्यायमें, क्षीरदोषाणाम् क्षीरदोषानुं क्षीरदोषोका, यत् ते जो, सामान्यम् सामान्य सामान्य, कारणम् कारण कारण, वक्ष्यते उद्देश्ये कहा जायगा, तत् एव ते वक्षी, त्रिदोषस्य त्रिदोषानां त्रिदोषके, प्रदरस्य प्रदरनुं प्रदरका, कारणम् कारण कारण है, न एकावस्थम् शुद्धी शुद्धी अवस्थायोपायानुं मित्र मित्र अवस्थायोवाले, असुगदरम् आ प्रदरने इस प्रदरको, त्रिलिङ्गसंयुतम् त्रलु दोषानां लक्षणैर्युक्त तीनों दोषोंके लक्षणोंसे युक्त, विद्यात् अध्युं जानना चाहिए ॥ २१९-२२० ॥

219-220. What will be described as the general causes of the morbidity of the mother's milk are also to be considered the causative factors of colporrhea of the tridiscordance type. In colporrhea of the tridiscordance type, where all the above symptoms are combined, the disease will be characterised by various conditions.

નારી ત્વતિપરિક્ષિષ્ટા યદા પ્રક્ષીણશોણિતા ।  
સર્વહેતુસમાચારાદિવૃદ્ધસ્તદાનિલઃ ॥૨૨૧॥  
રક્તમાર્ગેણ સૃજતિ પ્રત્યનીકવલં કફમ્ ।  
દુર્ગન્ધં પિચ્છિલં પીતં વિદગ્ધં પિત્તતેજસા ॥૨૨૨॥

૨૨૧. પ્રત્યનીકવલં-પ્રત્યનીકવલં (બ)

૨૨૨. —પ્રત્યનીકગુણં (ક ક.)

वसां मेदश्च यावच्च समुपादाय वेगवान् ।  
सृजत्यपत्यमार्गेण सर्पिर्मज्जवसोपमम् ॥२२३॥  
शश्वत् स्रवत्यथान्नावं तृष्णादाहज्वरान्विताम् ।  
क्षीणरक्तां दुर्बलां स तामसाध्यां विवर्जयेत् ॥२२४॥

ક્લિ- અત્યંત અત્યંત, પરિક્ષિષ્ટા કષ્ટયુક્ત કષ્ટયુક્ત, પ્રક્ષીણશોણિતા અને ક્ષીણ રક્તવાળી और क्षीण रक्त-युक्त, નારી તુ સ્ત્રી સ્ત્રી, યદા જ્યારે જબ, સર્વહેતુ-સઘળા હેતુઓનું સર્વ હેતુઓંકા, સમાચારાત્ સેવન કરે છે ત્યારે સેવન કરતી હૈ તથ, અતિવૃદ્ધઃ બહુ બધેથી અત્યંત વધા हुआ, ક્લિલઃ વાયુ વાયુ, પ્રત્યનીકવલમ્ હીન બળયુક્ત, પિત્તતેજસા પિત્તના તેજથી પિત્તકે તેજસે, વિદગ્ધમ્ વિદગ્ધ વિદગ્ધ, પીતમ્ પીળા પીકે, દુર્ગન્ધમ્ દુર્ગન્ધી દુર્ગન્ધી, પિચ્છિલમ્ અને પિચ્છિલ और पिच्छिल, કફમ્ કફને કફકો, રક્ત-માર્ગેણ રક્તમાર્ગે રક્તમાર્ગે, સૃજતિ બહાર કાઢે છે बाहर निकालता है, यावच्च हि અને જ્યારે और જબ, વેગવાન્ વેગવાન વાયુ વેગવાન वायु, વસામ્ વસા વસા, મેદઃ ચ અને મેદને और मेदको, સમુપાદાય બર્ધને લેકર, અપત્યમાર્ગેણ યોનિમાર્ગથી योनिमार्गसे, સૃજતિ બહાર કાઢે છે बाहर निकालता है, अथ त्यारे तव, शश्वत् निरंतर निरन्तर, सर्पिः- શી શી, મજ્જ-મજ્જા મજ્જા, વસોપમમ્ અને વસા જેવા और वसाके समान, आन्नावाम् आन्नावने आन्नावको, સ્રવતિ યોનિદ્વારા બહાર કાઢે છે योनिद्वारा बाहर निकालता है, तृष्णा- તરસ પ્યાસ, दाह- દાહ દાહ, જ્વરાન્વિતામ્ તથા જનરથી યુક્ત તથા जवरसे युक्त, ક્ષીણરક્તમ્ ક્ષીણરક્તવાળી क्षीणरक्त, दुर्बलाम् અને दुर्बल और दुर्बल, ताम् તે સ્ત્રીને उस स्त्रीको, असाध्याम् असाध्य भांती असाध्य मानकर, सः તે વૈષ્ણે वह वैद्य, विवर्जयेत् छोड़ी देवी छोड़ दे ॥ २२१-२२४ ॥

221-224. If a woman, very much exhausted or greatly wasted in blood, indulges in things which are causative factors of this disease, the vata getting excessively increased and passing

૨૨૪. સ્રવત્યથાન્નાવં-સ્રવત્યથાન્નાવં (ક.)

, તામસાધ્યાં વિવર્જયેત-તામસાધ્યાં વિવિર્જયેત (ક)



through the blood-channels. causes the opposing kapha to be burnt by the heat of pitta and converts it into a slimy offensive and yellowish fluid; and mixing with fat and the adipose tissue, it flows out forcibly through the vagina and this discharge is of the color of ghee or marrow or fat This is a continual discharge accompanied with thirst, burning and fever. The woman, wasted of blood and rendered weak as a result should be considered incurable.

शुद्धार्तवलक्षणम्—

मासान्निष्पिच्छदाहार्ति पञ्चरात्रानुबन्धि च ।  
नैवातिबहु नात्यल्पमार्तवं शुद्धमादिशेत् ॥२२५॥

मासात् भासे भासे प्रतिमास, निष्पिच्छदाहार्ति पिच्छा, दाह और पीका-रहित, पञ्चरात्र-पांच रात्रि पर्यंत पञ्चरात्रि तक, अनुबन्धि आलु रहता जारी रहनेवाले, न एव न तो न तो, अति बहुत अहु वधारे अति अधिक, नात्यल्पम् च अने न तो अहु थोडा और न तो बहुत थोके, आर्तवम् आर्तवने आर्तवको, शुद्धम् शुद्ध शुद्ध, आदिशेत् आलुपुं जानना चाहिए ॥ २२५ ॥

225. That should be regarded healthy or normal menses which occurs every month, which is not slimy, which is not attended with burning or pain, which lasts for five days and which is neither excessive nor very scanty.

गुञ्जाफलसवर्णं च पद्मालककसन्निभम् ।  
इन्द्रगोपकसङ्काशमार्तवं शुद्धमादिशेत् ॥२२६॥

गुञ्जाफल- थल्लोडीना गुञ्जाफलके, सवर्णम् जेरा रंगेना सहस वर्णवाले, पद्म- कमल, अलकक- तथा

अणताना और अलतेके, सन्निभम् जेरा सदृश, इन्द्र-गोपक अने छत्रे.पना और वीरवहुटीके, सङ्काशम् च जेरा सदृश, आर्तवम् आर्तवने आर्तवको, शुद्धम् शुद्ध शुद्ध, आदिशेत् अलुपुं कहना चाहिए ॥ २२६ ॥

226 That should be regarded as the healthy or normal menstrual blood which is of the color of the jequirity-seed or of the lotus or of lac or which resembles the trombidium, the scarlet insect.

प्रदरचिकित्सा—

योनीनां वातलाघानां यदुक्तमिह मेवजम् ।  
चतुर्णां प्रदराणां च तत् सर्वं कारयेद्भिषक् ॥२२७॥

इह आ अध्यायमा इस अध्यायमें, वातलाघानाम् वातक्ष आदि वातल आदि, योनीनाम् योनीनाम् योनीनाम्, यत् मेवजम् जे औषध जो औषध, उक्तम् उक्तम् उक्तम् कहा गया है, तत् सर्वम् ते अधुं उन सबका, भिषक् वैद्यको, चतुर्णाम् प्रदराणाम् च चारों प्रदरोमां पक्ष चारों प्रदरोमें मी, कारयेत् करवुं अर्धे प्रयोग करना चाहिए ॥ २२७ ॥

227 The physician should use all medications indicated in gynecic disorders caused by vata and other humors, in these four kinds of colporrhoea.

रक्तसिंहाणां यच्च तथा शोणितपित्तिनाम् ।  
रक्तार्शसां च यत् प्रोक्तं मेवजं तच्च कारयेत् ॥२२८॥

यत् जे जो, रक्तसिंहाणाम् रक्तसिंहारिणीनाम् रक्तसिंहारिणी, तथा तथा तथा, शोणितपित्तिनाम् रक्तपित्तिनाम् रक्तपित्तिनाम्, यत् च अने जे और जो रक्तार्शसां रक्तार्शसां रक्तार्शसां, मेवजम् औषध औषध, प्रोक्तम् उक्तम् उक्तम् कहा है, तत् च तेने पक्ष उसे मी, कारयेत् करवुं अर्धे करनी चाहिए ॥ २२८ ॥

228. He should also use the remedies indicated in diarrhea with bloody stools, in hemothermia and bleeding piles.

क्षीरदोषाणां निदानं संप्राप्तिश्च—

घात्रीस्तनस्तन्यसंपदुक्ता विस्तरतः पुरा ।

स्तन्यसंजननं चैव स्तन्यस्य च विशोधनम् ॥२२९॥

घात्री- धाव घात्री, स्तन- स्तन स्तनो, स्तन्य- अने धावधुनी और स्तन्यकी, संपदु सम्पत्ति सम्पत्ति, पुरा पहले, विस्तरतः विस्तारथी विस्तारसे, उक्ता उक्ती छे कह दी है, स्तन्यसंजननम् च एव स्तन्यजनन स्तन्यजनन, स्तन्यस्य स्तन्यत्वं और स्तन्यका, विशोधनम् च विशोधन पक्षु तेज प्रभाषे उल्लुं छे विशोधन मी वसी प्रकार कह दिये हैं ॥ २२९ ॥

229. The qualities of the wellformed breasts and the breast-milk of the wet nurse have been already described by me in detail. So too have been described the galactogogues and the galacto-depurants;

वातादिदुष्टे लिङ्गं च क्षीणस्य च चिकित्सितम् ।  
तत्सर्वमुक्तं ये त्वष्टौ क्षीरदोषाः प्रकीर्तिताः ॥२३०॥  
वातादिष्वेव तान् विद्याच्छास्त्रवधुर्भिषक्कमः ।  
त्रिविधास्तु यतः क्षिप्यास्ततो वक्ष्यामि विस्तरम् ॥

वातादिदुष्टे वातादिथी दूषित दूधना वातादिसे दूषित दूधके, लिङ्गम् लक्षण लक्षण, क्षीणस्य च अने क्षीण दूधनी और क्षीण दूधकी चिकित्सितम् चिकित्सा चिकित्सा, तत् सर्वम् ते अधुं यह सब, उक्तम् उल्लुं छे कह दिया है, ये तु अने ते और जो, अष्टौ आठ आठ, क्षीरदोषाः क्षीरदोषे क्षीरदोष, प्रकीर्तिताः उल्लेख छे कहे हैं, तान् तेओने उनको, शास्त्रवधुः शास्त्र शास्त्रज्ञ, भिषक्कमः श्रेष्ठ वैद्य श्रेष्ठ वैद्य, वातादिषु एव वातादिओभां व वातादिदोषोमें ही, विद्यात् अधुना जाने, यतः नेथी यतः, क्षिप्याः तु शिष्य शिष्य, त्रिविधाः

२३१. भिषक्कमः—भिषग्वरः (ब.)

पक्षु प्रकारना छे तीन प्रकारके हैं, ततः तेथी ततः, विस्तरम् विस्तारथी विस्तारसे वक्ष्यामि उल्लेख कहूंगा ॥ २३०-२३१ ॥

230-231. So also the signs of vitiation of the breast-milk by vata and other humors along with its treatment. All this, along with the eight kinds of morbidity of milk, have been described. The able physician endowed with scientific vision should classify these into the categories of vata and other humors. As there are three classes of pupils in view of their grades of intelligence, I describe the subject in detail to be used even to the lowest of them.

अजीर्णासात्म्यविषमविरुद्धात्यर्थभोजनान् ।  
लवणाम्लकटुक्षारप्रक्षिन्नानां च सेवनात् ॥२३२॥  
मनःशरीरसंतापादस्वप्नाग्निशि चिन्तनात् ।  
प्राप्तवेगप्रतीघातादप्रातोदीरणेन च ॥२३३॥  
परमात्रं गुडकृतं कृशरां दधि मन्दकम् ।  
अभिष्यन्दीनि मांसानि ग्राम्यान्पौदकानि च २३४  
भुक्त्वा भुक्त्वा दिवास्वप्नामद्यस्यातिनिषेवणात् ।  
अनायासादमीघातात् क्रोधाच्चातङ्ककर्शनैः ॥२३५॥  
दोषाः क्षीरवहाः प्राप्य सिराः स्तन्यं प्रदूष्य च ।  
कुर्युरष्टविधं भूयो दोषतस्तन्निबोध मे ॥२३६॥

अजीर्ण- अजीर्ण अजीर्ण, असात्म्य- असात्म्य असात्म्य, विरुद्ध- विरुद्ध विरुद्ध, अत्यर्थ- अने अत्यन्त और अत्यन्त, भोजनान् भोजनान् भोजनसे, लवण- लवण लवण, अम्ल- अम्ल अम्ल, कटु- कटु कटु, क्षार- क्षार क्षार, प्रक्षिन्नानाम् च अने उल्लेखनामां प्रयोगना और क्लेदयुक्त द्रव्योंके, सेवनात् सेवनथी सेवनसे, मनः-

२३२. मन्दकम्—मन्दकम् (ब. घ.)

२३५. अनायासादमीघातात् क्रोधाच्चातङ्ककर्शनैः—अभिचारादनायामाव व्याधिसिः कर्शनेन च (घ. ब. क.)

२३६. क्षीरवहाः—क्षीराशयाः (फ.)

મન મન, શરીર-અને શરીરના ઔર શરીરકે, સંતાપાત્ સંતાપથી સન્તાપ્તે, નિશિ રાત્રિમાં રાત્રિમે, અસ્માત્ ન ઊંઘવાથી ન સોનેસે, ચિન્તનાત્ ચિંતાથી ચિન્તાસે, પ્રાપ્તવેગ-પ્રાપ્ત થએલા વેગને પ્રાપ્ત વેગોંકો, પ્રતીવાતાત્ રોકવાથી રોકેસે, અપ્રાપ્ત-અને અપ્રાપ્ત વેગોંકો ઔર અપ્રાપ્ત વેગોંકો, સ્વીરણેન ચ પ્રેરિત કરવાથી પ્રેરિત કરેસે, પરમાત્મ દૂધપાક દૂધપાક, ગુડકૃતમ્ ગોળની બનાવેલો ગુડકી બની હુદે ચીજે, કૃષ્ણરામ્ કૃષ્ણ કૃષ્ણ, મન્દકમ્ દધિ મન્દઅત્ દહીં મન્દજાત દધિ, અભિષ્યન્દીનિ અભિષ્યન્દી અભિષ્યન્દી, પ્રામ્ય તથા પ્રામ્ય તથા પ્રામ્ય, આનૂપ-આનૂપ આનૂપ, ઔદકાનિ ચ અને જળચરોનાં ઔર જરૂરોંકે, માંસાનિ માંસ માંસ, મુક્તવા મુક્તવા ખાઈ ખાઈને खा खाकर, દિવા સ્વમાત્ દિવસમાં ઊંઘવાથી દિનમે સોનેસે, મદ્યપ્ત તેમજ મદ્યના એવં પ્રયકે, અતિનિષેવણાત્ અતિસેવનથી અતિસેવનસે, અનાયાસાત્ પરિશ્રમ ન કરવાથી પરિશ્રમ ન કરેસે, અમીઘાતાત્ અભિઘાતથી ચોટ લગેસે, ક્રોધાત્ ક્રોધથી ક્રોધસે, આતક્ક-અને રોગથી ઔર રોગસે, કર્શનઃ ચ કૃશ થવાથી કૃશ હોનેસે, દોષાઃ ક્રોધેશ દોષો ક્રુપિત દોષ, ક્ષીરવદ્વાઃ ક્ષીરવાહિની ક્ષીરવાહ, સિરાઃ સિરાઓમાં સિરાઓમે, પ્રાપ્ય પહોંચીને પહુંચકર, સ્તન્યમ્ શાવણને સ્તન્યકો, પ્રદૂષ્ય ચ દૂષિત કરી દૂષિત કરકે, અષ્ટલિધમ્ આઠ પ્રકારત્ અષ્ટ પ્રકારકા, કુર્યુઃ કરે છે કરતે હૈં, મૂયઃ ફરીને ફિરમે, તત્ તેને વ્ષે, દોષતઃ દોષ પ્રમાણે દોષાનુસાર, મેભારી પાસેથી મુમ્મસે, નિવોધ સાંભળો છુનો ॥ ૨૩૨-૨૩૬ ॥

232-236. By taking predigestion meals, unwholesome, irregular, antagonistic and excessive diet, by constant use of salt, acid, pungent, alkaline and softened articles, by mental and bodily affliction, sleeplessness at night, brooding, suppression of the manifested urges and artificially exciting such urges, and by indulgence in daysleep after frequent eating of milk-pudding, products of gur,

kedgere- immature under liquefaction, flesh of domestic land and aquatic creatures: by excessive use of wine, lack of exertion, trauma, anger and emaciation due to diseases the humors, getting provoked reach the galactic channels vitiate the milk and cause eight kinds of galactic morbidity. Now listen as I describe them again, according to each category of morbidity.

વાતજાદિભેદેન ક્ષીરદોષસ્ય વિજ્ઞાન —

વૈરસ્ય ફેનલજ્ઞાતો રૌક્ષ્યં ચેત્યનિલાત્મકે ।

પિત્તાદૈવર્ણ્યદર્શન્યે ક્ષોદ્રપેષિઙ્ગયગૌરવમ્ ॥૨૩૭॥  
કફાદ્ભવતિ

અભિલાષકે વાતદૂષિત ક્ષીરમાં વાતદૂષિત ક્ષીરમે, વૈરસ્યમ્ વિરસના વિરસના, ફેનલજ્ઞાતઃ ફીણને જમાવ ફેનલ સંવાત, રૌક્ષ્યમ્ ચ રુક્ષિ અને રુક્ષતા વાય છે ઔર રુક્ષતા હોતી હૈ, પિત્તાત્ પિત્તની દૂષિત ક્ષીરમાં પિત્તદૂષિત ક્ષીરમે, વૈવર્ણ્ય-વિવર્ણતા વિવર્ણતા, વર્ણન્યે અને દુર્ગન્ધે પ્રાપ્ત છે ઔર દુર્ગન્ધ હોતી હૈ, કફાત્ તથા રુક્ષદૂષિત ક્ષીરમાં તથા કફદૂષિત ક્ષીરમે, સ્નેહ-સ્નિગ્ધતા સ્નિગ્ધતા, પેષિઙ્ગ-ચીકણ પિષ્ટક્રતા, ગૌરવમ્ તથા ભારેપણું પ્રાપ્ત છે ઔર ગુહતા મરવતિ પ્રાપ્ત છે હોતી હૈ ॥ ૨૩૭ ॥

237. In condition of vitiation of vata the milk will be distasteful, frothy and unctuous. In vitiation by pitta, there will be discoloration and bad smell. In vitiation by kapha, unctuousness, sliminess and heaviness will be observed.

રુક્ષાદૈરનિલઃ સ્વૈઃ પ્રકોપણૈઃ ।

કુદ્ધઃ ક્ષીરાશયં પ્રાપ્ય રસં સ્તન્યસ્ય દૂષયેત્ ॥૨૩૮॥

રુક્ષાણૈઃ રુક્ષાદિ રુક્ષાદિ, સ્વૈઃ પેતાનાં અપને, પ્રકોપણૈઃ પ્રક્રોપણથી પ્રક્રોપણોંસે, કુદ્ધઃ ક્રુપિત ક્રુપિત,

૨૩૮. સ્તન્યસ્ય દૂષયેત્-સ્તન્ય પ્રદૂષયેત્ (૫.)

અનિલઃ વાયુ વાયુ, ક્ષીરાશયમ્ ક્ષીરાશયમ્ ક્ષીરાશયમે, પ્રાપ્ય બાઈને પહુંચકર, સ્તન્યસ્ય ધાવણુના સ્તન્યકે, રસમ્ રસને રસકો, વૃષભેત્ દૂષિત કરે છે દૂષિત કરતી છે ॥ ૨૩૮ ॥

238. The vata gets provoked by dry articles of diet and other similar vata-provoking factors. Thus, getting provoked and reaching the mammary glands, it vitiates their secretions.

વાતાદિદુષ્ટં ક્ષીરં પિવતે. વાલસ્ય યાનિ લિજ્જાનિ ભવન્તિ—  
વિરસં વાતસંસૃષ્ટં કૃશીભવતિ તત્ પિબન્ ।  
ન चास्य स्वदते क्षीरं कृच्छ्रेण च विवर्धते ॥ २३९ ॥

વિરસમ્ વિરસ વિરસ, વાતસંસૃષ્ટમ્ અને વાતસંસૃષ્ટ  
ઔર વાતસંસૃષ્ટ, તત્ તે દૂધે તે દૂધે તે દૂધકો, પિબન્ પીનાર  
બાળક પીનેવાળા બાલક, કૃશીભવતિ પાતળો થઈ  
બધ છે કુશ હો જાતા છે, અસ્ય ચ તેને તેને તેને, ક્ષીરમ્  
દૂધ દૂધ, ન સ્વદતે ભાવતું નથી અચ્છા નહીં લગતા,  
કૃચ્છ્રેણ તથા મુશ્કેલીથી તથા કઠિનાઈસે, વિવર્ધતે ચ તે  
બાળકની વૃદ્ધિ થાય છે તે બાલકની વૃદ્ધિ થતી  
છે ॥ ૨૩૯ ॥

239. The child, who sucks this distasteful milk vitiated by vata, becomes emaciated. It does not relish the milk and its growth becomes difficult

तथैव वायुः कुपितः स्तन्यमन्तर्विलोडयन् ।  
करोति फेनसङ्घातं तच्च कृच्छ्रात् प्रवर्तते ॥ २४० ॥

તથા એવ તેજ પ્રમાણે હસી પ્રકાર, કુપિતઃ કુપિત  
કુપિત, વાયુઃ વાયુ વાયુ, અન્તઃ સ્તન્યમ્ ક્ષીરાશયમ્  
સ્તન્યને ક્ષીરાશયમે સ્તન્યકો, વિલોડયન્ વલોડીને  
વિલોડિત કરકે, ફેનસઙ્ઘાતમ્ શીણના સમૂહને ફેન-  
સઘાતકો, કરોતિ બનાવે છે ઉત્પન્ન કરતા છે, તત્ તુ  
તેથી તે સ્તન્યની તતઃ તે સ્તન્યની, કૃચ્છ્રાત્ કૃચ્છ્ર-

૨૩૯. ન ચાસ્ય—ન ચાસ્યે (વ. ક.)

૨૪૦. તત્-તતઃ (વ. ક.)

પૂર્વક કઠિનાઈસે, પ્રવર્તતે પ્રવર્તિ થાય છે પ્રવર્તિ થતી  
છે ॥ ૨૪૦ ॥

240. Similarly, the provoked vata churns up the milk internally in the glands and makes it forthy. Consequently, it flows out with great difficulty.

तेन क्षामस्वरो बालो बद्धविण्मूत्रमारुतः ।  
वातिकं शीर्षरोगं वा पीनसं वाऽधिगच्छति ॥ २४१ ॥

તેન તે પીનાથી તેને પીને, બાલઃ બાળક બાલક,  
ક્ષામસ્વરઃ ક્ષીણ સ્વરવાળો ક્ષીણ સ્વરવાળો, બદ્ધ-વિટ્-  
મૂત્ર-મારુતઃ અને બદ્ધ-મૂત્ર તથા વાયુની અટકાયત-  
વાળો થાય છે મલ-મૂત્ર ઔર વાયુની રુકાવટવાળા થોતા  
છે, વાતિકમ્ વળી તેને વાતજન્ય વાતજન્ય, શીર્ષરોગમ્  
વા શીર્ષરોગ શીર્ષરોગ, પીનસમ્ વા કે પીનસ યા  
પીનસરોગ, અધિગચ્છતિ થાય છે થોતા છે ॥ ૨૪૧ ॥

241. The child which drinks this milk becomes weak of voice and suffers from stasis of feces, of urine and flatus. It develops headache or coryza of the vata type

पूर्ववत् कुपितः स्तन्ये स्नेहं शोषयतेऽनिलः ।  
रूक्षं तत् पिबतो रौक्ष्याद्बलहासः प्रजायते ॥ २४२ ॥

પૂર્વવત્ પહેલાની પ્રમાણે જ પૂર્વવત્, કુપિતઃ કુપિત  
કુપિત, અનિલઃ વાયુ વાયુ, સ્તન્યે સ્તન્યમ્ ક્ષીરાશયમે, સ્નેહમ્  
સ્નેહને સ્નેહકા, શોષયતે શોષી છે છે શોષણ  
કરતા છે, તત્ તે તે, રૂક્ષમ્ રૂક્ષ ધાવણુ રૂક્ષ  
દૂધકો, પિબતો પીતા બાળકને પીનેવાળે બાલકકો,  
રૌક્ષ્યાત્ ધાવણુની રૂક્ષતાને વળી સ્તન્યની રૂક્ષતાસે,  
બલહાસઃ બળનો હાસ બલહાસ, પ્રજાયતે થાય છે  
થોતા છે ॥ ૨૪૨ ॥

242. The vata which is provoked as before, dehydrates the unctuous element in the milk. The child, taking this unctuous milk, is reduced in

૨૪૨. અધિગચ્છતિ—નિગચ્છતિ (વ.)

strength, by the lack of unctuous quality in the milk.

पित्तमुष्णादिभिः क्रुद्धं स्तन्याशयमभिप्लुतम् ।  
करोति स्तन्यवैवर्ण्यनील पीतासितादिकम् ॥२४३॥

उष्णादिभिः उष्णदिग्ने क्रुद्धं कुपित  
थयेत् कुपित हुआ, पित्तं पित्त पित्त, स्तन्याशयम्  
स्तन्याशयम् स्तन्याशयम्, अभिप्लुतम् अङ्गिने पहुँचकर,  
नील नील नीले, पीत पीत पीत, असितादिकम् के  
कृष्ण वज्रे या कृष्ण आदि, स्तन्यवैवर्ण्यम् धावणुनी  
निवर्णता स्तन्यकी विवर्णता, करोति करे के करता  
है ॥ २४३ ॥

243. The pitta, getting provoked  
by hot articles and other similar factors,  
reaching the mammary glands, causes  
discoloration of the milk into bluish,  
yellowish, dark and other shades

विवर्णगात्रः स्विन्नः स्यात्तृष्णालुर्भिन्नविट् शिशुः ।  
नित्यमुष्णशरीरश्च नाभिनन्दति तं स्तनम् ॥२४४॥

शिशुः आण्ड बच्चा, विवर्णगात्रः विवर्ण अंगो-  
वाणे विवर्ण शरीरवाला, स्विन्नः पसीनावाणे पसीनयुक्त,  
तृष्णालुः तृष्णवाणे तृष्णावाला, भिन्नविट् भिन्नविट्  
अतिसारका रोगी, नित्यम् तथा अतत और सदा, उष्ण-  
शरीरः च उष्ण शरीरवाणे उष्ण शरीरवाला, स्वात्  
थाय के होता है, तम् स्तनम् अने ते स्तनने और  
उस स्तनको, न अभिनन्दति प्यछते नथी नहीं  
चाहता ॥ २४४ ॥

244. The child who takes this milk  
gets changed in bodycolor and is  
afflicted with perspiration, thirst and  
loose stools; its body is always felt to  
be warm, and it shows dislike for the  
breast-feed.

पूर्ववत् कुपिते पित्ते दौर्गन्ध्यं क्षीरमृच्छति ।  
प्राग्दामयस्तत्पित्ततः कामला च भवेच्छिशोः २४५

पूर्ववत् पदेष्वन्ती अत्र पूर्ववत्, पित्ते कुपिते पित्त  
कुपित थाथायी पित्ते कुपित होनेसे, क्षीरम् दूध दूध,  
दौर्गन्ध्यम् दुर्गन्धयुक्त दुर्गन्धयुक्त ऋच्छति थाय के  
होता है, तत् ते इसके, पित्ततः पीता पीनेवाले, शिशोः  
आण्डने बच्चेको प्राग्दामयः प्राग्दामय प्राग्दामय,  
कामला च के कामला या कामला, भवेत् थाय के होता  
है ॥ २४५ ॥

245. The pitta, provoked as before,  
gives a bad smell to the milk, and the  
child drinking that milk is afflicted  
with anemia and jaundice.

क्रुद्धो गुर्वादिभिः स्लेष्मा क्षीराशयगतः स्त्रियाः ।  
स्नेहान्वितत्वात्तत्क्षीरमतिस्निग्धं करोति तु ॥२४६॥

स्त्रियाः स्त्रीना स्त्रीके, क्षीराशयगतः क्षीराशयम्  
रहेक्ष क्षीराशयमें पहुँचकर, गुर्वादिभिः शुभ्र वज्रे केरुवाणी  
गुरु आदिसे, क्रुद्धः केपेक्षे कुपित, स्लेष्मा के के कफ,  
स्नेहान्वितत्वात् पोतानी रित्तताने स्त्रीके स्नेहयुक्त  
होनेसे, तत्क्षीरम् तु ते दूधने उस क्षीरको, अतिस्निग्धम्  
अतिस्निग्ध अतिस्निग्ध, करोति करे के करता है ॥ २४६ ॥

246. The kapha, provoked by heavy  
articles and other similar factors rea-  
ches the woman's mammary glands  
and by its unctuous quality, it renders  
the milk hyper-unctuous.

ऊर्ध्वनः कुन्थनस्तेन लालालुर्जायते शिशुः ।  
नित्योपदिग्धैः स्रोतोभिर्निद्राक्लमसमन्वितः ॥२४७॥  
श्वासकासपरीतस्तु प्रसेकतमकान्वितः ।

तेन तेनाथी उससे, शिशुः आण्ड बच्चा, ऊर्ध्वनः  
ऊर्ध्वनी ऊर्ध्व करे के वमनशील, कुन्थनः कर्त्तव्यते कुन्थन  
कनेवाला, लालालुः लालने आव करतो लाला युक्त,  
नित्योपदिग्धैः हरेश्व उषदिग्ध रहेखा नित्य कफसे  
उपदिग्ध, स्रोतोभिः स्रोतोथी युक्त स्रोतोवाला, निद्रा निद्रा  
निद्रा, क्लमसमन्वितः तेमज थाकवाणे एवं क्लमसे युक्त,

श्वस- श्वासश्वास, काम अने कासथी और काससे, परीतः पीडित पीडित, प्रसेक- उड़ने स्त्राव कफदा स्राव, तमक- अन्वितः तु अने तमकवाणे और तमकवाला, जायते थाय से होता है ॥ २४७३ ॥

247. The child sucking this milk, suffers from vomiting, tussive sounds, dribbling of saliva, increase of mucus in body-channels sleepiness, exhaustion, dyspnea, cough, ptyalism and asthma.

अभिभूय कफः स्तन्यं पिच्छिलं कुरुते यदा ॥२४८॥  
लालालुः शूनवक्त्राक्षिर्जडः स्यात्तत् पिवञ्छिद्युः ।

यदा कफः अत्यरे उड़ जब कफ, स्तन्यम् स्तन्यने स्तन्यको, अभिभूय दूषित करीने दूषित करके, पिच्छिलम् पीछिलुं पिच्छिल, कुरुते अनावे से तयारे बनाता है तब, तत् तेने उसको, पिवत् पीनार पीनेवाला, शिशुः आण्ड बालक, लालालुः लाणवाणो लालायुक्त, शून-वक्त्राक्षिः मुण तथा आभना सोअवाणे सूजे हुए मुह और आंखवाला, जडः अने जड और जड, स्यात् अने से होता है ॥२४८३॥

248. When the Kapha vitiates the milk and makes it slimy, the child sucking this milk, suffers from slobber; its face and eyes become swollen and the child becomes dull

कफः क्षीराशयगतो गुरुत्वात् क्षीरगौरवम् ॥२४९॥  
करोति गुरु दत् पीत्वा बालो हृद्गोगमृच्छति ।  
अन्यांश्च विविधात्रोगान्कुर्यात्क्षीरसमाश्रितान् २५०

क्षीराशयगतः क्षीराशयगत क्षीराशयसे पहुंचा हुआ कफः उड़ कफ, गुरुत्वात् युरुताने वीधे भारी होनेसे, क्षीरगौरवम् दूधने युरुतवाणुं दूधको भारी, करोति करे से करता है, तत् गुरु ते भारे दूध उस

२५०. करोति गुरु दत् पीत्वा बालो हृद्गोगमृच्छति—कुर्यात्स्नेहा-  
न्वितं पीतं तत् आवात्कफोदवान् (त. द.)  
" करोतिगुरु दत्—अतिस्नेहान्वितं (च. फ. द.)

गुरु दूधको, पीत्वा पीराथी पीकर, बालः आण्डने बच्चा, हृद्गोगम् ह्रोगे हृद्गोगको, मृच्छति थाय से प्राप्त होता है, क्षीरसमाश्रितान् पणी ते उड़ दूधअन्य और वह कफ क्षीरजन्य, अन्यान् भीअ अन्य, विविधान् विविध नावा प्रकारके, रोगान् च रोगो को कुर्यात् करे से करता है ॥२४९-२५०॥

249-250. The kapha getting located in the mammary glands, causes heaviness of milk; owing to its quality of heaviness the child drinking that milk is afflicted with the diseases of the stomach and various other disorders born of morbid milk.

क्षीरे वातादिभिर्दुष्टे संभवन्ति तदात्मकाः ।

क्षीरे दूध दूध, वातादिभिः वातादिथी वातादिसे, दुष्टे दूषित अती दुष्ट होने पर तदात्मकाः तेनाथी अती रोगो तज्जन्य रोग, संभवन्ति थाय से होते हैं ॥२५०३॥

250. If the breast-milk is vitiated by vata or other humors, diseases corresponding in characteristics to the humor will afflict the child.

क्षीरदोषे घात्र्याः संशोधनम्—

तत्रादौ स्तन्यशुद्ध्यर्थं घात्रीं स्नेहोपपादिताम् २५१  
संस्वेद्य विधिवद्वैद्यो वमनेनोपपादयेत् ।

तत्र तेभा उसमें, आदौ प्रथम प्रथम, वैद्यः वैद्य वैद्य, स्तन्य-धूपयुनी स्तन्यकी, शुद्ध्यर्थम् शुद्धिने भाटे शुद्धिके लिए, स्नेह-उपपादिताम् स्नेहन करावे वी स्नेहन कराई हुई, घात्रीम् घात्रीने घात्रीको, विधिवत् विधि मुण्य विधिपूर्वक, संस्वेद्य स्वेहन करावीने स्वेदन कराके, वमनेन वमन वमन, उपपादयेत् करावुं करावे ॥२५१३॥

251-251. For the purification of the breast milk, the physician should, at first, systematically treat the mother



with oleation and sudation procedures and then give her emesis.

वमनार्थं वचादियोगः —

वचाप्रियङ्गुयष्ट्याह्वफलवत्सकसर्षपैः ॥२५२॥

कल्कैर्निम्बपटोलानां कायैः सलवणैर्वमेत् ।

वचा- ५७ वच, प्रियङ्गु- धड्डा प्रियङ्गु, यष्ट्याह्व-  
नेरीमध मुलहठी, फल- भीड़ण मैनफल, वत्सक- डडे  
कुडा, सर्षपैः सरसवना सरषोके, कल्कैः डड्डे कल्क,  
सलवणैः अने धवणुयुक्त और लवण मिलाकर, निम्ब-  
लीमध नीम, पटोलानाम् अने परवल्के और परवल्के,  
कायैः डवायथी कायसे, वमेत् वमन करावतुं वमन  
करावे ॥ २५२३ ॥

252-252½. Sweet flag, perfumed  
cherry, liquorice emetic nut, kurchi  
and rape seed may be given in the  
form of paste; or the bark of neem and  
wild snake gourd, mixed with salt, may  
be given as decoction.

विरेचनार्थं योगः —

सम्यग्वान्तां यथान्यायं कृतसंसर्जनां ततः ॥२५३॥

दोषकालबलापेक्षी स्नेहयित्वा विरेचयेत् ।

सम्यक्-वान्ताम् अशाभर वमन भया अच्छी प्रकार  
वमन होनेके, ततः आगे पीछे, यथान्यायम् यथाविधि  
शास्त्रानुसार, कृतसंसर्जनाम् संसर्जनक्रम करानेके  
पछी संसर्जनक्रम करानेके पीछे दोष- दोष दोष, काल-  
काल काल, बल- अने भक्षणी और बलका, अपेक्षी  
अपेक्षा करनेके विचार करके, स्नेहयित्वा स्नेहन  
करावनी स्नेहन कराके, विरेचयेत् विरेचन आधुन  
विरेचन करावे ॥ २५३३ ॥

253-253½ The patient that has been  
systematically subjected to emesis and  
rehabilitation procedure, should be  
given purgation preceded by olea-  
tion, in keeping with the patient's

degree of morbidity and strength,  
and the season.

त्रिवृतामभयां वाऽपि त्रिफलारससंयुताम् ॥२५४॥

पाययेन्मधुसंयुक्तामभयां वाऽपि केवलाम् ।

(पाययेन्मूत्रसंयुक्तां विरेकार्थं च शास्त्रवित् २५५)

त्रिफलारससंयुताम् त्रिदशाना कलात्र त्रिफला-  
कायमेयुक्त, मधुसंयुक्ताम् तथः मधुसहित तथा मधुसंयुक्त,  
त्रिवृताम् त्रिवृत त्रिवृत, अभयाम् वा अपि डे डडे  
अथवा अभयको, पाययेत् पाणी पिलावे, शास्त्रवित्  
अथवा शास्त्रने अनुसार वैद्य अथवा शास्त्रज्ञ वैद्य,  
विरेकार्थम् विरेचन भाटे विरेचके लिए, मूत्रसंयुक्ताम्  
गोमूत्र साथे गोमूत्रयुक्त, केवलाम् अथवा केवल,  
अभयाम् वा अपि डडे अभयको, पाययेत् पाणी  
पिलावे ॥ २५४-२५५ ॥

254-255. He should be given the pul-  
vis of turpeth, and chebulic myrobalan  
mixed with the decoction of the three  
myrobalans and honey, or he should  
be given the pulvis of chebulic myro-  
balan only mixed with cow's urine, by  
the physician with a view to purge  
the patient.

सम्यग्विरिक्तां मतिमान् कृतसंसर्जनां पुनः ।

ततो दोषावशेषघ्नैरन्नपानैरुपाचरेत् ॥२५६॥

सम्यक्- अशाभर ठीक प्रकारसे विरिक्ताम् मतिमान्  
अथेष्टी विरेचन हो जानेपर, पुनः कृतसंसर्जनाम् संसर्जन-  
क्रम करनेके, ततः आगे बाद, मतिमान् बुद्धिमान् वैद्य बुद्धिमान् वैद्य, दोषावशेषघ्नैः  
आडी रहेवा दोषने करनेके दोषघ्ननाशक, अन्नपानैः  
अन्नपानेष्टी अन्नपानसे, उपाचरेत् चिकित्सा करनेकी  
उपचार करे ॥ २५६ ॥

२५५. पाययेन्मधुसंयुक्तामभयां वाऽपि केवलाम्- पाययेत् समी-

मूत्रासभयां स्वपि शास्त्रवित् (ब.)

२५६. सम्यग्विरिक्तां मतिमान्-अथ मन्मथविरिक्ता च (त.)

, दोषावशेषघ्नैः-दोषविशेषघ्नैः (ब. क.)



256. After she has been purged well and given the rehabilitation procedure, the wise physician should treat the residual morbidity in her, by a regular course of suitable food and drink.

ક્ષીરદોષે દિતનશ્વપાનમ્—

શાલયઃ પશ્ચિકા વા સ્યુઃ શ્યામાકા ભોજને હિતાઃ ।  
પ્રિયક્કવઃ કોરદૂષા યવા વેણુયવાસ્તથા ॥૨૫૭॥  
વંશવેષ્ઠકલાયાશ્ચ શાકાર્થે સ્નેહસંસ્કૃતાઃ ।

શાલયઃ શાલિ, પશ્ચિકાઃ વા પશ્ચિક સાંઠી  
ચાવલ, શ્યામાકાઃ આમી સાંઠાં, પ્રિયક્કવઃ પ્રિયંગુ  
પ્રિયંગુ, કોરદૂષાઃ કેદારી કોરોં, યવાઃ તથા જવ તથા  
જો, તથા વેણુયવાઃ અને વેણુયવ ઓર વેણુયવ, ભોજને  
ભોજનને માટે ભોજનમેં, હિતાઃ દિતકર્તા દિતકર, સ્યુઃ  
છે હૈં, સ્નેહસંસ્કૃતાઃ સ્નેહથી સંસ્કૃત આપેલા સ્નેહ-  
સંસ્કૃત, વંશ- વાંસ વંશ, વેત્ર વેત્ર વેત્ર, કલાયાઃ ચ  
અને વટાણા ઓર મટર, શાકાર્થે શાક તરીકે દિતકર  
છે શાકકે લિષ્ટ દિતકર હૈં ॥ ૨૫૭૩ ॥

257-257½. Jali or shastika rice, sanwa, millet or italian millet, common millet, barley or bamboo barley are beneficial as diet. The tender shoots of bamboo, cane sprouts and chickling vetch should be used as vegetable-curry prepared in unctuous substances.

મુદ્ગાન્ મસૂરાન્ યૂવાર્થે કુલત્યાંશ્ચ પ્રકરણયેત્ ૨૫૮

મુદ્ગાન્ મગ મુંગ, મસૂરાન્ મસર મસર, કુલત્યાન્  
ચ તથા કળથી ઓર કુચીકો, યૂવાર્થે યૂવને માટે  
યૂષકે લિષ્ટ, પ્રકરણયેત્ આપવા પ્રયોગ કરે ॥ ૨૫૮ ॥

258. Green gram, lentils and horsegram may be used for preparing soup.

૨૫૭૩. શાકાર્થે સ્નેહસંસ્કૃતાઃ—સ્નેહ શૂષ્કસંસ્કૃતાઃ

(ક. ટ. પ. વ.)

નિમ્બવેત્રાપ્રકુલકવાર્તાકામલકૈઃ શૃતાન્ ।

સવ્યોષસૈન્ધવાન્ યૂષાન્દાપયેત્સ્તન્યશોધનાન્ ૨૫૯

સ્તન્યશોધનાન્ સ્તન્યનું શોધન કરનાર સ્તન્યશોધક,  
નિમ્બ- લીમડો નીમ, વેત્રાપ્ર- વેત્રામ વેત્રાપ્ર, કુલક-  
કારેલી કારેલા, વાર્તાક- રીંગણાં વૈગન, આમલકૈઃ  
અને આમળાંથી ઓર આંબલેસે, શૃતાન્ ઉકાળેલ  
પકાયે હુણ, સવ્યોષ- ત્રિકડુ ત્રિકડુ, સૈન્ધવાન્ તથા  
સિંધાલુણથી યુક્ત તથા સૈન્ધવસે યુક્ત, યૂષાન્ યૂષ  
યૂષકો, દાપયેત્ આપવા દેવે ॥ ૨૫૯ ॥

259. The patient should be given a potion of the soups of the sprouts of neem and cane, karella fruit, brinjal and emblic myrobalans mixed with the pulvis of the three spices and rock salt; they are galacto-depurants.

શશાન્ કપિજ્જલાનેણાન્ સંસ્કૃતાંશ્ચ પ્રદાપયેત્ ।

સંસ્કૃતાન્ ત્રિકડુ વગેરેથી સંસ્કૃત કરેલ ત્રિકડુ  
આદિસે સંસ્કૃત કિયે હુણ, શશાન્ સસલાં શશ,  
કપિજ્જલાન્ કપિજ્જલ કપિજ્જલ, પુણાન્ ચ તથા એણનાં  
માંસ ઓર એણકે માંસકો, પ્રદાપયેત્ આપવા દેવે ૨૫૯½

259½. The flesh of hare, grey partridge and Indian antelope, should be given well cooked as food;

સ્તન્યશુદ્ધિકરાઃ કતિપયયોગાઃ—

શાર્ફેષ્ઠાસસર્પર્ણત્વગન્ધગન્ધાશૃતં જલમ્ ॥૨૬૦॥

પાયયેતાથવા સ્તન્યશુદ્ધયે રોહિણીશૃતમ્ ।

સ્તન્યશુદ્ધયે સ્તન્યની શુદ્ધિને માટે સ્તન્યની શુદ્ધિ  
લિષ્ટ, શાર્ફેષ્ઠા- પીલુડી મકોય, સસર્પર્ણત્વક- સાતવલુની  
છાલ, સતિવનકી છાલ, ગન્ધગન્ધા- અને આસોંદથી ઓર  
અસગન્ધસે, શૃતમ્ ઉકાળેલું પકાયા હુણ, જલમ્ પાણી  
પીવા આપવું જલ પિલાવે, અથવા અથવા યા,

૨૫૯½. પ્રદાપયેત્—પ્રકરણયેત્ (ક. ટ. વ.)

૨૬૦ ગન્ધગન્ધા—અસગન્ધા (ક.)

૨૬૦½ રોહિણીશૃતમ્—કંઠરોહિણી (ક.)

રોહિણીશૃત્ત્વ ૨૧૬૫૫થી ઉકાળેલું પાણી રોહનસે પકાયા હુઆ જલ, પાયયેવ દેવું દેવે ॥ ૨૬૦૩ ॥

260 260½. The water prepared with black-night shade, dita bark, cinnamom bark and winter cherry may be used for drinking; or the decoction of kurroa may be given as potion for the purification of breast-milk.

અમૃતાસત્તર્ણત્વકકાર્થં ચૈવ સનાગરમ્ ॥૨૬૧॥  
કિરાતતિક્કકાર્થં શ્લોકપાદેરિતાન્ પિબેત્ ।  
ત્રીનેતાન્સ્તન્યશુદ્ધયર્થમ્

અમૃતા- ગંગા ગિલોય, સત્તર્ણત્વક- અને સત-  
વલ્લી છાલને। સતિવનકી છાલકા, કાથમ્ કપાથ કાથ,  
સનાગરમ્ સુંઠને। કપાથ સોઠકા કાથ, કિરાતતિક્ક-  
અને કિરિયાતાને। ઔર ચિરાયતાકા, કાથમ્ કપાથ  
કાથ, પુતાન્ આ. ઇન્, શ્લોકપાદ- શ્લોકના એક એક  
પાદમાં શ્લોકકે એક એક પાદમાં, રિરિતાન્ કહેલા કહે  
હુ, ત્રીન્ ત્રણ થોગે। ત્રીન થોગોનો, સ્તન્ય-શુદ્ધયર્થમ્  
સ્તન્યશુદ્ધિને માટે સ્તન્યકી શુદ્ધિકે લિપ્, પિબેત્ પાવે  
પીવે। ઘાત્રી પીવે ॥ ૨૬૧૩ ॥

261-261½ The decoction of the bark of guduch and dita bark, the decoction of ginger or the decoction of chiretta should be taken as potion and all three, each described in a quarter of the verse, may be taken for the purification of breast milk.

इति सामान्यमेवजम् ॥२६२॥  
કીર્તિતં સ્તન્યદોષાણાં પૃથગન્યં નિબોધત ।

इति आ०म इ०प्र प्रकार, स्तन्यदोषाणाम् स्तन्य-  
રોગોની સ્તન્યરોગોની સામાન્ય- સામાન્ય સામાન્ય,  
મેષજમ્ ચિકિત્સા ઔષધ, કીર્તિતમ્ કહી છે કહી છે,  
પૃથક્ સ્તન્યમ્ હવે વિશેષ ચિકિત્સા કહું છું અવ  
વિશેષ ચિકિત્સા કહતા હું, નિબોધત સાંભળો સુનો ૨૬૨૩  
૨૬૨. નિબોધત-નિબોધ મે (વ.)

262-262½. Thus has been described the treatment of the morbidity of the breast milk in general. Now listen to the treatment of various conditions described separately.

પાયયેદ્વિરસશીરાં દ્રાક્ષામધુકસારિવાઃ ॥૨૬૩॥  
શ્લક્ષ્ણપિષ્ટાં પયસ્યાં ચ સમાલોઙ્ય સુશામ્બુના ।

વિરસશીરામ્ વિરસ થયેલા દૂધવાળી અને વિરસ  
શીરવાલી છીકો, દ્રાક્ષા- દ્રાક્ષ દ્રાક્ષ, મધુક- ગ્રેડીમધ  
મુલહરી, સારિવાઃ સારિવા કપૂર, શ્લક્ષ્ણ- પિષ્ટામ્ અને  
ભારીક વાટેલું ઔર બારીક પીસે હુ, પયસ્યામ્ ભોય-  
કાળું બિલાઈકન્દકો, સુશામ્બુના નવશેકા પાણીમાં થોડે  
ગરમ પાનીમાં, સમાલોઙ્ય ચ થોળીને આલોચિત કરકે,  
પાયયેવ પાવું પિલાવે ॥ ૨૬૩૩ ॥

263 263½. In condition of vitiated taste of the breast milk, grapes, liquorice, sarsaparilla and the fine powder of milky yam, mixed with genially warm water, should be given.

पञ्चकोलादिलेपः —

पञ्चकोलकुलत्थैश्च पिष्टैरालેપयेत् स्तनौ ॥२६४॥  
શુષ્કૌ પ્રક્ષાલ્ય નિર્દુઘાત્તથા સ્તન્યં વિશુદ્ધયતિ ।

પિષ્ટૈઃ પન્ચકોલ-કુલત્થૈઃ ચ પંચકોલ અને કુળત્થીને  
ભારીક વાટી એએને। પન્ચકોલ ઔર કુલત્થીનો બારીક  
પીસકર ઇતકા, સ્તનૌ સ્તન ઉપર સ્તનોપર, આલેપયેવ લેપ  
કરવે લેપ કરે, શુષ્કૌ લેપ સુકાથે સ્તનને લેપ શુષ્ક  
હોનેપર સ્તનકો, પ્રક્ષાલ્ય પાણીથી ધોઈને પાનીસે  
થોકર, નિર્દુઘાત્ત દૂધ બહાર કાઢી દેવું દૂધ બાહર  
નિકાલ દે, તથા આવી રીતે સ્તન પ્રકાર, સ્તન્યમ્  
સ્તન્ય દૂધ, વિશુદ્ધયતિ શુદ્ધ થાય છે શુદ્ધ હો જાતા  
દે ॥૨૬૪૩ ॥

264-264½. The paste of the pentad of spices and horseggram should be applied to the breast and when it is

dried, the breast should be washed and the accumulated milk drawn out. Thus the breast milk gets purified.

फेनसङ्घाते पाठादियोगः —

फेनसङ्घातवत्क्षीरं यथास्तां पाययेत् स्त्रियम् २६५  
पाठानागरशार्ङ्गेष्टामूर्वाः पिष्ट्वा सुखाम्बुना ।

अञ्जनं नागरं दारु बिल्वमूलं प्रियङ्गवः ॥२६६॥  
स्तनयोः पूर्ववत् कार्यं लेपनं क्षीरशोधनम् ।

यस्याः गेः जिसका, क्षीरम् दूध दूध, फेनसङ्घात-  
वत् शीशुना समूहवाणुं होय फेनसंघातवाला हो,  
तद् ते उस, स्त्रियम् स्त्रीने स्त्रीको. पाठा- पाथ पादी  
नागर- सूँठ सोंठ, शार्ङ्गेष्टा- पीलुडी काकमाची, मूर्वाः  
अने भूर्वाने और मूर्वाको, पिष्ट्वा उड़क उरी पीसकर,  
सुखाम्बुना नवश्रेष्ठा पाणी साथे सुखोष्ण जलसे,  
पाययेत् पावे पिलावे, अञ्जनम् रस(अन रसांजन,  
नागरम् सूँठ सोंठ, दारु देवदार देवदार, बिल्वमूलम्  
पीलुडी भूण बेलका मूल, प्रियङ्गवः तथा धुँदुवाथी  
तथा प्रियंगुका, पूर्ववत् पहेवांनी नेम पूर्ववत्, स्तनयोः  
स्तन उपर स्तनोंके ऊपर, लेपनम् लेप लेप, क्षीर-  
शोधनम् स्तनशोधन भाटे क्षीरशोधनके लिए, कार्यम्  
करवे करे ॥ २६५-२६६ ॥

265 266½. The woman whose milk is frothy should be given a potion of Patha, ginger, black nightshade and trilobed virgin's bower, pounded in genially warm water and, as in the previous case, the breast should be painted with the paste of the extract of indian berberry, ginger, deodar, roots of bael, and perfumed cherry; this purifies the milk.

२६५. पाययेत् स्त्रियम्-पाययेत् च (ब.)

२६६. पाठानागर-चान्बनागर (च. क. ज.)

,, नागरं-तगरं (ब. ग.)

किराततिकादिकाथः —

किराततिकां गुण्ठीं साधुतां काथयेद्विषम् ॥२६७॥  
तं काथं पाययेद्वात्रीं स्तन्यदोषनिवर्हणम् ।  
स्तनौ चालेपयेत् पिष्टैर्यवगोधूमसर्वपैः ॥२६८॥

विषम् वैवे वैद्य, किराततिकाकम् उरियातुं विनायता,  
गुण्ठीर सूँठ सोंठ, साधुताम् अने गजौना और  
गिलोयका, काथयेत् उथल उरवे काथ करे, स्तन्यदोष-  
स्तन्यदोष स्तन्यदोष, निवर्हणम् उरवाने भाटे हटानेके  
लिए तद् काथम् ते उथल यह काथ, वात्रीम् धावने  
घात्रीसे, पाययेत् पावे पिलावे, पिष्टैः यव-गोधूम-  
सर्वपैः अने यव भुँड तथा सरसवना उड़कणी और पीसे  
हुए जौ गेहूं तथा सरसोंसे, स्तनौ च स्तन उपर स्तनों  
पर, चालेपयेत् आलेपन करवुं लेप करे ॥२६७-२६८॥

267-268 Chiretta, dry ginger and guduch should be decocted and be given by the physician as potion to the mother or wet nurse for curing the galactic morbidity; and the breasts should be painted with the paste of barley, wheat and rapeseed.

रुक्षक्षीरचिकरसाः —

षड्विरेकाश्रितियोक्तैरौषधैः स्तनशोधनैः ।

रुक्षक्षीरा पिबेत् क्षीरं तैर्वा सिद्धं घृतं पिबेत् २६९

रुक्षक्षीरा रुक्ष क्षीरवाली स्त्रीसे रुक्ष क्षीरवाली स्त्री,  
षड्विरेकाश्रितिय- षड्विरेयनशताश्रितिय अध्यायभा  
षड्विरेयनशताश्रितिय अध्यायमें, उक्तैः उड़ेका कही हुई.  
स्तन्यशोधनैः स्तन्यशुद्धि उरनार स्तन्यशोधक,  
औषधैः औषधियाँ औषधियोंसे, क्षीरम् पकावे दूध  
पकाया हुआ दूध, पिबेत् पीवुं पीवे, तैः सिद्धम् घृतम्  
वा के ते औषधियोंसे पकाया हुआ घी, पिबेत् पीवुं पीवे ॥२६९॥

269. The woman whose breast milk is un-unctuous should drink the

२६९. रुक्षक्षीरा-गुक्षक्षीरा (च. क.)

,, ,, घृतक्षीरे (ब.)

milk or ghee, medicated with drugs mentioned as galacto depurants in the chapter on purgative drugs of six kinds.

पूर्ववज्जीवकाद्यं च पञ्चमूलं प्रलेपनम् ।

स्तनयोः संविधातव्यं सुखोष्णं स्तन्यशोधनम् २७०

पूर्ववत् पक्षेक्षानी जेम पूर्ववत्, जीवकाद्यम् ७१. अहिभक्ष जीवकादिगण, पञ्चमूलम् च अने भृङ्गपत्र-भूक्षणे तथा बृहत्पंचमूलका, सुखोष्णं सडे-५ अवे, सुखोष्णं प्रलेपनम् द्वेप लेग, स्तन्यशोधनम् प्रायशुनी शोधन भाटे स्तन्यशोधनके लिए, स्तनयोः स्तने पर स्तनो पर, संविधातव्यम् अवे काना चाहिए ॥ २७० ॥

270. As already described the drugs of the pentaradices of the Jivaka group should be made into paste and painted on the breast in a genially warm temperature for the purification of the breast milk.

पैवर्ण्यं यष्टीमधुकादियोगः—

यष्टीमधुकामृद्रीकापयस्यासिन्धुवारिकाः ।

शीताम्बुना पिबेत्कलकं क्षीरवैवर्ण्यनाशनम् ॥२७१॥

यष्टीमधुक- जेमीमधु सुलह्मी, मृद्रीका- अक्ष द्राक्षा, पयस्या- क्षीरविहारी पयस्या, सिन्धुवारिकाः अने नजे। अना और निर्गुही इनके, क्षीरवैवर्ण्य- दूधनी विवर्ण्यतासे, दूधकी विवर्ण्यताको, नाशक नश कराने नष्ट करनेवाले, कलकम् अक्ष कलको, शीताम्बुना ठंडा पानी साथे शीतल जलसे, पिबे पीवे पीवे ॥ २७१ ॥

271. Liquorice, grapes, milky yam and chaste tree, pounded and taken as potion with cold water, destroys the discoloration of breast milk.

२७०. स्तनयोः संविधातव्यं } { अक्षं पिष्ट्वा जलेनैव लेपनं  
सुखोष्णं स्तन्यशोधनम् } { भिषजा स्त्रियाः (र.)

द्राक्षा-अधुककलेन स्तनो चास्याः प्रलेपयेत् ।

अक्षारय द्राणिना च च निर्द्विह्यत्तौ पुनः पुनः ॥२७२॥

अनाः जेमी इम, ननो च स्तन उरे, स्तनो पर, द्राक्षा- अक्ष द्राक्ष, अधुक- अने जेमीमधुना और सुलह्मीके कलकेन अक्षकी कलके, प्रलेपयेत् द्वेप अवे, लेप ले लो च ले २ सु. ५. पछी जेमीने नन, वारिणा पानीया जलसे, प्रकाश्य अक्ष पीवे, धेक, पुनः पुनः बार ॥ बारबार, निर्द्विह्यत्तौ धारित अक्षी नाअपुं दूध क्षिप्तं ॥ २७२ ॥

272. The woman's breast should be painted with the paste of grapes and liquorice and when dried, the breasts should be washed with water and the milk drawn away repeatedly.

वासग्यं तत्र ण दिशोर.—

विषाणिकाजशृङ्गयो च त्रिफलां रजनीं चाम्बुनाः ।  
पिबेत्क्षीताम्बुना विष्टा क्षीरदौर्गन्ध्यनाशिनीम् ॥

क्षीरदौर्गन्ध्य- दूधनी दुर्गन्धने, क्षीरने दुर्गन्धको, वासिनीम् नाश करनारी नष्ट करनेवाली, विषाणिका- अजशृङ्गी विषाणिका, अजशृङ्गी अजशृङ्गी, त्रिफलाम् त्रिफलाः त्रिफला, रजनीम् रजनीम् इन्दी वचा च अने पत्र और वचा, विष्टा अवे अवे पीने इनको पीकर, शीताम्बुना ठंडा पानी साथे शीतल जलसे, पिबे पीवे पीवे ॥ २७३ ॥

273. Stinking swallow wort and Ajasringi, the three myrobalans turmeric and sweet flag, reduced to paste and taken as potioa with cold water, destroys the foul odor of the breast-milk.

दौर्गन्धे चिकित्सा—

लिङ्गावाऽप्यमयाचूर्णे सव्येषं माक्षिकसुम् ।

क्षीरदौर्गन्ध्यनाशार्थं घात्री पथ्याशिनी तथा २७४

२७२. चाम्बाः-वास्याः (व.)

२७३. वचाम्-अनाम् (व.)

तथा पथ्याक्षिनी अथवा पथ्य भोजन करना  
अथवा पथ्य भोजन करनेवाली घात्री धाने घात्री, क्षीर-  
दौर्गन्ध्य-दूधनी दुर्गन्धने क्षीरकी दुर्गन्धके, नास्त्रार्थम्  
नाश करनेवाले भाटे नाशके लिए, सद्योषम् त्रिकटुसहित  
त्रिकटुके साथ, माक्षिककुतम् मध भेजनीने मधुमें  
मिलाकर, अभयाचूर्णम् अपि हरउं तुं थूणुं हरइका चूर्ण,  
लिङ्गात् वा आटवुं चाटे ॥ २७४ ॥

274. If the mother takes the linctus  
made of the powder of chebulic myro-  
balans and the three spices, mixed  
with honey and observes the regimen  
of diet, the bad odor of the milk gets  
rectified.

सारिवोशीरमज्जिष्ठाश्लेष्मातककुचन्दनैः ।

पत्राम्बुचन्दनोशीरैः स्तनौ चास्याः प्रलेपयेत् २७५

अस्याः तेना इसके, स्तनौ च स्तन ७५२ स्तनो पर,  
सारिवा- ७५६सरी सारिवा, उशीर- वाणो। खस,  
मज्जिष्ठा- भण्ड मंजीठ, श्लेष्मातक- शुंढो श्लेष्मातक,  
कुचन्दनैः तथा रतलणी ऐओने। तथा लालचन्दन  
इनका, पत्र- अथवा तमाक्षपत्र अथवा तेजपत्र,  
अम्बु- वाणो। गन्धवाला, चन्दन- यंदन चन्दन, उशीरैः  
अने उणो वाणो ऐओने। और खस इनका, प्रलेपयेत्  
लेप करने लेप करे ॥ २७५ ॥

275. Sarsaparilla, cuscus grass,  
madder, Assyrian plum and red sandal;  
or cinnamom bark, fragrant sticy  
mallow, sandal and cuscus grass,  
should be rubbed into paste and painted  
on the breasts.

स्निग्धक्षीरा दारुमुस्तपाठाः पिष्ट्वा सुखाम्बुना ।  
पीत्वा ससैन्धवाः क्षिप्रं क्षीरशुद्धिमवाप्नुयात् २७६

२७५. श्लेष्मातककुचन्दनैः-श्लेष्मातैर्वा कुचन्दनैः (घ. द.)

,, कुचन्दनैः-सचन्दनैः (ड.)

,, पत्राम्बु-बवाम्बु (ब. फ.)

२७६. स्निग्धक्षीरा-गुरुक्षीरा (ब. फ.)

स्निग्धक्षीरा अतिशय स्निग्ध धावणुवाणी ओओ  
अति स्निग्ध क्षीरवाली ओओ, दारु- देवदार देवदार, मुस्त-  
नागरमोथ मोथा, पाठाः अने पाठा ऐओने और  
पाकी इनको, ससैन्धवाः थोडुं सिंधावणु नाभी थोडा  
सेन्धानमक डालकर, सुखाम्बुना पिष्ट्वा नवशेका पाणुथी  
वाटीने कोसे जलसे पीसकर, पीत्वा पीनाथी पीनेसे,  
क्षिप्रम् शीघ्र शीघ्र, क्षीरशुद्धिम् स्तन्यशुद्धिने स्तन्य-  
शुद्धिको, अवाप्नुयात् प्राप्त करे छे प्राप्त करती  
है ॥ २७६ ॥

276. In condition of viscid or heavy  
breast-milk deodar, nut grass and  
Patha should be pounded and taken  
as potion in genially warm water  
mixed with rock salt. This will quickly  
purify the breast-milk.

पाययेत् पिच्छिलक्षीरां शार्ङ्गष्टामभयां वचाम् ।

मुस्तनागरपाठाश्च पीताः स्तन्यविशोधनाः ॥ २७७ ॥

पिच्छिलक्षीराम् पीछला धावणुवाणी ओओने पिच्छिल  
क्षीरवाली ओओको, शार्ङ्गष्टाम् पीलुडी मकोय, अभयाम्  
हरउं हरइ, वचाम् अने वच धावणुनी शुद्धि भाटे  
और वच स्तन्यकी शुद्धिके लिए, पाययेत् पाणी पिळावे,  
मुस्त- मुस्त मुस्त, नागर- सुंठ सोंठ, पाठाः च अने  
पाठा ऐओ। पलु और पाकी ये भी, पीताः पीनाथी पीने  
पर, स्तन्य- स्तन्यनी स्तन्यकी, विशोधनाः शुद्धि करे  
छे शुद्धि करते हैं ॥ २७७ ॥

277. The woman with slimy milk  
should be given as potion, black night-  
shade, chebulic myrobalans, sweet flag,  
nut grass, ginger and Patha reduced  
to paste with water, for clarification  
of the milk.

तक्रारिष्टं पिबेद्यापि यदुक्तं गुदजापहम् ।

विदारीबिल्वमधुकैः स्तनौ चास्याः प्रलेपयेत् २७८

२७८. तक्रारिष्टं पिबेद्यापि यदुक्तं गुदजापहम्-तक्रारिष्टमपि  
पिबेद्यासां यद्विश्रितम् (ख. घ. ड. त.)

,, यदुक्तं गुदजापहम्-तथान्वा गुदजापहम् (फ.)

ગુદગાપદમ્ હરસને મટાડનાર વવાસીરકા નાશક, યત્ જે જો, તકારિદ્ધ તકારિદ્ધ તકારિદ્ધ, ડક્કન કહેવાઈ ગયો છે કહા જા ચૂકા છે, પિવેત્ ચ અપિ તે પશુ પીવે। તસકો મી પીવે, અમ્બાઃ અને એનાં ઓર इसके, स्तनौ च स्तन उपर स्तनों पर, विदारी- भोज्येकाणुं बिलाईकन्द विल्व- भीत्री बेल, मधुकैः અને જેની-મધને। ઓર મુલહરીકા, પ્રલેપયેત્ લેપ કરવે। લેપ કરે ॥ ૨૭૮ ॥

278. Or, she may drink curds-wine which has been described as curative of piles. White yam, bael and liquorice should be made into paste and applied on the breasts.

ગોરવે ચિકિત્સા—

त्रायमाणा मृतानिम्बपटोलत्रिफलाशृतम् ।  
गुरुक्षीरा पिबेदाशु स्तन्यदोषविशुद्धये ॥२७९॥

ગુરુક્ષીરા ભારે દૂધવાળી ઓઝી ગુરુ ક્ષીરવાલી જી, જાણુ તરત શીઘ્ર, સ્તન્યદોષ- દૂધના દોષની સ્તન્ય-દોષકી, વિશુદ્ધયે શુદ્ધિ કરવા માટે વિશુદ્ધિકે લિપ, ત્રાયમાણા- ત્રાયમાણુ અસર્ગ, અમૃતા- ગયો મિલેબ, નિમ્બ- લીમડે નીમ, પટોલ- પરવળ પરવલ, ત્રિફલા- અને ત્રિફળાના ઓર ત્રિફલાકા, શૃતમ્ કર્યાથ કાથ, પિવેત્ પીવે। પિવે ॥ ૨૭૯ ॥

279. The decoction of zalil, guduch, neem, wild snake gourd and the three myrobalans, taken as potion by the woman whose breast-milk is heavy, quickly purifies the galactic morbidity.

पिबेद्वा पिप्पलीमूलचव्यचित्रकनागरम् ।  
बलानागरशार्ङ्गेष्टामूर्वामिर्लेपयेत् स्तनौ ॥२८०॥

પિપ્પલીમૂલ- અથવા તેણે પીપરીમૂળના ગડોડા અથવા વહ પિપ્પલીમૂલ, ચવ્ય- ચવ્ય ચવ્ય, ચિત્રક-ચિત્રક ચિત્રક, નાગરમ્ અને સુંઠેનો કંઈક ઓર સોંઠકા કરક, પિવેત્ વા બલની સાથે પીવે। બલને પીવે, બલા-

અને બલા ઓર બલા, નાગર- સુંઠે સોંઠ, શાર્દૂલ- પીપુરી મકોચ મૂર્વામિઃ તથા મૂર્વાને। તથા મૂર્વાકા, પ્રલેપયેત્ લેપ કરવે। લેપ કરે ॥ ૨૮૦ ॥

280. Similarly, the decoction of the roots of long pepper chaba pepper, white-flowered leadwort and ginger may be taken as potion. Heart leaved sida, ginger, black nightshade and trilobed virgin's bower should be reduced to paste and applied to the breasts.

पृश्निपर्णीपयस्याभ्यां स्तनौ चास्याः प्रलेपयेत् ।

અસ્યાઃ તથા એના તથા इसके, स्तनौ च स्तन उपर स्तनों पर, पृश्निपर्णी- पृश्निपर्णी पृश्निपर्णी, पयस्या- म्याम् અને ભોજ્યેકાળને। ઓર બિલાઈકન્દકા મી, પ્રલેપયેત્ લેપ કરવે। લેપ કરે ॥ ૨૮૦૩ ॥

280½. Similarly, the paste of painted leaved uraria and milky yam may be applied.

अष्टावेते क्षीरदोषा हेतुलक्षणमेवजैः ॥२८१॥  
निर्दिष्टाः क्षीरदोषोत्थास्तथोक्ताः केचिदामयाः ।

પટે અઢો આ આઠે જે આઠ, ક્ષીરદોષાઃ સ્તન્ય-દોષો। ક્ષીરદોષ, હેતુ- નિદાન હેતુ, લક્ષણ- લક્ષણ લક્ષણ, મેવજૈઃ તથા ચિકિત્સાસહિત તથા ઔષધિસહિત, નિર્દિષ્ટાઃ કહ્યા છે તથા દિવે હૈં, તથા અને ઓર, ક્ષીરદોષોત્થાઃ ક્ષીરદોષથી થનારા ક્ષીરદોષને ઉત્પન્ન હોવાને, કેચિત્ કેટલાક કહે, આમયાઃ રોગો રોગો મી, અજ્ઞાઃ કહ્યા છે કહ દિવે હૈં ॥ ૨૮૧૩ ॥

281-281½. These are the eight kinds of galactic disorders described with their etiology, signs and symptoms and treatment. Some disorders

૨૮૨. આસ્યાઃ-આસ્યાઃ (વ.)

૨૮૧૩. કેચિદામયાઃ-જે તથાકમયાઃ (વ.)

resulting from these galactic morbidity, have also been described.

बालरोगाणां चिकित्सा—

दोषदूष्यमलाश्चैव महतां व्याधयश्च ये ॥२८२॥

त एव सर्वे बालानां मात्रा स्वल्पतरा मता ।

ये ७ जो, महताम् भेदाभां बहोमें, दोष- दोष दोष, दूष्य- दूष्य दूष्य, मलाः च एव व्याधयः च भक्ष अने व्याधयोः आयुं छे मन और रोग होते हैं, ते एव ते ७ वे ही, सर्वे व्याधयः आण्डोने पक्ष आयुं छे सारे बालकोंको भी होते हैं, बालानाम् परंतु आण्डोभां किन्तु बालकोंमें, मात्रा तु रोगोन्मी मात्रा इनकी मात्रा, अल्पतरा अपेक्षासे अल्प अपेक्षासे अल्प, मता होय छे होती है ॥ २८२३ ॥

282-284. The humoral morbidity the susceptible body-elements, the waste matter and the diseases that effect the adults affect also the children, but only in a smaller degree.

निवृत्तिर्वमनादीनां मृदुत्वं परतन्त्रताम् ॥२८३॥

वाक्चेष्टयोरसामर्थ्यं वीक्ष्य बालेषु शास्त्रविदः ।

मेषजं स्वल्पमात्रं तु यथाव्याधि प्रयोजयेत् ॥२८४॥

बालेषु आण्डोभां बालकोंमें, मृदुत्वं मृदुत, मृदुता, परतन्त्रता परतन्त्रता परतन्त्रता, वाक्चेष्टयोः वाणी तथा चेष्टा वणी और चेष्टाकी, असामर्थ्या असामर्थ्या असमर्थताका, वीक्ष्य ओंछने खयाल करके, वमनादीनाम् निवृत्तिः तेओने वमनादि न करववां

२८२. दोषदूष्यमलाश्चैव महतां व्याधयश्च ये—दोषा दूष्या मला-  
श्चैव महान्तो व्याधयश्च ये (क.)

२८३. त एव सर्वे बालानां मात्रा स्वल्पतरा मता—त एव  
हेया बालानां विना बालग्रहैर्बुधैः (घ,

,, —त एव हेया बालानां विना बालग्रहान्  
बुधैः (ब. झ.)

२८३. निवृत्तिर्वमनादीनां—निवृत्तिं च बलादीनाम् (ब.)

२८४. स्वल्पमात्रं—वाल्पमात्रं (ब.)

उन्नें वमनादि न करावे, शास्त्रविद् शास्त्रज्ञ वैद्य शास्त्रज्ञ वैद्य, यथाव्याधि व्याधि मुअअ रोगानुसार, स्वल्पमात्रम् तु थोडी मात्राभां अल्प मात्रासे, मेषजम् प्रयोजयेत् औषधने प्रयोग करवे औषधप्रयोग करे ॥ २८३-२८४ ॥

283-284. The specialist in pædiatrics should not administer emesis and other purificatory procedures in view of the tenderness, dependency and inability to fully express themselves in speech and gestures of children. He should give only small doses of medicine appropriate to the disease.

मधुराणि कषायाणि क्षीरवन्ति मृदूनि च ।

प्रयोजयेद्विषग्बाले मतिभ्रान्तप्रमादतः ॥२८५॥

ममिमां सुद्धिमानं बुद्धिमान, मिषक् वैधे वैद्य, बाले आण्डोने बालकोंमें, मधुराणि मधुर मधुर, कषायाणि कषाय कसैली, क्षीरवन्ति दूधयुक्त दूधयुक्त, मृदूनि च अने मृदु औषधी और मृदु औषधका, अप्रमादतः प्रमाद विना सावधानीसे, प्रयोजयेत् आपवां ओंछने प्रयोग करे ॥ २८५ ॥

285. The wise physician should administer with great care mixed with milk and sweet decoctions which are mild in action.

अत्यर्थस्निग्धरूक्षोष्णमम्लं कटुविपाकि च ।

गुरु चोषधयानाममेतद्बालेषु गर्हितम् ॥२८६॥

अत्यर्थ- धक्षुं अत्यंत, स्निग्ध- स्निग्ध स्निग्ध, रूक्ष- रूक्ष रूक्ष, उष्ण- उष्ण उष्ण, अम्लम् अम्ल अम्ल, कटुविपाकि च कटु विपाकवाणुं कटु विपाकवाणी, गुरु च गुरु भारी, औषध-पान-अम्लम् एतन् औषध तथा अम्लपान ओ औषधियां तथा अम्लपान ये, बालेषु आण्डोने भाटे बालकोंके लिए, गर्हितम् थोड़ा नशी निन्दित हैं ॥ २८६ ॥

286. Medication and food and drink, that are excessively unctuous,



un-unctuous. acid and pungent in post-digestive effect, and heavy in quality are contra-indicated in children.

समासात् सर्वरोगाणामेतद्वालेषु मेषजम् ।  
निर्दिष्टं शास्त्रविद्वैद्यः प्रविचिष्य प्रयोजयेत् ॥२८७॥

वालेषु आण्डोना बालकौके, सर्वरोगाणाम् अधा रोगेषुं सब रोगोंकी, समासात् सङ्क्षेपभा संक्षेपमें, एतत् आ यह, मेषजम् औषध औषध, निर्दिष्टम् कलुं छे तेना कही है उसका, शास्त्रविद् शास्त्र शास्त्रज्ञ, वैद्यः वैद्य वैद्य, प्रविचिष्य विवेचना करीने विवेचना करके, प्रयोजयेत् प्रयोग करवे प्रयोग करे ॥ २८७ ॥

287. This, in brief, is the direction regarding the treatment of all the diseases occurring in children, and the physician should treat the diseases having first classified them according to their humoral category.

चरकप्रतिसंस्कृतस्याग्निवेशतन्त्रस्य दृढबलकृता संपूर्तिः—

भवन्ति चात्र—

इति सर्वविकाराणामुक्तमेतच्चिकित्सितम् ।  
स्थानमेतद्धि तन्त्रस्य रहस्यं परमुत्तमम् ॥२८८॥

अत्र च आ विषयभा इस विषयमें, भवन्ति श्लोके छे के श्लोक हैं कि, इति आ प्रमाणे इस प्रकार, सर्वविकाराणाम् सधणा रोगोनी सब विकारोंकी, एतत् आ यह, चिकित्सितम् चिकित्सा चिकित्सा, उत्तमम् उत्तमी छे कही है, तन्त्रस्य आ शास्त्रेणुं इस तन्त्रका, एतत् आ

२८७ एतच्छ्लोकादनन्तरम्—

इति स्तन्यदोषवाक्त्ररोगयोश्चिकित्सा ।

सल्लिङ्गा न्यापदो बोधेः सनिदानचिकित्साः ।

उक्ता विस्तरशः सन्ध्यामुदिता तत्त्वदर्शिना ॥

इत्यधिकः पाठ (क. इ.) पुस्तकयोः ।

„ प्रविचिष्य—प्रविमर्ष्य (घ. इ.)

२८८ परमुत्तमम्—परमुत्तमे (घ. इ.)

„ —सारमुत्तमम् (इ.)

यह, स्थानम् स्थान स्थान, परम् उत्तमम् परम् उत्तम उत्तम, रहस्यम् रहस्य छे रहस्य है ॥ २८८ ॥

Here are verses again—

288. Thus has been expounded the therapeutics of all diseases; and this section on treatment contains the most essential part of this treatise.

अस्मिन् सप्तदशाध्यायाः कल्पाः सिद्धय एव च ।  
नासाद्यन्तेऽग्निवेशस्य तन्त्रे चरकसंस्कृते ॥२८९॥  
तानेतान् कापिलबलिः शेषान् दृढबलोऽकरोत् ।  
तन्त्रस्यास्य महार्थस्य पूरणार्थं यथातथम् ॥२९०॥

चरकसंस्कृते अत्र के प्रतिसंस्कृत करेवा चरकके द्वारा प्रतिसंस्कृत, अग्निवेशस्य अग्निवेशना अग्निवेशके, अस्मिन् तन्त्रे आ तन्त्रभां इस तन्त्रमें, सप्तदश सत्तर सप्तद, अध्यायाः अध्याय अध्याय, कल्पाः कल्पस्थान कल्प-स्थान, सिद्धयः च एव अने सिद्धिस्थान और सिद्धि-स्थान, न नासाद्यन्ते प्राप्त भती नहीं प्राप्त नहीं होते, महार्थस्य तेथी महान् अर्थवाणा महान् अर्थसे युक्त, बल्य आ इस, तन्त्रस्य तन्त्रे तन्त्रकी, दृढबलम् अश्वर रीते यथायोग्य, पूरणार्थम् संपूर्ण करवाने भाटे पूर्तिके लिए, शेषान् तान् एतान् आधीना ते आगे शेष उन भागोंकी, कापिलबलिः कपिलबलना पुन कपिलबलके पुन, दृढबलः दृढबल दृढबलने, अकरोत् रच्यो छे बनावा है ॥ २८९-२९० ॥

289-290. The seventeen chapters and the sections on pharmaceutics and successive treatment in the treatise composed by Agnivesa and revised by Caraka have not been found These, Dhradhala, the son of Kapilabali reconstructed, thus bringing faithfully to completion, the great aim of this treatise.

२९०. कापिलबलिः—कापिलबलः (घ. इ.)

उक्तानुक्तानां रोगाणां चिकित्सान्तित्वेनः —

रोगा येऽप्यत्र नोद्दिष्टा बहुत्वान्नामरूपतः ।

तेषामप्येतदेव स्यादोषादीन् वीक्ष्य भेषजम् २९१

नामरूपतः नाम अने दक्षणे। नाम और रूपसे, बहु-  
त्वात् अहु होवाने कारणे बहुत होनेके कारण, वे अपि  
ने ओ, रोगाः रोग, अत्र न उद्दिष्टाः उक्ता नहीं  
नहीं बतलाये हैं, तेषाम् अपि तेओनी पक्ष उनकी भी,  
दोषादीन् दोषादि दोषादिको, वीक्ष्य ओधने देखकर,  
एतत् एव आत्मा यही, भेषजम् चिकित्सा औषध,  
स्यात् भाव्य छे होती है ॥ २९१ ॥

291. Those diseases that have not  
been described here as they have  
various names and forms, should be  
treated as indicated herein, from the  
point of view of humoral classification.

दोषद्वयनिदानानां विपरीतं हितं ध्रुवम् ।

उक्तानुक्तान् गदान् सर्वान् सम्यग्युक्तं नियच्छति ॥

दोष-दोष दोष, दूष्य-दूष्य दूष्य, निदानानाम् अने  
निदानभी और निदानसे, विपरीतम् विपरीत औषध  
विपरीत औषध, हितम् हितकारी छे हितकारी है, सम्यक्  
युक्तम् अशुभ योअथेय औषध सम्यक् प्रयुक्त औषध,  
उक्त-उक्तेवायेला उक्त, अनुक्तान् अने नहि उक्तेवायेला  
और अनुक्त, सर्वान् अधा सब, गदान् रोगाने रोगोंको,  
ध्रुवम् नियच्छति अपश्य भटाडी दे छे अवश्य जीतती  
है ॥ २९२ ॥

292. Whatever is the opposite of the  
morbid humor, affected body-element  
and etiological factor, is definitely  
beneficial. Treatment, if done properly  
according to this principle, all the  
diseases described herein and also those  
not described too, can be cured.

भेषजसम्बन्धयोगलक्षणम्—

देशकालप्रमाणानां सात्त्व्यासात्त्व्यस्य चैव हि ।

सम्यग्योगोऽप्यथा दोषां पथ्यमप्यम्यथा भवेत् २९३

२९१. अन्यथा दोषा-अन्यथाऽन्यथा (८)

देश-चिकित्साभा देश चिकित्सामें देश, काल-काल  
काल, प्रमाणानाम् प्रमाण प्रमाण, सात्त्व्य-सात्त्व्य  
सात्त्व्य, असात्त्व्यस्य च एव अने असात्त्व्यने। और  
असात्त्व्यका, सम्यग्योगः सम्यग्योग थवे। ओधने  
सम्यग्योग होना चाहिए, हि कारणे के क्योंकि, एषाम्  
अन्यथा ओओने। विपरीत योग अतः इनका विपरीत  
योगके होने पर, पथ्यम् अपि पथ्य पक्ष पथ्य सी,  
अन्यथा अपथ्य अपथ्य, भवेत् भाव्य छे हो जाता  
है ॥ २९३ ॥

293. The remedy should be pres-  
cribed with full consideration to  
clime and season and dosage and the  
homologation or non-homologation. Else  
the most wholesome medication may  
turn out to be harmful.

शरीरापेक्षसम्यग्योगोदाहरणम्—

आस्यादामाशयस्थानं हि रोगान् नस्तः शिरोगतान् ।  
गुदात् पकाशयस्थानं हस्त्याशु दत्तमौषधम् ॥ २९४ ॥

आस्यात् शुभदाश आयेलु औषध सुंदरे वी हुई  
औषध, आमाशयस्थान् आमाशयना रोगाने। आमाशयके  
रोगोंको, नस्तः नासिकादारा आयेलु औषध नासिकसे  
वी हुई औषध, शिरोगतान् भायाना रोगाने। शिरके  
रोगोंको, गुदात् अने शुभदाश और गुदासे, दत्तम्  
औषधम् आयेलु औषध वी हुई औषध, पकाशयस्थान्  
पकाशयना पकाशयके, रोगान् च रोगाने रोगोंको,  
आशु पुरत शीघ्र, हस्ति हि नाश करे छे हस्ती  
है ॥ २९४ ॥

294. In disease of the stomach, the  
medicine administered by the mouth,  
in diseases of the head, nasal medica-  
tions, and in diseases affecting the  
colon the medication given by the  
rectum act most readily.

२९४. गुदात् पकाशयस्थानं हस्त्याशु दत्तमौषधम्—

अपस्ताब्दनामो दत्तं हस्त्याशुदत्तमौषधम् (४)

१. दत्तमौषधम्—दत्तमौषधम् (४)

शरीरावयवोत्थेषु त्रिसर्पपिडकादिषु ।

यथादेशं प्रदेहादि शमनं स्याद्विशेषतः ॥२९५॥

शरीर- शरीरना शरीरके, अवयव- अवयवोंमें, उत्थेषु अत्ता होनेवाले, त्रिसर्प- त्रिसर्प, त्रिसर्प, पिडका- पिडका पिडका, आदिषु वजरे शरीरोंमें आदि रोगोंमें, यथादेशम् ते ते प्रदेशे उपर उरेक्ष्वा तन तन प्रदेश पर किये हुए, प्रदेहादि क्षेत्रादि प्रदेशादि, विशेषतः विशेषे करीने विशेषतः, शमनम् शमन करनेवाले, स्नात थाप छे होते हैं ॥ २९५ ॥

295. In local diseases arising in the various regions of the body and in acute spreading affection and pimples and similar lesions, local applications suitable to the part affected will prove specially efficacious.

चिकित्सायां कालविचारः—

दिनातुरौषधव्याधिजीर्णलिङ्गत्ववेक्षणम् ।

कालं विद्यादिनावेक्षः पूर्वा वचनं यथा ॥२९६॥

दिन- द्विविध दिन जातुर- शरीर रोगी, औषध- औषध औषध, व्याधि- रोग व्याधि, जीर्णलिङ्ग- शूल- क्षक्ष्ण जीर्णलक्षण, ऋतु- अने ऋतु ऐशाना और ऋतु इनके, अवेक्षणम् अवेक्षणने देखनेको, कालम् काल, विद्यात् आधुना जाने, यथा पूर्वाह्ने वचनम् जेभके प्रातःकालमें वचन कराना चाहिए यह, दिनावेक्षः दिनावेक्षण छे दिनको देखना है ॥ २९६ ॥

296. The term 'Time' is used in medicine with reference to the day,

२९५. यथादेशं-यथादेशं (व. घ)

, , -यथावस्थं (व. क)

, , -यथादेशं (व. व.)

, , शमनं-शमनं (व.)

२९६. अवेक्षणम्-अवेक्षणम् (व.)

, , दिनावेक्षः-दिनावेक्षः (व.)

, , -दिनावेक्षः (व.)

the patient, medication, signs of completion of digestion and season. As regards time with reference to day, morning is the suitable time for giving emesis.

रोगवेक्षो यथा प्रातःनिरजो बलवान् पिबेत् ।

मेषजं लघुपथ्यान्नैर्युक्तमद्यात्तु दुर्बलः ॥२९७॥

यथा वशी जेभके और जेभके, बलवान् बलवान् पुरुषे बलवान् पुरुष, प्रातः निरजः प्रातःकालमें भूय्या पेटे प्रातः खाली पेट, मेषजम् औषध औषध, पिबेत् भावुं खावे, दुर्बलः दुर्बल तथा दुर्बल पुरुषे तो तथा दुर्बल पुरुष तो, लघु-पथ्य-न्नैः लघु अने पथ्य अन्नानी लघु और पथ्य अन्नसे, युक्तम् साथे मिली हुई, अद्यात् औषध भावुं औषध खावे, रोगवेक्षः रोग रोगीनु अवेक्षण छे यह रोगीको देखना है ॥ २९७ ॥

297. With reference to the patient, the strong patient may take the medicine in the morning on an empty stomach and the weak one should take the medicine mixed with light and wholesome food.

मेषजग्रहणकालः—

मैषज्यकालो भुक्तादौ मध्ये पश्चान्मुहुर्मुहुः ।

सामुद्रं भक्तसंयुक्तं प्रासप्रासान्तरे दश ॥२९८॥

भुक्तादौ भुक्ता पहेला (प्रातःकाल तथा अन्नकाल) भोजनके पूर्व (प्रातःकाल तथा अन्नकाल), मध्ये भोजनना भोजन (भोजनकाल) भोजनके मध्यमें (मध्यमकाल), पश्चात् भोजन कभी बाद (अपराह्णकाल-प्रातःकालना भोजन पछी तथा सायंकालना भोजन पछी) भोजनके पश्चात् (अवधामक- प्रातःभोजनके पश्चात् तथा सायंभोजनके पश्चात्), मुहुः मुहुः बार-बार बारबार, सामुद्रम् भोजनना पहेला तथा पछी भोजनके आदि तथा अन्तमें, भक्तसंयुक्तम्

२९७ रोगवेक्षो-रोगवेक्षो (व. क. व. व.)

२९८. प्रासप्रासान्तरे-प्रासे प्रासान्तरे (व.)

, , दश-विंश (क)

भोजनन्ती साथे (समकृत-अन्नमिश्रित) भोजनमें मिलाकर (समक-अन्नमिश्रित), प्रास- कृष्णीया कृष्णी- आभा (सम्रास) प्रत्येक प्रासमें (सम्रास), प्रासान्तरे कृष्णीया कृष्णीयान्ती वचभा एक प्रास तथा दूसरे प्रासके मध्यमें, दश आ दश ये दस, मैषज्यकालः औषधना कृष्णी छे औषधके काल हैं ॥ २९८ ॥

298. As regards the time of medication, it is before the first meal or in the midst of meals or after meals, or at repeated times, or in the beginning of each meal or mixed with light food or mixed with regular meals, or in between two morsels of food.

अपाने विगुणे पूर्व, समाने मध्यभोजनम् ।

व्याने तु प्रातरशितमुदाने भोजनोत्तरम् ॥ २९९ ॥

वायौ प्राणे प्रदुष्टे तु प्रासप्रासान्तरिष्यते ।

श्वासकासपिपासासु त्ववचार्यं मुहुर्मुहुः ॥ ३०० ॥

सामुद्रं हिक्किने देयं लघुनाऽन्नेन संयुतम् ।

संभोज्यं त्वौषधं भोज्यैर्विचित्रैररुचौ हितम् ॥ ३०१ ॥

अपाने अपानवायु अपानवायुके, विगुणे पूर्वम् विगुण् यथे होय तो भोजनन्ती पहेला औषध देवुं विगुण होनेपर भोजनसे प्रथम औषध देना, समाने अमान विगुण् होय तो समानके विगुण होनेपर, मध्य- भोजनम् भोजनन्ती वचभा औषध देवुं भोजनके मध्यमें औषध देना, व्याने तु व्यान विगुण् होय तो व्यान वायुके विगुण होनेपर, प्रातः अशितम् सवारभा आभा आऽ औषध देवुं सबेरे भोजनके अन्तमें औषध देना, उदाने उदान विगुण् होय तो उदानके विगुण होनेपर, भोजनोत्तरम् भोजन आऽ औषध देवुं भोजनके

२९९. मध्यभोजनम्—मध्यमेवजम् (व.)

॥ व्याने तु प्रातरशितमुदाने—व्यानेऽन्ते प्रातराशस्य तूराने (क. व. व.)

॥ प्रातरशितमुदाने—प्रातराशं उदाने (फ.)

३००. प्रासप्रासान्तरिष्यते—प्रासे प्रासान्तरिष्यते (ब.)

बादमें औषध देना, प्राणे वायौ तथा प्राणवायु तथा प्राणवायुके, प्रदुष्टे तु दूषित यथे होय तो प्रदुष्ट होनेपर, प्रास- आसभा प्रासमें, प्रासान्तः के आस आसन्ती वचभा औषध देवुं एक प्रास तथा दूसरे प्रासके मध्यमें औषध देना, इष्यते षष्ट छे इष्ट है, श्वास- कास- श्वास कास, पिपासासु तु अने पिपासाभा तो और पिपासामें तो, मुहुः मुहुः बारेबारे बारबार, अवचार्यम् औषध देवुं औषध देनी चाहिए, हिक्किने हेडकीना शरीरने हिक्कावालेको, लघुना लघु, अन्नेन भोजनन्ती अन्नके, संयुतम् युक्त साथ, सामुद्रम् भोजनन्ती आभण अने पाभण भोजनके पहले और बाद, देयम् औषध देवुं औषध देनी चाहिए, अरुचौ तेभ्य अरुचिभा एवं अरुचिमें, विचित्रैः विचित्र विचित्र, भोज्यैः भोजनभा भोज्योंके साथ, औषधम् तु संभोज्यम् औषध भोजनीने आपुं औषध मिलाकर खाना, हितम् हितकारी छे हितकारी है ॥ २९९-३०१ ॥

299-301. These are the ten different times when medicine may be taken. In discordance of the Upana vata, medicine should be taken before meal; and in the discordance of the Samana vata it should be taken in the middle of the meal and in the discordance of the Vyana-vata, medicine should be taken after the morning meal and in the discordance of the Udana-vata after the meals, while in the discordance of the Prana-vata, it should be taken in between the morsels. In dyspnea, cough and thirst, medicine should be given frequently at short intervals, and in hiccup, it should be given both before and at the end of the meal mixed with light articles of diet; and in anorexia, it should be given mixed with food abounding in variety.

ज्वरे पेया-कषाय-क्षीर-सर्पिर्विरेचनानां कालः—

ज्वरे पेयाः कषायाश्च क्षीरं सर्पिर्विरेचनम् ।

षडहे षडहे देयं कालं वीक्ष्यामस्य च ॥३०२॥

जामबल च रेगना रोगके, कालम् कालने  
कालको, वीक्ष्य भेधने देवकर, ज्वरे ७२२भा ज्वरमें,  
पेयाः पेया पेया, कषायाः कषाय कषाय, क्षीरम् दूध  
दूध, सर्पिः धी धी, विरेचनम् च अने (विरेचन और  
विरेचन, षडहे षडहे छ छ द्विसे छः छः दिनके बाद,  
देयम् देना देने चाहिए ॥ ३०२ ॥

302. In the case of fever gruels, decoctions, milk, ghee and purgatives should be given after the lapse of six days, after observing the time of the disease.

मेघप्रवृत्तयोः कालः—

क्षुब्धगमोक्षौ लघुता विशुद्धिर्जीर्णलक्षणम् ।

तदा मेघजमादेयं स्याद्वि दोषवदन्यथा ॥३०३॥

क्षुब्ध- भूय लामनी मुख लगना, वेगमोक्षौ वेगोक्षौ  
भुक्ति वेगोक्षा त्याग, लघुता क्षीरानुं ६६३५६ लघुता,  
विशुद्धिः ६६५ अने ओ५३३३३ शुद्धि ओ हृदय और  
हृकारकी शुद्धि ये, जीर्णलक्षणम् आ६३३३३ शुद्धि  
लक्षण छे आहारके जीर्ण होनेके लक्षण हैं, तदा त्परे  
तब, मेघजम् औषध औषध, जादेयम् स्यात् भापुं  
भेधने खानी चाहिए, अन्यथा नहिं तो ते बन्धवा  
बह, दोषवत् हि स्यात् दोषकारक भाम छे दोषकारक होती  
हे ॥ ३०३ ॥

303. The signs of completion of digestion are the appearance of hunger, normal discharge of excretions, lightness of the body and clarity of the eructations Medicine should be given at this stage. Otherwise it will be harmful.

३०१. क्षुब्धगमोक्षौ-उद्देगमोक्षौ (ध.)

.. त्वादि दोषवदन्यथा-स्वारोपवदतोऽन्यथा (ध.)

ऋत्वाद्यपेक्षः कालविचारः—

चयादयश्च दोषाणां वर्ज्यं सेव्यं च यत्र यत् ।

ऋताववेक्ष्यं यत् कर्म पूर्वं सर्वमुदाहृतम् ॥३०४॥

दोषाणाम् दोषानां दोषोंके, चयादयः यम वजेरे  
(यम, डोप अने शमन) चय आदि. यत्र ने ऋतुभां  
जिस ऋतुमें, यत् ने जो, वर्ज्यम् च त्याग करना योग्य  
छे त्याग करने योग्य है, यत् अने ने और जो,  
सेव्यम् च सेवन करना योग्य छे सेवन करने योग्य है,  
सर्वम् ते भक्षणं वे सब, ऋतौ अवेष्यम् ऋतुपेक्ष  
ऋतुपेक्ष, कर्म कर्म कर्म, पूर्वम् पहले पूर्व, उदाहृतम्  
उदाहरण भयां छे कह दिये हैं ॥ ३०४ ॥

304. The accumulation of humoral morbidity, what are contra-indicated and what are indicated in a given season, what measures are recommended in each season, have all been already described.

(उपक्रमाणां करणं प्रतिषेधे च कारणम् ।

व्याख्यातमवलानां सविकरानामवेक्षणे ॥३०५॥

उपक्रमाणां लक्षण वजेरे उपक्रमोक्षौ क्रिया लक्षण  
आदि उपक्रमोक्षौ क्रिया, प्रतिषेधे अने ते उपक्रमो नहिं  
करनाभां डारखु उन उपक्रमो नहिं करनेमें कारण,  
सविकरानाम् तेभ्य दोषना अनेक वेदनाणा एवं  
दोषके अनेक वेदनाके, अवलानाम् दुर्गोक्षो दुर्गोक्षो,  
अवेक्षणे परीक्षाभां परीक्षामें, कारणम् डारखु कारण,  
व्याख्यातम् उद्देगभां आ५५५ छे कहे गये हैं ॥ ३०५ ॥

305. The application of treatment, the reasons for the avoidance of treatment and manner of investigation of minutia of morbid changes in weak persons, has already been described.

मुहुर्मुहुश्च रोगाणामवस्थामानुरस्य च ।

अवेक्षमाणस्तु मिषक् चिकित्सायां न मुह्यति ३०६)

रोगाणाम् रोगोक्षौ रोगोक्षौ, आनुरस्य च अने  
रोगोक्षौ और रोगोक्षौ, अवस्थाम् अवस्थाम् अवस्थाम्,

સુદુઃ સુદુઃ ચ વારંવાર વારવાર, અવેક્ષમાણઃ તુ બ્રેતે।  
દેશ્વેવાલા, મિષક્ વૈષ વૈય, ચિકિત્સાયામ્ ચિકિત્સાભાં  
ચિકિત્સામૈ, ન સુદ્ધતિ મુંઝતે। નથી મૂલ નહીં કરતા  
॥ ૩૦૬ ॥

306. The physician who keeps on observing repeatedly, the development of diseases and the condition of the patient, will not err in treatment.

इत्येवं पद्धिधं कालमनवेक्ष्य मिषग्नितम् ।  
प्रयुक्तमहिताय स्यात् सस्यस्याकालवर्षवत् ॥३०७॥

સસ્ય સ્વકાલવર્ષવત્ બેમ અકાલમાં મથેલી વૃષ્ટિ  
અનાજના બેતર માટે હાનિકારક થાય છે જેસે અકાલમેં  
હુરે વૃષ્ટિ અનાજકે સેતકે લિખ હાનિકારક હોતી હૈ, इति  
एवम् तेभ आ वैसे इस, पद्धिधम् छ प्रकरना छः  
प्रकारके, कालम् कालने कालको, अनवेक्ष्य नेया विना  
बिना देखे, प्रयुक्तम् प्रयोगेयुं दी हुई, मिषग्नितम्  
अहिताय औषध रोगीने हानिकारक थाय छ औषध  
रोगीको हानिकारक, स्यात् थाय छ होती है ॥ ३०७ ॥

307. The medication administered without carefully investigating the six points regarding the time of medication, just described, will be harmful to the patient, like unseasonal rains to crops.

व्याधीनामृत्वहोरात्रयसां भोजनस्य च ।  
विशेषो भिद्यते यस्तु कालावेक्षः स उच्यते ॥३०८॥

વ્યાધીનામ્ રોગો વ્યાધિ, ઋતુ-ઋતુ ઋતુ, અહોરાત્ર-  
દિવસરાત્રિ અહોરાત્ર, વયસાન્ ઉંમર વય, ભોજનસ્ય  
ચ અને ભોજનની ઓર ભોજનકી, ચઃ તુ બે જો,  
વિશેષઃ વિશેષતાઓમાં વિશેષ અવસ્થાઓમેં, મિદ્યતે  
વિભાજ કરવામાં આવે છે મેદ કિયા જાતા હૈ, સઃ તે

૩૦૮. ઋતુહોરાત્રયસાન્-ઋતુહોરાત્રનિયમાન્ (ક.)

„ વયમાન્-નિયમાન્ (વ.)

„ કાલાવેક્ષઃ-કાલાવેક્ષઃ (વ. બ.)

વહ, કાલાવેક્ષઃ કાલાવેક્ષ (કાલતું અવેક્ષણું) કાલાવેક્ષ,  
उच्यते उच्यते છે કહા જાતા હૈ ॥ ૩૦૮ ॥

308. A few more considerations with reference to time, as with reference to diseases, season, period of day and night, age of the patient and before or after or during meals time will now be described.

कस्मिन् काले कस्य दोषस्य प्रकोपः —

वसन्ते श्लेष्मजा रोगाः शरत्काले तु पित्तजाः ।  
वर्षासु वातिकाश्चैव प्रायः प्रादुर्भवन्ति हि ॥३०९॥

વસન્તે વસન્ત ઋતુમાં વસન્ત ઋતુમેં, શ્લેષ્મજાઃ  
કફજન્ય, શરત્કાલે તુ શરદઃઋતુમાં શરદઃઋતુમેં,  
પિત્તજાઃ પિત્તજન્ય પિત્તજન્ય, વર્ષાસુ અને વર્ષાઋતુમાં  
ઔર વર્ષાઋતુમેં, વાતિકાઃ ચ એવ વાતજન્ય વાતજન્ય,  
રોગાઃ રોગો, પ્રાયઃ ધણું કરીને પ્રાયઃ, પ્રાદુ-  
ર્ભવન્તિ હિ ઉત્પન્ન થાય છે ઉત્પન્ન હોતે હૈ ॥ ૩૦૯ ॥

309. In the spring, there generally occur diseases of kapha and in the autumn those of pitta, in the rainy season, those of vata.

निशान्ते दिवसान्ते च वर्षान्ते वातजा गदाः ।  
प्रातः क्षपादौ कफजास्तयोर्मध्ये तु पित्तजाः ३१०

નિશાન્તે રાત્રિના અન્તમાં નિશાકે અન્તમેં, દિવસાન્તે  
દિવસના અન્તમાં દિવસકે અન્તમેં, વર્ષાન્તે ચ અને  
વર્ષાના અન્તમાં ઔર વર્ષાકે અન્તમેં, વાતજાઃ વાતજન્ય  
રોગો વાતજન્ય રોગ, પ્રાતઃ સવારમાં સુવહમેં, ક્ષપાદૌ  
અને રાત્રિના પ્રારંભમાં સૌર રાત્રિકે પ્રારંભમેં, કફજાઃ  
કફજન્ય રોગો કફજન્ય રોગ, તયોઃ મધ્યે તુ તથા  
મધ્યાહ્નમાં અને મધ્યરાત્રિમાં તથા મધ્યાહ્નમેં ઔર મધ્ય-  
રાત્રિમેં, પિત્તજાઃ પિત્તજન્ય પિત્તજન્ય, ગદાઃ રોગો  
થાય છે રોગ હોતે હૈ ॥ ૩૧૦ ॥

૩૧૦. વર્ષાન્તે-વર્ષાન્તે (વ.)

„ નિશાન્તે-નિશાન્તે (વ.)



310. At the end of the night, day and the rainy season, there generally occur diseases of vata. In the mornings, and the beginning of night diseases of kapha such as sneezing etc, and in the middle of the day and the night diseases born of pitta occur.

कस्मिन् वयसि कस्य दोषस्य प्रकोपः —

वयोन्तमध्यप्रथमे वातपित्तकफामयाः ।

बलवन्तो भवन्त्येव स्वभावाद्द्वयसो नृणाम् ॥३११॥

नृणाम् मनुष्याणां मनुष्यांश्च, वयसः न्यूनं वयसः, स्वभावात् स्वभावार्थेन स्वभावसे, वयः- वयना वयसः, अन्त- अंत अन्त, मध्य- मध्य मध्य, प्रथमे अने प्रथम भागमें कर्मस्थः और प्रथम भागमें कर्मस्थः, वात- वात वात, पित्त- पित्त पित्त, कफ-कामयाः तथा कर्मेणा रोगो तथा कफके रोग, बलवन्तः बलवान् बलवान्, भवन्ति एव तथा न करे छे हुआ ही करते हैं ॥ ३११ ॥

311. With regard to age, in old, middle and early age, there generally occur disorders of vata pitta and kapha respectively, or they become severe aided by the natural effects of the age of the person.

आहारपाकापेक्षो दोषप्रकोपः —

जीर्णान्ते वातजा रोगा जीर्यमाणे तु पित्तजाः ।

स्तेष्मजा भुक्तपात्रे तु लभन्ते प्रायशो बलम् ॥३१२॥

जीर्णान्ते भोजन पश्चात् अर्थात् भोजनके पश्चात् जाने पर, वातजाः वातजन्य वातजन्य, जीर्यमाणे तु भोजन पश्चात् भोजन पश्चात् रहे होने पर, पित्तजाः पित्तजन्य पित्तजन्य, सुकृमात्रे तु अने अन्ना आहारेतः भोजन कर चुकने पर, स्तेष्मजाः कृष्णजन्य कफजन्य, रोगाः रोग, प्रायशः भुक्त पात्रे प्रायः, बलम् कर्मन्ते अने रोगने छे बलको प्राप्त करते हैं ॥ ३१२ ॥

312. At the end of digestion the diseases of vata; during the stage of digestion the diseases of pitta; and

just after meals diseases born of kapha, generally become aggravated.

चिकित्सायां मात्राविचारः —

नान्यं हस्त्यौषधं व्याधिं यथाऽऽपोऽवरा महानलम् ।

दोषवञ्चातिमात्रं स्यात्सस्यस्यात्युदकं यथा ॥३१३॥

संप्रचार्य बलं तस्मादामयस्यौषधस्य च ।

नैवातिबहु नात्यल्पं भैषज्यमवचारयेत् ॥३१४॥

यथा जेम जैसे, बहराः शोधुं घोडा, आपः पानी जल, महानलम् महान अग्निने ओढ़नी शक्ति नथी महान अग्निको नष्ट नहीं करता, अल्पम् तेम शोधुं वैसे अल्प, औषधम् औषध औषध, व्याधिः रोगने व्याधिको, न हन्ति मटाही शक्ति नथी नष्ट नहीं करती, यथा अने जेम और जैसे, अत्युदकम् अतिशय नल बहुत अधिक जल, सस्य अनाजने हानिकारक छे अनाजको हानिकारक है, अतिमात्रम् च तेम अति- मात्राम् औषध वैसे अतिमात्रामें औषध, दोषवत् रोगीने हानिकारक रोगीको हानिकारक, स्यात् अने छे होती है, तस्मात् तेथी अतः, आमयस्य रोगानु रोगके, औषधस्य च तेम औषधनु एवं औषधके, बलम् अने बलका, संप्रचार्य निश्चय करीने निश्चय करके, न एव अतिबहु नहि अल्प वधारे न बहुत अधिक, न अति अल्पम् तथा नहि अल्प शोधुं तथा न बहुत कम, भैषज्यम् औषध औषधका, अवचारयेत् आपधुं ओढ़नी प्रयोग करे ॥ ३१३-३१४ ॥

313-314. An under-dose of medication cannot cure the disease just as a small quantity of water cannot quench a great fire; and medicine given in over-dose will prove harmful just as excessive watering harms the crops. So, after carefully considering the severity of the disease and the strength of the medication, the physician should administer it, neither in too large a dose nor in too small a dose.



चिकित्सायां देशसात्म्यविचारः —

औचित्याद्यस्य यत् सात्म्यं देशस्य पुरुषस्य च ।  
अपथ्यमपि नैकान्तात्तत्त्यजंलभते सुखम् ॥३१५॥

औचित्यात् अभ्यासने एषे अभ्यासके कारण, यस्य  
ने जिस, देशस्य देश देश, पुरुषस्य च के ने पुरुषस्य या  
जिस पुरुषका, यत् सात्म्यम् ने सात्म्यं छे जो सात्म्य है,  
तत् ते वह, अपथ्यम् अपि अपथ्यं होवा छत्ता पक्षु  
अपथ्य होने पर मी. एकान्तात् तेने। सर्वथा उसका  
सर्वथा, त्यजन् त्याग करवाथी त्याग करनेसे, सुखम्  
मनुष्य आरोग्यने मनुष्य आरोग्यको, न लभते प्राप्त  
करते। नथी प्राप्त नहीं करता ॥ ३१५ ॥

315. A patient feels uncomfortable  
by the sudden withdrawal from even an  
unwholesome habit which has become  
homologatory to him by habitual use  
or as the result of climatic conditions.

बाह्लीकाः पल्लवाश्चीनाः शूलीका यवनाः शकाः ।  
मांसगोधूममाध्वीकशस्त्रवैश्वानरोचिताः ॥३१६॥  
मत्स्यसात्म्यास्तथा प्राच्याः क्षीरसात्म्याश्च  
सैन्धवाः ।

अश्मकावन्तिकानां तु तैलाम्लं सात्म्यमुच्यते ३१७  
कन्दमूलफलं सात्म्यं विद्यान्मलयवासिनाम् ।  
सात्म्यं दक्षिणतः पेया मन्यञ्चोत्तरपश्चिमे ॥३१८॥  
मध्यदेशे भवेत् सात्म्यं यवगोधूमगोरसाः ।  
तेषां तत्सात्म्ययुक्तानि भैषजान्यवचारयेत् ॥३१९॥  
सात्म्यं ह्याशु बलं धत्ते नातिदोषं च बहुपि ।

३१५. औचित्यात्—अपि स्वात (व.)

३१६. पल्लवाः—शास्त्रमलाः (व.)

३१७ मत्स्यसात्म्यास्तथा प्राच्याः क्षीरसात्म्याश्च सैन्धवाः—  
क्षीरसात्म्यास्तथा प्राच्या मत्स्यसात्म्याश्च सैन्धवाः

(ड व. फ.)

३१७. अश्मकावन्तिकानां तु—अश्मकानर्चकानां तु (व. फ.)

तैलाम्लं—तैलाम्लं (व. ड. व.)

३१८. कन्दमूलफलं—शाकमूलफलं (व. फ.)

मन्यः—मन्यः (व.)

३१९. च बहुपि—च विनष्टि (व.)

बाह्लीकाः आह्लीक बाह्लीक, पल्लवाः पल्लव  
पल्लव, चीनाः चीन चीन, शूलीकाः शूलीक शूलीक, यवनाः  
यवन यवन, शकाः शक शक और शक लोग,  
मांस-मांस मांस, गोधूम-धुँ गेहूँ, माध्वीक-माध्वीक  
माध्वीक, शस्त्र-शस्त्र शस्त्र, वैश्वानर-अने अग्निना  
और अग्निके, उचिताः अभ्यासी छे अभ्यासी हैं,  
प्राच्याः पूर्वीना देशोंने पूर्वके लोगोंको, मत्स्य-माछली  
मछली, सात्म्याः सात्म्य छे सात्म्य है, तथा अने  
और, सैन्धवाः सिन्धुना देशोंने सिन्धुके लोगोंको,  
क्षीरसात्म्याः च दूध सात्म्य छे दूध सात्म्य है,  
अश्मक-अश्मक अश्मक, अवन्तिकानाम् तु  
तथा अवन्तिकाना देशोंने तथा अवन्तिकके लोगोंको,  
तैलाम्लम् तैल अने अम्ल तैल और खटाई, सात्म्यम्  
सात्म्य सात्म्य, उच्यते उद्देवाय छे कही जाती हैं,  
मलयवासिनाम् मलयवासीछीने मलयाचलवासियोंको,  
कन्द-मूल-फलम् कन्द मूल अने इगो। कन्द मूल और  
फल, सात्म्यम् सात्म्य छे सात्म्य है, दक्षिणतः  
दक्षिणना देशोंने दक्षिणके लोगोंको, पेया पेया सात्म्य  
छे पेया सात्म्य है, उत्तरपश्चिमे उत्तर तथा पश्चिमभा  
उत्तर तथा पश्चिममें, मन्यः मन्यने मन्यको, सात्म्यम्  
सात्म्य सात्म्य, विद्यात् आखुण् जाने, मध्यदेशे अने  
मध्यदेशभा और मध्यदेशमें, यव-यव जौ, गोधूम-धुँ  
गेहूँ, गोरसाः तथा गोरस तथा दूध, सात्म्यम् सात्म्य  
सात्म्य, भवेत् छे हैं, तेषाम् ते ते देशोंने उन उन  
लोगोंको, तत् ते ते उन उन, सात्म्ययुक्तानि सात्म्य-  
युक्त सात्म्ययुक्त, भैषजानि औषध औषध, अवचारयेत्  
आपवां ओर्ध्वा देनी चाहिए, हि कार्ष्ण्य के क्योंकि,  
सात्म्यम् सात्म्य सात्म्य, आशु बलम् बल, धत्ते धत्ते  
बल, धत्ते आपे छे देता है, बहु अपि च अने सात्म्य,  
पदार्थ पक्षु मात्राभा देनाय तोय और सात्म्य पदार्थ  
अधिक होने पर मी, अतिदोषम् न लभु दैपकारक नथी  
भते। बहु दोषकर नहीं होता ॥ ३१६-३१९ ॥

316-319. The Bahlikas, the Palla-  
yas, the Chinese, the Sulikas the  
Greeks and the Sakas are habituated  
to flesh, wheat, Madhweeka wine,  
bearing arms and to fire. The easterners



322-322½. The pitta which is penetrated inside and is lying deep is eliminated by sudation, hot affusion and hot poultices. Thus heat is subdued by heat.

વાહ્યેષ્ઠ શીતૈઃ સેકાદ્યેભ્યમાન્તર્યાતિ પીઢિતઃ ૩૨૨ સોન્તર્ગદ્ કફ હન્તિ શીતં શીતૈસ્તથા જયેત્ ।

વાહ્યઃ બહારના વાહ્ય, શીતૈઃ શીતલા શીત, સેકાદ્યૈઃ પરિષેક આદિ પરિષેકાદિતે, પીઢિતઃ પીડાયેલી પીડિતકી હુકે, ક્ષમા ગરમી ક્ષમા, અન્તઃ યાતિ અંદર બાં છે મીતર જાતી છે, સઃ અન્તર્ગદ્ તે અંદર રહેલા ગૂઢ-ચરી મીતર છિપે, કફઃ કફને કફકો, હન્તિ હણે છે નષ્ટ કરતી છે, તથા તેવી રીતે उस तरह, શીતૈઃ શીત ઉપચારથી શીત ઉપચારે, શીતમ્ શીતને શીતકો, જયેત્ જીતું જીતે ॥ ૩૨૨ ॥

323-323½. By the external application of cold things such as affusion etc, the external heat, being pressed, passes internally; and this heat going internally destroys internal kapha. Thus cold too is subdued by cold.

શ્લક્ષ્ણપિષ્ઠો ઘનો લેપશ્ચન્દનસ્યાપિ દાહકત્ ॥૩૨૩॥  
સ્વગતસ્યોષ્ણણો રોધાચ્છીતકૃચ્ચાન્યથાઽગુરોઃ ।

ચન્દનચ અપિ ચંદનને પશુ ચંદનકા મી, શ્લક્ષ્ણ-પિષ્ઠઃ સાંરી પેટે વાટેથી વારીક પીણા હુઆ, ઘનઃ લેપઃ બહુ લેપ ઘના લેપ, સ્વગતસ્ય ત્વચાગત સ્વચાગત, ક્ષમણઃ ઉષ્ણતાને ક્ષમાકો, રોધાચ્ રોકતે હેવાથી રોકતે, દાહકત્ દાહ કરે છે દાહકારક હોતા છે, અગુરોઃ અને અગરનેા ઔર અગુરુકા, અન્યથા ઔછે વાટેથી પાતળેા લેપ મોટા મોટા પીણા હુઆ પતલા લેપ, શીતકૃત્ ચ હંકરે છે શીતજનક હોતા છે ॥ ૩૨૩ ॥

324-324½. (External application of cold articles causes contraction of peripheral vessels and so more blood is collected

in the central organs.) Thus, the thick application of very finely ground sandal acts as calorific though sandal is of the cold potency, by obstructing the evaporation of heat from the skin; while the thin application of coarsely ground eagle-wood acts as refrigerant though it is of the hot potency.

હર્દિમ્ની મશ્વિકાવિષ્ઠા મશ્વિકૈવ તુ વામયેત્ ॥૩૨૫॥  
દ્રવ્યેષુ સ્વિન્નજગ્ધેષુ ચૈવ તેષ્વેવ વિક્રિયા ।

મશ્વિકા માખી મચ્લી વામયેત્ એવ ઉદરમાં બધું ઉલટી કરાવે બધું છે ઉદરમાં જાકર વમન કરાતી હી છે, મશ્વિકાવિષ્ઠા તુ પરંતુ માખીની વિષ્ઠા પરંતુ મચ્લીની વિષ્ઠા, હર્દિમ્ની ઉદરમાં બધું ઉલટી મટાડે છે ઉદરમાં જાકર વમન દૂર કરતી છે. તેષુ એવ તેમાં તે બધું, દ્રવ્યેષુ દ્રવ્યોમાં દ્રવ્યોમાં, સ્વિન્નજગ્ધેષુ ચ એવ આખીને ખવાથી ઉબાલ કરકે જાનેપર, વિક્રિયા આવી વિક્રિયા થાય છે એવી વિક્રિયા હોતી છે ॥ ૩૨૫ ॥

325-325½. Excretion of the fly is antiemetic while the whole fly is emetic. In all articles subjected to either physical heat or to the digestive heat there may occur similar contrary actions

દોષોષધાદીનિ પરીક્ષ્યૈવ વિક્રિત્સા વિધેયા—

તસ્માદોષોષધાદીનિ પરીક્ષ્ય દશ તત્ત્વતઃ ॥૩૨૬॥  
કુર્યાન્નિક્રિત્સિતં પ્રાક્ષો ન યોગૈરેવ કેવલમ્ ।

તસ્માત્ તેથી ફસ લિખ, પ્રાક્ષઃ વેલે વેલ, દોષ-દોષ દોષ, ઔષધ-ઔષધ ઔષધ, આદીનિ આદિ આદિ, દશ દશ બાવોની દસ આવોની, તત્ત્વતઃ તત્ત્વપૂર્વક તત્ત્વસે, પરીક્ષ્ય પરીક્ષા કરીને પરીક્ષા કરકે, વિક્રિત્સિતમ્ ચિક્રિત્સા ચિક્રિત્સા, કુર્યાન્ન કરવી કરે, કેવલમ્ કેવળ

૩૨૬. સ્વિન્નજગ્ધેષુ-સ્વિન્નજગ્ધેષુ (ક.)

૩૨૬. કેવલમ્-કેવલૈઃ (ક.)

केवल, योगः एव योगोऽपि न योगोऽपि ही, न न कःवी  
न करे ॥ ३२६३ ॥

३२६-३२६½. Therefore the wise physician should do the treatment after carefully examining the morbidity and the remedies from the 'ten points' of view described previously. He should not depend entirely on the literal formula of drugs.

निवृत्तेऽपि व्याधौ दोषशेषपशुत्यर्थमनपाधिप्रयोगस्य सेवनं  
विधेयम्—

निवृत्तोऽपि पुनर्व्याधिः स्वप्नेनायाति हेतुना ३२७  
क्षीणे मार्गीकृते देहे शेषः सूक्ष्म इवानलः ।

निवृत्तः अपि भी गयेव पक्ष निवृत्त हुआ भी  
व्याधिः व्याधि रोग, शेषः शेष शेष शेष  
रक्षो होय तो यदि शेष भी शेष रहा हो तो, क्षीणे  
क्षीण क्षीण, मार्गीकृते अने मार्गीकृत करेवा और  
मार्गीकृत किये हुए, देहे देहमा देहमें, सूक्ष्मः अथवा  
सूक्ष्म बची हुई सूक्ष्म, अनलः इव अग्नित्वा पेटे  
अग्निकी भांति, स्वप्नेन शेषः पक्ष योडे भी, हेतुना  
कारणवती हेतुसे पुनः इरीया फिर, आयाति आये छे  
आ जाता है ॥ ३२७३ ॥

३२७-३२७½. After the subsidence of the disease, recurrence may be brought about by even a slight cause. As the condition of the body is weak and the path for the spread of the disease is already made, the slightest residue of morbidity may flare up like fire.

तस्मात्तमनुवर्त्तनीयात् प्रयोगेणानपायिना ॥३२८॥  
सिद्ध्यर्थं प्राक्प्रयुक्तस्य सिद्धस्याप्यौषधस्य तु ।

३२७½. देहे-शेषे (द. क.)

३२८½. सिद्धयर्थं दाढ्यार्थं (क. घ. त.)

तस्मात् तेथी अतः एव, प्राक्प्रयुक्तस्य पक्षेना  
प्रयोगेण प्रथम प्रयुक्त की हुई, सिद्धस्य अपि सिद्ध पक्ष  
सिद्ध, औषधस्य तु औषधनी औषधकी, सिद्धयर्थम्  
सिद्धिने भाटे दृढताके लिए, अनपायिना अनपानिकर  
हानि न करनेव ले प्रयोगेण प्रयोगी प्रयोगेमें, तस्मात्  
रोगनी रोगकी, अनुवर्त्तनीयात् चिकित्सा शेषः काण  
सुधी कभी करवी कुछ काल तक चिकित्सा करते  
रहना चाहिए ॥ ३२८३ ॥

३२८-३२८½. Thereafter, the body should be rendered immune by a mild or safe course of the effective remedies which have been used and found efficacious in the disease.

काठिन्यादूनभावाद्वा दोषोऽन्नः कुपितो महान् ३२९  
पथ्यैर्मृद्वस्वतां नीतो मृदुदोषकरो भवेत् ।

काठिन्यात् दृढता अथवा संदृढताभी दृढके  
व्यवस्था संदृढ होनेसे, उन्नभावात् वा डे दृढनी अथवा  
३५ न्यूनताभी अथवा दोषकी अव्यवस्था न्यूनता होनेसे,  
अन्नः अन्न अन्न, कुपितः कुपित अथवा कुपित,  
महान् महान् महान्, दोषः दोष दोष, पथ्यैः पथ्यैः  
पथ्ये वडे जब पथ्येसे, मृद्वस्वताम् मृदु अने अथवा  
मृदु और अल्प, नीतोः करी दृढतामा आवे छे कर  
दिया जाता है, मृदुदोषकरो त्पारे ते मृदु दोषने  
उत्पन्न करनेपर तब वह मृदु दोषको उत्पन्न करनेवाला,  
भवेत् अथ छे होता है ॥ ३२९३ ॥

३२९-३२९½. The humors, greatly provoked internally by excessive accumulation or deficiency, can be rendered mild by recourse to wholesome regimen; and consequently they manifest only mild morbid effects.

पथ्यमप्यन्नतस्तस्माद्यो व्याधिरुपजायते ॥३३०॥  
ह्रास्वेवं वृद्धिमभ्यासमथवा तस्य कारयेत् ।

३३०½. तस्य-अन्नस्य (घ.)

તસ્યાત્ તેથી એ સ્થિતિ, પથ્યમ્ પથ્યનું પથ્યકો, અશ્વતઃ અપિ ભોજન કરતાં છતાં પણ સેવન કરતે હુણ મી, યઃ એ જો, વ્યાધિઃ વ્યાધિ, અપજાયતે મૃદુ કે અસ્પૃશ્યે અનુવર્તન કરે છે મૃદુ યા અસ્પૃશ્યસે અનુવર્તન કરતી છે, એવમ્ તેને એ પ્રમાણે, એ સેવન પ્રકાર, જાણવા બહુની જાણકર, તસ્ય પથ્યની માનામાં પથ્યકો માત્રામાં, વૃદ્ધિમ્ વધારો વૃદ્ધિ, અથવા અથવા તે। અથવા, અમ્યાસમ્ તેને। અમ્યાસ એવકા અમ્યાસ, કારણે કરાવવો કરાવવાં હાથિ ॥ ૩૩૦૩ ॥

330-330½. Finding that inspite of taking the wholesome regimen, the disease occurs, the physician should increase either the quantity of or the length of the course of the wholesome regimen.

દ્રેષ્યમપિ પથ્યં કલ્પનાવિધિમિઃ પ્રિયત્વં ગમયેત્—

સાતત્યાત્સાદ્ધમાવાદ્યા પથ્યં દ્રેષ્યત્વમાગતમ્ ૩૩૧  
કલ્પનાવિધિમિસ્તૈસ્તૈઃ પ્રિયત્વં ગમયેત્ પુનઃ ।

સાતત્યાત્ સાતત સેવન કરવાથી નિરંતર અમ્યાસકે કારણ, સાદ્ધમાવાત્ વા અથવા સ્વાદુ ન હોવાથી અથવા સ્વાદુ ન હોવેકે કારણ, દ્રેષ્યત્વમ્ આગતમ્ નહિ અથવા દ્રેષ્યકે વિષયમૃત, પથ્યમ્ પથ્ય આહારને પથ્ય આહારકો, યે યેઃ કલ્પનાવિધિમિઃ બનાવવાની તે તે વિધિઓથી મિશ્ર મિશ્ર કલ્પનાવિધિઓદ્વારા, પુનઃ ફરીથી ફિરકે, પ્રિયત્વમ્ પ્રિય રુચિકર, ગમયેત્ બનાવવો બનાવવાં હાથિ ॥ ૩૩૧½ ॥

331-331½. Owing to constant use or to unpalatableness, the wholesome regimen becomes repulsive; it should be rendered palatable by various modes of preparation.

ગ્નોર્ધાનામાત્રુકૃત્વસ્ય કલમ્—

ગ્નોર્ધાનુકૃત્યાદિ તુષ્ટિકર્જા રુચિર્બલમ્ ૩૩૨  
જ્યોપમોગતા ચ સ્યાદ્યાધેન્નાતો બલક્ષયઃ ।

દિ કારણ કે ક્ષોભ, મનસઃ મનના મનકે, જાત્રુકૃત્યાત્ વિષયનું અનુકૂળપણું હોવાથી વિષયકે

અનુકૂળ હોવે, તુષ્ટિઃ સંતોષ તુષ્ટિ, કર્જા ઉત્સાહ કર્જા, રુચિઃ રુચિ રુચિ, બલમ્ બલ બલ, સુખોપમોગતા ચ સ્યાત્ અને વિષયનું સુખેથી ઉપભોગયોગપણું થાય છે ઓર વિષયકી સુખસે ઉપભોગયોગયતા હોતી છે, અતઃ ચ આથી એસે, વ્યાધેઃ રોગના વ્યાધિકે, બલ-ક્ષયઃ બલનો ક્ષય થાય છે બલકા નાશ હોતા છે ॥ ૩૩૨½ ॥

332-332½. By its being agreeable to the mind and the senses. it produces a sense of satisfaction, it increases good spirits, relish vitality, sense of happiness and enjoyment. Hence the strength of the disease gets diminished.

લૌભ્યાદોષક્ષયાદ્યાધેવૈધર્મ્યાદ્યાપિ ચા રુચિઃ ૩૩૩  
તાસુ પથ્યોપચારઃ સ્યાધોગેનાથં વિકલ્પયેત્ ।

લૌભ્યાત્ લૌભ્યથી લોહપ્રતાપે, ડોષક્ષયાત્ ડોષની ક્ષીણતાથી ડોષકે ક્ષયસે, વ્યાધેઃ વ્યાધિથી વ્યાધિકે, વૈધર્મ્યાત્ ચ અપિ તથા વિધર્મતાથી તથા વિધર્મતાસે, યા એ જો, રુચિઃ રુચિ પેદા થાય છે રુચિ ઉત્પન્ન હોતી છે, તાસુ તેમાં એનમાં, પથ્યોપચારઃ સ્યાત્ પથ્યથી ઉપચાર કરવો પથ્ય હી દેના હાથિ, રોગેન અને ઔષધયોગ વડે ઓર ઔષધયોગસે, આદ્યમ્ વિકલ્પયેત્ ભોજનને સંસ્કૃત કરીને દેવું મોજનકો સંસ્કૃત કરકે દેના હાથિ ॥ ૩૩૩½ ॥

333-333½. The medications which are wholesome should be of the taste which the patient has acquired by constant indulgence, which are developed owing to deficiency of the corresponding body element, or which are developed as a reaction to disease. And the diet also should be cooked by suitable methods of preparation.

૩૩૩. લૌભ્યાદોષક્ષયાદ્યાધેવૈધર્મ્યાદ્યાપિ ચા રુચિઃ—

લૌભ્યાદોષક્ષયાદ્યાધેવૈધર્મ્યાદ્યાપિ ચા રુચિઃ (૫.)

अध्यायोक्तविषयाः—

तत्र श्लोकाः—

विंशतिर्व्यापदो योनेर्निदानं लिङ्गमेव च ॥३३३॥  
चिकित्सा चापि निर्दिष्टा शिष्याणां हितकाम्यया ।

तत्र ते विषयमां उस विषयमे, श्लोकाः ३५३-३६२ना  
श्लोकाः ३३३ उपसंहारके श्लोक है कि, शिष्याणाम्  
शिष्याणां शिष्योंकी, हितकाम्यया हितनी धृच्छाशी  
हितकामनासे, योनेः योनिनी योनिके, चिकित्साः चिकित्से  
वीस, व्यापदः व्यापत्ति रोग, निदानम् तेओनां निदान  
उनके निदान, लिङ्गम् च एव अक्षय लक्षण, चिकित्सा  
च अपि अने चिकित्सा और चिकित्सा, निर्दिष्टा कला  
३३३३ ॥ ३३४३ ॥

Here are the recapitulatory verses

334-334½. The twenty gynecic disorders, the etiology, signs and symptoms and their therapeutics have been explained, for the benefit of the disciples.

शुक्रदोषास्तथा चाष्टौ निदानाकृतिसेषजैः ॥३३५॥  
क्लेश्याभ्युत्थानि चत्वारि चत्वारः प्रदरास्तथा ।  
तेषां निदानं लिङ्गं च भैषज्यं चैव कीर्तितम् ॥३३६॥

तथा तथा तथा, निदान- निदान निदान, आकृति-  
अक्षय लक्षण, सेषजैः अने चिकित्सासहित और  
चिकित्सासहित, अष्टौ आठ आठ, शुक्रदोषाः शुक्रना  
दोषा कला ३३५ शुक्रके दोष कहे हैं, चत्वारि चार चार,  
क्लेश्यानि क्लेश्य क्लेश्य, उत्थानि कला ३३६ कहे हैं, तथा  
तेभ्य एवं, चत्वारः चार चार, प्रदराः प्रदर कला ३३६  
प्रदर कहे हैं, तेषाम् तेओनां उनके, निदानम् निदान  
निदान, लिङ्गम् च अक्षय लक्षण, भैषज्यम् च एव अने  
चिकित्सा और चिकित्सा, कीर्तितम् कला ३३६ ॥ ३३५-३३६ ॥

335-336. So too the causes symptoms and treatment of the eight kinds of seminal morbidity, the four kinds

of impotency and the four kinds of colporrhea, their etiology, characteristics and treatment have all been described.

क्षीरदोषास्तथा चाष्टौ हेतुलिङ्गभिषग्जितैः ।

रेतसो रजसश्चैव कीर्तितं शुद्धिलक्षणम् ॥३३७॥

तथा तथा तथा हेतु- निदान निदान, लिङ्ग- अक्षय  
लक्षण, भिषग्जितैः अने चिकित्सासहित और औषधके  
साध, अष्टौ आठ आठ क्षीरदोषाः च क्षीरदोषा क्षीर-  
दोष, रेतसः वीर्य वीर्य, रजसः च एव अने आर्तवनी  
तथा आर्तवकी शुद्धिलक्षणम् शुद्धिना अक्षय शुद्धि  
लक्षण, कीर्तितम् कला ३३७ ॥ ३३७ ॥

337. Also the eight kinds of galatic morbidity with their causes, characteristics and remedies, and the signs of the purity of semen and the menses, have also been described.

उक्तानुक्तचिकित्सा च सम्यग्योगस्तथैव च ।  
देशादिगुणशंसा च कालः पट्टि एव च ॥३३८॥  
देशे देशे च यत् सात्त्वं यथा वैद्योऽपराध्यति ।  
चिकित्सा चापि निर्दिष्टा दोषाणां गूढचारिणाम् ॥

उक्त- उक्ते कहे हुए, अनुक्त- अने न उक्ते  
देशादिगुणशंसा च कालः पट्टि एव च ॥३३८॥  
देशे देशे च यत् सात्त्वं यथा वैद्योऽपराध्यति ।  
चिकित्सा चापि निर्दिष्टा दोषाणां गूढचारिणाम् ॥

३३७. मया कोकस्य पूर्वाचारानन्तरम्—

तेषां चिकित्सा निर्दिष्टा समामभ्यासतो मया ।

इत्यधिकः पाठः (ड. पुस्तके ।

३३८. देशादिगुणशंसा च—देशादिगुणयोगाच्च (ब.)

—देशादिगुणयोगाच्च (क.)

३३९. एतच्छ्लोकानन्तरम्—

योनिव्यापदिकेऽध्याये पुनर्वस्तुनिर्दिष्टम् । (द.)

इत्यधिकः पाठः (द.) पुस्तके ।



अने ७ प्रकारने। डाव और छः प्रकारका काल, देशे देशे च शुद्ध शुद्ध देशानुं देश देशका, यत् ते जो, साम्यम् सात्त्व्यं ये सात्त्व्य है, यथा वैद्यः ते रीति वैद्य जिस प्रकार वैद्य, अपराध्यति निष्पन्न थाय ये इष्ट सिद्धि नहीं करता, गूढचारिणाम् तथा गूढचारी तथा गूढचारी, दोषाणाम् दोषोनी दोषोकी, चिकित्सा च अपि चिकित्सा आ सधनुं चिकित्सा यह सब, निर्दिष्टाः छेवामा आनुं छे कहा गया है ॥ ३३८-३३९ ॥

338-339. The diseases which have been mentioned here as well as those not mentioned and the proper line of treatment for them; the time of medication with reference to six factors, what is homologatory to which clime; and how the physician commits mistakes owing to ignorance of these and also the description and the treatment of deepseated morbidity, have all been expounded here.

यो हि सम्यङ् जानाति शास्त्रं शास्त्रार्थमेव च ।  
न कुर्यात् स क्रियां चित्रमचक्षुरिव चित्रकृद् ॥३४०॥

मचक्षुः नेम अधिगे। जैसे चक्षुरहित, चित्रकृद् चित्रकार चित्रकार, चित्रम् इव चित्र बनावी शक्ते। चित्र नहीं बना सकता, यः हि तेम ते मनुष्य वैसे जो मनुष्य, शास्त्रं शास्त्रने शास्त्र, शास्त्रार्थम् च एव अने शास्त्रना अर्थने और शास्त्रके अर्थको, सम्यक् भलाभर भली प्रकार, न जानाति सम्यक्ते। न होय नहीं जानता, सः ते वह, क्रियाम् चिकित्सा चिकित्सा, न कुर्यात् करी शक्ते। नहीं कर सकता ॥ ३४० ॥

340. He who knows not thoroughly the science and its full interpretation should not venture on treatment, even

३४०. यो हि सम्यङ् जानाति-यस्तु सम्यगिजानीते (यः)

as a blind man should not try to paint a picture.

इत्यग्निवेशकृते तन्त्रे चरकप्रतिसंस्कृतेऽप्राप्ते  
दृढबलसंपूरिते चिकित्सास्थाने योनिव्यापच्चि-  
कित्सितं नाम त्रिंशोऽध्यायः ॥३०॥

इति आ. प्रभाषे इस प्रकार, अग्निवेशकृते अग्निवेशे रथेवा अग्निवेशे बनाये, चरकप्रतिसंस्कृते तन्त्रे अने यरकथी प्रतिसंस्कार पाभेवा आ. शास्त्रमां और चरकके द्वारा संस्कृत इस शास्त्रके, अप्राप्ते अप्राप्त अप्राप्त, दृढबल-संपूरिते अने दृढबले पूरा करेवा और दृढबलसे पूरित किये गये, चिकित्सास्थाने चिकित्सास्थान विषे चिकित्सा-स्थानमें, योनिव्यापच्चिकित्सितम् 'योनिव्यापच्चिकित्सित' 'योनिव्यापच्चिकित्सित', नाम नामने। नामका, त्रिंशः तीसवाँ, अध्यायः अध्याय संपूर्ण यथे अध्याय समाप्त हुआ ॥ ३० ॥

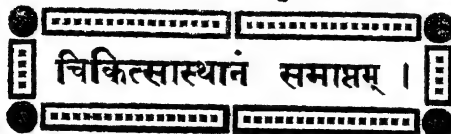
30. Thus, in the Section on 'Therapeutics' in the treatise compiled by Agnivesa and revised by Caraka, the thirteenth chapter entitled 'The Therapeutics of the Gynecic disorders' not being available and the same as reconstructed by Dridhabala, is completed.

अग्निवेशकृते तन्त्रे चरकप्रतिसंस्कृते ।

चिकित्सितमिव स्थानं षष्ठं परिसमापितम् ॥३४१॥

अग्निवेशकृते अग्निवेशे रथेवा अग्निवेशे बनाये, चरकप्रतिसंस्कृते अने यरकथी प्रतिसंस्कार पाभेवा और चरकके द्वारा संस्कृत, तन्त्रे आ. शास्त्रमां इस तन्त्रमें, दृढम् आ. यह, षष्ठम् छठुं छठा, चिकित्सितम् स्थानम् चिकित्सास्थान चिकित्सास्थान, परिसमापितम् संपूर्ण यथुं समाप्त हुआ ॥३४१॥

341. Thus ends the Section on Therapeutics which forms the sixth section in the Treatise compiled by Agnivesa and revised by Caraka.





# श्रीः चरकसंहिता कल्पस्थानम्

श्री  
चरकसंहिता  
कल्पस्थानम्

श्री  
चरकसंहिता  
कल्पस्थानम्

The  
Carakasamhita

KALPASTHANAM  
( The Section on  
pharmaceutics )

प्रथमोऽध्यायः ।

पहले अध्याय अध्याय प्रथम  
Chapter I

मदनकलोपक्रमः—

अथातो मदनकल्पं व्याख्यास्यामः ॥१॥

इति ह स्माह भगवानात्रेयः ॥२॥

अथ अतः हवे अर्ह्यथी अब आगे, मदनकल्पम्  
'मदनकल्प' नामना अध्यायानु 'मदनकल्प' नामके  
अध्यायका, व्याख्यास्यामः व्याख्यान करथु व्याख्यान  
करेंगे ॥ १ ॥

भगवान् भगवान् भगवान्, आत्रेयः आत्रेये आत्रेयने,  
इति ह आ विषयमा नीये प्रभाषे ॥ इस विषयमें  
निम्न प्रकारसे ही, आह उस कहेंगे ॥ २ ॥

1. We shall now expound the  
chapter entitled "The Pharmaceutics  
of the Emetic nut".

2. Thus declared the worshipful  
Atreya.

कल्पस्थानस्य विषयः—

अथ खलु वमनविरेचनार्थं वमनविरेचनद्र-  
व्याणां सुखोपभोगतमैः सहान्यैर्द्रव्यैर्विविधैः  
कल्पनार्थं-मेदार्थं विभागार्थं चेत्यर्थः, तद्योगानां  
च क्रियाविधेः सुखोपायस्य सम्यगुपकल्पनार्थं  
कल्पस्थानमुपदेक्ष्यामोऽग्निवेश ! ॥ ३ ॥

अग्निवेश ! हे अग्निवेश ! हे अग्निवेश ! अथ खलु हवे  
अब, वमन- वमन वमन, विरेचनार्थम् तथा विरेचन  
भाटे तथा विरेचनके लिए, वमन- वमन वमन, विरेचन-  
तथा विरेचनना तथा विरेचनके, द्रव्याणां द्रव्याणां  
द्रव्योंकी, सुखोपभोगतमैः अत्यंत आरोग्य भाटे छिप-  
छेप करवाना अतिशय आरोग्यके लिए उपभोगयोग्य,  
अन्यः ००० अन्य, विविधैः विविध नावा प्रकारके,  
द्रव्यैः सह द्रव्योंकी साथे द्रव्योंके साथ, कल्पनार्थम्  
कल्पना करवा भाटे कल्पनाके लिए, मेदार्थम् विभा-  
गार्थम् च इति अर्थः अर्थात् वमन तथा विरेचनना  
द्रव्योंना भिन्न भिन्न प्रयोग भाटे तथा ते द्रव्योंना  
विक्रम भाटे अर्थात् वमन तथा विरेचनके द्रव्योंके भिन्न  
भिन्न प्रयोगके लिए तथा उन द्रव्योंके विभागाके लिए,

३. वमनविरेचनार्थं-वमनविरेचनार्थं मदनकल्पस्थानादीनां  
(च. ३.)  
,, सुखोपभोगतमैः-सुखोपभोगतमैः (५.)

तद्योगानाम् च अने वमन तथा विरेचननां प्रयोगेना प्रयोजेनी और वमन तथा विरेचनके प्रयोगोंकी, सुखोपायस्य आरोग्यना उपायभूत आरोग्यके उपायभूत, क्रियाविधेः स्वरसादिषु क्रियानी विधिने स्वरसादिरूप क्रियाकी विधिकी, सम्यक् भस्मभस्म भस्मी प्रकार, उप-कल्पनार्थम् उद्देश्य भाटे कदमेके लिए, कल्पस्थानम् कल्पस्थानने कल्पस्थानका, उपदेक्ष्यामः उपदेश करुं उपदेश करेंगे ॥ ३ ॥

3. It is indeed O, Agnivesa! for the following reasons that we expound the Section on Pharmaceutics namely, to describe the combinations with various drugs that render the preparation most pleasant to take for the purpose of emesis and purgation; to describe the classifications and dosage of these emetic and purgative drugs, as also to describe the easy and proper pharmaceutical procedures of these preparations.

शरीरमलविरेचनमेदाः —

तत्र दोषहरणमूर्ध्वभागं वमनसंज्ञकम्, अधो-भागं विरेचनसंज्ञकम्; उभयं वा शरीरमलविरे-चनाविरेचनसंज्ञां लभते ॥ ४ ॥

तत्र तेभां इनमें, ऊर्ध्वभागम् उपरना भागधी (युष्म भास्म) ऊपरके भागसे (मुखद्वारा), दोषहरणम् दोषनुं निर्हरण करेना दोषोंका निर्हरण करनेवाला, वमनसंज्ञकम् वमन उद्देश्य है वमन कहाता है, अधो-भागम् नीचेना भागधी (युष्म भास्म) नीचेके भागसे (गुदाद्वारा), विरेचनसंज्ञकम् विरेचन उद्देश्य है विरेचन कहाता है, शरीरमल-अथवा शरीरना मलनुं अथवा शरीरके मलका, विरेचनात् वा विरेचन करवाधी विरेचन करनेसे, उभयम् अने दोनोंकी, विरेचनसंज्ञाम् विरेचनसंज्ञा विरेचनसंज्ञा, लभते भेजवे है होती है ॥ ४ ॥

4. Of these the act or action of expelling the impurities through the upper channel is known as Emesis, while that of expelling the impurities through the lower channel is known as Purgation. Both being processes of cleansing the bodily impurities, they are known by the common term purgation.

वमनं विरेचनं च द्रव्यं कथं वामयति विरेचयति च—

तत्रोष्ण-तीक्ष्ण-सूक्ष्म-व्याधि-विकाशीन्यौषधा-नि स्ववीर्येण हृदयमुपेत्य घमनीरनुसृत्य स्थूलाणु-स्रोतोभ्यः केवलं शरीरगतं दोषसंघातमाग्नेयत्वाद् विष्यन्दयन्ति, तैक्ष्ण्याद् विच्छिन्नमन्ति,

तत्र तेभां इनमें, उष्ण-तीक्ष्ण-उष्ण तीक्ष्ण, सूक्ष्म-सूक्ष्म सूक्ष्म, व्याधि-व्याधी व्याधी, विकाशीनि विकशी शुष्काणां विकाशी गुण-वाली, औषधानि औषधा औषधियां, स्ववीर्येण योताना वीर्यनी अपनी शक्तिसे, हृदयम् हृदयभां हृदयमें, उपेत्य पहुँचती पहुँचकर, घमनीः घमनीऔषदां घमनियोंमें, अनुसृत्य प्रसूरी व्याप्त होकर, स्थूल-अणु-स्थूल तथा सूक्ष्म स्थूल तथा अणु, स्रोतोभ्यः स्रोतोभांभी स्रोतोसे, केवलम् आभा संपूर्ण, शरीरगतम् शरीरभां रहेगा शरीरमें व्याप्त, दोषसंघातम् दोषना समूहने दोष-समूहको, आग्नेयत्वाद् आग्नेय होवाधी आग्नेय होनेसे, विष्यन्दयन्ति पीजणावे है द्रव बना देती हैं, तैक्ष्ण्याद् अने तीक्ष्ण होवाधी और तीक्ष्णतासे, विच्छिन्नमन्ति छेदे छे टुकड़े टुकड़े कर देती हैं ॥ ५ ॥

5-(1). The drugs that are hot, acute, subtle, diffusive and anti-spasmodic, reaching the heart by virtue of their potency, and circulating through the large and small blood vessels, pervade the entire body. They liquefy the

५. तीक्ष्णसूक्ष्म-तीक्ष्णसूक्ष्मसूक्ष्म (द.)

५. घमनीरनुसृत्य स्थूलाणु-घमनीरनुसृत्य सम्मग्नस्य स्थूलाणु (द. त.)

accumulated morbid matter therein by virtue of their fiery quality and break it up by their acuteness.

स विच्छिन्नः परिप्लवन् स्नेहभाविते काये स्नेहा-  
कभाजनस्थमिव क्षौद्रमसज्जन्नप्रवणभावादा-  
माशयमागम्योदानप्रणुओऽग्निवाय्वात्मकत्वादूर्ध्व-  
भागप्रभावादौषघस्योर्ध्वमुत्क्षिप्यते, सलिलपृथि-  
व्यात्मकत्वादधोभागप्रभावाच्चौषघस्याधः प्रवर्तते,  
उभयतश्चोभयगुणत्वात् । इति लक्षणोद्देशः ॥ ५ ॥

विच्छिन्नः स्नेहोऽथ दुर्बलः सः ते दोषसमूहं यद्  
दोषसमूहः, स्नेहभाविते स्नेहभाविता स्नेहसे स्निग्धः काये  
शरीरभां शरीरमें, परिप्लवन् आभूतेभ इतरां इधर उधर  
जाता हुआ, स्नेहाक- स्नेहभाविता स्नेह चुपके,  
भाजनस्थम् पात्रभां पात्रमें, क्षौद्रम् मधुनी मधुके,  
इव जेम समान, असज्जन् न शोऽर्ता न चिपकता  
हुआ, अणुप्रवणभावात् अणुभागभां संचार करवाने  
कीधे अणुभागोंमें संचरण करनेसे, आमाशयम् आमा-  
शयभां आमाशयमें, आगम्य आनी पहुँचकर, उदान-  
प्रणुः उदान वायुधी प्रेरणु पाभी उदान वायुसे  
प्रेरित होकर, औषघस्य औषधनां औषधियोंके, अग्नि-  
वायु- आत्मकत्वात् प्रधानतः अग्नि, वायुस्वरूप  
होवाथी प्रधानतः अग्निवायुस्वरूप होनेसे, ऊर्ध्वभाग- तथा  
उपरना भागभी दोषतुं निर्हरणु करवाना तथा ऊपरकी  
ओरसे दोषका निर्हरण करनेके, प्रभावात् प्रभावथी  
प्रभावसे, ऊर्ध्वम् उपर ऊपरकी ओर, उत्क्षिप्यते ईंकाय  
छे फेंका जाता है, औषघस्य औषधनां औषधियोंके,  
सलिल-पृथिवी-आत्मकत्वात् प्रधानतः जलपृथ्वीस्व-  
रूपहोवाथी प्रधानतः जलपृथ्वीस्वरूप होनेसे, अधोभाग-  
तथा नीचेना भागभी दोषतुं निर्हरणु करवाना नीचेकी  
ओरसे दोषका निर्हरण करनेके, प्रभावात् च प्रभावथी  
प्रभावसे, अधः नीचे नीचेकी ओर, प्रवर्तते अथ छे  
प्रवृत्त होता है, उभयगुणत्वात् अने औषधनां छे  
अणु होवाथी और औषधियोंके दोनों गुण होनेसे,  
उभयतः च अने भागोंकी अथ छे दोनों मार्गोंसे

प्रवृत्त होता है, इति आ यह, लक्षणोद्देशः वमन तथा  
विरेचन द्रव्योंना स्वरूपतुं वर्णन छे वमन तथा विरेचन  
द्रव्योंके स्वरूपका वर्णन है ॥ ५ ॥

5. This morbid matter being thus broken up and floating in the body, that has undergone oleation procedure, remains detached in the body like honey kept in a pot smeared with ghee; and being drawn by its atomic affinity, it flows towards the gastro-intestinal tract and getting propelled upwards by the Udana vata, the morbid matter gets thrown upwards as a result of the fiery and the airy quality as well as by the upward flowing tendency of the drugs. Owing to the watery and earthy qualities and the downward flowing tendency of drugs, it purges downwards. Where both the qualities are combined, it purges both-ways. Thus have been described the characteristics of the purgative drugs. अपरिसंख्येययोगानामपि विरेचनद्रव्याणां षट्सु श्लेष्मन्तमार्गं कृत्वोपदेशः—

तत्र फल-जीमूतकेक्ष्वाकू-धामार्गव-कुटज-कृतवे-  
घनानां, श्यामा-त्रिवृच्चतुरङ्गल-तिस्वक-महावृक्ष-  
ससला-शङ्खिनी-वन्ती-द्रवन्तीनां च, नानाविधदेश-  
कालसंभवास्वाद-रस-वीर्य-विपाक-प्रभावग्रहणाद्  
देह-दोष-प्रकृति-वयो-बलाग्नि-भक्ति-सात्म्य-रोगा-  
वस्थादीनां नानाप्रभाववत्त्वाच्च, विचित्रगन्धवर्ण-  
रस-स्पर्शानामुपयोगसुखार्थमसंख्येयसंयोगानां -

६. धामार्गवकुटजचतुरवेघनानां—धामार्गवकुटजवेघनानां (क.)

॥ प्रभावग्रहणाद्—प्रभावग्रहणानां (ख. फ.)

॥ रोगावस्थादीनां नानाप्रभाववत्त्वाच्च—रोगावस्थादिनानात्मक-  
त्वाच्च (घ. क.)

॥ उपयोगसुखार्थम्—उपयोगसुखार्थम् (घ. ग.)

५. परिप्लवन्—परिप्लवः (घ. फ.)

॥ क्षौद्रमसज्जन्नप्रवण—उदकमसज्जन्नप्रवण (घ.)

मपि च सतां द्रव्याणां विकल्पमार्गोपदर्शनार्थं  
षट् विरेचनयोगशतानि व्याख्यास्यामः ॥ ६ ॥

तत्र तेषां इनमें फल- मीठण मैनफल, जीमूतक  
कुंडवेव जीमूतक, इस्वाकु- उडवी तूणडी तितीलौकी,  
चामार्गव- धामार्गव (पीली बीसीडी) चामार्गव, कुटज-  
उडे कुडा, कूतवेवनानाम् अने उडवीं गुरिभां और  
कडवी तोरई, इयामा- तथा डाणुं नसेातर तथा इयामा,  
त्रिवृत्- धाव नसेातर त्रिवृत्, चतुरकुल- गरभागे चतुरं-  
गुल, तिक्क- धोअ तिक्क, महाबुध- शेर थूर,  
सप्तला- सातला शेर सप्तला, कङ्किनी- आभूटाभपू  
कङ्किनी, दन्ती- नेपागे। दन्ती, द्रवन्तीनाम् अने रतन-  
मेत भेयानां और जंगली एण्डी इनके, नानाविध-  
जुडा जुडा प्रकारना नाना प्रकारके, देह-काक- देश  
तथा डाणभां देश तथा कालमें, संभव- उत्पत्ति उत्पत्ति,  
आस्वाद- जुडा जुडा स्वाद नाना प्रकारके आस्वाद,  
रस-वीर्य- रस, वीर्य रस, वीर्य, विपाक- निपाक विपाक,  
प्रभाव- अने प्रभाव और प्रभाव, ग्रहणात् भवाथी  
होनेके कारण, देह-दोष- देह, दोष देह, दोष, प्रकृति-  
प्रकृति प्रकृति, वयः-बल- वय-अथ वय-बल, अग्नि- अग्नि  
अग्नि, मक्ति- रुचि रुचि, साम्य- सात्म्य साम्य, रोग-  
रोग रोग, अवस्था- अवस्था अवस्था, आदीनाम्  
आदिना आदिके, नानाप्रभाववत्त्वात् च जुडा जुडा  
प्रभाव होवाथी नाना प्रभाव होनेके कारण, विचित्रगन्ध-  
तथा विचित्र गन्ध तथा विविध प्रकारके गन्ध, वर्ण-रस-  
वर्ण-रस वर्ण-रस, स्पर्शानाम् अने स्पर्शनां और  
स्पर्शके, उपयोग- उपयोगानुं उपयोगका, सुखार्थम् सुख  
लेवाना हेतुथी सुख लेनेके कारण, द्रव्याणाम् द्रव्येना।  
द्रव्येके, असंख्येय- अगणित असंख्येय, संयोगनाम् च  
अपि संयोग संयोग, सताम् होवा अतां पक्ष होने  
पर मी, विकल्पमार्ग- उदयनाने। भाग कल्पनाका मार्ग,  
उपदर्शनार्थम् अतावना भाटे बतानेके लिए, षट् विरेचन-  
योगशतानि असे। विरेचन योगानुं छसौ विरेचन  
योगिका, व्याख्यास्यामः व्याख्यान करथुं व्याख्यान  
करेंगे ॥ ६ ॥

६. द्रव्याणां विकल्पमार्गोपदर्शनार्थं—द्रव्याणि विकल्पमार्गोपदर्शनार्थं

(६.)

6. Taking into consideration that  
drugs differ with respect to land, season,  
source, flavor, taste, potency, post-  
digestive effect and specification, and  
also that men differ with respect to  
their body, morbid tendency, consti-  
tution, age, vitality, gastric fire, pro-  
clivities, homologation and stage of  
disease, we shall here describe six  
hundred purgative preparations that  
are pleasant in their variety of smell,  
color, taste and touch; of drugs such  
as emetic nut, bristly luffa, bottle  
gourd, sponge gourd, kurchi, bitter  
luffa, black turpeth, turpeth, purging  
cassia, tilwaka, thorny milk-hedge plant,  
soappod, clenolipis, red physic nut,  
and physic nut, although the extent of  
the possible preparations from these  
drugs is innumerable.

विरेचनद्रव्याणि कथं क्रियासमर्थतमानि भवन्ति—

तानि तु द्रव्याणि देश-काल-गुण-भाजन-संपत्ती-  
र्यबलाधानात् क्रियासमर्थतमानि भवन्ति ॥ ७ ॥

तानि ते वे, द्रव्याणि तु द्रव्ये द्रव्य, देश-काक- देश,  
काक देश, काल, गुण-गुण गुण, भाजन- अने पात्रकी  
और पात्रकी, संपत्ति संपत्ति वसे संपत्तिके कारण, वीर्य-  
बल- भाजानात् अधिक वीर्यवान् भवाथी शक्तिकी  
अधिकतासे, क्रिया- कार्य करवाना कार्य करनेमें, समर्थ-  
तमानि अति अधिक सामर्थ्यवान् अत्यधिक शक्तिशाली,  
भवन्ति अने छे होते हैं ॥ ७ ॥

7. These drugs become most effec-  
tive in action by the richness of the  
factors of favourable place, season,  
quality of storage-vessels and the  
process of dynamization.

७. भाजनसंपत्तीर्यबलाधानात्—भाजनसम्बन्धीर्यबलाधानात् (७.)

દેશભેદ:—

ત્રિવિધ: જાલુ દેશ:—જાફલ: , આનૂપ: , સાધારણ-  
શ્રેતિ । તત્ર જાફલ: પર્યાકાશભૂમિષ્ઠ: , તરુભિરપિ  
ચ કદર-હિરણ્મયનાશ્વકર્ણ-ધવ-તિનિશ-શાલુકી-  
સાલ-સોમવલ્લ-વદરી-તિન્દુકાશ્વત્થ-વટામલકીવ-  
નગહન: , અને કશમી-કકુભ-શિશપાપ્રાય: , સ્થિરશુ-  
ષ્કપવનબલવિધૂયમાનપ્રત્યક્ષરુણવિટપ: , પ્રતત-  
મૃગતુષ્ણિકોપગૃહતનુચરપરુષસિકતાશર્કરાબહુલ: ,  
લાવતિત્તિરિચકોરાનુચરિતભૂમિભાગ: , વાતપિત્ત-  
બહુલ: , સ્થિરકઠિનમનુષ્યપ્રાયો જ્ઞેય: ;

દેશ: દેશ દેશ, ત્રિવિધ: જાલુ ત્રણ પ્રકારનો છે  
ત્રણ પ્રકારનો છે, જાફલ: બંગલ જાંગલ, આનૂપ:  
આનૂપ આનૂપ, સાધારણ: અને સાધારણ જોર સાધારણ,  
તત્ર તેમાં જાનમાં, પર્યાકાશભૂમિષ્ઠ: ચારે બાજુ પુષ્કળ  
પુષ્કળ આકાશવાળા ચારો બોર વિસ્તૃત આકાશવાળે,  
તરુભિ: અપિ ચ અનેક વૃક્ષોવાળા અનેક વૃક્ષવાળે,  
કદર- શરૂ થેર સફેદ હૈર, હિર- થેર હૈરકથ્યા,  
જસન- અસન હાજ, અશ્વકર્ણ- શાલ સાલુ, વવ-  
ધાવડો જો, તિનિશ- તણુ તિનિશ, જાલુકી- શાલુકી  
કુંદર, સાલ- રાળનાં ઝાડ સાલ, સોમવલ્લ- જોરડ સફેદ  
હૈર, વદરી- થેરડી વેરી, તિન્દુક- ટીંબરો તેંદુ,  
અશ્વત્થ- પીપળા પીપળ, વટ- વડ વડ, જામલકી-  
આમળાનાં ઝાડ એઓનાં આંબલેકે વૃક્ષજનકે, વનગહન:  
ખાટી વનવાળો મરે જંગલોવાળે, અનેક- અનેક અનેક,  
કશમી- ખીજડી કશમી, કકુભ- અર્જુન કૌહા, શિશપાપ્રાય:  
અને સીસમના ઝાડથી મરપૂર જોર સીસમ વૃક્ષોસે મરે  
સ્થિર- સ્થિર સ્થિર, શુષ્ક- તેમજ સૂકાં એવં શુષ્ક,  
પવનબલ- પવનના ઝપાટાઓથી વાયુકે જોકોસે, વિધૂય-  
માન- હાલતીં કંપાયે હુએ, પ્રત્યક્ષ અને નાચતા હોય  
એમ દેખાતા જોર નાચતે સે દિશાઈ દેતે, તરુણવિટપ:  
નાનાં ઝાડવાળા છોટે વૃક્ષવાળે, પ્રતત- અવિચ્છિન્ન  
નિરંતર, મૃગતુષ્ણિકા- ઝાડવાળાં જાળનાં મૃગતુષ્ણિકો,  
રુપગૃહ- દેખાવાળા ઉત્પન્ન કરનેવાળે, તનુ-ચર- ઝીણી

કઠોર પત્તી કઠોર, પરુષ- તથા મરપૂર તથા કર્કશ,  
સિકતા- રેતી વાલુ, શર્કરા- અને ઝાડરી જોર કંકરી,  
બહુલ: જેમાં વધારે હોય એવા જિલ્લામાં બહુત જોરે,  
લાવ-તિત્તિરિ- હાવરા તેતર વટેર, તીતર, ચકોર- અને  
થકોર પક્ષી જોર ચકોર, અનુચરિત- જેમાં જરતાં હોય  
એવા જિલ્લામાં વિચરતે જોરે, ભૂમિભાગ: ભૂમિપ્રદેશ-  
વાળાં એસે ભૂમિપ્રદેશવાળે, વાતપિત્તબહુલ: વાતપિત્તની  
અધિકતાવાળા વાતપિત્તકી અધિકતાવાળે, સ્થિર- તથા  
સ્થિર તથા સ્થિર કઠિન- અને કઠણ શરીરથી યુક્ત  
જોર કઠોર શરીરસે યુક્ત, મનુષ્યપ્રાય: મનુષ્યની અધિ-  
કતાવાળા દેશને મનુષ્યકી અધિકતાવાળે દેશનો, જાફલ:  
બંગલ જાંગલ, જ્ઞેય: બહુલ જાનના વાહિય;

8-(1). 'Place' or 'clime' is of three  
kinds—Jangala(arid) land. wetland  
and ordinary land. Of them the jangala  
land is that which is abounding in  
open space. It contains dense forests  
of gum arabic tree, catechu tree, Spi-  
nous kino tree, sal, crane tree, oojain  
tree, Indian olinabeum, Indian sal, small  
jujube, false mangosteen, holy fig,  
banyan and emblic myrobalan. There  
grow the Sami, Arjun and rose wood  
trees in large numbers. There, the  
young branches dance swayed by the  
force of continuous dry winds; it  
abounds in thin, rough and hard sand  
and gravel hidden often by the sight  
of mirages. It is inhabited by quails,  
partridges and Chakora birds. There,  
the vata and pitta humors are in  
predominance, and people are well-  
knit and hardy.

અથાનૂપો દિન્તાલતમાલનારિકેલકદલીવન-  
ગહન: , સરિત્સમુદ્રપર્યન્તપ્રાય: , શિશિરપવનબહુલ: ,  
વજુલવાનીરોપશોભિતતીરામિ: સરિન્નિરુપગત-

૮. ત્રિવિધ:—તત્ર ત્રિવિધ: (વ.)

૧૧. મનુષ્યપ્રાયો જ્ઞેય:—મનુષ્યપ્રાયો જાફલો જ્ઞેય: (ક.)

भूमिभागः, क्षितिधरनिकुञ्जोपशोभितः, मन्दपवनानुवीजितक्षितिरुहगहनः, अनेकवनराजीपुष्पितवनगहनभूमिभागः, स्निग्धतद्वप्रतानोपगूढः, हंसचक्रवाक-बलाका-नन्दीमुख-पुण्डरीक-कादम्ब-मद्गु-भृङ्गराज-शतपत्र-मत्तकोकिलानुनादिततरुविटपः, सुकुमारपुरुषः, पवनकफप्रायो ज्ञेयः;

अथ हिन्ताल- ताड हिन्ताल, तमाल- तमाल तमाल, नारिकेल- नाणियेरी नारियल, कदली- अने डेगना और केलेके, वनगहनः धाटी वनवाणी वने जंगलसे भरपूर सरिसमुद्र- नदी के समुद्र नदी वा समुद्र, पर्यन्तप्रायः जेना प्रांत भागमां होय सेवा जिसके प्रान्त भागमें हो ऐसे, क्षितिधरवन- ठंडा पवननी ठंडी हवाकी, बहुलः पुष्कणतावाणा पुष्कलतावाले, वज्रुल- वाणुल वज्रुल, वानीर- अने जलनेतरसी और वानीरसे, उपशोभित- शोभता शोभित, तीराभिः किनारावाणी किनारोंवाले, सरिद्धिः नदीओथी नदियोंसे, उपगत- व्याप्त व्याप्त, भूमिभागः भूमिप्रदेशवाणा भूमिप्रदेशवाले, क्षितिधर- पर्वतनी पर्वतकी, निकुञ्ज- कुंजोथी कुंजोंसे, उपशोभितः शोभता शोभित, मन्दपवन- मंद मंद वायुथी धीमी धीमी वायुसे, अनुवीजित- छाछती कम्पित, क्षितिरुहगहनः जंगल वनवाणी वृक्षोंके वनवाले, अनेक- अनेके अनेक, वनराजी- वननी पंक्ति वनकी पंक्ति, पुष्पित- तेभज पुष्पित एवं पुष्पित, वनगहन- जंगली दुर्गम वनोंसे दुर्गम, भूमिभागः भूमिप्रदेशवाणा भूमिप्रदेशवाले, स्निग्धतद्व- स्निग्ध जंगली लताओना स्निग्ध वृक्षोंकी लताओंके, प्रतान- बाँझ तंतुओथी कुटिल तंतुओंसे, उपगूढः ठंडायेले भरे, हंस- हंस हंस, चक्रवाक- चक्रवाक चक्रवाक, बलाका- भगवा बलाका, नन्दीमुख- नन्दीमुख नन्दीमुख, पुण्डरीक- पुण्डरीक पुण्डरीक, कादम्ब- कदम्ब कदम्ब, मद्गु- जलकाक, भृङ्गराज- भृङ्गराज भृङ्गराज, शतपत्र- शतपत्र शतपत्र, मत्तकोकिल-

अने मत्त के यक्ष्मी और मत्त कोयलसे, अनुनादित- गाओली प्रतिध्वनित, तरुविटपः वृक्षोंकी शाखाओवाणा वृक्षोंकी शाखाओंवाले सुकुमार- तेभज नाजुड, पुरुषः अनुप्यो वाणी अनुप्योवाले, पवनकफप्रायः अने वात तथा उष्णप्रधान देशने और वात तथा कफप्रधान देशको, जानूपः आनूप आनूप, ज्ञेयः अनुप्यो जानना चाहिए;

8 2). The wetland is that which contains dense forests and marshes, date plants Tamala, coconuts and plantain trees, which is generally bounded by rivers or the sea; where cold winds blow greatly, which is in the neighbourhood of rivers whose banks are rendered beautiful by reeds and rush, which is abounding in hills covered with creeping shrubs; where clusters of trees wave to gentle breezes, which contains many forests of blooming rows of trees; which is covered with densely grown trees and creepers; Where the branches of trees are echoing to the cries of birds like the swan, the Chakravaka, the crane, the Nandimukha, the Pundareeka, the Kadamba, the Madgu, the Bhringaraja, the Sata-patra and the inebriate cuckoo; and where the people are delicate in looks and of vata and kapha constitutions generally.

अनयोरेव द्वयोर्देशयोर्विद्वन्नस्पतिवानस्पत्य-  
शकुनिमृगगणयुतः स्थिरसुकुमारबलवर्णसंहननो-  
पपञ्चसाधारणगुणयुक्तपुरुषः साधारणो ज्ञेयः ॥८॥

अनयोः आ इन, द्वयोः एव अने दोनों, देशयोः देशनां देशोंकी, वीरुह- लता लता, वनस्पति- पुष्प विना भयेवा जंगलवाणी पुष्पके बिना हुए फलवाले वृक्ष,

८. क्षितिधर-क्षितिधर (इ. द.)

,, मद्गुभृङ्गराजशतपत्रमत्तकोकिल-मद्गुकोयष्टिभृङ्गराजशतपत्र  
पुंस्कोकिल (घ. त. थ.)

,, मद्गुभृङ्गराजशतपत्रमत्तकोकिलानुनादित-मद्गुकोयष्टिभृङ्गराज  
राजपुंस्कोकिलानुनादित (घ.)

८. स्थिरसुकुमारबलवर्ण-स्थिरसुकुमारवर्ण (ख.)



वानस्पत्य- पुष्पैश्च यथेष्टा इतोवाणां पुष्पसे हुए फलवाले वृक्ष, जकुनि-सृग- पक्षी अने भूगोना पक्षी और पशुओंके, गण-सुतः गणैवाणां समूहोंसे भरे, स्थिर- स्थिरता स्थिरता, सुकुमार- डोमणता कोमलता, बल-वर्ण-भक्ष, वलुं बल, वर्ण, संहनन-उपपन्न- अने शरीर-रत्ना आधामां आवेष्टा और शरीरके गठनमें आवे हुए, साधारणगुण- अने देशना साधारण्य (समान) गुणधरी दोनों देशके साधारण (समान) गुणोंसे, युक्त-युक्त युक्त, पुष्टवः मनुष्यैवाणां देशने मनुष्योंवाले देशको, साधारणः साधारण्य साधारण, शेषः अल्पवेद जानना चाहिए ॥८॥

8. That place should be known as ordinary country which contains the trees, herbs and shrubs, birds and beasts of both the aforesaid types of land, which is inhabited by people endowed with firmness, delicacy, strength, color, well-knit frames and average qualities.

कथंभूते देशे जातानि द्रव्याण्युपादेयानि—

तत्र देशे साधारणे जाङ्गले वा यथाकालं क्षिप्रिरातपपवनसलिलसेविते समे शुचौ प्रदक्षिणोदके इमशान-चैत्य-देवयजनागार-सभा-श्वश्राराम-वल्मीकोपरविरहिते कुशरोहिषास्तीर्णे स्निग्ध-कृष्णमधुरमृत्तिके सुवर्णवर्णमधुरमृत्तिके वा मृदा-वफालकृष्टेऽनुपहतेऽन्यैर्बलवत्तरैर्दुर्मैरौषधानि जातानि प्रशस्यन्ते ॥९॥

तत्र तेओभां इनमें, साधारणे साधारण्य साधारण, जाङ्गले वा डे अंगल या जाङ्गल, देशे देशमां देशमें, यथाकालम् यथासमय यथासमय, क्षिप्रिर- टाढ शीत, वातप- तपडा धूप, पवन- पवन वायु, सलिल- अने १२साक्षी और वर्षासे, सेविते सेवायेष्टा सेवित, समे शुचौ सपाट पवित्र समतल पवित्र, प्रदक्षिणोदके अमछी भाणु अक्षाक्षयवाणा दाहिनी और जकाशयवाले, इमशान- १२शान इमशान, चैत्य- चैत्य चैत्य, देव-यजन-अगार-

देवालय मन्त्रशाला देवालय, मन्त्रशाला, सभा- सभा- स्थान सभा, श्वश्र- भासा गर्त, शाराम- अमीथा वगीचा, वल्मीक- राक्षस वल्मीक, ऊपर- तथा भारी अभिनय और ऊपर भूमिसे, विरहिते रक्षित रक्षित, कुश-रोहिष- कुश अने रोहिष आसथी कुश और रोहिष वापसे, आस्तीर्णे आच्छादित भरे, स्निग्ध- स्निग्ध स्निग्ध, कृष्ण- काली काली, मधुर- तथा मधुर तथा मधुर, मृत्तिके माटी- वाणा मिट्टीवाले, सुवर्णवर्ण- अथवा सोना अथवा वलुंवाणा सुवर्ण जैसे वर्णवाले, मधुर तथा मधुर मधुर, मृत्तिके वा माटीवाणा मिट्टीवाले, मृदौ मृदु कोमल, वफालकृष्टे ढण्णी नहि भेद्येष्टा बिना ढल चले, अन्यैः अने भीष्मां और अन्य, बलवत्तरै अधिक प्रभण अधिक बलवान, दुर्मैः वृक्ष वृक्षोंसे, अनुपहते उपधात नहि पायेष्टा स्थानमां उपधानको नहीं प्राप्त हुए स्थानमें, जातानि उत्पन्न यथेष्ट उत्पन्न, औषधानि औषधी औषधियां, प्रशस्यन्ते श्रेष्ठ छे प्रशस्त हैं ॥ ९ ॥

9. Of them the herbs that grow in the ordinary or jangala land, which are subject to normal seasonal cold, sun, wind and rain; which have grown on level and clean ground with water on its right side; where the burial ground, sacred tombs, places of sacrifice to gods, place of assembly, pits, pleasure gardens, and ant-hills and saline soils are not in the neighbourhood; where the sacred and the ginger grasses grow, whose earth is black and sweet or golden and sweet; which has not been ploughed up or in any way damaged or devastated by strong trees growing over it the drugs growing in such land are commended as good.

औषधद्रव्याहरणविधिः —

तत्र यानि कालजातान्युपागतसंपूर्णग्रामाण- रसवीर्य-गन्धानि कालातपाग्निसलिलपवनजन्तु-

१. प्रदक्षिणोदके—प्रदक्षिणे (ख)

११. सुवर्णवर्णमधुरमृत्तिके—सुवर्णवर्णमृत्तिके (ब.)

१०. कालजातान्युपागत—कालजातान्यागत (ब.)



મિરનુપહતગન્ધ-વર્ણ-રસ-સ્પર્શ-પ્રમાવાણિ પ્રત્ય-  
ગ્રાણ્યુદીચ્યાં દિગ્નિ સ્થિતાનિ; તેષાં શાસ્ત્રાપલા-  
શમચિરપ્રકૃદં વર્ષાવસન્તયોર્ગ્રાહ્યં, ગ્રીષ્મે મૂલાનિ  
શિશિરે વા શીર્ષપ્રકૃદવર્ણાનાં, શરદિ ત્વક્કન્દ-  
ક્ષીરાણિ, હેમન્તે સારાણિ, યથર્તુ પુષ્પફલમિતિ;  
મજ્જલાચારઃ કલ્યાણવૃત્તઃ શુચિઃ શુક્લવાસાઃ  
સંપૂજ્ય દેવતા અશ્વિનૌ ગોબ્રાહ્મણાંશ્ચ કૃતોપવાસઃ  
પ્રાજ્ઞુલ્લ ડદ સ્વો વા ગૃહ્ણીયાત્ ॥૧૦॥

મજ્જલાચારઃ મંગળ આચારવાળા મંગલ આચાર-  
વાળા, કલ્યાણવૃત્તઃ તથા સદાચરણવાળા મનુષ્યે તથા  
સદાચરણવાળા મનુષ્ય, શુચિઃ પવિત્ર થઈ પવિત્ર હોકર,  
શુક્લવાસાઃ સફેદ વસ્ત્ર પહેરી શ્વેત વસ્ત્ર ધારણ કરકે,  
કૃતોપવાસઃ ઉપવાસ કરી ઉપવાસ કર, દેવતાઃ દેવતા  
દેવતા, અશ્વિનૌ અશ્વિનીકુમાર અશ્વિનીકુમાર, ગો-બ્રાહ્મ-  
ણાન્ ચ ગાય અને બ્રાહ્મણની ગાય બૌર બ્રાહ્મણોના,  
સંપૂજ્ય પૂજા કરી પૂજન કરકે, પ્રાજ્ઞુલ્લઃ પૂર્વ તરફ  
મુખ રાખી પૂર્વામુખ, ડદ્મુલ્લઃ કે ઉત્તર તરફ  
મુખ રાખી અથવા ઉત્તરામુખ રહકર, ગૃહ્ણીયાત્  
ઔષધો ગ્રહણ કરવા ઔષધ પ્રહણ કરે, તત્ર તેઓમાં  
ઉત્તરમાં, ડદ્મીયામ્ ઉત્તર ઉત્તર, દિગ્નિ દિશામાં દિશામાં,  
સ્થિતાનિ રહેલી રહી હુઈ, વાનિ ને ઔષધિઓ જો  
ઔષધિયાં, કાલજાતાનિ મથાકાળે ઉગેલ હોય  
સમય પર ઉત્પન્ન હુઈ હોં, ઉપાગત-સંપૂર્ણ-પ્રમાણ-સંપૂર્ણ  
પ્રમાણમાં આવેલાં સંપૂર્ણ પ્રમાણમાં આવે હુઈ, રસ-વીર્ય  
રસ, વીર્ય રસ, વીર્ય, ગન્ધાનિ અને ગન્ધથી પરિપૂર્ણ  
બૌર ગન્ધથી પરિપૂર્ણ, કાલ-જાત-પ-સમય તાપ સમય  
પૂર્વ, અગ્નિ-અગ્નિ આગ, સલિલ પાણી જલ, પવન-  
પવન વાયુ, જન્તુમિઃ કે જન્તુઓથી બૌર  
જન્તુઓં, જનુપહત-નષ્ટ નહિ થયેલા નષ્ટ નહીં હુઈ,  
ગન્ધ-વર્ણ-ગન્ધ, વર્ણ, રસ-સ્પર્શ-રસ,  
સ્પર્શ રસ, સ્પર્શ, પ્રમાવાણિ અને પ્રમાવવાળી બૌર  
પ્રમાવવાળી, પ્રત્યગ્રાણિ તથા તાણ હોય તથા નવીન હોં,  
તેવામ્ તેઓનાં ઉત્તર, અશિરપ્રકૃદન્ નવાં ફૂટેલાં  
નવીન ઉત્પન્ન, શાસ્ત્રાપલાશ્ચ શાસ્ત્ર તથા પાન શાસ્ત્ર

તથા પત્તોકો, વર્ષા-વર્ષા વર્ષા, વસન્તયોઃ અને વસન્તમાં  
અને વસન્તમાં, ગ્રામ્ય દેવાં પ્રહણ કરના વાહિય, શીર્ષ-  
ખરી પડેલાં પુરાને પત્તોકો ગિર જાનેવર, પ્રકૃદ-નવાં  
આવેલાં નવે આવે હુઈ, પર્ણાનામ્ પાકડાવાળી તે  
ઔષધિઓનાં પત્તોવાળી અને ઔષધિઓં, મૂલાનિ મૂળ  
મૂલકો, ગ્રીષ્મે ગ્રીષ્મમાં ગ્રીષ્મમાં, શિશિરે તથા શશિરમાં  
દેવાં તથા શિશિરમાં લેના વાહિય, ત્વક્કન્દક્ષીરાણિ  
ખાલ, કન્દ અને દૂધ છાલ, કન્દ બૌર દૂધકો, જરદિ  
શરદ્ઋતુમાં દેવાં શરદ્માં લેના વાહિય, સારાણિ સારો  
સારોકો હેમન્તે હેમન્તમાં લેના હેમન્તમાં લેના વાહિય.  
પુષ્પફલમ્ અને ફૂલ તથા ફળને પુષ્પ બૌર ફળોંકો,  
યથર્તુ ઋતુ પ્રમણે ઋતુકે અનુસાર, ગૃહ્ણીયાત્ દેવાં  
પ્રહણ કરના વાહિય ॥ ૧૦ ॥

૧૦. Of them, such drugs should be  
culled as were put forth in their proper  
season and have attained their fullness  
of growth, taste, potency and smell,  
whose smell color, taste, touch and  
specific action have not been impaired  
by season, sunheat, fire, water, wind  
or insects and which are fully mature  
and growing on the northern side. Of  
them again the branches and leaves  
which have recently grown should be  
gathered between the rainy season and  
the spring. The roots should be ga-  
thered in the summer or in the winter,  
from trees whose ripened leaves have  
been shed; the bark, bulb and milk  
of plants in the autumn and the pith  
at the end of autumn, (Hemantha) and  
the flowers and fruit in their proper  
season. After performing auspicious  
rites, living a pure life, having per-  
formed the purificatory bath, wearing  
white raiment, having worshipped the  
gods, the Aswin twins, the cows and

૧૦. પ્રત્યગ્રાણ્યુદીચ્યાં દિગ્નિસ્થિતાનિ તેવામ્-પ્રત્યગ્રાણિ તેવામ્ (અ.)

,, દેવતા અશ્વિનૌ-દેવતાપગ્નિમશ્વિનૌ (ક. વ)

brahmanas, having observed a fast and facing the east or the north, one should cull these drugs.

औषधद्रव्याणि कथं स्वाप्यानि—

गृहीत्वा चानुरूपगुणवद्भाजनस्थान्यागारेषु प्रागुदग्द्वारेषु निवातप्रवातैकदेशेषु नित्यपुष्पोपहारबलिकर्मवत्सु, अग्नि-सलिलोपसेव-धूम-रजो-मूषक-चतुष्पदामनमिगमनीयानि स्वच्छज्ञानि शिक्येष्वसज्य स्थापयेत् ॥११॥

गृहीत्वा च औषधिभेदेन ६४ तैः औषधियोंको लाकर उनको, प्राक्-उदक्- पूर्व के उत्तर भाग पूर्व या उत्तरकी ओर, द्वारेषु आरक्षणाणां द्वारवाले निवात-प्रवात-एकदेशेषु वायुभी रहित परंतु ओके आगम सांरी रीते वाता वायुवाणां वायुसे रहित परन्तु एक भागमें अच्छी तरह बहते हुए वायुवाले, नित्य-पुष्प-उपहार- न्यां रोज पुष्प उपहार प्रतिदिन पुष्पोपहार, बलिकर्मवत्सु तथा अलिकर्म यथा होय औषध तथा बलिकर्मसे सम्पन्न, आगारेषु धरमा घरमें, अनुरूप-गुणवत्- योज्य गुणोवाणां योग्य गुणोंवाले, भाजनस्थानि पात्रमां राप्ती पात्रमें रखकर, स्वच्छज्ञानि अरात्रदंडीने भली प्रकार ढाँककर, अग्नि-सलिल-अग्नि, ७६ अग्नि, जल, उपसेव- पृथ्वीनी अग्नी भूगर्भ, धूम-रजः- धूमाडे, धूण धूम, धूल, मूषक- ईदर चूहे, चतुष्पदाम् अने योपमां प्राप्ती और पशुजों, अनमिगमनीयानि न पहेली शके औषधी रीते न पहुँच सकें इस तरह, शिक्येषु शीतलां छिकोंमें, नासज्य ६४ टिकावीने लटकाकर, स्थापयेत् रात्र्यां रखे ॥ ११ ॥

11. Having thus been culled and placed in suitable vessels, they should be stored in houses with doors opening to the east or the north, in a room which is windless except for one window, in

११. चानुरूपगुणवद्भाजनस्थान्यागारेषु-चानुरूपगुणवद्भाजने-संस्थाप्यागारेषु (ब. व.)

„ मूषक-मूषिक (व.)

„ शिक्येष्वसज्य-शिक्ये च स्वासज्य (इ.)

a house where every day flower-offering and sacrifice are observed and which is proof against fire water, moisture, smoke, dust mice and quadrupeds. The vessel should be well-covered and kept securely tied in swings.

वसन- विरेचन- द्रव्याणां भावनार्थमालोडनार्थं च द्रव्याणि—

तानि च यथादोषं प्रयुजीत सुरा-सौवीरक-तुषोदक-मैरेय-मेदक-धान्याम्ल-फलाम्ल दध्यम्लादि-मिवांते, मृद्वीकामलक-मधु-मधुक-परूषक-फाणित-क्षीरादिभिः पित्ते, स्लेष्मणि तु मधु-मूत्र-कषायादिभिर्भाविताम्यालोडितानि च; इत्युद्देशः ।

तानि च तैः औषधेभ्यः इनका, वाते वायुमां वातमें, सुरा-सौवीरक- सुरा, सौवीरक सुरा, सौवीरक, तुषोदक- तुषोदक, तुषोदक, मैरेय- मैरेय मैरेय, मेदक- मेदक मेदक, धान्याम्ल- डां धान्याम्ल, फलाम्ल- सुरेध फलाम्ल, दध्यम्ल- दध्यम्ल दध्यम्ल, आदिभिः वजेरे वडे आदिके साथ, पित्ते पित्तमां पित्तमें, मृद्वीका- दक्ष द्राक्षा, कामलक- आभणां जांबवा मधु-मधुक- मध, मृद्वीकामलक मधु, मुलहठी परूषक- दक्ष द्राक्षा फालसा, फाणित- औषधी रात्र रात्र, क्षीरादिभिः अने दूधवडे दूध आदिके साथ, स्लेष्मणि अने कडमां और कर्ममें. मधु-मूत्र- मध, मूत्र मधु मूत्र, कषाय- अने कषाय और कषाय, आदिभिः आदि वडे आदिसे, भावितानि भावना आपी भावना देकर, आलोडितानि अने औषधेभ्यः औषधी और इनमें जोड़कर, यथादोषम् यथादोष दोषानुसार, प्रयुजीत उपयोक्तुं कर्तव्य प्रयोग करे, इति उद्देशः आ सस्त्रेभ्यः कश्चुं ते नह संक्षेपमें कहा है;

12(1). These should be administered according to the morbid humor. They should be given with Sura, Sauveeraka, Tushodaka, Maireya and Medaka wines.

१२. धान्याम्ल दध्यम्ल दध्यम्लादिभिर्विवांते-धान्याम्ल दध्यम्ल दध्यम्ल-मिवांते (व.)

„ मृद्वीकामलकमधुमधुकपरूषकफाणितक्षीरादिभिः मृद्वीका - मधुमधुकफाणितक्षीरादिभिः (व.)

sour-gruel, sour fruit-juice, sour curds etc in condition of vata; in condition of pitta with grape, emblic myrobalans, honey, liquorice, sweet falsah, liquid gur milk etc; and in condition of kapha, they should be impregnated and mixed with honey, cow's urine and decoctions curative of kapha etc. Thus, has the subject been described, in brief.

तं विस्तरेण द्रव्य-देह-दोष-सात्म्यादीनि प्रवि-  
भज्य व्याख्यास्यामः ॥१२॥

द्रव्य-देह- ६०५, देह द्रव्य, देह, दोष- दोष दोष,  
सात्म्यादीनि अने सात्म्यादीना और सात्म्यआदिके,  
प्रविभज्य विभाज करीने ते ६१२ विभाग कर उसके द्वारा,  
तम् ते विषयत्वं उस विषयका, विस्तरेण विस्तारथी  
विस्तारसे, व्याख्यास्यामः व्याख्यान करथुं व्याख्यान  
करेमे ॥ १२ ॥

12. The same, shall we now describe, in extenso under the divisions of drugs, constitution, morbidity, homology etc.

वमनद्रव्याणां मदनफलस्य श्रेष्ठत्वम्—

वमनद्रव्याणां मदनफलानि श्रेष्ठतमान्याचक्षते,  
अनपायित्वात् । तानि वसन्तग्रीष्मयोरन्तरे पुण्या-  
श्वयुग्म्यां मृगशिरसा वा गृहीयान्मैत्रे मुहूर्ते ।

वमनद्रव्याणां वमन ६०५।३। वमन द्रव्योंमें,  
मदनफलानि भी०६०५।३। मेंनफलको, अनपायित्वात्  
६०५।३।३ न होवाथी अपकार नहीं करनेसे, श्रेष्ठतमानि  
औथी श्रेष्ठ सबसे श्रेष्ठ, आचक्षते उहे छे कहते हैं,

१२. देह दोष-सात्म्यादीनि प्रविभज्य—देह-दोष-सात्म्यादीन्  
वसन्तादींश्च प्रविभज्य (घ. ष. क.)

१३. वसन्तग्रीष्मयोरन्तरे पुण्याश्वयुग्म्यां मृगशिरसा वा—वसन्त-  
ग्रीष्मयोरन्तरा पुण्याश्वयुजि मृगशिरसि वा (घ. क.)

१४. मुहूर्ते—मुहूर्ते करणे च (घ. ष.)

तानि तेथीने इनको, वसन्तग्रीष्मयोः वसंत अने  
ग्रीष्मना वसंत और ग्रीष्मके, अन्तरे मध्यमां सन्धि-  
कालमें, पुण्याश्वयुग्म्याम् पुण्य, अश्विनी पुण्य, अश्विनी,  
मृगशिरसा वा अथवा मृगशीर्षं नक्षत्र अथवा मृगशीर्ष  
नक्षत्रमें, मैत्रेमुहूर्ते मैत्रेमुहूर्तम् मैत्रेमुहूर्तमें, गृहीयाव  
देवां ग्रहण करना चाहिए ।

13-(1). The emetic nut is regarded as the best of emetic drugs as its administration is attended with no risks. It should be culled between the spring and the summer under the constellation of Pushya, Asvini twins, or the Mrigasiras during the auspicious hour of the Maitreya Muhurta.

मजनफलानां ग्रहणस्थापनविधिः—

यानि पक्कान्यकाणाम्यहरितानि पाण्डुम्यक्रि-  
मीण्यपूतीन्यजन्तुजग्धान्यहस्त्वानि; तानि प्रमृज्य,  
कुशपुटे बद्धा, गोमयेनालिप्य, यवतु(बु)षमाषशा-  
लिकुलस्थमुद्रपलानामन्यतमे निदध्यादष्टरात्रम् ।

यानि ७ जो, पक्कानि पाकां पके हुए, अकाणानि  
छिद्र विनानां छिद्ररहित, अहरितानि हरीया वसुंधी  
रहित हरे वर्णसे रहित, पाण्डुनि पीला पाण्डुवर्ण,  
अक्रीमीणि अन्तुविनानां कृमिरहित, अपूतीनि दुर्गंध-  
विनानां दुर्गन्धरहित, अजन्तुजग्धानि जन्तुओंसे न  
आधेया जन्तुओंसे न खाये हुए, अहस्त्वानि अने भोटा

१३. यानि पक्कान्यकाणाम्यहरितानि—यानि पक्कानि हरितानि

(घ. ष.)

अपूतीनि—अकृशानि अपूतीनि (घ.)

अहस्त्वानि—अकृशानि अहस्त्वानि (घ.)

प्रमृज्य कुशपुटे बद्धा—प्रमृज्य कुशमूलैर्बद्धा (घ. क.)

गोमयेनालिप्य—गोमयेनानुलिप्य (घ.)

यवतुषमाषशालिकुलस्थमुद्रपलानाम्—यवतुषमाषशालिकुलि-  
कुलस्थमुद्रपलानाम् (घ. क.)

शालिकुलस्थ—शालिकुलिस्थकुलस्थ (घ.)

मुद्रपलानाम्—मुद्रपर्णानाम् (घ.)

—मुद्रपर्णानाम् (घ. क.)

हेम और नके हों, तालि ते भी दगने उन मैन कजोंक, मसृज्ज साद डरी साफ करके, कुशपुटे कुशना पुटभां कुशके पुटमें, बद्धवा आधी बांधकर, गोमयेन आयना अक्षुभी गोबरका, आलिप्य धीधी लेप काके, यव-तु(ड)व-वचनां इतनां जौतुप, माष- अडे उद्धर आलि- शाब्बियेभा शाब्बिवाडल, कुलथ-मुद्र- डगधी के भय ओओभांना कुलथ वा संग इनमेंमे, पलानान् अम्बतमे डेधं ओडना डगधामां किसी एकके ढेरमें, अहरात्रम् आडे द्विस आठ रात तक, निद्रयान राभवां रख देवे।

13(2). Such of the fruits as are ripe, as are not perforated, as are not green but are yellowish, as are neither touched by worms, nor rotten nor bitten by insects nor small in size should be gathered, cleansed and bundled up in sacred grass, smeared with cow-dung and kept for eight nights in a heap of barley husk, black-gram, rice, horse-gram or green-gram.

अत ऊर्ध्वं मृदूभूतानि मध्विष्टगन्धान्युद्धृत्य शोषयेत् । सुशुष्काणां फलपिप्पलीकदरेत् । तासां घृतदक्षिमधुपल्लविमृदितानां पुनः शुष्काणां नवं कलशं सुप्रमृष्टवालुकमरजस्कमाकण्ठं पूरयित्वा स्ववच्छन्नं खनुगुप्तं शिक्येत्वासज्य सम्यक् स्थापयेत् ॥१३॥

१३. मृदूभूतानि-मृदूभूतानि तानि व )

.. फलपिप्पलीकदरेत्-पलानां पिप्पलीकदरेत् (ब. क)

.. शिक्येत्वासज्य-शिक्ये वासज्य (ग.)

.. -शिक्ये स्वासज्य (द.)

.. -शिक्येस्ववसज्य (ब. क.)

.. सम्यक् स्थापयेत्-स्थापयेत् (ब.)

अतः ऊर्ध्वम् त्वाराः इत्येके पीठे मृदूभूतानि नरभ मृदू, मध्विष्टगन्धानि अने भधना जेनी प्रिम वास-वायां अये मधुर इष्ट गन्धयुक्त होने पर, उद्धृत्य डाढीने निःशालकर, शोषयेत् सूखवनां सूखा ले, सुशुष्काणाम् अराअर सूकायेवां भीढगभांभी मली प्रकार सूखे मैन-फलोंमेंसे, फलपिप्पलीः पीपर बीजोंको, उद्धरेत् डाढी देवां निकाल ले, तासाम् तेओने इनको, घृत-दक्षि-धी, धीं धी, दही, मधु- भध मधु. पल्ल- तथा तल्लना डेडभां तथा तिलकल्कके साथ, विमृदितानाम् वाटी पीसर, पुनः डरीभी पुनः, शुष्काणाम् सूखी सूखाकर, सुप्रमृष्ट-वालुकम् रेतीने वज्रभी सारी रीते लूनी नाभी वालुकाको अच्छी प्रकार पोंछ डालकर, अरजस्कम् धूग वजरना धूलरहित, नवम् नवा नये, कलशम् धूपने घरेको, आकण्ठम् अणा सुधी गलेतक, पूरयित्वा अरी दधि भरकर, स्ववच्छन्नम् तेने अराअर डाढी अच्छी प्रकार ढांककर, खनुगुप्तम् सुरक्षित रीते सुरक्षित रूपमें, शिक्येवु शीकःभां छीकों पर, आसज्य लटकावी लटकाकर, सम्यक् संभक्षणपूर्वक मली प्रकार, स्थापयेत् भूकये रख देवे ॥ १३ ॥

13. Afterwards, when they have become soft sweet and pleasant-smelling, they should be taken out and dried. When they are well dried, their seeds should be taken out. They should be crushed with ghee, curds, honey and til-paste and dried again. Then they should be filled to the neck in a new pot which is clean and free from sand or dust, well closed with a lid, well protected and placed securely in a swing.

वसनौषधपानविधिः —

अथच्छर्दनीयमातुरं द्रव्यं ज्यहं वा ज्येह-खेदोपपन्नं श्वच्छर्दयितव्यमिति ग्राम्यानुपौषक-मांसरस-सीर-दधि-माष-तिल-शाकादिभिः समु-

१४. श्वच्छर्दयितव्यमिति-त्र चर्दयेदिति (ब.)

स्फेक्षितस्फेष्माणं व्युषितं जीर्णाहारं पूर्वाह्नं  
कृतबलिहोममङ्गलप्रायश्चित्तं निरस्यमनतिस्त्रिगुणं  
यवाग्वा घृतमात्रां पीतवन्तं, तासां फलपिप्पली-  
नामन्तर्नखमुष्टिं यावद्वा साधु मन्येत जर्जरीकृत्य  
यष्टिमधुकषायेण कोविदार-कर्बुदार-नीप-विदुल-  
बिम्बी-शणपुष्पी-सदापुष्पी-प्रत्यक्पुष्पी-कषाया-  
णामन्यतमेन वा रात्रिमुषितं विमृष्टं पूतं मधु-  
सैन्धवयुक्तं सुखोष्णं कृत्वा पूर्णं शरावं मन्त्रेणा-  
नेनाभिमन्त्रयेत्—

‘ॐ ब्रह्मदक्षाश्विखट्वेन्द्रभूचन्द्रार्कानिलानलाः ।

ऋषयः सौषधिग्रामा भूतसङ्गाश्च पान्तु ते ॥

रसायनमिवर्षीणां देवानाममृतं यथा ।

सुधेवोत्तमनागानां भैषज्यमिदमस्तु ते ॥’

इत्येवमभिमन्त्रयोदङ्मुखं प्राङ्मुखं वाऽऽतुरं  
पाययेच्छ्लेष्मज्वरगुल्मप्रतिश्यायार्तं विशेषेण पुनः  
पुनरापिन्तागमनात्, तेन साधु व्रमति;

अथ द्वे अव, द्वयद्वम् ये द्विद्व दो दिन, त्र्यहम् वा  
के त्रयु द्विद्व या तीन दिन, चोहस्वेद स्वेदन अने स्वेदन  
स्नेहन और स्वेदन, उपपन्नम् करावी देकर, छर्दनीयम्  
वमनने योग्य वमन कराने योग्य, आतुरम् इररीने  
रोगीको, श्वः डावे कल, छर्दयितव्यम् इति वमन  
करावतुं छे ऐम निश्चय करी वमन देना चाहिए ऐसा  
निश्चय करके, ग्राम्य-आम्य ग्राम्य, आनूप-जौदक-  
आनूप तथा औदक प्राप्तिओना आनूप तथा औदक  
प्राणियोंके, मांसरस-मांसरसो मांसरस, क्षीर-दधि-दूध,  
दही दूध, दही, माष-तिल-अउद, तक्ष माष, तिल, आका-  
दिभिः तेभ्यः शाक वजरेथी एवं शाक आदिसे, समुच्छे-  
क्षित-सारी रीते जलार नीडणवा तैयार भयेला भली  
प्रकार बाहर निकलनेकी ओर प्रवृत्त, स्फेष्माणम् उडवाणा  
कफवाले, जीर्णाहारम् अने जेने। पूर्व द्विद्वसने आहार  
पछी गये छे ऐवा रोगीने और जिसका प्रथम दिनका  
आहार जीर्ण हो गया है ऐसे रोगीको, व्युषितम् रात्रि  
वीत्या पछी रात्रि व्यतीत होनेके बाद, पूर्वाह्ने द्विद्वसना  
पूर्व आभर्मा पूर्वाह्ने, कृतबलि-होम-अवि-होम बलि-  
होम, मङ्गल-भोगल मंगल, प्रायश्चित्तम् तेभ्यः प्राय-

श्चित एवं प्रायश्चित्त कराके, निरस्यम् भूष्या विना  
भोजन किये, अनतिस्त्रिगुणम् तथा अति स्निग्ध नहि  
ऐवा तेने अतिस्निग्ध नहीं ऐसे उसको, यवाग्वा यवागू  
साथे यवागूके साथ, घृतमात्राम् धीनी मात्रा घीकी  
मात्रा, पीतवन्तम् पित्रापी पिलाकर, तासाम् ते  
उन, फलपिप्पलीनाम् मीठानां पीज मैनफलके  
बीजोंकी, अन्तर्नखमुष्टिम् नख अंदर रहे ऐवी मुठ्ठीमां  
जेटला सभाय तेडला नख न दिखाई दे ऐसी एक मुठ्ठीभर  
मात्राको, यावत् वा साधु मन्येत छे योग्य लाभ तेडली  
मात्राभां अथवा जितनी ठीक समझे उतनी मात्राको, जर्जरी-  
कृत्य आंड़ी कुचलकर, यष्टिमधु-जेटिमधना मुलहरीके,  
कषायेण कषायेथी कषायसे कोविदार-अथवा डांचनार  
अथवा कांचनार, कर्बुदार-डांचनार कांचनार, नीप-कटभ  
कदम्ब, विदुल-समुद्रफल समुद्रफल, बिम्बी-बीबीडी  
कुन्दुरु, शणपुष्पी-धूधरे। वनसन, सदापुष्पी-आउडो  
आक, प्रत्यक्पुष्पी-अने अवेडो ऐओभांभी और  
चिरचिटा इनमेंसे, कषायाणाम् अन्यतमेन वा डाईऐडना  
कषायाभां किसी एकके कायमें, रात्रिम् रात्रि रातभर,  
उषितम् रात्री सिगोंकर, विमृष्टं योगी मलकर,  
पूतम् आणी छानकर, मधुसैन्धव-मध अने सिंधावसु  
मधु और सैन्धानमक, युक्तम् भेजनी मिलाकर, सुखोष्णम्  
नरशेडा थोका गरम, कृत्वा करी करके, पूर्णम् शरावं  
६४ तोला भापने। प्याला भरी तेनुं ६४ तोले मापका  
प्याला भरकर उसका, अनेन आ इस, मन्त्रेण मंत्रधी  
मंत्रसे, अभिमन्त्रयेत् अभिमंत्रयु करतुं अभिमंत्रण  
करे, ॐ ॐ ॐ, ब्रह्म-अक्षर ब्रह्मा, दक्ष-अग्नि-दक्ष,  
अश्विनीकुमार दक्ष, अश्विनीकुमार, रुद्र-इन्द्र-रुद्र, छन्द-  
रुद्र, इन्द्र, सू-चन्द्र-पृथ्वी, अन्द्र पृथ्वी, चन्द्र, अर्क-  
सूर्य सूर्य, अनिल-वायु वायु, अनलाः अग्नि अग्नि;  
औषधिग्रामाः औषधसमूह साथे संपूर्ण औषधिसमूह,  
ऋषयः ऋषिओ ऋषि, भूतसङ्गाः च अने भूतना  
समूहों और भूतसंघ, ते तारी तेरी, पान्तु रक्षा करे। रक्षा  
करे, ऋषीणाम् ऋषिओने भाटे ऋषियोंके लिए, रसा-  
यनम् इव जेम रसायन हितकर छे जिस प्रकार रसायन  
हितकर है, देवानाम् देवाने भाटे देवोंके लिए, असृतम्  
यथा जेम असृत हितकर छे जिस प्रकार असृत हितकर  
है, उत्तमनागानाम् अने उत्तम नागोंने भाटे और

उत्तम नागोंके लिए, सुषा इव ओम् सुधा दितकर ये जिस प्रकार सुषा दितकर है, इदम् तेम् आ उस प्रकार वह, औषध्यम् औषध औषध, ते तारे भाटे तेरे लिए, अस्तु दितकर आये। दितकर हो, इति एवम् ओम् इस प्रकार, अमिमन्त्र्य अभिमन्त्र्य करी अभिमन्त्रण करके, आनुरम् वमनने योग्य रेणुने वमनके योग्य रोगीको, विशेषेण तथा विशेषे करी तथा खासकर, क्लृप्तज्वर- क्लृप्तज्वर कफज्वर, गुल्म- शुष्म गुल्म, प्रतिश्याय- अने प्रतिश्यायना और प्रतिश्यायके आर्तम् दरीने रोगीको, उदङ्मुखम् उत्तमामिमुख उत्तरामिमुख, प्राङ्मुखम् वा के पूर्वामिमुख धिसाडी या पूर्वामिमुख धिठाकर आपित्तागमनात् पित्त आवे त्वां सुधी जब तक पित्त बहार आवे तब तक, पुनः पुनः वारे वारे बार बार, पायवेत् पापुं पिलावे, तेन येनाभी इससे, साधु सारी रीते भली प्रकार, वमति वमन पाय ये वमन होता है;

14.(1). The patient to whom emesis is to be administered should be subjected to the oleation and sudation procedures for two or three days. His kapha should then be roused up the day previous to the administration of emesis, by a diet of the meat-juice of domestic wet-land and aquatic creatures, milk, curds, black gram, til, vegetables etc. In the morning, when the food taken in the previous night has been fully digested and the kapha has been well precipitated after he has performed sacrifice, poured libation of ghee into the fire done auspicious and purificatory rites and has taken a potion of barley soup mixed slightly with unctuous articles along with a dose of ghee and without taking any solid diet, he should be given the emetic potion in the following manner. Take a fistful of

the emetic nut seeds and crushing them as much as is necessary for the purpose, soak them in the decoction of liquorice, variegated mountain ebony, white mountain ebony, Cadamba hijjal tree, scarlet fruit gourd, flax hemp, mudar, or rough chaff tree. It should be kept overnight; it should then be rubbed and strained mixed with honey and rock salt, warmed to a genial degree and filled in a measure pot with the following holy verse chanted over it. Om may Brahma, Daksha Aswins, Rudra, Indra, the earth, the moon, the sun, the gods of the wind, the fire, the sages, the host of drugs and all living creatures protect thee. Even as the vitalizers are to the sages, and ambrosia to the gods, as nectar is to the best of the Nagas, so may this medicine be unto thee. Having thus sanctified the potion, the patient with his face turned to the east or the north must be made to drink again and again and vomit until the bile is seen to come out especially in persons afflicted with fever of the kapha type, gulma or coryza. This is the proper method of the procedure of Emesis

वमनायोगे कर्तव्यम्—

हीनवेगं तु पिप्पल्यामलक-सर्षप-वचाकल्कल-  
ज्जोषोदकैः पुनः पुनः प्रवर्तयेदापित्तदर्शनात् ।  
इत्येष सर्वहृदययोगविधिः ॥१४॥

हीनवेगम् तु ओ वमनने। देज हीन आवे तो  
वमन के हीनवेग होनेपर, आपित्तदर्शनात् पित्त आवे त्वां



सुधी जबतक पिप्पला दर्शन हो तब तक, पिप्पली- पीपर  
पिप्पली, आमलक- आमला आंवला, सर्षप- सरसप  
सरसो, वचाकक- अने वचना उदक और वचाक  
कक, कवण- सैधव सैधानसक, कृष्ण- अने गरम  
और गरम, उदकैः पाण्णीथी पानीसे, पुनः पुनः बारं बार  
बारबार, प्रवर्तयेत् वमनने प्रवृत्त करुं वमनको प्रवृत्त  
करे, एषः आ यह, सर्वैः सुधणी सब, छर्दनयोग- वमन-  
योगनी वमनयोगकी, त्रिभिः विधि छे विधि है ॥ १४ ॥

14. If the urge be weak in the patient, it should be augmented by repeated administration of the paste of long pepper, emblic myrobalan, rape-seed and sweet flag as also rock salt and hot water, until the appearance of bile in the vomit. This is the method of administration of all kinds of emetic preparations.

सर्वेषु वमनयोगेष्वनुक्रमपि मधुसैन्धवं देयम्—

सर्वेषु तु मधुसैन्धवं कफविलयनच्छेदार्थं वम-  
नेषु विदध्यात् । न चोष्णविरोधो मधुनश्छर्दनयो-  
गयुक्तस्य, अविपक्वप्रत्यागमनाद्दोषनिर्हरणाच्च ॥ १५ ॥

सर्वेषु अर्था सब, वमनेषु तु वमने।भा वमनोंमें,  
कक- उरने कफको, विलयन- पिगुणाववा प्रव बनाने,  
छेद-अर्थम् तथा छेदना भाटे तथा छेदन करनेके लिए,  
मधु- सैन्धवम् मधु अने सिंधावु मधु और सैन्धव,  
विदध्यात् वापरना देना चाहिए, छर्दनयोग- भाटे वमन-  
योगभा वमनयोगमें, युक्तस्य आवता मिलाये जाते, मधुनः  
मधुने मधुके, अविपक्व- अल्पपेयुं न बिना परिपाक  
हुए, प्रत्यागमनात् पाण्डुं आववाथी वापिस आजानेसे,  
दोषनिर्हरणाच्च च अने दोषनुं हरणुं करवाथी  
और दोषोंको निकालनेके कारण, उष्णविरोधः च न  
उष्णताथी विरोध नथी उष्णतासे विरोध नहीं होता  
॥ १५ ॥

15. In all emetic preparations, honey and rock-salt must be added

in order to liquefy and segregate the kapha in the body. The honey used in emetic preparations does not become incompatible with heat, as it is thrown out undigested and as it helps the elimination of the morbid matter.

मदनफलातामधौ मात्रायोगाः—

फलपिप्पलीनां द्वौ द्वौ भागौ कोविदारादिकषा-  
येण त्रिःसप्तकृत्वः स्नावयेत्, तेन रसेन तृतीयं भागं  
पिष्ट्वा मात्रां हरीतकीभिर्विभीतकैरामलकैर्वा तुल्यां  
वर्तयेत्, तासामेकां द्वे वा पूर्वोक्तानां कषायाणाम-  
न्यतमस्याञ्जलिमात्रेण विमृष्ट बलवच्छेष्मप्रसेकप्र-  
न्थिज्वरोदराहचिषु पाययेदिति समानं पूर्वेण ॥ १६ ॥

फलपिप्पलीनाम् भीठणनां भीठना सैनफलके बीजके,  
द्वौ द्वौ भे भे दो दो, भागौ भागने भागोंको, कोविदारादि-  
कषायेण उधनार वजेरेमथी डाध औकना उपायथी  
कोविदार आदिमेंसे किसी एकके कषायसे, त्रिःसप्तकृत्वः  
औकनीसवार इक्कीसवार, स्नावयेत् गाणी देवा छान लेवे,  
तेन ते गाणीका उन छाने हुए, रसेन रसथी रससे,  
तृतीयम् त्रीअ बचे हुए तीसरे, मात्राम् भागने भागको,  
पिष्ट्वा पीसीने पीसकर, हरीतकीभिः हरडे हरब,  
विभीतकैः अडेडां बहेडा, आमलकैः वा उ आमला वा  
प्रांवलेके, तुल्याम् गेवडी समान, मात्राम् वर्तयेत्  
गोणी अनावली गोलियां बनाये, तासाम् तेमथी  
इनमेंसे, एकाम् औक एक, द्वे वा उ भे गोणीने या  
दो गोलियोंको, पूर्वोक्तानाञ्च अगाडि उडेस पूर्वोक्त  
कोविदारादि, कषायाणाञ्च उपायोभांना कषायोंमेंसे,  
अन्यतमस्य डाध औक उपायना किसी एक कषायके,  
अञ्जलिमात्रेण आर पक्षमां चार पलमें, विमृष्ट गोणी  
मर्दनकर, बलवत् अथवान बलवान, छेष्मप्रसेक- उध-  
प्रसेक ककसाव प्रन्थि गाड प्रन्थि, ज्वर- नवर नवर,  
उदर उदरेण उदर, अरुचिषु अने अरुचिभा और  
अरुचिमें, पाययेत् इति पानडावली पिलाये, पूर्वेण

१६. द्वौ द्वौ भागौ-द्वौ भागौ (५१)

स्नावयेत्-स्नावयेत् (५१)



स्वेदन, स्वेदन आदि पूर्वं योगना स्नेहन, स्वेदन आदि पूर्वयोगके, समानम् समान करतुं ओषधी समान करना चाहिए ॥ १६ ॥

16. Take two out of three parts of emetic nut seeds and six times the quantity of the decoction of the variegated mountain ebony and other drugs, and soak it and strain twenty-one times. Then take the remaining one part of the emetic nut seeds and reducing it to paste with the above decoction, make boluses of it of the size of the chebulic, beleric or emblic myrobalan. One or two of these pills rubbed well with 16 tolas of the decoction of any of the drugs of the variegated mountain ebony group, should be administered as potion in severe conditions of excessive discharge of mucus from the mouth, tumors, fever, abdominal disease and anorexia. The rest of the procedure is as described before.

मदनफलानां पञ्च पयोमुखा योगाः —

फलपिप्पलीक्षीरं, तेन वा क्षीरयवागूमघोभागे रक्तपित्ते हृद्वाहे च; तज्जस्य वा दध्न उत्तरकं कफ-च्छर्दितमकप्रसेकेषु; तस्य वा पयसः शीतस्य सन्तानिकाञ्जलिं पित्ते प्रकुपिते उरःकण्ठहृदये च तनुकफोपदिग्धे, इति समानं पूर्वेण ॥१७॥

अधोगात्रे नीयेना बाधना अधोगात्री, रक्तपित्ते रक्तपित्तमां रक्तपित्तम्, हृद्वाहे च अने हृदयना हृदमां और हृदयदाहमें, फलपिप्पली- भीदगनां भीदभी क्षीरपाकविधि वउ साधित मैनफलसे क्षीरपाक-विधिद्वारा साधित. क्षीरम् दूध दूध, तेन वा क्षीर-यवागूम अथवा ओ दूधथी साधित यवाभू देवी अथवा

इध दूधन साधित यवागू देवे, कफ-च्छर्दि- उरःकण्ठ- हृद-दीमां कफजन्य समनमें, तमक- तमक- सासमां तमक-वासमें, प्रसेकेषु तथा उरःप्रसेकमां तथा कफप्रसेकमें, तज्जस्य ते दूधना अभावैवा इस दूधकी जमाई, दध्नः दहीनी दहीकी, उत्तरकम् भक्षाधं देवी मलाई देवे, पित्ते पित्त पित्तके, प्रकुपिते प्रदोष- पात्रतां प्रकुपित होने पर, उरःकण्ठहृदये अने छाती, हृद तथा हृदय और उर, कण्ठ और हृदयके, तनुकफ- पातना उरःकी पतने कफसे, उपदिग्धे द्वेपाधं अतां लिप्त होने पर, तस्य ते दूध इस दूधके, शीतस्य शीतल अतां शीतल होजाने पर, पयसः ते दूधनी उस दूधकी, सन्तानिका भक्षाधंभी मलाईकी, अञ्जलिप् इति १६ तोलः मात्रा आपवी १६ तोले मात्राको देवे, पूर्वेण स्नेहन, स्वेदन आदि पूर्वं योगना स्नेहन, स्वेदन आदि पूर्व योगके, समानम् समान करतुं ओषधी समान करना चाहिए ॥ १७ ॥

17. The milk prepared with the emetic nut seeds or the milk-gruel prepared with that milk is beneficial in hemothermia affecting the lower region of the body, and heart-burn. The supernatant part of the curds made from that milk is beneficial in vomiting due to kapha, asthma and ptialism. The top part of the milk prepared with emetic nut and cooled, is beneficial in the provocation of pitta wherein the chest, throat and the stomach are coated with a thin layer of mucus. The rest of the procedure is as described before.

फलपिप्पलीभृतक्षीराध्वनीतमुत्पन्नं फलादि-कस्ककषायसिद्धं कफामिभूताग्निं निशुष्यदेहं च मात्रया पाययेदिति समानं पूर्वेण ॥१८॥

१७. तज्जस-सुवितस्य (इ.)

,, तमकप्रसेकेषु-तमकप्रसेकेषु पूर्ण करतुं (व.)

१८. फलपिप्पलीभृतक्षीराध्वनीतम्-फलपिप्पलीक्षीराध्वनीतम् (व.)

,, निशुष्यदेहं च-निशुष्यदेहं निशुष्यमाणं च (व.)

कफानिभूत-उद्धृथी पराभव पाभेदा कफसे आक्रान्त,  
अग्निम् अग्निवाणाने अग्निवातेको, विशुष्यन्- तथा सुकृता।  
और शुष्क, देहन् शरीरवाणाने शरीरवातेको, फल-  
पिप्पली- भी'ढण'नीं पीज्यथी मैनफलके बीजसे, शृत-  
क्षीरात् साधेव दूधभांथी साधित दूधसे, उत्पन्नम्  
उत्पन्न करेव उत्पन्न किया हुआ, नवनीतम् भा'प्यन्ते  
मक्खन, फलादि- भी'ढण' नजेरेना मैनफल आदिके,  
कटुक-कषाय- उद्धृथी अने उपायथी कटुक तथा कषायसे,  
सिद्धम् सिद्ध करी सिद्ध करके, मात्रया पाययेत् इति मात्रा-  
सर पापुं मात्रासे पिबाये, पूर्वेण स्नेहन, स्वेदन आदि  
पूर्वयोगना स्नेहन, स्वेदन आदि पूर्वयोगके, समानम्  
समान करवुं ओछ'ओ समान करना चाहिए ॥ १८ ॥

18. The fresh butter formed from milk prepared with emetic nut seeds, should be prepared with the decoction and paste of the drugs of the emetic nut group, and be given as potion in conditions of the gastric fire being over-powered by kapha, and in dehydrated condition of the body. The rest of the procedure is as described before.

मदनफलानामेको त्रैययोगः —

फलपिप्पलीनां फलादिकषायै त्रिःसप्तकृत्वः  
सुपरिभाषितेन पुष्परजःप्रकाशेन चूर्णेन सरसि  
संजातं बृहत्सरोरुहं सायाह्नेऽवचूर्णयेत्, तद्वाग्नि-  
व्युषितं प्रभाते पुनरवचूर्णितमुद्धृत्य हरिद्राकृसर-  
क्षीर्यवागूनामन्यतमं सैन्धवगुडफाणितयुक्तमा-  
कण्ठं पीतवन्तमाम्रापयेत् सुकुमारमुत्क्लिष्टपित्तक-  
फमौषधद्वेषिणमिति समानं पूर्वेण ॥ १९ ॥

फलादि- भी'ढण' नजेरेना मैनफलआदिके, कषायेण  
उपायथी कषायसे, त्रिःसप्तकृत्वः ओछ'नीसवार इक्कीसवार,  
सुपरिभाषितेन सायाह्ने पेठे भावना आपेक्षा अच्छी  
प्रकार भावना दिये हुए, फलपिप्पलीनाम् भी'ढण'नीं पीज्यन्ता  
मैनफलके बीजके, पुष्परजःप्रकाशेन पराग जेवा थारीक  
पुष्पधूलिके समान, चूर्णेन चूर्णने चूर्णको, सायाह्ने साय-  
कागे सायंकाल, सरसि सरोवरभां ताणवमें, संजातम्

उत्पन्न यथेक्षा उत्पन्न हुए, बृहत्सरोरुहम् मोटा उमण  
पर बड़े कमल वर, अवचूर्णयेत् छांटी देवुं छिड़क देवे,  
प्रभाते सवार प्रातःकाल, पुनः वणी फिर, रात्रिदु-  
वितञ्ज आभी रात उमण पर पडी रहेवा रातभर  
कमल पर पड़े रहे, अवचूर्णितम् छांटेव छिड़के  
हुए, तत् ते चूर्णने उस चूर्णको, उद्धृत्य उतारी उद्ध  
उतारकर, हरिद्रा- ढण'हर हल्दी, कृसर- कुसर कृपरा,  
क्षीर्यवागूनाम् दूध अने यवागू ओओभांथी दूध और  
यवागू इनमेंसे, अन्यतमम् ऊर्ध्व ओऊने किसी एकको, सैन्धव-  
गुड- सिंधाधुलु, गोण सैन्धव, गुड, फाणित-युक्तम् अने  
क्षुभित साधे भेणवी और फाणितसे मिलाकर, आकण्ठम्  
ओछे गणा सुधी जिसने गले तक, पीतवन्तम् पीधुं  
होय ओवा पिया हो ऐसे, सुकुमारम् सुकोमल नालुक  
प्रकृतिवाले, उत्क्लिष्ट- तेमन् वृद्धि पाभेदा एवं बढ़े हुए,  
पित्तकफम् पित्त तथा उद्धवाणा पित्त तथा कफवाले,  
औषधद्वेषिणम् अने औषधने द्वेष करनेवाले रोगीको, आम्रापयेत् इति  
संधाउपुं सुचावे, पूर्वेण स्नेहन, स्वेदन आदि पूर्व  
योगना स्नेहन, स्वेदन आदि पूर्वयोगके, समानम् समान  
करवुं ओछ'ओ समान करना चाहिए ॥ १९ ॥

19. The emetic nut should be im-  
pregnated twenty-one times in the  
decoction of the drugs of the emetic  
nut group and then reduced to a fine  
powder resembling the pollen of flo-  
wers. This powder should be sprinkled  
on a large lotus growing in a lake in  
the evening; next morning, this powder  
should be gathered and given as snuff  
to a delicate person who is afflicted  
with the provocation of pitta and kapha  
and who is averse to taking medicines  
orally, after he has been glutted to the  
neck on a diet of either turmeric-  
kedgeriee or milk-gruel mixed with  
rock-salt, gur and treacle. The rest of  
the procedure is as described before.

मदनफलानामेकः फणितयोगः —

फलपिप्पलीनां भङ्गातकविधिपरिष्कृतं खरः पक्त्वा फणितभूतमातन्तुलीभावाद्धेयम्;

फलपिप्पलीनाम् भोढणानां भोजनानां मदनफलके बीजसे, भङ्गातकविधि- भङ्गाभान्नी विधि- मिलावको मांति, परिष्कृतम् परिष्कृत करे- परिष्कृत किये हुए, स्वरसम् स्वरसने स्वरसको, पक्त्वा पकावीने पकाकर, मातन्तुलीभावात् तार नीकवे तार सुधी तार बन जाने पर, फणितभूतम् श्लिष्ट जे- भनावीने राबकी मांति बनाकर, लेहयेत् अदावे चये ।

20-(1). Prepare the expressed juice of the emetic nut seeds in the manner described with regard to the marking nut; cook it till it is reduced to the consistency of treacle when it can form threads, and prepare a linctus out of it.

आतपशुष्कं वा चूर्णीकृतं जीमूतकादिकषायेण पित्ते कफस्थानगते पाययेदिति समानं पूर्वेण ॥२०॥

पित्ते अथवा पित्त अथवा पित्तके, कफस्थानगते कश्चान्नाभां जल कफस्थान पर पहुंच जाने पर, आतपशुष्कं वा भोढणानां भोजने तडाभां सुखी येनकले बीजसे घूमने सुखाकर, चूर्णीकृतम् चूर्ण भनावी चूर्ण करके, जीमूतकादि श्रुत- वजेरेना जीमूतादिके, कषायेण अथवा नी साधे कषाये के साथ, पाययेत् इति पापुं पिळावे, पूर्वेण स्नेहन, स्वेदन आदि पूर्व योगना स्नेहन, स्वेदन आदि पूर्वयोगके, समानम् समान करवुं लेधजे समान करना चाहिए ।

20. The emetic nut seeds dried in the sun and trituated, should be given as potion mixed with the decoction of bristly luffa and other drugs

२०. भङ्गात कविधिपरिष्कृतं-भङ्गात कविधिपरिष्कृतं (व. न. व.)

१. खरसं-रसम् (व.)

२. भावाद्धेयम्-भावाद्धेयं वापयेत् (व.)

३. आतपशुष्कं वा चूर्णीकृतं-शुष्कं वा चूर्णीकृतम् (व.)

४. जीमूतकादिकषायेण-जीमूतकादिकषायेण (व.)

of that group, in condition of morbid pitta lodged in the habitat of kapha. The rest of the procedure is as described before.

मदनफलानां पद्धतियोगः —

फलपिप्पलीचूर्णानि पूर्ववत् फलादीनां षण्णा- अन्यतमकषायघृतानि वर्तिकायाः फलादिकषा- योपसर्जनाः पेया इति समानं पूर्वेण ॥२१॥

फलपिप्पली- भोढणानां भोजनानां मदनफलके बीजसे, चूर्णानि चूर्णने चूर्णको, पूर्ववत् अभाउनी भाइ- पूर्वको मांति, फलादीनाम् भोढण वजेरे ७ द्रव्योनां मदनफल आदि छः द्रव्योंके, षण्णाम् ७ अथवा भां छः कषायेमेंसे, अन्यतम- डोष ऐक किसी एक, कषायघृतानि अथवा परिष्कृत करी कषायसे परिष्कृत कर, वर्तिकायाः वर्तिका भनावी वर्तियां बना के, फलादि- भोढण वजेरेना मदनफलादिके, कषाय- डोष ऐक अथवा नी किसी एक कषायके, उपसर्जनाः साथे साथ मिलाकर, पेयाः इति ते वर्तिका पीवी उन वर्तियोंको पीवे, पूर्वेण स्नेहन, स्वेदन आदि पूर्वयोगना स्नेहन, स्वेदन आदि पूर्वयोगके, समानम् समान करवुं लेधजे समान करना चाहिए ॥ २१ ॥

21. The powder of the emetic nut seeds prepared as already described with the decoction of any one of the six drugs of the emetic nut group, should be rolled into pills. They should be taken as potion mixed with the decoction of the drugs of the emetic nut group. The rest of the procedure is as described before.

मदनफलानां विविधलेहयोगः —

फलपिप्पलीनामारग्वध-वृक्षक-खातुकष्टक- पाटा-पाटला-शार्ङ्ग-मूर्वा-सप्तपर्ण-नकमाल-

२१. फलादीनां-कोविदारदीनां (न. व.)

२. फलादिकषाय-कोविदारकषाय (क. त. व.)

३. फलपिप्पलीनाम्-फलपिप्पलीनाम् (व.)

४. पाटला-पाटलि (व.)

पिचुमर्द-पटोल-सुषवी-गुडूची-सोमवल्क-द्वीपिकानां  
पिप्पली-पिप्पलीमूल-हस्तिपिप्पली-चित्रक-शृङ्गवे-  
राणां चान्यतमकषायेण सिद्धो लेह इति समानं  
पूर्वेण ॥२२॥

फलपिप्पलीनाम् भीठणनां भीष्मने नैनफलके  
बीजोंका, आरग्वथ- गरभाणो अमलतास, वृक्षक- डोडो  
कुषा, स्वादुकण्टक- चिउणो कटाई पाठा- पाडा पादो,  
पाटला- पाडल पाटला, काङ्ग्रेठा- पीलुडी मकोय, मूर्वा-  
भूर्वा मूर्वा, सप्तपर्ण- सातपर्ण सतिवन, नक्तमाल-  
नक्तमाल नक्तमाल, पिचुमर्द- वीभडो नीम, पटोल-  
पटोल परवल, सुषवी- सुषवी सुषवी, गुडूची- गणो  
गिलोय, सोमवल्क- सईं ओर सफेद खैर, द्वीपिकानाम्  
द्वीपिका द्वीपिका, पिप्पली- पीपर पिप्पली, पिप्पलीमूल-  
पीपरमीणना गणोडा पिप्पलीमूल, हस्तिपिप्पली-  
गणपीपर गजपिप्पली, चित्रक- चित्रक चित्रक,  
शृङ्गवेराणाम् च अने सुंठ और सोंठ, अन्यतम-  
ओ द्रव्योभांभी डोई ओडना इन द्रव्योंमेंसे किसी एकके,  
कषायेण कषायथी कषायसे, सिद्धः लेहः इति सिद्ध  
करेखा अपरेह रेभीने अटाडो सिद्ध किया अवलेह  
रोगीको चटाना चाहिए, पूर्वेण स्नेहन, स्नेहन आदि  
पूर्वयोगना स्नेहन, स्वेदन आदि पूर्वयोगके, समानम्  
समान करवुं ओईओ समान करना चाहिए ॥ २२ ॥

22. The seeds of emetic nut may  
be made into a linctus with the decoction  
of any of these drugs viz., pur-  
ging cassia, kurchi, thorny staff tree,  
false pareira brava, trumpet flower,  
black nightshade, trilobed virgin's  
bower, dita bark tree, indian beech,  
neem, bitter gourd, black cumin,  
guduch, gum arabic tree, yellow-berried  
night-shade, long pepper, roots of  
long pepper, elephant pepper, white flo-  
wered leadwort and dry ginger. The rest  
of the procedure is as described before.

मदनफलानां विंशतिरुत्कारिकाजोगाः, मोदकजोगाश्च—

फलपिप्पलीज्वला-हरेणुका-शतपुष्पा-कुस्तुम्बुक-

तगर-कुष्ठ-त्वक्-चोरक-मरुवकागुरु-गुग्गुल्वेल-  
वालुक-श्रीवेष्टक-परिपेलव-भांसी-शैलेयक-स्थौण्यक-  
सरल-पारावतपद्मशोकरोहिणीनां विंशतेरन्यत-  
मस्य कषायेण साधितोत्कारिका उत्कारिकाकल्पेन,  
मोदका वा मोदककल्पेन, यथादोषरोगभक्ति  
प्रयोज्या इति समानं पूर्वेण ॥२३॥

फलपिप्पलीषु भीठणनां भीष्मनां नैनफलके  
बीजमें, एला- ओडली इलायची, हरेणुका- हरेणुका  
हरेणुका, शतपुष्पा- शतपुष्पा शतपुष्पा, कुस्तुम्बुक-  
डोईभीर गुमा, तगर- तगर तगर, कुष्ठ- कूठ कूठ,  
त्वक्- त्व दालचीनी, चोरक- चोरक चोरक, मरुवक-  
भरवा मर्वा, अगुरु- अगुरु अगुरु, गुग्गुलु- गुग्गुलु गुग्गुलु,  
एलवालुक- ओडुवा आलवालु, श्रीवेष्टक- गंधविरोज,  
गंधविरोजा, परिपेलव- केवडीमोथा, केवडीमोथा, भांसी-  
भांसीभांसी भांसी, शैलेयक- इगडूडू लरिला, स्थौण्यक-  
थुष्टेर थुनेर, सरल- शीड धूपसरल, पारावतपदी- भाड-  
डांगणु मालकांगनी, अशोक- अशोक अशोक, रोहि-  
णीनाम् कडु कटुकी, विंशतेः ओ वीस द्रव्योभांभी इन  
वीस द्रव्योंमेंसे, अन्यतमस्य डोई ओडना किसी एकके,  
कषायेण कषायथी कषायसे, उत्कारिका उत्कारिकानां  
उत्कारिकाकी, कल्पेन विधिभी विधिसे, साधिता तैयार  
करेह सिद्ध की हुई, उत्कारिका उत्कारिकानो उत्कारिका,  
मोदककल्पेन अथवा लाडुनी विधिथी या लडुकी विधिसे,  
मोदका वा तैयार करेखा लाडुनीना सिद्ध किये हुए  
लडुकीका, यथादोष-रोग-भक्ति दोष, रोग अने रुचिके  
अनुसार दोष रोग और रुचिके अनुसार, प्रयोज्याः  
इति प्रयोग करवो प्रयोग करना चाहिए, पूर्वेण स्नेहन,  
स्वेदन आदि पूर्वयोगना स्नेहन, स्वेदन आदि पूर्व-  
योगके, समानम् समान करवुं ओईओ समान करना  
चाहिए ॥ २३ ॥

23. The Utkarika pan-cake can be  
made in the pharmaceutical method of  
making the pan-cake, with the emetic  
nut seeds and the decoction of any  
one of the following drugs namely—  
cardamom, fragrant piper, dill seed,  
coriander, indian valerian, costus,

cinnamon bark, angelica, sweet marjoran, eagle-wood, guégul, cherry tree, pine resin, rush-nut, nardus, lichen, glory tree, long leaved pine, staff plant and kurroa. Similarly, sweetmeat may be prepared according to the pharmaceutical method of making it. These should be administered to suit the degree of morbidity, disease and proclivities of the patient. The rest of the procedure is as described before.

षोडश शङ्कुली रूपयोगः :-

फलपिप्पली-खरसक-कायपरिम-वितानि तिल-  
शालितण्डुलपिष्टानि तत्कषायोपसर्जनानि शङ्कु-  
लीकल्पेन वा शङ्कुल्यः, पूषकल्पेन वा पूषाः, इति  
समानं पूर्वेष ॥२४॥

फलपिप्पली- भौढगनां श्रीवना- मैनफलके बीज-  
खरस- स्वरस- स्वरस, कषाय- अने कषायथी और  
कायसे, परिमावितानि भावना धर्मा भाविन, तिल-  
शालितण्डुल- तल अने शालियेभाना तिल और  
शालिचावलके, पिष्टानि धोटेने भाटेको, तत्कषाय-  
उपसर्जनानि ते वा कषायथी युक्त करी उसी कषायसे  
मिलाकर, शङ्कुलीकल्पेन शङ्कुलीनी विविधी शङ्कुलीको  
विधिसे, शङ्कुल्यः तैयार करेदी शङ्कुलीओ सिद्ध की हुई  
शङ्कुलियोंका, पूषकल्पेन अथवा पूषानी विविधी अथवा  
पूषकी विधिसे, पूषा वा इति तैयार करेदी पूषओने।  
प्रयोग करेदी सिद्ध किये हुए पूर्वोक्त प्रयोग करना  
चाहिए, पूर्वेष स्नेहन, स्वेदन आदि पूर्वयोगके, समानम् समान  
करवुं ओईओ समान करने चाहिए ॥ २४ ॥

24. The paste of til and sali rice  
impregnated with the expressed juice  
and decoction of the seeds of emetic  
nut and mixed with the same decoction

२४ वा शङ्कुली, पूषकल्पेन वा पूषा, इति समानं पूर्वेष -

वा पूषा इति समानं पूर्वेष (ख)

may be made into coils or pan-  
cakes according to the pharmaceutical  
method of preparing them. The rest of  
the procedure is as described before.

एतेनैव च कल्पेन सुमुख-सुरस-कुठेरक-काण्डीर-  
कालमालक- पर्णासक-क्षवक-फणिज्जक- गृध्नन -  
कासमर्द-भृङ्गराजानां पोटेक्षुवालिका-कालकूतक-  
दण्डैरकाणां चान्यतमस्य कषायेण कारयेत् ॥२५॥

एतेन एव अ. २४ इसी, कल्पेन विविधी विधिसे,  
सुमुख- सुमुख सुमुख, सुरस- सुरस सुरस, कुठेरक-  
कुठेरक कुठेरक, काण्डीर- काण्डीर काण्डीर, कालमालक-  
कालमालक कालमालक, पर्णासक- पर्णासक पर्णासक,  
क्षवक- नाकलीक्षुली नाकलिकनी, फणिज्जक- भरवे  
मर्वा, गृध्नन- गृध्नन गृध्नन, कासमर्द- कासमर्द  
कसौदी, भृङ्गराजानाम् भांशरी मांगरा, पोटा- नाली  
नल, इक्षुवालिका- औषरी तालमखाना, कालकूतक-  
कालकूतक कालकूतक, दण्डैरकाणाम् च अने इउरडा  
ओओभाथी और दण्डैरका इनमेंसे, अन्यतमस्य काल  
ओकना किसी एकके, कषायेण कषायथी शङ्कुलीओने  
अथवा पूषोने कषायसे शङ्कुलियोंको अथवा पूषोको,  
कारयेत् तैयार करेदी सिद्ध करे ॥ २५ ॥

25. In the same manner, they may  
be prepared using the decoction of  
any of the following drugs:- shrubby  
basil, holy basil, black basil, Kandira,  
Kalamalaka, Parnasaka, sneeze-wort,  
sweet marjoran, turnip, negro coffee,  
trailing eclipta, great reed, Ikshuvalika,

२५. काण्डीर-गण्डीर (क. ख. ग.)

कालमालक....कारयेत्-कालमालकशालपर्णाक्षवकफणिज्जक-  
गृध्ननकासमर्दभृङ्गराजानां पोटेक्षुवालिकाकालकूतकाण्डैर-  
काणां चान्यतमस्य कषायेण कार्याः (द.)

फणिज्जक-फणिज्जकगृध्नन (द.)

गृध्नन....कारयेत्-गृध्ननगृध्ननभृङ्गराजानां  
नामिक्षुवालिकेक्षुकाण्डैस्तैर्वा चान्यतमस्य कषायेण  
कारयेत् (ख)

round podded cassia and elephant grass.

મદનફલાનાં દશ ષાઢવાદિયોગઃ —

તથા બદરણાડવ-રાગ-લેહ-મોદકોત્કારિકા-તર્પણ-પાનક-માંસરસ-યૂષ-મધાનાં મદનફલાન્ય-ન્યતમેનોપસૃજ્ય યથાદોષરોગમ્ભક્તિ દદ્યાત્; તૈઃ સાધુ વમતીતિ ॥૨૬॥

તથા તે બે પ્રમાણે હસી પ્રકાર, મદનફલાની મીઠાળ મૈનફલકા, બદરણાડવ- ઓરને પાડવ બેરસે બના ષાઢવ, રાગ-લેહ- રાગ-લેહ, મોદક- મોદક મોદક, ઉત્કારિકા- ઉત્કારિકા ઉત્કારિકા, તર્પણ- તર્પણ તર્પણ, પાનક- પાનક પાનક, માંસરસ- માંસરસ માંસરસ, યૂષ- યૂષ યૂષ, મધાનામ્ અને મધ એઓમાંથી ઓર મધ इनमेंसे, અન્યતમેન કોઈ એકની સાથે કિસી એકકે સાથ, ઉપસૃજ્ય મેળવીને મિલાકર, યથા-દોષ-રોગ-મ્ભક્તિ દોષ, રોગ, અને રુચિને અનુસાર દોષ, રોગ, ઓર રુચિકે અનુસાર, દદ્યાત્ આપવું પ્રયોગ કરના જાણે. તૈઃ તેનાથી इनसे, સાધુ રોગી સારી રીતે મલી પ્રકાર, વમતિ વમન કરે છે વમન કરતા હે ॥ ૨૬ ॥

26. In the same manner, preparation of jujube, Shadava. Raga, linctus, sweet-meat, Utkarika pancake, demulcent drink, syrup, meat-juice, gruel and wine should be made by mixing the emetic nut with any of the above preparations and administered to suit the morbidity, disease and proclivities of the patient. By the help of these preparations, the patient is made to vomit well.

૨૬ મધાનાં-મધાનિ (ક. ચ. ફ.)

„ મદનફલાન્યન્યતમેનોપસૃજ્ય-મદનફલકાણિતેનોપસૃજ્ય (ચ. ફ.)

„ અન્યતમેન-વાસ્તિતિ (ક.)

મદનફલપર્યાયાઃ—

મદનઃ કરહાટશ્ચ રાઠઃ પિન્ડીતકઃ ફલમ્ ।  
શ્વસનશ્ચેતિ પર્યાયૈરુચ્યતે તસ્ય કર્ષણા ॥૨૭॥

મદનઃ મદન મદન, કરહાટઃ ચ કરહાટ કરહાટ, રાઠઃ રાઠ રાઠ, પિન્ડીતકઃ પિન્ડીતક પિન્ડીતક, ફલમ્ ફલ ફલ, શ્વસનઃ ચ શ્વસન શ્વસન ઓર શ્વસન, હિતિ પર્યાયૈઃ એ પર્યાયોથી इन पर्यायोंसे, उच्यते એને કહેવામાં આવે છે જિસે કહા જાતા હૈ, તસ્ય તેની उसकी, કર્ષણા આ કર્ષણા છે यह कर्षणा है ॥ ૨૭ ॥

27. In the various preparations of the emetic nut, it is referred to by its synonyms such as Madana, Kara-hata, Ratha, Pindeetaka, Phala and Shwasana.

અધ્યાયોર્કાર્યસંપ્રદઃ —

તત્ર શ્લોકાઃ—

નવ યોગાઃ કષાયેષુ, માત્રાસ્વદ્ઘૌ, પયોધૃતે ।  
પશ્ચ, ફાણિતચૂર્ણે દ્વૌ ગ્રેવે, વર્તિક્રિયાસુ ષટ્ ॥૨૮॥  
વિંશતિર્વિંશતિર્લેહ-મોદકોત્કારિકાસુ ચ ।  
શશ્કુલીપૂપયોશ્ચોક્તા યોગાઃ ષોડશ ષોડશ ॥૨૯॥  
દશાન્યે ષાઢવાદ્યેષુ ત્રયત્વિંશદિદં શતમ્ ।  
યોગાનાં વિધિવદિદં ફલકરણે મહર્ષિણા ॥૩૦॥

તત્ર તે વિષયમાં હવ વિષયમે, શ્લોકાઃ ઉપસંહારના શ્લોકો છે કે ઉપસંહારકે શ્લોક હૈં કિ, કષાયેષુ કષાયોમાં કષાયોમે, નવ નવ યોગ નૌ યોગ, માત્રાસુ માત્રાઓમાં માત્રામે, અઘૌ આઠ ઓઠ, પયોધૃતે દૂધ અને ઘીમાં મેળવી દૂધ ઓર ઘીમેં મિલાકર, પશ્ચ પાંચ પાંચ, ફાણિતચૂર્ણે ક્ષણિત અને ચૂર્ણમાં ફાણિત ઓર ચૂર્ણમે, દ્વૌ એ દો, ગ્રેવે સૂંબવામાં એક સૂંબનેમેં એક, વર્તિક્રિયાસુ વર્તિક્રિયામાં વર્તિક્રિયામે, ષટ્ છ છઃ, લેહ-મોદક- લેહ. મોદક લેહ, મોદક, ઉત્કારિકાસુ ચ તથા

૨૮. માત્રાસ્વદ્ઘૌ-વર્તિક્રિયાઘૌ (સ. ક. ર. ક. ચ. ફ.)

„ પયોધૃતે-પયોમુલઃ (ત.)

પશ્ચ ફાણિતચૂર્ણે દ્વૌ ગ્રેવે-પશ્ચૈકઃ ફાણિતે ચૂર્ણે ગ્રેવે (વ.)

૩૦. વિદિ-વિદિ (ત.)



उत्कारिकायां तथा उत्कारिकामे, विस्त्रिः वीस वीस.  
विस्त्रिः वीस वीस, जङ्गली- शिंदुली शङ्कुली, पूरयो  
च तथा पूरुमां तथा पपमे, सोडश सेण सोडश  
सोडश सेण सोडश. पाडवाद्येषु अन्ये पाडवाद्येषु  
और पाडवा आदिमें अन्ये भी आ दपने, दश दश दम,  
योगाः योगे योग उक्ताः उक्ताः ये रहे हैं मद्रिणि  
मद्रिणि मद्रिणि फलकल्पे भूतकला उदयमां मदन-  
फलके कल्पमें, इदम् आ ये योगानाम् त्रयस्त्रिंशत्  
अतम् अउसे। तेनीस योगे एवमे तेनीस योग विधि-  
वत् विधिपूर्वक विधिपूर्वक, दिवम् अतः आ ये रहे  
हैं ॥ २८-३० ॥

Here are the recapitulatory verses —

28-30. Nine preparations in the  
form of decoction, eight of bolus, five  
of milk and ghee, one of treacle and  
one of powder, one of snuff, and six  
of pills, twenty each of linctus, sweet  
meat and Utkarika pancake sixteen  
each of coils and Pupa pancake. ten  
others of Shadava preparation, etc., in  
all, one hundred and thirty-three  
preparations of the emetic nut have  
been systematically expounded in this  
chapter.

इत्यग्निवेशकृते तन्त्रे चरकप्रतिसंस्कृतेऽप्राप्ते  
दृढबलसंपूरिते कल्पस्थाने मदनकल्पो नाम  
प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

इति आ प्रभाषे इस प्रकार, अग्निवेशकृते अग्निवेशे  
रखेवा। अग्निवेशसे बनाये, चरकप्रतिसंस्कृते तन्त्रे अने  
अरुंधती प्रतिसंस्कार प. मेवा आ शास्त्रमां और चरकके  
द्वारा संस्कृत इस शास्त्रके, अप्राप्ते अप्राप्त अत्रात, दृढबल-  
संपूरिते अने दृढबले पूरा करेवा। और दृढबलसे पूरित  
किये गये, कल्पस्थाने कल्पस्थान विषे कल्पस्थानमें,  
मदनकल्पः 'मदनकल्प' 'मदनकल्प', नाम नामने।  
नामका, प्रथमः पहलेवा। प्रथम, अध्यायः अध्याय  
अध्याय अथवा अध्याय समाप्त हुआ ॥ १ ॥

1. Thus, in the Section on the  
Pharmaceutics is the treatise compiled  
by Agnivesa and revised by Caraka,  
the first chapter entitled 'The  
Pharmaceutics of the Emetic nut' not  
being available, the same as restored  
by Dridhabala, is completed.

## द्वितीयोऽध्यायः ।

जीमूत अध्याय अध्याय दूसरा

### Chapter II

जीमूतकल्पोपक्रमः—

अथातो जीमूतकल्पं व्याख्यास्यामः ॥१॥

इति ह स्माह भगवानात्रेयः ॥२॥

अथ अतः हवे अर्द्धांशे अब आगे, जीमूतकल्पम्  
'जीमूतकल्प' नामना अध्यायम् 'जीमूतकल्प' नामके  
अध्यायका, व्याख्यास्यामः व्याख्यान करुं व्याख्यान  
करेंगे ॥ १ ॥

भगवान् भगवान् भगवान्, आत्रेयः आत्रेये आत्रेयेने,  
इति ह आ विषयमां नीचे प्रभाषे अ इस विषयमें  
निम्न प्रकारसे ही, आह स्माह उहेतुं उ कहा है ॥ २ ॥

1. We shall now expound the  
chapter entitled "The Pharmaceutics  
of (Jeemootaka) Bristly luffa".

2. Thus declared the worshipful  
Atreya.

जीमूतकल्पार्थाः—

कल्पं जीमूतकल्पेयं फलपुष्पाश्रयं शृणु ।

गरागरी च वेणी च तथा स्यादेवताडकः ॥३॥

जीमूतकल्प जीमूतकला जीमूतकके, फलपुष्प-  
अने पुष्पने। फल और पुष्पका, आश्रयम् वसन आटे  
उपयोग अतापना। वसनके लिए उपयोग बतानेवाले,

३. गरागरी-खरागरी (ब.)



इमम् आ इष, कल्पम् कल्पने कल्पको, शृणु साधनैः।  
सुनो, गरागरी च गरगरी गरागरी, वेणी च वैष्णी  
वेणी, तथा अने और, देवतादकः देवतादकः देवतादक,  
स्वात् ओ श्रुतकना पयसि। ओ ये जीमूतकके पर्याय  
हैं ॥ ३ ॥

3. Listen to the exposition of the  
pharmaceutics of bristly luffa making  
use of its fruit and blossom. Garagari,  
Veni and Devatadaka are its synonyms.

जीमूतकगुणः —

जीमूतकं त्रिदोषघ्नं यथास्वौषधकल्पितम् ।  
प्रयोक्तव्यं ज्वरश्वासहिकाद्येष्वामयेषु च ॥ ४ ॥

यथास्व-वातहर आदि द्रव्येयुक्त वातहर आदि  
द्रव्येयुक्त युक्त, औषधकल्पितम् तथा वातादिहर द्रव्येयुक्त  
साधे कल्पना करवाभा आवेक्षु तथा वातादिहर द्रव्येयुक्त  
साध कल्पित किया गया, जीमूतकम् श्रुतक जीमूतक,  
त्रिदोषघ्नम् त्रिदोषघ्ना नाश करे ओ तीन दोषोंको नष्ट  
करता है, ज्वर-तेनो ज्वर उसका ज्वर, श्वास-श्वास  
श्वास, हिका-हेडकी हिक्की, आयेषु वगेरे आदि,  
आमयेषु च रोगोभा रोगोंमें, प्रयोक्तव्यम् प्रयोग  
करने ओधये प्रयोग करना चाहिए ॥ ४ ॥

4. Bristly luffa is curative of each  
of the three morbid humors when  
combined with appropriate adjuvants.  
It should be administered in fever,  
dyspnea, hiccup and similar other  
disorders.

जीमूतकानां षट् क्षीरयोगाः —

यथोक्तगुणयुक्तानां देशजनानां यथाविधि ।  
पयः पुष्पेऽस्य, निर्वृत्ते फले पेया पयस्कृता ॥ ५ ॥

४. हिकाद्येष्वामयेषु च-हिकाकोष्ठामयेषु च (इ. त. द.)

५. देशजनानां-जीमूतानां (ब.)

६. पुष्पेऽस्य, निर्वृत्ते-पुष्पेषु निर्वृत्तं (इ. ब. फ.)

७. पयस्कृता-शुद्धा पयः (ख.)

लोमशे क्षीरसंतानं, दध्युत्तरमलोमशे ।

शृते पयसि दध्युत्तरं जातं हरितपाण्डुके ॥ ६ ॥

जीर्णानां च सुशुष्काणां न्यस्तानां भाजने शुचौ ।

चूर्णस्य पयसा शुक्तिं वातपित्तार्दितः पिबेत् ॥ ७ ॥

यथोक्तगुणयुक्तानाम् भदनकल्पनां कहेवा शुद्धेयु  
युक्त मदनकल्पमें कहे हुए गुणसे युक्त, देशजनानाम्  
भदनकल्पनां कहेवा प्रशस्त देशभा उत्पन्न अथेव  
मदनकल्पमें कहे हुए प्रशस्त देशमें उत्पन्न, यथाविधि  
अने भदनकल्पनां कहेवा विविधी अङ्गु करेवा  
और मदनकल्पमें कही हुई विधिसे ग्रहण किये हुए, अथ  
आ श्रुतकना इस जीमूतकके, पुष्पे इत्युक्ती साधित  
पुष्पसे साधित, पयः दूध दूध, निर्वृत्ते उत्पन्न अर्थात्  
उत्पन्न होते, फले इत्युक्ती फलसे, पयस्कृता साधित  
दूधनी दूधकी, पेया पेया पेया, लोमशे इत्युक्ती पर  
इत्यादी आदिवा फल पर रोए आने पर, क्षीरसंतानम्  
तेजोयुक्ती साधित दूधनी मलाई उनसे सिद्ध दूधकी  
मलाई, लोमशे इत्यादी अरी गद्या पछी इत्युक्ती  
रोए रहित फलसे, दध्युत्तरम् साधित दहीनी तर  
दहीकी मलाई, हरितपाण्डुके अने इण दीक्षाश पडता  
पांडु थाय तयारे और फलके हरे पीले होने पर, शृते  
ओओयुक्ती साधित इनसे साधित, पयसि दूधनु दूधकी,  
जातम् दध्युत्तरम् आहुं दही ओओने प्रयोग करने  
ओधये खट्टी दही इनका प्रयोग करना चाहिए, वातपित्त-वर्णी  
वातपित्तया पुनः वातपित्तसे, अर्दितः पीडायेवा रोगीओ  
पीडित रोगीको, शुचौ स्वच्छ स्वच्छ, भाजने पात्रभा  
पात्रमें, न्यस्तानाम् राखेवा रखे, जीर्णानाम् पाडेवा  
परिपक्व, सुशुष्काणाम् तथा सारी पेठे सुखायेवा इत्युक्ती  
तथा अच्छी प्रकार शुष्क हुए फलोंके, चूर्णस्य चूर्णनी  
चूर्णकी, शुक्तिं ओ तोला मात्रा दो तोलेकी मात्रा,  
पयसा दूध साथे दूधके साथ, पिबेत् पीवी ओधये  
पीनी चाहिए ॥ ५-७ ॥

5-7. Select the bristly luffa growing in  
the most favourable land and endowed

६. जातं-जाते (ब.)

७. जातं हरितपाण्डुके-जाते हरितपाण्डुरो (ब.)

८. शुक्तिं वातपित्तार्दितः पिबेत्-युक्तं वातपित्तार्दितः पिबेत् (ब.)

with the best quality as already described. Milk should be prepared from its flowers. Milk-gruel from its fresh fruits, the cream of milk from its hairy fruits, the cream of curds from its fruits whose hair have fallen, sour curds from the milk prepared with greenish yellow fruits; the powder of old and well dried fruits kept in a clear vessel should be taken with milk, in the dose of two tolas by a person afflicted with vata and pitta.

एकः सुरामण्डयोगः—

आसुत्य च सुरामण्डे मृदित्वा प्रक्षुतं पिबेत् ।  
कफजेऽरोचके कासे पाण्डुरोगे सयक्ष्मणि ॥८॥

कफजे उद्धम्य कफजन्य, अरोचके अरोचकम्, अरोचकम्, कासे कसम्, कासम्, सयक्ष्मणि यक्ष्मणः यक्ष्मा रोगम्, पाण्डुरोगे अने पाण्डुरोगम् और पाण्डुरोगम्, सुरामण्डे सुरामण्डम् अमृतकना पाकेवा इति। सुरामण्डम् जीमूतकके पके हुए फलको, आसुत्य रात-वासी रात्री रातभर भिंकोर, मृदित्वा च येणी मलकर, प्रक्षुतम् अने भाणीने और छानकरके, पिबेत् पीवुं पीवे ॥ ८ ॥

8. The fruits should be crushed and macerated with the supernatant part of sura wine (and the juice strained). It should be taken as potion in kapha-disorders, anorexia, cough, anemia and consumption.

जीमूतकानां एकेनविंशतिः कषाययोगः—

द्वे चापोथ्याथवा त्रीणि गुडूच्या मधुकस्य वा ।  
कोविदारादिकानां वा निम्बस्य कुटजस्य वा ॥९॥  
कषायेष्वासुतं पूत्वा तेनैव विधिना पिबेत् ।

९. चापोथ्य चापोथ्य (ड.)

॥ गुडूच्या मधुकस्य वा-गुडूच्यामलकस्य वा (ब. फ.)

॥ मधुकस्य-मलकस्य (ब.)

द्वे अमृतकनां ये जीमूतकके द्वे, अथवा त्रीणि द्वे त्रयु इत्यने या तीन फलको कुटजर, गुडूच्या अथवा निलोम्बे, मधुकस्य वा कोविदारा सुगन्धीके, कोविदारा-आदिकानाम् वा कुञ्जस्य वजेरानां केर्छ ओकना काचनार आदिमेंसे किसी एकके, निम्बस्य लीमूतना नीमके कुटजस्य वा के कना या कुटजके, कषायेषु उत्राथम् कषायमें आसुतम् रातवासी रात्री भिंकोर, पूत्वा भाणी छानकर, तेन एव तेन उसी विधिना विधिना विधिसे, पिबेत् पीवुं पीवे ॥ ९ ॥

9-9½. Two or three fruits of bristly luffa should be crushed and put into the decoction of either gudush, liquorice, variegated mountain ebony and other drugs of its group, neem or kurchi and well macerated. It should then be strained and taken as potion in the manner already described in the case of the emetic nut.

अथवाऽऽरग्वधादीनां सप्तः पूर्णवत् पिबेत् ॥१०॥  
एकैकस्य कषायेण पित्तस्तेष्वमज्वरादितः ।

अथवा अथवा अथवा, पित्तस्तेष्वम पित्त अने उद्धना पित्त और कफके, ज्वर ज्वरशी ज्वरसे, अदितः पीडायेषां शोथीये पीडित रोगी, आरग्वध-अमृतकनु इति अत्रभाणा जीमूतकका फल अमलतास, आदीनाम् वजेरे आदि, सप्तानाम् सात द्रव्येषामासी सात द्रव्योंमेंसे, एकैकस्य केर्छ ओकना किसी एकके, कषायेण उत्राथम् कषायमें, पूर्णवत् पूनीकत विधिनी पूर्ण विधिसे, पिबेत् पीवुं पीवे ॥ १० ॥

10. Or, it may be taken with any one of the decoctions of the heptad of purging cassia and other drugs of its group in the manner described in the previous chapter by a person afflicted with fever of the pitta and kapha type.

११. एकैकस्य-एकैकस्यः (ड. ब. फ.)

जीमूतकानां अष्टौ मात्रायोगाः —

मात्राः स्युः फलवच्चाष्टौ कोलमात्रास्तु ता मताः ११

फलवत् च अने भदनक्षणी येते मदनफलके समान, अष्टौ औभूतकना क्षणी आः जीमूतकके फलके आठ, मात्राः मात्रायोग मात्रायोग, स्युः करवा ओष्ठये बनाने चाहिए, ताः तु तेओनी मात्रा इनकी मात्रा, कोलमात्राः कोलना जेनी कोलके समान, मताः अष्टुनी होनी चाहिए ॥ ११ ॥

11. The preparation of pills are the same as in the case of the emetic nut i. e. eight in number; only the size of the pill is to be that of the jube.

जीमूतकानां चत्वारः स्वरस्योगाः —

जीवकर्षभकेक्षूणां शतावर्या रसेन वा ।

पित्तश्लेष्मज्वरे दद्याद्वातपित्तज्वरेऽथवा ॥१२॥

पित्तश्लेष्मज्वरे पित्तकक्षूणां पित्तश्लेष्मज्वरमें, अथवा अथवा वा, वातपित्तज्वरे वातपित्तकक्षूणां औभूतकनुं क्षणी वातपित्तज्वरमें जीमूतकका फल, जीवक-औषध जीवक, कर्षभक-रूपभक रूपभक, इक्षूणाम् शेरी इक्षु, शतावर्याः वा अथवा शतावरीना अथवा शतावरके, रसेन रस साथे रसके साथ, दद्यात् देव देना चाहिए ॥ १२ ॥

12. In fever due to pitta cum kapha or vata cum pitta, it should be administered in the juices of Jivaka, Rishabhaka, sugar cane or climbing asparagus.

११ मात्राः स्युः—वर्तयः (क त. द. ब. फ.)

११ मात्राः स्युः फलवच्चाष्टौ—वर्तयः फलवत्तयोऽष्टौ (ह.)

११ एनच्छोकानन्तरम्—

ज्वरे पित्तभवे वातद्वेष्टे श्लेष्मणि चानुगे ।

जीमूतकस्य वा कर्कं चूर्णं वा शिशिराम्बुना ॥

इत्यधिकः पाठः (ब. ड. त. फ.) पुस्तकेषु ।

जीमूतकानां एको घृतयोगः —

तथा जीमूतकक्षीरात् समुत्पन्नं पचेद्भृतम् ।

फलादीनां कषायेण श्रेष्ठं तद्वमनं मतम् ॥१३॥

तथा तथा इसी प्रकार, जीमूतकक्षीरात् औभूतकथी साधित दूधभांजी जीमूतकसे सिद्ध दूधसे, समुत्पन्नम् उत्पन्न थयेला उत्पन्न हुए, घृतम् घीने घृतको फलादीनाम् भदनक्षणी वजेरेभांथी मैनफलदिमेंसे, कषायेण द्रष्टुं ओक्षनां कषायेथी किसी एकके साथसे, पचेत् पकावतुं सिद्ध करे, तत् तेने यह, श्रेष्ठम् उत्तम उत्तम, वमनम् वमन वमन, मतम् मानेला छे माना गया है ॥ १३ ॥

13. Similarly, the ghee obtained from the milk prepared with bristly luffa and cooked with the decoction of the emetic nut and other drugs of its group is regarded as an excellent emetic

अध्यायोक्तार्थसंग्रहः —

तत्र श्लोकौ—

षट् क्षीरे मदिरामण्डे एको द्वादश चापरे ।

सप्त बारग्वधादीनां कषायेऽष्टौ च वर्तिषु ॥१४॥

जीवकादिषु चत्वारो घृतं चैकं प्रकीर्तितम् ।

कल्पे जीमूतकानां च योगास्त्रिंशच्चवाधिकाः ॥१५॥

तत्र ते विषयभां उक्त विषयमें, श्लोकौ उपसंहारना छे श्लोका छे के उपसंहारके दो श्लोक हैं कि, क्षीरे दूधभां दूधमें, षट् छ छः, मदिरामण्डे सुराभांभां मदिरामण्डमें, एकः ओंठ एक, अपरे च अन्य अन्य, द्वादश बार बारह, बारग्वध-गर्भाणीं अमलताच, आदीनाम् वजेरेना आदिके, कषाये च कषायेभां कायमें, सप्त सात सात, वर्तिषु च वर्तिओभां वर्तियोंमें, अष्टौ आठ आठ, जीवकादिषु औषध वजेरेभां जीवकादिमें, चत्वारः चार चार, घृतम् च अने घीभां और घृतमें, एकम् ओंठ योग एक योग, प्रकीर्तितम् उड़ी अताया छे उड़े हैं, जीमूतकानाम् कल्पे च आ प्रमाणे औभूतक-

१४. मदिरामण्डे—मदिराबोगे (ब. ड. फ.)

१५. च—मे (ब.)

१५. च—ते (ब.)

३६५भा। इस तरह जीमूतक कल्पमें, नवाधिका :त्रिषष्ट  
ओगधुयादीस उनचालीन, योगाः येजे. याय ३  
योग होते हैं ॥ १४-१५ ॥

Here are the two recapitulatory  
verses—

14 5. Six preparations in milk,  
one in the supernatant part of wine  
twelve other preparations, seven in the  
decoction of the purging cassia and  
other drugs of its group, eight of  
pills, four preparations in the juice of  
Jeevaka and other drugs of its group  
and one preparation of ghee—these  
are the thirty-nine preparations des-  
cribed in the pharmaceutics of bristly  
luffa.

इत्यग्निवेशकृते तन्त्रे चरकप्रतिसंस्कृतेऽप्राप्ते  
दृढबलसंपूरिते कल्पस्थाने जीमूतककल्पो  
नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

इति आ प्रभाषे. इस प्रकार, अग्निवेशकृते अग्नि-  
वेशे रचेला अग्निवेशसे बनाये, चरकप्रतिसंस्कृते तन्त्रे  
अने अरुंधती प्रतिसंस्कार पायेला आ आभा  
और चरकके द्वारा संस्कृत इस शास्त्रके, अप्राप्ते अप्राप्त  
अप्राप्त, दृढबलसंपूरिते अने दृढबले पूरा करेला और  
दृढबलसे पूरित किये गये, कल्पस्थाने ३६५स्थान विधि  
कल्पस्थानमें, जीमूतककल्पः 'जीमूतककल्प' 'जीमूतककल्प',  
नाम नामने नामका, द्वितीयः श्रीने दूसरा, अध्यायः  
अध्याय संपूर्ण अथ अध्याय समाप्त हुआ ॥ २ ॥

2. Thus, in the Section on Pharma-  
ceutics in the treatise compiled by  
Agnivesa and revised by Caraka, the  
second chapter entitled 'The Pharma-  
ceutics of Bristly luffa' not being  
available, the same as restored by  
Dridhabala, is completed.

तृतीयोऽध्यायः ।

श्रीने अध्याय अध्याय तीसरा

Chapter III

इक्ष्वाकुकल्पोपक्रमः—

अथान इक्ष्वाकु कल्पं व्याख्यास्यामः ॥१॥

इति ह आह भगवानात्रेयः ॥२॥

अथ अतः इवे अदीर्घा अब अग्रे, इक्ष्वाकुकल्पम्  
'३६५कुक्ष्य' नामना अध्याय 'इक्ष्वाकुकल्प' नामके  
अध्यायका, व्याख्यास्यामः व्याख्यान करूँगा व्याख्यान  
करेगा ॥१॥

भगवान् भगवान् भगवान्, आत्रेयः आत्रेये  
पतेवने. इति ह आ विषयमां नीये प्रभाषे ॥ इस  
वषयमें निम्न प्रकारसे ही आह स प्रहेलुं के कहा है ॥२॥

1. We shall now expound the  
chapter entitled 'The Pharmaceutics of  
the Bottle gourd.'

2. Thus declared the worshipful  
Atreya.

सिद्धं वक्ष्याम्यथेक्ष्वाकु कल्पं येषां प्रशस्यते ।

अथ इवे अब, चेवाम् अत्रेयाने भाटे त्रिनके लिए,  
प्रशस्यते ३६५कुने प्रयोग प्रशस्त है इक्ष्वाकुका प्रयोग  
प्रशस्त है, तेषाम् त्रेयाने भाटे उनके लिए, सिद्धम्  
आ सिद्ध इस सिद्ध, इक्ष्वाकुकल्पम् ३६५कुक्ष्य  
इक्ष्वाकुकल्प. वक्ष्यामि ३६५ कुहूँगा ।

2. I shall now describe the tes-  
ted preparations of the bottle-gourd  
and the type of the patient for  
whom it is recommended.

इक्ष्वाकोः पर्यायाः—

लम्बाऽथ कटुकाणावुस्तुम्बी पिण्डफला तथा ॥३॥

इक्ष्वाकुः फलिनी चैव प्रोच्यते तस्य कल्पना ।

३. प्रशस्यते—प्रशस्यते (प्रशस्यते)

, लम्बाऽथ कटुकाणावुस्तुम्बी पिण्डफला तथा—लम्बा पिण्ड-

फला तुम्बी कटुकाणावुस्ती न सा (प्र. प्र.)

॥ पिण्डफला—पिण्डफला (प्र.)

इक्ष्वाकुः काली तूअरी कटुतुम्बी, लम्बा क्षम्भा लम्बा, अथ कटुकालावूः कटुकालावू, कटुकालावू, तुम्बी तूअरी तुम्बी, तथा पिण्डफला पिण्डफला, पिण्डफला, फलिनी च एव अने इक्षिनी ये पर्यायैथी और फलिनी इन पर्यायोंसे, प्रोच्यते कहेवाय छे कही जाती है, तब तेनी इसकी, कल्पना कल्पना कल्पना, प्रोच्यते कहेवाभा आवे छे कहते हैं ॥ ३३ ॥

3-3½. Here we describe the pharmaceuticals of the bottle gourd which is known also by the names of Lamba, Katukalabu, Tumbi, Pindaphala Ikshvaku and Phalini.

इक्ष्वाकोः गुणाः—

कासश्वासविपण्डूर्दिज्वरार्ते कफकर्षिते ॥ ४ ॥  
प्रताम्यति नरे चैव वमनार्थं तदिष्यते ।

कास- कास कास, श्वास- श्वास श्वास, विष- विष विष, छर्दि- छर्दि वमन, ज्वर-ज्वर तथा नर-नरथी पीडायेवा तथा ज्वरसे पीडित, कफकर्षिते कही क्षीयुथयेवा कफसे क्षीण हुए, प्रताम्यति च अने जेध्युक्त और खिजतायुक्त, नरे च एव पुरुषने मनुष्यके, वमनार्थम् वमन भाटे वमनके लिए, तस् ते वह, इष्यते छे इष्ट है ॥ ४ ॥

4-4½. It is recommended for purpose of emesis in patients afflicted with cough, dyspnea, toxicosis, vomiting and fever as well as in patients distressed with phlegm or tachycardia.

पयोमुखा अष्टौ एकश्च सुरामण्डयोगः—

अपुण्यस्य प्रवालानां मुष्टिं प्रादेशसंमितम् ॥ ५ ॥  
क्षीरप्रस्थे शृतं दद्यात् पित्तोदिके कफज्वरे ।

पित्तोदिके उन्मादभाभी पित्तवाणा उन्मादभाभी पित्तवाले, कफज्वरे कफज्वरभाभी कफज्वरमें, क्षीर-प्रस्थे १४ सेला इधमा चौखट तोले दूधमें, शृतम् छेछानीने पकाकर, अपुण्यस्य पुष्परहित- छक्ष्वाकुनी

विना फूल आवे इक्ष्वाकुके प्रवालानाम् टीश्रीछेनी पत्तोंकी, प्रादेशसंमितम् तर्जनी आंगुली सुधी प्रादेशांगुली तक, मुष्टिम् ओके मुष्टी जरी मात्रा एक मुष्टी-परिमाण मात्रामें, दद्यात् आपनी देवे ॥ ५ ॥

5-5½. A large fistful of the sprouts of the plant that has not yet put forth blossoms should be boiled in 64 tolas of milk and given in the fever of the kapha type, where the pitta is also provoked.

पुष्पादिषु च चत्वारः क्षीरे जीमूतके यथा ॥ ६ ॥  
योगा हरितपाण्डूनां सुरामण्डेन पञ्चमः ।

यथा ते प्रभाषे जिस प्रकार, जीमूतके श्रुतकना इध वगेरेथी इधमा और योग थाय छे जीमूतके फूल आदिसे इधमें चार योग होते हैं, पुष्पादिषु च तेभ छक्ष्वाकुनां इध वगेरेथी उसी तरह इक्ष्वाकुके फूल आदिसे, क्षीरे इधमा दूधमें, चत्वारः और चार, योगाः योग थाय छे योग होते हैं, हरितपाण्डूनाम् अने छक्ष्वाकुनां पीलास पत्ता पीला इछेनी और इक्ष्वाकुके हरित पीतवर्ण फलोंका, सुरामण्डेन सुरामण्डेनी साथे सुरामण्डके साथ, पञ्चमः पांचमो योग थाय छे पाँचवा योग बनता है ॥ ६ ॥

6-6½. Four milk preparations can be made of its blossoms etc., as in the case of the bristly luffa and a fifth preparation in the supernatant part of wine made with its greenish yellow fruits.

फलस्वरसभागं च त्रिगुणक्षीरसाधितम् ॥ ७ ॥  
उरःस्थिते कफे दद्यात् स्वरभेदे च पीनसे ।

उरःस्थिते छातीभां रहेवा छातीमें स्थित, कफे कफमें, स्वरभेदे स्वरभेदभां स्वरभेदमें, पीनसे च तथा सगेजभमा तथा पीनसमें, त्रिगुणक्षीर- त्रिगुण

७ ॥ च पीनसे-सपीनसे (इ.)

दूधभा तीन गुने दूधमें, साधितम् साधितः सिद्ध किये हुए, फल- भक्षत्रादुना इगने इक्ष्वाकुके फलके, स्वरस- स्वरसना स्वरसने, मागम् च ओ३ भागने एक भागको, दद्यात् देवे देता चाहिए ॥ ७३ ॥

7-7½. The expressed juice of its fruits, prepared in thrice its quantity of milk, is to be administered in accumulation of phlegm in the chest, in alteration of voice and in coryza.

जीर्णे मध्वोद्धृते क्षीरं प्रक्षिपेत्तद्यदा दधि ॥ ८ ॥  
जातं स्यात् सकफेकासे श्वासे वम्यां च तत् पिबेत् ।

मध्वोद्धृते मध्य भागने दाही दधि बीचने सोखला करके, जीर्णे पाडी गयेले भक्षत्रादुभा पके इक्ष्वाकुमें क्षीरम् दूध दूध, प्रक्षिपेत् तदाभुं मर देवे, तत् ते दूध वह दूध, यदा न्यारे जब, दधि अभीने छीं नमकर दहीरूप, जातम् स्यात् अर्ध अथ त्पारे बन जाय तब, तत् ते उसे, सकफे कासे कक्षसहित कक्षभा कफयुक्त कास, आसे श्वःसभां श्वास, वम्याम् च अने छिछटीभां और वमनमें, पिबेत् पीवुं पीना चाहिए ॥ ८३ ॥

8-8½. The curds prepared from the milk in which the pulp of its old fruits have been cast, should be given as potion in cough, dyspnea and vomiting associated with kapha provocation.

अजाक्षीरेण बीजानि भावयेत् पाययेत् च ॥ ९ ॥  
विषगुल्मोदरग्रन्थिगण्डेषु स्त्रीपदेषु च ।

बीजानि भक्षत्रादुना श्रीने इक्ष्वाकुके बीजोंको, अजाक्षीरेण अक्षरीना दूधनी बकरीके दूधमें, भावयेत्

८. जीर्णे मध्वोद्धृते क्षीरं-जीर्णे दध्याद्धृते क्षीरं ७ फा.)

९. जीर्णे मध्वोद्धृते क्षीरं प्रक्षिपेत्तद्यदा दधि-इत-मध्ये छे जीर्णे सिद्धं क्षीरं यदा दधि (द. १.)

८३. सकफे-कफजे (द.)

९. भावयेत् पाययेत् च-भावितानि प्रयोगयेत् (च. फ.)

भावना देवी भावना देवी च हिर, विषः अने विष और विष, गुल्म- गुल्म गुल्म उदर- उदरेण उदरोग, ग्रन्थि ग्री प्रन्थि, गण्डेषु च गण्डेषु च तरे गलगण्ड आदि, स्त्रीपदेषु च तथा स्त्रीपदभां और स्त्रीपदमें, पाययेत् च पियरावना पिलाना चाहिए ॥ ९३ ॥

9-9½. The seeds of bottle-gourd impregnated with goat's milk should be taken as potion in toxicosis, gulma, abdominal diseases tumors of glandular enlargement and in elephantiasis.

इक्ष्वाकोः मस्तौ एको योगः, तके एको योगश्च—

मस्तुना वा फलान्मध्यं पाण्डुकुष्ठविवर्धितः ॥ १० ॥  
तेन त्रकं विषकं वा सक्षौद्रलवणं पिबेत् ।

पाण्डु- पांडु पाण्डु, कुष्ठ- कुष्ठ कुष्ठ, विष-वर्धितः अने विषधी पीउयेला रे.भी.औ और विषमें पीवित रेगी, फलान् भक्षत्रादुना इगने इक्ष्वाकुके फलके, मध्यम् मध्य भाग गुदेको, मस्तुना वा मस्तु साथे पीवे मस्तुक साथ पीवे, तेन वा अथवा तेलाथी अथवा गुदेके साथ, विषकम् पक्षदेव पकाई तका तक तको, सक्षौद्र- लवणम् मध अने दध्नु नाभीने मधु और नमकके साथ, पिबेत् पीवी पीवे ॥ १०३ ॥

10-10½. The pulp of the bottle gourd fruit mixed with whey should be taken as potion in anemia, dermatosis and toxicosis, or a potion of butter-milk prepared with its pulp may be taken mixed with honey and rock-salt.

इक्ष्वाकोः एको प्रेययोगः—

तुम्ब्याः फलरसैः शुष्कैः सपुष्पैश्च चूर्णितम् ॥ ११ ॥  
छर्दयेन्मातृमात्राय गन्धसंपत्सुखोचितः ।

गन्ध-संपत्- गंधनी संपत्तिना सुगन्ध सूघनेके, सुख- उचितः सुखने अभासी रे.भी सुखका अभ्यासी रेमी, तुम्ब्याः कडवी दूधजीना कडवी तुम्बीके, शुष्कैः सुखाई भयेला शुष्क, सपुष्पैः पुष्पे पुष्पों, फलरसैः तेम

तेनां इक्ष्मणा रसथी और इसके फलोंके रससे, अवचूर्णितम् छांटकी छिड़की हुई, माल्यम् पुष्पमाला पुष्पमाला, आत्राय सूधीने सूघनेसे, छर्दयेज् उबली करे छे वमन करता है ॥ ११३ ॥

11-11½. The person habituated to pleasant smells should be made to vomit by smelling a flower which has been sprinkled over with the fruit-juice and the powder of the dried flowers of the bottle gourd.

इक्ष्वाकोः एकः पलयोगः, एकस्तैलयोगः, एको घृतयोगश्च—

भक्षयेत् फलमध्यं वा गुडेन पललेन च ॥१२॥  
इक्ष्वाकुफलतैलं वा सिद्धं वा पूर्ववद्धृतम् ।

फलमध्यं वा उबली तूंगीनी मध्यभाग कड़ी तुम्बीके गुदेको, गुडेन जेण गुड़, पललेन च अने तैलपटनी साथे और तिलककके साथ, भक्षयेत् आवे खावे, इक्ष्वाकु- उबली तूंगीनी कड़ी तुम्बीके, फल- तैलम् वा इणतुं तेक्ष फलका तैल, पूर्ववत् के अभा- डनी पेडे या पूर्वकी भांति, सिद्धम् सिद्ध करेहुं सिद्ध, घृतम् वा वी पीतुं घृत पीवे ॥ १२३ ॥

12-12½. The pulp of the bottle gourd should be eaten with gur and til paste; or, the bottle gourd oil and ghee prepared as in the case of bristly luffa, may also be taken as an emetic.

इक्ष्वाकुबीजानां षड् वर्धमानयोगाः—

पञ्चाशदशवृद्धानि फलादीनां यथोत्तरम् ॥१३॥  
पिबेद्विमृद्य बीजानि कषायेष्वाशतं पृथक् ।

पञ्चाशत् पचासथी शः करी पचाससे लेकर, दशवृद्धानि दश दश वर्धमानां दश दश बढ़ाते हुए, आशतम् सो सुधी सौ तक, बीजानि छद्वाकुनां बीजने इक्ष्वाकुके बीजको, यथोत्तरम् उत्तरेत्तर क्रमशः फला-

११. फलादीनाम्-फलनीनाम् (फ.)

१३. पिबेद्विमृद्य बीजानि-पिबेद्विमृद्य बीजानि (य)

१३. कषायेष्वाशतं-कषायेष्वाशतं (य.)

दीनाम् भदनक्ष्मणे वगेरेभाथी मदनफलादिमैसे, पृथक् छे छे छेना भणी एक एकके मिलकर, कषायेषु छे कषायभा छः कषायमें, विमृद्य योणीने मलकर, पिबेत् पीनां पीने चाहिए ॥ १३३ ॥

13-13½ The seeds of the bottle gourd beginning with fifty in number and increased each time by ten till one hundred is reached should be crushed and put into the decoctions of the emetic nut or any other drug of its group, taking each in its successive order.

इक्ष्वाकोः कषायेषु नव योगाः—

यष्ट्याह्नकोविदाराद्यैर्मुष्टिमन्तर्नखं पिबेत् ॥१४॥

अन्तर्नखम् नभ अंदर राभी नाखनोंको अंदर रखकर, मुष्टिम् छे छे मुष्टीथी भरेखां छद्वाकुनां बीज एक मुठोभर इक्ष्वाकुके बीजको, यष्ट्याह्न- जेडीमध मुलहठी, कोविदार- छायनार काचनार, आः वगेरेना कषायभा आदिके कायमें, पिबेत् पीनां पीने चाहिए ॥ १४ ॥

14. A fistful of its seeds mixed with the decoction of liquorice and the variegated mountain ebony or other drugs of its group may be taken as emetic dose.

इक्ष्वाकोः अष्टौ वर्तियोगाः—

कषायैः कोविदाराद्यैर्मात्राश्च फलवत् स्मृताः ।

कोविदार- कोविदार (छायनार) काचनार, आयेः वगेरे आदि, कषायैः आठ द्रव्योंके कायसे, मात्राः च छद्वाकुनां मात्राथीजे (वर्तियोगे) इक्ष्वाकुके मात्रायोग (वर्तियोग), फलवत् भदनक्ष्मणा मात्रायोग जेवा मदनफलके मात्रायोगके समान, स्मृताः उल्ला छे कहे हैं ॥ १४३ ॥

14½. The size of the pills in the case of the decoctions of the variegated

१४. मात्राश्च-वर्तियोगः (य.)



mountain ebony and other drugs of its group is the same as that of the emetic nut.

इक्ष्वाकोः पक्ष नेहयोगाः—

बिल्वमूलकपायेण तुम्बीवीजाञ्जलिं पचेत् ॥१५॥  
पूतस्यास्य त्रयो भागाश्चतुर्थः फाणितस्य तु ।  
सघृतो बीजभागश्च पिष्टानर्घाशिकांस्तथा ॥१६॥  
महाजालिनिजीमूतकृतवेधनवत्सकान् ।  
तं लेहं साधयेद्द्वयं घट्टयन्मृदुनाऽग्निना ॥१७॥  
यावत् स्यात्तन्तुमतोये पतितं तु न ग्रीर्यते ।  
तं लिहन्मात्रया लेहं प्रमथ्यां च पिबेदनु ॥१८॥  
कस्य एषोऽग्निमन्थादौ चतुष्के पृथगुच्यते ।

बिल्वमूल- भीलीनां भूषणा बिल्वमूलके, कषायेण  
कषायथी कषायसे, तुम्बीबीज- कडवी तूंगडीनां भीज  
कडवी तुम्बीके बीज, अञ्जलिम् १६ तोला १६ तोले,  
पचेत् पकावनां पकाने चाहिए, पूतस्य भागीने  
छानकर, अस्य तेना इसके, त्रयः भागाः त्रय भाग  
तीन भाग, फाणितस्य तु क्षुण्णितने रावका चतुर्थः  
थोथो भाग चौथा भाग, सघृतः ओंठ भाग धी घृतका  
एक भाग, बीज-भागः च ओंठ भाग कटुतुम्बीनां भीज  
इक्ष्वाकबीज एक भाग, महाजालिनि- कडवी खीरा  
जीमूत- भूत जीमूत, कृतवेधन- कडवां तूरिभां  
कडवी तरौई, वत्सकान् अने वत्सक और वत्सक,  
अर्घाशिकान् पिष्टान् ओभांना प्रत्येकना अरधा अरधा  
भागना कडक और वत्सक इनमेंसे प्रत्येकके आवे  
आवे भागके कलक, तम् लेहम् ओंठोना प्रसिद्ध  
अवलेह इनका प्रसिद्ध अवलेह यावत् न्यां सुधी  
जबतक, तन्तुमत स्यात् तांतुलारागे। धाय तारवाला बने,

१५. पचेत्-पिबेत् (ख.)

१६. पूतस्यास्य-पूतस्यापि (ख.)

१७. भागाश्चतुर्थः-अग्निस्त्व तु-भागाश्चतुर्थः कटु वत्सक  
व. क.)

१८. पिष्टानर्घाशिकांस्तथा-पिष्टानर्घाशिकांस्तथा (ख.)

१९. लेहं-कले (ख. क.)

२०. लिहन् मात्रया-लिहान्मात्रया (क. ख. ज. ड.)

तोये अने पाण्डुभां और पानीमें, पतितम् तु नाभतां  
डाकने पर, न ग्रीर्यते बीजभाजं न अन्यत्वां सुधी  
शीर्ण न हो तब तड, द्रव्यां कडवीभी कडवीमें, घट्टयन्  
ढबानतां हिलते हुए, मृदुना मृदु मृदु, अग्निना अग्निभी  
अग्निमें, माषयेत् तैयार करे सिद्ध करे. तम् लेहम् ते  
आवलेहने इस अवलेहको. मात्रया भाष्यम् मात्रामें,  
लिहन् आटी चाटकर, अनु अने उपर वीठे, प्रमथ्याम्  
च अभथ्या (दीपन अने पायन कर. थ) प्रमथ्याको, पिबेत्  
पीवी पीवे, अग्निमन्थ- अग्निमन्थ अग्निमन्थ, आदौ  
पहले आदि, चतुष्के आर द्रव्योंमें सिद्ध यता चार  
द्रव्योंमें सिद्ध किया जाता, एषः आ वड, कस्य  
कस्यमें कस्य, पृथक् भुङ्गे भुङ्गे पृथक् पृथक् ढक्यने  
कडवांभां आवे छे कहा जाता है ॥ १५-१८॥

15 & 16. 16 tolas of the bottle gourd  
seeds should be cooked in the decoction  
of the roots of bael and strained.  
Take three parts of this decoction  
one part of treacle, one part of ghee,  
half part of each of the pastes of the  
seeds of sponge gourd bristly luffa,  
bitter luffa and kurchi. This should  
be prepared into a linctus on a gentle  
fire stirring the stuff with a ladle  
till it has obtained the consistency of  
forming into threads which do not  
snap when put into water. This linc  
tus should be taken in proper dose  
followed by a potion of the digestive-  
stimulant decoction. This same prepa-  
ration in the case of the tetrad  
of windkiller etc., is described  
separately.

इक्ष्वाकोः एको मन्थयोगः—

शकुभिर्वा पिबेन्मन्थं तुम्बीखरसमाधितैः ॥१९॥  
कफज्वरज्वरे कासे कण्ठरोगेष्वरोचके ।

१९. कासे-बासे (ख.)

कफजे कङ्कन्य कफजन्य, ज्वरे ज्वरभां ज्वरमें, अथ कासे कास कासमें, कण्ठरोगेषु कण्ठरोग कण्ठरोग, अरोचकेषु अने अरुचिभां और अरोचकमें, तुम्बी- कटु तुम्बीना कटुतुम्बीके, स्वरस- स्वरसनी स्वरससे, भावितैः भावना दीधेव भावित, झक्तुभिः वा सक्तुऔथी सक्तुअसे, मन्थक मन्थ अनानी मन्थ वनाकर, पिवेत् पीवे पीवे ॥ १९३ ॥

19-19½. The demulcent drink with the expressed juice of the bottle gourd and roasted paddy powder should be taken as potion in fever cough, throat diseases and anorexia due to kapha

इक्ष्वाकेः एको मांसरसयोगः—

गुल्मे मेहे प्रसेके च कल्कं मांसरसैः पिवेत् ।  
नरः साधु वमत्येवं न च दौर्बल्यमश्नुते ॥२०॥

गुल्मे गुल्म गुल्म, मेहे प्रसेक प्रसेक, प्रसेके च अने कङ्कप्रसेकभां और कफप्रसेकमें, कल्कम् छद्वाकुनां छिन्नना कटुने इक्ष्वाकके बीजके कल्कको, मांसरसैः मांसरस साथे मांसरसोंके साथ, पिवेत् पीवे पीवे, एवम् ए प्रभाञ्छे करवाथी इस प्रकार, नरः पुरुषने मनुष्यको, साधु वमति सादरी रीते वमन थाय छे मली प्रकार वमन होता है, दौर्बल्यम् च अने दुर्बलता और दुर्बलताका, न अश्नुते आनती नथी अनुभव नहीं होता ॥ २० ॥

20. A potion of the paste of the bottle-gourd seeds mixed with meat-juices should be taken in gulma, urinary anomalies and ptyalism. As a result of this, the person vomits well without getting exhausted.

अभ्यायोक्तार्थसंग्रहः—

तत्र श्लोकाः—

पयस्यष्टौ सुरामण्ड-मस्तु-तक्रेषु च त्रयः ।

२०. मेहे-श्लोके (च. क.)

,, कल्क-कल्कं (च.)

त्रेयं सपललं तैलं वर्धमानाः फलेषु षट् ॥२१॥

घृतमेकं कषायेषु नवान्ये मधुकादिषु ।

अष्टौ वर्तिक्रिया लेहाः पञ्च मन्थो रसस्तथा ॥२२॥

योगा इक्ष्वाकुकल्पे ते चत्वारिंशच्च पञ्च च ।

उक्ता महर्षिणा सम्यक् प्रजानां हितकाम्यया ॥२३॥

तत्र ते विषयभां उच विषयमें, श्लोकाः उपसंहा- रना श्लोका छे छे उपसंहारके श्लोक हैं कि, पयसि दूधभां दूधमें, अष्टौ आठ आठ, सुरामण्ड- सुरामण्ड सुरामण्ड, मस्तु- मस्तु मस्तु, तक्रेषु च अने तकभां और तकमें, त्रयः त्रय तीन, सपललम् तिष्ठत्तुभां छे छे पललमें एक, त्रेयम् सूधवाभां छे छे सूधवेमें एक, तैलम् तैलभां छे छे तैलमें एक, फलेषु इक्ष्वाभां फलोंमें वर्ध- मानाः वर्धता जाता बढ़ते हुए, षट् छ छः, घृतम् घीभां घीमें, एकम् एक एक, मधुकादिषु मधुकादिषु मधुकादिषु, नवान्ये नवान्य अन्य, नच नच नो, वर्तिक्रियाः वर्तिक्रियाभां वर्तिक्रियामें, अष्टौ आठ आठ लेहाः लेहोभां अवलेहोंमें, पंच पांच पांच, मन्थः मन्थभां छे छे मन्थमें एक, तथा तथा और, रसः मांसरसभां छे छे मांसरसमें एक, ते आ ये, चत्वारिंशच्च च पञ्च च पिस्तादीन् पिस्तादीन्, योगाः योगा योग, महर्षिणा महर्षिणे महर्षिने, प्रजानाम् प्रजाना जनताको, हितकाम्यया हितकाम्यया इति नती कामनाथी हितकामनासे, इक्ष्वाकुकल्पे छद्वाकुक्ष्वाका इक्ष्वाकुकल्पमें, सम्यक् सादरी रीते मली प्रकार, उक्ताः उक्ता छे कहे हैं ॥ २१-२३ ॥

Here are the recapitulatory verses—

21-23. Eight milk preparations, three preparations consisting of one in supernatant part of wine, one in whey and one in buttermilk, one of snuff, one preparation with til paste, one of oil and six preparations of successively

२१. वर्धमानाः फलेषु षट्-वर्धमानासवेषु षट् (ख. द.)

२२. मन्थो रसस्तथा-मन्थो रसे तथा (च. क.)

२३. इक्ष्वाकुकल्पे ते-इक्ष्वाकुकल्पेऽस्मिन् (च. ब.)

, योगा.....पञ्च च-पञ्चचत्वारिंशदुक्ता योगाश्चास्मिन् महर्षिणा (च. त. द.)

increasing dose of seeds with emetic nut etc., one of ghee wine with decoctions of liquorice etc. eight of pills five of linctuses, one of demulcent drink and one of meat-juice—thus these forty-five preparations of the bottle gourd have been fully described by the great sage, desirous of the welfare of humanity.

इत्यग्निवेशकृते तन्त्रे चरकप्रतिमंस्कृतेऽग्रासे  
दृढबलसंपूरिते कल्पस्थाने इक्ष्वाकुकरणे  
नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

इति आ प्रभाषे इम प्रकार. अग्निवेशकृते अग्नि-  
वेशे रयेव। अग्निवेशने बनाये. चरकप्रतिमंस्कृते तन्त्रे  
अने चरक्या प्रतिमंस्कृत प.मेव। आ शास्त्रभा  
और चरकके द्वारा संस्कृत इस शास्त्रके, अग्रासे अग्रस  
अप्राप्त, दृढबलसंपूरिते अने दृढबले पूरा करेव।  
और दृढबलसे पूरित किये गये, कल्पस्थाने उदपरधान  
विधि कल्पस्थानमें, इक्ष्वाकुकरणः 'इक्ष्वाकुकरण' 'इक्ष्वाकु-  
करण', नाम नामने। नामका, तृतीयः त्रीजे तीसरा  
अध्यायः अध्याय संपूर्ण अथे। अध्याय समाप्त  
हुआ ॥ ३ ॥

3. Thus, in the Section on Pharma-  
ceutics, in the treatise compiled by  
Agnivesa and revised by Caraka, the  
third chapter entitled 'The Pharma-  
ceutics of the Bottle-gourd' not being  
available, the same as restored by  
Dridhabala, is completed.

चतुर्थोऽध्यायः ।

थैथे। अध्याय अध्याय चौथा  
Chapter IV

धामार्गवकल्पेपक्रम --

अथातो धामार्गवकल्पं व्याख्यास्यामः ॥ १ ॥

इति ह स्माह भगवानात्रेयः ॥ २ ॥

अथ अतः ६३ अध्याय अत्र आगे, धामार्गव-  
कल्पम् 'धामार्गवकल्प' नामक. अध्यायम् 'धामार्गव-  
कल्प' नामके अध्यायका, व्याख्यास्यामः व्याख्यान करुं  
व्याख्यान करेंगे ॥ १ ॥

भगवान् भगवान् आत्रेय, आत्रेयः आत्रेये  
आत्रेयेन, इति ह आ। विप्रभा नीये प्रभाषे अ इस  
विषयमें निम्न प्रकारसे ही, आह स्म उदयुं छे कहा है ॥ २ ॥

1. We shall now expound the  
chapter entitled 'The Pharmaceutics of  
the Sponge gourd'.

2. Thus declared the worshipful  
Atreya.

धामार्गवपर्यायाः —

कर्कोटकी कोठफला महाजालिनेरेव च ।

धामार्गवकल्प पर्याया राजकोशातकी तथा ॥ ३ ॥

कर्कोटकी डोर्टकी कर्कोटकी, कोठफला कोठफला  
कोठफला, महाजालिनेः च एव महाजालिनी महाजालिनी,  
तथा अने और, राजकोशातकी राजकोशातकी अ  
राजकोशातकी ये. धामार्गवकल्प धामार्गवकल्प धामार्गवके,  
पर्यायाः पर्याया छे पर्याय हैं ॥ ३ ॥

3. Karkothaki, Kothaphala, Mahajalini  
and Rajakosataki are the synonyms  
of ( Dhamargava ) the sponge gourd.

धामार्गवगुणाः —

गरे गुल्मोदरे कासे वाते श्लेष्माशयस्थिते ।

कफे च कण्ठवक्त्रस्थे कफसंचयजेषु च ॥ ४ ॥

रोगेष्वेषु प्रयोज्यं स्यात् स्थिराश्च गुरुवश्च ये ।

१. कोठफला—कोठफला (ध. प. फ.)

४. रोगेष्वेषु—रोगेष्वेषु (ध. प. फ.)

गरे अरक्षेण गरदोष, गुल्म-ददरे शुभ्र, उदररोग  
गुल्म, उदररोग, कासे कास काश, श्लेष्माशयस्थिते कक्ष-  
शयभा रહેथे। कफस्थानमें स्थित, वाते वात वात,  
कण्ठवक्त्रस्थे कंठ अने मुभभा रહેथे। गले और मुखमें  
स्थित, कफे कक्ष कफ, कफमंचयजेषु च अने कक्षना  
संयथशी यथा रोग औशोभा और कफसंचयजन्य रोग  
इनमें, ये स्थिराः च तेभ्य न रोग स्थिर एवं जो रोग  
स्थिर, गुरुवः च तथा गुरु छे तथा गुरु हैं, एषु ते उन,  
रोगेषु रोगोभा रोगोंमें, प्रयोज्यम् स्वात् धामार्गव योज्यवः  
दायक छे धामार्गवका प्रयोग करना चाहिए ॥ ४३ ॥

4-4½. This should be administered  
in toxicosis, gulma, abdominal disease,  
and cough; in conditions of vata lodged  
in the habitat of kapha; in condition  
of provoked kapha in the throat and  
the mouth and in diseases resulting  
from accumulation of kapha, and in  
conditions which cause rigidity and  
heaviness in the body.

फलं पुष्पं प्रवालं च विधिना तस्य संहरेत् ॥ ५ ॥

तस्य तेना इसके, फलम् इण फल, पुष्पम् इथ  
पुष्प, प्रवालम् च अने पत्राकुशेने और पत्राकुशेको,  
विधिना विधिपूर्वक विधिपूर्वक, संहरेत् अथ छे  
अधे अधे संग्रह करना चाहिए ॥ ५ ॥

5. By the systematic administration of  
its fruit, flowers and tender leaves, these  
disorders should be treated and cured.

धामार्गवस्य पलवानां नव योगाः—

प्रवालस्वरसं शुष्कं कृत्वा च गुलिकाः पृथक् ।  
कोविदारादिभिः पेयाः कषायैर्मधुकस्य च ॥ ६ ॥

प्रवाल- धामार्गवना पत्राकुशेना धामार्गवके पत्रा-  
कुशे, स्वरसम् स्वरसने स्वरसको, शुष्कम् कृत्वा  
सुखावी सुखाकर, गुलिकाः च गोलीओ अनावी  
गोलियां बनाकर, पृथक् पूटा पूटा पृथक् पृथक्, कोवि-

६. कृत्वा च-कृत्वा (क. व. क.)

दारादिभिः कथिताना वजेरेना कांचनारजादि, कषायेः  
कषायनी साथे कषायके साथ, मधुकस्य च अने मधु-  
मधना कषाय साथे और मुलहठीके कषायके साथ, पेयाः  
पीवी ओधे पीनी चाहिए ॥ ६ ॥

6. The expressed juice of the  
leaves should be dried and made into  
pills. These pills should be taken with  
the decoction of each of the drugs of  
variegated mountain ebony group, as  
well as with that of liquorice.

धामार्गवस्य चत्वारः क्षीरयोगाः, एकः सुरायोगश्च—

पुष्पादिषु पयोयोगाश्चत्वारः पञ्चमी सुरा ।  
पूर्ववत्

पूर्ववत् अगाठनी पेठे पूर्वकी भांति, पुष्पादिषु इथ  
वजेरेभा पुष्पादिमें, चत्वारः चार चार, पयोयोगाः  
दूधना योग थाय छे दूधके योग होते हैं, पञ्चमी अने  
पाँचमी और पाँचवां, सुरा सुराभा योग थाय छे  
सुराका योग होता है ॥ ६३ ॥

6½. Four milk preparations of  
the flowers etc., and a fifth a wine-  
preparation can be prepared as des-  
cribed with reference to previous drugs.

धामार्गवस्य नव कषाययोगाः—

जीर्णशुष्काणामतः कल्पः प्रवक्ष्यते ॥ ७ ॥  
मधुकस्य कषायेण बीजकण्ठोद्धृतं फलम् ।  
सगुडं व्युषितं रात्रिं कोविदारादिभिस्तथा ॥ ८ ॥  
दद्याद्बुधोद्वारतैभ्यो ये चाप्यन्ये कफामयाः ।

मतः अहीथी इसके आगे, जीर्णशुष्काणाम् अर्ध  
अने सुखाध अथेला इणने। पके और सूखे फलोंका,  
कल्पः कल्प कल्प, प्रवक्ष्यते छेलेवाभा आवशे कहा  
जायगा, बीजकण्ठ- पीजवाणी भाग बीजवाले भागको,

६३ पयोयोगाश्चत्वारः—पयोयोगाश्चत्वारः (घ.)

॥ पयोयोगा—पयोयोगा (घ.)

८. रात्रि—रात्रौ (घ.)

उद्धृतम् जेमभिः कटी नाभयभां आधेः छे औवा  
बीचमेंसे निकाले हुए, फलक ३ दोने फलके, सगुडर  
जोणसहित गुड मिलाकर, रात्रि न्युवितम् बना  
वासी रात्री रातभर रखकर मधुकस्य जेडीमधना  
मुलहठीके कषायके कवायनी साथे कषायके साथ, तथा  
अने और, कोविदार- कंठना- जेरेने कवायनी के  
कोविदार आदिके कषायके साथ, गुल्म- युष्म- गुल्म,  
उदर- अने उदरना और उदरके, जावेम्पः रेजीकीने  
रोगियोंको, ये च अने जे और जो, अन्ये अपि भीम  
पक्ष अन्य मी, कफामयाः कइना रेजे छे तयोभां  
कफरोग हैं उनमें, दद्यात् देवुं देवे ॥ ७-८६ ॥

7-8. The preparations of crushed and dried sponge gourd will henceforth be described. The fruit from which the seeds have been removed, kept overnight in the decoction of liquorice mixed with gur or with the decoction of the variegated mountain ebony or other drugs of its group, should be administered to patients afflicted with gulma, abdominal disease and other disorders due to kapha.

धामार्गवस्य एकोऽवयोगः —

दद्यादधेन संयुक्तं छर्दिहृद्रोगशान्तये ॥ ९ ॥

छर्दि- छिटी वमन, हृद्रोग- अने हृद्रोगनी और  
हृदयरोगकी, शान्तये शान्ति भान्ते शान्तिके लिए, अन्नेन  
धामार्गवतुं इण अजशी अजके, संयुक्तम् युक्त साथ,  
दद्यात् देवुं ओधो देवे ॥ ९ ॥

9. It should be given mixed with food for the alleviation of vomiting and cardiac disorders.

धामार्गवस्य एकोऽवयोगः

चूर्णैर्वाऽप्युत्पलादीनां भाविनाति प्रभूतशः ।  
एव क्षीरयवाग्वादितुतो घ्रात्वा वमेत् सुखम् ॥ १० ॥

रम- भांमं मंमं, क्षीर- दूध दूध, ववागू- अने  
यवागू और यवागू. आदि-वृषः जेरेधी नृष अयेवे  
रेजी आदिसे तृष दंकर रागी, चूर्णैः धामार्गवनां  
युष्मोथी धामार्गवके चूर्णसे प्रभूतशः अणु बहुतवार,  
भाविनाति अना दीधिव मवित किये, उत्पलादीनि वा  
अपि नीवकभण जेरेने नीलोकर आदिको, घ्रात्वा  
संधीने सूषकर, सुखम् सुखपूर्वक सुखपूर्वक, वमेत्  
वमन करे छे वमन करता है ॥ १० ॥

10. A person fed sumptuously on meat-juice, milk, gruel etc. and made to smell the blue lily or other flower heavily sprinkled over with the powder of the dried juice of the sponge gourd, vomits with ease

धामार्गवस्य द्वादश शकृदवयोगः —

चूर्णीकृतस्य वर्ति वा कृत्वा बदरसंमिताम् ।  
विनीयाज्जलिमात्रे तु पिबेद्रोऽश्वशकृद्रसे ॥ ११ ॥

चूर्णीकृतस्य वा धामार्गवतुं युष्मं उरी चूर्ण किये  
हुए धामार्गवकी, बदरसंमिताम् और जेवडी बेर बराबर,  
वर्तिम् जेणी गोली, कृत्वा अनावी बनाकर, अजलि-  
मात्रे सेण तोला सोलह तोके, गो आयना अलुना  
गायके गाबर, अश्व-शकृद- के बोधनी बाहना वा घोड़ेकी  
लीदके, रसे तु रसभां रसमें विनीय जेणीने चोकर,  
पिबेत् पीवी पीवे ॥ ११ ॥

11. Preparing a pill of the size of the jujube with the powder, one should take it in 16 tolas of the juice of cow-dung or horse-dung.

९. दद्यादधेन संयुक्तम्-दद्यादधेन वा युक्तं (ख.)

१०. संयुक्तम्-वा युक्तम् (ख. घ. ङ. च.)

१०. प्रभूतशः-सहस्रशः (घ.)

११. गोऽश्वशकृद्रसे गोशकृद्रो रसे (घ. ङ.)

पृषतर्ष्यकुरङ्गाह्वनजोष्ट्रश्चतराविके ।

श्वदंष्ट्रखरखङ्गानां चैवं पेया शकृद्रसे ॥१२॥

पृषत- पृषत, पृषत, कष्य- ऋष्य ऋष्य, कुरङ्गाह्व-  
कुरंग, कुरंग, गज- हाथी हाथी, उष्ट्र- गैंडा ऊँट, अश्व-  
तर- अश्व, खर- खर, आविके घेंटी मेड़, श्वदंष्ट्र-  
श्वदंष्ट्र, खर- गैंडा गवा, खङ्गानाम् च अने  
गेंडाना और गेंडेकी, शकृद्रसे भगवान् रसमां विष्टाके  
रसमें, एवम् ओ ५५ भाषाएँ इसी प्रकार, पेया ओ गेंडी  
पीवी इस गोली पीवे ॥ १२ ॥

12. Or the pill should be taken in  
the juice of the dung of the spotted  
deer, musk-deer, black deer, elephant,  
camel, mule, sheep, mouse deer, ass  
and rhinoceros.

धामार्गवत्स दश लेहयोगाः—

जीवकर्षभकौ वीरामात्मगुप्तं शतावरीम् ।

काकोलीं श्रावणीं मेदां महामेदां मधूलिकाम् ॥१३॥

एकैकशोऽभिसंचूर्ण्य सह धामार्गवेण ते ।

शर्करामधुसंयुक्ता लेहा हृदाहकासिनाम् ॥१४॥

सुखोदकानुपानाः स्युः पित्तोष्मसहिते कफे ।

जीवक. ७५५ जीवक, ऋषभकौ ५५५ ऋषभक,  
वीराम् शतावरी शतावर, आत्मगुप्तम् कौंथा केवोंच,  
शतावरीम् शतावरी शतावर, काकोलीम् काकोली  
काकोली, श्रावणीम् मोटी गेरभुंड़ी बड़ी मुंड़ी, मेदाम्  
मेदा मेदा, महामेदाम् महामेदा महामेदा, मधूलिकाम्  
अने मधुबिडा और मधूलिका, एकैकशः ओभांथी  
दरेडनु इनमेंसे एक एकको, धामार्गवेण धामार्गव  
धामार्गवके, सह सहित साथ, अभिसंचूर्ण्य थूल् करीने  
चूर्ण करके, शर्करामधु- साकर अने मधु शर्करा और  
मधु, संयुक्ता साथे मिलाकर, ते लेहाः तैयार करेवा  
ते अवलेहो तैयार किये हुए वे अवलेह, हृदाह-

१२. पृषतर्ष्य—शकृद्रसे ॥—पृषतर्ष्यकुरङ्गाह्वनजोष्ट्रश्चतराविके ।

हरिजाजशर्कराजिमेभवे च शकृद्रसे ॥

(क. ब. ग. फ.)

१३. पृषतर्ष्य...तराविके ।—पृषतर्ष्यकुरङ्गाह्वनजोष्ट्रश्चतराविके च

(क. ड.)

हृदयना हाडवाणा हृदहवाले, कासिनाम् तथा डास-  
वाणा रेग्रीओने अटोडवा तथा काप्रोगियोंको चटावे,  
पित्तोष्म- पित्तनी गरमीथी पित्तकी गरमीसे, सहिते युक्त  
युक्त, कफे अर्मा कफमें, सुखोदक- सहन थाय तेवा  
गरम अडना थोड़े गरम जलके, अनुपानाः अनुपानथी  
अनुपानसे, स्युः देवा देवा चाहिए ॥ १३-१४॥

13 : 4. Jivaka, Rishabhaka, Veera,  
cowage, climbing asparagus Kakoli,  
east indian globe thistle, Meda, Maha-  
meda and Madhulika—each of these  
reduced to powder along with sponge-  
gourd and taken as a linctus mixed  
with sugar and honey is beneficial for  
those afflicted with heart-burn and  
cough. It should be followed by a  
potion of genially warm water in  
conditions of kapha associated with  
pyrexia due to pitta.

धामार्गवस्य एकः कल्कयोगः—

धान्यतुम्बुरुयूषेण कल्कः सर्वविषापहः ॥१५॥

धान्य- धान्या धनिया, तुम्बुरु- अने तेम्बुङ्गना  
और तेजबलके, यूषेण थूप् साथे यूषके साथ, कल्कः  
धामार्गवसे उल्ल धामार्गवका कल्क, सर्वविष- सर्व  
विषने सब विषको, अपहः नाश करनेवाले छे नष्ट  
करता है ॥ १५ ॥

15. The paste of the sponge-gourd  
taken with the gruel of coriander and  
indian tooth-ache is curative of all  
kinds of toxicosis.

धामार्गवस्य अन्ये एकादश कषाययोगाः—

जात्याः सौमनसायिन्या रजन्याश्चोरकस्य च ।

वृश्चीरस्य महाशुद्रसहाहैमवतस्य च ॥१६॥

१५. सर्वविषापहः—तस्य विषापहः (क. ख. छ. ड.)

१६. वृश्चीरस्य—वृश्चीरस्य (ब.)

—महामहाशुद्रसहाहैमवतीराणां पुष्कं पुष्कं (ब. फ.)

विम्ब्याः पुनर्नवाया वा कासमर्दस्य वा पृथक् ।  
एकं धामार्गवं द्वे वा कषाये पट्टितम् तु ॥ १७ ॥  
पूतं मनोविकारेषु पित्तद्वन्द्वमुत्तमम् ।

जात्याः अर्धं जाई तौमनसाविन्याः श्वेदी मेदी  
रज्याः दण्डर हली, चोरकस्य च ये च चोरक, वृश्चि-  
रस्य धोणी साटोडी सफेद गन्धपुरा, महाशुद्धसदा  
भक्षसदा, क्षुद्रसदा मक्षसदा, क्षुद्रसदा, हैमवतस्य च  
हैमवती हैमवती, विम्ब्याः धीरेडी कन्दरी, पुनर्नवायाः  
वा साटोडी गन्धपुरा, कासमर्दस्य वा अने अशुद्धमन्त्र  
और कसोदीके, पृथक् अणु अणु पृथक् पृथक्, कषाये  
अनाथमां कषायमें, धामार्गवम् धामार्गवम् धामार्गवके,  
एकम् अथ एक, द्वे वा के ये द्वे वा च फट्टको, रजितम्  
थोणीने मलकर, पूतम् गाणी अर्ध छान कर्क उत्तम-  
ये उत्तम इत्य श्रेष्ठ, वमनम् तु वमन वमनको, मनो-  
विकारेषु मनो विकारोंमां मानसिक रोगोंमें, पित्त-  
पीपुं पीता चाहिए ॥ १६-१७ ॥

16-17. Put one or two of the  
sponge-gourd fruits into the decoction  
of either nut-meg, spanish jasmine,  
turmeric, angelica, white hog-weed,  
wild black gram, white sweet flag,  
scarlet fruited gourd, hog-weed or  
negro coffee. Then rub well and strain.  
This is an excellent emetic preparation  
in psychic disorders.

धामार्गवस्य एको घृतयोगः —

तच्छृतक्षीरजं सर्पिः साधितं वा फलादिभिः ॥ १८ ॥

तच्छृत- धामार्गवना इगनी साथे उद्भावेन  
धामार्गवके फलके साथ पकाये, क्षीरजम् दूधमांथी  
उत्पन्न अथ दुग्धसे उत्पन्न, फलादिभिः अने भीड़  
वजरेना उद्भावेनी और फलकादिके कार्योंने, साधितम्  
साधित सिद्ध, सर्पिः वा वी पीपुं घृतको पीवे ॥ १८ ॥

18. A medicated ghee can be made  
from the ghee obtained from the milk  
in which the sponge gourd has been  
boiled, by preparing it with the  
emetic nut and other drugs of its  
group.

अध्यायोक्तसंग्रहः —

तत्र श्लोको—

पल्लवे नव तत्वारः क्षीर एकः सुरासवे ।  
कषाये विंशतिः कल्के दश द्वौ च शकृद्रसे ॥ १९ ॥  
अन्न एकस्तथा त्रेधे दश लेहास्तथा घृतम् ।  
कल्पे धामार्गवस्योक्ताः पट्टिर्योगा महर्षिणा ॥ २० ॥

तत्र ये त्रिधमां उपपन्नानां ये श्लोक छे छे  
उस विषयमें उपपन्नके दो श्लोक हैं कि, पल्लवे  
पक्षवोमां पत्राकुरोंमें, नव नव नो, क्षीरे दूधमां दूधमें,  
तत्वारः चार चार, सुरासवे सुरासवमां सुरासवमें,  
एकः अथ एक, कषाये कषायमां कषायमें, विंशतिः  
वीस बीस, कल्के कल्कमां अथ कल्कमें एक, शकृद्रसे  
पुरीपरसमां पुरीपरसमें, दश द्वौ च दश बारह, अने  
अन्नमां अन्नमें, एकः अथ एक, त्रेधे सूधमां अथ  
सूधनेमें एक, दश लेहाः आटोलीमां दश अवलेहमें दश,  
घृतम् तथा धीमां अथ तथा घृतमें एक पट्टिः योगः  
आ प्रमाणे साठ थोड़ा इस प्रकार साठ-योग, महर्षिणा  
महर्षि अथ महर्षिने, धामार्गवस्य कल्पे धामार्गवकल्पमां  
धामार्गवकल्पमें, उक्ताः उक्ता छे कहे हैं ॥ १९-२० ॥

Here are the two recapitulatory  
verses —

19-20. Nine preparations from the  
sprouts, four milk-preparations, one  
of wine, twenty decoctions and one  
preparation of paste, twelve preparations  
in dung-juice, one in food and one as  
snuff, ten preparations of linctus and

१९. कषाये विंशतिः कल्के-कषाये नव दण्डन्ये त्रेधे (द.)

२०. अन्न.....दश-दश लेहास्य कल्का दश चैव दश

१७ विम्ब्याः.....पृथक्-पुनर्नवाकासमर्दविन्वीहैमवतस्य च

(च-फ.)

तथा (द.)



one of ghee—thus, these sixty preparations have been described by the sage, in the pharmaceutics of the sponge-gourd.

इत्यग्निवेशकृते तन्त्रे चरकप्रतिसंस्कृतेऽप्राप्ते  
दृढबलसंपूरिते कल्पस्थाने धामार्गवकल्पो  
नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

इति आ. भ्रा. ॥ इस प्रकार, अग्निवेशकृते अग्निवेशे  
रथेला अग्निवेशसे बनाये, चरकप्रतिसंस्कृते तन्त्रे अने  
चरककी प्रति संस्कार पायेला आ. शा. भ्रा. और  
चरकके द्वारा संस्कृत इस शास्त्रके, अप्राप्ते अप्राप्त अप्राप्त,  
दृढबलसंपूरिते अने दृढबलसे पूरा करेला और दृढबलसे  
पूरित किये गये, कल्पस्थाने उपस्थाननाम कल्पस्थानमें,  
धामार्गवकल्पः 'धामार्गवकल्प' 'धामार्गवकल्प', नाम  
नामना नामका, चतुर्थः येथे चौथा, अध्यायः अध्याय  
संपूर्ण थये। अध्याय समाप्त हुआ ॥ ४ ॥

4. Thus in the Section on Pharma-  
ceutics, in the treatise compiled by Agni-  
vesa and revised by Caraka, the fourth  
chapter entitled 'The Pharmaceutics  
of the Sponge gourd' not being  
available, the same as restored by  
Dridhabala, is completed.

पञ्चमोऽध्यायः ।

पांचमो अध्याय अध्याय पांचवाँ

Chapter V

वत्सककल्पोपक्रमः—

अथातो वत्सककल्पं व्याख्यास्यामः ॥ १ ॥

इति ह स्माह भगवानात्रेयः ॥ २ ॥

अथ अतः हवे अलीथी अब आगे, वत्सककल्प  
'वत्सककल्प' नामना अध्याय 'वत्सककल्प' नामके  
अध्यायका, व्याख्यास्यामः व्याख्या करूँ व्याख्या  
करि ॥ १ ॥

भगवान् भगवान् भगवान्, आत्रेयः आत्रेये आत्रेयने,  
इति ह आ. विषयमा. नीये भ्रा. ॥ इस विषयमें  
निम्न प्रकारसे ही. आह स्म. उद्धृतुं छे कहा है ॥ २ ॥

1. We shall now expound the  
chapter entitled 'The Pharmaceutics of  
Kurchi'.

2. Thus declared the Worshipful  
Atreya.

वत्सकस्य पर्यायाः—

अथ वत्सकनामानि मेवं स्त्रीपुंसयोस्तथा ।

कल्पं चास्य प्रवक्ष्यामि विस्तरेण यथातथम् ॥ ३ ॥

अथ हवे अब, वत्सक- वत्सकना वत्सकके, नामानि  
नाम नाम, तथा स्त्रीपुंसयोः मादा अने नरमा मादा  
और नरमें, मेदम् मेद मेद, अस्य तथा येना तथा  
इसका, कल्पम् च उद्धृतुं छे अने कल्प इनको, यथा-  
तथम् अथ स्वयंभा. ठीक प्रकारसे, विस्तरेण विस्तार-  
पूर्वक विस्तारसे, प्रवक्ष्यामि उद्दीश कहूँगा ॥ ३ ॥

3. I shall declare the various names  
of kurchi, the difference between the  
female and the male of the species, and  
expound the pharmaceutics of kurchi  
in a systematic and elaborate manner.

वत्सकः कुटजः शक्रो वृक्षको गिरिमल्लिका ।

बीजानीन्द्रयवास्तस्य तथोच्यन्ते कलिङ्गकाः ॥ ४ ॥

कुटजः कुटज कुटज, शक्रः शक्र शक्र,  
वृक्षकः वृक्षक वृक्षक, गिरिमल्लिका तथा  
गिरिमल्लिका ये तथा गिरिमल्लिका ये, वत्सकः वत्सकना  
पर्याय छे वत्सकके पर्याय हैं, तस्य अने तेना और  
उसके, बीजानि अने बीजको, इन्द्रयवाः इन्द्रयव  
इन्द्रयव, तथा तथा तथा, कलिङ्गकाः कलिङ्गक कलिङ्गक,  
उच्यन्ते उद्धृतुं छे कहा जाता है ॥ ४ ॥

4. It is known by the names of  
Vatsaka, Kutaja, Sakra, Vriksaka  
and Girimallika. Its seeds are known  
as Indrayava and Kalingaka.

३. प्रवक्ष्यामि-विशेषमें (च. फ.)

વત્સકસ્ય મેદો -

વૃહત્ફલઃ શ્વેતપુષ્પઃ સ્નિગ્ધપત્રઃ પુમાન્ ભવેત્ ।  
શ્યામા ચારુણપુષ્પા સ્ત્રી ફલવૃન્તૈસ્તથાઽણુભિઃ ॥૫॥

વૃહત્ફલઃ જે વત્સકને મેદો કહે જિન વત્સકને વડે ફલ, શ્વેત-પુષ્પઃ શ્વેત ફૂલ શ્વેત પત્ર. સ્નિગ્ધપત્રઃ અને સ્નિગ્ધ પાન હોય અને સ્વિકારે પત્તો હોય, પુમાન્ તે નર વડ નર, મેદો કહેવાય છે કહાતા છે, શ્યામા અને જે વત્સક શ્યામ રંગની અને જો વત્સક શ્યામ વર્ણન અરુણ-પુષ્પા એ વાદ ફૂલોથી લાલ ફૂલોમાં. તથા તથા તથા, અણુભિઃ નાનાં છોડે, ફલવૃન્તૈઃ ફળો. તેમજ કીડી-યાથી યુક્ત હોય તે ફળોં એવં વૃન્તોંયે યુક્ત હો વડ. સ્ત્રી માદા કહેવાય છે માદા કહાતી છે ॥ ૫ ॥

5. The male variety of the species is known by its big fruit, white flowers and thick leaves. The female variety is known by its dark and red flowers and by the small size of its fruit and stalk.

વત્સકસ્ય ગુણઃ —

રક્તપિત્તકફમ્નસ્તુ સુકુમારેષ્વનત્યયઃ ।  
હૃદ્રોગજ્વરવાતાસુગ્વીરપાદિષુ શસ્યતે ॥૬॥

રક્તપિત્ત- વત્સક રક્તપિત્ત વત્સક રક્તપિત્ત, કફમ્નઃ તથા કફને નાશ કરે છે તથા કફનો નષ્ટ કરતા છે, સુકુમારેષુ નુ કોમળ મનુષ્યોને કોમળ પ્રકૃતિવાલોનો અત્યયઃ તુલસાન કરનાર નથી હાતિ નહીં કરતા, હૃદ્રોગ- અને હૃદ્રોગ અને હૃદ્રોગ, જ્વર- જ્વર જ્વર, વાતાસુ- વાતરક્ત વાતરક્ત, વીરપાદિષુ અને વિસર્પ વગેરેમાં અને વિસર્પ આદિમાં, શસ્યતે વધણાય છે પ્રશસ્ત છે ॥ ૬ ॥

6. This (either variety) is curative of hemothermia and is free from any risk if administered even to delicate people. It is recommended in cardiac

૫. શ્વેતપુષ્પઃ—સિને: પુષ્પ: (શ. ક.)

૬. ફલવૃન્તૈઃ—ફલપુષ્પ: (શ. ક.)

troubles, fever. rheumatic conditions and acute spreading affections.

વત્સકસ્ય નવ કષાયયોગાઃ —

કાલે ફલાનિ સંગૃહ્ય તયોઃ શુષ્કાણિ ત્રિશ્લિપેન્ ।  
તેષામન્તર્નસ્ત્વં મુષ્ટિં જર્જરીકૃત્ય ભાવયેન્ ॥ ૭ ॥  
મધુકસ્ય કષાયેળ કોવિદારાદિભિસ્તથા ।  
નિશિ મિથ્યંતં વિમૃદ્યેતલ્લવણઙ્ગૌદ્રસંગુતમ્ ॥ ૮ ॥  
પિવેત્તદ્વમનં શ્રેષ્ઠં પિત્તશ્લેષ્મનિર્ઘર્ષણમ્ ।

તયોઃ તે બન્નેનાં જન બેનોંકે, શુષ્કાણિ સૂકાં શુષ્ક, ફલાનિ ફળોં. ફળોંકા, કાલે તેઓની મોસ-મમાં અગતી સોયમમાં, સંગૃહ્ય સંગ્રહ કરી સંગ્રહ કરકે, ત્રિશ્લિપેન્ રાખી મૂકનાં રક્ષા દેવે, તેષામ્ તેઓમાંથી જનમાંં અન્તર્નસ્ત્વં નખ અંદર રહે તેવી નહોંકો અન્દર કાકે, મુષ્ટિમ્ મુઠી જેટલાં એક મુઠીમર જેકર, જર્જરીકૃત્ય અધકચનાં ખાડી અવકુટેકર, મધુકસ્ય જેડીમધના મુલહીકે. કષાયેળ કષાયથી કષાયમાં, તથા તથા તથા, કોવિદાર- કાંચનાર કાચનાર, આદિભિઃ વગેરેના કષાયથી આદિકે કષાયમાં, ભાવયેન્ ભાવના દેવી ભાવના દેવે, નિશિ રાત આખી રાત મર સ્થિતમ્ રહેના દર્ધને મિગોકર, વિમૃદ્ય યોગી મલકર, લવણ-લવણ નમક, ઙ્ગૌદ્ર- અને મધુકસ્ય મધુ, સંગુતમ્ મેળવી મિલાકર, એવં એને રક્ષકો, પિવેન્ પીવું પીવે, તત્ તે વડ, વમનમ્ વમન વમન, શ્રેષ્ઠમ્ શ્રેષ્ઠ છે શ્રેષ્ઠ છે, પિત્ત-શ્લેષ્મ- અને પિત્ત તથા કફને નાશ કરનાં અને પિત્ત તથા કફના નિર્ઘર્ષણમ્ નાશ કરનાર છે નાશ કરનાર છે ॥ ૭-૮ ॥

7-8. The fruits of kurchi should be culled in their proper season and should be dried and stored A fistful of them should be crushed and soaked

૭. ત્રિશ્લિપેન્—ત્રિશ્લિપેન્ (શ. ક. શ. ક.)

૮. ભાવયેન્—ભાવયેન્ (શ. ક.)

૯. —મં પચેન્ (શ. ક.)

૧૦. —તેપયેન્ (શ. ક.)

૧૧. —તેમયેન્ (શ. ક.)

૧૨. પિવેન્—પિવેન્ તત્ વમનમ્ (શ. ક.)

in the decoction of liquorice and the mountain ebony group of drugs, for a night. This should then be rubbed with rock-salt and honey and taken as a potion. This is a good emetic dose curative of pitta and kapha.

वत्सकस्य पत्र चूर्णयोगः, त्रः सलिलयोगः, एकः  
कृशरायोगश्च—

अष्टाहं पयसाऽऽर्केण तेषां क्षृणानि भावयेत् ॥९॥  
जीवन्मृत्यु कषायेण ततः पाजितं विवेत् ।  
फलजीमूतकेदराकुजीमूतानां पृथक् तथा ॥१०॥  
सर्वपाणां मधुकानां लवणस्यथवाऽऽहुता ।  
कृशरेणाथवा युक्तं विदध्याह्वानं भिषक ॥११॥

तेषाम् धनं धनं धनं चूर्णानि येषु चूर्णको  
अष्टाहम् आह विनशु सुधी आह दिन तः, आर्जेण  
आह धनं आहवे पयसा हृद्यथी हृद्यमे, मानयेत् भावन  
देवी भावना देवे, ततः ते पथी उत्तरे वाद, पणितलम्  
येक धर्म ज्ञेयुं एक कर्ष मात्राको, जीवकस्य अहङ्गा  
जीवकके, कषायेण हृद्यथ भाये कषायके साथ, पिवेत्  
पीयुं पीवे, फल-भीतिथ मैतकल, जीमूतक-अभूतक  
जीमूतक, इक्ष्वाकु-हृद्यथी तूष्णी तिकलौकी, जीवन्तीनाम्  
अने होडीना और जीवन्तीके, पृथक् शुद्ध शुद्ध पृथक्  
पृथक्, तथा ते ज प्रभाणे इसी प्रकार, सर्वपाणाम् सरस्य  
सरतो, मधूकानाम् भट्ट्यां मद्दे, अथवा अने और  
लवणस्य धनधनं नमकके अम्बुता भाष्टीथी पानीसे,  
अथवा अथवा अथवा, कृत्तरेण कृशगनी कृशराके, युक्तम्  
साथे साथ मिलाकर, मिषक् वैदे वैद्य, वज्रनम् वमन  
वमन, विदध्यात् कृशधनुं कराये ॥ ९-११ ॥

9-11. The powder of the fruits should be impregnated for eight days in the milky exudation of mudar, and a dose of one tola of this powder should be taken as potion with the

decoction of Jivaka. In a similar manner, the decoction of the emetic nut bristly luffa, bottle gourd, cork swallow wort, rape seed or mahwa may be used. or even water mixed with rocksalt. The powder of its seeds may be given mixed with kedgerree, for the purpose of emesis.

अध्यायोक्त संसंगः —

तत्र श्लोकः—

कथयिष्ये चूर्णैश्च पञ्चोक्ताः सलिलैस्त्रयः ।  
एकश्च कृशरायां रुमायोगास्तेऽष्टदश स्मृताः ॥१२॥

तत्र ते निषप्रभा उत्त निषयमे, श्लोकः विपश्चं-  
 र्ना श्लोक छे के उपसंशारका श्लोक है कि, कषायैः  
 क्षपायेमा क्षपायमे, नव नव नो, चूर्णैः च यूष्णीमा  
 चूर्णैमे, पञ्च पांय पांच, सलिलैः शने अन्नमा और जलमे,  
 त्रयः त्रयु योग तीन योग, उक्ताः उक्ता छे कहे हैं,  
 कृशरायाम् तथा कृशराभा तथा कृशरामे, एकः च ओक  
 योग एक योग स्यात् पाय छे होता है, ते योगाः ते  
 योगा ये योग, अष्टादश अक्षर अठारह, स्मृताः कला  
 छे कहे हैं ॥ १२ ॥

Here is the recapitulatory verse—

12 Nine preparations of decoctions, five of powders, three in water and one in kedgeriee -- thus in all, eighteen preparations have been described of kurchi.

इत्यग्निवेशकृते तन्त्रे चरकप्रतिसंस्कृतेऽप्राप्ते  
दृढबलसंप्रिते कर्पस्थाने वत्सककर्पो  
नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

१०. जीवकस्य-जीमूतक (घ. फ.)

११. निरूप्यात-प्रत्ययात् (ठ. इ.).

१२. एकश्च...स्मृताः-कुरुक्षेत्रादश प्रोक्ता दोषाः कश्चेत्  
वत्सकम् (य. द.)

कूशराऽष्टाश्रयेणा वत्सकरम्  
निदर्शिताः (च. "क.)



चार योग होते हैं, सुरा च तथा कृतवेधनना इत्यने। सुरानी साथे ओक थोड़ा आयु छे और कृतवेधनके फलका सुराके साथ एक योग होता है, एनेषु ओछीभा इनमें, पूर्ववत् अगोडि शुभ्रकृतकल्पमां कला प्रभाषे अभव्युं जीमूतक कल्पमें पहिले जो कहा है उसके अनुसार समझना चाहिए ॥ ४३ ॥

4½. Preparations of milk etc., as also of wine may be made of the flowers etc. of bitter luffa, as in the case of the drugs previously described.

कृतवेधनस्य द्वाविंशतिः कषाययोगाः —

सुशुष्काणां तु जीर्णानामेकं द्वे वा यथाबलम् ॥ ५ ॥  
कषायैर्मधुकादीनां नवभिः फलवत् पिबेत् ।  
काथयित्वा फलं तस्य पूत्वा लेहं निघापयेत् ॥ ६ ॥  
कृतवेधनकल्पांशं फलाद्यर्घांशसंयुतम् ।  
पृथक् चारुवधादीनां त्रयोदशभिरासुतम् ॥ ७ ॥

सुशुष्काणाम् सारी पेडे सूखयेवां मली प्रकार सूखे हुए, जीर्णानाम् तु अने परिपक्व धयेवां और पके हुए. एकम् ओक एक, द्वे वा डे धे इण या दो फलोंको, यथाबलम् अथ अनुसार बलके अनुसार, मधुकादीनाम् नेहीमधु वज्रेना मुलहरी आदि, नवभिः नव नौ, कषायैः क्वाथेनी साथे कषायोंके साथ, फलवत् भीठणी नेम मैनफलकी तरह, पिबेत् पीवां पीवे, तस्य तेना इसके, फलम् इधने फलका, काथयित्वा छिछाणी काथ करके, पूत्वा भाणी धर्छ छानकर, लेहम् अने यादव् नेवा पीड लेह, निघापयेत् अनावी राभवे अने उपर्युक्त डोछ ओक क्वाथनी साथे पीवे बनाने और उपर्युक्त किसी एक काथके साथ पीवे, कृतवेधन- कृतवेधनना इधना कृतवेधनके फलके, कल्पां

कल् कल्कना ओक भागने कल्कके एक भागको, फलादि- भीठण वज्रेना मैनफल आदिके, अर्घांश- अर्धी भागो आवे भागोंके, संयुतम् साथे भेगवी तेना साथ मिलाकर उसका, चारुवध- गरभाणा अमलतास, आदीनाम् च वज्रे आदि, त्रयोदशभिः तेर द्रव्योंना क्वाथेथी तेरह द्रव्योंके काथोंसे, पृथक् शुद्धे शुद्धे पृथक् पृथक्, आसुतम् आसव करवे आसव करे ॥ ५-७ ॥

5-7. One or two of the dried and crushed fruits of bitter luffa according to the strength of the patient, should be taken in any of the nine kinds of decoctions of liquorice and other drugs of its group as in the case of the emetic nut. Decocting the fruits of bitter luffa and straining the decoction, a linctus may be made by mixing in it one part of the paste of bitter luffa seeds and half part of the emetic nut and other drugs. Thirteen decoctions can be made by macerating the bitter luffa in each of the decoctions of the purging cassia and other drugs of its group.

कृतवेधनस्य दश पिच्छायोगाः —

शास्मलीमूलचूर्णानां पिच्छाभिर्दशभिस्तथा ।

तथा ते प्रभाषे उसी प्रकार, शास्मलीमूल- शैभणानां भणानां शास्मलीके मूलके, चूर्णानाम् यूथोनी चूर्णोंके, दशभिः दश दस, पिच्छाभिः पिच्छाओथी दश थोड़ा थाप छे छवाबसे दस योग होते हैं ॥ ७३ ॥

7½. Ten emulsions can be made by mixing bitter luffa with the powders of the roots of each of the

५. जीर्णानाम्-जीर्णानाम् (ब. थ. द. ब. फ.)

६. फलं-रसं (ब.)

७. फलं तस्य पूत्वा लेहं-रसं तं च कृत्वा लेहं (ब.)

८. " " -रसं तस्य पत्तवा लेहं (ब. फ.)

९. कल्पांश-कल्पांश (त.)

१०. कल्पांशसंयुतम्-फलांशसंयुतम् (ब. फ.)

७३. शास्मलीमूलचूर्णानां पिच्छाभिः-शास्मलीचूर्णचूर्णानां

पक्वाभिः (ग.)

११. चूर्णानां-वृत्तानां (ब. ब. ब. फ.)

ten milk-exuding trees of the silk cotton tree group

कृतवेधनस्य षड्वर्तियोगाः एको घृतयोगश्च—

वर्तिक्रियाः षट् फलवत्, फलादीनां घृतं तथा ॥८॥

फलवत् भीमिनी भाङ्ग मैनफलके समान, षट् छः, वर्तिक्रियाः वर्तिक्रियाः आथ छे वर्तिक्रियाएं होनी हैं, तथा तथा तथा, घृतम् कृतवेधनना इण साधे साधेसा इधयी अथेसा बीने कृतवेधनके फलसे साधित दूधसे उत्पन्न हुए बीने, फलादीनाम् भीमिनी वजरेना कपायथी भीमिनी पेठे साधयुं मैनफल आदिके काथसे मैनफलवत् सिद्ध करे ॥ ८ ॥

8. Six preparations of pills can be made as in the case of the emetic nut. A ghee-preparation can be made of its fruits etc., in the same manner.

कृतवेधनस्य अष्टौ लेहयोगाः—

कोशातकानि पञ्चाशत् कोविदाररसे पचेत् ।

तं कषायं फलादीनां कल्कैर्लेहं पुनः पचेत् ॥९॥

क्ष्वेडस्य तत्र भागः स्याच्छेषाण्यर्धांशिकानि तु ।

कषायैः कोविदाराद्यैरेवं तत् कल्पयेत् पृथक् ॥१०॥

पञ्चाशत् पचास पचास, कोशातकानि कोशातकीने कोशातकीके, कोविदाररसे कांथनारना कपायभां काचनारके काथमें, पचेत् पडावनी पकाना चाहिए, फलादीनाम् भीमिनी वजरेना मदनफलादिके, कल्कैः कल्कैः नाभी कल्क द्वारा, तम् ते इध, कषायम् कषायने कषायका, पुनः इरीथी फिर, लेहम् लेह लेह, पचेत् गन्धवदे बनाये, तत्र तेभां इसमें, क्ष्वेडस्य कडवां त्रिभिन्ने कषयी तोरईका, भागः अेक भाग एक भाग, स्यात् नाभये देवे, शेषाणि तु भाडीनां इन्ने शेष इन्नेका, अर्धांशिकानि अर्धा अर्धा भागभां लेवां लेधे

८. वर्तिक्रियाः षट् फलवत्-वर्तयः फलवत् षट् स्तुः (ड. व. क.)

१०. कोविदाराद्यैरेवं तत् कल्पयेत् पृथक्-कोविदाराद्यैरेवमित्तं पृथक् पिबेत् (व. क.)

११. एवं तत् कल्पयेत् पृथक्-एवं तत् कल्पयेत् पृथक् (ड. व. क.)

आषा आषा माग लेना चाहिए, एवम् तत् अे प्रभाषे तेनी इध प्रकार उसकी, कोविदाराद्यैः कांथनार वजरेना काचनारआदिके, कषायैः कषायैथी कषायके साथ, पृथक् लुदी लुदी पृथक् पृथक्, कल्पयेत् कल्पना करनी लेधे अे कल्पना कानी चाहिए ॥ ९-१० ॥

9-10. Fifty fruits of bitter luffa should be cooked in the expressed juice of the variegated mountain ebony. That decoction should be cooked into a linctus with the paste of the emetic nut group of drugs in the ratio of one part of the paste of bitter luffa and half part of the other drugs. It may also be prepared separately with the decoctions of each of the drugs of the variegated mountain ebony group.

सप्त मांसरसयोगाः—

कषायेषु फलादीनामानूपं पिशितं पृथक् ।

कोशातक्या समं पक्त्वा रसे सलवणं पिबेत् ॥११॥

फलादीनाम् भीमिनी वजरेना मैनफलादिके, पृथक् लुदा लुदा पृथक् पृथक्, कषायेषु कषायेभां कषायोंमें, कोशातक्या कोशातकी कोशातकीके, समम् लेधुं समान प्रमाणमें, जानूपम् जानूप प्राणीओनु जानूप प्राणियोंका, पिशितम् भांस मांस, पक्त्वा पडावनीने पकाकर, रसम् भांसरस मांसरसमें, सलवणम् लवण साथे नमक मिलाकर, पिबेत् पीवे पीना चाहिए ॥ ११ ॥

11. The flesh of wetland creatures along with equal part of bitter luffa, should be cooked in the decoction of each of the drugs of the emetic nut group and the juice of this flesh-preparation should be taken mixed with rocksalt.

११. कोशातक्या समं-कोशातकीके (व. क.)

ફલાદિપિપ્પલીતુલ્યં તદ્વત્ ક્ષ્વેડરસં પિબેત્ ।

તદ્વત્ તે બે પ્રમાણે, જસી સજાર, ક્ષ્વેડરસમ્ કડવાં તુરિયાનાં રસમાં કઢવી તોરડે, રામ્, ફલાદિપિપ્પલી-મીઠાનાં બીજ વગેરે છ પ્રમાણે જૈનકળ પ્રાદિ છઃ દ્રવ્ય, તુલ્યમ્ અને એએનાં પ્રમાણ પ્રમાણમાં માંસે લઈ માંસરસ સિદ્ધ કરી, ઓર અને સમાન પ્રમાણમાં માંસ લેકર ચાંચરવકો સિદ્ધ કરાકે, પિબેત્ રોગીએ થીવે રોગી પીવે ॥ ૧૧૩ ॥

11½. The juice of bitter luffa cooked with the flesh of wet-land creatures equal in quantity to that of the emetic nut and other drugs and of long pepper, may be taken as potion.

કૃતવેધનસ્ય એક ઇશ્વરસયોગઃ :-

ક્ષ્વેડં કાસી પિબેત્ સિદ્ધં મિશ્રમિશ્વરસેન ચ ॥૧૨॥

કાસી કાસરોગીએ કાસરોગી, ઇશ્વરસેન શેરડીના રસમાં ફેલકે રસમાં, મિશ્રમ્ મિશ્રિત કરીને મિલાકર, સિદ્ધમ્ ચ તે રસથી સિદ્ધ કરેલાં, તે રસસે સિદ્ધ કી હુઈ, ક્ષ્વેડમ્ કડવાં તુરિયા કઢવી તોરડે, પિબેત્ થીવાં પીવે ॥ ૧૨ ॥

12. A man afflicted with cough should take as potion. bitter luffa mixed and prepared with the juice of sugarcane.

અધ્યાયોજાર્થવિષયાઃ :-

તત્ર સ્તોકો—

શીરે દ્વૌ દ્વૌ સુરા ચૈકા કાથા દ્વાવિંશતિસ્તથા ।  
દશ પિચ્છા વૃતં ચંકં વદ્ ચ વર્તિક્રિયાઃ શુભાઃ ૧૩  
લેહેઽષ્ટૌ સપ્ત માંસે ચ યોગ ઇશ્વરસેઽપરઃ ।  
કૃતવેધનકલ્પેઽસ્મિન્ ષષ્ઠિર્યોગાઃ પ્રકીર્તિતાઃ ॥૧૪॥

૧૧૩. ક્ષ્વેડરસમ્-માંસરસમ્ (છ. ત. ફ.)

૧૨. ક્ષ્વેડં કાસી-ક્ષ્વેડં કાસી (જ.)

૧૩. કાસી-કાસી (જ. ડ.)

૧૪. કાથા દ્વાવિંશતિસ્તથા-કાથાદિવિંશતિસ્તથા (જ.)

તત્ર તે વિષયમાં તે વિષયમાં, છોકરો ઉપસંકારના ને સ્ત્રીકે છે કે ઉપસંકારને નો છોકરો હૈં કિ, શીરે દ્વૌમાં રૂપમાં, દ્વૌ દ્વૌ થા. ચાર સુરા ચ સુરામાં સુરામાં, એકા એક એક, તથા કાથાઃ કાથામાં કાથામાં, દ્વાવિંશતિઃ પાવીસ ચાઈસ, પિચ્છાઃ પિચ્છામાં પિચ્છામાં, દશ દશ રૂપ, વૃત્તમ્ ચ ધીમાં વૃત્તમાં, એકમ્ એક એક, શુભાઃ શુભ મંગલકારી, વર્તિક્રિયાઃ વર્તિક્રિયામાં વર્તિક્રિયામાં, વદ્ ચ છ છઃ લેહે લેહેમાં લેહેમાં, અષ્ટૌ આઠ આઠ, માંસે માંસમાં માંસમાં, સપ્ત સાત સાત, ઇશ્વરસે ચ અને શેરડીના રસમાં ઓર ઇશ્વરસમાં, અપરઃ બીજે દૂમરા, યોગઃ એક યોગ એક યોગ, અસ્મિન્ એમ આ તેનું તરફે હવે કૃતવેધનકલ્પે કૃતવેધનકલ્પમાં કૃતવેધન કલ્પમાં, ષષ્ઠિઃ સાઠ સાઠ યોગાઃ યોગો યોગ, પ્રકીર્તિતાઃ કહેવામાં આવ્યા છે કહે હૈં ॥ ૧૩-૧૪ ॥

Here are the two recapitulatory verses—

13-14. Four preparations in milk, one in wine, twenty-two preparations of decoctions, ten emulsion-preparations, one of ghee and six excellent preparations of pills eight of linctus, seven of meat-juice and one preparation in sugar-cane juice—thus in all, sixty preparations of bitter luffa are described herein.

इत्यग्निवेशकृते तन्त्रे चरकप्रतिसंस्कृतेऽप्राप्त  
दृढबलसंपूरिते कल्पस्थाने कृतवैधनकल्पो

नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

इति આ પ્રમાણે આ પ્રકાર, અગ્નિવેશકૃતે અગ્નિ-વેશે રચેલા અગ્નિવેશસે બનાવે, ચરકપ્રતિસંસ્કૃતે તન્ત્રે અને ચરકથી પ્રતિસંસ્કાર પામેલા આ શાસ્ત્રમાં ઓર ચરકને દ્વારા સંસ્કૃત હવે શાસ્ત્રમાં, અપ્રાપ્તે અપ્રાપ્ત, દૃઢબલસંપૂર્ણ અને દૃઢબલે પૂરા કરેલા ઓર દૃઢબલસે પૂર્ણ કિયે ગયે, કલ્પસ્થાને કલ્પસ્થાનમાં કલ્પસ્થાનમાં, કૃતવેધનકલ્પઃ 'કૃતવેધનકલ્પ' 'કૃતવેધનકલ્પ', નામ નામનો નામનો, ષષ્ઠઃ છઠો છઠ્ઠો, અધ્યાયઃ અધ્યાય સંખ્યામાં અધ્યાય ક્રમાંપ્ત-હુઆ ॥ ૬ ॥



6. Thus, in the Section on Pharmaceutics in the treatise compiled by Agnivesa and revised by Caraka, the sixth chapter entitled 'The Pharmaceutics of the Bitter Turpeth' not being available, the same as restored by Dridhabala, is completed.

### સત્તમોઽધ્યાયઃ ।

સાતમો અધ્યાય અધ્યાય સાતવો

### Chapter VII

શ્યામાત્રિવૃત્કલ્પોપક્રમઃ —

અર્થાતઃ શ્યામાત્રિવૃત્કલ્પં વ્યાખ્યાસ્યામઃ ॥ ૧ ॥

इति ह समाह भगवानात्रेयः ॥ २ ॥

અર્થ એવું: હવે અહીંથી શ્રવણને, શ્યામા-ત્રિવૃત્કલ્પમ્ 'શ્યામાત્રિવૃત્કલ્પ' નામના અધ્યાયનું 'શ્યામાત્રિવૃત્કલ્પ' નામકે અધ્યાયકા, વ્યાખ્યાસ્યામઃ: વ્યાખ્યાન કરશું વ્યાખ્યાન કરેણે ॥ ૧ ॥

મગવાન્ ભગવાન્ ભગવાન, આત્રેયઃ આત્રેયે આત્રેયને, इति ह આ વિષયમાં નીચે પ્રમાણે જુદા વિષયને નિમ્ન પ્રકારે કી. જાહ સ્મ કહેલું છે કહા દે ॥ ૨ ॥

1. We shall now expound the chapter entitled 'The Pharmaceutics of Black Turpeth and Turpeth.'

2. Thus declared the worshipful Atreya.

વિરેચને ત્રિવૃત્તમૂલસ્ય શ્રેષ્ઠત્વમ્ —

વિરેચને ત્રિવૃત્તમૂલં શ્રેષ્ઠમાદુર્મનીષિણઃ ।

तस्याः संज्ञा गुणाः कर्म मेदः कल्पश्च वक्ष्यते ॥ ૩ ॥

મનીષિણઃ બુદ્ધિમાન વેદો બુદ્ધિમાન વૈદ્ય વિરેચને વિરેચનમાં વિરેચનર્મે, ત્રિવૃત્તમૂલમ્ નસોતરના મૂળને ત્રિવૃત્તકો જહકો, શ્રેષ્ઠઃ શ્રેષ્ઠ, આદુઃ કહે છે ૧૩૮૫

૩. મનીષિણઃ—મહર્ષયઃ (ધ. ક.)

हैं, तस्याः संज्ञा नाम नाम, गुणाः गुण, कर्म कर्म कर्म, मेदः भेद भेद, कल्पः च અને કલ્પ જોર કલ્પ, વક્ષ્યતે કહેવામાં આવશે કહે જાયો ॥ ૩ ॥

3. Wise men are of opinion that the root of the turpeth is the best drug for the purpose of purgation. Its synonyms, qualities, actions, varieties and pharmaceutical preparations are here described.

ત્રિવૃતાયાઃ પર્યાયાઃ —

ત્રિભંડી ત્રિવૃત્તા ચૈવ શ્યામા કૂટરણા તથા ।

सर्वानुभूतिः सुवहा शब्दैः पर्यायवाचकैः ॥ ૪ ॥

ત્રિભંડી ત્રિભંડી ત્રિભંડી, શ્યામા શ્યામા શ્યામા, કૂટરણા કૂટરણા કૂટરણા, તથા સર્વાનુભૂતિઃ તથા સર્વાનુભૂતિ તથા સર્વાનુભૂતિ, સુવહા અને સુવહા જોર સુવહા, इति એ इन, पर्याय- वाचकैः पर्यायवाचक पर्यायवाचक, शब्दैः शब्दोष्ठी शब्दोंके, त्रिवृता च एव त्रिवृताने જ કહેવામાં આવે છે ત્રિવૃતા હી કહી જાતી દે ॥ ૪ ॥

4. Tribhandi, Trivrita, Syama, Kutarana, Sarvanubhuti and Suvaha are its synonyms.

ત્રિવૃતાયાઃ ગુણાઃ —

કષાયા મધુરા રુક્ષા વિપાકે કટુકા ચ સા ।

कफपित्तप्रशमनी रौक्ष्याच्चानिलकोपनी ॥ ૫ ॥

સેદાનીમૌષઘૈર્યુકા વાતપિત્તકફાપહૈઃ ।

कल्पवैशेष्यमासाद्य सर्वरोगहरा भवेत् ॥ ૬ ॥

સા તે ત્રિવૃતા, કષાયા કષાયા કષાયા, મધુરા મધુર મધુર, રુક્ષા રુક્ષ રુક્ષ, વિપાકે તથા વિપાકમાં જોર વિપાકર્મે, કટુકા ચ કટુ કટુ, કફપિત્ત. અને કફ તથા

૪. ચૈવ શ્યામા કૂટરણા તથા । સર્વાનુભૂતિઃ સુવહા—શ્યામા સુવહા કોટરા તથા । ત્રિવૃત્ત સર્વાનુભૂતિઃ (ધ.)

૫. શ્યામા કૂટરણા—સરંડી કોટરા (ત.)

૬. સુવહા—સરણ (ધ. ધ.)

૭. કલ્પવૈશેષ્યમાસાદ્ય—કલ્પે વૈશેષ્યમાસાદ્ય (શ. ડ. ધ. ક.)

पित्तनुं और कफ तथा पित्तकी, प्रज्ञानी शम्भु करनार  
 छे शामक है, रौक्ष्यात् तेभ्यश्च श्क्षताने धर्ध एवं रक्ष  
 होनेसे, अमिल- कोपनी च वायुनेः भ्रष्टाप करनार छे  
 वातकी प्रकोपक है। सा ते वह, हृदानीम् ढवे अब,  
 वात-पित्त-कफ- वात पित्त अने उद्धेने वात, पित्त और  
 कफकी, अपहैः नाश करनार नाशक, औषधैः औषध-  
 धैर्था औषधियोंसे, युक्ता युक्त भर्ध मिलकर, कल्पवैरोष्यक  
 जुदी जुदी अनावटोने भिन्न भिन्न कल्पको, आसाद्य  
 प्राप्त करीने प्राप्त करके, सर्वरोगहरा सर्व रोग हरनार  
 सर्वरोगनाशक, अवेद आय छे होती है ॥ ५-६ ॥

5-6. In taste, it is astringent, sweet and dry. It is pungent in its post digestive effect and is curative of kapha and pitta; and owing to its quality of dryness, it is provocative of vata. This drug, when combined with drugs curative of vata, pitta and kapha, acquires a special property by virtue of such pharmaceutical preparation, and is able to cure all kinds of diseases.

त्रिवृतायाः भेदाः —

मूलं तु द्विविधं तस्याः श्यामं चारुणमेव च ।  
तयोर्मुख्यतरं विद्धि मूलं यदरुणप्रभम् ॥७॥

तस्याः वशी तेनुं और इसकी, मूलम् तु भूषा  
जड़, द्विविधम् ये प्रकृत्युं छे दो प्रकारकी है, इया-  
मम् च स्थाम् इयाम्, अरुणम् च एव अने अरुण-  
रंगनुं और अरुण, तयोः तेभां इनमें, यद् मूलम् न् भूषा  
जो जड़, अरुणप्रभम् अरुणुं देखावनुं छे लाल कान्ति-  
वाली है, मुख्यतरङ्ग तेने अधिक मुख्य उसको अधिक  
मुख्य, विद्धि अथो। समझो ॥ ७ ॥

7. Its roots are of two kinds—black and red, and the more valuable of them two is the root with the red color.

येषामरुणा येषां च श्यामा हिता—

सुकुमारे शिशौ वृद्धे मृदुकोष्ठे च तच्छुभम् ।

तव ते ऋषिर्भूषणवाणुं नमोऽतएव वरुण  
 मूलवाली निजोत, सुकुमारि कोमल नाजुक, बिजौ भाण-  
 कं शिशुका, वृद्धे पृष्ठं वृद्धका, मृदुकोष्ठे कं गरी भृदु  
 कोष्ठवाणुं और, कोमलकण्ठवातेका, सुमय शुभ  
 करनार छे शुभ करनेवाली है ॥ ७३ ॥

7½- It is very good for children and for delicate, aged and soft-bowelled persons.

मोहयेदशुहारित्वाच्छ्यामा क्षिणीत मूर्च्छयेत् ॥८॥  
तैक्ष्ण्यात् कर्षति दृक्कण्ठमाशु दोषं हरत्यपि ।  
शस्यते बहुदोषाणां क्रूरकोष्ठाश्च ये नराः ॥९॥

इयामा कृणा भूतानां न सोतर इयाम मूलकी  
निषोत, आशुकारिवाय आशुकारी होवाथी शीघ्रकारी  
होनेसे, मोहबेद मोह करे छे मोह उत्पन्न कर देती है,  
क्षिण्वीत धातुओने क्षीय करे छे धातुक्षय कर देती है,  
मूर्च्छयेत् च अने मूर्च्छा उत्पन्न करे छे और मूर्च्छित  
कर देती है, तैक्ष्णयात् तेभ्य तीक्ष्णताने क्षीये एवं  
तीक्ष्णताके कारण, हृत्कण्ठम् ते हृदये तथा कंठने  
वह हृदय तथा कंठको, कर्षति ओये छे खींचती है,  
दोषम् अपि अने दोषने पक्ष और दोषको भी, आशु  
भक्षटी शीघ्र, हरति हरी छे छे निकालती है, बहु-  
दोषाणाम् तेथी बहुदोषवाणा पुरुषे भाटे अतः  
बहुदोषवाले पुरुषोंके लिए, ये नराः अने ये पुरुषे और  
जो पुरुष, क्रूरकोष्ठाः च क्रूर कोष्ठावाणा छे तेओने भाटे  
क्रूर कोष्ठवाले हैं उनके लिए, आस्यते ते अशरत छे  
वह प्रशस्त है ॥ ८-९ ॥

8-9. The black variety by its quick action causes stupor and loss of body-elements and fainting. By its acute quality it causes distress in the throat and the stomach and

७३. तच्छुभम्-तद्विजितम् (ब. घ.)

८ क्षिणीत मूच्छयेत्-कण्ठं क्षिणोत्सवि (क. झ. ङ. त. द. ण.)

७. त्रयोदशतारम्-तत्रोः मेघतारम् (य. क.)

eliminates the morbid matter quickly. It is therefore recommended for persons with excessive morbidity and for those with hard-bowelled condition.

श्यामाविश्रुतयोः उद्ध यन्विधः —

गुणवत्यां तयाभूमौ जाते सुखं यमुद्धरेत् ।

उपोष्य प्रयतः शुक्ले शुक्ल गन्गाः समाहितः ॥ १० ॥

गम्भीरानुगतं श्लक्ष्णमतिर्यग्विश्रुतं च यत् ।

तद्विपाद्योद्धरेद्गर्भं तत्त्वं शुक्लं विधायेत् ॥ ११ ॥

उपोष्य उपवास करीने उपवास रखकर प्रयतः स्नानशी पनेत्र धर्ष स्नानमें पक्षी लेकर, शुक्ल गंगाः धोणी पक्ष पड़ेरी क्षेत्र वगैरे गणन करके शुक्ले शुद्ध पक्षमा शुद्ध पक्षमें गुणवत्या गुणवत्या गुणवाली भूमौ भूमिमा भूमिमें, जानसु उत्पन्न भूयेंतु उत्पन्न तयोः ते भूनेतुं इत सेनोंनी, सुख सुख भूने, समुद्रोः उधेऽतुं उन्नाडे, यत् जे भूमि जो जड़, गम्भीरानुगतम् छडुं भूयेंतु होय इतक भूमिमें घुसी के, श्लक्ष्णमतीशुं होय चिकनी अतिर्यक् विस्तृतम् च अने अशुभपशुं न भूयें होय और सीवी गई हुई हो, तव तेनं उसे, विपाद्य छडीने चीरना, गर्भम् अर्धने। आश वीचके भागको, उद्धरेत् छडी नाभवे। छिकल डाले शुष्कम् त्वचम् अने छावने सुखी और छावको सुखाकर, निचापवेत् राभी भूकेवी रख ले ॥ १०-११ ॥

10-11. The roots of the herb growing in a good soil or country should be culled by one with collected mind during the bright fortnight, after one has fasted and purified oneself and put on white garments. The root that has penetrated deep, which is smooth and has not spread sideways should be gathered. It should be split and the pith inside should be removed and the dried bark preserved.

१०. अतिर्यक् न तिर्यक् (ब.)

११. तद्विपाद्योद्धरेद्गर्भं—तद्विपाद्योद्धरेद्गर्भं (ब.)

स्निग्धस्निग्धो विरेचयन्तु पेयः प्रयोचितः सुखम् ।

स्निग्ध- स्निग्धः स्नेहः, स्नेहने स्नेहना यस्मात् पछी स्नेहन की, स्नेहन करनेके बाद, पेयानाम्- उचितः तु आगच्छे तिलो डेयः पेयः पीके डेयः मनुष्यने पूर्व दिन केवल पेयके ही आहार पर रहे हुए मनुष्यको, सुखम् सुखपूर्वक सुखपूर्वक, विरेचः विरेचन थाय के विरेचन होता है ॥ ११ ॥

11. The person that is to be administered the purgation should be given general oleation and sudation procedures and kept on a liquid diet the previous day, so that he purges with ease.

अभ्यसिद्धिर्द कल्पयोगः —

अश्वमात्रं तयोः पिण्डं विनीयाम्लेन ना पिबेत् ॥ १२ ॥

तयोः आ अने अतनी नसे। अतनी इन दोनोंकी, अश्वमात्रम् अश्व तोला के। एक तलेकी, पिण्डम् मात्रने मात्राको अम्लेन अम्ल छ। साथे अम्ल काजीमें, विनीय भेजवीने घोलकर, ना भूयें मनुष्य, पिबेत् पीवी पीवे ॥ १२ ॥

12. A person may take one tola of the lump of either of the two varieties of turpeth mixed with sour conjee.

गोऽव्यजगत्हिपीमूत्रसौवीरकतुषोदकैः ।

प्रसन्नया त्रिफलया शृतया च पृथक् पिबेत् ॥ १३ ॥

गो- आप अथवा बाय अथवा, अवी- वेदी मेड़, अजा- अजरी पकरी, महिषी के भेसना वा मैसके, मूत्र- भूत साथे मूत्रसे, सौवीरक- अथवा सौवीरक अथवा सौवीरक, तुषोदकैः तुषोदक तुषोदक, प्रसन्नया प्रसन्ना प्रसन्ना, शृतया त्रिफलया च के (त्रिफलाना इत्यादि साथे या त्रिफलाके साथसे, पृथक् लुदी लुदी पृथक् पृथक्, पिबेत् पीवी पीवे ॥ १३ ॥

१२. पेयानामोचितः—पेयानामोचितः (ब.)

१३. —पेयानामाश्रितः (ब.)



काकोलीं क्षीरकाकोलीमिन्द्रां त्रिभ्रुहां तथा ।  
क्षीरशुक्लां पयस्यां च यष्ट्याह्वं विचिना पिबेत् ॥१९॥  
वातपित्तद्विगन्धेतान्यन्यानि तु कफानिले ।

जीवक ७५३ जीवक, कशमकौ ४५७३ कशमक,  
मेदाम् मेध मेदा, आवणीम् आवणी आवणी कर्कटा-  
क्ष्याम् ३६३१११ कर्कटामित्री, सुद्र-प्राय-आख्य-  
पय्यां च भुङ्गपय्यां अने पय्यापय्यां सुद्रपणी, माषपणी,  
तथा महतीम् आवणीम् भुङ्गपय्यां महाआवणी,  
काकोलीम् ३६३१११ काकोली, क्षीरकाकोलीम् क्षी-  
काकोली क्षीरकाकोली, इन्द्रां अने नलमलाना  
त्रिभ्रुहां तथा तथा अने तथा गिलोय, क्षीरशुक्लां  
क्षीरविदारी क्षीरविदारी, पयस्यां अर्धपुष्पी पयस्या,  
यष्ट्याह्वं च अने जेठीमध अने मध प्रत्येकनी साथे  
तेना जेठ्या नसेतरना यष्ट्याने और सुत्रहरी इनमेंसे  
प्रत्येकके साथ उमके बराबर त्रिवृतके चूर्णको, विचिना  
विधिपूर्वक विधिपूर्वक, पिबेत् पीवुं पीव, एतानि आ-  
अथ येजे ये सब योग, वातपित्त वात तथा पित्तमा-  
वात तथा पित्तमें द्विगानि द्वितकर अ द्वितकारी हैं,  
अन्यानि तु अने भीअ और अन्य योग कफानिले  
३६ तथा वातमा कफ तथा वायुमें, द्विगानि द्वितकर अ  
द्वितकारी हैं ॥ १८-१९३ ॥

18-19. In the same manner, a  
potion may be prepared with Jivaka,  
Rishabhaka, Meda, east indian globe-  
thistle, Kakoli, Kshira-kakoli, long  
leaved barleria, guduch, milky yam,  
white yam or liquorice. These potions  
are beneficial in conditions of vata  
and pitta. Others that are described  
below are good in kapha and vata.

क्षीरादिभिः सप्त योगाः —

क्षीरमांसेक्षुकादमर्याद्राक्षापीलुरसैः पृथक् ॥२०॥  
सर्पिषा वा तयोश्चूर्णमभयार्घाशिकं पिबेत् ।

१९. इन्द्रां-सुद्रां (क. द. व. फ.)

॥ ॥ -विना (व. फ.)

अभया- इन्द्रोने हरइका अर्घाशिकम् अरघी भाज  
नाभीने अर्घा माग मित्रक, तयोः अने प्रकाशना  
नसेतरना दोनों प्रकारकी त्रिवृतके चूर्णम् यष्ट्या चूर्णको,  
क्षीर- ६५३ क्षीर, मांसे- मांसम् मांसम्, इक्षु- शेरडीने।  
अक्ष- ईसका रस काश्मर्य- शीवधुने। रस गंमारीका रस,  
द्राक्षा- द्राक्षने। रस द्राक्षा रस, पीलु- तथा पीलुने।  
तथा पीलुका, रसैः रस रस, सर्पिषा वा अने श्री तीर  
की, पृथक् अने मध प्रत्येकनी साथे लुङ् लुङ् इनमेंसे  
प्रत्येकके साथ उमके बराबर त्रिवृतके चूर्णको, विचिना  
पीवुं पीव ॥ २०-३ ॥

20-20. One part of turpeth and  
half part of chebulic myrobalans may  
be taken in milk, meat-juice or the  
juice of sugar-cane, or white teak, or  
grapes or tooth-brush tree or with  
ghee.

अष्टौ लेह्य गाः —

लेह्याद्रा मधुसर्पिर्भ्यां संयुक्तं ससितोपलम् ॥२१॥

ससितोपलम् साकरसहित नसेतरना यष्ट्याने चीनीके  
साथ त्रिवृतके चूर्णको, मधुसर्पिर्भ्यां मध अने धीमा  
मधु और घृतमें, संयुक्तम् वा अने मीठाकर लिह्यात्  
आठवुं चाटना चाहिए ॥ २१ ॥

21. It may be taken as linctus  
mixed with honey, ghee and sugar  
candy.

अजगन्धा तुगाक्षीरी विदारी शर्करा त्रिवृत् ।  
चूर्णितं क्षौद्रसर्पिर्भ्यां लीढा साधु विरिच्यते ॥२२॥  
सन्निपातज्वरस्तम्भदाहतृष्णादितो नरः ।

सन्निपातज्वर- सन्निपातज्वर सन्निपातज्वर,  
स्तम्भ- स्तम्भ स्तम्भ, दाह- दाह दाह, तृष्णा अने  
तृष्णा और तृष्णासे, अर्द्धितः पीपता पीपित, नरः पुरुषने  
मनुष्यको, अजगन्धा अजगन्धा अजगन्धा, तुगाक्षीरी  
वासकपूर वंशलोचन, विदारी विदारी ३६ विदारी,  
शर्करा साकर शर्करा, त्रिवृत् अने नसेतर अने मधु  
यष्ट्याने और त्रिवृत इनके चूर्णको, क्षौद्र- मध मधु,

सर्पिर्म्याम् तथा धीर्मा तथा घृतके साथ, लीङ्गा याट  
वाथी चाटनेसे साधु साधु मली प्रकार, विरिच्यने  
विरिच्यन थाय छे विरेचन होता है ॥ २२३ ॥

22-22½. A patient afflicted with fever of the tridiscordance-type, rigidity, burning and thirst gets well-purged by taking the linctus prepared from the powder of wild carrot, bamboo manna, white yam, sugar and turpeth mixed with honey and ghee.

इयामात्रिवृत्कषायेण कल्केन च लशर्करम् ॥ २३ ॥  
साधयेद्विचिवल्लेहं लिङ्गात् पाणितलं ततः ।

इयामात्रिवृत् ३११ नसोतरना इयामात्रिवृत्के,  
कषायेण कषायथा कषायसे, कल्केन च अने उल्लेखी  
और कल्केसे सशर्करम् साधर नाभीने शर्करा डालकर,  
लेहम् याटल्लु लेह, विचिवत् विधिपुरःसर विधिपूर्वक,  
साधयेत् तैयार करवुं तैयार करे. ततः तेमाथी इसमेंसे  
पाणितलम् ओक तोला एक तोला, लिङ्गात् याटल्लु  
चाटे ॥ २३ ॥

23-23½. A linctus should be prepared in the prescribed manner with the decoction and paste of the black turpeth mixed with sugar, and taken in a dose of one tola.

सक्षौद्रां शर्करां पक्त्वा कुर्यान्मृद्भाजने नवे ॥ २४ ॥  
क्षिपेच्छीते त्रिवृच्चूर्णे त्वक्पत्रमरिचैः सह ।  
मात्रया लेहयेदेतदीश्वराणां विरेचनम् ॥ २५ ॥

सक्षौद्रान् भक्षसहित मधुके साथ, शर्कराम्  
साधरने शर्कराको, पक्त्वा पाक करीने पकाकर, नवे  
नवा नये, मृद्भाजने भाटीना वासलुभा मिट्टीके बर्तनमें,  
कुर्यात् राभवे रख देवे, शीते ठंडा थाय तयारे ठण्डा  
होवे पर, त्वक्पत्र-तेजपत्र तेजपत्र, मरिचैः अने भरी

और मरिचके सह सहित नाय, त्रिवृच्चूर्णम् नसोतरनुं  
युष्णं त्रिवृत्का चूर्ण, क्षिपेत् नाभयुं डाल देवे, ईश्वराणाम्  
ऐश्वर्यशाणी भाखुसोने ऐश्वर्यशालियोंको, एतत्  
आ इस, विरेचनम् विरेचन विरेचन. मात्रया मात्रा-  
सर मात्रापूर्वक, लेहयेत् याटल्लुं चाटे ॥ २४-२५ ॥

24-25. Sugar should be boiled with honey in a new earthen pot; when cooked, powdered turpeth should be cast into it along with cinnamon bark and leaf, and pepper. This, taken in due dose, acts as a wholesome purgative in persons of the aristocratic class.

कुडवांशान् रसानिक्षुद्राक्षापीलुपरूषकात् ।  
सितोपलापलं क्षौद्रात् कुडवार्धं च साधयेत् ॥ २६ ॥  
तं लेहं योजयेच्छीतं त्रिवृच्चूर्णेन शास्त्रवित् ।  
एतदुत्सन्नपित्तानामीश्वराणां विरेचनम् ॥ २७ ॥

इक्षु- शेरडी गन्ना, दाक्षा- द्रक्ष दाक्षा, पीलु- पीलु  
पीलु, परूषकात् द्रक्षसां फालसा, कुडवांशान् भयेक  
१६ तोला प्रत्येक १६ तोले, सितोपलापलम् साधर ४  
तोला चीनी ४ तोले, क्षौद्रात् अने मधु और मधु,  
कुडवार्धम् च ८ तोला ८ तोले, साधयेत् ऐश्वर्युं  
याटल्लु तैयार करवुं इनका अवलेह पकावे, शास्त्रवित्  
शास्त्र भाखुनार वैद्य शास्त्र जाननेवाला वैद्य, शीतम्  
ठंडा भयेका ठंडे होनेपर तम् ते इस, लेहम् याटल्लुने  
लेहको, त्रिवृच्चूर्णेन नसोतरना युष्णं साथे त्रिवृत्के चूर्णके  
साथ, योजयेत् भेजवुं मिलावे, एतत् आ यह, उत्सन्न-  
पित्तानाम् वधी भयेका पित्तवाणा पित्तोत्पन्न, ईश्वराणाम्  
ऐश्वर्यशाणी भाखुसोने भाटे ऐश्वर्यशालियोंके लिए,  
विरेचनम् विरेचन छे विरेचन है ॥ २६-२७ ॥

26-27. Prepare a linctus with 16 tolas of each of the juices of sugar

२३½. साधयेत्-साधितम् (ग. द.)

२५. क्षिपेच्छीते-इक्षौच्छीते (च. फ.)

१) मात्रया लेहयेदेत-लिङ्गात् मात्रया लेहम् (च. फ.)

२६. कुडवांशान् रसानिक्षु-रसान् कौडविकानिक्षु (च. फ.)

१) सितोपलापलम्-सितोपलाप पलम् (ख.)

२७. योजयेच्छीतं त्रिवृच्चूर्णेन-योजयेच्छीतं त्रिवृच्चूर्णेन (ग.)

१) एतदुत्सन्नपित्तानाम्-एतदुत्सन्नपित्तानाम् (च.)

cane grape, tooth brush tree, and sweet falsah, four tolas of sugar candy and 8 tolas of honey. This linctus when cooled should be mixed with powdered turpeth by the physician versed in pharmaceuticals. This is a good purgative for constitutions with pronounced pitta and for aristocratic persons.

शर्करामादकान् वर्तीगुलिकाणां लपूपकान् ।

अनेन विधिना कुर्यात् पैत्तिकानां विरेचनम् ॥२८॥

अनेन ये च इस, विधिना विभिन्न विधिसे, शर्करा-  
मोदकान् शर्करा मोदक शर्करामोदक, वर्तीः वर्ती वर्ति,  
गुलिका- गुलिका गुलिका, मांसपूपकान् अने मांसना  
पूष और मांसपूप, कुर्यात् कुर्यात् बनावे, पैत्तिकानां  
पित्तप्रधान मनुष्यो भाटे पित्तकृतेवाले मनुष्योंके  
लिए, विरेचनम् विरेचन छे यह विरेचन ॥२८॥

28. In the same manner sugary sweet-meats, rolls, pills, meats and pancakes should be prepared to be used as purgatives for persons of pitta-habitus.

पिप्पलीं नागरं क्षारं श्यामं त्रिवृतया सह ।

लेहयेन्मधुना सार्धं श्लेष्मलानां विरेचनम् ॥२९॥

पिप्पलीम् पीपरी पिप्पली, नागरम् सूँठ, क्षारम् क्षार पक्खार, श्यामम् अने काला नसोतरनी और काली निसोतकी, त्रिवृतया सह मधुसु नसोतरनी साथे ओझर करी अरुण निसोतके साथ एकत्रकर, मधुना सार्धम् मधुनी साथे मधुके साथ, लेहयेत् यथावत् चटावे, एतत् आ यह, श्लेष्मलानां ऊँध्रधान मनुष्योंके कफ प्रकृतिवालोंके लिए, विरेचनम् विरेचन छे विरेचन है ॥ २९ ॥

29. For purging persons of kapha-habitus the linctus should be prepared

of long pepper dry ginger, alkali, black turpeth and turpeth mixed with honey.

मानुलुङ्गामयाघात्रीश्रीपर्णीकोलदाहिमात् ।

सुभृष्टान् स्वरसांस्तैले साधयेन्न नाचयेत् ॥३०॥

सहकारात् कपित्थाच्च मध्यमम्लं च यत् फलम् ।

पूर्ववद्बहलीभूते त्रिवृच्चूर्णं समावयेत् ॥३१॥

त्वक्पत्रकेशरेलानां चूर्णं मधु च मात्रया ।

तेह्रास्यं कफपूर्णानामीश्वराणां विरेचनम् ॥३२॥

मानुलुङ्ग- पीपरी, घात्री, अमया- दण्डे हरड, घात्री- अमया आंवला, श्रीपर्णी- श्रीपर्णी गम्भारी, कोल- कोल बे, दाहिमात् तथा दाहिमा अथवा तथा इनके, स्वरसां स्वरसोको, तैले तैलमें, सुभृष्टान् सारी पेठे भूँछ मली प्रकार भूँकर, सहकारेत् तैयार करके पकावे, तत्र च अने तैयारी और उनमें, सहकारात् अथवा आम, कपित्थात् च तथा कोहना और खटे कैयका, मध्यम मध्यम गुदा मिलाकर, यत् च तथा ये कछ और जो कोई, बन्धम् आट्टं खट्टा फलक इति होय फल का, नाचयेत् ते पक्षु नाचयुं उसको भी डाले, पूर्ववत् अथावत् पेठे पूर्वकी भांति, बहलीभूते ते बट आभ तयारे जब यादा हो तब, त्रिवृत्-चूर्णम् तैमां नसोतरनीं यूसुं नाचयुं इसमें त्रिवृतका चूर्ण डाले, त्वक्- त्वक् शालचीनी, पत्र- तमाच पत्र तेजपत्र केसर- नाजकेसर नाजकेसर, एलानाश्च अने ओवलीयुं और इलायची इनका, चूर्णम् यूसुं चूर्ण, मधु च तथा मधु और मधु, समावयेत् नाचयुं मिलाये, मात्रया मात्रासर वीधेयुं मात्रामें, अपक्व आ यह, लेहः यथावत् लेह, कफपूर्णानां ऊँध्र मली कफसे भरे, ईश्वराणां ईश्वर आम्मी भाषुसेयुं ऐश्वर्यशक्तियोंके लिए, विरेचनम् विरेचन छे विरेचन है ॥३०-३२॥

30-32. The expressed juice of the fruits of pomello, chebulic myrobalan,

३०. सुभृष्टान्-सुभृष्टान् (ख. क.)

३१. सुभृष्टान् स्वरसांस्तैले साधयेन्न नाचयेत् स्वरसान् मर्जितान्-  
तैले साधयेन्न नाचयेत् (ख.)

३२. समावयेत्-च साधयेत् (ख.)



emblic myrobalan, white teak, jujube and pomegranate should be seasoned and cooked with oil. In it the pulp of the sour mango and bael, or any other fruit should be cast. When it has become thickened as described before, the powder of the turpeth along with the powder of the cinnamon bark and leaf, fragrant poon, and cardamom and honey in due proportion should be put into this. This linctus is indicated as purgative for aristocratic persons who are full of morbid kapha.

पानकादिषु पञ्च द्रव्याः —

पानकानि रसान् यूषान्मोदकान् रागषाडवान् ।  
अनेन विधिना कुर्याद्विरेकार्थं कफाधिके ॥३३॥

कफाधिके कृद्धी अधिकतावाणा पुत्रुषणा कफ-  
प्रबल पुरुषके विरेकार्थम् विरेचन भटे विरेचनके लिए,  
अनेन अ। इस, विधिना विधिना विधिसे, पानकानि  
पानक पानक, रसान् रस रस, यूषान् यूष यूष, मोद-  
कान् मोदक मोदक, रागषाडवान् राग अने पाडव राग  
और पाडव, कुर्यात् करवा लेईये बनाने चाहिए ॥३३॥

33. In the same manner, syrups, meat-juices, gruels, sweet-meats and Ragas and Shadavas should be prepared for administering purgation in conditions of predominance of kapha.

श्यामात्रितयोः प्रथमस्तर्पणयोगः —

भृङ्गैलाभ्यां सप्ता नीली तैस्त्रिवृत्तैश्च शर्करा ।  
चूर्णं फलरसश्चौदशकुम्भस्तर्पणं पिबेत् ॥३४॥  
वातपित्तकफोत्थेषु रोगेष्वल्पानलेषु च ।  
नरेषु सुकुमारेषु निरपायं विरेचनम् ॥३५॥

भृङ्ग- अथ भाग १०४ एक भाग दालचीनी, एका-  
श्याम् अथ भाग १०४ नानी अथ भाग १०४ एक भाग इलायची,

११. विरेचन-विधिः (च)

सप्ता नीली अथ अनेनी अथ अथ नीली अथ अथ अथ  
भाग नीली इनके बराबर नीली अथ अथ दो भाग नीली,  
तैः अथ त्रिवृत्त नीली अथ अथ इन तीनोंके बराबर, त्रिवृत्त  
नसेातर अथ अथ अथ भाग नसेातर नसेातर अथ अथ  
चार भाग नसेातर, तैः च अथ अथ अथ अथ अथ अथ  
इन चारोंके बराबर, शर्करा साकर अथ अथ अथ भाग  
साकर शर्करा अथ अथ आठ भाग चीनी, चूर्णम् अथ अथ  
यूषुतुं इनके चूर्णका, फलरसः द्राव्य वगैरेना रस  
अथ अथ अथ रस. औद- मधु मधु, कुकुमिः अथ अथ अथ  
साथे और सक्तुके साथ, तर्पणम् तर्पण अथ अथ  
तर्पण बनाकर, पिबेत् पीवुं पीना चाहिए, वात-पित्त-कफ-  
वात, पित्त तथा कृद्धी वात, पित्त तथा कफसे, उत्थेषु  
उत्पन्न उत्थेषु उत्पन्न इदं, रोगेषु रोगेषु रोगोंमें,  
अल्पानलेषु अथ अथ अथ अग्निवाणा और मन्दान्निवाले,  
सुकुमारेषु तेजस्योऽल्पेण एवं कोमल, नरेषु च पुरुषे  
भाटे पुरुषोंके लिए, निरपायम् अथ अथ अथ अथ अथ  
यह हानिरहित, विरेचनम् विरेचन अथ अथ विरेचन  
है ॥ ३४-३५ ॥

34-35. A demulcent drink prepared from the powder of equal parts of cinna-  
mon and cardamom, and indigo equal  
in measure to both of them combined,  
and turpeth equal in measure to all  
the three combined, and sugar equal  
in measure to all four combined and  
mixed with fruit juice honey and  
roasted paddy powder, may be taken.  
This acts as a safe purgative in disor-  
ders born of vata, pitta or kapha, in  
dullness of the gastric fire, and in  
persons of delicate constitution.

पञ्च मोदकयोगः —

शर्करात्रिफलाश्यामात्रिवृत्पिप्पलिमाक्षिकैः ।  
मोदकः सन्निपातोर्ध्वरक्तपित्तज्वरापहः ॥३६॥

१२. पिप्पलिमाक्षिकैः मागषिकामधु (स. व. द. त. द.)

११. सन्निपातोर्ध्व-सन्निपाते हि (च.)

शर्करा- साकर शर्करा, त्रिफला- त्रिफला त्रिफला  
इयामा- डाणुं नसेतर इयामा, त्रिवृत्- अरुण नसेतर  
अरुण नसेतर, पिप्पली- पीपर पिप्पली, माक्षिकैः- अने  
भक्षणी अनावेदा और मधुमे साधित, मोदकः- मेदक  
लडुओं सखिपात- सन्निपात सखिपात, ऊर्ध्व- रक्तपित्त-  
ज्वर- उर्ध्वग रक्तपित्त अने ज्वरने ऊर्ध्वग रक्तपित्त  
और ज्वरके, अपहः- दूर करनार छे नाशक हैं ॥ ३६ ॥

36. The sweetmeat prepared of sugar, the three myrobalans, black turpeth, long pepper and honey is curative of tridiscordance hemothermia affecting the upper region of the body and fever.

त्रिवृच्छाणा मतास्तिस्रस्तिस्रश्च त्रिफलात्वचः ।  
विडङ्गपिप्पलीक्षारशाणास्तिस्रश्च चूर्णिताः ॥३७॥  
लिङ्गात् सर्पिर्मधुभ्यां च मोदकं वा गुडेन तु ।  
भक्षयेन्निष्परीहारमेतच्छोधनमुत्तमम् ॥३८॥  
गुल्मं ग्रीहोदरं श्वासं हलीमकपरोचकम् ।  
कफवातकृताश्चान्यान् व्याधीनेतद्व्यपोहति ॥३९॥

त्रिवृत्-शाणाः तिस्रः मताः अरुण भूगनी नसेतर  
त्रिषु शाणु अरुण मूलकी निघेत तीन शाण, त्रिफला-  
त्वचः च तिस्रः दूरदा, अडेडां तथा आमगनी छेद  
त्रिषु शाणु त्रिफलाकी छाल तीन शाण, विडङ्ग-पिप्पली-  
क्षार- अने वावडिंग, पीपर तथा अवभार विडङ्ग, पिप्पली  
तथा यवक्षार, चूर्णिताः- अने आटुं चूर्ण करी इनका चूर्ण  
कर, सर्पिर्मधुभ्याम् च घी अने मधु साथे घृत और  
मधुके साथ, लिङ्गात् आटुं चाटे, गुडेन वा अथवा  
गोणथी अथवा गुडके साथ, मोदकम् तु मेदक अना-  
वीने लडु बनाकर, भक्षयेत् भावा खावे, निष्परी-  
हारम् परडेछे नभरतु किसी वस्तुके परिहाररहित,  
एतत् आ यह उत्तमम् उत्तम, शोधनम् शोधन

३७. त्रिवृच्छाणा मतास्तिस्रः-त्रिवृच्छाणा मतास्तिस्रः (६)

॥ शाणाः-समाः (५.)

३८. मेनच्छोधनमुत्तमम्-मेनच्छोधनं विरेचनम् (५, ६)

३९. श्वासं-श्वासं (५, ६.)

छे विरेचन है, गुल्मम् शुभम् गुल्म ग्रीहोदरम्  
प्लीहोदर ग्रीहोदर श्वासम् श्वास श्वास, हलीमकम्  
हलीमक हलीमक, अरोचकम् अरुचि अरोचक, कफ-  
वात- अने कफ तथा वातथी अने कफ तथा वातसे, कृतान्  
उत्पन्न उत्पन्न, अन्यान् अने अन्य, व्याधीन् च  
व्याधीने रोगोंको, एतत् आ यह, व्यपोहति दूर करे छे  
नष्ट कर देता है ॥ ३७-३९ ॥

37-39. Three quarters of a tola of turpeth and 3/4 tola of embelia, long pepper and alkali combined, and reduced to powder should be taken as linctus along with gur. This is regarded as the best mode of purgation and needs no after-treatment of regimen. It is curative of gulma, splenic disorders, abdominal diseases, dyspnea, Halimaka-jaundice, anorexia and other disorders born of kapha and vata.

विडङ्गपिप्पलीमूलत्रिफलाघान्यचित्रकान् ।  
मरिचन्द्रयवाजाजीपिप्पलीहस्तिपिप्पलीः ॥४०॥  
लवणान्यजमोदां च चूर्णितं कार्ष्णिकं पृथक् ।  
तिलतैलत्रिवृच्चूर्णभागौ चाष्टपलोन्मिता ॥४१॥  
घात्रीफलरसप्रस्थांस्त्रीन् गुडार्धतुलां तथा ।  
पक्त्वा मृद्वग्निना खावेद्ददरोदुम्बरोपमान् ॥४२॥  
गुडान् कृत्वा न चात्र स्याद्विद्वाराहारयन्त्रजा ।

विडङ्ग-वावडिंग वायविडंग, पिप्पलीमूल पीपरमूल  
पिप्पलीमूल, त्रिफला- त्रिफला त्रिफला, घान्य- धाणु  
घनिया, चित्रकान् चित्रक चित्रक, मरिच- भरी मरिच,  
इन्द्रयव- इन्द्रयव इन्द्रयव, अजावी अजुं जीरा, पिप्पली-  
पीपर पिप्पली, हस्तिपिप्पलीः- अजपीपर गत्रपिप्पली,  
लवणाणि लवण पांचों नमक, अजमोदाम् च अने  
अजमोद अजमोद और अजमोद इनमेंसे, पृथक् दरेकतुं  
प्रत्येकका, कार्ष्णिकम् अके तोला एक एक तोला, चूर्णितम्  
चूर्ण चूर्ण, अष्टपक-अष्टमितौ ३२ तोला ३२ तोले,

४२. न चात्र-न चात्र (५, ६.)

તિલતૈલ- તથા તેલનો ભાગ તિલતૈલકા માગ,  
ત્રિવૃષ્ણ-માગૌ તથા નસોતરના ચૂર્ણનો ભાગ તથા  
ત્રિવૃત્તકે ચૂર્ણકા માગ, અષ્ટપલ-ઉન્નિમતૌ ૩૨ તેલ  
૩૨ તોલે, ત્રીન્ ખાત્રીફલરસ-પ્રચ્યાન્ આમળાનો રસ  
ત્રણ પ્રસ્થ આવલેકે રસકે ત્રીન પ્રસ્થ, તથા અને ઓર,  
ગુદ-અર્ધ-તુલાન્ બોળ ૫૦ પલ એ સૌને ગુદ ૫૦  
પલ इन सबको, मृदु- भेद मृदु, अग्निना अग्नि-ये अग्निसे,  
पक्त्वा पकावीने पकाकर, बदर- ओर बेर, उदुम्बर- કે  
छिन्नरानां क्षी या गूलरके फलके, उपमान् जेवडा बराबर,  
गुडान् धातु लड्ड, कृत्वा કરીને बनाकर, खादेत् ખાના  
खाये, अत्र च आभां इसमें, विहार- निहार विहार,  
आहार- तथा आहारमां तथा आहारमें, यन्त्रणा न  
खान् परहेछ राखवानी जरूर नहीं परहेजकी  
आवश्यकता नहीं है ॥ ४०-४२ ॥

40-42½. One tola each of the pow-  
ders of embelia, roots of long pepper,  
the three myrobalans, coriander, white  
flowered leadwort, black pepper,  
kurchi seeds, cumin, long pepper, ele-  
phant pepper, the salts and celery  
mixed with thirty-two tolas of til oil  
and the powder of turpeth, 192 tolas  
of the juice of the fruits of emblic  
myrobalans and 200 tolas of gur—these  
should be cooked on a gentle fire and  
taken, made into boluses of the size  
of a jujube or fig. There is no restric-  
tion of regimen with regard to these  
in the matter of diet or exertion.

મન્દાગ્નિત્વં જ્વરં મૂર્છાં મૂત્રકૃચ્છ્રમરોચકમ્ ॥૪૩॥  
અસ્વપ્નં ગાત્રશૂલં ચ કાસં શ્વાસં શ્રમં ક્ષયમ્ ।  
કુષ્ઠાશીકામલામેહગુલ્મોદરભગન્દરાન્ ॥૪૪॥  
ગ્રહણીપાણ્ડુરોગાંશ્ચ હન્યુઃ પુંસવનાશ્ચ તે ।  
કલ્યાણકા ઇતિ ક્યાતાઃ સર્વેષ્વત્રુષુ યૌગિકાઃ ॥૪૫॥  
इति कल्याणकगुडः ।

તે તે લાડુ વે લડુ, મન્દાગ્નિત્વમ્ મન્દ અગ્નિ  
મન્દાગ્નિ, જ્વરમ્ જ્વર જ્વર, મૂર્છામ્ મૂર્છા મૂર્છા,  
મૂત્રકૃચ્છ્રમ્ મૂત્રકૃચ્છ્ર મૂત્રકૃચ્છ્ર, અરોચકમ્ અરુચિ  
અરોચક, અસ્વપ્નમ્ અનિદ્રા નીંદકા ન આના, ગાત્રશૂલમ્  
ગાત્રશૂલ શરીરમેં શૂલ, કાસમ્ કાસ કાસ, શ્વાસમ્  
શ્વાસ શ્વાસ, શ્રમમ્ શ્રમ શ્રમ, ક્ષયમ્ ક્ષય ક્ષય, કુષ-  
કુષ કુષ, અર્શઃ- અર્શ અર્શ, કામલા- કમળો કામલા,  
મેહ- મેહ પ્રમેહ, ગુલ્મ- ગુલ્મ ગુલ્મ, ઉદર- ઉદરોગ  
ઉદરોગ, મગન્દરાન્ ભગન્દર મગન્દર, ગ્રહણી- ગ્રહણી-  
રોગ ગ્રહણી, પાણ્ડુરોગાન્ ચ અને પાંડુરોગનો ઓર  
પાણ્ડુરોગકા, હન્યુઃ નાશ કરે છે નાશ કરતે હૈં. પુંસ-  
વનાઃ ચ અને પુંસવન છે ઓર પુંસવન કરતેવાલે હૈં,  
કલ્યાણકાઃ તેઓ 'કલ્યાણક' વે 'કલ્યાણક', ઇતિ  
ક્યાતાઃ એનામથી પ્રસિદ્ધ છે इस नामसे प्रसिद्ध हैं,  
સર્વેષુ અને સર્વ ઓર સર્વ, ત્રુષુ ત્રુષુઓમાં ત્રુષુઓમેં,  
યૌગિકાઃ તેઓનો પ્રયોગ કરી શકાય છે વે યૌગિક હૈં  
॥ ૪૩-૪૫ ॥ इति आ ये, कल्याणकगुडः कल्याणकगुड  
कल्याणकगुड हैं ।

43-45. These boluses are curative  
of the dullness of the gastric fire,  
fever, fainting, dysuria, anorexia, inso-  
mnia, body aches, cough, dyspnea,  
giddiness, emaciation, dermatosis, piles,  
jaundice urinary disorders, gulma,  
abdominal diseases, fistula-in-ano, assi-  
milation disorders and anemia. They  
help in establishing the male sex in  
the embryo. They are known as  
Auspicious boluses and can be admini-  
stered in all seasons. Thus has been  
described the 'Auspicious bolus'.

દ્યોષત્વકપત્રમુસ્તૈલાવિહજ્ઞામલકામયાઃ ।  
સમમાગા મિષગ્દયાન્ ત્રિગુણં ચ મુકૂલકમ્ ॥૪૬॥

૪૬ મલકામયાઃ—મલકાન્ સમાન્ (વ. ક.)

, મુકૂલકન્—મુકૂલકન્ (વ. જ.)

त्रिवृतोऽष्टगुणं भागं शर्करायाश्च षड्गुणम् ।  
 चूर्णितं गुडिकाः कृत्वा क्षौद्रेण पलसंमिताः ॥४७॥  
 मक्षयेत् कल्पमुत्थाय शीतं चानु पिवेज्जलम् ।  
 मूत्रकृच्छ्रे ज्वरे वम्यां कासे श्वासे भ्रमे क्षये ॥४८॥  
 तापे पाण्ड्यामयेऽल्पेऽग्नौ शक्ता निर्यन्त्रणाग्निनः ।  
 योगः सर्वविषाणां च मतः श्रेष्ठो विरेचने ॥४९॥  
 मूत्रजानां च रोगाणां विधिज्ञेनावचारितः ।

मिषक् वैद्य वैद्य, ग्योष- सुं, मरी, पीपर त्रिफल,  
 खड्ग- तश्च दालचीनी, पत्र- तेजपत्र तेजपात, मुस्त- भेद्य  
 मुस्ता, एला- नान्दी ऐक्षथी इलायची, विडङ्ग- वागडिङ्ग  
 वायविडङ्ग, आमलक- आमली आंबला, अमयाः अने  
 हरदे और हरद, समभागाः ऐक्षथी समान भागभा  
 इनको समान भागमें, मुक्ककम् दन्तीने दन्तीको,  
 द्विगुणम् अमला भागभा दुगुने भागमें, त्रिवृतः नसे-  
 तने नितोतको, अष्टगुणम् अष्टगुला भागभा आठगुने  
 भागमें, शर्करायाः अने साकरने और शर्कराको, षड्गुणम्  
 भागम् च छगुला भागभा छगुने भागमें, दद्यात्  
 देना देवे, चूर्णितम् ऐ सर्वतुं चूर्ण करी इन सबके  
 चूर्णमें, क्षौद्रेण मध नाभी राहद मिठाकर, पलसंमिताः  
 ऐक ऐक पलनी एक एक पलकी, गुडिकाः गोलीऐ  
 गोलियां, कृत्वा करी बनाकर, कल्पम् सत्रारे प्रातःकालमें,  
 कृत्वा ऐरी उठकर, मक्षयेत् ऐक गोली आवी  
 एक गोली खावे अनु च अने उपर और पीछे,  
 शीतम् ठंडे शीतल, जलम् पाथी जल, पिवेत् पीवुं  
 पीवे, मूत्रकृच्छ्रे मूत्रकृच्छ्रे मूत्रकृच्छ्रे, ज्वरे ज्वर ज्वर,  
 वम्याम् उबडी वमन, कासे कास कास, श्वासे श्वास  
 श्वास, भ्रमे भ्रम भ्रम, क्षये क्षय क्षय, तापे ताप ताप,  
 अग्नौ अग्नौ तथा भ्रमभिर्मा तथा मन्दाग्निमें, निर्यन्त्रण-  
 परहेष्ठ परहेष्ठके बिना, आग्निनः आवामा खानेमें,  
 कृत्वा आ गोली प्रशस्त ऐ प्रशस्त है, विधिज्ञेन  
 विधि अनुसार वैद्य विधि जाननेवाले वैद्य द्वारा,  
 अवचारितः आपेक्षे प्रयुक्त, योगः आ योग यह योग,  
 सर्वविषाणाम् सर्व विषाभा सब प्रकारके विषोंमें,  
 मूत्रजानाम् अने मूत्रजन्य और मूत्रजन्य, रोगाणाम् च

रोगोंमें, विरेचने विरेचन मा २ विरेचनके लिए,  
 श्रेष्ठः श्रेष्ठ श्रेष्ठ, मतः म-ये, छे माना है ॥४७-४९॥

46-49. The physician should take equal parts of the three spices, cinnamon bark and leaf nut grass, cardamom, emblic myrobalans, chebulic myrobalans, two parts of physic nut, eight parts of turpeth and six parts of sugar. These reduced to powder and mixed with honey, should be made into boluses of four tolas each and taken early in the morning after rising from the bed, followed by potion of cold water. It is recommended in dysuria, fever, vomiting cough, dyspnea, giddiness emaciation, excessive heat, anemia and weakness of gastric fire, without any regimen of diet. This preparation in the hands of an expert is regarded a most effective one in the elimination of all kinds of poisons and in the curing of all urinary diseases.

पथ्याघ्रात्र्युक्कृकाणां प्रसूतौ द्वौ त्रिवृत्पलम् ॥५०॥  
 दश तान्मोदकान् कुर्यादीश्वराणां विरेचनम् ।

पथ्या- हरदे हरद, घात्री- आमली आंबला, उद-  
 कृकाणाम् अने और उदकीअना और एरडके बीज, द्वौ  
 प्रसूतौ १६ तोला १६ तोले, त्रिवृत् नसेतने त्रिवृत, पलम्  
 ४ तोला ऐक्षथी, मधथी ४ तोला इनके, मधुमे, तान् दस  
 उतम गुणवाणा दस उत्तम गुणवाले दस, मोदकान्  
 मेदक लडू, कुर्यात् अनामना बनाये, ईश्वराणाम् आ

५०. पथ्या-घ्राका (क. क.)

५०. पथ्याघ्रात्र्युक्कृकाणां प्रसूतौ द्वौ त्रिवृत्पलम्-त्रिवृत्पलं

५०. द्विपसृतं पथ्याघ्रात्र्युक्कृकोः (क. ग. द. व. फ.)

५०. -त्रिवृत्पलं द्विपसृतं पथ्या त्र्युक्कृकोः (द.)

४९. श्रेष्ठो विरेचने-श्रेष्ठं विरेचनम् (ग. क.)

औषधंशाणी पुरुषो भाटे यह ऐश्वर्यशाली पुरुषोंके लिए,  
विरेचनम् विरेचन छे विरेचन है ॥ ५०३ ॥

50-50½. 16 tolas of chebulic myrobalans, emblic myrobalans and castor plant and four tolas of turpeth should be prepared into ten sweet boluses to be used for the purgation of aristocratic persons.

त्रिवृद्धैमवती श्यामा नीलिनी हस्तिपिप्पली ॥ ५१ ॥  
समूला पिप्पली मुस्तमजमोदा दुरालभा ।  
कार्षिकं नागरपलं गुडस्य पलविंशतिम् ॥ ५२ ॥  
चूर्णितं मोदकान् कुर्यादुदुम्बरफलोपमानम् ।

त्रिवृत् नसेातर त्रिवृत् हैमवती हैमवती,  
श्यामा काणु नसेातर श्यामा, नीलिनी नीलिनी  
नीलिनी, हस्तिपिप्पली गजपीपर गजपिप्पली, समूला  
पीपरीमूल पिप्पलीमूल, पिप्पली पीपर पिप्पली, मुस्तम्  
मोय मुस्ता, अजमोदा अजमोदा अजमोदा, दुरालभा  
अने धमासा और धमासा, कार्षिकम् ऐ करैक ऐक  
तोला ये प्रत्येक एक एक तोला, नागरपलम् सुं ४  
तोला सोंठ ४ तोले, गुडस्य अने गोण और गुड, पल-  
विंशतिम् १८० तोला १८० तोले, चूर्णितम् ऐ सर्वतुं  
थुलुं करी इन सबके चूर्णसे, उदुम्बर- फल- छेभरानां  
इय गूरके फलके, उपमान् जेवना समान, मोदकान्  
मोदके लड्डु, कुर्यात् करवा बनाये ॥ ५१-५२ ३ ॥

51-52½. Take one tola each of turpeth, white sweet flag, black turpeth, indigo, elephant pepper, long pepper, roots of long pepper, nut grass, celery, cretan prickly-clover, four tolas of dry ginger and eighty tolas of gur and reducing them to powder, make sweet boluses of the size of a fig.

हिङ्गुसौवर्चलव्योष्यवानीविडजीरकैः ॥ ५३ ॥  
वज्राजगम्बात्रिकलाचव्यचित्रकधान्यकैः ।

५३. ववानी विडजीरकैः-विडवाजीवमानिकैः (द.)

मोदकान् वेष्टयेच्चूर्णैस्तान् सतुम्बुरुदाडिमैः ॥ ५४ ॥  
त्रिकवङ्गणहृदस्तिकोष्ठार्शःप्लीहशूलिनाम् ।

हिकाकासारचिश्वाखकफोदावर्तिनां शुभाः ॥ ५५ ॥

हिङ्गु- हिङ्ग हींग, सौवर्चल- संथण संचल, व्योष-  
सुं ६, भरी, पीपर त्रिकटु, ववानी- अजमोदा अजमोदा,  
विड- विड वनस्पति विड नमक, जीरकैः ७२ जीरा, ववा-  
ववा वच, अजगम्बा- अजगम्बा अजगम्बा, त्रिकला-  
त्रिकला त्रिकला, चव्य- चव्य चव्य, चित्रक- चित्रक चित्रक,  
धान्यकैः धान्य धनिया, सतुम्बुरु- सतुम्बुरु धान्य  
तुम्बुरु दाडिमैः अने दाडिमनां पीपरी और अनार-  
दाना, चूर्णैः थुलुंथी इनके चूर्णसे, तान् ते इन, मोदकान्  
मोदके लड्डुको, वेष्टयेत् छेपेटवा लपेट देवे, त्रिक-  
ते मोदके त्रिक ये लड्डुओं त्रिक, वङ्गण- वंक्षु वंक्षण,  
हृद- हृदय हृदय, बस्ति- बस्ति बस्ति, कोष्ठ- कोष्ठ कोष्ठ,  
अर्शः अर्शः अर्शः, प्लीह- अने प्लीहाना और प्लीहामें,  
शूलिनाम् शूलवाणाओंने भाटे शूलवालोंके लिए, हिका-  
हिका हिका, कास- कास कास, अरुचि- अरुचि अरुचि,  
श्वास- श्वास श्वास, कफ- अने कफ- अने कफजन्य,  
उदावर्तिनाम् उदावर्तिना रोगवाणाओंने भाटे उदावर्त-  
रोगियोंके लिए, शुभाः शुभ छे मंगलकारी हैं ॥ ५३-५५ ॥

53-55. Sweet boluses may also be made of the powder of asafetida, sanchal salt, the three spices, bishop's weed, bid salt, cumin seeds, sweet flag wild carrot, the three myrobalans, chaba pepper, white flowered leadwort and coriander, and dressed with powdered indian tooth-ache and pomegranate. These are beneficial to patients afflicted with pain in the sacral, inguinal, epigastric, hypogastric and abdominal regions, painful piles and splenic disorders, and also to patients suffering from hiccup, cough anorexia, dyspnea, morbid kapha and misperistalsis.

५५. शुभाः-हिताः (घ.)

षट्सु ऋतुषु षट् योगाः—

त्रिवृतां कौटजं बीजं पिप्पलीं विश्वमेषजम् ।

क्षौद्रद्राक्षारसोपेतं वर्षास्वेतद्विरेचनम् ॥५६॥

त्रिवृताम् नसेत्तर नसेत्, कौटजम् बीजम् ४-  
 ७५ इन्द्रजै, पिप्पलीम् ५५२ पिप्पली, क्षौद्र- मधु-  
 मधु, द्राक्षारस- अने द्राक्षना रसथी और द्राक्षारससे,  
 उपेतम् युक्त युक्त, विश्वमेवजम् सूंष्टुं यूष्टुं सोठका  
 चूर्ण, एतत् ओ ये, वर्षासु वर्षाऋतुभा वर्षाऋतुमे  
 विरेचनम् विरेचनं ओ विरेचनं हैं ॥ ५६ ॥

56. Turpeth, seeds of kurchi, long pepper and dry ginger mixed with honey and grape-juice is a purgative preparation suitable for use in the rainy season.

त्रिवृद्गुणलभामुस्तर्करोदीव्यचन्दनम् ।

द्राक्षाम्बुना स्रग्ष्ट्याहसातलं जलदात्यये ॥५७॥

सयष्टयाङ्गः ऋषीभ्यः सुलहरी सातल्लव विद्याभा-  
 धुं यूर्ध्वं चिकेगई, त्रिवृत्-नसेातर निसेात, दुरालमा-  
 धभासेा वमासा, सुस्त-मेथ मुस्ता, शर्करा-साडर  
 शर्करा, उदीच्य-भुगंधी वाजे। गन्धवाला, चन्दनम् अने  
 वाळ अंदन ऐऐातुं यूर्ध्वं और लाल चन्दन इनका चूर्ण,  
 द्राक्षाम्बुना द्राक्षना पाणी साथे द्राक्षाके रसके साथ,  
 जलदायबे शरद ऋतुमा विरेचन छे शरदमे विरेचन  
 हे ॥ ५७ ॥

57. Turpeth, cretan-prickly clover, nut grass sugar, fragrant sticky mallow, sandal, liquorice and soap-pod mixed with grape-water, make a purgative preparation suitable for use at the end of the rainy season.

त्रिवृतां चित्रकं पाठामज्जाजीं सरलं वचाम् ।

स्वर्णक्षीरीं च हेमन्ते पिष्ट्वा तूष्णाम्बुना पिबेत् ॥५८॥

५६. क्षौद्रद्राक्षारसोपेकम् - समृद्धोक्षारसक्षौद्रम् (च. क.)

५८. स्वर्णक्षीरी-स्वर्णदुग्धी (क त.)

हेमन्ते हेमन्तमा हेमन्तमे, त्रिवृताम् नसोत्तर  
त्रिव्र, चित्रकम् त्रिव्र चित्रक, पाठाम् पाठा पाठो,  
अजात्रीम् अजु अजात्री, सरलम् सरल सरल, वचाम्  
वच वच, स्वर्गक्षीरीम् च अने स्वर्गक्षीरीने और  
स्वर्गक्षीरी इनको, पित्रा पीसीने पीसकर, उष्णाम्बुना दु  
अरुम पाण्डु साथे गरम पानीसे, पिबेत् पीना पीना  
चाहिए ॥ ५८ ॥

58. Turpeth. white flowered leadwort. Patha. cumin, long leaved pine, sweet flag and yellow milk plant reduced to paste should be taken as potion in warm water in the winter.

शर्करा त्रिवृता तुल्या ग्रीष्मकाले विरेचनम् ।

तुल्या समान परिभाष्यमा समान परिमाणमें,  
शर्करा साकर शर्करा, त्रिवृता अने नम्रोतर ज्वर त्रिवृत,  
प्रीणकाले प्रीणकालमा प्रीणकालमें, विरेचनम् विरेचन  
छे विरेचन हैं ॥ ५८३ ॥

58½. Equal parts of sugar and turpeth make a suitable purgative preparation for use in the summer.

त्रिवृत्त्राया तहपुषाः सातलां कटुरोहिणीम् ॥५९॥

स्वर्णक्षीरीं च संचूर्ण्य गोमूत्रे भावयेत् त्र्यहम् ।

एष सर्वतुको योगः खिग्धानां मलदोषहृत् ॥६०॥

त्रिवृत्- नसेत्तर त्रिवृत्, त्राश्रित्व- त्रायभाष्य  
असवर्गं, ह्रस्वाः ङिङिरे हाङ्गेरे, सातलाम् यभङ्ग्या  
सातला, कटुरोहिणीम् कटुरोहिणी कटुकी, स्वर्णक्षीरीम्  
च अने रत्नक्षीरीनुं और स्वर्णक्षीरी, संचूर्ण्य चूर्ण  
करीने इक्का चूर्ण करके, ज्यहम् त्रष्ट् इवत्स सुधी  
तीन दिन तक, गोमूत्रे गोमूत्रनी गोमूत्रमें, भावयेत्  
भावना देवी भिगोर रखे, एषः आ यह, सर्वतुङ्कः

५९. त्रिवृत्त्रयन्तिहपुत्राः मानलां कटुरोहिणीम्-इपुत्रं सप्तलां  
इवामां इवन्तीं कटुरोहिणीम् (घ. ङ.)

६०. मलदोषहृत्-मलदोषनुत् (ब)



सर्व ऋतुभां उपयेगी। सव ऋतुओंमें उपयोगी, योगः  
श्रेय योग, स्निग्धानाक रितुध भुष्योना स्निग्ध  
पुष्पोंके, मलदोषहृत् भोजना दोषने हरे छे मलदोषका  
नाश करनेवाला है ॥ ५९-६० ॥

59-60. Turpeth, zalil, juniper, soap-  
pod, kurroa, and yellow milk plant  
should be reduced to powder and  
impregnated for three days in cow's  
urine. This is a preparation suitable  
for purgative use in all seasons for  
eliminating the morbid matter in  
persons with unctuous condition of  
the body.

श्यामात्रिवृतयोः द्वौ चूर्णयोगौ—

त्रिवृच्छयामा दुरालम्भा वत्सकं हस्तिपिप्पली ।  
नीलिनी त्रिफला मुस्तं कटुका च सुचूर्णितम् ॥६१॥  
सर्पिर्मांसरसोष्णाम्बुयुक्तं पाणितलं ततः ।  
पिबेत् सुखतमं ह्येतद्रूक्षणाग्रपि शस्यते ॥६२॥

त्रिवृत नसोत्तर निसेत, श्यामा कालुं नसोत्तर  
श्यामा, दुरालम्भा धमासो धमासा, वत्सकम् धन्वप  
इन्द्रजौ, हस्तिपिप्पली गजपीपर गजपिप्पली, नीलिनी  
नीलिनी नीलिनी, त्रिफला त्रिध्व त्रिफला, मुस्तम्  
भोथ मुस्त, कटुका च अने कटु और कटुती, सुचूर्णितम्  
ऐओतुं सारी रीते चूर्ण करीने इनका अच्छी प्रकार  
चूर्ण करके, ततः तेभांथी उसमेंसे, पाणितलम् ऐक तोला  
एक तोला, सर्पिः धी वी, मांसरस-भांसरस के मांसरस  
या, उष्णाम्बु- गरम पाछी गरम पानीके, युक्तम् साथे  
साथ, पिबेत् पीवुं पीवे, एतत् आ निरेचन यह  
निरेचन, सुखतमम् सौथी सुभकारक छे अत्यन्त सुख-  
दायक है, रूक्षणाग्रम् अने रूक्ष भुष्योने भाटे और  
रूक्ष पुरुषोंके लिए, अपि पक्षु मी, शस्यते हि नक्षी  
प्रशस्त छे निषयसे प्रशस्त है ॥ ६१-६२ ॥

61-62. Turpeth, black turpeth,  
cretan-prickly clover, kurchi, elephant

pepper, indigo, the three myrobalans,  
nut grass and kurroa reduced to fine  
powder and mixed with ghee, meat-  
juice and hot water, should be taken  
in the dose of one tola. This is regar-  
ded as most beneficial and is recom-  
mended even in a dehydrated condition  
of the body

त्र्युषणं त्रिफला हिङ्गु कार्षिकं त्रिवृतापलम् ।  
सौवर्चलार्धकर्व च पलार्धं चाम्लवेतसात् ॥६३॥  
तच्चूर्णं शर्करातुल्यं मधेनाम्लेन वा पिबेत् ।  
गुल्मपार्श्वार्तिनुत्सिद्धं जीर्णं चाद्याद्रसौदनम् ॥६४॥

त्र्युषणम् सूंड, भरी, पीपर त्रिकटु त्रिफला त्रिध्व  
त्रिफला, हिङ्गु अने हिंअ हींग, कार्षिकम् दरेक ऐक  
तोला प्रत्येक एक एक तोला, त्रिवृतापलम् नसोत्तर  
आर तोला निसेत चार तोले, सौवर्चल-सूथण संवड,  
अर्धकर्वम् च अरधो तोला आधा तोला, अम्लवेतसात्  
अने अम्लवेतस और अम्लवेतस, पलार्धम् च २  
तोला २ तोले, शर्करातुल्यम् ऐ अधां गेटथी साकर  
नाथीने इन सबके बराबर शर्करा मिलाकर, तत् ते  
इस, चूर्णम् चूर्ण चूर्णको, मधेन मध मध, अम्लेन वा  
अथवा अम्ल द्रव्य साथे या अम्ल द्रव्यके साथ,  
पिबेत् पीवुं पीवे, गुल्म ते गुल्म वह गुल्म, पार्श्व-  
आर्ति अने पडभांने दुभावे और पार्श्वशूलके, तुत्  
भटाउनार तरीके नाश करनेके लिए, सिद्धम् सिद्ध  
भयेतु छे सिद्ध है, जीर्णं च ऐ पथी अथ त्पारे इसके  
पचने पर, रसौदनम् भांसरसनी साथे भात मांसरसके  
साथ मात, अद्यात् भावे खाये ॥ ६३-६४ ॥

63-64. One tola each of the three  
spices, the three myrobalans and asafe-  
tida, four tolas of turpeth, half a tola of  
sanchal salt and two tolas of Amlavetasa  
reduced to powder and mixed with  
equal part of sugar should be taken  
as a potion along with wine or sour  
gruel. This is a tested remedy for



gulma and pain in the sides; and when the dose has been digested, cooked rice mixed with meat-juice should be taken

श्यामात्रिवृतयोर्द्वितीयस्तर्पणयोगः—

त्रिवृतां त्रिकलां दन्तीं सप्तलां व्योषसैन्धवम् ।  
 कृत्वा चूर्णं तु सप्ताहं भाव्यमामलकीरसे ॥६५॥  
 तद्योज्यं तर्पणे यूषे पिहिते रागयुक्तिषु ।

त्रिवृतम् नसेत्तर त्रिवृत, त्रिफलाश्च त्रिद्वि त्रिकला,  
दन्तीश्च दंती दन्ती, सप्तलाम् सातधा सानला,  
व्योष- सुंठ, भरी, पीपर त्रिकटु सैन्धवश्च अने  
सिंघालुषुतुं और सैधव, चूर्णम् यूषुं इनका चूर्ण, कूवा  
करीने करके, आमलकी-रसे तु आभणाना रसभा  
आंवलेके रसमें, सप्ताहम् तेने सात दिनस सुधी रसको  
सात दिन तक, भाग्यम् भावना देवी भावना देवे, तत्  
तेने। इसका, तर्पणे तर्पण तर्पणमें, यूषे यूष यूषमें, पिष्टिते  
भांसरस मांसरसमें, रागयुक्तियु अने रागनी येज्जनायेमा  
और रागकी बनावटमें, योज्यम् प्रयोग करवे। प्रयोग करना  
चाहिए ॥ ६५३ ॥

65 65½. Reducing to powder turpeth, the three myrobalans, red physic nut, soap-pod, the three spices and rock salt and impregnating it in the juice of the emblic myrobalans for seven days, it should be administered mixed with a demulcent drink, soup-meat and Raga preparations.

श्यामात्रिवृत्तः घृतमौ—

तुल्याम्लं त्रिघृतांकल्कसिद्धं गुरुमहरं घृतम् ॥६६॥

त्रिवृत्ताकक- नसीतरना ३६६३। त्रिवृत्ताकसे,  
सिद्ध सिद्ध करेणुं सिद्ध किवा, तुल्याम्कम् અને  
समान પ્રમાણમાં અગ્ર દ્રવ્યનાળું જોઈ સમાવ માત્રાને

३५. त्रिभुतां त्रिदशां दम्पतीं सप्तानां श्लोकसंख्यवन्-विदुषां विदु-  
कादम्पतीसप्तानां श्लोकसंख्यैः (५.)

अम्लद्रव्य मिला, घृतम् वी घृत गुल्महरण भुक्ष्मनाशक  
 ये गुल्मनाशक वै ॥ ६६ ॥

66. The ghee prepared with equal parts of emblic myrobalans and turpeth is curative of gulma.

श्यामात्रिवृत्तयामूलं पंचदामलकैः सह ।

जले तेन कयायेण पक्त्वा सर्पिः पित्रेन्नरः ॥६७॥

इयामा- छाग्री नसेःतरनां इयामा, त्रिवृतयोः अने  
अनुषु नसेःतरनां और त्रिवृत इनकी, मूलम् भूगने बड़को,  
सामलकैः यह आःभगांन्दी एःथे आंबलकै साथ, जले  
जलमां जलमें पचेत् पडावथां पकवे, तेन ते इस,  
कषादेण कषाथन्दी आथे कषावके साथ, सर्पिः धी घृत,  
पक्त्वा पडावीने पका करके, नरः मनुष्ये मनुष्य, पीवेत्  
पीपुं पीवे ॥ ६७ ॥

67. The roots of black turpeth and turpeth should be decocted in water with emblic myrobalans. The patient may take the ghee prepared with this decoction.

श्यामात्रिवृतयोः क्षीरयोगौ—

इयामात्रिवृत्कषायेण सिद्धं सर्पिः पिबेत्तथा ।

साधितं वा पयस्ताभ्यां सुखं तेन विरिज्यते ॥६८॥

तथा ते भ्रमास्तु इति प्रकार, इयामा-त्रिवृत्-काण्डा  
नसोत्तर अने अरुखु नसोत्तरना इयामा जोर त्रिवृत्के,  
कषायेण कषायधी कषायसे, सिद्धम् सिद्ध करेहुं सिद्ध,  
सर्पिः धी धीपुं इतको पीवे, ताम्बाम् जलना ते  
अनेधी जयवा इयामा त्रिवृत्के साथ, साधितम् साधेहुं  
सिद्ध करके, पयः वा इह इह, पिबेत् धीपुं पीवे, तैव  
तेथी उपसे, सुखम् सुखपूर्वकं सुखपूर्वक, विस्मयते  
विराजन् इति छे विरेजन होता है ॥ ६८ ॥

६.१ जले में कषाय-निर्मुक्तता (४.)

• निवेदन:- निवेदना ( ५ )

६८ इयामभिस्तुत्यायेन भिहं सर्पिः नीरुहेन तयोस्तुत्या सिद्ध-  
सर्पिः (ख. द.)

॥ सर्पिः-वीर (द.)

68. The ghee prepared with the decoction of black turpeth and turpeth should be taken similarly as potion. Also the milk prepared with these two (black turpeth and turpeth) acts as a pleasant purgative.

श्यामात्रिवृतयोः मद्ययोगौ—

त्रिवृन्मुष्टीस्तु सनखानद्यौ द्रोणेऽम्भसः पचेत् ।  
पादशेषं कषायं तं पूतं गुडतुलायुतम् ॥६९॥  
स्निग्धे स्थाप्यं घटे क्षौद्रपिप्पलीफलचित्रकैः ।  
प्रलिप्ते मधुना मासं जातं तन्मात्रया पिबेत् ॥७०॥  
ग्रहणीपाण्डुरोगघ्नं गुल्मश्चयथुनाशनम् ।

सनखान् नभ आँदर रहे तेवी नखन व दिखते रहे ऐसी, अष्टौ आठ आठ, त्रिवृन्मुष्टीन् तु नसे।तरनी मुष्टी निसोतकी मुष्टी, अम्भसः द्रोणे ओक द्रोण पाण्डीभा एक द्रोण पानीमें, पचेत् पडाववी पकावे, पादशेषम् यतुर्थांश आठौ रहे त्यारे चतुर्थांश शेष रहे तब, तम् ते उस, कषायम् कषाधने कायको, पूतम् आणी धर्ष छानकर, गुडतुलायुतम् तेभा ४०० तोला जोग भेजनी उसमें ४०० तोले गुड मिलाकर क्षौद्र-तथा मध तथा मधु, पिप्पली- पीपर पिप्पली, फल-भील्ल मदनफल, चित्रकैः तथा चित्रक नाभी और चित्रक ढाल करके, मधुना मध मधुसे, प्रलिप्ते थोपडेला लिप्त किये, स्निग्धे अने घी थोपडेला और घी चुपके हुए, घटे भाभां वडेमें, मासम् ओक महीना मुष्टी एक मास तक, स्थाप्यम् राखवे रख देवे, जातम् आसवर्ष थयेला आसवरूप बने, तत् तेने उसको, मात्रया पिबेत् मात्रासर पीवे। मात्रासे पीवे, ग्रहणी- ते अहर्षुरोग वह ग्रहणीरोग, पाण्डुरोगघ्नम् तथा पांडुरोगने। नाश करने।र छे तथा पाण्डुरोगका नाशक है, गुल्म- अने शुल्म और

गुल्म, शयथु- तेभज सोअने एवं शोथको, नाशनम् नष्ट करने छे नष्ट करता है ॥ ६९. ७०॥

69-70. Eight fistfuls of turpeth should be decocted in 1024 tolas of water till it is reduced to one fourth of its quantity. That decoction should be strained and mixed with 400 tolas of gur. This should be mixed with honey, long pepper, emetic nut and white flowered leadwort and kept in a pot soaked in ghee and well-lined with honey. At the end of a month, this should be taken out and used as potion in due dose. This is curative of assimilation-disorders, anemia, gulma and edema.

सुरां वा त्रिवृतायां गन्धिष्वं तत्कायसंयुताम् ॥७१॥

त्रिवृता-योग- नसे।तरना थोपडेला त्रिवृतके योगरूप, क्धिष्वं वा सुराभीअवाणी सुराबीजवाला, तत्काय- अने नसे।तरना कषाधनी और त्रिवृतके कायसे, संयुताम् युक्त युक्त, सुराम् वा सुरा पीवी सुरा पीवे ॥ ७१ ॥

71. Or, the wine prepared by mixing yeast with turpeth and its decoction may also be taken.

श्यामात्रिवृतयोः काञ्जिकनोगौ—

यवैः श्यामात्रिवृत्कायस्निग्धैः कुल्माषमम्भसा ।  
आसुतं षडहं पले जातं सौवीरकं पिबेत् ॥७२॥

श्यामा- डाणा नसे।तर श्यामा, त्रिवृत् अने अतुल्य- नसे।तरना और त्रिवृतके, कायस्निग्धैः कषाधनी पाण्डेला कायसे उबाले हुए, यवैः जवना जौके, कुल्मा- षम् कुल्माषने। कुल्माषको, अम्भसा पाण्डी साथे ओक

६९. त्रिवृन्मुष्टीस्तु....पचेत्-जले द्रोणे पचेदष्टौ त्रिवृन्मुष्टीस्तु

सनखान् (त.)

— अने द्रोणे त्रिवृन्मुष्टीमष्टौ तु सनखान्

पचेत् (ब. क.)

७०. मधुना-पिबेत् (क. ब. ड. व. क.)

७१. त्रिवृता....संयुताम्-त्रिवृताक्धिष्वं पिबेत्कायसंयुताम्

(ब. क.)

७२. स्निग्धैः-स्निग्धैः (त.)

पले-पले (ब. ड. व.)

अथ धान्नां राशी पानीके माय एक घण्टे रखकर सुब  
बन्द करके, पहले धान्यना दण्डाभां धान्यराशिमें,  
बडहम् ७ दिवस राशी छः दिनतक रखकर, आसुतम्  
आसुवन्ती क्रियायी आसवकी क्रियासे, जातम् अनेक  
बने हुए, सौवीरकम् सौवीरक सौवीरकको, पिवेत् पीतुं  
पीवे ॥ ७३ ॥

72 The cooked parts obtained by  
boiling barley in the decoction of  
black turpeth should be soaked in  
water and made to ferment for six  
days in a vessel buried in a heap of  
grain. The resulting Sauveeraka wine  
should be taken as potion.

भृष्टान् वा सतुषाञ्जुष्टान् यवांस्तर्जुणसंयुतान् ।  
आसुतानम्भसा तद्वत् पिवेज्जातं तुषोदकम् ॥७३॥

शुष्टान् अथवा साधु करेखा अथवा शुद्ध यवान्  
वा अने जौको, सतुषान् इतनासहित तुषसहित,  
भृष्टान् शेकी भूनकर, तर्जुण- नसोतरना यूष्टी  
त्रिवृतके चूर्णसे, संयुतान् युक्त करी मिलाकर, तद्वत्  
ते अ प्रभाषे इसी प्रकार, अम्भसा अणानी साथे जलमें  
घोलकर, आसुतान् आसुवन्ती क्रियायी आसवकी क्रियासे,  
जातम् अनेक बने हुए तुषोदकम् तुषोदकने तुषोदकको,  
पिवेत् पीतुं पीवे ॥ ७३ ॥

73. Clean unhusked and roasted  
barley boiled in the decoction of  
turpeth and mixed with half-boiled  
barley-powder should be soaked and  
made to ferment for six days in water,  
in a vessel buried under a heap of  
grain; and the resulting Tushodaka  
wine should be used in the same  
manner as Sauveeraka wine.

७३. शुष्टान्-भुष्टान् (क. घ)

७४. ...-शुष्टान् (घ)

पाडवादिभिर्दश योगाः —

तथा मदनकल्पोक्तान् पाडवादीन् पृथग्दश ।  
त्रिवृच्चूर्णेन संयोज्य विरेकार्थं प्रयोजयेत् ॥७४॥

तथा ते अ प्रभाषे उसी प्रकार, मदनकल्प- भट्टन-  
कल्पभां मदनकल्पमें, डक्कान् कहेव कहे हुए, पृथक्  
शुद्ध शुद्ध पृथक् पृथक्, दश दश दश, पाडवादीन्  
पाडव चरेरे पाडवादिको, त्रिवृत्- चूर्णेन नसोतरना  
यूष्टीनी साथे त्रिवृत्चूर्णके साथ. संयोज्य भेगवीने  
मिलाकर विरेकार्थम् विरेचनने भाटे विरेचनके लिए,  
प्रयोजयेत् योजना प्रयोग करे ॥ ७४ ॥

74. Ten different preparations of  
Shadava etc., described in the pharma-  
ceutics of the emetic nut. should be  
mixed with the powder of turpeth  
and administered for purgation.

विरेचनयोगानां वाग्निनिरासार्थमुपायाः —

भवतश्चात्र —

त्वक्केशराज्रातकदाडिमैला-

सितोपलामाक्षिकमातुलुङ्गैः ।

मधैस्तथाऽम्लैश्च मनोनुकूल-

र्युक्तानि देवानि विरेचनानि ॥७५॥

अत्र च आ विषयभां इस विषयमें, भवतः ये  
श्लोक छे छे दो श्लोक हैं कि, त्वक्- त्वक् दालचीनी,  
केशर- नाभकेसर नागकेसर, राज्रातक- अणानी प्रभाषे,  
दाडिम- दाडिम अनार, यला- नानी ओष्ठयी इलायची,  
सितोपला- साकर चीनी, माक्षिक- मध मधु, मातुलुङ्गैः  
अने जीजेरा और मिर्जोरे, तथा मधैः मधै मध, मनो-  
नुकूलैः तेमअ मनने अमतां एवं मनके प्रिय, अम्लैः  
च अम्ल द्रव्ये अम्लोरे, युक्तानि साथे मिलाकर,  
विरेचनानि विरेचने। विरेचन देवानि देवां अर्धको  
देवे ॥ ७५ ॥

Here are two verses again—

75. Purgative preparations should  
be given combined with cinnamon

७५. मधैस्तथाऽम्लैश्च-मधैस्तथाऽम्लैश्च (व. ड. घ.)

bark, fragrant poon, indian hog plum, pomegranate, cardamom, sugar candy, honey, pomello and pleasant wines and drinks.

शीताम्बुना पीतवतश्च तस्य

सिञ्चेन्मुखं छर्दिविघातहेतोः ।

हृद्यांश्च मृत्पुष्पफलप्रवाला-

नम्लं च दद्यादुपजिघ्रणार्थम् ॥७६॥

पीतवतः च विरेचन पीथेन विरेचन पीने पर, तस्य ते शरीरान्ता उष रोगीके, मुखम् मुष् ५२ मुखको, छर्दि-विघात- छिदी न भाय वमन न हो, हेतोः ये भाटे इस लिए, शीताम्बुना शीतल नल शीतल जलसे, सिञ्चेन् मुखं आसिञ्चन करे, हृद्यां च अने हृदयने छितकर और हृदयके लिए हितकर, मृद- भाटी मिट्टी, पुष्प- फूल, फल- इण फल, प्रवालान् पत्ताकुशे पत्ताकुरी, अम्लम् च अने अम्ल द्रव्य और खट्टी वस्तु रोगीको, उपजिघ्रणार्थम् सुंभवा भाटे सूंभवेके लिए. दद्यात् आपना देवे ॥७६॥

76. After the person has taken the purgative dose, his face should be sprinkled over with cold water, and he should be given to smell cordial earth, flowers, fruits, leaf-buds and acid articles in order to prevent the tendency for vomiting.

अध्यायोक्तविषयः —

तत्र श्लोकाः—

एकोऽम्लादिभिरष्टौ च दश द्वौ सैन्धवादिभिः ।  
मूत्रेऽष्टादश यष्ट्यां द्वौ जीवकादौ चतुर्दश ॥७७॥  
क्षीरादौ सप्त लेह्येऽष्टौ चत्वारः सितयाऽपि च ।  
पानकादिषु पञ्चैव षडृतौ पञ्च मोदकाः ॥७८॥  
चत्वारश्च घृते क्षीरे द्वौ चूर्णे तर्पणे तथा ।  
द्वौ मये काञ्चिके द्वौ च दशान्ये षाडवादिषु ॥७९॥

७६. मृत्पुष्पफलप्रवालानम्लं च-समुदाहृतम् (ब.)

, प्रवालानम्लं व-प्रवालानम्लं (क. घ. फ.)

७७. यष्ट्यां-दृष्ट्या (ब.)

७९. षाडवादिषु-षाडवादिषु (ब.)

श्यामायास्त्रिवृतायाश्च कल्पेऽस्मिन् समुदाहृतम् ।  
शतं दशोत्तरं सिद्धं योगानां परमर्षिणा ॥८०॥

तत्र ते विषयमां उष विषयै, श्लोकाः उपसंहारना श्लोका छे छे उपसंहारके श्लोक हैं कि, अम्लादिभिः अम्ल पत्रेभां अम्लादिभिः, एकः अष्टौ च नव नव, सैन्धवादिभिः सैन्धव पत्रेभां सैन्धवादिभिः, दश द्वौ च पार बारह, मूत्रे मूत्रभां मूत्रै, षाडवादिषु षाडव अठारह, षडृतौ द्वौ जीवकादौ जीवकादौ दो, जीवकादौ चतुर्दश पत्रेभां जीवकादिभिः, चतुर्दश यौ चौरह, क्षीरादौ दश पत्रेभां क्षीरादिभिः, सप्त सात सात, लेह्ये अष्टौ यष्ट्यां अष्ट लेह्ये आठ, सितया च अति साठरभां चीनीमें, चत्वारः चार चार, पानकादिषु पानक पत्रेभां पानकादिभिः, पञ्च एव पांच पांच, षडृतौ षटुत्रेभां षटुत्रेभां, षट् छ छ, मोदकाः मोदकभां मोदकमें, पञ्च पांच पांच, घृते क्षीरे च क्षीरे अने दूधभां ची और दूधमें, चत्वारः चार चार, चूर्णे तथा तर्पणे चूर्ण तथा तर्पणभां चूर्ण तथा तर्पणमें, द्वौ ये दो, मये द्वौ मयभां ये मयमें दो, काञ्चिके काञ्चिकभां काञ्चिकमें, द्वौ ये दो, षाडवादिषु षाडव पत्रेभां षाडव आदिमें, अन्ये अन्य अन्य, दश च दश दश, श्यामायाः आ प्रभाषि श्यामा इस प्रकार श्यामा त्रिवृतायाः च अने त्रिवृतना और त्रिवृतके, अस्मिन् आ इस, कल्पे कल्पभां कल्पमें, परमर्षिणा मर्षिणे महर्षि, सिद्धम् योगानाम् दशोत्तरम् शतम् सिद्ध अष्टोदश योगो सिद्ध एकसौदश योग, समुदाहृतम् उही अतांभा छे कहे हैं ॥ ७७-८० ॥

Here are the recapitulatory verses—

77-80. Nine preparations with acid articles etc., twelve with rock-salt etc., eighteen with urine, two mixed with liquorice, fourteen with Jivaka and other drugs, seven with milk etc., twelve preparations of linctus mixed with sugar candy, five preparations of syrups for the six seasons, five preparations of sweet boluses, four preparations with ghee, two in milk and similar number in the form of powdered and

demulcent preparations, two preparations in wine, one in sour conjeer and ten other preparations in Shadava etc. thus in all one hundred and ten tested preparations of turpeth and black turpeth have been expounded by the great sage, in this chapter on the pharmaceutics of black turpeth

इत्यग्निवेशकृते तन्त्रे चरकप्रतिसंस्कृतप्रोक्त  
दृढबलसंपूरिते कल्पस्थाने इयमात्रिवृत्करूपो  
नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

इति आ. प्रभाषे. इस प्रकार अग्निवेशकृते अग्नि-  
वेशे रच्ये. अग्निवेशकृते वनाये, चरकप्रतिसंस्कृते तन्त्रे  
अने चरककी प्रतिप्रोक्त १० पत्रे. आ. शास्त्रभा.  
और चरकके द्वारा संस्कृत इस शास्त्रके, अत्रासे अत्रास  
अत्रास, दृढबलसंपूरिते अने दृढबले पूरा करने  
और दृढबलसे पूरित होने दये, कल्पस्थाने उपरान्त  
विषे कल्पस्थानमें. इयमात्रिवृत्करूपः 'इयमात्रिवृत्करूप'  
'इयमात्रिवृत्करूप', नाम नामने नामका, सप्तमः सातवा  
सातवा. अध्यायः अध्याय संपूर्ण अथे. अध्याय समाप्त  
हुआ ॥ ७ ॥

7. Thus, in the Section on Pharma-  
ceutics, in the treatise compiled by  
Agnivesa and revised by Caraka, the  
seventh chapter entitled 'The Pharma-  
ceutics of the Black Turpeth and  
Turpeth' not being available, the same  
as restored by Drīdhbala, is completed.

### अष्टमोऽध्यायः ।

आठमो अध्याय अध्याय आठवाँ

### Chapter VIII

चतुरङ्गकल्पोपक्रमः—

अथातश्चतुरङ्गकल्पं व्याख्यास्यामः ॥ १ ॥

इति ह स्माह भगवानात्रेयः ॥ २ ॥

अथ अतः ६वे अध्यासे अत्र आगे, चतुरङ्ग-  
कल्पम् 'चतुरङ्गकल्प' नामने अध्यायम् 'चतुरङ्ग-  
कल्प' नामके अध्यायका, व्याख्यास्यामः व्याख्यान करेगे ॥ १ ॥

भगवान् भगवान् भगवान्, आत्रेयः अत्रेये  
आत्रेयने, इति ह आ. शिष्याणां नीचे प्रभाषे. न इस  
विषयमें निम्न प्रकारसे ही, कहा सा करे. ये कहा है ॥ २ ॥

1. We shall now expound the  
chapter entitled 'The Pharmaceutics of  
the Purging Cassia'.

2. Thus declared the worshipful  
Atreya.

आरग्वधस्य पर्यायाः—

आरग्वधो राजवृक्षः शम्पाकश्चतुरङ्गलः ।

प्रग्रहः कृतमालश्च कर्णिकारोऽवघातकः ॥ ३ ॥

राजवृक्षः राजवृक्ष, शम्पाकः शम्पाक  
शम्पाक, चतुरङ्गलः चतुरङ्गल, प्रग्रहः प्रग्रह  
प्रग्रह, कृतमालः कृतमाल, कर्णिकारः कर्णिकार  
कर्णिकार, अवघातकः च अने अवघातक और अवघातक,  
आरग्वधः ये आरग्वधना पर्याया ये वे आरग्वधके पर्याय  
हैं ॥ ३ ॥

3. Aragwadha, Rajavriksha,  
Sampaka, Chaturangula, Pragraha,  
Kritamala, Karnikara and Avaghataka  
are its synonyms.

आरग्वधस्य गुणाः—

ज्वरहृद्गोवातासृग्दुदावर्तादिरोमिषु ।

राजवृक्षोऽधिकं पथ्यो मृदुर्मधुरशीतलः ॥ ४ ॥

राजवृक्षः अरभागे. अमलतास, मृदुः मृदु, मृदु,  
मधुरशीतलः मधुर तथा शीतल ये मधुर तथा शीतल  
है, ज्वर- अने ज्वर और ज्वर. हृद्गो- हृद्गो हृद्ग-  
रोम, गोवात- वातारो वातरक, दुदावर्तादि- अने  
दुदावर्त वजेरेना और उदावर्त आदिके, रोमिषु रोमिषो  
भाटे रोमिषोके लिए, अधिकं विशेष अधिक, पथ्यः  
पथ्य ये पथ्य है ॥ ४ ॥

4. It is mild, sweet and cooling and is exceedingly wholesome to persons suffering from fever, cardiac disorders and misperistalsis etc.

बाले वृद्धे क्षते क्षीणे सुकुमारे च मानवे ।  
योज्यो मृद्वनपायित्वाद्विशेषाच्चतुरङ्गुलः ॥५॥

चतुरङ्गुलः गरभाणां अमलतास, मृदु-अनपायित्वात् मृदु तथा नुकसान न करे जीवे होवाशी मृदु एवं अहानिकर होनेसे, विशेषात् भास करीने विशेषकर, बाले आण्ड बालक, वृद्धे वृद्ध, क्षते क्षतयुक्त क्षतरीगो, क्षीणे क्षीण, सुकुमारे च अने कामल और कोमल, मानवे मनुष्यमा मनुष्यमें, योज्यः विरिथन भाटे तेना प्रयोग करवे ओरिओ विरेचनके लिए उसका प्रयोग करना चाहिए ॥५॥

5. The purging cassia is specially suitable for administration to children, the aged, those suffering from pectoral lesions and cachexia and persons who are of delicate constitution, as it is mild and harmless in action.

आरग्वधस्य उपयोगविधिः —

फलकाले फलं तस्य ग्राह्यं परिणतं च यत् ।  
तेषां गुणवतां भारं सिकतासु निधापयेत् ॥६॥  
सप्तरात्रात् समुद्धृत्य शोषयेदातपे भिषक् ।  
ततो मज्जानमुद्धृत्य शुचौ भाण्डे निधापयेत् ॥७॥

फलकाले इणस अह करवाने समये फलसंग्रहकालमें, तस्य तेना इसके, यत् फलम् च ओ इण जो फल, परिणतम् पाकेवा होय पके हुए हों, आहम् ते देवां

५. ओज्यो-देवः (ब.)

६. फलकाले-रेचनार्थे (ब.)

७. फलं तस्य ग्राह्यं परिणतं च यत्-परिणतं फलं तस्याहरे-  
द्वयः (क. घ. ङ. फ.)

८. भारं-भारं (ब.)

९. भाण्डे-भाण्डे (ब.)

१०. भाण्डे-भाण्डे (ब.)

उसको ग्रहण करे, निषक् वैद्य वैद्य, गुणवताम् गुणवानां गुणवाले, तेषां ते इणानां उन फलोंके, भारम् समुद्धरे भारको, सिकतासु रेतीमां रेतमें, निधापयेत् राभी भुडवे दवा देना चाहिए. सप्तरात्र सात दिवस पछी सात दिनोंके पीछे, समुद्धृत्य तेने उद्धार डाढी उसको निकाल-कर, आतपे तापडाभां धूपमें, शोषयेत् सूक्ष्मवे सूखा देवे, ततः ते पछी उसके पीछे, मज्जानम् तेनी मज्जा उसकी मज्जाको उद्धृत्य डाढी उद्धरे निकालकर, शुचौ स्वच्छ स्वच्छ, भाण्डे पात्राणामां पात्रमें, निधापयेत् राभी भुडवी रख देवे ॥ ६-७ ॥

6-7. During the proper season of fruition, its ripe fruits should be gathered and those that are heavy and rich in pulp should be preserved in sand. Taking them out after seven nights, the physician should dry them in the sun. Then, the pulp should be taken out and preserved in a clean pot

आरग्वधस्य द्राक्षारसेन एको योगः —

द्राक्षारसयुतं दद्याद्वाहोदावर्तपीडिते ।

चतुर्वर्षमुखे बाले यावद्द्वादशवार्षिके ॥८॥

दाह- दाह दाह, उदावर्त- अने उदावर्तशी और उदावर्तसे, पीडिते पीडिते पीडित, चतुर्वर्षमुखे चार वर्षी भांडी चार वर्षसे लेकर, यावत् द्वादशवार्षिके चार वर्ष सुधीना बारह वर्ष तकके, बाले आण्डने गरभाणां गेण बालकको अमलतासकी मज्जा, द्राक्षारसयुतम् द्राक्षाना रस साथे द्राक्षाके रसके साथ, दद्यात् आपवे देवे ॥ ८ ॥

8. In persons affected with burning and misperistalsis, in children from four years upto twelve years of age, the pulp of the purging cassia should

८. द्राक्षारसयुतं दद्यात्-द्राक्षारसयुतो देवो (ब.)

, चतुर्वर्षमुखे बाले-चतुर्वर्षे मुखं बाले (ब.)



be given mixed with grape juice.

सुरामण्डेन, सीधुना, दधिमण्डेन, आमलकरसेन, सौवीरकेण च  
एकैको योगः—

चतुरङ्गुलमज्जस्तु प्रसृतं वाऽथवाऽञ्जलिम् ।  
सुरामण्डेन संयुक्तमथवा कोलसीधुना ॥९॥  
दधिमण्डेन वा युक्तं रसेनामलकस्य वा ।  
कृत्वा शीतकषायं तं पिबेत् सौवीरकेण वा ॥१०॥

चतुरङ्गुल-मज्जाः तु गरभाणानां गेणनां अमल-  
तासकी मज्जाके, प्रसृतम् वा आठ तोला आठ तोले, अथवा  
अञ्जलिम् अथवा गेण तोलाने अथवा सोलह तोलेका,  
शीत- कषायम् शीत कषाय शीत कषाय, कृत्वा करी  
बनाकर, तम् तेने उठे, सुरामण्डेन सुरामण्डेनी सुरामण्डे,  
संयुक्तम् साथे साथ, अथवा अथवा या, कोलसीधुना  
गेरना सीधु साथे बेरकी सीधुके साथ, दधिमण्डेन वा  
अथवा दहीना भंड साथे या दधिमण्डेके साथ, आमल-  
कस्य वा अथवा आमलाना या आवलेके, रसेन रस  
साथे रमके साथ, सौवीरकेण वा अथवा सौवीरकेनी  
या सौवीरकेके, युक्तम् साथे साथ, पिबेत् पीवे  
पीवे ॥९-१०॥

9-10. Making a cold infusion of  
the purging cassia weighing 8 tolas  
or 16 tolas, it may be given mixed  
with the supernatant part of Sura  
wine, or Sidhu wine prepared from  
the jujube, with whey or with the  
juice of the emblic myrobalans, or  
it may be given mixed with Sauvee-  
raka wine.

त्रिवृत्कषायेण विल्वकषायेण च एकैको योगः—

त्रिवृतो वा कषायेण मज्जः कर्कं तथा पिबेत् ।  
तथा विल्वकषायेण लवणक्षौद्रसंयुतम् ॥११॥

१०. युक्तं-सम्यक् (क. व.)

११. तं-वा (व.)

११. त्रिवृतो वा कषायेण मज्जः कर्कं तथा पिबेत्-त्रिवृन्मज्जो-  
स्तथा कर्कं तत्कषायेण वा पिबेत् (व. क.)

११. मज्जः कर्कम्-मज्जकरकम् (क. व.)

तथा तथा तथा, मज्जः गरभाणानां गेणनां  
अमलतासकी मज्जाके, कर्कम् उच्छने कर्कको, त्रिवृतः  
त्रिवृतना त्रिवृतके, कषायेण कषाय साथे कषायके साथ,  
तथा लवण- लवण लवण अथवा नमक, क्षौद्र- अने  
मध और मधु, संयुतम् सहित मिलाकर, विल्वकषायेण  
वा वीक्षना कषाय साथे विल्वकषायके साथ, पिबेत्  
पीवे ॥ ११ ॥

11 The paste of the pulp should  
be similarly taken as potion mixed  
with the decoction of turpeth or with  
the decoction of bael, adding rock-salt  
and honey.

एको लेहयोगः—

कषायेणाथवा तस्य त्रिवृच्चूर्णं गुडान्वितम् ।  
साधयित्वा शनैर्लेहं लेहयेन्मात्रया नरम् ॥१२॥

अथवा अथवा अथवा, गुडान्वितम् गेणसहित  
गुडमिश्रित, त्रिवृच्चूर्णम् त्रिवृत चूर्णं त्रिवृतके चूर्णको,  
तस्य गरभाणानां गेणनां अमलतासकी मज्जाके, कषा-  
येण कषायमा कषायमें, साधयित्वा सिद्ध करी सिद्ध  
करके, लेहम् ते लेह वह लेह, नरम् विरेच्य भुज्यने  
विरेच्य मनुष्यको, मात्रया मात्रा अनुसार मात्रामें,  
ज्ञेनः धीरे धीरे धीरे धीरे, लेहवेत् अद्यावे  
चटावे ॥ १२ ॥

12. Preparing a linctus by cooking  
on a low fire the powder of turpeth  
and gur in the decoction of the pur-  
ging cassia till it is reduced to the  
proper consistency, that linctus should  
be administered to a person in a proper  
dose.

द्वौ घृतयोगौ—

चतुरङ्गुलसिद्धाया क्षीराद्यदुदियाद्भुतम् ।  
मज्जः कर्ककेन घात्रीणां रसे तत्साधितं पिबेत् १३

चतुरङ्गुल- अथवा गरभाणां अथवा अमलतासके,  
सिद्धाय सिद्ध करेका सिद्ध किये, क्षीरात् वा दूधमांथी



इससे, यह जो जो, घृतस्थ धी धी, उदियार नीकले निकले, तब तेने उसको, आत्रीणां आम्रानां आंव-  
लेके, रसे रसभां रसमें, छज्जः भरभाणानां जोगना  
अमलतासकी मज्जाके, कल्केन उदुधनी कल्केसे, साधितम्  
साधीने सिद्ध करके पिबेत् पीपुं पान करे ॥१३॥

13. A medicated ghee may be made by taking the ghee obtained from the milk prepared with the purging cassia and the paste of the purging cassia-pulp and the expressed juice of emblic myrobalans; it may be taken as a purgative potion.

तदेव दशमूलम् कुलत्थानां यवस्य च ।  
कषाये साधितं सर्पिः कर्कैः श्यामादिभिः पिबेत् ॥१४॥

दशमूलम् दशमूल दशमूलके, कुलत्थानाम् उदुधनी  
कुलथीके, यवस्य च अने जवना और जौके, कषाये  
अथभां कषायमें, श्यामादिभिः श्यामा जोगरेना श्यामा  
आदिके, कर्कैः उदुधनी साथे कल्केसे, साधितम् सिद्ध  
उरेख सिद्ध, तब एव ते जो उसी, सर्पिः धी घृतको,  
पिबेत् पीपुं पीवे ॥ १४ ॥

14. Medicated ghee made by taking the purging cassia ghee and preparing it with the decoction of the deca radices, horse-gram or barley and the paste of black turpeth etc., may be taken as a purgative potion.

आरग्वधस्य एकोऽरिष्टयोगः —

दन्तीकाथेऽञ्जलिं मज्जः शम्पाकस्य गुडस्य च ।  
दत्त्वा मासार्धमासस्यमरिष्टं पाययेत् च ॥१५॥

दन्तीकाथे दन्तीनां अथभां दन्तीके काथमें, शम्पा-  
कस्य भरभाणानां अमलतासकी, मज्जः जोगना मज्जाके,  
गुडस्य च अने जोगना और गुडके, अञ्जलिम् १६-१६

१५. दत्त्वा-दत्ता त.)

„ मरिष्टं पाययेत् च-आद्युतं तब प्रयोजयेत् (द.)

„ पाययेत् च-पाययेद्विषम् (ब. ब.)

तेत्या १६-१६ तोले, कल्केन नीकले निकले, अमलतासस्य गुड आस्य गुड तेने रहेवा देवे। केह  
मात्र तक रख देवे, अरिष्टम् अरिष्ट साथ तबारे ते  
अरिष्ट बनने पर इष्टे, पाययेत् च पाये। पिलावे ॥ १५ ॥

15. Adding 16 tolas of the pulp of the purging cassia and of gur into the decoction of the red physic nut, it should be allowed to ferment for a month and a half. The medicated wine thus prepared, may be used as potion.

आरग्वधस्य अनुकविरेचनकोपदेशः —

यस्य यत् पानमन्नं च हृद्यं स्वाद्वथ वा कटु ।  
लवणं वा भवेत्तेन युक्तं दद्याद्विरेचनम् ॥१६॥

यस्य जेने जिसको, यह जो जो, पावस्य पान  
पान, अन्नम् च अने अन्न और अन्न, हृद्यम् हृद्य  
होय पत्तं हो, स्वादु पछी ते भक्षुर् चाहे वह मधुर,  
अथवा अथवा अथवा, कटु वा उदु कु, लवणम्  
वा उ उदुधनी या नमकीन, भवेत् होय हो, तेन तेनी  
उसके, युक्तम् साथे साथ मिलाकर, विरेचनम् विरेचन  
विरेचन, दद्यात् देवुं देवे ॥ १६ ॥

16. The purgative dose should be given to a man mixed with whatever food and drink is agreeable in taste to him, i. e. either sweet, pungent or salt.

अध्यक्षोक्तविषयाः —

तत्र श्लोको—

द्राक्षारसे सुरासीध्वोर्दधि चामलकीरसे ।

सौवीरके कषाये च त्रिवृतो विश्वकस्य च ॥१७॥

१७. पानमन्नं-पानमन्नं (ब.)

१७. दधि-दधि (ड.)

„ सौवीरके कषाये च त्रिवृतो विश्वकस्य च-सौवीरके कषा-

याभ्यां विश्वकस्योत्तमा (ड. ब. फ.)

„ „ „ -सौवीरकेऽथ त्रिवृतः कषाये विश्वकस्य च

(ब. फ.)

लेहेऽरिष्टे घृते द्वे च योगा द्वादश कीर्तिताः ।  
चतुरङ्गुलकल्पेऽस्मिन् सुकुमाराः सुखोदयाः ॥२८॥

तत्र ते विषयान् उस विषयमें, श्लोकौ उपसंहारना  
ये श्लोक छे के उपसंहारके दो श्लोक हैं कि, अस्मिन् आ  
इस, चतुरङ्गुलकल्पे चतुरङ्गुलकल्पम् इस चतुरङ्गुल-  
कल्पमें, द्वाक्षारके द्वाक्षारम् द्वाक्षारमें सुरासीध्वोः  
सुराभा, सीधुभा सुरामें, सीधुमें दक्षिणीभा दक्षिमें,  
आमलकीरसे च आमलाना रसभा आवलेके रसमें  
सौवीरके सौवीरभा सौवीरमें, त्रिवृतः त्रिवृतना  
अथाथभा त्रिवृतके कषभमें तिल्वकल्प च तेभ्यः तिल्वना  
एवं तिल्वके, कषाये कषाथभा कषायमें लेहे वेदभा  
लेहमें, अरिष्टे अने अरिष्टभा लोके अने और अरिष्टमें  
एक एक, घृते तथा घीभा और घीमें, द्वे च ये दो  
द्वादश अभ्युक्त इत नरह बाह्य, सुकुमाराः भद्र कोमल,  
सुखोदयाः अने आरोग्यदायक और आरोग्यदायक, योगाः  
योगा योग, कीर्तिताः उद्धेयभा आभ्या छे कहे हैं  
॥ १७-१८ ॥

Here are the recapitulatory verses —

17-18. One preparation each in  
grape juice, Sura wine, Sidhu wine,  
in curds, the juice of emblic myroba-  
lans, Sauveeraka wine, the decoction  
of turpeth or that of bael; one in  
the form of linctus, one in that of  
medicated wine and two in the form  
of ghee—thus, in all, twelve prepara-  
tions suitable for delicate persons and  
attended with happy results are des-  
cribed in this chapter on the Pharma-  
ceutics of the Purging Cassia.

इत्यग्निवेशकृते तन्त्रे चरकप्रतिसंस्कृतेऽप्राप्ते  
दृढबलसंपूरिते कल्पस्थाने चतुरङ्गुलकल्पो  
नामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

इति आ प्रभाषे इस प्रकार, अग्निवेशकृते अग्निवेशे  
रथैव अग्निवेशसे बनाये, चरकप्रतिसंस्कृते तन्त्रे अने  
१८. सुखोदयाः प्रकीर्तिताः (४)

चरककी प्रतिसंस्कार पायेवा आ शास्त्रभा और  
चरकके द्वारा संस्कृत इस शास्त्रके, अप्राप्ते अप्राप्त अप्राप्त,  
दृढबलसंपूरिते अने दृढबले पूरा करेवा और दृढबलसे  
पूरित किये गये, कल्पस्थाने उद्धेयस्थानभा कल्पस्थानमें,  
चतुरङ्गुलकल्प 'चतुरङ्गुलकल्प' 'चतुरङ्गुलकल्प' नाम  
नामना नामका, अष्टमः आठमो आठवाँ, अध्यायः  
अध्याय संपूर्ण भयो अध्याय समाप्त हुआ ॥ ८ ॥

8 Thus in the Section on Pharma-  
ceutics, in the treatise compiled by Agni-  
veśa and revised by Caraka, the eighth  
chapter entitled 'The Pharmaceutics  
of the Purging Cassia' not being  
available, the same as restored by  
Dridhabala is completed.

## नवमोऽध्यायः ।

नवमो अध्यय अध्याय नौवाँ

## Chapter IX

तिल्वकल्पापक्रमः —

अथातस्तिल्वकल्पं व्याख्यास्यामः ॥ १ ॥  
इति ह स्माह भगवानात्रेयः ॥ २ ॥

अथ अतः हवे अहोथी अब आगे, तिल्वकल्पम्  
'तिल्वकल्प' नामना अध्यायानु 'तिल्वकल्प' नामके  
अध्यायका, व्याख्यास्यामः व्याख्यान करेयुं व्याख्यान  
करेंगे ॥ १ ॥

भगवान् भगवान् भगवान्, आत्रेयः आत्रेये आत्रेयेने,  
इति ह आ विषयभा नीचे प्रभाषे अ इस विषयमें  
निम्न प्रकारसे ही, आह अ उद्धेय छे कहा है ॥ २ ॥

1. We shall now expound the  
chapter entitled 'The Pharmaceutics of  
Tilwaka'.

2. Thus declared the Worshipful  
Atreya.

तिल्वकस्य पर्यायाः —

तिल्वकस्तु मतो लोधो बृहत्पत्रस्तिरीटकः ।

तिल्वकं तु तिल्वकना तिल्वकके, लोधः लोधः लोधः, बृहत्पत्रः बृहत्पत्र, तिल्वकः अने तिल्वक और तिल्वक, मतः ये पर्याय। उद्देशार्थं आख्या छे ये पर्याय कहे गये हैं ॥ २३ ॥

23. Tilwaka is known by its synonyms such as Lodh, Brihatpatra and Tiritaka.

तिल्वकस्य उपयोगविधिः —

तस्य मूलत्वचं शुष्कामन्तर्वल्कलवर्जिताम् ॥ ३ ॥

चूर्णयेत्तु त्रिधा कृत्वा द्वौ भागौ श्रोतयेत्ततः ।

लोधस्यैव कषायेण तृतीयं तेन भवयेत् ॥ ४ ॥

अन्तर्वल्कल- अन्तर्गुं १६३६ अन्दरकी छालको, वर्जिताम् डाढी नाभी छोड़कर, शुष्काम् सूखावेदी सूखी हुई, तस्य तेना इसके, मूलत्वचम् तु मूलकी छालको, चूर्णयेत् चूर्ण करे, ततः पछी पीछे, त्रिधा त्रिधा भाग तीन भाग, कृत्वा करीने बनाकर, द्वौ ये दो, भागौ भागने भागको, लोधस्य एव लोधरना लोधके, कषायेण कषायसे, श्रोतयेत् गाभी देवा छान लेवे, तेन ते आगेवा कषायसे उस छाने हुए कायसे, तृतीयम् तृतीया भागने तीसरे भागको, भावयेत् भावना देवी भावना देवे ॥ ३-४ ॥

3-4. Its dried root-bark with its inner layer removed should be triturated. Dividing that into three parts, two parts should be washed and strained twenty-one times. Then the third part should be taken and impregnated with the strained solution.

४. श्रोतयेत्ततः—कायसेततः (६.)

भागं तं दशमूलस्य पुनः काथेन भावयेत् ।

शुष्कं चूर्णं पुनः कृत्वा तत ऊर्ध्वं प्रयोजयेत् ॥ ५ ॥

तम् ते इस, भागम् भागने भागको, पुनः करीने फिर, दशमूलस्य दशमूलना दशमूलके, काथेन कषायसे, भावयेत् भावना देवी भावना देवे, पुनः करीने फिरसे, शुष्कम् सूखावेदी सूखाकर चूर्णम् चूर्ण चूर्ण, कृत्वा करी करके, ततः ऊर्ध्वम् ते पछी तदनन्तर, प्रयोजयेत् प्रयोग करवे प्रयोग करना चाहिए ॥ ५ ॥

5 That should again be impregnated with the decoction of decaradices. It should then be dried and powdered and made use of.

तिल्वकस्य दध्यादिभिः पञ्च योगाः —

दधितक्रसुरामण्डमूत्रैर्बदरसीधुना ।

रसेनामलकानां वा ततः पाणितलं पिबेत् ॥ ६ ॥

ततः ते पछी पीछे, पाणितलम् ते चूर्णकी एक तोला मात्राको, दधि-दही, दधि, तक्र-तक तक्र, सुरामण्ड-सुराम'ड सुरामण्ड, मूत्रैः गोमूत्र गोमूत्र, बदरसीधुना बदरसीधुना या बरकी सीधु, आमलकानाम् के आमलकाना या आवलेके, रसेन वा रस साथे रससे, पिबेत् पीवी पीवे ॥ ६ ॥

6. It should be taken as potion in the dose of one tola mixed with curds, butter milk, supernatant part of sura wine, cow's urine, Sidhu wine prepared from jujube or with the expressed juice of the emblic myrobalans.

५ पुनः काथेन भावयेत्—कषायेण अभवितं पुनः (६. क)

६ तत ऊर्ध्वं प्रयोजयेत्—स्निग्धस्त्विके द्रव्याप्ये (६. क)

६. दधितक्रसुरामण्ड—दधिमण्डसुरामण्ड (६. क.)

एकः सौवीरकयोगः—

मेषशृङ्गभयाकृष्णाचित्रकैः सलिले शृते ।  
मरुजान् सुनुयात्तच्च जातं सौवीरकं यदा ॥७॥  
भवेदञ्जलिना तस्य लोधकल्कं पिबेत् सदा ।

मेषशृङ्गी- मरुशृङ्गी मेदासिगी, अमबा- ६२३  
हरक, कृष्णा- पीपरी पिप्पली, चित्रकैः अने चित्रकना और  
चित्रकके, शृते सलिले कृष्णा पाणीमां कायके पानीमें,  
मरुजान् शेकेला नवने। भूने हुए जोको, सुनुयात्  
आसुन करे। आसुत करे, तब च ते वह, यदा  
न्यारे जब, सौवीरकम् सौवीरक सौवीरक, जातम्  
भवेत् भर्ष अथ तयारे हो जाय तब, तस्य तेना  
उसके, अञ्जलिना १६ तोलांनी साथे १६ तोलेके साथ,  
लोधकल्कम् दोधरने। ६६६ लोधकल्कको, सदा ६६६  
सदा, पिबेत् पीने। पीवे ॥ ७३ ॥

7-7½. The paste of lodh should be taken as potion in a dose of 16 tolas of the Sauveeraka wine prepared by fermenting fried barley in the decoction of the tree of the woods chebulic myrobalans, long pepper and blue-flowered leadwort.

तिलकस्य सुरायोगः—

सुरां लोधकषायेण जातां पक्षस्थितां पिबेत् ॥८॥

लोधकषायेण दोधरना कृष्णापी लोधके कषाये,  
जाताम् अथेल बनी, पक्षस्थिताम् अने अने पञ्चमाडीके  
राणी भूकेली और एक पक्ष रखी हुई, सुराम् सुरा सुरा,  
पिबेत् पीने। पीवे ॥ ८ ॥

8. The Sura wine, prepared from the decoction of lodh by keeping it for a fortnight, should be taken as potion.

७. मरुजान्-मरुजान् (स.)

११. -तपुषां (ब. द.)

७३. सदा-तदा (क. घ. ङ. ड.)

तिलकस्य अरिष्टयोगः—

दन्तीचित्रकयोर्दोषे सलिलस्याढकं पृथक् ।  
समुत्काश्य गुडस्यैकां तुलां लोधस्य चाञ्जलिम् ॥९॥  
आवपेत् परं पञ्चान्मद्यपानां विरेचनम् ।

दन्ती- दन्ती दन्ती, चित्रकयोः अने चित्रक और  
चित्रकके, पृथक् लुध लुध पृथक् पृथक्, आवपेत् २५६  
तोला २५६ तोले लेकर, सलिलस्य पाणी जलके, दोषे  
१०२४ तोलाभा १०२४ तोलेमें, समुत्काश्य उकाणीने  
पकाकर, गुडस्य जेण गुड, एकाम् तुलाम् ४०० तोला  
४०० तोला, लोधस्य अने दोधर और लोध, अञ्जलिम्  
च १६ तोला १६ तोले, आवपेत् नाणी राणी भूकेली  
मिलाकर रख देवे, पञ्चात् अने पञ्चमाडीया पन्द्रह दिनोंके,  
परम् पछी पीछे, तब ते वह, मद्यपानाम् मद्य पीनाइत  
मद्य पीनेवालेके लिए, विरेचनम् विरेचन अने छे विरेचन  
वन जाता है ॥ ९३ ॥

9-9½. 256 tolas of each of red physic nut and white-flowered leadwort should be decocted separately in 1024 tolas of water, and 400 tolas of gur and 16 tolas of lodh should be added to it. That wine, prepared by keeping for a fortnight is an excellent purgative potion for persons addicted to wine.

कम्पिलकेन एको योगः—

कम्पिलकषायेण दशकृत्वः सुभाविताम् ॥१०॥  
मात्रां कम्पिलकस्यैव कषायेण पुनः पिबेत् ।

कम्पिलक- कम्पिलाना रोरीके, कषायेण कृष्णापी  
कषाये, दशकृत्वः दशवार दसवार, सुभाविताम् अथेल  
दीधेल भावना देकर, मात्राम् मात्रा मात्राको, कम्पिल-  
कस्य कम्पिलाना रोरीके ही, कषायेण कृष्णापी साथे  
कषाये, पुनः इरीने फिर, पिबेत् पीने। पीवे ॥ १० ॥

10-10½. A dose of powdered Tilwaka after being impregnated ten times is

१३. मद्यपानां-मद्यपानात् (घ. ङ.)

१०३. कम्पिलकषायेण-तिलकस्य कषायेण (ब. त. द. ङ. ड.)

the decoction of Kamala, should be taken mixed again with the decoction of Kamala.

त्रयो लेहयोगः —

चतुरङ्गलकल्पेन लेहोऽन्धः कार्य एव च ॥११॥

चतुरङ्गल. गोभाणानां अमलतप्तके, कल्पेन ३६५भां  
३६६वीं विवि अमले, कल्पमें कही दुरे विधिके अनुसार,  
अन्यः पीले दूध, लेहः लेह, लेह, कार्यः च ३६  
३२५। लेह के बनावा चाहिए ॥ ११ ॥

11. A linctus should be made of it in the same pharmaceutical method as in the case of the purging cassia.

त्रिफलायाः कषायेण ससर्पिर्मधुकाणेतः ।

लोधचूर्णयुतः सिद्धो लेहः श्रेष्ठो विरेचने ॥१२॥

त्रिफलायाः त्रिफला. त्रिफलाके, कषायेण कषायी  
कषायमें, ससर्पिर्मधु- धी, मधु घृत, मधु. काणेतः क्षुत्  
राव, लोधचूर्णयुतः अने लोधचूर्ण युक्त मेथवी और  
लोधका चूर्ण मिलाकर, सिद्धः सिद्ध करेया सिद्ध किया,  
लेहः लेह लेह, विरेचने विरेचनभा विरेचनमें, श्रेष्ठः  
श्रेष्ठ छे श्रेष्ठ है ॥ १२ ॥

12. The linctus prepared by mixing powdered Tilwaka with the decoction of the three myrobalans, ghee, honey and treacle, is regarded the best for purgation.

तिल्वकस्य कषायेण कल्केन च सशर्करः ।

सघृतः साधितो लेहः स च श्रेष्ठो विरेचने ॥१३॥

तिल्वकस्य तिल्वकना तिल्वकके, कषायेण कषाय  
कषायसे, कल्केन च अने ३६६ साथे और कल्कके,  
सशर्करः सांकर शर्करा, सघृतः अने धी नाभी और  
वीके साथ, साधितः तैयार करेया सिद्ध किया, सः च  
ते वह, लेहः लेह लेह, विरेचने विरेचनभा विरेचनमें,  
श्रेष्ठः श्रेष्ठ छे श्रेष्ठ है ॥ १३ ॥

१२. लेहो विरेचने-लेहो विरेचनम् (च. क.)

13. The linctus prepared by mixing the paste of Tilwaka with its own decoction and adding sugar and ghee, is the foremost medicine for purgation.

तिल्वकस्य चत्वारो घृतयोगाः —

अष्टाष्टौ त्रिवृतादीनां मुष्टीस्तु सनखान् पृथक् :  
द्रोणेऽर्थां साधयेत् पादशेषे अस्थं घृतात् पचेत् १४  
पैष्टैस्तैरेव विस्वांशैः समूषलवणैरथ ।  
ततो यात्रां पिबेत् काले श्रेष्ठमेतद्विरेचनम् ॥१५॥

त्रिवृतादीनां त्रिवृत चोरे नव विरेचन-द्रव्योनी  
त्रिवृतादीनां विरेचन-द्रव्योंसे, अष्ट अष्टौ आठ आठ आठ  
आठ, पृथक् छुटी छुटी पृथक् पृथक्, सनखान् मुष्टी  
तु अतन अमुष्टि अष्ट अन्तर्नलमुष्टि केकर अषा  
पाशुना जलके, द्रोणे अष्ट द्रोणभा एक द्रोणमें, साधयेत्  
पके नवी पकाये, पादशेषे यत्पूर्वसे आधी रहे तयारे  
चतुर्थां रह तयारे तय, समूषलवणैः गोमूत्र अने धनसु-  
सहित गोमूत्र और लवणके साथ, विस्वांशैः ४ तोला  
४ तोले, पिष्टैः तैः एव ते विरेचन-द्रव्योनाम् ३६६वीं  
उन विरेचन-द्रव्योंके ही कल्के, घृतात् धी घृत, प्रस्थम्  
१४ तोला १४ तोले, पचेत् पकानुं पकाये, अथ ततः  
पछी पीछे, काले योग्य समये उचित समय पर, यात्रा  
तैनी यात्रा इससे यात्राको, पिबेत् पीवी पीवे, एतत्  
आ यह, श्रेष्ठम् श्रेष्ठ श्रेष्ठ, विरेचनम् विरेचन छे  
विरेचन है ॥ १४-१५ ॥

14-15. Sixteen fistfuls of Tilwaka should be cooked along with eight fistfuls of each of turpeth etc., separately in 1024 tolas of water, till reduced to one fourth of the quantity. That should be cooked in 64 tolas of ghee with the paste of 4 tolas of each of those very drugs; it should be taken

१४. अष्टाष्टौ त्रिवृतादीनां मुष्टीस्तु सनखान् पृथक्-अष्टौ तु त्रिवृ-  
तादीनां मुष्टीरन्तर्नलः पृथक् (च.)

१५. समूषलवणैरथ-गोमूत्रलवणैरथ (च. क.)

at the right time and in due dose  
mixed with cow's urine and rock salt.

लोभः शोकः क्रोधः मूढः कलङ्कः पापः पञ्चद्वन्द्वम् ।  
चतुर्द्वन्द्वमप्यनेन लक्ष्मिणी हे च सार्धमेव ॥१६॥

लोध्र ज्वरन विषयः इहोपि लोध्रैः कल्के, मृद-  
भूत मूत्र, कम्प- इहोपि मूल, कवयैः च मूत्रे वायुमी  
ओर लवणोद्धारः घृतं धी घृतं मध्वैः पदार्थुं पदार्थै  
चतुर्भुज- गन्धमाधनः अमलकपत्रैः कल्केन इहोपि वायु  
कल्के लवणोद्धारः द्वे सर्पिणी च धीमां ओ धी अन्यो  
घृत. साधयेव विदुः कन्वा सिद्ध करे ॥ १६ ॥

16. This is an excellent purgative preparation. Prepare a medicated ghee of cow's ghee in cow's urine, sour conji and rock salt, adding the paste of Tilwaka. Two other preparations of ghee may be made in the same method as described in the pharmaceuticals of the purging cassia.

अथ्यशेक्तः संप्रदः

तत्र श्लोके—

पञ्च दद्यादिभिल्लयेन सुरा सौवीरजेण च ।  
एकोऽरिष्टस्तथा योऽप्येकः कमिषल्लकेन च ॥२७॥

तत्र ते त्रयवली उक्त विषये, श्लोकै उपसंहारनः  
 वे श्लोक के द्वे उपसंहारे द्वे श्लोके द्वे द्वे नि दध्यादिभिः  
 हर्षी वजरेयी द्वि अदिसे, एक पांच पांच, सुरा  
 सुराथी सुरासे, एका इ ओक एक, सौवीरकेण च  
 सौवीरकेणी सौवीरके, एकः ओक एक, तथा तथा तथा,  
 मरिष्टः अरिष्टयी ओक अरिष्टये एक कविप्रह्वेन च यने  
 कपीवादी नौर रोहिमे, एकः ओक एक योगः योग  
 थाय छे योग होता है ॥ १७ ॥

Here are the two recapitulatory  
verses—

17. Five preparations with curds etc., one of Sura wine one of Sauveeraka wine one of medicated wine and similarly one preparation with Kamala.

लेहास्त्रयो वृत्तेनापि चत्वारः संपकीर्तिताः ।  
योगास्ते लोघ्नमूलकां कल्पे षोडश दर्शिताः ॥१८॥

लेहाः श्रेष्ठा येदमे, त्रयः प्रभुः प्रीत, वृत्तेन अपि अने  
 गीर्षि मंत्र वृत्तेन चरवारः श्याम येन चाम योग्यं संगी-  
 तिता. उक्तं ये ये हे हे, लोभप्रवृत्तयः यः यो धन्या-  
 मृगिना एव विवक्तुः कल्पे एवम्. कल्पे, ते-  
 नोदय ते श्रेष्ठा वे भोक्तुः योता. श्रेष्ठा संग, दक्षिताः  
 अन्तर्गता ये विवक्तुः हे ११०॥

13. Three preparations ofunctuoses and four of gleez have been described. Thus, in all, sixteen preparations have been expounded in this chapter on the pharmaceutics of Tilwaka.

न्यग्निवैराकुले नन्वे चरकप्रतिपादकृतोऽप्राप्ते  
दृढबल-पूरिते कलास्थाने तिलचक्रवयो नाम  
नवमोऽध्यायः ॥१॥

[illegible]

9. Thus. in the Section on Pharmaceutics in the treatise compiled by Agnivesa and revised by Caraka, the ninth chapter entitled 'The Pharmaceutics of the Tilwaka' not being available, the same as restored by Dridhabala is completed.

## દશમોઽધ્યાયઃ ।

દશમો અધ્યાય અધ્યાય દસવો

## Chapter X

સુષાકલ્પોપક્રમઃ —

અયાતઃ સુષાકલ્પં વ્યાખ્યાસ્યામઃ ॥ ૧ ॥

इति ह स्माह भगवानात्रेयः ॥ २ ॥

અવ અતઃ હવે અહીંથી અવ આગે, સુષાકલ્પમ્  
'સુષાકલ્પ' નામના અધ્યાયનું 'સુષાકલ્પ' નામકે  
અધ્યાયકા, વ્યાખ્યાસ્યામઃ વ્યાખ્યાન કરું વ્યાખ્યાન  
કરું ॥ ૧ ॥

भगवान् भगवान् भगवान्, आत्रेयः आत्रेये आत्रे-  
यवे, इति ह आ विषयम्। नीये प्रभाषे न इस  
विषयमे निम्न प्रकारसे ही, आह स्म उद्धेतुं उ कहा है ॥ २ ॥

1. We shall now expound the  
chapter entitled "The Pharmaceutics  
of the Thorny Milk-hedge plant."

2. Thus declared the worshipful  
Atreya.

સુષાગુણઃ, સુષાપ્રયોગાનર્હા નરાશ્ચ —

विरचनानां सर्वेषां सुषा तीक्ष्णतमा मता ।  
सङ्गतं हि भिनत्त्याशु दोषाणां कष्टविभ्रमा ॥ ३ ॥  
तस्माच्चैवा मृदौ कोष्ठे प्रयोक्तव्या कदाचन ।  
न दोषनिचये चाल्पे सति मार्गपरिक्रमे ॥ ४ ॥

સર્વેષામ્ સર્વે સર્વ, વિરેચનાનામ્ વિરેચનોર્મા  
વિરેચનોર્મે, સુષા ચૈરને સુષા, તીક્ષ્ણતમા અત્યંત તીક્ષ્ણ  
અત્યંત તીક્ષ્ણ, મતા માનેલ છે માની છે, હિ કારણ કે  
કર્મોક્તિ, દોષાનામ્ તે દોષોના વદ દોષોને, સંઘાતમ્  
સંઘાતને સંઘાતને, જાત્રુ બલદી શીત્ર, બિનત્તિ તેડી  
નાચે છે તેવતી છે, કષ્ટવિભ્રમા ન અને સમ્યક્ પ્રયોગ  
ન થાય તેા અત્યંત કષ્ટ ઉત્પન્ન કરે છે ઓર સમ્યક્  
પ્રયોગ ન હોનેપર અત્યંત કષ્ટ ઉત્પન્ન કરતી છે, તસ્માત્

૧. સુષાકલ્પ-વ્યાખ્યાસ્યામઃ (ત.)

૪. માર્ગપરિક્રમે-વાચ્યપરિક્રમે (ક. જ. ક.)

તેથી ફસલિય, ઘણા એને। ફસલા, મૃદો કોષ્ટે મૃદુ કોષ્ટામાં  
મૃદુ કોષ્ટમાં, કદાચન કદી પણ કમી સી, ન પ્રયોક્તવ્યા  
પ્રયોગ કરવો નહિ પ્રયોગ નહીં કરના ચાહિય, દોષનિચયે  
દોષને। સંઘાત દોષકા સંઘાત, અલ્પે એ અલ્પ હોય તે।  
યદિ અલ્પ હો તે, માર્ગપરિક્રમે સતિ ન અને એ ખીણ  
કેઈ ચિકિત્સાથી કામ ચાલતું હોય તે। પણ પ્રયોગ  
કરવો નહિ ઓર યદિ અન્ય કિસી ચિકિત્સાસે કાર્ય  
ચલતા હો તે સી પ્રયોગ નહીં કરના ચાહિય ॥ ૩-૪ ॥

3-4. The thorny milk-hedge plant is regarded the most acute of all the purgative drugs. It quickly breaks up the accumulation of impurities and if wrongly used might lead to conditions difficult to cure. Therefore this should in no case be administered to a soft bowelled person nor in a condition of scanty accumulation of impurities nor in a condition where other measure can as well serve the purpose.

સુષાપ્રયોગાર્હા નરાઃ —

पाण्डुरोगोदरे गुल्मे कुष्ठे दूषीविषादिते ।  
श्वयथौ मधुमेहे च दोषविभ्रान्तचेतसि ॥ ५ ॥  
रोगैरेवंविधैर्ग्रस्तं ज्ञात्वा सप्राणमातुरम् ।  
प्रयोजयेन्महावृक्षं सम्यक् स ह्यवचारितः ॥ ६ ॥  
सद्यो हरति दोषाणां महान्तमपि संचयम् ।

પાણ્ડુરોગ- પાંડુરોગ પાણ્ડુરોગ, ઝડરે ઉદરોગ  
ઉદરોગ, ગુલ્મે ગુલ્મ ગુલ્મ, કુષ્ટે કુષ્ટ કુષ્ટ, દૂષીવિષા-  
દિતે દૂષીવિષયી થયેલી પીડા દૂષીવિષયે ઉત્પન્ન પીડા,  
શ્વયથો સોએ શોષ, મધુમેહે મધુમેહ મધુમેહ, દોષ અને  
દોષોને કારણે ઓર દોષોને કારણ, વિભ્રાન્તચેતસિ ન  
થયેલા ચિત્તવિભ્રમ ઉત્પન્ન ચિત્તવિભ્રમ, ઇવંવિધૈઃ આવી  
બલના ફસ પ્રકારકે, રોગેઃ રોગોથી રોગોસે, પ્રજ્ઞા  
થેરાયેલા પીડિત, જાતુરમ્ રોગીને રોગીકો, સપ્રાણમ્  
સમ્યક્ બલવાન, જ્ઞાત્વા અધી જાનકર, મહાવૃક્ષમ્

૭. હરતિ-નુદતિ (જ.)



शे।रने। सुधावृक्षका, प्रयोजयेत् प्रथे। उरवे। प्रयोग करे,  
हि उरवे। के क्योकि, सम्यक् सारी रीते भली प्रकार,  
जवचारितः प्रथे। उरवाभां आवेदे। प्रयोग किया  
इहा, सः ते वह, दोषाणाम् दोषे।ना दोषोंके, महान्तम्  
भटान बड़े भारी, संचयम् संचयने संचयका, सद्यः  
नक्ष्मी तुरन्त, हरति हरी छे छे नाश कर देता  
है ॥ ५-६३ ॥

5-63. In patients affected with  
anemia, abdominal diseases, gulma,  
dermatosis, chronic poisoning, edema,  
diabetes, morbid psychic conditions  
and such other diseases, the thorny  
milk hedge plant should be adminis-  
tered if the patient is strong enough to  
withstand the drug. When properly  
administered, it quickly eliminates  
the impurities even if excessively  
accumulated.

सुधामेदो—

द्विविधः स मतोऽल्पैश्च बहुभिश्चैव कण्टकैः ॥ ७ ॥  
सुतीक्ष्णैः कण्टकैरल्पैः प्रवरो बहुकण्टकः ।

सः शे।रनुं वृक्ष सुधावृक्ष, द्विविधः छे प्रकाशनुं दो,  
प्रकारका, मतः भा-युं छे माना गया है, अल्पैः च अल्प  
नाना एक छोटे, बहुभिः च एव तथा थुल्य तथा  
बहुत, कण्टकैः कंटोवाणुं कंटोवाला, सुतीक्ष्णैः अने  
थीलुं अत्यंत तीक्ष्ण और दूसरा अत्यंत तीक्ष्ण, अल्पैः  
तथा शे।उ। कंटोवाणुं तथा थोड़े कंटोवाला, बहुकण्टकः  
अथे।भां थुल्य कंटोवाणुं इनमें बहुत कंटोवाला,  
प्रवरः श्रेष्ठ छे श्रेष्ठ है ॥ ७३ ॥

7. It is known to be of two kinds.  
One with small and numerous thorns,  
the other with very sharp and a small  
number of thorns. The one with  
numerous thorns is the superior  
variety.

७. अल्पैश्च-वेद्य (ब. ड.)

सुधायाः पर्यायाः—

स नास्मां जुगुप्सा नन्दा सुधा निस्त्रिंशपत्रकः ॥ ८ ॥

सुधा सः सुधा नामनुं ते वृक्ष सुधा नामका वह  
वृक्ष, स्नुक् स्नुक् स्नुक्, गुप्सा गुप्सा, नन्दा नंदा  
नन्दा, निस्त्रिंशपत्रकः अने निस्त्रिंशपत्रक और निस्त्रिंश-  
पत्रक, नास्मां छे पर्यायोथी छेहेनाथ छे इन पर्यायोंसे  
कहा जाता है ॥ ८ ॥

8. It is known by the synonyms  
of Snuk, Guda, Nanda, Sudha, Nistri-  
msapatraka.

सुधायाः उपयोगविधिः—

तौ विपाट्याहरेत् क्षीरं शस्त्रेण मतिमान् मिषक् ।  
द्विवर्षं वा त्रिवर्षं वा क्षिशिरान्ते विदोषतः ॥ ९ ॥

मतिमान् बुद्धिमान् बुद्धिमान्, मिषक् वेदे वैद्य,  
विदोषतः भास करीने चासकर, क्षिशिरान्ते क्षिशिर-  
शस्त्रेण अते क्षिशिर शस्त्रके अन्तमें, द्विवर्षम् वा छे  
वर्षना दो बरसके, त्रिवर्षम् वा छे त्रय वर्षना या  
तीन बरसके, तौ शस्त्रेण ते वृक्षे।ने शस्त्रे।नी उन वृक्षोंके  
शस्त्रसे, विपाट्य श्रीरीने चीरकर, क्षीरम् दध् दध्,  
आहरेत् धेवुं लेवे ॥ ९ ॥

9. The intelligent physician should  
incise the plants of two or three  
years of age with a sharp instrument  
and obtain the milk, specially at the  
end of winter.

सौवीरकादिभिः सप्त योगाः—

चिन्तादीनां बृहत्या वा कण्टकार्यास्तथैकराः ।  
कषायेण समांशं तं कृत्वाऽङ्गारेषु शोषयेत् ॥ १० ॥

चिन्तादीनाम् भीष्मी पत्रे वृक्षपत्रभूष चिन्ता  
आदि बृहत्पत्रमूल, बृहत्याः भीष्मी पत्रे।भीष्मी बड़ी कटेरी,

८. स्नुगुप्सा नन्दा—सु गदा नन्दी (ड.)

९. तौ-मं (क. ब. ड.)

तौ विपाट्याहरेत् क्षीरं शस्त्रेण मतिमान् मिषक्—तं पादवित्वा  
शस्त्रेण क्षीरमुदाहरेत्क्षिपक् (ब.)

१०. कषायेण समांशं तं—कषायेण तं समांशेन (ब. ड.)

तथा कण्टकारीः वा तथा भेडी भेडीगुल्ली तथा कटेरी,  
एककः ऐऐभाथी डाई ऐडना इनमेंसे किसी एकके,  
कपायेण डरायनी साथे कपायके साथ, तम् थेरना  
दूधने स्नुहीके दूधजे, समानां समान भाजे समान  
भागमें, कृत्वा भेगवी मिलाकर जहारेतु अंगारा पर  
अंगारोपर, बोधयेत् सुकवी नालुपुं सुखा देवे ॥ १० ॥

10. The milk of the thorny-hedge  
plant mixed with equal quantity of any  
of the decoctions of the bael group of  
drugs or of indian nightshade or yellow-  
berried nightshade should be reduced  
to a thick consistency on coal fire

ततः कोलसमां मात्रां पिबेत् सौवीरकेण वा ।  
तुषोदकेन कोलानां रसेनापलक्य वा ॥ ११ ॥  
सुरया दधिपण्डेन मतलुङ्गरसेन वा ।

ततः तेभाथी इनमेंसे कोलसमाम् और समान  
वेरके समान, मात्राश्च मात्रा मात्रा, सौवीरकेण वा  
सौवीरके सौवीरक, तुषोदकेन तुषोदके तुषोदके, कोलानाम्  
औरना रस वेरके रस, आमलक्य आमलकी आवलेके,  
रसेन वा रस रसके साथ, सुरया सुरा सुरा, दधिपण्डेन  
दधिपण्डे दधिपण्डे, मतलुङ्गरसेन वा डे भीजेराना रस  
साथे या बिजौरके रसके साथ, पिबेत् पीनी पीवे ॥ ११ ॥

11-11½. Then it should be made into  
pills of the size of a jujube; it should  
be taken as potion mixed with Sauvee-  
raka wine, Tushodaka wine, the juice  
of the emblic myrobalans, Sura wine,  
whey, or the juice of the pomello.

सुधायाः सर्पिषा मांसरसेन चैकैको योगः ---

सातलां काञ्चनक्षीरीं श्यामादीनि कटुत्रिकम् ॥ १२ ॥

११. ततः कोलसमां मात्रां-कोलप्रमाणं गुटिकां (ग)

११. ततः कोलसमां मात्रां पिबेत् सौवीरकेण वा-कोलसमामां  
गुटिकां पिबेत् सौवीरकेण ताम् (घ.)

१२. कटुत्रिकम्-फलत्रिकम् (घ ब, फ.)

यथोपपत्तिं सप्ताहं सुधाक्षीरेण भावयेत् ।

कोलमात्रां वृतेनातः पिबेन्मांसरसेन वा ॥ १३ ॥

मानलाम् सातलां सातला, काञ्चनक्षीरीम् २५-  
क्षीरी स्वर्णक्षीनी, श्यामादीन् डाण् नसोतर वजेरे  
श्यामा आदि, कटुत्रिकम् अने त्रिकटु ऐऐभाथी और  
त्रिकटु इनमेंसे, यथोपपत्तिं जे डाई भजे तेने जो प्राप्त  
हो उसे. सप्ताहम् सात दिवस सुधी सात दिन तक,  
सुधाक्षीरेण थेरना दूधनी सुधाक्षीरे, भावयेत् भावना  
देवी भावना देवे, अतः ऐऐभाथी इसमेंसे. कोलमात्राम्  
और जेथी मात्रा वेरके समान मात्रा, वृतेन थी साथे  
वीरके साथ, मांसरसेन वा अथवा मांसरस साथे या  
मांसरसके साथ, पिबेत् पीनी पीवे ॥ १२-१३ ॥

12-13. As many as are available of  
these, viz., soap-pod, yellow milk plant,  
black turpeth and the other drugs of its  
group and the three spices should be  
impregnated for a week with the milk  
of the thorny milk-hedge plant. A  
pill made of the size of a jujube  
should be taken as potion with ghee  
or meat-juice

सुधाया एकः पानकयोगः ---

श्यूषणं त्रिफलां दन्तीं चित्रकं त्रिवृतां तथा ।

स्तुक्क्षीरभाजितं सम्यग्विदध्याहुडपानकम् ॥ १४ ॥

श्यूषणम् श्यूषण त्रिकटु, त्रिफलाम् त्रिफला त्रिफला,  
दन्तीम् दन्तीभूषण दन्तीमूल, चित्रकम् चित्रक चित्रक,  
तथा अने एवं, त्रिवृताश्च नसोतरने त्रिवृतको, स्तुक्क्षीर-  
औरना दूधनी स्नुहीके दूधजे, भाजितम् भावना दधि  
भावना देकर, गुडपानकम् गोणीना शरभत साथे गुडके  
शरबतके साथ, सम्यक् विदध्यात् तेने सारी रीते  
प्रयोग डरे। उसका अच्छी तरह प्रयोग करे ॥ १४ ॥

14. The three spices, the three myro-  
balans, red physic nut, white flowered  
leadwort and turpeth impregnated

१४. गुडपानकम्-गुडपानके (घ.)

in the milk of the thorny milk-hedge plant should be administered with the syrup of gur.

एकः प्रेययोगः—

त्रिवृतारव्यं दन्तीं शङ्खिनीं सप्तलां समम् ।  
गोमूत्रे रजनीं कृत्वा शोषयेदातपे ततः ॥२३॥  
सप्ताहं भावयित्वैवं स्नुक्क्षीरेणापरं पुनः ।  
सप्ताहं भावयेच्छुद्धं ततस्तेनापि भावितम् ॥२४॥  
गन्धमाल्यं तदाग्राय प्राकृत्य पटमेव च ।  
सुखमाशु विरिच्यन्ते मृदुकोष्ठा नराधिपाः ॥२७॥

त्रिवृता नसेतर निसेत आरव्यम् गन्धमाल्यं  
अमलताय, दन्तीम् दन्तीभूषण दन्तीमूत्र, शङ्खिनीम्  
अभिष्टम्भी शङ्खिनी, सप्तलाम् अने सप्तला  
शेओना यूलुंसे और सप्तला इनके चूर्णको, समम् सम  
प्रमाणम् १६८ प्रमाण भागमें लेकर, गोमूत्रे ओमूत्रम्  
गोमूत्रमें, रजनीम् आभी रत एक रात, कृत्वा राभी  
मिगोकर, ततः ५६१ पीछे, आतपे तडाभा धूपमें,  
शोषयेत् सुखावपुं सुखा ले, एवम् आ प्रभावे इस  
प्रकार, सप्ताहम् सात दिवस सुधी सात दिन तक,  
भावयित्वा भावनाओ आभी भावना देकर, पुनः ५६१  
फिर, अपरम् भीम दूसरे, सप्ताहम् सात दिवस सुधी  
सात दिन तक, स्नुक्क्षीरेण शेरना इधनी स्नुक्षीरीरं,  
भावयेत् भावना आभी भावना देवे, शुष्कम् सुखावीने  
सुखाकर, ततः से ५६१ तदनन्तर, तेन अपि ते यूलुंसे  
इस चूर्णसे, भावितम् अवयूलुंसे ६१२ भावना आपेक्ष  
अवचूर्णनद्वारा भावित, तत् गन्धमाल्यम् उत्तम सुगन्धी  
पुष्पमालासे उत्तम सुगन्धी पुष्पमालाको, आग्राय  
संध्यायां संध्यासे, पटम् अने अवयूलुंसे ६१२ भावना  
आपेक्ष करने और अवचूर्णनद्वारा भावित वखको,  
प्राकृत्य च एव ओषधी ५६१ ओषधी से भी, मृदुकोष्ठाः  
मृदु कोष्ठावाणा मृदु कोष्ठवाले, नराधिपाः राजा राजे

२३. समम्—समान (व.)

२४. गोमूत्रे रजनीं कृत्वा—निशि स्थितं गवां मूत्रे (व. क. म. फ.)

२७. गोमूत्रे रजनीं कृत्वा शोषयेदातपे ततः—निशि स्थितं गवां  
मूत्रे शोषयेदातपे निशि (व.)

२७. तदाग्राय—समाग्राय (व. फ.)

दे:केने रावा आदि लोकोको. सुखम् सुखपूर्वः सुखपूर्वक.  
आशु मृदुही जल्दी, विरिच्यन्ते विरेचन आय छे  
विरेचन हो जाता है ॥ १५ ॥

7. Turpeth, purging cassia, red  
physic nut, clerolipis and soap-pod taken  
in equal parts and soaked in cow's  
urine for a night should then be  
dried in the sun. This process should  
be repeated for seven days. Again  
impregnated for a week in the milk  
of the thorny milk hedge plant  
they should be dried and powdered.  
This powder, when sprinkled profusely  
on a sweet smelling flower garland or on  
the upper cloth and given for smelling  
or for wearing to a soft-bowelled person  
of royal descent, he will be moved  
to happy and quick purgative effect.

सुवाथाः एकः लेहयोगः—

इयामात्रिवृत्कषायेण स्नुक्क्षीरघृतफणितैः ।  
लेहं पक्त्वा विरेकार्थं लेहयेन्मात्रया नरम् ॥२८॥

इयामा-काणुं नसेतर इयामा-त्रिवृत्-तथा अशुषु  
नसेतरना तथा अशुषु त्रिवृत्के, कषायेण कषायधी  
कषाये, स्नुक्क्षीर-अने शेरना इध स्नुक्षीरा इध, घृत-  
धी घी, फणितैः तथा राज ओषधी तथा राज इधसे,  
लेहम् लेह लेह, पक्त्वा पकावीने पककर, विरेकार्थम्  
विरेचन भाटे विरेचनके लिए, नरम् मनुष्यने मनुष्यको,  
मात्रया मात्रासे मात्रासे, लेहयेत् यटाडवे बटावे ॥२८॥

8. A linctus should be prepared  
with the decoction of black turpeth  
and turpeth, milk of the thorny hedge  
plant, ghee and treacle and adminis-  
tered in due dose, for the purpose of  
purgation.

२८. पक्त्वा—कृत्वा (व.)

यूषादिभिस्त्रयो योगाः—

पाययेत्तु सुधाक्षीरं यूषैर्मांसरसैर्वृतैः ।

सुधाक्षीरम् शेरान् दुधं स्तुहीके दूधको, यूषैः यूप, मांसरसैः मांसरस मांसरस, वृतैः अने धीनी साधे और धीके साथ, पाययेत् पिपरावपुं पिलावे ॥१८३॥

183. The milk of the thorny milk hedge plant may be administered as potion along with soups, meat juices and medicated ghees.

शुष्कमत्स्येन मांसेन च एको योगः—

भाविताञ्जुष्कमत्स्यान् वा मांसं वा भक्षयेन्नरः १९

भाविताञ् शेरान् दुधनी भावना आपेक्षा सेहुंडके दूधसे भावित की हुई, शुष्कमत्स्यान् वा सूडवेक्षां भाषणा सुखी हुई मछलियोंको, मांसम् वा अथवा शेरान् दुधनी भावना आपेक्षा मांसने अथवा सेहुंडके दूधसे भावित मांसको, नरः भक्षये मनुष्य, भक्षयेत् भावा खावे ॥ १९ ॥

19. Dried fish and meat impregnated with that milk may also be eaten for purposes of purgation.

एकः सुरायोगः द्वौ घृतयोगौ च—

क्षीरेणामलकैः सर्पिस्तुरकुलवत् पचेत् ।

सुरां वा कारयेत् क्षीरे घृतं वा पूर्ववत् पचेत् ॥२०॥

चतुरकुलवत् अरभाणानीं पेडे अमलतासे समान, क्षीरेण शेरान् दुधनी स्तुहीके दूधसे, आमलकैः आमलकानां कषाधनी भावलेके कायसे, सर्पिः धी घृत, पचेत् पडावपुं पकावे, पूर्ववत् अगाडिनी पेडे पूर्वकी मति, क्षीरे शेरान् दुधनी स्तुहीके दूधसे, सुराम् सुरा सुरा, कारयेत् बनाये, घृतम् वा अथवा घृत अथवा धीको, पचेत् पडावपुं सिद्ध करे ॥ २० ॥

20. A ghee can be obtained from the prepared milk of thorny milk

१९. भाविताञ्जुष्कमत्स्यान् वा मांसं वा भक्षयेन्नरः—भावि

शुष्कमत्स्यं वा मांसं वा भक्षयेन्नरः (व.)

२०. घृतं—घृतं (व.)

hedge mixed with emblic myrobalans as in the case of the purging cassia. Sura wine can be prepared from the milk of the thorny hedge plant; or even a ghee, as described before, can be prepared from it.

अध्यायोक्त्यायसंग्रहः—

तत्र श्लोकौ—

सौवीरकादिभिः सप्त सर्पिषा च रसेन च ।

पानकं त्रेयलेहौ च योगा यूषादिभिस्त्रयः ॥२१॥

द्वौ शुष्कमत्स्यमांसाभ्यां सुरैका द्वे च सर्पिषी ।

महावृक्षस्य योगास्ते विंशतिः समुदाहृताः ॥२२॥

तत्र श्लोकौ ते विषयमां उपसंहारना ये श्लोक छे के उस विषयमें उपसंहारके दो श्लोक हैं कि, सौवीरक-आदिभिः सौवीरक वजेरेधी सौवीरक आदिसे, सप्त सात सप्त सर्पिषा धीधी ऐक धीसे एक. रसेन मांसरसथी ऐक मांसरससे एक, पानकम् पानकथी पानकसे एक, त्रेयलेहौ च त्रेयथी ऐक लेहथी ऐक त्रेयसे एक लेहसे एक, यूषादिभिः अने यूप वजेरेधी और यूषादिसे, त्रयः योगाः त्रयुं योगो तीन योग, शुष्कमत्स्य-शुष्कमत्स्य सूखी मछली, मांसाभ्याम् अने मांसथी और मांससे, द्वौ ये दो सुरा एका सुराथी ऐक सुरासे एक, सर्पिषी च तथा धीथी तथा धीसे, द्वे ये दो, महावृक्षस्य आ प्रभाषे शेरान् इस तरह महावृक्षके, ते विंशतिः ते वीस वे बीस, योगाः योगो योग, समुदाहृताः उहा छे कहे हैं ॥ २१-२२ ॥

Here are the recapitulatory verses—

21-22. Seven preparations with sauveeraka wine etc., one with ghee, one with meat-juice, one preparation of syrup, one of snuff and one of linctus, three preparations administered with soups etc., two preparations consisting of dry fish and meat, one of Sura wine and two of ghee—thus, in

२१. महावृक्षस्य—शुषाक्षस्य (व. व.)

all twenty preparations of the thorny milk hedge plant have been described.

इत्यग्निवेशकृते तन्त्रे चरकप्रतिसंस्कृतेऽप्राप्ते  
दृढबलसंपूरिते कल्पस्थाने सुधाकल्पो  
नाम दशमोऽध्यायः ॥१०॥

इति आ प्रभाषे इस प्रकार, अग्निवेशकृते अग्नि-  
वेशे रचेष्टा अग्निवेशे बनाये, चरकप्रतिसंस्कृते तन्त्रे  
अने चरकथी प्रतिसंस्कार पायेष्टा आ शास्त्रमां  
और चरकके द्वारा संस्कृत इस शास्त्रके, अप्राप्ते अप्राप्त  
अप्राप्त, दृढबलसंपूरिते अने दृढबले पूरा करेष्टा और  
दृढबलसे पूरित किये गये, कल्पस्थाने उपस्थान विषे  
कल्पस्थानमें, सुधाकल्पः 'सुधाउत्प' सुधाकल्प',  
नाम नामने नामका, दशमः दशमो दसवाँ, अध्यायः  
अध्याय संपूर्ण थये। अध्याय समाप्त हुआ ॥ १० ॥

10. Thus, in the Section on Pharma-  
ceutics in the treatise compiled by  
Agniveśa and revised by Caraka, the  
tenth chapter entitled 'The Pharma-  
ceutics of the Thorny Milk-hedge  
plant' not being available, the same as  
restored by Dridhabala, is completed.

## एकादशोऽध्यायः ।

अग्निरामो अध्याय अध्याय ग्यारहवाँ

## Chapter XI

सप्तलाशङ्खिनीकल्पोपक्रमः —

अथातः सप्तलाशङ्खिनीकल्पं व्याख्यास्यामः ॥१॥  
इति ह साह भगवान्त्रेयः ॥२॥

अथ अतः हवे अहोथी अब आगे, सप्तलाशङ्खिनी-  
कल्पम् 'सप्तलाशङ्खिनीउत्प' नामना अध्यायम्  
'सप्तलाशङ्खिनीकल्प' नामके अध्यायका, व्याख्यास्यामः  
व्याख्यान करेष्टु व्याख्यान करेगे ॥१॥

भगवान् भगवान् भगवान्, आत्रेयः आत्रेयः  
आत्रेयने, इति ह आ विषयमां नीये प्रभाषे अ इह  
विषयमें निम्न प्रकारसे ही, साह सा करेष्टु के कहा है ॥२॥

1. We shall now expound the  
chapter entitled "The Pharmaceutics of  
the Soap pod and Clenolipis."

2. Thus declared the worshipful  
Atreya.

सप्तलाशङ्खिन्योः पर्यायाः —

सप्तला चर्मसाह्वा च बहुफेनरसा च सा ।

शङ्खिनी तिकला चैव यवतिकाऽक्षि(क्ष)पीडकः ॥३॥

चर्मसाह्वा च चर्मसाह्वा, बहुफेनरसा च  
अने बहुफेनरसा और बहुफेनरसा, सा सप्तला ते  
सप्तलाना पर्याये छे वे सप्तलाके पर्याय हैं, तिकला  
अने तिकला और तिकला, यवतिका यवतिका  
यवतिका, अक्षिपीडकः च एव अने अक्षिपीडकः च  
और अक्षिपीडक ये, शङ्खिनी शङ्खिनीना पर्याये छे  
शङ्खिनीके पर्याय हैं ॥ ३ ॥

3. Soap pod is also known by its  
synonyms of Saptala, Chermasahva  
and Bahuphenarasa while Clenolipis is  
known by the names of Shankhini,  
Tiktala, Yavatikta and Akshipeedaka.

सप्तलाशङ्खिन्योः गुणाः —

ते गुल्मगरहृद्रोगकुष्ठशोफोदरादिषु ।

विकासितीक्ष्णरूक्षत्वाद्योज्ये स्नेहप्राधिकेषु तु ॥४॥

ते ते लन्ने उन दोनोंका, विकासि- विकासि  
विकासि, तीक्ष्ण- तीक्ष्ण तीक्ष्ण, रूक्षत्वात् अने रूक्ष  
होनाथी और रूक्ष होनेके कारण, गुल्म- गुल्म गुल्म,  
गर- गरहृद्रोग, हृद्रोग- हृद्रोग हृद्रोग, कुष्ठ-  
कुष्ठ कुष्ठ, शोफ- शोफ शोफ, उदरादिषु अने उदरादिषु  
वज्रेरेमां और उदरादि रोगोंमें, स्नेहप्राधिकेषु तु ते स्नेहप्रा-  
धिकतावाणा होय तेओमां जो रूक्ष अविकृतवाणें

३. शङ्खिनी तिकला चैव-शङ्खिनी तिकला हेया (ब. क.)

-शङ्खिनी तिकला च (ब. क.)

हों उनमें, दोन्ने थोड़ा-सा दायक छे प्रयोग करना चाहिए ॥ ४ ॥

4. These should be administered in gulma, chronic poisoning, cardiac-disorder, dermatosis, edema, abdominal disease etc., and in conditions of predominance of kapha, as they are anti-spasmodic, acute and dry in quality.

सप्तलाशङ्खिन्योः प्राद्यमज्जम्—

नातिशुष्कं फलं ग्राह्यं शङ्खिन्या निस्तुपीकृतम् ।  
सप्तलायाश्च मूलानि गृहीत्वा भाजने क्षिपेत् ॥ ५ ॥

नातिशुष्कम् अथु सुखां नहि गयेलुं न बहुत सूखा हुआ निस्तुपीकृतम् अने इतरां उतारेलुं और तुषहित, शङ्खिन्याः शङ्खिनीतुं शङ्खिनीका, फलम् इण फल, ग्राह्यम् अथु इत्था दायक छे ग्रहण करना चाहिए, सप्तलायाः शङ्खिनीका चिकेकाईके, मूलानि च मूल मूलको, गृहीत्वा धर्तने लेकर, भाजने वास-लुमां पात्रमें, क्षिपेत् राखवां रख देवे ॥ ५ ॥

5. The fruits of the clenolipis should be gathered before they are very dry, and excorticated. The roots of soap-pod should be gathered and both these should be preserved in a pot.

सप्तलाशङ्खिन्योः षोडश कल्कयोगाः—

अक्षमात्रं तयोः पिण्डं प्रसन्नालवणायुतम् ।  
हृद्रोगे कफवातोत्थे गुल्मे चैव प्रयोजयेत् ॥ ६ ॥  
प्रियालपीलुकर्कन्धुकोलाघ्रातकदाडिमैः ।  
द्राक्षापनखजर्जरबदराम्लपरुषकैः ॥ ७ ॥  
मैरेये दधिमण्डेऽम्ले सौवीरकतुषोदके ।  
सीधौ चाप्येष कल्पः स्यात् सुखं शीघ्रविरेचनः ॥ ८ ॥

६. प्रसन्ना-मदिरा (द.)

१. कफवातोत्थे-वातकफजे (ब.)

२. हृद्रोगे कफवातोत्थे-हृद्रोगकफवातात्तं (ब. क.)

३. प्रियाल-पिप्लिक (ब.)

४. कोलाघ्रातक-कोषाघ्रातक (द.)

प्रसन्ना-प्रसन्ना प्रसन्ना, लवण- अने द्रव्य और लवणसे, आयुतम् सहित मिलाकर, तयोः ते अन्नेने। इन दोनोंकी, अक्षमात्रम् छेक तोला गेटवे। एक तोला मात्राके पिण्डम् पिंड पिण्डको कफवातोत्थे इक्ष्वात-अन्थ कफवातजन्य, हृद्रोगे हृद्रोगमां हृद्रोग, गुल्मे एव च अने गुल्ममां और गुल्ममें, प्रियाल- प्रियाली चिरौजी, पीलु- पीलु पीलु, कर्कन्धु- यक्षुभिः शङ्खे, कोल- भेर बेर, आघ्रातक- अंभाडे अंवाड़ा, दाडिमैः दाडिम अनार, द्राक्षा- द्राक्ष मुनका, पनस- इक्षुस कटहल, खर्जूर- भणूर खजूर, बदराम्ल- भाटां भेर बदराम्ल, परुषकैः अने इक्ष्वासा साथे और फालसाके साथ, प्रयोजयेत् प्रयोजने। छेक छे प्रयोग करना चाहिए, मैरेये मैरेयमां मैरेयमें, अम्ले भाटा कट्टे, दधिमण्डे दधिमण्डमां दधिमण्डमें, सौवीरक- सौवीरकमां सौवीरकमें, तुषोदके तुषोदकमां तुषोदकमें, सीधौ च अने सीधुमां और सीधुमें, अपि पथु मी, एवः आ यही, कल्पः कल्प छे कल्प है, सुखम् तेथी सुखपूर्वक इससे सुख-पूर्वक, शीघ्र- अने जल्दी और शीघ्र, विरेचनः विरेचन विरेचन, स्यात् थाय छे होता है ॥ ६-८ ॥

6-8. A measure of one tola of the paste of these drugs mixed with Prasanna wine and rock-salt should be administered in cardiac disorder caused by kapha and vata, and also in gulma. This paste administered with the decoctions of Buchanan's mango, tooth-brush tree, wild jujube, small jujube, indian hog-plum, pomegranate, grape, jack fruit, date, sour jujube, sweet falsah or with Maireya wine, sour whey, Sauveeraka wine, Tushodaka wine, or Sidhu wine, acts as a quick and easeful purgative.

सप्तलाशङ्खिन्योः षट् तैलयोगाः—

तैलं विदारिगन्धाद्यैः पयसि कञ्चित् पचेत् ।  
सप्तलाशङ्खिनीकस्य त्रिबुट्टयामार्शभाषिके ॥ ९ ॥



दधिमण्डेन सजीय सिद्धं तत् पाययेत च ।

विदारिगन्धार्घ्यैः विदारीगन्धा दूधरे साथे विदारी-  
गन्धादिके साथ, कथिते उक्तगोष्ठा उवाच ह्ये, पयसि  
दूधभा दूधमें, त्रिवृच्छयामा त्रित्त तथा श्यामाना ओष्ठ  
भागने। ३६३ त्रिवृत्त और श्यामाके एक भागका कल्क,  
आर्धभागिके अने तेथी अरुणा भागने। और इनसे आवे  
भागका, सप्तला- श्रीकाभ ४ चीकेकाई, शङ्खिनी- अने  
आभ्रूटाभण्णीने। और शंखिनीके, कल्के ३६३ नाथी  
तेभा कल्क डालकर उसमें, तैलञ्च तैल तैल, एचेत्  
पकावत् सिद्ध करे, सिद्धम् सिद्ध थयेवा सिद्ध हुए, तद्  
ते तैलने उस तैलको, दधिमण्डेन हठीना भंड साथे  
दहीके मंडमें, सजीय भेणवी मिलाकर, पाययेत च पापुं  
ओष्ठये पिलाये ॥ ९३ ॥

9-9३. The oil cooked in the milk  
prepared with the drugs of the tick-  
trefoil group, with the paste of soap-  
pod and clenolipis and half its quantity  
of the paste of turpeth and black  
turpeth, should be administered as  
potion along with whey.

शङ्खिनीचूर्णभागौ द्वौ तिलचूर्णस्य चापरः ॥१०॥  
हरीतकीकषायेण तैलं तत्पीडितं पिबेत् ।  
अतसीसर्वपैरण्डकरज्जेवेष संविधिः ॥११॥

द्वौ शङ्खिनी-चूर्ण- भागौ आभ्रूटाभण्णीना ये भाग  
शंखिनीके चूर्णके दो भाग, तिलचूर्णञ्च च अने तैलना  
थूलने। और तिलचूर्णका, अपरः नीचे ओष्ठ भाग  
दूसरा एक भाग, तत्पीडितम् तेथीने पीसी काटेहुं  
इनको पीसकर निकाले हुए, तैलञ्च तैल तैलको, हरीतकी-  
६२३ना हरबके, कषायेण कषाय साथे कषायके साथ,  
पिबेत् पीपुं पीवे, अतसी- अणसी अलसी, सर्वर-  
सरसव सरसों, एरण्ड- ओरुं एरण्ड, करज्जेपु अने  
करंजभा पल्लु और करजमें सी, एषः आ ७ प्रकारनी  
यही, संविधिः विधि छे विधि बरतनी चाहिए ॥ १०-११ ॥

10-11. Taking the powder of clen-  
olipis two parts and one part of the  
powder of til, oil should be expressed  
out of that. This should be taken with  
the decoction of chebulic myrobahus.  
The same is the process in the case of  
linseed, rapeseed, castor and indian  
beech.

सप्तलाशङ्खिनीः अष्टौ च योगः —

शङ्खिनीसप्तलासिद्धात् क्षीराद्यदुदियाद्धतम् ।  
कल्कभागो तयोरेव त्रिवृच्छयामार्यसंयुते ॥१२॥  
क्षीरेणालोड्य संपक्वं पिबेत्तच्च विरेचनम् ।

शङ्खिनी आभ्रूटाभण्णी शंखिनी, सप्तला- अने  
श्रीकाभार्धयी और चीकेकाईसे, सिद्धात् सिद्ध करेवा  
सिद्ध किये, क्षीरात् दूधभाथी दूधवे, तद् जे जो, घृतम्  
घी घी, उदियात् नीकगे बने, तद् च तेने उसे,  
त्रिवृच्छयामा- त्रित्त तथा श्यामाना त्रिवृत्त एवं श्यामाके,  
अर्धसंयुते अर्ध भागना ३६३थी आवे भागके कल्कसे,  
तयोः एव अने शंखिनी तथा सप्तला और शंखिनी  
तथा सप्तलाके, कल्कभागो ओष्ठ भागना ३६३थी एक  
भागके कल्कसे, संपक्म् पकावी पकाकर, क्षीरेण दूधभा  
दूधमें, आलोड्य घोणी मिलाकर, पिबेत् पीपुं पीवे,  
तद् च ते वह, विरेचनम् विरेचन आवे छे विरेचन  
जाता है ॥ १२३ ॥

12-12३. A medicated ghee should be  
prepared by taking the ghee obtained  
from the milk prepared with clenolipis  
and soap-pod in four parts the  
quantity of milk and the paste of the  
same two drugs as well as the same  
quantity of the paste of turpeth and  
black turpeth. This should be taken  
as a purgative potion.

१२. कल्कभागो-कल्कभागं (घ.)

१३. संयुते-संयुतम् (घ.)

१३. संपक्वं-विषचेत् (घ.)

९३. सजीय-सन्धाय (ख. ड. त. थ.)

१०. तिलचूर्णस्य-नीलीचूर्णञ्च (घ. ङ.)



दन्तीद्रवन्त्योः कल्लोऽयमजशृङ्गयजगन्धयोः ॥१३॥  
क्षीरिण्या नीलिकायाश्च तथैव च करञ्जयोः ।  
मसूरविदलायाश्च प्रत्यक्षपर्ण्यास्तथैव च ॥१४॥  
द्विवर्गाधौशकलकेन तद्वत् साध्यं घृतं पुनः ।

अथम् कल्पः आ ७८६५ यही कल्प, दन्तीद्रवन्त्योः  
६-टी तथा द्रवन्तीने। दन्ती तथा द्रवन्तीका, अजशृङ्गी-  
अजशृङ्गी अजशृङ्गी, अजगन्धयोः तथा अजगन्धाने।  
तथा अजगन्धाका, क्षीरिण्याः क्षीरिणीने। क्षीरिणीका, नीलि-  
कायाः च तथा नीलिङाने। तथा नीलिकाका, तथा एव  
करञ्जयोः च अने ३२७ने। दोनों करंजीका, मसूर-  
विदलायाः च अने श्यामलता और श्यामलता, तथा  
एव तथा तथा, प्रत्यक्षपर्ण्याः च ७६३३नीने। छे सूषा-  
कर्णिका है, द्विवर्गाधौश. आ ७७७ने। ७६३३ना अरुधा  
आमना इन दोदोके बगोंके अर्थात्, कल्लकेन ६६३थी  
कल्लके, तद्वत् पूर्ववत् पूर्ववत्, घृतम् धी घृत, साध्यम्  
पुनः सिद्ध ३२७ सिद्ध करे ॥ १३-१४॥

13-14. The same is the process  
in the preparation of medicated ghee  
in the case of red physic nut and  
physic nut, shell and wild carrot,  
yellow milk plant and indigo plant,  
indian beech, and jungle cork tree  
as also in the case of lentil and  
kidney-leaved ipomea. Again, taking  
half part of the paste of each of  
this dyad of drugs, a medicated ghee  
may be prepared.

शङ्खिनीससलाघात्रीकषाये साधयेद्घृतम् ॥१५॥

शङ्खिनी- आ ७८६५ यही शङ्खिनी, ससला- नीलिकाया  
वीकेकाई, घात्री- अने आमनाना और आवलेके,

१४. क्षीरिण्या नीलिकायाश्च-स्वात् क्षीरिणीनीलिकयोः (५)

१५. प्रत्यक्षपर्ण्याः-प्रत्यक्षपर्ण्याः (क. छ. ड. त. फ.)

१६. द्विवर्गाधौशकलकेन-विदलायाश्चकलकेन (ख. ड.)

१७. साधयेद्घृतम्-चापरम् (क. फ.)

१८. साधयेद्घृतम्-चापरं घृतम् (घ.)

कषाये ३२५भा कषायमें, घृतम् धी घृत, साधयेद्  
सिद्ध ३२७ सिद्ध करे ॥१५॥

15. Prepare a medicated ghee with  
the decoction of clenolipis, soap-pod  
and emblic myrobalsans.

सप्तलाशङ्खिन्योः त्रयो लेहयोगाः, कम्पिल्लकेनैको योगश्च—  
त्रिवृत्कल्पेन सर्पिश्च त्रयो लेहाश्च लोघवत् ।  
सुराकम्पिल्लयोगः कार्यो लोघवदेव च ॥१६॥

त्रिवृत्कल्पेन अथवा त्रिवृतना ३६५नी भाइके अथवा  
त्रिवृतकल्पके समान, सर्पिः च धृतपाके घृतपाक,  
लोघवत् लोघरनी पे? लोघके समान, त्रयः त्रय तीन,  
लेहाः च याटलु लेह, सुराकम्पिल्लयोः अने सुरा तथा  
उपीलाने। और सुरा तथा रोरीका, योगः ये। योग,  
लोघवत् एव लोघरनी भाइके ७ लोघके समान ही,  
कार्यः ३२७ बनाना चाहिए ॥ १६ ॥

16. One preparation of ghee can  
be made as in the case of turpeth; and  
three linctuses as in the case of lodh.  
One preparation in Sura wine and one  
with Kamala may be made in the same  
manner as lodh.

सप्तलाशङ्खिन्योः पञ्च सन्धानयोगाः—

दन्तीद्रवन्त्योः कल्पेन सौवीरकतुषोदके ।

अजगन्धाजशृङ्गयोश्च तद्वत् स्यातां विरेचने ॥१७॥

तद्वत् ते ७ प्रभाषे उसकी भांति, दन्ती- ६-टी  
दन्ती, द्रवन्त्योः अने द्रवन्तीना और द्रवन्तीके, कल्पेन  
३६५भा कल्पमें, सौवीरकतुषोदके सौवीरक तथा तुषोदक  
३६५भा आवशे सौवीरक तथा तुषोदक कहे जावेंगे,  
तद्वत् ते ७ प्रभाषे उसी प्रकार, अजगन्धा- आशृणी  
हुकु, अजशृङ्गयोः च अने अजशृङ्गीना सौवीरक तथा  
तुषोदक और अजशृङ्गीके सौवीरक तथा तुषोदक, विरेचने  
विरेचन भाटे विरेचनके लिए, स्याताम् ३२७ बनाना  
चाहिए ॥ १७ ॥

१६. त्रिवृत्कल्पेन-त्रिवृत्कल्पेन (ज.)

१७. लोघवत्-पूर्ववत् (ड. ड. घ. फ.)

१८. तद्वत् स्याताम्-कार्यं स्याताम् (घ.)

17. In the same pharmaceutical process as red physic nut and physic nut, these can be prepared in Sauveeraka and Tushodaka wines. Similarly they can be prepared in the decoction of wild carrot and shell for the purpose of purgation.

अध्यायोक्तविषयाः—

तत्र श्लोकौ—

कषाया दश षट् चैव षट् तैलेऽष्टौ च सर्पिणि ।  
पञ्च मद्ये त्रयो लेहा योगः कम्पिल्लके तथा ॥१८॥  
सप्तलाशङ्खिनीभ्यां ते त्रिंशदुक्ता नवाधिका ।  
योगाः सिद्धाः समस्ताभ्यामेकशोऽपि च ते हिताः ॥

तत्र ते विषयभां उस विषयमें, श्लोकौ ७५२६१२८।  
श्लोक ७५ ३ उपसंहारके दो श्लोक हैं कि, कषायाः  
कषायाभां कषायमें, दश षट् च एव सोलह सोलह, तैले  
तैलभां तैलमें, षट् छ छः, सर्पिणि धीभां धीमें, जहौ  
आठ आठ, मद्ये भद्रभां मद्यमें, पञ्च पांच पांच, लेहाः  
लेहभां लेहमें, त्रयः त्रयः तीन, तथा कम्पिल्लके कपीलाभां  
ओक योम रोरीमें एक ते ते वे, नवाधिका त्रिंशद  
ओगलुयादीस उनचालीस, योगाः योम योग, उक्ताः  
उद्धेवाभां आठवा छे कहे गये हैं, सप्तला- श्लिनीकाई,  
शङ्खिनीभ्याम् अने आठवाभ्याम् और  
शङ्खिनी, समस्ताभ्याम् अनेथी दोनोंसे, एकशः ओक  
ओकथी अथवा एक एकसे, अपि च पलु सी, सिद्धाः  
तैयार भयेला तैयार हुए, ते हिताः ते योमो हितकर छे  
वे योग हितकारी हैं ॥ १८-१९ ॥

Here are the two recapitulatory verses—

18-19. Sixteen preparations of decoctions, six preparations in oil, eight in ghee, five in wine, three preparations of linctuses and one preparation with kamala—thus, in all, thirty-nine tested preparations are there of soap-pod

१८ मद्ये त्रयो-गवाक्षयो (च.)

and clenolipis used in combination. They (soap-pod and clenolipis) are beneficial, used either together or even singly.

इत्यग्निवेशकृते तन्त्रे चरकप्रतिषंस्कृतेऽप्राप्ते  
दृढबलसंपूरिते कल्पस्थाने सप्तलाशङ्खिनी-  
कल्पो नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

इति आ प्रभाषे इस प्रकार, अग्निवेश-  
कृते अग्निवेशे २येला अग्निवेशसे बनाये, चरक-  
प्रतिषंस्कृते तन्त्रे अने चरकथी प्रतिषंस्कार पायेला  
आ शास्त्रभां और चरकके द्वारा संस्कृत इस शास्त्रके,  
अप्राप्ते अप्राप्त अप्राप्त, दृढबलसंपूरिते अने दृढबल  
पूरा करेला और दृढबलसे पूरित किये गये, कल्पस्थाने  
कल्पस्थानभां कल्पस्थानमें, सप्तलाशङ्खिनीकल्पः 'सप्तला-  
शङ्खिनीकल्प' 'सप्तलाशङ्खिनीकल्प' नाम नामने: नामका,  
एकादशः अग्नियारमो ग्यारहवाँ, अध्यायः अध्याय  
संपूर्ण भयो अध्याय समाप्त हुआ ॥ ११ ॥

11. Thus, in the Section on Pharma-  
ceutics in the treatise compiled by  
Agnivesa and revised by Caraka, the  
eleventh chapter entitled 'The Pharma-  
ceutics of the Soap-pod and Clenolipis'  
not being available, the same as resto-  
red by Dridhabala, is completed.

द्वादशोऽध्यायः ।

पारमो अध्याय अध्याय बारहवाँ

Chapter XII

दन्तीद्रवन्तीकल्पोपक्रमः—

अथातो दन्तीद्रवन्तीकल्पं व्याख्यास्यामः ॥१॥

इति ह स्माह भगवानात्रेयः ॥२॥

अथ अतः हवे अङ्गीथी अब आगे, दन्तीद्रवन्ती-  
कल्पम् 'दन्तीद्रवन्तीकल्प' नामना अध्यायतुं 'दन्ती-

द्रवन्तीकल्प' नामके अध्यायका, व्याख्यास्वामः व्याख्यान-  
३२२० व्याख्यान करेंगे ॥ १ ॥

भगवान् भगवान् भगवान्, आत्रेयः आत्रेये  
आत्रेये, इति ह आ विषयमा न्ति ये प्रमाणे ७  
इस विषयमें निम्न प्रकारसे ही, आह स्व उद्धृत है ॥ ३ ॥

1. We shall now expound the  
chapter entitled 'The Pharmaceutics of  
the Red Physic nut and the Physic nut'.

2. Thus declared the worshipful  
Atreya.

दन्तीद्रवन्त्योः पर्यायाः —

दन्त्युदुम्बरपर्णी स्यान्निकुम्भोऽथ मुकूलकः ।  
द्रवन्ती नामतश्चित्रा न्यग्रोधी मूषिकाह्वया ॥ ३ ॥  
(नथा मूषिकपर्णी चाप्युपचित्रा च शम्बरी ।  
प्रत्यक्षश्रेणी सुतश्रेणी दन्ती रण्डा च कीर्तिता ॥)

उदुम्बरपर्णी उदुम्बरपर्णी, निकुम्भः  
निकुम्भ निकुम्भ, अथ अने और, मुकूलकः मुकूलक ओ  
मुकूलक ये, दन्ती दन्तीना पर्याये दन्तीके पर्याय,  
स्यात् ओ हैं, चित्रा चित्रा चित्रा, न्यग्रोधी न्यग्रोधी  
न्यग्रोधी, मूषिकाह्वया मूषिकाह्वया मूषिकाह्वया, तथा  
मूषिकपर्णी च अपि मूषिकपर्णी मूषिकपर्णी, उपचित्रा  
उपचित्रा उपचित्रा, शम्बरी च शम्बरी शम्बरी, प्रत्यक्ष-  
श्रेणी प्रत्यक्षश्रेणी प्रत्यक्षश्रेणी, सुतश्रेणी सुतश्रेणी  
सुतश्रेणी, दन्ती दन्ती दन्ती, रण्डा च अने रण्डा और  
रण्डा, नामतः ओ पर्यायेधी इन पर्यायोंसे, द्रवन्ती  
द्रवन्तीने द्रवन्ती, कीर्तिता उद्धृतामा आने से कही  
जाती है ॥ ३ ॥

3. Danti (red physic nut) is also  
known by its synonyms Udumbara-  
parni, Nikumbha and Mukoolaka.  
Dravanti (physic nut) is known also as  
Chitra, Nyagrodhi and Mushikahvaya.  
It is also known as Mushikaparni.  
Upachitra and Sambari, Pratyaksreni,  
Sutasreni, Danti and Randa(or Chanda).

दन्तीद्रवन्त्योः प्राद्यमङ्गल, प्रयोगविधिश्च—

तयोर्मूलानि संगृह्य स्थिराणि बहलानि च ।  
हस्तिदन्तप्रकाराणि श्यावताम्राणि बुद्धिमान् ॥ ४ ॥  
पिप्पलीमधुलितानि स्वेदयेन्मृत्कुशान्तरे ।  
शोषयेदातपेऽग्नौ हतो ह्येषां विकाशिताम् ॥ ५ ॥

तयोः ते दन्तीनां उन दोनोंकी, स्थिराणि उद्धृत  
सारवाली, बहलानि लची लचीनां मोटी लालवाली,  
हस्तिदन्त- हाथीना दंत हाथी दांतके, प्रकाराणि जेवां  
समान, श्यावताम्राणि च धुंधली तथा तांभा जेवा  
पिप्पली श्याव तथा ताम्रवर्ण, मूलानि भूषण जड़ोंको,  
संगृह्य संगृह्य करी ग्रहणकर, बुद्धिमान् बुद्धिमान वैद्य  
बुद्धिमान वैद्य, पिप्पली- ऐथोपर पीपर उनपर पीपर,  
मधु- अने मधुने और मधुका लिहालि लेप करी लेप  
कर, मृत्कुशान्तरे तेथेने ईर्ष्या कीटी माटीथी  
दीपी ईर्ष्य उनको कुशाओंसे लपेटकर मिट्टीका लेप करके,  
स्वेदयेत् स्वेद करवां स्विन्न करे, आतपे अने तपकाभा  
और धूपमें, शोषयेत् सुखवां सुखावे, हि कारुण्डे  
क्योंकि, अग्नौ अग्नि अने सूर्य अग्नि और सूर्य,  
एषाव तेथेनी इनके, विकाशिताश्च विकाशिताने  
विकाशी गुणको. हतः नाश करे ओ नष्ट करते हैं ॥ ४ ५ ॥

4-5. The wise physician should  
gather the roots of the red physic  
nut and the physic nut that are  
strong and thick and resemble in  
shape the elephant's tusk and are dark  
and coppery in color respectively.  
They should be smeared with long  
pepper and honey, covered with earth  
and sacrificial grass and subjected  
to sudation procedure. They should  
then be dried in the sun. Their toxic  
effects of causing paralysis is destroyed  
by the fire and the sun.

दन्तीद्रवन्त्योर्गुणाः —

तीक्ष्णोष्णान्याशुकारीणि विकाशीनि गुरुणि च ।  
विलाययन्ति दोषौ द्वौ मारुतं कोपयन्ति च ॥ ६ ॥

४. हस्ति-दन्ति (द.)

५. शोषयेदातपेऽग्नौ—शोषयेदातपेऽग्नौ (च. क.)

तीक्ष्ण- दन्ती तथा द्रवन्तीनां भूय तीक्ष्ण दन्ती तथा द्रवन्तीकी जहें तीक्ष्ण, उष्णानि उष्ण, आशुकारीणि आशुकारी शीघ्रकारी, बिकाशीनि विकशी विकाशी, गुरुणि च अने थुरु छे और गुरु हैं, द्रौ तेथे पित्त तथा कफ छे छे पित्त तथा कफ इन दो, दोषो दोषोसे दोषोंको, विलाययन्ति ओगाणी नष्ट करे छे द्रवीभूतकर नष्ट करती हैं, मासुतम् च अने वायुने और वायुको, कोपयन्ति कुपित करे छे कुपित करती हैं ॥ ६ ॥

6. They are acute, hot quick in action, antispasmodic and heavy. They cause the liquefaction of the two humors kapha and pitta, and provoke vata.

दन्तीद्रवन्त्योः क्षम कल्कयोगाः, मांसरसैश्च यो योगाश्च—

दधितकसुरामण्डैः पिण्डमक्षसमं तयोः ।  
प्रियालंकोलवदरपीलुशीघ्रभिरिव च ॥ ७ ॥  
पिबेद्रुम्भोदरी दोषैरभिस्त्रिचश्च यो नरः ।  
गोमृगाजरसैः पाण्डुः कृमिकोष्ठी भगन्दरी ॥ ८ ॥

गुम्भोदरी शुभ्ररोमी, उदररोमी गुल्मरोगी, उदर-रोगी, यः च तथा जे रोगी पर तथा जो रोगी, दोषैः दोषोको दोषोंसे, अभिस्त्रिचः आक्रमण कुपुं होय आक्रान्त हो, नरः ते भनुष्ये वह मनुष्य, तयोः दन्ती तथा द्रवन्तीनां दन्ती तथा द्रवन्तीके, मक्षसमम् ओक तोला जेटोला एक तोला प्रमाण मात्राके, पिण्डम् उदक-पिण्ड कल्कपिण्डको, दधि- दही, तक्- तक् तक्, सुरामण्डैः सुरामंड सुरामण्ड, प्रियाल- अने आरोगी और चिरोजी, कोल- भोला और बड़े बेर, वदर- और बेर, पीलु- तथा पीलुना तथा पीलु शीघ्रभिः च एव सीधु ओओभाथो डाई ओक सीधु साथे इनमेंसे किसी एकके सीधुके साथ, पिबेत् पीवे पीवे, कृमिकोष्ठी अने कृमिवाणा और कोष्ठमें क्रिमिवाला, पाण्डुः पांडुरोगीओ पाण्डुरोगी, भगन्दरी तथा भगन्दरना रोगीओ तथा भगन्दरका रोगी, गो- गाय गो, मृग- भृग मृग, जज- अने

भजरोना और बकरेके, रसैः मांसरस साथे ते उदकपिण्ड पीवे ॥ ७-८ ॥

7-8. The patient with gulma and abdominal disease who is overpowered by morbid humors should take one tala in measure of these drugs with curds, butter milk, the supernatant part of Sura wine, buehanan's mango, jujube, small jujube, tooth brush tree or Sidhu wine. The persons afflicted with anemia, intestinal worms and fistula-in-ano should take it with the meat-juice of the cow, or of the deer or of the goat.

दन्तीद्रवन्त्योः त्रयः स्नेहयोगाः—

तयोः कर्कशे कषाये च दशमूलरसायुते ।  
कक्ष्यालजीविसर्पेषु दाहे च विपचेद्भूतम् ॥ ९ ॥  
तैलं मेहे च गुस्मे च सोदावर्ते कफानिले ।  
चतुःस्नेहं शकृच्छुक्वातसङ्गानिलार्तिषु ॥ १० ॥

दशमूल- दशमूलना दशमूलके, रसायुते रसायुथी युक्त कायके साथ, तयोः ते अन्नेना इन दोनोंके, कर्कशे उदक कल्क, कषाये च अने कषायभा और कषायसे, भूतम् भी घृतको, विपचेत् पकावतुं पकावे, कक्ष्या- उदका कक्ष्या अलजी- अलजी अलजी, विसर्पेषु विसर्प- विसर्प, दाहे च तथा दाहभां ते बीने प्रयोग प्रशस्त छे और दाहमें उप बीका प्रयोग प्रशस्त है, मेहे च प्रमेह प्रमेह गुस्मे शुष्म गुस्म, सोदावर्ते उदावर्त उदावर्त, कफानिले च अने उदक- तथा वात- तथा अलजी रोगीभां और कफजन्य तथा वातजन्य दूसरे रोगोंमें, तैलम् ते अ प्रभासे तैल करेवा तैलना प्रयोग प्रशस्त छे उसी प्रकार सिद्ध किये तैलका प्रयोग प्रशस्त है, शकृच्छु- तेम- मधुमध मधुमध, शुक्- शुक्ल शुक्ल, शकृच्छु- आपनरोध आपनरोध, अलिकार्तिषु तथा वात- अलिकार्तिषु तथा वातजन्य रोगोंमें, चतुःस्नेहम् ते अ

८. दोषैरभिस्त्रिच-दोषैरभिस्त्रिच (बं. त. व. फं.)  
९. कृमिकोष्ठी-कृमिकोष्ठी (ब.)

९. रसायुते-रसायुते (ब.)  
१०. कक्ष्यालजीविसर्पेषु-कक्ष्यालजीविसर्पेषु (ब. ब.)

प्रभावे सिद्ध करेखा आर्य स्नेहमे। प्रयोग प्रशस्त छे  
उसी प्रकार सिद्ध किये चतुःस्नेहका प्रयोग प्रशस्त  
है ॥ १-१० ॥

9-10. The ghee prepared with the paste and the decoction of the red physic nut and the physic nut along with the juice of the decaradices should be taken in condition of herpes boils and spreading affections and burning. Oil similarly prepared should be taken in urinary anomalies, gulma, misperistalsis and provocation of kapha and vata. The tetrad of unctuous substances combined together and prepared similarly should be taken in conditions of stasis of feces, semen and flatus and in disorders of vata.

दन्तीद्रवन्त्योः षड्लेहयोगाः —

रसे दन्त्यजशृङ्गयोश्च गुडक्षौद्रवृत्तान्वितः ।  
लेहः सिद्धो विरेकार्थे दाहसंतापमेहजुक् ॥११॥

विरेकार्थे विरेचन भाटे विरेचनके लिए. दन्ती-  
दन्ती दन्ती, अजशृङ्गयोः च अने अश्वशृङ्गीना और  
अजशृङ्गीके, रसे कषायभा कायमें, सिद्धः सिद्ध करेखा  
सिद्ध किया, गुड- जौण गुड, क्षौद्र- मध मधु, द्रव-  
नान्वितः अने भीसहित और घृतसे मिश्रित, लेहः  
लेह लेह, दाह- दाह दाह, संताप- संताप संताप, मेहजुक्  
अने प्रमेहने। नाश करे छे और प्रमेहका नाशक  
है ॥ ११ ॥

11. The linctus prepared for the purpose of purgation, by mixing gur, honey and ghee in the juice of the red physic nut and Ajasringi is curative of burning, excessive heat and urinary anomalies.

वाततर्षे ज्वरे पैत्ते स्यात् स एवाजगन्धया ।

अजगन्धया भाक्षणीयो डुकुषे, सिद्धः सिद्ध करेखा  
सिद्ध किये. सः एव तेज्य लेहने। उसी लेहका, वाततर्षे  
वातजन्य तृषामां वातिक तृषामें, पैत्ते पित्तजन्य पित्त-  
जन्य, ज्वरे ज्वरभां ज्वरमें, स्यात् प्रयोग प्रशस्त छे  
प्रयोग प्रशस्त है ॥ १११ ॥

113. In dipsosis of the vata type, and in fever of the pitta type, the linctus prepared with wild carrot will serve as a good purgative.

दन्तीद्रवन्त्योर्मूलानि पचेदामलकीरसे ॥१२॥  
शीस्तु तस्य कषायस्य भागौ द्वौ फाणितस्य च ।  
तप्ते सर्पिषि तैले वा भर्जयेत्तत्र चावपेत् ॥१३॥  
कल्कं दन्तीद्रवन्त्योश्च श्यामादीनां च भागशः ।  
तत्सिद्धं प्राशयेद्देहं सुखं तेन विरिच्यते ॥१४॥

दन्तीद्रवन्त्योः दन्ती तथा द्रवन्तीनां दन्ती तथा  
द्रवन्तीकी, मूलानि भूगैने जर्बोको, आमलकीरसे आम-  
लीना कषायभां आवलोकें कायमें, पचेत् पडाववां पकाये,  
तस्य ते उस, कषायस्य कषायभां कषायके, शीस्तु तस्य  
भाग तीन भाग, फाणितस्य अने शूलितना और रात्रके  
द्वौ च छे दो, भागौ भाग भाग, तप्ते तपावेक्ष गरम,  
सर्पिषि भी भी, तैले वा छे तैलभां या तैलमें, भर्जयेत्  
भूज्या भून लेवे, तत्र च तेभां इसमें, दन्ती- दन्ती  
दन्ती, द्रवन्त्योः च तथा द्रवन्तीनां छेक छेक भागने।  
तथा द्रवन्तीके एक एक भागका, श्यामादीनाम् च तेभ्य  
श्याभां वगेरे नन द्रव्योभांथी एवं श्यामादि नौ द्रव्योमेंसे,  
भागशः प्रत्येकना छेक छेक भागने। प्रत्येकके एक  
एक भागका, कल्कम् छेक कल्क, जावपेत् नाभवे।  
डाले, तत्सिद्धम् तेथी सिद्ध भयेवे। उससे सिद्ध हुआ,  
लेहम् लेह लेह, प्राशयेत् याटवे खाये, तेन तेनाभी  
इससे, सुखम् सुखपूर्वकं सुखपूर्वक, विरिच्यते विरेचन  
पाय छे विरेचन होता है ॥ १२-१४ ॥

12-14. The roots of the red physic nut and the physic nut should be

decocted in the juice of the emblic myrobalan. Three parts of that decoction and two parts of treacle should be cooked in hot ghee or oil and the paste of equal parts of red physic nut, physic nut and the drugs of the black turpeth group should be added to it. The linctus, thus prepared and taken, causes easeful purgation.

રસે ચ દશમૂલસ્ય તથા વૈભીતકે રસે ।  
હરીતકીરસે ચૈવ લેહાનેવં પચેત્ પૃથક્ ॥૧૫॥

एवम् औषधं प्रमाणे इसी प्रकार, दशमूलस्य दश-  
मूलानां दशमूलके, रसे च क्वाथभां रसमें, वैभीतके  
भडेडानां बडेडेके, रसे क्वाथभां रसमें, तथा हरीतकी-  
रसे च एव तथा हरडेना क्वाथभां तथा हरडके रसमें,  
पृथक् ७५ ७५ पृथक् पृथक्, लेहान् देहो अवलेह,  
पचेत् ५३।५५ बनावे ॥ १५ ॥

15. Linctuses may be prepared in this manner in the juice of each of the decaradices or of beleric myrobalans or of emblic myrobalans.

દન્તીદ્રવન્ત્યોઃ એકશૂર્ણયોગઃ—

तयोर्विल्वसमं चूर्णं तद्रसेनैव भावितम् ।  
असृष्टे विधि वातोत्थे गुल्मे चाम्लयुतं शुभम् ॥१६॥

તયોઃ દંતી અને દ્રવન્તીના દન્તી ઓર દ્રવન્તીકે,  
અમ્લયુતમ્ અમ્લ દ્રવ્યથી યુક્ત અમ્લ દ્રવ્યસે યુક્,  
વિલ્વસમમ્ ૪ તોલા ૪ તોલે, ચૂર્ણમ્ ચૂર્ણને ચૂર્ણકો,  
તદ્રસેન એવ તેઓના ૪ રસાતી દ્રવ્યકે રસકી, ભાવિતમ્  
આવના આપી તેને ભાવના દેકર તસકા, અસૃષ્ટે  
વિધિ અલ્પભાગ મલકી રકાવટમ્, વાતોત્થે અને  
વાતજન્ય ઓર વાતજન્ય, ગુલ્મે ચ ગુલ્મમાં પ્રયોજ

૧૫. લેહાનેવં પચેત્ પૃથક્-લેહાનેવં પચેત્પૃથક્ (અ. ૫.)

૧૬. શુભમ્-શુભ (અ. ૫.)

કરવામાં આવે એ ગુલ્મમાં પ્રયોગ ક્રિયા જાય વહ,  
શુભમ્ શુભ છે કલ્પાણકારી છે ॥ ૧૬ ॥

16. The powder of the roots of red physic nut impregnated in that juice and taken in a dose of four tolas and mixed with acid article is beneficial in retention of feces and in gulma due to vata.

દન્તીદ્રવન્ત્યોઃ ઇશુષ્ણેદો યોગઃ—

पाटयित्वेषुकाण्डं वा कल्केनालिप्य चान्तरा ।  
स्वेदयित्वा ततः खादेत् सुखं तेन विरिच्यते ॥१७॥

इशुकाण्डम् वा अथवा शेरीना सांडने वा  
गन्धे काण्डको, पाटयित्वा भीरी चीरकर, चान्तरा च  
वथभां बीचमें, कल्केन दंती तथा द्रवन्तीना कल्के  
दन्ती तथा द्रवन्तीके कल्के, आलिप्य वीपी लेप  
करके. स्वेदयित्वा अने स्विन्न करी स्विन्न कर. ततः  
पछी पीछे, खादेत् भावे खाये, तेन तेथी इससे.  
सुखम् सुखपूर्वकं सुखपूर्वक, विरिच्यते विरेचन भाव છે  
વિરેચન હોતા છે ॥ ૧૭ ॥

17. A sugar-cane stalk should be split and the inside smeared with the paste of the red physic nut and the physic nut. It should be subjected to sudation procedure and then chewed. It causes easy purgation

દન્તીદ્રવન્ત્યોઃ મુદ્ધાદિમિશ્રયો રસયોગઃ—

मूलं दन्तीद्रवन्त्योश्च सह मुद्गैर्विपाचयेत् ।  
लाववर्तीरकाद्यैश्च ते रसाः स्फुरिरेचने ॥१८॥

દન્તી-દન્તી દન્તી દ્રવન્ત્યોઃ અને દ્રવન્તીના ઓર  
દ્રવન્તીકે, મૂલમ્ ૪ મૂળ મૂલકો, મુદ્ગૈઃ મગની સાથે મૂળકે  
સાથ લાવ-લાવ લાવ, વર્તીરકા-વર્તીરક વર્તીરક, આદિઃ ચ

૧૭. તતઃ-નર. (અ. ૫.)

૧૮. લાવવર્તીરકાદય-લાવતિરિકાપાં ચ (અ. ૬.)

" " -લાવતિરિકાપાં (દ.)

" " -લાવતિરિકાપાં ચ (અ. ૬.)

" સ્ફુરિરેચને-સ્ફુરિરેચનાં (અ. ૬.)



वज्रेना मसूरस्य आदिके मांसरसके, सह साथे साथ, सिपाचवेत् पञ्चावर्णा पकाये, ते रसाः ते रसेना वे मांसरस, विरेचने विरेचन भाटे विरेचनके लिए, स्युः ६५३५५ उरवाभा आवे छे प्रयुक्त किये जाते हैं ॥१८॥

18 The roots of the red physic nut and the physic nut should be cooked along with green gram or with the meat-juices of the quail, partridge or other birds of their group. These preparations can be used for purgation.

दन्तीद्रवन्त्योः त्रयो यवाग्वादियोगाः —

तयोर्वाऽपि कषायेण यवागूं जाङ्गलं रसम् ।  
माषयूषं च संस्कृत्य दद्यात्तैश्च विरिच्यते ॥१९॥

तयोः वा अपि अथवा इन्ती अने द्रवन्तीना या दन्ती और द्रवन्तीके, कषायेण उपायथी कषायसे, यवागूं यवागूं जाङ्गलम् अंगुष्ठ जांगल, रसम् मसूरस्य मांसरस, माषयूषम् च अने अऽऽना यूपने और माष-यूषको, संस्कृत्य संस्कार करी संस्कृत बनाकर, दद्यात् देना देवे, तैः च तैथी इनसे, विरिच्यते विरेचन भाय छे विरेचन होता है ॥ १९ ॥

19. Gruel or jangala meat-juice, or the soup of black gram prepared with the decoction of these two drugs and seasoned, should be given to a patient. This will cause him to purge.

दन्तीद्रवन्त्योः एक उत्कारिकायोगः एको मोदकयोगश्च —

तत्कषायात् त्रयो भागा द्वौ सितायास्तथैव च ।  
एको गोधूमचूर्णानां कार्या चोत्कारिका शुभा २०  
मोदको वाऽस्य कल्पेन कार्यस्तथा विरेचनम् ।

कषायायात् ते अन्ने औषधिऔना उपायना उने दौषी औषधिगोके कषायके, त्रयः त्रयु तीन, भागाः भाग भाग, तथा एव तथा तथा, सितायाः साउरना

चीनीके, द्वौ च छे भाग दो भाग, गोधूम-अने भुङ्गा और गेहूँके, चूर्णानाम् धोतने आवेका, एकः ओष्ठ भाग एक भाग, शुभा ओष्ठेथी शुभा इनसे मंगलकारी, उत्कारिका उत्कारिका उत्कारिका, कार्या अनावनी बनाये, कल्पेन अथवा आ ५ उपथी अथवा इसी विधिसे, अस्य आ विरेचन रोगी भाटे इस विरेचन रोगीके लिए, मोदकः वा मोदक लड्डू, कार्यः अनावनी बनाये, तत् च ते वह विरेचनम् विरेचन छे विरेचन है ॥२०॥

20-20½. A good Utkarika pancake may be prepared with three parts of the decoction of these two drugs, two parts of sugar-candy and one part of wheat flour. In the same manner sweet boluses may also be made which act as a purgative.

दन्तीद्रवन्त्योः एको मद्ययोगः एको भक्ष्ययोगश्च —

तयोर्वापि कषायेण मद्यान्यस्योपकल्पयेत् ॥२१॥

दन्तीकायेन चालोड्य दन्तीतैलेन साधितान् ।

गुडलावणिकान् भक्ष्यान् विविधान् भक्ष्येभ्यः ॥२२॥

तयोः ते अन्नेना इन दोनोंके, कषायेण च अपि उपायथी कषायसे, अस्य आ विरेचन रोगी भाटे इस विरेचन रोगीके लिए, मद्यानि भक्ष मद्य, उपकल्पयेत् अनावनी बनावे, दन्तीकायेन च इन्तीना उपायभा दन्तीके कायमें, आलोड्य धोणी धोलकर, दन्ती-तैलेन इन्तीना तैलेभा दन्तीके तैलेमें, साधितान् सिद्ध करेवा सिद्ध किये, गुडलावणिकान् गुण अने लवणुनाणा गुण और नमकसे बनाये, विविधान् विविध प्रकारना विविध प्रकारके, भक्ष्यान् भक्ष्येने भक्ष्योको, नरः मनुष्य मनुष्य, भक्षयेत् आवे खावे ॥ २१-२२ ॥

21-22. With their decoction wines may also be prepared. Various kinds of sweet and savoury articles of diet made by mixing them with the decoction



of red physic nut and preparing in its oil, may be eaten.

दन्तीद्रवन्त्योः एकोऽपरधूर्णयोगः —

दन्तीं द्रवन्तीं मरिचं यवानीमुपकुञ्चिकाम् ।  
नागरं हेमकुण्ठां च चित्रकं चेति चूर्णितम् ॥२३॥

सप्ताहं भावयेन्मूत्रे गवां पाणितलं ततः ।  
पिबेद्धतेन जीर्णे तु विरिक्तश्चापि तर्पणम् ॥२४॥

सर्वरोगहरं मुख्यं सर्वेष्वनुषु यौगिकम् ।  
चूर्णं तदनपायित्वाद्वाल्क्यद्वेषु पूजितम् ॥२५॥

दुर्मन्काजीर्णपार्श्वार्तिगुल्मप्लीहोदरेषु च ।  
गण्डमालासु वाते च पाण्डुरोगे च शस्यते ॥२६॥

दन्तीम् दन्ती दन्ती, द्रवन्तीम् द्रवन्ती द्रवन्ती,  
मरिचम् मरी मरिच, यवानीम् यवानी यवानी, उप-  
कुञ्चिकाम् कुञ्चिका कुञ्चुं काला जीरा, नागरम् नागर सोंठ,  
हेमकुण्ठाम् च हीरवी (काश्मीर) हीरवी (काश्मीर),  
चित्रकम् च चित्रक और चित्रक, इति औऔनुं इनका,  
चूर्णितम् चूर्णं कुटी चूर्णं करके, गवां गायना गायके,  
मूत्रे मूत्रनी मूत्रकी, सप्ताहम् सात दिवस सुधी सात  
दिन तक, भावयेत् भावना देवी भावना देवे, ततः  
पश्चात् पीठे, पाणितलम् औठ तोला गेठलुं एक तोला  
मात्रामें, दृतेन धी साथे चीके साथ, पिबेत् पीपुं पीवे,  
जीर्णे तु औषध पानी अथ औषध जीर्ण होने पर,  
विरिक्तः च अने रेश लागी अथ औषध और विरेचन  
होने पर, तर्पणम् च अपि तर्पण पक्ष पीपुं तर्पण भी  
पीवे, तत् चूर्णम् ते चूर्णं वह चूर्ण, सर्वरोगहरम् सर्व  
रोग हरनाहुं सर्व रोगोंको नष्ट करनेवाला, मुख्यम्  
मुख्य छे मुख्य है, सर्वेषु सर्व सब, ऋतुषु ऋतुओंमां  
ऋतुओंमें, यौगिकम् प्रयोग शक्य छे प्रयुक्त किया जा  
सकता है, अनपायित्वात् गुडसान्काउक न होनाथी  
हानिकारक न होनेसे, वाल्क्यद्वेषु आणक अने दूध  
बोकाओं पक्ष बाल और दूध लोगोंमें भी, पूजितम्  
मान्य छे प्रशस्त है, दुर्मन्क- अने दुष्ट बीजानधी

अथेला और दूधित मोजनसे उत्पन्न, अजीर्ण- अजीर्ण  
अजीर्ण, पार्श्वार्ति- पार्श्वार्ति पार्श्वार्ति, गुल्म- गुल्म  
गुल्म, प्लीहा- प्लीहा प्लीहा, उदरेषु च उदरेषु उदर-  
रोग, गण्डमालासु गण्डमाला गण्डमाला, वाते च वात-  
विकार वातरोग, पाण्डुरोगे च अने पाण्डुरोग और  
पाण्डुरोगमें, शस्यते प्रशस्त छे प्रशस्त है ॥ २३-२६ ॥

23-26. Take red physic nut, physic nut, black pepper, bishop's weed, black cumin, dry ginger, yellow milk plant and white flowered leadwort and triturate them well. This powder should be impregnated with cow's urine for a week. A person must take one tola of this powder as potion with ghee. When the dose has been digested and the person well purged, demulcent drink should be given. This powder is the foremost panacea for all kinds of disorders and is a good preparation to suit all seasons; and as it is attended with no harmful effects it is recommended for the young as well as the aged. It is recommended in inappetence, indigestion, pain in the sides, gulma, splenic disorders, abdominal diseases, scrofula, morbid vata and anemia.

दन्तीद्रवन्त्योः एको मोदकयोगः —

पलं चित्रकदन्त्योश्च हरीतक्याश्च विंशतिः ।  
त्रिवृत्पिप्पलिकर्षौ द्वौ गुडस्याष्टपलेन तत् ॥२७॥  
विनीय मोदकात् कुर्यादशैकं भक्षयेत्ततः ।  
उष्णाम्बु च पिबेच्चानु दशमे दशमेऽपि च ॥२८॥  
एते निष्परिहाराः स्युः सर्वरोगनिवर्हणाः ।  
ग्रहणीपाण्डुरोगार्शःकण्डूकोठानिलापहाः ॥२९॥

२४. जीर्ण-चूर्ण (व. क.)

२५. यौगिक-शोभनम् (त.)

२६. गण्डमालासु वाते च-गण्डमालासुवाते च (व. व. व. क.)

२७. त्रिवृत्पिप्पलिकर्षौ द्वौ-पिप्पलीत्रिवृताक्षौ (व.)

२८. पिबेच्चानु-पिबेच्छेषम् (व. क.)

२९. कोठानिलापहाः-कुष्ठानिलापहाः (क. क. क.)

त्रिविकदन्त्योः च त्रिविक्र और दन्ती, पलम् चार चार तोला, चार चार तोला, हरीतक्याः च ६२३ हरद, विंशतिः वीस (संख्यामां) बीस (संख्यामां), त्रिवृत्पिप्पली- और त्रिवृत् तथा पीपर और त्रिवृत् तथा पिप्पली, दूो कषौं अण्णे तोला दो दो तोले, तव तेऔने उनको, गुडश्च गेणना गुडके, अष्टपलेन ३२ तोलानी साथे ३२ तोलेके साथ, विनीष भेणवीने मिलाकर, दश दश दस, मोदकान् मोदक लडू, कृपात् करवा बनाये, ततः पछी पीछे, दशमे दशमे दसवें, दशमे दशमे दसवें, अह्नि च द्विसे दिन. एकम् ओड ओड मोदक एक एक लडू, मक्षयेत् भावे। खामे. जनु च अने ७५२ और उपरसे, उष्णाम्बु गरम पाणी गरम पानी, पिबेत् च पीवुं पीवे, एते आ ये मोदक निष्परिहाराः परहेणन्ती अपेक्षा नाभता नथी परहेजकी अपेक्षा नहीं रखते, सर्वरोग- सर्व रोगने। सब रोगोंको, निर्वर्णाः नाश करे छे नष्ट करते हैं, ग्रहणी- अने अण्णी ग्रहणी पाण्डुरोग- पाण्डुरोग पाण्डुरोग, अर्शः- अर्श अर्श, कण्डू- अण्वाण कण्डू, कोठ- डोड कोठ, अलिक- अने वायुने और वायुको, अपहाः ह्युः छेरे छे इरते हैं ॥ २७-२९ ॥

27-29. Take four tolas each of white flowered leadwort and red physic nut, twenty chebulic myrobalans, two tolas of turpeth and long pepper and thirty-two tolas of gur and prepare ten sweet boluses with these. Take one of these sweetboluses followed by a potion of hot water once every ten days. They do not demand any special after-regimen and are universal remedies though particularly for assimilation disorders, anemia, piles, pruritus, wheals and morbid vata.

दन्तीद्रवन्त्योः एकः कषाययोगः—

दन्तीद्विपलनिर्युहो द्राक्षार्धप्रस्थसाधितः ।

३०. प्रस्थमाधितः—प्रस्थसंयुतः (क. ग. घ. ङ.)

विरेचनं पित्तकासे पाण्डुरोगे च शस्यते ॥३०॥

द्राक्ष- द्राक्षना मुनक्के, अर्धप्रस्थ- ३२ तोलाथी ३२ तोलेसे, साधितः तैयार करेला सिद्ध किया, दन्तीद्विपल- ८ तोला दन्तीने ८ तोले दन्तीका, निर्युहः क्वाथ काथ, पित्तकासे पित्तकासार्थ पित्तजन्य कासमें, पाण्डुरोगे च अने पाण्डुरोगमां और पाण्डुरोगमें, विरेचनम् विरेचन भाटे विरेचनके लिए, शस्यते प्रशस्त छे प्रशस्त है ॥ ३० ॥

30. The extract of eight tolas of the red physic nut prepared with 32 tolas of grapes is a purgative preparation recommended in cough due to pitta and in anemia.

दन्तीद्रवन्त्योः एकः कल्कयोगः—

दन्तीकल्कं समगुडं शीतवारियुतं पिबेत् ।

विरेचनं मुख्यतमं कामलाहरमुत्तमम् ॥३१॥

समगुडम् सम प्रभालुमां गेण साथे सम प्रमाणमें गुडके साथ, दन्तीकल्कम् दन्तीने ३६३ भेणवी दन्तीका कल्क मिलाकर, शीतवारियुतम् ठंडा पाणी साथे ठंडे पानीके साथ, पिबेत् पीवे पीवे, मुख्यतमम् आ सौधी मुख्य यह सबसे मुख्य, उत्तमम् अने उत्तम और उत्तम, कामलाहरम् कामला मलाडनाडुं कामलानाशक, विरेचनम् विरेचन छे विरेचन है ॥ ३१ ॥

31. The paste of red physic nut and equal parts of the gur should be

३०. विरेचनं—ज्ञोषन (ब. ड. त.)

३१. विरेचनं मुख्यतमं—पतद्विरेचनं मुख्यं (ब.)

॥ एतच्छ्लोकानन्तरम्—

शृणोमरिचपिप्लवः कार्षिका स्युः पृथक् पृथक् ।

द्विगुणे शर्करेले च शङ्खिनी रसाच्चतुर्गुणा ॥

नीलिनीमष्टगुणितां द्विरष्टगुणितां तथा ।

दन्तीं द्रवन्तीं त्वक्काणसेकं चात्र प्रदापयेत् ॥

तस्मादधपलं चूर्णाह्वान्माध्वीकसंयुतम् ।

शीतोष्णानुपानं तु निरपायं विरेचनम् ॥

इत्यधिकः पाठः (ब. तं.) पुस्तकयोः ।

taken as potion mixed with cold water. This is a foremost purgative potion and a most effective cure for jaundice.

દન્તીદ્રવન્ત્યોઃ પચ્ચાસવયોગાઃ —

શ્યામાદન્તીરસે ગૌઢઃ પિપ્પલીફલચિત્રકૈઃ ।

લિસેઽરિષ્ટોઽનિલશ્લેષ્મપ્તીહપાણ્ડુદરાપહઃ ॥૩૨॥

પિપ્પલી- પીપર પિપ્પલી, ફલ- મીઠા મેનફલ, ચિત્રકૈઃ અને ચિત્રકથી ઔર ચિત્રકસે, લિસે લીપેલા થડાની અંદર લિસે વહેકે અન્દર. શ્યામા- શ્યામા શ્યામા, દન્તી- અને દન્તીના ઔર દન્તીકે, રસે કથાથમાં કાયમં, ગૌઢઃ ગોળથી કરેલો ગુલ્મસે બનાયા, અરિષ્ટઃ અરિષ્ટ અરિષ્ટ, અનિલ- વાત વાયુ, શ્લેષ્મ- કફ, પ્તીહ- પ્તીહા પ્તીહા, પાણ્ડુ- પાણ્ડુરોગ પાણ્ડુરોગ, દર- અને ઉદરરોગનો ઔર ઉદરરોગનો, અપહઃ નાશ કરે છે નષ્ટ કરતા હૈ ॥ ૩૨ ॥

32. A medicated wine prepared of gur and the juice of black turpeth and red physic nut and physic nut, in a pot lined with long pepper, emetic nut and white flowered leadwort, is curative of morbid vata and kapha, splenic disorders, anemia and abdominal diseases.

તથા દન્તીદ્રવન્ત્યોઃ કષાયે સાજગન્ધયોઃ ।

ગૌઢઃ કાર્યોઽઽજશ્ચક્રયા વા સવૈ સુલ્લવિરેચનઃ ૩૩

તથા તે બ પ્રમાણે તથા, સાજગન્ધયોઃ આશ્ણીસદિત હુલ્કે સાથ, દન્તીદ્રવન્ત્યોઃ વ દન્તી અને દ્રવન્તીના દન્તી ઔર દ્રવન્તીકે, અજશ્ચક્રયાઃ વા અથવા અબશ્ચક્રીની સાથે દન્તી તથા દ્રવન્તીના અથવા અજશ્ચક્રીકે સાથ દન્તી તથા દ્રવન્તીકે, કષાયે કથાથમાં કાયમં, ગૌઢઃ

૩૨ પ્તીહ-ક્ષિમિ (વ.)

૩૩ તથા દન્તીદ્રવન્ત્યોઃ કષાયે સાજગન્ધયોઃ-દન્તીદ્રવ-

ન્ત્યોઃશ્રિષ્ટઃ કષાયેસાજગન્ધયોઃ (ઢ)

૩૪ તથા-તાણાં (ચ.)

૩૫ સવૈ-રસૈઃ (દ. ડ. ચ.)

ગોળથી ગુલ્મસે, કાર્યઃ અરિષ્ટ કરવો બેઠીએ અરિષ્ટ કરના વાહિય, સઃ સૈ તે વહ, સુલ્લવિરેચનઃ સુખપૂર્વક વિરેચન કરનાર છે સુખપૂર્વક વિરેચન કરનારો હૈ ॥ ૩૩ ॥

33. A medicated wine of gur may likewise be prepared with the decoction of red physic nut and physic nut and wild carrot or with the two former drugs and Ajasringi. It acts as an easy purgative

તત્ત્વર્ણકાથમાષામ્બુકિષ્વતોયસમુદ્ધવા ।

મદિરા કફગુલ્મારુપવદ્વિપાશ્વકટિપ્રદે ॥૩૪॥

તત્ત્વર્ણ- તેઓતું થૂણું ઉનકા વર્ણ, કાથ કથાથ કાથ, માષામ્બુ- અડને કથાથ ઉલ્કકા કાથ, કિષ્વ- સુરાળીજ કિષ્વ, તોય- અને પાણીથી ઔર જલસે, સમુદ્ધવા ઉત્પન્ન થયેલી બની હુઈ, મદિરા મદિરા મદિરાકા, કફગુલ્મ- કફગુલ્મ મુલ્મ કફગુલ્મ, અરુપવદ્વિ- મંદામિ મંદામિ, પાશ્વ- પાશ્વ અર્ધ પાશ્વમહ, કટિપ્રદે અને કટિપ્રદેમાં પ્રયોજવી ઔર કટિપ્રદેમાં ઉપયોગ કરના વાહિય ॥ ૩૪ ॥

34. The medicated wine prepared from the powder of the decoction of the red physic nut and physic nut mixed with black-gram water and the solution of yeast, is curative of morbid kapha, gulma, weakness of the gastric fire and rigidity of the sides and waist.

एकैकः सौवीरकतुषोदकतुगकम्पिप्लवकयोगः —

अजगन्धाकपायेण सौवीरकतुषोदके ।

सुराकम्पिल्लके योगौ लोघ्रवच्च तयोः स्मृतौ ॥३५॥

અજગન્ધા- આશ્ણીના હુલ્કે, કષાયે કથાથમાં કષાયકે સાથ, સૌવીરક- સૌવીરક સૌવીરક, તુષોદકે અને તુષોદકે તૈયાર કરવા બેઠીએ ઔર તુષોદક તૈયાર કરવે વાહિય, સુરાકમ્પિલ્લકે સુરા અને કપીલામાં સુરા ઔર રોરીમાં, તયોઃ દન્તી તથા દ્રવન્તીના દન્તી ઔર દ્રવન્તીકે, યોગૌ વ એ યોગ સો યોગ, સ્મૃતૌ

ભોધરની પેઠે જોવકે સમાન, સ્મૃતી કહેલા છે કહે  
હે ॥ ૩૫ ॥

35. Preparations of medicated Sau-  
veeraka and Tushodaka wines may be  
made of these two drugs with the  
decoction of wild carrot. Preparations  
of medicated Sura wine and Kamala  
may be made of these drugs in the  
same manner as lodh.

અધ્યાયોપાસંપ્રદઃ—

તત્ર શ્લોકાઃ—

(દૃષ્યાદિષુ ત્રયઃ પચ્ચ પ્રિયાલાઘૈસ્ત્રયો રસે ।  
જેદેષુ વૈ ત્રયો લેહ્યાઃ વદ્ ચૂર્ણે ત્વેક એવ ચ ॥૩૬॥  
દૃષ્ટાલેકસ્તથા મુદ્ગમાંધાનાં ચ રસાસ્ત્રયઃ ।  
યવાગ્વાદૌ ત્રયઃચૈવ ઉક્ત ઉત્કારિકાવિધૌ ॥૩૭॥  
પૃષ્ઠમોદકે મધે ચૈકસ્તત્કાથતૈલકે ।  
ચૂર્ણમેકં પુનઃચૈકો મોદકઃ પચ્ચ ચાસવે ॥૩૮॥  
પૃષ્ઠઃ સૌવીરકેઽયૈકો યોગઃ સ્યાન્તુ તુષોદકે ।  
પૃષ્ઠા સુરૈકઃ કસ્પિલ્લે તથા પચ્ચ ઘૃતે સ્મૃતાઃ ॥૩૯॥  
દન્તીદ્રવન્તીકર્યેઽસ્મિન્ પ્રોક્તાઃ પોષકાસ્ત્રયઃ ।  
નાનાવિધાનાં યોગાનાં ભક્તિદોષામયાન્પ્રતિ ॥૪૦॥

તત્ર શ્લોકાઃ તે વિષયમાં ઉપસંહારના શ્લોક છે  
કે તેમ વિષયમાં ઉપસંહારકે શ્લોક છે કે, દૃષ્યાદિષુ દર્શ  
વર્ગેમાં દર્શિ આદિમાં, ત્રયઃ ત્રણ ત્રણ, પ્રિયાલાઘૈઃ  
પ્રિયાલાઘૈ વર્ગેમાં પ્રિયાલાઘૈ આદિમાં, પચ્ચ પાંચ પાંચ, રસે  
ત્રયઃ ત્રણ ત્રણ માંસરસમાં ત્રણ, સ્નેહેષુ ત્રે  
સ્નેહેષુ ત્રણ, ત્રયઃ ત્રણ ત્રણ, લેહ્યાઃ લેહ્ય લેહ્ય,  
વદ્ ૭ કઃ, ચૂર્ણે વ ચૂર્ણમાં ચૂર્ણમાં, એકઃ એક એક, તથા તથા  
તથા, મુદ્ગમાંધાનાં ચ મુદ્ગ અને મંસીના મૂંગાં  
માંસીસે, રવાઃ ત્રયઃ ત્રણ ત્રણ ત્રણ, યવાગ્વાદૌ  
યવાગ્વાદૌ વર્ગેમાં યવાગ્વાદૌ આદિમાં, ત્રયઃ ત્રણ ત્રણ ત્રણ

૩૬. લેહ્યાઃ-લેહ્યાઃ (વ. ક.)

૩૭. ત્રયઃચૈવ-ત્રયઃચૈવ (વ. ક.)

ત્રણ ત્રણ, ઉત્કારિકાવિધૌ તેમજ ઉત્કારિકાવિધૌમાં  
એક યોગ એવં ઉત્કારિકાવિધૌમાં એક યોગ, કક્તઃ કહેલા  
છે કહા છે, મોદકે મોદકમાં મોદકમાં, એકઃ એક એક  
એક, મધે મધમાં મધમાં, એકઃ એક એક, તત્કાથ-  
તૈલકે દંતીના કંઠા તથા તેલમાં એક દન્તીકે કાથ  
ઔર તૈલમાં એક, ચૂર્ણમ્ ચૂર્ણ ચૂર્ણમાં, એકમ્ એક એક,  
પુનઃ એક ફરીને ફર, મોદકઃ મોદકમાં લઘુમાં, એકઃ એક  
એક, આસવે ચ આસવમાં આસવમાં, પચ્ચ પાંચ પાંચ,  
સૌવીરકે સૌવીરકમાં સૌવીરકમાં એકઃ એક એક, અથ  
તુષોદકે તુ અને તુષોદકમાં ઔર તુષોદકમાં, એકઃ યોગઃ  
એક યોગ એક યોગ, સ્વાત્ થાય છે હોતા છે, સુરા  
એક સુરામાં એક સુરામાં એક, કસ્પિલ્લે કપીલામાં  
રોરીમાં, એકઃ એક એક, તથા તથા તથા, ઘૃતે ઘીમાં  
ઘીમાં, પચ્ચ પાંચ યોગ પાંચ યોગ, સ્મૃતાઃ કહેલા છે  
કહે છે, ભક્તિન્ આ દ્રવ, દન્તીદ્રવન્તી- દન્તી અને  
દન્તીના દન્તી ઔર દ્રવન્તીકે, કર્યે કદમ્બમાં કર્યમાં,  
ભક્તિદોષામયાન્ રુચિ, દોષ અને રોગ કસ્પિ, દોષ એવં  
રોગોંકે, પ્રતિ અનુસાર અનુસાર, નાનાવિધાનાં વિવિધ  
પ્રકારના નાના પ્રકારકે, યોગાનાં યોગોનાં યોગોંકે,  
ત્રયઃ પોષકાઃ સોળ સોળના ત્રણ સમૂહો (૪૮ યોગ)  
સોળ સોળકે ત્રણ સમૂહ (૪૮ યોગ), પ્રોક્તાઃ કહી  
ખતાવવામાં આવ્યા છે કહે છે ॥ ૩૬-૪૦ ॥

Here are the recapitulatory verses—

36-40. Three preparations in curds  
etc., five in b Buchanan's mango etc.,  
three in meat juices, three in unctuous  
substances, six preparations of linctus,  
one preparation of powder, one like-  
wise in sugarcane, three preparations  
in the juice of green gram and meat,  
three preparations in gruel etc, one  
preparation of Utkarika cake one of  
sweet bolus, one in wine, one prepara-  
tion in decoction and oil one prepara-  
tion of powder and one again of  
sweet bolus and five of medicated  
wines; one preparation of Sauveeraka

wine and one of Tushodaka wine, one preparation of Sura wine, one preparation of Kamala and five preparations of ghee. Thus, in all, forty-eight preparations of various kinds to suit the various tastes of persons and the conditions of morbidity and stages of diseases, have been described in this chapter on the pharmaceutics of the red physic nut and physic nut.

पञ्चदशद्रव्याभ्याश्चित् वमने विरेचने च वाचन्तो योगा  
उक्तास्तद्दिशः—

त्रिंशत् पञ्चपञ्चाशद्योगानां वमने स्मृतम् ।  
द्वे शते नवकाः पञ्च योगानां तु विरेचने ॥४१॥  
ऊर्ध्वानुलोमभागानामित्युक्तानि शतानि षट् ।  
प्राधान्यतः समाश्रित्य द्रव्याणि दश पञ्च च ॥४२॥

वमने वमननी अं६२ वमनमें, योगानाम् त्रिंश-  
तम् पञ्चपञ्चाशत् नवसे। पञ्चावन येजे तीनसौ  
पचपन योग, स्मृतम् ६५५ छे कहे हैं, विरेचने तु अने  
विरेचनभां और विरेचनमें, योगानाम् द्वे शते पञ्चनवकाः  
नसे। पिस्तादीन् येजे ६५५ छे दो सौ पैंतालीस योग  
कहे हैं, इति आनी रीते इसी तरह, प्राधान्यतः  
मुष्मत्वे ६४१ने मुख्यतः, दश पञ्च पं६२ पन्द्रह, च  
द्रव्याणि ६०५ने। द्रव्योंका, समाश्रित्य आश्रय ६४१ने  
आश्रय लेकर, ऊर्ध्व-अनुलोम-भागानाम् वमन तथा  
विरेचनना वमन तथा विरेचनके, षट्शतानि ७२०। येजे  
छः सौ योग, उक्तानि ६५५ छे कहे हैं ॥ ४१-४२ ॥

41-42. Three hundred and fifty-five preparations for the purpose of emesis have been described and two hundred forty-five preparations for the purpose of purgation—thus making, in all, six hundred preparations for purifying the upper and the lower regions of the body. These preparations are derived from fifteen basic drugs.

योगसंज्ञा कथं भवति—

भवन्ति चात्र—

यस्मिन् येन प्रधानेन द्रव्यं समुपचय्यते ।  
तत्संज्ञकः स योगो वै भवतीति विनिश्चयः ॥४३॥

अत्र च आ निषेधां इति विषयमें, भवन्ति ५५५।  
छे ६५५ छे कि, यत् हि ने जो, द्रव्यम् ६०५ द्रव्य,  
येन ने जिस, प्रधानेन प्रधान ६०५नी आने प्रधान  
द्रव्यके साथ, समुपचय्यते भगे छे मिलता है,  
तत्संज्ञकः तेना नामने। उसके नामसे, सः योगः ते  
योग वह योग, भवति ५५५ छे होता है, इति ने वह,  
विनिश्चयः सिद्धांत छे सिद्धान्त है ॥ ४३ ॥

Here are verses again—

43. It has been laid down that a compound preparation is named after the basic drug which forms its principal active ingredient.

गुणभूतानां सुरादीनां फलादिप्रधानद्रव्यानुवर्तित्वम्—

फलादीनां प्रधानानां गुणभूताः सुरादयः ।  
ते हि ताम्यनुवर्तन्ते मनुजेन्द्रमिवेतरे ॥४४॥

सुरादयः सुरा वजेरे ६०५ सुराआदि द्रव्य, फला-  
दीनाम् भी६५५ वजेरे मेनफल आदि, प्रधानानाम् प्रधान  
६०५ने। प्रधान द्रव्योंके, गुणभूताः जोषु ६०५ छे गुण-  
भूत द्रव्य हैं, हि ६०५ छे क्योंकि, इतरे भी६५५ छे।  
इतरे योग, मनुजेन्द्रम् इव नेम राजाने अनुसरे छे  
जैसे राजाकी अनुसरते हैं, ते तेम तेजा देवे वे, तस्मि  
ते प्रधान६०५ने उन प्रधानद्रव्योंके, अनुवर्तन्ते अनुसरे  
छे अनुसरते हैं ॥ ४४ ॥

44. In the prescription of a compound where the emetic nut etc., form the basic or principal drug, wines etc. occupy the secondary role as constituents, vehicles or excipients. They

४३-कोनो वै-संयोगो (प. फ.)

स योगो वै भवतीति विनिश्चयः-स संयोगो-भवतीति  
विनिश्चयः (व. प.)  
विनिश्चयः-विनिश्चयः (व. प.)

follow the main drug in the prescription, even as the attendants follow the king.

तेषां विरुद्धवीर्यत्वेऽप्यबाधकत्वम्—

विरुद्धवीर्यमप्येषां प्रधानानामबाधकम् ।

अधिकं तुल्यवीर्यं हि क्रियासामर्थ्यमिष्यते ॥४५॥

एषाम् ओ गुलुभूत द्रव्येभ्योऽनुं इन गुणभूत द्रव्योका, विरुद्धवीर्यं वीरुद्धवीर्यं विरुद्धवीर्यं, अपि पक्षु भी, प्रधानानाम् प्रधान द्रव्येभ्योऽनुं प्रधान द्रव्योका, अबाधकम् आधक अननुं नथी बाधक नहीं होता, तुल्यवीर्यं हि अने ओ प्रधान तथा गुलुभूत द्रव्येभ्योऽनुं वीर्यं समान होय तो यदि प्रधान तथा गुणभूत द्रव्यका वीर्य समान हो तो, क्रियासामर्थ्यम् तेभीने। संयोग क्रियाभा अधिक समर्थ थाय छे उनका संयोग क्रियामें अधिक समर्थ होता है, इष्यते अने ते छिष्ट छे और वह इष्ट है ॥ ४५ ॥

45. Even the antagonism of their potency does not vitally impair the main effects of the principal drugs, while admixture of drugs of similar potency intensifies its action.

विरुद्धवीर्याणां प्रयोगे हेतुः—

इष्टवर्णरसस्पर्शगन्धार्थं प्रति चामयम् ।

अतो विरुद्धवीर्याणां प्रयोग इति निश्चितम् ॥४६॥

मतः आभी इसलिए, इष्ट- छिष्ट इष्ट, वर्ण- पक्षु वर्ण, रस- रस रस, स्पर्श- स्पर्श स्पर्श, गन्धार्थम् अने अन्ध भाटे और गन्धके लिए, चामयम् प्रति च अने शेषेभ्यो- चिकित्सा भाटे और रोगकी चिकित्साके लिए, विरुद्ध- वीर्याणाम् विरुद्ध वीर्याणां द्रव्येभ्योऽनुं विरुद्ध वीर्याके द्रव्योका, प्रयोगः प्रयोग आवश्यक छे प्रयोग आवश्यक है, इति निश्चितम् ओ निश्चय छे वह निश्चय है ॥ ४६ ॥

४५. अधिकं तुल्यवीर्यं हि-समावर्तित्वधिकम् (ड.)

अधिकं तुल्यवीर्यं हि क्रियासामर्थ्यमिष्यते-समानवीर्यं

अधिकं क्रिया सामर्थ्यमिष्यते (ग.)

46. As laid down, the use of articles that are of antagonistic potency to the disease is allowed for the purpose of imparting to the medication, pleasant color, taste, touch and odor suitable to the conditions of a disease.

द्रव्याणां बलाधानार्थं स्वरसभावना कार्या—

भूयश्चैषां बलाधानं कार्यं स्वरसभावनायैः ।

सुभावितं ह्यल्पमपि द्रव्यं स्याद्बहुकर्मकम् ॥४७॥

स्वरसैस्तुल्यवीर्यैर्वा तस्माद् द्रव्याणि भावयेत् ।

स्वरसभावनायैः स्वरसन्धी भावनाथी स्वरसकी भावनासे, एषाम् आ द्रव्येभ्योऽनुं इन द्रव्योमें, भूयः बलाधानम् च अधिक अक्षन्ती उत्पत्ति अधिक बलकी उत्पत्ति, कार्यम् करनी ओछी करनी चाहिए, हि ऊपर छे क्योंकि, सुभावितम् सारी रीते भावना आपेक्षुं अच्छी प्रकार भावना दिया हुआ, अल्पम् थोड़ुं थोड़ा, अपि पक्षु भी, द्रव्यम् द्रव्य द्रव्य बहुकर्मकम् अहु कर्म करनी बहुत कार्य करनेवाला, स्यात् थाय छे होता है, तस्माद् तेभी इस लिए, द्रव्याणि द्रव्येभ्योऽनुं द्रव्योको तुल्यवीर्यैः अथवा तुल्यवीर्य अथवा तुल्यवीर्य, स्वरसैः वा स्वरसोथी के ऊपरथी स्वरसोंसे या कायोंसे, भावयेत् भावना आपेक्षी ओछी भावना देनी चाहिए ॥ ४७ ॥

47-47½. The dynamization of drugs may be done by impregnation with their expressed juice. A drug even though small in measure becomes great in its action, if well impregnated. Therefore, drugs should be impregnated either with their own expressed juice or the expressed juice of the drugs of similar potency.

तुल्यतुल्यवीर्यसंयोगादिकार्यम्—

अल्पस्यापि महातीव्रं प्रभूतस्याल्पकमेताम् ॥४८॥

सुयोगविशेषकालसंज्ञायादिकार्यम्—



संयोग-संयोग संयोग, विशेष-विशेष विभाग, काल-काल, संस्कार-अने संस्कारणी और संस्कारकी, युक्तिभिः युक्तिथी युक्तिसे, अल्प अल्प अल्प ६०० यो० पक्ष अल्प द्रव्यका सी, महार्थत्वम् महान् कार्यं करनी २५५ महान् कार्यको सिद्ध करना, प्रभूतत्व अल्प अने पु० ५५ ६०० पक्ष और प्रभूत द्रव्यका सी, अल्पकर्मताम् अल्प कार्यं करनी २५५ अल्प कार्य करना, कर्त्तव्य करी शक्य है किया जा सकता है ॥ ४८३ ॥

48-48½. By skilfully carrying out synthetic and analytic procedures on drugs, by time factors and by pharmaceutical processes even a small dose of a drug may be made to produce powerful action and a big dose of medication may be made to produce a very mild result.

अत्रोक्तबीजेनान्ययोगानामपि कल्पना कार्या—

प्रदेशमात्रमेतावद् द्रष्टव्यमिह षट्शतम् ॥४९॥  
स्वबुद्धयैवं सहस्राणि कोटीर्वाऽपि प्रकल्पयेत् ।  
बहुद्रव्यविकल्पत्वाद्योगसंख्या न विद्यते ॥५०॥

इह अर्द्धी यहाँ, एतावत् आठवा इतने, षट्शतम् ६०० यो० ने अता०वा है तेओने ६०० योग बताये हैं उन्हें, प्रदेशमात्रम् यो०ने ओक भाग यो०का एक भाग, द्रष्टव्यम् समझना समझना चाहिए, एवम् आ प्रभावे इस प्रकार, सहस्राणि ६०० हजारों, कोटीः वा अपि अथवा करोड़ यो०नी पक्ष या करोड़ों बोगोंकी सी, स्वबुद्ध्या यो०नी बुद्धिथी अपनी बुद्धिसे, प्रकल्पयेत् कल्पना करी लेवी कल्पना कर लेनी चाहिए, बहुद्रव्यविकल्पत्वात् ६०० अने तेओना वि० ५० (बोरो) अहु होवाथी द्रव्यों और उनके विकल्प अनेक होनेसे, योग-संख्या यो०नी संख्या बोगोंकी गिनती, न विद्यते बर्ध शब्द नहीं हो सकती ॥ ४९ ५० ॥

49-50. Here, six hundred preparations have been described, which are

५०. दोषहर्त्रा-दोषहर्त्रा (ब.)

only a fraction of the possible number of such preparations. According to one's own intelligence, thousands and millions of them may be made. As the combinations of drugs are very numerous, there can be no limitation to the extent of their combinations.

तीक्ष्णस्य विरेचनस्य लक्षणम्—

तीक्ष्णमभ्यसृद्नां तु तेषां शृणुत लक्षणम् ।  
सुखं क्षिप्रं महावेगमसक्तं यत् प्रवर्तते ॥५१॥  
नातिग्लानिकरं पायी हृदये न च रुक्कम् ।  
अन्तराशयमक्षिण्वन् कृत्स्नं दोषं निरस्यति ॥५२॥  
विरेचनं निरुद्धो वा तत्तीक्ष्णमिति निर्दिशेत् ।

तेषाम् ते उन, तीक्ष्ण-तीक्ष्ण तीक्ष्ण, मध्य-मध्य मध्य, सृद्नाम् अने शृदु विरेचनोना और शृदु विरेचनोंके, लक्षणम् तु लक्षण लक्षणोंके, शृणुत श्रुत सुनो, यत् ने जो, विरेचनम् विरेचन विरेचन, निरुद्धः वा अथवा निरुद्ध या निरुद्ध, सुखम् सुखपूर्वक सुख-पूर्वक, क्षिप्रम् अल्पधी जल्दी, महावेगम् महावेगथी अतिवेगपूर्वक, असक्तम् अने रो० ५१ ५२ और बिना रुक्क-बटके, प्रवर्तते प्रवर्तते प्रवृत्त होता है, पायी शुद्धा गुदामें, नातिग्लानिकरम् न अहु ग्लानि न करे अति-पीडा उत्पन्न न करे, हृदये हृदयमा हृदयमें रुक्कम् च न पीडा न करे दर्द न करे, अन्तराशयम् अन्तराशयने अन्तराशयको, अक्षिण्वन् अक्षिण्वन् अक्षिण्वन् अक्षिण्वन् विना, कृत्स्नम् सध्या सम्पूर्ण, दोषम् दोषने दोषको, निरस्यति अक्षर काटी नाजे है बाहर निकाल देता है, यत् तेने उसको, तीक्ष्णम् इति तीक्ष्ण तीक्ष्ण, निर्दिशेत् अक्षुधे जानना चाहिए ॥ ५१-५२ ॥

51-52½. Now learn the characteristics of the strong, moderate and mild types of action of these drugs. That which acts easily, quickly, with great force and unhindered, which does not

५२ अन्तराशयमक्षिण्वन्-अनेश्वयमक्षिण्वन् (क. क.)

—अक्षिण्वन् (ब. उ. द.)



induce exhaustion and which causes no pain in the rectum or the stomach, which without causing griping in the intestines eliminates the entire morbid matter, be it a purgative or an evacua-tive enema, is to be regarded as of the strong type.

कथं मेघजं तीक्ष्णत्वं मध्यमत्वं मन्दत्वं च याति—

जलाग्निकीटैरस्पृष्टं देशकालगुणान्वितम् ॥५३॥

ईषन्मात्राधिकैर्युक्तं तुल्यवीर्यैः सुभावितम् ।

लोहलेदोपपन्नस्य तीक्ष्णत्वं याति मेघजम् ॥५४॥

जलाग्निकीटैः अथ, अग्नि अने अंतुओओ जल, अग्नि और कीटोंसे, अस्पृष्टम् स्पर्श न करे हाथ तेतुं अशुचित देश-देश देश, काल-अने कालना और कालके, गुण शुद्धी गुणोंसे, अन्वितम् युक्त युक्त, ईषत् शैलीक घोड़ीसी, मात्राधिकैः युक्तम् अधिक मात्रावाणुं मात्रामें अधिक होनेवाली, तुल्यवीर्यैः तुल्य वीर्यवाणुं द्रव्योनी समान वीर्यवाली औषधियोंसे, सुभावितम् सारी चेहे भावना दीधेव मली प्रकार भावित, मेघजम् औषध औषध, स्नेह-स्नेहन स्नेहन, स्वेद-अने स्वेदन और स्वेदन, उपपन्नस्य पामेव पुरुषने भाटे दिये हुए मनुष्यमें, तीक्ष्णत्वम् तीक्ष्ण तीक्ष्ण, याति अने छे बन जाती हे ॥ ५३-५४ ॥

53-54. The drug that has not been impaired by water, fire or insects, which is imbued with the beneficial qualities of soil and season, that has to be used in a slightly bigger dose, and which is well impregnated with the juice of a drug of similar potency acquires strong power of action on a person who has undergone the preliminary oleation and sudation procedures.

किंचिदेभिर्गुणैर्हीनं पूर्वोक्तैर्मात्रया तथा ।

स्निग्धस्विन्नस्य वा सम्यङ्काश्यं भवति मेघजम् ५५

पूर्वोक्तैः अभाडे कहेवा उपर्युक्त, एभिः गुणैः ओ गुणोंकी इन गुणोंसे, तथा तथा एवं, मात्रया मात्राकी मात्रासे, किंचित् कंचित् कुछ, हीनम् हीन कम, मेघजम् औषध औषध, सम्यक् सारी रीते मली प्रकार, स्निग्धस्विन्नस्य वा स्नेहन तथा स्वेदन पामेवा पुरुषने भाटे स्नेहन-स्वेदन दिये पुरुषमें प्रयुक्त करने पर, मध्यम मध्य मध्य, भवति अने छे हो जाती हे ॥ ५५ ॥

55. The drug that is slightly inferior as regards the qualities described above and administered in a smaller dose to a person who has undergone the oleation and sudation procedures, has a moderate action.

मन्दवीर्यं विरूक्ष्य हीनमात्रं तु मेघजम् ।

अतुल्यवीर्यैः संयुक्तं मृदु स्यान्मन्दवेगवत् ॥५६॥

मन्दवीर्यम् मन्द वीर्यवाणुं मन्दवीर्य हीनमात्रम् हीन मात्रावाणुं मात्रामें हीन, अतुल्यवीर्यैः असमान वीर्यवाणुं द्रव्योनी असमान वीर्यवाली औषधियोंसे, संयुक्तम् युक्त युक्त, मन्दवेगवत् अने मन्द वेगवाणुं और मन्द वेगवाली, मेघजम् तु औषध औषध, विरूक्ष्य विरूक्ष्य पुरुषने भाटे रुक्ष पुरुषमें, मृदु मृदु मृदु, स्यात् अने छे होती हे ॥ ५६ ॥

56. The drug that is of low potency and is combined with the drugs of antagonistic potency and administered in a very small dose to a person who is dehydrated, has a mild and slow action.

तीक्ष्णादीनि मेघजानि केषु योजयानि—

अकृत्स्नदोषहरणादशुद्धी ते बलीयसाम् ।

मध्यावरबलानां तु प्रयोज्ये सिद्धिमिच्छता ॥५७॥

५७ अशुद्धी ते बलीयसाम्-अशुद्ध तत्त्वलीयसाम् (अ. व.)

सिद्धिमिच्छता-सिद्धिमिच्छता (अ.)

ते मध्य अने मृदु औषध मध्यम और मृदु औषध, बल्लस्न-दोष-हरणात् अथवा दोषने दूर न करवायी सम्पूर्ण दोषको बाहिर न निकालनेसे, बलीयसाम् अर्णवान् पुरुषो भाटे बलवान् पुरुषोंमें, बलशुद्धी संशोधन अनर्था नथी अशोधन होती है, सिद्धिम् सिद्धि सिद्धिको, इच्छता धृच्छानार वैद्ये चाहनेवाला वैद्य, मध्य-तेओनेो मध्य इनका मध्यम अवसर- अने हीन और हीन, बलानाम् तु अणवाना पुरुषो भाटे बलवालोंमें, प्रयोज्ये प्रयोग करवे ओछो ओछो प्रयोग करे ॥ ५७ ॥

57. That which does not eliminate the entirety of the morbid matter in a strong person is to be known as an insufficient or unsatisfactory purgative. This may be administered to persons of moderate and low strength to bring about successful purgation.

तीक्ष्णो मध्यो मृदुर्याधिः सर्वमध्यात्पलक्षणः ।  
तीक्ष्णादीनि बलावेक्षी मेघजान्येषु योजयेत् ॥५८॥

सर्व-सर्वं लक्षणाणां संपूर्ण लक्षणोंवाला, मध्य-मध्यम लक्षणाणां मध्यम लक्षणोंवाला, अल्पलक्षणः अने अल्प लक्षणाणां और अल्प लक्षणोंवाला, व्याधिः रोग, तीक्ष्णः अनुक्रमे तीक्ष्ण क्रमशः तीक्ष्ण, मध्यः मध्य मध्य, मृदुः अने मृदु छे और मृदु होता है, बला-वेक्षी भाटे अक्षने ध्यानर्मा राभता वैद्ये इस लिए बलको देखनेवाला वैद्य, एषु तेओ ५२ तीक्ष्ण आदि रोगोंमें, तीक्ष्णादीनि तीक्ष्ण वजरे तीक्ष्ण आदि, मेघजानि औषधि औषधियोंका, योजयेत् योजना प्रयोग करे ॥५८॥

58. Disease is acute, moderate or mild and has all the symptoms or moderate number of symptoms or very few symptoms respectively. Different types of medications should be administered to suit those different conditions as

well as to suit the strength of the patient.

आपित्तदर्शनाद्वमनार्थं मेघजं प्रयोज्यम्—

देयं त्वनिर्हते पूर्वं पीते पश्चात् पुनः पुनः ।  
मेघजं वमनार्थीयं प्राय आपित्तदर्शनात् ॥५९॥

पूर्वम् प्रथम प्रथम, पीते पश्चात् तु वमनदर्शना पीत्वा पछी वमन पीनेपर, अनिर्हते दोष अक्षर न निकले तो दोष बाहर न फिर आये तो, प्रायः प्रायशः प्रायः, आपित्तदर्शनात् व्याधि सुधी वमनर्मा पित्त दोष व्याधि सुधी जबतक वमनमें पित्तका दर्शन होवे तबतक, वमनार्थीयम् वमन भाटेनुं वमन लानेवाली, मेघजम् औषध औषध, पुनः पुनः इरी इरीने बारबार देवम् आपवुं ओछो ओछो देवे ॥ ५९ ॥

59. When an emetic potion has not eliminated the morbid matter, it must be administered again and again, till the bile makes its appearance in the vomitted mater.

दोषाद्विलम्बवेक्ष्य मेघजं प्रयोज्यम्—

बलत्रैविध्यमालक्ष्य दोषाणामानुरस्य च ।  
पुनः प्रदद्याद्भैषज्यं सर्वशो वा विवर्जयेत् ॥६०॥

दोषाणाम् दोषानुं दोष, आनुरस्य च अने रोगीनुं और रोगीका, बलत्रैविध्यम् त्रय प्रकारनुं अण तीन प्रकारका बल, आलक्ष्य ओछोने देखकर, पुनः इरीथी पुनः, भैषज्यम् औषध मेघज, प्रदद्यात् देवुं देना चाहिए, सर्वशः वा अक्षया निश्चिदुक्त अथवा सर्वथा, विवर्जयेत् न देवुं न देवे ॥ ६० ॥

60. Keeping in view the three grades of the strength of the morbidity as well as of the strength of the patient, the medication may be repeated or avoided altogether.

५८. बलावेक्षी मेघजान्येषु योजयेत्-सिषक् तेषु बलावेक्षी प्रयोजयेत् (ब.)

५९. वमनार्थीयं-वमनार्थीय (ब.)

६०. बलत्रैविध्यमालक्ष्य-बलं त्रिविधमालक्ष्य (ब.)

અન્યદ્રેષણં કદા પ્રયોજ્યમ્—

નિર્હતે વાડપિ જીર્ણે વા દોષનિર્હરણે બુધઃ ।  
મેષજેડમ્યત્પ્રયુક્તિત પ્રાર્થયન્સિદ્ધિમુત્તમામ્ ॥૬૧॥

દોષનિર્હરણે દોષ બહાર કાઢનાર દોષ નિકાલનેવાલે, મેષજે ઔષધ ઔષધકે, નિર્હતે વા નીકળી બધ નિકલ જાને પર, જીર્ણે વા અપિ અથવા પચી બધ ત્યારે વા જીર્ણ હો જાને પર, ઉત્તમામ્ ઉત્તમ ઉત્તમ, સિદ્ધિમ્ સિદ્ધિ સફળતા, પ્રાર્થયન્ ઇચ્છનાર ચાહનેવાલા, બુધઃ બુધ મનુષ્યે બુદ્ધિમાન, અન્યત્ ફરીવાર ઔષધ પુનઃ ઔષધકા, પ્રયુક્તિત પ્રયોજ્યમ્ પ્રયોગ કરે ॥ ૬૧ ॥

61. If the emetic medication gets itself eliminated or gets digested, then the wise physician desiring to eliminate the morbidity successfully should administer another dose.

વમને વાકપ્રતીક્ષા કિમર્થ ન કાર્યા—

અપકં વમનં દોષં પચ્યમાનં વિરેચનમ્ ।  
નિર્હરેદમનસ્યાતઃ પાકં ન પ્રતિપાલયેત્ ॥૬૨॥

વમનમ્ વમન ઔષધ વમન ઔષધ, અપકમ્ પચ્યા વચરે વિના પાચન હુણ, વિરેચનમ્ વિરેચન ઔષધ વિરેચન ઔષધ, પચ્યમાનમ્ પચ્યું દોષ ત્યારે પચકર, દોષજ દોષને દોષકો, નિર્હરેત્ બહાર કાઢે છે બહાર નિકાલતો હૈ, અતઃ માટે इसलिए, વમનસ વમન દમનની વમન ઔષધકે, પાકમ્ પચવાની જીર્ણ હોનેકે વમનકો, ન પ્રતિપાલયેત્ રાહ ન ભેવી ભેઈએ પ્રતીક્ષા ન કરે ॥ ૬૨ ॥

62. The emetic dose acts before getting digested, and the purgative dose acts while getting digested. Therefore, in the case of an emetic dose, one should not wait in expectation of delayed action after its digestion.

૬૨. દોષજ-દોષક (જ, ૫.)

કદા પુનઃ સંશોધનોષધં દેયમ્—

પીતે પ્રસંસને દોષાન્ન નિર્હત્ય જરાં ગતે ।  
વમિતે ચૌષધે ધીરઃ પાયયેદૌષધં પુનઃ ॥૬૩॥

પ્રસંસને વિરેચન વિરેચન, ઔષધે ઔષધ ઔષધ, પીતે પીધા પછી પીને પર, દોષાન્ન ન નિર્હત્ય દોષોને બહાર કાઢ્યા વગર દોષોનો ન નિકાલકર, જરામ્ ગતે પચી બધ પચ જાય, વમિતે વ અથવા ઉલટીમાં નીકળી બધ તેા યા વમનદ્વારા બાહર આજાય તો, ધીરઃ ધીર વૈદ્યે ધીર વૈદ્ય, પુનઃ ફરીથી પુનઃ, ઔષધમ્ ઔષધ ઔષધ, પાયયેત્ પાવું પિલાયે ॥ ૬૩ ॥

63. In the case of a purgative potion, if the medication gets itself digested without eliminating the morbidity or the medication is vomited out, the intelligent physician should administer the medication again.

દીપ્તાગ્નિમ્ બહુદોષં તુ દદન્નેદગુણં નરમ્ ।  
દુઃશુદ્ધં તદદર્શનકં શ્વોભૂતે પાયયેત્ પુનઃ ॥૬૪॥

દીપ્તાગ્નિમ્ પ્રદીપ્ત અગ્નિવાળા પ્રવીણ અગ્નિવાલે, બહુદોષમ્ બહુ દોષવાળા બહુત દોષોવાલે, દદન્નેદગુણમ્ શરીરમાં રનેદગુણની દદતાવાળા શરીરમાં સ્નેહગુણકો દદતાવાલે, દુઃશુદ્ધમ્ અને બરાબર સંશોધન નહિ પામેલા ઔર સમ્યક્ શોધનકો પ્રાપ્ત નહીં હુણ, નરમ્ તુ પુરુષને પુરુષકો, તદદર્શનકમ્ તે દિવસ ભોજન કરવા ઇચ્છે તેવો દિન મોજન કરાકર, પુનઃ ફરીથી પુનઃ, શ્વોભૂતે બીજે દિવસે અગલે દિન, પાયયેત્ વિરેચન પાવું વિરેચન ઔષધ દેવે ॥ ૬૪ ॥

64. If the person with strong gastric fire, excessive morbidity and strong unctuous element has not been fully cleansed, he must be given his food that day and administered the

૬૩. પ્રસંસને-પ્રસન્દને (જ.)

., ઔષધમ્-આતુરમ્ (ક.)

૬૪. દુઃશુદ્ધમ્-દુઃશોધનમ્ (ક.)

purificatory potion again on the next day.

यो दुर्बलो बहुदोषश्च दोषपाकेन स्वयमेव विरिच्यते तत्र-  
कर्तव्यम्—

दुर्बलो बहुदोषश्च दोषपाकेन यो नरः ।

विरिच्यते शनैर्भोज्यैर्भूयस्तमनुसारयेत् ॥६५॥

दुर्बलः दुर्बलः दुर्बल, बहुदोषः च अने अहु दोष-  
वाणा और बहुत दोषवाले, यः नरः ने पुरुषने जिस  
पुरुषको, दोषपाकेन दोष पाडी जवाथा दोषके परिपाकसे,  
विरिच्यते विरेचन भाव से स्वयं विरेचन हो जाता  
है, तत्र तेने उसे, शनैः धीरे धीरे धीरे धीरे, भूयः  
झरीझरी फिर भोज्यैः भोज्येने वडे भोजनों द्वारा,  
अनुसारयेत् सारखु करारखु अनुलोमन करावे ॥ ६५ ॥

65. The weak person with excessive morbidity, who purges naturally owing to maturity of the morbidity, must be gradually helped in the movement of his bowels by means of appropriate articles of diet.

दोषशेषशमनोपायः—

वमनैश्च विरेकैश्च विशुद्धस्याप्रमाणतः ।

भोजनान्तरपानाभ्यां दोषशेषं शमं नयेत् ॥६६॥

वमनैः च वमन वमन, विरेकैः च अने विरेचनथी  
और विरेचनसे, अप्रमाणतः विशुद्धस्य निःशेष शुद्ध  
नहि थयेला पुरुषना पूर्णरूपमें शोधन न होनेपर,  
दोषशेषम् आडीना दोषने शेष दोषको, भोजन-अन्तर-  
पानाभ्याम् भवाभू वजेरे भोजनथी अने उपवासपानथी  
भोजन और अन्तर पानसे, शमम् शांत शांत, नयेत्  
करवे। करना चाहिए ॥ ६६ ॥

66. If a person that has undergone the purificatory procedures of emesis

६५. शनैः—रसैः (ख. ड. त. व.)

„ „ —रसैः (फ.)

६६. विशुद्धस्याप्रमाणतः—विशुद्धस्य प्रमाणतः (व. फ.)

and purgation is not fully cleansed, then the residual morbidity in him may be sedated by means of digestive stimulant foods and drinks.

केषां मृद्वौषधं प्रयोज्यम्—

दुर्बलं शोधितं पूर्वमल्पदोषं च मानवम् ।

अपरिज्ञातकोष्ठं च पाययेत्तौषधं मृदु ॥६७॥

दुर्बलम् दुर्बलं दुर्बल, पूर्वम् अगाध पूर्व, शोधितम्  
संशोधन पायेला शुद्ध हो चुके, अल्पदोषम् च अने  
अल्प दोषवाणा और अल्प दोषवाले, अपरिज्ञातकोष्ठम्  
च अने जेना कोष्ठानी अजर न होय और और  
जिसका कोष्ठ ज्ञात नहीं हो ऐसे, मानवम् अनुष्यने  
मनुष्यको, मृदु मृदु मृदु, औषधम् औषध औषध,  
पाययेत् पावुं पिबानो चाहिए ॥ ६७ ॥

67. A mild medicine should be prescribed as potion in the case of a weak man or one whose morbidity is slight and of one whose bowel-condition is not known.

श्रेयो मृद्वसकृत्पीतमल्पबाधं निरत्ययम् ।

न चातितीक्ष्णं यत् क्षिप्रं जनयेत्प्राणसंशयम् ॥६८॥

मृदु श्रेयः श्रेयः अल्पबाधं मृदु औषध श्रेष्ठ छे  
इस अवस्थामें मृदु औषध हितकारी है, असकृत्पीतम्  
कठिण के बारंबार पीछुं होय तो पक्ष ते बारबार  
पीने पर भी वह, अल्पबाधम् मृदु नुकसान करे छे  
थोड़ी बाधा करती है, निरत्ययम् अने भरखुने। अल्प  
कठिण नथी बिनासका भय नहीं करती, यत् ने जो,  
क्षिप्रम् तत्तत् क्षीघ्र ही, प्राणसंशयम् प्राणना अल्पभने  
प्राणोंके भयको, जनयेत् पेदा करे उत्पन्न करे, अति-  
तीक्ष्णम् च न ते अतितीक्ष्ण औषध साधुं नथी वह  
अति तीक्ष्ण औषध अच्छी नहीं है ॥ ६८ ॥

68. It is better to take a potion of a mild medication repeatedly as it is attended with only slight discomfort

६८. अल्पदोषम् अल्पदोषम् (व.)

and no risk, than to take a very strong medication which is attended with immediate danger to life.

दुर्बलोऽपि महादोषो विरेच्यो बहुशोऽल्पशः ।  
मृदुमिर्मेषजैर्दोषा हन्युर्ह्येनमनिर्हताः ॥६९॥

दुर्बलः अपि दुर्बल होवा छता पक्ष दुर्बल होनेपर भी, महादोषः महादोषवाणा रोगीने महान दोषवाले रोगीको, मृदुमिः मृदु मृदु, मेषजैः औषधैश्च औषधियाँसे, अल्पशः थोड़ा थोड़ा थोड़ा थोड़ा, बहुशः अहुवार बहुत-वार, विरेच्यः विरेचन करावपुं ओषधौ विरेचन देना चाहिए, हि कारुण्ये क्योंकि, अनिर्हताः दोषाः अहार काढवाभा नहि आवेक्षा दोषा न निकाले हुए दोष, एवम् अने इसको, हन्युः भारी नाणे छे मार डालते हैं ॥ ६९ ॥

69. Even a weak person if afflicted with excessive morbidity should be purged by gradual steps by means of repeated administration of small doses of mild medications, for the morbidity if not eliminated, may kill the patient.

यस्य विरेचनमूर्ध्वं याति तस्य चिकित्सा—

यस्योर्ध्वं कफसंसृष्टं पीतं यात्यानुलोमिकम् ।  
वमितं कवलैः शुद्धं लङ्घितं पाययेत्तु तम् ॥७०॥

यस्य नेतुं जिस पुरुषमें, पीतम् पीधेतुं पी डई, आनुलोमिकम् अनुलोमिक औषध अनुलोमिक औषध, कफसंसृष्टम् ऊँ साथे भणीने कफसे मिलकर, ऊर्ध्वम् उपर तरफ ऊपरकी ओर, याति गमन करे छे जाती हो, तम् तु वमितम् तेने वमन करवा छई उसे वमन कराके, कवलैः काभणा करावी कवलद्वारा, शुद्धम् शुद्ध करी शुद्ध कर, लङ्घितम् लघन करावी लघन कराके, पाययेत्तु करी औषध पावुं फिर औषध पिनाये ॥ ७० ॥

70. The person in whom the purgative potion gets mixed with the

kapha in the stomach and shows a tendency to go upward, should first be given emesis, mouth-purifying gargles and lightening therapy, and then, the purgative potion.

दोषप्रवृत्तौ कर्तव्यम्—

विषहेऽल्पे चिरादोषे स्रवत्युष्णं पिवेज्जलम् ।  
तेनाभ्मानं तृषा चर्द्धिर्विवन्धश्चैव शाम्यति ॥७१॥

दोषे अने दोष यदि दोष, विषहे विषह होय विषह हो. अल्पे थोड़ा होय अल्प हो, चिरात् अने क्षीमे वधते और ढेरसे, स्रवति स्रवती होय तो बहता हो तो, उष्णम् जलुं गरम, जलम् पाणी जल, पिवेत् पीवुं पीवे, तेन तेथी इससे, आभ्मानम् आभ्मान आभ्मान, तृषा तृषा प्यास, चर्द्धिः उल्टी वमन, विवन्धः च एव अने उभयव्यात और विवन्ध, शाम्यति शान्त थाय छे शान्त होते हैं ॥ ७१ ॥

71. In condition of constipation and tardy and scanty elimination of morbid matter hot water should be drunk. It relieves distention of abdomen, thirst, vomiting and constipation.

भेषजं दोषरुद्धं चेन्नोर्ध्वं नाधः प्रवर्तते ।  
सोद्गारं साङ्गशूलं च स्वेदं तत्रावचारयेत् ॥७२॥

दोषरुद्धम् भेषजम् दोषरुद्ध रुद्धायेतुं औषध दोषके कारण रही हुई औषध, सोद्गारम् औद्गार उद्गार, साङ्गशूलम् तथा अंगभां शूलने उत्पन्न करी और अङ्गोंमें शूलको पैदा कर, ऊर्ध्वम् न ओ. धीये यदि ऊपर, अधः ऊँ नीचे या नीचे, न प्रवर्तते चेत् न अथ तो न जाये तो, तत्र तेभां वहां, स्वेदम् स्वेदन स्वेदन, अवचारयेत् आपवुं देना चाहिए ॥ ७२ ॥

72. If the medication is obstructed by the morbid matter, it causes neither

७१. विषहेऽल्पे—विषहेऽल्पम् (च. क.)

, तृषा—सृष्ट (क. घ. त.)

७२. साङ्गशूलं—सशूलं (क. घ. क.)

emesis nor purgation but gives rise to eructation and body-ache. In such cases, sudation procedure should be done.

दोषातिप्रवृत्तौ कर्तव्यम्—

सुविरिक्ते तु सोद्धारमाश्ववौषधमुल्लिखेत् ।  
अतिप्रवर्तनं जीर्णे सुशीतैः स्तम्भयेद्भिषक् ॥७३॥

सुबिरिके तु सारी रीते विरेचन भया पक्षी पक्षु  
मल्ल प्रकार विरेचन होनेपर भी, सोद्धारम् औषधना  
औद्धार आपता होय तो यदि औषधके उद्धार आते  
हैं तो, भिषक् वैद्य वैद्य, आशु एव शीघ्र शीघ्र,  
औषधम् इच्छित्व औषधनी उद्धरी करावी नाभनी  
औषधका वमन करा देवे, अतिप्रवर्तनम् अ वेगनी अति  
प्रवृत्ति होय तो यदि वेगकी अति प्रवृत्ति हो तो, जीर्ण  
औषध पथी गया पक्षी औषध जीर्ण होनेपर, सुशीतैः  
अति शीतल चिकित्साथी अति शीतल उपचारोंसे,  
सम्मयेत् तैर्न रतंभन करवुं उसको रोक देवे ॥ ७३ ॥

73. If a person has been well-purged and still continues to eructate, the residue of the medicine in him should be immediately eliminated by emesis. If the medicine has been digested and causes excessive purgation, it should be stopped by refrigerent remedies.

विरेचनस्याविक्रमत्वे हेतुः, तृचिकित्सा च—

कदाचिच्छेषमणा रुखं तिष्ठत्युरसि मेषजम् ।

स्त्रीणे ऋष्मणि सायाज्ञे राज्ञौ वा तत्प्रवर्तते ॥७४॥

कदाचित् ध्यायेत् कमी, श्रेयसा उदया कफसे,  
 वदत रेखायेषु वद होकर, मेघजम् औषध औषध,  
 वरसि अश्विना ७ छातीमें ही, तिष्ठति स्त्री अथ छे  
 रुक जाती है, वत् से वह, श्रेयसि उद कफसे, बीजे  
 क्षीय्य भूता जीव होने पर, सावाहे साधु ध्याये सार्वकाल,

रात्रौ वा ३ रात्रिमें या रात्रिमें, प्रवर्तते प्रवृत्त नाम  
 ३ प्रवृत्त होती है ॥ ७४ ॥

74. Sometimes, the medicine administered remains in the stomach, obstructed by the kapha. It acts towards the evening or the night, when the kapha has decreased.

रुक्षानाहारयोर्जीर्णं विष्टम्योर्ध्वं गतेऽपि वा ।  
वायुना मेषजे त्वन्यत् सन्नेहलवणं पिबेत् ॥७५॥

रूक्ष- रक्ष रक्ष, जनाहारयोः अने आहार वजरना भयुधेयु और विना भोजन किये पुरुषर्षे, भेषजे औषध औषध, जीर्णे विरेचन न लावे अने पथी अन्य विरेचन न लावे और पच जाय, वायुना अधवा वायुभी वा वायुके कारण, विह्वय विष्टम पाभी रुक कर, ऊर्ध्वम् गते अपि वा उर्ध्वं शायमां रक्षी अथ तो ऊपरकी ओर आजाव तो, सस्नेहहृदयम् स्नेह अने हृदयसहित जेह और नमरुके साथ, नन्वत् तु पीथुं विरेचन अन्य विरेचन, पिबेत् पीपुं पीना चाहिए ॥५॥

75. In case where the medicine has been digested and delayed in the intestines or has been carried upward by the vata owing to lack of unctuous quality in the body or owing to fasting, another dose should be taken mixed with unctuous article and rock salt.

वीर्यसौषधे यदि तृणोद्मूर्च्छाः स्फुटदा कर्तव्याः—

तृष्णोहभ्रममूर्च्छायाः स्युश्चेज्जीर्यति मेषजे ।

विष्णुं स्मृतुं शीतं च मेघजं तत्र शस्यते ॥७६॥

मैत्रेय निरेखन औपध विरेचन औपधके, जीर्णसि  
पच्यते, केच त्पारे पचते ह्य, ह्य, ने तथा पचत,  
मैत्रेय- औध मोद, अम- भम अम, मृच्छिकाः अने  
मृच्छा और मृच्छा, ह्यः केच भाव हो ते, जम तेम

कथं न्यायार्थोक्तिं-विश्वनाथोक्तिं (प. ५.)

1944-1945 (A.)

५३. विविरेके दु-दुविदिहस्त (घ. प. म.)

॥ अक्षिप्रवर्तितं जीर्णं अक्षिप्रवर्तितं जीर्णं ॥ (च. व.)



इसमें, पित्तजम् पित्तनाशकं पित्तनाशक, स्वादु शीतम् च मधुरं अने शीतं मधुर और शीतल, भेषजम् औषध औषध, जस्यते प्रशस्तं छे प्रशस्त हैं ॥ ७६ ॥

76. In a condition where during the digestion of the medicine there occur thirst, stupor, giddiness and fainting, a remedy that is curative of pitta, sweet and refrigerant is recommended.

કફાવૃત્તે મેષજે યદા લાભદયઃ સ્યુક્ષ્મા ચિકિત્સા—

લાલાહૃદ્યાસવિષ્ટમ્ભલોમહર્ષાઃ કફાવૃત્તે ।

મેષજં તત્ર તીક્ષ્ણોષ્ણં કટુાદિ કફનુહિતમ્ ॥ ૭૭ ॥

કફાવૃત્તે વિરેચન ઔષધ કફથી ઠંડાઈ જતા વિરેચન ઔષધ કફને માવૃત્ત હોનેપર, લાલા-ને હાળ લાભલાવ, હૃદ્યાસ ઉછાળો જી મિચલાના, વિષ્ટમ્ભ-કમ્ભિયાત કવજિયાત, લોમહર્ષાઃ અને રોમહર્ષા માથ તેા और लोमहर्ष हों तो, तत्र तेषां इसमें, तीक्ष्ण-पीक्षु तीक्ष्ण, उष्णम् उष्ण, कटुादि અને કટુ બમેરે और कटु आदि, कफनुह कफनाशक, भेषजम् औषध औषध, हितम् हितकर छे हितकारी है ॥ ७७ ॥

77. In a condition where ptyalism, nausea, intestinal stasis and horripilation manifest as consequence of the medication becoming covered up by kapha, acute, hot, pungent and other such remedies curative of kapha, are beneficial.

શુસ્તિગચે કૂરકોષ્ઠે ચ કર્તવ્યમ્—

શુશિગ્ધં કૂરકોષ્ઠં ચ લઙ્ગાયેવ વિરેચિતમ્ ।

તેજાસ્વ સ્નેહજઃ સ્તેષ્મા સજ્જશ્ચૈવોપશમ્યતિ ॥ ૭૮ ॥

શુશિગ્ધમ્ શારી યેઝે સ્નિગ્ધ સમ્યક્ પ્રકારસે સિન્ધ, કૂરકોષ્ઠં ચ અને કૂર કોષ્ઠવાળા પુરુષને और कूर कोष्ठाळे पुरुषको, अविरेषितम् अल्प विरेचन अथु હોય તેા ચોક્ક વિરેચન હોને પર, લઙ્ગાયેવ લંઘન કરાવવું

૭૭. લોમહર્ષા-શીતહર્ષાઃ (બ, ઘ.)

,, કફનુહિતમ્-કફોહિતમ્ (ક)

એઈ એ લંઘન કરાનાં चाहिए, तेन तेथी इससे, जस्य येने। उसका, स्नेहजः स्नेहजन्य स्नेहजन्य, स्तेष्मा कश् कफ, सज्जः च एव અને કોષ્ઠવાળા પુરુષને और दोषोंकी हकावट, उपशम्यति शान्त आय छे शान्त होते हैं ॥ ७८ ॥

78. If the hard-bowelled person who has been given the full oleation procedure does not purge, he should be given the lightening therapy; as a result of this, his kapha, roused by the oleation procedure and accumulated in the body, will get sedated.

એવામવિરેચ્યેવ મેષજં જીર્ણતિ તેષાં ચિકિત્સા—

રૂક્ષ-વહ્નિલ-કૂરકોષ્ઠ-વ્યાયામશાલિનામ્ ।

દીપ્તામ્નીનાં ચ મૈષજ્યમવિરેચ્યેવ જીર્ણતિ ॥ ૭૯ ॥

રૂક્ષ-રૂક્ષ, વહ્નિલ-બહુ વાયુવાળા વહુત વાતવાલે, કૂરકોષ્ઠ-કૂર કોષ્ઠવાળા કૂરકોષ્ઠવાલે, વ્યાયામ-વ્યાયામ કરનાર વ્યાયામ કરનેવાલે, શાલિનામ્ શાલિનામ્ ચ અને પ્રદીપ્ત અગ્નિવાળા પુરુષને और प्रवृद्ध जठराग्निवाले पुरुषोंमें, मैषज्यम् विरेचन औषध વિરેચન ઔષધ, અવિરેચ્ય એવ રેચ લગાડ્યા વિના જ વિરેચન ન કરકે હી, જીર્ણતિ પચી જાય છે પચ જાતો છે ॥ ૭૯ ॥

79. In those that are lacking in unctuous quality, that are afflicted with excessive vata that are hard-bowelled, that are given to exercise or possess strong gastric fire, the purgative medicine administered gets digested without causing purgation.

તેમ્યો વહ્નિત પુરા દત્તવા પદ્યાદ્યાદિરેચનમ્ ।

વસ્તિપ્રવર્તિતં દોષં હરેચ્છીઘં વિરેચનમ્ ॥ ૮૦ ॥

૭૯. શાલિનામ્ શાલિનામ્ (ક, ઘ, ઘ.)

,, શીલિનામ્ (વ ત)

૮૦. વસ્તિપ્રવર્તિતમ્-વસ્તિપ્રવાલિનામ્ (ધ.)

,, વસ્તિપ્રવર્તિતં દોષં હરેચ્છીઘં વિરેચનમ્-વસ્તિપ્રવર્તિતા-મ્દોષાહરણમ્વિરેચનમ્ (ઘ.)



तेभ्यः तेभ्योः इनके लिए, पुरा प्रथम प्रथम, बस्तिम् अस्ति बस्ति, दत्त्वा आपीने देकर, पश्चात् पछी पीछेसे, विरेचनम् विरेचनम् विरेचन, दद्यात् आप्पुं ओष्ठो देवे, बस्तिप्रवर्तित्रम् अस्तिओ प्रवृत्त करेक्ष बस्तिद्वारा प्रवर्तित, दोषम् दोषने दोषको, विरेचनम् विरेचनम् विरेचन, शीघ्रम् शीघ्रम् शीघ्र, हरेत् हरी दे छे नष्ट कर देता है ॥ ८० ॥

80. Such persons should first be given enema and then the purgative medicine. Then, the morbidity that has been set in motion by the enema will get easily eliminated by the purgative dose.

तेषां संशोधनं विना कर्मवातातपाग्निभिर्दोषाः क्षयं यान्ति तेषां कर्तव्यम्—

रूक्षाशनाः कर्मनित्या ये नरा दीप्तपावकाः ।  
तेषां दोषाः क्षयं यान्ति कर्मवातातपाग्निभिः ॥८१॥

वे जे जो, नराः पुरुषो पुरुष, रूक्षाशनाः रूक्ष भोजन करने हैं, कर्मनित्याः नित्य श्रमनु काम करनेवाले नित्य श्रमका कार्य करते हैं, दीप्तपावकाः अने प्रदीप्त अग्निवाला होय छे और जिनकी अग्नि पदीप्त है, तेषां तेभ्योः इनके, दोषाः दोष, कर्म-कर्म, वात-वायु वायु, जातप तड्डो घूप, अग्निभिः अने अग्निथी और अग्निसे, क्षयम् क्षय नष्ट, यान्ति पाये छे हो जाते हैं ॥ ८१ ॥

81. In persons given to un-unctuous food and drink and constant work, and who are possessed of strong gastric fire, the morbidity gets reduced by the influence of work, air, sun and the gastric fire.

८१. तेषां दोषाः क्षयं यान्ति कर्मवातातपाग्निभिः—वायु-  
कर्पाग्निभिर्येषां यान्ति दोषाः क्षयं यदा (ब.)  
कर्मवातातपाग्निभिः—कर्मवातातपाग्निभिः (द.)

विरुद्धाध्यशनाजीर्णदोषानपि सहन्ति ते ।  
ज्वेहास्ते मारुताद्रक्ष्यानाभ्याधौ तान् विशेषयेत् ।

ते तेभ्यो दे, विरुद्ध-विरुद्ध भोजन, विरुद्ध भोजन, अध्यशन-भोजन उपर भोजन अध्यशन, जीर्ण-जीर्ण अथ अल्पथी यत्ता और जीर्णसे उत्पन्न होते हुए, दोषान् दोषाने दोषको, अपि पक्षु मी, सहन्ति सहन करी दे छे सहन कर लेते हैं, ते ज्वेहाः तेभ्योः स्नेहन करवुं ओष्ठो उनका स्नेहन करना चाहिए, मारुतात् तथा वायुथी तथा वायुसे, रक्ष्याः रक्ष्य करवुं ओष्ठो बचाना चाहिए, अभ्याधौ अने अभ्याध दमर और बिना रोगके, तान् तेभ्योः उनका, विशेषयेत् शोधन न करवुं ओष्ठो शोधन नहीं करना चाहिए ॥ ८२ ॥

82. They are able to tolerate the effects of even antagonistic diet or pre digestion meals or indigestion. They should be given oleation procedure and protected from the provocation of vata. They should never be subjected to the purificatory procedures except in unavoidable circumstances of disease.

तेषां दिनग्वं तेषां न रूक्षां विरेचनं न्येयम्—  
नातिस्निग्धशरीराय दद्यात् स्नेहविरेचनम् ।  
ज्वेहोत्किष्ठशरीराय रूक्षं दद्याद्विरेचनम् ॥८३॥

अतिस्निग्ध-अतिशय दिनग्वं अतिस्निग्ध, शरीराय शरीरवाणाने शरीरवाले रोगीको, स्नेहविरेचनम् स्नेह-विरेचन स्नेहका विरेचन, न दद्यात् आप्पुं न ओष्ठो नहीं देना चाहिए, स्नेहोत्किष्ठ स्नेहथी उत्किष्ठ स्नेहसे उत्किष्ठ, शरीराय शरीरवाणाने शरीरवालेको, रूक्षम् रूक्ष, विरेचनम् विरेचनम् विरेचन, दद्यात् आप्पुं ओष्ठो देना चाहिए ॥ ८३ ॥

८२ जीर्णदोषानपि सहन्ति ते—जीर्णदोषानपि सहन्ति ते (ब ड.)

.. स्नेहास्ते मारुताद्रक्ष्याः—स्नेहास्ते मारुताद्रक्ष्या (ब.)  
.. विशेषयेत्—विशेषयेत् (ब.)

83. An unctuous purgative medicine should not be administered to one who has excessive unctuous quality in the body. To one possessed of excessive unctuous quality a non-unctuous purgative dose should be given.

વિધિપૂર્વકં સંશોધનં પ્રયોજ્યમ્ —

एवं ज्ञान्वा विधिं धीरा देशकालप्रमाणविद् ।

विरेचनं विरेचयेभ्यः प्रयच्छन्नापराधयति ॥८३॥

દેશ- દેશ દેશ કાલ- કાલ કાલ, પ્રમાણ-વિદ્ અને પ્રમાણને બાબતનાર અને પ્રમાણને જાનનેવાળા, ધીરઃ ધીર વૈદ્ય ધીર વૈદ્ય વચ્ચે આ બંધ છે. આ પ્રમાણે, વિધિમ વિધિ ભેદિ જ્ઞાત્વા બાબતને જાનકર, વિરેચયેભ્યઃ વિરેચન લાયક મનુષ્યને વિરેચનકે યોગ્ય પુરુષોનો, વિરેચનમ્ વિરેચન વિરેચન, પ્રયચ્છન્ આપતાં દેતા હોય, ન અપરાધયતિ બુદ્ધ કરતો નહીં કિંચિત્ પ્રકારની ભૂલ નહીં કરતા ॥ ૮૩ ॥

84. The wise physician who, being expert in proper procedure thus described, and versed in the knowledge of climate, season and dosage, administers purgation to patients in whom it is indicated, will not be liable to error.

विभ्रंशो विषवद्यस्य समग्रदोशे यथाऽस्मृतम् ।

कालेष्ववश्यं पेयं च तस्माद्यत्नात् प्रयोजयेत् ॥८४॥

સમ્પ્ર એનેા જિસ સંશોધનકા, વિભ્રંશઃ બૂદ્ધવાળો પ્રયોગ વિભ્રંશ વિશ્વવદ્ વિષ બરાબર છે વિષકે સમાન છે, સમગ્ર અને યોગ્ય તોર જિસકા સમ્યક્, યોગઃ પ્રયોગ યોગ, અમૃતમ્ અમૃત અમૃતકે, યથા પ્રદ્ય છે સમાન છે, કાલેષુ સમયે કાલમે, અવશ્યમ્ એ અવશ્ય જો અવશ્ય, પેયમ્ ચ પીવાતું છે પીના પદ્ધતિ છે, તસ્માદ્ તેનો વૈદ્ય તે માટે તેકા વૈદ્ય હવેા લિય, ચત્નાદ્ ચત્નપૂર્વકં યત્નપૂર્વક, પ્રયોજયેત્ પ્રયોગ કરેલો બેધની પ્રયોગ કરે ॥ ૮૪ ॥

85. The purificatory dose, if improperly administered, is like poison and if properly administered, is like nectar. It should necessarily be taken at the prescribed times. Hence it should be administered with skill and care.

अत्रोक्तमात्राविचारः —

द्रव्यप्रमाणं तु यदुक्तमस्मिन्-

मध्येषु तत् कोष्ठवयोबलेषु ।

तन्मूलमालम्ब्य भवेद्वિકल्प्य

तेषां विकल्पोऽभ्यधिकोनभावः ॥८५॥

અસ્મિન્ આમાં હવમે, યદ્ એ જો, દ્રવ્યપ્રમાણમ્ દ્રવ્યપ્રમાણ દ્રવ્યપ્રમાણ, તુ ઇત્થમ્ કહું છે કહા છે, તદ્ તે વહ, મધ્યેષુ મધ્ય મધ્ય, કોષ્ઠવયોબલેષુ કોષ્ઠ, વય અને બલવાળા માટે છે કોષ્ઠ, વય અને બલવાળાંકે લિય છે, તત્ મૂલમ્ તેનો મૂળ તરીકે હવકા મૂલરૂપમે, માલમ્બ્ય આશ્રય કરીને સ્વીકાર કરે, વિકલ્પમ્ ભવેત્ કલ્પનાનો ભેદ કરેલો કલ્પનાકા ભેદ કરતાં ચાહિય, તેષામ્ અને અનુસરી તેઓની હવકે અનુસાર ઝન્ટી ઔષધિયોમે, અભ્યધિક-ઝનભાવઃ અધિકતા કે ન્યૂનતાનો અધિક યા કમ પ્રમાણની, વિકલ્પ્યઃ નિઃકલ્પ કરેલો કલ્પનાકા ભેદ કરતાં ચાહિય ॥ ૮૫ ॥

86. The dosage of drugs given in this section is with reference to moderate-bowelled persons and of average age and strength. This should be regarded as the standard for pharmaceutical purposes and larger or smaller doses have to be prepared keeping that standard in view.

मानपरिमाणा—

षड् द्रव्यैस्तु मरिचिः स्यात् षण्मरीच्यस्तु सर्वपा ।

अष्टौ ते सर्वपा रक्ताक्तपुलश्चापि तद्वृक्ष्यम् ॥८६॥

૮૬ તન્મૂલમાલમ્બ્ય ભવેદ્વિકલ્પમ્—તન્મૂલમાલમ્બ્ય ભવેદ્વિકલ્પમ્ (૫.)

, ભવેદ્વિકલ્પમ્—ભવેદ્વિકલ્પમ્ (૫.)

धान्यमाषो भवेद्वेदो धान्यमाषद्वयं यवः ।  
अण्डिका ते तु चत्वारः सप्तत्यस्तु मातकः ॥८८॥  
हेमश्च धान्यकश्चोत्तमो भवेदुष्णस्तु ये त्रयः ।  
शाणौ द्वौ द्रक्ष्णौ विद्यान् कोलं वदरमेव च ॥८९॥  
विद्यात् द्वौ द्रक्ष्णौ कर्षे सुवर्णं चासमेत च ।  
विडालपदकं चैत पिचुं पाणितलं तथा ॥९०॥  
तिन्दुकं च विजानीयात् कवलप्रहमेव च ।  
द्वे सुवर्णं पलायं मातकुलिरपमिका तथा ॥९१॥  
द्वे पलायं पलं मुष्टिं त्रयोऽथ चतुर्थिका ।  
विव्वं पाण्डिका मातृ द्वे पले प्रसृतं विदुः ॥९२॥  
अष्टमाहं तु विज्ञेयं कुडवौ द्वौ तु मानिका ।  
पलं चतुर्गुणं विद्यान् अण्डिकां कुडवं तथा ॥९३॥  
चत्वारः कुडवाः प्रथमस्तु प्रथमपथाटकम् ।  
पात्रं तद्वै विज्ञेयं पलः प्रथमपथकं तथा ॥९४॥  
कंसभृत्तुर्गुणो द्रोणश्चासमेतं नववर्णं च तत् ।  
स एव कलशः ख्यातो घटमुन्मातमेव च ॥९५॥  
द्रोणस्तु द्विगुणः शूरो विज्ञेयः कम्भ एव च ।  
गोर्णी शूर्पद्वयं विद्यान् खारीं भारं तथैव च ॥९६॥  
द्वाविंशतं विजानीयाद्वाहं शूर्पाणि बुद्धिमान् ।  
तुलां शतपलं विद्यान् परिमाणविशारदः ॥९७॥  
शुष्कद्रव्येष्विदं मानमेवमादि प्रकीर्तितम् ।

षट् ध्वंज्यः तु ७ ध्वंशीनी लः ध्वंशीसे,  
मरीचिः ओ३ भरीचि एक मरीचि, स्वात् थाय छे  
होती है, षण्मरीच्यः तु ७ भरीचिने। लः मरीचिमे,  
सर्वपः ओ३ रक्त सर्पप थाय छे एक लाल सरसो  
होता है, ते अष्टौ ते आठ वे आठ, रक्ताः सर्वपः थाय  
सर्पपने। लाल सरसोमे, तण्डुलः ओ३ तण्डुल थाय छे  
एक तंडुल होता है, तद्द्वयः च अपि ओ३ तण्डुलने।  
दो तण्डुलोसे, एकः ओ३ एक, धान्यमाषः धान्यमाष

धान्यमाष, अवेत् थाय छे होता है, धान्यमाष-  
द्वयम् ओ३ धान्यमाषने दो धान्यमाषोमे यवः ओ३  
यव थाय छे एक यव होता है, चत्वारः ते तु  
चार अर्धनी चार यवसे, अण्डिका ओ३ अण्डिका  
थाय छे एक अण्डिका होती है, चत्वारः ताः तु ४  
अण्डिकाने। चार अण्डिकने, मातकः ओ३ मातक थाय  
छे एक मातक होता है, हेमः च ओ३ हेम इसे हेम,  
धान्यकः च ओ३ धान्यक और धान्यक, उष्णः ध्वो  
छे कहते हैं, ते त्रयः तु त्रय मातके, तीन मपी,  
शाणः अवेत् ओ३ शाण थाय छे एक शाण होता है,  
द्वौ शाणौ ओ३ शाणुं दो शाणमे द्रक्ष्णः ओ३ द्रक्ष्ण  
थाय छे एक द्रक्ष्ण होता है, कोलम् ओ३ कोल इसे  
कोल, वदरम् च एव ओ३ वदर और वदर, विद्यान्  
अक्षुर्वा कहते हैं, द्वौ द्रक्ष्णौ ओ३ द्रक्ष्णुने। दो द्रक्ष्णमे,  
कर्षम् ओ३ कर्ष थाय छे एक कर्ष होता है सुवर्णम् च  
ओ३ सुवर्ण इसे सुवर्ण अक्षम् च एव अक्ष यक्ष,  
विडालपदकम् च एव अण्डिकाः विडालपदक, पिचुम्  
पिचु तथा पाणितलम् पणितल पाणित, विद्यान्  
अक्षुर्वा कहते हैं, तिन्दुकम् च तेमन् ओ३ तिन्दु  
एवं इसे तिन्दुक, कवलप्रहम् च तथा कवलप्रह तथा  
कवलप्रह मी विजानीयात् अक्षुर्वा कहते हैं, द्वे सुवर्णे  
ओ३ सुवर्णनां दो सुवर्णसे, पलायं अक्षुर्वा पल आवा  
पल, शुक्तिः शुक्ति शुक्ति तथा अष्टमिका तथा अष्ट-  
मिका तथा अष्टमिका, स्वार माय छे होते हैं, द्वे पलाये  
ओ३ पलायनां दो पलायसे पलम् मुष्टिः ओ३ पल, मुष्टि  
एक पल, मुष्टि, प्रकृजः प्रकृत्य प्रकुंज, अथ चतुर्थिका  
चतुर्थिका चतुर्थिका, विव्वं अक्षुर्वा विव्व, पाण्डिका  
पाण्डिका पाण्डिका, मातृ च ओ३ मातृ थाय छे  
और मातृ होते हैं, द्वे पले ओ३ पलुं दो पलमे प्रसृतम्  
ओ३ प्रसृत एक प्रसृत, विदुः अक्षुर्वा जानना चाहिए,  
अष्टमानम् तु ओ३ अष्टमान पातु और इसे  
अष्टमान मी, विज्ञेयम् अक्षुर्वा जानना चाहिए, चतु-  
र्गुणम् चार चार, पलम् पलनी पलसे, अक्षलिम् ओ३  
अक्षलि एक अक्षलि, तथा ओ३ एवं, कुडवं कुडव  
कुडव, विद्यान् थाय छे जानना चाहिए, द्वौ कुडवौ तु  
ओ३ कुडवनी दो कुडवसे, मानिका ओ३ मानिका थाय छे एक  
मानिका होती है, चत्वारः चार चार, कुडवाः कुडवने।

८८. मातकः—मातकाः (ज)

९०. चैत—तच्च (क.)

९१. तिन्दुकं च विजानीयात् कवलप्रहमेव च स एव तिन्दुको  
हेमः स एव कवलप्रहः (ग. ब.)

९२. पाण्डिका—पाण्डिका (क. ब.)

९५. नववर्ण—नववर्ण (ग.)

९६. द्रोणस्तु—घटस्तु (क. ब. ल.)

कुक्कुटे, प्रस्थः औंष्ट्र प्रस्थं यायुः छे एक प्रस्थ होता है, अथ चतुःप्रस्थम् याः २२ प्रस्थाने। चार प्रस्थसे, आढकश्च औंष्ट्र आढक यायु छे एक आढक होता है, तत् एव तेने ४ इसीको, पात्रम् पात्रं पात्रं, विज्ञेयम् अक्षुषु औंष्ट्र औंष्ट्र कहते हैं, तथा प्रस्थाष्टकम् आः २२ प्रस्थाने। आठ प्रस्थसे, कंसः औंष्ट्र कंसं यायु छे एक कंस होता है चतुर्गुणः याः २२ चार, कंसः कंसाने। कंससे, द्रोणः च औंष्ट्र द्रोणु यायु छे एक द्रोण होता है, तत् तेने इहे अर्धमात्रम् अर्धमात्रं अर्धमात्रं, नल्वणम् च तथा नल्वणु कहे छे तथा नल्वण कहते हैं, सः एव ते ४ वही, कलशः 'कुलश' औंष्ट्र नामथी 'कलश' यह नामसे, ख्यातः प्रसिद्ध छे प्रसिद्ध है, घटम् अने तेने ४ घट और उसीको घट, उन्मानम् च एव तथा उन्मान कहे छे तथा उन्मान कहते हैं, द्विगुणः औंष्ट्र दो, द्रोणः तु द्रोणाने। द्रोणसे, शूर्पः औंष्ट्र शूर्पं एक शूर्प, कुम्भः च एव अने औंष्ट्र कुम्भ और एक कुम्भ, विज्ञेयः अक्षुषु कहते हैं, शूर्पद्वयम् औंष्ट्र शूर्पानी दो शूर्पसे, गोणीम् औंष्ट्र गोणी एक गोणी, खारीम् औंष्ट्र खारी खारी, तथा एव औंष्ट्र और, मारम् च औंष्ट्र मार एक मार, विद्यात् अक्षुषु कहते हैं, बुद्धिमान् बुद्धिमान् भाक्षुसे बुद्धिमानको, द्वात्रिंशत्तम् अनीस बत्तीस, शूर्पाणि शूर्पाने। शूर्पसे, वाहम् १६ एक वाह, विजानीयात् अक्षुषु जानना चाहिए, परिमाण- परिमाणम् परिमाणको, विहारदः निपुणं भनुष्ये जाननेवाला मनुष्य, शतपलम् सौ पलानी एकसौ पलसे, तुलाम् तुला एक तुला, विद्यात् अक्षुषु जाने, शुक्कद्रव्येषु शुष्क द्रव्योंमें, एवम् आदि आः २२ भाक्षु इस तरह, इदम् आः यह मानम् भाष्य परिमाण, प्रकीर्तितम् कहेवाला आयु छे कहा गया है ॥ ८७-९७ ॥

87-97½. Six particles (Dhvamsis) make a Marichi and six Marichis make a Rape-seed (Sarshapa). Eight such red Rape-seeds make a Rice-grain (Tandula), two rice grains make a Black gram grain (Dhanya Masha), two Black grams make a Barley (Yava). Four of them make

an Andika, four of these again make a Mashaka. It is also known as Hema and Dhanyaka. Three of such Mashakas make a Sana. Two Sanas make a Drankshana which is known also as a Kola or Badara (jajube) or half a tola. Two Drankshanas make one Karsha or Suvarna or Aksha or Bidalapadaka, Pichu or Panitala or Tinduka or Kavalagraha. Two Suvarnas make half a Pala or Sukti or Ashtamika. Two half Palas make one Pala or Mushti (fistful) or Prakuncha or Chaturthika or Bilwa or Shodasika or Amra; two Palas make a Prasrita which is also known as Ashtamana. Four Palas are known as an Anjali or Kudava. Four Kudavas make a Prastha and four Prasthas make an Adhaka which is also known as Patra. Eight Prasthas make a Kansa. Four Kansas make a Drona or Charnana or Nalvana. It is also known as Kalasa, Ghata or Unmana. Two Dronas make a Surpa or Kumbha. Two Surpas make a Goni known as Khari or Bhara. Thirty-two Surpas should be known as making a Vaha and a hundred Palas make one Tula. This is the table of measures that an expert pharmacist should be versed in. These and such other measures described are with reference to dried articles of medicine.

द्रव्याणां सद्य उद्धृतानां द्रवाणां च दिगुणं मानं प्राच्यम्—  
दिगुणं तद् द्रव्येष्वाष्टं तथा सद्योद्धृतेषु च ॥९८॥

યદ્દિમાનં તુલા પ્રોક્તા પલં વા તત્ પ્રયોજયેત્ ।  
અનુકે પરિમાણે તુ તુલ્યં માનં પ્રકીર્તિતમ્ ॥૧૯॥

દ્રવેષુ ૬૫ પદાર્થોભાં દ્રવ, તથા અને એવં, સ્થોદૃતેષુ ચ તરતનાં ઉમેડેલાં ૬૦૫ોભાં તુરન્ત તજાડે હુણ દ્રવ્યોર્મે, તત્ દ્વિગુણમ્ તે માપ અમણ્ હસસે યુગ્તા પ્રમાણ, હૃદમ્ લેવું બેઈએ લેનાં વાહિણ, ચત્ હિ ને જો, માનમ્ પરિમાણુ પરિમાણ, પલમ્ પલ પલ, તુલા વા અથવા તુલા અથવા તુલા, પ્રોક્તા તત્ કહું હોય તે જ કહી હો વહી, પ્રયોજયેત્ પ્રયોજવું લેનાં વાહિણ, પરિમાણે અને જ્યાં પરિમાણુ ઓર જહાંપર પરિમાણ, અનુકે તુ કહું ન હોય ત્યાં ન કહા હો વહાંપર, તુલ્યમ્ તુલ્ય સમાન, માનમ્ માન પરિમાણ, પ્રકીર્તિતમ્ અણુતું બેઈએ જાનનાં વાહિણ ॥ ૧૮-૧૯ ॥

98-99. Double the measure is meant when mentioned with reference to fluids and freshly culled herbs. But where the measure is described in terms of a Tula or a Pala, the measure should be literally understood. Where the relative measures of things are not specified, an equal measure is implied.

સ્નેહપાકપરિમાણ—

દ્રવકાર્યેઽપિ ચાનુકે સર્વત્ર સલિલં સ્મૃતમ્ ।  
યતઃ પાદનિર્દેશશ્ચતુર્ભાગસ્તતઃ સઃ ॥૧૦૦॥

દ્રવકાર્યે અપિ જ્યાં દ્રવનાં કાર્યમાં દ્રવકે કાર્યર્મે, અનુકે ૬૫૬૦મ કહું ન હોય ત્યાં જહાં દ્રવદબ્ધ કહા ન હો વહાં, સર્વત્ર સર્વ સ્થાને સર્વત્ર, સલિલમ્ પાણી જલ, સ્મૃતમ્ સમજવું સમજનાં વાહિણ, યતઃ ચ અને જ્યાં ઓર જહાંપર, પાદનિર્દેશઃ પાદને નિર્દેશ કર્યો હોય પાદના નિર્દેશ ક્રિયા હો, તતઃ ચ ત્યાં વહાંપર, સઃ તેને

૧૯. યદ્દિ માનં તુલા પ્રોક્તા પલં વા તત્ પ્રયોજયેત્-તત્ માનં તુલા કાર્ય તત્રેવં સંપ્રકલ્પયેત્ (દ. જ.)

૧૦૦. યતઃ પાદનિર્દેશશ્ચ-તત્રેવં સંપ્રયોજયેત્ (જ.)

૧૦૦. દ્રવકાર્યેઽપિ-દ્રવકાર્યે તુ (જ.)

૧૦૦. દ્રવકાર્યેઽપિ ચાનુકે-દ્રવકાર્યે તુ ચાનુકે (દ.)

વસકા, ચતુર્ભાગઃ ચતુર્ભાગ સમજવો ચતુર્ભાગ જાનનાં વાહિણ ॥ ૧૦૦ ॥

100. In making fluid preparations, where the liquid is not specified, water is implied in all such preparations. Where a quarter is mentioned, it should be known as one fourth part with reference to the main drug.

જલસ્નેહૌષધાનાં તુ પ્રમાણં યત્ર નેરિતમ્ ।  
તત્ર સ્યાદૌષધાત્ સ્નેહઃ સ્નેહાતોયં ચતુર્ગુણમ્ ॥૧૦૧॥

યત્ર તુ જ્યાં જહાં, જલ-સ્નેહ-જલ, સ્નેહ જલ, સ્નેહ, ઔષધાનાત્ અને ઔષધતું ઔષધવિયોક્તા, પ્રમાણમ્ પ્રમાણ પરિમાણ, ન નેરિતમ્ કહું ન હોય નહીં કહા હો, તત્ર ત્યાં વહાં, ઔષધાત્ ઔષધથી ઔષધસે સ્નેહઃ ચતુર્ગુણ ૨૨૬ ચૌગુના સ્નેહ, સ્નેહાત્ અને સ્નેહથી ઔષધસે, ચતુર્ગુણમ્ ચતુર્ગુણ ચૌગુના, તોયમ્ પાણી જલ, સ્નાત્ લેવું બેઈએ લેનાં વાહિણ ॥ ૧૦૧ ॥

101. In the making of unctuous preparations, where the measures of water, unctuous article and drug are not specified, the unctuous article is implied to be four times the drug and water four times the unctuous article.

સ્નેહપાકસ્ત્રિધા દ્વેયો મૃદુર્મધ્યઃ સ્વરસ્તથા ।  
તુલ્યે કલ્કેન નિર્યાસે મેષજાનાં મૃદુઃ સ્મૃતઃ ॥૧૦૨॥  
સંઘાવ ઇત્થ નિર્યાસે મધ્યો દર્ધી વિમુઞ્ચતિ ।  
શીર્યમાણે તુ નિર્યાસે વર્તમાને સ્વરસ્તથા ॥૧૦૩॥

સ્નેહપાકઃ સ્નેહપાક સ્નેહપાક, ત્રિધા ત્રણ પદાર્થો ત્રિધ પ્રકારના, દ્વેયઃ બેય બેય જાનનાં વાહિણ, મૃદુઃ મૃદુ, મધ્યઃ મધ્ય મધ્ય, તથા સ્વરઃ અને સ્વર ઔષધ, મેષજાનાત્ ઔષધીને ઔષધવિયોક્તા, નિર્યાસે જ્યાં

૧૦૨. મેરિતમ્-નેરિતમ્ (જ.)

૧૦૩. સંઘાવ-સંઘાવ (જ. દ. જ.)

૧૦૩. વર્તમાને-વર્તમાને (જ. જ.)

निर्यास जिसमें निर्यास, कल्केन उद्धृता कल्के, तुल्ये  
 जेवो भाय समान हो जाये मृदुः तेने मृदुपाक उसको  
 मृदुपाक, स्मृतः अलुने। जानना चाहिए, निर्यासे जेभा  
 निर्यास जिसमें निर्यास, संयावे इव संयाव जेवो  
 संयावके समान हो जाये, दुर्दीम् तथा कडलीके और कडलीके  
 साथ, विमुञ्चति छोड़ी दे जेवो भाय न चिपटे ऐसा हो  
 जाये, मध्यः तेने मध्यपाक अलुने। उसे मध्यपाक जानना  
 चाहिए, तथा और, निर्यासे जेभा निर्यास जिसमें  
 निर्यास, वर्तमाने आंगणीभी वाट करता अंगुलियोंसे बर्नि  
 बनाने पर, शीर्षभागे छूटे पड़ी अथ जेवो मध्य टुकड़े  
 टुकड़े हो जाये, खर जेने अरपाक अलुने। उसको  
 खरपाक जानना चाहिए ॥ १०२-१०३ ॥

102- 03. Unctuous preparations are,  
 it should be known, of three kinds:  
 soft, medium and hard. When the  
 solution of the drugs acquires the  
 consistency of the paste added to it, it  
 is known as a 'soft preparation'. When  
 the solution acquires the consistency  
 of a jelly and can be poured out  
 easily with the ladle, it is considered  
 'medium preparation'. When the  
 solution becomes so thickened that it  
 snaps, and can be rolled between the  
 fingers, it is called 'hard preparation'.

खरोऽभ्यङ्गे स्मृतः पाको, मृदुर्नस्तः क्रियासु च ।  
 मध्यपाकं तु पानार्थं बस्तौ च विनियोजयेत् ॥१०४॥

अभ्यङ्गे अभ्यङ्गभा अभ्यङ्गमें, खरः पाकः अरपाक  
 खरपाक, नस्तः क्रियासु तथा नस्तकर्मभा तथा नस्त  
 कर्ममें, मृदुः च मृदुपाक मृदुपाक, स्मृतः उल्लो छे कहा  
 है, पानार्थं तेभ्य पीना भाटे एवं पिठानेके लिए,  
 बस्तौ च तथा अस्तिभा और बस्तिमें, मध्यपाकम् तु  
 मध्यपाकने मध्यपाकका, विनियोजयेत् येजवे। प्रयोग  
 करे ॥ १०४ ॥

१०४. खरोऽभ्यङ्गे-मृदुर्नस्ते (छ.)

104. It should be known that the  
 hard preparation should be used for  
 inunction, the soft one for nasal medi-  
 cation and the medium preparation  
 should be used as potion and in the  
 preparation of enemata.

मानस द्वैविध्यम्—

मानं च द्विविधं प्राहुः कालिङ्गं मागधं तथा ।  
 कालिङ्गान्मागधं श्रेष्ठमेवं मानविदो विदुः ॥१०५॥

मानम् च परिभाष्य मान, कालिङ्गं डाक्षिण्य  
 कालिङ्ग, तथा अने और, मागधम् मागध मागध,  
 द्विविधम् ये ये प्रकारम् इन दो प्रकारका, प्राहुः उल्लो  
 छे कहा है कालिङ्गात् पशु डाक्षिण्य करता किन्तु कालिङ्ग  
 मानसे, मागधम् मागध मागध, श्रेष्ठम् श्रेष्ठ छे श्रेष्ठ  
 है, एवम् जेभ इस प्रकार मानविदः परिभाष्य  
 अलुने। मानको जाननेवाके विदुः माने छे मानते  
 हैं ॥ १०५ ॥

105. The standard of measurement  
 is said to be of two kinds viz., Kalinga  
 and Magadha Mensural experts regard  
 the Magadha standard to be superior  
 to the Kalinga.

कल्पस्थानोक्तार्थसंग्रहः—

तत्र श्लोकौ—

कल्पार्थः शोधने संज्ञा पृथग्हेतुः प्रवर्तने ।  
 देशादीनां फलादीनां गुणा योगशतानि षट् ॥१०६॥  
 विकल्पहेतुर्नामानि तीक्ष्णमध्याल्पलक्षणम् ।  
 विधिश्चावस्थिको मानं जेहपाकश्च दर्शितः ॥१०७॥

तत्र श्लोकौ ते विषयभा उपसंहारना ये श्लोका  
 छे छे उस विषयमें उपसंहारके दो श्लोक हैं कि,

१०६. मानम् पानम् (ख.)

१०६. हेतुः प्रवर्तने-आतुप्रवर्तनम् (ग.)

पृथग्हेतुः प्रवर्तने-पृथग्हेतु प्रवर्तनम् (ग.)

योगशतानि-योगाः शतानि (घ.)

दर्शितः-दर्शितम् (ङ.)

कल्पार्थः उपपन्नः। विषय कल्पका विषय, बोधने शोधने-नी शोधनोक्ती, मंज्रा सञ्ज्ञा संज्ञा, प्रवर्तने तेजो-नी प्रवृत्तिर्भा। इनके प्रवर्तनमें, पृथक् हेतुः शुद्ध शुद्ध हेतु पृथक् कारण, देशादीनाम् देश वजरेना शुद्ध देश आदिके गुण, कलादीनाम् भी-दण वजरेना सैनफलादिके, गुणाः शुद्ध गुण, षट् योगशतानि असेः योगे छः सौ योग। विकल्प-हेतुः विकल्पने। हेतु विकल्पका कारण, नामाजि नाम नाम, तीक्ष्ण-तीक्ष्ण तीक्ष्ण, मध्य-मध्य मध्य, अल्प-अल्प अल्प शोधनना और अल्प शोधनके, लक्षण-लक्षण लक्षण, आवस्थिकः आवस्थिक अवस्थाके अनुसार, विधिः विधि विधि, मानम् परिभाष्य मान, स्नेहपाकः च अल्प स्नेहपाक और स्नेहपाक, दक्षितः अतः अतः छे वतला दिया है ॥ १०६-१०७ ॥

Here are the two recapitulatory verses—

106-107. The purpose of Pharmaceutics; the definition of the purificatory procedures; different aims in the use of each procedure; the qualities of clime etc., the qualities of emetic nut etc. and six hundred preparations; the purpose and the names of preparations and the characteristics of the strong, moderate and the mild types of preparations; the procedure with reference to the stage of disease, the

table of measures and the method of preparation of unctuous articles—all this has been described herein.

इत्यग्निवेशकृते तन्त्रे चरकप्रतिसंस्कृतेऽप्याप्त दृढबलसंपूरितं कल्पस्थाने दन्तीद्रवन्तीकल्पो नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

इति आ प्रभाष्ये इस प्रकार अग्निवेशकृते अग्नि-वेशे २२व्या अग्निवेशसे बनाये, चरकप्रतिसंस्कृते तन्त्रे अने अरुंधती प्रतिसंस्कार पायेला आ शाश्वत और चरकके द्वारा संस्कृत इस शास्त्रके, अग्रासे अग्राप्त अप्राप्त, दृढबलसंपूरिते अने दृढबले पूरा करेला और दृढबलसे पूरित किये गये, कल्पस्थाने उपपन्नान निधे कल्पस्थानमें, दन्तीद्रवन्तीकल्पः 'दन्तीद्रवन्तीकल्प' 'दन्तीद्रवन्तीकल्प', नाम नामने नामका, द्वादशः आरसे बारहवौ, अध्यायः अध्याय संपूर्ण अथे अध्याय समाप्त हुआ ॥ १२ ॥

12. Thus, in the Section on Pharmaceutics, in the treatise compiled by Agnivesa and revised by Caraka, the twelfth chapter entitled 'The Pharmaceutics of the Red Physic Nut and the Physic Nut' not being available, the same as restored by Dridhabala, is completed.

कल्पस्थानं समाप्तम् ।



# श्रीः चरकसंहिता सिद्धिस्थानम्

श्री  
चरकसंहिता  
सिद्धिस्थान

श्री  
चरकसंहिता  
सिद्धिस्थान

The  
Carakasamhita  
SIDDHISTHANA  
( The Section on  
Success in Treatment )

प्रथमोऽध्यायः ।

पहेले। अध्याय अध्याय पहला  
Chapter I

कल्पनासिद्धयुपक्रमः—

अथातः कल्पनासिद्धिं व्याख्यास्यामः ॥ १ ॥

इति ह स्माह भगवानात्रेयः ॥ २ ॥

अथ अतः हुवे अह्मी श्री अब आगे, कल्पना-  
सिद्धिम् 'कल्पनासिद्धि' नामना अध्यायम् 'कल्पना-  
सिद्धि' नामके अध्यायका, व्याख्यास्यामः व्याख्यान करेगु  
व्याख्यान करेंगे ॥ १ ॥

भगवान् भगवान् भगवान्, आत्रेयः आत्रेये  
आत्रेयेने, इति ह आ विषयम् नीचे प्रमाणे अ इस  
विषयमें निम्न प्रकारसे ही, जाह से उहेलुं छे कहा है ॥ २ ॥

1. We shall now expound the  
chapter entitled 'The Successful  
Application of various therapeutic  
measures'.

2. Thus declared the worshipful  
Atreya.

पञ्चकर्मकल्पनाविषयेऽप्रवेशस्य कतिपये प्रश्नाः—

का कल्पना पञ्चसु कर्मसूका,  
क्रमश्च कः, किं च कृताकृतेषु ।  
लिङ्गं तथैवातिकृतेषु, संख्या  
का, किंशुणः, केषु च कश्च बस्तिः ॥ ३ ॥  
किं वर्जनीयं प्रतिकर्मकाले,  
कृते कियान् वा परिहारकालः ।  
प्रणीयमानश्च न याति केन,  
केनैति शीघ्रं, सुचिराश्च बस्तिः ॥ ४ ॥  
साध्या गदाः स्रैः शमनेश्च केचित्  
कस्मात् प्रयुक्तैर्न शमं व्रजन्ति ।  
प्रचोदितः शिष्यवरेण सम्य-  
गित्यग्निवेशेन भिषग्वरिष्ठः ॥ ५ ॥

३. संख्या—संज्ञा (ख.)

४. परिहारकालः—परिहारकालः (ब.)

याति केन—याति बस्तिः (क. घ. फ.)

बस्तिः—केन (घ.)

५. साध्या गदाः.....भिषग्वरिष्ठः—

साध्या गदाश्च शमनेश्च केचित्

कस्माद्गदा न प्रशमं व्रजन्ति ।

इत्यग्निवेशो भिषगां परिष्ठं

पप्रच्छ तस्मै स च सर्वमाह ॥ (घ. फ.)

પુનર્વસુસ્તમ્પ્રવિદાહ તસ્મે

સર્વપ્રજાનાં હિતકામ્યયેદમ્ ॥

પચ્ચસુ કર્મસુ પંચકર્મભાં પચ્ચકર્મોત્તે, કા કલ્પના સી કલ્પના કલ્પના કયા, કલ્પા કહી છે? કહી છે?, કમ: ચ એનો કમ કમ, ક: શો છે કયા છે?, કૃત્વાકૃતેષુ એનાં કૃત-અકૃત કૃત-અકૃત, તથા એવ અને ઔર, અવિકૃતેષુ અતિકૃતનાં અતિકૃતકે, લિક્કમ્ ચ લક્ષણે લક્ષણ, કિન્ ચ શાં છે? કયા છે?, સંસ્થા કા સંસ્થા સી છે? સંસ્થા કયા છે?, કેષુ ચ કયા રોગીઓનાં કિન્મે, કિન્ગુણ: કયા ગુણવાળી કિન્ ગુણોવાળી, ક: ચ વક્તિ: અને કઈ યસ્તિ પ્રયોગ્ય છે? ઔર કૌનસી વસ્તિ દેની વાદિયે?, વ્તિકર્મકાલે દરેક કર્મને સમયે પ્રત્યેક કર્મને કાલમે, કિન્ વર્જનીયમ્ શું તજવા યોગ્ય છે કયા ત્યાગ્ય છે?, કૃતે પંચકર્મ કયાં પછી પચ્ચ કર્મ કરનેકે વાદ, પરિહારકાલ: પરહેજનો કાલ પરહેજકા સમય, કિયાન્ વા કેટલો છે? કિતના છે?, પ્રણીવમાન: પ્રયોગ્ય સી જાતી, વક્તિ: ચ યસ્તિ વસ્તિ, કેન ન વાતિ કયા કારણથી અંદર જતી નથી? કિન્ કારણસે અંદર નહીં જાતી?, કેન શીઘ્રમ્ કયે કારણે જલદી કિન્ કારણસે શીઘ્ર, વ્તિ પાછી આવે છે? વાપસ આ જાતી છે?, સુચિરાત્ ચ અને કયે કારણે લાંબી કાળે પાછી આવે છે? ઔર કિન્ કારણસે દેરમે વાપસ જાતી છે?, કેચિત્ કેટલોક કહે, સાધ્યા: સાધ્ય સાધ્ય, ગદ્યા: ચ રોગો રોગ, પ્રયુક્તે: પ્રયોગ્યેનાં પ્રયુક્ત કિન્ ગયે, સ્વે: જગમૈ: યોતયોતાનાં જામનેદારાં અપને અપને જામનેસે, કયાત્ શા કારણે, કિન્ કારણસે, જામમ્ ન જામનિત્ શાન્ત થતા નથી? જાન્ત નહીં હોતે?, ક્ષિતિ આ પ્રમાણે આ પ્રકાર, ક્ષિત્ત્વચરેણ શ્રેષ્ઠ સિધ્ધિ શ્રેષ્ઠ સિધ્ધિ, અભિવેદોન અભિવેદશથી અભિવેદશદ્વારા, સમ્યક્ શાદી રીતે મળી પ્રકાર, પ્રચોદિત: પ્રેરાયેલા પૂછે જાને પર, અભિવેદરિઠ: વેદોનાં શ્રેષ્ઠ વેદોમે શ્રેષ્ઠ, તન્નવિદ શાસ્ત્ર તત્ત્વવિદ, પુનર્વસુ: પુનર્વસુએ પુનર્વસુને, સર્વ પ્રજાનામ્ સર્વ પ્રજાના સર્વ પ્રજાઓને, હિતકામ્યવા હિતની કામનાથી હિતકામ્યવાસે, તથા તેને તથા, હદમ્ આ વદ, વાદ કહી કહા ॥ ૧-૫૩ ॥

3-5. What is the method laid down in the five purificatory proce-

dures? What is the order in which they are to be performed? What are the signs of successful and unsuccessful administration of the purificatory procedures, as also of over-administration? What is the number of enemata to be given? What is the therapeutic value of enema? What kind of enema should be given in which condition? What is to be avoided during the period of treatment; what is the period of interval to be observed between the administration of various purificatory procedures? What are the causes preventing the successful operation of an enema? What makes for the immediate return of the enema fluid? What again causes its delayed return? Why is it that some diseases, although curable, are not allayed in spite of being treated by appropriate measures? Thus questioned fully by the foremost of his pupils - Agnivesa, Punarvasu, the foremost of physicians and highly learned in the Science, moved by the desire of promoting the welfare of the whole of humanity, answered and said to him thus.

સ્તેહકર્મણ: કાલાવધિ: —

જ્યહાવરં સપ્તદિનં પરં તુ

ક્ષિન્ધો વર: સ્વેદવિતપ્ય વત્ક: ॥ ૬ ॥

નાભ: પરં લેહનમાદિસન્તિ

સાત્મ્યમિવેત્ સપ્તદિનાત્ પરં તુ ।

જ્યહાવરં એજનાં એજના તથા દિવસ કાલે કાલ લેવ દિવ, સપ્તદિન પરં અને વધુમાં વધુ સાત

૧. વત્ક:-વર: (૫)

દિવસ સુધી અધિકસે અધિક સાત દિન, સ્નિગ્ધઃ સ્નેહન કરાવેલ સ્નેહન કરકે, નરઃ તુ પુરુષને પુરુષકો, સ્વેદ-યિતગ્ધઃ સ્નેહનયોગ્ય કક્ષો છે સ્વેદનયોગ્ય કહા છે, જતઃ પરમ્ એથી વધારે વખત સસે અધિક સમય, સ્નેહસ્ત્વ સ્નેહન કરવાતું સ્નેહન, ન આદિશન્તિ શાસ્ત્રકારો કહેતા નથી દેનેકે લિષ્ટ નહીં કરતે. સસદિનાત્ પરમ્ તુ કરાવકે સાત દિવસ પછી તેા ક્યોંકિ સાત દિનકે પીછે તેા, સાત્મ્યીમવેત્ તે સ્નેહન સાત્મ્ય ધર્મ અથ છે વહ સ્નેહન સાત્મ્ય હો જાતા છે ॥ ૬૨ ॥

6-6½. It is prescribed that the person should be subjected to sudation therapy after he has undergone oleation therapy for a minimum period of three days or a maximum period of seven days. Oleation therapy for longer than this period is not recommended, as the patient then gets habituated to it.

સ્નેહસ્વેદયોગુણાઃ —

એહોઽનિલં હન્તિ મૃદૂકરોતિ  
દેહં મલાનાં વિનિહન્તિ સક્લમ્ ॥૭॥  
સ્નિગ્ધસ્ય સુક્ષ્મેશ્વયનેષુ લીનં  
સ્વેદસ્તુ લોષં નયતિ દ્રવસ્વમ્ ।

એહઃ સ્નેહન સ્નેહન, અનિલમ્ વાયુનેા વાયુકા, હન્તિ નાશ કરે છે નાશ કરતા છે, દેહમ્ દેહને શરીરકો, મૃદૂકરોતિ મૃદુ બનાવે છે કોમલ કરતા છે, મલાનામ્ અને મળના ઓર મલોંકી, સક્લમ્ વિઝ-ધને રુકાવટકો, વિનિહન્તિ હણે છે તોડતા છે, સ્નિગ્ધસ્ય સિનગ્ધ મતુધ્યના સિનગ્ધ પુરુષકે, સુક્ષ્મેષુ સુક્ષ્મ સુક્ષ્મ, અશ્વનેષુ મોતેભાં માર્ગોંમેં, લીનમ્ લોષમ્ અરાધિરહેલ ડોષને લીન લોષકો, સ્વેદઃ તુ સ્વેદન સ્વેદન, દ્રવસ્વમ્ પીમળાવી રવ, નયતિ નાણે છે વના દેતા છે ॥ ૭૩ ॥

7-7½. Oleation cures the morbidity of vata, makes the body soft and disintegrates the accumulation of morbid matter, while sudation liquefies

the morbid matter which is stuck up in the minute channels of the body of the person who has undergone oleation therapy.

વમનવિરેચને ચ દોષોત્ક્રેશનવિધિઃ —

પ્રામ્યૌદકાનૂપરસૈઃ સમાસૈ-

રુક્કેશનીયઃ પયસા ચ વમ્યઃ ॥૮॥

રસૈસ્તથા જાઙ્ગલજૈઃ સયૂષૈઃ

સ્નિગ્ધૈઃ કફાવૃદ્ધિકરૈર્વિરેચ્યઃ ।

વમ્યઃ વમનયોગ્ય પુરુષને વમનયોગ્ય પુરુષકો, સમાસૈઃ માંસસહિત માંસોંસે યુક્ત, પ્રામ્ય-ઔદક- પ્રામ્ય-ઔદક- પ્રામ્ય-ઔદક, આનૂપ- અને આનૂપ ઓર આનૂપ, રસૈઃ માંસરસોંથી માંસરસોંસે, પયસા ચ તથા દૂધથી ઓર દૂધસે, રુક્કેશનીયઃ ઉત્તિલપ્ટ કરવો બેઈ એ વમનોત્પુલ્લ કરના જાહિષ, તથા તે જ પ્રમાણે હસી પ્રકાર, વિરેચ્યઃ નિરેચનયોગ્ય પુરુષને જિસે વિરેચન દેના હો ડસે, સયૂષૈઃ ધૂપસહિત યૂષોંસે, સ્નિગ્ધૈઃ સિનગ્ધ સિનગ્ધ, કફા-વૃદ્ધિકરૈઃ અને કક્ષી ધક્કિ ન કરનાર કફકો ન વડાનેવાલે, જાઙ્ગલજૈઃ અંગલ જાંગલ, રસૈઃ માંસરસોંથી ભોભન કરાવતું બેઈ એ માંસરસોંસે મોજન કરાના જાહિષ ॥૮૨॥

8-8½. The person who is to be subjected to emesis should have his kapha in the stomach roused up by a diet of milk mixed with meat-juice and the flesh of domestic, aquatic and wet-land animals. The person who is to be administered purgation should be given the meat-juice of jangala animals, soups mixed with unctuous articles and articles non-promotive of kapha.

વમનવિરેચનયોઃ પ્રતિલોભગમને હેતુઃ —

સ્તેષ્મોત્તરશ્ચર્દયતિ શ્વાદુઃશ્ચ

વિરિચ્યતે મન્દકફસ્તુ સમ્યક્ ॥૯॥

૮. સમાસૈઃ—વમાષૈઃ (વ.)

૯. સિનગ્ધૈઃ—સિનગ્ધઃ (વ.)

૧૦. શ્વાદુઃશ્ચ—શ્વાદુઃ (વ.)

अथः कफेऽस्ये वमनं विरेचये-

द्विरेचनं वृद्धकफे तथोर्ध्वम् ।

स्नेहोत्तरः हि कफेऽस्ये अधिकतावागो पुरुष  
कफो कफो प्रवृत्तावाला, अदुःखम् मुक्तेऽपि वमनं  
वृद्धसे, छईयति वमनं अरे अरे वमनं कफता है मन्दकफ  
तु अने भेद कफवाग ने और यों कफवागको, मम्वक  
सारी रीति मजी प्रकार, विरेचने विरेचन थाय छे  
विरेचन होता है, कफे मम्वे कफ अक्षय होय तो।  
कफे थोड़ा होनेपर, वमनम् वमन औषध वमन  
औषध, अथः नीचे अर्ध विरेचन करावे छे नीचे  
जाकर विरेचन कराती है, वृद्धकफे अने कफ अधिक होय  
तो। कफे अधिक होनेपर, विरेचनम् विरेचन औषध  
विरेचन औषध, ऊर्ध्वम् उपर अर्ध करको जाकर,  
विरेचयेत् वमन करावे छे वमन कराती है ॥ १३ ॥

9-9½ The person in whom the  
kapha is in excess vomits easily and  
the person in whom it is low purges  
well. If the kapha is meagre the  
emetic drug acts as a purgative while  
in a condition of excess of kapha, the  
purgative drug acts as an emetic.

वमनविरेचनयोः कर्तव्यः क्रमः —

स्निग्धाय देयं वमनं यथोक्तं

बान्तस्य पेयादिरनुक्रमश्च ॥१०॥

स्निग्धस्य सुखिन्नतनोर्यथाव-

द्विरेचनं याग्यतमं प्रयोज्यम् ।

१३. विरेचयेत्-गच्छेत् (क. क.)

" , -हि बालि (ज.)

" , -विगच्छेत् (झ. ब.)

१०. स्निग्धाय देयं वमनं यथोक्तं बान्तस्य पेयादिरनुक्रमश्च ।

स्निग्ध-स्निग्धस्य च स्निग्धवत् कर्त्तव्यं विरेचनं यथोक्तम्  
नतम् पेयां ॥ (ब.)

१०½. स्निग्धस्य सुखिन्न-नोर्ध्वकविरेचनं बोधतमं प्रयोज्यम्-

स्निग्धस्य च स्निग्धवत् कर्त्तव्यं विरेचनं बोधतमं तद्वत् (क.)

" प्रयोज्यम्-विदध्यात् (ब. क.)

स्निग्धाय स्नेहन करवेद्य मनुष्यने स्निग्ध किये  
हुए पुरुषको, यथोक्त कर्त्तव्य प्रमाणेन यथोक्त विधिसे,  
वमनम् वमन वमन, देयम् देय देना चाहिए, बान्तस्य  
अने वमन करावेद्य मनुष्यने और वमन करावे हुए  
मनुष्यको पेयादिः पेया वजरेने। पेया विदेपी आदि,  
अनुक्रमः च अनुक्रम करावे। अर्धोर्ध्व क्रमपालन कराना  
चाहिए, स्निग्धस्य स्नेहन करेद्य स्निग्ध, सुखिन्नतनोः  
अने सारी येठे स्नेहन करेद्य शरीरवाग। मनुष्यने  
अरे मली प्रकार स्नेहन किये शरीरवाले मनुष्यको,  
योग्यतमम् अर्धोर्ध्व यथावत् योग्य, विरेचनम्  
विरेचन विरेचन, यथावत् विधिपूर्वक यथाविधि,  
प्रयोज्यम् देय देना चाहिए ॥ १०½ ॥

10. 9. Emesis should be admini-  
stered in the manner laid down to one  
that has taken the oleation therapy; and  
when the emesis has been complete. the  
patient should be given the systematic  
dietetic regimen by means of gruels  
etc. The person who has undergone  
the oleation and sudation procedures  
should be administered the best suited  
purgative as laid down.

संक्षोभनानन्तरं कर्त्तव्योऽन्नसंस्पर्शनक्रमः —

पेयां विलेपीमकृतं कृतं च

यूषं रसं त्रिद्विरेचकश्च ॥११॥

क्रमेण सेवेत विशुद्धकायः

प्रधानमभ्यावरशुद्धिशुद्धः

प्रधान- प्रधान प्रधान, मम्व-मवर- मम्व अने  
अपर मम्व और मवर, शुद्धि- शुद्धि शुद्धिसे, शुद्धः  
शुद्ध करावेद्य शुद्ध किया हुआ, विशुद्धकायः विशुद्ध  
शरीरवाग। शरीर शुद्ध शरीरवाग। रोगी, क्रमेण  
अनुक्रमे क्रमः, त्रिः द्विः त्रिधवार, द्विधवार तीन, दो,  
अथ एकधः अने अथवार और एकवार, पेयाश्च  
पेया पेया, विलेपीम् विलेपी विलेपी, अकृतम् कृतम्

११. सेवेत-सेवते (ब.)

" शुद्धिशुद्धः-शुद्धिशुद्धिः (ब.)

અસંસ્કૃત કે સંસ્કૃત અસંસ્કૃત યા સંસ્કૃત, યૂષ્મ યૂષુ  
યુષ, રસમ ચ તથા મંસિરસનું તથા માંસરસકા, સેવેત  
સેવન કરવું એઈ એ સેવન કરે ॥ ૧૧૩ ॥

11-11½. The person who has been thus purged should take thin and thick gruel, unseasoned and seasoned soup and meat-juice, in the order mentioned. He should take each of these at the three meal times or at two meals, or at one meal time according as the purificatory dose was maximum, moderate or minimum.

યથાપ્તુરગ્નિસ્તુળગોમયાદ્યઃ

સંયુક્તમાણો ભવતિ ક્રમેણ ॥૧૨॥

મહાન્ સ્થિરઃ સર્વપચસ્તથૈવ

શુદ્ધસ્ય પેયાદિભિરન્તરગ્નિઃ ।

યથા જેમ જેમ પ્રકાર, ગણુઃ બહુ થોડો સૂક્ષ્મ,  
ગણિઃ અગ્નિ અગ્નિ, તુળગોમયાદ્યઃ ધાસ અને ઝાણાં વગે-  
રેથી તુળ બોર ગોમય આદિયે, સંયુક્તમાણઃ પ્રદીપ્ત કરાતે।  
પ્રગ્વસ્થિત હોતી હુઈ, ક્રમેણ ક્રમે ક્રમે ક્રમે, મહાન્ સ્થિરઃ  
મહાન, સ્થિર મહાન, સ્થિર, સર્વપચઃ અને સર્વ પચાવનાર  
બોર સ્થાવકો પચાનેવાળો, ભવતિ થાય છે હો જાતી છે, તથા  
દુષ્ તેવી જ રીતે ડાહી પ્રકાર, શુદ્ધસ્ય સંશોધનથી શુદ્ધ  
થયેલા રોગીની સંશોધનથી શુદ્ધ હુઈ રોગીની, અન્તરગ્નિ  
અંતરગ્નિ અન્તરગ્નિ મી, પેયાદિભિઃ પેયા વગેરેથી મહાન,  
સ્થિર અને સર્વપચક થાય છે પેયા આદિયે મહાન,  
સ્થિર બોર સર્વપાચક હોતી છે ॥ ૧૨½ ॥

12-12½. Just as a spark of fire fed gradually by straw and cow-dung cakes etc., grows into a big and constant flame, similarly, the internal gastric fire in the person who has undergone the purificatory procedure, grows strong

and constant and capable of digesting all foods, fed gradually by gruels etc.

હીનમધ્યપ્રવરયોર્વમનવિરેચનયોર્લક્ષણાનિ—

જઘન્યમધ્યપ્રવરે તુ વેગા-

શ્ચત્વાર દૃષ્ટા વમને ષડ્ઘૌ ॥૧૩॥

દશૈવ તે દ્વિત્રિગુણા વિરેકે

પ્રસ્થસ્તથા દ્વિત્રિચતુર્ગુણાશ્ચ ।

જઘન્ય-મધ્ય- હીન, મધ્ય જઘન્ય, મધ્ય, પ્રવરે અને  
ઉત્તમ બોર પ્રવર, વમને તુ વમનમાં વમનમાં, ચત્વારઃ  
અનુક્રમે ચાર ક્રમશઃ ચાર, ષટ્ ષઠૌ છ અને આઠ છઃ  
બોર આઠ, વેગાઃ દૃષ્ટાઃ વેગો અબીષ્ટ છે વેગ દૃષ્ટ છે, વિરેકે  
તે અને હીન, મધ્ય તથા ઉત્તમ વિરેચનમાં તે વેગો  
હીન, મધ્ય તથા ઉત્તમ વિરેચનમાં વે વેગ, દશ દશ દશ,  
દ્વિત્રિગુણાઃ વીસ અને ત્રીસ વીસ બોર ત્રીસ દશ છે,  
તથા તથા હીન, મધ્ય અને ઉત્તમ માનપરિમાણમાં  
તથા હીન, મધ્ય બોર ઉત્તમ માનપરિમાણમાં, દ્વિત્રિચતુર્ગુણઃ  
ચ નિઃસ્રુત દોષતુ પ્રમાણ છે, ત્રણ અને ચાર તો  
ત્રીસ બોર ચાર, પ્રસ્થઃ પ્રસ્થ દોષ છે પ્રસ્થ હોતો  
છે ॥ ૧૩½ ॥

13-13½. Four six and eight times of vomiting are considered good as minimum, moderate and maximum action respectively, and similarly are regarded in purgation, ten, twenty and thirty times. The quantity of fecal matter should be 128, 192 or 256 tolas.

વમનવિરેચનયોઃ સમહીનાતિયોગલક્ષણાનિ—

પિત્તાન્તમિષ્ટં વમનં વિરેકા-

દર્થે કફાન્તં ચ વિરેકમાદુઃ ॥૧૪॥

દ્વિત્રાન્ સવિદ્કાનપનીય વેગા-

ન્મેયં વિરેકે વમને તુ પીતમ્ ।

પિત્તાન્તમ્ પિત્ત આદે ત્યાં સુધીનુ પિત્તકે બાને  
તક, વિરેકાત્ અને વિરેચનથી બોર વિરેચનથી, બર્થમ્  
અરધુ આધા, વમનમ્ વમન વમન, કફાન્તમ્ ચ તથા

૧૪. વિરેકાવર્થ-તથોર્થમાર્થઃ (ક)

३६ आवे त्वां सुधीनुं तथा कफ आने तक, विरेकम् विरेचन विरेचन, इहम् बाहुः ४४८ इत्युं छे इष्टं च है, सविट्कान् भण्युक्त मलमिश्रित, द्वित्रान् ये त्रय दो तीन, वेगान् वेगेने वेगोको, अपनीय तञ्जे छोड़कर, विरेके विरेचनने तोणपुं ओधये विरेचनको तोलना चाहिए, पीतम् तु अने पीथेव ओषधने तञ्जे और पी हुई ओषधको छोड़कर वमने वमनने वमनको सेवम् तोणपुं ओधये तोलना चाहिए ॥ १४३ ॥

14-14½ The quantity of vomited matter should be half of this, and that vomit should be considered successful which is accompanied with bile in the last phase and likewise the purgation which is accompanied with mucus or kapha in the last phase. In case of fecal matter, the quantity passed should be measured without taking into account the quantity passed in the first two or three motions; and in the measurement of the quantity of vomitus the quantity of the drug in the vomitus should not be counted.

कमात् कफः पिचमयानिलश्च

यस्यैति सम्यग्वमितः स इष्टः ॥१५॥

हृत्पार्श्वमूर्धेन्द्रियमार्गशुद्धौ

तथा लघुत्वेऽपि च लक्ष्यमाणे ।

वस्व नेने जितसे, कमात् कफः ओक पछी ओक ३६ कसे कफ, पिचम् पित पित, अथ अनिलः च अने वायु और वायु, एति आवे छे जाती है, तथा हृत्-पार्श्व- तथा हृत्, पार्श्व, पार्श्व, मूर्ध-इन्द्रिय-भस्त्रक अने छिन्दनना छिर और इन्द्रियके, मार्ग-शुद्धौ भाजनी शुद्धि यत्ता मार्गके शुद्ध होजानेपर, लघुत्वे तेभ्यः शरीरन्ती लघुता एवं शरीरमें हलक्षणन, कद्वयमाणे लघुता प्रतीत होनेपर, सः सम्यक् तेने सम्यक् उसे जकी प्रकारसे, वमितः वमन यद्युं छे वमन हुआ है, इष्टः ओम् अलघुपुं ऐसा जानना चाहिए ॥ १५३ ॥

5-15. He is considered to have undergone emesis successfully who expels the mucus, bile and air in succession and who feels that his stomach sides of the body, sense-organs and body-channels have been cleansed and that his body has become light.

दुश्छर्दिने स्फोटककोठकण्डू-

हृत्पार्श्वमूर्धेन्द्रियमार्गता च ॥१६॥

तृणमोहमूर्च्छानिलकोपनिद्रा-

बलादिहानिर्धमनेऽति च ग्यात् ।

दुश्छर्दिने वमन शोथ रीने न यद्युं होय ते। वमनके ठीक प्रकारसे न होने पर, स्फोटक- है। ३६ स्फोट, कोठ-कण्डू- डेह, भ्रमवाण कोठ, कण्डू हृत्-स- ३६ तथा छिन्दनना हृत् तथा इन्द्रियकी, अविशुद्धिः विशुद्धिने अभाव मन्त्रिता, गुरुगात्रता च अने अजोनुं बरेपलुं थाय छे और शरीरमें भारीपन होता है. अत्रिवमने नेभ्यः वमनना अतिशययी एवं वमनके अधिक हो जानेसे, तृण-मोह- तृषा, शोथ प्यास, मोह, मूर्च्छा, मूर्च्छा मूर्च्छा, अलिलकोप- वायुने। डेह वायुका कोप, निद्रा-बलादि-हानिः च अने निद्रा तथा अल वमनेनी हानि और नींद एवं बल आदिकी हानि, ग्यात् थाय छे होती हैं ॥ १६३ ॥

16-16½. If the emesis goes wrong, then there occur eruptions, wheals and itching on the body, imperfect cleansing of the stomach and body-channels and heaviness of the limbs. Thirst stupor fainting provocation of vata, loss of sleep and loss of strength etc., occur in case of over-action of emesis.

१६. हृत्पार्श्वमूर्धेन्द्रियमार्गता च

१६. बलादिहानिः-वज्रतिहानि 'न. च. ॥

, वमनेऽति च ग्यात्-वमनेऽति विवात् (न.)

स्रोतोविशुद्धीन्द्रियसंप्रसादौ

लघुत्वमूर्जोऽग्निरनामयत्वम् ॥१७॥

प्राप्तिश्च विट्पित्तकफानिलानां

सम्यग्विरिक्तस्य भवेत् क्रमेण ।

सम्यक् योग्य रीतौ सम्यक्, विरिक्तस्य विरेचन  
अथैव अनुष्ठाने विरिक्त पुरुषके, स्रोतोविशुद्धि- स्रोतोनी  
शुद्धि स्रोतोकी शुद्धि, इन्द्रियसंप्रसादौ इन्द्रियोनी  
प्रसन्नता इन्द्रियोकी प्रसन्नता, लघुत्वम् शरीरमां दृढता-  
पक्षुं शरीरमें दृढतापन, ऊर्जः अग्निः उत्साह, अग्निनी  
दीप्ति उत्साह, अग्निनी दीप्ति, अनामयत्वम् नीरोगता  
नीरोगता, क्रमेण अने क्रमेक्रमे और क्रमशः, विट्- भूण  
मल, पित्त-कफ-पित्त, उक्षे पित्त, कफ, अनिलानाम् तथा  
वायुनी तथा वायुकी, प्राप्तिः भवेत् प्राप्ति थाय छे  
प्राप्ति होती है ॥ १७३ ॥

17-17½. Purification of the alimen-  
tary tract, clarity of the senses, light-  
ness of the body, stimulation of the  
gastric fire, a sense of well-being and  
passing of feces, bile, mucus and wind  
in succession in his motions are the  
signs of successful purgation.

स्याच्छ्लेष्मपित्तानिलसंप्रकोपः

सादस्तथाऽग्नेर्गुरुता प्रतिश्या ॥१८॥

तन्द्रा तथा चर्द्धिररोक्षकश्च

वातानुलोम्यं न च दुर्विरिक्ते ।

दुर्विरिक्ते विरेचनना अथोगमां विरेचन मली  
प्रकार न होने पर, श्लेष्म-पित्त- उक्षे, पित्त कफ, पित्त,  
अनिल- अने वायुने और वायुका, संप्रकोपः प्रकोप प्रकोप,  
तथा अग्नेः सादः अग्निनी भंडता अग्निमांय, गुरुता भारी-  
पक्षुं भारीपन, प्रतिश्या सगैभम प्रतिश्याव, तन्द्रा  
तन्द्रा तन्द्रा, तथा चर्द्धिः उक्षेटी वमन, अरोक्षकः च  
अरुचि अरुचि, न वातानुलोम्यम् अने वायुना अनु-

१८. सादस्तथाऽग्नेर्गुरुता प्रतिश्या-स्वेदोऽरुचिर्गुरुतात्रता

स्यात् (च फ.)

॥ गुरुता प्रतिश्या-गुरुतात्रता च (क.)

द्योभपक्षुना अक्षुध और वायुका अनुलोमन न होना,  
सात् थाय छे होता है ॥ १८३ ॥

18-18½. In a condition where pur-  
gation has acted amiss, there will be  
great provocation of kapha, pitta and  
vata, exhaustion, dullness of the gastric  
fire, heaviness of body, coryza, torpor,  
vomiting, anorexia and the absence of  
regular peristaltic movement of the  
vata.

कफास्त्रपित्तक्षयजानिलोत्थाः

सुहृद्यङ्गमर्दङ्गमवेपनाद्याः ॥१९॥

निद्राबलाभावतमःप्रवेशाः

सोन्मादहिकाश्च विरेचितेऽति ।

अतिविरेचिते विरेचनना अतियोगमां विरेचनके  
अधिक होने पर, कफ-अक्ष- उक्षे, रक्त कफ, रक्त, पित्त-  
क्षयज- अने पित्तना क्षयशी अथैव और पित्तके क्षयसे  
उत्पन्न, अनिल- वायुशी वायुसे, उत्थाः अ-भेदा पैदा  
हुए, सुप्ति-अङ्गमर्द- रक्षशीज्ञान, अ-भमर्द सुप्ति, अंगोंका  
दृज्जना, क्रम-वेपन- उक्षानि अने उ-प क्रम और वेपन,  
आद्याः पहले थाय छे पहले होते हैं, स-उन्माद-  
तेभम उन्माद एवं उन्माद, हिकाः च उक्षेटी हिका,  
निद्रा- निद्रा निद्रा, बलाभाव- तथा अणने अक्षुध  
तथा बलका अभाव, तमःप्रवेशाः अने अंधारा आवर्ण  
पक्षी थाय छे और आंखोंके आगे अंधेरा आना पीछे  
होते हैं ॥ १९३ ॥

19-19½. In a condition of excessive  
action of purgation, there will occur  
numbness, body-ache, exhaustion,  
tremors and other symptoms born of  
vata which becomes provoked owing  
to loss of mucus, blood and bile in  
the motions, as also torpor, loss of  
vitality, faintness, mental disturbance  
and hiccup.



निरुद्धाशुवासनयिवानम् —

संसृष्टभक्तं नवमेऽह्नि सर्पिः-

स्तं पाययेत्पाप्यनुवासायेद्वा ॥२०॥

संसृष्टभक्तम् संसर्जनं कृतं कुर्यात् पथी आहमे  
दिवसे भोजनं शीघ्रं वा ॥ संसर्जनकृतं करं चूकनेपर  
आठवें दिन स्वाभाविक भोजन अनेपर, तम ते ते रसक  
नवमे अह्नि नवमे दिवसे नवें दिन, सर्पिः शीघ्रं  
पाययेत् अपि पापुं पित्राये, अनुवासने वा अथवा  
अनुवासनं कर्तुं अथवा अनुवासनवस्ति देवे ॥ २० ॥

20. Then after the rehabilitation of the patient by means of diet, he should be given on the ninth day, a potio of ghee or unctuous enema.

तैलाकगात्राय ततो निरुद्धं

दद्यात् ज्यहाश्रतिबुभुक्षिताय ।

प्रत्यागते घन्वरसेन भोज्यः

समीक्ष्य वा दोषबलं यथार्हम् ॥२१॥

ततः ते पथी पीठे, ज्यहाश्र तत्र दिवसे पथी  
तीन दिनके पश्चात्, तैलाकगात्राय शरीरे तैल योपडे  
शरीरपर तैल मालिश करवाके, नातिबुभुक्षिताय अने  
अहु भूष्या नहि शीघ्रं पुत्रुपने जब बहुत भूखा न हो  
तब, निरुद्धं निरुद्धवस्ति निरुद्धवस्ति, दद्यात्  
आपर्वी देवे, प्रत्यागते अस्ति पाथी वरुणा पथी  
वस्ति वापस आजानेपर, घन्वरसेन अथवा मांसरसयु  
वांगल मांसरससे, भोज्यः ते पुत्रुपने अथवा अथ  
दोषबलम् वा अथवा दोष अने अग्निबलं वा दोष और  
अग्निबलको, समीक्ष्य अर्थने देखकर, यथार्हम् अथवा  
आने ते भोजन देवुं यथायोग्य अथवा देवे ॥ २१ ॥

21. Three days after that the patient who had his body well anointed with oil and is not very hungry should be given evacuative enema; when the enema fluid has returned he should

be given the meat-juice of jangala animals or any other suitable diet according to his humoral constitution and the strength of the gastric fire.

नरस्ततो निश्चयानुवासादहो

नाप्याशितः स्यादनुवासात्नीयः ।

ततः ते पथी पीठे, अनुवासानाहो नरः अनुवासने  
अथ पुत्रुपने अनुवासनके योग्य पहरणे नाप्याशितः  
अहु अथवा अथ अधिक भोजन किंवा हो तब,  
निश्चय रात्रे रात्रिमें, अनुवासात्नीयः स्यात् अनुवासन  
देवुं अनुवासन देना चाहिए ॥ २१ ॥

2. Then, the person who is to be administered the unctuous enema should be given the enema at night, care being taken to see that he has not eaten a heavy meal

शीते वसन्त च देवाऽनुवासात्

रात्रौ शरद्रीष्मघनागमेषु ॥२२॥

तानेव दोषान् परिरक्षता ये

स्नेहस्य पाने परिकीर्तिताः प्राक् ।

प्राक् अभाउ पहले, स्नेहस्य स्नेहस्य स्नेहके, पाने  
पानमां पानमें, ये परिकीर्तिताः ये दोष कहे हैं, तान् एव ते अथ, दोषान् दोषो  
दोषोंसे, परिरक्षता रक्षक कर्तृ रक्षण करते हुए, शीते  
वसन्ते च शीतकालमां अने वसन्तमां शीतकाल और  
वसन्तमें, शिवा दिनसे दिनमें, शरद्-ग्रीष्म- अने शरद,  
ग्रीष्म और शरद, ग्रीष्म, वर्षागमेषु तथा वर्षा  
तथा वर्षामें, रात्रौ रात्रे रात्रिमें, अनुवासात् अनुवासन  
आपुं अनुवासन देना चाहिए ॥ २२ ॥

22-22½. In the winter and the spring, the unctuous enema should be

२१. न-वस्ति निश्चयानुवासादहो नाप्याशितः स्यादनुवासात्नीयः-

प्रत्यागते पात्रसेन भोज्यः तान् च भुक्तोऽप्यमोक्षु-  
वाप्यः (६, ७.)

२१. तान् परिकीर्तिताः-तान् परिकीर्तिताः (६.)

given by day and in the autumn, summer and the rains, it should be given at night, with due care to prevent the wrongful effects of the oleation therapy, which have been already described. (Sutra. Chap. XIII.).

प्रत्यागते चाप्यनुवासनीये

दिवा प्रदेयं व्युषिताय भोज्यम् ॥२३॥

सायं च भोज्यं परतो द्यहे वा

ज्यहेऽनुवास्योऽहनि पञ्चमे वा ।

ज्यहे ज्यहे वाऽप्यथ पञ्चमे वा

दद्यान्निरुद्धादनुवासनं च ॥२४॥

अनुवासनीये अनुवासन अनुवासनके, प्रत्यागते च अपि पाण्डुं तृणी आवे त्थारे वापव आ जानेपर भी, व्युषिताय रात आभी ज्वा ६४ रातभर ठहरकर, दिवा द्विसे दिनमें, भोज्यम् प्रदेयम् कोजन ठरावपुं भोजन देना चाहिए, सायम् च अर्धे सांने और सायंकाल, भोज्यम् कोजन ठरावपुं भोजन देना चाहिए, परतः अर्धे पछी इसके पीछे, द्यहे ज्यहे वा भीने द्विसे, त्रीने द्विसे दूसरे दिन, तीसरे दिन, पञ्चमे वा अथवा पांचमे अथवा पांचवे, अहनि द्विसे दिन, अनुवास्यः अनुवासन देपुं अनुवासन देना योग्य है, निरुद्धात् निरुद्धवस्ति पछी निरुद्धवस्तिके पश्चात्, ज्यहे ज्यहे वा अपि त्रीने त्रीने द्विसे तीसरे तीसरे दिन, पञ्चमे वा अपि अथवा पांचमे द्विसे अथवा पांचवे दिन, अनुवासनम् अनुवासन अनुवासन, दद्यात् देपुं देना चाहिए ॥ २३-२४ ॥

23-24 After the unctuous fluid has returned, the person who has taken the unctuous enema and has spent

the night quietly should be given food during the day and also in the evening. Thereafter, he is to be given unctuous enema on the second, third or fifth day. After giving the evacua-tive enema on every third or fifth day, he should be given the unctuous enema

एकं तथा त्रीन् कफजे विकारे

पित्तात्मके पञ्च तु सप्त वाऽपि ।

वाते नवैकादश वा पुनर्वा

वस्तीनयुग्मान् कुशलो विदध्यात् ॥२५॥

कुशलः कुशल वैद्ये कुशल वैद्य, कफजे कफजन्य, विकारे रोगमां रोगमें, एकः एक एक, तथा त्रीन् के त्रय या तीन, पित्तात्मके तु पित्तजन्य रोगमां पित्तजन्य रोगमें, पञ्च तु सप्त वा अपि पांच के सात पांच वा सात, वाते पुनः अर्धे वातजन्य रोगमां वणी वातजन्यरोगमें, नव वा नव नौ, एकादश वा के अगित्थार या ग्यारह, अयुग्मान् ऐशी अयुग्म, वस्तीन् वस्ति बस्तियां, विदध्यात् आपणी अर्धे अर्धे देवे ॥२५॥

25. In disorders of kapha, one enema or three enemata should be given; in disorders of pitta, five or seven; while in disorders of vata, nine or even eleven should be given. In this way the expert physician should give enemata in odd numbers.

नरो विरिक्तस्तु निरुद्धदानं

विवर्जयेत् सप्तदिनान्यवश्यम् ।

शुद्धो निरुद्धेण विरेचनं च

तद्वयस्य शून्यं विकसेच्छरीरम् ॥२६॥

विरिक्तः विरेचन दीधा पछी विरेचनके पश्चात्, नरः तु अनुप्य मनुष्य, सप्त दिनानि सात दिवस शुद्धी

२३. व्युषिताय-सुषुप्ताय (श.)

२३. सायं च भोज्यं...निरुद्धादनुवासनं च ॥-

प्रत्यागते चाप्युषितस्य काले भोज्यं दिवा सायं परतः ।

ज्यहे ज्यहे वाऽप्यथ पञ्चमे वा दद्यान्निरुद्धादनुवासनं च ॥ (क.)

२४. ज्यहे वा-ज्यहे वा (क. ड. घ.)

२४. ज्यहे ज्यहे वाऽप्यथ-ज्यहे ज्यहे वाऽप्यथ (घ.)

२६. शुद्धो निरुद्धेण विरेचनं च-शुद्धो विरेकेण निरुद्धदानं (श. ड.)

२६. विकसेच्छ-विकसेच्छ (ड.)

સાત દિન તક, નિરુદ્ધદાનમ્ નિરુદ્ધમસ્તિ દેવાનો નિરુદ્ધમસ્તિ લેના, અવશ્યમ્ અવશ્ય અવશ્ય, વિવર્જયેન્ ત્યામ કરવે બેઠાંએ છોડ દે, નિરુદ્ધેન અને નિરુદ્ધથી ઓર નિરુદ્ધેન, કુદ્ધ: શુદ્ધ થયેલાંએ સાત દિવસ સુધી શુદ્ધ હુપ પુરુષકો સાત દિન તક, વિરેચનમ્ વિરેચનનો ત્યામ કરવે બેઠાંએ વિરેચન છોડ દે, હિ કારણ કે કયોંકિ, તત્ સમય પહેલાં દેવામાં આવેલાં નિરુદ્ધ તથા વિરેચન સમયકે પહેલે લિયે ગયે નિરુદ્ધ તથા વિરેચન, અસ્ય એ રેખીન: ઉચ રોગીકે, શૂન્યમ્ ક્ષીરમ્ ખાલી શરીરને ચાલો હુપ શરીરકો, ચિકિત્સા ભારી નાંએ છે માર ડાલતે હૈં ॥ ૨૧ ॥

26. The person who has undergone purgation should definitely avoid taking evacuative enema for a period of seven days. Similarly, the person who has been cleansed by evacuative enema should avoid purgation, as it will have injurious effects on the system which has already been evacuated.

વસ્તેશુના: —

વસ્તિર્વય:સ્થાપયિતા સુશાયુ-  
વૈલાગ્નિમેધાસ્તરવર્ણકુચ ।

સર્વાર્થકારી શિશુવૃદ્ધયુનાં  
નિરત્યય: સર્વગદાપદ્મ ॥૨૭॥

વસ્તિ: વસ્તિ વસ્તિ, વય:સ્થાપયિતા વય:સ્થાપક વય:સ્થાપક, સુશાયુ: આરોગ્ય, આયુષ્ય સુશ, આયુ: અયુ: અયુ, અગ્નિ વલ, અગ્નિ, મેધા-સ્તર- મેધા, ૨૧૨ બુદ્ધિ, સ્વર, વર્ણ-કુચ વ અને વર્ણ કરનાર ઓર વર્ણકો વડાનેવાળી, સર્વાર્થકારી સર્વ અર્થ સારનાર મન પ્રયોજનોએ સિદ્ધ કરનેવાળી, શિશુ-વૃદ્ધ- બાળક, વૃદ્ધ વાલક, વૃદ્ધ, યુવામ્ અને યુવાને ઓર યુવા સગકે કિપ્, નિરત્યય: નુકસાન નહિ કરનાર અહાનિકર, સર્વ- ગદાપદ્મ: વ તથા સર્વ રેખાનો નાશ કરનાર છે તથા અવ રોગોંકા વાલક હોલી હૈં ॥ ૨૭ ॥

27. The enema is an agent of rejuvenation, and promoter of happy-

bess, life, strength, gastric fire, intelli-  
gence, voice and color. It is beneficial  
in every way for all, whether young,  
adult or aged. It is free from risks,  
and cures all diseases.

વિદ્-સ્તેષ્મપિત્તાનિલમૂત્રકર્ષી

દાહ્યાવહ: શુક્રબલપદ્મ ।

વિષ્વક્ષિતં દોષચયં નિરસ્ય

સર્વાન્ વિકારાન્ શમયેન્નિરુદ્ધ: ॥૨૮॥

નિરુદ્ધ: નિરુદ્ધમસ્તિ નિરુદ્ધમસ્તિ, વિદ્-સ્તેષ્મ- અગ્નિ, કફ, મલ, કફ, પિત્ત-અનિલ- પિત્ત, વાયુ પિત્ત, વાયુ, મૂત્ર- કર્ષી અને મૂત્રને જેથી કાઢે છે ઓર મૂત્રકા કર્ષણ કરતી હે, દાહ્યાવહ: દહતા કરે છે દહતા દેવે હૈ, શુક્રબલપદ્મ: વ વીર્ય તથા બળ આપનાર છે શુક્ર ઓર બલકો વડાતી હે, વિષ્વક્ષિતં અને ચારે બાજુ ઓર દુષ્કર ઉપર, સ્થિતમ્ રહેલા સ્થિત, દોષચયમ્ દોષના અચયને દોષચયમ્કો, નિરસ્ય દૂર કરી હટાકર, સર્વાન્ સર્વ સર્વ, વિકારાન્ વિકારોને રોગોંકો, શમયેન્ શાન્ત કરે છે શાન્ત કરતી હે ॥ ૨૮ ॥

28. It draws out the feces, mucus, bile, flatus and urine, and imparts firmness and enriches the semen and body strength. The evacuative enema expelling the morbid accumulations lodged in the entire body alleviates all kinds of diseases.

દેહે નિરુદ્ધેન વિશુદ્ધમાર્ગે

સંકોહનં વર્ણબલપદ્મં વ ।

ન તૈલદાનાત્ પરમસ્તિ કિંચિદ્

દ્રવ્યં વિશેષેન સમીરણાર્થે ॥૨૯॥

૨૮. વિદ્-સ્તેષ્મપિતાનિલમૂત્રકર્ષી દાહ્યાવહ: શુક્રબલપદ્મ-

વિદ્-સ્તેષ્મપિતાનિલમૂત્રકર્ષી સ્થિતમ્કુચ શુક્રબલપદ્મ (૫.)

દાહ્યાવહ:-સ્થિતમ્કુચ (૨. ૫.)

વિષ્વક્ષિતં-વિદ્યા સ્થિતં (૫.)

૨૯. ન તૈલદાનાત્ પરમસ્તિ કિંચિદ્ દ્રવ્યં વિશેષેન સમીરણાર્થે-

નામ્બાતમાત્ કિંચિદ્વાસ્તિ કર્મ પર વિશેષેન સમીરણાર્થે (૫. ૫.)

निरुहेण निरुद्धास्तिसे, देहे देह देहमें, विबुद्धमार्गे शुद्ध भागोवाणो यत्ता मार्गोंके शुद्ध होने पर, स्नेहेन स्नेहने स्नेहन, वर्णबलप्रदम् च वलुं अने भल देनार छे वर्ण और बलकारक होता है, विशेषेण आस डरीने विशेषतः, समीरणार्थे वायुथी पीडित मनुष्यने भाटे वातसे पीडित मनुष्यमें, तैल-दानार् तैलदानथी तैलदानसे बढ़कर, परम् श्रेष्ठ श्रेष्ठ, किञ्चित् पीड्युं डालि अन्य कोई, द्रव्यम् ५०५ द्रव्य, न अस्ति नथी नहीं है ॥ २९ ॥

29. When the body-channels have been cleansed by the evacuative enema, oleation imparts color and strength to the body. There is no remedy more beneficial than the administration of oil, particularly in afflictions of vata.

स्नेहेन रौक्ष्यं लघुतां गुरुत्वा-

दौष्ण्याच्च शैत्यं पवनस्य हृत्वा ।

तैलं ददात्याशु मनःप्रसादं

वीर्यं बलं वर्णमथाग्निपुष्टिम् ॥३०॥

तैलम् तैल, स्नेहेन स्नेहथी स्निग्धताके कारण, पवनस्य वायुनी वायुकी, रौक्ष्यम् रूक्षताने रूक्षताको, गुरुत्वात् गुरु होवाथी भारी होनेसे, लघुताम् लघुताने लघुताको, दौष्ण्याच्च अने उष्ण होवाथी और उष्ण होनेसे, शैत्यं च शीतलताने शीतताको, हृत्वा आशु भटाडी जल्दीथी नष्ट करके शीघ्र, मनःप्रसादम् मननी प्रसन्नता मनकी प्रसन्नता, वीर्यम् बलम् वीर्य, अण वीर्य, बल, वर्णम् वलुं वर्ण, अथ अग्निपुष्टिम् अने अग्निपुष्टि और अग्निकी पुष्टिको, ददाति आपे छे देता है ॥ ३० ॥

30. Oil by its unctuous quality counteracts the dryness, by its heaviness counteracts the lightness and by its heat the quality of

१०. स्नेहेन-स्नेहादि (क. छ.)

११. वीर्य-स्नेह (च.)

१२. मथाग्निपुष्टिम्-मथापि पुष्टि (च.)

coldness due to vata and thus quickly imparts clarity of mind, virility, strength, color and the increase of the gastric fire.

मूले निषिको हि यथा द्रुमः स्या-

शीलच्छदः कोमलपल्लवाग्र्यः ।

काले महान् पुष्पफलप्रदश्च

तथा नरः स्यादनुवासनेन ॥३१॥

मूले निषिकः हि मूलभां जल सींचवाथी मूलको सींचनेसे, द्रुमः वृक्ष वृक्ष, यथा जेम जिस प्रकार, शील-च्छदः शीलांछम पीडावाणुं हराभरा, कोमलपल्लव-तथा कोमल पत्रथी तथा कोमल पत्तोंसे, अग्र्यः स्यात् सुशोभित थाय छे सुशोभित होता है, काले अने वयस पर, महान् महान तथा महान वृक्ष बनकर, पुष्पफलप्रदः च फूल अने फल आपनारुं अने छे पुष्प-फल देने लगता है, तथा तेवी रीते उसी प्रकार, नरः भालुस पलु मनुष्य मी, अनुवासनेन अनुवासनथी अनुवासनसे, स्यात् भल वजरेथी संपन्न थाय छे बलादिसे संपन्न होता है ॥ ३१ ॥

31. Just as a tree fed with water at its roots, puts forth green leaves and delicate sprouts, and in due time, grows into a big tree full of blossom and fruit, similarly does a man grow strong by means of the unctuous enema.

स्तब्धाश्च ये सङ्कुचिताश्च येऽपि

ये पङ्क्तवो येऽपि च भङ्गरूपाः ।

येषां च शाखासु चरन्ति वाताः

शस्तो विशेषेण हि तेषु वस्तिः ॥३२॥

३२. पल्लवोऽपि नरः—

अपत्यवन्तानिबुद्धिकारी काले बहुरूपी बहुकीर्तिमान् ॥

इत्यधिकः पाठः (ख. च. द.) दुर्लभः ।

११. मूले निषिको-मूले निषिके (च.)

१२. कोमलपल्लवाग्र्यः-कोमलपल्लवाग्र्यः (च.)

१३. चरन्ति वाताः-चरन्ति वाताः (च.)

वे च नेत्रो जो, सङ्घाः स्तब्ध होय छे स्तब्ध होते हैं, वे च नेत्रो जो, संकुचितः च अपि संकुचित होय छे संकुचित होते हैं, वे पङ्क्तवः नेत्रो पामणा होय छे जो पङ्क्त होते हैं वे च नेत्रो जिन्के, भग्न-रूपाः अपि आग्नेय कायावाणा तथा संधिमुक्त होय छे अंग टूट गये हैं और सन्निधौ अलग हो गई है, वेचाम् च अने नेत्रोन्ती और जिन्की, कायासु श्वाभयोर्भा शस्त्राओंमें, वाताः प्रकुपित वायु प्रकुपित वायु, चरन्ति सञ्चार करे छे गति करती है तेषु बस्तिः तेओर्भा अस्ति उनमें बस्ति, विज्ञेयेण भास्य करीने विशेषकर, अस्तः हि प्रशस्त छे प्रशस्त है ॥ ३२ ॥

32. Enema is specially indicated in persons whose limbs have become stiff or contracted, who are suffering from lameness in both legs, who have suffered from fractures and dislocation and who suffer from rheumatic lesions affecting the extremities.

आध्मापने विप्रयिते पुरीषे

शूले च भक्तानभिनन्दने च ।

एवंप्रकाराश्च भवन्ति कुक्षौ

ये चामयास्तेषु च बस्तिरिष्टः ॥ ३३ ॥

आध्मापने आध्मानर्भा आध्मानमें, पुरीषे भग्न मलके, विप्रयिते भङ्गाई अवामा गांठदार होनेमें, शूले च शूलर्भा शूलमें, भक्तानभिनन्दने भोजन पर अरुचिमें, कुक्षौ च अने पेटर्भा और उदरमें, एवंप्रकाराः च ओषा प्रकारना इसी प्रकारके, वे च नेत्रो जो अन्ध, आमयाः रोगो रोग, भवन्ति शय छे होते हैं, तेषु च तेओर्भा उनमें, बस्तिः अस्ति बस्ति, इष्टः अभीष्ट छे अभीष्ट है ॥ ३३ ॥

33. Enema is also indicated in distension of abdomen, scybalous stools, colic, inappetence and similar other

३३. आध्मापने-आध्मापने (ब.)

disorders affecting the gastro-intestinal tract.

याश्च स्त्रियो वातकृतोपसर्गा

गर्भे न गृह्णन्ति नृभिः समेताः ।

स्त्रीणेन्द्रिया ये च नराः कृशाश्च

बस्तिः प्रशस्तः परमं च तेषु ॥ ३४ ॥

वात-कृत-उपसर्गाः वायुशी छिन्न भयेवा छिन्न-प्रवाणी वातजन्य उपसर्गोंके युक्त, याः च ने स्त्रिय, स्त्रियः स्त्रीओ स्त्रियोंके, नृभिः समेताः पुरुषशी सभोज पाश्चा छत्ता पुरुषसे संयोग होने पर भी, गर्भम् गर्भं गर्भं, न गृह्णन्ति धारण करती नहीं रहता, वे च ने स्त्रिय, नराः पुरुषो मनुष्योंके, स्त्रीणेन्द्रियाः स्त्रीषु छिन्न-प्रवाणा होय छे इन्द्रियां क्षीण हो गई हैं, कृशाः च अने नेत्रो कृश होय छे और जो कृश होते हैं, तेषु च तेओर्भा भाटे इनके लिए, बस्तिः अस्ति बस्ति, परमम् परम अतिशय, प्रशस्तः प्रशस्त छे प्रशस्त है ॥ ३४ ॥

34. The enema is considered the sovereign remedy in cases of women who have been afflicted with complications due to vata who are not able to conceive despite mating with men, and in the case of persons whose semen is weak and who are emaciated.

उष्णाभिभूतेषु वदन्ति शीता-

ष्ठीताभिभूतेषु तथा सुखोष्णान् ।

तत्प्रस्यनीकौषधसंप्रयुक्तान्

सर्वत्र बस्तीन् प्रविभज्य युक्त्यात् ॥ ३५ ॥

उष्ण-अभिभूतेषु छिन्नुताशी पराभव पायेवा मनुष्योंर्भा उष्णतासे पीड़ित मनुष्योंमें, शीतान् शीत कीट,

३४. वातकृतोपसर्गा गर्भे-वातकृतोपसर्गागर्भे (ब.)

३५. बस्तिः प्रशस्तः परमं च तेषु-तेषां च बस्तिः परमः प्रशस्तः (कं च, क, च)

३५. युक्त्यात्-दवाय (ब.)

३५. प्रविभज्य युक्त्यात्-प्रविभज्यकायाः (ब.)

વધા અને ઔર, શીતાભિમૂલેષુ શીતથી પરાશવ  
પામેલા મનુષ્યોમાં શીતસે પીડિત મનુષ્યોંકે લિપે,  
સુક્ષ્મોષ્ણાન્ નવશેકી બસ્તિઓ આપવાનું સુક્ષ્મ  
બસ્તિયાં, વદ્ધન્તિ કહે છે કહી છે, તત્ પ્રવિમર્ય તેથી  
નિબાળ કરીને ફાલિયે વિમાગ કરકે, સર્વત્ર સર્વ  
રોગોમાં સર્વ રોગોંમે પ્રત્યનીક-વિપરીત વિરુદ્ધ, ઔષધ-  
ઔષધ ઔષધિયોંમે, સંપ્રયુક્તાન્ યુક્ત યુક્ત, બસ્તીન્  
બસ્તિ બસ્તિયાં, યુક્ત્યાત્ શોભવી બેધંતે દેની  
વાહિં ॥ ૩૫ ॥

35. The wise are of opinion that a cold enema should be given to patients afflicted with excessive heat and in a genially warm enema where the patient is afflicted with cold. In this manner, the nature of the enema should generally be determined in all conditions and mixed with drugs possessing the qualities contrary to the characteristics of the disease-condition.

ન હંદ્ગનીયાન્ વિદધીત બસ્તીન્

વિશાધનીયેષુ ગદેષુ વૈદ્યઃ ।

કુષ્ઠપ્રમેહાદિષુ મેદુરેષુ

નરેષુ યે ચાપિ વિશોધનીયાઃ ॥૩૬॥

કુષ્ઠપ્રમેહાદિષુ કુષ્ઠ, પ્રમેહ વગેરે કુષ્ઠ, પ્રમેહ આદિ,  
વિશોધનીયેષુ શોધનયોગ્ય સંશોધનયોગ્ય, ગદેષુ  
શોભોમાં રોગોંમે, મેદુરેષુ મેદવાળા મેદવકુલ, નરેષુ  
પુરુષોમાં પુરુષોંમે, યે ચ અપિ અને જેઓ તથા જો,  
વિશોધનીયાઃ શોધનયોગ્ય છે તેઓમાં શોધનયોગ્ય  
હૈં હવેં, વૈદ્યઃ વૈદ્યે વૈદ્ય, હંદ્ગનીયાન્ બુંદણુ હંદ્ગ,  
બસ્તીન્ બસ્તિ બસ્તિ, ન વિદધીત આપવી ન બેધંતે  
ન દેવે ॥ ૩૬ ॥

36. The roborant enema should not be administered in disease-conditions indicating depletion therapy, such as dermatosis, urinary disorders etc., as also to men with excessive adiposity

who need to be given the purificatory and the depletory treatment.

ક્ષીણક્ષતાનાં ન વિશોધનીયા-

અ શોષિનાં નો મૃશદુર્બલાનામ્ ।

ન મૂર્છિતાનાં ન વિશોધિતાનાં

યેષાં ચ દોષેષુ નિબદ્ધમાયુઃ ॥૩૭॥

ક્ષીણક્ષતાનામ્ ક્ષીણ તથા ક્ષતયુક્ત રોગીઓને  
ક્ષીણ તથા ક્ષત રોગિયોંકો, વિશોધનીયાન્ વિશોધનીય-  
બસ્તિઓ નહિ આપવી વિશોધનબસ્તિયાં ન દેવે,  
શોષિનામ્ શોષરોગીઓને નહિ શોષરોગિયોંકો ન,  
મૃશદુર્બલાનામ્ બહુ દુર્બલ પુરુષોંમે નહિ અત્યન્ત  
દુર્બલ પુરુષોંકો ન, મૂર્છિતાનામ્ મૂર્છારોગીઓને  
નહિ મૂર્છારોગિયોંકો ન, વિશોધિતાનામ્ સ્વશોધન  
થયેલાં નહિ જિનકા શોધન હો સુકા હો સનકો ન,  
અ યેષામ્ અને જેઓંનું ઔર જિનકો, આયુઃ ચ આયુષ્ય  
આયુ, દોષેષુ દોષોંમાં દોષોંકે સાથ, નિબદ્ધ અંધામેષુ  
હોમ તેઓંને પણ નહિ આપવી જુદી હો સનકો સી  
ન દેવે ॥ ૩૭ ॥

37. And the evacuating enema should not be given to persons who are cachectic due to pectoral lesions, who are dehydrated, who are extremely debilitated, who are unconscious, and who are already purged as also in conditions where the excretory matter is the only hold for life.

શાસ્ત્રાગતાઃ કોષ્ઠગતાશ્ચ રોગા

મર્મોર્થ્વસર્વાવિચવાક્કજાશ્ચ ।

યે સન્તિ તેષાં ન હિ કશ્ચિદન્યો

વાયોઃ પરં જન્મનિ હેતુરસ્તિ ॥૩૮॥

વિષ્મૃત્તપિત્તાદિમલાશયાનાં

વિક્ષેપસંઘાતકરઃ સ યસ્માત્ ।

૩૮. મર્મોર્થ્વસર્વાવિચવાક્કજાશ્ચ-મર્મોર્થ્વસર્વાવિચવં ગતાશ્ચ (જ.)

૩૯. મલાશયાનાં વિક્ષેપસંઘાત કરઃ-મલાચયાનાં

વિક્ષેપસંહારકર. (જ.)

,, સંઘાતકરઃ-સંહારકરઃ (જ.)

तस्यातिवृद्धस्य शमाय नान्य-

द्वस्ति विना मेघजमस्ति किञ्चित् ॥३९॥

तस्माच्चिकित्सार्थमिति ब्रुवन्ति

सर्वां चिकित्सामपि बस्तिमेके ।

शाखागताः शाखाभूत शाखाभ्रोंमें पहुँचे, कोष्ठगताः च कोष्ठगत कोष्ठमें गये हुए, मर्म-ऊर्ध्व- तथा भ्रम-स्थण, उपरना भागो तथा मर्मस्थान, ऊर्ध्व भाग, सर्वावयव-सर्व शरीर संपूर्ण शरीर, अङ्गजाः च अने अङ्गभा ओपन्न अनार और अंगोंमें होनेवाले, वे रोगाः ने रोगो जो रोग, सन्ति ये हैं, तेजाम् तेजोना उनको, जन्मन्ति जन्मभा उत्पत्तिमें, वायोः परस् वायु सिवाय भीलुं प्रधान वायुके सिवा अन्य प्रधान, कश्चित् हेतुः कोई कारण न हि अस्ति नहीं है, यस्मात् जेथी यतः, सः ते वायु वह वायु, विद-मूत्र- भण, भूत मज, मूत्र, पित्तादि- अने पित्त वज्रे और पित्त आदि, मलाशयानाम् अने भण तेभ्य आशयेना और मल एवं आशयको, विक्षेपसंवातकरः संथेज तथा विक्षेजने उरनार छे मिलानेवाला और पृथक् करनेवाला है, अतिवृद्धस्य तेथी अतिशय वृद्धि पायेला ततः अत्यन्त बड़े हुए, तस्य ते वायुना उस वायुको, समाश शमन भाटे शान्त करनेके लिए, बस्तिम् अस्ति बस्तिसे, विना अन्यत् विना भीलुं विना अन्य. किञ्चित् कोई, मेघजम् औषध चिकित्सा, न अस्ति नहीं है, तस्मात् तेथी इसलिये, एके डेटलाड आशयेन कई आचार्य बस्तिम् अस्तिने बस्तिको चिकित्सार्थम् अरधी चिकित्सा आवी चिकित्सा, सर्वां अने डेटलाड आशयेन संपूर्ण और कई आचार्य सम्पूर्ण चिकित्साम् चिकित्सा चिकित्सा, अपि पक्षु मी, ब्रुवन्ति उहे छे कहते हैं ॥ ३८-३९॥

38-39. There is no cause greater than vata in the manifestation of diseases affecting the peripheral regions or the alimentary tract or vital organs or the upper part of the body or the whole body or part of the

body. Since the vata is the motive force behind the function of elimination or retention of feces, urine, bile and other excreta in their respective emunctories, there is no remedy other than the enema in the alleviation of vata that is excessively provoked. It is therefore that some physicians are of the opinion that enema constitutes half of the treatment, while others hold it to be not half but the whole of treatment.

बस्तेः समहीनातिमोगलक्षणानि—

नाभिप्रदेशं कटिपार्श्वकुक्षिं

गत्वा शकुहोषचयं विलोच्य ॥४०॥

संस्नेह कार्यं सपुरीषदोषः

सम्यक् सुखेनैति च यः स बस्तिः ।

यः ने अस्ति जो बस्ति, नाभिप्रदेशम् नाभि-प्रदेश नाभिप्रदेश, कटिपार्श्व- डेट, पडभा कटि, पाश, कुक्षिम् अने उरभा और कुक्षिमें, गत्वा अर्धने जाकर, शकुहोषचयम् भण तथा दोषना संशयने मल और दोषसंवातका, विलोच्य वक्षोवी मन्यन करके, कायम् शरीरन्तु शरीरको, संस्नेह स्नेहन करी स्निग्ध करके, सपुरीषदोषः भक्ष अने दोषसहित मल और दोषके साथ, सुखेन सुभपूर्वके सुखपूर्वक, एति पक्षार आवे छे बाहर आती है, सः ते वह, सम्यक् बस्तिः सारी रीति आपेक्षी अस्तिना बक्षु छे अच्छी प्रकार दी हुई बस्तिका लक्षण है ॥ ४०॥

४०. नाभिप्रदेशं कटिपार्श्वकुक्षिं गत्वा शकुहोषचयं विलोच्य—

नाभिप्रदेशं च कटिं च गत्वा कुक्षिं समाकोच्य पुनश्च

पृष्ठम् (अ. ब. ब. ब.)

विलोच्य—निराश (ब.)

—विषेय (ब.)

४१. संस्नेह कार्यं सपुरीषदोषः सम्यक् सुखेनैति च यः स बस्तिः—

संस्नेह कार्यं सिधिकां कृत्वा दोषान् पुरीषं प्रविष्टं विमज्ज

(अ. ब. ब. ब.)



40-40½. Enema is that which reaching upto the umbilical iliac, lumbar and hypochondriac regions and churning up the fecal and morbid matter and spreading the unctuous effect in the whole body, draws out the fecal and morbid matter with ease.

प्रसृष्टविण्मूत्रसमीरणत्वं

रुच्यग्निवृद्ध्याशयलाघवानि ॥४१॥

रोगोपशान्तिः प्रकृतिस्थता च

बलं च तत् स्यात् सुनिरुद्धलिङ्गम् ।

प्रसृष्टविण्मूत्रसमीरणत्वम् भण, मूत्र तथा वायुनं सारी रीते नीकणुं मल, मूत्र और वायुका मली प्रकार आना, रुचि-रुचि भोजनमें रुचि, अग्निवृद्धि-अग्नि वृद्धि अग्नि की वृद्धि, आशयलाघवानि डोहानी अधुना आशयमें हलकापन, रोगोपशान्तिः रोगनी शान्ति रोग की शान्ति, प्रकृतिस्थता च देवोने सम-भाव दोषोंका समभाव, बलम् च अने अग्नि उत्पत्ति और बलकी उत्पत्ति, तत् अये ये, सुनिरुद्ध-सारी रीते आपेदी निरुद्ध अस्तिना अच्छी प्रकार दी हुई निरुद्ध वस्तिके, लिङ्गम् अक्षु लक्षण, स्यात् अये हैं ॥ ४१३ ॥

41-41½. Elimination of feces, urine and air, increase of the appetite and the gastric fire, lightness of the emunctories and alleviation of ailments and return to health and vitality, are the signs of the successful administration of the evacuative enema.

४१. एनक्लोनान्तरम्—

स्वसङ्ख्येयः सपुरीषदोषः प्रत्यागतो वस्तिरिति प्रशस्तः ।

इत्यधिकः पाठः (ड.) पुस्तके ।

स्याद्रुक्छिरोद्गुदवस्तिलिङ्गे

शोफः प्रतिश्यायविकर्तिके च ॥४२॥

हृल्लासिका मारुतमूत्रसङ्गः

श्वासो न सम्यक् च निरुद्धिते स्युः ।

शिरः-हृदः भस्तिक, हृदय शिर, हृदय, गुद-वस्ति-युद्ध, अस्तिप्रदेश, गुदा, वस्तिप्रदेश, लिङ्गे अने शिश्रमा और लिङ्गमें, रुक् स्यात् पीडा थाय दर्द हो, शोफः तथा शोफे तथा शोफ, प्रतिश्याय-सङ्गेभम प्रतिश्याय, विकर्तिके च अने वाढ थाय और कर्तनके समान पीडा हो, हृल्लासिका वणी भोग पुनः जी मचलाना, मारुतमूत्रसङ्गः वातरोध, मूत्ररोध वातरोध, मूत्ररोध, श्वासः च अने श्वास और श्वास, स्युः थाय हों, सम्यक् निरुद्धिते च अये सारी रीते नहि आपेदी निरुद्ध अस्तिना अक्षु अये अच्छी प्रकार न दी हुई निरुद्ध वस्तिके लक्षण हैं ॥ ४२३ ॥

42-42½. If the evacuative enema has not acted satisfactorily, there will be pain in the head, stomach, rectum, bladder and phallus, edema, coryza, griping pain, nausea, retention of flatus and urine, and dyspnea.

लिङ्गं यदेवातिविरेचितस्य

भवेत्तदेवातिनिरुद्धितस्य ॥४३॥

यत् एव अये जो, अति-अतिशय अति, विरेचितस्य विरेचन पाभेक्षना विरक्तिके, लिङ्गम् अक्षु अये लक्षण हैं, तत् एव ते अये ही, अति-अतिशय अति, निरुद्धितस्य निरुद्ध पाभेक्षना निरुद्धितके, भवेत् थाय अये होते हैं ॥ ४३ ॥

४२. स्याद्रुक्छिरोद्गुदवस्तिलिङ्गे शोफः प्रतिश्यायविकर्तिके च-स्यात् हृल्लासिका मारुतमूत्रसङ्गः पूर्तिः प्रतिश्यायविकर्तिके च (घ. क.)

४३. हृदय-वस्तिलिङ्गे-हृदयगुदवस्तिलिङ्गे (झ. ड. द. घ.)

४४. विकर्तिके च-विकर्तिका (क.)

४५. हृल्लासिका मारुतमूत्रसङ्गः-हृल्लासिकामारुतमूत्रसङ्गः (घ.)

४६. निरुद्धिते स्युः-निरुद्धितस्य (घ.)

४७. स्युः-स्यात् (घ. घ.)

43. The signs of the over-action of the evacuative enema are the same as those produced by the overaction of purgation.

પ્રત્યેત્યસકં સશકુચ તૈલં

રક્તાદિવુદ્ધીન્દ્રિયસંપ્રસાદઃ ।

સ્વપ્નાનુવૃત્તિરંધુતા ચલં ચ

સુષ્ટાશ્ચ વેગાઃ સ્વનુવાસિતે સ્યુઃ ॥૪૪॥

તૈલમ્ તૈલ તૈલ, અનક્તમ્ રેડાયા વગર પૃથક્ સ્વપ્ને, સશકુચ ચ મળસહિત મનકે સાથ, પ્રત્યેતિ પાશુ આંદ્રે છે વાપસ આતા હૈ, રક્તાદિ-વુદ્ધિ-રક્ત વગેરે ધાતુઓ, બુદ્ધિ રક્ત આદિ ધાતુઓની એવં બુદ્ધિ, હન્દ્રિય- અને ઇન્દ્રિયો. બૌર ઇન્દ્રિયોની, સંપ્રસાદઃ નિર્મળ આય છે પ્રસન્નતા હોતી હૈ, સ્વપ્નાનુવૃત્તિઃ નિદ્રા સારી રીતે આવે છે નૌદ મલી પ્રકાર આતી હૈ, રંધુતા શરીરની રંધુતા થાય છે શરીરમેં હલકાપન હોતા હૈ, ચલચ ચ બળ આવે છે ચલકી ઉત્પત્તિ હોતી હૈ, વેગાઃ ચ અને વેગો બૌર મલમૂત્રાદિ મલી પ્રકાર, સુષ્ટાઃ પ્રવૃત્ત પ્રવૃષ્ઠ, સ્યુઃ થાય છે હોતે હૈ, સ્વનુવાસિતે એ સારી રીતે આપેલી અનુવાસનઅસ્તિનાં લક્ષણ છે વે અચ્છી પ્રકાર દી હુઈ અનુવાસવસ્તિકે લક્ષણ હૈ ॥ ૪૪ ॥

44. The signs of the successful unctuous enema are the return of oil with the fecal matter without being stuck up anywhere, the clarity of blood and other body-elements and intellect and the sense organs, inclination to sleep, lightness of body, increase of vitality and regulation of the excretory urges

અચઃશરીરોદરવાહુપૃષ્ઠ-

પાર્શ્વેષુ વપ્રક્ષરં ચ ગાત્રમ્ ।

પ્રહ્રમ્ વિમૂઢસમીરણાના-

મસમ્બયેતાન્યનુવાસિતસ્ય ॥૪૫॥

૪૪. રક્તાદિવુદ્ધીન્દ્રિયસંપ્રસાદઃ-વસ્ત્રાદિવુદ્ધીન્દ્રિયસંપ્રસાદઃ (૫.)

૪૫. મોઢમ્-ચર્ચઃ (મ. ૫.)

૪૫. નામ્યનુવાસિતસ્ય-નામ્યનુવાસિતે સ્યુઃ (ક-ક. ૫.)

અચઃશરીર- શરીરમેં નીચેલાં ભાગ શરીરકે નીચેકે ભાગમેં, ઉદર-વાહુ- ઉદર, બાહુ ઉદર વાહુ, પૃષ્ઠ-પાર્શ્વેષુ પૃષ્ઠ તથા પાર્શ્વોમાં પીઠ તથા પાર્શ્વમેં, વપ્ર- પીઠા દર્દ, ગાત્રમ ચ શરીરમાં શરીરમેં વપ્રક્ષરમ્ રક્ષ અને કટ્ટે-રપશુ કક્ષતા બૌર કઠોળતા, વિદ્-મૂઢ- તથા મળ મૂઢ મલ-મૂઢ. સમીપ્પાનાન નેમ્બ પાનુતે એવં વાયુકા, પ્રહઃ ચ રોધ અવરોધ પતાનિ એ વે. અસમ્બય્ અનુ-વાસિતસ્ય સારી રીતે નૌદ આપેલી અનુવાસન અસ્તિ-નાં લક્ષણ છે અચ્છી પ્રકાર ન દી હુઈ અનુવાસન અસ્તિનાં લક્ષણ હૈ ॥ ૪૫ ॥

45. The signs of the imperfect action of the unctuous enema are pain in the lower part of the body, abdomen, arms back and sides of the body, dryness and roughness of the limbs and the retention of feces, urine and flatus.

હ્રાસમોહક્રમસાદમૂર્છા

વિકર્તિકા ચાત્યનુવાસિતસ્ય ।

હ્રાસ- મોળ જી મચકાના, મોહ- મોહ મોહ, ક્રમ-સાદ- માક, શિખિલતા ક્રમ, સાદ, મૂર્છાઃ મૂર્છાઃ મૂર્છાઃ, વિકર્તિકા ચ અને વાદ બૌર વિકર્તિકા, ચાત્યનુવાસિ-તસ્ય એ અતિયોગથી આપેલી અનુવાસન અસ્તિનાં લક્ષણ છે વે અતિયોગથી દી હુઈ અનુવાસવસ્તિકે લક્ષણ હૈ ॥ ૪૫ ॥

45. And the signs of the excessive action of the unctuous enema are nausea, stupor, fatigue, exhaustion, fainting and griping pain.

અચિત્તેહપ્રત્યાયમનકાલઃ —

ચસ્યેહ ચામાનનુવર્તને ગ્રીવ

સેહો નરઃ સ્વાપ્ સ વિશુદ્ધદેહઃ ॥૪૬॥

૪૬. અનુવાસિતસ્ય-અનુવાસિતે (૫.)

૪૬. સ્નેહો નરઃ-સ્નેહાનરઃ (ક.)

आश्वागतेऽन्यस्तु पुनर्विधेयः

स्नेहो न संस्नेहयति ह्यतिष्ठन् ।

इह यस्य अलीं ७ पुंशुभं। यहाँ जिस पुरुषमें, त्रीन् यामान् त्रयु प्रहरं सुधी तीन प्रहर तक, स्नेहः अनुवासनस्नेह, अनुवर्तते अनुवर्तन करे छे इह जाता है, सः नरः ते पुंशु वद पुरुष विशुद्ध-देहः शुद्ध देहवाला शुद्धदेह, स्यात् अने छे होता है, आशु आगते अने स्नेह तस्त् पछे आवे ते। स्नेहके शीघ्र वापस आनेपर, अन्यः तु अलीं स्नेह दूसरा स्नेह, पुनः विधेयः इरीथी आपवे। ओछे फिर देना चाहिए, हि कारणु के क्योंकि, अतिष्ठन् शरीरमा नहि रहेवे। शरीरमें न रहा, स्नेहः स्नेह स्नेह, न संस्नेहयति स्नेहन करते। नथी क्षिप्र नहीं करता ॥ ४६३ ॥

46-46½. That person's body is well purified in whom the unctuous fluid returns after three yamas; if it returns much earlier, then another enema should be given. If the unctuous enema is not retained, it cannot produce the desired unctuous effect in the body.

कर्मवस्ति-कालवस्ति-योगवस्तीनां विवरणम्—

त्रिंशममताः कर्म नु वस्तयो हि

कालस्ततोऽर्धेन ततश्च योगः ॥४७॥

सान्वासना द्वादश वै निरुहाः

प्राक् स्नेह एकः परतश्च पञ्च ।

काले त्रयोऽन्ते पुरतस्तथैकः

स्नेहा निरुहान्तरिताश्च षट् स्युः ॥४८॥

४७. त्रिंशममताः कर्म नु-त्रिंशस्त्वमताः कर्मसु (व.)

„ कर्म नु-कर्मसु (व.)

४८. काले त्रयोऽन्ते-पुरतस्तथैकः स्नेहा निरुहान्तरिताश्च

षट्—काले त्रयोऽन्ते-पुरतस्तथैकः स्नेहा निरुहान्तरिताश्च

षट् (व.)

„ काले त्रयोऽन्ते-कालवस्तीनां (व.)

योगे निरुहास्तथैव देयाः

स्नेहाश्च पञ्चैव परादिमध्याः ।

कर्मवस्तयः नु कर्मवस्तिभ्यो। कर्मवस्तिबां, त्रिंशत् मताः हि त्रीस मानेव छे तीस कही हैं, ततः तेनी उनकी, अर्धेन कालः अर्धी कालवस्तिभ्यो छे आधी कालवस्तिबां है, ततः अने तेनाथी और उनसे, अर्धेन च अर्धी आधी योगः योगवस्तिभ्यो छे योग-वस्तिबां हैं, सान्वासनाः आर अनुवासन वस्तिवस्ति वारह अनुवासन वस्तिवस्ति, द्वादश आर बारह, निरुहाः निरुहवस्तिभ्यो। निरुहवस्तिबां, प्राक् तथा शश्चातमा तथा प्रारम्भमें, एकः स्नेह अथ स्नेह-वस्ति एक स्नेहवस्ति, परतः पञ्च च अने अंतमा पांच स्नेहवस्तिभ्यो देवी आ प्रभाषे कर्मवस्तिभ्यो ३० गाय छे और अन्तमें पांच स्नेहवस्तिबां देवे, इस तरह कर्मवस्तिबां ३० होती हैं, अन्ते त्रयः स्नेहाः अंतमा त्रयु स्नेहवस्तिभ्यो अन्तमें तीन स्नेहवस्तिबां, तथा पुरतः तथा शश्चातमा तथा प्रारम्भमें, एकः अथ स्नेहवस्ति एक स्नेहवस्ति निरुह-अन्तरिताः अने पथमा ७ निरुह-वस्तिवाणी और बीचमें छः निरुहवस्तिबांवाली, षट् ७ अनुवासन वस्तिभ्यो छः अनुवासन वस्तिबां, स्युः छे अथो भणी हैंये मिलकर, काले कालवस्तिभ्यो १६ आ १६ काल-वस्तिबां १६ होती हैं, निरुहाः निरुहवस्तिभ्यो निरुहवस्तिबां, त्रयः एव त्रयु ७ तीन ही, देयाः देवी देनी चाहिए, पर-आदि-मध्याः अने अन्तमा, शश्चातमा तथा पथमा और अन्तमें, प्रारम्भमें तथा मध्यमें, पञ्च एव पांच ७ पांच ही, स्नेहाः च स्नेहवस्तिभ्यो देवी स्नेहवस्तिबां देनी चाहिए, योगे आ प्रभाषे योगवस्तिभ्यो ८ आ ८ छे इस तरह योगवस्तिबां ८ होती हैं ॥४७-४८॥

47 48½ In the Karma type of procedure, it is laid down that thirty enemata should be given; in the Kala type of procedure, half this number should be given; and in the Yoga type procedure the half of the last. In the

४९. योगे निरुहास्तथैव-योगो-निरुहास्तथैव-एव (व.)

„ च पञ्चैव-तथा षट् (व.)

first procedure, twelve each of the unctuous and evacuative enemata should be given in the middle; one unctuous enema in the beginning and five at the end should be given. In Kala type of procedure there will be one unctuous enema in the beginning, six each of unctuous and evacuative enemata in the middle, and three unctuous enemata in the end. In Yoga type of procedures, only three evacuative enemata are to be given and five of unctuous enemata. These latter may be given at any time, that is, either in the beginning the middle or the end.

त्रीन् पञ्च वाऽऽहुश्चतुरोऽथ षट्वा

वातादिकानामनुवासनीयान् ॥४९॥

स्रोतान् प्रदायाशु मिषग्विदध्यात्

स्रोतोविशुद्ध्यर्थमतो निरुहान् ।

वातादिकानाम् वातादिकर्मा वात, पित्त और कफमें, त्रीन् पञ्च वा त्रिषु पांच तीन पांच, अथ चतुरः षट् वा चार के छ चार अथवा छः, अनुवासनीयान् अनुवासन अनुवाचन, स्नेहान् स्नेह स्नेह, प्रदाय अतः आपीने पछी देकर पश्चात्, मिषक् वैद्य वैद्य, स्रोतो-विशुद्ध्यर्थम् स्रोतो-नी शुद्धि भाटे स्रोतोके शोधनके लिए, निरुहान् निरुद्धभरितओ, निरुद्धस्त्रियाँ, आशु तत्तत् क्षीघ्र, विदध्यात् आपवी ओर्ध् ओ देवे, आहुः ओम् आचार्यो कहे छे ऐसा आचार्य कहते हैं ॥ ४९ ॥

49-49½. They say that after giving three, four, five or six unctuous enemata according to the degree of morbid humors i. e. vata etc., the physician

should give evacuative enemata for the purification of the body-channels.

शिरोविरेचनस्य विधिः—

विशुद्धदेहस्य ततः क्रमेण

स्निग्धं तलस्वेदिनमुत्तमाङ्गम् ॥५०॥

विरेचयेत् त्रिविधैकशो वा

बलं समीक्ष्य त्रिविधं मलानाम् ।

ततः ते पछी इस प्रकार, विशुद्धदेहस्य (विशुद्ध) अथवा देहागता शरीरके शुद्ध होबानेपर, उत्तमाङ्गम् भस्त्रकेने शिरको, क्रमेण क्रमशः क्रमपूर्वक स्निग्धम् स्नेह अंगारी स्निग्ध करके, तलस्वेदिनम् हलेश्वरीने भरकेरी तेथी स्वेदन करी हाथकी तलीको गरम कर उसके स्वेदन करके, मलानाम् भोगानु मलोंके, त्रिविधम् बलम् त्रिषु प्रकारनु अथ तीन प्रकारके बलोंके, समीक्ष्य ओर्ध् देखकर, त्रिः द्विः अथ त्रिषु बार, द्वे बार तीन, दो, अथ एकशः वा के ओर्ध्वार या एकशः, विरेचयेत् शिरोविरेचन हेतु शिरोविरेचन देवे ॥ ५० ॥

50-50½. After the body has been purified, the person's head should be methodically anointed and sweated with the palm of the hand. The physician on ascertaining the degree of intensity of the morbid humors, should give errhine treatment, once, twice or thrice as required.

समहीनातियोगलक्षणानि—

उरःशिरोलाघवमिन्द्रियाच्छयं

स्रोतोविशुद्धिश्च भवेद्विशुद्धे ॥५१॥

मलोपलेपः क्षिरसो गुरुत्वं

निष्ठीवनं चाप्यथ दुर्विरिक्ते ।

४९. वातादिकानामनुवासनीयान्—वातादिकेभ्यस्त्वनुवासनीयान् (स. ब.)

५०. प्रदायाशु—प्रदर्शय (ब)

५०½. विशुद्धदेहस्य—विशुद्धकायस्य (ब. ब. ब.)

५१. इन्द्रियाच्छयं—इन्द्रियाणां (ब. ब. फ.)

५२. मलोपलेपः—मलोपलेपः (ग.)

## શિરોક્ષિશઙ્ગશ્રવણર્મિતોદા-

અત્યર્થશુદ્ધે તિમિરે ચ પચ્યેત્ ॥૫૨॥

વિશુદ્ધે શિરોવિરેચનની સમજૂતી શુદ્ધ અર્થેશ મધુપ્થમાં સમ્યક્ શિરોવિરેચન હોને પર, ઘરઃશિરો-લાવવમ્ છાતી અને મધ્યાહ્ન હલકાપણું છાતી ઓર શિરમાં હલકાપણ, હિન્દિયાચ્છવન ઇન્દિયની નિર્મળતા, હિન્દિયોની નિમલતા, સોનોવિશુદ્ધિઃ ચ તથા સોતોન્દી શુદ્ધિ ઓર સંતોષી શુદ્ધિ. અવેદ થાય છે હોતી હૈ દુષ્કરિકે શિરોવિરેચન ગરબર ન થયું હોય તો શિરો વિરેચનકે અંગેસે, મલોપલેનઃ ગળામાં કદ દેપાઈઅય છે મલેમે કફસ લેપસા હોય શિરસઃ માથું શિરમે, ગુરુત્વમ્ ભારે થાય છે મારીપન, અથ નિષ્ટીવનમ્ ચ અપિ અને થૂક ખૂબ આવે છે ઓર થૂકકા વહુત આના હોતા હૈ. અત્યર્થશુદ્ધે માથાનું અતિભોગથી શોષન થતાં શિરોવિરેચનકે અત્યોગસે, શિર-અશિ-માથું, આંખ શિર, આંહ, શઙ્ગશ્રવણ શંખદેશ અને કાનમાં સંસ્પ્રદેશ ઓર કાનમે, આર્તિવેદો પીડા તથા તોડ થાય છે પીડા તથા તોડ હોતે હૈ, તિમિરમ્ ચ અને અંધારા ઓર અન્વેશ. પચ્યેત્ આવે છે વીચતા હૈ ॥ ૫૧-૫૨ ॥

51-52. In case of successful errhine therapy, there will be lightness of the chest and head, clarity of the senses and purification of the body channels. If the errhine therapy has acted amiss, there will be mucus-secretions in the throat, heaviness of the head and ptialism. In over-action of the errhine therapy, there will be aching pain in the head, eyes, temple and ear, and faintness. In case of over-action, the remedy consists in the administration of demulcent drinks and soft and fluid medications.

તેષુ ચિકિત્સા—

સ્વાત્તર્પણં તત્ર મૃદુ દ્રવં ચ

સિન્ધવસ્ય તીક્ષ્ણં તુ પુનર્ન યોગે ।

## હત્યાતુરસ્વસ્થસુખઃ પ્રયોગો

બલાયુષોર્વૃદ્ધિકદામયઙ્ગઃ ॥૫૩॥

તત્ર મૃદુ તેમાં મૃદુ હસ અતિયોગમે મૃદુ, દ્રવમ્ અને દ્રવ ઓર દ્રવ, તર્પણમ્ સ્વાદ તર્પણ દેવું તર્પણ દેના ચાહિય, ન યોગે પુનઃ અને અયોગમાં ફરીને ઓર અયોગમે ફિર, સિન્ધવસ્ય તુ સ્નેહન કરીને સ્નેહન દેકર, તીક્ષ્ણમ્ તીક્ષ્ણ શિરોવિરેચન તીક્ષ્ણ શિરોવિરેચન, સ્વાદ દેવું દેના ચાહિય, હતિ આ વહ, જાતુર-રોગી રોગી, સ્વસ્થસુખઃ અને સ્વસ્થને મુખકર ઓર સ્વસ્થ દોનોકે લેણ સુલદાયક, બલાયુષોઃ બલ અને અયુષ્યની બલ ઓર આયુકો, વૃદ્ધિકદા વૃદ્ધ કરનાર વધાનેવાલા, કદામયઙ્ગઃ તથા રોગોને હલુનાર તથા રોગોકા નાશ કરનેવાલા, પ્રયોગઃ પંચકર્મને પ્રયોગ હલો છે પંચકર્મકા પ્રયોગ કહ દિયા હૈ ॥ ૫૩ ॥

53. In case of under-action, the subject should be given a stronger dose of errhines after preparation with fresh oleation. Thus we have described the courses of the purificatory therapy, which are conducive to the establishment of the health and happiness of the patient, and also which promote the vitality and length of life, and are curative of all disease-conditions.

વસ્ત્યાદિષુ પરિહારકાલઃ—

કાલસ્તુ વસ્ત્યાદિષુ યાતિ યાચાં-

સ્તાવાન્ ભવેદ્ દ્વિઃ પરિહારકાલઃ ।

વસ્ત્યાદિષુ તુ અસ્તિ વગેરેમાં વસ્તિ આદિમે, યાવાન્ કાલઃ બેટથો કાળ જિતના કાલ, યાતિ અથ છે લગતા હૈ, તાવાન્ દ્વિઃ તેનાથી બમણો સયસે દુગુના, પરિહારકાલઃ ૫૨હેછોને કાળ પરહેજકા કાલ, મવેત્ હોય છે હોતા હૈ ॥ ૫૩૩ ॥

૫૩ કુલઃ પ્રયોગો-ચિકિત્સાઃ પ્રયોગે (૪)

૫૪ પ્રયોગો-પ્રયોગે (૫)



कोष्ठे च अने डोहो और कोष्ठके, मृदो मृदु होता कोमल होनेके, अत्युष्णतीक्ष्णः तेभ्यः अस्ति अति उष्णु डे तीक्ष्णु होता एवं बस्तिके अत्यन्त गरम या तीक्ष्ण होनेसे, बस्तिः अस्ति बस्ति, प्रणीतमात्रः आपत्ता देतः देते ही, पुनः एति पाछी आवे छे वापस आ जाती है ॥ ५६३ ॥

56-56½. In conditions where there is sudden urge for voiding feces, flatus, or urine, or where there is excessive increase of vata, or where the enema fluid is excessively hot and pungent, or the person is of the soft-bowelled type, the enema returns immediately after being injected.

बेषु साध्येष्वपि कर्म न सिद्धिमिति ते रोगाः—

मेदःकफाभ्यामनिलो निरुद्धः

शूलाङ्गसुतिश्चयथून् करोति ॥५७॥

अहं तु युञ्जन्नबुधस्तु तस्मै

संवर्धयत्येव हि तान् विकारान् ।

मेदःकफाभ्याम् मेदः अने ऋक्षी मेद और कफसे, निरुद्धः रुंधायेदो रुकी हुई, अनिलः वायु वायु, शूल-अङ्गसुति- शूल, स्पर्शज्ञान शूल, स्पर्शज्ञान, चयथून् अने सोओ और शोध, करोति करे छे उत्पन्न करती है, तस्मै तु ते रोगवाणा भुत्तुयने उन रोगवाले मनुष्यमें, स्नेहम् युञ्जन् स्नेह आपनार स्नेहका प्रयोग करके, बुधः तु भूम् वैध मूर्ख वैध, तान् विकारान् हि ते विकारोने न उन विकारोंको ही, संवर्धयति एव अवश्य ५५१रे छे अवश्य बढ़ा देता है ॥ ५७३ ॥

57-57½. The vata being obstructed by accumulations of fat or of mucus, gives rise to colic, numbness of the limbs and edema. The ignorant physician giving an unctuous enema in

such conditions, will only further aggravate those very conditions.

रोगास्तथाऽन्येऽप्यवितर्क्यमाणाः

परस्परेणावगृहीतमार्गाः ॥५८॥

संदूषिता धातुभिरेव चान्यैः

स्वैर्भोजैर्नोपशमं व्रजन्ति ।

तथा तथा इस प्रकारके, परस्परेण ओंओ भीओथी एक दूसरेसे, अवगृहीतमार्गाः रोकथेदो मार्गवाणा रुके हुए मार्गवाले, अन्यैः धातुभिः च एव तथा अन्य धातुओथी और अन्य धातुओंसे, संदूषिताः दूषित धवाथी दूषित होनेसे, अवितर्क्यमाणाः ओंओ न शकता न पहचाननेके कारण, अन्ये रोगाः ओंओ रोगो अन्य रोग, अपि पक्षु मी, स्वैः भोजैः पोताना औषधोथी अपनी औषधियोंसे, उपशमम् शान्त शान्त, न व्रजन्ति यता नथी नहीं होते ॥ ५८३ ॥

58-58½. Similarly, other disorders which overlap each other in their courses and get mixed up with the morbidity of other body-elements and consequently prove difficult for diagnosis, fail to yield to the specific remedies.

सर्वे च रोगप्रशमाय कर्म

हीनातिमानं विपरीतकालम् ॥५९॥

मिथ्योपचाराच्च न तं विकारं

शान्तिं नयेत् पथ्यमपि प्रयुक्तम् ।

रोगप्रशमाय रोगना शमन भाटेनु रोगकी शांतिके लिए, सर्वम् च सर्व सब, पथ्यम् अपि कर्म पथ्य उर्भ पक्षु पथ्य कर्म मी, हीनातिमानम् हीन मात्राथी, अति मात्राथी हीन मात्रासे, अति मात्रासे, विपरीतकालम् विपरीत कालथी विपरीत समयसे, मिथ्योपचाराच्च च अने मिथ्या उपचारथी और मिथ्या उपचारसे, प्रयुक्तम् प्रयोग करवाभा आवता प्रयुक्त किये जाने पर, तम् विकारम्



ते विकारने उस रोगको, ज्ञान्तिम् शान्त शान्त, न नवेत् करतुं नभी नहीं करता ॥ ५९३ ॥

59-59½. All therapeutic measures designed to alleviate disease, however wholesome and however skilfully given, fail to bring about the alleviation of disease, if they are used either in insufficient or excessive measure or at the wrong time or in the wrong manner.

अध्यायोक्त्यसंप्रदः —

तत्र श्लोकः—

प्रश्नानिमान् द्वादश पञ्चकर्मा-

प्युद्दिश्य सिद्धाविह कल्पनायाम् ॥ ६० ॥

प्रजाहितार्थं भगवान् महार्थान्

सम्यग्जगादर्थित्वोऽत्रिपुत्रः ।

तत्र ते विषयभा उक्त विषयमें, श्लोकः ७५३६१ने। श्लोक ७५३ उपसंहारका श्लोक है कि, ऋषिवरः ऋषिभोभा श्रेष्ठ ऋषिवर, भगवान् भगवान् भगवान्, अत्रिपुत्रः आनेथे अत्रिपुत्रने, पञ्चकर्माणि पञ्चकर्माणि पञ्चकर्माणि, उद्दिश्य उद्दिष्टी लक्ष्य करके, महार्थान् भद्रा अर्थवाणा महान् अर्थवाण, इमान् आ इत, द्वादश बारह, प्रश्नान् प्रश्नोना प्रश्नोके, प्रजा-हितार्थम् प्रजाना हित भाटे प्रजाके हितके लिए, इह कल्पनायाम् सिद्धौ आ उद्दिष्टनासिद्धि अभ्यासभा इस कल्पनासिद्धि अध्यायमें, सम्यक् सारी रीति सम्यक् प्रकारसे, जगाद उत्तर आभा ७ उत्तर दिये हैं ॥ ६०३ ॥

Here is the recapitulatory verse—

60-60½. The worshipful son of Atri, the foremost of sages, in this chapter on the successful application of various therapeutic measures, declared fully for the good of the people, the answers to twelve questions of great

significance concerning the five purification procedures

इत्यग्निवेशकृते नन्वे चरकप्रनिर्गस्तृतेऽप्राप्ते  
दृढबलसंपूरिते सिद्धिस्थाने कल्पनासिद्धिर्नाम

प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

इति आ प्रभाषे इय प्रकार, अग्निवेश-कृते अग्निवेशे अथेष्टा अग्निवेशे वनाये चरक-प्रनिर्गस्तृते तन्त्रे अने अन्तरी मतिपंक्षार प. मेष्टा आ शास्त्रभा और चरकके द्वारा संस्कृत इस शास्त्रके, अप्राप्ते अप्राप्त प्रयास, दृढबलसंपूरिते अने दृढबले पूरा करेवा और दृढबलमें पूर्ण किये गये, सिद्धिस्थाने सिद्धिस्थान १३थे सिद्धिस्थानमें, कल्पनासिद्धिः 'उद्दिष्टना-सिद्धि' 'कल्पनासिद्धि' नाम न. भने। नानका, प्रथमः पहेले प्रथम, अध्यायः अध्याय अ'पूव' अथो अध्याय समाप्त हुआ ॥ १ ॥

1. Thus, in the Section on Success in Treatment in the treatise compiled by Agnivesa and revised by Caraka, the first chapter entitled 'The Successful application of the Various Therapeutic Measures' not being available, the same as restored by Dridhabala, is completed.

द्वितीयोऽध्यायः ।

जीने अध्याय अध्याय दूसरा

Chapter II

पञ्चकर्मोपसिद्धपकमः—

अथातः पञ्चकर्म्यां सिद्धिं व्याख्यास्यामः ॥ १ ॥

इति ह स्माह भगवानात्रेयः ॥ २ ॥

अथ अतः हने अहो'थी अथ आगे, पञ्चकर्म्याम् सिद्धिम् 'पञ्चकर्म्यासिद्धि' नामना अभ्यास'पूव' पञ्चकर्म्या-

६०. सिद्धाविहकल्पनायाम्—सिद्धाविह समाहिताय (प.)

६०३. महार्थान्—महार्थ (प.)

१. पञ्चकर्म्यां सिद्धिं—पञ्चकर्मोपसिद्धि (प.)

સિદ્ધિ નામકે મધ્યાધના, વ્યાસ્યાદ્યાદિનામઃ વ્યગ્રપદાનુકરણં  
વ્યખ્યાન કરેને ॥ ૧ ॥

મગવાન્ ભગવાન્ મગવાન્, આત્રેયઃ આત્રેયે આત્રેયને,  
હતિ હ આ વિષયમાં નીચે પ્રમાણે જુદા વિષયમે  
નિમ્ન પ્રકારમે હી આજ સ્મ કહેલું છે કહા છે ॥ ૨ ॥

1. We shall now expound the chapter entitled "The Success in Treatment through the Fivefold Purificatory Therapy."

2. Thus declared the worshipful Atreya.

યેષાં ચક્ષાત્ પચ્ચકર્માણ્યગ્નિવેશ ન કારયેત્ ।  
યેષાં ચ કારયેત્તાનિ તત્ સર્વં સંપ્રવક્ષ્યતે ॥ ૩ ॥

મગ્નિવેશ હે અગ્નિવેશ ! હે અગ્નિવેશ ! યેષાં જેઓને  
જિન્દો, ચક્ષાત્ જે કારણે જિવ કારણે, પચ્ચકર્માણિ  
પંચકર્મ પંચકર્મ, ન કારયેત્ ન કરાવવાં બોધીએ  
નહીં કરાનાં વાહિય, ચેષાત્ ચ અને જેઓને બીજાં જિવકો,  
તાનિ તે વે, કારયેત્ કરાવવાં બોધીએ કરાવે વાહિય,  
તત્ તે વહ, સર્વં સર્વ સર્વ, સંપ્રવક્ષ્યતે કહેવામાં  
આવશે કહા જાયગા ॥ ૩ ॥

3. In whom, O, Agnivesa! and for what reason the quinary purificatory therapy is contra-indicated and in whom it is indicated—all this, will now be described.

સામાન્યતઃ પચ્ચકર્માનર્હઃ—

ચણ્ડઃ સાહસિકો મીરઃ કૃતઘ્નો વ્યગ્ર એવ ચ ।  
સદ્રાજમિષજાં દ્રેષ્ટા તદ્દિષ્ટઃ શોકપીડિતઃ ॥ ૪ ॥  
યાદચ્છિકો મુમૂર્ષુશ્ચ વિહીનઃ કરણૈશ્ચ યઃ ।  
વૈરી વૈશ્વવિદગ્ધશ્ચ શ્રદ્ધાહીનઃ સુશક્તિઃ ॥ ૫ ॥

૧. યેષાં...ન કારયેત્-પચ્ચકર્માણિ યેષાં તુ ન કુર્યાદેત્ હેતુના (થ)

૨. યેષાં...સંપ્રવક્ષ્યતે ॥-પચ્ચકર્માણિ યેષાં તુ ન કુર્યાદેત્ હેતુના ।

યેષાં ગાનિ ચ કર્માણિ તત્સર્વં સંપ્રવક્ષ્યતે ॥ (૬)

૪. સદ્રાજમિષજાં દ્રેષ્ટા સદૈશ્વનૃપતિદ્રેષ્ટા (ક પ ઢ ધ)

૫. વૈશ્વવિદગ્ધશ્ચ-વૈશ્વવિદગ્ધશ્ચ (ક. ઢ. ધ.)

મિષજામવિધેયશ્ચ નોપક્રમ્યા મિષગ્નિવદા ।

પતાનુપચરન્ વૈદ્યો બહૂન્ દોષાનવાપ્નુયાત્ ॥ ૬ ॥

પશ્યોડન્યે સમુપક્રમ્યા નરાઃ સર્વૈરુપક્રમેઃ ।

અવસ્થાં પ્રવિભજ્યૈષાં વર્જ્યં કાર્યં ચ વક્ષ્યતે ॥ ૭ ॥

ચણ્ડઃ ઉગ્ર ચણ્ડ, સાહસિકઃ સાહસિક સાહસિક,  
મીરઃ ખીકણુ ડરવોક, કૃતઘ્નો કૃતઘ્ન, વ્યગ્રઃ ચ  
એવ વ્યગ્ર વ્યગ્ર, સત્-રાજ-મિષજામ્ સત્પુરુષ, રાજ અને  
વૈદ્યને સજ્જન, રાજા બીરોએ, દ્રેષ્ટા દ્રેષ કરનાર દ્રેષ  
રહનેવાલા, તદ્દિષ્ટઃ તેઓના દ્રેષનું પાત્ર उसका  
દ્રેષણ પાત્ર, શોકપીડિતઃ શોકપીડિત શોકસે દુઃખી,  
યાદચ્છિકઃ નાસ્તિક નાસ્તિક, મુમૂર્ષુઃ ચ મુમૂર્ષુ મરણો-  
ન્મુદ્ધ, યઃ કરણૈઃ વિહીનઃ ચ જે સાધનોહીન હોય તે  
જો સાધનોસે હીન હો વહ, વૈરી વૈદ્યને વૈરી વૈદ્યકા  
અપકાર કરનેવાલા, વૈશ્વવિદગ્ધઃ ચ વૈદ્યમાની અપનેકો  
વૈદ્ય માનનેવાલા, શ્રદ્ધાહીનઃ શ્રદ્ધાહીન શ્રદ્ધાહીન,  
સુશક્તિઃ ખડુ શકાશીલ વહત સંશયવાલા, મિષજામ્  
અને વૈદ્યને બીર વૈદ્યકા, અવિધેયઃ ચ વશ ન રહેનારનો  
વશમે ન રહેવાલેલી, મિષગ્નિવદા વિદ્યાન વૈદ્યે શિદ્ધાન  
વૈદ્યને, ન ઉપક્રમ્યા ઉપચાર કરવો નહિ બોધીએ  
ચિકિત્સા નહીં કરની વાહિય, પતાન્ એઓનાં ફનકી,  
ઉપચરન્ ઉપચાર કરનાર ચિકિત્સા કરતા હુઆ, વૈદ્યઃ  
વૈદ્યને વૈદ્ય, બહૂન્ ખડુ વહત, દોષાન્ દોષો દોષોકા,  
અવાપ્નુયાત્ આપ્ત થાય છે ભાગી હોતા છે, પશ્યઃ  
એ ફનસે, અન્યે સિવાયના ખીબ અતિરિક્ત, નરાઃ  
પુરુષોની મનુષ્યોકી, સર્વૈઃ ઉપક્રમેઃ સર્વ ઉપચારોથી  
સર્પૂર્ણ ઉપચારોસે, સમુપક્રમ્યાઃ ચિકિત્સા કરવી ચિકિ-  
ત્સા કરની વાહિય, એવામ્ એઓની ફનકી, અવસ્થામ્  
અવસ્થાના અવસ્થાકે અનુસાર, પ્રવિભજ્ય વિભાગ કરીને  
વિભાગ કરકે, વર્જ્યમ્ શું તબવા થોડ્ય છે કૌનસા ઉપક્રમ  
સ્થાજ્ય છે, કાર્યમ્ ચ અને શું કરવા થોડ્ય છે બીર  
કૌનસા કરના યોગ્ય છે, વક્ષ્યતે તે કહેવામાં આવશે  
વહ કહા જાયગા ॥ ૪-૭ ॥

4-7. The man that is fierce, rash, cowardly, ungrateful or fickle, who is

૧. નોપક્રમ્યા-નોપક્રમ્યો (ક. ધ.)

૨. પતાનુપચરન્-પતાનુપચરન્ (જ.)

૩. વર્જ્ય-કાર્યા (ત. ક.)

a hater of good persons, kings and physicians or he who is hated by them or he who is afflicted with grief, or is a fatalist or one doomed to death one who is devoid of the means for treatment or an enemy, impostor or one devoid of faith, a confirmed sceptic or who does not carry out the directions of the physician—such a man should not be taken up, by a wise physician, for treatment. The physician who treats such cases invites many difficulties upon himself. Persons other than such should be treated well with all modes of treatment. Classifying the various morbid conditions, we shall now describe the indications and the contra-indications of the five purificatory procedures with reference to them.

અચ્છદનીયાઃ —

અવસ્થાસ્તાવન્-જ્ઞતશ્ચીનાતિસ્થૂલાતિક્ષણાલ-  
વુદ્ધુર્બલશ્રાન્તપિપાસિતશ્ચુષિતકર્મભારાશ્વહતોપ-  
વાસમૈયુનાશ્ચયનવ્યાયામચિન્તાપ્રસક્તશામગમિ-  
ણીસુકુમારસંવૃતકોષ્ઠવુદ્ધર્જનૌર્ધ્વરક્તપિત્તપ્રસક્ત-  
ચ્છર્દિર્હર્ષવાતાસ્થાપિતાનુવાસિતહૃદ્ગોદાવર્તમૂ-  
ત્રાઘાતઘ્રીહગુલ્મોદરાઘ્રીલાસ્રોપઘાતતિમિરશિર-  
શક્ષુકર્ણાક્ષિશૂલાર્તાઃ ॥૮॥

જ્ઞત-શીળ-ક્ષતયુક્ત, શીઘ્ર ઝરઃજ્ઞત રોગી, ક્ષીણ,  
અતિસ્થૂલ-અતિસ્થૂલ અતિસ્થૂલ, અતિકૃશ્ન-અતિકૃશ્ન  
અતિકૃશ્ન, બાલ-બાલક, વૃદ્ધ-વૃદ્ધ વૃદ્ધ, દુર્બલ-

દુર્બલ દુર્બલ આન્ન-પ્રકેશ ઝેર દુઃખ, પરાસિત-  
તારણ, વગરમે મોરિત કુષિત-શુષ્કા મૂલો, કર્મ-માર-  
કાવધી, ભારથી કામ કરમે, વગર ઝર મેલ અશ્વહત-  
તણ ઘાંચ મ.મ.થી ક.કી મરેલા એ દીર્ઘ મર્ગે  
જ્ઞાન્ત. ડગવામ- ઉપવાસ ડગવા મૈથુન મૈથુન  
મૈથુન અશ્વયન-ભાત-વર-વ્યાયામ-વ્યાયામ  
વ્યાયામ, ચિન્તા-તથા ચિન્તામાં ઝેર ચિન્તામે, પ્રસક્ત-  
મન-વગે જ્ઞાન-શુદ્ધ દેહવાળા ક્ષીણ, ગમિણી-  
ગમિણી ગમિણી સુકુમાર સુકુમાર મેલ, સંવૃતકોષ્ઠ-  
સંકુચિત કેદવાળા સંવૃતકોષ્ઠ. દુર્ધર્જન-મુરકેલીથી  
ઉદરી કરનાર ઘટિનાઈને વાન કરનેસાં ઉર્ધ્વરક્તપિત્ત-  
ઊર્ધ્વ રક્તપિત્તવાળા ઉર્ધ્વ રક્તપિત્તવાળે, પ્રસક્તચ્છર્દિઃ  
સતત ઉદરી કરનાર નેરનાર વમન કરનેવલે ઉર્ધ્વવાત-  
ઊર્ધ્વવાતથી પીડિત ઉર્ધ્વવાતરોગી, આસ્થાપિત-  
આસ્થાપન પામેલ આસ્થાપનવસ્તિ જિન્ટે થી હો વે,  
અનુવાસિત-અનુવાસન પામેલ અનુવાસનવસ્તિ જિન્ટે  
થી હો વે, હૃદ્ગો-હૃદ્ગો હૃદયરોગ, ગદાવર્ત-ઉદાવર્ત  
ઉદાવર્ત, મૂત્રાઘાત-નૂનઘાત મૂત્રાઘાત, ઘ્રીહ-ધ્રીહ  
ઘ્રીહ, ગુલ્મ-ગુલ્મ ગુલ્મ હૃદ-હૃદરોગ-હૃદરોગ,  
ઘ્રીહ-ઘ્રીહ ઘ્રીહ. સ્વરોપઘાત-સ્વરોપઘાત  
સ્વરમંગ તિમિર-તિમિર તિમિર, શિર-શક્ષુ-કર્ણ-અક્ષિ-  
શૂલ-જાર્તાઃ શિર-શક્ષુ, અંબશક્ષુ કણ્ઠશક્ષુ અને નેત્ર-  
શક્ષુથી પીડિત મનુષ્યે ગિગેગોગ, શંકરોગ, કર્મરોગ  
ઝેર અક્ષિરોગમે પીડિત મનુષ્ય, ટાવત તેા તેા અવસ્થાઃ  
વપનને થે.પ નથી વપનકે યોગ્ય નથી હૈ ॥ ૮ ॥

The following are the conditions where emesis is contra indicated — persons afflicted with pectoral lesions, those who are cachectic, very obese or extremely emaciated, who are infants, senile, debilitated, fatigued, thirsty or hungry, those who are exhausted by labour, load-lifting and way-faring, or those given to fasting, sexual excess, study, exercise and thinking, or those that are emaciated, pregnant women and delicate persons, or those whose alimentary

૮. અવસ્થાઃ—અચ્છદનીયાઃ (ક.)
- .. અવસ્થાસ્તાવન્—અચ્છદનીયાસ્તાવન્ (ક. ઇ. ન. ક.)
- .. —અવસ્થાસ્તાવન્ (ક.)
- .. —તથા વર્ગાદિગણે અવસ્થાસ્તુ (ક.)
- .. ર્ણાદિગણે—ર્ણાદિગણેસ્તાવન્ (ક. ઇ. ન. ક.)

tract is contracted, who do not react to emetics easily or who suffer from hemothermia of the upper region, or from incessant vomiting or from disorders of the upward flow of morbid vata, or who take often evacuative or unctuous enemata, who are suffering from cardiac disorders, misperistalsis, lesions of the urinary tract, splenic disorder, Gulma, abdominal diseases, prostratic enlargement, impairment of voice, and faintness, or are afflicted with pain in the head, temples, ears and eyes.

અર્ચ્ચનીયાનાં વનસ્પત્યા વ્યાપદો ભવન્તિ—

તત્ર ક્ષતસ્ય મૂયઃ ક્ષણાનાદ્રક્તાતિપ્રવૃત્તિઃ સ્યાત, ક્ષીણાતિસ્થૂલકુશલાલવૃદ્ધદુર્બલાનામૌષધબલાસહત્વાત પ્રાણોપરોધઃ, આન્તપિપાસિતશુચિતાનાં ચ તદ્વત્, કર્મભારાધ્વહતોપવાસમૈથુનાધ્યયનવ્યાયામચિન્તાપ્રસક્તક્ષમાણાં રૌક્યાદ્રાતરક્તચ્છેદક્ષતભયં સ્યાદ્, ગર્ભિण्या ગર્ભવ્યાપદામગર્ભશ્ચ દારુણા રોગપ્રાપ્તિઃ, સુકુમારસ્ય હૃદયાપકર્ષણાદુર્ધ્વમધો વા સધિરાતિપ્રવૃત્તિઃ, સંવૃતકોષ્ટદુઃસ્થર્ચનયોરતિમાત્રપ્રવાહણાદોષાઃ સ્તુરિક્ષિપ્ત અન્તઃકોષ્ટે જનયન્સ્વન્તર્વિસર્પ સ્તમ્ભં જાડ્યં વૈચિત્ર્યં મરણં વા, ऊर्ध्वगरकपित्तन उदानमुत्क्षिप्य प्राणान् हरेद्रक्तं चातिप्रवर्तयेत्,

૧. અધ્યયન-અધ્યયન (ક. દ.)

૨. ગર્ભવ્યાપદા-ગર્ભવ્યાપામાદામ (ક.)

૩. આમગર્ભશ્ચ-આમગર્ભપ્રપતનાચ (ધ.)

૪. હૃદયાપકર્ષણાત-હૃદયવિકર્ષણાત (ધ.)

૫. હૃદયાપકર્ષણાદુર્ધ્વમધો-હૃદયવિકર્ષણાદુર્ધ્વમધો (ધ.)

૬. અન્તઃકોષ્ટે જનયન્સ્વન્તર્વિસર્પ સ્તમ્ભ-અન્તઃકોષ્ટે વિસર્પ-સ્તમ્ભો જનયન્તિ સ્તમ્ભં (ક.)

૭. અન્તઃકોષ્ટે જનયન્સ્વન્તર્વિસર્પ સ્તમ્ભં જાડ્યં વૈચિત્ર્યં મરણં વા-અન્તઃકોષ્ટે વિસર્પન્તઃ સ્તમ્ભં જાડ્યં વૈચિત્ર્યં મરણં વા

૮. જનયન્તિ (ધ.)

૯. રક્તપિપિત્તનદાનકુક્ષિપ્ત-રક્તપિપિત્તનોદાન કુક્ષિપ્ત (ધ.)

પ્રસક્ત-અર્ચ્ચસ્તદ્વત્, ऊर्ध्ववातास्थापितानुवासितानामूर्ध्व वातातिप्रवृत्तिः, हृद्रोगिणो हृदयोपरोधः, उदावर्तिनो घोरतर उदावर्तः स्याच्छीघ्रतरहन्ता, सूत्राघातादिभिरार्तानां तीव्रतरशूलप्रादुर्भावः, तिमिरार्तानां तिमिरातिवृद्धिः, शिरःशूलादिषु शूलान्तिवृद्धिः, तस्यादेते न वम्याः ।

તત્ર તેમાં इनमें, ક્ષતસ્ય ક્ષતયુક્ત મનુષ્યને ડરા-ક્ષત રોગીકો મૂયઃ ફરીથી અધિક, ક્ષણનાત્ ૪૫૫૫ અવાથી ક્ષત હો જાનેસે, રક્તાતિપ્રવૃત્તિઃ ૫૫૫૨ ૫૫૫૩ ઘોલી નીકળે છે રક્ત અધિક આને લગતા છે, ક્ષીણ-ક્ષીણ ક્ષીણ, અતિસ્થૂલ- અતિસ્થૂલ અતિસ્થૂલ, કુશ-અતિસ્થૂલ અતિસ્થૂલ. બાલ- બાલ બાલક, વૃદ્ધ- વૃદ્ધ વૃદ્ધ, દુર્બલાનાત્ અને દુર્બલ મનુષ્યો. જૌષધબલ- ઔષધનું બળ ઔષધબલકા, અસહત્વાત્ સહન ન કરી શકવાથી સહન ન કરનેસે, પ્રાણોપરોધઃ મરણ થામે છે મરણકો પ્રાપ્ત હોતે છે, આન્ત- થાકેલ થકે, પિપાસિતઃ તરસ્યા પ્યાસી, શુચિતાનાત્ ચ અને બૂખ્યાનું જૌષ મૂલેમેં મી, તદ્વત્ તે ૪ પ્રમાણે થાય છે ફરી પ્રકાર હતા છે, કર્મભાર- કર્મ કરવાથી, ભાર ઉડાવવાથી કાર્ય કરનેસે, આર ડાઠાનેસે, અધ્વહત- ઘાબો માર્ગ થાકવાથી નબળા થયેલ લીધે માર્ગ પર ચલનેસે ક્ષાન્ત, ઉપવાસ- ઉપવાસ ઉપવાસ, મૈથુન- મૈથુન મૈથુન, અધ્યયન- બાહ્યતર પઢાઈ, વ્યાયામ વ્યાયામ વ્યાયામ ક્ષેત્રે વહેવાલે, ચિન્તા- તથા ચિંતામાં તથા ચિન્તામેં, પ્રસક્ત- મગ્ન ક્ષમાણાત્ અને શુષ્ક દેહવાળા મનુષ્યને એવં ક્ષીણ મનુષ્યોકો, રૌક્યાત્ શક્તિને લીધે રુદ્ધતાસે, વાતરક્તચ્છેદ- વાતકોપ, રક્તની પ્રવૃત્તિ વાતકોપ, રક્તસ્રાવ, ક્ષત- અને ક્ષતનો જૌષ ડરાક્ષતકા, ભયમ્ ભય ભય, સ્વાત્ રહે છે રહતા છે, ગર્ભિण्याઃ ગર્ભિણીને ગર્ભિણીકો, ગર્ભ- વ્યાપત્ ગર્ભની વ્યાપત્ ગર્ભકા વિકાર, આમગર્ભશ્ચાદ્ ચ તથા કાચે! ગર્ભ પડી જવાથી તથા આમગર્ભકે ગિરનેસે, દારુણા ભયકર મયાનક, રોગપ્રાપ્તિઃ રોગની પ્રાપ્તિ થાય છે રોગોકો પ્રાપ્તિ હોતી છે, સુકુમારસ્ય સુકોમળ મનુષ્યને સુકુમાર મનુષ્યકો, હૃદય- હૃદયમાં હૃદય પર, અવકર્ષણાત્ આઘાત થવાથી આઘાત લગનેસે, ऊर्ध्वम अधः वा उपरना अधना नीचेना भूर्गथी

૧. તિમિરાર્તાનાં-તિમિરાર્તાનાં (ધ.)



even death. In patients with hemothermia affecting the upper region, it may provoke the Udana vata and take away the life or cause profuse bleeding. In the case of persons afflicted with incessant vomiting, similar are the effects. In condition of upward movement of vata and in persons who have taken corrective or unctuous enema, there will be augmentation of the upward movement of vata. In persons suffering from cardiac disorders there will be impairment of the cardiac function. In cases of misperistalsis, there will be aggravation of the condition which may quickly cause death. Persons afflicted with the lesions in the urinary tract and similar other conditions, there will be manifestation of more acute pain. In persons suffering from fainting, there will be great aggravation. In cases of aches in the head etc., there will be great intensification of pain. Therefore, emesis is contra-indicated in such persons.

तत्रापवादः—

सर्वेष्वपि तु खल्वेतेषु निषगरविरुद्धाजीर्णाभ्यवहारामकृतेष्वप्रतिषिद्धं शीघ्रतरकारित्वादेवामिति ॥ ९ ॥

एतेषु आ इन, सर्वेषु अपि तु खलु सर्वे रोगिणोऽपि सव रोगोमें भी, विष- जे रोगो निष जो रोग विष, गर- अथोगन्थ अर गर, विरुद्ध- विरुद्ध भोजन निरुद्ध भोजन, अजीर्ण- अजीर्ण पर अजीर्ण पर, अन्ध- बहार भोजन भोजन, नामकृतेषु अने आभ्यो उपेक्ष भोजन और नामसे उत्पन्न हुए हैं, एवाम् ऐओना इसके, शीघ्रतरकारित्वादेव अथैत शीघ्रतरादेव

पञ्चाने दीप्ति अति शीघ्रकारी होनेके कारण, अप्रतिषिद्धम् इति ऐओना वमन निषिद्ध नहीं इनमें वमन निषिद्ध नहीं है ॥ ९ ॥

9. Even in all these conditions, emesis is not prohibited if the person is afflicted with acute or chronic poisoning, antagonistic diet, indigestion, predigestion meal and chyme morbidity, as these conditions are very quick in their toxic effect on the body.

वदन्तर्हीः—

शेषास्तु वम्याः; विशेषतस्तु पीनसकुष्ठनवज्वरराज्यक्ष्मकासश्वासगलग्रहगलगण्डश्लीपद-मेहमन्दाग्निविरुद्धाजीर्णाग्निविस्त्रिकालसकविषगर-पीनवृद्धिघविद्धाघःशोणितपित्तप्रसेक (दुर्नाम)-दुल्लभारोचकविपाकावच्यपस्मारोन्मादातिसार-शोफपाण्डुरोगमुष्णपाकदुष्टस्तन्यादयः श्लेष्मव्याधयो विशेषेण महारोगाध्यायोक्ताश्च; एतेषु हि वमनं प्रधानतममित्युक्तं केदारसेतुमेवे शास्त्राद्य-शेषदोषविनाशवत् ॥ १० ॥

शेषाः तु आजीर्णा भाजुसो शेष मनुष्य, वम्याः वमनयोग्य छे वमनके योग्य हैं, विशेषः तु आस डरीने खास कर, पीनस- पीनस पीनस, कुष्ठ- कुष्ठ कुष्ठ, नवज्वर- नव ज्वर नव ज्वर, राज्यक्ष्म- राज्यक्ष्मा राज्यक्ष्मा, कास- कास कास, श्वास- श्वास श्वास, गलग्रह- गलग्रह गलग्रह, गलगण्ड- गलगण्ड गलगण्ड, श्लीपद- श्लीपद श्लीपद, मेह- मेह प्रमेह प्रमेह, मन्दाग्नि- मन्दाग्नि मन्दाग्नि, विरुद्ध- विरुद्ध विरुद्ध भोजन, अजीर्ण- अने अजीर्ण पर और अजीर्ण पर,

१०. मह-महान्न (म.)

विद्धाघः-विद्रुहिः (घ.)

पित्तप्रसेक-पित्तकफप्रसेक (ङ.)

पित्तप्रसेक (दुर्नाम)-पित्तकफप्रसेक (घ.)

शोफ-शोष (ग. घ.)

एतेषु-तेषु (ब.)



अन्न- भोजन भोजन, विस्फुटिका- विस्फुटिका विस्फुटिका  
अलसक- अलसक अलसक, विष- विषयान विषयान  
गरपीत- अलसक गरपीत, दृढ- अर्थ वज्रेषु दृढ  
सर्पादिसे काटा जाना, विषविष- अत्र भोज्येय रक्तभी  
वीधाय विषसे लिप्त सन्नसे अन्न देना, अन्न-भोजन-  
विष- न्दीयेना भोजनमा रक्तपित्त अवोगामी रक्तपित्त  
प्रसेक- उद्भेदेक कर्मसेक, (दुर्नाम अर्थ अर्थ), हृत्तान-  
भोजन जी मिचलाना, करोक- अरुचि अरुचि, अविपाक-  
अपथी अविपाक, अपची- अपथी अपची, अपस्मार-  
अपरभार अपस्मार, उन्माद उन्माद उन्माद, अतिमार-  
अतिसार अतिसार शोक- शोक शोक, पाण्डुरोग-  
पाण्डुरोग पाण्डुरोग, सुखपाक- सुखपाक सुखपाक,  
दुष्टस्तन्य- दुष्ट धावस्य दूषित स्तन्य, आदयः वज्रे  
आदि, विशेषण अने भास्य करीने और विशेषतः,  
महारोगाध्यायोक्ताः च महारोगाध्यायमां उद्देशः  
महारोगाध्यायमे कहे हुए, श्लेष्मन्व्याधय- उद्देशेण करीने,  
एतेषु ओषधीमां इनमें, वमनम् वमन वमन, पश्चात्तम ;  
हि औषधी भुज्य से सबसे मुख्य है, इति ओष एतः,  
रक्त- उद्भुं से कहा है, कदारसेतुनेदे उद्भुं जे  
जेतरने पाणे तो उपाधी क्योंकि जैसे खेतमें गेहूँ के  
तोड़नेसे, शाल्यादि- शाली वज्रे शालि आदिके, अशोच-  
वोष- सुकृष्टि न भवान्ने देव न सुखनेका दोष, विनाश-  
वद नाश पाये छे तेवी रीते वमननी उपन उद्देश  
रोषो नाश पाये छे नष्ट हो जाते हैं वसे वमनसे उक्त  
रोगों नष्ट हो जाते हैं ॥१०॥

10. Emesis is indicated in all other conditions and specially in persons suffering from coryza, dermatosis, recent fever, consumption, cough, dyspnea, spasm of the throat, deradenoncus, elephantiasis, urinary disorders, weakness of gastric fire, antagonistic diet, indigestion, acute intestinal irritation, intestinal torpor, acute poisoning chronic poisoning, poisonous bites or licks or stings hemothermia affecting the lower region, ptialism, (piles), nausea,

anorexia, indigestion, scrofula, epilepsy, insanity, diarrhea, edema, anemia, stomatitis, galactic disorders and disorders of kapha specially mentioned in the chapter on nomenclature of disorders (Sutra Chap. XX); in all these conditions, emesis is considered the foremost of treatment and it acts like the breaking of the bund of the paddy field so that the paddy and other crops are saved from the harm of getting over-watered.

अविरेच्याः —

अविरेच्यास्तु सुभगन्नतगुदमुक्तनालाधोभान-  
रक्तपित्तविलङ्घितदुर्बलेन्द्रियाव्याप्तिनिरुद्धकामा-  
दिभ्यः प्राजीर्णितवज्जरिमदात्ययिताभ्यातशल्यादि-  
तामिहतातेस्त्रिगुणरुद्धदाहणकोष्ठाः क्षतादयश्च  
गर्भिण्यन्ताः ॥११॥

सुभग- सुभमां उद्देशे सुभसे पके हुए, अतगुद-  
क्षययुक्त युक्तवाणा गुदामें क्षतवाले, मुक्तनाक- भगनी  
नाक पर उल्लु वजरेना खुली गुदवलिगो वाले, अशो-  
भागरक्तपित्त- न्दीयेना भोजनमा रक्तपित्तवाणा  
अवोगामी रक्तपित्तसे पीड़ित, विलङ्घित- लङ्घन पाये  
लङ्घन किये हुए, दुर्बलेन्द्रिय- दुर्बल छन्द्रेयवाणा  
निर्बल इन्द्रियोंवाले, अस्यापि- अन्ध अमिवाणा मंशमिवाले,  
निरुद्ध- निरुद्धायेन निरुद्ध कामादिभ्यः काम वज्रेषु  
अभ्य कामादिमें कहे हुए, अजीर्ण- अजीर्णवाणा अजीर्ण-  
रोगी, नवज्वरि- नव ताववाणा नवज्वररोगी, आत्मा-  
आत्मानवाणा आत्मानरोगी, शल्यादित- शल्या-  
पीडित शल्यासे पीडित, अमिहव- प्रहार पायेन अमि-  
घातको प्राप्त हुए, अतिस्त्रिग- अतिस्त्रिग अतिस्त्रिग,  
रुद्ध- रुद्ध रुद्ध, दाहणकोष्ठाः दूर उद्देशावाणाते दूर  
कोष्ठोंके, क्षतादयः तथा अनन्य पुरुषोंमां नष्टावेला  
क्षतधी मर्डी क्षतसे लेकर, गर्भिण्यन्ताः न पुनः  
अर्भाणी दुर्धीनां मनुष्ये, गर्भिणी पर्यन्तक मनुष्योंको,

११ अमिजीमितवज्जरि- अमिजीमितवज्जरि (व.)



अविरेच्याः विरेचनमे येऽग्र रथी विरेचन नहीं देना चाहिए ॥ ११ ॥

11. The conditions in which purgation is contra-indicated are delicate constitutions or ulceration of rectum or prolapse of rectum or hemothermia affecting the lower region or excessive fasting or weakness of the sense, dullness of gastric fire, or persons who have taken evacuating enema or are agitated by passions or those afflicted with indigestion, recent fever, alcoholism, distension of abdomen, foreign body, injury, over-unctuousness, over-dehydrated-ness, hard bowelled condition and group of conditions beginning with pectoral lesions and ending with gravaida described in the previous paragraph.

तेषां विरेचनाया व्यापरी भवन्ति—

तत्र सुभगस्य सुकुमारोऽसौ दोषः स्यात्, क्षत-  
गुदस्य क्षते गुदे प्राणोपरोधकरी रुजां जनयेत्,  
मुक्तनालमतिप्रवृत्त्या हन्यात्, अधोभागरक्तपि-  
त्तिनं तद्वत्, विलङ्घितदुर्बलेन्द्रियालपानिनिरूढा  
औषधवेगं न सहेरन्, कामादिव्यग्रमनसो न प्रव-  
र्तते कृच्छ्रेण वा प्रवर्तमानमयोगदोषान् कुर्यात्,  
अजीर्णिन आमदोषः स्यात्, नवज्वरिणोऽविपक्वान्  
दोषान् न निर्हरेद् वातमेव च कोषयेत्, मदात्य-  
यितस्य मद्यक्षीणे देहे वायुः प्राणोपरोधं कुर्यात्,

१२. क्षते गुदे-क्षते गुदे वायुः (घ.)

„ गुदे प्राणोपरोधकरी-गुदे वायुः प्राणोपरोधकरी क. ख.  
घ. ल.)

„ प्राणोपरोधकरी रुजां जनयेत्-प्राणोपरोधकरी रुजां  
जनयेत् (घ.)

„ तद्वत्-तद्वदेव (घ.)

„ अधोगदोषान्-अधोमदोषान् (ख.)

„ देहे वायुः-देहे वायुः (घ.)

आध्मातस्याधमतो वा पुरीषकोष्ठे निचितो वायु-  
विसर्पन् सहसाऽऽनाहं तीव्रतरं मरणं वा जन-  
येत्, शस्यादितामिहतयोः क्षते वायुराश्रितो  
जीवितं हि स्यात्, अतिस्निग्धस्यातियोगमयं भवेत्,  
रूक्षस्य वायुरङ्गप्रग्रहं कुर्यात्, दारुणकोष्ठस्य विरे-  
चनोद्धता दोषा हृच्छूलपर्वमेदानाहाङ्गमदंच्छर्दि-  
मूर्च्छाक्लमाञ्जनयित्वा प्राणान् हन्त्युः, क्षतादीनां  
गर्भिण्यानां च छर्दनोक्तो दोषः स्यात्; तस्मादेते  
न विरेच्याः ॥ १२ ॥

तत्र तेषां इनमें, सुभगस्य सुभगा ७७३६ने  
सुभग मनुष्यको विरेचन देनेसे, सुकुमारोक्तः सुकुमारने  
भाटे ७७३६ सुकुमार मनुष्यमें कथित, दोषः दोष, दोष,  
स्वात् थाप छे होता है, क्षतगुदस्य क्षतयुक्त गुद-  
वाणाने क्षतगुदरोगीकी, क्षते अधोभी क्षत, गुदे शुद्धभा  
गुदायें, प्राणोपरोधकरीम् विरेचन प्राणोपरोधक विरेचन  
मरणजनक, रुजात् व्याधि पीडाको, जनयेत् उत्पन्न करे  
छे उत्पन्न करता है, मुक्तनालम् मुक्तनाल रोगीने मुक्तनाल  
रोगीके, अतिप्रवृत्त्या अत्यन्ती अतिशय प्रवृत्तिथी मलकी  
अतिप्रवृत्ति होनेसे, हन्यात् भारी नाभे छे सत्युको  
उत्पन्न करता है, तद्वत् ते अधोभाषे इसी प्रकार, अधो-  
भागरक्तपित्तनम् नीचेना भागना रक्तपित्तवाणाने  
भारी नाभे छे अधोगामी रक्तपित्तरोगीको मार डालता  
है, विलङ्घित-गुद लंघन पामेक्ष बहु कङ्कन किने,  
दुर्बलेन्द्रिय-दुर्बल चन्द्रियवाणा दुर्बल इन्द्रियोवाले,  
अव्याप्ति-भेद अशिववाणा अव्याप्ति, निरूढाः अने  
निश्चय पामेक्ष मनुष्या निरूढ दिये मनुष्यों, औषधवेगम्  
औषधना वेगने औषधके वेगको, न सहेरन् सहन  
करी सकता नहीं सहन नहीं कर सकते, कामादिव्यग्र-  
मनसः काम वगेरेशी व्यग्रमनवाणाने कामादिसे  
व्याकुल मनुष्योंमें, न प्रवर्तते विरेचननी प्रवृत्ति  
थती नहीं विरेचन प्रवृत्ति नहीं होता, कृच्छ्रेण  
वा अथवा मुश्केलीके या कठिनाईसे, प्रवर्तमानम्  
प्रवृत्त थती प्रवृत्ति होनेपर, अयोगदोषान् अयोगजन्य  
दोषों अयोगके दोषोंको, कुर्यात् उत्पन्न करे छे  
उत्पन्न करता है, अजीर्णिनः अजीर्णवाणाने अजीर्ण-

१२. आधमतो वा पुरीषकोष्ठे-आध्मातस्य पुरीषग्रथिते कोष्ठे (घ.)

„ आधमतो-आध्मातमानस (घ.)

12. A person living in luxury will suffer from the same disorders as delicate people. In persons of ulcerated rectum there will be very distressing pain in the lesions of the rectum which may cause danger to life, and in case of prolapse of rectum, it may cause death owing to over-action of the bowels. In case of hemothermia affecting the lower region, similar results will be produced. The persons who have undergone lightening therapy, those whose senses have become debilitated or whose digestive fire is dull or those who have taken evacua-tive enema, will not be able to tolerate the action of medication. In case of persons whose minds are agitated by sexual passion and similar other senti-ments, either there will be no effect of purgation or there will be some effect of purgation with great difficulty. In these cases there will be harmful effects of the imperfect action of purgation. In cases of indigestion there will be disorders of chyme. In cases of persons with recent fever, purgation will not be able to eliminate the toxic matter which is yet immature but will rather provoke the vata. In case of emaciation due to alcoholism in one addicted to alcohol, the provoked vata

may endanger life. In a condition of meteorism, the vata, getting accumulated in the colon and increasing the distension, begins to spread and causes tympanitis of a severe and sudden type or may cause even death. The vata lodged in the wounds or ulcers caused by a foreign body or by trauma, may destroy the life. In persons who have taken excess of oleation therapy, there is the likelihood of over-action of the purgative medication. In case of a dehydrated or un-unctuous person, it will cause spasticity of the limbs. In the case of a hard-bowelled condition, the morbid matter, being roused up but not fully eliminated, causes cardiac pain, joint-pain constipation body-ache, vomiting, fainting and prostration and may even cause death. In persons suffering from the group of disorders beginning with pectoral lesions and ending with the conditions of gravaida, there will be the same evil effects as described in emesis. Therefore purgation is contra-indicated in these cases.

विरेचनाहः—

शेषास्तु विरेच्याः; विशेषतस्तु कुष्ठज्वरमे-  
होर्ध्वरक्तपित्तमगन्दरोदराशोब्रध्नीहगुल्मार्बुदग-  
लगण्डग्रन्थिविसृज्जकालस्रक्मूत्राघातक्रिमिकोष्ठ-  
विसर्पपाण्डुरोगक्षिरःपार्श्वशूलोदावर्तनेत्रास्यदाह-  
हृद्रोगव्यङ्गनीलिकानेत्रनासिकास्रवणहलीमक-

श्वासकालकामलापक्वपसारोन्मादवातरक्तयोनि-  
रेतोदोषतैमिरारोचकाविपाकच्छर्दिश्वयथूदरवि-  
स्फोटकादयः पित्तव्याधयो विशेषेण महारोगा-  
ध्यायोक्ताः; एतेषु हि विरेचनं प्रधानतममि-  
त्युक्तमश्रुपशमेऽग्निगृहवत् ॥२३॥

शेषाः तु भाडीना पुरुषेभ्यो शेषोको विरेच्याः  
निरेचन आपवुं ओष्ठो विरेचन देना चाहिए, विरे-  
षतः तु भास करीने विशेषकर, कुष्ठ- कुष्ठ, ज्वर-  
ज्वर, उदर, मेह- प्रमेह प्रमेह, ऊर्ध्वरक्तपित्त- उपरना  
भाभा रक्तपित्त ऊर्ध्वरक्तपित्त, मगन्दर- मग- मगन्दर,  
उदर- उदर, उदर, अर्ध- अर्ध, ब्रध-  
ब्रध, ब्रध, ब्रध, प्लीहा- प्लीहा, प्लीहा, गुल्म- गुल्म, गुल्म,  
अर्बुद- अर्बुद, अर्बुद, गलगण्ड- गलगण्ड, गलगण्ड, ग्रन्थि-  
ग्रन्थि, विसृज्जिका- विसृज्जिका, विसृज्जिका, जलस्र-  
जलस्र, जलस्र, मूत्राघात- मूत्राघात, मूत्राघात,  
क्रिमिकोष्ठ- क्रिमिकोष्ठ, क्रिमिकोष्ठ, विसर्प- विसर्प, विसर्प,  
पाण्डुरोग- पाण्डुरोग, पाण्डुरोग, क्षिरःपार्श्वशूल- शिरःशूल,  
पार्श्वशूल, क्षिरःशूल, पार्श्वशूल, उदावर्त- उदावर्त,  
उदावर्त, नेत्रास्यदाह- नेत्रास्यदाह, नेत्रास्यदाह,  
मुखदाह हृद्रोग- हृद्रोग, हृद्रोग, व्यङ्ग- व्यङ्ग, व्यङ्ग,  
नीलिका- नीलिका, नीलिका, नेत्र- नेत्र, नेत्र, आंखोंका  
स्राव, नासिका- नासिका, नासिका, नासिकास्राव, आस्यस्रवण-  
मुखास्राव मुखस्राव, हलीमक- हलीमक, हलीमक, श्वास-  
श्वास, श्वास, कास- कास, कास, कामला- कामला, कामला,  
अपची- अपची, अपची, अपसार- अपसार, अपसार,  
उन्माद- उन्माद, उन्माद, वातरक्त- वातरक्त, वातरक्त,  
योनिरेतोदोष- योनिरेतोदोष, योनिरेतोदोष, शुक्रोष-  
तैमिर- तैमिर, तैमिर, अरोचक- अरोचक, अरोचक,  
अविपाक- अविपाक, अविपाक, छर्दि- छर्दि, छर्दि, श्वयथु-  
उदर- शूल, उदर शोक, उदर, विस्फोटक- विस्फोटक,  
विस्फोटक, आदयः अनेके रोगो आदि रोगों, विशेषेण  
तथा भास करीने और विशेषकर, महारोगाध्यायोक्ताः  
महारोगाध्यायमा उहेला महारोगाध्यायमे कहे, पित्त-  
व्याधयः पित्तव्याधयो। विरेचनशी नाश पावे  
छे पित्तरोगों विरेचनसे नष्ट होते हैं, एतेषु

१३. उदर-अपची (त)

, नेत्रनासिकास्रवण-नेत्रनासिकास्रवणगुणुमेदपाक (क)

, -नेत्रनासिकास्रवणगुणुमेदपाक (घ)

, नासिकास्रवणहलीमक नासिकास्रवणगुणुमेदपाक -  
हलीमक (घ.)

१३. महारोगाध्याय-रोगाध्याय (ज.)

, अश्रुपशमे-अश्रुपशमे (घ)

13. In all others purgation is indicated; and especially in those suffering from dermatosis fever, urinary disorders, hemothermia affecting the upper part, fistula in ano abdominal diseases, piles, inguinal swelling, splenic disorders, gulma. malignant tumours. deradenocous, tumors acute intestinal irritation, intestinal tor or, lesions in the urinary tract, intestinal worms, acute spreading affections, anemia headache and pleurodynia, misperistalsis, burning in the eyes and mouth, cardiac disorders, fleshy mole and bluish black moles excessive discharge from the eyes, nose and mouth, Holimaka jaundice, dyspnea cough, scrofula. epilepsy, insanity, rheumatic conditions, gynecic and seminal disorders, faintness, anorexia, indigestion, vomiting, edema, leucorrhœa. eruptions and similar conditions and specially in disorders of pitta enumerated in the chapter on the nomenclature of diseases (Sutra. Chap. XX). In these cases purgation is the foremost treatment, just as the quenching of the fire is the first thing to do when a house is on fire.

अजीर्ण- अशुद्धिवाणा अजीर्णशी, अनिच्छाव-  
अति श्लेष्म अति शिरध, पीतस्नेह- स्नेह पीषेक्ष  
जिघने स्नेहान किया हो, वस्तिहृदोष- उद्विगृष्ट दोष  
वाणा जिसके दोष बाहर निकलनेके लिए प्रवृत्त हो रहे  
हो, अरुणमि- भूदंशिवान मन्दाग्नि, शानकान्त-  
सुवारीश्रम- श्रम समीपसे गके हुए अनिदुर्बल- अति  
दुर्बल अतः श्रम- क्षुत्तृष्णाश्रम- श्रम तरस अने  
श्रमशी भूत्र, प्यास तथा यकानसे, आवे- पीडित पीडित,  
अनिकृष- अतिदृष्ट अतिकृष, मुक्कनक- पुस्तन-  
प्रेरक- अक्षिज जिघने अभी मात्रन किया हो, पीतोदक-  
पुस्तन- अक्षिज जिघने अभी पानी पिया हो,  
वामेत- वमन पामेक्ष जिघने वमन लिया हो, विरिक्त-  
विरेचन पामेक्ष जिघने विरेचन लिया हो, कुतनकः कर्म-  
नश्य- अक्षिज जिघने नश्य कर्म किया हो, कुद-  
श्रुस्ते अक्षिज क्रोधी, सीत- अक्षिज डरपोक, मल- भूत  
मल मूर्च्छित- भूच्छित मूर्च्छित, प्रसकृष्टवि- सतत  
उद्वी- निन्तर वमत, निष्ठोत्रिका- सतत भूँड निन्तर  
युग, श्वास- श्वास श्वास कास- कास काम, हिक्का- हेष्ठी  
हिक्का बद्धिप्रोदकोदर- अक्षिज, अक्षिज, अक्षिज बद्धो-

conditions of the body or over-dose of oleation, a highly roused condition of the humors, weakness of the gastric fire, exhaustion due to riding, excessive weakness, affliction due to hunger, thirst and fatigue, excessive emaciation, also just after a meal or a drink of water, immediately after emesis, purgation, errhination, in condition of anger, fright, intoxication, fainting, incessant vomiting, ptialism, dyspnea, cough, hiccup, the condition of intestinal obstruction or perforation, ascites, meteorism, intestinal torpor, acute intestinal irritation, miscarriage, enteric, diarrhea, diabetes and dermatosis.

तेषामास्थापनायाः स्थापनो भवति ताः—

तत्राजीर्ण्यतिक्षिप्तपीतस्नेहानां दूष्योदरं मूर्च्छां श्वयथुर्वा स्यात्, उत्क्रिष्टदोषमन्दाग्रोररोचक-स्तीव्रः, यान्छान्तस्य शोभव्यापन्नो बस्तिराशु देहं शोषयेत्, अतिदुर्बलक्षुत्तुष्णाश्रमातीनां पूर्वोक्तो दोषः स्यात्, अतिकृशस्य काश्यं पुनर्जनयेत्, भुक्त-भक्तपीतोदकयोः उत्क्रिष्टदोषोऽर्धमद्यो वा वायुर्वस्तिमु-त्क्षिप्य क्षिप्रं घोरान् विकाराञ्जनयेत्, वमितवि-रिक्तयोस्तु रुक्षं शरीरं निरुहः क्षतं क्षार इव दृष्टेत्, कृतनस्तःकर्मणो विभ्रंशं भृशसंरुद्धस्रोतसः कुर्यात्, कृच्छमीतयोर्बस्तिरुर्ध्वमुपप्लवेत्, मत्तमूर्च्छितयो-र्भृशं विचलितायां संज्ञायां चित्तोपघाताद् व्यापत्

१५. मन्द-अल्प (ङ.)

„ शोषयेत्-शोषयेत् (ण.)

„ अतिदुर्बलक्षुत्तुष्णा-अतिदुर्बलक्षुत्तुष्णा (घ.)

„ ऊर्ध्वमद्यो वा वायुर्वस्तिमुत्क्षिप्य क्षिप्रं घोरान्-ऊर्ध्वमद्यो वा वायुर्वस्तिमुत्क्षिप्य क्षिप्रं घोरान् (च.)

„ रुक्षं-रिक्तं (घ.)

„ कृच्छमीतयो-कृच्छमीतयो (घ.)

„ मत्तमूर्च्छितयो-मत्तमूर्च्छितयो (घ.)

स्यात्, असक्तच्छर्दिनिष्ठीविकाश्वासकासहिकार्ता-नामूर्ध्वीभूतो वायुर्ऊर्ध्वं वस्तिं नयेत्, बद्धच्छिद्रो-दकोदराध्मानातीनां भृशतरमाध्माप्य वस्तिः प्राणान् हिंस्यात्, अलसकविस्त्रिकामप्रजाता-मातिलारिणामामकृतो दोषः स्थान, मधुमेहकृष्टि-दोषाधिः पुनर्वृद्धिः, तस्मादेते नास्थाप्याः ॥१५॥

तत्र तेषां इनमें, अजीर्ण-अजीर्ण, अजीर्णवाले, अतिस्निग्ध-अतिस्निग्ध, अतिस्निग्ध, पीतस्नेहानाम्-पीतस्नेह पीतस्नेह और स्नेह पीनेवालोंको आस्थापन देनेसे, दूष्योदरम्-दूष्योदर दूष्योदर, मूर्च्छा-मूर्च्छा, श्वयथुः वा ३ सोओ थाथ ३ अथवा श्वयथु होता है, उत्क्रिष्टदोष-उत्क्रिष्ट दोष, उत्क्रिष्टदोष-वाले, मन्दाग्रयोः तथा मन्दाग्रिनवाणीने और मन्दाग्रि-वालेको तीव्रः तीव्र तीव्र, अरोचकः अरुचि अरोचक, स्यात् थाथ ३ होता है, यान्छान्तस्य सवारीशी भांडेवाली सवारी करनेसे थके मनुष्यको, शोभव्यापन्नः शोभनी निरुत थयेली क्षोभसे दूषित हुई, वस्तिः अस्ति वास्त, देहम् देहम् शरीरको, आशु जल्दी शीघ्र, शोष-येत् शोषये ३रे ३ शुष्क कर देती है, अतिदुर्बल-अतिदुर्बल अतिदुर्बल क्षुत्तुष्णा-अने भूभ, तरस और भूख, व्यास, अम-तेमज अमयी एवं यकानसे, आतीनाम् पीडित मनुष्योंने पीडित मनुष्योंको, पूर्वोक्त-पहले कहेले पहले उक्त, दोषः दोष दोष, स्यात् थाथ ३ होता है, अतिकृशस्य अतिकृशने आस्थापन अतिकृशको आस्थापन, पुनः कार्यम् ३रीने कृशता और मी कृशता, जनयेत् उत्पन्न ३रे ३ उत्पन्न करता है, भुक्तभक्त-तरतमांज भोराक भाधेल अभी भोजन खाने-वाले, पीतोदकयोः अने तरतमां ज जल पाधेल मनुष्योंने एवं अभी पानी पीनेवालेका, वायुः वायु वायु, उत्क्रिष्ट उत्क्रिष्ट थर्धने उत्क्रिष्ट होकर, वस्तिम् अस्तिने वस्तिको, ऊर्ध्वम् उपर ऊपर, अद्यः वा ३ नीचे या नीचे, उत्क्षिप्य धर्ध ३ने ले जाकर, क्षिप्रम् जल्दी शीघ्र, घोरान् जल ३रे अथानक, विकारान् विकाराने रोगोंको, जनयेत् उत्पन्न ३रे ३ उत्पन्न कर देता है, निरुहः निरुहअस्ति निरुहवस्ति, वमित-विरिक्तयोः

१५. आध्मानातिनां-आध्मानातीनां (ङ.)

„ गालाणां-गालाणां (ङ.)





complications of injury to the mind. In persons who are suffering from incessant vomiting, ptyalism, dyspnea, cough and hiccups, the vata, turned into an upward course, will carry the enema fluid upwards. In persons afflicted with obstruction or perforation of intestines, ascites or meteorism, the enemata, still increasing the distension, may kill the patient. In conditions of intestinal torpor, acute intestinal irritation, abortion and diarrhea, there will occur disorders of chyme. And in cases of diabetes and dermatosis, there will be further aggravation of the disease. Hence, in these conditions, corrective enema should not be given.

આસ્થાપનાર્હઃ —

શેષાસ્થાપ્યાઃ; વિશેષતસ્તુ સર્વાઙ્ગકાઙ્ગકુ  
ક્ષિરોગવાતવર્ચોમૂત્રશુક્રસન્નિવલવર્ણમાંસરેતઃશ્ચ  
દાષાધ્માનાઙ્ગુત્તિક્રિમિકોષ્ટોદાવર્તશુદ્ધાતિસારપવ-  
મેદાભિતાપહીહગુલ્મશૂલહ્રોગમગન્દરોન્માદન્વ-  
રબ્રધશિરઃકર્ણશૂલહૃદયપાર્શ્વપૃષ્ઠકટીગ્રહવેપનાક્ષે-  
પકગૌરવાતિલાઘવરજઃક્ષયાર્તવિષમાગ્નિસ્ફિગ્જા-  
નુજઙ્ગોરુગુલ્ફપાર્ણિગ્રપદયોનિવાહકુલિસ્તનાન્તદ-  
ન્તનખપર્વાસ્થિશૂલશોષસ્તમ્ભાન્નકૂજપરિકર્તિ-  
કાલ્પાલ્પસશબ્દોગ્રગન્ધોત્થાનાદયો વાતવ્યાધયો  
વિશેષેણ મહારોગાધ્યાયોક્તાઃ; एतेष्व्वास्थापनं  
प्रधानतममित्युक्तं वनस्पतिमूलच्छेदवच्च ॥१६॥

૧૬ શુદ્ધાતિસારપવમેદાભિતાપ-સ્તવ્થાઙ્ગાતિમારસર્વાઙ્ગાભિતાપ-  
(ધ)

, અભિગપ્લીહગુલ્મશૂલહ્રોગ પ્લીહગુલ્મહ્રોગ (ધ)

, ક્ષયાર્તવિષમાગ્નિ-સ્વાનાત્તેવ વિષમાગ્નિ (ધ)

, વાહકુલિસ્તનાન્તદન્તનખપર્વાસ્થિશૂલશોષ-વાહકુલિસ્તનાન્ત-  
દન્તપાર્શ્વસ્થિશૂલશોષ (ધ)

, શોષ શોષ (ધ)

, વનસ્પતિમૂલછેદવચ્ચ-વનસ્પતિમૂલછેદવચ્ચ (ધ)

શેષાઃ તુ આકીના પુરુષો શેષ પુરુષો, આસ્થાપ્યાઃ  
આસ્થાપનશેષો છે આસ્થાપનકે યોગ્ય છે, વિશેષતઃ  
તુ આસ કરીને શાસકર, સર્વાઙ્ગ-સર્વાઙ્ગ રોગ સર્વાઙ્ગ  
રોગ, આકાઙ્ગ-એકાઙ્ગરોગ, એકાઙ્ગરોગ, કુક્ષિરોગ-કુક્ષિરોગ  
કુક્ષિરોગ, વાત-વાતરોધ વાયુરોધ, વર્ચઃ- મળરોધ  
મલરોધ, મૂત્ર-મૂત્રરોધ મૂત્રરોધ, શુક્રસન્ન- અને વીર્ય-  
રોધ ઔર શુક્રરોધ, બલ- બલક્ષય, બલરોધ વલક્ષય,  
વલરોધ વર્ણ- વર્ણક્ષય, વર્ણરોધ વર્ણક્ષય, વર્ણરોધ,  
માંસ-માંસક્ષય, માંસરોધ માંસક્ષય, માંસરોધ, રેતઃ-શ્ચ-  
રોધ વીર્યક્ષય, વીર્યરોધ વીર્યક્ષય, વીર્યરોધ, આધ્માન-  
આધ્માન આધ્માન, આઙ્ગુત્તિક- રૂપશીઘ્રાન સ્પર્શજ્ઞાન,  
ક્રિમિકોષ્ટ-ક્રિમિકોષ્ટ ક્રિમિકોષ્ટ, ઉદાવર્ત- ઉદાવર્ત ઉદાવર્ત,  
શુદ્ધાતિસાર- શુદ્ધાતિસાર શુદ્ધાતિસાર, પર્વમેદ- પર્વમેદ  
પર્વમેદ, અભિતાપ- અભિતાપ સન્તાપ, હીહ- પ્લીહ  
પ્લીહ, ગુલ્મ- ગુલ્મ ગુલ્મ, શૂલ- શૂલ શૂલ, હ્રોગ-  
હ્રોગ હ્રોગરોગ, મગન્દર- મગન્દર મગન્દર, ઉન્માદ-  
ઉન્માદ ઉન્માદ, ઉવર- ઉવર ઉવર, બ્રધ- બ્રધ બ્રધ,  
શિરઃકર્ણશૂલ- શિરઃશૂલ, કર્ણશૂલ શિરઃશૂલ, કર્ણશૂલ,  
હૃદય- હૃદયશૂલ હૃદયશૂલ, પાર્શ્વ- પાર્શ્વશૂલ પાર્શ્વશૂલ,  
પૃષ્ઠ- પૃષ્ઠશૂલ પૃષ્ઠશૂલ, કટીગ્રહ- કટીગ્રહ કટીગ્રહ, વેપન-  
કટીગ્રહ કમ્પ, આક્ષેપક- આક્ષેપક આક્ષેપક, ગૌરવ-  
ગૌરવ ગૌરવ, અતિલાઘવ- અતિલાઘવ અતિલાઘવ,  
રજઃક્ષય- અને રજઃક્ષયથી ઔર રજઃક્ષયસે,  
આર્ત- પીડા પામેલ પીડિત, વિષમાગ્નિ- વિષમાગ્નિ  
વિષમાગ્નિ, સ્ફિગ્- સ્ફિગ્ સ્ફિગ્, જાનુ- એકાઙ્ગ  
જઙ્ગ- પિંડી જંઘા, ઝરુ- સાથળ ઝરુ, ગુલ્ફ- ધૂટી  
ગુલ્ફ, પાર્ણિ- પાની પાર્ણિ, પ્રપદ- પ્રપદ પ્રપદ, યોનિ-  
યોનિ યોનિ, વાહુ- વાહુ વાહુ, અકુલિ- આમળા  
અંગુલિ, સ્તનાન્ત- ડીટડી ચૂચુક, દન્ત- દાંત દાંત, નખ-  
નખ નખ, પર્વ- પર્વ પર્વ, અસ્થિશૂલ- અને હાડકામાં  
શૂલ ઔર અસ્થિમે શૂલ, શોષ- શોષ શોષ, સ્તમ્ભ- બડા  
સ્તમ્ભ, અન્નકૂજ- અન્નકૂજ આંતરે શુભગુહાદટ,  
પરિકર્તિકા- વાહ પરિકર્તિકા, અલ્પાલ્પ- એકાઙ્ગ એકાઙ્ગ  
એકાઙ્ગ, સજ્જ- સજ્જ સાથે સજ્જકે સાથ, ઉગ્રગન્ધોત્થાન-  
ઉગ્રગન્ધોત્થાન મળને ત્યાં ઉગ્રગન્ધોત્થાન મળને ત્યાં,  
આદ્યઃ વગેરે રોગો આદિ રોગ, વિશેષેણ અને આદ્ય  
કરીને ઔર વિશેષકર, મહારોગાધ્યાયોક્તાઃ મહારોગો-





fevers, anemia, jaundice, urinary disorders, piles coryza, anorexia weakness of gastric fire, debility splenic disorders, abdominal diseases of the kapha type, spastic paraplegia, looseness of stools, ingestion of natural or chemical poisons discharge of mucus or bile. hard-bowelled condition, elephantiasis, deradenoncus, scrofula and intestinal worms

तेषामनुवासनाया व्यापदो भवन्ति ताः —

तत्राभुक्तभक्तस्यानावृत्तमार्गत्वादूर्ध्वमतिवर्तते  
 कोष्ठः, नञञ्वरणाण्डुरोगकामलापमेहिणां दोषानु-  
 त्किङ्क्षयोदं जनयेत्, अर्शस्यार्शस्वप्निध्वन्धा-  
 श्मानं कुर्यात्, अरोचकार्तस्यान्नगृद्धिं पुनर्हन्त्यात्,  
 मन्दाग्निर्बलयोर्मन्दतरमग्निं कुर्यात्, प्रतिश्याय-  
 स्त्रीषादिमतां भृशमुत्किङ्क्षदोषाणां भूय एव दोषं  
 वर्धयेत्, तस्मादेते नानुवास्याः ॥१८॥

तत्र तेभा इन्में, असुक्तप्रकृतस्य गेष्ठे भेःराउ  
भाषि न होय भोजन नक्षिये हुएके, अनावृतमार्गध्वात्  
भार्ग्युक्ष्य होवायी मार्गके खुला होनेसे, स्नेहः स्नेह  
स्नेह, ऊर्ध्वम् उपर तरङ्ग ऊपरकी ओर, अतिवर्तते थाट्यो  
अथ छे अनुसरण करता है, नवज्वर- नवे ताप नव  
ज्वर, पाण्डुरोग- पांडुरोग पाण्डुरोग, कामला- उभयो  
कामला, प्रमेहिणान् अने प्रमेहना रेग्रीकोना और प्रमेहके  
रोगियोंमें, दोषान् दोषोने दोषोंको, उत्क्रिश्य उत्क्रिष्ट  
करी कुपित करके, उदरम् उदररेगने उदररोगको,  
जनयेत् उत्पन्न करे छे उत्पन्न करता है, अर्क्षस्य अर्क्ष-  
रेग्रीना अर्क्षरोगीके, अर्क्षसि अर्क्षोने अर्क्षोंको,  
अभिष्यन्ध अभिष्यन्धित करी अभिष्यन्धित करके,  
आध्मान् आध्मान आध्मान, कुर्यात् करे छे उत्पन्न  
करता है, अरोचकार्तस्य अरुचिथी पीडाता मनुष्यनी  
अरोचकसे पीडित मनुष्यकी, पुनः वपि फिर, अलगृद्धिम्  
अलगृद्धी धृष्टानेअन्नकी इच्छाको, हन्यात् नाश  
करे छे नष्ट करता है, मन्दाग्निदुर्बलयोः मन्दाग्निवाणा  
अने दुर्बलना मन्दाग्नि और दुर्बलके, अग्निम् अग्निने

अग्निको, मन्दतरम् वधारे भंड और भी मन्द, कुर्वा  
 करे के करता है, भुजम् अत्यंत अति, उत्कृष्ट-  
 दोषाणाम् उत्कृष्ट दोषाणां उत्कृष्ट दोषवाले, प्रतिश्याय  
 सज्जम् प्रतिश्याय, प्लीहादिमताम् अने प्लीहा वगैरे-  
 वाणां अनुप्रेमा और प्लीहा आदिके रोगियोंमें दोषक दोष  
 दोषको, भूयः एव वशी अधिक और भी अधिक,  
 वर्धयेत् वधारे के बढ़ा देता है, तस्मात् एते माटे  
 ओषै। इसलिए इनको, न अनुवास्याः अनुवासनने  
 योग्य नहीं अनुवासन नहीं देना चाहिए

॥ १८ ॥

18. Now, in persons who have not taken any food, unctuous solution spreads far upwards owing to there being no obstruction in the alimentary tract. In conditions of recent fever, anemia, jaundice and urinary anomalies, it will provoke the humors and cause abdominal diseases. In piles it will make the piles slimy and cause distension of abdomen; in anorexia, it will further impair the desire for food; in weakness of gastric fire, it will make it still weaker; in coryza, splenic disorders and similar other conditions and in a condition of provoked humors it will further aggravate the condition. Therefore, in these conditions one, should not give unctuous enemata.

अनुवासनार्हः —

य एवास्थाप्यास्त एवानुवास्याः, विशेषतस्तु  
रुक्षतीक्ष्णाग्रयः केवलवातरोगात्तश्च; एतेषु ह्यनु-  
वासनं प्रधानतममित्युक्तं मूले द्रमप्रसेकवत् ॥१९॥

११. इत्युक्तं मूले द्रमप्रमेकवत्--वनस्पतिमूलच्छेदनकथं (घ.ड.इ ।)

'३                  "                  --मूले द्रुमाणां प्रसेकवच्चेति (प.)

वे एव जेथी जो, आस्थाप्याः आस्थापनने  
थोअ छे आस्थापनके योग्य हैं, ते एव तेथी अ वे ही,  
अनुवास्याः अनुवासनने थोअ छे अनुवासनके योग्य  
हैं। विशेषतः नु आस करीने विशेषकर, कृष्णतीक्ष्णाग्रयः  
इक्ष अने तीक्ष्ण अग्निवाणा कृष्ण और तीक्ष्ण अग्निवाः  
केवल- तथा डेवण तथा शुद्ध वानरोगार्ताः च रातरेअथी  
पीडित वायुरोगसे पीडित। एतेषु हि जेथीमां इनने,  
अनुवासनम् अनुवासन अनुवाशन, प्रधानतमम् सोथी  
मुप्य छे सबसे मुख्य है, इति जैम ऐष, उक्तम् उद्युं  
छे कहा है, मूले द्रुमप्रसेकवत् जेम वृक्षना भूषमां पशुी  
रेवथी तेनां पान स्निग्ध आय छे, तेम इक्ष  
शरीरवाणा पुष्पना पञ्चाशमर्ष भूषमां अनुवासन  
देवथी तेनुं सधणु शरीर स्निग्ध आय छे जैसे वृक्षके  
मूळमें जल सींचनेसे उस वृक्षके पत्ते स्निग्ध हो जाते  
हैं उसी प्रकार कृष्ण शरीरवाले पुष्पके पत्र सधरण मूळमें  
अनुवासनके पहुंचानेसे साग शरीर स्निग्ध होता है।

19. The unctuous enema is indicated in those very conditions where corrective enema is indicated and specially in persons who are low in unctuous quality and are afflicted with an acute gastric fire and disorders purely of morbid vata. In these conditions, the unctuous enema is considered the foremost of medications and is like water to a tree poured at its very roots.

अशिरोविरेचनाहः—

अशिरोविरेचनाहस्तु अजीर्णिभुकभकपीतजे-  
हमद्यतोयपातुकामाः स्नातक्षिराः स्नातुकामाः क्षुत्-  
प्याश्रमार्तमत्तमूर्च्छितशस्त्रदण्डहतव्याध्याव्या-  
मपानक्लान्तनवज्वरशोकाभितसविरिक्तानुवासित-  
गर्भिणीनवप्रतिश्यावार्ताः, अनृतौ दुर्दिने चेति ॥२०॥

अजीर्णि अशुक्ष्णवाणा अजीर्णवाले, भुकभक- पु-  
तर्मा भेराक्ष भविष्य असी भोजन खावे हुए, पीतस्नेह-

पुतर्मा स्नेह पीषिष्य असी स्नेह पीये हुए, मद्य-तोय-  
भक्ष अने अक्ष मद्य तथा जल, पातुकामाः पीवानी क्षुत्-  
वाणा पीनेकी इच्छवाले, स्नातक्षिराः भूथुं धीयेक्ष जिसने  
शिरसे स्नान किया हो, स्नातुकाम नद-वाणी क्षुत्वाणा  
स्नानकी इच्छवाला, क्षुत्- भूष मूल, नृप्या तप्य  
प्यास, अमार्त- अने अमभी पीडित और अमने पीडित,  
मत्त- भत मत्त, मूर्च्छित- मूर्च्छित मूर्च्छित, शस्त्रदण्ड-  
हत- शस्त्र तथा दण्ड आगेक्ष शस्त्र और दंडसे मारत,  
व्याध- भैथुन मैथुन, व्याधाम व्याधाम व्याधाम पान-  
अने भवपानभी और मद्यपानसे, क्लान्त- अक्षेय बड़े,  
नवज्वर- नवे ताव नवज्वर, शोका- अने शोकाथी एवं  
शोकसे, अभितस- संतप्त पीडित विरिक्त- विरेचन  
पाषेक्ष विरेचन लिए, अनुवासित- अनुवासन पाषेक्ष  
अनुवाशन लिये, गर्भिणी- गर्भिणी गर्भिणी, नवप्रति-  
श्याव- तथा नवा नवप्रतिश्याव तथा नूतन प्रतिय्यावसे,  
वार्ता पीडित भुत्थे, पीडित मनुष्यको, दुर्दिने तो,  
अशिरोविरेचनार्हाः शिरोविरेचनने थोअ नही शिरो-  
विरेचन नहीं देना चाहिये, अनृतौ अतु वअर  
अतुके बिना, दुर्दिने व इति अने वदणिये दिवसे  
पक्षु शिरोविरेचन आयतुं नहि जेथीअ और  
दुर्दिनेमें सी शिरोविरेचन नहीं देना चाहिए ॥२०॥

20. The conditions where the errhine therapy is contra-indicated are indigestion, persons who have just taken their meals or an unctuous potion, those that are thirsty, those that have bathed their head, those just going to take their bath, those that are afflicted with hunger, thirst or fatigue or are intoxicated, fainted, or injured with a weapon or a stick, or are exhausted by sex-act, exertion or drink, those who have recently suffered fever or are afflicted with grief, those who have just been purged, or are given an unctuous enema, the gravida, and those that are just afflicted with coryza; nor should

the errhine therapy be given in the wrong season or on a cloudy day.

तेषां शिरोविरेचनाया व्यापदो भवन्ति ताः—

तत्राजीर्णिभुक्तभक्तयोर्दोष ऊर्ध्ववहानि स्रोतां-  
स्यावृत्य कासश्चापचूर्दिप्रतिश्यायाञ्जनयेत्, पीत-  
क्षेहमद्यतोषपातुकामानां कृते च पितृतां मुखना-  
सास्त्रावाक्षुषदेहतिमिरशिरोरोगाञ्जनयेत्, स्नात-  
शिरसः कृते च स्नातच्छिरसः प्रतिश्यायं, क्षुधार्त-  
स्य वातप्रकोपं, तृष्णार्तस्य पुनस्तृष्णाभिवृद्धिं मुख-  
शोषं च, अस्नातपक्षमूर्च्छितानाम्नास्थापनोक्तं दोषं  
जनयेत्, शस्त्रदण्डहतपोस्तीव्रतरां रुजं जनयेत्,  
व्यवायव्यायामपातकृन्तानां शिरःस्कन्धनेत्रोरः-  
पीडनं, नवज्वरस्रोकाभितप्तयोरुष्मा नेत्रनाडीरनु-  
सृत्य तिमिरं ज्वरवृद्धिं च कुर्यात्, विरिक्तस्य  
वायुरिन्द्रियोपघातं कुर्यात्, अनुवासितस्य कफः  
शिरोगुरुत्वकण्टकमिदोषाञ्जनयेत्, गर्भिण्या गर्भं  
स्तम्भयेत् स काणः कुणिः पक्षहतः पीठसर्पिं वा  
जायते, नवप्रतिश्यायार्तस्य स्रोतांसि व्यापादयेत्,  
अनृतौ दुर्दिने च शीतदोषान् पूतिनस्यं शिरोरोगं  
च जनयेत्; तस्यादेते न शिरोविरेचनाहर्षाः ॥२१॥

तत्र तेषां इनमें, अजीर्णिभुक्तभक्तयोः अशुद्धिर्वाजा  
अने भोराक्ष भाषेक्ष मनुष्यने। अजीर्णगेगी और भोजन  
किये हुए मनुष्यका, दोषः दोष दोष, ऊर्ध्ववहानि ऊर्ध्व-  
भाभी ऊर्ध्ववह, स्रोतांसि स्रोतांने स्रोतांको, आवृत्य  
पूरी र्ध रोडकर, कास- डास कास, आस- आस

१. कासश्चापचूर्दि-ईषचूर्दि (ग.)
२. स्नातच्छिरसः-स्नातस्य (ब.)
३. आस्थापनोक्तं दोषं-आस्थापनोक्तो दोषः (घ.)
४. गर्भिण्या-अन्तर्वत्स्या (ख. त.)
५. काणः कुणिः-काणः शूली (ग.)
६. जायते स्यात् (घ.)
७. अनृतौ दुर्दिने च शीतदोषान्-अनृतुदुर्दिने शीतदोषात् (घ.)
८. शीतदोषान् पूतिनस्यं-शीतं पूतिनासिकां (ब.)
९. शिरोरोगं च जनयेत्-शिरोरोगश्च स्वात् (घ.)

आस, छर्दि- उद्धरी वमन, प्रतिश्यायश्च तथा भौभभौ  
और प्रतिश्यायको, जनयेत् उत्पन्न करे छे उत्पन्न कर  
देता है, पीतस्नेह- नेओओ रनेडपान डभुं होय जिन्होंने  
स्नेहपान किया हो, मद्यतोषपातुकामानाश्च भक्ष्यं अने नक्ष  
पीपाती नेने डभुं होय मद्य और जल पीनेको जिन्हें  
इच्छा हो, कृते च पितृताञ्च अने शिरोविरेचन कराव्या  
पछी नेओओ नक्ष नगेरे पी दीधा होय तेओभां  
और शिरोविरेचन कराने पर जिन्होंने जल पी लिया हो  
उनमें, मुखनासास्त्राव- भुभस्त्राव, नासास्त्राव मुखस्त्राव,  
नासास्त्राव, अक्षुषदेह- आभ् भीपडाभी दीपाती नेत्रोंका  
मललित होना, तिमिर- तिमिरस्य तिमिर, शिरोरोगान्  
अने शिरोरोगने और शिरोरोगको, जनयेत् उत्पन्न करे  
छे उत्पन्न करता है, स्नातशिरसः भाषे नक्षानारने  
शिरोविरेचनभी शिरसे स्नान किये हुए मनुष्यमें शिरो-  
विरेचनसे, कृते च स्नातस्य अने शिरोविरेचन कराव्या  
पछी भाषे नक्षानारभां और शिरोविरेचनके पीछे शिरा-  
स्नान करनेवालेमें, प्रतिश्यायश्च भौभभ प्रतिश्याय,  
क्षुधार्तस्य भूभभी पीडायेक्षभां भूखसे पीड़ितमें, वात-  
प्रकोपम् वातप्रकोप वातप्रकोप, तृष्णार्तस्य पुनः तृप्त्य  
पीडायेक्षभां प्याससे पीड़ितमें, तृष्णाभिवृद्धिं तृप्त्य  
वृद्धि प्यासकी वृद्धि, मुखशोषम् च अने भुभने। शोष  
और मुखका शोष, अस्नात- तेभभ आडेक्ष एवं श्रमसे  
पीड़ित, मत्त- भत्त मत्त, मूर्च्छितानाम् तथा मूर्च्छित  
मनुष्योंभां और मूर्च्छित मनुष्योंमें, आस्थापनोक्तम्  
आस्थापनभां उडेक्ष आस्थापनमें कहे हुए, दोषश्च  
दोषने दोषको, जनयेत् उत्पन्न करे छे उत्पन्न करता है,  
शस्त्र- शस्त्रां शस्त्रसे, दण्ड- अने दंडां और दंडसे,  
हस्योः आभात पाभेक्षभां आहत हुवेमें, तीव्रतराम्  
अतिशय तीव्र अति तीव्र, रुजश्च पीडा पीडा, जनयेत्  
उत्पन्न करे छे उत्पन्न करता है, व्यवाय- भैथुन  
मैथुन, व्यायाम- व्यायाम व्यायाम, पात- अने  
मद्यपानभी और मद्यपानसे, कृन्तानाम् आडेक्षभां रके  
हुए मनुष्योंमें, शिरःस्कन्ध- भस्त्राव, स्कन्ध शिर, स्कन्ध,  
नेत्रोरः नेत्र अने छातीभां नेत्र और छातीमें, पीडनम् पीडा  
पीडा, नवज्वरस्रोका- नव ताव अने शोडभी नवज्वर और  
शोकसे, अमितस्योः संतप्त भयेक्षभां पीड़ित मनुष्योंमें,  
ऊष्मा भस्त्राव ऊष्मा, नेत्रनाडी- नेत्रनाडीको। नेत्रनाडीका,

it will cause excessive discharge from the mouth and the nose increase of secretion from the eye (cataract) and diseases of the head. In persons who have taken a head bath or in those who take a head bath after the errhination, it will cause coryza. In persons afflicted with hunger it will provoke the vata; and in those afflicted with thirst it will intensify the thirst and cause parching of the mouth. In persons who are afflicted with fatigue, intoxication and fainting, it will cause the same ill effects as mentioned with reference to corrective enema; in persons injured with a weapon or a stick, it will make the pain more acute; in persons exhausted by overwork, sex-act or drink, there will be affliction of the head shoulder-region, eye and chest. In persons who have recently suffered from fever or who are afflicted with grief, the heat, spreading in the vessels in the eyes, will cause cataract and rise of body-temperature; in persons just purged, the vata, getting provoked, will injure the sense organs. In persons who have just taken the unctuous enema, it will cause heaviness of the head, pruritus and helmenthiasis. In pregnant women, it will stiffen the fetus and the fetus may become one-eyed, or afflicted with deformation of the hand, hemiplegia, or paraplegia; in persons afflicted recently with coryza, it will cause complications in the body-channels. If administered in the wrong season or on a cloudy

21. Of these conditions in a person with indigestion or in one who has taken his meals, the errhine treatment will occlude the channels going to the upper part of the body and will cause cough, dyspnea, vomiting and coryza. If it is administered to persons who have taken the unctuous potion or persons who are thirsty for wine or water, and if these persons drink it immediately after the errhine-treatment,

day, it will produce disorders of cold, stink-nose or diseases of the head; therefore the errhine treatment is not indicated in these conditions.

शिरोविरेचनाहः—

शेषास्त्वर्हाः, विशेषतस्तु शिरोदन्तमन्या-  
स्तम्भगलहनुप्रग्रहीनसगलशुण्डिकाशालूकशुक-  
तिमिरवर्त्मरोगव्यङ्गोपजिह्विकाधर्मावमेदकप्रीवास्क-  
न्धांसास्यनासिकाकर्णाक्षिमूर्धकपालशिरोरोगादि-  
तापतन्त्रकापताजकगलगण्डदन्तशूलहर्षचाला -  
क्षिराज्यबुद्धस्वरमेदवाग्ग्रहगदगदकथनादय ऊर्ध्व-  
जनुगताश्च वातादिविकाराः परिपक्वाश्च; एतेषु  
शिरोविरेचनं प्रधानतममित्युक्तं, तद्व्युत्तमाङ्गम-  
नुप्रविश्य मुञ्जादीषिकामिवास्त्रां केवलं विकारकरं  
दोषमपकर्षति ॥२२॥

शेषाः तु आक्षीना मनुष्ये शिरोविरेचनमे शेष  
मनुष्य शिरोविरेचनके, अर्हाः येषु ते योग्य हैं, विशेष-  
तः तु भास्य करीने विशेषकर, क्षिरः शिरःस्तम्भ  
शिरःस्तम्भ, दन्त- दन्तस्तम्भ दन्तस्तम्भ, मन्यास्तम्भ-  
मन्यास्तम्भ, गलहनुग्रह- गलग्रह, हनुग्रह  
गलगण्ड, हनुग्रह, पीनस- भृगुभम पीनस, गलशुण्डिका-  
गलशुण्डिका गलशुण्डिका, शालूक- शालूक गलशालूक,  
शुक- शुक (अथ यकारने नेत्ररोग) शुक (नेत्ररोग-  
विशेष) तिमिर- तिमिर तिमिर, वर्त्मरोग- वर्त्मरोग  
वर्त्मरोग, व्यङ्ग- व्यङ्ग व्यङ्ग, उपजिह्विका- उपजिह्विका  
उपजिह्विका, अर्धावमेदक- आधाश्मिन् अर्धावमेदक,  
प्रीवा- प्रीवा, स्कन्ध- स्कन्ध स्कन्ध, अंस- अंस  
अंस, नास्य- नास्य मुख, नासिका- नासिका नासिका,  
कर्ण- कर्ण कान, अक्षि- अक्षि आंख, मूर्ध- मूर्ध मूर्ध  
मसकके, कपाल- कपाल (अस्थि) कपाल (अस्थि),

२२. नासिकाक्षिराजि-बालाक्षिराजि (ग.)

, अक्षिराज्यबुद्ध-अक्षिरोगनास्यबुद्ध (अ.)

, राजि-राजि (अ.)

, गदगदकथनादयः-गदगदकथनादयः (अ.)

२२. मुञ्जादीषिकामिवास्त्रां केवलं विकारकरं दोषम्-अपेक्षिका-  
शिरोरोगं दोषविकारम् (ग.)

शिरोरोग- शिरः मूर्धकानां रोग तथा शिरके रोग, अर्धित-  
अर्धित अर्धित, अपतन्त्रक- अपतानक,  
गलगण्ड- गलगण्ड गलगण्ड, दन्तशूल- दन्तशूल दन्तशूल,  
हर्ष- हर्ष दन्तहर्ष, चाल- दन्तचाल दन्तचाल,  
क्षिराजि- अक्षिराजि अक्षिराजि, अर्बुद- अर्बुद  
अर्बुद, स्वरमेद- स्वरमेद स्वरमेद, वाग्ग्रह- वाग्ग्रह  
वाग्ग्रह गदगद- कथनादयः गदगद, कथन पत्रे गदगद,  
ऊर्ध्वभागका वन आदि, परिपक्वाः चयने परिपक्व और पके  
हुए, ऊर्ध्वजनुगताः ऊर्ध्वजनुगता ऊर्ध्वजनुगता, वातादि-  
विकाराः च वात पत्रे रोग विकारे वातादिके विकार, एतेषु  
क्षेत्रे भा इनमें, शिरोविरेचनम् शिरोविरेचन शिरो-  
विरेचन, प्रधानतमम् सौथी मुख्य ते सबसे श्रेष्ठ है,  
इति अथ ऐसा, उक्तम् उक्तम् ते कहा है दि कारके  
क्योंकि, मुञ्जादि अथ मनुष्य मनुष्य जैसे मनुष्य  
मुञ्जेसे, आसक्तम् अपेक्षी लगे हुए, ईषिकाम् इव  
अथ ते ते से सरकण्डेको अलग कर लेता है, तत्  
तेम ते वैसे वह, उत्तमाङ्गम् मूर्धकानां शिरमें, अनु-  
प्रविश्य प्रवेश करीने प्रविष्ट होकर, केवलम् अपेक्षी  
संपूर्ण, विकारकरम् दोषम् विकार करवाने दोषने विकार-  
कारक दोषको, अपकर्षति अपेक्षी ते से खींच लेता है ॥२२॥

22. The errhine is indicated in all other conditions and specially in stiffness of the head, teeth or sides of the neck, spasm of the throat and jaw, or coryza, Galasundika, Saluka, Sukra, Timira, diseases of the eyelid, moles, glossitis, hemicrania, diseases of neck, shoulder region, shoulders, mouth, nose, ear, eye, cranium, forehead, facial paralysis, convulsions, contractions, deradenoncus, tooth ache, setting of teeth on edge, looseness of teeth, injection of eyes, malignant tumor, alteration of voice loss of speech, spasmodic speech etc., and diseases affecting the upper part of the supra-clavicular region of the body,



as a result of the morbid vata and other humors which get fully developed. In these conditions, errhine treatment is considered the foremost of medications. Entering every interspace of the head, this withdraws the whole of the morbid matter, just as a wick acts in an oil lamp.

कस्मिन्नृतौ कदा नावनं विवेचय ?—

प्रावृद्धशरद्वसन्तेऽनुरेष्वात्ययिकेषु रोगेषु नावनं कुर्यात् कृत्रिमगुणोपधानात्; ग्रीष्मे पूर्वाह्ने, शीते मध्याह्ने, वर्षास्वदुर्दिने चेति ॥२३॥

आत्ययिकेषु भार्यक मारक, रोगेषु रोगेभ्यो रोगोर्मे, प्रावृट्-प्रावृट् प्रावृट्, शरद्-शरद् शरद्, वसन्त-वसन्तेषु अने नसन्त सिद्धयन्ती ग्रीष्मे ऋतुभां पक्ष और वसन्तसे भिन्न दूसरी ऋतुओंमें सी, कृत्रिमगुण-कृत्रिम अथवा कृत्रिम गुणोंकी, उपधानात् उत्पन्न करी रचना करके, नावनम् कुर्यात् शिरोविरेचन हेतुं नस्यकर्म करे, ग्रीष्मे पूर्वाह्ने ग्रीष्मभां अथवा पड़वा औष्ण्यऋतुमें पूर्वाह्नेमें, शीते मध्याह्ने शीतभां मध्याह्ने औषधऋतुमें मध्याह्नेमें, वर्षासु अने वर्षाभां और वर्षामें, अदुर्दिने च पादग्रां वज्रना द्विसे नस्य हेतुं दुर्दिन न होनेपर नस्य करे ॥ २३ ॥

23. If errhine treatment is to be given in urgent conditions, in seasons other than the first rains, autumn or spring then it should be given by making artificial conditions of these seasons. It should be given in the morning in summer in the noon in the winter and in the rainy season when there are no clouds in the sky.

अभ्यासोक्तविषयाः—

तत्र श्लोकाः—

इति पञ्चविधं कर्म विस्तरेण निर्वर्णितम् ।

येभ्यो यच्च हितं यस्मात् कर्म येभ्यश्च यच्चितम् ॥२४॥

तत्र ते विषयभां उच विषयों, श्लोकाः श्लोक-  
हारना श्लोक छे छे समसंसारके श्लोक हैं कि, इति आ प्रमाणे इस प्रकार, पञ्चविधम् पांच पञ्चविध पांच प्रकारका, कर्म कर्म कर्म, विस्तरेण विस्तारणी विस्तारसे, निर्वर्णितम् कथुं छे कह दिया है, यच्च कर्म अने ये कर्म और जो कर्म, येभ्यः जेहीने भाटे जिनको, यस्मात् जे कारणसे, न हितम् हितकर नहीं अहित है, यच्च यत्था जे जोर जो, येभ्यः हितम् जेहीने भाटे हितकर छे जिनके कि हितकर है, विस्तरेण ते विस्तारपूर्वक अतन्त्र छे वह विस्तारपूर्वक कह दिया है ॥ २४ ॥

Here are the recapitulatory verses—

24. Thus has the fivefold mode of purificatory therapy been propounded regarding what is contra-indicated, in whom and wherefore and similarly what is indicated and in whom.

उक्तेषु विधिनिषेधेषु वैद्येन स्वयमप्युद्गो विवेचः—

न चैकान्तेन निर्विष्टेऽप्ययंऽभिनिविसेद्बुधः ।

स्वयमप्यत्र वैद्येन तर्क्यं बुद्धिमता भवेत् ॥२५॥

निर्विष्ट अतवेष्टा तंत्रमें कहे गये, जनि कर्मे अर्थभां पक्ष अर्थमें सी, बुधः च यथा वैद्ये बुद्धिमान वैद्य, एकान्तेन ऐकान्तपक्षे एकान्तकारसे, न अभिनिविसेद् वज्रगी रहें न ओर्ध्व ओ निषेध कर न बैठे, बुद्धिमता बुद्धिमान बुद्धिमान, वैद्येन वैद्ये वैद्य, जत्र जत्र वहां, स्वयम् जनि पौते पक्ष स्वयं सी, तर्क्यं तर्क्य तर्क करवा ओर्ध्व ओ विचार करके निषेध करे ॥२५॥

२५. न चैकान्तेन-वस्तुनिष्ठ (ख.)

.. एतच्छ्लोकानन्तरम्—

भवन्ति वाच

स्वयमपिः वाचः (घ.) बुद्धिमता

२५. न चैकान्तेन-न ऐकान्त (घ.)

.. निर्विष्टेऽप्ययंऽभिनिविसेद्बुधः—निर्विष्टेऽप्ययं समानके (क. घ. ग. क.)

.. वैद्येन-विषयां (घ. क.)



25. But the intelligent physician should not determine this according to the letter of these directions exclusively, but must use his own discretion and reasoning in arriving at decisions.

उत्पद्येत हि साऽवस्था देशकालबलं प्रति ।

यस्यां कार्यमकार्यं स्यात् कर्म कार्यं च वर्जितम् २६

દેશ- કારણ કે દેશ દેશ, કાલ- કાલ કાલ, બલમ્ તથા બલ તથા બલકે, પ્રતિ અનુસાર અનુસાર. સા હિ એવી ऐसी, अवस्था अवस्था अवस्था, उत्पद्येत उत्पद्य થાય છે કે उत्पन्न होती है कि, यस्याम् जेभा जिनमें, कार्यम् કરવા લાયક કાર્ય કર્તવ્ય કર્મ મી. અકાર્યમ્ સ્વાત્ અકાર્ય અને છે ન કરને યોગ્ય હોતા હૈ, वर्जितम् અને તબલા લાયક જીર ન કરને યોગ્ય, कर्म च કર્મ પશુ કાર્ય મી, कार्यम् કરવું પડે છે કરને યોગ્ય બન જાતા હૈ ॥ ૨૬ ॥

26. There may arise situations in view of the nature of the place time and the vitality of a particular patient, when, what is contra indicated in a patient, may be necessary for him and what is indicated may have to be avoided.

छर्दिहृद्रोगगुमानां वमनं खे चिकित्सते ।

अवस्थां प्राप्य निर्दिष्टं कुष्ठिनां वस्तिकर्म च ॥ २७ ॥

સ્વે પોતપોતાના અપને અપને, ચિકિત્સિતે ચિકિત્સાધ્યાયમ્ ચિકિત્સાધ્યાયમે, छर्दि- ઉલટી વમન, हृद्रोग- હૃદયોગ હૃદયરોગ, गुमानाम् અને ગુસ્મરોગની ઓર ગુલ્મ ઇન્કી, अवस्थाम् અમુક અવસ્થા અવસ્થાકે

૨૬ ઉત્પદ્યેત-ઉત્પદ્યેત (૫.)

., દેશ-દેશ (૫.)

., સ્વાત્ કર્મ કાર્ય ચ વર્જિતમ્-સ્વાત્કાર્ય કાર્યમેવ ચ

(૫. ૬.)

., વર્જિતમ્-વર્જિતમ્ (૫. ૬.)

૨૭. કુષ્ઠિનામ્-કુષ્ઠિનાં (૫.)

પ્રાપ્ય અનુસરીને અનુસાર, वमनम् તે રોગવાળાઓને માટે વમન આપવાનું તેમ રોગવાળાંકે લિખ્ત વમન કરાવે, निर्दिष्टम् કહ્યું છે કહા હૈ, कुष्ठिनाम् અને કુષ્ઠરોગીઓને માટે ઓર કુષ્ઠરોગીઓકે લિખ્ત, वस्तिकर्म च अस्तिकर्म કહ્યું છે વસ્તિકર્મ કહા હૈ ॥ ૨૭ ॥

27. Emesis in vomiting, cardiac disease and gulma, and enemata in dermatosis, though contra-indicated, are generally recommended at particular stages of the disease, in the chapters dealing with therapeutics.

तस्मात् सत्यपि निर्देशे कुर्याद्बुद्ध स्वयं धिया ।

विना तर्केण या सिद्धिर्यदृच्छासिद्धिरैव सा ॥ २८ ॥

તસ્માત્ તેથી ઇસ ક્ષેત્ર, निर्देशे આજ્ઞામાં निर्देश શાસ્ત્રે નિર્દેશ, सति अपि હોય તે પશુ હોનેર મી, स्वयम् પોતે અપની, धिया ऊह बुद्धिથી तर्क કરીને बुद्धिसे તર્ક કર, कुर्यात् कर्मा કરવું કર્મ કરવા વાહિય, तर्केण तर्क તર્ક, विना वगैरની विना, या सिद्धिઃ જે સિદ્ધિ મળે છે જો સફલતા મિલતી હૈ, सा ते वह, यदृच्छासिद्धिः एव यदृच्छासिद्धि જે છે यदृच्छासिद्धि હી હૈ ॥ ૨૮ ॥

28. Hence, despite the directions laid down, therapeutic measures should be decided upon by the physician, with the use of his own discretion. The success achieved without the exercise of reason is indeed success resulting from chance.

इत्यग्निवेशकृते तन्त्रे चरकप्रतिसंस्कृतेऽप्राप्ते

बलबलसंपूरिते सिद्धिस्थाने चक्षुर्कार्य-

सिद्धिर्नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

इति आ प्रभाषे इति प्रकार, अग्निवेश-कृते अग्निवेशे २येवा अग्निवेशे बनाने, चरक-प्रतिसंस्कृते तन्त्रे અને ચરકથી પ્રતિસંસ્કાર પામેલા આ શાસ્ત્રમાં ઓર ચરકકે દ્વારા સંસ્કૃતે ઇસ શાસ્ત્ર,



के वस्तयः केषु हिता इतीदं

श्रुत्वोत्तरं प्राह वचो महर्षिः ॥५॥

किम् अपेक्ष्य शी शी आभतने विचार करीने किन नियमोंका विचार करके, नरेभ्यः पुरुषोने मनुष्योंमें, वृत्तः वस्तिः आपेक्षी अस्ति दी हुई वस्ति, सिद्धिमान् अर्थ कृतकार्य, स्यात् भाव्य छे? होती है?, अथ नेत्रम् औनी नणी इसका नेत्र, किमप्रथम् शानी अनावेदी होय छे? किन द्रव्योंसे बनता है?, कीदृक् डेवी आतना क्या हैं इसके, प्रमाणाकृति प्रमाणा अने आकृतिवाणी प्रमाण और आकृति, किङ्कुणश्च अने उया गुणवाणी होय छे? और गुण?, वस्तिः अस्तिपुटश्च वस्तिपुटक, केभ्यः ओने भाटे किनके लिए, किं योनिगुणः च शानु अनावेदुं अने उया गुणवाणी होयुं ओछे? किसका और किस गुणवाका होना चाहिए?, निरुहकल्पः निरुहनी रुहयन्ता शी छे? निरुहकी कल्पना क्या है?, प्रणिधानमात्रा तेना प्रयोगनी मात्रा शी छे?, इस वस्तिके देनेकी मात्रा क्या है?, का वा स्नेहस्य अनुवासनमा स्नेहनी मात्रा शी छे? अनुवासनमें स्नेहकी क्या मात्रा है?, वायने अस्ति वभते सुवानी लेटनेकी, कः विधिः शी विधि छे? क्या विधि है?, के वस्तयः कृष्ट कृष्ट अस्तिओ छे कौनसी वस्तियां हैं?, केषु हिताः ओने भाटे हितकर छे? किनके लिए हितकारी है?, इति इदम् आ इनको, श्रुत्वा महर्षिः साक्षणी महर्षिओ सुनकर महर्षिने, उत्तरम् वचः उत्तर उत्तर, प्राह आपेक्षी दिया ॥ ४-५ ॥

4-5. What are the factors, observing which, an enema administered to a patient is attended with success? Of what material is the tube made? What is its length and shape, what is its quality and what are the sources of the enema-receptacle and what should be the qualities of those receptacles? What is the pharmaceutical formula of the evacuative enema? What is the mode of administration? What is the measure of the enema solution?

५. केसु हिता-केसु मता (क. व. ड. त.)

What is the proportion of the unctuous substance? What is the method to be observed in the bed? What are the varieties of enema and in whom are they indicated? Hearing these questions, the great sage spoke in answer thus.

बोषादीन्यपेक्ष्य दत्तो वस्तिः सम्यक् सिद्धिमेति -

समीक्ष्य दोषौषधदेशकाल-

सात्स्न्याग्निसत्त्वादिवयवबलानि ।

वस्तिः प्रयुक्तो नियतं गुणाय

स्यस्तु सर्वकर्माणि च सिद्धिमन्ति ॥६॥

दोष-औषध-दोष, औषध दोष, औषध, देश-काल-देश, काल देश, काल, सात्स्न्य-सात्स्न्य सात्स्न्य, अग्नि-अग्नि अग्नि, सत्त्वादि, सत्त्व वजरे सत्त्व आदि, वयः-बलानि वय अने अक्षने वय और बलको, समीक्ष्य विचार करीने देखकर, प्रयुक्तः प्रयोगेक्षी दी हुई, वस्तिः अस्ति वस्ति, निश्चित नउडी निश्चित, गुणाय स्यात् गुणकारी अने छे गुणकारक होती है, सर्वकर्माणि च अने सर्व कर्म और सब कार्यमें, सिद्धिमन्ति सिद्धिवाणी थाय छे सकलता मिलती है ॥६॥

6. If the enema is administered after a full investigation of the morbid humors, the medications, climate and season, homologation of the patient, his digestive power, psychic condition, age and vitality etc., it will give definite results in bringing about the success of the enema and achieving all its objects.

वस्तिनेत्रविधानोपयोगीनि द्रव्याणि—

सुवर्णरूप्यत्रपुताघ्रिती-

कांस्यास्थिशस्त्राक्षदुग्धमेणुदन्तैः

१ समीक्ष्य-अपेक्ष्य (घ.)

२ अग्निसत्त्वादि-अग्निसत्त्वौक (ज.)

३ कांस्यास्थिशस्त्र-कांस्यायनास्थि (घ. फ.)

४ कांस्यास्थिलोह (फ.)

५ शस्त्रदुग्ध-लोहदुग्ध (क. घ. ड. त.)

नलैर्विषाणैर्मणिभिश्च तैस्तै-

नेत्राणि कार्याणि सु(त्रि)कर्णिकाणि ॥७॥

सुवर्ण-रूप- सोना ३५ सुवर्ण चांदी, त्रपु-ताम्र-  
कवर्ध, तांशु बंग, ताम्र, रीति-कांस्य- पित्तल, कसुं पित्तल,  
कांसा, अस्थि-कव- हाडकां दे ६ अस्थि, कव, कुम-वेणु-  
वृक्ष, वांस वृक्ष, वाघ, वन्तैः दाधीयांत हाधीयांत,  
नलैः नल नल विषाणैः श्लिष्टां मोंग, तै तैः च अने  
ते ते और उन उन, मणिभिः भक्षिओली मणि  
आदिसे, सु(त्रि)कर्णिकानि सारी (२५) कर्णिकाओवाणी  
उत्तम (तीन) कर्णिकावाते नेत्राणि नणीओः नेत्र, कार्याणि  
अनापवी बनाने चाहिए ॥ ७ ॥

7. The enema tube should be made  
of gold, silver, tin copper, brass,  
bronze, bone wood, bamboo, ivory,  
reed, horn or crystal and fitted with  
well-made ears.

वस्तिनेत्रप्रमाणं वास्तिनेत्राकृतिश्च—

षट्पञ्चदशाष्टकलसंमितानि

षट्पञ्चदशवर्षजानाम् ।

स्युमुद्रकर्कशुसतीनवाहि-

च्छिद्राणि वस्याऽपिहितानि चैव ॥८॥

यथावयोऽङ्गुष्ठकनिष्ठिकाभ्यां

मूलाप्रयोः स्युः परिणाहवन्ति ।

ऋजूनि गोपुच्छसमाकृतीनि

ऋक्ष्णानि च स्युगुंडिकामुखानि ॥९॥

स्यात् कर्णिकेकाऽप्रचतुर्थभागे

मूलाधिते वस्तिनिबन्धने द्वे ।

७. नलैर्विषाणैर्मणिभिश्च तैस्तैनेत्राणि कार्याणि सु(त्रि)कर्णिकानि—

नेत्राणि सुवर्णैर्मणिभिर्नलैश्च त्रिकर्णिकानि प्रवदन्ति तज्ज्ञाः

(१. ४ ५)

८. चैव-चाणि (४.)

९. स्युगुंडिकामुखानि-स्युगुंडिकामुखानि (४)

षट्पञ्चदश- ७०वीस कलीस, हाडक- अने ७२

और बाण्ड, वर्षजानाम् वर्षों में अनुषे ७२ वर्षों में  
वयसालों के लिए, षट्पञ्चदश- अनुषे ७२ और कमनाः  
छः, वाट अष्ट- अने ७२ और ७२, ऋक्ष-  
आभगना अङ्गुल, संमेतानि आपनी नणीओ ओधेओ  
परिमित नेत्र कमशः अने चाहिए, सुद्र-कर्कश-पानीन-  
वाहिच्छिद्राणि अने ओओनां छिद्र ५५ अनुषे भग,  
ऋजूऔर अने मटर पेसी अथ ओनां छेनां ओधेओ  
और इनके छिद्र भी कमशः मंग, ऋक्षे और मटर के  
प्रवेश योग्य होना चाहिए, वस्या तथा वाटशी तथा  
बत्तीमे, अपिहितानि च एव पंध छेनां वन्द, स्युः  
छेनां ओधेओ रहने चाहिए मूलाप्रयोः अस्तिनेत्र भू  
अने अथ ७२भा वस्तिनेत्र मूलमें और अथ भागमें,  
वधावक ५५ अथ छे उमके अनुप्रार, ऋक्ष-  
अनुषे अंगुल कमशः अंगुले कनिष्ठिकाभ्यां अने  
८५वी आभणी ७८वी और कनिष्ठिका के बराबर,  
परिणाहवन्ति परिधिवाणी बोलइयां, स्युः छेनां ओधेओ  
होने चाहिए ऋजूनि नणी स्तीर्धा और ये सीधे, गोपुच्छ-  
सम- आपना पूछा ७८वी गायके पूछे के समान,  
आकृतीनि आकृतिनां आकृतिवाले, ऋक्ष्णानि २६क्षु  
चिकने, गुडिकामुखाणि अने ओणी नेत्रां ओनां मुख-  
वाणी और गुडिका के सदृश गोल मुखवाले, स्युः छेनां  
ओधेओ होने चाहिए एका ओक इन कर्णिकामें एक,  
कर्णिका- कर्णिका कर्णिका, अथचतुर्थभागे आभगना  
ओथा ७२भा आगे के चतुर्थ भागमें, कां छेनां  
ओधेओ होनी चाहिए, वस्तिनिबन्धने अने अस्ति पंधन-नी  
और वस्ति बांधने के लिए, द्वे मूलाधिते ओ कर्णिका भगभां  
छेनां ओधेओ दो मूलमें होनी चाहिए ॥८-९॥

8-9 The length of the enema  
tube should be six twelve or eight  
finger-breadths, according as the  
age of the patient is six, twenty or  
twelve years respectively. The hole or  
calibre of the tube should be such  
that it allows the passage of a green  
gram, jujube or math grain respectively,  
and stopped with a stylet, and the

circumference of the tube at the base and apex should be respectively of the thumb and the little finger of the patient. It should be straight and tapering like the cow's tail, smooth and globular at the mouth. There should be one ear attached to it at the first quarter from the mouth and there should be two ears more at the base for linking it with the receptacle.

વસ્ત્રવન્ત્રનિર્માણવિધિ:—

જારદ્રવો માહિષહારિણી વા

સ્યાચ્છૈક્રો વસ્ત્રિરજસ્ય વાઽપિ ॥૧૦॥

દદસ્તનુર્નષ્ટસિરો વિગન્ધ:

કષાયરુઢ: સુમૃદુ: સુશુદ્ધ: ।

નૃણાં વયો વીક્ષ્ય યથાનુરૂપં

નેત્રેષુ યોજ્યસ્તુ સુવદસૂત્ર: ॥૧૧॥

જારદ્રવ: અસ્તિપુટક ૧૬ અળદ વસ્ત્રિપુટક  
બુદે બેલ, માહિષ- ધારી મૈસે, હારિણી વા હરિણ હસ્તિ,  
ઘોઠર: સૂવર સૂવર, અજલ વા અપિ અથવા બહારાની  
અસ્તિ (મૂત્રાશય)થી બનાવેલું અથવા વઢરેલી વસ્ત્રિ  
(મૂત્રાશય)એ બનાયા હુઆ, જાદ હોવું બેઠીએ હોવા  
વાહિય, દદ: તે દદ વહ મઘવૂત, તતુ: પાતળી પતલ્લી,  
નષ્ટસિર: સિરા વઢરની સિરાહિત, વિગન્ધ: અન્ધરહિત  
ગન્ધરહિત, કષાયરુઢ: કષાયરુઢની કષાયનાથી કષાય  
કષાયરુઢની માવનાસે લાલ બની, સુમૃદુ: સારી પેઠે  
કોમળ કોમળ, સુશુદ્ધ: અને સારી પેઠે શુદ્ધ હોવી બેઠીએ  
જોર મલી પ્રકાર શુદ્ધ હોવી વાહિય, સુવદસૂત્ર: સારી  
રીતે સૂત્રથી બાંધી મલી પ્રકાર ધાયેસે બાંધકર, નૃણાં  
વય: પુરુષોનું વય મનુષ્યોની વયકો, વીક્ષ્ય બેઠીએ  
વેચકર, યથાનુરૂપમ્ તેને અનુસરી રીતે અનુસાર,  
વસ્ત્રિ: અસ્તિપુટકને વસ્ત્રિપુટકકો, નેત્રેષુ નેત્રની  
સાથે નેત્રકે સાથ, યોજ્ય દેરાથી બાંધવું બેઠીએ  
સૂત્રસે બાંધના વાહિય ॥ ૧૦-૧૧ ॥

૧૧. સુશુદ્ધ:—સુવદ: (વ. ફ.)

10-11. The enema receptacle should be made of the bladder of an ox, buffalo, deer, hog or goat. It should be firm, thin, with all its veins removed, free from smell, tanned and colored red with astringents and very soft and very clean. On ascertaining the age of the patient, the bladder should be connected with the appropriate kind of enema-tube, and well secured by means of strings.

વસ્ત્રિલામેન્નુકન્પવિધિ:—

વસ્ત્રેરલામે પ્લવજો ગલો વા

સ્યાદક્ષપાદ: સુઘન: પટો વા ।

વસ્ત્રે: અસ્તિ વસ્ત્રિ, અલામે ન મળે તેા ન મિલ્ને  
પર, પ્લવજ: પ્લવ ૫૬નીના પ્લવ પક્ષીકે, ગલ: ગળાથી  
ગલ્લે, અક્ષપાદ: વા અથવા આમ્રાથીડિયાના આમ્રાથી  
અથવા વિમગાદફકે ચર્મસે, સુઘન: અથવા સારી પેઠે  
થડ અથવા સૂવ વટ, પટ: વા વસ્ત્રથી વસ્ત્રસે, સાદ  
અસ્તિપુટક બનાવી દેવું બેઠીએ વસ્ત્રિપુટક બના લેના  
વાહિય ॥ ૧૧૩ ॥

113. If the bladder is not available, the throat of a pelican or the skin of a bat or a very thick cloth may be used instead.

વસ્ત્રિપ્રયોગવિધિ:—

આસ્થાપનાર્થં પુરુષં વિધિઃ

સમીક્ષ્ય પુષ્પેઽહ્નિ શુક્લપદ્મે ॥૧૨॥

૧૧૩. અલામે—અભાવે (હ. જ. ફ.)

, વસ્ત્રેરલામે પ્લવજો ગલો વા—વસ્ત્રેરભાવે પ્લવજગલો વા (વ.)

૧૨. વસ્ત્રેરલામે પ્લવજો ગલો વા સ્યાદક્ષપાદ: સુઘન: પટો વા—  
નેત્રસ્ય વાચામત્ત પદ્મ નાહી હિતાસ્થિજા વંશમવા નકો વા  
(હ.ત.)

, પ્લવજો ગલો વા—પ્લવજાંગકોવા (થ.)

**प्रशस्तनक्षत्रमुहूर्तयोगे  
जीर्णाग्नेकाग्रमुपक्रमेत ।**

विचित्रः निधिः अक्षुण्णः वैद्यः विचित्रो ज्ञाननेवाणः  
चिकित्सकः, पुरुषम् पुरुषने पुरुषको, आस्थापनार्हम्  
आस्थापनने योऽय आस्थापनके योग्य समीक्ष्य अपूर्व  
देखकर, जीर्णाग्ने अग्ने अत्र पृथ्वी मधुं छे अत्र अत्र  
जीर्ण होनेपर, एकाग्रम् अग्ने ओकाग्र मनवाणा पुरुषने  
एकाग्र मनसे स्थित मनुष्यको, शुक्लपक्षे शुक्लपक्षमा  
शुक्लपक्षमें, पुण्ये महर्षि पवित्र दिनसे पुण्य दिनमें,  
प्रशस्त-प्रशस्त प्रशस्त, नक्षत्र-नक्षत्र नक्षत्र, मुहूर्त-  
मुहूर्त मुहूर्त, योगे अग्ने योगमा और योग मिलनेपर  
उपक्रमेत ७५५२ ३२५१ बस्ति देवे ॥ १२३ ॥

12-123. The expert physician,  
knowing a patient to be fit for the  
administration of corrective enema  
should start treatment after the  
patient has fully digested his food  
and is composed in mind, on an  
auspicious day in the bright fortnight,  
under a propitious constellation and in  
a good Muhurta and Yoga.

बलां गुह्वीं त्रिफलां सराखां  
द्वे पञ्चमूले च पलोन्मितानि ॥१३॥  
अष्टौ फलान्यर्घतुलां च मांसा-  
च्छागात् पचेदप्सु चतुर्थशेषम् ।  
पूतं यवानीफलबिस्वकुष्ठ-  
वचाशताह्वाघनपिप्पलीनाम् ॥१४॥  
कक्षैर्गुडश्चौद्रघृतैः सतैलै-  
रुतं सुखोष्णैस्तु पिबुप्रसन्नैः ।  
गुहात् पलं त्रिप्रसृतां तु मात्रां  
क्षेदस्य युक्त्या मधु सैन्धवं च ॥१५॥

१२३. जीर्णाग्नेकाग्रमुपक्रमेत-जीर्णाग्नेकाग्रमुपाकरेणम् (ब. क.)  
१५. स्नेहस्य-स्नेहाद्य (क. घ)  
१५. सैन्धवं च-सैन्धवे च (ब. घ. ङ.)  
१५. स्नेहस्य युक्त्या मधुसैन्धवं च-स्नेहं कुल्लिर्जम् ततोऽनुकल्पम् (ब. घ.)

प्रक्षिप्य बस्तौ मथितं स्रजेन  
सुबद्धमुच्छ्वास्य च निर्वलीकम् ।  
अङ्गुष्ठमण्ड्येन सुखं पिषाय  
नैवाग्रसंस्थामपनीय वर्तिम् ॥१६॥  
हैमस्वभावं कृतमूत्रविदकं  
मानिधुधार्ते ज्वने मनुष्यम् ।  
समेऽथवेचनतस्तीर्णके च  
नास्तुच्छिन्ने स्वास्तरनोपपन्ने ॥१७॥  
सव्येन पार्श्वेन त्वं ज्ञायानं  
कृत्वर्जुदेहं मधुत्रोपधानम् ।  
सङ्कोच्य सव्येतरदक्ष्य सविथ  
धामं प्रक्षार्य प्रणयेत्ततस्तम् ॥१८॥  
क्षिण्ये गुहे नेत्रचतुर्धामं  
क्षिण्यं शनैर्ज्ञेयसु पृष्ठवंशम् ।  
अक्षपनावेपथ्यावादीष  
काद्योगुणांश्चापि विदर्शयस्तम् ॥१९॥  
प्रक्षीक्य सैकप्रहणेन दधं  
नेत्रं शनैरेव ततोऽपकर्षेत् ।

फलोन्मितानि औष्ठ औष्ठ ५६ नैः ७५ प्रत्येक चार  
कर जेले प्रमाणमें, बलाम् बला बला, गुह्वीम् अग्ने  
मिलेय, सराखाम् सारना राजा, त्रिफलाम् त्रिफला  
त्रिफला, द्वे द्वे दोनो, पञ्चमूले च पञ्चमूल पञ्चमूल,  
अष्टौ अष्ट आठ, फलानि भीक्षण जैनफल, छागात्  
मांसात् च अग्ने लडरानु भांश और बकरेका भांश,  
अर्जुनकाम् अरुंधी गुहा २०० तोले डेकर, मधु तेरे  
पाखीमा जकमें, चतुर्थशेषम् अर्जुनांश आधी रहे त्या  
पृथ्वी मधुर्वांश लेष रहे तब तक, पचेत् पकावी पकावे,  
पूतम् पठावी भाणीने इसको छाककर, वचाशी-वचाशी

१६. सुबद्धमुच्छ्वास्य च निर्वलीकम्-बति ततः सम्बद्धे निषाय (ग. घ. ङ.)  
१७. समेऽथवेचनत-समेऽथ किञ्चित् (घ.)  
१८. समेऽथवेचनतस्तीर्णके वा समेऽथवेचनतस्तीर्णके वा (ब. क.)  
१८. सङ्कोच्य-सिञ्च्य (ब. क. त. घ. क.)  
१८. धामं-मध्यं (ब. क.)  
१९. शनैर्ज्ञेयसु पृष्ठवंश-सनैर्ज्ञेयसु पृष्ठवंश (घ.)  
१९. विदर्शयस्तम्-वि दर्शयस्तम् (ब. घ.)



यवानी, फल-भीठण मैफल, विच-भिदी बेल, कुष्ठ-  
 उड कुष्ठ, बसा- १०८ बस, जलाह्व- सुवा सोवा, घन-  
 विप्लीनाम् मोक्ष अने धीपरा इरेडना नागरमोक्ष  
 और विप्ली प्रत्येकके विचुममाणैः ओड ओड तोड़ना एक  
 एक तोले, ककैः ६६६ के कककै, सुखोणैः तु नवशेडं  
 सुहाते गरम, सैलैः तैल तैल, गुड- गोण गुड, खौद्र-  
 मध मधु, बूबैः अने धी साधे और घृतके साथ,  
 युतम् भेणववा मिला देवे, गुडाव पलम् गोणवी ओड  
 पलनी मात्रा गुडकी चार तोलकी, स्नेहस्य तथा धी  
 अने तैल भणी तथा धी और तैल मिलाकर, द्विहस-  
 ताम् भे प्रसृतनी १६ तोलेकी, मात्रा ८ मात्रा देवी  
 मात्रा लेवे, पुस्त्या च तेमा युक्तयुक्तार तममें युक्ति  
 पूर्वक, मधु मध मधु, सैन्धवक तथा सिन्धवम् भेणवी  
 तथा सैन्धव मिलाकर, खजेन जेरणीया तथावीने, मथिनम  
 भथीने मयक, सुबद्धम् शरीरी रीते भाषिदी अने  
 सुबद्ध और, विवेकीकम् अण न रहे ओवी रीते कुरियां  
 न रहे ऐसी तरह, ककैस्व इभावीने मधु डाढी  
 नाभी दबाकर वायु निकाल कर, बसौ ते अस्तितमा  
 बस्तिमें, प्रक्षिप्य नाभीने डालकरके नेत्राग्रसंख्याम्  
 नेत्रना आगला भागमा रहेवी नेत्रके अग्रभागमें लगनी,  
 वर्तिम् वाटने बत्तीको, अपनीय दूर करी निकालकर,  
 अङ्गुष्ठमन्धेन अङ्गुष्ठाना पथला भागभी अंगूठेके  
 मध्यसे, मुखम् नेत्रनु मोड़ुं नेत्रके मुखको, विषाय  
 अंध करी वन्द करते हुए, तैलाक्तगात्रम्  
 शरीरे तैल ओषध रोगीके शरीरमें तैल मालिश करके,  
 कृतमूत्रविदूकम् मूत्र अने मज्जत्याग करावेला मल-  
 मूत्र त्याग करवाकर, नातिक्षुभार्तन् अङ्गुष्ठ भूष्यो न  
 होय ओवा अनुष्यने मूत्रसे बहुत पीड़ित न होने पर,  
 समे समभण समान, अथवा अथवा या त्ने, ईष्य  
 जराड थोडा, नवशीर्षके भायां तरङ्ग थोडा नीया  
 शिरकी ओर कुछ नीचे, नारुण्छिते वा अङ्गुष्ठ अथवा न  
 होय तेवां न बहुत ऊंचे, स्वास्तरण- तथा सारां भिजानां  
 तथा अच्छे बिछौने, उपपन्ने भिजवेला बिछाये हुए  
 कपने शयनमा विस्तर पर, अङ्गुदेहम् सीधुं शरीर  
 शरीरको सीधा, कृत्वा रभावी रखते हुए, स्वभुजोपचा-  
 नम् पोताना कपनुं न ओशीकुं करावी उसकी मुजाका  
 तिरहाणा बनाकर, सखेन भाये रोगीको बाम, पार्श्वेन

पङ्गे पार्श्वे, मुखम् सुभे सुससे, कवानम्  
 सुवाडीने लिटवाका, अथ औना इसके, समेतार  
 जमण्ठा दाहिनी, स्वस्थ पङ्गे टांगको, सङ्कोच  
 अंशेयावीने सिकोडकर, वामम् अने भागाने और  
 बांयी टांगको प्रसार्थ लाये करी फेलाकर, ततः  
 ते पङ्गी बादमें, तम् प्रणवेत् अस्ति देवी बस्ति देवी  
 चाहिए, खिगधे गुदे त्थारे रनेह थोपडेह गुदाभां बी  
 या तैलसे गुदाको, खिगधम् स्निग्ध करी स्निग्ध करे,  
 नेत्रचतुर्थभागम् नेत्रना थोथो भाग नेत्रके चतुर्थ भागको,  
 अकंपन- नहि उंपुं नही कांपना अवेपन- नहि हथुं  
 नहीं हिलना, लाघवादीन् हलकापङ्गुं पङ्गेरे हलकापन  
 आदि, पाण्योः हथना हाथके, गुणान् च अपि युष्येने  
 गुणोंको, विदूष्यन् देभाउतां वैदे दिखाते हुए वैद,  
 तम् एक ग्रहणेन अस्तितमे ओड न पङ्गुथी बस्तिको ए  
 ही पकडसे, अङ्गुष्ठवन्ध मेरुडं अतुसार पृष्ठवन्ध  
 साथ साथ, बसैः कजु धीमे धीमे सीधे पेसाओ  
 धीरे धीरे सीधा प्रविष्ट करे, प्रपीड्य इभावीने अस्त-  
 २१ दबाकर बस्तिद्वय, दत्तम् च आपी देवा दे देना  
 चाहिए, ततः नेत्रम् अने पङ्गी नेत्रने और पीछे नेत्रको,  
 स्रवैः एव धीरेधीरे धीरेधीरे, अवकर्वेत् पाङ्गुं भेयुं  
 बाहर निकाले ॥ १३-१९ ॥

13-19. Take four tolas each of heart-leaved sida, guduch, the three myrobalans, indian groundsel and decaradices, eight fruits of emetic nut and twenty tolas of goat's flesh. Decoct them in water till reduced to 1/4 the quantity; then filter and add to it the paste prepared of one tola each of celery seeds, emetic nut, bael, costus, sweet flag, dill seeds, nut grass and long pepper, and mix 4 tolas of gur and 16 tolas of ghee and oil, slightly warmed and a proportionate quantity of honey and rocksalt. Emulsify this with a pestle and put it in the enema-receptacle. The enema apparatus should



be well fixed, all the air should be expelled and the curves and wrinkles should be smoothed out. Having removed the stylet from the mouth of the tube, one should cover it with the middle of the thumb. The patient should first be well prepared with inunction of the body. He should have passed feces and urine, and should not be very hungry; he should be placed on a flat bed or bed with a slightly lowered head. The bed should not be very high, it should be well spread and prepared. The patient should lie comfortably on his left side. He should keep his body straight and pillowing himself on his interlocked hands, he should flex his right leg over his body and fully extend his left leg. Lubricating his anus, the physician should introduce one fourth of the enema tube which has been smeared with oil, slowly and rightly following the curve of the spinal column. He should not shake, nor tremble and should bring to bear all the dexterity of his hand in performing his act. He should, with a single act of compression on the receptacle, inject the contents; and then he should gradually withdraw the nozzle of the tube from the anus.

અસમ્યક્ પ્રણીતે વસ્ત્રો વ્યાપદઃ—

તિર્યક્ પ્રણીતે તુ ન યાતિ ધારા  
ગુદે વ્રજઃ સ્યાચ્છલિતે તુ નેત્રે ॥૨૦॥  
દત્તઃ શનૈર્નાશયમેતિ વસ્તિઃ  
કણ્ઠં પ્રધાવત્યતિપીઢિતમ્ ।

શીતસ્વતિસ્તમ્મકરો વિદાહં

મૂર્છાં ચ કુર્યાદતિમાત્રમુષ્ણઃ ॥૨૧॥

સ્નિગ્ધોઽતિજાહ્યં પવનં તુ ક્ષ્ણ-

સ્તમ્વલ્પમાત્રાલવણસ્વયોગમ્ ।

કરોતિમાત્રાભ્યધિકોઽતિયોગં

ક્ષામં તુ સાન્દ્રઃ સુચિરેણ ચૈતિ ॥૨૨॥

દાહાતિશ્ચારૌ લવણોઽતિ કુર્યા-

ત્તસ્યાત્ સુયુક્તં સમમેવ દદ્યાત્ ।

તિર્યક્ પ્રણીતે તુ એ અસ્તિની નળીને ટેડી રાખી દોષ તેા નેત્રકો તિર્યક્ પ્રવિષ્ટ કરનેસે, ધારા ખાસ કાયકો ધારા, ન યાતિ અંદર જતી નથી મન્દર નહીં જાતી, નેત્રે તુ ચલિતે એ નેત્ર ચલિત થાય તેા નેત્રકે હિલનેસે, ગુદે યુદ્ધમાં ગુદામેં, વ્રજઃ સ્વાદ મધુ થાય એ વ્રજ હો જાતા હૈ, જનૈઃ ધીમેથી દબાવીને ધીરે, દત્ત-વસ્તિઃ દીધેથી અસ્તિ રેનેસે વસ્તિ, નાશયમ્ પકાશયમાં પકાશયમેં, ન યતિ પહેલવી નથો વહીં પહુંવતી, અતિપીઢિતઃ અને બહુ દબાવેલી અસ્તિ જોર વહુત જોરસે દબાવે પર, કણ્ઠમ્ કંઠ સુધી કણ્ઠ તક, પ્રધાવતિ દોડી બધ છે આ જાતી હૈ, અતિપીઢિતઃ અતિ-શીતલ અસ્તિ અતિ શીત વસ્તિ, સ્તમ્મકરઃ સ્તંભ કરનાર છે અત્યંત જડતા ઉત્પન્ન કરતી હૈ, અતિમાત્રમ્ અને અતિ જોર અત્યંત, ડબ્બઃ ઉષ્ણ અસ્તિ ડબ્બ વસ્તિ, વિદાહમ્ વિદાહ વિદાહ, મૂર્છામ્ ચ અને મૂર્છાને જોર મૂર્છા, કુર્યાત્ કરે છે કરતી હૈ, અતિસ્નિગ્ધ અસ્તિ અતિ સ્નિગ્ધ વસ્તિ, જાહ્યમ્ જડતા કરે છે વહુત કરતી હૈ, ક્ષ્ણઃ તુ અને રૂક્ષ અસ્તિ ક્ષ્ણ વસ્તિ, પવનમ્ વાયુ કરે છે વાયુ કરતી હૈ, વ્યુ-અને પાતળી જોર વળતી, અલ્પ-માત્રા-શોડી માત્રાવાળી માત્રામેં અલ્પ, અલવણઃ અને હવણરહિત અસ્તિ જોર જમકરહિત વસ્તિ, અલયોગમ્ અયોગ કરે છે અયોગ ઉત્પન્ન કરતી હૈ, માત્રાભ્યધિકઃ વધારે માત્રામાં દોષ તેા માત્રામેં અધિક હો તેા, અતિયોગમ્ અતિયોગ કરે છે અતિયોગ કરતી હૈ, સાન્દ્રઃ તુ અને ઘાટી દોષ તેા વદ્ધ હો તેા, ક્ષામપ્ યુગ્મને શીઘ્ર જોગ, કરોતિ કરે છે કરતી હૈ,

૨૦. ક્ષામં તુ-ક્ષોમન્તુ (વ.)

૨૧. કુર્યાત્-પ્રયુક્તં (ક.)

સુષિરેણ ચ અને ઘાતે વખતે ઔર વહુત દેરમેં,  
 ઇતિ અંદર બધ છે પ્રવિષ્ટ થોતી હૈ અતિલવણ: બે  
 લવણ અધિક હોય તેા યદિ લવણ અધિક હોતો, દાહ-  
 દાહ દાહ, અતિસારો અને અતિસાર ઔર અતિસાર, કુર્યાવ  
 કરે છે કરતી હૈ, તરુમાજ માટે ઇસ લિણ, સુયુક્ત સારી  
 રીતે યુક્તિપૂર્વક મલી પ્રકાર યુક્તિપૂર્વક, સમમ્ એવ  
 અને સરખી રીતે ઔર સમાન રૂપમેં, દયાત્ અસ્તિ  
 આપવી બોધ એ વસ્તિ દેની ત્રાદિણ ॥ ૨૦-૨૨૩ ॥

20-223. If the euema tube is inser-  
 ted obliquely, the fluid will not flow,  
 and if the nozzle is jerked about,  
 wounds are likely to be caused in the  
 rectum. If it is given slowly, it may  
 not reach to its destination; and if given  
 with great force, it may run up very  
 high in the alimentary canal even upto  
 the throat. If the enema solution is too  
 cold, it will cause stiffness; if it is  
 very hot, it will cause local irritation  
 and fainting. If it is unctuous it will  
 lead to dullness; and if it is very dry,  
 it will provoke vata; and if it is very  
 thin or in small dose or not mixed with  
 salt, it will be abortive in action. If it  
 is excessive in dose, it will produce  
 the effects of over-action and weakness;  
 if it is very viscid, it will take a long  
 time to return. If salt is added in  
 excess, it will cause burning and  
 diarrhea. Therefore, the enema should  
 be properly prepared and given in  
 the right manner.

વસ્તો દ્રવ્યલેષ્યક્રમ: —

પૂર્વે હિ દયાન્મધુ સૈન્ધવં તુ

છેહ વિનિર્મથ્ય તતોડનુ કલ્કમ્ ॥૨૩॥

૨૩. દયાન્મધુસૈન્ધવં તુ-વસ્તો મધુસૈન્ધવાધ્યાન્મ (વ. ધ.)

વિનિર્મથ્ય-કુનિર્મથ્ય (ધ.)

વિમથ્ય સંયોજ્ય પુનર્દ્રવૈસ્તં

વસ્તૌ નિદધ્યાન્મથિતં સ્વજેન ।

પૂર્વમ્ હિ પ્રથમ પ્રથમ, મધુ મધ મધુ, સૈન્ધવમ્  
 તુ અને સિંધાવુણુ ઔર સૈન્ધવ, સ્નેહમ્ રનેહમાં સ્નેહમેં,  
 દયાત્ નાખવાં ઢાલે, વિનિર્મથ્ય મથીને મથકર. તત:  
 મધુ પછી, ડસકે વાદ કલ્કમ્ કરક નાખવો કલ્ક  
 ઢાલે, વિમથ્ય તેને મથી મથકર, પુન: દ્રવૈ: ફરીને  
 દ્રવેન્દ્રી સાથે ફિર દ્રવોસે, સંયોજ્ય મેળવી સંયોજિત  
 કરકે, સ્વજેન મથિતમ્ ઝેરુથી મથી મંથનદંડસે  
 મથકર, તમ્ તેને અસ્તિપુટકમાં ડસકો વસ્તિપુટકમેં,  
 નિદધ્યાત્ નાખવું ઢાલે ॥ ૨૩૩ ॥

23-233. The pharmacist should first  
 take unctuous substance, honey and  
 rocksalt and emulsify it and then add  
 the paste and continue to rub. Then  
 he should add the fluid decoction and  
 fully mixing them up with a pestle,  
 place it in the enema-receptacle.

સવ્યં શયાનસ્ય વસ્તિદાને હેતુ: —

વામાશ્રયે હિ પ્રહણીગુદે ચ

તત્પાર્શ્વસંસ્થસ્ય સુસોપલઙ્ચિ: ॥૨૪॥

લીયન્ત એવં વલયશ્ચ તસ્માત્

સવ્યં શયાનોઽર્હતિ વસ્તિદાનમ્ ।

પ્રહણીગુદે ચ ગ્રહણી અને યુદ્ધ પ્રહણી ઔર ગુદા,  
 વામાશ્રયે હિ ડાયા બાગમાં આશ્રય કરી રહેલા છે  
 તેથી વામપાર્શ્વમેં હૈ ઇસલિણ, તત્-પાર્શ્વસંસ્થસ્ય તે પડમે  
 સ્તેલામાં વામપાર્શ્વમેં લેટનેવાલેમેં, સુસોપલઙ્ચિ: અસ્તિ  
 સુખપૂર્વક વ્યાપ્ત થાય છે વસ્તિ સુખપૂર્વક વ્યાપ્ત હોતી  
 હૈ, એવમ્ ચ અને એ પ્રમાણે ઇસ તરહ, વલય:  
 કરચલીઓ વલિયાં, લીયન્તે ઝેરુ બધ છે હટ જાતી  
 હૈ, તસ્માત્ તેથી ઇસ લિણ, સવ્યમ્ ડામે પડમે વામપાર્શ્વમેં,  
 શયાન: સ્તેલા મનુખ્ય લેટા હુધા મનુખ્ય, વસ્તિદાનમ્

૨૩૩. મથિતં સ્વજેન-મિથનપ્રમથ: (ધ. ધ.)

૨૪. વામાશ્રયે હિ પ્રહણીગુદે ચ-વામાશ્રયોઽભિર્મહણી ગુદં ચ

(ધ. ધ.)

સુસોપલઙ્ચિ:-સુસોપલઙ્ચિ: (ધ. ધ.)

અસ્તિ દેવાને વસ્તિ વેનેકે, જહંતિ ચોગ્ય છે ચોગ્ય દોતા છે ॥ ૨૪૩ ॥

24-24½. As the organ of assimilation and the rectum are situated on the left side of the body, the enema will be taken well by the person who is lying on his left side; and as the folds and valves of the rectum get straightened out it is said, that the enema should be administered to the patient while he is lying on his left side.

વસ્તિદાનસમયે આવશ્યિકં કર્મ—

વિદ્વાત્તેમો यदि चार्धदत्ते

निष्कृष्य मुके प्रणयेदशेषम् ॥૨૫॥

उत्तानदेहश्च कृतोपधानः

स्याद्वीर्यमाप्नोति तथाऽस्य देहम् ।

યદિ ચ અને બે વદિ, અર્ધદત્તે અસ્તિ અરધી આપી હોય ત્યાં વસ્તિ આપી દેનેપર, વિદ્વાત્તેમોઃ મળ અથવા મહાવાતરો વેગ થાય તો મલ અથવા મહાવાતની પ્રવૃત્તિ હો જાય તો નિષ્કૃષ્ય અસ્તિનેત્ર પાશુ જેથી લઈને વસ્તિનેત્રકો નિકાલ લે, મુકે વેગ છોડ્યા પછી વેગ મુક હોનેપર, અશેષમ્ સંપૂર્ણ અસ્તિ સંપૂર્ણ વસ્તિ, પ્રણયેત્ દેવી વેગે, ઉત્તાનદેહઃ અને શરીર અતુ કડી માથા નીચે ફિર શરીરકો ચિત કરકે, કૃતોપધાનઃ ન જાત્ ઓશીકું રાખવું સિરકે નીચે સિરહાના રાખકર લેટ જાય, તથા અસ્ય એ પ્રમાણે કરવાથી એવા કરનેશે, દેહમ્ એના દેહને શરીરમેં, વીર્યમ્ અસ્તિને શાર વસ્તિકા સાર, આપ્નોતિ પ્રાપ્ત થાય છે પહુંચ જાતા હૈ ॥ ૨૫૩ ॥

25-25½. If in the middle of the enema administration the patient gets

૨૫ પ્રણયેદશેષમ્—પ્રણયેદ શેષમ્ (૫)

૨૫½ —પ્રણયેતુ શેષમ્ (૫.)

૨૫૩. દેહમ્—દેહઃ (૫.)

an urge to pass feces or flatus, the enema tube should be drawn out and when the urge has passed away, the remaining solution should be injected; he should lie supine on the bed with his body in a raised position by means of a pillow in such a way that the effect of the enema pervades the whole body.

પ્રથમદ્વિતીયતૃતીયવસ્તીનાં ફલમ્—

एकोऽपकर्षत्यनिलं स्वमार्गात्

पित्तं द्वितीयस्तु कफं तृतीयः ॥૨૬॥

૧૬: પહેલી અસ્તિ પહેલી વસ્તિ, અનિલમ્ વાયુને વાયુકો, દ્વિતીયઃ બીજી અસ્તિ દ્વિતી વસ્તિ, પિત્તમ્ પિત્તને પિત્તકો, તૃતીયઃ ત્રીજી અસ્તિ ત્રીજી વસ્તિ, કફમ્ કફને કફકો, સ્વમાર્ગાત્ પોતાના માર્ગમાથી અપને માર્ગસે, અપકર્ષતિ જેથી હાલે છે જોઈ જાતી હૈ ॥૨૬॥

26. The first enema expels the vata from its natural course, the second will expel the pitta, and the third will expel the kapha.

પ્રત્યાગતે વસ્તી પશ્ચાત્કર્મ—

પ્રત્યાગતે કોષ્ઠજઙ્ગાવસિકઃ

શાલ્યધમમયાત્તનુના રસેન ।

जीर्णे तु सायं लघु चाक्षमात्रं

भुक्तोऽनुवात्यः परिहृंहणार्थम् ॥૨૭॥

પ્રત્યાગતે અસ્તિ પાછી વળી આવે એટલે વસ્તિકે વાપસ આવેપર, કોષ્ઠજઙ્ગ- નવરીકા પાશુથી મુલોજ્જ જલસે, અવસિકઃ નાહી જાનકર, તનુના પાતળા પતલે, રસેન મીઠાસર સાથે માંસરસકે સાથ, આક્ષમાત્ર શાળના જાત જાળિવાલકા માત, અઘાત ખાના જાલે, જીર્ણે તુ તે પછી જતાં રસકે જીર્ણ હોનેપર, સાયમ્ સાંજે જાનકો, લઘુ લઘુ લઘુ, અક્ષમાત્રમ્ અને જોશી માત્રામાં જોર અલ્પ માત્રામેં, મુકઃ ચ બોજવ કરાવી મોજન કરકે, પરિહૃંહણાર્થમ્ બુંદણુને માટે બુંદળકે કિપ્,

૨૭. મુકોઽનુવાત્યઃ—મુકોઽનુવાત્યઃ (૫.)

મનુષ્યાયઃ તેનું અનુવાસન કરવું અનુવાસનવસ્તિ દેની જાહિર ॥ ૨૭ ॥

27. When the solution has returned, the person should be affused with genially warm water, and should be given a diet of sali rice along with thin meat-juice; when this is digested, the physician should give him light diet in a small quantity in the evening and then should give him an unctuous enema for the sake of strengthening him.

નિરુદ્ધાનન્તરમનુવાસનં દેયમ—

નિરુદ્ધપાદાંશસમેન તૈલે-

નામ્લાનિલઘ્નૌષધસાધિતેન ।

વસ્ત્વા સ્ફિક્તૌ પાણિતલેન હન્યાત્

જ્વેહસ્ય શીઘ્રાગમરક્ષણાર્થમ્ ॥૨૮॥

ઈવચ્ચ પાદાક્કલિયુગ્મમાન્ત્રે-

ઉત્તાનદેહસ્ય તલૌ પ્રમૃજ્યાત્ ।

જ્વેહેન પાષ્ણ્યક્કલિપિષ્ઠિકાશ્ચ

યે વ્યાસ્ય માત્રાવયવા રુગાર્તાઃ ॥૨૯॥

તાંધ્યાવસૃત્રીત સુખં તતશ્ચ

નિદ્રામુપાસીત કૃતોપધાનઃ ।

અન્તઃ-અન્તઃ દ્રવ્યે અન્તઃ, અનિલઘ્ન- અને વાત- નાશકે બૌર વાતહર, ઔષધસાધિતેન ઔષધથી સાધેલા ઔષધિસાધિત, નિરુદ્ધપાદાંશ- નિરુદ્ધના ચતુર્થાંશ નિરુદ્ધકે ચતુર્થાંશ, સમેન જેટલા જિતને, સૈલેન તેલથી લેકડે, દરવા અનુવાસન દઈ અનુવાસન દેકર, જ્વેહસ્ય અને રનેહને સ્નેહ, શીઘ્રાગમ-રક્ષણાર્થેષુ તુરત બહાર આવવા ન દેવા માટે જલ્પી વાપસ ન આ જાય ફર

૨૯. ઈવચ્ચ પાદાક્કલિયુગ્મમાન્ત્રે-ઈવચ્ચપદાંગુલિયુગ્મં ચ કર્ષેન

(ર. ત. ધ)

, તલૌ-તનો (હ.)

૩૦. અવસૃત્રીત સુખં-અવસૃજ્યાત્ સુખં (ર.)

, અવસૃત્રીત-અવસૃજ્યાત્ (ર.)

લિપ્, સ્ફિક્તૌ બ-ને રિસ્યેને દોનોં નિતંવોંએ, પાણિતલેન હથેલીથી ક્ષ્ણેલિયોંસે, હન્યાત્ ઠપકારવા ઠપકના વાદિપ, ઉત્તાનદેહસ્ય અને ચત્તા શરીરવાખ્ખ બૌર ચિત લિટાકર, પાદાક્કલિયુગ્મમ્ બ-ને પગની આંગળીઓને ડસકી દોનોં પેરોંકી અંગુલિયોંકો, ઈવચ્ચ બ-રા થોડા થોડા, આન્ત્રેષુ જે ચવી લીંચે, સ્નેહેન રનેહથી બૌર સ્નેહસે, તલૌ તેનાં પગનાં તળાંને ડસકે પેગકે તલોંમેં, પ્રમૃજ્યાત્ ધસવાં મર્દન કરે, પાષ્ણિ- ઓડી ઈડી, અક્કલિ- આંગ- ળીઓ અંગુલિ, પિષ્ઠિકાઃ ચ અને પિડીઓ બૌર પિષ્ઠલિયાં, યે ચ અને જે પીઝાં બૌર જો જો, અસ્ય ઓનાં ફસકે, રુગાર્તાઃ પીડાયુક્ત પીડિત, માત્રાવયવાઃ શરીરના અવયવો હોય શરીરકે અવયવ હોં, તાન્ ચ તેઓંને ડવકો, અવસૃત્રીત રનેહથી મસળવાં સ્નેહસે મર્દન કરે, તતઃ ત્યાર પછી બૌર પીછે, કૃતોપધાનઃ પુરુષે ઓશ્લીકું રાખી પુરુષ તકિયા લગાકર, સુખમ ચ સુખેથી આરામહે, નિદ્રામ્ નિદ્રાનું નિદ્રાકા, ઉપાસીત સેવન કરવું સેવન કરે ॥ ૨૮-૨૯૩ ॥

28-29. After giving him the unctuous enema, which is 1/4 the quantity of the evacuating enema and which is prepared with oil, acid articles and drugs curative of vata, the physician should press the buttocks together with the palms of the hands in order to prevent the early return of the oil. While the patient is lying supine in the bed, his joints of the feet and the toes should be pulled and cracked gently and the soles of his feet should be slightly rubbed with unctuous substances, and the heels, toes and the calves and all other parts which are afflicted with pain should also be massaged. The patient may then lie at ease and sleep with his head resting on a pillow.

निरुह कषायस्नेहयोर्मित्रा—

भानाः कषायस्य तु पञ्च, पित्ते

स्नेहस्य षष्ठः प्रकृतौ स्थिते च ॥३०॥

वाते विवृद्धे तु चतुर्थभागो,

मात्रा निरुहेषु कफेऽष्टभागः ।

कषायस्य तु निरुहभां कषायना निरुहमें कषायके, षष्ठ भागः पांच भागो होय छे पांच भाग होते हैं, पित्ते पित्तनी वृद्धिभां पित्तकी वृद्धिमें, प्रकृतौ स्थिते च अने स्वस्थ पुरुषभां और स्वस्थ पुरुषमें, स्नेहस्य स्नेहना स्नेहका, षष्ठः छठो भाग होय छे छठवा भाग होता है, वाते वायु, विवृद्धे तु वधैश्च होय तो बड़ा हुआ हो तो, चतुर्थभागः स्नेहना येथो भाग होय छे स्नेहका चौथा भाग होता है, कफे अने कफ वधैश्च होय तो और कफ बड़ा हो तो, अष्टभागः स्नेहना आठवा भाग होय छे स्नेहका आठवां भाग होता है ॥ ३०॥

30-30½. In an evacuative enema consisting of 96 tolas of solution, there should be 40 tolas of decoction. The unctuous portion should consist of one sixth of the whole solution if the enema is given in a condition of morbid pitta or of normal health. It should be 1/4 in conditions of morbid vata and 1/8 in conditions of morbid kapha.

वयोमेदेन निरुहमात्राः—

निरुहमात्रा प्रसृतार्धमाद्ये

वर्षे ततोऽर्धप्रसृताभिवृद्धिः ॥३१॥

आद्यादशात् स्यात् प्रसृताभिवृद्धि-

रष्टादशाद् द्वादशतः परं स्युः ।

आसप्ततेस्तद्विहितं प्रमाण-

मतः परं षोडशवद्विधेयम् ॥३२॥

निरुहमात्रा प्रसृतप्रमाणा

बाले च वृद्धे च मनुर्विशेषः ।

निरुहमात्रा निरुहनी मात्रा निरुहनी मात्रा, बाले वर्षे पहेले वर्षे वर्षम वर्गमें, प्रसृताब्दं अर्धं प्रसृत छे ४ तोले है, ततः ते पछी उपके बाद, आद्यादशात् आठवा वर्ष सुधी वधैश्च वर्ष पर्यन्त, अर्धं प्रसृत अर्धं अर्धं प्रसृतनी ४-४ तोले है, अभिवृद्धिः वृद्धि वृद्धि, स्यात् कर्त्तव्यी ओष्ठरे कर्त्तव्यी चादिए, द्वादशतः परम् आठवा वर्ष पछी द्वादश वर्ष उपके बाद, अष्टादशात् अठारवा वर्ष सुधी अठारह वर्ष पर्यन्त, प्रसृताभिवृद्धिः ओष्ठ ओष्ठ प्रसृतनी वृद्धि कर्त्तव्यी ८-८ तोले बढाया जाये, तत् प्रमाणम् ते प्रमाणाये यह प्रमाण, आसप्ततेः सितेर वर्ष सुधीनुं सप्त वर्ष पर्यन्तका, विदितम् कर्त्तव्य छे कहा है, अतः परम् ओ पछी उपके बाद, षोडशवत् षोडश वर्षना भाष्यसुनी येठे सोलह वर्षकी बचाले मनुष्यके समान, विधेयम् प्रमाणा कर्त्तव्य प्रमाण करे, प्रसृतप्रमाणाः आ प्रमाणा प्रसृतना प्रमाणावाणी इस तरह प्रसृतके प्रमाणवाली, निरुहमात्राः निरुहमात्रा मात्रा छे निरुहमात्रा होती है, बाले वृद्धे च आशुके अने वृद्धभां बालक और वृद्धमें, मनुः विशेषः मनु निरुहमास्ति विशेषे कर्त्तव्य आपनी ओष्ठ ओष्ठ मनु निरुहमास्ति विशेषतः देनी चादिए ॥ ३१-३२॥

31-32½. The dose of the evacuative enema should be of 4 tolas for a patient aged one year and the dose should be increased by four tolas for every year till the twelfth year. After the twelfth year, the increase for each succeeding year should be 8 tolas till the eighteenth year, until the maximum dose of 96 tolas is reached. This is the dose prescribed upto the age of 70. After that, the dose should be that prescribed for a patient of 16 years (80 tolas). Thus has been described the dosage in term of Prasrita which is equal to eight tolas. In children

and in the aged, the enema should be prepared with mild medicines.

वस्तिदानसमये प्रशस्तं शयनम्—

नात्युच्छिन्नं नाप्यतिनीचपादं

सपादपीठं शयनं प्रशस्तम् ॥३३॥

प्रधानमृदास्तरणोपपन्नं

प्राक्शीर्षिकं शुक्लपटोत्तरीयम् ।

न अत्युच्छिन्नं न अत्यु नीचं न बहुत ऊँची, न अपि अतिनीचपादं न अति नीचा पायावाणी न बहुत नीचे पैरोंवाली, सपादपीठम् पञ्च राभवाना पीठसहित पादपीठसहित, प्रधान मोटा बड़े, सटु-बास्तरण-अने डेअण भिछाना और कोमल बिछौनेसे, उपपन्नम् युक्त युक्त, प्राक्शीर्षिकम् पूर्व तरफ ओशीका-वाणी पूर्वकी ओर मिरहानेवाली, शुक्लपट-उत्तरीयम् अने ओठवाना सड़े वस्त्रवाणी और ओढ़नेके सफेद कर्चोवाली, शयनम् शय्या शय्या, प्रशस्तम् प्रशस्त छे प्रशस्त है ॥ ३३३ ॥

33-33½. The bed which is neither too high nor too low, which has a foot-rest and which is spread with a soft quilt, is good. The patient should lie with his head towards the east and cover himself with a white sheet.

वस्तिदानानन्तरं देयं भोजनम्—

भोज्यं पुनर्व्याधिप्रवेक्ष्य तद्वत्

प्रकरपथैद्युषपयोरस्राद्यैः ॥३४॥

सर्वेषु विद्याद्विधिमेतमाद्यं

वक्ष्यामि वस्तीनत उत्तरीयान् ।

तद्वत् पुनः ते प्रभाते इसके अनुसार, व्याधिम् व्याधि व्याधिको, अवेष्य ओढ़ने देखकर, यूष-यूष यूष, पयः-इध दूध, रसाद्यैः अने भांसरस वज्रेथी और रसादिसे, भोज्यम् भोजनानी भोजनकी, प्रकरपथेत आहवथी करनी ओढ़ी कल्पना करे, सर्वेषु एतम् सर्व निश्छेओ आ सब निरुहमें इस, विधिम् आद्यम् विधिने

३४. तद्वत्-सम्बन्ध (च. ब. व. क.)

मुप्य विधिको प्रवान, विद्यात् अक्षुणी जाने, वक्तः अक्षीथी इसके आगे, उत्तरीयान् ढरे पीछे अब दूसरी, वस्तीन् अस्तिओ वस्तियोको, वक्ष्यामि बक्ष्याऊँ कहूँगा ॥ ३४३ ॥

34-34½. His diet should be determined with due regard to his disease and should consist of soups, milk and meat-juices, to suit conditions of kapha, pitta and vata respectively. This is the principle to be observed in the administration of evacuative enema. Hereafter, I shall describe the enema preparations.

कतिपये निरुहयोगाः—

द्विपञ्चमूलस्य रसोऽम्लयुक्तः

सच्छागमांसस्य सपूर्वपेष्यः ॥३५॥

त्रिस्नेहयुक्तः प्रवरो निरुहः

सर्वानिलव्याधिहरः प्रदिष्टः ।

अम्लयुक्तः अम्लद्वयसहित अम्लयुक्त, सपूर्वपेष्यः अगाडि कडेक्ष कडेक्ष साथे पूर्वोक्त बलादिकल्कसहित, त्रिस्नेहयुक्तः तथा त्रयु स्नेहथी युक्त तीन स्नेहोंसे युक्त, सच्छागमांसस्य अकरानी भांससहित छागमांससहित, द्विपञ्चमूलस्य दशभूणना दशमूलका, रसः क्वाथने काप, सर्व-सर्व सब, अनिलव्याधि-वात-व्याधि वात-व्याधि-योको, हरः हरनेवाला, प्रवरः श्रेष्ठ उत्तम, निरुहः निरुह निरुह, प्रदिष्टः अताओ छे बताया है ॥ ३५३ ॥

35-35½. The decoction of the two varieties of penta-radices mixed with sour conjee and juice of the goat's flesh along with the paste of drugs of the heart-leaved sida group and the triad of unctuous substances, is an excellent preparation for the evacuative

३५ एतच्छोकानन्तरम्—

सम्बन्ध प्रणीताः खलु वस्तयो ये वातामयव्याधौ बलप्रदाश्च

स्यधिकः पाठः (च. ब. व. द.) पुस्तकेषु ।



enema. It is regarded as curative of all diseases due to vata.

स्विरादिवर्गस्य बलापटोल-

प्रायन्तिकैरण्डयैर्युतस्य ॥३६॥

प्रस्थो रसाच्छागरसार्धयुक्तः

साध्यः पुनः प्रस्थसमस्तु यावत् ।

प्रियङ्गु-कृष्णाघनकक्युक्तः

सतैलसर्पिर्मधुसैन्धवश्च ॥३७॥

स्याद्दीपनो मांसबलप्रदश्च

चक्षुर्बलं चापि ददाति वस्तिः ।

बला- भला बला, पटोल- परवल, प्रायन्तिका-  
त्रायभाषु असर्वा, एरण्ड-यवैः ओरंडमूला तथा ७५भी  
एरण्डमूल तथा यव, युतस्य युक्त सहित, स्विरादि- शिला-  
पथुरी वजेरे शालपर्ण्यादि, वर्गस्य पंचभूषणवर्गना  
पंचमूलवर्गके, प्रस्थः ओड प्रस्थ उवाचभा ६४ तोले  
कायमे, पुनः छागरसार्धयुक्तः ओडरानो मांसरस अर्धो  
प्रस्थ भेणवी छागमांसरस ३२ तोले मिलाकर, यावत्  
तु ७५भारे ते जबतक, प्रस्थसमः प्रस्थ ओटबो रहे ६४  
तोले रहे, साध्यः त्यां सुधी सिद्ध करवे। तब तक पकावे,  
प्रियङ्गु- वणी तेभां धुंधला फिर उसमें प्रियङ्गु, कृष्णा-  
पीपर पिप्पली, घन- अने नागरभोथना और नागरमोयाके,  
कक्युक्तः कंठयुक्त ककसहित, सतैल- तैल तैल, सर्पिः-  
वी ची, मधु- मधु शहद, सैन्धवः च अने सिंधावुधु  
नाथी और सैन्धव डालकर बनायी हुई, वस्तिः अस्ति  
वस्ति, दीपनः दीपन छे दीपन है, मांसबलप्रदः च मांस  
अने अणने आधनारी छे मांस और बलको देनेवाली  
है, चक्षुर्बलं च अपि तथा आंभने अण जोर दष्टिको  
बल, चापि पक्षु मी, ददाति आये छे देती है ॥३६-३७॥

36-37½. Take 64 tolas of the decoction of the drugs of the ticktrefoil group along with heart-leaved sida, wild snake gourd, zalil, castor and

३६. पुनः-परः (ड.)

प्रस्थसमस्तु-प्रस्थसमः स (प.)

प्रस्थसमः (क.)

३७½. वस्तिः-सर्वः (क. प. ड. इ. उ. व. ब. क.)

barley and mix with half the quantity of the meat-juice of the goat and reduce it by cooking it to 64 tolas. Add to it the paste of perfumed cherry, long pepper, nut grass, oil, ghee, honey and rocksalt and prepare the enema. This enema is stimulative of the gastric fire, promotive of flesh and strength, and of the strength of the eye-sight.

एरण्डमूलं त्रिपलं पलाशा

द्वस्त्रानि मूलानि च यानि पञ्च ॥३८॥

रास्त्राश्वगन्धातिबलागुडची-

पुनर्नवारगन्धदेवदारु ।

भागाः पलाशा मदनाष्टयुक्ता

जलद्विकसे कथितेऽष्टशे ॥३९॥

पेष्याः शताङ्का हपुषा प्रियङ्गुः

सपिप्पलीकं मधुकं बला च ।

रसाञ्जनं वत्सकबीजमुस्तं

भागाक्षमात्रं लवणांशयुक्तम् ॥४०॥

समाक्षिकस्तैलयुतः समूत्रो

वह्निर्नृणां दीपनलेखनीयः ।

जङ्गोदपादत्रिकपृष्ठमूलं

कफावृत्तिं मादतत्रिप्रदं च ॥४१॥

विष्मूत्रवातप्रहणं सशूल-

आध्मानतामश्मतिशर्करे च ।

आनाहमर्शोऽग्रहणीप्रदोषा-

नेरण्डवस्तिः शमयेत् प्रयुक्तः ॥४२॥

एरण्डमूलं ओरंडमूल एरण्डमूल, त्रिपलं २५  
पल १२ तोले, पलाशाः भाभरे डाक यानि च अने

३८. पलाशा पलानि (प. क.)

३९. मदनाष्टयुक्त-मदनाष्टकं च (क. प.)

४०. पेष्याः-पेष्या (क.)

४१. कफावृत्ति-वृत्ति (क. प. ड. त. व. क.)

४२. आनाहमर्श-आनाहमर्श (क. प. व.)

४३. त्रिकपृष्ठमूल-त्रिकपृष्ठमूल (क.)

४४. एरण्डमूलान्तर-एरण्डमूलान्तर

वस्तिः सन्धु कुसुमेन वैर पुनर्नवारः कृष्णा वराण्य ।

वस्तिः सन्धु कुसुमेन वैर पुनर्नवारः कृष्णा वराण्य ।



ને ઓર જો, પચ્ચ દસ્યાનિ મૂલાનિ લઘુ પંચમૂળ છે તે લઘુ પંચમૂલ હૈં વે, રાસ્ના ગરના રાસ્ના, અશ્વગન્ધા-આસેદિ અસગન્ધ, અતિવલ્કા- કાંસડી કંવી, ગુદૂચી- મળો શિલોચ, પુનર્નવા- લાલ સાટોડી ગદહપુરના. આરવલ- ગરમાળો અમલતાસ, દેવદાર દેવદાર દેવદાર, પલાંચા: સાગા: એઓના ૪-૪ તોલાના ભાગો. इनके ४-४ तोलेके भाग, मदनाष्टयुका: आठ मीठण आठ मैतफल, जलद्विकसे ऐओने ऐ आठ ७८भा इनका ५१२ तोले जलमें, कथिते क्वाथ करी काथ करके, अष्टशेषे आठभे भाग आडी रहे त्पारे आठवां भाग दौष रहने पर, क्वाहा शुवा लोवा, हनुवा हाथिरे हाऊवेर, प्रियङ्गु: भईंवा प्रियंगु. सविप्पलीकम् पीपर पिप्पली, मधुकल नेहीमध मुलहठी, बला च भला बला, रसाक्षनम् रसवन्ती रसौत, वत्सकबीज- चन्द्रमौ इन्द्रजौ, मुखम् अने भुस्त ऐओना और मुख इनके, सागाक्षमात्रम् ऐक ऐक तोलांना भागो. एक एक तोलेके भाग, क्वणांशयुकम् सिंधावृक्षने ऐक भाग सैधानमकका एक भाग, समाक्षिक: मध शहद, तैलयुत: तैल तैल, समूत्र: तथा गोमूत्र ऐओभी तैयार કરવામાં આવેલી और गोमूत्र इनसे तय्यार की हुई, वस्ति: भरित वस्ति, मृणाम् भनुष्येने मनुष्योंको, दीपनलेखनीय: दीपन अने दोषनीय છે दीપન और लेखन होती है, प्रयुक्त: प्रयोग કરેલી પ્રયુક્ત की हुई, एरण्डवस्ति: और उभरित एरण्ड-वस्ति, जङ्गा- पिंडी जंघा, ऊरु- साथण ऊरु, पाद- पग पाद, त्रिक- त्रिक त्रिक, पृष्ठशूलम् तथा पीठना थળું तथा પૃષ્ઠકે શૂલ, कफावृत्तिम् કફના આવરણું કફકે આવરણ, मास्तनिग्रहम् च वायुना निरोधनु वायुके निरोध, सशूलम् अने थળ और शूल, बिद्- भण- अह मलग्रહ, मूत्र- भूत्रअह मूत्रग्रह, वातग्रहणम् अने वातअहનું और वायुकी रुकावट, आध्मानताम् आध्मान-ता अफाश, अश्रमरि- अश्रमरी अश्रमरी, कर्करे च शर्करा, आनाहम् आनाह आनाह, अर्श:- अर्श- अर्श, ग्रहणी- तथा अहथी तथा ग्रहणी, प्रदोषान् दोषानुं दोषોको, समवेत् समन કરે છે समन करती है ॥ ३८-४२ ॥

38-42. Take 12 tolas of the roots of

eastor and four tolas of each of palas,

the small variety of penta-radices, indian groundsel, winter cherry, common mallow, guduch, hog's weed, purging cassia and deodar along with eight fruits of emetic nut; this should be boiled in 512 tolas of water and reduced to 1/8 the quantity adding the paste of one tola each of dill seeds juniper, perfumed cherry long pepper, liquorice, heart-leaved sida, extract of indian berberry, kurchi seeds and nut grass along with rock salt, honey, oil and cow's urine, and should be administered as enema. It is stimulative of gastric fire and revulsive. It is curative of aches in the leg, thighs, feet, sacrum and back and of the obstruction of vata by kapha and stasis of vata. This enema of castor root etc., when duly administered, alleviates the stasis of feces, urine and flatus attended with colic, tympanitis, calculus, sand in the urine, constipation, piles and assimilation disorders.

ચતુષ્પલે તૈલવૃતસ્ય મૃષ્ટા-

ચ્છાગાચ્છતાર્થો દધિદાહિમામ્લ: ।

રસ: સપેશ્યો વલમાંસવર્ણ-

રેતોન્નિદશ્વાન્ધ્યશિરોર્નિશસ્ત: ॥૪૩॥

તૈલવૃતસ્ય તૈલ અને ધીના તૈલ ઓર વી મિલાકર, ચતુષ્પલે ચાર પલમાં ૧૬ તોલેમે, મૃષ્ટાદ બુજેલા સંસ્કૃત, દધિ- દાહિમ- અને દહીં તથા દાહમથી ઓર દહીં તથા અનારસે, અમ્લક: ખાટા કરેલા સહે કિયે હુપ, કાગાવ બકરાના વકરેકે, ક્વાર્થ: રસ: પચાસ પલ માસરસમાં ૨૦૦ તોલે માંસરસમે, સપેશ્વ: બલા વજેરેને કફ નાખી તૈયાર કરવામાં આવેલી નિરહ-

૪૩. શિરોર્નિશસ્ત: શિગેજનામ: (ક ધ. હ દ. વ.)

અસ્તિ બલ આદિકા કલ્પ ડાલકર તથ્યાર કી હુરે નિરુદ્ધ-  
વસ્તિ, બલ-બલ વલ, માંસ માંસ માંસ, વર્ણ-વર્ણ વર્ણ,  
રેતઃ-વીર્ય વીર્ય, અગ્નિઃ અને અગ્નિને વધારનારી છે  
और अग्निको बढ़ानेवाली है, आन्ध्र- तथा अंधापामा  
तथा अन्धापन, क्षिरः- अर्तिः च तेभ्यः शिरोरोजमा एवं  
शिरोवेदनामै. शास्त्रः प्रशस्तं ये प्रशस्त है ॥ ४३ ॥

43. 200 tolas of the meat-juice of  
the goat seasoned with 16 tolas of the  
mixture of oil and ghee soured with  
curds and pomegranate and mixed  
with the paste of heart-leaved sida  
and other drugs of its group and  
given as enema, is promotive of vitality,  
flesh, color, semen and gastric fire,  
and is recommended in blindness and  
pain in the head

जलद्विकंसेऽष्टपलं पलाशात्

पक्त्वा रसोऽर्धादिकमात्रशेषः ।

कल्कैर्वचामागधिकापलाभ्यां

युक्तः शताह्वाद्रिपलेन चापि ॥४४॥

ससैन्धवः क्षौद्रयुतः सतैलो

देयो निरुहो बलवर्णकारी ।

आनाहपार्श्वार्थमयोनिदोषान्

गुग्मानुदावर्तैरुजं च हन्यात् ॥४५॥

જલદ્વિકંસે એ આઠક બલમાં ૫૧૨ તોલે જલમે,  
પલાશાત્ આખરો ઢાક, જલપલમ્ આઠ પલ ૩૨ તોલે,  
પક્તવા પકાવી પકાકર અર્ધાદિકમાત્ર-માત્ર અધી આઠક  
૨૨ ૧૨૮ તોલે, શેષઃ આઠકી રાખી તેને શેષ રચકર  
વચમે, વચા- વચ વચ, માગધિકા- અને પીપર ઓર  
પિપ્પલી, પલાભ્યામ્ પ્રત્યેકના એક એક પલ પ્રત્યેકકે  
૪-૪ તોલે, જાતાહ્વાદ્રિપલેન ચ અપિ તથા સુવાના એ પલ  
સોથેકે ૮-૮ તોલે, કલ્કૈઃ યુક્તઃ એએના કલ્કથી યુક્ત  
કરી ફવકો કલ્ક મિજાકર, સસૈન્ધવઃ તેમાં સિંધાવૃષ્ઠ  
સૈન્ધવ, ક્ષોદ્રયુતઃ મધ સહદ, સતૈલઃ અને તેલ નાખી

૪૪. વચામાગધિકા-વચામાગધિકા (ક. ડ. વ. પ.)

૪૫. સતૈલઃ-સતૈલે (વ.)

और तैल डालकर, निरुदः देवः निरुद्वस्ति देवी  
निरुद्वस्ति देवे, बलवर्णकारी ते बल અને વર્ણને  
વધારે છે વહ બલ તથા વર્ણકો વઢાલી છે જાનાહ- તેમજ  
આનાહ एवं आनाह, पार्श्वार्थम- पार्श्वार्थ पार्श्वार्थ,  
योनिदोषान् योनिदोष योनिदोष, गुग्मान् च गुग्म गुग्म,  
उदावर्तैरुजं અને ઉદાવર્તની પીપરોઁ ઓર ઉદાવર્તની  
પીપાકો, हन्यात् नाश करे છે નષ્ટ કરતો છે ॥ ४४-४५ ॥

44-45. Take 32 tolas of Palas and  
decoct in 512 tolas of water till  
reduced to 28 tolas and mix with  
the paste of four tolas each of sweet  
flag and long pepper and eight  
tolas of dill seeds, adding rock salt  
honey and oil. This should be given  
as an evacuative enema. It is promotive  
of vitality and color, and cures consti-  
pation, pain in the sides, gynecic  
diseases, gulma and misperistalsis.

यष्ट्याह्वयस्याष्टपलेन सिद्धं

पयः शताह्वाफलपिप्पलीभिः ।

युक्तं ससर्पिर्मधु वातरक्त-

वैस्वर्यवीसर्पहितो निरुहः ॥४६॥

યષ્ટ્યાહ્વયસ્ય યેઠીમધના મુલહરીકે, જલપલેન આઠ  
પલથી ૩૨ તોલેસે, સિદ્ધન્ સિદ્ધ કરેલું સિદ્ધ કિને હુરે,  
પયઃ દૂધમાં દૂધમે, શતાહ્વા- સુવા સોવા, ફલ- મીઠાના  
મૈનફલ, પિપ્પલીભિઃ તથા પીપરનો કલ્ક તથા પિપ્પ-  
લીકા કલ્ક, સસર્પિર્મધુ અને ઘી તેમજ મધ ઓર  
શુત एवं शहद, युक्तम् नाभी डालकर वी हुरे, निरुदः  
निरुद्वस्ति निरुद्वस्ति, वातरक्त- वातरक्त वातरक्त,  
वैस्वर्य- स्वरमेद स्वरमेद, वीसर्प- અને વીસર્પમાં ઓર  
વીસર્પમે, हितः हितकर છે હિતકર છે ॥ ४६ ॥

46. The evacuative enema of milk  
prepared with 32 tolas of liquorice,  
dill seeds emetic nut and long pepper

૪૬. યષ્ટ્યાહ્વયસ્ય-યષ્ટ્યાહ્વયસ્ય (વ.)

and mixed with ghee and honey is beneficial in rheumatic condition, change of voice and acute spreading affections.

यष्ट्याह्वलोध्रामयचन्दनैश्च ।

शृतं पयोऽग्न्यं कमलोत्पलैश्च ।

सशर्करं क्षौद्रयुतं सुशीतं

पित्तामयान् हन्ति सजीवनीयम् ॥४७॥

यष्ट्याह्व- जेठीभध मुलहठी, लोध्र- धोधर लोध, जमय- वीरक्षुनो वाणो खस, चन्दनैः चन्दन, कमलोत्पलैः च उभय अने नीलउभय ओओशी कमल और नीलोफर उनसे, शृतम् सिद्ध करेवा पकाये हुए, अग्न्यम् पयः भायना दूधभां गौके दूधमें, सशर्करम् साकर शर्करा, क्षौद्रयुतम् भध शहद, सजीवनीयम् तथा शुपन्दीयभक्षुनो उल्लेख नाभी तथा जीवनीयगणका कल्क बालकर, सुशीतम् सारी रीते ठंडा थाया पछी आपवामां आवेदी अस्ति अच्छी तरह ठण्डा होनेके बाद की हुई वस्तु, पित्तामयान् पित्तना रोगोने पित्तके रोगोंको, हन्ति हथे छे नष्ट करती है ॥ ४७ ॥

47. The milk boiled with liquorice, lodh, chebulic myrobalan, sandal, lotus and blue lotus and mixed with sugar and honey, and then cooled and mixed with the paste of the life-promoter group of drugs makes an excellent enema for the cure of all disorders due to pitta.

द्विकार्षिकाश्चन्दनपद्मकर्षि-

यष्ट्याह्वराज्ञावृषसारिवाश्च ।

सलोध्रमज्जिष्ठमथाप्यनन्ता-

बलास्थिरादितृणपञ्चमूलम् ॥४८॥

४७. सशर्करं क्षौद्रयुतं-सशर्कराक्षौद्रयुतं (घ.)

४८. सलोध्रमज्जिष्ठमथाप्यनन्ता-सलोध्रमज्जिष्ठमथाप्यनन्ताबलास्थिरादितृणपञ्चमूलम्-  
सलोध्रमज्जिष्ठमथाप्यनन्ताबलास्थिरादितृणपञ्चमूलम् (घ.)

बलास्थिरादि-बलास्थिरादि (घ.)

तोये समुत्काथ्य रसेन तेन

शृतं पयोऽर्घाढकमम्बुहीनम् ।

जीवन्तिमेदधिंशतावरीभिः-

वीराद्विकाकोलिकशेरुकाभिः ॥४९॥

सितोपलाजीवकपद्मरेणु-

प्रपौषडरीकैः कमलोत्पलैश्च ।

लोध्रात्मगुप्तामधुकैर्विवारी-

मुञ्जातकैः केशरचन्दनैश्च ॥५०॥

पिष्टैर्वृतक्षौद्रयुतैर्निरुहं

ससैन्धवं शीतलमेव दद्यात् ।

प्रत्यागते धन्वरसेन शाङ्गीन्

क्षीरेण वाऽद्यात् परिषिकगात्रः ॥५१॥

दाहात्तिसारप्रदराक्षपित-

दृत्पाण्डुरोगान् विषमज्वरं च ।

सगुल्ममूत्रप्रहकामलाक्षीन्

सर्वामयान् पित्तकृताग्निहन्ति ॥५२॥

द्विकार्षिकाः ये ये उर्ष को दो तोले, चन्दन-चन्दन, पद्मक-पद्मक पद्मक, कर्षि-कर्षि कर्षि, यष्ट्याह्व- जेठीभध मुलहठी, राज्ञा- राज्ञा राज्ञा, वृष-अरुंद्री वावा, सारिवाः च सारिवा सारिवा, सलोध्र-मज्जिष्ठम् धोधर, भज्जिष्ठ लोध, गंजीठ, अथ अपि अने वण्डी और, अनन्ता-अनन्ता अनन्तमूल, बला-बला बला, स्थिरादि-शाङ्गिपल्ली वगेरे शालिपण्यादि पञ्चमूल, तृणपञ्चमूलम् अने तृणपञ्चमूल ओओने और तृणपञ्चमूल इनको लेकर, तोये पाण्डीभां जलमें, समुत्काथ्य उठो उठी काथकर, तेन रसेन ते उवाथथी उस काथसे, शर्कराकम् अर्घा आढक १२८ तोले, पयः दूध दूधको, शृतम् पाण्डीने पककर, अम्बुहीनम् जलरहित थाय त्पारे तेभां जलरहित हो तब, शृतक्षौद्रयुतेः थी तथा भध भेणवीने थी और शहद मिलाकर, जीवन्ति-ओडी डोबी, मेदा-मेदा मेदा, कर्षि-कर्षि कर्षि, शतावरीभिः शतावरी शतावर, वीराः शतावरी शतावर, द्विकाकोलि-ओओली, क्षीरकाकोली काकोली, क्षीरकाकोली, कशेरुकाभिः कशेरुका कशेरुका, सितोपला-साकर चीनी, जीवक-शुक्ल जीवक, पद्मरेणु-उभयपराभ कमलपराग,

४९. तोये समुत्काथ्य-मिःकाथ्य तोयेन (घ.)

प्रयोगद्वारीकैः प्रयोगद्वारीकैः पुण्डरीक काष्ठ, कमकोरपलेः च  
 कुम्भ, उत्पल कमल, उत्पल, लोध्र-लोध्र लोध्र आत्म-  
 गुला-कोशिका केवाच, यष्टुकैः लोध्रमधु मुकुटकी, विदारी-  
 कोशिका विदारीकन्द, गुलावकैः लोध्रमधु लोध्रमधु लोध्रमधु  
 सारस, केदारचन्दनैः शिष्टैः नागेश्वर तथा चन्दनो  
 उदक नागेश्वर तथा चन्दनका कल्क, समैश्च वम् अने  
 सिन्धुवल्गु नाभ्यौ और सैन्धव डालकर, शीतलम् पूर  
 शीतल ७ शीतल ही, निरुद्धम् निरुद्धमस्ति निरुद्धमस्ति,  
 दद्यात् देवी देवी चान्द्रि, प्रत्यागते अस्ति पाणी वशी  
 आवे त्वारे वस्तिके आपस आ जानेपर, परिधिकमात्रः  
 नवशेका पाणीभी नाभी स्नान करके बालीन शोधना  
 योभा शालिवाकलका भात, चन्दरसेन अम्बु भूमि-  
 रस साथे जागल मांढरसके साथ, क्षीरेण वा अथवा  
 दूध साथे अथवा दूधके साथ, अथवा भावा साथे,  
 दाह-आ अस्ति पाद यह वस्ति दाह, अतिशार-  
 अतिशार अतिशार, प्रदर-प्रदर प्रदर, अक्षपित्त-रक्तपित्त  
 रक्तपित्त, हृत्-पाण्डुरोगान् हृद्रोग, पाण्डुरोग हृद्रोग  
 पाण्डुरोग, विषमज्वरं च विषमज्वरं विषमज्वर,  
 सगुल्म-गुल्म गुल्म, भूतग्रह-भूतग्रह भूतग्रह, कामला-  
 दीन् अने कुम्भिका वज्रे और कामला आदि, पित्तकृतान्  
 पित्तजन्य पित्तजन्य, सर्व-सर्व सर्व, आमयान् रोगान्  
 रोगोको, निहन्ति हृष्टे छे वष्ट करती है ॥४८५२॥

48-52. Take two tolas each of sandal, sacred lotus, Ridhi, liquorice, indian groundsel, Vasaka, black indian sarsaparilla, lodh, indian madder, white sarsaparilla, heart-leaved sida, and the penta-radices of the ticktrefoil group as well as the penta-radices of the grass group and decoct in water; 128 tolas of milk should be mixed with this decoction and boiled till all the water is evaporated; then add the paste of Jivanti, Meda, Ridhi climbing asparagus, Veera, the two varieties of Kakoli, luffa, sugar-candy Jivaka, lotus-filament, white lotus, lotus, blue water-lily, lodh, cowage, liquorice, white yam,

salep, fragrant poon and sandal, along with ghee, honey and rock salt. This enema should be given cold. After the enema fluid has returned, the patient should take an affusion-bath and then eat a meal of cooked rice mixed with the meat-juice of jangala creatures or with milk. This is curative of burning, diarrhea leucorrhoea, hemothermia cardiac disorder anemia, irregular fever, Glima suppression of urine jaundice and all diseases due to pitta.

द्राक्षादिकाश्चर्ममधूकसेव्यः

ससारिवाचन्दनशीतपाक्यैः ।

पयः शृतं श्रावणिमुद्रपर्णी-

तुगात्मगुतामधुयष्टिकदकैः ॥५३॥

गोधूमचूर्णैश्च तथाऽक्षमात्रैः

सक्षौद्रसर्पिर्मधुयष्टितैः ।

पथ्याविदारीश्वरसैर्गुहैर्न

वस्ति युतं पित्तहरं विदध्यात् ॥५४॥

हृन्नाभिपाश्वोत्तमदेहदाहे

दाहेऽन्तरस्थे च सकृच्छ्रमूत्रे ।

क्षीणे क्षते रेतसि चापि नष्टे

पैत्तेऽतिसारे च नृपां प्रशस्तः ॥५५॥

ससारिवा-सारिवा कपूरी, चन्दन-चन्दन चन्दन,  
 शीतपाक्यैः शीतपाकी शीतपाकी, द्राक्षादि-द्राक्ष वज्रे  
 द्राक्षादि, काश्मर्य-शीतल बमारीकाफल, मधूक-मधूक  
 मधुवा, सेव्यैः सुगन्धी वाष्प सुगन्धबाला, श्रावण-श्रीश्री  
 यष्टिकदक इन्से पकाये हुए, पयः दूधमां दूधमां, अक्षमात्रैः  
 ओक ओक तोला एक एक तोले, आबणि-भोटी और भ-  
 मुंकी बड़ीमुंकी, मुद्रपर्णी-भूमि भूमि सुगन्धी, तुगा-  
 वांस्तुपूर वंशलेचन, आमगुला-कोशिका केवाच, मधुयष्टि-  
 अने लोध्रमधुना और मुकुटकीके, कदकैः उदके कदकै,

५४. पथ्या-तथा (घ. ब. ब. क.)

५५. हृन्नाभिपाश्वोत्तमदेहदाहे-हृन्नाभिपाश्वोत्तमदेहदाहे (ब.)

५६. सकृच्छ्रमूत्रे-सकृच्छ्रमूत्रे (घ.)

५७. चापि नष्टे-तत्रैव (क.)

तथा तथा तथा, गोधूमचूर्णैः च औष्ठं तोष्यो ॥५३॥  
 होत नाभी एक तोले गेहूँके आटेको डालकर, सखौद-  
 मध मधु, सर्पिः श्री घृत, मधुमण्डि- गेहीमध मुलहरी,  
 वैकैः तैल तैल, पद्मा- ६२३ हरक, विदारी- भेलिकेणुं  
 बिल्वार्कन्द, इक्षुरसैः शेरडीना रस गन्धका रस, सुदेन  
 वृत्त तथा गेणुथी युक्त और पुड़ मिलाकर, पित्तहरम्  
 पित्तहर पित्तनाशक, बस्तिम् अस्ति बस्ति, विदग्धास  
 अनावली बनावे, हृ- हृदय हृदय, नाभि- नाभि नाभि,  
 पार्श्व- पार्श्व पार्श्व, उत्तमदेह- अने भस्त्रकना और शिरके,  
 दाहे ६६भा दाहमें, सक्कळ्मूत्रे भूत्रकुम्भभा मूत्रकुम्भमें,  
 अन्तराले अन्तरना शरीरके अन्दरके, दाहे च ६६भा  
 दाहमें, क्षीणे क्षते क्षीणभा क्षतभा क्षीणमें, क्षतमें,  
 गहे रेवति च अपि वीर्य नाश पाभ्युं होय तेभा  
 शुक्लस्य हो जानेमें, पैसे अने पित्तना और पित्तजन्य,  
 अतिसारे च अतिसारभा अतिसारमें, नृणाम् भनुष्योने  
 मनुष्योंको, प्रसादाः आ अस्ति प्रशस्त छे यह बस्ति  
 प्रसाद है ॥ ५३-५५ ॥

53-55. Take the milk prepared with the decoction of one tola each of the grape group of drugs, white teak, mahwa, fragrant sticky mallow, indian sarsaparilla, sandal and jequirity and mixed with the paste of east indian globe thistle, wild bean, liquorice and wheat flour, and with honey ghee, liquorice and oil, and the juice of chebulic myrobalan, white yam, sugarcane and gur; this administered as enema, is regarded as curative of pitta. This is recommended to patients suffering from burning in the epigastric, umbilical and hypochondriac regions and head, or in burning in the internal organs, in dysuria and in conditions of cachexia, pectoral lesions, loss of semen and diarrhea of the pitta type.

कोषातकारग्वधदेवदारु-

शाङ्गेष्टमूर्वाकुटजार्कपाठाः ।

पक्त्वा कुलत्थान् बृहतीं च तोये

रसस्य तस्य प्रसृता दश स्युः ॥५६॥

तान् सर्वपैलामदनैः सकुष्ठै-

रक्षप्रमाणैः प्रसृतैश्च युक्तान् ।

फलाहृतैलस्य समाक्षिकस्य

क्षारस्य तैलस्य च सार्षपस्य ॥५७॥

दद्यान्निरुहं कफरोगिणे ज्ञो

मन्दाग्रये चाप्यक्षन्निद्विषे च ।

कोषातक- कोषातकी कोषातकी, आरग्वध- अरभागो  
 अमलतास, देवदारु- देवदारु देवदारु, शाङ्गेष्ट- यक्षो  
 रती, मूर्वा- मूर्वा मूर्वा, कुटज- कुटज कुटज, अर्क- अर्क  
 आक, पाठाः पाठा पाठा, कुलत्थान् कुलथी कुलथी,  
 बृहतीम् च अने ७७भा ७७भा और बड़ी कटेरी इनका,  
 तोये पाणीभा पानीमें, पक्त्वा पकावीने काथ करके,  
 तस्य रसस्य ते कुलथने उस काथको, दश प्रसृताः दश  
 प्रसृत ८० तोला, स्युः २०भा रक्त्वे, तान् तेने इसको,  
 अक्षप्रमाणैः अक्ष अक्ष ७७भा एक एक तोले, सकुष्ठैः  
 कुष्ठ कुष्ठ, सर्वप- सरसप सरसों, एका- औषधी इलायची,  
 मदनैः अने भीटणना कुष्ठकी और मैनफलके कल्के,  
 समाक्षिकस्य मध मधु, फलाहृतैलस्य भीटणनुं तैल  
 मैनफलका तैल, क्षारस्य अपभार यवक्षार, सार्षपस्य  
 अने सरसपनुं और सरसोंका, तैलस्य च तैल औषधाना  
 तैल इनके, प्रसृतैः च ८-८ तोलाथी ८-८ तोलेसे,  
 युक्तान् कृत्वा युक्त करी मिलाकर, ज्ञः अक्षुडार वैद्य  
 जाननेवाला वैद्य, कफरोगिणे कुक्षीने कफरोगी,  
 मन्दाग्रये च अपि भेदाक्षिवागने मन्दाग्रिवाले, अक्षन्-  
 निद्विषे च अने भोजनदोषीने और भोजनमें द्वेष  
 रखनेवालेको, निरुहम् निरुहअस्ति निरुहवस्ति, दद्याद्  
 देवी देवे ॥ ५६-५७ ॥

५६. देवदारुशाङ्गेष्टमूर्वा-देवदारुमूर्वाश्वदंष्ट्रा (क. ब. ड.)

५७. शाङ्गेष्ट-श्वदंष्ट्रा (त.)

५८. शाङ्गेष्टमूर्वा-दूर्वाश्वदंष्ट्रा (द.)

५९. शाङ्गेष्टमूर्वा-मूर्वाश्वदंष्ट्रा (ब.)

५९. फलाहृतैलस्य समाक्षिकस्य-क्षौद्रस्य तैलस्य फलाहृतस्य (ब. क.)

56-57<sup>1</sup>. Take 80 tolas of decoction prepared by boiling in water mountain ebony, purging cassia, deodar, black nightshade, trilobed virgin's bower, kurchi, mudar, Patha, horse-gram and indian nightshade. Add to these the paste of one tola each of rape-seed, cardamom, emetic nut and costus, and 8 tolas of each of the oil known as the emetic nut oil, honey, barley-alkali and rape-seed oil. This should be administered by the wise physician as evacuative enema to patients afflicted with disorders of kapha, weakness of the gastric fire and disgust for food.

पटोलपथ्यामरदारुमिर्षा

सपिण्यलीकैः कथितैर्जलेऽग्नौ ॥५८॥

द्विपञ्चमूले त्रिफलां सबिल्वां

फलानि गोमूत्रयुतः कषायः ।

कलिङ्गपाठाफलमुस्तकवृकः

ससैन्धवः क्षारयुतः सतैलः ॥५२॥

निरुहमुख्यः कफजान् विकारान्

सपाण्डुरोगालसकामदोषान् ।

इन्धाक्षथा मारुतमूत्रसङ्गं

वस्तेस्तथाऽऽटोपमथापि घोरम् ॥६०॥

अग्नौ अथवा अग्नि उपर अथवा अग्निपर, जले  
 अथवा जलमें, सपिप्पलीकैः पीपर पिप्पली, पटोल-  
 परवण परवळ, पथ्या- ६२३ हरद, जम्बरदाहनिः वा  
 अने देवदार और देवदार, कश्चितैः ओशोनो इत्याथ  
 ऊरी तेनाथी अस्ति देवी इनका काय करके इनसे वस्ति  
 देवे, द्विपञ्चमूले दशभूण दोनों पञ्चमूल, सखित्वात्  
 भीष्मी बिल्व, त्रिफलात् त्रिंश त्रिफला, फलानि तथा  
 भीष्मणे। तथा मैनफलका, गोमूत्रयुतः ओमूत्रभा

५८. कथितैर्जलेऽग्नौ-कथितैर्जलाख्यैः (क. ड. फ.)

६०. मयापि घोरम्—मतीव घोरम् (ध)

गोमूत्रमें, कषायः छाटे: उरवी कषाय, सवैष्णवः सिंधाः शुष्क  
सैन्धव, क्षारयुतः श्वेतः सवक्षार सनैकः तथा तैल  
तथा तैल, कटिङ्ग-अने छिन्न और इन्द्रजो, पाठा- पाठा  
पाठी, फल- भीक्षण सैन्धव, मुख- तेभज भीज एवं  
मोया, कल्कः औषधः ३६५ वाष्पी निरुद्धमस्ति तैवार  
उरवी इनका कल्क डालकर निरुद्धमस्ति तद्वार करे,  
निरुद्धमुख्यः आ सुप्य निरुद्धमस्ति यह श्रेष्ठ निरुद्ध-  
वस्ति, सुपाण्डुरोग- पाण्डुरोग पाण्डुरोग, बलसक- अलसक  
अलसक, आमदोषान् आमदोष आमरोग, कफजान्  
कफजान् कफजन्य, विकारान् रोगे गेग, मारुतमूत्रसङ्गम्  
वातरोग, भूतरोग वातरोग, मूत्ररोग, तथा बन्धैः तथा  
अस्ति तथा तथा मूत्राश्रयके घोरम् वाटोषम् भयंकर  
आटोपने भयंकर आघातको, अथ अपि पशु सी,  
हन्त्याह छे छे नष्ट करता है ॥५८-६०॥

58-60 Or administer as enema the decoction prepared in water of wild snake gourd, chebulic myrobalan, deodar and long pepper, or the decoction of the two varieties of pentaradices, the three myrobalans, bael and emetic nuts and cow's urine. Add to this the paste of kurchi, Patha, emetic nut and nut grass rock-salt and oil along with barley alkali. The evacuative enema with this solution is foremost in curing diseases of the kapha type of anemia, intestinal stasis and chyme disorders. It also cures stasis of flatus and urine and severe distension of the bladder.

रास्त्रामृतैरण्डविडङ्गदावी-

सप्तच्छदोशीरपुराहनिम्बैः ।

शम्पाकभूनिम्बपटोलपाठा-

निकाखुणीदशालसुनैः ॥६॥

६. डावीं दाह ७

॥ सम्पादक-सम्पादक (स)

—इयानाक (त. इ.)



प्रायन्तिकाशिपुफलत्रिकैश्च  
कायः सपिण्डीतकतोयमूत्रः ।

यष्टपाण्डकृष्णाफलिनीक्षताह्वा-  
रसाञ्जनश्चेतवसाविडङ्गैः ॥६२॥

कलिङ्गपाठाङ्गुदसैन्धवैश्च  
करकैः ससर्पिर्मधुतैलमिश्रः ।

अथ निरुहः किमिकुष्ठमेह-  
बन्धोदराजीर्णकफातुरेभ्यः ॥६३॥

रुक्षौषधेरप्यपतर्पितेभ्य  
पतेषु रोगेष्वपि सत्सु दत्तः ।

निहत्य दातं ज्वलनं प्रक्षीप्य  
विजित्स्व रोगांश्च बलं करोति ॥६४॥

रास्ना- रास्ना, अमृता- अणै। गिलेय, एरण्ड-  
औरेंडा, एरण्ड, लिङ्ग- पावडिंग वायविडंग, दार्दी-  
दावी, सतब्बद- सातवक्षु सखिवन, इशीर-  
वीरक्षुने। वागे। खस, सुराङ्ग- देवदार देवदार, शिम्बै-  
लीमडे नीमक्षी छाल, शम्पाक- गरभागे। अमलतास,  
मूनिम्ब- उरियापुं चिरायता, पटोक- परवण परवल,  
पाठा- पाठा पादी, तिका- कुं कटुक्षी, आखुपर्णी-  
उदरक्षुनी मूलाक्षुणी, दशमूल- दशमूल दशमूल, मुस्तै-  
भुस्त मुस्त, प्रायन्तिका- प्रायभाषु प्रायमाण, शिम्ब-  
सरभवे। सहजन, फलत्रिकैः च अने त्रिक्षुणी और  
त्रिफला, कायः औओना उवाधभा। इनके कायमें,  
सपिण्डीतक-तोय-मूत्रः भीदभने। उवाध तथा ओमूत्र  
नाभवा। मेनफलका काय तथा गोमूत्र डाले, यष्टपाण्ड-  
तेभ्य जेहीमध एवं मुलहठी, कृष्णा- पीपर विप्वली,  
फलिनी- धडैला प्रियङ्गु, क्षताह्वा- सुवा सोया, रसा-  
ञ्जन- रसवन्दी रसौत, श्वेतवचा- सईद वज्र श्वेत वच,  
विडङ्गैः पावडिंग वायविडंग, कलिङ्ग- धन्दव इन्द्रजौ,  
पाठा- पाठा पादी, अम्बुद- भेथ मोथा, सैन्धवैः च अने  
शिंधालूषु औओने। और सैन्धव इतका, करकैः उदर पक्षु  
नाभवे। करक भी डाले, ससर्पिः तथा थी घृत, मधु-  
तैलमिश्रः मध अने तैल भेजवी निरुहवस्ति तैयार  
उरवी मधु और तैलसे मिश्रित निरुहवस्ति तैयार करे,  
अथम् आ यह, निरुहः निरुहवस्ति निरुहवस्ति, किमि-

किमि किमि, कुष्ठ- कुष्ठ कुष्ठ, मेह- प्रमेह प्रमेह, बन्ध-  
अभन बन्धन, बद्धर- उदर उदर, अजीर्ण- अजीर्ण अजीर्ण,  
कफ-आतुरेभ्यः अने उदर। रोगीओने आपसी ओधौ  
और कफरोगियोंको देनी चाहिए, रुक्षौषधैः अने रुक्ष  
औषधाथी और रुक्ष औषधोंके सेवनसे, अपतर्पितेभ्यः अपि  
अपतर्पण पाभेलाओने अपतर्पित हुएको, पतेषु आ  
मध ये, रोगेषु रोगी रोग, सत्सु अपि अथा होथ  
ते। पक्षु हुए हों तो मी, दत्तः आपवामां आवेक्षी  
निरुहवस्ति दी हुई निरुहवस्ति, वातम् वायुने वायुका,  
निहत्य हट्टी नाश करके, ज्वलनम् प्रदीप्य अग्निने  
प्रदीप्त करी अग्निको दीप्त करके, रोगान् च अने रोगीने  
और रोगोंको, विजित्य श्रुती धर्ध जीतकर, बलम् अण  
बल, करोति आपे छे देती है ॥ ६१-६४ ॥

61-64. The evacuative enema should be prepared from the decoction of indian groundsel, guduch, castor, embelia, indian berberry, dita bark, cuseus grass, deodar, neem, purging cassia, chiretta, wild snakegourd, Patha, kurroa, kidney-leaved ipomea, deca-radices, nut grass, zalil, drumstick, the three myrobalans and mixed with the decoction of emetic nut and cow's urine along with the paste of liquorice, long pepper, bottle gourd, dill seeds, extract of indian berberry, white sweet flag, embelia, kurchi seeds, Patha and nut grass, adding rock salt, ghee, honey, and oil. This enema is administered in helminthiasis, dermatosis, urinary disorders, inguinal swelling, abdominal disease, indigestion and in diseases due to kapha. In patients suffering from the above diseases, even if they are in a condition of depletion as a result of un-unctuous medications, this enema removes the morbidity of vata,



promotes the gastric fire, subdues the diseases and increases the patient's vitality.

पुनर्नवैरण्डवृषाश्ममेद-

वृश्चीरभूतीकबलापलाशाः ।

द्विपञ्चमूलं च पलांसिकानि

ध्रुणानि धौतानि फलानि चाष्टौ ॥६५॥

बिल्वं यवान् कोलकुलत्थधान्य-

फलानि चैव प्रसृतोन्मितानि ।

पयोजलव्याढकवच्छृतं तत्

क्षीरावशेषं सितवस्त्रपूतम् ॥६६॥

वचाशताद्वामरदारुकुष्ठ-

यष्ट्याहसिद्धार्थकपिप्पलीनाम् ।

कलैर्ध्वान्या मदनैश्च युक्तं

नात्युष्णशीतं गुडसैन्धवाकम् ॥६७॥

क्षौद्रस्य तैलस्य च सर्पिषश्च

तथैव युक्तं प्रसृतैस्त्रिमिश्रम् ।

दद्यान्निरुहं विधिना विधिशः

स सर्वसंसर्गकृतामयम् ॥६८॥

पलांसिकानि ओ३ ओ३ प३ एक एक पल, पुनर्नवा-  
साटोडी गदहपुरना, एरण्ड- ओ२३। एरण्डमूल, वृष-  
ओ२३सी अइसा, अशममेद- पा३। पु३। पाषाणमेद,  
वृश्चीर- धौ३। साटोडी भेत पुनर्नवा, भूतीक- ओ३।  
अजवायन, बला- अ३। बला, पलाशाः आ३। डाक,  
द्विपञ्चमूलम् च ओ३ द३भू३ और दोनों पञ्चमूल,  
धौतानि धौ३ने धोकर, ध्रुणानि आ३।ने और कूटकर,

६५. वृश्चीरभूतीकबलापलाशाः—वृश्चीरवृश्चीरवलापलाशाः (च ।

॥ द्विपञ्चमूलं च—द्विपञ्चमूलानि (च ।

॥ फलानि—फलानि (च. फ.)

६६. पयोजलव्याढकवच्छृतम्—पयोजलव्याढकवोः श्रुतम्

(ख ग. घ. ङ.)

॥—पयोजलव्याढकवच्छ्रितम् (च.)

६७. कुष्ठ-विल्व (च. फ.)

६८. प्रसृतैस्त्रिमिश्रं—प्रसृतप्रवेन (च. ख. ग. ङ.)

॥—प्रसृतैस्त्रिमिश्रं (च.)

जहौ ककामि ओ३ भौ३। आठ मैतफल, प्रसृतोन्मितानि  
ओ३ ओ३ सित ८-८ तोले, बिल्व- भौ३। बिल्वफल,  
यवान् ओ३ ओ३, कोल भौ३। वे३, कुलत्थ- भौ३। कुलथी,  
धान्य- धौ३। धनिना, फलानि च द३व ओ३ भौ३।  
ओ३।ने और मैतफल इनका, पय- दूध दूध, जल- ओ३  
जलके, व्याढकवत् ओ३ ओ३। ५१२ बोलेमें, श्रुतम्  
प३।वी काच करे, क्षीरावशेषम् दूध आ३। रहे त्यारे  
दूधमात्र शेष रह जाय तब, सितवस्त्रपूतम् श्वेत वस्त्री  
आ३। श्वेतवस्त्रमें छानकर, वचा ५७ वच, वचाह्वा- सुवा  
सोया, अमरदारु- देवदारु देवदारु, कुष्ठ- ५६ कूठ, बज्ज्याह-  
गेठी३। गुडमुलदही, सिद्धार्थक- सरसों, पिप्पलीनाम्  
पी३। पिप्पली, यष्ट्या ओ३। अजवायन, मदनैः च  
ओ३ भौ३। और मैतफलके, कलैः ५६३। कलके,  
कुष्ठम् युक्त करे। मिलावे, गुडसैन्धवाकम् प३। ओ३।  
तथा सि३। लू३ प३ नाभवां कीछे गुडसैन्धव मिलावे,  
वचा द३व ओ३ और क्षौद्रस्य भ३। मधु, तैलस्य तैल  
तैल, च सर्पिषः तथा बी तथा बी, त्रिभिः प्रसृतैः च  
प३। प्रसृतथी २४ तोलेमें, युक्तम् युक्त करी मिलावे,  
तत् ते वह, नात्युष्णशीतम् ओ३ म३। प३ नदि ओ३  
ओ३ ढंडी प३ नदि ओ३। न बहुत गरम न बहुत  
शीतल, निरुहम् निरुहवस्ति निरुहवस्ति, विधिशः  
विधिने ओ३। वे३ विधिशे जाननेलका वे३, विधिना  
विधिपूर्वकं विधिपूर्वक, दद्यात् आप३। देवे, सः सर्व-  
ते अ३। यह निरुहवस्ति सब, संसर्गकृत- सं३। अ३।  
अथै३। संसर्गजन्य, आमयम् रोगो३। ना३। करे छे  
रोगोंको नष्ट करती है ॥ ६५-६८ ॥

65-68. Take four tolas each of hog's  
weed, castor, vasaka, indian rock  
foil, white hog weed, bishop's weed,  
heart-leaved sida, Palas, the two  
varieties of penta-radices, eight fruits  
of the emetic nut well crushed and  
washed, and eight tolas each of  
the bael, barley and the fruits of  
jajube, horse-gram and coriander, and  
512 tolas of milk and water; then add  
gha. It should be boiled till only the

milk remains, and strained through a white cloth It should be mixed with the paste of sweet flag, dill seeds, deodar, costus, liquorice, rape, long pepper, bishop's weed and emetic nut and with gur, rock salt and 24 tolas of honey, oil and ghee mixed together This, in a lukewarm condition, should be administered as evacuative enema in due manner by the expert. It is curative of all diseases born of continued discordances of the humors.

दोषापेक्षिणी निरुहकल्पना—

स्निग्धोष्ण एकः पवने समांसो

द्वौ स्वादुशीतौ पयसा च पित्ते ।

त्रयः समूत्राः कटुकोष्णतीक्ष्णाः

कफे निरुद्धा न परं विधेयाः ॥६९॥

पवने वायुभा वायुमें, समांसः मांसरससहित मांसरससहित, स्निग्धोष्णः स्निग्ध तथा उष्ण स्निग्ध तथा उष्ण, एकः ओष्ठ निरुद्धभस्ति एक निरुद्धवस्ति, पित्ते पित्तभा पित्तमें, पयसा दूधनी साथे दूधमिश्रित, स्वादुशीतौ भक्षुर तथा शीतल मधुर तथा शीतल, द्वौ ये निरुद्धभस्तिओ दो निरुद्धवस्तिओ, कफे अने कृष्भा और कफमें, समूत्राः ओभूतसहित गोमूत्रमिली, कटुक-उदु कटु, उष्ण-उष्ण उष्ण, तीक्ष्णाः तथा तीक्ष्ण तथा तीक्ष्ण, त्रयः निरुद्धाः त्रय निरुद्धभस्तिओ आपवी ओष्ठओ तीन निरुद्धवस्तिओ देनी चाहिए, परम् ओष्ठी अधिक निरुद्धभस्तिओ इनसे अधिक निरुद्ध वस्तिओ, न विधेयाः आपवी नहि ओष्ठओ नहीं देनी चाहिए ॥ ६९ ॥

69. One evacuative enema which is unctuous and warm and mixed with meat-juice is to be given in conditions of vata. Two evacuative enemata which are sweet and cold and mixed

with milk are to be given in conditions of pitta and three evacuative enemata that are pungent, hot, and acute and mixed with cow's urine are to be given in conditions of kapha. Not more than these specified evacuative enemata are to be given.

विरुहे प्रतिभोजनम्—

रसेन वाते प्रतिभोजनं स्यात्

क्षीरेण पित्ते तु कफे च यूषैः ।

तथाऽनुवास्येषु च विस्त्वतैलं

स्याज्जीवनीयं फलसाधितं च ॥७०॥

वाते वातभा वायुमें, रसेन मांसरसनी साथे मांसरसके साथ, पित्ते तु पित्तभा पित्तमें, क्षीरेण दूधनी साथे दूधके साथ, कफे च अने कृष्भा और कफमें, यूषैः यूषानी साथे यूषके साथ, प्रतिभोजनम् निरुद्ध-भस्ति आपवी पक्षीतुं भोजन निरुद्धवस्तिदानके पश्चात् भोजन, स्वात् करवुं करे, तथा ते ७ प्रभाणे इसी प्रकार, अनुवास्येषु च अनुवासनयोग्य पुरुषोभा अनुवासनके योग्य पुरुषोंमें, विस्त्वतैलम् वात वज्रेभा अनुकम्पे पक्षीतुं तैल विस्त्वतैल, जीवनीयम् शुभनीय गन्तुं तैल जीवनीयगणसे साधित तैल, फलसाधितम् च अने भीक्षणुं तैल और मैनफलसे सिद्ध तैल, स्वात् प्रयोक्तुं प्रयुक्त करना चाहिए ॥ ७० ॥

70. In conditions of vata, the next meal should be taken mixed with meat-juice; in pitta, it should be taken mixed with milk, and in kapha, it should be taken mixed with soups. Similarly, in conditions demanding unctuous enemata the bael oil the oil, prepared with life-promoter group of drugs and

७०. यूषैः-यूषः (क.)

“ दण्डकालान्तरम्—

तत्र कौकः ।

इत्यधिकः पाठः (क. द.) पुस्तकयोः ।

oil prepared with the emetic nut are to be given respectively, in conditions of vata, pitta and kapha.

अध्यायोक्तविषयाः—

इतीदमुक्तं निखिलं यथाव-

द्वस्तिप्रदानस्य विधानमध्यम् ।

योऽधीत्य विद्वानिह वस्तिकर्म

करोति लोके लभते स सिद्धिम् ॥७१॥

इति आ प्रभाषे आ इस प्रकार यह, वस्तिप्रदा-  
नस्य अस्ति देवानी वस्ति देनेकी, अथवा श्रेष्ठ श्रेष्ठ,  
निखिलम् संपूर्ण, विधानम् विधि विधि, यथा-  
वत् सत्य २०३५ भाग सम्यक् रूपमें, उक्तम् उक्ती के कहीं  
है, यः विद्वान् ये विद्वान् जो विद्वान्, अधीत्य ते  
अधीने इसको पढ़कर, इह लोके आ योऽधुना इस  
लोकमें, वस्तिकर्म अस्तिकर्म वस्तिकर्म, करोति करे के  
करता है, सः ते वह, सिद्धिम् सिद्धिने सफलताको,  
लभते भोगे के प्राप्त करता है ॥ ७१ ॥

71. Thus, the best method of ad-  
ministering the enema-treatment has  
been fully and properly expounded  
here. The wise man who learning  
this, administers the enema-treatment,  
achieves complete success in his  
treatment.

इत्यग्निवेशकृते तन्त्रे चरकप्रतिसंस्कृतेऽप्राप्ते  
दृढबलसंपूरिते सिद्धिस्थाने वस्तिसूत्रीय-  
सिद्धिर्नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

इति आ प्रभाषे इस प्रकार, अग्निवेशकृते अग्नि-  
वेशे २०३५ अग्निवेशे बनाये, चरकप्रतिसंस्कृते  
तन्त्रे अने अरुंधती प्रतिस्कार पायेवा आ  
शास्त्रम् और चरकके द्वारा संस्कृत इस शास्त्रके,  
अप्राप्ते अप्राप्त, दृढबलसंपूरिते अने दृढबले  
पूरा करेवा और दृढबलसे पूरित किये गये, सिद्धिस्थाने  
सिद्धिस्थान निवे सिद्धिस्थानमें, वस्तिसूत्रीयसिद्धिः अस्ति  
सूत्रीयसिद्धिः 'वस्तिसूत्रीयसिद्धिः', नाम नामने नामका,

तृतीयः श्रीमे तीवरा, अध्यायः अध्याय संपूर्ण गये  
अध्याय समाप्त हुआ ॥ ३ ॥

3. Thus, in the Section on Success in  
Treatment, in the treatise compiled by  
Agnivesa and revised by Caraka, the  
third chapter entitled 'Success in  
Treatment through the Principles of the  
Enema Procedure' not being available,  
the same as restored by Dridhabala,  
is completed.

चतुर्थोऽध्यायः ।

येथे अध्याय अध्याय चौथा

Chapter IV

स्नेहवस्तिव्यापत्तिद्वयप्रकमः—

अथातः स्नेहव्यापत्तिसिद्धिं व्याख्यास्यामः ॥ १ ॥

इति ह साह मयवानाग्नेयः ॥ २ ॥

अथ अतः हवे अहीनी जब जाने, स्नेहव्याप-  
त्तिसिद्धिं 'स्नेहव्यापत्तिसिद्धिं' नामने अध्यायानु स्नेह-  
व्यापत्तिसिद्धिं नामके अध्यायका, व्याख्यास्यामः व्याख्या-  
करेयुं व्याख्यान करेंगे ॥ १ ॥

मयवान् अजवान् मयवान् आग्नेयः आग्नेय आग्नेयके,  
इति ह आ विषयम् नीचे प्रभाषे २ इस विषयमें  
निम्न प्रकारसे ही, साह सा उद्धेय के कहा है ॥ २ ॥

1. We shall now expound the  
chapter entitled "Success in Treatment  
of the Complications arising from  
the Unctuous Enema".

2. Thus declared the worshipful  
Atreya.

1. स्नेहव्यापत्तिसिद्धिं-स्नेहव्यापत्तिसिद्धिं सिद्धिं (व. प. क.)

अद्विबस्तीन्निबोधेमान् वातपित्तकफापहान् ।  
मिथ्याप्रणिहितानां च व्यापदः सचिकित्सिताः ॥३॥

इमान् आ इन, वात-पित्त-वात, पित्त वात, पित्त, कफ-अपहान् तथा करने नाश करनेर तथा कफकी नाशक, अद्विबस्तीन् स्नेहपरितोने स्नेहवस्तीगोको, मिथ्या-अने मिथ्या और मिथ्या, प्रणिहितानाम् प्रयोगेही स्नेहपरितोनेही यता प्रयुक्त की गई स्नेह-वस्तीगोको होनेवाले, व्यापदः रोगोंने रोगोंको, सचिकित्सिताः चिकित्सासहित चिकित्साके साथ, निबोध साबगै। सुनो ॥ ३ ॥

3. Listen now to the exposition of the unctuous enemata which are curative of vata, pitta and kapha, and of the complications arising from wrongful administration of these and the treatment of such complications.

कतिपयेऽनुवाचनस्नेहयोगाः —

दशमूलं बलां रास्त्रामश्वगन्धां पुनर्नवाम् ।  
गुडुच्येरण्डभूतीकभार्गीवृषकरोहिषम् ॥४॥  
शतावरीं सहचरं काकनासां पलांशिकम् ।  
यवमाषातसी लोलकुलत्थान् प्रस्तोन्मितान् ॥५॥  
चतुर्द्रोणैश्च पचत्वा द्रोणशेषेण तेन च ।  
तैलाढकं समक्षीरं जीवनीयैः पलोन्मितैः ॥६॥  
अनुवासनमेतद्धि सर्ववातविकारनुत् ।  
आनुषानां वसा तद्वज्जीवनीयोपसाधिता ॥७॥

पलांशिकम् ऐक ऐक पक्ष ४-४ तोले, दशमूलम् दशमूल, दशमूल, बलाम् अक्ष। बला, रास्त्राम् रास्त्रा, रास्त्रा, अश्वगन्धाम् आसे। अश्वगन्ध, पुनर्नवाम् सादे। गदहपुरना, गुडुची-अने। गिलोय, एरण्ड-ऐर। एरण्डमूल, भूतीक-अने। अजवायन, भार्गी-आर। भार्गी, वृषक-अर। अरुसी अरुसा, रोहिषम् रोहिष, रोहिषवास, शतावरीं शतावरी शतावर,

३. निबोधेमान्—पवक्ष्यामि (च. ग. ख. क.)

५. पलोन्मितैः—पलोन्मितैः (च.)

६. तैलाढकं समक्षीरं—तैलाढकं पेक्षैः (च.)

पक्षैः तैलाढकं क्षीरं (च.)

सहचरम् आसमान्नी दूधने। अंटाशेणियो नील पुष्पवाजी कटसरैया, काकनासाम् तथा डौवादे। तथा शींगरोटी, प्रस्त-अन्मितान् अने ऐक ऐक प्रस्त ८-८ तोले, यव-अव जौ, माष-अउद उदद, अतसी-अणसी अलसी, कोल-ऐर अने बेर, कुलत्थान् तथा उण्ठी ऐओने तथा कुलथी इनको, अम्मसः चतुर्द्रोणे आर द्रोण पाण्डुभां ४०९६ तोले पानीमें, पत्त्वा पक्षी पक्षकर, द्रोणशेषेण ऐक द्रोण आधी रहे आरे १०२४ तोले रहने प, तेन च तेनी साथे इनके साथ, पलोन्मितैः ऐक ऐक पक्ष ४-४ तोले, जीवनीयैः अवन्यगणुनां ६००० ऐक ऐक ऐक जीवनीय गणके द्रव्योंका कलक मिलाकर, समक्षीरम् ऐक आढक दूध २५६ तोले दूध, तैलाढकम् तथा ऐक आढक तैल सिद्ध करुं तथा २५६ तोले तैल सिद्ध करे, एतत् आ यह, अनुवासनम् अनुवासन अनुवासन, सर्ववात-सर्व प्रकारना वातना सब प्रकारके वातके, विकारनुत् विकारोंने दूर करनेर ऐ रोगोंको शान्त करनेवाला है, जीवनीय-अवन्य गणुनी जीवनीय गणसे उपसाधिता साधित सिद्ध की हुई, आनुषानाम् आनुष अवेनी आनुष प्राणियोंकी, वसा वसा वसा सी, तद्वत् तेन प्रमाणे सर्व वातविकारोंने दूर करनेर ऐ इसी प्रकार सब वातविकारोंको दूर करनेवाली है ॥ ४-७ ॥

4-7. Take four tolas each of decaradices, heart-leaved sida, indian groundsel, winter cherry, hog's weed, guduch, castor, bishop's weed, beetle killer, vasaka, ginger grass, climbing asparagus, crested purple nail dye, small stinking swallow wort and eight tolas each of barley, black gram, linseed jujube, and horsegram, and decoct in 4096 tolas of water till reduced to 1024 tolas; this should be mixed and cooked with 256 tolas of oil and an equal quantity of milk along with the paste of 4 tolas of each

of life-promoter group of drugs. This preparation of oil, used as unctuous enema, cures all disorders of vata. Similarly the fat of wet-land creatures prepared with the paste of life-promoter group of drugs may be used.

शताह्वयवविस्वाहः सिद्धं तैलं समीरणे ।  
सैम्भवेनाम्रितसेन तप्तं वानिलनुद्धृतम् ॥ ८ ॥

शताह्व- मुवा सोया, यव- ज्व जौ, विस्व-  
भीलुं बेल, अम्लैः अने अम्ल ५०येथी और अम्ल  
द्रव्योंसे, सिद्धम् सिद्ध करेवा सिद्ध किये हुए, तैलम्  
तेलने। तैलका, समीरणे वायुदोषमा प्रयोग करने  
के लिये वायुदोषमें प्रयोग करना चाहिए, अम्रितसेन  
अम्रिमा गरम करेवा अम्रितसे तप्त, सैम्भवेन सिद्धा-  
लुब्धुं सेन्वानमकसे तप्तम् तपायैलुं गरम किया हुआ,  
वृत्तम् च धी पलु धी सी, वानिलनुद्धृतम् अनुवासनद्वारा  
वायुरोगने दूर करने के अनुवासनद्वारा वायुरोगका  
नाशक है ॥ ८ ॥

8. The oil, prepared with dill seeds, barley, bael and sour articles, is beneficial in vata, and the ghee heated by the warmth of roasted rocksalt is also curative of vata.

जीवन्तीं मदनं मेदां श्रावणीं मधुकं बलाम् ।  
शताह्वयवविस्वाहः कृष्णां काकनासां शतावरीम् ॥ ९ ॥  
खगुतां क्षीरकाकोलीं कर्कटाक्ष्यां शटीं वचाम् ।  
पिष्टा तैलं घृतं क्षीरे साधयेत्तनुर्गुणे ॥ १० ॥  
बृंहणं वातपित्तघ्नं बलशुक्राग्निवर्धनम् ।  
मूत्ररेतोरजोदोषान् हरेत्तदनुवासनम् ॥ ११ ॥

८. तसेन-वर्णन (क. घ.)

११. शुक्राग्नि-वर्णाग्नि (ग)

, मूत्ररेतोरजोदोषान्-पुत्रं रेतोरजोदोषान् (घ. च. ङ.)

, अनुवासनम्-अनुवासनम् (क.)

जीवन्तीम् देही जीवन्ती, मदनम् भीक्षण मेनफल,  
मेदाम् मेदा मेदा, श्रावणीम् श्रावणी श्रावणी, मधुकम्  
मेदीमधु मलहठी बलाम् पक्ष बला शताह्व- मुवा  
सोया, कृष्णमकौ कृष्णमक कृष्णम् भीपर  
पिप्पली, काकनासाम् क्षीरदेही शीरदेही, शतावरीम्  
शतावरी शतावरी खगुताम् क्षीरक्षीर, क्षीर-  
काकोलीम् क्षीरकाकोली क्षीरकाकोली, कर्कटाक्ष्याम्  
काकटाक्षी भी काकटाक्षी, शटीम् शटी शटी, वचाम्  
अने वच कीओने। और वचा इनका, पिष्टा ५६६  
नाभी कलक डालकर, तैलम् घृतम् तैल तथा धी  
तैल तथा धी, तनुर्गुणे तेनाथी यार भला इनके  
चार गुणे, क्षीरे दूधमा दूधमें, साधयेत् सिद्ध करने  
सिद्ध करे, तय ते यह, अनुवासनम् अनुवासन  
अनुवासन, बृंहणम् बृंहण बृंहण, वातपित्तघ्नम् वात तथा  
पित्तने नाश करने के वात तथा पित्तका नाशक, बल- पक्ष  
बल, शुक्र- शुक्र शुक्र अग्निवर्धनम् अने अग्निवर्धन  
वर्धन के और अग्निको बढ़ानेवाला है, मूत्र- तथा  
मूत्र मूत्र, रेतः- वीर्य शुक्र, रजोदोषान् तेम  
रेतना दोषाने एवं रजोदोषको, हरेत् नष्ट करे  
नष्ट करता है ॥ ९-११ ॥

9-11. The dyad of oil-cum-ghee may be prepared by cooking it with four times the quantity of milk along with the paste of cork swallow wort, emetic nut, Meda, east indian globe thistle, liquorice, heart-leaved sida, rishab seeds, Rishabhaka, long pepper, stinking swallow wort, climbing asparagus, Sugupta, Kshirakakoli, cucumber, zedoary and sweet flag. This is roborant, curative of vata-cum-pitta, and is curative of urinary, seminal and menstrual disorders.

लाभतमन्नाद्यैश्च पिष्टैः क्षीरचतुर्गुणम् ।

तैलपादं घृतं सिद्धं पित्तघ्नमनुवासनम् ॥ १२ ॥

१२. तैलपादं-तैलपादं (घ)

તેલપાણ્ડુ યૌથા ભાગના તેલ સાથે ચતુર્થાંશ તેલસહિત, ક્ષોરચતુર્ગુણમ્ ચારગણા દ્વધર્મા ચારગુણે સૂચ્યે, કામતઃ ગેટલાં મળી શકે તેટલાં જિતને પ્રાપ્ત હોં રતને, વિદેઃ ચન્દ્રવાદ્યૈઃ ચ ચન્દનાદિકના કંદકથી ચન્દનાદિકે કલ્કસે, સિદ્ધમ્ સિદ્ધ કરેલ સિદ્ધ કિયે હુણ, ઘૃતમ્ ધીનું ઘૃતકા, અનુવાસનમ્ અનુવાસન અનુવાસન, પિત્તપ્તમ્ પિત્તનાશક છે પિત્તનાશક છે ॥ ૧૨ ॥

12. The dyad of ghee and oil, containing til oil of one fourth quantity should be prepared in four times the quantity of milk with the paste of the drugs of the sandal group in whatever quantity available. This preparation, given as an unctuous enema, is curative of pitta.

સૈન્ધવમ્ મદનમ્ કુષ્ઠં શતાઢ્ઢાં નિચુલં વચામ્ ।  
હીવેરં મધુકં માર્ગીં દેવદાર સકટફલમ્ ॥૧૩॥  
માર્ગરં પુષ્કરં મેદાં ચવિકાં ચિત્રકં શટીમ્ ।  
ચિત્કદ્ધાતિવિષે શ્યામાં હરેણું નીલિનીં સ્થિરામ્ ૨૪  
ચિત્વાજમોદે કૃષ્ણાં ચ દન્તીં રાસ્નાં ચ પેષયેત્ ।  
સાધ્યમેરંડજં તૈલં તૈલં વા કફરોગનુત્ ॥૧૫॥  
બ્રહ્મોદાવર્તગુલ્માર્ચઃ પ્લીહમેહાલ્યમારુતાન્ ।  
આનાહમશ્મરીં ચૈવ હમ્યાત્તદનુવાસનાત્ ॥૧૬॥

સૈન્ધવમ્ સિંધાણુ સૈન્ધવ, મદનમ્ મીઠું મૈન-  
કક, કુષ્ઠમ્ કઠ કૂઠ, શતાઢ્ઢામ્ સુત્રા સોયા, નિચુલમ્  
શેષુદ્ધિ સમુદ્ધિ, વચામ્ વજ્ર વચા, હીવેરમ્  
હીવેર વાળો સુગન્ધવાળો, મધુકમ્ ગેઠીમધ મુલ-  
હકી, માર્ગીમ્ માર્ગી માર્ગી, સકટફલમ્ કાચકી  
કાચક, દેવદાર દેવદાર દેવદાર, નાગરમ્ નાગર સોંઠ,  
પુષ્કરમ્ પાંખરમ્ પોદરમ્, મેદામ્ મેદા મેદા,  
ચવિકામ્ ચવક ચવય, ચિત્રકમ્ ચિત્રક ચિત્રક, શટીમ્

શટી શટી, ચિત્કદ્ધ- વાવડિંગ વાયવિંગ, અતિવિષે  
અતિવિષની કાળી અતિસ, શ્યામામ્ કાળું નસોતર  
શ્યામા, હરેણુમ્ રેણુકાપીજ રેણુકા, નીલિનીમ્ નીલિની  
નીલિની, સ્થિરામ્ શાલવણ સરીવન, ચિત્તવ- પીલી  
વેલ, અજમોદે યોડી અજમોદ અજમોદ, કૃષ્ણામ્ ચ  
પીપર પિપ્પલી, દન્તીમ્ દન્તીમ્ દન્તી, રાસ્નામ્ ચ  
અને રાસ્ના ઓઝોનો ઓર વાયસુરફે રાસ્ના, પેષયેત્  
કંદક કરેલો કલ્ક કરે, ઇરંડજમ્ તેલમ્ તે કંદકથી  
એરંડિયું તેલ ઉપ કલ્કસે ઇરંડ તેલ તેલમ્ વા  
કે તલનું તેલ અથવા તિલતેલ, સાધ્યમ્ સિદ્ધ કરવું સિદ્ધ  
કરે, તલ્લ તે વહ, કફરોગનુત્ કફરોગ દૂર કરનાર છે  
કફરોગનાશક છે, અનુવાસનાત્ અને અનુવાસનદારા ઓર  
અનુવાસદારા, બ્રહ્મ- બ્રહ્મ બ્રહ્મ, ઉદાવર્ત- ઉદાવર્ત  
ઉદાવર્ત, ગુલ્મ- ગુલ્મ ગુલ્મ, અર્ચઃ- અર્ચ અર્ચ, પ્લીહ-  
પ્લીહ પ્લીહ, મેહ- પ્રમેહ પ્રમેહ, આલ્યમારુતાન્  
આલ્યમારુત આલ્યમારુત, આનાહમ્ આનાહ આનાહ,  
અશ્મરીમ્ ચ એવ તથા અશ્મરીનો તથા અશ્મરીનો,  
હમ્યાત્ નાશ કરે છે નષ્ટ કરતા છે ॥ ૧૩-૧૬ ॥

13-16. Make into paste rock salt, emetic nut, costus, dill seeds hijjal tree, sweet flag, fragrant sticky mallow liquorice, beetle killer, decidar box myrtle, ginger, orris root, Meda long pepper, white flowered leadwort, zedoary, embelia, indian atees, black turpeth, pea, indigo, ticktrefoil, bael, celery, long pepper, red physic nut and indian groundsel. Either castor oil or til oil prepared with this paste, is curative of disorders of kapha. Given as unctuous enema, it cures inguinal swelling, misperistalsis gulma, piles, splenic disorders, rheumatic conditions, constipation and calculus.

૧૩. વર્ણન-વર્ણન (ક. ડ. ટ. વ.)

૧૫. પેષયેત્-પ્રપ્રપ્ર: (વ.)

મદનૈર્વાઽમ્લસંયુતૈર્ચિત્વાચેન ગળેન વા ।

તૈલં કફહરૈર્વાઽપિ કફપ્રં કલ્પયેદ્ધિવક્ ॥૧૭॥



मिषक् वैद्ये वैद्य, अम्लसंयुक्तैः अम्ल द्रव्यैश्च युक्तं अम्ल द्रव्यैः युक्त, मक्षैः वा मीठानां उदकं मैनफलके कल्कसे, विस्वाद्येन के अम्लसि या विस्वादि गणेन वा अम्लना उदकं कल्कसे, कफहरैः वा अपि अथवा उदकं औषधीनां उदकं अपवा कफनाशक औषधियोंके कल्कसे, कफघ्नम् उदकं कफहर, तैलम् तैल तैल, कफघ्नम् तैलम् उदकं औषधी सिद्ध करे ॥ १७ ॥

17. The physician should prepare an oil curative of kapha by cooking it with the paste of emetic nut and sour article or with the paste of the bael group of drugs or with the paste of the drugs curative of kapha

विडङ्गैरण्डरजनीपटोलत्रिफलामृताः ।

जातीप्रवालनिर्गुण्डीदशमूलखुपर्णिकाः ॥१८॥

निम्बपाठासहचरशम्पाककरवीरकाः ।

एषां काथेन विषचेत्तैलमेभिश्च कल्कितैः ॥१९॥

फलविल्वत्रिवृत्कुण्णारास्त्राभूनिम्बदारुभिः ।

सप्तपर्णवचोशीरदार्वाकुष्ठकलिङ्गकैः ॥२०॥

लतागौरीशताह्वाग्निशटीचोरकपौष्करैः ।

तत् कुष्ठानि किमीन् मेहाकशांसि ग्रहणीगदम् ॥२१॥

क्षीबतां विषमाश्रित्वं मलं दोषत्रयं तथा ।

प्रयुक्तं प्रणुदत्याशु पानाभ्यङ्गकुवासनैः ॥२२॥

विडङ्ग- वावडिभ वायविडङ्ग, एरण्ड- औरडभूण एरण्ड, रजनी- ६गहर हल्दी, पटोल- परवण परवल, त्रिफला- त्रिफला त्रिफला, अमृताः अमृता गिलोय, जातीप्रवाल- यमेलीना पत्राकुं चमेलीके पत्राकुं, निर्गुण्डी- नमेली संभाल, दशमूल- दशमूल दशमूल, खुपर्णिकाः उदरकनी मूषाकर्णी, निम्ब- लीभडी नीमकी छाल, पाठा- पाठा पाठी, सहचर- आसमान्नी

१८ रजनी-भूतीक (ग)

१९ करवीरकाः-करवीरकम् (ब)

२० लतागौरी-लतायष्टि (क. झ. ड. त. द. प. फ.)

२१ चोरक-सौराष्ट्री (ब. फ.)

२२ क्षीबतां-क्षीबत्वं (ब.)

इदमे। उदरशेणियो नील पुण्डरीको कटुपरैया, शम्पाक- भरभागी। अमलतास, करवीरकाः अने उदकं और कनेर, एषाम् औषधीनां इतके, काथेन उदकं औषधी काथेन, एभिः अने आ औषधियोंना अर्थान् और इन औषधियोंके अर्थान्, फल- मीठान मैनफल, विस्व- णीली वेण, त्रिवृत्- अमोतः निसोत कुण्णा- मीपर पिप्पली, रास्ना- २.२.२. वासुरई, मूनिम्ब- उमियापुं विरायता, दारुभिः देवदारु देवदारु सप्तपर्ण- सातपर्ण सतिवन, वचा- पत्र वच, इशीर- वीरभूना वागी। चम, दार्वा- ६गहर इतके, दारुहल्ली, कुष्ठ- ३६ कूठ, कलिङ्गकैः ४-६गहर इतके, लता- मूषा मजीठ, गौरी- ६गहर हल्ली, लताह्वा- सुवा मोवा, अग्नि- विप्रो विप्रक, शटी- उदर उदरकी शटी चोरक- ये २३ चोरक, पौष्करैः च योअभूण औषधी पोदकमूल इतके, कल्कितैः उदकं कल्कसे, तैलम् तैल तैल, पचेत् पडावतुं सिद्ध करे, पान- पान पान अभ्यङ्ग- अभ्यङ्ग अभ्यङ्ग अनुवासनैः अने अनुवासनम् और अनुवासनम्, प्रयुक्तम् प्रयोगार्थः प्रयोग कानेसे तत् ते वह, कुष्ठानि कुष्ठ कुष्ठ, किमीन् किमी कुमीरोग, मेहान् प्रमेह प्रमेह, अशांसि अर्श अर्श, ग्रहणीगदम् अहणीरोग ग्रहणीरोग क्षीबताम् नपुंसकता क्षीबता, विषमाश्रित्वम् विषमाश्रि विषमाश्रि, मलम् मल मल, तथा दोषत्रयम् तथा त्रये दोषेने तथा तीनों दोषोंको, आशु नष्टी शीघ्र, प्रणुदति इतके उदकं नष्ट करता है ॥ १८-२२ ॥

18. An oil may be prepared in the decoction of embelia, castor, turmeric, wild snake gourd, the three myrobalans guduch sprouts of spanish jasmine, chaste tree, deca-radices, ipomea, neem, Patha crested purple nail dye, purging cassia and indian oleander along with the paste of emetic nut, bael, turpeth, long pepper, indian groundsel, chiretta, deodar, dita bark, sweet flag, cuscus grass, indian berberry, costus, kurchi



seeds, indian madder, turmeric, dill seeds, white flowered lead wort, zedoary, angelica and orris root. This administered as potion, inunction and unctuous enema, is a speedy cure for dermatosis, helminthiasis, urinary disorders, piles, assimilation disorders, impotency, irregular condition of the gastric fire, excess of morbid matter, as well as the morbidity of the three humors.

व्याधि-व्यायाम-कर्माध्व-क्षीणाबल-निरोज-साम् ।

क्षીणशુक्रस्य चातीव स्नेहवस्तिर्बलप्रदः ॥२३॥

पादजङ्घोरुपृष्ठांसकटीनां स्थिरतां पराम् ।

जनयेदप्रजानां च प्रजां स्त्रीणां तथा नृणाम् ॥२४॥

વ્યાધિ- રોગ, વ્યાયામ- બ્યાયામ વ્યાયામ, કર્માધ્વ- કામ અને મુસાફરીથી ક્ષીણ કર્મ તથા મુસાફરીકે કારણ ક્ષીણ, અબલ- નિર્બળ નિર્બલ, નિરોજ-સામ્ ઓજસ્વરહિત ઓજરહિત, ક્ષીણશુક્રસ્ય ચ તથા ક્ષીણવીર્ય પુરુષોને તથા ક્ષીણવીર્ય પુરુષોનો સ્નેહવસ્તિઃ સ્નેહવસ્તિ સ્નેહવસ્તિ અતીવ વલપ્રદઃ અતિશય બલ દેનારી છે અતિવલપ્રદ છે, પાદ- પગ પેર, જઙ્ઘા- બાજુ, કટીનામ્ તથા કંઠમાં તથા કટીમાં, પરમ્ પરમ અતિશય, સ્થિરતામ્ સ્થિરતા આપે છે સ્થિરતા દેતી છે, અપ્રજાનામ્ અને પ્રજાસન્તાન, સ્ત્રીણામ્ સ્ત્રીઓને સ્ત્રી, તથા તથા તથા, નૃણામ્ પુરુષોને પુરુષોની, પ્રજામ્ ચ પ્રજા સન્તાનનો, જનયેત્ ઉત્પન્ન કરે છે ઉત્પન્ન કરતી છે ॥ ૨૩-૨૪ ॥

23-24. This unctuous enema is an excellent promoter of strength in those whose strength and vitality have sunk low, as a result of disease over exertion, over-work, exercise and load carrying, and in those of diminished

semen. It imparts great firmness to the feet, legs, thighs, back, shoulders and waist, and imparts fertility to sterile women and men.

स्नेहवस्तेः षडापदः—

वातपित्तकफात्यन्तपुસિચૈરાવૃતસ્ય ચ ।

અમુકે ચ પ્રણીતસ્ય સ્નેહવસ્તેઃ ષડાપદઃ ॥૨૫॥

વાત- વાત વાયુ, પિત્ત- પિત્ત પિત્ત, કફ- કફ કફ, અત્યન્ત- અતિ અતિશય અત્ય, પુસિચૈઃ અને મળથી ઓર મલસે, આવૃતસ્ય ચ સ્નેહવસ્તિ ટંકાઈ જતા સ્નેહવસ્તિ અવરુદ્ધ હોને પર, અમુકે તેમજ બીજા વગરનાને એવે વિના મોજન ક્રિયે, પ્રણીતસ્ય ચ દેવાથી દેનેસે, સ્નેહવસ્તેઃ સ્નેહવસ્તિની સ્નેહવસ્તિકી, ષડ્ ૭ ૬, આપદઃ આપત્તિઓ થાય છે વ્યાપત્તિયાં હોતી છે ॥ ૨૫ ॥

25. There are six conditions of complication likely to arise in the administration of the unctuous enemata; the unctuous fluid may be obstructed by vata, pitta or kapha or by excess of food or fecal matter, and sixthly when given to a person on an empty stomach.

षड्व्यापदां हेतुः—

शीतोऽल्पो वाऽधिके वाते शितेऽत्युष्णः कफे मृदुः ।

અતિમુકે ગુરુર્વર્ષઃસંચયેઽત્યલક્ષ્ણતથા ॥૨૬॥

दसस्तैरावृतः कोहो न यात्यभिभवादिपि ।

અમુકેઽનાવૃત્તવાદ્ય યાત્યૂર્ધ્વ

વાતે અધિકે વાયુની અધિકતામાં વાયુની અધિકતામાં, શીતઃ અલ્પઃ વા શીત અથવા અલ્પ શીત અથવા અલ્પ, પિત્તે પિત્તની અધિકતામાં પિત્તની અધિકતામાં, અતિઘ્ણઃ અતિ ઘ્ણ અતિ ઘ્ણ, કફે કફની અધિકતામાં કફની અધિકતામાં, મૃદુઃ મૃદુ મૃદુ, અતિમુકે અતિ મોજનમાં અતિ મોજનમાં, ગુરુઃ ભારે ભારે, તથા તથા તથા, વર્ષઃસંચયે મળના સંચયમાં મલકે

૨૬કૃ. ન યાત્યભિ-નયાત્યભિ (વ.).

૨૭ ન યાત્યભિભવાદિપિ-ન યાત્યભિભવાદિપિ (વ. ક. ત.)

संयम्य, अल्पबलः शैथिल्यं भवति। अल्प बलवाली, दृढः स्नेहवस्ति आपवर्धः स्नेहवस्ति देनेसे, तैः आवृतः ते वायु वजरेथी आवरतु पात्रवाने वीधि उन वायु आदिसे आवृत होनेके कारण, अभिभवात् अपि तथा उत्पद्यते। पराभव पात्रवाने वीधि पक्ष तथा उत्पद्यते दोषोपे पराभूत होनेके कारण भी स्नेहः स्नेहवस्तिनो स्नेह स्नेहवस्तिनो स्नेह, न याति पात्रो आवर्तते नथी वायव नहीं जाता, अमुके तेभ्यः आलो पेटमां स्नेहवस्ति आपवर्धो एवं खाली पेटमें स्नेहवस्ति देनेसे, अनावृतत्वात् च भाग्यं अनन्धी आवृत नहि होवाने वीधि मार्ग अज्ञसे आवृत नहीं होनेके कारण, ऊर्ध्वं याति स्नेह उपर आस्थे। अथ छे स्नेह ऊपरकी ओर चला जाता है ॥२६-२७॥

26-26<sup>3</sup>. If the enema fluid is given in a cold condition or in meagre quantity, in a condition of excess of vata, if it is given in a hot condition in pitta, or a mild enema is given in kapha, or if the enema prepared with heavy articles is given after a heavy meal, or a weak i. e. forceless enema is given in accumulation of feces, the enema fluid thus given will not be able to reach its destination as its course is obstructed by these conditions; while in a patient with an empty stomach, it reaches upwards owing to the absence of any such obstruction.

वातावृतस्नेहस्य लक्षणम्—

तस्य लक्षणम् ॥२७॥

अङ्गमर्दज्वराभ्यामशीतस्तम्भोदपीडनैः ।

पार्श्वरुग्नेष्टनैर्विद्यात् स्नेहं वातावृतं मिषक् ॥२८॥

तस्य वातावृत स्नेहनां वातावृत स्नेहके, लक्षणम् आ वक्ष्यते छे ये लक्षण हैं, मिषक् वेवे देव, अङ्गमर्द-

२८. अङ्गमर्दज्वराभ्यामशीतस्तम्भोदपीडनैः—स्तम्भोदस्तम्भः

वातान्तराङ्गलक्षणनैः (क. व. उ. व. व. क.)

अङ्गमर्द अङ्गोका दूटन, ज्वर- अङ्ग ज्वर आभ्याम- आभ्याम अङ्गान, शीत- शीत शीत, स्तम्भ- स्तम्भ स्तम्भ, ऊरपीडनैः ऊरपीडनैः ऊरपीडनैः, पार्श्वरुग्- पार्श्वरुग् पार्श्वरुग् पीडन पार्श्वोर्मे दर्द वेष्टनैः अने उद्वेष्टनथी और पार्श्वोर्मे एतन होनेसे, स्नेहस्नेहने स्नेहने, वातावृतम् वायुथी आवृत वायुसे अवन, विद्यात् अथुवे जाने ॥ २७-२८ ॥

27-28. These are then the symptoms produced—body-aches fever distension of abdomen, chill stiffness, pain in the thighs, and pain and cramps in the sides. The physician should know from these symptoms that the unctuous fluid is occluded by vata.

वातावृतस्नेहस्य चिकित्सा—

स्निग्धाम्ललवणोष्णैस्तं रास्त्रापीनद्रुतैलैः ।

सौवीरकसुराकोलकुलथयवसाधितैः ॥२९॥

निरुहैर्निहरेत् सम्यक् समूत्रैः गात्रमूलिकैः ।

ताभ्यामेव च तैलाभ्यां सायं मुकेऽनुवासयेत् ॥३०॥

स्निग्ध- स्निग्ध स्निग्ध, अम्ल- अम्ल अम्ल, लवण- लवण लवण, उष्णैः अने उष्ण अथुवाणां और उष्ण गुणवाके, सौवीरक- तेभ्यः सौवीरक एवं सौवीरक, सुरा- सुरा सुरा, कोल- कोल कोल, कुलथ- कुलथी कुलथी, यव- अने यवथी और जौ इनसे, साधितैः साधित सिद्ध किये हुए, रास्त्रा- रास्त्रा रास्त्रा, पीनद्रु- तथा धनुषगण्डरना तथा सारहन्वीके, तैलैः तैलथी मिश्रित तैलसे मिश्रित, समूत्रैः अने गोमूत्रमिश्रित और गोमूत्रमिश्रित, पात्रमूलिकैः पात्रमूलथी अनावृत पत्रमूलसे सिद्ध किये, निरुहैः निरुहैथी निरुहैथे, तम् तेनुं उसे, सम्यक् अत्रात्र अत्रा प्रकार, निहरेत् निहरेत्- २९ ३२० अर्थ है निकाल देवे, सायम् अने सांने सायंकाल, मुके अथुवा पक्षी भोजन करवकने पर, ताभ्याम् एव तेभ्यः अने इन दोनों, तैलाभ्याम् च तैलथी तैलसे, अनुवासयेत् अनुवासन ३२० अर्थ है अनुवासन देवे ॥ २९-३० ॥

२९. स्निग्ध-स्निग्धैः (क. व. उ. व. क.)

29-30. The physician should eliminate it well by evacuative enema of unctuous, acid, salt and hot substances, mixed with the oil of indian groundsel and indian berberry, prepared with sauveeraka and sura wines. jujube, horsegum and barley, cow's urine and the decoction of penta-radices. After the evening meals, the physician should administer unctuous enema of the above-said oils.

पित्तावृतस्नेहस्य लक्षणं चिकित्सा च—

दाहरागतृषामोहतमकज्वरदूषणैः ।

विद्यात् पिप्पावृतं स्वादुतिकैस्तं वस्तिभिर्हरेत् ॥३१॥

दाह- दाह दाह, राग- बाबाश रक्ता, तृषा-  
तृषा प्यास, मोह- मोह मोह, तमक- तमक-  
तमकभास, ज्वर- ज्वर ज्वर और ज्वर इन, दूषणै-  
विआरोधी विकारोंसे, पिच्छावृतस् स्नेहने पित्तथी  
आधत स्नेहको पित्ते आवृत, विद्याय अक्षुयो जाने,  
खादुतिकैः मधुर तथा ऊष्णी स्वादु तथा तिक्त, बस्तिभिः  
अस्तित्योथी बस्तियोंसे, तस् तेने इसे, हरेत् हरी  
देवे ओधिओ बाहर निकाले ॥ ३१ ॥

31. The physician should know the enema to be occluded by pitta, if there occur burning, redness, thirst, stupor, faintness and fever. These conditions should be cured with the enema prepared with sweet and bitter groups of drugs.

**कफावृतस्नेहस्य लक्षणम्—**

तन्द्राशीतब्धरालस्यप्रसेकारुचिगौरवैः ।

संमूर्च्छाग्लानिभिर्विद्याच्छेषमणा ब्रह्मावृतम् ॥३२॥

तन्त्रा- त-श्र तन्त्रा, शीतज्वर- श्मि तन्त्र- शीत-  
ज्वर, काष्ठस्य- आणस्य जालस्य, प्रसेक- केशुं थूकपुं  
कफका शूकना, जहन्ति- अशुभि जहन्ति, गौरवैः शारे-  
पक्षं भारीपण, लङ्कालि- शूकालि, ज्वालिभिः

अने प्धानि औऔधी और ग्लानि इनसे, स्नेहम् स्नेहने  
स्नेहको, स्नेहप्रणा उद्गीही कफसे, आवृतम् आवृत आवृत,  
विद्यान अक्षुर्वे जाने ॥३३॥

3- The physician should know it to be occluded by kapha if there occur torpor, algid fever, lethargy, ptyalism, anorexia, heaviness, fainting and depression.

अक्रान्तस्नेहस्य चिकित्सा—

कषायकटुतीक्ष्णोष्णैः सुरामूत्रापसाधितैः ।

फलतैलयुतैः साम्लैर्बस्तिभिस्तं विनिर्हरेत् ॥३३॥

कषाय- कषाय कषाय, कटु- कटु कटु, तीक्ष्ण- तीक्ष्ण तीक्ष्ण, उष्णः तथा उष्ण गुणवाणी तथा उष्ण गुणवाली सुरा- सुरा सुरा, मूत्र- तथा गोमूत्रा तथा गोमूत्रसे, उपसाधितैः सिद्ध करेदी सिद्ध की हुई, फलतैल भीङ्गना तैलथी मैनफलके तैलसे, युतैः युक्त युक्त सामैः तथा अभ्यु प्रथेवाणी तथा अम्ल द्रव्यवाली, बस्तिभिः भरितथैथी बस्तिमोंसे, तम् तेने इसे, विनिर्हरेत् अहार अहारे वाहर निकाले ॥ ३३ ॥

33. This should be treated with enema prepared with astringent, pungent, acute and hot substances, and with sura wine and cow's urine, and mixed with the emetic nut oil and sour articles.

अभ्यशन।वृत्तस्नेहस्य लक्षणम्—

छर्दिमूर्च्छा रुचिग्लानिशूलनिद्राङ्गमर्दनैः ।

आमलिकः सदाहैस्तं विद्यादत्यशनावृतम् ॥३४॥

छर्दि- उक्ष्त्री वमन, मूर्च्छा- मूर्च्छा मूर्च्छा, अरु-  
अरुचि अरुचि, ग्लानि- ग्लानि, शूल- शूल  
शूल, निद्रा- निद्रा निद्रा, क्रमद्वयः आगमर्ह संयोगः।

३३. कषायकटुतीक्ष्णोष्णैः कषायलिप्ताः कृद्भिः । ४ )

१४. इदिमूर्च्छाकविरक्तानां सुखोद्वाहकमर्दनैः इदितुष्णाकविरक्तानि-  
वारयन्नाहमर्दनैः ॥ ५ )

मूर्च्छा-तृष्णा (क)  
 जलनिद्रा जमर्दनेः ज्वरशूलसमर्दनेः (क. ड.)

दृढता, सदाहैः दाहः, वामलिङ्गैः तथा आभनां  
दक्षिणैः तथा आभके लक्षण इत्येते, तत्र स्नेहने  
स्नेहको, अत्यशनावृत्तम् अति भोजनशी आहत अति  
भोजनसे आवृत, विद्यात् अशुद्धी जानना चाहिए ॥३४॥

34 The physician should know it  
to be occluded by excess of intake of  
food, if there occur vomiting, fainting,  
anorexia, depression, colic, somnolence,  
body-aches, symptoms of chyme  
disorders and burning.

अत्यशनावृत्तस्नेहस्य चिकित्सा—

कटूनां लवणानां च काथैश्चूर्णैश्च पाचनम् ।  
विरेको मृदुरत्रामविहिता च क्रिया हिता ॥३५॥

कटूनां कटु कटु, लवणानाम् च अने लवण  
द्रव्येना और लवण द्रव्योंके, काथैः काथैः काथैः काथैः,  
चूर्णैः च तथा चूर्णैः तथा चूर्णोंके, पाचनम् पाचन  
पाचन. मृदुः मृदु मृदु, विरेकः विरेचन विरेचन, आम-  
विहिता अने आभयिक्रिया कहेल और आम-  
चिकित्सा में कही हुई. क्रिया च क्रिया क्रिया. अत्र अहो  
यहांपर, हिता हितकर से हितकारी है ॥३५॥

35. The treatment in such condi-  
tions is to stimulate digestion by means  
of decoctions and powders of pungent  
and salt drugs, and mild purgation,  
and the line of treatment indicated in  
chyme-disorders is also beneficial.

विडावृत्तस्नेहस्य लक्षणं चिकित्सा च—

विषमूत्रानिलसङ्गार्तिगुक्त्वाभमानहृद्ग्रहैः ।  
खेदं विडावृत्तं ज्ञात्वा खेदस्वेदः सर्वातिभिः ॥३६॥  
श्यामाबिल्वादिसिद्धैश्च निरुहैः सानुवासनैः ।  
निर्हरेद्विधिना सम्यगुदावर्तहरेण च ॥३७॥

त्रिड- भणरोध मलरोध, मूत्र- मूत्ररोध मूत्ररोध,  
निलसङ्ग- वायुरोध वायुरोध, अति- शूल शूल, गुह-  
गुहः

३७. सम्यगुदावर्तहरेण च-सर्वेणोदावर्तहरेण च (क.)

भारेपलुं मारीपन, आभमान- आभमान आभमान, हृद्-  
ग्रहैः तथा हृद्ग्रहैः तथा हृद्ग्रहसे, स्नेहस्नेहने  
स्नेहको, विडावृत्तम् भणशी आहत मलसे आवृत,  
ज्ञात्वा अशुद्धी जानकर, सर्वातिभिः- सर्वातिभिः  
सर्वातिभिः, स्नेहस्वेदः स्नेहन, स्वेदन स्नेहन, स्वेदन,  
श्यामा- श्यामा नसीतर श्यामा, बिल्वादि- अने बिल्वा-  
दिशी और बिल्वादिसे, सिद्धैः सिद्ध करके सिद्ध, निरुहैः  
च निरुहैः निरुहोंसे, उदावर्तहरेण अने उदावर्तहरे  
नाथ करना और उदावर्तनाथक, विधिना च  
विधिशी विधिसे, सम्यक् सारी रीति मकी प्रकार,  
निर्हरेत् तेने अहार कहेल उसे बाहर निकाले ॥३६-३७॥

36-37. Knowing that the unctuous  
fluid is occluded by fecal matter by  
observing retention of feces urine  
and flatus, pain, heaviness and disten-  
sion of abdomen and cardiac spasm,  
the physician should treat the patient  
with oleation and sudation procedures,  
suppositories and evacuative enema  
prepared with black turpeth, bael  
and other drugs of that group, with  
unctuous enema and with the line  
of treatment indicated in misperistalsis.

ऊर्ध्वं मच्छतः स्नेहस्य लक्षणम्—

अमुके शून्यपायौ वा वेगात् खेदोऽतिपीडितः ।  
धावत्यूर्ध्वं ततः कण्ठादूर्ध्वं खेद्यः पत्यपि ॥३८॥

अमुके भोजन नहि करनारमा भोजन नहीं करने-  
वालोंमें, शून्यपायौ वा अथवा शून्य शून्य शून्यपायोंमें  
अथवा खाली गुदावालोंमें, अतिपीडितः अत्यन्त दुःख-  
पायी बलपूर्वक दबानेसे, स्नेहः वेगात् स्नेह वेगशी  
स्नेह वेगसे, ऊर्ध्वम् उपर तरफ ऊपरकी ओर, धावति  
अथ से जाता है, ततः पछी तदनन्तर, कण्ठात् कंठ-  
पड़ोशी कण्ठमें पहुंचकर, ऊर्ध्वम् उपरना ऊपरके,  
खेद्यः अपि खिन्नोपायी छिन्नोसे, पत्यपि अहार अथ से  
बाहर जाता है ॥३८॥

38. In an enema given to a person on an empty stomach or emptied bowels, if the unctuous fluid is given with great force, it goes up very high and from there may reach the throat and may come out from the upper orifices of the body.

कण्ठादूर्ध्वच्छिद्रेभ्य आगच्छतस्तस्य चिकित्सा—

मूत्रश्यामात्रिवृत्तिसिद्धो यवकोलकुलस्थवान् ।

तत्सिद्धतैल इष्टोऽत्र निरुहः सानुवासनः ॥३९॥

मूत्र-गोमूत्र गोमूत्र, श्यामा-कालुं नसोतर श्यामा, त्रिवृत्त-सिद्धः अने अशुषु नसोतरथी सिद्ध करेख और अरुण त्रिवृत्तसे सिद्ध, यव- ७५ जौ, कोल- और बेर, कुलस्थवान् अने कुलभीवाणी और कुलथीसे युक्त, तत्सिद्धतैलः तेभ्य गोमूत्र, श्यामा अने त्रिवृत्तथी सिद्ध करेख तैलवाणी एवं गोमूत्र, श्यामा और त्रिवृत्तसे सिद्ध किये तैलकी, निरुहः निरुहभस्ति निरुहबस्ति, सानुवासनः अने अनुवासनभस्ति और अनुवासनबस्ति, अत्र अक्षीं यहां, इष्टः ७५ छे इष्ट हैं ॥ ३९ ॥

39. In these conditions, the evacuative and unctuous enemata of oil prepared with cow's urine, black turpeth, barley, jujube and horse-gram should be given.

कण्ठादागच्छतस्तस्य चिकित्सा—

कण्ठादागच्छतः स्तम्भकण्ठग्रहविरेचनैः ।

छर्दिघ्नीभिः क्रियाभिश्च तस्य कार्यं निवर्तनम् ॥४०॥

कण्ठात् गण्ठाभ्यं कण्ठसे, आगच्छतः नीकलता निकलते हुए, तस्य ते स्नेहने उस स्नेहको, स्तम्भ-स्तंभ स्तम्भ, कण्ठग्रह- कंठग्रह कण्ठग्रह, विरेचनैः विरेचन विरेचन, छर्दिघ्नीभिः तथा उद्वेगी भटाउनार तथा वमननाशक, क्रियाभिः च चिकित्साओथी चिकित्साओं द्वारा, निवर्तनम् कार्यम् पाछे वाणवे ओर्ध्वे पीछे लौटाना चाहिए ॥ ४० ॥

40. And in conditions where it is coming out of the throat, it should be

remedied by astringent medications, pressure on the throat and by purgatives and anti-emetic remedies.

रौक्ष्यादनागतः स्नेह उपेक्ष्यः —

यस्य नोपद्रवं कुर्यात् स्नेहबस्तिरनिःसृतः ।

सर्वोऽप्यो वाऽऽवृतो रौक्ष्यादुपेक्ष्यः स विज्ञानता ॥

सर्वः अल्पः वा अल्पः के अल्प सम्पूर्ण रूपमें या थोड़े परिमाणमें, आवृतः आवृत आवृत, स्नेहबस्तिः स्नेहभस्ति स्नेहबस्ति, अनिःसृतः अक्षर न आवर्त बाहर न आये, यस्य नेमा जिसमें, रौक्ष्यात् रक्षिताने र्ध्वं रुक्षताके कारण, उपद्रवश्च उपद्रव उपद्रव, न कुर्यात् न करे न करे, सः तेन सको, विज्ञानता विज्ञान वैद्य विज्ञान वैद्यको, उपेक्ष्यः उपेक्षा करनी उपेक्षा करनी चाहिए ॥ ४१ ॥

41. In conditions where though the unctuous fluid has not returned or returned only partially owing to obstruction but has not caused any complication owing to the unctuous condition of the body, the patient should be let alone by the experienced physician.

अनुवासनावर्धं युक्तस्नेहवादिविधिषट् भोजनं देयम्—

युक्तस्नेहं द्रवोष्णं च लघुपथ्योपसेवनम् ।

भुक्तवान् मात्रया भोज्यमनुवास्यकृयहात् ज्यहात् ॥ ४२ ॥

युक्तस्नेहम् नेने अनुवासन स्नेहने। सम्भोज्येयं यथे छे तेने अनुवासनका सम्यगयोग होनेपर, द्रवोष्णम् द्रव, उष्ण द्रव, उष्ण, लघु- लघु लघु, पथ्य-अने पथ्य और पथ्य, उपसेवनम् च भोजन आपणुं ओर्ध्वे भोजन देना चाहिए, भोज्यम् भोजन भोजन, मात्रया प्रमाणात् मात्रानुसार, भुक्तवान् भोजने खाये हुएको, ज्यहात् त्रयु तीन, ज्यहात् त्रयु द्विसे तीन दिनों अन्तरसे, अनुवासाः अनुवासन देणु अनुवासन देना चाहिए ॥ ४२ ॥

४१. रुक्षस्नेहं-रुक्षस्नेह (ड, क.)

,, भोज्यम्-भोज्यम् (ड)

42. The person, who has taken the unctuous enema, should be given warm water to drink, and light or wholesome diet; the patient after taking the diet in right proportion should take unctuous enema every third day.

अनुवासितायोष्णं जलं देयम्—

धान्यनागरसिद्धं हि तोयं दद्याद्विचक्षणः ।

व्युषिताय निशां कल्यमुष्णं वा केवलं जलम् ॥४३॥

विचक्षणः विचक्षुषु वैद्ये बुद्धिमान् वैद्य, निश्चाय आशी रात रात्रि, व्युषिताय पसार करेण अनुष्यने वित्ताये हुए को, कल्यम् प्रभातर्भा प्रातःकाल, धान्य-नागर- धाया आने सुधी धनिया और सोंठसे, सिद्धम् सिद्ध करेण सिद्ध, तोयम् जल, केवलम् अथवा केवल या केवल, उष्णम् उष्ण गरम, जलम् वा जलको, दद्यात् हि देवुं देवे ॥ ४३ ॥

43. In the next morning, the wise physician should administer the patient who has well-spent the night, the potion of water prepared with coriander and ginger or simple warm water.

उष्णजलस्य गुणाः—

स्नेहाजीर्णं जरयति श्लेष्माणं तद्भिन्नचित् च ।

मारुतस्यानुलोम्यं च कुर्यादुष्णोदकं नृणाम् ॥४४॥

वमने च विरेके च निरुहे सानुवासने ।

तस्मान्नुष्णोदकं देयं वातश्लेष्मोपशान्तये ॥४५॥

तत् उष्णोदकम् ते उष्ण जल वह गरम जल, नृणाम् अनुष्यन्ता मनुष्योंके, स्नेहाजीर्णम् स्नेहना अशुद्धिने जेहके अजीर्णको, जरयति पकावी नाणे छे पचाता है, श्लेष्माणम् छेने कफको, भिन्नचित् तोड़ी नाणे छे तोड़ता है, मारुतस्य आने वायुतुं और वायुका, अनुलोम्यम् च अनुलोमन अनुलोमन, कुर्यात् करे छे करता है, तस्मात् तेथी इस लिए, वमने च वमन

वमन, विरेके च विरेचन विरेचन, सानुवासने अनुवासन अनुवासन, निरुहे च आने निरुहर्भा और निरुहमें, वात-श्लेष्म- वात तथा छेनी वात तथा कफको, उप-शान्तये शान्ति भाटे शान्तिके लिए, उष्णोदकम् उष्ण जल गरम पानी, देयम् देवुं देवे छे देना चाहिए ॥ ४४-४५ ॥

44. This warm water digests the unctuous substance which has remained undigested, breaks down the mucus and regulates the peristaltic movement of vata in the patient. Therefore, after emesis or purgation or administration of evacuative or unctuous enemata, warm water should be given for the alleviation of vata and kapha.

प्रतिदिनमनुवासाः—

रुक्षनित्यस्तु दीप्ताग्निर्व्यायामी मारुतामयी ।

वक्त्रजश्रोण्युदावृत्तवाताश्चार्हा दिने दिने ॥४६॥

रुक्षनित्यः रुक्ष पदार्थो नित्य सेवन करनेपर निरुक्ष सेवन करनेवाला, दीप्ताग्निः प्रदीप्त अग्निप्राणः वीर्याग्नि, व्यायामी व्यायाम करनेपर व्यायाम करनेवाला, मारुतामयी वा वातरोगी वातरोगी, वक्त्रजश्रोणि-उदावृत्त-वाताः च तथा वक्ष्युर्भा वायुवाजा, श्रोणिर्भा वायु वाजा आने उदावृत्तश्री वक्त्रजमें वायुवाला, श्रोणि-प्रदेशमें वायुवाला और उदावृत्तरोगी, दिने दिने अर्थात् ६२२०८ ये प्रतिदिन, चार्हा अनुवासनवस्तितने योऽथ छे अनुवासनवस्तिके योग्य हैं ॥ ४६ ॥

46. The persons who are habituated to dry things, whose digestive fire is very active, who are habituated to physical exertion, who are suffering from vata disorders, who are afflicted with disorders of vata in the groin or pelvic region or disorders of

४६. व्यायामी मारुतामयी-सूत्रं व्यायामवीर्यः (च. द. च.)

॥ मारुतामयी-मारुतामयी (च.)



misperistalsis, should be given unctuous enema everyday.

प्रतिदिनाववासे हेतुः —

एषां वायु जरां स्नेहो वात्यम्बु, सिकताखिव ।  
अतोऽन्येषां ज्यहात् प्रायः स्नेहं पचति पावकः ॥४७॥

जम्बु जेम पाण्डू जिस प्रकार पानी, सिकतासु  
इव रेतीमां लीन थाय छे रेतमें लीन होता है,  
एवम् तेम ओझाने आपेक्षे उस प्रकार उनको दिया  
हुआ, स्नेहः च स्नेह स्नेह, वायु जलदी शीघ्र,  
जराम् याति पथी जल लीन थाय छे पचकर लीन  
होता है, अतः अन्येषाम् ते सिवायना भीमोने।  
उनसे अतिरिक्त दूसरोंकी, पावकः अग्नि अग्नि, प्रायः  
स्नेहम् अल्पम् स्नेहने प्रायः स्नेहको, ज्यहात् अल्प  
दिवसे तीन दिनमें, पचति पथावे छे पचाता है ॥४७॥

47. In such persons, the unctuous substance is immediately digested, just as water falling over sand is quickly absorbed; and in persons other than these, the gastric fire generally takes three days to digest the unctuous substance.

अनुवासे आमस्नेहनिषेधः —

न त्वामं प्रणयेत् स्नेहं स ह्यभिष्यन्दयेद्बुद्धम् ।  
सावशेषं च कुर्वीत वायुः शेषे हि तिष्ठति ॥४८॥

आमज्ज डाथी कच्चा, स्नेहम् तु स्नेह स्नेह, न  
प्रणयेत् देवा न ओझो नहीं देना चाहिए, हि सः  
अरक्ष के ते क्योंकि यह, गुदश्च शुद्धने गुदाको, अभि-  
ष्यन्दयेत् अभिष्यन्दित करे छे अभिष्यन्दित करता है,  
सावशेषं च कुर्वीत स्नेह आपवाभा अस्तिने। थे।  
अंश आधी आपवा ओझो स्नेह देवेमें बस्तिका कुछ  
अंश शेष रचना चाहिए, हि अरक्ष के क्योंकि, वायुः न वायु  
को वायु, शेषे तिष्ठति अस्तिना अवकाशमा रहे छे ते,  
अस्ति संपूर्ण आपवाधी पचनाशममा जेतो रहे छे  
वस्तिके अवकाशमें रहता है वह, बस्तिको संपूर्ण देनेसे  
वकाशमें चला जाता है ॥ ४८ ॥

48. The unctuous substance should never be given unboiled as it would cause increase of mucus secretion in the rectum, and some portion should be allowed to remain in the enema vessel because, along with the last parts, air would enter into the rectum.

गुदकण्ठाभ्यां युगपरस्नेहदाननिषेधः —

न चैव गुदकण्ठाभ्यां दद्यात् स्नेहमनन्तरम् ।  
उभयस्यान् समं गच्छन् वातमग्निं च दूषयेत् ॥४९॥

गुदकण्ठाभ्याम् गुदा अने कण्ठारा गुदा और  
मुखसे, अनन्तरम् ओझो छे। एक ही समय पर, स्नेहम्  
स्नेह स्नेह, न एव दद्यात् न आपवा ओझो नहीं  
देना चाहिए, उभयस्यान् अरक्ष के अने भागोंकी क्योंकि  
दोनों मार्गोंसे, समम् ओझो साथे एक साथ, गच्छन्  
जेतो स्नेह जाता हुआ स्नेह, वातम् वायुने वायुको,  
अग्निं च अने अरक्षिने और अग्निको, दूषयेत् दूषित  
करे छे दूषित करता है ॥ ४९ ॥

49. Oleation should never be done simultaneously by the mouth as well as by the rectum. The oleation taken by both the channels meeting together will vitiate vata and the gastric fire.

अनुवासेनिरुहयोरिकान्ततः सेवननिषेधः —

स्नेहवस्ति निरुहं वा नैकमेवातिशीलयेत् ।  
उत्क्लेशाग्निवधौ स्नेहाग्निरुहात् पचनाद्भयम् ॥५०॥  
तस्माग्निरुहः संस्नेहो निरुहश्चानुवासितः ।  
स्नेहशोधनयुक्त्यैव वस्तिकर्म शिरोषनुत् ॥५१॥

स्नेहवस्तिम् स्नेहवस्ति स्नेहवस्ति, निरुहम् वा  
अथवा निरुहने। या निरुहवस्ति, एकम् एव ओझ-  
दाने न अकेलेका ही, अतिशीलयेत् अल्प प्रयोग न

४९ उभयस्यान् समं गच्छन्-सङ्गतः सङ्गमयतो (क. ब. फ.)

५० वातमग्निं च दूषयेत्-शान्तिं दूषयेत् समम् (ब. फ.)

५१ संस्नेहो-स्नेहाः साव (क. व. ब. फ.)



उरवे। ओष्ठे निरन्तर अभ्यास नहीं करना चाहिए, चेहाय  
उरवे के ओष्ठों स्नेहनी क्योंकि अकेले स्नेहने, उत्तेज-  
काले उरवे, अग्निवधौ अने अग्निनाश और अग्नि-  
नाश होते हैं, निरुद्धा तथा ओष्ठों निरुद्ध अकेले  
निरुद्ध, पवनान् वायुने। वायुसे, मयम् अथ यम् अ  
मय होता है, तस्मात् तेथी इस लिए, निरुद्धः निरुद्ध  
आप्या पथी निरुद्धके पीछे, संस्नेहः अनुवासन आप्युं  
स्नेहन देना चाहिए, अनुवासितः च अने अनुवासन  
आप्या पथी और अनुवासनके पीछे, निरुद्धः निरुद्ध  
आप्ये। ओष्ठे निरुद्ध देना चाहिए, एवम् आ प्रभाये  
इस प्रकार, स्नेहशोचन स्नेहन अने शोधननी स्नेहन  
और शोधनकी, युक्त्या शोधनाथी योजनासे, बस्तिर्कर्म-  
अस्तिर्कर्म बस्तिकर्म, त्रिदोषनुत् त्रिदोष भटाके अ  
त्रिदोषका नाशक होता है ॥ ५०-५१ ॥

50-51. One should not develop  
excessively the habit of either the  
unctuous or the evacuating enema. By  
habituation to the unctuous enema  
there will be rousing of the kapha  
and pitta and impairment of the  
gastric fire, and by habituation to the  
evacuative enema there is the risk of  
the provocation of vata. Therefore the  
person who has taken evacuative enema  
should be given unctuous enema and  
the person who has been given unctu-  
ous enema should be given evacuative  
enema. By this procedure of alterna-  
ting the unctuous with the evacuative  
enema, the enema therapy becomes  
curative of the morbidity of all three  
humors.

केषां मात्रावस्तिर्हितः?—

कर्मव्यायामभाराव्यायामनखीकर्षितेषु च ।

दुर्बले वातभेदे च मात्रावस्तिः सदा मतः ॥ ५२ ॥

५२. या पांनखी-बतुः खी (य.)

॥ वातभेदे-वातरोगे (य.)

कर्म- ३१३ कर्म, व्यायाम- व्यायाम व्यायाम,  
भार- भार भार, कर्म- मुसाहरी मुसाहरी, बाध-  
सवारी सवारी, खी- अने खीभननो और खी-  
सेवनसे, कर्मितेषु च ३१३ यथेवा कर्म हुए, दुर्बले  
दुर्बल दुर्बल, वातभेदे च तेभ्यः वायुथी पीडित  
एवं वायुने पीडित मनुष्योंमें, सदा दृश्ये सदा, मात्रा-  
वस्तिः मात्रावस्तिः। प्रयोग मात्रावस्तिका प्रयोग,  
मतः ४४ अ इष्ट है ॥ ५२ ॥

52. The 'matra' enema is recom-  
mended for daily use in persons emacia-  
ted by over-work, over-exertion, load  
lifting, way-faring riding or indul-  
gence in women, in debilitated persons  
as well as in those afflicted with vita  
disorders.

मात्रावस्तेरुणाः—

यथेष्टाहारचेष्टस्य सर्वकालं निरत्ययः ।

ह्रस्वायाः स्नेहमात्राया मात्रावस्तिः समो मत्रेत् ॥ ५३ ॥

बल्यं सुखोपचर्य च मुखं सुष्टपुरीषकृत् ।

स्नेहमात्राविधानं हि बृंहणं वातरोगनुत् ॥ ५४ ॥

यथा-इष्ट-आहार-चेष्टा मात्रावस्तिर्मा भुज्य  
यथेष्ट आहार तथा विहार करी अके अ मात्रावस्तिमें  
जुज्य यथेष्ट आहार तथा विहार कर सकता है, सर्व-  
कालम् मात्रावस्ति सधनी सधनीमां वर्ध शक्य अ  
मात्रावस्ति सब कालमें ली जा सकती है निरत्ययः  
अने हानि नभरनी अ और हानिरहित है, मात्रावस्तिः  
मात्रावस्ति मात्रावस्ति, ह्रस्वायाः नानामां नाना  
वसे छोटी, स्नेहमात्रायाः अनुवासननी मात्रा  
अनुवासनकी मात्राके, समः समान समान, सवेत् अ  
है, स्नेहमात्राविधानम् स्नेहनी मात्रातुं विधान  
अर्थात् मात्रावस्ति स्नेहकी मात्राका विधान अर्थात् मात्रा-  
वस्ति, बल्यम् अक्षरार्थ बलकारक, सुखोपचर्यम्  
सुखे उपचार करी शक्य अथी सुखसे चिकित्साके लिए  
योग्य, सुखम् सुखे सुखपूर्वक, सुष्टपुरीषकृत् भज  
दावनार मल लानेवाली, बृंहणम् अक्षरार्थ बृंहण, वातरोग-

५४. वातरोगनुत्-सर्वदोषविध (य.)

तुम् च अने वातरोग भ्रमरान्तर के और वातरोग-  
नाशक है ॥ ५३-५४ ॥

53-54. The Matra-enema does not demand any regimen of diet or behaviour. It can be administered at all times and in all seasons and is harmless. Its dose is equivalent to the minimum dose of oleation. This procedure of the unctuous Matra-enema is promotive of strength, demands no strict regimen of diet, causes easy elimination of feces and urine, and is roborant and curative of vata disorders.

अध्यायोक्त्यायसंग्रहः —

तत्र श्लोकौ—

वातादीनां शमायोक्ताः प्रवराः स्नेहवस्तयः ।  
तेषां चाक्षप्रयुक्तानां व्यापदः सचिकित्सिताः ॥५५॥  
प्राग्भोज्यं स्नेहवस्तेर्यद् ध्रुवं येऽर्हाह्वयहास्य ये ।  
स्नेहवस्तिविधिश्चोक्तो मात्रावस्तिविधिस्तथा ॥५६॥

तत्र ते विषयमां उस विषयमें, श्लोकौ उपसंहारना  
के श्लोक के उपसंहारके दो श्लोक हैं कि, वातादीनाम्  
वातादि के दोषनी वातादिकी, शमाय शान्ति भाटे शान्तिके  
लिए, प्रवराः श्रेष्ठ श्रेष्ठ, स्नेहवस्तयः स्नेहवस्तिओ स्नेह-  
वस्तियाँ, अक्ष-अने अक्षान् अनुष्येथी और मूढद्वारा,  
प्रयुक्तानाम् तेषाम् तेषाम् प्रयोग करवाभां आववाभी  
प्रयुक्त करने पर, व्यापदः भती व्यापत्तिओ होनेवाली  
व्यापत्तियाँ, सचिकित्सिताः चिकित्सासहित चिकित्सा-  
सहित, उक्ताः उक्ती भताववाभां आवी के कह दी हैं,  
स्नेहवस्तेः स्नेहवस्तिनी स्नेहवस्तिके, प्राक् पहले  
पूर्व, वत् के जो, भोज्यम् भावुं भोज्यो आहार  
करना चाहिए, ये ध्रुवम् नेओ हमेशां स्नेहने योग्य  
के जो स्नेहवस्तिके निरन्तर योग्य हैं, ये च अने नेओ  
और जिनको, श्वहात् त्रक्षु त्रक्षु द्विसे तीन दिनके  
अन्तरसे, अर्हाः स्नेहवस्तिने योग्य के स्नेहवस्ति

देवी चाहिए, स्नेहवस्तिविधिः च स्नेहवस्तिने  
विधि स्नेहवस्तिविधि, तथा तथा और, मात्रावस्ति-  
विधिः मात्रावस्तिने विधि के अर्थ मात्रावस्तिनी  
विधि ये सब, उक्तः उक्ती भताववाभां आवी के कह  
दिये हैं ॥ ५५-५६ ॥

Here are the two recapitulatory verses—

55. The foremost of unctuous enema beneficial in the alleviation of vata and other humors are described herein, as well as the complications arising from their use by ignorant persons, along with the treatment of those complications. What should be taken before taking the unctuous enema, who are those in whom administration of the enema is indicated everyday, or every third day, the method of administering the unctuous enema and also that of Matra enema, are all described in this chapter.

इत्यग्निवेशकृते तन्त्रे चरकप्रतिसंस्कृतेऽप्राप्ते  
दृढबलसंपूरिते सिद्धिस्थाने स्नेहव्याप-  
त्तिनिर्णाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

इति आ प्रभाषे इस प्रकार, अग्निवेशकृते अग्निवेशे  
रथेला अग्निवेशसे बनाये, चरकप्रतिसंस्कृते तन्त्रे अने  
अरुंधती प्रतिसंस्कार पायेला आ शास्त्रमां और  
चरकके द्वारा संस्कृत इस शास्त्रके, अप्राप्ते अप्राप्त अप्राप्त,  
दृढबलसंपूरिते अने दृढबले पूरा करेला और दृढबले  
पूरित किये गये, सिद्धिस्थाने सिद्धिस्थानमां सिद्धिस्थानमें,  
स्नेहव्यापत्तिनिर्णामः 'स्नेहव्यापत्तिनिर्णाम' 'स्नेहव्यापत्तिनिर्णाम',  
नाम नामने नामका, चतुर्थः चौथो चौथा, अध्यायः  
अध्याय संपूर्ण थयो अध्याय समाप्त हुआ ॥ ४ ॥

4. Thus, in the Section on Success in Treatment, in the treatise compiled by Agniveśa and revised by Caraka, the

fourth chapter entitled 'The Success in Treatment of the Complications arising from the Unctuous Enema' not being available, the same as restored by Dridhabala, is completed.

### पञ्चमोऽध्यायः ।

पांचमो अध्याय अध्याय पांचवाँ

### Chapter V

नेत्रवस्तिव्यापत्तिस्त्रिद्विषयः —

अथातो नेत्रवस्तिव्यापत्तिस्त्रिद्विषयाख्यास्यामः ॥१॥

इति ह स्माह भगवानत्रेयः ॥ २ ॥

अथ अतः हुवे अहो'थी अब आगे, नेत्रवस्तिव्यापत्तिस्त्रिद्विषय 'नेत्रवस्तिव्यापत्तिस्त्रिद्वि' नामना अध्यायानु 'नेत्रवस्तिव्यापत्तिस्त्रिद्वि' नामके अध्यायका, व्याख्यास्यामः व्याख्यान करेणुं व्याख्यान करेण ॥ १ ॥

भगवान् भगवान् भगवान्, आत्रेयः आत्रेये आत्रेयने, इति ह आ विषयमा नीये प्रभाषे न इष विषयमे निम्न प्रकारसे ही, आह स हरेणुं छे कहा है ॥२॥

1. We shall now expound the chapter entitled 'The Success in Treatment of the Complications arising from the Defects in the Enema apparatus or in the Technique of administration of the Enema'.

2. Thus declared the worshipful Atreya.

वर्ज्यानि वस्तिनेत्राणि, तेषां दोषाश्च —

अथ नेत्राणि वस्तींश्च शृणु वर्ज्यानि कर्मसु ।  
नेत्रस्याङ्गप्रणीतस्य व्यापदः सचिकित्सिताः ॥ ३ ॥

अथ हुवे अब, कर्मसु चिकित्साभां वस्तिकार्यमे, वर्ज्यानि तन्वा ६५३ व्यापद, नेत्राणि नेत्रो नेत्र,

वस्तीन् तेभ्य अस्तिथौ एवं वस्तिभां अङ्गप्रणीतस्य तथा अङ्गान वैत्रे वापरैश्च एवं मूत्रसे प्रयुक्त, नेत्रस्य नेत्रथी यत्ता नेत्रसे इनेवात्रे, सचिकित्सिताः व्यापदः रोगो अने तेनी चिकित्सा रोगों और उनकी चिकित्सा, शृणु सांभलो सुनो ॥ ३ ॥

3 Now listen to the description of the enema tube and the enema receptacle that are to be avoided in this procedure and to the exposition of the complications which arise from such apparatus as well as from the administration of enema by an inexperienced person, as also the treatment of these complications.

हस्त्वं दीर्घं तनु स्थूलं जीर्णं शिथिलबन्धनम् ।  
पार्श्वच्छिद्रं तथा वक्रमष्टौ नेत्राणि वर्जयेत् ॥ ४ ॥

अप्राप्त्यतिगतिक्षोभकर्षणक्षणनक्षवाः ।

गुदपीडा गतित्रिष्टया तेषां दोषा यथाक्रमम् ॥ ५ ॥

हस्त्वं दीर्घं तनु स्थूलं जीर्णं शिथिलबन्धनम् शिथिल अध्यायुं दीले बन्धवाला, पार्श्वच्छिद्रं द्रव्य पदभाभां छिद्रवाणुं पार्श्वमे छिद्रवाला, तथा अने और, वक्रम् वाङ्' ओ टेढ़ा ये, अष्टौ आठ आठ प्रकारके, नेत्राणि नेत्रोने नेत्र, वर्जयेत् तन्वा ६५३ ओ'ओ' त्याज्य हैं, अप्राप्ति- न पहुँचपुं स्नेहका न पहुँचवा, अतिगति- अहु दूर अहुं बहुत दूर जाना, क्षोभ- क्षोभ क्षोभ कर्षण- कर्षण कर्षण, क्षणन- क्षणन क्षणन, क्षवाः क्षाव क्ष्वा, गुदपीडा- गुदपीडा गुदमे दर्द, त्रिष्टया गतिः अने दुष्टिष भति ओ और स्नेहकी टेढ़ी गति ये, तेषाम् तेषोना इनके, यथाक्रमम् क्रमशः क्रमसे, दोषाः दोषो छे दोष होते हैं ॥ ४-५ ॥

4-5. The physician should avoid eight kinds of enema-tubes viz.,

१. नेत्रवस्तिव्यापत्तिस्त्रिद्विषय-नेत्रव्यापदिकीं त्रिद्वि (प. क.)

२. व्यापदः-दोषाश्च (द.)

३. व्यापदः सचिकित्सिताः-दोषाश्च सचिकित्सिताः (प. क.)

४. जीर्ण-जीर्ण (प.)

५. पार्श्वच्छिद्रं-पार्श्वच्छिद्रं (प. क.)

६. -पार्श्वच्छिद्रं (प.)

those that are too short, too long, too thin, too thick, worn out or loosely fixed, which have holes on the sides or are tortuous. Not reaching the destination, penetrating too far up, shaking in the rectum, injury to the rectum, fluid leaking out, pain in the rectum, oblique flow of the fluid—these are respectively the harmful effects of the above described defective conditions of the enema tube.

वर्णा वस्त्रयः, तेषां दोषाश्च—

विषममांसलच्छिन्नस्थूलजालिकवातलाः ।

छिन्नः छिन्नश्च तानद्यौ वस्तीन् કર્મસુ વર્જयेत् ॥ ૬ ॥

गतिवैषम्यविस्त्रस्त्रावदौर्ग्रहानिस्त्रयाः ।

फेनिलच्छुस्यधार्यत्वं वस्तेः स्युर्बस्तिदोषतः ॥ ७ ॥

વિષમ. વિષમ વિષમ, માંસલ- માંસલ માંસલ, છિન્ન- કપાયેલ છિન્ન, સ્થૂલ સ્થૂલ સ્થૂલ, જાલિક- અનેક સૂક્ષ્મ છિદ્રવાળું અનેક સૂક્ષ્મ છિદ્રોવાળી, વાતલાઃ વાતકુટ વાતસે કુટ, સ્નિગ્ધઃ સ્નિગ્ધ સ્નિગ્ધ, છિન્નઃ ચ અને ક્ષેદ્યુક્ત ઔર છિન્ન, તાન્ બહો ઔ આઠ યે આઠ પ્રકારકી, વસ્તીન્ અસ્તિઔ વસ્તિયાં, કર્મસુ ચિકિત્સામાં ચિકિત્સામાં, વર્જયેત્ તબ્દી ઔધ ઔ ત્યાગ્ય હૈ, વસ્તિદોષતઃ અસ્તિપુટકના દોષથી વસ્તિપુટકકે દોષસે, વસ્તેઃ અસ્તિનાં વસ્તિકી, ગતિવૈષમ્ય- ગતિની વિષમતા વિષમ ગતિ, વિસ્ત્રસ્ત્ર- વિસ્ત્રતા વિસ્ત્રતા, ત્રાવ- ત્રાવ ત્રાવ, દૌર્ગ્રહ- મુશ્કેલીથી પકડાવું કઠનાઈસે પકડા જાના, નિસ્ત્રયાઃ નિસ્ત્રય દ્રવકા બાહર નિકલ જાના, ફેનિલ- ફીણ યુક્ત થવું શાગદાર હોના, શ્યુતિ- હાથમાંથી પડી જવું હાથસે ગિરજાના, અધાર્યસ્વઃ અને

આવણુ ન કરી શકાવું ઔર ધારણ ન કર સકના, સ્યુઃ ઔ આય ઔ યે હોતે હૈ ॥ ૬-૭ ॥

6-7. The physician should avoid eight kinds of enema receptacles in this procedure viz, those that are irregular, fleshy torn, thick, which have many perforations, which are bubbled inside, sticky and worn out. Irregular flow, fleshy odor, leakage of fluid, difficulty to grasp, absence of flow, frothiness of fluid slipping away from the hand and difficulty of holding are respectively the results of the above mentioned defective conditions of the receptacle.

वस्तिपणेतु षष्ठाः—

सवाता द्रुतांश्चिसतिर्यगुलुसकम्पिताः ।

अतिबाह्यामन्दातिवेगदोषाः प्रणेतुतः ॥ ૮ ॥

પ્રણેતુતઃ અસ્તિ દેનારના દોષથી વસ્તિ દેનેવાલેકે દોષસે, સવાત- વાતસહિત ઔષધ દેવું વાયુકે વાય વસ્તિકા જાના, અતિદ્રુત- અસ્તિનેત્રને બહુ ઉતાવળથી મંદર નાખવું વસ્તિનેત્રકા અતિ શીઘ્રતાસે અન્દર ઢાલના, ડશ્ચિસ- નેત્રને ઉપર ચડાવી દેવું નેત્રકો ઉપરકો ઔર અધિક ઢાલના, તિર્યક્- ત્રાંસું નાખવું તિરછા ઢાલના, ગુલુસ- વારંવાર દબાવવું રક રક કર દબાના, કમ્પિતાઃ અસ્તિતું કંપવું નેત્રકા કાંપના, અતિ- બહુનાર નાખવું વારંવાર ઢાલના, આહ્યા- નેત્રતું બહાર રહેવું નેત્રકા બાહર રહના, મન્દ-અતિવેગ- મંદવેગથી અને અતિવેગથી અસ્તિ દેવી મન્દવેગસે ઔર અતિવેગસે વસ્તિ દેના, દોષાઃ આ દોષ આય ઔ યે દોષ હોતે હૈ ॥ ૮ ॥

8. The following are the defects resulting from the defective technique of the enema administrator. The air may be pushed into the rectum, enema may be given too hurriedly, the tube

૬. વિષમમાંસલ-માંસલ-માંસલ (ક. ત.)

, , , માંસલ-સ્નિગ્ધવિષમ (ગ. ય.)

, , સ્નિગ્ધઃ-છિન્ન-છિન્ન (ગ. ય.)

૭. ત્રાવ-દૌર્ગ્રહ-નિસ્ત્રયાઃ-નિસ્ત્રય-નિસ્ત્રય (ગ. ય.)

, , દૌર્ગ્રહ-નિસ્ત્રયાઃ-દૌર્ગ્રહ-નિસ્ત્રયાઃ (ક. ત.)

, , દૌર્ગ્રહ-દૌર્ગ્રહ (ગ. ય.)

૮. તિર્યક્-ગુલુસ-કમ્પિતાઃ-તિર્યક્-ગુલુસ-કમ્પિતાઃ (ક. ટ. ત.)

may be pushed too high, or it may be introduced obliquely; he may do repeated compression or he may shake the tube while introducing or he may do frequent insertion of the tube or he may not be able to insert it in the rectum, or he may compress the receptacle either too slowly or too forcibly.

અનુચ્છાસ્ય દત્તે નિઃશેષં વા દત્તે વસ્તૌ દોષાઃ, ચિકિત્સા ચ—  
અનુચ્છાસ્ય ચ વજ્રે વા દત્તે નિઃશેષે એવ વા પ્રવિશ્ય કુપિતો વાયુઃ શૂલતોદકરો ભવેત્ ॥૯॥  
તત્રાભ્યક્તો ગુદે સ્વેદો વાતપ્રાન્થશનાનિ ચ ।

અનુચ્છાસ્ય ચ વાયુ કાઠી નાખ્યા વગર વાયુકે બાહર નિકાલે વિના, વજ્રે વા અસ્તિ અધિવામાં આવતાં વસ્તિકે વાંધને પર, નિઃશેષે એવ વા અથવા શેષ રાખ્યા વગર જ અથવા સંપૂર્ણ, દત્તે અસ્તિ દેતાં વસ્તિ દેને પર, વાયુઃ વાયુ વાયુ, પ્રવિશ્ય પ્રવેશ કરીને શરીરમાં પ્રવિષ્ટ થોકર, કુપિતઃ કુપિત અર્થ કુપિત હો કરકે, શૂલતોદકરઃ શૂલ અને સોય ભેડાયા જેવી પીડા કરનાર શૂલ તથા તોદકૌ ઉત્પન્ન કરનેવાલા, ભવેત્ થાય છે હોતા હૈ, તત્ર તેમાં ઉત્તમ, અભ્યક્તઃ અભ્યંગ અભ્યક્ત, ગુદે સ્વેદઃ ગુદામાં સ્વેદ ગુદામાં સ્વેદ, વાતપ્રાન્થ અને વાતહર ઔર વાતનાશક, અશનાનિ ચ ભોજન આપવાં બેઠકી મોજન દેના ચાહિય ॥ ૯ ॥

9-9½. If the enema bag has been fixed without the air in it being pushed out, or if all the enema fluid has been pushed in without leaving any residue, the air entering the rectum and provoking the vata there, causes colicky and piercing pain. In such a condition inunction and sudation of the anus, and food and drink curative of vata are indicated.

૧. કુપિતો-કુપિતઃ (૫)

દ્રુતપ્રણીતાદિવસ્તિદોષાઃ, તેષાં ચિકિત્સા ચ—

દ્રુતં પ્રણીતે નિષ્ક્રુષ્ટે સહસોક્ષિત એવ વા ॥૧૦॥  
સ્વાત્ કટીગુદજઙ્ગાનિવસ્તિસ્તમ્મોરુવેદનાઃ ।  
મોજનં તત્ર વાતપ્રાન્થ સ્વેદાઃ સ્વેદાઃ સબસ્તયઃ ॥૧૧॥

દ્રુતમ્ અસ્તિનેત્ર ઉતાપી, પ્રણીતે નાખ્યાથી પ્રવિષ્ટ કરને પર, સદ્મા એકદમ, એકદમ, નિષ્ક્રુષ્ટે બહાર બેઠકી દેવાથી નિઃશલને પર, ઉત્ક્રિષ્ટે એવ વા અથવા ઉપરની તરફ નાખ્યાથી યા ઉપરકી ઔર બલિક હાલનેપર કટી- કટી કટી, ગુદ-ગુદા ગુદા, જઙ્ગા- અને જંઘામાં ઔર જંઘામાં, આર્તિ- પીડા દર્દ, વસ્તિ- મુશ- શયમાં વસ્તિમાં, સ્તમ્મ- અસ્તિ સ્તમ્મ, ઝરુવેદનાઃ અને સાધ્ધેમાં વેદના ઔર ઝરુવે વેદના, સ્વાત્ થાય છે હોતી હૈ, તત્ર તેમાં ઉત્તમ, વાતપ્રાન્થ વાતહર વાતનાશક, મોજનમ્ ભોજન મોજન, સ્વેદાઃ સ્વેદ સ્વેદ, સબસ્તયઃ અસ્તિઓ વસ્તિયાં, સ્વેદાઃ અને સ્વેદ દેવાં બેઠકી ઔર સ્વેદ દેના ચાહિય ॥ ૧૦-૧૧ ॥

10-11. If the enema tube has been introduced too hurriedly or if it is pushed very high, there will occur pain in the waist, rectum and legs, rigidity of the bladder and pain in the thighs. In such a condition, inunction, sudation procedures, enemata and diet that are curative of vata, are indicated.

વસ્તેહર્ષવિમગમને હેતુઃ, તચ્ચિકિત્સા ચ—

તિર્યગ્વલ્ચાનૃતદ્વારે વજ્રે વાડપિ ન ગચ્છતિ ।  
નેત્રે તદ્વજુ નિષ્ક્રુષ્ય સંશોધ્ય ચ પ્રવેશયેત્ ॥૧૨॥

નેત્રે નેત્ર નેત્ર, તિર્યગ્ ત્રાસુ નાખ્યાથી તિરકા પ્રવિષ્ટ કરને પર, વલિ-વાનૃતદ્વારે વલિઓથી હર

૧૧. જઙ્ગાનિવસ્તિસ્તમ્મોરુવેદનાઃ જઙ્ગોરવસ્તિસ્તમ્માર્તિમેદનમ્  
(૫. ૬.)

૧૦. સ્તમ્મોરુવેદના-સ્તમ્મોરુવેદનમ્ (૬. ૬.)

૧૨. તિર્યગ્વલ્ચા-તિર્યગ્વલ્ચા (૬. ૬.)

૧૩. તદ્વજુ-તદ્વજુ (૬. ૬.)

૧૪. પ્રવેશયેત્-પુનર્નયેત્ (૬. ૬. ૬.)

રોકાઈ જતાં વલિયોંકે કારણ દ્વારકે વન્દ હોનેસે, બંદે  
વા અપિ અથવા નેત્ર જ સૂત્ર આદિથી બંધ થઈ  
જવાથી અથવા નેત્ર હી સૂત્ર આદિસે વન્દ હો જાને  
પર, ન ગચ્છતિ ઔષધ અંદર જતું નથી ઔષધ અન્દર  
નહીં જાતી, ત્વ ત્યારે તેને તથ નેત્રકો, નિષ્ક્રુણ પાધુ  
જેથી બંધ નિકાલકર, સંજોષ્ય ચ સાધુ કરી સાફ  
કરકે, ક્ષુ સીધું સીધા, પ્રવેશવેત દાખલ કરવું  
પ્રવિષ્ટ કરના ચાહિય ॥ ૧૨ ॥

12. If the enema tube is introduced obliquely or is obstructed by the anal folds or is blocked by substances in the enema fluid itself, the enema fluid will not flow. The enema tube then should be taken out, cleansed and properly re-introduced.

પીડ્યમાને વસ્તાવન્તરા મુકે દોષાઃ, તન્નિકિત્સા ચ—

પીડ્યમાનેઽન્તરા મુકે ગુદે પ્રતિહતોઽનિલઃ ।

ઉરઃશિરોર્તિમૂર્વોશ્ચ સ્વદનં જનયેદ્વલી ॥૧૩॥

વસ્તિઃ સ્યાત્તત્ર વિશ્વાદિકલશ્યામાદિમૂત્રવાન્ ।

પીડ્યમાને દબાવતાં દબાવતાં દબાવે દબાવે, અન્તરા  
વચ્ચમાં ચીવમેં, મુકે છોડી દેવાથી છોડ દેનેસે, ગુદે  
ગુદામાં ગુદામેં, પ્રતિહતઃ પ્રતિહત પામેલો રુકા હુઆ,  
વલી અનિલઃ બળવાન વાયુ વલવાન વાયુ, ઉરઃશિરોર્તિમૂ  
જાતી અને મસ્તકમાં પીડા જાતી ઓર શિરમેં પીડા,  
કર્ષોઃ ચ તથા સાયગોની ઓર કરમેં, સ્વદનમ્ શિથિલતા  
શિથિલતા, જનયેદ ઉત્પન્ન કરે છે કર દેતા હૈ, તત્ર  
તેમાં ઉચમેં, વિશ્વાદિ-બીલી વગેરે વિશ્વાદિ, કલ-  
મીઠળ મૈનકલ, શ્યામાદિ-કાળું નસોતર વગેરે  
શ્યામા આદિસે, મૂત્રવાન્ અને ગોમૂત્રવાળી ઓર  
ગોમૂત્રસે મુક્ત, વસ્તિઃ અસ્તિ વસ્તિ, જ્વાલ દેવી બેઈએ  
દેની ચાહિય ॥ ૧૩ ॥

13. If there are interruptions in the act of compression resulting in, repeated compression, the vata in the

rectum being thus struck repeatedly becomes highly provoked and causes pain in the chest, head and thighs, and also asthenia. In such a condition, is indicated the enema prepared from the bael group of drugs, emetic nut and the black turpeth group of drugs mixed with cow's urine.

નેત્રકમ્પનાભિહતે ગુદે દોષાઃ, તન્નિકિત્સા ચ—

સ્વાદાહો દવથુઃ શોફઃ કમ્પનાભિહતે ગુદે ॥૧૪॥

કવાયમધુરાઃ શીતાઃ સેકાસ્તત્ર સ્વસ્તયઃ ।

ગુદે ગુદા ગુદામેં, કમ્પનાભિહતે નેત્રના કમ્પથી  
અભિહત પામતાં નેત્રકે કમ્પસે ચોટ લગને પર, દાહઃ  
દાહ દાહ, દવથુઃ બળતરા દવથુ, શોફઃ અને શોફ  
ઓર શોથ, જ્વાલ થાય છે હોતા હૈ, તત્ર તેમાં જનમેં,  
સ્વસ્તયઃ અસ્તિસહિત વસ્તિયોંકે સાથ, કવાય-કવાય  
કવાય, મધુરાઃ મધુર મધુર, શીતાઃ અને શીતલ ઓર  
શીતલ, સેકાઃ પરિષેક હિતકર છે પરિષેક હિતકર હૈ ॥૧૪॥

14. If the rectum is injured by the shaking of the tube, there will be burning, sense of heat and edema. In such conditions, astringent, sweet and cold affusions and enemata are indicated

અતિમાત્રપ્રણીતેનેત્રદોષાઃ, તન્નિકિત્સા ચ—

અતિમાત્રપ્રણીતેન નેત્રેણ ક્ષણનાઢલેઃ ॥૧૫॥

સ્યાત્ સાર્તિ દાહનિસ્તોદગુદ્વર્ચઃપ્રવર્તનમ્ ।

તત્રસર્પિઃપિચુઃ ક્ષીરં પિચ્છાવસ્તિશ્ચ શસ્યતે ॥૧૬॥

અતિમાત્ર-અત્યંત અસ્યધિક, પ્રણીતેન નાખવાથી  
પ્રવિષ્ટ કરનેસે, નેત્રેણ અસ્તિનેત્રથી નેત્રકે કારણ, વલેઃ  
વલિયોંમાં વલિયોંમેં, ક્ષણનાઢ પામેલો બાજવાથી  
વિસર્જ લગનેસે, સાર્તિ પીડાસહિત દર્દ, દાહ-દાહ દાહ,  
નિસ્તોદ-અને ફાટ ઓર તોડકે સાથ, ગુદ-ગુદાની તથા

૧૩. ઉરઃશિરોર્તિમૂર્વોશ્ચ સ્વદનં જનયેદ વલી-ઉરઃશિરોરુજં સાદ  
મૂર્વોશ્ચ જનયેદ વલી (ઉ. ચ. ક.)

૧૫. પ્રણીતેન-પ્રવચેન (વ.)

૧૬. સાર્તિ દાહ-કર્કશદાહ (વ. ક.)



पुष्पा और, वर्षः मधुसूदी पुष्पवस्त्र, प्रवर्तव्य प्रवृत्ति  
प्रवृत्ति, स्यात् याय छे होती है, तत्र तेभां उसमें, सधिः-  
पिबुः धीतुं योतुं वीका पिबु, क्षीरम् दूध दूध, पिच्छा-  
वस्तिः च अने पिच्छावस्ति और पिच्छावस्ति, वस्यते  
प्रक्षस्त छे हितकर हैं ॥ १५-१६ ॥

15-16. If the anal valves are hurt  
by excessive penetration of the enema  
tube, there will be pain, burning  
rectalgia and the discharge of fecal  
matter. In such a condition the use of  
ghee sweet milk and mucilagenous  
enema are recommended.

मन्दं प्रणीते बाह्ये वा स्नेहे दोषाः, तच्चिकित्सा च—

न भावयति मन्दस्तु बाह्यस्त्वाशु निवर्तते ।

स्नेहस्तत्र पुनः सम्यक् प्रणेत्यः सिद्धिमिच्छता ॥१७॥

मन्दः तु मन्द अस्ति मन्द वस्ति, न भावयति  
पक्वाशयभां पक्षोच्यती नथी पक्वाशयमें नहीं पहुंचती,  
बाह्यः तु अने बाह्यम् अस्ति और बाह्यम् वस्ति, आशु  
बलदीधी शीघ्र, निवर्तते पाछी वगैरे छे लौट आती है,  
सिद्धिम् सिद्धि सिद्धि, इच्छता इच्छता नैवे चाहनेवाला  
वैद्य, तत्र ते स्थितिभां उस स्थितिमें, स्नेहः पुनः इरीने  
स्नेह फिरे स्नेह, सम्यक् सारी रीति अच्छी तरहसे,  
प्रणेत्यः आपवे ओझै देवे ॥ १७ ॥

17. The inadequately compressed  
enema does not reach the destination  
and returns too soon. In such condi-  
tions, unctuous enema should be pro-  
perly administered again, by one desi-  
ring success in treatment.

अतिप्रपीडनदोषाः, तच्चिकित्सा च—

अतिप्रपीडितः कोष्ठे तिष्ठत्यायाति वा गलम् ।

तत्र वस्तिर्विरेकश्च गलपीडादि कर्म च ॥१८॥

१८. न भावयति—न वा वहति (क. द. घ. फ.)

१८. न भावयति—न वा वहति (क.)

अतिप्रपीडितः अतु इत्येवम् अस्ति अति प्रपीडित  
वस्ति, कोष्ठे तिष्ठताम् अ कोष्ठमें, तिष्ठते रहे छे ठहर  
जायगी, गलम् वा अथवा अशामां या गलेमें, आयाति  
आवे छे ऊपर पहुंच जायगी, तत्र तेभां उसमें, वस्तिः  
अस्ति वस्ति, विरेकः च विरेचन विरेचन, गलपीडादि  
अने गलुं दवावतु वजेरे और गलप्रपीडन आदि, कर्म  
च चिकित्सा छे चिकित्सा करती चाहिए ॥ १८ ॥

18. If over-forcibly administered,  
the enema is retained in the stomach  
or goes up and reaches the throat. In  
such conditions enema, purgation and  
pressure on the neck etc., are the  
requisite measures of treatment.

अभ्यायोक्तविषयाः—

तत्र श्लोकः—

नेत्रवस्तिप्रणेतृणां दोषानेतान् समेषजान् ।

वेत्ति यस्तेन मतिमान् वस्तिकर्माणि कारयेत् ॥१९॥

तत्र श्लोकः ते विषयभां उस विषयमें, श्लोकः  
विषयकारने श्लोक छे उपसंहारका श्लोक है कि,  
यः ने भावयति जो मनुष्य, नेत्रवस्ति- नेत्र, अस्ति  
नेत्र, वस्ति, प्रणेतृणाम् अने अस्तिदाताना और प्रणेत-  
आके, एतान् अने आ और इन, दोषान् दोषों  
दोषोंको, समेषजान् तेनां औपम्यसहित उनके औपम्य-  
सहित, वेत्ति अस्ति छे जानता है, तेन तेनां पास उससे,  
मतिमान् बुद्धिमान् भावयति बुद्धिमान् मनुष्यको, वस्ति-  
कर्माणि अस्तिकर्मा वस्तिकर्म, कारयेत् कराववां कराना  
चाहिए ॥ १९ ॥

Here is the recapitulatory verse—

19. The wise physician who has a  
knowledge of these complications with  
regard to the enema tube, receptacle  
as well as the ineptness of the enema  
administrator and the treatment of  
these complications, should be engaged  
to give the treatment.

१९. वेत्ति यस्तेन-विद्वान्स्तेन (क. द.)



इत्यग्निवेशकृते तन्त्रे चरकप्रतिसंस्कृतेऽप्राप्ते  
दृढबलसंपूरिते सिद्धिस्थाने नेत्रवस्तिव्याप-  
त्सिद्धिर्नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

इति आ प्रभाषे इस प्रकार, अग्निवेशकृते अग्नि-  
वेशे रथेष्टा अग्निवेशसे बनाये, चरकप्रतिसंस्कृते तन्त्रे  
अने अरुंथी प्रतिप्रसंस्कार पायेष्टा आ शास्त्रभा  
और चरकके द्वारा संस्कृत इस शास्त्रके, अप्राप्ते अप्राप्त  
अप्राप्त, दृढबलसंपूरिते अने दृढबले पूरा करेष्टा  
और दृढबलसे पूरित किये गये, सिद्धिस्थाने सिद्धिस्थानभा  
सिद्धिस्थानमें, नेत्रवस्तिव्यापत्सिद्धिः नेत्रवस्तिव्या-  
पत्सिद्धि 'नेत्रवस्तिव्यापत्सिद्धि', नाम नामने नामका,  
पञ्चमः पांचमो, पांचवौ, अध्यायः अध्याय संपूर्ण अये।  
अध्याय समाप्त हुआ ॥ ५ ॥

5. Thus, in the Section on Success  
in Treatment, in the treatise compiled  
by Agnivesa and revised by Caraka the  
fifth chapter entitled 'The Success in  
Treatment of the Complications arising  
from the Defects in the Enema appa-  
ratus or in the Technique of admini-  
stration of the Enema' not being  
available, the same as restored by  
Dridhabala, is completed.

### षष्ठोऽध्यायः ।

छठो अध्याय अध्याय छट्टा

Chapter VI

वमनविरेचनव्यापत्सिद्धयुपक्रमः—

अथातो वमनविरेचनव्यापत्सिद्धिं व्याख्यास्यामः १  
इति ह स्माह भगवानात्रेयः ॥ २ ॥

अब अतः हमे अहींथी अब आगे, वमनविरेचन-  
व्यापत्सिद्धिम् 'वमनविरेचनव्यापत्सिद्धि' नामना  
अध्यायानु 'वमनविरेचनव्यापत्सिद्धि' नामके अध्यायका,  
व्याख्यास्यामः व्याख्यान करेथुं व्याख्यान करेंगे ॥ १ ॥

१. वमनविरेचनव्यापत्सिद्धि-संशोधनव्यापत्सिद्धि (फ.)

भगवान् भगवान् भगवान्, आत्रेयः आत्रेये आत्रेयने,  
इति ह आ. (रथपभा) नीचे प्रभाषे अ इस विषयमें  
निम्न प्रकारसे ही, आह स्म उहेथुं छे कहा है ॥ २ ॥

1. We shall now expound the  
chapter entitled 'The treatment of com-  
plications arising from the procedures  
of Emesis and Purgation'.

2. Thus declared the worshipful  
Atreya.

अथ शोधनयोः सम्बन्धविधिमूर्ध्वानुलोमयोः ।  
असम्यक्कृतयोश्चैव दोषान् वक्ष्यामि सौबधान् ॥ ३ ॥

अब हमे अब, ऊर्ध्वानुलोमयोः ऊर्ध्व तथा  
अनुलोम ऊर्ध्व तथा अनुलोम, शोधनयोः शोधननी  
शोधनकी, सम्बन्ध- रीतनी सम्यक्, विधिम् विधि  
विधि, असम्यक् कृतयोः च एव अने तेओने सारी  
रीतनी विधिनी न करेष्टाभा आपत्ता और वे सम्यक्  
विधिसे न किये जाने पर, दोषान् तेओना दोषे उनके दोष,  
सौबधान् औषधसहित औषधसमेत, वक्ष्यामि छहीश  
अहंगा ॥ ३ ॥

3. I shall describe the proper  
method of purification through the  
upper and lower channels of the body  
and the complications arising from  
improper procedure and their  
treatment.

साधारणेषु प्रावृट्शरद्वसन्तेषु संशोधनोपदेशः—

अत्युष्णवर्षशीता हि ग्रीष्मवर्षाहिमागमाः ।

तदन्तरे प्रावृडाद्यास्तेषां साधारणास्त्रयः ॥ ४ ॥

ग्रीष्म- ग्रीष्म ग्रीष्म, वर्षा- वर्षा वर्षा, हिम-हिमागमाः  
अने हेमन्त ओ अनुओ और हेमन्त ये ऋतुएं, अति-  
उष्ण- अत्युष्मे अति गरमी क्रमशः अति गर्मी, वर्षा- अति  
वरसाह अति वर्षा, शीताः हि अने अति ठंडीवाणी होथ  
छे और अति शीतवाली होती हैं, तदन्तरे तेओनी वन्ते

४. तदन्तरे प्रावृडाद्यास्तेषां साधारणास्त्रयः—अन्तरेषु प्रावृडाया  
त्रेधाः साधारणास्त्रयः (च. फ.)

इसके बीचमें, प्रावृद्धाद्याः प्रावृट् पञ्चरे प्रावृट् प्रादि,  
जयः त्रयः ऋतुओ। तीन ऋतुएं, तेषाम् अनुक्रमे ऋतु  
परसाह तथा ऋतुओ। क्रमशः गर्मी, वर्षा तथा शीतमें,  
साधारणाः साधारण्ये से साधारण हैं ॥ ४ ॥

4. Summer, the rainy season and winter are hot, rainy and cold respectively. In between them, there are three seasons called the early-rains and two others which have mild seasonal characteristics.

प्रावृट् शुचिर्नभौ ज्ञेयौ शरदूर्जसहो वनः ।

तपस्यश्च मधुश्चैव वसन्तः शोधनं प्रति ॥ ५ ॥

एतानृतून विकल्पैव दद्यात् संशोधनं भिषक् ।

स्वस्थवृत्तमभिप्रेत्य व्याधौ व्याधिवशेन तु ॥ ६ ॥

शोधनम् शोधनम् शोधनम्, प्रति आश्रयम्  
हृदिसे, शुचिर्नभौ अशुद्धि और श्रावणने आषाढ और  
श्रावणको, प्रावृट् प्रावृट् अशुद्धि प्रावृट् जाने, ऊर्जसहो  
ऊर्जसहो और माघशरदने कार्तिक और मार्गशीर्षको, शरद  
शरद अशुद्धि शरद जाने, तपस्यः च तथा श्रमशु  
फाल्गुन, मधुः च एव अने चैत्रने और चैत्रको, वसन्तः  
वसन्त वसन्त, ज्ञेयौ अशुद्धि जाने, एवम् आ अशुद्धि  
इस प्रकार, स्वस्थवृत्तम् स्वस्थवृत्तने स्वस्थवृत्तको,  
अभिप्रेत्य दक्षिण राश्री लक्ष्य करके, एतान् आ इन,  
ऋतुन् ऋतुओने ऋतुओंको, विकल्प यथैकत विज्ञाय  
अशुद्धि राश्री यथोक्त विभागके अनुसार रखकर, भिषक्  
वेद वेद, संशोधनम् संशोधन संशोधन, दद्यात् देवुं  
देवे, व्याधौ तु व्याधिम् तौ व्याधिमें तो, व्याधिवशेन  
व्याधि अनुसार ऋतुओनी उदयना करी संशोधन  
देवुं व्याधिके अनुसार ऋतुओंकी कल्पना कर संशोधन  
देवे ॥ ५-६ ॥

४. एतानृतून विकल्पैव दद्यात् एतानृतून विकल्पैव दद्यात्

(क. प. ५.)

—एतानृतून विकल्पैव दद्यात्

(ग.)

,, भिषक्—नृणाम् (त.)

5-6. Pravrit (the early rains) is comprised of Ashadha and Sravana and Sarad (autumn) is Kartika and Margasirsha and Vasanta (spring) is Phalguna and Chaitra. These are the seasons in which seasonal purification is to be done. The physician should classify seasons in this way and give seasonal purification in condition of normal health; but in cases of disease he should administer purification whensoever found necessary in view of the disease-condition.

वमनादीनामन्तः स्नेहस्वेद प्रयोगः, अन्ते च स्नेहप्रयोगः—

कर्मणां वमनादीनामन्तरेष्वप्येव च ।

स्नेहस्वेदौ प्रयुज्जीत स्नेहं चान्ते प्रयोजयेत् ॥ ७ ॥

वमनादीनाम् वमन पञ्चरे वमनादि, कर्मणाम्  
ऊर्जसहो कर्मोंके अन्तरेषु अन्तरेषु पञ्चरे पञ्चरे बीच  
बीचमें, स्नेहस्वेदौ स्नेहन तथा स्वेदनने। स्नेहन तथा  
स्वेदनका, प्रयुज्जीत प्रयोग ऊर्जसहो प्रयोग करना चाहिए,  
अन्ते च अन्ते अन्ते और अन्तमें, स्नेहम् संशोधनम्  
स्नेहनने। संशोधनम् स्नेहनका, प्रयोजयेत् प्रयोग ऊर्जसहो  
प्रयोग करना चाहिए ॥ ७ ॥

7. In the intervals between the procedures of emesis, purgation etc., the physician should give oleation and sudations procedure and in the end, he should give sedative oleation.

कान् नातिस्निग्धान् विरेचयेत्—

विसर्पपिडकाशोककामलापाण्डुरोगिणः ।

अभिघातविषातांश्च नातिस्निग्धान् विरेचयेत् ॥ ८ ॥

विसर्पः विसर्पः विसर्पः, पिडका- पिडका पिडका,  
शोक शोक स्नान, कामला- कुम्भिका कामला, पाण्डु-

५. अन्तरेषु अन्तरेषु च—अन्तरे अन्तरे (क. प. ५.)

८. विसर्पपिडकाशोककामलापाण्डुरोगिणः—कुम्भिका विसर्पपिडकाकामला-  
पाण्डुरोगिणः (ग. प.)

तथा पांडुना तथा पाण्डुके, रोषिणः श्रेष्ठोऽने रोषिणो, अग्निवात- तेभ्यः प्रहृष्ट एवं चोद, विष- क्षतं तथा विषयी पीडित मनुष्योने और विषसे पीडित मनुष्योको, अतिस्निग्धान् च अतिशय स्नेहन आपी अत्यन्त स्नेहन कराके, न विरेचयेत् विरेचन कुर्यात् न हि विरेचन नहीं देना चाहिए ॥ ८ ॥

8. The physician should not give an excessive dose of preparatory oleation before purgation, to those who are suffering from acute spreading affections, pimples, edema, jaundice, anemia, trauma and toxicosis.

केषां स्नेहविरेचनं केषां च रुक्षं विरेचनं देयम्—  
नातिस्निग्धशरीराय दद्यात् स्नेहविरेचनम् ।  
क्षोदोत्क्लिष्टशरीराय रुक्षं दद्याद्विरेचनम् ॥ ९ ॥

अतिस्निग्ध- अतिशय स्निग्ध अति स्निग्ध, शरीराय शरीरवाणने शरीरवालेको, स्नेहविरेचनम् स्नेहविरेचन स्नेहविरेचन, न दद्यात् न देयुं न देवे, स्नेहोत्क्लिष्ट- शरीराय अने स्नेहशी उत्क्लिष्ट शरीरवाणने और जिसका शरीर स्नेहसे उत्क्लिष्ट है उसे, रुक्षम् रुक्ष रुक्ष, विरेचनम् विरेचन विरेचन दद्यात् आप्युं देवे ॥ ९ ॥

9. The persons who have excessive unctuous quality in the body should not be given unctuous purgatives. The persons, in whose body the unctuous element has become agitated, should be given non-unctuous purgatives.

कथं पीतमौषधं सम्यग्योगाय कल्पते—  
क्षोदस्वेदोपपन्नेन जीर्णे मात्रावदौषधम् ।  
एकाग्रमनसा पीतं सम्यग्योगाय कल्पते ॥ १० ॥

क्षोदस्वेद- स्नेहन तथा स्वेदनशी स्नेहनसे तथा स्वेदनसे, उपपन्नेन युक्त पुष्टे शुक्ल पुरुषने, जीर्णे गौराक्ष पक्षी अथ पक्षी आहारके पच जानेके बाद,

१. रुक्षं दद्याद्विरेचनम्—रुखाद्रुक्षं विरेचनम् (घ.)

१०. सम्यग्योगाय—सम्यग् योगाय (घ.)

एकाग्रमनसा ओझाग्र मनशी एकाग्र मनसे, मात्रावत् मात्राअर मात्रातुवार, पीतम् पीथेयुं पी हुरे, औषधम् औषध औषध, सम्यग्योगाय पीताने सम्यग्योग कुर्यात् अपना सम्वयोग करनेमें, कल्पते समर्थ लाभ छे समर्थ होती है ॥ १० ॥

10. When a person has been well prepared with oleation and sudation procedures, and after his previous meal has been fully digested, if he ingests the right dose of medication with his mind concentrated on the treatment, it brings about the most desirable results.

स्निग्धात् पात्राद्यथा तोयमयत्नेन प्रणुद्यते ।  
कफादयः प्रणुद्यन्ते स्निग्धादेहात्तथौषधैः ॥ ११ ॥

स्निग्धात् स्निग्ध विदने, पात्रात् वासुधुमांशी बर्तनसे, यथा जेवी रीते जैसे, अयत्नेन प्रयत्न वगर आसानीसे, तोयम् जल जल, प्रणुद्यते भसेडी शकाय छे हटाया जाता है, तथा जेवी रीते वैसे, स्निग्धात् स्निग्ध स्निग्ध, देहात् देहमांशी देहसे, कफादयः कफ वजरे दोषो कफादि दोष, औषधैः औषधोशी औषध- बोसे, प्रणुद्यन्ते प्रयत्न वगर भसेडी शकाय छे आसानीसे हटाये जाते हैं ॥ ११ ॥

11. As in a vessel smeared with oil, water slips down without any effort, similarly kapha and other morbid humors slip out easily in a body which has undergone oleation therapy.

आर्द्रं काष्ठं यथा वह्निर्विष्यन्दयति सर्वतः ।  
तथा स्निग्धस्य वै दोषान् स्वेदो विष्यन्दयेत् स्थिरान् ॥

यथा जेभ जैसे, वह्निः अग्नि आग, आर्द्रम् भीना गीली, काष्ठम् धाड्डाने लकड़ीको, सर्वतः आरे आबुथी चारों ओरसे, विष्यन्दयति युवरादे छे विष्यन्दित करती

११. प्रणुद्यते—प्रसिष्यते (क)

१२. तथा स्निग्धस्य वै दोषान् स्वेदो विष्यन्दयेत् स्थिरान्—  
तथा स्निग्धस्य औषधं दोषान् हरति सर्वतः (घ.)

है, तथा तेम उसी प्रकार, स्वेदः वै स्वेदन स्वेदन, स्निग्धस्य स्निग्ध भुञ्ज्यमाना स्निग्ध पुरुषके, स्थिरान् स्थिर स्थिर, दोषान् दोषान् दोषोको, विष्यन्दयेत् गह्वर कडे से विष्यन्दित करता है ॥ १२ ॥

12. As fire makes the water in moist wood to trickle out from every pore, similarly sudation causes the fixed toxic matter to melt and flow out in a person who has been previously oiled.

क्लिष्टं वासो यथोत्क्लेश्य मलः संशोध्यतेऽम्भसा ।  
स्नेहस्वेदैस्तथोत्क्लेश्य शोध्यते शोधनैर्मलः ॥१३॥

यथा ते प्रभाण्डे जिस प्रकार, क्लिष्टम् भेदा मूले, वासः पञ्चमाथी वस्त्रसे, उत्क्लेश्य भेदने शिथिल करी मूलको ढीलाकर, अम्भसा पाणीथी जलसे, मलः ते भेदने वह मूल, संशोध्यते धोई नाभवाभा आवे से हटाया जाता है, तथा ते प्रभाण्डे उसी प्रकार, स्नेह-स्वेदः स्नेहन तथा स्वेदनथी स्नेहन तथा स्वेदनद्वारा, उत्क्लेश्य यथायमान करी प्रचलित करके, शोधनैः शोधन औषधाधी शोधनोद्वारा, मलः भुञ्ज्य मल, शोध्यते शोधन करवाभा आवे से दूर किया जाता है ॥ १३ ॥

13. Just as dirt in a dirty cloth is separated and washed out by water, so, by oleation and sudation, the toxic matter in the body is segregated and washed out by purgation.

१३. क्लिष्टं वासो यथोत्क्लेश्य मलः संशोध्यतेऽम्भसा-क्षारोत्क्लेश्ये यथा वस्त्रे मलः शुध्यति वारिणा (ग.)

१३. क्लिष्टं वासो यथोत्क्लेश्य-क्षारोत्क्लेश्ये यथा वस्त्रे (घ. त. घ.)

१३. क्लिष्टं वासो...शोधनैर्मलः ॥-क्षारोत्क्लेश्ये यथा वस्त्रे मलः शुध्यति वारिणा । स्नेहस्वेदैस्तथोत्क्लेश्यो दोषः शुध्यति शोधनैः (घ. क.)

अजीर्णस्य संशोवनौषधस्य विज्ञानि —

अजीर्णे वर्धते ग्लानिर्विविक्कन्धश्चापि जायते ।  
पीतं संशोधनं चैव विपरीतं प्रवर्तते ॥१४॥

अजीर्णे आधेयुं पन्था पहेला आहारके बिना पचे ही, ग्लानिः पीधेला संशोधन औषधधी ग्लानि पिये हुए संशोधन औषधसे ग्लानि, वर्धने पड़े से बढ़ती है, विक्कन्धः च अपि अने कण्ठस्थित पक्षु और कवचियत मी, जायते भाय से होती है, पीतम् अने पीधेयु एवं पी हुई, संशोधनम् च एव संशोधन औषध संशोधन औषध, विपरीतम् विपरीत भार्जे विपरीत मार्गसे, प्रवर्तते प्रवर्तते से प्रवृत्त होती है ॥ १४ ॥

14. If the purificatory dose is taken when the previous meal is undigested, there will occur depression and constipation, and the medication acts in a wrong way.

मात्रावतः संशोवनौषधस्य गुणः —

अल्पमात्रं महावेगं बहुदोषहरं सुखम् ।  
लघुपाकं सुखाखादं प्रीणनं व्याधिनाशनम् ॥१५॥  
अधिकारि च व्यापत्तौ नातिग्लानिकरं च यत् ।  
गन्धवर्णरसोपेतं विद्यान्मात्रावदौषधम् ॥१६॥

यत् ते जो औषधम् औषध औषध, अल्पमात्रम् थोड़ी मात्राभा थोड़ी मात्रामें मी, महावेगम् महान वेगवाणुं महा वेगवान, बहुदोषहरम् गहु दोषाने हरनार बहुत दोष हरनेवाली, सुखम् सुखेथी धर्ध शिथिल येपुं सुखपूर्वक जाई जा सके ऐसी, लघुपाकम् पयवाभा लघुपाक जल्दी पचनेवाली, सुखाखादम् सुख-कारक स्वादवाणुं सुखकारक स्वादवाली, प्रीणनम् प्रसन्नता-कारक प्रसन्नताको उत्पन्न करनेवाली, व्याधिनाशनम् रोगनाशक रोगनाशक, व्यापत्तौ च अने व्यापत्तिभा पक्षु और व्यापत्तिमें मी, अधिकारि थोड़ा विह्वल करनार बोल विकार करनेवाली, नातिग्लानिकरम् गहु ग्लानि न करनार अति ग्लानि न करनेवाली,

१५. अधिकारि च व्यापत्तौ-अधिकारिणां च (घ.)

१५. च व्यापत्तौ-विपत्तौ च (घ.)

ગન્ધવર્ણરસ- અને જે ગન્ધ, વર્ણ તથા રસથી ગન્ધ, વર્ણ તથા રસે, ઉપેત્ત્વ ચ યુક્ત હોય યુક્ત હો, માત્રાવત્ તેને યોગ્ય માત્રાવાળું કહે ઉચિત માત્રાવાળી, વિચાર અણુવું જાને ॥ ૧૫-૧૬ ॥

15-16. That should be known as the proper medication which requires to be taken in small dose, which is quick in action and is curative of even an excessive degree of morbidity, which is easy to take, which is light in digestion, palatable, pleasing curative of the particular disease not harmful even if complications arise, nor very depressant and is possessed of the most agreeable smell, color and taste.

કથંભૂતમના આશય વિશેષ—

વિધૂય માનસાન્ દોષાન્ કામાદીનશુભોદયાન્ ।  
एकाग्रमनसा पीतं सम्यग्योगाय कल्पते ॥૧૭॥

અશુભોદયાન્ અશુભ કરનાર અશુભ ફલકો દેને-  
વાલે, કામાદીન્ કામાદિક કામાદિ, માનસાન્ માનસિક  
માનસ, દોષાન્ દોષોને દોષોંકો, વિધૂય દૂર કરી દટા-  
કર, ઇકાગ્રમનસા એકાગ્ર મનથી ઇકાગ્ર મનસે, પીતમ્  
પીધેલું ઔષધ પી હુઈ ઔષધ, સમ્યગ્યોગાય યોગ્યતાનો  
સમ્યગ્યોગ કરવા માટે અપના સમ્યગ્યોગ કરનેકે લિપ્ત,  
કલ્પતે સમર્થ થાય છે સમર્થ હોતો હૈ ॥ ૧૭ ॥

17. If a person after cleansing his mind of its impurities like passion and other inauspicious sentiments and concentrating his mind on the treatment, takes this dose, it brings about the most desirable results.

શ્રો વમન પાતા વિરેચન પાતા ચ કિં ભુજીત?—

નરઃ શ્ચો વમનં પાતા ભુજીત કફવર્ધનમ્ ।  
સુજરં દ્રવમૂષિષ્ઠ, લઘ્વશીતં વિરેચનમ્ ॥૧૮॥

૧૭ કામાદીનશુભોદયાન્—કામાદીનશુભોદયાન્ (ક. વ. ર. જ. ડ.)

૧૮. કથંભૂતમના—કથંભૂતમ (ક. જ. ર. જ. વ.)

उत्क्रिष्टाल्पकफत्वेन क्षिप्रं दोषाः स्रवन्ति हि ।

શ્રઃ આવતી કાદે અનેવાલે દિનમેં. વમનમ્ વમન  
વમન, પાતા નરઃ જે મનુષ્યને પીવું હોય પીનેવાલા  
મનુષ્ય, કફવર્ધનમ્ તેણે કફ વધારનાર કફવર્ધક,  
સુજરત્ તરત પચી અથ ઐવું ક્ષીપ્ર પચેવાલા, દ્રવ-  
મૂષિષ્ઠ અને મોટે ભાગે દ્રવવાળું ભોજન દ્રવપ્રાય  
મોજન, સુજીત ખાવું જાવું. વિરેચનમ્ અને આવતી  
કાદે વિરેચન જે મનુષ્યને પીવું હોય તેણે ઔર અને  
વાલે દિનમેં વિરેચન પીનેવાલા મનુષ્ય, લઘુ હલકું દલકા,  
અશીતલ્ અને ઉષ્ણ ભોજન ખાવું ઔર ઉષ્ણ મોજન  
જાવું, ઉત્ક્રિષ્ટ-અલ્પ કફત્વેન કફ ઉત્ક્રિષ્ટ તથા અલ્પ  
હોવાથી કફકે ઉત્ક્રિષ્ટ તથા અલ્પ હોને પર, દોષાઃ  
દોષો દોષ, ક્ષિપ્રમ્ તરત જલ્દી. સ્રવન્તિ હિ સર્વી  
અથ છે નિકલ જાતે હૈ ॥ ૧૮ ॥

18-18½ The person who is going to have emesis the next day, should take diet which is easily digestible, mostly liquid and promotive of mucus secretion; and the person who is going to take purgation, should eat light and warm articles of diet. Owing to increase of mucus in the former case and diminution of mucus in the latter, the morbid humors quickly flow out

સમ્યક્ શુદ્ધસ્ય લિંગાનિ—

પીતૌષધસ્ય તુ મિષક્ શુદ્ધિલિંગાનિ લક્ષયેત્ ॥૧૯॥  
ऊर्ध्वं कफानुगे पित्ते विट्पित्तेऽनुकफे त्वचः ।  
हतदोषं वदेत् कार्यदौर्बल्ये चेत् सलाघवे ॥૨૦॥

મિષક્ તુ વૈષે વૈષ, પીતૌષધસ્ય ઔષધ પીધેલ  
મનુષ્યના ઔષધ પિયે હુઈ મનુષ્યકે. શુદ્ધિલિંગાનિ  
શુદ્ધિના લક્ષણ શુદ્ધિકે લક્ષણ, લક્ષયેત્ એવાં ધ્યાનસે  
દેશે, પિત્તે કફાનુગે એ પિત્ત કફની પાછળ નીકળે. યદિ  
પિત્ત કફકે બાદ નિકલે, સલાઘવે અને લાઘવસહિત

૨૦. પિત્તે વિટ્પિત્તેઽનુકફે પિત્તે વિ વિજાનુકફે (વ.)

૨૧. કાર્યદૌર્બલ્યે ચેત્ સલાઘવે—કાર્યદૌર્બલ્ય ચેત્

સલાઘવં (વ.)

और लाघवसहित, काश्चिदौर्बल्ये कृशता तथा दुर्बलता होय तो, कृशता तथा दुर्बलता हों तो, ऊर्ध्वं जिघ्र्सागने ऊर्ध्वभागको, कफे विट्पित्ते जनु तेभ्य ऊर्ध्वं भग तथा पित्तनी पाछण नीकणे अने लाघवसहित कृशता तथा दुर्बलता होय तो। एवं कफ पित्तके बाद निकले और लाघवसहित कृशता तथा दुर्बलता हों तो, जघः नीचेना भागने अधोभागको, हृत्तदोषम् दोष-रहित दोषरहित, वदेत् उद्देवो कहे ॥ १९-२० ॥

19-20. In a person who has taken the purificatory dose, the physician should keep observing the development of the signs of complete purification. In the case of emesis, when bile appears after the mucus in the vomitus and in the case of purgation, mucus appears after feces and bile, and there occur weakness, debility and lightness of the body, it should be considered the stage of complete elimination of morbid matter.

शुद्धिलक्षणदर्शनेऽपि सावशेषोषवे वमनोपदेशः—

वामयेत्तु ततः शेषमौषधं न त्वलाघवे ।  
स्तेमित्येऽनिलसङ्गे च निरुद्धारेऽपि वामयेत् ॥२१॥  
आलाघवात्तनुत्वाच्च कफस्यापत् परं भवेत् ।

ततः पछी बाद. शेषम् आडीनां शेष, औषधम् औषधनी औषध, तु वामयेत् उद्धटी करावी नाभवी वमनसे निकाल देवे, जलाघवे तु पक्ष्मे ओ धधुता न आवी होय तो। किन्तु लघुता न हो तो, न उद्धटी न कराववी वमन न करावे, स्तेमित्येऽनिलसङ्गे च अने वायुरोधा और वायुके अवरोधमें, निरुद्धारे तेभ्य औडकार न आवता होय तो। एवं उद्धारके न होने पर, अपि पक्ष्मी लाघवात् शरीरनी धधुता थाय शरीरमें लघुता हो जाये, कफस्य तनुत्वात् च

२१३. आलाघवात्तनुत्वाच्च कफस्यापत् परं भवेत्—आलाघवा-

दणुत्वाच्च कफस्यापिभूरं भवेत् (क.)

॥ तनुत्वात्—अणुत्वात् (कं. फ.)

अने उर्ध्वं पातणे। पडे और कफ पतल हो जावे, ना त्यां सुधी तब तक, वामयेत् वमन करावुं वमन करावे, परम् ओ पछी वमन करावे तो इसके पचाव वमन करानेसे, आपत् विकार तेभ्य उपपन्न विकार एवं उपपन्न, भवेत् भाय छे होते हैं ॥ २१३ ॥

21-21½. After this stage if any part of the dose is left in the body, it should be eliminated by emesis. But if lightness has not developed in the body, it should not be done. In case there are stiffness and accumulation of vata, the patient should be made to vomit even if there occur no eructations. Emesis should be done till there occur lightness of the body and thinning of the mucus. If carried further, it will be attended with great disaster

यथोक्तवमनफलम्, सम्यगवमितस्य च पचात्कर्म—

वमिते वर्धते वह्निः शमं दोषा व्रजन्ति हि ॥२२॥  
वमितं लङ्घयेत् सम्यग्जीर्णलिङ्गान्यलक्षयन् ।  
तानि दृष्ट्वा तु पेयादिकम् कुर्याच्च लङ्घनम् ॥२३॥

वमिते वमन थर्ध जातां सम्यक् वमन होने पर, वह्निः अह्नाभि अग्नि, वर्धते वर्ध छे बढ़ती है, दोषाः अने दोषा और दोष, शमम् शांत शान्त, व्रजन्ति हि थाय छे होते हैं, सम्यक् ओ सरणी रीते लङ्घयेत्, जीर्णलिङ्गानि शुद्धं यथेष्ट औषधनी वक्ष्मस् जीर्णके लक्षण, जलक्षयम् न देयाय त्यां सुधी न पीने पडां तक, वमितम् वमन करेव अनुपपन्ने वमन करावे दुपपन्ने, लङ्घयेत् वमन करावुं ओछि ओ लंघन करावे, तानि दृष्ट्वा तु पक्ष्मे ओ ते वक्ष्मस् देयाय तो उनके पीने पर, पेयादिकम् पेयादिकम् पेयादि संवर्जनकम्, कुर्यात् करावे, लङ्घनम् न वमन करावुं नहि नहान न करावे ॥ २२-२३ ॥

२३ जीर्णलिङ्गान्यलक्षयन्—जीर्णलिङ्गानि लङ्घयेत् (कं.)



22-23. Emesis promotes the gastric fire and the humors get sedated. The person who has vomited should be starved as long as the signs of the full digestion of the medication are not seen; and on seeing these signs, the dietetic regimen of gruels should be carried out and the starvation should be stopped.

પેયાદિક્રમાચરણે હેતુઃ—

સંશોધનાભ્યાં શુદ્ધસ્ય હૃતદોષસ્ય લેહિનઃ ।  
યાત્યગ્નિર્મન્દતાં તસ્યાત્ કમં પેયાદિમાચરેત્ ॥૨૩॥

સંશોધનાભ્યામ્ સંશોધનથી સંશોધનને, શુદ્ધસ્ય શુદ્ધ થયેલ શુદ્ધ હૃદય, હૃતદોષસ્ય તેમજ તેના દોષ દૂરી લેવામાં આવ્યા છે તેના એવં દોષોને નિકલ જાનેસે, લેહિનઃ પુરુષનો પુરુષકી, અગ્નિઃ અગ્નિ અગ્નિ, મન્દતાત્ મંદ મન્દ, યાતિ થઈ બીય છે હો જાતી હૈ, તસ્યાત્ માટે અતઃ, પેયાદિઃ પેયાદિ પેયાદિ, કમન્ સંસર્જનકમ સંસર્જનકમ, આચરેત્ કરાવેલો બેઈએ કરાવે ॥ ૨૪ ॥

24. The gastric fire in the body of the person who has been cleansed by the purificatory procedures and freed from all morbid matter, becomes weakened. Therefore, a course of dietetic regimen of thin gruels etc., should be carried out.

તર્પણાદિક્રમઃ કુત્ર યોજ્યઃ—

કફપિત્તે વિશુદ્ધેઽયં મધ્યે વાતપૈત્તિકે ।  
તર્પણાદિક્રમં કુર્યાત્ પેયાઽભિશ્યન્દયેદિ તાન્ ॥૨૫॥

કફપિત્તે કફ અને પિત્તની કફ જૌર પિત્તકી, અભ્યમ્ અભ્ય અભ્ય, વિશુદ્ધે શુદ્ધિ થઈ હોય તે। શુદ્ધિ હોને

પર મધ્યે મધ્યપાન કરનારને કફ પીનેવાલોને, વાત-પૈત્તિકે અને વાતપિત્તના રોગીને જૌર વાતપૈત્તિક રોગીને, તર્પણાદિક્રમમ્ તર્પણાદિ કમ તર્પણાદિ કમ, કુર્યાત્ કરાવેલો કરાવે, હિ પેયા કરાવે છે પેયા કયોઈ પેયા, તાન્ તેઓને ઝનકો, અભિશ્યન્દયેદિ કિલ્લ કરે છે અભિશ્યન્દિત કર દેતી હૈ ॥ ૨૫ ॥

25. The physician should prescribe the dietetic regimen of demulcent drinks etc., in conditions where kapha and pitta are partially cleansed and in case of alcoholics or persons with vata-cum-pitta habitus; the thin gruels will have a liquefacient effect on their body.

જીર્ણૌષધસ્ય લિંગાનિ—

અનુલોમોઽનિલઃ સ્વાસ્થ્યં શુચૃષ્ણોર્જો મનસ્વિતા ।  
લઘુત્વમિન્દ્રિયોદ્ધારશુદ્ધિર્જીર્ણૌષધાકૃતિઃ ॥૨૬॥

અનિલઃ વાયુ વાયુકા, અનુલોમઃ અનુલોમ હોવો અનુલોમ હોના, સ્વાસ્થ્યમ્ સ્વસ્થતા સ્વસ્થતા, શુચૃષ્ણ-શુચ-તરસ મૂલ-પ્યાસ લગના, ઝર્જઃ ઝર્જાદ ઉત્પાદ, મન-સ્વિતા મનસ્વિતા મનસ્વિતા, લઘુત્વમ્ શરીરમાં લઘુતા લેહમે લઘુતા, ઇન્દ્રિય-ઇન્દ્રિયો ઇન્દ્રિયો, ઉદ્ધાર-શુદ્ધિઃ તથા ઔડકારની શુદ્ધિ તથા ઉદ્ધારકી શુદ્ધિ, જીર્ણૌષધ-એ પચી ગયેલ ઔષધનાં જે જીર્ણૌષધકે, આકૃતિઃ લક્ષણ છે લક્ષણ હૈ ॥ ૨૬ ॥

26. Regular peristaltic movement of vata, a sense of well being, hunger, thirst, good spirits, self confidence, lightness, clarity of the senses and of the eructations are the signs that indicate that the dose of medication has been completely digested.



અજીર્ણોષધસ્ય લિઙ્ગાનિ—

ક્રમો દાહોઽક્ષસદનં અમો મૂર્છાં શિરોરુજા ।  
અરતિર્બલહાનિચ સાવશેવૌષધાકૃતિઃ ॥૨૭॥

ક્રમઃ આઠ ક્રમ, દાહઃ દાહ દાહ, અક્ષસદનમ્ અગ્નિની શિથિલતા અંપસાદ, અમઃ ભૂમ અમ, મૂર્છાં મૂર્છા, શિરોરુજા શિરપીડા સિરદર્દ, અરતિઃ ઐથેની વેચેની, બલહાનિઃ ચ અતે બલહાનિ તૈર બલહાનિ, સાવશેષ- એ પથવામાં બાકી રહેલા એ પચનેમેં અવશિષ્ટ, ઔષધ- ઔષધન ઔષધકે, આકૃતિઃ લક્ષણ છે લક્ષણ હૈં ॥૨૭॥

27. Exhaustion, burning, asthenia, giddiness, fainting, headache, malaise and loss of vitality are the signs indicating that some part of medication is still left undigested.

કથંભૂતૌષધં વ્યાપચયે?—

અકાલેઽસ્પાતિમાત્રં ચ પુરાણં ન ચ ભાવિતમ્ ।  
અસમ્યક્સંસ્કૃતં ચૈવ વ્યાપચયેતૌષધં દ્રુતમ્ ॥૨૮॥

અકાલે અધોગ્ય કાળે લીધેલું અયોગ્ય સમયમેં લે હુરં, અસ્પાતિમાત્રમ્ ચ નાની કે મોટી માત્રાવાળું અત્પ યા અતિ માત્રાવાળી, પુરાણમ્ બુધું પુરાણી, ન ભાવિતમ્ ચ ભાવના વગરનું માવનારહિત, અસમ્યક્ સંસ્કૃતમ્ ચ જુવ અને યોગ્ય રીતે સંસ્કાર ન પામેલું ઔર સમ્યક્ રૂપમે સંસ્કૃત ન કી હુરં, ઔષધમ્ ઔષધ ઔષધ, દ્રુતમ્ બલદી કીધ, વ્યાપચયેત વ્યાપતિ કરે છે વ્યાપત્તિકારક હોતી હૈ ॥ ૨૮ ॥

28. Medication taken at the wrong time or in underdose or over dose, or medication that is very old or which is

not impregnated or not well prepared will soon produce complications.

વમનવિરેવનયોર્દશ વ્યાપદઃ—

આધ્માનં પરિકર્તિચ્ચ સાવો દદ્વાત્રયોર્મદઃ ।  
જીવાદાનં સચિન્નશઃ આત્મઃ સોપદ્રવઃ ક્રમઃ ॥૨૯॥  
અયોગાદતિયોગાચ્ચ દશૈતા વ્યાપદો મતાઃ ।  
પ્રેચ્યભૈવજ્યવૈદ્યાનાં વૈગુણ્યાદાતુરસ્ય ચ ॥૩૦॥

આધ્માનમ્ આધ્માન આધ્માન, પરિકર્તિઃ પરિકર્તિકા પરિકર્તિકા, સાવઃ આર સાવ, દદ્વાત્રયોર્મદઃ પ્રદઃ હૈમદ, અંગઅદ દદ્વાત્ર- અંગપ્રદ, જીવાદાનમ્ જીવાદાન જીવાદાન, સચિન્નશઃ વિભન્ન વિભન્ન, ક્રમઃ સ્તંભ ક્રમ, સોપદ્રવઃ ઉપદ્રવ ઉપદ્રવ, ક્રમઃ ચ અને કલમ ઔર ક્રમ, પૃતાઃ એ એ, દશ દશ વચ, વ્યાપદઃ વ્યાપત વ્યાપત, અયોગાત્ અયોગ અયોગ, અતિયોગાત્ ચ અને અતિયોગથી ઔર અતિયોગમે, પ્રેચ્ય- તથા પરિચારક તથા પરિચારક, ભૈવજ્ય- ઔષધ ઔષધ વૈદ્યાનામ્ વૈદ્ય વૈદ્ય, આતુરસ્ય અને રોગીની ઔર રોગીની, વૈગુણ્યાત્ ચ વિશુદ્ધતાને લઈ વિગુણતાકે કારણ, મતાઃ માનેલી છે હોલી હૈં ॥ ૨૯-૩૦ ॥

29-30. Distension of abdomen, gripping pain, excessive discharge, cardiac spasm and spasm of the limbs, discharge of blood, improper action of the medication, rigidity, serious affections and exhaustion—these are considered to be the ten complications due to under-action or over-action of the drug or due to the defects of the attendant, the medication, the physician or the patient.

વમનવિરેવનયોર્માતિયોગાધોગાનાં લક્ષણમ્—

યોગઃ સમ્યક્પ્રવૃત્તિઃ સ્યાદતિયોગોઽતિવર્તનમ્ ।  
અયોગઃ પ્રાતિહોમ્યેન ન ચાલ્યં વા પ્રવર્તનમ્ ॥૩૧॥

સમ્યક્- સંશોધનની સમ્યક્ સંશોધનની સમ્યક્, પ્રવૃત્તિઃ પ્રવૃત્તિ પ્રવૃત્તિ, યોગઃ યોગ હહેવાય છે યોગ કહાતા હૈ, અતિવર્તનમ્ અતિ પ્રદીપ્ત અતિ પ્રવૃત્તિ,

૨૭. દાહોઽક્ષસદનં દાહોઽક્ષસદનં (ક.)

૨. દાહોઽક્ષસદનં અમો મૂર્છાં શિરોરુજા—દાહોઽક્ષસદનં અમો મૂર્છાં શિરોરુજા (ક.)

૨૮. દ્રુતમ્—દ્રુતમ્ (૧. ૬ ૫)

અતિયોગઃ અતિયોગ કહેવાય છે અતિયોગ કહાતા છે, પ્રાતિકોમ્બેન અને વિપરીતપણાથી પ્રવૃત્તિ ઔર પ્રતિ-લોમતાએ પ્રવૃત્તિ, ન ચ અલ્પજ્વા બિલકુલ નહિ પ્રવૃત્તિ અથવા થોડા પ્રમાણમાં સર્વથા નહીં પ્રવૃત્તિ યા અલ્પ, પ્રવર્તનમ્ પ્રવૃત્તિ પ્રવૃત્તિ, અયોગઃ અયોગ અયોગ, સ્વાત્ કહેવાય છે કહાતા છે ॥ ૩૧ ॥

31. Successful action is discharge in right proportion. If there is excessive discharge, it signifies over-action. And unsuccessful action is that where there is contrary action or there is no discharge or scanty discharge.

સ્વેષ્મોત્ક્રિષ્ટેન દુર્ગન્ધમહદ્યમતિ વા વહુ ।  
વિરેચનમર્જીને ચ પીતમૂર્ધ્વે પ્રવર્તે ॥૩૨॥

સ્વેષ્મોત્ક્રિષ્ટેન કહેના ઉત્કેશવાળા મનુષ્યે કફકે ઉત્કેશયુક્ત પુરવને, પીતમ્ પીધેલું પી હુઈ, અતિદુર્ગન્ધમ્ અતિ દુર્ગન્ધવાળું અતિ દુર્ગન્ધયુક્ત, અતિ મહદ્યમ્ અતિશય મહદ્યમ્ હદયકે લિપ્ત અત્યન્ત અપ્રિય, વહુ વા અધિક માત્રાવાળું અધિક માત્રાવાળી, મર્જીને ચ અથવા અશુભ્માં પીધેલું અથવા અર્જીને પી હુઈ, વિરેચનમ્ વિરેચન ઔષધ વિરેચન ઔષધ, ઉર્ધ્વમ્ ચ ઉર્ધ્વગામી કપરકે માર્ગસે, પ્રવર્તે પ્રવૃત્ત થાય છે પ્રવૃત્તિ થોતી છે ॥૩૨॥

32. Purgative medication in a condition, where the kapha is aroused, would act upwards, i. e. as an emetic if the medicine is bad in odor or unpalatable or is in a big dose and taken before the previous meal is digested.

શુષાર્તમૃદુકોષ્ઠાભ્યાં સ્વરુપોત્ક્રિષ્ટકફેન વા ।  
તીક્ષ્ણં પીતં સ્થિતં શુભ્યં વમનં સ્યાદ્વિરેચનમ્ ॥૩૩॥

૩૩. સ્વરુપોત્ક્રિષ્ટકફેન વા-પીતં સ્વરુપકફેન વા (દ.)

„ તીક્ષ્ણં પીતં સ્થિતં શુભ્યં વમનં સ્યાદ્વિરેચનમ્-તીક્ષ્ણં સ્થિરં સંશુભિતં વમનં સ્યાદ્વિરેચનમ્ (અ.)

„ યત્કલ્પોક્તનન્તરમ્-

અયોગે તત્ત્વ વચ્ચં સમાસેનાધિવીધને ।

સ્તવધિકઃ પાઠઃ (દ દ.) પુસ્તકનો: ।

શુષાર્ત- ભૂખથી પીડિત શુષાર્ત, મૃદુકોષ્ઠાભ્યામ્ મૃદુ કોષ્ઠાવાળા મૃદુ કોષ્ઠ, સ્વરુપ- અથવા થોડાક અથવા વહુત થોડે, ઉત્ક્રિષ્ટ-કફેન કહેના ઉત્કેશવાળા મનુષ્યે કફકે ઉત્કેશવાળે મનુષ્યને, પીતમ્ પીધેલું પી હુઈ, તીક્ષ્ણમ્ તીક્ષ્ણ તીક્ષ્ણ, શુભ્યમ્ અને અંદર ક્ષોભ પામી રોકાઈ રહેલું ઔર અન્દર શુભ્ય હોકર કફી હુઈ, વમનમ્ વમન ઔષધ વમન ઔષધ, વિરેચનમ્ વિરેચન ઔષધ વિરેચન ઔષધ, સ્વાત્ અતિ અલ્પ છે વન જાતી છે ॥ ૩૩ ॥

33. The emetic dose which is taken in a condition when a person is afflicted with hunger, or where the person is of the soft-bowelled type or where kapha in the stomach is poorly aroused or where medicine is strong or where the medicine taken becomes stagnant in the stomach and causes agitation, acts as a purgative.

પ્રાતિલોમ્યેન દોષાણાં હરણાત્તે દ્યક્ષ્ણશઃ ।  
અયોગસંજ્ઞે, કુચ્છેન યાતિ દોષો નવાડ્યશઃ ॥૩૪॥

પ્રાતિલોમ્યેન હિ વિપરીત માર્ગથી પ્રતિલોમતાએ, અદ્યક્ષ્ણશઃ તથા અસંપૂર્ણપણે તથા અપૂર્ણતા, દોષાણામ્ દોષોનું દોષોકે, હરણાત્ હરણ કરવાથી હરણ કરનેકે કારણ, તે અયોગસંજ્ઞે તેઓની અયોગ સંજ્ઞા થાય છે એ અયોગ નામસે કહે જાતે હૈ, દોષઃ અયોગમાં દોષ અયોગમે દોષ, કુચ્છેન કાં તે મુશ્કેલીથી વફો કઠીનાઈસે, યાતિ નીકળે છે નિકલતા છે, યા ન વા કાં તે નીકળતો નથી યા નહીં નિકલતા, અલ્પશઃ અથવા અલ્પ પ્રમાણમાં નીકળે છે અથવા યોગ યોગ નિકલતા છે ॥ ૩૪ ॥

34. These conditions where the actions of drugs are reversed and consequently elimination is partial, are known as conditions of unsuccessful

૩૪. યાતિ દોષો નવાડ્યશઃ-અદા (ન વા) ગચ્છતિ

ચાર્ણશઃ (ક. પ.)

action. It means that the morbid matter is either eliminated with difficulty, or not at all, or only slightly.

पीतैष्यौषधेश्चुद्धस्य कर्तव्यम्—

पीतौषधो न शुद्धश्चेज्जीर्णं तस्मिन् पुनः पिबेत् ।  
औषधं न त्वजीर्णैऽप्युद्धयं स्यादतियोगतः ॥३५॥

पीतौषधः औषधं पीयुं होय जता औषधके पीनेसे, शुद्धः शुद्धिं शुद्धि, न चेत् न थाय ते। न हो तो, तस्मिन् ते औषध उसके, जीर्णं पथी जता जीर्ण होने पर, पुनः इरीथी फिर, पिबेत् औषध पीयुं औषध पीवे, अजीर्णं तु पथु पथु न होय तेना पर किन्तु जीर्ण न हुआ हो तो, अन्यत् इरी दुबारा, औषधम् औषध औषध, न पीयुं न ओर्धये न पीवे, अतियोगतः ऊरक्षु के अतियोगने। क्योंकि अतियोगका, मयम् अथ मय, स्यात् रहे छे रहता है ॥ ३५ ॥

35. If after taking the dose, the body is not cleansed and the dose is fully digested, he may take a second dose. If the second dose is taken before the first is fully digested, there may be over-action.

कोष्ठस्य गुरुतां ज्ञात्वा लघुत्वं बलमेव च ।

अयोगे मृदु वा दद्यादौषधं तीक्ष्णमेव वा ॥३६॥

कोष्ठस्य केहानी कोष्ठकी, गुरुताम् गुरुता गुरुता, लघुत्वम् लघुता लघुता, बलम् च एव तथा जग और बलको, ज्ञात्वा जगणी अर्थने जानकर, अयोगे अयोगे अयोग होने पर, मृदु वा मृदु मृदु, तीक्ष्णम् एव वा अथवा तीक्ष्ण अथवा तीक्ष्ण, औषधम् औषध औषध, दद्यात् आपुन देवे ॥ ३६ ॥

36. In case of imperfect action of the dose, the physician should give a strong or mild second dose, after ascertaining whether the person is of the hard-bowelled or the soft-bowelled type and also his vitality.

दुर्बलने वमनं क्राकोष्ठे विरेचनं च न देयम्—

वमनं न तु दुर्बलं दुष्कोष्ठं न विरेचनम् ।

पाययेतौषधं भूयो हन्यात् पीतं पुनर्हि तौ ॥३७॥

दुर्बलम् तु जेने डेवरी न थती होय तेने जिने वमन न होता हो उसे, वमनम् वमन वमन, औषधम् औषध औषध, मूयः इरी पुनः, न पाययेत् पायुं न ओर्धये न पिलावे, दुष्कोष्ठम् अने जेने केहो केहो होय तेने और कठिन कोष्ठान्ते, विरेचनम् विरेचन औषध विरेचन औषध, न इरी पायुं न ओर्धये पुनः न पिलावे, हि पीतम् ऊरक्षु के पीनामा आदेवा ते औषधो क्योंकि पी हुई वे औषध, तौ पुनः ते जेनेने उन दोनोंको, हन्यात् हन्या नाने छे मार डालती है ॥ ३७ ॥

37. The physician should not give a second dose of emesis to one who is a bad subject for emesis, or a second dose of purgation should not be given to a hard-bowelled person. If they are so given, they will surely kill the patient.

अयोगजन्या व्यापदः—

अस्त्रिग्धास्त्रिग्धदेहस्य रुक्क्षस्यानवमौषधम् ।

दोषानुत्क्रिय निर्हर्तुमशकं जनयेद्भवान् ॥३८॥

विभ्रंशं श्वयथुं हिकां तमसो दर्शनं भृशम् ।

पिण्डकोद्वेष्टनं कण्डूमूर्धोः साधं विवर्णताम् ॥३९॥

अनवम् अनुराणी, औषधम् औषध औषध, अस्त्रिग्ध-अस्त्रिग्धदेहस्य स्नेहन अने स्नेहन न करेव शरीरवाला शरीरको बिना स्निग्ध स्निग्ध क्रिये हुए, रुक्क्षस्य रुक्ष पुरुषने रुक्ष पुरुषके, दोषान् देषोने दोषोंको, उत्क्रिय उत्क्रिय इरी उत्क्रिय करके, निर्हर्तुम् गह्रर केहना निकालनेमें, अशकम् असमर्थ अर्थ असक होकर, विभ्रंशम् विभ्रंश विभ्रंश, श्वयथुम् श्वयथु सून, हिकाम् हेडडी हिका, भृशम् भृश अत्यन्त, तमसः

३८. दुर्बलं दुष्कोष्ठं न-दुर्बलं मृदुकोष्ठे न-)

३९. दुष्कोष्ठं विरेचनम्-क्राकोष्ठं विरेचनम् (फ.)

३९. भृशम्-वृशम् (प.)

अधिकार अंधकारका, दर्शनम् हेभावे दर्शन, पिण्डिका-  
पिंडीभोभा पिण्डिलिकोका, उद्वेहनम् ओष्ठो अथवा  
उद्वेहन, कण्डूम् अथवाण खुज्जी, ऊर्ध्वोः ऊर्ध्वोभोनी दोनों  
ऊरुकी, सादम् शिथिलता शिथिलता, विवर्णताम् अने  
विवर्णता और विवर्णता, गदगम् ओ रोगोने इन रोगोंको,  
जनयेत् उत्पन्न करे छे उत्पन्न करती है ॥ ३८-३९ ॥

38 39. The purificatory dose given  
to a person who is not prepared with  
preliminary oleation and sudation  
procedures, or to one who is dehyd-  
rated, or if the drug has become too old,  
it will only rouse the morbid matter  
and will be incapable of eliminating  
it; such a dose of medication causes  
many diseases; wrongful action, edema,  
hiccup, excessive faintness cramps in  
the calf muscles, pruritus, asthenia of  
the thigh and discoloration

स्निग्धस्निग्धस्य चात्स्वरूपं दीप्ताग्नेर्जीर्णमौषधम् ।  
शीतैर्वा स्तम्भयामे वा दोषानुत्क्रिय नाहरेत् ॥४०॥  
तानेव जनयेद्रोगानयोगः सर्व एव सः ।  
विज्ञाय मतिमांस्तत्र यथोक्तं कारयेत् क्रियाम् ॥४१॥

स्निग्ध- स्नेहन स्निग्ध, स्निग्धस्य अने स्नेहन करेव  
और स्निग्ध, दीप्ताग्नेः च तथा प्रदीप्त अग्निवाणा  
भुज्जने तथा दीप्ताग्नि पुरुषको, अत्यवयव अति अल्प  
भावाभा आपेक्ष अति अल्प मात्रामें दी हुई, औषधम्  
औषध औषध, जीर्णम् पथी अर्था पच जानेसे, शीतैः  
वा अथवा शीत द्रव्योथी अथवा शीत द्रव्योंसे, स्तम्भय  
स्तम्भय अर्था स्तम्भ हो जानेसे, मामे वा अथवा दोष  
पाप्मा वगैर औषध पीवाभा आवता अथवा अपक्व  
दोषमें औषध पीनेसे, दोषान् ते दोषोभो वह दोषोंका,  
उत्क्रिय उत्क्रिय करे छे परंतु पथी उत्क्रिय करती है  
परन्तु इसके बाद, न नाहरेत् तेओने अहार छोड़ी

४०. स्तम्भयामे वा-स्तम्भयेत् मामे (इ.)

.. नाहरेत्-नापेक्षे (इ. क.)

शक्ति नहीं उनको निकाल नहीं सकती, तब एव  
अने ते ओ और उन्हीं, विषंशरोगान् विषंश वजरे  
रोगोने विषंश आदि रोगोंको, जनयेत् उत्पन्न करे छे  
उत्पन्न करती है, सर्वः सः ते अथो यह सब, अयोगः  
अयोग अयोग, एव ओ छे ही है, विज्ञाय ओ अर्थोने  
इसे जानकर, मतिमान् बुद्धिमान् नैवे बुद्धिमान् वेष्ट,  
तत्र त्वां वहां, यथोक्तम् उक्ता प्रमाणे यथोक्त, क्रियाम्  
चिकित्सा चिकित्सा, कारयेत् करवी करे ॥ ४०-४१ ॥

40-41. The purificatory medicine  
given in a very small dose to a person  
who has been prepared with oleation  
and sudation procedures, and whose  
digestive fire is strong and who, as a  
result, has digested away the medication  
or whose action has been impeded by  
ingestion of cold articles or by chyme,  
only rouses up the morbid matter but  
does not eliminate it. These conditions  
too would give rise to the same diseases.  
All these are conditions of imperfect  
or unsuccessful action. Knowing these  
as such, the wise physician should  
carry out the line of treatment in the  
manner laid down.

तत्र चिकित्सा—

तं तैलकवणाभ्यक्तं स्विन्नं प्रस्तरसङ्करैः ।  
पाययेत् पुनर्जीर्णं समूत्रैर्वा निरुहयेत् ॥४२॥

जीर्ण औषध पथी गथा पथी औषध जीर्ण होने पर,  
तैल-कवण- तैल तथा सिंधावृक्षोथी तैल तथा सैन्धवसे,  
अभ्यक्तम् अभ्यंग करी अभ्यंग कर, प्रस्तर- प्रस्तर  
स्वेदथी प्रस्तर स्वेदसे, सङ्करैः अने संकरस्वेदथी और संकर-  
स्वेदसे, स्विन्नम् स्वेदन करी स्विन्न करके, तम् तेने उसको,  
पुनः इरीने फिर, पाययेत् औषध पावुं औषध पिनावे,  
समूत्रैः वा अथवा गोभूतसहित अथवा गोमूत्रयुक्त,  
निरुहयेत् निरुहयित देवी निरुहयित देवे ॥ ४२ ॥

42. In such conditions the person should be anointed with oil and salt and sweated by means of bed-sudation or mixed lump sudation method; and he should be given another purificatory dose after the first dose of medication is digested; or he may be given evacuative enema mixed with cow's urine.

निरुद्धं च रसैर्धाम्बैर्भोजयित्वाऽनुवासयेत् ।  
फलमागधिकादारुसिद्धतैलेन मात्रया ॥४३॥

निरुद्धं च निरुद्धं यथै भया पथी निरुद्धे बाद, धान्वैः रसैः तेने आगध भासिरसैथी जांगल मांसरसोंसे, भोजयित्वा भभाडीने भोजन कराके, फल- भीड़ण मैनफल, मागधिका- पीपर विष्पली, दारु-अने देवदारुकी और देवदारु इनसे, सिद्ध- सिद्ध करेख साधित, तैलेन तैलकी तैलसे, मात्रया मात्रा अनुसर मात्रामें, अनु-वासयेत् अनुवासन देवुं अनुवासन देवे ॥ ४३ ॥

43. After the evacuative enema he should be fed with meat-juice of jangala animals and then should be given unctuous enema of oil prepared with emetic nut, long pepper and deodar, in proper dose.

जिग्धं वातहरैः क्षेहैः पुनस्तीक्ष्णेन शोधयेत् ।  
न चातितीक्ष्णेन ततो ह्यतियोगस्तु जायते ॥४४॥

वातहरैः वातहर वातहर, क्षेहैः स्नेहेथी बेहोंसे, जिग्धं स्नेहन करेख अनुभुतुं जिग्ध करके, पुनः इरीथी पुनः, तीक्ष्णेन तीक्ष्ण औषधकी तीक्ष्ण औषधसे, शोधयेत् शोधन करवुं शोधन देवे, अतितीक्ष्णेन च पक्षु अति तीक्ष्ण औषधकी अति तीक्ष्ण औषध, न नहि न देवे, हि डारुख के कर्मणि, ततः तु तेथी इससे, अतियोगः अतियोग अतियोग, जायते आय छे हो जाता है ॥ ४४ ॥

44. After oleating him with unctuous articles curative of vata, he

should be given again a strong purificatory dose. It should not be a very strong dose, as then, it will cause over-action.

अतियोगजन्या व्यापदः, तासां चिकित्सा च—

अतितीक्ष्णं क्षुधानस्थं मृदुकोष्ठस्य मेघजम् ।  
हत्वाऽऽगु विदपित्तकफान् वातन्विस्त्रावयेद् द्रवान् ॥

अतितीक्ष्णम् अतितीक्ष्ण अतितीक्ष्ण, मेघजम् औषध औषध, क्षुधानस्थं भूष्मा क्षुधान्, मृदुकोष्ठस्य तथा मृदु कोष्ठवाणानां तथा मृदु कोष्ठवालेके, विद-पित्त-कफान् मग्न पित्त अने कइने पुरीष, पित्त और कफको, वातम् अक्षी शीघ्र, हत्वा दरी बर्ध निकालकर, द्रवान् द्रव द्रव, वातम् वातमीने। वातमीको, विस्त्रावयेत् आव करे छे सावित करती है ॥ ४५ ॥

45. The strong medications given to a person who is afflicted with hunger or who is soft-bowelled, would quickly eliminate not only the feces, bile and mucus, but also the fluid body elements along with stools.

बलस्वरक्षयं दाहं कण्ठशोषं ज्वरं तृषाम् ।  
कुर्याच्च मधुरैस्तत्र शेषमौषधमुल्लिखेत् ॥४६॥

बल-स्वर- वशी ते वल तथा स्वरने। पुनः बह बल और स्वरका, क्षय क्षम क्षय, दाहं दाह दाह, कण्ठशोषं कण्ठशोष कण्ठशोष, ज्वरं ज्वर ज्वर, तृषाम् अने तृषा और तृषा, कुर्यात् च करे छे करती है, तत्र तेभां इनमें, शेषम् भाडीनां शेष, औषध औषध, मधुरैः मधुर मधुरीथी मधुर औषधोंसे, उल्लिखेत् उल्लिखन करवुं निकाल देवे ॥ ४६ ॥

46. Thus, it would lead to the loss of vitality and voice burning, dryness of throat, giddiness and thirst. In this condition, the physician should

remove the residual portion of the medication by giving him emesis prepared with drugs of the sweet group.

वमने तु विरेकः स्याद्विरेके वमनं पुनः ।

परिवेकावगाहाद्यैः सुशीतैः स्तम्भयेच्च तत् ॥४७॥

कषायमधुरैः शीतैरन्नपानौषधैस्तथा ।

रक्तपित्ततिसारघ्नैर्दाहज्वरहरैरपि ॥४८॥

वमने तु वमनम्। वमनम्, विरेकः विरेचनं विरेचन, विरेके अने विरेचनम्। और विरेचनम्, पुनः पश्चात् पुनः, वमनम् वमनं वमन, स्वात् भाव्य तो होवे तो, तत् तेषु इन वेगोंको, सुशीतैः शरीरी ये शीतल सुशीतल, परिवेक- परिषेक परिवेक, अवगाह- अने अवगाह और अवगाह, आद्यैः च पश्चात् आदिरे, तथा तथा तथा, कषाय- कषाय कषाय, मधुरैः मधुर मधुर, शीतैः शीतल शीतल, रक्तपित्त- रक्तपित्त रक्तपित्त, अतिसारघ्नैः अने अतिसारघ्ना नाश करने और अतिसारके नाशक, दाहज्वरहरैः अपि तथा दाह अने ज्वर मटाउने और दाह और ज्वरके हटानेवाले, अन्नपान- अन्नपान अन्नपान, औषधैः औषध औषध। एवं औषधोंसे, स्तम्भयेच्च स्तम्भन करने स्तम्भित करे ॥ ४७-४८ ॥

47-48. In case of over-action of emesis, the physician should give purgation; and in case of over-action of purgation the physician should give emesis. The overflow should be stopped by treating the patient with cold affusions and immersion bath and with eats and drinks and drugs of astringent and sweet groups and of cooling quality. The patient may be treated with the medications curative of hematemesis, diarrhea, burning and fever.

४७. वमनं पुनः-वमनं शब्द (क. घ. ङ. ड. ञ.)

„ तत्-तत् (घ.)

अञ्जनं चन्दनोशीरमज्जासूक्ष्मकरोदकम् ।

लाजचूर्णैः पिबेन्मन्यमतियोगहरं परम् ॥४९॥

अञ्जनम् अञ्जन रसाञ्जन, चन्दन- चन्दन चन्दन, उशीर- डागै। पागै। खस, मज्जा- जसू- मज्जा, रक्त मज्जा, रक्त, शर्करा- साकरं चीनीका, उदकम् पानी शर्वत, मन्यम् तथा मन्य और मन्य, लाजचूर्णैः लज्जना चूर्ण स. ये लाजचूर्णके साथ, पिबेत् पीवुं पीवे, परम् ते श्रेष्ठ वह श्रेष्ठ, अतियोगहरम् अतियोग- नाशक अतियोगनाशक है ॥४९॥

49. The patient may drink the demulcent drink prepared of the extract of indian berberry, sandal wood, cuscus, marrow and blood mixed with the powder of roasted paddy. This demulcent drink is an excellent curative of the effects of over-action.

शुद्धाभिर्वा वटादीनां सिद्धां पेयां समाक्षिकाम् ।

वर्चःसांग्राहिकैः सिद्धं क्षीरं भोज्यं च दापयेत् ॥५०॥

वटादीनाम् अथवा पत्र पत्रेनां अथवा वटादि क्षीरी वृक्षोंके, शुद्धाभिः वा शुद्धाभि नवीन पत्राङ्गुरोंसे, सिद्धाम् सिद्ध करेदी सङ्घित, समाक्षिकाम् मधुयुक्त मधुसे युक्त, पेयाम् पेया पेया, वर्चःसांग्राहिकैः पुरीषसंग्राहणीय (मृगन्ती कुम्भज्यात करने) मधुना औषधौ मलसंग्राहक औषधियोंसे, सिद्धम् सिद्ध करेदी सिद्ध, क्षीरम् दूध दूध, भोज्यम् च अने पीय भोज्य पदार्थ और अन्य भोज्य, दापयेत् देना देने चाहिए ॥ ५० ॥

50. The physician may give the thin gruel prepared of the sprouts of banyan or other milk-exuding trees mixed with honey, or milk or other articles of diet both prepared with medications that are intestinal astringents.



जाङ्गलैर्वा रसैर्भोज्यं पिच्छावस्तिश्च शक्यते ।  
मधुरैर्नुवास्यश्च सिद्धेन क्षीरसर्पिषा ॥५१॥

जाङ्गलैः रसैः वा अथवा जंगल प्राणीओन  
भांसरसन्दी साधे या जांगल जीवोंके नांसरसोंके साथ,  
भोज्यम् खोजन भोजन, पिच्छावस्ति च तथा पिच्छ-  
वस्ति तथा पिच्छावस्ति, शक्यते प्रशस्त प्रशस्त है  
मधुरैः मधुर गन्धुनां द्रव्यैश्च मधुर औषधोंसे, सिद्धेन  
सिद्ध करेवा सिद्ध किये हुए, क्षीरसर्पिषा दूधभांथी कटेक  
वीथी क्षीरसर्पिषे, अनुवास्यः च अनुवासन पक्षु करेवुं  
अर्धे अर्ध अनुवासन भी देना चाहिए ॥ ५१ ॥

51. He may be given the food  
mixed with the meat juice of jangala  
animals. The mucilagenous evema  
is also recommended in this condition,  
or he may be given an unctuous  
enema of ghee taken directly from milk  
and prepared with drugs of the sweet  
group.

वमनस्यातियोगे तु शीताम्बुपरिषेचितः ।  
पिबेत् कफहरैर्मन्थं सघृतक्षौद्रशर्करम् ॥५२॥

वमनस्य वमनना वमनके, अतियोगे तु अति-  
योगभां वणी अतियोगमें, शीताम्बु- शीतल जलने।  
शीतल जलमे, परिषेचितः परिषेक करी परिषेक करके,  
कफहरैः कफहर द्रव्यैः साधे कफहर औषधियोंसे तय्यार  
किये हुए, सघृत-क्षौद्र-शर्करम् घी, मधु अने साकर-  
सहित घृत, शहद और चीनी मिलाकर, मन्थम् मन्थ  
मन्थको, पिबेत् पीवे। पीये ॥ ५२ ॥

52. In over-action of emesis. the  
person should be affused with cold  
water and then may be given a

demulcent drink prepared of fruit juice  
mixed with ghee, honey and sugar.

सोद्गारः भृशं भृशं मूत्रांघ्रां घान्यमुस्तयोः ।  
समधूकाजनं चूर्णं दिहयेन्मधुरंयुतम् ॥५३॥

सोद्गारः भृशं भृशं सोद्गारायाम् ओद्गारसहित  
उद्गारसहित, मूत्रांघ्रां मूत्रांघ्रां वमनमें, मूत्रांघ्रां  
अने मूत्रांघ्रां मूत्रांघ्रां देने पर, घान्यमुखयोः घांघ्रा  
तथा नागभेषजं वलिया, मोथा, समधूकाजनम्  
मधु अने रसायनसहित मधुसा तथा रसोंत इनके,  
चूर्णः चूर्ण चूर्णको, मधुरंयुतम् मधुभां भेषजीने  
सहदेक साथ लेइयेक अटुं चटे ॥ ५३ ॥

53. In excessive vomiting with  
eructations. the patient may lick the  
powder of coriander, nut grass,  
mahwa and extract of berberry mixed  
with honey.

वमतोऽन्तःप्रविष्टायां जिह्वायां कवलप्रहाः ।  
जिग्वाम्ललवणद्वयंयूरक्षीररसैर्हिताः ॥५४॥

वमतः ओदरी करी करती वमत करने हुए,  
जिह्वायाम् ओ ओसा यदि जीम, प्रविष्टायाम् अंदर पेसी  
अथ तोः सीतकी खोर चली जाय तो, स्निग्ध- स्निग्ध  
स्निग्ध अम्ल अम्ल अम्ल, लवणैः अने लवण प- लवण  
तैयार करेवा तथा लवण परायोंत सिद्ध किये हुए, द्वयैः  
द्वय द्वय, यूव- यूव यूव, क्षीर- दूध क्षीर, रसैः  
तथा रसायनैश्च तथा नांसरसोंसे, कवलप्रहाः भेषजा  
धारकु करवा कवल धारण करना, हिताः दितकर  
दितकारक हैं ॥ ५४ ॥

54. In a condition where the tongue  
has been extremely drawn in during  
vomiting, it is beneficial for the patient  
to take mouth-rinses prepared of  
palatable soup, milk or meat-juice  
prepared with unctuous, acid and salt  
articles.

५१. पिच्छावस्तिश्च शक्यते—पिच्छ वस्ति : उपवेत्

(क. ख. ड. ए. व.)

५२. कफहरैः—कफहरैः क. ख. ड. ए. व. क.

५३. कफहरैर्मन्थं सघृतं क्षौद्रशर्करम्—कफहरैर्मन्थं सघृतं क्षौद्र-

शर्करम् (क.)

५४. मूत्रांघ्रां-मूत्रांघ्रां (क.)



ફલાન્યમ્લાનિ ક્ષાદેયુસ્તસ્ય ચાન્યેઽગ્રતો નરાઃ ।  
નિઃસૂતાં તુ તિલદ્રાક્ષાકલ્પલિપ્તાં પ્રવેશ્યેત્ ॥૫૫॥

અન્યે નરાઃ ખીખ માણસોએ દુસરે મનુષ્ય, તસ્ય તેની उसके, अग्रतः आगण सामने, अम्लानि ખાટાં खट्टे, फलानि ફળે! फलोंको खादेयुः च ખાવાં खाये, निःसूताम् તુ એ જીભ બહાર નીકળી ગઈ હોય તે। यदि जीभ बाहर निकल आयी हो तो, तिल-द्राक्षा-तल અને દ્રાક્ષના તિલ और द्राक्षके, कल-क-कल्पी कलकको, लिपताम् લીપી लगाकर, प्रवेशयेत् તેને પાછી પેશાડી देवी उसे मीतर प्रविष्ट करे ॥ ५५ ॥

55. Or some one else should be made to taste, in his presence, acid fruits so that his mouth may water in sympathy. If his tongue is protruded out, then smearing it with the paste of til and grapes, one should push it into position.

वाग्ग्रहानिलरोगेषु घृतमांसोपस्थापिताम् ।

यवागूं तनुकां दद्यात् स्नेहस्वेदौ च बुद्धिमान् ॥ ५६ ॥

બુદ્ધિમાન્ બુદ્ધિમાન વૈદ્યે बुद्धिमान् वैद्य, वाग्ग्रह-જીભ ઝલાવાળા વાળીકી रुकावट, अनिल-રોગેષુ અને વાયુના રોગોમાં और वातरोगोंमें, घृत-मांस-ધી અને માંસથી घी और मांससे, उपस्थापिताम् स्थापित सिद्ध की हुई, तनुकान् પાતળી पतली, यवागूं यवागूं, स्नेह-स्वेदौ च तथा स्नेहन અને स्वेदन तथा स्नेहन और स्वेदन, दद्यात् देना देवे ॥ ५६ ॥

56. The wise physician should give in spasmodic conditions of speech and in vata-disorders, thin gruel prepared with ghee and flesh and also oleation and sudation therapy.

૫૬. વાગ્ગ્રહાનિરોગેષુ-વાગ્ગ્રહાનિરોગેષુ (ખ.)

,, यवागूं तनुकां दद्यात्-तन्वी दंष्ट्रायवागूं च (बै. क.)

वमितश्च विरिक्तश्च मन्दाग्निश्च विलङ्घितः ।

अग्निप्राणविवृद्ध्यर्थं क्रमं पेयादिकं भजेत् ॥ ५७ ॥

વમિતઃ च वमन धामेक्ष वमित, विरिक्तः च विरेथन धामेक्ष विरिक्त, मन्दाग्निः मन्द अग्निवाળા મન્દાગ્નિવાળા, विलङ्घितः च અને લઘ્વન કરેલ મનુષ્યે और लघ्वन किया हुआ मनुष्य, अग्नि-प्राण-अग्नि અને પ્રાણની અગ્નિ और प्राणोंकी, विवृद्ध्यर्थम् વૃદ્ધિ માટે वृद्धिके लिए, पेयादिकम् पेयादि पेयादि, क्रमम् ક્રમે। संज्ञेन क्रमका, भजेत् आश्रय કરશે खेवन करे ॥ ५७ ॥

57. The patients who have undergone emesis or purgation or starvation, or whose gastric fire is poor, should take the dietetic regimen of thin gruel etc., for the improvement of their digestive fire and vitality.

आध्मानव्यापदो वर्णनं चिकित्सा च —

बहुदोषस्य रुक्षस्य हीनाग्नेरल्पमौषधम् ।

सोदावर्तस्य चोत्किञ्च दोषान्मार्गाग्निरुध्य च ॥ ५८ ॥

भृशमाध्मापयेन्नाभिं पृष्ठपार्श्वशिरोरुजम् ।

श्वासविण्मूत्रवातानां सङ्गं कुर्याच्च दारुणम् ॥ ५९ ॥

बहुदोषस्य बहु दोषवाળા बहुत दोषवाले, रुक्षस्य रुक्ष रुक्ष, हीनाग्नेः मंदाग्निवाળા મન્દાગ્નિવાળે, सोदा-वर्तस्य અને ઉદાવર્તવાળા મનુષ્યને आपेक्ष और उदावर्तयुक्त पुरुषमें दी हुई, अल्पम् अल्प अल्प, औषधम् च औषध औषध, दोषान् दोषોને दोषोंको, उत्किञ्च उत्किञ्च કરી उत्કેશિત करके, मार्गाग्निं च तथा भागों मार्गोंको, निरुध्य रुंधीने रोककर, नाभिम् नाभिने नाभिको, भृशम् भूय अत्यन्त, आध्मापयेत् पुष्पादे छे आध्मापित करती है, पृष्ठ-पीठ पीठ, पार्श्व-पार्श्व पार्श्व, शिरः-रुजम् तथा मस्तकमां पीडा કરે छे तथा शिरःने दर्द करती है, श्वास-अने श्वास और श्वास, विट्-भण विष्टा, मूत्र-वातानां मूत्र तथा वायुनो मूत्र तथा वायुके, दारुणम् बयंकर दारुण, सङ्गं निरोध सङ्गको, कुर्यात् च કરે छे करती है ॥ ५८-५९ ॥

૫૮. भजेत्-आश्रयेत् (ग.)

,, पेयादिकं भजेत्-पेयादिमा चरेत् (ब.)

58 59. Medicines, given in too small a dose to a person who has excess of morbidity or who is dehydrated or whose gastric fire is weak or who suffers from misperistalsis, will rouse the morbid humor and obstruct the body-channels and cause great distension of abdomen, pain in the back, side of the chest and head, and serious obstruction to breath, feces, urine and flatus.

अभ्यङ्गस्वेदवर्त्यादि सनिरुद्धानुवासनम् ।  
उदावर्तहरं सर्वं कर्माध्यातस्य शस्यते ॥६०॥

सनिरुद्ध- निरुद्धसहित निरुद्ध, अनुवासनम् अनु-  
वासन, अनुवासन, अभ्यङ्ग- अभ्यङ्ग अभ्यङ्ग, स्वेद-वर्ति-  
आदि स्वेद, वर्ति- वर्ति वर्ति स्वेद-वर्ति-प्रादि, उदावर्तहरम्  
उदावर्त मृदाउनार उदावर्तनाशक, सर्वम् सर्वम् सर्व  
कर्म चिकित्सा चिकित्सा, आध्यातस्य आध्यातस्य  
रोगी भाटे आध्यातस्य रोगीके लिए, शस्यते प्रशस्त छे  
प्रशस्त हैं ॥ ६० ॥

60. Inunction, sudation, suppository and similar treatment, evacuable and unctuous enemata and all treatment curative of disorders of misperistalsis are recommended in the case of distension of abdomen.

परिकर्तिकाव्यापदो वर्णनं चिकित्सा च—

क्षिण्येन गुरुकोष्ठेन सामे बलवदौषधम् ।  
क्षामेण मृदुकोष्ठेन शान्तेनाल्पबलेन वा ॥६१॥  
पीतं गत्वा गुदं साममाशु दोषं निरस्य च ।  
तीव्रशूलां सपिच्छाक्षां करोति परिकर्तिकां ॥६२॥

क्षिण्येन शिथिल क्षिण्य, गुरुकोष्ठेन तथा भारे के-  
वाणी मनुष्ये तथा भारी कोष्ठवाले पुरुषसे, सामे आभ-  
युक्त दोषभा पीषेयुं आमयुक्त दोषमें पी गई होने पर,  
क्षामेण तथा शुष्क देहवाणी शुष्क, मृदुकोष्ठेन मृदु

के-वाणी: सुकोष्ठवाले, भारीकोष्ठवाले भारे हुए,  
मनुष्यकोष्ठेन वा भारीकोष्ठवाले मनुष्यकोष्ठे मनुष्यकोष्ठे  
निर्बल मनुष्यकोष्ठे पीतम् पीषेयुं पी गई बलवान्- पुरु-  
षान् बलवान्, औषधम् औषध औषध, गुदम् गुदम्  
गुदमें, गत्वा गत्वा गत्वा, सामम् आभयुक्त आमयुक्त,  
दोषम् दोषम् दोषम्, क्षामु क्षामु क्षामु निरस्य च  
हरे हरी निकाल, तीव्रशूलां तीव्रशूलान् तीव्रशूलान् तीव्र-  
शूलयुक्त, सपिच्छाक्षां सपिच्छाक्षान् सपिच्छाक्षान् सपिच्छाक्षान्  
युक्त एवं पिच्छाक्षान् रफ्तान् रफ्तान् युक्त, परिकर्तिकां  
वाद परिकर्तिका, करोति उत्पन्न करे छे करती  
है ॥ ६१-६२ ॥

61-62. Strong medication taken by a person who has taken the oleation therapy who is hard bowelled and who suffers from chyme morbidity or by a person who is emaciated, soft bowelled, exhausted and is poor of vitality, reaches the rectum and eliminates morbid matter along with chyme, and causes acute colic and griping pain accompanied with slimy and bloody discharge.

लङ्घनं पावनं सामे रुक्षोष्णं उद्युमोजनम् ।  
बृंहणीयो विधिः सर्वैः क्षामस्य मधुरस्तथा ॥६३॥

सामे आभयुक्त दोषभा आमयुक्त दोषमें, लङ्घ-  
नम् लङ्घन लङ्घन, पावनम् पावन पावन, रुक्षोष्णम्  
रुक्ष, उष्ण रुक्ष, उष्ण, उद्युमोजनम् तथा उद्युमोजन  
एवं लङ्घन मोहन, क्षामस्य अने शुष्क देहवाणी भाटे और  
निर्बल पुरुषके लिए, सर्वैः सर्वैः सर्व, बृंहणीयः बृंहणीय  
पुष्टिकारक, तथा तथा एवं, मधुरः मधुर मधुर, विधिः  
विधि ६१-६२ छे विधि दिनकारी है ॥ ६३ ॥

63. In conditions associated with chyme-morbidity, starvation and diges-  
tive medication are recommended; and the diet should be of dry, hot and

६३. पावनं-पीतं (च)

light articles; and in condition of emaciation, all measures of roborant therapy and medications prepared with drugs of the sweet group are recommended.

आमे जीर्णेऽनुबन्धश्चेत् क्षाराम्लं लघु शरयहे ।

आमे जीर्णे आभ पथी जर्ता आमेके पचजाने पर, अनुबन्धः चेत् ओ वाढ आधु रहे हे। यदि एरि-कृतिकाका अनुबन्ध रहे तो, क्षाराम्लम् क्षार तथा अम्लथी युक्त क्षार तथा अम्लसे युक्त लघु अने लघु और लघु, भोजनम् भोजन भोजन, अम्लसे प्रशस्त हे प्रशस्त है ॥ ६३३ ॥

63½. If, even after the digestion of chyme, there is obstipation, medication with acid and alkali, and light diet are recommended.

पुष्पकासीसमिश्रं वा क्षारेण लवणेन वा ॥६३॥  
सदाडिमरसं सर्पिः पिबेद्व्रतेऽधिके सति ।  
दध्यम्लं भोजने पाने संयुक्तं दाडिमत्वचा ॥६४॥  
देवदारुतिलानां वा कल्कमुष्णाम्बुना पिबेत् ।

वाते वा वायु वायुके, अधिके अधिक अधिक, सति होता होने पर, पुष्पकासीस- हरीरडशीथी पुष्प-कासीससे, मिश्रम् मिश्रित मिश्रित, क्षारेण अथवा क्षार अथवा क्षार, लवणेन वा डे लवण साथे या लवणके साथ, सदाडिमरसम् दाडिमना रसयुक्त दाडिमके रससे, सर्पिः धी घृत, पिबेत् पीवुं पीना चाहिए, भोजने अन्न भोजन, पाने तथा पानर्मा तथा पानर्मे, दाडिमत्वचा- दाडिमनी तालथी अनारके छिलकेके, संयुक्तम् युक्त साथ, अम्लम् आटुं खटा, दधि दही पीवुं दही पीवे, देवदारु- अथवा देवदारु अथवा देवदारु, तिलानां अने तिलने और तिलोका, कल्कम् वा डेड कल्क, उष्णाम्बुना अना पाणी साथे गरम जलसे, पिबेत् पीवे पीवे ॥ ६४-६५ ॥

६५. दध्यम्लं भोजने-दध्यन्नं भोजनं (घ.)

64-65½ If in this condition there is excess of vata, the patient may take ghee mixed with fulsee flowers and with pomegranate juice adding barley alkali or rock-salt. He should take as food, sour curds mixed with pomegranate bark and as his drink, he should take warm water mixed with the paste of deodar and til.

अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षकदम्बैर्वा शृतं पयः ॥६६॥

कषायमधुरं शीतं पिच्छावस्तिमथापि वा ।

यष्टीमधुकल्लिखं वा स्नेहवस्तिं प्रदापयेत् ॥६७॥

अश्वत्थ- अश्वत्थ पीपणे पीपल, उदुम्बर- उंभरे गूलर, प्लक्ष- पीपर पाकर, कदम्बैः अने उदंभ साथे और कदम्बसे, शृतम् उडार्थे सिद्ध किया हुआ, पयः वा दूध पीवुं दूध पीवे, अथ अथि वा अथवा अथवा, कषायमधुरम् कषाय अधुर कषाय मधुर, शीतम् अने शीतल और शीतल, पिच्छावस्तिम् पित्तावस्तिं पिच्छा-वस्ति, यष्टीमधुक- अथवा यष्टीमधुथी अथवा मुठहरीसे, कल्लिखं सिद्ध करे सिद्ध, स्नेहवस्तिम् वा स्नेहवस्ति स्नेहवस्ति, प्रदापयेत् देवी देवे ॥ ६६-६७ ॥

66-67. Or he may take the milk prepared with holy fig, gular fig, yellow barked fig and cadamba or he may be given a mucilagenous enema prepared with astringent, sweet and cooling drugs; or he may be given an unctuous enema prepared with liquorice.

परिस्नातव्यपदं वर्णने चित्रित्वा च—

अल्प तु बहुदोषस्य दोषमुक्लिश्य शेषजम् ।

अल्पाल्पं स्नातयेत् कण्डूं शोफं कुष्ठानि गौरवम् ६८

६७. शीतं-वस्ति (क. घ. ड. ष. ङ.)

६८. कण्डूं-अल्पं (द.)

कुर्याच्चप्रिवलोटकेस्तैमित्यादिप्रमाणतः ।

परिस्रावः स, तं दोषं शमयेद्वामयेदपि ॥६९॥

सहितं वा पुनस्तीक्ष्णं पाययेत् विद्वेजम् ।

शुद्धे चूर्णासवारिक्कन् संस्कृतांश्च प्रदापयेत् ॥७०॥

बहुदोषश्च तु बहु दोषाणां आरब्धं बहुत दोष-  
बालेको दी दृष्टं, अस्वप्नं अस्वप्नं अस्वप्नं, मेघजम् तु  
औषधं औषधं, दोषश्च दोषो दोषको, उत्क्रियतेति  
करी उत्क्रियते करके, अस्वप्नम् अस्वप्नं अस्वप्नं योवा  
योवा, स्त्रावयेत् स्त्राव करे छे निकालती है, कण्डूम्  
अने अस्वप्न और खुजली, शोफम् शोफ सूजन,  
कुष्ठानि कुष्ठ कुष्ठ, गौरवम् गौरवम् भारीपन, अग्निव-  
त्क्रियते अग्नि अने अग्नी दान, उत्क्रियते अग्नि और  
बलकी हानि, उत्क्रियते, सैमित्य- रितमितता स्मितता,  
अस्वप्न-अस्वप्न अस्वप्न, पाण्डुताः च तथा पाण्डुता तथा  
पाण्डुता, कर्मात् करे छे करती है, सः ते वह, परिस्रावः  
परिस्राव छेदवाय छे परिस्राव कहाता है तम् ते इस,  
दोषम् दोषम् दोषको, शमयेत् शमन करायुं अर्थ जो  
शान्त करे, वामयेत् अपि छे वामन करायुं अर्थ जो  
या वमनसे निकाले, सहितं वा अथवा स्नेहन करी  
अथवा स्नेहन करके, पुनः करीथी फिर, तीक्ष्णं  
तीक्ष्ण तीक्ष्ण, विरेचनम् विरेचन विरेचन, पाययेत्  
पायुं अर्थ जो देवे, शुद्धे अने अथवा शुद्धि यर्थ अथ  
त्यारे और शुद्ध हो जाने पर, संस्कृतांश्च अस्कार करे  
संस्कार किये हुए, चूर्ण- चूर्ण चूर्ण, आसव- आसव  
आसव, अरिष्टान् च अने अरिष्ट और अरिष्टको,  
प्रदापयेत् आपवां देवे ॥ ६८-७० ॥

68-70. Medicine given in a small  
dose to a person who has excessive  
morbidity, rouses the humors causes  
frequent and scanty elimination and  
gives rise to pruritus, edema, derma-  
tosis, heaviness of the body, impair-

ment of the humors, causes stiffness,  
excessive and scanty elimination, fre-  
quency of discharge. This complication  
may either be treated with sedative  
drugs or with emetics; or giving him  
oleation again he should be adminis-  
tered a strong purgative and when he  
is perfectly cleansed he may be given  
powders and medicated wines prepared  
with suitable medications.

द्वयव्यपको वर्णतः चिकित्सा च—

पीनोपश्रव्य वेगान्तं निरुह्यस्पादयत्युः ।

कुपिता हृदयं वात्सा घातं कुर्वन्ति हृद्ग्रहम् ॥७१॥

वेगान्तं पीनता पानं उत्प्रेर्य यत् वेगेने  
पिचके यत् उत्प्रेर्य वेगोको, निरुह्य वेगान्तं  
रोकनेसे, आरुह्य यत् वेगेने वेगु अर्थ, कुपिताः  
कुपित अर्थ जो कुपित हो जाय, पीनोपश्रव्य औषधं पान  
करायुं पानयन् अर्थ जो वेगेने हृद् अन्तुष्यके, हृदयम्  
हृदयम् हृदयं मरना अर्थ मरना घोरम् अर्थ कर  
मरना, हृदयम् हृदयम् हृदयम् रोगको, कुर्वन्ति  
करे छे उत्प्रेर्य करे ॥ ७१ ॥

71. Owing to suppression of the urge  
in one who has taken the purificatory  
dose, the vata and other humors,  
getting provoked and reaching the  
heart, cause severe cardiac spasm.

स हिक्काकान्नाश्वर्निदैर्न्यलालातिविश्रमैः ।

जिह्वां खादति निःशब्दो दन्तान् किटकिटापयन् उर-  
ज गच्छेद्विध्रमं तत्र कामयेनाशु सं भिषक् ।

सः ते शशी वह रोमी हिक्का- रेडडी हिक्का कास-  
उपश्रव्य कास, पार्श्व-पार्श्व- पार्श्व-पार्श्व- पार्श्व-पार्श्व,

६९. अग्निवत्क्रियते-अग्निवत्क्रियते (घ. ब.)

॥ पाण्डुताः-पाण्डुताम् (घ.)

॥ परिस्रावः स, तं दोषं-परिस्रावगतं दोषं (घ.)

७०. प्रदापयेत्-प्रगोत्रयेत् (घ.)

७२. स हिक्का-सहिक्का नि हिक्कापार्श्वका (घ.)

॥ हिक्का-हिक्का-हिक्का-हिक्का (घ. क.)

॥ कास-कास (घ.)

॥ दन्तान् किटकिटापयन्-दन्तान् किटकिटापयते (घ.)

हेन्य- दीनता हेन्य, काला- क्षाण लालावा, अश्वि-  
ज्जमैः अने आभनः विभ्रमभी युक्त भन्ति और नेत्र-  
विभ्रम इन लक्षणोंके साथ, निःसंज्ञः संज्ञारहित अर्ध-  
संज्ञारहित हो कर, दन्तान् दंत दांतोंको, कटिकिटा-  
वयन् उड्डावते। कटिकिटाता हुआ, जिह्वाम् अक्ष-  
जिह्वाको, खादति उड्डे छे काटता है, तत्र ते आभतमां  
इसमें, मिषक् वैद्ये चिकित्सक, विभ्रमम् भ्रमभां भ्रमों,  
न गच्छेत् पश्युं नहि न पड़े, आशु पशु तत्तत् न  
परन्तु शीघ्र ही, तद् तेने उसको, वामयेत् वमन  
उड़ावतुं वमन करावे ॥७२३॥

72-72½. The person becomes afflicted  
with hiccup, cough and pain in the side  
of the chest; he gets depressed; there is  
dribbling from the mouth; agitation of  
the eyes; he bites his tongue, falls  
unconscious and gnashes his teeth. As  
this condition is serious, the physician  
should immediately make him vomit.

मधुरैः पित्तमूर्च्छार्तिं कटुभिः कफमूर्च्छितम् ॥७३॥  
पाचनीयैस्ततश्चास्य दोषशेषं विपाचयेत् ।  
कायाग्निं च बलं चास्य क्रमेणोत्थापयेत्ततः ॥७४॥

पित्तमूर्च्छार्तिम् पित्तभी भूयंभी पीडित रोगीने  
पित्तमूर्च्छापीडित रोगीको, मधुरैः मधुर द्रव्योंसे  
द्रव्योंसे, कफमूर्च्छितम् अने उड्डावती भूयंभी पीडित  
रोगीने और कफमूर्च्छापीडित रोगीको, कटुभिः कटु  
द्रव्योंसे वमन उड़ावतुं कटु द्रव्योंसे वमन करावे,  
ततः ते पछी इसके पश्चात्, अस्य च औना इसके,  
दोषशेषं आडी रहेला दोषतुं शेष दोषका, पाचनीयैः  
पाचनीय द्रव्योंसे पाचनीय औषधोंसे, विपाचयेत्  
पाचन उड्डावतुं पाचन करे, ततः अने ते पछी इसके  
पश्चात्, अस्य औना इसके, कायाग्निम् च उपायि  
कायाग्नि, बलम् च तथा अणुं तथा बलको, क्रमेण  
उमे उमे क्रमशः, उत्थापयेत् उत्थान उड्डावतुं  
बढ़ावे ॥ ७३-७४ ॥

७४. क्रमेणोत्थापयेत्ततः—क्रमेणाभिवर्धयेत् (व. त.)

७४. क्रमेणाभिवर्धयेत् (व. फ.)

73-74. If the fainting is due to  
excess of pitta, emesis should be  
given prepared with drugs of the  
sweet group, and if due to kapha,  
drugs of the pungent group should be  
used. Thereafter, the residual mor-  
bidity should be digested away by  
digestive medications. Then his body-  
heat and vitality should be systemati-  
cally rehabilitated.

पवनेनातिवमतो हृदयं यस्य पीड्यते ।

तस्मै स्निग्धान् लवणं दद्यात् पित्तकफेऽन्यथा ॥७५॥

अतिवमतः अति वमन उड्डाव अति वमन होने  
पर, यस्य अने जिसके, हृदयम् हृदय हृदयमें, पवनेन  
पवननी वायुसे, पीड्यते पीडित होय पीडा होवे, तस्मै  
तेने उसको, स्निग्ध-स्निग्ध स्निग्ध, लवण-लवण लवण,  
लवणम् अने लवण द्रव्य और लवण द्रव्य, दद्यात् देव  
देवे, पित्तकफे पित्त तथा उड्डाव पित्त तथा कफमें,  
अन्यथा औथी विपरीत द्रव्यों देव औथी विपरीत  
द्रव्य देवे ॥७५॥

75. If the person, while vomiting  
excessively, is afflicted in his heart  
by vata, he should be given un-  
ctuous, acid and salt articles; and in  
condition due to pitta-cum-kapha, dry,  
pungent and bitter articles should be  
given.

अङ्गप्रव्यापदो वर्णनं चिकित्सा च—

पीतौषधस्य वेगानां निग्रहेण कफेन वा ।

रुद्धोऽति वा विशुद्धस्य गृह्णात्यङ्गाणि मारुतः ॥७६॥

स्तम्भवेपथुनिस्तोदसादोद्वेष्टनमन्थनैः ।

तत्र वातहरं सर्वं ओहस्वेदादि कारयेत् ॥७७॥

७५ पवनेनातिवमतः—पवनेनातिवमतः (व.)

७६. रुद्धोऽति वा विशुद्धस्य—रुद्धोऽतीव विशुद्धस्य (व. फ.)

७७. उद्वेष्टनमन्थनैः—उद्वेष्टनमन्थनैः (छ. व. उ. द. फ.)

७७. कारयेत्—शस्त्रेण (व. फ.)

पीतौषधस्य औषधं पानं कर्तुं न भवति औषधं पीये हुं मनुष्यके, वेगानाम् वेगे वेगोको, निग्रहेण रोधवाथी कुपितं रोकनेसे कुपितः ककेन वा अथवा उध्वी अथवा कफसे, रुद्धः रुंधायेति रुद्धः अतिविशुद्ध-स्य वा अथवा अंशोधनना अतियोगवाणाम् कुपितं अथवा संशोधनके अतियोगवालेका कुपितं, मारुतः वायु वायु, स्तम्भ-स्तम्भ स्तम्भ वेपथु-उभय कम्पन, निस्तोद-सोय बोधावा जेवी पीडा निस्तोद, साद- शिथिलता शिथिलता, उद्वेजन- उद्वेजन उद्वेजन, मन्थनः अने मन्थन जेवी पीडासहित और मन्थनवत् पीडासे, बद्धानि अंगाने बर्गोको, गृह्णाति आदी वे छे पकड़ लेता है, तत्र तेमां उत्तमं, स्नेहस्वेदादि स्नेह अने स्नेह वजेरे स्नेह स्वेदादि, सर्वम् सर्वं सब, वातहरम् वातहर वातहर, कारयेत् उभं कर्तुं ओधये कियाओको करे ॥ ७६-७७ ॥

76-77. By suppression of the urges by a person who has taken the purificatory dose or owing to obstruction of vata by kapha, or owing to purification done in excess, the provoked vata seizes the limbs and causes stiffness, tremor, pricking pain, asthenia, cramps and churning. In this condition, oleation, sudation and all similar other measures curative of vata should be carried out.

जीवादानव्यापदो वर्णनं चिकित्सा च—

अतितीक्ष्णं मृदौ कोष्ठे लघुदोषस्य मेषजम् ।  
दोषान् हत्वा विनिर्मय्य जीवं हरति शोणितम् ७८

मृदौ मृदु, कोष्ठे कोष्ठो कोष्ठ होने पर, लघु-दोषस्य श्लेष्मा दोषवाणाम् आपेक्षुं अल्प दोषवालेको पी हुं, अतितीक्ष्णम् अति तीक्ष्ण अति तीक्ष्ण, मेषजम् औषध औषध, दोषान् दोषाने दोषोंको, हत्वा हरी निकालकर, शोणितम् रक्तने रक्तको, विनिर्मय्य श्लेष्मा कंडी विधुषण करके, जीवम् श्वररक्तने जीवसंनिहितको, हरति हरी हरी के निकालती है ॥ ७८ ॥

78. If a very strong medication is given to a soft-bowelled person who has only slight morbidity after eliminating the morbid matter and churning the system excessively, it causes the discharge of the live-blood.

तेनाद्यं मिश्रितं दद्याद्वायवाय शुनेऽपि वा ।  
मुहुं तच्चेद्वदेज्जीवं न मुहुं पित्तमादिशेत् ७९

तेन तेनाथी इस रक्ते, मिश्रितम् मिश्रित मिश्रित किया हुआ, दद्याद् दद्याद् वायवाय वायवाय आयुधने कोए, शुने अपि वा अथवा तो कुतराने या कुत्तेको, दद्याद् देतुं देवे, तत् मुहुं के वेद ओ ते आर्धं अथ तो वे उसे खाये तो जीवक बदेत् श्व-रक्त कहेतुं जीवशोणित कहे, न मुहुं के अने ओ न आय तो न खाये तो, पित्तम् रक्तपित्त रक्तपित्त, आदिशेत् कहेतुं कहे ॥ ७९ ॥

79. Mixed with food, the blood should be thrown to dogs or crows to eat. If they eat it, it is live-blood. If it is not eaten declare it to be bile-blood.

शुक्लं वा मावितं वस्त्रमावानं कोष्णवारिणा ।  
प्रक्षालितं विवर्णं स्यात् पित्तं शुद्धं तु शोणितं ८०

मावितम् वा अथवा तेमां उभेयेका उस रक्ते गीला करके, शुक्लम् श्वेत सफेद, वस्त्रम् वस्त्रने वस्त्र, मावानम् सूक्ष्मा धी सुखाया हुआ, कोष्णवारिणा श्लेष्मा श्लेष्मा पाण्डुभी कोसे बळसे, प्रक्षालितम् धातु बोने पर, पित्तं ओ रक्तपित्त होय तो रक्तपित्त हो तो, विवर्णम् ते विवर्णम् वह विवर्ण, स्यात् अर्धं अथ छे हो जाता है, शोणितं तु अने श्वररक्त होय तो और जीवक हो तो, शुद्धम् शुद्ध अर्धं अथ छे शुद्ध हो जाता है ॥ ८० ॥

८०. स्वात् पित्तं शुद्धं तु शोणितं-विवर्णं शुद्धं तु शोणितम् (व. व.)







with supernatant part of ghee and extract of berberry, or he may be given a very cold mucilagenous enema, or an unctuous enema prepared of the supernatant part of ghee.

विभ्रंशव्यापदो वर्णनं चित्रितम् च—

गुर्वं अष्टं कषायैश्च स्तम्भयित्वा प्रवेशयेत् ।  
साम गान्धर्वशब्दांश्च संज्ञानाशेऽस्य कारयेत् ८५

अष्टम् गुदम् शुद्धं यथे होय तेः गुदप्रश  
हुआ हो तो, कषायैः च कषाय द्रव्योत्थी कषाय द्रव्योत्थे,  
स्तम्भयित्वा तेनुं स्तम्भन करी स्तम्भित करके, प्रवे-  
शयेत् शुद्धने पेसाडी देवी गुदाको सीनर प्रवेश करे, अस्य  
अने सेना और इसकी, संज्ञानाशे संज्ञाना नाशमां संज्ञा  
नष्ट होने पर, साम आश्वासन आश्वासन, गान्धर्व-  
अने संगीतना और संगीतके, शब्दान् च ध्वनि  
शब्दोंको, कारयेत् कराववा करावे ॥८५॥

85. If there occurs prolapse of rec-  
tum, it should be replaced after con-  
stricting it with astringent medication.  
In a condition of unconsciousness  
soothing songs and words should be  
uttered.

यदा विरेचनं पीतं विडम्बन्वतिष्ठते ।  
वमनं मेघजाम्बं वा दोषानुत्क्रिय नावहेत् ॥८६॥  
तदा कुर्वन्ति कण्डादीन् दोषाः प्रकुपिता गदान् ।  
स विभ्रंशो मतस्तत्र स्याद्यथाव्याधि मेघजम् ॥८७॥

यदा व्याधिरेव, पीतम् पीधितुं पी हुई, विरे-  
चनम् विरेचन औषध विरेचन औषध, विडम्बन्वतिष्ठते भाग  
अथ डाढीने अ सिर्फ पुरीचको ही निकाल कर अवति  
इते छिदुं रहे छे रह जावे, वमनम् वा अथवा वमन  
औषध अथवा वमन औषध, मेघजाम्बम् भाग पीधितुं  
औषधने अ डाढे छे पी हुई औषधको निकालके एक

८५. गुर्वं अष्टं-गुदप्रश (ग. न.)

॥ साम गान्धर्वशब्दांश्च संज्ञानाशेऽस्य कारयेत्-साम गन्ध-  
र्वशब्दोंको संज्ञानाशे कारयेत् (ग.)

अथ दोषान् अने दोषोंको और दोषोंको, उत्क्रिय  
उत्क्रिय करी उत्क्रिय करके, न आवहेत् तेने नकार  
डाढे नहि बाहर न निकाले, तदा अथ ते तब, प्रकुपिताः  
प्रकुपित भयेवा प्रकुपित हुए, दोषाः दोष दोष,  
कण्डादीन् कण्डादीन् दोषोरे कण्डा आदि, गदान् गेजा  
रोगोंको, कुर्वन्ति करे छे उत्क्रिय करते हैं, सः विभ्रंशः  
तेने विभ्रंश यह विभ्रंश मतः भाने छे माना गया  
है, तत्र तेमां इसमें, यथाव्याधि व्याधि अनुसार  
रोगके अनुसार, मेघजम् औषध औषध, स्वात् देवुं  
देनी चाहिए ॥ ८६-८७ ॥

86-87. If the purgative dose ceases to  
act immediately after elimination of the  
fecal matter or the emetic dose is imme-  
diately vomited out, it causes only the  
agitation of the morbid humor but does  
not eliminate it. Then the provoked  
humors cause pruritus and other dise-  
ases. This is called the condition of  
wrongful action of medication; and in  
this condition, treatment should be in  
accordance with the pathological fea-  
tures.

स्तम्भव्यापदो वर्णनं चित्रितम् च—

पीतं स्निग्धेन सखेहं तदोषैर्माद्विवाद्धतम् ।  
न बाहयति दोषांस्तु स्वस्थानात् स्तम्भयेद्युतान् ८८

स्निग्धेन स्निग्ध अनुष्ये स्निग्ध पुरुषद्वारा, पीतम्  
पीधित पी गई, सखेहम् स्नेहसहित स्नेहद्वारा,  
तत् ते औषध वह औषध, माद्विवाद्धतम् अनुष्यते छिदुं  
तासे, दोषैः द्रव्योत्थी दोषोत्थी अथवा पीधित दोषोंके  
आवृत्त हो जानेके कारण, दोषान् तु दोषोंने दोषोंको,  
न बाहयति नकार डाढुं नही बाहर नहीं निकालती,  
स्वस्थानात् अने पीताना स्थानधी और अपने स्थानसे,  
युतान् असेवा व्युत्त हुए, स्तम्भयेद्युतान् स्तम्भन  
करे छे उन दोषोंको स्तम्भित कर देती है ॥ ८८ ॥

88. If a man who has undergone  
oleation procedure takes an unctuous

poison, it gets covered up by the morbid matter which is in a softened condition and will be unable to expel the morbid matter from its habitat; it even obstructs those that have been dislodged from their habitats.

वानसङ्गगुदस्वप्नशूलैः क्षरति चावशः ।  
तीक्ष्णं वस्ति विरेकं वा सोऽर्हो लङ्घितपाचितः ॥८९॥

वातसङ्ग- गेने वातरोध जिसको वातरोध, गुदस्वप्न-  
शूलस्तंभ गुदाका स्तम्भन, शूलैः अने शूल साथे और  
शूलके साथ, अवशः शोऽर्हो शोका शोका, क्षरति  
क्षरण थाय छे क्षरण होता है, सः तेने उसे, लङ्घित-  
पाचितः लङ्घन अने पाचन करान्या पछी लङ्घन  
और पाचनके बाद, तीक्ष्णं तीक्ष्ण, वस्तिम्  
वस्ति वस्ति, विरेकं वा छे विरेचन या विरेचन, अर्हः  
आपणुं थोअ छे देना योग्य है ॥ ८९ ॥

89. It causes scanty and frequent elimination accompanied with acute obstruction of vata. rigidity and pain in the rectum. Such a man requires treatment by strong enemata or purgation preceded by lightening and digestive measures.

उद्धवःखण्ड्यापरो वर्णनं चिकित्सा च—

रुक्षं विरेचनं पीतं रुक्षेणारवलेन वा ।  
मारुतं कोपयित्वाऽऽशु कुर्याद्वोरानुपद्रवान् ॥९०॥  
स्तम्भशूलानि घोरानि सर्वगात्रेषु मुह्यतः ।  
स्वेदस्वेदादिकस्तत्र कार्यो वातहरो विधिः ॥९१॥

रुक्षेण रूक्ष, अरवलेन वा छे अरव अणवाणा  
भनुष्ये या दुर्बल पुरुषद्वारा, पीतम् पीषिलुं पी दुई,  
रुक्षम् रूक्ष, विरेचनम् विरेचन विरेचन औषध,  
मारुतं कोपयित्वाऽऽशु कुर्याद्वोरानुपद्रवान् ॥९०॥  
स्तम्भशूलानि घोरानि सर्वगात्रेषु मुह्यतः ।  
स्वेदस्वेदादिकस्तत्र कार्यो वातहरो विधिः ॥९१॥

८९. सोऽर्हो लङ्घितपाचितः—यद्य लङ्घितपाचनय (ब. व. त.)

—यद्य लङ्घितपाचनय (फ.)

९१. मुह्यतः—मारुतः (ब. व. त.)

मारुतं वायुने वायुको आशु जलदी शीघ्र, कोपयित्वा  
उद्धवः कुपित करके, घोरान् भयंकर घेर, उपद्रवान्  
उपद्रवों, कुर्याद्वो करे छे करती है, मुह्यतः  
भोऽर्हो भोऽर्हो भोऽर्हो मोहयुक्त उस मज्ज्यके,  
सर्वगात्रेषु सर्व अङ्गवेषु सारे शरीरमें, घोरानि  
भयंकर भयंकर, स्तम्भशूलानि स्तम्भ अने शूल थाय  
छे स्तम्भ और शूल होते हैं, तत्र तेमां उनमें, स्नेह-  
स्वेदादिकः स्नेह, स्वेद पत्रे स्नेह, स्वेदादि, वातहरो  
वातहरो वातहार, विधिः विधि विधि, कार्यः आचरणी  
अर्हो करनी चाहिए ॥ ९०-९१ ॥

90-91. The un-unctuous purgative medication, taken by one already lacking in the unctuous quality, or by one who is debilitated, will provoke the vata quickly and give rise to severe complications. It causes rigidity and severe pain in all the limbs and fainting. In such a condition, oleation, sudation and similar other measures as well as the line of treatment curative of vata, are indicated.

कृत्वाखण्ड्यापरो वर्णनं चिकित्सा च—

स्निग्धस्य मृदुकोष्ठस्य मृदुत्विश्वौषधं कफम् ।  
चित्तं चातं च संरुध्य सतन्द्रागौरवं कृष्णम् ॥९२॥  
दीर्घं चान्नसाधं च कुर्यादाशु तदुल्लिखेत् ।  
लङ्घने पाचने चात्र स्निग्धं तीक्ष्णं च शोधनम् ॥९३॥

स्निग्धस्य स्निग्ध, मृदुकोष्ठस्य अने मृदु  
कोष्ठकोष्ठ पुत्रपने आपैलुं और मृदुकोष्ठकोष्ठ पुत्रकोष्ठ  
गई, मृदु मृदु मृदु, औषधम् औषध औषध, कफम् कफ  
कफ, चित्तम् तथा चित्तने तथा चित्तको, उल्लिखेत्  
उल्लिखेत् उल्लिखेत् करके, वातम् वा वायुने

मृदुकोष्ठस्य—मृदुकोष्ठस्य (फ.)

चित्तकोष्ठस्य (क.)

मृदुकोष्ठस्य—मृदुकोष्ठस्य क त.

चित्तं—चित्तं (ब.)

चित्तं—चित्तं (क.)

વાયુકો, સંરુપ્ય નિરેધ કરી રોકકર, સતનદ્રાગૌરવમ્ તન્ના અને ભારેપણામરિત તન્ના, ગૌરવ, ક્રમમ્ થાક્રમ, દૈર્ઘ્યમ્ ચ દુર્બળતા દુર્બલતા, અક્રમાદમ્ ચ અને અભિની શિથિલતા, ઔર અંગેશી શિથિલતા, કુર્ણવ કરે છે કરતી હે, તન્ આશુ તેને તરત રવે શોષ રહિલેવ બહાર કાઢતું એઈએ વમનદ્વારા નિકાલ દેવે, જન્ એમાં इसमें, लङ्घनम् एवं लघन, पाचनम् च पाचन पाचन, क्षिप्रम् तथा शिघ्रम् तथा स्निग्ध, तीक्ष्णम् च અને तीक्ष્ણુ एवं तीक्ष્ણ, શોષનમ્ શોષન સંશોષન, દિવમ્ દિવકરી છે દિવકરક હૈ ॥૧૨-૧૩॥

92-93. A mild medication administered to one that has undergone the oleation procedure and who is soft-bowelled rouses up the kapha and the pitta and obstructs the vata, and gives rise to torpor heaviness, exhaustion and asthenia. In this condition, the patient should be made to vomit out the medication as well as the morbid matter. Then he should be given lightening and digestive remedies. Afterwards he should be given unctuous and strong purificatory measures.

અધ્યાયોપવિષયસંગ્રહ:—

તત્ર શ્લોકો—

इत्येता व्यापदः प्रोक्ताः सरूपाः सचिकित्सिताः ।  
वमनस्य विरेकस्य कृतस्याकुशलैर्नृणाम् ॥२४॥

તત્ર શ્લોકો તે વિષયમાં ઉપસંહારના એ શ્લોક છે કે તલ વિષયમેં ઉપસંહારકે દો શ્લોક હૈં કિ, અકુશલૈઃ કુશળતારહિત વૈદ્યોએ અકુશલ વૈદ્યસે, નૃણામ કૃતક્રમનુષ્ઠીમાં પ્રયોજેલાં મનુષ્યોમેં પ્રયુક્ત કી ગઈ, વમનમ્ વમન, વિરેકસ્ય તથા વિરેચન ઔષધોથી ઉપચ

યનારી તથા વિરેચન ઔષ્ધોમે ક્રમજ્ઞ હોનેવાની, ફતિ પતા: આ: વે મરૂપા: શરૂપ, સરૂપ, મતિકિત્સિતા: અને ચિકિત્સાસંહત ઔષધિવાસમેત, વ્યારક: વ્યપતિઓ વ્યાપતિઓ, પ્રોક્તા કહેવામાં આવી છે કહી હૈં ॥ ૧૪ ॥

Here are the two recapitulatory verses—

94. Thus have been described along with their signs and symptoms and treatment, the complications arising from the procedures of emesis and purgation done by unskilled physicians.

एता विज्ञाय मतिमानवस्थाश्च तत्त्वतः ।

दद्यात् संशोधनं सम्यगारोग्यार्थी नृणां सदा ॥२५॥

एता: आ: व्यपत्तिओ उन व्यापत्तिओ, अवस्था: च एव અને अवસ્થાઓને ઔર अवस्थाओंके, तत्त्वतः सत्य स्वरૂપમાં तत्त्वसे, विज्ञाय બુદ્ધીને જાણકર, નૃણામ મનુષ્યોના મનુષ્યોકે મદદ સદા સદા, આરોગ્યાર્થી આરોગ્યની પ્રત્યાશાવાળા આરોગ્યકો ઇચ્છાવાલા, મતિમાન્ બુદ્ધિમાન વૈદ્યે બુદ્ધિમાન વિકિત્સક, સમ્યક્ સા. ડી રીતે મલો પ્રકાર, સંશોધનમ્ સંશોધન સંશોધન, દદ્યાત્ આપવું દેવે ॥ ૧૫ ॥

95. The wise physician, versed in the correct pathology and stages of these conditions, should administer properly the purificatory procedures with a view always to completely restore the health of the patient.

इत्यग्निवेशकृते तन्मे चरकप्रतिसंस्कृतेऽप्राते  
दृढबलसंपूरिते सिद्धिस्थाने वमनविरेचन-  
व्यापत्तिखनिर्नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

૧૪ મરૂપા: -- સર્વા હિ (સ. ૪)

૧૧ વમનસ્ય વિરેકસ્ય કૃતસ્યાકુશલૈર્નૃણામ્-વિરેચનસા-

કુશલૈર્વૈદ્યસ્ય વમનસ્ય ચ (વ. ૪.)

૧૫ એતા વિજ્ઞાય મતિમાન્-વીજ્ઞાન્ વિજ્ઞાય તાસ્તસ્માદ્ (અ. વ. ૪.)

, દદ્યાન્-કુર્વાત્ (દ. ૪)

, આરોગ્યાર્થી-આરોગ્યાર્થે (અ. ૪)

इति आ प्रभाषे, इस प्रकार, अग्निवेशकृते अग्निवेशे  
रथेवा अग्निवेशसे बनाये, चरकप्रतिसंस्कृते तन्त्रे अने  
अरुच्ये प्रतिसंस्कार पायेवा आ शास्त्रमां और  
चरकके द्वारा संस्कृत इस शास्त्रके, अप्राप्ते अप्राप्त,  
दृढबलसंप्रति अने दृढभवे पूरा करेवा और दृढबलसे  
पूरित किये गये, सिद्धिस्थाने सिद्धिस्थान निषे सिद्धिस्थानमें,  
वमनचिरेचनव्यापत्तिस्तिद्धिः 'वमनचिरेचनव्यापत्तिस्तिद्धिः'  
'वमनचिरेचनव्यापत्तिस्तिद्धिः', नाम नामने नामका, वषः  
छठो छठ्ठा, अध्यायः अध्याय संपूर्ण यथे अध्याय  
समाप्त हुआ ॥ ६ ॥

6. Thus, in the Section on Success in Treatment, in the treatise compiled by Agnivesa and revised by Caraka, the sixth chapter entitled 'The successful treatment of Complications arising from the procedures of Enema and Purgation' not being available, the same as restored by Dridhabala, is completed.

### सप्तमोऽध्यायः ।

सातमो अध्याय अध्याय सातवाँ

### Chapter VII

वस्तिव्यापत्तिद्वयपक्रमः —

अथातो वस्तिव्यापत्तिस्तिद्धिं व्याख्यास्यामः ॥ १ ॥

इति ह स्माह भगवानात्रेयः ॥ २ ॥

अथ अतः हवे अहोथी अब आगे, वस्तिव्या-  
पत्तिस्तिद्धिं 'अस्तिव्यापत्तिस्तिद्धिः' नामना अध्यायनु  
'वस्तिव्यापत्तिस्तिद्धिः' नामके अध्यायका, व्याख्यास्यामः  
आभ्यास करेथुं व्याख्यान करेंगे ॥ १ ॥

अगवान् अगवान् भगवान्, आत्रेयः आत्रेये  
आत्रेयने, इति ह आ विषयमां नीये प्रभाषे अ इस  
विषयमें निम्न प्रकारसे ही, आह आ कहेंगे थे कहा है ॥ २ ॥

1 We shall now expound the chapter entitled 'The Success in Treatment of the Complications arising from the administration of the Enema'.

2 Thus declared the worshipful Atreya.

धीधैर्यौदार्यगाम्भीर्यक्षमादमतपोनिधिम् ।

पुनर्वसुं शिष्यगणः पप्रच्छ विनयान्वितः ॥ ३ ॥

काः कति व्यापदो बन्ते? किमुत्थानलक्षणाः ।

का चिकित्सा इति प्रश्नाञ्छ्रुत्वा तानब्रवीद्गुरुः ॥ ४ ॥

विनय- विनय विनय, अन्वितः युक्त सम्पन्न,  
शिष्यगणः शिष्यगणे शिष्यगणने, धी- बुद्धि बुद्धि, धैर्य-  
धैर्य धैर्य, औदार्य- उदारता उदारता, गाम्भीर्य  
गम्भीरता गम्भीरता, क्षमा- क्षमा क्षमा, दम- धृष्टि  
दमन दमन, तपोनिधिम् अने तपना अंगर और तपके  
निधिस्वरूप, पुनर्वसुम् पुनर्वसुने पुनर्वसुसे, पप्रच्छ पूछथुं  
प्रश्न किया, बन्ते अस्तिनी वस्तिनी, काः कति कौन  
कौन, कति अने कटली और कितनी, व्यापदः व्यापत्तिओ  
छे? व्यापत्तियां हैं?, किमुत्थानलक्षणाः तेओना  
हेतु अने लक्षण शां छे? उनके हेतु और लक्षण क्या  
हैं?, का शी क्या, चिकित्सा चिकित्सा छे? चिकित्सा  
है?, इति आ इन प्रश्नान् प्रश्नोने प्रश्नोको, श्रुत्वा  
श्रावणोने सुनकर, गुरुः गुरुओ गुरुने, तान् तेओने  
इनके प्रति, अबबीच कहें कहा ॥ ३-४ ॥

3. The assembly of disciples inquired with due humility, the great teacher Punarvasu, a veritable storehouse of intelligence, fortitude, large-heartedness, profundity, patience, restraint and austerity, saying:—  
"What are the complications arising from the administration of enema? How many are they? What are their causes and their symptoms? What are the therapeutic measures?" On



which is very dense; the enema of this description will only stir up the morbid matter without eliminating it owing to its weak action. It will consequently produce heaviness of the alimentary tract and retention of flatus, urine and feces, pain in the umbilical and hypogastric regions burning increased mucus secretion in the stomach, edema of the anorectal region, pruritus, onchoma, discoloration, anorexia and dullness of the gastric fire.

તત્રોષ્ણાયાઃ પ્રમથ્યાયાઃ પાનં સ્વેદાઃ પૃથગ્વિધાઃ ।  
ફલવર્ત્યોઽથવા કાલં જાત્વા શસ્તં વિરેચનમ્ ॥૧૦॥

તત્ર તેભાં !નમ્, ઉષ્ણાયાઃ અરમ્ ગરમ, પ્રમથ્યાયાઃ પ્રમથ્યાનું પ્રમથ્યાકા, પાનમ્ પાન પાન, પૃથગ્વિધાઃ બુદ્ધિ બુદ્ધિ પ્રકારના નાના પ્રકારકે, સ્વેદાઃ સ્વેદ સ્વેદ, ફલવર્ત્યઃ ફલવર્તિઓ, ફલવર્તિયાં, અથવા અથવા અથવા, કાલમ્ વિરેચનયોગ્ય અવસ્થાને વિરેચનયોગ્ય અવસ્થાકો, જાત્વા બેઠીને દેશકર, વિરેચનમ્ વિરેચન વિરેચન, શસ્તં પ્રશસ્ત છે પ્રશસ્ત છે ॥ ૧૦ ॥

10. In these conditions a warm potion of digestive decoctions, various methods of sudation, suppositories prepared of emetic nut or at the right time the administration of purgation are recommended.

ચિત્તમૂલત્રિવૃદ્ધાદયવકોલકુલત્થવાન્ ।  
સુરાદિમૂત્રવાન્ વસ્તિઃ સપ્રાક્ષેપ્યસ્તમાનયેન્ ॥૧૧॥

ચિત્ત-મૂલ-બીલીનાં મૂળ વેલકા મૂલ, ત્રિવૃદ્ધ-ત્રિવૃદ્ધ ત્રિવૃદ્ધ, વાહ- દેવદાર દેવદાર, ચવ- બન જી, કોલ- બેર, કુલત્થવાન્ અને કળથીથી યુક્ત ઔષ્ધ

કુળથીથી યુક્ત, સુરાદિ તથા સુરા વગેરે તથા સુરાદિ, મૂત્રવાન્ અને ગોમૂત્રથી યુક્ત ઔષ્ધ ગોમૂત્ર મિલકત, સપ્રાક્ષેપ્યઃ અગાઉ કહેલ કહેલી યુક્ત પૂર્વેક કલ્કોકે સાથે વસ્તિઃ અસ્તિ વસ્તિ, તમ્ તે અતિયોગપ્રારંભ વિગત અસ્તિને અસોગકારક વિગત વસ્તિનો, આનયેન્ હરે છે બાહર લે આતી છે ॥ ૧૧ ॥

11. The enema prepared of bael root, turpeth, deodar bark, barley, jujube, horse-gram, Sura and other wines and cow's urine mixed with the medicinal paste described earlier will draw out the morbid matter.

અતિયોગવ્યાપદો વર્ગેનં ચિકિત્સા ચ—

ચિત્તમૂલત્રિવૃદ્ધોષ્ણો મૃદુકોષ્ઠેઽતિયુજ્યતે ।  
તત્થ લિઙ્ગં ચિકિત્સા ચ શોષનામ્બ્યાં સમા ભવેન્ ॥૧૨॥

ચિત્ત-મૂલ-પામેલ ચિત્ત, ચિત્તે અને સ્વેદન પામેલ ઔષ્ધ ચિત્ત, મૃદુકોષ્ઠે મૃદુકોષ્ઠવાળાને આપેલ મૃદુકોષ્ઠ પુરુષમે, અતિતીક્ષ્ણ-અતિતીક્ષ્ણ અતિતીક્ષ્ણ, ઉષ્ણઃ અને ઉષ્ણઅસ્તિ ઔષ્ણ વસ્તિ, અતિયુજ્યતે અતિયોગ કરનાર અને છે અતિયોગ કરતી છે, તત્થ તેનાં ઉપકે, લિઙ્ગમ્ લક્ષણ, ચિકિત્સા ચ તથા ચિકિત્સા તથા ચિકિત્સા, શોષનામ્બ્યાં અને શોષનાના અતિયોગનાં લિંગ તથા ચિકિત્સા, શોષનાના અતિયોગનાં લિંગ તથા ચિકિત્સા, સમા સમાન સમાન, ભવેન્ છે ॥ ૧૨ ॥

12. The enema which is given to a person who has previously been subjected to oleation and sudation and who is soft-bowelled, and the enema which is prepared with strong and hot medications will produce over-action. The symptoms and treatment of this condition will be similar to those given in over-action of purificatory procedures.

૧૧. સુરાદિમૂત્રવાન્-સુરામૂત્રાદિના (ચ.ક.)

૧૨. સપ્રાક્ષેપ્યસ્તમાનયેન્-પ્રાક્ષેપિતમાનયેન્ (ક.ચ.ક.)



पृश्निपर्णी स्थिरं पद्मं काशमर्षं मधुकं बलाम् ।  
 पिष्ट्वा द्राक्षां मधुकं च क्षीरे तण्डुलधावने ॥२३॥  
 द्राक्षायाः पक्वलोष्टम् प्रसादे मधुकस्य च ।  
 विनीय लघुतं यस्ति दद्याद्वाहेऽनियोगजे ॥२४॥

पृश्निपर्णीम् पृश्निपर्णी पृश्निपर्णी, स्थिराम् शावकम्  
 शावपणी, पद्मम् कमलम्, काशमर्षम् शीतपुनः  
 ३० गम्भासीकल, मधुकम् नेलीमधुं सुलहरी, बलाम्  
 भला बला, द्राक्षा द्राक्ष सुतका मधुकं अने मधुनारे  
 ओर महुवा इनको, पिष्ट्वा पीसी पीसकर क्षीरे दूधभां  
 दूधमें, तण्डुलधावने ये आना धोखुं तण्डुलोरकमें,  
 द्राक्षायाः तेम ४ द्राक्ष एवं सुतकाके, पक्वलोष्टम् तपावी  
 धाव करेय भाटीन देक्ष पक्व सिद्धीके देनेके मधुकस्य  
 अने नेलीमधुना और सुलहरीक, प्रसादे च शीत  
 कपायनी विधिसे करेया प्रसादमें, विनीय वेणी घोलकर  
 सघृतम् बीसहित बीके राग, कस्तिम अस्त वस्ति, अति-  
 योगजे अतिथेयसी उपर्युक्त अथैव अतियोगजम्,  
 वाहे द्राक्षभां दाहमें, दद्यात् देवी देवे ॥ १३-१४ ॥

13-14. To relieve the burning sen-  
 sation induced by the over-action, the  
 physician should give an enema pre-  
 pared with the paste of painted-leaved  
 tick-trefoil, lotus, white teak, liquorice,  
 sida, grapes, or mahwa in milk or  
 rice water or the cold infusion of  
 grapes or of baked earth or of liquorice,  
 mixed with ghee.

कृमाशयव्यापदो वर्णनं चिकित्सा च—

आमशोषे निरुहेण मृदुता दोष इरितः ।

मार्गे कण्ठि वातस्य हृन्मयि मूर्च्छयत्यपि ॥२५॥

२३. मधुकं बलाम् नेलीमधु सुलहरी (श. व. त. व. क.)

२४. वाहेऽनियोगजे—दाहानि गिने क.

२५. आमशोषे—आमशोषे (श. व. त. व. क.)

१. मार्गिकण्ठि वातस्य हृन्मयि मूर्च्छयत्यपि—मूर्च्छयत्यपि  
 मार्गि कण्ठिकणि हृन्मयि (श. व. त.)

कृमं विदाहं हृच्छूलं मोहवैद्यनगोरवम् ।  
 कुर्यात् स्वेदं विरुहेण रात्रौ न्याय्युपाचरेत् ॥२६॥

आमशोषे आम शोषी हेता आम शोष होने पर,  
 मृदुता मृदु मृदु निरुहेण निरुधरी निरुधरी, इरितः  
 प्रेरित प्रेरित, दोष दोष, वातस्य वायुना वायुके,  
 मार्गे मार्गे मार्गे, कण्ठि कण्ठि के रोक्ता है,  
 मयि मयि, मयि, इति नाथ के के लह करता  
 है, मूर्च्छयति अपि वायुने मयि के के वायुको कृपित  
 कर देता है, कृमम् कृम कृम विदाहम् विदाह विदाह,  
 हृच्छूलम् हृच्छूलम् हृच्छूलम् मोह- मोह मोह,  
 वैद्यन- वैद्यन वैद्यन, गोरवम् गोरव गोरव और गोरवको,  
 कुर्यात् करे के करता है, रात्रौ रात्रौ रात्रौ, विरुहे-  
 रक्ष रुक्ष, स्वेदः स्वेदोऽथी स्वेदनोसे, पाचनेः अने  
 पाचनोऽथी और पाचनेमें, उपाचरेत् उपचार करे।  
 चिकित्सा करनी चाहिए ॥ १५-१६ ॥

15-16. If there is a residue of  
 chyme and then evacnative enema given  
 is mild the stirring up of the morbid  
 matter obstructs the course of vata,  
 impairs the gastric fire and also  
 provokes the vata and causes  
 exhaustion burning, cardiac pain,  
 stupefaction, cramps and heaviness  
 The physician should treat this con-  
 dition with dry method of sudation  
 and digestive medication.

पिप्पलीकचुणोशीरदाकमूर्च्छाभृतं जलम् ।

पिबेत् सौवर्चलोमिमं क्षीपनं हृदिसोषणम् ॥२७॥

पिप्पली- पीपर पिप्पली, चुणु- चुणु चुणु,  
 ओशीर- वीरुने नाथै खव, दाक- देवदार, देवदार,  
 मूर्च्छा- अने मूर्च्छा और मूर्च्छा, जलम् जलम् पकाया  
 हुआ, पिबेत् पीये जल, सौवर्चल- सौवर्चल सौवर्चल,  
 हृदिसोषणम् हृदिसोषण मिनकर, पिबेत् पीये पीये, क्षीपनम्  
 ते अग्निदीपन वह अग्निदीपन, हृदिसोषणम् अने

१७. विदाह-दाह (श. व. त.)



हृदयं शोधनं कर्तव्यं छे और हृदयको शुद्ध करनेवाला है ॥१७॥

17. The patient may drink the water medicated with long pepper ginger grass, cuscus deodar, and trilobed virgin's bower mixed with ranchal salt. This is digestive stimulant and cleanses the stomach.

वचानागरशट्येला दधिमण्डेन मूर्च्छिताः ।

पेयाः प्रसन्नया वा स्युरविष्टेनासवेन वा ॥१८॥

वचा- वच, नागर- सूँडे सोंडे, छटी- पटुचूरो कचूर, एलाः अने औषधी और इलायचीको, दधिमण्डेन दहीना भंडां दधिमण्डसे, मूर्च्छिताः थोड़ीने मिलाकर, प्रसन्नया वा अन्नया प्रसन्नासे, अरिष्टेन अरिष्ट अरिष्टसे, नासवेन वा अन्नया आसवेन साथे या आसवेसे, पेयाः स्युः पीना पीना चाहिए ॥१८॥

18. Or the patient may drink whey mixed with sweet flag, dry ginger, long zedoary and small cardamom in conjunction with Prasanna wine or medicated or simple wines.

दारु त्रिकटुकं पथ्यां पलाशं चित्रकं शटीम् ।

पिष्ट्वा कुष्ठं च मूत्रेण पिबेत् क्षारांश्च दीपनान् ॥१९॥

वस्तिमस्य विदध्याच्च समूत्रं दाशमूलिकम् ।

समूत्रमथवा व्यकलवणं माधुतैलिकम् ॥२०॥

दारु देवदार देवदार, त्रिकटुकम् त्रिकटु त्रिकटु, पथ्याम् ७२३ हरड़, पलाशम् भाभरो डाक, चित्रकम् चित्रो चिता, शटीम् पटुचूरो कचूर, कुष्ठम् अने कुठने और कुठको, पिष्ट्वा पीसीने पीसकर, मूत्रेण गोभूत साथे गोभूतसे मिलाकर, पिबेत् पीना पीवे, दीपनान् अने अग्निदीपन और दीपन, क्षारान् च क्षारो पक्षु पीना क्षारको भी पीवे, अथ येने इसे, दाशमूलिकम् दशमूलानी

१८. शब्देना-संज्ञका (ब. स.)

१९. त्रिकटुकम्-त्रिकटुकम् (ग. व.)

२०. माधुतैलिकम्-माधुतैलिकम् (ब. स.)

दशमूलकी, वस्तिम् अस्ति वस्ति, समूत्रम् च गोभूत-सहित गोभूतयुक्त, अथवा अथवा अथवा, व्यकलवणम् देभाध आवे ओटका भीक्षनाणी लवणाधिक, माधुतैलिकम् माधुतैलिक अस्ति माधुतैलिक वस्ति, समूत्रम् गोभूतसहित गोभूतयुक्त, विदध्यात् देवी देवे ॥१९-२०॥

19-20 Or the patient may take as potion the pulp of deodar, the three spices, chebulic myrobalans, palas, white flowered leadwort and costus mixed with cow's urine, or he may take a potion of alkali which is digestive stimulant. Or he may be given enema prepared with deca-radices in cow's urine, or an enema prepared of honey and oil mixed with cow's urine and well salted.

आध्मानव्यापदो वर्णनं चिकित्सा च—

अल्पवीर्यो महादोषे रुक्षे कूराशये कृतः ।

वस्तिर्दोषावृत्तो रुद्धमार्गो रुद्ध्यात् समीरणम् ॥२१॥

स विमार्गोऽनिलः कुर्याद्वाध्मानं मर्मपीडनम् ।

विदाहं गुरुकोष्ठस्य मुष्कवङ्गणवेदनम् ॥२२॥

रुणद्धि हृदयं शूलैरितश्चेतश्च धावति ।

महादोषे महादोषवाणा महादोषवाले, रुक्षे रुक्ष कक्ष, कूराशये कूर कोरावाणा अनुप्यने कर कोषवाले पुरुषमें, कृतः आपेक्ष ही हुई, अल्पवीर्यः अल्प वीर्यवाणी अल्पवीर्य, वस्तिः अस्ति वस्ति, दोष- दोषधी दोषसे, आवृत्तः वेराध अध आवृत्त होकर, रुद्धमार्गः भाग रोकाध अधधी मार्गके रुद्ध जानेसे, समीरणम् वायुने वायुको रुद्ध्यात् निरोध करे छे रोकती है, विमार्गः विमार्गवाणी विमार्गगत, सः ते वह, अनिलः पांथु वायु, आध्मानम् आध्मान आध्मान, मर्मपीडनम् मर्मपीडा मर्मपीडा, विदाहम् विदाह विदाह, गुरुकोष्ठस्य गुरु कोष्ठवाले गुरुकोष्ठका, मुष्क- अंड अंड, वङ्गण- वंक्षण

२१. वस्तिर्दोषावृत्तो रुद्धमार्गो रुद्ध्यात्-वस्तिर्दोषावृत्तस्त्वर्थमथो

रुद्ध्यात् (ब. व.)

२२. गुरुकोष्ठस्य-गुरुकोष्ठस्य (ग.)

तथा वक्षुनी और वक्षुणमें, वेदनान् पीड मोडा कुर्यात्  
उरे छे कली है, हृदयम् हृदये हृदयका, शूलैः शूलपी  
शूलसे. रुणद्धि रेडो छे छे उपरोध कर्ती है इतः न  
अने आभ तेभ और उधर उधर, धावति छे छे छे  
शेडती है ॥ २१-२२३ ॥

21-223. The enema of a poor potency  
given in conditions of great morbidity,  
dehydration or to a low-bowelled per-  
son, gets covered up by the accumu-  
lated morbid matter and becomes  
clogged in the channels, causing  
obstruction to the movement of the  
vata. This obstructed vata flowing in a  
wrong course, causes distension of  
abdomen, pressure on the vital organs,  
burning, heaviness of the alimentary  
tract, pain in the scrotum and groin,  
and impedes the action of the heart  
and causes pain running about here  
and there irregularly

इयामाकलादिभिः कुष्ठकुष्ठणालवणसर्पैः ॥२३॥  
धूममाषवचाकिण्वक्षारचूर्णगुडैः कृताम् ।  
कराकुष्ठनिभां वर्ति यवमर्घ्यां निधापयेत् ॥२४॥  
अभ्यक्तस्त्रिषगात्रस्य तैलाकां ज्ञेहि ते गुदे ।  
अथवा लवणागारधूमसिद्धार्थकैः कृताम् ॥२५॥

अभ्यक्त- अभ्यज्ज करेव अभ्यज्ज किये हुए, स्त्रिष-  
अने स्वेद करानेव और स्त्रिष, गात्रस्य अभ्यज्जणा  
भनुष्यनी शरीरवाले पुरुषकी, स्नेहिते स्नेहयुक्त स्नेहयुक्त,  
गुदे गुदाभां गुदामें, इयामा-श्यामा इयामा, कलादिभिः  
अने भीष्मण वज्रेथी और मेनकल आदिसे, कुष्ठ- कठ कूठ,  
कुष्ठण- पीपर पिपली, लवण- लवण लवण, सर्पैः अने  
सरसवशी और सरसोंसे, धूम- अने धूस और गुहधूम,  
माष- अड्ड उड्ड, वचा- वज्र वज्र, किण्व- सुरापीज

किण्वशीर धार- तथा क्षर तथा क्षार, चूर्ण- औषधीनां  
चूर्ण इतके चूर्ण गुडैः अने गुणशी और गुप्ते,  
कृताम्- अन्तर्वेदी बनगी, करा- इयामा हाथके, कटुष्ठ-  
अभ्युः संगुठके, निधाप- जेवी समान, यवमर्घ्याम्  
वगर्भा २५ जेवी मध्यमे त्रैके मध्य तैलाकां तेव  
ये रेव तैल चुपड़ी हुई अथवा अथवा अथवा, लवण-  
लवण लवण, अगारधूम- गुहधूम गुहधूम, सिद्धार्थकैः  
अने सरसवशी और सरसोंसे, कृताम् करेवी की हुई,  
वर्तिष्म वर्ति वर्ति. निधापयेत् गार्भी रक्ते ॥२३-२५॥

23-25. Take emetic root, turpeth  
and the other drugs of that group,  
costus, long pepper, rock-salt, rape  
seed, kitchen soot, flour of black-gram,  
sweet flag yeast and barley alkali;  
mix this with gur and prepare a sup-  
pository of the size of a thumb and  
of the shape of a barley seed and  
smearing it with oil, insert it in the  
lubricated anus of the person who  
has been previously treated with  
unction and sudation. Or a supposi-  
tory prepared of rock salt, kitchen  
soot and rape-seed may also be  
used.

विद्वशादिना निरुहः स्यात् पीडुसर्वपमूत्रवार ।  
सरलामरदाहभ्यां सिद्धं चैवानुवासनम् ॥२६॥

विद्वशादिना पीडनी वज्रेथी वेक आदिसे, पीडु-  
पीडु पीडु, सर्वप- सरसव सरसों, मूत्रवार अने जे-  
भूतसहित और मोमयुक्त, निरुह निरुहभरित देवी  
निरुहभरित देवे, सरल- अने सरल एवं सरल, वमर-  
दाहभ्याम् तथा देवदारथी और देवदारसे, सिद्धम् सिद्ध  
करेव सिद्ध, अनुवासनम् च एव अनुवासन अनुवासन,  
स्यात् देव देवे ॥ २६ ॥

२६. एतच्छुद्धि जननस्य -

२४. निधापयेत्-प्रवेशयेत् (क. फ.)

२५. अभ्यक्त-स्त्रिषक (क.)

इयामा-नठवापिकिला ।

इत्यधिकः पाठः (क.) पुस्तके ।

26. Or the patient may be given a evacuative enema prepared of bael and the other drugs of its group, tooth-brush tree, rape-seed and cow's urine; and he may then be administered an unctuous enema prepared with long leaved pine and deodar.

દિકામ્પાપદો વર્ણનં ચિકિત્સા ચ—

મૃદુકોષ્ઠેઽબલે વસ્તિરતિતીક્ષ્ણોઽતિનિર્હરન્ ।

કુર્યાદિકાં, હિતં તસ્મૈ દિકામ્પં વૃંહણં ચ યત્ ॥૨૭॥

મૃદુકોષ્ઠે મૃદુ કોષ્ઠવાળા મૃદુકોષ્ઠ, અબલે અને નિર્બળ મનુષ્યને આપેલ એવં નિર્બલ મનુષ્યકો દી ગઈ, અતિતીક્ષ્ણઃ અતિતીક્ષ્ણ અત્યન્ત તીક્ષ્ણ, વસ્તિઃ અસ્તિ વસ્તિ, અતિનિર્હરન્ દોષને અતિચોગથી બહાર કાઢતાં દોષોનો અતિયોગસે નિકાલથી હૂંઈ, દિકામ્પ હેઝી દિકા, કુર્યા ઉત્પન્ન કરે છે ઉત્પન્ન કરતી હૈઃ તસ્મૈ તેને ઇસકો, યત્ ને જો, દિકામ્પ હેઝીતું નાશક દિકાનાશક, વૃંહણમ્ ચ તથા બુંદણુ હોય તે તથા વૃંહણ હો વહ, હિતમ્ હિતકર છે હિતકર હૈ ॥ ૨૭ ॥

27. A very strong enema given to a weak and soft-bowelled person will eliminate over much and cause hiccup. In this condition, treatment which is curative of hiccup and roborant is advised.

વલાસ્થિરાદિકાશ્મર્યત્રિફલાગુડસૈન્ધવૈઃ ।

સપ્રસન્નારનાલામ્લૈસ્તૈલં પત્ત્વાઽનુવાસયેત્ ॥૨૮॥

વલા- બલા, વલા, સ્થિરાદિ- શાલપર્ણી વગેરે શાલપર્ણી આદિ, કાશ્મર્ય- શ્લીવલુનાં ફળ ગમ્મારકે ફલ, ત્રિફલા- ત્રિફલા ત્રિફલા, ગુડ- ગોળ ગુડ, સૈન્ધવૈઃ અને સિંધાવૃણથી ઔર સૈન્ધાનમકકા કલ્ક મિલાકર, સપ્રસન્ના- પ્રસન્ના પ્રસન્ના, અરનાલામ્લૈઃ અને ખાટી આરનાલાથી ઔર સહી આરનાલાયે, તૈલમ્ તેલ તેલ,

૨૭. દિકાં હિતં-દિકાદિકં (ક, દ.)

,, તસ્મૈ-તત્ર (વ, જ, ટ.)

પત્ત્વા પટ્ટાવીને પટ્ટાકર, અનુવાસયેદ અનુવાસન કરવું અનુવાસન દેવે ॥ ૨૮ ॥

28. The patient may be given an unctuous enema of the oil prepared with the paste of sida, tick trefoil and other drugs of its group, white teak, the three myrobalans, gur and rock salt along with Prasanna wine and sour conjee.

કુળ્લાલવળયોરશ્ચ વિવેકુળ્લામ્બુના યુતમ્ ।

ધૂમ્લેહરસક્ષીરસેવાશ્ચાજં ચ વાતનુત્ ॥૨૯॥

કુળ્લા- પીપર પિપ્પલી, લવણયોઃ તથા સિંધા- વૃણના ચૂર્ણને તથા સૈન્ધાનમકકે ચૂર્ણકો, અશ્વઃ એક કર્ષે એક તોલે, કુળ્લામ્બુના મરમ પાણી ગરમ જલકે, યુતમ્ સાથે સાથ વિવેક પીપુ પીવે, ધૂમ- વાતહર ધૂમ વાતહર ધૂમ, લેહ- અન્દ્રેહ લેહ, રસ- મીસરસ માંસરસ, સ્ત્રીર- દૂધ દૂધ, સ્વેદાઃ ચ સ્વેદ સ્વેદ, વાતનુત્ અને વાતહર ઔર વાતનાશક, અજમ્ ચ અજ દેવા અજ દેના चाहिए ॥ ૨૯ ॥

29. Or the patient may take the pulvis of long pepper and rock salt of the measure of one tola, with warm water. Inhalations, linctus, meat-juices, milk, sudation and foods that are curative of vata are also recommended.

હસ્પ્રાસિન્ધાપદો વર્ણનં ચિકિત્સા ચ—

અતિતીક્ષ્ણઃ સવાતો વા ન વા સમ્યક્ પ્રપીઢિતઃ ।

ચદૃયેચ્છદયં વસ્તિસ્તત્ર કાશકુશોતકટૈઃ ॥૩૦॥

સ્પ્યાત્ સામ્લલવળસ્કન્ધકરીરવદરીફલૈઃ ।

મૃતૈર્વસ્તિર્હિતઃ સિઙ્ગં વાતપ્રેક્ષાનુવાસનમ્ ॥૩૧॥

અતિતીક્ષ્ણઃ અતિતીક્ષ્ણ અતિતીક્ષ્ણ, સવાતઃ વા વાયુસંહિત વાયુસંહિત, સમ્યક્ અમ્યક્ અમ્યક્ સરખી રીતે અમ્યક્ સમ્યક્, ન ન ન, પ્રપીઢિતઃ વા દબાવેલ

૨૯. કુળ્લાલવળયોરશ્ચ વિવેકુળ્લામ્બુના યુતમ્-કુળ્લામ્બુનાઃ

પિપ્પલા દિતો સરજસંકુતઃ (વ, ધ.)

प्रपीडन करके दी गई, बस्ति अस्ति वस्ति, हृदयम् हृदये हृदयमें, वट्टवेद आधात करे छे बोट करती है, तब तेभा इसमें, वृत्तेः अथवा करणभा आनेवाला ज्ञान किये गये, काक- काश ज्ञान, कुश- हर्ष दाम, इत्कटैः छकट इत्कट, साम्क- अग्निस्त्रिंश अमलस्त्रिंश, लवणस्कन्ध- अग्ने अथवास्त्रिंशनां द्रव्यो अग्ने लवणस्कन्धके द्रव्योंसे, करीर- करीर करीर, बदरीफलैः तथा ओर- और बेगकी, बस्तिः अस्ति वस्ति, हितः स्वाय हितकर है हितकर है, वातघ्नैः अग्ने वातघ्न द्रव्यो अग्ने वातघ्न औषधोंसे, सिद्धम् सिद्ध करे तब सिद्ध किये तैलका अनुवासनम् च अनुवासन हितकर छे अनुवासन हितकर है ॥ ३०-३१ ॥

3031. Enema, strongly medicated or containing air bubbles or improperly compressed, will afflict the heart. In this condition, the evacuative enema prepared with the decoction of thatch grass, sacrificial grass, and Itkata grass, the drugs of the sour and salt groups, common caner and jujube are beneficial. This should be followed by an unctuous enema prepared with drugs curative of vata.

ऊर्ध्वताख्यव्यापदो वर्णनं चिकित्सा च—

वातमूत्रपुरीषाणां दत्ते वेगाग्निगृह्यतः ।

अति वा पीडितो बस्तिमुन्नेतायाति वेगवान् ॥३२॥

दत्ते अस्ति दीधा पक्षी बस्ति देनेके पश्चात्, वात- वात वात, मूत्र- मूत्र मूत्र, पुरीषाणाञ्च तथा मूत्रना तथा पुरीषके, वेगान् वेगोने वेगोंको, निगृह्यतः रोडनारन्गी रोडनेवालेकी, अति अथवा बहुत अथवा अति, पीडितः वा हानावीने दीधेद पीडन करके दी हुई, बस्तिः अस्ति बस्ति, वेगवान् वेगवाणी अथ वेगवान होकर, मुखेन मुखेन मुखसे, आयाति अहार आने छे बाहर आती है ॥ ३२ ॥

32. If, after the enema has been given, the urge of the flatus, urine and feces is suppressed, and if the enema is given with great pressure, the forceful flow of the fluid may find its way out through the oral cavity.

मूच्छाविकारं तस्यासौ दृष्ट्वा शीतान्धुना मुखम् ।  
सिञ्चेत् पार्श्वोदरं चाथः प्रमुञ्ज्याद्वीजनेषु तम् ३३  
केशोष्णालम्ब्य चाकाशे ध्रुव्यात् त्रासयेच्च तम् ।  
गोखराश्वगजैः सिंहैः राजप्रेमैस्तथोरगेः ॥३४॥  
उत्क्रामिरेवमन्यैश्च मीनस्याथः प्रवर्तते ।

तब तेने उससे, मूच्छाविकारम् मूच्छाविकार यथेष्टे। मूच्छासि युक्त, दृष्ट्वा ओष्ठने देखकर, आशे प्रथम प्रथम, मुखम् मुख उपर मुखपर, शीत- शीत शीतल, अन्धुना अण जलसे, सिञ्चेत् छटपुं सींचे पार्श्व- पार्श्व पार्श्व उदरम् च अग्ने उदरने और उदरक, अथः नीचेनी तरङ नीचेकी ओर, प्रमुञ्ज्यात् भस्मगवा नने, तब तेने उसका, वीजनेषु च पार्श्वे नाभवे पंखा करे, तम् तेने उसको, केशेषु केश वालोंसे, आलम्ब्य पक्षीने पकड़कर, आकाशे आली अणामा खानी जगहमें, ध्रुव्यात् हवावने अवधूतन करे, गो- गाय गाय, खर- अधिडा गवा, अथ- वेद बोका, गजैः हानी हाथी, सिंहैः सिंह सिंह, राजप्रेमैः सीपार्थ चरेरे राजना सेवक। सिपाही आदि राजके सेवक, तथा उरगेः आप बाप। उत्क्रामिः अणामा उत्क्रामों, एवम् अग्ने अथवा प्रकारना और ऐसे, अन्यैः च अणामा अथवा अन्य उपायोंसे, त्रासयेत् त्रास पमाउवे त्रास देना चाहिए, शीतल अणामा पुरुषनी शीत हुए पुरुषकी, अथः अस्ति नीचेनी तरङ बस्ति नीचेकी ओर, प्रवर्तते प्रवृत्त अथ छे प्रवृत्त हो जाती है ॥ ३३-३४ ॥

३४ आलम्ब्य-आलम्ब्य (उ. त. व. ५.)

चाकाशे ध्रुव्यात् त्रासयेत् तम्-चाकाशे ध्रुव्यात् त्रासयेत् तम् (व.)

३४ ३ मीनस्याथः प्रवर्तते-बस्तिमुख न्यसेदधः (व.)

मीनस्याथः प्रवर्तते-मीनस्याथः प्रवर्तते (व.)

मीनस्याथः प्रवर्तते-बस्तिमुख न्यसेदधः (व. ५.)

३२. अति वा पीडितः—अतिपीडितः (व.)

33-34½. On observing the unctuous condition in the patient, induced by this complication, his face should be immediately washed with cold water and the sides, abdomen and the nether parts laved with cold water and the patient should be continually fanned. In extreme cases, it may be necessary to hold the patient, by his hair, in mid air and shake him and also frighten him by means of infuriated bulls, asses, elephants and lions or the executioners of the king, serpents, fireworks and such other fearful things. When the patient is terrified in this manner, the aberrant flow of the enema will return to its normal downward course.

बलपाणिग्रहैः कण्ठं रुन्ध्याञ्च त्रियते यथा ॥३५॥  
प्राणोदाननिरोधाद्धि प्रसिद्धतरमार्गवान् ।  
अपानः पवनो वस्ति तमाश्वेषापकर्षति ॥३६॥

यथा लेवी रीते जिससे, न त्रियते भरी न अथ तेभ मर न जाय इसी प्रकार, बल- पञ्च बल, पाणि-ग्रहैः अने हाथी पक्षी और हाथसे पकड़ कर, कण्ठम् अणुं गलेको, रुन्ध्यात् रुधुं घोटें, हि ऊपर उठे क्योंकि, प्राण-प्राण, उदान- अने उदान और उदानके, निरोधात् रोधवाथी रोधसे, अपानः अपान अपान, पवनः वायु वायु, प्रसिद्धतर- येताने अति प्रसिद्ध अपने अतिप्रसिद्ध, मार्गवान् मार्ग लक्ष मार्ग-शाका हो कर, तम् ते उस, वस्तिम् भरितने वस्तिको, आङ्गु अङ्गुली जल्दी, एव न ही, अपकर्षति नीचे लेनी अथ छे नीचेकी ओर ले जाता है ॥ ३५-३६ ॥

35-36. Or in certain cases it may be necessary to apply pressure round the neck of the patient by a tight grip of the hand, or a piece of cloth, taking

care of course, to see that the patient is not asphyxiated to death. In this way, in consequence of the blockage of the channels of the upward moving Prana and Udana, the Apana vata regaining the normal downward tendency, quickly pushes the enema fluid down.

ततः कमुककल्काक्षं पाययेताम्लसंयुतम् ।  
औष्ण्यात्तैक्षण्यात् सरस्वाच्च वस्ति सोऽस्यानु-  
लोमयेत् ॥ ३७ ॥

ततः ते पछी इसके बाद, अम्ल- अम्ल द्रव्योधी अम्ल द्रव्योसे, संयुतम् युक्त युक्त, कमुक- पक्षी देखने पठाणी लोचका, कल्क- उधु कल्क, अक्षम् अक्ष एक तोला, पाययेत् पावे पिलावे, सः ते वह, औष्ण्यात् उष्णता उष्णता, तैक्षण्यात् तीक्ष्णता तीक्ष्णता, सरस्वाच्च अने सरस्वती लक्ष और सरस्वसे, अथ तेनी इसको, वस्तिम् भरितनुं वस्तिका, अनुलोम-येत् अनुलोमन करने अनुलोमन करेगा ॥ ३७ ॥

37. At this stage, in order to help the peristaltic movement, the patient should be given to drink one tola of the paste of pathan lodh mixed with sour articles. These drugs, by virtue of their being hot, acute and diffusive will help to draw the enema fluid downwards.

पकाशयस्थिते स्विन्ने निरुहो दाशमूलिकः ।  
यवकोलकुलत्थैश्च विधेयो मूत्रसाधितः ॥३८॥

पकाशयस्थिते भरित पकाशयभां रहेदी होय तो वस्ति पकाशयमें रुकी हो तो, स्विन्ने स्वेदन करीने स्वेदन करके, दाशमूलिकः दशमूलकी दशमूलकी, यव-अन जो, कोल- और बेर, कुलत्थैः च अने कुलथी और कुलथीसे, मूत्रसाधितः गोमूत्रभां साधित गोमूत्रमें

साधित, निरुद्धः निरुद्धमस्ति, विवेकः देवी  
देवे ॥ ३८ ॥

38. If the enema fluid is lodged in the colon, the patient should be sweated and given an evacuative enema of barley, jujube and horse-gram prepared with cow's urina.

बिल्वादिपञ्चमूलेन सिद्धो वस्तिरुत्तरस्थिते ।

उत्तरस्थिते अग्नि उत्तरादेशभां देखी होय तो वस्ति उत्तरस्थित हो तो, बिल्वादिपञ्चमूलेन सिद्धो वस्ति उत्तरस्थित हो तो, बिल्वादिपञ्चमूलेन सिद्धः सिद्ध करेव साधित, वस्तिः अस्ति ४४ छे वस्ति २४ छे ॥ ३८ ॥

38. If the enema fluid is lodged higher up in the thoracic region, the evacuative enema to be given should be prepared with the penta-radices of the bael group.

शिरःस्थे नावनं धूमः प्रच्छाद्यं सर्वपैः शिरः ॥ ३९ ॥

शिरःस्थे ओ भावभां रही होय तो शिरमें यदि स्थित हो तो, नावनं नस्य नस्य, धूमः धूमपान धूमपान, सर्वपैः अने सरसपथी और सरपके कल्कसे, शिरः भरतकुं शिरको, प्रच्छाद्यं देखन ४४ छे प्रकृत करना चाहिए ॥ ३९ ॥

39. If the enema fluid is lodged still higher in the head, then nasal medications, inhalations and anointing of the head with the paste of rape-seed should be resorted to.

प्रवाहिकाव्यापशे वर्णनं चिकित्सा च—

स्निग्धस्निग्धे महादोषे वस्तिर्मुद्गल्पमेघजः ।

उत्किङ्क्ष्यात् हरेद्दोषं जनयेच्च प्रवाहिकाम् ॥ ४० ॥

न वस्तिपाशुशोकेन जङ्घोस्तदनेन वा ।

निरुद्धास्तेऽन्तुरमीक्ष्णं संप्रधात्ते ॥ ४१ ॥

महादोषे भद्रदोषपाशा बहु दोषपाशे, स्निग्ध-  
स्निग्ध स्निग्ध, स्निग्धे तथे स्निग्धे स्निग्धे स्निग्धे स्निग्धे  
मनुष्ये मनु-मनु मनु अन्तुरमीक्ष्णं अन्तुरमीक्ष्णं  
मेघजः मनुष्यपाशा मनुष्यपाशा, वस्ति अस्ति वस्ति,  
उत्किङ्क्ष्यात् उत्किङ्क्ष्यात् उत्किङ्क्ष्यात् उत्किङ्क्ष्यात्  
योके, दोषमे दोषमे दोषमे दोषमे दोषमे दोषमे दोषमे  
प्रवाहिका अने प्रवाहिका अने प्रवाहिका अने प्रवाहिका  
उत्पन्न करे छे उत्पन्न करी छे, निरुद्ध-रुद्धोत्पन्न करे  
हरे, मारुतः मनुष्यपाशा मनुष्यपाशा, सः ते वद, अन्तुरः  
मनुष्य मनुष्य, वस्ति-अस्ति वस्ति, पाशु-पाशु मनुष्य  
और गुदाके, शोकेन स्निग्धनी साधे शोके साधे,  
जङ्घा-अथवा पाशु मनुष्यपाशा, उत्किङ्क्ष्यात् साधनी  
और उत्की, सद्नेन वा मिद्विद्यानी साधे मिद्विद्यानी  
साधे, वस्तिपाशु मनुष्यपाशा मनुष्यपाशा, संप्रधात्ते करी  
छे प्रवाहण करता छे ॥ ४०-४१ ॥

40-41. When a mild and insufficiently medicated enema is given to a patient who is suffering from heavy accumulation of morbid matter, the oleation and sudation procedures, followed by such an enema will stir up the morbid matter and eliminate it only partially, thus setting up a tendency to diarrhea. One afflicted with this complication, suffers from frequency of stools resulting from the swelling of the bladder and the rectum, or from asthenia of the shanks and the thighs.

४० स वस्तिपाशुशोकेन जङ्घोस्तदनेन वा—४ वस्तिः पाशुशोकाव

जङ्घोस्तदनेन वा (व. क.)

—वस्तिपाशुशोके

जङ्घोस्तदनेन वा (व. क.)



खेदाभ्यङ्गनिरुहंश्च शोधनीयानुलोमिकान् ।  
विदध्याल्लङ्घयित्वा तु वृत्तिं कुर्याद्विरिक्तवत् ॥४२॥

कङ्कित्वा तेने लंघन करवी इसको कङ्कन कराके,  
स्वेद-स्वेद स्वेद, अभ्यङ्गान् अभ्यङ्ग और अभ्यङ्ग कराके,  
शोधनीय- शोधक शोधनीय, आनुलोमिकान् अने  
आनुलोमिक और आनुलोमिक, निरुहान् च निरुहो  
निरुह, विदध्याल्ल आध्या देवे, वृत्तिम् आहारविहार  
आहारविहार, तु तो तो, विरिक्तवत् विरिक्त वीरिक्त  
भुज्य गेवे विरेचन लिये हुए पुरुषकी भाति, कुर्यात्  
राभवे रखे ॥ ४२ ॥

42. The line of treatment in such a condition consists of sudation, inunction and evacuative enema medicated with purificatory drugs and drugs inducive of correct peristalsis. Then, after the patient has undergone the lightening procedure, he should be put on the dietetic regimen laid down for those who have undergone purgation.

शिरःशूलव्यापदो वर्णनं चिकित्सा च—

दुर्बले क्रूरकोष्ठे च तीव्रदोषे तनुर्मृदुः ।  
शीतोऽल्पश्चावृतो दोषैर्बस्तिस्तद्विहतोऽनिलः ॥४३॥  
मार्गैर्गात्राणि सन्धावन्मूर्ध्नि मूर्ध्नि विहन्यते ।  
ग्रीवां मन्वे च गृह्णाति शिरः कण्ठं भिनसि च ॥४४॥  
वार्षिय कर्णनादं च पीनसं नेत्रविभ्रमम् ।  
कुर्यात् ॥

४२ एतच्छोकानन्तरम्—

इति प्रवाहिकान्वापचिकित्सा ।

इत्यधिकः पाठः (क) : पुस्तके ।

४३. क्रूरकोष्ठे—दुष्कोष्ठे (ख. ड.)

४४ मार्गैर्गात्राणि सन्धावन्—गात्राण्यनुसरन् मार्गैः (छ. त. ब.)

॥ विहन्यते—विषावति छ. त. ब. ब.)

॥ गृह्णाति—संस्तम्ब (ग. ब.)

दुर्बले दुर्धर्ष दुर्बल, क्रूरकोष्ठे क्रूर कोष्ठवाला क्रूर  
कोष्ठवाले, तीव्रदोषे च अने तीव्र दोषयुक्त पुरुषने  
आपेक्षी और तीव्र दोषयुक्त पुरुषकी दो हुई, तनुः  
पातली पतली, मृदुः मृदु मृदु, शीतः शीत शीत,  
अल्पः च अने अल्प और अल्प, बस्तिः अस्ति बस्ति,  
दोषैः दोषैः दोषोंसे, आवृतः घेराई अथ छे आवृत  
हो जाती है, तत् तेनाथी इससे, विहतः विहात पाभे  
वाधित, अनिलः वायु वायु, मार्गैः मार्गैः मार्गोंद्वारा,  
गात्राणि अंगोंमें अंगोंमें, सन्धावन् सन्धावन् सन्धावन् होइती हुई,  
ऊर्ध्वम् ऊपर ऊपर, मूर्ध्नि मस्तकमें शिरमें, विहन्यते  
रुकाई अथ छे रुक जाती है, ग्रीवाम् ग्रीवा ग्रीवा, मन्वे  
च अने मन्वाओने और मन्वाओंकी गृह्णाति गृह्णाति छे  
छे जकड़ लेती है, शिरः शिरः शिर, कण्ठम् अने  
कंठने और गलेमें, भिनसि च भेदे छे भेदनवत् पीका  
करती है, वार्षियम् तथा वार्षिय तथा वार्षियता,  
कर्णनादम् कानमें अनाद कर्णनाद पीनसम् सनेमम  
पीनस, नेत्रविभ्रमम् च अने नेत्रविभ्रम और नेत्रविभ्रम,  
कुर्यात् करे छे करती है ॥ ४३-४४ ॥

43-44. When an enema which is too thin, mild, cold or insufficient in quantity is given to a person who is debilitated, hard-bowelled and suffering from severe morbidity, it gets choked by the morbid accumulations. The enema fluid thus blocked, presses on the vata which gets provoked and courses wildly through the body-channels and is obstructed in the cranium. Thus checked, it renders the neck and its sides rigid and causes cutting pain in the throat and the head. As a result deafness, tinnitus, coryza, and agitation of the eyes are induced.

अभ्यङ्गनं तैलवणेन यथाविधि ॥४५॥

४५. अभ्यङ्गनं तैलवणेन यथाविधि—तु तैलवणेनेणे.

नार्क यथाविधि (ब.)

॥ तैलवणेन यथाविधि—तैलवणेनावगाहयेत् (ब.)



युञ्ज्यात् प्रथमनैर्नस्यैर्धूमैरस्य विरेचयेत् ।

तीक्ष्णानुलोमिकेनाथ स्निग्धं भुक्तेऽनुवासयेत् ॥४६॥

तैलकवणेन तैल अने धूमपानं तैलमें नमक मिलाकर, यथाविधि विधिपूर्वकः यथाविधि अम्बजनम् अभ्यङ्ग अभ्यंग, युञ्ज्यात् कर्त्तव्यं करे, बस्व औषुं इमं, प्रथमनैः प्रथमन प्रथमन, नस्यैः नस्यैः नस्ये, धूमेः अने धूमपानं और धूमपानसे विरेचयेत् क्षिरोविरेचन करतुं क्षिरोविरेचन देवे, अथ पक्षी पोछे, स्निग्धम तेने स्नेहन करी इसको स्निग्ध करके, तीक्ष्ण-तीक्ष्ण तीक्ष्ण, आनुलोमिकेन अने आनुलोमिक तथा आनुलोमिक, भुक्ते भोजन करावी भोजन कराके, अनुवासयेत् अनुवासन देतुं अनुवासन देवे ॥ ४५-४६ ॥

45-46. In such conditions, inunction with oil and rock salt in conformity with the rules laid down are advised. The patient should be further treated with insufflations or nasal medications and inhalations or errhines. Then, after he has been made to eat pungent and peristalsis-inducing articles of food, he should be oiled and administered an unctuous enema.

अङ्गशूलव्यापदो वर्णनं चिकित्सा च —

स्नेहस्वेदैर्नापाद्य गुरुस्तीक्ष्णोऽतिमात्रया ।

४५ धूमैरस्य विरेचयेत्—धूमैरास्वविरेचनेः (व. प.)

॥ अम्ब-अम्बुं (प.)

॥ तीक्ष्णानुलोमिकेनाथ स्निग्धं भुक्तेऽनुवासयेत्—विरेचनैर्निक-  
हेद्य वस्तिमिश्रानुलोमिकैः (व. प. क.)

॥ स्निग्धं—स्निग्धं (ड.)

॥ धनकूलोक्तान्तरं —

इति शिःशूलव्यापचिकित्सा

इत्यधिकः पाठः (क.) पुस्तके ।

४७. स्नेहस्वेदैर्नापाद्य गुरुस्तीक्ष्णोऽतिमात्रया । बस्व वस्तिः प्रयुज्येत—कुत्सिप्रक्षिप्तवदेहस्य बस्व वस्तिर्विधीयते । अति-  
तीक्ष्णो गुरुश्च (क. प.)

॥ तीक्ष्णोऽतिमात्रया—तीक्ष्णोऽतिमात्रः (प.)

यस्व वस्तिः प्रयुज्येत सोऽतिमात्रं प्रवर्तयेत् ॥४८॥

क्षुनेषु तस्य दोषेषु निरुद्धस्यातिमात्रयाः ।

स्तब्धोदावृतकोष्ठस्य वायुः संप्रतिह्रियते ॥४८॥

विलोमनसमुद्भूतो रुज्यन्मानि देहिनः ।

गात्रवेष्टननिस्तोदमेदस्फुरजजृम्भणैः ॥४९॥

स्नेह-स्नेहन स्नेहन स्वेदैः अने स्वेदन और स्वेदन, अनापाद्य आप्यायेना न कराके, बस्व जेने जिनको गुरु शुभु गुरु, तीक्ष्णः तीक्ष्ण तीक्ष्ण, वस्ति-मात्रया अने मात्राया अधिक और मात्राये अधिक, वस्तिः वस्तिनेः वस्ति, प्रयुज्येत प्रयोग करना भां आये वी जाय, सः तेने वह, वस्तिमात्रम् अति प्रमाणां अतिमात्रामें, प्रवर्तयेत् प्रवर्त भाग छे अर्थात् वस्तिने अतियोग भाग छे प्रवर्त होती है अर्थात् वस्तिका अतियोग होता है, तस्य तेना उसके, दोषेषु दोषो दोष, क्षुनेषु क्षुणी अर्थात् वह जाने पर, वस्तिमात्रः अति प्रमाणां अतिमात्रामें, निरुद्धस्य निरुद्ध पायेव निरुद्ध पाये हुए, स्तब्ध-स्तब्ध स्तब्ध, उदावृत-अने उदावर्तवाता और उदावर्तयुक्त, कोष्ठस्य कोष्ठवाताने कोष्ठवाते पुरुषकी, वायुः वायु वायु, संप्रतिह्रियते प्रति-धात पाये छे प्रतिहृत हो जाती है, विलोमन-विलोम-अतिभी विलोमगतिसे, समुद्भूतः दुर्धृता वायु कुपित हुई वायु, देहिनः देहधारीनां देहधारीके, मानि अजिने अंको, गात्रवेष्टन-गात्रवेष्टन गात्रवेष्टन, निस्तोद-सोय बोझना जेनी पीछ निस्तोद, मेद-हाट मेद, स्फुरज-अंज इरकना स्फुरज, जृम्भणैः अने अज्यायां और जृम्भणसे, रुज्यति पीछ करे छे पीकित करती है ॥४८-४९॥

47-49. If a patient is given an excessive dose of a heavy and acute enema without his being first prepared with the oleation and sudation procedures, the enema so administered will

४८. सोऽतिमात्र-नातिमात्र (ड. न.)

॥ प्रवर्तयेत्—प्रयुज्यते (ड. न.)

४९. गात्रवेष्टननिस्तोदमेदस्फुरजजृम्भणैः—वस्तिमात्रमात्र-  
वास्तव्यजृम्भणैः (प.)

cause excessive elimination. When the excretory matter has thus been eliminated in an excessive measure by the evacuative enema, the patient's gastro-intestinal tract becomes rigid and an upward peristalsis is set up, with the result that the course of vata is impeded. On account of this abnormal course of vata the patient is afflicted in his limbs with various kinds of pain such as girdle pain, pricking pain, breaking pain, throbbing pain and stretching pain.

तं तैललवणाभ्यक्तं सेचयेदुष्णवारिणा ।

एरण्डपत्रनिष्कायैः प्रस्तरेऽधोपपादयेत् ॥५०॥

तैल- तेल, लवण- तथा क्षवक्षुथी तथा नमकसे, अभ्यक्तम् अभ्यङ्ग पासेक्ष अभ्यङ्ग प्राप्त किये हुए, तस्य तेने उसको, उष्णवारिणा गरम पाण्डुली गरम जलसे, सेचयेत् परिषेक करने, एरण्डपत्र- और उरुना पानना एरण्डपत्रके, निष्कायैः क्वाथी कायसे, प्रस्तरेः च अने प्रस्तरेऽधोपपादयेत् स्वेदन कराने स्वेदन करे ॥ ५० ॥

50. In such conditions, the patient should be anointed with saked oil and affused with hot water. He should then be sweated with decoctions of the leaves of the castor-plant and with hot-bed method of sudation.

यवान् कुलत्थान् कोलानि पञ्चमूले तथोभये ।

जलाढकद्वये पक्त्वा पादशेषेण तेन च ॥५१॥

कुर्यात् सविस्वतैलोष्णलवणेन निरुहणम् ।

तं निरुहं समाश्वस्तं द्रोण्यां समवगाहयेत् ॥५२॥

५१. तं निरुहं-निरुहण (क. व. ड.)

५२. समाश्वस्तं-समवगाहयेत् (घ.)

ततो मुकवत्स्तस्य कारयेदनुवासनम् ।

यष्टीमधुकतैलेन विस्वतैलेन वा भिषक् ॥५३॥

यवान् जौ, कुलत्थान् उण्थो कुलथी, कोलानि भोर बेर, तथा तथा तथा, जम्बवे अने दोनों, पञ्च-मूले पांचमूलने पञ्चमूलको, जल-आढकद्वये जे आढक उण्थो दो आढक जलमें, पक्त्वा पकापी पकाकर, पादशेषेण अतुर्थांश पाडी रहेता चतुर्थांश शेष रहने पर, सविस्व- भीली बेर, तैल-उष्ण. उष्ण तैल उष्णतैल, लव-णेन अने क्षवक्षु नाभी और कवण मिलाकर, तेन च तेनाथी उससे, निरुहणम् निरुहण निरुहण, कुर्यात् करे, निरुहम् निरुह पासेक्ष निरुह दिये हुए, तस्य तेने उससे, समाश्वस्तम् आश्वस्त आशी आश्वस्तन देकर, द्रोण्याम् पाण्डुली कीलीमां द्रोणीमें, समवगाहयेत् नवरात्रे अवगाहन करावे, ततः ते पछी उसके बाद, भिषक् वैद्य वैद्य, मुकवत्ः जमाउक्ष भोजन किये हुए, तस्य तेनु उससे, यष्टीमधुक- जेठीमधुथी सिद्ध करेला मुक-हठीसे साधित, तैलेन तैलथी तैलसे, विस्वतैलेन वा यथवा भीलीथी सिद्ध करेला तैलथी या बिल्वसे साधित तैलसे, अनुवासनम् अनुवासन अनुवासन, कारयेत् कराने कराने ॥ ५१-५३ ॥

51-53 He should then be given an evacuative enema prepared with barley, black-gram and jujube and the two kinds of penta-radices in 512 tolas of water till the water is reduced to one fourth its original quantity and mixed with the paste of bael, warm oil and salt. When he has been administered this evacuative enema and comforted, he should be given an immersion bath in a tub. After that he should be made by the physician to eat and immediately on completing his meal, he should be given an unctuous enema with oil medicated with liquorice or with the oil medicated with bael.



calophany, liquorice, indian ash tree, Karadama and indian berberry, after the patient is put on an acid and soft diet.

परिस्रवव्यापको वर्णनं चिकित्सा च—

पित्तरोगेऽम्ल उष्णो वा तीक्ष्णो वा लवणोऽथवा ।  
बस्तिर्लिखति पायुं तु क्षिणोति विद्वहस्यपि ॥५८॥  
स विदग्धः स्रवत्यर्धं पित्तं घानेकवर्णवत् ।  
सार्वते बहुवेगेन मोहं गच्छति चासकृत् ॥५९॥

पित्तरोगे पित्तशोभा पित्तरोगमें, अम्लः अम्ल  
अम्ल, उष्णः वा अथवा उष्ण या उष्ण, तीक्ष्णः वा  
अथवा तीक्ष्ण या तीक्ष्ण, अथवा लवणः अथवा लवण  
अथवा लवण, बस्तिः अस्ति बस्ति, पायुश्च तु शुद्धं  
शुद्धको, लिखति देहना करे से लेखन करती है, क्षिणोति  
हानि पहुँचाते से हानि पहुँचाती है, विद्वहति अपि अरे  
विद्वह उच्यते करे से और विद्वह उत्पन्न करती है,  
विदग्धः विद्वह पात्रे विदग्ध हुआ, सः ते पायु वह  
पायु, अनेकवर्णवत् अनेक वर्णवाला अनेक वर्णयुक्त, स्रवत्य्  
रुधिर रुधिर, पित्तम् च तथा पित्तना तथा पित्तको,  
स्रवति स्राव करे से बहाता है, बहुवेगेन बहु वेगથી  
बहु वेगसे, सार्वते स्राव थाय से स्राव होता है, असकृत्  
अने दोषी बारबार और रोगी बारबार, मोहम् च  
मोह मोहको, गच्छति पात्रे से प्राप्त होता है ॥५८-५९॥

58-59. If an enema which is very acid or hot or acute or salt, is given to a person suffering from pitta disorders, the enema irritates, injures and inflames the anal tract. The anus thus inflamed exudes blood and pitta of various colors, flows out with a great force at frequent intervals, and the man faints.

५८. पित्तरोगे—पित्तके (स. ड. क. घ.)

१. बस्तिर्लिखति पायुं तु—बस्तिर्गुं लिखति (घ. ग.)

२. क्षिणोति—तीक्ष्णोति (स. ड.)

५९. विदग्धः—विद्वहं (घ.)

१. सार्वते बहुवेगेन—सर्वथा क्षतिवेगेन (क. घ. ड. क. घ.)

आर्द्रशाल्मलिबृन्तैस्तु क्षुण्णैराजं पयः शृतम् ।  
सर्पिषा योजितं शीतं बस्तिमस्मै प्रदापयेत् ॥६०॥

क्षुण्णैः आर्द्रैश्च कुचके दुग्ध, आर्द्र-लीला गीले,  
शाल्मलि-शेभणानां सिम्बलके, बृन्तैः तु डीरे सावे  
बृन्तसे, शृतम् उद्भिदं उवाला हुआ. सर्पिषा शीथी  
बीसे, योजितम् युक्त युक्त, आज्ञा अङ्गीकृत वकीला,  
पयः दुग्ध दूध, शीतम् शीतल थाय तयारे ठंडा होने  
पर, अस्मै अस्मै उरको, बस्तिम् अस्ति बस्ति, प्रदापयेत्  
देवी देवे ॥ ६० ॥

60. In such a condition, a cold enema of goat's milk, in which have been boiled triturated bits of green stalks of silk cotton tree and to which has been added a quantity of ghee, should be given.

वटादिपल्लवेष्वेव कल्पो यवतिलेषु च ।  
सुवर्चलोपोदिकयोः कर्बुदारे च शस्यते ॥६१॥

एषः आ यह, कल्पः कल्पना कल्प, वटादि-वटा-  
दिना वरगद आदिके. पल्लवेषु पल्लवोंमा पल्लवों,  
यवतिलेषु च यव अने तिलमा यव और तिलमें,  
सुवर्चला-सुवर्चला सुवर्चला, उपोदिकयोः अने पौष्टिमा  
और पोष्टिमें, कर्बुदारे च तथा आयुनारमा एवं क-  
नारमें, शस्यते प्रशस्त से प्रशस्त है ॥ ६१ ॥

61. This method of preparing the enema is also recommended "in the case of banyan and other drugs of its group, or in the case of barley and til with heliotrope and indian spinach as also with white mountain ebony.

गुदे सेकाः प्रदेहाथ शीताः स्युर्मधुराश्च ये ।  
रक्तपित्तातिसारघ्नी क्रिया चात्र प्रशस्यते ॥६२॥

६०. बस्तिमस्मै प्रदापयेत्—बस्ति धीरः प्रयोजयेत् (घ.)

६१. कल्पो यवतिलेषु च—कल्पः पल्लवेषु च (घ.)

६२. यवतिलेषु च—

इति परिस्रवव्यापचिकित्सा

इत्यधिकं पाठः (क) हुस्तके ।

वे ने जो, शीताः शीतल शीतल, मधुराः च  
अने मधुर और मधुर, सेकाः परिधेयन परिधेक.  
प्रदेहाः च तथा प्रदेय एवं प्रलेप, स्युः होय छे ते  
होते हैं वे, गुदे युवाभा प्रशस्त छे गुडामें प्रशस्त हैं,  
रक्तपित्त-अने रक्तपित्त और रक्तपित्त, अतिसारघ्नो  
तथा रक्तपित्तसारन्धी नाशक एवं रक्तपित्तसारकी  
नाशक, क्रिया च चिकित्सा पक्ष चिकित्सा मी, अत्र  
अर्ही यहाँ. प्रशस्तते प्रशस्त छे प्रशस्त है ॥६२॥

62. In addition affusion of the  
anus, applications prepared with cold  
and sweet drugs and procedures  
advised in hemothermia and diarrhea  
are recommended.

बस्तेमृदुत्वं तीक्ष्णत्वं च निषेधम् —

तीक्ष्णत्वं मूत्रपीकवृक्षिलवणक्षारसर्वैः ।

प्रासकालं विधातव्यं क्षीराद्यैर्मर्दितं तथा ॥६३॥

प्रासकालम् समय अनुसार अवस्थानुसार, मूत्र-  
ओमूत्र गोमूत्र, पीलु-पीलु पीलु, अग्नि अने चित्रो चिता,  
लवण-लवण लवण, क्षार-क्षार क्षार, सर्वैः अने सरसवथी  
और सरसोसे, तीक्ष्णत्वम् अतिन्धी तीक्ष्णता बस्ति  
तीक्ष्णता, तथा तथा तथा, क्षीर-दूध दूध. आद्यैः आदिथी  
आदिसे, मर्दितम् मृदुता मृदुता, विधातव्यम् करनी ओर्ध छे  
करनी चाहिए ॥ ६३ ॥

63. An enema should be made  
acute when so required in a given  
condition by the addition of cow' urine,  
tooth brush tree, white-flowered lead-  
wort, salts alkalis and rape seed; and  
it should be made mild when so  
required by the addition of milk etc.

बस्तेः सर्वशरीरमलहरत्वे दृढान्तद्वयम् —

आपादतलमूर्धस्थान् दोषान् पक्वाशये स्थितः ।

वीर्येण बस्तिरादत्ते क्षस्थोऽर्को भूरसानिव ॥६४॥

बस्तेः आकाशभा रहेद्यो आकाशमें स्थित, अर्को  
सूर्य, मूरसान् धरतीना रसेने पृथ्वीके रसोको, इव  
जेवी रीते हरे छे जित प्रकार खीव लेता है, पक्वाशये

तेवी रीते पक्वाशयभा उत्र प्रकार पक्वाशयमें स्थितः  
रहेद्यो स्थित, बस्तिः अग्नि बस्ति. आपादतल- पक्वा  
तणिवाथी भाक्षी पैके तल्लेसे ले कर, मूर्धस्थान् भाषा  
सुधीना सि तक्के, दोषान् दोषोने दोषोको. वीर्येण  
वीर्यथी वीर्यसे आदत्ते हरे छे खीव लेती है ॥६४॥

64. The enema, when lying in the  
colon, draws by its potency the morbid  
matter lodged in the entire body from  
the foot to the head just as the sun  
situated in the sky sucks up the mois-  
ture from the earth.

यद्वत् कुसुम्भसंमिश्रात्तोयादागं हरेत् पटः ।

तद्वद्द्वीकृताद्देहाभिरूहो निर्हरेन्मलान् ॥६५॥

यद्वत् जेवी रीते जित प्रकार पटः पट बस्ति,  
कुसुम्भ- कुसुम्भाभी कुसुम्भसे. संमिश्रात् मिश्रित मिश्रित,  
तोयात् पाणीभाभी जलमेंसे, रागत् रंगने रंगने,  
हरेत् हरी ले छे हर लेता है, तद्वत् तेवी रीते उत्र  
तरह, निरूहः निरूह निरूह, द्वीकृतात् पीकृता  
जेवा करेद्यो इवके सदस किये हुए, देहात् देहभाभी  
देहमेंसे, मलान् मलाने मलोका, निर्हरेत् नहर अडे  
छे निर्हरण कर लेता है ॥ ६५ ॥

65. Again, just as the cloth sucks  
up the pigment from the water dyed  
with the safflower, even so, the  
evacuative enema sucks up and elimi-  
nates the morbid matter from the body  
which has been prepared by the liqui-  
facient procedures of oleation and  
sudation.

अध्यायोपाख्यसंग्रहः —

तत्र श्लोकः—

इत्येता व्यापदः प्रोक्ता बस्तेः साकृत्तिमेषजाः ।

बुद्धा कारुण्येन तान् बस्तीभिर्बुद्ध्यापराध्यति ॥६६॥

तत्र श्लोकः ते विषयभा विषयकारने श्लोक छे ते  
उत्र विषयमें उपसंहारका श्लोक है कि, इति आ प्रभाषे







સેન્ધવાર્ષાશ્નઃ સિંધાલુચ્ચુ આર્યૈઃ કર્પૃ સેન્ધવ આઘા તોલા, ક્ષૌદ્ર-તેજ-મધ, તેજ મધુ, તેજ, પચઃ-૬૫ દધ, છતાવ તથા ઘી તથા ઘી, એકેકઃ એક એક એક એક, પ્રસૂતઃ પ્રસૂત ૮-૮ તોલે, હૃણાકર્ણઃ હૃણા એક કર્પૃ હૃણા એક તોલા, નિરુહઃ એએની નિરુહસ્તિ इनकी निरुहवस्ति, પરમ્ પરમ અતિ, શુક્રકૃત વીર્યવર્ધક છે વીર્યવર્ધક છે ॥૭॥

7. Take half a tola of rock-salt, one Prasrita each of honey, til oil, milk and ghee and one tola of juniper. This makes an evacuative enema which is an excellent promoter of the seminal secretion.

પચતિકો નિરુહઃ —

પટોલનિમ્બભૂનિમ્બરાજાસત્ત્વછદામ્બસઃ ।  
ચત્વારઃ પ્રસૂતા ઇકો છૃતાવ્ સર્ષપકલિકતઃ ॥૮॥  
નિરુહઃ પચતિકોઽયં મેહાભિષ્ગન્દકુષ્ઠતુત્ત્વ ।

પટોલ-૫૨૫૧ પરવલ, નિમ્બ- ૬૧૩૫ નીમકો છાલ, ભૂનિમ્બ- કચિયાતું ચિરાવતા, રાસ્ના- રાસ્ના વાયસુરદે, સત્ત્વછદ- અને સાતવલ્લુ એએનેા જૌર સતિવન इनका, અમ્બસઃ કવાથ કાથ, ચત્વારઃ પ્રસૂતાઃ ચાર પ્રસૂત ૩૨ તોલે, છતાવ્ એકઃ અને ઘી એક પ્રસૂત જૌર ઘી ૮ તોલે, સર્ષપ- કલિકતઃ સુરસવના કદક સાથે મેળવી સરસૌકા કરક મિલાકર વનાયા, પચતિકઃ પંચતિકત પચતિક, અવસ્ આ ચહ, નિરુહઃ નિરુહ નિરુહ, મેહ- પ્રમેહ મેહ, અભિષ્ગન્દ- અભિષ્ગન્દ અભિષ્ગન્દ, કુષ્ઠ- અને કુષ્ઠનેા જૌર કુષ્ઠકા, તુત્ત્વ નાશ કરનાર છે નાશક છે ॥૮॥

8-8½. Take four Prasritas of the decoction of wild snake gourd, neem, chiretta, indian groundsel and dita bark, one Prasrita of ghee, and mix the paste of rape-seed. This evacuative enema, containing the afore-mentioned five bitters, is curative of urinary

anomalies and dermatosis, and is anti-blennorrhagic.

ક્રિમિનાશનો નિરુહઃ —

વિડઙ્ગત્રિફલાશિમ્બુફલમુસ્તાચુર્ણિજાત્ ॥૯॥  
કષાયાત્ પ્રસૂતાઃ પચ્ચ તૈલાદેકો વિમથ્ય તાન્ ।  
વિડઙ્ગપિપ્પલીકલ્લકો નિરુહઃ ક્રિમિનાશનઃ ॥૧૦॥

વિડઙ્ગ- વાવડિંગ વાયવિડંગ, ત્રિફલા- ત્રિફળા ત્રિફળા, શિમ્બુ- સરસવેા સહજન, ફલ- મોઢળ મૈનફલ, મુસ્તા- મોથ મોથા, શાચુર્ણિજાત્ અને ઉરકનીનેા જૌર મૂષાકર્ણી इनके, કષાયાત્ કવાથ કાથકે, પચ્ચ પ્રસૂતાઃ પાંચ પ્રસૂત ૪૦ તોલે, તૈલાત્ તેજ તેજ, એકઃ એક પ્રસૂત ૮ તોલે લેકર, તાન્ તેએને સન સવકો, વિમથ્ય મથીને મથકર, વિડઙ્ગ- વાવડિંગ વાયવિડંગ, પિપ્પલી- અને પીપરના જૌર પિપ્પલીકા, કલ્લકઃ કલ્લકસહિત આપેલ કલ્લક મિલાકર લી હુદે, નિરુહઃ નિરુહસ્તિ નિરુહવસ્તિ, ક્રિમિનાશનઃ ક્રિમિનાશક છે ક્રિમિનાશક છે ॥ ૧૦ ॥

9 10. Take five Prasritas of embelia, three myrobalans, drumstick, emetic nut, nut grass and kidney leaved ipomea and one of til oil and emulsify the whole together with the paste of embelia and long pepper. This evacuative enema is curative of helminthiasis.

વૃષત્વક્રુજિરુહઃ —

પયસ્યેશ્ચુસ્થિરાજાવિદારીક્ષૌદ્રસર્પિષામ્ ।  
એકેકઃ પ્રસૂતો વસ્તિઃ કૃષ્ણાકલ્લકો વૃષત્વક્રુત્ ॥૧૧॥

પયસ્યા- પયસ્યા પયસ્યા, હશ્ચુ- શેરડી રીંચ, ચિરા- શાલવલ્લુ સરીવન, રાસ્ના- રાસ્ના વાયસુરદે, વિદારી- રીંચેા વિલાઈકન્દ, ક્ષૌદ્ર- મધ મધુ, સર્પિષામ્ ઘી છૃત, એકેકઃ એક એક એક એક, પ્રસૂતઃ પ્રસૂત ૮-૮ તોલે, કૃષ્ણાકલ્લકઃ તેમાં પીપરનેા કદક નાખી આપેલી इनमें

૯. આચુર્ણિજાત્—આચુર્ણિકાત્ (ક.)

૧૦. કષાયાત્—કષાયાઃ (ચ.)

૧૧. ક્રિમિનાશન — ક્રિમિનાશકઃ (વ.)

पिप्पलीका कल्क मिलाकर दी गई, बस्तिः निरुद्धवस्तिः निरुद्धवस्ति, वृषत्वक्कट वीर्यं शक्ति ऊरुनार छे वृषता-कारक है ॥११॥

11. Take one Prasrita each of milky yam, sugar cane tick trefoil, indian groundsel white yam, honey and ghee and add the paste of long pepper. This makes an enema promotive of virility.

मेदनो निरुद्धः —

चत्वारस्तैलगोमूत्रदधिमण्डाम्लकाजिकात् ।

प्रसृताः सर्वपैः कश्कैर्विदसङ्गानाहमेदनः ॥१२॥

तैल- तैल तैल, गोमूत्र- गोमूत्र, दधिमण्ड- दहीने भंड दधिमण्ड, जम्बकाजिकात् अने आटी डाल और अम्ल कांजी, चत्वारः प्रसृताः चार प्रसृत बत्तोर तोले, सर्वपैः तैला सरसवने। इनमें सरसोका, कश्कैः डई भेगवी आयेली निरुद्धवस्ति कल्क मिलाकर दी गई निरुद्धवस्ति, विदसङ्ग- भूदरेव मलसङ्ग, आनाह- अने आनाहने और आनाहकी, मेदनः तैलनार छे नासक है ॥१२॥

12. Take four Prasritas of til oil, cow's urine, whey and sour conjee and add the paste of rape-seed. This makes an enema which is curative of constipation and distension of the abdomen.

मूत्रकृच्छ्रविकारः —

अर्द्धशामभिमिदरेण्डरसाचौकात् सुरासवात् ।

प्रसृताः पञ्च यण्ड्याहकौन्तीमागधिकासिताः ॥१३॥

कक्कः स्यान्मूत्रकृच्छ्रे तु सानाहे वस्तिरुत्तमः ।

पते सलवणाः कोष्णा निरुद्धाः प्रसृतैर्नव ॥१४॥

१२, कश्कै - पिष्टे: (क म ड त थ. द. व.)

१४, कक्कः स्यान्मूत्रकृच्छ्रे तु सानाहे वस्तिरुत्तमः—कक्को

वस्तिरुत्तमः सानाहे मूत्रकृच्छ्रे पते पतः (व. ड. व. क.)

१४, प्रसृतैर्नव—प्रसृता नव (क.)

अर्द्धशाम- गोमूत्र गोमूत्र, अर्द्धशाम- पायासुने। पायाणमेद, एरण्ड- अने औरुडाने और एरण्ड इनका, रसात् उपाय काय, तैकात् तैल तैल, सुरासवात् तथा सुरासव तथा सुरासव, पञ्च प्रसृताः पांच प्रसृत ४० तोले, यण्ड्याह- तैला नेरीमध इनमें मुकहरी, कौन्ती- रेण्डुकीय रेण्डुका मागधिका- पीपर पिप्पली, सिवाः अने साङरने। और चीनी इनका, कक्कः डई भेगवी कल्क मिलाकर बस्तिः जनावेरी वस्ति बनायी हुई वस्ति, सानाहे आनाह आनाह मूत्रकृच्छ्रे तु तथा मूत्रकृच्छ्रमा तथा मूत्रकृच्छ्रमा, उत्तमः उत्तम उत्तम, लात् छे डे, प्रसृतैः प्रसृत प्रभासु अनुसार प्रसृत प्रमाणके अनुसार एने नव आ नव ये नौ, निरुद्धाः निरुद्धा निरुद्धो सकवणाः सरसुसहित नवके पाच, कोष्णाः अने नवशेडा आयात ओरुडी और कोसे गरम देने चाहिए ॥१३-१४॥

13-14. Take five Prasritas of the decoctions of small caltrop, indian rock foil, castor, til oil and sura wine, and add the paste of liquorice, fragrant piper, long pepper and sugar candy. This makes an excellent enema in conditions of dysuria and distension of the abdomen.

तीक्ष्णो वस्तिर्मधुरप्रस्तास्यापनं च—

मृदुवस्तिजडीभूते तीक्ष्णोऽप्यो वस्तिरिच्छते ।

तीक्ष्णैर्विकर्षिते स्वादु प्रस्तास्यापनमिच्छते ॥१५॥

मृदुवस्ति- मृदु अस्तिथी सुगन्धिते, जडीभूते ७५ थये। मृदुप्यने मिश्रित हो जाने पर अल्पः पीछे अल्प, तीक्ष्णः तीक्ष्ण तीक्ष्ण, वस्तिः वस्तिथी वस्तिका, इच्छते आपस्यवत्ता रहे छे प्रयोग करना चाहिए, तीक्ष्णः तीक्ष्ण अस्तिथी तीक्ष्ण वस्तिथे, विकर्षिते इच्छ थये। अने कस हो जाने पर, स्वादु मधुर मधुर अल्पे, प्रस्तास्यापनम् आरथापनन्ती आस्थापन, इच्छते ७२२ रहे छे करना चाहिए ॥१५॥

१५, प्रस्तास्यापनमिच्छते—प्रस्तास्यापनमिच्छते (क.)

15. In conditions of stagnation induced by the administration of an over-mild enema, the remedy consists in the administration of a second and severe enema; while, on the other hand, if a patient has been excessively depleted by severe enemas, recourse must be had to corrective enema prepared with the sweet group of drugs.

गुददाहारी द्राक्षादियोगः —

वातोपमृष्टस्योष्णः स्फूर्णददाहदयो यदि ।  
द्राक्षाम्बुना त्रिवृत्कल्कं दद्यादोषानुलोमनम् ॥१६॥

वातोपमृष्टस्य वातदोषप्रधानः मनुष्ये वातसे पीडित मनुष्यको, उष्णः उष्ण अस्ति औष्णी लण वस्तिरे, यदि ओ यदि, गुद-दाह- शुक्लने दाह गुदामें दाह, आदयः नजरे आरे, स्युः शय तो हो जायें तो, दोषानुलोमनम् दोषोत्तु अनुलोमन करनेवाला, त्रिवृत्कल्कम् त्रिवृत्कल्क करनेवाला, द्राक्षाम्बुना द्राक्षना उपाय साथे द्राक्षके काथके साथ मिलाकर, दद्यात् आपवे देना चाहिए ॥ १६ ॥

16. If a person, suffering from disordered vata, complains of burning in the anus etc., as a result of the administration of a hot enema, he should be given a potion consisting of the paste of turpeth diluted with the decoction of grapes; this will induce the normal peristalsis and passage of morbid matter.

वस्तिशुद्धस्य यत्नागुद्विधानम् —

तद्धि पित्तशक्तव्रतान् हत्वा दाहादिकाजयेत् ।  
शुद्धशर्बि विवेकीतां यवागूं शर्करायुताम् ॥१७॥

१७. शुद्धशर्बदो यदि-शुद्धशर्ब दाहादिकी यदि (य क)

१८. दाह-दोष-

हि दाहादिकी यदि, तत् ते वह, पित्तशक्त पित्त, भय पित्त, मल, वाताद तथा आयुर्ने एवं वायुको, हत्वा हरीने नष्ट कर दाहादिकान् दाह नजरेने दाहादिकी, जयेत् उसे छे लान्त करता है, शुद्धः च अपि शुद्धि यवा पछी रेभीसे शुद्ध होने पर रोगी, शर्करायुताम् शर्करा युक्त शर्करामिश्रित, योताम् यवागूं हंडी यवागूं शीतक यवागूं, विवेक् पीवी पीवे ॥ १७ ॥

17. This enema, by effecting elimination of the morbid pitta, feces and flatus, will allay the burning etc.; when purified thus the patient should be given a drink of cold gruel mixed with sugar.

क्षीणविट्कस्य चिकित्सा —

अथवाऽतिविट्कः स्यात् क्षीणविट्कः स भक्षयेत् ।  
माषयूषेण कुल्माषान् विवेन्मधवया सुराम् ॥१८॥

अथवा अथवा, अथवा, अतिविट्कः अतिशय विरेचने लीने अतिशय विरेचने कारण, क्षीणविट्कः स्यात् ओ भय क्षीण अथ अपे होय तो, यदि मल क्षीण हो गया हो तो, सः तेष्मे वह माषयूषेण अथवा यूप साथे माषके यूपके साथ, कुल्माषान् कुल्माषको, भक्षयेत् भक्षये खाये, मधु अने मधु और मधु, अथवा अथवा या, सुराम् सुरा सुराका, विवेद पीवी पान करे ॥ १८ ॥

18. If the patient is excessively purged and as a result suffers from an excessive loss of fecal matter, he should eat the Kulmasha preparation i. e. half-boiled barley or other grain with the thin gruel of black gram; or he should drink honey wine or Sura wine.

१८. विवेन्मधवया-विवेदययवा (प्र. क.)

मधु-मधु (न. क. प्र.)

मधवया-मधवायवा (न)

अतिघारस्य षट्त्रिंशद्भेदाः—

सामं चेत् कुणपं शूलैरुपविशेदरोचकी ।

स घनातिविषाकुष्ठनतदारुचचाः पिबेत् ॥१९॥

अरोचकी अरुचिवागे। मनुष्य अरुचिवाला मनु-  
ष्यको, शूलैः अथैवसहित दर्दके साथ, सामम् आम-  
युक्त आममिश्रित, कुणपम् अने मुडदानी जेवा मध-  
वाग्ना भजने. और शक्की दुर्गन्धवाले मलका, उपविशेद  
चेत् त्याग करे तो त्याग करे तो, सः तेले बड़, घनः  
भोथ मोथा, अतिविषा- अतिविषयनी डगी अतीस, कुष्ठ-  
ऊँ कूठ, नत- तगर तगर, दारु- देवदार देवदार, चचाः  
अने वज्र ओओने। कवाथ और वज्र इनका काथ,  
पिबेत् पीवे। पीये ॥१९॥

19. If the patient is seen passing  
foul-smelling and undigested stools  
accompanied with colicky pain and  
anorexia, he should drink a  
potion of nut-grass, atees, costus,  
indian valerian, deodar and sweet flag.

शकृद्वातमसृक् पित्तं कफं वा योऽतिसार्यते ।

पक्वं, तत्र स्ववर्गीयैर्वस्तिः श्रेष्ठं मिषग्वितम् ॥२०॥

यः जेने जिसको, पक्कम् पाकेला पक, शकृत् भण  
मल, वातश् वात वायु, असृक् रक्त रक्त, पित्तम् पित्त  
पित्त, ककम् वा अथवा ऊँने। या कफका, अतिसार्यते  
अतिसार थाय अतिघार हो जाय, तत्र तेने भाटे उसके  
लिए, स्ववर्गीयैः पोतपोतानां वर्गना ओपधयी अपने

१९. सामं चेत् कुणपं—आमं य. कुणपं (घ.)

सामं चेत् कुणपं शूलैरुपविशेदरोचकी—सामं चेदतिसार्यते

शूलैरुपविशेदरोचकी—(ख. ड. त. घ.)

२०. सामं चेत् कुणपं शूलैरुपविशेदरोचकी—सामं चेदतिसार्यते

शूलैरुपविशेदरोचकी—(द.)

—सामं चेदतिसार्यते। एभिः शूलैरुपविशेदरोचकी

(घ.)

शूलैरुपविशेदरोचकी—शूलैरुपविशेदरोचकी—(घ.)

सघनातिविषाकुष्ठं—स तदा ह्युषाकुष्ठं (ख. ड. त.)

२० पक्वं—पक्कः (क. घ. फ.)

अपने वर्गकी औषधमे सिद्ध. वस्तिः अस्ति वस्ति, जेहव  
श्रेष्ठ उपम. मिषग्वितम् औषध अ औषध है ॥२०॥

20 If the patient passes excessively,  
digested stools, flatus, blood, pitta or  
kapha, the enema prepared with  
suitable medicaments is the best  
remedial measure.

षण्णामेषां द्विसंस्पर्गात् त्रिंशद्भेदा भवन्ति तु ।  
केवलैः सह षट्त्रिंशद्विधात् सोपद्रवानपि ॥२१॥

द्विसंस्पर्गात् अ जेना संसर्गथी दो दोके संसर्गे,  
एषाम् आ इन, षण्णाम् तु अ अतिसारना छः अति-  
सारके, त्रिंशत् तीस तीस, भेदाः भेद भेद, भवन्ति  
थाय अ हो जाते हैं, केवलैः सह भणना अ साथ  
मूल छः के साथ मिलनेसे, सोपद्रवान् उपद्रवयुक्त उप-  
द्रवयुक्त, षट्त्रिंशत् तीस भेद छत्तीस भेदोंको, अपि  
पक्ष सी, विद्यात् अध्ययन जाने ॥२१॥

21. These six varieties of diarrhea  
are further subdivided into thirty  
varieties, according to the various  
combinations of two morbid humors.  
These thirty together with the main  
six varieties make thirty-six varieties  
of diarrhea, along with their  
complications.

अतिसारोपद्रवाः—

शूलप्रवाहिकाभ्मानपरिकर्त्यरुचिज्वरान् ।

तृष्णोष्णदाहमूर्च्छादीनिषां विद्यादुपद्रवान् ॥२२॥

शूल- शूल शूल, प्रवाहिका- प्रवाहिका प्रवाहिका,  
आभ्मान- आभ्मान आभ्मान, परिकर्ति- परिक-  
र्तिका, अरुचि- अरुचि अरुचि, ज्वरान् ज्वर, ०५२ ज्वर,  
तृष्णा-तृष्णा- तृष्णा, तृष्ण तृष्णा, उष्णमा, दाह- दाह  
दाह, मूर्च्छादीन् च अने मूर्च्छा वजेरेने और मूर्च्छा

२१. भवन्ति तु—भवन्ति ते (घ.)

षट्त्रिंशत्—चेत् त्रिंशत् (घ.)

२२. तृष्णोष्णदाह—तृष्णोष्णदाह (घ.)

आदिको, एषाद् ओशोना इनके, उपद्रवान् उपद्रव  
उपद्रव, विद्यात् अक्षुषा जाने ॥२२॥

22. The physician should know colic, dysentery, meteorism, griping pain, anorexia, fever, thirst, stupefaction, burning, fainting etc., to be the complications of these various types of diarrhea.

अतिघातोपद्रवाणां नाशना योगाः—

तत्रामेऽन्तरपानं स्यात् व्योषाम्ललवणैर्युतम् ।  
पाचनं शस्यते वस्तिरामे हि प्रतिषिध्यते ॥२३॥

तत्र ते इस, आमे आमना अतिसारमां  
आमातिसारमें, व्योष- त्रिउटु त्रिउटु, अम्ल- अम्ल द्रव्य  
अम्ल द्रव्य, लवणैः अने क्षवक्षुषी और लवणसे, युतम्  
युक्त मिश्रित, अन्तरपानम् पाचन पाचन, स्यात् आपवुं  
ओषधे देना चाहिए, हि आमे कार्ष्ण्य के आममां  
क्योंकि आममें, पाचनम् पाचन पाचन, शस्यते प्रशस्त  
छे प्रशस्त है, वस्तिः अस्तिने वस्ति, प्रतिषिध्यते निषेध  
करनामां आवे छे निषिद्ध है ॥ २३ ॥

23. When the patient passes undigested stools, a digestive potion prepared with the three spices, acids and salt is recommended, since, in this condition, administration of the enema is contra-indicated.

वातघ्नेप्राहिर्वर्गीयैर्वस्तिः शकृति शस्यते ।

शकृति भणना अतिसारमां मलातिसारमें, वातघ्नेः  
वातनाशक वातघ्न, प्राहिर्वर्गीयैः तथा प्राही वर्गना  
द्रव्योष्णी तथा प्राही वर्गके द्रव्योंसे साधित, वस्तिः अस्ति  
वस्ति, शस्यते प्रशस्त छे उत्तम है ॥२३३॥

23½. When the patient passes digested stools, the physician should administer enema prepared from vata-curative and astringent group of drugs.

२३. तत्रामेऽन्तरपानं—तत्रामे वमनं कार्यं (श. व. त. व. क.)

स्वादाम्ललवणैः शसनः स्नेहवस्तिः समीरणे ॥२४॥

समीरणे वायुना अतिसारमां वातातिसारमें, स्वादु-  
स्वादु मधुर, अम्ल- अम्ल अम्ल, लवणैः अने क्षवक्षु  
द्रव्योष्णी युक्त और लवण द्रव्योंसे युक्त, स्नेहवस्तिः  
स्नेहवस्ति स्नेहवस्ति, वस्ति प्रशस्त छे प्रशस्त है ॥२४॥

24. If there is provocation of vata the patient should be given the unctuous enema prepared with sweet, sour and salt groups of drugs.

रक्ते रक्तेन, पित्ते तु कषायस्वादुतिक्तकैः ।

सार्यमाणे कफे वस्तिः कषायकटुतिक्तकैः ॥२५॥

रक्ते सार्यमाणे रक्तना अतिसारमां रक्तातिसारमें,  
रक्तेन रक्तनी रक्ते, पित्ते तु पित्तमां पित्तमें, कषाय-  
कषाय कषाय, स्वादु- मधुर स्वादु, तिक्तकैः अने तिक्त  
द्रव्योष्णी और तिक्त द्रव्योंसे, कफे अने कफना अति-  
सारमां और रक्तातिसारमें, कषाय- कषाय कषाय, कटु-  
कटु कटु, तिक्तकैः अने तिक्त द्रव्योंसे सिद्ध और  
तिक्त द्रव्योंसे सिद्ध, वस्तिः अस्ति आपवनी ओषधे वस्ति  
देनी चाहिए ॥२५॥

25. If there is blood in the stools, enema of blood should be given; and in the case of provocation of pitta the enema prepared of astringent, sweet and bitter groups of drugs, and if there is excessive mucus in the stools the enema prepared of astringent, pungent and bitter groups of drugs should be given.

शकृता वायुना वाऽऽमे तेन वर्चस्थानिले ।  
संसृष्टेऽन्तरपानं स्याद् व्योषाम्ललवणैर्युतम् ॥२६॥

शकृता अप्रधान भण अप्रधान मल, वायुना वा  
अथवा वायु साथे अथवा वायुके साथ आमे प्रधान

२४ स्वादाम्ललवणैः—स्वादाम्ललवणः (व. क.)

२४ वाऽऽमे चामे (व. क.)

आमने। प्रधान आमका, तेन अथवा अप्रधान आमनी  
साथे अथवा अप्रधान आमके साथ, वचसि प्रधान मरु,  
प्रधान मरु, अथ वल्लि अथवा वायुने, अथवा वायुका,  
संसृष्टे संसर्गं भर्ता संसर्गं होने पर, द्योव- त्रिकटु  
त्रिकटु, अम्ल- अम्ल द्रव्य, अम्ल द्रव्य, कवणैः युक्त  
अने धवलुषी युक्त और कवणसे युक्त, अन्तर- पान-  
आर पायन आपवुं जेहिजे पाचन देना चाहिए ॥२६॥

26. If the condition of lenteric  
diarrhea is associated with fecal matter  
or flatus, or if the condition of fecu-  
lent diarrhea or diarrhea due to vata-  
morbidity is associated with undigested  
stools the treatment consists of a  
digestive potion of the three spices  
and the drugs of the acid and salt  
groups.

पित्तेनामेऽसृजा वाऽपि तयोरामेन वा पुनः ।  
संसृष्टयोर्भवेत् पानं सब्योषस्वादुतिककम् ॥२७॥

पित्तेन अप्रधान पित्तनी साथे अप्रधान पित्तके  
साथ, असृजा वा अपि अथवा रक्तनी साथे अथवा  
रक्तके साथ, आने प्रधान आमने। प्रधान आमका,  
आमेन वा अथवा अप्रधान आमनी साथे अथवा  
अप्रधान आमके साथ, तयोः पुनः प्रधान पित्तने। अथवा  
रक्तने। प्रधान पित्तका अथवा रक्तका, संसृष्टयोः संसर्गं  
भर्ता संसर्गं होने पर, सब्योष- त्रिकटु त्रिकटु, स्वादु-  
अने मधुर और मधुर, तिक्तकम् तेभ्यः तिक्तद्रव्यी  
युक्त एवं तिक्त द्रव्योंसे युक्त, पानम् पायन पाचन  
भवेत् हितकर छे हितकर है ॥२७॥

27. If the condition of lenteric  
diarrhea is associated with bile or  
blood or if the condition of bilious or  
sanguinous diarrhea is associated with  
undigested stools, the treatment con-  
sists of a potion of the three spices

and the drugs of the acid and the  
bitter groups

तथाऽऽमे कफसंसृष्टे कषायज्योषतिककम् ।  
आमेन तु कफे द्योषकषायलवणैर्नुनम् ॥२८॥

तथा तथा तथा, आमे प्रधान आमने। प्रधान  
आमका, कफसंसृष्टे अप्रधान उरुनी साथे संसर्गं  
भर्ता अप्रधान कफके साथ संसर्गं होने पर, कषाय-  
उषायद्रव्य कषायद्रव्य, द्योव- त्रिकटु त्रिकटु, तिक्तकम्  
अने तिक्त द्रव्यी युक्त पायन हितकर छे और कफ  
द्रव्योंसे युक्त पाचन हितकर है, आमेन तु तथा  
अप्रधान आमनी साथे तथा अप्रधान आमके साथ,  
कफे प्रधान उरुने। संसर्गं भर्ता प्रधान कफका संसर्गं  
होने पर, द्योव- त्रिकटु त्रिकटु, कषाय- द्रव्य कषाय,  
लवणैः युक्त अने धवलुषी युक्त पायन हितकर छे  
और नमकसे युक्त पाचन हितकर है ॥२८॥

28. If the condition of lenteric  
diarrhea is associated with mucus, the  
treatment consists of a potion of the  
three spices and the drugs of the  
astringent and the bitter groups.

वातेन विशि पित्ते वा विट्पित्ताभ्यां तथाऽवल्ले ।  
मधुराम्लकषायः स्यात् संसृष्टे वस्तिरुत्तमः ॥२९॥

वातेन अप्रधान वायुनी साथे अप्रधान वायुके  
साथ, विशि पित्ते वा प्रधान मणने। अथवा पित्तने।  
संसर्गं भर्ता प्रधान मरु अथवा पित्तका संसर्गं होने पर,  
तथा विट्पित्ताभ्याम् तथा अप्रधान मरु अथवा पित्तनी  
साथे तथा अप्रधान मरु अथवा पित्तके साथ, वल्लि  
प्रधान वायुने। प्रधान वायुका संसृष्टे संसर्गं भर्ता  
संसर्गं होने पर, मधुर- मधुर मधुर, अम्ल- अम्ल अम्ल,  
कषायः तथा उषाय द्रव्यी साधित तथा कषाय  
द्रव्योंसे साधित, वस्तिः अस्ति वस्ति, उत्तमः उत्तम  
स्यात् छे है ॥२९॥

२८. आमेन तु कफे-आमे तनुकफे (क.)

२९. विट्पित्ताभ्यां-विट्पित्तसैः (क. व. त. व. क.)

29. If the conditions of feculent or bilious diarrhea is associated with flatus, or if the condition of diarrhea of vata is associated with fecal matter or bile, the best line of treatment is the administration of an enema prepared of the drugs of the sweet, acid and astringent groups.

**શાકુન્ધોષિતયોઃ પિત્તશકૃતો રક્તપિત્તયોઃ ।**

**વસ્તિરમ્યોન્યસંસર્ગે કષાયસ્વાદુતિકકઃ ॥૩૦॥**

શાકુન્ધ-ઓષિતયોઃ મળ અને રક્તના મળ ઔર રક્તકે, પિત્તશકૃતોઃ પિત્ત અને મળના પિત્ત ઔર મળકે, રક્તપિત્તયોઃ તથા રક્ત અને પિત્તના તથા રક્ત ઔર પિત્તકે, અમ્યોન્ધ- એક બીજાના પરસ્પર, સંસર્ગે સંસર્ગ સંસર્ગમે, કષાય કષાય કષાય, સ્વાદુ- સ્વાદુ સ્વાદુ, તિક્કકઃ અને તિક્ત દ્રવ્યોથી સાધિત ઔર તિક્ત દ્રવ્યોસે સાધિત, વસ્તિઃ યસ્તિ ઉત્તમ છે વસ્તિ ઉત્તમ છે ॥૩૦॥

30. If fecal matter and blood, or bile and fecal matter, or blood and bile, or fecal matter and blood and bile are found mutually associated in the conditions of diarrhea, the treatment consists in the administration of an enema prepared of the drugs of the astringent, sweet and bitter groups

**કફેન વિષિ પિત્તે વા કફે શિટ્પિત્તશોણિતૈઃ ।**

**શ્લોષતિક્કષાયઃ સ્યાત્ સંસૃષ્ટે વસ્તિરુત્તમઃ ॥૩૧॥**

કફેન અપ્રધાન કફની સાથે અપ્રધાન કફકે કષાય, વિષિ પિત્તે વા પ્રધાન મળ અથવા પિત્તને પ્રધાન મળ અથવા પિત્તકા, કફે અને પ્રધાન કફની સાથે ઔર પ્રધાન કફકે સાથ, શિટ્- પિત્ત- અપ્રધાન

મળ પિત્ત અપ્રધાન મળ, પિત્ત, શોણિતૈઃ અથવા રક્તનો અથવા રક્તકા, સંસૃષ્ટે સંસર્ગ યતાં સંસર્ગ હોને પર, શ્લોષ- ત્રિકટુ ત્રિકટુ, તિક્ક- તિક્ત તિક્ક, કષાયઃ તથા કષાય દ્રવ્યોથી શિદ્ધ તથા કષાય દ્રવ્યોસે શિદ્ધ, વસ્તિઃ યસ્તિ વસ્તિ, ઉત્તમઃ સ્યાત્ ઉત્તમ છે ઉત્તમ છે ॥૩૧॥

31. If the condition of feculent diarrhea or bilious diarrhea is associated with mucus in stools or if the diarrhea due to kapha is associated with fecal matter, bile or blood in stools, the best line of treatment consists in the administration of an enema prepared of the three spices and the drugs of the bitter and the astringent groups.

**સ્યાદ્વસ્તિર્વ્યોષતિક્કામ્લઃ સંસૃષ્ટે વાયુના કફે ।**

**મધુરવ્યોષતિક્કસ્તુ રક્તે કફવિમૂર્ચિષ્ઠે ॥૩૨॥**

વાયુના અપ્રધાન વાયુની સાથે અપ્રધાન વાયુકે સાથ, કફે પ્રધાન કફનો પ્રધાન કફકા, સંસૃષ્ટે સંસર્ગ યતાં સંસર્ગ હોને પર, શ્લોષ- ત્રિકટુ ત્રિકટુ, તિક્ક- અને તિક્ત તિક્ક, અમ્લઃ તથા અમ્લ દ્રવ્યોથી સાધિત ઔર અમ્લ દ્રવ્યોસે સાધિત, રક્તે અને પ્રધાન રક્તની સાથે ઔર પ્રધાન રક્તકે સાથ, કફવિમૂર્ચિષ્ઠે અપ્રધાન કફનો સંસર્ગ યતાં અપ્રધાન કફકા સંસર્ગ હોને પર, મધુર- સ્વાદુ દ્રવ્ય મધુર દ્રવ્ય, શ્લોષ- ત્રિકટુ ત્રિકટુ, તિક્કઃ તુ તથા તિક્ત દ્રવ્યોથી સાધિત યસ્તિ તથા તિક્ક દ્રવ્યોસે સાધિત વસ્તિ, સ્યાત્ આપવી એક એક દેની વાદિ ॥ ૩૨ ॥

32. If the condition of diarrhea due to kapha is associated with flatus, the treatment consists in the administration of an enema prepared of the three spices and the drugs of the bitter

૩૨. શ્લોષતિક્કામ્લઃ - શ્લોષવ્યક્તિમ્લઃ (ક.)

,, કાવિમૂર્ચિષ્ઠે - કાવિમિચિષ્ઠે (ક હ. દ.)

૩૧. શ્લોષતિક્કષાયઃ - કટુતિક્કષાયઃ (વ.)



and acid groups; while if the condition of sanguinous diarrhea is associated with mucus in stools, the treatment consists in the administration of an enema prepared of the three spices and the drugs of the sweet and bitter groups.

मारुते कफसंसृष्टे व्योषाम्ललवणो भवेत् ।

वस्तिवर्तिन पित्ते तु कार्यः स्वादुम्लतिक्तकः ॥३३॥

मारुते प्रधान वायुने प्रधान वायुका, कफसंसृष्टे अप्रधान कफनी साथे संसर्गं यत् अप्रधान कफके साथ संसर्ग होने पर, व्योष- त्रिफले, त्रिकटु, अम्ल- अम्ल द्रव्य अम्ल द्रव्य, लवणः अने क्षारसुथी साधित अस्ति और लवणसे साधित वस्ति, भवेत् आपवी देनी चाहिए वातेन अने अप्रधान वायुनी साथे और अप्रधान वायुके साथ, पित्ते तु प्रधान पित्तेन संसर्गं यत् प्रधान पित्तका संसर्ग होने पर स्वादु- मधुर स्वादु, अम्ल- अम्ल अम्ल, तिक्तकः तथा तिक्त द्रव्यैथी साधित तथा तिक्त द्रव्योंसे साधित, वस्तिः अस्ति वस्ति, कार्यः आपवी भेष्टी देनी चाहिए ॥३३॥

33. If the diarrhea due to vata is associated with mucus in stools, the treatment consists in the administration of an enema prepared of the three spices and the drugs of the sweet and the salt groups; while if the condition of sanguinous diarrhea is associated with flatus in stools the treatment consists in the administration of an enema prepared of the drugs of the sweet, acid and bitter groups.

अतिसारोक्तमस्यान्यत्राप्यतिदेशः —

त्रिचतुःपञ्चसंसर्गनिवमेव विकल्पयेत् ।

युक्तिश्चातिसारोक्ता सर्वरोगेष्वपि स्मृता ॥३४॥

३३. पित्ते-रक्ते वद. ७ ४ ५ क.)

३४. त्रिचतुःपञ्चसंसर्गनि-त्रिचतुःपञ्चसंसर्गनि (फ.)

एवम् एव आ. ४ प्रभासे इसी प्रकार, त्रि-चतुः-पञ्च- त्रय, यान् तथा पांचव्या दीन, चार तथा पांचके, संसर्गान् संसर्गानी संसर्गानी, विकल्पयेत् कल्पना करनी भेष्टी- कल्पना करनी चाहिए, अतिसारोक्ता च अतिसारोक्ता त्रिपयसां कहेदी अतिरोगोंमें कही हुई, एषा आ यह युक्ति युक्ति युक्ति, सर्वरोगेषु सर्वेषु रोगोंमें सब रोगोंमें और पक्ष भी, स्मृता स्मृतनी समझनी चाहिए ॥३४॥

34. In this manner, in combinations of three, four or five morbid factors, the corresponding combination of therapeutic measures should be determined. This methodology enunciated with reference to diarrhea is applicable *mutatis mutandis* in all disease-conditions.

आमादिषट्संस्तयाचक्षया —

युगपत् षड्सं वण्णां संज्ञं पाचनं भवेत् ।

निरामाणां तु पञ्चानां वस्तिः पादुसेको मतः ॥३५॥

वण्णाम् छाना छाना, संज्ञं संज्ञं संज्ञं संज्ञं, युगपत् छेक साथे एक साथ, षड्सं छेके रसेतु छेकों रसेते युक्त पाचनम् पाचन पाचन, भवेत् आपवुं भेष्टी देनी चाहिए, निरामाणां पक्ष आमा क्षिपयना आमके बिना पञ्चानाम् तु पाचना संसर्गं पांचका संसर्ग होनेपर पादुसेकः छ रसेनी छ रसेते युक्त, वस्तिः अस्ति वस्ति, मतः आपवी भेष्टी देनी चाहिए ॥ ३५ ॥

35. When all the six morbid factors are found in combination a digestive potion consisting of all the six tastes should be used; when five of the six conditions except that of chyme are involved, the enema consisting of all the six tastes should be given.

३५. वण्णाम्-सर्व द.)

„ भवेत्-पित्ते (प.)

अतिशारहरं घृतम्—

उदुम्बरशलाहूनि जम्बवान्प्रोदुम्बरत्वचः ।

शङ्ख सर्जरसं लाक्षां कर्दमं च पलांसिकाम् ॥३६॥

पिष्ट्वा तैः सर्पिषः प्रस्थं क्षीरद्विगुणितं पचेत् ।

अतीसारेषु सर्वेषु पेयमेतद्यथाबलम् ॥३७॥

पलांसिकम् ओष्ठ ओष्ठ पक्ष एक एक पल, उदुम्बर-  
शलाहूनि उमरुआनां शलाहू कच्चे गूलर, जम्बु- आंशु  
जामुन, आम्र- आंशु आम, उदुम्बर- अने उमरुआनी  
और गूलरकी, त्वच- छाल छाल, शङ्ख शंभु शङ्ख,  
सर्जरसम् सर्जरस रस, लाक्षाम् लाक्ष लाल, कर्दमम्  
च अने कर्दम और कर्दम, पिष्ट्वा ओंशोने पीसी इतको  
पीसकर, तैः तेओंशोना साथे उनके साथ, क्षीरद्विगुणितम्  
१२८ तोला दूधमां १२८ तोले दूधमें, सर्पिषः धी धी,  
प्रस्थम् ६४ तोला ६४ तोले, पचेत् पकावतुं सिद्ध  
करे, सर्वेषु सर्व सब, अतीसारेषु अतिसारेमां अति-  
सारोंमें, एतत् ओ इसे, यथाबलम् अथ अनुसार बलके  
अनुसार, पेयम् पीवुं पीना चाहिए ॥३६-३७॥

36-37. Take four tolas each of the  
unripe fruits of gular fig, the barks  
of jambul, mango and gular fig, conch,  
sal resin, lac and Kardama and reducing  
the whole to paste, prepare with it 64  
tolas of ghee adding double the quantity  
of milk. This medicated ghee may be  
given in all kinds of diarrhea, accor-  
ding to the vitality of the patient.

अतिशारहरा यवाग्वः—

कच्छुराघातकीबिस्वसमङ्गारकशालिमिः ।

मसूराभ्वस्थशुक्रैश्च यवागूः स्याज्जले शृतैः ॥३८॥

जले शृतैः पाण्डु साथे उकाण्डोने जलमें पकाकर,  
कच्छुरा- डोवय केवाँच, घातकी- धावडी धायके फूल,  
बिस्व- भीली बेलगिरी, समङ्गा- रीसाभण्डी लज्जावन्ती,  
रकशालिमिः लाल येआ लाल चावल, मसूर- मसूर  
मसूर, अश्वस्थशुक्रैः च अने पीपणानां पत्रांकुर और पीपलके

पत्रांकुर इनकी, यवागूः यवागू यवागू, स्याज्ज डरवी  
बनाये ॥३८॥

38. A medicated gruel, prepared of  
cowage, fulsee flowers, bael, sensitive  
plant, red rice, lentils and sprouts of  
holy fig with water may be given in  
conditions of diarrhea.

बालोदुम्बरकटुकसमङ्गापुष्पपल्लवैः ।

मसूरधातकीपुष्पबलामिश्च तथा भवेत् ॥३९॥

बालोदुम्बर- आंशु उमरुआनां छाल कच्चे गूलर, कटुक-  
अरु अरु, समङ्गा- रीसाभण्डी लज्जावन्ती, पुष्पपल्लवैः  
पीपणना पत्रांकुरोधी पाकरके पत्ते, मसूर- मसूर मसूर,  
धातकीपुष्प- धावडीनां दूध धायके फूल, बलामिः च अने  
भला ओंशोधी पक्ष यवागू और बला इनसे भी यवागू,  
तथा ते च प्रमाणे इसी प्रकार, भवेत् सिद्ध डरवी सिद्ध  
करे ॥३९॥

39. Similarly, a medicated gruel  
prepared of tender gular fig, indian  
calosanthos, sensitive plant and sprouts  
of yellow-barked fig tree, lentils, fulsee  
flowers and heart-leaved sida may also  
be given.

स्थिरादीनां बलादीनामिक्ष्वादीनामथापि वा ।

कायेषु समसूराणां यवाग्वः स्युः पृथक् पृथक् ४०

समसूराणाम् मसूरसहित मसूरसहित, स्थिरादीनाम्  
शलाहू वगेरे सरीवन आदि, बलादीनाम् भला वगेरे  
बलादि, अथ अपि इक्ष्वादीनाम् वा अथवा शेरी  
वगेरेना अथवा इक्षु आदिके, कायेषु उपाधोमां कायमें,  
पृथक् पृथक् लुदी लुदी पृथक् पृथक्, यवाग्वः यवागूआ  
यवागूएँ, स्युः भनावनी बनानी चाहिए ॥४०॥

40. Similarly, different medicated gruels may be prepared of lentils with the addition of the decoctions of any of the following groups of drugs viz., the tick trefoil group, the sida group and the sugar-cane group.

कच्छुरामूलशान्वादिषण्डुलैरुपसाधिताः ।

दधितकारनालाम्लक्षीरेष्विक्षुरसेऽपि वा ॥४१॥

शीताः सशर्कराक्षौद्राः सर्वातीसारनाशनाः ।

ससर्पिमैरिवाज्ञान्यो मधुरा लवणाः शिवाः ॥४२॥

कच्छुरामूल- डोन्धना मूल केवांचके मूल, शाक्यादि-  
अने शाण आदि और शक्तिआदिके, षण्डुलैः तंडुलोष्णी  
चावलसे, दधि- दही, दही, तक- छाश तक, बारनाल-  
अने आरनाल और कांजी आदि, अम्ल- भाटा दूधोभा  
खट्टे द्रव्योंमें, क्षीरेषु दूधमें, दूधमें, क्षुरसे अपि वा  
अथवा शेरडीना मसूर अथवा गजके रसमें, उपसा-  
धिताः साधित बनायी, सशर्करा- साकर चीनी,  
क्षौद्राः तथा मयसहित तथा मधुमिश्रित, शीताः  
शीतल यवागूमें शीतल यवागूएं, सर्व- सर्व सब प्रका-  
रके अतीसार अतिसारने अतिप्रारोंको, नाशनाः नाश  
करनार छे नष्ट करती हैं, ससर्पिः धी धी, मरिच-  
भरी भरिच, अजाज्य; अने उरासहित और क्षीरेसे  
संस्कृत, मधुराः मधुर मधुर, लवणाः छे क्षवक्षुयुक्त या  
नमकीन यवागूएं, शिवाः उष्माक्षुडारु छे कल्याणकारी  
हैं ॥४१-४२॥

41-42. Medicated gruels prepared of the roots of cowage, sali and other kinds of rice or with curd, buttermilk sour conjee, acid, milk and sugar cane should be given cold, mixed with

sugar, honey, ghee and black pepper curing all kinds of diarrhea. These medicated gruels seasoned with ghee, black pepper, cumin seeds and sweet and salt articles are wholesome and curative of all kinds of diarrhea.

प्रतिसारचिकित्वासूत्रम्

भवन्ति चात्र श्लोकाः—

स्निग्धाम्ललवणमधुरं पानं बन्धितं मारुते कोष्णः ।

जीर्णं तिक्तकषायं मधुरं पित्ते च रक्ते च ॥४३॥

तिक्तोष्णकषायकटु स्नेहमणि संप्राप्तिं यातनुच्छकृति  
पाचनमामे पानं पिच्छासृग्बन्धनयो रक्ते ॥४४॥

अतिसारं प्रत्युक्तं मिश्रं ब्रन्दादियोगजेष्वपि च ।

तत्रोद्वेकविशेषादांघ्र्येषूपक्रमः कार्यः ॥४५॥

अत्र च आ विषयभां इस विषयमें, श्लोकाः सबभित  
श्लोका छे ३ श्लोक हैं कि, मारुते वायुजन्य अति  
सारभां वातजन्य अतिप्रारमें, स्निग्ध- स्निग्ध स्निग्ध,  
अम्ल- अम्ल अम्ल लवण- लवण लवण, मधुरम् अने  
मधुर और मधुर, पानम् पान पान, कोष्णः तथा  
नवशेडी तथा बोकी गरम, बन्धितः च अस्ति बन्धित  
उत्तम हैं, पित्ते च पित्तजन्य अतिसारभां पित्तजन्य  
अतिप्रारमें, रक्ते च अने रक्तजन्य अतिसारभां और  
रक्तजन्य अतिप्रारमें, शीतम् शीत शीतल, तिक्त- तिक्त  
तिक्त, कषायम् क्षयय कषाय, मधुरम् अने मधुर पान  
तेमज अस्ति उत्तम छे और मधुर पान एवं बन्धित  
उत्तम हैं, स्नेहमणि क्षयजन्य अतिसारभां कफजन्य  
अतिप्रारमें, तिक्त- तिक्त तिक्त, उष्ण- उष्ण उष्ण,  
कषाय- क्षयय कषाय, कटु- अने कटु पान तेमज अस्ति  
उत्तम छे और कटु पान एवं बन्धित उत्तम हैं, संप्राप्ति  
महजन्य अतिसारभां मलजन्य अतिप्रारमें, संप्राप्ति  
संप्राप्ति संप्राप्ति, वातनुच्छकृति अने वातहर पान तेमज

१. कच्छुरामूलशान्वादि-शर्करासूतशान्वादि (४१.)

२. उपसाधिताः ऽपि साधिताः (४२.)

३. दधितकारनालाम्लक्षीरेष्विक्षुरसेऽपि वा-दधितकारनालाम्ललवणाः

मांसुक्षाराः प्रसाधिताः (४२.)

४. क्षीरेषु-क्षीरेषु (४२. ख. घ. ङ.)

४२. ससर्पिमैरिवाज्ञान्यो-ससर्पिर्बन्धना बोध्याः (४२.)

४३ रक्ते-रक्ते (४३.)

४४. ब्रन्दादियोगजेष्वपि च-ब्रन्दादियोगजेष्वपि च (४४.)

४५. संप्राप्ति-संप्राप्ति (४५.)

४६. उपक्रमः-उपक्रमविधेयः (४६.)

अस्ति उत्तमं च और वातहर पान एवं वस्ति उत्तमं है, आने आमजन्य अतिसारमा आमजन्य अतिसारमें, पाचनम् पाचन करना २० पाचन करनेवाला, पानम् पान उत्तम है, रक्ते अने रक्तजन्य अतिसारमा और रक्तजन्य अतिसारमें, पिच्छा- पिच्छा अस्ति च। पिच्छावस्तियां, असृक् वस्तयः अने रक्तअस्ति च। और रक्तवस्तियां उत्तम है, अतिसारम् प्रतिष्ठापनम् आ प्रभावे अतिसारना विषयमा उद्देवामा आये ३० इस तरह अतिसारके विषयमें कहा गया है, द्रव्यादि-योगजेषु च अपि अने द्रव्य वजरेना शोथेति उत्पन्न भवेत् अतिसारमा और द्रव्य आदिके योगसे उत्पन्न हुए अतिसारमें, मिश्रम् मिश्र चिकित्सा कही है मिश्र चिकित्सा कही है, तत्र तेमां इन संज्ञाओं में, उद्देक-विशेषाद् दोषोन्मी अधिकता अनुसार दोषोंकी प्रबलताके अनुसार, दोषेषु दोषोमा दोषोंमें, उपक्रमः उपचार चिकित्सा, कार्यः करने के अर्थ से करनी चाहिए ॥ ४३-४५ ॥

Here are verses again—

43-45. In diarrhea due to vata, the potion as well as the enema should be prepared of unctuous acid, salt and sweet articles and should be taken lukewarm; in diarrhea due to pitta and blood morbidity, both potion and enema should be prepared of bitter, astringent and sweet articles and should be taken cold; in diarrhea due to kapha, drink and enema should be prepared of bitter, astringent and pungent articles and should be taken hot; in diarrheas due to fecal morbidity, the medication should be astringent and alleviative of vata; in diarrhea due to chyme morbidity, digestive potions should be drunk; in diarrhea characterised by blood in stools the mucilagenous enema, or blood enema should be given. In this manner, we

have indicated the various lines of treatment in diarrhea. In cases where the diarrhea is caused by the morbidity of more factors than one, the medication should consist of the appropriate combination of the various lines indicated. In these latter cases, the principle of treatment should be to treat the preponderant morbid factor first

अध्यायोक्ता विषयाः—

तत्र श्लोकः—

प्रासृतिकाः सव्याप-

त्क्रिया निरुहास्तथाऽतिसारहिताः ।

रसकरपवृत्तयवाग्व-

श्लोका गुरुणा प्रसृतसिद्धौ ॥४६॥

तत्र ते विषयमा उस विषयमें, श्लोकः उपसंहा- रने श्लोक से उपसंहारका श्लोक है कि, प्रसृतसिद्धौ आ प्रासृतयेऽपीय सिद्धिमा इस प्रासृतयोगीय सिद्धिमें, सव्यापत्क्रियाः व्यापत्तियोन्मी चिकित्सासहित व्यापत्तियोंकी चिकित्साके साथ, प्रासृतिकाः प्रासृति उत्पत्ति अस्ति च। प्रासृतिक वस्तियोग, अथ अतिसारहिताः अतिसारमा हितकर अति-सारको हितकर, निरुहाः निरुद्ध निरुद्ध, रस-करप रसकरप रसकरप, वृत्त-वृत्त वी, ववाग्वः च अने यवागूओ और यवागूएँ, गुरुणा गुरुओ गुरुने, उक्ताः उक्ती अताओं से कह दी हैं ॥४६॥

Here is the recapitulatory verse—

46. In this chapter on success by the use of enema consisting of the Prasrita measure, the teacher has described the various enemas in which the Prasrita measure is used; the complications arising from the use of mild enema, as also their treatment, evacuative enemas which are beneficial

४६. रसकरपवृत्तयवाग्वः—रसकरकवृत्तयवाग्वः (च.)

॥ प्रसृतसिद्धौ—प्रसृतवः सिद्धौ (च.)

in conditions of diarrhea and finally, the determination of medications with reference to the six categories of taste, various medicated ghees and gruels.

इत्यग्निवेशकृते तन्त्रे चरकप्रतिसंस्कृतेऽप्राप्ते  
दृढबलसंपूरिते सिद्धिस्थाने प्रासृतयो-  
गीयसिद्धिर्नामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

इति आ. भ्राष्ट्रे इस प्रकार, अग्निवेशकृते अग्निवेशे  
२२६६ अग्निवेशसे बनाये, चरकप्रतिसंस्कृते तन्त्रे अने  
अरुंधती प्रतिसंस्कार पायेवा आ. शास्त्रभां और  
चरकके द्वारा संस्कृत इस शास्त्रके, अप्राप्ते अभ्राप्त अप्राप्त,  
दृढबलसंपूरिते अने दृढबलसे पूरा करेवा और दृढबलसे  
पूरित किये गये, सिद्धिस्थाने सिद्धिस्थानभां सिद्धिस्थानमें,  
प्रासृतयोगीयसिद्धिः 'प्रासृतयोगीयसिद्धि' 'प्रासृत-  
योगीयसिद्धि', नाम नामने नामका, अष्टमः आष्टमो  
आठवाँ, अध्यायः अध्याय संपूर्ण भयो अध्याय  
समाप्त हुआ ॥ ८ ॥

8. Thus, in the Section on Success in Treatment, in the treatise compiled by Agnivesa and revised by Caraka, the eighth chapter entitled 'The successful treatment of administration of the Prasrita Enema' not being available, the same as restored by Dridhabala, is completed.

नवमोऽध्यायः ।

नवमो अध्याय अध्याय नौवाँ

Chapter IX

त्रिमूर्तिसिद्धिपुष्पकमः —

अथातस्त्रिमूर्तीयां सिद्धिं व्याख्यास्यामः ॥ १ ॥

इति ह स्माह भयवर्णनात्रेयः ॥ २ ॥

अथ अतः एवे अर्द्धांथी अथ अत्रो, त्रिमूर्तीयां  
सिद्धिं त्रिमूर्तीयसिद्धि' नामना. अध्यायान् 'त्रिमूर्ती-  
सिद्धि' नामके अध्यायका, व्याख्यास्यामः व्याख्या-  
करंशु व्याख्यान करेंगे ॥ १ ॥

अगवान् भगवान् भगवान्, आत्रेयः आत्रेये  
आत्रेयने, इति ह आ. विप्रभां नीचे प्रभाष्ट्रे २ इस  
विषयमें निम्न प्रकारसे ही, आह स. ३६६० के कहा है ॥ २ ॥

1. We shall now expound the chapter entitled 'Success in Treatment of the Complications arising from the disorders affecting the Three Vital Regions in the body.'

2. Thus declared the worshipful Atreya.

मर्मणां संख्या—

सप्तोत्तरं मर्मशतमस्मिच्छरीरे स्कन्धशाखा-  
माश्रितमग्निवेशः । तेषामन्यतमपीडायां समञ्जिका  
पीडा भवति, चेतनानिबन्धवैशेष्यात् ।

अग्निवेशः ! हे अग्निवेशः ! हे अग्निवेशः ! अस्मिन् आ  
इस, शरीरे शरीरभां शरीरमें, स्कन्धशाखा- २३५  
अने शाखाओंमें स्कन्ध और शाखाओंमें, समञ्जिकम्  
आश्रये २३६६ आश्रित, सप्तोत्तरम् मर्मशतम् १०७  
मर्म के १०७ मर्म हैं, तेषाम् तेषां इत्येव,  
अन्यतम- ३६६ केडभां किसी एकके सी, पीडायां पीडा  
अर्था पीडित होने पर, चेतना- चेतनाधितुना चेतनाके,  
निबन्ध-वैशेष्यात् विशेष संशयने ३६६ विशेष सम्बन्धके  
कारण, समञ्जिका अधिक अधिक, पीडा पीडा पीडा,  
भवति बाध के होती है ।

3-(1). O, Agnivesa! A hundred and seven are the vital organs located in the trunk and limbs of the human body. When any one of them is afflicted, the resultant suffering is very

१. शरीर-शरीर (२.)

severe, on account of their intimate connection with the sentient principle in the body.

तत्र त्रयाणां प्राधान्यम्—

तत्रशाखाश्रितेभ्यो मर्मभ्यः स्कन्धाश्रितानि गरीयांसि, शाखानां तदाश्रितत्वात्; स्कन्धाश्रितेभ्योऽपि हृदिस्तिशिरांसि, तन्मूलत्वाच्छरीरस्य ॥३॥

तत्र तैमां इनमें, शाखाश्रितेभ्यः शाखाभां रહેदां शाखाओंमें आश्रित, मर्मभ्यः मर्म ऊरतां मर्मोंसे, स्कन्धाश्रितानि रक्षधमां रहेदां मर्म स्कन्धमें आश्रित मर्म, गरीयांसि मुख्य छे मुख्य हैं, शाखानाम् ऊपर छे शाखाओं क्योंकि शाखायें, तदाश्रितत्वात् ते रक्षधने आश्रये छे उन स्कन्धोंके आश्रित हैं, स्कन्ध- रक्षधमां स्कन्धमें, आश्रितेभ्यः रहेदां मर्म ऊरतां आश्रित मर्मोंको आपेक्षा, अपि पक्ष सी, हृदि- वस्ति-हृदि, अस्ति हृदय, वस्ति, शिरांसि अने भरतक और शिर मुख्य हैं, शरीरस्य तन्मूलत्वात् ऊपर छे और तल्ले शरीरनां मूल छे क्योंकि ये तीनों शरीरके मूल हैं ॥३॥

3. Among these vital regions, those situated in the trunk are more important than those situated in the extremities, since the extremities are dependent on the trunk. As regards the vital organs situated in the trunk again, those of the heart, the bladder and the head are the most important, since the existence of the body is dependent upon them.

प्रधानमर्मणां हृदयशिरसेवस्तीनां वर्णनम्—

तत्र हृदये दश धमन्यः प्राणापानौ मनो बुद्धिश्चेतना महाभूतानि च नाभ्यामरा इव प्रतिष्ठितानि,

४. हृदये—हृदि (ब. क. व.)

, प्राणापानौ—प्राणोदानौ (क. ड. व.)

, नाभ्यामरा—नाभ्यागार (व.)

तत्र तैमां इनमें, नाभ्याम् अराः इव नेम पैरानी नाभिमां आरा आश्रित होय छे तैम जिस प्रकार चक्की नाभिमें आरे आश्रित होते हैं उस प्रकार, हृदये हृदयभां हृदयमें, दश धमन्यः दश धमनीओं दश धमनियां, प्राणापानौ प्राण, अपान प्राण, अपान, मनःबुद्धिः मन, बुद्धि मन, बुद्धि, चेतना चेतना चेतना, महाभूतानि च अने महाभूतों और महाभूत, प्रतिष्ठितानि आश्रित छे आश्रित हैं;

4-(1). Now, in the heart are set, as spokes in the nave of the wheel, the ten great arteries, the vital breaths Prana and Apana, the mind, the intellect, consciousness and the great proto-elements.

शिरसि इन्द्रियाणि इन्द्रियप्राणवहानि च स्रोतांसि सूर्यमिव गमस्तयः संश्रितानि,

गमस्तयः सूर्यनां ऊपर छे सूर्यकी किरणें, सूर्यस्य सूर्यभां सूर्यमें, इव नेम आश्रित छे तैम जिस प्रकार आश्रित हैं उस प्रकार, इन्द्रियाणि इन्द्रिये इन्द्रियां, इन्द्रिय- इन्द्रियवह इन्द्रियवह, प्राणवहानि अने प्राणवह और प्राणवह, स्रोतांसि च स्रोतों स्रोतों, शिरसि भाभाभां शिरमें, संश्रितानि आश्रित छे आश्रित हैं;

4-(2). In the head are set, as rays in the sun, the sense organs and the channels carrying the sensory and vital impulses.

वस्तिस्तु स्थूलगुदमुष्कसेवनीशुकमूत्रवाहिनीनां नाडी(ली)नां मध्ये मूत्रघारोऽम्बुवहानां सर्वस्रोतसामुदधिरिषापगानां प्रतिष्ठा, बहुमिध तन्मूलैर्मर्मसंज्ञकैः स्रोतोमिर्गगनमिव दिनकरकरैर्व्याप्तमिदं शरीरम् ॥४॥

स्थूलगुद- स्थूलगुद, मुष्क- अ. ड. अण्ड, सेवनी- सेवनी सेवनी, शुक-मूत्र-वाहिनीनाम् शुक्लवह

४. मूत्रवाहिनीनाम्—मूत्रवहानां (ब. क.)

अने भूतवह शुक्रवाहिनी और मूत्रवाहिनी. नाडी(ली)नाम नाडीऔनी नाडिबोंके, मन्वे वन्वे बीचमें, मूत्रचारः भूत धारण करनार मूत्रको चारण करनेवाली, वस्तिः तु अस्ति तो वस्ति तो, आपगगनाम् नदीऔने। नदिशोछा, बहुभिः इव जेम महासागर आश्रय छे तेम जिस प्रकार महासागर आश्रय है उस प्रकार, अम्बुवहानाम् भूतवह अम्बुवह, सर्वस्रोतसाम् सर्व स्रोतीने। सब स्रोतोंका, प्रतिष्ठा आश्रय (आधार) छे आश्रय (आवार) है, दिनकरकरैः भूतनां दिशेत्थी सूर्यको किरणोंसे गगनम् इव जेम आकाश व्याप्त थाय छे तेम जिस प्रकार आकाश व्याप्त होता है उसी प्रकार, तन्मूलैः अस्तिथी उत्पन्न थयेला वस्तिसे उत्पन्न, बहुभिः च भूषा बहुतेसे, मर्मसंज्ञकैः भूमि कहेवाला मर्मसंज्ञक, स्रोतोभिः स्रोतीथी स्रोतोंसे, इदम् आ यह शरीरक शरीर शरीर, व्याप्तम् व्याप्त छे व्याप्त है ॥ ४ ॥

4. As regards the bladder, located as it is in the perineum amidst the channels carrying the semen and the urine, it is the seat of urinary secretion and also the resort of all the channels conveying the aqueous element even as the ocean is the resort of all the rivers of the earth. With a network of channels known as vital ones emanating from these centres, the body is pervaded, even as the sky is pervaded with the rays of the sun.

प्रधानमर्मणामुपधाते सामान्यलक्षणानि—

तेषां त्रयाणामन्यतमस्यापि मेदादाश्वेव शरीर-  
मेदः स्यात्, आश्रयनाशादाश्रितस्यापि विनाशः;  
तदुपघाताच्च घोरतरव्याधिप्रातुर्भावः; तस्मा-

५. अश्रितस्यापि विनाशः—अश्रितस्य नाशः (व.)

६. घोरतरव्याधि—घोरव्याधि (घ.)

७. तदुपघाताच्च—तदुपघाताच्च (घ. च.)

देतानि विशेषेण रक्ष्याणि बाह्याभिघादातादि-  
भ्यश्च ॥ ५ ॥

तेषाम् ते इन, त्रयाणाम् त्रयभूतानां तीनोंमेंसे, अन्य-  
तमस्य कोर्ध औकना किसी एकका, अपि पक्ष मी,  
मेदाद नाशयी नाश होनेसे, बाह्य एव तरतर कोप्र ही,  
शरीरभेदः स्वाद शरीरने। नाश अर्थ छे शरीरका नाश  
हो जाता है, आश्रयनाशान् आश्रयना नाशने कोर्ध  
आश्रयका नाश होनेसे, आश्रितस्य आश्रये रहेलावे।  
आश्रित, अपि पक्ष मी, विनाशः विनाश भाव छे  
नष्ट हो जाता है। तदुपघातात् तु तेऔभां विकार  
अवाथी इनके विकृत होनेसे, घोरतरव्याधि—अतिशय  
क्षयकर रोगों मयानक रोगोंकी, प्रातुर्भावः उत्पन्न भाव  
छे उत्पत्ति होती है, तस्मात् भावे इस लिए एतानि  
तेऔनी इनकी, बाह्याभिघातात् गहना अभिघातथी  
बाह्य चोट आदिसे, तातादिभ्यः च अने वातादिथी  
और वातादिसे, विशेषेण भास करीने विशेष रूपमें,  
रक्ष्याणि रक्षा करवी भेद अे रक्षा करनी चाहिए ॥ ५ ॥

5. If any one of these three vital resorts is destroyed, destruction soon overtakes the entire body, since the destruction of the substratum means the destruction of the super structure as well. If any one of them is damaged, the most serious disorders take their rise in the body. Accordingly, these three vital regions should be protected with special care, both from external injury and internal morbidity of vata and the other humors.

प्रधानमर्मणामुपधाते विशेषलक्षणानि—

तत्र हृद्यभिहते कासश्वासबलक्षयकण्ठशोषहो-  
माकर्षणजिह्वा निर्गमसुखतालुशोषापस्मारोन्मादप्र-  
लापचित्ताशयः स्युः;

५. बाह्याभिघातादिभ्यश्च—बाह्याभिघातात् वातादिदोषेभ्य-

केति (व.)

६. हृद्यभिहते—हृद्येऽभिहते (घ.)



તત્ર તેભાં હનમેં, હૃદિ હૃદયને હૃદય પર, અભિહતે અભિધાત યતાં ચોટ લગનેસે, કાસ-ધાસ-કાસ, શ્વાસ-શ્વાસ, વલક્ષય-બલક્ષય વલક્ષય, કળ્ઠશોષ-કંઠ-શેષ ગલેકા સૂક્ષ્ણા, ક્લોમાકર્ષણ-ક્લોમાનું ખેંચાવું ક્લોમકા વહાર આના, જિહ્વાવિગ્મ-જીભ નીકળી પડવી ગીમકા નિકલના, મુલ્તાલુશોષ-મુખશેષ, તાલુશેષ મુલ્તાલુશોષ, તાલુશોષ, અપસ્માર-અપસ્માર અપસ્માર, રુમાદ-ઉન્માદ રુમાદ, પ્રલાપ-અપ્પાટ પ્રલાપ, વિચનાશ-સંજાનાશ વિચનાશ, આદયઃ વગેરે આદિ, ક્યુઃ થાય છે હોતે હૈં;

6-(1). Among these, if the heart is injured, such disorders as the following ensue: namely, cough, dyspnea, loss of strength, dryness of the throat, pain as though the Kloma is drawn down, protrusion of the tongue, dryness of the mouth and the palate, epilepsy, insanity, delirium and loss of consciousness etc.

શિરસ્યમિહતે મન્યાસ્તમ્માર્દિતચક્ષુર્વિભ્રમ-મોહોદ્વેષનચેષ્ટનાશકાસશ્વાસહનુગ્રહમૂકગદ્ગદ-સ્વાક્ષિનીમીલનગણ્ડસ્પન્દનજૃમ્ભણલાલાસાવસ્વ-સ્વહાનિવદનજિહ્વાત્વાદિની;

શિરસિ માથામાં શિર પર, અભિહતે અભિધાત અવાથી આવાત હોનેસે, મન્યાસ્તમ્મ-મન્યાસ્તમ્મ મન્યાસ્તમ્મ, મર્દિત-મર્દિત મર્દિત, ચક્ષુર્વિભ્રમ-નેત્ર-વિભ્રમ આંસુની વિકૃતિ, મોહ-મોહ મોહ, ઉદ્વેષન-ઉદ્વેષન ઈંટન, ચેષ્ટનાશ-ચેષ્ટનાશ ચેષ્ટનાશ, કાસ-કાસ-કાસ, શ્વાસ-શ્વાસ કાસ, શ્વાસ, હનુમ્મ-હનુમ્મ હનુમ્મ, મૂકગદ્ગદ-મૂકગદ્ગદ, ગદ્ગદતા ગૂંપાવન, ગદ્ગદવાણી, અક્ષિનીમીલન-આંખ વીંચાઈ જવી આંસુકા વન્દ હોના, ગણ્ડસ્પન્દન-ગંડાનું ફરકવું ગંડસ્થાનમેં સ્પન્દન, જૃમ્ભણ-ખાસાં આવનાં જમ્માઈ, લાલાસાવ-લાળનેા આવ થવો લાલાસાવ, સ્વહાનિ-સ્વરશેદ સ્વરની દાનિ,

વદનજિહ્વાત્વ-અને મોહું વાંકું થઈ જવું ઓર મુઠ્ઠી વકતા, આવીનિ વગેરે થાય છે આદિ હોતે હૈં;

6-(2). If the head is injured, such disorders as the following ensue: namely, rigidity of the sides of the neck, facial paralysis, agitation of the eyes, stupefaction, constricting pain in the head, loss of movement, cough, dyspnea, trismus, dumbness, stuttering speech, closed condition of the eyelids, twitching of the cheeks, yawning fits, ptialism, aphasia and facial asymetry.

વસ્તૌ તુ વાતમૂત્રવર્ચોનિગ્રહવક્ષણમેહન-વસ્તિશૂલકુણ્ડલોદાવર્તગુસ્માનિલાષ્ટીલોપસ્તમ્ભ-નાભિકુક્ષિગુદશ્રોણિગ્રહાદયઃ; વાતાદ્યપસૃષ્ઠાનાં ત્વેષાં લિઙ્ગાનિ ચિકિત્સિતે સક્રિયાવિધીન્યુકાનિ ॥ ૬ ॥

વસ્તૌ અસ્તિમાં આધાત યતાં વસ્તિ પર ચોટ લગનેસે, વાત-મૂત્ર-વાત, મૂત્ર વાયુ, મૂત્ર, વર્ચઃ-નિગ્રહ-અને મહનેા રોધ ઓર મલકા અવરોધ, વક્ષણ-વંક્ષણમાં શૂલ વંક્ષણમેં શૂલ, મેહન-મૂત્રેન્દ્રિયમાં શૂલ મેહનમેં શૂલ, વસ્તિશૂલ-અસ્તિમાં શૂલ વસ્તિમેં શૂલ, કુણ્ડલ-કુંડલ કુણ્ડલ, ઉદાવર્ત-ઉદાવર્ત ઉદાવર્ત, ગુસ્મ-ગુસ્મ ગુસ્મ, અનિલાષ્ટીલા-વાતાષ્ટીલા વાતાષ્ટીલા, ડપસ્તમ્મ-અસ્તિનેા ઉપસ્તમ્મ વસ્તિકી જવતા, નાભિ-કુક્ષિ-નાભિ, કુક્ષિ-નાભિ, કુક્ષિ, ગુદશ્રોણિ-ગુદા અને શ્રોણીનું ગુદા ઓર શ્રોણિકા, ગ્રહ-ઝહાઈ જવું જકડા જાના, આદયઃ વગેરે થાય છે આદિ હોતે હૈં, વાતાદિ-વાત, પિત્ત તથા કફથી વાત, પિત્ત તથા કફસે, ડપસૃષ્ઠાનામ્ તુ દૂષિત દૂષિત, ઇષામ્ એ મમોનાં હન મમોંકે, લિઙ્ગાનિ લક્ષણ લક્ષણ, ચિકિત્સિતે ચિકિત્સાસ્થાનમાં ચિકિત્સાસ્થાનમેં, સક્રિયાવિધીનિ ચિકિત્સાવિધિસહિત ચિકિત્સાવિધિકે સાથ, ડકાનિ ડહી દેવામાં આવ્યાં છે કહે જા ચુકે હૈં ॥ ૬ ॥

6. If the bladder is injured, such disorders as the following ensue: namely, retention of flatus, urine and feces, acute pain in the groins, phallus and the bladder, spiralling pain in the bladder, reverse misperistalsis, gulma, stone-hard swelling due to gulma, rigidity of the bladder and the spasticity of the umbelicus, stomach, rectum and hips. The signs and symptoms of these various conditions with reference to the predominant morbid humor concerned, together with the appropriate therapeutic measures have been described earlier in the Section on Therapeutics.

किंत्वेतानि विशेषतोऽनिलाद्रक्ष्याणि, अनिलो हि पित्तकफसमुदीरणे हेतुः प्राणमूलं च, स वस्ति-कर्मसाध्यतमः, तस्मात्त वस्ति-समं किञ्चित् कर्म मर्मपरिपालनमस्ति ।

किंतु परंतु किंतु एतानि आ भवेति इत ममोक्षी, विशेषतः आस उरीने विशेषकर, अनिलान् वायुं वायुसे, रक्ष्याणि रक्ष्यां ओष्ठो रक्षा करनी चाहिए, हि उरिष्ठ के क्योंकि, अनिलः वायु वायु, पित्त-कफ-पित्त अने उरिने पित्त और कफको. समुदीरणे प्रकुपित उरिवाभा प्रकुपित करनेमें, हेतुः हेतु छे कारण है, प्राणमूलम् तथा प्राणुं मूल छे तथा प्राणोका आधार है, सः ते वह. वस्ति-कर्म-वस्ति-कर्मद्वारा, साध्यतमः सौथी अधिक साध्य छे सबसे अधिक साध्य है, तस्मात् भाटे इस लिए, किञ्चित् उरिष्ठ दूसरा कोई, कर्म उरिष्ठ कर्म, वस्ति-समम् वस्ति-कर्म हेतु वस्ति-समान, मर्मपरिपालनम् भवेति रक्षाभां ममोक्षी रक्षा करनेके लिए, न वस्ति-वस्ति नहीं है;

7-(1). Now these vital centres require to be protected particularly from the morbid effects of vata, for it is

the vata morbidity that serves as the causative factor for the arousing of pitta and kapha morbidity, and it is vata that is likewise the root of life-processes. This vata is best treated by the enema procedure. Hence is it that among measures calculated to safeguard the health of the vital organs, there is none that can compare with the enema procedure.

तत्र पडास्थापनस्कन्धान् विमाने द्वौ चानु-वासनस्कन्धाविह च विहितान् वस्तीन् बुध्या विचार्य महामर्मपरिपालनार्थं प्रयोजयेद्वातव्याधि-चिकित्सां च ॥७॥

तत्र तेने भाटे इसके लिए, विमाने विमाने स्थानभां विमानमें, विहितान् उरिष्ठ कहे, पद छे छे, आस्थापन-आस्थापन आस्थापन, स्कन्धान् स्कन्ध स्कन्ध, द्वौ च अने छे और दो, अनुवासन-अनुवासन अनुवासन, स्कन्धौ स्कन्ध स्कन्ध, इह अर्थात् यहां पर, विहितान् उरिष्ठ कही, वस्तीन् वस्ति-वस्ति, वस्ति-वस्ति, वातव्याधि-अने वातव्याधि और वातव्याधि, चिकित्सां चिकित्सां चिकित्साका, बुध्या बुद्धि बुद्धि, विचार्य विचार्य उरि विचार करके, महामर्म-महामर्मोक्षी महामर्मोक्षी, परिपालनार्थम् रक्षा भाटे रक्षाके लिए, प्रयोजयेद् प्रयोजयेद् ओष्ठो प्रयोग करे ॥ ७ ॥

7. Accordingly, the six categories of medication described for corrective enema and the two categories of unctuous enema described in the section on Specific Measure, as well as the various kinds of enema described in this section should be given mature consideration and made use of together with the therapeutic measures laid down in the treatment of vata

disorders for the purpose of preserving the great vital organs in health.

वातोपहतेषु मर्मसु चिकित्सा—

भूयश्च हृद्युपसृष्टे हिङ्गुचूर्णे लवणानामन्यतमचूर्णसंयुक्तं मातुलुङ्गस्य रसेनान्येन वाऽम्लेन हृद्येन वा पाययेत्, स्थिरादिपञ्चमूलरसः सशर्करः पानार्थं, बिम्बादिपञ्चमूलरससिद्धा च यवागूः, हृद्रोगविहितं च कर्म;

मूत्रः च इरीने वृणी और भी, हृदि हृद्य पर हृदयके, उपसृष्टे वायुभी आक्रमण भता वायुसे आक्रान्त होने पर, लवणानाम् क्षवलेभाना पांचों नमकोसेसे, अन्यतम- डोर्ध ओडना किसी एक नमकके, चूर्णसंयुक्तम् चूर्ण साथे युक्त करी चूर्णके साथ, हिङ्गुचूर्ण हिंगना चूर्णने हीङ्गके चूर्णको मिलाकर, मातुलुङ्गस्य भीमेराना बिजौरके, रसेन रस साथे रसके साथ, अन्येन वा अथवा भीम अथवा अन्य, अम्लेन अम्ब अम्ब हृद्येन वा डे हृद्य रस साथे अथवा हृदयके लिए जो हितकर हो उसके साथ, पाययेत् पापुं पिलावे, सशर्करः साकर- सहित शर्कराके साथ, स्थिरादि- स्थिरा वजेरे शाकपणी आदि, पञ्चमूली- डेस्व पंचमूलने। हस पञ्चमूलका, रसः क्वाथ काय, बिम्बादि- अने भीली वजेरे और बिम्बादि, पञ्चमूलरस- पंचमूलना क्वाथभा पञ्चमूलके काथमें, सिद्धा च सिद्ध करेय सिद्ध की हुई, यवागूः यवागू यवागू, पानार्थम् पीवा भाटे देवा पीनेके लिए देवे, हृद्रोगविहितम् अने हृद्रोगभा डेहली और हृदय-

८. भूयश्च...पाययेत्-भूयश्च हृद्युपसृष्टे वातेन हिङ्गुचूर्णलवणा-

नामन्यतमचूर्णसंयुक्तां पेयां मातुलुङ्ग-

रसेनान्येन वा अम्लेन हृद्येन वा

पाययेत् (ब.)

.. हिङ्गुचूर्णं लवणानामन्यतमचूर्णसंयुक्तं मातुलुङ्गस्य-हिङ्गुचूर्ण-

लवणानामन्यतमचूर्णसंयुक्तां पेयां मातुलुङ्गस्य (फ.)

.. मातुलुङ्गस्य...पाययेत्-मातुलुङ्गरसेनान्येन वा बिम्बादि-

स्थिरादिपञ्चमूलरससिद्धा यवागूः (ब.)

.. स्थिरादि पञ्चमूलरसः.....यवागूः-मातुलुङ्गरसेनान्येन वा

बिम्बादिस्थिरादिपञ्चमूलरससिद्धा यवागूः (ब.)

सेममें कही हुई, कर्म च चिकित्सा डेहली चिकित्सा करनी चाहिए;

8-(1). In particular, if the heart is affected by vata, the patient should be given to drink a potion consisting of powdered asafetida mixed with the powder of any of the salts in the juice of pomelo or in any other acid or cordial liquid, and the decoction of penta-radices of the tick-trefoil group as beverage mixed with sugar. He may also be given medicated gruel prepared with the juice of the penta-radices of the bael group. And therapeutic measures prescribed for diseases of the heart may also be resorted to.

मूर्ध्नि तु वातोपसृष्टेऽम्बकस्वेदनोपनाहस्नेह-  
पाननस्तःकर्मावपीडनधूमादीनि;

मूर्ध्नि तु मस्तक पर शिरके, वातोपसृष्टे वायुभी आक्रमण भता वायुसे आक्रान्त होने पर, अभ्यङ्ग- अभ्यङ्ग अभ्यङ्ग, स्वेदन- स्वेदन स्वेदन, उपनाह- उपनाह उपनाह स्नेहपान- स्नेहपान स्नेहपान, नस्तः- कर्म- नस्तकर्म नस्तकर्म, अवपीडन- अवपीडन अवपीडन, धूमादीनि अने धूम वजेरेने प्रयोग डेहली और धूम आदिका प्रयोग करे;

8-(2). If the head is affected with vata morbidity, the therapeutic measures indicated are inunction, sudation, poultices, unctuous potions, nasal medications, sternutatory unctuous applications and inhalations etc.

वस्तौ तु कम्भीस्वेदः, वर्तयः, ह्यामादिमिर्गो-  
मूत्रसिद्धो निरुहः, बिम्बादिमिश्र सुरासिद्धः,

८. बिम्बादिमिश्र सुरासिद्धः-बिम्बादिस्वरससिद्धः (ख. ड.)

.. सुरासिद्धः-सुरासिद्धः (घ.)

शरकाशेषदुर्भागोक्षुरकमूलशृतक्षीरैश्च त्रपुसैर्वार-  
खराश्ववीजयवर्षभकवृद्धिककिकितो निरुहः, पीत-  
दारुसिद्धतैलेनानुवासनं, तैल्वकं च सर्पिर्विरेकार्थं,  
शतावरीगोक्षुरकवृद्धीकण्टकारिकागुडूचीपुनर्नवो-  
शीरमधुकविसारिवालोध्रयेयसीकुशकाशमूलक-  
वायक्षीरचतुर्गुणं बलावृषर्षभकखराश्वोषकृच्छिका-  
वत्सकत्रपुसेवाकबीजशितिवारकमधुकवचाशतपु-  
ष्पाश्ममेदकवर्षाभूमदनफलकल्कसिद्धं तैलमुत्तर-  
वस्तिनिरुहो वा शुद्धखिग्वस्त्रिजस्य वस्तिशूल-  
मूत्रविकारहर इति ॥८॥

वस्तो तु अस्ति पर वायुभी आकंभु  
भता वायुसे वस्तिके पीकित होने पर, कुम्भीस्वेदः  
कुम्भीस्वेदः कुम्भीस्वेद, वतेशः वतिशो  
वतिशां, इयामादिभिः श्याभा वजेरेथी इयामादिंस,  
गोमूत्रसिद्धः गोमूत्रां सिद्ध करेव गोमूत्रमें सिद्ध किया,  
निरुहः निरुह निरुह, विल्वदिभिः च पीली वजेरेथी  
विल्वदि पंचमूलसे, सुरासिद्धः सुराभां सिद्ध करेव सुरामें  
सिद्ध किया, खर-काश-शरभू, काश शरमूल, काश,  
इक्षु-शेरडी इक्षु, दर्भ-दर्भ दर्भ, गोक्षुरमूल- अने  
गोभृशुनां भूख साथे और गोक्षुर इनकी जड़ोंसे शृतक्षीरेः  
छिडायेवा दूधभां पकाये दूधमें, त्रपुस- त्रपुस खीरा,  
पूर्वाक- कांडडी ककरी, खराश्वबीज भराश्वानां पीप  
अजवायनके बीज, यव- यव जी, ऋषभक-  
ऋषभक ऋषभक, वृद्धि- अने शूद्ध ओओना और  
शूद्ध इनका, ककिकितः उच्छ ओओनी कल्क मिलाकर,  
निरुहः निरुह देवे निरुह देवे, पीतदारु- पल्ली देवदारुथी  
पश्चात् देवदारुसे, सिद्धतैलेन सिद्ध करेव तैलथी सिद्ध  
तैलका, अनुवासनम् अनुवासन देव अनुवासन देवे,  
विरेकार्थम् विरेचन भाटे विरेचनके लिए, तैल्वकम्  
सर्पिः च तैल्वकम् वी देव तैल्वक वृत्त देवे,

शतावरी- शतावरी शतावरी, गोक्षुरक- गोभृशु गोक्षुरक,  
वृद्धी- वृद्धी वकी कटरी, कण्टकारिका- कण्टकारिका  
छोटी कटरी, गुडूची- गुडूची पिठोय, पुनर्नवा- साठोडी  
पुनर्नवा कशीर- कागो पागो कशीर, मधुक- नेरीभध  
मुकहरी, विसारिवा- वे सारिवा कोनो सारिवा, लोध्र-  
लोध्र लोध्र, अयसी- अयसी पेशी, कुशकाशमूल- कुश-  
काश अने कशमूल कुशमूल और काशमूल,  
कषाय- अयोना कषाय इनके कषये, शोरचतुर्गुणम्  
तेलथी आरभुवा दूधभां तैलसे चतुर्गुण दूधमें, बला-  
भला बला, वृष- वृष वासा, ऋषभक- ऋषभक ऋषभक,  
खराश्व- भराश्व अजवायन, वरकुञ्जिका- काणी लरी  
उपकुञ्जिका, वरसक- वरसक इन्द्रजो, त्रपुस- त्रपुस ककरी,  
पूर्वाकबीज ओवोरुडनां पीप खीराकेबीज शितिवारक-  
शितिवारक शितिवारक, मधुक- नेरीभध मुकहरी, कचा-  
कच वच, शतपुष्पा- शतपुष्पा सावा, अश्ममेदक- पापलु-  
मेद अश्ममेद, वर्षाभू- साठोडी पुनर्नवा, मदनकल्क- अने  
पीठेण और मदनकल्क, कल्क ओओना उच्छथी इनके  
कल्कसे, सिद्धम् सिद्ध करेव सिद्ध किये, तैलम् तैलथी  
तैलसे, उत्तरवस्तिः उत्तरवस्ति देवी उत्तरवस्ति देवे,  
शुद्धखिग्वस्त्रिजस्य तेभ्यः शुद्ध भता स्वेदन तथा  
स्वेदन करी एवं शुद्ध होने पर स्वेदन बसा स्वेदन  
करके, वस्तिशूल- अस्तिशूल वस्तिशूल, मूत्रविकार- अने  
मूत्रविकारने और मूत्रविकारको, हरः हरनार हरनेवाको,  
निरुहः वा निरुहोस्ति देवी निरुह देवे ॥ ८ ॥

8. If the bladder is affected with vata morbidity, the treatment consists of pitcher sudation, suppositories, evacuating enema prepared of black turpeth and other drugs of its group and cow's urine or of the drugs of the bael group with sura wine, or milk prepared with the roots of pen-reed grass, thatch grass, sugar cane, sacrificial grass and small captops, or evacuating enema prepared with the paste of the seeds of common cucumber, celery, barley, Rishabhaka and Vriddhi;

८. शृतक्षीरैश्च शृतक्षीरं च (घ.)

९. यवर्षभकवृद्धिकारकितो-यवर्षभकककिकितो (घ.)

१०. वृद्धिककिकितो निरुहः-सखारबवतैल्वकवृद्धिककिकितो वा निरुहः (उ)

११. निरुहः-निरुहः स (द.)

८. कुशकाशमूलकवायक्षीर-कोशकाशमूलकवाय (घ.)

unctuous enema of oil prepared with indian berberry, purgations with Tilvaka ghee and urethral douche with the medicated oil prepared with the decoction of climbing asparagus. The patient may also be given, after he has been subjected to purification, sudation and oleation procedures, an evacuative enema with the drugs which are curative of urinary disorders and pain.

मर्मणां परिपालनानि—

भवन्ति चात्र श्लोकाः—

हृदये मूर्ध्नि वस्तौ च नृणां प्राणाः प्रतिष्ठिताः ।  
तस्मात्तेषां सदा यत्नं कुर्वीत परिपालने ॥१॥

अत्र आ विषयमां इस विषयमें, श्लोकाः भवन्ति श्लोकाः ३ श्लोक हैं कि, नृणाम् मनुष्याणां मनुष्योंके, प्राणाः प्राण, हृदये हृदय, मूर्ध्नि मस्तक शिर, वस्तौ च अने अस्तिमां और वस्तिमें, प्रतिष्ठिताः रहेला ३ प्रतिष्ठित हैं, तस्मात् तेथी इस लिए, तेषाम् तेथीना इनकी, परिपालने रक्षय्य भाटे रक्षामें, सदा यत्नम् हमेशा यत्न सदा प्रयत्न, कुर्वीत करवे लेछी की करना चाहिए ॥१॥

Here are verses again—

9. It is in the cardiac, cranial and pelvic regions that the life of men is established. Hence, constant effort for the protection of these should be made.

आवाधवर्जनं नित्यं स्वस्थवृत्तानुवर्तनम् ।  
उत्पन्नार्तिविधातश्च मर्मणां परिपालनम् ॥२॥

आवाधवर्जनम् मर्मने नुकसान पहुँचाउनाई  
उत्पन्नो त्याग मर्ममें पीड़ा उत्पन्न करनेवाले कारणोंका

हृदये—हृदि (घं.)

यत्नं कुर्वीत परिपालने—वरनाह कुर्वीत परिपालनम् (घं. घं.)

आवाधवर्जनं—आवाधवर्जनं (घं. कं.)

त्याग, नित्यम् नित्य निरत्य, स्वस्थवृत्त-स्वस्थवृत्तानुवर्तनम्, स्वस्थवृत्तका, अनुवर्तनम् पालन करवा, उत्पन्नार्ति-अने उत्पन्न अथैव मर्मरोगिनो और उत्पन्न हुए मर्मरोगिका, विधातः च नाश करवे प्रतिकार करना, मर्मणाश्च अने मर्मोन्तु यह मर्मोंका, परिपालनम् परिपालन ३ परिपालन है ॥ १० ॥

10. Such protection of the vital organs consists in the avoidance of the causes of injury to them, constant adherence to the rules of the regimen of hygienic living and prompt treatment on the incidence of disease.

अपतन्त्रकस्य निदानलक्षणचिकित्सितानि—

अत्र ऊर्ध्वं विकारा ये त्रिमूर्मीये चिकित्सिते ।  
न प्रोक्ता मर्मजास्तृषां कांश्चिद्वक्ष्यामि सौषधान् ॥

अतः अर्द्धीथी इसके, ऊर्ध्वम् आगण जागे, ये जो, मर्मजाः मर्मजन्य मर्मजन्य, विकाराः विकार विकार, त्रिमूर्मीये त्रिमूर्मीय त्रिमूर्मीय चिकित्सिते चिकित्सितेध्यायमां चिकित्साध्यायमें, न प्रोक्ताः उहेतामां अख्या नहीं कहे हैं, तेषाम् तेमांना उनमेंसे, कांश्चिद् उहेलाइ कुछको, सौषधान् औषधसहित चिकित्साके साथ, वक्ष्यामि उद्दिश कहूंगा ॥ ११ ॥

11. I shall hereafter describe some disorders, along with their treatment, affecting the vital organs, such as have not been described in the chapter on the Therapeutics of the disorders affecting the Three Vital Regions.

कुक्षः स्त्रैः कोपनैर्बाधुः स्थानादूर्ध्वं प्रपद्यते ।  
पीडयन् हृदयं मत्स्या शिरः शङ्खा च पीडयन् ॥१२॥

धनुर्वज्रमथेद्वात्रापथाक्षिपेन्मोहयेत्तथा ।

(तमयेष्वाक्षिपेष्वाक्षान्पुच्छासं निरुणद्धि च ॥)

११. क्षिपेन्मोहयेत्तथा—क्षिपेन्मोहयेत्तथा (घं.)

कृच्छ्रेण चाप्युच्छसिति स्तब्धाक्षोऽथ निमीलकः ॥  
कपोत इव कूजेन निःसंज्ञः सोऽपतन्त्रकः ।

स्त्रेः पैताना अपने, कोपनैः प्रकोपक हेतुभेदी प्रकोपक कारणोंसे, क्रुद्धः कोपेन प्रकुपित, वायुः वायु वायु, स्थानात् पैताना स्थानांथी अपने स्थानसे, ऊर्ध्वम् उपर तरङ्ग ऊपरको, प्रपद्यते भय छे जाती है, हृदयम् हृदयभा ७४ हृदयमें जाकर, पीडयन् तेने पीडा करते। उसे पीडित करती हुई, शिरः भस्तकभा शिर, झड्डौ च अने शंभभा और शङ्खमें, गत्वा ७४ जाकर, पीडयन् तेने पक्ष पीडा करते। उसे भी पीडित करती हुई, धनुर्वत् धनुषनी भाइके धनुषके समान, गात्राणि अंगोंने अङ्गोंको, नमन्ते नभावी दे छे मोह देती है, नाक्षिपेत् अवधवाभा आंचडी छेपल डरे छे अवधवोंमें आक्षेप उत्पन्न करती है, तथा मोहयेत् भूला छेपल डरे छे मोह उत्पन्न करती है, अङ्गानि अंगोंने अंगोंको, नमन्ते च नभावी दे छे मोह देती है, नाक्षिपेत् च आंचडी छेपल छे आक्षेप कर देती है, उच्छ्वासम् तथा उच्छ्वासने तथा उच्छ्वासको, निरुणद्धि च रोक छे बन्द कर देती है, कृच्छ्रेण च अपि शैथी मुस्केलीथी कठिनईसे, उच्छ्वसिति श्वास अहार डाढे छे श्वास बाहर निकालता है, स्तब्धाक्षः अंगो स्तब्ध थाय छे आंखें स्तब्ध हो जाती हैं, अथ अने और, निमीलकः वीथ्या ७४ भय छे बन्द हो जाती है, कपोतः उच्छ्वातरनी कवूतरकी, इव येते तरह, कूजेन च धुधवे छे शब्द करता है, निःसंज्ञः तेभ्य संज्ञा-रहित भय छे एवं बेज्ञोश हो जाता है, सः ते शैथ वह रोग, अपतन्त्रकः अपतन्त्रक डहेवाय छे अपतन्त्रक कहा जाता है ।

12-13. The vata, provoked by its specific causative factors, spreads upwards beyond its natural habitat, afflicts the heart and reaching the head, afflicts the temples. It bends the

body like a bow and causes convulsions of the limbs and fainting. The patient breathes with difficulty and his eyes are fixed in a wide stare or are closed. He coos like the pigeon and becomes unconscious. This condition is known as Apatantraka.

दृष्टि संस्तम्भ्य संज्ञां च हत्वा कण्ठेन कूजति ॥१४॥  
हृदि मुके नरः स्वास्थ्यं याति मोहं वृते पुनः ।  
वायुना दारुणं प्रादुरेके तमपतानकम् ॥१५॥

दृष्टिम् ७२ शैथी अनुप्य दृष्टिने विष रोगसे अनुप्य आंखको, संस्तम्भ्य- स्तब्ध करी स्तब्ध बनाकर, संज्ञाम् च अने संज्ञाना और संज्ञाके, हत्वा नाशने प्राप्त भय नाशको प्राप्त हो कर, कण्ठेन- अंगाधी गलेसे, कूजति धुधवाट डरे छे शब्द करता है, वायुना- वायु वायु पुनः वायुसे, इदि हृदय हृदयके, मुके नरः मुक्त भतां अनुप्य मुक्त हो जाने पर अनुप्य, स्वास्थ्यम् स्वास्थ्यने स्वस्थताको, पुनः वृते अने वायुशी आकंभलु भतां इरी और वायुसे आवृत होने पर फिर, मोहम् भूयने मुच्छाको, याति पामे छे पाता है, तत्र तेने इवे, एके डेटवाके कुल्लोग, दारुणम् भय डरे मसनक, अपतानकम् अपतानक अपतानक, प्रादुरः डहे छे कहते हैं ॥१४-१५॥

14-15. The eyes are fixed; the consciousness is lost and the patient makes a moaning noise from the throat. When this vata is released from the heart, the man becomes normal again; but when again seized by the paroxysm he falls unconscious. This dreadful disorder is termed Apatanaka

१३. कृच्छ्रेण चाप्युच्छसिति स्तब्धाक्षोऽथ निमीलकः—उच्छ्वसिति च कृच्छ्रेण स्तब्धाक्षोऽथानिमीलनः (१४.)

१५. तमपतानकम्—तदपतानकम् (ख प.)



श्वसनं कफवाताभ्यां रुद्धं तस्य विमोक्षयेत् ।  
 तीक्ष्णैः प्रथमनैः संज्ञां तासु सुक्तासु विन्दति ॥१६॥  
 मरिचं शिशुबीजानि विडङ्गं च फणिज्जकम् ।  
 एतानि सूक्ष्मचूर्णानि दद्याच्छीर्षविरेचनम् ॥१७॥  
 तुम्बुरुष्यभया हिङ्गु पौष्करं लवणत्रयम् ।  
 यवकाथाम्बुना पेयं हृद्ग्रहे चापतन्त्रके ॥१८॥

कफ उ३ कफ, वाताभ्याम् अने वातथी और वायुसे, रुद्धम् रुंधायेला रुके हुए, तस्य तेना इस पुरुषके, श्वसनम् श्वासने श्वासको, तीक्ष्णैः तीक्ष्ण तीक्ष्ण, प्रथमनैः प्रथमन नस्यो व३ प्रथमन नस्योसे, विमोक्षयेत् मुक्त करेला ओर्ध्वा मुक्त करे, तासु अग्यारे येतनाव६ धमनीओ चेतनावह धमनियोंके, सुक्तासु मुक्त थाय छे त्पारे मुक्त होने पर, संज्ञाम् ते पुरुष आनमा वह पुरुष संज्ञाको, विन्दति आवे छे प्राप्त करता है, मरिचम् भरी मरिच, शिशुबीजानि शिशुबीजानां बीज शोभाजनबीज, विडङ्गम् वा६डि० वायविडंग, फणिज्जकम् अने भरवा और मरवा, एतानि ओतु इनका, सूक्ष्मचूर्णानि सूक्ष्म चूर्ण उ३रीने सूक्ष्म चूर्ण करके, शीर्षविरेचनम् शिरोविरेचन शिरोविरेचन, दद्यात् देतु देवे, हृद्ग्रहे हृदयग्रहे हृदयग्रह, अपतन्त्रके च अने अपतन्त्रकभा और अपतन्त्रकमें, तुम्बुरुणि नेपाणी धातु तुम्बुर, अभया उ३ हारक, हिङ्गु हिं० हींग, पौष्करम् पु०कर-मू० पुष्करमू०, लवणत्रयम् तथा त्रयु लवणना चूर्णने तथा तीनों नमक इनके चूर्णको, यवकाथाम्बुना ज्वना कवाथनी तथा प०अ विविधी पकावेला पाथुनी साथे जोके काथ और षडंग विविसे शृत जलके साथ, पेयम् पीवु पीना चाहिए ॥ १६-१८ ॥

1618. The breathing which has become obstructed by the kapha and

११ श्वसनं कफवाताभ्यां रुद्धं तस्य—चेतनाः कफवाताभ्यां रुद्धा-

स्तस्य (ध.)

—श्वसनः कफवाताभ्यां-

रुद्धस्तं च (ध. क.)

विमोक्षयेत्—विमोचयेत् (ध.)

१८. तुम्बुरुष्यभया हिङ्गु—हिङ्गु तुम्बुर पश्चात् (क. घ. ध. फ.)

१८. हृद्ग्रहे चापतन्त्रके—हृत्पाथ्याश्चापतन्त्रके (ध. फ.)

vata must be relieved by acute nasal insufflations. When the channels conducting consciousness are freed, the man recovers his wits. To this end the patient should be given, in the form of errhines, long pepper, the seeds of drumstick, embelia and Sweet Marjoram, reduced to fine powder. In conditions of heart-seizure and tetanic convulsions, the patient should be made to drink a potion of Indian tooth ache emblic myrobalan, asafetida orris root and the three salts prepared with barleywater.

हिङ्गुवम्लवेतसं शुण्ठीं ससौवर्चलदाडिमम् ।  
 पिबेद्वातकफघ्नं च कर्म हृद्गोणुद्धितम् ॥१९॥  
 शोघना बस्त्यस्तीक्ष्णा न हितास्तस्य कृत्स्नशः ।  
 सौवर्चलाभयाव्योषैः सिद्धं तस्मै घृतं हितम् ॥२०॥

हिङ्गु हिं० हींग, अम्लवेतसम् अम्लवेतस अम्ल-वेतस, शुण्ठीम् सु० शोंठ, ससौवर्चल-सं० अण सौवर्चल, दाडिमम् अने दाडिम ओओतु चूर्ण और अनार इनके चूर्णको, पिबेत् पीवु पीवे, वातकफघ्नम् वात तथा उ३नेला नाश करनेवाले वात तथा कफका नाशक, हृद्गोणुद्धितम् च तेम० हृद्गोम भटा०ना२ एवं हृद्गोनाशक, कर्म-चिकित्सा चिकित्सा, हितम् हितकर छे हितकारी है, कृत्स्नशः सर्वथा सम्पूर्ण रूपसे, शोघनाः शो०घ० शोघन-कारक, तीक्ष्णाः तीक्ष्ण तीक्ष्ण, बस्त्यः अस्तिओ बस्तियां, तस्य तेने इस रोगीको, हिताः च हितकर नथी हितकारी नहीं, सौवर्चल-सं० अण सौवर्चल, अभया-उ३ हारक, व्योषैः अने त्रिकुटुभी और त्रिकुटुसे, सिद्धम् सिद्ध करेला सिद्ध, घृतम् भी बी, तस्मै हितम् तेने भाटे उसके लिये हितकारी है ॥ १९-२० ॥

२०. शोघना-शोघने (ध.)

न हितास्तस्य कृत्स्नशः—हितास्तस्य न कृत्स्नशः (क. घ.)

सिद्धं तस्मै—सिद्धं त्वात् (ध.)



19-20. Or the patient may be made to drink a potion prepared of asafetida, Amlavetasa, dry ginger, sanchal salt and pomegranite juice. All procedures advised for the alleviation of vata and kapha morbidity are recommended in the alleviation of cardiac disorders. Thorough-going purificatory measures as well as enema of a strong action are contra-indicated. The patient may be given, with advantage, the medicated ghee prepared with sanchal salt, chebulic myrobalan and the three spices.

तद्ग्राया निदानलक्षणचिकित्सितानि—

मधुरस्निग्धगुर्वन्नसेवमाश्चिन्तनाच्छ्रमात् ।

शोकाद्व्याध्यनुषङ्गाच्च वायुनोदीरितः कफः ॥२१॥

यदाऽसौ समवस्कन्ध हृदयं हृदयाश्रयान् ।

समावृणोति ज्ञानादींस्तदा तन्द्रोपजायते ॥२२॥

मधुर- भक्षुर मधुर, स्निग्ध- स्निग्ध स्निग्ध, गुरु-  
जघ्न- तथा भारे अजना और गुरु अन्नके, सेवनात्  
सेवनथी सेवनसे, चिन्तनात् चिन्तनथी चिन्ता करनेसे,  
अस्मात् अभथी अमसे, श्लोकात् श्लोकथी श्लोकसे,  
व्याधि- अने व्याधिना और रोगके, अनुपज्ञात् अ  
ज्ञाना वधतना अनुपधथी देरतक बने रहेनेसे, वायुना  
वायु वडे वायुसे, उदीरितः प्रेशथैव प्रेरित, असौ आ  
यह, कफः ऊँ कफ, यदा ज्वारे जब, हृदयम् हृदय  
पर हृदयमें, समवस्कन्ध घेरा धावी घेरा डालकर,  
हृदयाभ्यान् हृदयना आश्रित हृदयके आश्रित, ज्ञाना-  
कीन् ज्ञानादिके भावने ज्ञानआधिको, समावृणोति  
आवरी ले छे ढांक लेबा है, तदा त्वारे तब, तन्ना  
तन्ना तन्ना, उपजायते उत्पन्न भाव छे उत्पन्न होती  
है ॥ २१ २२ ॥

27-22. When the kapha is provoked by the vata as a result of indulgence in sweet, unctuous and heavy articles of diet, or as a result of mental strain, fatigue and grief, or as a sequela of disease—when such kapha reaches and covers up the cardiac region and the channels situated therein such as the knowledge-bearing channels etc., it gives rise to torpor.

हृदये व्याकुलीभावां वाक्चेष्टेन्द्रियगौरवम् ।

मनोबुद्धयप्रसादः तन्द्राया लक्षणं मतम् ॥२३॥

कफघ्नं तत्र कर्तव्यं शौचनं शमनानि च ।

व्यायामो रक्तमोक्षश्च भोज्यं च कटुतिक्तकम् ॥२४॥

हृदये- हृदयार्त्ता हृदयमें, व्याकुलीभावः व्याकुलता  
व्याकुलता, वाक्-वेष्टा- वाष्प्री, येश वाणी, वेष्टा, इन्द्रिय-  
तथा इन्द्रियार्त्ता एवं इन्द्रियोंमें, गौरवम् गुरुता भारीपन,  
मनः बुद्धिः तथा मन अने बुद्धिनी मन और बुद्धि, क  
अप्रसादः क प्रसन्नताने। अक्षान निर्मल न होना,  
तन्द्वाषाः ओ तान्दुं ये तन्द्वाके, कक्षणम् क्षण  
क्षण, मतम् मान्तां ओ माने गये हैं, तत्र तेभ्य इवमें,  
कक्षत्रम् कक्षत्र कक्षत्राक्षक, शोषणम् शोषण शोषण,  
कसनानि क संक्षमने। संक्षमन, व्यावामः व्यावाम  
व्यावाम, रक्तमोक्षः क तथा रक्तमोक्ष और रक्त-  
मोक्षण, कर्तव्यम् कर्तव्यं ओ कर्त्तव्य चाहिए, कटु-  
तिक्तकक्ष तेभ्य कटु तथा तिक्त एवं कटु तथा तिक्त,  
भोज्यम् भोजन कर्तुं ओ भोजन करना  
चाहिए ॥२३-२४॥

23-24. The characteristics of torpor are said to be depression of the heart, heaviness of speech, movement and the senses and clouding of the mind and the intellect. In such a condition measures curative of kapha, purificatory and sedative procedures, exercise, blood-letting and a diet of pungent and bitter articles are indicated.

२१. सुर्वज्ञ-दुग्धादि (द.)

११ - शुर्वग्न (४.)

अपात्-भयात् (त. ष. फ.)

त्रयोदशमूत्रदोषाणां नामतो निर्देशः—

मूत्रौकसादो जठरं कृच्छ्रमुत्सङ्गसंक्षयो ।  
मूत्रातीतोऽनिलाष्टीला वातवस्त्युष्णमारुतो ॥२५॥  
वातकुण्डलिका ग्रन्थिर्विद्धातो बस्तिकुण्डलम् ।  
त्रयोदशैते मूत्रस्य दोषास्तौल्लिङ्गतः शृणु ॥२६॥

मूत्रौकसादः मूत्रौकसाद मूत्रौकसाद जठरम् मूत्र-  
७६२ मूत्रजठर, कृच्छ्रम् मूत्रकृच्छ्र मूत्रकृच्छ्र, उत्सङ्ग-  
मूत्रोत्सङ्ग मूत्रोत्सङ्ग, संक्षयो मूत्रसंक्षय मूत्रसंक्षय, मूत्रा-  
तीत- मूत्रातीत मूत्रातीत, अनिलाष्टीला वाताष्टीला  
वाताष्टीला, वातवस्ति वातवस्ति वातवस्ति, उष्णमारुतो  
उष्णमारुत उष्णमारुत, वातकुण्डलिका वातकुण्डलिका  
वातकुण्डलिका, ग्रन्थिः मूत्रग्रन्थि मूत्रग्रन्थि, विद्धात  
विद्धात विद्धात, बस्तिकुण्डलम् अने अस्तिकुण्डल  
और बस्तिकुण्डल, एते ये ये, त्रयोदश तेर तेरद,  
मूत्रस्य मूत्रना मूत्रके, दोषाः दोषो छे दोष हैं, तान्  
तेजाने इनको, लिङ्गतः लक्षणेभ्यो लक्षणोंसे, शृणु  
श्रवण सुनो ॥ २५-२६ ॥

25-26. The following thirteen are the urinary morbidities:—

1. Mutroukasada (Dense urine) 2. Mutra jathara (uro-cleioncus) 3. Krichra (dysuria). 4. Mutra-utsanga (Residual urination). 5. Samkshaya (Suppression of urine). 6. Mutraateeta (Delayed Micturition). 7. Ashteela (Stone-hard tumor). 8. Vata Basti (Vata affection of the bladder). 9. Ushnamaruta (Vata-cum-Pitta condition). 10. Vata-Kundalika (Circumgyratory Vata in the bladder). 11. Raktagranthi (Blood-tumor). 12. Vid-Vighata (Fecal fistula). 13. Basti-Kundala (circular distension of the bladder).

Hear now the symptoms of each of them.

२५. मूत्रौकसादो—मूत्रौकसादो (ब.)

मूत्रौकसादस्य निदानलक्षणचिकित्सितानि—

पित्तं कफो द्वावपि वा वस्तौ संहन्यते यदा ।  
मारुतेन तदा मूत्रं रक्तं पीतं घनं सृजेत् ॥२७॥  
सदाहं श्वेतसान्द्रं वा सर्वैर्वा लक्षणैर्युतम् ।  
मूत्रौकसादं तं विद्यात् पित्तश्लेष्महरैर्जयेत् ॥२९॥

यदा ज्वारे ज्व, मारुतेन- वायुभी वायुके कारण,  
वस्तौ- अस्तिभां वस्तिमें, पित्तञ्च पित्तने। पित्ता, कफः  
उद्देशो कफका, द्वौ अपि वा अथवा अनेने। अथवा  
दोनोंका, संहन्यते- संघात थाप छे संघात होता है,  
तदा- त्वारे तब, रोगी- रोगी, रक्तम् रक्तो काल,  
पीतम् पीलो। पीला, घनम् घाटो घट्ट, सदाहम् सदा-  
सहित दाहयुक्त, श्वेतसान्द्रम् वा श्वेत, घट्ट श्वेत घट्ट,  
सर्वैः अथवा सर्वे अथवा सब दोषोंके, लक्षणैः लक्षणे।  
लक्षणोंसे युतञ्च वा युक्त युक्त, मूत्रम् मूत्रा। मूत्रको,  
सृजेत् उरे छे त्यागता है। मूत्रौकसादञ्च तेने मूत्रौकसाद  
मूत्रौकसाद, विद्यात् अध्ये। जाने, पित्तश्लेष्महरेः पित्त  
तथा उद्देश्ये ६२५२ औषधेभ्यो पित्त तथा कफके नाशक  
औषधोंसे, जयेत् तेने छतवे। उसे शान्त करे ॥२७-२९॥

27-28. When the pitta and the kapha are both combined in the bladder along with the vata, the patient passes urine that is reddish, yellowish and thick. Or he may pass urine accompanied with burning and of a white and dense quality or urine showing a combination of all the qualities. This is to be known as Mutroukasada or dense urine and it should be treated with measures curative of pitta and kapha.

मूत्रजठरस्य निदानलक्षणचिकित्सितानि—

विचारणात् प्रतिहतं वातोदावर्तितं यदा ।  
पूरयत्युदरं मूत्रं तदा तदनिमित्तरुक् ॥२९॥

२७. द्वावपि-द्वयं वाऽपि (ब.)

२८. रक्तं पीतं-रक्तपीतं (ब.)

२९. मूत्रौकसादं—मूत्रौकसादं (ब.)

अपक्विमूत्रविदसङ्गैस्तन्मूत्रजठरं वदेत् ।

मूत्रवैरेचनीं तत्र चिकित्सां संप्रयोजयेत् ॥३०॥

यदा मूत्राद्रे जठरं, विधारणात् वेधो रोकनेसे, प्रतिहतम् प्रतिधातुं पात्रेषु रक्ता हुआ, वात-  
अने वायुथी और वायुसे, उदावर्तितम् उदावर्तयुक्त  
थयेलुं ऊपरकी और प्रेरित, मूत्रम् मूत्र मूत्र, उदरम्  
उदरने उदरको, पूरयति भरती है और भर देता है,  
तदा मूत्राद्रे तब, तब ते उदर वह उदर, अनिमित्तक  
ऊपरकी मूत्रावा वगैर वेदनावाणुं थाय और कारण जाने  
बिना वेदनावाला होता है, तब तेने इसे, अपक्वि-अपये।  
अपचन, मूत्र-तथा मूत्र और मूत्र, विद-मूत्रने। एवं  
मलका, सङ्गैः रोक थयथी अवरोध होनेसे मूत्रजठरम्  
मूत्रजठर मूत्रजठर, वदेत् उहेवे। कहे तत्र तेमां इसने,  
मूत्रवैरेचनीम् मूत्रतुं निरेचन करनेपर मूत्रका विरेचन  
करनेवाली, चिकित्सा चिकित्सा चिकित्सा, संप्रयोजयेत्  
उरवी और करनी चाहिए ॥ २९-३० ॥

29-30. When in consequence of the suppression of the urge of micturition, the retarded urinal flow gets pushed upwards by the vata and fills up the abdominal cavity, there is an indefinite pain accompanied with indigestion and retention of urine and feces. This condition is called 'Mutrajathara' (uro-celioncus). In this condition diuretic measures should be resorted to. हिक्कुद्विरुत्तरं चूर्णं त्रिमर्मीये प्रकीर्तितम् ।

हन्यान्मूत्रोदरानाहमाध्मानं गुदमेढ्रयोः ॥३१॥

त्रिमर्मीये त्रिमर्मीये अध्यायमां त्रिमर्मीये अध्या-  
यमे, प्रकीर्तितम् उहेलुं कथित, हिक्कुद्विरुत्तरम् हिक्कु-  
द्विरुत्तर हिक्कुद्विरुत्तर, चूर्णम् चूर्णं चूर्ण, मूत्रोदर मूत्र

३०. अपक्वि-अपं हि (द.)

३१. हन्यान्मूत्रोदरानाहमाध्मानं-हन्यान्मूत्रादिसङ्घातं व्याधिं च (क.)

हन्यान्मूत्रोदरानाहमाध्मानं गुदमेढ्रयोः-हन्यान्मूत्रादि-

सङ्घातं व्याधिं च गुदमेढ्रयोः (ड. त. ब. व. क.)

मूत्रजठर. आनाहम् आनाह आनाह, गुदमेढ्रयोः  
तथा गुद मूत्र मूत्रने। तथा गुद मूत्र और मूत्रके,  
आध्मानम् अध्मान आध्मानका, हन्यात् मूत्राद्रे  
नाश कर देता है ॥ ३१ ॥

31. The compound urinary powder described in the chapter on 'the three vital regions' will cure this uro-abdominal condition as well as constipation and distension of the rectum and the phallus

मूत्रजठरस्य निदानलक्षणम्—

मूत्रितस्य व्यवायात् रेतो वातोद्धतं व्युत्तम् ।

पूर्वं मूत्रस्य पश्चाद्वा सवेत् कृच्छ्रं तदुच्यते ॥३२॥

मूत्रितस्य मूत्रने वेध आवना उता मूत्रके वेधके  
उपस्थित होने पर व्यवायात् त मूत्रने उरवाथी मूत्रने  
करनेसे, वातोद्धतं वायुथी वेक्षित थय वायुसे विक्षित  
होकर, व्युत्तम् पैताना रथानथी मूत्रने व्युत्त हुआ,  
रेतः पीथं वीथं, मूत्रम् मूत्रनी मूत्रके, पूर्वम् पहले  
पहेले, पश्चात् वा उरवाथी वापीके, सवेत् सवे और सवे  
होता है, तब ते वह कृच्छ्रं कृच्छ्रं कृच्छ्र, उच्यते  
उहेवाय और कहा जाता है ॥ ३२ ॥

32. When a man, while under the urge for micturition, performs the sexual act, the seminal fluid discharged and ejected by vata will either precede or follow the flow of urine. This condition is called 'Kricchra' or difficult micturition.

मूत्रोत्सङ्गस्य निदानलक्षणम्—

स्ववैगुण्यानिडाक्षेपैः किञ्चिन्मूत्रं च तिष्ठति ।

मणिसन्धौ सवेत् पश्चात्तदुत्सङ्गस्य चातिरुक् ॥३३॥

मूत्रोत्सङ्गः स विच्छिन्नमुच्छेदगुदमेढ्रयोः ।

३२. कृच्छ्रं तदुच्यते-तत्कृच्छ्रमुच्यते (क.)

३३. विच्छिन्नमुच्छेदगुदमेढ्रयोः-विच्छिन्नमुच्छेदगुदमेढ्रयोः

(क. प.)

સ્વેગુણ્ય- શિશુ છિદ્રની વિચલુતા મૂત્રેન્દ્રિયકે છિદ્રની વિગુણતાએ, અનિલાક્ષણે: અને વાયુના આક્ષેપને લઈ વાયુકે આક્ષેપકે કારણ, કિચ્છિત્ થેાડું કે કુલ, સ્વપ્ન ચ મૂત્ર મૂત્ર, મણિસન્ધૌ મણિસન્ધિમાં મણિસન્ધિમે, વિદ્વતિ રોકાઈ રહે છે રુક જાતા હૈ, કચ્છેષ- બાકી રહેલા મૂત્રથી મૂત્રકે કોષે, ગુરુકોષ: ભારે થઈ ગયેલા શિશુવાલા રોગીનું મારી શિશુવાલા રોગીકા, વિચ્છિદ્રમ્ તૂટી ધારાથી આવતું તૂટકર આતી ધારાવાળા, તર તે મૂત્ર વહ મૂત્ર, પશ્ચાત્ પાછળથી પીછેસે, અરુક્ વેદના વિના દર્દકે વિના, અથવા ચ અતિરુક્ અથવા અતિશય વેદના સહિત અથવા વહુત દર્દકે વાય, સ્વેત્ સ્વે છે નિકલતા હૈ, સ: તે વહ, મૂત્રોત્સંગ: મૂત્રોત્સંગ કહેવાય છે મૂત્રોત્સંગ કહા જાતા હૈ ॥ ૩૩૩ ॥

33. When in consequence of the abnormality of the urinary outlet, and of the large and heavy size of the phallus the urinal flow ejected by vata is retained in part and accumulated in the region of the glans penis, subsequently this residual urine dribbles out accompanied either with severe or no pain. This condition of stammering urination is called 'Mutra-utsanga' or residual urination.

મૂત્રસંકલ્પસ્ય નિદાનલક્ષણે—

વાતાકૃતિર્ધવેદ્વાતાન્મૂત્રે શુષ્યતિ સંક્ષય: ॥૩૩૪॥

વાતાત્ વાયુને લઈ વાયુકે કારણ, મૂત્રે મૂત્ર મૂત્રકે, શુષ્યતિ સુકાઈ જતાં છૂક જાને પર, વાતાકૃતિ: વાત-લક્ષણે યુક્ત વાયુકે લક્ષણોવાલા, સંક્ષય: મૂત્રસંક્ષય મૂત્ર-ક્ષય, મૂત્રસંક્ષય, સ્વેત્ આય છે હોતા હૈ ॥ ૩૩૪ ॥

34. When the urinary secretion dries up owing to excessive vata, there is induced a condition called 'Samkshaya' or precession of urine characterised by supasympptoms of vata morbidity.

મૂત્રાતીતસ્ય નિદાનલક્ષણે—

ચિરં ધારયતો મૂત્રં ત્વરયા ન પ્રવર્તતે ।

મેહમાનસ્ય મન્દં વા મૂત્રાતીત: સ્વ ઉચ્યતે ॥૩૫॥

ચિરમ્ લાંબા બખત સુધી વહુત દેર તક, ધારયત: મૂત્ર ધારણ કરી રાખનારને ઉપસ્થિત મૂત્રવેગકો, રોક રાખનેસે મૂત્રમ્ મૂત્ર મૂત્ર, ત્વરયા બલદી જલ્દીસે, ન પ્રવર્તતે ઉતરતું નથી પ્રવૃત્ત નહીં હોતા, મેહમાનસ અથવા મૂત્રભાગ માટે અમત્ન કરતાં અથવા મૂત્ર ત્યાગકે લિષ્ટ પ્રયત્ન કરને પર, મન્દમ્ વા મૂત્ર ધીરે ધીરે ઉતરે છે મૂત્ર વીરસે પ્રવૃત્ત હોતા હૈ, સ: તે વા, મૂત્રાતીત: મૂત્રાતીત મૂત્રાતીત કહ્યતે કહેવાય છે કહા જાતા હૈ ॥ ૩૫ ॥

35. When a man habitually given to long withholding of the urge for urination performs the act of micturition, the flow does not start immediately or flows out very slowly; this condition is called 'Mutraeteeta' or delayed micturition.

મૂત્રાઘીલાયા નિદાનલક્ષણે—

આધ્માપયન્ વસ્તિગુદં રુદ્ધા વાયુશ્ચલોષ્ણતામ્ ।

કુર્યાત્તીવાર્તિમઘીલાં મૂત્રવિષ્ણમાર્ગરોચિનીમ્ ॥૩૬॥

વસ્તિગુદમ્ અસ્તિ તથા યુદ્ધાને વસ્તિ ઓર ગુદાને, રુદ્ધા રુંધાઈને સકકર, આધ્માપયન્ આધ્માન કરી આધ્માન કરકે, વાયુ: વાયુ વાયુ, ચલોષ્ણતામ્ ઊંચી ઉપસેલી ડંચી ડી હુઈ, તીવાર્તિમ્ તીવ્ર વેદના યુક્ત અતિશય પીષા કરનેવાળી, મૂત્રવિટ્ મૂત્ર તથા મલના મૂત્ર ઓર મલકે, માર્ગ માર્ગને માર્ગકો, રોચિનીમ્ રુંધનાર રોકનેવાળી, અઘીલામ્ અઘીલાને અઘીલાકો, કુર્યાત્ ઉત્પન્ન કરે છે ઉત્પન્ન કરતી હૈ ॥ ૩૬ ॥

36. When the vata, being obstructed, distends the bladder and the rectum, it gives rise to the formation of the condition called an Astheela (stone-hard tumour) which is movable

elevated, acutely painful and obstructive of the urinary and rectal passages.

वातवस्तेनिदानलक्षणे—

मूत्रं धारयतो वस्तौ वायुः कुक्षो विधारणात् ।

मूत्ररोधार्तिकण्डूभिर्वातवस्तिः स उच्यते ॥३७॥

मूत्रम् मूत्र मूत्रको, धारयतः धारयु करनारने रोकते हुए मनुष्यको, विधारणात् मूत्रवेग रोकवाधो मूत्रवेगके रोकनेसे, कुक्षः प्रेक्षा पीडा प्रकृषित हुआ, वायुः वायु वायु, वस्तौ अस्तिर्भा वस्तिमें, मूत्ररोध मूत्ररोध मूत्ररोध, अस्ति- पीडा पीडा, कण्डूभिः तथा मूत्रवाध उत्पन्न करे छे और कण्डूको उत्पन्न करता है, सः ते वह, वातवस्तिः वातवस्ति वातवस्ति, उच्यते उच्यते छे कहाती है ॥ ३७ ॥

3.7 In a person who is habitually suppressing the urge for micturition, the vata in the bladder becomes provoked owing to suppression of its action and causes retention of urine pain and itching sensation in the bladder. This is called the vata disease of the bladder.

उष्णवातस्य निदानलक्षणे—

ऊष्मणा सोष्मकं मूत्रं शोषयन् रक्तपीतकम् ।

उष्णवातः सृजेत् कुच्छ्राद्वस्त्युपस्थार्तिदाहवान् ३८

वस्ति- अस्ति वस्ति, उत्पन्न- तथा मूत्रेन्द्रियभा और शिरमें, आर्ति- पीडा पीडा, दाहवान् तेमन् दाह करनार वायु एवं जलन करनेवाली वायु, ऊष्मणा पित्तनी गरमीसे पित्तकी गरमीसे, मूत्रम् मूत्रने मूत्रको, शोषयन् सुखीने सुखाकर, सोष्मकम् उष्णतायुक्त उष्णतायुक्त, रक्तपीतकम् रातुं तेमन् पीतुं मूत्र काक एवं पीला मूत्र, कुच्छ्राद भुस्केलीसी कठिनाईसे, सृजेत् उत्पन्न छे प्रवाहण करता है, उष्णवातः ते उष्णवात उच्यते छे वह उष्णवात कहा जाता है ॥ ३८ ॥

३७. विधारणात्-विधारणे (क.)

मूत्रं धारयतो वस्तौ-मूत्रमाधारयेद्वस्तौ (क.)

३८. सोष्मकं-सोष्मको (क.)

38. The vata, combining with the heat of pitta, heats up the urine, dries it up, turns it red and yellowish in color. This ushna-vata or vata-cum-pitta disease gives rise to difficult urination accompanied with pain and burning in the bladder and the phallus.

वातकुण्डलिकाया निदानलक्षणे—

गतिसङ्गादुदावृत्तः स मूत्रस्थानमार्गयोः ।

मूत्रस्य विगुणो वायुर्मग्न्याविद्धकुण्डली ॥३९॥

मूत्रं विहन्ति संस्तम्भमङ्गौरववेदनैः ।

तीव्ररुद्धमूत्रविदसङ्गैर्वातकुण्डलिकेति सा ॥४०॥

मूत्रस्य मूत्रनी मूत्रकी गतिसङ्गात् अतिना रोधधो गतिमें रुकावट आनेसे, उदावृत्तः उदावृत्तवाधो रुकावट और गतिशील, सः विगुणः ते दोषवाधो वह दोषवाधो, वायुः वायु वायु, मूत्रस्थानमार्गयोः मूत्रस्थानभा जाने मूत्रभाभा मूत्रस्थानमें और मूत्रमार्गमें, मग्न्याविद्ध प्रतिधात धावे, वक् प्रतिवत्, वक्, कुण्डली अने कुण्डलीकर धर्त तथा कुण्डलाकार होकर, मूत्रम् मूत्रने मूत्रका, विहन्ति विधात करे छे विधात कर देता है, संस्तम्भमङ्ग- सांभ, मङ्ग नेपी वेदना स्तम्भ, मङ्गके उत्पन्न वेदना, गौरव-भुत्ता मारीपन, वेदनैः वेदने उत्पन्न वेदन, तीव्ररुद्ध तीव्र पीडा अतिपीडा, मूत्र-विदसङ्गै मूत्ररोध, तथा मलरोध मूत्ररोध तथा मलरोध, ये दोषवाधो युक्त मङ्ग इन लक्षणोंसे युक्त होकर, मूत्रम् मूत्रने मूत्रका, विहन्ति विधात करे छे विधात करता है, सा ते वह, वातकुण्डलिका इति वातकुण्डलिका उच्यते छे वात-कुण्डलिका कही जाती है, ॥ ३९-४० ॥

39-40. Owing to clogging in the urinary passages, the vata is turned upwards and thus its motion, becoming broken and vitiated, it assumes either a crooked or circum-gyratory motion in the bladder as well as in the urinary

४०. मङ्ग-मङ्ग (क क.)

channels; It then vitiates the urinary function, giving rise to rigidity, breaking pain, heaviness, girdle-pain, severe colic and retention of urine and feces. This condition is termed 'vata-kundalika' or circum-gyrotory vata-disorder of the bladder.

रक्तग्रन्थिनिदानलक्षणे—

रक्तं वातकफादुदुग्धं बस्तिद्वारे सुदारुणम् ।

ग्रन्थिं कुर्यात् स कृच्छ्रेण सृजेन्मूत्रं तदावृतम् ॥४१॥

अश्मरीसमशूलं तं रक्तग्रन्थिं प्रवक्षते ।

वातकफात् वातः अने उद्धृती वायुः और कफसे, दुग्धम् दूषितं यथेक्षं वृषितं हुआ, रक्तम् रक्तं रक्त, बस्तिद्वारे अस्तिद्वारम् बस्तिद्वारमें, सुदारुणम् अत्यन्तं भयंकरं, ग्रन्थिम् अर्धं ग्रन्थि, कुर्यात् उत्पन्न करे छे उत्पन्न करता है. सः ते रोगी, तदावृतम् तेनाथी रेखाधं अन्तर्ने वीथि इष ग्रन्थिसे रुकनेके कारण, कृच्छ्रेण भुशुकेलीथी कठिनाईसे, मूत्रम् सृजेत् पेशात् करे छे मूत्र त्यागता है, अश्मरीसम- पथरीना जेवा अश्मरीके सदृश, शूलम् थूलवाणा शूलवाले, तम् ते ग्रन्थिने उग्र ग्रन्थिको, रक्तग्रन्थिम् रक्तग्रन्थि रक्तग्रन्थि प्रवक्षते उद्धे छे कहते हैं ॥४१-४२॥

41-41½. The blood vitiated by the vata and the kapha causes a serious kind of tumor in the neck of the bladder. Owing to the obstruction thus caused, the man passes urine with difficulty and pain, similar to that felt in the condition of stone in the urinary passage. This condition is known as the 'Rakta-granthi' or blood-tumor in the bladder.

विड्विघातस्य निदानलक्षणे—

रुक्षदुर्बलयोर्वर्तितोदावृतं शकृच्चदा ॥४२॥

मूत्रस्रोतः प्रपद्येत विट्संसृष्टं तदा नरः ॥४३॥

४२½. रक्तग्रन्थि-मूत्रग्रन्थि (च. व. सं. त.)

विड्विघ्नं मूत्रयेत् कृच्छ्राद्विड्विघातं विनिर्दिशेत् ॥४३॥

रुक्ष- रुक्ष, दुर्बलयोः अने दुर्बल मनुष्योना और दुर्बल मनुष्योका, कृच्छ्रत् मज्ज मज्ज, वातेन वायुशी वायुसे, उदावृतम् उपर तः ४४ उद्धृति होकर, यदा अन्तरे जब, मूत्रस्रोतः मूत्रना स्रोतमा मूत्रस्रोतमें, प्रपद्येत पहुँचये छे पहुँच जाता है, तदा नरः त्वारे मनुष्य तत्र पुरुष, कृच्छ्रात् भुशुकेलीथी कठिनाईसे, विट्संसृष्टम् विड्विघात संसृष्टं तथा भवनात् पेशात् मलके संसर्ग और गन्धवाला मूत्र, मूत्रयेत् करे छे त्यागता है, तम् तेने इसे, विड्विघातम् विड्विघात विड्विघात विनिर्दिशेत् उद्धेवा कहें ॥४२-४३॥

42-43. When the morbid vata enters the urinary passage, the person then passes with difficulty urine that is mixed with fecal matter and which is foul-smelling. This condition is to be known as 'Vid-vighata' or fecal fistula.

वस्तिकुण्डलस्य निदानलक्षणे—

दुताश्वलङ्घनायासादभिघातात् प्रपीडनात् ।

स्वस्थानाद्वस्तिद्वारं स्थूलस्तिष्ठति गर्भवत् ॥४४॥

शूलस्पन्दनदाहार्तां बिन्दुं बिन्दुं स्रवत्यपि ।

पीडितस्तु सृजेद्द्वारां संस्तम्भोद्वेष्टनार्तिमान् ॥४५॥

वस्तिकुण्डलमाहुस्तं घोरं शस्त्रविषोपमम् ।

पवनप्रबलं प्रायो दुर्निवारमबुद्धिभिः ॥४६॥

दुताश्वलङ्घन- अलङ्घनी मार्गं यावत्वाथी शीघ्रतसे मार्ग चलनेसे, आयासात् परिश्रमथो परिश्रमसे, अभिघातात् अभिघात भवाथी चोट लगनेसे, प्रपीडनात् अलङ्घनायाथी दब जानेसे, स्वस्थानात् पेशाना स्थानंथी अपने स्थानसे, उद्वृत्तः मुज्ज डेरवी उपर आनी मुखको परावृत कर ऊपरकी ओर उठ करके, वस्तिः अस्ति वस्ति, गर्भवत् गर्भा जेवी गर्भके समान, स्थूलः मोटी मोटी, तिष्ठति अर्धं रहे छे हो जाती है, शूलस्पन्दन-

४४½. सृजेद्द्वारां-सृजेद्द्वारां (च. व. सं. त.)

पीडितस्तु सृजेद्द्वारां-पीडितः संसृजेद्द्वारां (च. व. सं. त.)



शूल, स्पर्शन शूल, स्पन्दन, दाह आते- अने दाहकी पीड़ायेक मनुष्यके और दाहसे पीडित मनुष्यको, बिन्दुम् टीपुं बुंद, बिन्दुम् टीपुं बुंद, खवति अपि ऐशान् ॥ अतरे छे मूत्र आता है, पीडितः दु अस्तित्वे द्वाववायी द्वावसे, संस्तम्भ-स्तम्भ स्तम्भ, उद्वेजन- अने विद्वेजनकी और ऐंठनकी, अविमान् पीडाधी युक्त यथ दर्देसे युक्त होकर, धाराय धार धाराके रूपमें, सजेव छोड़े छे मूत्रको ह्यागता है, पवनप्रबलन् प्रबल पवनवाणी वायुकी प्रबलतावाली, अजुद्धिभिः भेदं जुद्धिवाया वैद्योधी मन्द बुद्धिवाले वैद्योंसे, प्रायः धक्षुं भइ प्रायः करके, दुर्निवारन् न अटके ओवी अचिकित्स्य, अस्त्रविषोपमम् शस्त्र तथा विष ओवी शस्त्र और विषके समान, घोरम् भयंकर अमानक, तम् ते उस बस्तिको, बस्तिकुण्डलम् अस्तिकुण्डलिका बस्तिकुण्डलिका, आहुः उहे छे कहते हैं ॥ ४४-४६

44-46. By excessive running, way-faring, jumping, exertion, trauma or compression, the bladder is displaced upwards; and becoming enlarged, it appears like the gravid uterus. The patient getting afflicted with colic, throbbing and burning pain, passes urine drop by drop. When the bladder region is pressed, the urine comes out in a jet. This condition is characterised by rigidity and girdle pain and is termed 'basti-kundala' or circular distension of the bladder. It is a dreadful condition comparable in seriousness to injury by weapon or poisoning. It is generally caused by predominant morbidity of vata and cannot be cured by the mediocre physician

तस्मिन् पित्तान्विते दाहः शूलं मूत्रविवर्णता ।

तस्मिन् ते उस बस्तिकुण्डलिकाके साथ, पित्तान्विते पित्त-युक्त होय ते। पित्तका संवन्ध होने पर, दाहः दाह दाह,

शूलम् शूल शूल, मूत्रविवर्णता अने मूत्रकी विवर्णता साथ छे और मूत्रकी विवर्णता होती है ॥ ४४-४६ ॥

46. If the condition is accompanied with pitta-morbidity there will be burning, colic and varied coloration of urine

श्लेष्मणा गौरवं श्लोकः श्लिग्धं मूत्रं घनं सितम् ॥

श्लेष्मणा अस्तित्वे उद्विक्ता कथी युक्त होय ते। बस्तिकुण्डलिकाके साथ कफका संवन्ध होने पर, गौरवम् भारेपण भारीपन, श्लोकः सोओ श्लोभ, मूत्रम् तथा ऐशान् और मूत्र, श्लिग्धम् रिन्ध श्लिग्ध, घनम् घट घट, सितम् अने धागे। साथ छे एवं श्लेत् होता है ॥ ४७ ॥

47. While if accompanied with kapha-morbidity, there will be heaviness, swelling and unctuous, dense and pallid condition of the urine.

श्लेष्मरुद्धविलो बस्तिः पित्तोदीर्घो न सिध्यति ।  
अविघ्नान्तविलः साध्यो न तु यः कुण्डलीकृतः ॥ ४८ ॥

श्लेष्मरुद्धविलः नेनु छिः कथी उपायुं होय जिसका छिः कफसे अवरोध हो। पित्तोदीर्घः अने ओधी पित्तकी प्रबलता होय और जिसमें पित्तकी प्रबलता हो, बस्तिः ते अस्तिकुण्डलिका वह बस्तिकुण्डलिका, न सिध्यति साध्य नहीं असाध्य है, अविघ्नान्तविलः नेनु छिः उपायुं न होय जिसमें द्वार उन्द न हुआ हो, यः तु अने ने और जो, न कुण्डलीकृत, कुण्डलुं न पणी अर्थ होय ते कुण्डलाकार न बनी हो वह, साध्यः साध्य छे साध्य है ॥ ४८ ॥

48. Where the orifice of the bladder gets obstructed by kapha and where there is provocation of pitta too, it does not yield to treatment. If the orifice of the bladder is not

४७. श्लिग्ध-श्लिग्ध (य.)

४८. गौरवं नास्ति (य. क.)

४८. श्लेष्मरुद्धविलः-श्लेष्मरुद्धविलः (य.)



displaced, the condition is curable; but if it is twisted round and displaced, the condition is incurable.

स्याद्वस्तौ कुण्डलीभूते हृन्मोहः श्वास एव च ।

वस्तौ अस्ति वस्तिके, कुण्डलीभूते कुण्डली वण्णी अर्ध होय तो कुण्डलाकार होने पर, हृन्मोहः हृदये मोह हृदयमें मूर्च्छा, श्वासः च एव अने श्वास और श्वास, स्यात् थाय छे होते हैं ॥ ४८३ ॥

48½. When the bladder is twisted and displaced, there will occur cardiac distress, fainting and dyspnea.

मूत्राघातानां विकृतिः—

दोषाधिक्यमवेक्ष्यैतान् मूत्रकृच्छ्रहरैर्जयेत् ॥४९॥

वस्तिमुत्तरवस्ति च सर्वेषामेव दापयेत् ।

दोषाधिक्यम् दोषणी अधिकता इनमें दोषकी अधिकता, अवेक्ष्य भेधने देखकर, एतान् औषधीनी इनकी, मूत्रकृच्छ्रहरैः मूत्रकृच्छ्र मटाउनार औषधीनी मूत्रकृच्छ्रनाशक योगोंसे, जयेत् चिकित्सा करवी भेध औषधी विकृति का री चाहिए, सर्वेषाम् एव सधना मूत्र-दोषमां सभी मूत्रदोषमें, वस्तिम् अस्ति वस्ति, उत्तर-वस्तिम् च तथा उत्तरवस्तिने तथा उत्तरवस्ति, दापयेत् प्रयोग करवे भेध औषधी प्रयोग करना चाहिए ॥ ४९३ ॥

49-49½. Diagnosing the predominance of the morbid humor, these conditions should be treated by measures curative of dysuria. Enemata and urethral douches should be admi-

४८३. हृन्मोहः—मूर्च्छा (ह. ब. फ.)

४९. दोषाधिक्यम्—दोषवेगम् (र.)

४९३. दापयेत्—गोजयेत् (क. ख. ग. ड.)

॥ अस्मादितन्तरम्—

उत्तरवस्तिविधिः

इत्यधिकः पाठः (क) पुस्तके ।

nistered in all morbid conditions of the bladder.

उत्तरवस्तेविधिः—

पुष्पनेत्रं तु हैमं स्याच्छुष्कमौत्तरवस्तिकम् ॥५०॥

जात्यश्वहनवृन्तेन समं गोपुच्छसंस्थितम् ।

रौप्यं वा सर्वपच्छिद्रं द्विकर्णं द्वादशाङ्गुलम् ॥५१॥

औत्तरवस्तिकम् उत्तरवस्तिनं उत्तरवस्तिका, पुष्प-नेत्रम् तु पुष्पनेत्र पुष्पनेत्र, हैमम् सोनानुं स्वर्ण, रौप्यम् वा अथवा रूपाणुं अथवा चांदीका, शुष्कम् सूखी और शुष्क, जाति- अर्ध चमेली, अश्वहन- १ करेखुना सूखनी या कनेरके फूलके, वृन्तेन अर्धदी लठके, समम् समान समान, गोपुच्छ- गामना पूछना गायके पूछके आकारका, सर्वपच्छिद्रम् सरसव नेत्र छिद्रवाणु सरसों जितना छिद्रवाला, द्विकर्णम् भेद छिद्रवाणु दो कर्णिकावाला, द्वादशाङ्गुलम् अने बार आंगुलानुं और लम्बाईमें बारह अङ्गुलका, स्यात् होय भेध औषधी होना चाहिए ॥ ५०-५१ ॥

50-51. The catheter should be of gold or silver and smooth, and the tip must be of the size of the stalk of a jasmine or oleander flower and tapering in shape like the cow's tail. It must have a hole of the size of a mustard seed. Its length must be twelve fingers breadth and it must be provided with two ears.

तेनाजवस्तियुकेन स्नेहस्यार्धपलं नयेत् ।

यथावयोविशेषेण स्नेहमात्रां विकल्प्य वा ॥५२॥

५०. पुष्पनेत्रं तु हैमं स्याच्छुष्कमौत्तरवस्तिकम्—पुष्पनेत्रं तु

हैमं स्याच्छुष्कमौत्तरवस्तिकम् (ब)

॥ जात्यश्वहनवृन्तेन समं गोपुच्छसंस्थितम्—गोपुच्छसंस्थितम् वृन्त-समं जात्यश्व-हनवृन्तयोः (ब.)

॥ जात्यश्वहनवृन्तेन—जातीपुच्छस्य वृन्तेन (क.)

आजवस्ति- अङ्गुली अस्तिर्भा वक्रेकी वस्तिर्मे, युक्तेन आधी बाधकर, तेन ते वडे उससे, केहल्ल बर्धपकम् ये तोला स्नेह स्नेहकी दो तोलेकी मात्रा, यथावयः-विशेषेण अथवा वयना बेहने अनुसार अथवा वयभेदके अनुसार, विकल्प्य उद्धृष्टे कल्पना करके, केहमात्रा वा स्नेहनी मात्रा स्नेहकी मात्रा, नवेन अंदर दाख करवी देवे ॥५२॥

52. This should be attached to a goat's bladder and the unctuous medication given through it must be two tolas in measure; or the dose administered may be in keeping with the age and other conditions of the patient.

आतस्य भुक्तभक्तस्य रसेन पयसाऽपि वा ।  
सृष्टविण्मूत्रवेगस्य पीठे जानुसमे मृदौ ॥५३॥  
ऋजोः सुखोपविष्टस्य हृष्टे मेद्रे घृताक्तया ।  
शलाकयाऽन्विष्य गतिं यद्यप्रतिहता व्रजेत् ॥५४॥  
ततः शोफःप्रमाणेन पुष्पनेत्रं प्रवेशयेत् ।  
गुदवन्मूत्रमार्गेण प्रणयेदनु सेवनीम् ॥५५॥

आतस्य नडाथैल्ल ज्ञान करके, रसेन भासरस साधे मांसरस, पयसा अपि वा अथवा दूध साधे वा दुधके साथ, भुक्तभक्तस्य जेले ओज्जन कथुं छे जिसने भोजन किया है, सृष्टविण्मूत्रवेगस्य तथा जेले भल्लमूत्रनेला त्याग कथो छे तेले और जिसने मलमूत्रका त्याग किया है उस, जानुसमे ओड्डु जेटला उंचा घुंठोंके बराबर ऊंचे, मृदौ पीठे डोभण पीडा पर कोमल आसन पर, ऋजोः सीधा सीधा, सुखोपविष्टस्य सुजेथी भेटेद शेजीना सुखपूर्वक बैठे हुए रोगीके, हृष्टे हर्षयुक्त उत्तेजित, मेद्रे शिशिर्भा शिश्रके, घृताक्तया धी चोपडे घृतसे सिद्ध की हुई, शलाकया शलाका वडे शलाकासे, गतिम् मूत्र-भाजने मूत्रमार्गको, अन्विष्य शोधीने देखकर यदि जे यदि, अप्रतिहता अटकेला वअर बिना रुकावटके,

व्रजेत् अंदर याही भय तो अन्दर चली जाव तो, ततः त्याग पछी तब पश्चात्, शोफः शिश्र जेटला शिश्रके, प्रमाणेन प्रमात्रुभा प्रमाणमें, पुष्पनेत्रम् पुष्पनेत्रने। पुष्पनेत्रको, प्रवेशयेत् प्रवेश करावे। प्रविष्ट करे, गुद-वत् अने गुदानी अस्तिनी येठे और गुदकी बहिर्की भांति, सेवनीम् सेवनीनी सेवनीके, अनु सीधे साथ साथ सीधमें, मूत्रमार्गेण मूत्रमार्गभा मूत्रमार्गमें, प्रणयेत् छुई जवी के जाव ॥५३५५॥

53-55. The patient should have bathed, taken his food mixed with meat-juice or milk, and should have voided his feces and urine. He should be seated on a knee-high and soft seat in a straight and comfortable position. His phallus should be made erect and the probe, smeared with ghee, should be inserted into the urethra. If the probe can be passed without any obstruction, then the catheter should be introduced according to the size of the phallus (in the line of perineal raphe) and in the same manner as that described about the enema-nozzle for the anus.

हिंस्यादस्तिगतं वस्तिमूने कोहां न गच्छति ।  
सुखं प्रपीड्य निष्क्रम्यं निष्कर्षेद्येनमेव च ॥५६॥  
प्रत्यागते द्वितीयं च तृतीयं च प्रदापयेत् ।

अतिमलम् अतिशय अंदर भयेयुं नेत्र नेत्रके अधिक जाने पर, वस्तिम् अस्तिर्भा वस्तिर्मे, हिंस्यात् पुच्छान करे छे चोट पहुंचती है, ऊने स्नेहः ओड्डुं भयुं छेय तो स्नेह कम जानेसे स्नेह, न गच्छति पहुंचते। नथी नहीं पहुंचता, सुखम् ओ डारले, सुजेथी अतः सुखसे, निष्क्रम्यम् छुडाने उंचावला वअर निवा हाथको कम्पाते हुए, प्रपीड्य अस्तिपुटके छपी वस्ति-

पुटको दबाकर, नेत्रम् च एव औषध अंदर गया  
पछी नेत्रने औषधके अन्दर प्रविष्ट होनेके पश्चात् नेत्रको,  
निष्कर्षेत् पाछुं जेयी देवुं निकाल लेवे, प्रत्यागते  
वस्ति पाछी आवे त्पारे बस्तिके बापस आ जाने पर,  
द्वितीयम् भी७ दूसरी, तृतीयम् च अने त्री७ और  
तीसरी बस्ति, प्रदापयेत् आपवी देवे ॥५६३॥

56-56½. If it penetrates too far, it  
hurts; and if insufficiently inserted, the  
unctuous medication does not reach  
its destination. Then, compressing the  
douche-bladder without shaking it and  
without causing discomfort to the  
patient, the douche-tube, i. e. the  
catheter, should be with-drawn. After  
the fluid has returned a second and  
third douche should be given.

अनागच्छन्नुपेक्ष्यस्तु रजनीव्युषितस्य च ॥५७॥  
पिप्पलीलवणागारधूमापामार्गसर्वपैः ।  
वार्ताकुरसनिर्गुण्डीशम्पाकैः ससहाचरैः ॥५८॥  
मूत्राम्लपिष्टैः सगुडैर्वर्ति कृत्वा प्रवेशयेत् ।  
अग्रे तु सर्वपाकारां पञ्चार्धं माषसंमिताम् ॥५९॥  
नेत्रदीर्घां घृताभ्यक्तां सुकुमारामभङ्गराम् ।  
नेत्रवन्मूत्रनाड्यां तु पायौ चाङ्गुष्ठसंमिताम् ॥६०॥  
खोदे प्रत्यागते ताभ्यानुवासनिको विधिः ।  
परिहाराश्च सव्यापत् ससम्यक्दत्तलक्षणः ॥६१॥

अनागच्छन् तु पाछी आवे नहि ते। तेनी यदि  
बापस न आवे तो, उपेक्ष्य उपेक्षा करवी उपेक्षा  
करनी चाहिए, रजनीव्युषितस्य पक्षु रात आपछी  
आछी अथ ते। रात भर उपेक्षा करने पर यदि बापस न

आवे तो, पिप्पली- पीपर पिप्पली, लवण- लवण  
नमक, अगारधूम- गुडधूम गुडधूम, अवामार्ग- अवेडा  
विरविटा, सर्वपैः सरसप सरसों, ससहाचरैः सहाचर  
सहाचर, वार्ताकुरस- वार्ताकुने। रस वार्ताकुका रस,  
निर्गुण्डी- निर्गुंड़ी संभाल, शम्पाकैः अने गरभाणे  
और अमलतास इनको, मूत्राम्लपिष्टैः गोमूत्र तथा  
अम्ल द्रव्यके साथ पीसकर, सगुडैः गोण नांभी गुड मिला-  
कर, अग्रे तु आगछा अर्ध भागभां अग्रिम अर्ध भागमें,  
सर्वपाकाराम् सरसपना आकारनी सरसोंके आकारकी,  
पञ्चार्ध अने पाछवा अर्ध भागभां और पीछले  
अर्ध भागमें, माषसंमिताम् अ३६ जेवडी उदद जितनी  
मोटी, नेत्रदीर्घां पुष्पनेत्र जेटली क्षीणी पुष्पनेत्रके  
समान लम्बी, सुकुमाराम् डोभण कोमल, अभङ्गराम्  
भांभी न अथ तेवी नहीं टूटनेवाली, बर्तिम् वर्ति  
वर्ति, कृत्वा अनावी बनाकर, घृताभ्यक्तां घी सेपडी  
वीसे लिपि करके, मूत्रनाड्याम् मूत्रनाडीभां मूत्र  
नाडीमें, नेत्रवत् पुष्पनेत्रनी पेठे दाखल करवी पुष्प-  
नेत्रकी भांति दाखल करे, पायौ च अने गुदाभां और  
गुदामें, अङ्गुष्ठसंमिताम् दाखल अंगूठा जेवडी हाथके  
अंगूठेके प्रमाणकी, प्रवेशयेत् दाखल करवी दाखल करे,  
ताभ्याम् ते अन्नेथी मेढ़ और गुदामें वर्ति देनेसे, स्नेहे  
स्नेह स्नेहके, प्रत्यागते पाछो वणी आवे त्पारे  
बापस आने पर, आनुवासनिकः अनुवासननी  
अनुवासनकी, विधिः विधि करवी जेधंथे विधि करनी  
चाहिए, सव्यापत् उत्तरवर्तिनी व्यापत् उत्तरवस्तिकी  
व्यापत्ति, स-सम्यक्दत्तलक्षणः उत्तरवर्तिना सम्यग्धो-  
गनां लक्ष्य उत्तरवस्तिके सम्यग्योगके लक्षण, परिहारः च  
अने परहेण अनुवासनभां कहेवाधं जयेवना समान  
अक्षुषां और परहेत्रको अनुवासनमें कहे गयेके समान  
जानना चाहिए ॥ ५७-६१ ॥

57-61. If it does not return, it may  
be ignored for a night. If it has not  
returned after a night, prepare a suppo-  
sitory with long pepper, rock salt,  
kitchen-smoke, rough chaff, rapessed,  
the juice of brinjal, chaste tree purgling

५७. रजनीव्युषितस्य-रजनीं व्युषितस्य (घ.)

५८. शम्पाकैः-शम्पाकैः (ख)

५९. परिहारश्च-परिहारस्य (घ)

पञ्चार्धोक्तान्तरम्—

अर्धभां विशेषमाह

शरयिकः पाठः (क.) पुस्तके ।

cassia and crested purple nail dye rubbed into paste with cow's urine and acid article and mixed with gur. The suppository should be of the size of the mustard seed at the tip and of the blackgram seed at the base. It should be of the length of the catheter and soft and unbreakable. It should be lubricated with ghee and inserted in the manner of the catheter into the urethral passage, and another suppository of the size of a thumb should be inserted into the anus. After the unctuous fluid has returned from both the urethra and the anus, the after-treatment laid down in the case of the unctuous enema should be followed. The after-care complications and characteristics of a successful administration of the urethral douche are the same as those described regarding unctuous enema.

स्त्रीणामुत्तरवस्तिदाने विशेषः —

स्त्रीणामार्तवकाले तु प्रतिकर्म तदाचरेत् ।

गर्भासना सुखं क्षेत्रं तदाऽऽदत्ते क्षपावृता ॥६२॥

गर्भं योनिस्तदा शीघ्रं जिते गृह्णाति मावते ।

स्त्रीणाम् श्रीश्रीनो त्रियोंका, तु तदा, तव आ-  
यह, प्रतिकर्म तु उपचार प्रतिकर्म, मार्तवकाले आर्त-  
वना सुभयभा आर्तवकालमें, आचरेत् उरवे। ओष्ठो  
करना चाहिए, हि उरवे के क्योंकि, तदा त्वारे तव,  
गर्भासना अभीशम गर्भासय, क्षपावृता शुद्धी गुरु  
होवाभी अवरोध न होनेसे, क्षेत्रं स्नेहने स्नेहो, सुखम्  
सुभेभी सुखपूर्वक, आदत्ते अदत्तु उरवे उ प्रहण कर  
केता है, तदा ते सुभये उस समय, मावते पवन  
वायुके, जिते अर्थात् अर्थात् शान्त हो जानेसे, योनिः

योनि योनि. गर्भम् शीघ्रम् गृह्णाति- अभीशम गर्भं  
मावते उरवे उरवे शीघ्र प्रहण कर केता है ॥६२॥

62-64. For women, this douche-  
therapy, should be given during their  
menstrual period, as the mouth of the  
uterus is open at the time and readily  
receives the fluid injected. If the vata is  
thus subdued, the uterus becomes  
readily impregnable.

वस्तिजेषु विकारेषु योनिविभ्रंशजेषु च ॥६३॥  
योनिशूलेषु तीव्रेषु योनिव्यापत्स्वसृग्दरे ।  
अप्रस्रवति मूत्रे च बिन्दुं बिन्दुं स्रवत्यपि ॥६४॥  
विद्व्यादुत्तरं वस्ति यथास्त्रीवचसंस्कृतम् ।

वस्तिजेषु वस्तिभी उपचन अथैव वस्तिजन्य, योनि-  
विभ्रंशजेषु तथा योनिना विभ्रंशभी उपचन अथैव  
तथा योनिभ्रंशजन्य, विकारेषु च विकारोभा रोगोमें,  
तीव्रेषु तीव्र तीव्र, योनिशूलेषु योनिशूलभा योनिशूलोंमें,  
योनिव्यापत्सु योनिनी व्यापत्तिभी योनिनी व्यापत्ति-  
योमें, असृग्दरे रक्तप्रस्रभा रक्तप्रस्रमें, मूत्रे च मूत्र  
मूत्रके, अप्रस्रवति अिदुल न आववाभा न जानेमें,  
बिन्दुम् बिन्दुम् अने वणी दीपु दीपु बूंद बूंदकर,  
स्रवति अपि मूत्र आववाभा जानेमें, यथास्त्री यथा-  
योताना अपनी अपनी, औषधसंस्कृतम् औषधभी संस्कृत  
उरवे औषधियोंसे संस्कृत, उत्तरम् वस्तिम् उत्तरवस्ति  
उत्तरवस्ति, विद्व्यात् देदी ओष्ठो देदी चाहिए  
॥६३-६४॥

63-64. The douche prepared with  
appropriate medications should be  
administered in disorders of the  
bladder, prolapse of the uterus, severe  
uterine colic, other gynecic disorders,  
menorrhagia, stasis of urine and in  
conditions of incontinence where the  
urine dribbles drop by drop.

पुष्पनेत्रप्रमाणं तु प्रमदानां दशाङ्गुलम् ॥६५॥  
मूत्रस्रोतःपरीणाहं मूत्रस्रोतोऽनुवाहि च ।

प्रमदानाम् श्रीश्रीभा उत्तरवस्ति आपवा भाटे  
त्रियोंमें उत्तरवस्ति देनेके लिए, पुष्पनेत्र- पुष्पनेत्रनी  
पुष्पनेत्रकी, प्रमाणम् द्वांभाई लंबाई, दशाङ्गुलम् दश  
अंगुल दस अंगुल, मूत्रस्रोतः-परीणाहम् तैनी परिधि  
भूतस्रोतना जेवी उसकी परिधि मूत्रस्रोतके समान,  
मूत्रस्रोतः अनुवाहि च अने छिद्र भगपेसी जल येवुं  
होपुं जेधये और छिद्र मूंगके प्रवेशयोग्य होना  
चाहिए ॥ ६५३ ॥

65-65½. The catheter in the case of  
women should be ten fingers-breadth  
in length. Its circumference should be  
of the size of the urethral canal and  
the channel of the catheter should be  
large enough to allow the free passage  
of a green-gram seed.

अपत्यमार्गे नारीणां विधेयं चतुरङ्गुलम् ॥६६॥  
व्याकुलं मूत्रमार्गे तु बालायास्त्विकमङ्गुलम् ।

नारीणाम् श्रीश्रीभा त्रियोंके, अपत्यमार्गे योनि-  
मार्गमें अपत्यमार्गमें, चतुरङ्गुलम् अस्तिनेत्र चार  
अंगुल वस्तिनेत्र चार अंगुल, मूत्रमार्गे तु तथा भूत  
मार्गमें तथा मूत्र मार्गमें, व्याकुलम् ये अंगुल दो  
अंगुल, बालायाः तु तथा क-भाना मूत्रमार्गमें इत  
और बालाके मूत्रमार्गमें सिर्फ, एकम् ऐक एक, अङ्गुलम्  
अंगुल अंगुल, विधेयम् द्वांभाई करवुं जेधये प्रविष्ट  
करना चाहिये ॥ ६६३ ॥

66-66½. It should be inserted into  
the vagina upto a depth of four fingers-  
breadth and upto two fingers-breadth  
in the urethra in, the case of an adult  
woman. While in the case of tender  
girls, the catheter should be introduced

only upto one finger-breadth in the  
urethra.

उत्तानायाः शयानायाः सम्यक् सङ्कोच्य सक्थिनी ॥  
अथास्याः प्रणयेन्नेत्रमनुवंशगतं सुखम् ।  
द्विस्त्रिचतुरिति ज्ञेयानहोरात्रेण योजयेत् ॥६८॥  
वस्तौ, वस्तौ प्रणीते च वर्तिः पीनतरा भवेत् ।

उत्तानायाः श्रीने अती चित, शयानायाः सुषुप्तावी  
लेटाकर, सक्थिनी सक्थिनीने टांकोको, सम्यक् अरापर  
मली प्रकार, सङ्कोच्य सङ्कोचावीने संकुचित करवाके,  
अथ पक्षी पश्चात्, नेत्रम् पुष्पनेत्रने पुष्पनेत्रको, जलाः  
श्रीना इसके, अनुवंशगतम् पृथवंशनी स्त्रीधातुभा  
पृष्ठवंशके अनुसार सीवा, सुखम् सुखपूर्वकं सुखपूर्वक,  
प्रणयेत् द्वांभाई करवुं प्रविष्ट करे, वस्तौ अस्तिभभा  
वस्तिभभा, अहोरात्रेण ऐक अहोरात्रभा एक अहोरात्रे,  
द्विः त्रिः ऐवार त्रयवार दो, तीन, चतुः इति के चार  
वार या चार बार, स्नेहान् स्नेहनी स्नेहकी, योजयेत्  
योजना करवी जेधये योजना करनी चाहिए, वस्तौ-  
अस्ति वस्ति, प्रणीते च आपी दीया पक्षी देनेके  
पश्चात्, वर्तिः वर्ति वर्ति, पीनतरा-वधारे जेधये अधिक  
मोटी, भवेत् रेवी जेधये प्रविष्ट करनी चाहिए ॥६८-६८½॥

67-68½. This should be done when  
the woman is lying in bed in a supine  
position with the thighs well flexed.  
The catheter should be introduced in  
the line of the curve of the spinal  
column and in such a way that no  
discomfort is caused to the patient.  
Two, three or four unctuous douches  
should be injected in the course of a  
day and night into the bladder. The  
suppository to be used for getting the

६८. योजयेत्-दापयेत् (प.)

६८½. वस्तौ वस्तौ प्रणीते च वर्तिः पीनतरा भवेत्-वस्ति वस्तौ

प्रणीते च वस्तिश्चानन्तरं भवेत् (व. व.)

„ वर्तिः पीनतरा भवेत्-वस्तिश्चानन्तरं भवेत् (त. क.)

६५३. मूत्रस्रोतो-मूत्रस्रोतो (ख.)

६६. अपत्यमार्गे-नारीणां तु (क. व.)

injected fluid to return should be thicker than the catheter.

त्रिरात्रं कर्म कुर्वीत खेहमात्रां विवर्धयेत् ॥६९॥  
अनेनैव विधानेन कर्म कुर्यात् पुनश्च्यदात् ।

खेहमात्राम् स्नेहनी मात्रा जेहकी मात्राको, विवर्धयेत् पधारता रहेता बढ़ाते हुए, कर्म उत्तरमस्त-  
कर्म उत्तरवस्तिकर्मको, त्रिरात्रम् त्रयु रात तीन रात  
तक, कुर्वीत करवुं करना चाहिए, पुनः च्यदात् त्रयु  
द्विपक्ष पक्षी वणी फिर तीन दिनों पश्चात्, अनेन आभ  
इस, विधानेन विधिधी विधिसे, कर्म उत्तरमस्तिकर्म  
उत्तरवस्तिकर्म, कुर्यात् करवुं करे ॥ ६९३ ॥

69-69½. This treatment should be done for three nights with gradual increase of the dose of the unctuous medication. In the same manner, treatment should be repeated after an interval of three days.

शङ्खकस्य निदानलक्षणचिकित्सितानि—

अतः शिरोविकाराणां कश्चिद्भेदः प्रवक्ष्यते ॥७०॥

अतः हुवे अहीथी अब इसके आगे, शिरः- शिरना  
शिरके, विकाराणाम् रोगिना रोगोंके, कश्चिद् भेदका  
कुछ, भेदः भेद भेद, प्रवक्ष्यते कहेनाभा आवशे कहे  
जायेंगे ॥७०॥

70. Hereafter we shall describe some varieties of the diseases affecting the head.

रक्तपित्तमिला बुद्धाः शङ्खदेशे विमूर्च्छिताः ।  
तीव्ररुग्दाहशगं हि शोकं कुर्वन्ति दाहणम् ॥७१॥  
स शिरो विषयवेगी निरुभ्याशु गलं तथा ।

७०. शतच्छोकानन्तरम्—

शिरोविनाराः

इत्यधिक. पाठः (क.) पुस्तके ।

त्रिरात्राज्जीवितं हन्ति शङ्खको नाम नामतः ॥७२॥

बुद्धाः बुधित भयेवा बुधित हुए, रक्तपित्त रक्त. पित्त  
रक्त, पित्त, बलिकाः अने राधु और राधु, शङ्खको नाम-  
देशभा शंखस्थानमें, विमूर्च्छिताः ५२२५२ भगीने  
मिथित होकर, तीव्ररुक् तीव्र पीडा तीव्र दर्द, दाहणम्  
दाह अने रक्षाक्षणा दाह और रक्तमायुक्त, दाहणम्  
क्षमंकर भयानक, शोकम् मोक्षे शोकको, कुर्वन्ति हि  
उत्पन्न करे छे उत्पन्न करते हैं, विषयम् वेगी विषय  
वेगी वेगवानो। विषके समान वेगवाना सः शङ्खकः ते  
शंखक वह शङ्खक, नामतः नामने। मोक्षे नामका  
शोक, शिरः मस्तक शिर, गलम् तथा भगाने तथा  
गलेको, जाशु पुरत पुरत निदध्य दुधी रोककर.  
त्रिरात्रात् त्रयु रातभा तीन दिनोंमें, जीवितम् अचितने।  
प्राणोंका, हन्ति नाम अन्त्य नाश करे छे नश्वर नाश  
कर देता है ॥ ७१-७२ ॥

71-72. When the vitiated blood, pitta and vata combine together and affect the temple region, they will cause an acute and fulminating condition attended with severe pain, burning, redness and swelling. Spreading rapidly like an acute poison, it causes obstruction in the head and throat, and kills the patient in three days. This disease is called by the name of Shankhaka or facial cellulitis.

परं ज्यहाज्जीवति चेत् प्रत्याख्याय चरेत् किनाम् ।  
शिरोविरेकसेकादि सर्वे वीत्सर्पनुष बत् ॥७३॥

७१. त्रिरात्राज्जीवितं हन्ति शङ्खको नाम नामतः—शङ्खको-  
नियः शिरः शिराज्जीवति मानवम् (५.)

७२. नाम नामतः—नामतः परम् (५ ५)

७३. एतच्छोकानन्तरम्—

अर्थाभेदकः

अत्यधिकः पाठः (क.) पुस्तके ।

७४. परं ज्यहाज्जीवति चेत् प्रत्याख्याय चरेत् किनाम्—कीने  
आहंवेष्टैकम् प्रत्याख्याय समचरेत् (५-५)  
७५. —ज्यहा जीवति ज्यहा प्रत्याख्याय चरेत् (५.)  
७६. —जीवेत् आहंवेष्टैकम् प्रत्याख्याय समचरेत् (५.)



अथहात् त्रयं दिवसश्चैतन् तीन दिवसे, परम् अधिक  
अधिक, जीवति चेत् २०५ते। रहे तो। पक्षु जीता रहे तो  
भी, प्रत्याख्याय असाध्य छे औम उछी असाध्य छे  
ऐसा कह कर, क्रियायु जिडित्सा चिकित्सा, हपाचरेत्  
करवी करे, शिरोविरेक- शिरोविरेचन शिरोविरेचन,  
सेकादि परिषेक वगेरे परिषेचन आदि, वीसर्पणम् च  
तथा विसर्प मृदाजनार और विसर्पनाशक यत् च  
ने पक्षु कर्म होय जो भी कर्म हो, सर्वम् ते सधुणुं  
प्रशस्त छे वह सब प्रशस्त है ॥७३॥

73. If the patient survives the three  
critical days, the physician, after  
making it known that treatment may  
not yet be efficacious should admini-  
ster errhines, affusions, such other  
medications, as are indicated in acute  
spreading affections.

अर्धावमेदकस्य निदानलक्षणचिकित्सितानि—

कक्षात्यध्वशनात् पूर्ववातावध्यायमैथुनैः ।  
वेगसंधारणायासव्यायामैः कुपितोऽनिलः ॥७३॥  
केवलः सकफो वाऽर्धं गृहीत्वा शिरसस्ततः ।  
मन्याभ्रशङ्कुकर्णाशिललाटाधैस्तिवेदनाम् ॥७४॥  
शङ्खारणिनिभां कुर्यात्तीव्रां सोऽर्धावमेदकः ।  
नयनं वाऽथवा श्रोत्रमतिवृद्धो विनाशयेत् ॥७५॥  
कक्ष- ३३ भोजन कक्ष भोजन, अति- अतिभोजन

७४. कक्षात्यध्वशनात् पूर्ववातावध्यायमैथुनैः—कक्षात्यध्व-  
यनप्राववातैश्चास्य मैथुनैः (ब.)  
—कक्षात्यध्वशनात् प्राग्वा-  
तस्य च सेवनात् (घ.)

कुपितोऽनिलः—कुपितो गुणम् (द फ.)

७५. वाऽर्धं गृहीत्वा शिरसस्ततः—वापि गृहीत्वाऽर्धशिरोबली (घ.)  
—अपि गृहीत्वाऽर्ध- शिरोबली  
(त. ब फ.)

कक्षाटाधैस्तिवेदनाम्—कक्षाटाधै च वेदनाय (घ.)

ततः—अनिलः (द. फ.)

७६. शङ्खारणिनिभां—शङ्खारणिनिभां (ब. द.)  
नयनं वाऽथवा—श्रोत्रं वाऽथवा (घ.)

अतिभोजन, अध्यशनात् अध्यशन, अध्यशन, पूर्ववात-  
पूर्ववात पूर्ववात, अवध्याय- आकण ओस, मैथुनैः  
मैथुन मैथुन, वेगसंधारण- वेगसंधारण निरोध वेगोको  
रोकना, व्यायाम- परिश्रम परिश्रम, व्यायामैः अने  
व्यायाम औमौमी और व्यायाम इनसे, कुपितः कुपित  
अधैष्टो कुपित, अनिलः वायु वायु, केवलः औक्यो  
अकेला, सकफः वा अथवा उर्ध्व अक्षित अर्ध या कफके  
साथ मिलकर, शिरसः भागानां शिरके, अर्धम् अर्ध  
भागने आवे भागको, गृहीत्वा आदी कर्ध प्रकट कर,  
ततः पछी पीछे, मन्याभ्र मन्या, भ्रमर मन्या, भ्र,  
शङ्कुकर्ण शंभ, कानं शङ्ख, कान, शङ्खि आभ आब,  
लाटाधै अरधा भागानां आवे माथेमें, शङ्खारणि-  
शंभ तथा शङ्खमन्यन शङ्ख और अरणिमन्यनके,  
निभाम् नेवी समान, तीव्राम् तीव्र तीव्र, अतिवेदनाम्  
अतिशय वेदना अत्यन्त वेदनाको, कुर्यात् करे छे करता है,  
सः ते वह, अर्धावमेदकः अर्धावमेदक उहेनाथ छे  
अर्धावमेदक कहाता है, अतिवृद्धः आ अतिशय वृद्धि  
पायी यह बहुत बढ़कर, नयनम् वा आभ आब,  
अथवा छे वा, श्रोत्रम् कानको कानका, विनाशयेत्  
विनाश करे छे नाश कर देता है ॥ ७४-७६ ॥

74-76 The vaia, getting provoked by  
addiction to dry articles or excess diet or  
eating on a loaded stomach, by easterly  
winds, fog, excessive sexual indulgence,  
suppression of natural urges, strain  
or over exertion, either alone or in  
combination with kapha, seizes the one  
half of the head and causes acute  
neuralgic pain in the sides of the neck,  
eyebrow, temple ear, eye or forehead of  
one side. This pain is very agonizing  
like that caused by a churning rod or  
(red hot needle). This disease is  
called Ardhavabhedaka or hemicrania.  
If the condition becomes aggravated,  
it may even impair the functions of the  
eye and ear.



ચતુઃસ્નેહોત્તમા માત્રા શિરઃકાયવિરેચનમ્ ।

નાડીસ્વેદો વૃત્તં જીર્ણં વસ્તિકર્માનુવાસનમ્ ॥૭૭॥

ઉપનાદઃ શિરોવસ્તિર્દહનં ચાત્ર શસ્યતે ।

પ્રતિશ્યાયે શિરોરોગે યદ્વોદિષ્ટં ચિકિત્સિતમ્ ॥૭૮॥

ચતુઃસ્નેહ-ઉત્તમા આરે સ્નેહોત્તમી ઉત્તમ વારો સ્નેહોત્તમી ઉત્તમ, માત્રા- માત્રા માત્રા, શિરઃકાય- વિરેચનમ્ શિરોવિરેચન, કાયવિરેચન શિરોવિરેચન, કાય- વિરેચન, નાડીસ્વેદઃ નાડીસ્વેદ નાડીસ્વેદ, જીર્ણમ્ જીર્ણ પુરાના, વૃત્તમ્ ધી વૃત્ત, વસ્તિકર્મ- વસ્તિકર્મ વસ્તિકર્મ, અનુ- વાસનમ્ અનુવાસન અનુવાસન, ઉપનાદઃ ઉપનાદઃ ઉપનાદ, શિરોવસ્તિઃ શિરોવસ્તિ શિરોવસ્તિ, દહનમ્ ડામ દેવા દાદ કરના, પ્રતિશ્યાયે અને સુષોષમ્ ઓર પ્રતિશ્યાય, શિરોરોગે- તથા શિરોરોગમાં તથા શિરો- રોગમે, યદ્ વે જો, ચિકિત્સિતમ્ ચિકિત્સા ચિકિત્સા રહિતમ્ અતાવી છે તે પણ કહી છે વહ સી, જત્ર અહીં યહાં, શસ્યતે પ્રશસ્ત છે ઉત્તમ છે ॥૭૭ ૭૮॥

77-78. The maximum doses of the tetrad of unctuous preparations, the purification of the head and body, steam-kettle sudation, injection of old ghee, unctuous and evacuative enemas, poultices and unctuous head-packs and cauterization are recommended in this condition, as also is whatever, prescribed in coryza and diseases of the head.

સૂર્યાવર્તકસ્ય નિદાનલક્ષણચિકિત્સિતાનિ—

સન્ધારણાદજીર્ણધૈર્મસ્તિક્કં રક્તમારુતૌ ।

બુઘૌ દુષ્યતસ્તચ્ચ બુઘં તામ્યાં વિમૂર્ચિતમ્ ॥૭૯॥

સૂર્યોદયેઽશુર્સતાપાદ્દિવં વિશ્યન્દતે શનૈઃ ।

તતો દિને શિરઃશૂલં દિનવૃદ્ધિઃ વિવર્ધતે ॥૮૦॥

દિનશ્ચયે તતઃ સ્થાને મસ્તિક્કે સંપ્રશામ્યતિ ।

સૂર્યાવર્તઃ સ તત્ર સ્યાત્

૮૦. દ્રવં-દુઃખં (ક ડ.)

,, દ્રવં વિશ્યન્દતે શનૈઃ-રક્તં વિશ્યન્દતે શનૈઃ (ખ.)

૮૦કૃ. તત્ર સ્થાત-પ્રવ સ્થાત (ચ)

સન્ધારણાદ વેગે રેકવાધી વેગોકે રેકવેગે, જીર્ણધૈઃ અશુભં વેગેથી અજીર્ણ આદિયે, બુઘો- દુષિત અથેલા દુષિત, રક્તમારુતૌ- રક્ત તથા વાયુ રક્ત તથા વાયુ, મસ્તિક્કમ્ મસ્તિક્કને મસ્તિક્કકો, દુષ્યતઃ દુષિત કહે છે દુષિત કરતે છે, બુઘમ્ વત્ર ચ અને દુષિત અથેલું તે ઓર દુષિત દુઃખા વદ, તામ્યામ્ તે બનેથી રક્ત ઓર વાયુયે, વિમૂર્ચિતમ્ સંસર્ગ પામીને મિલકર, સૂર્યોદયે સૂર્યાના ઉદય વખતે સૂર્યોદયકે સમય, અંશુસંતાપાદ કિરણની ખરમીયે, કિરણોક્તિ મયોસ, શનૈઃ ધીમે ધીમે ધીરે ધીરે, દ્રવમ્ દન બની દ્રવ વનકર, વિશ્યન્દતે- વહે છે વહતા છે, તતઃ ત્યારે તત્ર, દિને દિનમે દિનકે સમય, દિનવૃદ્ધિઃ દિવસના વધવાની સાથે દિનકે વધતેકે સાથ, શિરઃશૂલમ્ માથાનું શૂલ શિરકી પીડા સી, વિવર્ધતે- વધતું આવે છે વધતી જાતી છે, દિનશ્ચયે દિવસ ધીલુ થતાં દિનકે શિપનેકે સમય, તતઃ ત્યારે તત્ર મસ્તિક્કે મસ્તિક્ક મસ્તિક્કકે, સ્થાને ધટ્ટ થવા લાગતાં ઘટ્ટ વનનેકે, સંપ્રશામ્યતિ શાંત થાય છે શાન્ત હો જાતી છે, તત્ર ત્યારે તત્ર, સઃ તે વદ, સૂર્યાવર્તઃ સૂર્યાવર્ત સૂર્યાવર્ત, સ્થાત્ કહેવાય છે કહા જાતા છે ॥ ૭૯-૮૦કૃ ॥

79-80<sup>k</sup>. The blood and the vata getting vitiated by the suppression of natural urges, indigestion and similar factors, in turn vitiate the brain. The brain, thus vitiated, combining with the vitiated humors, causes the following disorders. After sunrise, the morbid matter gets liquified by the sun-heat and begins to flow out gradually; and as the day advances the headache continues to increase; and after the sun begins to go down the liquid gets congealed in the head and the pain ceases. This disease is called Suryavarta, a variety of neuralgia.

सर्पिसौत्तरभक्तिकम् ॥८१॥

शिरःकायविरेकौ च मूर्ध्ना त्रिखेहधारणम् ।

जाङ्गलैरुपनाहञ्च घृतक्षीरैश्च सेचनम् ॥८२॥

बहिर्निक्षिपितलावादिशृतक्षीरोत्थितं घृतम् ।

स्यान्नावनं जीवनीयक्षीराद्यगुणसाञ्चितम् ॥८३॥

औत्तरभक्तिकम् अर्था उपर भोजनके ऊपर, सर्पिः  
धीनुं पान घृतपान, शिरःकाय-विरेकौ च शिरो-  
विरेचन, कामविरेचन शिरोविरेचन, कायविरेचन,  
मूर्ध्ना अर्था पर शिर पर, त्रिखेह- अर्था स्नेहनुं तीन  
स्नेहोंका, धारणम् च धारण धारण करना, जाङ्गलैः  
जंगल भोजनो जांगल मांसका, उपनाहः च उपनाह  
शिरमें उपनाह, घृतक्षीरैः घी अने दूधनुं घी और  
दूधसे शिर पर, सेचनम् च परिषेचन परिषेक, बहि-  
र्भार मोर, निक्षिपि- तेतर तीतर, लावादि- अने लाव  
वज्रेना भक्षित स्यात् लाव आदिके मांससे, शृतक्षीर-  
उत्थिते दूधमांसी पकाये दूधसे, उत्थितम् उठेला निकाले,  
घृतम् घीने घीको, जीवनीय- अर्था जीवनीय अर्था जीवनीय  
जीवनीय गणके कल्कसे, क्षीर-अद्यगुण आद्यगुण। दूधमां  
आद्यगुणे दूधमें, साञ्चितम् सिद्ध करीने सिद्ध करके,  
नावनम् नश्य नश्य, खाव करानुं देना चाहिए  
॥ ८१-८३ ॥

81-83. The treatment of this condi-  
tion is by post prandial potion of ghee,  
purification of the head and body,  
head packs with the triad of un-  
ctuous articles, poultices with the  
flesh of jangala animals, affusions with  
ghee and milk and nasal medications  
with ghee extracted from the milk  
prepared with the flesh of peacock,  
partridge, quail or other game birds,

८२. त्रिखेहधारणम्-स्नेहधारणम् (स.)

८१. स्नेहधारणम् (घ.)

८३. सेचनम्-नावनम् (घ.)

८३. घृतक्षीरानन्तरम्—

अनन्तवातः

इत्यधिकः पाठः (क.) दुर्लभः ।

prepared again in eight times its  
quantity of milk along with the paste of  
the drugs of the life-promoter group.

अनन्तवातस्य निदानलक्षणचिकित्सतानि—

(उपवासातिशोकातिरूक्षशीताल्पभोजनैः।)

दुष्टा दोषास्त्रयो मन्वापश्चादादासु वेदनाम् ॥८४॥

तीवां कुर्वन्ति सा चाक्षिभ्रूशङ्खेष्ववतिष्ठते ।

स्पन्दनं गण्डपार्श्वस्य नेत्ररोगं हनुग्रहम् ॥८५॥

सोऽनन्तवातस्तं हन्यात् सिरार्कावर्तनाशनैः ।

उपवास- उपवास उपवास, अतिशोक- अतिशोक  
अतिशोक, अतिरूक्ष- अतिरूक्ष अतिरूक्ष, शीत-अल्प  
शीत तेमन् अल्प शीत एवं अल्प, भोजनैः भोजनभी  
भोजनोसे, दुष्टाः दूषित अथेला दूषित दूष, त्रयः दोषाः  
त्रये दोषो तीन दोष, मन्वा-पश्चाद- मन्वा, पीत मन्वा,  
पीठ, घाटासु तथा घाटा (गर्दन)मां और घाटामें,  
तीव्राम् तीव्र तीव्र वेदनाम् वेदना वेदना, कुर्वन्ति करे  
छे करते हैं, सा च अने ते वेदना और वह वेदना,  
अक्षि-भ्रू आंख, आभर आंख, भ्रू, शङ्खेषु तथा शंखमां  
और शंखमें, अवतिष्ठते आवी रहे छे स्थिर रहती है,  
गण्डपार्श्वस्य दूषित अथेला ते दोषो अर्द्धयणीना पद-  
णेना आगुं गण्डके पार्श्वमें, स्पन्दनम् इरकुं स्पन्दन,  
नेत्ररोगम् नेत्ररोग नेत्ररोग, हनुग्रहम् तथा हनुग्रह  
करे छे और हनुग्रह करते हैं, सः ते वह, अनन्तवातः  
अनन्त वात छे अनन्त वात है, तम् तेने उसे, सिरा-  
सिरामोक्षसु सिरामोक्षण, अर्कावर्त- अने सूर्यावर्तने  
और सूर्यावर्तको, नाशनैः नष्ट करनार औरपेयी नष्ट  
करनेवाली औषधियोंसे, हन्यात् भटाउवे दूर करे ॥८४-८५॥

84-85. All the three humors, when  
provoked by fasting, excessive grief  
or by taking very dry, old and

८४. पश्चादादासु वेदनाम्-पश्चादादे दु वेदनाम् (घ.)

८४. मन्वापश्चादादासु-मन्वा पश्चादादासु (घ.)

८५. सा चाक्षि-नासाक्षि (घ. व.)

८५. सा चाक्षिभ्रूशङ्खेषु-नासाक्षिभ्रूशङ्खेषु (घ. क.)

८५. सिरार्कावर्तनाशनैः-सिरार्कावर्तनाशनैः (ख.)

scanty articles of food, cause acute neuralgic pain in the sides and the nape of the neck; then the pain becomes localized in the eye, the eye brow and temple and causes throbbing of the cheeks and the sides of the face, disorders of the eyes and trismus. This condition is called Anantavata or tic douloureux (major trigeminal neuralgia). It can be cured by venisection and by the treatment indicated in Suryavarta.

शिरःकम्पस्य निदानलक्षणचिकित्सानि —

वातो रूक्षादिभिः क्रुद्धः शिरःकम्पमुदीरयेत् ॥८६॥

तन्नामृताबलाराक्षामहाश्वेताश्वगन्धकैः ।

स्नेहस्वेदादि वातघ्नं शस्तं नस्यं च तर्पणम् ॥८७॥

रूक्षादिभिः ३३ वज्रे हेतुशैथिली रूक्ष आदि हेतुओंसे, क्रुद्धः कुपित भयेद्ये। कुपित हुआ, वातः वायु वायु, शिरःकम्पम् भाभाभां कम्प शिरमें कम्प, उदीरयेत् उदर्यन करे छे उत्पन्न करता है, तन्ना तेभां उसमें, अमृता- भणो गिलोय, बला-राक्षाम- गन्ध, राक्षाम बला, राक्षाम, महाश्वेता भद्राश्वेता महाश्वेता, अश्वगन्धकैः अने अश्वगन्धकै और अश्वगन्धासे, वातघ्नं वात- नाशक वातनाशक, स्नेहस्वेदादि स्नेह अने स्वेदः वज्रे स्नेह स्वेदादि, नस्यम् नस्य नस्य, तर्पणम् च तथा तर्पण एवं तर्पण, शस्तं प्रशस्त छे प्रशस्त है ॥ ८६-८७ ॥

86-87. The vata, getting vitiated by dry diet and similar factors causes shaking of the head (shaking palsy). In this condition, oleation, sudation etc, and demulcent nasal medication prepared with guduch, sida, indian groundsel, white siris, and

winter cherry, which are curative of vata are recommended.

नस्तःकर्मगुणाः —

नस्तःकर्म च कुर्वीत क्षिरोरोगेषु शास्त्रवित् ।

द्वारं हि क्षिरसो नाम्ना तेन तद् व्याप्य हन्ति तान् ८८

शास्त्रवित् ३.३३ अश्वगन्धकै, शास्त्रवेत्ता, क्षिरो- रोगेषु क्षिरोरोगभां क्षिरोरोगोंमें, नस्तःकर्म नस्तःकर्म नस्यकर्म, कुर्वीत करे छे करे, हि द्वारं छे क्योकि, नाम्ना नाक नाक, क्षिरसः भस्तःक्षु क्षिरका, द्वारं द्वार छे द्वार है, तेन तद् ते भागे ते नस्य उससे करिये वह नस्य व्याप्य क्षिरभां व्याप्यने क्षिरमें व्याप्त होकर, तान् हन्ति तेभांने हल्ले छे उन रोगोंको नष्ट करता है ॥ ८८ ॥

88. The expert physician should administer the nasal therapy in the diseases of the head, as the nose is the gateway of the head, the medications given through the nose pervade everywhere in the head and allay head-diseases.

नस्यकर्मभेदाः —

नावनं चावपीड्य ध्मापनं धूम एव च ।

प्रतिमर्शश्च विज्ञेयं नस्तःकर्म तु पञ्चधा ॥८९॥

नस्तःकर्म तु नस्य कर्म तो। नस्य कर्म तो, नाव- नम् नावन नावन, आवपीड्य च आवपीड्य आवपीड्य, ध्मापनम् ध्मापन ध्मापन, धूमः च धूम धूम धूम, प्रतिमर्शः च प्रतिमर्श और प्रतिमर्श, पञ्चधा अने पांच प्रकारों इव तरह पांच प्रकारका, विज्ञेयम् अज्ञेयं अज्ञेयं जानना चाहिए ॥ ८९ ॥

89. The nasal therapy, it should be known, comprises the five procedures

८८ शास्त्रवित्-सक्षमवित् (च ३.)

“एतच्छ्लोकानन्तरम्-नस्तःकर्मभेदाः

इत्यधिकः पाठः (क.) पुस्तके ।

of inunction, nasal drops, insufflation, inhalation and application.

એહનં શોધનં ચૈવ દ્વિવિધં નાવનં સ્મૃતમ્ ।  
શોધનઃ સ્તમ્ભનશ્ચ સ્યાદવપીડો દ્વિધા મતઃ ॥૧૦॥

નાવનમ્ નાવન નાવન, સ્નેહનમ્ સ્નેહ સ્નેહ, શોધનમ્ ચ એવ અને શોધન ઓર શોધન, દ્વિવિધમ્ એમ એ પ્રકારનું' હવ તરફ દો પ્રકારકા, સ્મૃતમ્ કહ્યું છે કહા છે, અવપીડઃ અને અવપીડ ઓર અવપીડ, શોધનઃ શોધન શોધન, સ્તમ્ભનઃ ચ અને સ્તમ્ભન ઓર સ્તમ્ભન, દ્વિધા મતઃ સ્યાદ એમ એ પ્રકારનો માનેલ છે હવ તરફ દો પ્રકારકા માના છે ॥ ૧૦ ॥

90. Nasal inunction is said to have two actions viz, oleation and purification. The nasal drops are said to have two actions purificatory and astringent.

चूर्णस्याध्मापनं तद्धि देहलोतोविशोधनम् ।  
विज्ञेयस्त्रिविधो धूमः प्रागुक्तः शमनादिकः ॥११॥  
प्रतिमर्शो भवेत् क्षेप्तो निर्दोष उभयार्थकृत् ।  
एवं तद्वेचनं कर्म तर्पणं शमनं त्रिधा ॥१२॥

ચૂર્ણ એ ચૂર્ણનું જો ચૂર્ણકા, આધ્માપનમ્ આધ્માપન છે આધ્માપન છે, તદ્દિ તે વદ્, દેહલોતઃ-દેહના ઓતેનું' દેહકે લોતોનો, વિજ્ઞોધનમ્ શોધન કરનાર છે વિશુદ્ધ કરનેવાળા છે, પ્રાગુક્તઃ અમાઉ કહેવામાં આવેલો પૂર્વ કહા ગયા, ધૂમઃ ધૂમ ધૂમ, શમનાદિકઃ શમનાદિક શમનાદિક, ત્રિવિધઃ ત્રણ પ્રકારનો. ત્રણ પ્રકારકા, વિજ્ઞેયઃ બાલુલો જાનના વાહિય, ઉભયાર્થકૃત્ સ્નેહન તથા શોધન બન્ને કામ કરનાર સ્નેહન તથા શોધન બંને કાર્ય કરનેવાળા, નિર્દોષઃ દોષરહિત દોષરહિત, એહઃ સ્નેહ સ્નેહ, પ્રતિમર્શઃ પ્રતિમર્શ

૧૦. મતઃ-વ મઃ (ધ.)

૧૧. તદ્દિ દેહલોતો-નામ દેહલેપ (ત.)

„ દેહલોતોવિશોધનમ્-દેહલેપવિશોધનમ્ (ધ, ક.)

„ ત્રિધા-ત્રિધા (ધ)

પ્રતિમર્શ, સવેદ છે છે, એવમ્ આ પ્રમાણે હવ પ્રકાર, તદ્ કર્મ તે કર્મ' યદ્ નસ્યકર્મ, રેચનમ્ રેચન રેચન, તર્પણમ્ તર્પણ તર્પણ, શમનમ્ અને શમન ઓર શમન, ત્રિધા એમ ત્રણ પ્રકારનું' છે હવ તરફ ત્રણ પ્રકારકા છે ॥ ૧૧-૧૨ ॥

91-92. And the insufflation of powder brings about the purification of the nasal passages. Inhalation should be known to be of the threefold method such as sedative etc., as previously described. Application is made of unctuous substance which is harmless in use and which serves both the purposes of oleation and purification. Thus these procedures may be classified into three groups, viz purification, impletion and sedation.

नस्यकर्मविषया रोगाः —

સ્તમ્ભસુષ્ણિગુહત્વાદ્યાઃ શ્લેષ્મિકા યે શિરોગદાઃ ।  
શિરોચિરેચનં તેષુ નસ્તઃકર્મ પ્રશસ્યતે ॥૧૩॥

એ એ જો, સ્તમ્ભ-સુષ્ણિ-સ્તમ્ભ, સ્પર્શોચાન સ્તમ્ભ, સુષ્ણિ, ગુહત્વ-ભારેપણું' ગૌરવ આદ્યાઃ વગેરે આદિ, શ્લેષ્મિકાઃ કફજન્ય કફજન્ય, શિરોગદાઃ શિરોગદા છે શિરોરોગ છે, તેષુ તેમાં' એમાં, શિરોચિરેચનમ્ શિરોચિરેચનમ્ ૧૫ શિરોચિરેચનરૂપ. નસ્તઃકર્મ નસ્યકર્મ નસ્ય કર્મ, પ્રશસ્યતે પ્રશસ્ત છે પ્રશસ્ત છે ॥ ૧૩ ॥

93. Nasal medications for the purpose of purification of the head are recommended in stiffness, numbness, heaviness and similar diseases of the head, arising from morbid kapha.

ये च वातात्मका रोगाः शिरःकम्पादितादयः ।  
शिरसस्तर्पणं तेषु नस्तःकर्म प्रशस्यते ॥१४॥

૧૩. શિરોચિરેચનં-શિરસો રેચનં (ધ.)

„ નસ્તઃકર્મ પ્રશસ્યતે-નસ્તઃ કાર્ય પ્રશસ્યતે (ધ.)

૧૪. પ્રશસ્યતે-પ્રચક્ષતે (ધ.)

ये च जे जो, क्षिरःकम्प- माथानो क'प शिरका  
कम्प, अर्दित- तथा आर्दित अर्दित, आदयः वजेरे  
आदि, वातात्मकाः वातप्रधान वातप्रधान, रोगाः  
शोभा छे शिरोरोग हैं, तेषु तेभ्योभा उनमें, क्षिरसख-  
पणम् भरतकना त'प'क्ष'प शिरका तर्पणरूप, नस्तः-  
कर्म नस्तकर्म नस्तकर्म, प्रशस्यते प्रशस्त छे प्रशस्त  
है ॥१४॥

94. Demulcent nasal medication for the purpose of soothing the head is recommended in shaking palsy, facial palsy and other disorders born of vata.

रक्तपित्तादिरोगेषु शमनं नस्यमिष्यते ।

॥मापनं धूमपानं च तथा योग्येषु शस्यते ॥१५॥  
(दोषादिकं समीक्ष्यैव भिषक् सम्यक् च कारयेत्)

रक्तपित्तादि- रक्तपित्त वजरे रक्तपित्तादि, रोगेषु  
 रोगोर्मा रोगोर्मै, ज्वरमन् शमन ज्वरमन्, नखम् नखम्  
 नख, इत्येते धृष्टे इष्ट है, तथा अने और, ज्वरमन्  
 प्रथमन् प्रथमन्, धूमपानम् च तथा धूमपान तथा धूमपान,  
 योग्येषु औद्योग्ये औद्योग्य रोगोर्मा इनके योग्य रोगोर्मा  
 लिए, ज्वरमन् प्रथमन् छे प्रथम है, निवृत्त वेष्टे वेष्टे,  
 दोषादिकम् दोषादिकम् दोषादिको, समीक्ष्य परीक्षा  
 करीने देखकर, एवं न हि, सम्यक् सारी रीति सम्यक्  
 प्रकारसे, कारयेत् नख करीवत् नखका प्रयोग  
 करे ॥ १५ ॥

95. The sedative nasal medication is recommended in hemothermia and similar conditions. Insufflation and smoking are recommended in required conditions. (On fully investigating the morbidity etc., the physician should carry out the treatment as indicated).

विरेचनं तर्पणं च नश्यम्—

फलादिमेषजं प्रोक्तं शिरसो यद्विरेचनम् । १६॥

तच्चूर्णं कल्पयेत्तेन पश्येत् स्नेहं विरेचनम् ।

यदुक्तं मधुरस्कन्धे मेषजं तेन तर्पणम् ॥९७॥

साधयित्वा भिषक् खेहं नस्तः कुर्याद्विधानवित् ।

यत् नो जा, फलादिमेवञ्चम् इण पत्रे ओषधि  
फलादि औषध शिरसः भस्तकना शिरके, विरेचनम्  
विरेचन भाटे विरेचनके लिर, प्रोक्त्वा क्त्वां छे कहे हैं,  
तत् चूर्णम् तेनाऽनं यूसुं उनका चूर्ण, ककरवेत् अन.चुं  
बनाये, तेन तेनाथीं उनसे, विरेचनम् शिरोविरेचन-  
३५ शिरोविरेचनरूप, स्नेहम् स्नेह स्नेह यवेत् पञ्चपत्र  
पकावे, मधुरस्कन्धे अने मधुरस्केधमा और मधुर-  
स्कन्धमें, यत् मेवञ्चम् नो औषध जो औषध, कक्त्वा  
छेहेल छे कही है. तेन स्नेहम् तेनाथीं स्नेह उनसे स्नेह  
सावयित्वा सिद्ध करीने सिद्ध करके, विषावयित्वा  
निधिने अलुनः२ विधिको जाननेवाला, विषक- पद्वे कैव,  
तर्पणम् तर्पण तर्पणकारक. नस्तः कुर्वात नस्तकर्म करवुं  
नस्तकर्म करे ॥१६-१७॥

96-97½ The physician may prepare errhine-powder from the various drugs described as errhine drugs. The unctuous purificatory errhine-medication may be prepared from this powder and the unctuous demulcent nasal medications may be prepared from the drugs of the sweet group described previously. With the medications thus prepared, the specialist should carry out the nasal therapy.

**अवपीडनस्य दानविधिः—**

प्राक्सूर्ये मध्यसूर्ये वा प्राकृतावश्यकस्य च ॥९८॥

उत्तानस्य शयानस्य शयने स्वास्तुते सुखम् ।

९. अस्मदन्ताम्—

वस्तुः कर्मणिभिः

इत्यधिकः पाठः (ब.) पुस्तके ।

१८. प्राकृतावशङ्कस्य च--कुर्वीताममेव च (ब. त. ब.)

प्रलम्बशिरसः किञ्चित् किञ्चित् पादोन्नतस्य च ९९  
दद्यान्नासापुटे स्नेहं तर्पणं बुद्धिमान् भिषक् ।

प्राक् अभाउथी पहले, कृतावश्यकस्य जेले भक्ष-  
त्माज्यादि आवश्यक कर्म करी दीयेवां छे जेवा  
आवश्यक कार्यको करके, स्वास्तुने सारी रीते  
निभावेछे अच्छे प्रकार बिछे, ज्ञयने च शय्यामां  
विस्तर पर, सुखम् सुभूपूर्वकं सुखपूर्वक, उत्तानस्य यत्ता  
चित्, ज्ञयानस्य सदैव लेटे हुए, किञ्चित् ऊँचक कुठ,  
प्रलम्बशिरसः माथुं छटकतुं राधेछ शिरको लटकाये  
हुए, किञ्चित् ऊँचक और कुठ, पादोन्नतस्य च पञ्च  
जोया राधेछ मनुष्यने पैरोंको ऊँचा किये हुए मनुष्यके,  
नासापुटे नस्रकारांमां नासारंघमें बुद्धिमान् बुद्धिमान्  
बुद्धिमान्, भिषक् वैद्ये वैद्य, प्राक्सूर्ये सूर्योदयना कालमां-  
सूर्योदयके कालमें, मध्यसूर्ये वा अथवा मध्याह्ने  
अथवा मध्याह्नमें, तर्पणम् तर्पणं तर्पण, स्नेहम् स्नेह  
स्नेहको, दद्यात् देवे देवे ॥ ९८-९९३ ॥

98-99. The intelligent physician should administer the demulcent nasal medications, either in the morning or in the noon, to the patient who has previously attended to the necessary acts of ablution and has been made to lie at his ease in the supine position on a well-spread couch, with his head hanging down slightly and the feet slightly raised.

अनवाक्शिरसो नस्यं न शिरः प्रतिपद्यते ॥१००॥  
अत्यवाक्शिरसो नस्यं मस्तुलुङ्गेऽवतिष्ठति ।  
अत एव शयानस्य शुद्ध्यर्थं स्वेदयेच्छिरः ॥१०१॥  
संस्वेद्य नासामुन्नम्य वामेनाङ्गुष्ठपर्वणा ।  
हस्तेन दक्षिणेनाथ कुर्यादुभयतः समम् ॥१०२॥  
प्रणाख्या पिचुना वाऽपि नस्तः स्नेहं यथाविधि ।

१०१. मस्तुलुङ्गेऽवतिष्ठति-मस्तुलुङ्गे च तिष्ठति (व. ब.)

१०२. नासामुन्नम्य-नासामुन्नम्य (व. ब.)

१. प्रणाख्या-प्रणाख्या (व.)

अनवाक् शिरसः शिरने नीयुं राध्या पञ्च  
शिरको नीचे किये बिना, नस्यम् नस्य नस्य, शिरः  
माथाभां शिरमें, न प्रतिपद्यते-पड़ोयतुं नहीं नहीं  
पहुँचता, अत्यवाक् शिरसः जेले शिरने जड़ुय नीयुं  
राधेछ होय तेने शिरको अधिक नीचा रखनेवालेको,  
नस्यम् नस्य नस्य, मस्तुलुङ्गे-मस्तिष्कमां मस्तिष्कमें,  
अवतिष्ठति-बसति अथ छे ठहर जाता है, अतः माटे  
इस लिए, एवं शयानस्य उपर उठा। अभावे सतेछ  
यथोक्त प्रकारसे लेटे हुएके, शिरः भरतकतुं शिरको,  
शुद्ध्यर्थम् शुद्धि माटे शुद्धिके लिए, यथाविधि-विधि  
अनुसार विधि अनुसार, स्वेदयेत् स्वेदन करतुं स्वेदन  
करे, संस्वेद्य स्वेदन करीने स्वेदन करके, वामेन अथा  
बाये, अङ्गुष्ठपर्वणा-अङ्गुष्ठाना आगला वेदाथी अङ्गुष्ठके  
अग्रपर्वसे, नासाम् नाकेने नाकको, उन्नम्य अथ ऊँचुं  
करी पछी ऊँचा करके पश्चात्, दक्षिणेन-अथवा  
दाहिने, हस्तेन हाथ वडे हाथसे, प्रणाख्या-प्रणुडीथी  
नालीसे, पिचुना वा के पूमडाथी वा फायेसे, अपि पक्ष  
सी, उभयतः अने नस्रकारांमां दोनों नथुनोंमें, समम्  
ऐक समान एक समान ही, कुर्यात् स्नेह देवे स्नेह  
देवे ॥ १००-१०२ ॥

100-102. If the head is not lowered at all, the nasal medication does not reach the desired destination; if, on the other hand it is lowered too much, there is the danger of the medication getting lodged in the brain; hence the patient should be made to assume the position described, and by way of preparatory cleansing, his head should be subjected to sudation. Having carried out the sudation procedure, the physician should with the thumb of his left hand, raise the tip of the patient's nose and with the right hand he should drop, either by means of pipette or cotton swab, the sternutatory oil in equal measure in



both the nostrils in the way prescribed.

कृते च स्वेदयेद्भूय आकर्षेच्च पुनः पुनः ॥१०३॥  
तं स्नेहं श्लेष्मणा साकं तथा स्नेहो न तिष्ठति ।  
स्नेदेनोत्कृशितः श्लेष्मा नस्तः कर्मण्युपस्थितः ॥१०४॥  
भूयः स्नेहस्य शैत्येन शिरसि स्थापयते ततः ।  
श्रोत्रमन्यागलाद्येषु विकाराय स कल्पते ॥१०५॥

कृते च नस्थ आभी नावन देकर, भूयः इरीने फिर, स्नेहयेत् स्वेदन करुं स्वेदन करे, पुनः पुनः इरी इरीने बारबार, तन्म ते उस, स्नेहस् स्नेहने स्नेहको, श्लेष्मणा ऊँ कफके, साकम् सहित साथ, आकर्षेत् अहार डाढये ओषो बाहिर निकाले, तथा ते प्रभाषे करवाथी ऐसा करनेसे, स्नेहः न तिष्ठति स्नेह टकते। नथी स्नेह नहीं रहता, स्वेदन-स्वेदनथी स्वेदसे, उत्कृशितः उत्कृशित धयेक्षे। उत्कृशित, श्लेष्मा ऊँ श्लेष्मा, नस्तः कर्मणि नस्थ ऊँ भूमा नस्य कर्मणि उपस्थितः नशुक आये। होय छे पास आता है, भूयः अने पाछे और फिर, स्नेहस्य स्नेहनी स्नेहकी, शैत्येन शीतलताने धर्ध शीतलतासे, शिरसि भस्तकभा मस्तिकमें, स्थापयते धट्ठ अनी अथ छे घट्ट होजाता है, ततः तेषी ते फिर वह, श्रोत्र-कान कान, मन्या-मन्या मन्या, गलाद्येषु अला अजरेभा गले आदिमें, विकाराय विकारोने रोगोको, कल्पते करे छे उत्पन्न करता है ॥१०३-१०५॥

103-105. On completing this the patient's head should be once again subjected to sudation and the oil that has been dropped should be repeatedly drained out together with the morbid mucus, till no portion of the medicated oil is left behind. The mucus roused by the sudation and collected during

the administration of the errhine treatment, becomes congealed in the head once again, as a result of the cooling effect of the unctuous article. It then gives rise to disorders of the ear, sides of the neck throat etc.

ततो नमनः कृते धूमं पिबेत् कफविनाशनम् ।  
हिताश्रुभुङ्गिवातोष्णसेवी स्यान्नियतेन्द्रियः ॥१०६॥  
विचिरेषाऽवपीडस्य कार्यः

ततः तेषी इस लिए, नस्तः कृते नस्थ ऊँ कभा पछी नस्य कर्मके बाद, कफविनाशनम् ऊँ नस्य कर्म कफनाशक, धूमम् धूमधुं धूम, पिबेत् पान करुं पीना चाहिए, हिताश्रुभुङ्गि दितकर अथ भावुं हितकर अथवा मंजन करे, निवात-दण्ण-पवनना अथवा वज्रना अने उष्ण स्थानधुं वायुरहित और गरम स्थानका, सेवी सेवन करुं सेवन करे, नियतेन्द्रियः स्वान तथा धृति-येने नियमभां राअवी और जितेन्द्रिय रहे, अवपीडस्य अवपीडनो अवपीडकी, एषः आ वह, विधिः विधि विधि, कार्यः करवी ओर्धये करनी चाहिए ॥१०६॥

106-106½. Hence the patient should, after the errhine treatment, resort to smoking that is curative of kapha, take wholesome diet, resort to windless and warm apartments and observe sense restraint. This is the method to be employed in the administration of nasal drops.

ब्रह्मापनस्य प्रयोगविधिः, नस्यकर्मणो व्यापारः, तद्विदित्वा च—

ब्रह्मापनस्य तु ।

तत् पटकुस्वा नाख्या धमेर्ध्वं मुखेन तु ॥१०७॥  
विरिकशिरसं तूष्णं पाययित्वाऽभ्यु मोजयेत् ।

१०४. साकं तथा-साथै वसा (प.)

" " -साथै तथा (फ.)

" " -साकं तथा (क.)

" नस्तः कर्मण्युपस्थितः-नस्तः कर्मण्युपस्थितः (प.)

१०५ स्थापयते-स्थापयते पुनः (प.क.)

१०६. कफविनाशनं-कफविनाशनं (प.क.)

१०७ पटकुस्वा-पटकुस्वाऽवसा (प.)

" पटकुस्वा नाख्या " (फ.)

१०८. धूमं-धुने (त.)

" " -कृतं (प.)



लघु त्रिष्वविरुद्धं च निवातस्थमतन्द्रितः ॥१०८॥

विरेकशुद्धो दोषस्य कोपनं यस्य सेवते ।

स दोषो विचरंस्तत्र करोति स्वान् गदान् बहून् ॥१०९॥

यथास्वं विहितां तेषु क्रियां कुर्याद्विचक्षणः ।

अकालकृतजातानां रोगाणामनुरूपतः ॥११०॥

प्रथमापनस्य- प्रथमापनम्। प्रथमापनमें, तु ते। तो, पदङ्गुल्या छ अंगुली लः अंगुली, नाड्या- नखी १३ नाडीसे, तत् चूर्णम् ते चूर्णम् इस चूर्णको, तु ते। तो, मुखेन- भुभमी मुखद्वारा, अमेर इन्द्रिय फूँके विरिक्तवि- रसक शिरोविरेचन थर्ग अथा पछी रोगीने शिरोविरे- चनके बाद रोगीको, वृष्णम् अरभ गरम अम्बु- पाणी जल, पाययित्वा पित्तवीने पिलाकर, अतन्द्रितः तन्द्रा रहित वैद्य अप्रमत्त वैद्य, निवातस्थम् वायुना अपाटा पजरना स्थानम्। रोगी वायुहित स्थानमें रखकर, लघु ६६३ लघु, त्रिषु तथा त्रय दोषभांसी दोष पक्ष ओझने तीनो दोषोंमेंसे किसी सी एकको, अविरुद्धम् नहि वधार- ना ३ न बढ़ानेवाला, भोजयेत् भोजन करे। पयुं भोजन करावे, विरेकशुद्धः शिरोविरेचनथी शुद्ध अथेव शिरो- विरेचनसे शुद्ध हुआ, यस्य जे जिस, दोषस्य दोषना दोषका, कोपनम् कोपक ५०५३ कोप करनेवाला द्रव्य, सेवते सेवन करे छे सेवन करता है, सः दोषः ते दोष वह दोष, तत्र त्यां वहां, विचरन् विचरता विचरता विचरता हुआ, स्वान् पैतना अपने, बहून् बहुतसे, गदान् रोगीने रोगोंको, करोति उप- न करे छे उत्पन्न करता है, विचक्षणः विशिष्ट वैद्य चतुर वैद्य, तेषु- तेओभां उनमें, यथास्वम् ते ते दोषने अनुसार यथादोष विहितम् कहेल कही हुई, क्रियाम् चिकित्सा चिकित्सा, कुर्यात् करवी करे, अकालकृत- अकाली करैव शिरोविरेचनथी अकालमें किये हुए शिरोविरेचनसे, जातानाम् उप- न अथेव उत्पन्न हुए, रोगाणाम् रोगीनी पक्ष रोगोंकी सी, अनुरूपतः ते ते रोगीभां कहेली चिकित्सा करवी उन उन रोगमें कही हुई चिकित्सा करे ॥१०७-११०॥

107-110. As regards insufflation the powder should be blown by the

mouth through a tube six fingers- breadth in length. After the patient has been errhinated, he should be given a potion of hot water and then a light meal which is not aggra- vative of any of the three humors and should be made to remain in a windless place by the vigilant physician. If a man that has been purged of the impurities, resorts again to things causative of humoral provocation, the particular humor provoked, moving about in that region gives rise to many diseases peculiar to its nature. In these conditions the wise physician should carry out treatment as indicated; and as regards complica- tions arising from untimely nasal therapy, the line of treatment is the same as that in corresponding diseases.

अजीर्णं भोजने भुक्ते तोये पीतेऽथ दुर्दिने ।

प्रतिश्याये नवे स्नाते स्नेहपानेऽनुवासने ॥१११॥

नावनं स्नेहनं रोगान् करोति श्लेष्मिकान् बहून् ।

तत्र श्लेष्महरः सर्वस्तीक्ष्णोष्णादिविधिर्हितः ॥११२॥

अजीर्णं अशुभं अजीर्णमें, भोजने भुक्ते भोजन करी पछी भोजन करनेके बाद, अथ अने और, तोये पीते पाणी पीया पछी पानी पीनेके उपरान्त, दुर्दिने वादणीये दिवसे दुर्दिनमें, नवे नया नये, प्रतिश्याये सवेधभम् जुकाममें, स्नाते नाला पछी स्नान करनेके बाद, स्नेहपाने स्नेहपानम् स्नेहपानमें, अनुवासने अने अनुवासनम् और अनुवासनमें, स्नेहनम् स्नेहन

१११. भोजने भुक्ते-भुक्तयुक्ते च (क घ)

स्नाते स्नेहपानेऽनुवासने-स्नाने स्नेहपीतेऽनुवासिते (घ, फ.)

११२. नावनं-नराणां (व.)

स्नेहन, नावनम् नश्य, बहुन् धक्षु। बहुत, स्नेमि-  
कान् उक्षेप्य कफजन्य, रोगान् रोगो। रोगोको, करोति  
उरे छे करता है, तत्र तेभां उनमें, तीक्ष्णोष्णादिः  
तीक्ष्ण अने उष्ण वजेरे तीक्ष्ण उष्णादि, सर्वः सर्व  
सर्व, स्नेहमहरः उक्षेप्य कफहर, विधिः हितः विधि  
हितकर छे विधि हितकर है ॥ १११-११२ ॥

111-112. Unctuous nasal medication  
administered in indigestion or immedi-  
ately after meals or after-taking a draught  
of water or on a cloudy day or in  
condition of recent coryza or after a  
bath or after an unctuous pation or  
after an unctuous enema will give  
rise to various disorders of kapha.  
In such disorders, all measures curative  
of kapha, such as are acute hot, etc  
are beneficial.

क्षामे विरेचिते गर्भे व्यायामाभिहिते तृषि ।  
वातो रुक्षेण नश्येन कुक्षः स्वाजनयेद्वदान् ॥११३॥  
तत्र वातहरः सर्वो विधिः स्नेहनबृंहण ।  
स्वेदादिः, स्याद्भूतं क्षीरं गर्भिण्यास्तु विशेषतः ११४  
ज्वरशोकातितप्तानां तिमिरं मद्यपस्य तु ।  
रुक्षैः शीताजनैर्लेपैः पुटपाकैश्च साधयेत् ॥११५॥

क्षामे शुष्क देहवाणा मनुष्यभां रुक्ष मनुष्यमें,  
विरेचिते निरेथन पाभेक्ष मनुष्यभां विरेचन लिये हुए  
मनुष्यमें, गर्भे गर्भिणीभां गर्भवतीमें, व्यायामाभिहिते  
व्यायामाभ्यां अभिधात पाभेक्ष मनुष्यभां व्यायामसे  
अभिहित मनुष्यमें, तृषि तथा तृप्सा मनुष्यभां और  
प्यासवाले मनुष्यमें, रुक्षेण रुक्ष, नश्येन नश्येथी  
नश्य लेनेसे, कुक्षः वातः कुपेक्ष वायु कुपित हुआ वायु,

स्नान पोताना अपने, गदान् रोगोने रोगोको, ज्वरवेद्य  
उत्पन्न उरे छे उत्पन्न करता है, तत्र तेभां उनमें,  
स्नेहनबृंहणः स्नेहन, बृंहण, स्नेहन, बृंहण, स्वेदादिः  
स्नेहन वजेरे स्वेदादि, सर्वः सर्व सब वातहरः वातहर  
वातहर, विधिः विधि विधि, स्वाप् हितकर छे हितकर  
है, गर्भिण्याः तुः अने गर्भिणीने ती। गर्भवतीको जो,  
विशेषतः आस करीने विशेष करके, वृत्तम् वी वी,  
क्षीरम् अने दूध और दूध हितकर हैं ज्वर-शोक-  
ज्वर अने शोथभी ज्वर और शोकेसे, अतितप्तानाम्  
अतितप्त संताप पाभेक्ष मनुष्यभां अतितप्त संताप  
हुए मनुष्योंके, मद्यपस्य तथा मद्य पीनारने। निरे-  
निरेथनथी उत्पन्न भयेको और मद्य पीनेवालेके क्षिरो-  
विरेचनसे उत्पन्न हुए, तिमिरम् तिमिररोग तिमिररोगको,  
रुक्षैः रुक्ष रुक्ष, शीताजनैः तथा शीतल जननेथी  
और शीत अंजनोसे, लेपैः लेपेथी लेपोसे, पुटपाकैः  
अने पुटपाकैथी और पुटपाकोसे, साधयेत् अटाये  
मच्छा करे ॥ ११३-११५ ॥

113-115. By the administration of  
dry nasal medication in conditions of  
emaciation or after purgation or in gravid  
condition or in fatigue due to exertion  
and in thirst, the vata, getting pro-  
voked, causes disorders peculiar to its  
nature. In such conditions, all measures  
curative of vata, such as oleation  
or roborant and sudation therapies etc ,  
should be given; and in the case of  
a gravida ghee and milk should be  
specially given. The unctuous nasal  
medication causes dimness of vision in  
the case of persons greatly afflicted  
with fever or grief and also in those  
addicted to wine In such cases painting  
the eye with an-unctuous and cooling  
collyrium, applications and medications  
prepared by the Putapaka-method  
should be done.

११४. क्षीरं-जीर्ण (च.)

११५. शीताजनैः-सेवाजनै (च.च.)

साधयेत्-साधयेत् (च.च.)

पुटपाकोकानन्तरम्-तेनचरादवस्तत्र प्रशमं याम्ति तस्य तु

इति पाठः (च.) पुस्तके।

प्रतिमर्शगुणाः—

स्नेहनं शोधनं चैव द्विविधं नावनं मतम् ।

प्रतिमर्शस्तु नस्यार्थं करोति न च दोषवान् ॥११६॥

स्नेहनम् स्नेहनं स्नेहन, शोधनम् च एव अने शोधन और शोधन, द्विविधम् औषध और प्रक्षारण इत्येव दो प्रकारका, नावनम् नस्य नस्य, मतम् मानेछे माना गया है, प्रतिमर्शः तु अने प्रतिमर्श और प्रतिमर्श, नस्यार्थम् अन्ने प्रक्षारण नस्यणुं काम दोनों प्रकारके नस्यका कार्य, करोति करे छे करता है, दोषवान् च अने दोष करनेवाला और दोष करनेवाला, न नशी नहीं है ॥ ११६ ॥

116. There are two purposes served by nasal medication viz. oleation and purification. Nasal application serves both purposes and is harmless.

प्रतिमर्शप्रयोगविधिः—

नस्तः स्नेहाकुलिं दद्यात् प्रातर्निशि च सर्वदा ।

न चोच्छिक्तेरुदरोगाणां प्रतिमर्शः स दाढ्यकृत् ११७

सर्वदा हरिरेव प्रतिदिन, प्रातः निशि च सवारे अने सान्ने प्रातःकाल और रात्रिमें, नस्तः नस्यकारण नथुनोंमें, स्नेहाकुलिम् स्नेहभरी आंगुली स्नेहपूरित अंगुलि, दद्यात् देवी देवे, न च उच्छिक्तेर पक्षु ते स्नेह उथेलायी अथवा नहि किन्तु इसे ऊपर न खींचे, अरोगाणाम् नीरोग भनुष्येने नीरोगियोंको, सः प्रतिमर्शः ते प्रतिमर्श वह प्रतिमर्श, दाढ्यकृत् हठता करनेवाले छे हठताकारक है ॥ ११७ ॥

117. Morning and night, and in all seasons, one should use a finger dipped in unctuous substance for nasal inunction. The medication should not be sniffed in too deeply. This nasal appli-

cation is to be used in health and it is promotive of firmness and strength.

अध्यायान्तविषयाः—

तत्र श्लोकौ—

त्रीणि यस्मात् प्रधानानि मर्माण्यभिहतेषु च ।

तेषु लिङ्गं चिकित्सां च रोगभेदाश्च सौषधाः ॥११८॥

विधिरुत्तरवस्तेश्च नस्तः कर्मविधिस्तथा ।

सव्यापद्मेवजं सिद्धौ मर्माध्यायां प्रकीर्तितम् ॥११९॥

तत्र श्लोकौ ते विषयभा उपसंहारना के श्लोक छे के उस विषयमें उपसंहारके दो श्लोक हैंकि, मर्माध्यायाम् सिद्धौ त्रिमर्मायसिद्धि नामना अध्यायाम् त्रिमर्मायसिद्धि नामके अध्यायमें, यस्मात् अने कारणसे, त्रीणि त्रय तीव, मर्माणि मर्मा मर्मा, प्रधानानि मुख्य छे मुख्य हैं, तेषु तेषामे उनको, अभिहतेषु च अभिधात भता चोट लगने पर, लिङ्गम् लक्ष्य लक्षण, चिकित्सां चिकित्सा चिकित्सा, सौषधाः औषधी सहित औषधोंके साथ, रोगभेदाः च रोगना भेदा रोगके भेद उत्तरवस्तेः उत्तरवस्तिनी उत्तरवस्तिनी, विधिः च विधि विधि, तथा नस्तः कर्मविधिः नस्यकर्मनी विधि नस्यकर्मकी विधि, सव्यापत्तेरुदरोगाणां व्यापत्ति उनकी व्यापत्ति, भेषजम् अने तेना औषध और इनकी औषध, प्रकीर्तितम् उद्देशनामा आया छे कही गई हैं ॥ ११८-११९ ॥

Here are the two recapitulatory verses—

118-119. Of the vital regions why three are pre-eminent; the signs and symptoms and treatment of injuries occurring in these regions; the different varieties of diseases affecting these organs and their remedies; the method of administration of the urethral and vaginal douche and similarly the

११८. नावनं मतं—नस्यगुण्यते (घ.)

१, ११८. —नस्यगुण्यते (घ. य. घ.)

११८. —नावनं स्मृतम् (घ.)

११८. प्रतिमर्शस्तु—प्रतिमर्शश्च (घ.)

११९. सव्यापद्मेवजं सिद्धौ मर्माध्यायान्—सव्यापद्मेवजसिद्धौ मर्माध्यायः प्रकीर्तितः (घ.)

११९. सव्यापद्मेवजं—सव्यापद्मेवजं (घ.)

method of administering nasal medication; the complications and their treatment:—have all been described in the chapter entitled Success in treatment of the Three Vital Regions

इत्यग्निवेशकृते तन्त्रे चरकप्रतिस्क्रुतेऽप्राप्ते  
दृढबलसंपूरिते सिद्धिस्थाने त्रिमयीय-  
सिद्धिर्नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

इति आ प्रभाषे। इस प्रकार, अग्निवेशकृते अग्निवेशे  
रथेष्वा अग्निवेशसे बनाये, चरकप्रतिस्क्रुते तन्त्रे अने  
चरकथी प्रतिस्कार पायेवा आ शास्त्रभा और  
चरकके द्वारा संस्कृत इस शास्त्रके, अप्राप्ते अप्राप्त,  
दृढबलसंपूरिते अने दृढबले पूरा करेवा और दृढबलसे  
पूरित किये गये, सिद्धिस्थाने सिद्धिस्थान विषे सिद्धिस्थानमें,  
त्रिमयीयसिद्धिः 'त्रिमयीयसिद्धि' 'त्रिमयीयसिद्धि'  
नाम नामने। नामका, नवमः नवमे। नौवो,  
अध्यायः अध्याय संपूर्ण थये। अध्याय समाप्त  
हुआ ॥ ९ ॥

9. Thus, in the Section on Success in Treatment, in the treatise compiled by Agnivesa and revised by Caraka, the ninth chapter entitled 'Success in Treatment of the Complications arising from the disorders affecting the Three Vital Regions in the body'. not being available, the same as restored by Dridhabala, is completed.

दशमोऽध्यायः ।

दशमे। अध्याय अध्याय दसवाँ

Chapter X

बस्तिविद्वगुपक्रमः —

अथातो बस्तिविद्धि व्याख्यास्यामः ॥ १ ॥

इति ह स्माह भगवानात्रेयः ॥ २ ॥

अथ अतः हवे अह्नीथी अब आगे, बस्ति-  
सिद्धि 'बस्तिविद्धि' नामना अध्यायानु 'बस्ति-  
विद्धि' नामके अध्यायका, व्याख्यास्यामः व्याख्यान  
करेंगे ॥ १ ॥

भगवान् भगवान् भगवान्, आत्रेयः आत्रेये  
आत्रेयने, इति ह आ विषयभा नीचे प्रभाषे न इस  
विषयमें निम्न प्रकारसे ही, आह स्माह भगवान् के कहा है ॥ २ ॥

1. We shall now expound the chapter entitled 'The Successful application of the Enema Procedure'.

2. Thus declared the worshipful Atreya.

सिद्धानां बस्तीनां शस्त्रानां तेषु तेषु रोगेषु ।

शृण्वग्निवेश ! गदतः सिद्धि सिद्धिप्रदां भिषजाम् ३

अग्निवेश ! हे अग्निवेश ! हे अग्निवेश !, तेषु तेषु ते  
ते उन उन, रोगेषु रोग पर रोगोंमें, बस्तीनाम् बस्ती  
कही हुई, सिद्धानाम् प्रत्यक्ष इस आपनारी प्रत्यक्ष  
फक्त देनेवाली, बस्तीनाम् अस्तिभोनी बस्तिबोनी,  
भिषजाम् वैद्योने वैद्योंको, सिद्धिप्रदाम् सफलता  
सफलता देनेवाली, सिद्धिम् सिद्धि सिद्धिको, गदतः  
कहुं छुं कहता हूं, शृणु संभने। सुनो ॥ ३ ॥

3. Listen to me, O Agnivesa, as I discourse on the successful application of the most efficacious types of enema, the use of which brings success to the physician, and on the particular diseases in which each particular type is recommended.

बलादीन्प्रविभज्य दत्तोवसितः सर्वरोगान्निवर्तयति—

बलदोषकालरोगप्रकृतीः प्रविभज्य योजिताः सम्यक्  
स्वैः स्वैरौषधवर्गैः स्वान् स्वान् रोगान्निवर्तयन्ति ॥३॥

बल-दोष-अल, दोष, काल-रोग-काल, रोग  
काल, रोग, प्रकृतीः अने प्रकृतिना और प्रकृतिके,  
प्रविभज्य विभाग करी विभागके अनुसार, स्वैः स्वैः  
पैतपैताना अपने अपने, औषधवर्गों औषध वर्गों  
औषधवर्गोंसे, सम्यक् सारी रीते अच्छी प्रकार,  
योजिताः योजिते अर्थात् बनाई हुई वस्तियां, स्वान्  
स्वान् पैतपैताना अपने अपने, रोगान् रोगोंके  
रोगोंको, निवर्तयन्ति हरे के शान्त करती हैं ॥३॥

4. When, having regard to the nature of strength, morbidity, time, disease, and constitution in each given case, the appropriate kind of enema, prepared with the proper medications indicated, is used in the right way, the enema succeeds in allaying the disorder for which it is meant

वस्तेर्गुणाः—

कर्मण्यद्विस्त्रमं न विद्यते शीघ्रसुखविशोद्यित्वात् ।  
आश्वपतर्पणतर्पणयोगाच्च निरत्ययत्वाच्च ॥ ५ ॥

शीघ्र-अलदी जल्दी, सुखविकोचित्वात् सुखपूर्वक  
शोधन करना होवाथी सुखपूर्वक शोधन करनेवाली  
होनेसे, आश्व-अलदी शीघ्र, अपतर्पण-अपतर्पण  
तर्पण, तर्पणयोगात् च तथा तर्पण करना होवाथी तथा  
तर्पण करनेवाली होनेसे, निरत्ययत्वाच्च च अने अनिकारक  
न होवाथी और हानिकारक न होनेसे, वस्त्रिसमम्  
अस्त्रिसमान वस्त्रिसमान, अन्वय भीष्म अन्य, कर्म  
कर्म कर्म, न विद्यते नहीं नहीं है ॥५॥

5: There is no therapeutic procedure comparable to that of the enema in as much as it possesses rapid and useful properties of cleansing, in addition to its being a quick agent of

५. स्वान् स्वान्-तान् तान् (ब. क.)

impletion and depletion and is unattended with danger.

विरेचनापेक्षया वस्तेः श्रेष्ठवप्रतिपादनम्—

सत्यपि दोषहरत्वे कटुतीक्ष्णोष्णादि भेषजादानात्  
दुःखोद्धारोत्कृष्टाद्वचत्वं कोष्ठरुजा विरेके स्युः ॥६॥

विरेके विरेचनम्। विरेचनमें, दोषहरत्वे दोष-  
हरता दोष हटानेकी शक्ति, सति अपि होवा छती पक्ष  
होने पर भी, कटुतीक्ष्ण- कटु, तीक्ष्ण, उष्णादि-  
उष्ण और उष्ण वर्गों उष्ण आदि, भेषज- औषधि  
औषध, आदानात् देवाथी देनेसे, दुःख- दुःख दुःख  
उद्धार- उद्धार उद्धार, उत्कृष्ट- उत्कृष्ट उत्कृष्ट,  
अद्वयत्व- अद्वयता अद्वयता, कोष्ठरुजाः अने केशमां  
पीडा और कोष्ठमें पीडा, स्युः आय छ होती हैं ॥६॥

6. Although purgation does eliminate morbid matter, the oral injection of drugs containing as they do pungent, acute and hot and such other properties, tends to produce such unpleasant side-effects as cause distress, eructations nausea, unpleasantness and pain in the gastrointestinal tract.

अविरेच्यौ शिशुवृद्धौ तावत्प्राप्तप्रहीनधातुबलौ ।  
आस्थापनमेव तयोः सर्वार्थकदुत्तमं कर्म ॥ ७ ॥  
बलवर्णहर्षमार्दवगात्रलोहाभ्रूणां ददात्याशु ।

शिशुवृद्धौ आलक अने वृद्ध बालक और बृद्ध,  
अविरेच्यौ विरेचनने योग्य नहीं विरेचनके योग्य नहीं  
हैं, तो अप्राप्त-प्रहीन-धातुबलौ- कालक्षु के तेओभांना  
आलकने धातु तथा अल पूरा प्राप्त यथा होता नहीं  
अने वृद्धां धातु तथा अल ओछां यथा अल छे  
क्योंकि उनमेंसे बालकको धातु तथा बल पूर्ण प्राप्त नहीं  
होते और बृद्धको धातु तथा बलकी हानि होती जाती है, तयोः  
तेओने भाटे उनके लिए, आस्थापनम् एव आस्थापन अ  
आस्थापन ही, सर्वार्थकदुत्तमं सर्व काम साधनार सर्वार्थ-  
साधक, उत्तमम् अने उत्तम और उत्तम, कर्म- कर्म छे कर्म  
है, नृणाम् अस्ति भुज्यमाने वस्त्रि मनुष्योंको, बलवर्ण-

अथ, वक्षुं बलं वर्णं, हर्षं हर्षं हर्षं, मार्दवं भृशता  
सुदुता, मात्रस्नेहान् अने अओभा स्निग्धता और  
अत्रोमें स्निग्धता, आशु- ७७६ दी शीघ्र, दवाति आये के  
देती है ॥७६॥

7-7½. Moreover, since the very young and the very aged are both unsuitable subjects for purgation, on account of the former having not yet attained full body-growth and vitality and the latter having begun to lose both, the corrective enema-procedure is in both cases the most suitable procedure and the one that can achieve all the desired results. Thus, the enema invests persons quickly with strength, complexion, exhilaration, softness and unctuousness of the body

वस्तेमैदाः, तद्विषयाश्च—

अनुवासनं निरुहश्चोत्तरवस्तिश्च स त्रिविधः ॥८॥  
शाखावातार्तानां संकुचिनस्तब्धमम्लरुग्णानाम् ।  
विद्वस्त्राग्मानारुचिपरिकर्तिरुगादिषु च शस्तः ॥९॥

सः त्रिविधः ते त्रय प्रकारणी छे वह तीन प्रकारकी  
है, अनुवासनम् नेभके अनुवासन जैसेके अनुवासन,  
निरुहः च निरुह निरुह, उत्तरवस्तिः च अने उत्तर-  
अस्ति और उत्तरवस्ति, शाखावात शाखावातभी शाखाके  
वायुसे, आर्तानां पीडित पीडित, संकुचित- तेमभ  
संकोच एवं संकोच, स्तब्ध-मम्ल स्तब्धता तथा अम-  
ल-मम्ल स्तब्धता तथा अम्लमम्लवाले, रुग्णानाम् रोभी-  
ओने भाटे रोगियोंके लिए, विद्वस्त्र- अने भणशेष  
और मलाबरोच, आग्मान- आग्मान आग्मान, अरुचि  
अरुचि अरुचि, परिकर्तिरुह- अने वाढरेम और  
परिकर्तिकारोग, आदिषु च वजेरेभा आदिमें, शस्तः  
अस्ति प्रशस्त छे वस्ति प्रशस्त है ॥ ८-९ ॥

89. The enema is of three kinds viz, unctuous, evacuating and urethro-vaginal douching. The enema is especially beneficial in persons afflicted with rheumatic affections of the extremities, contracture, softness, fracture and pain.

उष्णार्तानां शीताङ्गीतार्तानां तथा सुखोष्णोश्च ।  
तद्योग्यौषधयुक्तान् वस्तीन् संतर्क्य विनियुज्यान् १०

उष्णार्तानाम् गरभीभी पीडिता मनुष्येने उष्णतासे  
पीडितोंको, शीतान् शीत शीतल तथा शीतार्तानाम्  
तथा हंसीभी पीडिता मनुष्येने तथा शीतपीडितोंको,  
सुखोष्णान् च नवशेखी सुखोष्ण, बलीन् अस्तिओ  
बलियोंको, तद्योग्य देओने योग्य उनके लिए योग्य  
औषधयुक्तान् औषधयी युक्त करी औषधोंसे युक्तकर,  
संतर्क्य दियार करी विचार करके, विनियुज्यान्  
प्रयोओवी ओईओ प्रयोग करनी चाहिए ॥ १० ॥

10. Patients afflicted with heat, should be given cold enemas while those afflicted with cold should be given genially warm enemas. The enema should be given prepared with the appropriate medicaments judging each case on its own merits

बृंहणीयवस्त्यनर्हाः—

वस्तीञ्च बृंहणीयान् दद्याद् व्याधिषु विशोषनीयेषु ।  
मेदस्त्रिजो विशोष्या येऽपि नराः कुष्ठमेहार्ताः ॥११॥

विशोषनीयेषु तथा शोषन करवा योग्य तथा  
शोषनयोग्य, व्याधिषु रोगोंमें, बृंहणीयान् बृंहण  
बृंहण, बलीन् अस्तिओ वस्ति, न दद्याद् देनी ओईओ  
नहीं देनी चाहिए, मेदस्त्रिजः मेदस्त्रिजो मेदस्त्री,  
१० तद्योग्यौषधयुक्तान् वस्तीन् संतर्क्य—तद्योग्यौषधयुक्तान् औषध  
संतर्क्य (८ च)

११. दद्याद् व्याधिषु विशोषनीयेषु—व्याधिषु युक्तव्याधिषो-  
नीयेषु (८)



कुष्ठमेहात्माः तथा डाढ अने प्रमेहथी पीडित कुष्ठ और मेहसे पीडित, अपि नराः ७ डाढ मनुष्यो जो कोई मनुष्य, विशोध्यः शोधन करवा योग्य होय तेओने पक्ष अस्ति नहि देवी ओई शोधन योग्य हों उनको भी बस्ति नहीं देनी चाहिए ॥ ११ ॥

11. Roborant enema should not be given in cases requiring purificatory treatment (such as persons who are obese or afflicted with dermatosis, urinary anomalies, or in cases needing to be rid of putrid humors or in cases of skin and urinary diseases.

शोधनीयवस्त्यनर्हाः —

न क्षीणक्षतदुर्बलमूर्च्छितकृशशुष्कदेहानाम् ।  
युज्याद्विशोधनीयान् दोषनिबद्धायुषो ये च ॥ १२ ॥

क्षीण-क्षत-क्षीण, क्षतयुक्त क्षीण, क्षतयुक्त, दुर्बल-दुर्बल, दुर्बल, मूर्च्छित-मूर्च्छित, मूर्च्छित, कृश-शुष्क कृश अने शुष्क कृश और शुष्क, देहानाम् देह-वालाओने देहवालोंको, ये च तथा ७ तथा जो, दोष-निबद्धायुषः दोष पर टोका आयुवाला होय तेओने दोषों पर अवलम्बित आयुवाले हों उनको, विशोधनीयान् शोधन अस्ति शोधनवस्ति, न युज्यात् आपवी न ओई ओ नहीं देनी चाहिए ॥ १२ ॥

12. The use of the purificatory measures are contra-indicated in persons with cachexia, pectoral lesions, debility, fainting, emaciation and dehydration of the body, as well as in those whose life is sustained to some extent by the excretory matter in the body.

कार्यविशेषापेक्षया वस्तीनां संस्कारविशेषः —

वाजीकरणेऽसृक्पित्तयोश्च अधुवृतपयोयुक्ताः ।  
शस्ताः सतैलमूत्रारनाललवणाश्च कफवाते ॥ १३ ॥

वाजीकरणे वा७३२क्ष वाजीकरण, असृक् रक्तहोष रक्तहोष, पित्तयोः च अने पित्तभा और पित्तमें, मधु-घृत-मधु, घी मधु, घी, पयः-युक्ताः तथा हृषथी युक्त तथा दूधसे युक्त, कफ-वाते अने छे तथा वातभा और कफ तथा वातमें, सतैल-मूत्र-तेल गोमूत्र तैल गोमूत्र, आरनाल आरनाल आरनाल लवणाः च तथा क्षपथी युक्त अस्तिओ तथा लवणसे युक्त वस्तिभा, शस्ताः प्रशस्त छे प्रशस्त हैं ॥ १३ ॥

13 For the purpose of virilification and in disorders of blood and pitta, the enemata prepared with honey, ghee and milk are recommended. In morbid conditions of kapha and vata, enemata prepared with til oil, cow's urine, sour congee and rock salt are beneficial.

युज्याद् द्रव्याणि वस्तिष्वम्लं मूत्रं पयः सुरां काथान् ।  
अविरोधात्तानां रसयोनित्वाच्च जलमुष्णम् ॥ १४ ॥

धातूनाम् धातुओने धातुओंके, अविरोधात् विरोधी न होय ओवां विरोधी न हों ऐसे, अम्लम् अम्ल, मूत्रम् पयः गोमूत्र-दूध, सुराम् सुरा सुरा, काथान् अने कवाथ और काथ, द्रव्याणि ओ द्रव्योंने इन द्रव्योंको, रसयोनित्वात् च अने रसनी योनि होवाथी और रसकी योनि होनेसे, उष्णम् गरम गरम, जलम् पाणीने जलको, वस्तिषु अस्तिओभा वस्तिओंमें, युज्यात् योग्य होवां ओईओ भिन्नाना चाहिए ॥ १४ ॥

14. In the preparation of the enema solution, such substances should be used from among acid articles, urines milks,

१२. कुष्ठमेहानाम्-कुष्ठमेहानाम् (क. व.)

१३. युज्याद्विशोधनीयान्-युज्याद्विशोधनीयान् (च.)

१३. पित्तयोश्चमधुनपयोयुक्ताः-पित्तयोश्चमधुनपयोयुक्ताः सवें (च.)

१४. लवणाश्चकफवाते-लवणाः कफवाते वाते (च. व. क.)



wines and decoctions as are not antagonistic to the body elements and water, being the source the nutrient fluid, should be warm.

सुरदारुशताङ्गुलकुष्ठमधुकपिप्पलीमधुमेहाः ।  
ऊर्ध्वानुलोमभागाः ससर्षपाः शर्करा लवणम् ॥१५॥  
आवापा वस्तीनामनः प्रयोज्यानि येषु यानि स्युः ।  
युक्तानि सह कषायैस्ताम्युत्तरतः प्रवक्ष्यामि ॥१६॥

ससर्षपाः सरसव सरसो, सुरदारु- देवदारु, कृताङ्ग- सुवा सोया, एला-कुष्ठ नान्दी ओषधी-उठ इलायची कूठ, मधुक- गेठीमधु मुलहठी, पिप्पली- भीपर पिप्पली, मधु-स्नेहाः मधु-स्नेह मधुस्नेह ऊर्ध्व- अनुलोम-भागाः ऊर्ध्वभाग (वमन द्रव्य) ऊर्ध्वभाग, (वमन द्रव्य) अनुलोमभाग (विरेचन द्रव्य) अनुलोमभाग (विरेचन द्रव्य), शर्करा साकर अने शर्करा लवणम् अने एवम् ओ और नमक ये, वस्तीनाम् अस्तिओनां वस्तिओमें, आवापाः नाभ्यानां १०थे छे डालनेके द्रव्य हैं, अतः ओओभांथी इनमेंसे, यानि ओओने जो, कषायैः सह कषायैः साथे कषायोंसहित, युक्तानि मेज- वीने मिलाकर, येषु प्रयोज्यानि स्युः ओ अस्तिओभां प्रयोक्ता ओओओ जिन वस्तिओमें प्रयोज्य हैं, तानि तेओने उनको, उत्तरतः हवे पछी पीछेसे, प्रवक्ष्यामि छडीश कहूंगा ॥ १५-१६ ॥

15-16 Deodar, dill seeds, small cardamom costus, liquorice, long pepper, honey and unctuous substance, drugs acting as purificatory of upper and lower channels rape-seed, sugar and salt are the ingredients to be added to the enema solution. As to which of these ingredients should be used in which kind of enema and with what

kind of decoction will be described hereafter

चिरञ्जातकठिनबलेषु  
व्याधिषु तीक्ष्णा विपर्यये सुदृढः ।  
मप्रतिवापकषाया  
योज्यास्त्वनुवासननिरुहाः ॥१७॥

चिरञ्जात- अंशः १५१०थी यथेष्ट दीर्घ कालसे उपरान्त, कठिन- मज्जान महान, बलेषु अक्षय्याणा बलवान्, व्याधिषु व्याधियोंमें, सप्रतिवाप आवाप आवाप, कषायाः अने कषायसहित और कषायसहित, तीक्ष्णाः तीक्ष्ण तीक्ष्ण अनुवासन अनुवासन अनुवासन, निरुहाः तथा निरुद्ध अस्तिओ निरुद्ध वस्तिओ, योज्याः योज्यी ओओओ प्रयुक्त कानी चाहिए, विपर्यये तु तथा विपरीत अवस्थाओंमें आवाप अने कषायसहित मधु अनुवासन तथा निरुद्ध अस्तिओ योज्यी ओओओ तथा विपरीत अवस्थाओंमें आवाप और कषायसहित मधु अनुवासन तथा निरुद्धवस्तिओ प्रयुक्त करनी चाहिए ॥१७॥

In disease-conditions which are chronic, obstinate and severe, strong, unctuous or evacuating enema prepared with suitable ingredients and decoction should be used, while in the opposite conditions, i. e. mild or recent condition of disease mild enema should be used.

वातरोगेषु वस्तीनामनो वस्तवः —

अर्धस्रोक्तेरतः सिद्धान् नानाव्याधिषु सर्वदाः ।  
वस्तीन् वीर्यसमैर्गैर्बार्हालोडनाङ्गुलु ॥१८॥

नानाव्याधिषु बुद्ध बुद्ध व्याधियोंमें किन् किन् रोगोंमें, सर्वदा सर्वदा पक्षे सब प्रकारसे, सिद्धान् सिद्ध बनेली सिद्ध, वीर्यसमैः आर्धः ओषधीनां सामर्थ्येन

१६. आवापा-आवापो (क)

ताम्युत्तरतः-तमुत्तरतः (क. द)

११. आवापा वस्तीनामनःप्रयोज्यानि येषु यानि स्युः-आवापे वस्तीनामनः प्रयोज्यानि तेषु यानि स्युः (ब. क.)

१७. बलेषु-बलितु (ब.)

१८. सर्वदा-सर्वदा (क. ग. द. व.)

११. -पूरिशः (ब.)

११. बार्हालोडनाङ्गुलु-बार्हालोडनाङ्गुलु (ब. द. व. क.)

नाश न करे तेवा द्रव्योत्थी युक्त समीर्य द्रव्य भागोंसे युक्त, यथाई-आलोडनान् अने ते द्रव्योत्थी मिश्रित करनेवाले द्रव द्रव्योंसे युक्त, बस्तीन् अस्तिस्तेने बस्तिनोको, जतः अस्तींभी यद्वासे, नर्भश्लोकैः अरधा अरधा श्लोकैर्भा आवे आवे श्लोकैर्भा, शृणु आभजे। सुनो ॥ १८ ॥

18. Listen to me as I now describe. a prescription in each hemistich a number of tried prescriptions of enemas suitable for administration in all varieties of disease-conditions. In these prescriptions, the relative proportion of the drugs to be mixed together should be such that the potency of any one drug is not neutralized by that of any other.

विस्वोऽग्निमन्थः श्योनाकः काश्मर्यः पाटलिस्तथा ।  
शालपर्णी पृश्निपर्णी बृहत्स्यौ वर्धमानकः ॥१९॥  
यवाः कुलत्थाः कोलानि स्थिरा चेति त्रयोऽनिले ।  
शस्यन्ते सचतुःश्लेहाः पिशितस्य रसान्विताः ॥२०॥

विश्वः भीष्मी बेल, अग्निमन्थः अरली अरणी श्योनाकः अरु अरु, काश्मर्यः शीतल गंमारी, तथा पाटलिः अने पाटला तथा पाटला, शालपर्णी शा.प.श्री शालपर्णी, पृश्निपर्णी पृश्निपर्णी, बृहत्स्यौ अने भोरीभल्ली दोनों कटेरी, वर्धमानकः अने अरु. एरण, यवाः तथा जौ, कुलत्थाः कुलथी, कोलानि और बेर, स्थिरा च अने आलवधु और शालपर्णी, त्रयः आ. त्रयु यो. ये तीन योग, सचतुः श्लेहाः आरे स्नेह आधे चार स्नेहोंके साथ, पिशितस्य रसान्विताः तथा भासरस आधे तथा मांसरसके साथ, जबिके वातरोगभा वातरोगमें, बस्यन्ते प्रशस्त छे प्रशस्त हैं ॥ १९-२० ॥

१९. शालपर्णी-शालिपर्णी (क. व.)

२०. कोलानि. कोलानि (क. व.)

19-20. (1) Bael, wind killer, Indian calosanthos, fruits of white teak and trumpet flower; (2) Ticktrefoil, painted leaved uraria, the two varieties of Indian nightshade and castor oil plant; (3) Barley horse-gram Indian jujube, ticktrefoil; these three sets of drugs comprising three distinct prescriptions should be prepared with the addition of the tetrad of unctuous articlee and meat-juices and administered in morbid conditions due to vata

पित्तोगे शस्तान्नयो बस्तयः --

नलवज्जुलवानीरशतपत्राणि शैवलम् ।  
मज्जिष्ठा सारिवाऽनन्ता पयस्या मधुयष्टिका ॥२१॥  
चन्दनं पद्मकोशिरं तुङ्गं ते पैसिके त्रयः ।  
सशर्कराक्षौद्रघृताः सक्षीरा बस्तयो हिताः ॥२२॥

नल-वज्जुल नादी वाणुं नल, वज्जुल वानीर-वानीर वानीर, शतपत्राणि शतपत्र शतपत्र, शैवलम् अने शेवाण और शेवाल, मज्जिष्ठा मज्जि मजीठ, सारिवा सारिवा सारिवा, अनन्ता अनन्ता कपूरी, पयस्या भो.प.को. बिलाईकन्द, मधुयष्टिका अने भो.भ.ध और मुलहठी, चन्दनम् तथा अन्नन् तथा चन्दन, पद्मकः पद्मक पद्माख, पद्मीरम् कणो बाणो खस, तुङ्गम् अने पुनाग पुनाग, ते ते ये, त्रयः बस्तयः त्रय अस्तिस्ते तीन बस्तियां, सशर्करा सा.कर चीनी, क्षौद्र-घृताः भ.ध अने घी साथे शहद और घीके साथ, सक्षीराः तथा दूध साथे तथा दूधके साथ, पैसिके पित्तदोषभा पित्तोगोंमें, हिताः हितकर छे हितकर हैं ॥ २१-२२ ॥

21-22. (1) Great reed, country willow, cane, lotus and moss. (2) Indian madder. the two varieties of Indian sarsaparilla, milky yam, and

२२. ते-च (व.)

तुङ्गं ते पैसिके त्रयः पैसिके तु गदे त्रयः (द.)

liquorice; (3) Sandalwood, Himalayan cherry, cuscus grass, and fragrant poon, these three sets of drugs making the second triad of prescriptions, are to be given combined with sugar, honey, ghee and milk and are indicated as enema in disease-conditions due to pitta.

**कफरोगे शस्तास्त्रयो वस्तयः—**

अर्कस्तथैव चालर्क एकाष्टीला पुनर्नवा ।  
हरिद्रा त्रिफला मुस्तं पीतदारु कुटञ्जटम् ॥२३॥  
पिप्पल्यक्षिप्रकञ्चेति त्रयस्ते श्लेष्मरोगिषु ।  
सक्षारक्षौद्रगोमूत्रा नातिस्नेहान्विता हिताः ॥२४॥

जर्क आउठो लाल आक, बलर्कः सईह आउठ  
सफेद आक, एकाछीला पाहा पादी, तथा एव अने  
और, पुनर्नवा च साठोछी पुनर्नवा, हरिद्रा छण्डर  
हल्दी, त्रिफला त्रिद्वी त्रिफला, सुस्तम नाभरभोय  
मोथ, पीतदार देवदारु देवदारु, कुट्टनटम् अने उपल-  
सरी और कालीमर, पिप्पल्यः तथा पीपर तथा  
पिप्पली, चित्रकः च अने चित्रक और चित्रक, इति ते  
वे, न-अति-स्नेह-अन्विताः अत्यंत स्नेहशी युक्त नहि  
ओवी अत्यन्त स्नेहसे युक्त नही ऐसी, त्रयः तेषु  
अस्तिओ तीन बस्तिवां, सक्षारबौद्ध क्षार, मध क्षार,  
शहद, गोमूत्राः अने ओभूत साथे और गोमूत्रके साथ,  
छेम्परोगिषु कइरोओओने कफ रोगियोंके लिए, हिताः  
हितकारक छे हितकर हैं ॥ २३-२४ ॥

23-24. The two varieties of (1) mudar, Patha, and hog's weed; (2) Turmeric, the three myrobalans, nut-grass, Indian berberry and Indian valerian; (3) Long pepper and white flowered leadwort; these three sets of drugs, making the third triad of

prescriptions, should be used mixed with alkali, honey and cow's urine and a slight quantity of unctuous substance. These enemas are recommended in disease-conditions due to kapha.

**पकाशयकोवनायस्वारो वस्तयः—**

फलजीमूतकेष्वाकुचामार्गवकवत्सकाः ।  
 श्यामा च त्रिफला चैव स्थिरा दन्ती द्रवस्यपि २५  
 प्रकीर्या चोदकीर्या च नीलिनी क्षीरिणी तथा ।  
 सतला शङ्खिनी लोभं फलं कम्पिल्लकस्य च ॥२६॥  
 चत्वारो मूत्रसिद्धास्ते पकाशयविशोधनाः ।  
 (व्यस्तैरपि समस्तैश्च चतुर्योगा उदाहृताः ॥२७॥)

फल- मीठण मैनफल, जीमूतक- शुभ्रतक देवदासी,  
इक्ष्वाकु- धक्ष्वाकु कटुतुम्बी, धामार्गवक- धामार्गव  
धामार्गव, वस्तकाः अने धन्वज और इन्द्रजो, इयामा च  
श्यामा इयामा त्रिवृत्त, त्रिकला च एव अने त्रिदला  
त्रिफला, स्थिरा- साधवस्य सरोजन, इन्वी- इन्वी इन्वी,  
द्रवन्वी जपि अने रतनमेत और जंगली एरणी,  
प्रकीर्ण च करं करज, इक्ष्मीर्वा च उड्डीर्वा उड्डीर्वा,  
नीलिनी- नीलिनी नीली, तथा क्षीरिणी- अने क्षीरिणी  
और क्षीरिणी, सप्तका- सप्तका सप्तका, शङ्खिनी- शङ्खिनी  
शङ्खिनी, कोमल- कोमल लेख कमिष्ठकक अने  
कंपीष्ठां और कमीळाक, फलम् च इक्ष फल, मूत्र-  
सिद्धाः गोमूत्रशी सिद्ध करेव गोमूत्रसे सिद्ध, ते ते च,  
वत्सारः आर गोत्रो चार योग, पद्मकय- पद्मकय  
पद्मकयके, विजोबनाः दोधन करनार के कोबक है,  
म्वस्त्रैः पूष्टा पूष्टा मिष्ट मिष्ट, समस्त्रैः च जपि अने  
समस्त ३५भां पक्ष और समस्त रूपमें सी, चतुर्वर्णाः  
आ आर दोत्रो वे चार योग, उदाहृताः उदाहृताः  
आआ के कहे गये हैं ॥२५-२०॥

25-27. (1) Emetic nut, bristly luffa,  
bottle gourd, sponge gourd, bitter

१४. डेडमरोगिषु-डेडमरोगिणाम् (घ. ष ।)

- कफरोगिण्यम् (य.)

२५. वामार्गकवचस्तथाः—वामार्गहोहकवचस्तथाः (घ. ब. ह. ष.)

॥ ॥ विप्लव-विद्रुता (व. फ.)

luffa and kurchi; (2) Black turpeth, the three myrobalans, ticktrefoil, red physic nut and physic nut. (3) Indian beech, prickly brazil wood, indigo plant, and asthma weed. (4) Soap pod, elenolipis, lodh, and the fruit of kamala. these four sets of drugs prepared with cow's urine are purificatory of the colon. (the drugs above mentioned may be used separately or in combination and they make a tetrad of prescriptions.)

शुक्रमांसदास्यत्वारो वस्तयः —

काकोली क्षीरकाकोली मुद्गपर्णी शतावरी ।

विदारी मधुयष्ट्याङ्गा शृङ्गाटककशेरुक ॥२८॥

आत्मगुसाफलं माषाः सगोधूमा यवास्तथा ।

जलजानूपजं मांसमित्येते शुक्रमांसलाः ॥२९॥

काकोली डाकोली, काकोली, क्षीरकाकोली, क्षीरकाकोली, मुद्गपर्णी जलजी, भज मुद्गपर्णी, शतावरी, शतावरी और शतावर, विदारी बेय-डाण, विदारीकन्द, मधुयष्ट्याङ्गा जेठीमध मुलहठी, शृङ्गाटक- शीमेडा सिंचाडे, कशेरुक और कशेरुक, आत्मगुसाफलम् डोयपीज कौवके बीज, माषाः अड्ड उड्ड, सगोधूमाः धुँगे, तथा यवाः अने जौ और जौ, जलजानूपजम् तथा जलज अने आनूप और जलज और आनूप, मांसम् मांस मांस, इति एते ये चार अस्तिथे। ये चार वस्तियाँ, शुक्रमांसलाः वीर्यवर्धक अने मांसवर्धक छे शुक्रवर्धक और मांसवर्धक हैं ॥ २८-२९ ॥

28-29. (1) Kakoli, Ksheerakakoli, wild bean and climbing asparagus; (2)

२८. मुद्गपर्णी-पुष्पपर्णी (घ.)

,, विदारीमधुयष्ट्याङ्गा-पशुकं च विदारी च (घ.)

२९. जलजानूपजं-जलजानूपजं (ग. ड. घ. ङ.)

,, शुक्रमांसलाः-शुक्रमांसदाः (घ. ङ.)

,, मांसमित्येते शुक्रमांसलाः-मांसमिति शुक्रविवर्धनाः (घ.)

,, शुक्रमांसलाः-शुक्रवर्धकाः (घ.)

white yam, liquorice Indian water chest-nut and luffa, (3) the fruit of the cowage, black gram, wheat and barley; (4) And the meat of the aquatic wet-land animals:—these four sets of drugs are promotive of the seminal secretion as well as of flesh.

साम्राहिकाश्चत्वारो वस्तयः —

जीवन्ती चाग्निमन्थश्च घातकीपुष्पवत्सकौ ।

प्रग्रहः खदिरः कुष्ठं शमी पिण्डीतको यवाः ॥३०॥

प्रियङ्गु रक्तमूली च तरुणी स्वर्णयूथिका ।

वटायाः किंशुकं लोभ्रमिति साम्राहिका मताः ३१

जीवन्ती च जीवन्ती जीवन्ती अग्निमन्थः अग्नि-मन्थ अग्निमन्थ, घातकीपुष्प- घातकीपुष्प, इव घातकी फूल, वत्सकौ च अने घट्टक और इन्द्रजौ, प्रग्रहः प्रग्रह, खदिरः खदिर, कुष्ठम् कुष्ठ, शमी भीमडी शमी, पिण्डीतकः भीमडी मैनफल, यवाः अने जौ और जौ, प्रियङ्गुः प्रियङ्गु प्रियङ्गु, रक्तमूली रक्तमूली तरुणी शुद्धाण गुलाब, स्वर्णयूथिका अने स्वर्णयूथिका और स्वर्णयूथिका, वटायाः वटायाः वटायाः और लोभ्र, इति ये ये, साम्राहिकाः साम्राहिक अस्तिथे। साम्राहिक वस्तियाँ, मताः माने छे कही हैं ॥ ३०-३१ ॥

30-31. (1) Cork swallow wort, wind killer, fulsee flower and kurchi; (2) Purgive cassia, catechu, costus, shamee, emetic nut and barley; (3) perfumed cherry, Indian madder; double jasmine and yellow-jasmine; (4) The banyan and the other drugs of its group Palas and the lodh these four sets of drugs are known to be astringent in their action.

३१. तरुणी-तरुणी (घ.)

परिष्ठावे द्वौ बन्तौः—

परिष्ठावे शृतं क्षीरं सवृक्षीरपुनर्नवम् ।

आखुपर्णिकया वाऽपि तण्डुलीयकयुक्तया ॥३२॥

परिष्ठावे परिष्ठावम् परिष्ठावम्, सवृक्षीर- घाण्डी साटेडी वृक्षीर, पुनर्नवम् अने बाव साटेडी सावे और पुनर्नवासे, शृतम् उकाणेला कथित, क्षीरम् दूधभी दूधसे, तण्डुलीयक अथवा तण्डुलीयकी अथवा तण्डुली- यकसे, युक्तया युक्त युक्त, आखुपर्णिकया वा अपि ॥३२॥ सावे उकाणेला दूधभी अस्ति देवी आखु- पर्णीके साथ कथित दूधसे बस्ति देवे ॥३२॥

32. (1) Milk prepared with white hog's weed, and hog's weed. (2) Or with kidney leaved ipomea and prickly amaranth is indicated in hemorrhage conditions.

दाहे द्वौ बन्तौ—

कालकृतककाण्डेषुदर्भपोटगलेक्षुभिः ।

दाहघ्नः सघृतक्षीरो द्वितीयश्चोत्पलादिभिः ॥३३॥

कालकृतक- कालकृतक कसौरी, काण्डेषु- कालकृतक काण्डेषु, दर्भ- दर्भ दर्भ, पोटगल- पोटगल, गलेक्षुभिः अने शेरडीथी साधित और ईशसे साधित, सघृतक्षीरः घी तथा दूधवाणी पहेवी अस्ति घी और दूधवाली प्रथम बस्ति, उत्पलादिभिः अने उत्पल पजेरेथी साधित घी तथा दूधवाणी और उत्पल आदिसे साधित घी तथा दूधवाली, द्वितीयः च घी अस्ति दूधरी बस्ति, दाहघ्नः दाहनाशक छे दाहनाशक है ॥३३॥

33. (1) Negro coffee, big sugar-cane, sacrificial grass, elephant grass

३३. परिष्ठावे-परिष्ठावे (घ.)

, परिष्ठावे शृतं क्षीरं-पयः शृतं परिष्ठावे (घ. व.)

३३. कालकृतक-कोककृतक (क. त.)

, दर्भपोटगलेक्षुभिः-दर्भपोटगलेक्षुभिः (क. घ. त. व. फ.)

, कालकृतककाण्डेषुदर्भपोटगलेक्षुभिः-कोककृतककाण्डेषुदर्भ- कोलेक्षुसालिभिः (घ. व.)

and sugar cane; (2) The blue water lily and other aquatic plants of its group; ghee or milk, prepared with either of these two sets of drugs, is curative of burning.

परिकर्ते द्वौ बन्तौ—

कर्बुदारादकीनीपविबुलैः क्षीरसाधितैः ।

बस्तिः प्रदेयो भिषजा शीतः समभुशर्करः ॥३४॥

परिकर्ते तथा वृन्तैः श्रीपर्णीकोविदारजैः ।

(देयो बस्तिः सुवैद्यैस्तु यथावद्विदितक्रियैः ॥३५॥)

परिकर्ते परिकर्तिकाभा परिकर्तिकाभे, भिषजा वैद्य वैद्य, क्षीरसाधितैः दूधमा साधित क्षीरसाधित, कर्बुदार- कर्बुदार कचनार, आदकीनीप- तुवेर उद्वेग अवर कदम्ब, विबुलैः अने समभुशर्कर सावे और समभुशर्कर, समभुशर्करः भूष अने साधर भेणवी सह और औनी मिलाकर, शीतः ठंडी शीत, बस्तिः अस्ति बस्ति, प्रदेयः देवी दे, तथा तथा तथा, यथावत् यथावत् ॥३४॥ सत्यस्वरूपमे, विदितक्रियैः क्रियाने अन्तर्गत क्रियाने ज्ञाता, सुवैद्यैः तु सुवैद्योमे सुवैद्य, श्रीपर्णी- क्षीरमादकीनी गंभारी, कोविदारजैः अने कर्बुदारादकीनी और कचनारके, वृन्तैः श्रीपर्णी अस्ति देवी अन्तर्गत के बस्तिसे बस्ति देवे ॥ ३४-३५ ॥

34-35. White mountain ebony, pigeon pea, kadamba and hijjal tree should be prepared in milk with honey and sugar, and given as a cold enema by the physician, in griping or colicky pain. Similarly, an enema prepared with the stalks of white teak and variegated mountain ebony may be given as enema in the same condition by good physicians who have a correct knowledge of the therapeutic methods.

પ્રવાહને દ્વૌ વસ્તી—

વસ્તિઃ શાસ્ત્રમલિકૃત્તાનાં ક્ષીરસિદ્ધો ઘૃતાન્વિતઃ ।  
હિતઃ પ્રવાહને તદ્વદ્વેષ્ટૈઃ શાસ્ત્રમલિકસ્ય ચ ॥૩૬॥

શાસ્ત્રમલિ- શાસ્ત્રમલિકા શાસ્ત્રમલિકે, ઘૃતાન્વાન  
કૃતિથી ઢંઢકોસે, ક્ષીરસિદ્ધઃ સખિત દૂધમાં સિદ્ધ  
કરેલ સાધિત દૂધમે સિદ્ધ કિયે, ઘૃતાન્વિતઃ ઘીથી યુક્ત  
બીકે સાથ, વસ્તિઃ અસ્તિ વસ્તિ, પ્રવાહને- કરાજવાના  
રોગમાં પ્રવાહિકામે, હિતઃ હિતકર છે હિતકારી છે,  
તદ્વદ્વેષ્ટૈઃ પ્રમાણે તદ્વદ્વેષ્ટ, શાસ્ત્રમલિકસ્ય ચ શાસ્ત્ર-  
મલિકા શાસ્ત્રમલિકે, વેષ્ટૈઃ યુદ્ધથી સખિત દૂધમાં સિદ્ધ  
કરેલ ઘીથી યુક્ત અસ્તિ કરાજવાના રોગમાં હિતકર  
છે ગોદષે સાધિત દૂધમે સિદ્ધ કિયે બીકે સાથ વસ્તિ  
પ્રવાહિકામે હિતકર છે ॥૩૬॥

36. The stalks of silk cotton tree prepared in milk with ghee and (2) the resin of the silk cotton tree similarly prepared, make two prescriptions beneficial in conditions of diarrhea

અતિયોગે દ્વૌ વસ્તી—

અશ્વાવરોહિકાકાકનાસારાજકશેરુકૈઃ ।  
સિદ્ધાઃ ક્ષીરેઽતિયોગે સ્યુઃ ક્ષૌદ્રાજ્ઞનઘૃતૈર્યુતાઃ ૩૭  
ન્યપ્રોધાયૈશ્વતુર્ભિશ્ચ તેનૈવ વિધિના પરઃ ।

અશ્વાવરોહિકા-અશ્વાગંધા અશ્વગંધા, કાકનાસા-  
કાકનાસા કાકનાસા, રાજકશેરુકૈઃ અને રાજકશેરુકી  
ઔર રાજકશેરુકસે, ક્ષીરે દૂધમાં ક્ષીરમે, સિદ્ધાઃ સિદ્ધ  
કરેલી સિદ્ધ કી ગઈ, ક્ષૌદ્રાજ્ઞનઘૃતૈઃ મધ રસાજન  
તથા ઘીથી શદ્દ રસાજન તથા શ્વત્તે, યુતાઃ યુક્ત

૩૬. તદ્વદ્વેષ્ટૈઃ-તદ્વદ્વેષ્ટૈઃ ક હ ત.ક.]

૧. વસ્તિઃ-મુદ્ધિઃ (વ હ. ધ. ૨. ખ. ૫.)

૨. શાસ્ત્રમલિકસ્ય-શાસ્ત્રમલિકસ્ય (જ. ૫.)

૩. ઇત્તરુકાનન્તરમ્—

વસ્તિઃ પ્રવાહને દેયો મિષજા ક્ષતિતો ધિયા

સ્થાયિકઃ પાઠઃ (ક. લ. હ. ડ.) પુસ્તકેડી.

૩૭. રાજકશેરુકૈઃ-રાજકશેરુકાઃ (૫.)

પહેલી અસ્તિ યુક્ત પ્રથમ વસ્તિ, અતિયોગે- શોધનના  
અતિયોગમાં શોધનકે અતિયોગમે, સ્યુઃ દેવાય છે કી  
જાતી છે, ન્યપ્રોધાયૈઃ ૫૩ વજેરે વડાદિ, અતુર્ભિઃ  
ચારે વૃક્ષોથી ચાર વૃક્ષોસે, તેન એવ તેજ ડસી, વિધિના  
વિધિથી સિદ્ધ કરેલી વિધિસે સિદ્ધ કી ગઈ, પરઃ બીજી  
અસ્તિ પણ શોધનના અતિયોગમાં દેવાય છે દુસરી  
વસ્તિ મી શોધનકે અતિયોગમે કી જાતી છે ॥૩૭॥

37-37½. Oleander, small stinking swallow wort, and Rajakaseruka prepared in milk and mixed with honey, extract berberry and ghee; (2) the banyan and the three other drugs of its group similarly prepared; these two prescriptions of enema are used in conditions of complications resulting from overaction of the enema

જીવાદાને ત્રયો વસ્તયઃ—

વૃદ્ધતી ક્ષીરકાકોલી પૃશ્નિપર્ણી શતાવરી ॥૩૮॥

કાશ્મર્યબદરીદૂર્વાસ્તથોક્ષીરપ્રિયજ્ઞવઃ ।

જીવાદાને શ્રુતૌ ક્ષીરે દ્વૌ ઘૃતાજ્ઞનસંયુતૌ ॥૩૯॥

વસ્તી પ્રદેયૌ મિષજા શીતૌ સમધુશર્કરૌ ।

વૃદ્ધતી ઉક્ષી બેરીંગણી વડી કરેલી, ક્ષીરકાકોલી  
ક્ષીરકાકોલી ક્ષીરકાકોલી, પૃશ્નિપર્ણી પૃશ્નિપર્ણી પૃશ્નિ-  
પર્ણી, શતાવરી અને શતાવરી ઔર શતાવર, તથા  
તથા તથા, કાશ્મર્ય- ગંભારી ગંભારીકે ફલ, બદરી-  
દૂર્વાઃ બેર, દૂર્વા વેર, દૂર્વા, વડીર- કાગો વાગો લવ,  
પ્રિયજ્ઞવઃ અને પ્રિયંયુ ઔર પ્રિયજ્ઞ, દ્વૌ એ બંને  
દ્રવ્ય સમૂહોને इन दोनों द्रव्य समूहोंको, ક્ષીરે દૂધમાં  
દૂધમે, શ્રુતૌ ઉક્ષી પકાકર, ઘૃતાજ્ઞન- ઘી તથા  
રસાજન ઘૃત તથા રસાજનકે, સંયુતેઃ મેળવી સાથ  
મિલાકર, સમધુશર્કરૌ મધ અને સાકર સાથે શદ્દ  
ઔર ચીનીકે સાથ, શીતૌ શીતળ શીતળ, વસ્તી

૩૮. કાશ્મર્ય-કાશ્મરી (હ.)

જીવાદાને-જીવનીવૈઃ (હ.)

જીવાદાને શ્રુતૌ ક્ષીરે-જીવનીવૈઃ શ્રુતૌ ક્ષીરે (સ.)

કાશ્મર્ય....શ્રુતૌ ક્ષીરે-કાશ્મરીબદરીદૂર્વાસ્તથોક્ષીરપ્રિયજ્ઞકાઃ ।  
જીવનીવૈઃ શ્રુતૌ ક્ષીરેઃ (હ.)



अस्तिओ वस्तिओ, मिश्रजा वैदे वैद्य, जीवादाने ७१-  
२४२ना आवर्मा जीवादानमें, प्रदेयो देरी देवे ॥३८ ३९॥

38-39. (1) Indian nightshade, Ksheerakakoli, painted leaved uraria and climbing asparagus; (2) White teak, jujube, scutch grass, cuscus grass and perfumed cherry:—these two sets of drugs prepared in milk and mixed with ghee, extract of berberry, honey and sugar should be given as cold enema, by the physician, in conditions of hemorrhage.

गोऽव्यजामहिषीक्षीरैर्जीवनीययुतैस्तथा ॥४०॥  
शशैणदक्षमार्जारमहिषाव्यजशोणितैः ।  
सद्यस्कैर्मृदितैर्वस्तिजीवादाने प्रशस्यते ॥४१॥

जीवनीययुतैः ७१-७२ मधुनी औषधिकी बेणवी  
जीवनीयगणकी औषधियोंके साथ, तथा तथा तथा  
शुद्ध-एण-ससला औषु खरगोश-एण, दक्ष-मार्जार  
कुंडा, गिलाया मुर्गा, बिह्ना, महिष बेस मैद्य, नवी-नज  
भेदी और अउरीना मेह और बकरी इनके, शोणितैः  
बोली साथे खनके साथ, सुदितैः बेणवी आपेवी  
मिलाकर वी हुई, गो-नवी- गाय, भेदी गाय, मेह,  
नजा अउरी बकरी, महिषी और बेसना और मैद्यके,  
शौरैः दूध, साथे दूधके साथ, वस्तिः अस्ति वस्ति,  
जीवादाने ७१-७२ना जीवादानमें, प्रशस्यते प्रशस्त छे  
प्रशस्त है ॥ ४०-४१ ॥

40-41. Another prescription recommended for use in this condition of hemorrhage consists of the freshly drawn blood of hare, deer, cock, cat, buffalo, sheep or goat, emulsified and mixed with the milk of cow, sheep, goat or buffalo and with the drugs of the life promoter group.

४१. सद्यस्कैर्मृदितैः-सद्यस्कैरेवतैः (क.)

रक्तपिते द्वौ वस्ती प्रमेहे वैदः—

मधूकमधुकद्राक्षादूर्वाकाशमर्यचन्दनैः ।  
तेनैव विधिना वस्तिर्वैद्यः सक्षौद्रशर्करः ॥४२॥  
मज्जिष्ठासारिवानस्तापयस्यामधुकैस्तथा ।  
शर्कराचन्दनद्राक्षामधुघ्रात्रीफलोत्पलैः ।  
रक्तपिते, प्रमेहे तु कषायः सोमवल्कजः ॥४३॥

मधूक- मधुनी महुवा, मधुक नेरीमध मुनद्री,  
द्राक्षा द्राक्षा द्राक्षा, दूर्वा श्री दूर्वा, काशमर्य- काशमर्य-  
गम्मातीके फल, चन्दनैः और चन्दनभी और चन्दनके,  
स-क्षौद्र- मध राहद, शर्करः और साक्षरसहित और  
नीनीके साथ, वस्तिः पहेली अस्ति प्रथम वस्ति, तेव  
एव तेव उसी, विधिना विधिभी विधानसे, रक्तपिते  
रक्तपितमा रक्तपितमें, वैद्यः देवी ओधओ देवी  
चाहिए, तथा तथा तथा मज्जिष्ठा- मज्जिष्ठा मंजीठ,  
सारिवा- सारिवा सारिवा, जनन्ता- जनन्ता जनन्ता,  
पयसा- पयसा पयसा, तथा मधुकैः नेरीमध वडिदमधु,  
शर्करा-चन्दन- साक्षर, चन्दन नीनी, चन्दन, द्राक्षा-  
द्राक्षा द्राक्षा, मधु- मध राहद, घ्रात्रीफल- आभर्मा  
आँवला, उत्पलैः च और नीलकमलभी साधित भी  
अस्ति रक्तपितमा देवी ओधओ और नीलोफरसे  
साधित दूसरी वस्ति रक्तपितमें देनी चाहिए, सोमवल्कजः  
कषायः सोमवल्कजना कषायानी अस्ति सोमवल्कके कषा-  
यकी वस्ति, प्रमेहे तु प्रमेहमा देवी ओधओ प्रमेहमें  
देनी चाहिए ॥ ४२-४३ ॥

42-43 Another enema prepared from mohwah, liquorice grape, scutch grass white teak and sandalwood and mixed with honey and sugar may be given in the same way. Indian madder, the two varieties of Indian sarsaparilla, milky yam and liquorice (2) sugar, sandalwood, grape, honey, emblec myrobalan and blue lotus; these two

४३ एतच्छ्लोकानन्तरम्—

वस्तिद्वौ विविधेन विधया बुद्धिपूर्वितः

इत्यधिकः पाठः (क.) पुस्तके ।



sets of drugs are used in conditions of hemothermia. The decoction of gum arabic is given in conditions of urinary anomalies.

ગુસ્માદિરોગેવાતિદેશિકવસ્તયઃ—

ગુસ્માતિસારોદાવર્તેસ્તમ્મસકુચિતાદિષુ ।

સર્વાન્નૈકાન્નરોગેષુ રોગેષ્વેવંવિધેષુ ચ ॥૪૪॥

યથાસ્વૈરોષયૈઃ સિદ્ધાન્ વસ્તીન્ દયાદ્વિચક્ષણઃ ।

પૂર્વોક્તેન વિધાનેન કુર્વન્ યોગાન્ પૃથગ્વિધાન્ ॥૪૫॥

ગુસ્મ- ગુદમ ગુલ્મ, અતિસાર- અતિસાર અતિસાર, ઉદાવર્ત- ઉદાવર્ત ઉદાવર્ત, સ્તમ્મ- સ્તમ્મ સ્તમ્મ, સકુચિત- સકુચિત સંકોચ, આદિષુ વગેરેમાં આદિમે, સર્વાન્ન- સર્વાન્ન તથા એકાન્ન સર્વાન્ન તથા એકાન્ન, રોગેષુ રોગેષુ રોગોમે, રોગેષુ રોગેષુ રોગોમે, એવંવિધેષુ ચ અને એવી અતના ઓર હવ પ્રકારકે, રોગેષુ- બીજા રોગમાં દુસરે રોગોમે, વિચક્ષણઃ વિચક્ષણ વેચે વિદ્વાન વૈય, પૂર્વોક્તેન- અગાઉ કહેલા પૂર્વેક, વિધાનેન વિધાન પ્રમાણે વિધિસે, પૃથગ્વિધાન્ બુદ્ધ બુદ્ધ પ્રકારના નાના પ્રકારકે, યોગાન્ યોગો યોગો, કુર્વન્ કરીને વનાકર, યથાસ્વૈઃ રોગા- નુસાર રોગાનુસાર, ઔષધૈઃ ઔષધથી ઔષધોસે, સિદ્ધાન્ વસ્તીન્ સિદ્ધ અસ્તિઓ સિદ્ધ વસ્તિયાં, દયાદ્વ દેની દેને ॥૪૪-૪૫॥

44-45. In conditions of gulma, diarrhea, reverse peristalsis, stiffness and contractures, as also, in conditions of partial or total paralysis and in various morbid conditions of a similar type, the discerning physician should administer enema prepared with the drugs appropriate for each disease-condition, selecting the prescriptions of various sorts in the manner of the above mentioned prescriptions.

૪૪. સર્વાન્નૈકાન્ન-સર્વાન્નૈકાન્ન (બ.)

૫. કુર્વન્ યોગાન્-કુર્વન્ યોગાન્ (ર.)

અધ્યાયોક્તવિષયાઃ—

તત્ર શ્લોકાઃ—

ત્રિકાલ્પયોઽનિલાદીનાં ચતુષ્કાશ્ચાપરે ત્રયઃ ।

પકાશયવિશુદ્ધયર્થે વૃષ્યાઃ સાંપ્રાદિકાસ્તથા ॥૪૬॥

પરિસ્વાવે તથા દાહે પરિકર્તે પ્રવાહણે ।

સાતિયોગે મતૌ દ્વૌ દ્વૌ જીવાદાને તથા ત્રયઃ ॥૪૭॥

દ્વૌ રક્તપિત્તે મેહે ચ એકસ્ત્રિશ્ચ સસ તે ।

સુલભાસ્પૌષધક્લેશા વસ્તયો ગુણવત્તમાઃ ॥૪૮॥

તત્ર તે વિષયમાં ઉપ વિષયમે, શ્લોકાઃ ઉપસંહારના શ્લોક છે કે ઉપસંહારકે શ્લોક હૈંકિ, અનિલા- દીનામ વાયુ વગેરે દોષોમાં વાતાદિ દોષોમે, ત્રયઃત્રિકાઃ ત્રણ ત્રણના ત્રણ સમૂહરૂપ અસ્તિઓ. ત્રણ ત્રણના ત્રણ સમૂહરૂપ અસ્તિઓ, પકાશય પકાશયની પકાશયકી, વિશુદ્ધયર્થે શુદ્ધિ કરનારા શુદ્ધિ કરનાર, વૃષ્યાઃ વૃષ્ય વૃષ્ય, તથા તથા તથા, સાંપ્રાદિકાઃ સાંપ્રાદિક સાંપ્રાદિક, અપરે ચ બીજા દુસરે, ચતુષ્કાઃ ચ ચાર ચારના ત્રણ સમૂહરૂપ અસ્તિઓ. ચાર ચારકે ત્રણ સમૂહરૂપ અસ્તિઓ, પરિસ્વાવે અને પરિસ્વાવ ઓર પરિસ્વાવ, દાહે દાહ દાહ, પરિકર્તે પરિકર્તિતકા પરિકર્તિતકા, સાતિયોગે અતિયોગ અતિયોગ, તથા પ્રવાહણે તથા પ્રવાહિકામાં તથા પ્રવાહિકામે, દ્વૌદ્વૌ છે છે અસ્તિઓ દો દો વસ્તિયાં, મતૌ કહી છે કહી હૈં, તથા તથા તથા, જીવાદાને જીવાદાનમાં જીવાદાનમે, ત્રયઃ ત્રણ ત્રણ, રક્તપિત્તે દ્વૌ રક્તપિત્તમાં છે રક્તપિત્તમે દો, મેહે ચ અને પ્રમેહમાં ઓર પ્રમેહમે, એકઃ એક અસ્તિ કહી છે એક અસ્તિ કહી હૈ, તે આ પ્રમાણે તે હવ તરહવે, સુલભ- સુલભ સુલભ, અસ્પૌષધ-ક્લેશાઃ અસ્પૌષધ તથા ક્લેશવાળી અસ્પૌષધ તથા ક્લેશવાળી, ગુણવત્તમાઃ અને સૌથી શુભવાળી ઓર ગુણોમે સર્વથે શ્રેષ્ઠ, ત્રિકાલ્પ સસ ચ સાડનીસ ચૈતીસ, વસ્તયઃ અસ્તિઓ વસ્તિયાં કહી હૈ ॥ ૪૬-૪૮ ॥

Here are the recapitulatory verses:—

૪૭ સાતિયોગે મતૌ દ્વૌદ્વૌ-અતિયોગે મતઃ પદ્મ (ક. જ.)

૪૮. પકાશયવિશુદ્ધયર્થે-સસન્નિશ્ચયવિશુદ્ધયર્થે (બ.)

46-48. The three triads of prescriptions in conditions of vata and the other two humors, another triad of tetrads for purification of the colon, virilifics, astringents, a dyad of prescriptions in each of the conditions of blennorrhagic condition, burning, griping pain diarrhea and overaction of the exema; a triad of prescriptions in hemorrhage a dyad in hemothermia and one in urinary anomalies thus making a total of thirty seven prescriptions of most excellent enemas, prepared with a few and easily obtainable drugs and causing little or no discomfort are described herein.

इत्यग्निवेशकृते तन्त्रे चरकप्रतिमंस्कृतेऽप्राप्ते  
दृढबलसंपूरिते सिद्धिस्थाने वस्ति-  
सिद्धिर्नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

इति आ प्रभाषे इस प्रकार, अग्निवेशकृते अग्नि-  
वेशे २२६॥ अग्निवेशसे बनाये, चरकप्रतिमंस्कृते तन्त्रे  
आने अरु ३७१ प्रतिमंस्कृत पाये॥ आ शास्त्रमां  
और चरकके द्वारा संस्कृत इस शास्त्रके, अप्राप्ते अप्राप्त  
अप्राप्त, दृढबलसंपूरिते आने दृढबले पूरा करने॥  
और दृढबलसे पूरित किये गये, सिद्धिस्थाने सिद्धिस्थानमां  
सिद्धिस्थानमें, वस्तिविधिः 'वस्तिविधिः' वस्तिविधिः  
नाम नामने। नामक, दशमः दशमो दशमो, अध्यायः  
अध्याय संपूर्णः अध्याय समाप्त हुआ ॥ १० ॥

10. Thus, in the Section on Success in Treatment, in the treatise compiled by Agnivesa and revised by Caraka, the tenth chapter entitled 'The Successful application of the enema procedure' not being available, the same as restored by Dridhabala, is completed.

## एकादशोऽध्यायः ।

अग्नियारभो अध्याय अध्याय ग्यारहवां

## Chapter XI

फलमात्राविदुषपक्रमः—

अथातः फलमात्रासिद्धिं व्याख्यास्यामः ॥ १ ॥

इति ह स्माह मगवानात्रेयः ॥ २ ॥

अथ अतः हने अहोमीं अब आगे, फलमात्रा-  
सिद्धिम् 'इक्षुमात्रासिद्धि' नामना अध्यायः 'फलमात्रा-  
सिद्धि' नामके अध्यायका, व्याख्यास्यामः व्याख्या-  
करेण व्याख्यान करेगे ॥ १ ॥

मगवान् अग्रयान मगवान्, आत्रेयः आत्रेये आत्रेयने,  
इति ह आ विषयमां नीचे प्रभाषे ॥ इस विषयमें  
निम्न प्रकारसे ही। आह आ करेणुं से कहा है ॥ २ ॥

1. We shall now expound the chapter entitled 'The successful use of the emetic nut and the dose of the enema.'

2. Thus declared the worshipful Atreya.

आस्थापने कतमफलं श्रेष्ठमित्यत्र मुनीनां मतानि—

मगवन्तमुदारसस्वधी-

श्रुतिविज्ञानसमृद्धमग्निजम् ।

फलवस्तिवरत्वनिश्चये

सविवादा मुनयोऽभ्युपगमन् ॥ ३ ॥

शृगुक्लौषिककाप्यद्यौमकाः

सपुलस्त्यासितगौतमादयः ।

कतमम् प्रवरं फलादिषु

स्मृतमाख्यायनयोजनास्त्विति ॥ ४ ॥

आस्थापन- आस्थापन आस्थापनकी, दोषकाप्य  
शृगुक्लौषिकमां योजनानामो, फलादिषु औक्लौषिक वज्रेमां  
मेनफल आदिमें, कतमम् कतुं ह १ कौतुका फल, प्रवरम्  
श्रेष्ठ श्रेष्ठ, स्मृतम् मानवामां आवेक्ष से माना गया है,  
इति औम इव तरह, फलवस्ति इक्षुपरितोनी फलवस्ति,  
वरत्वनिश्चये श्रेष्ठताना निश्चयमां श्रेष्ठताने निश्चयमें,

१. फलमात्रासिद्धि-फलमात्रा (१.)

सविवादाः निवाद्युक्त विवादयुक्त, भृगु-भृगुः कृष्णः, कौशिक-कौशिकः कौशिकः, काप्य-काप्यः काप्यः, शौनकाः शौनकः शौनकः, सपुलस्त्य-पुलस्त्यः पुलस्त्यः, असित-असितः असितः, गौतमादयः गौतमः गौतमे गौतम आदि, मुनिवः मुनिवः मुनि, भगवन्तम् भगवान् भगवान्, उदारसत्त्व-उदारः भगवन् उदार मनः, श्री-शुद्धि बुद्धि, श्रुति-श्रुति श्रुति, विज्ञान-अने विज्ञानधी और विज्ञानसे, समुद्रम् समुद्रः समुद्रः, अत्रिजम् अत्रिः अत्रिजके, अभ्युपागमन् पासे आभ्या पास पहुँचे ॥ ३-४ ॥

3-4. Unto the worshipful son of Atri, richly endowed with wide mind, understanding, learning and knowledge, the sages came disputing among themselves concerning the determination of the excellence of the emetic nut in the preparation of the enema. Among these sages were Bhrigu, Kausika, Kapya, Saunaka, as well as Pulastya, Asita, Gautama and others; and the subject of their discussion was—which among such fruits as the emetic nut etc., holds the first place in the preparation of corrective enema.

कफपित्तहरं वरं फले-

अथ जीमूतकमाह शौनकः ।

मृदुवीर्यतयाऽभिनत्ति तच्छ-

कटित्याह नृपोऽथ वामकः ॥ ५ ॥

कटुगुग्गुलुममन्यतोत्तमं

वमने दोषसमीरणं च तत् ।

अथ शौनकः शौनके शौनकने, आह-उल्लुं के कहा कि, फलेषु इणोभा फलोमें, कफपित्तहरम् उह अने पित्त हरनार कफ तथा पित्तको हरनेवाला, जीमूतकम् उल्लुं जीमूतक, वरम् श्रेष्ठ छे श्रेष्ठ है, अथ नृपः राजा

५. तच्छकटित्याह-तस्य चित्राच (ह.)

६. कटुगुग्गुलुममन्यतोत्तमम्-कटुगुग्गुलुममन्यतोत्तमम् (क.)

राजा, वामकः वामके वामकने, आह उल्लुं के कहा कि तत् ते वह, मृदुवीर्यतया-मृदु वीर्यवाला होनेसे, शक्य भणनुं मलका, अभिनत्ति इति भेदन करतुं नहीं भेदन नहीं करता, कटुगुग्गुलु ते उल्लुं तुलसीने वह कटुगुग्गुलुको, उत्तमम् श्रेष्ठ श्रेष्ठ, अमन्यत मानते। हते। मानता था, तत् च उल्लुं के ते क्योंकि वह, वमने-वमनभा वमनमें, दोषसमीरणम् दोषोने प्रेरी अहार काटे छे दोषको प्रेरित करके बाहर निकालती है ॥ ५३ ॥

5 Saunaka said that bristly luffa is the foremost among the fruits used in enema, as it is curative of pitta and Kapha conditions. King Vamaka intervened saying, due to its mild potency it is not able to laxate the stools. The bitter bottle gourd is the best as it is an excellent agent in emesis and in elimination of morbid matter.

तद्वृष्यमशैत्यतीक्ष्णता-

कटुरौक्ष्यादिति गौतमोऽब्रवीत् ॥ ६ ॥

कफपित्तनिवर्हणं परं

स च धामार्गवमित्यमन्यत ।

गौतमः गौतम गौतमने, अब्रवीत् उल्लुं के कहा कि, तत् ते वह, अशैत्य-उष्णता उष्णता, तीक्ष्णता-तीक्ष्णता तीक्ष्णता, कटु-कटुता कटुता, रौक्ष्यात् अने रक्षताने अर्ध और रुक्षताके कारण, अवृष्यम् इति अशैत्य छे अवृष्य है, सः च ते वह धामार्गवम् धामार्गवने धामार्गवको, परम् कफ-पित्त-निवर्हणम् इति उह तथा पित्तने। अत्यन्त नाश करनार कफ तथा पित्तका अत्यन्त नाशक, अमन्यत मानता हता मानता था ॥ ६३ ॥

६. तद्वृष्य-तद्वृष्य (घ फ)

७. अशैत्य अमौक्ष्य (घ.)

८. धामार्गवमित्यमन्यत-धामार्गवमेव मन्यते (घ. क.)

९. धामार्गवमेव मन्यते (घ. क.)

6 6½. Gautama said 'No, on account of its anaphrodisiac, hot, acute, pungent and dry qualities, it is not suitable; but bitter rag gourd is considered an excellent remedy for the cure of kapha and pitta conditions.'

तदमन्यत वातलं पुन-

बडिशो ग्लानिकरं बलापहम् ॥ ७ ॥

कुटजं प्रशंसस चोत्तमं

न बलघ्नं कफपित्तहारि च ।

बडिशः अग्नि बडिश, पुनः तत् तेने उसे, वातकम् वातल वातल, ग्लानिकरम् ग्लानि करनार ग्लानिकरक, बलापहम् अने ग्लानाशक और बलनाशक अमन्यत मानता इति मानता या, कुटजम् ते श्रुत्वा ने वह इन्द्रजौको, उत्तमम् च उत्तम छे उत्तम है, प्रशंसस श्रीवी प्रशंसा करता इति ऐसी प्रशंसा करता या, न बलघ्नम् केभके ते ग्लानाशक नहीं क्योंकि वह बलनाशक नहीं है, कफपित्तहारि च अने छे तथा पित्तने करनार छे और कफ तथा पित्तका नाशक है ॥ ७ ॥

7-7½. Badisa said 'It is not so as it is causative of vata discordance and a depressant, and results in loss of vitality; but the kurchi is praised as an excellent remedy, since it does not impair the vitality and also cures morbid kapha and pitta'

अतिविज्जलमौर्ध्वभागिकं

पवनक्षोभि च काप्य आह तत् ॥ ८ ॥

कृतवेधनमाह वातलं

कफपित्तं प्रबलं हरेदिति ।

काप्यः पक्षु क्षाये परंतु काप्यने, आह उक्तुं के कहा कि, तत् ते वह, अतिविज्जलम् अतिशय पिच्छिल छे अतिशय पिच्छिल है, और्ध्वभागिकम् पवन क्षावनार छे वमन लनेवाला है, पवनक्षोभि च अने वायुने।

क्षोभ करनार छे और वातका क्षोभक है, कृतवेधनम् तेखे कृतवेधनने उधने कृतवेधनको, आह उक्तुं उक्त कहा, वातकम् क्षाये के ते वातल छे क्योंकि वह वातल है, प्रबलम् परंतु प्रबल परन्तु प्रबल, कफपित्तम् छे तथा पित्तने कफ तथा पित्तको, हरेद इति हरे छे हरता है ॥ ८ ॥

8-8½. Kāpya said 'No this drug is very viscid. It is mainly an emetic and it disturbs the movement of vata, but the bitter luffa is the best, since it is promotive of vata and curative of even very severe discordance of kapha and pitta.'

तदसाध्विति भद्रशौनकः

कटुकं चातिबलघ्नमित्यपि ॥ ९ ॥

भद्रशौनकः भद्रशौनके उक्तुं के भद्रशौनकने कहा कि, तत् असाधु ते छेक नहीं वह ठीक नहीं है, कटुकम् क्षाये के ते छेक क्योंकि वह कटु, अतिबलघ्नम् च इति अपि अने अति ग्लानाशक छे और अति बलनाशक है ॥ ९ ॥

9. Bhadra Saunaka said 'No, this is not right. It is pungent and causes great impairment of vitality'.

इति तद्वचनानि हेतुभिः

सुविचित्राणि निशम्य बुद्धिमान्

प्रशंसस फलेषु निश्चयं

परमं चात्रिसुतोऽब्रवीदिवम् ॥ १० ॥

इति आ प्रभाषे इस प्रकार, हेतुभिः हेतुओंसहित हेतुसहित, सुविचित्राणि सारी येठे निश्चिन बहु विचित्र, तद्वचनानि तेओनां वचनो उनके वचन, निश्चय संशयोंने सुनकर, बुद्धिमान् बुद्धिमान् बुद्धिमान्,

१. भद्रशौनकः-तत्र शौनकः (४.)

२. कटुकं चाति-कटुकानि (४.)

३. बुद्धिमान्-बुद्धिमान् (४.)

अत्रिसुतः आत्रेये आत्रेयने, फलेषु इमेऽनी आभूतम्।  
फलोंके विषयमें, परमम् श्रेष्ठ श्रेष्ठ, निश्चयम् निश्चय  
निश्चय, प्रकृतं कही देखाया कही, अत्रवीर च अने  
मेऽस्मा और बोले ॥१०॥

10. Having listened to these interesting observations, advanced with reasons, the wise son of Atri praised the speakers and then delivered, as follows, the final decision as to which of the fruits was the best for purposes of the enema.

तत्रात्रेयकृतो निश्चयः —

फलदोषगुणान् सरस्वती

प्रति सर्वैरपि सम्यगीरिता ।

न तु किञ्चिद्दोषनिर्गुणं

गुणभूयस्त्वमतो विचिन्त्यते ॥११॥

सर्वेः अपि तमे सर्वेऽपि आप सवने, फल-इमेऽनी  
फलोंके, दोषगुणान् दोष अने गुणनी दोष और गुणोंके,  
प्रति आभूतम् वारेमें, सरस्वती वाणी वाणी, सम्यक्  
सरणी रीति योग्य रीतिसे, ईरिता उन्मारी के कही है,  
किञ्चित् तु परं तु अमृतम् ऊर्ध्वं पक्ष परन्तु जगतमें  
कुछ भी, अदोषनिर्गुणम् न दोषवाणं अने गुणवाणं  
अ नथो दोषवाला ही और, गुणवाला ही नहीं है, अतः  
आधी इस लिए, गुणभूयस्त्वम् पदार्थना गुणनी अधि-  
कृताने पदार्थके गुणोंकी अधिकताका, विचिन्त्यते विचार  
करना आदे के विचार किया जाता है ॥११॥

11. Concerning the baneful and beneficial properties of the various fruits, you have, all of you, given utterance rightly. There is no substance which is absolutely of both good and bad qualities. Hence our concern should be to select such substances as possess more of the required good qualities.

११. विचिन्त्यते-विचिन्त्यते (ब.)

इह कुष्ठहिता गरागरी

हितमिक्ष्वाकु तु मेहिने मतम् ।

कुटजस्य फलं हृदामये

प्रवरं कोठफलं च पाण्डुषु ॥१२॥

उदरे कृतवेधनं हितं,

इह अही यहां, गरागरी कुष्ठवेदा बंदाल, कुष्ठ-  
हिता कुष्ठमां हितकर के कुष्ठमें हितकर है, इक्ष्वाकु तु  
कुष्ठनी तुण्डी हितलौकी, मेहिने प्रमेहरोग्गिने प्रमेह-  
रोगीके लिए, हितम् हितकर हितकर, मतम् माने के  
माना है, कुटजस्य ऊर्ध्वाना कुशाका, फलम् इक्ष फल,  
हृदामये हृदोगमां हृदोगमें, कोठफलम् च अने कोठ-  
फल और कोठफल, पाण्डुषु पाण्डुरोगमां पाण्डुरोगमें,  
प्रवरम् श्रेष्ठ के श्रेष्ठ है, उदरे तेऽम् उदरोगमां एवं  
उदरोगमें, कृतवेधनम् कृतवेधन कृतवेधन, हितम्  
हितकर के हितकर है ॥१२॥

12-12½. Bristly luffa is best in dermatosis and bitter bottle gourd is considered beneficial in urinary anomalies. Kurchi seeds are beneficial in diseases of the stomach; the bitter rag gourd is good in anemia; and the bitter luffa is beneficial in abdominal disease.

मदनं सर्वगदाविरोधि तु ।

मधुरं सकषायतिककं

तदरुखं सकटूष्णविजलम् ॥१३॥

कफपित्तहृदाशुकारि चा-

प्यनपायं पवनानुलोमि च ।

फलनाम विशेषतस्त्वतो

लभतेऽन्येषु फलेषु सत्वपि ॥१४॥

मदनम् तु भीष्म मैनफल, सर्वगदाविरोधि  
सर्व रोगानु विरोधी नथो सब रोगोंका अविरोधी है,  
तत् ते वह, मधुरम् मधुर मधुर, सकषाय- कषाय के  
कषाय है, तिककम् तिक के तिक है, अरुखम् तथा  
इक्ष नथो तथा कक्ष नहीं है, सकटु- पक्ष ते कटु पुनः  
वह कटु, उष्ण- उष्ण उष्ण, विजलम् विजलम्

१२. कोठफलं-कोशफल (ब.)

१३. मधुरं-मधुरं (ब.)

विजल, कफपित्तद्वय उद्ग तथा पित्तरे हरनार कफ तथा पित्तको हरनेवाला, आशुकारि जलदीधी असर करनेवाला शीघ्रकारि, अनपायम् च अपि पुष्टिमान नहि करनेवाला हानि नहीं करनेवाला, पवनानुलोमि च अने वायुनु अनुलोमन करनेवाला है, अतः औषधी इस लिए, अन्वेषु णीम् अन्य, फलेषु- क्षणे। फल, सरसु अपि होना अर्था ५क्षु होने पर भी. विशेषतः भीक्षुणा भास करीने मैनफल विशेषतः, फलनाम 'क्षु' औषधी नामने 'फल' ऐसे नामको, कथते प्राप्त करे छे प्राप्त करता है ॥ १३-१४ ॥

13-14. And emetic nut is not contra-indicated in any disease. It is sweet, slightly astringent, and bitter in taste, it is non-dry pungent, hot and viscid; and it quickly eliminates kapha and pitta from the stomach. It is innocuous; it regulates the regular peristaltic movement of vata. By reason of all these excellent qualities, this gets the appellation of the fruit, par excellence amid all the fruits

गुदगतोवस्तिः सर्वशरीरस्थान्दोषान्कथमपहरतीत्यग्निवेशप्रश्नः —

गुदणेति वचस्पृदाहते

मुनिसङ्गेन च पूजिते ततः ।

प्रणिपत्य मुदा समन्वितः

सहितः शिष्यगणोऽनुगृह्णवान् ॥१५॥

गुरुणा शुभे गुरुके, इति वचसि औ प्रभाषे पञ्चन इस प्रकारके वचन, उदाहृते कथं त्वारे कहने पर, मुनिसङ्गेन च अने मुनिसभूडे और मुनिसंघने, पूजिते तेने भान सह स्वीकृत्य उसको सम्मानित किया, ततः ते पक्षी इसके बाद, प्रणिपत्य प्रक्षुभ करीने प्रणाम करके, मुदा समन्वितः आनन्दयुक्त हर्षयुक्त, सहितः औष्ठ साथे भण्णने एक साथ, शिष्यगणः शिष्य-भूडे शिष्योंने, अनुगृह्णवान् प्रश्न पूछ्यो पूछा ॥१५॥

15. When the Master had thus delivered his pronouncement and had been duly honoured by the assembled sages, then the band of disciples, greatly pleased, bowed before the teacher and together put the following question.

सर्वकर्मगुणकृद्गुरुणोक्तो

वस्तिरुर्ध्वमथ नेति नामितः ।

नाम्बधो गुदमतः स शरीरात्

सर्वतः कथमपोहति दोषान् ॥१६॥

जब गुरुणा आपने आपने, वस्तिः वस्तिने वस्तिको, सर्वकर्मगुणकृद् सर्व कर्मना युक्त साधनार सब कर्मके गुणोंको करनेवाली, उक्तः उक्ती छे कहा है, नामितः ते नामिथी वह नामिते, उर्ध्वम् ऊपर ऊपर, व वस्ति जली नथी नहीं जाती, नाम्बधः परंतु नामिनी नीचे परन्तु नामिते नीचे, गुदम् गुदमा पाली आवे छे गुरामें फिर लौट आती है, अतः आधी इस लिए, सः ते वह, शरीरात् शरीरमाथी शरीरके, सर्वतः सर्व रश्मानेथी सब स्थानोंमेंसे, दोषान् दोषाने दोषोंको, कथम् कथी रीते कैसे, अपोहति हरे करे छे हरे करती है ॥१६॥

16. The enema has been declared by the teacher to be possessed of the qualities and actions curative of all morbid conditions; but, seeing that it does not reach up above the umbilical region and comes out from there through the anus, how then does it manage to draw out the morbid matter from all over the body?

तत्राग्नेयकृतं समाधानम्—

तद्गुरुब्रवीद्विद्वं शरीरं

तन्त्रयतेऽनिलः सङ्गविधातात् ।

११. गुदगतः स—गुदगतः (स.)

१२. दोषान्—दोषान् (व. क.)

१३. सङ्गविधातात्—सङ्गविधानात् (व. क.)

केवल एव दोषसहितो वा

स्वाशयगः प्रकोपमुपयाति ॥१७॥

तत्र त्वारे तव, गुरुः गुरुः गुरुः, अत्रवीर्यं कथं  
के कहा कि, सप्तविधातात् संधेऽत्र अने विशेषेण धर्म  
संयोग और वियोगसे, अनिलः वायु वायु, इव  
शरीरम् आ शरीरने इस शरीरको, तन्मयते यथावे  
छे बलाता है, केवलः अकेला अकेला, एव अ ही,  
दोषसहितः वा अथवा दोष साथे अथवा दोषसहित,  
स्वाशयगः पीताना आशयभा रक्षी अपने स्थानमें  
रहकर, प्रकोपम् प्रकोप प्रकोपको, उपयाति पात्रे छे  
प्राप्त होता है ॥ १७ ॥

17. To this, the teacher replied ' it is vata that controls the entire body in as much as it is the one universal motivation preventing any stagnation or obstruction in the body; and it is always in its own habitat that this vata, whether by itself or in conjunction with the other two morbid humors. gets first provoked.

तं पवनं सपित्तकफवृद्धं

शुद्धिकरोऽनुलोमयति बस्तिः ।

सर्वशरीरगश्च गदसंघ-

स्तत्प्रशमात् प्रशान्तिमुपयाति ॥१८॥

शुद्धिकरः शुद्धि करनेवाला शुद्धिकारक, बस्तिः अस्ति  
बस्ति, सपित्त- पित्त पित्त, कफवृद्धम् कफ अने भण्ण  
भुक्ता कफ और मलसे युक्त, तम् ते उस, पवनम्  
पवनम् वायुका, अनुलोमयति अनुलोमन करे छे अनु-  
लोमन करती है, तत्प्रशमात् तेनी शान्तिभी उसके  
समनसे, सर्वशरीरगः आभाय शरीरभा रहेछे सब  
शरीरगत, गदसंघः च रोगप्रसूत रोगप्रसूत, प्रशान्तिम्  
शान्ति प्रशान्त, उपयाति थाय छे होता है ॥१८॥

18. Now, the enema by its purificatory action, regulates the downward movement of this morbid vata along with pitta, kapha and the fecal matter.

And when the vata is thus quieted it follows that the disease conditions, whenever they may be in the body, are also quieted.

पशूनां वस्तिकर्मविधिः —

अथाधिगम्यार्थमखण्डितं धिया

गजोष्ट्रगोश्वाम्यजकर्म रोगनुत् ।

अपृच्छदेनं स च वस्तिमब्रवी-

विधिं च तस्याह पुनः प्रचोदितः ॥१९॥

धिया बुद्धिभी बुद्धिसे, अखण्डितम् अखण्डित  
संपूर्ण, अर्थश्च अर्थ अर्थको, अधिगम्य अथ अथ  
पशू समझनेके पश्चात्, गज- शिम्भुअष्ट्रे हाथी शिम्भ-  
गणने हाथी, उष्ट्र- ऊँट ऊँट, गो- गाय, अश्व-  
घोडा घोडा, अजी- बैँटा भेडा, अज अने अउराभा  
और बकरेमें, रोगनुत् रोगने दूर करनेवाला रोगहर, कर्म  
कर्म कर्म, एनम् अने इनसे, अपृच्छत् पूछ्युं पूछा,  
सः च अने तेझे और उन्होंने, वस्तिम् अस्ति वस्तिको,  
अब्रवीत् रोगने दूर करनेवाला कर्म कहा, पुनः अने इसीथी और  
फिरसे, प्रचोदितः पूछवाथी पूछने पर, तस्य तेनी  
उसकी, विधिम् विधि विधिको, जाह कही कहा ॥१९॥

19. Then the disciple (Agnivesa) having grasped, by his keen intelligence the full implications of the above theory, went on to question about the curatives of diseases affecting elephants, camels, cattle, horses, sheep and goats; and here again the Master emphasized the supremacy of the enema among therapeutic measures

१९. अथाधिगम्यार्थमखण्डितं धिया-अथाधिगम्यार्थमखण्डितका-

विधिं (च. फ.)

,,

--अथाधिगम्याजमुखिदकाविधि

(च. फ.)

,,

गजोष्ट्रगोश्वाम्यजकर्म-गजोष्ट्रगोश्वाम्यजवस्तिकर्म (च.)

,,

व्यजकर्म रोगनुत्-व्यजवस्तिकर्म (फ.)



and being besought for further elucida-  
tion, he described the modus  
operandi in each case, as follows;

आजोरणौ सौम्य गजोष्ट्रयोः कृते  
गवाश्वयोर्वेस्तिमुशन्ति माहिषम् ।

अजाविकानां तु जरङ्गवोद्धवम्

वदन्ति वस्ति तदुपायचिन्तकाः ॥२०॥

सौम्य हे सौम्य ! हे सौम्य !, गजोष्ट्रयोः कृते  
हाथी અને ઉંટને માટે हाथी और ऊंटके लिए, आजो-  
रणौ भडरी अथवा घेटीनी अस्ति बकरी या भेड़की  
वस्ति, गवाश्वयोः गाय અને घोडाने માટે ગાયો और  
घोडोंके लिए, माहिषम् भैंसनी भैंसकी, वस्तिम् अस्ति  
वस्ति, उशन्ति उड़े છે कहते हैं, अजाविकानाम् तु અને  
भडरी तथा घेटी માટે और बकरी तथा भेड़के लिए,  
जरङ्गवोद्धवम् वृद्ध भगवन्ती बूढ़े बेलकी, वस्तिम् अस्ति  
वस्तिको, तदुपायचिन्तकाः તેના ઉપાયનું ચિંતન કરનાર  
उसके उपायके चिन्तक, वदन्ति उड़े છે कहते हैं ॥२०॥

20. For giving the enema to the  
elephant and the camel, the receptacle  
should be made of the bladder of the  
goat or the sheep. For giving enema  
to cows and horses the bladder of  
the buffalo should be used, and for  
giving the enema to sheep and goats  
the bladder of an old ox should be  
used. This is the opinion of the ve-  
terinary experts in the administration  
of the enema.

अरस्तिमष्टादशषोडशाङ्गुलं

तथैव नेत्रं हि दशाङ्गुलं क्रमात् ।

२०. आजोरणौ-अजाविके (ख. न.)

॥ आजोरणौ सौम्य गजोष्ट्रयोः कृते-अजाविके सौम्य गजो-  
ष्ट्रयोर्वा (ख.)

॥ जरङ्गवोद्धवम्-जरङ्गवोपपम् (ख.)

॥ तदुपायचिन्तकाः-स्वयं उत्तरेण (त.)

२१. अरस्तिम्-सुवस्तिम् (ख. त. द.)

॥ हि दशाङ्गुलं-सप्तदशाङ्गुलं (ख.)

गजोष्ट्रयोश्चाप्यजवस्तिर्सौधौ

चतुर्थभागोपनयं हितं वदेत् ॥२१॥

तथा एव तेभ्य एव, गज- हाथी हाथी, उष्ट्र-  
जिंटे ऊंट, गो- गाय गाय, वध- घोड़ा घोड़ा, जवी  
घेटी भेड़ अज और भडरीने और बकरीके, वस्ति  
सन्धौ नेत्रम् अस्ति आपवाभा नेत्र वस्ति नेनेमें नेत्र,  
क्रमात् कभानुसार क्रमसे, अरस्तिम् अरस्ति अरस्ति,  
मष्टादश अठार आंगुल अठारह अंगुल, षोडशाङ्गुलम्  
षोडश आंगुल सोलह अंगुल, दशाङ्गुलम् द्दि तथा दश  
आंगुल द्वाधुं तथा दश अंगुल दसमा, चतुर्थ-भाग-  
उपनयम् અને દાખલ કરવામાં તેનો ચોથો ભાગ  
और दाखिल करनेमें उसका चौथा भाग, हिदम् हिदकर  
छे हितकर है, वदेत् એમ કહેવું ऐसा कहे ॥२१॥

21. The length of the forearm  
and eighteen, sixteen and ten fingers  
should be the respective lengths  
of the enema tube used for the elep-  
hant, camel, cow, horse, sheep or  
goat. It is stated that it is advisable  
to insert one fourth of the tube in to  
the rectum.

प्रस्वस्त्वजाभ्योर्हि निरुहमात्रा

गवादिषु द्वित्रिगुणं यथाबलम् ।

निरुहमुष्ट्रस्य तथाऽऽढकद्वयं

गजस्य वृद्धिस्त्वनुवासनेऽष्टमः ॥२२॥

२१. चतुर्थभागोपनयं हितं वदेत् चतुर्थभागे च अस्ति हि वदेत्  
(ख. ड.)

॥ -चतुर्थभागे कृतवस्ति वदेत्  
(ख. क.)

२२. प्रस्वस्त्वजाभ्योर्हि.... यथाबलम्-अजाविके प्रस्वस्तिं निरुहं  
गवादिषु द्वित्रिगुणं यथाबलम् (ख.)

॥ प्रस्वस्त्वजाभ्योर्हि निरुहमात्रा-अजाविके प्रस्वस्तिम्-  
तद्विदः (ख.)

॥ द्वित्रिगुणम्-द्वित्रिगुणो (ख.)

॥ निरुहमुष्ट्रस्य.... अनुवासनेऽष्टमः-निरुह उष्ट्रस्य वदेत् दशा-  
ङ्गुलो यथाबलं तु हिदं अनुवासनेऽष्टमः (ख.)

અજાગ્યોઃ દિ બકરાં અને બેટાંની વકરી જોર મેકરી, નિરુહમાત્રા તુ નિરુહમાત્રા નિરુહકી માત્રા, પ્રસ્થઃ ઓક પ્રસ્થ છે ૬૪ તોલે છે ગવાદિષુ. આપ વજેરેમાં ગાય આદિમેં, ચયાવલમ્ બલ અનુસાર વલા-ગુસાર, દ્વિત્રિગુણમ્ બમણી કે ત્રમણી નિરુહમાત્રા છે દુગુની ના તિગુની નિરુહમાત્રા હૈ, તથા તથા તથા, ચક્રુચ્ચ- ઊંટની કંટકી, નિરુહમ્ નિરુહમાત્રા નિરુહ-માત્રા, આઠકદમ્ મે આઠક છે ૫૧૨ તોલે છે, ગજલ્લ તુ હાથીની જોર હાથીની, વૃદ્ધિઃ ઓથી બમણી નિરુહ-માત્રા છે દુગુની નિરુહમાત્રા હૈ, જનુવાસને અનુવાસ-નમાં અનુવાસનમેં, અજમઃ નિરુહમાત્રાને આઠમે આમ બહુવો નિરુહમાત્રાકા આઠવાં હિસ્સા જાને ॥૨૨॥

22 The dose of the evacuative enema for goats and sheep is 64 tolas; in the case of cows etc, it should be twice or thrice in quantity. In the case of the camel, it should be 512 tolas in quantity and double that in the case of the elephant. The dose of the unctuous enema should be one eighth of the evacuative enema.

કલિજ્જકુષ્ઠે મધુકં ચ પિપ્પલી

વચા શતાઘ્ના મદનં રસાઞ્જનમ્ ।

હિતાનિ સર્વેષુ ગુઢઃ સસૈન્ધવો

દ્વિપચ્ચમૂલં ચ વિકલ્પના ત્વિયમ્ ॥૨૩॥

કલિજ્જ- ઇન્દ્રજૌ, કુષ્ઠ કઠુ, મધુકમ્ બેટીમધ મુલહટી, પિપ્પલી ચ પીપર પિપ્પલી, વચા વચ, જતાઘ્ના મુખા સોયા, મદનમ્ મીઠા મૈનફલ, રસાઞ્જનમ્ રસપાંતી રસોલ, સસૈન્ધવઃ સિંધાલુષ્ઠ સેન્ધવ, ગુઢઃ ઝોળ ગુઢ, દ્વિપચ્ચમૂલમ્ ચ તથા દશમૂળ જોર દશમૂળ, સર્વેષુ ઓ સર્વ પશુઓ માટે એ સર્વ પશુઓકે લિપ, હિતાનિ બસ્તિકર્મમાં હિતકર છે વસ્તિકર્મમેં હિતકર હૈ, હવમ્ તુ ૫૨૫ આ નીચે બહુવેલી પરંતુ વહ નિન્નોક, વિકલ્પના વિશેષ કલ્પના છે વિશેષ કલ્પના હૈ ॥૨૩॥

૨૩. સિન્ધવ-ત્વિયવ (વ.)

23. Kurchi seeds, costus, liquorice, long pepper, sweet flag, dill seeds, emetic nut, extract of berbery, gur, rock salt and decaradices. These articles are useful in the preparation of all kinds of veterinary enemas.

ગજેડધિકાઽશ્વત્થવટાશ્વકર્ણકાઃ

સત્તાદિરપ્રમદશાલતાલજાઃ ।

સત્તાદિર- ખેર જૈર, પ્રમદ- અરમાળો અમલતાષ, શાલ- શાલ શાલ, તાલજાઃ તાડનાં ફળ તાલકે ફલ, અશ્વત્થ- પીપળો પીપલ, વટ- વડ વરગદ, અશ્વકર્ણકાઃ અને શાલ ઓ જૈર સાલુ યે, ગજે હાથી માટે હાથીકે લિપ, અધિકા બસ્તિકર્મમાં અધિક વપરાય છે વસ્તિકર્મમેં અધિક પ્રયુક્ત કિયે જાતે હૈ ॥ ૨૩૬ ॥

23૬. Holy fig, banyan, Asvakarna sal, catechu, purging cassia, sal, and palmyra palm are specially useful in enema given to elephants.

તથા ચ પચ્ચૌ ધવશિશ્રુપાટલી-

મધૂકસારાઃ સનિકુમ્ભચિત્રકાઃ ॥૨૪॥

પલાશમૂતીકસુરાદ્દરોહિણી-

કવાય ઉક્તસ્વધિકો ગર્વાં હિતઃ ।

તથા ચ તે બ પ્રમાણે હસી પ્રકાર, પચ્ચૌ મુદ્-પર્ણી, માષપર્ણી મુદ્ગર્ણી, માષર્ણી સનિકુમ્ભ- હાંતી દન્તી, ચિત્રકાઃ ચિત્રક ચિત્રક, ધવ- ખાવડો ધાવ, શિશ્રુ- સરંગવો સહજન, પાટલી પાટલી પાટલ, મધૂક-સારાઃ મધુકાને સાર મધુકા સાર, પલાશ- ખાખરો ઢાક, મૂતીક- અબ્જો અજવાયન, સુરાદ્દ- દેવદાર દેવદાર, રોહિણી- અને રોહણ જૈર રોહન, કવાયઃ તુ ઓઝોને કવાય હનકા કવાય, ગવાય ગાયોને માટે

૨૩૬ ગજેડધિકા-ગજેડધિકો (સ. ધ.)

૧૧ અશ્વકર્ણકાઃ-અશ્વકર્ણકાઃ (સ.)

૧૨ સત્તાદિર-સત્તાદિરાઃ (સ.)

૨૪. પચ્ચૌ-ઉબ્દે (સ. હ ત. વ.)

૧૩ પાટલી-પાટલા (ધ.)

गायोंके लिए, अधिक: अधिक, हित: हितकर छे हितकर, उक्त: उक्ता छे कहा है ॥ २४३ ॥

24-24½. Ticktrefoil, painted leaved uraria, crane tree, drum stick, Patala, pith of mahuva, wild croton and and white flowered leadwort, Palas, ginger grass, deodar. kurroa-the decoction of all this is said to be specially beneficial in the preparation of enema to be given to cows.

पलाशदन्तीसुरदारकचूण-

द्रवस्य उक्तास्तुरगस्य चाधिकाः ॥२५॥

पलाश- आभरे ठाक, दन्ती- दन्ती दन्ती, सुरदार- देवदार देवदार, कचूण- रेडिया धास हसा घास, द्रवस्य: अने दन्ती और द्रवन्ती, तुरगस्य च ओओ। बोडाने भाटे ये घोड़ेके लिए, अधिका: अधिक हितकर अधिक हितकर, उक्ता: उक्ता छे कहे गये हैं ॥ २५ ॥

25. Palas, wild croton deodar, ginger-grass and physic nut are regarded specially useful for horses.

सरोष्ठ्योः पीलुकरीरखादिराः

शम्याकविस्वादिगणस्य च उक्ताः ।

सरोष्ठ्यो: अर्धम अने छिट भाटे गये और उक्ताके लिए, पीलु- पीलु पीलु, करीर- करीर करीर, खादिरा: जेर खैर, शम्याक- अरभाओ अमलतास, विस्वादि- अने विस्वादि विस्वा जाति, गणस्य- गणस्य गणके, उक्ता: च पान हितकर छे पते अधिक हितकर कहे हैं ॥ २५½ ॥

25½. Indian toothbrush, common caper, catechu, purging cassia and the leaves of the bael group of drugs are good for donkeys and camels.

अजाविकानां त्रिफलापरूपकं

कपित्थकर्मणु सविस्वकोलजम् ॥२६॥

अजाविकानाम् अकरा अने बेटी भाटे बहरी और मेइके लिए, त्रिफला- त्रिफला त्रिफला, पक्वकर्मणु फाकसा, सविस्व- पीली बेल कोलजम् और बेल, कपित्थ- डाठ कैय, कर्मणु अने मलीबोर अधिक हितकर छे और अइसे अधिक हितकर हैं ॥ २६ ॥

26 Thethree myrobalans Palas, wood apple. wild jujube. bael and jujube are good for goats and sheep.

सदातुरा नराः—

अथाग्निवेशः सदातुरान् नरान्

हितं च पप्रच्छ गुरुस्तदाह च ।

सदाऽऽतुराः श्रोत्रियराजसेवका-

स्तथैव वेद्या सह पण्यजीविभिः ॥२७॥

अथ पीछी तदनन्तर, अग्निवेशः अग्निवेशे अग्निवेशने, सदातुरान् नरान् क्या मनुष्यो सदा रोमी रहा करे छे ? कौन मनुष्य सदा रोमी रहा करते हैं ?, हितं च अने तेओ भाटे हितकर शुं छे ? और उनके लिए हितकर क्या है ?, पप्रच्छ ओम पूछ्युं ऐसा पूछ, गुरुः च भुओ गुरुने, तव तेनो भुओतर उक्ता प्रत्युत, जाह आप्यो के दिवा कि, श्रोत्रिय- श्रोत्रिय ब्राह्मण, राजसेवकाः राजसेवकाः राजसेवका, तथा एव तेमन् और पण्यजीविभिः सह दुकानदारो दुकानदार, वेद्याः वेद्या और वेद्याएँ, सह सदा सदा, आतुराः रोमी छे रोमी हैं ॥ २७ ॥

27. Then, Agnivesa questioned as to who formed the ever-sick class and what was beneficial in their case; and the teacher replied as follows. 'The ever-sick class comprises the priest, the king's officer, as also the merchant and the courtesan.

२७ सदातुरान् नरान्-सदातुरान् नरान् (७.)

-सदातुरान् नरान् (७.)

" हितं च-हितं (७.)

तेषां सदाश्रित्वे हेतुः शिक्किता च—

द्विजो हि वेदाध्ययनव्रतादिक-

क्रियादिभिर्देहहितं न चेष्टते ।

नृपोपसेवी नृपचित्ररक्षणत्

परानुरोधाद्बहुचिन्तनाद्भयात् ॥२८॥

नृचित्तवर्तिन्युपचारतत्परा

मृजामि(वि)भूषानिरता पणाङ्गना ।

सदासनादत्यनुबन्धविक्रय-

क्रयादिलोभादपि पण्यजीविनः ॥२९॥

सदैव ते ह्यागतवेगनिग्रहं

समाचरन्ते न च कालभोजनम् ।

अकालनिर्हारविहारसेविनो

भवन्ति येऽप्येऽपि सदाऽऽतुराश्च ते ॥३०॥

हि कारणं है क्योंकि, द्विजः श्रोत्रिय ब्राह्मणं श्रोत्रिय ब्राह्मण, वेदाध्ययन- वेदाध्ययन वेदाध्ययन, व्रतादिक- व्रत अने आदिक व्रत और दैनिक, क्रियादिभिः क्रिया पजेरेमा तत्पर रहेनाथी क्रियाओंमें तत्पर रहनेसे, नृपोपसेवी- राजानी सेवा करनेवाले राजाका सेवक, नृपचित्त- राजनी भननी राजके चित्तको, रक्षणत् रक्षा करनेवाले लीपे रक्षा करनेसे, परानुरोधात् पीछे देखेना अनुरोधथी दूसरोंके अनुरोधसे, बहुचिन्तनात् बहुत चिन्ताथी बहु चिन्तनसे, अन्धा अने अयथी देखतु हित करी शकती नथी और अयसे देहका हित नहीं कर सकता, नृचित्तवर्तिनी- पुत्रपुत्री चितने अनुसार वर्तनारी परपुरुषके चित्तको अनुवर्तन करनेवाली, पणाङ्गना- वेस्मा वेस्या, उपचार- पुत्रपुत्री-उपचारमा पुरुषके उपचारमें, तत्परा- तत्पर देखेना-तत्पर होनेसे, मृजा- शरीरनी रम्यता करीरकी स्वच्छता, अमि(वि)भूषा- अने शङ्खभारमा शृङ्गार

२८. वेदाध्ययन-शिष्याध्ययन (इ. इ. घ)

२९. चेष्टते-सेवते (घ. फ.)

३०. चित्त-चित्त (द.)

३१. परानुरोधात्-गुरोनिरोधात् (घ. फ.)

३२. सदैव ते-सदैव ते (घ.)

३३. समाचरन्ते-समाचरन्ते (घ. फ.)

३४. " " -समाचरन्ते (घ.)

आदिमें, श्रिता- २थी ५थी रहेली होनाथी लगी रहनेसे, देहहित देखतु हित देहका हित, न चेष्टते करी शकती नथी नहीं कर सकती पण्यजीविनः दुकानदारे दुकानदार, सदा सतत सदा, आसनात् बैठे रहनेसे, अत्यनुबन्ध- अने निरंतर और निरन्तर, विक्रय- क्रय- वेनाथी तथा भरीदी पजेरेना फरोक्त तथा खरीद आदिके, लोभात् अपि देखेना पीछे देखतु हित करी शकता नथी लोभसे भी देहका हित नहीं कर सकते, हित है ठमके तेथी क्योंकि वे, आगत- वेगम् हमेशा आवेक्षा वेगने प्राप्त वेगोंको, निग्रह- निग्रह, समाचरन्ते करे छे करते हैं, कालभोजनम् च न अने समयसर भोजन करता नथी और कालभोजन नहीं करते वे छे जो, अन्ये अपि पीछे पीछे दूसरे भी, अकालनिर्हारविहारसेविनः भवन्ति समयसर भवत्याज अने आहार विहार करता नथी समयानुसार मकविसर्जन और आहार विहार नहीं करते, ते च तेथी वे भी, सदा सदा सदा, आतुराः रोगी रहे छे रोगी हैं ॥२८-३०॥

28-30. The priest, engaged as he is constantly, in the study and recitation of the scriptural texts, observance of the vows and the daily rites and ceremonies etc., fails to attend to his bodily good. And similarly, the king's officer fails in his duty towards his own body by his preoccupation with the gratification of the royal mind, and by the demands made on him by the other dependents of the king, the constant anxiety caused by the various responsibilities of his position, as also the constant fear of incurring the displeasure of his masters. As regards the courtesan, being dependent on the whims and moods of men, she devotes herself to their service and is constantly engaged in acts of toilet and

beautification, while those who live by trade are perforce victims to a sedentary mode of life. due to their immoderate passion for the business of selling and buying. All these are constantly given to suppressing the natural urges of their body and can hardly ever afford to have timely meals. These, as also, all those who are given to untimely diet and voidance of excretions and irregular mode of life, are to be included in the category of the perpetually ailing.

**समीरणं वेगविधारणोद्धतं**

**विवन्धसर्वाङ्गरुजाकरं भिषक् ।**

**समीक्ष्य तेषां फलवर्तिमादितः**

**सुकल्पितां स्नेहवर्ती प्रयोजयेत् ॥३१॥**

वेग-विधारण-उद्धतम् वेग रोडवाधी प्रदुषित भयेद्या वेग रोकनेसे कुपित, समीरणम् वायुने वायुको, विवन्ध-विषय विवन्ध, सर्वाङ्ग-तथा सर्व अङ्गमां और सर्वाङ्गमें, रुजाकरम् पीडा करते पीडा करता हुआ समीक्ष्य ओधने देखकर, भिषक् वैद्य वैद्य, सुकल्पितम् सारी रीते अनावेदी अच्छी तरहसे बनाई हुई, स्नेहवर्तीम् स्नेहयुक्त स्नेहयुक्त, फलवर्तिम् फलवर्ति फलवर्तिका, आदितः पहले, प्रयोजयेत् प्रयोग करे ॥ ३१ ॥

31. When the physician has diagnosed the case of obstipation, characterised by pains and aches all over the body as due to provocation of vata consequent upon suppression of natural urges, he should, to begin with, administer a suppository well-made with unctuous substance.

**पुनर्नैवरण्डनिकुम्भचित्रकान् ।**

**सदेवदारुत्रिवृतानिदिग्धिकाञ्च**

**महान्ति मूलानि च पञ्च यानि**

**विपाच्य मूत्रे दधिमस्तुसंयुते ॥३२॥**

**सतैलसर्पिलवणैश्च पञ्चभिः**

**विमूर्च्छितं दत्तिमग्न प्रयोजयेत् ।**

**निरुहितं घन्वरसेन भोजितं**

**निकुम्भतैलेन ततोऽनुवासयेत् ॥३३॥**

सदेवदारु- देवदारु, देवदारु, त्रिवृता- त्रिवृत, त्रिवृत, निदिग्धिकाञ्च ओडी भोरी भोरी इतरी, पुनर्नैवा- साटोडी गदहपुरना, एरण्ड- ओरंड एरण्ड, निकुम्भ- दांटी दन्ती, चित्रकान् चित्रक चित्रक, यानि गे जो, महान्ति पञ्च मूलानि च भृङ्गपत्रमूल तेओते वृद्धपत्रमूल वनको, दधि दहीना दहीके, मस्तु मस्तुओ मस्तुसे, संयुते युक्त युक्त, मूत्रे गोमूत्रमां गोमूत्रमें, विपाच्य पकावीने पकाकर, मय पछी पचाव, मर्तकसर्पिः- तेल बी, तेल बी, लवणैः च पञ्चभिः अने पांचे लवणों और पांचो नमक, विमूर्च्छितम् ओधवीने मिश्रकर, दत्तिम् अस्ति दत्तिका, प्रयोजयेत् प्रयोग करे, निरुहितम् निरुद्ध यर्ध अर्ध पछी निरुद्धके बाद, घन्वरसेन अङ्गल भांसरसुओ जांगल मांसरससे, भोजितम् भोजन करावीने भोजन कराके, ततः पछी उसके बाद, निकुम्भ- दांटीना दन्तीके, तैलेन तेलओ तेलसे, अनुवासयेत् अनुवासन करावुं अनुवासन देवे ॥ ३२-३३ ॥

32-33 He should then prepare an enema by decocting hog's weed, castor, red physic nut, chiretta, deodar, turpeth, yellow berried night-shade and the major penta-radices in cow's urine to which has been added the supernatant fluid of curds. To this decoction should be added oil and ghee; and the salts of the five varieties should be mixed with it. This enema should then be administered to the patient. After the administration



द्वितीये हि हिताकर है, सिद्धवृद्धयोः आगच्छे अने उद्ध  
भाटे बालक और वृद्धके लिए, आशु जलदी शीघ्र,  
अन्न-वक्त्र-अभिवर्धनम् अन्न अने जल वधारना अंग  
और बल बढ़ानेके लिए, निरुद्धवस्तेः निरुद्धवस्तिथी  
निरुद्धवस्तिसे, परम् च श्रेष्ठ श्रेष्ठ, अन्यत् न जीयुं  
उद्धे नथी दूसरा कुछ नहीं है ॥ ३६ ॥

36. In the case of children, the unctuous enema prepared with the decoction of the drugs of the life-promoter group and the evacuative enema prepared with the same decoctions, and without the addition of salt, should be used. There is no therapeutic measure more rapidly promotive of bodily strength, for infants and the aged, than evacuative enema.

अध्यायोक्तिविषयाः—

तत्र श्लोकः—

फलकर्म वस्तिवरता नेत्रं यद्वस्तयो गवादीनाम् ।  
सततानुराध दिष्टाः फलमात्रायां हितं चैवाम् ॥ ३७ ॥

इति ते आगतर्मा उप विषयम्, श्लोकः उपसं-  
हारने। श्लोक छे छे उपसंहारका श्लोक है कि, फलमा-  
त्रायाम् इक्षमात्रासिद्धिः अध्यायर्मा फलमात्रासिद्धिः  
अध्यायर्मे, फलकर्म इक्षुं उद्धे फलका कर्म वस्ति-  
वरता अस्तिनी श्रेष्ठता वस्तिकी श्रेष्ठता, गवादीनाम्  
आय वजेरे भाटे गाय आरियोके लिए, यत् नेत्रम् च  
ने अस्तिनेत्र जो वस्तिनेत्र, वस्तयः तथा अस्तिथी  
ते तथा वस्तिथी वे, सततानुराः च अने सदा  
शेगीथी और सदाके रोगियों, दिष्टाः अताम्ना छे  
बतलाये गये हैं, एवाम् तेथीने भाटे इनके लिए,

३७. वस्तिवरता नेत्रं यत्-वस्तिषु वरत्त निश्चयो (ख)

, वस्तिवरता नेत्रं यद्वस्तयो गवादीनाम्-वस्ति वरत्त  
निश्चयो वाज्यादीनाम् (ग.)

, गवादीनाम्-गवादीनाम् (घ.)

, दिष्टाः-दृष्टाः (ङ. च)

द्विम् च ने द्वितीये छे, ते यम् अताम्ना छे जो  
द्वितीये है वह सी बतलाया गया है ॥ ३७ ॥

Here is the recapitulatory verse

37. The actions of the various fruits and the fruit, par excellence, in enema; the length of the tube of the enema apparatus used in the case of animals; those who constitute the eversick class and what is beneficial for them—have all been described in this chapter on 'The successful use of the emetic nut and the dose of the enema'.

इत्यग्निवेशकृते तन्त्रे चरकप्रतिसंकृतेऽप्राप्ते  
दृढबलसंपूरिते सिद्धिस्थाने फलमात्रा-  
सिद्धिर्नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

इति आ. प्रभाषे इस प्रकार, अग्निवेशकृते अ.अ.  
देशे २थेका अग्निवेशसे बनाये, चरकप्रतिसंकृते  
तन्त्रे अने चरकथी प्रतिसंस्कार पायेका आ.  
शा.अ.भा. और चरकके द्वारा संस्कृत इस शास्त्रके,  
अप्राप्ते अप्राप्त अप्राप्त, दृढबलसंपूरिते अने दृढबले  
पूरा करेका और दृढबलसे पूरित किये गये, सिद्धिस्थाने  
सिद्धिस्थान विषे सिद्धिस्थानमें, फलमात्रासिद्धिः  
'इक्षमात्रासिद्धि' 'फलमात्रासिद्धि', नाम नामने। नामका,  
एकादशः अध्यायः अग्राह्यो ग्राह्यो, अध्यायः अध्याय  
संपूर्ण अथे अध्याय समाप्त हुआ ॥ ११ ॥

11. Thus, in the Section on Success in Treatment, in the treatise compiled by Agnivesa and revised by Caraka, the eleventh chapter entitled 'The successful use of emetic nut and the dose of the enema' not being available the same as restored by Dridhabala, is completed.



## द्वादशोऽध्यायः ।

आरभो अध्याय अध्याय बारहवाँ

## Chapter XII

उत्तरवस्तिस्त्रिषुपक्रमः—

अथात उत्तरवस्तिस्त्रिषु व्याख्यास्यामः ॥ १ ॥

इति ह साह भगवानाश्रेयः ॥ २ ॥

अथ अतः हवे अहींथी अव आगे, उत्तरवस्ति-  
सिद्धिम् 'उत्तरवस्तिस्त्रिषु' नामना अध्यायानु  
'उत्तरवस्तिस्त्रिषु' नामके अध्यायका, व्याख्यास्यामः  
व्याख्यान करेणु ॥ १ ॥

भगवान् भगवान् भगवान्, आश्रेयः आश्रेये  
आश्रेयने, इति ह आ विषयमा न्नीये प्रमाणे ॥ इस  
विषयमें निम्न प्रकारसे ही, आह सा उहेणु ॥ कदा हे ॥ २ ॥

1. We shall now expound the cha-  
pter entitled "The Successful application  
of the remaining best kinds of enema".

2. Thus declared the worshipful  
Atreya.

वमनादिभिः शुद्धस्यादुरस्य परिरक्षणप्रकारः—

अथ खल्वानुरं वैद्यः संशुद्धं वमनादिभिः ।

दुर्बलं कृशमल्पाग्निं मुक्तसंचानबन्धनम् ॥ ३ ॥

निर्हृतानिलविण्मूत्रकफपित्तं कृशाशयम् ।

शून्यदेहं प्रतीकारासहिष्णुं परिपालयेत् ॥ ४ ॥

यथाऽण्डं तरुणं पूर्णं तैलपात्रं यथैव च ।

गोपाल इव दण्डी गाः सर्वस्मादपचारतः ॥ ५ ॥

अथ हवे अव, यथा जेवी रीते जैसे, तरुणम्  
नवा नये, अण्डम् ॥ ३ ॥ अंडेका, यथा एव च तैलपात्रं  
एवं, पूर्णम् ॥ ४ ॥ अंडेका, पूर्णं अरे हुए, तैलपात्रम्  
तैलपात्रानुं रक्षण करेणु आदे ॥ तैलपात्रका रक्षण  
किया जाता है, दण्डी अने दंडधारी और दण्डधारी,  
गोपालः गोपाल गोपाल, गाः इव जेव आयेणुं रक्षण  
करे ॥ जैसे गायोंका रक्षण करता है वैसे, वैद्यः खलु

वैद्ये वैद्य, वमनादिभिः वमनादिभिः वमनादिभिः, संशुद्धं  
शुद्ध अयेणु शुद्ध हुए, दुर्बलम् दुर्बलम् दुर्बल, कृशम्  
कृश, अल्पाग्निम् अल्प अग्निनागा अल्पाग्नि,  
मुक्तसंचानबन्धनम् दीक्षा साधनागा और शिथिल  
पथियोंवाले, निर्हृत- अंडार अंडेनामा आदेक्षा बाहर  
निकाले गये अनिल- वायु वायु, विट्- मल मल, मूत्र-  
मूत्र मूत्र, कफ-पित्तम् कफ अने पित्तनागा कफ और  
पित्तवाले, कृशाशयम् कृश आशयनागा कृश आशय-  
वाले, शून्यदेहम् शून्य शरीरनागा शून्य शरीरवाले  
प्रतीकार अने प्रतिशारेने और प्रतिकार, असहिष्णुम्  
सहन न करी शकनार रोगीने सहन न कर सकनेवाले  
रोगीको, सर्वस्मात् सधना सब प्रकारके, अपचारतः  
अपचारार्थी अपचारोंसे, परिपालयेत् रक्षेत् रक्षेत्  
वचाना चाहिए ॥ ३-५ ॥

3-5. When after being duly puri-  
fied by the procedures of emesis etc.,  
the patient is in a debilitated condition,  
emaciated, weakened in his digestive  
power, has his joints loosened, is pur-  
ged of the morbid accumulations of  
flatus, urine, mucus and bile, the  
stomach and the intestines have become  
contracted, the body has become vacu-  
ous and accordingly unable to bear  
any further strain, he should be  
protected by the physician from all  
kinds of risk, just as a tender  
egg is protected or a vessel brimful  
of oil, or the kine by the cowherd  
armed with his staff

तस्याग्निसंशुद्धणार्थं पेयादिकम्—

अग्निसंशुद्धणार्थं तु पूर्वं पेयादिना भिषक् ।

रसोत्तरेणोपचरेत् क्रमेण क्रमकोविदः ॥ ६ ॥

१. कृशमल्पाग्नि-आमसंश्लि (ब.)

५. यथाऽण्डम्-यथैव (ख, ड. द.)

५. यथैव च-तथैव च (ड. ब.)

६. पेयादिना भिषक्-पेयादिभिर्भिषक् (ब.)

५. रसोत्तरेणोपचरेत्-रसोत्तरेणैव चरेत् (क.)

५. उपचरेत्-एव चरेत् (ड.)

ક્રમકોલિદઃ કમ બાધુનાર કમજાની, મિષ્ક વૈદે  
વૈય, અમિસંયુક્ષણાર્થઃ અમિ પ્રદીપ કરવા માટે અમિ-  
પ્રવીત કરનેકે લિપ, પૂર્વમ્ તુ પહેલાં તેા પ્રથમ તો,  
વેયાદિના વેયા વગેરેથી વેયા આદિસે, રસોત્તરેણ અને  
નિઃશ્વ પછી મંસિરસપ્રધાન ઔર નિરુદ્ધકે પચાવ  
માંવસપ્રધાન, ક્રમેણ કમજી ક્રમસે, ઉપચરેત્ ઉપચાર  
કરવો એકથી ઉપચાર કરના ચાહિયે ॥ ૬ ॥

6. The physician who is conversant with the order and sequence of therapeutic procedures, should put the patient on a liquid diet beginning with thin gruel and leading upto meat-juices, for the purpose of re-stimulating his gastric fire.

શિગ્ધામ્લસ્વાદુદ્ધવાનિ તતોઽમ્લલવણૌ રસૌ ।  
સ્વાદુતિકૌ તતો મૂયઃ કષાયકટુકૌ તતઃ ॥ ૭ ॥  
અન્યોઽન્યપ્રત્યનીકાનાં રસાનાં શિગ્ધરુક્ષયોઃ ।  
વ્યત્યાસાદુપયોગેન પ્રકૃતિં ગમયેદ્ધિષ્ક ॥ ૮ ॥

શિગ્ધ- પહેલાં રિનગ્ધ સિગ્ધ, અમ્લ- અમ્લ  
અમ્લ, સ્વાદુ- તથા મધુર રસ તથા મધુર રસ, દ્ધવાનિ  
ને હૃદયને પ્રિય હોય તે આપવા જો દ્રવ્યકો પ્રિય હોવે  
વેદને ચાહિયે, તતઃ પછી પીહે, અમ્લલવણૌ અમ્લ અને  
લવણ રસ અમ્લ ઔર લવણ રસ, તતઃ તે પછી उसके  
વાદ, સ્વાદુતિકૌ મધુર અને તિક્ત રસ મધુર ઔર  
તિક્ત રસ, તતઃ મૂયઃ અને તે પછી વળી તત્પચાત  
કષાય- કષાય કષાય, કટુકૌ અને કટુ રસ દેવા  
કટુ રસ દેવે, અન્યોન્ય- એક બીજાથી એક દૂરસે,  
પ્રત્યનીકાનામ્ વિરુદ્ધ વિરુદ્ધ, રસાનામ્ રસોના ઉપ-  
યોગથી રસોંકે ઉપયોગસે, શિગ્ધ- અને રિનગ્ધ ઔર  
સિગ્ધ, રુક્ષયોઃ તથા રક્ષના તથા રુક્ષકા, વ્યત્યાસાત્  
પચાય કમે પચાય ક્રમસે, ઉપયોગેન ઉપયોગથી ઉપ-  
યોગસે, મિષ્ક વૈદે વૈય, પ્રકૃતિમ્ રોગીને સ્વાભાવિક  
અવસ્થામાં રોગીકો સ્વાભાવિક અવસ્થામાં, ગમયેત્ લાવવો  
લે આયે ॥ ૭-૮ ॥

7-8. To this end, he should prescribe the use first, of unctuous, acid, sweet

and pleasant articles, then of articles of acid and salt tastes, and later of sweet and bitter tastes, and last by of all articles of astringent and pungent tastes. In this manner by the use of two antagonistic tastes at a time, and by the alternate use of unctuous and dry articles, the physician should restore the patient to his normal health.

પ્રકૃતિમાપદસ્ય લક્ષણાનિ—

સર્વેક્ષમો હાસંસર્ગો રતિયુક્તઃ સ્થિરેન્દ્રિયઃ ।  
બલવાન્ સત્ત્વસંપન્નો વિજ્ઞેયઃ પ્રકૃતિં ગતઃ ॥ ૯ ॥  
સર્વેક્ષમઃ સધળા રસોને સહન કરનાર જન રસોંકો  
સહન કરનેવાલે, હાસંસર્ગઃ વેગોના નિરોધથી રહિત  
વેગરોધરહિત, રતિયુક્તઃ કાર્ય કરવામાં પ્રતિયુક્ત  
કાર્ય કરનેમે પ્રતિયુક્ત, સ્થિરેન્દ્રિયઃ (સ્થિર ઇન્દ્રિયવાળો)  
સ્થિર ઇન્દ્રિયવાળે, બલવાન્ બલવાન વજવાન, સત્ત્વસંપન્નઃ  
હિ અને મનોબલવાળા પુરુષને ઔર મનોબલસે વૃદ્ધ  
પુરુષકો, પ્રકૃતિમ્ ગતઃ સ્વાભાવિક સ્થિતિને પામેલો  
સ્વાભાવિક સ્થિતિમે આયા, વિજ્ઞેયઃ બલુવો જાનવા  
ચાહિયે ॥ ૯ ॥

9 When the patient is able to tolerate all the tastes, when there is no retention of excretory matter when the zest for life has returned, the sense-organs have regained their firmness, when strength has returned and the mind is fully composed, it should be known that he is restored to normality.

૧. સર્વેક્ષમઃ—કુતક્રમઃ (૫.)

૨. સર્વેક્ષમો હાસંસર્ગો રતિયુક્તઃ—બલવાન્ સર્વેક્ષમો સ્થિરઃ  
(ત. ૧. ૫.)

૩. હાસંસર્ગો—નિરાસકો (અ. ૫. ૫.)

૪. સર્વેક્ષમો....પ્રકૃતિં ગતઃ ॥—બલવાન્ વર્જવાન્ સર્વેક્ષમો-  
સક્ર પચ વા સ્થિરેન્દ્રિયઃ સર્વેક્ષમો વિજ્ઞેયઃ પ્રકૃતિયુક્તઃ મ(૫. ૫.)

૫. સર્વેક્ષમો હાસંસર્ગો—કુતક્રમો નિરાસકો (૫)

प्रकृतिमप्राप्तस्य वर्ज्यानि—

एतां प्रकृतिमप्राप्तः सर्ववर्ज्यानि वर्जयेत् ।  
महादोषकराण्यष्टाविमानि तु विशेषतः ॥१०॥

उच्चैर्भाष्यं रथक्षोभमतिचक्रमणास्तने ।

अजीर्णाहितभोज्ये च दिवास्वप्नं समैथुनम् ॥११॥

एताम् आ-इस, प्रकृतिम् स्वाभाविक अस्थाने स्वास्थ्यको, अप्राप्तः नहि पायेका मनुष्ये न प्राप्त हुआ मनुष्य, सर्ववर्ज्यानि तजना लायक सर्व वस्तुओंने। सब त्याज्य वस्तुओंका, वर्जयेत् त्याग करवे। ओष्ठ के स्वाग करना चाहिए, उच्चैर्भाष्यम् जैसे सारे भोजन कंवा बोलना, रथक्षोभम् रथने। डडोहो। रथसंक्षोभ, अतिचक्रमण- अतिशय द्रवुं बहुत घूमना, आसने अतिशय भेसी रहेवुं बहुत बैठा रहना, अजीर्ण- अशुचुं पर भोजन अजीर्ण पर भोजन, अहित- अहित अपचय, भोज्ये च भोजन भोजन, समैथुनम् मैथुन मैथुन, दिवास्वप्नम् अने द्विषन्ती निद्रा तथा दिवा-स्वप्न, इमानि आ इन, महादोषकराणि महादोष करनेवाले, अष्टौ तु आठ आभतीने। तो आठ भावोंका तो, विशेषतः भास करीने त्याग करवे। ओष्ठ के विशेष करके स्वाग करना चाहिए ॥१०-११॥

10-11. So long as the patient has not regained such full measure of health, he should scrupulously avoid all things and activities that are prohibited. He should be particularly careful to eschew the following eight factors which are highly causative of morbidity; loud speaking, jolting in conveyances, excessive moving about and excessive sedentation, indigestion and pre-digestion meals, day-sleep and the sex act.

वर्ज्यसेवना व्याधयः—

तज्जा देहोर्ध्वसर्वाद्योमध्यपीडामदोषजाः ।

श्लेष्मजाः क्षयजाश्चैव व्याधयः स्युर्यथाक्रमम् ॥१२॥

तज्जाः तीक्ष्णोष्ण अता उनसे होनेवाले, देहोर्ध्व ऊर्ध्वदेहना शरीर ऊर्ध्वदेहके रोग, सर्व- आभा शरीर-रना शरीर सम्पूर्ण शरीरके रोग, अथ- शरीरना नीचेना भागना शरीर शरीरके नीचेके भागके रोग, मध्यपीडा- शरीरना मध्यभागना शरीर शरीरके मध्य भागके रोग, आमदोषजा आमदोषाधी उत्पन्न आमदोषजन्य, श्लेष्मजाः क्षयभी उत्पन्न कफजन्य, क्षयजाः च एव अने क्षयधी उत्पन्न और क्षयजन्य, व्याधयः रोगे रोग, यथाक्रमम् स्युः अनुक्रमे थाय छे क्रमशः होते हैं ॥१२॥

12. Indulgence in these things gives rise successively to pain affecting the upper part of the body, pain affecting the whole body, pain affecting the lower part of the body, pain affecting the middle part of the body, chyme disorders, disorders of morbid accumulations of kapha and disorders born of wasting.

तेषां विस्तरतो व्याख्यानप्रतिज्ञा—

तेषां विस्तरतो लिङ्गमैकैकस्य च मेघजम् ।

यथावत्संप्रवक्ष्यामि सिद्धान् वस्तीश्च यापनान् ॥१३॥

तेषाम् तेजोभांभी उनमेंसे, एकैकस्य एक-एक प्रत्येकके, लिङ्गम् लक्षण लक्षण, मेघजम् च भिक्तिरा चिकित्सा, सिद्धान् तथा सिद्ध तथा सिद्ध, यापनान् यापन यापन, वस्तीश्च अस्तिशरीरने वस्तिर्योको, यथावत् संप्रवक्ष्यामि रूपसे, विस्तरतः विस्तरास्थी विस्तरासे, संप्रवक्ष्यामि कहूँ कहूँगा ॥१३॥

13. I shall now describe the symptoms of these various disorders, in extenso, and the appropriate remedy for each of them as also the tried recipes of the longevity-promoting yapana-enema.

१३. च मेघजम्-समेघजम् (च.)

उर्ध्वार्ध्यातिभाष्यजा व्यापदः —

तत्रोर्ध्वार्ध्यातिभाष्याभ्यां शिरस्तापशङ्कुकर्ण-  
निस्तोदश्रोत्रोपरोधमुखतालुकण्ठशोषतैमिर्यपिपा-  
साज्वरतमकहनुमहमन्यास्तम्भनिष्ठीवनोरःपार्श्व-  
शूलस्वरमेदहिकाश्वासादयः स्युः (१);

तत्र तेभां उनमें, उर्ध्वार्ध्या- अर्ध्या भाष्याधी  
ऊँचा बोलनेसे, अतिभाष्याभ्याम् तथा अर्ध्या भाष्याधी  
तथा बहुत बोलनेसे, शिरस्ताप- शिरमें संताप,  
शङ्कुकर्ण- शंभू अर्ध्या ऊँचा भां शङ्कु और कानोंमें,  
निस्तोद- तोद तोद, श्रोत्रोपरोध- ऊँचा ओपरोध  
बधिरता, मुखतालु- भेदा, तालुका मुख, तालु, कण्ठशोष-  
तथा अर्ध्या शोष तथा गलेका शोष, तैमिर्य- तिमिर  
सिमिर, पिपासाज्वर- तपस्, ज्वर प्यास, ज्वर तमक-  
तमक तमक, हनुमह- हनुमह हनुमह, मन्यास्तम्भ-  
मन्यास्तम्भ मन्यास्तम्भ, निष्ठीवन- निष्ठीवन निष्ठीवन  
जरः अती लाली, पार्श्वशूल तथा पार्श्वभां शूल तथा  
पार्श्वोंमें शूल, स्वरमेद- स्वरमेद स्वरमेद, हिका- हिका  
हिका, श्वासादयः श्वास वजरे श्वास आदि, स्युः शय  
छे होते हैं;

14-(1). The following complications  
result from talking too loudly or in  
excess:—burning sensation in the head,  
pricking pain in the temples and the  
ears, auditory dysfunction, parching  
of the mouth, palate and the throat,  
faintness, thirst, fever, asthmatic dys-  
pnea, spastic condition of the jaws  
and the sides of the neck, ptyalism,  
acute pain in the front and sides of  
the chest, change of voice, hiccup,  
dyspnea and other similar conditions.

१४-(१) श्रोत्रोपरोध-श्रोत्रोपरोध (क. ब. क.)

शङ्कुकर्णनिस्तोद-शङ्कुनिस्तोद (घ.)

हनुमहमन्यास्तम्भ-हनुमहमन्यास्तम्भ (ङ.)

मन्यास्तम्भनिष्ठीवनोरः-मन्यास्तम्भनिष्ठीवनोरः (च.)

निष्ठीवनोरःपार्श्वशूल-निष्ठीवनशिरःपार्श्वशूल (ब.)

रथक्षोभजा व्यापदः —

रथक्षोभात् संधिपर्वशेषित्यहनुनासाकर्णक्षिरः-  
शूलतोदकुक्षिक्षोभाटोपात्रकूजनाभ्यान्हृदयेन्द्रि-  
योपरोधस्फिकृपाश्वंक्षणवृषणकटीपृष्ठवेदनासं-  
क्षिप्तकन्धग्रीवादीर्घस्याङ्गाभिनापरादशोफप्रस्त्राप-  
हर्षणादयः (२);

रथक्षोभान् रथक्षोभधी रथक्षोभसे. संधिपर्वशे-  
षित्य- सांध्या तथा पर्वोन्नी शिथिलता. संधि तथा पर्वोन्नी  
शिथिलता, हनु- हनु हनु, नासा- नास नासा, कर्ण-  
ऊँचा कान, शिरःशूल- तथा भाष्याभां शूल और शिरमें  
शूल, तोद- तोद तोद, कुक्षिक्षोभ- कुक्षिक्षोभ कुक्षिक्षोभ,  
आटोप- आटोप आटोप, अन्त्रकूजन आंतरधर्मा अवाच्य  
अन्त्रकूजन, आभ्यान्- आभ्यान् आभ्यान्, हृदय-  
हृदय हृदय, इन्द्रिय- तथा इन्द्रियोन्नी तथा इन्द्रियोन्नी,  
उपरोध उपरोध उपरोध, स्फिकृ- निताप निताप, पार्श्व-  
पार्श्व पार्श्व, वंक्षण- वंक्षण वंक्षण, वृषण- वृषण  
वृषण, कटी- कटी कटी, पृष्ठवेदना- अर्ध्या वंक्षण वेदना  
और पीठमें वेदना, संधि- तेमभ्य सांध्या एवं संधि,  
स्कन्ध- अर्ध्या कन्धे, ग्रीवादीर्घस्या- तथा अर्ध्यान्नी  
निर्धर्षिता तथा ग्रीवादीर्घस्या- अर्ध्यान्नी  
अक्षिताप अर्ध्यान्नी अक्षिताप, पार्श्वकोक- अर्ध्यान्नी  
शोभ्य और पैरोंमें सूजन, प्रस्त्राप- रथक्षोभान्नी नाक्ष  
क्षिति, हर्षणादयः तथा हर्ष वजरे श्वास छे तथा पार्श्व-  
हर्ष आदि होते हैं ॥ २ ॥

14-(2). From jolting suffered while  
travelling in conveyances, the following  
disorders arise—flabbiness of the bigger  
and smaller joints, acute pricking pain  
in the jaw, nose, ear and the head,  
disturbance in the abdomen, meteorism,

१४-(२). कुक्षिभ-कुक्षिभ (ब.)

आभ्यान्हृदयेन्द्रियोपरोध-आभ्यान्हृदयोपरोध (ब.)

संक्षिप्तकन्ध-संक्षिप्तकन्ध (क.)

स्कन्धग्रीवा-स्कन्धग्रीवा (क. द.)

स्कन्धग्रीवा-स्कन्धग्रीवा (ब.)

—संक्षिप्तकन्धग्रीवा (ब.)

intestinal gurgling distension, disordered function of the heart and the sense-organs; and pain in the hip, sides, groin, scrotum, waist and back, asthenia of the joints, shoulders and neck, burning in the limbs, edema, anaesthesia and hyperaesthesia of the feet and other similar conditions.

अतिचङ्क्रमणजा व्यापदः —

अतिचङ्क्रमणात् पादजङ्घोरजानुवङ्गणश्रोणीपृष्ठ-  
शूलसक्थिसादनिस्तोदपिण्डिकोद्वेष्टनाङ्गमर्दासा-  
भितापसिराधमनीहर्षश्वासकासादयः (३);

अतिचङ्क्रमणार अहु इत्यादी बहुत बैठनेसे, पाद- पंज पर जङ्घा- पीडी जङ्घा, ऊरु- साथण ऊरु, जानु- ठीथेयु जानु, वङ्गण- वक्षेयु वङ्गण, श्रोणी- श्रोणि, पृष्ठशूल तथा अरजामां शूल तथा पीठमें शूल, सक्थिसाद- तेमथ सक्थिसाद एवं सक्थिसाद, निस्तोद- सक्थितेऽ निस्तोद, पिण्डिकोद्वेष्टन- पीडी- ओमां उद्वेष्टन पिण्डलियोंमें उद्वेष्टन, अङ्गमर्द- अङ्गमर्द अङ्गमर्द, अंसाभिताप- अंसाभिताप अंसाभिताप, सिरा- सिरा सिरा, धमनीहर्ष- तथा धमनीओने। हर्ष तथा धमनीयोका हर्ष, वासकासादयः अने श्वास कास वगेरे श्वास के और श्वास कामादि होते हैं (३);

14-(3). From excessive moving about, the following disorders arise— pain in the feet, calves, thighs, knees, groin, waist and back; flabbiness and pain in the legs, cramps in the calves, body-aches, burning pain in the shoulders, acceleration of the arteries and the veins, dyspnea, cough and other similar conditions.

१४-(३). अतिचङ्क्रमण-सङ्क्रमणसिद्धि (क)  
सक्थिसाद-अर्दः साध (ग.)

अत्यासनाद्यापदः —

अत्यासनाद्यशोभजाः स्फिक्पार्श्ववङ्गणवृषण-  
कटीपृष्ठवेदनादयः (४);

अत्यासनाद्य अहु ऐसी रूहेनाथी बहुत बैठनेसे, रथशोभजाः रथशोभयां रता रथशोभजन्य, स्फिक्- स्फिक् पार्श्व- पार्श्व पार्श्व, वङ्गण- वक्षेयु वङ्गण, वृषण- वृषण वृषण, कटी- कटी कटी, पृष्ठ- तथा अरजामां तथा पृष्ठश्री, वेदनादयः वेदना वगेरे श्वास के वेदना आदि होते हैं ॥ ४ ॥

14-(4). From luxus sedentation, the disorders described as occurring from excessive jolting, arise; as for example, pain in the hips, sides, groin, scrotum, waist and back and the rest.

अजीर्णाध्यशनजा व्यापदः —

अजीर्णाध्यशनाभ्यां तु मुखशोषाभ्मानशूल-  
निस्तोदपिपासागात्रसादच्छर्वातीसारमूर्च्छाज्वर-  
प्रवाहणामविषादयः (५);

अजीर्णाध्यशनाभ्याम् तु अजीर्ण तथा अध्यशनथी अजीर्ण और अध्यशनसे, मुखशोष- मुखशोष मुखशोष, आभ्मान- आभ्मान आभ्मान, शूल- शूल शूल, निस्तोद- निस्तोद निस्तोद, पिपासा- पिपासा प्यास, गात्रसाद- अंगसाद अंगसाद, छर्दि- छर्दि वमन, अतीसार- अतीसार अतिवार, मूर्च्छा- मूर्च्छा मूर्च्छा, ज्वर- ज्वर ज्वर, प्रवाहण- प्रवाहण प्रवाहिका, आमविषादयः आम आमविषाद रोगे श्वास के और आमविषादरोग होते हैं ॥ ५ ॥

15-(5). From indigestion and taking of predigestion meals, the following disorders arise:—dryness of the mouth, distension of the abdomen, colicky or pricking pain in the abdomen, thirst, asthenia of the limbs, vomiting, diarrhea,

१५-(५). वेदनादयः-वेदनादयः शूलः (क.)

fainting, fever, dysenteric condition, chyme-toxemia and similar conditions.

વિષમાહિતાશનજા વ્યાપદ: —

વિષમાહિતાશનાભ્યામનજામિલાવદૌર્બલ્યવૈવર્ણ્યકણ્ઠપામાગાત્રાવસાદવાનાદિપ્રકોપજાશ્ચ પ્રહ-  
વ્યર્શોવિકારાદય: (૬);

વિષમાહિત- વિષમ તથા અહિત વિષમ તથા અહિત, અજ્ઞનાભ્યામ્ જોજનથી સોજનસે અનજ્ઞાનિકાવ-  
અજ્ઞની ઇન્ધ્રા ન થવી અજ્ઞાની અનિચ્છા, દૌર્બલ્ય-  
દુર્બલતા દુર્બલતા, વૈવર્ણ્ય- વિવર્ણતા વિવર્ણતા, કણ્ઠ-  
અરબ્જા, પામા- પામા પામા, ગાત્રાવસાદ- ગાત્રોને  
અવસાદ ગાત્રોની શિથિલતા, વાતાદિ- અને વાત આદિના  
વાતાદિકે, પ્રકોપજા: ચ પ્રકોપથી થનારા પ્રકોપે  
હોનેવાલે, પ્રહ્વો- સંપ્રહ્વો સંપ્રહ્વો, અર્શોવિકારાદય:  
અર્શ વગેરે થાય છે અર્શ:પ્રસૂતિ હોતે હૈં (૬);

14-(6). From eating irregular and unwholesome meals, the following disorders arise—inappetance, debility, discoloration, pruritus, asthenia of the limbs, assimilation-disorders and piles due to the morbidity of vata and other humors, skin eruption and similar conditions.

દિવાસ્વપ્નજા વ્યાપદ: —

દિવાસ્વપ્નાદરોષકાવિપાકાગ્નિનાશસ્તૈમિત્યપા-  
ણ્ડુત્વકણ્ઠપામાદાહચ્છર્ધક્રમર્દદૃષ્ટસ્તમ્બજાઘ્રત-  
ન્દ્રાનિદ્રાપ્રસન્નપ્રત્યિજન્મદૌર્બલ્યરક્તમૂત્રાશ્ચિતાતા-  
લુલેપા: (૭);

દિવાસ્વપ્નાદિવસે જીવનાથી દિવા સ્વપ્ને, અરોચક-  
અરુચિ અરુચિ, અવિપાક- અવિપાક અવિપાક, અગ્નિ-  
નાશ- અગ્નિનાશ અગ્નિનાશ, સ્તૈમિત્ય- સ્તિમિતતા  
સ્તિમિતતા, પાણ્ડુત્વ- પાણ્ડુતા પાણ્ડુતા, કણ્ઠ-

૧૪-(૬). દૌર્બલ્યવૈવર્ણ્યકણ્ઠ-દૌર્બલ્યકણ્ઠ (૬)

૧૪-(૭). તાલુલેપા:—તાલુલેપા: પિપાસા ચ (ક. સ.)

—તાલુલેપા: પિપાસા ચ (ક. ઇ. ટ. ત.)

અરબ્જા કણ્ઠ, પામા- પામા પામા, દાહ- દાહ દાહ,  
કર્કિ- કીર્કી વનમ, અજ્ઞમર્દ- અજ્ઞમર્દ અજ્ઞમર્દ,  
હસ્તમ્મ- હસ્તમ્મ હસ્તમ્મ, ગાત્ર- ગાત્ર  
જઠતા, તન્દ્રા- તન્દ્રા તન્દ્રા, નિદ્રામજ્જા જીવ્મા કંરુ  
નિદ્રાસાતરય, પ્રત્યિજન્મ- પ્રત્યિજન્મ પ્રત્યિજન્મ પ્રત્યિજન્મ  
ઉત્પન્ન હોના, દૌર્બલ્ય- દુર્બલતા દુર્બલતા, રક્તમૂત્રાશ્ચિતા  
મૂત્ર તથા આંત્રો રાત્રી થવી મૂત્ર તથા આંત્રોના  
રક્ત હોના, તાલુલેપા: અને તાલુલેપા: ઉપલેપ ગ્રો  
તાલુમે ઉપલેપ હોતા હૈં ॥ ૭ ॥

14-(7). From indulgence in day-sleep, the following disorders arise—anor-  
exia, indigestion, loss of digestive power, stiffness, pallor, pruritus, eruption, burning, vomiting, body-ache, rigidity of the cardiac region, dullness, torpor, somnolence formation of swellings, debility, red coloration of the urine and the eyes, and coating of the palate.

વ્યવાયજા વ્યાપદ: —

વ્યવાયાદાશુબલનાશોરસાદશિરોબસ્તિગુદમેદ-  
વંશ્વળોરુજાનુજઙ્ગાપાદશૂલહૃદયસ્પન્દનનેત્રપીઢાક-  
શૈથિલ્યશુક્રમાર્ગશોણિતાગમનકાસશ્વાસશોણિત-  
છીવનસ્વરાવસાદકટીદૌર્બલ્યકાઙ્ગ-સર્વાઙ્ગ-રોગમુ-  
ક્ષશ્વયથુવાતવર્ચોમૂત્રસજ્જશુક્રવિસર્ગજાઘ્રવેપથુ-  
વાધિર્યવિષાદાદય: સ્યુ:; અવલુપ્યત ઇવ ગુદ:; તા-  
ઘ્યત ઇવ મેદૂમ્, અવસીદતીત્ર મનો, વેપથે હૃદયં,  
પીઢ્યન્તે સન્ધયા:; તમ: પ્રવેશ્યત ઇવ ચ (૮);

૧૪-(૮). આશુબલનાશ-દુર્બલનાશ (૮)

વંશ્વળોરુજાનુજઙ્ગા-વંશ્વળોરુજાનુજઙ્ગા (૮)

શૈથિલ્યશુક્રમાર્ગશોણિતાગમનકાસશ્વાસશોણિત-  
છીવનસ્વરાવસાદ-છીવનસ્વરાવસાદ (૮)

અવલુપ્યત ઇવ-અવલુપ્યત ઇવ (ક. ઇ. ટ. ત.)

અવલુપ્યત ઇવ ગુદ:—અવલુપ્યત ઇવ ગુદ: (ક. ઇ. ટ. ત.)

તાઘ્યત ઇવ મેદૂમ્—તાઘ્યત ઇવ મેદૂમ્ (ક. ઇ. ટ. ત.)

પીઢ્યન્તે સન્ધયા:—પીઢ્યન્તે સન્ધયા: (ક. ઇ. ટ. ત.)

તમ: પ્રવેશ્યત ઇવ ચ (૮)



व्यवायात् मैथुनशी मैथुनसे, आशुबलनाश- अक्षने।  
 शीघ्रनाश बलका क्षीप्रनाश, ऊहसाद- साधनमा पीडा  
 ऊहसाद, विरः माथुं विर, वस्ति- अस्ति वस्ति, गुद-  
 गुदा गुदा, मेढ- उपस्थ उपस्थ, वङ्गण- वक्ष्य वक्ष्य  
 ऊह- साधन ऊह, जानु- टी- अक्ष जानु, जङ्गा- पीडा  
 जङ्गा, पादशूल- तक्षा पङ्क्तुं शूल तथा पैरोंमें शूल,  
 हृदयस्पन्दन- हृदयना धमकां हृदयका स्पन्दन,  
 मेघवीर्या- आभनी पीडा आंखकी पीडा, अङ्गवैद्यिय-  
 अङ्गो शिथिल तथा अङ्गोंकी शिथिलता, शुक्लमार्ग- शुक्ला  
 मार्गमांशु शुक्ले मार्गसे, शोणितगमन- रक्तानुं आवतुं  
 रक्तका आना, कास- कास कास, श्वस- श्वास श्वास,  
 क्षोभितछीवन- थूंकमां थोड़ी पडतुं थूंकमें रक्तका आना,  
 खराबसाद- स्वर मेसी- अवे। खरकी शिथिलता, कटी-  
 दौर्बल्य- कङ्कणी अशक्ति कटीदौर्बल्य, एकाङ्ग- अङ्क अङ्गमां  
 शनार एकाङ्ग, सर्वाङ्गरोग- के आभा शरीरमां शनार  
 रोग या सर्वाङ्ग रोग, मुक्कश्वयथु- पृथक्ने। सोओ  
 वृषणोंमें शोथ, वात- अधोवायु अधोवायु, वर्ष- भक्ष  
 पुरीष, मूत्रसङ्ग- तथा मूत्रनी अटकावत तथा मूत्रकी  
 रक्तावट, शुक्रविसर्ग- थूंकने। निःसर्ग शुक्रका क्षरण,  
 जाण्यवेपथु- अङ्गता, भ्रूअरी जडता, कम्पन, बाधिर्य-  
 अहोरापङ्क्तुं बधिरता, विषादादयः विषाद वञ्चरे विषाद  
 आदि, स्युः थाय छे होते हैं, गुदः गुदामां गुदा,  
 अवलुप्यत इव छेदन- नेवी पीडा आय छे मानो टुकड़े  
 हो जाती है, मेढम् उपस्थमां उपस्थमें, ताड्यत इव ताडन  
 नेवी पीडा आयछे चोट लगनेसी पीडा होती है, मनः  
 मन मन, अवसीदति शिथिल पडतुं होय तेम आय छे  
 शिथिलता होता है, हृदयम् हृदय हृदय, वेपते कंठे छे  
 कांपता है, सन्धयः संधिओमां सन्धियोंमें, पीड्यन्ते  
 पीडा पीडा, तमः च- अने अंधारां और अंधेरा,  
 श्वेद्यते इव आवतां होय ओतुं आय छे छा जाता  
 है ॥ ८ ॥

14.(8). From indulgence in sex, the following disorders arise:—rapid loss of the vitality, flabbiness of the thighs, pain in the head, bladder, rectum, phallus, groin, thigh, knee, calf and feet, palpitation of the heart,

pain in the eyes, debility of the body, discharge of blood through the seminal passages, cough, dyspnea, blood in expectoration, asthenia of the voice, weakness of the waist, affections of one or all the limbs of the body, swelling of the scrotum, retention of flatus, feces and urine and semen, dullness tremor deafness, mental depression and similar conditions; the patient feels as though his rectum is being cut, his phallus is becoming smaller, his mind were sinking, his heart were trembling, his joints were being squeezed and as though he were about to faint.

इत्येवमेभिरष्टभिरपचारैरेते प्रादुर्भवन्त्युप-  
 द्रवाः ॥ १४ ॥

इति एवम् अष्ट एते, अष्टभिः आठ आठ, अप-  
 चारैः अपचारैशी अपचारोंसे, एते आ ये. उपद्रवाः  
 उपद्रवो उपद्रव, प्रादुर्भवन्ति येदा थाय छे होते  
 हैं ॥ १४ ॥

14. Thus have been described the various kinds of disorders arising from these eight violations of the rules of behaviour for the convalescent.

उच्चैर्भाष्यातिभाष्यजानां व्यापदां चिकित्सा—

तेषां सिद्धिः—तत्रोच्चैर्भाष्यातिभाष्यजानामभ्यङ्ग-  
 स्वेदोपनाहधूमनस्नोपरिभक्तोज्झपानरत्नक्षीरादि-  
 र्जानहृदः सर्वा विधिर्मौनं च (१);

तेषाम् ते रोगोन्नी उन रोगोंकी, सिद्धिः चिकित्सा  
 चिकित्सा, तत्र तेषां उनमें, उच्चैर्भाष्य- उच्चैर्भाष्य-  
 यां कंवा बोलनेमें, अतिभाष्यजानाम् तथा पडु  
 ओहतायी अथेला रोगोमां तथा बहुत बोलनेसे उत्पन्न

१५-(१). तत्रोच्चैर्भाष्य-उच्चैर्भाष्य (क.)



रोगोंमें, अभ्यङ्ग- अभ्यङ्ग अभ्यङ्ग, स्वेद- स्वेद स्वेद, उपनाह- उपनाह उपनाह, भूम धूमपान धूमपान, नस्य- नस्य नस्यकर्म, उपरिभक्त भोजन भोजन भोजनके बाद, स्नेहपान स्नेहपान स्नेहपान, रसक्षीरादिः भोजन २५ हृष वजेरे मांसरस दध आदि, वातहरः वातघ्न वातघ्न, सर्वः विधिः सर्व विधि सब विधि, मौनम् च तथा मौन चिञ्जित्सा ७ तथा मौन चिकित्सा है ॥१॥

15-(1). Now we shall describe the treatment in these disorders. In disorders due to loud or excessive talking, the following remedial measures are indicated—inunction, sudation poultices, smoking nasal medications. post-prandial potions of unctuous articles, meat-juice, milk and all measures curative of vata; and lastly the observance of silence.

रथक्षोभातिचङ्क्रमणात्पासनजानां व्यापदां चिकित्सा—

रथक्षोभातिचङ्क्रमणात्पासनजानां स्नेहस्वेदादि वातहरं कर्म सर्वं निदानवर्जनं च (२);

रथक्षोभ- रथक्षोभर्था रथक्षोभसे, अति चङ्क्रमण- अङ्गु इत्याथी बहुत फिरनेसे, अत्पासनजानाम् तथा अङ्गु भेदी रहेवाभी थयेला रोजोभा तथा अधिक बैठा रहनेसे उत्पन्न हुए रोगोंमें, स्नेह स्नेहन स्नेहन, स्वेदादि स्वेदन वजेरे स्वेदन आदि, वातहरम् वातघ्न वातघ्न, कर्म- कर्म कर्म, सर्वम् तथा सर्व तथा सब, निदान तथा निदानने निदानका, वर्जनम् च त्याग चिञ्जित्सा ७ त्याग चिकित्सा है ॥२॥

15-(2). In disorders due to jolting in carriages or to excessive moving about, or to excessive sedentation: the following remedial measures are indicated—oleation, sudation etc. all measures curative of vata and avoidance of the causative factors.

अजीर्णाध्यशनजानां व्यापदां चिकित्सा—

अजीर्णाध्यशनजानां निरवशेषतश्चर्दनं रुक्षः स्वेदो लङ्घनीयपाचनीयदीपनीयौषधावधारणं च (३);

अजीर्ण- अजीर्ण अजीर्ण, अध्यशनजानाम् तथा अध्यशनथी थयेला रोजोभा तथा अध्यशनजन्य रोगोंमें, निरवशेषतः अपक्व अन्न न रहे त्या सुधी सब अजीर्ण अन्नका, चर्दनम् वमन वमन, रुक्षः रुक्ष स्वेद स्वेद स्वेद, लङ्घनीय- लङ्घनीय लङ्घनीय, पाचनीय- पाचनीय पाचनीय, दीपनीय- तथा दीपनीय दीपनीय, औषध- औषधोभा औषधोका, अवधारणम् च प्रयोग चिञ्जित्सा ७ प्रयोग चिकित्सा है ॥३॥

15-(3). In disorders due to indigestion or predigestion meals, the remedial measures indicated are complete emesis, dry sudation, lightening therapy and the use of digestive and digestive-stimulant medications.

विषमाहिताशनजानां व्यापदां चिकित्सा—

विषमाहिताशनजानां यथास्वंदोषहराः क्रियाः (४);

विषम- विषम विषम, अहित- तथा अहित तथा अहित, अशनजानाम् अशनभी थयेला रोजोभा अशन जन्य रोगोंमें यथास्वम् ते ते दोषने अनुसरी उस उस दोषके अनुसार, दोषहराः दोषने हरना दोषहर, क्रियाः चिञ्जित्सा ७२वी भेधये चिकित्सा करनी चाहिए ॥४॥

15-(4). In morbid conditions due to irregular or unwholesome dietary, the line of treatment should be curative of the morbidity concerned.

दिवास्वप्नजानां व्यापदां चिकित्सा—

दिवास्वप्नजानां धूमपानलङ्घनवमनक्षिराविरेचनव्यायामरुक्षाशनारिष्टदीपनीयौषधोपयोगः प्रवर्ण- णोऽर्द्धमणिरियेवनादिश्च स्नेहवातहरः सर्वो विधिः (५);

१५-३). स्वेदो-स्वेदधूमपानं (न ६५)

१५-५). पर्वणो-पर्वणो ख ६. न ।

દિવાસ્વપ્નજાનામ્ દિવસે સુષુપ્તી ધ્યેયા રોગોભાં  
દિવાસ્વપ્નજન્ય રોગોર્મે, ધૂમપાન-ધૂમપાન ધૂમપાન, લઙ્ગન-  
ઉપવાસ ઉપવાસ વમન-વમન વમન, શિરોચિરેચન-  
શિરોચિરેચન શિરોચિરેચન, વ્યાયામ-દ્યુત્ય વ્યાયામ,  
રુક્ષાશન રુક્ષ ભોજન રુક્ષ ભોજન, અરિષ્ટ-અરિષ્ટ અરિષ્ટ,  
દીપનીય-દીપનીય દીપનીય, ઔષધોપયોગઃ ઔષધોપયોગો  
ઉપધોગ ઔષધોપયોગ ઉપયોગ, પ્રવર્ષણ પ્રવર્ષણ પ્રવર્ષણ,  
ઝન્મર્દન ઉન્મર્દન ઝન્મર્દન, પરિષેચનાદિઃ ચ અને  
પરિષેચન વગેરે ઔષધોપયોગ આદિ, શ્લેષ્મહરઃ કફ-  
કફહર, સર્વઃ સર્વશી સર્વ, ચિધિઃ ત્રિધિ ચિકિત્સા છે  
વિધિ ચિકિત્સા છે ॥ ૫ ॥

15 (5). In disorders arising from day-sleep, the remedial means indicated are smoking, lightening therapy, emesis, errhines, exercise, dry articles of food, medicated wines and the use of digestive-stimulant medications, friction massage shampoo, affusions etc, and all measures curative of kapha.

વ્યવાર્જનાં વ્યાપદાં ચિકિત્સા—

મૈથુનજાનાં જીવનીયસિદ્ધયોઃ ક્ષીરસર્પિષોરુપ-  
યોગઃ, તથા વાતહરાઃ સ્વેદાભ્યક્ષોપનાદા વૃષ્યાશ્વા-  
દારાઃ ક્ષેદાઃ ક્ષેદવિધયો યાપનાવસ્તયોઽનુવાસન-  
ચ; મૂત્રવૈકૃતવસ્તિશૂલેષુ ચોત્તરવસ્તિવિદારીગ-  
ન્ધાદિગણજીવનીયક્ષીરસંસિદ્ધં તૈલં સ્યાત્ ॥ ૧૫ ॥

મૈથુનજાનામ્ મૈથુનથી ધ્યેયા રોગોભાં મૈથુનજન્ય  
રોગોર્મે, જીવનીય-જીવનીય ગણુનાં દ્યોધોથી જીવનીય-  
ગણુને, સિદ્ધયોઃ પકાવેષ પકાવે હુણ, ક્ષીર-દૂધ દૂધ,  
સર્પિષોઃ તથા શીરો તથા ઘી, ઉપયોગઃ  
ઉપયોગ ઉપયોગ, તથા વાતહરાઃ વાતઘ્ન વાતઘ્ન, સ્વેદ-

સ્વેદન સ્વેદન, અભ્યક્ષ-અભ્યક્ષ અભ્યક્ષ, ઉપનાદાઃ  
ઉપનાદા ઉપનાદાઃ ઉપનાદા, વૃષ્યા-વૃષ્યા વૃષ્યા, આદારાઃ  
આદારા આદારા, ક્ષેદાઃ ક્ષેદા ક્ષેદા, ક્ષેદવિધયઃ ક્ષેદ-  
વિધિ ક્ષેદવિધિ, યાપનાવસ્તયઃ યાપનાવસ્તિયો યાપના-  
વસ્તિયો, અનુવાસનમ્ ચ અને અનુવાસનમ્ અનુવાસનમ્  
ચિકિત્સા છે ઔષધોપયોગ અનુવાસનવસ્તિ ચિકિત્સા છે, મૂત્ર-  
વૈકૃત મૂત્રના રોગો તથા મૂત્રવિકાર. વસ્તિશૂલેષુ ચ  
તથા અસ્તિશૂલેષુ તથા વસ્તિકે શૂલર્મે, ઓત્તરવસ્તિઃ  
ઓત્તરવસ્તિ ઓત્તરવસ્તિ, વિદારીગન્ધાદિગણ-વિદારી-  
ગન્ધાદિગણુ વિદારીગન્ધાદિગણ, જીવનીય-તથા જીવનીય-  
ગણુનાં દ્યોધોથી તથા જીવનીયગણુને દ્યોધોથી, ક્ષીર-  
સંસિદ્ધમ્ દૂધ વડે પકાવેષુ ક્ષીરસે સિદ્ધ, તૈલમ્ તેલ  
તૈલ, આદિ ચિકિત્સા છે ચિકિત્સા છે ॥ ૧૫ ॥

15 In disorders arising from sexuality the remedial measures indicated are:—the use medicated milk or ghee prepared with the life-promoter group of drugs: sudations inunctions and fomentations curative of vata, diet promotive of the seminal secretion, unctuous articles, oleation procedures, longevity promoting enemas (yapana-basti) and unctuous enemas. In conditions of the vitiation of the urine or pain in the bladder, oil prepared with milk and drugs of the ticktrefoil group and the life-promoter group

મુસ્તાયો યાપનાવસ્તિઃ—

યાપનાશ્ચ વસ્તયઃ સર્વકાલં દેયાઃ; તાનુપદે-  
શ્યામઃ—મુસ્તોશીરવલારગ્ધરાશ્ચાન્નામશ્વિષ્ટાકદુરો-  
હિણીશ્યામાણાપુનર્નવાભિમીતકગુહ્વીચીસ્થિરાદિપ-  
શ્ચમૂલાનિ પલિકાનિ સ્વપ્નશઃ કલ્પાન્ન્યદ્યૌ ચ  
મદનફલાનિ પ્રક્ષાલ્ય જલાઢકે પરિકાશ્ય  
પાદશેષો રસઃ ક્ષીરદ્વિપ્પસ્યસંયુક્તઃ પુનઃ શૂતઃ

૧૫. મૂત્રવૈકૃતવસ્તિશૂલેષુ ચોત્તરવસ્તિઃ—મૂત્રવૈકૃતે વસ્તિશૂલેઃ (ય)

—મૂત્રવૈકૃતવસ્તિશૂલેષુ (ક.)

૧૫. જીવનીયક્ષીર—જીવનીયગણુક્ષીર (ક.)

૧૫-(૧). પુનઃ શૂતઃ—પુનઃ પુનઃ (ક.)

क्षीरावशेषः पादजाङ्गलरसस्तुल्यमधुघृतः शत-  
कुसुमास्रधुकुसुमजलरसाञ्जनप्रियङ्गुकल्कीकृतः  
ससैन्धवः सुखोष्णो बस्तिः शुक्रमांसबलजननः  
क्षतक्षीणकासमुल्लमूलविषमज्जरव्रध्न(वध्मे)कुण्ड-  
लोदावर्तकुक्षिशूलमूत्रकुच्छ्रास्रप्रजोविस्वर्पप्रवाहि-  
काशिरोरुजाजानूरजङ्गावस्तिप्रहाइमर्युन्मादार्शः -  
प्रमेहाध्मानवातरक्तपित्तश्लेष्मव्याधिहरः सद्यो  
बलजननो रसायनश्चेति (१);

यापनाः यापना यापना, वस्तयः च अस्तिओ  
वस्तिगो, सर्वकालम् सन् डाध सब कालमें, देयाः  
आपवी ओधओ देनी चाहिए, तान् तेओने। इनको,  
उपदेक्ष्यामः उपदेश करथुं कहेंगे, सुस्त- नागर भोथ  
मोथा, उशीर- वीरछुने। नागे। खस, बका- अधा बला,  
आरगवध- गरभागे। अमलतास, रास्ता- रास्ता वाय-  
सुरई, मज्जिहा- मज्ज मंजीठ, कटुरोहिणी- डडु कटुई,  
त्रायमाणा- त्रायभाओ असवर्ग, पुनर्नवा- साठोडी गदह-  
पुरना, विभीतक- अडेडा बहेडा, गुडूची- गणे। गिलोय,  
स्थिरादि- स्थिरादि शालपर्ण्यादि, पञ्चमूलानि पंचमूल  
पंचमूल, पलिकानि दरेक ओक पध प्रत्येक चार तोले,  
खण्डकः ओओना डुकेडा इनके टुकडों, कलसानि डरी  
करके, अष्टौ अने आठ और आठ, मदनफलानि च  
भीठण मैनकल, प्रक्षाल्य धौध नाथीने धोकर, जला-  
ठके ओक आठके पाण्डोभां २५६ तोले जलमें, परिकाष्य  
उवाथ डरी पकाकर, पादशेषः अतुर्थांश आडी रहे  
त्यारे चौबाई शेष रहने पर, रसः ते उवाथभां उस  
काथमें, क्षीर- दूध दूध, द्विप्रत्य- ओ प्रत्य १२८ तोले,  
संयुक्तः नाथी डालकर, पुनः डरीभां फिरसे, क्षीरा-

वशेषः दूध आडी रहे त्यां मुन्ने दूध शेष रहने तक,  
घृतः डिकाधो उबाले, तुष्य पछी तेभां तेडवा अ  
फिर उसमें उतने ही, मधु- मध घट्ट, घृतः तथा  
धी नाथी तथा धी डालकर, मतकुसुमा- तेभां मुना  
एवं सोया, मधुक- गेडीभज सुलहरी, कुसुमफल- घ-  
०७ इन्द्रजौ, रसाञ्जन- रसाञ्जन रसाञ्जन, प्रियङ्गु तथा  
धउं धाने। तथा प्रियंगुका, कल्कीकृतः डडु डरी कल्क  
कर, ससैन्धवः सैन्धवसहित सेन्धानमकसहित, पाद-  
ओकअतुर्थांश एकचतुर्थांश, जाङ्गलरसः अजध भाथी-  
ओना भांसरसवाणी जांगल मांसासवाली, सुखोष्णः  
नवशेडी सुखोष्ण, बस्तिः अस्ति देनी बस्ति देनी  
चाहिए, शुक्र- आ अस्ति शुक्र यह बस्ति शुक्र मांस-  
भांस तथा मांस, बल- तथा अधने तथा बलका,  
जननः पेदा डरनार छे जनक है, क्षत- क्षत जत,  
क्षीण- क्षीण क्षीण, कास- कास कास गुरम- युद्ध  
गुल्म, शूल- शूल शूल, विषमज्जर- विषम अज्जर विषम  
ज्जर, व्रध्न- व्रध्न व्रध्न, कुण्डल- वातकुंडलिका वात-  
कुंडलिका, उदावर्त- उदावर्त उदावर्त, कुक्षिशूल- कुक्षिशूल  
कुक्षिशूल, मूत्रकुच्छ्र- मूत्रकुच्छ्र मूत्रकुच्छ्र असवर्गः रज-  
प्रदर रक्तप्रदर, विसर्प- विसर्प विसर्प, प्रवाहिका-  
प्रवाहिका प्रवाहिका, क्षीरोरुजा- भाथीनी पीध क्षीर-  
दर्द जानु- डींथल जानु, चरु- साधण ऊरु जङ्गा-  
पीडी जंघा, बस्ति- तथा अस्ति तथा बस्ति, प्रह-  
अडधध ०७ पुं जकडा जाना, बहमरी- अहमरी अहमरी,  
उन्माद- उन्माद उन्माद, अर्शः- अर्शः अर्शः, प्रमेह-  
प्रमेह प्रमेह, आध्मान- आध्मान आध्मान, वातरक्त-  
वातरक्त वातरक्त, पित्त-अने पित्त और पित्त, श्लेष्म-  
तेभां डईना एवं कफके, व्याधिहरः रोगो ओओने  
भटाडनार रोग इनका नाशक, सद्यः शीघ्र क्षीघ्र, बल-  
जननः अडेडरके बलकारक, रसायनः च इति तथा  
रसायन छे तथा रसायन है ॥ १ ॥

१६-१). क्षीरावशेषः पादजाङ्गलरसस्तुल्यमधुघृतः क्षीरावशेष-  
स्तुल्यो जाङ्गलरसमधुघृतः (क)

- ११ पादजाङ्गलरस-तुल्यो जाङ्गलरसः (ड)
- १२ तुल्यमधुघृतः-प्रमधुघृतः (ड)
- १३ शुक्रमांसबलजननः-शुक्रमांसाभिजजननः (क)
- १४ शुक्रमांसबलजननः-शुक्रमांसाभिजजननः (घ)
- १५ मांसबलजननः-मांसाभिजजननः (ङ)
- १६ कासगुरम-कासहिकागुरम (द)
- १७ मूत्रकुच्छ्रास्रप्रजो-मूत्रकुच्छ्रास्रप्रजो (घ)
- १८ प्रवाहिका-निर्वाहिका (ग)

16-(1). Yapana enemata may be given at all times as we shall now describe. Take 4 tolas each of nut grass, heart leaved sida, purging cassia, Indian groundsel, Indian madder, kurroa, zalil, hog's weed, beleric myrobalan, guduch and the pentaradices of the

ticktrefoil group and having crushed them into little bits, decoct them together with eight emetic nuts which have been properly cleansed in 256 tolas of water, till the solution is reduced to one fourth the original quantity add to this solution 128 tolas of cow's milk; boil the whole gain till only the milk part remains. Add to this meat-juice of the jangala animals in measure one fourth the quantity of the milk; and honey and ghee in equal quantities. Add to this solution the paste of dill seed, liquorice, kurchi emetic nut, extract of Indian berberry and perfumed cherry. This solution, mixed with rock salt, should be given in congenially warm water as enema it is promotive of the seminal secretion, and flesh and curative of pectoral lesions. cachexia, cough, Gulma, colicky pain, irregular fever inguinal swelling, Kundala vata, misperistalsis, acute pain in the stomach, dysuria, menorrhagia, acute spreading affections, dysenteric condition, pain in the head, in the knee the thigh, the calf and the bladder. urinary calculi, insanity, piles urinary anomalies, abdominal distension and disorders due to morbid vata, blood, pitta and kapha. This enema is also an immediate promoter of strength and vitality.

एरण्डमूलाद्यो यापनवस्तिः—

एरण्डमूलपलाशात् षट्पलं शालिपर्णीपृश्निपर्णी  
बृहती कण्टकारिका गोक्षुरको राज्ञाऽश्वगन्ध

गुडूची वर्णाभूरास्वधो देवदार्विति पलिकानि  
खण्डकाः कलसानि कलाचि चाष्टौ प्रक्षाल्य जलाढके  
क्षीरपादे पचेत् । पादशेषं कषायं पूतं शतकुसुमाकु-  
ष्ठमुस्तपिप्पलीहृषुषाबिल्ववचावत्सकफलरसाञ्जन-  
प्रियङ्गुयवानीप्रक्षेपकलिकतं मधुघृततैलसैन्धवयुक्तं  
तुखोष्णं निरूहमेकं द्वौ त्रीन् वा दद्यात् ।

एरण्डमूल- औरंडाना मूल एरण्डमूल, पलाशात्  
पलाशानां मूल ढाककी जड़, षट्पलम् ७ पल २४  
तोले, शालिपर्णी शाहपत्र सतीवन, पृश्निपर्णी पोष्टपत्र  
पृश्निपर्णी, बृहती डेडी भोरी गंधुली बनभाटा, कण्टका-  
रिका डेडी भोरी गंधुली छोटी कटेरी, गोक्षुरक गोभरु  
गोखरु, रास्ना रास्ना वायसुरई, अश्वगन्धा आसेई  
असगन्ध, गुडूची गणो गिलोय, वर्णाभूः सायेडी  
पुनर्नवा, आरवधः भरभाणो अमलतास, देवदारु इति  
आने देवदार और देवदार, पलिकानि इरेड और ५६  
प्रत्येक ४-४ बोले, खण्डकाः औरंडाना टुकड़ा इनके  
टुकड़ों कलसानि डरी करके, चाष्टौ आने आठ और  
बाठ, कलानि च भीड़ण मैनफल, प्रक्षाल्य धोई  
नाभीने धोकर, जलाढके- और आढक जलमा २५६  
तोले जलमें, क्षीरपादे- तथा पा आढक दूधमा नाभी  
और ६४ तोले दूधमें पचेत् पकावना पकाये, पादशेषम्  
अधुनांश आडी रहे त्पारे चौथाई शेष रहने पर,  
कषायम् पूतम् ते कषायने गाणी उस कायको छानकर,  
शतकुसुमा- तेमा सुवा उसमें सोया, कुष्ठ- ४६ कूठ,  
मुस्त- नागरमेथ मोथा, पिप्पली- पीपर पिप्पली,  
हृषुषा- डाडियेर हाजवेर, बिल्व- भीलुं बेल, वचा- पञ्च  
वच, वत्सकफल- डोडा कुडा, रसाञ्जन- रसाञ्जन रसौत,  
प्रियङ्गु- धुँडला प्रियङ्गु, यवानी- आने अजमे और ओने।  
और अजवायन इनका, प्रक्षेप-कलिकतम् उहेड नाभी कल  
ढालकर, मधु- मधु शहद, घृत- वी जी, तैल- तैल  
तैल, सैन्धव- तथा सैन्धवथी तथा सेंधानमकसे, युक्तम्  
युक्त डरी मिलाकर, एकम् और एक, द्वौ- डे दो,  
त्रीन् वा अथवा त्रय अथवा तीन, निरूहम् निरूह-  
अरित निरूह बस्ति, दद्यात् देवी देवे ।

१६-(२). शतकुसुमा-शतकुसुमादि (ड.)

, , -शतकुसुमादिकलिकतं (५.)

, , यवानीप्रक्षेप-यवानीप्रक्षेप (६.)

16 (1) Take twentyfour tolas of castor and palas and four tolas each of tick trefoil, painted-leaved uraria. Indian nightshade, yellow-berried nightshade, small caltrop, Indian groundsel, winter cherry, guduch, hog's weed, purging cassia and deodar; triturate all these into small bits and decoct them together with eight well cleansed emetic nuts, in 250 tolas of water and one fourth that quantity of milk. when the solution is reduced to one-fourth its original quantity, it should be taken down and filtered. Add to this the paste of dillseed, costus nut-grass, long pepper, juniper, bael, sweet-flag, kurchi, emetic nut, extract of Indian berberry, perfumed cherry and barley, as also honey, ghee til oil and rock-salt. with the solution thus obtained an evacuative enema in congenially warm condition should be given once, twice or thrice as the case requires.

सर्वेषां प्रशस्तो विशेषतो ललितसुकुमार-  
क्रीविहारक्षीणक्षतस्थविरचिरार्शसामपत्यकामा-  
नां च (२);

सर्वेषाम् आ अस्ति सध्या भाटे सबके लिए,  
विशेषतः अने विशेष कड़ीने और विशेष करके, ललित-  
ललित, सुकुमार-सुकुमार, सुकुमार, क्रीविहार-  
कीनी साधेना, निहारथी क्रीविहारसे, क्षीण-क्षीण

क्षीण, क्षत-क्षतबागा क्षत, क्षविर-प्रक्षुब्ध, चिरार्श-  
साम् क्षीण वधतना अर्शना रेजी वीच भर्शोरोनी,  
अपत्यकामानाम् च अने संतातनी कामनाबागाओने  
भाटे तथा अपत्यकी कामनाबागोंके लिए, प्रशस्तः प्रशस्त  
छे प्रशस्त है (२);

16(2). This enema is beneficial in all conditions and especially for the aristocrats the emaciated and those suffering from pectoral lesions as a result of sex indulgence, the aged, and those suffering from chronic piles and those who are desirous of progeny.

सहचराद्यो यापनवस्ति: —

तद्वत् सहचरबलादर्भमूलसारिवासिद्धेन  
पयसा (३);

तद्वत् ते अ प्रभावे इसी प्रकार, सहचर-आश-  
भानी इधने कटाक्षेण्ये नीलपुष्पवादी कटसरवा,  
बला. अला बला, दर्भमूल इधना भूण दर्भके मूल,  
सारिवा-तथा सारिवाथी तथा कपूरीसे, सिद्धेन पयसे  
सिद्ध, पयसा इधनी अस्ति आपनी दूधनी वधि  
देवे (३);

16(3). An enema may be similarly prepared with created purple nail dye, heart-leaved sida, roots of sacrificial grass and Indian sarsaparilla and with milk.

वृद्ध्याद्यो यापनवस्ति: —

तथा वृद्धीकण्टकारीशतावरीच्छिब्रह्माभृ-  
तेन पयसा मधुकमदनपिप्पलीकस्त्रितेन पूर्वव-  
द्दत्ताः (४);

१६-(२) सर्वेषां-स सर्वेषां (ब)

चिरार्शसामपत्यकामानां च-चिरार्शोमृदुल्लोमावर्तत्र-

हणीदोषाश्मरीणां क्षितोऽपत्यकामानां च (क.)

चिरार्शोमृदुल्लोमावर्तत्रहणी-  
दोषाश्मरीणां क्षितोऽपत्यकामानां च (ब.)

१६-(३). दर्भमूल-मृदुल्लोम (ब. त.)

१६-(४). कस्त्रितेन-कस्त्रितेन (ब. क.)

—कस्त्रितेन (ब.)

—कस्त्रितेन (ब. क. ड.)

તથા તથા તથા, મધુક- બેરીમધુ મુલહઠી, મદન-  
વિપ્પલી મીઠાનાં બીજનાં મૈનફલકે વીજકે, કલિકતેન-  
કલકયુક્ત કર્કસે યુક્ત, બૃહતી- ઉભી બોરીગણી  
વનખાટા, કણ્ટકારી- બેરી બોરીગણી છોટી કટેરી,  
જાતાવરી- શતાવરી શતાવર, છિન્નરુદ્ધા- અને ગળેાથી  
ઓર નિલોચસે, શ્વેન પકાવેલા સિદ્ધ કિચે હુણ. પચસા  
દૂધની દૂધકી, બસ્તિઃ અસ્તિ બસ્તિ, પૂર્વેવત્ પૂર્વોક્ત  
વિધિ પ્રમાણે દેવી પૂર્વોક્ત વિધિકે અનુચાર દેવે (૪);

16(4). Likewise, an enema may be prepared in the foregoing manner from Indian nightshade, yellow-berried nightshade, climbing asparagus and guduch in milk, along with the paste of liquorice, emetic nut and long pepper.

પ્રથમો બલાયો યાપનવસ્તિ: —

તથા બલાતિબલાવિદારીશાલપર્ણીપૃષ્ઠિપર્ણી-  
બૃહતીકણ્ટકારિકાદર્ભમૂલપરુષકકાશ્મર્યવિલ્વફ-  
લયવસિદ્ધેન પચસા મધુકમદનકલિકતેન મધુવૃત-  
સૌવર્ચલયુક્તેન કાસજ્વરગુલ્મહીહાર્દિતસ્ત્રીમધ-  
ક્ષિણનાં સદ્યોબલજનનો રસાયનઞ્ચ (૫);

તથા તથા તથા, મધુક- બેરીમધુ મુલહઠી, મદન-  
અને મીઠાનાં મૈનફલકે, કલિકતેન- કલકયુક્ત, મધુ-  
તથા મધુ તથા શહદ, વૃત ધી વી, સૌવર્ચલ- અને  
સૌવર્ચલયુક્ત ઓર સૌવર્ચલમકલકે યુક્ત, બલા- બલા  
બલા, અતિબલા ખપાટ કન્વી, વિદારી- બોલિકાળું  
બિલાઈકન્દ, જાલિપર્ણી- શાલવણુ સરીવન, પૃષ્ઠિપર્ણી-  
પીઠવણુ પૃષ્ઠિપર્ણી, બૃહતી- ઉભી બોરીગણી વનખાટા,  
કણ્ટકારિકા- બેરી બોરીગણી છોટી કટેરી, દર્ભમૂલ  
શભનાં મૂલ દર્ભમૂલ. પરુષક- ફાલસા ફાલસા,  
કાશ્મર્ય- શીવણુ ગમ્માર વિલ્વફલ- બીલાં બેલનિરી,  
ચવ- અને યવથી ઓર જોસે, સિદ્ધેન- પકાવેલા પકાવે  
હુણ, પચસા દૂધની અસ્તિ દૂધકી બસ્તિ, કાસ- કાસ

૧૬-(૫). દર્ભમૂલપરુષકકાશ્મર્યવિલ્વફલયવસિદ્ધેન-દર્ભમૂલયવ-  
કાશ્મર્યવિલ્વફલસિદ્ધેન (ક.)

પરુષક-યવપરુષક (૫.)

પરુષકકાશ્મર્ય-યવકાશ્મર્ય (શ. ૩)

સાંસી, જ્વર- જ્વર જ્વર, ગુલ્મ- ગુલ્મ ગુલ્મ, હીહાર્દિત-  
હીહાર્દિત હીહાર્દિત, સ્ત્રીમધ- સ્ત્રી તથા  
મધથી સ્ત્રી તથા મધસે, ક્ષિણનાં શીવણુ મધેલાઓને  
માટે કર્ણિકાકે લિપ્ત, સ્વચ્છ: સ્વચ્છ સ્વચ્છ, બલજનન: બલ  
દેનાર બલજનક, રસાયન: જ અને રસાયન છે ઓર  
રસાયન છે (૫);

16(5) Likewise, an enema may be prepared from heart-leaved sida, evening mallow, white yam, tick-trefoil, painted leaved uraria, Indian nightshade, yellow-berried nightshade, roots of sacrificial grass sweet falsah, white teak, bael, emetic nut and barley in milk, with the paste of liquorice and emetic nut and mixed with honey, ghee and sanchal salt. These enemas are indicated in the case of those who are suffering from cough, fever, Gulma, splenic disorder, facial paralysis and the effects of indulgence in sex and urine. They are immediate promoters of strength and vitalization.

દ્વિતીયો બલાયો યાપનવસ્તિ: —

બલાતિબલારાસ્ત્રાગ્વધમદનવિલ્વગુડૂચીપુનર્વ-  
વૈરણ્ડાશ્વગન્ધાસહચરપલાશદેવદારુદ્વિપશ્ચમૂલા-  
નિ પલિકાનિ યવકોલકુલત્યદ્વિપ્રસૂતં શુષ્કમૂલ-  
કાનાં ચ જલદ્રોણસિદ્ધં નિરુહપ્રમાણાવશેષં કષાયં  
પૂતં મધુકમદનશતપુષ્પાકુષ્ઠપિપ્પલીવચાવત્સક-  
ફલરસાશ્વનપ્રિયકૃયવાનીકલ્કીકૃતં ગુડવૃતતૈલ-  
ક્ષૌદ્રક્ષીરમાંસરસામ્લકાઞ્જિકસૈન્ધવયુક્તં સુષો-  
ષ્ણં વસ્તિ દધાન્નુકમૂત્રવર્ચસક્કેડનિલજે ગુલ્મ-

૧૬-(૬). શ્વગન્ધા-સુમત્રા ય.)

શુષ્કમૂલકાનાં ચ જલદ્રોણસિદ્ધં-શુષ્કમૂલકાનિ ચ  
પલિકાનિ (ચ. ૫.)

જલદ્રોણસિદ્ધં નિરુહપ્રમાણાવશેષં-જલદ્રોણે સિદ્ધં  
નિરુહપ્રમાણશેષં (ચ.)



हृद्रोगाध्मानप्रपार्श्वपृष्ठकटीग्रहसंज्ञानाशयलक्ष-  
येषु च (६);

बला- अला बला, अतिबला- अपाट कंवी, रास्ना-  
रास्ना वायसुरई, आरगवध- गरभाणे, अमलतास, मदन-  
भीठण मैनफल, बिलव- भीजा बेल, गुडूची- अणे गिलय  
पुनर्नवा- साठोये गदहपुरना, एरण्ड- औरडे एरण्ड,  
अधगन्धा- आसेई अलगन्ध, सहचर- आसभानी कुडने।  
डांशेणीये नीलपुष्पवाली कटसरैया, पलाश भाभरे।  
ठाक, देवदार- देवदार देवदार, द्विपञ्चमूलानि दशमूल  
दशमूल, पलिकानि दरेड और और पक्ष चार चार तोले,  
यव-कोल- यव, और, जौ, वैर, कुलत्थ- अने कण्ठी  
कुलथी, द्विपञ्चमूल अने प्रसृत १६-१३ तोले, शुष्क-  
मूलकानाम् च तेमज सूक्ष्म भूणा अने प्रसृत एवं सूखी  
मूली १६ तोले, जलद्रोण और द्रोण पाण्डुभा १०२४  
तोले जलमें, सिद्धम् पञ्चावर्ग पकावे, निरुह- निरुह-  
अस्ति निरुहवस्तिके प्रमाण- अटके। प्रमाणमें, अवशेषम्  
कषायम् क्वाथ आडी २६ त्पारे काथके अवशिष्ट रहने  
पर, पूतम् आणी धर्ष छानकर, मज्जुक- तेमां अक्षीमध  
मुलहठी, मदन- भीठण मैनफल, अतपुष्पा- सुवा सोया,  
कुष्ठ- कठ कूठ, पिप्पली- भीपर पिप्पली, बवा- वज्र  
वज्र, वत्सकफलम् ध-द्रव्य इन्द्रजौ, रसाजिन- रसाजिन  
रसौत, प्रियङ्गु- धडैला प्रियङ्गु, बवानी- अने अजभाणे।  
और अजवायनका, कल्कीकृतम् कटके नाभी कलक डाल-  
कर, गुड- गोण गुड, वृत्त- बी जी, तैल तैल तैल,  
सौद्र- मध शहद, क्षीर- दूध दूध, मांसरस- भांसरस  
मांसरस, अम्लकाजिक- आटी डांश खट्टी कांजी, सैन्धव-  
युक्तम् तथा सैन्धवशी युक्त तथा सैन्धवसे युक्त, सुखो-  
ष्णम् नवशेडी सुखोष्ण, वस्तिम् अस्ति वस्ति, अनि-  
कजे वातज वातज, शुक्र- शुक्र शुक्र, मूत्र- मूत्र मूत्र,  
वर्ष- तथा आसानी तथा पुरीषकी, सत्रे अटकायत  
रुकावट, गुल्म- शुद्ध गुल्म, हृद्रोग- हृद्रोग हृद्रोग,  
आध्मान आध्मान आध्मान, अधन अने व्रत पार्श्व-  
पार्श्व पार्श्व, पृष्ठ- पीठ पृष्ठ, कटी- तेमज डेउ एवं  
कटीकी, ग्रह- अक्षी अणु जकहाट, संज्ञानाश- संज्ञा-  
नाश संज्ञानाश, बलक्षयेषु च अने अक्षनी क्षीयता  
और अक्षनी इनमें, दद्यात् आपनी देवे (६);

16-61. Take four tolas each of heart-leaved sida. evening mallow, Indian groundsel, purging cassia emetic nut, bael, guduch, hog's weed. castor, winter cherry, crested purple nail dye, palas, deodar and the two kinds of pentaradices and 16 tolas of barley, Indian jujube, horsegram and dried garden radish. This should be boiled in 1024 tolas of water and when the decoction is reduced to the quantity prescribed for an evacuative enema it should be taken down and filtered. Add to it the paste of liquorice, emetic nut, dill-seed costus long pepper, sweet flag, kurchi, emetic nut, extract of Indian berberry, perfumed cherry and bishop's weed, as also gnr, ghee, oil, honey, milk, meat juice, sour conjee and rock-salt. This solution should be given as a congenially warm enema in conditions of the retention of semen, urine and feces due to morbidity of vata, as also in conditions of gulma, heart-disease, abdominal distension, inguinal swellings, spasticity of the sides, back and waist, loss of consciousness and loss of strength.

हृद्रोगो वापनवस्तिः—

हृद्रोगार्धकुडवो द्विगुणार्धशुष्णयवः क्षीरोदक-  
सिद्धः क्षीरशेषो मधुवृततैलवज्रयुक्तः सर्वाङ्गवि-  
स्तृतवातरक्तसक्तविण्मूत्रक्षीरेदितद्वितो वातहरो  
बुद्धिमेधाश्लिवलजननश्च (७);

१३(७). कृष्णयुक्त-वज्रयुक्तो वस्तिः (क. क.)



દુગુણ- હાઉચેર હાઝવેર, અર્ધકુઢવઃ અર્ધી કુડવ  
૮ તોલે, ત્રિગુણ અને અમ્ભુઝા ઓર દુગુને, અર્ધકુણ્ણયવઃ  
અધ કચરેલા જવને, અધકુટે જોકો, ક્ષીરોદક- દૂધ  
તથા પાણીમાં દૂધ તથા જલમેં, સિદ્ધઃ પકાવી પકાકર,  
ક્ષીરોદકઃ દૂધ આકી રહે ત્યારે તેમાં દૂધકે અવશિષ્ઠ  
રહને પર હવમેં, મધુ- મધ શહદ, ઘૃત- ઘી વી, તૈલ-  
તેલ, લવણ- અને સૈંધવ ઓર સૈંધવ, યુક્તઃ મેળવી  
આપેલી ધરિત મિલાકર લી હુદેં વસ્તિ, સર્વાન્ન- આખા  
શરીરમાં સમ્પૂર્ણ શરીરમેં, વિષ્ણુત- દેહાયેલ વ્યાસ,  
વાતરક્ત- વાતરક્તવાળા વાતરક્તવાલે, સક્તવિષ્ણુમૂઝ-  
આડા તથા પેશાબની અટકાયતવાળા ઓર મલ મૂત્રકી  
રકાવટવાલે, સ્ત્રીચેદિત- અને સ્ત્રીસંભોગથી ક્ષીણ  
થયેલા પુરુષો માટે સ્ત્રીસંભોગસે ક્ષોણ હુણ પુરુષકે લિપ,  
હિતઃ હિતકર્તા છે હિતકર હે, વાતરહરઃ તેમજ તે  
વાતમ્મં એવં વહ વાતરહર, બુદ્ધિ- અને યુદ્ધિ ઓર બુદ્ધિ,  
મેધા- મેધા મેધા, અગ્નિ- અગ્નિ અગ્નિ, વલજનનઃ  
જ તથા બલને પેદા કરનાર છે ઓર વલકી જનક હે (૭);

16-(7). Take 8 tolas of juniper and twice that quantity of half-crushed barley, and boil the whole in milk and water till only the portion of milk remains. Add to this honey, ghee, til oil and salt. This enema is beneficial in cases of rheumatic conditions affecting all the body parts, retention of feces and urine and for persons afflicted with the effects of over-indulgence in sex. It is curative of morbid vata and promotive of intellect, memory, gastric power and vitality.

લઘુપચ્છમૂલાયો યાપનવસ્તિઃ —

હૃસ્વપચ્છમૂલીકપાયઃ ક્ષીરોદકસિદ્ધઃ પિપ્પલી-  
મધુકમદનકલ્કીકૃતઃ સગુહઘૃતતૈલલવણઃ ક્ષીણ-  
વિષમચ્ચરકશિતસ્ય વસ્તિઃ (૮);

૧૬-(૮). હૃસ્વપચ્છમૂલીકપાયઃ—હૃસ્વપચ્છમૂલીકપાયઃ (ચ.)

” કલ્કીકૃતઃ—કશિકતઃ (ક.)

ક્ષીરોદક- દૂધ તથા પાણીમાં દૂધ તથા જલમેં, સિદ્ધઃ  
સિદ્ધ કરેલા સિદ્ધ કિયે હુણ, હૃસ્વપચ્છમૂલી- હૃધુ પંચ-  
મૂળના લઘુ પચ્છમૂલકે, કપાયઃ કપાયમાં કપાયમેં, પિપ્પલી-  
પીપર પિપ્પલી, મધુક- બેઠીમધ મુઠહઠી મદન- અને  
મીઠળનેા ઓર મેનફલકા, કલ્કીકૃતઃ કલ્ક નાખીને  
કલ્ક હાલકર, સગુહ- મેળા ગુહ, ઘૃત- ઘી વી, તૈલ-  
તૈલ, લવણઃ તથા સૈંધવવાળી તથા સૈંધવસે યુક્ત, વસ્તિઃ  
ધરિત વસ્તિ, ક્ષોણ- ક્ષીણ ક્ષોણ, વિષમ- તથા વિષમ  
તથા વિષમ, ઝવર- જવરથી ઝવરસે, કશિતસ્ય ક્ષીણ  
થયેલાઓ માટે હિતકર છે કુશ શરીરવાલોકે લિપ  
હિતકર હે (૮);

16-(8). An enema may be prepared by decocting the minor pentaradices in milk and water and adding the paste of long pepper, liquorice and emetic nut and mixed with gur, ghee, til oil and salt. This enema is beneficial to those who are suffering from wasting and irregular fever.

તૃતીયો વલાયો યાપનવસ્તિઃ —

વલાતિવલાપામાર્ગાત્મગુણાષ્ટપલાર્ધશુષ્ણયવા-  
અલિકપાયઃ સગુહઘૃતતૈલલવણયુક્તઃ પૂર્વવદ્વસ્તિઃ  
સ્થવિરદુર્બલક્ષીણશુક્રરુચિરાણાં પથ્યતમઃ (૯);

વલા- વલા વલા, અતિવલા- અતિવલા અતિવલા,  
અપામાર્ગ- અધેડો ત્રિરવિટા, આરમગુણ- કોવચ કેવૅચ,  
અષ્ટપલ- આઠ પલ ૩૨ તોલે, અર્ધકુણ્ણ- અધકુણ્ણ  
કરેલ અધકુટે, યવાજલિ- એક કુડવ જવનેા જો ૧૬  
તોલે મિલાકર કપાયઃ કપાય કરી તેને કાથ કરે હવમેં,  
સગુહ- મેળા ગુહ, ઘૃતતૈલ- ઘી, તૈલ વી, તૈલ, લવણ-  
અને સૈંધવથી ઓર સૈંધવસે, યુક્તઃ યુક્ત કરી મિલાકર,  
પૂર્વવત પૂર્વોક્ત ત્રિપિ પ્રમાણે પૂર્વોક્ત વિવિધે અનુસાર,  
વસ્તિઃ ધરિત આપવી વસ્તિ હેવે, સ્થવિર- વૃદ્ધ વૃદ્ધ,  
દુર્બલ- દુર્બળ દુર્બલ, ક્ષીણશુક્રરુચિરાણાં અને શુક્ર  
તથા રક્તની ક્ષીણતાવાળાઓ માટે ઓર શુક્ર તથા  
રક્તની ક્ષીણતાવાલોકે લિપ, પથ્યતમઃ અત્યંત પથ્ય છે  
અત્યંત પથ્ય હે (૯);

16-(9). An enema may be similarly prepared from the decoction of thirty-two tolas of heart-leaved sida, evening mallow. rough chaff and cowage and 16 tolas of half-crushed barley and mixed with gur, ghee, til oil and salt. This enema is most beneficial in the case of the aged, the debilitated and for those who have suffered loss of semen and blood.

ચતુર્થો બલાયો યાપન વસ્તિ: —

બલામધુકવિદારીદર્ભમૂલમૃદ્ધીકાચૈ: કષાય-  
માજેન પયસા પક્ત્વા મધુકમદનકક્ષિતં સમધુ-  
ધૃતસૈન્ધવં જ્વરાતેભ્યો વસ્તિ દદ્યાત્ (૧૦):

બલા- બલા, મધુક- બેઠીમધ મુલદ્દી,  
વિદારી- ૩ગિથી, ચિલાઈકન્દ, દર્ભમૂલ- દાણનાં મૂલ દર્ભમૂલ,  
મૃદ્ધીકા- દાક્ષ દાક્ષ, ચૈ: અને જવનીં જોર જોરે,  
કષાયમ્ કષાયને કાચકો, માજેન બકરીનાં વકરીકે,  
પયસા દૂધથી દૂધસે, પક્ત્વા પકાવીને પકાકર, મધુક-  
બેઠીમધ મુલદ્દી, મદન- અને મોઢળનોં જોર મૈનફલકા,  
કક્ષિતમ્ કંકડ નાખી કલક ઢાલકર, સમધુ મધ ચદર,  
ધૃત- થી વી, સૈન્ધવમ્ તથા સૈન્ધવ મેળવી તથા  
સૈન્ધાનમક મિલાકર, વસ્તિમ્ બસ્તિ વસ્તિ, જ્વરાતેભ્ય:  
જ્વરવાળાઓને જ્વર પીઠિતોંકો, દદ્યાત્ આપવી  
દેવે, (૧૦);

16- 10). An enema may be prepared by boiling heart-leaved sida, liquorice, white yam, roots of sacrificial grass, grapes and barley in goat's milk. To this decoction must be added the paste of liquorice and emetic nut as also honey, ghee and rock salt. This

enema should be given to those who are afflicted with fever.

શાલપર્ણાધો યાપનવસ્તિ: --

શાલિપર્ણીપૃષ્ઠિપર્ણીગોધુરકમૂલકાશ્મર્યપરુષ્ક-  
સ્વર્જૂરફલમધુકપુષ્પૈરજાક્ષીરજલપ્રસ્થામ્યાં સિદ્ધ:  
કષાય: પિપ્પલીમધુકોત્પલકક્ષિત: સધૃતસૈન્ધવ:  
ક્ષીણેન્દ્રિયવિષમજ્વરકર્ણિતમ્ય વસ્તિ: શસ્ત: (૧૧):

શાલિપર્ણી- શાલવડુ સરીવન, પૃષ્ઠિપર્ણી- પીડાવડુ,  
પૃષ્ઠિપર્ણી, ગોધુરકમૂલ- ગોખરુનાં મૂળ મેંઘરુકે મૂલ,  
કાશ્મર્ય- શીવડુ ગમ્ભારીકે ફલ, પરુષ્ક- ૩૩૩૩  
ફાલસા, સ્વર્જૂરફલ- ખબરુનાં ફલ સ્વર્જૂરફલ, મધુક-  
અને મહુડાનાં જોર મહુડકે, પુષ્પ: દૂધના ફૂલકે,  
અજા-જોર-જલ-પ્રસ્થામ્યાં ૧૪ તોલા બકરીનાં દૂધથી  
અને ૧૪ તોલા પાણીથી ૬૪ તંબે વકરીકે દૂધસે જોર  
૬૪ તોલે જલસે, સિદ્ધ: સિદ્ધ કરેલા સિદ્ધ કિંચે હુપ કષાય:  
કષાયમાં કાચમેં, પિપ્પલી- પીપર પિપ્પલી, મધુક-કપત-  
બેઠીમધ તથા કેમળનો મુલદ્દી તથા કમલકા, કક્ષિત:  
કંકડ નાખી કલક ઢાલકર, સધૃત- થી વી, સૈન્ધવ: તથા  
સૈન્ધવ મેળવી તથા સૈન્ધાનમક મિલાકર, વસ્તિ: આપેલી  
બસ્તિ થી હુઈ વસ્તિ, ક્ષીણેન્દ્રિય- ક્ષીણેન્દ્રિય ક્ષીણેન્દ્રિય,  
વિષમજ્વર- તથા વિષમ જ્વરથી તથા વિષમ જ્વરસે,  
કર્ણિતમ્ય કુશ થયેલા મનુષ્યને માટે કુશ હુપ મનુષ્યકે  
લિપ, શસ્ત: પ્રશસ્ત છે પ્રશસ્ત હૈ (૧૧);

16-(11). An enema may be prepared from the decoction of ticktrefoil, painted-leaved uraria, roots of small caltrops, white teak sweet falsah, dates, emetic nut, the flowers of mahwah in 128 tolas of goat's milk and water with the addition of the paste of long pepper, liquorice and blue water lily as well as ghee and rock salt. This enema is recommended in the case of those who are suffering from weakened sense-faculties and wasted by irregular fever

૧૬-(૧૦). માજેન પયસા પક્ત્વા મધુકમદનકક્ષિતં-માજન-  
પયસા પુન: પુન: પક્ત્વામધુકાક્ષકક્ષિતં (૧)

,, મદન-અક્ષ (ત.)

સ્થિરાદ્યો યાપનવસ્તિ: —

સ્થિરાદિપચ્ચમૂલીપચ્ચપલેન શાલિષષ્ટિકયવ-  
ગોધૂમમાષપચ્ચપ્રસૂતેન છાગં પયઃ શૃતં પાદશેષં  
કુકુટાણ્ડરસસમમધુઘૃતશર્કરાસૈન્ધવસૌવર્ચલ -  
યુક્તો વસ્તિર્વૃણ્યતમો બલવર્ણજનનશ્ચ । હિતિ  
યાપના વસ્તયો દ્વાદશ ॥ ૧૬ ॥

સ્થિરાદિ- સ્થિરાદિ શાલિષળ્યાદિ, પચ્ચમૂલી- પંચમૂલ  
પંચમૂલ, પચ્ચપલેન પ્રત્યેક એક એક પદ્ય પ્રત્યેક ૪-૪  
તોલે, શાલિ- અને શાલિ ઓર શાલિવાવલ, ષષ્ટિક-  
ષષ્ટિક સાંઠી વાવલ, યવ- જવ, જો, ગોધૂમ- ઘઉં, ગેહૂં,  
માષ- તથા અડદ તથા સદ્દ, પચ્ચપ્રસૂતેન પ્રત્યેક એક  
એક પ્રસૂત પ્રત્યેક ૮-૮ તોલે, છાગમ્ પયઃ શૃતમ્  
એએથી બકરીના દૂધને પકાવી ફનસે વકરીકે દૂધકો  
પકાકર, પાદશેષમ્ અતુર્થોશ શેષ રહે ત્યારે તેમાં  
ચતુર્થાશ શેષ રહેતર હસમે, કુકુટાણ્ડરસસમ- સમાન  
ભાગે કૂકુટીના ઇંડાને રસ સમાન ભાગમેં મુર્ગાકે  
બંડોકા રસ, મધુઘૃત- મધ, ઘી, શહદ, ઘી, શર્કરા-  
સાકર ચીની, સૈન્ધવ- સિંધાલૂણુ સેધાનમક, સૌવર્ચલ-  
અને સંચળ ઓર સૌચલનમક, યુક્તઃ મેળવી  
મિલાકર, વસ્તિઃ દેવામાં આપેલી અસ્તિ થી હુઈ વસ્તિ,  
વૃણ્યતમઃ સર્વથી અધિક વીર્યવધક છે સર્વે અધિક  
વીર્યવર્ધક છે, બલવર્ણ- તથા બલ અને બલુને તથા બલ  
ઓર વર્ણકા, જનનઃ ચ પેદા કરનાર છે જનક છે,  
હિતિ દ્વાદશ આ બારે ચે વારહ, યાપનાઃ યાપન યાપન,  
વસ્તયઃ અસ્તિઓ છે વસ્તિઓ છે ॥ ૧૬ ॥

16. Take twenty tolas of the penta-  
radices of the ticktrefoil group  
and 40 tolas of the sali rice, shashtik  
rice, barley, wheat and black gram  
and boil the whole in goat's milk till  
it is reduced to one-fourth its original  
quantity; add to this the contents of  
hen's eggs and equal quantities of

૧૬. ગોધૂમમાષ-કષાય (દ.)

.. છાગં પયઃ-છાગપયઃ (ઘ.)

.. બલવર્ણજનનશ્ચ-બલમાર્જનનશ્ચ (ચ. ફ.)

honey, ghee sugar, rock salt and  
sauchala salt. This euema acts as a  
most effective aphrodisiac and is  
promotive of strength and complexion.  
Thus, we have described the twelve  
enemas promotive of longevity.

શિશ્યાદિષુ પૂર્વોક્તકલ્પાતિદેશઃ —

કલ્પશ્ચૈવ શિશ્વિગોનર્દહંસસારસાણ્ડરસેષુ  
શ્ચાત્ ॥ ૧૭ ॥

શિશ્વિ- મેર મયૂર, ગોનર્દ- ગોનર્દ ગોનર્દ, હંસ- હંસ  
દસ, સારસાણ્ડ તથા સારસના ઇંડાના તથા સારસકે  
બંડોકા, રસેષુ રસમાં પાણી રસમેં મી, વૃણ્યઃ ચ આજ  
યહી, કલ્પઃ શ્ચાત્ કલ્પ થાય છે કલ્પ દોતા  
છે ॥ ૧૭ ॥

17 This erema may also be pre-  
pared by substituting the hen's eggs  
with the eggs of the per-hen, adjutant  
swan and saras crane.

તિત્તિર્યાદ્યો યાપનવસ્તિ: —

સતિત્તિરિઃ સમયૂરઃ સરાજહંસઃ પચ્ચમૂલી-  
પયઃસિદ્ધઃ શતપુષ્પામધુકરાશ્ચાકુટજાદનફલ-  
પિપ્પલીકલ્કો ઘૃતતૈલગુહસૈન્ધવયુક્તો વસ્તિર્બલ-  
વર્ણશુક્રજનનો રસાયનશ્ચ (૧);

સતિત્તિરિઃ તેતર તીતર, સમયૂરઃ મેર મયૂર,  
સરાજહંસઃ અને રાજહંસના માંસ ઓર રાજહંસકે માંસ,  
પચ્ચમૂલી- તથા બધુ પંચમૂલથી તથા લઘુ પંચમૂલસે,  
પયઃસિદ્ધઃ પકાવેલ દૂધમાં પકાયે હુઈ દૂધમે, શતપુષ્પા-  
સુવા સોવા, મધુક- બેરીમધ મુલહટી, રાસના રાસના  
વાયસરદે, કુટજ- કડો કુદા, મદનફલ- મીઠા મેનફલ,

૧૭. કલ્પશ્ચૈવ-કલ્પશ્ચૈવ ડ.)

.. હંસસારસાણ્ડરસેષુ-હંસાણ્ડરસેષુ (ધ.)

૧૮-(૧) સમયૂરઃ મેરાજહંસઃ-મસારસમયૂરમેરાજહંસઃ (ક. છ. ફ.)

.. સરાજહંસઃ-સપાજહંસઃ (ચ. ફ.)

.. શતપુષ્પા-શતકસમા (ચ. છ.)

विष्पली- अने पीपरने। और विष्पलीका, कल्कः उत्क  
कल्क, घृत भी यी, तैल- तैल, गुड- गोण गुड,  
तैजव- अने सिंधालूऔ और तैजव, युक्तः नाभी  
बालकर, बस्तिः आपनार्मा आवेदी अस्ति दी हुई  
बस्ति, बलवर्ण- अथ, पल्लु बल, वर्ण, शुक्रजननः तथा  
शुक्रने उत्पन्न करनेपर तथा शुक्रजनक, रसायनः च अने  
रसायन छे और रसायन छे (१);

18-(1). Take the sap of the pentaradices and prepare it with the meat juice of partridge, peacock and royal swan. Add to it the paste of dill seed, liquorice, Indian groundsel, kurchi, emetic nut and long pepper as well as ghee, til oil, gur and rock salt. This enema is promotive of strength, complexion and seminal secretion. It is also a good vitalizer.

द्विपञ्चमूल्याद्यो यापनवस्तिः —

द्विपञ्चमूलीकुङ्कुटससिद्धं पथः पादशेखं पिण्ड-  
लीमधुकरास्नामदनककं शर्करामधुघृतयुक्तं स्त्री-  
श्वलिकामानां बलजननो बलतिः (२);

पयः दूधने दूधको, द्विपञ्चमूली दशमूल दशमूल, कुङ्कुट- कूडाना कुक्कुटके, रससिद्धम् भांसरसधी पङ्कवी भांसरससे पकाकर, पादशेषम् अतुर्थांश शेष रहे त्वारे तेभां चतुर्थांश शेष रहने पर उसमें, शर्करा- साकर चीनी, मधु- मध शहद, कृत- अने वीथी और बीसे, युक्तम् युक्त युक्त, विप्वली- पीपर विप्वली, मधुक- नेमिमध मुलहठी, रास्ना- रास्ना वायसुरई, मदन- तथा भीठणने। तथा मेनफलका, कङ्कम् कट्क नाभी आपेक्ष कल्क बालकर वी हुई, वस्त्रिः भरित वस्त्रि, स्त्रीषु अति- कामानाम् स्त्रीस्त्रीभां यद्गु कामना राभनाराओने स्त्रियोंमें अतिकामना रखनेवालोंको, बलजननः यद्गु देनेपर छे बल देनेवाली है (२);

18-(2). Cook both kinds of pentaradices and the domestic fowl in milk

१८-२). मदनकरकं-महापुत्रकं (क. ख. ग. घ.)

till it is boiled down to 1/4 its original quantity. Add to this the paste of long pepper, liquorice. Indian groundsel and emetic nut, as also sugar, honey and ghee. This enema is promotive of vitality in those who are excessively given to sex indulgence.

मयूराक्षो व्यापनवस्तिः—

अयूरमपि सपक्षपादास्यान्त्रं स्थिरादिभिः पल्लैः  
सजले पयसि पक्त्वा क्षीरशेषं मदनपिप्पलीविदा-  
रीशतकुसुमामधुककक्कीकृतं मधुघृतसैन्धवयुक्तं  
वस्ति दद्यात् स्त्रीष्वतिप्रसक्तक्षीणेन्द्रियेभ्यो बल-  
वर्णकरम् (३);

अपि चत्तपञ्चादास्यान्त्रः पित, पाम, पंअ, मांअ  
अने आंतर्या काढी नाभीने पच, पंच पंचे, मुख,  
और आंतोको छोड़कर, मयूरम ओक भोग्नी मांस एक  
मोरका मांस, पलिकः ओक ओक पल चार चार ताला,  
स्थिरादिभिः स्थिरादि पंचभूतया शालपत्रादि पंच-  
मूलसे, सजले पाणीपःया पलसिले, पचति दूधभा दूधमें,  
पक्त्वा पकावी पकाकर, क्षीरशेष नःकी रहेवा दूधभा  
अवशिष्ट रहे हुए दूधमें, मदन- भौंडा मैनफल,  
पिप्पली पीपर पिप्पली, जिहारी- इमियो बिलाईकन्द,  
सतकुसुमा- सुवा सोया, मधुक- तथा जेरीभयने तथा  
मुलद्रीका, कक्कीकृतय कटक नाभी कल्क डालकर,  
मधु- भय शहद, घृत- धा तथा ची, सैन्धव- तेमज  
सैन्धव एवं सैन्धव, चुकक भोग्नी मिलाकर, बस्तिन  
दद्यात् अस्ति आपवी वस्ति देवे, खीरु ते अ-  
संभोगभा वह जीवंभोगमें, अतिप्रसक्त अत्पत तत्पर  
अत्यन्तरत, क्षीणेन्द्रियेभ्यः अने क्षीण इन्द्रियवालाओंने  
भाटे और क्षीण इन्द्रियवालोंके लिए, बलवर्जकम् अथ  
तथा वर्धने करनारी से बल तथा वर्जको करनेवाली है (३);

१८-१३. मयूरमण्डित-मयूरमण्डित (६)

मयूरमपित्तपञ्च-मयूरमपक्षतुण्डं (च.)

पादास्यान्त्रं-पादास्यान्त्रं कृत्वा (क)

॥ क्षीणेन्द्रियेभ्यो बलवर्णकराय-क्षीणेन्द्रियेभ्यो विद्यो  
बलवर्णकराय (क.उ.)

बहवर्णकरम्-रितो बहवर्णकरः (घ.)

18-(3). Cook peacock having removed the bile, the wings, the legs, the beak and the intestines along with four tolas each of ticktrefoil and the other drugs of its group in milk and water. When the water has fully evaporated, take the decoction down and add to it the paste of emetic nut, long pepper, white yam dill seed and liquorice as also honey, ghee and rock-salt. This enema should be given to those who are debilitated by over indulgence in sex. It is promotive of strength and complexion

विष्किरादिषु पूर्वोक्तकल्पातिदेशः —

कल्पश्चैव विष्किरप्रतुदप्रसहाम्बुचरेषु स्यात्,  
अक्षीरो रोहितादिषु च मत्स्येषु (४);

विष्किर-विष्किर, प्रतुद-प्रतुद प्रतुद, प्रसह-प्रसह प्रसह, अम्बुचरेषु अने अक्षयः प्राक्षीयानां भ्रासिना और जलचरोंके मांसका, एवः च आभ्र वही, कल्पः ३६५ कल्प, स्यात् ॐ हे, रोहितादिषु रोहितादि रोहितादि, मत्स्येषु च भाष्याओभा पक्ष, मछलियोंमें भी, अक्षीरः दूध सिंघाव आभ्र ३६५ ॐ दूधको जोड़कर यही कल्प है (४);

18-(4). This enema may be prepared also with the meat-juices of the birds of the gallinaceous, pecker and tearer and the aquatic groups. It may also be prepared with fish-juices such as the Rohita fish. but in that case milk should be omitted.

गोधाशो यापनवस्ति —

गोधानकुलमार्जारमूषिकशलुकमांसानां दश-  
भागान् सपञ्चमूलान् पयसि पक्त्वा तत्पयः-  
पिप्पलीफलककसैन्धवसौवर्चलशर्करामधुघृतै-

लघुको वस्तिर्वल्यो रसायनः क्षीणशतस्य सन्धान-  
करो मयितोरस्करथगजहयभञ्जवातबलासकप्रभु-  
त्युदावर्तवातसक्तमूत्रवर्चशुक्राणां हिततमश्च (५);

गोधा- घो गोह. नकुल- ने।जिये। नेवला, मार्जार-  
भिलाउ। बिल्ला, मूषिक- उँदर चूहा, शलुक-अने शाहुडीनां  
और सेहके. मांसानां मांस मांस, सपञ्चमूलान्  
सपञ्चमूल और पञ्चमूल, दशपलान् भागान् दरेक दश दश  
पक्ष प्रत्येक ४०-४० तोले, पयसि दूधमां दूधमें, पक्त्वा-  
पकायीने पकाकर, तत्पयः ते दूधने इस दूधको, पिप्पली-  
फल- पीपर अने मीठाना पिप्पली और मैनफलके,  
कक- ३६५थी ककसे, सैन्धव- तथा सिंघावपक्ष तथा  
सैन्धानमक, सौवर्चल संथण सौचलनमक, शर्करा- साकर  
चीनी, मधु- मधु शहद, घृत- घी घी, तैल- तेमज तैल एवं  
तैलसे युक्तः युक्त डेरी युक्त कर, वस्तिः आपेयी भरित  
दी गई वस्ति. बल्यः अल्प बलकारक, रसायनः रसायन  
रसायन, क्षीणशतस्य- अने क्षीणशत क्षत और क्षीण-  
शतका, सन्धानकरः संधान करनेवाले ॐ सन्धानकारक है,  
मयितोरस्क- वशी ते सादसथी मध्याध गयेयी छाती  
वाणा साहससे मथी गई छातीवाले. रथ- अने रथ और  
रथ, गज- हाथी हाथी. हय- तेमज घोडाथी एवं  
घोड़ेसे, मत्स- मत्स मनुष्य भाटे मत्स मनुष्यके लिए,  
वातबलासक- अने वातभलासक और वातबलासक,  
प्रभृति- वजरे आदि, उदावर्त- उदावर्त उदावर्त, वात-  
तथा वातने लीधे यथेथा तथा वातके कारण हुए,  
सक्त-सक्त-वर्चःशुक्राणाम् मूत्रसंग, पुरीषसंग अने  
वीर्यसंगवाणा मनुष्ये भाटे मूत्रसंग, पुरीषसंग और  
वीर्यसंगवाले मनुष्योंके लिए, हिततमः च अत्यंत हित-  
कर्ता ॐ अत्यन्त हितकर है (५);

18-(5). Take forty tolas of the meats of iguana, mongoose, cat, mouse and pangolin and cook them together with the pentaradices in milk. Add to it the paste of long pepper, emetic nut as also rock salt, sanchal salt, sugar, honey, ghee and til oil. This enema is promotive of strength, vitalizing, promotive of healing in those who

are suffering from pectoral lesions, cachexia and is most beneficial in conditions of crushing injury to the chest, fractures sustained from vehicles, elephants and horses, vata-disorders, kapha disorders etc., as well as in conditions of misperistalsis and retention of urine, feces and semen due to vata.

कूर्माद्यो यापनवस्तिः —

कूर्मादीनामन्यतमपिशितसिद्धं पयो गोवृषना-  
गह्वयनकहंसकुक्कुटाण्डरसमधुघृतशर्करासैन्धवेषू-  
रकात्मगुप्ताफलकरकसंसृष्टो वस्तिवृद्धानामपि  
बलजननः (६);

कूर्मादीनाम् ऊँयम् पजेरेभांकी कछुआ आदिसे,  
अन्यतम- गभे ते ओङ्गना किसी एकके, पिशित- भांसकी  
मांससे, सिद्धम् पडावेले पकाये हुए, पयः दूधमां  
दूधमें, गोवृष- सांड सांड, नाग- हाथी हाथी, हय- तथा  
बोझना वृषछोथी साधित रस तथा घोड़ेके वृषणोंसे  
साधित रस, हंस- हंस हंस, कुक्कुट- अने डूङ्गना और  
कुक्कुटके, अण्डरस- डोङ्गना रस अंडोंका रस, मधु- मधु  
शहद, घृत- घी घी, शर्करा- साकर शर्करा, सैन्धव- सैंधव  
सैन्धव, इक्षुरक- ओभरे तालमखाना, आत्मगुप्ता-  
अने डोङ्गना और कौचके, कक- ओङ्गना बीजका,  
कक- डूङ्ग कक, संसृष्टः भेजवी मिलाकर, वस्तिः  
देवाभा आवेली अस्ति दी हुई वस्ति, वृद्धानाम् वृद्धोंने  
वृद्धोंको, अपि पक्षु भी, बलजननः बल आपनाने के  
बल देनेवाली है (६),

18-(6). Prepare an enema by cooking milk with the flesh of any one of the animals of the tortoise group, adding to it the meat-juice of the bull, elephant and horse as well as the contents of the eggs of the

crocodile, swan and domestic fowl as also honey, ghee, sugar rock salt, and the paste of long-leaved barlaria, cowage and the emetic out. This enema is promotive of vigor even in the very aged.

कर्कटरसाद्यो यापनवस्तिः —

कर्कटकरसश्चटकाण्डरसयुक्तः समधुघृतशर्करा-  
वस्तिः, इत्येते वस्तयः परमवृष्याः उष्णटकेभुरका-  
त्मगुप्तामृतक्षीरप्रतिभोजनानुपानात् स्त्रीशतमा-  
मिनं नरं कुर्युः (७);

चटकाण्ड- अक्षीनां डोङ्गना चिडियाके अंडोंके,  
रस- रसकी रससे, युक्तः युक्त युक्त, समधु-  
उष्णटङ्गना केंकड़ेके, रसः भांसरसभां मांसरसमें, समधु-  
मधु शहद, घृत- घी घी, शर्करा- अने साकर भेजवीने  
और शर्करा मिलाकर, वस्तिः अस्ति आपनी वस्ति देवे,  
इति एते आ ये, वस्तयः अस्तिओ वस्तियां, परमवृष्याः  
परम वृष्य के परम वृष्य हैं, नरम् तेओ भाङ्गने  
मनुष्यको, उष्णटका- डोङ्गले उतवन, इक्षुरक- ओभरे  
तालमखाना, आत्मगुप्ता- डोङ्गना ओङ्गना कौचकीसे,  
मृतक्षीर- पडावेले दूध पकाया हुआ दूध, प्रतिभोजन-  
भोजन पक्षी भोजनके बाद, अनुपानात् पीनाथी पीनेके,  
स्त्रीशत- ओ आओभां सौ स्त्रियोंमें, मामिनम् रसक्षु  
करनाथे मदन करनेवाला कुर्युः अनावे के बनाली  
हैं (७);

18-(7) An enema may be prepared from the meat-juice of the crab with the contents of sparrows eggs and mixed with honey, ghee and sugar. All these enemas are highly promotive of sex vigor and when followed by an after draught of milk boiled with blaffaria, long-leaved barlaria and cowage will enable a man to approach a hundred women.



गोवृषाद्यो यापनवस्तिः —

गोवृषवस्तवराहवृषणकर्कटचटकसिद्धं क्षीरमु-  
चटकेक्षुरकात्मगुतामधुघृतसैन्धवयुक्तः किंलिह्य  
णितो वस्तिः (८);

गोवृष- साठ सांड, बस्त- भट्टर, बरुरे, वराह-  
वृषण- अने सूअरना वृषण और सूअरके वृषण, कर्कट-  
उकट्ट कंकड़ा, चटक- अने उकडाना भांसथी और  
चटकके मांससे, सिद्धय पकावेवा सिद्ध किये, क्षीरम्  
दूधभा दूधमें, उचटक- उटीगण उतजन, इक्षुरक-  
अभगे तालमखाना, आत्मगुता- अने औंथो ३६३  
नाभी और कौंचवीजके कलको डालकर, मधु- मध राहद  
घृत- घी अने घी, सैन्धवयुक्तः तथा सैन्धवथी युक्त तथा  
सैन्धवसे युक्त, किंलिह्य अने थोड़ा और थोड़ा, लवणित  
क्षरणाणी लवण मिलाई हुई, वस्तिः अस्ति देवी  
वरिन देवे (८);

18-(8). An enema may be prepared  
from milk boiled with the testes of  
the bull, sheep and boar and  
the flesh of crab and sparrow with the  
addition of blaffaris, longleaved  
barlaria, cowage, honey, ghee and  
rock salt and a little common salt.

दशमूलद्यो यापनवस्तिः —

दशमूलमयूरहंसकुक्कुटकाथात् पञ्चप्रसृतं तैल-  
घृतवसामज्जचतुष्प्रसृतयुक्तं शतपुष्पामुस्तद्वृषा-  
कस्त्रीकृतः सलवणो वस्तिः पादगुदफोरजानुजङ्घा-  
त्रिकवङ्गणवस्तिवृषणाबिलरोगहरः (९);

तैल- तैल तैल, घृत- घी घी, वसा- वसा वसा,  
मज्ज- अने मज्ज और मज्जा, चतुष्प्रसृत- सधणा  
मणी और प्रसृत सब मिलकर ३२ तोले, युक्तम्  
अथथी युक्त इनसे युक्त, दशमूल- दशमूल दशमूल,  
मयूर- मोर मोर, हंस- हंस हंस, कुक्कुट- अने कुक्कुट-

१८-९. मधुघृतसैन्धवयुक्त-मधुघृतयुक्तं (क घ)

१८-९. तैल-मधुनेत्रः घः

११ कस्त्रीकृतः सलवणो-कस्त्रीकृतं सलवणं. (१५)

अना भांसथी कुक्कुटके मांससे, काथात् पञ्च प्रसृतम्  
पञ्च प्रसृत अनाथभा ४० तोले काथमें, शतपुष्पा-  
मुवा सोया, मुस्त- नागरभाथ मोथा, द्रुषा- तेभ  
हाविभरेना एवं हाऊबोरका, कस्त्रीकृतः ३६३ कलक,  
सलवणः तथा क्षरणाणी तथा लवण डालकर,  
वस्तिः आयेदी अस्ति वी हुई वस्ति, पाद- पद पैर,  
गुदफ धुंटी गुल्म, ऊरु- साथ ऊरु, जानु- डींथ  
जानु, जङ्घा- पींड़ी जङ्घा, त्रिक- त्रिक त्रिक, वङ्गण-  
वङ्गण वङ्गण वस्ति अस्ति वस्ति, वृषण- तथा वृषणा  
तथा वृषणके, बिलरोगहरः बायुरोगने हरे छे बायु-  
रोगको हरती है (९);

18-9). An euema may be prepared  
by taking forty tolas of the decoction  
of decaradices and the meat juices of  
peacock swan and domestic fowl and  
adding to it 32 tolas of til oil, ghee,  
flesh-marrow and bone-marrow and  
the paste of dillseed, nut-grass and  
juniper and mixed with salt. This  
enema is curative of vata disorders  
affecting the feet, ankles, thighs,  
knees, calves, pelvis, groins, bladder  
and the testes

मृगादिषु पूर्वोक्तकल्पादिदेशः -

मृगविष्किरानूपविलेशयानामेतेनैव कल्पेन  
वस्तयो देयाः (१०);

मृग- मृग मृग, विष्किर- [विष्किर विष्किर, आनूप-  
आनूप आनूप, विलेशयानाम् अने विदेशय  
प्राणीओना भांसथी और विलेशय प्राणियोंके मांससे,  
एतेन एव आनूप इसी, कल्पेन ३६५थी कल्पसे बलवः  
अस्ति वस्ति, देयाः आयेदी देवे (१०);

18-(10). Enemas may be prepared  
in this manner with the meat-juices  
of deer, birds of the gallinaceous  
group, wetland creatures and burro-  
wing animals as well.



सद्योद्यो यापनवस्ति: —

मधुघृतद्विप्रसृतस्तुत्योष्णोदकः शतपुष्पार्धपलः  
सैन्धवार्धाक्षयुक्तो बस्तिर्वृष्यतमो मूत्रकृच्छ्रपित्त-  
वातहरः (११);

मधु- मधु शहद, घृत- अने घी भण्णी और की  
मिलाकर, द्विप्रसृतः ये प्रसृत १६ तोले, तुत्य तेरु ज  
सम भागमें, उष्णोदकः गरम पाणी उष्ण जल, शत-  
पुष्पा- सुवा सोया, अर्धपलः अर्धी पल २ तोले, सैन्धव-  
अने सिंधवालू और सेन्धानमक, अर्धाक्षयुक्तः  
अर्धी तोला ३ तोला मिलाकर, बस्ति: आपेदी  
भस्ति वी हुई बस्ति, वृष्यतमः परम वृष्य छे परम  
वृष्य है, मूत्रकृच्छ्र- तथा मूत्रकृच्छ्र मूत्रकृच्छ्र, पित्त-  
पित्त पित्त, वातहरः अने वातने छे और वातको  
हन्ती है (११);

18-(11). Take 16 tolas of honey  
and ghee, and add an equal quantity  
of hot water. Prepare this with two  
tolas of dill seed and half a tola of  
rock salt. This enema is highly pro-  
motive of virility and is curative of  
dysuria and disorders of pitta and  
vata.

सद्योद्योताया यापनवस्ति: ---

सद्योद्योततैलवसामज्जचतुष्प्रस्थं हृष्यार्धपलं  
सैन्धवार्धाक्षयुक्तो बस्तिर्वृष्यतमो मूत्रकृच्छ्रपित्त-  
व्याधिहरो रसायनः (१२);

सद्योद्योत- तालुं धो तुरन्तका घी, तैल- तेल तैल,  
वसा- वसा वसा और, मज्ज- अने मज्ज और मज्जा,  
चतुष्प्रस्थम् आर प्रस्थ २५६ तोले, हृष्यार्धपलम्  
हाडिमेर अर्धी पल हाडिमेर दो तोले, सैन्धव- तथा  
सिंधवालू तथा सेन्धानमक, अर्धाक्ष- अर्धी तोला ३  
तोला, युक्तः जोओने भेजवी आपेदी इनको मिलाकर

८-(११). शतपुष्पार्धपलः—हृष्यार्धपल (११)

,, अर्धपलः—अर्धपल (क.)

१८-(१२). सद्योद्योत—द्योत (ज)

वी गई, बस्ति: भस्ति बस्ति, वृष्यतमः परम वृष्य छे  
परम वृष्य है, मूत्रकृच्छ्र- मूत्रकृच्छ्र मूत्रकृच्छ्र, पित्त- तथा  
पित्त तथा पित्तके, व्याधिहरः रोगने मराना छे  
रोगोंका नाशक है, रसायनः तेभ्य रसायन छे एवं  
रसायन है (१२),

18 (12). An enema may be prepared  
from 256 tolas of fresh ghee, til-oil,  
flesh marrow and bone-marrow and two  
tolas of juniper with the addition of  
half a tola of rock-salt. This enema is  
highly promotive of virility and cura-  
tive of dysuria and pitta-diseases and  
is, besides, a good vitalizer.

मधुतैलाद्यो यापनवस्ति: —

मधुतैलं चतुष्प्रस्थं शतपुष्पार्धपलं सैन्धवा-  
र्धाक्षयुक्तो बस्तिर्वीपनो बृंहणो बलवर्णकरो  
निरुपद्रवो वृष्यतमो रसायनः क्रिमिकुष्ठोदाकर्त  
गुल्मार्शोऽघ्नीहमेहहरः (१३);

चतुष्प्रस्थम् आर प्रस्थ २२ तोले, मधु- मधु  
शहद, तैलम् तैल तैल, शतपुष्पा- सुवा सोया, अर्ध-  
पलम् अर्धीपल २ तोले, सैन्धवार्धाक्षयुक्तः अने अर्धी  
तोला सैन्धवालू और ३ तोला सैन्धव मिलाकर वी  
गई, बस्ति: भस्ति बस्ति, वीपनः वीपन वीपन, बृंहणः  
बृंहण बृंहण, बलवर्णकरः बल तथा बलने करनार  
बलवर्णकर, निरुपद्रवः उपद्रव न करनार उपद्रवहीन,  
वृष्यतमः अने परम वृष्य और परम वृष्य, रसायनः  
रसायन छे रसायन है, क्रिमि- वमी ते क्रिमि पुनः  
वद क्रिमि, कुष्ठ- कुष्ठ कुष्ठ, उदाकर्त- उदाकर्त उदाकर्त,  
गुल्म- गुल्म गुल्म, अर्शः- अर्श अर्श, अघ्नी- अघ्नी  
अघ्नी, अघ्नी प्लीहा प्लीहा, मेहहरः अने प्रमेह मराना  
छे और प्रमेहका नाशक है (१३);

18-(13). An enema may be prepared  
from 32 tolas of honey and oil and  
two tolas of dill seed with the addition  
of half a tola of rock-salt. This enema  
is digestive-stimulant, roborant, pro-

motive of strength and complexion, harmless, highly promotive of virility, vitalizing and curative of helmanthiasis, dermatosis, misperistalsis, Gulma, piles, inguinal swellings, splenic disorders and urinary anomalies.

प्रथमो मधुघृताद्यो यापनवस्तिः —

तद्वन्मधुघृताभ्यां पयस्तुभ्यो वस्तिः पूर्वकत्वेन बलवर्णकरो वृष्यतमो निरुपद्रवो वस्तिमेद्रूपाकपरिकर्तिकामूत्रकृच्छ्रपित्तव्याधिहरो रसायनश्च (१४);

तद्वत् ते प्रभाषे ७ तदनुसार, पूर्वकत्वेन पहेला कहेंला उदकावाणी पूर्वोक्त कल्कसहित, मधुघृताभ्याम् भक्ष्ये भी शहर भी, पयस्तुभ्यः अने तेद्वला ७ दूधवाणी और समभाग दूधकी, वस्तिः अस्ति वस्ति, बलवर्णकरः अक्ष तथा वृष्यने करनेर बलवर्णकारक, वृष्यतमः अत्यन्त वीर्यवर्धक अत्यन्त वीर्यवर्धक, निरुपद्रवः अने उपद्रव रहित और उपद्रवरहित है, वस्ति तथा अस्तिपाके तथा वस्तिपाक, मेद्रूपाक उपरश्चने पाके मेद्रूपाक, परिकर्तिका- परिकर्तिका परिकर्तिका, मूत्रकृच्छ्र- मूत्रकृच्छ्र, पित्तव्याधिहरः तेभ्यः पित्तना रोगने मटाउना एवं वित्तके रोगको हरनेवाली है, रसायनः च तेभ्यः रसायन छे एवं रसायन है (१४)।

18-(14) Similarly, an enema may be prepared from honey and ghee with an equal amount of milk and the addition of the paste described above. This enema is promotive of strength and complexion, a great virilific, harmless, curative of suppuration of the bladder and the phallus, griping pain, dysuria and pitta-disorders and is a vitalizer.

द्वितीयो मधुघृताद्यो यापनवस्तिः —

तद्वन्मधुघृताभ्यां मांसरसतुभ्यो मुस्ताश्लयुकः पूर्ववद्वस्तिर्वातबलासपादहर्षगुल्मत्रिकोरुजानु - निकुञ्जनवस्तिवृषणमेद्रूत्रिकपृष्ठशूलहरः (१५);

तद्वत् ते ७ प्रभाषे इसी प्रकार, मधुघृताभ्याम् भक्ष्ये भी शहर भी, मांसरस-तुभ्यः तेद्वला ७ मांस-रस समान भागमें मांसरस, मुस्ताश्लयुकः अने अक्ष तोला नाभरभोयवाणी और एक तोला मोघावाली, पूर्ववत् पूर्वोक्त विधिभी आयेली पूर्वोक्त विधिसे भी हुई, वस्तिः अस्ति वस्ति वातबलास- वातबलास वातबलास, पादहर्ष- पादहर्ष पादहर्ष, गुल्म- गुल्म, त्रिक- त्रिक त्रिक, ऊरु- साथण ऊरु, जानु- अने टीथणुने और जानुका, निकुञ्जन- सकोय संकोच, वस्ति- अस्ति वस्ति, वृषण- वृषण वृषण, मेद्रू- खिग मेद्रू, त्रिक- त्रिक त्रिक, पृष्ठ- अने पीठना और पृष्ठके, शूलहरः शूलने नाश करे छे शूलका नाश करती है (१५);

18-(15). Similarly, an enema may be prepared from honey and ghee with an equal quantity of meat-juices and the addition of a tola of nut-grass. This enema is curative of vata, kapha, hyperaesthesia of the feet, Gulma, pronounced contracture of the pelvis, thigh and knee regions, and pain in the bladder, testis, phallus, pelvis and back.

सुराद्यो यापनवस्तिः —

सुरासौवीरककुलथमांसरसमधुघृततैलसप्त-प्रसृतो मुस्तशताह्वाकविकतः सलवणो वस्तिः सर्ववातरोगहरः (१६);

सुरा- सुरा सुरा, सौवीरक- सौवीरक सौवीरक, कुलथ- कुलथी कुलथी, मांसरस- मांसरस मांसरस, मधु-

अथ शहद, घृत- धी घी, तैल- अने तैल और तैल, सप्तप्रसृतः सधर्मा भणी सात प्रसृत सब मिलकर ५६ तोले, सुस्त- तेभा भोथ मोथा, जताह्वा अने सुवाने और सोयाका, कल्कितः ३६३ कल्क, सलवणः तथा सिंधावूषु नाभी तथा सेन्धानमक डालकर, बस्तिः आपैली भरित दी हुई बस्ति, सर्ववातरोगहरः अथ वातजन्य रोगो भटाङ्गनार थाय छे सब वात रोगकी नाशक होती है (१६);

18 (16). An enema may be prepared from 56 tolas of sura and sanvira wines, horse-gram, meat-juice, honey, ghee and til oil with the addition of the paste of nut grass, dill seed and salt. This enema is curative of all vata-disorders.

त्रिपञ्चमूलाद्यो यापनवस्तिः—

त्रिपञ्चमूलत्रिफलाविल्वप्रदनफलकषायो गोमूत्रसिद्धः कुटजमदनफलसुस्तपाठाकल्कितः सैन्धव-यावशूकक्षौद्रतैलयुक्तो वस्तिः श्लेष्मव्याधिर्वस्वा-टोपवातशुक्रसङ्क्रपाण्डुरोगाजीर्णविस्चिकालस्रकेषु देय इति ॥ १८ ॥

गोमूत्र- गोमूत्रथा गोमूत्रसे, सिद्धः सिद्ध ३६३ सिद्ध किये हुए, त्रिपञ्चमूल- दशभूष दशमूल, त्रिफला- त्रिफला त्रिफला, विल्व- णीक्षा विल्व, मदनफल- अने भौढणना और मैनफलके, कषायः उवाथर्मा काथर्मे, कुटज- ५६३ कुटज, मदनफल- भौढण मैनफल, सुस्त- नाभरभोथ मोथा, पाठा- तथा पाठा तथा पाठी, कल्कितः अथोना ३६३ इनका कल्क, सैन्धव- सिंधावूषु सेन्धानमक, यावशूक- ५५५५२ यवशार, क्षौद्र- अथ शहद, तैल- तथा तैलथी तथा तैलसे, युक्तः युक्त युक्त, बस्तिः भरित बस्ति, श्लेष्मव्याधि- ३६३ रोग कफरोग, बस्ति- जाटोप- भरित वायुथी पूषु होवुं वस्तिका वायुसे पूर्ण होना, वात- वातजन्य वातजन्य, शुक्र- शुक्रनी शुक्रकी, सङ्क्र- अटङ्गनार रुकावट. पाण्डुरोग- पाण्डुरोग पाण्डुरोग,

अजीर्ण- अजीर्ण अजीर्ण विस्चिकाल (विस्चिकाल विस्चिकाल, अलसकेषु अने अलसकेषु और अलसकेषु, देयः इति आपैली देवे ॥ १८ ॥

18. Decoct the two pentaradices, the three myrobalans, bael and emetic nut in cow's urine and add the paste of kurchi, emetic nut, nut grass and patha as also rock salt, barley-alkali, honey and til oil. This enema is indicated in conditions of kapha-disorder, distension of the bladder, retention of flatus and semen, anemia, indigestion, acute alimentary irritation and intestinal torpor.

वृष्यतमस्नेहकथनप्रतिज्ञा—

अत ऊर्ध्वं वृष्यतमान् स्नेहान् वक्ष्यामः।—

अतः ६६६ इसके ऊर्ध्वं आभण आगे, वृष्यत- मान् अत्यंत वीर्यवर्धक अत्यंत वीर्यवर्धक, स्नेहान् स्नेहो स्नेहो, वक्ष्यामः ३६३ कहेंगे;

19-(1). We shall now describe the unctuous preparations used in enema, which are the best promotives of virility.

शतावरीयः स्नेहवस्तिः—

शतावरीगुंडूचीशुविदार्यामलकद्राक्षासर्जूरानां यन्त्रपीडितानां रसप्रस्थं पृथगेकैकं तद्वद्वततैल- गोमहिष्यजाक्षीराणां द्वौ द्वौ दद्यात्, जीवकर्षमक- मेदामहामेदात्वक्षीरीशृङ्गाटकमधूलिकामधुकोष- टापिप्पलीपुष्करबीजनीलोत्पलकदम्बपुष्पपुष्कर- ककेशरककान् पृषततरक्षुमांसकुटुचटकचकोर- मत्ताक्षबर्हिजीवजीवकुलिङ्गहंसापण्डरसबसामज्जा- देक्ष प्रस्थं दत्त्वा साधयेत् ।

१९(१). वक्ष्यामः—उपदेक्ष्यामः ५)

उत्पल-उत्पल (५.)

जीव बीजकुलिङ्ग—जीव बीजकुलिङ्गपुष्कराक्ष (५.)

मत्तादेक्ष प्रस्थम्—मत्तादेक्ष प्रस्थं प्रस्थं (५.)

यन्त्र-यन्त्रम्! यन्त्रम्, पीडितानाम् पीडनीये कटेष्टे।  
पीडन करके निकाला हुआ, शतावरी-शतावरी शतावर,  
गुहूची-गुहूची गिलोय, इक्षु-शेरडी ईख, विदारी-  
इतिथो विदारीकन्द, आमलक-आमला आवला, द्राक्षा-  
द्राक्ष मुनका, खजूराणाम्-अने भणूर और खजूर,  
पृथक्-पृथक् प्रत्येकका, एकैकम्-औं औं एक एक,  
रसप्रस्थम्-प्रस्थ २५ ६४ तोला रस, तद्वत्-ते  
सुगन्ध इसी प्रकार, घृत-घी घी, तैल-तैल तैल, गो-  
तेभम्-गाय गाय, महिषी-बैस बैस, बजा-तथा  
भङ्गरीनु तथा बकरीका, क्षीराणाम्-दूध दूध, द्वौ द्वौ  
प्रत्येक-बै बै प्रत्येक प्रत्येक १२८ तैले, दद्यात्-देवुं  
देवे, जीवक-तेभा ७५३ उतमें जीवक, ऋषभक-  
ऋषभक ऋषभक, मेदा-मेदा मेदा, महामेदा-महामेदा  
महामेदा, स्वक्क्षीरी-वासकपर देशलोचन, शृङ्गाटक-  
शृङ्गाटक सिंघादे, मधूलिका-मधूलिका मधूलिका, मधुक-  
ण्ठीमधु मुलहठी उच्चटा-उडी गण्डु उतंजन, पिप्पली-  
पीपर पिप्पली, पुष्करबीज-कमलकण्ठी कमलगडा,  
नीलोत्पल-नीलकण्ठी नीलोफर, कदम्बपुष्प-कदम्बना  
दूध कदम्बके फूल, पुण्डरीक-सङ्केत कमल सफेद कमल,  
केशर-लाक्ष नागकेशर रक्त नागकेशर, कक्कान्-औंऔं  
कक्क इनका कलक, पृषत-पृषत पृषत, तरक्षु-तथा तरक्षुनुं  
तथा तरक्षुका, मांस-मांस मांस, कुक्कुट-कुक्कुट मुर्गा,  
चटक-चटक चटक, चकोर-चकोर चकोर, मत्स्य-  
मत्स्य कोयल, बर्हि-भैर मोर, जीवजीव-७५७५३  
जीवजीवक, कुलिङ्ग-कुलिङ्ग कुलिङ्ग, हंस-अने हंस  
औंऔं और हंस इनके, अण्डरस-छांछां २५  
जडोंका रस, वसा-औंऔं वसा इनकी वसा, मज्जादे-  
व-अने मज्जा वज्रे और मज्जा आदिका,  
प्रस्थम्-औं २५ ६४ तोला, दद्यात्-नाथीने  
हालकर, साधयेत्-पाक करे।

Take 64 tolas of each of the mechanically expressed juices of climbing asparagus, guduch, sugarcane, white yam, emblic myrobalan, grapes and dates and add to it 128 tolas each of ghee, til oil and milk of cow, buffalo and goat, as also the paste of Jivaka,

Rishabhaka, Meda, Mahameda, bamboo manna, Indian water thest nut, Madhulika, aquatic and terrestrial liquorice, blaffaris, long pepper, lotus seeds, blue lotus, cadamba flower and the pollen of the white lotus: prepare these by adding 64 tolas of the flesh of spotted deer and hyena, and contents of the egg, flesh-marrow, bone-marrow etc. and of the domestic fowl, sparrow, chakor, koel, pea-fowl, common mynah, weaver bird, lily trotter, and swan.

ब्रह्मघोषशङ्खपटहमेरीनादैः सिद्धं सितच्छत्र-  
कृतच्छात्रं गजस्कन्धमारोपयेद्ब्रह्मचर्यं वृषध्वजम-  
भिपूज्य, तं ज्ञेहं त्रिभागमाक्षिकं मङ्गलाशीःस्तुति-  
देवतार्चनैर्वस्ति गमयेत् ।

मगवन्तम्-भगवान् भगवान्, वृषध्वजम्-शंकरनी  
शंकरकी, अभिपूज्य-पूजा करी पूजा करके, सिद्धम्-  
सिद्ध स्नेह पर सिद्ध स्नेह पर, सितच्छत्र-सङ्केत छत्र  
सफेद छत्रसे, कृतच्छात्रम्-छात्रा करी छात्रा कर, ब्रह्म-  
घोष-वेदघोष वेदध्वनि, शङ्खपटह-शंख टोले शंख,  
ढोल, मेरीनादैः-तथा मेरीना नादधी और मेरीके नादसे,  
गजस्कन्धम्-तेने हाथीनी पीठ उपर हाथीनी पीठ पर,  
मारोपयेत्-भुजवो उसे रखे, त्रिभाग-त्रीभे भाग तृतीय  
भाग, माक्षिकम्-मधु भेगनीने शहद मिलाकर, तम्-  
स्नेहम्-ते स्नेहधी उस स्नेहसे, मङ्गलाशीः-मङ्गलकर्म  
आशीर्वाचन मंगलकर्म आशीर्वाचन स्तुति-स्तुति स्तुति,  
देवतार्चनैः-तथा देवपूजन करीने देवपूजन करके,  
वस्तिम्-अस्ति वस्ति, गमयेत्-देवी देवे;

19-(1). Then, having duly worshipped the god Shiva the preparation should be placed on the back of an elephant and a white umbrella held over it to the accompaniment of vedic chants, blowing of the conches and the beating of the hand-drum and

the kettle drum. Add to this unctuous preparation 1/3 its quantity of honey and administer it as an enema to the accompaniment of the sounds of auspicious words, benedictions, prayers and divine worship.

નૃણાં સ્ત્રીવિહારિણાં નદરેતસાં ક્ષતક્ષીણવિષમજ્વ-  
રાતીનાં વ્યાપન્નયોનીનાં વન્ધ્યાનાં રક્તગુલ્મિનીનાં  
મૃતાપત્યાનામનાર્તવાનાં ચ સ્ત્રીણાં ક્ષીણમાંસરુધિ-  
રાણાં પથ્યતમં રસાયનમુત્તમં વલીપલિતનાશનં  
વિદ્યાત્ (૧);

સ્ત્રીવિહારિણામ્ સ્ત્રીઓનાં વિહાર કરનાર સ્ત્રીઓને  
વિહાર કાનેવાળે, નદરેતસાં ક્ષીણવીર્ય ક્ષીણવીર્ય,  
ક્ષતક્ષીણ- ક્ષતક્ષીણ, વિષમજ્વર- તમા વિષમ  
જ્વરથી તથા વિષમ જ્વરસે, આતીનામ્ પીડિત પીડિત,  
નૃણામ્ માણસોને મનુષ્યોનો, વ્યાપન્નયોનીનામ્ તથા  
યોનિના રોગવાળી તથા યોનિરોગવાળી વન્ધ્યાનામ્  
વન્ધ્યા વન્ધ્યા, રક્તગુલ્મિનીનામ્ રક્તગુલ્મવાળી રક્ત  
ગુલ્મવાળી, મૃતાપત્યાનામ્ જેનાં બેઠરાં મરી ગયાં  
હોય એવી નદ પ્રજાવાળી, અનાર્તવાનામ્ જેને આર્ત  
ન આવતું હોય એવી આર્તવહીન, ક્ષીણ- અને ક્ષીણ  
અથવા ક્ષીણ, માંસ- માંસ માંસ, રુધિરાણામ્ ચ તેમજ  
દોહીવાળી एवं રક્તવાળી સ્ત્રીઓને સ્ત્રીઓનો,  
પથ્યતમમ્ આ બરિત આર્ત પથ્ય છે यह वस्ति अति  
पथ्य है, વલીપલિત- વળિયાં પાળિયાનાં વલીપલિતકી,  
નાશનમ્ નાશ કરનાર નાશક, ઉત્તમમ્ તથા ઉત્તમ  
તથા ઉત્તમ, રસાયનમ્ રસાયન રસાયન, વિદ્યાત્ છે  
હે (૧);

19.(1). This enema is most whole-  
some and a great vitalizer for persons  
who are given to sex-indulgence, have  
suffered loss of seminal secretion, who  
are afflicted with pectoral lesions,  
cachexia and irregular fever, who are

૧૯-(૧) રક્તગુલ્મિનીનાં રક્તગુલ્મનાં (૫.)

—રક્તગુલ્મિનામ્ (૫.)

suffering from gynecic disorder, who  
are suffering from Gulma born of  
vitiated blood, whose children do not  
survive, and women who are suffering  
from amenorrhea and also persons  
who are suffering from loss of flesh and  
blood This enema is also curative of  
wrinkles and grey hair.

વલાયઃ સ્નેહવસ્તિઃ—

વલાયોશ્ચુરકરાસાશ્ચગન્ધાશતાવરીસહચરાણાં  
શતં શતમાપોધ્ય જલદ્રોણશતે પ્રસાધ્યં, તસ્મિન્  
જલદ્રોણાવશેષે રસે વલપૂતે વિદાર્યામલકસરસ-  
યોર્ધસ્તમ્હિપવરાહવૃષકુકટવર્હિંહસકારણઢયસાર-  
સાણ્ડરસાનાં ઘૃતતૈલયોગ્યૈકૈકં પ્રસ્થમઘૌ પ્રસ્થાન્  
ક્ષીરમ્ દત્ત્વા ચન્દનમધુકમધૂલિકાત્વક્ષઃપીરિચિ-  
સમૂળાલનીલોત્પલપટોલપ્રગુતાશ્વાકિતાલમસ્ત-  
કલર્જૂરમૂઢીકાતામલકીરુષ્ટકાગીઝીવકર્ષમકથુ-  
દ્રસહામહાસહાશતાવરીમેદાપિપ્પલીઘીવેરન્વક્ષ્ય-  
પ્રકરકાંશ્ચ દત્ત્વા સાધયેત્ ।

વલા- બલા વલા, ગોશુરક- ગોખરુ ગોશુર રાસા-  
શતના રાસના, અશ્વાગન્ધા આસોદ અશ્વગન્ધ, શતાવરી-  
શતાવરી શતાવર, સહચરાણામ્ આસમાની ધૂધને  
કુટાશેળીઓ નીલ પુષ્પવાળી કુટસૌયા, કલમ કલમ  
દરેક સો ૫૬ પ્રત્યેક ૪૦૦ તોલે, આપોષ્ય કૂટી કૂટલ,  
જલદ્રોણશતે સો દ્રોણ પાણીમાં ૧૦૨૪૦૦ તોલે જલમેં,  
પ્રસાધ્યમ્ ૫૬૫૫૫૫ પકાવે, જલદ્રોણ બ્યારે એક દ્રોણ  
પાણી ૧૦૨૪ તોલે જલ, અવશેષે બાકી રહે ત્યારે  
શેષ રહેને એ વલપૂતે કપાથી આળી બર્ધ વલપૂતે

૧૯-૨). હંમાણ્ડરસ-હંસાનાં રસં (ત.)

પ્રારમાણ્ડરસાનાં-પ્રારમાણ્ડરસાનાં (૫.)

મૃગાલ્નીલોત્પલ મૃગાલ્નીલોત્પલ (ક. ૫.)

આશ્વમુક્તાશ્વાકિ-આશ્વમુક્તાશ્વાકિ (૫.)

નાગમસ્ટક-નાગમસ્ટક (ત.)

—તાલમકર્ષ (૫.)

મેદા-મેદામહામેદા (૫. ૫.)

छानलेवे, लस्मिन् रसे ते रसम्। तस्य रसम्, श्रीरस्य  
 इध इधः बहो प्रस्थान् आऽऽ प्रस्थ ५१२ तोले, दत्त्वा  
 नाभी डालकर, चन्दन- अने सुपुड और चन्दन,  
 मधुक- नेहीमध मुलहठी मधूलिका- मधूलिका मधूलिका,  
 त्वक्करी- वासकपूर वंशलोचन, विन- कुमणना इंडना  
 तंतु विष, मृणाल- कुमलदंड मृणाल, नीलोत्पल-  
 नीलकुमण नीलोत्पल, पटोल- परवण परवल, आमलगुता-  
 कोवथ केवथ, अन्नपाकि- ओदनपाकी ओदनपाकी,  
 तालमस्तक- तालना भाथा तालमस्तक, खजूर-  
 भजूर खजूर, मृद्वीका- दक्षि- मुनका, तामलकी-  
 भोमअभदी मुईआंवला, कण्टकारी- भेरी भोरी गंधी  
 कटेरी, जीवक- शुक्र जीवक, अश्वमक- अश्वमक अश्वमक,  
 क्षुद्रसहा- मुद्रपल्ली मुद्रपल्ली, महासहा- भापल्ली  
 भापल्ली, शतावरी- शतावरी शतावरी, मेदा- मेदा  
 मेदा, पिप्पली- पीपरी पिप्पली, द्विवेर- सुगंधी वागे  
 सुगन्धवाला, त्वक्-पत्र- त्वक् अने तमालपत्रने। दाल-  
 चीनी तथा तेजपत्रका कलकान् च कुट्ट कलक, दत्त्वा-  
 नाभी डालकर, विदारी- इगियो विदारीकन्द, आमलक-  
 अने आमला ओझाना और आवले इनका, स्वरसयोः  
 स्वरस स्वरस, बस्त- अक्षरी बकरे, महिष पाडे मेषा,  
 वराह- सुवर सुवर, वृष- तथा आभक्षाना वृषभुने। रस  
 तथा सांडके वृषणका रस, कुक्कुट- कुक्कुट मुर्गा, बहि- भोर  
 मोर, हंस- हंस हंस, कारकव- कारकव कारकव, सारस-  
 अने सारसना और सारसके, जण्डरसानाम् धुने। रस  
 बंबोका रस, वृत्तैलयोः च धी अने तैलने धी और  
 तैल, एकैकम् प्रस्थम् ओड ओड प्रस्थ ६४-६४ तोले,  
 साधयेत् पडाववा पकावे;

19 (2) Take four tolas each of heart leaved sida, small caltrops, Indian groundsel, winter-cherry, climbing asparagus and crested purple nail dye, and having crushed the whole, cook it in 102400 tolas of water till it is boiled down to 1024 tolas, and strain the solution through a cloth; add to it 64 tolas each of the expressed juice of white-yam, and emblic myrobalan,

meat-juices of goat, buffalo, boar and bull and the contents of the eggs of domestic fowl, pea-hen, swan and sara cranes, as also 64 tolas each of ghee and oil and 512 tolas of milk. Prepare this by adding the paste of sandal, terrestrial and aquatic liquorice, bamboo manna, lotus rhizome, lotus stalk, blue lotus wild snake-gourd, cowage Annapaki, the tufts of palmyra palm, dates, grapes, ground phyllanthus yellow-berried night-shade Jivaka, Rishabhaka, wild blackgram, white siris, climbing asparagus, Meda long pepper, fragrant sticky mallow, cinnamon and cassia cinnamom.

ब्रह्मघोषादिना विधिना सिद्धं वस्ति दद्यात्।

ब्रह्मघोषादिना वेदध्वनि आदि वेदध्वनि आदि, विधिना विधिनी विधिते, सिद्धं सिद्धं सिद्धं, वस्ति अस्ति वस्तिको, दद्यात् आपवी देवे;

19-(2) The preparation thus made may be administered as an enema after performing ceremonial rites with vedic chants etc. described before.

तेन स्त्रीशतं गच्छेत्; न चात्रास्ते विहाराहार यन्त्रणा काचित्। एष वृष्यो वर्यो बृहण आयुष्यो वलीपलितनुश्च श्वतक्षीणनष्टशुकविषमज्वरार्तानां व्यापन्नयोनीनां च पथ्यतमः (२);

तेन तैली इससे, स्त्रीशतम् स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्रियोंके साथ, गच्छेत् संभोग करी शके छे गमन कर सकता है, अत्र च तेना प्रयोगम् इसके प्रयोगमें, काचित् कांछि पक्ष कुछ भी, विहाराहार- आहार- विहारनी आहारविहारकी, यन्त्रणा परहेज यन्त्रणा, न आस्ते नथी नहीं है, एषः आ अस्ति यह वस्ति,

(१९-२). सिद्धं तरिद्धं (घ.)

,, विषमज्वरार्तानां-विषमज्वरार्तानां (ग)



वृष्यः वृष्य वृष्य, वल्यः अस्थ वल्य, वृंहणः वृंहण  
वृंहण, आयुष्यः आयुष्य आयुष्य, वलीपलित वलीपलित  
तथा पणियानो वली तथा पलितकी, लुव नाशकरोरार  
नाशक है, क्षतक्षीण-क्षतक्षीण क्षतक्षीण, नष्टशुक्र-नष्टवीर्य  
नष्टवीर्य, विषमज्वरातीनाम् तथा विषमज्वरशी  
पीडित भनुष्येने विषमज्वरसे पीडित मनुष्योंको,  
व्यापन्नयोनीनाम् तेमश्च योनिरोगवायो भीओने  
एवं योनिरोगवाली स्त्रियोंको पथ्यतमः च आयुत पथ्य  
छे पथ्यन्त पथ्य है ॥ २ ॥

19-2). This would enable a man to approach hundred women. Moreover, this enema does not need any regimen of diet or behaviour. It is virilific, strength-giving, roborant, promotive of longevity and curative of wrinkles and grey hair. It is most wholesome for those suffering from pectoral lesions cachexia, loss of semen and irregular fever, as well as for women who are suffering from gynecic disorders.

सहचरायः स्नेहवस्तिः —

सहचरपलशतमुदकद्रोणचतुष्टये पक्त्वा द्रोण-  
शोषे रसे सुपूते विदारीक्षुरसप्रस्थाम्यामष्टगुणक्षीरं  
घृततैलप्रस्थं बलामधुकमधुकचन्दनमधूलिकासा-  
रिवामेदामहमेदाकाकोलीक्षीरकाकोलीपयसागु-  
रुमज्जिष्टाव्याघ्रनखशटीसहचरसहजवीर्यविराज-  
लोभाणामक्षमात्रैद्विगुणशर्करैः कर्कैः साधयेत् ।

सहचर आसमान्नी इलेनो कटाक्षेणियो नीलपुष्प-  
वाली कटसरेया, पक्षकचम् सो पक्ष ४०० तोले, उदक-  
द्रोणचतुष्टये आर द्रोण पाणीमा ४०९६ तोले जलमे,  
पक्त्वा पक्षान्नीने पकाकर, द्रोणशोषे ओड द्रोण पाडी  
रसे १०२४ तोल शोष रहने पर, सुपूते रसे क्षायने  
आणी तेमा कायको छानकर इसमें, बला- पक्ष बला,  
मधुक- गेडीमधु मुलहरी, मधुक- मधुमे मधुवा, चन्दन-  
मुष्क चन्दन, मधूलिका- मधूलिका मधूलिका, सारिवा-  
सारिवा कपूरी, मेदा- मेदा मेदा, महामेदा- महामेदा

महामेदा, काकोली- काकोली कानोली, क्षीरकाकोली-  
क्षीरकाकोली क्षीरकाकोली, पक्त्वा- इतिहे। बिलईकम्,  
अगुरु- अगुरु अगुरु, मज्जिष्टा- मज्जिष्टा मज्जिष्टा,  
नभला नलो। शटी- कपूरकाकोली शटी, सहचर आस-  
मान्नी इलेनो कटाक्षेणियो नीलपुष्पवाली कटसरेया,  
सहजवीर्य- श्री इवा, बराज- १०० दानवीनी, लोभाणाम  
अने दोधर और लोव, क्षमात्रैः इरेड ओड अक्ष  
प्रत्येक एक तोला, कर्कैः ओओनो कर्कै उतका कर्क,  
द्विगुण- तथा मे उपे तथा दो कर्क, शर्करैः साकर नाणी  
चीनी बाल करके, विदारी तेमा इजियानो रस विदारी-  
कन्दका रस, इक्षुरस- तथा शेरडीनो रस और इक्षुरस,  
प्रस्थाम्याम् ओड ओड प्रस्थ ६४-६४ तोले, सहजुग-  
आष्टगुण आठगुना, क्षीरम् इध दूध घृत- भी भी,  
तैल तथा तेल तथा तेल, प्रस्थम् प्रस्थ २४ तोले,  
साधयेत् पक्षान्नी पकावे (३);

19(3a) Take four hundred tolas of crested purple nail dye and cook it in 4096 tolas of water till it is reduced to 1024 tolas. Strain the solution well and add 64 tolas each of white yam and juice of the sugar cane and eight times the quantity of milk and 64 tolas of ghee and oil; prepare by adding the paste of one tola each of heart-leaved sida, liquorice, mohwab, sandal, aquatic liquorice, Indian sarsaparila, Međa, Mahameda, Kakoli, shirkakoli, milky yam, eagal wood, Indian madder, shell, zedoary, purple crested nail dye. Sahaaravirya, cinnamon and lodh and two tolas of sugar.

ब्रह्मघोषादिना विविजा सिद्धं वस्ति यथात् ।

सिद्धं सिद्ध यथेदी सिद्ध इति, वस्तिवत्ते गस्ति  
उस वस्तिको, ब्रह्मघोषादिना यथेपादिना यथेपादिना



विद्वारा, विभिन्ना पूर्वोक्ता विधिभी पूर्वोक्त विधिसे, दद्यात्  
आयुर्वी मेवे ।

19 (3b). The ceremonial rites of  
vedic chanting etc., should be gone  
through and the enema thereafter  
administared

एष सर्वरोगहरो रसायनो ललितानां श्रेष्ठो-  
ऽन्तःपुरचारिणीनां क्षतक्षयवातपित्तवेदनाश्वास-  
कासहरस्त्रिभागमाक्षिको बलीपलितनुवर्णरूपबल-  
मांसशुक्रवर्धनः (३);

एषः आ अस्ति यद् बस्ति, सर्वरोगहरः सर्वरोग-  
हरनाम सर्वरोगहर, रसायनः तथा रसायन छे तथा रसायन  
है, अन्तःपुरचारिणीनाम् अन्तःपुरमां रङ्गेनाम् अन्तःपुरमें  
विचरनेवाली, ललितानाम् स्त्रीस्त्रीने मांटे स्त्रियोंके लिए,  
श्रेष्ठः श्रेष्ठ छे श्रेष्ठ है, क्षतक्षय- अने उरःक्षत, क्षय  
उरःक्षत, क्षय वातपित्त- पात तथा पित्तनी वात तथा  
पित्तकी, वेदना- वेदना पीडा, श्वास- श्वास श्वास, कासहरः  
अने कास भटाङ्गनाम् छे और कासकी नाशक है, त्रिभाग-  
तृतीयांश तृतीयांश, माक्षिकः मधु मेणवी देनाथी शहद  
मिलाकर देनेने बलीपलितनुत् ते वर्णियां तेभ्यः पश्चात्  
हरनाम् वह बली एवं पलितका नाशक, वर्ण-रूप- पक्षु,  
३५ वर्ण- रूप, बल-मांस-अध, मांस बल, मांस शुक्रवर्धनः  
अने शुक्र वधरनाम् छे और शुक्रवर्धक है (३),

19 (3c). This enema is a panacea for  
all disorders and is a vitalizer and is  
the best for delicate women living in  
harems. It is curative of pectoral le-  
sions wasting and pain due to vata  
and pitta morbidity and dyspnea and  
cough mixed with one-third quantity of  
honey and administered; it is curative  
of wrinkles and grey hair and promo-  
tive of complexion, vitality, flesh and  
semen.

वीर्यबलाधानार्थं वस्तयः शतपाकाः सहस्रपाका वा कार्याः—

इत्येते रसायनाः ज्ञेहवस्तयः सति विभवे  
शतपाकाः सहस्रपाका वा कार्या वीर्यबलाधानार्थ-  
मिति ॥ १९ ॥

एते आ इन, रसायनाः रसायनरूप,  
ज्ञेहवस्तयः स्नेहवस्तिस्त्रीको, विभवे-  
सति ज्ञे मज्ज्य वस्त्रय युक्त होय ते विभव होने  
पर, वीर्यबलाधानार्थं वीर्य तथा अक्षय आधानने मांटे  
वीर्य तथा बज्जके आधानके लिए, शतपाकाः सौ पाकवाणी  
औ पाकवाली, सहस्रपाकाः वा द्द सहस्र पाकवाणी या  
हजार पाकवाली, कार्याः करनेवाली जेष्ठकी करनी  
चाहिए ॥ १९ ॥

19. Thus we have described the  
vitalizing unctuous preparations for  
enema. If a man is affluent enough  
he may have these preparations cooked  
hundred times or a thousand times  
over and over in order to dynamize  
the potency and action of these pre-  
parations.

पूर्वोक्तवस्तीनां गुणाः—

भवन्ति चात्र—

इत्येते वस्तयः ज्ञेहाश्चोक्ता यापनसंज्ञिताः ।  
स्वस्थानामातुराणां च वृद्धानां चाविरोधिनः ॥२०॥  
अतिव्यवायशीलानां शुक्रमांसबलप्रदाः ।  
सर्वरोगप्रशमनाः सर्वेष्वृतुषु यौगिकाः ॥२१॥  
नारीणामप्रजातानां नराणां चाप्यपत्यदाः ।  
उभयार्थकरा दृष्टाः ज्ञेहवस्तिनिरुहयोः ॥ २२ ॥

अत्र च आ 1444मां इस विषयमें, भवन्ति श्लोका  
छे के श्लोक है कि, एते आ ये, यापनसंज्ञिताः यापन  
नामनी यापन नामकी, वस्तयः अस्तिस्त्री वस्त्रियां,  
ज्ञेहाः च तथा स्नेहो तथा स्नेह, दृष्टाः, उद्देवामां  
आमां छे कहे गये हैं, स्वस्थानाम् तेस्त्री स्वरथ वे

સ્વસ્થ, આતુરાણામ્ રોગી, વૃદ્ધાનામ્ ચ અને વૃદ્ધોર્માં ઔર વૃદ્ધોર્મે, અવિરોધિનઃ અવિરોધી છે અવિરોધી છે અતિશયવાય- અતિમૈથુન અતિમૈથુન, શ્રીકાનામ્ કરનારાઓને કરનેવાલોંકો, શુક્ર-પ્રાપ્ત-શુક્ર, મંસિ શુક્ર, માંસ, વલ્કપ્રદાઃ અને બલ આપનાર છે ઔર વલ્કદાનક છે, સર્વરોગ- સર્વ રોગને સર્વ રોગોંકે, પ્રથમનાઃ મટાડનાર છે પ્રથમક છે, સર્વેષુ સમગ્રી સર્વ, ઋતુષુ ઋતુર્માં ઋતુર્મે, યૌગિકાઃ પ્રયોગ કરી શકાય ઔર્માં છે યૌગિક છે, અપ્રજાતાનામ્ અને સંતાન વિનાનાં પ્રજાહીન, નારીનામ્ સ્ત્રી સ્ત્રી, નરાણામ્ ચ તથા પુરુષોને પુરુષોંકો, અપિ પશુ સ્ત્રી, અપત્ન્યાદાઃ સંતાનો આપનાર છે સંતાન દેનેવાલે છે, હેઠ્ઠવસ્તિ- વળી તેઓ અનુવાસનવસ્તિ ફિર વે અનુવાસનવસ્તિ, નિરુહયોઃ તથા નિરુહવસ્તિ તથા નિરુહવસ્તિ, કમ- શાયકરાઃ બંનેનું કાર્ય (રનેહન તથા શેધન) કરનારાં લોનોંકા કાર્ય કરનેવાલે, દશાઃ બહુરામાં આબ્માં છે જાને ગયે છે ॥૨૦-૨૨॥

There are certain verses here—

20-22. Thus, we have described the enemas and the unctuous preparations which are designated longevity-promoters. They are not contra-indicated either in conditions of health or disease or in senility. They are promotive of semen, flesh and strength in persons given to excessive sex indulgence. They are curative of all diseases and suitable in all seasons. They induce fertility in sterile women and men. They are formed to serve the purpose of both types of enema namely unctuous and the evacuative.

તત્ત્વ વર્ણન—

વ્યાયામો મૈથુનં મધં મધૂનિ શિશિરામ્બુ ચ ।  
સંમોજનં રથશોખો વસ્તિજ્વેતેષુ ગર્હિતમ્ ॥૨૩॥

एतेषु आ इत. वस्तिषु अस्तिशोभां वस्तिषोर्मे, व्यायामः व्यायाम व्यायाम, मैथुनम् मैथुन मैथुन, मधन् मध मध, मधूनि मध मध, शिशिराम्बु ६३ पाणी ठंडा जल, रथशोखः रथशोख रथशोख, संमोजनम् च અને સમજન ઔર સમજન, ગર્હિતમ્ નિન્દિત છે નિન્દિત છે ॥૨૩॥

23. Exercise, sex-act, alcohol, honey, cold water, promiscuous eating and jolty conveyances should be eschewed during the course of these enemas.

અધ્યાયોક્તવિષયાઃ—

તત્ત્વ શ્લોકાઃ—

શિશિગોનર્દહંસાણ્ડર્દશ્વદ્વસ્તયશ્ચયઃ ।  
વિંશતિર્વિષ્કિરૈશ્વિશત્યપ્તુદૈઃ પ્રસદૈર્નૈવ ॥૨૪॥  
વિંશતિશ્ચ તથા સપ્તવિંશતિશ્ચામ્બુવારિમિઃ ।  
નવ મત્સ્યાદિભિશ્ચૈવ શિશિકલ્પેન વસ્તયઃ ॥૨૫॥  
દશ કર્કટકાષ્ઠૈશ્ચ કૂર્મકલ્પેન વસ્તયઃ ।  
મૃગૈઃ સપ્તદશૈકોનવિંશતિર્વિષ્કિરૈર્નૈવ ॥૨૬॥  
આનૂપૈર્દશશિશિવદ્વશયૈશ્ચ ચતુર્દશ ।  
एकोनविंशदित्येते सह कोटैः समासतः ॥२७॥  
પ્રોક્તા વિસ્તરશો મિથ્યા દે શતે શોડશોત્તરે ।

તત્ત્વ તે બાબતમાં તેમ વિષયમેં, શ્લોકાઃ ૩૫૨ ૬૨ના શ્લોકો છે કે ઉપસંહારકે શ્લોક છે કે, શિશિ- ગો- નર્- મોર, ગોનર્દ- ગોનર્દ ગોનર્દ, હંસાણ્ડ- અને હંસના ઇંડાંથી ઔર હંસકે બંડોંસ, દશવર દુકડીના ઇંડાં પ્રમાણેની કુલ- ટાણકે સદશ, ત્રયઃ ત્રણ લીન, વસ્તયઃ વસ્તિઓ વસ્તિમાં, વિષ્કિરૈઃ વિષ્કિરથી વિષ્કિરસે, વિશતિઃ વીસ લીસ, અપ્તુદૈઃ ત્રિશ્વ અપ્તુદેથી ત્રીસ પ્રત્તદૈસે લીસ, પ્રસદૈઃ પ્રસદેથી પ્રસદસે, નવ વિશતિઃ ૧૦ બહુ-ત્રીસ સ્ત્રીસ, તથા અમ્બુ- વારિમિઃ બહુ-ત્રીસ જલવરોંસે, સપ્તવિંશતિઃ ૭૭ વાવીસ સપ્તાર્દશ, શિશિ- મધુ-૨ના મોરકે, કલ્પેન કલ્પથી કલ્પસે.

૨૪. તથા સપ્તવિંશતિ-તપ્તનાદિવિશતિ (૨.)

૨૫. દશ-નવ (૧. ૧. ૧. ૧.)

૨૬. ચતુર્દશ-શોડશ (૧.)

मरुत्वादिभिः भाष्यार्था वगेरेथी मरुत्यादिसे, नव नव नव,  
वक्ष्यः च एव भरितयो। वस्तिर्था, कूर्मकल्पेन कुर्म-  
कल्पार्थी कूर्मकल्पसे, कर्कटकाद्यैः च उर्कटं आदिथी  
कर्कट आदिसे, दश दश दस वक्ष्यः भरितयो। वस्तिर्था,  
मृगैः भृगेथी मृगोसे, सप्तदश सप्तर सप्तह, विष्कैः  
विष्किरेथी विष्किरोसे। एकोनविंशतिः औगुप्ती अ औसी,  
जानूरेः आनूपथी अनूरोसे, नव नव नौ, दक्षिणिवि-  
षण कुडुग अने मयूरना कल्पथी कुकुट तथा मयूरके  
कल्पसे, भूक्षयैः च भिक्षेशमथी निक्षययोसे। चतुर्दश  
औह चौदह, इति आ प्रभाषे। इस प्रकार, स्नेहैः त्रिषु  
स्नेहेषु तीन स्नेहके, सह साथे साथ, समासतः  
द्व्यंशसुभा संक्षेपमें, एते आ ये, एकोनत्रिंशत् औगुप्ती-  
औसी भरितयो। उन्नीस वस्तिर्था, प्रोक्ताः उली से कही  
हैं, विस्तारणः विस्तारथी विस्तारसे, भिक्षाः भोग पास्तां  
पृथक् पृथक्, बोद्धव्योत्तरे द्वे शते असे। सोम भरितयो।  
आम से दो सौ सोलह वस्तिर्था होती हैं ॥ २४-२७॥

24-27 $\frac{1}{2}$ . Three preparations of enema with the eggs of peafowl, adjutant and swan prepared in the same way as that described in the case of the eggs of the hen; twenty preparations with gallinaceous birds; thirty with the pecker group of birds, twenty-nine with the tearer group of creatures, and twenty-seven with aquatic group of birds; nine with aquatic creatures like fish etc., in the manner described in the case of the pea fowl; ten preparations with amphibious group of creatures such as the crab etc., in the manner prescribed in the case of the tortoise; seventeen preparations with the deer-group of animals, nineteen preparations with gallinaceous birds; ten preparations with wet-land creatures and fourteen preparations of burrowing animals in the manner

described for the domestic fowl and the pea fowl. In brief, these taken together with the unctuous preparations, make twenty-nine groups of enemas. In extenso, when individually considered they make 216 kinds of enemas.

मधुसंयुक्तानामेतेषां वस्तीनां गुणाः —

एते माक्षिकसंयुक्ताः कुर्वन्त्यतिवृषं नरम् ॥२८॥  
नातियोगं न वाऽयोगं स्तम्भितास्ते च कुर्वते ।

माक्षिकसंयुक्ताः भक्ष्यसहितं शहदयुक्तं, एते आ-  
ये वस्त्रियां, नरम् भक्ष्येने मनुष्यको, अतिवृषम् अति-  
वीर्यसंपन्नं अति वीर्यसंपन्नं, कुर्वन्ति- अनादे से  
करती हैं, स्तम्भिताः अनेस्तम्भित करवाथी और स्तम्भित  
करनेसे, ते च तेभ्यो वे, अतियोगम् अतियोग अतियोग,  
न करती नहीं करती, अयोगम् वा तेभ्यो अयो-  
गने पक्षु एवं अयोगको सी, न च कुर्वन्ते करती नहीं  
करती ॥२८३॥

28-28½. These enemas when combined with honey make the man extremely virile. When thus fortified with honey they will not lead to over-action or under-action.

यापनावस्त्यप्रवृत्तौ कर्तव्यम्—

मृदुत्वाच्च निवर्तन्ते यस्य त्वेते प्रयोजिताः ॥२९॥  
समूत्रैर्बस्तिभिस्तीक्ष्णैरास्थाप्यः क्षिप्रमेव सः ।।

यस्य तु जने खिसमें, प्रयोजिताः दीधेदी दी दुई,  
एते आ अस्तिया। ये बस्तियां, सुवुस्थाव भद्र होवाथी

३. पूर्वमप्यसिद्धं-कुर्वमप्यतिक्रमं (च. ण.)

२६१ ते च कुर्वते-तेन कुर्वते (क.)

२०. सुदुस्वाप्न निवर्तन्ते यस्य त्वेने प्रबोधिताः—सुदुस्वाप्ननिवर्तः

नवसयस्येतिवदणे (स. ३, त. ५)

२९. निवर्तन्ते-निवर्तेरन् (छ)

२९३. तीक्ष्णः-स्त्रैकः (४.)

११ -स्वेतैः (त)

मृदु होनेसे, न निवर्तन्ते पाथी न आवे वापस नहीं लौटती, सः तेने इस मनुष्यको, क्षिप्रम् एव ततः अतुरन्त ही, तीक्ष्णैः तीक्ष्ण, समूत्रैः गोमूत्रयुक्त गोमूत्रयुक्त, बस्तिभिः अस्तिभ्यो बस्तिभ्योसे, आस्थाप्य. आस्थापन करायुं ओष्ठो आस्थापन कराना चाहिए ॥२९१॥

29-29½. If, on account of mild action, these enemata, when administered to a man, do not return, then he should be forth with given corrective enema with strong medications mixed with urine.

यापनावस्तेरतिसेवनदोषाः—

शोफाग्निनाशपाण्डुत्वशूलार्शःपरिकर्तिकाः ॥३०॥  
स्युर्ज्वरश्चातिसारश्च यापनात्यर्थसेवनात् ।

यापना- यापन अस्तिना यापन बस्तिके, अत्यर्थ-सेवनात् अतिशय सेवनथी अति सेवनसे, शोफ- सोअ सूजन, अग्निनाश- अग्निनाश अग्निनाश, पाण्डुत्व- पांडु- रोग पाण्डुरोग, शूल- शूल शूल, अर्शः- अर्श अर्श, परिकर्तिकाः परिकर्तिका परिकर्तिका, ज्वरः च ज्वर ज्वर, अतिसारः च अने अतिसार और अतिसार, स्युः शय्य छे होते हैं ॥३०॥

30-30½. The excessive use of these longevity-promoting enemata. causes edema, loss of gastric fire, anemia, colicky pain, piles, griping pain, fever and diarrhea.

तत्र चिकित्सा—

अरिष्टक्षीरसीध्वाद्या तत्रेष्टा दीपनी क्रिया ॥३१॥  
युक्त्या तस्माज्जिवेत् यापनाञ्च प्रसङ्गतः ।

तत्र ते उपद्रवोभा उन् उपद्रवोर्मे, अरिष्ट- अरिष्ट अरिष्ट, क्षीर- क्षीर क्षीर, सीध्वाद्या तथा सीधु आदिथी

३०½ सेवनात्-सेवना (७)

सीधु आदिसे, दीपनी अग्निदीपन अग्निदीपन, क्रिया क्रिया चिकित्सा, इष्टा करवी ओष्ठो कानी न हिए तस्मात् तेथी इस लिए, यापनाञ्च यापन अस्तिभ्यो यापन बस्तिभ्योका, युक्त्या युक्तिपूर्वक युक्तिपूर्वक, जिवेत् सेवन करवुं ओष्ठो सेवन करना चाहिए, प्रसङ्गतः न इति यह बातबामर सेवन न करवुं परन्तु निरन्तर सेवन न करना चाहिए ॥३१॥

31-31½. In such complications, treatment consists in the administration of digestive-stimulants such as medicated and seedhu wines and milk. Therefore one should have recourse to these enemata judiciously and not as a matter of habit.

इत्युच्चैर्मध्यपूर्वाणां व्यापदः सन्धिकित्तिताः ॥३२॥  
विस्तरेण पृथक् प्रोक्तास्तेभ्यो रक्षेन्नर सदा ।

इति उच्चैर्नाम- अथैथी ओष्ठो कानी बेलना, पूर्वाणाञ्च आदिनी आदिकी, सन्धिकित्तिताः चिकित्सा-सहित चिकित्सासहित, व्यापदः व्यापदितो व्यापदितो, विस्तरेण विस्तारथी विस्तारसे, पृथक् पृथक् पृथक् पृथक् पृथक्, प्रोक्ताः उद्धी छे उद्धी हैं, नरम् मनुष्यम् मनुष्यको, तेभ्यः तेथीथी उनसे, सदा सदा सदा, रक्षेन्नर रक्षेन्नर करवुं बचाना चाहिए ॥३२॥

32-32½. Thus, the complications resulting from loud speaking etc., together with their treatment, have been described again separately and in extenso. From these complications the patient should be protected at all times.

सिद्धिस्थाननिरुक्तिः—

कर्मणां वमनादीनामसम्यक्करणपदाम् ॥३३॥  
यत्रोक्तं साधनं स्थाने सिद्धिस्थानं तदुच्यते ।

३३ असम्यक्करणम्—

उच्चैर्मध्यपूर्वाणां नृणां नावते हि सदा भवन् ।

हास्यिकः पाठः (८.) इत्युच्यते ।

વમનાદીનામ્ વમનાદિ વમનાદિ, કર્મેણામ્ કર્મેણે કર્મોકે, અસમ્યક્-કરણ. યથાવિધિ ન કરવાથી પેદા થયેલા યથાવિધિ ન કરનેકે કારણ ઉત્પન્ન હુણ, આપદામ્ નિકારેની વિકારોક્તી, યન્ન ને ત્રિસ, સ્થાને સ્થાનમાં સ્થાનમેં, સાધનમ્ ચિકિત્સા ચિકિત્સા, ઠક્તમ્ ઠકી છે કહી છે, તદ્દ તે વદ, સિદ્ધિસ્થાનમ્ સિદ્ધિસ્થાન સિદ્ધિસ્થાન, ઠક્તમે કહેવાય છે કહા જાતા છે ॥૨૩૩॥

33-33½. The section wherein the treatment of complications resulting from the misuse of the purificatory procedures such as emesis etc., are described, that section, is named the section of Success in Treatment.

પ્રત્યક્ષપટનફલમ્—

સ્વપ્રધ્યાયશતં વિશમાત્રેયમુનિવાદ્યયમ્ ॥૩૩॥  
હિતાર્થે પ્રાણિનાં પ્રોક્તમગ્નિવેશેન ધીમતા ।

ધીમતા બુદ્ધિમાન બુદ્ધિમાન, અગ્નિવેશેન અગ્નિવેશે અગ્નિવેશેને, પ્રાણિનામ્ પ્રાણીઓના પ્રાણિયોકે, હિતાર્થમ્ હિતાર્થે માટે હિતાર્થે લિપ્, આત્રેયમુનિ- આત્રેય ઋષિની આત્રેય મુનેકી, વાદ્યમયમ્ વાણીરૂપ વાણીરૂપ, અધ્યાય- અધ્યાય વિશમ્ ૧૨૦ અધ્યાય ૧૨૦ અધ્યાય, પ્રોક્તમ્ ઠક્ત છે કહે છે ॥૨૩૩॥

34-34½. Thus, the treatise comprising a hundred and twenty chapters consisting on the main, of the utterances of sage Atreya, has been propounded by the intelligent Agnivesa for the good of all living beings.

દીર્ઘમાયુર્યશઃ સ્વાસ્થ્યં ત્રિવર્ગં ચાપિ પુષ્કલમ્ ॥૩૫॥  
સિદ્ધિં ચાનુષ્ઠાનાં લોકે પ્રાપ્નોતિ વિચિના પઠન્ ।

વિચિના વિચિત્ર વિચિત્ર, પઠન્ આ તંત્રને પાઠ કરતો. મનુષ્ય હવે તન્ત્રનો પઢતોવાળા મનુષ્ય, લોકે આ લોકમાં હવે લોકમેં, દીર્ઘમ્ લાંબુ દીર્ઘ, માયુઃ

આયુષ્ય આયુ, યશઃ યશઃ, સ્વાસ્થ્યમ્ સ્વસ્થતા સ્વાસ્થ્ય, પુષ્કલમ્ અને પુષ્કલમ્ ઓર પુષ્કલ, ત્રિવર્ગમ્ ધર્મ, અર્થ, તથા કામ ધર્મ, અર્થ તથા કામ, અનુષ્ઠામાયુ અને અતિ ઉત્તમ ઓર અતિ ઉત્તમ, સિદ્ધિમ્ કાર્યસિદ્ધિને કાર્યસિદ્ધિનો, પ્રાપ્નોતિ મેળવે છે પ્રાપ્ત કરતા છે ॥૨૫૩॥

35-35½. One, who studies this treatise systematically will attain long life, fame, health and an abundant measure of the three desiderata of human life, including unsurpassed success in this world.

પ્રતિસંસ્કર્તુઃ કર્મ—

વિસ્તારયતિ લેશોકં સંક્ષિપ્તયતિવિસ્તારમ્ ॥૩૬॥  
સંસ્કર્તા કુરુતે તન્નં પુરાણં ચ પુનર્નવમ્ ।

સંસ્કર્તા પ્રતિસંસ્કર્તા પ્રતિસંસ્કર્તા, લેશોકમ્ સંક્ષેપમાં કહેવાનો સંક્ષેપમે કહે હુણ, વિસ્તારયતિ વિસ્તાર કરે છે વિસ્તાર કરતા છે, અતિવિસ્તારમ્ અતિ વિસ્તારમાં કહેવાનો અતિ વિસ્તારમે કહે હુણ, સંક્ષિપ્તયતિ સંક્ષેપ કરે છે સંક્ષિપ્ત કરતા છે, પુરાણમ્ અને જૂના ઓર પુરાણ, તન્નમ્ ચ શાસ્ત્રમે તન્ત્રમે, પુનઃ ફરીથી ફિર નવમ્ નવું નવા, કુરુતે બનાવે છે કરતા છે ॥૨૬૩॥

36-36½. The redactor enlarges what is concise and abbreviates what is very prolix and, in this manner brings an ancient work uptodate.

ચરકદૃઢવલાન્નાં કૃતોઽગ્નિવેશતન્ત્રપ્રતિસંસ્કારઃ—

અતસ્તન્ત્રોત્તમમિદં ચરકેનાતિબુદ્ધિના ॥૩૭॥  
સંસ્કૃતં તત્ત્વસંપૂર્ણં ત્રિમાગેનોપલક્ષ્યતે ।  
તત્ત્વહ્રસ્વં ભૂતપતિં સંપ્રસાધ્ય સમાપયત્ ॥૩૮॥  
અક્ષણ્ડાર્થે દૃઢવલો જાતઃ પચ્ચનદે પુરે ।

૩૬. પુરાણ-ઉદાર (ગ)

૩૮ તત્ત્વસંપૂર્ણ-તત્ત્વસંપૂર્ણ (ર.)

૩૮ તત્ત્વસંપૂર્ણ ત્રિમાગેનો-તત્ત્વસંપૂર્ણ ત્રિમાગેનો (અ.)

૩૮ ત્રિમાગેન-ત્રિમાગેન (ર.)

૩૫. સ્વાસ્થ્યં ત્રિવર્ગ-પ્રશામારોગં (ક, ત, ધ, ક)

૩૫. પ્રાપ્નોતિ-ક્રમતે (વ.)

अतः तेषां च इस लिए, अतिबुद्धिना अति बुद्धिमान् अति बुद्धिमान्, चरकेण अरुक् मुनिश्रेष्ठे चरक- मुनिने, इदम् आ इस, तन्त्रोक्तम् उत्तम शास्त्रेण उत्तम शास्त्रका, संस्कृतस्य संस्करणे कथं संस्करण क्रिया, तत् ते बह, त्रिभागेन- श्रील भाग्ये तीसरे भागसे, असं- पूर्णम् अपूर्णम् अपूर्ण, उपलक्ष्यते ज्ञेयम् आने छे देखा जाता है, तत् तेने उसको, पञ्चनदे पञ्चनद पञ्चनद, पुरे पुरम् पुरम्, जातः अन्धेः उत्पन्न हुए, दृढबलः दृढबले दृढबले, भूतपतिः भूतपति भूतपति, कङ्कर्म शंकरने शंकरको, संग्रहाद्य तुष्ट करीने प्रमत्त करके, अखण्डार्थम् अर्थ अति न क्षय जेवी दीने अर्थ खण्डित न हो इस तरहसे, समापयत् पुरम् कथं छे पूर्ण किया है ॥३७.३८॥

37-38½. Thus this best of all treatises which is replete with truth and wisdom and which has been redacted by the extremely erudite scholar Charaka is now available only in three quarters of the original extent. Accordingly, in order to make the treatise complete Dridhabala, born in the town of Panchanada, restored the lost portion, having propitiated God Shiva, the Lord of creatures.

कृत्वा बहुभ्यस्तन्त्रेभ्यो विशेषोच्छशिलोच्चयम् ॥३९॥ सप्तदशौषधाभ्यायसिद्धिकल्पैरपूरयत् ।

बहुभ्यः अहु बहुत, तन्त्रेभ्यः शास्त्रोभांशे शास्त्रो, विशेष- श्रील विषयेने पञ्च इधरे विषयोंका सी, उच्छ- शिल- उच्छशिलरूप, उच्चयम् संग्रह संग्रह, कृत्वा करीने करके, सप्तदश सप्तर सप्तद, औषधाभ्याय अतिउत्साहमानना अध्याय चिकित्सास्थानके अध्याय, सिद्धि- सिद्धिस्थान सिद्धिस्थान, कल्पैः अने कल्पस्थानथी और कल्पस्थानसे, अपूरयत् तत्रने पूर्य कथं छे तन्त्रको पूर्ण किया है ॥ ३९½ ॥

39 39½. He added seventeen chapters in the section on Therapeutics as also the two sections of Pharmaceutics and Success in Treatment in entirety, by culling his data from various treatises on the science.

इदमन्यूनशब्दार्थं तन्त्रदोषविवर्जितम् ॥४०॥ पटत्रिंशता विचित्राभिभूषितं तन्त्रयुक्तिभिः ।

इदम् आ शास्त्रे वा शास्त्र, अन्यूनशब्दार्थम् अने अर्थनी न्यूनता रिक्तता शब्द अने अर्थनी न्यूनता रहित, तन्त्रदोष तन्त्रदोष, तन्त्रदोषसे, विचित्राभिभूषित तन्त्रयुक्तिभिः अने विचित्र और विचित्र, पटत्रिंशता छत्तीस छत्तीस, तन्त्रयुक्तिभिः तन्त्रयुक्तिभिः तन्त्र युक्तियोंसे, भूषितम् शोभीतुं मे विभूषित है ॥४०-३॥

40 40½. Thus, this treatise is not deficient either in respect of diction or in respect of content, and is free from any blemishes besetting scientific treatise and is embellished with the thirty-six canons of exposition.

पटत्रिंशतन्त्रयुक्तिरूपणम्—

तत्राधिकरणं योगो हेत्वर्थोऽर्थः पदस्य च ॥४१॥ प्रवेशोद्देशनिर्देशावकाशयोः प्रयोजनम् । उपदेशापदेशातिदेशार्थापत्तिर्निर्णयाः ॥४२॥ प्रसङ्गैकान्तनैकान्ताः सापेक्षगो विपर्ययः । पूर्वपक्षविधानानुमतन्याख्यानसंशयाः ॥४३॥ अतीतानागतवेद्याख्यसंशयसमुच्चयाः । निर्दर्शनं निर्वचनं संनियोगो विकल्पणम् ॥४४॥ प्रत्युत्सारस्तथोद्धारः संभवस्तन्त्रयुक्तयः ।

तत्र अधिकरणम् अधिकरणम् अधिकरण, योगः योग योग, हेत्वर्थः हेत्वर्थ हेत्वर्थ, पदस्य पदस्य पदस्य, प्रवेश- प्रवेश प्रवेश, उद्देश- उद्देश उद्देश, निर्दर्शनं निर्दर्शनं निर्दर्शन, संनियोगो संनियोगो संनियोग, विकल्पणम् विकल्पणम् विकल्पण, प्रत्युत्सार- प्रत्युत्सार- प्रत्युत्सार, स्तथोद्धारः स्तथोद्धारः स्तथोद्धार, संभवस्तन्त्रयुक्तयः संभवस्तन्त्रयुक्तयः संभवस्तन्त्रयुक्तयः ।

४१-३. पटत्रिंशता-पटत्रिंशत (४१)

४२-३. अवेक्षा-अवेक्षा (४२)

४३-३. प्रत्युत्सारः-प्रत्युत्सारः (४३)



निर्देश- निर्देश निर्देश, वाक्यशेष- वाक्यशेष वाक्यशेष, प्रयोजनम् प्रयोजनम् प्रयोजनम्, उपदेश- उपदेश उपदेश, अपदेश- अपदेश अपदेश, अतिदेश- अतिदेश अतिदेश, अर्थपत्ति- अर्थपत्ति अर्थपत्ति, निर्णयः निर्णयः निर्णयः, प्रसङ्ग- प्रसङ्ग प्रसङ्ग, एकान्त- एकान्त एकान्त, नैकान्ताः नैकान्ताः नैकान्ताः, अनेकान्त- अनेकान्त, सापवर्गः- सापवर्गः सापवर्गः, अपवर्ग- अपवर्ग अपवर्ग, विपर्ययः- विपर्ययः विपर्ययः, पूर्वपक्ष- पूर्वपक्ष पूर्वपक्ष, विधान- विधान विधान, अनुमत- अनुमत अनुमत, व्याख्यान- व्याख्यान व्याख्यान, संशयः- संशयः संशयः, अतीत- अतीत अतीत, अतीतावेक्षण- अतीतावेक्षण, अनागतावेक्षा- अनागतावेक्षा अनागतावेक्षण, स्वसंज्ञा- स्वसंज्ञा स्वसंज्ञा, ऊह्य- ऊह्य ऊह्य, समुच्चयः- समुच्चयः समुच्चयः, निदर्शनम्- निदर्शनम् निदर्शनम्, निर्वचनम्- निर्वचनम् निर्वचनम्, संनियोगः- संनियोगः संनियोगः, विकल्पनम्- विकल्पनम् विकल्पनम्, प्रत्युत्सारः- प्रत्युत्सारः प्रत्युत्सारः, तथा उद्धारः- तथा उद्धारः तथा उद्धारः, संभवः- संभवः संभवः, तन्त्रयुक्त्यः- तन्त्रयुक्त्यः तन्त्रयुक्त्यः, आ तन्त्रयुक्तिः- आ तन्त्रयुक्तिः आ तन्त्रयुक्तिः ॥४१४४३॥

41-44. The canons of exposition are (1) Subject matter (2) Arrangement (3) Extension of argument (4) Import of words (5) Partial adumbration (6) Concise statement (7) Amplification (8) Supply of ellipsis (9) Purpose (10) Authoritative instruction (11) Adducement of reason (12) Indication (13) Implication (14) Decision (15) Restatement (16) Categorical statement (17) Compromising statement (18) Exception (19) Exception to exception (20) Objection (21) Right interpretation (22) Concession (23) Explanation (24) Doubt (25) Retrospective reference (26) Prospective reference (27) Technical nomenclature (28) Deduction (29) Specification (30) Illustration (31) Definition (32) Injunction (32) Option (34) Rebuttal (35) Re-affirmation and (36) Possibility.

तन्त्रयुक्तिज्ञानफलम्—

तन्त्रे समाख्ययासोके भवन्त्येता हि कृत्स्नशः ॥४५॥  
एकदेशेन दृश्यन्ते समासाभिहिते तथा ।

समास- संक्षेपभी संक्षेपसे, व्यासोके तथा विस्तारभी उद्देश तथा विस्तारसे कहे हुए, तन्त्रे शास्त्रभाषाक्रमें, एताः आ तन्त्रयुक्तिः आ ये तन्त्रयुक्तियां, कृत्स्नशः संपूर्णपक्षे संपूर्णतया, भवन्ति हि जेवामा आवे छे देखी जाती हैं, तथा अने और समास- अति संक्षेपभी अति संक्षेपसे, अभिहिते उद्देश शास्त्रभाषा कहे हुए शास्त्रमें, एकदेशेन उद्देशशी एकदेशसे, दृश्यन्ते जेवामा आवे छे देखी जाती हैं ॥ ४५३ ॥

45-45. These canons of exposition are observed in their entirety in treatises which make use of both the aphoristic and the expository style of expression, while in the treatises which make use of the aphoristic style alone, they are observed only partially.

यथाऽम्बुजवनस्यार्कः प्रदीपो वेदमनो यथा ॥४६॥  
प्रबोधनप्रकाशार्थास्तथा तन्त्रस्य युक्तयः ।

यथा जेभ जिस प्रकार, अर्कः सूर्य सूर्य, अम्बुजवनस्य उमणवननो विकास करे छे कमलवनको विकसित करता है, यथा अने जेभ और जिस प्रकार, प्रदीपः दीपो दीपक, वेदमनः अंधाराभी आश्रित धरने प्रकाश करे छे अन्धकारसे आवृत गृहको प्रकाशित करता है, तथा तेभ उसी प्रकार, तन्त्रस्य तन्त्रणी तन्त्रकी, युक्तयः युक्तिः युक्तियां, प्रबोधन- प्रकाशार्थाः शास्त्रना अर्थनो विकास (विस्तार) तथा प्रकाश करे छे शास्त्रके अर्थको विकसित तथा प्रकाशित करती हैं ॥ ४६३ ॥

४५ तन्त्रे समाख्ययासोके भवन्त्येता हि कृत्स्नशः—तन्त्रे व्यास-

समासाख्यां भवन्त्येता हि कृत्स्नशः (ख.)

४५ समाख्ययासोके समाख्ययासोका (घ.)

४५ समासाभिहिते तथा—समासाभिहिते स्तुताः (ङ.)

४५ —समासाभिहितस्तथा (च.)

४५ —समासाभिहितस्तथा (फ.)



46-46½. What the sun is to the lotuses in a pond and what the lamp is to the house, the canons of exposition are to the treatise in subserving the double purpose of awakening and illumination

एकस्मिन्नपि यस्येह शास्त्रे लब्धास्पदा मतिः ॥४७॥  
स शास्त्रमन्यदप्याशु युक्तिज्ञत्वात् प्रबुध्यते ।

इह आ. इव. एकस्मिन् अपि ओके पक्ष एक मी, शास्त्रे शास्त्रार्थं शास्त्रार्थे, यस्य मतिः ज्ञेयं बुद्धिं चित्तं बुद्धि, लब्धास्पदा प्रविष्टं अर्थं होय प्रविष्टं हुई हो, सः ते वह, युक्तिज्ञत्वात् युक्तिने अल्पानुरो होयाभी युक्तिको जाननेसे, अन्यत् भी अन्य, अपि पक्ष मी, शास्त्रम् शास्त्रे शास्त्रको, आशु प्रबुध्यते तुरत समस्त शके छे जल्दी समस्त सकता है ॥४७॥

47-47½. One who has acquired a good grasp of even one branch of of this science will be able to acquire an understanding of the other branches as well, on account of his being well grounded in general principles

अधीयानोऽपि शास्त्राणि तन्त्रयुक्त्या विना भिषक् ।  
नाधिगच्छति शास्त्रार्थानर्थान् भाग्यक्षये यथा ४८

भाग्यक्षये आशु शीघ्र भर्ता भाग्य क्षीण होने पर, यथा जेभ जिस प्रकार, अर्थान् अनुष्य धनने मेजवतो नभी मनुष्य धनको प्राप्त नहीं करता, तन्त्र-तेभ तन्त्रे उची प्रकार तन्त्रकी, युक्त्या युक्ति युक्तियोंके, विना विना विना, शास्त्राणि शास्त्रोने। शास्त्रोको, अधीयानः अपि अध्यास करनेपर पढ़नेवाला, भिषक् वैद्य वैद्य, शास्त्रार्थान् शास्त्रार्थ अर्थने शास्त्रके अर्थको, न अधिगच्छति गलुते। नभी नहीं जानता ॥४८॥

48. A physician who is not conversant with the canons of exposition,

though he maybe a student of many treatises will fail to grasp the meaning of these treatises just as a man fails to acquire wealth when fortune has deserted him.

दुर्गृहीतं क्षिणोत्येव शास्त्रं शस्त्रमिवाबुधम् ।  
सुगृहीतं तदेव न शास्त्रं शस्त्रं च रक्षति ॥४९॥

दुर्गृहीतम् जगत्तर नदि समुच्चैश्च अच्छी प्रकार न समझा हुआ, शास्त्रम् शास्त्र शास्त्र बुद्धि जगत्तर नदि पड़ोसा शास्त्रे अच्छी प्रकार नहीं पढ़े हुए शास्त्रो. इव येठे मति, अबुधम् अज्ञानीने अनजानको. क्षिणोति एव नष्ट करे छे मार डालता है. सुगृहीतम् अने जगत्तर समुच्चैश्च और अच्छी प्रकार समझा हुआ. तदेव वह, शास्त्रम् शास्त्र शास्त्र, शस्त्र ज्ञानीने समझदारको, शस्त्रम् च जगत्तर पड़ोसा शास्त्रे येठे अच्छी प्रकार पढ़े हुए शास्त्रो मति, रक्षति रक्षा करे छे रक्षा करता है ॥४९॥

46 A science, if badly handled, will destroy the inept user, like a weapon badly handled: on the other hand the self-same science or weapon, rightly handled will become a source of succour.

(तस्मादेताः प्रवक्ष्यन्ते विस्तरेणांतरे पुनः ।

तत्त्वज्ञानार्थमस्यैव तन्त्रस्य गुणदोषतः) ॥५०॥

तस्मात् तेभी इस लिए, गुणदोषतः गुणदोषनी समीक्षा करी गुणदोषकी समीक्षाकर, जज्ञ एव आशु इक्षी, तन्त्रस्य शास्त्रार्थं शास्त्रके, तत्त्वज्ञानार्थम् तत्त्वज्ञान आते तत्त्वको जाननेके लिए, इताः आ तन्त्रयुक्तिर्वा ये तन्त्रयुक्तियां, पुनः इरीभी फिरसे, उचरे उत्तरतन्त्रार्थं उत्तरतन्त्रार्थ, विस्तरेण विस्तारभी विस्तारके, प्रवक्ष्यन्ते उद्देशार्थं आवद्ये कही जावेगी ॥५०॥

50. Accordingly, these canon of exposition will be described in extenso again in the supplementary section, with a view to enabling the student

to know the real import of this very treatise from a critical standpoint.

एतच्छास्त्रज्ञानफलम्—

इदमखिलमधीत्य सम्यगर्थान्

विमृशति योऽविप्रताः प्रयोगनित्यः ।

स मनुजसुखजीवितप्रदाता

भवति धृतिस्मृतिबुद्धिधर्मवृद्धः ॥५१॥

अविप्रताः तत्रार्थभां योऽकस्मिन् प्रतयागौ निःसंशयः प्रयोगनित्यः अने नित्य चिकित्सा कुर्मः इत्यादि और नित्य चिकित्सा करनेवाला, यः के मनुष्य जो मनुष्य, इदम् आ इष, अखिलम् संपूर्ण शास्त्रने सम्पूर्ण शास्त्रको, अधीत्य अधी पढ़कर, अर्थान् तेना अलिप्रामादने उसके अभिप्रायको, सम्यक् अर्थान् सही प्रकार विमृशति अभने छे समझता है, सः ते वह, धृति- धृति धृति, स्मृति- स्मृति स्मृति, बुद्धि- बुद्धि बुद्धि, धर्म- तथा धर्मनी तथा धर्मको, वृद्धः वृद्धिने भेजवी वृद्धिको प्राप्त कर, मनुज- मनुष्यने मनुष्योंको, सुख- सुखमय सुखमय, जीवित- जीवन जीवन, प्रदाता- आपनारे देनेवाला, भवति थाय छे होता है ॥५१॥

51. He who, having studied this treatise in its entirety, gives due reflection to its contents with concentrated mind and constantly verifies his knowledge in practical work and has fully developed his powers of retention, recollection discretion, and righteousness becomes a bestower of happiness and life to men.

(यस्य द्वादशसाहस्री हृदि तिष्ठति संहिता ।  
सोऽर्थज्ञः स विचारश्चिकित्साकुशलश्च सः ॥५२॥  
रोगांस्तेषां चिकित्सां च स किमर्थं न बुध्यते ।

५१. योऽविप्रताः यो निमग्नः (द. क.)

,, प्रदाना-प्रदानात् (द.)

५२. योऽर्थज्ञः सोऽर्थज्ञः—

कर्णश्रावणैरोगोपशान्तं च विचारयन्ति ।

अन्वयार्थचिकित्सां च सक्रियवैद्यवृत्तये ॥

इत्यधिकः पाठः (द.) पुरस्कृतः

यस्य के पुरुषना जिस पुरुषके, हृदि हृदयमें, द्वादशसाहस्री आर ६०२ श्लोकवाणी बारह हजार श्लोकसे युक्त संहिता आ संहिता यह संहिता, तिष्ठति रहे छे रहती है, सः ते वह, अर्थज्ञः अर्थज्ञ छे अर्थ जाननेवाला है, सः ते वह, विचारज्ञः विचारज्ञ छे अर्थ जाननेवाला है, सः अने ते और वह, चिकित्साकुशलः च चिकित्साकुशल छे चिकित्सामें कुशल है, सः ते वह, रोगान् रोगोंको, निवारयन् निवारयन् अने तेरोनी और उनकी, चिकित्सां च चिकित्सां च चिकित्साको, किमर्थम् आ अर्थार्थी केम इष प्रत्यसे क्यों, न बुध्यते न अर्थे? न जाने? ॥५२॥

52 He, in whose memory resides this compendium of twelve thousand verses, is indeed the knower of its meaning and an adept in theory and in practice; wherefore, then, does he not know the diseases and their treatment?

चिकित्सा वहिवैद्यश्च सुस्थातुरहितं प्रति ॥५३॥  
यदिहास्ति तदन्यत्र यज्ञेहास्ति न तत्कचिद् ।

सुस्थ- स्वरथ स्वरथ, आतुर- अने रोगीना और रोगीके, हितम् हितने हितके, प्रति भाटे लिए, वहिवैद्यश्च अभिवैद्ये अभिवैद्यने, चिकित्सा आ चिकित्सा शास्त्र उद्यु छे यह चिकित्सा शास्त्र कहा है, यत् के जो, इह आ तत्रभा इष तन्त्रमें, अस्ति छे है, तत् ते वह, अन्यत्र भीने स्थाने भूषणे अन्यत्र मिलेगा, यत् परंतु के परन्तु जो, इह आ तत्रभा यहाँ, न अस्ति नहीं नहीं है तत् ते वह, कचिद् भीने अर्थार्थ पक्ष कहीं सी. न नहीं नहीं ॥५३॥

53. Whatever is found herein of the science of therapeutics, compiled by Agnivesa for the wellbeing of the healthy as well as of the ailing, may be found in other treatises too, but

५३. चिकित्सा वहिवैद्यश्च—चिकित्सितं वहिवैद्यः (क.)

whatever is not contained herein can never be found elsewhere.

अग्निवेशकृते तन्त्रे चरकप्रतिसंस्कृते ॥५४॥

सिद्धिस्थानेऽष्टमे प्राप्ते तस्मिन् दृढबलेन तु ।

सिद्धिस्थानं स्वसिद्ध्यर्थं समासेन समापितम् ॥५५॥

अग्निवेशकृते अग्निवेशे रथेवा अग्निवेशे वनाये, चरक- अने यरुथी और चरकके द्वारे, प्रतिसंस्कृते अतिसंस्कार पाभेवा प्रतिसंस्कृत, तन्त्रे आ शास्त्रभा इस शास्त्रके, अष्टमे आऽमुं आठवें, सिद्धिस्थाने सिद्धि- स्थान सिद्धिस्थानके, प्राप्ते प्राप्ति यत्ता प्राप्त होने पर, तस्मिन् तेषां उसमें, दृढबलेन तु दृढबले दृढबलेन, स्वसिद्ध्यर्थम् पोताना प्रयोजनकी सिद्धिने भाटे अपने प्रयोजनकी सिद्धिके लिए, सिद्धिस्थानम् सिद्धिस्थान सिद्धिस्थान, समासेन संक्षेपभा संक्षेपमें, समापितम् पूरुं कर्तुं छे पूर्ण किया है ॥५४-५५॥

54-55. The eighth section entitled Success in Treatment, in the treatise compiled by Agnivesa and revised by Caraka, being available, the same has been abridged and completed by Dridhabala for the sake of the fulfilment of his mission in life.

इत्यग्निवेशकृते तन्त्रे चरकप्रतिसंस्कृतेऽष्टमे

दृढबलव्यपूरिते सिद्धिस्थाने उत्तरवस्तिनि

सिद्धिनाम द्वादशोऽध्यायः ॥५६॥

इति आ अनामे इस प्रकार, अग्निवेशकृते रथेवा रथे रथेवा अग्निवेशके वनाये, चरकप्रतिसंस्कृते तन्त्रे तन्त्रे चरकके प्रतिसंस्कृत पाभेवा आ शास्त्रभा और चरकके द्वारा संस्कृत इस प्रकार, अष्टमे आऽमुं अष्टमे, दृढबलव्यपूरिते अने दृढबले दृढबलेन, स्वसिद्ध्यर्थम् पोताना प्रयोजनकी सिद्धिने भाटे अपने प्रयोजनकी सिद्धिके लिए, सिद्धिस्थानम् सिद्धिस्थान, समासेन संक्षेपभा संक्षेपमें, समापितम् पूरुं कर्तुं छे पूर्ण किया है ॥५४-५५॥

12. Thus, in the Section on Success in Treatment, in the treatise compiled by Agnivesa and revised by Caraka, the twelfth chapter entitled 'Successful application of the remaining best kinds of enema, not being available, the same as restored by Dridhabala, is completed.

PRINTED BY  
**Gunvantray Acharya**  
At Ayurveda Mudranalaya, JAMNAGAR











